उत्पत्ति 1

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। 2 और पृथ्वी बेडौल और
सुनसान पक्की यी; और गहरे जल के ऊपर अन्धिक्कारनो या: तया परमेश्वर का
आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता या। 3 तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो
उजियाला हो गया। 4 और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और
परमेश्वर ने उजियाले को अन्धिक्कारने से अलग किया। 5 और परमेश्वर ने
उजियाले को दिन और अन्धिक्कारने को रात कहा। तया सांफ हुई फिर भोर
हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।। 6 फिर परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक
ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए। 7 तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके
उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही
हो गया। 8 और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तया सांफ हुई फिर
भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।। 9 फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के
नीचे का जल एक स्यान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे; और वैसा
ही हो गया। 10 और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तया जो जल इकट्ठा
हुआ उसको उस ने समुद्र कहा: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। 11 फिर
परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तया बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई
वृझ भी जिनके बीज उन्ही में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें;
और वैसा ही हो गया। 12 तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में
अपक्की अपक्की जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृझ जिनके बीज
एक एक की जाति के अनुसार उन्ही में होते हैं उगे; और परमेश्वर ने देखा कि
अच्छा है। 13 तया सांफ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।। 14

फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिथे आकाश के अन्तर में
ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षोंके कारण
हों। 15 और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृय्वी पर प्रकाश देनेवाली भी
ठहरें; और वैसा ही हो गया। 16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में
से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिथे, और छोटी ज्योति को रात पर
प्रभुता करने के लिथे बनाया: और तारागण को भी बनाया। 17 परमेश्वर ने उनको
आकाश के अन्तर में इसलिथे रखा कि वे पृय्वी पर प्रकाश दें, 18 तया दिन और
रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धिक्कारने से अलग करें: और परमेश्वर
ने देखा कि अच्छा है। 19 तया सांफ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौया दिन हो
गया।। 20 फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियोंसे बहुत ही भर जाए, और
पक्की पृय्वी के ऊपर आकाश कें अन्तर में उड़ें। 21 इसलिथे परमेश्वर ने जाति
जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियोंकी भी सृष्टि की
जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के
उड़नेवाले पझियोंकी भी सृष्टि की : और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। 22 और
परमेश्वर ने यह कहके उनको आशीष दी, कि फूलो-फलो, और समुद्र के जल में
भर जाओ, और पक्की पृय्वी पर बढ़ें। 23 तया सांफ हुई फिर भोर हुआ। इस
प्रकार पांचवां दिन हो गया। 24 फिर परमेश्वर ने कहा, पृय्वी से एक एक जाति के
जीवित प्राणी, अर्यात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृय्वी के वनपशु,
जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया। 25 सो परमेश्वर ने
पृय्वी के जाति जाति के वनपशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को,
और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया : और परमेश्वर

ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपके स्वरूप के
अनुसार अपक्की समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के
पझियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर
जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिक्कारने रखें। 27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपके
स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपके ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने
उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्योंकी सृष्टि की। 28 और
परमेश्वर ने उनको आशीष दी : और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर
जाओ, और उसको अपके वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तया आकाश
के पझियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओ पर अधिक्कारने रखो। 29 फिर
परमेश्वर ने उन से कहा, सुनो, जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर
हैं और जितने वृझोंमें बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे
तुम्हारे भोजन के लिथे हैं : 30 और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्की,
और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण हैं, उन सब के खाने के
लिथे मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिए हैं; और वैसा ही हो गया। 31 तब परमेश्वर ने
जो कुछ बनाया या, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तया
सांफ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया।।

उत्पत्ति 2

1 योंआकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। 2 और
परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता या सातवें दिन समाप्त किया। और उस
ने अपके किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्रम किया। 3 और परमेश्वर ने

सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपक्की
सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्रम लिया। 4 आकाश और पृय्वी की उत्पत्ति
का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्यात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने
पृय्वी और आकाश को बनाया: 5 तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न या, और न
मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा या, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृय्वी पर जल नहीं
बरसाया या, और भूमि पर खेती करने के लिथे मनुष्य भी नहीं या; 6 तौभी कुहरा
पृय्वी से उठता या जिस से सारी भूमि सिंच जाती यी 7 और यहोवा परमेश्वर ने
आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नयनो में जीवन का श्वास फूंक
दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया। 8 और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर
अदन देश में एक बाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उस ने रचा या, रख
दिया। 9 और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृझ, जो देखने में मनोहर
और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और बाटिका के बीच में जीवन के वृझ
को और भले या बुरे के ज्ञान के वृझ को भी लगाया। 10 और उस बाटिका को
सींचने के लिथे एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा
में हो गई। 11 पहिली धारा का नाम पीशोन् है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे
देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है। 12 उस देश का सोना चोखा होता है, वहां
मोती और सुलैमानी पत्यर भी मिलते हैं। 13 और दूसरी नदी का नाम गीहोन् है,
यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। 14 और तीसरी नदी का नाम
हिद्देकेल् है, यह वही है जो अश्शूर् के पूर्व की ओर बहती है। और चौयी नदी का
नाम फरात है। 15 जब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की बाटिका में
रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रझा करे, 16 तब यहोवा परमेश्वर

ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू बाटिका के सब वृझोंका फल बिना खटके खा
सकता है: 17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृझ है, उसका फल तू कभी न खाना
: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।। 18 फिर
यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिथे एक
ऐसा सहाथक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए। 19 और यहोवा परमेश्वर भूमि में से
सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भँाति के पझियोंको रचकर
आदम के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और
जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो
गया। 20 सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पझियों, और
सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिथे कोई ऐसा सहाथक
न मिला जो उस से मेल खा सके। 21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी
नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसुली
निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया। 22 और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली
को जो उस ने आदम में से निकाली यी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास
ले आया। 23 और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियोंमें की हड्डी और मेरे मांस
में का मांस है : सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।
24 इस कारण पुरूष अपके माता पिता को छोड़कर अपक्की पत्नी से मिला रहेगा
और वे एक तन बनें रहेंगे। 25 और आदम और उसकी पत्नी दोनोंनंगे थे, पर
लजाते न थे।।

उत्पत्ति 3

1 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त या, और
उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के
किसी वृझ का फल न खाना ? 2 स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृझोंके फल
हम खा सकते हैं। 3 पर जो वृझ बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में
परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर
जाओगे। 4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, 5 वरन परमेश्वर आप
जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल
जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। 6 सो
जब स्त्री ने देखा कि उस वृझ का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ,
और बुद्धि देने के लिथे चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खाया;
और अपके पति को भी दिया, और उस ने भी खाया। 7 तब उन दोनोंकी आंखे
खुल गई, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़
जोड़ कर लंगोट बना लिथे। 8 तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय बाटिका
में फिरता या उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी
बाटिका के वृझोंके बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। 9 तब यहोवा परमेश्वर ने
पुकारकर आदम से पूछा, तू कहां है? 10 उस ने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर
डर गया क्योंकि मैं नंगा या; इसलिथे छिप गया। 11 उस ने कहा, किस ने तुझे
चिताया कि तू नंगा है? जिस वृझ का फल खाने को मै ने तुझे बर्जा या, क्या तू ने
उसका फल खाया है? 12 आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया
है उसी ने उस वृझ का फल मुझे दिया, और मै ने खाया। 13 तब यहोवा परमेश्वर
ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब

मै ने खाया। 14 तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है
इसलिथे तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट
के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा : 15 और मै तेरे और
इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुंगा,
वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। 16 फिर स्त्री से उस
ने कहा, मै तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित
होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह
तुझ पर प्रभुता करेगा। 17 और आदम से उस ने कहा, तू ने जो अपक्की पत्नी की
बात सुनी, और जिस वृझ के फल के विषय मै ने तुझे आज्ञा दी यी कि तू उसे न
खाना उसको तू ने खाया है, इसलिथे भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज
जीवन भर दु:ख के साय खाया करेगा : 18 और वह तेरे लिथे कांटे और ऊंटकटारे
उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा ; 19 और अपके माथे के पक्कीने की रोटी
खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला
गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा। 20 और आदम ने
अपक्की पत्नी का नाम हव्वा रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की
आदिमाता वही हुई। 21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिथे
चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहिना दिए। 22 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,
मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिथे अब
ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृझ का फल भी तोड़ के खा ले और
सदा जीवित रहे। 23 तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से
निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस मे से वह बनाया गया या। 24

इसलिथे आदम को उस ने निकाल दिया और जीवन के वृझ के मार्ग का पहरा देने
के लिथे अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करुबोंको, और चारोंओर घूमनेवाली
ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।।

उत्पत्ति 4

1 जब आदम अपक्की पत्नी हव्वा के पास गया तब उस ने गर्भवती होकर कैन को
जन्म दिया और कहा, मै ने यहोवा की सहाथता से एक पुरूष पाया है। 2 फिर वह
उसके भाई हाबिल को भी जन्मी, और हाबिल तो भेड़-बकरियोंका चरवाहा बन
गया, परन्तु कैन भूमि की खेती करने वाला किसान बना। 3 कुछ दिनोंके पश्चात्
कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। 4 और हाबिल भी
अपक्की भेड़-बकरियोंके कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी
चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, 5
परन्तु कैन और उसकी भेंट को उस ने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित
हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई। 6 तब यहोवा ने कैन से कहा, तू
क्योंक्रोधित हुआ ? और तेरे मुंह पर उदासी क्योंछा गई है ? 7 यदि तू भला करे,
तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी ? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर
छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।
8 तब कैन ने अपके भाई हाबिल से कुछ कहा : और जब वे मैदान में थे, तब कैन
ने अपके भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया। 9 तब यहोवा ने कैन से पूछा,
तेरा भाई हाबिल कहां है ? उस ने कहा मालूम नहीं : क्या मै अपके भाई का
रखवाला हूं ? 10 उस ने कहा, तू ने क्या किया है ? तेरे भाई का लोहू भूमि में से

मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है ! 11 इसलिथे अब भूमि जिस ने तेरे
भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिथे अपना मुंह खोला है, उसकी ओर से तू
शापित है। 12 चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न
मिलेगी, और तू पृय्वी पर बहेतू और भगोड़ा होगा। 13 तब कैन ने यहोवा से कहा,
मेरा दण्ड सहने से बाहर है। 14 देख, तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला
है और मै तेरी दृष्टि की आड़ मे रहूंगा और पृय्वी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा; और
जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा। 15 इस कारण यहोवा ने उस से कहा, जो
कोई कैन को घात करेगा उस से सात गुणा पलटा लिया जाएगा। और यहोवा ने
कैन के लिथे एक चिन्ह ठहराया ऐसा ने हो कि कोई उसे पाकर मार डाले।। 16
तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया, और नोद् नाम देश में, जो अदन के
पूर्व की ओर है, रहने लगा। 17 जब कैन अपक्की पत्नी के पास गया जब वह
गर्भवती हुई और हनोक को जन्मी, फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर
का नाम अपके पुत्र के नाम पर हनोक रखा। 18 और हनोक से ईराद उत्पन्न
हुआ, और ईराद ने महूयाएल को जन्म दिया, और महूयाएल ने मतूशाएल को,
और मतूशाएल ने लेमेक को जन्म दिया। 19 और लेमेक ने दो स्त्रियां ब्याह ली :
जिन में से एक का नाम आदा, और दूसरी को सिल्ला है। 20 और आदा ने याबाल
को जन्म दिया। वह तम्बुओं में रहना और जानवरोंका पालन इन दोनो
रीतियोंका उत्पादक हुआ। 21 और उसके भाई का नाम यूबाल है : वह वीणा और
बांसुरी आदि बाजोंके बजाने की सारी रीति का उत्पादक हुआ। 22 और सिल्ला ने
भी तूबल्कैन नाम एक पुत्र को जन्म दिया : वह पीतल और लोहे के सब धारवाले
हयियारोंका गढ़नेवाला हुआ: और तूबल्कैन की बहिन नामा यी। 23 और लेमेक

ने अपक्की पत्नियोंसे कहा, हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो; हे लेमेक की
पत्नियों, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक पुरूष को जो मेरे चोट लगाता या,
अर्यात् एक जवान को जो मुझे घायल करता या, घात किया है। 24 जब कैन का
पलटा सातगुणा लिया जाएगा। तो लेमेक का सतहरगुणा लिया जाएगा। 25 और
आदम अपक्की पत्नी के पास फिर गया; और उस ने एक पुत्र को जन्म दिया और
उसका नाम यह कह के शेत रखा, कि परमेश्वर ने मेरे लिथे हाबिल की सन्ती,
जिसको कैन ने घात किया, एक और वंश ठहरा दिया है। 26 और शेत के भी एक
पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने उसका नाम एनोश रखा, उसी समय से लोग
यहोवा से प्रार्यना करने लगे।।

उत्पत्ति 5

1 आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपके ही
स्वरूप में उसको बनाया; 2 उस ने नर और नारी करके मनुष्योंकी सृष्टि की और
उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा। 3 जब आदम
एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप
के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा। 4 और शेत के जन्म के
पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न
हुईं। 5 और आदम की कुल अवस्या नौ सौ तीस वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर
गया।। 6 जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ, तब उस ने एनोश को जन्म दिया। 7
और एनोश के जन्म के पश्चात् शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। 8 और शेत की कुल अवस्या नौ सौ बारह वर्ष

की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया।। 9 जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उस ने
केनान को जन्म दिया। 10 और केनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ पन्द्रह
वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां हुई। 11 और एनोश की कुल
अवस्या नौ सौ पांच वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया।। 12 जब केनान सत्तर
वर्ष का हुआ, तब उस ने महललेल को जन्म दिया। 13 और महललेल के जन्म
के पश्चात् केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे
बेटियां उत्पन्न हुई। 14 और केनान की कुल अवस्या नौ सौ दस वर्ष की हुई :
तत्पश्चात् वह मर गया।। 15 जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने थेरेद
को जन्म दिया। 16 और थेरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ तीस वर्ष
जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। 17 और महललेल की
कुल अवस्या आठ सौ पंचानवे वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया।। 18 जब
थेरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, जब उस ने हनोक को जन्म दिया। 19 और
हनोक के जन्म के पश्चात् थेरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे
बेटियां उत्पन्न हुई। 20 और थेरेद की कुल अवस्या नौ सौ बासठ वर्ष की हुई :
तत्पश्चात् वह मर गया। 21 जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने मतूशेलह
को जन्म दिया। 22 और मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक
परमेश्वर के साय साय चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई।
23 और हनोक की कुल अवस्या तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। 24 और हनोक
परमेश्वर के साय साय चलता या; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे
उठा लिया। 25 जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उस ने लेमेक को
जन्म दिया। 26 और लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष

जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। 27 और मतूशेलह की
कुल अवस्या नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया।। 28 जब
लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, तब उस ने एक पुत्र जन्म दिया। 29 और यह
कहकर उसका नाम नूह रखा, कि यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप दिया है, उसके
विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं, हम
को शान्ति देगा। 30 और नूह के जन्म के पश्चात् लेमेक पांच सौ पंचानवे वर्ष
जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। 31 और लेमेक की कुल
अवस्या सात सौ सतहत्तर वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया।। 32 और नूह
पांच सौ वर्ष का हुआ; और नूह ने शेम, और हाम और थेपेत को जन्म दिया।।

उत्पत्ति 6

1 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न
हुई, 2 तब परमेश्वर के पुत्रोंने मनुष्य की पुत्रियोंको देखा, कि वे सुन्दर हैं; सो
उन्होंने जिस जिसको चाहा उन से ब्याह कर लिया। 3 और यहोवा ने कहा, मेरा
आत्मा मनुष्य से सदा लोंविवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है :
उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। 4 उन दिनोंमें पृथ्वी पर दानव रहते थे;
और इसके पश्चात् जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियोंके पास गए तब उनके
द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीत्तिर् प्राचीनकाल
से प्रचलित है। 5 और यहोवा ने देखा, कि मनुष्योंकी बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है,
और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता
है। 6 और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति

खेदित हुआ। 7 तब यहोवा ने सोचा, कि मै मनुष्य को जिसकी मै ने सृष्टि की है
पृय्वी के ऊपर से मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं। 8 परन्तु
यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।। 9 नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी
पुरूष और अपके समय के लोगोंमें खरा या, और नूह परमेश्वर ही के साय साय
चलता रहा। 10 और नूह से, शेम, और हाम, और थेपेत नाम, तीन पुत्र उत्पन्न
हुए। 11 उस समय पृय्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई यी, और उपद्रव से भर
गई यी। 12 और परमेश्वर ने पृय्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि वह बिगड़ी
हुई है; क्योंकि सब प्राणियोंने पृय्वी पर अपक्की अपक्की चाल चलन बिगाड़ ली
यी। 13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, सब प्राणियोंके अन्त करने का प्रश्न मेरे
साम्हने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृय्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिथे मै
उनको पृय्वी समेत नाश कर डालूंगा। 14 इसलिथे तू गोपेर वृझ की लकड़ी का
एक जहाज बना ले, उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल
लगाना। 15 और इस ढंग से उसको बनाना : जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ,
चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की हो। 16 जहाज में एक खिड़की
बनाना, और इसके एक हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और जहाज की एक
अलंग में एक द्वार रखना, और जहाज में पहिला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना। 17
और सुन, मैं आप पृय्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियोंको, जिन में जीवन की
आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं : और सब जो पृय्वी पर है मर
जाएंगे। 18 परन्तु तेरे संग मै वाचा बान्धता हूं : इसलिथे तू अपके पुत्रों, स्त्री, और
बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना। 19 और सब जीवित प्राणियोंमें से, तू एक
एक जाति के दो दो, अर्यात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर, अपके

साय जीवित रखना। 20 एक एक जाति के पक्की, और एक एक जाति के पशु,
और एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेवाले, सब में से दो दो तेरे पास आएंगे, कि
तू उनको जीवित रखे। 21 और भांति भांति का भोज्य पदार्थ जो खाया जाता है,
उनको तू लेकर अपके पास इकट्ठा कर रखना सो तेरे और उनके भोजन के लिथे
होगा। 22 परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।

उत्पत्ति 7

1 और यहोवा ने नूह से कहा, तू अपके सारे घराने समेत जहाज में जा; क्योंकि मै
ने इस समय के लोगोंमें से केवल तुझी को अपक्की दृष्टि में धर्मी देखा है। 2 सब
जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू सात सात, अर्यात् नर और मादा लेना : पर जो
पशु शुद्ध नहीं है, उन में से दो दो लेना, अर्यात् नर और मादा : 3 और आकाश के
पझियोंमें से भी, सात सात, अर्यात् नर और मादा लेना : कि उनका वंश बचकर
सारी पृय्वी के ऊपर बना रहे। 4 क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मैं पृय्वी
पर चालीस दिन और चालीस रात तक जल बरसाता रहूंगा; जितनी वस्तुएं मैं ने
बनाईं है सब को भूमि के ऊपर से मिटा दूंगा। 5 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
नूह ने किया। 6 नूह की अवस्या छ: सौ वर्ष की यी, जब जलप्रलय पृय्वी पर
आया। 7 नूह अपके पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत, जलप्रलय से बचने के लिथे
जहाज में गया। 8 और शुद्ध, और अशुद्ध दोनो प्रकार के पशुओं में से, पझियों, 9
और भूमि पर रेंगनेवालोंमें से भी, दो दो, अर्यात् नर और मादा, जहाज में नूह के
पास गए, जिस प्रकार परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी यी। 10 सात दिन के उपरान्त
प्रलय का जल पृय्वी पर आने लगा। 11 जब नूह की अवस्या के छ: सौवें वर्ष के

दूसरे महीने का सत्तरहवां दिन आया; उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट
निकले और आकाश के फरोखे खुल गए। 12 और वर्षा चालीस दिन और चालीस
रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही। 13 ठीक उसी दिन नूह अपके पुत्र शेम, हाम,
और थेपेत, और अपक्की पत्नी, और तीनोंबहुओं समेत, 14 और उनके संग एक
एक जाति के सब बनैले पशु, और एक एक जाति के सब घरेलू पशु, और एक एक
जाति के सब पृथ्वी पर रेंगनेवाले, और एक एक जाति के सब उड़नेवाले पक्की,
जहाज में गए। 15 जितने प्राणियोंमें जीवन की आत्मा यी उनकी सब जातियोंमें
से दो दो नूह के पास जहाज में गए। 16 और जो गए, वह परमेश्वर की आज्ञा के
अनुसार सब जाति के प्राणियोंमें से नर और मादा गए। तब यहोवा ने उसका द्वार
बन्द कर दिया। 17 और पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता रहा; और पानी
बहुत बढ़ता ही गया जिस से जहाज ऊपर को उठने लगा, और वह पृथ्वी पर से
ऊंचा उठ गया। 18 और जल बढ़ते बढ़ते पृथ्वी पर बहुत ही बढ़ गया, और जहाज
जल के ऊपर ऊपर तैरता रहा। 19 और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहां
तक कि सारी धरती पर जितने बड़े बड़े पहाड़ थे, सब डूब गए। 20 जल तो पन्द्रह
हाथ ऊपर बढ़ गया, और पहाड़ भी डूब गए 21 और क्या पक्की, क्या घरेलू पशु,
क्या बनैले पशु, और पृथ्वी पर सब चलनेवाले प्राणी, और जितने जन्तु पृथ्वी मे
बहुतायत से भर गए थे, वे सब, और सब मनुष्य मर गए। 22 जो जो स्यल पर थे
उन में से जितनोंके नयनोंमें जीवन का श्वास या, सब मर मिटे। 23 और क्या
मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्की, जो जो भूमि पर
थे, सो सब पृथ्वी पर से मिट गए; केवल नूह, और जितने उसके संग जहाज में थे,
वे ही बच गए। 24 और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा।।

उत्पत्ति 8

1 और परमेश्वर ने नूह की, और जितने बनैले पशु, और घरेलू पशु उसके संग
जहाज में थे, उन सभोंकी सुधि ली : और परमेश्वर ने पृथ्वी पर पवन बहाई, और
जल घटने लगा। 2 और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश के फरोखे बंद हो गए;
और उस से जो वर्षा होती यी सो भी यम गई। 3 और एक सौ पचास दिन के
पशचात् जल पृथ्वी पर से लगातार घटने लगा। 4 सातवें महीने के सत्तरहवें दिन
को, जहाज अरारात नाम पहाड़ पर टिक गया। 5 और जल दसवें महीने तक
घटता चला गया, और दसवें महीने के पहिले दिन को, पहाड़ोंकी चोटियाँ
दिखलाई दीं। 6 फिर ऐसा हुआ कि चालीस दिन के पश्चात् नूह ने अपके बनाए हुए
जहाज की खिड़की को खोलकर, एक कौआ उड़ा दिया : 7 जब तक जल पृथ्वी पर
से सूख न गया, तब तक कौआ इधर उधर फिरता रहा। 8 फिर उस ने अपके पास
से एक कबूतरी को उड़ा दिया, कि देखें कि जल भूमि से घट गया कि नहीं। 9 उस
कबूतरी को अपके पैर के तले टेकने के लिथे कोई आधार ने मिला, सो वह उसके
पास जहाज में लौट आई : क्योंकि सारी पृथ्वी के ऊपर जल ही जल छाया या तब
उस ने हाथ बढ़ाकर उसे अपके पास जहाज में ले लिया। 10 तब और सात दिन
तक ठहरकर, उस ने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया। 11 और
कबूतरी सांफ के समय उसके पास आ गई, तो क्या देखा कि उसकी चोंच में
जलपाई का एक नया पत्ता है; इस से नूह ने जान लिया, कि जल पृथ्वी पर घट
गया है। 12 फिर उस ने सात दिन और ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया; और
वह उसके पास फिर कभी लौटकर न आई। 13 फिर ऐसा हुआ कि छः सौ एक वर्ष
के पहिले महीने के पहिले दिन जल पृथ्वी पर से सूख गया। तब नूह ने जहाज की

छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गई है। 14 और दूसरे महीने के सताईसवें
दिन को पृय्वी पूरी रीति से सूख गई।। 15 तब परमेश्वर ने, नूह से कहा, 16 तू
अपके पुत्रों, पत्नी, और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ। 17 क्या पक्की,
क्या पशु, क्या सब भांति के रेंगनेवाले जन्तु जो पृय्वी पर रेंगते हैं, जितने
शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं, उस सब को अपके साय निकाल ले आ, कि
पृय्वी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न हों; और वे फूलें-फलें, और पृय्वी पर फैल
जाएं। 18 तब नूह, और उसके पुत्र, और पत्नी, और बहुएं, निकल आईं : 19 और
सब चौपाए, रेंगनेवाले जन्तु, और पक्की, और जितने जीवजन्तु पृय्वी पर चलते
फिरते हैं, सो सब जाति जाति करके जहाज में से निकल आए। 20 तब नूह ने
यहोवा के लिथे एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पझियोंमें से,
कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। 21 इस पर यहोवा ने सुखदायक
सुगन्ध पाकर सोचा, कि मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा,
यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है;
तौभी जैसा मैं ने सब जीवोंको अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूंगा। 22
अब से जब तक पृय्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और
तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे।।

उत्पत्ति 9

1 फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रोंको आशीष दी और उन से कहा कि
फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृय्वी में भर जाओ। 2 और तुम्हारा डर और भय
पृय्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पझियों, और भूमि पर के सब

रेंगनेवाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियोंपर बना रहेगा : वे सब तुम्हारे
वश में कर दिए जाते हैं। 3 सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे; जैसा तुम
को हरे हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूं। 4 पर मांस को प्राण
समेत अर्यात् लोहू समेत तुम न खाना। 5 और निश्चय मैं तुम्हारा लोहू अर्यात्
प्राण का पलटा लूंगा : सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनोंसे मैं उसे लूंगा : मनुष्य के
प्राण का पलटा मै एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। 6 जो कोई मनुष्य का लोहू
बहाएगा उसका लोहू मनुष्य ही से बहाथा जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को
अपके ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। 7 और तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और
पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ।। 8 फिर परमेश्वर ने नूह और
उसके पुत्रोंसे कहा, 9 सुनों, मैं तुम्हारे साय और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश
होगा, उसके साय भी वाचा बान्धता हूं। 10 और सब जीवित प्राणियोंसे भी जो
तुम्हारे संग है क्या पक्की क्या घरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी के
जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं; सब के साय भी मेरी यह वाचा बन्धती है :
11 और मै तुम्हारे साय अपक्की इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर
जलप्रलय से नाश न होंगे : और पृथ्वी के नाश करने के लिथे फिर जलप्रलय न
होगा। 12 फिर परमेश्वर ने कहा, जो वाचा मै तुम्हारे साय, और जितने जीवित
प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साय भी युग युग की पीढ़ियोंके लिथे बान्धता हूं;
उसका यह चिन्ह है : 13 कि मैं ने बादल मे अपना धनुष रखा है वह मेरे और
पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा। 14 और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊं
जब बादल में धनुष देख पकेगा। 15 तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित
शरीरधारी प्राणियोंके साय बान्धी है; उसको मैं स्मरण करूंगा, तब ऐसा

जलप्रलय फिर न होगा जिस से सब प्राणियोंका विनाश हो। 16 बादल में जो
धनुष होगा मैं उसे देख के यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और
पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियोंके बीच बन्धी है। 17 फिर परमेश्वर ने
नूह से कहा जो वाचा मैं ने पृथ्वी भर के सब प्राणियोंके साय बान्धी है, उसका
चिन्ह यही है।। 18 नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले, वे शेम, हाम, और थेपेत थे
: और हाम तो कनान का पिता हुआ। 19 नूह के तीन पुत्र थे ही हैं, और इनका वंश
सारी पृथ्वी पर फैल गया। 20 और नूह किसानी करने लगा, और उस ने दाख की
बारी लगाई। 21 और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपके तम्बू के
भीतर नंगा हो गया। 22 तब कनान के पिता हाम ने, अपके पिता को नंगा देखा,
और बाहर आकर अपके दोनोंभाइयोंको बतला दिया। 23 तब शेम और थेपेत
दोनोंने कपड़ा लेकर अपके कन्धोंपर रखा, और पीछे की ओर उलटा चलकर
अपके पिता के नंगे तन को ढ़ाप दिया, और वे अपना मुख पीछे किए हुए थे
इसलिथे उन्होंने अपके पिता को नंगा न देखा। 24 जब नूह का नशा उतर गया,
तब उस ने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उस से क्या किया है। 25 इसलिथे
उस ने कहा, कनान शापित हो : वह अपके भाई बन्धुओं के दासोंका दास हो। 26
फिर उस ने कहा, शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है, और कनान शेम का दास
होवे। 27 परमेश्वर थेपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं मे बसे, और
कनान उसका दास होवे। 28 जलप्रलय के पश्चात् नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित
रहा। 29 और नूह की कुल अवस्या साढ़े नौ सौ वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर
गया।

उत्पत्ति 10

1 नूह के पुत्र जो शेम, हाम और थेपेत थे उनके पुत्र जलप्रलय के पश्चात् उत्पन्न
हुए : उनकी वंशावली यह है।। 2 थेपेत के पुत्र : गोमेर, मागोग, मादै, यावान,
तूबल, मेशेक, और तीरास हुए। 3 और गोमेर के पुत्र : अशकनज, रीपत, और
तोगर्मा हुए। 4 और यावान के वंश में एलीशा, और तर्शीश, और कित्ती, और
दोदानी लोग हुए। 5 इनके वंश अन्यजातियोंके द्वीपोंके देशोंमें ऐसे बंट गए, कि वे
भिन्न भिन्न भाषाओं, कुलों, और जातियोंके अनुसार अलग अलग हो गए।। 6
फिर हाम के पुत्र : कूश, और मिस्र, और फूत और कनान हुए। 7 और कूश के पुत्र
सबा, हवीला, सबता, रामा, और सबूतका हुए : और रामा के पुत्र शबा और ददान
हुए। 8 और कूश के वंश में निम्रोद भी हुआ; पृथ्वी पर पहिला वीर वही हुआ है। 9
वही यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला ठहरा, इस से यह कहावत
चक्की है; कि निम्रोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला।
10 और उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबुल, अक्कद, और कलने
हुआ। 11 उस देश से वह निकलकर अश्शूर् को गया, और नीनवे, रहोबोतीर, और
कालह को, 12 और नीनवे और कालह के बीच रेसेन है, उसे भी बसाया, बड़ा नगर
यही है। 13 और मिस्र के वंश में लूदी, अनामी, लहाबी, नप्तूही, 14 और पत्रुसी,
कसलूही, और कप्तोरी लोग हुए, कसलूहियोंमे से तो पलिश्ती लोग निकले।। 15
फिर कनान के वंश में उसका ज्थेष्ठ सीदोन, तब हित्त, 16 और यबूसी, एमोरी,
गिर्गाशी, 17 हिव्वी, अर्की, सीनी, 18 अर्वदी, समारी, और हमाती लोग भी हुए :
फिर कनानियोंके कुल भी फैल गए। 19 और कनानियोंका सिवाना सीदोन से
लेकर गरार के मार्ग से होकर अज्जा तक और फिर सदोम और अमोरा और
अदमा और सबोयीम के मार्ग से होकर लाशा तक हुआ। 20 हाम के वंश में थे ही

हुए; और थे भिन्न भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों, और जातियोंके अनुसार अलग
अलग हो गए।। 21 फिर शेम, जो सब एबेरवंशियोंका मूलपुरूष हुआ, और जो
थेपेत का ज्थेष्ठ भाई या, उसके भी पुत्र उत्पन्न हुए। 22 शेम के पुत्र : एलाम,
अश्शूर्, अर्पझद्, लूद और आराम हुए। 23 और आराम के पुत्र : ऊस, हूल, गेतेर
और मश हुए। 24 और अर्पझद् ने शेलह को, और शेलह ने एबेर को जन्म दिया।
25 और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि
उसके दिनोंमें पृय्वी बंट गई, और उसके भाई का नाम योक्तान है। 26 और
योक्तान ने अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, थेरह, 27 यदोरवाम, ऊजाल, दिक्ला, 28
ओबाल, अबीमाएल, शबा, 29 ओपीर, हवीला, और योबाब को जन्म दिया : थे ही
सब योक्तान के पुत्र हुए। 30 इनके रहने का स्यान मेशा से लेकर सपारा जो पूर्व में
एक पहाड़ है, उसके मार्ग तक हुआ। 31 शेम के पुत्र थे ही हुए; और थे भिन्न
भिन्न कुलों, भाषाओं, देशोंऔर जातियोंके अनुसार अलग अलग हो गए।। 32 नूह
के पुत्रोंके घराने थे ही हैं : और उनकी जातियोंके अनुसार उनकी वंशावलियां थे ही
हैं; और जलप्रलय के पश्चात् पृय्वी भर की जातियां इन्हीं में से होकर बंट गई।।

उत्पत्ति 11

1 सारी पृय्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली यी। 2 उस समय लोग पूर्व की
और चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उस में बस गए। 3 तब वे
आपस में कहने लगे, कि आओ; हम ईंटें बना बना के भली भंाति आग में
पकाएं, और उन्होंने पत्यर के स्यान में ईंट से, और चूने के स्यान में मिट्टी के
गारे से काम लिया। 4 फिर उन्होंने कहा, आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट

बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बात करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें
ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पके। 5 जब लोग नगर और गुम्मट
बनाने लगे; तब इन्हें देखने के लिथे यहोवा उतर आया। 6 और यहोवा ने कहा, मैं
क्या देखता हूं, कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है, और
उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे,
उस में से कुछ उनके लिथे अनहोना न होगा। 7 इसलिथे आओ, हम उतर के
उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें। 8
इस प्रकार यहोवा ने उनको, वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया; और उन्होंने
उस नगर का बनाना छोड़ दिया। 9 इस कारण उस नगर को नाम बाबुल पड़ा;
क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, सो यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं
से यहोवा ने मनुष्योंको सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।। 10 शेम की वंशावली
यह है। जल प्रलय के दो वर्ष पश्चात् जब शेम एक सौ वर्ष का हुआ, तब उस ने
अर्पझद् को जन्म दिया। 11 और अर्पझद् ने जन्म के पश्चात् शेम पांच सौ वर्ष
जीवित रहा; और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई।। 12 जब अर्पझद्
पैंतीस वर्ष का हुआ, तब उस ने शेलह को जन्म दिया। 13 और शेलह के जन्म के
पश्चात् अर्पझद् चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां
उत्पन्न हुई।। 14 जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा एबेर को जन्म
हुआ। 15 और एबेर के जन्म के पश्चात् शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा,
और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई।। 16 जब एबेर चौंतीस वर्ष का हुआ,
तब उसके द्वारा पेलेग का जन्म हुआ। 17 और पेलेग के जन्म के पश्चात् एबेर
चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई।।

18 जब पेलेग तीस वर्ष को हुआ, तब उसके द्वारा रू का जन्म हुआ। 19 और रू के
जन्म के पश्चात् पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे
बेटियां उत्पन्न हुईं।। 20 जब रू बत्तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सरूग का
जन्म हुआ। 21 और सरूग के जन्म के पश्चात् रू दो सौ सात वर्ष और जीवित
रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।। 22 जब सरूग तीस वर्ष का
हुआ, तब उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ। 23 और नाहोर के जन्म के पश्चात्
सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।।
24 जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ। 25
और तेरह के जन्म के पश्चात् नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा, और
उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।। 26 जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ,
तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए।। 27 तेरह की
यह वंशावली है। तेरह ने अब्राम, और नाहोर, और हारान को जन्म दिया; और
हारान ने लूत को जन्म दिया। 28 और हारान अपके पिता के साम्हने ही,
कस्दियोंके ऊर नाम नगर में, जो उसकी जन्मभूमि यी, मर गया। 29 अब्राम
और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं : अब्राम की पत्नी का नाम तो सारै, और नाहोर की
पत्नी का नाम मिल्का या, यह उस हारान की बेटी यी, जो मिल्का और यिस्का
दोनोंका पिता या। 30 सारै तो बांफ यी; उसके संतान न हुई। 31 और तेरह अपना
पुत्र अब्राम, और अपना पोता लूत जो हारान का पुत्र या, और अपक्की बहू सारै,
जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी यी इन सभोंको लेकर कस्दियोंके ऊर नगर से
निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नाम देश में पहुचकर वहीं रहने
लगा। 32 जब तेरह दो सौ पांच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया।।

उत्पत्ति 12

1 यहोवा ने अब्राम से कहा, अपके देश, और अपक्की जन्मभूमि, और अपके
पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। 2 और मैं
तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा
करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। 3 और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं
आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे
द्वारा आशीष पाएंगे। 4 यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत भी
उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर
वर्ष का या। 5 सो अब्राम अपक्की पत्नी सारै, और अपके भतीजे लूत को, और जो
धन उन्होंने इकट्ठा किया या, और जो प्राणी उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सब
को लेकर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ भी गए।
6 उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में, जहां मोरे का बांज वृझ है, पंहुचा;
उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे। 7 तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन
देकर कहा, यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा : और उस ने वहां यहोवा के लिथे जिस ने
उसे दर्शन दिया या, एक वेदी बनाई। 8 फिर वहां से कूच करके, वह उस पहाड़ पर
आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्यान में खड़ा किया
जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ है; और वहां भी उस ने
यहोवा के लिथे एक वेदी बनाई : और यहोवा से प्रार्यना की 9 और अब्राम कूच
करके दक्खिन देश की ओर चला गया।। 10 और उस देश में अकाल पड़ा : और
अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहां परदेशी होकर रहे -- क्योंकि देश में
भयंकर अकाल पड़ा या। 11 फिर ऐसा हुआ कि मिस्र के निकट पहुंचकर, उस ने

अपक्की पत्नी सारै से कहा, सुन, मुझे मालूम है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है : 12 इस
कारण जब मिस्री तुझे देखेंगे, तब कहेंगे, यह उसकी पत्नी है, सो वे मुझ को तो
मार डालेंगे, पर तुझ को जीती रख लेंगे। 13 सो यह कहना, कि मैं उसकी बहिन
हूं; जिस से तेरे कारण मेरा कल्याण हो और मेरा प्राण तेरे कारण बचे। 14 फिर
ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्र में आया, तब मिस्रियोंने उसकी पत्नी को देखा कि
यह अति सुन्दर है। 15 और फिरौन के हाकिमोंने उसको देखकर फिरौन के
साम्हने उसकी प्रशंसा की : सो वह स्त्री फिरौन के घर में रखी गई। 16 और उस ने
उसके कारण अब्राम की भलाई की; सो उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल,
दास-दासियां, गदहे-गदहियां, और ऊंट मिले। 17 तब यहोवा ने फिरौन और
उसके घराने पर, अब्राम की पत्नी सारै के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां डालीं। 18 सो
फिरौन ने अब्राम को बुलवाकर कहा, तू ने मुझ से क्या किया है ? तू ने मुझे
क्योंनहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है ? 19 तू ने क्योंकहा, कि वह तेरी बहिन है ?
मैं ने उसे अपक्की ही पत्नी बनाने के लिथे लिया; परन्तु अब अपक्की पत्नी को
लेकर यहां से चला जा। 20 और फिरौन ने अपके आदमियोंको उसके विषय में
आज्ञा दी और उन्होंने उसको और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत जो उसका
या, विदा कर दिया।।

उत्पत्ति 13

1 तब अब्राम अपक्की पत्नी, और अपक्की सारी सम्पत्ति लेकर, लूत को भी संग
लिथे हुए, मिस्र को छोड़कर कनान के दक्खिन देश में आया। 2 अब्राम
भेड़-बकरी, गाय-बैल, और सोने-रूपे का बड़ा धनी या। 3 फिर वह दक्खिन देश से

चलकर, बेतेल के पास उसी स्यान को पहुंचा, जहां उसका तम्बू पहले पड़ा या, जो
बेतेल और ऐ के बीच में है। 4 यह स्यान उस वेदी का है, जिसे उस ने पहले बनाई
यी, और वहां अब्राम ने फिर यहोवा से प्रार्यना की। 5 और लूत के पास भी, जो
अब्राम के साय चलता या, भेड़-बकरी, गाय-बैल, और तम्बू थे। 6 सो उस देश में
उन दोनोंकी समाई न हो सकी कि वे इकट्ठे रहें : क्योंकि उनके पास बहुत धन
या इसलिथे वे इकट्ठे न रह सके। 7 सो अब्राम, और लूत की भेड़-बकरी, और
गाय-बैल के चरवाहोंके बीच में फगड़ा हुआ : और उस समय कनानी, और
परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे। 8 तब अब्राम लूत से कहने लगा, मेरे और तेरे
बीच, और मेरे और तेरे चरवाहोंके बीच में फगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग
भाई बन्धु हैं। 9 क्या सारा देश तेरे साम्हने नहीं? सो मुझ से अलग हो, यदि तू
बाईं ओर जाए तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा; और यदि तू दहिनी ओर जाए तो मैं
बाईं ओर जाऊंगा। 10 तब लूत ने आंख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी
तराई को देखा, कि वह सब सिंची हुई है। 11 जब तक यहोवा ने सदोम और
अमोरा को नाश न किया या, तब तक सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की
बाटिका, और मिस्र देश के समान उपजाऊ यी। 12 अब्राम तो कनान देश में रहा,
पर लूत उस तराई के नगरोंमें रहने लगा; और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा
किया। 13 सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे। 14 जब लूत
अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात् यहोवा ने अब्राम से कहा, आंख
उठाकर जिस स्यान पर तू है वहां से उत्तर-दक्खिन, पूर्व-पश्चिम, चारोंओर दृष्टि
कर। 15 क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे
वंश को युग युग के लिथे दूंगा। 16 और मैं तेरे वंश को पृय्वी की धूल के

किनकोंकी नाई बहुत करूंगा, यहां तक कि जो कोई पृथ्वी की धूल के किनकोंको
गिन सकेगा वही तेरा वंश भी गिन सकेगा। 17 उठ, इस देश की लम्बाई और
चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुझी को दूंगा। 18 इसके पशचात् अब्राम
अपना तम्बू उखाड़कर, मम्रे के बांजोंके बीच जो हेब्रोन में थे जाकर रहने लगा,
और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई।।

उत्पत्ति 14

1 शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, और एलाम के राजा
कदोर्लाओमेर, और गोयीम के राजा तिदाल के दिनोंमें ऐसा हुआ, 2 कि उन्होंने
सदोम के राजा बेरा, और अमोरा के राजा बिर्शा, और अदमा के राजा शिनाब, और
सबोयीम के राजा शेमेबेर, और बेला जो सोअर भी कहलाता है, इन राजाओं के
विरूद्ध युद्ध किया। 3 इन पांचोंने सिद्दीम नाम तराई में, जो खारे ताल के पास है,
एका किया। 4 बारह वर्ष तक तो थे कदोर्लाओमेर के अधीन रहे; पर तेरहवें वर्ष में
उसके विरूद्ध उठे। 5 सो चौदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर, और उसके संगी राजा आए,
और अशतरोत्कनम में रपाइयोंको, और हाम में जूजियोंको, और शबेकिर्यातैम में
एमियोंको, 6 और सेईर नाम पहाड़ में होरियोंको, मारते मारते उस एल्पारान तक
जो जंगल के पास है पहुंच गए। 7 वहां से वे लौटकर एन्मिशपात को आए, जो
कादेश भी कहलाता है, और अमालेकियोंके सारे देश को, और उन एमोरियोंको भी
जीत लिया, जो हससोन्तामार में रहते थे। 8 तब सदोम, अमोरा, अदमा,
सबोयीम, और बेला, जो सोअर भी कहलाता है, इनके राजा निकले, और सिद्दीम
नाम तराई। में, उनके साथ युद्ध के लिथे पांति बान्धी। 9 अर्यात् एलाम के राजा

कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार
के राजा अर्योक, इन चारोंके विरूद्ध उन पांचोंने पांति बान्धी। 10 सिद्दीम नाम
तराई में जहां लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे; सदोम और अमोरा के राजा
भागते भागते उन में गिर पके, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए। 11 तब वे
सदोम और अमोरा के सारे धन और भोजन वस्तुओं को लूट लाट कर चले गए।
12 और अब्राम का भतीजा लूत, जो सदोम में रहता या; उसको भी धन समेत वे
लेकर चले गए। 13 तब एक जन जो भागकर बच निकला या उस ने जाकर इब्री
अब्राम को समाचार दिया; अब्राम तो एमोरी मम्रे, जो एश्कोल और आनेर का भाई
या, उसके बांज वृझोंके बीच में रहता या; और थे लोग अब्राम के संग वाचा बान्धे
हुए थे। 14 यह सुनकर कि उसका भतीजा बन्धुआई में गया है, अब्राम ने अपके
तीन सौ अठारह शिझित, युद्ध कौशल में निपुण दासोंको लेकर जो उसके कुटुम्ब
में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र शस्त्र धारण करके दान तक उनका पीछा किया। 15 और
अपके दासोंके अलग अलग दल बान्धकर रात को उन पर चढ़ाई करके उनको
मार लिया और होबा तक, जो दमिश्क की उत्तर ओर है, उनका पीछा किया। 16
और सारे धन को, और अपके भतीजे लूत, और उसके धन को, और स्त्रियोंको,
और सब बन्धुओं को, लौटा ले आया। 17 जब वह कदोर्लाओमेर और उसके सायी
राजाओं को जीतकर लौटा आता या तब सदोम का राजा शावे नाम तराई में, जो
राजा की भी कहलाती है, उस से भेंट करने के लिथे आया। 18 जब शालेम का
राजा मेल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक या, रोटी और दाखमधु ले
आया। 19 और उस ने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की
ओर से, जो आकाश और पृय्वी का अधिक्कारनी है, तू धन्य हो। 20 और धन्य है

परमप्रधान ईश्वर, जिस ने तेरे द्रोहियोंको तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने
उसको सब का दशमांश दिया। 21 जब सदोम के राजा ने अब्राम से कहा,
प्राणियोंको तो मुझे दे, और धन को अपके पास रख। 22 अब्राम ने सदोम के राजा
ने कहा, परमप्रधान ईश्वर यहोवा, जो आकाश और पृय्वी का अधिक्कारनी है, 23
उसकी मैं यह शपय खाता हूं, कि जो कुछ तेरा है उस में से न तो मै एक सूत, और
न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूंगा; कि तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम
मेरे ही कारण धनी हुआ। 24 पर जो कुछ इन जवानोंने खा लिया है और उनका
भाग जो मेरे साय गए थे; अर्यात् आनेर, एश्कोल, और मम्रे मैं नहीं लौटाऊंगा वे
तो अपना अपना भाग रख लें।।

उत्पत्ति 15

1 इन बातोंके पश्चात् यहोवा को यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे
अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं। 2 अब्राम ने कहा, हे
प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा,
सो तू मुझे क्या देगा ? 3 और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और
क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा। 4 तब
यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज
पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा। 5 और उस ने उसको बाहर ले जाके कहा,
आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है ?
फिर उस ने उस से कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। 6 उस ने यहोवा पर विश्वास
किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना। 7 और उस ने उस से

कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कस्‌दियोंके ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ
को इस देश का अधिक्कारने दूं। 8 उस ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं
इसका अधिक्कारनी हूंगा ? 9 यहोवा ने उस से कहा, मेरे लिथे तीन वर्ष की एक
कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेंढ़ा, और एक
पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले। 10 और इन सभोंको लेकर, उस ने बीच में
से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ोंको आम्हने-साम्हने रखा : पर चिड़ियाओं को
उस ने टुकड़े न किया। 11 और जब मांसाहारी पक्की लोयोंपर फपके, तब अब्राम
ने उन्हें उड़ा दिया। 12 जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी नींद आई;
और देखो, अत्यन्त भय और अन्धकार ने उसे छा लिया। 13 तब यहोवा ने
अब्राम से कहा, यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे,
और उसके देश के लोगोंके दास हो जाएंगे; और वे उनको चार सौ वर्ष लोंदु:ख देंगे;
14 फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा : और उसके पश्चात्‌ वे बड़ा
धन वहां से लेकर निकल आएंगे। 15 तू तो अपके पितरोंमें कुशल के साय मिल
जाएगा; तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्‌टी दी जाएगी। 16 पर वे चौयी पीढ़ी में यहां फिर
आएंगे : क्योंकि अब तक एमोरियोंका अधर्म पूरा नहीं हुआ। 17 और ऐसा हुआ
कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगेठी जिस में
से धुआं उठता या और एक जलता हुआ पक्कीता देख पड़ा जो उन टुकड़ोंके बीच
में से होकर निकल गया। 18 उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साय यह वाचा बान्धी,
कि मिस्र के महानद से लेकर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है, 19 अर्यात्‌,
केनियों, कनिज्जियों, कद्‌क़ोनियों, 20 हित्तियों, पक्कीज्जियों, रपाइयों, 21
एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियोंऔर यबूसियोंका देश मैं ने तेरे वंश को दिया है।।

उत्पत्ति 16

1 अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न यी : और उसके हाजिरा नाम की एक
मिस्री लौंडी यी। 2 सो सारै ने अब्राम से कहा, देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द
कर रखी है सो मैं तुझ से बिनती करती हूं कि तू मेरी लौंडी के पास जा : सम्भव है
कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए। 3 सो सारै की यह बात अब्राम ने मान ली। सो
जब अब्राम को कनान देश में रहते दस वर्ष बीत चुके तब उसकी स्त्री सारै ने
अपक्की मिस्री लौंडी हाजिरा को लेकर अपके पति अब्राम को दिया, कि वह
उसकी पत्नी हो। 4 और वह हाजिरा के पास गया, और वह गर्भवती हुई और जब
उस ने जाना कि वह गर्भवती है तब वह अपक्की स्वामिनी को अपक्की दृष्टि में
तुच्छ समझने लगी। 5 तब सारै ने अब्राम से कहा, जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो
तेरे ही सिर पर हो : मैं ने तो अपक्की लौंडी को तेरी पत्नी कर दिया; पर जब उस ने
जाना कि वह गर्भवती है, तब वह मुझे तुच्छ समझने लगी, सो यहोवा मेरे और
तेरे बीच में न्याय करे। 6 अब्राम ने सारै से कहा, देख तेरी लौंडी तेरे वश में है :
जैसा तुझे भला लगे वैसा ही उसके साय कर। सो सारै उसको दु:ख देने लगी और
वह उसके साम्हने से भाग गई। 7 तब यहोवा के दूत ने उसके जंगल में शूर के
मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा, 8 हे सारै की लौंडी हाजिरा, तू कहां
से आती और कहां को जाती है ? उस ने कहा, मैं अपक्की स्वामिनी सारै के
साम्हने से भग आई हूं। 9 यहोवा के दूत ने उस से कहा, अपक्की स्वामिनी के
पास लौट जा और उसके वश में रह। 10 और यहोवा के दूत ने उस से कहा, मैं तेरे
वंश को बहुत बढ़ाऊंगा, यहां तक कि बहुतायत के कारण उसकी गणना न हो
सकेगी। 11 और यहोवा के दूत ने उस से कहा, देख तू गर्भवती है, और पुत्र

जनेगी, सो उसका नाम इश्माएल रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दु:ख का हाल सुन
लिया है। 12 और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान होगा उसका हाथ सबके
विरूद्ध उठेगा, और सब के हाथ उसके विरूद्ध उठेंगे; और वह अपके सब भाई
बन्धुओं के मध्य में बसा रहेगा। 13 तब उस ने यहोवा का नाम जिस ने उस से
बातें की यीं, अत्ताएलरोई रखकर कहा कि, कया मैं यहां भी उसको जाते हुए देखने
पाई जो मेरा देखनेहारा है ? 14 इस कारण उस कुएं का नाम लहैरोई कुआं पड़ा;
वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है। 15 सो हाजिरा अब्राम के द्वारा एक पुत्र
जनी : और अब्राम ने अपके पुत्र का नाम, जिसे हाजिरा जनी, इश्माएल रखा। 16
जब हाजिरा ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम
छियासी वर्ष का या।

उत्पत्ति 17

1 जब अब्राम निन्नानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा मैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं; मेरी उपस्यिति में चल और सिद्ध होता जा। 2 और मैं तेरे
साय वाचा बान्धूंगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा, और तेरे वंश को
अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा। 3 तब अब्राम मुंह के बल गिरा : और परमेश्वर उस से
योंबातें कहता गया, 4 देख, मेरी वाचा तेरे साय बन्धी रहेगी, इसलिथे तू
जातियोंके समूह का मूलपिता हो जाएगा। 5 सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा
परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियोंके समूह का मूलपिता
ठहरा दिया है। 6 और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा, और तुझ को जाति
जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। 7 और मैं तेरे साय,

और तेरे पश्चात् पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वंश के साय भी इस आशय की युग युग की
वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। 8
और मैं तुझ को, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू
परदेशी होकर रहता है, इस रीति दूंगा कि वह युग युग उनकी निज भूमि रहेगी,
और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा। 9 फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तू भी मेरे
साय बान्धी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपक्की
अपक्की पीढ़ी में उसका पालन करे। 10 मेरे साय बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और
तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पकेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरूष का
खतना हो। 11 तुम अपक्की अपक्की खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे
और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। 12 पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश
ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियोंको रूपा देकर मोल
लिथे जाएं, ऐसे सब पुरूष भी जब आठ दिन के होंजाएं, तब उनका खतना किया
जाए। 13 जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अयवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए, उसका
खतना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा
वह युग युग रहेगी। 14 जो पुरूष खतनारहित रहे, अर्यात् जिसकी खलड़ी का
खतना न हो, वह प्राणी अपके लोगोंमे से नाश किया जाए, क्योंकि उस ने मेरे
साय बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया।। 15 फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी
जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा। 16 और मैं
उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी
आशीष दूंगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में
राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे। 17 तब इब्राहीम मुंह के बल गिर पड़ा और

हंसा, और अपके मन ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरूष के भी सन्तान
होगा और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी ? 18 और इब्राहीम ने परमेश्वर
से कहा, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है। 19 तब परमेश्वर ने कहा,
निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम
इसहाक रखना : और मैं उसके साय ऐसी वाचा बान्धूंगा जो उसके पश्चात् उसके
वंश के लिथे युग युग की वाचा होगी। 20 और इश्माएल के विषय में भी मै ने तेरी
सुनी है : मैं उसको भी आशीष दूंगा, और उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही
बढ़ा दूंगा; उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा। 21 परन्तु मैं अपक्की वाचा इसहाक ही के साय बान्धूंगा जो सारा से
अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा। 22 तब परमेश्वर ने इब्राहीम से
बातें करनी बन्द कीं और उसके पास से ऊपर चढ़ गया। 23 तब इब्राहीम ने अपके
पुत्र इश्माएल को, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रूपके
से मोल लिथे गए थे, निदान उसके घर में जितने पुरूष थे, उन सभोंको लेके उसी
दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का खतना किया। 24 जब
इब्राहीम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्नानवे वर्ष का या। 25 और जब
उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह वर्ष का या। 26
इब्राहीम और उसके पुत्र इश्माएल दोनोंका खतना एक ही दिन हुआ। 27 और
उसके घर में जितने पुरूष थे जो घर में उत्पन्न हुए, तया जो परदेशियोंके हाथ से
मोल लिथे गए थे, सब का खतना उसके साय ही हुआ।।

उत्पत्ति 18

1 इब्राहीम मम्रे के बांजो के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ या,
तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया : 2 और उस ने आंख उठाकर दृष्टि की तो क्या
देखा, कि तीन पुरूष उसके साम्हने खड़े हैं : जब उस ने उन्हे देखा तब वह उन से
भेंट करने के लिथे तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत् की और
कहने लगा, 3 हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं बिनती करता हूं,
कि अपके दास के पास से चले न जाना। 4 मैं योड़ा सा जल लाता हूं और आप
अपके पांव धोकर इस वृझ के तले विश्रम करें। 5 फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं
और उस से आप अपके जीव को तृप्त करें; तब उसके पश्चात् आगे बढें : क्योंकि
आप अपके दास के पास इसी लिथे पधारे हैं। उन्होंने कहा, जैसा तू कहता है वैसा
ही कर। 6 सो इब्राहीम ने तम्बू में सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा, तीन सआ
मैदा फुर्ती से गून्ध, और फुलके बना। 7 फिर इब्राहीम गाय बैल के फुण्ड में दौड़ा,
और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपके सेवक को दिया, और उसने फुर्ती
से उसको पकाया। 8 तब उस ने मक्खन, और दूध, और वह बछड़ा, जो उस ने
पकवाया या, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृझ के तले उनके पास
खड़ा रहा, और वे खाने लगे। 9 उन्होंने उस से पूछा, तेरी पत्नी सारा कहां है? उस ने
कहा, वह तो तम्बू में है। 10 उस ने कहा मैं वसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर
आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा। और सारा तम्बू के
द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे या सुन रही यी। 11 इब्राहीम और सारा दोनो बहुत
बूढे थे; और सारा का स्त्रीधर्म बन्द हो गया या 12 सो सारा मन में हंस कर कहने
लगी, मैं तो बूढी हूं, और मेरा पति भी बूढा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा? 13 तब
यहोवा ने इब्राहीम से कहा, सारा यह कहकर कयोंहंसी, कि क्या मेरे, जो ऐसी

बुढिय़ा हो गई हूं, सचमुच एक पुत्र उत्पन्न होगा? 14 क्या यहोवा के लिथे कोई
काम कठिन है? नियत समय में, अर्यात् वसन्त ऋतु में, मैं तेरे पास फिर
आऊंगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न होगा। 15 तब सारा डर के मारे यह कहकर
मुकर गई, कि मैं नहीं हंसी। उस ने कहा, नहीं; तू हंसी तो यी।। 16 फिर वे पुरूष
वहां से चलकर, सदोम की ओर ताकने लगे : और इब्राहीम उन्हें विदा करने के
लिथे उनके संग संग चला। 17 तब यहोवा ने कहा, यह जो मैं करता हूं सो क्या
इब्राहीम से छिपा रखूं ? 18 इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्यी जाति
उपकेगी, और पृय्वी की सारी जातियां उसके द्वारा आशीष पाएंगी। 19 क्योंकि मैं
जानता हूं, कि वह अपके पुत्रोंऔर परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे आज्ञा
देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें,
इसलिथे कि जो कुछ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे पूरा करे। 20
क्योंकि मैं जानता हूं, कि वह अपके पुत्रोंऔर परिवार को जो उसके पीछे रह
जाएंगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय
करते रहें, इसलिथे कि जो कुछ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे पूरा
करे। 21 इसलिथे मैं उतरकर देखूंगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक
पहुंची है, उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं : और न किया हो तो मैं उसे
जान लूंगा। 22 सो वे पुरूष वहां से मुड के सदोम की ओर जाने लगे : पर इब्राहीम
यहोवा के आगे खड़ा रह गया। 23 तब इब्राहीम उसके समीप जाकर कहने लगा,
क्या सचमुच दुष्ट के संग धर्मी को भी नाश करेगा ? 24 कदाचित् उस नगर में
पचास धर्मी हों: तो क्या तू सचमुच उस स्यान को नाश करेगा और उन पचास
धमिर्योंके कारण जो उस में हो न छोड़ेगा ? 25 इस प्रकार का काम करना तुझ से

दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनोंकी एक ही
दशा हो। 26 यहोवा ने कहा यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके
कारण उस सारे स्यान को छोड़ूंगा। 27 फिर इब्राहीम ने कहा, हे प्रभु, सुन मैं तो
मिट्‌टी और राख हूं; तौभी मैं ने इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूं। 28
कदाचित् उन पचास धमिर्योंमे पांच घट जाए : तो क्या तू पांच ही के घटने के
कारण उस सारे नगर का नाश करेगा ? उस ने कहा, यदि मुझे उस में पैंतालीस भी
मिलें, तौभी उसका नाश न करूंगा। 29 फिर उस ने उस से यह भी कहा, कदाचित्
वहां चालीस मिलें। उस ने कहा, तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा ने करूंगा। 30
फिर उस ने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, तो मैं कुछ और कहूं : कदाचित् वहां तीस
मिलें। उस ने कहा यदि मुझे वहां तीस भी मिलें, तौभी ऐसा न करूंगा। 31 फिर
उस ने कहा, हे प्रभु, सुन, मैं ने इतनी ढिठाई तो की है कि तुझ से बातें करूं :
कदाचित् उस में बीस मिलें। उस ने कहा, मैं बीस के कारण भी उसका नाश न
करूंगा। 32 फिर उस ने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, मैं एक ही बार और कहूंगा :
कदाचित् उस में दस मिलें। उस ने कहा, तो मैं दस के कारण भी उसका नाश न
करूंगा। 33 जब यहोवा इब्राहीम से बातें कर चुका, तब चला गया : और इब्राहीम
अपके घर को लौट गया।।

उत्पत्ति 19

1 सांफ को वे दो दूत सदोम के पास आए : और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा
या : सो उनको देखकर वह उन से भेंट करने के लिथे उठा; और मुंह के बल
फुककर दण्डवत् कर कहा; 2 हे मेरे प्रभुओं, अपके दास के घर में पधारिए, और

रात भर विश्रम कीजिए, और अपके पांव धोइथे, फिर भोर को उठकर अपके मार्ग
पर जाइए। उन्होंने कहा, नहीं; हम चौक ही में रात बिताएंगे। 3 और उस ने उन से
बहुत बिनती करके उन्हें मनाया; सो वे उसके साय चलकर उसके घर में आए;
और उस ने उनके लिथे जेवनार तैयार की, और बिना खमीर की रोटियां बनाकर
उनको खिलाई। 4 उनके सो जाने के पहिले, उस सदोम नगर के पुरूषोंने,
जवानोंसे लेकर बूढ़ोंतक, वरन चारोंओर के सब लोगोंने आकर उस घर को घेर
लिया; 5 और लूत को पुकारकर कहने लगे, कि जो पुरूष आज रात को तेरे पास
आए हैं वे कहां हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उन से भोग करें। 6 तब
लूत उनके पास द्वार बाहर गया, और किवाड़ को अपके पीछे बन्द करके कहा, 7 हे
मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो। 8 सुनो, मेरी दो बेटियां हैं जिन्होंने अब तक पुरूष
का मुंह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं, और तुम को
जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उन से करो : पर इन पुरूषोंसे कुछ न करो; क्योंकि
थे मेरी छत के तले आए हैं। 9 उनहोंने कहा, हट जा। फिर वे कहने लगे, तू एक
परदेशी होकर यहां रहने के लिथे आया पर अब न्यायी भी बन बैठा है : सो अब
हम उन से भी अधिक तेरे साय बुराई करेंगे। और वे पुरूष लूत को बहुत दबाने
लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिथे निकट आए। 10 तब उन पाहुनोंने हाथ बढ़ाकर,
लूत को अपके पास घर में खींच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया। 11 और
उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरूषोंको जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर दिया,
सो वे द्वार को टटोलते टटोलते यक गए। 12 फिर उन पाहुनोंने लूत से पूछा, यहां
तेरे और कौन कौन हैं? दामाद, बेटे, बेटियां, वा नगर में तेरा जो कोई हो, उन
सभोंको लेकर इस स्यान से निकल जा। 13 क्योंकि हम यह स्यान नाश करने पर

हैं, इसलिथे कि उसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है; और यहोवा ने
हमें इसका सत्यनाश करने के लिथे भेज दिया है। 14 तब लूत ने निकलकर
अपके दामादोंको, जिनके साय उसकी बेटियोंकी सगाई हो गई यी, समझा के
कहा, उठो, इस स्यान से निकल चलो : क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया
चाहता है। पर वह अपके दामादोंकी दृष्टि में ठट्ठा करनेहारा सा जान पड़ा। 15
जब पह फटने लगी, तब दूतोंने लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ, अपक्की
पत्नी और दोनो बेटियोंको जो यहां हैं ले जा : नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में
भस्म हो जाएगा। 16 पर वह विलम्ब करता रहा, इस से उन पुरूषोंने उसका और
उसकी पत्नी, और दोनोंबेटियोंको हाथ पकड़ लिया; क्योंकि यहोवा की दया उस
पर यी : और उसको निकालकर नगर के बाहर कर दिया। 17 और ऐसा हुआ कि
जब उन्होंने उनको बाहर निकाला, तब उस ने कहा अपना प्राण लेकर भाग जा;
पीछे की और न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना,
नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा। 18 लूत ने उन से कहा, हे प्रभु, ऐसा न कर : 19
देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई,
कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि
कोई विपत्ति मुझ पर आ पके, और मैं मर जाऊं : 20 देख, वह नगर ऐसा निकट है
कि मैं वहां भाग सकता हूं, और वह छोटा भी है : मुझे वहीं भाग जाने दे, क्या वह
छोटा नहीं हैं? और मेरा प्राण बच जाएगा। 21 उस ने उस से कहा, देख, मैं ने इस
विषय में भी तेरी बिनती अंगीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है,
उसको मैं नाश न करूंगा। 22 फुर्ती से वहां भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहां न
पहुचे तब तक मैं कुछ न कर सकूंगा। इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा।

23 लूत के सोअर के निकट पहुचते ही सूर्य पृय्वी पर उदय हुआ। 24 तब यहोवा
ने अपक्की ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई;
25 और उन नगरोंको और सम्पूर्ण तराई को, और नगरोंको और उस सम्पूर्ण
तराई को, और नगरोंके सब निवासिक्कों, भूमि की सारी उपज समेत नाश कर
दिया। 26 लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे यी दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा, और
वह नमक का खम्भा बन गई। 27 भोर को इब्राहीम उठकर उस स्यान को गया,
जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा या; 28 और सदोम, और अमोरा, और उस तराई
के सारे देश की ओर आंख उठाकर क्या देखा, कि उस देश में से धधकती हुई
भट्टी का सा धुआं उठ रहा है। 29 और ऐसा हुआ, कि जब परमेश्वर ने उस तराई
के नगरोंको, जिन में लूत रहता या, उलट पुलट कर नाश किया, तब उस ने
इब्राहीम को याद करके लूत को उस घटना से बचा लिया। 30 और लूत ने सोअर
को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपक्की दोनोंबेटियोंसमेत रहने लगा; क्योंकि वह
सोअर में रहने से डरता या : इसलिथे वह और उसकी दोनोंबेटियां वहां एक गुफा
में रहने लगे। 31 तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बूढा है, और पृय्वी
भर में कोई ऐसा पुरूष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए : 32
सो आ, हम अपके पिता को दाखमधु पिलाकर, उसके साय सोएं, जिस से कि हम
अपके पिता के वंश को बचाए रखें। 33 सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपके
पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जाकर अपके पिता के पास लेट गई; पर
उस ने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई। 34 और ऐसा हुआ कि दूसरे
दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपके पिता के साय सोई : सो
आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं; तब तू जाकर उसके साय सोना कि

हम अपके पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। 35 सो उन्होंने उस दिन भी रात के
समय अपके पिता को दाखमधु पिलाया : और छोटी बेटी जाकर उसके पास लौट
गई : पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न या। 36 इस प्रकार
से लूत की दोनो बेटियां अपके पिता से गर्भवती हुई। 37 और बड़ी एक पुत्र जनी,
और उसका नाम मोआब रखा : वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है
मूलपिता हुआ। 38 और छोटी भी एक पुत्र जनी, और उसका नाम बेनम्मी रखा;
वह अम्मोन् वंशियोंका जो आज तक हैं मूलपिता हुआ।।

उत्पत्ति 20

1 फिर इब्राहीम वहां से कूच कर दक्खिन देश में आकर कादेश और शूर के बीच में
ठहरा, और गरार में रहने लगा। 2 और इब्राहीम अपक्की पत्नी सारा के विषय में
कहने लगा, कि वह मेरी बहिन है : सो गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर
सारा को बुलवा लिया। 3 रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर
कहा, सुन, जिस स्त्री को तू ने रख लिया है, उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि
वह सुहागिन है। 4 परन्तु अबीमेलेक उसके पास न गया या : सो उस ने कहा, हे
प्रभु, क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा ? 5 क्या उसी ने स्वयं मुझ से नहीं
कहा, कि वह मेरी बहिन है ? और उस स्त्री ने भी आप कहा, कि वह मेरा भाई है :
मैं ने तो अपके मन की खराई और अपके व्यवहार की सच्चाई से यह काम
किया। 6 परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा, हां, मैं भी जानता हूं कि अपके मन
की खराई से तू ने यह काम किया है और मैं ने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरूद्ध
पाप न करे : इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया। 7 सो अब उस पुरूष

की पत्नी को उसे फेर दे; क्योंकि वह नबी है, और तेरे लिथे प्रार्यना करेगा, और तू
जीता रहेगा : पर यदि तू उसको न फेर दे तो जान रख, कि तू, और तेरे जितने
लोग हैं, सब निश्चय मर जाएंगे। 8 बिहान को अबीमेलेक ने तड़के उठकर अपके
सब कर्मचारियोंको बुलवाकर थे सब बातें सुनाई : और वे लोग बहुत डर गए। 9
तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलवाकर कहा, तू ने हम से यह क्या किया है ?
और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा या, कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा
पाप डाल दिया है ? तू ने मुझ से वह काम किया है जो उचित न या। 10 फिर
अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, तू ने क्या समझकर ऐसा काम किया ? 11
इब्राहीम ने कहा, मैं ने यह सोचा या, कि इस स्यान में परमेश्वर का कुछ भी भय न
होगा; सो थे लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे। 12 और फिर भी सचमुच
वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर
वह मेरी पत्नी हो गई। 13 और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपके पिता का
घर छोड़कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैं ने उस से कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ
पर करनी होगी : कि हम दोनोंजहां जहां जाएं वहां वहां तू मेरे विषय में कहना,
कि यह मेरा भाई है। 14 तब अबीमेलेक ने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और
दास-दासियां लेकर इब्राहीम को दीं, और उसकी पत्नी सारा को भी उसे फेर दिया।
15 और अबीमेलेक ने कहा, देख, मेरा देश तेरे साम्हने है; जहां तुझे भावे वहां रह।
16 और सारा से उस ने कहा, देख, मैं ने तेरे भाई को रूपे के एक हजार टुकड़े दिए
हैं : देख, तेरे सारे संगियोंके साम्हने वही तेरी आंखोंका पर्दा बनेगा, और सभोंके
साम्हने तू ठीक होगी। 17 तब इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्यना की, और यहोवा ने
अबीमेलेक, और उसकी पत्नी, और दासिक्कों चंगा किया और वे जनने लगीं। 18

क्योंकि यहोवा ने इब्राहीम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब
स्त्रियोंकी कोखोंको पूरी रीति से बन्द कर दिया या।।

उत्पत्ति 21

1 सो यहोवा ने जैसा कहा या वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साय अपके वचन
के अनुसार किया। 2 सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी
नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया या एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 3
और इब्राहीम ने अपके पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ या इसहाक रखा। 4
और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा
के अनुसार उसक खतना किया। 5 और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न
हुआ तब वह एक सौ वर्ष का या। 6 और सारा ने कहा, परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित
कर दिया है; इसलिथे सब सुननेवाले भी मेरे साय प्रफुल्लित होंगे। 7 फिर उस ने
यह भी कहा, कि क्या कोई कभी इब्राहीम से कह सकता या, कि सारा लड़कोंको
दूध पिलाएगी ? पर देखो, मुझ से उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 8 और
वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया : और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन
इब्राहीम ने बड़ी जेवनार की। 9 तब सारा को मिस्री हाजिरा का पुत्र, जो इब्राहीम से
उत्पन्न हुआ या, हंसी करता हुआ देख पड़ा। 10 सो इस कारण उस ने इब्राहीम से
कहा, इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे : क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे
पुत्र इसहाक के साय भागी न होगा। 11 यह बात इब्राहीम को अपके पुत्र के कारण
बुरी लगी। 12 तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, उस लड़के और अपक्की दासी के
कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश

कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा। 13 दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उत्पन्न
करूंगा इसलिथे कि वह तेरा वंश है। 14 सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठकर
रोटी और पानी से भरी चमड़े की यैली भी हाजिरा को दी, और उसके कन्धे पर
रखी, और उसके लड़के को भी उसे देकर उसको विदा किया : सो वह चक्की गई,
और बेर्शेबा के जंगल में भ्रमण करने लगी। 15 जब यैली का जल चुक गया, तब
उस ने लड़के को एक फाड़ी के नीचे छोड़ दिया। 16 और आप उस से तीर भर के
टप्पे पर दूर जाकर उसके साम्हने यह सोचकर बैठ गई, कि मुझ को लड़के की
मृत्यु देखनी न पके। तब वह उसके साम्हने बैठी हुई चिल्ला चिल्ला के रोने
लगी। 17 और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा
को पुकार के कहा, हे हाजिरा तुझे क्या हुआ ? मत डर; क्योंकि जहां तेरा लड़का है
वहां से उसकी आवाज परमेश्वर को सुन पक्की है। 18 उठ, अपके लड़के को उठा
और अपके हाथ से सम्भाल क्योंकि मैं उसके द्वारा एक बड़ी जाति बनाऊंगा। 19
परमेश्वर ने उसकी आंखे खोल दी, और उसको एक कुंआ दिखाई पड़ा; सो उस ने
जाकर यैली को जल से भरकर लड़के को पिलाया। 20 और परमेश्वर उस लड़के के
साय रहा; और जब वह बड़ा हुआ, तब जंगल में रहते रहते धनुर्धारी बन गया। 21
वह तो पारान नाम जंगल में रहा करता या : और उसकी माता ने उसके लिथे
मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई।। 22 उन दिनोंमें ऐसा हुआ कि अबीमेलेक अपके
सेनापति पीकोल को संग लेकर इब्राहीम से कहने लगा, जो कुछ तू करता है उस
में परमेश्वर तेरे संग रहता है : 23 सो अब मुझ से यहां इस विषय में परमेश्वर की
किरिया खा, कि तू न तो मुझ से छल करेगा, और न कभी मेरे वंश से करेगा,
परन्तु जैसी करूणा मैं ने तुझ पर की है, वैसी ही तू मुझ पर और इस देश पर भी

जिस में तू रहता है करेगा 24 इब्राहीम ने कहा, मैं किरिया खाऊंगा। 25 और
इब्राहीम ने अबीमेलेक को एक कुएं के विषय में, जो अबीमेलेक के दासोंने
बरीयाई से ले लिया या, उलाहना दिया। 26 तब अबीमेलेक ने कहा, मै नहीं
जानता कि किस ने यह काम किया : और तू ने भी मुझे नहीं बताया, और न मै ने
आज से पहिले इसके विषय में कुछ सुना। 27 तक इब्राहीम ने भेड़-बकरी, और
गाय-बैल लेकर अबीमेलेक को दिए; और उन दोनोंने आपस में वाचा बान्धी। 28
और इब्राहीम ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रखीं। 29 तब अबीमेलेक ने
इब्राहीम से पूछा, इन सात बच्चियोंका, जो तू ने अलग कर रखी हैं, क्या प्रयोजन
है ? 30 उस ने कहा, तू इन सात बच्चियोंको इस बात की साझी जानकर मेरे हाथ
से ले, कि मै ने कुंआ खोदा है। 31 उन दोनोंने जो उस स्यान में आपस में किरिया
खाई, इसी कारण उसका नाम बेर्शेबा पड़ा। 32 जब उन्होंने बेर्शेबा में परस्पर
वाचा बान्धी, तब अबीमेलेक, और उसका सेनापति पीकोल उठकर पलिश्तियोंके
देश में लौट गए। 33 और इब्राहीम ने बेर्शेबा में फाऊ का एक वृझ लगाया, और
वहां यहोवा, जो सनातन ईश्वर है, उस से प्रार्यना की। 34 और इब्राहीम
पलिश्तियोंके देश में बहुत दिनोंतक परदेशी होकर रहा।।

उत्पत्ति 22

1 इन बातोंके पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, इब्राहीम से यह कहकर उसकी
पक्कीझा की, कि हे इब्राहीम : उस ने कहा, देख, मैं यहां हूं। 2 उस ने कहा, अपके
पुत्र को अर्यात् अपके एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग
लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे

बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा। 3 सो इब्राहीम बिहान को तड़के उठा और अपके
गदहे पर काठी कसकर अपके दो सेवक, और अपके पुत्र इसहाक को संग लिया,
और होमबलि के लिथे लकड़ी चीर ली; तब कूच करके उस स्यान की ओर चला,
जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की यी। 4 तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठाकर
उस स्यान को दूर से देखा। 5 और उस ने अपके सेवकोंसे कहा गदहे के पास यहीं
ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहां तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे
पास लौट आऊंगा। 6 सो इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपके पुत्र इसहाक
पर लादी, और आग और छुरी को अपके हाथ में लिया; और वे दोनोंएक साय चल
पके। 7 इसहाक ने अपके पिता इब्राहीम से कहा, हे मेरे पिता; उस ने कहा, हे मेरे
पुत्र, क्या बात है उस ने कहा, देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिथे
भेड़ कहां है ? 8 इब्राहीम ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय
आप ही करेगा। 9 सो वे दोनोंसंग संग आगे चलते गए। और वे उस स्यान को
जिसे परमेश्वर ने उसको बताया या पहुंचे; तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर
लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपके पुत्र इसहाक को बान्ध के वेदी पर की
लकड़ी के ऊपर रख दिया। 10 और इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि
अपके पुत्र को बलि करे। 11 तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार के कहा,
हे इब्राहीम, हे इब्राहीम; उस ने कहा, देख, मैं यहां हूं। 12 उस ने कहा, उस लड़के
पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर : क्योंकि तू ने जो मुझ से अपके पुत्र,
वरन अपके एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मै अब जान गया कि तू
परमेश्वर का भय मानता है। 13 तब इब्राहीम ने आंखे उठाई, और क्या देखा, कि
उसके पीछे एक मेढ़ा अपके सींगो से एक फाड़ी में बफा हुआ है : सो इब्राहीम ने

जाके उस मेंढ़े को लिया, और अपके पुत्र की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया। 14
और इब्राहीम ने उस स्यान का नाम यहोवा यिरे रखा : इसके अनुसार आज तक
भी कहा जाता है, कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा। 15 फिर यहोवा के
दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकार के कहा, 16 यहोवा की यह वाणी है,
कि मैं अपक्की ही यह शपय खाता हूं, कि तू ने जो यह काम किया है कि अपके
पुत्र, वरन अपके एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; 17 इस कारण मैं निश्चय
तुझे आशीष दूंगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के
तीर की बालू के किनकोंके समान अनगिनित करूंगा, और तेरा वंश अपके शत्रुओं
के नगरोंका अधिक्कारनी होगा : 18 और पृय्वी की सारी जातियां अपके को तेरे
वंश के कारण धन्य मानेंगी : क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है। 19 तब इब्राहीम
अपके सेवकोंके पास लौट आया, और वे सब बेर्शेबा को संग संग गए; और
इब्राहीम बेर्शेबा में रहता रहा।। 20 इन बातोंके पश्चात् ऐसा हुआ कि इब्राहीम को
यह सन्देश मिला, कि मिल्का के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुए हैं। 21
मिल्का के पुत्र तो थे हुए, अर्यात् उसका जेठा ऊस, और ऊस का भाई बूज, और
कमूएल, जो अराम का पिता हुआ। 22 फिर केसेद, हज़ो, पिल्दाश, यिद्लाप, और
बतूएल। 23 इन आठोंको मिल्का इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माए जनी। और
बतूएल ने रिबका को उत्पन्न किया। 24 फिर नाहोर के रूमा नाम एक रखेली भी
यी; जिस से तेबह, गहम, तहश, और माका, उत्पन्न हुए।।

उत्पत्ति 23

1 सारा तो एक सौ सत्ताईस बरस की अवस्या को पहुंची; और जब सारा की इतनी

अवस्या हुई; 2 तब वह किर्यतर्बा में मर गई। यह तो कनान देश में है, और हेब्रोन
भी कहलाता है : सो इब्राहीम सारा के लिथे रोने पीटने को वंहा गया। 3 तब
इब्राहीम अपके मुर्दे के पास से उठकर हित्तियोंसे कहने लगा, 4 मैं तुम्हारे बीच
पाहुन और परदेशी हूं : मुझे अपके मध्य में कब्रिस्तान के लिथे ऐसी भूमि दो जो
मेरी निज की हो जाए, कि मैं अपके मुर्दे को गाड़के अपके आंख की ओट करूं। 5
हित्तियोंने इब्राहीम से कहा, 6 हे हमारे प्रभु, हमारी सुन : तू तो हमारे बीच में बड़ा
प्रधान है : सो हमारी कब्रोंमें से जिसको तू चाहे उस में अपके मुर्दे को गाड़; हम में
से कोई तुझे अपक्की कब्र के लेने से न रोकेगा, कि तू अपके मुर्दे को उस में गाड़ने
न पाए। 7 तब इब्राहीम उठकर खड़ा हुआ, और हित्तियोंके सम्मुख, जो उस देश के
निवासी थे, दण्डवत करके कहने लगा, 8 यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपके
मुर्दे को गाड़के अपक्की आंख की ओट करूं, तो मेरी प्रार्यना है, कि सोहर के पुत्र
एप्रोन से मेरे लिथे बिनती करो, 9 कि वह अपक्की मकपेलावाली गुफा, जो उसकी
भूमि की सीमा पर है; उसका पूरा दाम लेकर मुझे दे दे, कि वह तुम्हारे बीच
कब्रिस्तान के लिथे मेरी निज भूमि हो जाए। 10 और एप्रोन तो हित्तियोंके बीच
वहां बैठा हुआ या। सो जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते
थे, उन सभोंके साम्हने उस ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 11 कि हे मेरे प्रभु, ऐसा
नहीं, मेरी सुन; वह भूमि मैं तुझे देता हूं, और उस में जो गुफा है, वह भी मैं तुझे
देता हूं; अपके जातिभाइयोंके सम्मुख मैं उसे तुझ को दिए देता हूं: सो अपके मुर्दे
को कब्र में रख। 12 तब इब्राहीम ने उस देश के निवासियोंके साम्हने दण्डवत
की। 13 और उनके सुनते हुए एप्रोन से कहा, यदि तू ऐसा चाहे, तो मेरी सुन : उस
भूमि का जो दाम हो, वह मैं देना चाहता हूं; उसे मुझ से ले ले, तब मैं अपके मुर्दे

को वहां गाडूंगा। 14 एप्रोन ने इब्राहीम को यह उत्तर दिया, 15 कि, हे मेरे प्रभु, मेरी
बात सुन; एक भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल रूपा है; पर मेरे और तेरे बीच में
यह क्या है ? अपके मुर्दे को कब्र मे रख। 16 इब्राहीम न एप्रोन की मानकर उसको
उतना रूपा तौल दिया, जितना उस ने हित्तियोंके सुनते हुए कहा या, अर्यात् चार
सौ ऐसे शेकेल जो व्यापारियोंमें चलते थे। 17 सो एप्रोन की भूमि, जो मम्रे के
सम्मुख की मकपेला में यी, वह गुफा समेत, और उन सब वृझोंसमेत भी जो उस
में और उसके चारोंऔर सीमा पर थे, 18 जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से
होकर भीतर जाते थे, उन सभोंके साम्हने इब्राहीम के अधिक्कारने में पक्की रीति
से आ गई। 19 इसके पश्चात् इब्राहीम ने अपक्की पत्नी सारा को, उस मकपेला
वाली भूमि की गुफा में जो मम्रे के अर्यात् हेब्रोन के साम्हने कनान देश में है,
मिट्टी दी। 20 और वह भूमि गुफा समेत, जो उस में यी, हित्तियोंकी ओर से
कब्रिस्तान के लिथे इब्राहीम के अधिक्कारने में पक्की रीति से आ गई।

उत्पत्ति 24

1 इब्राहीम वृद्ध या और उसकी आयु बहुत भी और यहोवा ने सब बातोंमें उसको
आशीष दी यी। 2 सो इब्राहीम ने अपके उस दास से, जो उसके घर में पुरनिया
और उसकी सारी सम्पत्ति पर अधिक्कारनी या, कहा, अपना हाथ मेरी जांघ के
नीचे रख : 3 और मुझ से आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में
शपय खा, कि तू मेरे पुत्र के लिथे कनानियोंकी लड़कियोंमें से जिनके बीच मैं
रहता हूं, किसी को न ले आएगा। 4 परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियोंके पास
जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिथे एक पत्नी ले आएगा। 5 दास ने उस से कहा,

कदाचित् वह स्त्री इस देश में मेरे साय आना न चाहे; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस
देश में जहां से तू आया है ले जाना पकेगा ? 6 इब्राहीम ने उस से कहा, चौकस रह,
मेरे पुत्र को वहां कभी न ले जाना। 7 स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिस ने मुझे मेरे
पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर मुझ से शपय खाकर कहा, कि मैं
यह देश तेरे वंश को दूंगा; वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के
लिथे वहां से एक स्त्री ले आए। 8 और यदि वह स्त्री तेरे साय आना न चाहे तब तो
तू मेरी इस शपय से छूट जाएगा : पर मेरे पुत्र को वहां न ले जाना। 9 तब उस
दास ने अपके स्वामी इब्राहीम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखकर उस से इसी
विषय की शपय खाई। 10 तब वह दास अपके स्वामी के ऊंटो में से दस ऊंट
छं◌ाटकर उसके सब उत्तम उत्तम पदार्योंमें से कुछ कुछ लेकर चला : और
मसोपोटामिया में नाहोर के नगर के पास पहुंचा। 11 और उस ने ऊंटोंको नगर के
बाहर एक कुएं के पास बैठाया, वह संध्या का समय या, जिस समय स्त्रियां जल
भरने के लिथे निकलती है। 12 सो वह कहने लगा, हे मेरे स्वामी इब्राहीम के
परमेश्वर, यहोवा, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी इब्राहीम पर
करूणा कर। 13 देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं; और नगरवासियोंकी
बेटियोंजल भरने के लिथे निकली आती हैं : 14 सो ऐसा होने दे, कि जिस कन्या
से मैं कहूं, कि अपना घड़ा मेरी ओर फुका, कि मैं पीऊं; और वह कहे, कि ले, पी ले,
पीछे मैं तेरे ऊंटो को भी पीलाऊंगी : सो वही हो जिसे तू ने अपके दास इसहाक के
लिथे ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करूणा की है।
15 और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही रहा या कि रिबका, जो इब्राहीम के भाई
नाहोर के जन्माथे मिल्का के पुत्र, बतूएल की बेटी यी, वह कन्धे पर घड़ा लिथे

हुए आई। 16 वह अति सुन्दर, और कुमारी यी, और किसी पुरूष का मुंह न देखा
या : वह कुएं में सोते के पास उतर गई, और अपना घड़ा भर के फिर ऊपर आई।
17 तब वह दास उस से भेंट करने को दौड़ा, और कहा, अपके घड़े मे से योड़ा पानी
मुझे पिला दे। 18 उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, ले, पी ले: और उस ने फुर्ती से घड़ा
उतारकर हाथ में लिथे लिथे उसको पिला दिया। 19 जब वह उसको पिला चुकी,
तक कहा, मैं तेरे ऊंटोंके लिथे भी तब तक पानी भर भर लाऊंगी, जब तक वे पी न
चुकें। 20 तब वह फुर्ती से अपके घड़े का जल हौदे में उण्डेलकर फिर कुएं पर भरने
को दौड़ गई; और उसके सब ऊंटोंके लिथे पानी भर दिया। 21 और वह पुरूष
उसकी ओर चुपचाप अचम्भे के साय ताकता हुआ यह सोचता या, कि यहोवा ने
मेरी यात्रा को सुफल किया है कि नहीं। 22 जब ऊंट पी चुके, तब उस पुरूष ने
आध तोले सोने का एक नत्य निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के
कंगन उसके हाथोंमें पहिना दिए; 23 और पूछा, तू किस की बेटी है? यह मुझ को
बता दे। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिथे स्यान है ? 24 उस ने उत्तर
दिया, मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं। 25 फिर उस ने
उस से कहा, हमारे वहां पुआल और चारा बहुत है, और टिकने के लिथे स्यान भी
है। 26 तब उस पुरूष ने सिर फुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके कहा, 27 धन्य है
मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उस ने अपक्की करूणा और सच्चाई
को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया : यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर
मेरे स्वामी के भाई बन्धुओं के घर पर पहुचा दिया है। 28 और उस क्न्या ने
दौड़कर अपक्की माता के घर में यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। 29 तब लाबान
जो रिबका का भाई या, सो बाहर कुएं के निकट उस पुरूष के पास दौड़ा गया। 30

और ऐसा हुआ कि जब उस ने वह नत्य और अपक्की बहिन रिबका के हाथोंमें वे
कंगन भी देखे, और उसकी यह बात भी सुनी, कि उस पुरूष ने मुझ से ऐसी बातें
कहीं; तब वह उस पुरूष के पास गया; और क्या देखा, कि वह सोते के निकट
ऊंटोंके पास खड़ा है। 31 उस ने कहा, हे यहोवा की ओर से धन्य पुरूष भीतर आ :
तू क्योंबाहर खड़ा है ? मैं ने घर को, और ऊंटो के लिथे भी स्यान तैयार किया है।
32 और वह पुरूष घर में गया; और लाबान ने ऊंटोंकी काठियां खोलकर पुआल
और चारा दिया; और उसके, और उसके संगी जनो के पांव धोने को जल दिया।
33 तब इब्राहीम के दास के आगे जलपान के लिथे कुछ रखा गया : पर उस ने
कहा मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूं, तब तक कुछ न खाऊंगा। लाबान ने
कहा, कह दे। 34 तक उस ने कहा, मैं तो इब्राहीम का दास हूं। 35 और यहोवा ने
मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दी है; सो वह महान पुरूष हो गया है; और उस ने
उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा, दास-दासियां, ऊंट और गदहे दिए है। 36
और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। और
उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब कुछ दे दिया है। 37 और मेरे स्वामी ने मुझे
यह शपय खिलाई, कि मैं उसके पुत्र के लिथे कनानियोंकी लड़कियोंमें से जिन के
देश में वह रहता है, कोई स्त्री न ले आऊंगा। 38 मैं उसके पिता के घर, और कुल के
लोगोंके पास जाकर उसके पुत्र के लिथे एक स्त्री ले आऊंगा। 39 तब मैं ने अपके
स्वामी से कहा, कदाचित् वह स्त्री मेरे पीछे न आए। 40 तब उस ने मुझ से कहा,
यहोवा, जिसके साम्हने मैं चलता आया हूं, वह तेरे संग अपके दूत को भेजकर
तेरी यात्रा को सुफल करेगा; सो तू मेरे कुल, और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र
के लिथे एक स्त्री ले आ सकेगा। 41 तू तब ही मेरी इस शपय से छूटेगा, जब तू मेरे

कुल के लोगोंके पास पहुंचेगा; अर्यात् यदि वे मुझे कोई स्त्री न दें, तो तू मेरी शपय
से छूटेगा। 42 सो मैं आज उस कुएं के निकट आकर कहने लगा, हे मेरे स्वामी
इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा, यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता हो : 43 तो
देख मैं जल के इस कुएं के निकट खड़ा हूं; सो ऐसा हो, कि जो कुमारी जल भरने
के लिथे निकल आए, और मैं उस से कहूं, अपके घड़े में से मुझे योड़ा पानी पिला;
44 और वह मुझ से कहे, पी ले और मै तेरे ऊंटो के पीने के लिथे भी पानी भर दूंगी
: वह वही स्त्री हो जिसको तू ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिथे ठहराया हो। 45 मैं मन
ही मन यह कह ही रहा या, कि देख रिबका कन्धे पर घड़ा लिथे हुए निकल आई;
फिर वह सोते के पास उतरके भरने लगी : और मै ने उस से कहा, मुझे पिला दे।
46 और उस ने फुर्ती से अपके घड़े को कन्धे पर से उतारके कहा, ले, पी ले, पीछे
मैं तेरे ऊंटोंको भी पिलाऊंगी : सो मैं ने पी लिया, और उस ने ऊंटोंको भी पिला
दिया। 47 तब मैं ने उस से पूछा, कि तू किस की बेटी है ? और उस ने कहा, मैं तो
नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं : तब मैं ने उसकी नाक में वह
नत्य, और उसके हाथोंमें वे कंगन पहिना दिए। 48 फिर मैं ने सिर फुकाकर
यहोवा को दण्डवत् किया, और अपके स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को
धन्य कहा, क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया कि मै अपके स्वामी के पुत्र
के लिथे उसकी भतीजी को ले जाऊं। 49 सो अब, यदि तू मेरे स्वामी के साय कृपा
और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझ से कहो : और यदि नहीं चाहते
हो, तौभी मुझ से कह दो; ताकि मैं दाहिनी ओर, वा बाईं ओर फिर जाऊं। 50 तब
लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, यह बात यहोवा की ओर से हुई है : सो हम
लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा। 51 देख, रिबका तेरे साम्हने है,

उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो
जाए। 52 उनका यह वचन सुनकर, इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके यहोवा को
दण्डवत् किया। 53 फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने, और वस्त्र निकालकर
रिबका को दिए : और उसके भाई और माता को भी उस ने अनमोल अनमोल
वस्तुएं दी। 54 तब उस ने अपके संगी जनोंसमेत भोजन किया, और रात वहीं
बिताई : और तड़के उठकर कहा, मुझ को अपके स्वामी के पास जाने के लिथे
विदा करो। 55 रिबका के भाई और माता ने कहा, कन्या को हमारे पास कुछ दिन,
अर्यात् कम से कम दस दिन रहने दे; फिर उसके पश्चात् वह चक्की जाएगी। 56
उस ने उन से कहा, यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया है; सो तुम मुझे मत
रोको अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपके स्वामी के पास जाऊं। 57 उन्होंने कहा,
हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और देखेंगे, कि वह क्या कहती है। 58 सो
उन्होंने रिबका को बुलाकर उस से पूछा, क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी? उस
ने कहा, हां मैं जाऊंगी। 59 तब उन्होंने अपक्की बहिन रिबका, और उसकी धाय
और इब्राहीम के दास, और उसके सायी सभोंको विदा किया। 60 और उन्होंने
रिबका को आशीर्वाद देके कहा, हे हमारी बहिन, तू हजारोंलाखोंकी आदिमाता हो,
और तेरा वंश अपके बैरियोंके नगरोंका अधिक्कारनी हो। 61 इस पर रिबका
अपक्की सहेलियोंसमेत चक्की; और ऊंट पर चढ़के उस पुरूष के पीछे हो ली : सो
वह दास रिबका को साय लेकर चल दिया। 62 इसहाक जो दक्खिन देश में रहता
या, सो लहैरोई नाम कुएं से होकर चला आता या। 63 और सांफ के समय वह
मैदान में ध्यान करने के लिथे निकला या : और उस ने आंखे उठाकर क्या देखा,
कि ऊंट चले आ रहे हैं। 64 और रिबका ने भी आंख उठाकर इसहाक को देखा,

और देखते ही ऊंट पर से उतर पक्की 65 तब उस ने दास से पूछा, जो पुरूष मैदान
पर हम से मिलने को चला आता है, सो कौन है? दास ने कहा, वह तो मेरा स्वामी
है। तब रिबका ने घूंघट लेकर अपके मुंह को ढ़ाप लिया। 66 और दास ने इसहाक
से अपना सारा वृत्तान्त वर्णन किया। 67 तब इसहाक रिबका को अपक्की माता
सारा के तम्बू में ले आया, और उसको ब्याहकर उस से प्रेम किया : और इसहाक
को माता की मृत्यु के पश्चात् शान्ति हुई।।

उत्पत्ति 25

1 तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा या। 2 और उस से
जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न हुए। 3 और
योक्षान से शबा और ददान उत्पन्न हुए। और ददान के वंश में अश्शूरी, लतूशी,
और लुम्मी लोग हुए। 4 और मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा, और
एल्दा हुए, से सब कतूरा के सन्तान हुए। 5 इसहाक को तो इब्राहीम ने अपना सब
कुछ दिया। 6 पर अपक्की रखेलियोंके पुत्रोंको, कुछ कुछ देकर अपके जीते जी
अपके पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश में भेज दिया। 7 इब्राहीम की सारी
अवस्या एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई। 8 और इब्राहीम का दीर्घायु होने के कारण
अर्यात् पूरे बुढ़ापे की अवस्या में प्राण छूट गया। 9 और उसके पुत्र इसहाक और
इश्माएल ने, हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे के सम्मुखवाली भूमि में, जो
मकपेला की गुफा यी, उस में उसको मिट्टी दी गई। 10 अर्यात् जो भूमि इब्राहीम
ने हित्तियोंसे मोल ली यी : उसी में इब्राहीम, और उस की पत्नी सारा, दोनोंको
मिट्टी दी गई। 11 इब्राहीम के मरने के पश्चात् परमेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक को

जो लहैरोई नाम कुएं के पास रहता या आशीष दी।। 12 इब्राहीम का पुत्र इश्माएल
जो सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री से उत्पन्न हुआ या, उसकी यह वंशावली है। 13
इश्माएल के पुत्रोंके नाम और वंशावली यह है : अर्यात् इश्माएल का जेठा पुत्र
नबायोत, फिर केदार, अद्बेल, मिबसाम, 14 मिश्मा, दूमा, मस्सा, 15 हदर, तेमा,
यतूर, नपीश, और केदमा। 16 इश्माएल के पुत्र थे ही हुए, और इन्हीं के नामोंके
अनुसार इनके गांवों, और छावनियोंके नाम भी पके; और थे ही बारह अपके
अपके कुल के प्रधान हुए। 17 इश्माएल की सारी अवस्या एक सौ सैंतीस वर्ष की
हुई : तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपके लोगोंमें जा मिला। 18 और उसके
वंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के सम्मुख अश्शूर् के मार्ग में है, बस गए। और
उनका भाग उनके सब भाईबन्धुओं के सम्मुख पड़ा।। 19 इब्राहीम के पुत्र
इसहाक की वंशावली यह है : इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ। 20 और इसहाक
ने चालीस वर्ष का होकर रिबका को, जो पद्दनराम के वासी, अरामी बतूएल की
बेटी, और अरामी लाबान की बहिन भी, ब्याह लिया। 21 इसहाक की पत्नी तो
बांफ यी, सो उस ने उसके निमित्त यहोवा से बिनती की: और यहोवा ने उसकी
बिनती सुनी, सो उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। 22 और लड़के उसके गर्भ में
आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे : तब उस ने कहा, मेरी जो ऐसी ही
दशा रहेगी तो मैं क्योंकर जीवित रहूंगी? और वह यहोवा की इच्छा पूछने को
गई। 23 तब यहोवा ने उस से कहा तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तेरी कोख से
निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से
अधिक सामर्यी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा। 24 जब उसके पुत्र
उत्पन्न होने का समय आया, तब क्या प्रगट हुआ, कि उसके गर्भ में जुड़वे

बालक है। 25 और पहिला जो उत्पन्न हुआ सो लाल निकला, और उसका सारा
शरीर कम्बल के समान रोममय या; सो उसका नाम एसाव रखा गया। 26 पीछे
उसका भाई अपके हाथ से एसाव की एड़ी पकडे हुए उत्पन्न हुआ; और उसका
नाम याकूब रखा गया। और जब रिबका ने उनको जन्म दिया तब इसहाक साठ
वर्ष का या। 27 फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो वनवासी होकर चतुर
शिकार खेलनेवाला हो गया, पर याकूब सीधा मनुष्य या, और तम्बुओं में रहा
करता या। 28 और इसहाक तो एसाव के अहेर का मांस खाया करता या, इसलिथे
वह उस से प्रीति रखता या : पर रिबका याकूब से प्रीति रखती यी।। 29 याकूब
भोजन के लिथे कुछ दाल पका रहा या : और एसाव मैदान से यका हुआ आया।
30 तब एसाव ने याकूब से कहा, वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे
कुछ खिला, क्योंकि मैं यका हूं। इसी कारण उसका नाम एदोम भी पड़ा। 31
याकूब ने कहा, अपना पहिलौठे का अधिक्कारने आज मेरे हाथ बेच दे। 32 एसाव
ने कहा, देख, मै तो अभी मरने पर हूं : सो पहिलौठे के अधिक्कारने से मेरा क्या
लाभ होगा ? 33 याकूब ने कहा, मुझ से अभी शपय खा : सो उस ने उस से शपय
खाई : और अपना पहिलौठे का अधिक्कारने याकूब के हाथ बेच डाला। 34 इस
पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उस ने खाया
पिया, तब उठकर चला गया। योंएसाव ने अपना पहिलौठे का अधिक्कारने तुच्छ
जाना।।

उत्पत्ति 26

1 और उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहिले अकाल से अलग या जो इब्राहीम के

दिनोंमें पड़ा या। सो इसहाक गरार को पलिश्तियोंके राजा अबीमेलेक के पास
गया। 2 वहां यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे
बताऊं उसी में रह। 3 तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूंगा, और तुझे आशीष
दूंगा; और थे सब देश मैं तुझ को, और तेरे वंश को दूंगा; और जो शपय मैं ने तेरे
पिता इब्राहीम से खाई यी, उसे मैं पूरी करूंगा। 4 और मैं तेरे वंश को आकाश के
तारागण के समान करूंगा। और मैं तेरे वंश को थे सब देश दूंगा, और पृय्वी की
सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपके को धन्य मानेंगी। 5 क्योंकि इब्राहीम ने
मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा या उसको और मेरी आज्ञाओं विधियों, और
व्यवस्या का पालन किया। 6 सो इसहाक गरार में रह गया। 7 जब उस स्यान के
लोगोंने उसकी पत्नी के विषय में पूछा, तब उस ने यह सोचकर कि यदि मैं उसको
अपक्की पत्नी कहूं, तो यहां के लोग रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है मुझ को
मार डालेंगे, उत्तर दिया, वह तो मेरी बहिन है। 8 जब उसको वहां रहते बहुत दिन
बीत गए, तब एक दिन पलिश्तियोंके राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से फांकके
क्या देखा, कि इसहाक अपक्की पत्नी रिबका के साय क्रीड़ा कर रहा है। 9 तब
अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाकर कहा, वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तू ने
क्योंकर उसको अपक्की बहिन कहा ? इसहाक ने उत्तर दिया, मैं ने सोचा या, कि
ऐसा न हो कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो। 10 अबीमेलेक ने कहा, तू ने हम से यह
क्या किया ? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साय सहज से कुकर्म कर
सकता, और तू हम को पाप में फंसाता। 11 और अबीमेलेक ने अपक्की सारी
प्रजा को आज्ञा दी, कि जो कोई उस पुरूष को वा उस स्त्री को छूएगा, सो निश्चय
मार डाला जाएगा। 12 फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में

सौ गुणा फल पाया : और यहोवा ने उसको आशीष दी। 13 और वह बढ़ा और
उसकी उन्नति होती चक्की गई, यहां तक कि वह अति महान पुरूष हो गया। 14
जब उसके भेड़-बकरी, गाय-बैल, और बहुत से दास-दासियां हुई, तब पलिश्ती
उस से डाह करने लगे। 15 सो जितने कुओं को उसके पिता इब्राहीम के दासोंने
इब्राहीम के जीते जी खोदा या, उनको पलिश्तियोंने मिट्टी से भर दिया। 16 तब
अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत
सामर्यी हो गया है। 17 सो इसहाक वहां से चला गया, और गरार के नाले में तम्बू
खड़ा करके वहां रहने लगा। 18 तब जो कुएं उसके पिता इब्राहीम के दिनोंमें खोदे
गए थे, और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियोंने भर दिए थे, उनको इसहाक
ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। 19
फिर इसहाक के दासोंको नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला।
20 तब गरारी चरवाहोंने इसहाक के चरवाहोंसे फगड़ा किया, और कहा, कि यह
जल हमारा है। सो उस ने उस कुएं का नाम एसेक रखा इसलिथे कि वे उस से
फगड़े थे। 21 फिर उन्होंने दूसरा कुआं खोदा; और उन्होंने उसके लिथे भी फगड़ा
किया, सो उस ने उसका नाम सित्रा रखा। 22 तब उस ने वहां से कूच करके एक
और कुआं खुदवाया; और उसके लिथे उन्होंने फगड़ा न किया; सो उस ने उसका
नाम यह कहकर रहोबोत रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिथे बहुत स्यान
दिया है, और हम इस देश में फूलें-फलेंगे। 23 वहां से वह बेर्शेबा को गया। 24 और
उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, मैं तेरे पिता इब्राहीम का
परमेश्वर हूं; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साय हूं, और अपके दास इब्राहीम के कारण
तुझे आशीष दूंगा, और तेरा वंश बढ़ाऊंगा 25 तब उस ने वहां एक वेदी बनाई,

और यहोवा से प्रार्यना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहां इसहाक
के दासोंने एक कुआं खोदा। 26 तब अबीमेलेक अपके मित्र अहुज्जत, और अपके
सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया। 27 इसहाक ने उन से
कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपके बीच से निकाल दिया या; सो अब मेरे पास
क्योंआए हो ? 28 उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यझ देखा है, कि यहोवा तेरे साय
रहता है : सो हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच
में शपय खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं; 29 कि जैसे
हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साय निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल झेम
से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा। 30 तब उस ने
उनकी जेवनार की, और उन्होंने खाया पिया। 31 बिहान को उन सभोंने तड़के
उठकर आपस में शपय खाई; तब इसहाक ने उनको विदा किया, और वे कुशल
झेम से उसके पास से चले गए। 32 उसी दिन इसहाक के दासोंने आकर अपके
उस खोदे हुए कुएं का वृत्तान्त सुना के कहा, कि हम को जल का एक सोता मिला
है। 33 तब उस ने उसका नाम शिबा रखा : इसी कारण उस नगर का नाम आज
तक बेर्शेबा पड़ा है।। 34 जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उस ने हित्ती बेरी की
बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत को ब्याह लिया। 35 और इन
स्त्रियोंके कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ।।

उत्पत्ति 27

1 जब इसहाक बूढा हो गया, और उसकी आंखें ऐसी धुंधली पड़ गई, कि उसको
सूफता न या, तब उस ने अपके जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, हे मेरे पुत्र; उस

ने कहा, क्या आज्ञा। 2 उस ने कहा, सुन, मैं तो बूढा हो गया हूं, और नहीं जानता
कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा : 3 सो अब तू अपना तरकश और धनुष आदि
हयियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिथे हिरन का अहेर कर ले आ। 4 तब मेरी
रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मै उसे खाकर
मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूं। 5 तब एसाव अहेर करने को मैदान में
गया। जब इसहाक एसाव से यह बात कह रहा या, तब रिबका सुन रही यी। 6 सो
उस ने अपके पुत्र याकूब से कहा सुन, मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह
कहते सुना, 7 कि तू मेरे लिथे अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे
खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले आशीर्वाद दूं 8 सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी
सुन, और यह आज्ञा मान, 9 कि बकरियोंके पास जाकर बकरियोंके दो अच्छे
अच्छे बच्चे ले आ; और मैं तेरे पिता के लिथे उसकी रूचि के अनुसार उन के मांस
का स्वादिष्ट भोजन बनाऊंगी। 10 तब तू उसको अपके पिता के पास ले जाना, कि
वह उसे खाकर मरने से पहिले तुझ को आशीर्वाद दे। 11 याकूब ने अपक्की माता
रिबका से कहा, सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरूष है, और मैं रोमहीन पुरूष
हूं। 12 कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहरूंगा;
और आशीष के बदले शाप ही कमाऊंगा। 13 उसकी माता ने उस से कहा, हे मेरे,
पुत्र, शाप तुझ पर नहीं मुझी पर पके, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे
पास ले आ। 14 तब याकूब जाकर उनको अपक्की माता के पास ले आया, और
माता ने उसके पिता की रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया। 15 तब
रिबका ने अपके पहिलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर में थे,
लेकर अपके लहुरे पुत्र याकूब को पहिना दिए। 16 और बकरियोंके बच्चोंकी

खालोंको उसके हाथोंमें और उसके चिकने गले में लपेट दिया। 17 और वह
स्वादिष्ट भोजन और अपक्की बनाई हुई रोटी भी अपके पुत्र याकूब के हाथ में दे
दी। 18 सो वह अपके पिता के पास गया, और कहा, हे मेरे पिता : उस ने कहा
क्या बात है ? हे मेरे पुत्र, तू कौन है ? 19 याकूब ने अपके पिता से कहा, मैं तेरा
जेठा पुत्र एसाव हूं। मैं ने तेरी आज्ञा मे अनुसार किया है; सो उठ और बैठकर मेरे
अहेर के मांस में से खा, कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे। 20 इसहाक ने अपके पुत्र
से कहा, हे मेरे पुत्र, क्या कारण है कि वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया ? उस ने
यह उत्तर दिया, कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे साम्हने कर दिया। 21 फिर
इसहाक ने याकूब से कहा, हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूं, कि तू
सचमुच मेरा पुत्र एसाव है वा नहीं। 22 तब याकूब अपके पिता इसहाक के निकट
गया, और उस ने उसको टटोलकर कहा, बोल तो याकूब का सा है, पर हाथ एसाव
ही के से जान पड़ते हैं। 23 और उस ने उसको नहीं चीन्हा, क्योंकि उसके हाथ
उसके भाई के से रोंआर थे। 24 और उस ने पूछा, क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव
है ? उस ने कहा मैं हूं। 25 तब उस ने कहा, भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं,
अपके पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूं। तब वह उसको
उसके निकट ले आया, और उस ने खाया; और वह उसके पास दाखमधु भी लाया,
और उस ने पिया। 26 तब उसके पिता इसहाक ने उस से कहा, हे मेरे पुत्र निकट
आकर मुझे चूम। 27 उस ने निकट जाकर उसको चूमा। और उस ने उसके वोंको
सुगन्ध पाकर उसको वह आशीर्वाद दिया, कि देख, मेरे पुत्र का सुगन्ध जो ऐसे
खेत का सा है जिस पर यहोवा ने आशीष दी हो : 28 सो परमेश्वर तुझे आकाश से
ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया

दाखमधु दे : 29 राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों, और देश देश के लोग तुझे
दण्डवत् करें : तू अपके भाइयोंका स्वामी हो, और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत्
करें : जो तुझे शाप दें सो आप ही स्रापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें सो आशीष
पाएं।। 30 यह आशीर्वाद इसहाक याकूब को दे ही चुका, और याकूब अपके पिता
इसहाक के साम्हने से निकला ही या, कि एसाव अहेर लेकर आ पहुंचा। 31 तब
वह भी स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपके पिता के पास ले आया, और उस ने कहा, हे
मेरे पिता, उठकर अपके पुत्र के अहेर का मांस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद दे।
32 उसके पिता इसहाक ने पूछा, तू कौन है ? उस ने कहा, मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव
हूं। 33 तब इसहाक ने अत्यन्त यरयर कांपके हुए कहा, फिर वह कौन या जो
अहेर करके मेरे पास ले आया या, और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में से कुछ
कुछ खा लिया और उसको आशीर्वाद दिया ? वरन उसको आशीष लगी भी रहेगी।
34 अपके पिता की यह बात सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊंचे और दु:ख भरे स्वर
से चिल्लाकर अपके पिता से कहा, हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे। 35 उस
ने कहा, तेरा भाई धूर्तता से आया, और तेरे आशीर्वाद को लेके चला गया। 36 उस
ने कहा, क्या उसका नाम याकूब ययार्य नहीं रखा गया ? उस ने मुझे दो बार
अड़ंगा मारा, मेरा पहिलौठे का अधिक्कारने तो उस ने ले ही लिया या : और अब
देख, उस ने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है : फिर उस ने कहा, क्या तू ने मेरे लिथे
भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है ? 37 इसहाक ने एसाव को उत्तर देकर कहा,
सुन, मैं ने उसको तेरा स्वामी ठहराया, और उसके सब भाइयोंको उसके अधीन
कर दिया, और अनाज और नया दाखमधु देकर उसको पुष्ट किया है : सो अब, हे
मेरे पुत्र, मैं तेरे लिथे क्या करूं ? 38 एसाव ने अपके पिता से कहा हे मेरे पिता,

क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है ? हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे :
योंकहकर एसाव फूट फूटके रोया। 39 उसके पिता इसहाक ने उस से कहा, सुन,
तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर हो, और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पके।।
40 और तू अपक्की तलवार के बल से जीवित रहे, और अपके भाई के अधीन तो
होए, पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा, तब उसके जूए को अपके कन्धे पर से तोड़
फेंके। 41 एसाव ने तो याकूब से अपके पिता के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैर
रखा; सो उस ने सोचा, कि मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है, फिर मैं
अपके भाई याकूब को घात करूंगा। 42 जब रिबका को अपके पहिलौठे पुत्र एसाव
की थे बातें बताई गई, तब उस ने अपके लहुरे पुत्र याकूब को बुलाकर कहा, सुन,
तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के लिथे अपके मन को धीरज दे रहा है। 43 सो
अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा ; 44
और योड़े दिन तक, अर्यात् जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के
पास रहना। 45 फिर जब तेरे भाई का क्रोध ने उतरे, और जो काम तू ने उस से
किया है उसको वह भूल जाए; तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी : ऐसा क्योंहो कि
एक ही दिन में मुझे तुम दोनोंसे रहित होना पके ? 46 फिर रिबका ने इसहाक से
कहा, हित्ती लड़कियोंके कारण मैं अपके प्राण से घिन करती हूं; सो यदि ऐसी हित्ती
लड़कियोंमें से, जैसी इस देश की लड़कियां हैं, याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो
मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?

उत्पत्ति 28

1 तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया, और आज्ञा दी, कि तू किसी

कनानी लड़की को न ब्याह लेना। 2 पद्दनराम में अपके नाना बतूएल के घर
जाकर वहां अपके मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना। 3 और सर्वशक्तिमान
ईश्वर तुझे आशीष दे, और फुला-फलाकर बढ़ाए, और तू राज्य राज्य की मण्डली
का मूल हो। 4 और वह तुझे और तेरे वंश को भी इब्राहीम की सी आशीष दे, कि तू
यह देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को
दिया या, उसका अधिक्कारनी हो जाए। 5 और इसहाक ने याकूब को विदा किया,
और वह पद्दनराम को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के पास चला, जो याकूब
और एसाव की माता रिबका का भाई या। 6 जब इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद
देकर पद्दनराम भेज दिया, कि वह वहीं से पत्नी ब्याह लाए, और उसको आशीर्वाद
देने के समय यह आज्ञा भी दी, कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना; 7
और याकूब माता पिता की मानकर पद्दनराम को चल दिया; 8 तब एसाव यह सब
देख के और यह भी सोचकर, कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इसहाक को बुरी
लगती हैं, 9 इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के पास गया, और इश्माएल की बेटी
महलत को, जो नबायोत की बहिन भी, ब्याहकर अपक्की पत्नियोंमे मिला
लिया।। 10 सो याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान की ओर चला। 11 और उस ने
किसी स्यान में पहुंचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो
गया या; सो उस ने उस स्यान के पत्यरोंमें से एक पत्यर ले अपना तकिया
बनाकर रखा, और उसी स्यान में सो गया। 12 तब उस ने स्वप्न में क्या देखा,
कि एक सीढ़ी पृय्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा है : और
परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। 13 और यहोवा उसके ऊपर खड़ा
होकर कहता है, कि मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का

भी परमेश्वर हूं : जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा।
14 और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकोंके समान बहुत होगा, और पच्छिम,
पूरब, उत्तर, दक्खिन, चारोंओर फैलता जाएगा : और तेरे और तेरे वंश के द्वारा
पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। 15 और सुन, मैं तेरे संग रहूंगा, और जहां कहीं
तू जाए वहां तेरी रझा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा : मैं अपके
कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझ को न छोडूंगा। 16 तब याकूब
जाग उठा, और कहने लगा; निश्चय इस स्यान में यहोवा है; और मैं इस बात को
न जानता या। 17 और भय खाकर उस ने कहा, यह स्यान क्या ही भयानक है !
यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का
फाटक ही होगा। 18 भोर को याकूब तड़के उठा, और अपके तकिए का पत्यर
लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिक्के पर तेल डाल दिया। 19 और
उस ने उस स्यान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम पहिले लूज या। 20
और याकूब ने यह मन्नत मानी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में
मेरी रझा करे, और मुझे खाने के लिथे रोटी, और पहिनने के लिथे कपड़ा दे, 21
और मैं अपके पिता के घर में कुशल झेम से लौट आऊं : तो यहोवा मेरा परमेश्वर
ठहरेगा। 22 और यह पत्यर, जिसका मैं ने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का
भवन ठहरेगा : और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया
करूंगा।।

उत्पत्ति 29

1 फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया, और पूर्व्वियोंके देश में आया। 2 और उस ने

दृष्टि करके क्या देखा, कि मैदान में एक कुंआ है, और उसके पास भेड़-बकरियोंके
तीन फुण्ड बैठे हुए हैं; क्योंकि जो पत्यर उस कुएं के मुंह पर धरा रहता या, जिस
में से फुण्डोंको जल पिलाया जाता या, वह भारी या। 3 और जब सब फुण्ड वहां
इकट्ठे हो जाते तब चरवाहे उस पत्यर को कुएं के मुंह पर से लुढकाकर
भेड़-बकरियोंको पानी पिलाते, और फिर पत्यर को कुएं के मुंह पर ज्योंका
त्योंरख देते थे। 4 सो याकूब ने चरवाहोंसे पूछा, हे मेरे भाइयो, तुम कहां के हो?
उन्होंने कहा, हम हारान के हैं। 5 तब उस ने उन से पूछा, क्या तुम नाहोर के पोते
लाबान को जानते हो ? उन्होंने कहा, हां, हम उसे जानते हैं। 6 फिर उस ने उन से
पूछा, क्या वह कुशल से है ? उन्होंने कहा, हां, कुशल से तो है और वह देख,
उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियोंको लिथे हुए चक्की आती है। 7 उस ने कहा, देखो,
अभी तो दिन बहुत है, पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं : सो भेड़-बकरियोंको
जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ। 8 उन्होंने कहा, हम अभी ऐसा नहीं कर
सकते, जब सब फुण्ड इकट्ठे होते हैं तब पत्यर कुएं के मुंह से लुढकाया जाता है,
और तब हम भेड़-बकरियोंको पानी पिलाते हैं। 9 उनकी यह बातचीत हो रही यी,
कि राहेल जो पशु चराया करती यी, सो अपके पिता की भेड़-बकरियोंको लिथे हुए
आ गई। 10 अपके मामा लाबान की बेटी राहेल को, और उसकी भेड़-बकरियोंको
भी देखकर याकूब ने निकट जाकर कुएं के मुंह पर से पत्यर को लुढकाकर अपके
मामा लाबान की भेड़-बकरियोंको पानी पिलाया। 11 तब याकूब ने राहेल को
चूमा, और ऊंचे स्वर से रोया। 12 और याकूब ने राहेल को बता दिया, कि मैं तेरा
फुफेरा भाई हूं, अर्यात् रिबका का पुत्र हूं : तब उस ने दौड़ के अपके पिता से कह
दिया। 13 अपके भानजे याकूब को समाचार पाते ही लाबान उस से भेंट करने को

दौड़ा, और उसको गले लगाकर चूमा, फिर अपके घर ले आया। और याकूब ने
लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया। 14 तब लाबान ने याकूब से कहा, तू
तो सचमुच मेरी हड्डी और मांस है। सो याकूब एक महीना भर उसके साय रहा।
15 तब लाबान ने याकूब से कहा, भाईबन्धु होने के कारण तुझ से सेंतमेंत सेवा
कराना मुझे उचित नहीं है, सो कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं ? 16 लाबान के
दो बेटियां यी, जिन में से बड़ी का नाम लिआ : और छोटी का राहेल या। 17 लिआ
: के तो धुन्धली आंखे यी, पर राहेल रूपवती और सुन्दर यी। 18 सो याकूब ने, जो
राहेल से प्रीति रखता या, कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिथे सात बरस तेरी
सेवा करूंगा। 19 लाबान ने कहा, उसे पराए पुरूष को देने से तुझ को देना उत्तम
होगा; सो मेरे पास रह। 20 सो याकूब ने राहेल के लिथे सात बरस सेवा की; और वे
उसको राहेल की प्रीति के कारण योड़े ही दिनोंके बराबर जान पके। 21 तब याकूब
ने लाबान से कहा, मेरी पत्नी मुझे दे, और मैं उसके पास जाऊंगा, क्योंकि मेरा
समय पूरा हो गया है। 22 सो लाबान ने उस स्यान के सब मनुष्योंको बुलाकर
इकट्ठा किया, और उनकी जेवनार की। 23 सांफ के समय वह अपक्की बेटी
लिआ : को याकूब के पास ले गया, और वह उसके पास गया। 24 और लाबान ने
अपक्की बेटी लिआ : को उसकी लौंडी होने के लिथे अपक्की लौंडी जिल्पा दी। 25
भोर को मालूम हुआ कि यह तो लिआ है, सो उस ने लाबान से कहा यह तू ने मुझ
से क्या किया है ? मैं ने तेरे साय रहकर जो तेरी सेवा की, सो क्या राहेल के लिथे
नहीं की ? फिर तू ने मुझ से क्योंऐसा छल किया है ? 26 लाबान ने कहा, हमारे
यहां ऐसी रीति नहीं, कि जेठी से पहिले दूसरी का विवाह कर दें। 27 इसका सप्ताह
तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिथे मिलेगी जो तू मेरे साय रहकर

और सात वर्ष तक करेगा। 28 सो याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआ : के सप्ताह
को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपक्की बेटी राहेल को भी दिया, कि वह उसकी
पत्नी हो। 29 और लाबान ने अपक्की बेटी राहेल की लौंडी होने के लिथे अपक्की
लौंडी बिल्हा को दिया। 30 तब याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति
लिआ: से अधिक उसी पर हुई, और उस ने लाबान के साय रहकर सात वर्ष और
उसकी सेवा की।। 31 जब यहोवा ने देखा, कि लिआ: अप्रिय हुई, तब उस ने
उसकी कोख खोली, पर राहेल बांफ रही। 32 सो लिआ: गर्भवती हुई, और उसके
एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उस ने यह कहकर उसका नाम रूबेन रखा, कि यहोवा
ने मेरे दु:ख पर दृष्टि की है : सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा। 33 फिर वह
गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने यह कहा कि यह
सुनके, कि मै अप्रिय हूं यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया : इसलिथे उस ने उसका
नाम शिमोन रखा। 34 फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ;
और उस ने कहा, अब की बार तो मेरा पति मुझ से मिल जाएगा, क्योंकि उस से
मेरे तीन पुत्र उत्पन्न हुए : इसलिथे उसका नाम लेवी रखा गया। 35 और फिर
वह गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने कहा, अब की
बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी, इसलिथे उस ने उसका नाम यहूदा रखा;
तब उसकी कोख बन्द को गई।।

उत्पत्ति 30

1 जब राहेल ने देखा, कि याकूब के लिथे मुझ से कोई सन्तान नहीं होता, तब वह
अपक्की बहिन से डाह करने लगी : और याकूब से कहा, मुझे भी सन्तान दे, नहीं

तो मर जाऊंगी। 2 तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, क्या मैं परमेश्वर
हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है। 3 राहेल ने कहा, अच्छा, मेरी लौंडी
बिल्हा हाजिर है: उसी के पास जा, वह मेरे घुटनोंपर जनेगी, और उसके द्वारा मेरा
भी घर बसेगा। 4 तो उस ने उसे अपक्की लौंडी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी
पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया। 5 और बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से
उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 6 और राहेल ने कहा, परमेश्वर ने मेरा न्याय
चुकाया और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया : इसलिथे उस ने उसका नाम दान
रखा। 7 और राहेल की लौंडी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और
उत्पन्न हुआ। 8 तब राहेल ने कहा, मैं ने अपक्की बहिन के साय बड़े बल से
लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई : सो उस ने उसका नाम नप्ताली
रखा। 9 जब लिआ: ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं, तब उस ने अपक्की
लौंडी जिल्पा को लेकर याकूब की पत्नी होने के लिथे दे दिया। 10 और लिआ: की
लौंडी जिल्पा के भी याकूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 11 तब लिआ: ने कहा, अहो
भाग्य! सो उस ने उसका नाम गाद रखा। 12 फिर लिआ: की लौंडी जिल्पा के
याकूब से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ। 13 तब लिआ: ने कहा, मै धन्य हूं; निश्चय
स्त्रियां मुझे धन्य कहेंगी : सो उस ने उसका नाम आशेर रखा। 14 गेहूं की कटनी
के दिनोंमें रूबेन को मैदान में दूदाफल मिले, और वह उनको अपक्की माता
लिआ: के पास ले गया, तब राहेल ने लिआ: से कहा, अपके पुत्र के दूदाफलोंमें से
कुछ मुझे दे। 15 उस ने उस से कहा, तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या
छोटी बात है ? अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है? राहेल ने कहा,
अच्छा, तेरे पुत्र के दूदाफलोंके बदले वह आज रात को तेरे संग सोएगा। 16 सो

सांफ को जब याकूब मैदान से आ रहा या, तब लिआ: उस से भेंट करने को
निकली, और कहा, तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मै ने अपके पुत्र के
दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया। तब वह उस रात को उसी के संग सोया।
17 तब परमेश्वर ने लिआ: की सुनी, सो वह गर्भवती हुई और याकूब से उसके
पांचवां पुत्र उत्पन्न हुआ। 18 तब लिआ: ने कहा, में ने जो अपके पति को
अपक्की लौंडी दी, इसलिथे परमेश्वर ने मुझे मेरी मंजूरी दी है : सो उस ने उसका
नाम इस्साकार रखा। 19 और लिआ: फिर गर्भवती हुई और याकूब से उसके
छठवां पुत्र उत्पन्न हुआ। 20 तब लिआ: ने कहा, परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान
दिया है; अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उस से छ: पुत्र
उत्पन्न चुके हैं : से उस ने उसका नाम जबूलून रखा। 21 तत्पश्चात् उसके एक
बेटी भी हुई, और उस ने उसका नाम दीना रखा। 22 और परमेश्वर ने राहेल की भी
सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली। 23 सो वह गर्भवती हुई और
उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; सो उस ने कहा, परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर
कर दिया है। 24 सो उस ने यह कहकर उसका नाम यूसुफ रखा, कि परमेश्वर मुझे
एक पुत्र और भी देगा। 25 जब राहेल से यूसुफ उत्पन्न हुआ, तब याकूब ने
लाबान से कहा, मुझे विदा कर, कि मैं अपके देश और स्यान को जाऊं। 26 मेरी
स्त्रियां और मेरे लड़के-बाले, जिनके लिथे मैं ने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे, कि
मैं चला जाऊं; तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की है। 27 लाबान ने उस से
कहा, यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है, तो रह जा : क्योंकि मैं ने अनुभव से
जान लिया है, कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है। 28 फिर उस ने कहा,
तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं, और मैं उसे दूंगा। 29 उस ने उस से कहा तू

जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे।
30 मेरे अपके से पहिले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने
मेरे आने पर तुझे तो आशीष दी है : पर मैं अपके घर का काम कब करने पाऊंगा?
31 उस ने फिर कहा, मैं तुझे क्या दूं? याकूब ने कहा, तू मुझे कुछ न दे; यदि तू
मेरे लिथे एक काम करे, तो मै फिर तेरी भेड़-बकरियोंको चराऊंगा, और उनकी
रझा करूंगा। 32 मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियोंके बीच होकर निकलूंगा, और जो
भेड़ वा बकरी चित्तीवाली वा चित्कबरी हो, और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी
चित्कबरी वा चित्तीवाली हो, उन्हें मैं अलग कर रखूंगा : और मेरी मजदूरी में वे ही
ठहरेंगी। 33 और जब आगे को मेरी मजदूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले, तब धर्म
की यही साझी होगी; अर्यात् बकरियोंमें से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी हो,
और भेड़ोंमें से जो कोई काली न हो, सो यदि मेरे पास निकलें, तो चोरी की
ठहरेंगी। 34 तब लाबान ने कहा, तेरे कहने के अनुसार हो। 35 सो उस ने उसी
दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों, और सब चित्तीवाली और चित्कबरी
बकरियोंको, अर्यात् जिन में कुछ उजलापन या, उनको और सब काली भेड़ोंको भी
अलग करके अपके पुत्रोंके हाथ सौप दिया। 36 और उस ने अपके और याकूब के
बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया : सो याकूब लाबान की
भेड़-बकरियोंको चराने लगा। 37 और याकूब ने चनार, और बादाम, और अर्मोन
वृझोंकी हरी हरी छडियां लेकर, उनके छिलके कहीं कहीं छीलके, उन्हें धारीदार
बना दिया, ऐसी कि उन छडियोंकी सफेदी दिखाई देने लगी। 38 और तब छीली
हुई छडियोंको भेड़-बकरियोंके साम्हने उनके पानी पीने के कठौतोंमें खड़ा किया;
और जब वे पानी पीने के लिथे आईं तब गाभिन हो गईं। 39 और छडियोंके

साम्हने गाभिन होकर, भेड़-बकरियां धारीवाले, चित्तीवाले और चित्कबरे बच्चे
जनीं। 40 तब याकूब ने भेड़ोंके बच्चोंको अलग अलग किया, और लाबान की
भेड़-बकरियोंके मुंह को चित्तीवाले और सब काले बच्चोंकी ओर कर दिया; और
अपके फुण्ड़ोंको उन से अलग रखा, और लाबान की भेड़-बकरियोंसे मिलने न
दिया। 41 और जब जब बलवन्त भेड़-बकरियां गाभिन होती यी, तब तब याकूब
उन छडिय़ोंको कठौतोंमे उनके साम्हने रख देता या; जिस से वे छडिय़ोंको देखती
हुई गाभिन हो जाएं। 42 पर जब निर्बल भेड़-बकरियां गाभिन होती यी, तब वह
उन्हें उनके आगे नहीं रखता या। इस से निर्बल निर्बल लाबान की रही, और
बलवन्त बलवन्त याकूब की हो गई। 43 सो वह पुरूष अत्यन्त धनाढय हो गया,
और उसके बहुत सी भेड़-बकरियां, और लौंडियां और दास और ऊंट और गदहे हो
गए।।

उत्पत्ति 31

1 फिर लाबान के पुत्रोंकी थे बातें याकूब के सुनने में आईं, कि याकूब ने हमारे
पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी यह
प्रतिष्ठा है। 2 और याकूब ने लाबान के मुखड़े पर दृष्टि की और ताड़ लिया, कि वह
उसके प्रति पहले के समान नहीं है। 3 तब यहोवा ने याकूब से कहा, अपके
पितरोंके देश और अपक्की जन्मभूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूंगा। 4 तब
याकूब ने राहेल और लिआ: को, मैदान में अपक्की भेड़-बकरियोंके पास,
बुलवाकर कहा, 5 तुम्हारे पिता के मुखड़े से मुझे समझ पड़ता है, कि वह तो मुझे
पहिले की नाई अब नहीं देखता; पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग है। 6 और

तुम भी जानती हो, कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है। 7 और तुम्हारे
पिता ने मुझ से छल करके मेरी मजदूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर
ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया। 8 जब उस ने कहा, कि चित्तीवाले बच्चे तेरी
मजदूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं, और जब उस ने
कहा, कि धारीवाले बच्चे तेरी मजदूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां धारीवाले
जनने लगीं। 9 इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे
दिए। 10 भेड़-बकरियोंके गाभिन होने के समय मैं ने स्वप्न में क्या देखा, कि जो
बकरे बकरियोंपर चढ़ रहे हैं, सो धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले है। 11 और
परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, हे याकूब : मैं ने कहा, क्या आज्ञा। 12
उस ने कहा, आंखे उठाकर उन सब बकरोंको, जो बकरियोंपर चढ़ रहे हैं, देख, कि
वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता
है, सो मैं ने देखा है। 13 मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं, जहां तू ने एक खम्भे पर तेल
डाल दिया, और मेरी मन्नत मानी यी : अब चल, इस देश से निकलकर अपक्की
जन्मभूमि को लौट जा। 14 तब राहेल और लिआ : ने उस से कहा, क्या हमारे
पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग वा अंश बचा है? 15 क्या हम उसकी दृष्टि
में पराथे न ठहरीं? देख, उस ने हम को तो बेच डाला, और हमारे रूपे को खा बैठा
है। 16 सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है, सो हमारा, और
हमारे लड़केबालोंको है : अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा सो कर। 17 तब
याकूब ने अपके लड़केबालोंऔर स्त्रियोंको ऊंटोंपर चढ़ाया; 18 और जितने पशुओं
को वह पद्दनराम में इकट्ठा करके धनाढय हो गया या, सब को कनान में अपके
पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से, साय ले गया। 19 लाबान तो अपक्की

भेड़ोंका ऊन कतरने के लिथे चला गया या। और राहेल अपके पिता के
गृहदेवताओं को चुरा ले गई। 20 सो याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से
चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूं। 21 वह अपना सब कुछ लेकर
भागा : और महानद के पार उतरकर अपना मुंह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर
किया।। 22 तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला, कि याकूब भाग गया है। 23
सो उस ने अपके भाइयोंको साय लेकर उसका सात दिन तक पीछा किया, और
गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पकड़ा। 24 तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में
आरामी लाबान के पास आकर कहा, सावधान रह, तू याकूब से न तो भला कहना
और न बुरा। 25 और लाबान याकूब के पास पहुंच गया, याकूब तो अपना तम्बू
गिलाद नाम पहाड़ी देश में खड़ा किए पड़ा या : और लाबान ने भी अपके भाइयोंके
साय अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया। 26 तब लाबान याकूब से कहने
लगा, तू ने यह क्या किया, कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी
बेटियोंको ऐसा ले आया, जैसा कोई तलवार के बल से बन्दी बनाए गए? 27 तू
क्योंचुपके से भाग आया, और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला
आया; नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साय मृदंग और वीणा बजवाते, और गीत
गवाते विदा करता ? 28 तू ने तो मुझे अपके बेटे बेटियोंको चूमने तक न दिया? तू
ने मूर्खता की है। 29 तुम लोगोंकी हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है; पर
तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा, सावधान रह, याकूब से
न तो भला कहना और न बुरा। 30 भला अब तू अपके पिता के घर का बड़ा
अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया, पर मेरे देवताओं को तू क्योंचुरा ले
आया है? 31 याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, मैं यह सोचकर डर गया या : कि

कहीं तू अपक्की बेटियोंको मुझ से छीन न ले। 32 जिस किसी के पास तू अपके
देवताओं को पाए, सो जीता न बचेगा। मेरे पास तेरा जो कुछ निकले, सो
भाई-बन्धुओं के साम्हने पहिचानकर ले ले। क्योंकि याकूब न जानता या कि
राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है। 33 यह सुनकर लाबान, याकूब और लिआ
: और दोनोंदासियोंके तम्बुओं मे गया; और कुछ न मिला। तब लिआ: के तम्बू में
से निकलकर राहेल के तम्बू में गया। 34 राहेल तो गृहदेवताओं को ऊंट की काठी
में रखके उन पर बैठी यी। सो लाबान ने उसके सारे तम्बू में टटोलने पर भी उन्हें
न पाया। 35 राहेल ने अपके पिता से कहा, हे मेरे प्रभु; इस से अप्रसन्न न हो, कि
मैं तेरे साम्हने नहीं उठी; क्योंकि मैं स्त्रीधर्म से हूं। सो उसके ढूंढ ढांढ़ करने पर भी
गृहदेवता उसको न मिले। 36 तब याकूब क्रोधित होकर लाबान से फगड़ने लगा,
और कहा, मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है, कि तू ने इतना क्रोधित होकर
मेरा पीछा किया है ? 37 तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, सो तुझ
को सारी सामग्री में से क्या मिला? कुछ मिला हो तो उसको यहां अपके और मेरे
भाइयोंके सामहने रख दे, और वे हम दोनोंके बीच न्याय करें। 38 इन बीस वर्षोंसे
मै तेरे पास रहा; उन में न तो तेरी भेड़-बकरियोंके गर्भ गिरे, और न तेरे मेढ़ोंका
मांस मै ने कभी खाया। 39 जिसे बनैले जन्तुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास
न लाता या, उसकी हानि मैं ही उठाता या; चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को,
तू मुझ ही से उसको ले लेता या। 40 मेरी तो यह दशा यी, कि दिन को तो घाम
और रात को पाला मुझे खा गया; और नीन्द मेरी आंखोंसे भाग जाती यी। 41
बीस वर्ष तक मैं तेरे घर में रहो; चौदह वर्ष तो मै ने तेरी दोनो बेटियोंके लिथे, और
छः वर्ष तेरी भेड़-बकरियोंके लिथे सेवा की : और तू ने मेरी मजदूरी को दस बार

बदल डाला। 42 मेरे पिता का परमेश्वर अर्यात् इब्राहीम का परमेश्वर, जिसका भय
इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता, तो निश्चय तू अब मुझे छूछे हाथ
जाने देता। मेरे दु:ख और मेरे हाथोंके परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई
रात में तुझे दपटा। 43 लाबान ले याकूब से कहा, थे बेटियोंतो मेरी ही हैं, और थे
पुत्र भी मेरे ही हैं, और थे भेड़-बकरियोंभी मेरी ही हैं, और जो कुछ तुझे देख पड़ता
है सो सब मेरा ही है : और अब मैं अपक्की इन बेटियोंवा इनके सन्तान से क्या
कर सकता हूं ? 44 अब आ मैं और तू दोनोंआपस में वाचा बान्धें, और वह मेरे
और तेरे बीच साझी ठहरी रहे। 45 तब याकूब ने एक पत्यर लेकर उसका खम्भा
खड़ा किया। 46 तब याकूब ने अपके भाई-बन्धुओं से कहा, पत्यर इकट्ठा करो;
यह सुनकर उन्होंने पत्यर इकट्ठा करके एक ढेर लगाया और वहीं ढेर के पास
उन्होंने भोजन किया। 47 उस ढेर का नाम लाबान ने तो यज्र सहादुया, पर याकूब
ने जिलियाद रखा। 48 लाबान ने कहा, कि यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच
साझी रहेगा। इस कारण उसका नाम जिलियाद रखा गया, 49 और मिजपा भी;
क्योंकि उस ने कहा, कि जब हम उस दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी
देखभाल करता रहे। 50 यदि तू मेरी बेटियोंको दु:ख दे, वा उनके सिवाय और
स्त्रियां ब्याह ले, तो हमारे साय कोई मनुष्य तो न रहेगा; पर देख मेरे तेरे बीच में
परमेश्वर साझी रहेगा। 51 फिर लाबान ने याकूब से कहा, इस ढेर को देख और
इस खम्भे को भी देख, जिनको मैं ने अपके और तेरे बीच में खड़ा किया है। 52
यह ढेर और यह खम्भा दोनोंइस बात के साझी रहें, कि हानि करने की मनसा से
न तो मैं इस ढेर को लांघकर तेरे पास जाऊंगा, न तू इस ढेर और इस खम्भे को
लांघकर मेरे पास आएगा। 53 इब्राहीम और नाहोर और उनके पिता; तीनोंका जो

परमेश्वर है, सो हम दोनो के बीच न्याय करे। तब याकूब ने उसकी शपय खाई
जिसका भय उसका पिता इसहाक मानता या। 54 और याकूब ने उस पहाड़ पर
मेलबलि चढ़ाया, और अपके भाई-बन्धुओं को भोजन करने के लिथे बुलाया, सो
उन्होंने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई। 55 बिहान को लाबान तड़के उठा,
और अपके बेटे बेटियोंको चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपके
स्यान को लौट गया।

उत्पत्ति 32

1 और याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले। 2
उनको देखते ही याकूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है सो उस ने उस स्यान
का नाम महनैम रखा।। 3 तब याकूब ने सेईर देश में, अर्यात् एदोम देश में, अपके
भाई एसाव के पास अपके आगे दूत भेज दिए। 4 और उस ने उन्हें यह आज्ञा दी,
कि मेरे प्रभु एसाव से योंकहना; कि तेरा दास याकूब तुझ से योंकहता है, कि मैं
लाबान के यहां परदेशी होकर अब तक रहा; 5 और मेरे पास गाय-बैल, गदहे,
भेड़-बकरियां, और दास-दासियां है: सो मैं ने अपके प्रभु के पास इसलिथे संदेशा
भेजा है, कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। 6 वे दूत याकूब के पास लौटके
कहने लगे, हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को
चार सौ पुरूष संग लिथे हुए चला आता है। 7 तब याकूब निपट डर गया, और
संकट में पड़ा : और यह सोचकर, अपके संगवालोंके, और भेड़-बकरियों, और
गाय-बैलों, और ऊंटो के भी अलग अलग दो दल कर लिथे, 8 कि यदि एसाव
आकर पहिले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भागकर बच जाएगा। 9 फिर

याकूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से कहा,
कि अपके देश और जन्मभूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूंगा : 10 तू ने
जो जो काम अपक्की करूणा और सच्चाई से अपके दास के साय किए हैं, कि मैं
जो अपक्की छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो
दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामोंमें से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं। 11 मेरी
बिनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा : मैं तो उस से डरता हूं, कहीं
ऐसा ने हो कि वह आकर मुझे और मां समेत लड़कोंको भी मार डाले। 12 तू ने तो
कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा, और तेरे वंश को समुद्र की बालू के
किनकोंके समान बहुत करूंगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जो सकते। 13
और उस ने उस दिन की रात वहीं बिताई; और जो कुछ उसके पास या उस में से
अपके भाई एसाव की भेंट के लिथे छांट छांटकर निकाला; 14 अर्यात् दो सौ
बकरियां, और बीस बकरे, और दो सौ भेड़ें, और बीस मेढ़े, 15 और बच्चोंसमेत
दूध देनेवाली तीस ऊंटनियां, और चालीस गाथें, और दस बैल, और बीस गदहियां
और उनके दस बच्चे। 16 इनको उस ने फुण्ड फुण्ड करके, अपके दासोंको
सौंपकर उन से कहा, मेरे आगे बढ़ जाओ; और फुण्डोंके बीच बीच में अन्तर रखो।
17 फिर उस ने अगले फुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, कि जब मेरा भाई एसाव
तुझे मिले, और पूछने लगे, कि तू किस का दास है, और कहां जाता है , और थे जो
तेरे आगे आगे हैं, सो किस के हैं? 18 तब कहना, कि यह तेरे दास याकूब के हैं। हे
मेरे प्रभु एसाव, थे भेंट के लिथे तेरे पास भेजे गए हैं, और वह आप भी हमारे पीछे
पीछे आ रहा है। 19 और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालोंको भी, वरन उस
सभोंको जो फुण्डोंके पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी, कि जब एसाव तुम को मिले

तब इसी प्रकार उस से कहना। 20 और यह भी कहना, कि तेरा दास याकूब हमारे
पीछे पीछे आ रहा है। क्योंकि उस ने यह सोचा, कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे
जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शान्त करके तब उसका दर्शन करूंगा; हो
सकता है वह मुझ से प्रसन्न हो जाए। 21 सो वह भेंट याकूब से पहिले पार उतर
गई, और वह आप उस रात को छावनी में रहा।। 22 उसी रात को वह उठा और
अपक्की दोनोंस्त्रियों, और दोनोंलौंडियों, और ग्यारहोंलड़कोंको संग लेकर घाट से
यब्बोक नदी के पार उतर गया। 23 और उस ने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया
वरन अपना सब कुछ पार उतार दिया। 24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब
कोई पुरूष आकर पह फटने तक उस से मल्लयुद्ध करता रहा। 25 जब उस ने
देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो
याकूब की जांघ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। 26 तब उस ने
कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे
आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा। 27 और उस ने याकूब से पूछा, तेरा
नाम क्या है? उस ने कहा याकूब। 28 उस ने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं,
परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्योंसे भी युद्ध करके प्रबल
हुआ है। 29 याकूब ने कहा, मैं बिनती करता हूं, मुझे अपना नाम बता। उस ने
कहा, तू मेरा नाम क्योंपूछता है? तब उस ने उसको वहीं आशीर्वाद दिया। 30 तब
याकूब ने यह कहकर उस स्यान का नाम पक्कीएल रखा: कि परमेश्वर को
आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है। 31 पनूएल के पास से चलते
चलते सूर्य उदय हो गया, और वह जांघ से लंगड़ाता या। 32 इस्राएली जो पशुओं
की जांघ की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन तक नहीं खाते, इसका कारण

यही है, कि उस पुरूष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ या।।

उत्पत्ति 33

1 और याकूब ने आंखें उठाकर यह देखा, कि एसाव चार सौ पुरूष संग लिथे हुए
चला जाता है। तब उस ने लड़केबालोंको अलग अलग बांटकर लिआ, और राहेल,
और दोनोंलौंडियोंको सौप दिया। 2 और उस ने सब के आगे लड़कोंसमेत
लौंडियोंको उसके पीछे लड़कोंसमेत लिआ: को, और सब के पीछे राहेल और
यूसुफ को रखा, 3 और आप उन सब के आगे बढ़ा, और सात बार भूमि पर गिरके
दण्डवत् की, और अपके भाई के पास पहुंचा। 4 तब एसाव उस से भेंट करने को
दौड़ा, और उसको ह्रृदय से लगाकर, गले से लिपटकर चूमा : फिर वे दोनोंरो पके।
5 तब उस ने आंखे उठाकर स्त्रियोंऔर लड़के बालोंको देखा; और पूछा, थे जो तेरे
साय हैं सो कौन हैं? उस ने कहा, थे तेरे दास के लड़के हैं, जिन्हें परमेश्वर ने
अनुग्रह करके मुझ को दिया है। 6 तब लड़कोंसमेत लौंडियोंने निकट आकर
दण्डवत् की। 7 फिर लड़कोंसमेत लिआ: निकट आई, और उन्होंने भी दण्डवत्
की: पीछे यूसुफ और राहेल ने भी निकट आकर दण्डवत् की। 8 तब उस ने पूछा,
तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला, उसका क्या प्रयोजन है? उस ने कहा, यह कि
मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। 9 एसाव ने कहा, हे मेरे भाई, मेरे पास
तो बहुत है; जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे। 10 याकूब ने कहा, नहीं नहीं, यदि तेरा
अनुग्रह मुझ पर हो, तो मेरी भेंट ग्रहण कर : क्योंकि मैं ने तेरा दर्शन पाकर, मानो
परमेश्वर का दर्शन पाया है, और तू मुझ से प्रसन्न हुआ है। 11 सो यह भेंट, जो
तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर : क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है, और

मेरे पास बहुत है। 12 फिर एसाव ने कहा, आ, हम बढ़ चलें: और मै तेरे आगे
आगे चलूंगा। 13 याकूब ने कहा, हे मेरे प्रभु, तू जानता ही है कि मेरे साय सुकुमार
लड़के, और दूध देनेहारी भेड़-बकरियां और गाथें है; यदि ऐसे पशु एक दिन भी
अधिक हांके जाएं, तो सब के सब मर जाएंगे। 14 सो मेरा प्रभु अपके दास के आगे
बढ़ जाए, और मैं इन पशुओं की गति के अनुसार, जो मेरे आगे है, और
लड़केबालोंकी गति के अनुसार धीरे धीरे चलकर सेईर में अपके प्रभु के पास
पहुंचूंगा। 15 एसाव ने कहा, तो अपके संगवालोंमें से मैं कई एक तेरे साय छोड़
जाऊं। उस ने कहा, यह क्यों? इतना ही बहुत है, कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि
मुझ पर बनी रहे। 16 तब एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया।
17 और याकूब वहां से कूच करके सुक्कोत को गया, और वहां अपके लिथे एक
घर, और पशुओं के लिथे फोंपके बनाए: इसी कारण उस स्यान का नाम सुक्कोत
पड़ा।। 18 और याकूब जो पद्दनराम से आया या, सो कनान देश के शकेम नगर के
पास कुशल झेम से पहुंचकर नगर के साम्हने डेरे खड़े किए। 19 और भूमि के
जिस खण्ड पर उस ने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उस ने शकेम के पिता
हमोर के पुत्रोंके हाथ से एक सौ कसीतोंमें मोल लिया। 20 और वहां उस ने एक
वेदी बनाकर उसका नाम एलेलोहे इस्राएल रखा।।

उत्पत्ति 34

1 और लिआ: की बेटी दीना, जो याकूब से उत्पन्न हुई यी, उस देश की
लड़कियोंसे भेंट करने को निकली। 2 तब उस देश के प्रधान हित्ती हमोर के पुत्र
शकेम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साय कुकर्म करके उसको भ्रष्ट कर

डाला। 3 तब उसका मन याकूब की बेटी दीना से लग गया, और उस ने उस कन्या
से प्रेम की बातें की, और उस से प्रेम करने लगा। 4 और शकेम ने अपके पिता
हमोर से कहा, मुझे इस लड़की को मेरी पत्नी होने के लिथे दिला दे। 5 और याकूब
ने सुना, कि शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है , पर उसके पुत्र उस
समय पशुओं के संग मैदान में थे, सो वह उनके आने तक चुप रहा। 6 और शकेम
का पिता हमोर निकलकर याकूब से बातचीत करने के लिथे उसके पास गया। 7
और याकूब के पुत्र सुनते ही मैदान से बहुत उदास और क्रोधित होकर आए:
क्योंकि शकेम ने याकूब की बेटी के साय कुकर्म करके इस्राएल के घराने से
मूर्खता का ऐसा काम किया या, जिसका करना अनुचित या। 8 हमोर ने उन सब
से कहा, मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, सो उसे उसकी
पत्नी होने के लिथे उसको दे दो। 9 और हमारे साय ब्याह किया करो; अपक्की
बेटियां हम को दिया करो, और हमारी बेटियोंको आप लिया करो। 10 और हमारे
संग बसे रहो: और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है; इस में रहकर लेनदेन करो,
और इसकी भूमि को अपके लिथे ले लो। 11 और शकेम ने भी दीना के पिता और
भाइयोंसे कहा, यदि मुझ पर तुम लोगोंकी अनुग्रह की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम
मुझ से कहा, सो मैं दूंगा। 12 तुम मुझ से कितना ही मूल्य वा बदला क्योंन मांगो,
तौभी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूंगा : परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिथे
मुझे दो। 13 तब यह सोचकर, कि शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है,
याकूब के पुत्रोंने शकेम और उसके पिता हमोर को छल के साय यह उत्तर दिया,
14 कि हम ऐसा काम नहीं कर सकते, कि किसी खतनारहित पुरूष को अपक्की
बहिन दें; क्योंकि इस से हमारी नामधराई होगी : 15 इस बात पर तो हम तुम्हारी

मान लेंगे, कि हमारी नाई तुम में से हर एक पुरूष का खतना किया जाए। 16 तब
हम अपक्की बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे, और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे, और
तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे, और हम दोनोंएक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएंगे। 17
पर यदि तुम हमारी बात न मानकर अपना खतना न कराओगे, तो हम अपक्की
लड़की को लेके यहां से चले जाएंगे। 18 उसकी इस बात पर हमोर और उसका पुत्र
शकेम प्रसन्न हुए। 19 और वह जवान, जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता या,
इस काम को करने में उस ने विलम्ब न किया। वह तो अपके पिता के सारे घराने
में अधिक प्रतिष्ठित या। 20 सो हमोर और उसका पुत्र शकेम अपके नगर के
फाटक के निकट जाकर नगरवासिक्कों योंसमझाने लगे; 21 कि वे मनुष्य तो
हमारे संग मेल से रहना चाहते हैं; सो उन्हें इस देश में रहके लेनदेन करने दो;
देखो, यह देश उनके लिथे भी बहुत है; फिर हम लोग उनकी बेटियोंको ब्याह लें,
और अपक्की बेटियोंको उन्हें दिया करें। 22 वे लोग केवल इस बात पर हमारे
संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं, कि उनकी नाई
हमारे सब पुरूषोंका भी खतना किया जाए। 23 क्या उनकी भेड़-बकरियां, और
गाय-बैल वरन उनके सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना की
करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे। 24 सो जितने उस
नगर के फाटक से निकलते थे, उन सभोंने हमोर की और उसके पुत्र शकेम की
बात मानी; और हर एक पुरूष का खतना किया गया, जितने उस नगर के फाटक
से निकलते थे। 25 तीसरे दिन, जब वे लोग पीड़ित पके थे, तब ऐसा हुआ कि
शिमोन और लेवी नाम याकूब के दो पुत्रोंने, जो दीना के भाई थे, अपक्की अपक्की
तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसकर सब पुरूषोंको घात किया। 26 और हमोर

और उसके पुत्र शकेम को उन्होंने तलवार से मार डाला, और दीना को शकेम के
घर से निकाल ले गए। 27 और याकूब के पुत्रोंने घात कर डालने पर भी चढ़कर
नगर को इसलिथे लूट लिया, कि उस में उनकी बहिन अशुद्ध की गई यी। 28
उन्होंने भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे, और नगर और मैदान में जितना
धन या ले लिया। 29 उस सब को, और उनके बाल-बच्चों, और स्त्रियोंको भी हर ले
गए, वरन घर घर में जो कुछ या, उसको भी उन्होंने लूट लिया। 30 तब याकूब ने
शिमोन और लेवी से कहा, तुम ने जो उस देश के निवासी कनानियोंऔर
परिज्जियोंके मन में मेरी ओर घृणा उत्पन्न कराई है, इस से तुम ने मुझे संकट
में डाला है, क्योंकि मेरे साय तो योड़े की लोग हैं, सो अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर
चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, सो मैं अपके घराने समेत सत्यानाश हो जाऊंगा। 31
उन्होंने कहा, क्या वह हमारी बहिन के साय वेश्या की नाई बर्ताव करे?

उत्पत्ति 35

1 तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, यहां से कूच करके बेतेल को जा, और वहीं रह:
और वहां ईश्वर के लिथे वेदी बना, जिस ने तुझे उस समय दर्शन दिया, जब तू
अपके भाई एसाव के डर से भागा जाता या। 2 तब याकूब ने अपके घराने से, और
उन सब से भी जो उसके संग थे, कहा, तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें
निकाल फेंको; और अपके अपके को शुद्ध करो, और अपके वस्त्र बदल डालो; 3
और आओ, हम यहां से कूच करके बेतेल को जाएं; वहां मैं ईश्वर के लिथे एक वेदी
बनाऊंगा, जिस ने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता या,
उस में मेरे संग रहा। 4 सो जितने पराए देवता उनके पास थे, और जितने कुण्डल

उनके कानोंमें थे, उन सभोंको उन्होंने याकूब को दिया; और उस ने उनको उस
सिन्दूर वृझ के नीचे, जो शकेम के पास है, गाड़ दिया। 5 तब उन्होंने कूच किया:
और उनके चारोंओर के नगर निवासियोंके मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय
समा गया, कि उन्होंने याकूब के पुत्रोंका पीछा न किया। 6 सो याकूब उन सब
समेत, जो उसके संग थे, कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी
कहलाता है। 7 वहां उस ने एक वेदी बनाई, और उस स्यान का नाम एलबेतेल
रखा; क्योंकि जब वह अपके भाई के डर से भागा जाता या तब परमेश्वर उस पर
वहीं प्रगट हुआ या। 8 और रिबका की दूध पिलानेहारी धाय दबोरा मर गई, और
बेतेल के नीचे सिन्दूर वृझ के तले उसको मिट्टी दी गई, और उस सिन्दूर वृझ
का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया।। 9 फिर याकूब के पद्दनराम से आने के
पश्चात् परमेश्वर ने दूसरी बार उसको दर्शन देकर आशीष दी। 10 और परमेश्वर ने
उस से कहा, अब तक तो तेरा नाम याकूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याकूब न
रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा : 11 फिर परमेश्वर ने उस से कहा, मैं सर्वशक्तिमान
ईश्वर हूं: तू फूले-फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन जातियोंकी एक
मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। 12 और जो देश मैं
ने इब्राहीम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूं, और तेरे पीछे तेरे वंश
को भी दूंगा। 13 तब परमेश्वर उस स्यान में, जहां उस ने याकूब से बातें की, उनके
पास से ऊपर चढ़ गया। 14 और जिस स्यान में परमेश्वर ने याकूब से बातें की,
वहां याकूब ने पत्यर का एक खम्बा खड़ा किया, और उस पर अर्घ देकर तेल डाल
दिया। 15 और जहां परमेश्वर ने याकूब से बातें की, उस स्यान का नाम उस ने
बेतेल रखा। 16 फिर उन्होंने बेतेल से कूच किया; और एप्राता योड़ी ही दूर रह

गया या, कि राहेल को बच्चा जनने की बड़ी पीड़ा आने लगी। 17 जब उसको बड़ी
बड़ी पीड़ा उठती यी तब धाय ने उस से कहा, मत डर; अब की भी तेरे बेटा ही
होगा। 18 तब ऐसा हुआ, कि वह मर गई, और प्राण निकलते निकलते उस ने उस
बेटे को नाम बेनोनी रखा: पर उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा। 19
योंराहेल मर गई, और एप्राता, अर्यात् बेतलेहेम के मार्ग में, उसको मिट्टी दी
गई। 20 और याकूब ने उसकी कब्र पर एक खम्भा खड़ा किया: राहेल की कब्र का
वही खम्भा आज तक बना है। 21 फिर इस्राएल ने कूच किया, और एदेर नाम
गुम्मट के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया। 22 जब इस्राएल उस देश में
बसा या, तब एक दिन ऐसा हुआ, कि रूबेन ने जाकर अपके पिता की रखेली
बिल्हा के साय कुकर्म किया : और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई।। 23
याकूब के बारह पुत्र हुए। उन में से लिआ: के पुत्र थे थे; अर्यात् याकूब का जेठा,
रूबेन, फिर शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, और जबूलून। 24 और राहेल के पुत्र
थे थे; अर्यात् यूसुफ, और बिन्यामीन। 25 और राहेल की लौन्डी बिल्हा के पुत्र थे
थे; अर्यात् दान, और नप्ताली। 26 और लिआ: की लौन्डी जिल्पा के पुत्र थे थे :
अर्यात् गाद, और आशेर; याकूब के थे ही पुत्र हुए, जो उस से पद्दनराम में उत्पन्न
हुए।। 27 और याकूब मम्रे में, जो करियतअर्बा, अर्यात् हब्रोन है, जहां इब्राहीम
और इसहाक परदेशी होकर रहे थे, अपके पिता इसहाक के पास आया। 28
इसहाक की अवस्या एक सौ अस्सी बरस की हुई। 29 और इसहाक का प्राण छूट
गया, और वह मर गया, और वह बूढा और पूरी आयु का होकर अपके लोगोंमें जा
मिला: और उसके पुत्र एसाव और याकूब ने उसको मिट्टी दी।।

उत्पत्ति 36

1 एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसकी यह वंशावली है। 2 एसाव ने तो कनानी
लड़कियां ब्याह लीं; अर्यात् हित्ती एलोन की बेटी आदा को, और अहोलीबामा को
जो अना की बेटी, और हिव्वी सिबोन की नतिनी यी। 3 फिर उस ने इश्माएल की
बेटी बासमत को भी, जो नबायोत की बहिन यी, ब्याह लिया। 4 आदा ने तो एसाव
के जन्माए एलीपज को, और बासमत ने रूएल को उत्पन्न किया। 5 और
ओहोलीबामा ने यूश, और यालाम, और कोरह को उत्पन्न किया, एसाव के थे ही
पुत्र कनान देश में उत्पन्न हुए। 6 और एसाव अपक्की पत्रियों, और बेटे-बेटियों,
और घर के सब प्राणियों, और अपक्की भेड़-बकरी, और गाय-बैल आदि सब
पशुओं, निदान अपक्की सारी सम्पत्ति को, जो उस ने कनान देश में संचय की यी,
लेकर अपके भाई याकूब के पास से दूसरे देश को चला गया। 7 क्योंकि उनकी
सम्पत्ति इतनी हो गई यी, कि वे इकट्ठे न रह सके; और पशुओं की बहुतायत के
मारे उस देश में, जहां वे परदेशी होकर रहते थे, उनकी समाई न रही। 8 एसाव जो
एदोम भी कहलाता है : सो सेईर नाम पहाड़ी देश में रहने लगा। 9 सेईर नाम
पहाड़ी देश में रहनेहारे एदोमियोंके मूल पुरूष एसाव की वंशावली यह है : 10
एसाव के पुत्रोंके नाम थे हैं; अर्यात् एसाव की पत्नी आदा का पुत्र एलीपज, और
उसी एसाव की पत्नी बासमत का पुत्र रूएल। 11 और एलीपज के थे पुत्र हुए;
अर्यात् तेमान, ओमार, सपो, गाताम, और कनज। 12 और एसाव के पुत्र एलीपज
के तिम्ना नाम एक सुरैतिन यी, जिस ने एलीपज के जन्माए अमालेक को जन्म
दिया : एसाव की पत्नी आदा के वंश में थे ही हुए। 13 और रूएल के थे पुत्र हुए;
अर्यात् नहत, जेरह, शम्मा, और मिज्जा : एसाव की पत्नी बासमत के वंश में थे
ही हुए। 14 और ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी, और सिबोन की नतिनी और

अना की बेटी यी, उसके थे पुत्र हुए : अर्यात् उस ने एसाव के जन्माए यूश, यालाम
और कोरह को जन्म दिया। 15 एसाववंशियोंके अधिपति थे हुए : अर्यात् एसाव
के जेठे एलीपज के वंश में से तो तेमान अधिपति, ओमार अधिपति, सपो
अधिपति, कनज अधिपति, 16 कोरह अधिपति, गाताम अधिपति, अमालेख
अधिपति : एलीपज वंशियोंमे से, एदोम देश में थे ही अधिपति हुए : और थे ही
आदा के वंश में हुए। 17 और एसाव के पुत्र रूएल के वंश में थे हुए; अर्यात् नहत
अधिपति, जेरह अधिपति, शम्मा अधिपति, मिज्जा अधिपति: रूएलवंशियोंमें
से, एदोम देश में थे ही अधिपति हुए; और थे ही एसाव की पत्नी बासमत के वंश में
हुए। 18 और एसाव की पत्नी ओहोलीबामा के वंश में थे हुए; अर्यात् यूश
अधिपति, यालाम अधिपति, कोरह अधिपति, अना की बेटी ओहोलीबामा जो
एसाव की पत्नी यी उसके वंश में थे ही हुए। 19 एसाव जो एदोम भी कहलाता है,
उसके वंश थे ही हैं, और उनके अधिपति भी थे ही हुए।। 20 सेईर जो होरी नाम
जाति का या उसके थे पुत्र उस देश में पहिले से रहते थे; अर्यात् लोतान, शोबाल,
शिबोन, अना, 21 दीशोन, एसेर, और दीशान; एदोम देश में सेईर के थे ही होरी
जातिवाले अधिपति हुए। 22 और लोतान के पुत्र, होरी, और हेमाम हुए; और
लोतान की बहिन तिम्ना यी। 23 और शोबाल के थे पुत्र हुए; अर्यात् आल्वान,
मानहत, एबाल, शपो, और ओनाम। 24 और सिदोन के थे पुत्र हुए; अर्यात् अय्या,
और अना; यह वही अना है जिस को जंगल में अपके पिता सिबोन के गदहोंको
चराते चराते गरम पानी के फरने मिले। 25 और अना के दीशोन नाम पुत्र हुआ,
और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई। 26 और दीशोन के थे पुत्र हुए;
अर्यात् हेमदान, एश्बान, यित्रान, और करान। 27 एसेर के थे पुत्र हुए; अर्यात्

बिल्हान, जावान, और अकान। 28 दीशान के थे पुत्र हुए; अर्यात् ऊस, और
अकान। 29 होरियोंके अधिपति थे हुए; अर्यात् लोतान अधिपति, शोबाल
अधिपति, शिबोन अधिपति, अना अधिपति, 30 दीशोन अधिपति, एसेर
अधिपति, दीशान अधिपति, सेईर देश में होरी जातिवाले थे ही अधिपति हुए। 31
फिर जब इस्राएलियोंपर किसी राजा ने राज्य न किया या, तब भी एदोम के देश
में थे राजा हुए; 32 अर्यात् बोर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया, और उसकी
राजधानी का नाम दिन्हाबा है। 33 बेला के मरने पर, बोस्रानिवासी जेरह का पुत्र
योबाब उसके स्यान पर राजा हुआ। 34 और योबाब के मरने पर, तेमानियोंके देश
का निवासी हूशाम उसके स्यान पर राजा हुआ। 35 और हूशाम के मरने पर, बदद
का पुत्र हदद उसके स्यान पर राजा हुआ : यह वही है जिस ने मिद्यानियोंको
मोआब के देश में मार लिया, और उसकी राजधानी का नाम अबीत है। 36 और
हदद के मरने पर, मस्रेकावासी सम्ला उसके स्यान पर राजा हुआ। 37 फिर
सम्ला के मरने पर, शाऊल जो महानद के तटवाले रहोबोत नगर का या, सो
उसके स्यान पर राजा हुआ। 38 और शाऊल के मरने पर, अकबोर का पुत्र
बाल्हानान उसके स्यान पर राजा हुआ। 39 और अकबोर के पुत्र बाल्हानान के
मरने पर, हदर उसके स्यान पर राजा हुआ : और उसकी राजधानी का नाम पाऊ
है; और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल है, जो मेजाहब की नतिनी और मत्रेद की
बेटी यी। 40 फिर एसाववंशियोंके अधिपतियोंके कुलों, और स्यानोंके अनुसार
उनके नाम थे हैं; अर्यात् तिम्ना अधिपति, अल्वा अधिपति, यतेत अधिपति, 41
ओहोलीबामा अधिपति, एला अधिपति, पीनोन अधिपति, 42 कनज अधिपति,
तेमान अधिपति, मिसबार अधिपति, 43 मग्दीएल अधिपति, ईराम अधिपति:

एदोमवंशियोंने जो देश अपना कर लिया या, उसके निवासस्यानोंमें उनके थे ही
अधिपति हुए। और एदोमी जाति का मूलपुरूष एसाव है।।

उत्पत्ति 37

1 याकूब तो कनान देश में रहता या, जहां उसका पिता परदेशी होकर रहा या। 2
और याकूब के वंश का वृत्तान्त यह है : कि यूसुफ सतरह वर्ष का होकर भाइयोंके
संग भेड़-बकरियोंको चराता या; और वह लड़का अपके पिता की पत्नी बिल्हा, और
जिल्पा के पुत्रोंके संग रहा करता या : और उनकी बुराईयोंका समाचार अपके
पिता के पास पहुंचाया करता या : 3 और इस्राएल अपके सब पुत्रोंसे बढ़के यूसुफ
से प्रीति रखता या, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र या : और उस ने उसके लिथे
रंग बिरंगा अंगरखा बनवाया। 4 सो जब उसके भाईयोंने देखा, कि हमारा पिता
हम सब भाइयोंसे अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उस से बैर करने लगे और
उसके साय ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे। 5 और यूसुफ ने एक स्वप्न देखा,
और अपके भाइयोंसे उसका वर्णन किया : तब वे उस से और भी द्वेष करने लगे।
6 और उस ने उन से कहा, जो स्वप्न मैं ने देखा है, सो सुनो : 7 हम लोग खेत में
पूले बान्ध रहे हैं, और क्या देखता हूं कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब
तुम्हारे पूलोंने मेरे पूले को चारोंतरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया। 8 तब
उसके भाइयोंने उस से कहा, क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा ? वा
सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा ? सो वे उसके स्वप्नोंऔर उसकी बातोंके कारण
उस से और भी अधिक बैर करने लगे। 9 फिर उस ने एक और स्वप्न देखा, और
अपके भाइयोंसे उसका भी योंवर्णन किया, कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा

है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं। 10 यह स्वप्न
उस ने अपके पिता, और भाइयोंसे वर्णन किया : तब उसके पिता ने उसको
दपटके कहा, यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता
और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत् करेंगे? 11 उसके भाई
तो उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा। 12
और उसके भाई अपके पिता की भेड़-बकरियोंको चराने के लिथे शकेम को गए।
13 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, तेरे भाई तो शकेम ही में भेड़-बकरी चरा रहें
होंगे, सो जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हूं। उस ने उस से कहा जो आज्ञा मैं हाजिर
हूं। 14 उस ने उस से कहा, जा, अपके भाइयोंऔर भेड़-बकरियोंका हाल देख आ
कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ। सो उस ने उसको हेब्रोन की
तराई में विदा कर दिया, और वह शकेम में आया। 15 और किसी मनुष्य ने
उसको मैदान में इधर उधर भटकते हुए पाकर उस से पूछा, तू क्या ढूंढता है? 16
उस ने कहा, मैं तो अपके भाइयोंको ढूंढता हूं : कृपा कर मुझे बता, कि वे
भेड़-बकरियोंको कहां चरा रहे हैं? 17 उस मनुष्य ने कहा, वे तो यहां से चले गए हैं
: और मैं ने उनको यह कहते सुना, कि आओ, हम दोतान को चलें। सो यूसुफ
अपके भाइयोंके पास चला, और उन्हें दोतान में पाया। 18 और ज्योंही उन्होंने
उसे दूर से आते देखा, तो उसके निकट आने के पहिले ही उसे मार डालने की युक्ति
की। 19 और वे आपस में कहने लगे, देखो, वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है। 20
सो आओ, हम उसको घात करके किसी गड़हे में डाल दें, और यह कह देंगे, कि
कोई दुष्ट पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नोंका क्या फल
होगा। 21 यह सुनके रूबेन ने उसको उनके हाथ से बचाने की मनसा से कहा, हम

उसको प्राण से तो न मारें। 22 फिर रूबेन ने उन से कहा, लोहू मत बहाओ, उसको
जंगल के इस गड़हे में डाल दो, और उस पर हाथ मत उठाओ। वह उसको उनके
हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुंचाना चाहता या। 23 सो ऐसा हुआ, कि जब
यूसुफ अपके भाइयोंके पास पहुंचा तब उन्होंने उसका रंगबिरंगा अंगरखा, जिसे
वह पहिने हुए या, उतार लिया। 24 और यूसुफ को उठाकर गड़हे में डाल दिया :
वह गड़हा तो सूखा या और उस में कुछ जल न या। 25 तब वे रोटी खाने को बैठ
गए : और आंखे उठाकर क्या देखा, कि इश्माएलियोंका एक दल ऊंटो पर
सुगन्धद्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस्र को चला जा रहा
है। 26 तब यहूदा ने अपके भाइयोंसे कहा, अपके भाई को घात करने और उसका
खून छिपाने से क्या लाभ होगा ? 27 आओ, हम उसे इश्माएलियोंके हाथ बेच
डालें, और अपना हाथ उस पर न उठाएं, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी हड्डी
और मांस है, सो उसके भाइयोंने उसकी बात मान ली। तब मिद्यानी व्यापारी उधर
से होकर उनके पास पहुंचे : 28 सो यूसुफ के भाइयोंने उसको उस गड़हे में से
खींचके बाहर निकाला, और इश्माएलियोंके हाथ चांदी के बीस टुकड़ोंमें बेच दिया
: और वे यूसुफ को मिस्र में ले गए। 29 और रूबेन ने गड़हे पर लौटकर क्या देखा,
कि यूसुफ गड़हे में नहीं हैं; सो उस ने अपके वस्त्र फाड़े। 30 और अपके भाइयोंके
पास लौटकर कहने लगा, कि लड़का तो नहीं हैं; अब मैं किधर जाऊं ? 31 और तब
उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया, और एक बकरे को मारके उसके लोहू में उसे
डुबा दिया। 32 और उन्होंने उस रंग बिरंगे अंगरखे को अपके पिता के पास
भेजकर कहला दिया; कि यह हम को मिला है, सो देखकर पहिचान ले, कि यह
तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं। 33 उस ने उसको पहिचान लिया, और कहा, हां

यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है; नि:सन्देह
यूसुफ फाड़ डाला गया है। 34 तब याकूब ने अपके वस्त्र फाड़े और कमर में टाट
लपेटा, और अपके पुत्र के लिथे बहुत दिनोंतक विलाप करता रहा। 35 और उसके
सब बेटे-बेटियोंने उसको शान्ति देने का यत्न किया; पर उसको शान्ति न मिली;
और वह यही कहता रहा, मैं तो विलाप करता हुआ अपके पुत्र के पास अधोलोक
में उतर जाऊंगा। इस प्रकार उसका पिता उसके लिथे रोता ही रहा। 36 और
मिद्यानियोंने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर नाम, फिरौन के एक हाकिम,
और जल्लादोंके प्रधान, के हाथ बेच डाला।।

उत्पत्ति 38

1 उन्हीं दिनोंमें ऐसा हुआ, कि यहूदा अपके भाईयोंके पास से चला गया, और हीरा
नाम एक अदुल्लामवासी पुरूष के पास डेरा किया। 2 वहां यहूदा ने शूआ नाम
एक कनानी पुरूष की बेटी को देखा; और उसको ब्याहकर उसके पास गया। 3 वह
गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर
रखा। 4 और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसका
नाम ओनान रखा गया। 5 फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका
नाम शेला रखा गया : और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा
कजीब में रहता या। 6 और यहूदा ने तामार नाम एक स्त्री से अपके जेठे एर का
विवाह कर दिया। 7 परन्तु यहूदा का वह जेठा एर यहोवा के लेखे में दुष्ट या,
इसलिथे यहोवा ने उसको मार डाला। 8 तब यहूदा ने ओनान से कहा, अपक्की
भौजाई के पास जा, और उसके साय देवर का धर्म पूरा करके अपके भाई के लिथे

सन्तान उत्पन्न कर। 9 ओनान तो जानता या कि सन्तान तो मेरी न ठहरेगी: सो
ऐसा हुआ, कि जब वह अपक्की भौजाई के पास गया, तब उस ने भूमि पर वीर्य
गिराकर नाश किया, जिस से ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले। 10
यह काम जो उस ने किया उसे यहोवा अप्रसन्न हुआ: और उस ने उसको भी मार
डाला। 11 तब यहूदा ने इस डर के मारे, कि कहीं ऐसा न हो कि अपके भाइयोंकी
नाई शेला भी मरे, अपक्की बहू तामार से कहा, जब तक मेरा पुत्र शेला सियाना न
हो तब तक अपके पिता के घर में विधवा की बैठी रह, सो तामार अपके पिता के
घर में जाकर रहने लगी। 12 बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ
की बेटी यी सो मर गई; फिर यहूदा शोक से छूटकर अपके मित्र हीरा
अदुल्लामवासी समेत अपक्की भेड़-बकरियोंका ऊन कतराने के लिथे तिम्नाय
को गया। 13 और तामार को यह समाचार मिला, कि तेरा ससुर अपक्की
भेड़-बकरियोंका ऊन कतराने के लिथे तिम्नाय को जा रहा है। 14 तब उस ने यह
सोचकर, कि शेला सियाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना
विधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डालकर अपके को ढांप लिया, और
एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाय के मार्ग में है, जा बैठी: 15 जब यहूदा
ने उसको देखा, उस ने उस को वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढ़ापे हुए यी।
16 और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा और उस से कहने लगा, मुझे अपके पास
आने दे, (क्योंकि उसे यह मालूम न या कि वह उसकी बहू है)। और वह कहने
लगी, कि यदि मैं तुझे अपके पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा? 17 उस ने कहा,
मैं अपक्की बकरियोंमें से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। 18 उस ने
पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपक्की मुहर, और

बाजूबन्द, और अपके हाथ की छड़ी। तब उस ने उसको वे वसतुएं दे दीं, और
उसके पास गया, और वह उस से गर्भवती हुई। 19 तब वह उठकर चक्की गई,
और अपना घूंघट उतारके अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिन लिया। 20
तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपके मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया,
कि वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको
न मिली। 21 तब उस ने वहां के लोगोंसे पूछा, कि वह देवदासी जो एनैम में मार्ग
की एक और बैठी यी, कहां है? उन्होंने कहा, यहां तो कोई देवदासी न यी। 22 सो
उस ने यहूदा के पास लौटके कहा, मुझे वह नहीं मिली; और उस स्यान के लोगोंने
कहा, कि यहां तो कोई देवदासी न यी। 23 तब यहूदा ने कहा, अच्छा, वह बन्धक
उस के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे: देख, मैं ने बकरी का
यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुझे नहीं मिली। 24 और तीन महीने के पीछे यहूदा
को यह समाचार मिला, कि तेरी बहू तामार ने व्यभिचार किया है; वरन वह
व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले आओ, कि
वह जलाई जाए। 25 जब उसे बाहर निकाल रहे थे, तब उस ने, अपके ससुर के
पास यह कहला भेजा, कि जिस पुरूष की थे वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूं; फिर
उस ने यह भी कहलाया, कि पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और वाजूबन्द, और
छड़ी किस की है। 26 यहूदा ने उन्हें पहिचानकर कहा, वह तो मुझ से कम दोषी है;
क्योंकि मैं ने उसे अपके पुत्र शेला को न ब्याह दिया। और उस ने उस से फिर कभी
प्रसंग न किया। 27 जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि
उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं। 28 और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने
अपना हाथ बढ़ाया: और धाय ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुथे

बान्ध दिया, कि पहिले यही उत्पन्न हुआ। 29 जब उस ने हाथ समेट लिया, तब
उसका भाई उत्पन्न हो गया: तब उस धाय ने कहा, तू क्योंबरबस निकल आया है
? इसलिथे उसका नाम पेरेस रखा गया। 30 पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल
सूत बन्धा या उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया।।

उत्पत्ति 39

1 जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फिरौन का
हाकिम, और जल्लादोंका प्रधान या, उस ने उसको इश्माएलियोंके हाथ, से जो
उसे वहां ले गए थे, मोल लिया। 2 और यूसुफ अपके मिस्री स्वामी के घर में रहता
या, और यहोवा उसके संग या; सो वह भाग्यवान् पुरूष हो गया। 3 और यूसुफ के
स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको
यहोवा उसके हाथ से सुफल कर देता है। 4 तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर
हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिथे नियुक्त किया गया : फिर उस ने
उसको अपके घर का अधिक्कारनी बनाके अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप
दिया। 5 और जब से उस ने उसको अपके घर का और अपक्की सारी सम्पत्ति का
अधिक्कारनी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष
देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ या, सब पर यहोवा की
आशीष होने लगी। 6 सो उस ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़
दिया: कि अपके खाने की रोटी को छोड़, वह अपक्की सम्पत्ति का हाल कुछ न
जानता या। और यूसुफ सुन्दर और रूपवान् या। 7 इन बातोंके पश्चात् ऐसा हुआ,
कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साय सो।

8 पर उस ने अस्वीकार करते हुए अपके स्वामी की पत्नी से कहा, सुन, जो कुछ
इस घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उस ने अपना
सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है। 9 इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उस
ने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा; सो भला, मैं ऐसी बड़ी
दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं ? 10 और ऐसा हुआ, कि वह प्रति
दिन यूसुफ से बातें करती रही, पर उस ने उसकी न मानी, कि उसके पास लेटे वा
उसके संग रहे। 11 एक दिन क्या हुआ, कि यूसुफ अपना काम काज करने के
लिथे घर में गया, और घर के सेवकोंमें से कोई भी घर के अन्दर न या। 12 तब
उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, मेरे साय सो, पर वह अपना वस्त्र उसके
हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। 13 यह देखकर, कि वह अपना
वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया, 14 उस स्त्री ने अपके घर के सेवकोंको
बुलाकर कहा, देखो, वह एक इब्री मनुष्य को हमारा तिरस्कार करने के लिथे
हमारे पास ले आया है। वह तो मेरे साय सोने के मतलब से मेरे पास अन्दर आया
या और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी। 15 और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह
अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। 16 और वह उसका
वस्त्र उसके स्वामी के घर आने तक अपके पास रखे रही। 17 तब उस ने उस से
इस प्रकार की बातें कहीं, कि वह इब्री दास जिसको तू हमारे पास ले आया है, सो
मुझ से हंसी करने के लिथे मेरे पास आया या। 18 और जब मैं ऊंचे स्वर से
चिल्ला उठी, तब वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया। 19 अपक्की
पत्नी की थे बातें सुनकर, कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया, यूसुफ के
स्वामी का कोप भड़का। 20 और यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में,

जहां राजा के कैदी बन्द थे, डलवा दिया : सो वह उस बन्दीगृह में रहने लगा। 21
पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करूणा की, और बन्दीगृह के
दरोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। 22 सो बन्दीगृह के दरोगा ने उन सब
बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौप दिया; और जो जो काम वे
वहां करते थे, वह उसी की आज्ञा से होता या। 23 बन्दीगृह के दरोगा के वश में जो
कुछ या; क्योंकि उस में से उसको कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती यी; इसलिथे कि
यहोवा यूसुफ के साय या; और जो कुछ वह करता या, यहोवा उसको उस में
सफलता देता या।

उत्पत्ति 40

1 इन बातोंके पश्चात् ऐसा हुआ, कि मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने
अपके स्वामी का कुछ अपराध किया। 2 तब फिरौन ने अपके उन
दोनोंहाकिमोंपर, अर्यात् पिलानेहारे के प्रधान, और पकानेहारोंके प्रधान पर
क्रोधित होकर 3 उन्हें कैद कराके, जल्लादोंके प्रधान के घर के उसी बन्दीगृह में,
जहां यूसुफ बन्धुआ या, डलवा दिया। 4 तब जल्लादोंके प्रधान ने उनको यूसुफ के
हाथ सौपा, और वह उनकी सेवा टहल करने लगा: सो वे कुछ दिन तक बन्दीगृह
में रहे। 5 और मिस्र के राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा, जो बन्दीगृह में
बन्द थे, उन दोनोंने एक ही रात में, अपके अपके होनहार के अनुसार, स्वप्न
देखा। 6 बिहान को जब यूसुफ उनके पास अन्दर गया, तब उन पर उस ने जो
दृष्टि की, तो क्या देखता है, कि वे उदास हैं। 7 सो उस ने फिरौन के उन हाकिमोंसे,
जो उसके साय उसके स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, कि आज तुम्हारे मुंह

क्योंउदास हैं ? 8 उन्होंने उस से कहा, हम दोनो ने स्वप्न देखा है, और उनके फल
का बतानेवाला कोई भी नहीं। यूसुफ ने उन से कहा, क्या स्वप्नोंका फल कहना
परमेश्वर का काम नहीं है? मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ। 9 तब
पिलानेहारोंका प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को योंबताने लगा: कि मैं ने स्वप्न में
देखा, कि मेरे साम्हने एक दाखलता है; 10 और उस दाखलता में तीन डालियां हैं:
और उस में मानो कलियां लगीं हैं, और वे फूलीं और उसके गुच्छोंमें दाख लगकर
पक गई। 11 और फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में या: सो मै ने उन दाखोंको लेकर
फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को फिरौन के हाथ में दिया। 12 यूसुफ ने
उस से कहा, इसका फल यह है; कि तीन डालियोंका अर्थ तीन दिन है: 13 सो अब
से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर ऊंचा करेगा, और फिर से तेरे पद पर तुझे
नियुक्त करेगा, और तू पहले की नाई फिरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा
उसके हाथ में फिर दिया करेगा। 14 सो जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण
करना, और मुझ पर कृपा करके, फिरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से
मुझे छुड़वा देना। 15 क्योंकि सचमुच इब्रानियोंके देश से मुझे चुरा कर ले आए हैं,
और यहां भी मै ने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में
डाला जाऊं। 16 यह देखकर, कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला,
पकानेहारोंके प्रधान ने यूसुफ से कहा, मैं ने भी स्वप्न देखा है, वह यह है: मै ने
देखा, कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियां है: 17 और ऊपर की टोकरी
में फिरौन के लिथे सब प्रकार की पक्की पकाई वस्तुएं हैं; और पक्की मेरे सिर पर
की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं। 18 यूसुफ ने कहा, इसका फल यह है;
कि तीन टोकरियोंका अर्थ तीन दिन है। 19 सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन

तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृझ पर टंगवा देगा, और पक्की तेरे मांस को नोच
नोच कर खाएंगे। 20 और तीसरे दिन फिरौन का जन्मदिन या, उस ने अपके सब
कर्मचारियोंकी जेवनार की, और उन में से पिलानेहारोंके प्रधान, और
पकानेहारोंके प्रधान दोनोंको बन्दीगृह से निकलवाया। 21 और पिलानेहारोंके
प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया, और वह फिरौन के हाथ
में कटोरा देने लगा। 22 पर पकानेहारोंके प्रधान को उस ने टंगवा दिया, जैसा कि
यूसुफ ने उनके स्वप्नोंका फल उन से कहा या। 23 फिर भी पिलानेहारोंके प्रधान
ने यूसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया।।

उत्पत्ति 41

1 पूरे दो बरस के बीतने पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा, कि वह नील नदी के
किनारे पर खड़ा है। 2 और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गाथें
निकलकर कछार की घास चरने लगीं। 3 और, क्या देखा, कि उनके पीछे और
सात गाथें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकली; और दूसरी गायोंके निकट
नदी के तट पर जा खड़ी हुई। 4 तब थे कुरूप और दुर्बल गाथें उन सात सुन्दर
और मोटी मोटी गायोंको खा गई। तब फिरौन जाग उठा। 5 और वह फिर सो गया
और दूसरा स्वप्न देखा, कि एक डंठी में से सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें
निकलीं। 6 और, क्या देखा, कि उनके पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से
मुरफाई हुई निकलीं। 7 और इन पतली बालोंने उन सातोंमोटी और अन्न से भरी
हुई बालोंको निगल लिया। तब फिरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि यह
स्वप्न ही या। 8 भोर को फिरौन का मन व्याकुल हुआ; और उस ने मिस्र के सब

ज्योतिषियों, और पण्डितोंको बुलवा भेजा; और उनको अपके स्वप्न बताएं; पर
उन में से कोई भी उनका फल फिरौन से न कह सहा। 9 तब पिलानेहारोंका प्रधान
फिरौन से बोल उठा, कि मेरे अपराध आज मुझे स्मरण आए: 10 जब फिरौन
अपके दासोंसे क्रोधित हुआ या, और मुझे और पकानेहारोंके प्रधान को कैद कराके
जल्लादोंके प्रधान के घर के बन्दीगृह में डाल दिया या; 11 तब हम दोनोंने, एक
ही रात में, अपके अपके होनहार के अनुसार स्वप्न देखा; 12 और वहां हमारे साय
एक इब्री जवान या, जो जल्लादोंके प्रधान का दास या; सो हम ने उसको बताया,
और उस ने हमारे स्वप्नोंका फल हम से कहा, हम में से एक एक के स्वप्न का
फल उस ने बता दिया। 13 और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा या, वैसा की
हुआ भी, अर्यात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर वह फांसी पर लटकाया
गया। 14 तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। और वह फटपट बन्दीगृह से
बाहर निकाला गया, और बाल बनवाकर, और वस्त्र बदलकर फिरौन के साम्हने
आया। 15 फिरौन ने यूसुफ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का
बतानेवाला कोई भी नहीं; और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही
उसका फल बता सकता है। 16 यूसुफ ने फिरौन से कहा, मै तो कुछ नहीं जानता :
परमेश्वर ही फिरौन के लिथे शुभ वचन देगा। 17 फिर फिरौन यूसुफ से कहने
लगा, मै ने अपके स्वप्न में देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूं 18 फिर,
क्या देखा, कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गाथें निकलकर कछार की
घास चरने लगी। 19 फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात और गाथें निकली, जो
दुबली, और बहुत कुरूप, और दुर्बल हैं; मै ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल
गाथें कभी नहीं देखीं। 20 और इन दुर्बल और कुडौल गायोंने उन पहली सातोंमोटी

मोटी गायोंको खा लिया। 21 और जब वे उनको खा गई तब यह मालूम नहीं होता
था कि वे उनको खा गई हैं, क्योंकि वे पहिले की नाई जैसी की तैसी कुडौल रहीं।
तब मैं जाग उठा। 22 फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठी में सात
अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकलीं। 23 फिर, क्या देखता हूं, कि
उनके पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुरफाई हुई
निकलीं। 24 और इन पतली बालोंने उन सात अच्छी अच्छी बालोंको निगल
लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियोंको बताया, पर इस का समझनेहारा कोई नहीं
मिला। 25 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, फिरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो
काम किया चाहता है, उसको उस ने फिरौन को जताया है। 26 वे सात अच्छी
अच्छी गाथें सात वर्ष हैं; और वे सात अच्छी अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं; स्वप्न
एक ही है। 27 फिर उनके पीछे जो दुर्बल और कुडौल गाथें निकलीं, और जो सात
छूछी और पुरवाई से मुरफाई हुई बालें निकाली, वे अकाल के सात वर्ष होंगे। 28
यह वही बात है, जो मैं फिरौन से कह चुका हूं, कि परमेश्वर जो काम किया चाहता
है, उसे उस ने फिरौन को दिखाया है। 29 सुन, सारे मिस्र देश में सात वर्ष तो
बहुतायत की उपज के होंगे। 30 उनके पश्चात् सात वर्ष अकाल के आथेंगे, और
सारे मिस्र देश में लोग इस सारी उपज को भूल जाथेंगे; और अकाल से देश का
नाश होगा। 31 और सुकाल (बहुतायत की उपज) देश में फिर स्मरण न रहेगा
क्योंकि अकाल अत्यन्त भयंकर होगा। 32 और फिरौन ने जो यह स्वप्न दो बार
देखा है इसका भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है,
और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा। 33 इसलिथे अब फिरौन किसी समझदार
और बुद्धिमान् पुरूष को ढूंढ़ करके उसे मिस्र देश पर प्रधानमंत्री ठहराए। 34

फिरौन यह करे, कि देश पर अधिक्कारनेियोंको नियुक्त करे, और जब तक
सुकाल के सात वर्ष रहें तब तक वह मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे।
35 और वे इन अच्छे वर्षोंमें सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्‌ठा करें, और नगर
नगर में भण्डार घर भोजन के लिथे फिरौन के वश में करके उसकी रझा करें। 36
और वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात वर्षोंके लिथे, जो मिस्र देश में आएंगे,
देश के भोजन के निमित्त रखी रहे, जिस से देश उस अकाल से स्त्यानाश न हो
जाए। 37 यह बात फिरौन और उसके सारे कर्मचारियोंको अच्छी लगी। 38 सो
फिरौन ने अपके कर्मचारियोंसे कहा, कि क्या हम को ऐसा पुरूष जैसा यह है,
जिस में परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है ? 39 फिर फिरौन ने यूसुफ
से कहा, परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार
और बुद्धिमान्‌ नहीं; 40 इस कारण तू मेरे घर का अधिक्कारनी होगा, और तेरी
आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय में तुझ से बड़ा
ठहरूंगा। 41 फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, सुन, मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के
ऊपर अधिक्कारनी ठहरा देता हूं 42 तब फिरौन ने अपके हाथ से अंगूठी
निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दी; और उसको बढ़िया मलमल के वस्त्र
पहिनवा दिए, और उसके गले में सोने की जंजीर डाल दी; 43 और उसको अपके
दूसरे रय पर चढ़वाया; और लोग उसके आगे आगे यह प्रचार करते चले, कि
घुटने टेककर दण्डवत करो और उस ने उसको मिस्र के सारे देश के ऊपर प्रधान
मंत्री ठहराया। 44 फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, फिरौन तो मैं हूं, और सारे मिस्र
देश में कोई भी तेरी आज्ञा के बिना हाथ पांव न हिलाएगा। 45 और फिरौन ने
यूसुफ का नाम सापनत्पानेह रखा। और ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी

आसनत से उसका ब्याह करा दिया। और यूसुफ मिस्र के सारे देश में दौरा करने
लगा। 46 जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरौन के सम्मुख खड़ा हुआ, तब वह तीस
वर्ष का या। सो वह फिरौन के सम्मुख से निकलकर मिस्र के सारे देश में दौरा
करने लगा। 47 सुकाल के सातोंवर्षोंमें भूमि बहुतायत से अन्न उपजाती रही। 48
और यूसुफ उन सातोंवर्षोंमें सब प्रकार की भोजनवस्तुएं, जो मिस्र देश में होती
यीं, जमा करके नगरोंमें रखता गया, और हर एक नगर के चारोंओर के खेतोंकी
भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में इकट्‍ठा करता गया। 49 सो यूसुफ ने अन्न
को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रखा, यहां
तक कि उस ने उनका गिनना छोड़ दिया; क्योंकि वे असंख्य हो गई। 50 अकाल
के प्रयम वर्ष के आने से पहिले यूसुफ के दो पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी
आसनत से जन्मे। 51 और यूसुफ ने अपके जेठे का नाम यह कहके मनश्शे रखा,
कि परमेश्वर ने मुझ से सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।
52 और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एप्रैम रखा, कि मुझे दु:ख भोगने के देश
में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है। 53 और मिस्र देश के सुकाल के वे सात वर्ष
समाप्त हो गए। 54 और यूसुफ के कहने के अनुसार सात वर्षोंके लिथे अकाल
आरम्भ हो गया। और सब देशोंमें अकाल पड़ने लगा; परन्तु सारे मिस्र देश में
अन्न या। 55 जब मिस्र का सारा देश भूखोंमरने लगा; तब प्रजा फिरोन से चिल्ला
चिल्लाकर रोटी मांगने लगी : और वह सब मिस्रियोंसे कहा करता या, यूसुफ के
पास जाओ: और जो कुछ वह तुम से कहे, वही करो। 56 सो जब अकाल सारी
पृय्वी पर फैल गया, और मिस्र देश में काल का भयंकर रूप हो गया, तब यूसुफ
सब भण्डारोंको खोल खोलके मिस्रियोंके हाथ अन्न बेचने लगा। 57 सो सारी

पृय्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिथे यूसुफ के पास आने लगे, क्योंकि
सारी पृय्वी पर भयंकर अकाल या।

उत्पत्ति 42

1 जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तब उस ने अपके पुत्रोंसे कहा, तुम एक
दूसरे का मुंह क्योंदेख रहे हो। 2 फिर उस ने कहा, मैं ने सुना है कि मिस्र में अन्न
है; इसलिथे तुम लोग वहां जाकर हमारे लिथे अन्न मोल ले आओ, जिस से हम न
मरें, वरन जीवित रहें। 3 सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिथे मिस्र को
गए। 4 पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचकर भाइयोंके साय न
भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई विपत्ति आ पके। 5 सो जो लोग अन्न
मोल लेने आए उनके साय इस्राएल के पुत्र भी आए; क्योंकि कनान देश में भी
भारी अकाल या। 6 यूसुफ तो मिस्र देश का अधिक्कारनी या, और उस देश के सब
लोगोंके हाथ वही अन्न बेचता या; इसलिथे जब यूसुफ के भाई आए तब भूमि पर
मुंह के बल गिरके दण्डवत् किया। 7 उनको देखकर यूसुफ ने पहिचान तो लिया,
परन्तु उनके साम्हने भोला बनके कठोरता के साय उन से पूछा, तुम कहां से आते
हो? उन्होंने कहा, हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने के लिथे आए हैं। 8 यूसुफ
ने तो अपके भाइयोंको पहिचान लिया, परन्तु उन्होंने उसको न पहिचाना। 9 तब
यूसुफ अपके उन स्वप्नोंको स्मरण करके जो उस ने उनके विषय में देखे थे, उन
से कहने लगा, तुम भेदिए हो; इस देश की दुर्दशा को देखने के लिथे आए हो। 10
उन्होंने उस से कहा, नहीं, नहीं, हे प्रभु, तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने के लिथे
आए हैं। 11 हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं, तेरे दास भेदिए

नहीं। 12 उस ने उन से कहा, नहीं नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आए
हो। 13 उन्होंने कहा, हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही
पुरूष के पुत्र हैं, और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है, और एक जाता रहा।
14 तब यूसुफ ने उन से कहा, मैं ने तो तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो; 15 सो
इसी रीति से तुम परखे जाओगे, फिरौन के जीवन की शपय, जब तक तुम्हारा
छोटा भाई यहां न आए तब तक तुम यहां से न निकलने पाओगे। 16 सो अपके में
से एक को भेज दो, कि वह तुम्हारे भाई को ले आए, और तुम लोग बन्धुवाई में
रहोगे; इस प्रकार तुम्हारी बातें परखी जाएंगी, कि तुम में सच्चाई है कि नहीं।
यदि सच्चे न ठहरे तब तो फिरौन के जीवन की शपय तुम निश्चय ही भेदिए
समझे जाओगे। 17 तब उस ने उनको तीन दिन तक बन्दीगृह में रखा। 18 तीसरे
दिन यूसुफ ने उन से कहा, एक काम करो तब जीवित रहोगे; क्योंकि मैं परमेश्वर
का भय मानता हूं; 19 यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम सब भाइयोंमें से एक जन
इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे; और तुम अपके घरवालोंकी भूख बुफाने के लिथे
अन्न ले जाओ। 20 और अपके छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; इस प्रकार
तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी, और तुम मार डाले न जाओगे। तब उन्होंने वैसा ही
किया। 21 उन्होंने आपस में कहा, निस्सन्देह हम अपके भाई के विषय में दोषी हैं,
क्योंकि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती की, तौभी हम ने यह देखकर, कि
उसका जीवन केसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस
संकट में पके हैं। 22 रूबेन ने उन से कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा या, कि लड़के
के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना : देखो, अब उसके लोहू का पलटा
दिया जाता है। 23 यूसुफ की और उनकी बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती

यी; इस से उनको मालूम न हुआ कि वह उनकी बोली समझता है। 24 तब वह
उनके पास से हटकर रोने लगा; फिर उनके पास लौटकर और उन से बातचीत
करके उन में से शिमोन को छांट निकाला और उसके साम्हने बन्धुआ रखा। 25
तब यूसुफ ने आज्ञा दी, कि उनके बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में
उसके रूपके को भी रख दो, फिर उनको मार्ग के लिथे सीधा दो : सो उनके साय
ऐसा ही किया गया। 26 तब वे अपना अन्न अपके गदहोंपर लादकर वहां से चल
दिए। 27 सराय में जब एक ने अपके गदहे को चारा देने के लिथे अपना बोरा
खोला, तब उसका रूपया बोरे के मोहड़े पर रखा हुआ दिखलाई पड़ा। 28 तब उस
ने अपके भाइयोंसे कहा, मेरा रूपया तो फेर दिया गया है, देखो, वह मेरे बोरे में है;
तब उनके जी में जी न रहा, और वे एक दूसरे की और भय से ताकने लगे, और
बोले, परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है ? 29 और वे कनान देश में अपके पिता
याकूब के पास आए, और अपना सारा वृत्तान्त उस से इस प्रकार वर्णन किया : 30
कि जो पुरूष उस देश का स्वामी है, उस ने हम से कठोरता के साय बातें कीं, और
हम को देश के भेदिए कहा। 31 तब हम ने उस से कहा, हम सीधे लोग हैं, भेदिए
नहीं। 32 हम बारह भाई एक ही पिता के पुत्र है, एक तो जाता रहा, परन्तु छोटा
इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है। 33 तब उस पुरूष ने, जो उस देश
का स्वामी है, हम से कहा, इस से मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे मनुष्य हो; तुम
अपके में से एक को मेरे पास छोड़के अपके घरवालोंकी भूख बुफाने के लिथे कुछ
ले जाओ। 34 और अपके छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। तब मुझे विश्वास हो
जाएगा कि तुम भेदिए नहीं, सीधे लोग हो। फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंप
दूंगा, और तुम इस देश में लेन देन कर सकोगे। 35 यह कहकर वे अपके अपके

बोरे से अन्न निकालने लगे, तब, क्या देखा, कि एक एक जन के रूपके की यैली
उसी के बोरे में रखी है : तब रूपके की यैलियोंको देखकर वे और उनका पिता
बहुत डर गए। 36 तब उनके पिता याकूब ने उन से कहा, मुझ को तुम ने निर्वंश
कर दिया, देखो, यूसुफ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम
बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो : थे सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पक्की हैं।
37 रूबेन ने अपके पिता से कहा, यदि मैं उसको तेरे पास न लाऊं, तो मेरे
दोनोंपुत्रोंको मार डालना; तू उसको मेरे हाथ में सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर
पहुंचा दूंगा। 38 उस ने कहा, मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा; क्योंकि उसका भाई
मर गया है, और वह अब अकेला रह गया : इसलिथे जिस मार्ग से तुम जाओगे,
उस में यदि उस पर कोई विपत्ति आ पके, तब तो तुम्हारे कारण मैं इस बुढ़ापे की
अवस्या में शोक के साय अधोलोक में उतर जाऊंगा।।

उत्पत्ति 43

1 और अकाल देश में और भी भयंकर होता गया। 2 जब वह अन्न जो वे मिस्र से
ले आए थे समाप्त हो गया तब उनके पिता ने उन से कहा, फिर जाकर हमारे लिथे
योड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। 3 तब यहूदा ने उस से कहा, उस पुरूष ने
हम को चितावनी देकर कहा, कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम
मेरे सम्मुख न आने पाओगे। 4 इसलिथे यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे,
तब तो हम जाकर तेरे लिथे भोजनवस्तु मोल ले आएंगे; 5 परन्तु यदि तू उसको
न भेजे, तो हम न जाएंगे : क्योंकि उस पुरूष ने हम से कहा, कि यदि तुम्हारा
भाई तुम्हारे संग न हो, तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे। 6 तब इस्राएल ने

कहा, तुम ने उस पुरूष को यह बताकर कि हमारा एक और भाई है, क्योंमुझ से
बुरा बर्ताव किया ? 7 उन्होंने कहा, जब उस पुरूष ने हमारी और हमारे
कुटुम्बियोंकी दशा को इस रीति पूछा, कि क्या तुम्हारा पिता अब तक जीवित है?
क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है ? तब हम ने इन प्रश्नोंके अनुसार उस से वर्णन
किया; फिर हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, कि अपके भाई को यहां ले आओ।
8 फिर यहूदा ने अपके पिता इस्राएल से कहा, उस लड़के को मेरे संग भेज दे, कि
हम चले जाएं; इस से हम, और तू, और हमारे बालबच्चे मरने न पाएंगे, वरन
जीवित रहेंगे। 9 मैं उसका जामिन होता हूं; मेरे ही हाथ से तू उसको फेर लेना:
यदि मैं उसको तेरे पास पहुंचाकर साम्हने न खड़ाकर दूं, तब तो मैं सदा के लिथे
तेरा अपराधी ठहरूंगा। 10 यदि हम लोग विलम्ब न करते, तो अब तब दूसरी बार
लौट आते। 11 तब उनके पिता इस्राएल ने उन से कहा, यदि सचमुच ऐसी ही बात
है, तो यह करो; इस देश की उत्तम उत्तम वस्तुओं में से कुछ कुछ अपके बोरोंमें
उस पुरूष के लिथे भेंट ले जाओ : जैसे योड़ा सा बलसान, और योड़ा सा मधु, और
कुछ सुगन्ध द्रव्य, और गन्धरस, पिस्ते, और बादाम। 12 फिर अपके अपके साय
दूना रूपया ले जाओ; और जो रूपया तुम्हारे बोरोंके मुंह पर रखकर फेर दिया
गया या, उसको भी लेते जाओ; कदाचित् यह भूल से हुआ हो। 13 और अपके भाई
को भी संग लेकर उस पुरूष के पास फिर जाओ, 14 और सर्वशक्तिमान ईश्वर उस
पुरूष को तुम पर दयालु करेगा, जिस से कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और
बिन्यामीन को भी आने दे : और यदि मैं निर्वंश हुआ तो होने दो। 15 तब उन
मनुष्योंने वह भेंट, और दूना रूपया, और बिन्यामीन को भी संग लिया, और चल
दिए और मिस्र में पहुंचकर यूसुफ के साम्हने खड़े हुए। 16 उनके साय बिन्यामीन

को देखकर यूसुफ ने अपके घर के अधिक्कारनी से कहा, उन मनुष्योंको घर में
पहुंचा दो, और पशु मारके भोजन तैयार करो; क्योंकि वे लोग दोपहर को मेरे संग
भोजन करेंगे। 17 तब वह अधिक्कारनी पुरूष यूसुफ के कहने के अनुसार उन
पुरूषोंको यूसुफ के घर में ले गया। 18 जब वे यूसुफ के घर को पहुंचाए गए तब वे
आपस में डरकर कहने लगे, कि जो रूपया पहिली बार हमारे बोरोंमें फेर दिया
गया या, उसी के कारण हम भीतर पहुंचाए गए हैं; जिस से कि वह पुरूष हम पर
टूट पके, और हमें वंश में करके अपके दास बनाए, और हमारे गदहोंको भी छीन
ले। 19 तब वे यूसुफ के घर के अधिक्कारनी के निकट जाकर घर के द्वार पर इस
प्रकार कहने लगे, 20 कि हे हमारे प्रभु, जब हम पहिली बार अन्न मोल लेने को
आए थे, 21 तब हम ने सराय में पहुंचकर अपके बोरोंको खोला, तो क्या देखा, कि
एक एक जन का पूरा पूरा रूपया उसके बोरे के मुंह में रखा है; इसलिथे हम उसको
अपके साय फिर लेते आए हैं। 22 और दूसरा रूपया भी भोजनवस्तु मोल लेने के
लिथे लाए हैं; हम नहीं जानते कि हमारा रूपया हमारे बोरोंमें किस ने रख दिया
या। 23 उस ने कहा, तुम्हारा कुशल हो, मत डरो: तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे
पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने तुम को तुम्हारे बोरोंमें धन दिया होगा, तुम्हारा
रूपया तो मुझ को मिल गया या: फिर उस ने शिमोन को निकालकर उनके संग
कर दिया। 24 तब उस जन ने उन मनुष्योंको यूसुफ के घर में ले जाकर जल
दिया, तब उन्होंने अपके पांवोंको धोया; फिर उस ने उनके गदहोंके लिथे चारा
दिया। 25 तब यह सुनकर, कि आज हम को यहीं भोजन करना होगा, उन्होंने
यूसुफ के आने के समय तक, अर्यात् दोपहर तक, उस भेंट को इकट्ठा कर रखा।
26 जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को , जो उनके हाथ में यी, उसके सम्मुख

घर में ले गए, और भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया। 27 उस ने उनका
कुशल पूछा, और कहा, क्या तुम्हारा बूढ़ा पिता, जिसकी तुम ने चर्चा की यी,
कुशल से है ? क्या वह अब तक जीवित है ? 28 उन्होंने कहा, हां तेरा दास हमारा
पिता कुशल से है और अब तक जीवित है; तब उन्होंने सिर फुकाकर फिर
दण्डवत् किया। 29 तब उस ने आंखे उठाकर और अपके सगे भाई बिन्यामीन को
देखकर पूछा, क्या तुम्हारा वह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझ से की यी,
यही है ? फिर उस ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे। 30 तब
अपके भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और यह सोचकर, कि मैं कहां
जाकर रोऊं, यूसुफ फुर्ती से अपक्की कोठरी में गया, और वहां रो पड़ा। 31 फिर
अपना मुंह धोकर निकल आया, और अपके को शांत कर कहा, भोजन परोसो। 32
तब उन्होंने उसके लिथे तो अलग, और भाइयोंके लिथे भी अलग, और जो मिस्री
उसके संग खाते थे, उनके लिथे भी अलग, भोजन परोसा; इसलिथे कि मिस्री
इब्रियोंके साय भोजन नहीं कर सकते, वरन मिस्री ऐसा करना घृणा समझते थे।
33 सो यूसुफ के भाई उसके साम्हने, बड़े बड़े पहिले, और छोटे छोटे पीछे,
अपक्की अपक्की अवस्या के अनुसार, क्रम से बैठाए गए: यह देख वे विस्मित्
होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। 34 तब यूसुफ अपके साम्हने से
भोजन-वस्तुएं उठा उठाके उनके पास भेजने लगा, और बिन्यामीन को अपके
भाइयोंसे पचगुणी अधिक भोजनवस्तु मिली। और उन्होंने उसके संग मनमाना
खाया पिया।

उत्पत्ति 44

1 तब उस ने अपके घर के अधिक्कारनी को आज्ञा दी, कि इन मनुष्योंके बोरोंमें
जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे, और एक एक जन के रूपके को
उसके बोरे के मुंह पर रख दे। 2 और मेरा चांदी का कटोरा छोटे के बोरे के मुंह पर
उसके अन्न के रूपके के साय रख दे। यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उस ने
किया। 3 बिहान को भोर होते ही वे मनुष्य अपके गदहोंसमेत विदा किए गए। 4
वे नगर से निकले ही थे, और दूर न जाने पाए थे, कि यूसुफ ने अपके घर के
अधिक्कारनी से कहा, उन मनुष्योंका पीछा कर, और उनको पाकर उन से कह,
कि तुम ने भलाई की सन्ती बुराई क्योंकी है? 5 क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में
मेरा स्वामी पीता है, और जिस से वह शकुन भी विचारा करता है ? तुम ने यह जो
किया है सो बुरा किया। 6 तब उस ने उन्हें जा लिया, और ऐसी ही बातें उन से
कहीं। 7 उन्होंने उस से कहा, हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्योंकहता है? ऐसा काम
करना तेरे दासोंसे दूर रहे। 8 देख जो रूपया हमारे बोरोंके मुंह पर निकला या, जब
हम ने उसको कनान देश से ले आकर तुझे फेर दिया, तब, भला, तेरे स्वामी के
घर में से हम कोई चांदी वा सोने की वस्तु क्योंकर चुरा सकते हैं ? 9 तेरे दासोंमें
से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपके उस
प्रभु के दास जो जाएं। 10 उस ने कहा तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह
निकले सो मेरा दास होगा; और तुम लोग निरपराध ठहरोगे। 11 इस पर वे फुर्ती
से अपके अपके बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे। 12 तब वह
ढूंढ़ने लगा, और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे तक खोज की : और कटोरा
बिन्यामीन के बोरे में मिला। 13 तब उन्होंने अपके अपके वस्त्र फाड़े, और अपना
अपना गदहा लादकर नगर को लौट गए। 14 जब यहूदा और उसके भाई यूसुफ

के घर पर पहुंचे, और यूसुफ वहीं या, तब वे उसके साम्हने भूमि पर गिरे। 15
यूसुफ ने उन से कहा, तुम लोगोंने यह कैसा काम किया है ? क्या तुम न जानते
थे, कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है ? 16 यहूदा ने कहा, हम लोग
अपके प्रभु से क्या कहें ? हम क्या कहकर अपके को निर्दोषी ठहराएं ? परमेश्वर ने
तेरे दासोंके अधर्म को पकड़ लिया है : हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह
भी, हम सब के सब अपके प्रभु के दास ही हैं। 17 उस ने कहा, ऐसा करना मुझ से
दूर रहे : जिस जन के पास कटोरा निकला है, वही मेरा दास होगा; और तुम लोग
अपके पिता के पास कुशल झेम से चले जाओ। 18 तब यहूदा उसके पास जाकर
कहने लगा, हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपके प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो,
और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के; तू तो फिरौन के तुल्य है। 19 मेरे प्रभु ने
अपके दासोंसे पूछा या, कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई हैं ? 20 और हम ने अपके
प्रभु से कहा, हां, हमारा बूढा पिता तो है, और उसके बुढ़ापे का एक छोटा सा
बालक भी है, परन्तु उसका भाई मर गया है, इसलिथे वह अब अपक्की माता का
अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उस से स्नेह रखता है। 21 तब तू ने
अपके दासोंसे कहा या, कि उसको मेरे पास ले आओ, जिस से मैं उसको देखूं। 22
तब हम ने अपके प्रभु से कहा या, कि वह लड़का अपके पिता को नहीं छोड़
सकता; नहीं तो उसका पिता मर जाएगा। 23 और तू ने अपके दासोंसे कहा, यदि
तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने
पाओगे। 24 सो जब हम अपके पिता तेरे दास के पास गए, तब हम ने उस से
अपके प्रभु की बातें कहीं। 25 तब हमारे पिता ने कहा, फिर जाकर हमारे लिथे
योड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। 26 हम ने कहा, हम नहीं जा सकते, हां, यदि

हमारा छोटा भाई हमारे संग रहे, तब हम जाएंगे : क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई
हमारे संग न रहे, तो उस पुरूष के सम्मुख न जाने पाएंगे। 27 तब तेरे दास मेरे
पिता ने हम से कहा, तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री से दो पुत्र उत्पन्न हुए। 28
और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया, और मैं ने निश्चय कर लिया, कि वह
फाड़ डाला गया होगा ; और तब से मैं उसका मुंह न देख पाया 29 सो यदि तुम
इसको भी मेरी आंख की आड़ में ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर पके, तो
तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्या में दु:ख के साय अधोलोक में उतर
जाऊंगा। 30 सो जब मैं अपके पिता तेरे दास के पास पहुंचूं, और यह लड़का संग
न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, 31 इस कारण, यह देखके
कि लड़का नहीं है, वह तुरन्त ही मर जाएगा। तब तेरे दासोंके कारण तेरा दास
हमारा पिता, जो पक्के बालोंकी अवस्या का है, शोक के साय अधोलोक में उतर
जाएगा। 32 फिर तेरा दास अपके पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन
हुआ है, कि यदि मैं इसको तेरे पास न पहुंचा दूं, तब तो मैं सदा के लिथे तेरा
अपराधी ठहरूंगा। 33 सो अब तेरा दास इस लड़के की सन्ती अपके प्रभु का दास
होकर रहने की आज्ञा पाए, और यह लड़का अपके भाइयोंके संग जाने दिया जाए।
34 क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं कयोंकर अपके पिता के पास जा सकूंगा;
ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दु:ख पकेगा वह मुझे देखना पके।।

उत्पत्ति 45

1 तब यूसुफ उन सब के साम्हने, जो उसके आस पास खड़े थे, अपके को और
रोक न सका; और पुकार के कहा, मेरे आस पास से सब लोगोंको बाहर कर दो।

भाइयोंके साम्हने अपके को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा।
2 तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा : और मिस्रियोंने सुना, और फिरौन के घर
के लोगोंको भी इसका समाचार मिला। 3 तब यूसुफ अपके भाइयोंसे कहने लगा,
मैं यूसुफ हूं, क्या मेरा पिता अब तब जीवित है ? इसका उत्तर उसके भाई न दे
सके; क्योंकि वे उसके साम्हने घबरा गए थे। 4 फिर यूसुफ ने अपके भाइयोंसे
कहा, मेरे निकट आओ। यह सुनकर वे निकट गए। फिर उस ने कहा, मैं तुम्हारा
भाई यूसुफ हूं, जिसको तुम ने मिस्र आनेहारोंके हाथ बेच डाला या। 5 अब तुम
लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला, इस से उदास मत हो;
क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणोंको बचाने के लिथे मुझे आगे से भेज दिया है। 6
क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है; और अब पांच वर्ष और ऐसे ही होंगे,
कि उन में न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। 7 सो परमेश्वर ने मुझे
तुम्हारे आगे इसी लिथे भेजा, कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणोंके
बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। 8 इस रीति अब मुझ को यहां पर भेजनेवाले तुम नहीं,
परमेश्वर ही ठहरा: और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का
स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। 9 सो शीघ्र मेरे पिता के पास
जाकर कहो, तेरा पुत्र यूसुफ इस प्रकार कहता है, कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र
का स्वामी ठहराया है; इसलिथे तू मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ। 10 और
तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू, बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों,
और अपके सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा। 11 और अकाल के जो पांच वर्ष
और होंगे, उन में मै वहीं तेरा पालन पोषण करूंगा; ऐसा न हो कि तू, और तेरा
घराना, वरन जितने तेरे हैं, सो भूखोंमरें। 12 और तुम अपक्की आंखोंसे देखते हो,

और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपक्की आंखोंसे देखता है, कि जो हम से बातें कर
रहा है सो यूसुफ है। 13 और तुम मेरे सब विभव का, जो मिस्र में है और जो कुछ
तुम ने देखा है, उस सब को मेरे पिता से वर्णन करना; और तुरन्त मेरे पिता को
यहां ले आना। 14 और वह अपके भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया; और
बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर रोया। 15 तब वह अपके सब भाइयोंको
चूमकर उन से मिलकर रोया : और इसके पश्चात् उसके भाई उस से बातें करने
लगे।। 16 इस बात की चर्चा, कि यूसुफ के भाई आए हैं, फिरौन के भवन तब
पंहुच गई, और इस से फिरौन और उसके कर्मचारी प्रसन्न हुए। 17 सो फिरौन ने
यूसुफ से कहा, अपके भाइयोंसे कह, कि एक काम करो, अपके पशुओं को लादकर
कनान देश में चले जाओ। 18 और अपके पिता और अपके अपके घर के लोगोंको
लेकर मेरे पास आओ; और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें
दूंगा, और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। 19 और तुझे
आज्ञा मिली है, तुम एक काम करो, कि मिस्र देश से अपके बालबच्चोंऔर
स्त्रियोंके लिथे गाडिय़ोंले जाओ, और अपके पिता को ले आओ। 20 और अपक्की
सामग्री का मोह न करना; क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है
सो तुम्हारा है। 21 और इस्राएल के पुत्रोंने वैसा ही किया। और यूसुफ ने फिरौन
की मानके उन्हें गाडिय़ोंदी, और मार्ग के लिथे सीधा भी दिया। 22 उन में से एक
एक जन को तो उस ने एक एक जोड़ा वस्त्र भी दिया; और बिन्यामीन को तीन सौ
रूपे के टुकड़े और पांच जोड़े वस्त्र दिए। 23 और अपके पिता के पास उस ने जो
भेजा वह यह है, अर्यात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे, और अन्न
और रोटी और उसके पिता के मार्ग के लिथे भोजनवस्तु से लदी हुई दस

गदहियां। 24 और उस ने अपके भाइयोंको विदा किया, और वे चल दिए; और उस
ने उन से कहा, मार्ग में कहीं फगड़ा न करना। 25 मिस्र से चलकर वे कनान देश
में अपके पिता याकूब के पास पहुचे। 26 और उस से यह वर्णन किया, कि यूसुफ
अब तक जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है। पर उस ने
उनकी प्रतीति न की, और वह अपके आपे में न रहा। 27 तब उन्होंने अपके पिता
याकूब से यूसुफ की सारी बातें, जो उस ने उन से कहीं यी, कह दीं; जब उस ने उन
गाडिय़ोंको देखा, जो यूसुफ ने उसके ले आने के लिथे भेजीं यीं, तब उसका चित्त
स्यिर हो गया। 28 और इस्राएल ने कहा, बस, मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है
: मैं अपक्की मृत्यु से पहिले जाकर उसको देखंूगा।।

उत्पत्ति 46

1 तब इस्राएल अपना सब कुछ लेकर कूच करके बेर्शेबा को गया, और वहां अपके
पिता इसहाक के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए। 2 तब परमेश्वर ने इस्राएल से रात
को दर्शन में कहा, हे याकूब हे याकूब। उस ने कहा, क्या आज्ञा। 3 उस ने कहा, मैं
ईश्वर तेरे पिता का परमेश्वर हूं, तू मिस्र में जाने से मत डर; क्योंकि मैं तुझ से वहां
एक बड़ी जाति बनाऊंगा। 4 मैं तेरे संग संग मिस्र को चलता हूं; और मैं तुझे वहां
से फिर निश्चय ले आऊंगा; और यूसुफ अपना हाथ तेरी आंखोंपर लगाएगा। 5 तब
याकूब बेर्शेबा से चला: और इस्राएल के पुत्र अपके पिता याकूब, और अपके
बाल-बच्चों, और स्त्रियोंको उन गाडिय़ोंपर, जो फिरौन ने उनके ले आने को भेजी
यी, चढ़ाकर चल पके। 6 और वे अपक्की भेड़-बकरी, गाय-बैल, और कनान देश
में अपके इकट्ठा किए हुए सारे धन को लेकर मिस्र में आए। 7 और याकूब अपके

बेटे-बेटियों, पोते-पोतियों, निदान अपके वंश भर को अपके संग मिस्र में ले
आया।। 8 याकूब के साय जो इस्राएली, अर्यात् उसके बेटे, पोते, आदि मिस्र में
आए, उनके नाम थे हैं : याकूब का जेठा तो रूबेन या। 9 और रूबेन के पुत्र, हनोक,
पललू, हेस्रोन, और कर्म्मी थे। 10 और शिमोन के पुत्र, यमूएल, यामीन, ओहद,
याकीन, सोहर, और एक कनानी स्त्री से जन्मा हुआ शाऊल भी या। 11 और लेवी
के पुत्र, गेर्शोन, कहात, और मरारी थे। 12 और यहूदा के एर, ओनान, शेला, पेरेस,
और जेरह नाम पुत्र हुए तो थे; पर एर और ओनान कनान देश में मर गए थे। 13
और इस्साकार के पुत्र, तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन थे। 14 और जबूलून के
पुत्र, सेरेद, एलोन, और यहलेल थे। 15 लिआ: के पुत्र, जो याकूब से पद्दनराम में
उत्पन्न हुए थे, उनके बेटे पोते थे ही थे, और इन से अधिक उस ने उसके साय
एक बेटी दीना को भी जन्म दिया : यहां तक तो याकूब के सब वंशवाले तैंतीस
प्राणी हुए। 16 फिर गाद के पुत्र, सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी,
और अरेली थे। 17 और आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिस्त्री, और बरीआ थे, और
उनकी बहिन सेरह यी। और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल थे। 18 जिल्पा,
जिसे लाबान ने अपक्की बेटी लिआ� को दिया या, उसके बेटे पोते आदि थे ही
थे; सो उसके द्वारा याकूब के सोलह प्राणी उत्पन्न हुए।। 19 फिर याकूब की पत्नी
राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन थे। 20 और मिस्र देश में ओन के याजक
पोतीपेरा की बेटी आसनत से यूसुफ के थे पुत्र उत्पन्न हुए, अर्यात् मनश्शे और
एप्रैम। 21 और बिन्यामीन के पुत्र, बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश,
मुप्पीम, हुप्पीम, और आर्द थे। 22 राहेल के पुत्र जो याकूब से उत्पन्न हुए उनके
थे ही पुत्र थे; उसके थे सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए। 23 फिर दान का पुत्र हूशीम

या। 24 और नप्ताली के पुत्र, यहसेल, गूनी, सेसेर, और शिल्लेम थे। 25 बिल्हा,
जिसे लाबान ने अपक्की बेटी राहेल को दिया, उस के बेटे पोते थे ही हैं; उसके द्वारा
याकूब के वंश में सात प्राणी हुए। 26 याकूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्र में
आए, वे उसकी बहुओं को छोड़ सब मिलकर छियासठ प्राणी हुए। 27 और यूसुफ
के पुत्र, जो मिस्र में उस से उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी थे : इस प्रकार याकूब के
घराने के जो प्राणी मिस्र में आए सो सब मिलकर सत्तर हुए।। 28 फिर उस ने
यहूदा को अपके आगे यूसुफ के पास भेज दिया, कि वह उसको गोशेन का मार्ग
दिखाए; और वे गोशेन देश में आए। 29 तब यूसुफ अपना रय जुतवाकर अपके
पिता इस्राएल से भेंट करने के लिथे गोशेन देश को गया, और उस से भेंट करके
उसके गले से लिपटा हुआ रोता रहा। 30 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मै अब
मरने से भी प्रसन्न हूं, क्योंकि तुझे जीवित पाया और तेरा मुंह देख लिया। 31
तब यूसुफ ने अपके भाइयोंसे और अपके पिता के घराने से कहा, मैं जाकर फिरौन
को यह समाचार दूंगा, कि मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के लोग, जो
कनान देश में रहते थे, वे मेरे पास आ गए हैं। 32 और वे लोग चरवाहे हैं, क्योंकि
वे पशुओं को पालते आए हैं; इसलिथे वे अपक्की भेड़-बकरी, गाय-बैल, और जो
कुछ उनका है, सब ले आए हैं। 33 जब फिरौन तुम को बुलाके पूछे, कि तुम्हारा
उद्यम क्या है? 34 तब यह कहना कि तेरे दास लड़कपन से लेकर आज तक
पशुओं को पालते आए हैं, वरन हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे। इस से तुम
गोशेन देश में रहने पाओगे; क्योंकि सब चरवाहोंसे मिस्री लोग घृणा करते हैं।।

उत्पत्ति 47

1 तब यूसुफ ने फिरौन के पास जाकर यह समाचार दिया, कि मेरा पिता और मेरे
भाई, और उनकी भेड़-बकरियां, गाय-बैल और जो कुछ उनका है, सब कनान देश
से आ गया है; और अभी तो वे गोशेन देश में हैं। 2 फिर उस ने अपके भाइयोंमें से
पांच जन लेकर फिरौन के साम्हने खड़े कर दिए। 3 फिरौन ने उसके भाइयोंसे
पूछा, तुम्हारा उद्यम क्या है ? उन्होंने फिरौन से कहा, तेरे दास चरवाहे हैं, और
हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे। 4 फिर उन्होंने फिरौन से कहा, हम इस देश में
परदेशी की भांति रहने के लिथे आए हैं; क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने
के कारण तेरे दासोंको भेड़-बकरियोंके लिथे चारा न रहा : सो अपके दासोंको
गोशेन देश में रहने की आज्ञा दे। 5 तब फिरौन ने यूसुफ से कहा, तेरा पिता और
तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं, 6 और मिस्र देश तेरे साम्हने पड़ा है; इस देश का जो
सब से अच्छा भाग हो, उस में अपके पिता और भाइयोंको बसा दे; अर्यात् वे
गोशेन ही देश में रहें : और यदि तू जानता हो, कि उन में से परिश्रमी पुरूष हैं, तो
उन्हें मेरे पशुओं के अधिक्कारनी ठहरा दे। 7 तब यूसुफ ने अपके पिता याकूब को
ले आकर फिरौन के सम्मुख खड़ा किया : और याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद
दिया। 8 तब फिरौन ने याकूब से पूछा, तेरी अवस्या कितने दिन की हुई है? 9
याकूब ने फिरौन से कहा, मैं तो एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना जीवन
बीता चुका हूं; मेरे जीवन के दिन योड़े और दु:ख से भरे हुए भी थे, और मेरे
बापदादे परदेशी होकर जितने दिन तक जीवित रहे उतने दिन का मैं अभी नहीं
हुआ। 10 और याकूब फिरौन को आशीर्वाद देकर उसके सम्मुख से चला गया। 11
तब यूसुफ ने अपके पिता और भाइयोंको बसा दिया, और फिरौन की आज्ञा के
अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में, अर्यात् रामसेस नाम देश में, भूमि

देकर उनको सौंप दिया। 12 और यूसुफ अपके पिता का, और अपके भाइयोंका,
और पिता के सारे घराने का, एक एक के बालबच्चोंके घराने की गिनती के
अनुसार, भोजन दिला दिलाकर उनका पालन पोषण करने लगा।। 13 और उस
सारे देश में खाने को कुछ न रहा; क्योंकि अकाल बहुत भारी या, और अकाल के
कारण मिस्र और कनान दोनोंदेश नाश हो गए। 14 और जितना रूपया मिस्र और
कनान देश में या, सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उनके निवासी मोल
लेते थे इकट्ठा करके फिरौन के भवन में पहुंचा दिया। 15 जब मिस्र और कनान
देश का रूपया चुक गया, तब सब मिस्री यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे, हम
को भोजनवस्तु दे, क्या हम रूपके के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएं ? 16
यूसुफ ने कहा, यदि रूपके न होंतो अपके पशु दे दो, और मैं उनकी सन्ती तुम्हें
खाने को दूंगा। 17 तब वे अपके पशु यूसुफ के पास ले आए; और यूसुफ उनको
घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलोंऔर गदहोंकी सन्ती खाने को देने लगा: उस वर्ष में
वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन देकर उनका पालन पोषण करता रहा।
18 वह वर्ष तो योंकट गया; तब अगले वर्ष में उन्होंने उसके पास आकर कहा, हम
अपके प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा रूपया चुक गया है, और हमारे
सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं; इसलिथे अब हमारे प्रभु के
साम्हने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा। 19 हम तेरे देखते
क्योंमरें, और हमारी भूमि को भोजन वस्तु की सन्ती मोल ले, कि हम अपक्की
भूमि समेत फिरौन के दास हों: और हमको बीज दे, कि हम मरने न पाएं, वरन
जीवित रहें, और भूमि न उजड़े। 20 तब यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि को फिरौन
के लिथे मोल लिया; क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्रियोंको अपना

अपना खेत बेच डालना पड़ा : इस प्रकार सारी भूमि फिरौन की हो गई। 21 और
एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती यी, उसको उस
ने नगरोंमें लाकर बसा दिया। 22 पर याजकोंकी भूमि तो उस ने न मोल ली :
क्योंकि याजकोंके लिथे फिरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त या, और
नित्य जो भोजन फिरौन उनको देता या वही वे खाते थे; इस कारण उनको
अपक्की भूमि बेचक्की न पक्की। 23 तब यूसुफ ने प्रजा के लोगोंसे कहा, सुनो, मैं
ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फिरौन के लिथे मोल लिया है;
देखो, तुम्हारे लिथे यहां बीज है, इसे भूमि में बोओ। 24 और जो कुछ उपके उसका
पंचमांश फिरौन को देना, बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे, कि तुम उसे अपके
खेतोंमंे बोओ, और अपके अपके बालबच्चोंऔर घर के और लोगोंसमेत खाया
करो। 25 उन्होंने कहा, तू ने हमको बचा लिया है : हमारे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि
हम पर बनी रहे, और हम फिरौन के दास होकर रहेंगे। 26 सो यूसुफ ने मिस्र की
भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया, जो आज के दिन तक चला आता है, कि
पंचमांश फिरौन को मिला करे; केवल याजकोंही की भूमि फिरौन की नहीं हुई। 27
और इस्राएली मिस्र के गोशेन देश में रहने लगे; और वहां की भूमि को अपके वश
में कर लिया, और फूले-फले, और अत्यन्त बढ़ गए।। 28 मिस्र देश में याकूब
सतरह वर्ष जीवित रहा : इस प्रकार याकूब की सारी आयु एक सौ सैंतालीस वर्ष
की हुई। 29 जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया, तब उस ने अपके पुत्र
यूसुफ को बुलवाकर कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ
के तले रखकर शपय खा, कि मैं तेरे साय कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा,
कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा। 30 जब तू अपके बापदादोंके संग सो जाएगा,

तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जाकर उन्हीं के कबरिस्तान में रखूंगा; तब यूसुफ ने
कहा, मैं तेरे वचन के अनुसार करूंगा। 31 फिर उस ने कहा, मुझ से शपय खा : सो
उस ने उस से शपय खाई। तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर
फुकाया।।

उत्पत्ति 48

1 इन बातोंके पश्चात् किसी ने यूसुफ से कहा, सुन, तेरा पिता बीमार है; तब वह
मनश्शे और एप्रैम नाम अपके दोनोंपुत्रोंको संग लेकर उसके पास चला। 2 और
किसी ने याकूब को बता दिया, कि तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है; तब
इस्राएल अपके को सम्भालकर खाट पर बैठ गया। 3 और याकूब ने यूसुफ से
कहा, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कनान देश के लूज नगर के पास मुझे दर्शन देकर
आशीष दी, 4 और कहा, सुन, मैं तुझे फुला-फलाकर बढ़ाऊंगा, और तुझे राज्य
राज्य की मण्डली का मूल बनाऊंगा, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को यह देश दे दूंगा,
जिस से कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे। 5 और अब तेरे दोनोंपुत्र, जो
मिस्र में मेरे आने से पहिले उत्पन्न हुए हैं, वे मेरे ही ठहरेंगे; अर्यात् जिस रीति से
रूबेन और शिमोन मेरे हैं, उसी रीति से एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे। 6 और
उनके पश्चात् जो सन्तान उत्पन्न हो, वह तेरे तो ठहरेंगे; परन्तु बंटवारे के समय
वे अपके भाइयोंही के वंश में गिने जाएंगे। 7 जब मैं पद्दान से आता या, तब
एप्राता पहुंचने से योड़ी ही दूर पहिले राहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे साम्हने
मर गई : और मैं ने उसे वहीं, अर्यात् एप्राता जो बेतलेहम भी कहलाता है, उसी के
मार्ग में मिट्टी दी। 8 तब इस्राएल को यूसुफ के पुत्र देख पके, और उस ने पूछा, थे

कौन हैं ? 9 यूसुफ ने अपके पिता से कहा, थे मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहां
दिए हैं : उस ने कहा, उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं। 10 इस्राएल
की आंखे बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई यीं, यहां तक कि उसे कम सूफता या।
तब यूसुफ उन्हें उनके पास ले गया ; और उस ने उन्हें चूमकर गले लगा लिया।
11 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मुझे आशा न यी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने
पाऊंगा : परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है। 12 तब यूसुफ ने
उन्हें अपके घुटनोंके बीच से हटाकर और अपके मुंह के बल भूमि पर गिरके
दण्डवत् की। 13 तब यूसुफ ने उन दोनोंको लेकर, अर्यात् एप्रैम को अपके दहिने
हाथ से, कि वह इस्राएल के बाएं हाथ पके, और मनश्शे को अपके बाएं हाथ से, कि
इस्राएल के दहिने हाथ पके, उन्हें उसके पास ले गया। 14 तब इस्राएल ने अपना
दहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर जो छोटा या, और अपना बायां हाथ बढ़ाकर
मनश्शे के सिर पर रख दिया; उस ने तो जान बूफकर ऐसा किया; नहीं तो जेठा
मनश्शे ही या। 15 फिर उस ने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा, परमेश्वर जिसके
सम्मुख मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक (अपके को जानकर) चलते थे वही
परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है ; 16 और वही
दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कोंको आशीष दे; और थे
मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक के कहलाएं; और पृय्वी में बहुतायत
से बढ़ें। 17 जब यूसुफ ने देखा, कि मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम के सिर
पर रखा है, तब यह बात उसको बुरी लगी : सो उस ने अपके पिता का हाथ इस
मनसा से पकड़ लिया, कि एप्रैम के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे।
18 और यूसुफ ने अपके पिता से कहा, हे पिता, ऐसा नहीं: क्योंकि जेठा यही है;

अपना दहिना हाथ इसके सिर पर रख। 19 उसके पिता ने कहा, नहीं, सुन, हे मेरे
पुत्र, मैं इस बात को भली भांति जानता हूं : यद्यपि इस से भी मनुष्योंकी एक
मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान् हो जाएगा, तौभी इसका छोटा भाई इस
से अधिक महान हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी। 20
फिर उस ने उसी दिन यह कहकर उनको आशीर्वाद दिया, कि इस्राएली लोग तेरा
नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे, कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के
समान बना दे : और उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम का नाम लिया। 21 तब
इस्राएल ने यूसुफ से कहा, देख, मैं तो मरने पर हूं : परन्तु परमेश्वर तुम लोगोंके
संग रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरोंके देश में फिर पहुंचा देगा। 22 और मैं तुझ
को तेरे भाइयोंसे अधिक भूमि का एक भाग देता हूं, जिसको मैं ने एमोरियोंके हाथ
से अपक्की तलवार और धनुष के बल से ले लिया है।

उत्पत्ति 49

1 फिर याकूब ने अपके पुत्रोंको यह कहकर बुलाया, कि इकट्ठे हो जाओ, मैं तुम
को बताऊंगा, कि अन्त के दिनोंमें तुम पर क्या क्या बीतेगा। 2 हे याकूब के पुत्रों,
इकट्ठे होकर सुनो, अपके पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ। 3 हे रूबेन, तू
मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौरूष का पहिला फल है; प्रतिष्ठा का उत्तम भाग,
और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है। 4 तू जो जल की नाईं उबलनेवाला है,
इसलिथे औरोंसे श्रेष्ट न ठहरेगा; क्योंकि तू अपके पिता की खाट पर चढ़ा, तब तू
ने उसको अशुद्ध किया; वह मेरे बिछौने पर चढ़ गया।। 5 शिमोन और लेवी तो
भाई भाई हैं, उनकी तलवारें उपद्रव के हयियार हैं। 6 हे मेरे जीव, उनके मर्म में न

पड़, हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल; क्योंकि उन्होंने कोप से मनुष्योंको
घात किया, और अपक्की ही इच्छा पर चलकर बैलोंकी पूंछें काटी हैं।। 7 धिक्कार
उनके कोप को, जो प्रचण्ड था; और उनके रोष को, जो निर्दय था; मैं उन्हें याकूब
में अलग अलग और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूंगा।। 8 हे यहूदा, तेरे भाई तेरा
धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पकेगा; तेरे पिता के पुत्र तुझे
दण्डवत् करेंगे।। 9 यहूदा सिंह का डांवरू है। हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में
गया है : वह सिंह वा सिंहनी की नाई दबकर बैठ गया; फिर कौन उसको छेड़ेगा।।
10 जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश
से व्यवस्या देनेवाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो
जाएंगे।। 11 वह अपके जवान गदहे को दाखलता में, और अपक्की गदही के
बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा ; उस ने अपके वस्त्र दाखमधु
में, और अपना पहिरावा दाखोंके रस में धोया है।। 12 उसकी आंखे दाखमधु से
चमकीली और उसके दांत दूध से श्वेत होंगे।। 13 जबूलून समुद्र के तीर पर
निवास करेगा, वह जहाजोंके लिथे बन्दरगाह का काम देगा, और उसका परला
भाग सीदोन के निकट पहुंचेगा 14 इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त गदहा है, जो
पशुओं के बाड़ोंके बीच में दबका रहता है।। 15 उस ने एक विश्रमस्यान देखकर,
कि अच्छा है, और एक देश, कि मनोहर है, अपके कन्धे को बोफ उठाने के लिथे
फुकाया, और बेगारी में दास का सा काम करने लगा।। 16 दान इस्राएल का एक
गोत्र होकर अपके जातिभाइयोंका न्याय करेगा।। 17 दान मार्ग में का एक सांप,
और रास्ते में का एक नाग होगा, जो घोड़े की नली को डंसता है, जिस से उसका
सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है।। 18 हे यहोवा, मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट

जोहता आया हूं।। 19 गाद पर एक दल चढ़ाई तो करेगा; पर वह उसी दल के
पिछले भाग पर छापा मारेगा।। 20 आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम
होगा, और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा।। 21 नप्ताली एक छूटी
हुई हरिणी है; वह सुन्दर बातें बोलता है।। 22 यूसुफ बलवन्त लता की एक शाखा
है, वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा है; उसकी डालियां
भीत पर से चढ़कर फैल जाती हैं।। 23 धनुर्धारियोंने उसको खेदित किया, और
उस पर तीर मारे, और उसके पीछे पके हैं।। 24 पर उसका धनुष दृढ़ रहा, और
उसकी बांह और हाथ याकूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के हाथोंके द्वारा फुर्तीले हुए,
जिसके पास से वह चरवाहा आएगा, जो इस्राएल का पत्यर भी ठहरेगा।। 25 यह
तेरे पिता के उस ईश्वर का काम है, जो तेरी सहाथता करेगा, उस सर्वशक्तिमान को
जो तुझे ऊपर से आकाश में की आशीषें, और नीचे से गहिरे जल में की आशीषें,
और स्तनों, और गर्भ की आशीषें देगा।। 26 तेरे पिता के आशीर्वाद मेरे पितरोंके
आशीर्वाद से अधिक बढ़ गए हैं और सनातन पहाडिय़ोंकी मन- चाही वस्तुओं की
नाईं बने रहेंगे : वे यूसुफ के सिर पर, जो अपके भाइयोंमें से न्यारा हुआ, उसी के
सिर के मुकुट पर फूले फलेंगे।। 27 बिन्यामीन फाड़नेहारा हुण्डार है, सवेरे तो वह
अहेर भझण करेगा, और सांफ को लूट बांट लेगा।। 28 इस्राएल के बारहोंगोत्र थे
ही हैं : और उनके पिता ने जिस जिस वचन से उनको आशीर्वाद दिया, सो थे ही हैं;
एक एक को उसके आशीर्वाद के अनुसार उस ने आशीर्वाद दिया। 29 तब उस ने
यह कहकर उनको आज्ञा दी, कि मैं अपके लोगोंके साय मिलने पर हूं : इसलिथे
मुझे हित्ती एप्रोन की भूमिवाली गुफा में मेरे बापदादोंके साय मिट्टी देना, 30
अर्यात् उसी गुफा में जो कनान देश में मम्रे के साम्हनेवाली मकपेला की भूमि में

है; उस भूमि को तो इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इसी निमित्त मोल लिया या,
कि वह कबरिस्तान के लिथे उसकी निज भूमि हो। 31 वहां इब्राहीम और उसकी
पत्नी सारा को मिट्टी दी गई; और वहीं इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को भी
मिट्टी दी गई; और वहीं मैं ने लिआ: को भी मिट्टी दी। 32 वह भूमि और उस में
की गुफा हित्तियोंके हाथ से मोल ली गई। 33 यह आज्ञा जब याकूब अपके पुत्रोंको
दे चुका, तब अपके पांव खाट पर समेट प्राण छोड़े, और अपके लोगोंमें जा मिला।

उत्पत्ति 50

1 तब यूसुफ अपके पिता के मुंह पर गिरकर रोया और उसे चूमा। 2 और यूसुफ ने
उन वैद्योंको, जो उसके सेवक थे, आज्ञा दी, कि मेरे पिता की लोय में सुगन्धद्रव्य
भरो; तब वैद्योंने इस्राएल की लोय में सुगन्धद्रव्य भर दिए। 3 और उसके चालीस
दिन पूरे हुए। क्योंकि जिनकी लोय में सुगन्धद्रव्य भरे जाते हैं, उनको इतने ही
दिन पूरे लगते हैं : और मिस्री लोग उसके लिथे सत्तर दिन तक विलाप करते
रहे।। 4 जब उसके विलाप के दिन बीत गए, तब यूसुफ फिरौन के घराने के
लोगोंसे कहने लगा, यदि तुम्हारी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो मेरी यह बिनती
फिरौन को सुनाओ, 5 कि मेरे पिता ने यह कहकर, कि देख मैं मरने पर हूं, मुझे
यह शपय खिलाई, कि जो कबर तू ने अपके लिथे कनान देश में खुदवाई है उसी
में मैं तुझे मिट्टी दूंगा इसलिथे अब मुझे वहां जाकर अपके पिता को मिट्टी देने
की आज्ञा दे, तत्पश्चात् मैं लौट आऊंगा। 6 तब फिरौन ने कहा, जाकर अपके
पिता की खिलाई हुई शपय के अनुसार उनको मिट्टी दे। 7 सो यूसुफ अपके पिता
को मिट्टी देने के लिथे चला, और फिरौन के सब कर्मचारी, अर्यात् उसके भवन

के पुरनिथे, और मिस्र देश के सब पुरनिथे उसके संग चले। 8 और यूसुफ के घर
के सब लोग, और उसके भाई, और उसके पिता के घर के सब लोग भी संग गए;
पर वे अपके बालबच्चों, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलोंको गोशेन देश में छोड़
गए। 9 और उसके संग रय और सवार गए, सो भीड़ बहुत भारी हो गई। 10 जब वे
आताद के खलिहान तक, जो यरदन नदी के पार है पहुंचे, तब वहां अत्यन्त भारी
विलाप किया, और यूसुफ ने अपके पिता के सात दिन का विलाप कराया। 11
आताद के खलिहान में के विलाप को देखकर उस देश के निवासी कनानियोंने
कहा, यह तो मिस्त्रियोंका कोई भारी विलाप होगा, इसी कारण उस स्यान का नाम
आबेलमिस्रैम पड़ा, और वह यरदन के पार है। 12 और इस्राएल के पुत्रोंने उस से
वही काम किया जिसकी उस ने उनको आज्ञा दी यी: 13 अर्यात् उन्होंने उसको
कनान देश में ले जाकर मकपेला की उस भूमिवाली गुफा में, जो मम्रे के साम्हने
हैं, मिट्टी दी; जिसको इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इस निमित्त मोल लिया
या, कि वह कबरिस्तान के लिथे उसकी निज भूमि हो।। 14 अपके पिता को
मिट्टी देकर यूसुफ अपके भाइयोंऔर उन सब समेत, जो उसके पिता को मिट्टी
देने के लिथे उसके संग गए थे, मिस्र में लौट आया। 15 जब यूसुफ के भाइयोंने
देखा कि हमारा पिता मर गया है, तब कहने लगे, कदाचित् यूसुफ अब हमारे
पीछे पके, और जितनी बुराई हम ने उस से की यी सब का पूरा पलटा हम से ले।
16 इसलिथे उन्होंने यूसुफ के पास यह कहला भेजा, कि तेरे पिता ने मरने से
पहिले हमें यह आज्ञा दी यी, 17 कि तुम लोग यूसुफ से इस प्रकार कहना, कि हम
बिनती करते हैं, कि तू अपके भाइयोंके अपराध और पाप को झमा कर; हम ने
तुझ से बुराई तो की यी, पर अब अपके पिता के परमेश्वर के दासोंका अपराध

झमा कर। उनकी थे बातें सुनकर यूसुफ रो पड़ा। 18 और उसके भाई आप भी
जाकर उसके साम्हने गिर पके, और कहा, देख, हम तेरे दास हैं। 19 यूसुफ ने उन
से कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं ? 20 यद्यपि तुम लोगोंने मेरे
लिथे बुराई का विचार किया या; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार
किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगोंके
प्राण बचे हैं। 21 सो अब मत डरो : मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चोंका पालन
पोषण करता रहूंगा; इस प्रकार उस ने उनको समझा बुफाकर शान्ति दी।। 22
और यूसुफ अपके पिता के घराने समेत मिस्र में रहता रहा, और यूसुफ एक सौ
दस वर्ष जीवित रहा। 23 और यूसुफ एप्रैम के परपोतोंतक देखने पाया : और
मनश्शे के पोते, जो माकीर के पुत्र थे, वे उत्पन्न होकर यूसुफ से गोद में लिए
गए। 24 और यूसुफ ने अपके भाइयोंसे कहा मैं तो मरने पर हूं; परन्तु परमेश्वर
निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुंचा
देगा, जिसके देने की उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से शपय खाई यी। 25
फिर यूसुफ ने इस्राएलियोंसे यह कहकर, कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा,
उनको इस विषय की शपय खिलाई, कि हम तेरी हड्डियोंको वहां से उस देश में ले
जाएंगे। 26 निदान यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया : और उसकी लोय
में सुगन्धद्रव्य भरे गए, और वह लोय मिस्र में एक सन्दूक में रखी गई।।

निर्गमन 1

1 इस्राएल के पुत्रोंके नाम, जो अपके अपके घराने को लेकर याकूब के साय मिस्र
देश में आए, थे हैं: 2 अर्यात् रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, 3 इस्साकार, जबूलून,

बिन्यामीन, 4 दान, नप्ताली, गाद और आशेर। 5 और यूसुफ तो मिस्र में पहिले ही
आ चुका या। याकूब के निज वंश में जो उत्पन्न हुए वे सब सत्तर प्राणी थे। 6 और
यूसुफ, और उसके सब भाई , और उस पीढ़ी के सब लोग मर मिटे। 7 और
इस्राएल की सन्तान फूलने फलने लगी; और वे अत्यन्त सामर्यी बनते चले गए;
और इतना बढ़ गए कि कुल देश उन से भर गया।। 8 मिस्र में एक नया राजा गद्दी
पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता या। 9 और उस ने अपक्की प्रजा से कहा,
देखो, इस्राएली हम से गिनती और सामर्य्य में अधिक बढ़ गए हैं। 10 इसलिथे
आओ, हम उनके साय बुद्धिमानी से बर्ताव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब वे बहुत
बढ़ जाएं, और यदि संग्राम का समय आ पके, तो हमारे बैरियोंसे मिलकर हम से
लड़ें और इस देश से निकल जाएं। 11 इसलिथे उन्होंने उन पर बेगारी
करानेवालोंको नियुक्त किया कि वे उन पर भार डाल डालकर उनको दु:ख दिया
करें; तब उन्होंने फिरौन के लिथे पितोम और रामसेस नाम भण्डारवाले नगरोंको
बनाया। 12 पर ज्योंज्योंवे उनको दु:ख देते गए त्योंत्योंवे बढ़ते और फैलते चले
गए; इसलिथे वे इस्राएलियोंसे अत्यन्त डर गए। 13 तौभी मिस्रियोंने
इस्राएलियोंसे कठोरता के साय सेवकाई करवाई। 14 और उनके जीवन को गारे,
ईंट और खेती के भांति भांति के काम की कठिन सेवा से दु:खी कर डाला; जिस
किसी काम में वे उन से सेवा करवाते थे उस में वे कठोरता का व्यवहार करते थे।
15 शिप्रा और पूआ नाम दो इब्री धाइयोंको मिस्र के राजा ने आज्ञा दी, 16 कि जब
तुम इब्री स्त्रियोंको बच्चा उत्पन्न होने के समय जन्मने के पत्यरोंपर बैठी देखो,
तब यदि बेटा हो, तो उसे मार डालना; और बेटी हो, तो जीवित रहने देना। 17
परन्तु वे धाइयां परमेश्वर का भय मानती यीं, इसलिथे मिस्र के राजा की आज्ञा न

मानकर लड़कोंको भी जीवित छोड़ देती यीं। 18 तब मिस्र के राजा ने उनको
बुलवाकर पूछा, तुम जो लड़कोंको जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्योंकरती हो?
19 धाइयोंने फिरौन को उतर दिया, कि इब्री स्त्रियोंमिस्री स्त्रियोंके समान नहीं हैं;
वे ऐसी फुर्तीली हैं कि धाइयोंके पहुंचने से पहिले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो
जाता है। 20 इसलिथे परमेश्वर ने धाइयोंके साय भलाई की; और वे लोग बढ़कर
बहुत सामर्यी हो गए। 21 और धाइयां इसलिथे कि वे परमेश्वर का भय मानती यीं
उस ने उनके घर बसाए। 22 तब फिरौन ने अपक्की सारी प्रजा के लोगोंको आज्ञा
दी, कि इब्रियोंके जितने बेटे उत्पन्न होंउन सभोंको तुम नील नदी में डाल देना,
और सब बेटियोंको जीवित रख छोड़ना।।

निर्गमन 2

1 लेवी के घराने के एक पुरूष ने एक लेवी वंश की स्त्री को ब्याह लिया। 2 और वह
स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह
बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। 3 और जब वह उसे और छिपा
न सकी तब उसके लिथे सरकंड़ोंकी एक टोकरी लेकर, उस में बालक को रखकर
नील नदी के तीर पर कांसोंके बीच छोड़ आई। 4 उस बालक कि बहिन दूर खड़ी
रही, कि देखे इसका क्या हाल होगा। 5 तब फिरौन की बेटी नहाने के लिथे नदी के
तीर आई; उसकी सखियां नदी के तीर तीर टहलने लगीं; तब उस ने कांसोंके बीच
टोकरी को देखकर अपक्की दासी को उसे ले आने के लिथे भेजा। 6 तब उस ने
उसे खोलकर देखा, कि एक रोता हुआ बालक है; तब उसे तरस आया और उस ने
कहा, यह तो किसी इब्री का बालक होगा। 7 तब बालक की बहिन ने फिरौन की

बेटी से कहा, क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियोंमें से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं
जो तेरे लिथे बालक को दूध पिलाया करे? 8 फिरौन की बेटी ने कहा, जा। तब
लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई। 9 फिरौन की बेटी ने उस से कहा,
तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिथे दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूंगी।
तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। 10 जब बालक कुछ बड़ा हुआ
तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उस
ने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, कि मैं ने इसको जल से निकाल लिया।। 11
उन दिनोंमें ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हुआ, और बाहर अपके भाई बन्धुओं
के पास जाकर उनके दु:खोंपर दृष्टि करने लगा; तब उस ने देखा, कि कोई मिस्री
जन मेरे एक इब्री भाई को मार रहा है। 12 जब उस ने इधर उधर देखा कि कोई
नहीं है, तब उस मिस्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया।। 13 फिर दूसरे
दिन बाहर जाकर उस ने देखा कि दो इब्री पुरूष आपस में मारपीट कर रहे हैं; उस
ने अपराधी से कहा, तू अपके भाई को क्योंमारता है ? 14 उस ने कहा, किस ने
तुझे हम लोगोंपर हाकिम और न्यायी ठहराया ? जिस भांति तू ने मिस्री को घात
किया क्या उसी भांति तू मुझे भी घात करना चाहता है ? तब मूसा यह सोचकर
डर गया, कि निश्चय वह बात खुल गई है। 15 जब फिरौन ने यह बात सुनी तब
मूसा को घात करने की युक्ति की। तब मूसा फिरौन के साम्हने से भागा, और
मिद्यान देश में जाकर रहने लगा; और वह वहां एक कुएं के पास बैठ गया। 16
मिद्यान के याजक की सात बेटियां यी; और वे वहां आकर जल भरने लगीं, कि
कठौतोंमें भरके अपके पिता की भेड़बकरियोंको पिलाएं। 17 तब चरवाहे आकर
उनको हटाने लगे; इस पर मूसा ने खड़ा होकर उनकी सहाथता की, और

भेड़-बकरियोंको पानी पिलाया। 18 जब वे अपके पिता रूएल के पास फिर आई,
तब उस ने उन से पूछा, क्या कारण है कि आज तुम ऐसी फुर्ती से आई हो ? 19
उन्होंने कहा, एक मिस्री पुरूष ने हम को चरवाहोंके हाथ से छुड़ाया, और हमारे
लिथे बहुत जल भरके भेड़-बकरियोंको पिलाया। 20 तब उस ने अपक्की बेटियोंसे
कहा, वह पुरूष कहां है ? तुम उसको क्योंछोड़ आई हो ? उसको बुला ले आओ कि
वह भोजन करे। 21 और मूसा उस पुरूष के साय रहने को प्रसन्न हुआ; उस ने
उसे अपक्की बेटी सिप्पोरा को ब्याह दिया। 22 और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ,
तब मूसा ने यह कहकर, कि मैं अन्य देश में परदेशी हूं, उसका नाम गेर्शोम
रखा।। 23 बहुत दिनोंके बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। और इस्राएली कठिन
सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और
उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुंची। 24 और
परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपक्की वाचा को, जो उस ने इब्राहीम, और
इसहाक, और याकूब के साय बान्धी यी, स्मरण किया। 25 और परमेश्वर ने
इस्राएलियोंपर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया।।

निर्गमन 3

1 मूसा अपके ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियोंको चराता या;
और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।
2 और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली फाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन
दिया; और उस ने दृष्टि उठाकर देखा कि फाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। 3
तब मूसा ने सोचा, कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचम्भे को देखूंगा, कि वह फाड़ी

क्योंनहीं जल जाती। 4 जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है,
तब परमेश्वर ने फाड़ी के बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा। मूसा ने कहा,
क्या आज्ञा। 5 उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपके पांवोंसे जूतियोंको
उतार दे, क्योंकि जिस स्यान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। 6 फिर उस ने
कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर,
और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता
या अपना मुंह ढ़ाप लिया। 7 फिर यहोवा ने कहा, मैं ने अपक्की प्रजा के लोग जो
मिस्र में हैं उनके दु:ख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्र्म
करानेवालोंके कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने
चित्त लगाया है ; 8 इसलिथे अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियोंके वश से
छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और
मधु की धारा बहती है, अर्यात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी
लोगोंके स्यान में पहुंचाऊं। 9 सो अब सुन, इस्राएलियोंकी चिल्लाहट मुझे सुनाई
पक्की है, और मिस्रियोंका उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है, 10
इसलिथे आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र
से निकाल ले आए। 11 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मै कौन हूं जो फिरौन के
पास जाऊं, और इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आऊं ? 12 उस ने कहा, निश्चय
मैं तेरे संग रहूंगा; और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूं, तेरे लिथे यह चिन्ह
होगा कि जब तू उन लोगोंको मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर
परमेश्वर की उपासना करोगे। 13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं इस्राएलियोंके
पास जाकर उन से यह कहूं, कि तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास

भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको क्या
बताऊं? 14 परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूं सो हूं। फिर उस ने कहा, तू
इस्राएलियोंसे यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूं है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा
है। 15 फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियोंसे यह कहना, कि
तुम्हारे पितरोंका परमेश्वर, अर्यात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर
और याकूब का परमेश्वर, यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा
तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा। 16
इसलिथे अब जाकर इस्राएली पुरनियोंको इकट्ठा कर, और उन से कह, कि
तुम्हारे पितर इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन
देकर यह कहा है, कि मैं ने तुम पर और तुम से जो बर्ताव मिस्र में किया जाता है
उस पर भी चित लगाया है; 17 और मैं ने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दुखोंमें
से निकालकर कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी, और यबूसी लोगोंके देश में
ले चलूंगा, जो ऐसा देश है कि जिस में दूध और मधु की धारा बहती है। 18 तब वे
तेरी मानेंगे; और तू इस्राएली पुरनियोंको संग लेकर मिस्र के राजा के पास जाकर
उस से योंकहना, कि इब्रियोंके परमेश्वर, यहोवा से हम लोगोंकी भेंट हुई है;
इसलिथे अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे, कि अपके परमेश्वर
यहोवा को बलिदान चढ़ाएं। 19 मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम को जाने न
देगा वरन बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। 20 इसलिथे मैं हाथ
बढ़ाकर उन सब आश्चर्यकर्मोंसे जो मिस्र के बीच करूंगा उस देश को मारूंगा; और
उसके पश्चात् वह तुम को जाने देगा। 21 तब मैं मिस्रियोंसे अपक्की इस प्रजा पर
अनुग्रह करवाऊंगा; और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। 22 वरन

तुम्हारी एक एक स्त्री अपक्की अपक्की पड़ोसिन, और अपके अपके घर की
पाहुनी से सोने चांदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उन्हें अपके बेटोंऔर
बेटियोंको पहिराना; इस प्रकार तुम मिस्रियोंको लूटोगे।।

निर्गमन 4

1 तब मूसा ने उतर दिया, कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन
कहेंगे, कि यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया। 2 यहोवा ने उस से कहा, तेरे हाथ
में वह क्या है ? वह बोला, लाठी। 3 उस ने कहा, उसे भूमि पर डाल दे; जब उस ने
उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके साम्हने से भागा। 4
तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति
करें कि तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर अर्यात् इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के
परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है। 5 तब उस ने
हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई। 6 फिर
यहोवा ने उस से यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप। सो उस ने
अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा,
कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है। 7 तब उस ने कहा,
अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप। और उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर
ढांप लिया; और जब उस ने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है, कि
वह फिर सारी देह के समान हो गया। 8 तब यहोवा ने कहा, यदि वे तेरी बात की
प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे। 9
और यदि वे इन दोनोंचिन्होंकी प्रतीति न करें और तेरी बात को न मानें, तब तू

नील नदी से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना; और जो जल तू नदी से
निकालेगा वह सूखी भूमि पर लोहू बन जाथेगा। 10 मूसा ने यहोवा से कहा, हे मेरे
प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहिले या, और न जब से तू अपके दास से
बातें करने लगा; मैं तो मुंह और जीभ का भद्दा हूं। 11 यहोवा ने उस से कहा,
मनुष्य का मुंह किस ने बनाया है ? और मनुष्य को गूंगा, वा बहिरा, वा
देखनेवाला, वा अन्धा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है ? 12 अब जा, मैं तेरे
मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा। 13 उस ने
कहा, हे मेरे प्रभु, जिसको तू चाहे उसी के हाथ से भेज। 14 तब यहोवा का कोप
मूसा पर भड़का और उस ने कहा, क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है ? मुझे तो
निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है, और वह तेरी भेंट के लिथे निकला भी आता
है, और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। 15 इसलिथे तू उसे थे बातें
सिखाना; और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हे
करना होगा वह तुम को सिखलाता जाऊंगा। 16 और वह तेरी ओर से लोगोंसे
बातें किया करेगा; वह तेरे लिथे मुंह और तू उसके लिथे परमेश्वर ठहरेगा। 17
और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्होंको दिखाना।। 18
तब मूसा अपके ससुर यित्रो के पास लौटा और उस से कहा, मुझे विदा कर, कि मैं
मिस्र में रहनेवाले अपके भाइयोंके पास जाकर देखूं कि वे अब तक जीवित हैं वा
नहीं। यित्रो ने कहा, कुशल से जा। 19 और यहोवा ने मिद्यान देश में मूसा से कहा,
मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं 20
तब मूसा अपक्की पत्नी और बेटोंको गदहे पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर
की उस लाठी को हाथ में लिथे हुए लौटा। 21 और यहोवा ने मूसा से कहा, जब तू

मिस्र में पहुंचे तब सावधान हो जाना, और जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किए हैं
उन सभोंको फिरौन को दिखलाना; परन्तु मै उसके मन को हठीला करूंगा, और
वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। 22 और तू फिरौन से कहना, कि यहोवा योंकहता
है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है, 23 और मैं जो तुझ से कह चुका हूं, कि
मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे; और तू ने अब तक उसे जाने नहीं दिया,
इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे को घात करूंगा। 24 और ऐसा हुआ कि
मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा। 25 तब
सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्यर लेकर अपके बेटे की खलड़ी को काट डाला,
और मूसा के पावोंपर यह कहकर फेंक दिया, कि निश्चय तू लोहू बहानेवाला मेरा
पति है। 26 तब उस ने उसको छोड़ दिया। और उसी समय खतने के कारण वह
बोली, तू लोहू बहानेवाला पति है। 27 तब यहोवा ने हारून से कहा, मूसा से भेंट
करने को जंगल में जा। और वह गया, और परमेश्वर के पर्वत पर उस से मिला
और उसको चूमा। 28 तब मूसा ने हारून को यह बतलाया कि यहोवा ने क्या क्या
बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी
है। 29 तब मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियोंके सब पुरनियोंको इकट्ठा
किया। 30 और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही यी वह सब हारून ने उन्हें
सुनाई, और लोगोंके साम्हने वे चिन्ह भी दिखलाए। 31 और लोगोंने उनकी
प्रतीति की; और यह सुनकर, कि यहोवा ने इस्राएलियोंकी सुधि ली और उनके
दु:खोंपर दृष्टि की है, उन्होंने सिर फुकाकर दण्डवत की।।

निर्गमन 5

1 इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे, कि वे जंगल में मेरे लिथे
पर्व्व करें। 2 फिरौन ने कहा, यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मानकर
इस्राएलियोंको जाने दूं ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियोंको नहीं
जाने दूंगा। 3 उन्होंने कहा, इब्रियोंके परमेश्वर ने हम से भेंट की है; सो हमें जंगल
में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे बलिदान
करें, ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए वा तलवार चलवाए। 4 मिस्र के राजा ने
उन से कहा, हे मूसा, हे हारून, तुम क्योंलोगोंसे काम छुड़वाने चाहते हो? तुम
जाकर अपके अपके बोफ को उठाओ। 5 और फिरोन ने कहा, सुनो, इस देश में वे
लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको परिश्रम से विश्रम दिलाना चाहते हो ! 6
और फिरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवानेवालोंको जो उन लोगोंके ऊपर थे,
और उनके सरदारोंको यह आज्ञा दी, 7 कि तुम जो अब तक ईटें बनाने के लिथे
लोगोंको पुआल दिया करते थे सो आगे को न देना; वे आप ही जाकर अपके लिथे
पुआल इकट्ठा करें। 8 तौभी जितनी ईंटें अब तक उन्हें बनानी पड़ती यीं उतनी
ही आगे को भी उन से बनवाना, ईंटोंकी गिनती कुछ भी न घटाना; क्योंकि वे
आलसी हैं; इस कारण यह कहकर चिल्लाते हैं, कि हम जाकर अपके परमेश्वर के
लिथे बलिदान करें। 9 उन मनुष्योंसे और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उस
में परिश्रम करते रहें और फूठी बातोंपर ध्यान न लगाएं। 10 तब लोगोंके परिश्रम
करानेवालोंने और सरदारोंने बाहर जाकर उन से कहा, फिरौन इस प्रकार कहता
है, कि मैं तुम्हें पुआल नहीं दूंगा। 11 तुम ही जाकर जहां कहीं पुआल मिले वहां से
उसको बटोर कर ले आओ; परन्तु तुम्हारा काम कुछ भी नहीं घटाया जाएगा। 12

सो वे लोग सारे मिस्र देश में तित्तर-बित्तर हुए कि पुआल की सन्ती खूंटी बटोरें।
13 और परिश्र्म करनेवाले यह कह कहकर उन से जल्दी करते रहे, कि जिस
प्रकार तुम पुआल पाकर किया करते थे उसी प्रकार अपना प्रतिदिन का काम अब
भी पूरा करो। 14 और इस्राएलियोंमें से जिन सरदारोंको फिरौन के परिश्र्म
करानेवालोंने उनका अधिक्कारनी ठहराया या, उन्होंने मार खाई, और उन से
पूछा गया, कि क्या कारण है कि तुम ने अपक्की ठहराई हुई ईंटोंकी गिनती के
अनुसार पहिले की नाई कल और आज पूरी नहीं कराई ? 15 तब इस्राएलियोंके
सरदारोंने जाकर फिरौन की दोहाई यह कहकर दी, कि तू अपके दासोंसे ऐसा
बर्ताव क्योंकरता है? 16 तेरे दासोंको पुआल तो दिया ही नहीं जाता और वे हम से
कहते रहते हैं, ईंटे बनाओ, ईंटें बनाओ, और तेरे दासोंने भी मार खाई हैं; परन्तु
दोष तेरे ही लोगोंका है। 17 फिरौन ने कहा, तुम आलसी हो, आलसी; इसी कारण
कहते हो कि हमे यहोवा के लिथे बलिदान करने को जाने दे। 18 और जब आकर
अपना काम करो; और पुआल तुम को नहीं दिया जाएगा, परन्तु ईटोंकी गिनती
पूरी करनी पकेगी। 19 जब इस्राएलियोंके सरदारोंने यह बात सुनी कि उनकी
ईंटोंकी गिनती न घटेगी, और प्रतिदिन उतना ही काम पूरा करना पकेगा, तब वे
जान गए कि उनके दुर्भाग्य के दिन आ गए हैं। 20 जब वे फिरौन के सम्मुख से
बाहर निकल आए तब मूसा और हारून, जो उन से भेंट करने के लिथे खड़े थे,
उन्हें मिले। 21 और उन्होंने मूसा और हारून से कहा, यहोवा तुम पर दृष्टि करके
न्याय करे, क्योंकि तुम ने हम को फिरौन और उसके कर्मचारियोंकी दृष्टि में
घृणित ठहरवाकर हमें घात करने के लिथे उनके हाथ में तलवार दे दी है। 22 तब
मूसा ने यहोवा के पास लौट कर कहा, हे प्रभु, तू ने इस प्रजा के साय ऐसी बुराई

क्योंकी? और तू ने मुझे यहां क्योंभेजा ? 23 जब से मैं तेरे नाम से फिरौन के पास
बातें करने के लिथे गया तब से उसने इस प्रजा के साय बुरा ही व्यवहार किया है,
और तू ने अपक्की प्रजा का कुछ भी छुटकारा नहीं किया।

निर्गमन 6

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, अब तू देखेगा कि मैं फिरौन ने क्या करूंगा; जिस से
वह उनको बरबस निकालेगा, वह तो उन्हें अपके देश से बरबस निकाल देगा।। 2
और परमेश्वर ने मूसा से कहा, कि मैं यहोवा हूं। 3 मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम
से इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता या, परन्तु यहोवा के नाम से मैं
उन पर प्रगट न हुआ। 4 और मैं ने उनके साय अपक्की वाचा दृढ़ की है, अर्यात्
कनान देश जिस में वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूं। 5 और इस्राएली
जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना भी सुनकर मैं ने अपक्की
वाचा को स्मरण किया है। 6 इस कारण तू इस्राएलियोंसे कह, कि मैं यहोवा हूं,
और तुम को मिस्रियोंके बोफोंके नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुम को
छुड़ाऊंगा, और अपक्की भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा, 7
और मैं तुम को अपक्की प्रजा बनाने के लिथे अपना लूंगा, और मैं तुम्हारा
परमेश्वर ठहरूंगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम्हें
मिस्रियोंके बोफोंके नीचे से निकाल ले आया। 8 और जिस देश के देने की शपय मैं
ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई यी उसी में मैं तुम्हें पहुंचाकर उसे
तुम्हारा भाग कर दूंगा। मैं तो यहोवा हूं। 9 और थे बातें मूसा ने इस्राएलियोंको
सुनाई; परन्तु उन्होंने मन की बेचैनी और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी न

सुनी।। 10 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 11 तू जाकर मिस्र के राजा फिरौन से कह,
कि इस्राएलियोंको अपके देश में से निकल जाने दे। 12 और मूसा ने यहोवा से
कहा, देख, इस्राएलियोंने मेरी नहीं सुनी; फिर फिरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले की
क्योंकर सुनेगा ? 13 और यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियोंऔर मिस्र के
राजा फिरौन के लिथे आज्ञा इस अभिप्राय से दी कि वे इस्राएलियोंको मिस्र देश से
निकाल ले जाएं। 14 उनके पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरूष थे हैं : इस्राएल के जेठा
रूबेन के पुत्र : हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी थे; 15 और शिमोन के पुत्र :
यमूएल, यामीन, ओहद, याकिन, और सोहर थे, और एक कनानी स्त्री का बेटा
शाऊल भी या; इन्हीं से शिमोन के कुल निकले। 16 और लेवी के पुत्र जिन से
उनकी वंशावली चक्की है, उनके नाम थे हैं : अर्यात् गेर्शोन, कहात और मरारी,
और लेवी को पूरी अवस्या एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। 17 गेर्शोन के पुत्र जिन से
उनका कुल चला : लिबनी और शिमी थे। 18 और कहात के पुत्र : अम्राम,
यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे, और कहात की पूरी अवस्या एक सौ सैंतीस
वर्ष की हुई। 19 और मरारी के पुत्र : महली और मूशी थे। लेवियोंके कुल जिन से
उनकी वंशावली चक्की थे ही हैं। 20 अम्राम ने अपक्की फूफी योकेबेद को ब्याह
लिया और उस से हारून और मूसा उत्पन्न हुए, और अम्राम की पूरी अवस्या एक
सौ सैंतीस वर्ष की हुई। 21 और यिसहार के पुत्र कोरह, नेपेग और जिक्री थे। 22
और उज्जीएल के पुत्र: मीशाएल, एलसापन और सित्री थे। 23 और हारून ने
अम्मीनादाब की बेटी, और नहशोन की बहिन एलीशेबा को ब्याह लिया; और उस
से नादाब, अबीहू, ऐलाजार और ईतामार उत्पन्न हुए। 24 और कोरह के पुत्र :
अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप थे; और इन्हीं से कोरहियोंके कुल निकले।

25 और हारून के पुत्र एलाजार ने पूतीएल की एक बेटी को ब्याह लिया; और उस
से पीनहास उत्पन्न हुआ जिन से उनका कुल चला। लेवियोंके पितरोंके घरानोंके
मुख्य पुरूष थे ही हैं। 26 हारून और मूसा वे ही हैं जिनको यहोवा ने यह आज्ञा दी,
कि इस्राएलियोंको दल दल करके उनके जत्योंके अनुसार मिस्र देश से निकाल ले
आओ। 27 थे वही मूसा और हारून हैं जिन्होंने मिस्र के राजा फिरौन से कहा, कि
हम इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले जाएंगे।। 28 जब यहोवा ने मिस्र देश में
मूसा से यह बात कही, 29 कि मैं तो यहोवा हूं; इसलिथे जो कुछ मैं तुम से कहूंगा
वह सब मिस्र के राजा फिरौन से कहना। 30 और मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया,
कि मैं तो बोलने में भद्दा हूं; और फिरोन क्योंकर मेरी सुनेगा ?

निर्गमन 7

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, मैं तुझे फिरौन के लिथे परमेश्वर सा ठहराता
हूं; और तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा। 2 जो जो आज्ञा मैं तुझे दूं वही तू
कहना, और हारून उसे फिरौन से कहेगा जिस से वह इस्राएलियोंको अपके देश से
निकल जाने दे। 3 और मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और अपके चिन्ह
और चमत्कार मिस्र देश में बहुत से दिखलाऊंगा। 4 तौभी फिरौन तुम्हारी न
सुनेगा; और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियोंको भारी दण्ड देकर
अपक्की सेना अर्यात् अपक्की इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल लूंगा। 5
और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ा कर इस्राएलियोंको उनके बीच से निकालूंगा तब
मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा हूं। 6 तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के
अनुसार ही किया। 7 और जब मूसा और हारून फिरौन से बात करने लगे तब

मूसा तो अस्सी वर्ष का या, और हारून तिरासी वर्ष का या।। 8 फिर यहोवा ने,
मूसा और हारून से इस प्रकार कहा, 9 कि जब फिरौन तुम से कहे, कि अपके
प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ, तब तू हारून से कहना, कि अपक्की लाठी को
लेकर फिरौन के साम्हने डाल दे, कि वह अजगर बन जाए। 10 तब मूसा और
हारून ने फिरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब
हारून ने अपक्की लाठी को फिरौन और उसके कर्मचारियोंके साम्हने डाल दिया,
तब वह अजगर बन गया। 11 तब फिरौन ने पण्डितोंऔर टोनहा करनेवालोंको
बुलवाया; और मिस्र के जादूगरोंने आकर अपके अपके तंत्र मंत्र से वैसा ही किया।
12 उन्होंने भी अपक्की अपक्की लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन
गए। पर हारून की लाठी उनकी लाठियोंको निगल गई। 13 परन्तु फिरौन का
मन और हठीला हो गया, और यहोवा के वचन के अनुसार उस ने मूसा और हारून
की बातोंको नहीं माना।। 14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, फिरोन का मन कठोर हो
गया है और वह इस प्रजा को जाने नहीं देता। 15 इसलिथे बिहान को फिरौन के
पास जा, वह तो जल की ओर बाहर आएगा; और जो लाठी सर्प बन गई यी,
उसको हाथ में लिए हुए नील नदी के तट पर उस से भेंट करने के लिथे खड़ा
रहना। 16 और उस से इस प्रकार कहना, कि इब्रियोंके परमेश्वर यहोवा ने मुझे
यह कहने के लिथे तेरे पास भेजा है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे कि जिस से
वे जंगल में मेरी उपासना करें; और अब तक तू ने मेरा कहना नहीं माना। 17
यहोवा योंकहता है, इस से तू जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं; देख, मै अपके हाथ
की लाठी को नील नदी के जल पर मारूंगा, और जल लोहू बन जाएगा, 18 और
जो मछलियां नील नदी में हैं वे मर जाएंगी, और नील नदी बसाने लगेगी, और

नदी का पानी पीने के लिये मिस्रियोंका जी न चाहेगा। 19 फिर यहोवा ने मूसा से
कहा, हारून से कह, कि अपक्की लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है, अर्यात्
उसकी नदियां, नहरें, फीलें, और पोखरे, सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि उनका
जल लोहू बन जाए; और सारे मिस्र देश में काठ और पत्यर दोनोंभांति के
जलपात्रोंमें लोहू ही लोहू हो जाएगा। 20 तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा
ही के अनुसार किया, अर्यात् उस ने लाठी को उठाकर फिरौन और उसके
कर्मचारियोंके देखते नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लोहू बन
गया। 21 और नील नदी में जो मछलियां यीं वे मर गई; और नदी से दुर्गन्ध आने
लगी, और मिस्री लोग नदी का पानी न पी सके; और सारे मिस्र देश में लोहू हो
गया। 22 तब मिस्र के जादूगरोंने भी अपके तंत्र-मंत्रो से वैसा ही किया; तौभी
फिरौन का मन हठीला हो गया, और यहोवा के कहने के अनुसार उस ने मूसा और
हारून की न मानी। 23 फिरौन ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया, और मुंह फेर के
अपके घर में चला गया। 24 और सब मिस्री लोग पीने के जल के लिये नील नदी
के आस पास खोदने लगे, क्योंकि वे नदी का जल नहीं पी सकते थे। 25 और जब
यहोवा ने नील नदी को मारा या तब से सात दिन हो चुके थे।।

निर्गमन 8

1 और तब यहोवा ने फिर मूसा से कहा, फिरौन के पास जाकर कह, यहोवा तुझ
से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे जिस से वे मेरी उपासना
करें। 2 और यदि उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढ़क भेजकर तेरे सारे देश को
हानि पहुंचानेवाला हूं। 3 और नील नदी मेंढ़कोंसे भर जाएगी, और वे तेरे भवन

में, और तेरे बिछौने पर, और तेरे कर्मचारियोंके घरोंमें, और तेरी प्रजा पर, वरन
तेरे तन्दूरोंऔर कठौतियोंमें भी चढ़ जाएंगे। 4 और तुझ पर, और तेरी प्रजा, और
तेरे कर्मचारियों, सभोंपर मेंढ़क चढ़ जाएंगे। 5 फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी,
कि हारून से कह दे, कि नदियों, नहरों, और फीलोंके ऊपर लाठी के साय अपना
हाथ बढ़ाकर मेंढकोंको मिस्र देश पर चढ़ा ले आए। 6 तब हारून ने मिस्र के
जलाशयोंके ऊपर अपना हाथ बढ़ाया; और मेंढ़कोंने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा
लिया। 7 और जादूगर भी अपके तंत्र-मंत्रोंसे उसी प्रकार मिस्र देश पर मेंढक चढ़ा
ले आए। 8 तक फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, यहोवा से बिनती
करो कि वह मेंढ़कोंको मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे; और मैं इस्राएली लोगोंको
जाने दूंगा जिस से वे यहोवा के लिथे बलिदान करें। 9 तब मूसा ने फिरौन से कहा,
इतनी बात पर तो मुझ पर तेरा घमंड रहे, अब मैं तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और
प्रजा के निमित्त कब बिनती करूं, कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरोंमें से
मेंढकोंको दूर करे, और वे केवल नील नदी में पाए जाएं ? 10 उस ने कहा, कल।
उस ने कहा, तेरे वचन के अनुसार होगा, जिस से तुझे यह ज्ञात हो जाए कि हमारे
परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई दूसरा नहीं है। 11 और मेंढक तेरे पास से, और तेरे
घरोंमें से, और तेरे कर्मचारियोंऔर प्रजा के पास से दूर होकर केवल नील नदी में
रहेंगे। 12 तब मूसा और हारून फिरौन के पास से निकल गए; और मूसा ने उन
मेंढकोंके विषय यहोवा की दोहाई दी जो उस ने फिरौन पर भेजे थे। 13 और
यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार किया; और मेंढक घरों, आंगनों, और खेतोंमें
मर गए। 14 और लोगोंने इकट्ठे करके उनके ढेर लगा दिए, और सारा देश
दुर्गन्ध से भर गया। 15 परन्तु जब फिरोन ने देखा कि अब आराम मिला है तक

यहोवा के कहने के अनुसार उस ने फिर अपके मन को कठोर किया, और उनकी
न सुनी।। 16 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून को आज्ञा दे, कि तू अपक्की
लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार, जिस से वह मिस्र देश भर में कुटकियां बन
जाएं। 17 और उन्होंने वैसा ही किया; अर्यात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर
भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनोंपर कुटकियां हो गई वरन सारे
मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियां बन गई। 18 तब जादूगरोंने चाहा कि अपके
तंत्र मंत्रोंके बल से हम भी कुटकियां ले आएं, परन्तु यह उन से न हो सका। और
मनुष्योंऔर पशुओं दोनोंपर कुटकियां बनी ही रहीं। 19 तब जादूगरोंने फिरौन से
कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है। तौभी यहोवा के कहने के अनुसार
फिरौन का मन कठोर होता गया, और उस ने मूसा और हारून की बात न मानी।।
20 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बिहान को तड़के उठकर फिरौन के साम्हने खड़ा
होना, वह तो जल की ओर आएगा, और उस से कहना, कि यहोवा तुझ से यह
कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। 21 यदि तू
मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियोंऔर तेरी प्रजा
पर, और तेरे घरोंमें फुंड के फुंड डांस भेजूंगा; और मिस्रियोंके घर और उनके रहने
की भूमि भी डांसोंसे भर जाएगी। 22 उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा
रहती है अलग करूंगा, और उस में डांसोंके फुंड न होंगे; जिस से तू जान ले कि
पृय्वी के बीच मैं ही यहोवा हूं। 23 और मैं अपक्की प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर
ठहराऊंगा। यह चिन्ह कल होगा। 24 और यहोवा ने वैसा ही किया, और फिरौन
के भवन, और उसके कर्मचारियोंके घरोंमें, और सारे मिस्र देश में डांसोंके फुंड के
फुंड भर गए, और डांसोंके मारे वह देश नाश हुआ। 25 तब फिरौन ने मूसा और

हारून को बुलवाकर कहा, तुम जाकर अपके परमेश्वर के लिथे इसी देश में
बलिदान करो। 26 मूसा ने कहा, ऐसा करना उचित नहीं; क्योंकि हम अपके
परमेश्वर यहोवा के लिथे मिस्रियोंकी घृणित वस्तु बलिदान करेंगें; और यदि हम
मिस्रियोंके देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करें तो क्या वे हम को पत्यरवाह
न करेंगे ? 27 हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपके परमेश्वर यहोवा
के लिथे जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे। 28 फिरौन ने कहा, मैं
तुम को जंगल में जाने दूंगा कि तुम अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे जंगल में
बलिदान करो; केवल बहुत दूर न जाना, और मेरे लिथे बिनती करो। 29 तब मूसा
ने कहा, सुन, मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती करूंगा कि डांसोंके फुंड
तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के पास से कल ही दूर हों; पर फिरौन आगे
को कपट करके हमें यहोवा के लिथे बलिदान करने को जाने देने के लिथे नाहीं न
करे। 30 सो मूसा ने फिरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती की। 31 और
यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसोंके फुण्डोंको फिरौन, और उसके
कर्मचारियों, और उसकी प्रजा से दूर किया; यहां तक कि एक भी न रहा। 32 तक
फिरौन ने इस बार भी अपके मन को सुन्न किया, और उन लोगोंको जाने न
दिया।।

निर्गमन 9

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, फिरोन के पास जाकर कह, कि इब्रियोंका परमेश्वर
यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे, कि मेरी
उपासना करें। 2 और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, 3 तो सुन,

तेरे जो घोड़े, गदहे, ऊंट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर
यहोवा का हाथ ऐसा पकेगा कि बहुत भारी मरी होगी। 4 और यहोवा
इस्राएलियोंके पशुओं में और मिस्रियोंके पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा, कि जो
इस्राएलियोंके हैं उन में से कोई भी न मरेगा। 5 फिर यहोवा ने यह कहकर एक
समय ठहराया, कि मैं यह काम इस देश में कल करूंगा। 6 दूसरे दिन यहोवा ने
ऐसा ही किया; और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियोंका एक भी
पशु न मरा। 7 और फिरौन ने लोगोंको भेजा, पर इस्राएलियोंके पशुओं में से एक
भी नहीं मरा या। तौभी फिरौन का मन सुन्न हो गया, और उस ने उन लोगोंको
जाने न दिया। 8 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, कि तुम दोनोंभट्टी में से
एक एक मुट्ठी राख ले लो, और मूसा उसे फिरौन के साम्हने आकाश की ओर
उड़ा दे। 9 तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्योंऔर पशुओं दोनोंपर
फफोले और फोड़े बन जाएगी। 10 सो वे भट्टी में की राख लेकर फिरौन के
साम्हने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह
मनुष्योंऔर पशुओं दोनोंपर फफोले और फोड़े बन गई। 11 और उन फोड़ोंके
कारण जादूगर मूसा के साम्हने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब
मिस्रियोंके वैसे ही जादूगरोंके भी निकले थे। 12 तब यहोवा ने फिरौन के मन को
कठोर कर दिया, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा या, उस ने उसकी न सुनी।। 13
फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बिहान को तड़के उठकर फिरौन के साम्हने खड़ा हो,
और उस से कह इब्रियोंका परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के
लोगोंको जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। 14 नहीं तो अब की बार मैं तुझ पर,
और तेरे कर्मचारियोंऔर तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियां डालूंगा, जिससे तू

जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है। 15 मैं ने तो अभी हाथ
बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता, और तू पृथ्वी पर से सत्यनाश
हो गया होता; 16 परन्तु सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है, कि तुझे
अपना सामर्य्थ दिखाऊं, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं। 17 क्या तू
अब भी मेरी प्रजा के साम्हने अपके आप को बड़ा समझता है, और उन्हें जाने
नहीं देता? 18 सुन, कल मैं इसी समय ऐसे भारी भारी ओले बरसाऊंगा, कि जिन
के तुल्य मिस्र की नेव पड़ने के दिन से लेकर अब तक कभी नहीं पके। 19 सो अब
लोगोंको भेजकर अपके पशुओं को अपके मैदान में जो कुछ तेरा है सब को फुर्ती
से आड़ में छिपा ले; नहीं तो जितने मनुष्य वा पशु मैदान में रहें और घर में
इकट्ठे न किए जाएं उन पर ओले गिरेंगे, और वे मर जाएंगे। 20 इसलिथे फिरौन
के कर्मचारियोंमें से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे उन्होंने तो अपके
अपके सेवकोंऔर पशुओं को घर में हाँक दिया। 21 पर जिन्होंने यहोवा के वचन
पर मन न लगाया उन्होंने अपके सेवकोंऔर पशुओं को मैदान में रहने दिया।। 22
तक यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, कि सारे मिस्र देश
के मनुष्योंपशुओं और खेतोंकी सारी उपज पर ओले गिरें। 23 तब मूसा ने
अपक्की लाठी को आकाश की ओर उठाया; और यहोवा मेघ गरजाने और ओले
बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर
ओले बरसाए। 24 जो ओले गिरते थे उनके साय आग भी मिली हुई यी, और वे
ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा या तब से मिस्र भर में ऐसे ओले
कभी न गिरे थे। 25 इसलिथे मिस्र भर के खेतोंमें क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने
थे सब ओलोंसे मारे गए, और ओलोंसे खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान

के सब वृझ टूट गए। 26 केवल गोशेन देश में जहां इस्राएली बसते थे ओले नहीं
गिरे। 27 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उन से कहा, कि इस
बार मैं ने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं। 28
मेघोंका गरजना और ओलोंका बरसना तो बहुत हो गया; अब भविष्य में यहोवा
से बिनती करो; तब मैं तुम लोगोंको जाने दूंगा, और तुम न रोके जाओगे। 29
मूसा ने उस से कहा, नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा, तब
बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले फिर न गिरेंगे, इस से तू जान लेगा
कि पृय्वी यहोवा ही की है। 30 तौभी मैं जानता हूं, कि न तो तू और न तेरे
कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे। 31 सन और जव तो ओलोंसे मारे गए,
क्योंकि जव की बालें निकल चुकी यीं और सन में फूल लगे हुए थे। 32 पर गेहूं
और कठिया गेहूं जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए। 33 जब मूसा ने फिरौन
के पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का
गरजना और ओलोंका बरसना बन्द हुआ, और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा।
34 यह देखकर कि मेंह और ओलोंऔर बादल का गरजना बन्द हो गया फिरौन ने
अपके कर्मचारियोंसमेत फिर अपके मन को कठोर करके पाप किया। 35 और
फिरौन का मन हठीला होता गया, और उस ने इस्राएलियोंको जाने न दिया; जैसा
कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया या।।

निर्गमन 10

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, फिरोन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके और
उसके कर्मचारियोंके मन को इसलिथे कठोर कर दिया है, कि अपके चिन्ह उनके

बीच में दिखलाऊं। 2 और तुम लोग अपके बेटोंऔर पोतोंसे इसका वर्णन करो कि
यहोवा ने मिस्रियोंको कैसे ठट्ठोंमें उड़ाया और अपके क्या क्या चिन्ह उनके बीच
प्रगट किए हैं; जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। 3 तब मूसा और
हारून ने फिरौन के पास जाकर कहा, कि इब्रियोंका परमेश्वर यहोवा तुझ से इस
प्रकार कहता है, कि तू कब तक मेरे साम्हने दीन होने से संकोच करता रहेगा ?
मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। 4 यदि तू मेरी प्रजा को
जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे देश में टिड्डियां ले आऊंगा। 5 और वे धरती को
ऐसा छा लेंगी, कि वह देख न पकेगी; और तुम्हारा जो कुछ ओलोंसे बच रहा है
उसको वे चट कर जाएंगी, और तुम्हारे जितने वृझ मैदान में लगे हैं उनको भी वे
चट कर जाएंगी, 6 और वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियों, निदान सारे मिस्रियोंके
घरोंमें भर जाएंगी; इतनी टिड्डियां तेरे बापदादोंने वा उनके पुरखाओं ने जब से
पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखीं। और वह मुंह फेरकर फिरौन के
पास से बाहर गया। 7 तब फिरौन के कर्मचारी उस से कहने लगे, वह जन कब
तक हमारे लिथे फन्दा बना रहेगा ? उन मनुष्योंको जाने दे, कि वे अपके परमेश्वर
यहोवा की उपासना करें; क्या तू अब तक नहीं जानता, कि सारा मिस्र नाश हो
गया है ? 8 तब मूसा और हारून फिरौन के पास फिर बुलवाए गए, और उस ने
उन से कहा, चले जाओ, अपके परमेश्वर यहोवा की उपासना करो; परन्तु वे जो
जानेवाले हैं, कौन कौन हैं ? 9 मूसा ने कहा, हम तो बेटोंबेटियों, भेड़-बकरियों,
गाय-बैलोंसमेत वरन बच्चोंसे बूढ़ोंतक सब के सब जाएंगे, क्योंकि हमें यहोवा के
लिथे पर्ब्ब करना है। 10 उस ने इस प्रकार उन से कहा, यहोवा तुम्हारे संग रहे
जब कि मैं तुम्हें बच्चोंसमेत जाने देता हूं; देखो, तुम्हारे आगे को बुराई है। 11

नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तुम पुरूष ही जाकर यहोवा की उपासना करो, तुम
यही तो चाहते थे। और वे फिरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए।। 12 तब
यहोवा ने मूसा से कहा, मिस्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा, कि टिड्डियां मिस्र
देश पर चढ़के भूमि का जितना अन्न आदि ओलोंसे बचा है सब को चट कर
जाएं। 13 और मूसा ने अपक्की लाट्ठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा
ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई; और जब भोर हुआ तब उस
पुरवाई में टिड्डियां आईं। 14 और टिड्डियोंने चढ़के मिस्र देश के सारे स्यानोंमे
बसेरा किया, उनका दल बहुत भारी या, वरन न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियां
आई यी, और न उनके पीछे ऐसी फिर आएंगी। 15 वे तो सारी धरती पर छा गई,
यहां तक कि देश अन्धेरा हो गया, और उसका सारा अन्न आदि और वृझोंके सब
फल, निदान जो कुछ ओलोंसे बचा या, सब को उन्होंने चट कर लिया; यहां तक
कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृझ पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत में
अनाज रह गया। 16 तब फिरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवाके कहा, मैं
ने तो तुम्हारे परमेश्धर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है। 17 इसलिथे
अब की बार मेरा अपराध झमा करो, और अपके परमेश्धर यहोवा से बिनती करो,
कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे। 18 तब मूसा ने फिरोन के पास
से निकल कर यहोवा से बिनती की। 19 तब यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पछुवा
बहाकर टिड्डियोंको उड़ाकर लाल समुन्द्र में डाल दिया, और मिस्र के किसी
स्यान में एक भी टिड्डी न रह गई। 20 तौभी यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर
कर दिया, जिस से उस ने इस्राएलियोंको जाने न दिया। 21 फिर यहोवा ने मूसा से
कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिस्र देश के ऊपर अन्धकार छा जाए,

ऐसा अन्धकार कि टटोला जा सके। 22 तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर
बढ़ाया, और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा। 23 तीन
दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपके स्यान से उठा; परन्तु
सारे इस्राएलियोंके घरोंमें उजियाला रहा। 24 तब फिरौन ने मूसा को बुलवाकर
कहा, तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपके बालकोंको भी संग ले
जाओ; केवल अपक्की भेड़-बकरी और गाय-बैल को छोड़ जाओ। 25 मूसा ने कहा,
तुझ को हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पकेंगे, जिन्हें हम
अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे चढ़ाएं। 26 इसलिथे हमारे पशु भी हमारे संग
जाएंगे, उनका एक खुर तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हम को अपके
परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहां न
पहुंचें तब तक नहीं जानते कि क्या क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी।
27 पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया, जिस से उस ने उन्हें जाने न
दिया। 28 तब फिरौन ने उस से कहा, मेरे साम्हने से चला जा; और सचेत रह;
मुझे अपना मुख फिर न दिखाना; क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखलाए उसी
दिन तू मारा जाएगा। 29 मूसा ने कहा, कि तू ने ठीक कहा है; मैं तेरे मुंह को फिर
कभी न देखूंगा।।

निर्गमन 11

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, एक और विपत्ति मैं फिरौन और मिस्र देश पर
डालता हूं, उसके पश्चात् वह तुम लोगोंको वहां से जाने देगा; और जब वह जाने
देगा तब तुम सभोंको निश्चय निकाल देगा। 2 मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना,

कि एक एक पुरूष अपके अपके पड़ोसी, और एक एक स्त्री अपक्की अपक्की
पड़ोसिन से सोने चांदी के गहने मांग ले। 3 तब यहोवा ने मिस्त्रियोंको अपक्की
प्रजा पर दयालु किया। और इससे अधिक वह पुरूष मूसा मिस्र देश में फिरौन के
कर्मचारियोंऔर साधारण लोगोंकी दृष्टि में अति महान या।। 4 फिर मूसा ने कहा,
यहोवा इस प्रकार कहता है, कि आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में
होकर चलूंगा। 5 तब मिस्र में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर चक्की
पीसनेवाली दासी तक के पहिलौठे; वरन पशुओं तक के सब पहिलौठे मर जाएंगे।
6 और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहां तक कि उसके समान न तो
कभी हुआ और न होगा। 7 पर इस्राएलियोंके विरूद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी
पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा; जिस से तुम जान लो कि मिस्त्रियोंऔर इस्राएलियोंमें
मैं यहोवा अन्तर करता हूं। 8 तब तेरे थे सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत्
करके यह कहेंगे, कि अपके सब अनुचरोंसमेत निकल जा। और उसके पश्चात् मैं
निकल जाऊंगा। यह कह कर मूसा बड़े क्रोध में फिरौन के पास से निकल गया।।
9 यहोवा ने मूसा से कह दिया या, कि फिरौन तुम्हारी न सुनेगा; क्योंकि मेरी
इच्छा है कि मिस्र देश में बहुत से चमत्कार करूं। 10 मूसा और हारून ने फिरौन
के साम्हने थे सब चमत्कार किए; पर यहोवा ने फिरौन का मन और कठोर कर
दिया, सो उसने इस्राएलियोंको अपके देश से जाने न दिया।।

निर्गमन 12

1 फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, 2 कि यह महीना तुम
लोगोंके लिथे आरम्भ का ठहरे; अर्यात् वर्ष का पहिला महीना यही ठहरे। 3

इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को
तुम अपके अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार, घराने पीछे एक एक मेम्ना ले
रखो। 4 और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिथे मनुष्य कम हों,
तो वह अपके सब से निकट रहनेवाले पड़ोसी के साय प्राणियोंकी गिनती के
अनुसार एक मेम्ना ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का
हिसाब करना। 5 तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहिले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे
भेड़ोंमें से लेना चाहे बकरियोंमें से। 6 और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे
रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग
उसे बलि करें। 7 तब वे उसके लोहू में से कुछ लेकर जिन घरोंमें मेम्ने को खाएंगे
उनके द्वार के दोनोंअलंगोंऔर चौखट के सिक्के पर लगाएं। 8 और वे उसके मांस
को उसी रात आग में भूंजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साय खाएं। 9
उसको सिर, पैर, और अतड़ियोंसमेत आग में भूंजकर खाना, कच्चा वा जल में
कुछ भी पकाकर न खाना। 10 और उस में से कुछ बिहान तक न रहने देना, और
यदि कुछ बिहान तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। 11 और उसके
खाने की यह विधि है; कि कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी
लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्ब्ब होगा। 12 क्योंकि उस रात
को मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या
पशु, सब के पहिलौठोंको मारूंगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा;
मैं तो यहोवा हूं। 13 और जिन घरोंमें तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त
चिन्ह ठहरेगा; अर्यात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊंगा, और जब मैं
मिस्र देश के लोगोंको मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पकेगी और तुम नाश न

होगे। 14 और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको
यहोवा के लिथे पर्ब्ब करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढिय़ोंमें सदा की विधि
जानकर पर्ब्ब माना जाए। 15 सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, उन में
से पहिले ही दिन अपके अपके घर में से खमीर उठा डालना, वरन जो पहिले दिन
से लेकर सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इस्राएलियोंमें से
नाश किया जाए। 16 और पहिले दिन एक पवित्र सभा, और सातवें दिन भी एक
पवित्र सभा करना; उन दोनोंदिनोंमे कोई काम न किया जाए; केवल जिस प्राणी
का जो खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है। 17 इसलिथे तुम बिना खमीर की
रोटी का पर्ब्ब मानना, क्योंकि उसी दिन मानो मैं ने तुम को दल दल करके मिस्र
देश से निकाला है; इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढिय़ोंमें सदा की विधि जानकर
माना जाए। 18 पहिले महीने के चौदहवें दिन की सांफ से लेकर इक्कीसवें दिन
की सांफ तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरोंमें
कुछ भी खमीर न रहे, वरन जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देशी
हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इस्राएलियोंकी मण्डली से नाश किया जाए। 20 कोई
खमीरी वस्तु न खाना; अपके सब घरोंमें बिना खमीर की रोटी खाया करना।। 21
तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियोंको बुलाकर कहा, तुम अपके अपके कुल के
अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर रखो, और फसह का पशु बलि करना। 22 और
उसका लोहू जो तसले में होगा उस में जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में
के लोहू से द्वार के चौखट के सिक्के और दोनोंअलंगोंपर कुछ लगाना; और भोर
तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले। 23 क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर
मिस्रियोंको मारता जाएगा; इसलिथे जहां जहां वह चौखट के सिक्के, और

दोनोंअलंगोंपर उस लोहू को देखेगा, वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और
नाश करनेवाले को तुम्हारे घरोंमें मारने के लिथे न जाने देगा। 24 फिर तुम इस
विधि को अपके और अपके वंश के लिथे सदा की विधि जानकर माना करो। 25
जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपके कहने के अनुसार तुम को देगा प्रवेश
करो, तब वह काम किया करना। 26 और जब तुम्हारे लड़केबाले तुम से पूछें, कि
इस काम से तुम्हारा क्या मतलब है ? 27 तब तुम उनको यह उत्तर देना, कि
यहोवा ने जो मिस्रियोंके मारने के समय मिस्र में रहने वाले हम इस्राएलियोंके
घरोंको छोड़कर हमारे घरोंको बचाया, इसी कारण उसके फसह का यह बलिदान
किया जाता है। तब लोगोंने सिर फुकाकर दण्डवत् की। 28 और इस्राएलियोंने
जाकर, जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दी यी, उसी के अनुसार किया।।
29 और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर
विराजनेवाले फिरौन से लेकर गड़हे में पके हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठोंको,
वरन पशुओं तक के सब पहिलौठोंको मार डाला। 30 और फिरौन रात ही को उठ
बैठा, और उसके सब कर्मचारी, वरन सारे मिस्री उठे; और मिस्र में बड़ा हाहाकार
मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न या जिसमें कोई मरा न हो। 31 तब फिरौन ने
रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, तुम इस्राएलियोंसमेत मेरी
प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपके कहने के अनुसार जाकर यहोवा की
उपासना करो। 32 अपके कहने के अनुसार अपक्की भेड़-बकरियोंऔर
गाय-बैलोंको साय ले जाओ; और मुझे आशीर्वाद दे जाओ। 33 और मिस्री जो
कहते थे, कि हम तो सब मर मिटे हैं, उन्होंने इस्राएली लोगोंपर दबाव डालकर
कहा, कि देश से फटपट निकल जाओ। 34 तब उन्होंने अपके गून्धे गुन्धाए आटे

को बिना खमीर दिए ही कठौतियोंसमेत कपड़ोंमें बान्धके अपके अपके कन्धे पर
डाल लिया। 35 और इस्राएलियोंने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियोंसे सोने
चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिथे। 36 और यहोवा ने मिस्रियोंको अपक्की प्रजा
के लोगोंपर ऐसा दयालु किया, कि उन्होंने जो जो मांगा वह सब उनको दिया। इस
प्रकार इस्राएलियोंने मिस्रियोंको लूट लिया।। 37 तब इस्राएली रामसेस से कूच
करके सुक्कोत को चले, और बालबच्चोंको छोड़ वे कोई छ: लाख पुरूष प्यादे थे।
38 और उनके साय मिली जुली हुई एक भीड़ गई, और भेड़-बकरी, गाय-बैल,
बहुत से पशु भी साय गए। 39 और जो गून्धा आटा वे मिस्र से साय ले गए उसकी
उन्होंने बिना खमीर दिए रोटियां बनाई; क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले
गए, कि उन्हें अवसर भी न मिला की मार्ग में खाने के लिथे कुछ पका सकें, इसी
कारण वह गून्धा हुआ आटा बिना खमीर का या। 40 मिस्र में बसे हुए
इस्राएलियोंको चार सौ तीस वर्ष बीत गए थे। 41 और उन चार सौ तीस वर्षोंके
बीतने पर, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई। 42
यहोवा इस्राएलियोंको मिस्र देश से निकाल लाया, इस कारण वह रात उसके
निमित्त मानने के अति योग्य है; यह यहोवा की वही रात है जिसका पीढ़ी पीढ़ी में
मानना इस्राएलियोंके लिथे अति अवश्य है।। 43 फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, पर्ब्ब की विधि यह है; कि कोई परदेशी उस में से न खाए; 44 पर जो
किसी का मोल लिया हुआ दास हो, और तुम लोगोंने उसका खतना किया हो, वह
तो उस में से खा सकेगा। 45 पर परदेशी और मजदूर उस में से न खाएं। 46
उसका खाना एक ही घर में हो; अर्यात् तुम उसके मांस में से कुछ घर से बाहर न
ले जाना; और बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना। 47 पर्ब्ब को मानना इस्राएल की

सारी मण्डली का कर्तव्य कर्म है। 48 और यदि कोई परदेशी तुम लोगोंके संग
रहकर यहोवा के लिथे पर्ब्ब को मानना चाहे, तो वह अपके यहां के सब पुरूषोंका
खतना कराए, तब वह समीप आकर उसको माने; और वह देशी मनुष्य के तुल्य
ठहरेगा। पर कोई खतनारहित पुरूष उस में से न खाने पाए। 49 उसकी व्यवस्या
देशी और तुम्हारे बीच में रहनेवाले परदेशी दोनोंके लिथे एक ही हो। 50 यह आज्ञा
जो यहोवा ने मूसा और हारून को दी उसके अनुसार सारे इस्राएलियोंने किया। 51
और ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियोंको मिस्र देश से दल दल करके निकाल ले
गया।।

निर्गमन 13

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 कि क्या मनुष्य के क्या पशु के, इस्राएलियोंमें
जितने अपक्की अपक्की मां के जेठे हों, उन्हें मेरे लिथे पवित्र मानना; वह तो मेरा
ही है।। 3 फिर मूसा ने लोगोंसे कहा, इस दिन को स्मरण रखो, जिस में तुम लोग
दासत्व के घर, अर्यात् मिस्र से निकल आए हो; यहोवा तो तुम को वहां से अपके
हाथ के बल से निकाल लाया; इस में खमीरी रोटी न खाई जाए। 4 आबीब के
महीने में आज के दिन तुम निकले हो। 5 इसलिथे जब यहोवा तुम को कनानी,
हित्ती, एमोरी, हिब्बी, और यबूसी लोगोंके देश में पहुचाएगा, जिसे देने की उस ने
तुम्हारे पुरखाओं से शपय खाई यी, और जिस में दूध और मधु की धारा बहती है,
तब तुम इसी महीने में पर्ब्ब करना। 6 सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना,
और सातवें दिन यहोवा के लिथे पर्ब्ब मानना। 7 इन सातोंदिनोंमें अखमीरी रोटी
खाई जाए; वरन तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे पास देखने

में आए। 8 और उस दिन तुम अपके अपके पुत्रोंको यह कहके समझा देना, कि
यह तो हम उसी काम के कारण करते हैं, जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने
के समय हमारे लिथे किया या। 9 फिर यह तुम्हारे लिथे तुम्हारे हाथ में एक
चिन्ह होगा, और तुम्हारी आंखोंके साम्हने स्मरण करानेवाली वस्तु ठहरे; जिस
से यहोवा की व्यवस्या तुम्हारे मुंह पर रहे : क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपके
बलवन्त हाथोंसे मिस्र से निकाला है। 10 इस कारण तुम इस विधि को प्रति वर्ष
नियत समय पर माना करना।। 11 फिर जब यहोवा उस शपय के अनुसार, जो
उस ने तुम्हारे पुरखाओं से और तुम से भी खाई है, तुम्हे कनानियोंके देश में
पहुंचाकर उसको तुम्हें दे देगा, 12 तब तुम में से जितने अपक्की अपक्की मां के
जेठे होंउनको, और तुम्हारे पशुओं में जो ऐसे होंउनको भी यहोवा के लिथे अर्पण
करना; सब नर बच्चे तो यहोवा के हैं। 13 और गदही के हर एक पहिलौठे की
सन्ती मेम्ना देकर उसको छुड़ा लेना, और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो
उसका गला तोड़ देना। पर अपके सब पहिलौठे पुत्रोंको बदला देकर छुड़ा लेना।
14 और आगे के दिनोंमें जब तुम्हारे पुत्र तुम से पूछें, कि यह क्या है ? तो उन से
कहना, कि यहोवा हम लोगोंको दासत्व के घर से, अर्यात् मिस्र देश से अपके
हाथोंके बल से निकाल लाया है। 15 उस समय जब फिरौन ने कठोर होकर हम
को जाने देना न चाहा, तब यहोवा ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु तक सब के
पहिलौठोंको मार डाला। इसी कारण पशुओं में से तो जितने अपक्की अपक्की मां
के पहिलौठे नर हैं, उन्हें हम यहोवा के लिथे बलि करते हैं; पर अपके सब जेठे
पुत्रोंको हम बदला देकर छुड़ा लेते हैं। 16 और यह तुम्हारे हाथोंपर एक चिन्ह सा
और तुम्हारी भौहोंके बीच टीका सा ठहरे; क्योंकि यहोवा हम लोगोंको मिस्र से

अपके हाथोंके बल से निकाल लाया है।। 17 जब फिरौन ने लोगोंको जाने की
आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिश्तियोंके देश में होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा या;
तौभी परमेश्वर यह सोच कर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया, कि कहीं ऐसा न हो
कि जब थे लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं। 18 इसलिथे
परमेश्वर उनको चक्कर खिलाकर लाल समुद्र के जंगल के मार्ग से ले चला। और
इस्राएली पांति बान्धे हुए मिस्र से निकल गए। 19 और मूसा यूसुफ की
हड्डियोंको साय लेता गया; क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियोंसे यह कहके, कि
परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय की दृढ़ शपय खिलाई यी,
कि वे उसकी हड्डियोंको अपके साय यहां से ले जाएंगे। 20 फिर उन्होंने सुक्कोत
से कूच करके जंगल की छोर पर एताम में डेरा किया। 21 और यहोवा उन्हें दिन
को मार्ग दिखाने के लिथे मेघ के खम्भे में, और रात को उजियाला देने के लिथे
आग के खम्भे में होकर उनके आगे आगे चला करता या, जिससे वे रात और दिन
दोनोंमें चल सकें। 22 उस ने न तो बादल के खम्भे को दिन में और न आग के
खम्भे को रात में लोगोंके आगे से हटाया।।

निर्गमन 14

1 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्राएलियोंको आज्ञा दे, कि वे लौटकर मिगदोल और
समुद्र के बीच पीहहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के साम्हने अपके डेरे खड़े करें,
उसी के साम्हने समुद्र के तट पर डेरे खड़े करें। 3 तब फिरौन इस्राएलियोंके विषय
में सोचेगा, कि वे देश के उलफनोंमें बफे हैं और जंगल में घिर गए हैं। 4 तब मैं
फिरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा, तब फिरौन और

उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी; और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा
हूं। और उन्होंने वैसा ही किया। 5 जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे
लोग भाग गए, तब फिरौन और उसके कर्मचारियोंका मन उनके विरूद्ध पलट
गया, और वे कहने लगे, हम ने यह क्या किया, कि इस्राएलियोंको अपक्की
सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया ? 6 तब उस ने अपना रय जुतवाया और
अपक्की सेना को संग लिया। 7 उस ने छः सौ अच्दे से अच्छे रय वरन मिस्र के
सब रय लिए और उन सभोंपर सरदार बैठाए। 8 और यहोवा ने मिस्र के राजा
फिरौन के मन को कठोर कर दिया। सो उस ने इस्राएलियोंका पीछा किया; परन्तु
इस्राएली तो बेखटके निकले चले जाते थे। 9 पर फिरौन के सब घोड़ों, और रयों,
और सवारोंसमेत मिस्री सेना ने उनका पीछा करके उन्हें, जो पीहहीरोत के पास,
बालसपोन के साम्हने, समुद्र के तीर पर डेरे डाले पके थे, जा लिया।। 10 जब
फिरौन निकट आया, तब इस्राएलियोंने आंखे उठाकर क्या देखा, कि मिस्री हमारा
पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा
की दोहाई दी। 11 और वे मूसा से कहने लगे, क्या मिस्र में कबरें न यीं जो तू हम
को वहां से मरने के लिथे जंगल में ले आया है ? तू ने हम से यह क्या किया, कि
हम को मिस्र से निकाल लाया ? 12 क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते
रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियोंकी सेवा करें ? हमारे लिथे जंगल में मरने से
मिस्रियोंकि सेवा करनी अच्छी यी। 13 मूसा ने लोगोंसे कहा, डरो मत, खड़े खड़े
वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिथे करेगा; क्योंकि जिन
मिस्रियोंको तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। 14 यहोवा आप ही
तुम्हारे लिथे लड़ेगा, इसलिथे तुम चुपचाप रहो।। 15 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

तू क्योंमेरी दोहाई दे रहा है? इस्राएलियोंको आज्ञा दे कि यहां से कूच करें। 16 और
तू अपक्की लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो
जाएगा; तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्यल ही स्यल पर चले जाएंगे। 17
और सुन, मैं आप मिस्रियोंके मन को कठोर करता हूं, और वे उनका पीछा करके
समुद्र में घुस पकेंगे, तब फिरौन और उसकी सेना, और रयों, और सवारोंके द्वारा
मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। 18 और जब फिरौन,
और उसके रयों, और सवारोंके द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं
यहोवा हूं। 19 तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता
या जाकर उनके पीछे हो गया; और बादल का खम्भा उनके आगे से हटकर उनके
पीछे जा ठहरा। 20 इस प्रकार वह मिस्रियोंकी सेना और इस्राएलियोंकी सेना के
बीच में आ गया; और बादल और अन्धकार तो हुआ, तौभी उससे रात को उन्हें
प्रकाश मिलता रहा; और वे रात भर एक दूसरे के पास न आए। 21 और मूसा ने
अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई,
और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया, जिससे कि उसके बीच सूखी
भूमि हो गई। 22 तब इस्राएली समुद्र के बीच स्यल ही स्यल पर होकर चले, और
जल उनकी दाहिनी और बाईं ओर दीवार का काम देता या। 23 तब मिस्री, अर्यात्
फिरौन के सब घोड़े, रय, और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले
गए। 24 और रात के पिछले पहर में यहोवा ने बादल और आग के खम्भे में से
मिस्रियोंकी सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया। 25 और उस ने उनके रयोंके
पहियोंको निकाल डाला, जिससे उनका चलना कठिन हो गया; तब मिस्री आपस
में कहने लगे, आओ, हम इस्राएलियोंके साम्हने से भागें; क्योंकि यहोवा उनकी

ओर से मिस्रियोंके विरूद्ध युद्ध कर रहा है।। 26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना
हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों, और उनके रयों, और सवारोंपर फिर
बहने लगे। 27 तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते
क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्योंका त्योंअपके बल पर आ गया; और मिस्री उलटे
भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच ही में फटक दिया। 28 और
जल के पलटने से, जितने रय और सवार इस्राएलियोंके पीछे समुद्र में आए थे, सो
सब वरन फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और उस में से एक भी न बचा।
29 परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्यल ही स्यल पर होकर चले गए, और जल
उनकी दाहिनी और बाईं दोनोंओर दीवार का काम देता या। 30 और यहोवा ने उस
दिन इस्राएलियोंको मिस्रियोंके वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियोंने
मिस्रियोंको समुद्र के तट पर मरे पके हुए देखा। 31 और यहोवा ने मिस्रियोंपर जो
अपना पराक्रम दिखलाता या, उसको देखकर इस्राएलियोंने यहोवा का भय माना
और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की।।

निर्गमन 15

1 तब मूसा और इस्राएलियोंने यहोवा के लिथे यह गीत गाया। उन्होंने कहा, मैं
यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ोंसमेत सवारोंको
उस ने समुद्र में डाल दिया है।। 2 यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और
वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा ईश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूंगा, (मैं उसके
लिथे निवासस्यान बनाऊंगा), मेरे पूर्वजोंका परमेश्वर वही है, मैं उसको
सराहूंगा।। 3 यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है।। 4 फिरौन के रयोंऔर सेना

को उस ने समुद्र में डाल दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रयी लाल समुद्र में डूब
गए।। 5 गहिरे जल ने उन्हें ढांप लिया; वे पत्यर की नाईं गहिरे स्यानोंमें डूब
गए।। 6 हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ हे यहोवा, तेरा
दहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है।। 7 और तू अपके विरोधियोंको अपके
महाप्रताप से गिरा देता है; तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे की नाईं भस्म हो
जाते हैं।। 8 और तेरे नयनोंकी सांस से जल एकत्र हो गया, धाराएं ढेर की नाईं यम
गईं; समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया।। 9 शत्रु ने कहा या, मैं पीछा करूंगा,
मैं जा पकडूंगा, मैं लूट के माल को बांट लूंगा, उन से मेरा जी भर जाएगा। मै
अपक्की तलवार खींचते ही अपके हाथ से उनको नाश कर डालूंगा।। 10 तू ने
अपके श्वास का पवन चलाया, तब समुद्र ने उनको ढांप लिया; वे महाजलराशि में
सीसे की नाई डूब गए।। 11 हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो
पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपक्की स्तुति करने वालोंके भय के योग्य,
और आश्चर्य कर्म का कर्त्ता है।। 12 तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया, और पृय्वी ने
उनको निगल लिया है।। 13 अपक्की करूणा से तू ने अपक्की छुड़ाई हुई प्रजा की
अगुवाई की है, अपके बल से तू उसे अपके पवित्र निवासस्यान को ले चला है।।
14 देश देश के लोग सुनकर कांप उठेंगे; पलिश्तियोंके प्राण के लाले पड़ जाएंगे।।
15 एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे; मोआब के पहलवान यरयरा उठेंगे; सब
कनान निवासियोंके मन पिघल जाएंगें।। 16 उन में डर और घबराहट समा
जाएगा; तेरी बांह के प्रताप से वे पत्यर की नाई अबोल होंगे, जब तक, हे यहोवा,
तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएं, जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तू ने मोल
लिया है पार न निकल जाएं।। 17 तू उन्हें पहुचाकर अपके निज भागवाले पहाड़

पर बसाएगा, यह वही स्यान है, हे यहोवा जिसे तू ने अपके निवास के लिथे
बनाया, और वही पवित्रस्यान है जिसे, हे प्रभु, तू ने आप स्यिर किया है।। 18
यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।। 19 यह गीत गाने का कारण यह है, कि
फिरौन के घोड़े रयोंऔर सवारोंसमेत समुद्र के बीच में चले गए, और यहोवा उनके
ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया; परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्यल ही स्यल
पर होकर चले गए। 20 और हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ
लिया; और सब स्त्रियां डफ लिए नाचक्की हुई उसके पीछे हो लीं। 21 और
मरियम उनके साय यह टेक गाती गई कि :- यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह
महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ोंसमेत सवारोंको उस ने समुद्र में डाल दिया है।। 22 तब
मूसा इस्राएलियोंको लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नाम जंगल में आए;
और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला। 23 फिर मारा
नाम एक स्यान पर पहुंचे, वहां का पानी खारा या, उसे वे न पी सके; इस कारण
उस स्यान का नाम मारा पड़ा। 24 तब वे यह कहकर मूसा के विरूद्ध बकफक
करने लगे, कि हम क्या पीएं ? 25 तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा
ने उसे एक पौधा बतला दिया, जिसे जब उस ने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा
हो गया। वहीं यहोवा ने उनके लिथे एक विधि और नियम बनाया, और वहीं उस
ने यह कहकर उनकी पक्कीझा की, 26 कि यदि तू अपके परमेश्वर यहोवा का
वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी सब
विधियोंको माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियोंपर भेजा है उन में से एक भी तुझ
पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूं।। 27 तब वे एलीम
को आए, जहां पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे; और वहां उन्होंने

जल के पास डेरे खड़े किए।।

निर्गमन 16

1 फिर एलीम से कूच करके इस्राएलियोंकी सारी मण्डली, मिस्र देश से निकलने
के महीने के दूसरे महीने के पंद्रहवे दिन को, सीन नाम जंगल में, जो एलीम और
सीनै पर्वत के बीच में है, आ पहुंची। 2 जंगल में इस्राएलियोंकी सारी मण्डली मूसा
और हारून के विरूद्ध बकफक करने लगी। 3 और इस्राएली उन से कहने लगे, कि
जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियोंके पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे,
तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही या; पर तुम हम
को इस जंगल में इसलिथे निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भूखोंमार
डालो। 4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, देखो, मैं तुम लोगोंके लिथे आकाश से
भोजन वस्तु बरसाऊंगा; और थे लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन
इकट्ठा करेंगे, इस से मैं उनकी पक्कीझा करूंगा, कि थे मेरी व्यवस्या पर चलेंगे
कि नहीं। 5 और ऐसा होगा कि छठवें दिन वह भोजन और दिनोंसे दूना होगा,
इसलिथे जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें। 6 तब मूसा और हारून ने
सारे इस्राएलियोंसे कहा, सांफ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से
निकाल ले आया है वह यहोवा है। 7 और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख
पकेगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या
हैं, कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो ? 8 फिर मूसा ने कहा, यह तब होगा जब यहोवा
सांफ को तुम्हें खाने के लिथे मांस और भोर को रोटी मनमाने देगा; क्योंकि तुम
जो उस पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं ? तुम्हारा बुड़बुड़ाना

हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है। 9 फिर मूसा ने हारून से कहा, इस्त्राएलियोंकी
सारी मण्डली को आज्ञा दे, कि यहोवा के साम्हने वरन उसके समीप आवे,
क्योंकि उस ने उनका बुड़बुड़ाना सुना है। 10 और ऐसा हुआ कि जब हारून
इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा या, कि उन्होंने जंगल की
ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया। 11
तब यहोवा ने मूसा से कहा, 12 इस्त्राएलियोंका बुड़बुड़ाना मैं ने सुना है; उन से कह
दे, कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो
जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 13 और ऐसा
हुआ कि सांफ को बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं; और भोर को छावनी के
चारोंओर ओस पक्की। 14 और जब ओस सूख गई तो वे क्या देखते हैं, कि जंगल
की भूमि पर छोटे छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनकोंके समान पके हैं। 15
यह देखकर इस्त्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, सो आपस में कहने
लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजन वस्तु है जिसे
यहोवा तुम्हें खाने के लिथे देता है। 16 जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है, कि
तुम उस में से अपके अपके खाने के योग्य बटोरा करना, अर्यात् अपके अपके
प्राणियोंकी गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक एक ओमेर बटोरना;
जिसके डेरे में जितने होंवह उन्हीं भर के लिथे बटोरा करे। 17 और इस्त्राएलियोंने
वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने योड़ा बटोर लिया। 18 और
जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक या उसके कुछ
अधिक न रह गया, ओर जिसके पास योड़ा या उसको कुछ घटी न हुई; क्योंकि
एक एक मनुष्य ने अपके खाने के योग्य ही बटोर लिया या। 19 फिर मूसा ने उन

से कहा, कोई इस में से कुछ बिहान तक न रख छोड़े। 20 तौभी उन्होंने मूसा की
बात न मानी; इसलिथे जब किसी किसी मनुष्य ने उस में से कुछ बिहान तक रख
छोड़ा, तो उस में कीड़े पड़ गए और वह बसाने लगा; तब मूसा उन पर क्रोधित
हुआ। 21 और वे भोर को प्रतिदिन अपके अपके खाने के योग्य बटोर लेते थे, ओर
जब धूप कड़ी होती यी, तब वह गल जाता या। 22 और ऐसा हुआ कि छठवें दिन
उन्होंने दूना, अर्यात् प्रति मनुष्य के पीछे दो दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली
के सब प्रधानोंने आकर मूसा को बता दिया। 23 उस ने उन से कहा, यह तो वही
बात है जो यहोवा ने कही, क्यांेकि कल परमविश्रम, अर्यात् यहोवा के लिथे
पवित्र विश्रम होगा; इसलिथे तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ, और जो
सिफाना हो उसे सिफाओ, और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिथे रख
छोड़ो। 24 जब उन्होंने उसको मूसा की इस आज्ञा के अनुसार बिहान तक रख
छोड़ा, तब न तो वह बसाया, और न उस में कीड़े पके। 25 तब मूसा ने कहा, आज
उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्रमदिन है; इसलिथे आज तुम को
मैदान में न मिलेगा। 26 छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे; परन्तु सातवां दिन
तो विश्रम का दिन है, उस में वह न मिलेगा। 27 तौभी लोगोंमें से कोई कोई सातवें
दिन भी बटोरने के लिथे बाहर गए, परन्तु उनको कुछ न मिला। 28 तब यहोवा ने
मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्या को कब तक नहीं मानोगे ?
29 देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्रम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें
दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिथे तुम अपके अपके यहां बैठे
रहना, सातवें दिन कोई अपके स्यान से बाहर न जाना। 30 लोगोंने सातवें दिन
विश्रम किया। 31 और इस्राएल के घरानेवालोंने उस वस्तु का नाम मन्ना रखा;

और वह धनिया के समान श्वेत या, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पुए का सा
या। 32 फिर मूसा ने कहा, यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है, कि इस में से ओमेर
भर अपके वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिथे रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हमको
मिस्र देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता या। 33 तब मूसा ने हारून
से कहा, एक पात्र लेकर उस में ओमेर भर लेकर उसे यहोवा के आगे धर दे, कि
वह तुम्हारी पीढिय़ोंके लिथे रखा रहे। 34 जैसी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी,
उसी के अनुसार हारून ने उसको साझी के सन्दूक के आगे धर दिया, कि वह वहीं
रखा रहे। 35 इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुंचे तब तक, अर्यात् चालीस
वर्ष तक मन्ना को खाते रहे; वे जब तक कनान देश के सिवाने पर नहीं पहुंचे तब
तक मन्ना को खाते रहे। 36 एक ओमेर तो एपा का दसवां भाग है।

निर्गमन 17

1 फिर इस्राएलियोंकी सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चक्की, और
यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपके डेरे खड़े किए; और वहां उन
लोगोंको पीने का पानी न मिला। 2 इसलिथे वे मूसा से वादविवाद करके कहने
लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्योंवादविवाद
करते हो? और यहोवा की पक्कीझा क्योंकरते हो? 3 फिर वहां लोगोंको पानी की
प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़केबालोंऔर
पशुओं समेत प्यासोंमार डालने के लिथे मिस्र से क्योंले आया है ? 4 तब मूसा ने
यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगोंसे मैं क्या करूं? थे सब मुझे पत्यरवाह
करने को तैयार हैं। 5 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगोंमें से कुछ को

अपके साय ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा या, उसे अपके हाथ
में लेकर लोगोंके आगे बढ़ चल। 6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक
चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उस में से पानी
निकलेगा जिससे थे लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगोंके देखते वैसा
ही किया। 7 और मूसा ने उस स्यान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, कयोंकि
इस्राएलियोंने वहां वादविवाद किया या, और यहोवा की पक्कीझा यह कहकर की,
कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं ? 8 तब अमालेकी आकर रपीदीम में
इस्राएलियोंसे लड़ने लगे। 9 तब मूसा ने यहोशू से कहा, हमारे लिथे कई एक
पुरूषोंको चुनकर छांट ले, ओर बाहर जाकर अमालेकियोंसे लड़; और मैं कल
परमेश्वर की लाठी हाथ में लिथे हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा। 10 मूसा की
इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियोंसे लड़ने लगा; और मूसा, हारून, और
हूर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। 11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता
या तब तक तो इस्राएल प्रबल होता या; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब
तब अमालेक प्रबल होता या। 12 और जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्होंने एक
पत्यर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया, और हारून और
हूर एक एक अलंग में उसके हाथोंको सम्भाले रहें; और उसके हाथ सूर्यास्त तक
स्यिर रहे। 13 और यहोशू ने अनुचरोंसमेत अमालेकियोंको तलवार के बल से हरा
दिया। 14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, स्मरणार्य इस बात को पुस्तक में लिख ले
और यहोशू को सुना दे, कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी
रीति से मिटा डालूंगा। 15 तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम
यहोवानिस्सी रखा ; 16 और कहा, यहोवा ने शपय खाई है, कि यहोवा

अमालेकियोंसे पीढियोंतक लड़ाई करता रहेगा।।

निर्गमन 18

1 और मूसा के ससुर मिद्दान के याजक यित्रो ने यह सुना, कि परमेश्वर ने मूसा
और अपक्की प्रजा इस्त्राएल के लिथे क्या क्या किया है, अर्यात् यह कि किस
रीति से यहोवा इस्त्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आया। 2 तब मूसा के ससुर
यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जो पहिले नैहर भेज दी गई यी, 3 और उसके
दोनोंबेटोंको भी ले आया; इन में से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम रखा
या, कि मै अन्य देश में परदेशी हुआ हूं। 4 और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर
एलीएजेर रखा, कि मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहाथक होकर मुझे फिरौन की
तलवार से बचाया। 5 मूसा की पत्नी और पुत्रोंको उसका ससुर यित्रो संग लिए
मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहां परमेश्वर के पर्वत के पास उसका
डेरा पड़ा या। 6 और आकर उस ने मूसा के पास यह कहला भेजा, कि मैं तेरा ससुर
यित्रो हूं, और दोनो बेटोंसमेत तेरी पत्नी को तेरे पास ले आया हूं। 7 तब मूसा
अपके ससुर से भेंट करने के लिथे निकला, और उसको दण्डवत् करके चूमा; और
वे परस्पर कुशल झेम पूछते हुए डेरे पर आ गए। 8 वहां मूसा ने अपके ससुर से
वर्णन किया, कि यहोवा ने इस्त्राएलियोंके निमित्त फिरौन और मिस्रियोंसे क्या
क्या किया, और इस्त्राएलियोंने मार्ग में क्या क्या कष्ट उठाया, फिर यहोवा उन्हें
कैसे कैसे छुड़ाता आया है। 9 तब यित्रो ने उस समस्त भलाई के कारण जो यहोवा
ने इस्त्राएलियोंके साय की यी, कि उन्हें मिस्रियोंके वश से छुड़ाया या, मग्न होकर
कहा, 10 धन्य है यहोवा, जिस ने तुम को फिरौन और मिस्रियोंके वश से छुड़ाया,

जिस ने तुम लोगोंको मिस्रियोंकी मुट्ठी में से छुड़ाया है। 11 अब मैं ने जान लिया
है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है; वरन उस विषय में भी जिस में उन्होंने
इस्त्राएलियोंसे अभिमान किया या। 12 तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के
लिथे होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और हारून इस्त्राएलियोंके सब पुरनियोंसमेत
मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर के आगे भोजन करने को आया। 13 दूसरे
दिन मूसा लोगोंका न्याय करने को बैठा, और भोर से सांफ तक लोग मूसा के
आसपास खड़े रहे। 14 यह देखकर कि मूसा लोगोंके लिथे क्या क्या करता है,
उसके ससुर ने कहा, यह क्या काम है जो तू लोगोंके लिथे करता है? क्या कारण है
कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से सांफ तक तेरे आसपास खड़े रहते
हैं? 15 मूसा ने अपके ससुर से कहा, इसका कारण यह है कि लोग मेरे पास
परमेश्वर से पूछने आते है। 16 जब जब उनका कोई मुकद्दमा होता है तब तब वे
मेरे पास आते हैं और मैं उनके बीच न्याय करता, और परमेश्वर की विधि और
व्यवस्या उन्हें जताता हूं। 17 मूसा के ससुर ने उस से कहा, जो काम तू करता है
वह अच्छा नहीं। 18 और इस से तू क्या, वरन थे लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय
हार जाएंगे, क्योंकि यह काम तेरे लिथे बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर
सकता। 19 इसलिथे अब मेरी सुन ले, मैं तुझ को सम्मति देता हूं, और परमेश्वर
तेरे संग रहे। तू तो इन लोगोंके लिथे परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके
मुकद्दमोंको परमेश्वर के पास तू पहुंचा दिया कर। 20 इन्हें विधि और व्यवस्या
प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह
इनको जता दिया कर। 21 फिर तू इन सब लोगोंमें से ऐसे पुरूषोंको छांट ले, जो
गुणी, और परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ से घृणा

करने वाले हों; और उनको हजारफार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस
मनुष्योंपर प्रधान नियुक्त कर दे। 22 और वे सब समय इन लोगोंका न्याय किया
करें; और सब बड़े बड़े मुकद्दमोंको तो तेरे पास ले आया करें, और छोटे छोटे
मुकद्दमोंका न्याय आप ही किया करें; तब तेरा बोफ हलका होगा, क्योंकि इस
बोफ को वे भी तेरे साय उठाएंगे। 23 यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझ
को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और थे सब लोग अपके स्यान को कुशल से
पहुंच सकेंगें। 24 अपके ससुर की यह बात मान कर मूसा ने उसके सब वचनोंके
अनुसार किया। 25 सो उस ने सब इस्त्राएलियोंमें से गुणी-गुणी पुरूष चुनकर उन्हें
हजारफार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस, लोगोंके ऊपर प्रधान ठहराया। 26 और
वे सब लोगोंका न्याय करने लगे; जो मुकद्दमा कठिन होता उसे तो वे मूसा के
पास ले आते थे, और सब छोटे मुकद्दमोंका न्याय वे आप ही किया करते थे। 27
और मूसा ने अपके ससुर को विदा किया, और उस ने अपके देश का मार्ग लिया।।

निर्गमन 19

1 इस्त्राएलियोंको मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके, उसी
दिन वे सीनै के जंगल में आए। 2 और जब वे रपीदीम से कूच करके सीनै के
जंगल में आए, तब उन्होंने जंगल में डेरे खड़े किए; और वहीं पर्वत के आगे
इस्त्राएलियोंने छावनी डाली। 3 तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया,
और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह,
और इस्त्राएलियोंको मेरा यह वचन सुना, 4 कि तुम ने देखा है कि मै ने मिस्त्रियोंसे
क्या क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्की के पंखोंपर चढ़ाकर अपके पास ले

आया हूं। 5 इसलिथे अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन
करोगे, तो सब लोगोंमें से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी
है। 6 और तुम मेरी दृष्टि में याजकोंका राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें
तुझे इस्त्राएलियोंसे कहनी हैं वे थे ही है। 7 तब मूसा ने आकर लोगोंके पुरनियोंको
बुलवाया, और थे सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी यी, उनको
समझा दीं। 8 और सब लोग मिलकर बोल उठे, जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब
हम नित करेंगे। लोगोंकी यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं। 9 तब यहोवा ने
मूसा से कहा, सुन, मैं बादल के अंधिक्कारने में होकर तेरे पास आता हूं, इसलिथे
कि जब मैं तुझ से बातें करूं तब वे लोग सुनें, और सदा तेरी प्रतीति करें। और
मूसा ने यहोवा से लोगोंकी बातोंका वर्णन किया। 10 तब यहोवा ने मूसा से कहा,
लोगोंके पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और वे अपके वस्त्र धो
लें, 11 और वे तीसरे दिन तक तैयार हो रहें; क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब
लोगोंके देखते सीनै पर्वत पर उतर आएगा। 12 और तू लोगोंके लिथे चारोंओर
बाड़ा बान्ध देना, और उन से कहना, कि तुम सचेत रहोंकि पर्वत पर न चढ़ो और
उसके सिवाने को भी न छूओ; और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला
जाए। 13 उसको कोई हाथ से तो न छूए, परन्तु वह निश्चय पत्यरवाह किया
जाए, वा तीर से छेदा जाए; चाहे पशु हो चाहे मनुष्य, वह जीवित न बचे। जब
महाशब्द वाले नरसिंगे का शब्द देर तक सुनाई दे, तब लोग पर्वत के पास आएं।
14 तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर लोगोंके पास आकर उनको पवित्र कराया;
और उन्होंने अपके वस्त्र धो लिए। 15 और उस ने लोगोंसे कहा, तीसरे दिन तक
तैयार हो रहो; स्त्री के पास न जाना। 16 जब तीसरा दिन आया तब भोर होते

बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर
नरसिंगे का शब्द बड़ा भरी हुआ, और छावनी में जितने लोग थे सब कांप उठे। 17
तब मूसा लोगोंको परमेश्वर से भेंट करने के लिथे छावनी से निकाल ले गया; और
वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। 18 और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा
या, इस कारण समस्त पर्वत धुएं से भर गया; और उसका धुआं भट्टे का सा उठ
रहा या, और समस्त पर्वत बहुत कांप रहा या 19 फिर जब नरसिंगे का शब्द
बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर
उसको उत्तर दिया। 20 और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को
पर्वत की चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर चढ़ गया। 21 तब यहोवा ने मूसा से
कहा, नीचे उतरके लोगोंको चितावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़के यहोवा
के पास देखने को घुसें, और उन में से बहुत नाश होंजाएं। 22 और याजक जो
यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपके को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि
यहोवा उन पर टूट पके। 23 मूसा ने यहोवा से कहा, वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं
चढ़ सकते; तू ने तो आप हम को यह कहकर चिताया, कि पर्वत के चारोंओर बाड़ा
बान्धकर उसे पवित्र रखो। 24 यहोवा ने उस से कहा, उतर तो जा, और हारून
समेत ऊपर आ; परन्तु याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा
तोड़के न चढ़ आएं, कहीं ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पके। 25 थे ही बातें मूसा
ने लोगोंके पास उतरके उनको सुनाईं।।

निर्गमन 20

1 तब परमेश्वर ने थे सब वचन कहे, 2 कि मै तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे

दासत्व के घर अर्यात् मिस्र देश से निकाल लाया है।। 3 तू मुझे छोड़ दूसरोंको
ईश्वर करके न मानना।। 4 तू अपके लिथे कोई मूतिर् खोदकर न बनाना, न किसी
कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृय्वी पर, वा पृय्वी के जल में है। 5 तू
उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मै तेरा परमेश्वर
यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते है, उनके बेटों, पोतों,
और परपोतोंको भी पितरोंका दण्ड दिया करता हूं, 6 और जो मुझ से प्रेम रखते
और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारोंपर करूणा किया करता हूं।। 7 तू
अपके परमेश्वर का नाम व्यर्य न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्य ले वह
उसको निर्दोष न ठहराएगा।। 8 तू विश्रमदिन को पवित्र मानने के लिथे स्मरण
रखना। 9 छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; 10 परन्तु
सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे विश्रमदिन है। उस में न तो तू किसी
भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी
दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकोंके भीतर हो। 11 क्योंकि छः दिन
में यहोवा ने आकाश, और पृय्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को
बनाया, और सातवें दिन विश्रम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रमदिन को
आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।। 12 तू अपके पिता और अपक्की माता
का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत
दिन तक रहने पाए।। 13 तू खून न करना।। 14 तू व्यभिचार न करना।। 15 तू
चोरी न करना।। 16 तू किसी के विरूद्ध फूठी साझी न देना।। 17 तू किसी के घर
का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के
दास-दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।। 18 और

सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धुआं उठते हुए
पर्वत को देखते रहे, और देखके, कांपकर दूर खड़े हो गए; 19 और वे मूसा से
कहने लगे, तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से
बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएं। 20 मूसा ने लोगोंसे कहा, डरो मत;
क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी पक्कीझा करे, और उसका भय
तुम्हारे मन में बना रहे, कि तुम पाप न करो। 21 और वे लोग तो दूर ही खड़े रहे,
परन्तु मूसा उस घोर अन्धकार के समीप गया जहां परमेश्वर या।। 22 तब यहोवा
ने मूसा से कहा, तू इस्त्राएलियोंको मेरे थे वचन सुना, कि तुम लोगोंने तो आप ही
देखा है कि मै ने तुम्हारे साय आकाश से बातें की हैं। 23 तुम मेरे साय किसी को
सम्मिलित न करना, अर्यात् अपके लिथे चान्दी वा सोने से देवताओं को न गढ़
लेना। 24 मेरे लिथे मिट्टी की एक वेदी बनाना, और अपक्की भेड़-बकरियोंऔर
गाय-बैलोंके होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना; जहां जहां मैं अपके नाम
का स्मरण कराऊं वहां वहां मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा। 25 और यदि तुम मेरे
लिथे पत्यरोंकी वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्यरोंसे न बनाना; क्योंकि जहां तुम
ने उस पर अपना हयियार लगाया वहां तू उसे अशुद्ध कर देगा। 26 और मेरी वेदी
पर सीढ़ी से कभी न चढ़ना, कहीं ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर नंगा देख पके।।

निर्गमन 21

1 फिर जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे थे हैं।। 2 जब तुम कोई इब्री दास
मोल लो, तब वह छ: वर्ष तक सेवा करता रहे, और सातवें वर्ष स्वतंत्र होकर
संतमेंत चला जाए। 3 यदि वह अकेला आया हो, तो अकेला ही चला जाए; और

यदि पत्नी सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी पत्नी भी चक्की जाए। 4 यदि
उसके स्वामी ने उसको पत्नी दी हो और उस से उसके बेटे वा बेटियां उत्पन्न हुई
हों, तो उसकी पत्नी और बालक उसके स्वामी के ही रहें, और वह अकेला चला
जाए। 5 परन्तु यदि वह दास दृढ़ता से कहे, कि मैं अपके स्वामी, और अपक्की
पत्नी, और बालकोंसे प्रेम रखता हूं; इसलिथे मैं स्वतंत्र होकर न चला जाऊंगा; 6
तो उसका स्वामी उसको परमेश्वर के पास ले चले; फिर उसको द्वार के किवाड़ वा
बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करें; तब वह सदा उसकी
सेवा करता रहे।। 7 यदि कोई अपक्की बेटी को दासी होने के लिथे बेच डाले, तो
वह दासी की नाईं बाहर न जाए। 8 यदि उसका स्वामी उसको अपक्की पत्नी
बनाए, और फिर उस से प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे; उसका
विश्वासघात करने के बाद उसे ऊपक्की लोगोंके हाथ बेचने का उसको
अधिक्कारने न होगा। 9 और यदि उस ने उसे अपके बेटे को ब्याह दिया हो, तो
उस से बेटी का सा व्यवहार करे। 10 चाहे वह दूसरी पत्नी कर ले, तौभी वह उसका
भोजन, वस्त्र, और संगति न घटाए। 11 और यदि वह इन तीन बातोंमें घटी करे,
तो वह स्त्री सेंतमेंत बिना दाम चुकाए ही चक्की जाए।। 12 जो किसी मनुष्य को
ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए। 13 यदि वह उसकी
घात में न बैठा हो, और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया हो,
तो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं एक स्यान ठहराऊंगा जहां वह भाग
जाए। 14 परन्तु यदि कोई ढिठाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे,
तो उसको मार ढालने के लिथे मेरी वेदी के पास से भी अलग ले जाना।। 15 जो
अपके पिता वा माता को मारे-पीटे वह निश्चय मार डाला जाए।। 16 जो किसी

मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके पास पाया जाए,
तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।। 17 जो अपके पिता वा माता को श्रप दे वह भी
निश्चय मार डाला जाए।। 18 यदि मनुष्य फगड़ते हों, और एक दूसरे को पत्यर वा
मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं परन्तु बिछौने पर पड़ा रहे, 19 तो जब वह
उठकर लाठी के सहारे से बाहर चलने फिरने लगे, तब वह मारनेवाला निर्दोष
ठहरे; उस दशा में वह उसके पके रहने के समय की हानि तो भर दे, ओर उसको
भला चंगा भी करा दे।। 20 यदि कोई अपके दास वा दासी को सोंटे से ऐसा मारे
कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए। 21
परन्तु यदि वह दो एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए;
क्योंकि वह दास उसका धन है।। 22 यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी
गभिर्णी स्त्री को ऐसी चोट पहुचाए, कि उसका गर्भ गिर जाए, परन्तु और कुछ
हानि न हो, तो मारनेवाले से उतना दण्ड लिया जाए जितना उस स्त्री का पति पंच
की सम्मति से ठहराए। 23 परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुंचे, तो प्राण की
सन्ती प्राण का, 24 और आंख की सन्ती आंख का, और दांत की सन्ती दांत का,
और हाथ की सन्ती हाथ का, और पांव की सन्ती पांव का, 25 और दाग की सन्ती
दाग का, और घाव की सन्ती घाव का, और मार की सन्ती मार का दण्ड हो।। 26
जब कोई अपके दास वा दासी की आंख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी
आंख की सन्ती उसे स्वतंत्र करके जाने दे। 27 और यदि वह अपके दास वा दासी
को मारके उसका दांत तोड़ डाले, तो वह उसके दांत की सन्ती उसे स्वतंत्र करके
जाने दे।। 28 यदि बैल किसी पुरूष वा स्त्री को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो
वह बैल तो निश्चय पत्यरवाह करके मार डाला जाए, और उसका मांस खाया न

जाए; परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे। 29 परन्तु यदि उस बैल की पहिले से
सींग मारने की बान पक्की हो, और उसके स्वामी ने जताए जाने पर भी उसको न
बान्ध रखा हो, और वह किसी पुरूष वा स्त्री को मार डाले, तब तो वह बैल
पत्यरवाह किया जाए, और उसका स्वामी भी मार डाला जाए। 30 यदि उस पर
छुड़ौती ठहराई जाए, तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उसके लिथे ठहराया जाए उसे
उतना ही देना पकेगा। 31 चाहे बैल ने किसी बेटे को, चाहे बेटी को मारा हो, तौभी
इसी नियम के अनुसार उसके स्वामी के साय व्यवहार किया जाए। 32 यदि बैल
ने किसी दास वा दासी को सींग मारा हो, तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी
को तीस शेकेल रूपा दे, और वह बैल पत्यरवाह किया जाए।। 33 यदि कोई
मनुष्य गड़हा खोलकर वा खोदकर उसको न ढांपे, और उस में किसी का बैल वा
गदहा गिर पके 34 तो जिसका वह गड़हा हो वह उस हानि को भर दे; वह पशु के
स्वामी को उसका मोल दे, और लोय गड़हेवाले की ठहरे।। 35 यदि किसी का बैल
किसी दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए, कि वह मर जाए, तो वे दोनो मनुष्य
जीते बैल को बेचकर उसका मोल आपस में आधा आधा बांट ले; और लोय को भी
वैसा ही बांटें। 36 यदि यह प्रगट हो कि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान
पक्की यी, पर उसके स्वामी ने उसे बान्ध नहीं रखा, तो निश्चय यह बैल की सन्ती
बैल भर दे, पर लोय उसी की ठहरे।।

निर्गमन 22

1 यदि कोई मनुष्य बैल, वा भेड़, वा बकरी चुराकर उसका घात करे वा बेच डाले,
तो वह बैल की सन्ती पाँच बैल, और भेड़-बकरी की सन्ती चार भेड़-बकरी भर दे।

2 यदि चोर सेंध लगाते हुए पकड़ा जाए, और उस पर ऐसी मार पके कि वह मर
जाए, तो उसके खून का दोष न लगे; 3 यदि सूर्य निकल चुके, तो उसके खून का
दोष लगे; अवश्य है कि वह हानि को भर दे, और यदि उसके पास कुछ न हो, तो
वह चोरी के कारण बेच दिया जाए। 4 यदि चुराया हुआ बैल, वा गदहा, वा भेड़ वा
बकरी उसके हाथ में जीवित पाई जाए, तो वह उसका दूना भर दे।। 5 यदि कोई
अपके पशु से किसी का खेत वा दाख की बारी चराए, अर्यात् अपके पशु को ऐसा
छोड़ दे कि वह पराए खेत को चर ले, तो वह अपके खेत की और अपक्की दाख की
बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे।। 6 यदि कोई आग
जलाए, और वह कांटोंमें लग जाए और फूलोंके ढेर वा अनाज वा खड़ा खेत जल
जाए, तो जिस ने आग जलाई हो वह हानि को निश्चय भर दे।। 7 यदि कोई दूसरे
को रूपए वा सामग्री की धरोहर धरे, और वह उसके घर से चुराई जाए, तो यदि
चोर पकड़ा जाए, तो दूना उसी को भर देना पकेगा। 8 और यदि चोर न पकड़ा
जाए, तो घर का स्वामी परमेश्वर के पास लाया जाए, कि निश्चय हो जाय कि उस
ने अपके भाई बन्धु की सम्पत्ति पर हाथ लगाया है वा नहीं। 9 चाहे बैल, चाहे
गदहे, चाहे भेड़ वा बकरी, चाहे वस्त्र, चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के
विषय अपराध क्योंन लगाया जाय, जिसे दो जन अपक्की अपक्की कहते हों, तो
दोनोंका मुकद्दमा परमेश्वर के पास आए; और जिसको परमेश्वर दोषी ठहराए वह
दूसरे को दूना भर दे।। 10 यदि कोई दूसरे को गदहा वा बैल वा भेड़-बकरी वा कोई
और पशु रखने के लिथे सौंपें, और किसी के बिना देखे वह मर जाए, वा चोट
खाए, वा हांक दिया जाए, 11 तो उन दोनो के बीच यहोवा की शपय खिलाई जाए
कि मैं ने इसकी सम्पत्ति पर हाथ नहीं लगाया; तब सम्पत्ति का स्वामी इसको सच

माने, और दूसरे को उसे कुछ भी भर देना न होगा। 12 यदि वह सचमुच उसके
यहां से चुराया गया हो, तो वह उसके स्वामी को उसे भर दे। 13 और यदि वह
फाड़ डाला गया हो, तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिथे ले आए, तब उसे उसको
भी भर देना न पकेगा।। 14 फिर यदि कोई दूसरे से पशु मांग लाए, और उसके
स्वामी के संग न रहते उसको चोट लगे वा वह मर जाए, तो वह निश्चय उसकी
हानि भर दे। 15 यदि उसका स्वामी संग हो, तो दूसरे को उसकी हानि भरना न
पके; और यदि वह भाड़े का हो तो उसकी हानि उसके भाड़े में आ गई।। 16 यदि
कोई पुरूष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उसके
संग कुकर्म करे, तो वह निश्चय उसका मोल देके उसे ब्याह ले। 17 परन्तु यदि
उसका पिता उसे देने को बिल्कुल इनकार करे, तो कुकर्म करनेवाला कन्याओं के
मोल की रीति के अनुसार रूपके तौल दे।। 18 तू डाइन को जीवित रहने न देना।।
19 जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए।। 20 जो कोई यहोवा को
छोड़ किसी और देवता के लिथे बलि करे वह सत्यनाश किया जाए। 21 और
परदेशी को न सताना और न उस पर अन्धेर करना क्योंकि मिस्र देश में तुम भी
परदेशी थे। 22 किसी विधवा वा अनाय बालक को दु:ख न देना। 23 यदि तुम
ऐसोंको किसी प्रकार का दु:ख दो, और वे कुछ भी मेरी दोहाई दें, तो मैं निश्चय
उनकी दोहाई सुनूंगा; 24 तब मेरा क्रोध भड़केगा, और मैं तुम को तलवार से
मरवाऊंगा, और तुम्हारी पत्नियां विधवा और तुम्हारे बालक अनाय हो जाएंगे।।
25 यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो रूपए का ऋण दे,
तो उस से महाजन की नाई ब्याज न लेना। 26 यदि तू कभी अपके भाईबन्धु के
वस्त्र को बन्धक करके रख भी ले, तो सूर्य के अस्त होने तक उसको लौटा देना;

27 क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है, उसकी देह का वही अकेला वस्त्र होगा
फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा? तोभी जब वह मेरी दोहाई देगा तब मैं उसकी
सुनूंगा, क्योंकि मैं तो करूणामय हूं।। 28 परमेश्वर को श्रप न देना, और न अपके
लोगोंके प्रधान को श्रप देना। 29 अपके खेतोंकी उपज और फलोंके रस में से कुछ
मुझे देने में विलम्ब न करना। अपके बेटोंमें से पहिलौठे को मुझे देना। 30 वैसे ही
अपक्की गायोंऔर भेड़-बकरियोंके पहिलौठे भी देना; सात दिन तक तो बच्चा
अपक्की माता के संग रहे, और आठवें दिन तू उसे मुझे दे देना। 31 और तुम मेरे
लिथे पवित्र मनुष्य बनना; इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले
उसका मांस न खाना, उसको कुत्तोंके आगे फेंक देना।।

निर्गमन 23

1 फूठी बात न फैलाना। अन्यायी साझी होकर दुष्ट का साय न देना। 2 बुराई करने
के लिथे न तो बहुतोंके पीछे हो लेना; और न उनके पीछे फिरके मुकद्दमें में न्याय
बिगाड़ने को साझी देना; 3 और कंगाल के मुकद्दमें में उसका भी पझ न करना।।
4 यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास
अवश्य फेर ले आना। 5 फिर यदि तू अपके बैरी के गदहे को बोफ के मारे दबा
हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिथे छुड़ाने के लिथे तेरा मन न चाहे,
तौभी अवश्य स्वामी का साय देकर उसे छुड़ा लेना।। 6 तेरे लोगोंमें से जो दरिद्र
होंउसके मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना। 7 फूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष
और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा। 8 घूस न
लेना, क्योंकि घूस देखने वालोंको भी अन्धा कर देता, और धमिर्योंकी बातें पलट

देता है। 9 परदेशी पर अन्धेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो,
क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे।। 10 छ: वर्ष तो अपक्की भूमि में बोना
और उसकी उपज इकट्ठी करना; 11 परन्तु सातवें वर्ष में उसको पड़ती रहने
देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे भाई बन्धुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने
पाएं, और जो कुछ उन से भी बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम में आए। और
अपक्की दाख और जलपाई की बारियोंको भी ऐसे ही करना। 12 छ: दिन तक तो
अपना काम काज करना, और सातवें दिन विश्रम करना; कि तेरे बैल और गदहे
सुस्ताएं, और तेरी दासियोंके बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंडा कर सकें। 13
और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस में सावधान रहना; और दूसरे देवताओं के
नाम की चर्चा न करना, वरन वे तुम्हारे मुंह से सुनाई भी न दें। 14 प्रति वर्ष तीन
बार मेरे लिथे पर्ब्ब मानना। 15 अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानना; उस में मेरी आज्ञा
के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया
करना, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए। और मुझ को कोई छूछे
हाथ अपना मुंह न दिखाए। 16 और जब तेरी बोई हुई खेती की पहिली उपज
तैयार हो, तब कटनी का पर्ब्ब मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के
फल बटोर के ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्ब्ब मानना। 17 प्रति वर्ष तीनोंबार तेरे
सब पुरूष प्रभु यहोवा को अपना मुंह दिखाएं।। 18 मेरे बलिपशु का लोहू खमीरी
रोटी के संग न चढ़ाना, और न मेरे पर्ब्ब के उत्तम बलिदान में से कुछ बिहान तक
रहने देना। 19 अपक्की भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपके परमेश्वर
यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।।
20 सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रझा करेगा, और

जिस स्यान को मै ने तैयार किया है उस में तुझे पहुंचाएगा। 21 उसके साम्हने
सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा
अपराध झमा न करेगा; इसलिथे कि उस में मेरा नाम रहता है। 22 और यदि तू
सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे, तो मै तेरे शत्रुओं का शत्रु और
तेरे द्रोहियोंका द्रोही बनूंगा। 23 इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे
एमोरी, हित्ती, परज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगोंके यहां पहुंचाएगा, और
मैं उनको सत्यनाश कर डालूंगा। 24 उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और
न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन उन मूरतोंको पूरी
रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगोंकी लाटोंके टुकड़े टुकड़े कर देना।
25 और तुम अपके परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल
पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। 26 तेरे देश में न तो किसी
का गर्भ गिरेगा और न कोई बांफ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा। 27 जितने
लोगोंके बीच तू जाथेगा उन सभोंके मन में मै अपना भय पहिले से ऐसा समवा
दूंगा कि उनको व्याकुल कर दूंगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊंगा। 28
और मैं तुझ से पहिले बर्रोंको भेजूंगा जो हिब्बी, कनानी, और हित्ती लोगोंको तेरे
साम्हने से भगा के दूर कर देंगी। 29 मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में तो न
निकाल दूंगा, ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए, और बनैले पशु बढ़कर तुझे दु:ख
देने लगें। 30 जब तक तू फूल फलकर देश को अपके अधिक्कारने में न कर ले
तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से योड़ा योड़ा करके निकालता रहूंगा। 31 मैं लाल
समुद्र से लेकर पलिश्तियोंके समुद्र तक और जंगल से लेकर महानद तक के देश
को तेरे वश में कर दूंगा; मैं उस देश के निवासिक्कों भी तेरे वश में कर दूंगा, और

तू उन्हें अपके साम्हने से बरबस निकालेगा। 32 तू न तो उन से वाचा बान्धना
और न उनके देवताओं से। 33 वे तेरे देश में रहने न पाएं, ऐसा न हो कि वे तुझ से
मेरे विरूद्ध पाप कराएं; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह
तेरे लिथे फंदा बनेगा।।

निर्गमन 24

1 फिर उस ने मूसा से कहा, तू, हारून, नादाब, अबीहू, और इस्त्राएलियोंके सत्तर
पुरनियोंसमेत यहोवा के पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना। 2 और केवल
मूसा यहोवा के समीप आए; परन्तु वे समीप न आएं, और दूसरे लोग उसके संग
ऊपर न आएं। 3 तब मूसा ने लोगोंके पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब
नियम सुना दिए; तब सब लोग एक स्वर से बोल उठे, कि जितनी बातें यहोवा ने
कही हैं उन सब बातोंको हम मानेंगे। 4 तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख
दिए। और बिहान को सवेरे उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्त्राएल के
बारहोंगोत्रोंके अनुसार बारह खम्भे भी बनवाए। 5 तब उस ने कई इस्त्राएली
जवानोंको भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिथे होमबलि और बैलोंके मेलबलि चढ़ाए।
6 और मूसा ने आधा लोहू तो लेकर कटारोंमें रखा, और आधा वेदी पर छिड़क
दिया। 7 तब वाचा की पुस्तक को लेकर लोगोंको पढ़ सुनाया; उसे सुनकर उन्होंने
कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।
8 तब मूसा ने लोहू को लेकर लोगोंपर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह
उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनोंपर तुम्हारे साय बान्धी है। 9
तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्त्राएलियोंके सत्तर पुरनिए ऊपर गए, 10

और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया; और उसके चरणोंके तले नीलमणि का
चबूतरा सा कुछ या, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ या। 11 और उस ने
इस्राएलियोंके प्रधानोंपर हाथ न बढ़ाया; तब उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया,
और खाया पिया।। 12 तब यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास चढ़, और
वहां रह; और मै तुझे पत्यर की पटियाएं, और अपक्की लिखी हुई व्यवस्या और
आज्ञा दूंगा, कि तू उनको सिखाए। 13 तब मूसा यहोशू नाम अपके टहलुए समेत
परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। 14 कि जब तक हम तुम्हारे पास फिर न आएं
तब तक तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो; और सुनो, हारून और हूर तुम्हारे संग
हैं; तो यदि किसी का मुकद्दमा हो तो उन्हीं के पास जाए। 15 तब मूसा पर्वत पर
चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया। 16 तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत
पर निवास किया, और वह बादल उस पर छ: दिन तक छाया रहा; और सातवें
दिन उस ने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। 17 और इस्राएलियोंकी दृष्टि में
यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पड़ता या। 18 तब मूसा
बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस
दिन और चालीस रात रहा।।

निर्गमन 25

1 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्राएलियोंसे यह कहना, कि मेरे लिथे भेंट लाएं;
जितने अपक्की इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभोंसे मेरी भेंट लेना। 3 और जिन
वस्तुओं की भेंट उन से लेनी हैं वे थे हैं; अर्यात् सोना, चांदी, पीतल, 4 नीले, बैंजनी
और लाल रंग का कपड़ा, सूझ्म सनी का कपड़ा, बकरी का बाल, 5 लाल रंग से

रंगी हुई मेढ़ोंकी खालें, सुइसोंकी खालें, बबूल की लकड़ी, 6 उजियाले के लिथे तेल,
अभिषेक के तेल के लिथे और सुगन्धित धूप के लिथे सुगन्ध द्रव्य, 7 एपोद और
चपरास के लिथे सुलैमानी पत्यर, और जड़ने के लिथे मणि। 8 और वे मेरे लिथे
एक पवित्रस्यान बनाए, कि मैं उनके बीच निवास करूं। 9 जो कुछ मैं तुझे
दिखाता हूं, अर्यात् निवासस्यान और उसके सब सामान का नमूना, उसी के
अनुसार तुम लोग उसे बनाना।। 10 बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया
जाए; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ, और चौड़ाई और ऊंचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की हों। 11
और उसको चोखे सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना, और सन्दूक के ऊपर
चारोंओर सोने की बाड़ बनवाना। 12 और सोने के चार कड़े ढलवाकर उसके
चारोंपायोंपर, एक अलंग दो कड़े और दूसरी अलंग भी दो कड़े लगवाना। 13 फिर
बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हे भी सोने से मढ़वाना। 14 और
डण्डोंको सन्दूक की दोनोंअलंगोंके कड़ोंमें डालना जिस से उनके बल सन्दूक
उठाया जाए। 15 वे डण्डे सन्दूक के कड़ोंमें लगे रहें; और उस से अलग न किए
जाएं। 16 और जो साझीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे उसी सन्दूक में रखना। 17 फिर
चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना बनवाना; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ, और
चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। 18 और सोना ढालकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित्त के
ढकने के दोनोंसिरोंपर लगवाना। 19 एक करूब तो एक सिक्के पर और दूसरा
करूब दूसरे सिक्के पर लगवाना; और करूबोंको और प्रायश्चित्त के ढकने को
उसके ही टुकड़े से बनाकर उसके दोनो सिरोंपर लगवाना। 20 और उन करूबोंके
पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उन से ढंपा रहे, और उनके
मुख आम्हने-साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें। 21 और प्रायश्चित्त के

ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साझीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे सन्दूक
के भीतर रखना। 22 और मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूंगा; और
इस्त्राएलियोंके लिथे जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभोंके विषय
में प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबोंके बीच में से, जो साझीपत्र के
सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूंगा।। 23 फिर बबूल की लकड़ी की
एक मेज बनवाना; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊंचाई डेढ़ हाथ
की हो। 24 उसे चोखे सोने से मढ़वाना, और उसके चारोंओर सोने की एक बाड़
बनवाना। 25 और उसके चारोंओर चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना, और इस
पटरी के चारोंओर सोने की एक बाड़ बनवाना। 26 और सोने के चार कड़े
बनवाकर मेज के उन चारोंकोनोंमें लगवाना जो उसके चारोंपायोंमें होंगे। 27 वे
कड़े पटरी के पास ही हों, और डण्डोंके घरोंका काम दें कि मेज़ उन्हीं के बल उठाई
जाए। 28 और डण्डोंको बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना, और मेज़
उन्हीं से उठाई जाए। 29 और उसके परात और धूपदान, और चमचे और उंडेलने
के कटोरे, सब चोखे सोने के बनवाना। 30 और मेज़ पर मेरे आगे भेंट की रोटियां
नित्य रखा करना।। 31 फिर चोखे सोने की एक दीवट बनवाना। सोना ढलवाकर
वह दीवट, पाथे और डण्डी सहित बनाया जाए; उसके पुष्पकोष, गांठ और फूल,
सब एक ही टुकड़े के बनें; 32 और उसकी अलंगोंसे छ: डालियां निकलें, तीन
डालियां तो दीवट की एक अलंग से और तीन डालियां उसकी दूसरी अलंग से
निकली हुई हों; 33 एक एक डाली में बादाम के फूल के समान तीन तीन
पुष्पकोष, एक एक गांठ, और एक एक फूल हों; दीवट से निकली हुई
छहोंडालियोंका यही आकार या रूप हो; 34 और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल

के समान चार पुष्पकोष अपक्की अपक्की गांठ और फूल समेत हों; 35 और
दीवट से निकली हुई छहोंडालियोंमें से दो दो डालियोंके नीचे एक एक गांठ हो, वे
दीवट समेत एक ही टुकड़े के बने हुए हों। 36 उनकी गांठे और डालियां, सब दीवट
समेत एक ही टुकड़े की हों, चोखा सोना ढलवाकर पूरा दीवट एक ही टुकड़े का
बनवाना। 37 और सात दीपक बनवाना; और दीपक जलाए जाएं कि वे दीवट के
साम्हने प्रकाश दें। 38 और उसके गुलतराश और गुलदान सब चोखे सोने के हों।
39 वह सब इन समस्त सामान समेत किक्कार भर चोखे सोने का बने। 40 और
सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस
पर्वत पर दिखाया गया है।।

निर्गमन 26

1 फिर निवासस्यान के लिथे दस परदे बनवाना; इनको बटी हुई सनीवाले और
नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके का कढ़ाई के काम किए हुए करूबोंके साय
बनवाना। 2 एक एक परदे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की
हो; सब परदे एक ही नाप के हों। 3 पांच परदे एक दूसरे से जुड़े हुए हों; और फिर
जो पांच परदे रहेंगे वे भी एक दूसरे से जुड़े हुए हों। 4 और जहां थे दोनोंपरदे जोड़े
जाएं वहां की दोनोंछोरोंपर नीली नीली फलियां लगवाना। 5 दोनोंछोरोंमें पचास
पचास फलियां ऐसे लगवाना कि वे आम्हने साम्हने हों। 6 और सोने के पचास
अंकड़े बनवाना; और परदोंके पंचो को अंकड़ोंके द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना
कि निवासस्यान मिलकर एक ही हो जाए। 7 फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम
देने के लिथे बकरी के बाल के ग्यारह परदे बनवाना। 8 एक एक परदे की लम्बाई

तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; ग्यारहोंपरदे एक ही नाप के हों। 9 और
पांच परदे अलग और फिर छ: परदे अलग जुड़वाना, और छटवें परदे को तम्बू के
साम्हने मोड़ कर दुहरा कर देना। 10 और तू पचास अंकड़े उस परदे की छोर में
जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही अंकड़े दूसरी ओर के परदे की छोर में
जो बाहर से मिलाया जाएगा बनवाना। 11 और पीतल के पचास अंकड़े बनाना,
और अंकड़ोंको फलियोंमें लगाकर तम्बू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक ही
हो जाए। 12 और तम्बू के परदोंका लटका हुआ भाग, अर्यात् जो आधा पट रहेगा,
वह निवास की पिछली ओर लटका रहे। 13 और तम्बू के परदोंकी लम्बाई मे से
हाथ भर इधर, और हाथ भर उधर निवास के ढांकने के लिथे उसकी
दोनोंअलंगोंपर लटका हुआ रहे। 14 फिर तम्बू के लिथे लाल रंग से रंगी हुई
मेढोंकी खालोंका एक ओढ़ना और उसके ऊपर सूइसोंकी खालोंका भी एक ओढ़ना
बनवाना।। 15 फिर निवास को खड़ा करने के लिथे बबूल की लकड़ी के तख्ते
बनवाना। 16 एक एक तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। 17
एक एक तख्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो दो चूलें हों; निवास के सब तख्तोंको
इसी भांति से बनवाना। 18 और निवास के लिथे जो तख्ते तू बनवाएगा उन में से
बीस तख्ते तो दक्खिन की ओर के लिथे हों; 19 और बीसोंतख्तोंके नीचे चांदी की
चालीस कुसिर्यां बनवाना, अर्यात् एक एक तख्ते के नीचे उसके चूलोंके लिथे दो
दो कुसिर्यां। 20 और निवास की दूसरी अलंग, अर्यात् उत्तर की ओर बीस तख्ते
बनवाना। 21 और उनके लिथे चांदी की चालीस कुसिर्यां बनवाना, अर्यात् एक
एक तख्ते के नीचे दो दो कुसिर्यां हों। 22 और निवास की पिछली अलंग, अर्यात्
एक एक तख्ते के नीचे दो दो कुसिर्यां हों। 23 और पिछले अलंग में निवास के

कोनोंके लिथे दो तख्ते बनवाना; 24 और थे नीचे से दो दो भाग के होंऔर
दोनोंभाग ऊपर के सिक्के तक एक एक कड़े में मिलाथे जाएं; दोनोंतख्तोंका यही
रूप हो; थे तो दोनोंकोनोंके लिथे हों। 25 और आठ तख्तें हों, और उनकी चांदी की
सोलह कुसिर्यां हों; अर्यात् एक एक तख्ते के नीचे दो दो कुसिर्यां हों। 26 फिर
बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनवाना, अर्यात् निवास की एक अलंग के तख्तोंके लिथे
पांच, 27 और निवास की दूसरी अलंग के तख्तोंके लिथे पांच बेंडे, और निवास की
जो अलंग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगी, उसके लिथे पांच बेंड़े बनवाना।
28 और बीचवाला बेंड़ा जो तख्तोंके मध्य में होगा वह तम्बू के एक सिक्के से
दूसरे सिक्के तक पहुंचे। 29 फिर तख्तोंको सोने से मढ़वाना, और उनके कड़े जो
बेंड़ोंके घरोंका काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना; और बेड़ोंको भी सोने से
मढ़वाना। 30 और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे
दिखाया गया है।। 31 फिर नीले, बैजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूझ्म
सनीवाले कपके का एक बीचवाला पर्दा बनवाना; वह कढ़ाई के काम किथे हुए
करूबोंके साय बने। 32 और उसको सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भोंपर
लटकाना, इनकी अंकडियां सोने की हों, और थे चांदी की चार कुसिर्योंपर खड़ी
रहें। 33 और बीचवाले पर्दे को अंकडियोंके नीचे लटकाकर, उसकी आड़ में
साझीपत्र का सन्दूक भीतर लिवा ले जाना; सो वह बीचवाला पर्दा तुम्हारे लिथे
पवित्रस्यान को परमपवित्रस्यान से अलग किथे रहे। 34 फिर परमपवित्र स्यान
में साझीपत्र के सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रखना। 35 और उस पर्दे के
बाहर निवास की उत्तर अलग मेज़ रखना; और उसकी दक्खिन अलंग मेज़ के
साम्हने दीवट को रखना। 36 फिर तम्बू के द्वार के लिथे नीले, बैंजनी और लाल

रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपके का कढ़ाई का काम किया हुआ एक
पर्दा बनवाना। 37 और इस पर्दे के लिथे बबूल के पांच खम्भे बनवाना, और
उनको सोने से मढ़वाना; उनकी कडियां सोने की हो, और उनके लिथे पीतल की
पांच कुसिर्यां ढलवा कर बनवाना।।

निर्गमन 27

1 फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पांच हाथ लम्बी और पांच हाथ चौड़ी
बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उसकी ऊंचाई तीन हाथ की हो। 2 और उसके
चारोंकोनोंपर चार सींग बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उसे
पीतल से मढ़वाना। 3 और उसकी राख उठाने के पात्र, और फावड़ियां, और कटोरे,
और कांटे, और अंगीठियां बनवाना; उसका कुल सामान पीतल का बनवाना। 4
और उसके पीतल की जाली एक फंफरी बनवाना; और उसके चारोंसिरोंमें पीतल
के चार कड़े लगवाना। 5 और उस फंफरी को वेदी के चारोंओर की कंगनी के नीचे
ऐसे लगवाना, कि वह वेदी की ऊंचाई के मध्य तक पहुंचे। 6 और वेदी के लिथे
बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें पीतल से मढ़वाना। 7 और डंडे
कड़ोंमें डाले जाएं, कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसकी दोनोंअलंगोंपर रहें।
8 वेदी को तख्तोंसे खोखली बनवाना; जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई गई है
वैसी ही बनाई जाए।। 9 फिर निवास के आंगन को बनवाना। उसकी दक्खिन
अलंग के लिथे तो बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपके के सब पर्दोंको मिलाए कि उसकी
लम्बाई सौ हाथ की हो; एक अलंग पर तो इतना ही हो। 10 और उनके बीस खम्भे
बनें, और इनके लिथे पीतल की बीस कुसिर्यां बनें, और खम्भोंके कुन्डे और

उनकी पट्टियां चांदी की हों। 11 और उसी भांति आंगन की उत्तर अलंग की
लम्बाई में भी सौ हाथ लम्बे पर्दे हों, और उनके भी बीस खम्भे और इनके लिथे
भी पीतल के बीस खाने हों; और उन खम्भोंके कुन्डे और पट्टियां चांदी की हों।
12 फिर आंगन की चौड़ाई में पच्छिम की ओर पचास हाथ के पर्दे हों, उनके खम्भे
दस और खाने भी दस हों। 13 और पूरब अलंग पर आंगन की चौड़ाई पचास हाथ
की हो। 14 और आंगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, और उनके
खम्भे तीन और खाने तीन हों। 15 और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे हों,
उनके भी खम्भे तीन और खाने तीन हों। 16 और आंगन के द्वार के लिथे एक पर्दा
बनवाना, जो नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके और बटी हुई सूक्ष्म सनी के
कपके का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके खम्भे चार और खाने भी
चार हों। 17 आंगन की चारोंओर के सब खम्भे चांदी की पट्टियोंसे जुड़े हुए हों,
उनके कुन्डे चांदी के और खाने पीतल के हों। 18 आंगन की लम्बाई सौ हाथ की,
और उसकी चौड़ाई बराबर पचास हाथ की और उसकी कनात की ऊंचाई पांच हाथ
की हो, उसकी कनात बटी हुई सुक्ष्म सनी के कपके की बने, और खम्भोंके खाने
पीतल के हों। 19 निवास के भांति भांति के बर्तन और सब सामान और उसके
सब खूंटें और आंगन के भी सब खूंटे पीतल ही के हों।। 20 फिर तू इस्त्राएलियोंको
आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिथे कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्मल
तेल ले आना, जिस से दीपक नित्य जलता रहे। 21 मिलाप के तम्बू में, उस
बीचवाले पर्दे से बाहर जो साझीपत्र के आगे होगा, हारून और उसके पुत्र दीवट
सांफ से भोर तक यहोवा के साम्हने सजा कर रखें। यह विधि इस्त्राएलियोंकी
पीढिय़ोंके लिथे सदैव बनी रहेगी।।

निर्गमन 28

1 फिर तू इस्त्राएलियोंमें से अपके भाई हारून, और नादाब, अबीहू, एलीआज़ार
और ईतामार नाम उसके पुत्रोंको अपके समीप ले आना कि वे मेरे लिथे याजक
का काम करें। 2 और तू अपके भाई हारून के लिथे विभव और शोभा के निमित्त
पवित्र वस्त्र बनवाना। 3 और जितनोंके ह्रदय में बुद्धि है, जिनको मैं ने बुद्धि
देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण किया है, उनको तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे
कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिथे पवित्र बनें। 4 और जो वस्त्र
उन्हें बनाने होंगे वे थे हैं, अर्यात् सीनाबन्द; और एपोद, और जामा, चार खाने का
अंगरखा, पुरोहित का टोप, और कमरबन्द; थे ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और
उसके पुत्रोंके लिथे बनाए जाएं कि वे मेरे लिथे याजक का काम करें। 5 और वे
सोने और नीले और बैंजनी और लाल रंग का और सूक्ष्म सनी का कपड़ा लें।। 6
और वे एपोद को सोने, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके का और बटी हुई
सूक्ष्म सनी के कपके का बनाएं, जो कि निपुण कढ़ाई के काम करनेवाले के हाथ
का काम हो। 7 और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनो कन्धोंके सिक्के
आपस में मिले रहें। 8 और एपोद पर जो काढ़ा हुआ पट्टुका होगा उसकी बनावट
उसी के समान हो, और वे दोनोंबिना जोड़ के हों, और सोने और नीले, बैंजनी और
लाल रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपके के हों। 9 फिर दो सुलैमानी
मणि लेकर उन पर इस्त्राएल के पुत्रोंके नाम खुदवाना, 10 उनके नामोंमें से छः तो
एक मणि पर, और शेष छः नाम दूसरे मणि पर, इस्त्राएल के पुत्रोंकी उत्पत्ति के
अनुसार खुदवाना। 11 मणि खोदनेवाले के काम से जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे
ही उन दो मणियोंपर इस्त्राएल के पुत्रोंके नाम खुदवाना; और उनको सोने के

खानोंमें जड़वा देना। 12 और दोनोंमणियोंको एपोद के कन्धोंपर लगवाना, वे
इस्त्राएलियोंके निमित्त स्मरण दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे; अर्यात् हारून उनके
नाम यहोवा के आगे अपके दोनोंकन्धोंपर स्मरण के लिथे लगाए रहे।। 13 फिर
सोने के खाने बनवाना, 14 और डोरियोंकी नाईं गूंथे हुए दो जंजीर चोखे सोने के
बनवाना; और गूंथे हुए जंजीरोंको उन खानोंमें जड़वाना। 15 फिर न्याय की
चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना; एपोद की नाईं सोने, और नीले,
बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपके की उसे बनवाना। 16
वह चौकोर और दोहरी हो, और उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक एक बित्ते की हों।
17 और उस में चार पांति मणि जड़ाना। पहिली पांति में तो माणिक्य, पद्‌क़राग
और लालड़ी हों; 18 दूसरी पांति में मरकत, नीलमणि और हीरा; 19 तीसरी पांति
में लशम, सूर्यकांत और नीलम; 20 और चौयी पांति में फीरोजा, सुलैमानी मणि
और यशब हों; थे सब सोने के खानोंमें जड़े जाएं। 21 और इस्त्राएल के पुत्रोंके
जितने नाम हैं उतने मणि हों, अर्यात् उनके नामोंकी गिनती के अनुसार बारह
नाम खुदें, बारहोंगोत्रोंमें से एक एक का नाम एक एक मणि पर ऐसे खुदे जेसे
छापा खोदा जाता है। 22 फिर चपरास पर डोरियोंकी नाईं। गूंथे हुए चोखे सोने की
जंजीर लगवाना; 23 और चपरास में सोने की दो कड़ियां लगवाना, और
दोनोंकड़ियोंको चपरास के दोनो सिरोंपर लगवाना। 24 और सोने के दोनोंगूंथे
जंजीरोंको उन दोनोंकड़ियोंमें जो चपरास के सिरोंपर होंगी लगवाना; 25 और गूंथे
हुए दोनो जंजीरोंके दोनोंबाकी सिक्कों दोनोंखानोंमें जड़वा के एपोद के
दोनोंकन्धोंके बंधनोंपर उसके साम्हने लगवाना। 26 फिर सोने की दो और
कड़ियां बनवाकर चपरास के दोनोंसिरोंपर, उसकी उस कोर पर जो एपोद की

भीतर की ओर होगी लगवाना। 27 फिर उनके सिवाय सोने की दो और कड़ियां
बनवाकर एपोद के दोनोंकन्धोंके बंधनोंपर, नीचे से उनके साम्हने और उसके
जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना। 28 और चपरास
अपक्की कड़ियोंके द्वारा एपोद की कड़ियोंमें नीले फीते से बांधी जाए, इस रीति
वह एपोद के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे, और चपरास एपोद पर से अलग न होने
पाए। 29 और जब जब हारून पवित्रस्यान में प्रवेश करे, तब तब वह न्याय की
चपरास पर अपके हृदय के ऊपर इस्त्राएलियोंके नामोंको लगाए रहे, जिस से
यहोवा के साम्हने उनका स्मरण नित्य रहे। 30 और तू न्याय की चपरास में
ऊरीम और तुम्मीम को रखना, और जब जब हारून यहोवा के साम्हने प्रवेश करे,
तब तब वे उसके हृदय के ऊपर हों; इस प्रकार हारून इस्त्राएलियोंके न्याय पदार्थ
को अपके हृदय के ऊपर यहोवा के साम्हने नित्य लगाए रहे।। 31 फिर एपोद के
बागे को सम्पूर्ण नीले रंग का बनवाना। 32 और उसकी बनावट ऐसी हो कि उसके
बीच में सिर डालने के लिथे छेद हो, और उस छेद की चारोंओर बखतर के छेद की
सी एक बुनी हुई कोर हो, कि वह फटने न पाए। 33 और उसके नीचेवाले घेरे में
चारोंओर नीेले, बैंजनी और लाल रंग के कपके के अनार बनवाना, और उनके
बीच बीच चारोंओर सोने की घंटीयां लगवाना, 34 अर्यात् एक सोने की घंटी और
एक अनार, फिर एक सोने की घंटी और एक अनार, इसी रीति बागे के नीचेवाले
घेरे में चारोंओर ऐसा ही हो। 35 और हारून एक बागे को सेवा टहल करने के
समय पहिना करे, कि जब जब वह पवित्रस्यान के भीतर यहोवा के साम्हने जाए,
वा बाहर निकले, तब तब उसका शब्द सुनाई दे, नहीं तो वह मर जाएगा। 36 फिर
चोखे सोने का एक टीका बनवाना, और जैसे छापे में वैसे ही उस में थे अझर खोदें

जाएं, अर्यात् यहोवा के लिथे पवित्र। 37 और उसे नीले फीते से बांधना; और वह
पगड़ी के साम्हने के हिस्से पर रहे। 38 और हारून के माथे पर रहे, इसलिथे कि
इस्त्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएं, अर्यात् जितनी पवित्र वस्तुएं भेंट में चढ़ावें उन
पवित्र वस्तुओं का दोष हारून उठाए रहे, और वह नित्य उसके माथे पर रहे, जिस
से यहोवा उन से प्रसन्न रहे।। 39 और अंगरखे को सूझ्म सनी के कपके का
चारखाना बुनवाना, और एक पगड़ी भी सूझ्म सनी के कपके की बनवाना, और
कारचोबी काम किया हुआ एक कमरबन्द भी बनवाना।। 40 फिर हारून के पुत्रोंके
लिथे भी अंगरखे और कमरबन्द और टोपियां बनवाना; थे वस्त्र भी विभव और
शोभा के लिथे बनें। 41 अपके भाई हारून और उसके पुत्रोंको थे ही सब वस्त्र
पहिनाकर उनका अभिषेक और संस्कार करना, और उन्हें पवित्र करना, कि वे
मेरे लिथे याजक का काम करें। 42 और उनके लिथे सनी के कपके की जांघिया
बनवाना जिन से उनका तन ढपा रहे; वे कमर से जांघ तक की हों; 43 और जब
जब हारून वा उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें, वा पवित्र स्यान में सेवा
टहल करने को वेदी के पास जाएं तब तब वे उन जांघियोंको पहिने रहें, न हो कि
वे पापी ठहरें और मर जाएं। यह हारून के लिथे और उसके बाद उसके वंश के
लिथे भी सदा की विधि ठहरें।।

निर्गमन 29

1 और उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उन से करना है, कि वे मेरे लिथे याजक
का काम करें वह यह है। एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेंढ़े लेना, 2 और
अखमीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके, और तेल से चुपक्की

हुई अखमीरी पपडियां भी लेना। थे सब गेहूं के मैदे के बनवाना। 3 इनको एक
टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनोंमेंढो समेत समीप ले
आना। 4 फिर हारून और उसके पुत्रोंको मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप ले
आकर जल से नहलाना। 5 तब उन वोंको लेकर हारून को अंगरखा ओर एपोद का
बागा पहिनाना, और एपोद और चपरास बान्धना, और एपोद का काढ़ा हुआ
पटुका भी बान्धना; 6 और उसके सिर पर पगड़ी को रखना, और पगड़ी पर पवित्र
मुकुट को रखना। 7 तब अभिषेक का तेल ले उसके सिर पर डालकर उसका
अभिषेक करना। 8 फिर उसके पुत्रोंको समीप ले आकर उनको अंगरखे पहिनाना,
9 और उसके अर्यात् हारून और उसके पुत्रोंके कमर बान्धना और उनके सिर पर
टोपियां रखना; जिस से याजक के पद पर सदा उनका हक रहे। इसी प्रकार हारून
और उसके पुत्रोंका संस्कार करना। 10 और बछड़े को मिलापवाले तम्बू के
साम्हने समीप ले आना। और हारून और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपके
अपके हाथ रखें, 11 तब उस बछड़े को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर बलिदान करना, 12 और बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर अपक्की उंगली
से वेदी के सींगोंपर लगाना, और शेष सब लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल देना 13
और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जो फिल्ली कलेजे के ऊपर होती
है, उनको और दोनो गुर्दोंको उनके ऊपर की चरबी समेत लेकर सब को वेदी पर
जलाना। 14 और बछड़े का मांस, और खाल, और गोबर, छावनी से बाहर आग में
जला देना; क्योंकि यह पापबलि होगा। 15 फिर एक मेढ़ा लेना, और हारून और
उसके पुत्र उसके सिर पर अपके अपके हाथ रखें, 16 तब उस मेढ़ें को बलि करना,
और उसका लोहू लेकर वेदी पर चारोंओर छिड़कना। 17 और उस मेढ़े को टुकड़े

टुकड़े काटना, और उसकी अंतडिय़ोंऔर पैरोंको धोकर उसके टुकड़ोंऔर सिर के
ऊपर रखना, 18 तब उस पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाना; वह तो यहोवा के लिथे
होमबलि होगा; वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिथे हवन होगा। 19 फिर
दूसरे मेढ़े को लेना; और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर अपके अपके हाथ
रखें, 20 तब उस मेंढ़े को बलि करना, और उसके लोहू में से कुछ लेकर हारून और
उसके पुत्रोंके दहिने कान के सिक्के पर, और उनके दहिने हाथ और दहिने पांव के
अंगूठोंपर लगाना, और लोहू को वेदी पर चारोंओर छिड़क देना। 21 फिर वेदी पर
के लोहू, और अभिषेक के तेल, इन दोनो में से कुछ कुछ लेकर हारून और उसके
वोंपर, और उसके पुत्रोंऔर उनके वोंपर भी छिड़क देना; तब वह अपके वोंसमेत
और उसके पुत्र भी अपके अपके वोंसमेत पवित्र हो जाएंगे। 22 तब मेढ़े को
संस्कारवाला जानकर उस में से चरबी और मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से
अंतडिय़ां ढपी रहती हैं उसको, और कलेजे पर की फिल्ली को, और चरबी समेत
दोनोंगुर्दोंको, और दहिने पुट्ठे को लेना, 23 और अखमीरी रोटी की टोकरी जो
यहोवा के आगे धरी होगी उस में से भी एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का
एक फुलका, और एक पपक्की लेकर, 24 इन सब को हारून और उसके पुत्रोंके
हाथोंमें रखकर हिलाए जाने की भेंट ठहराके यहोवा के आगे हिलाया जाए। 25
तब उन वस्तुओं को उनके हाथोंसे लेकर होमबलि की वेदी पर जला देना, जिस से
वह यहोवा के साम्हने सुखदायक सुगन्ध ठहरे; वह तो यहोवा के लिथे हवन
होगा। 26 फिर हारून के संस्कार को जो मेंढ़ा होगा उसकी छाती को लेकर हिलाए
जाने की भेंट के लिथे यहोवा के आगे हिलाना; और वह तेरा भाग ठहरेगा। 27
और हारून और उसके पुत्रोंके संस्कार का जो मेढ़ा होगा, उस में से हिलाए जाने

की भेंटवाली छाती जो हिलाई जाएगी, और उठाए जाने का भेंटवाला पुट्ठा जो
उठाया जाएगा, इन दोनोंको पवित्र ठहराना। 28 और थे सदा की विधि की रीति
पर इस्त्राएलियोंकी ओर से उसका और उसके पुत्रोंका भाग ठहरे, कयोंकि थे उठाए
जाने की भेंटें ठहरी हैं; और यह इस्त्राएलियोंकी ओर से उनके मेलबलियोंमें से
यहोवा के लिथे उठाऐ जाने की भेंट होगी। 29 और हारून के जो पवित्र वस्त्र होंगे
वह उसके बाद उसके बेटे पोते आदि को मिलते रहें, जिस से उन्हीं को पहिने हुए
उनका अभिषेक और संस्कार किया जाए। 30 उसके पुत्रोंके जो उसके स्यान पर
याजक होगा, वह जब पवित्रस्यान में सेवा टहल करने को मिलाप वाले तम्बू में
पहिले आए, तब उन वोंको सात दिन तक पहिने रहें। 31 फिर याजक के संस्कार
का जो मेढ़ा होगा उसे लेकर उसका मांस किसी पवित्र स्यान में पकाना; 32 तब
हारून अपके पुत्रोंसमेत उस मेढे का मांस और टोकरी की रोटी, दोनोंको
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खाए। 33 और जिन पदार्योंसे उनका संस्कार और
उन्हें पवित्र करने के लिथे प्रायश्चित्त किया जाएगा उनको तो वे खाएं, परन्तु पराए
कुल का कोई उन्हें न खाने पाए, क्योंकि वे पवित्र होंगे। 34 और यदि संस्कारवाले
मांस वा रोटी में से कुछ बिहान तक बचा रहे, तो उस बचे हुए को आग में जलाना,
वह खाया न जाए; क्योंकि वह पवित्र होगा। 35 और मैं ने तुझे जो जो आज्ञा दी हैं,
उन सभोंके अनुसार तू हारून और उसके पुत्रोंसे करना; और सात दिन तक उनका
संस्कार करते रहना, 36 अर्यात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिथे
प्रतिदिन चढ़ाना। और वेदी को भी प्रायश्चित्त करने के समय शुद्ध करना, और उसे
पवित्र करने के लिथे उसका अभिषेक करना। 37 सात दिन तक वेदी के लिथे
प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना, और वेदी परम पवित्र ठहरेगी; और जो कुछ

उस से छू जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा।। 38 जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़ाना
होगा वह यह है; अर्यात् प्रतिदिन एक एक वर्ष के दो भेड़ी के बच्चे। 39 एक भेड़ के
बच्चे को तो भोर के समय, और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना।
40 और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन की चौयाई कूटके निकाले हुए तेल से सना
हुआ एपा का दसवां भाग मैदा, और अर्घ के लिथे ही की चौयाई दाखमधु देना। 41
और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना, और उसके साय भोर की
रीति अनुसार अन्नबलि और अर्घ दोनोंदेना, जिस से वह सुखदायक सुगन्ध और
यहोवा के लिथे हवन ठहरे। 42 तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे; यह वह स्यान है जिस में मैं
तुम लोगोंसे इसलिथे मिला करूंगा, कि तुझ से बातें करूं। 43 और मैं
इस्त्राएलियोंसे वहीं मिला करूंगा, और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा।
44 और मैं मिलापवाले तम्बू और वेदी को पवित्र करूंगा, और हारून और उसके
पुत्रोंको भी पवित्र करूंगा, कि वे मेरे लिथे याजक का काम करें। 45 और मैं
इस्त्राएलियोंके मध्य निवास करूंगा, और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। 46 तब वे
जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं, जो उनको मिस्र देश से इसलिथे
निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं; मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं।।

निर्गमन 30

1 फिर धूप जलाने के लिथे बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना। 2 उसकी लम्बाई
एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उसकी ऊंचाई दो हाथ
की हो, और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएं। 3 और वेदी के ऊपरवाले पल्ले

और चारोंओर की अलंगोंऔर सींगोंको चोखे सोने से मढ़ना, और इसकी चारोंओर
सोने की एक बाड़ बनाना। 4 और इसकी बाड़ के नीचे इसके दानोंपल्ले पर सोने
के दो दो कड़े बनाकर इसके दोनोंओर लगाना, वे इसके उठाने के डण्डोंके खानोंका
काम देंगे। 5 और डण्डोंको बबूल की लकड़ी के बनाकर उनको सोने से मढ़ना। 6
और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो साझीपत्र के सन्दूक के साम्हने है,
अर्यात् प्रायश्चित्त वाले ढकने के आगे जो साझीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुझ से
मिला करूंगा। 7 और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे; प्रतिदिन
भोर को जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप को जलाए, 8 तब गोधूलि के
समय जब हारून दीपकोंको जलाए तब धूप जलाया करे, यह धूप यहोवा के
साम्हने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए। 9 और उस वेदी पर तुम और
प्रकार का धूप न जलाना, और न उस पर होमबलि और न अन्नबलि चढ़ाना; और
न इस पर अर्घ देना। 10 और हारून वर्ष में एक बार इसके सींगोंपर प्रायश्चित्त करे;
और तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त लिया जाए; यह यहोवा के
लिथे परमपवित्र है।। 11 और तब यहोवा ने मूसा से कहा, 12 जब तू
इस्त्राएलियोंकि गिनती लेने लगे, तब वे गिनने के समय जिनकी गिनती हुई हो
अपके अपके प्राणोंके लिथे यहोवा को प्रायश्चित्त दें, जिस से जब तू उनकी गिनती
कर रहा हो उस समय कोई विपत्ति उन पर न आ पके। 13 जितने लोग गिने जाएं
वे पवित्रस्यान के शेकेल के लिथे आधा शेकेल दें, यह शेकेल बीस गेरा का होता है,
यहोवा की भेंट आधा शेकेल हो। 14 बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्या के
जितने गिने जाएं उन में से एक एक जन यहोवा की भेंट दे। 15 जब तुम्हारे
प्राणोंके प्रायश्चित्त के निमित्त यहोवा की भेंट दी जाए, तब न तो धनी लोग आधे

शेकेल से अधिक दें, और न कंगाल लोग उस से कम दें। 16 और तू इस्त्राएलियोंसे
प्रायश्चित्त का रूपया लेकर मिलापवाले तम्बू के काम में लगाना; जिस से वह
यहोवा के सम्मुख इस्त्राएलियोंके स्मरणार्य चिन्ह ठहरे, और उनके प्राणोंका
प्रायश्चित्त भी हो।। 17 और यहोवा ने मूसा से कहा, 18 धोने के लिथे पीतल की
एक हौदी और उसका पाया पीतल का बनाना। और उसके मिलापवाले तम्बू और
वेदी के बीच में रखकर उस में जल भर देना; 19 और उस में हारून और उसके पुत्र
अपके अपके हाथ पांव धोया करें। 20 जब जब वे मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें
तब तब वे हाथ पांव जल से धोएं, नहीं तो मर जाएंगे; और जब जब वे वेदी के
पास सेवा टहल करने, अर्यात् यहोवा के लिथे हव्य जलाने को आएं तब तब वे
हाथ पांव धोएं, न हो कि मर जाएं। 21 यह हारून और उसके पीढ़ी पीढ़ी के वंश के
लिथे सदा की विधि ठहरे।। 22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 23 तू मुख्य मुख्य
सुगन्ध द्रव्य, अर्यात् पवित्रस्यान के शेकेल के अनुसार पांच सौ शेकेल अपके
आप निकला हुआ गन्धरस, और उसका आधा, अर्यात् अढ़ाई सौ शेकेल
सुगन्धित अगर, 24 और पांच सौ शेकेल तज, और एक हीन जलपाई का तेल
लेकर 25 उन से अभिषेक का पवित्र तेल, अर्यात् गन्धी की रीति से तैयार किया
हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। 26 और उस से
मिलापवाले तम्बू का, और साझीपत्र के सन्दूक का, 27 और सारे सामान समेत
मेज़ का, और सामान समेत दीवट का, और धूपवेदी का, 28 और सारे सामान
समेत होमवेदी का, और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना। 29 और उनको
पवित्र करना, जिस से वे परमपवित्र ठहरें; और जो कुछ उन से छू जाएगा वह
पवित्र हो जाएगा। 30 फिर हारून का उसके पुत्रोंके साय अभिषेक करना, और इस

प्रकार उन्हें मेरे लिथे याजक का काम करने के लिथे पवित्र करना। 31 और
इस्त्राएलियोंको मेरी यह आज्ञा सुनाना, कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे
लिथे पवित्र अभिषेक का तेल होगा। 32 वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला
जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना; वह तो पवित्र होगा, वह
तुम्हारे लिथे पवित्र होगा। 33 जो कोई उसके समान कुछ बनाए, वा जो कोई उस
में से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए, वह अपके लोगोंमें से नाश किया जाए।। 34
फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बोल, नखी और कुन्दरू, थे सुगन्ध द्रव्य निर्मल
लोबान समेत ले लेना, थे सब एक तौल के हों, 35 और इनका धूप अर्यात् लोन
मिलाकर गन्धी की रीति के अनुसार चोखा और पवित्र सुगन्ध द्रव्य बनवाना; 36
फिर उस में से कुछ पीसकर बुकनी कर डालना, तब उस में से कुछ मिलापवाले
तम्बू में साझीपत्र के आगे, जहां पर मैं तुझ से मिला करूंगा वहां रखना; वह
तुम्हारे लिथे परमपवित्र होगा। 37 और जो धूप तू बनवाएगा, मिलावट में उसके
समान तुम लोग अपके लिथे और कुछ न बनवाना; वह तुम्हारे आगे यहोवा के
लिथे पवित्र होगा। 38 जो कोई सूंघने के लिथे उसके समान कुछ बनाए वह अपके
लोगोंमें से नाश किया जाए।।

निर्गमन 31

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता
और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूं। 3 और मैं उसको परमेश्वर की
आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्योंकी समझ देनेवाली
आत्मा है परिपूर्ण करता हूं, 4 जिस से वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल

निकालकर सब भांति की बनावट में, अर्यात् सोने, चांदी, और पीतल में, 5 और
जड़ने के लिथे मणि काटने में, और लकड़ी के खोदने में काम करे। 6 और सुन, मैं
दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूं; वरन
जितने बुद्धिमान है उन सभोंके हृदय में मैं बुद्धि देता हूं, जिस से जितनी वस्तुओं
की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभोंको वे बनाएं; 7 अर्यात् मिलापवाला तम्बू, और
साझीपत्र का सन्दूक, और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना, और तम्बू का सारा
सामान, 8 और सामान सहित मेज़, और सारे सामान समेत चोखे सोने की दीवट,
और धूपकेदी, 9 और सारे सामान सहित होमवेदी, और पाए समेत हौदी, 10 और
काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के याजकवाले काम के पवित्र वस्त्र, और उसके
पुत्रोंके वस्त्र, 11 और अभिषेक का तेल, और पवित्र स्यान के लिथे सुगन्धित धूप,
इन सभोंको वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएं जो मैं ने तुझे दी हैं।। 12 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 13 तू इस्त्राएलियोंसे यह भी कहना, कि निश्चय तुम मेरे
विश्रमदिनोंको मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगोंके बीच
यह एक चिन्ह ठहरा है, जिस से तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र
करनेहारा है। 14 इस कारण तुम विश्रमदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिथे
पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए; जो कोई उस
दिन में से कुछ कामकाज करे वह प्राणी अपके लोगोंके बीच से नाश किया जाए।
15 छ: दिन तो काम काज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्रम का दिन और
यहोवा के लिथे पवित्र है; इसलिथे जो कोई विश्रम के दिन में कुछ काम काज करे
वह निश्चय मार डाला जाए। 16 सो इस्त्राएली विश्रमदिन को माना करें, वरन पीढ़ी
पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। 17 वह मेरे और

इस्त्राएलियोंके बीच सदा एक चिन्ह रहेगा, क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश
और पृय्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्रम करके अपना जी ठण्डा किया।। 18
जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका, तब उस ने उसको
अपक्की उंगली से लिखी हुई साझी देनेवाली पत्यर की दोनोंतख्तियां दी।।

निर्गमन 32

1 जब लोगोंने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है, तब वे
हारून के पास इकट्ठे होकर कहने लगे, अब हमारे लिथे देवता बना, जो हमारे
आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरूष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया
है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ? 2 हारून ने उन से कहा, तुम्हारी स्त्रियोंऔर
बेटे बेटियोंके कानोंमें सोने की जो बालियां है उन्हें तोड़कर उतारो, और मेरे पास
ले आओ। 3 तब सब लोगोंने उनके कानोंसे सोने की बालियोंको तोड़कर उतारा,
और हारून के पास ले आए। 4 और हारून ने उन्हें उनके हाथ से लिया, और एक
बछड़ा ढालकर बनाया, और टांकी से गढ़ा; तब वे कहने लगे, कि हे इस्त्राएल तेरा
परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है। 5 यह देखके हारून ने
उसके आगे एक वेदी बनवाई; और यह प्रचार किया, कि कल यहोवा के लिथे पर्ब्ब
होगा। 6 और दूसरे दिन लोगोंने तड़के उठकर होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि ले
आए; फिर बैठकर खाया पिया, और उठकर खेलने लगे।। 7 तब यहोवा ने मूसा से
कहा, नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले
आया है, सो बिगड़ गए हैं; 8 और जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उनको दी
यी उसको फटपट छोड़कर उन्होंने एक बछड़ा ढालकर बना लिया, फिर उसको

दण्डवत् किया, और उसके लिथे बलिदान भी चढ़ाया, और यह कहा है, कि हे
इस्त्राएलियोंतुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है वह यही है। 9
फिर यहोवा ने मूसा से कहा, मैं ने इन लोगोंको देखा, और सुन, वे हठीले हैं। 10
अब मुझे मत रोक, मेरा कोप उन पर भड़क उठा है जिस से मैं उन्हें भस्म करूं;
परन्तु तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा। 11 तब मूसा अपके परमेश्वर यहोवा
को यह कहके मनाने लगा, कि हे यहोवा, तेरा कोप अपक्की प्रजा पर क्योंभड़का
है, जिसे तू बड़े सामर्य्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है?
12 मिस्री लोग यह क्योंकहने पाए, कि वह उनको बुरे अभिप्राय से, अर्यात्
पहाड़ोंमें घात करके धरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया? तू
अपके भड़के हुए कोप को शांत कर, और अपक्की प्रजा को ऐसी हानि पहुचाने से
फिर जा। 13 अपके दास इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर, जिन से
तू ने अपक्की ही किरिया खाकर यह कहा या, कि मै तुम्हारे वंश को आकाश के
तारोंके तुल्य बहुत करूंगा, और यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है तुम्हारे
वंश को दूंगा, कि वह उसके अधिक्कारनी सदैव बने रहें। 14 तब यहोवा अपक्की
प्रजा की हानि करने से जो उन ने कहा या पछताया।। 15 तब मूसा फिरकर साझी
की दानोंतख्तियोंको हाथ में लिथे हुए पहाड़ से उतर गया, उन तख्तियोंके तो
इधर और उधर दोनोंअलंगोंपर कुछ लिखा हुआ या। 16 और वे तख्तियां परमेश्वर
की बनाई हुई यीं, और उन पर जो खोदकर लिखा हुआ या वह परमेश्वर का लिखा
हुआ या।। 17 जब यहोशू को लोगोंके कोलाहल का शब्द सुनाई पड़ा, तब उस ने
मूसा से कहा, छावनी से लड़ाई का सा शब्द सुनाई देता है। 18 उस ने कहा, वह जो
शब्द है वह न तो जीतनेवालोंका है, और न हारनेवालोंका, मुझे तो गाने का शब्द

सुन पड़ता है। 19 छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना देख
पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उस ने तख्तियोंको अपके हाथोंसे पर्वत
के नीचे पटककर तोड़ डाला। 20 तब उस ने उनके बनाए हुए बछड़े को लेकर आग
में डालके फूंक दिया। और पीसकर चूर चूर कर डाला, और जल के ऊपर फेंक
दिया, और इस्त्राएलियोंको उसे पिलवा दिया। 21 तब मूसा हारून से कहने लगा,
उन लोगोंने तुझ से क्या किया कि तू ने उनको इतने बड़े पाप में फंसाया? 22
हारून ने उत्तर दिया, मेरे प्रभु का कोप न भड़के; तू तो उन लोगोंको जानता ही है
कि वे बुराई में मन लगाए रहते हैं। 23 और उन्होंने मुझ से कहा, कि हमारे लिथे
देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरूष मूसा को, जो हमें मिस्र
देश से छुड़ा लाया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ? 24 तब मैं ने उन से
कहा, जिस जिसके पास सोने के गहनें हों, वे उनको तोड़कर उतार लाएं; और जब
उन्होंने मुझ को दिया, मैं ने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछड़ा निकल पड़ा
25 हारून ने उन लोगोंको ऐसा निरंकुश कर दिया या कि वे अपके विरोधियोंके
बीच उपहास के योग्य हुए, 26 उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास
पर खड़े होकर कहा, जो कोई यहोवा की ओर का हो वह मेरे पास आए; तब सारे
लेवीय उस के पास इकट्ठे हुए। 27 उस ने उन से कहा, इस्त्राएल का परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, कि अपक्की अपक्की जांघ पर तलवार लटका कर छावनी से
एक निकास से दूसरे निकास तक घूम घूमकर अपके अपके भाइयों, संगियों, और
पड़ोसिक्कों घात करो। 28 मूसा के इस वचन के अनुसार लेवियोंने किया और उस
दिन तीन हजार के अटकल लोग मारे गए। 29 फिर मूसा ने कहा, आज के दिन
यहोवा के लिथे अपना याजकपद का संस्कार करो, वरन अपके अपके बेटोंऔर

भाइयोंके भी विरूद्ध होकर ऐसा करो जिस से वह आज तुम को आशीष दे। 30
दूसरे दिन मूसा ने लोगोंसे कहा, तुम ने बड़ा ही पाप किया है। अब मैं यहोवा के
पास चढ़ जाऊंगा; सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूं। 31 तब
मूसा यहोवा के पास जाकर कहने लगा, कि हाथ, हाथ, उन लोगोंने सोने का देवता
बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। 32 तौभी अब तू उनका पाप झमा कर नहीं तो
अपक्की लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे। 33 यहोवा ने मूसा से कहा,
जिस ने मेरे विरूद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपक्की पुस्तक में से काट
दूंगा। 34 अब तो तू जाकर उन लोगोंको उस स्यान में ले चल जिसकी चर्चा मैं ने
तुझ से की यी; देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने
लगूंगा उस दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूंगा। 35 और यहोवा ने उन
लोगोंपर विपत्ति डाली, क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया
या।

निर्गमन 33

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू उन लोगोंको जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है
संग लेकर उस देश को जा, जिसके विषय मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से
शपय खाकर कहा या, कि मैं उसे तुम्हारे वंश को दूंगा। 2 और मैं तेरे आगे आगे
एक दूत को भेजूंगा, और कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी
लोगोंको बरबस निकाल दूंगा। 3 तुम लोग उस देश को जाओ जिस में दूध और
मधु की धारा बहती है; परन्तु तुम हठीले हो, इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होके न
चलूंगा, ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूं। 4 यह बुरा समाचार

सुनकर वे लोग विलाप करने लगे; और कोई अपके गहने पहिने हुए न रहा। 5
क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया या, कि इस्त्राएलियोंको मेरा यह वचन सुना,
कि तुम लोग तो हठीले हो; जो मै पल भर के लिथे तुम्हारे बीच होकर चलूं, तो
तुम्हारा अन्त कर डालूंगा। इसलिथे अब अपके अपके गहने अपके अंगोंसे उतार
दो, कि मैं जानूं कि तुम्हारे साय क्या करना चाहिए। 6 तब इस्त्राएली होरेब पर्वत
से लेकर आगे को अपके गहने उतारे रहे।। 7 मूसा तम्बू को छावनी से बाहर वरन
दूर खड़ा कराया करता या, और उसको मिलापवाला तम्बू कहता या। और जो
कोई यहोवा को ढूंढ़ता वह उस मिलापवाले तम्बू के पास जो छावनी के बाहर या
निकल जाता या। 8 और जब जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब तब सब लोग
उठकर अपके अपके डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और जब तक मूसा उस तम्बू में
प्रवेश न करता या तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे। 9 और जब मूसा उस
तम्बू में प्रवेश करता या, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर
जाता या, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता या। 10 और सब लोग जब बादल
के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठकर अपके अपके डेरे के द्वार
पर से दण्डवत् करते थे। 11 और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने बातें
करता या, जिस प्रकार कोई अपके भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में फिर
आता या, पर यहोशू नाम एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ या,
वह तम्बू में से न निकलता या।। 12 और मूसा ने यहोवा से कहा, सुन तू मुझ से
कहता है, कि इन लोगोंको ले चल; परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको
भेजेगा। तौभी तू ने कहा है, कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, और तुझ पर मेरे
अनुग्रह की दृष्टि है। 13 और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे

अपक्की गति समझा दे, जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि
मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है। 14 यहोवा
ने कहा, मैं आप चलूंगा और तुझे विश्रम दूंगा। 15 उस ने उस से कहा, यदि तू
आप न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा। 16 यह कैसे जाना जाए कि तेरे
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपक्की प्रजा पर है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे
संग संग चले, जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृय्वी भर के सब लोगोंसे अलग
ठहरें? 17 यहोवा ने मूसा से कहा, मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा;
कयोंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है। 18
उस ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे। 19 उस ने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर
चलते हुए तुझे अपक्की सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का
प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और
जिस पर दया करना चांहू उसी पर दया करूंगा। 20 फिर उस ने कहा, तू मेरे मुख
का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं
रह सकता। 21 फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्यान है, तू उस चट्टान
पर खड़ा हो; 22 और जब तक मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे तब तक मै
तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे साम्हने होकर न निकल
जाऊं तब तक अपके हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा; 23 फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा,
तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।।

निर्गमन 34

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, पहिली तख्तियोंके समान पत्यर की दो और

तख्तियां गढ़ ले; तब जो वचन उन पहिली तख्तियोंपर लिखे थे, जिन्हें तू ने तोड़
डाला, वे ही वचन मैं उन तख्तियोंपर भी लिखूंगा। 2 और बिहान को तैयार रहना,
और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे साम्हने खड़ा होना। 3
और तेरे संग कोई न चढ़ पाए, वरन पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे;
और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत के आगे चरते पाएं। 4 तब मूसा ने
पहिली तख्तियोंके समान दो और तख्तियां गढ़ी; और बिहान को सवेरे उठकर
अपके हाथ में पत्यर की वे दोनोंतख्तियां लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार
पर्वत पर चढ़ गया। 5 तब यहोवा ने बादल में उतरके उसके संग वहां खड़ा होकर
यहोवा नाम का प्रचार किया। 6 और यहोवा उसके साम्हने होकर योंप्रचार करता
हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में
धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, 7 हजारोंपीढिय़ोंतब निरन्तर
करूणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का झमा करनेवाला है, परन्तु
दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरोंके अधर्म का दण्ड उनके
बेटोंवरन पोतोंऔर परपोतोंको भी देनेवाला है। 8 तब मूसा ने फुर्ती कर पृय्वी की
ओर फुककर दण्डवत् की। 9 और उस ने कहा, हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि
मुझ पर हो तो प्रभु, हम लोगोंके बीच में होकर चले, थे लोग हठीले तो हैं, तौभी
हमारे अधर्म और पाप को झमा कर, और हमें अपना निज भाग मानके ग्रहण
कर। 10 उस ने कहा, सुन, मैं एक वाचा बान्धता हूं। तेरे सब लोगोंके साम्हने मैं
ऐसे आश्चर्य कर्म करूंगा जैसा पृय्वी पर और सब जातियोंमें कभी नहीं हुए; और
वे सारे लोग जिनके बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेंगे; क्योंकि जो मैं तुम
लोगोंसे करने पर हूं वह भय योग्य काम है। 11 जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूं

उसे तुम लोग मानना। देखो, मैं तुम्हारे आगे से एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी,
हिब्बी, और यबूसी लोगोंको निकालता हूं। 12 इसलिथे सावधान रहना कि जिस
देश में तू जानेवाला है उसके निवासिक्कों वाचा न बान्धना; कहीं ऐसा न हो कि
वह तेरे लिथे फंदा ठहरे। 13 वरन उनकी वेदियोंको गिरा देना, उनकी लाठोंको
तोड़ डालना, और उनकी अशेरा नाम मूतिर्योंको काट डालना; 14 क्योंकि तुम्हें
किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका
नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है ही, 15 ऐसा न हो कि तू उस देश
के निवासिक्कों वाचा बान्धे, और वे अपके देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार
करें, और उनके लिथे बलिदान भी करें, और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उसके
बलिपशु का प्रसाद खाए, 16 और तू उनकी बेटियोंको अपके बेटोंके लिथे लावे,
और उनकी बेटियां जो आप अपके देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती है
तेरे बेटोंसे भी अपके देवताओं के पीछे होने को व्यभिचार करवाएं। 17 तुम
देवताओं की मूत्तियां ढालकर न बना लेना। 18 अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानना।
उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक
अखमीरी रोटी खाया करना; क्योंकि तू मिस्र से आबीब महीने में निकल आया।
19 हर एक पहिलौठा मेरा है; और क्या बछड़ा, क्या मेम्ना, तेरे पशुओं में से जो
नर पहिलौठे होंवे सब मेरे ही हैं। 20 और गदही के पहिलौठे की सन्ती मेम्ना
देकर उसको छुड़ाना, यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ देना।
परन्तु अपके सब पहिलौठे बेटोंको बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई छूछे हाथ
अपना मुंह न दिखाए। 21 छ: दिन तो परिश्रम करना, परन्तु सातवें दिन विश्रम
करना; वरन हल जोतने और लवने के समय में भी विश्रम करना। 22 और तू

अठवारोंका पर्ब्ब मानना जो पहिले लवे हुए गेहूं का पर्ब्ब कहलाता है, और वर्ष के
अन्त में बटोरन का भी पर्ब्ब मानना। 23 वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरूष इस्त्राएल
के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपके मुंह दिखाएं। 24 मैं तो अन्यजातियोंको तेरे
आगे से निकालकर तेरे सिवानोंको बढ़ाऊंगा; और जब तू अपके परमेश्वर यहोवा
को अपना मुंह दिखाने के लिथे वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का
लालच न करेगा। 25 मेरे बलिदान के लोहू को खमीर सहित न चढ़ाना, और न
फसह के पर्ब्ब के बलिदान में से कुछ बिहान तक रहने देना। 26 अपक्की भूमि
की पहिली उपज का पहिला भाग अपके परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना।
बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में ने सिफाना। 27 और यहोवा ने मूसा से
कहा, थे वचन लिख ले; क्योंकि इन्हीं वचनोंके अनुसार मैं तेरे और इस्त्राएल के
साय वाचा बान्धता हूं। 28 मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन और रात
रहा; और तब तक न तो उस ने रोटी खाई और न पानी पिया। और उस ने उन
तख्तियोंपर वाचा के वचन अर्यात् दस आज्ञाएं लिख दीं।। 29 जब मूसा साझी की
दोनोंतख्तियां हाथ में लिथे हुए सीनै पर्वत से उतरा आता या तब यहोवा के साय
बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकल रही यी।, परन्तु वह यह नहीं
जानता या कि उसके चेहरे से किरणें निकल रही हैं। 30 जब हारून और सब
इस्त्राएलियोंने मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें निकलती हैं, तब वे उसके
पास जाने से डर गए। 31 तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून मण्डली के सारे
प्रधानोंसमेत उसके पास आया, और मूसा उन से बातें करने लगा। 32 इसके बाद
सब इस्त्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएं यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके
साय बात करने के समय दी यीं, वे सब उस ने उन्हें बताईं। 33 जब तक मूसा उन

से बात न कर चुका तब तक अपके मुंह पर ओढ़ना डाले रहा। 34 और जब जब
मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उसके साम्हने जाता तब तब वह उस ओढ़नी
को निकलते समय तक उतारे हुए रहता या; फिर बाहर आकर जो जो आज्ञा उसे
मिलती उन्हें इस्त्राएलियोंसे कह देता या। 35 सो इस्त्राएली मूसा का चेहरा देखते
थे कि उस से किरणें निकलती हैं; और जब तक वह यहोवा से बात करने को
भीतर न जाता तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता या।।

निर्गमन 35

1 मूसा ने इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली इकट्ठी करके उन से कहा, जिन कामोंके
करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे थे हैं। 2 छ: दिन तो काम काज किया जाए,
परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिथे पवित्र और यहोवा के लिथे परमविश्रम का दिन
ठहरे; उस में जो कोई काम काज करे वह मार डाला जाए; 3 वरन विश्रम के दिन
तुम अपके अपके घरोंमें आग तक न जलाना।। 4 फिर मूसा ने इस्त्राएलियोंकी
सारी मण्डली से कहा, जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। 5 तुम्हारे
पास से यहोवा के लिथे भेंट ली जाए, अर्यात् जितने अपक्की इच्छा से देना चाहें
वे यहोवा की भेंट करके थे वस्तुएं ले आएं; अर्यात् सोना, रूपा, पीतल; 6 नीले,
बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूझ्म सनी का कपड़ा; बकरी का बाल, 7 लाल
रंग से रंगी हुई मेढ़ोंकी खालें, सुइसोंकी खालें; बबूल की लकड़ी, 8 उजियाला देने
के लिथे तेल, अभिषेक का तेल, और धूप के लिथे सुगन्धद्रव्य, 9 फिर एपोद और
चपरास के लिथे सुलैमानी मणि और जड़ने के लिथे मणि। 10 और तुम में से
जितनोंके ह्रृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा

यहोवा ने दी है वे सब बनाएं। 11 अर्यात् तम्बू, और ओहार समेत निवास, और
उसकी घुंडी, तख्ते, बेंड़े, खम्भे और कुसिर्यां; 12 फिर डण्डोंसमेत सन्दूक, और
प्रायश्चित्त का ढकना, और बीचवाला पर्दा; 13 डण्डोंऔर सब सामान समेत मेज़,
और भेंट की रोटियां; 14 सामान और दीपकोंसमेत उजियाला देनेवाला दीवट,
और उजियाला देने के लिथे तेल; 15 डण्डोंसमेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल,
सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का पर्दा; 16 पीतल की फंफरी, डण्डोंआदि
सारे सामान समेत होमवेदी, पाए समेत होदी; 17 खम्भोंऔर उनकी
कुसिर्योंसमेत आंगन के पर्दे, और आंगन के द्वार के पर्दे; 18 निवास और आंगन
दोनोंके खूंटे, और डोरियां; 19 पवित्रस्यान में सेवा टहल करने के लिथे काढ़े हुए
वस्त्र, और याजक का काम करने के लिथे हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके
पुत्रोंके वस्त्र भी।। 20 तब इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली मूसा के साम्हने से लौट
गई। 21 और जितनोंको उत्साह हुआ, और जितनोंके मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न
हुई यी, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी सारी सेवकाई और पवित्र
वोंके बनाने के लिथे यहोवा की भेंट ले आने लगे। 22 क्या स्त्री, क्या पुरूष,
जितनोंके मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई भी वे सब जुगनू, नयुनी, मुंदरी, और
कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भ◌ाति जितने मनुष्य यहोवा के
लिथे सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए। 23 और जिस जिस पुरूष
के पास नीले, बैंजनी वा लाल रंग का कपड़ा वा सूक्ष्म सनी का कपड़ा, वा बकरी
का बाल, वा लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ोंकी खालें, वा सूइसोंकी खालें यी वे उन्हें ले
आए। 24 फिर जितने चांदी, वा पीतल की भेंट के देनेवाले थे वे यहोवा के लिथे
वैसी भेंट ले आए; और जिस जिसके पास सेवकाई के किसी काम के लिथे बबूल

की लकड़ी यी वे उसे ले आए। 25 और जितनी स्त्रियोंके हृदय में बुद्धि का प्रकाश
या वे अपके हाथोंसे सूत कात कातकर नीले, बैंजनी और लाल रंग के, और सूझ्म
सनी के काते हुए सूत को ले आई। 26 और जितनी स्त्रियोंके मन में ऐसी बुद्धि का
प्रकाश या उन्हो ने बकरी के बाल भी काते। 27 और प्रधान लोग एपोद और
चपरास के लिथे सुलैमानी मणि, और जड़ने के लिथे मणि, 28 और उजियाला
देने और अभिषेक और धूप के सुगन्धद्रव्य और तेल ले आथे। 29 जिस जिस
वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी यी उसके लिथे जो कुछ
आवश्यक या, उसे वे सब पुरूष और स्त्रियां ले आई, जिनके हृदय में ऐसी इच्छा
उत्पन्न हुई यी। इस प्रकार इस्त्राएली यहोवा के लिथे अपक्की ही इच्छा से भेंट ले
आए।। 30 तब मूसा ने इस्त्राएलियोंसे कहा सुनो, यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले
बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है। 31 और
उस ने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया हे कि सब प्रकार की
बनावट के लिथे उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है, 32 कि वह
कारीगरी की युक्तियां निकालकर सोने, चांदी, और पीतल में, 33 और जड़ने के
लिथे मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में, वरन बुद्धि से सब भांति की
निकाली हुई बनावट में काम कर सके। 34 फिर यहोवा ने उसके मन में और दान
के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिझा देने की शक्ति दी
है। 35 इन दोनोंके हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है, कि वे खोदने
और गढ़ने और नीले, बैजनी और लाल रंग के कपके, और सूझ्म सनी के कपके
में काढ़ने और बुनने, वरन सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने
में सब भांति के काम करें।।

निर्गमन 36

1 और बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि
और समझ दी हो, कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्यान की
सेवकाई के लिथे सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें।। 2 तब
मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमानोंको जिनके हृदय में यहोवा
ने बुद्धि का प्रकाश दिया या, अर्यात् जिस जिसको पास आकर काम करने का
उत्साह हुआ या उन सभोंको बुलवाया। 3 और इस्त्राएली जो जो भेंट पवित्रस्यान
की सेवकाई के काम और उसके बनाने के लिथे ले आए थे, उन्हें उन पुरूषोंने मूसा
के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेंट अपक्की इच्छा से
लाते रहें; 4 और जितने बुद्धिमान पवित्रस्यान का काम करते थे वे सब अपना
अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए, 5 और कहने लगे, जिस काम के करने
की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिथे जितना चाहिथे उससे अधिक वे ले आए हैं।
6 तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, कि क्या पुरूष, क्या
स्त्री, कोई पवित्रस्यान के लिथे और भेंट न लाए, इस प्रकार लोग और भेंट लाने से
रोके गए। 7 क्योंकि सब काम बनाने के लिथे जितना सामान आवश्यक या उतना
वरन उससे अधिक बनाने वालोंके पास आ चुका या।। 8 और काम करनेवाले
जितने बुद्धिमान थे उन्होंने निवास के लिथे बटी हुई सूझ्म सनी के कपके के, और
नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके के दस पटोंको काढ़े हुए करूबोंसहित
बनाया। 9 एक एक पट की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई;
सब पट एक ही नाप के बने। 10 उस ने पांच पट एक दूसरे से जोड़ दिए, और फिर
दूसरे पांच पट भी एक दूसरे से जोड़ दिए। 11 और जहां थे पट जोड़े गए वहां की

दोनोंछोरोंपर उस ने पीली नीली फलियां लगाईं। 12 उस ने दोनोंछोरोंमें पचास
पचास फलियां इस प्रकार लगाई कि वे आम्हने-साम्हने हुई। 13 और उस ने सोने
की पचास घुंडियां बनाई, और उनके द्वारा पटोंको एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि
निवास मिलकर एक हो गया। 14 फिर निवास के ऊपर के तम्बू के लिथे उस ने
बकरी के बाल के ग्यारह पट बनाए। 15 एक एक पट की लम्बाई तीस हाथ और
चौड़ाई चार हाथ की हुई; और ग्यारहोंपट एक ही नाप के थे। 16 इन में से उस ने
पांच पट अलग और छ: पट अलग जोड़ दिए। 17 और जहां दोनोंजोड़े गए वहां की
छोरोंमें उस ने पचास पचास फलियां लगाईं। 18 और उस ने तम्बू के जोड़ने के
लिथे पीतल की पचास घुंडियां भी बनाई जिस से वह एक हो जाए। 19 और उस ने
तम्बू के लिथे लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ोंकी खालोंका एक ओढ़ना और उसके ऊपर
के लिथे सूइसोंकी खालोंका भी एक ओढ़ना बनाया। 20 फिर उस ने निवास के
लिथे बबूल की लकड़ी के तख्तोंको खड़े रहने के लिथे बनाया। 21 एक एक तख्ते
की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। 22 एक एक तख्ते में एक
दूसरी से जोड़ी हुई दो दो चूलें बनीं, निवास के सब तख्तोंके लिथें उस ने इसी
भंाति बनाईं। 23 और उस ने निवास के लिथे तख्तोंको इस रीति से बनाया, कि
दक्खिन की ओर बीस तख्ते लगे। 24 और इन बीसोंतख्तोंके नीचे चांदी की
चालीस कुसिर्यां, अर्यात् एक एक तख्ते के नीचे उसकी दो चूलोंके लिथे उस ने दो
कुसिर्यां बनाईं। 25 और निवास की दूसरी अलंग, अर्यात् उत्तर की ओर के लिथे
भी उस ने बीस तख्ते बनाए। 26 और इनके लिथे भी उस ने चांदी की चालीस
कुसिर्यां, अर्यात् एक एक तख्ते के नीचे दो दो कुसिर्यां बनाईं। 27 और निवास की
पिछली अलंग, अर्यात् पश्चिम ओर के लिथे उस ने छ: तख्ते बनाए। 28 और

पिछली अलंग में निवास के कोनोंके लिथे उस ने दो तख्ते बनाए। 29 और वे नीचे
से दो दो भाग के बने, और दोनोंभाग ऊपर से सिक्के तक उन दोनोंतख्तोंका ढब
ऐसा ही बनाया। 30 इस प्रकार आठ तख्ते हुए, और उनकी चांदी की सोलह
कुसिर्यां हुईं, अर्यात् एक एक तख्ते के नीचे दो दो कुसिर्यां हुईं। 31 फिर उस ने
बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाए, अर्यात् निवास की एक अलंग के तख्तोंके लिथे
पांच बेंड़े, 32 और निवास की दूसरी अलंग के तख्तोंके लिथे पांच बेंड़े, और
निवास की जो अलंग पश्चिम ओर पिछले भाग में यी उसके लिथे भी पांच बेंड़े,
बनाए। 33 और उस ने बीचवाले बेंड़े को तख्तोंके मध्य में तम्बू के एक सिक्के से
दूसरे सिक्के तक पहुंचने के लिथे बनाया। 34 और तख्तोंको उस ने सोने से मढ़ा,
और बेंड़ोंके घर को काम देनेवाले कड़ोंको सोने के बनाया, और बेंड़ोंको भी सोने से
मढ़ा।। 35 फिर उस ने नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके का, और बटी हुई
सूझ्म सनीवाले कपके का बीचवाला पर्दा बनाया; वह कढ़ाई के काम किथे हुए
करूबोंके साय बना। 36 और उस ने उसके लिथे बबूल के चार खम्भे बनाए, और
उनको सोने से मढ़ा; उनकी घुंडियां सोने की बनी, और उस ने उनके लिथे चांदी
की चार कुसिर्यां ढालीं। 37 और उस ने तम्बू के द्वार के लिथे नीले, बैंजनी और
लाल रंग के कपके का, और बटी हुई सूझ्म सनी के कपके का कढ़ाई का काम
किया हुआ पर्दा बनाया। 38 और उस ने घुंडियोंसमेत उसके पांच खम्भे भी
बनाए, और उनके सिरोंऔर जोड़ने की छड़ोंको सोने से मढ़ा, और उनकी पांच
कुसिर्यां पीतल की बनाईं।।

निर्गमन 37

1 फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी का सन्दूक बनाया; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ,
चौड़ाई डेढ़ हाथ, और ऊंचाई डेढ़ हाथ की यी। 2 और उस ने उसको भीतर बाहर
चोखे सोने से मढ़ा, और उसके चारोंओर सोने की बाड़ बनाई। 3 और उसके
चारोंपायोंपर लगाने को उस ने सोने के चार कड़े ढ़ाले, दो कड़े एक अलंग और दो
कड़े दूसरी अलंग पर लगे। 4 फिर उस ने बबूल के डण्डे बनाए, और उन्हें सोने से
मढ़ा, 5 और उनको सन्दूक की दोनो अलंगोंके कड़ोंमें डाला कि उनके बल सन्दूक
उठाया जाए। 6 फिर उस ने चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया; उसकी
लम्बाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की यी। 7 और उस ने सोना गढ़कर दो
करूब प्रायश्चित्त के ढकने के दानोंसिरोंपर बनाए; 8 एक करूब तो एक सिक्के पर,
और दूसरा करूब दूसरे सिक्के पर बना; उस ने उनको प्रायश्चित्त के ढकने के साय
एक ही टुकड़े के दोनोंसिरोंपर बनाया। 9 और करूबोंके पंख ऊपर से फैले हुए बने,
और उन पंखोंसे प्रायश्चित्त का ढकना ढपा हुआ बना, और उनके मुख आम्हने-
साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किए हुए बने।। 10 फिर उस ने बबूल की
लकड़ी की मेज़ को बनाया; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊंचाई
डेढ़ हाथ की यी; 11 और उस ने उसको चोखे सोने से मढ़ा, और उस में चारोंओर
सोने की एक बाड़ बनाई। 12 और उस ने उसके लिथे चार अंगुल चौड़ी एक पटरी,
और इस पटरी के लिथे चारोंओर सोने की एक बाड़ बनाई। 13 और उस ने मेज़ के
लिथे सोने के चार कड़े ढालकर उन चारोंकोनोंमें लगाया, जो उसके चारोंपायोंपर
थे। 14 वे कड़े पटरी के पास मेज़ उठाने के डण्डोंके खानोंका काम देने को बने। 15
और उस ने मेज़ उठाने के लिथे डण्डोंको बबूल की लकड़ी के बनाया, और सोने से
मढ़ा। 16 और उस ने मेज़ पर का सामान अर्यात् परात, धूपदान, कटोरे, और

उंडेलने के बर्तन सब चोखे सोने के बनाए।। 17 फिर उस ने चोखा सोना गढ़के
पाए और डण्डी समेत दीवट को बनाया; उसके पुष्पकोष, गांठ, और फूल सब एक
ही टुकड़े के बने। 18 और दीवट से निकली हुई छ: डालियां बनीं; तीन डालियां तो
उसकी एक अलंग से और तीन डालियां उसकी दूसरी अलंग से निकली हुई बनीं।
19 एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गांठ,
और एक एक फूल बना; दीवट से निकली हुई, उन छहोंडालियोंका यही ढब हुआ।
20 और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के सामान अपक्की अपक्की गांठ और
फूल समेत चार पुष्पकोष बने। 21 और दीवट से निकली हुई छहोंडालियोंमें से दो
दो डालियोंके नीचे एक एक गांठ दीवट के साय एक ही टुकड़े की बनी। 22 गांठे
और डालियां सब दीवट के साय एक ही टुकड़े की बनीं; सारा दीवट गढ़े हुए चोखे
सोने का और एक ही टुकड़े का बना। 23 और उस ने दीवट के सातोंदीपक, और
गुलतराश, और गुलदान, चोखे सोने के बनाए। 24 उस ने सारे सामान समेत
दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया।। 25 फिर उस ने बबूल की लकड़ी की
धूपकेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ ही यी; वह
चौकोर बनी, और उसकी ऊंचाई एक हाथ की यी; वह चौकोर बनी, और उसकी
ऊंचाई दो हाथ की यी; और उसके सींग उसके साय बिना जोड़ के बने थे 26 और
ऊपरवाले पल्लों, और चारोंओर की अलंगों, और सींगो समेत उस ने उस वेदी को
चोखे सोने से मढ़ा; और उसकी चारोंओर सोने की एक बाड़ बनाई, 27 और उस
बाड़ के नीचे उसके दोनोंपल्लोंपर उस ने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके उठाने
के डण्डोंके खानोंका काम दें। 28 और डण्डोंको उस ने बबूल की लकड़ी का बनाया,
और सोने से मढ़ा। 29 और उस ने अभिषेक का पवित्र तेल, और सुगन्धद्रव्य का

धूप, गन्धी की रीति के अनुसार बनाया।।

निर्गमन 38

1 फिर उस ने बबूल की लकड़ी की होमबलि भी बनाई; उसकी लम्बाई पांच हाथ
और चौड़ाई पांच हाथ की यी; इस प्रकार से वह चौकोर बनी, और ऊंचाई तीन हाथ
की यी। 2 और उस ने उसके चारोंकोनोंपर उसके चार सींग बनाए, वे उसके साय
बिना जोड़ के बने; और उस ने उसको पीतल से मढ़ा। 3 और उस ने वेदी का सारा
सामान, अर्यात् उसकी हांडियों, फावडियों, कटोरों, कांटों, और करछोंको बनाया।
उसका सारा सामान उस ने पीतल का बनाया। 4 और वेदी के लिथे उसके
चारोंओर की कंगनी के तले उस ने पीतल की जाली की एक फंफरी बनाई, वह
नीचे से वेदी की ऊंचाई के मध्य तक पहुंची। 5 और उस ने पीतल की फंफरी के
चारोंकोनोंके लिथे चार कड़े ढाले, जो डण्डोंके खानोंका काम दें। 6 फिर उस ने
डण्डोंको बबूल की लकड़ी का बनाया, और पीतल से मढ़ा। 7 तब उस ने डण्डोंको
वेदी की अलंगोंके कड़ोंमें वेदी के उठाने के लिथे डाल दिया। वेदी को उस ने
तख्तोंसे खोखली बनाया।। 8 और उसे ने हौदी और उसका पाया दोनोंपीतल के
बनाए, यह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के दर्पणोंके
लिथे पीतल के बनाए गए।। 9 फिर उस ने आंगन बनाया; और दक्खिन अलंग के
लिथे आंगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपके के थे, और सब मिलाकर सौ
हाथ लम्बे थे; 10 उनके लिथे बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस कुसिर्यां
बनी; और खम्भोंकी घुंडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। 11 और उत्तर
अलग के लिथे बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस ही कुसिर्यां बनीं, और

खम्भोंकी घुंडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनी। 12 और पश्चिम अलंग के
लिथे सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ के थे; उनके लिथे दस खम्भे, और दस ही
उनकी कुसिर्यां यीं, और खम्भोंकी घंुडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की यीं। 13
और पूरब अलंग में भी वह पचास हाथ के थे। 14 आंगन के द्वार के एक ओर के
लिथे पंद्रह हाथ के पर्दे बने; और उनके लिथे तीन खम्भे और तीन कुसिर्यां यी।
15 और आंगन के द्वार की दूसरी ओर भी वैसा ही बना या; और आंगन के दरवाजे
के इधर और उधर पंद्रह पंद्रह हाथ के पर्दे बने थे; और उनके लिथे तीन हीे
खम्भे, और तीन ही तीन इनकी कुसिर्यां भी यीं। 16 आंगन की चारोंओर सब पर्दे
सूझ्म बटी हुई सनी के कपके के बने हुए थे। 17 और खम्भोंकी कुसिर्यां पीतल
की, और घुंडियां और छड़े चांदी की बनी, और उनके सिक्के चांदी से मढ़े गए, और
आंगन के सब खम्भे चांदी के छड़ोंसे जोड़े गए थे। 18 आंगन के द्वार के पर्दे पर
बेल बूटे का काम किया हुआ या, और वह नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके
का; और सूझ्म बटी हुई सनी के कपके के बने थे; और उसकी लम्बाई बीस हाथ
की यी, और उसकी ऊंचाई आंगन की कनात की चौड़ाई के सामान पांच हाथ की
बनी। 19 और उनके लिथे चार खम्भे, और खम्भोंकी चार ही कुसिर्यां पीतल की
बनीं, उनकी घुंडियां चांदी की बनीं, और उनके सिक्के चांदी से मढ़े गए, और
उनकी छड़ें चांदी की बनीं। 20 और निवास और आंगन की चारोंओर के सब खूंटे
पीतल के बने थे।। 21 साझीपत्र के निवास का सामान जो लेवियोंकी सेवकाई के
लिथे बना; और जिसकी गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के
कहने से हुई यी, उसका वर्णन यह है। 22 जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा
यहोवा ने मूसा को दी यी उसको यहूदा के गोत्रवाले बसलेल ने, जो हूर का पोता

और ऊरी का पुत्र या, बना दिया। 23 और उसके संग दान के गोत्रवाले,
अहीसामाक के पुत्र, ओहोलीआब या, जो खोदने और काढ़नेवाला और नीले,
बैंजनी और लाल रंग के और सूक्ष्म सनी के कपके में कारचोब करनेवाला निपुण
कारीगर या।। 24 पवित्रस्यान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह उनतीस
किक्कार, और पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से सात सौ तीन शेकेल या। 25
और मण्डली के गिने हुए लोगोंकी भेंट की चांदी सौ किक्कार, और पवित्रस्यान के
शेकेल के हिसाब से सत्तरह सौ पचहत्तर शेकेल यी। 26 अर्यात् जितने बीस बरस
के और उससे अधिक अवस्या के गिने गए थे, वे छ: लाख तीन हज़ार साढ़े पांच
सौ पुरूष थे, और एक एक जन की ओर से पवित्रस्यान के शेकेल के अनुसार
आधा शेकेल, जो एक बेका होता है मिला। 27 और वह सौ किक्कार चांदी
पवित्रस्यान और बीचवाले पर्दे दोनोंकी कुसिर्योंके ढालने में लग गई; सौ किक्कार
से सौ कुसिर्यां बनीं, एक एक कुर्सी एक किक्कार की बनी। 28 और सत्तरह सौ
पचहत्तर शेकेल जो बच गए उन से खम्भोंकी चोटियां मढ़ी गईं, और उनकी छड़ें
भी बनाई गई। 29 और भेंट का पीतल सत्तर किक्कार और दो हज़ार चार सौ
शेकेल या; 30 उससे मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुसिर्यां, और पीतल की वेदी,
पीतल की फंफरी, और वेदी का सारा सामान; 31 और आंगन के चारोंओर की
कुसिर्यां, और आंगन की चारोंओर के खूंटे भी बनाए गए।।

निर्गमन 39

1 फिर उन्होंने नीले, बैंजनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपके पवित्र स्यान की
सेवकाई के लिथे, और हारून के लिथे भी पवित्र वस्त्र बनाए; जिस प्रकार यहोवा ने

मूसा को आज्ञा दी यी।। 2 और उस ने एपोद को सोने, और नीले, बैंजनी और लाल
रंग के कपके का और सूझ्म बटी हुई सनी के कपके का बनाया। 3 और उन्होंने
सोना पीट-पीटकर उसके पत्तर बनाए, फिर पत्तरोंको काट-काटकर तार बनाए,
और तारोंको नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके में, और सूझ्म सनी के कपके
में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। 4 एपोद के जोड़ने को उन्होंने उसके
कन्धोंपर के बन्धन बनाए, वह तो अपके दोनोंसिक्कों जोड़ा गया। 5 और उसके
कसने के लिथे जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना, वह उसके साय बिना जोड़ का,
और उसी की बनावट के अनुसार, अर्यात् सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के
कपके का, और सूझ्म बटी हुई सनी के कपके का बना; जिस प्रकार यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी यी।। 6 और उन्होंने सुलैमानी मणि काटकर उनमें इस्त्राएल के
पुत्रोंके नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और सोने के खानोंमें जड़
दिए। 7 और उस ने उनको एपोद के कन्धे के बन्धनोंपर लगाया, जिस से
इस्त्राएलियोंके लिथे स्मरण कराने वाले मणि ठहरें; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा
को आज्ञा दी यी।। 8 और उस ने चपरास को एपोद की नाईं सोने की, और नीले,
बैंजनी और लाल रंग के कपके की, और सूझ्म बटी हुई सनी के कपके में बेल बूटे
का काम किया हुआ बनाया। 9 चपरास तो चौकोर बनी; और उन्हो ने उसको
दोहरा बनाया, और वह दोहरा होकर एक बित्ता लम्बा और एक बित्ता चौड़ा बना।
10 और उन्होंने उस में चार पांति मणि जड़े। पहिली पांति में तो माणिक्य,
पद्‌य्क़राग, और लालड़ी जडे गए; 11 और दूसरी पांति में मरकत, नीलमणि, और
हीरा, 12 और तीसरी पांति में लशम, सूर्यकान्त, और नीलम; 13 और चौयी पांति
में फीरोजा, सुलैमानी मणि, और यशब जड़े; थे सब अलग अलग सोने के खानोंमें

जड़े गए। 14 और थे मणि इस्त्राएल के पुत्रोंके नाम की गिनती के अनुसार बारह
थे; बारहोंगोत्रोंमें से एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसा ही खोदा
गया। 15 और उन्होंने चपरास पर डोरियोंकी नाई गूंथे हुए चोखे सोने की जंजीर
बनाकर लगाई; 16 फिर उन्होंने सोने के दो खाने, और सोने की दो कड़ियां
बनाकर दोनोंकड़ियोंको चपरास के दोनोंसिरोंपर लगाया; 17 तब उन्होंने सोने की
दोनोंगूंयी हुई जंजीरो को चपरास के सिरोंपर की दोनोंकड़ियोंमें लगाया। 18 और
गूंयी हुई दोनोंजंजीरोंके दोनोंबाकी सिक्कों उन्होंने दोनोंखानोंमें जड़के, एपोद के
साम्हने दोनोंकन्धोंके बन्धनोंपर लगाया। 19 और उन्होंने सोने की और दो
कड़ियां बनाकर चपरास के दोनोंसिरोंपर उसकी उस कोर पर, जो एपोद की
भीतरी भाग में यी, लगाईं। 20 और उन्होंने सोने की दो और कड़ियां भी बनाकर
एपोद के दोनोंकन्धोंके बन्धनोंपर नीचे से उसके साम्हने, और जोड़ के पास,
एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाईं। 21 तब उन्होंने चपरास को उसकी
कड़ियोंके द्वारा एपोद की कड़ियोंमें नीले फीते से ऐसा बान्धा, कि वह एपोद के
काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे, और चपरास एपोद से अलग न होने पाए; जैसे यहोवा
ने मूसा को आज्ञा दी यी।। 22 फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया
गया। 23 और उसकी बनावट ऐसी हुई कि उसके बीच बखतर के छेद के समान
एक छेद बना, और छेद के चारोंओर एक कोर बनी, कि वह फटने न पाए। 24
और उन्होंने उसके नीचेवाले घेरे में नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपके के अनार
बनाए। 25 और उन्होंने चोखे सोने की घंटियां भी बनाकर बागे के नीचे वाले घेरे
के चारोंओर अनारोंके बीचोंबीच लगाईं; 26 अर्यात् बागे के नीचेवाले घेरे की
चारोंओर एक सोने की घंटी, और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहिने हुए

सेवा टहल करें; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी।। 27 फिर उन्होंने हारून,
और उसके पुत्रोंके लिथे बुनी हुई सूझ्म सनी के कपके के अंगरखे, 28 और सूझ्म
सनी के कपके की पगड़ी, और सूझ्म सनी के कपके की सुन्दर टोपियां, और
सूझ्म बटी हुई सनी के कपके की जांघिया, 29 और सूझ्म बटी हुई सनी के कपके
की और नीले, बैंजनी और लाल रंग की कारचोबी काम की हुई पगड़ी; इन सभोंको
जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी वैसा ही बनाया।। 30 फिर उन्होंने
पवित्र मुकुट की पटरी चोखे सोने की बनाई; और जैसे छापे में वैसे ही उस में थे
अझर खोदे गए, अर्यात् यहोवा के लिथे पवित्र। 31 और उन्होंने उस में नीला
फीता लगाया, जिस से वह ऊपर पगड़ी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी यी।। 32 इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के निवास का सब काम समाप्त
हुआ, और जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी, इस्त्राएलियोंने
उसी के अनुसार किया।। 33 तब वे निवास को मूसा के पास ले आए, अर्यात्
घंुडियां, तख्ते, बेंड़े, खम्भे, कुसिर्यां आदि सारे सामान समेत तम्बू; 34 और
लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ोंकी खालोंका ओढ़ना, और सूइसोंकी खालोंका ओढ़ना,
और बीच का पर्दा; 35 डण्डोंसहित साझीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित्त का
ढकना; 36 सारे सामान समेत मेज़, और भेंट की रोटी; 37 सारे सामान सहित
दीवट, और उसकी सजावट के दीपक और उजियाला देने के लिथे तेल; 38 सोने
की वेदी, और अभिषेक का तेल, और सुगन्धित धूप, और तम्बू के द्वार का पर्दा;
39 पीतल की फंफरी, डण्डों, और सारे सामान समेत पीतल की वेदी; और पाए
समेत हौदी; 40 खम्भों, और कुसिर्योंसमेत आंगन के पर्दे, और आंगन के द्वार का
पर्दा, और डोरियां, और खूंटे, और मिलापवाले तम्बू के निवास की सेवकाई का

सारा सामान; 41 पवित्रस्यान में सेवा टहल करने के लिथे बेल बूटा काढ़े हुए वस्त्र,
और हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रोंके वस्त्र जिन्हें पहिनकर उन्हें
याजक का काम करना या। 42 अर्यात् जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यीं
उन्हीं के अनुसार इस्त्राएलियोंने सब काम किया। 43 तब मूसा ने सारे काम का
निरीझण करके देखा, कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया है।
और मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।।

निर्गमन 40

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 पहिले महीने के पहिले दिन को तू मिलापवाले
तम्बू के निवास को खड़ा करा देना। 3 और उस में साझीपत्र के सन्दूक को रखकर
बीचवाले पर्दे की ओट में करा देना। 4 और मेज़ को भीतर ले जाकर जो कुछ उस
पर सजाना है उसे सजवा देना; 5 और साझीपत्र के सन्दूक के साम्हने सोने की
वेदी को जो धूप के लिथे है उसे रखना, और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना।
6 और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार के साम्हने होमवेदी को रखना। 7 और
मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच होदी को रखके उस में जल भरना। 8 और
चारोंओर के आंगन की कनात को खड़ा करना, और उस आंगन के द्वार पर पर्दे को
लटका देना। 9 और अभिषेक का तेल लेकर निवास को और जो कुछ उस में होगा
सब कुछ का अभिषेक करना, और सारे सामान समेत उसको पवित्र करना; तब
वह पवित्र ठहरेगा। 10 और सब सामान समेत होमवेदी का अभिषेक करके
उसको पवित्र करना; तब वह परमपवित्र ठहरेगी। 11 और पाए समेत हौदी का भी
अभिषेक करके उसे पवित्र करना। 12 और हारून और उसके पुत्रोंको मिलापवाले

तम्बू के द्वार पर ले जाकर जल से नहलाना, 13 और हारून को पवित्र वस्त्र
पहिनाना, और उसका अभिषेक करके उसको पवित्र करना, कि वह मेरे लिथे
याजक का काम करे। 14 और उसके पुत्रोंको ले जाकर अंगरखे पहिनाना, 15 और
जैसे तू उनके पिता का अभिषेक करे वैसे ही उनका भी अभिषेक करना, कि वे मेरे
लिथे याजक का काम करें; और उनका अभिषेक उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिथे उनके
सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा। 16 और मूसा ने जो जो आज्ञा यहोवा ने
उसको दी यी उसी के अनुसार किया।। 17 और दूसरे बरस के पहिले महीने के
पहिले दिन को निवास खड़ा किया गया। 18 और मूसा ने निवास को खड़ा
करवाया, और उसकी कुसिर्यां धर उसके तख्ते लगाके उन में बेंड़े डाले, और उसके
खम्भोंको खड़ा किया; 19 और उस ने निवास के ऊपर तम्बू को फैलाया, और
तम्बू के ऊपर उस ने ओढ़ने को लगाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी
यी। 20 और उस ने साझीपत्र को लेकर सन्दूक में रखा, और सन्दूक में डण्डोंको
लगाके उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को धर दिया; 21 और उस ने सन्दूक को
निवास में पहुंचवाया, और बीचवाले पर्दे को लटकवाके साझीपत्र के सन्दूक को
उसके अन्दर किया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 22 और उस ने
मिलापवाले तम्बू में निवास की उत्तर अलंग पर बीच के पर्दे से बाहर मेज़ को
लगवाया, 23 और उस पर उन ने यहोवा के सम्मुख रोटी सजाकर रखी; जिस
प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 24 और उस ने मिलापवाले तम्बू में मेज़
के साम्हने निवास की दक्खिन अलंग पर दीवट को रखा, 25 और उस ने
दीपकोंको यहोवा के सम्मुख जला दिया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी
यी। 26 और उस ने मिलापवाले तम्बू में बीच के पर्दे के साम्हने सोने की वेदी को

रखा, 27 और उस ने उस पर सुगन्धित धूप जलाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा
को आज्ञा दी यी। 28 और उस ने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया। 29 और
मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया;
जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 30 और उस ने मिलापवाले तम्बू
और वेदी के बीच हौदी को रखकर उस में धोने के लिथे जल डाला, 31 और मूसा
और हारून और उसके पुत्रोंने उस में अपके अपके हाथ पांव धोए; 32 और जब
जब वे मिलापवाले तम्बू में वा वेदी के पास जाते थे तब तब वे हाथ पांव धोते थे;
जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 33 और उस ने निवास की चारोंओर
और वेदी के आसपास आंगन की कनात को खड़ा करवाया, और आंगन के द्वार के
पर्दे को लटका दिया। इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा कर समाप्त किया।। 34
तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्यान में
भर गया। 35 और बादल जो मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का
तेज जो निवासस्यान में भर गया, इस कारण मूसा उस मे प्रवेश न कर सका। 36
और इस्त्राएलियोंकी सारी यात्रा में ऐसा होता या, कि जब जब वह बादल निवास
के ऊपर उठ जाता तब तब वे कूच करते थे। 37 और यदि वह न उठता, तो जिस
दिन तक वह न उठता या उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे। 38 इस्त्राएल के
घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को
उसी बादल में आग उन सभोंको दिखाई दिया करती यी।।

लैव्यवस्था 1

1 यहोवा ने मिलापवाले तम्बू में से मूसा को बुलाकर उस से कहा, 2

इस्त्राएलियोंसे कह, कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिथे पशु का चढ़ावा
चढ़ाए, तो उसका बलिपशु गाय-बैलोंवा भेड़-बकरियोंमें से एक का हो। 3 यदि वह
गाय बैलोंमें से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए,
कि यहोवा उसे ग्रहण करे। 4 और वह अपना हाथ होमबलिपशु के सिर पर रखे,
और वह उनके लिथे प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा। 5 तब वह उस
बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लोहू को
समीप ले जाकर उस वेदी की चारोंअलंगोंपर छिड़के जो मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर है। 6 फिर वह होमबलिपशु की खाल निकालकर उस पशु को टुकड़े टुकड़े करे;
7 तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रखें, और आग पर लकड़ी सजाकर धरें;
8 और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकड़ोंको उस
लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजाकर धरें; 9 और वह उसकी
अंतडियोंऔर पैरोंको जल से धोए। तब याजक सब को वेदी पर जलाए, कि वह
होमबलि यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।। 10 और यदि वह
भेड़ोंवा बकरोंका होमबलि चढ़ाए, तो निर्दोष नर को चढ़ाए। 11 और वह उसको
यहोवा के आगे वेदी की उत्तरवाली अलंग पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो
याजक हैं वे उसके लोहू को वेदी की चारोंअलंगोंपर छिड़कें। 12 और वह उसको
टुकड़े टुकड़े करे, और सिर और चरबी को अलग करे, और याजक इन सब को उस
लकड़ी पर सजाकर धरे जो वेदी की आग पर होगी; 13 और वह उसकी
अंतडियोंऔर पैरोंको जल से धोए। और याजक सब को समीप ले जाकर वेदी पर
जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिथे सुगन्धदायक सुगन्धवाला हवन
ठहरे।। 14 और यदि वह यहोवा के लिथे पक्षियोंका होमबलि चढ़ाए, तो पंडुको वा

कबूतरोंको चढ़ावा चढ़ाए। 15 याजक उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका गला
मरोड़ के सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए; और उसका सारा लोहू
उस वेदी की अलंग पर गिराया जाए; 16 और वह उसका ओफर मल सहित
निकालकर वेदी की पूरब की ओर से राख डालने के स्यान पर फेंक दे; 17 और वह
उसको पंखोंके बीच से फाड़े, पर अलग अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर
उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए, कि वह होमबलि और
यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।।

लैव्यवस्था 2

1 और जब कोई यहोवा के लिथे अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा
चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे; 2 और वह उसको
हारून के पुत्रोंके पास जो याजक हैं लाए। और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में
से इस तरह अपक्की मुट्ठी भरकर निकाले कि सब लोबान उस में आ जाए; और
याजक उन्हें स्मरण दिलानेवाले भाग के लिथे वेदी पर जलाए, कि यह यहोवा के
लिथे सुखदायक सुगन्धित हवन ठहरे। 3 और अन्नबलि में से जो बचा रहे सो
हारून और उसके पुत्रोंका ठहरे; यह यहोवा के हवनोंमें से परमपवित्र वस्तु होगी।।
4 और जब तू अन्नबलि के लिथे तन्दूर में पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाए, तो वह तेल
से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों, वा तेल से चुपक्की हुई अखमीरी
चपातियोंका हो। 5 और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो, तो
वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो; 6 उसको टुकड़े टुकड़े करके उस पर तेल
डालना, तब वह अन्नबलि हो जाएगा। 7 और यदि तेरा चढ़ावा कढ़ाही में तला

हुआ अन्नबलि हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। 8 और जो अन्नबलि इन
वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना; और जब वह
याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए। 9 और याजक
अन्नबलि में से स्मरण दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर जलाए, कि वह
यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे; 10 और अन्नबलि में से जो
बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रोंका ठहरे; वह यहोवा के हवनोंमें परमपवित्र
वस्तु होगी। 11 कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिथे चढ़ाओ खमीर
मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिथे खमीर और मधु न
जलाना। 12 तुम इनको पहिली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिथे चढ़ाना,
पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिथे वेदी पर चढ़ाए न जाएं। 13 फिर अपके सब
अन्नबलियोंको नमकीन बनाना; और अपना कोई अन्नबलि अपके परमेश्वर के
साय बन्धी हुई वाचा के नमक से रहित होने न देना; अपके सब चढ़ावोंके साय
नमक भी चढ़ाना।। 14 और यदि तू यहोवा के लिथे पहिली उपज का अन्नबलि
चढ़ाए, तो अपक्की पहिली उपज के अन्नबलि के लिथे आग से फुलसाई हुई हरी
हरी बालें, अर्यात् हरी हरी बालोंको मींजके निकाल लेना, तब अन्न को चढ़ाना।
15 और उस में तेल डालना, और उसके ऊपर लोबान रखना; तब वह अन्नबलि
हो जाएगा। 16 और याजक सींजकर निकाले हुए अन्न को, और तेल को, और
सारे लोबान को स्मरण दिलानेवाला भाग करके जला दे; वह यहोवा के लिथे हवन
ठहरे।।

लैव्यवस्था 3

1 और यदि उसका चढ़ावा मेंलबलि का हो, और यदि वह गाय-बैलोंमे से किसी को
चढ़ाए, तो चाहे वह पशु नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के
आगे चढ़ाए। 2 और वह अपना हाथ अपके चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे और
उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक है वे
उसके लोहू को वेदी की चारोंअलंगोंपर छिड़कें। 3 और वह मेलबलि में से यहोवा
के लिथे हवन करे, अर्यात् जिस चरबी से अंतडिय़ां ढपी रहती हैं, और जो चरबी
उन में लिपक्की रहती है वह भी, 4 और दोनोंगुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो
कमर के पास रहती है, और गुर्दोंसमेत कलेजे के ऊपर की फिल्ली, इन सभोंको
वह अलग करे। 5 और हारून के पुत्र इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएं,
जो उन लकडिय़ोंपर होगी जो आग के ऊपर हैं, कि यह यहोवा के लिथे सुखदायक
सुगन्धवाला हवन ठहरे।। 6 और यदि यहोवा के मेलबलि के लिथे उसका चढ़ावा
भेड़-बकरियोंमें से हो, तो चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह
चढ़ाए। 7 यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के साम्हने चढ़ाए,
8 और वह अपके चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले
तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लोहू को वेदी की चारोंअलंगोंपर
छिड़कें। 9 और मेलबलि में से चरबी को यहोवा के लिथे हवन करे, अर्यात् उसकी
चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जो चरबी उन में
लिपक्की रहती है, 10 और दोनोंगुर्दे, और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास
रहती है, और गुर्दोंसमेत कलेजे के ऊपर की फिल्ली, इन सभोंको वह अलग करे।
11 और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह यहोवा के लिथे हवन रूपी भोजन
ठहरे।। 12 और यदि वह बकरा वा बकरी चढ़ाए, तो उसे यहोवा के साम्हने

चढ़ाए। 13 और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले
तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लोहू को वेदी की चारोंअलंगोंपर
छिड़के। 14 और वह उस में से अपना चढ़ावा यहोवा के लिथे हवन करके चढ़ाए,
अर्यात् जिस चरबी से अंतडिय़ां ढपी रहती हैं, और जो चरबी उन में लिपक्की
रहती है वह भी, 15 और दोनोंगुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती
है, और गुर्दोंसमेत कलेजे के ऊपर की फिल्ली, इन सभोंको वह अलग करे। 16
और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह तो हवन रूपी भोजन है जो सुखदायक
सुगन्ध के लिथे होता है; क्योंकि सारी चरबी यहोवा की हैं। 17 यह तुम्हारे
निवासोंमें तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिथे सदा की विधि ठहरेगी कि तुम चरबी और
लोहू कभी न खाओ।।

लैव्यवस्था 4

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा 2 कि इस्त्राएलियोंसे यह कह, कि यदि कोई मनुष्य
उन कामोंमें से जिनको यहोवा ने मना किया है किसी काम को भूल से करके पापी
हो जाए; 3 और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिस से प्रजा दोषी ठहरे, तो
अपके पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए। 4
और वह उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर
उसके सिर पर हाथ रखे, और उस बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे। 5 और
अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू में ले जाए; 6
और याजक अपक्की उंगली लोहू मे डुबो डुबोकर और उस में से कुछ लेकर
पवित्रस्यान के बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के साम्हने सात बार छिड़के। 7 और

याजक उस लोहू में से कुछ और लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सींगो पर जो
मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के साम्हने लगाए; फिर बछड़े के सब लोहू को वेदी
के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल दे। 8 फिर वह पापबलि के
बछड़े की सब चरबी को उस से अलग करे, अर्यात् जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी
रहती हैं, और जितनी चरबी उन में लिपक्की रहती है, 9 और दोनोंगुर्दे और उनके
ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दोंसमेत कलेजे के ऊपर की
फिल्ली, इन सभोंको वह ऐसे अलग करे, 10 जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से
अलग किए जाते हैं, और याजक इनको होमबलि की वेदी पर जलाए। 11 और
उस बछड़े की खाल, पांव, सिर, अंतड़ियां, गोबर, 12 और सारा मांस, निदान
समूचा बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्यान में, जहां राख डाली जाएगी, ले जाकर
लकड़ी पर रखकर आग से जलाए; जहां राख डाली जाती है वह वहीं जलाया
जाए।। 13 और इन बातोंमें से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप करे,
याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप झमा किया जाएगा। और इस
पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष की नाईं याजक का ठहरेगा।। 14 तो जब
उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके
चढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे ले जाए, 15 और मण्डली के वृद्ध लोग
अपके अपके हाथोंको यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा
यहोवा के साम्हने बलि किया जाए। 16 और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से
कुछ मिलापवाले तम्बू में ले जाए; 17 और याजक अपक्की उंगली लोहू में डुबो
डुबोकर उसे बीचवाले पर्दे के आगे सात बार यहोवा के साम्हने छिड़के। 18 और
उसी लोहू में से वेदी के सींगोंपर जो यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू में है लगाए;

और बचा हुआ सब लोहू होमबलि की वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर है उंडेल दे। 19 और वह बछड़े की कुल चरबी निकालकर वेदी पर जलाए।
20 और जैसे पापबलि के बछड़े से किया या वैसे ही इस से भी करे; इस भांति
याजक इस्त्राएलियोंके लिथे प्रायश्चित्त करे, तब उनका पाप झमा किया जाएगा।
21 और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भांति जलाए जैसे पहिले
बछड़े को जलाया या; यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा।। 22 जब कोई
प्रधान पुरूष पाप करके, अर्यात् अपके परमेश्वर यहोवा कि किसी आज्ञा के विरूद्ध
भूल से कुछ करके दोषी हो जाए, 23 और उसका पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो
वह एक निर्दोष बकरा बलिदान करने के लिथे ले आए; 24 और बकरे के सिर पर
अपना हाथ धरे, और बकरे को उस स्यान पर बलि करे जहां होमबलि पशु यहोवा
के आगे बलि किथे जाते हैं; यह तो पापबलि ठहरेगा। 25 और याजक अपक्की
उंगली से पापबलि पशु के लोहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगोंपर
लगाए, और उसका लोहू होमबलि की वेदी के पाए पर उंडेल दे। 26 और वह
उसकी कुल चरबी को मेलबलि की चरबी की नाईं वेदी पर जलाए; और याजक
उसके पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह झमा किया जाएगा।। 27 और यदि
साधारण लोगोंमें से कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्यात् कोई ऐसा काम जिसे
यहोवा ने माना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो
जाए, 28 तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिथे ले आए;
29 और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्यान पर
पापबलि पशु का बलिदान करे। 30 और याजक उसके लोहू में से अपक्की उंगली
से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगोंपर लगाए, और उसके सब लोहू को उसी

वेदी के पाए पर उंडेल दे। 31 और वह उसकी सब चरबी को मेलबलिपशु की चरबी
की नाईं अलग करे, तब याजक उसको वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक
सुगन्ध के लिथे जलाए; और इस प्रकार याजक उसके लिथे प्रायश्चित्त करे, तब
उसे झमा मिलेगी।। 32 और यदि वह पापबलि के लिथे एक भेड़ी का बच्चा ले
आए, तो वह निर्दोष मादा हो, 33 और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर
रखे, और उसको पापबलि के लिथे वहीं बलिदान करे जहां होमबलिपशु बलि
किया जाता है। 34 और याजक अपक्की उंगली से पापबलि के लोहू में से कुछ
लेकर होमबलि की वेदी के सींगोंपर लगाए, और उसके सब लोहू को वेदी के पाए
पर उंडेल दे। 35 और वह उसकी सब चरबी को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की
चरबी की नाई अलग करे, और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हवनोंके ऊपर
जलाए; और इस प्रकार याजक उसके पाप के लिथे प्रायश्चित्त करे, और वह झमा
किया जाएगा।।

लैव्यवस्था 5

1 और यदि कोई साझी होकर ऐसा पाप करे कि शपय खिलाकर पूछने पर भी, कि
क्या तू ने यह सुना अयवा जानता है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको अपके
अधर्म का भार उठाना पकेगा। 2 और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता
से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध बनैले पशु की, चाहे अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-जन्तु की
लोय हो, तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा। 3 और यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध
वस्तु को अज्ञानता से छू ले, चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी भी प्रकार की क्योंन हो
जिस से लोग अशुद्ध हो जाते हैं तो जब वह उस बात को जान लेगा तब वह दोषी

ठहरेगा। 4 और यदि कोई बुरा वा भला करने को बिना सोचे समझे शपय खाए,
चाहे किसी प्रकार की बात वह बिना सोचे विचारे शपय खाकर कहे, तो ऐसी बात
में वह दोषी उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। 5 और जब वह इन
बातोंमें से किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उस ने पाप किया हो वह
उसको मान ले, 6 और वह यहोवा के साम्हने अपना दोषबलि ले आए, अर्यात् उस
पाप के कारण वह एक भेड़ वा बकरी पापबलि करने के लिथे ले आए; तब याजक
उस पाप के विषय उसके लिथे प्रायश्चित्त करे। 7 और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने
की सामर्य्य न हो, तो अपके पाप के कारण दो पंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे
दोषबलि चढ़ाने के लिथे यहोवा के पास ले आए, उन में से एक तो पापबलि के
लिथे और दूसरा होमबलि के लिथे। 8 और वह उनको याजक के पास ले आए,
और याजक पापबलिवाले को पहिले चढ़ाए, और उसका सिर गले से मरोड़ डाले,
पर अलग न करे, 9 और वह पापबलिपशु के लोहू में से कुछ वेदी की अलंग पर
छिड़के, और जो लोहू शेष रहे वह वेदी के पाए पर गिराया जाए; वह तो पापबलि
ठहरेगा। 10 और दूसरे पक्की को वह विधी के अनुसार होमबलि करे, और याजक
उसके पाप का प्रायश्चित्त करे, और तब वह झमा किया जाएगा।। 11 और यदि वह
दो पंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके, तो वह अपके पाप के कारण
अपना चढ़ावा एपा का दसवां भाग मैदा पापबलि करके ले आए; 12 वह उसको
याजक के पास ले जाए, और याजक उस में से अपक्की मुट्ठी भर स्मरण
दिलानेवाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हवनोंके ऊपर जलाए; वह तो
पापबलि ठहरेगा। 13 और इन बातोंमें से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप
करे, याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप झमा किया जाएगा। और

इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष की नाई याजक का ठहरेगा।। 14 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 15 यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय
में भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष
मेढ़ा दोषबलि के लिथे ले आए; उसका दाम पवित्रस्यान के शेकेल के अनुसार
उतने ही शेकेल रूपके का हो जितना याजक ठहराए। 16 और जिस पवित्र वस्तु
के विषय उस ने पाप किया हो, उस में वह पांचवां भाग और बढ़ाकर याजक को दे;
और याजक दोषबलि का मेढ़ा चढ़ाकर उसके लिथे प्रायश्चित्त करे, तब उसका पाप
झमा किया जाएगा।। 17 और यदि कोई ऐसा पाप करे, कि उन कामोंमें से जिन्हें
यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके अनजाने में हुआ
हो, तौभी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपके अधर्म का भार उठाना पकेगा। 18
इसलिथे वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने
दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिथे उसकी उस भूल का
जो उस ने अनजाने में की हो प्रायश्चित्त करे, और वह झमा किया जाएगा। 19 यह
दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य नि:सन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा।।

लैव्यवस्था 6

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी
ठहरे, जैसा कि धरोहर, वा लेनदेन, वा लूट के विषय में अपके भाई से छल करे, वा
उस पर अन्धेर करे, 3 वा पक्की हुई वस्तु को पाकर उसके विषय फूठ बोले और
फूठी शपय भी खाए; ऐसी कोई भी बात क्योंन हो जिसे करके मनुष्य पापी ठहरते
हैं, 4 तो जब वह ऐसा काम करके दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उस ने लूट, वा

अन्धेर करके, वा धरोहर, वा पक्की पाई हो; 5 चाहे कोई वस्तु क्योंन हो जिसके
विषय में उस ने फूठी शपय खाई हो; तो वह उसको पूरा पूरा लौटा दे, और पांचवां
भाग भी बढ़ाकर भर दे, जिस दिन यह मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह
उस वस्तु को उसके स्वामी को लौटा दे। 6 और वह यहोवा के सम्मुख अपना
दोषबलि भी ले आए, अर्यात् एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि के लिथे याजक के पास ले
आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए। 7 इस प्रकार याजक उसके
लिथे यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे, और जिस काम को करके वह दोषी हो गया
है उसकी झमा उसे मिलेगी।। 8 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 9 हारून और उसके
पुत्रोंको आज्ञा देकर यह कह, कि होमबलि की व्यवस्या यह है; अर्यात् होमबलि
ईधन के ऊपर रात भर भोर तब वेदी पर पड़ा रहे, और वेदी की अग्नि वेदी पर
जलती रहे। 10 और याजक अपके सनी के वस्त्र और अपके तन पर अपक्की सनी
की जांघिया पहिनकर होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह
जाए, उसे उठाकर वेदी के पास रखे। 11 तब वह अपके वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र
पहिनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्यान पर ले जाए। 12 और वेदी
पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुफने न पाए; और याजक भोर भोर उस पर
लकडिय़ां जलाकर होमबलि के टुकड़ोंको उसके ऊपर सजाकर धर दे, और उसके
ऊपर मेलबलियोंकी चरबी को जलाया करे। 13 वेदी पर आग लगातार जलती रहे;
वह कभी बुफने न पाए।। 14 अन्नबलि की व्यवस्या इस प्रकार है, कि हारून के
पुत्र उसको वेदी के आगे यहोवा के समीप ले आएं। 15 और वह अन्नबलि के तेल
मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर और उस पर का सब लोबान उठाकर अन्नबलि के
स्मरणार्य के इस भाग को यहोवा के सम्मुख सुखदायक सुगन्ध के लिथे वेदी पर

जलाए। 16 और उस में से जो शेष रह जाए उसे हारून और उसके पुत्र खा जाएं;
वह बिना खमीर पवित्र स्यान में खाया जाए, अर्यात् वे मिलापवाले तम्बू के
आंगन में उसे खाएं। 17 वह खमीर के साय पकाया न जाए; क्योंकि मैं ने अपके
हव्य में से उसको उनका निज भाग होने के लिथे उन्हें दिया है; इसलिथे जैसा
पापबलि और दोषबलि परमपवित्र है वैसा ही वह भी है। 18 हारून के वंश के सब
पुरूष उस में से खा सकते हैं तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यहोवा के हवनोंमें से यह
उनका भाग सदैव बना रहेगा; जो कोई उन हवनोंको छूए वह पवित्र ठहरेगा।। 19
फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 20 जिस दिन हारून का अभिषेक हो उस दिन वह
अपके पुत्रोंके साय यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए; अर्यात् एपा का दसवां भाग मैदा
नित्य अन्नबलि में चढ़ाए, उस में से आधा भोर को और आधा सन्ध्या के समय
चढ़ाए। 21 वह तवे पर तेल के साय पकाया जाए; जब वह तेल से तर हो जाए तब
उसे ले आना, इस अन्नबलि के पके हुए टुकड़े यहोवा के सुखदायक सुगन्ध के
लिथे चढ़ाना। 22 और उसके पुत्रोंमें से जो भी उस याजकपद पर अभिषिक्त होगा,
वह भी उसी प्रकार का चढ़ावा चढ़ाया करे; यह विधी सदा के लिथे है, कि यहोवा के
सम्मुख वह सम्पूर्ण चढ़ावा जलाया जाथे। 23 याजक के सम्पूर्ण अन्नबलि भी
सब जलाए जाएं; वह कभी न खाया जाए।। 24 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 25
हारून और उसके पुत्रोंसे यह कह, कि पापबलि की व्यवस्या यह है; अर्यात् जिस
स्यान में होमबलिपशु वध किया जाता है उसी में पापबलिपशु भी यहोवा के
सम्मुख बलि किया जाए; वह परमपवित्र है। 26 और जो याजक पापबलि चढ़ावे
वह उसे खाए; वह पवित्र स्यान में, अर्यात् मिलापवाले तम्बू के आँगन में खाया
जाए। 27 जो कुछ उसके मांस से छू जाए, वह पवित्र ठहरेगा; और यदि उसके

लोहू के छींटे किसी वस्त्र पर पड़ जाएं, तो उसे किसी पवित्रस्यान में धो देना। 28
और वह मिट्टी का पात्र जिस में वह पकाया गया हो तोड़ दिया जाए; यदि वह
पीतल के पात्र में सिफाया गया हो, तो वह मांजा जाए, और जल से धो लिया
जाए। 29 और याजकोंमें से सब पुरूष उसे खा सकते हैं; 30 पर जिस पापबलिपशु
के लोहू में से कुछ भी खून मिलापवाले तम्बू के भीतर पवित्रस्यान में प्रायश्चित्त
करने को पहुंचाया जाए तब तो उसका मांस कभी न खाया जाए; वह आग में जला
दिया जाए।।

लैव्यवस्था 7

1 फिर दोषबलि की व्यवस्या यह है। वह परमपवित्र है; 2 जिस स्यान पर
होमबलिपशु का वध करते हैं उसी स्यान पर दोषबलिपशु का भी बलि करें, और
उसके लोहू को याजक वेदी पर चारोंओर छिड़के। 3 और वह उस में की सब चरबी
को चढ़ाए, अर्यात् उसकी मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं
वह भी, 4 और दोनोंगुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर और कमर के पास रहती है,
और गुर्दोंसमेत कलेजे के ऊपर की फिल्ली; इन सभोंको वह अलग करे; 5 और
याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिथे हवन करे; तब वह दोषबलि होगा। 6
याजकोंमें के सब पुरूष उस में से खा सकते हैं; वह किसी पवित्रस्यान में खाया
जाए; क्योंकि वह परमपवित्र है। 7 जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन
दोनोंकी एक ही व्यवस्या है; जो याजक उन बलियोंको चढ़ा के प्रायश्चित्त करे वही
उन वस्तुओं को ले ले। 8 और जो याजक किसी के लिथे होमबलि को चढ़ाए उस
होमबलिपशु की खाल को वही याजक ले ले। 9 और तंदूर में, वा कढ़ाही में, वा तवे

पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की होंगी जो उन्हें चढ़ाता है। 10 और सब
अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए होंचाहे रूखे हों, वे हारून के सब पुत्रोंको एक
समान मिले।। 11 और मेलबलि की जिसे कोई यहोवा के लिथे चढ़ाए व्यवस्या
यह है। 12 यदि वह उसे धन्यवाद के लिथे चढ़ाए, तो धन्यवाद-बलि के साय तेल
से सने हुए अखमीरी फुलके, और तेल से चुपक्की हुई अखमीरी फुलके, और तेल
से चुपक्की हुई अखमीरी रोटियां, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर
चढ़ाए। 13 और वह अपके धन्यवादवाले मेलबलि के साय अखमीरी रोटियां, और
तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए। 14 और ऐसे एक एक चढ़ावे में
से वह एक एक रोटी यहोवा को उठाने की भेंट करके चढ़ाए; वह मेलबलि के लोहू
के छिड़कनेवाले याजक की होगी। 15 और उस धन्यवादवाले मेलबलि का मांस
बलिदान चढ़ाने के दिन ही खाया जाए; उस में से कुछ भी भोर तक शेष न रह
जाए। 16 पर यदि उसके बलिदान का चढ़ावा मन्नत का वा स्वेच्छा का हो, तो
उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाया जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उस
में से जो शेष रह जाए वह दूसरे दिन भी खाया जाए। 17 परन्तु जो कुछ बलिदान
के मांस में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। 18 और
उसके मेलबलि के मांस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण
न किया जाएगा, और न पुन में गिना जाएगा; वह घृणित कर्म समझा जाएगा,
और जो कोई उस में से खाए उसका अधर्म उसी के सिर पर पकेगा। 19 फिर जो
मांस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए; वह आग में जला दिया
जाए। फिर मेलबलि का मांस जितने शुद्ध होंवे ही खाएं, 20 परन्तु जो अशुद्ध
होकर यहोवा के मेलबलि के मांस में से कुछ खाए वह अपके लोगोंमें से नाश

किया जाए। 21 और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के
मेलबलिपशु के मांस में से खाए, तो वह भी अपके लोगोंमें से नाश किया जाए,
चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु वा अशुद्ध पशु वा कोई भी अशुद्ध और
घृणित वस्तु हो।। 22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 23 इस्त्राएलियोंसे इस प्रकार
कह, कि तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना और न भेड़ वा बकरी की। 24
और जो पशु स्वयं मर जाए, और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए, उसकी चरबी और
और काम में लाना, परन्तु उसे किसी प्रकार से खाना नहीं। 25 जो कोई ऐसे पशु
की चरबी खाएगा जिस में से लोग कुछ यहोवा के लिथे हवन करके चढ़ाया करते
हैं वह खानेवाला अपके लोगोंमें से नाश किया जाएगा। 26 ओर तुम अपके घर में
किसी भांति का लोहू, चाहे पक्की का चाहे पशु का हो, न खाना। 27 हर एक प्राणी
जो किसी भांति का लोहू खाएगा वह अपके लोगोंमें से नाश किया जाएगा।। 28
फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 29 इस्त्राएलियोंसे इस प्रकार कह, कि जो यहोवा के
लिथे मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास भेंट ले आए; 30 वह
अपके ही हाथोंसे यहोवा के हव्य को, अर्यात् छाती हिलाने की भेंट करके यहोवा के
साम्हने हिलाई जाए। 31 और याजक चरबी को तो वेदी पर जलाए, परन्तु छाती
हारून और उसके पुत्रोंकी होगी। 32 फिर तुम अपके मेलबलियोंमें से दहिनी जांघ
को भी उठाने की भेंट करके याजक को देना; 33 हारून के पुत्रोंमें से जो मेलबलि
के लोहू और चरबी को चढ़ाए दहिनी जांघ उसी को भाग होगा। 34 क्योंकि
इस्त्राएलियोंके मेलबलियोंमें से हिलाने की भेंट की छाती और उठाने की भेंट की
जांघ को लेकर मैं ने याजक हारून और उसके पुत्रोंको दिया है, कि यह सर्वदा
इस्त्राएलियोंकी ओर से उनका हक बना रहे।। 35 जिस दिन हारून और उसके पुत्र

यहोवा के समीप याजक पद के लिथे आए गए उसी दिन यहोवा के हव्योंमें से
उनका यही अभिषिक्त भाग ठहराया गया; 36 अर्यात् जिस दिन यहोवा ने उसका
अभिषेक किया उसी दिन उस ने आज्ञा दी कि उनको इस्त्राएलियोंकी ओर से थे ही
भाग नित मिला करें; उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिथे उनका यही हक ठहराया गया।
37 होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकोंके संस्कार बलि, और
मेलबलि की व्यवस्या यही है; 38 जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में
मूसा को आज्ञा दी कि इस्त्राएली मेरे लिथे क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं, तब उस ने
उनको यही व्यवस्या दी यी।।

लैव्यवस्था 8

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 तू हारून और उसके पुत्रोंके वों, और अभिषेक के
तेल, और पापबलि के बछड़े, और दोनोंमेढ़ों, और अखमीरी रोटी की टोकरी को 3
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले आ, और वहीं सारी मण्डली को इकट्ठा कर। 4
यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और मण्डली मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर इकट्ठी हुई। 5 तब मूसा ने मण्डली से कहा, जो काम करने की आज्ञा
यहोवा ने दी है वह यह है। 6 फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रोंको समीप ले
जाकर जल से नहलाया। 7 तब उस ने उनको अंगरखा पहिनाया, और कटिबन्द
लपेटकर बागा पहिना दिया, और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पटुके से
एपोद को बान्धकर कस दिया। 8 और उस ने उनके चपरास लगाकर चमरास में
ऊरीम और तुम्मीम रख दिए। 9 तब उस ने उसके सिर पर पगड़ी बान्धकर पगड़ी
के साम्हने पर सोने के टीके को, अर्यात् पवित्र मुकुट को लगाया, जिस प्रकार

यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 10 तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास
का और जो कुछ उस में या उन सब को भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। 11
और उस तेल में से कुछ उस ने वेदी पर सात बार छिड़का, और कुल सामान
समेत वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। 12
और उस ने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उसका
अभिषेक करके उसे पवित्र किया। 13 फिर मूसा ने हारून के पुत्रोंको समीप ले
आकर, अंगरखे पहिनाकर, फेटे बान्ध के उनके सिर पर टोपी रख दी, जिस प्रकार
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 14 तब वह पापबलि के बछड़े को समीप ले गया;
और हारून और उसके पुत्रोंने अपके अपके हाथ पापबलि के बछड़े के सिर पर रखें
15 तब वह बलि किया गया, और मूसा ने लोहू को लेकर उंगली से वेदी के
चारोंसींगोंपर लगाकर पवित्र किया, और लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया,
और उसके लिथे प्रायश्चित्त करके उसको पवित्र किया। 16 और मूसा ने
अंतडिय़ोंपर की सब चरबी, और कलेजे पर की फिल्ली, और चरबी समेत
दोनोंगुर्दोंको लेकर वेदी पर जलाया। 17 ओर बछड़े में से जो कुछ शेष रह गया
उसको, अर्यात् गोबर समेत उसकी खाल और मांस को उस ने छावनी से बाहर
आग में जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 18 फिर वह
होमबलि के मेढ़े को समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रोंने अपके अपके
हाथ मेंढ़े के सिर पर रखे। 19 तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लोहू
वेदी पर चारोंओर छिड़का। 20 किया गया, और मूसा ने सिर ओर चरबी समेत
टुकड़ोंको जलाया। 21 तब अंतडिय़ां और पांव जल से धोथे गए, और मूसा ने पूरे
मेढ़े को वेदी पर जलाया, और वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिथे होमबलि और

यहोवा के लिथे हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 22
फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कार का मेढ़ा या समीप ले गया, और हारून और
उसके पुत्रोंने अपके अपके हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 23 तब वह बलि किया गया,
और मूसा ने उसके लोहू में से कुछ लेकर हारून के दहिने कान के सिक्के पर और
उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठोंपर लगाया। 24 और वह हारून के
पुत्रोंको समीप ले गया, और लोहू में से कुछ एक एक के दहिने कान के सिक्के पर
और दहिने हाथ ओर दहिने पांव के अंगूठोंपर लगाया; और मूसा ने लोहू को वेदी
पर चारोंओर छिड़का। 25 और उस ने चरबी, और मोटी पूंछ, ओर अंतडिय़ोंपर की
सब चरबी, और कलेजे पर की फिल्ली समेत दोनोंगुर्दे, और दहिनी जांघ, थे सब
लेकर अलग रखे; 26 ओर अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई
यी उस में से एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक रोटी
लेकर चरबी और दहिनी जांघ पर रख दी; 27 और थे सब वस्तुएं हारून और
उसके पुत्रोंके हाथोंपर धर दी गई, और हिलाने की भेंट के लिथे यहोवा के साम्हने
हिलाई गई। 28 और मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथोंपर से लेकर उन्हें वेदी पर
होमबलि के ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिथे संस्कार की भेंट
और यहोवा के लिथे हव्य या। 29 तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाने की भेंट के
लिथे यहोवा के आगे हिलाया; और संस्कार के मेढ़ें में से मूसा का भाग यही हुआ
जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 30 और मूसा ने अभिषेक के तेल ओर वेदी
पर के लोहू, दोनोंमें से कुछ लेकर हारून और उसके वोंपर, और उसके पुत्रोंऔर
उनके वोंपर भी छिड़का; और उस ने वोंसमेत हारून को ओर वोंसमेत उसके
पुत्रोंको भी पवित्र किया। 31 और मूसा ने हारून और उसके पुत्रोंसे कहा, मांस को

मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पकाओ, और उस रोटी को जो संस्कार की टोकरी में
है वहीं खाओ, जैसा मैं ने आज्ञा दी है, कि हारून और उसके पुत्र उसे खाएं। 32
और मांस और रोटी में से जो शेष रह जाए उसे आग में जला देना। 33 और जब
तक तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न होंतब तक, अर्यात् सात दिन तक मिलापवाले
तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, क्योंकि वह सात दिन तक तुम्हारा संस्कार करता
रहेगा। 34 जिस प्रकार आज किया गया है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी
है, जिस से तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए। 35 इसलिथे तुम मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर सात दिन तक दिन रात ठहरे रहना, और यहोवा की आज्ञा को मानना,
ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसी की आज्ञा मुझे दी गई है। 36 तब यहोवा की
इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उस ने मूसा के द्वारा दी यीं हारून ओर उसके
पुत्रोंने उनका पालन किया।।

लैव्यवस्था 9

1 आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके पुत्रोंको और इस्त्राएली पुरनियोंको
बुलवाकर हारून से कहा, 2 पापबलि के लिथे एक निर्दोष बछड़ा, और होमबलि के
लिथे एक निर्दोष मेढ़ा लेकर यहोवा के साम्हने भेंट चढ़ा। 3 और इस्त्राएलियोंसे
यह कह, कि तुम पापबलि के लिथे एक बकरा, और होमबलि के लिथे एक बछड़ा
और एक भेड़ को बच्चा लो, जो एक वर्ष के होंऔर निर्दोष हों, 4 और मेलबलि के
लिथे यहोवा के सम्मुख चढ़ाने के लिथे एक बैल और एक मेढ़ा, और तेल से सने
हुए मैदे का एक अन्नबलि भी ले लो; क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा। 5
और जिस जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तम्बू के

आगे ले आए; और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी हुई। 6 तब
मूसा ने कहा, यह वह काम है जिसके करने के लिथे यहोवा ने आज्ञा दी है कि तुम
उसे करो; और यहोवा की महिमा का तेज तुम को दिखाई पकेगा। 7 और मूसा ने
हारून से कहा, यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपके पापबलि
और होमबलि को चढ़ाकर उनके लिथे प्रायश्चित्त कर। 8 इसलिथे हारून ने वेदी के
समीप जाकर अपके पापबलि के बछड़े को बलिदान किया। 9 और हारून के पुत्र
लोहू को उसके पास ले गए, तब उस ने अपक्की उंगली को लोहू में डुबाकर वेदी के
सींगोंपर लोहू को लगाया, और शेष लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया; 10 और
पापबलि में की चरबी और गुर्दोंऔर कलेजे पर की फिल्ली को उस ने वेदी पर
जलाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी। 11 और मांस और खाल को उस ने
छावनी से बाहर आग में जलाया। 12 तब होमबलिपशु को बलिदान किया; और
हारून के पुत्रोंने लोहू को उसके हाथ में दिया, और उस ने उसको वेदी पर चारोंओर
छिड़क दिया। 13 तब उन्होंने होमबलिपशु का टुकड़ा टुकड़ा करके सिर सहित
उसके हाथ में दे दिया और उस ने उनको वेदी पर जला दिया। 14 और उस ने
अंतड़ियोंऔर पांवोंको धोकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। 15 और उस ने
लोगोंके चढ़ावे को आगे लेकर और उस पापबलि के बकरे को जो उनके लिथे या
लेकर उसका बलिदान किया, और पहिले के समान उसे भी पापबलि करके
चढ़ाया। 16 और उस ने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार
चढ़ाया। 17 और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उस में से मुट्ठी भर वेदी पर
जलाया, यह भोर के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया। 18 और बैल और मेढ़ा,
अर्यात् जो मेलबलिपशु जनता के लिथे थे वे भी बलि किथे गए; और हारून के

पुत्रोंने लोहू को उसके हाथ में दिया, और उस ने उसको वेदी पर चारोंओर छिड़क
दिया; 19 और उन्होंने बैल की चरबी को, और मेढ़े में से मोटी पूंछ को, और जिस
चरबी से अतड़ियां ढपी रहती हैं उसको, ओर गुर्दोंसहित कलेजे पर की फिल्ली को
भी उसके हाथ में दिया; 20 और उन्होंने चरबी को छातियोंपर रखा; और उस ने
वह चरबी वेदी पर जलाई, 21 परन्तु छातियोंऔर दहिनी जांघ को हारून ने मूसा
की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिथे यहोवा के साम्हने हिलाया। 22 तब
हारून ने लोगोंकी ओर हाथ बढ़ाकर उनहें आशीर्वाद दिया; और पापबलि,
होमबलि, और मेलबलियोंको चढ़ाकर वह नीचे उतर आया। 23 तब मूसा और
हारून मिलापवाले तम्बू में गए, और निकलकर लोगोंको आशीर्वाद दिया; तब
यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया। 24 और यहोवा के साम्हने से आग
निकलकर चरबी सहित होमबलि को वेदी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर
जनता ने जय जयकार का नारा मारा, और अपके अपके मुंह के बल गिरकर
दण्डवत किया।।

लैव्यवस्था 10

1 तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रोंने अपना अपना धूपदान लिया,
और उन में आग भरी, और उस में धूप डालकर उस ऊपक्की आग की जिसकी
आज्ञा यहोवा ने नहीं दी यी यहोवा के सम्मुख आरती दी। 2 तब यहोवा के
सम्मुख से आग निकलकर उन दोनोंको भस्म कर दिया, और वे यहोवा के
साम्हने मर गए। 3 तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने
कहा या, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी

जनता के साम्हने मेरी महिमा करे। और हारून चुप रहा। 4 तब मूसा ने मीशाएल
और एलसाफान को जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा, निकट
आओ, और अपके भतीजोंको पवित्रस्यान के आगे से उठाकर छावनी के बाहर ले
जाओ। 5 मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको अंगरखोंसहित
उठाकर छावनी के बाहर ले गए। 6 तब मूसा ने हारून से और उसके पुत्र
एलीआजर और ईतामार से कहा, तुम लोग अपके सिरोंके बाल मत बिखराओ,
और न अपके वोंको फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली
पर उसका क्रोध भड़क उठे; परन्तु वह इस्त्राएल के कुल घराने के लोग जो तुम्हारे
भाईबन्धु हैं यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें। 7 और तुम लोग
मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि
यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है। मूसा के इस वचन के अनुसार
उन्होंने किया।। 8 फिर यहोवा ने हारून से कहा, 9 कि जब जब तू वा तेरे पुत्र
मिलापवाले तम्बू में आएं तब तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिए हो न और
किसी प्रकार का मद्य, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में
यह विधि प्रचलित रहे, 10 जिस से तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और
अशुद्ध में अन्तर कर सको; 11 और इस्त्राएलियोंको उन सब विधियोंको सिखा
सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको सुनवा दी हैं।। 12 फिर मूसा ने हारून से
और उसके बचे हुए दोनोंपुत्र ईतामार और एलीआजर से भी कहा, यहोवा के हव्य
में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना खमीर खाओ, क्योंकि वह
परमपवित्र है; 13 और तुम उसे किसी पवित्रस्यान में खाओ, वह तो यहोवा के
हव्य में से तेरा और तेरे पुत्रोंका हक है; क्योंकि मै ने ऐसी ही आज्ञा पाई है। 14

और हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जांघ को तुम लोग, अर्यात्
तू और बेटे-बेटियां सब किसी शुद्ध स्यान में खाओ; क्योंकि वे इस्त्राएलियोंके
मेलबलियोंमें से तुझे और तेरे लड़केबालोंकी हक ठहरा दी गई हैं। 15 चरबी के
हव्योंसमेत जो उठाई हुई जांघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के साम्हने हिलाने के
लिथे आया करेंगी, थे भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा की विधी की
व्यवस्या से तेरे और तेरे लड़केबालोंके लिथे हैं।। 16 फिर मूसा ने पापबलि के
बकरे की जो ढूंढ़-ढांढ़ की, तो क्या पाया, कि वह जलाया गया है, सो एलीआज़र
और ईतामार जो हारून के पुत्र बचे थे उन से वह क्रोध में आकर करने लगा, 17
कि पापबलि जो परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हे इसलिथे दिया है कि तुम
मण्डली के अधर्म का भार अपके पर उठाकर उनके लिथे यहोवा के साम्हने
प्रायश्चित्त करो, तुम ने उसका मांस पवित्रस्यान में क्योंनहीं खाया? 18 देखो,
उसका लोहू पवित्रस्यान के भीतर तो लाया ही नहीं गया, नि:सन्देह उचित या कि
तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उसके मांस को पवित्रस्यान में खाते। 19 इसका उत्तर
हारून ने मूसा को इस प्रकार दिया, कि देख, आज ही उन्होंने अपके पापबलि और
होमबलि को यहोवा के साम्हने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियां आ पक्की हैं
! इसलिथे यदि मैं आज पापबलि का मांस खाता तो क्या यह बात यहोवा के
सम्मुख भली होती? 20 जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ।।

लैव्यवस्था 11

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कहो, कि जितने पशु
पृय्वी पर हैं उन सभोंमें से तुम इन जीवधारियोंका मांस खा सकते हो। 3 पशुओं

में से जितने चिरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो। 4
परन्तु पागुर करनेवाले वा फटे खुरवालोंमें से इन पशुओं को न खाना, अर्यात् ऊंट,
जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिथे वह तुम्हारे लिथे
अशुद्ध ठहरा है। 5 और शापान, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं
होता, वह भी तुम्हारे लिथे अशुद्ध है। 6 और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु
चिरे खुर का नहीं होता, इसलिथे वह भी तुम्हारे लिथे अशुद्ध है। 7 और सूअर, जो
चिरे अर्यात् फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिथे वह तुम्हारे
लिथे अशुद्ध है। 8 इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोय को छूना भी
नहीं; थे तो तुम्हारे लिथे अशुद्ध है।। 9 फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम
इन्हें खा सकते हों, अर्यात् समुद्र वा नदियोंके जलजन्तुओं में से जितनोंके पंख
और चोंथेटे होते हैं उन्हें खा सकते हो। 10 और जलचक्की प्राणियोंमें से जितने
जीवधारी बिना पंख और चोंथेटे के समुद्र वा नदियोंमें रहते हैं वे सब तुम्हारे लिथे
घृणित हैं। 11 वे तुम्हारे लिथे घृणित ठहरें; तुम उनके मांस में से कुछ न खाना,
और उनकी लोयोंको अशुद्ध जानना। 12 जल में जिस किसी जन्तु के पंख और
चोंथेटे नहीं होते वह तुम्हारे लिथे अशुद्ध है।। 13 फिर पक्षियोंमें से इनको अशुद्ध
जानना, थे अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएं, अर्यात् उकाब, हड़फोड़, कुरर, 14
शाही, और भांति भांति की चील, 15 और भांति भांति के सब काग, 16 शुतुर्मुर्ग,
तखमास, जलकुक्कुट, और भांति भांति के बाज, 17 हवासिल, हाड़गील, उल्लू,
18 राजहँस, धनेश, गिद्ध, 19 लगलग, भांति भांति के बगुले, टिटीहरी और
चमगीदड़।। 20 जितने पंखवाले चार पांवोंके बल चरते हैं वे सब तुम्हारे लिथे
अशुद्ध हैं। 21 पर रेंगनेवाले और पंखवाले जो चार पांवोंके बल चलते हैं, जिनके

भूमि पर कूदने फांदने को टांगे होती हैं उनको तो खा सकते हो। 22 वे थे हैं,
अर्यात् भांति भांति की टिड्डी, भांति भांति के फनगे, भांति भांति के हर्गोल, और
भांति भांति के हागाब। 23 परन्तु और सब रेंगनेवाले पंखवाले जो चार पांववाले
होते हैं वे तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं।। 24 और इनके कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे; जिस
किसी से इनकी लोय छू जाए वह सांफ तक अशुद्ध ठहरे। 25 और जो कोई इनकी
लोय में का कुछ भी उठाए वह अपके वस्त्र धोए और सांफ तक अशुद्ध रहे। 26 फिर
जितने पशु चिरे खुर के होते है। परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और पागुर
करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं; जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध हैं; जो कोई
उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा। 27 और चार पांव के बल चलनेवालोंमें से जितने
पंजोंके बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोय छूए वह
सांफ तक अशुद्ध रहे। 28 और जो कोई उनकी लोय उठाए वह अपके वस्त्र धोए
और सांफ तक अशुद्ध रहे; क्योंकि वे तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं।। 29 और जो पृय्वी
पर रेंगते हैं उन में से थे रेंगनेवाले तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं, अर्यात् नेवला, चूहा,
और भांति भांति के गोह, 30 और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और
गिरगिटान। 31 सब रेंगनेवालोंमें से थे ही तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं; जो कोई इनकी
लोय छूए वह सांफ तक अशुद्ध रहे। 32 और इन में से किसी की लोय जिस किसी
वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे, चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे वस्त्र,
चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी काम का कैसा ही पात्रादि क्योंन हो; वह जल में
डाला जाए, और सांफ तक अशुद्ध रहे, तब शुद्ध समझा जाए। 33 और यदि मिट्टी
का कोई पात्र हो जिस में इन जन्तुओं में से कोई पके, तो उस पात्र में जो कुछ हो
वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़ डालना। 34 उस में जो खाने के योग्य

भोजन हो, जिस में पानी का छुआव होंवह सब अशुद्ध ठहरे; फिर यदि ऐसे पात्र में
पीने के लिथे कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे। 35 और यदि इनकी लोय में का कुछ
तंदूर वा चूल्हे पर पके तो वह भी अशुद्ध ठहरे, और तोड़ डाला जाए; क्योंकि वह
अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिथे भी अशुद्ध ठहरे। 36 परन्तु सोता वा तालाब
जिस में जल इकट्‌ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे; परन्तु जो कोई इनकी लोय को छूए
वह अशुद्ध ठहरे। 37 और यदि इनकी लोय में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर
जो बोने के लिथे हो पके, तो वह बीज शुद्ध रहे; 38 पर यदि बीज पर जल डाला
गया हो और पीछे लोय में का कुछ उस पर पड़ जाए, तो वह तुम्हारे लिथे अशुद्ध
ठहरे।। 39 फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उन में से
कोई पशु मरे, तो जो कोई उसकी लोय छूए वह सांफ तक अशुद्ध रहे। 40 और
उसकी लोय में से जो कोई कुछ खाए वह अपके वस्त्र धोए और सांफ तक अशुद्ध
रहे; और जो कोई उसकी लोय उठाए वह भी अपके वस्त्र धोए और सांफ तक
अशुद्ध रहे। 41 और सब प्रकार के पृय्वी पर रेंगनेवाले जन्तु घिनौने हैं; वे खाए न
जाएं। 42 पृय्वी पर सब रेंगनेवालोंमें से जितने पेट वा चार पांवोंके बल चलते हैं,
वा अधिक पांववाले होते हैं, उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे घिनौने हैं। 43 तुम
किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा अपके आप को घिनौना न करना; और न
उनके द्वारा अपके को अशुद्ध करके अपवित्र ठहराना। 44 क्योंकि मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं; इस प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृय्वी पर चलता है
अपके आप को अशुद्ध न करना। 45 क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से
इसलिथे निकाल ले आया हूं कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; इसलिथे तुम पवित्र बनो,
क्योंकि मैं पवित्र हूं।। 46 पशुओं, पझियों, और सब जलचक्की प्राणियों, और

पृय्वी पर सब रेंगनेवाले प्राणियोंके विषय में यही व्यवस्या है, 47 कि शुद्ध अशुद्ध
और भझय और अभझय जीवधारियोंमें भेद किया जाए।।

लैव्यवस्था 12

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि जो स्त्री गभिर्णी हो और
उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार वह ऋतुमती
होकर अशुद्ध रहा करती। 3 और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। 4 फिर
वह स्त्री अपके शुद्ध करनेवाले रूधिर में तेंतीस दिन रहे; और जब तक उसके शुद्ध
हो जाने के दिन पूरे न होंतब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए, और न
पवित्रस्यान में प्रवेश करे। 5 और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती
की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे; और फिर छियासठ दिन तक अपके शुद्ध
करनेवाले रूधिर में रहे। 6 और जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब चाहे
उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटी, वह होमबलि के लिथे एक वर्ष का भेड़ी का बच्चा,
और पापबलि के लिथे कबूतरी का एक बच्चा वा पंडुकी मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर याजक के पास लाए। 7 तब याजक उसको यहोवा के साम्हने भेंट चढ़ाके
उसके लिथे प्रायश्चित्त करे; और वह अपके रूधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर
शुद्ध ठहरेगी। जिस स्त्री के लड़का वा लड़की उत्पन्न हो उसके लिथे यही व्यवस्या
है। 8 और यदि उसके पास भेड़ वा बकरी देने की पूंजी न हो, तो दो पंडुकी वा
कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिथे दे; और
याजक उसके लिथे प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी।।

लैव्यवस्था 13

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 जब किसी मनुष्य के शरीर के चर्म में
सूजन वा पपक्की वा फूल हो, और इस से उसके चर्म में कोढ़ की व्याधि सा कुछ
देख पके, तो उसे हारून याजक के पास या उसके पुत्र जो याजक हैं उन में से
किसी के पास ले जाएं। 3 जब याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और यदि
उस व्याधि के स्यान के रोएं उजले हो गए होंऔर व्याधि चर्म से गहरी देख पके,
तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है; और याजक उस मनुष्य को देखकर उसको
अशुद्ध ठहराए। 4 और यदि वह फूल उसके चर्म में उजला तो हो, परन्तु चर्म से
गहरा न देख पके, और न वहां के रोएं उजले हो गए हों, तो याजक उनको सात
दिन तक बन्दकर रखे; 5 और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह
व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो याजक उसको
और भी सात दिन तक बन्दकर रखे; 6 और सातवें दिन याजक उसको फिर देखे,
और यदि देख पके कि व्याधि की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली न हो,
तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; क्योंकि उसके तो चर्म में पपक्की है; और वह
अपके वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाए। 7 और यदि याजक की उस जांच के पश्चात् जिस
में वह शुद्ध ठहराया गया या, वह पपक्की उसके चर्म पर बहुत फैल जाए, तो वह
फिर याजक को दिखाया जाए; 8 और यदि याजक को देख पके कि पपक्की चर्म
में फैल गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ ही है।। 9 यदि कोढ़
की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो, तो वह याजक के पास पहुचाया जाए; 10 और
याजक उसको देखे, और यदि वह सूजन उसके चर्म में उजली हो, और उसके
कारण रोएं भी उजले हो गए हों, और उस सूजन में बिना चर्म का मांस हो, 11 तो
याजक जाने कि उसके चर्म में पुराना कोढ़ है, इसलिथे वह उसको अशुद्ध ठहराए;

और बन्द न रखे, क्योंकि वह तो अशुद्ध है। 12 और यदि कोढ़ किसी के चर्म में
फूटकर यहां तक फैल जाए, कि जहां कहीं याजक देखें व्याधित के सिर से पैर के
तलवे तक कोढ़ ने सारे चर्म को छा लिया हो, 13 जो याजक ध्यान से देखे, और
यदि कोढ़ ने उसके सारे शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्याधित को शुद्ध
ठहराए; और उसका शरीर जो बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे। 14 पर
जब उस में चर्महीन मांस देख पके, तब तो वह अशुद्ध ठहरे। 15 और याजक
चर्महीन मांस को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए; कयोंकि वैसा चर्महीन मांस
अशुद्ध ही होता है; वह कोढ़ है। 16 पर यदि वह चर्महीन मांस फिर उजला हो जाए,
तो वह मनुष्य याजक के पास जाए, 17 और याजक उसको देखे, और यदि वह
व्याधि फिर से उजली हो गई हो, तो याजक व्याधित को शुद्ध जाने; वह शुद्ध है।।
18 फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो, 19 और फोड़े के
स्यान में उजली सी सूजन वा लाली लिथे हुए उजला फूल हो, तो वह याजक को
दिखाया जाए। 20 और याजक उस सूजन को देखे, और यदि वह चर्म से गहिरा
देख पके, और उसके रोएं भी उजले हो गए हों, तो याजक यह जानकर उस मनुष्य
को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है जो फोड़े में से फूटकर निकली
है। 21 और यदि याजक देखे कि उस में उजले रोएं नहीं हैं, और वह चर्म से गहिरी
नहीं, और उसकी चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को सात दिन तक
बन्द कर रखे। 22 और यदि वह व्याधि उस समय तक चर्म में सचमुच फैल जाए,
तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है। 23
परन्तु यदि वह फूल न फैले और अपके स्यान ही पर बना रहे, तो वह फोड़े को
दाग है; याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए।। 24 फिर यदि किसी के चर्म में

जलने का घाव हो, और उस जलने के घाव में चर्महीन फूल लाली लिथे हुए उजला
वा उजला ही हो जाए, 25 तो याजक उसको देखे, और यदि उस फूल में के रोएं
उजले हो गए होंऔर वह चर्म से गहिरा देख पके, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के
दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उस में
कोढ़ की व्याधि है। 26 और यदि याजक देखे, कि फूल में उजले रोएं नहीं और न
वह चर्म से कुछ गहिरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो वह उसको सात दिन
तक बन्द कर रखे, 27 और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में
फैल गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि
है। 28 परन्तु यदि वह फूल चर्म में नहीं फैला और अपके स्यान ही पर जहां का
तहां ही बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो, तो वह जल जाने के कारण सूजा
हुआ है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; क्योंकि वह दाग जल जाने के कारण
से है।। 29 फिर यदि किसी पुरूष वा स्त्री के सिर पर, वा पुरूष की डाढ़ी में व्याधि
हो, 30 तो याजक व्याधि को देखे, और यदि वह चर्म से गहिरी देख पके, और उस
में भूरे भूरे पतले बाल हों, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; वह व्याधि
सेंहुआं, अर्यात् सिर वा डाढ़ी का कोढ़ है। 31 और यदि याजक सेंहुएं की व्याधि को
देखे, कि वह चर्म से गहिरी नहीं है और उस में काले काले बाल नहीं हैं, तो वह
सेंहुएं के व्याधित को सात दिन तक बन्द कर रखे, 32 और सातवें दिन याजक
व्याधि को देखे, तब यदि वह सेंहुआं फैला न हो, और उस में भूरे भूरे बाल न हों,
और सेंहुआं चर्म से गहिरा न देख पके, 33 तो यह मनुष्य मूंड़ा जाए, परन्तु जहां
सेंहुआं हो वहां न मूंड़ा जाए; और याजक उस सेंहुएंवाले को और भी सात दिन तक
बन्द करे; 34 और सातवें दिन याजक सेहुएं को देखे, और यदि वह सेंहुआं चर्म में

फैला न हो और चर्म से गहिरा न देख पके, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए;
और वह अपके वस्त्र धोके शुद्ध ठहरे। 35 और यदि उसके शुद्ध ठहरने के पश्चात्
सेंहुआं चर्म में कुछ भी फैले, 36 तो याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला
हो, तो याजक यह भूरे बाल न ढूंढ़े, क्योंकि मनुष्य अशुद्ध है। 37 परन्तु यदि
उसकी दृष्टि में वह सेंहुआं जैसे का तैसा बना हो, और उस में काले काले बाल जमे
हों, तो वह जाने की सेंहुआं चंगा हो गया है, और वह मनुष्य शुद्ध है; याजक उसको
शुद्ध ही ठहराए।। 38 फिर यदि किसी पुरूष वा स्त्री के चर्म में उजले फूल हों, 39 तो
याजक देखे, और यदि उसके चर्म में वे फूल कम उजले हों, तो वह जाने कि
उसको चर्म में निकली हुई चाईं ही है; वह मनुष्य शुद्ध ठहरे।। 40 फिर जिसके
सिर के बाल फड़ गए हों, तो जानना कि वह चन्दुला तो है परन्तु शुद्ध है। 41 और
जिसके सिर के आगे के बाल फड़ गए हों, तो वह माथे का चन्दुला तो है परन्तु
शुद्ध है। 42 परन्तु यदि चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे पर लाली लिथे हुए
उजली व्याधि हो, तो जानना कि वह उसके चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे पर
निकला हुआ कोढ़ है। 43 इसलिथे याजक उसको देखे, और यदि व्याधि की सूजन
उसके चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर ऐसी लाली लिथे हुए उजली हो जैसा चर्म
के कोढ़ में होता है, 44 तो वह मनुष्य कोढ़ी है और अशुद्ध है; और याजक उसको
अवश्य अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह व्याधि उसके सिर पर है।। 45 और जिस में
वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपके
ऊपरवाले होंठ को ढांपे हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। 46 जितने दिन तक वह
व्याधि उस में रहे उतने दिन तक वह तो अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे;
इसलिथे वह अकेला रहा करे, उसका निवास स्यान छावनी के बाहर हो।। 47 फिर

जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो, चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी का, 48 वह
व्याधि चाहे उस सनी वा ऊन के वस्त्र के ताने में हो चाहे बाने में, वा वह व्याधि
चमड़े में वा चमड़े की किसी वस्तु में हो, 49 यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे
ताने में चाहे बाने में, वा चमड़े में वा चमड़े की किसी वस्तु में हरी हो वा लाल सी
हो, तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए। 50
और याजक व्याधि को देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन के लिये बन्द
करे; 51 और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह वस्त्र के चाहे ताने
में चाहे बाने में, वा चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो, तो
जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है, इसलिये वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम में क्योंन
आती हो, तौभी अशुद्ध ठहरेगी। 52 वह उस वस्त्र को जिसके ताने वा बाने में वह
व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का, वा चमड़े की वस्तु हो, उसको जला
दे, वह व्याधि गलित कोढ़ की है; वह वस्तु आग में जलाई जाए। 53 और यदि
याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के ताने वा बाने में, वा चमड़े की उस वस्तु में
नहीं फैली, 54 तो जिस वस्तु में व्याधि हो उसके धोने की आज्ञा दे, तक उसे और
भी सात दिन तक बन्द कर रखे; 55 और उसके धोने के बाद याजक उसको देखे,
और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो, और न व्याधि फैली हो, तो जानना कि
वह अशुद्ध है; उसे आग में जलाना, क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपक्की
हो तौभी वह खा जाने वाली व्याधि है। 56 और यदि याजक देखे, कि उसके धोने
के पश्चात् व्याधि की चमक कम हो गई, तो वह उसको वस्त्र के चाहे ताने चाहे
बाने में से, वा चमड़े में से फाड़के निकाले; 57 और यदि वह व्याधि तब भी उस
वस्त्र के ताने वा बाने में, वा चमड़े की उस वस्तु में देख पके, तो जानना कि वह

फूट के निकली हुई व्याधि है; और जिस में वह व्याधि हो उसे आग में जलाना।
58 और यदि उस वस्त्र से जिसके ताने वा बाने में व्याधि हो, वा चमड़े की जो वस्तु
हो उस से जब धोई जाए और व्याधि जाती रही, तो वह दूसरी बार धुल कर शुद्ध
ठहरे। 59 ऊन वा सनी के वस्त्र में के ताने वा बाने में, वा चमड़े की किसी वस्तु में
जो कोढ़ की व्याधि हो उसके शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्या है।।

लैव्यवस्था 14

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की व्यवस्या यह है, कि वह
याजक के पास पहुंचाया जाए। 3 और याजक छावनी के बाहर जाए, और याजक
उस कोढ़ी को देखे, और यदि उसके कोढ़ की व्याधि चंगी हुई हो, 4 तो याजक
आज्ञा दे कि शुद्ध ठहराने वाले के लिथे दो शुद्ध और जीवित पक्की, देवदारू की
लकड़ी, और लाल रंग का कपड़ा और जूफा थे सब लिथे जाएं; 5 और याजक
आज्ञा दे कि एक पक्की बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि किया
जाए। 6 तब वह जीवित पक्की को देवदारू की लकड़ी और लाल रंग के कपके
और जूफा इन सभोंको लेकर एक संग उस पक्की के लोहू में जो बहते हुए जल के
ऊपर बलि किया गया है डुबा दे; 7 और कोढ़ से शुद्ध ठहरनेवाले पर सात बार
छिड़ककर उसको शुद्ध ठहराए, तब उस जीवित पक्की को मैदान में छोड़ दे। 8
और शुद्ध ठहरनेवाला अपके वोंको धोए, और सब बाल मुंडवाकर जल से स्नान
करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा; और उसके बाद वह छावनी में आने पाए, परन्तु सात
दिन तक अपके डेरे से बाहर ही रहे। 9 और सातवें दिन वह सिर, डाढ़ी और
भौहोंके सब बाल मुंडाए, और सब अंग मुण्डन कराए, और अपके वोंको धोए, और

जल से स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा। 10 और आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़
के बच्चे, और अन्नबलि के लिथे तेल से सना हुआ एपा का तीन दहाई अंश मैदा,
और लोज भर तेल लाए। 11 और शुद्ध ठहरानेवाला याजक इन वस्तुओं समेत
उस शुद्ध होनेवाले मनुष्य को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
खड़ा करे। 12 तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिथे उसे और उस
लोज भर तेल को समीप लाए, और इन दोनो को हिलाने की भेंट के लिथे यहोवा
के साम्हने हिलाए; 13 तब याजक एक भेड़ के बच्चे को उसी स्यान में जहां वह
पापबलि और होमबलि पशुओं का बलिदान किया करेगा, अर्यात् पवित्रस्यान में
बलिदान करे; क्योंकि जैसा पापबलि याजक का निज भाग होगा वैसा ही दोषबलि
भी उसी का निज भाग ठहरेगा; वह परमपवित्र है। 14 तब याजक दोषबलि के
लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिक्के पर, और उसके
दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठोंपर लगाए। 15 और याजक उस लोज भर
तेल में से कुछ लेकर अपके बाएं हाथ की हथेली पर डाले, 16 और याजक अपके
दहिने हाथ की उंगली को अपके बाईं हथेली पर के तेल में डुबाकर उस तेल में से
कुछ अपक्की उंगली से यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के। 17 और जो तेल
उसकी हथेली पर रह जाएगा याजक उस में से कुछ शुद्ध होनेवाले के दहिने कान
के सिक्के पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठोंपर दोषबलि के
लोहू के ऊपर लगाएं; 18 और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसको वह
शुद्ध होनेवाले के सिर पर डाल दे। और याजक उसके लिथे यहोवा के साम्हने
प्रायश्चित्त करे। 19 और याजक पापबलि को भी चढ़ाकर उसके लिथे जो अपक्की
अशुद्धता से शुद्ध होनेवाला हो प्रायश्चित्त करे; और उसके बाद होमबलि पशु का

बलिदान करके: 20 अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाए: और याजक उसके लिथे
प्रायश्चित्त करे, और वह शुद्ध ठहरेगा।। 21 परन्तु यदि वह दरिद्र हो और इतना
लाने के लिथे उसके पास पूंजी न हो, तो वह अपना प्रायश्चित्त करवाने के निमित्त,
हिलाने के लिथे भेड़ का बच्चा दोषबलि के लिथे, और तेल से सना हुआ एपा का
दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके, और लोज भर तेल लाए; 22 और दो पंडुक, वा
कबूतरी के दो बच्चे लाए, जो वह ला सके; और इन में से एक तो पापबलि के
लिथे और दूसरा होमबलि के लिथे हो। 23 और आठवें दिन वह इन सभोंको अपके
शुद्ध ठहरने के लिथे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के सम्मुख, याजक के
पास ले आए; 24 तब याजक उस लोज भर तेल और दोष बलिवाले भेड़ के बच्चे
को लेकर हिलाने की भेंट के लिथे यहोवा के साम्हने हिलाए। 25 फिर दोषबलि के
भेड़ के बच्चे का बलिदान किया जाए; और याजक उसके लोहू में से कुछ लेकर
शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिक्के पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने
पांव के अंगूठोंपर लगाए। 26 फिर याजक उस तेल में से कुछ अपके बाएं हाथ की
हथेली पर डालकर, 27 अपके दहिने हाथ की उंगली से अपक्की बाईं हथेली पर के
तेल में से कुछ यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के; 28 फिर याजक अपक्की
हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिक्के पर, और
उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठोंपर दोषबलि के लोहू के स्यान पर,
लगाए। 29 और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेवाले
के लिथे यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करने को उसके सिर पर डाल दे। 30 तब वह
पंडुकोंवा कबूतरी के बच्चोंमें से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए, 31 अर्यात् जो
पक्की वह ला सका हो, उन में से वह एक को पापबलि के लिथे और अन्नबलि

समेत दूसरे को होमबलि के लिथे चढ़ाए; इस रीति से याजक शुद्ध ठहरनेवाले के
लिथे यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे। 32 जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो, और
उसके इतनी पूंजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके, तो उसके
लिथे यही व्यवस्या है।। 33 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 34 जब तुम
लोग कनान देश में पहुंचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिथे तुम्हें देता हूं,
उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिक्कारने के किसी घर में दिखाऊं,
35 तो जिसका वह घर हो वह आकर याजक को बता दे, कि मुझे ऐसा देख पड़ता
है कि घर में मानोंकोई व्याधि है। 36 तब याजक आज्ञा दे, कि उस घर में व्याधि
देखने के लिथे मेरे जाने से पहिले उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ घर
में हो वह सब अशुद्ध ठहरे; और पीछे याजक घर देखने को भीतर जाए। 37 तब
वह उस व्याधि को देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारोंपर हरी हरी वा लाल
लाल मानोंखुदी हुई लकीरोंके रूप में हो, और थे लकीरें दीवार में गहिरी देख पड़ती
हों, 38 तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक बन्द कर
रखे। 39 और सातवें दिन याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर की
दीवारोंपर फैल गई हो, 40 तो याजक आज्ञा दे, कि जिन पत्यरोंको व्याधि है उन्हें
निकाल कर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्यान में फेंक दें; 41 और वह घर के
भीतर ही भीतर चारोंओर खुरचवाए, और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर
किसी अशुद्ध स्यान में डाली जाए; 42 और उन पत्यरोंके स्यान में और दूसरे
पत्यर लेकर लगाएं और याजक ताजा गारा लेकर घर की जुड़ाई करे। 43 और
यदि पत्यरोंके निकाले जाने और घर के खुरचे और लेसे जाने के बाद वह व्याधि
फिर घर में फूट निकले, 44 तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में

फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है। 45 और वह
सब गारे समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवाकर गिरा दे; और उन सब
वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फिंकवा दे। 46 और
जब तक वह घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उस में जाए तो वह सांफ तक अशुद्ध
रहे; 47 और जो कोई उस घर में सोए वह अपके वोंको धोए; और जो कोई उस घर
में खाना खाए वह भी अपके वोंको धोए। 48 और यदि याजक आकर देखे कि जब
से घर लेसा गया है तब से उस में व्याधि नहीं फैली है, तो यह जानकर कि वह
व्याधि दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए। 49 और उस घर को पवित्र करने के
लिथे दो पक्की, देवदारू की लकड़ी, लाल रंग का कपड़ा और जूफा लिवा लाए, 50
और एक पक्की बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करे, 51 तब
वह देवदारू की लकड़ी लाल रंग के कपके और जूफा और जीवित पक्की इन
सभोंको लेकर बलिदान किए हुए पक्की के लोहू में और बहते हुए जल में डूबा दे,
और उस घर पर सात बार छिड़के। 52 और वह पक्की के लोहू, और बहते हुए
जल, और जूफा और लाल रंग के कपके के द्वारा घर को पवित्र करे; 53 तब वह
जीवित पक्की को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे; इसी रीति से वह घर के लिथे
प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा। 54 सब भांति के कोढ़ की व्याधि, और सेहुएं,
55 और वस्त्र, और घर के कोढ़, 56 और सूजन, और पपक्की, और फूल के विषय
में, 57 शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिझा की व्यवस्था यही है। सब प्रकार के कोढ़
की व्यवस्था यही है।।

लैव्यवस्था 15

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 कि इस्त्राएलियोंसे कहो, कि जिस जिस पुरूष के
प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे। 3 और चाहे बहता रहे, चाहे
बहना बन्द भी हो, तौभी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी। 4 जिसके प्रमेह हो वह जिस
जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे, और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वह भी
अशुद्ध ठहरे। 5 और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपके वोंको धोकर जल
से स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध ठहरा रहे। 6 और जिसके प्रमेह हो और वह
जिस वस्तु पर बैठा हो, उस पर जो कोई बैठे वह अपके वोंको धोकर जल से
स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध ठहरा रहे। 7 और जिसके प्रमेह हो उस से जो
कोई छू जाए वह अपके वोंको धोकर जल से स्नान करे और सांफ तक अशुद्ध रहे।
8 और जिसके प्रमेह हो यदि वह किसी शुद्ध मनुष्य पर यूके, तो वह अपके वोंको
धोकर जल से स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध रहे। 9 और जिसके प्रमेह हो वह
सवारी की जिस वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे। 10 और जो कोई किसी वस्तु को
जो उसके नीचे रही हो छूए वह अपके वोंको धोकर जल से स्नान करे, और सांफ
तक अशुद्ध रहे। 11 और जिसके प्रमेह हो वह जिस किसी को बिना हाथ धोए छूए
वह अपके वोंको धोकर जल से स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध रहे। 12 और
जिसके प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह तोड़ डाला जाए, और
काठ के सब प्रकार के पात्र जल से धोए जाएं। 13 फिर जिसके प्रमेह हो वह जब
अपके रोग से चंगा हो जाए, तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन गिन ले, और उनके
बीतने पर अपके वोंको धोकर बहते हुए जल से स्नान करे; तब वह शुद्ध ठहरेगा।
14 और आठवें दिन वह दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे। 15 तब याजक उन में से

एक को पापबलि; और दूसरे को होमबलि के लिथे भेंट चढ़ाए; और याजक उसके
लिथे उसके प्रमेह के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे।। 16 फिर यदि
किसी पुरूष का वीर्य्य स्खलित हो जाए, तो वह अपके सारे शरीर को जल से धोए,
और सांफ तक अशुद्ध रहे। 17 और जिस किसी वस्त्र वा चमड़े पर वह वीर्य्य पके
वह जल से धोया जाए, और सांफ तक अशुद्ध रहे। 18 और जब कोई पुरूष स्त्री से
प्रसंग करे, तो वे दोनो जल से स्नान करें, और सांफ तक अशुद्ध रहें।। 19 फिर
जब कोई स्त्री ऋतुमती रहे, तो वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरी रहे, और जो कोई
उसको छूए वह सांफ तक अशुद्ध रहे। 20 और जब तक वह अशुद्ध रहे तब तक
जिस जिस वस्तु पर वह लेटे, और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब अशुद्ध
ठहरें। 21 और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपके वस्त्र धोकर जल से
स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध रहे। 22 और जो कोई किसी वस्तु को छूए जिस
पर वह बैठी हो वह अपके वस्त्र धोकर जल से स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध
रहे। 23 और यदि बिछौने वा और किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने के
समय उसका रूधिर लगा हो, तो छूनेहारा सांफ तक अशुद्ध रहे। 24 और यदि कोई
पुरूष उस से प्रसंग करे, और उसका रूधिर उसके लग जाए, तो वह पुरूष सात
दिन तक अशुद्ध रहे, और जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें।। 25
फिर यदि किसी स्त्री के अपके मासिक धर्म के नियुक्त समय से अधिक दिन तक
रूधिर बहता रहे, वा उस नियुक्त समय से अधिक समय तक ऋतुमती रहे, तो जब
तक वह ऐसी दशा में रहे तब तक वह अशुद्ध ठहरी रहे। 26 उसके ऋतुमती रहने
के सब दिनोंमें जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उसके मासिक धर्म के
बिछौने के समान ठहरें; और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उसके ऋतुमती

रहे के दिनोंकी नाई अशुद्ध ठहरें। 27 और जो कोई उन वस्तुओं को छुए वह अशुद्ध
ठहरे, इसलिथे वह अपके वोंको धोकर जल से स्नान करे, और सांफ तक अशुद्ध
रहे। 28 और जब वह स्त्री अपके ऋतुमती से शुद्ध हो जाए, तब से वह सात दिन
गिन ले, और उन दिनोंके बीतने पर वह शुद्ध ठहरे। 29 फिर आठवें दिन वह दो
पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास
जाए। 30 तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि के लिथे चढ़ाए;
और याजक उसके लिथे उसके मासिक धर्म की अशुद्धता के कारण यहोवा के
साम्हने प्रायश्चित्त करे।। 31 इस प्रकार से तुम इस्त्राएलियोंको उनकी अशुद्धता से
न्यारे रखा करो, कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उनके बीच में है
अशुद्ध करके अपक्की अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं।। 32 जिसके प्रमेह हो और
जो पुरूष वीर्य्य स्खलित होने से अशुद्ध हो; 33 और जो स्त्री ऋतुमती हो; और क्या
पुरूष क्या स्त्री, जिस किसी के धातुरोग हो, और जो पुरूष अशुद्ध स्त्री के प्रसंग
करे, इन सभोंके लिथे यही व्यवस्या है।।

लैव्यवस्था 16

1 जब हारून के दो पुत्र यहोवा के साम्हने समीप जाकर मर गए, उसके बाद
यहोवा ने मूसा से बातें की; 2 और यहोवा ने मूसा से कहा, अपके भाई हारून से
कह, कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढ़कने के आगे, बीचवाले पर्दे के अन्दर,
पवित्रस्यान में हर समय न प्रवेश करे, नहीं तो मर जाएगा; क्योंकि मैं
प्रायश्चित्तवाले ढ़कने के ऊपर बादल में दिखाई दूंगा। 3 और जब हारून
पवित्रस्यान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्यात् पापबलि के लिथे

एक बछड़े को और होमबलि के लिथे एक मेढ़े को लेकर आए। 4 वह सनी के
कपके का पवित्र अंगरखा, और अपके तन पर सनी के कपके की जांघिया पहिने
हुए, और सनी के कपके का कटिबन्द, और सनी के कपके की पगड़ी बांधे हुए
प्रवेश करे; थे पवित्र स्यान हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने। 5 फिर
वह इस्त्राएलियोंकी मण्डली के पास से पापबलि के लिथे दो बकरे और होमबलि
के लिथे एक मेढ़ा ले। 6 और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिथे
होगा चढ़ाकर अपके और अपके घराने के लिथे प्रायश्चित्त करे। 7 और उन
दोनोंबकरोंको लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के साम्हने खड़ा करे; 8
और हारून दोनोंबकरोंपर चिट्ठियां डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिथे और दूसरी
अजाजेल के लिथे हो। 9 और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले
उसको हारून पापबलि के लिथे चढ़ाए; 10 परन्तु जिस बकरे पर अजाजेल के
लिथे चिट्ठी निकले वह यहोवा के साम्हने जीवता खड़ा किया जाए कि उस से
प्रायश्चित्त किया जाए, और वह अजाजेल के लिथे जंगल में छोड़ा जाए। 11 और
हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिथे होगा समीप ले आए, और
उसको बलिदान करके अपके और अपके घराने के लिथे प्रायश्चित्त करे। 12 और
जो वेदी यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलोंसे भरे हुए धूपदान को
लेकर, और अपक्की दोनोंमुट्ठियोंको फूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले
पर्दे के भीतर ले आकर 13 उस धूप को यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिस से
धूप का धुआं साझीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो
वह मर जाएगा; 14 तब वह बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर पूरब की ओर
प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर अपक्की उंगली से छिड़के, और फिर उस लोहू में से

कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के साम्हने भी सात बार छिड़क दे। 15 फिर वह
उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिथे होगा बलिदान करके
उसके लोहू को बीचवाले पर्दे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लोहू से
उस ने किया या ठीक वैसा ही वह बकरे के लोहू से भी करे, अर्यात् उसको
प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके साम्हने छिड़के। 16 और वह
इस्त्राएलियोंकी भांति भांति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापोंके
कारण पवित्रस्यान के लिथे प्रायश्चित्त करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग
उनकी भांति भांति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिथे भी वह वैसा ही करे।
17 और जब हारून प्रायश्चित्त करने के लिथे पवित्रस्यान में प्रवेश करे, तब से जब
तक वह अपके और अपके घराने और इस्त्राएल की सारी मण्डली के लिथे
प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे।
18 फिर वह निकलकर उस वेदी के पास जो यहोवा के साम्हने है जाए और उसके
लिथे प्रायश्चित्त करे, अर्यात् बछड़े के लोहू और बकरे के लोहू दोनोंमें से कुछ लेकर
उस वेदी के चारोंकोनोंके सींगो पर लगाए। 19 और उस लोहू में से कुछ अपक्की
उंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्त्राएलियोंकी भांति भांति की
अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे। 20 और जब वह पवित्रस्यान और
मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिथे प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को
आगे ले आए; 21 और हारून अपके दोनोंहाथोंको जीवित बकरे पर रखकर
इस्त्राएलियोंके सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, निदान उनके सारे
पापोंको अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य
के हाथ जो इस काम के लिथे तैयार हो जंगल में भेजके छुड़वा दे। 22 और वह

बकरा उनके सब अधर्म के कामोंको अपके ऊपर लादे हुए किसी निराले देश में
उठा ले जाएगा; इसलिथे वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे। 23 तब
हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वोंको पहिने हुए उस ने
पवित्रस्यान में प्रवेश किया या उन्हें उतारकर वहीं पर रख दे। 24 फिर वह किसी
पवित्र स्यान में जल से स्नान कर अपके निज वस्त्र पहिन ले, और बाहर जाकर
अपके होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपके और जनता
के लिथे प्रायश्चित्त करे। 25 और पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए। 26
और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिथे छोड़कर आए वह भी अपके वोंको
धोए, और जल से स्नान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे। 27 और
पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लोहू पवित्रस्यान में
प्रायश्चित्त करने के लिथे पहुंचाया जाए वे दोनोंछावनी से बाहर पहुंचाए जाएं; और
उनका चमड़ा, मांस, और गोबर आग में जला दिया जाए। 28 और जो उनको
जलाए वह अपके वोंको धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी
में प्रवेश करने पाए।। 29 और तुम लोगोंके लिथे यह सदा की विधि होगी कि
सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपके अपके जीव को दु:ख देना, और उस
दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश को हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई
परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; 30 क्योंकि उस दिन तुम्हें
शुद्ध करने के लिथे तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपके सब
पापोंसे यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। 31 यह तुम्हारे लिथे परमविश्रम का
दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपके अपके जीव को दु:ख देना; यह सदा की विधि
है। 32 और जिसका अपके पिता के स्यान पर याजक पद के लिथे अभिषेक और

संस्कार किया जाए वह याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्यात् वह सनी के पवित्र
वोंको पहिनकर, 33 पवित्रस्यान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिथे
प्रायश्चित्त करे; और याजकोंके और मण्डली के सब लोगोंके लिथे भी प्रायश्चित्त
करे। 34 और यह तुम्हारे लिथे सदा की विधि होगी, कि इस्त्राएलियोंके लिथे
प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापोंके लिथे प्रायश्चित्त किया जाए। यहोवा की इस
आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी यी हारून ने किया।।

लैव्यवस्था 17

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 हारून और उसके पुत्रोंसे और कुल इस्त्राएलियोंसे
कह, कि यहोवा ने यह आज्ञा दी है, 3 कि इस्त्राएल के घराने में से कोई मनुष्य हो
जो बैल वा भेड़ के बच्चे, वा बकरी को, चाहे छावनी में चाहे छावनी से बाहर घात
करके 4 मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के निवास के साम्हने यहोवा को
चढ़ाने के निमित्त न ले जाए, तो उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा; और
वह मनुष्य जो लोहू बहाने वाला ठहरेगा, वह अपके लोगोंके बीच से नाश किया
जाए। 5 इस विधि का यह कारण है कि इस्त्राएली अपके बलिदान जिनको वह
खुले मैदान में वध करते हैं, वे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास,
यहोवा के लिथे ले जाकर उसी के लिथे मेलबलि करके बलिदान किया करें; 6 और
याजक लोहू को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिड़के, और
चरबी को उसके सुखदायक सुगन्ध के लिथे जलाए। 7 और वे जो बकरोंके पूजक
होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपके बलिपशुओं को उनके लिथे बलिदान न
करें। तुम्हारी पीढ़ियोंके लिथे यह सदा की विधि होगी।। 8 और तू उन से कह, कि

इस्त्राएल के घराने के लोगोंमें से वा उनके बीच रहनेहारे परदेशियोंमें से कोई
मनुष्य क्योंन हो जो होमबलि वा मेलबलि चढ़ाए, 9 और उसको मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर यहोवा के लिथे चढ़ाने को न ले आए; वह मनुष्य अपके लोगोंमें
से नाश किया जाए।। 10 फिर इस्त्राएल के घराने के लोगोंमें से वा उनके बीच
रहनेवाले परदेशियोंमें से कोई मनुष्य क्योंन हो जो किसी प्रकार का लोहू खाए, मैं
उस लोहू खानेवाले के विमुख होकर उसको उसके लोगोंके बीच में से नाश कर
डालूंगा। 11 क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम
लोगोंको वेदी पर चढ़ाने के लिथे दिया है, कि तुम्हारे प्राणोंके लिथे प्रायश्चित्त
किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है। 12 इस कारण
मैं इस्त्राएलियोंसे कहता हूं, कि तुम में से कोई प्राणी लोहू न खाए, और जो परदेशी
तुम्हारे बीच रहता हो वह भी लोहू कभी न खाए।। 13 और इस्त्राएलियोंमें से वा
उनके बीच रहनेवाले परदेशियोंमें से कोई मनुष्य क्योंन हो जो अहेर करके खाने
के योग्य पशु वा पक्की को पकड़े, वह उसके लोहू को उंडेलकर धूलि से ढंाप दे।
14 क्योंकि शरीर का प्राण जो है वह उसका लोहू ही है जो उसके प्राण के साय एक
है; इसी लिथे मैं इस्त्राएलियोंसे कहता हूं, कि किसी प्रकार के प्राणी के लोहू को तुम
न खाना, क्योंकि सब प्राणियोंका प्राण उनका लोहू ही है; जो कोई उसको खाए वह
नाश किया जाएगा। 15 और चाहे वह देशी हो वा परदेशी हो, जो कोई किसी लोय
वा फाड़े हुए पशु का मांस खाए वह अपके वोंको धोकर जल से स्नान करे, और
सांफ तक अशुद्ध रहे; तब वह शुद्ध होगा। 16 और यदि वह उनको न धोए और न
स्नान करे, तो उसको अपके अधर्म का भार स्वयं उठाना पकेगा।।

लैव्यवस्था 18

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूं। 3 तुम मिस्र देश के कामोंके अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना;
और कनान देश के कामोंके अनुसार भी जहां मैं तुम्हें ले चलता हूं न करना; और
न उन देशोंकी विधियोंपर चलना। 4 मेरे ही नियमोंको मानना, और मेरी ही
विधियोंको मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 5 इसलिथे
तुम मेरे नियमोंऔर मेरी विधियोंको निरन्तर मानना; जो मनुष्य उनको माने वह
उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूं। 6 तुम में से कोई अपक्की किसी निकट
कुटुम्बिन का तन उघाड़ने को उसके पास न जाए। मैं यहोवा हूं। 7 अपक्की माता
का तन जो तुम्हारे पिता का तन है न उघाड़ना; वह तो तुम्हारी माता है, इसलिथे
तुम उसका तन न उघाड़ना। 8 अपक्की सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना; वह
तो तुम्हारे पिता ही का तन है। 9 अपक्की बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो,
चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन न उघाड़ना। 10 अपक्की
पोती वा अपक्की नतिनी का तन न उघाड़ना, उनकी देह तो मानो तुम्हारी ही है।
11 तुम्हारी सोतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई, वह तुम्हारी बहिन है,
इस कारण उसका तन न उघाड़ना। 12 अपक्की फूफी का तन न उघाड़ना; वह तो
तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिन है। 13 अपक्की मौसी का तन न उघाड़ना;
क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिन है। 14 अपके चाचा का तन न
उघाड़ना, अर्यात् उसकी स्त्री के पास न जाना; वह तो तुम्हारी चाची है। 15
अपक्की बहू का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है, इस कारण तुम
उसका तन न उघाड़ना। 16 अपक्की भौजी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे
भाई ही का तन है। 17 किसी स्त्री और उसकी बेटी दोनोंका तन न उघाड़ना, और

उसकी पोती को वा उसकी नतिनी को अपक्की स्त्री करके उसका तन न उघाड़ना;
वे तो निकट कुटुम्बिन है; ऐसा करना महापाप है। 18 और अपक्की स्त्री की बहिन
को भी अपक्की स्त्री करके उसकी सौत न करना, कि पहली के जीवित रहते हुए
उसका तन भी उघाड़े। 19 फिर जब तक कोई स्त्री अपके ऋतु के कारण अशुद्ध रहे
तब तक उसके पास उसका तन उघाड़ने को न जाना। 20 फिर अपके भाई बन्धु
की स्त्री से कुकर्म करके अशुद्ध न हो जाना। 21 और अपके सन्तान में से किसी को
मोलेक के लिथे होम करके न चढ़ाना, और न अपके परमेश्वर के नाम को अपवित्र
ठहराना; मैं यहोवा हूं। 22 स्त्रीगमन की रीति पुरूषगमन न करना; वह तो घिनौना
काम है। 23 किसी जाति के पशु के साय पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना, और
न कोई स्त्री पशु के साम्हने इसलिथे खड़ी हो कि उसके संग कुकर्म करे; यह तो
उल्टी बात है।। 24 ऐसा ऐसा कोई भी काम करके अशुद्ध न हो जाना, क्योंकि
जिन जातियोंको मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं वे ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध
हो गई है; 25 और उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण मैं उस पर उसके
अधर्म का दण्ड देता हूं, और वह देश अपके निवासिक्कों उगल देता है। 26 इस
कारण तुम लोग मेरी विधियोंऔर नियमोंको निरन्तर मानना, और चाहे देशी
चाहे तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेशी हो तुम में से कोई भी ऐसा घिनौना काम न
करे; 27 क्योंकि ऐसे सब घिनौने कामोंको उस देश के मनुष्य तो तुम से पहिले
उस में रहते थे वे करते आए हैं, इसी से वह देश अशुद्ध हो गया है। 28 अब ऐसा न
हो कि जिस रीति से जो जाति तुम से पहिले उस देश में रहती यी उसको उस ने
उगल दिया, उसी रीति जब तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह तुम को भी उगल दे।
29 जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपके लोगोंमें से नाश किए

जाएं। 30 यह आज्ञा जो मैं ने तुम्हारे मानने को दी है उसे तुम मानना, और जो
घिनौनी रीतियां तुम से पहिले प्रचलित हैं उन में से किसी पर न चलना, और न
उनके कारण अशुद्ध हो जाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।।

लैव्यवस्था 19

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली से कह, कि तुम
पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं। 3 तुम अपक्की
अपक्की माता और अपके अपके पिता का भय मानना, और मेरे विश्रम दिनोंको
मानना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 4 तुम मूरतोंकी ओर न फिरना, और
देवताओं की प्रतिमाएं ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 5 जब
तुम यहोवा के लिथे मेलबलि करो, तब ऐसा बलिदान करना जिससे मैं तुम से
प्रसन्न हो जाऊं। 6 उसका मांस बलिदान के दिन और दूसरे दिन खाया जाए,
परन्तु तीसरे दिन तक जो रह जाए वह आग में जला दिया जाए। 7 और यदि उस
में से कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो यह घृणित ठहरेगा, और ग्रहण न किया
जाएगा। 8 और उसका खानेवाला यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराता है,
इसलिथे उसको अपके अधर्म का भार स्वयं उठाना पकेगा; और वह प्राणी अपके
लोगोंमें से नाश किया जाएगा।। 9 फिर जब तुम अपके देश के खेत काटो तब
अपके खेत के कोने कोने तक पूरा न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी पक्की
बालोंको न चुनना। 10 और अपक्की दाख की बारी का दाना दाना न तोड़ लेना,
और अपक्की दाख की बारी के फंड़े हुए अंगूरोंको न बटोरना; उन्हें दीन और
परदेशी लोगोंके लिथे छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 11 तुम चोरी न

करना, और एक दूसरे से न तो कपट करना, और न फूठ बोलना। 12 तुम मेरे
नाम की फूठी शपय खाके अपके परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना; मैं यहोवा
हूं। 13 एक दूसरे पर अन्धेर न करना, और न एक दूसरे को लूट लेना। और
मजदूर की मजदूरी तेरे पास सारी रात बिहान तक न रहने पाएं। 14 बहिरे को
शाप न देना, और न अन्धे के आगे ठोकर रखना; और अपके परमेश्वर का भय
मानना; मैं यहोवा हूं। 15 न्याय में कुटिलता न करना; और न तो कंगाल का पझ
करना और न बड़े मनुष्योंका मुंह देखा विचार करना; उस दूसरे का न्याय धर्म से
करना। 16 लूतरा बनके अपके लोगोंमें न फिरा करना, और एक दूसरे के लोहू
बहाने की युक्तियां न बान्धना; मैं यहोवा हूं। 17 अपके मन में एक दूसरे के प्रति
बैर न रखना; अपके पड़ोसी को अवश्य डांटना नहीं, तो उसके पाप का भार तुझ
को उठाना पकेगा। 18 पलटा न लेना, और न अपके जाति भाइयोंसे बैर रखना,
परन्तु एक दूसरे से अपके समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूं। 19 तुम मेरी
विधियोंको निरन्तर मानना। अपके पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से मेल न
खाने देना; अपके खेत में दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना; और सनी और ऊन
की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना। 20 फिर कोई स्त्री दासी हो, और
उसकी मंगनी किसी पुरूष से हुई हो, परन्तु वह न तो दास से और न सेंतमेंत
स्वाधीन की गई हो; उस से यदि कोई कुकर्म करे, तो उन दोनोंको दण्ड तो मिले,
पर उस स्त्री के स्वाधीन न होने के कारण वे दोनोंमार न डाले जाएं। 21 पर वह
पुरूष मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के पास एक मेढ़ा दोषबलि के लिथे ले
आए। 22 और याजक उसके किथे हुए पाप के कारण दोषबलि के मेढ़े के द्वारा
उसके लिथे यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे; तब उसका किया हुआ पाप झमा

किया जाएगा। 23 फिर जब तुम कनान देश में पंहुचकर किसी प्रकार के फल के
वृझ लगाओ, तो उनके फल तीन वर्ष तक तुम्हारे लिथे मानोंखतनारहित ठहरें
रहें; इसलिथे उन में से कुछ न खाया जाए। 24 और चौथे वर्ष में उनके सब फल
यहोवा की स्तुति करने के लिथे पवित्र ठहरें। 25 तब पांचवें वर्ष में तुम उनके फल
खाना, इसलिथे कि उन से तुम को बहुत फल मिलें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूं। 26 तुम लोहू लगा हुआ कुछ मांस न खाना। और न टोना करना, और न शुभ
वा अशुभ मुहूर्तोंको मानना। 27 अपके सिर में घेरा रखकर न मुंड़ाना, और न
अपके गाल के बालोंको मुंड़ाना। 28 मुर्दोंके कारण अपके शरीर को बिलकुल न
चीरना, और न उस में छाप लगाना; मैं यहोवा हूं। 29 अपक्की बेटियोंको वेश्या
बनाकर अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि देश वेश्यागमन के कारण महापाप से
भर जाए। 30 मेरे विश्रमदिन को माना करना, और मेरे पवित्रस्यान का भय
निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूं। 31 ओफाओं और भूत साधने वालोंकी ओर न
फिरना, और ऐसोंको खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मै तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं। 32 पक्के बालवाले के साम्हने उठ खड़े होना, और बूढे का
आदरमान करना, और अपके परमेश्वर का भय निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूं। 33
और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको दु:ख न देना। 34
जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिथे देशी के समान हो, और उस से अपके
ही समान प्रेम रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे; मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं। 35 तुम न्याय में, और परिमाण में, और तौल में, और नाप में
कुटिलता न करना। 36 सच्चा तराजू, धर्म के बटखरे, सच्चा एपा, और धर्म का
हीन तुम्हारे पास रहें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से

निकाल ले आया। 37 इसलिथे तुम मेरी सब विधियोंऔर सब नियमोंको मानते
हुए निरन्तर पालन करो; मैं यहोवा हूं।।

लैव्यव्यवस्था 20

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि इस्त्राएलियोंमें से, वा
इस्त्राएलियोंके बीच रहनेवाले परदेशियोंमें से, कोई क्योंन हो जो अपक्की कोई
सन्तान मोलेक को बलिदान करे वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उसको
पत्यरवाह करे। 3 और मैं भी उस मनुष्य के विरूद्ध होकर उसको उसके लोगोंमें से
इस कारण नाश करूंगा, कि उस ने अपक्की सन्तान मोलेक को देकर मेरे
पवित्रस्यान को अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया। 4 और
यदि कोई अपक्की सन्तान मोलेक को बलिदान करे, और जनता उसके विषय में
आनाकानी करे, और उसको मार न डाले, 5 तब तो मैं स्वयं उस मनुष्य और
उसके घराने के विरूद्ध होकर उसको और जितने उसके पीछे होकर मोलेक के
साय व्यभिचार करें उन सभोंको भी उनके लोगोंके बीच में से नाश करूंगा। 6 फिर
जो प्राणी ओफाओं वा भूतसाधनेवालोंकी ओर फिरके, और उनके पीछे होकर
व्यभिचारी बने, तब मैं उस प्राणी के विरूद्ध होकर उसको उसके लोगोंके बीच में से
नाश कर दूंगा। 7 इसलिथे तुम अपके आप को पवित्र करो; और पवित्र बने रहो;
क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 8 और तुम मेरी विधियोंको मानना, और
उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। 9 कोई
क्योंन हो जो अपके पिता वा माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उस ने
अपके पिता वा माता को शाप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर

पकेगा। 10 फिर यदि कोई पराई स्त्री के साय व्यभिचार करे, तो जिस ने किसी
दूसरे की स्त्री के साय व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह
व्यभिचारिणी दोनोंनिश्चय मार डाले जाएं। 11 और यदि कोई अपक्की सौतेली
माता के साय सोए, वह जो अपके पिता ही का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; सो
इसलिथे वे दोनोंनिश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर पकेगा। 12
और यदि कोई अपक्की पतोहू के साय सोए, तो वे दोनोंनिश्चय मार डाले जाएं;
क्योंकि वे उलटा काम करनेवाले ठहरेंगे, और उनका खून उन्हीं के सिर पर
पकेगा। 13 और यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरूष से प्रसंग करे, तो वे
दोनोंघिनौना काम करनेवाले ठहरेंगे; इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका
खून उन्हीं के सिर पर पकेगा। 14 और यदि कोई अपक्की पत्नी और अपक्की
सांस दोनोंको रखे, तो यह महापाप है; इसलिथे वह पुरूष और वे स्त्रियां तीनोंके
तीनोंआग में जलाए जाएं, जिस से तुम्हारे बीच महापाप न हो। 15 फिर यदि कोई
पुरूष पशुगामी हो, तो पुरूष और पशु दोनोंनिश्चय मार डाले जाएं। 16 और यदि
कोई स्त्री पशु के पास जाकर उसके संग कुकर्म करे, तो तू उस स्त्री और पशु
दोनोंको घात करना; वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर
पकेगा। 17 और यदि कोई अपक्की बहिन का, चाहे उसकी संगी बहिन हो चाहे
सौतेली, उसका नग्न तन देखे, तो वह निन्दित बात है, वे दोनोंअपके जाति
भाइयोंकी आंखोंके साम्हने नाश किए जाएं; क्योंकि जो अपक्की बहिन का तन
उघाड़नेवाला ठहरेगा उसे अपके अधर्म का भार स्वयं उठाना पकेगा। 18 फिर
यदि कोई पुरूष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उसका तन उघाड़े, तो वह पुरूष
उसके रूधिर के सोते का उघाड़नेवाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपके रूधिर के सोते

की उघाड़नेवाली ठहरेगी; इस कारण दोनोंअपके लोगोंके बीच से नाश किए जाएं।
19 और अपक्की मौसी वा फूफी का तन न उघाड़ना, क्योंकि जो उसे उघाड़े वह
अपक्की निकट कुटुम्बिन को नंगा करता है; इसलिथे इन दोनोंको अपके अधर्म
का भार उठाना पकेगा। 20 और यदि कोई अपक्की चाची के संग सोए, तो वह
अपके चाचा का तन उघाड़ने वाला ठहरेगा; इसलिथे वे दोनोंअपके पाप का भार
को उठाए हुए निर्वंश मर जाएंगे। 21 और यदि कोई भौजी वा भयाहू को अपक्की
पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम जानना; और वह अपके भाई का तन
उघाड़नेवाला ठहरेगा, इस कारण वे दोनोंनिर्वंश रहेंगे। 22 तुम मेरी सब
विधियोंऔर मेरे सब नियमोंको समझ के साय मानना; जिससे यह न हो कि
जिस देश में मैं तुम्हें लिथे जा रहा हूं वह तुम को उगल देवे। 23 और जिस जाति
के लोगोंको मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूं उनकी रीति रस्म पर न चलना;
क्योंकि उन लोगोंने जो थे सब कुकर्म किए हैं, इसी कारण मुझे उन से घृणा हो
गई है। 24 और मैं तुम लोगोंसे कहता हूं, कि तुम तो उनकी भूमि के अधिक्कारनी
होगे, और मैं इस देश को जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम्हारे
अधिक्कारने में कर दूंगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जिस ने तुम को देशोंके
लोगोंसे अलग किया है। 25 इस कारण तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में, और शुद्ध
और अशुद्ध पझियोंमें भेद करना; और कोई पशु वा पक्की वा किसी प्रकार का
भूमि पर रेंगनेवाला जीवजन्तु क्योंन हो, जिसको मैं ने तुम्हारे लिथे अशुद्ध
ठहराकर वर्जित किया है, उस से अपके आप को अशुद्ध न करना। 26 और तुम
मेरे लिथे पवित्र बने रहना; क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूं, और मैं ने तुम को
और देशोंके लोगोंसे इसलिथे अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो।।

27 यदि कोई पुरूष वा स्त्री ओफाई वा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार
डाला जाए; ऐसोंका पत्थरवाह किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर पकेगा।।

लैव्यवस्था 21

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून के पुत्र जो याजक है उन से कह, कि तुम्हारे
लोगोंमें से कोई भी मरे, तो उसके कारण तुम में से कोई अपके को अशुद्ध न करे;
2 अपके निकट कुटुम्बियों, अर्यात् अपक्की माता, वा पिता, वा बेटे, वा बेटी, वा
भाई के लिथे, 3 वा अपक्की कुंवारी बहिन जिसका विवाह न हुआ हो जिनका
समीपी सम्बन्ध है; उनके लिथे वह अपके को अशुद्ध कर सकता है। 4 पर याजक
होने के नाते से वह अपके लोगोंमें प्रधान है, इसलिथे वह अपके को ऐसा अशुद्ध न
करे कि अपवित्र हो जाए। 5 वे न तो अपके सिर मुंड़ाएं, और न अपके गाल के
बालोंको मुंड़ाएं, और न अपके शरीर चीरें। 6 वे अपके परमेश्वर के लिथे पवित्र बने
रहें, और अपके परमेश्वर का नाम अपवित्र न करें; क्योंकि वे यहोवा के हव्य को
जो उनके परमेश्वर का भोजन है चढ़ाया करते हैं; इस कारण वे पवित्र बने रहें। 7
वे वेश्या वा भ्रष्टा को ब्याह न लें; और न त्यागी हुई को ब्याह लें; क्योंकि याजक
अपके परमेश्वर के लिथे पवित्र होता है। 8 इसलिथे तू याजक को पवित्र जानना,
क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है; इसलिथे वह तेरी दृष्टि में
पवित्र ठहरे; क्योंकि मैं यहोवा, जो तुम को पवित्र करता हूं, पवित्र हूं। 9 और यदि
याजक की बेटी वेश्या बनकर अपके आप को अपवित्र करे, तो वह अपके पिता को
अपवित्र ठहराती है; वह आग में जलाई जाए।। 10 और जो अपके भाइयोंमें
महाथाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका

पवित्र वोंको पहिनने के लिथे संस्कार हुआ हो, वह अपके सिर के बाल बिखरने न
दे, और अपके वस्त्र फाड़े; 11 और न वह किसी लोय के पास जाए, और न अपके
पिता वा माता के कारण अपके को अशुद्ध करे; 12 और वह पवित्रस्यान से बाहर
भी न निकले, और न अपके परमेश्वर के पवित्रस्यान को अपवित्र ठहराए; क्योंकि
वह अपके परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण किए हुए है; मैं यहोवा
हूं। 13 और वह कुंवारी ही स्त्री को ब्याहे। 14 जो विधवा, वा त्यागी हुई, वा भ्रष्ट, वा
वेश्या हो, ऐसी किसी को वह न ब्याहे, वह अपके ही लोगोंके बीच में की किसी
कुंवारी कन्या को ब्याहे; 15 और वह अपके वीर्य्य को अपके लोगोंमें अपवित्र न
करे; क्योंकि मैं उसका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। 16 फिर यहोवा ने मूसा से
कहा, 17 हारून से कह, कि तेरे वंश की पीढ़ी पीढ़ी में जिस किसी के कोई भी दोष
होंवह अपके परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिथे समीप न आए। 18 कोई क्योंन
हो जिस में दोष हो वह समीप न आए, चाहे वह अन्धा हो, चाहे लंगड़ा, चाहे
नकचपटा हो, चाहे उसके कुछ अधिक अंग हो, 19 वा उसका पांव, वा हाथ टूटा
हो, 20 वा वह कुबड़ा, वा बौना हो, वा उसकी आंख में दोष हो, वा उस मनुष्य के
चाईं वा खजुली हो, वा उसके अंड पिचके हों; 21 हारून याजक के वंश में से जिस
किसी में कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने के लिथे समीप न आए; वह
जो दोषयुक्त है कभी भी अपके परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिथे समीप न आए।
22 वह अपके परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनोंप्रकार के भोजन को खाए,
23 परन्तु उसके दोष के कारण वह न तो बीचवाले पर्दे के भीतर आए और न वेदी
के समीप, जिस से ऐसा न हो कि वह मेरे पवित्रस्यानोंको अपवित्र करे; क्योंकि मैं
उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। 24 इसलिथे मूसा ने हारून और उसके पुत्रोंको

तया कुल इस्त्राएलियोंको यह बातें कह सुनाईं।।

लैव्यवस्था 22

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 हारून और उसके पुत्रोंसे कह, कि इस्त्राएलियोंकी
पवित्र की हुई वस्तुओं से जिनको वे मेरे लिथे पवित्र करते हैं न्यारे रहें, और मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र न करें, मैं यहोवा हूं। 3 और उन से कह, कि तुम्हारी
पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपक्की अशुद्धता की दशा में उन
पवित्र की हुई वस्तुओं के पास जाए, जिन्हें इस्त्राएली यहोवा के लिथे पवित्र करते
हैं, वह प्राणी मेरे साम्हने से नाश किया जाएगा; मैं यहोवा हूं। 4 हारून के वंश में
से कोई क्योंन हो जो कोढ़ी हो, वा उसके प्रमेह हो, वह मनुष्य जब तक शुद्ध न हो
जाए तब तक पवित्र की हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। और जो लोय के कारण
अशुद्ध हुआ हो, वा वीर्य्य स्खलित हुआ हो, ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, 5 और
जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु को छूए जिस से लोग अशुद्ध हो सकते हैं, वा
किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता हो जो उसको भी
लग सकती है। 6 तो वह प्राणी जो इन में से किसी को छूए सांफ तक अशुद्ध ठहरा
रहे, और जब तक जल से स्नान न कर ले तब तक पवित्र वस्तुओं में से कुछ न
खाए। 7 तब सूर्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा; और तब वह पवित्र वस्तुओं में
से खा सकेगा, क्योंकि उसका भोजन वही है। 8 जो जानवर आप से मरा हो वा
पशु से फाड़ा गया हो उसे खाकर वह अपके आप को अशुद्ध न करे; मैं यहोवा हूं। 9
इसलिथे याजक लोग मेरी सौंपी हुई वस्तुओं की रझा करें, ऐसा न हो कि वे उनको
अपवित्र करके पाप का भार उठाएं, और इसके कारण मर भी जाएं; मैं उनका

पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। 10 पराए कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाने
पाए, चाहे वह याजक का पाहुन हो वा मजदूर हो, तौभी वह कोई पवित्र वस्तु न
खाए। 11 यदि याजक किसी प्राणी को रूपया देकर मोल ले, तो वह प्राणी उस में
से खा सकता है; और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए होंवे भी उसके भोजन में से
खाएं। 12 और यदि याजक की बेटी पराए कुल के किसी पुरूष से ब्याही गई हो,
तो वह भेंट की हुई पवित्र वस्तुओं में से न खाए। 13 यदि याजक की बेटी विधवा
वा त्यागी हुई हो, और उसकी सन्तान न हो, और वह अपक्की बाल्यावस्या की
रीति के अनुसार अपके पिता के घर में रहती हो, तो वह अपके पिता के भोजन में
से खाए; पर पराए कुल का कोई उस में से न खाने पाए। 14 और यदि कोई मनुष्य
किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खा जाए, तो वह उसका पांचवां भाग बढ़ाकर
उसे याजक को भर दे। 15 और वे इस्त्राएलियोंकी पवित्र की हुई वस्तुओं को,
जिन्हें वे यहोवा के लिथे चढ़ाएं, अपवित्र न करें। 16 वे उनको अपक्की पवित्र
वस्तुओं में से खिलाकर उन से अपराध का दोष न उठवाएं; मैं उनका पवित्र
करनेवाला यहोवा हूं।। 17 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 18 हारून और उसके
पुत्रोंसे और इस्त्राएल के घराने वा इस्त्राएलियोंमें रहनेवाले परदेशियोंमें से कोई
क्योंन हो जो मन्नत वा स्वेच्छाबलि करने के लिथे यहोवा को कोई होमबलि
चढ़ाए, 19 तो अपके निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिथे बैलोंवा भेड़ोंवा
बकरियोंमें से निर्दोष नर चढ़ाया जाए। 20 जिस में कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना;
क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा। 21 और जो कोई बैलोंवा
भेड़-बकरियोंमें से विशेष वस्तु संकल्प करने के लिथे वा स्वेच्छाबलि के लिथे
यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिथे अवश्य है कि वह निर्दोष हो,

उस में कोई भी दोष न हो। 22 जो अन्धा वा अंग का टूटा वा लूला हो, वा उस में
रसौली वा खौरा वा खुजली हो, ऐसोंको यहोवा के लिथे न चढ़ाना, उनको वेदी पर
यहोवा के लिथे हव्य न चढ़ाना। 23 जिस किसी बैल वा भेड़ वा बकरे का कोई अंग
अधिक वा कम हो उसको स्वेच्छाबलि कि लिथे चढ़ा सकते हो, परन्तु मन्नत
पूरी करने के लिथे वह ग्रहण न होगा। 24 जिसके अंड दबे वा कुचले वा टूटे वा
कट गए होंउसको यहोवा के लिथे न चढ़ाना, और अपके देश में भी ऐसा काम न
करना। 25 फिर इन में से किसी को तुम अपके परमेश्वर का भोजन जानकर
किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाओ; क्योंकि उन में उनका बिगाड़ वर्तमान है, उन
में दोष है, इसलिथे वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे।। 26 फिर यहोवा ने मूसा से
कहा, 27 जब बछड़ा वा भेड़ वा बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक
अपक्की मां के साय रहे; फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्यवाह
चढ़ावे के लिथे ग्रहणयोग्य ठहरेगा। 28 चाहे गाय, चाहे भेड़ी वा बकरी हो, उसको
और उसके बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना। 29 और जब तुम यहोवा के
लिथे धन्यवाद का मेलबलि चढ़ाओ, तो उसे इसी प्रकार से करना जिस से वह
ग्रहणयोग्य ठहरे।। 30 वह उसी दिन खाया जाए, उस में से कुछ भी बिहान तक
रहने न पाए; मैं यहोवा हूं। 31 और तुम मेरी आज्ञाओं को मानना और उनका
पालन करना; मैं यहोवा हूं। 32 और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना,
क्योंकि मैं इस्त्राएलियोंके बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊंगा; मैं तुम्हारा पवित्र
करनेवाला यहोवा हूं। 33 जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हूं जिस से
तुम्हारा परमेश्वर बना रहूं; मैं यहोवा हूं।।

लैव्यवस्था 23

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि यहोवा के पर्ब्ब जिनका
तुम को पवित्र सभा एकत्रित करने के लिथे नियत समय पर प्रचार करना होगा,
मेरे वे पर्ब्ब थे हैं। 3 छ: दिन कामकाज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्रम
का और पवित्र सभा का दिन है; उस में किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए;
वह तुम्हारे सब घरोंमें यहोवा का विश्रम दिन ठहरे।। 4 फिर यहोवा के पर्ब्ब जिन
में से एक एक के ठहराथे हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा करने के लिथे प्रचार
करना होगा वे थे हैं। 5 पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय यहोवा
का फसह हुआ करे। 6 और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को यहोवा के लिथे
अखमीरी रोटी का पर्ब्ब हुआ करे; उस में तुम सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया
करना। 7 उन में से पहिले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का
कोई काम न करना। 8 और सातोंदिन तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना; और
सातवें दिन पवित्र सभा हो; उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना।। 9 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 10 इस्त्राएलियोंसे कह, कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो
जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उस में के खेत काटो, तब अपके अपके पक्के खेत
की पहिली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना; 11 और वह उस पूले
को यहोवा के साम्हने हिलाए, कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए; वह उसे
विश्रमदिन के दूसरे दिन हिलाए। 12 और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ उसी
दिन एक वर्ष का निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिथे होमबलि चढ़ाना। 13 और
उसके साय का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो वह
सुखदायक सुगन्ध के लिथे यहोवा का हव्य हो; और उसके साय का अर्ध हीन भर
की चौयाई दाखमधु हो। 14 और जब तक तुम इस चढ़ावे को अपके परमेश्वर के

पास न ले जाओ, उस दिन तक नथे खेत में से न तो रोटी खाना और न भुना हुआ
अन्न और न हरी बालें; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरानोंमें सदा की
विधि ठहरे।। 15 फिर उस विश्रमदिन के दूसरे दिन से, अर्यात् जिस दिन तुम
हिलाई जानेवाली भेंट के पूले को लाओगे, उस दिन से पूरे सात विश्रमदिन गिन
लेना; 16 सातवें विश्रमदिन के दूसरे दिन तक पचास दिन गिनना, और पचासवें
दिन यहोवा के लिथे नया अन्नबलि चढ़ाना। 17 तुम अपके घरोंमें से एपा के दो
दसवें अंश मैदे की दो रोटियां हिलाने की भेंट के लिथे ले आना; वे खमीर के साय
पकाई जाएं, और यहोवा के लिथे पहिली उपज ठहरें। 18 और उस रोटी के संग
एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक बछड़ा, और दो मेढ़े चढ़ाना; वे
अपके अपके साय के अन्नबलि और अर्ध समेत यहोवा के लिथे होमबलि के
समान चढ़ाए जाएं, अर्यात् वे यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य
ठहरें। 19 फिर पापबलि के लिथे एक बकरा, और मेलबलि के लिथे एक एक वर्ष
के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना। 20 तब याजक उनको पहिली उपज की रोटी समेत
यहोवा के साम्हने हिलाने की भेंट के लिथे हिलाए, और इन रोटियोंके संग वे दो
भेड़ के बच्चे भी हिलाए जाएं; वे यहोवा के लिथे पवित्र, और याजक का भाग
ठहरें। 21 और तुम उस दिन यह प्रचार करना, कि आज हमारी एक पवित्र सभा
होगी; और परिश्र्म का कोई काम न करना; यह तुम्हारे सारे घरानोंमें तुम्हारी
पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे।। 22 जब तुम अपके देश में के खेत काटो, तब
अपके खेत के कोनोंको पूरी रीति से न काटना, और खेत में गिरी हुई बालोंको न
इकट्ठा करना; उसे दीनहीन और परदेशी के लिथे छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूं।। 23 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 24 इस्त्राएलियोंसे कह, कि सातवें

महीने के पहिले दिन को तुम्हारे लिथे परमविश्रम हो; उस में स्मरण दिलाने के
लिथे नरसिंगे फूंके जाएं, और एक पवित्र सभा इकट्ठी हो। 25 उस दिन तुम
परिश्रम का कोई काम न करना, और यहोवा के लिथे एक हव्य चढ़ाना।। 26 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 27 उसी सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित्त का दिन
माना जाए; वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा, और उस में तुम अपके अपके
जीव को दु:ख देना और यहोवा का हव्य चढ़ाना। 28 उस दिन तुम किसी प्रकार
का कामकाज न करना; क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन नियुक्त किया गया है जिस
में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिथे प्रायश्चित्त किया जाएगा। 29
इसलिथे जो प्राणी उस दिन दु:ख न सहे वह अपके लोगोंमें से नाश किया जाएगा।
30 और जो प्राणी उस दिन किसी प्रकार का कामकाज करे उस प्राणी को मैं उसके
लोगोंके बीच में से नाश कर डालूंगा। 31 तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना;
यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे घराने में सदा की विधी ठहरे। 32 वह दिन
तुम्हारे लिथे परमविश्रम का हो, उस में तुम अपके अपके जीव को दु:ख देना; और
उस महीने के नवें दिन की सांफ से लेकर दूसरी सांफ तक अपना विश्रमदिन
माना करना।। 33 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 34 इस्त्राएलियोंसे कह, कि उसी
सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन तक यहोवा के लिथे फोंपडिय़ोंका पर्ब्ब
रहा करे। 35 पहिले दिन पवित्र सभा हो; उस में परिश्रम का कोई काम न करना।
36 सातोंदिन यहोवा के लिथे हव्य चढ़ाया करना, फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र
सभा हो, और यहोवा के लिथे हव्य चढ़ाना; वह महासभा का दिन है, और उस में
परिश्रम का कोई काम न करना।। 37 यहोवा के नियत पर्ब्ब थे ही हैं, इन में तुम
यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्यात् होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, और अर्घ, प्रत्थेक

अपके अपके नियत समय पर चढ़ाया जाए और पवित्र सभा का प्रचार करना। 38
इन सभोंसे अधिक यहोवा के विश्रमदिनोंको मानना, और अपक्की भेंटों, और सब
मन्नतों, और स्वेच्छाबलियोंको जो यहोवा को अर्पण करोगे चढ़ाया करना।। 39
फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को, जब तुम देश की उपज को इकट्ठा कर
चुको, तब सात दिन तक यहोवा का पर्ब्ब मानना; पहिले दिन परमविश्रम हो,
और आठवें दिन परमविश्रम हो। 40 और पहिले दिन तुम अच्छे अच्छे वृझोंकी
उपज, और खजूर के पत्ते, और घने वृझोंकी डालियां, और नालोंमें के मजनू को
लेकर अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने सात दिन तक आनन्द करना। 41 और
प्रतिवर्ष सात दिन तक यहोवा के लिथे पर्ब्ब माना करना; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी
में सदा की विधि ठहरे, कि सातवें महीने में यह पर्ब्ब माना जाए। 42 सात दिन
तक तुम फोंपडिय़ोंमें रहा करना, अर्यात् जितने जन्म के इस्त्राएली हैं वे सब के
सब फोंपडिय़ोंमें रहें, 43 इसलिथे कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लोग जान रखें, कि
जब यहोवा हम इस्त्राएलियोंको मिस्र देश से निकाल कर ला रहा या तब उस ने
उनको फोंपडिय़ोंमें टिकाया या; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 44 और मूसा ने
इस्त्राएलियोंको यहोवा के पर्ब्ब के नियत समय कह सुनाए।।

लैव्यवस्था 24

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंको यह आज्ञा दे, कि मेरे पास
उजियाला देने के लिथे कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल ले आना, कि
दीपक नित्य जलता रहे। 3 हारून उसको, बीचवाले तम्बू में, साझीपत्र के
बीचवाले पर्दे से बाहर, यहोवा के साम्हने नित्य सांफ से भोर तक सजाकर रखे;

यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिथे सदा की विधि ठहरे। 4 वह दीपकोंके स्वच्छ
दीवट पर यहोवा के साम्हने नित्य सजाया करे।। 5 और तू मैदा लेकर बारह
रोटियां पकवाना, प्रत्थेक रोटी में एपा का दो दसवां अंश मैदा हो। 6 तब उनकी दो
पांति करके, एक एक पांति में छ: छ: रोटियां, स्वच्छ मेज पर यहोवा के साम्हने
धरना। 7 और एक एक पांति पर चोखा लोबान रखना, कि वह रोटी पर स्मरण
दिलानेवाला वस्तु और यहोवा के लिथे हव्य हो। 8 प्रति विश्रमदिन को वह उसे
नित्य यहोवा के सम्मुख क्रम से रखा करे, यह सदा की वाचा की रीति
इस्त्राएलियोंकी ओर से हुआ करे। 9 और वह हारून और उसके पुत्रोंकी होंगी, और
वे उसको किसी पवित्र स्यान में खाएं, क्योंकि वह यहोवा के हव्योंमें से सदा की
विधि के अनुसार हारून के लिथे परमपवित्र वस्तु ठहरी है।। 10 उन दिनोंमें
किसी इस्त्राएली स्त्री का बेटा, जिसका पिता मिस्री पुरूष या, इस्त्राएलियोंके बीच
चला गया; और वह इस्त्राएली स्त्री का बेटा और एक इस्त्राएली पुरूष छावनी के
बीच आपस में मारपीट करने लगे, 11 और वह इस्त्राएली स्त्री का बेटा यहोवा के
नाम की निन्दा करके शाप देने लगा। यह सुनकर लोग उसको मूसा के पास ले
गए। उसकी माता का नाम शलोमीत या, जो दान के गोत्र के दिब्री की बेटी यी। 12
उन्होंने उसको हवालात में बन्द किया, जिस से यहोवा की आज्ञा से इस बात पर
विचार किया जाए।। 13 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 14 तुम लोग उस शाप देने
वाले को छावनी से बाहर लिवा ले जाओ; और जितनोंने वह निन्दा सुनी हो वे सब
अपके अपके हाथ उसके सिर पर टेकें, तब सारी मण्डली के लोग उसको
पत्यरवाह करें। 15 और तू इस्त्राएलियोंसे कह, कि कोई क्योंन हो जो अपके
परमेश्वर को शाप दे उसे अपके पाप का भार उठाना पकेगा। 16 यहोवा के नाम

की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय
उसको पत्थरवाह करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा
करें तो वह मार डाला जाए। 17 फिर जो कोई किसी मनुष्य को प्राण से मारे वह
निश्चय मार डाला जाए। 18 और जो कोई किसी घरेलू पशु को प्राण से मारे वह
उसे भर दे, अर्यात् प्राणी की सन्ती प्राणी दे। 19 फिर यदि कोई किसी दूसरे को
चोट पहुंचाए, तो जैसा उस ने किया हो वैसा ही उसके साय भी किया जाए, 20
अर्यात् अंग भंग करने की सन्ती अंग भंग किया जाए, आंख की सन्ती आंख,
दांत की सन्ती दांत, जैसी चोट जिस ने किसी को पहुंचाई हो वैसी ही उसको भी
पहुंचाई जाए। 21 और पशु का मार डालनेवाला उसको भर दे, परन्तु मनुष्य का
मार डालनेवाला मार डाला जाए। 22 तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के
लिथे वैसा ही परदेशी के लिथे भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 23 और मूसा
ने इस्त्राएलियोंको यही समझाया; तब उन्होंने उस शाप देनेवाले को छावनी से
बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह किया। और इस्त्राएलियोंने वैसा ही किया जैसा
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी।।

लैव्यवस्था 25

1 फिर यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि जब
तुम उस देश में प्रवेश करो जो मैं तुम्हें देता हूं, तब भूमि को यहोवा के लिथे
विश्रम मिला करे। 3 छ: वर्ष तो अपना अपना खेत बोया करना, और छहोंवर्ष
अपक्की अपक्की दाख की बारी छांट छांटकर देश की उपज इकट्ठी किया
करना; 4 परन्तु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिथे परमविश्रमकाल मिला करे;

उस में न तो अपना खेत बोना और न अपक्की दाख की बारी छांटना। 5 जो कुछ
काटे हुए खेत में अपके आप से उगे उसे न काटना, और अपक्की बिन छांटी हुई
दाखलता की दाखोंको न तोड़ना; क्योंकि वह भूमि के लिथे परमविश्रम का वर्ष
होगा। 6 और भूमि के विश्रमकाल ही की उपज से तुम को, और तुम्हारे दास-दासी
को, और तुम्हारे साय रहनेवाले मजदूरोंऔर परदेशियोंको भी भोजन मिलेगा; 7
और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु होंउनका भी भोजन भूमि
की सब उपज से होगा।। 8 और सात विश्रमवर्ष, अर्यात् सातगुना सात वर्ष गिन
लेना, सातोंविश्रमवर्षोंका यह समय उनचास वर्ष होगा। 9 तब सातवें महीने के
दसवें दिन को, अर्यात् प्रायश्चित्त के दिन, जय जयकार के महाशब्द का नरसिंगा
अपके सारे देश में सब कहीं फुंकवाना। 10 और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके
मानना, और देश के सारे निवासियोंके लिथे छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष
तुम्हारे यहां जुबली कहलाए; उस में तुम अपक्की अपक्की निज भूमि और अपके
अपके घराने में लौटने पाओगे। 11 तुम्हारे यहां वह पचासवां वर्ष जुबली का वर्ष
कहलाए; उस में तुम न बोना, और जो अपके आप ऊगे उसे भी न काटना, और न
बिन छांटी हुई दाखलता की दाखोंको तोड़ना। 12 क्योंकि वह जो जुबली का वर्ष
होगा; वह तुम्हारे लिथे पवित्र होगा; तुम उसकी उपज खेत ही में से ले लेके
खाना। 13 इस जुबली के वर्ष में तुम अपक्की अपक्की निज भूमि को लौटने
पाओगे। 14 और यदि तुम अपके भाईबन्धु के हाथ कुछ बेचो वा अपके भाईबन्धु
से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना। 15 जुबली के पीछे
जितने वर्ष बीते होंउनकी गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल
लेना, और शेष वर्षोंकी उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे। 16 जितने वर्ष और

रहें उतना ही दाम बढ़ाना, और जितने वर्ष कम रहें उतना ही दाम घटाना, क्योंकि
वर्ष की उपज जितनी होंउतनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा। 17 और तुम अपके अपके
भाईबन्धु पर अन्धेर न करना; अपके परमेश्वर का भय मानना; मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं। 18 इसलिथे तुम मेरी विधियोंको मानना, और मेरे नियमोंपर
समझ बूफकर चलना; क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे। 19
और भूमि अपक्की उपज उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया करोगे, और
उस देश में निडर बसे रहोगे। 20 और यदि तुम कहो, कि सातवें वर्ष में हम क्या
खाएंगे, न तो हम बोएंगे न अपके खेत की उपज इकट्‌ठी करेंगे? 21 तो जानो कि
मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसी आशीष दूंगा, कि भूमि की उपज तीन वर्ष तक काम
आएगी। 22 तुम आठवें वर्ष में बोओगे, और पुरानी उपज में से खाते रहोगे, और
नवें वर्ष की उपज में से खाते रहोगे। 23 भूमि सदा के लिथे तो बेची न जाए,
क्योंकि भूमि मेरी है; और उस में तुम परदेशी और बाहरी होगे। 24 लेकिन तुम
अपके भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ा लेने देना।। 25 यदि तेरा कोई भाईबन्धु
कंगाल होकर अपक्की निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियोंमें से
जो सब से निकट हो वह आकर अपके भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले। 26
और यदि किसी मनुष्य के लिथे कोई छुड़ानेवाला न हो, और उसके पास इतना
धन हो कि आप ही अपके भाग को छुड़ा ले सके, 27 तो वह उसके बिकने के समय
से वर्षोंकी गिनती करके शेष वर्षोंकी उपज का दाम उसको जिस ने उसे मोल
लिया हो फेर दे; तब वह अपक्की निज भूमि का अधिक्कारनी हो जाए। 28 परन्तु
यदि उसके इतनी पूंजी न हो कि उसे फिर अपक्की कर सके, तो उसकी बेची हुई
भूमि जुबली के वर्ष तक मोल लेनेवालोंके हाथ में रहे; और जुबली के वर्ष में छूट

जाए तब वह मनुष्य अपक्की निज भूमि का फिर अधिक्कारनी हो जाए।। 29
फिर यदि कोई मनुष्य शहरपनाह वाले नगर में बसने का घर बेचे, तो वह बेचने
के बाद वर्ष भर के अन्दर उसे छुड़ा सकेगा, अर्यात् पूरे वर्ष भर उस मनुष्य को
छुड़ाने का अधिक्कारने रहेगा। 30 परन्तु यदि वह वर्ष भर में न छुड़ाए, तो वह
घर पर शहरपनाहवाले नगर में हो मोल लेनेवाले का बना रहे, और पीढ़ी-पीढ़ी में
उसी मे वंश का बना रहे; और जुबली के वर्ष में भी न छूटे। 31 परन्तु बिना
शहरपनाह के गांवोंके घर तो देश के खेतोंके समान गिने जाएं; उनका छुड़ाना भी
हो सकेगा, और वे जुबली के वर्ष में छूट जाएं। 32 और लेवियोंके निज भाग के
नगरोंके जो घर होंउनको लेवीय जब चाहें तब छुड़ाएं। 33 और यदि कोई लेवीय
अपना भाग न छुड़ाए, तो वह बेचा हुआ घर जो उसके भाग के नगर में हो जुबली
के वर्ष में छूट जाए; क्योंकि इस्त्राएलियोंके बीच लेवियोंका भाग उनके नगरोंमें वे
घर ही हैं। 34 और उनके नगरोंकी चारोंओर की चराई की भूमि बेची न जाए;
क्योंकि वह उनका सदा का भाग होगा।। 35 फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल
हो जाए, और उसकी दशा तेरे साम्हने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको
संभालना; वह परदेशी वा यात्री की नाई तेरे संग रहे। 36 उस से ब्याज वा बढ़ती न
लेना; अपके परमेश्वर का भय मानना; जिस से तेरा भाईबन्धु तेरे संग जीवन
निर्वाह कर सके। 37 उसको ब्याज पर रूपया न देना, और न उसको भोजनवस्तु
लाभ के लालच से देना। 38 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; मैं तुम्हें कनान देश
देने के लिथे और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस्र देश से
निकाल लाया हूं।। 39 फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे साम्हने कंगाल होकर
अपके आप को तेरे हाथ बेच डाले, तो उस से दास के समान सेवा न करवाना। 40

वह तेरे संग मजदूर वा यात्री की नाई रहे, और जुबली के वर्ष तक तेरे संग रहकर
सेवा करता रहे; 41 तब वह बालबच्चोंसमेत तेरे पास से निकल जाए, और अपके
कुटुम्ब में और अपके पितरोंकी निज भूमि में लौट जाए। 42 क्योंकि वे मेरे ही
दास हैं, जिनको मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूं; इसलिथे वे दास की रीति से न
बेचे जाएं। 43 उस पर कठोरता से अधिक्कारने न करना; अपके परमेश्वर का भय
मानते रहना। 44 तेरे जो दास-दासियां होंवे तुम्हारी चारोंओर की जातियोंमें से हों,
और दास और दासियां उन्हीं में से मोल लेना। 45 और जो यात्री लोग तुम्हारे बीच
में परदेशी होकर रहेंगे, उन में से और उनके घरानोंमें से भी जो तुमहारे आस पास
हों, और जो तुम्हारे देश में उत्पन्न हुए हों, उन में से तुम दास और दासी मोल
लो; और वे तुम्हारा भाग ठहरें। 46 और तुम अपके पुत्रोंको भी जो तुम्हारे बाद
होंगे उनके अधिक्कारनी कर सकोगे, और वे उनका भाग ठहरें; उन में से तुम
सदा अपके लिथे दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्त्राएली होंउन
पर अपना अधिक्कारने कठोरता से न जताना।। 47 फिर यदि तेरे साम्हने कोई
परदेशी वा यात्री धनी हो जाए, और उसके साम्हने तेरा भाई कंगाल होकर अपके
आप को तेरे साम्हने उस परदेशी वा यात्री वा उसके वंश के हाथ बेच डाले, 48 तो
उसके बिक जाने के बाद वह फिर छुड़ाया जा सकता है; उसके भाइयोंमें से कोई
उसको छुड़ा सकता है, 49 वा उसका चाचा, वा चचेरा भाई, तया उसके कुल का
कोई भी निकट कुटुम्बी उसको छुड़ा सकता है; वा यदि वह धनी हो जाए, तो वह
आप ही अपके को छुड़ा सकता है। 50 वह अपके मोल लेनेवाले के साय अपके
बिकने के वर्ष से जुबली के वर्ष तक हिसाब करे, और उसके बिकने का दाम
वर्षोंकी गिनती के अनुसार हो, अर्यात् वह दाम मजदूर के दिवसोंके समान उसके

साय होगा। 51 यदि जुबली के बहुत वर्ष रह जाएं, तो जितने रूपयोंसे वह मोल
लिया गया हो उन में से वह अपके छुड़ाने का दाम उतने वर्षोंके अनुसार फेर दे।
52 और यदि जुबली के वर्ष के योड़े वर्ष रह गए हों, तौभी वह अपके स्वामी के
साय हिसाब करके अपके छुड़ाने का दाम उतने ही वषार्ें के अनुसार फेर दे।
53 वह अपके स्वामी के संग उस मजदूर के सामान रहे जिसकी वार्षिक मजदूरी
ठहराई जाती हो; और उसका स्वामी उस पर तेरे साम्हने कठोरता से
अधिक्कारने न जताने पाए। 54 और यदि वह इन रीतियोंसे छुड़ाया न जाए, तो
वह जुबली के वर्ष में अपके बाल-बच्चोंसमेत छूट जाए। 55 क्योंकि इस्त्राएली मेरे
ही दास हैं; वे मिस्र देश से मेरे ही निकाले हुए दास हैं; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूं।।

लैव्यवस्था 26

1 तुम अपके लिथे मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूतिर् वा लाट अपके
लिथे खड़ी करना, और न अपके देश में दण्डवत् करने के लिथे नक्काशीदार
पत्यर स्यापन करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 2 तुम मेरे
विश्रमदिनोंका पालन करना और मेरे पवित्रस्यान का भय मानना; मैं यहोवा हूं।।
3 यदि तुम मेरी विधियोंपर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन
करो, 4 तो मैं तुम्हारे लिथे समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, तया भूमि अपक्की
उपज उपजाएगी, और मैदान के वृझ अपके अपके फल दिया करेंगे; 5 यहां तक
कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भर
पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपके देश में

निश्चिन्त बसे रहोगे। 6 और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे
और तुम्हारा कोई डरानेवाला न हो; और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने
दूंगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी। 7 और तुम अपके शत्रुओं को मार
भगा दोगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। 8 और तुम में से पांच मनुष्य
सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे
आगे आगे मारे जाएंगे; 9 और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूंगा और तुम को
फलवन्त करूंगा और बढ़ाऊंगा, और तुम्हारे संग अपक्की वाचा को पूर्ण करूंगा।
10 और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नथे के रहते भी पुराने को
निकालोगे। 11 और मैं तुम्हारे बीच अपना निवासस्यान बनाए रखूंगा, और मेरा
जी तुम से घृणा नहीं करेगा। 12 और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूंगा, और
तुम्हारा परमेश्वर बना रहूंगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। 13 मैं तो तुम्हारा
वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिथे निकाल ले आया कि तुम
मिस्रियोंके दास न बने रहो; और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को
सीधा खड़ा करके चलाया है।। 14 यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं
को न मानोगे, 15 और मेरी विधियोंको निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा
मेरे निर्णयोंसे घृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन
मेरी वाचा को तोड़ोगे, 16 तो मैं तुम से यह करूंगा; अर्यात् मैं तुम को बेचैन
करूंगा, और झयरोग और ज्वर से पीड़ित करूंगा, और इनके कारण तुम्हारी
आंखे धुंधली हो जाएंगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीच
बोना व्यर्य होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे; 17 और मैं भी तुम्हारे
विरूद्ध हो जाऊंगा, और तुम अपके शत्रुओं से हार जाओगे; और तुम्हारे बैरी

तुम्हारे ऊपर अधिक्कारने करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तब
भी तुम भागोगे। 18 और यदि तुम इन बातोंके उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं
तुम्हारे पापोंके कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूंगा, 19 और मैं तुम्हारे बल
का घमण्ड तोड़ डालूंगा, और तुम्हारे लिथे आकाश को मानो लोहे का और भूमि
को मानो पीतल की बना दूंगा; 20 और तुम्हारा बल अकारय गंवाया जाएगा,
क्योंकि तुम्हारी भूमि अपक्की उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृझ अपके
फल न देंगे। 21 और यदि तुम मेरे विरूद्ध चलते ही रहो, और मेरा कहना न मानों,
तो मैं तुम्हारे पापोंके अनुसार तुम्हारे ऊपर और सातगुणा संकट डालूंगा। 22 और
मैं तुम्हारे बीच बन पशु भेजूंगा, जो तुम को निर्वंश करेंगे, और तुम्हारे घरेलू
पशुओं को नाशकर डालेंगे, और तुम्हारी गिनती घटाएंगे, जिस से तुम्हारी सड़के
सूनी पड़ जाएंगी। 23 फिर यदि तुम इन बातोंपर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो, और
मेरे विरूद्ध चलते ही रहो, 24 तो मैं भी तुम्हारे विरूद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापोंके
कारण मैं आप ही तुम को सातगुणा मारूंगा। 25 तो मैं तुम पर एक ऐसी तलवार
चलवाऊंगा, जो वाचा तोड़ने का पूरा पूरा पलटा लेगी; और जब तुम अपके
नगरोंमें जा जाकर इकट्ठे होगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊंगा, और तुम
अपके शत्रुओं के वश में सौंप दिए जाओगे। 26 और जब मैं तुम्हारे लिथे अन्न के
आधार को दूर कर डालूंगा, तब दस स्त्रियां तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर
तौल तौलकर बांट देंगी; और तुम खाकर भी तृप्त न होगे।। 27 फिर यदि तुम
इसके उपरान्त भी मेरी न सुनोगे, और मेरे विरूद्ध चलते ही रहोगे, 28 तो मैं
अपके न्याय में तुम्हारे विरूद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापोंके कारण तुम को
सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा। 29 और तुम को अपके बेटोंऔर बेटियोंका मांस

खाना पकेगा। 30 और मैं तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्यानोंको ढा दूंगा, और तुम्हारे
सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ डालूंगा, और तुम्हारी लोयोंको तुम्हारी तोड़ी हुई मूरतोंपर
फूंक दूंगा; और मेरी आत्मा को तुम से घृणा हो जाएगी। 31 और मैं तुम्हारे
नगरोंको उजाड़ दूंगा, और तुम्हारे पवित्र स्यानोंको उजाड़ दूंगा, और तुम्हारा
सुखदायक सुगन्ध ग्रहण न करूंगा। 32 और मैं तुम्हारे देश को सूना कर दूंगा,
और तुम्हारे शत्रु जो उस में रहते हैं वे इन बातोंके कारण चकित होंगे। 33 और मैं
तुम को जाति जाति के बीच तित्तर-बित्तर करूंगा, और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार
खीचें रहूंगा; और तुम्हारा देश सुना हो जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड़ हो
जाएंगे। 34 तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपके शत्रुओं के
देश में रहोगे उतने दिन वह अपके विश्रमकालोंको मानता रहेगा। 35 और जितने
दिन वह सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उसको विश्रम रहेगा, अर्यात् जो विश्रम
उसको तुम्हारे वहां बसे रहने के समय तुम्हारे विश्रमकालोंमें न मिला होगा वह
उसको तब मिलेगा। 36 और तुम में से जो बच रहेंगे और अपके शत्रुओं के देश में
होंगे उनके हृदय में मै कायरता उपजाऊंगा; और वे पत्ते के खड़कने से भी भाग
जाएंगे, और वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे, और किसी के बिना पीछा
किए भी वे गिर गिर पकेंगे। 37 और जब कोई पीछा करनेवाला न हो तब भी
मानोंतलवार के भय से वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएंगे, और तुम को
अपके शत्रुओं के साम्हने ठहरने की कुछ शक्ति न होगी। 38 तब तुम जाति जाति
के बीच पहुंचकर नाश हो जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा
जाएगी। 39 और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपके शत्रुओं के देशोंमें अपके अधर्म
के कारण गल जाएंगे; और अपके पुरखाओं के अधर्म के कामोंके कारण भी वे

उन्हीं की नाईं गल जाएंगे। 40 तब वे अपके और अपके पितरोंके अधर्म को मान
लेंगे, अर्यात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे, कि हम
यहोवा के विरूद्ध चले थे, 41 इसी कारण वह हमारे विरूद्ध होकर हमें शत्रुओं के
देश में ले आया है। यदि उस समय उनका खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे
उस समय अपके अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेगें; 42 तब जो वाचा मैं ने याकूब
के संग बान्धी यी उसको मैं स्मरण करूंगा, और जो वाचा मैं ने इसहाक से और
जो वाचा मैं ने इब्राहीम से बान्धी यी उनको भी स्मरण करूंगा, और इस देश को
भी मैं स्मरण करूंगा। 43 और वह देश उन से रहित होकर सूना पड़ा रहेगा, और
उनके बिना सूना रहकर भी अपके विश्रमकालोंको मानता रहेगा; और वे लोग
अपके अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेगें, इसी कारण से कि उन्होंने मेरी आज्ञाओं
का उलंघन किया या, और उनकी आत्माओं को मेरी विधियोंसे घृणा यी। 44
इतने पर भी जब वे अपके शत्रुओं के देश में होंगे, तब मैं उनको इस प्रकार नहीं
छोड़ूंगा, और न उन से ऐसी घृणा करूंगा कि उनका सर्वनाश कर डालूं और
अपक्की उस वाचा को तोड़ दूं जो मैं ने उन से बान्धी है; क्योंकि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूं; 45 परन्तु मैं उनके भलाई के लिथे उनके पितरोंसे बान्धी हुई
वाचा को स्मरण करूंगा, जिन्हें मै अन्यजातियोंकी आंखोंके साम्हने मिस्र देश से
निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूं; मैं यहोवा हूं।। 46 जो जो विधियां
और नियम और व्यवस्या यहोवा ने अपक्की ओर से इस्त्राएलियोंके लिथे सीनै
पर्वत पर मूसा के द्वारा ठहराई यीं वे थे ही हैं।।

लैव्यवस्था 27

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे यह कह, कि जब कोई विशेष
संकल्प माने, तो संकल्प किए हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के होंगे; 3
इसलिथे यदि वह बीस वर्ष वा उस से अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्या का
पुरूष हो, तो उसके लिथे पवित्रस्यान के शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का
रूपया ठहरे। 4 और यदि वह स्त्री हो, तो तीस शेकेल ठहरे। 5 फिर यदि उसकी
अवस्या पांच वर्ष वा उससे अधिक और बीस वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिथे
तो बीस शेकेल, और लड़की के लिथे दस शेकेल ठहरे। 6 और यदि उसकी अवस्या
एक महीने वा उस से अधिक और पांच वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिथे तो
पांच, और लड़की के लिथे तीन शेकेल ठहरें। 7 फिर यदि उसकी अवस्या साठ वर्ष
की वा उस से अधिक हो, और वह पुरूष हो तो उसके लिथे पंद्रह शेकेल, और स्त्री
हो तो दस शेकेल ठहरे। 8 परन्तु यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का
ठहराया हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के साम्हने खड़ा किया जाए, और
याजक उसकी पूंजी ठहराए, अर्यात् जितना संकल्प करनेवाले से हो सके, याजक
उसी के अनुसार ठहराए।। 9 फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते
है, यदि ऐसोंमें से कोई संकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह
पवित्र ठहरेगा। 10 वह उसे किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे की सन्ती
अच्छा, और न अच्छे की सन्ती बुरा दे; और यदि वह उस पशु की सन्ती दूसरा
पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनोंपवित्र ठहरेंगे। 11 और जिन पशुओं में से
लोग यहोवा के लिथे चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसोंमें से यदि वह हो, तो वह उसको
याजक के साम्हने खड़ा कर दे, 12 तक याजक पशु के गुण अवगुण
दोनोंविचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल

उतना ही ठहरे। 13 और यदि संकल्प करनेवाला उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे,
तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उस में उसका पांचवां भाग और बढ़ाकर दे।। 14
फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिथे पवित्र ठहराकर संकल्प करे, तो याजक
उसके गुण-अवगुण दोनोंविचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक
ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। 15 और यदि घर का पवित्र करनेवाला उसे
छुड़ाना चाहे, तो जितना रूपया याजक ने उसका मोल ठहराया हो उस में वह
पांचवां भाग और बढ़ाकर दे, तब वह घर उसी का रहेगा।। 16 फिर यदि कोई
अपक्की निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिथे पवित्र ठहराना चाहे, तो उसका
मोल इसके अनुसार ठहरे, कि उस में कितना बीज पकेगा; जितना भूमि में होमेर
भर जौ पके उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे। 17 यदि वह अपना खेत जुबली
के वर्ष ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे; 18 और
यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष के बाद पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे
जुबली के वर्ष के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उसके लिथे रूपके का हिसाब
करे, तब जितना हिसाब में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो। 19 और
यदि खेत को पवित्र ठहरानेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया
हो उस में वह पांचवां भाग और बढ़ाकर दे, तब खेत उसी का रहेगा। 20 और यदि
वह खेत को छुड़ाना न चाहे, वा उस ने उसको दूसरे के हाथ बेचा हो, तो खेत आगे
को कभी न छुड़ाया जाए; 21 परन्तु जब वह खेत जुबली के वर्ष में छूटे, तब पूरी
रीति से अर्पण किए हुए खेत की नाई यहोवा के लिथे पवित्र ठहरे, अर्यात् वह
याजक ही की निज भूमि हो जाए। 22 फिर यदि कोई अपना मोल लिया हुआ
खेत, जो उसकी निज भूमि के खेतोंमें का न हो, यहोवा के लिथे पवित्र ठहराए, 23

तो याजक जुबली के वर्ष तक का हिसाब करके उस मनुष्य के लिथे जितना
ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिथे पवित्र जानकर उसी दिन दे दे। 24 और
जुबली के वर्ष में वह खेत उसी के अधिक्कारने में जिस से वह मोल लिया गया हो
फिर आ जाए, अर्यात् जिसकी वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए। 25 और
जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उसका मोल पवित्रस्यान ही के शेकेल के
हिसाब से ठहरे: शेकेल बीस गेरा का ठहरे।। 26 पर घरेलू पशुओं का पहिलौठा, जो
यहोवा का पहिलौठा ठहरा है, उसको तो कोई पवित्र न ठहराए; चाहे वह बछड़ा हो,
चाहे भेड़ वा बकरी का बच्चा, वह यहोवा ही का है। 27 परन्तु यदि वह अशुद्ध पशु
का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला उसको याजक के ठहराए हुए मोल के
अनुसार उसका पांचवां भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है; और यदि वह न छुड़ाया
जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर बेच दिया जाए।। 28 परन्तु अपक्की
सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिथे अर्पण करे, चाहे मनुष्य हो चाहे
पशु, चाहे उसकी निज भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची
जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिथे
परमपवित्र ठहरे। 29 मनुष्योंमें से जो कोई अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न
जाए; निश्चय वह मार डाला जाए।। 30 फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश,
चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृझ का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के
लिथे पवित्र ठहरे। 31 यदि कोई अपके दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पांचवां
भाग बढ़ाकर उसको छुड़ाए। 32 और गाय-बैल और भेड़-बकरियां, निदान जो जो
पशु गिनने के लिथे लाठी के तले निकल जानेवाले हैं उनका दशमांश, अर्यात् दस
दस पीछे एक एक पशु यहोवा के लिथे पवित्र ठहरे। 33 कोई उसके गुण अवगुण

न विचारे, और न उसको बदले; और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह और
उसका बदला दोनोंपवित्र ठहरें; और वह कभी छुड़ाया न जाए।। 34 जो आज्ञाएं
यहोवा ने इस्त्राएलियोंके लिथे सीनै पर्वत पर मूसा को दी यी वे थे ही हैं।।

गिनती 1

1 इस्त्राएलियोंके मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहिले
दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तम्बू में, मूसा से कहा, 2
इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली के कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार, एक एक
पुरूष की गिनती नाम ले लेकर करना; 3 जितने इस्त्राएली बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्या के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभोंको उनके दलोंके
अनुसार तू और हारून गिन ले। 4 और तुम्हारे साय एक एक गोत्र का एक एक
पुरूष भी हो जो अपके पितरोंके घराने का मुख्य पुरूष हो। 5 तुम्हारे उन
सायियोंके नाम थे हैं, अर्यात् रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर; 6
शिमोन के गोत्र में से सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल; 7 यहूदा के गोत्र में से
अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन; 8 इस्साकार के गोत्र में से सूआ का पुत्र नतनेल; 9
जबूलून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब; 10 यूसुफवंशियोंमें से थे हैं, अर्यात्
एप्रैम के गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा, ओर मनश्शे के गोत्र में से
पदासूर का पुत्र गम्लीएल; 11 बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान;
12 दान के गोत्र में से अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएेजेर; 13 आशेर के गोत्र में से
ओक्रान का पुत्र पक्कीएल; 14 गाद के गोत्र में से दूएल का पुत्र एल्यासाप; 15
नसाली के गोत्र में से एनाम का पुत्र अहीरा। 16 मण्डली में से जो पुरूष अपके

अपके पितरोंके गोत्रोंके प्रधान होकर बुलाए गए वे थे ही हैं, और थे इस्राएलियोंके
हजारोंमें मुख्य पुरूष थे। 17 और जिन पुरूषोंके नाम ऊपर लिखे हैं उनको साय
लेकर, 18 मूसा और हारून ने दूसरे महीने के पहिले दिन सारी मण्डली इकट्ठी
की, तब इस्राएलियोंने अपके अपके कुल और अपके अपके पितरोंके घराने के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्यावालोंके नामोंकी गिनती करवा के
अपक्की अपक्की वंशावली लिखवाई; 19 जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को जो
आज्ञा दी यी उसी के अनुसार उस ने सीनै के जंगल में उनकी गणना की।। 20
और इस्राएल के पहिलौठे रूबेन के वंश ने जितने पुरूष अपके कुल और अपके
पितरोंके घराने के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और युद्ध
करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 21 और रूबेन के गोत्र के
गिने हुए पुरूष साढ़े छियालीस हजार थे।। 22 और शिमोन के वंश के लोग जितने
पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्या के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपके अपके नाम से
गिने गए: 23 और शिमोन के गोत्र के गिने हुए पुरूष उनसठ हजार तीन सौ थे।।
24 और गाद के वंश के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे,
वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 25 और गाद के गोत्र के गिने हुए पुरूष
पैंतालीस हजार साढ़े छ: सौ थे।। 26 और यहूदा के वंश के जितने पुरूष अपके
कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 27
और यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरूष चौहत्तर हजार छ: सौ थे।। 28 और

इस्साकार के वंश के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे,
वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 29 और इस्साकार के गोत्र के गिने हुए
पुरूष चौवन हजार चार सौ थे।। 30 और जबूलून वे वंश के जितने पुरूष अपके
कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 31
और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरूष सत्तावन हजार चार सौ थे।। 32 और
यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके
घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध करने के
योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 33 और एप्रैम गोत्र के गिने हुए
पुरूष साढ़े चालीस हजार थे।। 34 और मनश्शे के वंश के जितने पुरूष अपके
कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 35
और मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरूष बत्तीस हजार दो सौ थे।। 36 और
बिन्यामीन के वंश के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे,
वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 37 और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए
पुरूष पैंतीस हजार चार सौ थे।। 38 और दान के वंश के जितने पुरूष अपके
कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे अपके अपके नाम से गिने गए: 39 और
दान के गोत्र के गिने हुए पुरूष बासठ हजार सात सौ थे।। 40 और आशेर के वंश

के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा
उससे अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके
नाम से गिने गए: 41 और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरूष साढ़े एकतालीस
हजार थे।। 42 और नप्ताली के वंश के जितने पुरूष अपके कुलोंऔर अपके
पितरोंके घरानोंके अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के थे और जो युद्ध
करने के योग्य थे, वे सब अपके अपके नाम से गिने गए: 43 और नप्ताली के गोत्र
के गिने हुए पुरूष तिरपन हजार चार सौ थे।। 44 इस प्रकार मूसा और हारून और
इस्त्राएल के बारह प्रधानोंने, जो अपके अपके पितरोंके घराने के प्रधान थे, उन
सभोंको गिन लिया और उनकी गिनती यही यी। 45 सो जितने इस्त्राएली बीस वर्ष
वा उस से अधिक अवस्या के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपके
पितरोंके घरानोंके अनुसार गिने गए, 46 और वे सब गिने हुए पुरूष मिलाकर छ:
लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ थे।। 47 इन में लेवीय अपके पितरोंके गोत्र के
अनुसार नहीं गिने गए। 48 क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा या, 49 कि लेवीय गोत्र
की गिनती इस्त्राएलियोंके संग न करना; 50 परन्तु तू लेवियोंको साझी के तम्बू
पर, और उसके कुल सामान पर, निदान जो कुछ उस से सम्बन्ध रखता है उस
पर अधिक्कारनी नियुक्त करना; और कुल सामान सहित निवास को वे ही उठाया
करें, और वे ही उस में सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आसपास वे ही
अपके डेरे डाला करें। 51 और जब जब निवास का कूच हो तब तब लेवीय उसको
गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब तब लेवीय उसको खड़ा
किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। 52 और
इस्त्राएली अपना अपना डेरा अपक्की अपक्की छावनी में और अपके अपके फण्डे

के पास खड़ा किया करें; 53 पर लेवीय अपके डेरे साझी के तम्बू ही की चारोंओर
खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्त्राएलियोंकी मण्डली पर कोप भड़के; और
लेवीय साझी के तम्बू की रझा किया करें। 54 जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी
यीं इस्त्राएलियोंने उन्हीं के अनुसार किया।।

गिनती 2

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 इस्त्राएली मिलापवाले तम्बू की
चारोंओर और उसके साम्हने अपके अपके फण्डे और अपके अपके पितरोंके
घराने के निशान के समीप अपके डेरे खड़े करें। 3 और जो अपके पूर्व दिशा की
ओर जहां सूर्योदय होता है अपके अपके दलोंके अनुसार डेरे खड़े किया करें वे ही
यहूदा की छावनीवाले फण्डे के लोग होंगे, और उनका प्रधान अम्मीनादाब का
पुत्र नहशोन होगा, 4 और उनके दल के गिने हुए पुरूष चौहत्तर हजार छ: सौ हैं। 5
उनके समीप जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार के गोत्र के हों, और उनका प्रधान
सूआर का पुत्र नतनेल होगा, 6 और उनके दल के गिने हुए पुरूष चौवन हजार
चार सौ हैं। 7 इनके पास जबूलून के गोत्रवाले रहेंगे, और उनका प्रधान हेलोन का
पुत्र एलीआब होगा, 8 और उनके दल के गिने हुए पुरूष सत्तावन हजार चार सौ हैं।
9 इस रीति से यहूदा की छावनी में जितने अपके अपके दलोंके अनुसार गिने गए
वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं। पहिले थे ही कूच किया
करें।। 10 दक्खिन अलंग पर रूबेन की छावनी के फण्डे के लोग अपके अपके
दलोंके अनुसार रहें, और उनका प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर होगा, 11 और
उनके दल के गिने हुए पुरूष साढ़े छियालीस हजार हैं। 12 उनके पास जो डेरे खड़े

किया करें वे शिमोन के गोत्र के होंगे, और उनका प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र
शलूमीएल होगा, 13 और उनके दल के गिने हुए पुरूष उनसठ हजार तीन सौ हैं।
14 फिर गाद के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा, 15
और उनके दल के गिने हुए पुरूष पैंतालीस हजार साढ़े छ: सौ हैं। 16 रूबेन की
छावनी में जितने अपके अपके दलोंके अनुसार गिने गए वे सब मिलकर डेढ़
लाख एक हजार साढ़े चार सौ हैं। दूसरा कूच इनका हो। 17 उनके पीछे और सब
छावनियोंके बीचोंबीच लेवियोंकी छावनी समेत मिलापवाले तम्बू का कूच हुआ
करे; जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपके अपके स्यान पर अपके
अपके फण्डे के पास पास चलें।। 18 पच्छिम अलंग पर एप्रैम की छावनी के फण्डे
के लोग अपके अपके दलोंके अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीहूद का पुत्र
एलीशामा होगा, 19 और उनके दल के गिने हुए पुरूष साढ़े चालीस हजार हैं। 20
उनके समीप मनश्शे के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल
होगा, 21 और उनके दल के गिने हुए पुरूष बत्तीस हजार दो सौ हैं। 22 फिर
बिन्यामीन के गोत्र में रहें, और उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान होगा, 23
और उनके दल के गिने हुए पुरूष पैंतीस हजार चार सौ हैं। 24 एप्रैम की छावनी में
जितने अपके अपके दलोंके अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख आठ
हजार एक सौ पुरूष हैं। तीसरा कूच इनका हो। 25 उत्तर अलंग पर दान की
छावनी के फण्डे के लोग अपके अपके दलोंके अनुसार रहें, और उनका प्रधान
अम्मीशद्दै का पुत्र अहीऐजेर होगा, 26 और उनके दल के गिने हुए पुरूष बासठ
हजार सात सौ हैं। 27 और उनके पास जो डेरे खड़े करें वे आशेर के गोत्र के रहें,
और उनका प्रधान ओक्रान का पुत्र पक्कीएल होगा, 28 और उनके दल के गिने

हुए पुरूष साढ़े इकतालीस हजार हैं। 29 फिर नप्ताली के गोत्र के रहें, और उनका
प्रधान एनान का पुत्र अहीरा होगा, 30 और उनके दल के गिने हुए पुरूष तिरपन
हजार चार सौ हैं। 31 और दान की छावनी में जितने गिने गए वे सब मिलकर डेढ़
लाख सात हजार छः सौ हैं। थे अपके अपके फण्डे के पास पास होकर सब से पीछे
कूच करें। 32 इस्त्राएलियोंमें से जो अपके अपके पितरोंके घराने के अनुसार गिने
गए वे थे ही हैं; और सब छावनियोंके जितने पुरूष अपके अपके दलोंके अनुसार
गिने गए वे सब मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ थे। 33 परन्तु यहोवा
ने मूसा को जो आज्ञा दी भी उसके अनुसार लेवीय तो इस्त्राएलियोंमें गिने नहीं
गए। 34 और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी इस्त्राएली उन आज्ञाओं के
अनुसार अपके अपके कुल और अपके अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार, अपके
अपके फण्डे के पास डेरे खड़े करते और कूच भी करते थे।।

गिनती 3

1 जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से बातें की उस समय हारून और
मूसा की यह वंशावली यी। 2 हारून के पुत्रोंके नाम थे हैं: नादाब जो उसका जेठा
या, और अबीहू, एलीआजार और ईतामार; 3 हारून के पुत्र, जो अभिषिक्त याजक
थे, और उनका संस्कार याजक का काम करने के लिथे हुआ या उनके नाम थे ही
हैं। 4 नादाब और अबीहू जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के सम्मुख ऊपक्की
आग ले गए उसी समय यहोवा के साम्हने मर गए थे; और वे पुत्रहीन भी थे।
एलीआजर और ईतामार अपके पिता हारून के साम्हने याजक का काम करते
रहे।। 5 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 6 लेवी गोत्रवालोंको समीप ले आकर हारून

याजक के साम्हने खड़ा कर, कि वे उसकी सेवा टहल करें। 7 और जो कुछ उसकी
ओर से और सारी मण्डली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उसकी रझा वे मिलापवाले
तम्बू के सामहने करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें; 8 वे मिलापवाले तम्बू के
कुल सामान की और इस्त्राएलियोंकी सौंपी हुई वस्तुओं की भी रझा करें, इस
प्रकार वे तम्बू की सेवा करें। 9 और तू लेवियोंको हारून और उसके पुत्रोंको सौंप
दे; और वे इस्त्राएलियोंकी ओर से हारून को सम्पूर्ण रीति से अर्पण किए हुए हों।
10 और हारून और उसके पुत्रोंको याजक के पद पर नियुक्त कर, और वे अपके
याजकपद की रझा किया करें; और यदि अन्य मनुष्य समीप आए, तो वह मार
डाला जाए।। 11 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 12 सुन इस्त्राएली स्त्रियोंके सब
पहिलौठोंकी सन्ती मैं इस्त्राएलियोंमें से लेवियोंको ले लेता हूं; सो लेवीय मेरे ही
हों। 13 सब पहिलौठे मेरे हैं; क्योंकि जिस दिन मैं ने मिस्त्र देश में के सब
पहिलौठोंको मारा, उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु इस्त्राएलियोंके सब
पहिलौठोंको अपके लिथे पवित्र ठहराया; इसलिथे वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूं।।
14 फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, 15 लेवियोंमें से जितने पुरूष
एक महीने वा उस से अधिक अवस्या के होंउनको उनके पितरोंके घरानोंऔर
उनके कुलोंके अनुसार गिन ले। 16 यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे के
अनुसार उनको गिन लिया। 17 लेवी के पुत्रोंके नाम थे हैं, अर्यात् गेर्शोन, कहात,
और मरारी। 18 और गेर्शोन के पुत्र जिन से उसके कुल चले उनके नाम थे हैं,
अर्यात् लिब्नी और शिमी। 19 कहात के पुत्र जिन से उसके कुल चले उनके नाम
थे हैं, अर्यात् अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल। 20 और मरारी के पुत्र जिन
से उसके कुल चले उनके नाम थे हैं, अर्यात् महली और मूशी। थे लेवियोंके कुल

अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार हैं।। 21 गेर्शोन से लिब्नियोंऔर शिमियोंके कुल
चले; गेर्शोनवंशियोंके कुल थे ही हैं। 22 इन में से जितने पुरूषोंकी अवस्या एक
महीने की वा उस से अधिक यी, उन सभोंकी गिनती साढ़े सात हजार यी। 23
गेर्शोनवाले कुल निवास के पीछे पच्छिम की ओर अपके डेरे डाला करें; 24 और
गेर्शोनियोंके मूलपुरूष से घराने का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो। 25 और
मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुएं गेर्शोनवंशियोंको सौंपी जाएं वे थे हों, अर्यात्
निवास और तम्बू, और उसका ओहार, और मिलापवाले तम्बू से द्वार का पर्दा, 26
और जो आंगन निवास और वेदी की चारोंओर है उसके पर्दे, और उसके द्वार का
पर्दा, और सब डोरियां जो उस में काम आती हैं।। 27 फिर कहात से अम्रामियों,
यिसहारियों, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियोंके कुल चले; कहातियोंके कुल थे ही हैं।
28 उन में से जितने पुरूषोंकी अवस्या एक महीने की वा उस से अधिक यी उनकी
गिनती आठ हजार छ: सौ यी। वे पवित्र स्यान की रझा के उत्तरदायी थे। 29
कहातियोंके कुल निवास की उस अलंग पर अपके डेरे डाला करें जो दक्खिन की
ओर है; 30 और कहातवाले कुलोंसे मूलपुरूष के घराने का प्रधान उज्जीएल का
पुत्र एलीसापान हो। 31 और जो वस्तुएं उनको सौंपी जाएं वे सन्दूक, मेज़, दीवट,
वेदियां, और पवित्रस्यान का वह सामान जिस से सेवा टहल होती है, और पर्दा;
निदान पवित्रस्यान में काम में आनेवाला सारा सामान हो। 32 और लेवियोंके
प्रधानोंका प्रधान हारून याजक का पुत्र एलीआजार हो, और जो लोग पवित्रस्यान
की सौंपी हुई वस्तुओं की रझा करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे।। 33 फिर मरारी
से महलियोंऔर मूशियोंके कुल चले; मरारी के कुल थे ही हैं। 34 इन में से जितने
पुरूषोंकी अवस्या एक महीने की वा उस से अधिक यी उन सभोंकी गिनती छ:

हजार दो सौ यी। 35 और मरारी के कुलोंके मूलपुरूष के घराने का प्रधान अबीहैल
का पुत्र सूरीएल हो; थे लोग निवास के उत्तर की ओर अपके डेरे खड़े करें। 36 और
जो वस्तुएं मरारीवंशियोंको सौंपी जाएं कि वे उनकी रझा करें, वे निवास के तख्ते,
बेंड़े, खम्भे, कुसिर्यां, और सारा सामान; निदान जो कुछ उसके बरतने में काम
आए; 37 और चारोंओर के आंगन के खम्भे, और उनकी कुसिर्यां, खूंटे और
डोरियां हों। 38 और जो मिलापवाले तम्बू के साम्हने, अर्यात् निवास के साम्हने,
पूरब की ओर जहां से सूर्योदय होता है, अपके डेरे डाला करें, वे मूसा और हारून
और उसके पुत्रोंके डेरे हों, और पवित्रस्यान की रखवाली इस्त्राएलियोंके बदले वे ही
किया करें, और दूसरा जो कोई उसके समीप आए वह मार डाला जाए। 39 यहोवा
की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की वा उस से अधिक अवस्यावाले जितने
लेवीय पुरूषोंको मूसा और हारून ने उनके कुलोंके अनुसार गिन लिया, वे सब के
सब बाईस हजार थे।। 40 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएलियोंके जितने
पहिलौठे पुरूषोंकी अवस्या एक महीने की वा उस से अधिक है, उन सभोंको नाम
ले लेकर गिन ले। 41 और मेरे लिथे इस्त्राएलियोंके सब पहिलौठोंकी सन्ती
लेवियोंको, और इस्त्राएलियोंके पशुओं के सब पहिलौठोंकी सन्ती लेवियोंके
पशुओं को ले; मैं यहोवा हूं। 42 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने
इस्त्राएलियोंके सब पहिलौठोंको गिन लिया। 43 और सब पहिलौठे पुरूष जिनकी
अवस्या एक महीने की वा उस से अधिक यी, उनके नामोंकी गिनती बाईस हजार
दो सौ तिहत्तर यी।। 44 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 45 इस्त्राएलियोंके सब
पहिलौठोंकी सन्ती लेवियोंको, और उनके पशुओं की सन्ती लेवियोंके पशुओं को
ले; और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूं। 46 और इस्त्राएलियोंके पहिलौठोंमे से जो

दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियोंसे अधिक हैं, उनके छुड़ाने के लिथे, 47 पुरूष
पीछे पांच शेकेल ले; वे पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्यात् बीस गेरा
का शेकेल हो। 48 और जो रूपया उन अधिक पहिलौठोंकी छुडौती का होगा उसे
हारून और उसके पुत्रोंको दे देना। 49 और जो इस्त्राएली पहिलौठे लेवियोंके द्वारा
छुड़ाए हुओं से अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रूपया लिया। 50 और
एक हजार तीन सौ पैंसठ शैकेल रूपया पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से वसूल
हुआ। 51 और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाए हुओं का रूपया हारून
और उसके पुत्रोंको दे दिया।।

गिनती 4

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 लेवियोंमें से कहातियोंकी, उनके
कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार, गिनती करो, 3 अर्यात् तीस वर्ष से लेकर
पचास वर्ष तक की अवस्यावालोंकी सेना में, जितने मिलापवाले तम्बू में
कामकाज करने को भरती हैं। 4 और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के
विषय कहातियोंका यह काम होगा, 5 अर्यात् जब जब छावनी का कूच हो तब तब
हारून और उसके पुत्र भीतर आकर, बीचवाले पर्दे को उतार के उस से साझीपत्र के
सन्दूक को ढंापप दें; 6 तब वे उस पर सूइसोंकी खालोंका ओहार डालें, और उसके
ऊपर सम्पूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें, और सन्दूक में डण्डोंको लगाएं। 7 फिर
भेंटवाली रोटी की मेज़ पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धूपदानों, करवों,
और उंडेलने के कटोरोंको रखें; और नित्य की रोटी भी उस पर हो; 8 तब वे उन
पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसको सुइसोंकी खालोंके ओहार से ढ़ापे, और

मेज़ के डण्डोंको लगा दें। 9 फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गलतराशों,
और गुलदानोंसमेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और उसके सब तेल के पात्रोंको
जिन से उसकी सेवा टहल होती है ढांपे; 10 तब वे सारे सामान समेत दीवट को
सूइसोंकी खालोंके ओहार के भीतर रखकर डण्डे पर धर दें। 11 फिर वे सोने की
वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उसको सूइसोंकी खालोंके ओहार के भीतर
रखकर डण्डे पर धर दें। 12 तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिस से
पवित्रस्यान में सेवा टहल होली है, नीले कपके के भीतर रखकर सूइसोंकी
खालोंके ओहार से ढांपे, और डण्डे पर धर दें। 13 फिर वे वेदी पर से सब राख
उठाकर वेदी पर बैंजनी रंग का कपड़ा बिछाएं; 14 तब जिस सामान से वेदी पर
की सेवा टहल होती है वह सब, अर्यात् उसके करछे, कांटे, फावडिय़ां, और कटोरे
आदि, वेदी का सारा सामान उस पर रखें; और उसके ऊपर सूइसोंकी खालोंका
ओहार बिछाकर वेदी में डण्डोंको लगाएं। 15 और जब हारून और उसके पुत्र
छावनी के कूच के समय पवित्रस्यान और उसके सारे सामान को ढंाप चुकें, तब
उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिथे आएं, पर किसी पवित्र वस्तु को न छुएं,
कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं। कहातियोंके उठाने के लिथे मिलापवाले तम्बू की थे
ही वस्तुएं हैं। 16 और जो वस्तुएं हारून याजक के पुत्र एलीजार को रझा के लिथे
सौंपी जाएं वे थे हैं, अर्यात् उजियाला देने के लिथे तेल, और सुगन्धित धूप, और
नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल, और सारे निवास, और उस में की सब
वस्तुएं, और पवित्रस्यान और उसके कुल समान।। 17 फिर यहोवा ने मूसा और
हारून से कहा, 18 कहातियोंके कुलोंके गोत्रियोंको लेवियोंमें से नाश न होने देना;
19 उसके साय ऐसा करो, कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएं तब न

मरें परन्तु जीवित रहें; अर्यात् हारून और उसके पुत्र भीतर आकर एक एक के
लिथे उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें, 20 और वे पवित्र वस्तुओं के
देखने को झण भर के लिथे भी भीतर आने न पाएं, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं।।
21 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 22 गेर्शोनियोंकी भी गिनती उनके पितरोंके
घरानोंऔर कुलोंके अनुसार कर; 23 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की
अवस्यावाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को सेना में भरती होंउन
सभोंको गिन ले। 24 सेवा करने और भार उठाने में गेर्शोनियोंके कुलवालोंकी यह
सेवकाई हो; 25 अर्यात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके
ओहार, और इसके ऊपरवाले सूइसोंकी खालोंके ओहार, और मिलापवाले तम्बू के
द्वार के पर्दे, 26 और निवास, और वेदी की चारोंओर के आंगन के पर्दों, और
आंगन के द्वार के पर्दे, और उनकी डोरियों, और उन में बरतने के सारे सामान, इन
सभोंको वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी
उनकी सेवकाई में आए। 27 और गेर्शोनियोंके वंश की सारी सेवकाई हारून और
उसके पुत्रोंके कहने से हुआ करे, अर्यात् जो कुछ उनको उठाना, और जो जो
सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौपा करो। 28
मिलापवाले तम्बू में गेर्शोनियोंके कुलोंकी यही सेवकाई ठहरे; और उन पर हारून
याजक का पुत्र ईतामार अधिक्कारने रखे।। 29 फिर मरारियोंको भी तू उनके
कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार गिन लें; 30 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष
तक की अवस्यावाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को सेना में भरती
हों, उन सभोंको गिन ले। 31 और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने
की सेवकाई उनको मिले वे थे हों, अर्यात् निवास के तख्ते, बेड़े, खम्भे, और

कुर्सियां, 32 और चारोंओर आंगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियां, खूंटे, डोरियां,
और भांति भांति के बरतने का सारा सामान; और जो जो सामान ढ़ोने के लिथे
उनको सौंपा जाए उस में से एक एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन दो। 33
मरारियोंके कुलोंकी सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी
होगी वह यही है; वह हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिक्कारने में रहे।। 34
तब मूसा और हारून और मण्डली के प्रधानोंने कहातियोंके वंश को, उनके
कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार, 35 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की
अवस्या के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे,
उन सभोंको गिन लिया; 36 और जो अपके अपके कुल के अनुसार गिने गए वे दो
हजार साढ़े सात सौ थे। 37 कहातियोंके कुलोंमें से जितने मिलापवाले तम्बू में
सेवा करने वाले गिने गए वे इतने ही थे; जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी यी
उसी के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।। 38 और गेर्शोनियोंमें से
जो अपके कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार गिने गए, 39 अर्यात् तीस वर्ष से
लेकर पचास वर्ष तक की अवस्या के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को
सेना में भरती हुए थे, 40 उनकी गिनती उनके कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके
अनुसार दो हजार छ: सौ तीस यी। 41 गेर्शोनियोंके कुलोंमें से जितने मिलापवाले
तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार
मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।। 42 फिर मरारियोंके कुलोंमें से जो अपके
कुलोंऔर पितरोंके घरानोंके अनुसार गिने गए, 43 अर्यात् तीस वर्ष से लेकर
पचास वर्ष तक की अवस्या के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को सेना
में भरती हुए थे, 44 उनकी गिनती उनके कुलोंके अनुसार तीन हजार दो सौ यी।

45 मरारियोंके कुलोंमें से जिनको मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा के
अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे।। 46 लेवियोंमें से
जिनको मूसा और हारून और इस्त्राएली प्रधानोंने उनके कुलोंऔर पितरोंके
घरानोंके अनुसार गिन लिया, 47 अर्यात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की
अवस्यावाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने का बोफ उठाने का
काम करने को हाजिर होने वाले थे, 48 उन सभोंकी गिनती आठ हजार पांच सौ
अस्सी यी। 49 थे अपक्की अपक्की सेवा और बोफ ढ़ोने के अनुसार यहोवा के
कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी उसी के अनुसार वे गिने गए।।

गिनती 5

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंको आज्ञा दे, कि वे सब कोढ़ियोंको,
और जितनोंके प्रमेह हो, और जितने लोय के कारण अशुद्ध हों, उन सभोंको
छावनी से निकाल दें; 3 ऐसोंको चाहे पुरूष होंचाहे स्त्री छावनी से निकालकर बाहर
कर दें; कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी छावनी, जिसके बीच मैं निवास करता हूं,
उनके कारण अशुद्ध हो जाए। 4 और इस्त्राएलियोंने वैसा ही किया, अर्यात् ऐसे
लोगोंको छावनी से निकालकर बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से कहा या
इस्त्राएलियोंने वैसा ही किया।। 5 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 6 इस्त्राएलियोंसे
कह, कि जब कोई पुरूष वा स्त्री ऐसा कोई पाप करके जो लोग किया करते हैं
यहोवा को विश्वासघात करे, और वह प्राणी दोषी हो, 7 तब वह अपना किया हुआ
पाप मान ले; और पूरे मूल में पांचवां अंश बढ़ाकर अपके दोष के बदले में उसी को
दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो। 8 परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो

जिसे दोष का बदला भर दिया जाए, तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर
दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस प्रायश्चित्तवाले मेढ़े से अधिक हो जिस
से उसके लिथे प्रायश्चित्त किया जाए। 9 और जितनी पवित्र की हुई वस्तुएं
इस्त्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के पास लाएं, वे उसी की हों; 10 सब
मनुष्योंकी पवित्र की हुई वस्तुएं उसी की ठहरें; कोई जो कुछ याजक को दे वह
उसका ठहरे।। 11 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 12 इस्त्राएलियोंसे कह, कि यदि
किसी मनुष्य की स्त्री कुचाल चलकर उसका विश्वासघात करे, 13 और कोई पुरूष
उसके साय कुकर्म करे, परन्तु यह बात उसके पति से छिपी हो और खुली न हो,
और वह अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विरूद्ध कोई साझी हो, और न कुकर्म
करते पकड़ी गई हो; 14 और उसके पति के मन में जलन उत्पन्न हो, अर्यात् वह
अपके स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; वा उसके मन में जलन उत्पन्न
हो, अर्यात् वह अपक्की स्त्री पर जलने लगे परन्तु वह अशुद्ध न हुई हो; 15 तो वह
पुरूष अपक्की स्त्री को याजक के पास ले जाए, और उसके लिथे एपा का दसवां
अंश जव का मैदा चढ़ावा करके ले आए; परन्तु उस पर तेल न डाले, न लोबान
रखे, क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेवाला, अर्यात् अधर्म का स्मरण
करानेवाला अन्नबलि होगा। 16 तब याजक उस स्त्री को समीप ले जाकर यहोवा
के साम्हने खड़ी करे; 17 और याजक मिट्टी के पात्र में पवित्र जल ले, और
निवासस्यान की भूमि पर की धूलि में से कुछ लेकर उस जल में डाल दे। 18 तब
याजक उस स्त्री को यहोवा के साम्हने खड़ी करके उसके सिर के बाल बिखराए,
और स्मरण दिलानेवाले अन्नबलि को जो जलनवाला है उसके हाथोंपर धर दे।
और अपके हाथ में याजक कड़ुवा जल लिथे रहे जो शाप लगाने का कारण होगा।

19 तब याजक स्त्री को शपय धरवाकर कहे, कि यदि किसी पुरूष ने तुझ से कुकर्म
न किया हो, और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो, तो तू
इस कड़ुवे जल के गुण से जो शाप का कारण होता है बची रहे। 20 पर यदि तू
अपके पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो, और तेरे पति को छोड़
किसी दूसरे पुरूष ने तुझ से प्रसंग किया हो, 21 (और याजक उसे शाप देनेवाली
शपय धराकर कहे,) यहोवा तेरी जांघ सड़ाए और तेरा पेट फुलाए, और लोग तेरा
नाम लेकर शाप और धिक्कार दिया करें; 22 अर्यात् वह जल जो शाप का कारण
होता है तेरी अंतड़ियोंमें जाकर तेरे पेट को फुलाए, और तेरी जांघ को सड़ा दे। तब
वह स्त्री कहे, आमीन, आमीन। 23 तब याजक शाप के थे शब्द पुस्तक में
लिखकर उस कड़ुवे जल से मिटाके, 24 उस स्त्री को वह कड़ुवा जल पिलाए जो
शाप का कारण होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कड़ुवा हो जाएगा। 25 और याजक
स्त्री के हाथ में से जलनवाले अन्नबलि को लेकर यहोवा के आगे हिलाकर वेदी के
समीप पहुंचाए; 26 और याजक उस अन्नबलि में से उसका स्मरण दिलानेवाला
भाग, अर्यात् मुट्ठी भर लेकर वेदी पर जलाए, और उसके बाद स्त्री को वह जल
पिलाए। 27 और जब वह उसे वह जल पिला चुके, तब यदि वह अशुद्ध हुई हो और
अपके पति का विश्वासघात किया हो, तो वह जल जो शाप का कारण होता है उस
स्त्री के पेट में जाकर कड़ुवा हो जाएगा, और उसका पेट फूलेगा, और उसकी जांघ
सड़ जाएगी, और उस स्त्री का नाम उसके लोगोंके बीच स्रापित होगा। 28 पर यदि
वह स्त्री अशुद्ध न हुई हो और शुद्ध ही हो, तो वह निर्दोष ठहरेगी और गभिर्णी हो
सकेगी। 29 जलन की व्यवस्या यही है, चाहे कोई स्त्री अपके पति को छोड़ दूसरे
की ओर फिरके अशुद्ध हो, 30 चाहे पुरूष के मन में जलन उत्पन्न हो और वह

अपक्की स्त्री पर जलने लगे; तो वह उसको यहोवा के सम्मुख खड़ी कर दे, और
याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे। 31 तब पुरूष अधर्म से बचा रहेगा,
और स्त्री अपके अधर्म का बोफ आप उठाएगी।।

गिनती 6

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि जब कोई पुरूष वा स्त्री
नाज़ीर की मन्नत, अर्यात् अपके को यहोवा के लिथे न्यारा करने की विशेष
मन्नत माने, 3 तब वह दाखमधु आदि मदिरा से न्यारा रहे; वह न दाखमधु का,
न और मदिरा का सिरका पीए, और न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन दाख न
खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी। 4 जितने दिन यह न्यारा रहे उतने दिन तक वह
बीज से ले छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उस में से कुछ न
खाए। 5 फिर जितने दिन उस ने न्यारे रहने की मन्नत मानी हो उतने दिन तक
वह अपके सिर पर छुरा न फिराए; और जब तक वे दिन पूरे न होंजिन में वह
यहोवा के लिथे न्यारा रहे तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और अपके सिर के बालोंको
बढ़ाए रहे। 6 जितने दिन वह यहोवा के लिथे न्यारा रहे उतने दिन तक किसी
लोय के पास न जाए। 7 चाहे उसका पिता, वा माता, वा भाई, वा बहिन भी मरे,
तौभी वह उनके कारण अशुद्ध न हो; क्योंकि अपके परमेश्वर के लिथे न्यारा रहने
का चिन्ह उसके सिर पर होगा। 8 अपके न्यारे रहने के सारे दिनोंमें वह यहोवा के
लिथे पवित्र ठहरा रहे। 9 और यदि कोई उसके पास अचानक मर जाए, और
उसके न्यारे रहने का जो चिन्ह उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए, तो वह
शुद्ध होने के दिन, अर्यात् सातवें दिन अपके सिर मुंड़ाए। 10 और आठवें दिन वह

दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास ले
जाए, 11 और याजक एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके उसके लिथे
प्रायश्चित्त करे, क्योंकि वह लोय के कारण पापी ठहरा है। और याजक उसी दिन
उसका सिर फिर पवित्र करे, 12 और वह अपके न्यारे रहने के दिनोंको फिर
यहोवा के लिथे न्यारे ठहराए, और एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके
ले आए; और जो दिन इस से पहिले बीत गए होंवे व्यर्थ गिने जाए, क्योंकि उसके
न्यारे रहने का चिन्ह अशुद्ध हो गया।। 13 फिर जब नाज़ीर के न्यारे रहने के दिन
पूरे हों, उस समय के लिथे उसकी यह व्यवस्या है; अर्यात् वह मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर पहुंचाया जाए, 14 और वह यहोवा के लिथे होमबलि करके एक वर्ष का
एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके, और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की
बच्ची, और मेलबलि के लिथे एक निर्दोष मेढ़ा, 15 और अखमीरी रोटियोंकी एक
टोकरी, अर्यात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके, और तेल से चुपक्की हुई अखमीरी
पपडिय़ां, और उन बलियोंके अन्नबलि और अर्घ; थे सब चढ़ावे समीप ले जाए।
16 इन सब को याजक यहोवा के साम्हने पहुंचाकर उसके पापबलि और होमबलि
को चढ़ाए, 17 और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिथे
मेलबलि करके, और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी चढ़ाए। 18 तब
नाज़ीर अपके न्यारे रहने के चिन्हवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
मुण्डाकर अपके बालोंको उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी। 19 फिर
जब नाज़ीर अपके न्यारे रहने के चिन्हवाले सिर को मुण्डा चुके तब याजक मेढ़े
को पकाया हुआ कन्धा, और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी
पपक्की लेकर नाज़ीर के हाथोंपर धर दे, 20 और याजक इनको हिलाने की भेंट

करके यहोवा के साम्हने हिलाए; हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जांघ समेत थे
भी याजक के लिथे पवित्र ठहरें; इसके बाद वह नाज़ीर दाखमधु पी सकेगा। 21
नाज़ीर की मन्नत की, और जो चढ़ावा उसको अपके न्यारे होने के कारण यहोवा
के लिथे चढ़ाना होगा उसकी भी यही व्यवस्या है। जो चढ़ावा वह अपक्की पूंजी के
अनुसार चढ़ा सके, उस से अधिक जैसी मन्नत उस ने मानी हो, वैसे ही अपके
न्यारे रहने की व्यवस्या के अनुसार उसे करना होगा।। 22 फिर यहोवा ने मूसा से
कहा, 23 हारून और उसके पुत्रोंसे कह, कि तुम इस्त्राएलियोंको इन वचनोंसे
आशीर्वाद दिया करना कि, 24 यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रझा करे: 25
यहोवा तुझ पर अपके मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे: 26
यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे। 27 इस रीति से मेरे नाम को
इस्त्राएलियोंपर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूंगा।।

गिनती 7

1 फिर जब मूसा ने निवास को खड़ा किया, और सारे सामान समेत उसका
अभिषेक करके उसको पवित्र किया, और सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक
करके उसे पवित्र किया, 2 तब इस्त्राएल के प्रधान जो अपके अपके पितरोंके
घरानोंके मुख्य पुरूष, और गोत्रोंके भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर
नियुक्त थे, 3 वे यहोवा के साम्हने भेंट ले आए, और उनकी भेंट छ: छाई हुई
गाडिय़ां और बारह बैल थे, अर्यात् दो दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी, और
एक एक प्रधान की ओर से एक एक बैल; इन्हें वे निवास के साम्हने यहोवा के
समीप ले गए। 4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 5 उन वस्तुओं को तू उन से ले ले,

कि मिलापवाले तम्बू के बरतन में काम आएं, सो तू उन्हें लेवियोंके एक एक कुल
की विशेष सेवकाई के अनुसार उनको बांट दे। 6 सो मूसा ने वे सब गाडिय़ां और
बैल लेकर लेवियोंको दे दिथे। 7 गेर्शोनियोंको उनकी सेवकाई के अनुसार उस ने
दो गाडिय़ां और चार बैल दिए; 8 और मरारियोंको उनकी सेवकाई के अनुसार उस
ने चार गाडिय़ां और आठ बैल दिए; थे सब हारून याजक के पुत्र ईतामार के
अधिक्कारने में किए गए। 9 और कहातियोंको उस ने कुछ न दिया, क्योंकि
उनके लिथे पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई यी कि वह उसे अपके कन्धोंपर उठा
लिया करें।। 10 फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उसके संस्कार की
भेंट वेदी के आगे समीप ले जाने लगे। 11 तब यहोवा ने मूसा से कहा, वेदी के
संस्कार के लिथे प्रधान लोग अपक्की अपक्की भेंट अपके अपके नियत दिन पर
चढ़ाएं।। 12 सो जो पुरूष पहिले दिन अपक्की भेंट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले
अम्मीनादाब का पुत्र महशोन या; 13 उसकी भेंट यह यी, अर्यात् पवित्रस्यानवाले
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल
चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे
हुए थे; 14 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 15 होमबलि के
लिथे एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 16 पापबलि के
लिथे एक बकरा; 17 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच
बकरे, और एक एक वर्ष के पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे।
अम्मीनादाब के पुत्र महशोन की यही भेंट यी।। 18 और दूसरे दिन इस्साकार का
प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल भेंट ले आया; 19 वह यह यी, अर्यात्
पवित्रस्यानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात,

और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए
और मैदे से भरे हुए थे; 20 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान; 21 होमबलि के लिथे एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी
का बच्चा; 22 पापबलि के लिथे एक बकरा; 23 और मेलबलि के लिथे दो बैल,
और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। सूआर के
पुत्र नतनेल की यहीं भेंट यी।। 24 और तीसरे दिन जबूलूनियोंका प्रधान हेलोन
का पुत्र एलीआब यह भेंट ले आया, 25 अर्यात् पवित्रस्यानवाले शेकेल के हिसाब
से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक
कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 26 फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 27 होमबलि के लिथे एक
बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 28 पापबलि के लिथे एक
बकरा; 29 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और
एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। हेलोन के पुत्र एलीआब की यहीं भेंट यी।। 30
और चौथे दिन रूबेनियोंका प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेंट ले आया, 31
अर्यात् पवित्रस्यानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 32 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान; 33 होमबलि के लिथे एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक
भेड़ी का बच्चा; 34 पापबलि के लिथे एक बकरा; 35 और मेलबलि के लिथे दो
बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे।
शदेऊर के पुत्र एलीसूर की यहीं भेंट यी।। 36 और पांचवें दिन शिमोनियोंका

प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल यह भेंट ले आया, 37 अर्यात् पवित्रस्यानवाले
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल
चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे
हुए थे; 38 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 39 होमबलि के
लिथे एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 40
पापबलि के लिथे एक बकरा; 41 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े,
और पंाच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। सूरीशद्दै के पुत्र
शलूमीएल की यही भेंट यी।। 42 और छठवें दिन गादियोंका प्रधान दूएल का पुत्र
एल्यासाप यह भेंट ले आया, 43 अर्यात् पवित्रस्यानवाले शेकेल के हिसाब से एक
सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा थे
दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 44 फिर धूप से
भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 45 होमबलि के लिथे एक बछड़ा, और
एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 46 पापबलि के लिथे एक बकरा;
47 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक
वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। दूएल के पुत्र एल्यासाप की यहीं भेंट यी।। 48 और
सातवें दिन एप्रैमियोंका प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेंट ले आया, 49
अर्यात् पवित्रस्यानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक
कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 50 फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 51 होमबलि के लिथे एक
बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 52 पापबलि के लिथे एक
बकरा; 53 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और

एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा की यहीं भेंट यी।।
54 और आठवें दिन मनश्शेइयोंका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेंट ले
आया, 55 अर्यात् पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से एक सो तीस शेकेल चांदी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल
से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 56 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
एक धूपदान; 57 होमबलि के लिथे एक बछ्ड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का
एक भेड़ी का बच्चा; 58 पापबलि के लिथे एक बकरा; 59 और मेलबलि के लिथे
दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेडी के बच्चे।
पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यहीं भेंट यी।। 60 और नवें दिन बिन्यामीनियोंका
प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेंट ले आया, 61 अर्यात् पवित्रस्यान के
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल
चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे
हुए थे; 62 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 63 होमबलि के
लिथे एक बछ्ड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 64
पापबलि के लिथे एक बकरा; 65 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े,
और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। गिदोनी के पुत्र अबीदान
की यही भेंट यी।। 66 और दसवें दिन दानियोंका प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र
अहीएजेर यह भेंट ले आया, 67 अर्यात् पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से एक
सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, थे
दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 68 फिर धूप से
भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 69 होमबलि के लिथे बछ्ड़ा, और एक

मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 70 पापबलि के लिथे एक बकरा; 71
और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष
के पांच भेड़ी के बच्चे। अम्मीशद्दै के पुत्र अहीएजेर की यही भेंट यी।। 72 और
ग्यारहवें दिन आशेरियोंका प्रधान ओक्रान का पुत्र पक्कीएल यह भेंट ले आया।
73 अर्यात् पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 74 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का
धूपदान; 75 होमबलि के लिथे एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक
भेड़ी का बच्चा; 76 पापबलि के लिथे एक बकरा; 77 और मेलबलि के लिथे दो
बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे।
ओक्रान के पुत्र पक्कीएल की यहीं भेंट यी।। 78 और बारहवें दिन नप्तालियोंका
प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेंट ले आया, 79 अर्यात् पवित्रस्यान के शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का
एक कटोरा, थे दोनोंअन्नबलि के लिथे तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; 80
फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; 81 होमबलि के लिथे एक
बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; 82 पापबलि के लिथे
एक बकरा; 83 और मेलबलि के लिथे दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे,
और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा की यही भेंट यी।।
84 वेदी के अभिषेक के समय इस्त्राएल के प्रधानोंकी ओर से उसके संस्कार की
भेंट यही हुई, अर्यात् चांदी के बारह परात, चांदी के बारह कटोरे, और सोने के
बारह धूपदान। 85 एक एक चांदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक एक

चांदी का कटोरा सत्तर शेकेल का या; और पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से थे
सब चांदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के थे। 86 फिर धूप से भरे हुए सोने के
बारह धूपदान जो पवित्रस्यान के शेकेल के हिसाब से दस दस शेकेल के थे, वे सब
धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे। 87 फिर होमबलि के लिथे सब मिलाकर
बारह बछड़े, बारह मेढ़े, और एक एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपके अपके
अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे; 88 और मेलबलि के
लिथे सब मिला कर चौबीस बैल, और साठ मेढ़े, और साठ बकरे, और एक एक
वर्ष के साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेंट
यही हुई। 89 और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू में गया,
तब उस ने प्रायश्चित्त के ढकने पर से, जो साझीपत्र के सन्दूक के ऊपर या,
दोनोंकरूबोंके मध्य में से उसकी आवाज सुनी जो उस से बातें कर रहा या; और
उस ने (यहोवा) उस से बातें की।।

गिनती 8

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 हारून को समझाकर यह कह, कि जब जब तू
दीपकोंको बारे तब तब सातोंदीपक का प्रकाश दीवट के साम्हने हो। 3 निदान
हारून ने वैसा ही किया, अर्यात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी उसी के
अनुसार उस ने दीपकोंको बारा, कि वे दीवट के साम्हने उजियाला दे। 4 और
दीवट की बनावट यह यी, अर्यात् यह पाए से लेकर फूलोंतक गढ़े हुए सोने का
बनाया गया या; जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखलाया या उसी के अनुसार उस
ने दीवट को बनाया।। 5 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 6 इस्त्राएलियोंके मध्य में से

लेवियोंको अलग लेकर शुद्ध कर। 7 उन्हें शुद्ध करने के लिथे तू ऐसा कर, कि
पावन करने वाला जल उन पर छिड़क दे, फिर वे सर्वांग मुण्डन कराएं, और वस्त्र
धोएं, और वे अपके को स्वचछ करें। 8 तब वे तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि
समेत एक बछड़ा ले लें, और तू पापबलि के लिथे एक दूसरा बछड़ा लेना। 9 और
तू लेवियोंको मिलापवाले तम्बू के साम्हने समीप पहुंचाना, और इस्त्राएलियोंकी
सारी मण्डली को इकट्ठा करना। 10 तब तू लेवियोंको यहोवा के आगे समीप ले
आना, और इस्त्राएली अपके अपके हाथ उन पर रखें, 11 तब हारून लेवियोंको
यहोवा के साम्हने इस्त्राएलियोंकी ओर से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे, कि वे
यहोवा की सेवा करनेवाले ठहरें। 12 और लेवीय अपके अपके हाथ उन बछड़ोंके
सिरोंपर रखें; तब तू लेवियोंके लिथे प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और
दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिथे चढ़ाना। 13 और लेवियोंको हारून और
उसके पुत्रोंके सम्मुख खड़ा करना, और उनको हिलाने की भेंट के लिथे यहोवा को
अपर्ण करना। 14 और उन्हें इस्त्राएलियोंमें से अलग करना, सो वे मेरे ही ठहरेंगे।
15 और जब तू लेवियोंको शुद्ध करके हिलाई हुई भेंट के लिथे अर्पण कर चुके,
उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी सेवा टहल करने के लिथे अन्दर आया
करें। 16 क्योंकि वे इस्त्राएलियोंमे से मुझे पूरी रीति से अर्पण किए हुए हैं; मै ने
उनको सब इस्त्राएलियोंमें से एक एक स्त्री के पहिलौठे की सन्ती अपना कर लिया
है। 17 इस्त्राएलियोंके पहिलौठे, चाहे मनुष्य के होंचाहे पशु के, सब मेरे हैं; क्योंकि
मैं ने उन्हें उस समय अपके लिथे पवित्र ठहराया जब मैं ने मिस्र देश के सब
पहिलौठोंको मार डाला। 18 और मैं ने इस्त्राएलियोंके सब पहिलौठोंके बदले
लेवियोंको लिया है। 19 उन्हे लेकर मै ने हारून और उसके पुत्रोंको इस्त्राएलियोंमें

से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू में इस्त्राएलियोंके निमित्त
सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करें, कहीं ऐसा न हो कि जब इस्त्राएली पवित्रस्यान
के समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति आ पके। 20 लेवियोंके विषय यहोवा
की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून और इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली ने उनके
साय ठीक वैसा ही किया। 21 लेवियोंने तो अपके को पाप से पावन किया, और
अपके वोंको धो डाला; और हारून ने उन्हें यहोवा के साम्हने हिलाई हुई भेंट के
निमित्त अर्पण किया, और उन्हें शुद्ध करने को उनके लिथे प्रायश्चित्त भी किया। 22
और उसके बाद लेवीय हारून और उसके पुत्रोंके साम्हने मिलापवाले तम्बू में
अपक्की अपक्की सेवकाई करने को गए; और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को
लेवियोंके विषय में दी यी उसी के अनुसार वे उन से व्यवहार करने लगे।। 23 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 24 जो लेवियोंको करना है वह यह है, कि पच्चक्कीस वर्ष
की अवस्या से लेकर उस से अधिक आयु में वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी काम
करने के लिथे भीतर उपस्यित हुआ करें; 25 और जब पचास वर्ष के होंतो फिर
उस सेवा के लिथे न आए और न काम करें; 26 परन्तु वे अपके भाई बन्धुओं के
साय मिलापवाले तम्बू के पास रझा का काम किया करें, और किसी प्रकार की
सेवकाई न करें। लेवियोंको जो जो काम सौंपे जाएं उनके विषय तू उन से ऐसा ही
करना।।

गिनती 9

1 इस्त्राएलियोंके मिस्र देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहिले महीने में यहोवा ने
सीनै के जंगल में मूसा से कहा, 2 इस्त्राएली फसह नाम पर्ब्ब को उसके नियत

समय पर माना करें। 3 अर्यात् इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय
तुम लोग उसे सब विधियोंऔर नियमोंके अनुसार मानना। 4 तब मूसा ने
इस्त्राएलियोंसे फसह मानने के लिथे कह दिया। 5 और उन्होंने पहले महीने के
चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के जंगल में फसह को माना; और जो जो
आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी यीं उन्हीं के अनुसार इस्त्राएलियोंने किया। 6 परन्तु
कितने लोग किसी मनुष्य की लोय के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह
को न मान सके; वे उसी दिन मूसा और हारून के समीप जाकर मूसा से कहने
लगे, 7 हम लोग एक मनुष्य की लोय के कारण अशुद्ध हैं; परन्तु हम क्योंरूके रहें,
और इस्त्राएलियोंके संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्योंन चढ़ाएं? 8 मूसा
ने उन से कहा, ठहरे रहो, मै सुन लूं कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता
है। 9 यहोवा ने मूसा से कहा, 10 इस्त्राएलियोंसे कह, कि चाहे तुम लोग चाहे
तुम्हारे वंश में से कोई भी किसी लोय के कारण अशुद्ध हो, वा दूर की यात्रा पर हो,
तौभी वह यहोवा के लिथे फसह को माने। 11 वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन
को गोधूलि के समय मानें; और फसह के बलिपशु के मांस को अखमीरी रोटी और
कड़ुए सागपात के साय खाएं। 12 और उस में से कुछ भी बिहान तक न रख छोड़े,
और न उसकी कोई हड्डी तोड़े; वे उस पर्ब्ब को फसह की सारी विधियोंके अनुसार
मानें। 13 परन्तु जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्ब्ब को
न माने, वह प्राणी अपके लोगोंमें से नाश किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का
चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपके पाप का बोफ उठाना पकेगा।
14 और यदि कोई परदेशी तुम्हारे साय रहकर चाहे कि यहोवा के लिथे फसह
माने, तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार उसको माने; देशी और परदेशी

दोनोंके लिथे तुम्हारी एक ही विधि हो।। 15 जिस दिन निवास जो साझी का तम्बू
भी कहलाता है खड़ा किया गया, उस दिन बादल उस पर छा गया; और सन्ध्या
को वह निवास पर आग सा दिखाई दिया और भोर तक दिखाई देता रहा। 16 और
नित्य ऐसा ही हुआ करता या; अर्यात् दिन को बादल छाया रहता, और रात को
आग दिखाई देती यी। 17 और जब जब वह बादल तम्बू पर से उठ जाता तब
इस्त्राएली प्रस्यान करते थे; और जिस स्यान पर बादल ठहर जाता वहीं इस्त्राएली
अपके डेरे खड़े करते थे। 18 यहोवा की आज्ञा से इस्त्राएली कूच करते थे, और
यहोवा ही की आज्ञा से वे डेरे खड़े भी करते थे; और जितने दिन तक वह बादल
निवास पर ठहरा रहता उतने दिन तक वे डेरे डाले पके रहते थे। 19 और जब जब
बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता तब इस्त्राएली यहोवा की आज्ञा मानते,
और प्रस्यान नहीं करते थे। 20 और कभी कभी वह बादल योड़े ही दिन तक
निवास पर रहता, और तब भी वे यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पके रहते थे और
फिर यहोवा की आज्ञा ही से प्रस्यान करते थे। 21 और कभी कभी बादल केवल
सन्ध्या से भोर तक रहता; और जब वह भोर को उठ जाता या तब वे प्रस्यान
करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे
प्रस्यान करते थे। 22 वह बादल चाहे दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर, जब
तक निवास पर ठहरा रहता तब तक इस्त्राएली अपके डेरोंमें रहते और प्रस्यान
नहीं करते थे; परन्तु जब वह उठ जाता तब वे प्रस्यान करते थे। 23 यहोवा की
आज्ञा से वे अपके डेरें खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्यान करते थे;
जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता या उसको वे माना करते थे।।

गिनती 10

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 चांदी की दो तुरहियां गढ़के बनाई जाएं; तू उनको
मण्डली के बुलाने, और छावनियोंके प्रस्यान करने में काम में लाना। 3 और जब
वे दोनोंफं◌ूकी जाएं, तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर तेरे पास
इकट्ठी हो जाए। 4 और यदि एक ही तुरही फूंकी जाए, तो प्रधान लोग जो
इस्त्राएल के हजारोंके मुख्य पुरूष हैं तेरे पास इकट्ठे हो जाएं। 5 जब तुम लोग
सांस बान्धकर फूंको, तो पूरब दिशा की छावनियोंका प्रस्यान हो। 6 और जब तुम
दूसरी बेर सांस बान्धकर फूंको, तब दक्खिन दिशा की छावनियोंका प्रस्यान हो।
उनके प्रस्यान करने के लिथे वे सांस बान्धकर फूंकें। 7 और जब लोगोंको इकट्ठा
करके सभा करनी हो तब भी फूंकना परन्तु सांस बान्धकर नहीं। 8 और हारून के
पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियोंको फूंका करें। यह बात तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के
लिथे सर्वदा की विधि रहे। 9 और जब तुम अपके देश में किसी सतानेवाले बैरी से
लड़ने को निकलो, तब तुरहियोंको सांस बान्धकर फूंकना, तब तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और तुम अपके शत्रुओं से बचाए जाओगे। 10
और अपके आनन्द के दिन में, और अपके नियत पर्ब्बोंमें, और महीनोंके आदि
में, अपके होमबलियोंऔर मेलबलियोंके साय उन तुरहियोंको फूंकना; इस से
तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।। 11
और दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साझी के निवास पर से
उठ गया, 12 तब इस्त्राएली सीनै के जंगल में से निकलकर प्रस्यान करके निकले;
और बादल पारान नाम जंगल में ठहर गया। 13 उनका प्रस्यान यहोवा की उस
आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी यी आरम्भ हुआ। 14 और सब से पहले
तो यहूदियोंकी छावनी के फंडे का प्रस्यान हुआ, और वे दल बान्धकर चले; और

उन का सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन या। 15 और इस्साकारियोंके गोत्र
का सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल या। 16 और जबूलूनियोंके गोत्र का सेनापति
हेलोन का पुत्र एलीआब या। 17 तब निवास उतारा गया, और गेर्शोनियोंऔर
मरारियोंने जो निवास को उठाते थे प्रस्यान किया। 18 फिर रूबेन की छावनी फंडे
का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति शदेऊर का पुत्र
एलीशूर या। 19 और शिमोनियोंके गोत्र का सेनापति सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल
या। 20 और गादियोंके गोत्र का सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप या। 21 तब
कहातियोंने पवित्र वस्तुओं को उठाए हुए प्रस्यान किया, और उनके पहुंचने तक
गेर्शोनियोंऔर मरारियोंने निवास को खड़ा कर दिया। 22 फिर एप्रैमियोंकी
छावनी के फंडे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति
अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा या। 23 और मनश्शेइयोंके गोत्र को सेनापति पदासूर
का पुत्र गम्लीएल या। 24 और बिन्यामीनियोंके गोत्र का सेनापति गिदोनी का
पुत्र अबीदान या। 25 फिर दानियोंकी छावनी जो सब छावनियोंके पीछे यी, उसके
फंडे का प्रस्यान हुआ, और वे भी दल बना कर चले; और उनका सेनापति
अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर या। 26 और आशेरियोंके गोत्र का सेनापति ओक्रान
का पुत्र पक्कीएल या। 27 और नप्तालियोंके गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र
अहीरा या। 28 इस्त्राएली इसी प्रकार अपके अपके दलोंके अनुसार प्रस्यान करते,
और आगे बढ़ा करते थे। 29 और मूसा ने अपके ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र
होबाब से कहा, हम लोग उस स्यान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने
कहा है, कि मैं उसे तुम को दूंगा; सो तू भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई
करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इस्त्राएल के विषय में भला ही कहा है। 30 होबाब ने उसे

उत्तर दिया, कि मैं नहीं जाऊंगा; मैं अपके देश और कुटुम्बियोंमें लौट जाऊंगा। 31
फिर मूसा ने कहा, हम को न छोड़, क्योंकि जंगल में कहां कहां डेरा खड़ा करना
चाहिथे, यह तुझे ही मालूम है, तू हमारे लिथे आंखोंका काम देना। 32 और यदि तू
हमारे संग चले, तो निश्चय जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के अनुसार हम
भी तुझ से वैसा ही करेंगे।। 33 फिर इस्त्राएलियोंने यहोवा के पर्वत से प्रस्यान
करके तीन दिन की यात्रा की; और उन तीनोंदिनोंके मार्ग में यहोवा की वाचा का
सन्दूक उनके लिथे विश्रम का स्यान ढूंढ़ता हुआ उनके आगे आगे चलता रहा।
34 और जब वे छावनी के स्यान से प्रस्यान करते थे तब दिन भर यहोवा का
बादल उनके ऊपर छाया रहता या। 35 और जब जब सन्दूक का प्रस्यान होता या
तब तब मूसा यह कहा करता या, कि हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तित्तर बित्तर हो
जाएं, और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग जाएं। 36 और जब जब वह ठहर जाता या
तब तब मूसा कहा करता या, कि हे यहोवा, हजारोंफार इस्त्राएलियोंमें लौटकर आ
जा।।

गिनती 11

1 फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; निदान यहोवा ने
सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य जल उठी,
और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी। 2 तब मूसा के पास आकर
चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्यना की, तब वह आग बुफ गई, 3 और उस
स्यान का नाम तबेरा पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उन में जल उठी यी।। 4 फिर
जो मिली-जुली भीड़ उनके साय यी वह कामुकता करने लगी; और इस्त्राएली भी

फिर रोने और कहने लगे, कि हमें मांस खाने को कौन देगा। 5 हमें वे मछलियां
स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और
गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी; 6 परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहां
पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता। 7 मन्ना तो धनिथे के
समान या, और उसका रंग रूप मोती का सा या। 8 लोग इधर उधर जाकर उसे
बटोरते, और चक्की में पीसते वा ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और
उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पुए का सा या। 9 और
रात को छावनी में ओस पड़ती यी तब उसके साय मन्ना भी गिरता या। 10 और
मूसा ने सब घरानोंके आदमियोंको अपके अपके डेरे के द्वार पर रोते सुना; और
यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी बुरा मालूम हुआ। 11 तब मूसा
ने यहोवा से कहा, तू अपके दास से यह बुरा व्यवहार क्योंकरता है? और क्या
कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तू ने इन सब लोगोंका भार
मुझ पर डाला है? 12 क्या थे सब लोग मेरे ही कोख में पके थे? क्या मैं ही ने
उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझ से कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को
अपक्की गोद में उठाए उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगोंको अपक्की गोद में
उठाकर उस देश में ले जाऊं, जिसके देने की शपय तू ने उनके पूर्वजोंसे खाई है?
13 मुझे इतना मांस कहां से मिले कि इन सब लोगोंको दूं? थे तो यह कह कहकर
मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमे मांस खाने को दे। 14 मैं अकेला इन सब लोगोंका
भार नहीं सम्भाल सकता, कयोंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है। 15 और जो तुझे
मेरे साय यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे
प्राण एकदम ले ले, जिस से मैं अपक्की दुर्दशा न देखने पाऊं।। 16 यहोवा ने मूसा

से कहा, इस्त्राएली पुरनियोंमें से सत्तर ऐसे पुरूष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू
जानता है कि वे प्रजा के पुरनिथे और उनके सरदार है कि वे प्रजा के पुरनिथे और
उनके सरदार हैं; और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साय यहां खड़े
हों। 17 तब मैं उतरकर तुझ से वहां बातें करूंगा; और जो आत्मा तुझ में है उस में
से कुछ लेकर उन में समवाऊंगा; और वे इन लोगोंका भार तेरे संग उठाए रहेंगे,
और तुझे उसको अकेले उठाना न पकेगा। 18 और लोगोंसे कह, कल के लिथे
अपके को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के
सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही
में भले थे। सो यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना। 19 फिर तुम
एक दिन, वा दो, वा पांच, वा दस, वा बीस दिन ही नहीं, 20 परन्तु महीने भर उसे
खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नयनोंसे निकलने न लगे और तुम को उस से
घृणा न हो जाए, कयोंकि तुम लोगोंने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ
जाना है, और उसके साम्हने यह कहकर रोए हो, कि हम मिस्र से क्योंनिकल
आए? 21 फिर मूसा ने कहा, जिन लोगोंके बीच मैं हूं उन में से छः लाख तो प्यादे
ही हैं; और तू ने कहा है, कि मैं उन्हें इतना मांस दूंगा, कि वे महीने भर उसे खाते
ही रहेंगे। 22 क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिथे मारे जाए, कि उनको
मांस मिले? वा क्या समुद्र की सब मछलियां उनके लिथे इकट्ठी की जाएं, कि
उनको मांस मिले? 23 यहोवा ने मूसा से कहा, क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया
है? अब तू देखेगा, कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि
नहीं। 24 तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगोंको यहोवा की बातें कह सुनाईं;
और उनके पुरनियोंमें से सत्तर पुरूष इकट्ठे करके तम्बू के चारोंओर खड़े किए।

25 तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उस ने मूसा से बातें की, और जो आत्मा
उस में यी उस में से लेकर उन सत्तर पुरनियोंमें समवा दिया; और जब वह आत्मा
उन में आई तब वे नबूवत करने लगे। परन्तु फिर और कभी न की। 26 परन्तु दो
मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिस में से एक का नाम एलदाद और दूसरे का
मेदाद या, उन में भी आत्मा आई; थे भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिथे
गथे थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे। 27
तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को बतलाया, कि एलदाद और मेदाद छावनी
में नबूवत कर रहे हैं। 28 तब नून का पुत्र यहोशू, जो मूसा का टहलुआ और उसके
चुने हुए वीरोंमें से या, उस ने मूसा से कहा, हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे। 29
मूसा ने उन से कहा, क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी
प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभोंमें समवा देता! 30
तब फिर मूसा इस्त्राएल के पुरनियोंसमेत छावनी में चला गया। 31 तब यहोवा की
ओर से एक बड़ी आंधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके
चारोंओर इतनी ले आईं, कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ
के लगभग ऊंचे तक छा गए। 32 और लोगोंने उठकर उस दिन भर और रात भर,
और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरोंको बटोरते रहे; जिस ने कम से कम बटोरा उस
ने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारोंओर फैला दिया। 33 मांस
उनके मुंह ही में या, और वे उसे खाने न पाए थे, कि यहोवा का कोप उन पर भड़क
उठा, और उस ने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। 34 और उस स्यान का नाम
किब्रोयत्तावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगोंने कामुकता की यी उनको वहां मिट्टी दी
गई। 35 फिर इस्त्राएली किब्रोयत्तावा से प्रस्यान करके हसेरोत में पहुंचे, और वहीं

रहे।।

गिनती 12

1 मूसा ने तो एक कूशी स्त्री के साय ब्याह कर लिया या। सो मरियम और हारून
उसकी उस ब्याहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे; 2 उन्होंने कहा,
क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साय बातें की हैं? क्या उस ने हम से भी बातें नहीं
कीं? उनकी यह बात यहोवा ने सुनी। 3 मूसा तो पृय्वी भर के रहने वाले मनुष्योंसे
बहुत अधिक नम्र स्वभाव का या। 4 सो यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और
मरियम से कहा, तुम तीनोंमिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ। तब वे
तीनोंनिकल आए। 5 तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर
खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया; सो वे दोनोंउसके पास निकल आए। 6
तब यहोवा ने कहा, मेरी बातें सुनो: यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मैं
यहोवा दर्शन के द्वारा अपके आप को प्रगट करूंगा, वा स्वप्न में उस से बातें
करूंगा। 7 परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घरानोंमे विश्वास
योग्य है। 8 उस से मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आम्हने साम्हने और प्रत्यझ
होकर बातें करता हूं; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। सो तुम मेरे
दास मूसा की निन्दा करते हुए क्योंनहीं डरे? 9 तब यहोवा का कोप उन पर
भड़का, और वह चला गया; 10 तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और
मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मरियम की ओर दृष्टि
की, और देखा, कि वह कोढ़िन हो गई है। 11 तब हारून मूसा से कहने लगा, हे मेरे
प्रभु, हम दोनोंने जो मूर्खता की वरन पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगने दे।

12 और मरियम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपक्की मां के
पेट से निकलते ही अधगली हो। 13 सो मूसा ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी,
हे ईश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर। 14 यहोवा ने मूसा से कहा, यदि उसका
पिता उसके मुंह पर यूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती?
सो वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने
पाए। 15 सो मरियम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक
मरियम फिर आने न पाई तब तक लोगोंने प्रस्यान न किया। 16 उसके बाद
उन्होंने हसेरोत से प्रस्यान करके पारान नाम जंगल में अपके डेरे खड़े किए।।

गिनती 13

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 कनान देश जिसे मैं इस्त्राएलियोंको देता हूं
उसका भेद लेने के लिथे पुरूषोंको भेज; वे उनके पितरोंके प्रति गोत्र का एक
प्रधान पुरूष हों। 3 यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरूषोंको पारान जंगल
से भेज दिया, जो सब के सब इस्त्राएलियोंके प्रधान थे। 4 उनके नाम थे हैं, अर्यात्
रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू; 5 शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र
शापात; 6 यहूदा के गोत्र में से यपुन्ने का पुत्र कालेब; 7 इस्साकार के गोत्र में से
योसेप का पुत्र यिगाल; 8 एप्रैम के गोत्र में से नून का पुत्र होशे; 9 बिन्यामीन के
गोत्र में से रापू का पुत्र पलती; 10 जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल; 11
यूसुफ वंशियोंमें, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी; 12 दान के गोत्र में से
गमल्ली का पुत्र अम्मीएल; 13 आशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर; 14
नप्ताली के गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहूबी; 15 गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र

गूएल। 16 जिन पुरूषोंको मूसा ने देश का भेद लेने के लिथे भेजा या उनके नाम थे
ही हैं। और नून के पुत्र होशे का नाम उस ने यहोशू रखा। 17 उन को कनान देश के
भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, इधर से, अर्यात् दझिण देश होकर जाओ,
18 और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उस में बसे हुए
लोगोंको भी देखो कि वे बलवान् हैं वा निर्बल, योड़े हैं वा बहुत, 19 और जिस देश
में वे बसे हुए हैं सो कैसा है, अच्छा वा बुरा, और वे कैसी कैसी बस्तियोंमें बसे हुए
हैं, और तम्बुओं में रहते हैं वा गढ़ वा किलोंमें रहते हैं, 20 और वह देश कैसा है,
उपजाऊ है वा बंजर है, और उस में वृझ हैं वा नहीं। और तुम हियाव बान्धे चलो,
और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना। वह समय पहली पक्की दाखोंका
या। 21 सो वे चल दिए, और सीन नाम जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग
में है, सारे देश को देखभालकर उसका भेद लिया। 22 सो वे दझिण देश होकर
चले, और हेब्रोन तक गए; वहां अहीमन, शेशै, और तल्मै नाम अनाकवंशी रहते
थे। हेब्रोन तो मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहिले बसाया गया या। 23 तब वे
एशकोल नाम नाले तक गए, और वहां से एक डाली दाखोंके गुच्छे समेत तोड़ ली,
और दो मनुष्य उस एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे
अनारोंऔर अंजीरोंमें से भी कुछ कुछ ले आए। 24 इस्त्राएली वहां से जो दाखोंका
गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्यान का नाम एशकोल नाला रखा गया।
25 चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए। 26 और पारान
जंगल के कादेश नाम स्यान में मूसा और हारून और इस्त्राएलियोंकी सारी
मण्डली के पास पहुंचे; और उनको और सारी मण्डली को संदेशा दिया, और उस
देश के फल उनको दिखाए। 27 उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, कि

जिस देश में तू ने हम को भेजा या उस में हम गए; उस में सचमुच दूध और मधु
की धाराएं बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है। 28 परन्तु उस देश के
निवासी बलवान् हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम
ने वहां अनाकवंशियोंको भी देखा। 29 दक्खिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं;
और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे
किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं। 30 पर कालेब ने मूसा के
साम्हने प्रजा के लोगोंको चुप कराने की मनसा से कहा, हम अभी चढ़के उस देश
को अपना कर लें; क्योंकि नि:सन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है। 31 पर जो
पुरूष उसके संग गए थे उन्होंने कहा, उन लोगोंपर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है;
क्योंकि वे हम से बलवान् हैं। 32 और उन्होंने इस्त्राएलियोंके साम्हने उस देश की
जिसका भेद उन्होंने लिया या यह कहकर निन्दा भी की, कि वह देश जिसका भेद
लेने को हम गथे थे ऐसा है, जो अपके निवासिक्कों निगल जाता है; और जितने
पुरूष हम ने उस में देखे वे सब के सब बड़े डील डौल के हैं। 33 फिर हम ने वहां
नपीलोंको, अर्यात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियोंको देखा; और हम अपक्की
दृष्टि में तो उनके साम्हने टिड्डे के सामान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी
दृष्टि में मालूम पड़ते थे।।

गिनती 14

1 तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे। 2 और सब
इस्त्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उस ने कहने
लगी, कि भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! वा इस जंगल ही में मर जाते! 3

और यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्योंतलवार से मरवाना चाहता है?
हमारी स्त्रियां और बालबच्चे तो लूट में चलें जाएंगे; क्या हमारे लिथे अच्छा नहीं
कि हम मिस्र देश को लौट जाएं? 4 फिर वे आपस में कहने लगे, आओ, हम किसी
को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें। 5 तब मूसा और हारून
इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली के साम्हने मुंह के बल गिरे। 6 और नून का पुत्र
यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश के भेद लेनेवालोंमें से थे, अपके अपके
वस्त्र फाड़कर, 7 इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली से कहने लगे, कि जिस देश का भेद
लेने को हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। 8 यदि यहोवा
हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती
हैं, पहुंचाकर उसे हमे दे देगा। 9 केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरूद्ध बलवा
न करो; और न तो उस देश के लोगोंसे डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया
उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो। 10 तब सारी
मण्डली चिल्ला उठी, कि इनको पत्यरवाह करो। तब यहोवा का तेज सब
इस्त्राएलियोंपर प्रकाशमान हुआ।। 11 तब यहोवा ने मूसा से कहा, वे लोग कब
तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक
मुझ पर विश्वास न करेंगे? 12 मैं उन्हें मरी से मारूंगा, और उनके निज भाग से
उन्हें निकाल दूंगा, और तुझ से एक जाति उपजाऊंगा जो उन से बड़ी और
बलवन्त होगी। 13 मूसा ने यहोवा से कहा, तब तो मिस्री जिनके मध्य में से तू
अपक्की सामर्य्य दिखाकर उन लोगोंको निकाल ले आया है यह सुनेंगे, 14 और
इस देश के निवासिक्कों कहेंगे। उन्होंने तो यह सुना है, कि तू जो यहोवा है इन
लोगोंके मध्य में रहता है; और प्रत्यझ दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके

ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के
खम्भे में होकर इनके आगे आगे चला करता है। 15 इसलिथे यदि तू इन लोगोंको
एक ही बार में मार डाले, तो जिन जातियोंने तेरी कीत्तिर् सुनी है वे कहेंगी, 16 कि
यहोवा उन लोगोंको उस देश में जिसे उस ने उन्हें देने की शपय खाई यी पहुंचा न
सका, इस कारण उस ने उन्हें जंगल में घात कर डाला है। 17 सो अब प्रभु की
सामर्य्थ की महिमा तेरे इस कहने के अनुसार हो, 18 कि यहोवा कोप करने में
धीरजवन्त और अति करूणामय है, और अधर्म और अपराध का झमा करनेवाला
है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजोंके अधर्म
का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतोंको देता है। 19 अब इन लोगोंके
अधर्म को अपक्की बड़ी करूणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहां तक
झमा करता रहा है वैसे ही अब भी झमा कर दे। 20 यहोवा ने कहा, तेरी बिनती के
अनुसार मैं झमा करता हूं; 21 परन्तु मेरे जीवन की शपय सचमुच सारी पृय्वी
यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी; 22 उन सब लोगोंने जिन्होंने मेरी
महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मोंको देखने
पर भी दस बार मेरी पक्कीझा की, और मेरी बातें नहीं मानी, 23 इसलिथे जिस
देश के विषय मैं ने उनके पूर्वजोंसे शपय खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे;
अर्यात् जितनोंने मेरा अपमान किया है उन में से कोई भी उसे देखने न पाएगा।
24 परन्तु इस कारण से कि मेरे दास कालिब के साय और ही आत्मा है, और उस
ने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिस में वह हो आया
है पहुंचाऊंगा, और उसका वंश उस देश का अधिक्कारनी होगा। 25 अमालेकी
और कनानी लोग तराई में रहते हैं, सो कल तुम घूमकर प्रस्यान करो, और लाल

समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ।। 26 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,
27 यह बुरी मण्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक सहता रहूं?
इस्त्राएली जो मुझ पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना मैं ने तो सुना है।
28 सो उन से कह, कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की शपय जो बातें
तुम ने मेरे सुनते कही हैं, नि:सन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साय व्यवहार
करूंगा। 29 तुम्हारी लोथें इसी जंगल में पक्की रहेंगी; और तुम सब में से बीस
वर्ष की वा उस से अधिक अवस्या के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते
थे, 30 उस में से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी
उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैं ने शपय खाई है कि तुम को उस में
बसाऊंगा। 31 परन्तु तुम्हारे बालबच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि थे लूट
में चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुंचा दूंगा; और वे उस देश को जान लेंगे
जिस को तुम ने तुच्छ जाना है। 32 परन्तु तुम लोगोंकी लोथें इसी जंगल में
पक्की रहेंगी। 33 और जब तक तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तक तक,
अर्यात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बालबच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल
भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। 34 जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे,
अर्यात् चालीस दिन उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे उस वर्ष, अर्यात् चालीस
वर्ष तक तुम अपके अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा
विरोध क्या है। 35 मैं यहोवा यह कह चुका हूं, कि इस बुरी मण्डली के लोग जो
मेरे विरूद्ध इकट्ठे हुए हैं उसी जंगल में मर मिटेंगे; और नि:सन्देह ऐसा ही करूंगा
भी। 36 तब जिन पुरूषोंको मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिथे भेजा या, और
उन्होंने लौटकर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिथे

उभारा या, 37 उस देश की वे नामधराई करनेवाले पुरूष यहोवा के मारने से उसके
साम्हने मर गथे। 38 परन्तु देश के भेद लेनेवाले पुरूषोंमें से नून का पुत्र यहोशू
और यपुन्ने का पुत्र कालिब दोनोंजीवित रहे। 39 तब मूसा ने थे बातें सब
इस्त्राएलियोंको कह सुनाई और वे बहुत विलाप करने लगे। 40 और वे बिहान को
सवेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम ने पाप किया
है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्यान को जाएंगे जिसके विषय यहोवा ने वचन
दिया या। 41 तब मूसा ने कहा, तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्योंकरते हो?
यह सुफल न होगा। 42 यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ो, नहीं तो शत्रुओं
से हार जाओगे। 43 वहां तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, सो तुम
तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिथे वह
तुम्हारे संग नहीं रहेगा। 44 परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए,
परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। 45 अब
अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन पर चढ़ आए, और होर्मा
तक उनको मारते चले आए।।

गिनती 15

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे कह, कि जब तुम अपके निवास
के देश में पहुंचों, जो मैं तुम्हे देता हूं, 3 और यहोवा के लिथे क्या होमबलि, क्या
मेलबलि, कोई हव्य चढ़ावो, चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो चाहे
स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयोंमें का हो, या वह चाहे गाय-बैल
चाहे भेड़-बकरियोंमें का हो, जिस से यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्ध हो; 4 तब

उस होमबलि वा मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे पीछे यहोवा के लिथे चौयाई हिन
तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, 5 और
चौयाई हिन दाखमधु अर्घ करके देना। 6 और मेढ़े पीछे तिहाई हिन तेल से सना
हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना; 7 और उसका अर्घ
यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई दिन दाखमधु देना। 8 और जब तू
यहोवा को होमबलि वा किसी विशेष मन्नत पूरी करने के लिथे बलि वा मेलबलि
करके बछड़ा चढ़ाए, 9 तब बछड़े का चढ़ानेवाला उसके संग आध हिन तेल से
सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए। 10 और उसका
अर्घ आध हिन दाखमधु चढ़ाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य
होगा। 11 एक एक बछड़े, वा मेढ़े, वा भेड़ के बच्चे, वा बकरी के बच्चे के साय
इसी रीति चढ़ावा चढ़ाया जाए। 12 तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो,
उसी गिनती के अनुसार एक एक के साय ऐसा ही किया करना। 13 जितने देशी
होंवे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाते समय थे काम इसी रीति
से किया करें। 14 और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, वा तुम्हारी किसी
पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे। 15
मण्डली के लिथे, अर्यात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनोंके लिथे
एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे, कि जैसे तुम हो
वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिथे ठहरता है। 16 तुम्हारे और तुम्हारे संग
रहनेवाले परदेशियोंके लिथे एक ही व्यवस्या और एक ही नियम है।। 17 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 18 इस्त्राएलियोंको मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस

देश में पहुंचो जहां मैं तुम को लिथे जाता हूं, 19 और उस देश की उपज का अन्न
खाओ, तब यहोवा के लिथे उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो। 20 अपके पहिले गूंधे हुए
आटे की एक पपक्की उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिथे चढ़ाना; जैसे तुम
खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना। 21
अपक्की पीढ़ी पीढ़ी में अपके पहिले गूंधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट
दिया करना।। 22 फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को
दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, 23 अर्यात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा
देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उस ने जितनी आज्ञाएं
मूसा के द्वारा दी हैं, 24 उस में यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने
हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला होमबलि करके
एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए,
और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए। 25 जब याजक इस्त्राएलियोंकी सारी
मण्डली के लिथे प्रायश्चित्त करे, और उनकी झमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप
भूल से हुआ, और उन्होंने अपक्की भूल के लिथे अपना चढ़ावा, अर्यात् यहोवा के
लिथे हव्य और अपना पापबलि उसके साम्हने चढ़ाया। 26 सो इस्त्राएलियोंकी
सारी मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप झमा किया
जाएगा, क्योंकि वह सब लोगोंके अनजान में हुआ। 27 फिर यदि कोई प्राणी भूल
से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। 28 और
याजक भूल से पाप करनेवाले प्राणी के लिथे यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे; सो
इस प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप झमा किया जाएगा। 29 जो कोई भूल से
कुछ करे, चाहे वह परदेशी होकर रहता हो, सब के लिथे तुम्हारी एक ही व्यवस्या

हो। 30 परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा
का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपके लोगोंमें से नाश किया जाए।
31 वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है,
इसलिथे वह प्राणी निश्चय नाश किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पकेगा।।
32 जब इस्त्राएली जंगल में रहते थे, उन दिनोंएक मनुष्य विश्रम के दिन लकड़ी
बीनता हुआ मिला। 33 और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको
मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए। 34 उन्होंने उसको हवालात
में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिथे वह प्रकट नहीं किया गया या।
35 तब यहोवा ने मूसा से कहा, वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली
के लोग छावनी के बाहर उस पर पत्यरवाह करें। 36 सो जैसा यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी यी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगोंने उसको छावनी से बाहर ले
जाकर पत्यरवाह किया, और वह मर गया। 37 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 38
इस्त्राएलियोंसे कह, कि अपक्की पीढ़ी पीढ़ी में अपके वोंके कोर पर फालर लगाया
करना, और एक एक कोर की फालर पर एक नीला फीता लगाया करना; 39 और
वह तुम्हारे लिथे ऐसी फालर ठहरे, जिस से जब जब तुम उसे देखो तब तब
यहोवा की सारी आज्ञाएं तुम हो स्मरण आ जाएं; और तुम उनका पालन करो,
और तुम अपके अपके मन और अपक्की अपक्की दृष्टि के वश में होकर
व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो। 40 परन्तु तुम यहोवा की सब
आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपके परमेश्वर के लिथे
पवित्र बनो। 41 मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हे मिस्र देश से निकाल ले
आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।।

गिनती 16

1 कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता, और यिसहार का पुत्र या, वह
एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन, 2 इन
तीनोंरूबेनियोंसे मिलकर मण्डली के अढ़ाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे,
उनको संग लिया; 3 और वे मूसा और हारून के विरूद्ध उठ खड़े हुए, और उन से
कहने लगे, तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक
मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिथे तुम यहोवा की
मण्डली में ऊंचे पदवाले क्योंबन बैठे हो? 4 यह सुनकर मूसा अपके मुंह के बल
गिरा; 5 फिर उस ने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, कि बिहान को
यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपके
समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपके समीप बुला भी
लेगा। 6 इसलिथे, हे कोरह, तुम अपक्की सारी मण्डली समेत यह करो, अर्यात्
अपना अपना धूपदान ठीक करो; 7 और कल उन में आग रखकर यहोवा के
साम्हने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा। हे लेवियों, तुम
भी बड़ी बड़ी बातें करते हो, अब बस करो। 8 फिर मूसा ने कोरह से कहा, हे
लेवियों, सुनो, 9 क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है, कि इस्त्राएल के परमेश्वर
ने तुम को इस्त्राएल की मण्डली से अलग करके अपके निवास की सेवकाई करने,
और मण्डली के साम्हने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिथे अपके
समीप बुला लिया है; 10 और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयोंको भी अपके समीप
बुला लिया है? फिर भी तुम याजक पद के भी खोजी हो? 11 और इसी कारण तू ने
अपक्की सारी मण्डली को यहोवा के विरूद्ध इकट्ठी किया है; हारून कौन है कि

तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो? 12 फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम
को बुलवा भेजा; और उन्होंने कहा, हम तेरे पास नहीं आएंगे। 13 क्या यह एक
छोटी बात है, कि तू हम को ऐसे देश से जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती है
इसलिथे निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डाले, फिर क्या तू हमारे ऊपर
प्रधान भी बनकर अधिक्कारने जताता है? 14 फिर तू हमें ऐसे देश में जहां दूध
और मधु की धाराएं बहती हैं नहीं पहुंचाया, और न हमें खेतोंऔर दाख की
बारियोंके अधिक्कारनी किया। क्या तू इन लोगोंकी आंखोंमें धूलि डालेगा? हम
तो नहीं आएंगे। 15 तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा, और उस ने यहोवा से
कहा, उन लोगोंकी भेंट की ओर दृष्टि न कर। मैं ने तो उन से एक गदहा भी नहीं
लिया, और न उन में से किसी की हानि की है। 16 तब मूसा ने कोरह से कहा, कल
तू अपक्की सारी मण्डली को साय लेकर हारून के साय यहोवा के साम्हने हाजिर
होना; 17 और तुम सब अपना अपना धूपदान लेकर उन में धूप देना, फिर अपना
अपना धूपदान जो सब समेत अढ़ाई सौ होंगे यहोवा के साम्हने ले जाना; विशेष
करके तू और हारून अपना अपना धूपदान ले जाना। 18 सो उन्होंने अपना अपना
धूपदान लेकर और उन में आग रखकर उन पर धूप डाला; और मूसा और हारून
के साय मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। 19 और कोरह ने सारी मण्डली को
उनके विरूद्ध मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब यहोवा का तेज
सारी मण्डली को दिखाई दिया।। 20 तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 21
उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ। कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर
डालूं। 22 तब वे मुंह के बल गिरके कहने लगे, हे ईश्वर, हे सब प्राणियोंके
आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरूष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली

पर होगा? 23 यहोवा ने मूसा से कहा, 24 मण्डली के लोगोंसे कह, कि कोरह,
दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट जाओ। 25 तब मूसा उठकर
दातान और अबीराम के पास गया; और इस्त्राएलियोंके वृद्ध लोग उसके पीछे पीछे
गए। 26 और उस ने मण्डली के लोगोंसे कहा, तुम उन दुष्ट मनुष्योंके डेरोंके पास
से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छूओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके
सब पापोंमें फंसकर मिट जाओ। 27 यह सुन वे कोरह, दातान, और अबीराम के
तम्बुओं के आसपास से हट गए; परन्तु दातान और अबीराम निकलकर अपक्की
पत्नियों, बेंटों, और बालबच्चोंसमेत अपके अपके डेरे के द्वार पर खड़े हुए। 28 तब
मूसा ने कहा, इस से तुम जान लोगे कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम
करूं, क्योंकि मैं ने अपक्की इच्छा से कुछ नहीं किया। 29 यदि उन मनुष्योंकी
मृत्यु और सब मनुष्योंके समान हो, और उनका दण्ड सब मनुष्योंके समान हो,
तब जानोंकि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूं। 30 परन्तु यदि यहोवा अपक्की
अनोखी शक्ति प्रकट करे, और पृय्वी अपना मुंह पसारकर उनको, और उनका सब
कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पकें, तो तुम समझ लो कि
इन मनुष्योंने यहोवा का अपमान किया है। 31 वह थे सब बातें कह ही चुका या,
कि भूमि उन लोगोंके पांव के नीचे फट गई; 32 और पृय्वी ने अपना मुंह खोल
दिया और उनका और उनका घरद्वार का सामान, और कोरह के सब मनुष्योंऔर
उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया। 33 और वे और उनका सारा घरबार
जीवित ही अधोलोक में जा पके; और पृय्वी ने उनको ढ ाप लिया, और वे
मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए। 34 और जितने इस्त्राएली उनके चारोंओर थे वे
उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, कि कहीं पृय्वी हम को भी निगल न ले!

35 तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन अढ़ाई सौ धूप चढ़ानेवालोंको
भस्म कर डाला।। 36 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 37 हारून याजक के पुत्र
एलीआजार से कह, कि उन धूपदानोंको आग में से उठा ले; और आग के
अंगारोंको उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं। 38 जिन्होंने पाप करके अपके
ही प्राणोंकी हानि की है, उनके धूपदानोंके पत्तर पीट पीटकर बनाए जाएं जिस से
कि वह वेदी के मढ़ने के काम आवे; क्योंकि उन्होंने यहोवा के साम्हने रखा या;
इस से वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इस्त्राएलियोंके लिथे एक निशान ठहरेगा। 39
सो एलीआजर याजक ने उन पीतल के धूपदानोंको, जिन में उन जले हुए
मनुष्योंने धूप चढ़ाया या, लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिथे बनवा
दिए, 40 कि इस्त्राएलियोंको इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हारून के
वंश का न हो, यहोवा के साम्हने धूप चढ़ाने को समीप न जाए, ऐसा न हो कि वह
भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के
द्वारा उसको आज्ञा दी यी।। 41 दूसरे दिन इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली यह
कहकर मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी, कि यहोवा की प्रजा को तुम ने मार
डाला है। 42 और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरूद्ध इकट्ठे हो रहे
थे, तब उन्होंने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा, कि बादल ने उसे
छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है। 43 तब मूसा और हारून
मिलापवाले तम्बू के साम्हने आए, 44 तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 45
तुम उस मण्डली के लोगोंके बीच से हट जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर
डालूं। तब वे मुंह के बल गिरे। 46 और मूसा ने हारून से कहा, धूपदान को लेकर
उस में वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुरती से

जाकर उसके लिथे प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है, और
मरी फैलने लगी है। 47 मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली
के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगोंमें मरी फैलने लगी है, उस ने धूप
जलाकर लोगोंके लिथे प्रायश्चित्त किया। 48 और वह मुर्दोंऔर जीवित के मध्य में
खड़ा हुआ; तब मरी यम गई। 49 और जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे,
उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हजार सात सौ थे। 50 तब हारून
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी यम गई।।

गिनती 17

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंसे बातें करके उन के पूर्वजोंके
घरानोंके अनुसार, उनके सब प्रधानोंके पास से एक एक छड़ी ले; और उन बारह
छडियोंमें से एक एक पर एक एक के मूल पुरूष का नाम लिख, 3 और लेवियोंकी
छड़ी पर हारून का नाम लिख। क्योंकि इस्त्राएलियोंके पूर्वजोंके घरानोंके एक एक
मुख्य पुरूष की एक एक छड़ी होगी। 4 और उन छडियोंको मिलापवाले तम्बू में
साझीपत्र के आगे, जहां मैं तुम लोगोंसे मिला करता हूं, रख दे। 5 और जिस पुरूष
को मैं चुनूंगा उसकी छड़ी में कलियां फूट निकलेंगी; और इस्त्राएली जो तुम पर
बुड़बुड़ाते रहते हैं, वह बुड़बुड़ाना मैं अपके ऊपर से दूर करूंगा। 6 सो मूसा ने
इस्त्राएलियोंसे यह बात कही; और उनके सब प्रधानोंने अपके अपके लिथे, अपके
अपके पूर्वजोंके घरानोंके अनुसार, एक एक छड़ी उसे दी, सो बारह छडियां हुई;
और उन की छडियोंमें हारून की भी छड़ी यी। 7 उन छडियोंको मूसा ने साझीपत्र
के तम्बू में यहोवा के साम्हने रख दिया। 8 दूसरे दिन मूसा साझीपत्र के तम्बू में

गया; तो क्या देखा, कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिथे यी उस में
कलियां फूट निकली, अर्यात् उस में कलियां लगीं, और फूल भी फूले, और पके
बादाम भी लगे हैं। 9 सो मूसा उन सब छडियोंको यहोवा के साम्हने से निकालकर
सब इस्त्राएलियोंके पास ले गया; और उन्होंने अपक्की अपक्की छड़ी पहिचानकर
ले ली। 10 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून की छड़ी को साझीपत्र के साम्हने
फिर धर दे, कि यह उन दंगा करनेवालो के लिथे एक निशान बनकर रखी रहे, कि
तू उनका बुड़बुड़ाना जो मेरे विरूद्ध होता रहता है भविष्य में रोक रखे, ऐसा न हो
कि वे मर जाएं। 11 और मूसा ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया।। 12
तब इस्त्राएली मूसा से कहने लगे, देख, हमारे प्राण निकला चाहते हैं, हम नष्ट हुए,
हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं। 13 जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता है
वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएंगे।।

गिनती 18

1 फिर यहोवा ने हारून से कहा, कि पवित्रस्यान के अधर्म का भार तुझ पर, और
तेरे पुत्रोंऔर तेरे पिता के घराने पर होगा; और तुम्हारा याजक कर्म के अधर्म का
भार भी तेरे पुत्रोंपर होगा। 2 और लेवी का गोत्र, अर्यात् तेरे मूलपुरूष के गोत्रवाले
जो तेरे भाई हैं, उनको भी अपके साय ले आया कर, और वे तुझ से मिल जाएं,
और तेरी सेवा टहल किया करें, परन्तु साझीपत्र के तम्बू के साम्हने तू और तेरे
पुत्र ही आया करें। 3 जो तुझे सौंपा गया है उसकी और सारे तम्बू की भी वे रझा
किया करें; परन्तु पवित्रस्यान के पात्रोंके और वेदी के समीप न आएं, ऐसा न हो
कि वे और तुम लोग भी मर जाओ। 4 सो वे तुझ से मिल जाएं, और मिलापवाले

तम्बू की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रझा किया करें; परन्तु जो तेरे कुल का न
हो वह तुम लोगोंके समीप न आने पाए। 5 और पवित्रस्यान और वेदी की
रखवाली तुम ही किया करो, जिस से इस्त्राएलियोंपर फिर कोप न भड़के। 6 परन्तु
मैं ने आप तुम्हारे लेवी भाइयोंको इस्त्राएलियोंके बीच से अलग कर लिया है, और
वे मिलापवाले तम्बू की सेवा करने के लिथे तुम को और यहोवा को सौंप दिथे गए
हैं। 7 पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातोंकी सेवकाई के लिथे तू और
तेरे पुत्र अपके याजकपद की रझा करना, और तुम ही सेवा किया करना; क्योंकि
मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूं; और जो तेरे कुल का न हो वह यदि
समीप आए तो मार डाला जाए।। 8 फिर यहोवा ने हारून से कहा, सुन, मै आप
तुझ को उठाई हुई भेंट सौंप देता हूं, अर्यात् इस्त्राएलियोंकी पवित्र की हुई वस्तुएं;
जितनी होंउन्हें मैं तेरा अभिषेक वाला भाग ठहराकर तुझे और तेरे पुत्रोंको सदा
का हक करके दे देता हूं। 9 जो परमपवित्र वस्तुएं आग में होम न ही जाएंगी वे
तेरी ही ठहरें, अर्यात् इस्त्राएलियोंके सब चढ़ावोंमें से उनके सब अन्नबलि, सब
पापबलि, और सब दोषबलि, जो वे मुझ को दें, वह तेरे और तेरे पुत्रोंके लिथे
परमपवित्र ठहरें। 10 उनको परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना; उनको हर
एक पुरूष खा सकता है; वे तेरे लिथे पवित्र हैं। 11 फिर थे वस्तुएं भी तेरी ठहरें,
अर्यात् जितनी भेंट इस्त्राएली हिलाने के लिथे दें, उनको मैं तुझे और तेरे
बेटे-बेटियोंको सदा का हक करके दे देता हूं; तेरे घराने में जितने शुद्ध होंवह उन्हें
खा सकेंगे। 12 फिर उत्तम से उत्तम नया दाखमधु, और गेहूं, अर्यात् इनकी पहली
उपज जो वे यहोवा को दें, वह मैं तुझ को देता हूं। 13 उनके देश के सब प्रकार की
पहली उपज, जो वे यहोवा के लिथे ले आएं, वह तेरी ही ठहरे; तेरे घराने में जितने

शुद्ध होंवे उन्हें खा सकेंगें। 14 इस्त्राएलियोंमें जो कुछ अर्पण किया जाए वह भी
तेरा ही ठहरे। 15 सब प्राणियोंमें से जितने अपक्की अपक्की मां के पहिलौठे हों,
जिन्हें लोग यहोवा के लिथे चढ़ाएं, चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहिलौठे हों, वे सब
तेरे ही ठहरें; परन्तु मनुष्योंऔर अशुद्ध पशुओं के पहिलौठोंको दाम लेकर छोड़
देना। 16 और जिन्हें छुड़ाना हो, जब वे महीने भर के होंतब उनके लिथे अपके
ठहराए हुए मोल के अनुसार, अर्यात् पवित्रस्यान के बीस गेरा के शेकेल के हिसाब
से पांच शेकेल लेके उन्हें छोड़ना। 17 पर गाय, वा भेड़ी, वा बकरी के पहिलौठे को
न छोड़ना; वे तो पवित्र हैं। उनके लोहू को वेदी पर छिड़क देना, और उनकी चरबी
को हव्य करके जलाना, जिस से यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्ध हो; 18 परन्तु
उनका मांस तेरा ठहरे, और हिलाई हुई छाती, और दहिनी जांघ भी तेरा ही ठहरे।
19 पवित्र वस्तुओं की जितनी भेंटें इस्त्राएली यहोवा को दें, उन सभोंको मैं तुझे
और तेरे बेटे-बेटियोंको सदा का हक करके दे देता हूं: यह तो तेरे और तेरे वंश के
लिथे यहोवा की सदा के लिथे नमक की अटल वाचा है। 20 फिर यहोवा ने हारून
से कहा, इस्त्राएलियोंके देश में तेरा कोई भाग न होगा, और न उनके बीच तेरा
कोई अंश होगा; उनके बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं।। 21 फिर
मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्त्राएलियोंका
सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूं। 22 और भविष्य में इस्त्राएली
मिलापवाले तम्बू के समीप न आएं, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और
वे मर जाएं। 23 परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें, और उनके
अधर्म का भार वे ही उठाया करें; यह तुम्हारी पीढ़ीयोंमें सदा की विधि ठहरे; और
इस्त्राएलियोंके बीच उनका कोई निज भाग न होगा। 24 क्योंकि इस्त्राएली जो

दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देंगे, उसे मैं लेवियोंको निज भाग करके
देता हूं, इसीलिथे मैं ने उनके विषय में कहा है, कि इस्त्राएलियोंके बीच कोई भाग
उनको न मिले। 25 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 26 तू लेवियोंसे कह, कि जब जब
तुम इस्त्राएलियोंके हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज
भाग करके उन से दिलाता है, तब तब उस में से यहोवा के लिथे एक उठाई हुई
भेंट करके दशमांश का दशमांश देना। 27 और तुम्हारी उठाई हुई भेंट तुम्हारे हित
के लिथे ऐसी गिनी जाएगी जैसा खलिहान में का अन्न, वा रसकुण्ड में का
दाखरस गिना जाता है। 28 इस रीति तुम भी अपके सब दशमांशोंमें से, जो
इस्त्राएलियोंकी ओर से पाओगे, यहोवा को एक उठाई हुई भेंट देना; और यहोवा
की यह उठाई हुई भेंट हारून याजक को दिया करना। 29 जितने दान तुम पाओ
उन में से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, सो उसे यहोवा के
लिथे उठाई हुई भेंट करके पूरी पूरी देना। 30 इसलिथे तू लेवियोंसे कह, कि जब
तुम उस में का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो, तब यह तुम्हारे लिथे खलिहान में
के अन्न, और रसकुण्ड के रस के तुल्य गिना जाएगा; 31 और उसको तुम अपके
घरानोंसमेत सब स्यानोंमें खा सकते हो, क्योंकि मिलापवाले तम्बू की जो सेवा
तुम करोगे उसका बदला यही ठहरा है। 32 और जब तुम उसका उत्तम से उत्तम
भाग उठाकर दो तब उसके कारण तुम को पाप न लगेगा। परन्तु इस्त्राएलियोंकी
पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ।।

गिनती 19

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 व्यवस्या की जिस विधि की आज्ञा

यहोवा देता है वह यह है; कि तू इस्त्राएलियोंसे कह, कि मेरे पास एक लाल निर्दोष
बछिया ले आओ, जिस में कोई भी दोष न हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा
गया हो। 3 तब एलीआजर याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए,
और कोई उसको उसके सम्हने बलिदान करे; 4 तब एलीआजर याजक अपक्की
उंगली से उसका कुछ लोहू लेकर मिलापवाले तम्बू के साम्हने की ओर सात बार
छिड़क दे। 5 तब कोई उस बछिया को खाल, मांस, लोहू, और गोबर समेत उसके
साम्हने जलाए; 6 और याजक देवदारू की लकड़ी, जूफा, और लाल रंग का कपड़ा
लेकर उस आग में जिस में बछिया जलती हो डाल दे। 7 तब वह अपके वस्त्र धोए
और स्नान करे, इसके बाद छावनी में तो आए, परन्तु सांफ तक अशुद्ध रहे। 8
और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी जल से अपके वस्त्र धोए और स्नान करे,
और सांफ तक अशुद्ध रहे। 9 फिर कोई शुद्ध पुरूष उस बछिया की राख बटोरकर
छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्यान में रख छोड़े; और वह राख इस्त्राएलियोंकी
मण्डली के लिथे अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के लिथे रखी रहे; वह तो पापबलि
है। 10 और जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपके वस्त्र धोए, और सांफ तक
अशुद्ध रहे। और यह इस्त्राएलियोंके लिथे, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियोंके
लिथे भी सदा की विधि ठहरे। 11 जो किसी मनुष्य की लोय छूए वह सात दिन
तक अशुद्ध रहे; 12 ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से पाप छुड़ाकर अपके को
पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन आप को पाप
छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध ठहरेगा। 13 जो कोई किसी मनुष्य की
लोय छूकर पाप छुड़ाकर अपके को पावन न करे, वह यहोवा के निवासस्यान का
अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी इस्त्राएल में से नाश किया जाए;

अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध
ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उस में बची रहेगी। 14 यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए
तो व्यवस्या यह यह है, कि जितने उस डेरे में रहें, वा उस में जाएं, वे सब सात
दिन तक अशुद्ध रहें। 15 और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा
न हो, वह अशुद्ध ठहरे। 16 और जो कोई मैदान में तलवार से मारे हुए को, वा
अपक्की मृत्यु से मरे हुए को, वा मनुष्य की हड्डी को, वा किसी कब्र को छूए, तो
सात दिन तक अशुद्ध रहे। 17 अशुद्ध मनुष्य के लिथे जलाए हुए पापबलि की राख
में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए; 18 तब कोई
शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र
और मनुष्य उस में हों, उन पर छिड़के, और हड्डी के, वा मारे हुए के, वा अपक्की
मृत्यु से मरे हुए के, वा कब्र के छूनेवाले पर छिड़क दे; 19 वह शुद्ध पुरूष तीसरे
दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके
पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपके वोंको धोकर और जल से स्नान
करके सांफ को शुद्ध ठहरे। 20 और जो कोई अशुद्ध होकर अपके पाप छुड़ाकर
अपके को पावन न कराए, वह प्राणी यहोवा के पवित्र स्यान का अशुद्ध करनेवाला
ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से
छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण से वह अशुद्ध ठहरेगा। 21
और यह उनके लिथे सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के
वह अपके वोंको धोए; और जिस जन से अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छू जाए वह
भी सांफ तक अशुद्ध रहे। 22 और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध
ठहरे; और जो प्राणी उस वस्तु को छूए वह भी सांफ तक अशुद्ध रहे।।

गिनती 20

1 पहिले महीने में सारी इस्त्राएली मण्डली के लोग सीनै नाम जंगल में आ गए,
और कादेश में रहने लगे; और वहां मरियम मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी
गई। 2 वहां मण्डली के लोगोंके लिथे पानी न मिला; सो वे मूसा और हारून के
विरूद्ध इकट्ठे हुए। 3 और लोग यह कहकर मूसा से फगड़ने लगे, कि भला होता
कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के साम्हने मर गए! 4
और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्योंले आए हो, कि हम अपके
पशुओं समेत यहां मर जाए? 5 और तुम ने हम को मिस्र से क्योंनिकालकर इस
बुरे स्यान में पहुंचाया है? यहां तो बीच, वा अंजीर, वा दाखलता, वा अनार, कुछ
नहीं है, यहां तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है। 6 तब मूसा और हारून
मण्डली के साम्हने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपके मुंह के बल
गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। 7 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 8
उस लाठी को ले, और तू अपके भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके
उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू
चट्टान में से उनके लिथे जल निकाल कर मण्डली के लोगोंऔर उनके पशुओं को
पिला। 9 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके साम्हने से लाठी को ले
लिया। 10 और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के साम्हने इकट्ठा
किया, तब मूसा ने उस से कह, हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान
में से तुम्हारे लिथे जल निकालना होगा? 11 तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी
चट्टान पर दो बार मारी; और उस में से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के
लोग अपके पशुओं समेत पीने लगे। 12 परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने

कहा, तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्त्राएलियोंकी दृष्टि में
पवित्र नहीं ठहराया, इसलिथे तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे
जिसे मैं ने उन्हें दिया है। 13 उस सोते का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि इस्त्राएलियोंने
यहोवा से फगड़ा किया या, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया।। 14 फिर
मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, कि तेरा भाई इस्त्राएल
योंकहता है, कि हम पर जो जो क्लेश पके हैं वह तू जानता होगा; 15 अर्यात् यह
कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे; और
मिस्त्रियोंने हमारे पुरखाओं के साय और हमारे साय भी बुरा बर्ताव किया; 16
परन्तु जब हम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने हमारी सुनी, और एक दूत को
भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है; सो अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरे
सिवाने ही पर है। 17 सो हमें अपके देश में से होकर जाने दे। हम किसी खेत वा
दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कूओं का पानी न पीएंगे; सड़क-सड़क होकर
चले जाएंगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएं, तब तक न दहिने न बाएं
मुड़ेंगे। 18 परन्तु एदोमियोंने उसके पास कहला भेजा, कि तू मेरे देश में से होकर
मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिथे हुए तेरा साम्हना करने को निकलूंगा। 19
इस्त्राएलियोंने उसके पास फिर कहला भेजा, कि हम सड़क ही सड़क चलेंगे, और
यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएं, तो उसका दाम देंगे, हम को और कुछ
नहीं, केवल पांव पांव चलकर निकल जाने दे। 20 परन्तु उस ने कहा, तू आने न
पाएगा। और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका साम्हना करने को निकल
आया। 21 इस प्रकार एदोम ने इस्त्राएल को अपके देश के भीतर से होकर जाने
देने से इन्कार किया; इसलिथे इस्त्राएल उसकी ओर से मुड़ गए।। 22 तब

इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नाम पहाड़ के पास आ
गई। 23 और एदोम देश के सिवाने पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, 24 हारून अपके लोगोंमें जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनो ने जो मरीबा नाम
सोते पर मेरा कहना छोड़कर मुझ से बलवा किया है, इस कारण वह उस देश में
जाने न पाएगा जिसे मैं ने इस्त्राएलियोंको दिया है। 25 सो तू हारून और उसके
पुत्र एलीआजर को होर पहाड़ पर ले चल; 26 और हारून के वस्त्र उतारके उसके
पुत्र एलीआजर को पहिना; तब हारून वहीं मरकर अपके लोगोंमे जा मिलेगा। 27
यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; वे सारी मण्डली के देखते होर
पहाड़ पर चढ़ गए। 28 तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके उसके पुत्र एलीआजर
को पहिनाए और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और
एलीआजर पहाड़ पर से उतर आए। 29 और जब इस्त्राएल की सारी मण्डली ने
देखा कि हारून का प्राण छूट गया है, तब इस्त्राएल के सब घराने के लोग उसके
लिथे तीस दिन तक रोते रहे।।

गिनती 21

1 तब अराद का कनानी राजा, जो दक्खिन देश में रहता या, यह सुनकर, कि
जिस मार्ग से वे भेदिथे आए थे उसी मार्ग से अब इस्त्राएली आ रहे हैं, इस्त्राएल से
लड़ा, और उन में से कितनोंको बन्धुआ कर लिया। 2 तब इस्त्राएलियोंने यहोवा से
यह कहकर मन्नत मानी, कि यदि तू सचमुच उन लोगोंको हमारे वश में कर दे,
तो हम उनके नगरोंको सत्यनाश कर देंगे। 3 इस्त्राएल की यह बात सुनकर
यहोवा ने कनानियोंको उनके वश में कर दिया; सो उन्होंने उनके नगरोंसमेत

उनको भी सत्यानाश किया; इस से उस स्यान का नाम होर्मा रखा गया।। 4 फिर
उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया, कि एदोम देश से
बाहर बाहर घूमकर जाएं; और लोगोंका मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो
गया। 5 सो वे परमेश्वर के विरूद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग
हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिथे क्योंले आए हो? यहां न तो रोटी है, और न
पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुखित हैं। 6 सो यहोवा ने उन
लोगोंमें तेज विषवाले सांप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्त्राएली मर
गए। 7 तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, हम ने पाप किया है, कि हम ने
यहोवा के और तेरे विरूद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्यना कर, कि वह सांपोंको हम
से दूर करे। तब मूसा ने उनके लिथे प्रार्यना की। 8 यहोवा ने मूसा से कहा एक तेज
विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ
उसको देख ले वह जीवित बचेगा। 9 सो मूसा ने पीतल को एक सांप बनवाकर
खम्भे पर लटकाया; तब सांप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप
को देखा वह जीवित बच गया। 10 फिर इस्त्राएलियोंने कूच करके ओबोत में डेरे
डाले। 11 और ओबोत से कूच करके अबारीम नाम डीहोंमें डेरे डाले, जो पूरब की
ओर मोआब के साम्हने के जंगल में है। 12 वंहा से कूच करके उन्होंने जेरेद नाम
नाले में डेरे डाले। 13 वहां से कूच करके उन्होंने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती
और एमोरियोंके देश से निकलती है, उसकी परली ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि
अर्नोन मोआबियोंऔर एमोरियोंके बीच होकर मोआब देश का सिवाना ठहरा है।
14 इस कारण यहोवा के संग्राम नाम पुस्तक में इस प्रकार लिखा है, कि सूपा में
बाहेब, और अर्नोन के नाले, 15 और उन नालोंकी ढलान जो आर नाम नगर की

ओर है, और जो मोआब के सिवाने पर है। 16 फिर वहां से कूच करके वे बैर तक
गए; वहां वही कूआं है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा या, कि उन
लोगोंको इकट्ठा कर, और मैं उन्हे पानी दूंगा।। 17 उस समय इस्त्राएल ने यह
गीत गया, कि हे कूएं, उबल आ, उस कूएं के विषय में गाओ! 18 जिसको
हाकिमोंने खोदा, और इस्त्राएल के रईसोंने अपके सोंटोंऔर लाठियोंसे खोद
लिया।। 19 फिर वे जंगल से मत्ताना को, और मत्ताना से नहलीएल को, और
नहलीएल से बामोत को, 20 और बामोत से कूच करके उस तराई तक जो मोआब
के मैदान में है, और पिसगा के उस सिक्के तक भी जो यशीमोन की ओर फुका है
पहुंच गए।। 21 तब इस्त्राएल ने एमोरियोंके राजा सीहोन के पास दूतोंसे यह
कहला भेजा, 22 कि हमें अपके देश में होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत वा
दाख की बारी में तो न जाएंगे; न किसी कूएं का पानी पीएंगे; और जब तक तेरे
देश से बाहर न हो जाएं तब तक सड़क ही से चले जाएंगे। 23 तौभी सीहोन ने
इस्त्राएल को अपके देश से होकर जाने न दिया; वरन अपक्की सारी सेना को
इकट्ठा करके इस्त्राएल का साम्हना करने को जंगल में निकल आया, और यहस
को आकर उन से लड़ा। 24 तब इस्त्राएलियोंने उस को तलवार से मार लिया, और
अर्नोन से यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियोंका सिवाना या, उसके देश के
अधिक्कारनी हो गए; अम्मोनियोंका सिवाना तो दृढ़ या। 25 सो इस्त्राएल ने
एमोरियोंके सब नगरोंको ले लिया, और उन में, अर्यात् हेशबोन और उसके आस
पास के नगरोंमें रहने लगे। 26 हेशबोन एमोरियोंके राजा सीहोन का नगर या; उस
ने मोआब के अगले राजा से लड़के उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से
छीन लिया या। 27 इस कारण गूढ़ बात के कहनेवाले कहते हैं, कि हेशबोन में

आओ, सीहोन का नगर बसे, और दृढ़ किया जाए। 28 क्योंकि हेशबोन से आग,
अर्यात् सीहोन के नगर से लौ निकली; जिस से मोआब देश का आर नगर, और
अर्नोन के ऊंचे स्यानोंके स्वामी भस्म हुए। 29 हे मोआब, तुझ पर हाथ! कमोश
देवता की प्रजा नाश हुई, उस ने अपके बेटोंको भगेड़ू, और अपक्की बेटियोंको
एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया। 30 हम ने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन
दीबोन तक नष्ट हो गया है, और हम ने नोपह और मेदबा तक भी उजाड़ दिया है।।
31 सो इस्त्राएल एमोरियोंके देश में रहने लगा। 32 तब मूसा ने याजेर नगर का
भेद लेने को भेजा; और उन्होंने उसके गांवोंको लिया, और वहां के एमोरियोंको
उस देश से निकाल दिया। 33 तब वे मुड़के बाशान के मार्ग से जाने लगे; और
बाशान के राजा ओग न उनका साम्हना किया, अर्यात् लड़ने को अपक्की सारी
सेना समेत एद्रेई में निकल आया। 34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, उस से मत डर;
क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूं; और जैसा तू
ने एमोरियोंके राजा हेशबोनवासी सीहोन के साय किया है, वैसा ही उसके साय भी
करना। 35 तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रोंऔर सारी प्रजा को यहां तक मारा
कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिक्कारनी को गए।

गिनती 22

1 तब इस्त्राएलियोंने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के
अराबा में डेरे खड़े किए।। 2 और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इस्त्राएल ने
एमोरियोंसे क्या क्या किया है। 3 इसलिथे मोआब यह जानकर, कि इस्त्राएली
बहुत हैं, उन लोगोंसे अत्यन्त डर गया; यहां तक कि मोआब इस्त्राएलियोंके

कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ। 4 तब मोआबियोंने मिद्यानी पुरनियोंसे कहा, अब
वह दल हमारे चारोंओर के सब लोगोंको चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की
हरी घास को चट कर जाता है। उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का
राजा या; 5 और इस ने पतोर नगर को, जो महानद के तट पर बोर के पुत्र बिलाम
के जातिभाइयोंकी भूमि यी, वहां बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे यह कहकर उसे
बुला लाएं, कि सुन एक दल मिस्र से निकल आया है, और भूमि उन से ढक गई है,
और अब वे मेरे साम्हने ही आकर बस गए हैं। 6 इसलिथे आ, और उन लोगोंको
मेरे निमित्त शाप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं, तब सम्भव है कि हम
उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपके देश से मारकर निकाल दें;
क्योंकि यह तो मैं जानता हूं कि जिसको तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है,
और जिसको तू शाप देता है वह स्रापित होता है। 7 तब मोआबी और मिद्यानी
पुरनिथे भावी कहने की दझिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुंचकर बालाक
की बातें कह सुनाईं। 8 उस ने उन से कहा, आज रात को यहां टिको, और जो बात
यहोवा मुझ से कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूंगा; तब मोआब के
हाकिम बिलाम के यहां ठहर गए। 9 तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा,
कि तेरे यहां थे पुरूष कौन हैं? 10 बिलाम ने परमेश्वर से कहा सिप्पोर के पुत्र
मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है, 11 कि सुन, जो दल मिस्र
से निकल आया है उस से भूमि ढंप गई है; इसलिथे आकर मेरे लिथे उन्हें शाप दे;
सम्भव है कि मैं उनसे लड़कर उनको बरबस निकाल सकूंगा। 12 परमेश्वर ने
बिलाम से कहा, तू इनके संग मत जा; उन लोगोंको शाप मत दे, क्योंकि वे
आशीष के भागी हो चुके हैं। 13 भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमोंसे

कहा, तुम अपके देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साय जाने की
आज्ञा नहीं देता। 14 तब मोआबी हाकिम चले गए और बालाक के पास जाकर
कहा, कि बिलाम ने हमारे साय आने से नाह किया है। 15 इस पर बालाक ने फिर
और हाकिम भेजे, जो पहिलोंसे प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। 16
उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, कि सिप्पोर का पुत्र बालाक योंकहता है, कि
मेरे पास आने से किसी कारण नाह न कर; 17 क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा
करूंगा, और जो कुछ तू मुझ से कहे वही मैं करूंगा; इसलिथे आ, और उन
लोगोंको मेरे निमित्त शाप दे। 18 बिलाम ने बालाक के कर्मचारियोंको उत्तर दिया,
कि चाहे बालाक अपके घर को सोने चांदी से भरकर मुझे दे दे, तौभी मैं अपके
परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर वा बढ़ाकर
मानूं। 19 इसलिथे अब तुम लोग आज रात को यहीं टिके रहो, ताकि मैं जान लूं,
कि यहोवा मुझ से और क्या कहता है। 20 और परमेश्वर ने रात को बिलाम के
पास आकर कहा, यदि वे पुरूष तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उनके संग जा;
परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूं उसी के अनुसार करना। 21 तब बिलाम भोर को
उठा, और अपक्की गदही पर काठी बान्धकर मोआबी हाकिमोंके संग चल पड़ा।
22 और उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत
उसका विरोध करने के लिथे मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपक्की गदही
पर सवार होकर जा रहा या, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे। 23 और उस
गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिथे हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा;
तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चक्की गई; तब बिलाम ने गदही को मारा, कि
वह मार्ग पर फिर आ जाए। 24 तब यहोवा का दूत दाख की बारियोंके बीच की

गली में, जिसके दोनोंओर बारी की दीवार यी, खड़ा हुआ। 25 यहोवा के दूत को
देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई, कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया; तब
उस ने उसको फिर मारा। 26 तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकेत स्यान
पर खड़ा हुआ, जहां न तो दहिनी ओर हटने की जगह यी और न बाईं ओर। 27
वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिथे दिथे बैठ गई; फिर तो
बिलाम का कोप भड़क उठा, और उस ने गदही को लाठी से मारा। 28 तब यहोवा
ने गदही का मुंह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, मैं ने तेरा क्या किया
है, कि तू ने मुझे तीन बार मारा? 29 बिलाम ने गदही से कहा, यह कि तू ने मुझ
से नटखटी की। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता। 30
गदही ने बिलाम से कहा क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज
तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती यी? वह बोला, नहीं। 31 तब
यहोवा ने बिलाम की आंखे खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी
तलवार लिथे हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह फुक गया, और मुंह के बल
गिरके दण्डवत की। 32 यहोवा के दूत ने उस से कहा, तू ने अपक्की गदही को
तीन बार क्योंमारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं, इसलिथे कि तू मेरे
साम्हने उलटी चाल चलता है; 33 और यह गदही मुझे देखकर मेरे साम्हने से
तीन बार हट गई। जो वह मेरे साम्हने से हट न जाती, तो नि:सन्देह मैं अब तक
तुझ को मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता। 34 तब बिलाम ने
यहोवा के दूत से कहा, मैं ने पाप किया है; मैं नहीं जानता या कि तू मेरा साम्हना
करने को मार्ग में खड़ा है। इसलिथे अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता
हूं। 35 यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, इन पुरूषोंके संग तू चला जा; परन्तु

केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा। तब बिलाम बालाक के हाकिमोंके
संग चला गया। 36 यह सुनकर, कि बिलाम आ रहा है, बालाक उस से भेंट करने
के लिथे मोआब के उस नगर तक जो उस देश के अर्नोनवाले सिवाने पर है गया।
37 बालाक ने बिलाम से कहा, क्या मैं ने बड़ी आशा से तुझे नहीं बुलवा भेजा या?
फिर तू मेरे पास क्योंनहीं चला आया? क्या मैं इस योग्य नहीं कि सचमुच तेरी
उचित प्रतिष्ठा कर सकता? 38 बिलाम ने बालाक से कहा, देख मैं तेरे पास आया
तो हूं! परन्तु अब क्या मैं कुछ कर सकता हूं? जो बात परमेश्वर मेरे मुंह में डालेगा
वही बात मैं कहूंगा। 39 तब बिलाम बालाक के संग संग चला, और वे किर्यूसोत
तक आए। 40 और बालाक ने बैल और भेड़-बकरियोंको बलि किया, और बिलाम
और उसके साय के हाकिमोंके पास भेजा। 41 बिहान को बालाक बिलाम को बालू
के ऊंचे स्यानोंपर चढ़ा ले गया, और वहां से उसको सब इस्त्राएली लोग दिखाई
पके।।

गिनती 23

1 तब बिलाम ने बालाक से कहा, यहां पर मेरे लिथे सात वेदियां बनवा, और इसी
स्यान पर सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर। 2 तब बालाक ने बिलाम के कहने
के अनुसार किया; और बालाक और बिलाम ने मिलकर प्रत्थेक वेदी पर एक
बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया। 3 फिर बिलाम ने बालाक से कहा, तू अपके
होमबलि के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूं; सम्भव है कि यहोवा मुझ से भेंट
करने को आए; और जो कुछ वह मुझ पर प्रकाश करेगा वही मैं तुझ को
बताऊंगा। तब वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया। 4 और परमेश्वर बिलाम से मिला;

और बिलाम ने उस से कहा, मैं ने सात वेदियां तैयार की हैं, और प्रत्थेक वेदी पर
एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया है। 5 यहोवा ने बिलाम के मुंह में एक बाल
डालीं, और कहा, बालाक के पास लौट जो, और योंकहना। 6 और वह उसके पास
लौटकर आ गया, और क्या देखता है, कि वह सारे मोआबी हाकिमोंसमेत अपके
होमबलि के पास खड़ा है। 7 तब बिलाम ने अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और
कहने लगा, बालाक ने मुझे आराम से, अर्यात् मोआब के राजा ने मुझे पूरब के
पहाड़ोंसे बुलवा भेजा: आ, मेरे लिथे याकूब को शाप दे, आ, इस्त्राएल को धमकी दे!
8 परन्तु जिन्हें ईश्वर ने नहीं शाप दिया उन्हें मैं क्योंशाप दूं? और जिन्हें यहोवा ने
धमकी नहीं दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूं? 9 चट्टानोंकी चोटी पर से वे मुझे दिखाई
पड़ते हैं, पहाडिय़ोंपर से मैं उनको देखता हूं; वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी
रहेगी, और अन्यजातियोंसे अलग गिनी जाएगी! 10 याकूब के धूलि के किनके
को कौन गिन सकता है, वा इस्त्राएल की चौयाई की गिनती कौन ले सकता है?
सौभाग्य यदि मेरी मृत्यु धमिर्योंकी सी, और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो!
11 तब बालाक ने बिलाम से कहा, तू ने मुझ से क्या किया है? 12 उस ने कहा, जो
बात यहोवा ने मुझे सिखलाई क्या मुझे उसी को सावधानी से बोलना न चाहिथे?
13 बालाक ने उस से कहा, मेरे संग दूसरे स्यान पर चल, जहां से वे तुझे दिखाई
देंगे; तू उन सभोंको तो नहीं, केवल बाहरवालोंको देख सकेगा; वहां से उन्हें मेरे
लिथे शाप दे। 14 तब वह उसको सोपीम नाम मैदान में पिसगा के सिक्के पर ले
गया, और वहां सात वेदियां बनवाकर प्रत्थेक पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा
चढ़ाया। 15 तब बिलाम ने बालाक से कहा, अपके होमबलि के पास यहीं खड़ा रह,
और मैं उधर जाकर यहोवा से भेंट करूं। 16 और यहोवा ने बिलाम से भेंट की,

और उस ने उसके मुंह में एक बात डाली, और कहा, कि बालाक के पास लौट जा,
और योंकहना। 17 और वह उसके पास गया, और क्या देखता है, कि वह मोआबी
हाकिमोंसमेत अपके होमबलि के पास खड़ा है। और बालाक ने पूछा, कि यहोवा ने
क्या कहा है? 18 तब बिलाम ने अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,
हे बालाक, मन लगाकर सुन, हे सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर कान लगा: 19 ईश्वर
मनुष्य नहीं, कि फूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपक्की इच्छा बदले। क्या
जो कुछ उस ने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उस पूरा न करे? 20 देख,
आशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैं ने पाई है: वह आशीष दे चुका है, और मैं उसे नहीं
पलट सकता। 21 उस ने याकूब में अनर्थ नहीं पाया; और न इस्त्राएल में अन्याय
देखा है। उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग है, और उन में राजा की सी ललकार
होती है। 22 उनको मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिथे आ रहा है, वह तो बैनेले सांड
के समान बल रखता है। 23 निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और
इस्त्राएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता; परन्तु याकूब और इस्त्राएल के
विषय अब यह कहा जाएगा, कि ईश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया है! 24 सुन,
वह दल सिंहनी की नाई उठेगा, और सिंह की नाई खड़ा होगा; वह जब तक अहेर
को न खा ले, और मरे हुओं के लोहू को न पी ले, तब तक न लेटेगा।। 25 तब
बालाक ने बिलाम से कहा, उनको न तो शाप देना, और न आशीष देना। 26
बिलाम ने बालाक से कहा, क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा, कि जो कुछ यहोवा मुझ
से कहेगा, वही मुझे करना पकेगा? 27 बालाक ने बिलाम से कहा चल, मैं तुझ को
एक और स्यान पर ले चलता हूं; सम्भव है कि परमेश्वर की इच्छा हो कि तू वहां
से उन्हें मेरे लिथे शाप दे। 28 तब बालाक बिलाम को पोर के सिक्के पर, जहां से

यशीमोन देश दिखाई देता है, ले गया। 29 और बिलाम ने बालाक से कहा, यहां
पर मेरे लिथे सात वेदियां बनवा, और यहां सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर।
30 बिलाम के कहने के अनुसार बालाक ने प्रत्थेक वेदी पर एक बछड़ा और एक
मेढ़ा चढ़ाया।।

गिनती 24

1 यह देखकर, कि यहोवा इस्त्राएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम
पहिले की नाई शकुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुंह जंगल की ओर कर
लिया। 2 और बिलाम ने आंखे उठाई, और इस्त्राएलियोंको अपके गोत्र गोत्र के
अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। 3 तब उसने
अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, कि बोर के पुत्र बिलाम की यह
वाणी है, जिस पुरूष की आंखें बन्द यीं उसी की यह वाणी है, 4 ईश्वर के वचनोंका
सुननेवाला, जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आंखोंसे सर्वशक्तिमान का दर्शन
पाता है, उसी की यह वाणी है: कि 5 हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इस्त्राएल, तेरे
निवासस्यान क्या ही मनभावने हैं! 6 वे तो नालोंवा घाटियोंकी नाई, और नदी के
तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर
के वृझ, और जल के निकट के देवदारू। 7 और उसके डोलोंसे जल उमण्डा करेगा,
और उसका बीच बहुतेरे जलभरे खेतोंमें पकेगा, और उसका राजा अगाग से भी
महान होगा, और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा। 8 उसको मिस्र में से ईश्वर की
निकाले लिथे आ रहा है; वह तो बनैले सांड़ के सामान बल रखता है, जाति जाति
के लोग जो उसके द्रोही है उनको वह खा जाथेगा, और उनकी हड्डियोंको टुकड़े

टुकड़े करेगा, और अपके तीरोंसे उनको बेधेगा। 9 वह दबका बैठा है, वह सिंह वा
सिंहनी की नाई लेट गया है; अब उसको कौन छेड़े? जो कोई तुझे आशीर्वाद दे सो
आशीष पाए, और जो कोई तुझे शाप दे वह स्रापित हो।। 10 तब बालाक का कोप
बिलाम पर भड़क उठा; और उस ने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, मैं ने
तुझे अपके शत्रुओं के शाप देने के लिथे बुलवाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें
आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। 11 इसलिथे अब तू अपके स्यान पर भाग जा; मैं
ने तो सोचा या कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने
से रोक रखा है। 12 बिलाम ने बालाक से कहा, जो दूत तू ने मेरे पास भेजे थे, क्या
मैं ने उन से भी न कहा या, 13 कि चाहे बालाक अपके घर को सोने चांदी से
भरकर मुझे दे, तौभी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपके मन से न तो भला कर
सकता हूं और न बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूंगा? 14 अब सुन, मैं
अपके लोगोंके पास लौट कर जाता हूं; परन्तु पहिले मैं तुझे चिता देता हूं कि
अन्त के दिनोंमें वे लोग तेरी प्रजा से क्या क्या करेंगे। 15 फिर वह अपक्की गूढ़
बात आरम्भ करके कहने लगा, कि बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस
पुरूष की आंखे बन्द यी उसी की यह वाणी है, 16 ईश्वर के वचनोंका सुननेवाला,
और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई
आंखोंसे सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है: कि 17 मै उसको
देखूंगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहारूंगा तो सही, परन्तु समीप होके
नहीं: याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा;
जो मोआब की अलंगोंको चूर कर देगा, जो सब दंगा करनेवालोंको गिरा देगा। 18
तब एदोम और सेईर भी, जो उसके शत्रु हैं, दोनोंउसके वश में पकेंगे, और

इस्त्राएल वीरता दिखाता जाएगा। 19 और याकूब ही में से एक अधिपति आवेगा
जो प्रभुता करेगा, और नगर में से बचे हुओं को भी सत्यानाश करेगा।। 20 फिर
उस ने अमालेक पर दृष्टि करके अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,
अमालेक अन्यजातियोंमें श्रेष्ट तो या, परन्तु उसका अन्त विनाश ही है।। 21 फिर
उस ने केनियोंपर दृष्टि करके अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, तेरा
निवासस्यान अति दृढ़ तो है, और तेरा बसेरा चट्टान पर तो है; 22 तौभी केन
उजड़ जाएगा। और अन्त में अश्शूर् तुझे बन्धुआई में ले आएगा।। 23 फिर उस
ने अपक्की गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, हाथ जब ईश्वर यह करेगा तब
कौन जीवित बचेगा? 24 तौभी कित्तियोंके पास से जहाजवाले आकर अश्शूर् को
और एबेर को भी दु:ख देंगे; और अन्त में उसका भी विनाश हो जाएगा।। 25 तब
बिलाम चल दिया, और अपके स्यान पर लौट गया; और बालाक ने भी अपना
मार्ग लिया।।

गिनती 25

1 इस्त्राएली शित्तीम में रहते थे, और लोग मोआबी लड़कियोंके संग कुकर्म करने
लगे। 2 और जब उन स्त्रीयोंने उन लोगोंको अपके देवताओं के यज्ञोंमें नेवता
दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे। 3 योंइस्त्राएली
बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्त्राएल पर भड़क उठा; 4
और यहोवा ने मूसा से कहा, प्रजा के सब प्रधानोंको पकड़कर यहोवा के लिथे धूप
में लटका दे, जिस से मेरा भड़का हुआ कोप इस्त्राएल के ऊपर से दूर हो जाए। 5
तब मूसा ने इस्त्राएली न्यायियोंसे कहा, तुम्हारे जो जो आदमी बालपोर के संग

मिल गए हैं उन्हें घात करो।। 6 और जब इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रो रही यी, तो एक इस्त्राएली पुरूष मूसा और सब
लोगोंकी आंखोंके सामने एक मिद्यानी स्त्री को अपके साय अपके भाइयोंके पास ले
आया। 7 इसे देखकर एलीआजर का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता या,
उस ने मण्डली में से उठकर हाथ में एक बरछी ली, 8 और उस इस्त्राएली पुरूष के
डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया, और उस पुरूष और उस स्त्री दोनोंके पेट में
बरछी बेध दी। इस पर इस्त्राएलियोंमें जो मरी फैल गई यी वह यम गई। 9 और
मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गए।। 10 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 11 हारून
याजक का पोता एलीआजर का पुत्र पीनहास, जिसे इस्त्राएलियोंके बीच मेरी सी
जलन उठी, उस ने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है, कि मैं ने
जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला। 12 इसलिथे तू कह दे, कि मैं उस से शांति
की वाचा बान्धता हूं; 13 और वह उसके लिथे, और उसके बाद उसके वंश के
लिथे, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसे अपके परमेश्वर के लिथे
जलन उठी, और उस ने इस्त्राएलियोंके लिथे प्रायश्चित्त किया। 14 जो इस्त्राएली
पुरूष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री या, वह साल का पुत्र और
शिमोनियोंमें से अपके पितरोंके घराने का प्रधान या। 15 और जो मिद्यानी स्त्री
मारी गई उसका नाम कोजबी या, वह सूर की बेटी यी, जो मिद्यानी पितरोंके एक
घराने के लोगोंका प्रधान या।। 16 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 17 मिद्यानियोंको
सता, और उन्हें मार; 18 क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को
छल करके सताते हैं। कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियोंकी
जाति बहिन यी, और मरी के दिन में पोर के मामले में मारी गई।।

गिनती 26

1 फिर यहोवा ने मूसा और एलीआजर नाम हारून याजक के पुत्र से कहा, 2
इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली में जितने बीस वर्ष के, वा उस से अधिक अवस्या के
होने से इस्त्राएलियोंके बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरोंके घरानोंके
अनुसार उन सभोंकी गिनती करो। 3 सो मूसा और एलीआजर याजक ने यरीहो के
पास यरदन नदी के तीर पर मोआब के अराबा में उन से समझाके कहा, 4 बीस
वर्ष के और उस से अधिक अवस्या के लोगोंकी गिनती लो, जैसे कि यहोवा ने
मूसा और इस्त्राएलियोंको मिस्र देश से निकले आने के समय आज्ञा दी यी।। 5
रूबेन जो इस्त्राएल का जेठा या; उसके थे पुत्र थे; अर्यात् हनोक, जिस से
हनोकियोंका कुल चला; और पल्लू, जिस से पल्लूइयोंका कुल चला; 6 हेस्रोन,
जिस से हेस्रोनियोंका कुल चला; और कर्मी, जिस से कर्मियोंका कुल चला। 7
रूबेनवाले कुल थे ही थे; और इन में से जो गिने गए वे तैतालीस हजार सात सौ
तीस पुरूष थे। 8 और पल्लू का पुत्र एलीआब या। 9 और पल्लू का पुत्र नमूएल,
दातान, और अबीराम थे। थे वही दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे; और
जिस समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से फगड़ा किया या, उस समय उस
मण्डली में मिलकर वे भी मूसा और हारून से फगड़े थे; 10 और जब उन अढ़ाई
सौ मनुष्योंके आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई, उसी समय पृय्वी
ने मुंह खोलकर कोरह समेत इनको भी निगल लिया; और वे एक दृष्टान्त ठहरे।
11 परन्तु कोरह के पुत्र तो नहीं मरे थे। 12 शिमोन के पुत्र जिन से उनके कुल
निकले वे थे थे; अर्यात् नमूएल, जिस से नमूएलियोंका कुल चला; और यामीन,
जिस से यामीनियोंका कुल चला; 13 और जेरह, जिस से जेरहियोंका कुल चला;

और शाऊल, जिस से शाऊलियोंका कुल चला। 14 शिमोनवाले कुल थे ही थे; इन
में से बाईस हजार दो सौ पुरूष गिने गए।। 15 और गाद के पुत्र जिस से उनके
कुल निकले वे थे थे; अर्यात् सपोन, जिस से सपोनियोंका कुल चला; और हाग्गी,
जिस से हाग्गियोंका कुल चला; और शूनी, जिस से शूनियोंका कुल चला; और
ओजनी, जिस से ओजनियोंका कुल चला; 16 और एरी, जिस से एरियोंका कुल
चला; और अरोद, जिस से अरोदियोंका कुल चला; 17 और अरेली, जिस से
अरेलियोंका कुल चला। 18 गाद के वंश के कुल थे ही थे; इन में से साढ़े चालीस
हजार पुरूष गिने गए।। 19 और यहूदा के एक और ओनान नाम पुत्र तो हुए,
परन्तु वे कनान देश में मर गए। 20 और यहूदा के जिन पुत्रोंसे उनके कुल निकले
वे थे थे; अर्यात् शेला, जिस से शेलियोंका कुल चला; और पेरेस जिस से
पेरेसियोंका कुल चला; और जेरह, जिस से जेरहियोंका कुल चला। 21 और पेरेस
के पुत्र थे थे; अर्यात् हेस्रोन, जिस से हेस्रोनियोंका कुल चला; और हामूल, जिस से
हामूलियोंका कुल चला। 22 यहूदियोंके कुल थे ही थे; इन में से साढ़े छिहत्तर
हजार पुरूष गिने गए।। 23 और इस्साकार के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे
थे थे; अर्यात् तोला, जिस से तोलियोंका कुल चला; और पुव्वा, जिस से
पुव्वियोंका कुल चला; 24 और याशूब, जिस से याशूबियोंका कुल चला; और
शिम्रोन, जिस से शिम्रोनियोंका कुल चला। 25 इस्साकारियोंके कुल थे ही थे; इन
में से चौसठ हजार तीन सौ पुरूष गिने गए।। 26 और जबूलून के पुत्र जिन से
उनके कुल निकले वे थे थे; अर्यात् सेरेद जिस से सेरेदियोंका कुल चला; और
एलोन, जिस से एलोनियोंका कुल चला; और यहलेल, जिस से यहलेलियोंका कुल
चला। 27 जबूलूनियोंके कुल थे ही थे; इन में से साढ़े साठ हजार पुरूष गिने गए।।

28 और यूसुफ के पुत्र जिस से उनके कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे। 29
मनश्शे के पुत्र थे थे; अर्यात् माकीर, जिस से माकीरियोंका कुल चला; और माकीर
से गिलाद उत्पन्न हुआ; और गिलाद से गिलादियोंका कुल चला। 30 गिलाद के
तो पुत्र थे थे; अर्यात् ईएजेर, जिस से ईएजेरियोंका कुल चला; 31 और हेलेक,
जिस से हेलेकियोंका कुल चला और अस्त्रीएल, जिस से अस्त्रीएलियोंका कुल चला;
और शेकेम, जिस से शेकेमियोंका कुल चला; और शमीदा, जिस से शमीदियोंका
कुल चला; 32 और हेपेर, जिस से हेपेरियोंका कुल चला; 33 और हेपेर के पुत्र
सलोफाद के बेटे नहीं, केवल बेटियां हुई; इन बेटियोंके नाम महला, नोआ, होग्ला,
मिल्का, और तिर्सा हैं। 34 मनश्शेवाले कुल थे ही थे; और इन में से जो गिने गए
वे बावन हजार सात सौ पुरूष थे।। 35 और एप्रैम के पुत्र जिन से उनके कुल
निकले वे थे थे; अर्यात् शूतेलह, जिस से शूतेलहियोंका कुल चला; और बेकेर,
जिस से बेकेरियोंका कुल चला; और तहन जिस से तहनियोंका कुल चला। 36
और शूतेलह के यह पुत्र हुआ; अर्यात् एरान, जिस से एरानियोंका कुल चला। 37
एप्रैमियोंके कुल थे ही थे; इन में से साढ़े बत्तीस हजार पुरूष गिने गए। अपके
कुलोंके अनुसार यूसुफ के वंश के लोग थे ही थे।। 38 और बिन्यामीन के पुत्र जिन
से उनके कुल निकले वे थे थे; अर्यात् बेला जिस से लेवियोंका कुल चला; और
अशबेल, जिस से अशबेलियोंका कुल चला; और अहीराम, जिस से अहीरामियोंका
कुल चला; 39 और शपूपास, जिस से शपूपामियोंका कुल चला; और हूपाम, जिस
से हूपामियोंका कुल चला। 40 और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे; और अर्द से
तो अदिर्योंको कुल, और नामान से नामानियोंका कुल चला। 41 अपके कुलोंके
अनुसार बिन्यामीनी थे ही थे; और इन में से जो गिने गए वे पैंतालीस हजार छ:

सौ पुरूष थे।। 42 और दान का पुत्र जिस से उनका कुल निकला यह था; अर्यात्
शूहाम, जिस से शूहामियोंका कुल चला। और दान का कुल यही था। 43 और
शूहामियोंमें से जो गिने गए उनके कुल में चौसठ हजार चार सौ पुरूष थे।। 44
और आशेर के पुत्र जिस से उनके कुल निकले वे थे थे; अर्यात् यिम्ना, जिस से
यिम्नियोंका कुल चला; यिश्‍ी, जिस से यिश्‍ियोंका कुल चला; और बरीआ,
जिस से बरीइयोंका कुल चला। 45 फिर बरीआ के थे पुत्र हुए; अर्यात् हेबेर, जिस
से हेबेरियोंका कुल चला; और मल्कीएल, जिस से मल्कीएलियोंका कुल चला। 46
और आशेर की बेटी का नाम सेरह है। 47 आशेरियोंके कुल थे ही थे; इन में से
तिर्पन हजार चार सौ पुरूष गिने गए।। 48 और नप्ताली के पुत्र जिस से उनके कुल
निकले वे थे थे; अर्यात् यहसेल, जिस से यहसेलियोंका कुल चला; और गूनी, जिस
से गूनियोंका कुल चला; 49 थेसेर, जिस से थेसेरियोंका कुल चला; और शिल्लेम,
जिस से शिल्लेमियोंका कुल चला। 50 अपके कुलोंके अनुसार नप्ताली के कुल थे
ही थे; और इन में से जो गिने गए वे पैंतालीस हजार चार सौ पुरूष थे।। 51 सब
इस्त्राएलियोंमें से जो गिने गए थे वे थे ही थे; अर्यात् छः लाख एक हजार सात सौ
तीस पुरूष थे।। 52 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 53 इनको, इनकी गिनती के
अनुसार, वह भूमि इनका भाग होने के लिथे बांट दी जाए। 54 अर्यात् जिस कुल
से अधिक होंउनको अधिक भाग, और जिस में कम होंउनको कम भाग देना;
प्रत्थेक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगोंके अनुसार दिया जाए। 55
तौभी देश चिट्ठी डालकर बांटा जाए; इस्त्राएलियोंके पितरोंके एक एक गोत्र का
नाम, जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाएं। 56 चाहे बहुतोंका
भाग हो चाहे योड़ोंका हो, जो जो भाग बांटे जाएं वह चिट्ठी डालकर बांटे जाएं।।

57 फिर लेवियोंमें से जो अपके कुलोंके अनुसार गिने गए वे थे हैं; अर्यात्
गेर्शोनियोंसे निकला हुआ गेर्शोनियोंका कुल; कहात से निकला हुआ कहातियोंका
कुल; और मरारी से निकला हुआ मरारियोंका कुल। 58 लेवियोंके कुल थे हैं;
अर्यात् लिब्नियोंका, हेब्रानियोंका, महलियोंका, मूशियोंका, और कोरहियोंका
कुल। और कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ। 59 और अम्राम की पत्नी का नाम
योकेबेद है, वह लेवी के वंश की यी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई
यी; और वह अम्राम से हारून और मूसा और उनकी बहिन मरियम को भी जनी।
60 और हारून से नादाब, अबीहू, एलीआजर, और ईतामार उत्पन्न हुए। 61
नादाब और अबीहू तो उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के साम्हने ऊपक्की
आग ले गए थे। 62 सब लेवियोंमें से जो गिने गथे, अर्यात् जितने पुरूष एक
महीने के वा उस से अधिक अवस्या के थे, वे तेईस हजार थे; वे इस्त्राएलियोंके
बीच इसलिथे नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया
या।। 63 मूसा और एलीआजर याजक जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो के
पास की यरदन नदी के तट पर इस्त्राएलियोंको गिन लिया, उनके गिने हुए लोग
इतने ही थे। 64 परन्तु जिन इस्त्राएलियोंको मूसा और हारून याजक ने सीनै के
जंगल में गिना या, उन में से एक पुरूष इस समय के गिने हुओं में न या। 65
क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा या, कि वे निश्चय जंगल में मर जाएंगे,
इसलिथे यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उन में से एक भी
पुरूष नहीं बचा।।

गिनती 27

1 तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलोंमें से सलोफाद, जो हेपेर का पुत्र, और
गिलाद का पोता, और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता या, उसकी बेटियां
जिनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिलका, और तिर्सा हैं वे पास आईं। 2 और वे
मूसा और एलीआजर याजक और प्रधानोंऔर सारी मण्डली के साम्हने
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं, 3 हमारा पिता जंगल में मर
गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न या जो कोरह की मण्डली के संग होकर
यहोवा के विरूद्ध इकट्ठी हुई यी, वह अपके ही पाप के कारण मरा; और उसके
कोई पुत्र न या। 4 तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण
क्योंमिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे। 5
उनकी यह बिनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। 6 यहोवा ने मूसा से कहा, 7
सलोफाद की बेटियां ठीक कहती हैं; इसलिथे तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी
अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्यात् उनके पिता का भाग उनके हाथ
सौंप दे। 8 और इस्त्राएलियोंसे यह कह, कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो
उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। 9 और यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो
उसका भाग उसके भाइयोंको देना। 10 और यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका
भाग चाचाओं को देना। 11 और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से
उसका जो कुटुम्बी सब से समीप हो उसको उसका भाग देना, कि वह उसका
अधिक्कारनी हो। इस्त्राएलियोंके लिथे यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।। 12 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस अबारीम नाम
पर्वत के ऊपर चढ़के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्त्राएलियोंको दिया है। 13
और जब तू उसको देख लेगा, तब अपके भाई हारून की नाई तू भी अपके लोगोंमे

जा मिलेगा, 14 क्योंकि सीन नाम जंगल में तुम दोनोंने मण्डली के फगड़ने के
समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी
दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया। (यह मरीबा नाम सोता है जो सीन नाम जंगल के
कादेश में है) 15 मूसा ने यहोवा से कहा, 16 यहोवा, जो सारे प्राणियोंकी
आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगोंके ऊपर किसी पुरूष को
नियुक्त कर दे, 17 जो उसके साम्हने आया जाया करे, और उनका निकालने और
पैठानेवाला हो; जिस से यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़ बकरियोंके
समान न रहे। 18 यहोवा ने मूसा से कहा, तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर
हाथ रख; वह तो ऐसा पुरूष है जिस में मेरा आत्मा बसा है; 19 और उसको
एलीआजर याजक के और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके उनके साम्हने
उसे आज्ञा दे। 20 और अपक्की महिमा में से कुछ उसे दे, जिस से इस्त्राएलियोंकी
सारी मण्डली उसकी माना करे। 21 और वह एलीआजर याजक के साम्हने खड़ा
हुआ करे, और एलीआजर उसके लिथे यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और
वह इस्त्राएलियोंकी सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे, और उसी के
कहने से लौट भी आया करे। 22 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू
को लेकर, एलीआजर याजक और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके, 23 उस
पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा या।।

गिनती 28

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंको यह आज्ञा सुना कि मेरा चढ़ावा,
अर्यात् मुझे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यरूपी भोजन, तुम लोग मेरे

लिथे उनके नियत समयोंपर चढ़ाने के लिथे स्मरण रखना। 3 और तू उन से कह,
कि जो जो तुम्हें यहोवा के लिथे चढ़ाना होगा वे थे हैं; अर्यात् नित्य होमबलि के
लिथे एक एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करे। 4 एक बच्चे
को भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाना; 5 और भेड़ के बच्चे के पीछे
एक चौयाई हीन कूटके निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदे का
अन्नबलि चढ़ाना। 6 यह नित्य होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर यहोवा का
सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिथे ठहराया गया। 7 और उसका अर्घ प्रति
एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौयाई हीन हो; मदिरा का यह अर्घ यहोवा के लिथे
पवित्रस्यान में देना। 8 और दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना; अन्नबलि
और अर्घ समेत भोर के होमबलि की नाईं उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देनेवाला हव्य करके चढ़ाना।। 9 फिर विश्रमदिन को दो निर्दोष भेड़ के एक साल
के नर बच्चे, और अन्नबलि के लिथे तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश
मैदा अर्घ समेत चढ़ाना। 10 नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा प्रत्थेक
विश्रमदिन का यही होमबलि ठहरा है।। 11 फिर अपके महीनोंके आरम्भ में
प्रतिमास यहोवा के लिथे होमबलि चढ़ाना; अर्यात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक
एक वर्ष के निर्दोष भेड़ के सात बच्चे; 12 और बछड़े पीछे तेल से सना हुआ एपा
का तीन दसवां अंश मैदा, और उस एक मेढ़े के साय तेल से सना हुआ एपा का दो
दसवां अंश मैदा; 13 और प्रत्थेक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एपा का
दसवां अंश मैदा, उन सभोंको अन्नबलि करके चढ़ाना; वह सुखदायक सुगन्ध
देने के लिथे होमबलि और यहोवा के लिथे हव्य ठहरेगा। 14 और उनके साय थे
अर्घ हों; अर्यात् बछड़े पीछे आध हीन, मेढ़े के साय तिहाई हीन, और भेड़ के बच्चे

पीछे चौयाई हीन दाखमधु दिया जाए; वर्ष के सब महीनोंमें से प्रति एक महीने का
यही होमबलि ठहरे। 15 और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिथे चढ़ाया
जाए; यह नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए।। 16 फिर
पहिले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे। 17 और उसी महीने
के पन्द्रहवें दिन को पर्ब्ब लगा करे; सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई जाए। 18
पहिले दिन पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए; 19
उस में तुम यहोवा के लिथे हव्य, अर्यात् होमबलि चढ़ाना; सो दो बछड़े, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे हों; थे सब निर्दोष हों; 20 और उनका
अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश और
मेढ़े के सात एपा का दो दसवां अंश मैदा हो। 21 और सातोंभेड़ के बच्चोंमें से प्रति
एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश चढ़ाना। 22 और एक बकरा भी पापबलि
करके चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिथे प्रायश्चित्त हो। 23 भोर का होमबलि जो नित्य
होमबलि ठहरा है, उसके अलावा इनको चढ़ाना। 24 इस रीति से तुम उन
सातोंदिनोंमें भी हव्य का भोजन चढ़ाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के
लिथे हो; यह नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए। 25 और
सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न
करना।। 26 फिर पहिली उपज के दिन में, जब तुम अपके अठवारे नाम पर्ब्ब में
यहोवा के लिथे नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और
परिश्रम का कोई काम न करना। 27 और एक होमबलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के
लिथे सुखदायक सुगन्ध हो; अर्यात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात
भेड़ के बच्चे; 28 और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्यात् बछड़े

पीछे एपा का तीन दसवां अंश, और मेढ़े के संग एपा का दो दसवां अंश, 29 और
सातोंभेड़ के बच्चोंमें से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना।
30 और एक बकरा भी चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिथे प्रायश्चित्त हो। 31 थे सब
निर्दोष हों; और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा इसको
भी चढ़ाना।।

गिनती 29

1 फिर सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; उस में परिश्रम का
कोई काम न करना। वह तुम्हारे लिथे जयजयकार का नरसिंगा फूंकने का दिन
ठहरा है; 2 तुम होमबलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्ध हो;
अर्यात् बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे; 3 और
उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्यात् बछड़े के साय एपा का दो
दसवां अंश, 4 और सातोंभेड़ के बच्चोंमें से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां
अंश मैदा चढ़ाना। 5 और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिस से तुम्हारे
लिथे प्रायश्चित्त हो। 6 इन सभोंसे अधिक नए चांद का होमबलि और उसका
अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका अन्नबलि, और उन सभोंके अर्घ भी
उनके नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के लिथे यहोवा के हव्य करके
चढ़ाना।। 7 फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम
अपके अपके प्राण को दु:ख देना, और किसी प्रकार का कामकाज न करना; 8 और
यहोवा के लिथे सुखदायक सुगन्ध देने को होमबलि; अर्यात् एक बछड़ा, एक
मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे चढ़ाना; फिर थे सब निर्दोष हों; 9

और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्यात् बछड़े के साय एपा का
तीन दसवां अंश, और मेढ़े के साय एपा का दो दसवां अंश, 10 और सातोंभेड़ के
बच्चोंमें से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। 11 और
पापबलि के लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य
होमबलि और उसके अन्नबलि के, और उन सभोंके अर्घो के अलावा चढ़ाया
जाए।। 12 फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; और
उस में परिश्रम का कोई काम न करना, और सात दिन तक यहोवा के लिथे पर्ब्ब
मानना; 13 तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिथे हव्य करके
चढ़ाना; अर्यात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह भेड़ के बच्चे;
थे सब निर्दोष हों; 14 और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्यात्
तेरहोंबछड़ोंमें से एक एक बछड़े के पीछे एपा का तीन दसवां अंश, और
दोनोंमेढ़ोंमें से एक एक मेढ़े के पीछे एपा का दो दसवां अंश, 15 और चौदहोंभेड़ के
बच्चोंमें से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। 16 और
पापबलि के लिथे एक बकरा चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि
और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं।। 17 फिर दूसरे दिन बारह बछड़े, और दो मेढ़े,
और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; 18 और बछड़ों, और
मेढ़ों, और भेड़ के बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के
अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।। 19 और पापबलि के लिथे एक बकरा
भी चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए
जाएं।। 20 फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के
चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; 21 और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के

बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम
के अनुसार चढ़ाना। 22 और पापबलि के लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे नित्य
होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं।। 23 और फिर
चौथे दिन दस बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे
चढ़ाना; 24 बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और
अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। 25 और
पापबलि के लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि
और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं।। 26 फिर पांचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े, और
एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; 27 और बछड़ों, मेढ़ों, और भेड़
के बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और
नियम के अनुसार चढ़ाना। 28 और पापबलि के लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे
नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं।। 29 फिर
छठवें दिन आठ बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के
बच्चे चढ़ाना; 30 और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चोंके साय उनके
अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार चढ़ाना। 31 और पापबलि के
लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के
अलावा चढ़ाए जाएं।। 32 फिर सातवें दिन सात बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक
वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। 33 और बछड़ोंऔर मेढ़ों, और भेड़ के
बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार चढ़ाना। 34
और पापबलि के लिथे एक बकरा भी चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं।। 35 फिर आठवें दिन तुम्हारी एक

महासभा हो; उस में परिश्रम का कोई काम न करना, 36 और उस में होमबलि
यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिथे हव्य करके चढ़ाना; वह एक बछड़े,
और एक मेढ़े, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चोंका हो; 37 बछड़े,
और मेढ़े, और भेड़ के बच्चोंके साय उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के
अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। 38 और पापबलि के लिथे एक बकरा
भी चढ़ाना; थे नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए
जाएं।। 39 अपक्की मन्नतोंऔर स्वेच्छाबलियोंके अलावा, अपके अपके नियत
समयोंमें, थे ही होमबलि, अन्नबलि, अर्घ, और मेलबलि, यहोवा के लिथे चढ़ाना।
40 यह सारी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी जो उस ने इस्त्राएलियोंको सुनाई।।

गिनती 30

1 फिर मूसा ने इस्त्राएली गोत्रोंके मुख्य मुख्य पुरूषोंसे कहा, यहोवा ने यह आज्ञा
दी है, 2 कि जब कोई पुरूष यहोवा की मन्नत माने, वा अपके आप को वाचा से
बान्धने के लिथे शपय खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुंह से
निकला हो उसके अनुसार वह करे। 3 और जब कोई स्त्री अपक्की कुंवारी अवस्या
में, अपके पिता के घर से रहते हुए, यहोवा की मन्नत माने, वा अपके को वाचा से
बान्धे, 4 तो यदि उसका पिता उसकी मन्नत वा उसका वह वचन सुनकर, जिस
से उसने अपके आप को बान्धा हो, उस से कुछ न कहे; तब तो उसकी सब मन्नतें
स्यिर बनी रहें, और कोई बन्धन क्योंन हो, जिस से उस ने अपके आप को बान्धा
हो, वह भी स्यिर रहे। 5 परन्तु यदि उसका पिता उसकी सुनकर उसी दिन उसको
बरजे, तो उसकी मन्नतें वा और प्रकार के बन्धन, जिन से उस ने अपके आप को

बान्धा हो, उन में से एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह जान कर, कि उस स्त्री
के पिता ने उसे मना कर दिया है, उसका यह पाप झमा करेगा। 6 फिर यदि वह
पति के अधीन हो और मन्नत माने, वा बिना सोच विचार किए ऐसा कुछ कहे
जिस से वह बन्धन में पके, 7 और यदि उसका पति सुनकर उस दिन उससे कुछ
न कहे; तब तो उसकी मन्नतें स्थिर रहें, और जिन बन्धनोंसे उस ने अपके आप
को बान्धा हो वह भी स्थिर रहें। 8 परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन उसे
मना कर दे, तो जो मन्नत उस ने मानी है, और जो बात बिना सोच विचार किए
कहने से उस ने अपके आप को वाचा से बान्धा हो, वह टूट जाएगी; और यहोवा
उस स्त्री का पाप झमा करेगा। 9 फिर विधवा वा त्यागी हुई स्त्री की मन्नत, वा
किसी प्रकार की वाचा का बन्धन क्योंन हो, जिस से उस ने अपके आप को बान्धा
हो, तो वह स्थिर ही रहे। 10 फिर यदि कोई स्त्री अपके पति के घर में रहते मन्नत
माने, वा शपय खाकर अपके आप को बान्धे, 11 और उसका पति सुनकर कुछ न
कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और हर
एक बन्धन क्योंन हो, जिस से उस ने अपके आप को बान्धा हो, वह स्थिर रहे।
12 परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्नत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से
तोड़ दे, तो उसकी मन्नतें आदि, जो कुछ उसके मुंह से अपके बन्धन के विषय
निकला हो, उस में से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति ने सब तोड़ दिया है;
इसलिथे यहोवा उस स्त्री का वह पाप झमा करेगा। 13 कोई भी मन्नत वा शपय
क्योंन हो, जिस से उस स्त्री ने अपके जीव को दु:ख देने की वाचा बान्धी हो, उसको
उसका पति चाहे तो दृढ़ करे, और चाहे तो तोड़े; 14 अर्यात् यदि उसका पति दिन
प्रति दिन उस से कुछ भी न कहे, तो वह उसको सब मन्नतें आदि बन्धनोंको

जिस से वह बन्धी हो दृढ़ कर देता है; उस ने उनको दृढ़ किया है, क्योंकि सुनने के
दिन उस ने कुछ नहीं कहा। 15 और यदि वह उन्हें सुनकर पीछे तोड़ दे, तो
अपक्की स्त्री के अधर्म का भार वही उठाएगा। 16 पति पत्नी के बीच, और पिता
और उसके घर मे रहती हुई कुंवारी बेटी के बीच, जिन विधियोंकी आज्ञा यहोवा ने
मूसा को दी वे थे ही हैं।।

गिनती 31

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 मिद्यानियोंसे इस्त्राएलियोंका पलटा ले; बाद को
तू अपके लोगोंमें जा मिलेगा। 3 तब मूसा ने लोगोंसे कहा, अपके में से पुरूषोंको
युद्ध के लिथे हयियार बन्धाओ, कि वे मिद्यानियोंपर चढ़के उन से यहोवा का
पलटा ले। 4 इस्त्राएल के सब गोत्रोंमें से प्रत्थेक गोत्र के एक एक हजार पुरूषोंको
युद्ध करने के लिथे भेजो। 5 तब इस्त्राएल के सब गोत्रोंमें से प्रत्थेक गोत्र के एक
एक हजार पुरूष चुने गथे, अर्यात् युद्ध के लिथे हयियार-बन्द बारह हजार पुरूष।
6 प्रत्थेक गोत्र में से उन हजार हजार पुरूषोंको, और एलीआजर याजक के पुत्र
पीनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिथे भेजा, और उसके हाथ में पवित्रस्यान के
पात्र और वे तुरहियां यीं जो सांस बान्ध बान्ध कर फूंकी जाती यीं। 7 और जो
आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी यी, उसके अनुसार उन्होंने मिद्यानियोंसे युद्ध करके
सब पुरूषोंको घात किया। 8 और दूसरे जूफे हुओं को छोड़ उन्होंने एवी, रेकेम,
सूर, हूर, और रेबा नाम मिद्यान के पांचोंराजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र
बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया। 9 और इस्त्राएलियोंने मिद्यानी
स्त्रियोंको बालबच्चोंसमेत बन्धुआई में कर लिया; और उनके गाय-बैल,

भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया। 10 और उनके निवास के
सब नगरों, और सब छावनियोंको फूंक दिया; 11 तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु,
सब बन्धुओं और सारी लूट-पाट को लेकर 12 यरीहो के पास की यरदन नदी के
तीर पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआजर याजक
और इस्त्राएलियोंकी मण्डली के पास आए।। 13 तब मूसा और एलीआजर याजक
और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले। 14
और मूसा सहस्त्रपति-शतपति आदि, सेनापतियोंसे, जो युद्ध करके लौटे आते थे
क्रोधित होकर कहने लगा, 15 क्या तुम ने सब स्त्रियोंको जीवित छोड़ दिया? 16
देखे, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्त्राएलियोंसे यहोवा का
विश्वासघात इन्हीं ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली। 17 सो अब
बालबच्चोंमें से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियोंने पुरूष का मुंह देखा हो उन
सभोंको घात करो। 18 परन्तु जितनी लड़कियोंने पुरूष का मुंह न देखा हो उन
सभोंको तुम अपके लिथे जीवित रखो। 19 और तुम लोग सात दिन तक छावनी
के बाहर रहो, और तुम में से जितनोंने किसी प्राणी को घात किया, और जितनोंने
किसी मरे हुए को छूआ हो, वे सब अपके अपके बन्धुओं समेत तीसरे और सातवें
दिनोंमें अपके अपके को पाप छुड़ाकर पावन करें। 20 और सब वों, और चमड़े की
बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालोंकी और लकड़ी की बनी हुई सब
वस्तुओं को पावन कर लो। 21 तब एलीआजर याजक ने सेना के उन पुरूषोंसे जो
युद्ध करने गए थे कहा, व्यवस्या की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है
वह यह है, 22 कि सोना, चांदी, पीतल, लोहा, रांगा, और सीसा, 23 जो कुछ आग
में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तौभी वह अशुद्धता

छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके
उसे जल में डुबाओ। 24 और सातवें दिन अपके वस्त्रोंको धोना, तब तुम शुद्ध
ठहरोगे; और तब छावनी में आना।। 25 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 26
एलीआजर याजक और मण्डली के पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूषोंको साय
लेकर तू लूट के मनुष्योंऔर पशुओं की गिनती कर; 27 तब उनको आधा आधा
करके एक भाग उन सिपाहियोंको जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग
मण्डली को दे। 28 फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा
के लिथे, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियां 29 पांच सौ
के पीछे एक को मानकर ले ले; और यहोवा की भेंट करके एलीआजर याजक को
दे दे। 30 फिर इस्त्राएलियोंके आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे,
क्या भेड़-बकरियां, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पीछे एक लेकर यहोवा
के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियोंको दे। 31 यहोवा की इस आज्ञा के
अनुसार जो उस ने मूसा को दी मूसा और एलीआजर याजक ने किया। 32 और
जो वस्तुएं सेना के पुरूषोंने अपके अपके लिथे लूट ली यीं उन से अधिक की लूट
यह यी; अर्यात् छः लाख पचहत्तर हजार भेड़-बकरियां, 33 बहत्तर हजार गाय बैल,
34 इकसठ हजार गदहे, 35 और मनुष्योंमें से जिन स्त्रियोंने पुरूष का मुंह नहीं
देखा या वह सब बत्तीस हजार यीं। 36 और इसका आधा, अर्यात् उनका भाग जो
युद्ध करने को गए थे, उस में भेड़बकरियां तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार, 37 जिस
में से पौने सात सौ भेड़-बकरियां यहोवा का कर ठहरीं। 38 और गाय-बैल छत्तीस
हजार, जिन में से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे। 39 और गदहे साढ़े तीस हजार,
जिन में से इकसठ यहोवा का कर ठहरे। 40 और मनुष्य सोलह हजार जिन में से

बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे। 41 इस कर को जो यहोवा की भेंट यी मूसा ने
यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआजर याजक को दिया। 42 और इस्त्राएलियोंकी
मण्डली का आधा 43 तीन लाख साढ़े सैंतिस हजार भेड़-बकरियां 44 छत्तीस हजार
गाय-बैल, 45 साढ़े तीस हजार गदहे, 46 और सोलह हजार मनुष्य हुए। 47 इस
आधे में से, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरूषोंके पास से अलग किया या, यहोवा
की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु, पचास पीछे एक लेकर
यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियोंको दिया। 48 तब
सहस्त्रपति-शतपति आदि, जो सरदार सेना के हजारोंके ऊपर नियुक्त थे, वे मूसा
के पास आकर कहने लगे, 49 जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे दासोंने
गिनती ली, और उन में से एक भी नहीं घटा। 50 इसलिथे पायजेब, कड़े, मुंदरियां,
बालियां, बाजूबन्द, सोने के जो गहने, जिस ने पाया है, उनको हम यहोवा के
साम्हने अपके प्राणोंके निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आए
हैं। 51 तब मूसा और एलीआजर याजक ने उन से वे सब सोने के नक्काशीदार
गहने ले लिए। 52 और सहस्त्रपतियोंऔर शतपतियोंने जो भेंट का सोना यहोवा
की भेंट करके दिया वह सब का सब सोलह हजार साढ़े सात सौ शेकेल का या। 53
(योद्धाओं ने तो अपके अपके लिथे लूट ले ली यी।) 54 यह सोना मूसा और
एलीआजर याजक ने सहस्त्रपतियोंऔर शतपतियोंसे लेकर मिलापवाले तम्बू में
पहुंचा दिया, कि इस्त्राएलियोंके लिथे यहोवा के साम्हने स्मरण दिलानेवाली वस्तु
ठहरे।।

गिनती 32

1 रूबेनियोंऔर गादियोंके पास बहुत जानवर थे। जब उन्होंने याजेर और गिलाद
देशोंको देखकर विचार किया, कि वह ढ़ोरोंके योग्य देश है, 2 तब मूसा और
एलीआजर याजक और मण्डली के प्रधानोंके पास जाकर कहने लगे, 3 अतारोत,
दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरोंका देश 4
जिस पर यहोवा ने इस्त्राएल की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह ढोरोंके योग्य
है; और तेरे दासोंके पास ढोर हैं। 5 फिर उन्होंने कहा, यदि तेरा अनुग्रह तेरे
दासोंपर हो, तो यह देश तेरे दासोंको मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन
पार न ले चल। 6 मूसा ने गादियोंऔर रूबेनियोंसे कहा, जब तुम्हारे भाई युद्ध
करने को जाएंगे तब क्या तुम यहां बैठे रहोगे? 7 और इस्त्राएलियोंसे भी उस पार
के देश जाने के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया है तुम क्योंअस्वीकार करवाते हो?
8 जब मैं ने तुम्हारे बापदादोंको कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिथे भेजा, तब
उन्होंने भी ऐसा ही किया या। 9 अर्यात् जब उन्होंने एशकोल नाम नाले तक
पहुंचकर देश को देखा, तब इस्त्राएलियोंसे उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें
दिया या अस्वीकार करा दिया। 10 इसलिथे उस समय यहोवा ने कोप करके यह
शपय खाई कि, 11 नि:सन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आए हैं उन में से,
जितने बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्या के हैं, वे उस देश को देखने न
पाएंगे, जिसके देने की शपय मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई है,
क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिथे; 12 परन्तु यपुन्ने कनजी का पुत्र
कालेब, और नून का पुत्र यहोशू, थे दोनोंजो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिथे हैं थे तो
उसे देखने पाएंगे। 13 सो यहोवा का कोप इस्त्राएलियोंपर भड़का, और जब तक
उस पीढ़ी के सब लोगोंका अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया या,

तब तक अर्यात् चालीस वर्ष तक वह जंगल में मारे मारे फिराता रहा। 14 और
सुनो, तुम लोग उन पापियोंके बच्चे होकर इसी लिथे अपके बाप-दादोंके स्यान
पर प्रकट हुए हो, कि इस्त्राएल के विरूद्ध यहोवा से भड़के हुए कोप को और
भड़काओ! 15 यदि तुम उसके पीछे चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभोंको
जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगोंका नाश कराओगे। 16 तब
उन्होंने मूसा के और निकट आकर कहा, हम अपके ढ़ोरोंके लिथे यहीं भेड़शाले
बनाएंगे, और अपके बालबच्चोंके लिथे यहीं नगर बसाएंगे, 17 परन्तु आप
इस्त्राएलियोंके आगे आगे हयियार बन्द तब तक चलेंगे, जब तक उनको उनके
स्यान में न पहुंचा दे; परन्तु हमारे बालबच्चे इस देश के निवासियोंके डर से
गढ़वाले नगरोंमें रहेंगे। 18 परन्तु जब तक इस्त्राएली अपके अपके भाग के
अधिक्कारनी न होंतब तक हम अपके घरोंको न लौटेंगे। 19 हम उनके साय
यरदन पार वा कहीं आगे अपना भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी
पार पूरब की ओर मिला है। 20 तब मूसा ने उन से कहा, यदि तुम ऐसा करो,
अर्यात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध करने को हयियार बान्धो। 21 और हर
एक हयियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले, जब तक यहोवा अपके आगे से
अपके शत्रुओं को न निकाले 22 और देश यहोवा के वश में न आए; तो उसके पीछे
तुम यहां लौटोगे, और यहोवा के और इस्त्राएल के विषय निर्दोष ठहरोगे; और यह
देश यहोवा के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा। 23 और यदि तुम ऐसा न करो,
तो यहोवा के विरूद्ध पापी ठहरोगे; और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप
लगेगा। 24 तुम अपके बालबच्चोंके लिथे नगर बसाओ, और अपक्की
भेड़-बकरियोंके लिथे भेड़शाले बनाओ; और जो तुम्हारे मुंह से निकला है वही

करो। 25 तब गादियोंऔर रूबेनियोंने मूसा से कहा, अपके प्रभु की आज्ञा के
अनुसार तेरे दास करेंगे। 26 हमारे बालबच्चे, स्त्रियां, भेड़-बकरी आदि, सब पशु
तो यहीं गिलाद के नगरोंमें रहेंगे; 27 परन्तु अपके प्रभु के कहे के अनुसार तेरे
दास सब के सब युद्ध के लिथे हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे लड़ने को पार
जाएंगे। 28 तब मूसा ने उनके विषय में एलीआजर याजक, और नून के पुत्र
यहोशू, और इस्त्राएलियोंके गोत्रोंके पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूषोंको यह
आज्ञा दी, 29 कि यदि सब गादी और रूबेनी पुरूष युद्ध के लिथे हथियार-बन्द
तुम्हारे संग यरदन पार जाएं, और देश तुम्हारे वश में आ जाए, तो गिलाद देश
उनकी निज भूमि होने को उन्हें देना। 30 परन्तु यदि वे तुम्हारे संग
हथियार-बन्द पार न जाएं, तो उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरे।
31 तब गादी और रूबेनी बोल उठे, यहोवा ने जैसा तेरे दासोंसे कहलाया है वैसा ही
हम करेंगे। 32 हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे उस पार कनान देश में
जाएंगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे।। 33 तब मूसा ने
गादियोंऔर रूबेनियोंको, और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियोंको
एमोरियोंके राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनोंके राज्योंका देश, नगरों,
और उनके आसपास की भूमि समेत दे दिया। 34 तब गादियोंने दीबोन, अतारोत,
अरोएर, 35 अत्रौत, शोपान, याजेर, योगबहा, 36 बेतनिम्रा, और बेयारान नाम
नगरोंको दृढ़ किया, और उन में भेड़-बकरियोंके लिथे भेड़शाले बनाए। 37 और
रूबेनियोंने हेशबोन, एलाले, और किर्यातैम को, 38 फिर नबो और बालमोन के
नाम बदलकर उनको, और सिबमा को दृढ़ किया; और उन्होंने अपके दृढ़ किए
हुए नगरोंके और और नाम रखे। 39 और मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशवालोंने

गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया, और जो एमोरी उस में रहते थे उनको निकाल
दिया। 40 तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया, और वे
उस में रहने लगे। 41 और मनश्शेई याईर ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियां
ले लीं, और उनके नाम हव्वोत्याईर रखे। 42 और नोबह ने जाकर गांवोंसमेत
कनात को ले लिया, और उसका नाम अपके नाम पर नोबह रखा।।

गिनती 33

1 जब से इस्त्राएली मूसा और हारून की अगुवाई से दल बान्धकर मिस्र देश से
निकले, तब से उनके थे पड़ाव हुए। 2 मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उनके कूच
उनके पड़ावोंके अनुसार लिख दिए; और वे थे हैं। 3 पहिले महीने के पन्द्रहवें दिन
को उन्होंने रामसेस से कूच किया; फसह के दूसरे दिन इस्त्राएली सब मिस्रियोंके
देखते बेखटके निकल गए, 4 जब कि मिस्री अपके सब पहिलौठोंको मिट्टी दे रहे
थे जिन्हें यहोवा ने मारा या; और उस ने उनके देवताओं को भी दण्ड दिया या। 5
इस्त्राएलियोंने रामसेस से कूच करे सुक्कोत में डेरे डाले। 6 और सुक्कोत से कूच
करके एताम में, जो जंगल के छोर पर हैं, डेरे डाले। 7 और एताम से कूच करके वे
पीहहीरोत को मुड़ गए, जो बालसपोन के साम्हने है; और मिगदोल के साम्हने डेरे
खड़े किए। 8 तब वे पीहहीरोत के साम्हने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल
में गए, और एताम नाम जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले। 9
फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बारह सोते और
सत्तर खजूर के वृझ मिले, और उन्होंने वहां डेरे खड़े किए। 10 तब उन्होंने एलीम
से कूच करे लाल समुद्र के तीर पर डेरे खड़े किए। 11 और लाल समुद्र से कूच

करके सीन नाम जंगल में डेरे खड़े किए। 12 फिर सीन नाम जंगल से कूच करके
उन्होंने दोपका में डेरा किया। 13 और दोपका से कूच करके आलूश में डेरा किया।
14 और आलूश से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहां उन लोगोंको पीने
का पानी न मिला। 15 फिर उन्होंने रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे
डाले। 16 और सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोयत्तावा में डेरा किया। 17 और
किब्रोयत्तावा से कूच करे हसेरोत में डेरे डाले। 18 और हसेरोत से कूच करके रित्मा
में डेरे डाले। 19 फिर उन्होंने रित्मा से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किए।
20 और रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किए। 21 और लिब्ना से
कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किए। 22 और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा
किया। 23 और कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया। 24 फिर
उन्होंने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया। 25 और हरादा से कूच
करके मखेलोत में डेरा किया। 26 और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े
किए। 27 और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले। 28 और तेरह से कूच करके
मित्का में डेरे डाले। 29 फिर मित्का से कूच करके उन्होंने हशमोना में डेरे डाले।
30 और हशमोना से कूच करके मोसेरोत मे डेरे खड़े किए। 31 और मोसेरोत से
कूच करके याकानियोंके बीच डेरा किया। 32 और याकानियोंके बीच से कूच करके
होर्हग्गिदगाद में डेरा किया। 33 और होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता में
डेरा किया। 34 और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किए। 35 और
अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में डेरे खड़े किए। 36 और एस्योनगेबेर के कूच
करके उन्होंने सीन नाम जंगल के कादेश में डेरा किया। 37 फिर कादेश से कूच
करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश के सिवाने पर है, डेरे डाले। 38 वहां

इस्त्राएलियोंके मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पांचवें महीने के पहिले
दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहां मर
गया। 39 और जब हारून होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस वर्ष का
या। 40 और अरात का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्खिन भाग में रहता
या, उस ने इस्त्राएलियोंके आने का समाचार पाया। 41 तब इस्त्राएलियोंने होर
पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले। 42 और सलमोना से कूच करके पूनोन
में डेरे डाले। 43 और पूनोन से कूच करके ओबोस में डेरे डाले। 44 और ओबोस से
कूच करके अबारीम नाम डीहोंमें जो मोआब के सिवाने पर हैं, डेरे डाले। 45 तब
उन डीहोंसे कूच करके उन्होंने दीबोनगाद में डेरा किया। 46 और दीबोनगाद से
कूच करके अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम नाम पहाड़ोंमें नबो
के साम्हने डेरा किया। 47 और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम
नाम पहाड़ोंमें नबो के साम्हने डेरा किया। 48 फिर अबारीम पहाड़ोंसे कूच करके
मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर डेरा किया। 49 और वे
मोआब के अराबा में वेत्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक यरदन के तीर तीर
डेरे डाले।। 50 फिर मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट
पर, यहोवा ने मूसा से कहा, 51 इस्त्राएलियोंको समझाकर कह, जब तुम यरदन
पार होकर कनान देश में पहुंचो 52 तब उस देश के निवासिक्कों उनके देश से
निकाल देना; और उनके सब नक्काशे पत्यरोंको और ढली हुई मूतिर्योंको नाश
करना, और उनके सब पूजा के ऊंचे स्यानोंको ढा देना। 53 और उस देश को
अपके अधिक्कारने में लेकर उस में निवास करना, क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हीं
को दिया है कि तुम उसके अधिक्कारनी हो। 54 और तुम उस देश को चिट्ठी

डालकर अपके कुलोंके अनुसार बांट लेना; अर्यात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें
अधिक, और जो योड़ेवाले हैं उनको योड़ा भाग देना; जिस कुल की चिट्ठी जिस
स्यान के लिथे निकले वही उसका भाग ठहरे; अपके पितरोंके गोत्रोंके अनुसार
अपना अपना भाग लेना। 55 परन्तु यदि तुम उस देश के निवासिक्कों अपके
आगे से न निकालोगे, तो उन में से जिनको तुम उस में रहने दोगे वे मानो
तुम्हारी आंखोंमें कांटे और तुम्हारे पांजरोंमें कीलें ठहरेंगे, और वे उस देश में जहां
तुम बसोगे तुम्हें संकट में डालेंगे। 56 और उन से जैसा बर्ताव करने की मनसा मैं
ने की है वैसा ही तुम से करूंगा।

गिनती 34

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंको यह आज्ञा दे, कि जो देश तुम्हारा
भाग होगा वह तो चारोंओर से सिवाने तक का कनान देश है, इसलिथे जब तुम
कनान देश मे पहुंचों, 3 तब तुम्हारा दक्खिनी प्रान्त सीन नाम जंगल से ले एदोम
देश के किनारे किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारा दक्खिनी सिवाना खारे
ताल के सिक्के पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले; 4 वहां से तुम्हारा सिवाना
अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्खिन की ओर पहुंचकर मुड़े, और सीन तक आए,
और कादेशबर्ने की दक्खिन की ओर निकले, और हसरद्दार तक बढ़के अस्मोन
तक पहुंचे; 5 फिर वह सिवाना अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले तक पहुंचे, और
उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे। 6 फिर पच्छिमी सिवाना महासमुद्र हो; तुम्हारा
पच्छिमी सिवाना यही ठहरे। 7 और तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यह हो, अर्यात् तुम
महासमुद्र से ले होर पर्वत तक सिवाना बन्धाना; 8 और होर पर्वत से हामात की

घाटी तक सिवाना बान्धना, और वह सदाद पर निकले; 9 फिर वह सिवाना
जिप्रोन तक पहुंचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यही ठहरे।
10 फिर अपना पूरबी सिवाना हसरेनान से शपाम तक बान्धना; 11 और वह
सिवाना शपाम से रिबला तक, जो ऐन की पूर्व की ओर है, नीचे को उतरते उतरते
किन्नेरेत नाम ताल के पूर्व से लग जाए; 12 और वह सिवाना यरदन तक उतरके
खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश के चारोंसिवाने थे ही ठहरें। 13 तब मूसा
ने इस्त्राएलियोंसे फिर कहा, जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिक्कारनी होगे,
और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगोंको देने की आज्ञा दी है, वह यही है; 14
परन्तु रूबेनियोंऔर गादियोंके गोत्र तो अपके अपके पितरोंके कुलोंके अनुसार
अपना अपना भाग पा चुके हैं, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग
पा चुके हैं; 15 अर्यात् उन अढ़ाई गोत्रोंके लोग यरीहो के पास की यरदन के पार
पूर्व दिशा में, जहां सूर्योदय होता है, अपना अपना भाग पा चुके हैं।। 16 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, 17 कि जो पुरूष तुम लोगोंके लिथे उस देश को बांटेंगे
उनके नाम थे हैं; अर्यात् एलीआजर याजक और नून का पुत्र यहोशू। 18 और देश
को बांटने के लिथे एक एक गोत्र का एक एक प्रधान ठहराना। 19 और इन
पुरूषोंके नाम थे हैं; अर्यात् यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब, 20 शिमोनगोत्री
अम्मीहूद का पुत्र शमुएल, 21 बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र एलीदाद, 22
दानियोंके गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्की, 23 यूसुफियोंमें से मनश्शेइयोंके
गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्नीएल, 24 और एप्रैमियोंके गोत्र का प्रधान
शिम्तान का पुत्र कमूएल, 25 जबूलूनियोंके गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र
एलीसापान, 26 इस्साकारियोंके गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, 27

आशेरियोंके गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद, 28 और नप्तालियोंके गोत्र का
प्रधान अम्मीहूद का पुत्र पदहेल। 29 जिन पुरूषोंको यहोवा ने कनान देश को
इस्त्राएलियोंके लिथे बांटने की आज्ञा दी वे थे ही हैं।।

गिनती 35

1 फिर यहोवा ने, मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर
मूसा से कहा, 2 इस्त्राएलियोंको आज्ञा दे, कि तुम अपके अपके निज भाग की
भूमि में से लेवियोंको रहने के लिथे नगर देना; और नगरोंके चारोंओर की चराइयां
भी उनको देना। 3 नगर तो उनके रहने के लिथे, और चराइयां उनके गाय-बैल
और भेड़-बकरी आदि, उनके सब पशुओं के लिथे होंगी। 4 और नगरोंकी चराइयां,
जिन्हें तुम लेवियोंको दोगे, वह एक एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारोंओर
एक एक हजार हाथ तक की हों। 5 और नगर के बाहर पूर्व, दक्खिन, पच्छिम,
और उत्तर अलंग, दो दो हजार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचोंबीच हो;
लेवियोंके एक एक नगर की चराई इतनी ही भूमि की हो। 6 और जो नगर तुम
लेवियोंको दोगे उन में से छ: शरणनगर हों, जिन्हें तुम को खूनी के भागने के
लिथे ठहराना होगा, और उन से अधिक बयालीस नगर और भी देना। 7 जितने
नगर तुम लेवियोंको दोगे वे सब अड़तालीस हों, और उनके साय चराइयां देना। 8
और जो नगर तुम इस्त्राएलियोंकी निज भूमि में से दो, वे जिनके बहुत नगर
होंउन से योड़े लेकर देना; सब अपके अपके नगरोंमें से लेवियोंको अपके ही अपके
भाग के अनुसार दें।। 9 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 10 इस्त्राएलियोंसे कह, कि
जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुंचो, 11 तक ऐसे नगर ठहराना जो

तुम्हारे लिथे शरणनगर हों, कि जो कोई किसी को भूल से मारके खूनी ठहरा हो
वह वहां भाग जाए। 12 वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेनेवाले से शरण लेने के
काम आएंगे, कि जब तक खूनी न्याय के लिथे मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब
तक वह न मार डाला जाए। 13 और शरण के जो नगर तुम दोगे वे छः हों। 14
तीन नगर तो यरदन के इस पार, और तीन कनान देश में देना; शरणनगर इतने
ही रहें। 15 थे छहोंनगर इस्त्राएलियोंके और उनके बीच रहनेवाले परदेशियोंके
लिथे भी शरणस्यान ठहरें, कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले वह वहीं भाग
जाए। 16 परन्तु यदि कोई किसी को लोहे के किसी हयियार से ऐसा मारे कि वह
मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। 17 और
यदि कोई ऐसा पत्यर हाथ में लेकर, जिस से कोई मर सकता है, किसी को मारे,
और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला
जाए। 18 वा कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर, जिस से कोई मर सकता है, किसी
को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार
डाला जाए। 19 लोहू का पलटा लेनेवाला आप की उस खूनी को मार डाले; जब भी
वह मिले तब ही वह उसे मार डाले। 20 और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे,
वा घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, 21 वा शत्रुता से
उसको अपके हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिस ने मारा हो वह अवश्य
मार डाला जाए; वह खूनी ठहरेगा; लोहू का पलटा लेनेवाला जब भी वह खूनी उसे
मिल जाए तब ही उसको मार डाले। 22 परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे,
और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, वा बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, 23 वा
ऐसा कोई पत्यर लेकर, जिस से कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर

फेंक दे, और वह मर जाए, परन्तु वह न उसका शत्रु हो, और न उसकी हानि का
खोजी रहा हो; 24 तो मण्डली मारनेवाले और लोहू का पलटा लेनेवाले के बीच इन
नियमोंके अनुसार न्याय करे; 25 और मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा
लेनेवाले के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहां वह पहिले भाग गया हो लौटा
दे, और जब तक पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महाथाजक न मर जाए तब
तक वह वहीं रहे। 26 परन्तु यदि वह खूनी उस शरणस्यान के सिवाने से जिस में
वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए, 27 और लोहू का पलटा
लेनेवाला उसको शरणस्यान के सिवाने के बाहर कहीं पाकर मार डाले, तो वह
लोहू बहाने का दोषी न ठहरे। 28 क्योंकि खूनी को महाथाजक की मृत्यु तक
शरणस्यान में रहना चाहिथे; और महाथाजक के मरने के पश्चात् वह अपक्की
निज भूमि को लौट सकेगा। 29 तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के
स्यानोंमें न्याय की यह विधि होगी। 30 और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले
वह साझियोंके कहने पर मार डाला जाए, परन्तु एक ही साझी की साझी से कोई
न मार डाला जाए। 31 और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उस से प्राणदण्ड के
बदले में जुरमाना न लेना; वह अवश्य मार डाला जाए। 32 और जो किसी
शरणस्यान में भागा हो उसके लिथे भी इस मतलब से जुरमाना न लेना, कि वह
याजक के मरने से पहिले फिर अपके देश मे रहने को लौटने पाएं। 33 इसलिथे
जिस देश में तुम रहोगे उसको अशुद्ध न करना; खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है,
और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लोहू बहाने ही से उस
देश का प्रायश्चित्त हो सकता है। 34 जिस देश में तुम निवास करोगे उसके बीच मै
रहूंगा, उसको अशुद्ध न करना; मैं यहोवा तो इस्त्राएलियोंके बीच रहता हूं।।

गिनती 36

1 फिर यूसुफियोंके कुलोंमें से गिलाद, जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता
या, उसके वंश के कुल के पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूष मूसा के समीप
जाकर उस प्रधानोंके साम्हने, जो इस्त्राएलियोंके पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरूष
थे, कहने लगे, 2 यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी यी, कि इस्त्राएलियोंको चिट्ठी
डालकर देश बांट देना; और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली,
कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उसकी बेटियोंको देना। 3 तो यदि वे
इस्त्राएलियोंके और किसी गोत्र के पुरूषोंसे ब्याही जाएं, तो उनका भाग हमारे
पितरोंके भाग से छूट जाएगा, और जिस गोत्र में से ब्याही जाएं उसी गोत्र के भाग
में मिल जाएगा; तब हमारा भाग घट जाएगा। 4 और जब इस्त्राएलियोंकी जुबली
होगी, तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उसके भाग में उनका भाग पक्की रीति से
मिल जाएगा; और वह हमारे पितरोंके गोत्र के भाग से सदा के लिथे छूट जाएगा।
5 तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्त्राएलियोंसे कहा, यूसुफियोंके गोत्री ठीक
कहते हैं। 6 सलोफाद की बेटियोंके विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है, कि जो वर
जिसकी दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाए; परन्तु वे अपके मूलपुरूष ही
के गोत्र के कुल में ब्याही जाएं। 7 और इस्त्राएलियोंके किसी गोत्र का भाग दूसरे के
गोत्र के भाग में ने मिलने पाए; इस्त्राएली अपके अपके मूलपुरूष के गोत्र के भाग
पर बने रहें। 8 और इस्त्राएलियोंके किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग
पानेवाली हो, वह अपके ही मूलपुरूष के गोत्र के किसी पुरूष से ब्याही जाए,
इसलिथे कि इस्त्राएली अपके अपके मूलपुरूष के भाग के अधिक्कारनी रहें। 9
किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाएं; इस्त्राएलियोंके एक एक

गोत्र के लोग अपके अपके भाग पर बने रहें। 10 यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो
उस ने मूसा को दी सलोफाद की बेटियोंने किया। 11 अर्यात् महला, तिर्सा, होग्ला,
मिलका, और नोआ, जो सलोफाद की बेटियां यी, उन्होंने अपके चचेरे भाइयोंसे
ब्याह किया। 12 वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलोंमें ब्याही गई, और उनका
भाग उनके मूलपुरूष के कुल के गोत्र के अधिक्कारने में बना रहा।। 13 जो
आज्ञाएं और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी
के तीर पर मूसा के द्वारा इस्त्राएलियोंको दिए वे थे ही हैं।।

व्यवस्थाविवरण 1

1 जो बातें मूसा ने यरदन के पार जंगल में, अर्यात् सूप के सामने के अराबा में,
और पारान और तोपेल के बीच, और लाबान हसरोत और दीजाहाब में, सारे
इस्त्राएलियोंसे कहीं वे थे हैं। 2 होरेब से कादेशबर्ने तक सेइर पहाड़ का मार्ग
ग्यारह दिन का हैं। 3 चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहिले दिन को जो कुछ
यहोवा ने मूसा को इस्त्राएलियोंसे कहने की आज्ञा दी यी, उसके अनुसार मूसा उन
से थे बातें कहने लगा। 4 अर्यात् जब मूसा ने ऐमोरियोंके राजा हेशबोनवासी
सीहोन और बाशान के राजा अशतारोतवासी ओग को एद्रेई में मार डाला, 5 उसके
बाद यरदन के पार मोआब देश में वह व्यवस्या का विवरण योंकरने लगा, 6 कि
हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा या, कि तुम लोगोंको इस
पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं; 7 इसलिथे अब यहॉ से कूच करो,
और एमोरियोंके पहाड़ी देश को, और क्या अराबा में, क्या पहाड़ोंमें, क्या नीचे के
देश में, क्या दक्खिन देश में, क्या समुद्र के तीर पर, जितने लोग एमोरियोंके

पास रहते हैं उनके देश को, अर्यात् लबानोन पर्वत तक और परात नाम महानद
तक रहनेवाले कनानियोंके देश को भी चले जाओ। 8 सुनो, मैं उस देश को तुम्हारे
साम्हने किए देता हूँ; जिस देश के विषय यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और
याकूब, तुम्हारे पितरोंसे शपय खाकर कहा या, कि मैं इसे तुम को और तुम्हारे
बाद तुम्हारे वंश को दूंगा, उसको अब जाकर अपके अधिक्कारने में कर लो। 9
फिर उसी समय मैं ने तुम से कहा, कि मैं तुम्हारा भार अकेला नहीं सह सकता;
10 क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहाँ तक बढ़ाया है, कि तुम गिनती
में आज आकाश के तारोंके समान हो गथे हो। 11 तुम्हारे पितरोंका परमेश्वर तुम
को हजारगुणा और भी बढ़ाए, और अपके वचन के अनुसार तुम को आशीष भी
देता रहे। 12 परन्तु तुम्हारे जंजाल, और भार, और फगड़े रगड़े को मैं अकेला
कहाँ तक सह सकता हूँ। 13 सो तुम अपके एक एक गोत्र में से बुद्धिमान और
समझदार और प्रसिद्ध पुरूष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊँगा। 14
इसके उत्तर में तुम ने मुझ से कहा, जो कुछ तू हम से कहता है उसका करना
अच्छा है। 15 इसलिथे मैं ने तुम्हारे गोत्रोंके मुख्य पुरूषोंको जो बुद्धिमान और
प्रसिद्ध पुरूष थे चुनकर तुम पर मुखिया नियुक्त किया, अर्यात् हजार-हजार,
सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रोंके सरदार
भी नियुक्त किए। 16 और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियोंको आज्ञा दी, कि तुम
अपके भाइयोंके मुकद्दमे सुना करो, और उनके बीच और उनके पड़ोसियोंऔर
परदेशियोंके बीच भी धर्म से न्याय किया करो। 17 न्याय करते समय किसी का
पझ न करना; जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुँह
देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है; और जो मुकद्दमा तुम्हारे

लिथे कठिन हो, वह मेरे पास ले आना, और मैं उसे सुनूंगा। 18 और मैं ने उसी
समय तुम्हारे सारे कर्त्तव्य कर्म तुम को बता दिए।। 19 और हम होरेब से कूच
करके अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक
जंगल में होकर चले, जिसे तुम ने एमोरियोंके पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और
हम कादेशबर्ने तक आए। 20 वहाँ मैं ने तुम से कहा, तुम एमोरियोंके पहाड़ी देश
तक आ गए हो जिसको हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है। 21 देखो, उस देश को
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साम्हने किए देता है, इसलिऐ अपके पितरोंके
परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपके अधिक्कारने
में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो। 22 और तुम सब मेरे पास
आकर कहने लगे, हम अपके आगे पुरूषोंको भेज देंगे, जो उस देश का पता
लगाकर हम को यह सन्देश दें, कि कौन सा मार्ग होकर चलना होगा और किस
किस नगर में प्रवेश करना पकेगा? 23 इस बात से प्रसन्न होकर मैं ने तुम में से
बारह पुरूष, अर्यात् गोत्र पीछे एक पुरूष चुन लिया; 24 और वे पहाड़ पर चढ़ गए,
और एशकोल नाम नाले को पहुँचकर उस देश का भेद लिया। 25 और उस देश के
फलोंमें से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आए, और हम को यह सन्देश दिया, कि
जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है वह अच्छा है। 26 तौभी तुम ने वहाँ
जाने से नाह किया, किन्तु अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरूद्ध होकर 27
अपके अपके डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि यहोवा हम से बैर रखता है,
इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है, कि हम को एमोरियोंके वश
में करके सत्यनाश कर डाले। 28 हम किधर जाएँ? हमारे भाइयोंने यह कहके
हमारे मन को कच्चा कर दिया है, कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और

वहाँ के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं; और
हम ने वहाँ अनाकवंशियोंको भी देखा है। 29 मैं ने तुम से कहा, उनके कारण त्रास
मत खाओ और न डरो। 30 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे चलता
है वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा, जैसे कि उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे
लिथे किया; 31 फिर तुम ने जंगल में भी देखा, कि जिस रीति कोई पुरूष अपके
लड़के को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को इस स्यान
पर पहुँचने तक, उस सारे मार्ग में जिस से हम आए हैं, उठाथे रहा। 32 इस बात
पर भी तुम ने अपके उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया, 33 जो तुम्हारे
आगे आगे इसलिथे चलता रहा, कि डेरे डालने का स्यान तुम्हारे लिथे ढूंढे, और
रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग
दिखाए जिस से तुम चलो। 34 परन्तु तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप
भड़क उठा, और उस ने यह शपय खाई, 35 कि निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्योंमें
से एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा, जिसे मैं ने उनके पितरोंको देने की
शपय खाई यी। 36 यपुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने पाएगा, और जिस भूमि
पर उसके पाँव पके हैं उसे मैं उसको और उसके वंश को भी दूंगा; क्योंकि वह मेरे
पीछे पूरी रीति से हो लिया है। 37 और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण क्रोधित
हुआ, और यह कहा, कि तू भी वहाँ जाने न पाएगा; 38 नून का पुत्र यहोशू जो तेरे
साम्हने खड़ा रहता है, वह तो वहाँ जाने पाएगा; सो तू उसको हियाव दे, क्योंकि
उस देश को इस्राएलियोंके अधिक्कारने में वही कर देगा। 39 फिर तुम्हारे
बालबच्चे जिनके विषय में तुम कहते हो, कि थे लूट में चले जाएंगे, और तुम्हारे
जो लड़केबाले अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते, वे वहाँ प्रवेश करेंगे, और उनको

मैं वह देश दूँगा, और वे उसके अधिक्कारनी होंगे। 40 परन्तु तुम लोग घूमकर
कूच करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल की ओर जाओ। 41 तब तुम ने मुझ
से कहा, हम ने यहोवा के विरूद्व पाप किया हैं; अब हम अपके परमेश्वर यहोवा की
आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेंगे और लड़ेंगे। तब तुम अपके अपके हयियार
बान्धकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार हो गए। 42 तब यहोवा ने
मुझ से कहा, उन से कह दे, कि तुम मत चढ़ो, और न लड़ो; क्योंकि मैं तुम्हारे
मध्य में नहीं हूँ; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपके शत्रुओं से हार जाओ। 43 यह
बात मैं ने तुम से कह दी, परन्तु तुम ने न मानी; किन्तु ढिठाई से यहोवा की
आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गए। 44 तब उस पहाड़ के निवासी
एमोरियोंने तुम्हारा साम्हना करने को निकलकर मधुमक्खियोंकी नाई तुम्हारा
पीछा किया, और सेईर देश के होर्मा तक तुम्हें मारते मारते चले आए। 45 तब
तुम लौटकर यहोवा के साम्हने रोने लगे; परन्तु यहोवा ने तुम्हारी न सुनी, न
तुम्हारी बातोंपर कान लगाया। 46 और तुम कादेश में बहुत दिनोंतक पके रहे,
यहाँ तक कि एक जुग हो गया।।

व्यवस्थाविवरण 2

1 तब उस आज्ञा के अनुसार, जो यहोवा ने मुझ को दी यी, हम ने घूमकर कूच
किया, और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर चले; और बहुत दिन तक सेईर
पहाड़ के बाहर बाहर चलते रहे। 2 तब यहोवा ने मुझ से कहा, 3 तुम लोगोंको इस
पहाड़ के बाहर बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गए, अब घूमकर उत्तर की ओर
चलो। 4 और तू प्रजा के लोगोंको मेरी यह आज्ञा सुना, कि तुम सेईर के निवासी

अपके भाई एसावियोंके सिवाने के पास होकर जाने पर हो; और वे तुम से डर
जाएँगे। इसलिथे तुम बहुत चौकस रहो; 5 उन्हें न छेड़ना; क्योंकि उनके देश में से
मैं तुम्हें पाँव धरने का ठौर तक न दूँगा, इस कारण कि मैं ने सेईर पर्वत
एसावियोंके अधिक्कारने में कर दिया हैं। 6 तुम उन से भोजन रूपके से मोल
लेकर खा सकोगे, और रूपया देकर कुंओं से पानी भरके पी सकोगे। 7 क्योंकि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथोंके सब कामोंके विषय तुम्हें आशीष देता
आया है; इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता हैं; इन चालीस
वर्षो में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग संग रहा है; और तुम को कुछ घटी
नहीं हुई। 8 योंहम सेईर निवासी और अपके भाई एसावियोंके पास से होकर,
अराबा के मार्ग, और एलत और एस्योनगेबेर को पीछे छोड़कर चलें।। फिर हम
मुड़कर मोआब के जंगल के मार्ग से होकर चले। 9 और यहोवा ने मुझ से कहा,
मोआबियोंको न सताना और न लड़ाई छेड़ना, क्योंकि मैं उनके देश में से कुछ भी
तेरे अधिक्कारने में न कर दूँगा क्योंकि मैं ने आर को लूतियोंके अधिक्कारने में
किया है। 10 (अगले दिनोंमें वहाँ एमी लोग बसे हुए थे, जो अनाकियोंके समान
बलवन्त और लम्बे लम्बे और गिनती में बहुत थे; 11 और अनाकियोंकी नाईं वे
भी रपाई गिने जाते थे, परन्तु मोआबी उन्हें एमी कहते हैं। 12 और अगले दिनोंमें
सेईर में होरी लोग बसे हुए थे, परन्तु एसावियोंने उनको उस देश से निकाल
दिया, और अपके साम्हने से नाश करके उनके स्यान पर आप बस गए; जैसे कि
इस्राएलियोंने यहोवा के दिथे हुए अपके अधिक्कारने के देश में किया।) 13 अब
तुम लोग कूच करके जेरेद नदी के पार जाओ; तब हम जेरेद नदी के पार आए।
14 और हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी◌े पार होने तक अड़तीस

वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपय के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा
छावनी में से नाश हो गए। 15 और जब तक वे नाश न हुए तब तक यहोवा का
हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिथे उनके विरूद्ध बढ़ा ही रहा 16 जब सब
योद्धा मरते मरते लोगोंके बीच में से नाश हो गए, 17 तब यहोवा ने मुझ से कहा,
18 अब मोआब के सिवाने, अर्यात आर को पार कर; 19 और जब तू
अम्मोनियोंके साम्हने जाकर उनके निकट पहुँचे, तब उनको न सताना और न
छेड़ना, क्योंकि मैं अम्मोनियोंके देश में से कुछ भी तेरे अधिक्कारने में न करूँगा,
क्योंकि मैं ने उसे लूसियोंके अधिक्कारने में कर दिया है। 20 (वह देश भी
रपाइयोंका गिना जाता या, क्योंकि अगले दिनोंमें रपाई, जिन्हें अम्मोनी
जमजुम्मी कहते थे, वे वहाँ रहते थे; 21 वे भी अनाकियोंके समान बलवान और
लम्बे लम्बे और गिनती में बहुत थे; परन्तु यहोवा ने उनको अम्मोनियोंके
साम्हने से नाश कर डाला, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और
उनके स्यान पर आप रहने लगे; 22 जैसे कि उस ने सेईर के निवासी एसावियोंके
साम्हने से होरियोंको नाश किया, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया,
और आज तक उनके स्यान पर वे आप निवास करते हैं। 23 वैसा ही अव्वियोंको,
जो अज्जा नगर तक गाँवोंमें बसे हुए थे, उनको कप्तोरियोंने जो कप्तोर से निकले
थे नाश किया, और उनके स्यान पर आप रहने लगे।) 24 अब तुम लोग उठकर
कूच करो, और अर्नोन के नाले के पार चलो; सुन, मैं देश समेत हेशबोन के राजा
एमोरी सीहोन को तेरे हाथ में कर देता हूँ; इसलिथे उस देश को अपके
अधिक्कारने में लेना आरम्भ करो, और उस राजा से युद्ध छेड़ दो। 25 और जितने
लोग धरती पर रहते हैं उन सभोंके मन में मैं आज ही के दिन से तेरे कारण डर

और थरथराहट समवाने लगूंगा; वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कांपेंगे
और पीड़ित होंगे।। 26 और मैं ने कदेमोत नाम जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन
के पास मेल की थे बातें कहने को दूत भेजे, 27 कि मुझे अपके देश में से होकर
जाने दे; मैं राजपय पर चला जाऊँगा, और दहिने और बांए हाथ न मुड़ूँगा। 28 तू
रूपया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊं, और पानी भी रूपया लेकर
मुझ को देना कि मैं पीऊं; केवल मुझे पांव पांव चले जाने दे, 29 जैसा सेईर के
निवासी एसावियोंने और आर के निवासी मोआबियोंने मुझ से किया, वैसा ही तू
भी मुझ से कर, इस रीति मैं यरदन पार होकर उस देश में पहुंचूंगा जो हमारा
परमेश्वर यहोवा हमें देता है। 30 परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने हम को अपके
देश में से होकर चलने न दिया; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित्त
कठोर और उसका मन हठीला कर दिया या, इसलिथे कि उसको तुम्हारे हाथ में
कर दे, जैसा कि आज प्रकट है। 31 और यहोवा ने मुझ से कहा, सुन, मैं देश
समेत सीहोन को तेरे वश में कर देने पर हूँ; उस देश को अपके अधिक्कारने में
लेना आरम्भ कर। 32 तब सीहोन अपक्की सारी सेना समेत निकल आया, और
हमारा साम्हना करके युद्ध करने को यहस तक चढ़ा आया। 33 और हमारे
परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया, और हम ने उसको पुत्रोंऔर सारी
सेना समेत मार डाला। 34 और उसी समय हम ने उसके सारे नगर ले लिए, और
एक एक बसे हुए नगर का स्त्रियोंऔर बालबच्चोंसमेत यहाँ तक सत्यनाश किया
कि कोई न छूटा; 35 परन्तु पशुओं को हम ने अपना कर लिया, और उन नगरोंकी
लूट भी हम ने ले ली जिनको हम ने जीत लिया या। 36 अर्नोन के नाले के
छोरवाले अरोएर नगर से लेकर, गिलाद तक कोई नगर ऐसा ऊँचा न रहा जो

हमारे साम्हने ठहर सकता या; क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने सभोंको हमारे
वश में कर दिया। 37 परन्तु हम अम्मोनियोंके देश के निकट, वरन यब्बोक नदी
के उस पार जितना देश है, और पहाड़ी देश के नगर जहाँ जहाँ जाने से हमारे
परमेश्वर यहोवा ने हम को मना किया या, वहाँ हम नहीं गए।

व्यवस्थाविवरण 3

1 तब हम मुड़कर बाशान के मार्ग से चढ़ चले; और बाशान का ओग नाम राजा
अपक्की सारी सेना समेत हमारा साम्हना करने को निकल आया, कि एद्रेई में
युद्ध करे। 2 तब यहोवा ने मुझ से कहा, उस से मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी
सेना और देश समेत तेरे हाथ में किए देता हूँ; और जैसा तू ने हेशबोन के निवासी
एमोरियोंके राजा सीहोन से किया है वैसा ही उस से भी करना। 3 सो इस प्रकार
हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाशान के राजा ओग को भी हमारे हाथ
में कर दिया; और हम उसको यहाँ तक मारते रहे कि उन में से कोई भी न बच
पाया। 4 उसी समय हम ने उनके सारे नगरोंको ले लिया, कोई ऐसा नगर न रह
गया जिसे हम ने उस से न ले लिया हो, इस रीति अर्गोब का सारा देश, जो बाशान
में ओग के राज्य में या और उस में साठ नगर थे, वह हमारे वश में आ गया। 5 थे
सब नगर गढ़वाले थे, और उनके ऊंची ऊंची शहरपनाह, और फाटक, और बेड़े थे,
और इनको छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे। 6 और जैसा हम ने
हेशबोन के राजा सीहोन के नगरोंसे किया या वैसा ही हम ने इन नगरोंसे भी
किया, अर्यात सब बसे हुए नगरोंको स्त्रियोंऔर बालबच्चोंसमेत सत्यानाश कर
डाला। 7 परन्तु सब घरेलू पशु और नगरोंकी लूट हम ने अपक्की कर ली। 8

योंहम ने उस समय यरदन के इस पार रहनेवाले एमोरियोंके दोनोंराजाओं के हाथ
से अर्नोन के नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक का देश ले लिया। 9 (हेर्मोन को
सीदोनी लोग सिर्योन, और एमोरी लोग सनीर कहते हैं।) 10 समयर देश के सब
नगर, और सारा गिलाद, और सल्का, और एर्देई तक जो ओग के राज्य के नगर
थे, सारा बाशान हमारे वश में आ गया। 11 जो रपाई रह गए थे, उन में से केवल
बाशान का राजा ओग रह गया या, उसकी चारपाई जो लोहे की है वह तो
अम्मोनियोंके रब्बा नगर में पक्की है, साधारण पुरूष के हाथ के हिसाब से उसकी
लम्बाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की है। 12 जो देश हम ने उस समय
अपके अधिक्कारने में ले लिया वह यह है, अर्यात अर्नोन के नाले के किनारेवाले
अरोएर नगर से ले सब नगरोंसमेत गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भाग, जिसे मैं
ने रूबेनियोंऔर गादियोंको दे दिया, 13 और गिलाद का बचा हुआ भाग, और
सारा बाशान, अर्यात अर्गोब का सारा देश जो ओग के राज्य में या, इन्हें मैं ने
मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया। (सारा बाशान तो रपाइयोंका देश कहलाता है।
14 और मनश्शेई याईर ने गशूरियोंऔर माकावासियोंके सिवानोंतक अर्गोब का
सारा देश ले लिया, और बाशान के नगरोंका नाम अपके नाम पर हब्बोत्याईर
रखा, और वही नाम आज तक बना है।) 15 और मैं ने गिलाद देश माकीर को दे
दिया, 16 और रूबेनियोंऔर गादियोंको मैं ने गिलाद से ले अर्नोन के नाले तक का
देश दे दिया, अर्यात उस नाले का बीच उनका सिवाना ठहराया, और यब्बोक नदी
तक जो अम्मोनियोंका सिवाना है; 17 और किन्नेरेत से ले पिसगा की सलामी के
नीचे के अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, अराबा और यरदन
की पूर्व की ओर का सारा देश भी मैं ने उन्हीं को दे दिया।। 18 और उस समय मैं

ने तुम्हें यह आज्ञा दी, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है कि
उसे अपके अधिक्कारने में रखो; तुम सब योद्धा हयियारबन्द होकर अपके भाई
इस्राएलियोंके आगे आगे पार चलो। 19 परन्तु तुम्हारी स्त्रियाँ, और बालबच्चे,
और पशु, जिन्हें मैं जानता हूँ कि बहुत से हैं, वह सब तुम्हारे नगरोंमें जो मैं ने
तुम्हें दिए हैं रह जाएँ। 20 और जब यहोवा तुम्हारे भाइयोंको वैसा विश्रम दे जैसा
कि उस ने तुम को दिया है, और वे उस देश के अधिक्कारनी हो जाएँ जो तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा उन्हें यरदन पार देता है; तब तुम भी अपके अपके अधिक्कारने
की भूमि पर जो मैं ने तुम्हें दी है लौटोगे। 21 फिर मैं ने उसी समय यहोशू से
चिताकर कहा, तू ने अपक्की आँखो से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन
दोनोंराजाओं से क्या क्या किया है; वैसा ही यहोवा उन सब राज्योंसे करेगा जिन
में तू पार होकर जाएगा। 22 उन से न डरना; क्योंकि जो तुम्हारी ओर से
लड़नेवाला है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है।। 23 उसी समय मैं ने यहोवा से
गिड़गिड़ाकर बिनती की, कि हे प्रभु यहोवा, 24 तू अपके दास को अपक्की महिमा
और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है; स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो
तेरे से काम और पराक्रम के कर्म कर सके? 25 इसलिथे मुझे पार जाने दे कि
यरदन पारके उस उत्तम देश को, अर्यात उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी
देखने पाऊँ। 26 परन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रूष्ट हो गया, और मेरी न
सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझ से
बातें न करना। 27 पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा, और पूर्व, पच्छिम, उत्तर,
दक्खिन, चारोंओर दृष्टि करके उस देश को देख ले; क्योंकि तू इस यरदन के पार
जाने न पाएगा। 28 और यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर;

क्योंकि इन लोगोंके आगे आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको
वही उनका निज भाग करा देगा। 29 तब हम बेतपोर के साम्हने की तराई में
ठहरे रहे।।

व्यवस्थाविवरण 4

1 अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं उन्हें सुन
लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरोंका
परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस में जाकर उसके अधिक्कारनी हो जाओ। 2 जो
आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना। 3 तुम ने
तो अपक्की आंखोंसे देखा है कि बालपोर के कारण यहोवा ने क्या क्या किया;
अर्यात् जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिथे थे उन सभोंको तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम्हारे बीच में से सत्यानाश कर डाला; 4 परन्तु तुम जो अपके
परमेश्वर यहोवा के साय लिपके रहे हो सब के सब आज तक जीवित हो। 5 सुनो,
मैं ने तो अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम
सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिक्कारनी होने जाते हो उस में तुम उनके अनुसार
चलो। 6 सो तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशोंके लोगोंके
साम्हने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्यात् वे इन सब
विधियोंको सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है।
7 देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा
हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उस को पुकारते हैं? 8 फिर कौन ऐसी बड़ी

जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी
व्यवस्या जिसे मैं आज तुम्हारे साम्हने रखता हूं? 9 यह अत्यन्त आवश्यक है
कि तुम अपके विषय में सचेत रहो, और अपके मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं
ऐसा न हो कि जो जो बातें तुम ने अपक्की आंखोंसे देखीं उनको भूल जाओ, और
वह जीवन भर के लिथे तुम्हारे मन से जाती रहे; किन्तु तुम उन्हें अपके
बेटोंपोतोंको सिखाना। 10 विशेष करके उस दिन की बातें जिस में तुम होरेब के
पास अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े थे, जब यहोवा ने मुझ से कहा या, कि
उन लोगोंको मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपके वचन सुनाऊं, जिस से वे
सीखें, ताकि जितने दिन वे पृय्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें,
और अपके लड़के बालोंको भी यही सिखाएं। 11 तब तुम समीप जाकर उस पर्वत
के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से धधक रहा या, और उसकी लौ आकाश
तक पहुंचक्की यी, और उसके चारोंओर अन्धिक्कारनो, और बादल, और घोर
अन्धकार छाया हुआ या। 12 तक यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें
की; बातोंका शब्द तो तुम को सुनाई पड़ा, परन्तु कोई रूप न देखा; केवल शब्द ही
शब्द सुन पड़ा। 13 और उस ने तुम को अपक्की वाचा के दसोंवचन बताकर
उनके मानने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्यर की दो पटियाओं पर लिख दिया। 14
और मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी,
इसलिथे कि जिस देश के अधिक्कारनी होने को तुम पार जाने पर हो उस में तुम
उनको माना करो। 15 इसलिथे तुम अपके विषय में बहुत सावधान रहना।
क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की तब तुम
को कोई रूप न देख पड़ा, 16 कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरूष चाहे

स्त्री के, 17 चाहे पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी
पक्की के, 18 चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में
रहनेवाली किसी मछली के रूप की कोई मूत्तिर् खोदकर बना लो, 19 वा जब तुम
आकाश की ओर आंखे उठाकर, सूर्य, चंद्रमा, और तारोंको, अर्यात् आकाश का
सारा तारागण देखो, तब बहककर उन्हें दण्डवत् करके उनकी सेवा करने लगो
जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालोंके लिथे रखा है। 20
और तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है,
इसलिथे कि तुम उसकी प्रजारूपी निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगट है। 21 फिर
तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझ से क्रोध करके यह शपय खाई, कि तू यरदन पार
जाने न पाएगा, और जो उत्तम देश इस्राएलियोंका परमेश्वर यहोवा उन्हें उनका
निज भाग करके देता है उस में तू प्रवेश करने न पाएगा। 22 किन्तु मुझे इसी देश
में मरना है, मैं तो यरदन पार नहीं जा सकता; परन्तु तुम पार जाकर उस उत्तम
देश के अधिक्कारनी हो जाओगे। 23 इसलिथे अपके विषय में तुम सावधान रहो,
कहीं ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूलकर, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम
से बान्धी है, किसी और वस्तु की मूत्तिर् खोदकर बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम को मना किया है। 24 क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म
करनेवाली आग है; वह जल उठनेवाला परमेश्वर है।। 25 यदि उस देश में रहते
रहते बहुत दिन बीत जाने पर, और अपके बेटे-पोते उत्पन्न होने पर, तुम
बिगड़कर किसी वस्तु के रूप की मूतिर् खोदकर बनाओ, और इस रीति से अपके
परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न कर दो, 26 तो मैं आज
आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरूद्ध साझी करके कहता हूं, कि जिस देश के

अधिक्कारनी होने के लिथे तुम यरदन पार जाने पर हो उस में तुम जल्दी
बिल्कुल नाश हो जाओगे; और बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से
नष्ट हो जाओगे। 27 और यहोवा तुम को देश देश के लोगोंमें तितर बितर करेगा,
और जिन जातियोंके बीच यहोवा तुम को पहुंचाएगा उन में तुम योड़े ही से रह
जाओगे। 28 और वहां तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्यर के देवताओं
की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूंघते हैं। 29
परन्तु वहां भी यदि तुम अपके परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल
जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपके पूरे मन से और अपके सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो।
30 अन्त के दिनोंमें जब तुम संकट में पड़ो, और थे सब विपत्तियां तुम पर आ
पकेंगी, तब तुम अपके परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना; 31
क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट
करेगा, और जो वाचा उस ने तेरे पितरोंसे शपय खाकर बान्धी है उसको नहीं
भूलेगा। 32 और जब से परमेश्वर ने मनुष्य हो उत्पन्न करके पृय्वी पर रखा तब
से लेकर तू अपके उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ, और आकाश के एक
छोर से दूसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसाी बड़ी बात कभी हुई वा सुनने में
आई है? 33 क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई
सुनकर जीवित रही, जैसे कि तू ने सुनी है? 34 फिर क्या परमेश्वर ने और किसी
जाति को दूसरी जाति के बीच में निकालने को कमर बान्धकर पक्कीझा, और
चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बली हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े
भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किए?
35 यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिथे कि तू जान रखे कि यहोवा ही

परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही नहीं। 36 आकाश में से उस ने तुझे
अपक्की वाणी सुनाई कि तुझे शिझा दे; और पृय्वी पर उस ने तुझे अपक्की बड़ी
आग दिखाई, और उसके वचन आग के बीच में से आते हुए तुझे सुन पके। 37
और उस ने जो तेरे पितरोंसे प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन
लिया, और प्रत्यझ होकर तुझे अपके बड़े सामर्य्य के द्वारा मिस्र से इसलिथे
निकाल लाया, 38 कि तुझ से बड़ी और सामर्यी जातियोंको तेरे आगे से
निकालकर तुझे उनके देश में पहुंचाए, और उसे तेरा निज भाग कर दे, जैसा आज
के दिन दिखाई पड़ता है; 39 सो आज जान ले, और अपके मन में सोच भी रख,
कि ऊपर आकाश में और नीचे पृय्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा
नहीं। 40 और तू उसकी विधियोंऔर आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं
मानना, इसलिथे कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे दिन बहुत वरन सदा के लिथे हों। 41 तब
मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर अलग किए, 42 इसलिथे कि जो
कोई बिना जाने और बिना पहले से बैर रखे अपके किसी भाई को मार डाले, वह
उन में से किसी नगर में भाग जाए, और भागकर जीवित रहे: 43 अर्यात्
रूबेनियोंका बेसेर नगर जो जंगल के समयर देश में है, और गादियोंके गिलाद का
रामोत, और मनश्शेइयोंके बाशान का गोलान। 44 फिर जो व्यवस्या मूसा ने
इस्राएलियोंको दी वह यह है; 45 थे ही वे चितौनियां और नियम हैं जिन्हें मूसा ने
इस्राएलियोंको उस समय कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे, 46 अर्यात् यरदन
के पार बेतपोर के साम्हने की तराई में, एमोरियोंके राजा हेशबोनवासी सीहोन के
देश में, जिस राजा को उन्होंने मिस्र से निकलने के पीछे मारा। 47 और उन्होंने

उसके देश को, और बाशान के राजा ओग के देश को, अपके वश में कर लिया;
यरदन के पार सूर्योदय की ओर रहनेवाले एमोरियोंके राजाओं के थे देश थे। 48
यह देश अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर से लेकर सीओन, जो हेर्मोन भी
कहलाता है, 49 उस पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की सलामी के नीचे के
अराबा के ताल तक, यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है।

व्यवस्थाविवरण 5

1 मूसा ने सारे इस्राएलियोंको बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियों, जो जो विधि और
नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं वे सुनो, इसलिथे कि उन्हें सीखकर मानने में
चौकसी करो। 2 हमारे परमेश्वर याहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बान्धी। 3
इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरोंसे नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां आज के
दिन जीवित हैं। 4 यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगोंसे आम्हने
साम्हने बातें की; 5 उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिथे मैं
यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा। तब उस ने
कहा, 6 तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर आर्यात् मिस्र देश में से
निकाल लाया है, वह मैं हूं। 7 मुझे छोड़ दूसरोंको परमेश्वर करके न मानना।। 8 तु
अपके लिथे कोई मूतिर् खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो
आकाश में, वा पृय्वी के जल में है; 9 तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी
उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं, और
जो मुझ से बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतोंको पितरोंका दण्ड दिया
करता हूं, 10 और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन

हजारोंपर करूणा किया करता हूं। 11 तू अपके परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्य न
लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्य ले वह उनको निर्दोष न ठहराएगा।। 12 तू
विश्रमदिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी।
13 छ: दिन तो परिश्रम करके अपना सारा कामकाज करना; 14 परन्तु सातवां
दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे विश्रमदिन है; उस में न तू किसी भांति का
कामकाज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल,
न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकोंके भीतर हो;
जिस से तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी नाई विश्रम करे। 15 और इस बात को
स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास या, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रमदिन मानने की आज्ञा देता है।। 16 अपके पिता और
अपक्की माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है;
जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहते
पाए, और तेरा भला हो।। 17 तू हत्या न करना।। 18 तू व्यभिचार न करना।। 19
तू चोरी न करना।। 20 तू किसी के विरूद्ध फूठी साझी न देना।। 21 तू न किसी की
पत्नी का लालच करना, और न किसी के घर का लालच करना, न उसके खेत का,
न उसके दास का, न उसकी दासी का, न उसके बैल वा गदहे का, न उसकी किसी
और वस्तु का लालच करना।। 22 यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग, और
बादल, और घोर अन्धकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारकर कहा;
और इस से अधिक और कुछ न कहा। और उन्हें उस ने पत्यर की दो पटियाओं
पर लिखकर मुझे दे दिया। 23 जब पर्वत आग से दहक रहा या, और तुम ने उस

शब्द को अन्धिक्कारने के बीच में से आते सुना, तब तुम और तुम्हारे गोत्रोंके
सब मुख्य मुख्य पुरूष और तुम्हारे पुरनिए मेरे पास आए; 24 और तुम कहने
लगे, कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना तेज और महीमा दिखाई है, और
हम ने उसका शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना; आज हम ने देख लिया कि
यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तौभी मनुष्य जीवित रहता है। 25 अब
हम क्योंमर जाएं? क्योंकि ऐसी बड़ी आग से हम भस्म हो जाएंगे; और यदि हम
अपके परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें, तब तो मर ही जाएंगे। 26 क्योंकि सारे
प्राणियोंमें से कौन ऐसा है जो हमारी नाई जीवित और अग्नि के बीच में से बोलते
हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित बचा रहे? 27 इसलिथे तू समीप जा, और
जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन ले; फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर
यहोवा कहे उसे हम से कहना; और हम उसे सुनेंगे और उसे मानेंगे। 28 जब तुम
मुझ से थे बातें कह रहे थे तब यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनीं; तब उस ने मुझ से
कहा, कि इन लोगोंने जो जो बातें तुझ से कही हैं मैं ने सुनी हैं; इन्होंने जो कुछ
कहा वह ठीक ही कहा। 29 भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि
वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें, जिस से उनकी और
उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे! 30 इसलिथे तू जाकर उन से कह दे, कि
अपके अपके डेरोंको लौट जाओ। 31 परन्तु तू यहीं मेरे पास खड़ा रह, और मैं वे
सारी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें तुझे उनको सिखाना होगा तुझ से
कहूंगा, जिस से वे उन्हें उस देश में जिसका अधिक्कारने मैं उन्हें देने पर हूं मानें।
32 इसलिथे तुम अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी
करना; न तो दहिने मुड़ना और न बांए। 33 जिस मार्ग में चलने की आज्ञा तुम्हारे

परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिक्कारनी होगे उस में तुम बहुत दिनोंके लिथे बने रहो।।

व्यवस्थाविवरण 6

1 यह वह आज्ञा, और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके
अधिक्कारनी होने को पार जाने पर हो; 2 और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता
यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियोंऔर आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे
सुनाता हूं, अपके जीवन भर चलते रहें, जिस से तू बहुत दिन तक बना रहे। 3 हे
इस्राएल, सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर; इसलिथे कि तेरा भला हो, और
तेरे पितरोंके परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहां दूध और मधु
की धाराएं बहती हैं तुम बहुत हो जाओ। 4 हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा
परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; 5 तू अपके परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन, और
सारे जीव, और सारी शक्ति के साय प्रेम रखना। 6 और थे आज्ञाएं जो मैं आज तुझ
को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; 7 और तू इन्हें अपके बालबच्चोंको
समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी
चर्चा किया करना। 8 और इन्हें अपके हाथ पर चिन्हानी करके बान्धना, और थे
तेरी आंखोंके बीच टीके का काम दें। 9 और इन्हें अपके अपके घर के चौखट की
बाजुओं और अपके फाटकोंपर लिखना।। 10 और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
उस देश में पहुंचाए जिसके विषय में उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब नाम,

तेरे पूर्वजोंसे तुझे देने की शपय खाई, और जब वह तुझ को बड़े बड़े और अच्छे
नगर, जो तू ने नहीं बनाए, 11 और अच्छे अच्छे पदार्योंसे भरे हुए घर, जो तू ने
नहीं भरे, और खुदे हुए कुंए, जो तू ने नहीं खोदे, और दाख की बारियां और
जलपाई के वृझ, जो तू ने नहीं लगाए, थे सब वस्तुएं जब वह दे, और तू खाके तृप्त
हो, 12 तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए, जो तुझे
दासत्व के घर अर्यात् मिस्र देश से निकाल लाया है। 13 अपके परमेश्वर यहोवा
का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपय खाना। 14 तुम
पराए देवताओं के, अर्यात् अपके चारोंओर के देशोंके लोगोंके देवताओं के पीछे न
हो लेना; 15 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जल उठनेवाला
ईश्वर है; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह
तुझ को पृय्वी पर से नष्ट कर डाले।। 16 तुम अपके परमेश्वर यहोवा की पक्कीझा
न करना, जैसे कि तुम ने मस्सा में उसकी पक्कीझा की यी। 17 अपके परमेश्वर
यहोवा की आज्ञाओं, चितौनियों, और विधियोंको, जो उस ने तुझ को दी हैं,
सावधानी से मानना। 18 और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है
वही किया करना, जिस से कि तेरा भला हो, और जिस उत्तम देश के विषय में
यहोवा ने तेरे पूर्वजोंसे शपय खाई उस में तू प्रवेश करके उसका अधिक्कारनी हो
जाए, 19 कि तेरे सब शत्रु तेरे साम्हने से दूर कर दिए जाएं, जैसा कि यहोवा ने
कहा या।। 20 फिर आगे को जब तेरा लड़का तुझ से पूछे, कि थे चितौनियां और
विधि और नियम, जिनके मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी
है, इनका प्रयोजन क्या है? 21 तब अपके लड़के से कहना, कि जब हम मिस्र में
फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हम को मिस्र में से निकाल ले

आया; 22 और यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फिरौन और उसके सारे घराने को
दु:ख देनेवाले बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए; 23 और हम को वह वहां से
निकाल लाया, इसलिथे कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय में उस ने
हमारे पूर्वजोंसे शपय खाई यी, इसको हमें सौंप दे। 24 और यहोवा ने हमें थे सब
विधियां पालने की आज्ञा दी, इसलिथे कि हम अपके परमेश्वर यहोवा का भय
मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि
आज के दिन है। 25 और यदि हम अपके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उसकी
आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमोंको मानने में चौकसी करें, तो वह हमारे लिथे
धर्म ठहरेगा।।

व्यवस्थाविवरण 7

1 फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिसके अधिक्कारनी होने को तू
जाने पर है पहुंचाए, और तेरे साम्हने से हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी नाम, बहुत सी जातियोंको अर्यात् तुम से बड़ी और
सामर्यी सातोंजातियोंको निकाल दे, 2 और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा
हरा दे, और तू उन पर जय प्राप्त कर ले; तब उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना;
उन से न वाचा बान्धना, और न उन पर दया करना। 3 और न उन से ब्याह शादी
करना, न तो उनकी बेटी को अपके बेटे के लिथे ब्याह लेना। 4 क्योंकि वे तेरे बेटे
को मेरे पीछे चलने से बहकाएंगी, और दूसरे देवताओं की उपासना करवाएंगी;
और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा, और वह तुझ को शीघ्र
सत्यानाश कर डालेगा। 5 उन लोगोंसे ऐसा बर्ताव करना, कि उनकी वेदियोंको ढा

देना, उनकी लाठोंको तोड़ डालना, उनकी अशेरा नाम मूत्तियोंको काट काटकर
गिरा देना, और उनकी खुदी हुई मूत्तियोंको आग में जला देना। 6 क्योंकि तू अपके
परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृय्वी भर के सब देशोंके लोगोंमें से
तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे। 7 यहोवा ने जो तुम
से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं या कि तुम गिनती में
और सब देशोंके लोगोंसे अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशोंके लोगोंसे गिनती में
योड़े थे; 8 यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और
मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लाया, इसका यही करण है कि
वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपय को भी पूरी करना चाहता है जो उस ने
तुम्हारे पूर्वजोंसे खाई यी। 9 इसलिथे जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही
परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है; और जो उस से प्रेम रखते और उसकी
आज्ञाएं मानते हैं उनके साय वह हजार पीढ़ी तक अपक्की वाचा पालता, और उन
पर करूणा करता रहता है; 10 और जो उस से बैर रखते हैं वह उनके देखते उन से
बदला लेकर नष्ट कर डालता है; अपके बैरी के विषय में विलम्ब न करेगा, उसके
देखते ही उस से बदला लेगा। 11 इसलिथे इन आज्ञाओं, विधियों, और नियमोंको,
जो मैं आज तुझे चिताता हूं, मानने में चौकसी करना।। 12 और तुम जो इन
नियमोंको सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे, तो तेरा परमेश्र यहोवा भी
करूणामय वाचा को पालेगा जिसे उस ने तेरे पूर्वजोंसे शपय खाकर बान्धी यी; 13
और वह तुझ से प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा, और गिनती में बढ़ाएगा; और
जो देश उस ने तेरे पूर्वजोंसे शपय खाकर तुझे देने को कहा है उस में वह तेरी
सन्तान पर, और अन्न, नथे दाखमधु, और टटके तेल आदि, भूमि की उपज पर

आशीष दिया करेगा, और तेरी गाय-बैल और भेड़-बकरियोंकी बढ़ती करेगा। 14
तू सब देशोंके लोगोंसे अधिक धन्य होगा; तेरे बीच में न पुरूष न स्त्री निर्वंश होगी,
और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा। 15 और यहोवा तुझ से सब प्रकार के
रोग दूर करेगा; और मिस्र की बुरी बुरी व्याधियां जिन्हें तू जानता है उन में से
किसी को भी तुझे लगने न देगा, थे सब तेरे बैरियोंही को लगेंगे। 16 और देश देश
के जितने लोगोंको तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सभोंको
सत्यानाश करना; उन पर तरस की दृष्टि न करना, और न उनके देवताओं की
उपासना करना, नहीं तो तू फन्दे में फंस जाएगा। 17 यदि तू अपके मन में सोचे,
कि वे जातियां जो मुझ से अधिक हैं; तो मैं उनको क्योंकर देश से निकाल
सकूंगा? 18 तौभी उन से न डरना, जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फिरौन से और
सारे मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण रखना। 19 जो बड़े बड़े पक्कीझा के
काम तू ने अपक्की आंखोंसे देखे, और जिन चिन्हों, और चमत्कारों, और जिस
बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को निकाल
लाया, उनके अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगोंसे भी जिन से तू डरता है
करेगा। 20 इस से अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा उनके बीच बर्रे भी भेजेगा, यहां
तक कि उन में से जो बचकर छिप जाएंगे वे भी तेरे साम्हने से नाश हो जाएंगे।
21 उस से भय न खाना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, और वह
महान् और भय योग्य ईश्वर है। 22 तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियोंको तेरे आगे
से धीरे धीरे निकाल देगा; तो तू एक दम से उनका अन्त न कर सकेगा, नहीं तो
बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे। 23 तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तुझ से
हरवा देगा, और जब तक वे सत्यानाश न हो जाएं तब तक उनको अति व्याकुल

करता रहेगा। 24 और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा, और तू उनका भी
नाम धरती पर से मिटा डालेगा; उन में से कोई भी तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा,
और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा। 25 उनके देवताओं की खुदी हुई
मूत्तिर्यां तुम आग में जला देना; जो चांदी वा सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच
करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फंसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएं
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। 26 और कोई घृणित वस्तु अपके
घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे
सत्यानाश की वस्तु जानकर उस से घृणा करना और उसे कदापि न चाहना;
क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

व्यवस्थाविवरण 8

1 जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभोंपर चलने की चौकसी करना,
इसलिथे कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा
ने तुम्हारे पूर्वजोंसे शपय खाई है उस में जाकर उसके अधिक्कारनी हो जाओ। 2
और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षोंमें तुझे सारे जंगल के
मार्ग में से इसलिथे ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी पक्कीझा करके
यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन
करेगा वा नहीं। 3 उस ने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह
मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया; इसलिथे
कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु
जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। 4 इन

चालीस वर्षोंमें तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे
पांव फूले। 5 फिर अपके मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपके बेटे को
ताड़ना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है। 6 इसलिथे
अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके मागार्ें पर
चलना, और उसका भय मानते रहना। 7 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक
उत्तम देश में लिथे जा रहा है, जो जल की नदियोंका, और तराइयोंऔर पहाड़ोंसे
निकले हुए गहिरे गहिरे सोतोंका देश है। 8 फिर वह गेहूं, जौ, दाखलताओं,
अंजीरों, और अनरोंका देश है; और तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है। 9
उस देश में अन्न की महंगी न होगी, और न उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी
होगी; वहां के पत्थर लोहे के हैं, और वहां के पहाड़ोंमें से तू तांबा खोदकर निकाल
सकेगा। 10 और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसका धन्य मानेगा। 11 इसलिथे सावधान रहना,
कहीं ऐसा न हो कि अपके परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा,
नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका मानना छोड़ दे; 12 ऐसा न हो
कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उन में रहने लगे, 13
और तेरी गाय-बैलोंऔर भेड़-बकरियोंकी बढ़ती हो, और तेरा सोना, चांदी, और
तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, 14 तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू
अपके परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझ को दासत्व के घर अर्यात् मिस्र देश
से निकाल लाया है, 15 और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहां
तेज विषवाले सर्प और बिच्छू हैं, और जलरहित सूखे देश में उस ने तेरे लिथे
चकमक की चट्ठान से जल निकाला, 16 और तुझे जंगल में मन्ना खिलाया,

जिसे तुम्हारे पुरखा जानते भी न थे, इसलिथे कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी
पक्कीझा करके अन्त में तेरा भला ही करे। 17 और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने
लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्य्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। 18
परन्तु तू अपके परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे
सम्पति प्राप्त करने का सामर्य्य इसलिथे देता है, कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजोंसे
शपय खाकर बान्धी यी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है। 19 यदि तू अपके
परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लेगा, और उसकी उपासना
और उनको दण्डवत् करेगा, तो मैं आज तुम को चिता देता हूं कि तुम नि:सन्देह
नष्ट हो जाओगे। 20 जिन जातियोंको यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है,
उन्ही की नाई तुम भी अपके परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो
जाओगे।

व्यवस्थाविवरण 9

1 हे इस्राएल, सुन, आज तू यरदन पार इसलिथे जानेवाला है, कि ऐसी जातियोंको
जो तुझ से बड़ी और सामर्यी हैं, और ऐसे बड़े नगरोंको जिनकी शहरपनाह आकाश
से बातें करती हैं, अपके अधिक्कारने में ले ले। 2 उन में बड़े बड़े और लम्बे लम्बे
लोग, अर्यात् अनाकवंशी रहते हैं, जिनका हाल तू जानता है, और उनके विषय में
तू ने यह सुना है, कि अनाकवशियोंके साम्हने कौन ठहर सकता है? 3 इसलिथे
आज तू यह जान ले, कि जो तेरे आगे भस्म करनेवाली आग की नाई पार
जानेवाला है वह तेरा परमेश्वर यहोवा है; और वह उनका सत्यानाश करेगा, और
वह उनको तेरे साम्हने दबा देगा; और तू यहोवा के वचन के अनुसार उनको उस

देश से निकालकर शीघ्र ही नष्ट कर डालेगा। 4 जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे
साम्हने से निकाल चुके तब यह न सोचना, कि यहोवा तेरे धर्म के कारण तुझे इस
देश का अधिक्कारनी होने को ले आया है, किन्तु उन जातियोंकी दुष्टता ही के
कारण यहोवा उनको तेरे साम्हने से निकालता है। 5 तू जो उनके देश का
अधिक्कारनी होने के लिथे जा रहा है, इसका कारण तेरा धर्म वा मन की सीधाई
नहीं है; तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियोंको तेरे साम्हने से निकालता है,
उसका कारण उनकी दुष्टता है, और यह भी कि जो वचन उस ने इब्राहीम,
इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजोंको शपय खाकर दिया या, उसको वह पूरा करना
चाहता है। 6 इसलिथे यह जान ले कि तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे वह अच्छा
देश देता है कि तू उसका अधिक्कारनी हो, उसे वह तेरे धर्म के कारण नहीं दे रहा
है; क्योंकि तू तो एक हठीली जाति है। 7 इस बात का स्मरण रख और कभी भी न
भूलना, कि जंगल में तू ने किस किस रीति से अपके परमेश्वर यहोवा को क्रोधित
किया; और जिस देश से तू मिस्र देश से निकला है जब तक तुम इस स्यान पर न
पहंुचे तब तक तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते आए हो। 8 फिर होरेब के
पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया, और वह क्रोधित होकर तुम्हें नष्ट करना
चाहता या। 9 जब मैं उस वाचा के पत्यर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से
बान्धी यी लेने के लिथे पर्वत के ऊपर चढ़ गया, तब चालीस दिन और चालीस
रात पर्वत ही के ऊपर रहा; और मैं ने न तो रोटी खाई न पानी पिया। 10 और
यहोवा ने मुझे अपके ही हाथ की लिखी हुई पत्यर की दोनोंपटियाओं को सौंप
दिया, और वे ही वचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य में से सभा के
दिन तुम से कहे थे वे सब उन पर लिखे हुए थे। 11 और चालीस दिन और चालीस

रात के बीत जाने पर यहोवा ने पत्थर की वे दो वाचा की पटियाएं मुझे दे दीं। 12
और यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, यहां से फटपट नीचे जा; क्योकिं तेरी प्रजा के
लोग जिनको तू मिस्र से निकालकर ले आया है वे बिगड़ गए हैं; जिस मार्ग पर
चलने की आज्ञा मैं ने उन्हें दी यी उसको उन्होंने फटपट छोड़ दिया है; अर्यात्
उन्होंने तुरन्त अपके लिथे एक मूत्तिर् ढालकर बना ली है। 13 फिर यहोवा ने मुझ
से यह भी कहा, कि मैं ने उन लोगो को देख लिया, वे हठीली जाति के लोग हैं; 14
इसलिथे अब मुझे तू मत रोक, ताकि मैं उन्हें नष्ट कर डालूं, और धरती के ऊपर
से उनका नाम वा चिन्ह तक मिटा डालूं, और मैं उन से बढ़कर एक बड़ी और
सामर्यी जाति तुझी से उत्पन्न करूंगा। 15 तब मैं उलटे पैर पर्वत से नीचे उतर
चला, और मेरे दोनोंहाथोंमें वाचा की दोनोंपटियाएं यीं। 16 और मैं ने देखा कि
तुम ने अपके परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध महापाप किया; और अपके लिथे एक
बछड़ा ढालकर बना लिया है, और तुरन्त उस मार्ग से जिस पर चलने की आज्ञा
यहोवा ने तुम को दी यी उसको तुम ने तज दिया। 17 तब मैं ने उन
दोनोंपटियाओं को अपके दोनो हाथोंसे लेकर फेंक दिया, और तुम्हारी आंखोंके
साम्हने उनको तोड़ डाला। 18 तब तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके
तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और उसे रीस दिलाई यी, मैं यहोवा के साम्हने
मुंह के बल गिर पड़ा, और पहिले की नाई, अर्यात् चालीस दिन और चालीस रात
तक, न तो रोटी खाई और न पानी पिया। 19 मैं तो यहोवा के उस कोप और
जल-जलाहट से डर रहा या, क्योंकि वह तुम से अप्रसन्न होकर तुम्हें सत्यानाश
करने को या। परन्तु यहोवा ने उस बार भी मेरी सुन ली। 20 और यहोवा हारून से
इतना क्रोधित हुआ कि उसे भी सत्यानाश करना चाहा; परन्तु उसी समय मैं ने

हारून के लिथे भी प्रार्यना की। 21 और मैं ने वह बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हो
गए थे लेकर, आग में डालकर फूंक दिया; और फिर उसे पीस पीसकर ऐसा चूर
चूरकर डाला कि वह धूल की नाईं जीर्ण हो गया; और उसकी उस राख को उस
नदी में फेंक दिया जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती यी। 22 फिर तबेरा, और
मस्सा, और किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को रीस दिलाई यी। 23 फिर जब
यहोवा ने तुम को कोदशबर्ने से यह कहकर भेजा, कि जाकर उस देश के जिसे मैं
ने तुम्हें दिया है अधिक्कारनी हो जाओ, तब भी तुम ने अपके परमेश्वर यहोवा की
आज्ञा के विरूद्ध बलवा किया, और न तो उसका विश्वास किया, और न उसकी
बात मानी। 24 जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं उस दिन से तुम यहोवा से बलवा
ही करते आए हो। 25 मैं यहोवा के साम्हने चालीस दिन और चालीस रात मुंह के
बल पड़ा रहा, क्योंकि यहोवा ने कह दिया या, कि वह तुम को सत्यानाश करेगा।
26 और मैं ने यहोवा से यह प्रार्यना की, कि हे प्रभु यहोवा, अपना प्रजारूपी निज
भाग, जिनको तू ने अपके महान् प्रताप से छुड़ा लिया है, और जिनको तू ने अपके
बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लिया है, उन्हें नष्ट न कर। 27 अपके दास
इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर; और इन लोगोंकी कठोरता, और
दुष्टता, और पाप पर दृष्टि न कर, 28 जिस से ऐसा न हो कि जिस देश से तू हम को
निकालकर ले आया है, वहां से लोग कहने लगें, कि यहोवा उन्हें उस देश में
जिसके देश का वचन उनको दिया या नहीं पहुंचा सका, और उन से बैर भी रखता
या, इसी कारण उस ने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला है। 29 थे लोग तेरी
प्रजा और निज भाग हैं, जिनको तू ने अपके बड़े सामर्य्य और बलवन्त भुजा के
द्वारा निकाल ले आया है।।

व्यवस्थाविवरण 10

1 उस समय यहोवा ने मुझ से कहा, पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो
और पटियाएं गढ़ ले, और उन्हें लेकर मेरे पास पर्वत के ऊपर आ जा, और लकड़ी
का एक सन्दूक भी बनवा ले। 2 और मैं उन पटियाओं पर वे ही वचन लिखूंगा, जो
उन पहिली पटियाओं पर थे, जिन्हें तू ने तोड़ डाला, और तू उन्हें उस सन्दूक में
रखना। 3 तब मैं ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवाया, और पहिली
पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ीं, तब उन्हें हाथोंमें लिथे हुए
पर्वत पर चढ़ गया। 4 और जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर अग्नि
के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही उस ने पहिलोंके समान उन पटियाओं पर
लिखे; और उनको मुझे सौंप दिया। 5 तब मै पर्वत से नीचे उतर आया, और
पटियाओं को अपके बनवाए हुए सन्दूक में धर दिया; और यहोवा की आज्ञा के
अनुसार वे वहीं रखीं हुई हैं। 6 तब इस्राएली याकानियोंके कुओं से कूच करके
मोसेरा तक आए। वहां हारून मर गया, और उसको वहीं मिट्टी दी गई; और
उसका पुत्र एलीआजर उसके स्यान पर याजक का काम करने लगा। 7 वे वहां से
कूच करके गुदगोदा को, और गुदगोदा से योतबाता को चले, इस देश में जल की
नदियां हैं। 8 उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इसलिथे अलग किया कि वे
यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाया करें, और यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी
सेवाटहल किया करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, जिस प्रकार कि
आज के दिन तक होता आ रहा है। 9 इस कारण लेवियोंको अपके भाईयोंके साय
कोई निज अंश वा भाग नहीं मिला; यहोवा ही उनका निज भाग है, जैसे कि तेरे
परमेश्वर यहोवा ने उन से कहा या। 10 मैं तो पहिले की नाईं उस पर्वत पर चालीस

दिन और चालीस रात ठहरा रहा, और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी, और तुझे
नाश करने की मनसा छोड़ दी। 11 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, और तू इन
लोगोंकी अगुवाई कर, ताकि जिस देश के देने को मैं ने उनके पूर्वजोंसे शपय
खाकर कहा या उस में वे जाकर उसको अपके अधिक्कारने में कर लें।। 12 और
अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है,
कि तू अपके परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और उसके सारे मार्गोंपर चले, उस से
प्रेम रखे, और अपके पूरे मन और अपके सारे प्राण से उसकी सेवा करे, 13 और
यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनको ग्रहण करे,
जिस से तेरा भला हो? 14 सुन, स्वर्ग और सब से ऊंचा स्वर्ग भी, और पृथ्वी और
उस में जो कुछ है, वह सब तेरे परमेश्वर यहोवा ही का है; 15 तौभी यहोवा ने तेरे
पूर्वजोंसे स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगोंको जो उनकी सन्तान हो
सर्व देशोंके लोगोंके मध्य में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रगट है। 16
इसलिथे अपके अपके हृदय का खतना करो, और आगे को हठीले न रहो। 17
क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरोंका परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है,
वह महान् पराक्रमी और भय योग्य ईश्वर है, जो किसी का पझ नहीं करता और न
घूस लेता है। 18 वह अनाथोंऔर विधवा का न्याय चुकाता, और परदेशियोंसे ऐसा
प्रेम करता है कि उन्हें भोजन और वस्त्र देता है। 19 इसलिथे तुम भी परदेशियोंसे
प्रेम भाव रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में पकेदशी थे। 20 अपके परमेश्वर
यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना और उसी से लिपके रहना, और उसी
के नाम की शपय खाना। 21 वही तुम्हारी स्तुति के योग्य है; और वही तेरा
परमेश्वर है, जिस ने तेरे साय वे बड़े महत्व के और भयानक काम किए हैं, जिन्हें

तू ने अपक्की आंखोंसे देखा है। 22 तेरे पुरखा जब मिस्र में गए तब सत्तर ही
मनुष्य थे; परन्तु अब तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारोंके
समान बहुत कर दिया है।।

व्यवस्थाविवरण 11

1 इसलिथे तू अपके परमेश्वर यहोवा से अत्यन्त प्रेम रखना, और जो कुछ उस ने
तुझे सौंपा है उसका, अर्यात् उसी विधियों, नियमों, और आज्ञाओं का नित्य
पालन करना। 2 और तुम आज यह सोच समझ लो (क्योंकि मैं तो तुम्हारे
बाल-बच्चोंसे नहीं कहता,) जिन्होंने न तो कुछ देखा और न जाना है कि तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने क्या क्या ताड़ना की, और कैसी महिमा, और बलवन्त हाथ,
और बढ़ाई हुई भुजा दिखाई, 3 और मिस्र में वहां के राजा फिरौन को कैसे कैसे
चिन्ह दिखाए, और उसके सारे देश में कैसे कैसे चमत्कार के काम किए; 4 और
उस ने मिस्र की सेना के घोड़ोंऔर रयोंसे क्या किया, अर्यात् जब वे तुम्हारा पीछा
कर रहे थे तब उस ने उनको लाल समुद्र में डुबोकर किस प्रकार नष्ट कर डाला, कि
आज तक उनका पता नहीं; 5 और तुम्हारे इस स्यान में पहुंचने तक उस ने
जंगल में तुम से क्या क्या किया; 6 और उस ने रूबेनी एलीआब के पुत्र दातान
और अबीराम से क्या क्या किया; अर्यात् पृय्वी ने अपना मुंह पसारके उनको
घरानों, और डेरों, और सब अनुचरोंसमेत सब इस्राएलियोंके देखते देखते कैसे
निगल लिया; 7 परन्तु यहोवा के इन सब बड़े बड़े कामोंको तुम ने अपक्की
आंखोंसे देखा है। 8 इस कारण जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन
सभोंको माना करना, इसलिथे कि तुम सामर्यी होकर उस देश में जिसके

अधिक्कारनी होने के लिथे तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके उसके अधिक्कारनी हो
जाओ, 9 और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को
देने की शपय यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजोंसे खाई यी, और उस में दूध और मधु की
धाराएं बहती हैं। 10 देखो, जिस देश के अधिक्कारनी होने को तुम जा रहे हो वह
मिस्र देश के समान नहीं है, जहां से निकलकर आए हो, जहां तुम बीज बोते थे
और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपके पांव की नलियां बनाकर सींचते
थे; 11 परन्तु जिस देश के अधिक्कारनी होने को तुम पार जाने पर हो वह
पहाड़ोंऔर तराईयोंका देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है; 12 वह
ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से
लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लगी रहती है।।
13 और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूं ध्यान से सुनकर,
अपके सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साय, अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो
और उसकी सेवा करते रहो, 14 तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त
दोनोंसमयोंकी वर्षा को अपके अपके समय पर बरसाऊंगा, जिस से तू अपना
अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल संचय कर सकेगा। 15 और मै तेरे पशुओं
के लिथे तेरे मैदान में घास उपजाऊंगा, और तू पेट भर खाएगा और सन्तुष्ट
रहेगा। 16 इसलिथे अपके विषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन
धोखा खाएं, और तुम बहककर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगो और उनको
दण्डवत् करने लगो, 17 और यहोवा का कोप तुम पर भड़के, और वह आकाश की
वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपक्की उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश में से जो
यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ। 18 इसलिथे तुम मेरे थे वचन अपके

अपके मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिथे अपके हाथोंपर
बान्धना, और वे तुम्हारी आंखोंके मध्य में टीके का काम दें। 19 और तुम घर में
बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी चर्चा करके अपके लड़केबालोंको सिखाया
करना। 20 और इन्हें अपके अपके घर के चौखट के बाजुओं और अपके फाटकोंके
ऊपर लिखना; 21 इसलिथे कि जिस देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजोंसे शपय
खाकर कहा या, कि मैं उसे तुम्हें दूंगा, उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालोंकी
दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने
रहें। 22 इसलिथे यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूं
पूरी चौकसी करके अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके सब मार्गोंपर
चलो, और उस से लिपके रहो, 23 तो यहोवा उन सब जातियोंको तुम्हारे आगे से
निकाल डालेगा, और तुम अपके से बड़ी और सामर्यी जातियोंके अधिक्कारनी हो
जाओगे। 24 जिस जिस स्यान पर तुम्हारे पांव के तलवे पकें वे सब तुम्हारे ही हो
जाएंगे, अर्यात् जंगल से लबानोन तक, और परात नाम महानद से लेकर पश्चिम
के समुद्र तक तुम्हारा सिवाना होगा। 25 तुम्हारे साम्हने कोई भी खड़ा न रह
सकेगा; क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पांव पकेंगे उस सब पर रहनेवालोंके मन
में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपके वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उन में डर और
यरयराहट उत्पन्न कर देगा। 26 सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और
शाप दोनोंरख देता हूं। 27 अर्यात् यदि तुम अपके परमेश्वर यहोवा की इन
आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हे सुनाता हूं मानो, तो तुम पर आशीष होगी, 28 और
यदि तुम अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की
आज्ञा मैं आज सुनाता हूं उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम

नहीं जानते हो, तो तुम पर शाप पकेगा। 29 और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ
को उस देश में पहुंचाए जिसके अधिक्कारनी होने को तू जाने पर है, तब आशीष
गरीज्जीम पर्वत पर से और शाप एबाल पर्वत पर से सुनाना। 30 क्या वे यरदन
के पार, सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा के निवासी कनानियोंके देश में,
गिल्गाल के साम्हने, मोरे के बांज वृझोंके पास नहीं है? 31 तुम तो यरदन पार
इसी लिथे जाने पर हो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसके
अधिक्कारनी होकर उस में निवास करोगे; 32 इसलिथे जितनी विधियां और
नियम मैं आज तुम को सुनाता हूं उन सभोंके मानने में चौकसी करना।।

व्यवस्थाविवरण 12

1 जो देश तुम्हारे पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिक्कारने में लेने को दिया
है, उस में जब तक तुम भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियोंऔर नियमोंके
मानने में चौकसी करना। 2 जिन जातियोंके तुम अधिक्कारनी होगे उनके लोग
ऊंचे ऊंचे पहाड़ोंवा टीलोंपर, वा किसी भांति के हरे वृझ के तले, जितने स्यानोंमें
अपके देवताओं की उपासना करते हैं, उन सभोंको तुम पूरी रीति से नष्ट कर
डालना; 3 उनकी वेदियोंको ढा देना, उनकी लाठोंको तोड़ डालना, उनकी अशेरा
नाम मूत्तियोंको आग में जला देना, और उनके देवताओं की खुदी हुई मूत्तियोंको
काटकर गिरा देना, कि उस देश में से उनके नाम तक मिट जाएं। 4 फिर जैसा वे
करते हैं, तुम अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे वैसा न करना। 5 किन्तु जो स्यान
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रोंमें से चुन लेगा, कि वहां अपना नाम
बनाए रखे, उसके उसी निवासस्यान के पास जाया करना; 6 और वहीं तुम अपके

होमबलि, और मेलबलि, और दंशमांश, और उठाई हुई भेंट, और मन्नत की
वस्तुएं, और स्वेच्छाबलि, और गाय-बैलोंऔर भेड़-बकरियोंके पहिलौठे ले जाया
करना; 7 और वहीं तुम अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना, और
अपके अपके घराने समेत उन सब कामोंपर, जिन में तुम ने हाथ लगाया हो, और
जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष मिली हो, आनन्द करना। 8 जैसे
हम आजकल यहां जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना; 9
जो विश्रमस्यान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब
तक तो नहीं पहुंचे। 10 परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके
भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे
चारोंओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्रम दे, 11 और तुम निडर रहने पाओ, तब जो
स्यान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपके नाम का निवास ठहराने के लिथे चुन ले
उसी में तुम अपके होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें,
और मन्नतोंकी सब उत्तम उत्तम वस्तुएं जो तुम यहोवा के लिथे संकल्प करोगे,
निदान जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उन सभोंको वहीं ले जाया
करना। 12 और वहां तुम अपके अपके बेटे बेटियोंऔर दास दासियोंसहित अपके
परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना, और जो लेवीय तुम्हारे फाटकोंमें रहे
वह भी आनन्द करे, क्योंकि उसका तुम्हारे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा।
13 और सावधान रहना कि तू अपके होमबलियोंको हर एक स्यान पर जो देखने
में आए न चढ़ाना; 14 परन्तु जो स्यान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं
अपके होमबलियोंको चढ़ाया करना, और जिस जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को
सुनाता हूं उसको वहीं करना। 15 परन्तु तू अपके सब फाटकोंके भीतर अपके जी

की इच्छा और अपके परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशीष के अनुसार पशु मारके
खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनोंखा सकेंगे, जैसे कि चिकारे और हरिण
का मांस। 16 परन्तु उसका लोहू न खाना; उसे जल की नाई भूमि पर उंडेल देना।
17 फिर अपके अन्न, वा नथे दाखमधु, वा टटके तेल का दशमांश, और अपके
गाय-बैलोंवा भेड़-बकरियोंके पहिलौठे, और अपक्की मन्नतोंकी कोई वस्तु, और
अपके स्वेच्छाबलि, और उठाई हुई भेंटें अपके सब फाटकोंके भीतर न खाना; 18
उन्हें अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने उसी स्यान पर जिसको वह चुने अपके
बेटे बेटियोंऔर दास दासियोंके, और जो लेवीय तेरे फाटकोंके भीतर रहेंगे उनके
साय खाना, और तू अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपके सब कामोंपर जिन
में हाथ लगाया हो आनन्द करना। 19 और सावधान रह कि जब तक तू भूमि पर
जीवित रहे तब तक लेवियोंको न छोड़ना।। 20 जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपके
वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए, और तेरा जी मांस खाना चाहे, और तू सोचने
लगे, कि मैं मांस खाऊंगा, तब जो मांस तेरा जी चाहे वही खा सकेगा। 21 जो
स्यान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिथे चुन ले वह यदि तुझ
से बहुत दूर हो, तो जो गाय-बैल भेड़-बकरी यहोवा ने तुझे दी हों, उन में से जो
कुछ तेरा जी चाहे, उसे मेरी आज्ञा के अनुसार मारके अपके फाटकोंके भीतर खा
सकेगा। 22 जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाया जाता है वैसे ही उनको भी खा
सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध दोनो प्रकार के मनुष्य उनका मांस खा सकेंगे। 23 परन्तु
उनका लोहू किसी भांति न खाना; क्योंकि लोहू जो है वह प्राण ही है, और तू मांस
के साय प्राण कभी भी न खाना। 24 उसको न खाना; उसे जल की नाईं भूमि पर
उंडेल देना। 25 तू उसे न खाना; इसलिथे कि वह काम करने से जो यहोवा की दृष्टि

में ठीक हैं तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी भला हो। 26 परन्तु जब तू कोई वस्तु
पवित्र करे, वा मन्नत माने, तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्यान को जाना जिसको
यहोवा चुन लेगा, 27 और वहां अपके होमबलियोंके मांस और लोहू दोनोंको अपके
परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाना, और मेलबलियोंका लोहू उसकी वेदी पर
उंडेलकर उनका मांस खाना। 28 इन बातोंको जिनकी आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं
चित्त लगाकर सुन, कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में
भला और ठीक है, तब तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी सदा भला होता रहे। 29
जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियोंको जिनका अधिक्कारनी होने को तू जा
रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिक्कारनी होकर उनके देश में बस
जाए, 30 तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनके सत्यनाश होने के बाद तू
भी उनकी नाईं फंस जाए, अर्यात् यह कहकर उनके देवताओं के सम्बन्ध में यह
पूछपाछ न करना, कि उन जातियोंके लोग अपके देवताओं की उपासना किस
रीति करते थे? मैं भी वैसी ही करूंगा। 31 तू अपके परमेश्वर यहोवा से ऐसा
व्यवहार न करना; क्योंकि जितने प्रकार के कामोंसे यहोवा घृणा करता है और
बैर-भाव रखता है, उन सभोंको उन्होंने अपके देवताओं के लिथे किया है, यहां
तक कि अपके बेटे बेटियोंको भी वे अपके देवताओं के लिथे अग्नि में डालकर
जला देते हैं।। 32 जितनी बातोंकी मैं तुम को आज्ञा देता हूं उनको चौकस होकर
माना करना; और न तो कुछ उन में बढ़ाना और न उन में से कुछ घटाना।।

व्यवस्थाविवरण 13

1 यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई

चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, 2 और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर
वह तुझ से कहे, कि आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिनसे तुम
अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें, 3 तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न
देखने वाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
तुम्हारी पक्कीझा लेगा, जिस से यह जान ले, कि थे मुझ से अपके सारे मन और
सारे प्राण के साय प्रेम रखते हैं वा नहीं? 4 तुम अपके परमेश्वर यहोवा के पीछे
चलना, और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका
वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपके रहना। 5 और ऐसा
भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला जो तुम को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से फेरके,
जिस ने तुम को मिस्र देश से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया है, तेरे उसी
परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह
मार डाला जाए। इस रीति से तू अपके बीच में से ऐसी बुराई को दूर कर देना।। 6
यदि तेरा सगा भाई, वा बेटा, वा बेटी, वा तेरी अर्द्धांगिन, वा प्राण प्रिय तेरा कोई
मित्र निराले में तुझ को यह कहकर फुसलाने लगे, कि आओ हम दूसरे देवताओं
की उपासना वा पूजा करें, जिन्हें न तो तू न तेरे पुरखा जानते थे, 7 चाहे वे तुम्हारे
निकट रहनेवाले आस पास के लोगोंके, चाहे पृथ्वी के एक छोर से लेके दूसरे छोर
तक दूर दूर के रहनेवालोंके देवता हों, 8 तो तू उसकी न मानना, और न तो उसकी
बात सुनना, और न उस पर तरस खाना, और न कोमलता दिखाना, और न
उसको छिपा रखना; 9 उसको अवश्य घात करना; उसके घात करने में पहिले तेरा
हाथ उठे, पीछे सब लोगोंके हाथ उठे। 10 उस पर ऐसा पत्यरवाह करना कि वह
मर जाए, क्योंकि उस ने तुझ को तेरे उस परमेश्वर यहोवा से, जो तुझ को दासत्व

के घर अर्यात् मिस्र देश से निकाल लाया है, बहकाने का यत्न किया है। 11 और
सब इस्राएली सुनकर भय खाएंगे, और ऐसा बुरा काम फिर तेरे बीच न करेंगे।।
12 यदि तेरे किसी नगर के विषय में, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के
लिथे देता है, ऐसी बात तेरे सुनने में आए, 13 कि कितने अधम पुरूषोंने तेरे ही
बीच में से निकलकर अपके नगर के निवासिक्कों यह कहकर बहका दिया है, कि
आओ हम और देवताओं की जिन से अब तक अनजान रहे उपासना करें, 14 तो
पूछपाछ करना, और खोजना, और भलीं भांति पता लगाना; और यदि यह बात
सच हो, और कुछ भी सन्देह न रहे कि तेरे बीच ऐसा घिनौना काम किया जाता है,
15 तो अवश्य उस नगर के निवासिक्कों तलवार से मान डालना, और पशु आदि
उस सब समेत जो उस में हो उसको तलवार से सत्यानाश करना। 16 और उस में
की सारी लूट चौक के बीच इकट्ठी करके उस नगर को लूट समेत अपके परमेश्वर
यहोवा के लिथे मानो सर्व्वांग होम करके जलाना; और वह सदा के लिथे डीह रहे,
वह फिर बसाया न जाए। 17 और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लगने
पाए; जिस से यहोवा अपके भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उस ने तेरे
पूर्वजोंसे शपय खाई यी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे, और दया करके
तुझ को गिनती में बढ़ाए। 18 यह तब होगा जब तू अपके परमेश्वर यहोवा की
जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभोंको मानेगा, और जो तेरा
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा।।

व्यवस्थाविवरण 14

1 तुम अपके परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो; इसलिथे मरे हुओं के कारण न तो अपना

शरीर चीरना, और न भौहोंके बाल मुंडाना। 2 क्योंकि तू अपके परमेश्वर यहोवा के
लिथे एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृय्वी भर के समस्त देशोंके
लोगोंमें से अपक्की निज सम्पति होने के लिथे चुन लिया है। 3 तू कोई घिनौनी
वस्तु न खाना। 4 जो पशु तुम खा सकते हो वे थे हैं, अर्यात् गाय-बैल, भेड़-बकरी,
5 हरिण, चिकारा, यखमूर, बनैली बकरी, साबर, नीलगाय, और बैनेली भेड़। 6
निदान पशुओं में से जितने पशु चिरे वा फटे खुरवाले और पागुर करनेवाले होते हैं
उनका मांस तुम खा सकते हो। 7 परन्तु पागुर करनेवाले वा चिरे खुरवालोंमें से
इन पशुओं को, अर्यात् ऊंट, खरहा, और शापान को न खाना, क्योंकि थे पागुर तो
करते हैं परन्तु चिरे खुर के नही होते, इस कारण वे तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं। 8 फिर
सूअर, जो चिरे खुर का होता है परन्तु पागुर नहीं करता, इस कारण वह तुम्हारे
लिथे अशुद्ध है। तुम न तो इनका मांस खाना, और न इनकी लोय छूना।। 9 फिर
जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्यात् जितनोंके पंख और
छिलके होते हैं। 10 परन्तु जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न
खाना; क्योंकि वे तुम्हारे लिथे अशुद्ध हैं।। 11 सब शुद्ध पझियोंका मांस तो तुम खा
सकते हो। 12 परन्तु इनका मांस न खाना, अर्यात् उकाब, हड़फोड़, कुरर; 13
गरूड़, चील और भांति भांति के शाही; 14 और भांति भांति के सब काग; 15
शुतर्मुर्ग, तहमास, जलकुक्कट, और भांति भांति के बाज; 16 छोटा और बड़ा
दोनोंजाति का उल्लू, और घुग्घू; 17 धनेश, गिद्ध, हाड़गील; 18 सारस, भांति भांति
के बगुले, नौवा, और चमगीदड़। 19 और जितने रेंगनेवाले पकेरू हैं वे सब तुम्हारे
लिथे अशुद्ध हैं; वे खाए न जाएं। 20 परन्तु सब शुद्ध पंखवालोंका मांस तुम खा
सकते हो।। 21 जो अपक्की मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना; उसे अपके

फाटकोंके भीतर किसी पकेदशी को खाने के लिथे दे सकते हो, वा किसी पराए के
हाथ बेच सकते हो; परन्तु तू तो अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे पवित्र समाज है।
बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।। 22 बीज की सारी उपज में से
जो प्रतिवर्ष खेत में उपके उसका दंशमांश अवश्य अलग करके रखना। 23 और
जिस स्यान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपके नाम का निवास ठहराने के लिथे चुन
ले उस में अपके अन्न, और नथे दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और
अपके गाय-बैलोंऔर भेड़-बकरियोंके पहिलौठे अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने
खाया करना; जिस से तुम उसका भय नित्य मानना सीखोगे। 24 परन्तु यदि वह
स्यान जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बानाए रखने के लिथे चुन लेगा
बहुत दूर हो, और इस कारण वहां की यात्रा तेरे लिथे इतनी लम्बी हो कि तू अपके
परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएं वहां न ले जा सके, 25 तो उसे
बेचके, रूपके को बान्ध, हाथ में लिथे हुए उस स्यान पर जाना जो तेरा परमेश्वर
यहोवा चुन लेगा, 26 और वहां गाय-बैल, वा भेड़-बकरी, वा दाखमधु, वा मदिरा,
वा किसी भांति की वस्तु क्योंन हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रूपके से मोल
लेकर अपके घराने समेत अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द
करना। 27 और अपके फाटकोंके भीतर के लेवीय को न छोड़ना, क्योंकि तेरे साय
उसका कोई भाग वा अंश न होगा।। 28 तीन तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की
उपज का सारा दशंमांश निकालकर अपके फाटकोंके भीतर इकट्ठा कर रखना;
29 तब लेवीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा वह, और जो
परदेशी, और अनाय, और विधवांए तेरे फाटकोंके भीतर हों, वे भी आकर पेट भर
खाएं; जिस से तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामोंमें तुझे आशीष दे।।

व्यवस्थाविवरण 15

1 सात सात वर्ष बीतने पर तुम छुटकारा दिया करना, 2 अर्यात् जिस किसी ऋण
देनेवाले ने अपके पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपके
पड़ोसी वा भाई से उसको बरबस न भरवा ले, क्योंकि यहोवा के नाम से इस
छुटकारे का प्रचार हुआ है। 3 परदेशी मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है,
परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसको तू बिना भरवाए छोड़ देना। 4 तेरे
बीच कोई दरिद्र न रहेगा, क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग
करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिक्कारनी हो, उस में वह तुझे बहुत ही
आशीष देगा। 5 इतना अवश्य है कि तू अपके परमेश्वर यहोवा की बात चित्त
लगाकर सुने, और इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूं
चौकसी करे। 6 तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपके वचन के अनुसार तुझे आशीष
देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न पकेगा; और तू बहुत जातियोंपर प्रभुता करेगा,
परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएंगी।। 7 जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयोंमें से कोई तेरे पास द्ररिद्र हो,
तो अपके उस दरिद्र भाई के लिथे न तो अपना हृदय कठोर करना, और न
अपक्की मुट्ठी कड़ी करना; 8 जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसका जितना
प्रयोजन हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना। 9 सचेत रह
कि तेरे मन में ऐसी अधम चिन्ता न समाए, कि सातवां वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है
वह निकट है, और अपक्की दृष्टि तू अपके उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके
उसे कुछ न दे, तो यह तेरे लिथे पाप ठहरेगा। 10 तू उसको अवश्य देना, और उसे
देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर

यहोवा तेरे सब कामोंमें जिन में तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा। 11
तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएंगे, इसलिथे मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू
अपके देश में अपके दीन-दरिद्र भाइयोंको अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान
देना।। 12 यदि तेरा कोई भाईबन्धु, अर्यात् कोई इब्री वा इब्रिन, तेरे हाथ बिके,
और वह छ: वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवे वर्ष उसको अपके पास से स्वतंत्र
करके जाने देना। 13 और जब तू उसको स्वतंत्र करके अपके पास से जाने दे तब
उसे छूछे हाथ न जाने देना; 14 वरन अपक्की भेड़-बकरियों, और खलिहान, और
दाखमधु के कुण्ड में से बहुतायत से देना; तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी
आशीष दी हो उसी के अनुसार उसे देना। 15 और इस बात को स्मरण रखना कि
तू भी मिस्र देश में दास या, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; इस
कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूं। 16 और यदि वह तुझ से ओर तेरे
घराने से प्रेम रखता है, और तेरे संग आनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से
कहने लगे, कि मैं तेरे पास से न जाऊंगा; 17 तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़
पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपक्की दासी से भी
ऐसा ही करना। 18 जब तू उसको अपके पास से स्वतंत्र करके जाने दे, तब उसे
छोड़ देना तुझ को कठिन न जान पके; क्योंकि उस ने छ: वर्ष दो मजदूरोंके
बराबर तेरी सेवा की है। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामोंमें तुझ को
आशीष देगा।। 19 तेरी गायोंऔर भेड़-बकरियोंके जितने पहिलौठे नर होंउन
सभोंको अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे पवित्र रखना; अपक्की गायोंके
पहिलौठोंसे कोई काम न लेना, और न अपक्की भेड़-बकरियोंके पहिलौठोंका ऊन
कतरना। 20 उस स्यान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के

साम्हने अपके अपके धराने समेत प्रति वर्ष उसका मांस खाना। 21 परन्तु यदि
उस में किसी प्रकार का दोष हो, अर्यात् वह लंगड़ा वा अन्धा हो, वा उस में किसी
और ही प्रकार की बुराई का दोष हो, तो उसे अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे बलि
न करना। 22 उसको अपके फाटकोंके भीतर खाना; शुद्ध और अशुद्ध दोनोंप्रकार के
मनुष्य जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाते हैं वैसे ही उसका भी खा सकेंगे। 23
परन्तु उसका लोहू न खाना; उसे जल की नाई भूमि पर उंडेल देना।।

व्यवस्थाविवरण 16

1 आबीब के महीने को स्मरण करके अपके परमेश्वर यहोवा के लिय फसह का
पर्व्व मानना; क्योकिं आबीब महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्र से
निकाल लाया। 2 इसलिथे जो स्यान यहोवा अपके नाम का निवास ठहराने को
चुन लेगा, वही अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैल फसह
करके बलि करना। 3 उसके संग कोई खमीरी वस्तु न खाना; सात दिन तक
अखमीरी रोटी जो दु:ख की रोटी है खाया करना; क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली
करके निकला या; इसी रीति से तुझ को मिस्र देश से निकलने का दिन जीवन भर
स्मरण रहेगा। 4 सात दिन तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी
न आए; और जो पशु तू पहिले दिन की संध्या को बलि करे उसके मांस में से कुछ
बिहान तक रहने न पाए। 5 फसह को अपके किसी फाटक के भीतर, जिसे तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना। 6 जो स्यान तेरा परमेश्वर यहोवा अपके
नाम का निवास करने के लिथे चुन ले केवल वहीं, वर्ष के उसी समय जिस में तू
मिस्र से निकला या, अर्यात् सूरज डूबने पर संध्याकाल को, फसह का पशुबलि

करना। 7 तब उसका मांस उसी स्यान में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले
भूंजकर खाना; फिर बिहान को उठकर अपके अपके डेरे को लौट जाना। 8 छ: दिन
तक अखीमीरी रोटी खाया करना; और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे
महासभा हो; उस दिन किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए।। 9 फिर जब तू
खेत में हंसुआ लगाने लगे, तब से आरम्भ करके सात अठवारे गिनना। 10 तब
अपके परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार उसके लिथे स्वेच्छा बलि देकर
अठवारोंनाम पर्व्व मानना; 11 और उस स्यान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपके
नाम का निवास करने को चुन ले अपके अपके बेटे-बेटियों, दास-दासियोंसमेत तू
और तेरे फाटकोंके भीतर जो लेवीय हों, और जो जो परदेशी, और अनाय, और
विधवाएं तेरे बीच में हों, वे सब के सब अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द
करें। 12 और स्मरण रखना कि तू भी मिस्र में दास या; इसलिथे इन विधियोंके
पालन करने में चौकसी करना।। 13 तू जब अपके खलिहान और दाखमधु के
कुण्ड में से सब कुछ इकट्ठा कर चुके, तब फोपडिय़ोंका पर्व्व सात दिन मानते
रहना; 14 और अपके इस पर्व्व में अपके अपके बेटे बेटियों, दास-दासियोंसमेत तू
और जो लेवीय, और परदेशी, और अनाय, और विधवाएं तेरे फाटकोंके भीतर होंवे
भी आनन्द करें। 15 जो स्यान यहोवा चुन ले उस में तु अपके परमेश्वर यहोवा के
लिथे सात दिन तक पर्व्व मानते रहना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी सारी
बढ़ती में और तेरे सब कामोंमें तुझ को आशीष देगा; तू आनन्द ही करना। 16
ुवर्ष में तीन बार, अर्यात् अखमीरी रोटी के पर्व्व, और अठवारोंके पर्व्व, और
फोपडिय़ोंके पर्व्व, इन तीनोंपर्व्व में तुम्हारे सब पुरूष अपके परमेश्वर यहोवा के
साम्हने उस स्यान में जो वह चुन लेगा जाएं। और देखो, छूछे हाथ यहोवा के

साम्हने कोई न जाए; 17 सब पुरूष अपक्की अपक्की पूंजी, और उस आशीष के
अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दी हो, दिया करें।। 18 तू अपके एक
एक गोत्र में से, अपके सब फाटकोंके भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को
देता है न्यायी और सरदार नियुक्त कर लेना, जो लोगोंका न्याय धर्म से किया
करें। 19 तुम न्याय न बिगाड़ना; तू न तो पझपात करना; और न तो घूस लेना,
क्योंकि घूस बुद्धिमान की आंखें अन्धी कर देती है, और धमिर्योंकी बातें पलट
देती है। 20 जो कुछ नितान्त ठीक है उसी का पीछा पकड़े रहना, जिस से तू
जीवित रहे, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसका अधिक्कारनी
बना रहे।। 21 तू अपके परमेश्वर यहोवा की जो वेदी बनाऐगा उसके पास किसी
प्रकार की लकड़ी की बनी हुई अशेरा का स्यापन न करना। 22 और न कोई लाठ
खड़ी करना, क्योंकि उस से तेरा परमेश्वर यहोवा घृणा करता है।।

व्यवस्थाविवरण 17

1 तू अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे कोई बैल वा भेड़-बकरी बलि न करना जिस
में दोष वा किसी प्रकार की खोट हो; क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा के
समीप घृणित है।। 2 जो बस्तियां तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, यदि उन में
से किसी में कोई पुरूष वा स्त्री ऐसी पाई जाए, जिस ने तेरे परमेश्वर यहोवा की
वाचा तोड़कर ऐसा काम किया हो, जो उसकी दृष्टि में बुरा है, 3 अर्यात् मेरी आज्ञा
का उल्लंघन करके पराए देवताओं की, वा सूर्य, वा चंद्रमा, वा आकाश के गण में
से किसी की उपासना की हो, वा उसको दण्डवत किया हो, 4 और यह बात तुझे
बतलाई जाए और तेरे सुनने में आए; तब भली भांति पूछपाछ करना, और यदि

यह बात सच ठहरे कि इस्राएल में ऐसा घृणित कर्म किया गया है, 5 तो जिस
पुरूष वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो, उस पुरूष वा स्त्री को बाहर अपके
फाटकोंपर ले जाकर ऐसा पत्यरवाह करना कि वह मर जाए। 6 जो प्राणदण्ड के
योग्य ठहरे वह एक ही की साझी से न मार डाला जाए, किन्तु दो वा तीन
मनुष्योंकी साझी से मार डाला जाए। 7 उसके मार डालने के लिथे सब से पहिले
साझियोंके हाथ, और उनके बाद और सब लोगोंके हाथ उस पर उठें। इसी रीति से
ऐसी बुराई को अपके मध्य से दूर करना।। 8 यदि तेरी बस्तियोंके भीतर कोई
फगड़े की बात हो, अर्यात् आपस के खून, वा विवाद, वा मारपीट का कोई मुकद्दमा
उठे, और उसका न्याय करना तेरे लिथे कठिन जान पके, तो उस स्यान को
जाकर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा; 9 लेवीय याजकोंके पास और उन दिनो
के न्यायियोंके पास जाकर पूछताछ करना, कि वे तुम को न्याय की बातें
बतलाएं। 10 और न्याय की जैसी बात उस स्यान के लोग जो यहोवा चुन लेगा
तुझे बता दें, उसी के अनुसार करना; और जो व्यवस्या वे तुझे दें उसी के अनुसार
चलने में चौकसी करना; 11 व्यवस्या की जो बात वे तुझे बताएं, और न्याय की
जो बात वे तुझ से कहें, उसी के अनुसार करना; जो बात वे तुझ को बाताएं उस से
दहिने वा बाएं न मुड़ना। 12 और जो मनुष्य अभिमान करके उस याजक की, जो
वहां तेरे परमेश्वर यहोवा की सेवा टहल करने को उपस्यित रहेगा, न माने, वा उस
न्यायी की न सुने, तो वह मनुष्य मार डाला जाए; इस प्रकार तू इस्राएल में से ऐसी
बुराई को दूर कर देना। 13 इस से सब लोग सुनकर डर जाएंगे, और फिर
अभिमान नहीं करेंगे।। 14 जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे देता है, और उसका अधिक्कारनी हो, और उन में बसकर कहने लगे, कि

चारोंओर की सब जातियोंकी नाई मैं भी अपके ऊपर राजा ठहराऊंगा; 15 तब
जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपके
भाइयोंही में से किसी को अपके ऊपर राजा ठहराना; किसी परदेशी को जो तेरा
भाई न हो तू अपके ऊपर अधिक्कारनी नहीं ठहरा सकता। 16 और वह बहुत घोड़े
न रखे, और न इस मनसा से अपक्की प्रजा के लोगोंको मिस्र में भेजे कि उसके
पास बहुत से घोड़े हो जाएं, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से
फिर कभी न लौटना। 17 और वह बहुत स्त्रियां भी न रखे, ऐसा न हो कि उसका
मन यहोवा की ओर से पलट जाए; और न वह अपना सोना रूपा बहुत बढ़ाए। 18
और जब वह राजगद्दी पर विराजमान हो, तब इसी व्यवस्या की पुस्तक, जो
लेवीय याजकोंके पास रहेगी, उसकी एक नकल अपके लिथे कर ले। 19 और वह
उसे अपके पास रखे, और अपके जीवन भर उसको पढ़ा करे, जिस से वह अपके
परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और इस व्यवस्या और इन विधियोंकी सारी
बातोंके मानने में चौकसी करना सीखे; 20 जिस से वह अपके मन में घमण्ड
करके अपके भाइयोंको तुच्छ न जाने, और इन आज्ञाओं से न तो दहिने मुड़े और
न बाएं; जिस से कि वह और उसके वंश के लोग इस्राएलियोंके मध्य बहुत
दिनोंतक राज्य करते रहें।।

व्यवस्थाविवरण 18

1 लेवीय याजकोंका, वरन सारे लेवीय गोत्रियोंका, इस्राएलियोंके संग कोई भाग
वा अंश न हो; उनका भोजन हव्य और यहोवा का दिया हुआ भाग हो। 2 उनका
अपके भाइयोंके बीच कोई भाग न हो; क्योंकि अपके वचन के अनुसार यहोवा

उनका निज भाग ठहरा है। 3 और चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरी का मेलबलि हो,
उसके करनेवाले लोगोंकी ओर से याजकोंका हक यह हो, कि वे उसका कन्धा और
दोनोंगाल और फोफ याजक को दें। 4 तू उसका अपक्की पहिली उपज का अन्न,
नया दाखमधु, और टटका तेल, और अपक्की भेंड़ोंका वह ऊन देना जो पहिली
बार कतरा गया हो। 5 क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रियोंमें से उसी
को चुन लिया है, कि वह और उसके वंश सदा उसके नाम से सेवा टहल करने को
उपस्यित हुआ करें।। 6 फिर यदि कोई लेवीय इस्राएल की बस्तियोंमें से किसी से,
जहां वह परदेशी की नाईं रहता हो, अपके मन की बड़ी अभिलाषा से उस स्यान
पर जाए जिसे यहोवा चुन लेगा, 7 तो अपके सब लेवीय भाइयोंकी नाईं, जो वहां
अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने उपस्यित होंगे, वह भी उसके नाम से सेवा
टहल करे। 8 और अपके पूर्वजोंके भाग की मोल को छोड़ उसको भोजन का भाग
भी उनके समान मिला करे।। 9 जब तू उस देश में पहुंचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे देता है, तब वहां की जातियोंके अनुसार घिनौना काम करने को न सीखना।
10 तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपके बेटे वा बेटी को आग में होम करके
चढ़ानेवाला, वा भावी कहनेवाला, वा शुभ अशुभ मुहूर्तोंका माननेवाला, वा टोन्हा,
वा तान्त्रिक, 11 वा बाजीगर, वा ओफोंसे पूछनेवाला, वा भूत साधनेवाला, वा
भूतोंका जगानेवाला हो। 12 क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा
के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामोंके कारण तेरा परमेश्वर यहोवा
उनको तेरे साम्हने से निकालने पर है। 13 तू अपके परमेश्वर यहोवा के सम्मुख
सिद्ध बना रहना। 14 वे जातियां जिनका अधिक्कारनी तू होने पर है शुभ-अशुभ
मुहूर्तोंके माननेवालोंऔर भावी कहनेवालोंकी सुना करती है; परन्तु तुझ को तेरे

परमेश्वर यहोवा ने ऐसा करने नहीं दिया। 15 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से,
अर्यात् तेरे भाइयोंमें से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की
सुनना; 16 यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा, जो तू ने होरेब पहाड़ के पास
सभा के दिन अपके परमेश्वर यहोवा से की यी, कि मुझे न तो अपके परमेश्वर
यहोवा का शब्द फिर सुनना, और न वह बड़ी आग फिर देखनी पके, कहीं ऐसा न
हो कि मर जाऊं। 17 तब यहोवा ने मुझ से कहा, कि वे जो कुछ कहते हैं सो ठीक
कहते हैं। 18 सो मैं उनके लिथे उनके भाइयोंके बीच में से तेरे समान एक नबी को
उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की
मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा। 19 और जो मनुष्य मेरे वह
वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उस से
लूंगा। 20 परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे
जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, वा पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह
नबी मार डाला जाए। 21 और यदि तू अपके मन में कहे, कि जो वचन यहोवा ने
नहीं कहा उसको हम किस रीति से पहिचानें? 22 तो पहिचान यह है कि जब कोई
नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे; तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए,
तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने वह बात अभियान
करके कही है, तू उस से भय न खाना।।

व्यवस्थाविवरण 19

1 जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियोंको नाश करे जिनका देश वह तुझे देता है,
और तू उनके देश का अधिक्कारनी हो के उनके नगरोंऔर घरोंमें रहने लगे, 2

तब अपके देश के बीच जिसका अधिक्कारनी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे कर देता
है तीन नगर अपके लिथे अलग कर देना। 3 और तू अपके लिथे मार्ग भी तैयार
करना, और अपके देश के जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे सौंप देता है तीन भाग
करना, ताकि हर एक खूनी वहीं भाग जाए। 4 और जो खूनी वहां भागकर अपके
प्राण को बचाए, वह इस प्रकार का हो; अर्यात् वह किसी से बिना पहिले बैर रखे वा
उसको बिना जाने बूफे मार डाला हो 5 जैसे कोई किसी के संग लकड़ी काटने को
जंगल में जाए, और वृझ काटने को कुल्हाड़ी हाथ से उठाए, और कुल्हाड़ी बेंट से
निकलकर उस भाई को ऐसी लगे कि वह मर जाए तो वह उस नगरोंमें से किसी
में भागकर जीवित रहे; 6 ऐसा न हो कि मार्ग की लम्बाई के कारण खून का
पलटा लेनेवाला अपके क्रोध के ज्वलन में उसका पीछा करके उसको जा पकड़े,
और मार डाले, यद्यपि वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि उस से बैर नहीं रखता
या। 7 इसलिथे मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि अपके लिथे तीन नगर अलग कर
रखना। 8 और यदि तेरा परमेश्वर यहोवा उस शपय के अनुसार जो उस ने तेरे
पूर्वजोंसे खाई यी तेरे सिवानोंको बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे, जिसके देने का
वचन उस ने तेरे पूर्वजोंको दिया या 9 यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने में
जिन्हें मैं आज तुझ को सुनाता हूं चौकसी करे, और अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम
रखे और सदा उसके मार्गोंपर चलता रहे तो इन तीन नगरोंसे अधिक और भी
तीन नगर अलग कर देना, 10 इसलिथे कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरा निज भाग करके देता है किसी निर्दोष का खून न बहाथा जाए, और
उसका दोष तुझ पर न लगे। 11 परन्तु यदि कोई किसी से बैर रखकर उसकी
घात में लगे, और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए, और फिर उन

नगरोंमें से किसी में भाग जाए, 12 तो उसके नगर के पुरनिथे किसी को भेजकर
उसको वहां से मंगाकर खून के पलटा लेनेवाले के हाथ में सौंप दे, कि वह मार
डाला जाए। 13 उस पर तरस न खाना, परन्तु निर्दोष के खून का दोष इस्राएल से
दूर करना, जिस से तुम्हारा भला हों।। 14 जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को
देता है, उसका जो भाग तुझे मिलेगा, उस में किसी का सिवाना जिसे अगले
लोगोंने ठहराया हो न हटाना।। 15 किसी मनुष्य के विरूद्ध किसी प्रकार के अधर्म
वा पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यो न हो, एक ही जन की साझी न
सुनना, परन्तु दो वा तीन साझीयोंके कहने से बात पक्की ठहरे। 16 यदि कोई
फूठी साझी देनेवाला किसी के विरूद्ध याहोवा से फिर जाने की साझी देने को खड़ा
हो, 17 तो वे दोनोंमनुष्य, जिनके बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो, यहोवा के सम्मुख,
अर्यात् उन दिनोंके याजकोंऔर न्यायियोंके साम्हने खड़े किए जाएं; 18 तब
न्यायी भली भांति पूछपाछ करें, और यदि यह निर्णय पाए कि वह फूठा साझी है,
और अपके भाई के विरूद्ध फूठी साझी दी है 19 तो अपके भाई की जैसी भी हानि
करवाने की युक्ति उस ने की हो वैसी ही तुम भी उसकी करना; इसी रीति से अपके
बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना। 20 और दूसरे लोग सुनकर डरेंगे, और आगे
को तेरे बीच फिर ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे। 21 और तू बिलकुल तरस न खाना;
प्राण की सन्ती प्राण का, आंख की सन्ती आंख का, दांत की सन्ती दांत का, हाथ
की सन्ती हाथ का, पांव की सन्ती पांव का दण्ड देना।।

व्यवस्थाविवरण 20

1 जब तू अपके शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और घोड़े, रय, और अपके से

अधिक सेना को देखे, तब उन से न डरना; तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ को मिस्र
देश से निकाल ले आया है वह तेरे संग है। 2 और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं
के निकट जाओ, तब याजक सेना के पास आकर कहे, 3 हे इस्राएलियोंसुनो, आज
तुम अपके शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आए हो; तुम्हारा मन कच्चा न हो; तुम
मत डरो, और न थरथराओ, और न उनके साम्हने भय खाओ; 4 क्योंकि तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने के लिथे तुम्हारे
संग चलता है। 5 फिर सरदार सिपाहियोंसे यह कहें, कि तुम में से कौन है जिस ने
नया घर बनाया हो और उसका समर्पण न किया हो? तो वह अपके घर को लौट
जाए और दूसरा मनुष्य उसका समर्पण करे। 6 और कौन है जिस ने दाख की बारी
लगाई हो, परन्तु उसके फल न खाए हों? वह भी अपके घर को लौट जाए, ऐसा न
हो कि वह संग्राम में मारा जाए, और दूसरा मनुष्य उसके फल खाए। 7 फिर कौन
है जिस ने किसी स्त्री से ब्याह की बात लगाई हो, परन्तु उसको ब्याह न लाया हो?
वह भी अपके घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह युद्ध में मारा जाए, और दूसरा
मनुष्य उस से ब्याह कर ले। 8 इसके अलावा सरदार सिपाहियोंसे यह भी कहें, कि
कौन कौन मनुष्य है जो डरपोक और कच्चे मन का है, वह भी अपके घर को लौट
जाए, ऐसा न हो कि उसकी देखा देखी उसके भाइयोंका भी हियाव टूट जाए। 9
और जब प्रधान सिपाहियोंसे यह कह चुकें, तब उन पर प्रधानता करने के लिथे
सेनापतियोंको नियुक्त करें।। 10 जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उनके निकट
जाए, तब पहिले उस से सन्धि करने का समाचार दे। 11 और यदि वह सन्धि
करना अंगीकार करे और तेरे लिथे अपके फाटक खोल दे, तब जितने उस में होंवे
सब तेरे अधीन होकर तेरे लिथे बेगार करनेवाले ठहरें। 12 परन्तु यदि वे तुझ से

सन्धि न करें, परन्तु तुझ से लड़ना चाहें, तो तू उस नगर को घेर लेना; 13 और
जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उस में के सब पुरूषोंको
तलवार से मार डालना। 14 परन्तु स्त्रियां और बालबच्चे, और पशु आदि जितनी
लूट उस नगर में हो उसे अपके लिथे रख लेना; और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना। 15 इस प्रकार उन नगरोंसे करना जो
तुझ से बहुत दूर हैं, और इन जातियोंके नगर नहीं हैं। 16 परन्तु जो नगर इन
लोगोंके हैं, जिनका अधिक्कारनी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ठहराने पर है, उन
में से किसी प्राणी को जीवित न रख छोड़ना, 17 परन्तु उनको अवश्य सत्यानाश
करना, अर्यात् हित्तियों, एमोरियों, कनानियों, परिज्जियों, हिव्वियों, और
यबूसिक्कों, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; 18 ऐसा न हो कि
जितने घिनौने काम वे अपके देवताओं की सेवा में करते आए हैं वैसा ही करना
तुम्हें भी सिखाएं, और तुम अपके परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप करने लगो।।
19 जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर को जीतने के लिथे उसे बहुत दिनोंतक घेरे
रहे, तब उसके वृझोंपर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना, क्योंकि उनके फल
तेरे खाने के काम आएंगे, इसलिथे उन्हें न काटना। क्या मैदान के वृझ भी मनुष्य
हैं कि तू उनको भी घेर रखे? 20 परन्तु जिन वृझोंके विषय में तू यह जान ले कि
इनके फल खाने के नहीं हैं, तो उनको काटकर नाश करना, और उस नगर के
विरूद्ध उस समय तक कोट बान्धे रहना जब तक वह तेरे वश में न आ जाए।।

व्यवस्थाविवरण 21

1 यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी मारे हुए

की लोथ पक्की हुई मिले, और उसको किस ने मार डाला है यह जान न पके, 2 तो
तेरे सियाने लोग और न्यायी निकलकर उस लोथ के चारोंओर के एक एक नगर
की दूरी को नापें; 3 तब जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे, उसके सियाने
लोग एक ऐसी कलोर ले रखें, जिस से कुछ काम न लिया गया हो, और जिस पर
जूआ कभी न रखा गया हो। 4 तब उस नगर के सियाने लोग उस कलोर को एक
बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती और न बोई गई हो ले जाएं, और
उसी तराई में उस कलोर का गला तोड़ दें। 5 और लेवीय याजक भी निकट आएं,
क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनको चुन लिया है कि उसकी सेवा टहल करें और
उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, और उनके कहने के अनुसार हर एक फगड़े
और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय हो। 6 फिर जो नगर उस लोथ के सब से
निकट ठहरे, उसके सब सियाने लोग उस कलोर के ऊपर जिसका गला तराई में
तोड़ा गया हो अपके अपके हाथ धोकर कहें, 7 यह खून हम से नहीं किया गया,
और न यह हमारी आंखोंका देखा हुआ काम है। 8 इसलिथे, हे यहोवा, अपक्की
छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढांपकर निर्दोष खून का पाप अपक्की इस्राएल
प्रजा के सिर पर से उतार। तब उस खून का दोष उनको झमा कर दिया जाएगा। 9
योंवह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तू निर्दोष के खून का दोष अपके
मध्य में से दूर करना।। 10 जब तू अपके शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और तेरा
परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे, और तू उन्हें बन्धुआ कर ले, 11 तब यदि
तू बन्धुओं में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए, और उस से
ब्याह कर लेना चाहे, 12 तो उसे अपके घर के भीतर ले आना, और वह अपना
सिर मुंडाए, नाखून कटाए, 13 और अपके बन्धुआई के वस्त्र उतारके तेरे घर में

महीने भर रहकर अपके माता पिता के लिथे विलाप करती रहे; उसके बाद तू
उसके पास जाना, और तू उसका पति और वह तेरी पत्नी बने। 14 फिर यदि वह
तुझ को अच्छी न लगे, तो जहां वह जाना चाहे वहां उसे जाने देना; उसको रूपया
लेकर कहीं न बेचना, और तू ने जो उसकी पत-पानी ली, इस कारण उस से दासी
का सा ब्यवहार न करना।। 15 यदि किसी पुरूष की दो पत्नियां हों, और उसे एक
प्रिय और दूसरी अप्रिय हो, और प्रिया और अप्रिया दोनोंस्त्रियां बेटे जने, परन्तु
जेठा अप्रिया का हो, 16 तो जब वह अपके पुत्रोंको सम्पत्ति का बटवारा करे, तब
यदि अप्रिया का बेटा जो सचमुच जेठा है यदि जीवित हो, तो वह प्रिया के बेटे को
जेठांस न दे सकेगा; 17 वह यह जानकर कि अप्रिया का बेटा मेरे पौरूष का
पहिला फल है, और जेठे का अधिक्कारने उसी का है, उसी को अपक्की सारी
सम्पत्ति में से दो भाग देकर जेठांसी माने।। 18 यदि किसी के हठीला और दंगैत
बेटा हो, जो अपके माता-पिता की बात न माने, किन्तु ताड़ना देने पर भी उनकी
न सुने, 19 तो उसके माता-पिता उसे पकड़कर अपके नगर से बाहर फाटक के
निकट नगर के सियानोंके पास ले जाएं, 20 और वे नगर के सियानोंसे कहें, कि
हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और
पियक्कड़ है। 21 तब उस नगर के सब पुरूष उसको पत्यरवाह करके मार डाले,
योंतू अपके मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना, तब सारे इस्राएली सुनकर भय
खाएंगे। 22 फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिस से वह
मार डाला जाए, और तू उसकी लोय को वृझ पर लटका दे, 23 तो वह लोय रात
को वृझ पर टंगी न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना, क्योंकि जो लटकाया
गया हो वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है; इसलिथे जो देश तेरा परमेश्वर

यहोवा तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को अशुद्ध न करना।।

व्यवस्थाविवरण 22

1 तू अपके भाई के गाय-बैल वा भेड़-बकरी को भटकी हुई देखकर अनदेखी न
करना, उसको अवश्य उसके पास पहुंचा देना। 2 परन्तु यदि तेरा वह भाई निकट
न रहता हो, वा तू उसे न जानता हो, तो उस पशु को अपके घर के भीतर ले आना,
और जब तक तेरा वह भाई उसको न ढूंढ़े तब तक वह तेरे पास रहे; और जब वह
उसे ढूंढ़े तब उसको दे देना। 3 और उसके गदहे वा वस्त्र के विषय, वरन उसकी
कोई वस्तु क्योंन हो, जो उस से खो गई हो और तुझ को मिले, उसके विषय में भी
ऐसा ही करना; तू देखी-अनदेखी न करना।। 4 तू अपके भाई के गदहे वा बैल को
मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न करना; उसके उठाने में अवश्य उसकी
सहाथता करना।। 5 कोई स्त्री पुरूष का पहिरावा न पहिने, और न कोई पुरूष स्त्री
का पहिरावा पहिने; क्योंकि ऐसे कामोंके सब करनेवाले तेरे परमेश्वर यहोवा की
दृष्टि में घृणित हैं।। 6 यदि वृझ वा भूमि पर तेरे साम्हने मार्ग में किसी चिड़िया
का घोंसला मिले, चाहे उस में बच्चे होंचाहे अण्डे, और उन बच्चोंवा अण्डोंपर
उनकी मां बैठी हुई हो, तो बच्चोंसमेत मां को न लेना; 7 बच्चोंको अपके लिथे ले
तो ले, परन्तु मां को अवश्य छोड़ देना; इसलिथे कि तेरा भला हो, और तेरी आयु
के दिन बहुत हों।। 8 जब तू नया घर बनाए तब उसकी छत पर आड़ के लिथे
मुण्डेर बनाना, ऐसा न हो कि कोई छत पर से गिर पके, और तू अपके घराने पर
खून का दोष लगाए। 9 अपक्की दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, ऐसा
न हो कि उसकी सारी उपज, अर्यात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख की बारी की

उपज दोनोंअपवित्र ठहरें। 10 बैल और गदहा दोनोंसंग जोतकर हल न चलाना।
11 ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना।। 12 अपके ओढ़ने
के चारोंओर की कोर पर फालर लगाया करना।। 13 यदि कोई पुरूष किसी स्त्री को
ब्याहे, और उसके पास जाने के समय वह उसको अप्रिय लगे, 14 और वह उस
स्त्री की नामधराई करे, और यह कहकर उस पर कुकर्म का दोष लगाए, कि इस
स्त्री को मैं ने ब्याहा, और जब उस से संगति की तब उस में कुंवारी अवस्या के
लझण न पाए, 15 तो उस कन्या के माता-पिता उसके कुंवारीपन के चिन्ह लेकर
नगर के वृद्ध लोगोंके पास फाटक के बाहर जाएं; 16 और उस कन्या का पिता वृद्ध
लोगोंसे कहे, मैं ने अपक्की बेटी इस पुरूष को ब्याह दी, और वह उसको अप्रिय
लगती है; 17 और वह तो यह कहकर उस पर कुकर्म का दोष लगाता है, कि मैं ने
तेरी बेटी में कुंवारीपन के लझण नहीं पाए। परन्तु मेरी बेटी के कुंवारीपन के
चिन्ह थे हैं। तब उसके माता-पिता नगर के वृद्ध लोगोंके साम्हने उस चद्दर को
फैलाएं। 18 तब नगर के सियाने लोग उस पुरूष को पकड़कर ताड़ना दें; 19 और
उस पर सौ शेकेल रूपे का दण्ड भी लगाकर उस कन्या के पिता को दें, इसलिथे
कि उस ने एक इस्राएली कन्या की नामधराई की है; और वह उसी की पत्नी बनी
रहे, और वह जीवन भर उस स्त्री को त्यागने न पाए। 20 परन्तु यदि उस कन्या
के कुंवारीपन के चिन्ह पाए न जाएं, और उस पुरूष की बात सच ठहरे, 21 तो वे
उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएं, और उस नगर के पुरूष
उसको पत्यरवाह करके मार डालें; उस ने तो अपके पिता के घर में वेश्या का काम
करके बुराई की है; योंतू अपके मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना।। 22 यदि
कोई पुरूष दूसरे पुरूष की ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा जाए, तो जो

पुरूष उस स्त्री के संग सोया हो वह और वह स्त्री दोनोंमार डालें जाएं; इस प्रकार तू
ऐसी बुराई को इस्राएल में से दूर करना।। 23 यदि किसी कुंवारी कन्या के ब्याह
की बात लगी हो, और कोई दूसरा पुरूष उसे नगर में पाकर उस से कुकर्म करे, 24
तो तुम उन दोनोंको उस नगर के फाटक के बाहर ले जाकर उनको पत्यरवाह
करके मार डालना, उस कन्या को तो इसलिथे कि वह नगर में रहते हुए भी नहीं
चिल्लाई, और उस पुरूष को इस कारण कि उस ने पड़ोसी की स्त्री की पत-पानी
ली है; इस प्रकार तू अपके मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना।। 25 परन्तु यदि
कोई पुरूष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस
उस से कुकर्म करे, तो केवल वह पुरूष मार डाला जाए, जिस ने उस से कुकर्म
किया हो। 26 और उस कन्या से कुछ न करना; उस कन्या का पाप प्राणदण्ड के
योग्य नहीं, क्योंकि जैसे कोई अपके पड़ोसी पर चढ़ाई करके उसे मार डाले, वैसी
ही यह बात भी ठहरेगी; 27 कि उस पुरूष ने उस कन्या को मैदान में पाया, और
वह चिल्लाई को सही, परन्तु उसको कोई बचानेवाला न मिला। 28 यदि किसी
पुरूष को कोई कुंवारी कन्या मिले जिसके ब्याह की बात न लगी हो, और वह उसे
पकड़कर उसके साय कुकर्म करे, और वे पकड़े जाएं, 29 तो जिस पुरूष ने उस से
कुकर्म किया हो वह उस कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा दे, और वह उसी
की पत्नी हो, उस ने उस की पत-पानी ली; इस कारण वह जीवन भर उसे न
त्यागने पाए।। 30 कोई अपक्की सौतेली माता को अपक्की स्त्री न बनाए, वह
अपके पिता का ओढ़ना न उघारे।।

व्यवस्थाविवरण 23

1 जिसके अण्ड कुचले गए वा लिंग काट डाला गया हो वह यहोवा की सभा में न
आने पाए।। 2 कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पाए; किन्तु
दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए।। 3 कोई
अम्मोनी वा मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए; उनकी दसवीं पीढ़ी तक का
कोई यहोवा की सभा में कभी न आने पाए; 4 इस कारण से कि जब तुम मिस्र से
निकलकर आते थे तब उन्होंने अन्न जल लेकर मार्ग में तुम से भेंट नहीं की, और
यह भी कि उन्होंने अरम्नहरैम देश के पतोर नगरवाले बोर के पुत्र बिलाम को
तुझे शाप देने के लिथे दझिणा दी। 5 परन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त
उसके शाप को आशीष से पलट दिया, इसलिथे कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से
प्रेम रखता या। 6 तू जीवन भर उनका कुशल और भलाई कभी न चाहना। 7
किसी एदोमी से घृणा न करना, क्योंकि वह तेरा भाई है; किसी मिस्री से भी घृणा
न करना, क्योंकि उसके देश में तू परदेशी होकर रहा या। 8 उनके जो परपोते
उत्पन्न होंवे यहोवा की सभा में न आने पाएं। 9 जब तू शत्रुओं से लड़ने को जाकर
छावनी डाले, तब सब प्रकार की बुरी बातोंसे बचा रहना। 10 यदि तेरे बीच कोई
पुरूष उस अशुद्धता से जो रात्रि को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो, तो
वह छावनी से बाहर जाए, और छावनी के भीतर न आए; 11 परन्तु संध्या से कुछ
पहिले वह स्नान करे, और जब सूर्य डूब जाए तब छावनी में आए। 12 छावनी के
बाहर तेरे दिशा फिरने का एक स्यान हुआ करे, और वहीं दिशा फिरने को जाया
करना; 13 और तेरे पास के हयियारोंमें एक खनती भी रहे; और जब तू दिशा
फिरने को बैठे, तब उस से खोदकर अपके मल को ढांप देना। 14 क्योंकि तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी

छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिथे तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिथे, ऐसा न
हो कि वह तेरे मध्य में कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए।। 15 जो दास
अपके स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उसको उसके स्वामी के हाथ न
पकड़ा देना; 16 वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए;
और तू उस पर अन्धेर न करना।। 17 इस्राएली स्त्रियोंमें से कोई देवदासी न हो,
और न इस्राएलियोंमें से कोई पुरूष ऐसा बुरा काम करनेवाला हो। 18 तू वेश्यापन
की कमाई वा कुत्ते की कमाई किसी मन्नत को पूरी करने के लिथे अपके परमेश्वर
यहोवा के घर में न लाना; क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप थे दोनोंकी
दोनोंकमाई घृणित कर्म है।। 19 अपके किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना,
चाहे रूपया हो, चाहे भोजन-वस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाति है,
उसे ब्याज न देना। 20 तू परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु अपके किसी
भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिक्कारनी होने को तू जा रहा है,
वहां जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए, उन सभोंको तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे आशीष दे।। 21 जब तू अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे मन्नत माने, तो
उसके पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय
तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा। 22 परन्तु यदि तू मन्नत
न माने, तो तेरा कोई पाप नहीं। 23 जो कुछ तेरे मुंह से निकले उसके पूरा करने में
चौकसी करना; तू अपके मुंह से वचन देकर अपक्की इच्छा से अपके परमेश्वर
यहोवा की जैसी मन्नत माने, वैसा ही स्वतंत्रता पूर्वक उसे पूरा करना। 24 जब तू
किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए, तब पेट भर मनमाने दाख खा तो खा,
परन्तु अपके पात्र में कुछ न रखना। 25 और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में

जाए, तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हंसुआ न लगाना।।

व्यवस्थाविवरण 24

1 यदि कोई पुरूष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात
पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिथे त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ
में देकर उसको अपके घर से निकाल दे। 2 और जब वह उसके घर से निकल
जाए, तब दूसरे पुरूष की हो सकती है। 3 परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरूष को भी
अप्रिय लगे, और वह उसके लिथे त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में देकर उसे
अपके घर से निकाल दे, वा वह दूसरा पुरूष जिस ने उसको अपक्की स्त्री कर
लिया हो मर जाए, 4 तो उसका पहिला पति, जिस ने उसको निकाल दिया हो,
उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपक्की पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के
सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा
भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना।। 5 जो पुरूष हाल का ब्याहा हुआ हो, वह
सेना के साय न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए; वह वर्ष भर
अपके घर में स्वतंत्रता से रहकर अपक्की ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे। 6
कोई मनुष्य चक्की को वा उसके ऊपर के पाट को बन्धक न रखे; क्योंकि वह तो
मानोंप्राण ही को बन्धक रखना है।। 7 यदि कोई अपके किसी इस्राएली भाई को
दास बनाने वा बेच डालने की मनसा से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो ऐसा चोर
मार डाला जाए; ऐसी बुराई को अपके मध्य में से दूर करना।। 8 कोढ़ की ब्याधि
के विषय में चौकस रहना, और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हें सिखाएं उसी के

अनुसार यत्न से करने में चौकसी करना; जैसी आज्ञा मैं ने उनको दी है वैसा करने
में चौकसी करना। 9 स्मरण रख कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने, जब तुम मिस्र से
निकलकर आ रहे थे, तब मार्ग में मरियम से क्या किया। 10 जब तू अपके किसी
भाई को कुछ उधार दे, तब बन्धक की वस्तु लेने के लिथे उसके घर के भीतर न
घुसना। 11 तू बाहर खड़ा रहना, और जिसको तू उधार दे वही बन्धक की वस्तु
को तेरे पास बाहर ले आए। 12 और यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो उसका बन्धक
अपके पास रखे हुए न सोना; 13 सूर्य अस्त होते होते उसे वह बन्धक अवश्य फेर
देना, इसलिथे कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सो सके और तुझे आशीर्वाद दे; और
यह तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धर्म का काम ठहरेगा।। 14 कोई मजदूर जो
दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाइयोंमें से हो चाहे तेरे देश के फाटकोंके भीतर
रहनेवाले परदेशियोंमें से हो, उस पर अन्धेर न करना; 15 यह जानकर, कि वह
दीन है और उसका मन मजदूरी में लगा रहता है, मजदूरी करने ही के दिन
सूर्यास्त से पहिले तू उसकी मजदूरी देना; ऐसा न हो कि वह तेरे कारण यहोवा की
दोहाई दे, और तू पापी ठहरे।। 16 पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न
पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए; जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण
मार डाला जाए।। 17 किसी पकेदशी मनुष्य वा अनाथ बालक का न्याय न
बिगाड़ना, और न किसी विधवा के कपके को बन्धक रखना; 18 और इस को
स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास या, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहां से छुड़ा
लाया है; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं।। 19 जब तू अपके पक्के खेत को
काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौट जाना;
वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिथे पड़ा रहे; इसलिथे कि परमेश्वर यहोवा

तेरे सब कामोंमें तुझ को आशीष दे। 20 जब तू अपके जलपाई के वृझ को फाड़े,
तब डालियोंको दूसरी बार न फाड़ना; वह परदेशी, अनाय, और विधवा के लिथे रह
जाए। 21 जब तू अपक्की दाख की बारी के फल तोड़े, तो उसका दाना दाना न तोड़
लेना; वह परदेशी, अनाय और विधवा के लिथे रह जाए। 22 और इसको स्मरण
रखना कि तू मिस्र देश में दास या; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं।।

व्यवस्थाविवरण 25

1 यदि मनुष्योंके बीच कोई फगड़ा हो, और वे न्याय करवाने के लिथे न्यायियोंके
पास जाएं, और वे उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी
ठहराएं। 2 और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे, तो न्यायी उसको गिरवाकर
अपके साम्हने जैसा उसका दोष हो उसके अनुसार कोड़े गिनकर लगवाए। 3 वह
उसे चालीस कोड़े तक लगवा सकता है, इस से अधिक नहीं लगवा सकता; ऐसा न
हो कि इस से अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई तेरी दृष्टि में तुच्छ ठहरे।।
4 दांवते समय चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना। 5 जब कोई भाई संग रहते हों,
और उन में से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया
जाए; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपक्की पत्नी कर ले, और उस
से पति के भाई का धर्म पालन करे। 6 और जो पहिला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो
वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे, जिस से कि उसका नाम इस्राएल में से
मिट न जाए। 7 यदि उस स्त्री के पति के भाई को उसे ब्याहना न भाए, तो वह स्त्री
नगर के फाटक पर वृद्ध लोगोंके पास जाकर कहे, कि मेरे पति के भाई ने अपके
भाई का नाम इस्राएल में बनाए रखने से नकार दिया है, और मुझ से पति के भाई

का धर्म पालन करना नहीं चाहता। 8 तब उस नगर के वृद्ध उस पुरूष को
बुलवाकर उसे समझाएं; और यदि वह अपक्की बात पर अड़ा रहे, और कहे, कि
मुझे इसको ब्याहना नहीं भावता, 9 तो उसके भाई की पत्नी उन वृद्ध लोगोंके
साम्हने उसके पास जाकर उसके पांव से जूती उतारे, और उसके मूंह पर यूक दे;
और कहे, जो पुरूष अपके भाई के वंश को चलाना न चाहे उस से इसी प्रकार
व्यवहार किया जाएगा। 10 तब इस्राएल में उस पुरूष का यह नाम पकेगा, अर्यात्
जूती उतारे हुए पुरूष का घराना।। 11 यदि दो पुरूष आपस में मारपीट करते हों,
और उन में से एक की पत्नी अपके पति को मारनेवाले के हाथ से छुड़ाने के लिथे
पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके गुप्त अंग को पकड़े, 12 तो उस स्त्री का
हाथ काट डालना; उस पर तरस न खाना।। 13 अपक्की यैली में भांति भांति के
अर्यात् घटती-बढ़ती बटखरे न रखना। 14 अपके घर में भांति भांति के, अर्यात्
घटती-बढती नपुए न रखना। 15 तेरे बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म के हों;
इसलिथे कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरी आयु बहुत हो।
16 क्योंकि ऐसे कामोंमें जितने कुटिलता करते हैं वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की
दृष्टि में घृणित हैं।। 17 स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा या तब
अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया, 18 अर्यात् उनको परमेश्वर का भय न या;
इस कारण उस ने जब तू मार्ग में यका मांदा या, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने
निर्बल होने के कारण सब से पीछे थे उन सभोंको मारा। 19 इसलिथे जब तेरा
परमेश्वर यहोवा उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिक्कारने में कर देता
है, तुझे चारोंओर के सब शत्रुओं से विश्रम दे, तब अमालेक का नाम धरती पर से
मिटा डालना; और तुम इस बात को न भूलना।।

व्यवस्थाविवरण 26

1 फिर जब तू उस देश में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके तुझे
देता है पहुंचे, और उसका अधिक्कारनी होकर उन में बस जाए, 2 तब जो देश
तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसकी भूमि की भांति भांति की जो पहिली
उपज तू अपके घर लाएगा, उस में से कुछ टोकरी में लेकर उस स्यान पर जाना,
जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा अपके नाम का निवास करने को चुन ले। 3 और उन
दिनोंके याजक के पास जाकर यह कहना, कि मैं आज तेरे परमेश्वर यहोवा के
साम्हने निवेदन करता हूं, कि यहोवा ने हम लोगोंको जिस देश के देने की हमारे
पूर्वजोंसे शपय खाई यी उस में मैं आ गया हूं। 4 तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी
लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने धर दे। 5 तब तू अपके परमेश्वर
यहोवा से इस प्रकार कहना, कि मेरा मूलपुरूष एक अरामी मनुष्य या जो मरने
पर या; और वह अपके छोटे से परिवार समेत मिस्र को गया, और वहां परदेशी
होकर रहा; और वहंा उस से एक बड़ी, और सामर्यी, और बहुत मनुष्योंसे भरी
हुई जाति उत्पन्न हुई। 6 और मिस्रियोंने हम लोगोंसे बुरा बर्ताव किया, और हमें
दु:ख दिया, और हम से कठिन सेवा लीं। 7 परन्तु हम ने अपके पूर्वजोंके परमेश्वर
यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुख-श्रम और अन्धेर
पर दृष्टि की; 8 और यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से अति भयानक
चिन्ह और चमत्कार दिखलाकर हम को मिस्र से निकाल लाया; 9 और हमें इस
स्यान पर पहुंचाकर यह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं हमें दे
दिया है। 10 अब हे यहोवा, देख, जो भूमि तू ने मुझे दी है उसकी पहली उपज मैं
तेरे पास ले आया हूं। 11 तब तू उसे अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने रखना;

और यहोवा को दण्डवत करना; 12 और जितने अच्छे पदार्य तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे और तेरे घराने को दे, उनके कारण तू लेवीयोंऔर अपके मध्य में रहनेवाले
परदेशियोंसहित आनन्द करना।। 13 और तू अपके परमेश्वर यहोवा से कहना,
कि मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपके घर
से निकाला, और लेवीय, परदेशी, अनाय, और विधवा को दे दिया है; तेरी किसी
आज्ञा को मैं ने न तो टाला है, और न भूला है। 14 उन वस्तुओं में से मैं ने शोक के
समय नहीं खाया, और न उन में से कोई वस्तु अशुद्धता की दशा में घर से
निकाली, और न कुछ शोक करनेवालोंको दिया; मैं ने अपके परमेश्वर यहोवा की
सुन ली, मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है। 15 तू स्वर्ग में से जो तेरा
पवित्र धाम है दृष्टि करके अपक्की प्रजा इस्राएल को आशीष दे, और इस दूध और
मधु की धाराओं के देश की भूमि पर आशीष दे, जिसे तू ने हमारे पूर्वजोंसे खाई
हुई शपय के अनुसार हमें दिया है। 16 आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को
इन्हीं विधियोंऔर नियमोंके मानने की आज्ञा देता है; इसलिथे अपके सारे मन
और सारे प्राण से इनके मानने में चौकसी करना। 17 तू ने तो आज यहोवा को
अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया है, कि मैं तेरे बनाए हुए मागार्ेंं पर
चलूंगा, और तेरी विधियों, आज्ञाओं, और नियमोंको माना करूंगा, और तेरी सुना
करूंगा। 18 और यहोवा ने भी आज तुझ को अपके वचन के अनुसार अपना
प्रजारूपी निज धन सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे, 19
और कि वह अपक्की बनाई हुई सब जातियोंसे अधिक प्रशंसा, नाम, और शोभा
के विषय में तुझ को प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के अनुसार अपके
परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे।

व्यवस्थाविवरण 27

1 फिर इस्राएल के वृद्ध लोगोंसमेत मूसा ने प्रजा के लोगोंको यह आज्ञा दी, कि
जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सब को मानना। 2 और जब तुम
यरदन पार होके उस देश में पहुंचो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब बड़े
बड़े पत्थर खड़े कर लेना, और उन पर चूना पोतना; 3 और पार होने के बाद उन
पर इस व्यवस्था के सारे वचनोंको लिखना, इसलिथे कि जो देश तेरे पूर्वजोंका
परमेश्वर यहोवा अपके वचन के अनुसार तुझे देता है, और जिस में दूध और मधु
की धाराएं बहती हैं, उस देश में तू जाने पाए। 4 फिर जिन पत्थरोंके विषय में मैं
ने आज आज्ञा दी है, उन्हें तुम यरदन के पार होकर एबाल पहाड़ पर खड़ा करना,
और उन पर चूना पोतना। 5 और वहीं अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे पत्थरोंकी
एक वेदी बनाना, उन पर कोई औजार न चलाना। 6 अपके परमेश्वर यहोवा की
वेदी अनगढ़े पत्थरोंकी बनाकर उन पर उसके लिथे होमबलि चढ़ाना; 7 और वहीं
मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना, और अपके परमेश्वर यहोवा के सम्मुख
आनन्द करना। 8 और उन पत्थरोंपर इस व्यवस्था के सब वचनोंको शुद्ध रीति से
लिख देना।। 9 फिर मूसा और लेवीय याजकोंने सब इस्राएलियोंसे यह भी कहा,
कि हे इस्राएल, चुप रहकर सुन; आज के दिन तू अपके परमेश्वर यहोवा की प्रजा
हो गया है। 10 इसलिथे अपके परमेश्वर यहोवा की बात मानना, और उसकी जो
जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका पालन करना। 11 फिर उसी
दिन मूसा ने प्रजा के लोगोंको यह आज्ञा दी, 12 कि जब तुम यरदन पार हो जाओ
तब शिमौन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, युसुफ, और बिन्यामीन, थे गिरिज्जीम
पहाड़ पर खडे होकर आशीर्वाद सुनाएं। 13 और रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून,

दान, और नप्ताली, थे एबाल पहाड़ पर खड़े होके शाप सुनाएं। 14 तब लेवीय लोग
सब इस्राएली पुरूषोंसे पुकारके कहें, 15 कि शापित हो वह मनुष्य जो कोई मूत्तिर्
कारीगर से खुदवाकर वा ढलवाकर निराले स्यान में स्यापन करे, क्योंकि इस से
यहोवा को घृणा लगती है। तब सब लोग कहें, आमीन।। 16 शापित हो वह जो
अपके पिता वा माता को तुच्छ जाने। तब सब लोग कहें, आमीन।। 17 शापित हो
वह जो किसी दूसरे के सिवाने को हटाए। तब सब लोग कहें, आमीन।। 18 शापित
हो वह जो अन्धे को मार्ग से भटका दे। तब सब लोग कहें, आमीन।। 19 शापित
हो वह जो पकेदशी, अनाय, वा विधवा का न्याय बिगाड़े। तब सब लोग कहें
आमीन।। 20 शापित हो वह जो अपक्की सौतेली माता से कुकर्म करे, क्योकिं वह
अपके पिता का ओढ़ना उघारता है। तब सब लोग कहें, आमीन।। 21 शापित हो
वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन।। 22
शापित हो वह जो अपक्की बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उस से कुकर्म करे।
तब सब लोग कहें, आमीन।। 23 शापित हो वह जो अपक्की सास के संग कुकर्म
करे। तब सब लोग कहें, आमीन।। 24 शापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे।
तब सब लोग कहें, आमीन।। 25 शापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के
लिथे धन ले। तब सब लोग कहें, आमीन।। 26 शापित हो वह जो इस व्यवस्या के
वचनोंको मानकर पूरा न करे। तब सब लोग कहें, आमीन।।

व्यवस्थाविवरण 28

1 यदि तू अपके परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं,
चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृय्वी की सब

जातियोंमें श्रेष्ट करेगा। 2 फिर अपके परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण थे सब
आर्शीवाद तुझ पर पूरे होंगे। 3 धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में। 4 धन्य
हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं
के बच्चे। 5 धन्य हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती। 6 धन्य हो तू भीतर आते
समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय। 7 यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो
तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएंगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे,
परन्तु तेरे साम्हने से सात मार्ग से होकर भाग जाएंगे। 8 तेरे खत्तोंपर और जितने
कामोंमें तू हाथ लगाएगा उन सभोंपर यहोवा आशीष देगा; इसलिथे जो देश तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे आशीष देगा। 9 यदि तू अपके
परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गोंपर चले, तो वह अपक्की
शपय के अनुसार तुझै अपक्की पवित्र प्रजा करके स्यिर रखेगा। 10 और पृय्वी के
देश देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा का कहलाता है, तुझ से डर
जाएंगे। 11 और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजोंसे शपय खाकर तुझे देने
को कहा, या उस में वह तेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की
बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा। 12 यहोवा तेरे लिथे अपके आकाशरूपी उत्तम
भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे
कामोंपर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियोंको उधार देगा, परन्तु किसी से
तुझे उधार लेना न पकेगा। 13 और यहोवा तुझ को पुंछ नहीं, किन्तु सिर ही
ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की
आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी
करे; 14 और जिन वचनोंकी मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दहिने

वा बाएं मुड़के पराथे देवताओं के पीछे न हो ले, और न उनकी सेवा करे।। 15
परन्तु यदि तू अपके परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं
और विधियोंके पालने में जो मैं आज सुनाता हूं चौकसी नहीं करेगा, तो थे सब
शाप तुझ पर आ पकेंगे। 16 अर्यात् शापित हो तू नगर में, शापित हो तू खेत में।
17 शापित हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती। 18 शापित हो तेरी सन्तान, और
भूमि की उपज, और गायोंऔर भेड़-बकरियोंके बच्चे। 19 शापित हो तू भीतर
आते समय, और शापित हो तू बाहर जाते समय। 20 फिर जिस जिस काम में तू
हाथ लगाए, उस में यहोवा तब तक तुझ को शाप देता, और भयातुर करता, और
धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए, और शीघ्र नष्ट न हो जाए; यह इस
कारण होगा कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा। 21 और यहोवा ऐसा
करेगा कि मरी तुझ में फैलकर उस समय तक लगी रहेगी, जब तक जिस भूमि
के अधिक्कारनी होने के लिथे तू जा रहा है उस से तेरा अन्त न हो जाए। 22
यहोवा तुझ को झयरोग से, और ज्वर, और दाह, और बड़ी जलन से, और तलवार
से, और फुलस, और गेरूई से मारेगा; और थे उस समय तक तेरा पीछा किथे
रहेंगे, तब तक तू सत्यानाश न हो जाए। 23 और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल
का, और तेरे पांव के तले भूमि लोहे की हो जाएगी। 24 यहोवा तेरे देश में पानी के
बदले बालू और धूलि बरसाएगा; वह आकाश से तुझ पर यहां तक बरसेगी कि तू
सत्यानाश हो जाएगा। 25 यहोवा तुझ को शत्रुओं से हरवाएगा; और तू एक मार्ग
से उनका साम्हना करने को जाएगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके साम्हने से
भाग जाएगा; और पृथ्वी के सब राज्योंमें मारा मारा फिरेगा। 26 और तेरी लोय
आकाश के भांति भांति के पझियों, और धरती के पशुओं का आहार होगी; और

उनका कोई हाँकनेवाला न होगा। 27 यहोवा तुझ को मिस्र के से फोड़े, और
बवासीर, और दाद, और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा, कि तू चंगा न हो सकेगा।
28 यहोवा तुझे पागल और अन्धा कर देगा, और तेरे मन को अत्यन्त घबरा
देगा; 29 और जैसे अन्धा अन्धिक्कारने में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी में
टटोलता फिरेगा, और तेरे काम काज सुफल न होंगे; और तू सदैव केवल अन्धेर
सहता और लुटता ही रहेगा, और तेरा कोई छुड़ानेवाला न होगा। 30 तू स्त्री से
ब्याह की बात लगाएगा, परन्तु दूसरा पुरूष उसको भ्रष्ट करेगा; घर तू बनाएगा,
परन्तु उस में बसने न पाएगा; दाख की बारी तू लगाएगा, परन्तु उसके फल खाने
न पाएगा। 31 तेरा बैल तेरी आंखोंके साम्हने मारा जाएगा, और तू उसका मांस
खाने न पाएगा; तेरा गदहा तेरी आंख के साम्हने लूट में चला जाएगा, और तुझे
फिर न मिलेगा; तेरी भेड़-बकरियां तेरे शत्रुओं के हाथ लग जाएंगी, और तेरी ओर
से उनका कोई छुड़ानेवाला न होगा। 32 तेरे बेटे-बेटियां दूसरे देश के लोगोंके हाथ
लग जाएंगे, और उनके लिथे चाव से देखते देखते तेरी आंखे रह जाएंगी; और तेरा
कुछ बस न चलेगा। 33 तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने
देश के लोगे खा जाएंगे; और सर्वदा तू केवल अन्धेर सहता और पीसा जाता
रहेगा; 34 यहां तक कि तू उन बातोंके कारण जो अपक्की आंखोंसे देखेगा पागल
हो जाएगा। 35 यहोवा तेरे घुटनोंऔर टांगोंमें, वरन नख से शिख तक भी असाध्य
फोड़े निकालकर तुझ को पीड़ित करेगा। 36 यहोवा तुझ को उस राजा समेत,
जिस को तू अपके ऊपर ठहराएगा, तेरी और तेरे पूर्वजोंसे अनजानी एक जाति के
बीच पहुंचाएगा; और उसके मध्य में रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं
की उपासना और पूजा करेगा। 37 और उन सब जातियोंमें जिनके मध्य में

यहोवा तुझ को पहुंचाएगा, वहां के लोगोंके लिथे तू चकित होने का, और दृष्टान्त
और शाप का कारण समझा जाएगा। 38 तू खेत में बीज तो बहुत सा ले जाएगा,
परन्तु उपज योड़ी ही बटोरेगा; क्योंकि टिड्डियां उसे खा जाएंगी। 39 तू दाख की
बारियां लगाकर उन मे काम तो करेगा, परन्तु उनकी दाख का मधु पीने न
पाएगा, वरन फल भी तोड़ने न पाएगा; क्योंकि कीड़े उनको खा जाएंगे। 40 तेरे
सारे देश में जलपाई के वृझ तो होंगे, परन्तु उनका तेल तू अपके शरीर में लगाने
न पाएगा; क्योंकि वे फड़ जाएंगे। 41 तेरे बेटे-बेटियां तो उत्पन्न होंगे, परन्तु तेरे
रहेंगे नहीं; क्योंकि वे बन्धुवाई में चले जाएंगे। 42 तेरे सब वृझ और तेरी भूमि की
उपज टिड्डियां खा जाएंगी। 43 जो परदेशी तेरे मध्य में रहेगा वह तुझ से बढ़ता
जाएगा; और तू आप घटता चला जाएगा। 44 वह तुझ को उधार देगा, परन्तु तू
उसको उधार न दे सकेगा; वह तो सिर और तू पूंछ ठहरेगा। 45 तू जो अपके
परमेश्वर यहोवा की दी हुई आज्ञाओं और विधियोंके मानने को उसकी न सुनेगा,
इस कारण थे सब शाप तुझ पर आ पकेंगे, और तेरे पीछे पके रहेंगे, और तुझ को
पकड़ेंगे, और अन्त में तू नष्ट हो जाएगा। 46 और वे तुझ पर और तेरे वंश पर
सदा के लिथे बने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे; 47 तू जो सब पदार्य की
बहुतायत होने पर भी आनन्द और प्रसन्नता के साय अपके परमेश्वर यहोवा की
सेवा नहीं करेगा, 48 इस कारण तुझ को भूखा, प्यासा, नंगा, और सब पदार्योंसे
रहित होकर अपके उन शत्रुओं की सेवा करनी पकेगी जिन्हें यहोवा तेरे विरूद्ध
भेजेगा; और जब तक तू नष्ट न हो जाए तब तक वह तेरी गर्दन पर लेहे का जूआ
डाल रखेगा। 49 यहोवा तेरे विरूद्ध दूर से, वरन पृय्वी के छोर से वेग उड़नेवाले
उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा जिसकी भाषा को तू न समझेगा; 50 उस

जाति के लोगोंका व्यवहार क्रूर होगा, वे न तो बूढ़ोंका मुंह देखकर आदर करेंगे,
और न बालकोंपर दया करेंगे; 51 और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज
यहां तक खा जांएगे कि तू नष्ट हो जाएगा; और वे तेरे लिथे न अन्न, और न नया
दाखमधु, और न टटका तेल, और न बछड़े, न मेम्ने छोड़ेंगे, यहां तक कि तू नाश
हो जाएगा। 52 और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिथे हुए सारे देश के सब फाटकोंके
भीतर तुझे घेर रखेंगे; वे तेरे सब फाटकोंके भीतर तुझे उस समय तक घेरेंगे, जब
तक तेरे सारे देश में तेरी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें जिन पर तू भरोसा करेगा
गिर न जाएं। 53 तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ
को डालेंगे, तू अपके निज जन्माए बेटे-बेटियोंका मांस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझ को देगा खाएगा। 54 और तुझ में जो पुरूष कोमल और अति सुकुमार हो वह
भी अपके भाई, और अपक्की प्राणप्यारी, और अपके बचे हुए बालकोंको क्रूर दृष्टि
से देखेगा; 55 और वह उन में से किसी को भी अपके बालकोंके मांस में से जो वह
आप खाएगा कुछ न देगा, क्योंकि घिर जाने और उस सकेती में, जिस में तेरे शत्रु
तेरे सारे फाटकोंके भीतर तुझे घेर डालेंगे, उसके पास कुछ न रहेगा। 56 और तुझ
में जो स्त्री यहां तक कोमल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन के और कोमलता के
मारे भूमि पर पांव धरते भी डरती हो, वह भी अपके प्राणप्रिय पति, और बेटे, और
बेटी को, 57 अपक्की खेरी, वरन अपके जने हुए बच्चोंको क्रूर दृष्टि से देखेगी,
क्योंकि घिर जाने और सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकोंके भीतर
घेरकर रखेंगे, वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिप के खाएगी। 58 यदि तू
इन व्यवस्या के सारे वचनोंके पालने में, जो इस पुस्तक में लिखें है, चौकसी
करके उस आदरनीय और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय

न माने, 59 तो यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा, वे दुष्ट
और बहुत दिन रहनेवाले रोग और भारी भारी दण्ड होंगे। 60 और वह मिस्र के उन
सब रोगोंको फिर तेरे ऊपर लगा देगा, जिन से तू भय खाता या; और वे तुझ में
लगे रहेंगे। 61 और जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्या की पुस्तक में नहीं लिखे
हैं, उन सभोंको भी यहोवा तुझ को यहां तक लगा देगा, कि तू सत्यानाश हो
जाएगा। 62 और तू जो अपके परमेश्वर यहोवा की न मानेगा, इस कारण आकाश
के तारोंके समान अनगिनित होने की सन्ती तुझ में से योड़े ही मनुष्य रह जाएंगे।
63 और जैसे अब यहोवा की तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है, वैसे
ही तब उसको तुम्हें नाश वरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा; और जिस भूमि के
अधिक्कारनी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे। 64 और
यहोवा तुझ को पृय्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशोंके लोगोंमें
तित्तर बित्तर करेगा; और वहां रहकर तू अपके और अपके पुरखाओं के अनजाने
काठ और पत्यर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा। 65 और उन जातियोंमें तू
कभी चैन न पाएगा, और न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा; क्योंकि वहां यहोवा
ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कांपता रहेगा, और तेरी आंखे धुंधली पड़ जाएगीं, और
तेरा मन कलपता रहेगा; 66 और तुझ को जीवन का नित्य सन्देह रहेगा; और तू
दिन रात यरयराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा। 67 तेरे मन
में जो भय बना रहेगा, उसके कारण तू भोर को आह मारके कहेगा, कि सांफ कब
होगी! और सांफ को आह मारके कहेगा, कि भोर कब होगा। 68 और यहोवा तुझ
को नावोंपर चढ़ाकर मिस्र में उस मार्ग से लौटा देगा, जिसके विषय में मैं ने तुझ
से कहा या, कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा; और वहंा तुम अपके शत्रुओं के

हाथ दास-दासी होने के लिथे बिकाऊ तो रहोगे, परन्तु तुम्हारा कोई ग्राहक न
होगा।।

व्यवस्थाविवरण 29

1 इस्त्राएलियोंसे जिस वाचा के बान्धने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को मोआब के
देश में दी उसके थे ही वचन हैं, और जो वाचा उस ने उन से होरेब पहाड़ पर बान्धी
यी यह उस से अलग है। 2 फिर मूसा ने सब इस्त्राएलियोंको बुलाकर कहा, जो
कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फिरौन और उसके सब कर्मचारियों,
और उसके सारे देश से किया वह तुम ने देखा है; 3 वे बड़े बड़े पक्कीझा के काम,
और चिन्ह, और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखोंके साम्हने हुए; 4 परन्तु यहोवा ने
आज तक तुम को न तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आंखें, और न सुनने
के कान दिए हैं। 5 मैं तो तुम को जंगल में चालीस वर्ष लिए फिरा; और न तुम्हारे
तन पर वस्त्र पुराने हुए, और न तेरी जूतियां तेरे पैरोंमें पुरानी हुईं; 6 रोटी जो तुम
नहीं खाने पाए, और दाखमधु और मदिरा जो तुम नहीं पीने पाए, वह इसलिथे
हुआ कि तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं। 7 और जब तुम इस स्यान
पर आए, तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग, थे दोनो युद्ध
के लिथे हमारा साम्हना करने को निकल आए, और हम ने उनको जीतकर उनका
देश ले लिया; 8 और रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगोंको
निज भाग करके दे दिया। 9 इसलिथे इस वाचा की बातोंका पालन करो, ताकि जो
कुछ करो वह सुफल हो।। 10 आज क्या वृद्ध लोग, क्या सरदार, तुम्हारे मुख्य
मुख्य पुरूष, क्या गोत्र गोत्र के तुम सब इस्राएली पुरूष, 11 क्या तुम्हारे बालबच्चे

और स्त्रियां, क्या लकड़हारे, क्या पनभरे, क्या तेरी छावनी में रहनेवाले परदेशी,
तुम सब के सब अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने इसलिथे खड़े हुए हो, 12 कि
जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बान्धता है, और जो शपय वह आज
तुझ को खिलाता है, उस में तू साफी हो जाए; 13 इसलिथे कि उस वचन के
अनुसार जो उसने तुझ को दिया, और उस शपय के अनुसार जो उसने इब्राहीम,
इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजोंसे खाई यी, वह आज तुझ को अपक्की प्रजा
ठहराए, और आप तेरा परमेश्वर ठहरे। 14 फिर मैं इस वाचा और इस शपय में
केवल तुम को नहीं, 15 परन्तु उनको भी, जो आज हमारे संग यहां हमारे
परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े हैं, और जो आज यहां हमारे संग नहीं हैं, साफी
करता हूं। 16 तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश में रहते थे, और जब मार्ग में
की जातियोंके बीचोंबीच होकर आ रहे थे, 17 तब तुम ने उनकी कैसी कैसी
घिनौनी वस्तुएं, और काठ, पत्यर, चांदी, सोने की कैसी मूरतें देखीं। 18 इसलिथे
ऐसा न हो, कि तुम लोगोंमें ऐसा कोई पुरूष, वा स्त्री, वा कुल, वा गोत्र के लोग
होंजिनका मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिर जाए, और वे जाकर उन
जातियोंके देवताओं की उपासना करें; फिर ऐसा न हो कि तुम्हारे मध्य ऐसी कोई
जड़ हो, जिस से विष वा कडुआ बीज उगा हो, 19 और ऐसा मनुष्य इस शाप के
वचन सुनकर अपके को आशीर्वाद के योग्य माने, और यह सोचे कि चाहे मैं
अपके मन के हठ पर चलूं, और तृप्त होकर प्यास को मिटा डालूं, तौभी मेरा कुशल
होगा। 20 यहोवा उसका पाप झमा नहीं करेगा, वरन यहोवा के कोप और जलन
का धुंआ उसको छा लेगा, और जितने शाप इस पुस्तक में लिखें हैं वे सब उस पर
आ पकेंगे, और यहोवा उसका नाम धरती पर से मिटा देगा। 21 और व्यवस्या की

इस पुस्तक में जिस वाचा की चर्चा है उसके सब शापोंके अनुसार यहोवा उसको
इस्राएल के सब गोत्रोंमें से हानि के लिथे अलग करेगा। 22 और आनेवाली
पीढिय़ोंमें तुम्हारे वंश के लोग जो तुम्हारे बाद उत्पन्न होंगे, और पकेदेशी मनुष्य
भी जो दूर देश से आएंगे, वे उस देश की विपत्तियोंऔर उस में यहोवा के फैलाए
हुए रोग देखकर, 23 और यह भी देखकर कि इसकी सब भूमि गन्धक और लोन
से भर गई है, और यहां तक जल गई है कि इस में न कुछ बोया जाता, और न
कुछ जम सकता, और न घास उगती है, वरन सदोम और अमोरा, अदमा और
सबोयीम के समान हो गया है जिन्हें यहोवा ने अपके कोप और जलजलाहट में
उलट दिया या; 24 और सब जातियोंके लोग पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश से ऐसा
क्योंकिया? और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है? 25 तब लोग यह
उत्तर देंगे, कि उनके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उनके साय मिस्र देश से
निकालने के समय बान्धी यी उसको उन्होंने तोड़ा है। 26 और पराए देवताओं की
उपासना की है जिन्हें वे पहिले नहीं जानते थे, और यहोवा ने उनको नहीं दिया
या; 27 इसलिथे यहोवा का कोप इस देश पर भड़क उठा है, कि पुस्तक मे लिखे
हुए सब शाप इस पर आ पकें; 28 और यहोवा ने कोप, और जलजलाहट, और
बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उनके देश में से उखाड़ कर दूसरे देश में फेंक दिया, जैसा
कि आज प्रगट है।। 29 गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो
प्रगट की गई हैं वे सदा के लिथे हमारे और हमारे वंश में रहेंगी, इसलिथे कि इस
व्यवस्या की सब बातें पूरी ही जाएं।।

व्यवस्थाविवरण 30

1 फिर जब आशीष और शाप की थे सब बातें जो मैं ने तुझ को कह सुनाई हैं तुझ
पर घटें, और तू उन सब जातियोंके मध्य में रहकर, जहां तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझ को बरबस पहुंचाएगा, इन बातोंको स्मरण करे, 2 और अपक्की सन्तान
सहित अपके सारे मन और सारे प्राण से अपके परमेश्वर यहोवा की ओर फिरकर
उसके पास लौट आए, और इन सब आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे सुनाता
हूं उसकी बातें माने; 3 तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बन्धुआई से लौटा ले
आएगा, और तुझ पर दया करके उन सब देशोंके लोगोंमें से जिनके मध्य में वह
तुझ को तित्तर बित्तर कर देगा फिर इकट्ठा करेगा। 4 चाहे धरती के छोर तक तेरा
बरबस पहुंचाया जाना हो, तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहां से ले आकर
इकट्ठा करेगा। 5 और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिसके
तेरे पुरखा अधिक्कारनी हुए थे, और तू फिर उसका अधिक्कारनी होगा; और वह
तेरी भलाई करेगा, और तुझ को तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा।
6 और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू
अपके परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन और सारे प्राण के साय प्रेम करे, जिस
से तू जीवित रहे। 7 और तेरा परमेश्वर यहोवा थे सब शाप की बातें तेरे शत्रुओं पर
जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पकेंगे भेजेगा। 8 और तू फिरेगा और यहोवा की
सुनेगा, और इन सब आज्ञाओं को मानेगा जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं। 9 और
यहोवा तेरी भलाई के लिथे तेरे सब कामोंमें, और तेरी सन्तान, और पशुओं के
बच्चों, और भूमि की उपज में तेरी बढ़ती करेगा; क्योंकि यहोवा फिर तेरे ऊपर
भलाई के लिथे वैसा ही आनन्द करेगा, जैसा उस ने तेरे पूर्वजोंके ऊपर किया या;
10 क्योंकि तू अपके परमेश्वर यहोवा की सुनकर उसकी आज्ञाओं और विधियोंको

जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं माना करेगा, और अपके परमेश्वर यहोवा
की ओर अपके सारे मन और सारे प्राण से मन फिराएगा।। 11 देखो, यह जो
आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिथे अनोखी, और न दूर है। 12 और
न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिथे आकाश में चढ़कर उसे
हमारे पास ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? 13 और न यह समुद्र
पार है, कि तू कहे, कौन हमारे लिथे समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए,
और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? 14 परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन
तेरे मुंह और मन ही में है ताकि तू इस पर चले।। 15 सुन, आज मैं ने तुझ को
जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है। 16 क्योंकि मैं आज तुझे आज्ञा
देता हूं, कि अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना, और उसके मागार्ें पर
चलना, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमोंको मानना, जिस से तू
जीवित रहे, और बढ़ता जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिसका
अधिक्कारनी होने को तू जा रहा है, तुझे आशीष दे। 17 परन्तु यदि तेरा मन
भटक जाए, और तू न सुने, और भटककर पराए देवताओं को दण्डवत करे और
उनकी उपासना करने लगे, 18 तो मैं तुम्हें आज यह चितौनी दिए देता हूं कि तुम
नि:सन्देह नष्ट हो जाओगे; और जिस देश का अधिक्कारनी होने के लिथे तू
यरदन पार जा रहा है, उस देश में तुम बहुत दिनोंके लिथे रहने न पाओगे। 19 मैं
आज आकाश और पृथ्वी दोनोंको तुम्हारे साम्हने इस बात की साझी बनाता हूं,
कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिथे
तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनोंजीवित रहें; 20 इसलिथे
अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानों, और उस से लिपके

रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ जीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को
यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजोंको देने की शपय खाई यी उस
देश में तू बसा रहेगा।।

व्यवस्थाविवरण 31

1 और मूसा ने जाकर यह बातें सब इस्त्रएलियोंको सुनाईं। 2 और उस ने उन से
यह भी कहा, कि आज मैं एक सौ बीच वर्ष का हूं; और अब मैं चल फिर नहीं
सकता; क्योंकि यहोवा ने मुझ से कहा है, कि तू इस यरदन पार नहीं जाने
पाएगा। 3 तेरे आगे पार जानेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा ही है; वह उन जातियोंको
तेरे साम्हने से नष्ट करेगा, और तू उनके देश का अधिक्कारनी होगा; और यहोवा
के वचन के अनुसार यहोशू तेरे आगे आगे पार जाएगा। 4 और जिस प्रकार
यहोवा ने एमोरियोंके राजा सीहोन और ओग और उनके देश को नष्ट किया है,
उसी प्रकार वह उन सब जातियोंसे भी करेगा। 5 और जब यहोवा उनको तुम से
हरवा देगा, तब तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार उन से करना जो मैं ने तुम को
सुनाई हैं। 6 तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो, उन से न डर और न भयभीत हो;
क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा
और न छोड़ेगा। 7 तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियोंके सम्मुख
कहा, कि तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगोंके संग उस देश में
जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजोंसे शपय खाकर देने को कहा या तू जाएगा; और तू
इनको उसका अधिक्कारनी कर देगा। 8 और तेरे आगे आगे चलनेवाला यहोवा है;
वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिथे मत डर

और तेरा मन कच्चा न हो।। 9 फिर मूसा ने यही व्यवस्या लिखकर लेवीय
याजकोंको, जो यहोवा की वाचा के सन्दूक उठानेवाले थे, और इस्राएल के सब वृद्ध
लोगोंको सौंप दी। 10 तब मूसा ने उनको आज्ञा दी, कि सात सात वर्ष के बीतने
पर, अर्यात् उगाही न होने के वर्ष के फोपक्कीवाले पर्व्व में, 11 जब सब इस्राएली
तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्यान पर जिसे वह चुन लेगा आकर इकट्ठे हों, तब
यह व्यवस्या सब इस्राएलियोंको पढ़कर सुनाना। 12 क्या पुरूष, क्या स्त्री, क्या
बालक, क्या तुम्हारे फाटकोंके भीतर के परदेशी, सब लोगोंको इकट्ठा करना कि
वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्या के
सारे वचनोंके पालन करने में चौकसी करें, 13 और उनके लड़केबाले जिन्होंने थे
बातें नहीं सुनीं वे भी सुनकर सींखें, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय उस समय
तक मानते रहें, जब तक तुम उस देश में जीवित रहो जिसके अधिक्कारनी होने
को तुम यरदन पार जा रहे हो।। 14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तेरे मरने का
दिन निकट है; तू यहोशू को बुलवा, और तुम दोनोंमिलापवाले तम्बू में आकर
उपस्यित हो कि मैं उसको आज्ञा दूं। तब मूसा और यहोशू जाकर मिलापवाले
तम्बू में उपस्यित हुए। 15 तब यहोवा ने उस तम्बू में बादल के खम्भे में होकर
दर्शन दिया; और बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर ठहर गया। 16 तब यहोवा ने
मूसा से कहा, तू तो अपके पुरखाओं के संग सो जाने पर है; और थे लागे उठकर
उस देश के पराथे देवताओं के पीछे जिनके मध्य वे जाकर रहेंगे व्यभिचारी हो
जाएंगे, और मुझे त्यागकर उस वाचा को जो मैं ने उन से बान्धी है तोडेंगे। 17 उस
समय मेरा कोप इन पर भड़केगा, और मैं भी इन्हें त्यागकर इन से अपना मुंह
छिपा लूंगा, और थे आहार हो जाएंगे; और बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर

आ पकेंगे, यहां तक कि थे उस समय कहेंगे, क्या थे विपत्तियां हम पर इस कारण
तो नहीं आ पक्कीं, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं रहा? 18 उस
समय मैं उन सब बुराइयोंके कारण जो थे पराथे देवताओं की ओर फिरकर करेंगे
नि:सन्देह उन से अपना मुंह छिपा लूंगा। 19 सो अब तुम यह गीत लिख लो, और
तू उसे इस्राएलियोंको सिखाकर कंठ करा देना, इसलिथे कि यह गीत उनके विरूद्ध
मेरा साझी ठहरे। 20 जब मैं इनको उस देश में पहुंचाऊंगा जिसे देने की मैं ने
इनके पूर्वजोंसे शपय खाई यी, और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं,
और खाते-खाते इनका पेट भर जाए, और थे ह्रृष्ट-पुष्ट हो जाएंगे; तब थे पराथे
देवताओं की ओर फिरकर उनकी उपासना करने लगेंगे, और मेरा तिरस्कार
करके मेरी वाचा को तोड़ देंगे। 21 वरन अभी भी जब मैं इन्हें इस देश में जिसके
विषय मैं ने शपय खाई है पहुंचा नहीं चुका, मुझे मालूम है, कि थे क्या क्या
कल्पना कर रहे हैं; इसलिथे जब बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ
पकेंगे, तब यह गीत इन पर साझी देगा, क्योंकि इनकी सन्तान इसको कभी भी
नहीं भूलेगी। 22 तब मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इस्राएलियोंको
सिखाया। 23 और उस ने नून के पुत्र यहोशू को यह आज्ञा दी, कि हियाव बान्ध
और दृढ़ हो; क्योंकि इस्राएलियोंको उस देश में जिसे उन्हें देने को मैं ने उन से
शपय खाई है तू पहुंचाएगा; और मैं आप तेरे संग रहूंगा।। 24 जब मूसा इस
व्यवस्या के वचन को आदि से अन्त तक पुस्तक में लिख चुका, 25 तब उस ने
यहोवा के सन्दूक उठानेवाले लेवियोंको आज्ञा दी, 26 कि व्यवस्या की इस
पुस्तक को लेकर अपके परमेश्वर यहोवा की वाचा के सन्दूक के पास रख दो, कि
यह वहां तुझ पर साझी देती रहे। 27 क्योंकि तेरा बलवा और हठ मुझे मालूम है;

देखो, मेरे जीवित और संग रहते हुए भी तुम यहोवा से बलवा करते आए हो; फिर
मेरे मरने के बाद भी क्योंन करोगे! 28 तुम अपके गोत्रोंके सब वृद्ध लोगोंको और
अपके सरदारोंको मेरे पास इकट्ठा करो, कि मैं उनको थे वचन सुनाकर उनके
विरुद्ध आकाश और पृथ्वी दोनोंको साझी बनाऊं। 29 क्योंकि मुझे मालूम है कि
मेरी मृत्यु के बाद तुम बिलकुल बिगड़ जाओगे, और जिस मार्ग में चलने की
आज्ञा मैं ने तुम को सुनाई है उसको भी तुम छोड़ दोगे; और अन्त के दिनोंमें जब
तुम वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपक्की बनाई हुई वस्तुओं की
पूजा करके उसको रिस दिलाओगे, तब तुम पर विपत्ति आ पकेगी।। 30 तब मूसा
ने इस्राएल की सारी सभा को इस गीत के वचन आदि से अन्त तक कह सुनाए:

व्यवस्थाविवरण 32

1 हे आकाश, कान लगा, कि मैं बोलूं; और हे पृथ्वी, मेरे मुंह की बातें सुन।। 2 मेरा
उपकेश मेंह की नाईं बरसेगा और मेरी बातें ओस की नाईं टपकेंगी, जैसे कि हरी
घास पर फीसी, और पौधोंपर फडिय़ां।। 3 मैं तो याहोवा नाम का प्रचार करूंगा।
तुम अपके परमेश्वर की महिमा को मानो! 4 वह चट्टान है, उसका काम खरा है;
और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में कुटिलता नहीं, वह
धर्मी और सीधा है।। 5 परन्तु इसी जाति के लोग टेढ़े और तिर्छे हैं; थे बिगड़ गए,
थे उसके पुत्र नहीं; यह उनका कलंक है।। 6 हे मूढ और निर्बुद्धि लोगों, क्या तुम
यहोवा को यह बदला देते हो? क्या वह तेरा पिता नहीं है, जिस ने तुम को मोल
लिया है? उस ने तुम को बनाया और स्यिर भी किया है।। 7 प्राचीनकाल के
दिनोंको स्मरण करो, पीढ़ी पीढ़ी के वर्षोंको विचारो; अपके बाप से पूछो, और वह

तुम को बताएगा; अपके वृद्ध लोगोंसे प्रश्न करो, और वे तुझ से कह देंगे।। 8 जब
परमप्रधान ने एक एक जाति को निज निज भाग बांट दिया, और आदमियोंको
अलग अलग बसाया, तब उस ने देश देश के लोगोंके सिवाने इस्राएलियोंकी
गिनती के अनुसार ठहराए।। 9 क्योंकि यहोवा का अंश उसकी प्रजा है; याकूब
उसका नपा हुआ निज भाग है।। 10 उस ने उसको जंगल में, और सुनसान और
गरजनेवालोंसे भरी हुई मरूभूमि में पाया; उस ने उसके चंहु ओर रहकर उसकी
रझा की, और अपक्की आंख की पुतली की नाईं उसकी सुधि रखी।। 11 जैसे
उकाब अपके घोंसले को हिला हिलाकर अपके बच्चोंके ऊपर ऊपर मण्डलाता है,
वैसे ही उस ने अपके पंख फैलाकर उसको अपके परोंपर उठा लिया।। 12 यहोवा
अकेला ही उसकी अगुवाई करता रहा, और उसके संग कोई पराया देवता न या।।
13 उस ने उसको पृय्वी के ऊंचे ऊंचे स्यानोंपर सवार कराया, और उसको खेतोंकी
उपज खिलाई; उस ने उसे चट्टान में से मधु और चकमक की चट्ठान में से तेल
चुसाया।। 14 गायोंका दही, और भेड़-बकरियोंका दूध, मेम्नोंकी चर्बी, बकरे और
बाशान की जाति के मेढ़े, और गेहूं का उत्तम से उत्तम आटा भी; और तू दाखरस
का मधु पिया करता या।। 15 परन्तु यशूरून मोटा होकर लात मारने लगा; तू
मोटा और हृष्ट-पुष्ट हो गया, और चर्बी से छा गया है; तब उस ने अपके सृजनहार
ईश्वर को तज दिया, और अपके उद्धारमूल चट्टान को तुच्छ जाना।। 16 उन्होंने
पराए देवताओं को मानकर उस में जलन उपजाई; और घृणित कर्म करके उसको
रिस दिलाई ।। 17 उन्होंने पिशाचोंके लिथे जो ईश्वर न थे बलि चढ़ाए, और उनके
लिथे वे अनजाने देवता थे, वे तो नथे नथे देवता थे जो योड़े ही दिन से प्रकट हुए
थे, और जिन से उनके पुरखा कभी डरे नहीं। 18 जिस चट्टान से तू उत्पन्न हुआ

उसको तू भूल गया, और ईश्वर जिस से तेरी उत्पत्ति हुई उसको भी तू भूल गया
है।। 19 इन बातोंको देखकर यहोवा ने उन्हें तुच्छ जाना, क्योंकि उसके
बेटे-बेटियोंने उसे रिस दिलाई यी।। 20 तब उस ने कहा, मैं उन से अपना मुख
छिपा लूंगा, और देखूंगा कि उनका अन्त कैसा होगा, क्योंकि इस जाति के लोग
बहुत टेढ़े हैं और धोखा देनेवाले पुत्र हैं। 21 उन्होंने ऐसी वस्तु मानकर जो ईश्वर
नहीं हैं, मुझ में जलन उत्पन्न की; और अपक्की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस
दिलाई। इसलिथे मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं उनके मन में जलन
उत्पन्न करूंगा; और एक मूढ जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊंगा।। 22 क्योंकि
मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और
पृथ्वी अपक्की उपज समेत भस्म हो जाएगी, और पहाड़ोंकी नेवोंमें भी आग लगा
देगी।। 23 मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजूंगा; और उन पर मैं अपके सब
तीरोंको छोडूंगा।। 24 वे भूख से दुबले हो जाएंगे, और अंगारोंसे और कठिन
महारोगोंसे ग्रसित हो जाएंगे; और मैं उन पर पशुओं के दांत लगवाऊंगा, और
धूलि पर रेंगनेवाले सर्पोंका विष छोड़ दूंगा।। 25 बाहर वे तलवार से मरेंगे, और
कोठरियोंके भीतर भय से; क्या कुंवारे और कुंवारियां, क्या दूध पीता हुआ बच्चा
क्या पक्के बालवाले, सब इसी प्रकार बरबाद होंगे। 26 मैं ने कहा या, कि मैं
उनको दूर दूर से तित्तर-बित्तर करूंगा, और मनुष्योंमें से उनका स्मरण तक मिटा
डालूंगा; 27 परन्तु मुझे शत्रुओं की छेड़ छाड़ का डर या, ऐसा न हो कि द्रोही इसको
उलटा समझकर यह कहने लगें, कि हम अपके ही बाहुबल से प्रबल हुए, और यह
सब यहोवा से नहीं हुआ।। 28 यह जाति युक्तहीन तो है, और इन में समझ है ही
नहीं।। 29 भला होता कि थे बुद्धिमान होते, कि इसको समझ लेते, और अपके

अन्त का विचार करते! 30 यदि उनकी चट्टान ही उनको न बेच देती, और यहोवा
उनको औरोंके हाथ में न कर देता; तो यह क्योंकर हो सकता कि उनके हजार का
पीछा एक मनुष्य करता, और उनके दस हजार को दो मनुष्य भगा देते? 31
क्योंकि जैसी हमारी चट्टान है वैसी उनकी चट्टान नहीं है, चाहे हमारे शत्रु ही
क्योंन न्यायी हों।। 32 क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली,
और अमोरा की दाख की बारियोंमें की है; उनकी दाख विषभरी और उनके गुच्छे
कड़वे हैं; 33 उनका दाखमधु सांपोंका सा विष और काले नागोंका सा हलाहल है।।
34 क्या यह बात मेरे मन में संचित, और मेरे भण्डारोंमें मुहरबन्द नहीं है? 35
पलटा लेना और बदला देना मेरा ही काम है, यह उनके पांव फिसलने के समय
प्रगट होगा; क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन निकट है, और जो दुख उन पर
पड़नेवाले है वे शीघ्र आ रहे हैं।। 36 क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा की
शक्ति जाती रही, और क्या बन्धुआ और क्या स्वाधीन, उन में कोई बचा नहीं रहा,
तब यहोवा अपके लोगोंका न्याय करेगा, और अपके दासोंके विषय में तरस
खाएगा।। 37 तब वह कहेगा, उनके देवता कहां हैं, अर्यात वह चट्टान कहां जिस
पर उनका भरोसा या, 38 जो उनके बलिदानोंकी चर्बी खाते, और उनके
तपावनोंका दाखमधु पीते थे? वे ही उठकर तुम्हारी सहाथता करें, और तुम्हारी
आड़ हों! 39 इसलिथे अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूं, और मेरे संग कोई देवता
नहीं; मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूं; मैं ही घायल करता, और मैं ही
चंगा भी करता हूं; और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा सकता।। 40 क्योंकिं मैं अपना
हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर कहता हूं, क्योंकि मैं अनन्त काल के लिथे जीवित हूं,
41 सो यदि मैं बिजली की तलवार पर सान धरकर फलकाऊं, और न्याय को

अपके हाथ में ले लूं, तो अपके द्रोहियोंसे बदला लूंगा, और अपके बैरियोंको बदला
दूंगा।। 42 मैं अपके तीरोंको लोहू से मतवाला करूंगा, और मेरी तलवार मांस
खाएगी वह लोहू, मारे हुओं और बन्धुओं का, और वह मांस, शत्रुओं के प्रधानोंके
शीश का होगा।। 43 हे अन्यजातियों, उसकी प्रजा के साय आनन्द मनाओ;
क्योंकि वह अपके दासोंके लोहू का पलटा लेगा, और अपके द्रोहियोंको बदला
देगा, और अपके देश और अपक्की प्रजा के पाप के लिथे प्रायश्चित देगा। 44 इस
गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुत्र होशे समेत आकर लोगोंको सुनाए। 45 जब
मूसा थे सब वचन सब इस्राएलियोंसे कह चुका, 46 तब उस ने उन से कहा कि
जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूं उन सब पर अपना अपाना मन
लगाओ, और उनके अर्यात् इस व्यवस्या की सारी बातोंके मानने में चौकसी करने
की आज्ञा अपके लड़केबालोंको दो। 47 क्योंकि यह तुम्हारे लिथे व्यर्य काम नहीं,
परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारी आयु के दिन
बहुत होंगे, जिसके अधिक्कारनी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो।। 48 फिर
उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, 49 उस अबारीम पहाड़ की नबो नाम चोटी पर,
जो मोआब देश में यरीहो के साम्हने है, चढ़कर कनान देश जिसे मैं इस्राएलियोंकी
निज भूमि कर देता हूं उसको देख ले। 50 तब जैसा तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर
मरकर अपके लोगोंमें मिल गया, वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर मर जाएगा,
और अपके लोगोंमें मिल जाएगा। 51 इसका कारण यह है, कि सीन जंगल में,
कादेश के मरीबा नाम सोते पर, तुम दोनोंने मेरा अपराध किया, क्योंकि तुम ने
इस्राएलियोंके मध्य में मुझे पवित्र न ठहराया। 52 इसलिथे वह देश जो मैं
इस्राएलियोंको देता हूं, तू अपके साम्हने देख लेगा, परन्तु वहां जाने न पाएगा।।

व्यवस्थाविवरण 33

1 जो आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने अपक्की मृत्यु से पहिले इस्राएलियोंको
दिया वह यह है।। 2 उस ने कहा, यहोवा सीनै से आया, और सेईर से उनके लिथे
उदय हुआ; उस ने पारान पर्वत पर से अपना तेज दिखाया, और लाखोंपवित्रोंके
मध्य में से आया, उसके दहिने हाथ से उनके लिथे ज्वालामय विधियां निकलीं।।
3 वह निश्चय देश देश के लोगोंसे प्रेम करता है; उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ में
हैं: वे तेरे पांवोंके पास बैठे रहते हैं, 4 मूसा ने हमें व्यवस्या दी, और याकूब की
मण्डली का निज भाग ठहरी।। 5 जब प्रजा के मुख्य मुख्य पुरूष, और इस्राएल के
गोत्री एक संग होकर एकत्रित हुए, तब वह यशूरून में राजा ठहरा।। 6 रूबेन न
मरे, वरन जीवित रहे, तौभी उसके यहां के मनुष्य योड़े हों।। 7 और यहूदा पर यह
आशीर्वाद हुआ जो मूसा ने कहा, हे यहोवा तू यहूदा की सुन, और उसे उसके
लोगोंके पास पहुंचा। वह अपके लिथे आप अपके हाथोंसे लड़ा, और तू ही उसके
द्रोहियोंके विरूद्ध उसका सहाथक हो।। 8 फिर लेवी के विषय में उस ने कहा, तेरे
तुम्मीम और ऊरीम तेरे भक्त के पास हैं, जिसको तू ने मस्सा में परख लिया, और
जिसके साय मरीबा नाम सोते पर तेरा वादविवाद हुआ; 9 उस ने तो अपके माता
पिता के विषय में कहा, कि मैं उनको नहीं जानता; और न तो उस ने अपके
भाइयोंको अपना माना, और न अपके पुत्रोंको पहिचाना। क्योंकि उन्होंने तेरी
बातें मानी, और वे तेरी वाचा का पालन करते हैं।। 10 वे याकूब को तेरे नियम,
और इस्राएल को तेरी व्यवस्या सिखाएंगे; और तेरे आगे धूप और तेरी वेदी पर
सर्वांग पशु को होमबलि करेंगे।। 11 हे यहोवा, उसकी सम्पत्ति पर आशीष दे, और
उसके हाथोंकी सेवा को ग्रहण कर; उसके विरोधियोंऔर बैरियोंकी कमर पर ऐसा

मार, कि वे फिर न उठ सकें।। 12 फिर उस ने बिन्यामीन के विषय में कहा,
यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर
छाया करेगा, और वह उसके कन्धोंके बीच रहा करता है।। 13 फिर यूसुफ के
विषय में उस ने कहा; इसका देश यहोवा से आशीष पाए अर्यात् आकाश के
अनमोल पदार्य और ओस, और वह गहिरा जल जो नीचे है, 14 और सूर्य के
पकाए हुए अनमोल फल, और जो अनमोल पदार्य चंद्रमा के उगाए उगते हैं, 15
और प्राचीन पहाड़ोंके उत्तम पदार्य, और सनातन पहाडिय़ोंके अनमोल पदार्य, 16
और पृय्वी और जो अनमोल पदार्य उस में भरे हैं, और जो फाड़ी में रहता या
उसकी प्रसन्नता। इन सभोंके विषय में यूसुफ के सिर पर, अर्यात् उसी के सिर के
चांद पर जो अपके भाइयोंसे न्यारा हुआ या आशीष ही आशीष फले।। 17 वह
प्रतापी है, मानो गया का पहिलौठा है, और उसके सींग बनैले बैल के से हैं; उन से
वह देश देश के लोगोंको, वरन पृय्वी के छोर तक के सब मनुष्योंको ढकेलेगा; वे
एप्रैम के लाखोंलाख, और मनश्शे के हजारोंहजार हैं।। 18 फिर जबूलून के विषय
में उस ने कहा, हे जबूलून, तू बाहर निकलते समय, और हे इस्साकार, तू अपके
डेरोंमें आनन्द करे।। 19 वे देश देश के लोगोंको पहाड़ पर बुलाएंगे; वे वहां
धर्मयज्ञ करेंगे; क्योंकि वे समुद्र का धन, और बालू के छिपे हुए अनमोल पदार्य से
लाभ उठाएंगे।। 20 फिर गाद के विषय में उस ने कहा, धन्य वह है जो गाद को
बढ़ाता है! गाद तो सिंहनी के समान रहता है, और बांह को, वरन सिर के चांद तक
को फाड़ डालता है।। 21 और उस ने पहिला अंश तो अपके लिथे चुन लिया,
क्योंकि वहां रईस के योग्य भाग रखा हुआ या; तब उस ने प्रजा के मुख्य मुख्य
पुरूषोंके संग आकर यहोवा का ठहराया हुआ धर्म, और इस्राएल के साय होकर

उसके नियम का प्रतिपालन किया।। 22 फिर दान के विषय में उस ने कहा, दान
तो बाशान से कूदनेवाला सिंह का बच्चा है।। 23 फिर नप्ताली के विषय में उस ने
कहा, हे नप्ताली, तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तृप्त, और उसकी आशीष से भरपूर
है, तू पच्छिम और दक्खिन के देश का अधिक्कारनी हो।। 24 फिर आशेर के
विषय में उस ने कहा, आशेर पुत्रोंके विषय में आशीष पाए; वह अपके भाइयोंमें
प्रिय रहे, और अपना पांव तेल में डुबोए।। 25 तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे,
और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो।। 26 हे यशूरून, ईश्वर के तुल्य और कोई
नहीं है, वह तेरी सहाथता करने को आकाश पर, और अपना प्रताप दिखाता हुआ
आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है।। 27 अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है,
और नीचे सनातन भुजाएं हैं। वह शत्रुओं को तेरे साम्हने से निकाल देता, और
कहता है, उनको सत्यानाश कर दे।। 28 और इस्राएल निडर बसा रहता है, अन्न
और नथे दाखमधु के देश में याकूब का सोता अकेला ही रहता है; और उसके ऊपर
के आकाश से ओस पड़ा करती है।। 29 हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा
से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहाथता के लिथे ढाल, और
तेरे प्रताप के लिथे तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्यानोंको
रौंदेगा।।

व्यवस्थाविवरण 34

1 फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर, जो पिसगा की एक चोटी और
यरीहो के साम्हने है, चढ़ गया; और यहोवा ने उसको दान तक का गिलाद नाम
सारा देश, 2 और नप्ताली का सारा देश, और एप्रैम और मनश्शे का देश, और

पच्छिम के समुद्र तक का यहूदा का सारा देश, 3 और दक्खिन देश, और सोअर
तक की यरीहो नाम खजूरवाले नगर की तराई, यह सब दिखाया। 4 तब याहोवा
ने उस से कहा, जिस देश के विषय में मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से
शपय खाकर कहा या, कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा वह यही है। मैं ने इसको तुझे
साझात दिखला दिया है, परन्तु तू पार होकर वहां जाने न पाएगा। 5 तब यहोवा
के कहने के अनुसार उसका दास मूसा वहीं मोआब देश में मर गया, 6 और उस ने
उसे मोआब के देश में बेतपोर के साम्हने एक तराई में मिट्टी दी; और आज के
दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहां है। 7 मूसा अपक्की मृत्यु के
समय एक सौ बीस वर्ष का या; परन्तु न तो उसकी आंखें धुंधली पक्कीं, और न
उसका पौरूष घटा या। 8 और इस्राएली मोआब के अराबा में मूसा के लिथे तीस
दिन तक रोते रहे; तक मूसा के लिथे रोने और विलाप करने के दिन पूरे हुए। 9
और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण या, क्योंकि मूसा ने
अपके हाथ उस पर रखे थे; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो याहोवा ने
मूसा को दी यी उसकी मानते रहे। 10 और मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई
नबी नहीं उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने बातें कीं, 11 और उसको
यहोवा ने फिरौन और उसके सब कर्मचारियोंके साम्हने, और उसके सारे देश में,
सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा या, 12 और उस ने सारे इस्राएलियोंकी
दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए।।

यहोशू 1

1 यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून

का पुत्र या कहा, 2 मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और
इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्यात्
इस्राएलियोंको देता हूं। 3 उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्यात्
जिस जिस स्यान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हे दे देता हूं। 4 जंगल और
उस लबानोन से लेकर परात महानद तक, और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक
हित्तियोंका सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा। 5 तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने
ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं
तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा। 6 इसलिथे हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा;
क्योंकि जिस देश के देने की शपय मैं ने इन लोगोंके पूर्वजोंसे खाई यी उसका
अधिक्कारनी तू इन्हें करेगा। 7 इतना हो कि तू हियाव बान्धकर और बहुत दृढ़
होकर जो व्यवस्या मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में
चौकसी करना; और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बांए, तब जहां जहां तू
जाएगा वहां वहां तेरा काम सुफल होगा। 8 व्यवस्या की यह पुस्तक तेरे चित्त से
कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिथे कि जो कुछ उस
में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे
सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा। 9 क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी?
हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां
जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।। 10 तब यहोशू ने
प्रजा के सरदारोंको यह आज्ञा दी, 11 कि छावनी में इधर उधर जाकर प्रजा के
लोगोंको यह आज्ञा दो, कि अपके अपके लिथे भोजन तैयार कर रखो; क्योंकि
तीन दिन के भीतर तुम को इस यरदन के पार उतरकर उस देश को अपके

अधिक्कारने में लेने के लिथे जाना है जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे
अधिक्कारने में देनेवाला है।। 12 फिर यहोशू ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे
के आधे गोत्र के लोगोंसे कहा, 13 जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से कही यीं,
कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्रम देता है, और यही देश तुम्हें देगा, उसकी
सुधि करो। 14 तुम्हारी स्त्रियां, बालबच्चे, और पशु तो इस देश में रहें जो मूसा ने
तुम्हें यरदन के इसी पार दिया, परन्तु तुम जो शूरवीर हो पांति बान्धे हुए अपके
भांइयोंके आगे आगे पार उतर चलो, और उनकी सहाथता करो; 15 और जब
यहोवा उनको ऐसा विश्रम देगा जैसा वह तुम्हें दे चुका है, और वे भी तुम्हारे
परमश्ेवर यहोवा के दिए हुए देश के अधिक्कारनी हो जाएंगे; तब तुम अपके
अधिक्कारने के देश में, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के इस पार सूर्योदय की
ओर तुम्हें दिया है, लौटकर इसके अधिक्कारनी होगे। 16 तब उन्होंने यहोशू को
उत्तर दिया, कि जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहां
कहीं तू हमें भेजे वहां हम जाएंगे। 17 जैसे हम सब बातोंमें मूसा की मानते थे वैसे
ही तेरी भी माना करेंगे; इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग
रहता या वैसे ही तेरे संग भी रहे। 18 कोई क्योंन हो जो तेरे विरूद्ध बलवा करे,
और जितनी आज्ञाएं तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा। परन्तु तू दृढ़
और हियाव बान्धे रह।।

यहोशू 2

1 तब नून के पुत्र यहोशू ने दो भेदियोंको शित्तीम से चुपके से भेज दिया, और उन
से कहा, जाकर उस देश और यरीहो को देखो। तुरन्त वे चल दिए, और राहाब

नाम किसी वेश्या के घर में जाकर सो गए। 2 तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा,
कि आज की रात कई एक इस्राएली हमारे देश का भेद लेने को यहां आए हुए हैं। 3
तब यरीहो के राजा ने राहाब के पास योंकहला भेजा, कि जो पुरूष तेरे यहां आए हैं
उन्हें बाहर ले आ; क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आए हैं। 4 उस स्त्री ने
दोनोंपुरूषोंको छिपा रखा; और इस प्रकार कहा, कि मेरे पास कई पुरूष आए तो
थे, परन्तु मैं नहीं जानती कि वे कहां के थे; 5 और जब अन्धेरा हुआ, और फाटक
बन्द होने लगा, तब वे निकल गए; मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गए; तुम फुर्ती
करके उनका पीछा करो तो उन्हें जा पकड़ोगे। 6 उस ने उनको घर की छत पर
चढ़ाकर सनई की लकडिय़ोंके नीचे छिपा दिया या जो उस ने छत पर सजा कर
रखी यी। 7 वे पुरूष तो यरदन का मार्ग ले उनकी खोज में घाट तक चले गए; और
ज्योंही उनको खोजनेवाले फाटक से निकले त्योंही फाटक बन्द किया गया। 8
और थे लेटने न पाए थे कि वह स्त्री छत पर इनके पास जाकर 9 इन पुरूषोंसे
कहने लगी, मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगोंको यह देश दिया है, और
तुम्हारा भय हम लोगोंके मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे
कारण घबरा रहे हैं। 10 क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से
निकलने के समय तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र का जल सुखा दिया। और तुम
लोगोंने सीहोन और ओग नाम यरदन पार रहनेवाले एमोरियोंके दोनोंराजाओं को
सत्यानाश कर डाला है। 11 और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया, और
तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर
के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है। 12 अब मैं ने जो तुम पर दया
की है, इसलिथे मुझ से यहोवा की शपय खाओ कि तुम भी मेरे पिता के घराने पर

दया करोगे, और इसकी सच्ची चिन्हानी मुझे दो, 13 कि तुम मेरे माता-पिता,
भाइयोंऔर बहिनोंको, और जो कुछ उनका है उन सभोंको भी जीवित रख छोड़ो,
और हम सभोंका प्राण मरने से बचाओगे। 14 तब उन पुरूषोंने उस से कहा, यदि
तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे, तो तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण
जाए; और जब यहोवा हम को यह देश देगा, तब हम तेरे साय कृपा और सच्चाई
से बर्ताव करेंगे। 15 तब राहाब जिसका घर शहरपनाह पर बना या, और वह वहीं
रहती यीं, उस ने उनको खिड़की से रस्सी के बल उतारके नगर के बाहर कर
दिया। 16 और उस ने उन से कहा, पहाड़ को चले जाओ, ऐसा न हो कि
खोजनेवाले तुम को पाएं; इसलिथे जब तक तुम्हारे खोजनेवाले लौट न आएं तब
तक, अर्यात् तीन दिन वहीं छिपे रहता, उसके बाद अपना मार्ग लेना। 17 उन्होंने
उस से कहा, जो शपय तू ने हम को खिलाई है उसके विषय में हम तो निर्दोष
रहेंगे। 18 तुम, जब हम लोग इस देश में आएंगे, तब जिस खिड़की से तू ने हम
को उतारा है उस में यही लाल रंग के सूत की डोरी बान्ध देना; और अपके माता
पिता, भाइयों, वरन अपके पिता के घराने को इसी घर में अपके पास इकट्ठा कर
रखना। 19 तब जो कोई तेरे घर के द्वार से बाहर निकले, उसके खून का दोष उसी
के सिर पकेगा, और हम निर्दोष ठहरेंगे: परन्तु यदि तेरे संग घर में रहते हुए
किसी पर किसी का हाथ पके, तो उसके खून का दोष हमारे सिर पर पकेगा। 20
फिर यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट करे, तो जो शपय तू ने हम को
खिलाई है उस से हम निर्बन्ध ठहरेंगे। 21 उस ने कहा, तुम्हारे वचनोंके अनुसार
हो। तब उस ने उनको विदा किया, और वे चले गए; और उस ने लाल रंग की डोरी
को खिड़की में बान्ध दिया। 22 और वे जाकर पहाड़ तक पहुंचे, और वहां

खोजनेवालोंके लौटने तक, अर्यात् तीन दिन तक रहे; और खोजनेवाले उनको
सारे मार्ग में ढूंढ़ते रहे और कहीं न पाया। 23 तब वे दोनोंपुरूष पहाड़ से उतरे,
और पार जाकर नून के पुत्र यहोशू के पास पहुंचकर जो कुछ उन पर बीता या
उसका वर्णन किया। 24 और उन्होंने यहोशू से कहा, निसन्देह यहोवा ने वह सारा
देश हमारे हाथ में कर दिया है; फिर इसके सिवाय उसके सारे निवासी हमारे
कारण घबरा रहे हैं।।

यहोशू 3

1 बिहान को यहोशू सबेरे उठा, और सब इस्राएलियोंको साय ले शित्तीम से कूच
कर यरदन के किनारे आया; और वे पार उतरने से पहिले वहीं टिक गए। 2 और
तीन दिन के बाद सरदारोंने छावनी के बीच जाकर 3 प्रजा के लोगोंको यह आज्ञा
दी, कि जब तुम को अपके परमेश्वर यहोवा की वाचा का सन्दूक और उसे उठाए
हुए लेवीय याजक भी देख पकें, तब अपके स्यान से कूच करके उसके पीछे पीछे
चलना, 4 परन्तु उसके और तुम्हारे बीच में दो हजार हाथ के अटकल अन्तर रहे;
तुम सन्दूक के निकट न जाना। ताकि तुम देख सको, कि किस मार्ग से तुम को
चलना है, क्योंकि अब तक तुम इस मार्ग पर होकर नहीं चले। 5 फिर यहोशू ने
प्रजा के लोगोंसे कहा, तुम अपके आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा
तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा। 6 तब यहोशू ने याजकोंसे कहा, वाचा का
सन्दूक उठाकर प्रजा के आगे आगे चलो। तब वे वाचा का सन्दूक उठाकर आगे
आगे चले। 7 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, आज के दिन से मैं सब इस्राएलियोंके
सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरम्भ करूंगा, जिस से वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के

संग रहता या वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं। 8 और तू वाचा के सन्दूक के उठानेवाले
याजकोंको यह आज्ञा दे, कि जब तुम यरदन के जल के किनारे पहुंचो, तब यरदन
में खड़े रहना।। 9 तब यहोशू ने इस्राएलियोंसे कहा, कि पास आकर अपके
परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो। 10 और यहोशू कहने लगा, कि इस से तुम जान
लोगे कि जीवित ईश्वर तुम्हारे मध्य में है, और वह तुम्हारे सामह्रने से नि:सन्देह
कनानियों, हित्तियों, हिव्वियों, परिज्जियों, गिर्गाशियों, एमोरियों, और
यबूसिक्कों उनके देश में से निकाल देगा। 11 सुनो, पृथ्वी भर के प्रभु की वाचा का
सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने पर है। 12 इसलिथे अब इस्राएल के
गात्रोंमें से बारह पुरूषोंको चुन लो, वे एक एक गोत्र में से एक पुरूष हो। 13 और
जिस समय पृथ्वी भर के प्रभु यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले याजकोंके
पांव यरदन के जल में पकेंगे, उस समय यरदन का ऊपर से बहता हुआ जल यम
जाएगा, और ढेर होकर ठहरा रहेगा। 14 सो जब प्रजा के लोगोंने अपके डेरोंसे
यरदन पार जाने को कूच किया, और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के
आगे आगे चले, 15 और सन्दूक के उठानेवाले यरदन पर पहुंचे, और सन्दूक के
उठानेवाले याजकोंके पांव यरदन के तीर के जल में डूब गए (यरदन का जल तो
कटनी के समय के सब दिन कड़ारोंके ऊपर ऊपर बहा करता है), 16 तब जो जल
ऊपर की ओर से बहा आता या वह बहुत दूर, अर्यात् आदाम नगर के पास जो
सारतान के निकट है रूककर एक ढेर हो गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो
जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है, उसकी ओर बहा जाता या,
वह पूरी रीति से सूख गया; और प्रजा के लाग यरीहो के साम्हने पार उतर गए।
17 और याजक यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचोंबीच

पहुंचकर स्यल पर स्यिर खड़े रहे, और सब इस्राएली स्यल ही स्यल पार उतरते
रहे, निदान उस सारी जाति के लोग यरदन पार हो गए।।

यहोशू 4

1 जब उस सारी जाति के लोग यरदन के पार उतर चुके, तब यहोवा ने यहोशू से
कहा, 2 प्रजा में से बारह पुरूष, अर्यात्‌गोत्र पीछे एक एक पुरूष को चुनकर यह
आज्ञा दे, 3 कि तुम यरदन के बीच में, जहां याजकोंने पांव धरे थे वहां से बारह
पत्यर उठाकर अपके साय पाल ले चलो, और जहां आज की रात पड़ाव होगा वहीं
उनको रख देना। 4 तब यहोशू ने उन बारह पुरूषोंको, जिन्हें उस ने इस्राएलियोंके
प्रत्थेक गोत्र में से छांटकर ठहरा रखा या, 5 बुलवाकर कहा, तुम अपके परमेश्वर
यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाकर इस्राएलियोंके गोत्रोंकी गिनती
के अनुसार एक एक पत्यर उठाकर अपके अपके कन्धे पर रखो, 6 जिस से यह
तुम लोगोंके बीच चिन्हानी ठहरे, और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें, कि इन
पत्यरोंका क्या मतलब है? 7 तब तुम उन्हें उत्तर दो, कि यरदन का जल यहोवा
की वाचा के सन्दूक के साम्हने से दो भाग हो गया या; क्योंकि जब वह यरदन
पार आ रहा या, तब यरदन का जल दो भाग हो गया। सो वे पत्यर इस्राएल को
सदा के लिथे स्मरण दिलानेवाले ठहरेंगे। 8 यहोशू की इस आज्ञा के अनुसार
इस्रएलियोंने किया, जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा या वैसा ही उन्होंने
इस्राएलियोंने किया, जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा या वैसा ही उन्होंने इस्राएली
गोत्रोंकी गिनती के अनुसार बारह पत्यर यरदन के बीच में से उठा लिए; और
उनको अपके साय ले जाकर पड़ाव में रख दिया। 9 और यरदन के बीच जहां

याजक वाचा के सन्दूक को उठाए हुए अपके पांव धरे थे वहां यहोशू ने बारह
पत्यर खड़े कराए; वे आज तक वहीं पाए जाते हैं। 10 और याजक सन्दूक उठाए
हुए उस समय तक यरदन के बीच खड़े रहे जब तक वे सब बातें पूरी न हो चुकीं,
जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगोंसे कहने की आज्ञा दी यी। तब सब लोग फुर्ती से
पार उतर गए; 11 और जब सब लोग पार उतर चुके, तब याजक और यहोवा का
सन्दूक भी उनके देखते पार हुए। 12 और रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्र
के लोग मूसा के कहने के अनुसार इस्राएलियोंके आगे पांति बान्धे हुए पार गए;
13 अर्यात् कोई चालीस हजार पुरूष युद्ध के हयियार बान्धे हुए संग्राम करने के
लिथे यहोवा के साम्हने पार उतरकर यरीहो के पास के अराबा में पहुंचे। 14 उस
दिन यहोवा ने सब इस्राएलियोंके साम्हने यहोशू की महिमा बढ़ाई; और जैसे वे
मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उसके जीवन भर मानते रहे।।
15 और यहोवा ने यहोशू से कहा, 16 कि साझी का सन्दूक उठानेवाले याजकोंको
आज्ञा दे कि यरदन में से निकल आएं। 17 तो यहोशू ने याजकोंको आज्ञा दी, कि
यरदन में से निकल आओ। 18 और ज्योंही यहोवा की वाचा का सन्दूक
उठानेवाले याजक यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पांव स्यल पर
पके, त्योंही यरदन का जल अपके स्यान पर आया, और पहिले की नाईं कड़ारो के
ऊपर फिर बहने लगा। 19 पहिले महिने के दसवें दिन को प्रजा के लोगोंने यरदन
में से निकलकर यरीहो के पूर्वी सिवाने पर गिलगाल में अपके डेरे डाले। 20 और
जो बारह पत्यर यरदन में से निकाले गए थे, उनको यहोशू ने गिलगाल में खड़े
किए। 21 तब उस ने इस्राएलियोंसे कहा, आगे को जब तुम्हारे लड़केबाले अपके
अपके पिता से यह पूछें, कि इन पत्यरोंका क्या मतलब है? 22 तब तुम यह

कहकर उनको बताना, कि इस्राएली यरदन के पार स्थल ही स्थल चले आए थे।
23 क्योंकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक
हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा या, वैसे ही उस ने यरदन का भी जल तुम्हारे
पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा; 24 इसलिथे कि पृय्वी के
सब देशोंके लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है; और तुम सर्वदा अपके
परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।।

यहोशू 5

1 जब यरदन के पच्छिम की ओर रहनेवाले एमोरियोंके सब राजाओं ने, और
समुद्र के पास रहनेवाले कनानियोंके सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने
इस्राएलियोंके पार होने तक उनके साम्हने से यरदन का जल हटाकर सुखा रखा
है, तब इस्राएलियोंके डर के मारे उनका मन घबरा गया, और उनके जी में जी न
रहा।। 2 उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, चकमक की छुरियां बनवाकर दूसरी
बार इस्राएलियोंका खतना करा दें। 3 तब यहोशू ने चकमक की छुरियां बनवाकर
खलडिय़ां नाम टीले पर इस्राएलियोंका खतना कराया। 4 और यहोशू ने जो खतना
कराया, इसका कारण यह है, कि जितने युद्ध के योग्य पुरूष मिस्र से निकले थे वे
सब मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गए थे। 5 जो पुरूष मिस्र से
निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका या, परन्तु जितने उनके मिस्र से
निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उन में से किसी का खतना न हुआ
या। 6 क्योंकि इस्राएली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते रहे, जब तक उस
सारी जाति के लोग, अर्यात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश

न हो गए, क्योंकि उन्होंने यहोवा की न मानी यी; सो यहोवा ने शपय खाकर उन
से कहा या, कि जो देश मैं ने तुम्हारे पूर्वजोंसे शपय खाकर तुम्हें देने को कहा या,
और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, वह देश मैं तुम को नहीं दिखाने
का। 7 तो उन लोगोंके पुत्र जिन को यहोवा ने उनके स्यान पर उत्पन्न किया या,
उनका खतना यहोशू से कराया, क्योंकि मार्ग में उनके खतना न होने के कारण वे
खतनारहित थे। 8 और जब उस सारी जाति के लोगोंका खतना हो चुका, तब वे
चंगे हो जाने तक अपके अपके स्यान पर छावनी में रहे। 9 तब यहोवा ने यहोशू से
कहा, तुम्हारी नामधराई जो मिस्त्रियोंमें हुई है उसे मैं ने आज दूर की है। इस
कारण उस स्यान का नाम आज के दिन तक गिलगाल पड़ा है।। 10 सो इस्राएली
गिलगाल में डेरे डाले हुए रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी
की सन्ध्या के समय फसह माना। 11 और फसह के दूसरे दिन वे उस देश की
उपज में से अखमीरी रोटी और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने लगे। 12
और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे, उसी दिन बिहान को मन्ना
बन्द हो गया; और इस्राएलियोंको आगे फिर कभी मन्ना न मिला, परन्तु उस वर्ष
उन्होंने कनान देश की उपज में से खाई।। 13 जब यहोशू यरीहो के पास या तब
उस ने अपक्की आंखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिथे हुए
एक पुरूष साम्हने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, क्या तू हमारी
ओर का है, वा हमारे बैरियोंकी ओर का? 14 उस ने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा
की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृय्वी पर मुंह के बल
गिरकर दण्डवत् किया, और उस से कहा, अपके दास के लिथे मेरे प्रभु की क्या
आज्ञा है? 15 यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, अपक्की जूती पांव से

उतार डाल, क्योंकि जिस स्यान पर तू खड़ा है वह पवित्र है। तब यहोशू ने वैसा ही किया।।

यहोशू 6

1 और यरीहो के सब फाटक इस्राएलियोंके डर के मारे लगातार बन्द रहे, और
कोई बाहर भीतर आने जाने नहीं पाता या। 2 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, सुन,
मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरोंसमेत तेरे वश में कर देता हूं। 3 सो तुम में
जितने योद्धा हैं नगर को घेर लें, और उस नगर के चारोंओर एक बार घूम आएं। 4
और छः दिन तक ऐसा ही किया करना। 5 और जब वे जुबली के नरसिंगे देर तक
फूंकते रहें, तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार
करें; तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी, और सब लोग अपके अपके
साम्हने चढ़ जाएं। 6 सो नून के पुत्र यहोशू ने याजकोंको बुलवाकर कहा, वाचा के
सन्दूक को उठा लो, और सात याजक यहोवा के सन्दूक के आगे आगे जुबली के
सात नरसिंगे लिए चलें। 7 फिर उस ने लोगोंसे कहा, आगे बढ़कर नगर के
चारोंऔर घूम आओ; और हयियारबन्द पुरूष यहोवा के सन्दूक के आगे आगे
चलें। 8 और जब यहोशू थे बातें लोगोंसे कह चुका, तो वे सात याजक जो यहोवा
के साम्हने सात नरसिंगे लिथे हुए थे नरसिंगे फूंकते हुए चले, और यहोवा की
वाचा का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला। 9 और हयियारबन्द पुरूष नरसिंगे
फूंकनेवाले याजकोंके आगे आगे चले, और पीछे वाले सन्दूक के पीछे पीछे चले,
और याजक नरसिंगे फूंकते हुए चले। 10 और यहोशू ने लोगोंको आज्ञा दी, कि
जब तक मैं तुम्हें जयजयकार करने की आज्ञा न दूं, तब तक जयजयकार न करो,

और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए, न कोई बात तुम्हारे मुंह से निकलने
पाए; आज्ञा पाते ही जयजयकार करना। 11 उस ने यहोवा के सन्दूक को एक बार
नगर के चारोंओर घुमवाया; तब वे छावनी में आए, और रात वहीं काटी।। 12
बिहान को यहोशू सबेरे उठा, और याजकोंने यहोवा का सन्दूक उठा लिया। 13
और उन सात याजकोंने जुबली के सात नरसिंगे लिए और यहोवा के सन्दूक के
आगे आगे फूंकते हुए चले; और उनके आगे हयियारबन्द पुरूष चले, और
पीछेवाले यहोवा के सन्दूक के पीछे पीछे चले, और याजक नरसिंगे फूंकते चले
गए। 14 इस प्रकार वे दूसरे दिन भी एक बार नगर के चारोंओर घूमकर छावनी में
लौट आए। और इसी प्रकार उन्होंने छ: दिन तक किया। 15 फिर सातवें दिन वे
भोर को बड़े तड़के उठकर उसी रीति से नगर के चारोंओर सात बार घूम आए;
केवल उसी दिन वे सात बार घूमे। 16 तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फूंकते
थे, तब यहोशू ने लोगोंसे कहा, जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर
तुम्हें दे दिया है। 17 और नगर और जो कुछ उस में है यहोवा के लिथे अर्पण की
वस्तु ठहरेगी; केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर में होंवे जीवित छोड़े
जाएंगे, क्योंकि उस ने हमारे भेजे हुए दूतोंको छिपा रखा या। 18 और तुम अर्पण
की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपके आप को अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण
की वस्तु ठहराकर पीछे उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार
इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष्ट में डाल दो। 19 सब चांदी, सोना, और जो
पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिथे पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में
रखे जाएं। 20 तब लोगोंने जयजयकार किया, और याजक नरसिंगे फूंकते रहे।
और जब लोगोंने नरसिंगे का शब्द सुना तो फिर बड़ी ही ध्वनि से उन्होंने

जयजयकार किया, तब शहरपनाह नवे से गिर पक्की, और लोग अपके अपके
साम्हने से उस नगर में चढ़ गए, और नगर को ले लिया। 21 और क्या पुरूष,
क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बूढ़े, वरन बैल, भेड़-बकरी, गदहे, और जितने नगर में
थे, उन सभोंको उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला। 22 तब
यहोशू ने उन दोनोंपुरूषोंसे जो उस देश का भेद लेने गए थे कहा, अपक्की शपय
के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उसको और जो उसके पास होंउन्हें भी
निकाल ले आओ। 23 तब वे दोनोंजवान भेदिए भीतर जाकर राहाब को, और
उसके माता-पिता, भाइयों, और सब को जो उसके यहां रहते थे, वरन उसके सब
कुटुम्बियोंको निकाल लाए, और इस्राएल की छावनी से बाहर बैठा दिया। 24 तब
उन्होंने नगर को, और जो कुछ उस में या, सब को आग लगाकर फूंक दिया;
केवल चांदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के थे, उनको उन्होंने यहोवा के
भवन के भण्डार में रख दिया। 25 और यहोशू ने राहाब वेश्या और उसके पिता के
घराने को, वरन उसके सब लोगोंको जीवित छोड़ दिया; और आज तक उसका
वंश इस्राएलियोंके बीच में रहता है, क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के भेद लेने
को भेजे थे उनको उस ने छिपा रखा या। 26 फिर उसी समय यहोशू ने
इस्राएलियोंके सम्मुख शपय रखी, और कहा, कि जो मनुष्य उठकर इस नगर
यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से शापित हो। जब वह उसकी नेव
डालेगा तब तो उसका जेठा पुत्र मरेगा, और जब वह उसके फाटक लगावाएगा
तब उसका छोटा पुत्र मर जाएगा। 27 और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू
की कीतिर् उस सारे देश में फैल गई।।

यहोशू 7

1 परन्तु इस्राएलियोंने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया; अर्यात्
यहूदा के गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र या,
उस ने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया; इस कारण यहोवा का कोप
इस्राएलियोंपर भड़क उठा।। 2 और यहोशू ने यरीहो से ऐ नाम नगर के पास, जो
बेतावेन से लगा हुआ बेतेल की पूर्व की ओर है, कितने पुरूषोंको यह कहकर भेजा,
कि जाकर देश का भेद ले आओ। और उन पुरूषोंने जाकर ऐ का भेद लिया। 3
और उन्होंने यहोशू के पास लौटकर कहा, सब लोग वहां न जाएं, कोई दो वा तीन
हजार पुरूष जाकर ऐ को जीत सकते हैं; सब लोगोंको वहां जाने का कष्ट न दे,
क्योंकि वे लोग योड़े ही हैं। 4 इसलिथे कोई तीन हजार पुरूष वहां गए; परन्तु ऐ
के रहनेवालोंके साम्हने से भाग आए, 5 तब ऐ के रहनेवालोंने उन में से कोई
छत्तीस पुरूष मार डाले, और अपके फाटक से शबारीम तक उनका पीछा करके
उतराई में उनको मारते गए। तब लोगोंका मन पिघलकर जल सा बन गया। 6
तब यहोशू ने अपके वस्त्र फाड़े, और वह और इस्राएली वृद्ध लोग यहोवा के सन्दूक
के साम्हने मुंह के बल गिरकर पृय्वी पर सांफ तक पके रहे; और उन्होंने अपके
अपके सिर पर धूल डाली। 7 और यहोशू ने कहा, हाथ, प्रभु यहोवा, तू अपक्की
इस प्रजा को यरदन पार क्योंले आया? क्या हमें एमोरियोंके वश में करके नष्ट
करने के लिथे ले आया है? भला होता कि हम संतोष करके यरदन के उस पार रह
जाते। 8 हाथ, प्रभु मैं क्या कहूं, जब इस्राएलियोंने अपके शत्रुओं को पीठ दिखाई
है! 9 क्योंकि कनानी वरन इस देश के सब निवासी यह सुनकर हम को घेर लेंगे,
और हमारा नाम पृय्वी पर से मिटा डालेंगे; फिर तू अपके बड़े नाम के लिथे क्या
करेगा? 10 यहोवा ने यहोशू से कहा, उठ, खड़ा हो जा, तू क्योंइस भांति मुंह के

बल पृय्वी पर पड़ा है? 11 इस्राएलियोंने पाप किया है; और जो वाचा मैं ने उन से
अपके साय बन्धाई यी उसको उन्होंने तोड़ दिया है, उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में
से ले लिया, वरन चोरी भी की, और छल करके उसको अपके सामान में रख लिया
है। 12 इस कारण इस्राएली अपके शत्रुओं के साम्हने खड़े नहीं रह सकते; वे अपके
शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं, इसलिथे कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गए हैं। और
यदि तुम अपके मध्य में से अर्पण की वस्तु को सत्यानाश न कर डालोगे, तो मैं
आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूंगा। 13 उठ, प्रजा के लोगोंको पवित्र कर, उन से कह;
कि बिहान तक अपके अपके को पवित्र कर रखो; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यह कहता है, कि हे इस्राएल, तेरे मध्य में अर्पण की वस्तु है; इसलिथे जब
तक तू अर्पण की वस्तु को अपके मध्य में से दूर न करे तब तक तू अपके शत्रुओं
के साम्हने खड़ा न रह सकेगा। 14 इसलिथे बिहान को तुम गोत्र गोत्र के अनुसार
समीप खड़े किए जाओगे; और जिस गोत्र को यहोवा पकड़े वह एक एक कुल
करके पास आए; और जिस कुल को यहोवा पकड़े सो घराना घराना करके पास
आए; फिर जिस घराने को यहोवा पकड़े वह एक एक पुरूष करके पास आए। 15
तब जो पुरूष अर्पण की वस्तु रखे हुए पकड़ा जाएगा, वह और जो कुछ उसका हो
सब आग में डालकर जला दिया जाए; क्योंकि उस ने यहोवा की वाचा को तोड़ा है,
और इस्राएल में अनुचित कर्म किया है।। 16 बिहान को यहोशू सवेरे उठकर
इस्राएलियोंको गोत्र गोत्र करके समीप लिवा ले गया, और यहूदा का गोत्र पकड़ा
गया; 17 तब उस ने यहूदा के परिवार को समीप किया, और जेरहवंशियोंका कुल
पकड़ा गया; फिर जेरहवंशियोंके घराने के एक एक पुरूष को समीप लाया, और
जब्दी पकडा गया; 18 तब उस ने उसके घराने के एक एक पुरूष को समीप खड़ा

किया, और यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का
पुत्र या, पकड़ा गया। 19 तब यहोशू आकान से कहने लगा, हे मेरे बेटे, इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा का आदर कर, और उसके आगे अंगीकार कर; और जो कुछ तू ने
किया है वह मुझ को बता दे, और मुझ से कुछ मत छिपा। 20 और आकान ने
यहोशू को उत्तर दिया, कि सचमुच मैं ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप
किया है, और इस प्रकार मैं ने किया है, 21 कि जब मुझे लूट में शिनार देश का
एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकेल चांदी, और पचास शेकेल सोने की एक ईट
देख पक्की, तब मैं ने उनका लालच करके उन्हें रख लिया; वे मेरे डेरे के भीतर
भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चांदी है। 22 तब यहोशू ने दूत भेजे, और वे उस
डेरे में दौड़े गए; और क्या देखा, कि वे वस्तुएं उसके डेरे में गड़ी हैं, और सब के
नीचे चांदी है। 23 उनको उन्होंने डेरे में से निकालकर यहोशू और सब
इस्राएलियोंके पास लाकर यहोवा के साम्हने रख दिया। 24 तब सब
इस्राएलियोंसमेत यहोशू जेरहवंशी आकान को, और उस चांदी और ओढ़ने और
सोने की ईंट को, और उसके बेटे-बेटियोंको, और उसके बैलों, गदहोंऔर
भेड़-बकरियोंको, और उसके डेरे को, निदान जो कुछ उसका या उन सब को
आकोर नाम तराई में ले गया। 25 तब यहोशू ने उस से कहा, तू ने हमें क्योंकष्ट
दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा। तब सब इस्राएलियोंने उसको
पत्यरवाह किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्यर
डाल दिए। 26 और उन्होंने उसके ऊपर पत्यरोंका बड़ा ढेर लगा दिया जो आज
तक बना है; तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस
स्यान का नाम आज तक आकोर तराई पड़ा है।।

यहोशू 8

1 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो; कमर
बान्धकर सब योद्धाओं को साय ले, और ऐ पर चढ़ाई कर; सुन, मैं ने ऐ के राजा
को उसकी प्रजा और उसके नगर और देश समेत तेरे वश में किया है। 2 और जैसा
तू ने यरीहो और उसके राजा से किया वैसा ही ऐ और उसके राजा के साय भी
करना; केवल तुम पशुओं समेत उसकी लूट तो अपके लिथे ले सकोगे; इसलिथे
उस नगर के पीछे की ओर अपके पुरूष घात में लगा दो। 3 सो यहोशू ने सब
योद्धाओं समेत ऐ पर चढ़ाई करने की तैयारी की; और यहोशू ने तीस हजार
पुरूषोंको जो शूरवीर थे चुनकर रात ही को आज्ञा देकर भेजा। 4 और उनको यह
आज्ञा दी, कि सुनो, तुम उस नगर के पीछे की ओर घात लगाए बैठे रहना; नगर
से बहुत दूर न जाना, और सब के सब तैयार रहना; 5 और मैं अपके सब
सायियोंसमेत उस नगर के निकट जाऊंगा। और जब वे पहिले की नाईं हमारा
साम्हना करने को निकलें, तब हम उनके आगे से भागेंगे; 6 तब वे यह सोचकर,
कि वे पहिले की भांति हमारे साम्हने से भागे जाते हैं, हमारा पीछा करेंगे; इस
प्रकार हम उनके साम्हने से भागकर उन्हें नगर से दूर निकाल ले जाएंगे; 7 तब
तुम घात में से उठकर नगर को अपना कर लेना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
उसको तुम्हारे हाथ में कर देगा। 8 और जब नगर को ले लो, तब उस में आग
लगाकर फूंक देना, यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही काम करना; सुनो, मैं ने तुम्हें
आज्ञा दी है। 9 तब यहोशू ने उनको भेज दिया; और वे घात में बैठने को चले गए,
और बेतेल और ऐ के मध्य में और ऐ की पश्चिम की ओर बैठे रहे; परन्तु यहोशू
उस रात को लोगोंके बीच टिका रहा।। 10 बिहान को यहोशू सवेरे उठा, ओर

लोगोंकी गिनती लेकर इस्राएली वृद्ध लोगोंसमेत लोगोंके आगे आगे ऐ की ओर
चला। 11 और उसके संग के सब योद्धा चढ़ गए, और ऐ नगर के निकट पहुंचकर
उसके साम्हने उत्तर की ओर डेरे डाल दिए, और उनके और ऐ के बीच एक तराई
यी। 12 तब उस ने कोई पांच हजार पुरूष चुनकर बेतेल और ऐ के मध्यस्त नगर
की पश्चिम की ओर उनको घात में बैठा दिया। 13 और जब लोगोंने नगर की उत्तर
ओर की सारी सेना को और उसकी पश्चिम ओर घात में बैठे हुओं को भी ठिकाने
पर कर दिया, तब यहोशू उसी रात तराई के बीच गया। 14 जब ऐ के राजा ने यह
देखा, तब वे फुर्ती करके सवेरे उठे, और राजा अपक्की सारी प्रजा को लेकर
इस्राएलियोंके साम्हने उन से लड़ने को निकलकर ठहराए हुए स्यान पर जो
अराबा के साम्हने है पहुंचा; और वह नहीं जानता या कि नगर की पिछली और
लोग घात लगाए बैठे हैं। 15 तब यहोशू और सब इस्राएली उन से मानो हार
मानकर जंगल का मार्ग लेकर भाग निकले। 16 तब नगर के सब लोग
इस्राएलियोंका पीछा करने को पुकार पुकार के बुलाए गए; और वे यहोशू का पीछा
करते हुए नगर से दूर निकल गए। 17 और न ऐ में और ने बेतेल में कोई पुरूष रह
गया, जो इस्राएलियोंका पीछा करने को न गया हो; और उन्होंने नगर को खुला
हुआ छोड़कर इस्राएलियोंका पीछा किया। 18 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, अपके
हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढ़ा; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूंगा। और यहोशू ने
अपके हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढ़ाया। 19 उसके हाथ बढ़ाते ही जो लोग
घात में बैठे थे वे फटपट अपके स्यान से उठे, और दौड़कर नगर में प्रवेश किया
और उसको ले लिया; और फटपट उस में आग लगा दी। 20 जब ऐ के पुरूषोंने
पीछे की ओर फिरकर दृष्टि की, तो क्या देखा, कि नगर का धूआं आकाश की ओर

उठ रहा है; और उन में न तो इधर भागने की शक्ति रही, और न उधर, और जो
लोग जंगल की ओर भागे जाते थे वे फिरकर अपके खदेड़नेवालोंपर टूट पके। 21
जब यहोशू और सब इस्राएलियोंने देखा कि घातियोंने नगर को ले लिया, और
उसका धूंआ उठ रहा है, तब घूमकर ऐ के पुरूषोंको मारने लगे। 22 और उनका
साम्हना करने को दूसरे भी नगर से निकल आए; सो वे इस्राएलियोंके बीच में पड़
गए, कुछ इस्राएली तो उनके आगे, और कुछ उनके पीछे थे; सो उन्होंने उनको
यहां तक मार डाला कि उन में से न तो कोई बचने और न भागने पाया। 23 और
ऐ के राजा को वे जीवित पकड़कर यहोशू के पास ले आए। 24 और जब इस्राएली
ऐ के सब निवासिक्कों मैदान में, अर्यात् उस जंगल में जहां उन्होंने उनका पीछा
किया या घात कर चुके, और वे सब के सब तलवार से मारे गए यहां तक कि
उनका अन्त ही हो गया, तब सब इस्राएलियोंने ऐ को लौटकर उसे भी तलवार से
मारा। 25 और स्त्री पुरूष, सब मिलाकर जो उस दिन मारे गए वे बारह हजार थे,
और ऐ के सब पुरूष इतने ही थे। 26 क्योंकि जब तक यहोशू ने ऐ के सब
निवासिक्कों सत्यानाश न कर डाला तब तब उस ने अपना हाथ, जिस से बर्छा
बढ़ाया या, फिर न खींचा। 27 यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोशू
को दी यी इस्राएलियोंने पशु आदि नगर की लूट अपक्की कर ली। 28 तब यहोशू
ने ऐ को फूंकवा दिया, और उसे सदा के लिथे खंडहर कर दिया : वह आज तक
उजाड़ पड़ा है। 29 और ऐ के राजा को उस ने सांफ तक वृझ पर लटका रखा; और
सूर्य डूबते डूबते यहोशू की आज्ञा से उसकी लोय वृष पर से उतारकर नगर के
फाटक के साम्हने डाल दी गई, और उस पर पत्यरोंका बढ़ा ढेर लगा दिया, जो
आज तक बना है।। 30 तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे एबाल

पर्वत पर एक वेदी बनवाई, 31 जैसा यहोवा के दास मूसा ने इस्त्राएलियोंको आज्ञा
दी यी, और जैसा मूसा की व्यवस्या की पुस्तक में लिखा है, उस ने समूचे
पत्यरोंकी एक वेदी बनवाई जिस पर औजार नहीं चलाया गया या। और उस पर
उन्होंने यहोवा के लिथे होम-बलि चढ़ाए, और मेलबलि किए। 32 उसी स्यान पर
यहोशू ने इस्त्राएलियोंके साम्हने उन पत्यरोंके ऊपर मूसा की व्यवस्या, जो उस ने
लिखी यी, उसकी नकल कराई। 33 और वे, क्या देशी क्या परदेशी, सारे इस्त्राएली
अपके वृद्ध लोगों, सरदारों, और न्यायियोंसमेत यहोवा की वाचा का सन्दूक
उठानेवाले लेवीय याजकोंके साम्हने उस सन्दूक के इधर उधर खड़े हुए, अर्यात्
आधे लोग तो गिरिज्जीम पर्वत के, और आधे एबाल पर्वत के साम्हने खड़े हुए,
जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहिले आज्ञा दी यी, कि इस्त्राएली प्रजा को
आर्शीवाद दिए जाएं। 34 उसके बाद उस ने आशीष और शाप की व्यवस्या के सारे
वचन, जैसे जैसे व्यवस्या की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वैसे वैसे पढ़ पढ़कर सुना
दिए। 35 जितनी बातोंकी मूसा ने आज्ञा दी यी, उन में से कोई ऐसी बात नहीं रह
गई जो यहोशू ने इस्त्राएली की सारी सभा, और स्त्रियों, और बाल-बच्चों, और
उनके साय रहनेवाले परदेशी लोगोंके साम्हने भी पढ़कर न सुनाई।।

यहोशू 9

1 यह सुनकर हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी, जितने राजा
यरदन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, और लबानोन के साम्हने के
महानगर के तट पर रहते थे, 2 वे एक मन होकर यहोशू और इस्त्राएलियोंसे लड़ने
को इकट्ठे हुए।। 3 जब गिबोन के निवासियोंने सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ

से क्या क्या किया है, 4 तब उन्होंने छल किया, और राजदूतोंका भेष बनाकर
अपके गदहोंपर पुराने बोरे, और पुराने फटे, और जोड़े हुए मदिरा के कुप्पे लादकर
5 अपके पांवोंमें पुरानी गांठी हुई जूतियां, और तन पर पुराने वस्त्र पहिने, और
अपके भोजन के लिथे सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटी ले ली। 6 तब वे गिलगाल
की छावनी में यहोशू के पास जाकर उस से और इस्राएली पुरूषोंसे कहने लगे, हम
दूर देश सें आए हैं; इसलिथे अब तुम हम से वाचा बान्धो। 7 इस्राएली पुरूषोंने उन
हिव्वियोंसे कहा, क्या जाने तुम हमारे मध्य में ही रहते हो; फिर हम तुम से वाचा
कैसे बान्धे? 8 उन्होंने यहोशू से कहा, हम तेरे दास हैं। तब यहोशू ने उन से कहा,
तुम कौन हो? और कहां से आए हो? 9 उन्होंने उस से कहा, तेरे दास बहुत दूर के
देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आए हैं; क्योंकि हम ने यह सब सुना
है, अर्यात् उसकी कीतिर् और जो कुछ उस ने मिस्र में किया, 10 और जो कुछ उस
ने एमोरियोंके दोनोंराजाओं से किया जो यरदन के उस पार रहते थे, अर्यात्
हेश्बोन के राजा सीहोन से, और बाशान के राजा ओग से जो अश्तारोत में या। 11
इसलिथे हमारे यहां के वृद्धलोगोंने और हमारे देश के सब निवासियोंने हम से
कहा, कि मार्ग के लिथे अपके साय भोजनवस्तु लेकर उन से मिलने को जाओ,
और उन से कहना, कि हम तुम्हारे दास हैं; इसलिथे अब तुम हम से वाचा बान्धो।
12 जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हम ने अपके अपके
घर से यह रोटी गरम और ताजी ली यी; परन्तु अब देखो, यह सूख गई है और
इस में फफूंदी लग गई है। 13 फिर थे जो मदिरा के कुप्पे हम ने भर लिथे थे, तब
तो नथे थे, परन्तु देखो अब थे फट गए हैं; और हमारे थे वस्त्र और जूतियां बड़ी
लम्बी यात्रा के कारण पुरानी हो गई हैं। 14 तब उन पुरूषोंने यहोवा से बिना

सलाह लिथे उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया। 15 तब यहोशू ने उन से मेल
करके उन से यह वाचा बान्धी, कि तुम को जीवित छोड़ेंगे; और मण्डली के
प्रधानोंने उन से शपय खाई। 16 और उनके साय वाचा बान्धने के तीन दिन के
बाद उनको यह समाचार मिला; कि वे हमारे पड़ोस के रहनेवाले लोग हैं, और
हमारे ही मध्य में बसे हैं। 17 तब इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उनके नगरोंको
जिनके नाम गिबोन, कपीरा, बेरोत, और किर्यत्यारीम है पहुंच गए, 18 और
इस्राएलियोंने उनको न मारा, क्योंकि मण्डली के प्रधानोंने उनके संग इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा की शपय खाई यी। तब सारी मण्डली के लोग प्रधानोंके विरूद्ध
कुड़कुड़ाने लगे। 19 तब सब प्रधानोंने सारी मण्डली से कहा, हम ने उन से
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपय खाई है, इसलिथे अब उनको छू नहीं सकते।
20 हम उन से यही करेंगे, कि उस शपय के अनुसार हम उनको जीवित छोड़ देंगे,
नहीं तो हमारी खाई हुई शपय के कारण हम पर क्रोध पकेगां 21 फिर प्रधानोंने
उन से कहा, वे जीवित छोड़े जाएं। सो प्रधानोंके इस वचन के अनुसार वे सारी
मण्डली के लिथे लकड़हारे और पानी भरनेवाले बने। 22 फिर यहोशू ने उनको
बुलवाकर कहा, तुम तो हमारे ही बीच में रहते हो, फिर तुम ने हम से यह कहकर
क्योंछल किया है, कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं? 23 इसलिथे अब तुम शापित
हो, और तुम में से ऐसा कोई न रहेगा जो दास, अर्यात् मेरे परमेश्वर के भवन के
लिथे लकड़हारा और पानी भरनेवाला न हो। 24 उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, तेरे
दासोंको यह निश्चय बतलाया गया या, कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपके दास
मूसा को आज्ञा दी यी कि तुम को वह सारा देश दे, और उसके सारे निवासिक्कों
तुम्हारे साम्हने से सर्वनाश करे; इसलिथे हम लोगोंको तुम्हारे कारण से अपके

प्राणोंके लाले पड़ गए, इसलिथे हम ने ऐसा काम किया। 25 और अब हम तेरे
वश में हैं, जैसा बर्ताव तुझे भला लगे और ठीक जान पके, वैसा ही व्यवहार हमारे
साय कर। 26 तब उस ने उन से वैसा ही किया, और उन्हें इस्राएलियोंके हाथ से
ऐसा बचाया, कि वे उन्हें घात करने न पाए। 27 परन्तु यहोशू ने उसी दिन उनको
मण्डली के लिथे, और जो स्यान यहोवा चुन ले उसमें उसकी वेदी के लिथे,
लकड़हारे और पानी भरनेवाले नियुक्त कर दिया, जैसा आज तक है।।

यहोशू 10

1 जब यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया, और
उसको सत्यानाश कर डाला है, और जैसा उस ने यरीहो और उसके राजा से किया
है, और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियोंने इस्राएलियोंसे मेल किया, और
उनके बीच रहने लगे हैं, 2 तब वे निपट डर गए, क्योंकि गिबोन बड़ा नगर वरन
राजनगर के तुल्य और ऐ से बड़ा या, और उसके सब निवासी शूरवीर थे। 3
इसलिथे यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत के राजा
पिराम, लाकीश के राजा यापी, और एग्लोन के राजा दबीर के पास यह कहला
भेजा, 4 कि मेरे पास आकर मेरी सहाथता करो, और चलो हम गिबोन को मारें;
क्योंकि उस ने यहोशू और इस्राएलियोंसे मेल कर लिया है। 5 इसलिथे यरूशलेम,
हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के पांचोंएमोरी राजाओं ने अपक्की अपक्की
सारी सेना इकट्ठी करके चढ़ाई कर दी, और गिबोन के साम्हने डेरे डालकर उस
से युद्ध छेड़ दिया। 6 तक गिबोन के निवासियोंने गिलगाल की छावनी में यहोशू
के पास योंकहला भेजा, कि अपके दासोंकी ओर से तू अपना हाथ न हटाना; शीघ्र

हमारे पास आकर हमें बचा ले, और हमारी सहाथता कर; क्योंकि पहाड़ पर
रहनेवाले एमोरियोंके सब राजा हमारे विरूद्ध इकट्‌ठे हुए हैं। 7 तब यहोशू सारे
योद्धाओं और सब शूरवीरोंको संग लेकर गिलगाल से चल पड़ा। 8 और यहोवा ने
यहोशू से कहा, उन से मत डर, क्योंकि मैं ने उनको तेरे हाथ में कर दिया है; उन
में से एक पुरूष भी तेरे साम्हने टिक न सकेगा। 9 तब यहोशू रातोरात गिलगाल
से जाकर एकाएक उन पर टूट पड़ा। 10 तब यहोवा ने ऐसा किया कि वे
इस्राएलियोंसे घबरा गए, और इस्राएलियोंने गिबोन के पास उनका बड़ा संहार
किया, और बेयोरान के चढ़ाव पर उनका पीछा करके अजेका और मक्केदा तक
उनको मारते गए। 11 फिर जब वे इस्राएलियोंके साम्हने से भागकर बेयोरोन की
उतराई पर आए, तब अजेका पहुंचने तक यहोवा ने आकाश से बड़े बड़े पत्यर उन
पर बरसाए, और वे मर गए; जो ओलोंसे मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियोंकी
तलवार से मारे हुओं से अधिक यी।। 12 और उस समय, अर्यात् जिस दिन यहोवा
ने एमोरियोंको इस्राएलियोंके वश में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से
इस्राएलियोंके देखते इस प्रकार कहा, हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू
अय्यालोन की तराई के ऊपर यमा रह।। 13 और सूर्य उस समय तक यमा रहा;
और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगोंने अपके
शत्रुओं से पलटा न लिया।। क्या यह बात याशार नाम पुस्तक में नहीं लिखी है कि
सूर्य आकाशमण्डल के बीचोबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा?
14 न तो उस से पहिले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिस में यहोवा ने
किसी पुरूष की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता या।। 15
तब यहोशू सारे इस्राएलियोंसमेत गिलगाल की छावनी को लौट गया।। 16 और वे

पांचोंराजा भागकर मक्केदा के पास की गुफा में जा छिपे। 17 तब यहोशू को यह
समाचार मिला, कि पांचोंराजा मक्केदा के पास की गुफा में छिपे हुए हमें मिले हैं।
18 यहोशू ने कहा, गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्यर लुढ़काकर उनकी देख भाल के
लिथे मनुष्योंको उसके पास बैठा दो; 19 परन्तु तुम मत ठहरो, अपके शत्रुओं का
पीछा करके उन में से जो जो पिछड़ गए हैं उनको मार डालो, उन्हें अपके अपके
नगर में प्रवेश करने का अवसर न दो; क्योकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उनको
तुम्हारे हाथ में कर दिया है। 20 जब यहोशू और इस्राएली उनका संहार करके
नाश कर चुके, और उन में से जो बच गए वे अपके अपके गढ़वाले नगर में घुस
गए, 21 तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोशू के पास कुशल-झेम से लौट
आए; और इस्राएलियोंके विरूद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई। 22 तब यहोशू ने
आज्ञा दी, कि गुफा का मुंह खोलकर उन पांचोंराजाओं को मेरे पास निकाल ले
आओ। 23 उन्होंने ऐसा ही किया, और यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और
एग्लोन के उन पांचोंराजओं को गुफा में से उसके पास निकाल ले आए। 24 जब वे
उन राजाओं को यहोशू के पास निकाल ले आए, तब यहोशू ने इस्राएल के सब
पुरूषोंको बुलाकर अपके साय चलनेवाले योद्धाओं के प्रधानोंसे कहा, निकट आकर
अपके अपके पांव इन राजाओं की गर्दनोंपर रखो। और उन्होंने निकट जाकर
अपके अपके पांव उनकी गर्दनोंपर रखे। 25 तब यहोशू ने उन से कहा, डरो मत,
और न तुम्हारा मन कच्चा हो; हियाव बान्धकर दृढ़ हो; क्योंकि यहोवा तुम्हारे
सब शत्रुओं से जिन से तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा। 26 इस के बाद यहोशू ने
उनको मरवा डाला, और पांच वृझोंपर लटका दिया। और वे सांफ तक उन
वृझोंपर लटके रहे। 27 सूर्य डूबते डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगोंने उन्हें उन

वृझोंपर से उतारके उसी गुफा में जहां वे छिप गए थे डाल दिया, और उस गुफा के
मुंह पर बड़े बड़े पत्थर धर दिए, वे आज तक वहीं धरे हुए हैं।। 28 उसी दिन
यहोशू ने मक्केदा को ले लिया, और उसको तलवार से मारा, और उसके राजा को
सत्यानाश किया; और जितने प्राणी उस में थे उन सभोंमें से किसी को जीवित न
छोड़ा; और जैसा उस ने यरीहो के राजा के साथ किया या वैसा ही मक्केदा के राजा
से भी किया।। 29 तब यहोशू सब इस्राएलियोंसमेत मक्केदा से चलकर लिब्ना को
गया, और लिब्ना से लड़ा। 30 और यहोवा ने उस को भी राजा समेत
इस्राएलियोंके हाथ मे कर दिया; और यहोशू ने उसको और उस में के सब
प्राणियोंको तलवार से मारा; और उस में से किसी को भी जीवित न छोड़ा; और
उसके राजा से वैसा ही किया जैसा उस ने यरीहो के राजा के साथ किया या।। 31
फिर यहोशू सब इस्राएलियोंसमेत लिब्ना से चलकर लाकीश को गया, और उसके
विरूद्ध छावनी डालकर लड़ा; 32 और यहोवा ने लाकीश को इस्राएल के हाथ में कर
दिया, और दूसरे दिन उस ने उसको जीत लिया; और जैसा उस ने लिब्ना के सब
प्राणियोंको तलवार से मारा या वैसा ही उस ने लाकीश से भी किया। 33 तब गेजेर
का राजा होराम लाकीश की सहाथता करने को चढ़ आया; और यहोशू ने प्रजा
समेत उसको भी ऐसा मारा कि उसके लिथे किसी को जीवित न छोड़ा।। 34 फिर
यहोशू ने सब इस्राएलियोंसमेत लाकीश से चलकर एग्लोन को गया; और उसके
विरूद्ध छावनी डालकर युद्ध करने लगा; 35 और उसी दिन उन्होंने उसको ले
लिया, और उसको तलवार से मारा; और उसी दिन जैसा उस ने लाकीश के सब
प्राणियोंको सत्यानाश कर डाला या वैसा ही उस ने एग्लोन से भी किया।। 36 फिर
यहोशू सब इस्राएलियोंसमेत एग्लोन से चलकर हेब्रोन को गया, और उस से लड़ने

लगा; 37 और उन्होंने उसे ले लिया, और उसको और उसके राजा और सब
गावोंको और उन में के सब प्राणियोंको तलवार से मारा; जैसा यहोशू ने एग्लोन से
किया या वैसा ही उस ने हेब्रोन में भी किसी को जीवित न छोड़ा; उस ने उसको
और उस में के सब प्राणियोंको सत्यानाश कर डाला।। 38 तब यहोशू सब
इस्राएलियोंसमेत घूमकर दबीर को गया, और उस से लड़ने लगा; 39 और राजा
समेत उसे और उसके सब गांवोंको ले लिया; और उन्होंने उनको तलवार से घात
किया, और जितने प्राणी उन में थे सब को सत्यानाश कर डाला; किसी को
जीवित न छोड़ा, जैसा यहोशू ने हेब्रोन और लिब्ना और उसके राजा से किया या
वैसा ही उस ने दबीर और उसके राजा से भी किया।। 40 इसी प्रकार यहोशू ने उस
सारे देश को, अर्यात्पहाड़ी देश, दक्खिन देश, नीचे के देश, और ढालू देश को,
उनके सब राजाओं समेत मारा; और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के
अनुसार किसी को जीवित न छोड़ा, वरन जितने प्राणी थे सभोंको सत्यानाश कर
डाला। 41 और यहोशू ने कादेशबर्ने से ले अज्जा तक, और गिबोन तक के सारे
गोशेन देश के लोगोंको मारा। 42 इन सब राजाओं को उनके देशोंसमेत यहोशू ने
एक ही समय में ले लिया, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियोंकी
ओर से लड़ता या। 43 तब यहोशू सब इस्राएलियोंसमेत गिलगाल की छावनी में
लौट आया।।

यहोशू 11

1 यह सुनकर हासोर के राजा याबीन ने मादोन के राजा योबाब, और शिम्रोन और
अझाप के राजाओं को, 2 और जो जो राजा उत्तर की ओर पहाड़ी देश में, और

किन्नेरेत की दक्खिन के अराबा में, और नीचे के देश में, और पच्छिम की ओर
दोर के ऊंचे देश में रहते थे, उनको, 3 और पूरब पच्छिम दोनोंओर के रहनेवाले
कनानियों, और एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, और पहाड़ी यबूसियों, और
मिस्पा देश में हेर्मोन पहाड़ के नीचे रहनेवाले हिव्वियोंको बुलवा भेजा। 4 और वे
अपक्की अपक्की सेना समेत, जो समुद्र के किनारे बालू के किनकोंके समान
बहुत यीं, मिलकर निकल आए, और उनके साय बहुत ही घोड़े और रय भी थे। 5
तब थे सब राजा सम्मति करके इकट्ठे हुए, और इस्राएलियोंसे लड़ने को मेरोम
नाम ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली। 6 तब यहोवा ने यहोशू से कहा,
उन से मत डर, क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभोंको इस्राएलियोंके वश करके
मरवा डालूंगा; तब तू उनके घोड़ोंके सुम की नस कटवाना, और उनके रय भस्म
कर देना। 7 और यहोशू सब योद्धाओं समेत मेरोम नाम ताल के पास अचानक
पहुंचकर उन पर टूट पड़ा। 8 और यहोवा ने उनको इस्राएलियोंके हाथ में कर
दिया, इसलिथे उन्होंने उन्हें मार लिया, और बड़े नगर सीदोन और मिस्रपोतमैत
तक, और पूर्व की ओर मिस्पे के मैदान तक उनका पीछा किया; और उनको मारा,
और उन में से किसी को जीवित न छोड़ा। 9 तब यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के
अनुसार उन से किया, अर्यात् उनके घोड़ोंके सुम की नस कटवाई, और उनके रय
आग में जलाकर भस्म कर दिए।। 10 उस समय यहोशू ने घूमकर हासोर को जो
पहिले उन सब राज्योंमें मुख्य नगर या ले लिया, और उसके राजा को तलवार से
मार डाला। 11 और जितने प्राणी उस में थे उन सभोंको उन्होंने तलवार से
मारकर सत्यानाश किया; और किसी प्राणी को जीवित न छोड़ा, और हासोर को
यहोशू ने आग लगाकर फुंकवा दिया। 12 और उन सब नगरोंको उनके सब

राजाओं समेत यहोशू ने ले लिया, और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार
उनको तलवार से घात करके सत्यानाश किया। 13 परन्तु हासोर को छोड़कर,
जिसे यहोशू ने फुंकवा दिया, इस्राएल ने और किसी नगर को जो अपके टीले पर
बसा या नहीं जलायां 14 और इन नगरोंके पशु और इनकी सारी लूट को
इस्राएलियोंने अपना कर लिया; परन्तु मनुष्योंको उन्होंने तलवार से मार डाला,
यहां तक उनको सत्यानाश कर डाला कि एक भी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ा
गया। 15 जो आज्ञा यहोवा ने अपके दास मूसा को दी यी उसी के अनुसार मूसा ने
यहोशू को आज्ञा दी यी, और ठीक वैसा ही यहोशू ने किया भी; जो जो आज्ञा
यहोवा ने मूसा को दी यी उन में से यहोशू ने कोई भी पूरी किए बिना न छोड़ी।। 16
तब यहोशू ने उस सारे देश को, अर्यात् पहाड़ी देश, और सारे दक्खिनी देश, और
कुल गोशेन देश, और नीचे के देश, अराबा, और इस्राएल के पहाड़ी देश, और
उसके नीचे वाले देश को, 17 हालाक नाम पहाड़ से ले, जो सेईर की चढ़ाई पर है,
बालगाद तक, जो लबानोन के मैदान में हेर्मोन पर्वत के नीचे है, जितने देश हैं उन
सब को जीत लिया और उन देशोंके सारे राजाओं को पकड़कर मार डाला। 18 उन
सब राजाओं से युद्ध करते करते यहोशू को बहुत दिन लग गए। 19 गिबोन के
निवासी हिव्वियोंको छोड़ और किसी नगर के लोगोंने इस्राएलियोंसे मेल न किया;
और सब नगरोंको उन्होंने लड़ लड़कर जीत लिया। 20 क्योंकि यहोवा की जो
मनसा यी, कि अपक्की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी यी उन पर
कुछ भी दया न करे; वरन सत्यानाश कर डाले, इस कारण उस ने उनके मन ऐसे
कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्राएलियोंका साम्हना करके उन से युद्ध किया।। 21
उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन यहूदा और

इस्राएल दोनोंके सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियोंको नाश किया; यहोशू ने
नगरोंसमेत उन्हें सत्यानाश कर डाला। 22 इस्राएलियोंके देश में कोई अनाकी न
रह गया; केवल अज्जा, गत, और अशदोद में कोई कोई रह गए। 23 जैसा यहोवा
ने मूसा से कहा या, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया; और उसे इस्राएल के
गोत्रोंऔर कुलोंके अनुसार बांट करके उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति
मिली।।

यहोशू 12

1 यरदन पार सूर्योदय की ओर, अर्यात् अर्नोन नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक के
देश, और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्राएलियोंने मारकर उनके देश
को अपके अधिक्कारने में कर लिया या थे हैं; 2 एमोरियोंका हेशबोनवासी राजा
सीहोन, जो अर्नोन नाले के किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी नाले के बीच के
नगर को छोड़कर यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियोंका सिवाना है, आधे गिलाद
पर, 3 और किन्नेरेत नाम ताल से लेकर बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल
तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, पूर्व की ओर के अराबा, और दक्खिन की ओर
पिसगा की सलामी के नीचे नीचे के देश पर प्रभुता रखता या। 4 फिर बचे हुए
रपाइयोंमें से बाशान के राजा ओग का देश या, जो अशतारोत और ऐंदर्‌्‌रई में
रहा करता या, 5 और हेर्मोन पर्वत सलका, और गशूरियों, और माकियोंके सिवाने
तक कुल बाशान में, और हेशबोन के राजा सीहोन के सिवाने तक आधे गिलाद में
भी प्रभुता करता या। 6 इस्राएलियोंऔर यहोवा के दास मूसा ने इनको मार लिया;
और यहोवा के दास मूसा ने उनका देश रूबेनियोंऔर गादियोंऔर मनश्शे के आधे

गोत्र के लोगोंको दे दिया।। 7 और यरदन के पश्चिम की ओर, लबानोन के मैदान
में के बालगात से लेकर सेईर की चढ़ाई के हालाक पहाड़ तक के देश के जिन
राजाओं को यहोशू और इस्राएलियोंने मारकर उनका देश इस्राएलियोंके गोत्रोंऔर
कुलोंके अनुसार भाग करके दे दिया या वे थे हैं, 8 हित्ती, और एमोरी, और कनानी,
और परिज्जी, और हिव्वी, और यबूसी, जो पहाड़ी देश में, और नीचे के देश में,
और अराबा में, और ढालू देश में और जंगल में, और दक्खिनी देश में रहते थे। 9
एक, यरीहो का राजा; एक, बेतेल के पास के ऐ का राजा; 10 एक, यरूशलेम का
राजा; एक, हेब्रोन का राजा; 11 एक, यर्मूत का राजा; एक, लाकीश का राजा; 12
एक, एग्लोन का राजा; एक, गेजेर का राजा; 13 एक, दबीर का राजा; एक, गेदेर
का राजा; 14 एक, होर्मा का राजा; एक, अराद का राजा; 15 एक, लिब्ना का राजा;
एक, अदुल्लाम का राजा; 16 एक, मक्केदा का राजा; एक, बेतेल का राजा; 17
एक, तप्पूह का राजा; एक, हेपेर का राजा; 18 एक, अपेक का राजा; एक,
लश्शारोन का राजा; 19 एक, मदोन का राजा; एक, हासोर का राजा; 20 एक,
शिम्रोन्मरोन का राजा; एक, अक्षाप का राजा; 21 एक, तानाक का राजा; एक,
मगिद्दो का राजा; 22 एक, केदेश का राजा; एक, कर्मैल में के योकनाम का राजा;
23 एक, दोर नाम ऊंचे देश में के दोर का राजा; एक, गिलगाल में के गोयीम का
राजा; 24 और एक, तिर्सा का राजा; इस प्रकार सब राजा इकतीस हुए।।

यहोशू 13

1 यहोशू बूढा और बहुत उम्र का हो गया; और यहोवा ने उस से कहा, तू बूढा और
बहुत उम्र का हो गया है, और बहुत देश रह गए हैं, जो इस्राएल के अधिक्कारने में

अभी तक नहीं आए। 2 थे देश रह गए हैं, अर्यात् पलिश्तियोंका सारा प्रान्त, और
सारे गशूरी 3 (मिस्र के आगे शीहोर से लेकर उत्तर की ओर एक्रोन के सिवाने तक
जो कनानियोंका भाग गिना जाता है; और पलिश्ि्ितयोंके पांचोंसरदार, अर्यात्
अज्जा, अशदोद, अशकलोन, गत, और एक्रोन के लोग), और दक्खिनी ओर
अव्वी भी, 4 फिर अपेक और एमोरियोंके सिवाने तक कनानियो का सारा देश
और सीदोनियोंका मारा नाम देश, 5 फिर गवालियोंका देश, और सूर्योदय की ओर
हेर्मोन पर्वत के नीचे के बालगाद से लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन, 6
फिर लबानोन से लेकर मिस्रपोतमैम तक सीदोनियोंके पहाड़ी देश के निवासी।
इनको मैं इस्राएलियोंके साम्हने से निकाल दूंगा; इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के
अनुसार चिट्ठी डाल डालकर उनका देश इस्राएल को बांट दे। 7 इसलिथे तू अब
इस देश को नवोंगोत्रोंऔर मनश्शे के आधे गोत्र को उनका भाग होने के लिथे बांट
दे।। 8 इसके साय रूबेनियोंऔर गादियोंको तो वह भाग मिल चुका या, जिसे मूसा
ने उन्हें यरदन के पूर्व की ओर दिया या, क्योंकि यहोवा के दास मूसा ने उन्हीं को
दिया या, 9 अर्यात् अर्नोन नाम नाले के किनारे के अरोएक से लेकर, और उसी
नाले के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन तक मेदवा के पास का सारा चौरस देश;
10 और अम्मोनियोंके सिवाने तक हेशबोत में विराजनेवाले एमोरियोंके राजा
सीहोन के सारे नगर; 11 और गिलाद देश, और गशूरियोंऔर माकावासियोंका
सिवाना, और सारा हेर्मोन पर्वत, और सल्का तक कुल बाशान, 12 फिर
आशतारोत और एद्रेई में विराजनेवाले उस ओग का सारा राज्य जो रपइशें में से
अकेला बच गया या; क्योंकि इन्ही को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को उस देश से
निकाल दिया या। 13 परन्तु इस्राएलियोंने गशूरियोंऔर माकियोंको उनके देश से

न निकाला; इसलिथे गशूरी और माकी इस्राएलियोंके मध्य में आज तक रहते हैं।
14 और लेवी के गोत्रियोंको उस ने कोई भाग न दिया; क्योंकि इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उसी के हव्य उनके लिथे भाग ठहरे हैं। 15
मूसा ने रूबेन के गोत्र को उनके कुलोंके अनुसार दिया, 16 अर्यात् अर्नोन नाम
नाले के किनारे के अरोएर से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर
मेदबा के पास का सारा चौरस देश; 17 फिर चौरस देश में का हेशबोन और उसके
सब गांव; फिर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन, 18 यहसा, कदेमोत, मेपात, 19
किर्यातैम, सिबमा, और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेयश्शहर, 20 बेंतपोर,
पिसगा की सलामी और बेत्यशीमोत, 21 निदान चौरस देश में बसे हुए हेशबोन
में विराजनेवाले एमोरियोंके उस राजा सीहोन के राज्य के कुल नगर जिन्हें मूसा
ने मार लिया या। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नाम मिद्दान के
प्रधानोंको भी मार डाला या जो सीहोन के ठहराए हुए हाकिम और उसी देश के
निवासी थे। 22 और इस्राएलियोंने उनके और मारे हुओं के साय बोर के पुत्र भावी
कहनेवाले बिलाम को भी तलवार से मार डाला। 23 और रूबेनियोंका सिवाना
यरदन का तीर ठहरा। रूबेनियोंका भाग उनके कुलोंके अनुसार नगरोंऔर
गांवोंसमेत यही ठहरा।। 24 फिर मूसा ने गाद के गोत्रियोंको भी कुलोंके अनुसार
उनका निज भाग करके बांट दिया। 25 तब यह ठहरा, अर्यात् याजेर आदि गिलाद
के सारे नगर, और रब्बा के साम्हने के अरोएर तक अम्मोनियोंका आधा देश, 26
और हेशबोन से रामतमिस्पे और बतोनीम तक, और महनैम से दबीर के सिवाने
तक, 27 और तराई में बेयारम, बेनिम्रा, सुक्कोत, और सापोन, और हेशबोन के
राजा सीहोन के राज्य के बचे हुए भाग, और किन्नेरेत नाम ताल के सिक्के तक,

यरदन के पूर्व की ओर का वह देश जिसका सिवाना यरदन है। 28 गादियोंका
भाग उनके कुलोंके अनुसार नगरोंऔर गांवोंसमेत यही ठहरा।। 29 फिर मूसा ने
मनश्शे के आधे गोत्रियोंको भी उनका निज भाग कर दिया; वह मनश्शेइयोंके
आधे गोत्र का निज भाग उनके कुलोंके अनुसार ठहरा। 30 वह यह है, अर्यात्
महनैम से लेकर बाशान के राजा ओग के राज्य का सब देश, और बाशान में बसी
हुई याईर की साठोंबस्तियां, 31 और गिलाद का आधा भाग, और अश्तारोत, और
एद्रेई, जो बाशान में ओग के राज्य के नगर थे, थे मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश
का, अर्यात् माकीर के आधे वंश का निज भाग कुलोंके अनुसार ठहरे।। 32 जो
भाग मूसा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर बांट
दिए वे थे ही हैं। 33 परन्तु लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया; इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा ही अपके वचन के अनुसार उनका भाग ठहरा।।

यहोशू 14

1 जो जो भाग इस्राएलियोंने कनान देश में पाए, उन्हें एलीआजर याजक, और
नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रोंके पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूषोंने
उनको दिया वे थे हैं। 2 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढ़े नौ गोत्रोंके लिथे दी
यी, उसके अनुसार उनके भाग चिट्ठी डाल डालकर दिए गए। 3 मूसा ने तो अढ़ाई
गोत्रोंके भाग यरदन पार दिए थे; परन्तु लेवियोंको उसने उनके बीच कोई भाग न
दिया या। 4 यूसुफ के वंश के तो दो गोत्र हो गए थे, अर्यात् मनश्शे और एप्रैम;
और उस देश में लेवियोंको कुछ भाग न दिया गया, केवल रहने के नगर, और पशु
आदि धन रखने को और चराइयां उनको मिलीं। 5 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को

दी यी उसके अनुसार इस्राएलियोंने किया; और उन्होंने देश को बांट लिया।। 6
तब यहूदी यहोशू के पास गिलगाल में आए; और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने
उस से कहा, तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से
मेरे और तेरे विषय में क्या कहा या। 7 जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश
का भेद लेने के लिथे कादेशबर्ने से भेजा या तब मैं चालीस वर्ष का या; और मैं
सच्चे मन से उसके पास सन्देश ले आया। 8 और मेरे सायी जो मेरे संग गए थे
उन्होंने तो प्रजा के लोगोंको निराश कर दिया, परन्तु मैं ने अपके परमेश्वर यहोवा
की पूरी रीति से बात मानी। 9 तब उस दिन मूसा ने शपय खाकर मुझ से कहा, तू
ने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातोंका अनुकरण किया है, इस कारण
निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपके पांव धर आया है वह सदा के लिथे तेरा और
तेरे वंश का भाग होगी। 10 और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन
कहा या तब से पैतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिन में इस्राएली जंगल में घूमते फिरते
रहे; उन में यहोवा ने अपके कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं
पचासी वर्ष का हूं। 11 जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में या उतना बल
अभी तक मुझ में है; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने के लिथे जितनी उस
समय मुझ मे सामर्य्य यी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्य्य है। 12 इसलिथे अब
वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की यी; तू ने तो उस दिन सुना
होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या
जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें
उनके देश से निकाल दूं। 13 तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को
यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया। 14 इस कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के

पुत्र कालेब का भाग आज तक बना है, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का
पूरी रीति से अनुगामी या। 15 पहिले समय में तो हेब्रोन का नाम किर्यतर्बा या;
वह अर्बा अनाकियोंमें सब से बड़ा पुरूष या। और उस देश को लड़ाई से शान्ति
मिली।।

यहोशू 15

1 यहूदियोंके गोत्र का भाग उनके कुलोंके अनुसार चिट्ठी डालने से एदोम के
सिवाने तक, और दक्खिन की ओर सीन के जंगल तक जो दक्खिनी सिवाने पर
है ठहरा। 2 उनके भाग का दक्खिनी सिवाना खारे ताल के उस सिक्केवाले कोल
से आरम्भ हुआ जो दक्खिन की ओर बढ़ा है; 3 और वह अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की
दक्खिनी ओर से निकलकर सीन होते हुए कादेशबर्ने के दक्खिन की ओर को चढ़
गया, फिर हेस्रोन के पास हो अद्दार को चढ़कर कर्काआ की ओर मुड़ गया, 4 वहां
से अम्मोन होते हुए वह मिस्र के नाले पर निकला, और उस सिवाने का अन्त
समुद्र हुआ। तुम्हारा दक्खिनी सिवाना यही होगा। 5 फिर पूर्वी सिवाना यरदन के
मुहाने तक खारा ताल ही ठहरा, और उत्तर दिशा का सिवाना यरदन के मुहाने के
पास के ताल के कोल से आरम्भ करके, 6 बेयोग्ला को चढ़ते हुए बेतराबा की उत्तर
की ओर होकर रूबेनी बोहनवाले नाम पत्यर तक चढ़ गया; 7 और वही सिवाना
आकोर नाम तराई से दबीर की ओर चढ़ गया, और उत्तर होते हुए गिलगाल की
ओर फुका जो नाले की दक्खिन ओर की अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है; वहां
से वह एनशेमेश नाम सोते के पास पहुंचकर एनरोगेल पर निकला; 8 फिर वही
सिवाना हिन्नोम के पुत्र की तराई से होकर यबूस (जो यरूशलेम कहलाता है)

उसकी दक्खिन अलंग से बढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुंचा, जो पश्चिम की
ओर हिन्नोम की तराई के साम्हने और रपाईम की तराई के उत्तरवाले सिक्के पर
है; 9 फिर वही सिवाना उस पहाड़ की चोटी से नेप्तोह नाम सोते को चला गया,
और एप्रोन पहाड़ के नगरोंपर निकला; फिर वहां से बाला को (जो किर्यत्यारीम
भी कहलाता है) पहुंचा; 10 फिर वह बाला से पश्चिम की ओर मुड़कर सेईर पहाड़
तक पहुंचा, और यारीम पहाड़ (जो कसालोन भी कहलाता है) उस की उत्तरवाली
अलंग से होकर बेतशेमेश को उतर गया, और वहां से तिम्ना पर निकला; 11 वहां
से वह सिवाना एक्रोन की उत्तरी अलंग के पास होते हुए शिक्करोन गया, और
बाला पहाड़ होकर यब्नेल पर निकला; और उस सिवाने का अन्त समुद्र का तट
हुआ। 12 और पश्चिम का सिवाना महासमुद्र का तीर ठहरा। यहूदियोंको जो भाग
उनके कुलोंके अनुसार मिला उसकी चारोंओर का सिवाना यही हुआ।। 13 और
यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहूदियोंके बीच भाग
दिया, अर्यात् किर्यतर्बा जो हेब्रोन भी कहलाता है (वह अर्बा अनाक का पिता या)।
14 और कालेब ने वहां से शेशै, अहीमन, और तल्मै नाम, अनाक के तीनोंपुत्रोंको
निकाल दिया। 15 फिर वहां से वह दबीर के निवासियोंपर चढ़ गया; पूर्वकाल में
तो दबीर का नाम किर्यत्सेपेर या। 16 और कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर को
मारकर ले ले उसे मैं अपक्की बेटी अकसा को ब्याह दूंगा। 17 तब कालेब के भाई
ओत्नीएल कनजी ने उसे ले लिया; और उस ने उसे अपक्की बेटी अकसा को ब्याह
दिया। 18 और जब वह उसके पास आई, तब उस ने उसको पिता से कुछ भूमि
मांगने को उभारा, फिर वह अपके गदहे पर से उतर पक्की, और कालेब ने उस से
पूछा, तू क्या चाहती है? 19 वह बोली, मुझे आशीर्वाद दे; तू ने मुझे दक्खिन देश

में की कुछ भूमि तो दी है, मुझे जल के सोते भी दे। तब उस ने ऊपर के सोते, नीचे
के सोते, दोनोंउसे दिए।। 20 यहूदियोंके गोत्र का भाग तो उनके कुलोंके अनुसार
यही ठहरा।। 21 और यहूदियोंके गोत्र के किनारे-वाले नगर दक्खिन देश में एदोम
के सिवाने की ओर थे हैं, अर्यात् कबसेल, एदेर, यागूर, 22 कीना, दीमोना, अदादा,
23 केदेश, हासोर, यित्नान, 24 जीप, तेलेम, बालोत, 25 हासोर्हदत्ता,
करिय्योथेस्रोन, (जो हासोर भी कहलाता है), 26 और अमाम, शमा, मोलादा, 27
हसर्गद्दा, हेशमोन, बेत्पालेत, 28 हसर्शूआल, बेर्शेबा, बिज्योत्या, 29 बाला,
इय्यीम, एसेम, 30 एलतोलद, कसील, होर्मा, 31 सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना,
32 लबाओत, शिल्हीम, ऐन, और रिम्मोन; थे सब नगर उन्तीस हैं, और इनके
गांव भी हैं।। 33 और नीचे के देश में थे हैं; अर्यात् एशताओल सोरा, अशना, 34
जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम, 35 यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका, 36
शारैम, अदीतैम, गदेरा, और गदेरोतैम; थे सब चौदह नगर हैं, और इनके गांव भी
हैं।। 37 फिर सनान, हदाशा, मिगदलगाद, 38 दिलान, मिस्पे, योक्तेल, 39
लाकीश, बोस्कत, एग्लोन, 40 कब्बोन, लहमास, कितलीश, 41 गदेरोत,
बेतदागोन, नामा, और मक्केदा; थे सोलह नगर हैं, और इनके गांव भी हैं।। 42
फिर लिब्ना, ऐतेर, आशान, 43 यिप्ताह, अशना, नसीब, 44 कीला, अकजीब और
मारेशा; थे नौ नगर हैं, और इनके गांव भी हैं। 45 फिर नगरोंऔर गांवोंसमेत
एक्रोन, 46 और एक्रोन से लेकर समुद्र तक, अपके अपके गांवोंसमेत जितने नगर
अशदोद की अलंग पर हैं।। 47 फिर अपके अपके नगरोंऔर गावोंसमेत अशदोद,
और अज्जा, वरन मिस्र के नाले तक और महासमुद्र के तीर तक जितने नगर
हैं।। 48 और पहाड़ी देश में थे हैं; अर्यात् शामीर, यत्तीर, सोको, 49 दन्ना,

किर्यत्सन्ना (जो दबीर भी कहलाता है), 50 अनाब, एशतमो, आनीम, 51 गोशेन,
होलोन, और गीलो; थे ग्यारह नगर हैं, और इनके गांव भी हैं।। 52 फिर अराब,
दूमा, एशान, 53 यानीम, बेत्तप्पूह, अपेका, 54 हुमता, किर्यतर्बा (जो हेब्रोन भी
कहलाता है, और सीओर;) थे नौ नगर हैं, और इनके गांव भी हैं।। 55 फिर
माओन, कर्मेल, जीप, यूता, 56 मिज्रेल, योकदाम, जानोह, 57 कैन, गिबा, और
तिम्ना; थे दस नगर हैं, और इनके गांव भी हैं।। 58 फिर हलहूल, बेतसूर, गदोर,
59 मरात, बेतनोत, और एलतकोन; थे छः नगर हैं, और इनके गांव भी हैं।। 60
फिर किर्यतबाल (जो किर्यत्बारीम भी कहलाता है), और रब्बा; थे दो नगर हैं, और
इनके गांव भी हैं।। 61 और जंगल में थे नगर हैं, अर्यात् बेतराबा, मिद्दीन,
सकाका; 62 निबशान, लोनवाला नगर, और एनगदी, थे छः नगर हैं, और इनके
गांव भी हैं।। 63 यरूशलेम के निवासी यबूसिक्कों यहूदी न निकाल सके; इसलिथे
आज के दिन तक यबूसी यहूदियोंके संग यरूशलेम में रहते हैं।।

यहोशू 16

1 फिर यूसुफ की सन्तान का भाग चिट्ठी डालने से ठहराया गया, उनका सिवाना
यरीहो के पास की यरदन नदी से, अर्यात् पूर्ब की ओर यरीहो के जल से आरम्भ
होकर उस पहाड़ी देश से होते हुए, जो जंगल में हैं, बेतेल को पहुंचा; 2 वहां से वह
लूज तक पहुंचा, और एरेकियोंके सिवाने होते हुए अतारोत पर जा निकला; 3 और
पश्चिम की ओर यपकेतियोंके सिवाने से उतरकर फिर नीचेवाले बेयोरोन के
सिवाने से होकर गेजेर को पहुंचा, और समुद्र पर निकला। 4 तब मनश्शे और
एप्रैम नाम यूसुफ के दोनोंपुत्रोंकी सन्तान ने अपना अपना भाग लिया। 5

एप्रैमियोंका सिवाना उनके कुलोंके अनुसार यह ठहरा; अर्यात् उनके भाग का
सिवाना पूर्व से आरम्भ होकर अत्रोतदार से होते हुए ऊपर वाले बेयोरोन तक
पहुंचा; 6 और उत्तरी सिवाना पश्चिम की ओर के मिकमतात से आरम्भ होकर पूर्व
की ओर मुड़कर तानतशीलो को पहुंचा, और उसके पास से होते हुए यानोह तक
पहुंचा; 7 फिर यानोह से वह अतारोत और नारा को उतरता हुआ यरीहो के पास
होकर यरदन पर निकला। 8 फिर वही सिवाना तप्पूह से निकलकर, और पश्चिम
की ओर जाकर, काना के नाले तक होकर समुद्र पर निकला। एप्रैमियोंके गोत्र का
भाग उनके कुलोंके अनुसार यही ठहरा। 9 और मनश्शेइयोंके भाग के बीच भी कई
एक नगर अपके अपके गांवोंसमेत एप्रैमियोंके लिथे अलग किथे गए। 10 परन्तु
जो कनानी गेजेर में बसे थे उनको एप्रैमियोंने वहां से नहीं निकाला; इसलिथे वे
कनानी उनके बीच आज के दिन तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान काम
करते हैं।।

यहोशू 17

1 फिर यूसुफ के जेठे मनश्शे के गोत्र का भाग चिट्ठी डालने से यह ठहरा। मनश्शे
का जेठा पुत्र गिलाद का पिता माकीर योद्धा या, इस कारण उसके वंश को गिलाद
और बाशान मिला। 2 इसलिथे यह भाग दूसरे मनश्शेइशें के लिथे उनके कुलोंके
अनुसार ठहरा, अर्यात् अबीएजेर, हेलेक, असीएल, शेकेम, हेपेर, और शमीदा; जो
अपके अपके कुलोंके अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के पुरूष थे, उनके
अलग अलग वंशोंके लिथे ठहरा। 3 परन्तु हेपेर जो गिलाद का पुत्र, माकीर का
पोता, और मनश्शे का परपोता या, उसके पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, बेटियां ही

हुईं; और उनके नाम महला, नोआ, होग्ला, मिलका, और तिर्सा हैं। 4 तब वे
एलीआज़र याजक, नून के पुत्र यहोशू, और प्रधानोंके पास जाकर कहने लगीं,
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी यी, कि वह हम को हमारे भाइयोंके बीच भाग दे। तो
यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके चाचाओं के बीच भाग दिया। 5
तब मनश्शे को, यरदन पार गिलाद देश और बाशान को छोड़, दस भाग मिले; 6
क्योंकि मनश्शेइयोंके बीच में मनश्शेई स्त्रियोंको भी भाग मिला। और दूसरे
मनश्शेइयोंको गिलाद देश मिला। 7 और मनश्शे का सिवाना आशेर से लेकर
मिकमतात तक पहुंचा, जो शकेम के साम्हने है; फिर वह दक्खिन की ओर
बढ़कर एनतप्पूह के निवासियोंतक पहुंचा। 8 तप्पूह की भूमि तो मनश्शे को
मिली, परन्तु तप्पूह नगर जो मनश्शे के सिवाने पर बसा है वह एप्रैमियोंका
ठहरा। 9 फिर वहां से वह सिवाना काना के नाले तक उतरके उसके दक्खिन की
ओर तक पहुंच गया; थे नगर यद्दपि मनश्शे के सिवाने पर बसा है वह
एप्रैमियोंका ठहरा। 10 दक्खिन की ओर का देश तो एप्रैम को और उत्तर की ओर
का मनश्शे को मिला, और उसका सिवाना समुद्र ठहरा; और वे उत्तर की ओर
आशेर से और पूर्व की ओर इस्साकर से जा मिले। 11 और मनश्शे की, इस्साकार
और आशेर अपके अपके नगरोंसमेत बेतशान, यिबलाम, और अपके नगरोंसमेत
तानाक कि निवासी, और अपके नगरोंसमेत मगिद्दो के निवासी, थे तीनोंजो ऊंचे
स्यानोंपर बसे हैं मिले। 12 परन्तु मनश्शेई उन नगरोंके निवासिक्कों उन में से
नहीं निकाल सके; इसलिथे वे कनानी उस देश में बरियाई से बसे ही रहे। 13 तौभी
जब इस्राएली सामर्यी हो गए, तब कनानियोंसे बेगारी तो कराने लगे, परन्तु
उनको पूरी रीति से निकाल बाहर न किया।। 14 यूसुफ की सन्तान यहोशू से

कहने लगी, हम तो गिनती में बहुत हैं, क्योंकि अब तक यहोवा हमें आशीष ही
देता आया है, फिर तू ने हमारे भाग के लिथे चिट्ठी डालकर क्योंएक ही अंश
दिया है? 15 यहोशू ने उन से कहा, यदि तुम गिनती में बहुत हो, और एप्रैम का
पहाड़ी देश तुम्हारे लिथे छोटा हो, तो परिज्जयोंऔर रपाइयोंका देश जो जंगल है
उसमें जाकर पेड़ोंको काट डालो। 16 यूसुफ की सन्तान ने कहा, वह पहाड़ी देश
हमारे लिथे छोटा है; और क्या बेतसान और उसके नगरोंमें रहनेवाले, क्या
यिज्रेल की तराई में रहेनवाले, जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं, उन सभोंके
पास लोहे के रय हैं। 17 फिर यहोशू ने, क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई, अर्यात् यूसुफ
के सारे घराने से कहा, हां तुम लोग तो गिनती में बहुत हो, और तुम्हारी बड़ी
सामर्य भी है, इसलिथे तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा; 18 पहाड़ी देश भी
तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि वह जंगल तो है, परन्तु उसके पेड़ काट डालो, तब
उसके आस पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि चाहे कनानी सामर्यी हों,
और उनके पास लोहे के रय भी हों, तौभी तुम उन्हें वहां से निकाल सकोगे।।

यहोशू 18

1 फिर इस्राएलियोंको सारी मण्डली ने शीलो में इकट्ठी होकर वहां मिलापवाले
तम्बू को खड़ा किया; क्योंकि देश उनके वश में आ गया या। 2 और इस्राएलियोंमें
से सात गोत्रोंके लोग अपना अपना भाग बिना पाथे रह गए थे। 3 तब यहोशू ने
इस्राएलियोंसे कहा, जो देश तुम्हारे पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे
अपके अधिक्कारने में कर लेने में तुम कब तक ढिलाई करते रहोगे? 4 अब प्रति
गोत्र के पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो, और मैं उन्हें इसलिथे भेजूंगा कि वे चलकर

देश में घूमें फिरें, और अपके अपके गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उसका
हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएं। 5 और वे देश के सात भाग लिखें, यहूदी
तो दक्खिन की ओर अपके भाग में, और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर की ओर
अपके भाग में रहें। 6 और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे पास ले आओ; और
मैं यहां तुम्हारे लिथे अपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डालूंगा। 7 और
लेवियोंका तुम्हारे मध्य में कोई भाग न होगा, क्योंकि यहोवा का दिया हुआ
याजकपद ही उनका भाग है; और गाद, रूबेन, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग
यरदन के पूर्व की ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना अपना भाग पा
चुके हैं। 8 तो वे पुरूष उठकर चल दिए; और जो उस देश का हाल लिखने को चले
उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा दी, कि जाकर देश में घूमो फिरो, और उसका हाल
लिखकर मेरे पास लौट आओ; और मैं यहां शिलोंमें यहोवा के साम्हने तुम्हारे
लिथे चिट्ठी डालूंगा। 9 तब वे पुरूष चल दिए, और उस देश में घूमें, और उसके
नगरोंके सात भाग करके उनका हाल पुस्तक में लिखकर शीलो की छावनी में
यहोशू के पास आए। 10 तब यहोशू ने शीलोंमें यहोवा के साम्हने उनके लिथे
चिट्ठियां डालीं; और वहीं यहोशू ने इस्राएलियोंको उनके भागोंके अनुसार देश
बांट दिया।। 11 और बिन्यामीनियोंके गोत्र की चिट्ठी उनके कुलोंके अनुसार
निकली, और उनका भाग यहूदियोंऔर यूसुफियोंके बीच में पड़ा। 12 और उनका
उत्तरी सिवाना यरदन से आरम्भ हुआ, और यरीहो की उत्तर अलंग से चढ़ते हुए
पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन के जंगल में निकला; 13 वहां से वह
लूज को पहुंचा (जो बेतेल भी कहलाता है), और लूज की दक्खिन अलंग से होते
हुए निचले बेयोरोन की दक्खिन ओर के पहाड़ के पास हो अत्रोतद्दार को उतर

गया। 14 फिर पश्चिमी सिवाना मुड़के बेयोरोन के साम्हने और उसकी दक्खिन
ओर के पहाड़ से होते हुए किर्यतबाल नाम यहूदियोंके एक नगर पर निकला (जो
किर्यत्यारीम भी कहलाता है); पश्चिम का सिवाना यही ठहरा। 15 फिर दक्खिन
अलंग का सिवाना पश्चिम से आरम्भ होकर किर्यत्यारीम के सिक्के से निकलकर
नेप्तोह के सोते पर पहुंचा; 16 और उस पहाड़ के सिक्के पर उतरा, जो हिन्नोम के
पुत्र की तराई के साम्हने और रपाईम नाम तराई की उत्तर ओर है; वहां से वह
हिन्नोम की तराई में, अर्यात् यबूस की दक्खिन अलंग होकर एनरोगेल को उतरा;
17 वहां से वह उत्तर की ओर मुड़कर एनशेमेश को निकलकर उस गलीलोत की
ओर गया, जो अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है, फिर वहां से वह रूबेन के पुत्र
बोहन के पत्यर तक उतर गया; 18 वहां से वह उत्तर की ओर जाकर अराबा के
साम्हने के पहाड़ की अलंग से होते हुए अराबा को उतरा; 19 वहां से वह सिवाना
बेयोग्ला की उत्तर अलंग से जाकर खारे ताल की उत्तर ओर के कोल में यरदन के
मुहाने पर निकला; दक्खिन का सिवाना यही ठहरा। 20 और पूर्व की ओर का
सिवाना यरदन ही ठहरा। बिन्यामीनियोंका भाग, चारोंओर के सिवानोंसहित,
उनके कुलोंके अनुसार, यही ठहरा। 21 और बिन्यामीनियोंके गोत्र को उनके
कुलोंके अनुसार थे नगर मिले, अर्यात् यरीहो, बेयोग्ला, एमेक्कसीस, 22 बेतराबा,
समारैम, बेतेल, 23 अव्वीम, पारा, ओप्रा, 24 कपरम्मोनी, ओप्नी और गेबा; थे
बारह नगर और इनके गांव मिले। 25 फिर गिबोन, रामा, बेरोत, 26 मिस्पे,
कपीरा, मोसा, 27 रेकेम, यिर्पेल, तरला, 28 सेला, एलेप, यबूस (जो यरूशलेम भी
कहलाता है), गिबल और किर्यत; थे चौदह नगर और इनके गांव उन्हें मिले।
बिन्यामीनियोंका भाग उनके कुलोंके अनुसार यही ठहरा।।

यहोशू 19

1 दूसरी चिट्ठी शमौन के नाम पर, अर्यात् शिमोनियोंके कुलोंके अनुसार उनके
गोत्र के नाम पर निकली; और उनका भाग यहूदियोंके भाग के बीच में ठहरा। 2
उनके भाग में थे नगर हैं, अर्यात् बेर्शेबा, शेबा, मोलादा, 3 हसर्शूआल, बाला,
एसेम, 4 एलतोलद, बतूल, होर्मा, 5 बेतलबाओत, और शारूहेन; थे तेरह नगर
और इनके गांव उन्हें मिले। 6 बेतलबाओत, और शारूहेन; थे तेरह नगर और
इनके गांव उन्हें मिले। 7 फिर ऐन, रिम्मोन, ऐतेर, और आशान, थे चार नगर
गांवोंसमेत; 8 और बालत्बेर जो दिक्खन देश का रामा भी कहलाता है, वहां तक
इन नगरोंके चारोंओर के सब गांव भी उन्हें मिले। शिमानियोंके गोत्र का भाग
उनके कुलोंके अनुसार यही ठहरा। 9 शिमोनियोंका भाग तो यहूदियोंके अंश में से
दिया गया; क्योंकि यहूदियोंका भाग उनके लिथे बहुत या, इस कारण
शिमोनियोंका भाग उन्हीं के भाग के बीच ठहरा।। 10 तीसरी चिट्ठी
जबूलूनियोंके कुलोंके अनुसार उनके नाम पर निकली। और उनके भाग का
सिवाना सारीद तक पहुंचा; 11 और उनका सिवाना पश्चिम की ओर मरला को
चढ़कर दब्बेशेत को पहुंचा; और योकनाम के साम्हने के नाले तक पहुंच गया; 12
फिर सारीद से वह सूर्योदय की ओर मुड़कर किसलोत्ताबोर के सिवाने तक पंहुचा,
और वहां से बढ़ते बढ़ते दाबरत में निकला, और यापी की ओर जा निकला; 13
वहां से वह पूर्व की ओर आगे बढ़कर गथेपेर और इत्कासीन को गया, और उस
रिम्मोन में निकला जो नेआ तक फैला हुआ है; 14 वहां से वह सिवाना उसके
उत्तर की ओर से मुड़कर हन्नातोन पर पहुंचा, और यिप्तहेल की तराई में जा
निकला; 15 कत्तात, नहलाल, शिभ्रोन, यिदला, और बेतलेहम; थे बारह नगर

उनके गांवोंसमेत उसी भाग के ठहरे। 16 जबूलूनियोंका भाग उनके कुलोंके
अनुसार यही ठहरा; और उस में अपके अपके गांवोंसमेत थे ही नगर हैं।। 17
चौयी चिट्ठी इस्साकारियोंके कुलोंके अनुसार उनके नाम पर निकली। 18 और
उनका सिवाना यिज्रेल, कसुल्लोत, शूनेम 19 हपारैम, शीओन, अनाहरत, 20
रब्बीत, किश्योत, एबेस, 21 रेमेत, एनगन्नीम, एनहद्दा, और बेत्पस्सेस तक
पहुंचा। 22 फिर वह सिवाना ताबोर-शहसूमा और बेतशेमेश तक पहुंचा, और
उनका सिवाना यरदन नदी पर जा निकला; इस प्रकार उनको सोलह नगर अपके
अपके गांवोंसमेत मिले। 23 कुलोंके अनुसार इस्साकारियोंके गोत्र का भाग
नगरोंऔर गांवोंसमेत यही ठहरा।। 24 पांचक्कीं चिट्ठी आशेरियोंके गोत्र के
कुलोंके अनुसार उनके नाम पर निकली। 25 उनके सिवाने में हेल्कत, हली,
बेतेन, अक्षाप, 26 अलाम्मेल्लेक, अमाद, और मिशाल थे; और वह पश्चिम की
ओर कार्म्मेल तक और शाहोलिब्नात तक पहुंचा; 27 फिर वह सूर्योदय की ओर
मुड़कर बेतदागोन को गया, और जबलून के भाग तक, और यिप्तहेल की तराई में
उत्तर की ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक पहुंचा और उत्तर की ओर जाकर
काबूल पर निकला, 28 और वह एब्रोन, रहोब, हम्मोन, और काना से होकर बड़े
सीदोन को पहुंचा; 29 वहां से वह सिवाना मुड़कर रामा से होते हुए सोन नाम
गढ़वाले नगर तक चला गया; फिर सिवाना होसा की ओर मुड़कर और अकजीब
के पास के देश में होकर समुद्र पर निकला, 30 उम्मा, अपेक, और रहोब भी उनके
भाग में ठहरे; इस प्रकार बाईस नगर अपके अपके गांवोंसमेत उनको मिले। 31
कुलोंके अनुसार आशेरियोंके गोत्र का भाग नगरोंऔर गांवोंसमेत यही ठहरा।। 32
छठवीं चिट्ठी नप्तालियोंके कुलोंके अनुसार उनके नाम पर निकली। 33 और

उनका सिवाना हेलेप से, और सानन्नीम में के बांज वृझ से, अदामीनेकेब और
यब्नेल से होकर, और लक्कूम को जाकर यरदन पर निकला; 34 वहां से वह
सिवाना पश्चिम की ओर मुड़कर अजनोत्ताबोर को गया, और वहां से हुक्कोक को
गया, और दक्खिन, और जबूलून के भाग तक, और पश्चिम की ओर आशेर के
भाग तक, और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग के पास की यरदन नदी पर
पहुंचा। 35 और उनके गढ़वाले नगर थे हैं, अर्यात् सिद्दीम, सेर, हम्मत, रक्कत,
किन्नेरेत, 36 अदामा, रामा, हासोर, 37 केदेश, एद्रेई, एन्हासेर, 38 यिरोन,
मिगदलेल, होरेम, बेतनात, और बेतशेमेश; थे उन्नीस नगर गांवोंसमेत उनको
मिले। 39 कुलोंके अुनसार नप्तालियोंके गोत्र का भाग नगरोंऔर उनके गांवोंसमेत
यही ठहरा।। 40 सातवीं चिट्ठी कुलोंके अनुसार दानियोंके गोत्र के नाम पर
निकली। 41 और उनके भाग के सिवाने में सोरा, एशताओल, ईरशमेश, 42
शालब्बीन, अय्यालोन, यितला, 43 एलोन, तिम्ना, एक्रोन, 44 एलतके,
गिब्बतोन, बालात, 45 यहूद, बनेबराक, गत्रिम्मोन, 46 मेयर्कोन, और रक्कोन
ठहरे, और यापो के साम्हने का सिवाना भी उनका या। 47 और दानियोंका भाग
इस से अधिक हो गया, अर्यात् दानी लेशेम पर चढ़कर उस से लड़े, और उसे लेकर
तलवार से मार डाला, और उसको अपके अधिक्कारने में करके उस में बस गए,
और अपके मूलपुरूष के नाम पर लेशेम का नाम दान रखा। 48 कुलोंके अुनसार
दानियोंके गोत्र का भाग नगरोंऔर गांवोंसमेत यही ठहरा।। 49 जब देश का बांटा
जाना सिवानोंके अनुसार निपट गया, तब इस्राएलियोंने नून के पुत्र यहोशू को भी
अपके बीच में एक भाग दिया। 50 यहोवा के कहने के अनुसार उन्होंने उसको
उसका मांगा हुआ नगर दिया, यह एप्रैम के पहाड़ी देश में का विम्नत्सेरह है; और

वह उस नगर को बसाकर उस में रहने लगा।। 51 जो जो भाग एलीआजर याजक,
और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियोंके गोत्रोंके घरानोंके पूर्वजोंके मुख्य मुख्य
पुरूषोंने शीलो में, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के साम्हने चिट्ठी डाल
डालके बांट दिए वे थे ही हैं। निदान उन्होंने देश विभाजन का काम निपटा
दिया।।

यहोशू 20

1 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, 2 इस्राएलियोंसे यह कह, कि मैं ने मूसा के द्वारा
तुम से शरण नगरोंकी जो चर्चा की यी उसके अनुसार उनको ठहरा लो, 3 जिस से
जो कोई भूल से बिना जाने किसी को मार डाले, वह उन में से किसी में भाग जाए;
इसलिथे वे नगर खून के पलटा लेनेवाले से बचने के लिथे तुम्हारे शरणस्यान
ठहरें। 4 वह उन नगरोंमें से किसी को भाग जाए, और उस नगर के फाटक में से
खड़ा होकर उसके पुरनियोंको अपना मुकद्दमा कह सुनाए; और वे उसको अपके
नगर में अपके पास टिका लें, और उसे कोई स्यान दें, जिस में वह उनके साय
रहे। 5 और यदि खून का पलटा लेनेवाला उसका पीछा करे, तो वे यह जानकर कि
उस ने अपके पड़ोसी को बिना जाने, और पहिले उस से बिना बैर रखे मारा, उस
खूनी को उसके हाथ में न दें। 6 और जब तक वह मण्डली के साम्हने न्याय के
लिथे खड़ा न हो, और जब तक उन दिनोंका महाथाजक न मर जाए, तब तक वह
उसी नगर में रहे; उसके बाद वह खूनी अपके नगर को लौटकर जिस से वह भाग
आया हो अपके घर में फिर रहने पाए। 7 और उन्होंने नप्ताली के पहाड़ी देश में
गलील के केदेश को, और एप्रैम के पहाड़ी देश में शकेम को, और यहूदा के पहाड़ी

देश में किर्य्यतर्बा को, (जो हेब्रोन भी कहलाता है) पवित्र ठहराया। 8 और यरीहो
के पास के यरदन के पूर्व की ओर उन्होंने रूबेन के गोत्र के भाग में बसेरे को, जो
जंगल में चौरस भूमि पर बसा हुआ है, और गाद के गोत्र के भाग में गिलाद के
रमोत को, और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान के गोलान को ठहराया। 9 सारे
इस्राएलियोंके लिथे, और उन के बीच रहनेवाले परदेशियोंके लिथे भी, जो नगर
इस मनसा से ठहराए गए कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले वह उन
में से किसी में भाग जाए, और जब तक न्याय के लिथे मण्डली के साम्हने खड़ा
न हो, तब तक खून का पलटा लेनेवाला उसे मार डालने न पाए, वे यह ही हैं।।

यहोशू 21

1 तब लेवियोंके पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूष एलीआज़र याजक, और
नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रोंके पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरूषोंके
पास आकर 2 कनान देश के शीलो नगर में कहने लगे, यहोवा ने मूसा से हमें
बसने के लिथे नगर, और हमारे पशुओं के लिथे उन्हीं नगरोंकी चराईयां भी देने
की आज्ञा दिलाई यी। 3 तब इस्राएलियोंने यहोवा के कहने के अनुसार अपके
अपके भाग में से लेवियोंको चराईयोंसमेत थे नगर दिए।। 4 और कहतियोंके
कुलोंके नाम पर चिट्ठी निकली। इसलिथे लेवियोंमें से हारून याजक के वंश को
यहूदी, शिमोन, और बिन्यामीन के गोत्रोंके भागोंमें से तेरह नगर मिले।। 5 और
बाकी कहातियोंको एप्रैम के गोत्र के कुलों, और दान के गोत्र, और मनश्शे के आधे
गोत्र के भागोंमें से चिट्ठी डाल डालकर दस नगर दिए गए।। 6 और गेर्शोनियोंको
इस्साकार के गोत्र के कुलों, और आशेर, और नप्ताली के गोत्रोंके भागोंमें से, और

मनश्शे के उस आधे गोत्र के भागोंमें से भी जो बाशान में या चिट्ठी डाल डालकर
तेरह नगर दिए गए।। 7 और कुलोंके अनुसार मरारियोंको रूबेन, गाद, और
जबूलून के गोत्रोंके भागोंमें से बारह नगर दिए गए।। 8 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा
से दिलाई भी उसके अनुसार इस्राएलियोंने लेवियोंको चराइयोंसमेत थे नगर
चिट्ठी डाल डालकर दिए। 9 उन्होंने यहूदियोंऔर शिमोनियोंके गोत्रोंके भागोंमें
से थे नगर जिनके नाम लिखे हैं दिए; 10 थे नगर लेवीय कहाती कुलोंमें से हारून
के वंश के लिथे थे; क्योंकि पहिली चिट्ठी उन्हीं के नाम पर निकली यी। 11
अर्यात् उन्होंने उन को यहूदा के पहाड़ी देश में चारोंओर की चराइयोंसमेत
किर्यतर्बा नगर दे दिया, जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया और हेब्रोन
भी कहलाता है। 12 परन्तु उस नगर के खेत और उसके गांव उन्होंने यपुन्ने के
पुत्र कालेब को उसकी निज भूमि करके दे दिए।। 13 तब उन्होंने हारून याजक के
वंश को चराइयोंसमेत खूनी के शरण नगर हेब्रोन, और अपक्की अपक्की
चराइयोंसमेत लिब्ना, 14 यत्तीर, एशतमो, 15 होलोन, दबीर, ऐन, 16 युत्ता और
बेतशेमेश दिए; इस प्रकार उन दोनोंगोत्रोंके भागोंमें से नौ नगर दिए गए। 17 और
बिन्यामीन के गोत्र के भाग में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत थे चार नगर
दिए गए, अर्यात्गिबोन, गेबा, 18 अनातोत और अल्मोन 19 इस प्रकार
हारूनवंशी याजकोंको तेरह नगर और उनकी चराईयां मिली।। 20 फिर बाकी
कहाती लेवियोंके कुलोंके भाग के नगर चिट्ठी डाल डालकर एप्रैम के गोत्र के
भाग में से दिए गए। 21 अर्यात् उनको चराइयोंसमेत एप्रैम के पहाड़ी देश में खूनी
शरण लेने का शकेम नगर दिया गया, फिर अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत
गेजेर, 22 किबसैम, और बेयोरोन; थे चार नगर दिए गए। 23 और दान के गोत्र के

भाग में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत, एलतके, गिब्बतोन, 24 अय्यालोन,
और गत्रिम्मोन; थे चार नगर दिए गए। 25 और मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में
से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत तानाक और गत्रिम्मोन; थे दो नगर दिए
गए। 26 इस प्रकार बाकी कहातियोंके कुलोंके सब नगर चराइयोंसमेत दस
ठहरे।। 27 फिर लेवियोंके कुलोंमें के गेर्शोनियोंको मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में
से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत खूनी के शरण नगर बाशान का गोलान और
बेशतरा; थे दो नगर दिए गए। 28 और इस्साकार के गोत्र के भाग में से अपक्की
अपक्की चराइयोंसमेत किश्योन, दाबरत, 29 यर्मूत, और एनगन्नीम; थे चार
नगर दिए गए। 30 और आशेर के गोत्र के भाग में से अपक्की अपक्की
चराइयोंसमेत मिशाल, अब्दोन, 31 हेल्कात, और रहोब; थे चार नगर दिए गए।
32 और नप्ताली के गोत्र के भाग में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत खूनी के
शरण नगर गलील का केदेश, फिर हम्मोतदोर, और कर्तान; थे तीन नगर दिए
गए। 33 गेर्शोनियोंके कुलोंके अनुसार उनके सब नगर अपक्की अपक्की
चराइयोंसमेत तेरह ठहरे।। 34 फिर बाकी लेवियों, अर्यात् मरारियोंके कुलोंको
जबूलून के गोत्र के भाग में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत योक्नाम, कर्ता,
35 दिम्ना, और नहलाल; थे चार नगर दिए गए। 36 और रूबेन के गोत्र के भाग
में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत बेसेर, यहसा, 37 केदेमोत, और मेपात; थे
चार नगर दिए गए। 38 और गाद के गोत्र के भाग में से अपक्की अपक्की
चराइयोंसमेत खूनी के शरण नगर गिलाद में का रामोत, फिर महनैम, 39
हेशबोन, और याजेर, जो सब मिलाकर चार नगर हैं दिए गए। 40 लेवियोंके बाकी
कुलोंअर्यात् मरारियोंके कुलोंके अनुसार उनके सब नगर थे ही ठहरे, इस प्रकार

उनको बारह नगर चिट्ठी डाल डालकर दिए गए।। 41 इस्राएलियोंकी निज भूमि
के बीच लेवियोंके सब नगर अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत अड़तालीस ठहरे।
42 थे सब नगर अपके अपके चारोंओर की चराइयोंके साय ठहरे; इन सब
नगरोंकी यही दशा यी।। 43 इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियोंको वह सारा देश
दिया, जिसे उस ने उनके पूर्वजोंसे शपय खाकर देने को कहा या; और वे उसके
अधिक्कारनी होकर उस में बस गए। 44 और यहोवा ने उन सब बातोंके अनुसार,
जो उस ने उनके पूर्वजोंसे शपय खाकर कही यीं, उन्हें चारोंओर से विश्रम दिया;
और उनके शत्रुओं में से कोई भी उनके साम्हने टिक न सका; यहोवा ने उन
सभोंको उनके वश में कर दिया। 45 जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के
घराने से कही यीं उन में से कोई भी न छूटी; सब की सब पूरी हुई।।

यहोशू 22

1 उस समय यहोशू ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियोंको
बुलवाकर कहा, 2 जो जो आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें दी यीं वे सब तुम ने
मानी हैं, और जो जो आज्ञा मैं ने तुम्हें दी हैं उन सभोंको भी तुम ने माना है; 3 तुम
ने अपके भाइयोंको इस मुद्दत में आज के दिन तक नहीं छोड़ा, परन्तु अपके
परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने चौकसी से मानी है। 4 और अब तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयोंको अपके वचन के अनुसार विश्रम दिया है;
इसलिथे अब तुम लौटकर अपके अपके डेरोंको, और अपक्की अपक्की निज
भूमि में, जिसे यहोवा के दास मूसा ने यरदन पार तुम्हें दिया है चले जाओ। 5
केवल इस बात की पूरी चौकसी करना कि जो जो आज्ञा और व्यवस्या यहोवा के

दास मूसा ने तुम को दी है उसको मानकर अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो,
उसके सारे मार्गोंपर चलो, उसकी आज्ञाएं मानों, उसकी भंक्ति मे लौलीन रहो, और
अपके सारे मन और सारे प्राण से उसकी सेवा करो। 6 तब यहोशू ने उन्हें
आशीर्वाद देकर विदा किया; और वे अपके अपके डेरे को चले गए।। 7 मनश्शे के
आधे गोत्रियोंको मूसा ने बासान में भाग दिया या; परन्तु दूसरे आधे गोत्र को
यहोशू ने उनके भाइयोंके बीच यरदन के पश्चिम की ओर भाग दिया। उनको जब
यहोशू ने विदा किया कि अपके अपके डेरे को जाएं, 8 तब उनको भी आशीर्वाद
देकर कहा, बहुत से पशु, और चांदी, सोना, पीतल, लोहा, और बहुत से वस्त्र और
बहुत धन-सम्पित लिए हुए अपके अपके डेरे को लौट आओ; और अपके शत्रुओं
की लूट की सम्पत्ति को अपके भाइयोंके संग बांट लेना।। 9 तब रूबेनी, गादी, और
मनश्शे के आधे गोत्री इस्राएलियोंके पास से, अर्यात् कनान देश के शीलो नगर से,
अपक्की गिलाद नाम निज भूमि में, जो मूसा से दिलाई हुई, यहोवा की आज्ञा के
अनुसार उनकी निज भूमि हो गई यी, जाने की मनसा से लौट गए। 10 और जब
रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्री यरदन की उस तराई में पहुंचे जो कनान
देश में है, तब उन्होंने वहां देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई। 11 और इसका
समाचार इस्राएलियोंके सुनने में आया, कि रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के
आधे गोत्रियोंने कनान देश के साम्हने यरदन की तराई में, अर्यात् उसके उस पार
जो इस्राएलियोंका है, एक वेदी बनाई है। 12 जब इस्राएलियोंने यह सुना, तब
इस्राएलियोंकी सारी मण्डली उन से लड़ने के लिथे चढ़ाई करने को शीलो में
इकट्ठी हुई।। 13 तब इस्राएलियोंने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे
गोत्रियोंके पास गिलाद देश में एलीआज़र याजक के पुत्र पीनहास को, 14 और

उसके संग दस प्रधानोंको, अर्यात् इस्राएल के एक एक गोत्र में से पूर्वजोंके
घरानोंके एक एक प्रधान को भेजा, और वे इस्राएल के हजारोंमें अपके अपके
पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य पुरूष थे। 15 वे गिलाद देश में रूबेनियों, गादियों, और
मनश्शे के आधे गोत्रियोंके पास जाकर कहने लगे, 16 यहोवा की सारी मण्डली
यह कहती है, कि तुम ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यह कैसा विश्वासघात
किया; आज जो तुम ने एक वेदी बना ली है, इस में तुम ने उसके पीछे चलना
छोड़कर उसके विरूद्ध आज बलवा किया है? 17 सुनो, पोर के विषय का अधर्म
हमारे लिथे कुछ कम या, यद्दपि यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला तौभी
आज के दिन तक हम उस अधर्म से शुद्ध नहीं हुए; क्या वह तुम्हारी दृष्टि में एक
छोटी बात है, 18 कि आज तुम यहोवा को त्यागकर उसके पीछे चलना छोड़ देते
हो? क्या तुम यहोवा से फिर जाते हो, और कल वह इस्राएल की सारी मण्डली पर
क्रोधित होगा। 19 परन्तु यदि तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो, तो पार आकर यहोवा
की निज भूमि में, जहां यहोवा का निवास रहता है, हम लोगोंके बीच में अपक्की
अपक्की निज भूमि कर लो; परन्तु हमारे परमेश्वर यहोवा की बेदी को छोड़ और
कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से बलवा करो, और न हम से। 20 देखो, जब जेरह
के पुत्र आकान ने अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात किया, तब क्या
यहोवा का कोप इस्राएल की पूरी मण्डली पर न भड़का? और उस पुरूष के अधर्म
का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला।। 21 तब रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे
के आधे गोत्रियोंने इस्राएल के हजारोंके मुख्य पुरूषोंको यह उत्तर दिया, 22 कि
यहोवा जो ईश्वरोंका परमेश्वर है, ईश्वरोंका परमेश्वर यहोवा इसको जानता है, और
इस्राएली भी इसे जान लेंगे, कि यदि यहोवा से फिरके वा उसका विश्वासघात

करके हम ने यह काम किया हो, तो तू आज हम को जीवित न छोड़, 23 यदि
आज के दिन हम ने वेदी को इसलिथे बनाया हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़
दें, वा इसलिथे कि उस पर होमबलि, अन्नबलि, वा मेलबलि चढ़ाएं, तो यहोवा
आप इसका हिसाब ले; 24 परन्तु हम ने इसी विचार और मनसा से यह किया है
कि कहीं भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से यह न कहने लगे, कि तुम
को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से क्या काम? 25 क्योंकि, हे रूबेनियों, हे गादियों,
यहोवा ने जो हमारे और तुम्हारे बीच में यरदन को हद्द ठहरा दिया है, इसलिथे
यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं है। ऐसा कहकर तुम्हारी सन्तान हमारी
सन्तान में से यहोवा का भय छुड़ा देगी। 26 इसीलिथे हम ने कहा, आओ, हम
अपके लिथे एक वेदी बना लें, वह होमबलि वा मेलबलि के लिथे नहीं, 27 परन्तु
इसलिथे कि हमारे और तुम्हारे, और हमारे बाद हमारे और तुम्हारे वंश के बीच में
साझी का काम दे; इसलिथे कि हम होमबलि, मेलबलि, और बलिदान चढ़ाकर
यहोवा के सम्मुख उसकी उपासना करें; और भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी
सन्तान से यह न कहने पाए, कि यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं। 28 इसलिथे
हम ने कहा, कि जब वे लोग भविष्य में हम से वा हमारे वंश से योंकहने लेगें, तब
हम उन से कहेंगे, कि यहोवा के वेदी के नमूने पर बनी हुई इस वेदी को देखो,
जिसे हमारे पुरखाओं ने होमबलि वा मेलबलि के लिथे नहीं बनाया; परन्तु
इसलिथे बनाया या कि हमारे और तुम्हारे बीच में साझी का काम दे। 29 यह हम
से दूर रहे कि यहोवा से फिरकर आज उसके पीछे चलना छोड़ दें, और अपके
परमेश्वर यहोवा की उस वेदी को छोड़कर जो उसके निवास के साम्हने है
होमबलि, और अन्नबलि, वा मेलबलि के लिथे दूसरी वेदी बनाएं।। 30 रूबेनियों,

गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियोंकी इन बातोंको सुनकर पीनहास याजक
और उसके संग मण्डली के प्रधान, जो इस्राएल के हजारोंके मुख्य पुरूष थे, वे
अति प्रसन्न हुए। 31 और एलीआजर याजक के पुत्र पीनहास ने रूबेनियों,
गादियों, और मनश्शेइयोंसे कहा, तुम ने जो यहोवा का ऐसा विश्वासघात नहीं
किया, इस से आज हम ने यह जान लिया कि यहोवा हमारे बीच में है: और तुम
लोगोंने इस्राएलियोंको यहोवा के हाथ से बचाया है। 32 तब एलीआज़र याजक का
पुत्र पीनहास प्रधानोंसमेत रूबेनियोंऔर गादियोंके पास से गिलाद होते हुए
कनान देश में इस्राएलियोंके पास लौट गया: और यह वृतान्त उनको कह सुनाया।
33 तब इस्राएली प्रसन्न हुए; और परमेश्वर को धन्य कहा, और रूबेनियोंऔर
गादियोंसे लड़ने और उनके रहने का देश उजाड़ने के लिथे चढ़ाई करने की चर्चा
फिर न की। 34 और रूबेनियोंऔर गादियोंने यह कहकर, कि यह वेदी हमारे और
उनके मध्य में इस बात का साझी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है: उस वेदी का
नाम एद रखा।।

यहोशू 23

1 इसके बहुत दिनोंके बाद, जब यहोवा ने इस्राएलियोंको उनके चारोंओर के
शत्रुओं से विश्रम दिया, और यहोशू बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया, 2 तब यहोशू
सब इस्राएलियोंको, अर्यात् पुरनियों, मुख्य पुरूषों, न्यायियों, और सरदारोंको
बुलवाकर कहने लगा, मैं तो अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूं; 3 और तुम
ने देखा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियोंसे क्या
क्या किया है, क्योंकि जो तुम्हारी ओर लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर

यहोवा है। 4 देखो, मैं ने इन बची हुई जातियोंको चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे
गोत्रोंका भाग कर दिया है; और यरदन से लेकर सूर्यास्त की ओर के बड़े समुद्र
तक रहनेवाली उन सब जातियोंको भी ऐसा ही दिया है, जिनको मैं ने काट डाला
है। 5 और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको तुम्हारे साम्हने से उनके देश से
निकाल देगा; और तुम अपके परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उनके देश के
अधिक्कारनी हो जाओगे। 6 इसलिथे बहुत हियाव बान्धकर, जो कुछ मूसा की
व्यवस्या की पुस्तक में लिखा है उसके पूरा करने में चौकसी करना, उस से न तो
दाहिने मुड़ना और न बाएं। 7 थे जो जातियां तुम्हारे बीच रह गई हैं इनके बीच न
जाना, और न इनके देवताओं के नामोंकी चर्चा करना, और न उनकी शपय
खिलाना, और न उनकी उपासना करना, और न उनको दण्डवत् करना, 8 परन्तु
जैसे आज के दिन तक तुम अपके परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लवलीन रहते हो,
वैसे ही रहा करना। 9 यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जतियां
निकाली हैं; और तुम्हारे साम्हने आज के दिन तक कोई ठहर नहीं सका। 10 तुम
में से एक मनुष्य हजार मनुष्योंको भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
अपके वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है। 11 इसलिथे अपके परमेश्वर
यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना। 12 क्योंकि यदि तुम किसी रीति
यहोवा से फिरकर इन जातियोंके बाकी लोगोंसे मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे
हुए रहते थें, और इन से ब्याह शादी करके इनके साय समधियाना रिश्ता जोड़ो,
13 तो निश्चय जान लो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियोंको
तुम्हारे सामहने से नहीं निकालेगा; और थे तुम्हारे लिथे जाल और फंदे, और
तुम्हारे पांजरोंके लिथे कोड़े, और तुम्हारी आंखोंमें कांटे ठहरेगी, और अन्त में

तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है नष्ट हो
जाओगे। 14 सुनो, मैं तो अब सब संसारियोंकी गति पर जानेवाला हूं, और तुम
सब अपके अपके हृदय और मन में जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे
परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।
15 तो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी
है, वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर घटाते घटाते तुम को इस
अच्छी भूमि के ऊपर से, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है,
सत्यानाश कर डालेगा। 16 जब तुम उस वाचा को, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने तुम को आज्ञा देकर अपके साय बन्धाया है, उल्लंघन करके पराथे देवताओं की
उपासना और उनको दण्डवत् करने लगो, तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा,
और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उस ने तुम को दिया है शीघ्र नाश जो
जाओगे।।

यहोशू 24

1 फिर यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रोंको शकेम में इकट्ठा किया, और इस्राएल
के वृद्ध लोगों, और मुख्य पुरूषों, और न्यायियों, और सरदारोंको बुलवाया; और वे
परमेश्वर के साम्हने उपस्यित हुए। 2 तब यहोशू ने उन सब लोगोंसे कहा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि प्राचीन काल में इब्राहीम
और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते
हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे। 3 और मैं ने तुम्हारे मूलपुरूष इब्राहीम
को महानद के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्यानोंमें फिराया, और

उसका वंश बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया; 4 फिर मैं ने इसहाक को याकूब
और एसाव दिया। और एसाव को मैं ने सेईर नाम पहाड़ी देश दिया कि वह उसका
अधिक्कारनी हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतोंसमेत मिस्र को गया। 5 फिर मैं ने मूसा
और हारून को भेजकर उन सब कामोंके द्वारा जो मैं ने मिस्र में किए उस देश को
मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया। 6 और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र
में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुंचे; और मिस्रियोंने रय और
सवारोंको संग लेकर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया। 7 और जब तुम ने
यहोवा की दोहाई दी तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियोंके बीच में अन्धिक्कारनो
कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया; और जो कुछ मैं ने
मिस्र में किया उसे तुम लोगोंने अपक्की आंखोंसे देखा; फिर तुम बहुत दिन तक
जंगल में रहे। 8 तब मैं तुम को उन एमोरियोंके देश में ले आया, जो यरदन के उस
पार बसे थे; और वे तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया, और तुम
उनके देश के अधिक्कारनी हो गए, और मैं ने उनको तुम्हारे साम्हने से
सत्यानाश कर डाला। 9 फिर मोआब के राजा सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर
इस्राएल से लड़ा; और तुम्हें शाप देने के लिथे बोर के पुत्र बिलाम को बुलवा भेजा,
10 परन्तु मैं ने बिलाम की सुनने के लिथे नाहीं की; वह तुम को आशीष ही
आशीष देता गया; इस प्रकार मैं ने तुम को उसके हाथ से बचाया। 11 तब तुम
यरदन पार होकर यरीहो के पास आए, और जब यरीहो के लोग, और एमोरी,
परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिब्बी, और यबूसी तुम से लड़े, तब मैं ने उन्हें
तुम्हारे वश में कर दिया। 12 और मैं ने तुम्हारे आगे बर्रोंको भेजा, और उन्होंने
एमोरियोंके दोनोंराजाओं को तुम्हारे साम्हने से भगा दिया; देखो, यह तुम्हारी

तलवार वा धनुष का काम नहीं हुआ। 13 फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में
तुम ने परिश्रम न किया या, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया या,
और तुम उन में बसे हो; और जिन दाख और जलपाई के बगीचोंके फल तुम खाते
हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया या। 14 इसलिथे अब यहोवा का भय मानकर उसकी
सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा
महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो।
15 और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम
किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद
के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियोंके देवताओं की सेवा करो जिनके देश में
तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपके घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा। 16
तब लोगोंने उत्तर दिया, यहोवा को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा करनी हम से
दूर रहे; 17 क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हम को और हमारे पुरखाओं
को दासत्व के घर, अर्यात् मिस्र देश से निकाल ले आया, और हमारे देखते बड़े
बड़े आश्चर्य कर्म किए, और जिस मार्ग पर और जितनी जातियोंके मध्य में से हम
चले आते थे उन में हमारी रझा की; 18 और हमारे साम्हने से इस देश में
रहनेवाली एमोरी आदि सब जातियोंको निकाल दिया है; इसलिथे हम भी यहोवा
की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है। 19 यहोशू ने लोगोंसे कहा, तुम से
यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन
रखनेवाला ईश्वर है; वह तुम्हारे अपराध और पाप झमा न करेगा। 20 यदि तुम
यहोवा को त्यागकर पराए देवताओं की सेवा करने लगोगे, तो यद्दपि वह तुम्हारा
भला करता आया है तौभी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा और तुम्हारा अन्त

भी कर डालेगा। 21 लोगोंने यहोशू से कहा, नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे। 22
यहोशू ने लोगोंसे कहा, तुम आप ही अपके साझी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा
करनी अंगीकार कर ली है। उन्होंने कहा, हां, हम साझी हैं। 23 यहोशू ने कहा,
अपके बीच पराए देवताओं को दूर करके अपना अपना मन इस्राएल के परमेश्वर
की ओर लगाओ। 24 लोगोंने यहोशू से कहा, हम तो अपके परमेश्वर यहोवा ही की
सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे। 25 तब यहोशू ने उसी दिन उन लोगोंसे
वाचा बन्धाई, और शकेम में उनके लिथे विधि और नियम ठहराया।। 26 यह
सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्या की पुस्तक में लिख दिया; और एक
बड़ा पत्यर चुनकर वहां उस बांजवृझ के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्र
स्यान में या। 27 तब यहोशू ने सब लोगोंसे कहा, सुनो, यह पत्यर हम लोगोंका
साझी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहें हैं उन्हें इस ने सुना है;
इसलिथे यह तुम्हारा साझी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपके परमेश्वर से मुकर
जाओ। 28 तब यहोशू ने लोगोंको अपके अपके निज भाग पर जाने के लिथे विदा
किया।। 29 इन बातोंके बाद यहोवा का दास, नून का पुत्र यहोशू, एक सौ दस वर्ष
का होकर मर गया। 30 और उसको तिम्नत्सेरह में, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में
गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। 31 और
यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और
जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिथे कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन
भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे। 32 फिर यूसुफ की हड्डियां जिन्हें
इस्राएली मिस्र से ले आए थे वे शकेम की भूमि के उस भाग में गाड़ी गईं, जिसे
याकूब ने शकेम के पिता हामोर से एक सौ चांदी के सिक्कोंमें मोल लिया या;

इसलिथे वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया। 33 और हारून का पुत्र
एलीआज़र भी मर गया; और उसको एप्रैम के पहाड़ी देश में उस पहाड़ी पर मिट्टी
दी गई, जो उसके पुत्र पीनहास के नाम पर गिबत्पीनहास कहलाती है और उसको
दे दी गई यी।।

न्यायियों 1

1 यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियोंने यहोवा से पूछा, कि कनानियोंके विरूद्ध
लड़ने को हमारी ओर से पहिले कौन चढ़ाई करेगा? 2 यहोवा ने उत्तर दिया, यहूदा
चढ़ाई करेगा; सुनो, मैं ने इस देश को उसके हाथ में दे दिया है। 3 तब यहूदा ने
अपके भाई शिमोन से कहा, मेरे संग मेरे भाग में आ, कि हम कनानियोंसे लड़ें;
और मैं भी तेरे भाग में जाऊंगा। सो शिमोन उसके संग चला। 4 और यहूदा ने
चढ़ाई की, और यहोवा ने कनानियोंऔर परिज्जियोंको उसके हाथ में कर दिया;
तब उन्होंने बेजेक में उन में से दस हजार पुरूष मार डाले। 5 और बेजेक में
अदोनीबेजेक को पाकर वे उस से लड़े, और कनानियोंऔर परिज्जियोंको मार
डाला। 6 परन्तु अदोनीबेजेक भागा; तब उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़
लिया, और उसके हाथ पांव के अंगूठे काट डाले। 7 तब अदोनीबेजेक ने कहा, हाथ
पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेज के नीचे टुकड़े बीनते थे; जैसा मैं ने
किया या, वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है। तब वे उसे यरूशलेम को ले
गए और वहां वह मर गया।। 8 और यहूदियोंने यरूशलेम से लड़कर उसे ले लिया,
और तलवार से उसके निवासिक्कों मार डाला, और नगर को फूंक दिया। 9 और
तब यहूदी पहाड़ी देश और दक्खिन देश, और नीचे के देश में रहनेवाले

कनानियोंसे लड़ने को गए। 10 और यहूदा ने उन कनानियोंपर चढ़ाई की जो
हेब्रोन में रहते थे (हेब्रोन का नाम तो पूर्वकाल में किर्यतर्बा या); और उन्होंने शेशै,
अहीमन, और तल्मै को मार डाला। 11 वहां से उस ने जाकर दबीर के
निवासियोंपर चढ़ाई की। (दबीर का नाम तो पूर्वकाल में किर्यत्सेपेर या।) 12 तब
कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर को मारके ले ले उसे मैं अपक्की बेटी अकसा को
ब्याह दूंगा। 13 इस पर कालेब के छोटे भाई कनजी ओत्नीएल ने उसे ले लिया;
और उस ने उसे अपक्की बेटी अकसा को ब्याह दिया। 14 और जब वह ओत्नीएल
के पास आई, तब उस ने उसको अपके पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा; फिर
वह अपके गदहे पर से उतरी, तब कालेब ने उस से पूछा, तू क्या चाहती है? 15
वह उस से बोली मुझे आशीर्वाद दे; तू ने मुझे दक्खिन देश तो दिया है, तो जल के
सोते भी दे। इस प्रकार कालेब ने उसको ऊपर और नीचे के दोनोंसोते दे दिए।। 16
और मूसा के साले, एक केनी मनुष्य के सन्तान, यहूदी के संग खजूर वाले नगर
से यहूदा के जंगल में गए जो अराद के दक्खिन की ओर है, और जाकर इस्राएल
लोगोंके साय रहने लगे। 17 फिर यहूदा ने अपके भाई शिमोन के संग जाकर
सपत में रहनेवाले कनानियोंको मार लिया, और उस नगर को सत्यानाश कर
डाला। इसलिथे उस नगर का नाम होर्मा पड़ा। 18 और यहूदा ने चारोंओर की भूमि
समेत अज्जा, अशकलोन, और एक्रोन को ले लिया। 19 और यहोवा यहूदा के
साय रहा, इसलिथे उस ने पहाड़ी देश के निवासिक्कों निकाल दिया; परन्तु तराई
के निवासियोंके पास लोहे के रय थे, इसलिथे वह उन्हें न निकाल सका। 20 और
उन्होंने मूसा के कहने के अनुसार हेब्रोन कालेब को दे दिया: और उस ने वहां से
अनाक के तीनोंपुत्रोंको निकाल दिया। 21 और यरूशलेम में रहनेवाले यबूसिक्कों

बिन्यामीनियोंने न निकाला; इसलिथे यबूसी आज के दिन तक यरूशलेम में
बिन्यामीनियोंके संग रहते हैं।। 22 फिर यूसुफ के घराने ने बेतेल पर चढ़ाई की;
और यहोवा उनके संग या। 23 और यूसुफ के घराने ने बेतेल का भेद लेने को लोग
भेजे। (और उस नगर का नाम पूर्वकाल में लूज या।) 24 और पहरूओं ने एक
मनुष्य को उस नगर से निकलते हुए देखा, और उस से कहा, नगर में जाने का
मार्ग हमें दिखा, और हम तुझ पर दया करेंगे। 25 जब उस ने उन्हें नगर में जाने
का मार्ग दिखाया, तब उन्होंने नगर को तो तलवार से मारा, परन्तु उस मनुष्य
को सारे घराने समेत छोड़ दिया। 26 उस मनुष्य ने हित्तियोंके देश में जाकर एक
नगर बसाया, और उसका नाम लूज रखा; और आज के दिन तक उसका नाम
वही है।। 27 मनश्शे ने अपके अपके गांवोंसमेत बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम,
और मगिद्दोंके निवासिक्कों न निकाला; इस प्रकार कनानी उस देश में बसे ही
रहे। 28 परन्तु जब इस्राएली सामर्यी हुए, तब उन्होंने कनानियोंसे बेगारी ली,
परन्तु उन्हें पूरी रीति से न निकाला।। 29 और एप्रैम ने गेजेर में रहनेवाले
कनानियोंको न निकाला; इसलिथे कनानी गेजेर में उनके बीच में बसे रहे।। 30
जबलून ने कित्रोन और नहलोल के निवासिक्कों न निकाला; इसलिथे कनानी
उनके बीच में बसे रहे, और उनके वश में हो गए।। 31 आशेर ने अक्को, सीदोन,
अहलाब, अकजीब, हेलवा, अपीक, और रहोब के निवासियोंके बीच में बस गए;
क्योंकि उन्होंने उनको न निकाला या।। 32 इसलिथे आशेरी लोग देश के निवासी
कनानियोंके बीच में बस गए; क्योंकि उन्होंने उनको न निकाला या।। 33 नप्ताली
ने बेतशेमेश और बेतनात के निवासिक्कों न निकाला, परन्तु देश के निवासी
कनानियोंके बीच में बस गए; तौभी बेतशेमेश और बेतनात के लोग उनके वश में

हो गए।। 34 और एमोरियोंने दानियोंको पहाड़ी देश में भगा दिया, और तराई में
आने न दिया; 35 इसलिथे एमोरी हेरेस नाम पहाड़, अय्यलोन और शालबीम में
बसे ही रहे, तौभी यूसुफ का घराना यहां तक प्रबल हो गया कि वे उनके वश में हो
गए। 36 और एमोरियोंके देश का सिवाना अक्रब्बीम नाम पर्वत की चढ़ाई से
आरम्भ करके ऊपर की ओर या।।

न्यायियों 2

1 और यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम को जाकर कहने लगा, कि मैं ने तुम
को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुंचाया है, जिसके विषय में मैं ने तुम्हारे
पुरखाओं से शपय खाई यी। और मैं ने कहा या, कि जो वाचा मैं ने तुम से बान्धी
है, उसे मैं कभी न तोड़ूंगा; 2 इसलिथे तुम इस देश के निवासिक्कों वाचा न
बान्धना; तुम उनकी वेदियोंको ढा देना। परन्तु तुम ने मेरी बात नहीं मानी। तुम
ने ऐसा क्योंकिया है? 3 इसलिथे मैं कहता हूं, कि मैं उन लोगोंको तुम्हारे साम्हने
से न निकालूंगा; और वे तुम्हारे पांजर में कांटे, और उनके देवता तुम्हारे लिथे
फंदे ठहरेंगे। 4 जब यहोवा के दूत ने सारे इस्राएलियोंसे थे बातें कहीं, तब वे लोग
चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। 5 और उन्होंने उस स्यान का नाम बोकीम रखा।
और वहां उन्होंने यहोवा के लिथे बलि चढ़ाया।। 6 जब यहोशू ने लोगोंको विदा
किया या, तब इस्राएली देश को अपके अधिक्कारने में कर लेने के लिथे अपके
अपके निज भाग पर गए। 7 और यहोशू के जीवन भर, और उन वृद्ध लोगोंके
जीवन भर जो यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने
इस्राएल के लिथे कैसे कैसे बड़े काम किए हैं, इस्राएली लोग यहोवा की सेवा करते

रहे। 8 निदान यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष का होकर मर
गया। 9 और उसको तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की
उत्तर अलंग पर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। 10 और उस पीढ़ी के सब लोग
भी अपके अपके पितरोंमें मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके
लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उस ने इस्राएल के लिथे
किया या।। 11 इसलिथे इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है,
और बाल नाम देवताओं की उपासना करने लगे; 12 वे अपके पूर्वजोंके परमेश्वर
यहोवा को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया या, त्यागकर पराथे देवताओं की
उपासना करने लगे, और उन्हें दण्डवत् किया; और यहोवा को रिस दिलाई। 13 वे
यहोवा को त्याग कर के बाल देवताओं और अशतोरेत देवियोंकी उपासना करने
लगे। 14 इसलिथे यहोवा का कोप इस्राएलियोंपर भड़क उठा, और उस ने उनको
लुटेरोंके हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे; और उस ने उनको चारोंओर के
शत्रुओं के आधीन कर दिया; और वे फिर अपके शत्रुओं के साम्हने ठहर न सके।
15 जहां कहीं वे बाहर जाते वहां यहोवा का हाथ उनकी बुराई में लगा रहता या,
जैसे यहोवा ने उन से कहा या, वरन यहोवा ने शपय खाई यी; इस प्रकार से बड़े
संकट में पड़ गए। 16 तौभी यहोवा उनके लिथे न्यायी ठहराता या जो उन्हें
लूटनेवाले के हाथ से छुड़ाते थे। 17 परन्तु वे अपके न्यायियोंकी भी नहीं मानते
थे; वरन व्यभिचारिन की नाईं पराथे देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत्
करते थे; उनके पूर्वज जो यहोवा की आज्ञाएं मानते थे, उनकी उस लीक को
उन्होंने शीघ्र ही छोड़ दिया? और उनके अनुसार न किया। 18 और जब जब
यहोवा उनके लिथे न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर

उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता या; क्योंकि यहोवा उनका
कराहना जो अन्धेर और उपद्रव करनेवालोंके कारण होता या सुनकर दु:खी या।
19 परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराथे देवताओं के पीछे चलकर
उनकी उपासना करते, और उन्हें दण्डवत् करके अपके पुरखाओं से अधिक बिगड़
जाते थे; और अपके बुरे कामोंऔर हठीली चाल को नहीं छोड़ते थे। 20 इसलिथे
यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; और उस ने कहा, इस जाति ने उस वाचा
को जो मैं ने उनके पूर्वजोंसे बान्धी यी तोड़ दिया, और मेरी बात नहीं मानी, 21
इस कारण जिन जातियोंको यहोशू मरते समय छोड़ गया है उन में से मैं अब
किसी को उनके साम्हने से न निकालूंगा; 22 जिस से उनके द्वारा मैं
इस्राएलियोंकी पक्कीझा करूं, कि जैसे उनके पूर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही
थे भी चलेंगे कि नहीं। 23 इसलिथे यहोवा ने उन जातियोंको एकाएक न निकाला,
वरन रहने दिया, और उस ने उन्हें यहोशू के हाथ में भी उनको न सौंपा या।।

न्यायियों 3

1 इस्राएलियोंमें से जितने कनान में की लड़ाईयोंमें भागी न हुए थे, उन्हें परखने
के लिथे यहोवा ने इन जातियोंको देश में इसलिथे रहने दिया; 2 कि पीढ़ी पीढ़ी के
इस्राएलियोंमें से जो लड़ाई को पहिले न जानते थे वे सीखें, और जान लें, 3 अर्यात्
पांचो सरदारोंसमेत पलिश्तियों, और सब कनानियों, और सीदोनियों, और
बालहेर्मोन नाम पहाड़ से लेकर हमात की तराई तक लबानोन पर्वत में रहनेवाले
हिव्वियोंको। 4 थे इसलिथे रहने पाए कि उनके द्वारा इस्राएलियोंकी बात में
पक्कीझा हो, कि जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा के द्वारा उनके पूर्वजोंको दिलाई यीं,

उन्हें वे मानेंगे वा नहीं। 5 इसलिथे इस्राएली कनानियों, हित्तियों, एमोरियों,
परिज्जियों, हिव्वियों, और यबूसियोंके बीच में बस गए; 6 तब वे उनकी बेटियां
ब्याह में लेने लगे, और अपक्की बेटियां उनके बेटोंको ब्याह मे देने लगे; और
उनके देवताओं की भी उपासना करने लगे।। 7 इस प्रकार इस्राएलियोंने यहोवा
की दृष्टि में बुरा किया, और अपके परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नाम देवताओं
और अशेरा नाम देवियोंकी उपासना करने लग गए। 8 तब यहोवा का क्रोध
इस्राएलियोंपर भड़का, और उस ने उनको अरम्नहरैम के राजा कूशत्रिशातैम के
अधीन कर दिया; सो इस्राएली आठ वर्ष तक कूशत्रिशातैम के अधीन में रहे। 9
तब इस्राएलियोंने यहोवा की दोहाई दी, और उसने इस्राएलियोंके लिथे कालेब के
छोटे भाई ओत्नीएल नाम एक कनजी छुड़ानेवाले को ठहराया, और उस ने उनको
छुड़ाया। 10 उस में यहोवा का आत्मा समाया, और वह इस्राएलियोंका न्यायी बन
गया, और लड़ने को निकला, और यहोवा ने अराम के राजा कूशत्रिशातैम को
उसके हाथ में कर दिया; और वह कूशत्रिशातैम पर जयवन्त हुआ। 11 तब
चालीस वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। और उन्हीं दिनोंमें कन्जी ओत्नीएल मर
गया।। 12 तब इस्राएलियोंने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; और यहोवा ने
मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर प्रबल किया, क्योंकि उन्होंने यहोवा की
दृष्टि में बुरा किया या। 13 इसलिथे उस ने अम्मोनियोंऔर अमालेकियोंको अपके
पास इकट्ठा किया, और जाकर इस्राएल को मार लिया; और खजूरवाले नगर को
अपके वश में कर लिया। 14 तब इस्राएली अठारह वर्ष तक मोआब के राजा
एग्लोन के अधीन में रहे। 15 फिर इस्राएलियोंने यहोवा की दोहाई दी, और उस ने
गेरा के पुत्र एहूद नाम एक बिन्यामीनी को उनका छुड़ानेवाला ठहराया; वह

बैहत्या या। इस्राएलियोंने उसी के हाथ से मोआब के राजा एग्लोन के पास कुछ
भेंट भेजी। 16 एहूद ने हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार बनवाई यी, और
उसको अपके वस्त्र के नीचे दाहिनी जांघ पर लटका लिया। 17 तब वह उस भेंट को
मोआब के राजा एग्लोन के पास जो बड़ा मोटा पुरूष या ले गया। 18 जब वह भेंट
को दे चुका, तब भेंट के लानेवाले को विदा किया। 19 परन्तु वह आप गिलगाल
के निकट की खुदी हुई मूरतोंके पास लौट गया, और एग्लोन के पास कहला भेजा,
कि हे राजा, मुझे तुझ से एक भेद की बात कहनी है। तब राजा ने कहा, योड़ी देर
के लिथे बाहर जाओ। तब जितने लोग उसके पास उपस्यित थे वे सब बाहर चले
गए। 20 तब एहूद उसके पास गया; वह तो अपक्की एक हवादार अटारी में
अकेला बैठा या। एहूद ने कहा, परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात कहनी
है। तब वह गद्दी पर से उठ खड़ा हुआ। 21 इतने में एहूद ने अपना बायां हाथ
बढ़ाकर अपक्की दाहिनी जांघ पर से तलवार खींचकर उसकी तोंद में घुसेड़ दी;
22 और फल के पीछे मूठ भी पैठ गई, ओर फल चर्बी में धंसा रहा, क्योंकि उस ने
तलवार को उसकी तोंद में से न निकाला; वरन वह उसके आरपार निकल गई।
23 तब एहूद छज्जे से निकलकर बाहर गया, और अटारी के किवाड़ खींचकर
उसको बन्द करके ताला लगा दिया। 24 उसके निकल जाते ही राजा के दास
आए, तो क्या देखते हैं, कि अटारी के किवाड़ोंमें ताला लगा है; इस कारण वे बोले,
कि निश्चय वह हवादार कोठरी में लघुशंका करता होगा। 25 वे बाट जोहते जोहते
लज्जित हो गए; तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता, उन्होंने
कुंजी लेकर किवाड़ खोले तो क्या देखा, कि उनका स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है।
26 जब तक वे सोच विचार कर ही रहे थे तब तक एहूद भाग निकला, और खूदी

हुई मूरतोंकी परली ओर होकर सेइरे में जाकर शरण ली। 27 वहां पहुंचकर उस ने
एप्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूंका; तब इस्राएली उसके संग होकर पहाड़ी देश
से उसके पीछे पीछे नीचे गए। 28 और उस ने उन से कहा, मेरे पीछे पीछे चले
आओ; क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हारे हाथ में कर दिया है।
तब उन्होंने उसके पीछे पीछे जाके यरदन के घाटोंको जो मोआब देश की ओर है
ले लिया, और किसी को उतरने न दिया। 29 उस समय उन्होंने कोई दस हजार
मोआबियोंको मार डाला; वे सब के सब हृष्ट पुष्ट और शूरवीर थे, परन्तु उन में से
एक भी न बचा। 30 इस प्रकार उस समय मोआब इस्राएल के हाथ के तले दब
गया। तब अस्सी वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही।। 31 उसके बाद अनात का पुत्र
शमगर हुआ, उस ने छ: सौ पलिश्ती पुरूषोंको बैल के पैने से मार डाला; इस
कारण वह भी इस्राएल का छुड़ानेवाला हुआ।।

न्यायियों 4

1 जब एहूद मर गया तब इस्राएलियोंने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। 2
इसलिथे यहोवा ने उनको हासोर में विराजनेवाले कनान के राजा याबीन के
अधीन में कर दिया, जिसका सेनापति सीसरा या, जो अन्यजातियोंकी हरोशेत
का निवासी या। 3 तब इस्राएलियोंने यहोवा की दोहाई दी; क्योंकि सीसरा के पास
लोहे के नौ सौ रय थे, और वह इस्राएलियोंपर बीस वर्ष तक बड़ा अन्धेर करता
रहा। 4 उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा जो नबिया यी इस्राएलियोंका न्याय
करती यी। 5 वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच में दबोरा के
खजूर के तले बैठा करती यी, और इस्राएली उसके पास न्याय के लिथे जाया

करते थे। 6 उस ने अबीनोअम के पुत्र बाराक को केदेश नप्ताली में से बुलाकर
कहा, क्या इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दी, कि तू जाकर ताबोर
पहाड़ पर चढ़ और नप्तालियोंऔर जबूलूनियोंमें के दस हजार पुरूषोंको संग ले
जा? 7 तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा के रयोंऔर भीड़भाड़ समेत कीशोन नदी
तक तेरी ओर खींच ले आऊंगा; और उसको तेरे हाथ में कर दूंगा। 8 बाराक ने उस
से कहा, यदि तू मेरे संग चलेगी तो मैं जाऊंगा, नहीं तो न जाऊंगा। 9 उस ने कहा,
नि:सन्देह मैं तेरे संग चलूंगी; तौभी यह यात्रा से तेरी तो कुछ बढ़ाई न होगी,
क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा। तब दबोरा उठकर बाराक
के संग केदेश को गई। 10 तब बाराक ने जबूलून और नप्ताली के लोगोंको केदेश
में बुलवा लिया; और उसके पीछे दस हजार पुरूष चढ़ गए; और दबोरा उसके संग
चढ़ गई। 11 हेबेर नाम केनी ने उन केनियोंमें से, जो मूसा के साले होबाब के वंश
के थे, अपके को अलग करके केदेश के पास के सानन्नीम के बांजवृझ तक जाकर
अपना डेरा वहीं डाला य। 12 जब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम
का पुत्र बाराक ताबोर पहाड़ पर चढ़ गया है, 13 तब सीसरा ने अपके सब रय, जो
लोहे के नौ सौ रय थे, और अपके संग की सारी सेना को अन्यजातियोंके हरोशेत
के कीशोन नदी पर बुलवाया। 14 तब दबोरा ने बाराक से कहा, उठ! क्योंकि आज
वह दिन है जिस में यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा। क्या यहोवा तेरे आगे
नहीं निकला है? इस पर बाराक और उसके पीछे पीछे दस हजार पुरूष ताबोर
पहाड़ से उतर पके। 15 तब यहोवा ने सारे रयोंवरन सारी सेना समेत सीसरा को
तलवार से बाराक के साम्हने घबरा दिया; और सीसरा रय पर से उतरके पांव पांव
भाग चला। 16 और बाराक ने अन्यजातियोंके हरोशेत तक रयोंऔर सेना का

पीछा किया, और तलवार से सीसरा की सारी सेना नष्ट की गई; और एक भी
मनुष्य न बचा।। 17 परन्तु सीसरा पांव पांव हेबेर केनी की स्त्री याएल के डेरे को
भाग गया; क्योंकि हासोर के राजा याबीन और हेबेर केनी में मेल या। 18 तब
याएल सीसरा की भेंट के लिथे निकलकर उस से कहने लगी, हे मेरे प्रभु, आ, मेरे
पास आ, और न डर। तब वह उसके पास डेरे में गया, और उस ने उसके ऊपर
कम्बल डाल दिया। 19 तब सीसरा ने उस से कहा, मुझे प्यास लगी है, मुझे योड़ा
पानी पिला। तब उस ने दूध की कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया, और उसको
ओढ़ा दिया। 20 तब उस ने उस से कहा, डेरे के द्वार पर खड़ी रह, और यदि कोई
आकर तुझ से पूछे, कि यहां कोई पुरूष है? तब कहना, कोई भी नहीं। 21 इसके
बाद हेबेर की स्त्री याएल ने डेरे की एक खूंटी ली, और अपके हाथ में एक हयौड़ा भी
लिया, और दबे पांव उसके पास जाकर खूंटी को उसकी कलपक्की में ऐसा ठोक
दिया कि खूंटी पार होकर भूमि में धंस गई; वह तो यका या ही इसलिथे गहरी नींद
में सो रहा या। सो वह मर गया। 22 जब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ
आया, तब याएल उस से भेंट करने के लिथे निकली, और कहा, इधर आ, जिसका
तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊंगी। तब उस ने उसके साय जाकर क्या देखा;
कि सीसरा मरा पड़ा है, और वह खूंटी उसकी कनपक्की में गड़ी है। 23 इस प्रकार
परमेश्वर ने उस दिन कनान के राजा याबीन को इस्राएलियोंके साम्हने नीचा
दिखाया। 24 और इस्राएली कनान के राजा याबीन पर प्रबल होते गए, यहां तक
कि उन्होंने कनान के राजा याबीन को नष्ट कर डाला।।

न्यायियों 5

1 उसी दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया, 2 कि
इस्राएल के अगुवोंने जो अगुवाई की और प्रजा जो अपक्की ही इच्छा से भरती
हुई, इसके लिथे यहोवा को धन्य कहो! 3 हे राजाओ, सुनो; हे अधिपतियोंकान
लगाओ, मैं आप यहोवा के लिथे गीत गाऊंगी; इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं
भजन करूंगी।। 4 हे यहोवा, जब तू सेईर से निकल चला, जब तू ने एदोम के देश
से प्रस्यान किया, तब पृय्वी डोल उठी, और आकाश टूट पड़ा, बादल से भी जल
बरसने लगा।। 5 यहोवा के प्रताप से पहाड़, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के प्रताप
से वह सीनै पिघलकर बहने लगा। 6 अनात के पुत्र शमगर के दिनोंमें, और याएल
के दिनोंमें सड़कें सूनी पक्की यीं, और बटोही पगदंडियोंसे चलते थे।। 7 जब तक
मैं दबोरा न उठी, जब तक मैं इस्राएल में माता होकर न उठी, तब तक गांव सूने
पके थे।। 8 नथे नथे देवता माने गए, उस समय फाटकोंमें लड़ाई होती यी। क्या
चालीस हजार इस्राएलियोंमें भी ढ़ाल वा बर्छी कहीं देखने में आती यी? 9 मेरा मन
इस्राएल के हाकिमोंकी ओर लगा है, जो प्रजा के बीच में अपक्की ही इच्छा से
भरती हुए। यहोवा को धन्य कहो।। 10 हे उजली गदहियोंपर चढ़नेवालो, हे
फर्शोंपर विराजनेवालो, ध्यान रखो।। 11 परघटोंके आस पास धनुर्धारियोंकी बात
के कारण, वहां वे यहोवा के धर्ममय कामोंका, इस्राएल के लिथे उसके धर्ममय
कामोंका बखान करेंगे। उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकोंके पस गए।।
12 जाग, जाग, हे दबोरा! जाग, जाग, गीत सुना! हे बाराक, उठ, हे अबीनोअम के
पुत्र, अपके बन्धुओं को बन्धुआई में ले चल। 13 उस समय योड़े से रईस प्रजा
समेत उतर पके; यहोवा शूरवीरोंके विरूद्ध मेरे हित उतर आया। 14 एप्रैम में से वे
आए जिसकी जड़ अमालेक में है; हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलोंमें, माकीर में से

हाकिम, और जबूलून में से सेनापति दण्ड लिए हुए उतरे; 15 और इस्साकार के
हाकिम दबोरा के संग हुए, जैसा इस्साकार वैसा ही बाराक भी या; उसके पीछे लगे
हुए वे तराई में फपटकर गए। रूबेन की नदियोंके पास बड़े बड़े काम मन में ठाने
गए।। 16 तू चरवाहोंका सीटी बजाना सुनने को भेड़शालोंके बीच क्योंबैठा रहा?
रूबेन की नदियोंके पास बड़े बड़े काम सोचे गए।। 17 गिलाद यरदन पार रह गया;
और दान क्योंजहाजोंमें रह गया? आशेर समुद्र के तीर पर बैठा रहा, और उसकी
खाडिय़ोंके पास रह गया।। 18 जबलून अपके प्राण पर खेलनेवाले लोग ठहरे;
नप्ताली भी देश के ऊंचे ऊंचे स्यानोंपर वैसा ही ठहरा। 19 राजा आकर लड़े, उस
समय कनान के राजा मगिद्दो के सोतोंके पास तानाक में लड़े; पर रूपयोंका कुछ
लाभ न पाया।। 20 आकाश की ओर से भी लड़ाई हुई; वरन ताराओं ने अपके
अपके मण्डल से सीसरा से लड़ाई की।। 21 कीशोन नदी ने उनको बहा दिया,
अर्यात् वही प्राचीन नदी जो कीशोन नदी है। हे मन, हियाव बान्धे आगे बढ़।। 22
उस समय घोड़े के खुरोंसे टाप का शब्द होने लगा, उनके बलिष्ट घोड़ोंके कूदने से
यह हूआ।। 23 यहोवा का दूत कहता है, कि मेरोज को शाप दो, उसके
निवासिक्कों भारी शाप दो, क्योंकि वे यहोवा की सहाथता करने को, शूरवीरोंके
विरूद्ध यहोवा की सहाथता करने को न आए।। 24 सब स्त्रियोंमें से केनी हेबेर की
स्त्री याएल धन्य ठहरेगी; डेरोंमें से रहनेवाली सब स्त्रियोंमें वह धन्य ठहरेगी।। 25
सीसरा ने पानी मांगा, उस ने दूध दिया, रईसोंके योग्य बर्तन में वह मक्खन ले
आई।। 26 उस ने अपना हाथ खूंटी की ओर अपना दहिना हाथ बढ़ई के हयौड़े की
ओर बढ़ाया; और हयौड़े से सीसरा को मारा, उसके सिर को फोड़ डाला, और
उसकी कनपक्की को आरपार छेद दिया।। 27 उस स्त्री के पांवो पर वह फुका, वह

गिरा, वह पड़ा रहा; उस स्त्री के पांवो पर वह फुका, वह गिरा; जहां फुका, वहीं मरा
पड़ा रहा।। 28 खिड़की में से एक स्त्री फांककर चिल्लाई, सीसरा की माता ने
फिलमिली की ओट से पुकारा, कि उसके रय के आने में इतनी देर क्योंलगी?
उसके रयोंके पहियोंको अबेर क्योंहुई है? 29 उसी बुद्धिमान प्रतिष्ठित स्त्रियोंने उसे
उत्तर दिया, वरन उस ने अपके आप को इस प्रकार उत्तर दिया, 30 कि क्या
उन्होंने लूट पाकर बांट नहीं ली? क्या एक एक पुरूष को एक एक वरन दो दो
कुंवारियां; और सीसरा को रंगे हुए वस्त्र की लूट, वरन बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र की
लूट, और लूटे हुओं के गले में दोनोंओर बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र नहीं मिले? 31 हे
यहोवा, तेरे सब शत्रु ऐसे ही नाश हो जाएं! परन्तु उसके प्रेमी लोग प्रताप के साय
उदय होते हुए सूर्य के समान तेजोमय हों।। फिर देश में चालीस वर्ष तक शान्ति
रही।।

न्यायियों 6

1 तब इस्राएलियोंने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, इसलिथे यहोवा ने उन्हें
मिद्यानियोंके वश में सात वर्ष कर रखा। 2 और मिद्यानी इस्राएलियोंपर प्रबल हो
गए। मिद्यानियोंके डर के मारे इस्राएलियोंने पहाड़ोंके गहिरे खड्डों, और गुफाओं,
और किलोंको अपके निवास बना लिए। 3 और जब जब इस्राएली बीज बोते तब
तब मिद्यानी और अमालेकी और पूर्वी लोग उनके विरूद्ध चढ़ाई करके 4 अज्जा
तक छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नाश कर डालते थे, और इस्राएलियोंके
लिथे न तो कुछ भोजनवस्तु, और न भेड़-बकरी, और न गाय-बैल, और न गदहा
छोड़ते थे। 5 क्योंकि वे अपके पशुओं और डोरोंको लिए हुए चढ़ाई करते, और

टिड्डियोंके दल के समान बहुत आते थे; और उनके ऊंट भी अनगिनत होते थे;
और वे देश को उजाड़ने के लिथे उस में आया करते थे। 6 और मिद्यानियोंके
कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़ गए; तब इस्राएलियोंने यहोवा की दोहाई दी।।
7 जब इस्राएलियोंने मिद्यानियोंके कारण यहोवा की दोहाई दी, 8 तब यहोवा ने
इस्राएलियोंके पास एक नबी को भेजा, जिस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, कि मैं तुम को मिस्र में से ले आया, और दासत्व के घर से
निकाल ले आया; 9 और मैं ने तुम को मिस्रियोंके हाथ से, वरन जितने तुम पर
अन्धेर करते थे उन सभोंके हाथ से छुड़ाया, और उनको तुम्हारे साम्हने से बरबस
निकालकर उनका देश तुम्हें दे दिया; 10 और मैं ने तुम से कहा, कि मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं; एमोरी लोग जिनके देश में तुम रहते हो उनके देवताओं का
भय न मानना। परन्तु तुम ने मेरा कहना नहीं माना।। 11 फिर यहोवा का दूत
आकर उस बांजवृझ के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का या, और
उसका पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूं इसलिथे फाड़ रहा या कि उसे
मिद्यानियोंसे छिपा रखे। 12 उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर
सूरमा, यहोवा तेरे संग है। 13 गिदोन ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, यदि
यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति क्योंपड़ती? और जितने
आश्चर्यकर्मोंका वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे, कि क्या यहोवा हम को
मिस्र से छुड़ा नहीं लाया, वे कहां रहे? अब तो यहोवा ने हम को त्याग दिया, और
मिद्यानियोंके हाथ कर दिया है। 14 तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा,
अपक्की इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियोंको मिद्यानियोंके हाथ से छुड़ाएगा;
क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा? 15 उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, मैं इस्राएल को

क्योंकर छुड़ाऊ? देख, मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है, फिर मैं अपके पिता
के घराने में सब से छोटा हूं। 16 यहोवा ने उस से कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा;
सो तू मिद्यानियोंको ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को। 17 गिदोन ने उस से
कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे इसका कोई चिन्ह दिखा कि तू ही
मुझ से बातें कर रहा है। 18 जब तक मैं तेरे पास फिर आकर अपक्की भेंट
निकालकर तेरे साम्हने न रखूं, तब तक तू यहां से न जा। उस ने कहा, मैं तेरे
लौटने तक ठहरा रहूंगा। 19 तब गिदोन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक
एपा मैदे की अखमीरी रोटियां तैयार कीं; तब मांस को टोकरी में, और जूस को
तसले में रखकर बांजवृझ के तले उसके पास ले जाकर दिया। 20 परमेश्वर के दूत
ने उस से कहा, मांस और अखमीरी रोटियोंको लेकर इस चट्टान पर रख दे, और
जूस को उण्डेल दे। उस ने ऐसा ही किया। 21 तब यहोवा के दूत ने अपके हाथ की
लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियोंको छूआ; और चट्टान से आग
निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियां भस्म हो गई; तब यहोवा का दूत
उसकी दृष्टि से अन्तरध्यान हो गया। 22 जब गिदोन ने जान लिया कि वह यहोवा
का दूत या, तब गिदोन कहने लगा, हाथ, प्रभु यहोवा! मैं ने तो यहोवा के दूत को
साझात देखा है। 23 यहोवा ने उस से कहा, तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू न
मरेगा। 24 तब गिदोन ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा
शालोम रखा। वह आज के दिन तक अबीएजेरियोंके ओप्रा में बनी है। 25 फिर
उसी रात को यहोवा ने गिदोन से कहा, अपके पिता का जवान बैल, अर्यात् दूसरा
सात वर्ष का बैल ले, और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे, और जो
अशेरा देवी उसके पास है उसे काट डाल; 26 और उस दृढ़ स्यान की चोटी पर

ठहराई हुई रीति से अपके परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना; तब उस दूसरे बैल
को ले, और उस अशेरा की लकड़ी जो तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढ़ा। 27
तब गिदोन ने अपके संग दस दासोंको लेकर यहोवा के वचन के अनुसार किया;
परन्तु अपके पिता के घराने और नगर के लोगोंके डर के मारे वह काम दिन को
न कर सका, इसलिथे रात में किया। 28 बिहान को नगर के लोग सवेरे उठकर
क्या देखते हैं, कि बाल की वेदी गिरी पक्की है, और उसके पास की अशेरा कटी
पक्की है, और दूसरा बैल बनाई हुई वेदी पर चढ़ाया हुआ है। 29 तब वे आपस में
कहने लगे, यह काम किस ने किया? और पूछपाछ और ढूंढ़-ढांढ़ करके वे कहने
लगे, कि यह योआश के पुत्र गिदोन का काम है। 30 तब नगर के मनुष्योंने
योआश से कहा, अपके पुत्र को बाहर ले आ, कि मार डाला जाए, क्योंकि उस ने
बाल की वेदी को गिरा दिया है, और उसके पास की अशेरा को भी काट डाला है।
31 योआश ने उन सभोंसे जो उसके साम्हने खड़े हुए थे कहा, क्या तुम बाल के
लिथे वाद विवाद करोगे? क्या तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके लिथे वाद
विवाद करे वह मार डाला जाएगा। बिहान तक ठहरे रहो; तब तक यदि वह
परमेश्वर हो, तो जिस ने उसकी वेदी गिराई है उस से वह आप ही अपना वाद
विवाद करे। 32 इसलिथे उस दिन गिदोन का नाम यह कहकर यरूब्बाल रखा
गया, कि इस ने जो बाल की वेदी गिराई है तो इस पर बाल आप वाद विवाद कर
ले।। 33 इसके बाद सब मिद्यानी और अमालेकी और पूर्वी इकट्ठे हुए, और पार
आकर यिज्रेल की तराई में डेरे डाले। 34 तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया;
और उस ने नरसिंगा फूंका, तब अबीएजेरी उसकी सुनने के लिथे इकट्ठे हुए। 35
फिर उस ने कुल मनश्शे के पास अपके दूत भेजे; और वे भी उसके समीप इकट्ठे

हुए। और उस ने आशेर, जबूलून, और नप्ताली के पास भी दूत भेजे; तब वे भी उस
से मिलने को चले आए। 36 तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि तू अपके वचन
के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा, 37 तो सुन, मैं एक भेड़ी की ऊन
खलिहान में रखूंगा, और यदि ओस केवल उस ऊन पर पके, और उसे छोड़ सारी
भूमि सूखी रह जाए, तो मैं जान लूंगा कि तू अपके वचन के अनुसार इस्राएल को
मेरे द्वारा छुड़ाएगा। 38 और ऐसा ही हुआ। इसलिथे जब उस ने बिहान को सबेरे
उठकर उस ऊन को दबाकर उस में से ओस निचोड़ी, तब एक कटोरा भर गया।
39 फिर गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि मैं एक बार फिर कहूं, तो तेरा क्रोध मुझ
पर न भड़के; मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी पक्कीझा करूं, अर्यात् केवल
ऊन ही सूखी रहे, और सारी भूमि पर ओस पके। 40 इस रात को परमश्ेवर ने
ऐसा ही किया; अर्यात् केवल ऊन ही सूखी रह गई, और सारी भूमि पर ओस
पक्की।।

न्यायियों 7

1 तब गिदोन जो यरूब्बाल भी कहलाता है और सब लोग जो उसके संग थे सवेरे
उठे, और हरोद नाम सोते के पास अपके डेरे खड़े किए; और मिद्यानियोंकी छावनी
उनकी उत्तरी ओर मोरे नाम पहाड़ी के पास तराई में पक्की यी।। 2 तब यहोवा ने
गिदोन से कहा, जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिद्यानियोंको उनके हाथ
नहीं कर सकता, नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरूद्ध अपक्की बड़ाई मारने
लगे, कि हम अपके ही भुजबल के द्वारा बचे हैं। 3 इसलिथे तू जाकर लोगोंमें यह
प्रचार करके सुना दे, कि जो कोई डर के मारे यरयराता हो, वह गिलाद पहाड़ से

लौटकर चला जाए। तब बाईस हजार लोग लौट गए, और केवल दस हजार रह
गए। 4 फिर यहोवा ने गिदोन से कहा, अब भी लोग अधिक हैं; उन्हें सोते के पास
नीचे ले चल, वहां मैं उन्हें तेरे लिथे परखूंगा; और जिस जिसके विषय में मैं तुझ
से कहूं, कि यह तेरे संग चले, वह तो तेरे संग चले; और जिस जिसके विषय मे मैं
कहूं, कि यह तेरे संग न जाए, वह न जाए। 5 तब वह उनको सोते के पास नीचे ले
गया; वहां यहोवा ने गिदोन से कहा, जितने कुत्ते की नाईं जीभ से पानी चपड़
चपड़ करके पीएं उनको अलग रख; और वैसा ही उन्हें भी जो घुटने टेककर पीएं।
6 जिन्होंने मुंह में हाथ लगा चपड़ चपड़ करके पानी पिया उनकी तो गिनती तीन
सौ ठहरी; और बाकी सब लोगोंने घुटने टेककर पानी पिया। 7 तब यहोवा ने
गिदोन से कहा, इन तीन सौ चपड़ चपड़ करके पीनेवालोंके द्वारा मैं तुम को
छुड़ाऊंगा, और मिद्यानियोंको तेरे हाथ में कर दूंगा; और सब लोग अपके अपके
स्यान को लौट जाए। 8 तब उन लोगोंने हाथ में सीधा और अपके अपके नरसिंगे
लिए; और उस ने इस्राएल के सब पुरूषोंको अपके अपके डेरे की ओर भेज दिया,
परन्तु उन तीन सौ पुरूषोंको अपके पास रख छोड़ा; और मिद्यान की छावनी
उसके नीचे तराई में पक्की यी।। 9 उसी रात को यहोवा ने उस से कहा, उठ,
छावनी पर चढ़ाई कर; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ कर देता हूं। 10 परन्तु यदि तू
चढ़ाई करते डरता हो, तो अपके सेवक फूरा को संग लेकर छावनी के पास जाकर
सुन, 11 कि वे क्या कह रहे है; उसके बाद तुझे उस छावनी पर चढ़ाई करने का
हियाव होगा। तब वह अपके सेवक फूरा को संग ले उन हयियार-बन्दोंके पास जो
छावनी की छोर पर थे उतर गया। 12 मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग
तो टिड्डियोंके समान बहुत से तराई में फैले पके थे; और उनके ऊंट समुद्रतीर के

बालू के किनकोंके समान गिनती से बाहर थे। 13 जब गिदोन वहां आया, तब एक
जन अपके किसी संगी से अपना स्वप्न योंकह रहा या, कि सुन, मैं ने स्वप्न में
क्या देखा है कि जौ की एक रोटी लुढकते लुढकते मिद्यान की छावनी में आई,
और डेरे को ऐसा टक्कर मारा कि वह गिर गया, और उसको ऐसा उलट दिया, कि
डेरा गिरा पड़ा रहा। 14 उसके संगी ने उत्तर दिया, यह योआश के पुत्र गिदोन नाम
एक इस्राएली पुरूष की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है; उसी के हाथ में परमेश्वर ने
मिद्यान को सारी छावनी समेत कर दिया है।। 15 उस स्वप्न का वर्णन और फल
सुनकर गिदोन ने दण्डवत् की; और इस्राएल की छावनी में लौटकर कहा, उठो,
यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया है। 16 तब उस ने उन तीन
सौ पुरूषोंके तीन फुण्ड किए, और एक एक पुरूष के हाथ में एक नरसिंगा और
खाली घड़ा दिया, और घड़ोंके भीतर एक मशाल यी। 17 फिर उस ने उन से कहा,
मुझे देखो, और वैसा ही करो; सुनो, जब मैं उस छावनी की छोर पर पहुंचूं, तब
जैसा मैं करूं वैसा ही तुम भी करना। 18 अर्यात् जब मैं और मेरे सब संगी
नरसिंगा फूंकें तब तुम भी छावनी की चारोंओर नरसिंगे फूंकना, और ललकारना,
कि यहोवा की और गिदोन की तलवार।। 19 बीचवाले पहर के आदि में ज्योंही
पहरूओं की बदली हो गई यी त्योहीं गिदोन अपके संग के सौ पुरूषोंसमेत छावनी
की छोर पर गया; और नरसिंगे को फूंक दिया और अपके हाथ के घड़ोंको तोड़
डाला। 20 तब तीनोंफुण्डोंने नरसिंगोंको फूंका और घड़ोंको तोड़ डाला; और अपके
अपके बाएं हाथ में मशाल और दहिने हाथ में फूंकने को नरसिंगा लिए हुए
चिल्ला उठे, यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार। 21 तब वे छावनी के
चारोंओर अपके अपके स्यान पर खड़े रहे, और सब सेना के लोग दौड़ने लगे; और

उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया। 22 और उन्होंने तीन सौ नरसिंगोंको
फूंका, और यहोवा ने एक एक पुरूष की तलवार उसके संगी पर और सब सेना पर
चलवाई; तो सेना के लोग सरेरा की ओर बेतशित्ता तब और तब्बात के पास के
आबेलमहोला तक भाग गए। 23 तब इस्राएली पुरूष नप्ताली और आशेर और
मनश्शे के सारे देश से इकट्ठे होकर मिद्यानियोंके पीछे पके। 24 और गिदोन ने
एप्रैम के सब पहाड़ी देश में यह कहने को दूत भेज दिए, कि मिद्यानियोंसे मुठभेड़
करने को चले आओ, और यरदन नदी के घाटोंको बेतबारा तक उन से पहिले
अपके वश में कर लो। तब सब एप्रैमी पुरूषोंने इकट्ठे होकर यरदन नदी को
बेतबारा तक अपके वश में कर लिया। 25 और उन्होंने ओरेब और जेब नाम
मिद्यान के दो हाकिमोंको पकड़ा; और ओरेब को ओरेब नाम चट्टान पर, और जेब
को जेब नाम दाखरस के कुण्ड पर घात किया; और वे मिद्यानियोंके पीछे पके;
और ओरेब और जेब के सिर यरदन के पार गिदोन के पास ले गए।।

न्यायियों 8

1 तब एप्रैमी पुरूषोंने गिदाने से कहा, तू ने हमारे साय ऐसा बर्ताव क्योंकिया है,
कि जब तू मिद्यान से लड़ने को चला तब हम को नहीं बुलवाया? सो उन्होंने उस से
बड़ा फगड़ा किया। 2 उस ने उन से कहा, मैं ने तुम्हारे समान भला अब किया ही
क्या है? क्या एप्रैम की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर की सब फसल से अच्छी नहीं
है? 3 तुम्हारे ही हाथोंमें परमेश्वर ने ओरब और जेब नाम मिद्यान के हाकिमोंको
कर दिया; तब तुम्हारे बराबर मैं कर ही क्या सका? जब उस ने यह बात कही, तब
उनका जी उसकी ओर से ठंडा हो गया।। 4 तब गिदोन और उसके संग तीनोंसौ

पुरूष, जो यके मान्दे थे तौभी खदेड़ते ही रहे थे, यरदन के तीर आकर पार हो
गए। 5 तब उस ने सुक्कोत के लोगोंसे कहा, मेरे पीछे इन आनेवालोंको रोटियां
दो, क्योंकि थे यके मान्दे हैं; और मैं मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना नाम राजाओं
का पीछा कर रहा हूं। 6 सुक्कोत के हाकिमोंने उत्तर दिया, क्या जेबह और
सल्मुन्ना तेरे हाथ में पड़ चुके हैं, कि हम तेरी सेना को रोटी दे? 7 गिदोन ने कहा,
जब यहोवा जेबह और सल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा, तब मैं इस बात के
कारण तुम को जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ोंसे नुचवाऊंगा। 8 वहां से वह
पनूएल को गया, और वहां के लोगोंसे ऐसी ही बात कही; और पनूएल के लोगोंने
सुक्कोत के लोगोंका सा उत्तर दिया। 9 उस ने पनूएल के लोगोंसे कहा, जब मैं
कुशल से लौट आऊंगा, तब इस गुम्मट को ढा दूंगा।। 10 जेबह और सल्मुन्ना तो
कर्कोर में थे, और उनके साय कोई पन्द्रह हजार पुरूषोंकी सेना यी, क्योंकि
पूविर्योंकी सारी सेना में से उतने ही रह गए थे; जो मारे गए थे वे एक लाख बीस
हजार हयियारबन्द थे। 11 तब गिदोन ने नोबह और योग्बहा के पूर्व की ओर
डेरोंमें रहनेवालोंके मार्ग में चढ़कर उस सेना को जो निडर पक्की यी मार लिया।
12 और जब जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ लिया, और सारी सेना को भगा दिया।
13 और योआश का पुत्र गिदोन हेरेस नाम चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा। 14 और
सुक्कोत के एक जवान पुरूष को पकड़कर उस से पूछा, और उस ने सुक्कोत के
सतहत्तरोंहाकिमोंऔर वृद्ध लोगोंके पके लिखवाथे। 15 तब वह सुक्कोत के
मनुष्योंके पास जाकर कहने लगा, जेबह और सल्मुन्ना को देखा, जिनके विषय
में तुम ने यह कहकर मुझे चिढ़ाया या, कि क्या जेबह और सल्मुन्ना अभी तेरे
हाथ में हैं, कि हम तेरे यके मान्दे जनोंको रोटी दें? 16 तब उस ने उस नगर के वृद्ध

लोगोंको पकड़ा, और जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ लेकर सुक्कोत के पुरूषोंको
कुछ सिखाया। 17 और उस ने पनूएल के गुम्मट को ढा दिया, और उस नगर के
मनुष्योंको घात किया। 18 फिर उस ने जेबह और सल्मुन्ना से पूछा, जो मनुष्य
तुम ने ताबोर पर घात किए थे वे कैसे थे? उन्होंने उत्तर दिया, जैसा तू वैसे ही वे
भी थे अर्यात् एक एक का रूप राजकुमार का सा या। 19 उस ने कहा, वे तो मेरे
भाई, वरन मेरे सहोदर भाई थे; यहोवा के जीवन की शपय, यदि तुम ने उनको
जीवित छोड़ा होता, तो मैं तुम को घान न करता। 20 तब उस ने अपके जेठे पुत्र
यतेरे से कहा, उठकर इन्हें घात कर। परन्तु जवान ने अपक्की तलवार न खींची,
क्योंकि वह उस समय तक लड़का ही या, इसलिथे वह डर गया। 21 तब जेबह
और सल्मुन्ना ने कहा, तू उठकर हम पर प्रहार कर; क्योंकि जैसा पुरूष हो, वैसा
ही उसका पौरूष भी होगा। तब गिदोन ने उठकर जेबह और सल्मुन्ना को घात
किया; और उनके ऊंटोंके गलोंके चन्द्रहारोंको ले लिया।। 22 तब इस्राएल के
पुरूषोंने गिदोन से कहा, तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी
प्रभुता करे; क्योंकि तू ने हम को मिद्यान के हाथ से छुड़ाया है। 23 गिदोन ने उन
से कहा, मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूंगा, और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता
करेगा; यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा। 24 फिर गिदोन ने उन से कहा, मैं तुम से
कुछ मांगता हूं; अर्यात् तुम मुझ को अपक्की अपक्की लूट में की बालियां दो। (वे
तो इशमाएली थे, इस कारण उनकी बालियां सोने की यीं।) उन्होंने कहा, निश्चय
हम देंगे। 25 तब उन्होंने कपड़ा बिछाकर उस में अपक्की अपक्की लूट में से
निकालकर बालियां डाल दीं। 26 जो सोने की बालियां उस ने मांग लीं उनका तौल
एक हजार सात सौ शेकेल हुआ; और उनको छोड़ चन्द्रहार, फुमके, और बैंगनी

रंग के वस्त्र जो मिद्यानियोंके राजा पहिने थे, और उनके ऊंटोंके गलोंकी जंजीर।
27 उनका गिदोन ने एक एपोद बनवाकर अपके ओप्रा नाम नगर में रखा; और
सब इस्राएल वहां व्यभिचारिणी की नाईं उसके पीछे हो लिया, और वह गिदोन
और उसके घराने के लिथे फन्दा ठहरा। 28 इस प्रकार मिद्यान इस्राालियोंसे दब
गया, और फिर सिर न उठाया। और गिदोन के जीवन भर अर्यात् चालीस वर्ष
तक देश चैन से रहा। 29 योआश का पुत्र यरूब्बाल तो जाकर अपके घर में रहने
लगा। 30 और गिदोन के सत्तर बेटे उत्पन्न हुए, क्योंकि उसके बहुत स्त्रियां यीं।
31 और उसकी जो एक रखेली शकेम में रहती यी उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ,
और गिदोन ने उसका नाम अबीमेलेक रखा। 32 निदान योआश का पुत्र गिदोन
पूरे बुढ़ापे में मर गया, और अबीएजेरियोंके ओप्रा नाम गांव में उसके पिता
योआश की कबर में उसको मिट्टी दी गई।। 33 गिदोन के मरते ही इस्राएली फिर
गए, और व्यभिचारिणी की नाईं बाल देवताओं के पीछे हो लिए, और बालबरीत
को अपना देवता मान लिया। 34 और इस्राएलियोंने अपके परमेश्वर यहोवा को,
जिस ने उनको चारोंओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया या, स्मरण न रखा; 35
और न उन्होंने यरूब्बाल अर्यात् गिदोन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उस
ने इस्राएलियोंके साय की यी उसके घराने को प्रीति दिखाई।।

न्यायियों 9

1 यरूब्बाल का पुत्र अबीमेलेक शकेम को अपके मामाओं के पास जाकर उन से
और अपके नाना के सब घराने से योंकहने लगा, 2 शकेम के सब मनुष्योंसे यह
पूछो, कि तुम्हारे लिथे क्या भला है? क्या यह कि यरूब्बाल के सत्तर पुत्र तुम पर

प्रभुता करें? वा यह कि एक ही पुरूष तुम पर प्रभुता करे? और यह भी स्मरण
रखो कि मैं तुम्हारा हाड़ मांस हूं। 3 तब उसके मामाओं ने शकेम के सब मनुष्योंसे
ऐसी ही बातें कहीं; और उन्होंने यह सोचकर कि अबीमेलेक तो हमारा भाई है
अपना मन उसके पीछे लगा दिया। 4 तब उन्होंने बालबरीत के मन्दिर में से
सत्तर टुकड़े रूपे उसको दिए, और उन्हें लगाकर अबीमेलेक ने नीच और लुच्चे
जन रख लिए, जो उसके पीछे हो लिए। 5 तब उस ने ओप्रा में अपके पिता के घर
जाके अपके भाइयोंको जो यरूब्बाल के सत्तर पुत्र थे एक ही पत्यर पर घात किया;
परन्तु यरूब्बाल का योताम नाम लहुरा पुत्र छिपकर बच गया।। 6 तब शकेम के
सब मनुष्योंऔर बेतमिल्लो के सब लोगोंने इकट्ठे होकर शकेम के खम्भे से
पासवाले बांजवृझ के पास अबीमेलेक को राजा बनाया। 7 इसका समाचार
सुनकर योताम गरिज्जीम पहाड़ की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ, और ऊंचे स्वर से
पुकारा के कहने लगा, हे शकेम के मनुष्यों, मेरी सुनो, इसलिथे कि परमेश्वर
तुम्हारी सुनें। 8 किसी युग में वृझ किसी का अभिषेक करके अपके ऊपर राजा
ठहराने को चले; तब उन्होंने जलपाई के वृझ से कहा, तू हम पर राज्य कर। 9 तब
जलपाई के वृझ ने कहा, क्या मैं अपक्की उस चिकनाहट को छोड़कर, जिस से
लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनोंका आदर मान करते हैं, वृझोंका अधिक्कारनी
होकर इधर उधर डोलने को चलूं? 10 तब वृझोंने अंजीर के वृझ से कहा, तू आकर
हम पर राज्य कर। 11 अंजीर के वृझ ने उन से कहा, क्या मैं अपके मीठेपन और
अपके अच्छे अच्छे फलोंको छोड़ वृझोंका अधिक्कारनी होकर इधर उधर डोलने
को चलूं? 12 फिर वृझोंने दाखलता से कहा, तू आकर हम पर राज्य कर। 13
दाखलता ने उन से कहा, क्या मैं अपके नथे मधु को छोड़, जिस से परमेश्वर और

मनुष्य दोनोंको आनन्द होता है, वृझोंकी अधिक्कारनेिणी होकर इधर उधर
डोलने को चलूं? 14 तब सब वृझोंने फड़बेरी से कहा, तू आकर हम पर राज्य कर।
15 फड़बेरी ने उन वृझोंसे कहा, यदि तुम अपके ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक
सच्चाई से करते हो, तो आकर मेरी छांह में शरण लो; और नहीं तो, फड़बेरी से
आग निकलेगी जिस से लबानोन के देवदारू भी भस्म हो जाएंगे। 16 इसलिथे
अब यदि तुम ने सच्चाई और खराई से अबीमेलेक को राजा बनाया है, और
यरूब्बाल और उसके घराने से भलाई की, और उस ने उसके काम के योग्य बर्ताव
किया हो, तो भला। 17 (मेरा पिता तो तुम्हारे निमित्त लड़ा, और अपके प्राण पर
खेलकर तुम को मिद्यानियोंके हाथ से छुड़ाया; 18 परन्तु तुम ने आज मेरे पिता के
घराने के विरूद्ध उठकर बलवा किया, और उसके सत्तर पुत्र एक ही पत्यर पर घात
किए, और उसकी लौंड़ी के पुत्र अबीमेलेक को इसलिथे शकेम के मनुष्योंके ऊपर
राजा बनाया है कि वह तुम्हारा भाई है); 19 इसलिथे यदि तुम लोगोंने आज के
दिन यरूब्बाल और उसके घराने से सच्चाई और खराई से बर्ताव किया हो, तो
अबीमेलेक के कारण आनन्द करो, और वह भी तुम्हारे कारण आनन्द करे; 20
और नहीं, तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले जिस से शकेम के मनुष्य और
बेतमिल्लो भस्म हो जाएं: शकेम के मनुष्योंऔर बेतमिल्लो से ऐसी आग निकले
जिस से अबीमेलेक भस्म हो जाए। 21 तब योताम भागा, और अपके भाई
अबीमेलेक के डर के मारे बेर को जाकर वहां रहने लगा।। 22 और अबीमेलेक
इस्राएल के ऊपर तीन वर्ष हाकिम रहा। 23 तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और
शकेम के मनुष्योंके बीच एक बुरी आत्मा भेज दी; सो शकेम के मनुष्य
अबीमेलेक का विश्वासघात करने लगे; 24 जिस से यरूब्बाल के सत्तर पुत्रोंपर

किए हुए उपद्रव का फल भोगा जाए, और उनका कुल उनके घात करनेवाले उनके
भाई अबीमेलेक के सिर पर, और उसके अपके भाइयोंके घात करने में उसकी
सहाथता करनेवाले शकेम के मनुष्योंके सिर पर भी हो। 25 तब शकेम के
मनुष्योंने पहाड़ोंकी चोटियोंपर उसके लिथे घातकोंको बैठाया, जो उस मार्ग से
सब आने जानेवालोंको लूटते थे; और इसका समाचार अबीमेलेक को मिला।। 26
तब एबेद का पुत्र गाल अपके भाइयोंसमेत शकेम में आया; और शकेम के
मनुष्योंने उसका भरोसा किया। 27 और उन्होंने मैदान में जाकर अपक्की
अपक्की दाख की बारियोंके फल तोड़े और उनका रस रौन्दा, और स्तुति का
बलिदान कर अपके देवता के मन्दिर में जाकर खाने पीने और अबीमेलेक को
कोसने लगे। 28 तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, अबीमेलेक कौन है? शकेम कौन है
कि हम उसके अधीन रहें? क्या वह यरूब्बाल का पुत्र नहीं? शकेम के पिता हमोर
के लोगोंके तो अधीन हो, परन्तु हमे उसके अधीन क्योंरहें? 29 और यह प्रजा मेरे
वश में होती हो क्या ही भला होता! तब तो मैं अबीमेलेक को दूर करता। फिर उस
ने अबीमेलेक से कहा, अपक्की सेना की गिनती बढ़ाकर निकल आ। 30 एबेद के
पुत्र गाल की वे बातें सुनकर नगर के हाकिम जबूल का क्रोध भड़क उठा। 31 और
उस ने अबीमेलेक के पास छिपके दूतोंसे कहला भेजा, कि एबेद का पुत्र गाल और
उसके भाई शकेम में आके नगरवालोंको तेरा विरोध करने को उसका रहे हैं। 32
इसलिथे तू अपके संगवालोंसमेत रात को उठकर मैदान में घात लगा। 33 फिर
बिहान को सवेरे सूर्य के निकलते ही उठकर इस नगर पर चढ़ाई करना; और जब
वह अपके संगवालोंसमेत तेरा साम्हना करने को निकले तब जो तुझ से बन पके
वही उस से करना।। 34 तब अबीमेलेक और उसके संग के सब लोग रात को उठ

चार फुण्ड बान्धकर शकेम के विरूद्ध घात में बैठ गए। 35 और एबेद का पुत्र गाल
बाहर जाकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ; तब अबीमेलेक और उसके संगी घात
छोड़कर उठ खड़े हुए। 36 उन लोगोंको देखकर गाल जबूल से कहने लगा, देख,
पहाड़ोंकी चोटियोंपर से लोग उतरे आते हैं! जबूल ने उस से कहा, वह तो पहाड़ोंही
छाया है जो तुझे मनुष्योंके समान देख पड़ती है। 37 गाल ने फिर कहा, देख, लोग
देश के बीचोंबीच होकर उतरे आते हैं, और एक फुण्ड मोननीम नाम बांज वृझ के
मार्ग से चला आता है। 38 जबूल ने उस से कहा, तेरी यह बात कहां रही, कि
अबीमेलेक कौन है कि हम उसके अधीन रहें? थे तो वे ही लोग हैं जिनको तू ने
निकम्मा जाना या; इसलिथे अब निकलकर उन से लड़। 39 तब गाल शकेम के
पुरूषोंका अगुवा हो बाहर निकलकर अबीमेलेक से लड़ा। 40 और अबीमेलेक ने
उसको खदेड़ा, और अबीमेलेक के साम्हने से भागा; और नगर के फाटक तक
पहुंचते पहुंचते बहुतेरे घायल होकर गिर पके। 41 तब अबीमेलेक अरूमा में रहने
लगा; और जबूल ने गाल और उसके भाइयोंको निकाल दिया, और शकेम में रहने
न दिया। 42 दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गए; और यह अबीमेलेक को
बताया गया। 43 और उस ने अपक्की सेना के तीन दल बान्धकर मैदान में घात
लगाई; और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके
उन्हें मार लिया। 44 अबीमेलेक अपके संग के दलोंसमेत आगे दौड़कर नगर के
फाटक पर खड़ा हो गया, और दो दलोंने उन सब लोगोंपर धावा करके जो मैदान
में थे उन्हें मार डाला। 45 उसी दिन अबीमेलेक ने नगर से दिन भर लड़कर उसको
ले दिया, और उसके लोगोंको घात करके नगर को ढा दिया, और उस पर नमक
छिड़कवा दिया।। 46 यह सुनकर शकेम के गुम्मट के सब रहनेवाले एलबरीत के

मन्दिर के गढ़ में जा घुसे। 47 जब अबीमेलेक को यह समाचार मिला कि शकेम
के गुम्मट के सब मनुष्य इकट्ठे हुए हैं, 48 तब वह अपके सब संगियोंसमेत
सलमोन नाम पहाड़ पर चढ़ गया; और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ोंमें से एक डाली
काटी, ओर उसे उठाकर अपके कन्धे पर रख ली। और अपके संगवालोंसे कहा कि
जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी फटपट करो। 49 तब उन सब
लोगोंने भी एक एक डाली काट ली, और अबीमेलेक के पीछे हो उनको गढ़ पर
डालकर गढ़ में आग लगाई; तब शकेम के गुम्मट के सब स्त्री पुरूष जो अटकल
एक हजार थे मर गए।। 50 तब अबीमेलेक ने तेबेस को जाकर उसके साम्हने डेरे
खड़े करके उस को ले लिया। 51 परन्तु एक नगर के बीच एक दृढ़ गुम्मट या, सो
क्या स्त्री पुरूष, नगर के सब लोग भागकर उस में घुसे; और उसे बन्द करके
गुम्मट की छत पर चढ़ गए। 52 तब अबीमेलेक गुम्मट के निकट जाकर उसके
विरूद्ध लड़ने लगा, और गुम्मट के द्वार तक गया कि उस में आग लगाए। 53 तब
किसी स्त्री ने चक्की के ऊपर का पाट अबीमेलेक के सिर पर डाल दिया, और
उसकी खोपक्की फट गई। 54 तब उस ने फट अपके हयियारोंके ढोनेवाले जवान
को बुलाकर कहा, अपक्की तलवार खींचकर मुझे मार डाल, ऐसा न हो कि लोग
मेरे विषय में कहने पाएं, कि उसको एक स्त्री ने घात किया। तब उसके जवान ने
तलवार भोंक दी, और वह मर गया। 55 यह देखकर कि अबीमेलेक मर गया है
इस्राएली अपके अपके स्यान को चले गए। 56 इस प्रकार जो दुष्ट काम अबीमेलेक
ने अपके सत्तर भाइयोंको घात करके अपके पिता के साय किया या, उसको
परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया; 57 और शकेम के पुरूषोंके भी सब दुष्ट
काम परमेश्वर ने उनके सिर पर लौटा दिए, और यरूब्बाल के पुत्र योताम का शाप

उन पर घट गया।।

न्यायियों 10

1 अबीमेलेक के बाद इस्राएल के छुड़ाने के लिथे तोला नाम एक इस्साकारी उठा,
वह दोदो का पोता और पूआ का पुत्र या; और एप्रैम के पहाड़ी देश के शामीर नगर
में रहता या। 2 वह तेईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। तब मर गया,
और उसको शामीर में मिट्टी दी गई।। 3 उसके बाद गिलादी याईर उठा, वह
बाईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। 4 और उसके तीस पुत्र थे जो
गदहियोंके तीस बच्चोंपर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस नगर भी थे जो
गिलाद देश में हैं, और आज तक हव्वोत्याईर कहलाते हैं। 5 और याईर मर गया,
और उसको कामोन में मिट्टी दी गई।। 6 तब इस्राएलियोंने फिर यहोवा की दृष्टि
में बुरा किया, अर्यात् बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियोंऔर आराम, सीदोन,
मोआब, अम्मोनियों, और पलिश्तियोंके देवताओं की उपासना करने लगे; और
यहोवा को त्याग दिया, और उसकी उपासना न की। 7 तब यहोवा का क्रोध
इस्राएल पर भड़का, और उस ने उन्हें पलिश्तियोंऔर अम्मोनियोंके अधीन कर
दिया, 8 और उस वर्ष थे इस्राएलियोंको सताते और पीसते रहे। वरन यरदन पार
एमोरियोंके देश गिलाद में रहनेवाले सब इस्राएलियोंपर अठारह वर्ष तक अन्धेर
करते रहे। 9 अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन से और एप्रैम के घराने से लड़ने को
यरदन पार जाते थे, यहां तक कि इस्राएल बड़े संकट में पड़ गया। 10 तब
इस्राएलियोंने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हम ने जो अपके परमेश्वर को
त्यागकर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हम ने तेरे विरूद्ध महा पाप किया

है। 11 यहोवा ने इस्राएलियोंसे कहा, क्या मैं ने तुम को मिस्रियों, एमोरियों,
अम्मोनियों, और पलिश्तियोंके हाथ से न छुड़ाया या? 12 फिर जब सीदोनी, और
अमालेकी, और माओनी लोगोंने तुम पर अन्धेर किया; और तुम ने मेरी दोहाई
दी, तब मैं ने तुम को उनके हाथ से भी न छुड़ाया? 13 तौभी तुम ने मुझे त्यागकर
पराथे देवताओं की उपासना की है; इसलिथे मैं फिर तुम को न छुड़ाऊंगा। 14
जाओ, अपके माने हुए देवताओं की दोहाई दो; तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें
छुड़ाएं। 15 इस्राएलियोंने यहोवा से कहा, हम ने पाप किया है; इसलिथे जो कुछ
तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा। 16 तब वे पराए
देवताओं को अपके मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे; और वह
इस्राएलियोंके कष्ट के कारण खेदित हुआ।। 17 तब अम्मोनियोंने इकट्ठे होकर
गिलाद में अपके डेरे डाले; और इस्राएलियोंने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में अपके
डेरे डाले। 18 तब गिलाद के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, कौन पुरूष
अम्मोनियोंसे संग्राम आरम्भ करेगा? वही गिलाद के सब निवासियोंका प्रधान
ठहरेगा।।

न्यायियों 11

1 यिप्तह नाम गिलादी बड़ा शूरवीर या, और वह वेश्या का बेटा या; और गिलाद से
यिप्तह उत्पन्न हुआ या। 2 गिलाद की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए; और जब वे बड़े
हो गए तब यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया, कि तू तो पराई स्त्री का बेटा है;
इस कारण हमारे पिता के घराने में कोई भाग न पाएगा। 3 तब यिप्तह अपके
भाइयोंके पास से भागकर तोब देश में रहने लगा; और यिप्तह के पास लुच्चे

मनुष्य इकट्ठे हो गए; और उसके संग फिरने लगे।। 4 और कुछ दिनोंके बाद
अम्मोनी इस्राएल से लड़ने लगे। 5 जब अम्मोनी इस्राएल से लड़ते थे, तब गिलाद
के वृद्ध लोग यिप्तह को तोब देश से ले आने को गए; 6 और यिप्तह से कहा, चलकर
हमारा प्रधान हो जा, कि हम अम्मोनियोंसे लड़ सकें। 7 यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध
लोगोंसे कहा, क्या तुम ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न
दिया या? फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्योंआए हो? 8 गिलाद के वृद्ध
लोगोंने यिप्तह से कहा, इस कारण हम अब तेरी ओर फिरे हैं, कि तू हमारे संग
चलकर अम्मोनियोंसे लड़े; तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियोंका
प्रधान ठहरेगा। 9 यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध लोगोंसे पूछा, यदि तुम मुझे
अम्मोनियोंसे लड़ने को फिर मेरे घर ले चलो, और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे,
तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान ठहरूंगा? 10 गिलाद के वृद्ध लोगोंने यिप्तह से कहा,
निश्चय हम तेरी इस बाते के अनुसार करेंगे; यहोवा हमारे और तेरे बीच में इन
वचनोंका सुननेवाला है। 11 तब यिप्तह गिलाद के वृद्ध लोगोंके संग चला, और
लोगोंने उसको अपके ऊपर मुखिया और प्रधान ठहराया; और यिप्तह ने अपक्की
सब बातें मिस्पा में यहोवा के सम्मुख कह सुनाई।। 12 तब यिप्तह ने
अम्मोनियोंके राजा के पास दूतोंसे यह कहला भेजा, कि तुझे मुझ से क्या काम,
कि तू मेरे देश में लड़ने को आया है? 13 अम्मोनियोंके राजा ने यिप्तह के दूतोंसे
कहा, कारण यह है, कि जब इस्राएली मिस्र से आए, तब अर्नोन से यब्बोक और
यरदन तक जो मेरा देश या उसको उन्होंने छीन लिया; इसलिथे अब उसको बिना
फगड़ा किए फेर दे। 14 तब यिप्तह ने फिर अम्मोनियोंके राजा के पास यह कहने
को दूत भेजे, 15 कि यिप्तह तुझ से योंकहता है, कि इस्राएल ने न तो मोआब का

देश ले लिया और न अम्मोनियोंका, 16 वरन जब वे मिस्र से निकले, और
इस्राएली जंगल में होते हुए लाल समुद्र तक चले, और कादेश को आए, 17 तब
इस्राएल ने एदोम के राजा के पास दूतोंसे यह कहला भेजा, कि मुझे अपके देश में
होकर जाने दे; और एदोम के राजा ने उनकी न मानी। इसी रीति उस ने मोआब के
राजा से भी कहला भेजा, और उस ने भी न माना। इसलिथे इस्राएल कादेश में रह
गया। 18 तब उस ने जंगल में चलते चलते एदोम और मोआब दोनोंदेशोंके बाहर
बाहर घूमकर मोआब देश की पूर्व ओर से आकर अर्नोन के इसी पार अपके डेरे
डाले; और मोआब के सिवाने के भीतर न गया, क्योंकि मोआब का सिवाना
अर्नोन या। 19 फिर इस्राएल ने एमोरियोंके राजा सीहोन के पास जो हेश्बोन का
राजा या दूतोंसे यह कहला भेजा, कि हमें अपके देश में से होकर हमारे स्यान को
जाने दे। 20 परन्तु सीहोन ने इस्राएल का इतना विश्वास न किया कि उसे अपके
देश में से होकर जाने देता; वरन अपक्की सारी प्रजा को इकट्ठी कर अपके डेरे
यहस में खड़े करके इस्राएल से लड़ा। 21 और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने
सीहोन को सारी प्रजा समेत इस्राएल के हाथ में कर दिया, और उन्होंने उनको
मार लिया; इसलिथे इस्राएल उस देश के निवासी एमोरियोंके सारे देश का
अधिक्कारनी हो गया। 22 अर्यात् वह अनौन से यब्बोक तक और जंगल से ले
यरदन तक एमोरियोंके सारे देश का अधिक्कारनी हो गया। 23 इसलिथे अब
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपक्की इस्राएली प्रजा के साम्हने से एमोरियोंको
उनके देश से निकाल दिया है; फिर क्या तू उसका अधिक्कारनी होने पाएगा? 24
क्या तू उसका अधिक्कारनी न होगा, जिसका तेरा कमोश देवता तुझे
अधिक्कारनी कर दे? इसी प्रकार से जिन लोगोंको हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे

साम्हने से निकाले, उनके देश के अधिक्कारनी हम होंगे। 25 फिर क्या तू मोआब
के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक से कुछ अच्छा है? क्या उस ने कभी इस्राएलियोंसे
कुछ भी फगड़ा किया? क्या वह उन से कभी लड़ा? 26 जब कि इस्राएल हेश्बोन
और उसके गावोंमें, और अरोएल और उसके गावोंमें, और अर्नोन के किनारे के
सब नगरोंमें तीन सौ वर्ष से बसा है, तो इतने दिनोंमें तुम लोगोंने उसको क्योंनहीं
छुड़ा लिया? 27 मैं ने तेरा अपराध नहीं किया; तू ही मुझ से युद्ध छेड़कर बुरा
व्यवहार करता है; इसलिथे यहोवा जो न्यायी है, वह इस्राएलियोंऔर
अम्मोनियोंके बीच में आज न्याय करे। 28 तौभी अम्मोनियोंके राजा ने यिप्तह
की थे बातें न मानीं जिनको उस ने कहला भेजा या।। 29 तब यहोवा का आत्मा
यिप्तह में समा गया, और वह गिलाद और मनश्शे से होकर गिलाद के मिस्पे में
आया, और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मोनियोंकी ओर चला। 30 और यिप्तह
ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी, कि यदि तू नि:सन्देह अम्मोनियोंको मेरे
हाथ में कर दे, 31 तो जब मैं कुशल के साय अम्मोनियोंके पास से लौट आऊं तब
जो कोई मेरे भेंट के लिथे मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा, और मैं
उसे होमबलि करके चढ़ाऊंगा। 32 तब यिप्तह अम्मोनियोंसे लड़ने को उनकी ओर
गया; और यहोवा ने उनको उसके हाथ में कर दिया। 33 और वह अरोएर से ले
मिन्नीत तक, जो बीस नगर हैं, वरन आबेलकरामीम तक जीतते जीतते उन्हें
बहुत बड़ी मार से मारता गया। और अम्मोनी इस्राएलियोंसे हार गए।। 34 जब
यिप्तह मिस्पा को अपके घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचक्की हुई
उसकी भेंट के लिथे निकल आई; वह उसकी एकलौती यी; उसको छोड़ उसके न
तो कोई बेटा या और कोई न बेटी। 35 उसको देखते ही उस ने अपके कपके

फाड़कर कहा, हाथ, मेरी बेटी! तू ने कमर तोड़ दी, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालोंमें
हो गई है; क्योंकि मैं ेने यहोवा को वचन दिया है, और उसे टाल नहीं सकता। 36
उस ने उस से कहा, हे मेरे पिता, तू ने जो यहोवा को वचन दिया है, तो जो बात तेरे
मुंह से निकली है उसी के अनुसार मुझ से बर्ताव कर, क्योंकि यहोवा ने तेरे
अम्मोनी शत्रुओं से तेरा पलटा लिया है। 37 फिर उस ने अपके पिता से कहा, मेरे
लिथे यह किया जाए, कि दो महीने तक मुझे छोड़े रह, कि मैं अपक्की
सहेलियोंसहित जाकर पहाड़ोंपर फिरती हुई अपक्की कुंवारीपन पर रोती रहूं। 38
उस ने कहा, जा। तब उस ने उसे दो महिने की छुट्‌टी दी; इसलिथे वह अपक्की
सहेलियोंसहित चक्की गई, और पहाड़ोंपर अपक्की कुंवारीपन पर रोती रही। 39
दो महीने के बीतने पर वह अपके पिता के पास लौट आई, और उस ने उसके
विषय में अपक्की मानी हुइ मन्नत को पूरी किया। और उस कन्या ने पुरूष का
मुंह कभी न देखा या। इसलिथे इस्राएलियोंमें यह रीति चक्की 40 कि इस्राएली
स्त्रियां प्रतिवर्ष यिप्तह गिलादी की बेटी का यश गाने को वर्ष में चार दिन तक
जाया करती यीं।।

न्यायियों 12

1 तब एप्रैमी पुरूष इकट्‌ठे होकर सापोन को जाकर यिप्तह से कहने लगे, कि जब
तू अम्मोनियोंसे लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्योंनहीं बुलवाया? हम
तेरा घर तुझ समेत जला देंगे। 2 यिप्तह ने उन से कहा, मेरा और मेरे लोगोंका
अम्मोनियोंसे बड़ा फगड़ा हुआ या; और जब मैं ने तुम से सहाथता मांगी, तब तुम
ने मुझे उनके हाथ से नहीं बचाया। 3 तब यह देखकर कि तुम मुझे नहीं बचाते मैं

अपके प्राणोंको हथेली पर रखकर अम्मोनियोंके विरूद्ध चला, और यहोवा ने
उनको मेरे हाथ में कर दिया; फिर तुम अब मुझ से लड़ने को क्योंचढ़ आए हो? 4
तब यिप्तह गिलाद के सब पुरूषोंको इकट्ठा करके एप्रैम से लड़ा और एप्रैम जो
कहता या, कि हे गिलादियो, तुम तो एप्रैम और मनश्शे के बीच रहनेवाले
एप्रैमियोंके भगोड़े हो, और गिलादियोंने उनको मार लिया। 5 और गिलादियोंने
यरदन का घाट उन से पहिले अपके वश में कर लिया। और जब कोई एप्रैमी
भगोड़ा कहता, कि मुझे पार जाने दो, तब गिलाद के पुरूष उस से पूछते थे, क्या
तू एप्रैमी है? और यदि वह कहता नहीं, 6 तो वह उस से कहते, अच्छा, शिब्बोलेत
कह, और वह कहता सिब्बोलेत, क्योंकि उस से वह ठीक बोला नहीं जाता य; तब
वे उसको पकड़कर यरदन के घाट पर मार डालते थे। इस प्राकर उस समय
बयालीस हजार एप्रैमी मारे गए।। 7 यिप्तह छः वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता
रहा। तब यिप्तह गिलादी मर गया, और उसको गिलाद के किसी नगर में मिट्टी
दी गई।। 8 उसके बाद बेतलेहेम का निवासी इबसान इस्राएल का न्याय करने
लगा। 9 और उसके तीस बेटे हुए; और उस ने अपक्की तीस बेटियां बाहर ब्याह
दीं, और बाहर से अपके बेटोंका ब्याह करके तीस बहू ले आया। और वह इस्राएल
का न्याय सात वर्ष तक करता रहा। 10 तब इबसान मर गया, और उसको
बेतलेहेम में मिट्टी दी गई।। 11 उसके बाद जबूलूनी एलोन इस्राएल का न्याय
करने लगा; और वह इस्राएल का न्याय दस वर्ष तक करता रहा। 12 तब एलोन
जबूलूनी मर गया, और उसको जबूलून के देश के अय्यालोन में मिट्टी दी गई।।
13 उसके बाद हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन इस्राएल का न्याय करने लगा।
14 और उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए, जो गदहियोंके सत्तर बच्चोंपर

सवार हुआ करते थे। वह आठ वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। 15 तब
हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन मर गया, और उसको एप्रैम के देश के
पिरातोन में, जो अमालेकियोंके पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी गई।।

न्यायियों 13

1 और इस्राएलियोंने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; इसलिथे यहोवा ने उनको
पलिश्तियोंके वश में चालीस वर्ष के लिथे रखा।। 2 दानियोंके कुल का सोरावासी
मानोह नाम एक पुरूष या, जिसकी पत्नी के बांफ होने के कारण कोई पुत्र न या। 3
इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, सुन, बांफ होने के कारण तेरे बच्चा
नहीं; परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। 4 इसलिथे अब सावधान
रह, कि न तो तू दाखमधु वा और किसी भांति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध
वस्तु खाए, 5 क्योंकि तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। और
उसके सिर पर छूरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाजीर रहेगा;
और इस्राएलियोंको पलिश्तियोंके हाथ से छुड़ाने में वहीं हाथ लगाएगा। 6 उस स्त्री
ने अपके पति के पास जाकर कहा, परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया या
जिसका रूप परमेश्वर के दूत का सा अति भययोग्य या; और मैं ने उस से न पूछा
कि तू कहां का है? और न उस ने मुझे अपना नाम बताया; 7 परन्तु उस ने मुझ से
कहा, सुन तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा होगा; इसलिथे अब न तो दाखमधु
वा और किसी भांति की मदिरा पीना, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना, क्योंकि वह
लड़का जन्म से मरण के दिन तक परमेश्वर का नाजीर रहेगा। 8 तब मानोह ने
यहोवा से यह बिनती की, कि हे प्रभु, बिनती सुन, परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने

भेजा या फिर हमारे पास आए, और हमें सिखलाए कि जो बालक उत्पन्न
होनेवाला है उस से हम क्या क्या करें। 9 मानोह की यह बात परमेश्वर ने सुन ली,
इसलिथे जब वह स्त्री मैदान में बैठी यी, और उसका पति मानोह उसके संग न या,
तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया। 10 तब उस स्त्री ने फट दौड़कर
अपके पति को यह समाचार दिया, कि जो पुरूष उस दिन मेरे पास आया या उसी
ने मुझे दर्शन दिया है। 11 यह सुनते ही मानोह उठकर अपक्की पत्नी के पीछे
चला, और उस पुरूष के पास आकर पूछा, कि क्या तू वही पुरूष है जिसने इस स्त्री
से बातें की यीं? उस ने कहा, मैं वही हूं। 12 मानोह ने कहा, जब तेरे वचन पूरे हो
जाएं तो, उस बालक का कैसा ढंग और उसका क्या काम होगा? 13 यहोवा के दूत
ने मानोह से कहा, जितनी वस्तुओं की चर्चा मैं ने इस स्त्री से की यी उन सब से
यह पके रहे। 14 यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए, और न
दाखमधु वा और किसी भंाति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए;
जो जो आज्ञा मैं ने इसको दी यी उसी को माने। 15 मानोह ने यहोवा के दूत से
कहा, हम तुझ को रोक लें, कि तेरे लिथे बकरी का एक बच्चा पकाकर तैयार करें।
16 यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, चाहे तू मुझे रोक रखे, परन्तु मैं तेरे भोजन में
से कुछ न खाऊंगा; और यदि तू होमबलि करना चाहे तो यहोवा ही के लिथे कर।
(मानोह तो न जानता या, कि यह यहोवा का दूत है।) 17 मानोह ने यहोवा के दूत
से कहा, अपना नाम बता, इसलिथे कि जब तेरी बातें पूरी होंतब हम तेरा
आदरमान कर सकें। 18 यहोवा के दूत ने उस से कहा, मेरा नाम तो अद्भुत है,
इसलिथे तू उसे क्योंपूछता है? 19 तब मानोह ने अन्नबलि समेत बकरी का एक
बच्चा लेकर चट्टान पर यहोवा के लिथे चढ़ाया तब उस दूत ने मानोह और

उसकी पत्नी के देखते देखते एक अद्भुत काम किया। 20 अर्यात् जब लौ उस वेदी
पर से आकाश की ओर उठ रही यी, तब यहोवा का दूत उस वेदी की लौ में होकर
मानोह और उसकी पत्नी के देखते देखते चढ़ गया; तब वे भूमि पर मुंह के बल
गिरे। 21 परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन न
दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत या। 22 तब मानोह ने
अपक्की पत्नी से कहा, हम निश्चय मर जाएंगे, क्योंकि हम ने परमेश्वर का दर्शन
पाया है। 23 उसकी पत्नी ने उस से कहा, यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता, तो
हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता, और न वह ऐसी सब बातें
हम को दिखाता, और न वह इस समय हमें ऐसी बातें सुनाता। 24 और उस स्त्री के
एक बेटा उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शिमशोन रखा; और वह बालक बढ़ता
गया, और यहोवा उसको आशीष देता रहा। 25 और यहोवा का आत्मा सोरा और
एशताओल के बीच महनदान में उसको उभारने लगा।।

न्यायियों 14

1 शिमशोन तिम्ना को गया, और तिम्ना में एक पलिश्ती स्त्री को देखा। 2 तब
उस ने जाकर अपके माता पिता से कहा, तिम्ना में मैं ने एक पलिश्ती स्त्री को
देखा है, सो अब तुम उस से मेरा ब्याह करा दो। 3 उसके माता पिता ने उस से
कहा, क्या तेरे धाइयोंकी बेटियोंमें, वा हमारे सब लोगोंमें कोई स्त्री नहीं है, कि तू
खतनाहीन पलिश्तियोंमें से स्त्री ब्याहने चाहता है? शिमशोन ने अपके पिता से
कहा, उसी से मेरा ब्याह करा दे; क्योंकि मुझे वही अच्छी लगती है। 4 उसके माता
पिता न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर से होती है, कि वह पलिश्तियोंके

विरूद्ध दांव ढूंढता है। उस समय तो पलिश्ती इस्राएल पर प्रभुता करते थे।। 5 तब
शिमशोन अपके माता पिता को संग ले तिम्ना को चलकर तिम्ना की दाख की
बारी के पास पहुंचा, वहां उसके साम्हने एक जवान सिंह गरजने लगा। 6 तब
यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न या,
तौभी उस ने उसको ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े। अपना यह
काम उसने अपके पिता वा माता को न बतलाया। 7 तब उस ने जाकर उस स्त्री से
बातचीत की; और वह शिमशोन को अच्छी लगी। 8 कुछ दिनोंके बीतने पर वह
उसे लाने को लौट चला; और उस सिंह की लोय देखने के लिथे मार्ग से मुड़ गया?
तो क्या देखा कि सिंह की लोय में मधुमक्खियोंका एक फुण्ड और मधु भी है। 9
तब वह उस में से कुछ हाथ में लेकर खाते खाते अपके माता पिता के पास गया,
और उनको यह बिना बताए, कि मैं ने इसको सिंह की लोय में से निकाला है, कुछ
दिया, और उन्होंने भी उसे खाया। 10 तब उसका पिता उस स्त्री के यहां गया, और
शिमशोन न जवानोंकी रीति के अनुसार वहां जेवनार की। 11 उसको देखकर वे
उसके संग रहने के लिथे तीस संगियोंको ले आए। 12 शिमशोन ने उस ने कहा, मैं
तुम से एक पकेली कहता हूं; यदि तुम इस जेवनार के सातोंदिनोंके भीतर उसे
बूफकर अर्य बता दो, तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े कपके दूंगा; 13
और यदि तुम उसे न बता सको, तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपके
देने पकेंगे। उन्होंने उस से कहा, अपक्की पकेली कह, कि हम उसे सुनें। 14 उस
ने उन से कहा, खानेवाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली।
इस पकेली का अर्य वे तीन दिन के भीतर न बता सके। 15 सातवें दिन उन्होंने
शिमशोन की पत्नी से कहा, अपके पति को फुसला कि वह हमें पकेली का अर्य

बताए, नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएंगे। क्या तुम
लोगोंने हमारा धन लेने के लिथे हमारा नेवता किया है? क्या यही बात नहीं है? 16
तब शिमशोन की पत्नी यह कहकर उसके साम्हने रोने लगी, कि तू तो मुझ से प्रेम
नहीं, बैर ही रखता है; कि तू ने एक पकेली मेरी जाति के लोगोंसे तो कही है,
परन्तु मुझ को उसका अर्थ भी नहीं बताया। उस ने कहा, मैं ने उसे अपक्की माता
वा पिता को भी नहीं बताया, फिर क्या मैं तुझ को बता दूं? 17 और जेवनार के
सातोंदिनोंमें वह स्त्री उसके साम्हने रोती रही; और सातवें दिन जब उस ने उसको
बहुत तंग किया; तब उस ने उसको पकेली का अर्थ बता दिया। तब उस ने उसे
अपक्की जाति के लोगोंको बता दिया। 18 तब सातवें दिन सूर्य डूबने न पाया कि
उस नगर के मनुष्योंने शिमशोन से कहा, मधु से अधिक क्या मीठा? और सिंह से
अधिक क्या बलवन्त है? उस ने उन से कहा, यदि तुम मेरी कलोर को हल में न
जोतते, तो मेरी पकेली को कभी न बूफते।। 19 तब यहोवा का आत्मा उस पर बल
से उतरा, और उस ने अश्कलोन को जाकर वहां के तीस पूरूषोंको मार डाला, और
उनका धन लूटकर तीस जोड़े कपड़ोंको पकेली के बतानेवालोंको दे दिया। तब
उसका क्रोध भड़का, और वह अपके पिता के घर गया। 20 और शिमशोन की पत्नी
उसके एक संगी को जिस से उस ने मित्र का सा बर्ताव किया या ब्याह दी गई।।

न्यायियों 15

1 परन्तु कुछ दिनोंबाद, गेहूं की कटनी के दिनोंमें, शिमशोन ने बकरी का एक
बच्चा लेकर अपक्की ससुराल में जाकर कहा, मैं अपक्की पत्नी के पास कोठरी में
जाऊंगा। परन्तु उसके ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका। 2 और उसके ससुर ने

कहा, मैं सचमुच यह जानता या कि तू उस से बैर ही रखता है, इसलिथे मैं ने उसे
तेरे संगी को ब्याह दिया। क्या उसकी छोटी बहिन उस से सुन्दर नहीं है? उसके
बदले उसी को ब्याह ले। 3 शिमशोन ने उन लोगोंसे कहा, अब चाहे मैं
पलिश्तियोंकी हानि भी करूं, तौभी उनके विषय में निर्दोष ही ठहरूंगा। 4 तब
शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमडिय़ां पकड़ीं, और मशाल लेकर दो दो
लोमडिय़ोंकी पूंछ एक साय बान्धी, और उनके बीच एक एक मशाल बान्धा। 5
तब मशालोंमें आग लगाकर उस ने लोमडिय़ोंको पलिश्तियोंके खड़े खेतोंमें छोड़
दिया; और पूलियोंके ढेर वरन खड़े खेत और जलपाई की बारियां भी जल गईं। 6
तब पलिश्ती पूछने लगे, यह किस ने किया है? लोगोंने कहा, उस तिम्नी के
दामाद शिमशोन ने यह इसलिथे किया, कि उसके ससुर ने उसकी पत्नी उसे संगी
को ब्याह दी। तब पलिश्तियोंने जाकर उस पत्नी और उसके पिता दोनोंको आग में
जला दिया। 7 शिमशोन ने उन से कहा, तुम जो ऐसा काम करते हो, इसलिथे मैं
तुम से पलटा लेकर ही चुप रहूंगा। 8 तब उस ने उनको अति निठुरता के साय
बड़ी मार से मार डाला; तब जाकर एताम नाम चट्टान की एक दरार में रहने
लगा।। 9 तब पलिश्तियोंने चढ़ाई करके यहूदा देश में डेरे खड़े किए, और लही में
फैल गए। 10 तब यहूदी मनुष्योंने उन से पूछा, तुम हम पर क्योंचढ़ाई करते हो?
उन्होंने उत्तर दिया, शिमशोन को बान्धने के लिथे चढ़ाई करते हैं, कि जैसे उस ने
हम से किया वैसे ही हम भी उस से करें। 11 तब तीन हजार यहूदी पुरूष ऐताम
नाम चट्टान की दरार में जाकर शिमशोन से कहने लगे, क्या तू नहीं जानता कि
पलिश्ती हम पर प्रभुता करते हैं? फिर तू ने हम से ऐसा क्योंकिया है? उस ने उन
से कहा, जैसा उन्होंने मुझ से किया या, वैसा ही मैं ने भी उन से किया है। 12

उन्होंने उस से कहा, हम तुझे बान्धकर पलिश्तियोंके हाथ में कर देने के लिथे
आए हैं। शिमशोन ने उन से कहा, मुझ से यह शपय खाओ कि तुम मुझ पर प्रहार
न करोगे। 13 उन्होंने कहा, ऐसा न होगा; हम तुझे कसकर उनके हाथ में कर देंगे;
परन्तु तुझे किसी रीति मान न डालेंगे। तब वे उसको दो नई रस्सिक्कों बान्धकर
उस चट्टान पर ले गए। 14 वह लही तक आ गया या, कि पलिश्ती उसको
देखकर ललकारने लगे; तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसकी
बांहोंकी रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गईं, और उसके हाथोंके
बन्धन मानोंगलकर टूट पके। 15 तब उसको गदहे के जबड़े की एक नई हड्डी
मिली, और उस ने हाथ बढ़ा उसे लेकर एक हजार पुरूषोंको मार डाला। 16 तब
शिमशोन ने कहा, गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेर के ढेर लग गए, गदहे के जबड़े
की हड्डी ही से मैं ने हजार पुरूषोंको मार डाला।। 17 जब वह ऐसा कह चुका, तब
उस ने जबड़े की हड्डी फेंक दी और उस स्यान का नाम रामत-लही रखा गया। 18
तब उसको बड़ी प्यास लगी, और उस ने यहोवा को पुकार के कहा तू ने अपके
दास से यह बड़ा छुटकारा कराया है; फिर क्या मैं अब प्यासोंमरके उन खतनाहीन
लोगोंके हाथ में पडूं? 19 तब परमेश्वर ने लही में ओखली सा गढ़हा कर दिया, और
उस में से पानी निकलने लगा; और जब शिमशोन ने पीया, तब उसके जी में जी
आया, और वह फिर ताजा दम हो गया। इस कारण उस सोते का नाम एनहक्कोरे
रखा गया, वह आज के दिन तक लही में हैं। 20 शिमशोन तो पलिश्तियोंके
दिनोंमें बीस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा।।

न्यायियों 16

1 तब शिमशोन अज्जा को गया, और वहां एक वेश्या को देखकर उसके पास
गया। 2 जब अज्जियोंको इसका समाचार मिला कि शिमशोन यहां आया है, तब
उन्होंने उसको घेर लिया, और रात भर नगर के फाटक पर उसकी घात में लगे
रहे; और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे, कि बिहान को भोर होते ही हम उसको
घात करेंगे। 3 परन्तु शिमशोन आधी रात तक पड़ा रह कर, आधी रात को
उठकर, उस ने नगर के फाटक के दोनोंपल्लोंऔर दोनो बाजुओं को पकड़कर
बेंड़ोंसमेत उखाड़ लिया, और अपके कन्धोंपर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर
ले गया, जो हेब्रोन के साम्हने है।। 4 इसके बाद वह सोरेक नाम नाले में रहनेवाली
दलीला नाम एक स्त्री से प्रीति करने लगा। 5 तब पलिश्तियोंके सरदारोंने उस स्त्री
के पास जाके कहा, तू उसको फुसलाकर बूफ ले कि उसके महाबल का भेद क्या है,
और कौन उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हों, कि उसे बान्धकर दबा रखें; तब
हम तुझे ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी देंगे। 6 तब दलीला ने शिमशोन से कहा,
मुझे बता दे कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और किसी रीति से कोई तुझे
बान्धकर दबा रख सके। 7 शिमशोन ने उस से कहा, यदि मैं सात ऐसी नई नई
तातोंसे बान्धा जाऊं जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल घट जाथेगा, और मैं
साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा। 8 तब पलिश्तियोंके सरदार दलीला के पास ऐसी
नई नई सात तातें ले गए जो सुखाई न गई थीं, और उन से उस ने शिमशोन को
बान्धा। 9 उसके पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में घात लगाए बैठे थे। तब उस ने
उस से कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! तब उस ने तांतोंको ऐसा तोड़ा
जैसा सन का सूत आग में छूते ही टूट जाता है। और उसके बल का भेद न खुला।
10 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, सुन, तू ने तो मुझ से छल किया, और फूठ

कहा है; अब मुझे बता दे कि तू किस वस्तु से बन्ध सकता है। 11 उस ने उस से
कहा, यदि मैं ऐसी नई नई रस्सिक्कों जो किसी काम में न आई होंकसकर बान्धा
जाऊं, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊंगा। 12
तब दलीला ने नई नई रस्सियां लेकर और उसको बान्धकर कहा, हे शिमशोन,
पलिश्ती तेरी घात में हैं! कितने मनुष्य तो उस कोठरी में धात लगाए हुए थे। तब
उस ने उनको सूत की नाईं अपक्की भुजाओं पर से तोड़ डाला। 13 तब दलीला ने
शिमशोन से कहा, अब तक तू मुझ से छल करता, और फूठ बोलता आया है; अब
मुझे बता दे कि तू काहे से बन्ध सकता है? उस ने कहा यदि तू मेरे सिर की
सातोंलटें ताने में बुने तो बन्ध सकूंगा। 14 सो उस ने उसे खूंटी से जकड़ा। तब
उस से कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! तब वह नींद से चौंक उठा, और
खूंटी को धरन में से उखाड़कर उसे ताने समेत ले गया। 15 तब दलीला ने उस से
कहा, तेरा मन तो मुझ से नहीं लगा, फिर तू क्योंकहता है, कि मैं तुझ से प्रीति
रखता हूं? तू ने थे तीनोंबार मुझ से छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरे बड़े
बल का भेद क्या है। 16 सो जब उस ने हर दिन बातें करते करते उसको तंग
किया, और यहां तक हठ किया, कि उसके नाकोंमें दम आ गया, 17 तब उस ने
अपके मन का सारा भेद खोलकर उस से कहा, मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा,
क्योंकि मैं मां के पेट ही से परमेश्वर का नाजीर हूं, यदि मैं मूड़ा जाऊं, तो मेरा बल
इतना घट जाएगा, कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा। 18 यह देखकर, कि
उस ने अपके मन का सारा भेद मुझ से कह दिया है, दलीला ने पलिश्तियोंके
सरदारोंके पास कहला भेजा, कि अब की बार फिर आओ, क्योंकि उस ने अपके
मन का सब भेद मुझे बता दिया है। तब पलिश्तियोंके सरदार हाथ में रूपया लिए

हुए उसके पास गए। 19 तब उस ने उसको अपके घुटनोंपर सुला रखा; और एक
मनुष्य बुलवाकर उसके सिर की सातोंलटें मुण्डवा डालीं। और वह उसको दबाने
लगी, और वह निर्बल हो गया। 20 तब उस ने कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी
घात में हैं! तब वह चौंककर सोचने लगा, कि मैं पहिले की नाईं बाहर जाकर
फटकूंगा। वह तो न जानता या, कि यहोवा उसके पास से चला गया है। 21 तब
पलिश्तियोंने उसको पकड़कर उसकी आंखें फोड़ डालीं, और उसे अज्जा को ले
जाके पीतल की बेडिय़ोंसे जकड़ दिया; और वह बन्दीगृह में चक्की पीसने लगा।
22 उसके सिर के बाल मुण्ड जाने के बाद फिर बढ़ने लगे।। 23 तब पलिश्तियोंके
सरदार अपके दागोन नाम देवता के लिथे बड़ा यज्ञ, और आनन्द करने को यह
कहकर इकट्ठे हुए, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथ में कर
दिया है। 24 और जब लोगोंने उसे देखा, तब यह कहकर अपके देवता की स्तुति
की, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश के नाश करनेवाले को, जिस ने
हम में से बहुतोंको मार भी डाला, हमारे हाथ में कर दिया है। 25 जब उनका मन
मगन हो गया, तब उन्होंने कहा, शिमशोन को बुलवा लो, कि वह हमारे लिथे
तमाशा करे। इसलिथे शिमशोन बन्दीगृह में से बुलवाया गया, और उनके लिथे
तमाशा करने लगा, और खम्भोंके बीच खड़ा कर दिया गया। 26 तब शिमशोन ने
उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े या कहा, मुझे उन खम्भोंको जिन से घर
सम्भला हुआ है छूने दे, कि मैं उस पर टेक लगाऊं। 27 वह घर तो स्त्री पुरूषोंसे
भरा हुआ या; पलिश्तियोंके सब सरदार भी वहां थे, और छत पर कोई तीन हजार
सत्री पुरूष थे, जो शिमशोन को तमाशा करते हुए देख रहे थे। 28 तब शिमशोन ने
यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले; हे परमेश्वर, अब

की बार मुझे बल दे, कि मैं पलिश्तियोंसे अपक्की दोनोंआंखोंका एक ही पलटा लूं।
29 तब शिमशोन ने उन दोनोंबीचवाले खम्भोंको जिन से घर सम्भला हुआ या
पकड़कर एक पर तो दाहिने हाथ से और दूसरे पर बाएं हाथ से बल लगा दिया।
30 और शिमशोन ने कहा, पलिश्तियोंके संग मेरा प्राण भी जाए। और वह अपना
सारा बल लगाकर फुका; तब वह घर सब सरदारोंऔर उस में से सारे लोगोंपर
गिर पड़ा। सो जिनको उस ने मरते समय मार डाला वे उन से भी अधिक थे जिन्हें
उस ने अपके जीवन में मार डाला या। 31 तब उसके भाई और उसके पिता के सारे
घराने के लोग आए, और उसे उठाकर ले गए, और सोरा और एशताओल के मध्य
अपके पिता मानोह की कबर में मिट्टी दी। उसने इस्राएल का न्याय बीस वर्ष
तक किया या।

न्यायियों 17

1 एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका नाम एक पुरूष या। 2 उस ने अपक्की माता से
कहा, जो ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी तुझ से ले लिए गए थे, जिनके विषय में तू ने
मेरे सुनते भी शाप दिया या, वे मेरे पास हैं; मैं ने ही उनको ले लिया या। उसकी
माता ने कहा, मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशीष होए। 3 जब उस ने वे ग्यारह
सौ टुकड़े चान्दी अपक्की माता को फेर दिए; तब माता ने कहा, मैं अपक्की ओर
से अपके बेटे के लिथे यह रूपया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूं ताकि उस से
एक मूरत खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई जाए, सो अब मैं उसे तुझ को फेर
देती हूं। 4 जब उस ने वह रूपया अपक्की माता को फेर दिया, तब माता ने दो सौ
टुकड़े ढलवैयोंको दिए, और उस ने उन से एक मूत्तिर् खोदकर, और दूसरी ढालकर

बनाई; और वे मीका के घर में रहीं। 5 मीका के पास एक देवस्यान या, तब उस ने
एक एपोद, और कई एक गृहदेवता बनवाए; और अपके एक बेटे का संस्कार
करके उसे अपना पुरोहित ठहरा लियां 6 उन दिनोंमें इस्राएलियोंका कोई राजा न
या; जिसको जो ठीक सूफ पड़ता या वही वह करता या।। 7 यहूदा के कुल का एक
जवान लेवीय यहूदा के बेतलेहेम में परदेशी होकर रहता या। 8 वह यहूदा के
बेतलेहेम नगर से इसिलिथे निकला, कि जहां कहीं स्यान मिले वहां जा रहे।
चलते चलते वह एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला। 9 मीका ने
उस से पूछा, तू कहां से आता है? उस ने कहा, मैं तो यहूदा के बेतलेहेम से आया
हुआ एक लेवीय हूं, और इसलिथे चला जाता हूं, कि जहां कहीं ठिकाना मुझे मिले
वहीं रहूं। 10 मीका ने उस से कहा, मेरे संग रहकर मेरे लिथे पिता और पुरोहित
बन, और मैं तुझे प्रति वर्ष दस टुकड़े रूपे, और एक जोडा कपड़ा, और भोजनवस्तु
दिया करूंगा; तब वह लेवीय भीतर गया। 11 और वह लेवीय उस पुरूष के संग
रहने को प्रसन्न हुआ; और वह जवान उसके साय बेटा सा बना रहा। 12 तब
मीका ने उस लेवीय का संस्कार किया, और वह जवान उसका पुरोहित होकर
मीका के घर में रहने लगा। 13 और मीका सोचता या, कि अब मैं जानता हूं कि
यहोवा मेरा भला करेगा, क्योंकि मैं ने एक लेवीय को अपना पुरोहित कर रखा
है।।

न्यायियों 18

1 उन दिनोंमें इस्राएलियोंका कोई राजा न या। और उन्हीं दिनोंमें दानियोंके गोत्र
के लोग रहने के लिथे कोई भाग ढूंढ रहे थे; क्योंकि इस्राएली गोत्रोंके बीच उनका

भाग उस समय तक न मिला या। 2 तब दानियोंने अपके सब कुल में से पांच
शूरवीरोंको सोरा और एशताओल से देश का भेद लेने और उस में देख भाल करने
के लिथे यह कहकर भेज दिया, कि जाकर देश में देख भाल करो। इसलिथे वे
एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर तक जाकर वहां टिक गए। 3 जब वे मीका के
घर के पास आए, तब उस जवान लेवीय का बोल पहचाना; इसलिथे वहां मुड़कर
उस से पूछा, तुझे यहां कौन ले आया? और तू यहां क्या करता है? और यहां तेरे
पास क्या है? 4 उस ने उन से कहा, मीका ने मुझ से ऐसा ऐसा व्यवहार किया है,
और मुझे नौकर रखा है, और मैं उसका पुरोहित हो गया हूं। 5 उन्होंने उस से
कहा, परमेश्वर से सलाह ले, कि हम जान लें कि जो यात्रा हम करते हैं वह सफल
होगी वा नहीं। 6 पुरोहित ने उन से कहा, कुशल से चले जाओ। जो यात्रा तुम करते
हो वह ठीक यहोवा के साम्हने है। 7 तब वे पांच मनुष्य चल निकले, और लैश को
जाकर वहां के लोगोंको देखा कि सीदोनियोंकी नाईं निडर, बेखटके, और शान्ति
से रहते हैं; और इस देश का कोई अधिक्कारनी नहीं है, जो उन्हें किसी काम में
रोके, और थे सीदोनियोंसे दूर रहते हैं, और दूसरे मनुष्योंसे कुछ व्यवहार नहीं
रखते। 8 तब वे सोरा और एशताओल को अपके भाइयोंके पास गए, और उनके
भाइयोंने उन से पूछा, तुम क्या समाचार ले आए हो? 9 उन्होंने कहा, आओ, हम
उन लोगोंपर चढ़ाई करें; क्योंकि हम ने उस देश को देखा कि वह बहुत अच्छा है।
तुम क्योंचुपचाप रहते हो? वहां चलकर उस देश को अपके वंश में कर लेने में
आलस न करो। 10 वहां पहुंचकर तुम निडर रहते हुए लोगोंको, और लम्बा चौड़ा
देश पाओगे; और परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में दे दिया है। वह ऐसा स्यान है
जिस में पृय्वी भर के किसी पदार्य की घटी नहीं है।। 11 तब वहां से अर्यात् सोरा

और एशताओल से दानियोंके कुल के छ: सौ पुरूषोंने युद्ध के हयियार बान्धकर
प्रस्यान किया। 12 उन्होंने जाकर यहूदा देश के किर्य्यत्यारीम नगर में डेरे खड़े
किए। इस कारण उस स्यान का नाम महनेदान आज तक पड़ा है, वह तो
किर्य्यत्यारीम के पश्‍चिम की ओर है। 13 वहां से वे आगे बढ़कर एप्रैम के पहाड़ी
देश में मीका के घर के पास आए। 14 तब जो पांच मनुष्य लैश के देश का भेद
लेने गए थे, वे अपके भाइयोंसे कहने लगे, क्या तुम जानते हो कि इन घरोंमें एक
एपोद, कई एक गृहदेवता, एक खुदी और एक ढली हुई मूरत है? इसलिथे अब
सोचो, कि क्या करना चाहिथे। 15 वे उधर मुड़कर उस जवान लेवीय के घर गए,
जो मीका का घर या, और उसका कुशल झेम पूछा। 16 और वे छ: सौ दानी पुरूष
फाटक में हयियार बान्धे हुए खड़े रहे। 17 और जो पांच मनुष्य देश का भेद लेने
गए थे, उन्होंने वहां घुसकर उस खुदी हुई मूरत, और एपोद, और गृहदेवताओं,
और ढली हुई मूरत को ले लिया, और वह पुरोहित फाटक में उन हयियार बान्धे
हुए छ: सौ पुरूषोंके संग खड़ा या। 18 जब वे पांच मनुष्य मीका के घर में घुसकर
खुदी हुई मूरत, एपोद, गृहदेवता, और ढली हुई मूरत को ले आए थे, तब पुरोहित
ने उन से पूछा, यह तुम क्या करते हो? 19 उन्होंने उस से कहा, चुप रह, अपके
मुंह को हाथ से बन्दकर, और हम लोगोंके संग चलकर, हमारे लिथे पिता और
पुरोहित बन। तेरे लिथे क्या अच्छा है? यह, कि एक ही मनुष्य के घराने का
पुरोहित हो, वा यह, कि इस्राएलियोंके एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो? 20 तब
पुरोहित प्रसन्‍न हुआ, सो वह एपोद, गृहदेवता, और खुदी हुई मूरत को लेकर उन
लोगोंके संग चला गया। 21 तब वे मुड़े, और बालबच्चों, पशुओं, और सामान को
अपके आगे करके चल दिए। 22 जब वे मीका के घर से दूर निकल गए थे, तब जो

मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरोंमें रहते थे उन्होंने इकट्ठे होकर दानियोंको
जा लिया। 23 और दानियोंको पुकारा, तब उन्होंने मुंह फेर के मीका से कहा, तुझे
क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल लिए आता है? 24 उस ने कहा, तुम तो मेरे
बनवाए हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो; फिर मेरे पास क्या रह गया? तो
तुम मुझ से क्योंपूछते हो? कि तुझे क्या हुआ है? 25 दानियोंने उस से कहा, तेरा
बोल हम लोगोंमें सुनाई न दे, कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम लोगोंपर प्रहार
करें? और तू अपना और अपके घर के लोगोंके भी प्राण को खो दे। 26 तब
दानियोंने अपना मार्ग लिया; और मीका यह देखकर कि वे मुझ से अधिक
बलवन्त हैं फिरके अपके घर लौट गया। 27 और वे मीका के बनवाए हुए
पदार्योंऔर उसके पुरोहित को साय ले लैश के पास आए, जिसके लोग शान्ति से
और बिना खटके रहते थे, और उन्होंने उनको तलवार से मार डाला, और नगर
को आग लगाकर फूंक दिया। 28 और कोई बचानेवाला न या, क्योंकि वह सीदोन
से दूर या, और वे और मनुष्योंसे कुछ व्यवहार न रखते थे। और वह बेत्रहोब की
तराई में या। तब उन्होंने नगर को दृढ़ किया, और उस में रहने लगे। 29 और
उन्होंने उस नगर का नाम इस्राएल के एक पुत्र अपके मूलपुरूष दान के नाम पर
दान रखा; परन्तु पहिले तो उस नगर का नाम लैश या। 30 तब दानियोंने उस
खुदी हुई मूरत को खड़ा कर लिया; और देश की बन्धुआई के समय वह योनातान
जो गेर्शोम का पुत्र और मूसा का पोता या, वह और उसके वंश के लोग दान गोत्र
के पुरोहित बने रहे। 31 और जब तक परमेश्वर का भवन शीलो में बना रहा, तब
तक वे मीका की खुदवाई हुई मूरत को स्यापित किए रहे।।

न्यायियों 19

1 उन दिनोंमें जब इस्राएलियोंका कोई राजा न या, तब एक लेवीय पुरूष एप्रैम के
पहाड़ी देश की परली ओर परदेशी होकर रहता या, जिस ने यहूदा के बेतलेहेम में
की एक सुरैतिन रख ली यी। 2 उसकी सुरैतिन व्यभिचार करके यहूदा के
बेतलेहेम को अपके पिता के घर चक्की गई, और चार महीने वहीं रही। 3 तब
उसका पति अपके साय एक सेवक और दो गदहे लेकर चला, और उसके यहां
गया, कि उसे समझा बुफाकर ले आए। वह उसे अपके पिता के घर ले गई, और
उस जवान स्त्री का पिता उसे देखकर उसकी भेंट से आनन्दित हुआ। 4 तब उसके
ससुर अर्यात् उस स्त्री के पिता ने बिनती करके उसे रोक लिया, और वह तीन दिन
तक उसके पास रहा; सो वे वहां खाते पिते टिके रहे। 5 चौथे दिन जब वे भोर को
सबेरे उठे, और वह चलने को हुआ; तब स्त्री के पिता ने अपके दामाद से कहा, एक
टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठण्डा कर, तब तुम लोग चले जाना। 6 तब उन
दोनोंने बैठकर संग संग खाया पिया; फिर स्त्री के पिता ने उस पुरूष से कहा, और
एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो और आनन्द कर। 7 वह पुरूष विदा होने को
उठा, परन्तु उसके सुसर ने बिनती करके उसे दबाया, इसलिथे उस ने फिर उसके
यहां रात बिताई। 8 पांचवें दिन भोर को वह तो विदा होने को सवेरे उठा; परन्तु
स्त्री के पिता ने कहा, अपना जी ठण्डा कर, और तुम दोनोंदिन ढलने तक रूके
रहो। तब उन दोनोंने रोटी खाई। 9 जब वह पुरूष अपक्की सुरैतिन और सेवक
समेत विदा होने को उठा, तब उसके ससुर अर्यात् स्त्री के पिता ने उस से कहा,
देख दिन तो ढला चला है, और सांफ होने पर है; इसलिथे तुम लोग रात भर टिके
रहो। देख, दिन तो डूबने पर है; सो यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता, और
बिहान को सवेरे उठकर अपना मार्ग लेना, और अपके डेरे को चले जाना। 10

परन्तु उस पुरूष ने उस रात को टिकना न चाहा, इसलिथे वह उठकर विदा हुआ,
और काठी बान्धे हुए दो गदहे और अपक्की सुरैतिन संग लिए हुए यबूस के
साम्हने तक (जो यरूशलेम कहलाता है) पहुंचा। 11 वे यबूस के पास थे, और दिन
बहुत ढल गया या, कि सेवक ने अपके स्वामी से कहा, आ, हम यबूसियोंके इस
नगर में मुड़कर टिकें। 12 उसके स्वामी ने उस से कहा, हम पराए नगर में जहां
कोई इस्राएली नहीं रहता, न उतरेंगे; गिबा तक बढ़ जाएंगे। 13 फिर उस ने अपके
सेवक से कहा, आ, हम उधर के स्यानोंमें से किसी के पास जाएं, हम गिबा वा
रामा में रात बिताएं। 14 और वे आगे की ओर चले; और उनके बिन्यामीन के
गिबा के निकट पहुंचते पहुंचते सूर्य अस्त हो गया, 15 इसलिथे वे गिबा में टिकने
के लिथे उसकी ओर मुड गए। और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ
गया, क्योंकि किसी ने उनको अपके घर में न टिकाया। 16 तब एक बूढा अपके
खेत के काम को निपटाकर सांफ को चला आया; वह तो एप्रैम के पहाड़ी देश का
या, और गिबा में परदेशी होकर रहता या; परन्तु उस स्यान के लोग बिन्यामीनी
थे। 17 उस ने आंखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठे देखा; और उस बूढ़े
ने पूछा, तू किधर जाता, और कहां से आता है? 18 उस ने उस से कहा, हम लोग
तो यहूदा के बेतलेहम से आकर एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं, मैं तो
वहीं का हूं; और यहूदा के बेतलेहेम तक गया या, और यहोवा के भवन को जाता
हूं, परन्तु कोई मुझे अपके घर में नहीं टिकाता। 19 हमारे पास तो गदहोंके लिथे
पुआल और चारा भी है, और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिथे भी
जो तेरे दासोंके संग है रोटी और दाखमधु भी है; हमें किसी वस्तु की घटी नहीं है।
20 बूढे ने कहा, तेरा कल्याण हो; तेरे प्रयोजन की सब वस्तुएं मेरे सिर हों; परन्तु

रात को चौक में न बिता। 21 तब वह उसको अपके घर ले चला, और गदहोंको
चारा दिया; तब वे पांव धोकर खाने पीने लगे। 22 वे आनन्द कर रहे थे, कि नगर
के लुच्चोंने घर को घेर लिया, और द्वार को खटखटा-खटखटाकर घर के उस बूढ़े
स्वामी से कहने लगे, जो पुरूष तेरे घर में आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उस से
भोग करें। 23 घर का स्वामी उनके पास बाहर जाकर उन से कहने लगा, नहीं,
नहीं, हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो; यह पुरूष जो मेरे घर पर आया है, इस से
ऐसी मूढ़ता का काम मत करो। 24 देखा, यहां मेरी कुंवारी बेटी है, और इस पुरूष
की सुरैतिन भी है; उनको मैं बाहर ले आऊंगा। और उनका पत-पानी लो तो लो,
और उन से तो जो चाहो सो करो; परन्तु इस पुरूष से ऐसी मूढ़ता का काम मत
करो। 25 परन्तु उन मनुष्योंने उसकी न मानी। तब उस पुरूष ने अपक्की
सुरैतिन को पकड़कर उनके पास बाहर कर दिया; और उन्होंने उस से कुकर्म
किया, और रात भर क्या भोर तक उस से लीला क्रीड़ा करते रहे। और पह फटते
ही उसे छोड़ दिया। 26 तब वह स्त्री पह फटते हुए जाके उस मनुष्य के घर के द्वार
पर जिस में उसका पति या गिर गई, और उजियाले के होने तक वहीं पक्की रही।
27 सवेरे जब उसका पति उठ, घर का द्वार खोल, अपना मार्ग लेने को बाहर गया,
तो क्या देखा, कि मेरी सुरैतिन घर के द्वार के पास डेवढ़ी पर हाथ फैलाए हुए
पक्की है। 28 उस ने उस से कहा, उठ हम चलें। जब कोई न बोला, तब वह उसको
गदहे पर लादकर अपके स्यान को गया। 29 जब वह अपके घर पहुंचा, तब छूरी
ले सुरैतिन को अंग अंग करके काटा; और उसे बारह टुकड़े करके इस्राएल के देश
में भेज दिया। 30 जितनोंने उसे देखा, वे सब आपस में कहने लगे, इस्राएलियोंके
मिस्र देश मे चले आने के समय से लेकर आज के दिन तक ऐसा कुछ कभी नहीं

हुआ, और न देखा गया; सो इसको सोचकर सम्मति करो, और बताओ।।

न्यायियों 20

1 तब दान से लेकर बर्शेबा तक के सब इस्राएली और गिलाद के लोग भी निकले,
और उनकी मण्डली एक मत होकर मिस्पा में यहोवा के पास इकट्ठी हुई। 2 और
सारी प्रजा के प्रधान लोग, वरन सब इस्राएली गोत्रोंके लोग जो चार लाख तलवार
चलाने वाले प्यादे थे, परमेश्वर की प्रजा की सभा में उपस्थित हुए। 3
(बिन्यामीनियोंने तो सुना कि इस्राएली मिस्मा को आए हैं।) और इस्राएली पूछने
लगे, हम से कहो, यह बुराई कैसे हुई? 4 उस मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने
उत्तर दिया, मैं अपक्की सुरैतिन समेत बिन्यामीन के गिबा में टिकने को गया
या। 5 तब गिबा के पुरूषोंने मुझ पर चढ़ाई की, और रात के समय घर को घेरके
मुझे घात करना चाहा; और मेरी सुरैतिन से इतना कुकर्म किया कि वह मर गई।
6 तब मैं ने अपक्की सुरैतिन को लेकर टुकड़े टुकड़े किया, और इस्राएलियोंके
भाग के सारे देश में भेज दिया, उन्होंने तो इस्राएल में महापाप और मूढ़ता का
काम किया है। 7 सुनो, हे इस्राएलियों, सब के सब देखो, और यहीं अपक्की
सम्मति दो। 8 तब सब लोग एक मन हो, उठकर कहने लगे, न तो हम में से कोई
अपके डेरे जाएगा, और न कोई अपके घर की ओर मुड़ेगा। 9 परन्तु अब हम
गिबा से यह करेंगे, अर्यात् हम चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे, 10 और
हम सब इस्राएली गोत्रोंमें सौ पुरूषोंमें से दस, और हजार पुरूषोंमें से एक सौ, और
दस हजार में से एक हजार पुरूषोंको ठहराएं, कि वे सेना के लिथे भोजनवस्तु
पहुंचाएं; इसलिथे कि हम बिन्यामीन के गिबा में पहुंचकर उसको उस मूढ़ता का

पूरा फल भुगता सकें जो उन्होंने इस्राएल में की है। 11 तब सब इस्राएली पुरूष
उस नगर के विरूद्ध एक पुरूष की नाईं जुटे हुए इकट्ठे हो गए।। 12 और इस्राएली
गोत्रियोंमें कितने मनुष्य यह पूछने को भेजे, कि यह क्या बुराई है जो तुम लोगोंमें
की गई है? 13 अब उन गिबावासी लुच्चोंको हमारे हाथ कर दो, कि हम उनको
जान से मार के इस्राएल में से बुराई नाश करें। परन्तु बिन्यामीनियोंने अपके भाई
इस्राएलियोंकी मानने से इन्कार किया। 14 और बिन्यामीनी अपके अपके नगर
में से आकर गिबा में इसलिथे इकट्ठे हुए, कि इस्राएलियोंसे लड़ने को निकलें। 15
और उसी दिन गिबावासी पुरूषोंको छोड़, जिनकी गिनती सात सौ चुने हुए पुरूष
ठहरी, और और नगरोंसे आए हुए तलवार चलानेवाले बिन्यामीनियोंकी गिनती
छब्बीस हजार पुरूष ठहरी। 16 इन सब लोगोंमें से सात सौ बैंहत्थे चुने हुए पुरूष
थे, जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्यर मारने में बाल भर भी न चूकते थे।
17 और बिन्यामीनियोंको छोड़ इस्राएली पुरूष चार लाख तलवार चलानेवाले थे;
थे सब के सब योद्धा थे।। 18 सब इस्राएली उठकर बेतेल को गए, और यह कहकर
परमेश्वर से सलाह ली, और इस्राएलियोंने पूछा, कि हम में से कौन
बिन्यामीनियोंसे लड़ने को पहिले चढ़ाई करे? यहोवा ने कहा, यहूदा पहिले चढ़ाई
करे। 19 तब इस्राएलियोंने बिहान को उठकर गिबा के साम्हने डेरे डाले। 20 और
इस्राएली पुरूष बिन्यामीनियोंसे लड़ने को निकल गए; और इस्राएली पुरूषोंने उस
से लड़ने को गिबा के विरूद्ध पांति बान्धी। 21 तब बिन्यामीनियोंने गिबा से
निकल उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरूषोंको मारके मिट्टी में मिला दिया।
22 तौभी इस्राएली पुरूष लोगोंने हियाव बान्धकर उसी स्यान में जहां उन्होंने
पहिले दिन पांति बान्धी यी, फिर पांती बान्धी। 23 और इस्राएली जाकर सांफ

तक यहोवा के साम्हने राते रहे; और यह कहकर यहोवा से पूछा, कि क्या हम
अपके भाई बिन्यामीनियोंसे लड़ने को फिर पास जाएं? यहोवा ने कहा, हां, उन पर
चढ़ाई करो। 24 तब दूसरे दिन इस्राएली बिन्यामीनियोंके निकट पहुंचे। 25 तब
बिन्यामीनियोंने दूसरे दिन उनका साम्हना करने को गिबा से निकलकर फिर
अठारह हजार इस्राएली पुरूषोंको मारके, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे,
मिट्टी में मिला दिया। 26 तब सब इस्राएली, वरन सब लोग बेतेल को गए; और
रोते हुए यहोवा के साम्हने बैठे रहे, और उस दिन सांफ तक उपवास किए रहे,
और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। 27 और इस्राएलियोंने यहोवा से
सलाह ली (उस समय तो परमेश्वर का वाचा का सन्दूक वहीं या, 28 और
पीनहास, जो हारून का पोता, और एलीआजर का पुत्र या उन दिनोंमें उसके
साम्हने हाजिर रहा करता या।) उन्होंने पूछा, क्या मैं एक और बार अपके भाई
बिन्यामीनियोंसे लड़ने को निकल जाऊं, वा उनको छोड़ूं? यहोवा ने कहा, चढ़ाई
कर; क्योंकि कल मैं उनको तेरे हाथ में कर दूंगा। 29 तब इस्राएलियोंने गिबा के
चारोंओर लोगोंको धात में बैठाया। 30 तीसरे दिन इस्राएलियोंने बिन्यामीनियोंपर
फिर चढ़ाई की, और पहिले की नाईं गिबा के विरूद्ध पांति बान्धी। 31 तब
बिन्यामीनी उन लोगोंका साम्हना करने को निकले, और नगर के पास से खींचे
गए; और जो दो सड़क, एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई है, उन में लोगोंको
पहिले की नाईं मारने लगे, और मैदान में कोई तीस इस्राएली मारे गए। 32
बिन्यामीनी कहने लगे, वे पहिले की नाईं हम से मारे जाते हैं। परन्तु
इस्राएलियोंने कहा, हम भागकर उनको नगर में से सड़कोंमें खींच ले आएं। 33
तब सब इस्राएली पुरूषोंने अपके स्यान में उठकर बालतामार में पांति बान्धी;

और घात में बैठे हुए इस्राएली अपके स्यान से, अर्यात् मारेगेवा से अचानक
निकले। 34 तब सब इस्राएलियोंमें से छांटे हुए दास हजार पुरूष गिबा के साम्हने
आए, और घोर लड़ाई होने लगी; परन्तु वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी
पड़ा चाहती है। 35 तब यहोवा ने बिन्यामीनियोंको इस्राएल से हरवा दिया, और
उस दिन इस्राएलियोंने पक्कीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुरूषोंको नाश किया,
जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे।। 36 तब बिन्यामीनियोंने देखा कि हम
हार गए। और इस्राएली पुरूष उन घातकोंपर भरोसा करके जिन्हें उन्होंने गिबा के
साय बैठाया या बिन्यामीनियोंके साम्हने से चले गए। 37 परन्तु घातक लोग
फुर्ती करके गिबा पर फपट गए; और घातकोंने आगे बढ़कर कुल नगर को
तलवार से मारा। 38 इस्राएली पुरूषोंऔर घातकोंके बीच तो यह चिन्ह ठहराया
गया या, कि वे नगर में से बहुत बड़ा धूएं का खम्भा उठाएं। 39 इस्राएली पुरूष तो
लड़ाई में हटने लगे, और बिन्यामीनियोंने यह कहकर कि निश्चय वे पहिली लड़ाई
की नाई हम से हारे जाते हैं, इस्राएलियोंको मार डालने लगे, और तीस एक
पुरूषोंको घात किया। 40 परन्तु जब वह धूएं का खम्भा नगर में से उठने लगा,
तब बिन्यामीनियोंने अपके पीछे जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि नगर का नगर
धूंआ होकर आकाश की ओर उड़ रहा है। 41 तब इस्राएली पुरूष घूमे, और
बिन्यामीनी पुरूष यह देखकर घबरा गए, कि हम पर विपत्ति आ पक्की है। 42
इसलिथे उन्होंने इस्राएली पुरूषोंको पीठ दिखाकर जंगल का मार्ग लिया; परन्तु
लड़ाई उन से होती ही रह, और जो और नगरोंमें से आए थे उनको इस्राएली रास्ते
में नाश करते गए। 43 उन्होंने बिन्यामीनियोंको घेर लिया, और उन्हें खदेड़ा, वे
मनूहा में वरन गिबा के पूर्व की ओर तक उन्हें लताड़ते गए। 44 और

बिन्यामीनियोंमें से अठारह हजार पुरूष जो सब के सब शूरवीर थे मारे गए। 45
तब वे घूमकर जंगल में की रिम्मोन नाम चट्टान की ओर तो भाग गए; परन्तु
इस्राएलियोंने उन से पांच हजार को बीनकर सड़कोंमें मार डाला; फिर गिदोम तक
उनके पीछे पड़के उन में से दो हजार पुरूष मार डाले। 46 तब बिन्यामीनियोंमें से
जो उस दिन मारे गए वे पक्कीस हजार तलवार चलानेवाले पुरूष थे, और थे सब
शूरवीर थे। 47 परन्तु छ: सौ पुरूष घूमकर जंगल की ओर भागे, और रिम्मोन
नाम चट्टान में पहुंच गए, और चार महीने वहीं रहे। 48 तब इस्राएली पुरूष
लौटकर बिन्यामिनियोंपर लपके और नगरोंमें क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या जो
कुछ मिला, सब को तलवार से नाश कर डाला। और जितने नगर उन्हें मिले उन
सभोंको आग लगाकर फूंक दिया।।

न्यायियों 21

1 इस्राएली पुरूषोंने तो मिस्पा में शपय खाकर कहा या, कि हम में कोई अपक्की
बेटी किसी बिन्यामीनी को न ब्याह देगा। 2 वे बेतेल को जाकर सांफ तक
परमेश्वर के साम्हने बैठे रहे, और फूट फूटकर बहुत रोते रहे। 3 और कहते थे, हे
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस्राएल में ऐसा क्योंहोने पाया, कि आज इस्राएल में
एक गोत्र की घटी हुई है? 4 फिर दूसरे दिन उन्होंने सवेरे उठ वहां वेदी बनाकर
होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। 5 तब इस्राएली पूछने लगे, इस्राएल के सारे
गोत्रोंमें से कौन है जो यहोवा के पास सभा में न आया या? उन्होंने तो भारी शपय
खाकर कहा या, कि जो कोई मिस्पा को यहोवा के पास न आए वह निश्चय मार
डाला जाएगा। 6 तब इस्राएली अपके भाई बिन्यामीन के विषय में यह कहकर

पछताने लगे, कि आज इस्राएल में से एक गोत्र कट गया है। 7 हम ने जो यहोवा
की शपय खाकर कहा है, कि हम उन्हें अपक्की किसी बेटी को न ब्याह देंगे,
इसलिथे बचे हुओं को स्त्रियां मिलने के लिथे क्या करें? 8 जब उन्होंने यह पूछा,
कि इस्राएल के गोत्रोंमें से कौन है जो मिस्पा को यहोवा के पास न आया या? तब
यह मालूम हुआ, कि गिलादी यावेश से कोई छावनी में सभा को न आया या। 9
अर्यात् जब लोगोंकी गिनती की गई, तब यह जाना गया कि गिलादी यावेश के
निवासियोंमें से कोई यहां नहीं है। 10 इसलिथे मण्डली ने बारह हजार शूरवीरोंको
वहां यह आज्ञा देकर भेज दिया, कि तुम जाकर स्त्रियोंऔर बालबच्चोंसमेत
गिलादी यावेश को तलवार से नाश करो। 11 और तुम्हें जो करना होगा वह यह है,
कि सब पुरूषोंको और जितनी स्त्ि्रयोंने पुरूष का मुंह देखा हो उनको सत्यानाश
कर डालना। 12 और उन्हें गिलादी यावेश के निवासियोंमें से चार सौ जवान
कुमारियां मिलीं जिन्होंने पुरूष का मुंह नहीं देखा या; और उन्हें वे शीलो को जो
कनान देश में है छावनी में ले आए।। 13 तब सारी मण्डली ने उन
बिन्यामीनियोंके पास जो रिम्मोन नाम चट्टान पर थे कहला भेजा, और उन से
संधि का प्रचार कराया। 14 तब बिन्यामीन उसी समय लौट गए; और उनको वे
स्त्रियां दी गईं जो गिलादी यावेश की स्त्रियोंमें से जीवित छोड़ी गईं यीं; तौभी वे
उनके लिथे योड़ी यीं। 15 तब लोग बिन्यामीन के विषय फिर यह कहके पछताथे,
कि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रोंमें घटी की है। 16 तब मण्डली के वृद्ध गोत्रोंने कहा,
कि बिन्यामीनी स्त्रियां जो नाश हुई हैं, तो बचे हुए पुरूषोंके लिथे स्त्री पाने का हम
क्या उपाय करें? 17 फिर उन्होंने कहा, बचे हुए बिन्यामीनियोंके लिथे कोई भाग
चाहिथे, ऐसा न हो कि इस्राएल में से एक गोत्र मिट जाए। 18 परन्तु हम तो

अपक्की किसी बेटी को उन्हें ब्याह नहीं दे सकते, क्योंकि इस्राएलियोंने यह
कहकर शपय खाई है कि शापित हो वह जो किसी बिन्यामीनी को अपक्की
लड़की ब्याह दे। 19 फिर उन्होंने कहा, सुनो, शीलो जो बेतेल की उत्तर ओर, और
उस सड़क की पूर्व ओर है जो बेतेल से शकेन को चक्की गई है, और लाबोना की
दक्खिन ओर है, उस में प्रति वर्ष यहोवा का एक पर्व माना जाता है। 20 इसलिथे
उन्होंने बिन्यामीनियोंको यह आज्ञा दी, कि तुम जाकर दाख की बारियोंके बीच
घात लगाए बैठे रहो, 21 और देखते रहो; और यदि शीलो की लड़कियां नाचने को
निकलें, तो तुम दाख की बारियोंसे निकलकर शीलो की लड़कियोंमें से अपक्की
अपक्की स्त्री को पकड़कर बिन्यामीन के देश को चले जाना। 22 और जब उनके
पिता वा भाई हमारे पास फगड़ने को आएंगे, तब हम उन से कहेंगे, कि अनुग्रह
करके उनको हमें दे दो, क्योंकि लड़ाई के समय हम ने उन में से एक एक के लिथे
स्त्री नहीं बचाई; और तुम लोगोंने तो उनको ब्याह नहीं दिया, नहीं तो तुम अब
दोषी ठहरते। 23 तब बिन्यामीनियोंने ऐसा ही किया, अर्यात् उन्होंने अपक्की
गिनती के अनुसार उन नाचनेवालियोंमें से पकड़कर स्त्रियां ले लीं; तब अपके
भाग को लौट गए, और नगरोंको बसाकर उन में रहने लगे। 24 उसी समय
इस्राएली वहां से चलकर अपके अपके गोत्र और अपके अपके घराने को गए, और
वहां से वे अपके अपके निज भाग को गए। 25 उन दिनोंमें इस्राएलियोंका कोई
राजा न या; जिसको जो ठीक सूफ पड़ता या वही वह करता या।।

रूत 1

1 जिन दिनोंमें न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनोंमें देश में अकाल पड़ा, तब

यहूदा के बेतलेहेम का एक पुरूष अपक्की स्त्री और दोनो पुत्रोंको संग लेकर
मोआब के देश में परदेशी होकर रहने के लिथे चला। 2 उस पुरूष का नाम
एलीमेलेक, और उसकी पत्नि का नाम नाओमी, और उसके दो बेटोंके नाम
महलोन और किल्योन थे; थे एप्राती अर्यात् यहूदा के बेतलेहेम के रहनेवाले थे।
और मोआब के देश में आकर वहां रहे। 3 और नाओमी का पति एलीमेलेक मर
गया, और नाओमी और उसके दोनो पुत्र रह गए। 4 और इन्होंने एक एक
मोआबिन ब्याह ली; एक स्त्री का नाम ओर्पा और दूसरी का नाम रूत या। फिर वे
वहां कोई दस वर्ष रहे। 5 जब महलोन और किल्योन दोनोंमर गए, तब नाआमी
अपके दोनोंपुत्रोंऔर पति से रहित हो गई। 6 तब वह मोआब के देश में यह
सुनकर, कि यहोवा ने अपक्की प्रजा के लोगोंकी सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु दी
है, उस देश से अपक्की दोनोंबहुओं समेत लौट जाने को चक्की। 7 तब वह
अपक्की दोनोंबहुओं समेत उस स्यान से जहां रहती यीं निकलीं, और उन्होने
यहूदा देश को लौट जाने का मार्ग लिया। 8 तब नाओमी ने अपक्की दोनो बहुओं
से कहा, तुम अपके अपके मैके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उन से जो मर गए हैं
और मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे। 9 यहोवा ऐसा
करे कि तुम फिर पति करके उनके घरोंमें विश्रम पाओ। तब उस ने उन को चूमा,
और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं, 10 और उस से कहा, निश्चय हम तेरे संग
तेरे लोगोंके पास चलेंगी। 11 नाओमी ने कहा, हे मेरी बेटियों, लौट जाओ, तुम
क्योंमेरे संग चलोगी? क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों? 12 हे
मेरी बेटियों, लौटकर चक्की जाओ, क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूं। और चाहे मैं
कहती भी, कि मुझे आशा है, और आज की रात मेरे पति होता भी, और मेरे पुत्र

भी होते, 13 तौभी क्या तुम उनके सयाने होने तक आशा लगाए ठहरी रहतीं?
और उनके निमित्त पति करने से रूकी रहतीं? हे मेरी बेटियों, ऐसा न हो, क्योंकि
मेरा दु:ख तुम्हारे दु:ख से बहुत बढ़कर है; देखो, यहोवा का हाथ मेरे विरूद्ध उठा
है। 14 तब वे फिर से उठीं; और ओर्पा ने तो अपक्की सास को चूमा, परन्तु रूत
उस से अलग न हुई। 15 तब उस ने कहा, देख, तेरी जिठानी तो अपके लोगोंऔर
अपके देवता के पास लौट गई है; इसलिए तू अपक्की जिठानी के पीछे लौट जा।
16 रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा;
क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी; जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे
लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; 17 जहां तू मरेगी वहां
मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी
कारण मैं तुझ से अलग होऊं, तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक
करे। 18 जब उस ने यह देखा कि वह मेरे संग चलने को स्यिर है, तब उस ने उस
से और बात न कही। 19 सो वे दोनोंचल निकलीं और बेतलेहेम को पहुंची। और
उनके बेतलेहेम में पहुंचने पर कुल नगर में उनके कारण धूम मची; और स्त्रियां
कहने लगीं, क्या यह नाओमी है? 20 उस ने उन से कहा, मुझे नाओमी न कहो,
मुझे मारा कहो, क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दु:ख दिया है। 21 मैं भरी
पूरी चक्की गई यी, परन्तु यहोवा ने मुझे छूछी करके लौटाया है। सो जब कि
यहोवा ही ने मेरे विरूद्ध साझी दी, और सर्वशक्तिमान ने मुझे दु:ख दिया है, फिर
तुम मुझे क्योंनाओमी कहती हो? 22 इस प्रकार नाओमी अपक्की मोआबिन बहू
रूत के साय लौटी, जो मोआब के देश से आई यी। और वे जो कटने के आरम्भ के
समय बेतलेहेम में पहुंची।।

रूत 2

1 नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी या,
जिसका नाम बोअज या। 2 और मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, मुझे किसी
खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे पीछे मैं सिला
बीनती जाऊं। उस ने कहा, चक्की जा, बेटी। 3 सो वह जाकर एक खेत में
लवनेवालोंके पीछे बीनने लगी, और जिस खेत में वह संयोग से गई यी वह
एलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज का या। 4 और बोअज बेतलेहेम से आकर
लवनेवालोंसे कहने लगा, यहोवा तुम्हारे संग रहे, और वे उस से बोले, यहोवा तुझे
आशीष दे। 5 तब बोअज ने अपके उस सेवक से जो लवनेवालोंके ऊपर ठहराया
गया या पूछा, वह किस की कन्या है। 6 जो सेवक लवनेवालोंके ऊपर ठहराया
गया या उस ने उत्तर दिया, वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के संग मोआब
देश से लौट आई है। 7 उस ने कहा या, मुझे लवनेवालोंके पीछे पीछे पूलोंके बीच
बीनने और बालें बटोरने दे। तो वह आई, और भोर से अब तक यहीं है, केवल
योड़ी देर तक घर में रही यी। 8 तब बोअज ने रूत से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू
सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी ही दासियोंके संग यहीं
रहना। 9 जिस खेत को वे लवतीं होंउसी पर तेरा ध्यान बन्धा रहे, और उन्हीं के
पीछे पीछे चला करना। क्या मैं ने जवानोंको आज्ञा नहीं दी, कि तुझ से न बोलें?
और जब जब तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनोंके पास जाकर जवानोंका भरा
हुआ पानी पीना। 10 तब वह भूमि तक फुककर मुंह के बल गिरी, और उस से
कहने लगी, क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी
सुधि ली है? 11 बोअज ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपक्की

सास से किया है, और तू किस रीति अपके माता पिता और जन्मभूमि को
छोड़कर ऐसे लोगोंमें आई है जिनको पहिले तू ने जानती यी, यह सब मुझे
विस्तार के साय बताया गया है। 12 यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखोंके तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दें
13 उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे, क्योंकि यद्यपि
मैं तेरी दासियोंमें से किसी के भी बराबर नहीं हूं, तौभी तू ने अपक्की दासी के मन
में पैठनेवाली बातें कहकर मुझे शान्ति दी है। 14 फिर खाने के समय बोअज ने
उस से कहा, यहीं आकर रोटी खा, और अपना कौर सिरके में बोर। तो वह
लवनेवालोंके पास बैठ गई; और उस ने उसको भुनी हुई बालें दी; और वह खाकर
तृप्त हुई, वरन कुछ बचा भी रखा। 15 जब वह बीनने को उठी, तब बोअज ने
अपके जवानोंको आज्ञा दी, कि उसको पूलोंके बीच बीच में भी बीनने दो, और दोष
मत लगाओ। 16 वरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ निकाल कर गिरा भी दिया
करो, और उसके बीनने के लिथे छोड़ दो, और उसे घुड़को मत। 17 सो वह सांफ
तक खेत में बीनती रही; तब जो कुछ बीन चुकी उसे फटका, और वह कोई एपा
भर जौ निकला। 18 तब वह उसे उठाकर नगर में गई, और उसकी सास ने उसका
बीना हुआ देखा, और जो कुछ उस ने तृप्त होकर बचाया या उसको उस ने
निकालकर अपक्की सास को दिया। 19 उसकी सास ने उस से पूछा, आज तू कहां
बीनती, और कहां काम करती यी? धन्य वह हो जिस ने तेरी सुधि ली है। तब उस
ने अपक्की सास को बता दिया, कि मैं ने किस के पास काम किया, और कहा, कि
जिस पुरूष के पास मैं ने आज काम किया उसका नाम बोअज है। 20 नाओमी ने
अपक्की बहू से कहा, वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उस ने न तो

जीवित पर से और न मरे हुओं पर से अपक्की करूणा हटाई! फिर नाओमी ने उस
से कहा, वह पुरूष तो हमारा कुटुम्बी है, वरन उन में से है जिनको हमारी भूमि
छुड़ाने का अधिक्कारने है। 21 फिर रूत मोआबिन बोली, उस ने मुझ से यह भी
कहा, कि जब तक मेरे सेवक मेरी कटनी पूरी न कर चुकें तब तक उन्हीं के संग
संग लगी रह। 22 नाओमी ने अपक्की बहु रूत से कहा, मेरी बेटी यह अच्छा भी
है, कि तू उसी की दासियोंके साय साय जाया करे, और वे तुझ को दूसरे के खेत में
न मिलें। 23 इसलिथे रूत जौ और गेहूं दोनोंकी कटनी के अन्त तक बीनने के
लिथे बोअज की दासियोंके साय साय लगी रही; और अपक्की सास के यहां रहती
यी।।

रूत 3

1 उसकी सास नाओमी ने उस से कहा, हे मेरी बेटी, क्या मैं तेरे लिथे ठांव न ढूंढूं
कि तेरा भला हो? 2 अब जिसकी दासियोंके पास तू यी, क्या वह बोअज हमारा
कुटुम्बी नहीं है? वह तो आज रात को खलिहान में जौ फटकेगा। 3 तू स्नान कर
तेल लगा, वस्त्र पहिनकर खलिहान को जा; परन्तु जब तक वह पुरूष खा पी न
चुके तब तक अपके को उस पर प्रगट न करना। 4 और जब वह लेट जाए, तब तू
उस के लेटने के स्यान को देख लेना; फिर भीतर जा उसके पांव उघारके लेट
जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिथे। 5 उस ने उस से कहा,
जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूंगी। 6 तब वह खलिहान को गई और अपक्की
सास की आज्ञा के अनुसार ही किया। 7 जब बोअज खा पी चुका, और उसका मन
आनन्दित हुआ, तब जाकर राशि के एक सिक्के पर लेट गया। तब वह चुपचाप

गई, और उसके पांव उघार के लेट गई। 8 आधी रात को वह पुरूष चौंक पड़ा, और
आगे की ओर फुककर क्या पाया, कि मेरे पांवोंके पास कोई स्त्री लेटी है। 9 उस ने
पूछा, तू कौन है? तब वह बोली, मैं तो तेरी दासी रूत हूं; तू अपक्की दासी को
अपक्की चद्दर ओढ़ा दे, क्योंकि तू हमारी भूमि छुड़ानेवाला कुटुम्बी है। 10 उस ने
कहा, हे बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष हो; क्योंकि तू ने अपक्की
पिछली प्रीति पहिली से अधिक दिखाई, क्योंकि तू, क्या धनी, क्या कंगाल, किसी
जवान के पीछे नहीं लगी। 11 इसलिथे अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू
कहेगी मैं तुझ से करूंगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री
है। 12 और अब सच तो है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्बी हूं, तौभी एक और है जिसे
मुझ से पहिले ही छुड़ाने का अधिक्कारने है। 13 सो रात भर ठहरी रह, और सबेरे
यदि वह तेरे लिथे छुड़ानेवाले का काम करना चाहे; तो अच्छा, वही ऐसा करे;
परन्तु यदि वह तेरे लिथे छुड़ानेवाले का काम करने को प्रसन्न न हो, तो यहोवा
के जीवन की शपय मैं ही वह काम करूंगा। भोर तक लेटी रह। 14 तब वह उसके
पांवोंके पास भोर तक लेटी रही, और उस से पहिले कि कोई दूसरे को चीन्ह सके
वह उठी; और बोअज ने कहा, कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई
यी। 15 तब बोअज ने कहा, जो चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर याम्भ ले। और जब
उस ने उसे याम्भा तब उस ने छ: नपुए जौ नापकर उसको उठा दिया; फिर वह
नगर में चक्की गई। 16 जब रूत अपक्की सास के पास आई तब उस ने पूछा, हे
बेटी, क्या हुआ? तब जो कुछ उस पुरूष ने उस से किया या वह सब उस ने उसे
कह सुनाया। 17 फिर उस ने कहा, यह छ: नपुए जौ उस ने यह कहकर मुझे दिया,
कि अपक्की सास के पास छूछे हाथ मत जा। 18 उस ने कहा, हे मेरी बेटी, जब

तक तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस पुरूष को यह काम बिना निपटाए चैन न पकेगा।।

रूत 4

1 तब बोअज फाटक के पास जाकर बैठ गया; और जिस छुड़ानेवाले कुटुम्बी की
चर्चा बोअज ने की यी, वह भी आ गया। तब बोअज ने कहा, हे फुलाने, इघर
आकर यहीं बैठ जा; तो वह उधर जाकर बैठ गया। 2 तब उस ने नगर के दस वृद्ध
लोगोंको बुलाकर कहा, यहीं बैठ जाओ; वे भी बैठ गए। 3 तब वह छुड़ानेवाले
कुटुम्बी से कहने लगा, नाओमी जो मोआब देश से लौट आई है वह हमारे भाई
एलीमेलेक की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है। 4 इसलिथे मैं ने सोचा कि यह
बात तुझ को जताकर कहूंगा, कि तू उसको इन बैठे हुओं के साम्हने और मेरे
लोगोंके इन वृद्ध लोगोंके साम्हने मोल ले। और यदि तू उसको छुड़ाना चाहे, तो
छुड़ा; और यदि तू छुड़ाना न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि मैं समझ लूं;
क्योंकि तुझे छोड़ उसके छुड़ाने का अधिक्कारने और किसी को नहीं है, और तेरे
बाद मैं हूं। उस ने कहा, मैं उसे छुड़ाऊंगा। 5 फिर बोअज ने कहा, जब तू उस भूमि
को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए
की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पकेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में
स्यिर कर दे। 6 उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, मैं उसको छुड़ा नहीं सकता, ऐसा
न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिथे मेरा छुड़ाने का अधिक्कारने तू ले
ले, क्योंकि मुझ से वह छुड़ाया नहीं जाता। 7 अगले समय में इस्राएल में छुड़ाने के
बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिथे यह व्यवहार या, कि मनुष्य

अपक्की जूती उतार के दूसरे को देता या। इस्राएल में गवाही इसी रीति होती यी।
8 इसलिथे उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने बोअज से यह कहकर; कि तू उसे मोल ले,
अपक्की जूती उतारी। 9 तब बोअज ने वृद्ध लोगोंऔर सब लोगोंसे कहा, तुम आज
इस बात के साझी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और
महलोन का या, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूं। 10 फिर महलोन की
स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं अपक्की पत्नी करने के लिथे इस मनसा से मोल लेता
हूं, कि मरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्यिर करूं, कहीं ऐसा न हो कि मरे
हुए का नाम उसके भाइयोंमें से और उसके स्यान के फाटक से मिट जाए; तुम
लोग आज साझी ठहरे हो। 11 तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्होंने और
वृद्ध लोगोंने कहा, हम साझी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा
इस्राएल के घराने की दो उपजानेवाली राहेल और लिआ: के समान करे। और तू
एप्राता में वीरता करे, और बेतलेहेम में तेरा बड़ा नाम हो; 12 और जो सन्तान
यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे उसके कारण से तेरा घराना पेरेस का सा हो
जाए, जो तामार से यहूदा के द्वारा उत्पन्न हुआ। 13 तब बोअज ने रूत को ब्याह
लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की
दया से उस को गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ। 14 तब स्त्रियोंने
नाओमी से कहा, यहोवा धन्य है, जिस ने तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना
नहीं छोड़ा; इस्राएल में इसका बड़ा नाम हो। 15 और यह तेरे जी में जी ले
आनेवाला और तेरा बुढ़ापे में पालनेवाला हो, क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम
रखती और सात बेटोंसे भी तेरे लिथे श्रेष्ट है उसी का यह बेटा है। 16 फिर नाओमी
उस बच्चे को अपक्की गोद में रखकर उसकी धाई का काम करने लगी। 17 और

उसकी पड़ोसिनोंने यह कहकर, कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के
का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ।। 18 पेरेस की
यह वंशावली है, अर्यात् पेरेस से हेब्रोन, 19 और हेब्रोन से राम, और राम से
अम्मीनादाब, 20 और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सल्मोन 21 और
सल्मोन से बोअज, और बोअज से ओबेद, 22 और ओबेद से यिशै, और यिशै से
दाऊद उत्पन्न हुआ।।

1 शमूएल 1

1 एप्रैम के पहाड़ी देश के रामतैम सोपीम नाम नगर का निवासी एल्काना नाम
पुरूष या, वह एप्रेमी या, और सूप के पुत्र तोहू का परपोता, एलीहू का पोता, और
यरोहाम का पुत्र या। 2 और उसके दो पत्नियां यीं; एक का तो नाम हन्ना और
दूसरी का पनिन्ना या। और पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई
बालक न हुआ। 3 वह पुरूष प्रति वर्ष अपके नगर से सेनाओं के यहोवा को
दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिथे शीलो में जाता या; और वहां होप्नी
और पीनहास नाम एली के दोनोंपुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे। 4 और जब
जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता या तब तब वह अपक्की पत्नी पनिन्ना को और
उसके सब बेटे-बेटियोंको दान दिया करता या; 5 परन्तु हन्ना को वह दूना दान
दिया करता या, क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता या; तौभी यहोवा ने उसकी
कोख बन्द कर रखी यी। 6 परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी
कोख बन्द कर रखी यी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती यीं। 7 और वह तो
प्रति वर्ष ऐसा ही करता या; और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती यी तब

पनिन्ना उसको चिढ़ाती यी। इसलिथे वह रोती और खाना न खाती यी। 8
इसलिथे उसके पति एल्काना ने उस से कहा, हे हन्ना, तू क्योंरोती है? और खाना
क्योंनहीं खाती? और मेरा मन क्योंउदास है? क्या तेरे लिथे मैं दस बेटोंसे भी
अच्छा नहीं हूं? 9 तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के
मन्दिर के चौखट के एक अलंग के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ या। 10
और यह मन में व्याकुल होकर यहोवा से प्रार्यना करने और बिलख बिलखकर
रोने लगी। 11 और उस ने यह मन्नत मानी, कि हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू
अपक्की दासी के दु:ख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपक्की
दासी को भूल न जाए, और अपक्की दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर
के लिथे यहोवा को अर्पण करूंगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा। 12
जब वह यहोवा के साम्हने ऐसी प्रार्यना कर रही यी, तब एली उसके मुंह की ओर
ताक रहा या। 13 हन्ना मन ही मन कह रही यी; उसके होंठ तो हिलते थे परन्तु
उसका शब्द न सुन पड़ता या; इसलिथे एली ने समझा कि वह नशे में है। 14 तब
एली ने उस से कहा, तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार। 15 हन्ना ने
कहा, नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं तो दु:खिया हूं; मैं ने न तो दाखमधु पिया है और न
मदिरा, मैं ने अपके मन की बात खोलकर यहोवा से कही है। 16 अपक्की दासी
को ओछी स्त्री न जान जो कुछ मैं ने अब तक कहा है, वह बहुत ही शोकित होने
और चिढ़ाई जाने के कारण कहा है। 17 एली ने कहा, कुशल से चक्की जा;
इस्राएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे। 18 उसे ने कहा, तेरी दासी तेरी दृष्टि में
अनुग्रह पाए। तब वह स्त्री चक्की गई और खाना खाया, और उसका मुंह फिर
उदास न रहा। 19 बिहान को वे सवेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामा में अपके

घर लौट गए। और एलकाना अपक्की स्त्री हन्ना के पास गया, और यहोवा ने
उसकी सुधि ली; 20 तब हन्ना गर्भवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ,
और उसका नाम शमूएल रखा, क्योंकि वह कहने लगी, मैं ने यहोवा से मांगकर
इसे पाया है। 21 फिर एल्काना अपके पूरे घराने समेत यहोवा के साम्हने प्रति वर्ष
की मेलबलि चढ़ाने और अपक्की मन्नत पूरी करने के लिथे गया। 22 परन्तु
हन्ना अपके पति से यह कहकर घर में रह गई, कि जब बालक का दूध छूट
जाएगा तब मैं उसको ले जाऊंगी, कि वह यहोवा को मुंह दिखाए, और वहां सदा
बना रहे। 23 उसके पति एलकाना ने उस से कहा, जो तुझे भला लगे वही कर,
जब तक तू उसका दूध न छुड़ाए तब तक यहीं ठहरी रह; केवल इतना हो कि
यहोवा अपना वचन पूरा करे। इसलिथे वह स्त्री वहीं घर पर रह गई और अपके
पुत्र के दूध छुटने के समय तक उसको पिलाती रही। 24 जब उस ने उसका दूध
छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई, और तीन बछड़े, और एपा भर आटा, और
कुप्पी भर दाखमधु भी ले गई, और उस लड़के को शीलो में यहोवा के भवन में
पहुंचा दिया; उस समय वह लड़का ही या। 25 और उन्होंने बछड़ा बलि करके
बालक को एली के पास पहुंचा दिया। 26 तब हन्ना ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन
की शपय, हे मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूं जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्यना
करती यी। 27 यह वही बालक है जिसके लिथे मैं ने प्रार्यना की यी; और यहोवा ने
मुझे मुंह मांगा वर दिया है। 28 इसी लिथे मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं;
कि यह अपके जीवन भर यहोवा ही का बना रहे। तब उस ने वहीं यहोवा को
दण्डवत् किया।।

1 शमूएल 2

1 और हन्ना ने प्रार्यना करके कहा, मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग
यहोवा के कारण ऊंचा, हुआ है। मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरूद्ध खुल गया, क्योंकि
मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूं। 2 यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं,
क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई
चट्टान नहीं है।। 3 फूलकर अहंकार की ओर बातें मत करो, और अन्धेर की बातें
तुम्हारे मुंह से न निकलें; क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है, और कामोंको तौलनेवाला
है।। 4 शूरवीरोंके धनुष टूट गए, और ठोकर खानेवालोंकी कटि में बल का फेंटा
कसा गया।। 5 जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिथे मजदूरी करनी पक्की, जो भूखे
थे वे फिर ऐसे न रहे। वरन जो बांफ यी उसके सात हुए, और अनेक बालकोंकी
माता घुलती जाती है। 6 यहोवा मारता है और जिलाता भी है; वही अधोलोक में
उतारता और उस से निकालता भी है।। 7 यहोवा निर्धन करता है और धनी भी
बनाता है, वही नीचा करता और ऊंचा भी करता है। 8 वह कंगाल को धूलि में से
उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको
अधिपतियोंके संग बिठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिक्कारनी बनाए।
क्योंकि पृय्वी के खम्भे यहोवा के हैं, और उस ने उन पर जगत को धरा है। 9 वह
अपके भक्तोंके पावोंको सम्भाले रहेगा, परन्तु दुष्ट अन्धिक्कारने में चुपचाप पके
रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपके बल के कारण प्रबल न होगा।। 10 जो यहोवा से
फगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरूद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृय्वी
की छोर तक न्याय करेगा; और अपके राजा को बल देगा, और अपके अभिषिक्त
के सींग को ऊंचा करेगा।। 11 तब एल्काना रामा को अपके घर चला गया। और
वह बालक एली याजक के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करने लगा।। 12 एली के

पुत्र तो लुच्चे थे; उन्होंने यहोवा को न पहिचाना। 13 और याजकोंकी रीति लोगोंके
साय यह यी, कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता या तब याजक का सेवक मांस
पकाने के समय एक त्रिशूली कांटा हाथ में लिथे हुए आकर, 14 उसे कड़ाही, वा
हांडी, वा हंडे, वा तसले के भीतर डालता या; और जितना मांस कांटे में लग जाता
या उतना याजक आप लेता या। योंही वे शीलो में सारे इस्राएलियोंसे किया करते
थे जो वहां आते थे। 15 और चर्बी जलाने से पहिले भी याजक का सेवक आकर
मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता या, कि कबाब के लिथे याजक को मांस दे; वह तुझ
से पका हुआ नहीं, कच्चा ही मांस लेगा। 16 और जब कोई उस से कहता, कि
निश्चय चर्बी अभी जलाई जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना, तब
वह कहता या, नहीं, अभी दे; नहीं तो मैं छीन लूंगा। 17 इसलिथे उन जवानोंका
पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का
तिरस्कार करते थे।। 18 परन्तु शमूएल जो बालक या सनी का एपोद पहिने हुए
यहोवा के साम्हने सेवा टहल किया करता या। 19 और उसकी माता प्रति वर्ष
उसके लिथे एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपके पति के संग प्रति वर्ष की
मेलबलि चढ़ाने आती यी तब बागे को उसके पास लाया करती यी। 20 और एली
ने एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, यहोवा इस अर्पण किए हुए
बालक की सन्ती जो उसको अर्पण किया गया है तुझ को इस पत्नी के वंश दे; तब
वे अपके यहां चले गए। 21 और यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह गर्भवती
हुई ओर उसके तीन बेटे और दो बेटियां उत्पन्न हुई। और शमूएल बालक यहोवा
के संग रहता हुआ बढ़ता गया। 22 और एली तो अति बूढा हो गया या, और उस
ने सुना कि मेरे पुत्र सारे इस्राएल से कैसा कैसा व्यवहार करते हैं, वरन

मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियोंके संग कुकर्म भी करते हैं। 23
तब उस ने उन से कहा, तुम ऐसे ऐसे काम क्योंकरते हो? मैं तो इन सब लोगोंसे
तुम्हारे कुकर्मोंकी चर्चा सुना करता हूं। 24 हे मेरे बेटों, ऐसा न करो, क्योंकि जो
समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से
अपराध कराते हो। 25 यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो
परमेश्वर उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरूद्ध पाप करे,
तो उसके लिथे कौन बिनती करेगा? तौभी उन्होंने अपके पिता की बात न मानी;
क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की यी। 26 परन्तु शमूएल बालक
बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनो उस से प्रसन्न रहते थे।। 27 और
परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उस से कहने लगा, यहोवा योंकहता है,
कि जब तेरे मूलपुरूष का घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वश में या, तब क्या
मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ या? 28 और क्या मैं ने उसे इस्राएल के सब
गोत्रोंमें से इसलिथे चुन नहीं लिया या, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर
चढ़ावे चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे साम्हने एपोद पहिना करे? और क्या मैं
ने तेरे मूलपुरूष के घराने को इस्राएलियोंके कुल हव्य न दिए थे? 29 इसलिथे मेरे
मेलबलि और अन्नबलि जिनको मैं ने अपके धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें
तुम लोग क्योंपांव तले रौंदते हो? और तू क्योंअपके पुत्रोंका आदर मेरे आदर से
अधिक करता है, कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंटें खा
खाके मोटे हो जाओ? 30 इसलिथे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि
मैं ने कहा तो या, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरूष का घराना मेरे साम्हने सदैव
चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझ से दूर हो;

क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे
छोटे समझे जाएंगे। 31 सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे
मूलपुरूष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूंगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा होने
न पाएगा। 32 इस्राएल का कितना ही कल्याण क्योंन हो, तौभी तुझे मेरे धाम का
दु:ख देख पकेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने पाएगा। 33 मैं तेरे कुल
के सब किसी से तो अपक्की वेदी की सेवा न छीनूंगा, परन्तु तौभी तेरी आंखें
देखती रह जाएंगी, और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब
अपक्की पूरी जवानी ही में मर मिटेंगें। 34 और मेरी इस बात का चिन्ह वह
विपत्ति होगी जो होप्नी और पीनहास नाम तेरे दोनोंपुत्रोंपर पकेगी; अर्यात् वे
दोनो के दोनोंएक ही दिन मर जाएंगे। 35 और मैं अपके लिथे एक विश्वासयोग्य
याजक ठहराऊंगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और
मैं उसका घर बसाऊंगा और स्यिर करूंगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे सब
दिन चला फिरा करेगा। 36 और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा
वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चान्दी के वा एक रोटी के लिथे दण्डवत्
करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा, जिस से मुझे एक टुकड़ा रोटी
मिले।।

1 शमूएल 3

1 और वह बालक शमूएल एली के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता या। और
उन दिनोंमें यहोवा का वचन दुर्लभ या; और दर्शन कम मिलता या। 2 और उस
समय ऐसा हुआ कि (एली की आंखे तो धुंधली होने लगी यीं और उसे न सूफ

पड़ता या) जब वह अपके स्यान में लेटा हुआ या, 3 और परमेश्वर का दीपक अब
तक बुफा नहीं या, और शमूएल यहेवा के मन्दिर में जंहा परमेश्वर का सन्दूक या
लेटा या; 4 तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उस ने कहा, क्या आज्ञा! 5 तब
उस ने एली के पास दौड़कर कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। वह बोला,
मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा लेट रह। तो वह जाकर लेट गया। 6 तब यहोवा ने फिर
पुकार के कहा, हे शमूएल! शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, क्या
आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। उस ने कहा, हे मेरे बेटे, मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा
लेट रह। 7 उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता या, और न तो
यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ या। 8 फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल
को पुकारा। और वह उठके एली के पास गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो
मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है। 9
इसलिथे एली ने शमूएल से कहा, जा लेट रहे; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो
तू कहना, कि हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है तब शमूएल अपके
स्यान पर जाकर लेट गया। 10 तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहिले की नाईं
पुकारा, शमूएल! शमूएल! शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। 11
यहोवा ने शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक काम करने पर हूं, जिससे सब
सुननेवालोंपर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा। 12 उस दिन मैं एली के विरूद्ध वह सब
कुछ पूरा करूंगा जो मैं ने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त
तक पूरा करूंगा। 13 क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूं, कि मैं उस
अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिथे उसके घर का न्याय करूंगा,
क्योंकि उसके पुत्र आप शापित हुए हैं, और उस ने उन्हें नहीं रोका। 14 इस कारण

मैं ने एली के घराने के विषय यह शपय खाई, कि एली के घराने के अधर्म का
प्रायश्चित न तो मेलबलि से कभी होगा, और न अन्नबलि से। 15 और शमूएल
भोर तक लेटा रहा; तब उस ने यहोवा के भवन के किवाड़ोंको खोला। और शमूएल
एली को उस दर्शन की बातें बतानें से डरा। 16 तब एली ने शमूएल को पुकारकर
कहा, हे मेरे बेटे, शमूएल! वह बोला, क्या आज्ञा। 17 तब उस ने पूछा, वह कौन
सी बात है जो यहोवा ने तुझ से कही है? उसे मुझ से न छिपा। जो कुछ उस ने तुझ
से कहा हो यदि तू उस में से कुछ भी मुझ से छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही
वरन उस से भी अधिक करे। 18 तब शमूएल ने उसको रत्ती रत्ती बातें कह सुनाईं,
और कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने
वही करें। 19 और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उस
ने उसकी कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी। 20 और दान से बेर्शेबा तक के
रहनेवाले सारे इस्राएलियोंने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिथे
नियुक्त किया गया है। 21 और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा
ने अपके आप को शीलो में शमूएल पर अपके वचन के द्वारा प्रगट किया।।

1 शमूएल 4

1 और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा। और इस्राएली
पलिश्तियोंसे युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेजेर के आस-पास
छावनी डाली, और पलिश्तियोंने अपेक में छावनी डाली। 2 तब पलिश्तियोंने
इस्राएल के विरूद्ध पांति बान्धी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली
पलिश्तियोंसे हार एग, और उन्होंने कोई चार हजार इस्राएली सेना के पुरूषोंको

मैदान ही में मार डाला। 3 और जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के
वृद्ध लोग कहने लगे, कि यहोवा ने आज हमें पलिश्तियोंसे क्योंहरवा दिया है?
आओ, हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से मांग ले आएं, कि वह हमारे बीच
में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए। 4 तब उन लोगोंने शीलोंमें भेजकर वहां से
करूबोंके ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मंगा लिया;
और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साय एली के दोनोंपुत्र, होप्नी और पिनहास
भी वहां थे। 5 जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुंचा, तब सारे
इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि गूंज उठी। 6 इस ललकार का शब्द
सुनकर पलिश्तियोंने पूछा, इब्रियोंकी छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या
कारण है? तब उन्होंने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है। 7
तब पलिश्ती डरकर कहने लगे, उस छावनी में परमेश्वर आ गया है। फिर उन्होंने
कहा, हाथ! हम पर ऐसी बात पहिले नहीं हुई यी। 8 हाथ! ऐसे महाप्रतापी
देवताओं के हाथ से हम को कौन बचाएगा? थे तो वे ही देवता हैं जिन्होंने
मिस्रियोंपर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियां डाली यीं। 9 हे पलिश्तियों, तुम
हियाव बान्धो, और पुरूषार्य जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन
हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुरूषार्य करके संग्राम करो। 10 तब
पलिश्ती लड़ाई के मैदान में टूट पके, और इस्राएली हारकर अपके अपके डेरे को
भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ, कि तीस हजार इस्राएली पैदल खेत
आए। 11 और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और एली के दोनो पुत्र,
होप्नी और पीनहास, भी मारे गए। 12 तब एक बिन्यामीनी मनुष्य ने सेना में से
दौड़कर उसी दिन अपके वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो में पहुंचा।

13 वह जब पहुंचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से
यरयरा रहा या, वह मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा या। और ज्योंही
उस मनुष्य ने नगर में पहुंचकर वह समाचार दिया त्योंही सारा नगर चिल्ला
उठा। 14 चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा, ऐसे हुल्लड़ और हाहाकार
मचने का क्या कारण है? और उस मनुष्य ने फट जाकर एली को पूरा हाल
सुनाया। 15 एल तो अट्ठानवे वर्ष का या, और उसकी आंखें धुन्धली पड़ गई यीं,
और उसे कुछ सूफता न या। 16 उस मनुष्य ने एली से कहा, मैं वही हूं जो सेना में
से आया हूं; और मैं सेना से आज ही भाग आया। वह बोला, हे मेरे बेटे, क्या
समाचार है? 17 उस समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, कि इस्राएली पलिश्तियोंके
साम्हने से भाग गए हैं, और लोगोंका बड़ा भयानक संहार भी हुआ है, और तेरे
दोनोंपुत्र होप्नी और पीनहास भी मारे गए, और परमेश्वर का सन्दूक भी छीन
लिया गया है। 18 ज्योंही उस ने परमेश्वर के सन्दूक का नाम लिया त्योंही एली
फाटक के पास कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा; और बूढे और भारी होने के
कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया। उस ने तो इस्राएलियोंका न्याय
चालीस वर्ष तक किया या। 19 उसकी बहू पीनहास की स्त्री गर्भवती यी, और
उसका समय समीप या। और जब उस ने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने,
और अपके ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसको जच्चा का दर्द
उठा, और वह दुहर गई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 20 उसके मरते मरते
उन स्त्रियोंने जो उसके आस पास खड़ी यीं उस से कहा, मत डर, क्योंकि तेरे प्रत्र
उत्पन्न हुआ है। परन्तु उस ने कुद उत्तर न दिया, और न कुछ ध्यान दिया। 21
और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपके ससुर और पति के कारण

उस ने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद रखा, कि इस्राएल में से महिमा
उठ गई! 22 फिर उस ने कहा, इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर
का सन्दूक छीन लिया गया है।।

1 शमूएल 5

1 और पलिश्तियोंने परमेश्वर का सन्दूक एबनेजेर से उठाकर अशदोद में पहुंचा
दिया; 2 फिर पलिश्तियोंने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में
पहुंचाकर दागोन के पास धर दिया। 3 बिहान को अशदोदियोंने तड़के उठकर क्या
देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के साम्हने औंधे मूंह भूमि पर गिरा पड़ा है।
तब उन्होंने दागोन को उठाकर उसी के स्यान पर फिर खड़ा किया। 4 फिर बिहान
को जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के साम्हने
औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनो हथेलियां डेवढ़ी
पर कटी हुई पक्की हैं; निदान दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया। 5 इस
कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में
जाते हैं, वे अशदोद में दागोन कीे डेवढ़ी पर पांव नहीं धरते।। 6 तब यहोवा का
हाथ अशदोदियोंके ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नाश करने लगा; और उस ने
अशदोद और उसके आस पास के लोगोंके गिलटियां निकालीं। 7 यह हाल देखकर
अशदोद के लोगोंने कहा, इस्राएल के देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं
पाएगा; क्योंकि उसका हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के
साय पड़ा है। 8 तब उन्होंने पलिश्तियोंके सब सरदारोंको बुलवा भेजा, और उन से
पूछा, हम इस्राएल के देवता के सन्दूक से क्या करें? वे बोले, इस्राएल के परमेश्वर

के सन्दूक को घूमाकर गत में पहुंचाया जाए। तो उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के
सन्दूक को घुमाकर गत में पहुंचा दिया। 9 जब वे उसको घुमाकर वहां पहुंचे, तो
यूं हुआ कि यहोवा का हाथ उस नगर के विरूद्ध ऐसा उठा कि उस में अत्यन्त
हलचल मच गई; ओर उस ने छोटे से बड़े तब उस नगर के सब लोगोंको मारा,
और उनके गिलटियां निकलने लगीं। 10 तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन
को भेजा और ज्योंही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन में पहुंचा त्योंही एक्रोनी यह
कहकर चिल्लाने लगे, कि इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर हमारे पास
इसलिथे पहुंचाया गया है, कि हम और हमारे लोगोंको मरवा डाले। 11 तब
उन्होंने पलिश्तियोंके सब सरदारोंको इकट्ठा किया, और उन से कहा, इस्राएल के
देवता के सन्दूक को निकाल दो, कि वह अपेन स्यान पर लौट जाए, और हम को
और हमारे लोगोंको मार डालने न पाए। उस समस्त नगर में तो मृत्यु के भय की
हलचल मच रही यी, और परमेश्वर का हाथ वहां बहुत भारी पड़ा या। 12 और जो
मनुष्य न मरे वे भी गिलटियोंके मारे पके रहे; और नगर की चिल्लाहट आकाश
तक पहुंची।।

1 शमूएल 6

1 यहोवा का सन्दूक पलिश्तियोंके देश में सात महीने तक रहा। 2 तब
पलिश्तियोंने याजकोंऔर भावी करनेवालोंको बुलाकर पूछा, कि यहोवा के सन्दूक
से हम क्या करें? हमें बताओं की क्या प्रायश्चित देकर हम उसे उसके स्यान पर
भेजें? 3 वे बोले, यदि तुम इस्राएल के देवता का सन्दूक वहां भेजा, जो उसे वैसे ही
न भेजना; उसकी हानि भरने के लिथे अवश्य ही दोषबलि देना। तब तुम चंगे हो

जाओगे, और तुम जान लोगोंकि उसका हाथ तुम पर से क्योंनहीं उठाया गया। 4
उन्होंने पूछा, हम उसकी हानि भरने के लिथे कोन सा दोषबलि दें? वे बोले,
पलिश्ती सरदारोंकी गिनती के अनुसार सोने की पांच गिलटियां, और सोने के
पांच चूहे; क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनोंएक ही रोग से ग्रसित हो। 5
तो तुम अपक्की गिलटियोंऔर अपके देश के नाश करनेवाले चूहोंकी भी मूरतें
बनाकर इस्राएल के देवता की महिमा मानो; सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से
और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले। 6 तुम अपके मन क्योंऐसे हठीले
करते हो जैसे मिस्रियोंऔर फिरौन ने अपके मन हठीले कर दिए थे? जब उस ने
उनके मध्य में अचम्भित काम किए, तब क्या उन्होंने उन लोगोंको जाने न
दिया, और क्या वे चले न गए? 7 सो अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और ऐसी दो
दुधार गाथें लो जो सुए तले न आई हों, और उन गायोंको उस गाड़ी में जोतकर
उनके बच्चोंको उनके पास से लेकर घर को लौटा दो। 8 तब यहोवा का सन्दूक
लेकर उस गाड़ी पर धर दो, और साने की जो वस्तुएं तुम उसकी हाति भरने के
लिथे दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे सन्दूक में घर के उसके पास रख दो।
फिर उसे रवाना कर दो कि चक्की जाए। 9 और देखते रहना; यदि वह अपके देश
के मार्ग से होकर बेतशेमेश को चले, तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की
ओर से हुई: और यदि नहीं, तो हम को निश्चय होगा कि यह मार हम पर उसकी
ओर से नहीं, परन्तु संयोग ही से हुई। 10 उन मनुष्योंने वैसा ही किया; अर्यात् दो
दुधार गाथें लेकर उस गाड़ी में जोतीं, और उनके बच्चोंको घर में बन्द कर दिया।
11 और यहोवा का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और सोने के चूहोंऔर अपक्की
गिलटियोंकी मूरतोंको गाड़ी पर रख दिया। 12 तब गायोंने बेतशमेश को सीधा

मार्ग लिया; वे सड़क ही सड़क बम्बाती हुई चक्की गई, और न दहिने मुड़ी और न
बाथें; और पलिश्तियोंके सरदार उनके पीछे पीछे बेतशेमेश के सिवाने तक गए।
13 और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूं काट रहे थे; और जब उन्होंने आंखें
उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसके देखने से आनन्दित हुए। 14 और गाड़ी
यहोशू नाम एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहां ठहर गई, जहां एक बड़ा पत्थर
या। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ी को चीरा और गायोंको होमबलि करके यहोवा के
लिथे चढ़ाया। 15 और लेवीयोंने यहोवा के सन्दूक को उस सन्दूक के समेत जो
साय या, जिस में सोने की वस्तुएं यी, उतारके उस बड़े पत्थर पर धर दिया; और
बेतशेमेश के लोगोंने उसी दिन यहोवा के लिथे होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। 16
यह देखकर पलिश्तियोंके पांचोंसरदार उसी दिन एक्रोन को लौट गए।। 17 सोने
की गिलटियां जो पलिश्तियोंने यहोवा की हाति भरने के लिथे दोषबलि करके दे
दी यी उन में से एक तो अशदोद की ओर से, एक अज्जा, एक अश्कलोन, एक
गत, और एक एक्रोन की ओर से दी गई यी। 18 और वह सोने के चूहे, क्या
शहरपनाहवाले नगर, क्या बिना शहरपनाह के गांव, वरन जिस बड़े पत्थर पर
यहोवा का सन्दूक धरा गया या वहां पलिश्तियोंके पांचोंसरदारोंके अधिक्कारने
तक की सब बस्तियोंकी गिनती के अनुसार दिए गए। वह पत्थर तो आज तक
बेतशेमेशी यहोशू के खेत में है। 19 फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगोंने
यहोवा के सन्दूक के भीतर फांका या उस ने उन में से सत्तर मनुष्य, और फिर
पचास हजार मनुष्य मार डाले; और वहां के लोगोंने इसलिथे विलाप किया कि
यहोवा ने लोगोंका बड़ा ही संहार किया या। 20 तब बेतशेमेश के लोग कहने लगे,
इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के साम्हने कौन खड़ा रह सकता है? और वह हमारे

पास से किस के पास चला जाए? 21 तब उन्होंने किर्यत्यारीम के निवासियोंके
पास योंकहने को दूत भेजे, कि पलिश्तियोंने यहोवा का सन्दूक लौटा दिया है;
इसलिथे तुम आकर उसे अपके यहां ले जाओ।।

1 शमूएल 7

1 तब किर्यत्यारीम के लोगोंने जाकर यहोवा के सन्दूक को उठाया, और
अबीनादाब के घर में जो टीले पर बना या रखा, और यहोवा के सन्दूक की रझा
करने के लिथे अबीनादाब के पुत्र एलीआजार को पवित्र किया।। 2 किर्यत्यारीम में
रहते रहते सन्दूक को बहुत दिन हुए, अर्यात् बीस वर्ष बीत गए, और इस्राएल का
सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा। 3 तब शमूएल ने
इस्राएल के सारे घराने से कहा, यदि तुम अपके पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरे
हो, तो पराए देवताओं और अश्तोरेत देवियोंको अपके बीच में से दूर करो, और
यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो, तब वह तुम्हें
पलिश्तियोंके हाथ से छुड़ाएगा। 4 तब इस्राएलियोंने बाल देवताओं और
अशतोरेत देवियोंको दूर किया, और केवल यहोवा ही की उपासना करने लगे।। 5
फिर शमूएल ने कहा, सब इस्राएलियोंको मिस्पा में इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे
लिथे यहोवा से प्रार्यना करूंगा। 6 तब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, और जल भरके
यहोवा के साम्हने उंडेल दिया, और उस दिन उपवास किया, और वहां कहने लगे,
कि हम ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है। और शमूएल ने मिस्पा में
इस्राएलियोंका न्याय किया। 7 जब पलिश्तियोंने सुना कि इस्राएली मिस्पा में
इकट्ठे हुए हैं, तब उनके सरदारोंने इस्राएलियोंपर चढ़ाई की। यह सुनकर

इस्राएली पलिश्तियोंसे भयभीत हुए। 8 और इस्राएलियोंने शमूएल से कहा, हमारे
लिथे हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़, जिस से वह हम को
पलिश्तियोंके हाथ से बचाए। 9 तब शमूएल ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले सर्वांग
होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्राएलियोंके लिथे यहोवा की
दोहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली। 10 और जिस समय शमूएल होमबलि
हो चढ़ा रहा या उस समय पलिश्ती इस्राएलियोंके संग युद्ध करने के लिथे निकट
आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिश्तियोंके ऊपर बादल को बड़े कड़क के साय
गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्राएलियोंसे हार गए। 11 तब इस्राएली
पुरूषोंने मिस्पा से निकलकर पलिश्तियोंको खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे
तक मारते चले गए। 12 तब शमूएल ने एक पत्यर लेकर मिस्पा और शेन के
बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेजेर रखा, कि यहां तक
यहोवा ने हमारी सहाथता की है। 13 तब पलिश्ती दब गए, और इस्राएलियोंके
देश में फिर न आए, और शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियोंके
विरूद्ध बना रहा। 14 और एक्रोन और गत तक जितने नगर पलिश्तियोंने
इस्राएलियोंके हाथ से छीन लिए थे, वे फिर इस्राएलियोंके वश में आ गए; और
उनका देश भी इस्राएलियोंने पलिश्तियोंके हाथ से छुड़ाया। और इस्राएलियोंऔर
एमोरियोंके बीच भी सन्धि हो गई। 15 और शमूएल जीवन भर इस्राएलियोंका
न्याय करता रहा। 16 वह प्रति वर्ष बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में
घूम-घूमकर उन सब स्यानोंमें इस्राएलियोंका न्याय करता या। 17 तब वह रामा
में जहां उसका घर या लौट आया, और वहां भी इस्राएलियोंका न्याय करता या,
और वहां उस ने यहोवा के लिथे एक वेदी बनाई।।

1 शमूएल 8

1 जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उस ने अपके पुत्रोंको इस्राएलियोंपर न्यायी
ठहराया। 2 उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह या; थे
बेर्शेबा में न्याय करते थे। 3 परन्तु उसके पुत्र उसकी राह पर न चले, अर्यात्
लालच में आकर घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे।। 4 तब सब इस्राएली वृद्ध लोग
इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास जाकर 5 उस से कहने लगे, सुन, तू तो अब
बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के
लिथे सब जातियोंकी रीति के अनुसार हमारे लिथे एक राजा नियुक्त कर दे। 6
परन्तु जो बात उन्होंने कही, कि हम पर न्याय करने के लिथे हमारे ऊपर राजा
नियुक्त कर दे, यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्यना
की। 7 और यहोवा ने शमूएल से कहा, वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले;
क्योंकि उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका
राजा न रहूं। 8 जैसे जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्र से निकाल
लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्यागकर पराए, देवताओं की
उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं। 9 इसलिथे अब तू उनकी
बात मान; तौभी तू गम्भीरता से उनको भली भांति समझा दे, और उनको बतला
भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार होगा।। 10
और शमूएल ने उन लोगोंको जो उस से राजा चाहते थे यहोवा की सब बातें कह
सुनाईं। 11 और उस ने कहा जो राजा तुम पर राज्य करेगा उसकी यह चाल होगी,
अर्यात् वह तुम्हारे पुत्रोंको लेकर अपके रयोंऔर घोड़ोंके काम पर नौकर रखेगा,
और वे उसके रयोंके आगे आगे दौड़ा करेंगे; 12 फिर वह उनको हजार हजार और

पचास पचास के ऊपर प्रधान बनाएगा, और कितनोंसे वह अपके हल जुतवाएगा,
और अपके खेत कटवाएगा, और अपके लिथे युद्ध के हयियार और रयोंके साज
बनवाएगा। 13 फिर वह तुम्हारी बेटियोंको लेकर उन से सुगन्धद्रव्य और रसोई
और रोटियां बनवाएगा। 14 फिर वह तुम्हारे खेतोंऔर दाख और जलपाई की
बारियोंमें से जो अच्छी से अच्छी होंगे उन्हें ले लेकर अपके कर्मचारियोंको देगा।
15 फिर वह तुम्हारे बीच और दाख की बारियोंको दसवां अंश ले लेकर अपके
हाकिमोंऔर कर्मचारियोंको देगा। 16 फिर वह तुम्हारे दास-दासिक्कों, और
तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानोंको, और तुम्हारे गदहोंको भी लेकर अपके काम में
लगाएगा। 17 वह तुम्हारी भेड़-बकरियोंका भी दसवां अंश लेगा; निदान तुम लोग
उस के दास बन जाओगे। 18 और उस दिन तुम अपके उस चुने हुए राजा के
कारण दोहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा। 19 तौभी उन
लोगोंने शमूएल की बात न सुनी; और कहने लगे, नहीं! हम निश्चय अपके लिथे
राजा चाहते हैं, 20 जिस से हम भी और सब जातियोंके समान हो जाएं, और
हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध
किया करे। 21 लोगोंकी थे सब बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानोंतक
पहुंचाया। 22 यहोवा ने शमूएल से कहा, उनकी बात मानकर उनके लिथे राजा
ठहरा दे। तब शमूएल ने इस्राएली मनुष्योंसे कहा, तुम अब अपके अपके नगर को
चले जाओ।।

1 शमूएल 9

1 बिन्यामीन के गोत्र में कीश नाम का एक पुरूष या, जो अपीह के पुत्र बकोरत

का परपोता, और सरोर का पोता, और अबीएल का पुत्र या; वह एक बिन्यामीनी
पुरूष का पुत्र और बड़ा शक्तिशाली सूरमा या। 2 उसके शाऊल नाम एक जवान पुत्र
या, जो सुन्दर या, और इस्राएलियोंमें कोई उस से बढ़कर सुन्दर न या; वह इतना
लम्बा या कि दूसरे लोग उसके कान्धे ही तक आते थे। 3 जब शाऊल के पिता
कीश की गदहियां खो गईं, तब कीश ने अपके पुत्र शाऊल से कहा, एक सेवक को
अपके साय ले जा और गदहियोंको ढूंढ ला। 4 तब वह एप्रैम के पहाड़ी देश और
शलीशा देश होते हुए गया, परन्तु उन्हें न पाया। तब वे शालीम नाम देश भी
होकर गए, और वहां भी न पाया। फिर बिन्यामीन के देश में गए, परन्तु गदहियां
न मिलीं। 5 जब वे सूफ नाम देश में आए, तब शाऊल ने अपके साय के सेवक से
कहा, आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियोंकी चिन्ता छोड़कर
हमारी चिन्ता करने लगे। 6 उस ने उस से कहा, सुन, इस नगर में परमेश्वर का
एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है; और जो कुछ वह कहता है वह बिना
पूरा हुए नहीं रहता। अब हम उधर चलें, सम्भव है वह हम को हमार मार्ग बताए
कि किधर जाएं। 7 शाऊल ने अपके सेवक से कहा, सुन, यदि हम उस पुरूष के
पास चलें तो उसके लिथे क्या ले चलें? देख, हमारी यैलियोंमें की रोटी चुक गई है
और भेंट के योग्य कोई वस्तु है ही नहीं, जो हम परमेश्वर के उस जन को दें।
हमारे पास क्या है? 8 सेवक ने फिर शाऊल से कहा, कि मेरे पास तो एके शेकेल
चान्दी की चौयाई है, वही मैं परमेश्वर के जन को दूंगा, कि वह हम को बताए कि
किधर जाएं। 9 पूर्वकाल में तो इस्राएल में जब कोई ऐसा कहता या, कि चलो, हम
दर्शी के पास चलें; क्योंकि जो आज कल नबी कहलाता है वह पूर्वकाल में दर्शी
कहलाता या। 10 तब शाऊल ने अपके सेवक से कहा, तू ने भला कहा है; हम चलें।

सो वे उस नगर को चले जहां परमेश्वर का जन या। 11 उस नगर की चढ़ाई पर
चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियां मिलीं जो पानी भरने को निकली यीं; उन्होंने
उन से पूछा, क्या दर्शी यहां है? 12 उन्होंने उत्तर दिया, कि है; देखो, वह तुम्हारे
आगे है। अब फुर्ती करो; आज ऊंचे स्यान पर लोगोंका यज्ञ है, इसलिथे वह आज
नगर में आया हुआ है। 13 ज्योंही तुम नगर में पहुंचो त्योंही वह तुम को ऊंचे
स्यान पर खाना खाने को जाने से पहिले मिलेगा; क्योंकि जब तक वह न पहुंचे
तब तक लोग भोजन करेंगे, इसलिथे कि यज्ञ के विषय में वही धन्यवाद करता;
तब उसके पीछे ही न्योतहरी भोजन करते हैं। इसलिथे तुम अभी चढ़ जाओ, इसी
समय वह तुम्हें मिलेगा। 14 वे नगर में चढ़ गए और ज्योंही नगर के भीतर पहुंचे
त्योंही शमूएल ऊंचे स्यान पर चढ़ने की मनसा से उनके साम्हने आ रहा या।। 15
शाऊल के आने से एक दिन पहिले यहोवा ने शमूएल को यह चिता रखा या, 16
कि कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के देश से एक पुरूश को भेजूंगा, उसी
को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिथे अभिषेक करना। और वह
मेरी प्रजा को पलिश्तियोंके हाथ से छुड़ाएगा; क्योंकि मैं ने अपक्की प्रजा पर कृपा
दृष्टि की है, इसलिथे कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास पंहुची है। 17 फिर जब
शमूएल को शाऊल देख पड़ा, तब यहोवा ने उस से कहा, जिस पुरूष की चर्चा मैं ने
तु से की यी वह यही है; मेरी प्रजा पर यही अधिक्कारने करेगा। 18 तब शाऊल
फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा, मुझे बता कि दर्शी का घर कहां
है? 19 उस ने कहा, दर्शी तो मैं हूं; मेरे आगे आगे ऊंचे स्यान पर चढ़ जा, क्योंकि
आज के दिन तुम मेरे साय भोरन खाओगे, और बिहान को जो कुछ तेरे मन में हो
सब कुछ मैं तुझे बताकर विदा करूंगा। 20 और तेरी गदहियां जो तीन दिन तुए

खो गई यीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गई। और इस्राएल में
जो कुछ मनभाऊ है वह किस का है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने
का नहीं है? 21 शाऊल ने उत्तर देकर कहा, क्या मैं बिन्यामीनी, अर्यात् सब
इस्राएली गोत्रोंमें से छोटे गोत्र का नहीं हूं? और क्या मेरा कुल बिन्यामीनी के गोत्र
के सारे कुलोंमें से छोटा नहीं है? इसलिथे तू मुझ से ऐसी बातें क्योंकहता है? 22
तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को कोठरी में पहुंचाकर न्योताहारी, जो
लगभग तीस जन थे, उनके साय मुख्य स्यान पर बैठा दिया। 23 फिर शमूएल ने
रसोइथे से कहा, जो टुकड़ा मैं ने तुझे देकर, अपके पास रख छोड़ने को कहा या,
उसे ले आ। 24 तो रसोइथे ने जांघ को मांस समेत उठाकर शाऊल के आगे धर
दिया; तब शमूएल ने कहा, जो रखा गया या उसे देख, और अपके साम्हने धरके
खा; क्योंकि वह तेरे लिथे इसी नियत समय तक, जिसकी चर्चा करके मैं ने
लोगोंको न्योता दिया, रखा हुआ है। और शाऊल ने उस दिन शमूएल के साय
भोजन किया। 25 तब वे ऊंचे स्यान से उतरकर नगर में आए, और उस ने घर की
छत पर शाऊल से बातें कीं। 26 बिहान को वे तड़के उठे, और पह फटते फटते
शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाकर कहा, उठ, मैं तुम को विदा करूंगा। तब
शाऊल उठा, और वह और शमूएल दोनोंबाहर निकल गए। 27 और नगर के
सिक्के की उतराई पर चलते चलते शमूएल ने शाऊल से कहा, अपके सेवक को
हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे, (वह आगे बढ़ गया,) परन्तु तू अभी खड़ा रह कि
मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊं।।

1 शमूएल 10

1 तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उंडेला, और उसे चूमकर
कहा, क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपके निज भाग के ऊपर प्रधान
होने को तेरा अभिषेक किया है? 2 आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा, तब
राहेल की कब्र के पास जो बिन्यामीन के देश के सिवाने पर सेलसह में है दो जन
तुझे मिलेंगे, और कहेंगे, कि जिन गदिहियोंको तू ढूंढने गया या वे मिल हैं; और
सुन, तेरा पिता गदहियोंकी चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुढ़ता हुआ कहता है,
कि मैं अपके पुत्र के लिथे क्या करूं? 3 फिर वहां से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के
बांजवृझ के पास पहुंचेगा, तब वहां तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल को जाते हुए
तुझे मिलेंगे, जिन में से एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा तीन रोटी, और
तीसरा एक कुप्पी दाखमधु लिए हुए होगा। 4 और वे तेरा कुशल पूछेंगे, और तुझे
दो रोटी देंगे, और तू उन्हें उनके हाथ से ले लेना। 5 तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर
पहुंचेगा जहां पलिश्तियोंकी चौकी है; और जब तू वहां नगर में प्रवेश करे, तब
नबियोंका एक दल ऊंचे स्यान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे
सितार, डफ, बांसुली, और वीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे। 6 तब यहोवा
का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साय होकर नबूवत करने
लगेगा, और तू परिवतिर्त होकर और ही मनुष्य हो जाएगा। 7 और जब थे चिन्ह
तुझे देख पकेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उस में लग जाना;
क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा। 8 और तू मुझ से पहिले गिलगाल को जाना;
और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिथे तेरे पास आऊंगा। तू सात दिन
तक मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुंचकर तुझे बताऊंगा कि तुझ को
क्या क्या करना है। 9 ज्योंही उस ने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंही

परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तन किया; और वे सब चिन्ह उसी दिन प्रगट
हुए।। 10 जब वे उधर उस पहाड़ के पास आए, तब नबियोंका एक दल उसको
मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और वह उसके बीच में
नबूवत करने लगा। 11 जब उन सभोंने जो उसे पहिले से जानते थे यह देखा कि
वह नबियोंके बीच में नबूवत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, कि कीश के
पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नबियोंमें का है? 12 वहां के एक मनुष्य ने
उत्तर दिया, भला, उनका बाप कौन है? इस पर यह कहावत चलने लगी, कि क्या
शाऊल भी नबियोंमें का है? 13 जब वह नबूवत कर चुका, तब ऊंचे स्यान पर चढ़
गया।। 14 तब शाऊल के चचा ने उस से और उसके सेवक से पूछा, कि तुम कहां
गए थे? उस ने कहा, हम तो गदहियोंको ढूंढ़ने गए थे; और जब हम ने देखा कि वे
कहीं नहीं मिलतीं, तब शमूएल के पास गए। 15 शाऊल के चचा ने कहा, मुझे
बतला दे कि शमूएल ने तुम से क्या कहा। 16 शाऊल ने अपके चचा से कहा, कि
उस ने हमें निश्चय करके बतया कि गदहियां मिल गईं। परन्तु जो बात शमूएल ने
राज्य के विषय में कही यी वह उस ने उसको न बताई।। 17 तब शमूएल ने प्रजा
के लोगोंको मिस्पा में यहोवा के पास बुलवाया; 18 तब उस ने इस्राएलियोंसे कहा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि मैं तो इस्राएल को मिस्र देश से
निकाल लाया, और तुम को मिस्रियोंके हाथ से, और न सब राज्योंके हाथ से जो
तुम पर अन्धेर करते थे छुड़ाया है। 19 परन्तु तुम ने आज अपके परमेश्वर को जो
सब विपत्तियोंऔर कष्टोंसे तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना; और उस से कहा है,
कि हम पर राजा नियुक्त कर दे। इसलिथे अब तुम गोत्र गोत्र और हजार हजार
करके यहोवा के साम्हने खड़े हो जाओ। 20 तब शमूएल सारे इस्राएली गोत्रियोंको

समीप लाया, और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली। 21 तब वह
बिन्यामीन के गोत्र के कुल कुल करके समीप लाया, और चिट्ठी मत्री के कुल के
नाम पर निकली; फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली। और जब
वह ढूंढ़ा गया, तब न मिला। 22 तब उन्होंने फिर यहोवा से पूछा, क्या यहां कोई
और आनेवाला है? यहोवा ने कहा, हां, सुनो, वह सामान के बीच में छिपा हुआ है।
23 तब वे दौड़कर उसे वहां से लाए; और वह लोगोंके बीच में खड़ा हुआ, और वह
कान्धे से सिर तक सब लोगोंसे लम्बा या। 24 शमूएल ने सब लोगोंसे कहा, क्या
तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगोंमें कोई उसके बराबर नहीं?
तब सक लोग ललकारके बोल उठे, राजा चिरंजीव रहे।। 25 तब शमूएल ने
लोगोंसे राजनीति का वर्णन किया, और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे
रख दिया। और शमूएल ने सब लोगोंको अपके अपके घर जान को विदा किया।
26 और शाऊल गिबा को अपके घर चला गया, और उसके साय एक दल भी गया
जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा या। 27 परन्तु कई लुच्चे लोगोंने कहा, यह
जन हमारा क्या उद्धार करेगा? और उन्होंने उसको तुच्छ जाना, और उसके पास
भेंट न लाए। तौभी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा।।

1 शमूएल 11

1 तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेस के विरूद्ध छावनी डाली;
और याबेश के सब पुरूषोंने नाहाश से कहा, हम से वाचा बान्ध, और हम तेरी
अधीनता मना लेंगे। 2 अम्मोनी नाहाश ने उन से कहा, मैं तुम से वाचा इस शर्त
पर बान्धूंगा, कि मैं तुम सभोंकी दाहिनी आंखें फोड़कर इसे सारे इस्राएल की

नामधराई का कारण कर दूं। 3 याबेश के वृद्ध लोगोंने उस से कहा, हमें सात दिन
का अवकाश दे तब तक हम इस्राएल के सारे देश में दूत भेजेंगे। और यदि हम को
कोई बचाने वाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास निकल आएंगे। 4 दूतोंने
शाऊलवाले गिबा में आकर लोगोंको यह सन्देश सुनाया, और सब लोग चिल्ला
चिल्लाकर रोने लगे। 5 और शाऊल बैलोंके पीछे पीछे मैदान से चला आता या;
और शाऊल ने पूछा, लोगोंको क्या हुआ कि वे रोते हैं? उन्होंने याबेश के लोगोंका
सन्देश उसे सुनाया। 6 यह सन्देश सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बल
से उतरा, और उसका कोप बहुत भड़क उठा। 7 और उस ने एक जोड़ी बैल लेकर
उसके टुकड़े टुकड़े काटे, और यह कहकर दूतोंके हाथ से इस्राएल के सारे देश में
कहला भेजा, कि जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा उसके
बैलोंसे ऐसा ही किया जाएगा। तब यहोवा का भय लोगोंमें ऐसा समाया कि वे एक
मन होकर निकल आए। 8 तब उस ने उन्हें बेजेक में गिन लिया, और
इस्राएलियोंके तीन लाख, और यहूदियोंके तीस हजार ठहरे। 9 और उन्होंने उन
दूतोंसे जो आए थे कहा, तुम गिलाद में के याबेश के लोगोंसे योंकहो, कि कल धूप
तेज होने की घड़ी तक तुम छुटकारा पाओगे। तब दूतोंने जाकर याबेश के लोगोंको
सन्देश दिया, और वे आनन्दित हुए। 10 तब याबेश के लोगोंने कहा, कल हम
तुम्हारे पास निकल आएंगे, और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना।
11 दूसरे दिन शाऊल ने लोगोंके तीन दल किए; और उन्होंने रात के पिछले पहर
में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियोंको मारा; और घाम के कड़े होने के समय
तक ऐसे मारते रहे कि जो बच निकले वह यहां तक तितर बितर हुए कि दो जन
भी एक संग कहीं न रहे। 12 तब लोग शमूएल से कहने लगे, जिन मनुष्योंने कहा

या, कि क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा? उनको लाओ कि हम उन्हें मार डालें।
13 शाऊल ने कहा, आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा; क्योंकि आज यहोवा
ने इस्राएलियोंको छुटकारा दिया है।। 14 तब शमूएल ने इस्राएलियोंसे कहा,
आओ, हम गिलगाल को चलें, और वहां राज्य को नथे सिक्के से स्यापित करें।
15 तब सब लोग गिलगाल को चले, और वहां उन्होंने गिलगाल में यहोवा के
साम्हने शाऊल को राजा बनाया; और वहीं उन्होंने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए;
और वहीं शाऊल और सब इस्राएली लोगोंने अत्यन्त आनन्द मनाया।।

1 शमूएल 12

1 तब शमूएल ने सारे इस्राएलियोंसे कहा, सुनो, जो कुछ तुम ने मुझ से कहा या
उसे मानकर मैं ने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है। 2 और अब देखो, वह राजा
तुम्हारे आगे आगे चलता है; और अब मैं बूढ़ा हूं, और मेरे बाल उजले हो गए हैं,
और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं; और मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे साम्हने
काम करता रहा हूं। 3 मैं उपस्यित हूं; इसलिथे तुम यहोवा के साम्हने, और उसके
अभिषिक्त के सामने मुझ पर साझी दो, कि मैं ने किस का बैल ले लिया? वा किस
का गदहा ले लियो? वा किस पर अन्धेर किया? वा किस को पीसा? वा किस के
हाथ से अपक्की आंखें बन्द करने के लिथे घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम
को फेर दूंगा? 4 वे बोले, तू ने न तो हम पर अन्धेर किया, न हमें पीसा, और न
किसी के हाथ से कुछ लिया है। 5 उस ने उन से कहा, आज के दिन यहोवा तुम्हारा
साझी, और उसका अभिषिक्त इस बात का साझी है, कि मेरे यहां कुद नहीं
निकला। वे बोले, हां, वह साझी है। 6 फिर शमूएल लोगोंसे कहने लगा, जो मूसा

और हारून को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजोंको मिस्र देश से निकाल लाया वह यहोवा
ही है। 7 इसलिथे अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के साम्हने उसके सब धर्म के
कामोंके विषय में, जिन्हें उस ने तुम्हारे साय और तुम्हारे पूर्वजोंके साय किया है,
तुम्हारे साय विचार करूंगा। 8 याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे पूर्वजोंने यहोवा
की दोहाई दी; तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे
पूर्वजोंको मिस्र से निकाला, और इस स्यान में बसाया। 9 फिर जब वे अपके
परमेश्वर यहोवा को भूल गए, तब उस ने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और
पलिश्तियोंऔर मोआब के राजा के अधीन कर दिया; और वे उन से लड़े। 10 तब
उन्होंने यहोवा की दोहाई देकर कहा, हम ने यहोवा को त्यागकर और बाल
देवताओं और अशतोरेत देवियोंकी उपासना करके महा पाप किया है; परन्तु अब
तू हम को हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा तो हम तेरी उपासना करेंगे। 11 इसलिथे
यहोवा ने यरूब्बाल, बदान, यिप्तह, और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे
चारोंओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया; और तुम निडर रहने लगे। 12 और जब
तुम ने देखा कि अम्मोनियोंका राजा नाहाश हम पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा या तौभी तुम ने मुझ से कहा, नहीं, हम पर
एक राजा राज्य करेगा। 13 अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और
जिसके लिथे तुम ने प्रार्यना की यी; देखो, यहोवा ने ऐ राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त
कर दिया है। 14 यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और
उसकी बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा न करो,
और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनो अपके परमेश्वर यहोवा के पीछे
पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा; 15 परन्तु यदि तुम यहोवा की बात

न मानो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा करो, तो यहोवा का हाथ
जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरूद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरूद्ध उठेगा। 16
इसलिथे अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारे
आंखोंके साम्हने करने पर है। 17 आज क्या गेहूं की कटनी नहीं हो रही? मैं
यहोवा को पुकारूंगा, और वह मेघ गरजाएगा और मेंह बरसाएगा; तब तुम जान
लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा मांगकर यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ी
बुराई की है। 18 तब शमूएल ने यहोवा का पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघ
गरजाया और मेंह बरसाया; और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अत्यन्त डर
गए। 19 और सब लोगोंने शमूएल से कहा, अपके दासोंके निमित्त अपके परमेश्वर
यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएं; क्योंकि हम ने अपके सारे पापोंसे
बढ़कर यह बुराई की है कि राजा मांगा है। 20 शमूएल ने लोगोंसे कहा, डरो मत;
तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत
मुड़ना; परन्तु अपके सम्पूर्ण मन से उस की उपासना करना; 21 और मत मुड़ना;
नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिन से न कुछ लाभ पहुंचेगा,
और न कुछ छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं। 22 यहोवा तो
अपके बड़े नाम के कारण अपक्की प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हे
अपक्की ही इच्छा से अपक्की प्रजा बनाया है। 23 फिर यह मुझ से दूर हो कि मैं
तुम्हारे लिथे प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विरूद्ध पापी ठहरूं; मैं तो तुम्हें
अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता रहूंगा। 24 केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा
का भय मानो, और सच्चाई से अपके सम्पूर्ण मान के साय उसकी उपासना करो;
क्योंकि यह तो सोचो कि उस ने तुम्हारे लिथे कैसे बड़े बड़े काम किए हैं। 25

परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनोंके
दोनोंमिट जाओगे।

1 शमूएल 13

1 शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और उस ने इस्राएलियोंपर दो वर्ष
तक राज्य किया। 2 फिर शाऊल ने इस्राएलियोंमें से तीन हजार पुरूषोंको अपके
लिथे चुन लिया; और उन में से दो हजार शाऊल के साय मिकमाश में और बेतेल
के पहाड़ पर रहे, और एक हजार योनातान के साय बिन्यामीन के गिबा में रहे;
और दूसरे सब लोगोंको उस ने अपके अपके डेरे में जाने को विदा किया। 3 तब
योनातान ने पलिश्तियोंकी उस चौकी को जो गिबा में भी मार लिया; और इसका
समाचार पलिश्तियोंके कानोंमें पड़ा। तब शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा
फुंकवाकर यह कहला भेजा, कि इब्री लोग सुनें। 4 और सब इस्राएलियोंने यह
समाचार सुना कि शाऊल ने पलिश्तियोंकी चौकी को मारा है, और यह भी कि
पलिश्ती इस्राएल से घृणा करने लगे हैं। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर
गिलगाल में इकट्ठे हो गए।। 5 और पलिश्ती इस्राएल से युद्ध करने के लिथे
इकट्ठे हो गए, अर्यात् तीस हजार रय, और छ: हजार सवार, और समुद्र के तीर
की बालू के किनकोंके समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए; और बेतावेन के पूर्व की
ओर जाकर मिकमाश में छावनी डाली। 6 जब इस्राएली पुरूषोंने देखा कि हम
सकेती में पके हैं (और सचमुच लोग संकट में पके थे), तब वे लोग गुफाओं,
फाडियों, चट्टानों, गढियों, और गढ़होंमें जा छिपे। 7 और कितने इब्री यरदन पार
होकर गाद और गिलाद के देशोंमें चले गए; परन्तु शाऊल गिलगाल ही में रहा,

और सब लोग यरयराते हुए उसके पीछे हो लिए।। 8 वह शमूएल के ठहराए हुए
समय, अर्यात् सात दिन तक बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न
आया, और लोग उसके पास से इधर उधर होने लगे। 9 तब शाऊल ने कहा,
होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ। तब उस ने होमबलि को चढ़ाया। 10
ज्योंही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्श्या देखता है कि शमूएल आ पहुंचा;
और शाऊल उस से मिलने और नमस्कार करने को निकला। 11 शमूएल ने पूछा,
तू ने क्या किया? शाऊल ने कहा, जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर
हो चले हैं, और तू ठहराए हुए ेदनोंके भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकपाश
में इकट्ठे हुए हैं, 12 तब मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी आ
पकेंगे, और मैं ने यहोवा से बिनती भी नहीं की है; सो मैं ने अपक्की इच्छा न रहते
भी होमबलि चढ़ाया। 13 शमूएल ने शाऊल से कहा, तू ने मूर्खता का काम किया
है; तू ने अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा
राज्य इस्राएलियोंके ऊपर सदा स्यिर रखता। 14 परन्तु अब तेरा राज्य बना न
रहेगा; यहोवा ने अपके लिथे एक ऐसे पुरूष को ढूंढ़ लिया है जो उसके मन के
अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपक्की प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है,
क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।। 15 तब शमूएल चल निकला, और
गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया। और शाऊल ने अपके साय के लोगोंको
गिनकर कोई छ: सौ पाए। 16 और शाऊल और उसका पुत्र योनातान और जो
लोग उनके साय थे वे बिन्यामीन के गिबा में रहे; और पलिश्ती मिकमाश में डेरे
डाले पके रहे। 17 और पलिश्तियोंकी छावनी से नाश करनेवाले तीन दल
बान्धकर निकल; एक दल ने शूआल नाम देश की ओर फिर के ओप्रा का मार्ग

लिया, 18 एक और दल ने मुझकर बेयोरोन का मार्ग लिया, और एक और दल ने
मुड़कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम नाम तराई की ओर जंगल की तरफ
है।। 19 और इस्राएल के पूरे देश में लोहार कहीं नहीं मिलता या, क्योंकि
पलिश्तियोंने कहा या, कि इब्री तलवार वा भाला बनाने न पांए; 20 इसलिथे सब
इस्राएली अपके अपके हल की फली, और भाले, और कुल्हाड़ी, और हंसुआ तेज
करने के लिथे पलिश्तियोंके पास जाते थे; 21 परन्तु उनके हंसुओं, फालों, खेती के
त्रिशूलों, और कुल्हाडिय़ोंकी धारें, और पैनोंकी नोकें ठीक करने के लिथे वे रेती
रखते थे। 22 सो युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के सायियोंमें से किसी के पास
न तो तलवार यी और न भाला, वे केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास
रहे। 23 और पलिश्तियोंकी चौकी के सिपाही निकलकर मिकमाश की घाटी को
गए।।

1 शमूएल 14

1 एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपके पिता से बिना कुछ कहे अपके
हयियार ढोनेवाले जवान से कहा, आ, हम उधर पलिश्तियोंकी चौकी के पास
चलें। 2 शाऊल तो गिबा के सिक्के पर मिग्रोन में के अनार के पेड़ के तले टिका
हुआ या, और उसके संग के लोग कोई छ: सौ थे; 3 और एली जो शीलोंमें यहोवा
का याजक या, उसके पुत्र पिनहास का पोता, और ईकाबोद के भाई, अहीतूब का
पुत्र अहिय्याह भी एपोद पहिने हुए संग या। परन्तु उन लोगोंको मालूम न या कि
योनातान चला गया है। 4 उन घाटियोंके बीच में, जिन से होकर योनातान
पलिश्तियोंकी चौकी को जाना चाहता या, दोनोंअलंगोंपर एक एक नोकीली

चट्टान यी; एक चट्टान का नाम तो बोसेस, और दूसरी का नाम सेने या। 5 एक
चट्टान तो उत्तर की ओर मिकमाश के साम्हने, और दूसरी दक्खिन की ओर गेबा
के साम्हने खड़ी है। 6 तब योनातान ने अपके हयियार ढोनेवाले जवान से कहा,
आ, हम उन खतनारहित लोगोंकी चौकी के पास जाएं; क्या जाने यहोवा हमारी
सहाथता करे; क्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगोंके द्वारा
चाहे योड़े लोगोंके द्वारा छुटकारा दे। 7 उसके हयियार ढोनेवाले ने उस से कहा, जो
कुछ तेरे मन में हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूंगा।
8 योनातान ने कहा, सुन, हम उन मनुष्योंके पास जाकर अपके को उन्हें दिखाएं।
9 यदि वे हम से योंकहें, हमारे आने तक ठहरे रहो, तब तो हम उसी स्यान पर
खड़े रहें, और उनके पास न चढ़ें। 10 परन्तु यदि वे यह कहें, कि हमारे पास चढ़
आओ, तो हम यह जानकर चढ़ें, कि यहोवा उन्हें हमारे साय कर देगा। हमारे
लिथे यही चिन्ह हो। 11 तब उन दोनोंने अपके को पलिश्तियोंकी चौकी पर प्रगट
किया, तब पलिश्ती कहने लगे, देखो, इब्री लोग उन बिलोंमें से जहां वे छिप रहे थे
निकले आते हैं। 12 फिर चौकी के लोगोंने योनातान और उसके हयियार ढोनवाले
से पुकार के कहा, हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएंगे। तब
योनातान ने अपके हयियार ढोनवाले से कहा मेरे पीछे पीछे चढ़ आ; क्योंकि
यहोवा उन्हें इस्राएलियोंके हाथ में कर देगा। 13 और योनातान अपके हाथोंऔर
पावोंके बल चढ़ गया, और उसका हयियार ढोनेवाला भी उसके पीछे पीछे चढ़
गया। और पलिश्ती योनातान के साम्हने गिरते गए, और उसका हयियार
ढोनेवाला उसके पीछे पीछे उन्हें मारता गया। 14 यह पहिला संहार जो योनातान
और उसके हयियार ढोनेवाल से हुआ, उस में आधे बीघे भूमि में बीस एक पुरूष

मारे गए। 15 और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगोंमें यरयराहट
हुई; और चौकीवाले और नाश करनेवाले भी यरयराने लगे; और भुईंडोल भी हुआ;
और अत्यन्त बड़ी यरयराहट हुई। 16 और बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के
पहरूओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती जाती है, और वे लोग इधर उधर
चले जाते हैं।। 17 तब शाऊल ने अपके साय के लोगोंसे कहा, अपक्की गिनती
करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है। उन्होंने गिनकर देखा, कि
योनातान और उसका हयियार ढोनेवाला यहां नहीं है। 18 तब शाऊल ने
अहिय्याह से कहा, परमेश्वर का सन्दूक इस्राएलियोंके साय या। 19 शाऊल
याजक से बातें कर रहा या, कि पलिश्तियोंकी छावनी में हुल्लड़ अधिक होता
गया; तब शाऊल ने याजक से कहा, अपना हाथ खींच। 20 तब शाऊल और उसके
संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में गए; वहां उन्होंने क्या देखा, कि एक एक
पुरूष की तलवार अपके अपके सायी पर चल रही है, और बहुत कोलाहल मच रहा
है। 21 और जो इब्री पहिले की नाईं पलिश्तियोंकी ओर के थे, और उनके साय
चारोंओर से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के
इस्राएलियोंमें मिल गए। 22 और जितने इस्राएली पुरूष एप्रैम के पहाड़ी देश में
छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं, लड़ाई में आ उनका
पीछा करने में लग गए। 23 तब यहोवा ने उस दिन इस्राएलियोंको छुटकार दिया;
और लड़नेवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए। 24 परन्तु इस्राएली पुरूष
उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगोंको शपय धराकर कहा, शापित हो
वह, जो सांफ से पहिले कुछ खाए; इसी रीति मैं अपके शत्रुओं से पलटा ले सकूंगा।
तब उन लोगोंमें से किसी ने कुछ भी भोजन न किया। 25 और सब लोग किसी

वन में पहुंचे, जहां भूमि पर मधु पड़ा हुआ या। 26 जब लोग वन में आए तब क्या
देखा, कि मधु टपक रहा है, तौभी शपय के डर के मारे कोई अपना हाथ अपके मुंह
तक न ले गया। 27 परन्तु योनातान ने अपके पिता को लोगोंको शपय धराते न
सुना या, इसलिथे उस ने अपके हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में
डुबाया, और अपना हाथ अपके मुंह तक लगाया; तब उसकी आंखोंमें ज्योति
आई। 28 तब लोगोंमें से एक मनुष्य ने कहा, तेरे पिता ने लोगोंको दृढ़ता से शपय
धरा के कहा, शापित हो वह, जो आज कुछ खाए। और लोग यके मांदे थे। 29
योनातान ने कहा, मेरे पिता ने लोगोंको कष्ट दिया है; देखो, मैं ने इस मधु को योड़ा
सा चखा, और मुझे आंखोंसे कैसा सूफने लगा। 30 यदि आज लोग अपके शत्रुओं
की लूट से जिसे उन्होंने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो
बहुत पलिश्ती मारे नहीं गए। 31 उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक
पलिश्तियोंको मारते गए; और लोग बहुत ही यक गए। 32 सो वे लूट पर टूटे,
और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर मारके उनका मांस
लोहू समेत खाने लगे। 33 जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लोहू
समेत मांस खाकर यहोवा के विरूद्ध पाप करते हैं। तब उस ने उन से कहा; तुम ने
तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पत्यर मेरे पास लुढका दो। 34 फिर
शाऊल ने कहा, लोगोंके बीच में इधर उधर फिरके उन से कहो, कि अपना अपना
बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ, और वहीं बलि करके खाओ; और लोहू
समेत खाकर यहोवा के विरूद्ध पाप न करो। तब सब लोगोंने उसी रात अपना
अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया। 35 तब शाऊल ने यहोवा के लिथे एक वेदी
बनवाई; वह तो पहिली वेदी है जो उस ने यहोवा के लिथे बनवाई।। 36 फिर

शाऊल ने कहा, हम इसी राज को पलिश्तियोंका पीछा करके उन्हें भोर तक लूटते
रहें; और उन में से एक मनुष्य को भी जीवित न छोड़ें। उन्होंने कहा, जो कुछ तुझे
अच्छा लगे वही कर। परन्तु याजक ने कहा, हम इधर परमेश्वर के समीप आएं।
37 तब शाऊल ने परमेश्वर से पुछवाया, कि क्या मैं पलिश्तियोंका पीछा करूं?
क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में कर देगा? परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न
मिला। 38 तब शाऊल ने कहा, हे प्रजा के मुख्य लोगों, इधर आकर बूफो; और
देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है। 39 क्योंकि इस्राएल के छुड़ानेवाले
यहोवा के जीवन की शपय, यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तौभी
निश्चय वह मार डाला जाएगा। परन्तु लोगोंमें से किसी ने उसे उत्तर न दिया। 40
तब उस ने सारे इस्राएलियोंसे कहा, तुम एक ओर हो, और मैं और मेरा पुत्र
योनातान दूसरी और होंगे। लोगोंने शाऊल से कहा, जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही
कर। 41 तब शाऊल ने यहोवा से कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर, सत्य बात बता।
तब चिट्‌ठी योनातान और शाऊल के नाम पर निकली, और प्रजा बच गई। 42
फिर शाऊल ने कहा, मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिट्‌ठी डालो। तब
चिट्‌ठी योनातान के नाम पर निकली। 43 तब शाऊल ने योनातान से कहा, मुझे
बता, कि तू ने क्या किया है। योनातान ने बताया, और उस से कहा, मैं ने अपके
हाथ की छड़ी की नोक से योड़ा सा मधु चख तो लिया है; और देख, मुझे मरना है।
44 शाऊल ने कहा, परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन इस से भी अधिक करे; हे
योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा। 45 परन्तु लोगोंने शाऊल से कहा, क्या
योनातान मारा जाए, जिस ने इस्राएलियोंका ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न
होगा! यहोवा के जीवन की शपय, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न

पाएगा; क्योंकि आज के दिन उस ने परमेश्वर के साय होकर काम किया है। तब
प्रजा के लोगोंने योनातान को बचा लिया, और वह मारा न गया। 46 तब शाऊल
पलिश्तियोंका पीछा छोड़कर लौट गया; और पलिश्ती भी अपके स्यान को चले
गए।। 47 जब शाऊल इस्राएलियोंके राज्य में स्यिर हो गया, तब वह मोआबी,
अम्मोनी, एदोमी, और पलिश्ती, अपके चारोंओर के सब शत्रुओं से, और सोबा के
राजाओं से लड़ा; और जहां जहां वह जाता वहां जय पाता या। 48 फिर उस ने
वीरता करके अमालेकियोंको जीता, और इस्राएलियोंको लूटनेवालोंके हाथ से
छुड़ाया।। 49 शाऊल के पुत्र योनातान, यिशबी, और मलकीश थे; और उसकी दो
बेटियोंके नाम थे थे, बड़ी का नाम तो मेरब और छोटी का नाम मीकल या। 50
और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम या जो अहीमास की बेटी यी। और उसके
प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर या जो शाऊल के चचा नेर का पुत्र या। 51 और
शाऊल का पिता कीश या, और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र या। 52 और
शाऊल जीवन भर पलिश्तियोंसे संग्राम करता रहा; जब जब शाऊल को कोई वीर
वा अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा तब तब उस ने उसे अपके पास रख लिया।।

1 शमूएल 15

1 शमूएल ने शाऊल से कहा, यहोवा ने अपक्की प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के
लिथे तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा या; इसलिथे अब यहोवा की बातें सुन ले।
2 सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि मुझे चेत आता है कि अमालेकियोंने
इस्राएलियोंसे क्या किया; और जब इस्राएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग
में उनका साम्हना किया। 3 इसलिथे अब तू जाकर अमालेकियोंको मार, और जो

कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश कर; क्या पुरूष, क्या स्त्री, क्या
बच्चा, क्या दूधपिउवा, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊंट, क्या गदहा,
सब को मार डाल।। 4 तब शाऊल ने लोगोंको बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें
तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहूदी पुरूष भी थे। 5
तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक नाले में घातकोंको बिठाया। 6
और शाऊल ने केनियोंसे कहा, कि वहां से हटो, अमालेकियोंके मध्य में से निकल
जाओ कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साय तुम्हारा भी अन्त कर डालूं; क्योंकि तुम
ने सब इस्राएलियोंपर उनके मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई यी। और केनी
अमालेकियोंके मध्य में से निकल गए। 7 तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक
जो मिस्र के साम्हने है अमालेकियोंको मारा। 8 और उनके राजा अगाग को
जीवित पकड़ा, और उसकी सब प्रजा को तलवार से सत्यानाश कर डाला। 9
परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे पशुओं,
और मेम्नों, और जो कुछ अच्छा या, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने
कोमलता की, और उन्हें सत्यानाश करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और
निकम्मा या उसको उन्होंने सत्यानाश किया।। 10 तब यहोवा का यह वचन
शमूएल के पास पहुंचा, 11 कि मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूं; क्योंकि
उस ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब
शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दोहाई देता रहा। 12 बिहान
को जब शमूएल शाऊल से भेंट करने के लिथे सवेरे उठा; तब शमूएल को यह
बताया गया, कि शाऊल कर्म्मेल को आया या, और अपके लिथे एक निशानी खड़ी
की, और घूमकर गिलगाल को चला गया है। 13 तब शमूएल शाऊल के पास गया,

और शाऊल ने उस से कहा, तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैं ने यहोवा की
आज्ञा पूरी की है। 14 शमूएल ने कहा, फिर भेड़-बकरियोंका यह मिमियाना, और
गय-बैलोंका यह बंबाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्योंहो रहा है? 15 शाऊल ने
कहा, वे तो अमालेकियोंके यहां से आए हैं; अर्यात् प्रजा के लोगोंने अच्छी से
अच्छी भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैलोंको तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे बलि करने को
छोड़ दिया है; और बाकी सब को तो हम ने सत्यानाश कर दिया है। 16 तब
शमूएल ने शाऊल से कहा, ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझ से
कही है वह मैं तुझ को बताता हूं। उस ने कहा, कह दे। 17 शमूएल ने कहा, जब तू
अपक्की दृष्टि में छोटा या, तब क्या तू इस्राएली गोत्रियोंका प्रधान न हो गया, और
क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया? 18 और
यहोवा ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दी, और कहा, जाकर उन पापी
अमालेकियोंको सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएं, तब तक उन से
लड़ता रह। 19 फिर तू ने किस लिथे यहोवा की वह बात टालकर लूट पर टूट के
वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है? 20 शाऊल ने शमूएल से कहा,
नि:सन्देह मैं ने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला,
और अमालेकियोंको सत्यानाश किया है। 21 परन्तु प्रजा के लोग लूट में से
भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, अर्यात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को
गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे बलि चढ़ाने को ले आए हैं। 22 शमूएल
ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियोंसे उतना प्रसन्न होता है,
जितना कि अपक्की बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि
चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ोंकी चर्बी से उत्तम है। 23 देख बलवा करना और

भावी कहनेवालोंसे पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतोंऔर
गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना,
इसलिथे उस ने तुझे राजा होने के लिथे तुच्छ जाना है। 24 शाऊल ने शमूएल से
कहा, मैं ने पाप किया है; मैं ने तो अपक्की प्रजा के लोगोंका भय मानकर और
उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातोंका उल्लंघन किया है। 25
परन्तु अब मेरे पाप को झमा कर, और मेरे साय लौट आ, कि मैं यहोवा को
दण्डवत् करूं। 26 शमूएल ने शाऊल से कहा, मैं तेरे साय न लौटूंगा; क्योंकि तू ने
यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे इस्राएल का राजा होने के
लिथे तुच्छ जाना है। 27 तब शमूएल जाने के लिथे घूमा, और शाऊल ने उसके
बागे की छोर को पकड़ा, और वह फट गया। 28 तब शमूएल ने उस से कहा आज
यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी
को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है। 29 और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो
फूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए। 30 उस
ने कहा, मैं ने पाप तो किया है; तौभी मेरी प्रजा के पुरनियोंऔर इस्राएल के
साम्हने मेरा आदर कर, और मेरे साय लौट, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को
दण्डवत करूं। 31 तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया; और शाऊल ने
यहोवा का दण्डवत् की। 32 तब शमूएल ने कहा, अमालेकियोंके राजा आगाग को
मेरे पास ले आओ। तब आगाग आनन्द के साय यह कहता हुआ उसके पास
गया, कि निश्चय मृत्यु का दु:ख जाता रहा। 33 शमूएल ने कहा, जैसे स्त्रियां तेरी
तलवार से निर्वंश हुई हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियोंमें निर्वंश होगी। तब शमूएल ने
आगाग को गिलगाल में यहोवा के साम्हने टुकड़े टुकड़े किया।। 34 तब शमूएल

रामा को चला गया; और शाऊल अपके नगर गिबा को अपके घर गया। 35 और
शमूएल ने अपके जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की, क्योंकि शमूएल शाऊल के
लिथे विलाप करता रहा। और यहोवा शाऊल को इस्राएल का राजा बनाकर
पछताता या।।

1 शमूएल 16

1 और यहोवा ने शमूएल से कहा, मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के
लिथे तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपके सींग
में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, क्योंकि मैं ने
उसके पुत्रोंमें से एक को राजा होने के लिथे चुना है। 2 शमूएल बोला, मैं क्योंकर
जा सकता हूं? यदि शाऊल सुन लेगा, तो मुझे घात करेगा। यहोवा ने कहा, एक
बछिया साय ले जाकर कहना, कि मैं यहोवा के लिथे यज्ञ करने को आया हूं। 3
और यज्ञ पर यिशै को न्योता देता, तब मैं तुझे जता दूंगा कि तुझ को क्या करना
है; और जिसको मैं तुझे बताऊं उसी को मेरी ओर से अभिषेक करना। 4 तब
शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और बेतलहेम को गया। उस नगर
के पुरनिथे यरयराते हुए उस से मिलने को गए, और कहने लगे, क्या तू मित्रभाव
से आया है कि नहीं? 5 उस ने कहा, हां, मित्रभाव से आया हूं; म्ें यहोवा के
लिथे यज्ञ करने को आया हूं; तुम अपके अपके को पवित्र करके मेरे साय यज्ञ में
आओ। तब उस ने यिशै और उसके पुत्रोंको पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता
दिया। 6 जब वे आए, तब उस ने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा, कि निश्चय जो
यहोवा के साम्हने है वही उसका अभिषिक्त होगा। 7 परन्तु यहोवा ने शमूएल से

कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं
ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य
तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। 8 तब यिशै ने
अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के साम्हने भेजा। और उस से कहा, यहोवा ने
इसको भी नहीं चुना। 9 फिर यिशै ने शम्मा को साम्हने भेजा। और उस ने कहा,
यहोवा ने इसको भी नहीं चुना। 10 योंही यिशै ने अपके सात पुत्रोंको शमूएल के
साम्हने भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया, यहोवा ने इन्हें नहीं चुना। 11
तब शमूएल ने यिशै से कहा, क्या सब लड़के आ गए? वह बोला, नहीं, लहुरा तो
रह गया, और वह भेड़-बकरियोंको चरा रहा है। शमूएल ने यिशै से कहा, उसे
बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहां न आए तब तक हम खाने को न बैठेंगे। 12
तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली फलकती यी, और उसकी
आंखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल या। तब यहोवा ने कहा, उठकर इस का
अभिषेक कर: यही है। 13 तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके
भाइयोंके मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को
यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामा को
चला गया।। 14 और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की
ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। 15 और शाऊल के कर्मचारियोंने उस
से कहा, सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है। 16 हमारा
प्रभु अपके कर्मचारियोंको जो उपस्यित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा
बजानेवाले को ढूंढ़ ले आएं; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ
पर चढ़े, तब तब वह अपके हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए। 17 शाऊल ने

अपके कर्मचारियोंसे कहा, अच्छा, एक उत्तम बजवैया देखो, और उसे मेरे पास
लाओ। 18 तब एक जवान ने उत्तर देके कहा, सुन, मैं ने बेतलहमी यिशै के एक
पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात
करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साय रहता है। 19 तब
शाऊल ने दूतोंके हाथ यिशै के पास कहला भेजा, कि अपके पुत्र दाऊद को जो
भेड़-बकरियोंके साय रहता है मेरे पास भेज दे। 20 तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ
एक गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपके पुत्र
दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। 21 और दाऊद शाऊल के पास जाकर
उसके साम्हने उपस्यित रहने लगा। और शाऊल उस से बहुत प्रीति करने लगा,
और वह उसका हयियार ढोनेवाला हो गया। 22 तब शाऊल ने यिशै के पास कहला
भेजा, कि दाऊद को मेरे साम्हने उपस्यित रहने दे, क्योंकि मैं उस से बहुत
प्रसन्न हूं। 23 और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता
या, तब तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता
या, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता या।।

1 शमूएल 17

1 अब पलिश्तियोंने युद्ध के लिथे अपक्की सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहूदा
देश के सोको में एक साय होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे
डाले। 2 और शाऊल और इस्राएली पुरूषोंने भी इकट्ठे होकर एला नाम तराई में
डेरे डाले, और युद्ध के लिथे पलिश्तियोंके विरूद्ध पांती बान्धी। 3 पलिश्ती तो एक
ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर

के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनोंके बीच तराई यी। 4 तब पलिश्तियोंकी छावनी में
से एक वीर गोलियत नाम निकला, जो गत नगर का या, और उसके डील की
लम्बाई छ: हाथ एक बित्ता यी। 5 उसके सिर पर पीतल का टोप या; और वह एक
पत्तर का फिलम पहिने हुए या, जिसका तौल पांच हजार शेकेल पीतल का या। 6
उसकी टांगोंपर पीतल के कवच थे, और उस से कन्धोंके बीच बरछी बन्धी यी। 7
उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान यी, और उस भाले का फल छ: सौ
शेकेल लोहे का या, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे आगे चलता या
8 वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियोंको ललकार के बोला, तुम ने यहां आकर लड़ाई
के लिथे क्योंपांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं, और तुम शाऊल के अधीन
नहीं हो? अपके में से एक पुरूष चुना, कि वह मेरे पास उत्तर आए। 9 यदि वह मुझ
से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; परन्तु यदि मैं
उस पर प्रबल होकर मांरू, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी
पकेगी। 10 फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली पांतियोंको
ललकारता हूं, किसी पुरूष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें। 11 उस
पलिश्ती की इन बातोंको सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियोंका मन कच्च
हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।। 12 दाऊद तो यहूदा के बेतलेहेम के उस
एप्राती पुरूष को पुत्र या, जिसका नाम यिशै या, और उसके आठ पुत्र थे और वह
पुरूष शाऊल के दिनोंमें बूढा और निर्बल हो गया या। 13 यिशै के तीन बड़े पुत्र
शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रोंके नाम जो लड़ने को
गए थे थे थे, अर्यात् ज्थेश्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे
का शम्मा या। 14 और सब से छोटा दाऊद या; और तीनोंबड़े पुत्र शाऊल के पीछे

होकर गए थे, 15 और दाऊद बेतलहेम में अपके पिता की भेड़ बकरियां चराने को
शाऊल के पास से आया जाया करता या।। 16 वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक
सवेरे और सांफ को निकट आकर खड़ा हुआ करता या। 17 और यिशै ने अपके
पुत्र दाऊद से कहा, यह एपा भर चबैना, और थे दस रोटियां लेकर छावनी में
अपके भाइयोंके पास दौड़ जा; 18 और पक्कीर की थे दस टिकियां उनके
सहस्रपति के लिथे ले जा। और अपके भाइयोंका कुशल देखकर उन की कोई
चिन्हानी ले आना। 19 शाऊल, और वे भाई, और समस्त इस्राएली पुरूष एला
नाम तराई में पलिश्तियोंसे लड़ रहे थे। 20 और दाऊद बिहान को सबेरे उठ, भेड़
बकरियोंको किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, उन वस्तुओं को लेकर चला; और
जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिथे ललकार रही यी, उसी समय
वह गाडिय़ोंके पड़ाव पर पहुंचा। 21 तब इस्राएलियोंऔर पलिश्तियोंने अपक्की
अपक्की सेना आम्हने साम्हने करके पांति बांन्धी। 22 औ दाऊद अपक्की समग्री
सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपके भाइयोंके
पास जाकर उनका कुशल झेम पूछा। 23 वह उनके साय बातें कर ही रहा या, कि
पलिश्तियोंकी पांतियोंमें से वह वीर, अर्यात् गतवासी गालियत नाम वह पलिश्ती
योद्धा चढ़ आया, और पहिले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना।
24 उस पुरूष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके साम्हने से
भागे। 25 फिर इस्राएली पुरूष कहने लगे, क्या तुम ने उस पुरूष को देखा है जो
चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्राएलियोंको ललकारने को चढ़ा आता है; और जो
कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपक्की बेटी ब्याह देगा,
और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा। 26 तब दाऊद ने उन

पुरूषोंसे जो उसके आस पास खड़े थे पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मारके
इस्राएलियोंकी नामधराई दूर करेगा उसके लिथे क्या किया जाएगा? वह
खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? 27
तब लोगोंने उस से वही बातें कहीं, अर्यात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उस से
ऐसा ऐसा किया जाएगा। 28 जब दाऊद उन मनुष्योंसे बातें कर रहा या, तब
उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा या; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित
होकर कहने लगा, तू यहां क्या आया है? और जंगल में उन योड़ी सी भेड़
बकरियोंको तू किस के पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई
मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिथे यहां आया है। 29 दाऊद ने कहा, मैं ने
अब क्या किया है, वह तो निरी बात यी? 30 तब उस ने उसके पास से मुंह फेरके
दूसरे के सम्मुख होकर वैसी ही बात कही; और लोगोंने उसे पहिले की नाई उत्तर
दिया। 31 जब दाऊद की बातोंकी चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई; औश्र्
उस ने उसे बुलवा भेजा। 32 तब दाऊद ने शाऊल से कहा, किसी मनुष्य का मन
उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा। 33 शाऊल ने
दाऊद से कहा, तू जाकर उस पलिश्ती के विरूद्ध नहीं युद्ध कर सकता; क्योंकि तू
तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है। 34 दाऊद ने शाऊल से कहा,
तेरा दास अपके पिता की भेड़ बकरियां चराता या; और जब कोई सिंह वा भालू
फुंड में से मेम्ना उठा ले गया, 35 तब मैं ने उसका पीछा करके उसे मारा, और
मेम्ने को उसके मुंह से छुड़ाया; और जब उस ने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैं ने
उसके केश को पकड़कर उसे मार डाला। 36 तेरे दास ने सिंह और भालू दोनोंको
मार डाला; और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उस ने

जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है। 37 फिर दाऊद ने कहा, यहोवा जिस ने
मुझ सिंह और भालू दोनोंके पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी
बचाएगा। शाऊल ने दाऊद से कहा, जा, यहोवा तेरे साय रहे। 38 तब शाऊल ने
अपके वस्त्र दाऊद को पहिनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया,
और फिलम उसको पहिनाया। 39 और दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर
कसी, और चलने का यत्न किया; उस ने तो उनको न परखा या। इसलिथे दाऊद ने
शाऊल से कहा, इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता, क्योंकि मैं ने नहीं
परखा। और दाऊद ने उन्हें उतार दिया। 40 तब उस ने अपक्की लाठी हाथ में ले
नाले में से पांच चिकने पत्यर छांटकर अपक्की चरवाही की यैली, अर्यात् अपके
फोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला। 41 और
पलिश्ती चलते चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी
ढाल लिए या वह उसके आगे आगे चला। 42 जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद
को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही या, और उसके मुख पर
लाली फलकती यी, औश्र् वह सुन्दर या। 43 तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, क्या
मैं कुत्ता हूं, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है? तब पलिश्ती अपके देवताओं के
नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। 44 फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, मेरे पास
आ, मैं तेरा मांस आकाश के पझियोंऔर बनपशुओं को दे दूंगा। 45 दाऊद ने
पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है;
परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का
परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। 46 आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे
हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूंगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा;

और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियोंऔर पृथ्वी के
जीव जन्तुओं को दे दूंगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में
एक परमेश्वर है। 47 और यह समस्त मण्डली जान लेगी की यहोवा तलवार वा
भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिथे कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही
तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा। 48 जब पलिश्ती उठकर दाऊद का साम्हना करने
के लिथे निकट आया, तब दाऊद सना की ओर पलिश्ती का साम्हना करने के
लिथे फुर्ती से दौड़ा। 49 फिर दाऊद ने अपक्की यैली में हाथ डालकर उस में से
एक पत्यर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा
कि पत्यर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुंह के बल गिर
पड़ा। 50 योंदाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्यर के द्वारा प्रबल होकर
उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न यी। 51 तब दाऊद दौड़कर
पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ, और उसकी तलवार पकड़कर मियान से खींची, और
उसको घात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि
हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए। 52 इस पर इस्राएली और यहूद पुरूष
ललकार उठे, और गत और एक्रोन से फाटकोंतक पलिश्तियोंका पीछा करते गए,
और घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग में और गत और एक्रोन तक गिरते गए। 53
तब इस्राएली पलिश्तियोंका पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरोंको लूट
लिया। 54 और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हयियार
अपके डेरे में धर लिए।। 55 जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का साम्हना
करने के लिथे जाते देखा, तब उस ने अपके सेनापति अब्नेर से पूछा, हे अब्नेर,
वह जवान किस का पुत्र है? अब्नेर ने कहा, हे राजा, तेरे जीवन की शपय, मैं नहीं

जानता। 56 राजा ने कहा, तू पूछ ले कि वह जवान किस का पुत्र है। 57 जब
दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में
लिए हुए शाऊल के साम्हने पहुंचाया। 58 शाऊल ने उस से पूछा, हे जवान, तू
किस का पुत्र है? दाऊद ने कहा, मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूं।।

1 शमूएल 18

1 जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग
गया, कि योनातान उसे अपके प्राण के बराबर प्यार करने लगा। 2 और उस दिन
से शाऊल ने उसे अपके पास रखा, और पिता के घर को फिर लौटने न दिया। 3 ब
योनातान ने दाऊद से वाचा बान्धी, क्योंकि वह उसको अपके प्राण के बराबर
प्यार करता या। 4 और योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहिने या
उतारकर अपके वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन अपक्की तलवार और धनुष
और कटिबन्ध भी उसको दे दिए। 5 और जहां कहीं शाऊल दाऊद को भेजता या
वहां वह जाकर बुद्धिमानी के साय काम करता या; और शाऊल ने उसे योद्धाओं का
प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उस से
प्रसन्न थे।। 6 जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर लौटा आता या, और वे सब
लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरोंसे स्त्रियोंने निकलकर डफ और
तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साय गाती और नाचक्की हुई, शाऊल राजा के
स्वागत में निकलीं। 7 और वे स्त्रियां नाचक्की हुइ एक दूसरी के साय यह गाती
गईं, कि शाऊल ने तो हजारोंको, परन्तु दाऊद ने लाखोंको मारा है।। 8 तब शाऊल
अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्होंने

दाऊद के लिथे तो लाखोंऔर मेरे लिथे हजारोंको ठहराया; इसलिथे अब राज्य को
छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है? 9 तब उस दिन से भविष्य में शाऊल
दाऊद की ताक में लगा रहा।। 10 दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से ऐ दृष्ट आत्मा
शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपके घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद
प्रति दिवस की नाईं अपके हाथ से बजा रहा या। और शाऊल अपके हाथ में अपना
भाला लिए हुए या; 11 तब शाऊल ने यह सोचकर, कि मैं ऐसा मारूंगा कि भाला
दाऊद को बेधकर भीत में धंस जाए, भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके
साम्हने से दो बार हट गया। 12 और शाऊल दाऊद से डरा करता या, क्योंकि
यहोवा दाऊद के साय या और शाऊल के पास से अलग हो गया या। 13 शाऊल ने
उसको अपके पास से अलग करके सहस्रपति किया, और वह प्रजा के साम्हने
आया जाया करता या। 14 और दाऊद अपक्की समस्त चाल में बुद्धिमानी
दिखाता या; और यहोवा उसके साय साय या। 15 और जब शाऊल ने देखा कि वह
बहुत बुद्धिमान है, तब वह उस से डर गया। 16 परन्तु इस्राएल और यहूदा के
समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे; क्योंकि वह उनके देखते आया जाया करता
या।। 17 और शाऊल ने यह सोचकर, कि मेरा हाथ नहीं, वरन पलिश्तियोंही का
हाथ दाऊद पर पके, उस से कहा, सुन, मैं अपक्की बड़ी बेटी मेरब को तुझे ब्याह
दूंगा; इतना कर, कि तू मेरे लिथे वीरता के साय यहोवा की ओर से युद्ध कर। 18
दाऊद ने शाऊल से कहा, मैं क्या हूं, और मेरा जीवन क्या है, और इस्राएल में मेरे
पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊं? 19 जब समय आ गया कि
शाऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तब वह महोलाई अद्रीएल से ब्याही
गई। 20 और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी; और जब इस

बात का समाचार शाऊल को मिला, तब वह प्रसन्न हुआ। 21 शाऊल तो सोचता
या, कि वह उसके लिथे फन्दा हो, और पलिश्तियोंका हाथ उस पर पके। और
शाऊल ने दाऊद से कहा, अब की बार तो तू अवश्य ही मेरा दामाद हो जाएगा। 22
फिर शाऊल ने अपके कर्मचारियोंको आज्ञा दी, कि दाऊद से छिपकर ऐसी बातें
करो, कि सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम
रखते हैं; इसलिथे अब तू राजा का दामाद हो जा। 23 तब शाऊल के कर्मचारियोंने
दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, मैं तो निर्धन और तुच्छ
मनुष्य हूं, फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है? 24 जब
शाऊल के कर्मचारियोंने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी ऐसी बातें कहीं। 25 तब
शाऊल ने कहा, तुम दाऊद से योंकहो, कि राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं
चाहता, केवल पलिश्तियोंकी एक सौ खलड़ियां चाहता है, कि वह अपके शत्रुओं से
पलटा ले। शाऊल की मनसा यह यी, कि पलिश्तियोंसे दाऊद को मरवा डाले। 26
जब उसके कर्मचारियोंने दाऊद से यह बातें बताईं, तब वह राजा का दामाद होने
को प्रसन्न हुआ। जब ब्याह के दिन कुछ रह गए, 27 तब दाऊद अपके जनोंको
संग लेकर चला, और पलिश्तियोंके दो सौ पुरूषोंको मारा; तब दाऊद उनकी
खलड़ियोंको ले आया, और वे राजा को गिन गिन कर दी गईं, इसलिथे कि वह
राजा का दामाद हो जाए। और शाऊल ने अपक्की बेटी मीकल को उसे ब्याह
दिया। 28 जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साय है,
और मेरी बेटी मीकल उस से प्रेम रखती है, 29 तब शाऊल दाऊद से और भी डर
गया। और शाऊल सदा के लिथे दाऊद का बैरी बन गया।। 30 फिर पलिश्तियोंके
प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब तब दाऊद ने शाऊल के

और सब कर्मचारियोंसे अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इस से उसका नाम बहुत बड़ा
हो गया।।

1 शमूएल 19

1 और शाऊल ने अपके पुत्र योनातन और अपके सब कर्मचारियोंसे दाऊद को
मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र योनातन दाऊद से बहुत प्रसन्न
या। 2 और योनातन ने दाऊद को बताया, कि मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता
है; इसलिथे तू बिहान को सावधान रहना, और किसी गुप्त स्यान में बैठा हुआ
छिपा रहना; 3 और मैं मैदान में जहां तू होगा वहां जाकर अपके पिता के पास
खड़ा होकर उस से तेरी चर्चा करूंगा; और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे
बताऊंगा। 4 और योनातन ने अपके पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उस
से कहा, कि हे राजा, अपके दास दाऊद का अपराधी न हो; क्योंकि उस ने तेरा
कुछ अपराध नहीं किया, वरन उसके सब काम तेरे बहुत हित के हैं; 5 उस ने
अपके प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला, और यहोवा ने समस्त
इस्राएलियोंकी बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ या; और तू दाऊद
को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी क्योंबने? 6 तब शाऊल ने योनातन
की बात मानकर यह शपय खाई, कि यहोवा के जीवन की शपय, दाऊद मार डाला
न जाएगा। 7 तब योनातन ने दाऊद को बुलाकर थे समस्त बातें उसको बताई।
फिर योनातन दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और वह पहिले की नाईं उसके
साम्हने रहने लगा।। 8 तब फिर लड़ाई होने लगी; और दाऊद जाकर
पलिश्तियोंसे लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके साम्हने से भाग

गए। 9 और जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा या; और दाऊद हाथ से
बजा रहा ◌ा◌ा◌ि, तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा। 10
और शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए भीत में धंस
जाए; परन्तु दाऊद शाऊल के साम्हने से ऐसा हट गया कि भाला जाकर भीत ही
में धंस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया। 11 और शाऊल ने
दाऊद के घर पर दूत इसलिथे भेजे कि वे उसकी घात में रहें, और बिहान को उसे
मार डालें, तब दाऊद की स्त्री मीकल ने उसे यह कहकर जताया, कि यदि तू इस
रात को अपना प्राण न बचाए, तो बिहान को मारा जाएगा। 12 तब मीकल ने
दाऊद को खिड़की से उतार दिया; और वह भाग कर बच निकला। 13 तब मीकल
ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और बकरियोंके रोएं की तकिया उसके
सिरहाने पर रखकर उन को वस्त्र ओढ़ा दिए। 14 जब शाऊल ने दाऊद को पकड़
लाने के लिथे दूत भेजे, तब वह बोली, वह तो बीमार है। 15 तब शाऊल ने दूतोंको
दाऊद के देखने के लिथे भेजा, और कहा, उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि
मैं उसे मार डालूं। 16 जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर
गृहदेवता पके हैं, और सिरहाने पर बकरियोंके रोएं की तकिया है। 17 सो शाऊल
ने मीकल से कहा, तू ने मुझे ऐसा धोखा क्योंदिया? तू ने मेरे शत्रु को ऐसा
क्योंजाने दिया कि वह बच निकला है? मीकल ने शाऊल से कहा, उस ने मुझ से
कहा, कि मुझे जाने दे; मैं तुझे क्योंमार डालूं।। 18 और दाऊद भागकर बच
निकला, और रामा में शमूएल के पास पहुंचकर जो कुछ शाऊल ने उस से किया
या सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे। 19
जब शाऊल ने दाऊद के पकड़ लाने के लिथे दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतोंने

नबियोंके दल को नबूवत करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा,
और वे भी नबूवत करने लगे। 20 तब शाऊल ने दाऊद के पकड़ लाने के लिथे दूत
भेजे; और जब शाऊल के दूतोंने नबियोंके दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल
को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे
भी नबूवत करने लगे। 21 इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे
भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबूवत
करने लगे। 22 तब वह आप ही राता को चला, और उस बड़े गड़हे पर जो सेकू में
है पहुंचकर पूछने लगा, कि शमूएल और दाऊद कहां है? किसी ने कहा, वे तो रामा
के नबायोत में हैं। 23 तब वह उधर, अर्यात् रामा के नबायोत को चला; और
परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामा के नबायोत को पहुंचने तक
नबूवत करता हुआ चला गया। 24 और उस ने भी अपके वस्त्र उतारे, और शमूएल
के साम्हने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा
रहा। इस कारण से यह कहावत चक्की, कि क्या शाऊल भी नबियोंमें से है?

1 शमूएल 20

1 फिर दाऊद रामा के नबायोत से भागा, और योनातन के पास जाकर कहने
लगा, मैं ने क्या किया है? मुझ से क्या पाप हुआ? मैं ने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा
कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है? 2 उस ने उस से
कहा, ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा पिता मुझ को बिना जताए
न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझ से
क्योंछिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है। 3 फिर दाऊद ने शपय खाकर कहा, तेरा

पिता निश्चय जानता है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता
होगा, कि योनातन इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित हो
जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपय और तेरे जीवन की शपय, नि:सन्देह, मेरे
और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है। 4 योनातान ने दाऊद से कहा, जो
कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिथे करूंगा। 5 दाऊद ने योनातान से कहा, सुन
कल नया चाँद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साय बैठकर भोजन करूं;
परन्तु तू मुझे विदा कर, और मैं परसोंसांफ तक मैदान में छिपा रहूंगा। 6 यदि
तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे, तो कहना, कि दाऊद ने अपके नगर बेतलेहेम को
शीघ्र जाने के लिथे मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी है; क्योंकि वहां उसके
समस्त कुल के लिथे वार्षिक यज्ञ है। 7 यदि वह योंकहे, कि अच्छा! तब तो तेरे
दास के लिथे कुशल होगा; परन्तु यदि उसका कोप बहुत भड़क उठे, तो जान लेना
कि उस ने बुराई ठानी है। 8 और तू अपके दास से कृपा का व्यवहार करना,
क्योंकि तू ने यहोवा की शपय खिलाकर अपके दास को अपके साय वाचा बन्धाई
है। परन्तु यदि मुझ से कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप मुझे मार डाल; तू मुझे
अपके पिता के पास क्योंपहुंचाए? 9 योनातन ने कहा, ऐसी बात कभी न होगी!
यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है, तो क्या मैं
तुझ को न बताता? 10 दाऊद ने योनातन से कहा, यदि तेरा पिता तुझ को कठोर
उत्तर दे, तो कौन मुझे बताएगा? 11 योनातन ने दाऊद से कहा, चल हम मैदान
को निकल जाएं। और वे दोनो मैदान की ओर चले गए।। 12 तब योनातन दाऊद
से कहने लगा; इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपय, जब मैं कल वा परसोंइसी
समय अपके पिता का भेद पांऊ, तब यदि दाऊद की भलाई देखूं, तो क्या मैं उसी

समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊंगा? 13 यदि मेरे पिता का मन तेरी
बुराई करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूँ कि तू
कुशल के साय चला जाए, तो यहोवा योनातन से ऐसा ही वरन इस से भी अधिक
करे। और यहोवा तेरे साय वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साय रहा। 14 और न
केवल जब तक मैं जीवित रहूं, तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसा करना,
कि मैं न मरूं; 15 परन्तु मेरे घराने पर से भी अपक्की कृपादृष्टि कभी न हटाना!
वरन जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृय्वी पर से नाश कर चुकेगा, तब भी
ऐसा न करना। 16 इस प्रकार योनातन ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा
बन्धाई, कि यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले। 17 और योनातन दाऊद से प्रेम
रखता या, और उस ने उसको फिर शपय खिलाई; क्योंकि वह उस ने अपके प्राण
के बारबर प्रेम रखता या। 18 तब योनातन ने उस से कहा, कल नया चाँद होगा;
और तेरी चिन्ता की जाएगी, क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी। 19 और तू तीन दिन
के बीतने पर तुरन्त आना, और उस स्यान पर जाकर जहां तू उस काम के दिन
छिपा या, अर्यात् एजेल नाम पत्यर के पास रहना। 20 तब मैं उसकी अलंग,
मानो अपके किसी ठहराए हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊंगा। 21 फिर मैं अपके
टहलुए छोकरे को यह कहकर भेजूंगा, कि जाकर तीरोंको ढूंढ ले आ। यदि मैं उस
छोकरे से साफ साफ कहूं, कि देख तीर इधर तेरी इस अलंग पर हैं, तो तू उसे ले
आ, क्योंकि यहोवा के जीवन की शपय, तेरे लिथे कुशल को छोड़ और कुछ न
होगा। 22 परन्तु यदि मैं छोकरे से योंकहूं, कि सुन, तीर उधर तेरे उस अलंग पर
है, तो तू चला जाना, क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है। 23 और उस बात के
विषय जिसकी चर्चा मैं ने और तू ने आपस में की है, यहोवा मेरे और तेरे मध्य में

सदा रहे।। 24 इसलिथे दाऊद मैदान में जा छिपा; और जब नया चाँद हुआ, तक
राजा भोजन करने को बैठा। 25 राजा तो पहिले की नाईं अपके उस आसन पर
बैठा जो भीत के पास या; और योनातन खड़ा हुआ, और अब्नेर शाऊल के निकट
बैठा, परन्तु दाऊद का स्यान खाली रहा। 26 उस दिन तो शाऊल यह सोचकर चुप
रहा, कि इसका कोई न कोई कारण होगा; वह अशुद्ध होगा, नि:सन्देह शुद्ध न
होगा। 27 फिर नथे चाँद के दूसरे दिन को दाऊद का स्यान खाली रहा। और
शाऊल ने अपके पुत्र योनातन से पूछा, क्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल
भोजन पर आया या, और न आज ही आया है? 28 योनातन ने शाऊल से कहा,
दाऊद ने बेतलेहेम जाने के लिथे मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी; 29 और कहा,
मुझे जाने दे; क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को
वहां उपस्यित होने की आज्ञा दी है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि
हो, तो मुझे जाने दे कि मैं अपके भाइयोंसे भेंट कर आऊं। इसी कारण वह राजा
की मेज पर नहीं आया। 30 तब शाऊल का कोप योनातन पर भड़क उठा, और
उस ने उस से कहा, हे कुटिला राजद्रोही के पुत्र, क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन
तो यिशै के पुत्र पर लगा है? इसी से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का
अनादर ही होगा। 31 क्योंकि जब तक यिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब
तक न तो तू और न तेरा राज्य स्यिर रहेगा। इसलिथे अभी भेजकर उसे मेरे पास
ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा। 32 योनातन ने अपके पिता शाऊल को
उत्तर देकर उस से कहा, वह क्योंमारा जाए? उस ने क्या किया है? 33 तब शाऊल
ने उसको मारने के लिथे उस पर भाला चलाया; इससे योनातन ने जान लिया, कि
मेरे पिता ने दाऊद को मार डालना ठान लिया है। 34 तब योनातन क्रोध से जलता

हुआ मेज पर से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि
वह बहुत खेदित या, इसलिथे कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया या।।
35 बिहान को योनातन एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के साय
ठहराए हुए स्यान को गया। 36 तब उस ने अपके छोकरे से कहा, दौड़कर जो जो
तीर मैं चलाऊं उन्हें ढूंढ ले आ। छोकरा दौड़ता ही या, कि उस ने एक तीर उसके
पके चलाया। 37 जब छोकरा योनातन के चलाए तीर के स्यान पर पहुंचा, तब
योनातन ने उसके पीछे से पुकारके कहा, तीर तो तेरी परली ओर है। 38 फिर
योनातन ने छोकरे के पीछे से पुकारकर कहा, बड़ी फुर्ती कर, ठहर मत। और
योनातन ने छोकरे के पीछे से पुकारके कहा, बड़ी फुर्ती कर, ठहर मत! और
योनातन का छोकरा तीरोंको बटोरके अपके स्वामी के पास ल आया। 39 इसका
भेद छोकरा तो कुछ न जानता या; केवल योनातन और दाऊद इस बात को
जानते थे। 40 और योनातन ने अपके हयियार अपके छोकरे को देकर कहा, जा,
इन्हें नगर को पहुंचा। 41 ज्योंही छोकरा चला गया, त्योंही दाऊद दक्खिन दिशा
की अलंग से निकला, और भूमि पर औंधे मुंह गिरके तीन बार दण्डवत् की; तब
उन्होंने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साय रोए, परन्तु दाऊद को रोना
अधिक या। 42 तब योनातन ने दाऊद से कहा, कुशल से चला जा; क्योंकि हम
दोनोंने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के नाम की शपय खाई है, कि यहोवा मेरे
और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे। तब वह उठकर चला
गया; और योनातन नगर में गया।।

1 शमूएल 21

1 और दाऊद नोब को अहीमेलेक याजक के पास आया; और अहीमेलेक दाऊद से
भेंट करने को यरयराता हुआ निकला, और उस से पूछा, क्या कारण है कि तू
अकेला है, और तेरे साय कोई नहीं? 2 दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, राजा
ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझ से कहा, जिस काम को मैं तुझे
भेजता, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं, वह किसी पर प्रकट न होने पाए; और मैं ने
जवानोंको फलाने स्यान पर जाने को समझाया है। 3 अब तेरे हाथ में क्या है?
पांच रोटी, वा जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे। 4 याजक ने दाऊद से कहा, मेरे
पास साधारण रोटी तो कुछ नहीं है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान
स्त्रियोंसे अलग रहे हों। 5 दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उस से कहा, सच है कि
हम तीन दिन से स्त्रियोंसे अलग हैं; फिर जब मैं निकल आया, तब तो जवानोंके
बर्तन पवित्र थे; यद्यपि यात्रा साधारण है तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र
होंगे। 6 तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहां न यी, केवल
भेंट की रोटी यी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई यी, कि उसके उठा लेने के
दिन गरम रोटी रखी जाए। 7 उसी दिन वहां दोएग नाम शाऊल का एक कर्मचारी
यहोवा के आगे रूका हुआ या; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहोंका मुखिया या।
8 फिर दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, क्या यहां तेरे पास कोई भाला व तलवार नहीं
है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी यी कि मैं न तो तलवार साय लाया
हूं, और न अपना कोई हयियार ही लाया। 9 याजक ने कहा, हां, पलिश्ती गोलियत
जिसे तू ने एला तराई में घात किया उसकी तलवार कपके में लपेअी हुई एपोद के
पीदे धरी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहां नहीं है।
दाऊद बोला, उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।। 10 तब दाऊद चला, और उसी

दिन शाऊल के डर के मारे भागकर गत के राजा आकीश के पास गया। 11 और
आकीश के कर्मचारियोंने आकीश से कहा, क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं
है? क्या लोगोंने उसी के विषय नाचते नाचते एक दूसरे के साय यह गाना न गया
या, कि शाऊल ने हजारोंको, और दाऊद ने लाखोंको मारा है? 12 दाऊद ने थे बातें
अपके मन में रखीं, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त डर गया। 13 तब वह
उनके साम्हने दूसरी चाल चक्की, और उनके हाथ में पड़कर बौड़हा, अर्यात
पागल बन गया; और फाटक के किवाडोंपर लकीरें खींचते, और अपक्की लार
अपक्की दाढ़ी पर बहाने लगा। 14 तब आकीश ने अपके कर्मचारियोंसे कहा,
देखो, वह जन तो बावला है; तुम उसे मेरे पास क्योंलाए हो? 15 क्या मेरे पास
बावलोंकी कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे साम्हने बावलापन करने के लिथे लाए
हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?

1 शमूएल 22

1 और दाऊद वहां से चला, और अदुल्लाम की गुफा में पहुंचकर बच गया; और
यह सुनकर उसके भाईं, वरन उसके पिता का समस्त घराना वहां उसके पास
गया। 2 और जितने संकट में पके थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे,
वे एक उसके पास इकट्ठे हुए; और हव उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ
पुरूष उसके साय हो गए।। 3 वहां से दाऊद ने मोआब के मिसपे को जाकर
मोआब के राजा से कहा, मेरे पिता को अपके पास तब तक आकर रहने दो, जब
तक कि मैं न जानूं कि परमेश्वर मेरे लिथे क्या करेगा। 4 और वह उनको मोआब
के राजा के सम्मुख ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे

उसके पास रहे। 5 फिर गाद नाम एक नबी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह;
चल, यहूदा के देश में जा। और दाऊद चलकर हेरेत के बन में गया।। 6 तब
शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संगियोंका पता लग गया हैं उस समय
शाऊल गिबा के ऊंचे स्यान पर, एक फाऊ के पेड़ के तले, हाथ में अपना भाला
लिए हुए बैठा या, और उसके कर्मचारी उसके आसपास खड़े थे। 7 तब शाऊल
अपके कर्मचारियोंसे जो उसके आसपास खड़े थे कहने लगा, हे बिन्यामीनियों,
सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम सभोंको खेत और दाख की बारियां देगा? क्या वह
तुम सभोंको सहस्रपति और शतपति करेगा? 8 तुम सभोंने मेरे विरूद्ध
क्योंराजद्रोह की गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बान्धी, तब
किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया; और तुम में से किसी ने मेरे लिथे शोकित
होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी को मेरे विरूद्ध ऐसा
घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है। 9 तब एदोमी दोएग ने, जो
शाऊल के सेवकोंके ऊपर ठहराया गया या, उत्तर देकर कहा, मैं ने तो यिशै के पुत्र
को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा, 10 और उस ने उसके
लिथे यहोवा से पूछा, और उसे भोजन वस्तु दी, और पलिश्ती गोलियत की
तलवार भी दी। 11 और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को और उसके
पिता के समस्त घराने को, बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राज के
पास आए, 12 तब शाऊल ने कहा, हे अहीतूब के पुत्र, सुन, वह बोला, हे प्रभु, क्या
आज्ञा? 13 शाऊल ने उस से पुछा, क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनोंने
मेरे विरूद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है? तू ने उसे रोटी और तलवार दी, और उसके
लिथे परमेश्वर से पूछा भी, जिस से वह मेरे विरूद्ध उठे, और ऐसा घात लगाए

जैसा आज के दिन है? 14 अहीमेलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त
कर्मचारियोंमें दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन है? वह तो राजा का दामाद है,
और तेरी राजसभा में उपस्यित हुआ करत, और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है। 15
क्या मैं ने आज ही उसके लिथे परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है? वह मुझ से
दूर रहे! राजा न तो अपके दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त
घराने पर, क्योंकि तेरा दास इन सब बखेड़ोंके विषय कुछ भी नहीं जानता। 16
राजा ने कहा, हे अहीमेलेक, तू और तेरे पिता का समस्त घराना निश्चय मार डाला
जाएगा। 17 फिर राजा ने उन पहरूओं से जो उसके आसपास खड़े थे आज्ञा दी,
कि मुड़ो और यहोवा के याजकोंको मार डालो; क्योंकि उन्होंने भी दाऊद की
सहाथता की है, और उसका भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया।
परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजकोंको मारने के लिथे हाथ बढ़ाना न चाहते
थे। 18 तब राजा ने दोएग से कहा, तू मुड़कर याजकोंको मार डाल। तब एदोमी
दोएग ने मुड़कर याजकोंको मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहिने हुए
पचासी पुरूषोंको घात किया। 19 और याजकोंके नगर नोब को उस ने स्त्रियों-
पुरूषों, और बालबच्चों, और दूधपिउवों, और बैलों, गदहों, और
भेड़-बकरियोंसमेत तलवार से मारा। 20 परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का
एब्यातार नाम एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया। 21 तब
एब्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के याजकोंको बध किया है।
22 और दाऊद ने एब्यातार से कहा, जिस दिन एदोमी दोएग वहां या, उसी दिन मैं
ने जान लिया, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के
मारे जाने का कारण मैं ही हुआ। 23 इसलिथे तू मेरे साय निडर रह; जो मेरे प्राण

का ग्राहक है वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साय रहने से तेरी रझा
होगी।।

1 शमूएल 23

1 और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे
हैं, और खलिहानोंको लूट रहे हैं। 2 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं
जाकर पलिश्तियोंको मारूं? यहोवा ने दाऊद से कहा, जा, और पलिश्तियोंको मार
के कीला को बचा। 3 परन्तु दाऊद के जनोंने उस से कहा, हम तो इस यहूदा देश
में भी डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर पलिश्तियोंकी सेना का साम्हना करें,
तो क्या बहुत अधिक डर में न पकेंगे? 4 तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और
यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, कमर बान्धकर कीला को जा; क्योंकि मैं
पलिश्तियोंको तेरे हाथ में कर दूंगा। 5 इसलिथे दाऊद अपके जनोंको संग लेकर
कीला को गया, और पलिश्तियोंसे लड़कर उनके पशुओं को हांक लाया, और उन्हें
बड़ी मार से मारा। योंदाऊद ने कीला के निवासिक्कों बचाया। 6 जब अहीमेलेक
का पुत्र एब्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया या, तब हाथ में एपोद लिए
हुए गया या।। 7 तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है।
और शाऊल ने कहा, परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है; वह तो फाटक और
बेंड़ेवले नगर में घुसकर बन्द हो गया है। 8 तब शाऊल ने अपक्की सारी सेना को
लड़ाई के लिथे बुलवाया, कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनोंको घेर ले। 9
तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि कि युक्ति कर रहा है; इसलिथे उस
ने एब्यातार याजक से कहा, एपोद को निकट ले आ। 10 तब दाऊद ने कहा, हे

इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण
कीला नगर नाश करने को आना चाहता है। 11 क्या कीला के लोग मुझे उसके
वश में कर देंगे? क्या जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा, अपके दास को यह बता। यहोवा ने कहा, हां, वह आएगा। 12
फिर दाऊद ने पूछा, क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनोंको शाऊल के वश में
कर देंगे? यहोवा ने कहा, हां, वे कर देंगे। 13 तब दाऊद और उसके जन जो कोई
छः सौ थे कीला से निकल गए, और इधर उधर जहां कहीं जा सके वहां गए। और
जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकला भाग है, तब उस ने
वहां जाने की मनसा छोड़ दी।। 14 जब दाऊद जो जंगल के गढ़ोंमें रहने लगा,
और पहाड़ी देश के जीप नाम जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रति दिन ढूंढ़ता
रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया। 15 और दाऊद ने जान
लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नाम जंगल के
होरेश नाम स्यान में या; 16 कि शाऊल का पुत्र योनातन उठकर उसके पास होरेश
में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया। 17 उस ने उस से
कहा, मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पकेगा; और तू ही
इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूंगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल
भी जानता है। 18 तब उन दोनोंने यहोवा की शपय खाकर आपस में वाचा बान्धी;
तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातन अपके घर चला गया। 19 तब जीपी
लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, दाऊद तो हमारे पास होरेश के
गढ़ोंमें, अर्यात् उस हकीला नाम पहाड़ी पर छिपा रहता है, जो यशीमोन के
दक्खिन की ओर है। 20 इसलिथे अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा आने की है, तो आ;

और उसको राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा। 21 शाऊल ने कहा,
यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है। 22 तुम
चलकर और भी निश्चय कर लो; और देख भालकर जान लो, और उसके अड्डे का
पता लगा लो, और बूफो कि उसको वहां किसने देखा है; क्योंकि किसी ने मुझ से
कहा है, कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है। 23 इसलिथे जहां कहीं वह छिपा
करता है उन सब स्यानोंको देख देखकर पहिचानो, तब निश्चय करके मेरे पास
लौट आना। और मैं तुम्हारे साय चलूंगा, और यदि वह उस देश में कहीं भी हो, तो
मैं उसे यहूदा के हजारोंमें से ढूंढ निकालूंगा। 24 तब वे चलकर शाऊल से पहिले
जीप को गए। परन्तु दाऊद अपके जनोंसमेत माओन नाम जंगल में चला गया
या, जो अराबा में यशीमोन के दक्खिन की ओर है। 25 तब शाऊल अपके जनोंको
साय लेकर उसकी खोज में गया। इसका समाचार पाकर दाऊद पर्वत पर से
उतरके माओन जंगल में रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद
का पीछा किया। 26 शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपेन जनोंसमेत
पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा या; और दाऊद शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा
या, और शाऊल अपके जनोंसमेत दाऊद और उसके जनोंको पकड़ने के लिथे घेरा
बनाना चाहता या, 27 कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, फुर्ती से चला
आ; क्योंकि पलिश्तियोंने देश पर चढ़ाई की है। 28 यह सुन शाऊल दाऊद का
पीछा छोड़कर पलिश्तियोंका साम्हना करने को चला; इस कारण उस स्यान का
नाम सेलाहम्महलकोत पड़ा। 29 वहां से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ोंमें रहने
लगा।।

1 शमूएल 24

1 जब शाऊल पलिश्तियोंका पीछा करके लौटा, तब उसको यह समाचार मिला,
कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। 2 तब शाऊल समस्त इस्राएलियोंमें से तीन
हजार को छांटकर दाऊद और उसके जनोंको बनैले बकरोंकी चट्टानोंपर खोजने
गया। 3 जब वह मार्ग पर के भेड़शालोंके पास पहुंचा जहां एक गुफा यी, तब
शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। और उसी गुफा के कोनोंमें दाऊद और
उसके जन बैठे हुए थे। 4 तब दाऊद के जनोंने उस से कहा, सुन, आज वही दिन है
जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा या, कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा,
कि तू उस से मनमाना बर्ताव कर ले। तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की
छोर को छिपकर काट लिया। 5 इसके पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने
से पछताया। 6 और अपके जनोंसे कहने लगा, यहोवा न करे कि मैं अपके प्रभु से
जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, क्योंकि वह
यहोवा का अभिषिक्त है। 7 ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपके जनोंको घुडकी
लगाई और उन्हें शाऊल की हानि करने को उठने न दिया। फिर शाऊल उठकर
गुफा से निकला और अपना मार्ग लिया। 8 उसके पीछे दाऊद भी उठकर गुफा से
निकला और शाऊल को पीछे से पुकार के बोला, हे मेरे प्रभु, हे राजा। जब शाऊल
ने फिर के देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर फुकाकर दण्डवत् की। 9 और
दाऊद ने शाऊल से कहा, जो मनुष्य कहते हैं, कि दाऊद तेरी हानि चाहता है
उनकी तू क्योंसुनता है? 10 देख, आज तू ने अपक्की आंखोंसे देखा है कि यहोवा
ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया या; और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे
मारने को कहा या, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैं ने कहा, मैं अपके
प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। 11 फिर, हे मेरे

पिता, देख, अपके बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैं ने तेरे बागे की छोर तो काट
ली, परन्तु तुझे घात न किया; इस से निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई
बुराई वा अपराध का सोच नहीं है। और मैं ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, परन्तु
तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है। 12 यहोवा मेरा और तेरा
न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा पलटा ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।
13 प्राचीनोंके नीति वचन के अनुसार दुष्टता दुष्टोंसे होती है; परन्तु मेरा हाथ तुझ
पर न उठेगा। 14 इस्राएल का राजा किस का पीछा करने को निकला है? और
किस के पीछे पड़ा है? एक मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे! 15 इसलिथे
यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े,
और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए। 16 दाऊद शाऊल से थे बातें कही चुका
या, कि शाऊल ने कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है? तब शाऊल
चिल्लाकर रोने लगा। 17 फिर उस ने दाऊद से कहा, तू मुझ से अधिक धर्मी है; तू
ने तो मेरे साय भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे साय बुराई की। 18 और तू ने आज
यह प्रगट किया है, कि तू ने मेरे साय भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे
हाथ में कर दिया, तब तू ने मुझे घात न किया। 19 भला! क्या कोई मनुष्य अपके
शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिथे जो तू ने आज मेरे साय किया है,
इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे। 20 और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू
निश्चय राजा को जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्यिर होगा। 21 अब
मुझ से यहोवा की शपय खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे पीछे नाश न करूंगा, और तेरे
पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा। 22 तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी
ही शपय खाई। तब शाऊल अपके घर चला गया; और दाऊद अपके जनोंसमेत

गढ़ोंमें चला गया।

1 शमूएल 25

1 और शमूएल मर गया; और समस्त इस्राएलियोंने इकट्ठे होकर उसके लिथे
छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामा में या उसको मिट्टी दी। तब दाऊद
उठकर पारान जंगल को चला गया।। 2 माओन में एक पुरूष रहता या जिसका
माल कर्मेल में या। और वह पुरूष बहुत बड़ा या, और उसके तीन हजार भेड़ें, और
एक हजार बकरियोंयीं; और वह अपक्की भेड़ोंका ऊन कतर रहा या। 3 उस पुरूष
का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल या। स्त्री तो बुद्धिमान और
रूपवती यी, परन्तु पुरूष कठोर, और बुरे बुरे काम करनेवाला या; वह तो
कालेबवंशी या। 4 जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपक्की
भेड़ोंका ऊन कतर रहा है; 5 तब दाऊद ने दस जवानोंको वहां भेज दिया, ओर
दाऊद ने उन जवानोंसे कहा, कि कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से
उसका कुशलझेम पूछो। 6 और उस से योंकहो, कि तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण
हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। 7 मैं
ने सुना है, कि जो तू ऊन कतर रहा है; तेरे चरवाहे हम लोगोंके पास रहे, और न
तो हम ने उनकी कुछ हानि की, और न उनका कुछ खोया गया। 8 अपके
जवानोंसे यह बात पूछ ले, और वे तुझ का बताएंगे। सो इन जवानोंपर तेरे
अनुग्रह की दृष्टि हो; हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिथे जो कुछ तेरे
हाथ लगे वह अपके दासोंऔर अपके बेटे दाऊद को दे। 9 ऐसी ऐसी बातें दाऊद के
जवान जाकर उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे। 10 नाबाल ने दाऊद के

जनोंको उत्तर देकर उन से कहा, दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आज कल
बहुत से दास अपके अपके स्वामी के पास से भाग जाते हैं। 11 क्या मैं अपक्की
रोटी-पानी और जो पशु मैं ने अपके कतरनेवालोंके लिथे मारे हैं लेकर ऐसे
लोगोंको दे दूं, जिनको मैं नहीं जानता कि कहां के हैं? 12 तब दाऊद के जवानोंने
लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको से सब बातें ज्योंकी त्योंसुना दीं।
13 तब दाऊद ने अपके जनोंसे कहा, अपक्की अपक्की तलवार बान्ध लो। तब
उन्होंने अपक्की अपक्की तलवार बान्ध ली; और दाऊद ने भी अपक्की तलवार
बान्घ ली; और कोई चार सौ पुरूष दाऊद के पीछे पीछे चले, और दो सौ समान के
पास रह गए। 14 परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया, कि
दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिथे दूत भेजे थे; और उस
ने उन्हें ललकारा दिया। 15 परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे,
और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया जाया करते थे, तब तक न
तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया गया; 16 जब तक हम उन के
साय भेड़-बकरियां चराते रहे, तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे। 17
इसलिथे अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्होंने हमारे
स्वामी की ओर उसके समस्त घराने की हानि ठानी होगी, वह तो ऐसा दुष्ट है कि
उस से कोई बोल भी नहीं सकता। 18 अब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो
कुप्पी दाखमधु, और पांच भेडिय़ोंका मांस, और पांच सआ भूना हुआ अनाज, और
एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरोंकी दो सौ टिकियां लेकर गदहोंपर लदवाई।
19 और उस ने अपके जवानोंसे कहा, तुम मेरे आगे आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे
पीछे आती हूं; परनतु उस ने अपके पति नाबाल से कुछ न कहा। 20 वह गदहे पर

चक्की हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती यी, और दाऊद अपके जनोंसमेत उसके
सामहने उतरा आता या; और वह उनको मिली। 21 दाऊद ने तो सोचा या, कि मैं
ने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रझा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह
नि:सन्देह व्यर्य हुआ; क्योंकि उस ने भलाई के बदले मुझ से बुराई ही की है। 22
यदि बिहान को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगोंमें से एक लड़के को
भी मैं जीवित छोड़ूं, तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा ही, वरन इस से भी
अधिक करे। 23 दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पक्की,
और दाऊद के सम्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की। 24 फिर वह
उसके पांव पर गिरके कहने लगी, हे मेरे प्रभु, यह अपराण मेरे ही सिर पर हो; तेरी
दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपक्की दासी की बातोंको सुन ले। 25
मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही
वह आप है; उसका नाम तो नाबाल है, और सचमुच उस में मूढता पाई जाती है;
परन्तु मुझ तेरी दासी ने अपके प्रभु के जवानोंको जिन्हें तू ने भेजा या न देखा
या। 26 और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपय और तेरे जीवन की
शपय, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपके हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से
रोक रखा है, इसलिथे अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हाति के चाहनेवाले नाबाल ही
के समान ठहरें। 27 और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपके प्रभु के पास लाई है,
उन जवानोंको दी जाए जो मेरे प्रभु के साय चालते हैं। 28 अपक्की दासी का
अपराध झमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्यिर
करेगा, इसलिथे कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में
कोई बुराई नहीं पाई जाएगी। 29 और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करनेऔर तेरे

प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की
जीवनरूपी गठरी में बन्धा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणोंको वह मानो गोफन में
रखकर फेंक देगा। 30 इसलिथे जब यहोवा मेरे प्रभु के लिथे यह समस्त भलाई
करेगा जो उस ने तेरे विषय में कही है, और तुझे इस्राएल पर प्रधान करके
ठहराएगा, 31 तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, वा मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित
न होगा कि तू ने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने अपना पलटा आप लिया
है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपक्की दासी को स्मरण करना।
32 दाऊद ने अबीगैल से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने आज
के दिन मुझ से भेंट करने केलिथे तुझे भेजा है। 33 और तेरा विवेक धन्य है, और
तू आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा
आप लेने से रोक लिया है। 34 क्योंकि सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिस
ने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपय, यदि तू फुर्ती करके
मुंफ से भेंट करने को न आती, तो नि:सन्देह बिहान को उजियाला होने तक
नाबाल का कोई लड़का भी न बचता। 35 तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह
उसके लिथे लाई यी; फिर उस से उस ने कहा, अपके घर कुशल से जा; सुन, मैं ने
तेरी बात मानी है और तेरी बिनती ग्रहण कर ली है। 36 तब अबीगैल नाबाल के
पास लौट गई; और क्या देखती है, कि वह घर में राजा की सी जेवनार कर रहा है।
और नाबाल का मन मगन है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिथेउस ने
भोर के उजियालेहाने से पहिले उस से कुछ भी न कहा। 37 बिहान को जब नाबाल
का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे कुल हाल सुना दिया, तब उसके मन
का हियाव जाता रहा, और वह पत्यर सा सुन्न हो गया। 38 और दस दिन के

पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया। 39 नाबाल के मरने का
हाल सुनकर दाऊद ने कहा, धन्य है यहोवा जिस ने नाबाल के साय मेरी
नामधराई का मुकद्दमा लड़कर अपके दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने
नाबाल की बुराईको उसी के सिर पर लाद दिया है। तब दाऊद ने लोगोंको अबीगैल
के पास इसलिथे भेजा कि वे उस से उसकी पत्नी होने की बातचीत करें। 40 तो
जब दाऊद के सेवक कर्मेल को अबीगैल के पास पहुंचे, तब उस से कहने लगे, कि
दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिथे भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने। 41 तब वह उठी,
और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा, तेरी दासी अपके प्रभु के
सेवकोंके चरण धोने के लिथे लौंडी बने। 42 तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे
पर चक्की, और उसकी पांच सहेलियां उसके पीछे पीछे हो ली; और वह दाऊद के
दूतोंके पीछे पीछे गई; और उसकी पत्नी हो गई। 43 और दाऊद ने यिज्रैल नगर
की अहिनोअम को भी ब्याह लिया, तो वे दोनोंउसकी पत्नियां हुई। 44
परन्तुशाऊल ने अपक्की बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमवासी
पलती को दे दिया या।।

1 शमूएल 26

1 फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, क्या दाऊद उस
हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने है छिपा नहीं रहता? 2 तब
शाऊल उठकर इस्राएल केतीन हजार छांटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि दाऊद
को जीप के जंगल में खोजे। 3 और शाऊल ने अपक्की छावनी मार्ग के पास
हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में

रहा; और उस ने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है; 4
तब दाऊद ने भेदियोंको भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है।
5 तब शाऊल उठकर उस स्यान पर गया जहां शाऊल पड़ा या; और दाऊद ने उस
स्यान को देखा जहां शाऊल अपके सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा या,
और उसके लोग उसके चारोंओर डेरे डाले हुए थे। 6 तब दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक
और जरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, मेरे साय उस छावनी में
शाऊल के पास कौन चलेगा? अबीशै ने कहा, तेरे साय मैं चलूंगा। 7 सो दाऊद और
अबीशै रातोंरात उन लोगोंके पास गए, और क्या देचाते हैं, कि शाऊल गाडिय़ोंकी
आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और
अब्नेर और योद्धा लोग उसके चारोंओर पके हुए हैं। 8 तब अबीशै ने दाऊद से
कहा, परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिथे अब मैं
उसको एक बार ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धंस जाए, और मुझ
को उसे दूसरी बार मारना न पकेगा। 9 दाऊद ने अबीशै से कहा, उसे नाश न कर;
क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है। 10
फिर दाऊद ने कहा, यहोवा के जीवन की शपय यहोवा ही उसको मारेगा; वा वह
अपक्की मृत्यु से मरेगा; वा वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा। 11 यहावो न करे
कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर बढ़ाऊं; अब उसके सिरहाने से भाला
और पानी की फारी उठा ले, और हम यहां से चले जाएं। 12 तब दाऊद ने भाले
और पानी की फारी को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और
किसी ने इसे न देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण
सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उन में भारी नींद समा गई यी। 13 तब दाऊइ

परली ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ, और दोनोंकेबीच बड़ा
अन्तर या; 14 और दाऊद ने उन लोगोंको, और नेर के पुत्र अब्नेर कोपुकार के
कहा, हे अब्नेरए क्या तू नहीं सुनता? अब्नेर ने उत्तर देकर कहा, तू कौन है जो
राजा को पुकारता है? 15 दाऊद ने अब्नेर से कहा, क्या तू पुरूष नहीं है? इस्राएल
में तेरे तुल्य कौन है? तू ने अपके स्वामी राजा की चौकसी क्योंनहीं की? एक जन
तो तेरे स्वामी राजा को नाश करने घुसा या 16 जो काम तू ने किया है वह अच्छा
नहीं। यहोवा के जीवन की शपय तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने
अपके स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। और अब देख, राजा का
भाला और पानी की घरी जो उसके सिरहान यी वे कहां हैं, 17 तब शाऊल ने दाऊद
का बोल पहिचानकर कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है, दाऊद ने कहा,
हां, मेरे प्रभु राजा, मेरा ही बोल है। 18 फिर उस ने कहा, मेरा प्रभु अपके दास का
पीछा क्योंकरता है? मैं ने क्या किया है? और मुझ से कौन सी बुराई हुई है? 19
अब मेरा प्रभु राजा, अपके दास की बातें सुन ले। यदि यहोवा नेतुझे मेरे विरूद्ध
उसकाया हो, तब तो वह भेंट ग्रहण करे; परन्तु यदि आदमियोंने ऐसा किया हो,
तो वे यहोवा की ओर से शापित हों, क्योंकि उन्होंने अब मुझे निकाल दिया हैकि
मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं, और उन्होंने कहा है, कि जा पराए देवताओं की
उपासना कर। 20 इसलिथे अब मेरा लोहू यहोवा की आखोंकी ओट में भूमि पर न
बहने पाए; इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू ढूंढ़ने आया है, जैसा कि कोई
पहाड़ोंपर तीतर का अहेर करे। 21 शाऊल ने कहा, मैं ने पाप किया है, हे मेरे बेटे
दाऊद लौट आ; मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा, इस कारण मैं
फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा; सुन, मैं ने मूर्खता की, और मुझ से बड़ी भूल हुई है।

22 दाऊद ने उत्तर देकर कहा, हे राजा, भाले को देख, कोई जवान इधर आकर इसे
ले जाए। 23 यहोवा एक एक को अपके अपके धर्म और सच्चाई का फल देगा;
देख, आज यहोवा ने तुझ को मेरे हाथ में कर दिया या, परन्तु मैं ने यहोवा के
अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाना उचित न समझा। 24 इसलिथे जैसे तेरे प्राण
आज मेरी दृष्टि में प्रिय ठहरे, वैसे ही मेरे प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय ठहरे,
और वह मुझे समस्त विपत्तियोंसे छुड़ाए। 25 शाऊल ने दाऊद से कहा, हे मेरे बेटे
दाऊद तू धन्य है! तू बड़े बड़े काम करेगा और तेरे काम सुफल होंगे। तब दाऊद ने
अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपके स्यान को लौट गया।।

1 शमूएल 27

1 और दाऊद सोचने लगा, अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो
जाऊंगा; अब मेरे लिथे उत्तम यह है कि मैं पलिश्तियोंके देश में भाग जाऊं; तब
शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्राएल के देश के किसी भाग में फिर
न ढूढ़ेगा, योंमैं उसके हाथ से बच निकलूंगा। 2 तब दाऊद अपके छ: सौ संगी
पुरूषोंको लेकर चला गया, और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश के पास
गया। 3 और दाऊद और उसके जन अपके अपके परिवार समेत गत में आकीश
के पास रहने लगे। दाऊद तो अपक्की दो स्त्रियोंके साय, अर्यात् यिज्रेली
अहीनोअब, और नाबाल की स्त्री कर्मेली अबीगैल के साय रहा। 4 जब शाऊल को
यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उस ने उसे फिर कभी न
ढूंढ़ा 5 दाऊद ने आकीश से कहा, यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो देश की
किसी बस्ती में मुझे स्यान दिला दे जहां मैं रहूं; तेरा दास तेरे साय राजधनी में

क्योंरहे? 6 जब आकीश ने उसे उसी दिन सिकलग बस्ती दी; इस कारण से
सिकलग आज के दिन तक यहूदा के राजाओं का बना है।। 7 पलिश्तियोंके देश में
रहते रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए। 8 और दाऊद ने अपके
जनोंसमेत जाकर गशूरियों, गिजिर्यों, और अमालेकियोंपर चढ़ाई की; थे जातियां
तो प्राचीन काल से उस देश में रहती यीं जो शूर के मार्ग में मिस्र देश तक है। 9
दाऊद ने उस देश को नाश किया, और स्त्री पुरूष किसी को जीवित न छोड़ा, और
भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे, ऊंट, और वस्त्र लेकर लौटा, और आकीश के पास
गया। 10 आकीश ने पूछा, आज तुम ने चढ़ाई तोनहीं की? दाऊद ने कहा, हां,
यहूदा यरहमेलियोंऔर केनियोंकी दक्खिन दिशा में। 11 दाऊद ने स्त्री पुरूष किसी
को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुंचाए; उस ने सोचा या, कि ऐसा न हो कि वे
हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया है। वरन जब से वह
पलिश्तियोंके देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है। 12 तब आकीश ने
दाऊद की बात सच मानकर कहा, यह अपके इस्राएली लागोंकी दृष्टि में अति
घृणित हुआ है; इसलिथे यह सदा के लिथे मेरा दास बना रहेगा।।

1 शमूएल 28

1 उन दिनोंमें पलिश्तियोंने इस्राएल से लड़ने के लिथे अपक्की सेना इकट्ठी की।
और आकीश ने दाऊद से कहा, निश्चय जान कि तुझे अपके जनोंसमेत मेरे साय
सेना में जाना होगा। 2 दाऊद ने आकीश से कहा, इस कारण तू जान लेगा कि तेरा
दास क्या करेगा। आकीश ने दाऊद से कहा, इस कारण मैं तुझे अपके सिर का
रझक सदा के लिथे ठहराऊंगा।। 3 शमूएल तो मर गया या, और समस्त

इस्राएलियोंने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामा में मिट्टी
दी यी। और शाऊल ने ओफोंऔर भूतसिद्धि करनेवालोंको देश से निकाल दिया
या।। 4 जब पलिश्ती इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब
इस्राएलियोंको इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली। 5
पलिश्तियोंकी सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त
भयभीत हो कांप उठा। 6 और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो
स्वप्न के द्वारा उस उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के
द्वारा। 7 तब शाऊल ने अपके कर्मचारियोंसे कहा, मेरे लिथे किसी भूतसिद्धि
करनेवाली को ढूंढो, कि मैं उसके पास जाकर उस से पूछूं। उसके कर्मचारियोंने
उस से कहा, एन्दोर में एक भूतसिद्धि करनेवाली रहती है। 8 तब शाऊल ने अपना
भेष बदला, और दूसरे कपके पहिनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातोंरात चलकर
उस स्त्री के पास गया; और कहा, अपके सिद्धि भूत से मेरे लिथे भावी कहलवा,
और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा दे। 9 स्त्री ने उस से कहा, तू जानता है कि
शाऊल ने क्या किया है, कि उस ने ओफोंऔर भूतसिद्धि करनेवालोंको देश से नाश
किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिथे क्योंफंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले। 10
शाऊल ने यहोवा की शपय खाकर उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपय, इस
बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा। 11 स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिथे किस को
बुलाऊ? उस ने कहा, शमूएल को मेरे लिथे बुला। 12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा,
तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, तू ने मुझे क्योंधोखा दिया? तू तो
शाऊल है। 13 राजा ने उस सेकहा, मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है? स्त्री ने शाऊल
से कहा, मुझे एक देवता पृय्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। 14 उस ने उस

से पूछा उस का कैसा रूप ह? उस ने कहा, एक बूढा पुरूष बागा ओढ़े हुए चढ़ा
आता है। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर
गिरके दण्डवत् किया। 15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर
क्योंसताया है? शाऊल ने कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साय
लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं
के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वपनोंके; इसलिथे मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे
जता दे कि मैं क्या करूं। 16 शमूएल ने कहा, जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु
बन गया, तब तू मुझ से क्योंपूछता है? 17 यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहलावाया
या वैसा ही उस ने व्यवहार किया है; अर्यात् उस ने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे
पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। 18 तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न
अमालेकियोंको उसके भड़के हुए कोप के अनुसा दण्ड दिया या, इस कारण यहोवा
ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया। 19 फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियोंको
पलिश्तियोंके हाथ में कर देगा; और तू अपके बेटोंसमेत कल मेरे साय होगा; और
इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियोंके हाथ में कर देगा। 20 तब शाऊल
तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातोंके कारण अत्यन्त
डर गया; उस ने पूरे दिन और रात भोजन न किया या, इस से उस में बल कुछ भी
न रहा। 21 तब वह स्त्री शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल देखकर
उस से कहा, सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और मैं ने अपके प्राण पर
खेलकर तेरे वचनोंको सुन लिया जो तू ने मुझ से कहा। 22 तोअब तू भी अपक्की
दासी की बात मान; और मैं तेरे साम्हने एक टुकड़ा रोटी रखूं; तू उसे खा, कि जब
तू अपना मार्ग ले तब तुझे बल आ जाए। 23 उस ने इनकार करके कहा, मैं न

खाऊंगा। परन्तु उसके सेवकोंऔर स्त्री ने मिलकर यहां तक उसे दबाया कि वह
उनकी बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया। 24 स्त्री के घर में तो
एक तैयार किया हुआ बछड़ा या, उस ने फुर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर
गूंधा, और अखमीरी रोटी बनाकर 25 शाऊल और उसके सेवकोंके आगे लाई; और
उन्होंने खाया। तब वे उठकर उसी रात चले गए।।

1 शमूएल 29

1 पलिश्तियोंने अपक्की समस्त सेना को अपेक में इकट्ठा किया; और इस्राएली
यिज्रेल के निकट के सोते के पास डेरे डाले हुए थे। 2 तब पलिश्तियोंके सरदार
अपके अपके सैकड़ोंऔर हजारोंसमेत आगे बढ़ गए, और सेना के पीछे पीछे
आकीश के साय दाऊद भी अपके जनोंसमेत बढ़ गया। 3 तब पलिश्ती हाकिमोंने
पूछा, इन इब्रियोंका यहां क्या काम है? आकीश ने पलिश्ती सरदारोंसे कहा, क्या
वह इस्राएल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने
दिनोंसे वरन वर्षो से मेरे साय रहता है, और जब से वह भाग आया, तब से आज
तक मैने उस में कोई दोष नहीं पाया। 4 तब पलिश्ती हाकिम उस से क्रोधित हुए;
और उस से कहा, उस पुरूष को लौटा दे, कि वह उस स्यान पर जाए जो तू ने
उसके लिथे ठहराया है; वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा, कहीं ऐसा न हो
कि वह लड़ाई में हमारा विराधी बन जाए। फिर वह अपके स्वामी से किस रीति से
मेल करे? क्या लोगोंके सिर कटवाकर न करेगा? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं है,
जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, कि शाऊल ने
हजारोंको , पर दाऊद ने लाखोंको मारा है? 6 तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर

उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपय तू तो सीधा है, और सेना में तेरा मेरे संग
आना जाना भी मुझे भावता है; क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर
आज तक मैं ने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तौभी सरदार लोग तुझे नहीं
चाहते। 7 इसलिथे अब तू कुशल से लौट जा; ऐसा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझ
से अप्रसन्न हों। 8 दाऊद ने आकीश से कहा, मैं ने क्या किया है? और जब से मैं
तेरे साम्हने आया तब से आज तक तू ने अपके दास में क्या पाया है कि अपके
प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं? 9 आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा, हां,
यह मुझे मालूम है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है;
तौभी पलिश्ती हाकिमोंने कहा है, कि वह हमारे संग लड़ाई में ने जाने पाएगा। 10
इसलिथे अब तू अपके प्रभु के सेवकोंको लेकर जो तेरे साय आए हैं बिहान को
तड़के उठना; और तुम बिहान को लड़के उठकर उजियाला होते ही चले जाना। 11
इसलिथे बिहान को दाऊद अपके जनोंसमेत तड़के उठकर पलिश्तियोंके देश को
लौअ गया। और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़ गए।।

1 शमूएल 30

1 तीसरे दिन जब दाऊद अपके जनोंसमेत सिकलग पहुंचा, तब उन्होंने क्या
देखा, कि अमालेकियोंने दक्खिन देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग
को मार के फूंक दिया, 2 और उस में की स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को
बन्धुआई में ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभोंको लेकर
अपना मार्ग लिया। 3 इसलिथे जब दाऊद अपके जनोंसमेत उस नगर में पहुंचा,
तब नगर तो जला पड़ा या, और स्त्रियां और बेटे-बेछियां बन्धुआई में चक्की गई

थीं। 4 तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर
उन में रोने की शक्ति न रही। 5 और दाऊद की दो स्त्रियां, यिज्रेली अहीनोअम, और
कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्धुआई में गई थीं। 6 और दाऊद बड़े संकट में
पड़ा; क्योंकि लोग अपके बेटे-बेटियोंके कारण बहुत शोकित होकर उस पर
पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपके परमेश्वर यहोवा को
स्मरण करके हियाव बान्धा।। 7 तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र एब्यातार
याजक से कहा, एपोद को मेरे पास ला। तब एब्यातार एपोद को दाऊद के पास ले
आया। 8 और दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं इस दल का पीछा करूं? क्या
उसको जा पकडूंगा? उस ने उस से कहा, पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको
पकड़ेगा, और निसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा; 9 तब दाऊद अपकेछ: सौ साथी
जनोंको लेकर बसोर नाम नाले तक पहुंचा; वहां कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए।
10 दाऊद तो चार सौ पुरूषोंसमेत पीछा किए चला गया; परन्तु दौसौ जो ऐसे थक
गए थे, कि बसोर नाले के पार न जा सके वहीं रहे। 11 उनको एक मिस्री पुरूष
मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी; और उस ने उसे
खाया, तब उसे पानी पिलाया, 12 फिर उन्होंने उसको अंजीर की टिकिया का एक
टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिए। और जब उस ने खाया, तब उसके जी में जी
आया; उस ने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी और न पानी पिया
था। 13 तब दाऊद ने उस से पूछा, तू किस का जन है? और कहां का है? उस ने
कहा, मैं तो मिस्री जवान अ ौर एक अमालेकी मनुष्य का दास हूँ; अ ौर तीन
दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा, अ ौर मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया। 14 हम लोगोंने
करेतियोंकी दक्खिन दिशा में, और यहूदा के देश में, और कालेब की दक्खिन

दिशा में चढाई की; और सिकलग को आग लगाकर फूंक दिया या। 15 दाऊद ने
उस से पूछा, क्या तू मुझे उस दल के पास पहुंचा देगा? उस ने कहा, मुझ से
परमेश्वर की यह शपय खा, कि मैं तुझे न तो प्राण से मारूंगा, और न तेरे स्वामी
के हाथ कर दूंगा, तब मैं तुझे उस दल के पास पहुंचा दूंगा। 16 जब उस ने उसे
पहुंचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते पीते, और उस
बडी लूट के कारण, जो वे पलिश्तियोंके देश और यहूदा देश से लाए थे, नाच रहे
हैं। 17 इसलिथे दाऊद उन्हें रात के पहिले पहर से लेकर दूसरे दिन की सांफ तक
मारता रहा; यहां तक कि चार सौ जवान को छोड़, जो ऊंटोंपर चढ़कर भाग गए,
उन में से एक भी मनुष्य न बचा। 18 और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब
दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने आपक्की दोनोंस्त्रियोंको भी छुड़ा लिया। 19 वरन
उनके क्या छोटे, क्या बड़े,क्या बेटे, क्या बेटियां, क्या लूट का माल, सब कुछ जो
अमालेकी ले गए थे, उस में से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि
दाऊद सब का सब लौटा लाया। 20 और दाऊद ने सब भेड़-बकरियां, और
गाय-बैल भी लूट लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपके जानवरोंके आगे
हांकते गए, कि यह दाऊद की लूट है। 21 तब दाऊद उन दो सौ पुरुषोंके पास
आया, जो ऐसे यक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके थे, और बसोर नाले
के पास छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगोंसे मिलने को
चले; और दाऊद ने उनके पास पहुंचकर उनका कुशल झेम पूछा। 22 तब उन
लोगोंमें से जो दाऊद के संग गए थे सब दुष्ट और ओछे लोगोंने कहा, थे लोग
हमारे साय नही चले थे, इस कारण हम उन्हें अपके छुड़ाए हुए लूट के माल में से
कुछ न देंगे, केवल एक एक मनुष्य को उसकी स्त्री और बाल बच्चे देंगे, कि वे

उन्हें लेकर चले जाएं। 23 परन्तु दाऊद ने कहा, हे मेरे भाइयो, तुम उस माल के
साय एसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने हमारी रझा
की, और उस दल को जिस ने हमारे ऊपर चढाई की यी हमारे हाथ में कर दिया है।
24 और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो,
सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा; दोनोंएक ही समान भाग
पाएंगे। 25 और दाऊद ने इस्राएलियोंके लिथे ऐसी ही विधि और नियम ठहराया,
और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन आज लोंबना है। 26 सिकलग में
पहुंचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियोंके पास जो उसके मित्र थे लूट के माल में से कुछ
कुछ भेजा, और यह कहलाया, कि यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लूट में से तुम्हारे
लिथे यह भेंट है। 27 अर्यात्‌बेतेल के दक्खिन देश के रामोत,यत्तीर, 28 अरोएर,
सिपमोत, एश्तमो, 29 राकाल, यरहमेलियोंके नगरों, केनियोंके नगरों, 30 होर्मा,
कोराशान, अताक, 31 हेब्रोन आदि जितने स्यानोंमें दाऊद अपके जनोंसमेत
फिरा करता या, उन सब के पुरनियोंके पास उसने कुछ कुछ भेजा।

1 शमूएल 31

1 पलिश्ती तो इस्राएलियोंसे लड़े; और इस्राएली पुरुष पलिश्तियोंके साम्हने से
भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। 2 और पलिश्ती शाऊल और उसके
पुत्रोंके पीछे लगे रहे; और पलिश्तियोंने शाऊल के पुत्र योनातन, अबीनादाब, और
मल्कीश को मार डाला। 3 और शाऊल के साय धमासान युद्ध हो रहा या, और
धनुर्धारियोंने उसे जा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया। 4
तब शाऊल ने अपके हयियार ढोनेवाले से कहा, अपक्की तलवार खींचकर मुझे

फोंक दे, एसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मुझे फोंक दें, और मेरी ठट्टा
करें। परन्तु उाके हयियार ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार
किया। तब शाऊल अपक्की तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। 5 यह देखकर
कि शाऊल मर गया, उसका हयियार ढोनेवाला भी अपक्की तलवार पर आप
गिरकर उसके साय मर गया। 6 योंशाऊल, और उसके तीनोंपुत्र, और उसका
हयियार ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए। 7 यह
देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस
तराई की परली ओर वाले औ यरदन के पार रहनेवाले भी इस्राएली मनुष्य अपके
अपके नगरोंको छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे। 8 दूसरे
दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आए, तब उनको शाऊल और
उसके तीनोंपुत्र गिलबो पहाड़ पर पके हाए मिले। 9 तब उन्होंने शाऊल का सिर
काटा, और हयियार लूट लिए, और पलिश्तियोंके देश के सब स्यानोंमें दूतोंको
इसलिथे भेजा, कि उनके देवालयोंऔर साघारण लोगोंमें यह शुभ समाचार देते
जाएं। 10 तब उन्होंने उसके हयियार तो आश्तोरेत नाम देवियोंके मन्दिर में रखे,
और उसकी लोय बेतशान की शहरपनाह में जड़दी। 11 जब गिलादवाले याबेश के
निवासियोंने सुना कि पलिश्तियोंने शाऊल से क्या क्या किया है, 12 तब सब
शूरवीर चले, और रातोंरात जाकर शाऊल और उसके पुत्रोंकी लोथें बेतशान की
शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहोंफूंक दीं 13 तब उन्होंने उनकी
हड्डियां लेकर याबेश के फाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दीं, और सात दिन तक उपवास
किया।

2 शमूएल 1

1 शाऊल के मरने के बाद, जब दाऊद अमालेकियोंको मारकर लौटा, और दाऊद
को सिकलग में रहते हुए दो दिन हो गए, 2 तब तीसरे दिन ऐसा हुआ कि छावनी
में से शाऊल के पास से एक पुरुष कपके फाड़े सिर पर धूली डाले हुए आया। और
जब वह दाऊद के पास पहुंचा, तब भूमि पर गिरा और दणडवत् किया। 3 दाऊद
ने उस से पूछा, तू कहां से आया है? उस ने उस से कहा, मैं इस्राएली छावनी में से
बचकर आया हूं। 4 दाऊद ने उस से पूछा, वहां क्या बात हुई? मुझे बता। उस ने
कहा, यह, कि लोग रणभूमि छोड़कर भाग गए, और बहुत लोग मारे गए; और
शाऊल और उसका पुत्र योनातन भी मारे गए हैं। 5 दाऊद ने उस समाचार
देनेवाले जवान से पूछा, कि तू कैसे जानता है कि शाऊल और उसका पुत्र
योनातन मर गए? 6 समाचार देनेवाले जवान ने कहा, संयोग से मैं गिलबो पहाड़
पर या; तो क्या देखा, कि शाऊल अपके भाले की टेक लगाए हुए है; फिर मैं ने यह
भी देखा कि उसका पीछा किए हुए रय और सवार बड़े वेग से दौड़े आ रहे हैं। 7
उस ने पीछे फिरकर मुझे देखा, और मुझे पुकारा। मैं ने कहा,क्या आज्ञा? 8 उस ने
मुझ से पूछा, तू कौन है? मैं ने उस से कहा, मैं तो अमालेकी हूँ। 9 उस ने मुझ से
कहा, मेरे पास खड़ा होकर मुझे मार डाल; क्योंकि मेरा सिर तो घुमा जाता है,
परन्तु प्राण नही निकलता। 10 तब मैं ने यह निश्चय जान लिया, कि वह गिर
जाने के पहचात् नहीं बच सकता, उसके पास खड़े होकर उसे मार डाला; और मैं
उसके सिर का मुकुट और उसके हाथ का कंगन लेकर यहां अपके प्रभु के पास
आया हूँ। 11 तब दाऊद ने अपके कपके पकड़कर फाड़े; और जितने पुरुष उसके
संग थे उन्होंने भी वैसा ही किया; 12 और वे शाऊल, और उसके पुत्र योनातन,
और यहोवा की प्रजा, और इस्राएल के घराने के लिथे छाती पीटने और रोने लगे,

और सांफ तक कुछ न खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे। 13 फिर
दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जवान से पूछा, तू कहां का है? उस ने कहा, मैं तो
परदेशी का बेटा अर्यात् अमालेकी हूँ। 14 दाऊद ने उस से कहा, तू यहोवा के
अभिषिक्त को नाश करने के लिथे हाथ बढ़ाने से क्योंनहीं डरा? 15 तब दाऊद ने
एक जवान को बुलाकर कहा, निकट जाकर उस पर प्रहार कर। तब उस ने उसे
ऐसा मारा कि वह मर गया। 16 और दाऊद ने उस से कहा, तेरा खून तेरे ही सिर
पर पके; क्योंकि तू ने यह कहकर कि मैं ही ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला,
अपके मुंह से अपके ही विरुद्ध साझी दी है। 17 (शाऊल और योनातन के लिथे
दाऊद का बनाया हुआ विलापक्कीत) तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र
योनातन के विषय यह विलापक्कीत बनाया, 18 और यहूदियोंको यह धनुष नाम
गीत सिखाने की आज्ञा दी; यह याशार नाम पुस्तक में लिखा हुआ है; 19 हे
इस्राएल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊंचे स्यान पर मारा गया। हाथ, शूरवीर क्योंकर गिर
पके हैं! 20 गत में यह न बताओ, और न अश्कलोन की सड़कोंमें प्रचार करना; न
हो कि पलिश्ती स्त्रियाँ आनन्दित हों, न हो कि खतनारहित लोगोंकी बेटियां गर्व
करने लगें। 21 हे गिलबो पहाड़ो, तुम पर न ओस पके, और न वर्षा हो, और न
भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाए जाएं! क्योंकि वहां शूरवीरोंकी ढालें अशुद्ध हो
गई। और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई। 22 जूफे हुओं के लोहू बहाने
से, और शूरवीरोंकी चर्बी खाने से, योनातन का धनुष लौट न जाता या, और न
शाऊल की तलवार छूछी फिर आती यी। 23 शाऊल और योनातन जीवनकाल में
तो प्रिय और मनभाऊ थे, और अपक्की मृत्यु के समय अलग न हुए; वे उकाब से
भी वेग चलनेवाले, और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे। 24 हे इस्राएली स्त्रियो,

शाऊल के लिथे रोओ, वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता, और
तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता या। 25 हाथ, युद्ध के बीच शूरवीर
कैसे काम आए ! हे योनातन, हे ऊंचे स्यानोंपर जूफे हुए, 26 हे मेरे भाई योनातन,
मैं तेरे कारण दु:खित हूँ; तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता या; तेरा प्रेम मुझ पर
अद्भुत, वरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर या। 27 हाथ, शूरवीर क्योंकर गिर गए,
और युद्ध के हयियार कैसे नाश हो गए हैं !

2 शमूएल 2

1 इसके बाद दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं?
यहोवा ने उस से कहा, हां, जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर में जाऊं? उस ने
कहा, हेब्रोन में। 2 तब दाऊद यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री
अबीगैल नाम, अपक्की दोनोंपत्नियोंसमेत वहाँ गया। 3 और दाऊद अपके
सायियोंको भी एक एक के घराने समेत वहां ले गया; और वे हेब्रोन के गांवोंमें
रहने लगे। 4 और यहूदी लोग गए, और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह
यहूदा के घराने का राजा हो। 5 और दाऊद को यह समाचार मिला, कि जिन्होंने
शाऊल को मिट्टी दी वे गिलाद के याबेश नगर के लोग हैं। तब दाऊद ने दूतोंसे
गिलाद के याबेश के लोगोंके पास यह कहला भेजा, कि यहोवा की आशिष तुम पर
हो, क्योंकि तुम ने अपके प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके उसको मिट्टी दी। 6
इसलिथे अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बत्त्ािाव करे; और मैं भी
तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूंगा, क्योंकि तुम ने यह काम किया है। 7
और अब हियाव बान्धो, और पुरुषार्य करो; क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल मर गया,

और यहूदा के घराने ने अपके ऊपर राजा होने को मेरा अभिष्ोक किया है। 8
परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति या, उस ने शाऊल के पुत्र
ईशबोशेत को संग ले पार जाकर महनैम में पहुंचाया; 9 और उसे गिलाद
अशूरियोंके देश यिज्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन, वरन समस्त इस्राएल के देश पर
राजा नियुक्त किया। 10 शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का या जब वह
इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहूदा
का घराना दाऊद के पक्ष में रहा। 11 और दाऊद के हेब्रोन में यहूदा के घराने पर
राज्य करने का समय साढ़े सात वर्ष या। 12 और नेर का पुत्र अब्नेर, और शाऊल
के पुत्र ईशबोशेत के जन, महनैम से गिबोन को आए। 13 तब सरूयाह का पुत्र
योआब, और दाऊद के जन, हेब्रोन से निकलकर उन से गिबोन के पोखरे के पास
मिले; और दोनोंदल उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गए। 14 तब अब्नेर ने
योआब से कहा, जवान लोग उठकर हमारे साम्हने खेलें। योआब ने कहा, वे उठें।
15 तब वे उठे, और बिन्यामीन, अर्यात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के
लिथे बारह जन गिनकर निकले, और दाऊद के जनोंमें से भी बारह निकले। 16
और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपक्की अपक्की तलवार एक दूसरे के
पांजर में भोंक दी; और वे एक ही संग मरे। इस से उस स्यान का नाम
हेल्कयस्सूरीम पड़ा, वह गिबोन में है। 17 और उस दिन बड़ा घोर से युद्ध हुआ;
और अब्नेर और इस्राएल के पुरुष दाऊद के जनोंसे हार गए। 18 वहां तो योआब,
अबीशै, और असाहेल नाम सरूयाह के तीनोंपुत्र थे। और असाहेल बनैले चिकारे के
समान वेग दौड़नेवाला या। 19 तब असाहेल अब्नेर का पीछा करने लगा, और
उसका पीछा करते हुए न तो दाहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर। 20 अब्नेर ने पीछे

फिरके पूछा, क्या तू असाहेल है? उस ने कहा, हां मैं वही हूँ। 21 अब्नेर ने उस से
कहा, चाहे दाहिनी, चाहे बाईं ओर मुड, किसी जवान को पकड़कर उसका बकतर
ले ले। परन्तु असाहेल ने उसका पीछा न छोड़ा। 22 अब्नेर ने असाहेल से फिर
कहा, मेरा पीछा छोड़ दे; मुझ को क्योंतुझे मारके मिट्टी में मिला देना पके? ऐसा
करके मैं तेरे भाई योआब को अपना मुख कैसे दिखाऊंगा? 23 तौभी उस ने हट
जाने को नकारा; तब अब्नेर ने अपके भाले की पिछाड़ी उसके पेट में ऐसे मारी,
कि भाला आरपार होकर पीछे निकला; और वह वहीं गिरके मर गया। और जितने
लोग उस स्यान पर आए जहां असाहेल गिरके मर गया, वहां वे सब खढ़े रहे। 24
परन्तु योआब और अबीशै अब्नेर का पीछा करते रहे; और सूर्य डूबते डूबते वे
अम्मा नाम उस पहाड़ी तक पहुंचे, जो गिबोन के जंगल के मार्ग में गीह के
साम्हने है। 25 और बिन्यामीनी अबब्नेर के पीछे होकर एक दल हो गए, और
एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए। 26 तब अब्नेर योआब को पुकारके कहने लगा,
क्या तलवार सदा मारती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका फल दु:खदाई होगा?
तू कब तक अपके लोगोंको आज्ञा न देगा, कि अपके भाइयोंका पीछा छोड़कर
लौटो? 27 योआब ने कहा, परमेश्वर के जीवन की शपय, कि यदि तू न बोला होता,
तो नि:सन्देह लोग सवेरे ही चले जाते, और अपके अपके भाई का पीछा न करते।
28 तब योआब ने नरसिंगा फूंका; और सब लोग ठहर गए, और फिर
इस्राएलियोंका पीछा न किया, और लड़ाई फिर न की। 29 और अब्नेर अपके
जनोंसमेत उसी दिन रातोंरात अराबा से होकर गया; और यरदन के पार हो
समस्त बित्रोन देश में होकर महनैम में पहुंचा। 30 और योआब अब्नेर का पीछा
छोड़कर लौटा; और जब उस ने सब लोगोंको इकट्टा किया, तब क्या देखा, कि

दाऊद के जनोंमें से उन्नीस पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं। 31 परन्तु दाऊद के
जनोंने बिन्यामीनियोंऔर अब्नेर के जनोंको ऐसा मारा कि उन में से तीन सौ
साठ जन मर गए। 32 और उन्होंने असाहेल को उठाकर उसके पिता के
क़ब्रिस्तान में, जो बेतलेहेम में या, मिट्टी दी। तब योआब अपके जनोंसमेत रात
भर चलकर पह फटते हेब्रोन में पहुंचा।

2 शमूएल 3

1 शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लड़ाई होती रही;
परन्तु दाऊद प्रबल होता गया, और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया। 2 और
हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए; उसका जेठा बेटा अम्नोन या, जो यिज्रेली
अहीनोअम से उत्पन्न हुआ या; 3 और उसका दूसरा किलाव या, जिसकी मां
कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल यी; तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा तल्मै
की बेटी माका से उत्पन्न हुआ या; 4 चौया अदोनिय्याह, जो हग्गीत से उत्पन्न
हुआ या; पांचवां शपत्याह, जिसकी मां अबीतल यी; 5 छठवां यित्राम, जो ऐग्ला
नाम दाऊद की स्त्री से उत्पन्न हुआ। हेब्रोन में दाऊद से थे ही सन्तान उत्पन्न
हुए। 6 जब शाऊल और दाऊद दोनोंके घरानोंके मध्य लड़ाई हो रही यी, तब
अब्नेर शाऊल के घराने की सहाथता में बल बढ़ाता गया। 7 शाऊल की एक रखेली
यी जिसका नाम रिस्पा या, वह अय्या की बेटी थी; और ईशबोशेत ने अब्नेर से
पूछा, तू मेरे पिता की रखेली के पास क्योंगया? 8 ईशबोशेत की बातोंके कारण
अब्नेर अति क्रोधित होकर कहने लगा, क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूँ? आज
तक मैं तेरे पिता शाऊल के घराने और उसके भाइयोंऔर मित्रोंको प्रीति दिखाता

आया हूँ, और तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया; फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के
विषय में दोष लगाता है? 9 यदि मैं दाऊद के साय ईश्वर की शपय के अनुसार
बर्ताव न करुं, तो परमेशवर अब्नेर से वैसा ही, वरन उस से भी अधिक करे; 10
अर्यात् मैं राज्य को शाऊल के घराने से छीनूंगा, और दाऊद की राजगद्दी दान से
लेकर बेर्शेबा तक इस्राएल और यहूदा के ऊपर स्यिर करुंगा। 11 और वह अब्नेर
को कोई उत्तर न दे सका, इसलिथे कि वह उस से डरता या। 12 तब अब्नेर ने
उसके नाम से दाऊद के पास दूतोंसे कहला भेजा, कि देश किस का है? और यह
भी कहला भेजा, कि तू मेरे साध वाचा बान्ध, और मैं तेरी सहाथता करुंगा कि
समस्त इस्राएल के मन तेरी ओर फेर दूं। 13 दाऊद ने कहा, भला, मैं तेरे साय
वाचा तो बान्धूंगा परन्तु एक बात मैं तुझ से चाहता हूँ; कि जब तू मुझ से भेंट
करने आए, तब यदि तू पहिले शाऊल की बेटी मीकल को न ले आए, तो मुझ से
भेंट न होगी। 14 फिर दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूतोंसे यह कहला
भेजा, कि मेरी पत्नी मीकल, जिसे मैं ने एक सौ पलिश्तियोंकी खलड़ियां देकर
अपक्की कर लिया या, उसको मुझे दे दे। 15 तब ईशबोशेत ने लोगोंको भेजकर
उसे लैश के पुत्र पलतीएल के पास से छीन लिया। 16 और उसका पति उसके
साय चला, और बहूरीम तक उसके पीछे रोता हुआ चला गया। तब अब्नेर ने उस
से कहा, लौट जा; और वह लौट गया। 17 और अब्नेर ने इस्राएल के पुरनियोंके
संग इस प्रकार की बातचीत की, कि पहिले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद हमारे
ऊपर राजा हो। 18 अब वैसा करो; क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय में यह कहा
है, कि अपके दास दाऊद के द्वारा मैं अपक्की प्रजा इस्राएल को पलिश्तियों, वरन
उनके सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाऊंगा। 19 फिर अब्नेर ने बिन्यामीन से भी बातें

कीं; तब अब्नेर हेब्रोन को चला गया, कि इस्राएल और बिन्यामीन के समस्त
घराने को जो कुछ अच्छा लगा, वह दाऊद को सुनाए। 20 तब अब्नेर बीस पुरुष
संग लेकर हेब्रोन में आया, और दाऊद ने उसके और उसके संगी पुरुषोंके लिथे
जेवनार की। 21 तब अब्नेर ने दाऊद से कहा, मैं उठकर जाऊंगा, और अपके प्रभु
राजा के पास सब इस्राएल को इकट्ठा करुंगा, कि वे तेरे साय वाचा बान्धें, और तू
अपक्की इच्छा के अनुसार राज्य कर सके। तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया,
और वह कुशल से चला गया। 22 तब दाऊद के कई एक जन योआब समेत कहीं
चढ़ाई करके बहुत सी लूट लिथे हुए आ गए। और अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन में
न या, क्योंकि उस ने उसको विदा कर दिया या, और वह कुशल से चला गया या।
23 जब योआब और उसके साय की समस्त सेना आई, तब लागोंने योबाब को
बताया, कि नेर का पुत्र अब्नेर राजा के पास आया या, और उस ने उसको बिदा
कर दिया, और वह कुशल से चला गया। 24 तब योआब ने राजा के पास जाकर
कहा, तू ने यह क्या किया है? अब्नेर जो तेरे पास आया या, तो क्या कारण है कि
तू ने उसको जाने दिया, और वह चला गया है? 25 तू नेर के पुत्र अब्नेर को
जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने, और तेरे आने जाने, और कुल काम का भेद
लेने आया या। 26 योआब ने दाऊद के पास से निकलकर दाऊद के अनजाने
अब्नेर के पीछे दूत भेजे, और वे उसको सीरा नाम कुण्ड से लौटा ले आए। 27 जब
अब्नेर हेब्रोन को लौट आया, तब योआब उस से एकान्त में बातें करने के लिथे
उसको फाटक के भीतर अलग ले गया, और वहां अपके भाई असाहेल के खून के
पलटे में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया। 28 इसके बाद जब दाऊद ने
यह सुना, तो कहा, नेर के पुत्र अब्नेर के खून के विषय में अपक्की प्रजा समेत

यहोवा की दृष्टि में सदैव निर्दोष रहूंगा। 29 वह योआब और उसके पिता के
समस्त घराने को लगे; और योआब के वंश में कोई न कोई प्रमेह का रोगी, और
कोढ़ी, और बैसाखी का लगानेवाला, और तलवार से खेत आनेवाला, और भूखें
मरनेवाला सदा होता रहे। 30 योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को इस
कारण घात किया, कि उस ने उनके भाई असाहेल को गिबोन में लड़ाई के समय
मार डाला या। 31 तब दाऊद ने योआब और अपके सब संगी लागोंसे कहा, अपके
वस्त्र फाड़ो, और कमर में टाट बान्धकर अब्नेर के आगे आगे चलो। और दाऊद
राजा स्वयं अर्यी के पीछे पीछे चला। 32 अब्नेर को हेब्रोन में मिट्टी दी गई; और
राजा अब्नेर की कब्र के पास फूट फूटकर रोया; और सब लोग भी रोए। 33 तब
दाऊद ने अब्नेर के विषय यह विलापक्कीत बनाया कि, क्या उचित या कि
अब्नेर मूूढ की नाई मरे? 34 न तो तेरे हाथ बान्धे गए, और न तेरे पांवोंमें
बेडिय़ां डाली गई; जैसे कोई कुटिल मनुष्योंसे मारा जाए, वैसे ही तू मारा गया। 35
तब सब लोग उसके विषय फिर रो उठे। तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को
रोटी खिलाने आए; परन्तु दाऊद ने शपय खाकर कहा, यदि मैं सूर्य के अस्त होने
से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु खाऊं, तो परमेश्वर मुझ से ऐसा ही, वरन इस से
भी अधिक करे। 36 और सब लोगोंने इस पर विचार किया और इस से प्रसन्न
हुए, वैसे ही जो कुछ राजा करता या उस से सब लोग प्रसन्न होते थे। 37 तब उन
सब लोगोंने, वरन समस्त इस्राएल ने भी, उसी दिन जान लिया कि नेर के पुत्र
अब्नेर का घात किया जाना राजा की और से नही हुआ। 38 और राजा ने अपके
कर्मचारियोंसे कहा, क्या तुम लोग नहीं जानते कि इस्राएल में आज के दिन एक
प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है? 39 और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूँ तौभी

आज निर्बल हूँ; और वे सरूयाह के पुत्र मुझ से अधिक प्रचण्ड हैं। परन्तु यहोवा
बुराई करनेवाले को उसकी बुराई के अनुसार ही पलटा दे।

2 शमूएल 4

1 जब शाऊल के पुत्र ने सुना, कि अब्नेर हेब्रोन में मारा गया, तब उसके हाथ ढीले
पड़ गए, और सब इस्राएली भी घबरा गए। 2 शाऊल के पुत्र के दो जन थे जो
दलोंके प्रधान थे; एक का नाम बाना, और दूसरे का नाम रेकाब था, थे
दोनोंबेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के पुत्र थे, (क्योंकि बेरोत भी बिन्यामीन के
भाग में गिना जाता है; 3 और बेरोती लोग गित्तैम को भाग गए, और आज के दिन
तक वहीं परदेशी होकर रहते हैं।) 4 शाऊल के पुत्र योनातन के एक लगड़ा बेटा
था। जब यिज्रेल से शाऊल और योनातन का समाचार आया तब वह पांच वर्ष का
था; उस समय उसकी धाई उसे उठाकर भागी; और उसके उतावली से भागने के
कारण वह गिरके लंगड़ा हो गया। और उसका नाम मपीबोशेत था। 5 उस बेरोती
रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना कड़े घाम के समय ईशबोशेत के घर में जब वह
दोपहर को विश्रम कर रहा था आए। 6 और गेहूं ले जाने के बहाने मे घर में घुस
गए; और उसके पेट में मारा; तब रेकाब और उसका भाई बाना भाग निकले। 7
जब वे घर में घुसे, और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सोता था, तब अन्होंने
उसे मार डाला, और उसका सिर काट लिया, और उसका सिर लेकर रातोंरात
अराबा के मार्ग से चले। 8 और वे ईशबोशेत का सिर हेब्रोन में दाऊद के पास ले
जाकर राजा से कहने लगे, देख, शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राणोंका ग्राहक था,
उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है; तो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उसके

वंश से मेरे प्रभु राजा का पलटा लिया है। 9 दाऊद ने बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब
और उसके भाई बाना को उत्तर देकर उन से कहा, यहोवा जो मेरे प्राण को सब
विपत्तियोंसे छुड़ाता आया है, उसके जीवन की शपय, 10 जब किसी ने यह
जानकर, कि मैं शुभ समाचार देता हूं, सिकलग में मुझ को शाऊल के मरने का
समाचार दिया, तब मैं ने उसको पकड़कर घात कराया; अर्यात् उसको समाचार
का यही बदला मिला। 11 फिर जब दुष्ट मनुष्योंने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के
घर में, वरन उसकी चारपाई ही पर घात किया, तो मैं अब अवश्य ही उसके खून
का पलटा तुम से लूंगा, और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूंगा। 12 तब दाऊद ने
जवानोंको आज्ञा दी, और उन्होंने उनको घात करके उनके हाथ पांव काट दिए,
और उनकी लोयोंको हेब्रोन के पोखरे के पास टांग दिया। तब ईशबोशेत के सिर
को उठाकर हेब्रोन में अब्नेर की कब्र में गाड़ दिया।

2 शमूएल 5

1 (दाऊद के यरूशलेम में राज्य करने का आरम्भ) तब इस्राएल के सब गोत्र
दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, सुन, हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस
हैं। 2 फिर भूतकाल में जब शाऊल हमारा राजा या, तब भी इस्राएल का अगुवा तू
ही या; और यहोवा ने तुझ से कहा, कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा, और
इस्राएल का प्रधान तू ही होगा। 3 सो सब इस्राएली पुरनिथे हेब्रोन में राजा के पास
आए; और दाऊद राजा ने उनके साय हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बान्धी,
और उन्होंने इस्राएल का राजा होने के लिथे दाऊद का अभिषेक किया। 4 दाऊद
तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। 5

साढ़े सात वर्ष तक तो उस ने हेब्रोन में यहूदा पर राज्य किया, और तैंतीस वर्ष
तक यरूशलेम में समस्त इस्राएल और यहूदा पर राज्य किया। 6 तब राजा ने
अपके जनोंको साय लिए हुए यरूशलेम को जाकर यबूसियोंपर चढ़ाई की, जो उस
देश के निवासी थे। उन्होंने यह समझकर, कि दाऊद यहां पैठ न सकेगा, उस से
कहा, जब तक तू अन्धें और लंगड़ोंको दूर न करे, तब तक यहां पैठने न पाएगा।
7 तौभी दाऊद ने सिय्योन नाम गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। 8
उस दिन दाऊद ने कहा, जो कोई यबूसिक्कों मारना चाहे, उसे चाहिथे कि नाले से
होकर चढ़े, और अन्धे और लंगड़े जिन से दाऊद मन से घिन करता है उन्हें मारे।
इस से यह कहावत चक्की, कि अन्धे और लगड़े भवन में आने न पाएंगे। 9 और
दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, और उसका नाम दाऊदपुर रखा। और दाऊद ने
चारोंओर मिल्लो से लेकर भीतर की ओर शहरपनाह बनवाई। 10 और दाऊद की
बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता या।
11 और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत, और देवदारू की लकड़ी, और
बढ़ई, और राजमिस्त्री भेजे, और उन्होंने दाऊद के लिथे एक भवन बनाया। 12
और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्यिर
किया, और अपक्की इस्राएली प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढ़ाया है। 13 जब
दाऊद हेब्रोन से आया तब उसके बाद उस ने यरूशलेम की और और रखेलियां रख
लीं, और पत्नियां बना लीं; और उसके और बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। 14 उसके जो
सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए, उनके थे नाम हैं, अर्यात् शम्मू, शोबाब,
नातान, सुलैमान, 15 यिभार, एलोशू, नेपेग, यापी, 16 एलीशामा, एल्यादा, और
एलोपेलेत। 17 जब पलिश्तियोंने यह सुना कि इस्राएल का राजा होने के लिथे

दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले; यह
सुनकर दाऊद गढ़ में चला गया। 18 तब पलिश्ती आकर रपाईम नाम तराई में
फैल गए। 19 तब दाऊद ने यहावा से पूछा, क्या मैं पलिश्तियोंपर चढ़ाई करूं?
क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा? यहोवा ने दाऊद से कहा, चढ़ाई कर; क्योंकि मैं
निश्चय पलिश्तियोंको तेरे हाथ कर दूंगा। 20 तब दाऊद बालपरासीम को गया,
और दाऊद ने उन्हें वहीं मारा; तब उस ने कहा, यहोवा मेरे साम्हने होकर मेरे
शत्रुओं पर जल की धारा की नाई टूट पड़ा है। 21 वहां उन्होंने अपक्की मूरतोंको
छोड़ दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हें उठा ले गए। 22 फिर दूसरी बार
पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गए। 23 जब दाऊद ने यहोवा से
पूछा, तब उस ने कहा, चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृझोंके साम्हने से
उन पर छापा मार। 24 और जब तूत वृझोंकी फुनगियोंमें से सेना के चलने की सी
आहट तुझे सुनाई पके, तब यह जानकर फुर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियोंकी
सेना को मारने को मेरे आगे अभी पधारा है। 25 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियोंको मारता गया।

2 शमूएल 6

1 (पवित्र सन्दूक का यरूशलेम में पहुंचाया जाना) फिर दाऊद ने एक और बार
इस्राएल में से सब बड़े वीरोंको, जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया। 2 तब दाऊद
और जितने लोग उसके संग थे, वे सब उठकर यहूदा के बाले नाम स्यान से चले,
कि परमेश्वर का वह सन्दूक ले आएं, जो करूबोंपर विराजनेवाले सेनाओं के
यहोवा का कहलाता है। 3 तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर

चढ़ाकर टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से निकाला; और अबीनादाब के
उज्जा और अहह्यो नाम दो पुत्र उस नई गाड़ी को हांकने लगे। 4 और उन्होंने
उसको परमेश्वर के सन्दूक समेत टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से बाहर
निकाला; और अहह्यो सन्दूक के आगे आगे चला। 5 और दाऊद और इस्राएल का
समस्त घराना यहोवा के आगे सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे
और वीणा, सारंगियां, डफ, डमरू, फांफ बजाते रहे। 6 जब वे नाकोन के खलिहान
तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे
याम लिया, क्योंकि बैलोंने ठोकर खाई। 7 तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क
उठा; और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां
परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया। 8 तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिथे कि
यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा या; और उस ने उस स्यान का नाम पेरेसुज्जा रखा, यह
नाम आज के दिन तक वर्तमान है। 9 और उस दिन दाऊद यहोवा से डरकर कहने
लगा, यहोवा का सन्दूक मेरे यहां क्योंकर आए? 10 इसलिथे दाऊद ने यहोवा के
सन्दूक को अपके यहां दाऊदपुर में पहुंचाना न चाहा; परन्तु गतवासी ओबेदेदोम
के यहां पहुंचाया। 11 और यहोवा का सन्दूक गती ओबेदेदोम के घर में तीन
महीने रहा; और यहोवा ने ओबेदेदोम और उसके समस्त घराने को आशिष दी।
12 तब दाऊद राजा को यह बताया गया, कि यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर,
और जो कुछ उसका है, उस पर भी परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशिष दी है।
तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से दाऊदपुर में
आनन्द के साय पहूंचा दिया। 13 जब यहोवा के सन्दूक के उठानेवाले छ: कदम
चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया।

14 और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से
नाचता रहा। 15 योंदाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के सन्दूक को
जय जयकार करते और नरसिंगा फूंकते हुए ले चला। 16 जब यहोवा का सन्दूक
दाऊदपुर में आ रहा या, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से फांककर
दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ
जाना। 17 और लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए, और उसके स्यान में,
अर्यात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिथे खड़ा कराया या; और दाऊद ने
यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। 18 जब दाऊद होमबलि और
मेलबलि चढ़ा चुका, तब उस ने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद
दिया। 19 तब उस ने समस्त प्रजा को, अर्यात्, क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त
इस्राएली भीड़ के लोगोंको एक एक रोटी, और एक एक टुकड़ा मांस, और
किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपके अपके घर
चले गए। 20 तब दाऊद अपके घराने को आशीर्वाद देने के लिथे लौटा। और
शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से मिलने को निकली, और कहने लगी, आज
इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपके कर्मचारियोंकी लौंडियोंके साम्हने ऐसा
उघाड़े हुए या, जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघाढ़े रहता है, तब क्या ही प्रतापी
देख पड़ता या ! 21 दाऊद ने मीकल से कहा, यहोवा, जिस ने तेरे पिता और उसके
समस्त घराने की सन्ती मुझ को चुनकर अपक्की प्रजा इस्राएल का प्रधान होने
को ठहरा दिया है, उसके सम्मुख मैं ने ऐसा खेला--और मैं यहोवा के सम्मुख इसी
प्रकार खेला करूंगा। 22 और इस से भी मैं अधिक तुच्छ बनूंगा, और अपके लेखे
नीच ठहरूंगा; और जिन लौंडियोंकी तू ने चर्चा की वे भी मेरा आदरमान करेंगी।

23 और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान न हुआ।

2 शमूएल 7

1 जब राजा अपके भवन में रहता या, और यहोवा ने उसको उसके चारोंओर के
सब शत्रुओं से विश्रम दिया या, 2 तब राजा नातान नाम भविष्यद्वक्ता से कहने
लगा, देख, मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु परमेश्वर का सन्दूक
तम्बू में रहता है। 3 नातान ने राजा से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर;
क्योंकि यहोवा तेरे संग है। 4 उसी दिन रात को यहोवा का यह वचन नातान के
पास पहुंचा, 5 कि जाकर मेरे दास दाऊद से कह, यहोवा सोंकहता है, कि क्या तू
मेरे निवास के लिथे घर बनवाएगा? 6 जिस दिन से मैं इस्राालिएयोंको मिस्र से
निकाल लाया आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा, तम्बू के निवास में
आया जाया करता हूँ। 7 जहां जहां मैं समस्त इस्राएलियोंके बीच फिरता यि, क्या
मैं ने कहीं इस्राएल के किसी गोत्र से, जिसे मैं ने अपक्की प्रजा इस्राएल की
चरवाही करने को ठहराया हो, ऐसी बात कभी कही, कि तुम ने मेरे लिए देवदारु
का घर क्योंनहीं बनवाया? 8 इसलिथे अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि मैं ने तो तुझे भेड़शाला से, और
भ्ोड़-बकरिसोंके पीछे पीछे फिरने से, इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा
इस्राएल का प्रधान हो जाए। 9 और जहां कहीं तू आया गया, वहां वहां मैं तेरे संग
रहा, और तेरे समस्त शत्रुओं को तेरे साम्हने से नाश किया है; फिर मैं तेरे नाम
को पृय्वी पर के बड़े बड़े लोगोंके नामोंके समान महान कर दूंगा। 10 और मैं
अपक्की प्रजा इस्राएल के लिथे एक स्यान ठहराऊंगा, और उसको स्यिर करूंगा,

कि वह अपके ही स्यान में बसी रहेगी, और कभी चलायमान न होगी; और कुटिल
लोग उसे फिर दु:ख न देने पाएंगे, जैसे कि पहिले दिनोंमें करते थे, 11 वरन उस
समय से भी जब मैं अपक्की प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता या; और मैं
तुझे तेरे समस्त शत्रुओं से विश्रम दूंगा। और यहोवा तुझे यह भी बताता है कि
यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा। 12 जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपके
पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके
राज्य को स्यिर करूंगा। 13 मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी
राजगद्दी को सदैव स्यिर रखूंगा। 14 मैं उसका पिता ठहरूंगा, और वह मेरा पुत्र
ठहरेगा। यदि वह अधर्म करे, तो मैं उसे मनुष्योंके योग्य दण्ड से, और
आदमियोंके योग्य मार से ताड़ना दूंगा। 15 परन्तु मेरी करुणा उस पर से ऐसे न
हटेगी, जैसे मैं ने शाऊल पर से हटाकर उसको तेरे आगे से दूर किया। 16 वरन
तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे साम्हने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव
बनी रहेगी। 17 इन सब बातोंऔर इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को
समझा दिया। 18 तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा, और
कहने लगा, हे प्रभु यहोवा, क्या कहूं, और मेरा घराना क्या है, कि तू ने मुझे यहां
तक पहुंचा दिया है? 19 परन्तु तौभी, हे प्रभु यहोवा, यह तेरी दृष्टी में छोटी सी
बात हुई; क्योंकि तु ने अपके दास के घराने के विषय आगे के बहुत दिनोंतक की
चर्चा की है, और हे प्रभु यहोवा, यह तो मनुष्य का नियम है ! 20 दाऊद तुझ से
और क्या कह सकता है? हे प्रभु यहावा, तू तो अपके दास को जानता है ! 21 तू ने
अपके वचन के निमित्त, और अपके ही मन के अनुसार, यह सब बड़ा काम किया
है, कि तेरा दास उसको जान ले। 22 इस कारण, हे यहोवा परमेश्वर, तू महान् है;

क्योंकि जो कुछ हम ने अपके कानोंसे सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं,
और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है। 23 फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य
कौन है? यह तो पृय्वी भर में एक ही जाति है जिसे परमेश्वर ने जाकर अपक्की
निज प्रजा करने को छुड़ाया, इसलिथे कि वह अपना नाम करे, (और तुम्हारे
लिथे बड़े बड़े काम करे) और तू अपक्की प्रजा के साम्हने, जिसे तू ने मिस्री आदि
जाति जाति के लोगोंऔर उनके देवताओं से छूड़ा लिया, अपके देश के लिथे
भयानक काम करे। 24 और तू ने अपक्की प्रजा इस्राएल को अपक्की सदा की
प्रजा होने के लिथे ठहराया; और हे यहोवा, तू आप उसका परमेश्वर है। 25 अब हे
यहोवा परमेश्वर, तू ने जो वचन अपके दास के और उसके घराने के विषय दिया
है, उसे सदा के लिथे स्यिर कर, और अपके कहने के अनूसार ही कर; 26 और यह
कर कि लोग तेरे नाम की महिमा सदा किया करें, कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल
के ऊपर परमेश्वर है; और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे साम्हने अटल रहे। 27
क्योंकि, हे सेनाओं के यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, तू ने यह कहकर अपके
दास पर प्रगट किया है, कि मैं तेरा घर बनाए रखूंगा; इस कारण तेरे दास को तुझ
से यह प्रार्यना करने का हियाव हुआ है। 28 और अब हे प्रभु यहोवा, तू ही परमेश्वर
है, और तेरे वचन सत्य हैं, और तू ने अपके दास को यह भलाई करने का वचन
दिया है; 29 तो अब प्रसन्न होकर अपके दास के घराने पर ऐसी आशीष दे, कि
वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे; क्योंकि, हे प्रभु यहोवा, तू ने ऐसा ही कहा है, और
तेरे दास का घराना तुझ से आशीष पाकर सदैव धन्य रहे।

2 शमूएल 8

1 इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियोंको जीतकर अपके अधीन कर लिया, और
दाऊद ने पलिश्तियोंकी राजधानी की प्रभुता उनके हाथ से छीन ली। 2 फिर उस ने
मोआबियोंको भी जीता, और इनको भूमि पर लिटाकर डोरी से मापा; तब दो डोरी
से लोगोंको मापकर घात किया, और डोरी भर के लोगोंको जीवित छोड़ दिया। तब
मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। 3 फिर जब सोबा का राजा
रहोब का पुत्र हददेजेर महानद के पास अपना राज्य फिर ज्योंका त्योंकरने को जा
रहा या, तब दाऊद ने उसको जीत लिया। 4 और दाऊद ने उस से एक हजार सात
सौ सवार, और बीस हजार प्यादे छीन लिए; और सब रयवाले घोड़ोंके सुम की
नस कटवाई, परन्तु एक सौ रयवाले घोड़े बचा रखे। 5 और जब दमिश्क के
अरामी सोबा के राजा हददेजेर की सहाथता करने को आए, तब दाऊद ने
आरामियोंमें से बाईस हज़ार पुरुष मारे। 6 तब दाऊद ने दमिश्क में अराम के
सिपाहियोंकी चौकियां बैठाई; इस प्रकार अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले
आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता या वहां वहां यहोवा उसको जयवन्त
करता या। 7 और हददेजेर के कर्मचारियोंके पास सोने की जो ढालें यीं उन्हें दाऊद
लेकर यरूशलेम को आया। 8 और बेतह और बरौतै नाम हददेजेर के नगरोंसे
दाऊद राजा बहुत सा पीतल ले आया। 9 और जब हमात के राजा तोई ने सुना कि
दाऊद ने हददेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, 10 तब तोई ने योराम नाम
अपके पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल झेम पूछने, और उसे इसलिथे
बधाई देने को भेजा, कि उस ने हददेजेर से लड़ कर उसको जीत लिया या; क्योंकि
हददेजेर तोई से लड़ा करता या। और योराम चांदी, सोने और पीतल के पात्र लिए
हुए आया। 11 इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिथे पवित्र करके रखा; और वैसा

ही अपके जीती हुई सब जातियोंके सोने चांदी से भी किया, 12 अर्यात् अरामियों,
मोआबियों, अम्मानियों, पलिश्तियों, और अमालेकियोंके सोने चांदी को, और
रहोब के पुत्र सोबा के राजा हददेजेर की लूट को भी रखा। 13 और जब दाऊद
लोमवाली तराई में अठारह हजार अरामियोंको मारके लौट आया, तब उसका बड़ा
नाम हो गया। 14 फिर उस ने एदोम में सिपाहियोंकी चौकियां बैठाई; पूरे एदोम में
उस ने सिपाहियोंकी चौकियां। बैठाई, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए।
और दाऊद जहां जहां जाता या वहां वहां यहोवा उसको जयवन्त करता या। 15 (
दाऊद के कर्मचारियोंकी नामावली) दाऊद तो समस्त इस्राएल पर राज्य करता
या, और दाऊद अपक्की समस्त प्रजा के साय न्याय और धर्म के काम करता या।
16 और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब या; इतिहास का लिखनेवाला
अहीलूद का पुत्र यहोशापात या; 17 प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र सादोक और
एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक थे; मंत्री सरायाह या; 18 करेतियो और पकेतियोंका
प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह या; और दाऊद के पुत्र भी मंत्री थे।

2 शमूएल 9

1 दाऊद ने पूछा, क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं
योनातन के कारण प्रीति दिखाऊं? 2 शाऊल के घराने का सीबा नाम एक कर्मचारी
या, वह दाऊद के पास बुलाया गया; और जब राजा ने उस से पूछा, क्या तू सीबा
है? तब उस ने कहा, हां, तेरा दास वही है। 3 राजा ने पूछा, क्या शाऊल के घराने में
से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं? सीबा ने राजा
से कहा, हां, योनातन का एक बेटा तो है, जो लंगड़ा है। 4 राजा ने उस से पूछा, वह

कहां है? सीबा ने राजा से कहा, वह तो लोदबार नगर में, अम्मीएल के पुत्र माकीर
के घर में रहता है। 5 तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर उसको लोदबार से,
अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर से बुलवा लिया। 6 जब मपीबोशेत, जो योनातन
का पुत्र और शाऊल का पोता या, दाऊद के पास आया, तब मुह के बल गिरके
दणडवत् किया। दाऊद ने कहा, हे मपीबोशेत ! उस ने कहा, तेरे दास को क्या
आज्ञा? 7 दाऊद ने उस से कहा, मत डर; तेरे पिता योनातन के कारण मैं निश्चय
तुझ को प्रीति दिखाऊंगा, और तेरे दादा शाऊल की सारी भू्ूमि तुझे फेर दूंगा;
और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर। 8 उस ने दणडवत् करके कहा, तेरा
दास क्या है, कि तू मुझे ऐसे मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे? 9 तब राजा ने शाऊल के
कर्मचारी सीबा को बुलवाकर उस से कहा, जो कुछ शाऊल और उसके समस्त
घराने का या वह मैं ने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है। 10 अब से तू अपके
बेटोंऔर सेवकोंसमेत उसकी भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले आया करना,
कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे; परन्तु तेरे स्वामी का पोता
मपीबोशेत मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करेगा। और सीबा के तो पन्द्रह पुत्र
और बीस सेवक थे। 11 सीबा ने राजा से कहा, मेरा प्रभु राजा अपके दास को जो
जो आज्ञा दे, उन सभोंके अनुसार तेरा दास करेगा। दाऊद ने कहा, मपीबोशेत
राजकुमारोंकी नाई मेरी मेज पर भोजन किया करे। 12 मपीबोशेत के भी मीका
नाम एक छोटा बेटा या। और सीबा के घर में जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की
सेवा करते थे। 13 और मपीबोशेत यरूशलेम में रहता या; क्योंकि वह राजा की
मेज पर नित्य भोजन किया करता या। और वह दोनोंपांवोंका पंगुला या।

2 शमूएल 10

1 इसके बाद अम्मोनियोंका राजा मर गया, और उसका हानून नाम पुत्र उसके
स्यान पर राजा हुआ। 2 तब दाऊद ने यह सोचा, कि जैसे हानून के पिता नाहाश
ने मुझ को प्रीति दिखाई यी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊंगा। तब दाऊद
ने अपके कई कर्मचारियोंको उसके पास उसके पिता के विषय शान्ति देने के
लिथे भ्ेज दिया। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियोंके देश में आए। 3 परन्तु
अम्मोनियोंके हाकिम अपके स्वामी हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास
शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की
मनसा मे भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपके कर्मचारियोंको तेरे पास इसी मनसा मे
नहीं भेजा कि इस नगर में ढूंढ़ ढांढ़ करके और इसका भेद लेकर इसको उलट दें?
4 इसलिथे हानून ने दाऊद के कर्मचारियोंको पकडा, और उनकी आधी-आधी डाढ़ी
मुड़वाकर और आधे वस्त्र, अर्यात् नितम्ब तक कटवाकर, उनको जाने दिया। 5
इसका समाचार पाकर दाऊद ने लोगोंको उन से मिलने के लिथे भेजा, क्योंकि वे
बहुत लजाते थे। और राजा ने यह कहा, कि जब तक तुम्हारी डाढ़ियां बढ़ न जाएं
तब तक यरीहो में ठहरे रहो, तब लौट आना। 6 जब अम्मानियोंने देखा कि हम से
दाऊद अप्रसन्न हैं, तब अम्मोनियोंने बेत्रहोब और सोबा के बीस हजार अरामी
प्यादोंको, और हजार पुरुषोंसमेत माका के राजा को, और बारह हज़ार तोबी
पुरुषोंको, वेतन पर बुलवाया। 7 यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरोंकी
समस्त सेना को भेजा। 8 तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पांती
बान्धी; और सोबा और रहोब के अरामी और तोब और माका के पूरुष उन से
न्यारे मैदान में थे। 9 यह देखकर कि आगे पीछे दोनोंओर हमारे विरुद्व पांति
बन्धी है, योआब ने सब बड़े बढ़े इस्राएली वीरोंमें से बहुतोंको छांटकर अरामियोंके

साम्हने उनकी पांति बन्धाई, 10 और और लोगोंको अपके भाई अबीशै के हाथ
सौंप दिया, और उस ने अम्मोनियोंके साम्हने उनकी पांति बन्धाई। 11 फिर उस
ने कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहाथता करना; और
यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगोंगे, तो मैं आकर तेरी सहाथता करूंगा। 12
तू हियाब बान्ध, और हम अपके लोगोंऔर अपके परमेश्वर के नगरोंके निमित्त
पुरुषार्य करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे वैसा करे। 13 तब योआब और
जो लोग उसके साय थे अरामियोंसे युद्व करने को निकट गए; और वे उसके
साम्हने से भागे। 14 यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं अम्मोनी भी अबीशै के
साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब अम्मोनियोंके पास से
लौटकर यरूशलेम को आया। 15 फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियोंसे हार गए
अरामी इकट्ठे हुए। 16 और हददेजेर ने दूत भेजकर महानद के पार के
अरामियोंको बुलवाया; और वे हददेजेर के सेनापति शोवक को अपना प्रधान
बनाकर हेलाम को आए। 17 इसका समाचार पाकर दाऊद ने समस्त
इस्राएलियोंको इकट्ठा किया, और यरदन के पार होकर हेलाम में पहुंचा। तब
अराम दाऊद के विरुद्ध पांति बान्धकर उस से लड़ा। 18 परन्तु अरामी
इस्राएलियोंसे भागे, और दाऊद ने अरामियोंमें से सात सौ रयियोंऔर चालीय
हजार सवारोंको मार डाला, और उनके सेनापति हा◌ोबक को ऐसा घायल किया
कि वह वहीं मर गया। 19 यह देखकर कि हम इस्राएल से हार गए हैं, जितने राजा
हददेजेर के अधीन थे उन सभोंने इस्राएल के साय संधि की, और उसके अधीन हो
गए। और अरामी अम्मोनियोंकी और सहाथता करने से डर गए।

2 शमूएल 11

1 फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्यात्
वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपके सेवकोंऔर समस्त
इस्राएलियोंको भेजा; और उन्होंने अम्मोनियोंको नाश किया, और रब्बा नगर को
घेर लिया। परन्तु दाऊद सरूशलेम में रह गया। 2 सांफ के समय दाऊद पलंग पर
से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा या, और छत पर से उसको एक स्त्री,
जो अति सुन्दर यी, नहाती हुई देख पक्की। 3 जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को
पुछवाया, तब किसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ीि
ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है? 4 तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया;
और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साय सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो
गई यी) तब वह अपके घर लौट गई। 5 और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के
पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है। 6 तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा,
कि हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज, तब योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास
भेज दिया। 7 जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब दाऊद ने उस से योआब और
सेना का कुशल झेम और युद्ध का हाल पूछा। 8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा,
अपके घर जाकर अपके पांव धो। और ऊरिय्याह राजभवन से निकला, और
उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया। 9 परन्तु ऊरिय्याह अपके
स्वामी के सब सेवकोंके संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और अपके घर न
गया। 10 जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि ऊरिय्याह अपके घर नहीं गया,
तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपके घर
क्योंनहीं गया? 11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब सनदूक और इस्राएल और
यहूदा फोपडिय़ोंमें रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक

खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर खाऊं, पीऊं, और अपक्की
पत्नी के साय सोऊं? तेरे जीवन की शपय, और तेरे प्राण की शपय, कि मैं ऐसा
काम नहीं करने का। 12 दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, आज यहीं रह, और कल मैं
तुझे विदा करूंगा। इसलिथे ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम में
रहा। 13 तब दाऊद ने उसे नेवता दिया, और उस ने उसके साम्हने खाया पिया,
और उसी ने उसे मतवाला किया; और सांफ काो वह अपके स्वामी के सेवकोंके
संग अपक्की चारपाई पर सोने को निकला, परन्तु अपके घर न गया। 14 बिहान
को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह के हाथ से
भेजदी। 15 उस चिट्ठी में यह लिखा या, कि सब से घोर युद्ध के साम्हने
ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोडकर लौट आबो, कि वह घायल हो कर मर
जाए। 16 और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख भालकर जिस स्यान में
वह जानता या कि वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया। 17 तब नगर के
पुरुषोंने निकलकर योआब से युद्ध किया, और लागोंमें से, अर्यात् दाऊद के
सेवकोंमें से कितने खेत आए; और उन में हित्ती ऊरिय्यह भी मर गया। 18 तब
योआब ने भेजकर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया; 19 और दूत को आज्ञा दी,
कि जब तू युद्धका पूरा हाल राजा को बता चुके, 20 तब यदि राजा जलकर कहने
लगे, कि तुम लाग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्योंगए? क्या तुम न जानते थे
कि वे शहरपनाह पर से तीर छोड़ेंगे? 21 यरुब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किसने
मार डाला? क्या एक स्त्री ने शहरपनाह पर से चक्की का उपरला पाट उस पर ऐसा
न डाला कि वह तेबेस में मर गया? फिर तुम हाहरपनाह के एसे निकट क्योंगए?
तो तू योंकहना, कि तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। 22 तब दूत चल दिया,

और जाकर दाऊद से योआब की सब बातें चर्णन कीं। 23 दूत ने दाऊद से कहा,
कि वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आए, फिर हम ने
उन्हें फाटक तक खदेड़ा। 24 तब धनुर्धारियोंने शहरपनाह पर से तेरे जनोंपर तीर
छोड़े; और राजा के कितने जन मर गए, और तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर
गया। 25 दाऊद ने दूत से कहा, योआब से योंकहना, कि इस बात के कारण उदास
न हो, क्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको नाश करती है; तो तू नगर के विरुद्ध
अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दे। और तू उसे हियाव बन्धा। 26 जब
ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपके पति के लिथे रोने
पीटते लगी। 27 और जब उसके विलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे
बुलवाकर अपके घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र
उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया या यहोवा क्रोधित हुआ।

2 शमूएल 12

1 तब यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा, और वह उसके पास जाकर कहने
लगा, एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और एक निर्धन या।
2 धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय बैल थे; 3 परन्तु निर्धन के
पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न या, और उसको उस ने
मोल लेकर जिलाया या। और वह उसके यहां उसके बालबच्चोंके साय ही बढ़ी यी;
वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती, और उसकी गोद मे
सोती यी, और वह उसकी बेटी के समान यी। 4 और धनी के पास एक बटोही
आया, और उस ने उस बटोही के लिथे, जो उसके पास आया या, भोजत बनवाने

को अपक्की भेड़-बकरियोंवा गाय बैलोंमें से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन
मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिथे, जो उसके पास आया या,
भोजन बनवाया। 5 तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का; और उस ने
नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपय, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह
प्राण दणड के योग्य है; 6 और उसको वह भेड़ की बच्ची का औगुणा भर देना
होगा, क्योंकि उस ने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की। 7 तब नातान ने
दाऊद से कहा, तू ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि
मैं ने तेरा अभिशेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया, और मैं ते तुझे शाऊल
के हाथ से बचाया; 8 फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी
की पत्नियां तेरे भाग के लिथे दीं; और मैं ने इस्राएल और सहूदा का घराना तुझे
दिया या; और यदि यह योड़ा या, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देनेवाला या। 9 तू
ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्योंवह काम किया, जो उसकी दृष्टि में बुरा है?
हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपक्की कर
लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियोंकी तलवार से मरवा डाला है। 10 इसलिथे
अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती
ऊरिय्याह की पत्नी को अपक्की पत्नी कर लिया है। 11 यहोवा योंकहता है, कि
सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियोंको तेरे
साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियोंसे कुकर्म
करेगा। 12 तू ने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इस्राएलियोंके
साम्हने दिन दुपहरी कराऊंगा। 13 तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया

है।; तू न मरेगा। 14 तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को
तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है
वह अवश्य ही मरेगा। 15 तब नातान अपके घर चला गया। और जो बच्चा
ऊरिय्याह की पत्नी से दाऊद के द्वारा उत्पन्न या, वह यहोवा का मारा बहुत रोगी
हो गया। 16 और दाऊद उस लड़के के लिथे परमेश्वर से बिनती करने लगा; और
उपवास किया, और भीतर जाकर रात भर भूमि पर पड़ा रहा। 17 तब उसके
घराने के पुरनिथे उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिथे उसके पास गए; परन्तु
उस ने न चाहा, और उनके संग रोटी न खाई। 18 सातवें दिन बच्चा मर गया,
और दाऊद के कर्मचारी उसको बच्चे के मरने का समाचार देने से डरे; उन्होंने तो
कहा या, कि जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक उस ने हमारे बमफाने पर मन
न लगाया; यदि हम उसको बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएं तो वह बहुत ही
अधिक दु:खी होगा। 19 अपके कर्मचारियोंको आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद
ने जान लिया कि बच्चा मर गया; तो दाऊद ने अपके कर्मचारियोंसे पूछा, क्या
बच्चा मर गया? उन्होंने कहा, हां, मर गया है। 20 तब दाऊद भूमि पर से उठा,
और नहाकर तेल लगाया, और वस्त्र बदला; तब यहोवा के भवन में जाकर
दणडवत् की; फिर अपके भवन में आया; और उसकी आज्ञा पर रोटी उसको
परोसी गई, और उस ने भोजन किया। 21 तब उसके कर्मचारियोंने उस से पूछा,
तू ने यह क्या काम किया है? जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक तू उपवास
करता हुआ रोता रहा; परन्तु ज्योंही बच्चा मर गया, त्योंही तू उठकर भोजन
करने लगा। 22 उस ने उत्तर दिया, कि जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं
यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि क्या जाने यहोवा माुफ पर ऐसा

अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे। 23 परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं उपवास
क्योंकरूं? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूं? मैं तो उसके पास जाऊंगा, परन्तु वह
मेरे पास लौट न आएगा। 24 तब दाऊद ने अपक्की पत्नी बतशेबा को शान्ति दी,
और वह उसके पास गया; और असके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उस ने उसका
नाम सुलैमान रखा। और वह सहोवा का प्रिय हुआ। 25 और उस ने नातान
भविष्यद्वक्ता के द्वारा सन्देश भेज दिया; और उस ने यहोवा के कारण उसका नाम
यदीद्याह रखा। 26 और योआब ने अम्मोनियोंके रब्बा नगर से लड़कर राजनगर
को ले लिया। 27 तब योआब ने दूतोंसे दाऊद के पास यह कहला भेजा, कि मैं
रब्बा से लड़ा और जलवाले नगर को ले लिया है। 28 सो अब रहे हुए लोगोंको
इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले; ऐसा न हो कि मैं उसे
ले लूं, और वह मेरे नाम पर कहलाए। 29 तब दाऊद सब लोगोंको इकट्ठा करके
रब्बा को गया, और उस से युद्ध करके उसे ले लिया। 30 तब उस ने उनके राजा का
मुकुट, जो तौल में किक्कार भर सोने का या, और उस में मणि जड़े थे, उसको
उसके सिर पर से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उस ने उस
नगर की बहुत ही लूट पाई। 31 और उस ने उसके रहनेवालोंको निकालकर आरो
से दो दो टुकड़े कराया, और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाए, और लोहे की
कुल्हाडियोंसे उन्हें कटवाया, और ईट के पजावे में से चलवाया; और
अम्मोनियोंके सब नगरोंसे भी उस ने ऐसा ही किया। तब दाऊद समस्त
लोगोंसमेत यरूशलेम को लौट आया।

2 शमूएल 13

1 इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन यी,
उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ। 2 और अम्नोन अपक्की बहिन
तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया; क्योंकि वह कुमारी यी,
और उसके साय कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता या। 3 अम्नोन के
योनादाब नाम एक मित्र या, जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा या; और वह बड़ा
चतुर या। 4 और उस ने अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण है कि तू प्रति
दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने उस से कहा,
मैं तो अपके भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं। 5 योनादाब ने उस
से कहा, अपके पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने
को आए, तब उस से कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खिलाए, और
भोजन को मेरे साम्हने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं। 6 और
अम्नोन लेटकर बीमार बना; और जब राजा उसे देखने आया, तब अम्नोन ने
राजा से कहा, मेरी बहिन तामार आकर मेरे देखते दो पूरी बनाए, कि मैं उसके
हाथ से खाऊं। 7 और दाऊद ने अपके घर तामार के पास यह कहला भेजा, कि
अपके भाई अम्नोन के घर जाकर उसके लिथे भोजन बना। 8 तब तामार अपके
भाई अम्नोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ या। तब उस ने आटा लेकर गूंधा,
और उसके देखते पूरियां। पकाई। 9 तब उस ने याल लेकर उनको उसके लिथे
परोसा, परन्तु उस ने खाने से इनकार किया। तब अम्नोन ने कहा, मेरे आस पास
से सब लोगोंको निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से निकल गए। 10 तब
अम्नोन ने तामार से कहा, भोजत को कोठरी में ले आ, कि मैं तेरे हाथ से खाऊं।
तो तामार अपक्की बनाई हुई पूरियोंको उठाकर अपके भाई अम्नोन के पास

कोठरी में ले गई। 11 जब वह उनको उसके खाने के लिथे निकट ले गई, तब उस
ने उसे पकड़कर कहा, हे मेरी बहिन, आ, मुझ से मिल। 12 उस ने कहा, हे मेरे
भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिथे;
ऐसी मूढ़ता का काम न कर। 13 और फिर मैं अपक्की नामधराई लिथे हुए कहां
जाऊंगी? और तू इस्राएलियोंमें एक मूढ गिना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर,
वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लिथे मना न करेगा। 14 परन्तु उस ने उसकी न
सुनी; और उस से बलवान होने के कारण उसके साय कुकर्म करके उसे भ्रष्ट
किया। 15 तब अम्नोन उस से अत्यन्त बैर रखने लगा; यहां तक कि यह बैर
उसके पहिले मोह से बढ़कर हुआ। तब अम्नोन ने उस से कहा, उठकर चक्की
जा। 16 उस ने कहा, ऐसा नहीं, क्योंकि यह बढ़ा उपद्रव, अर्यात् मुझे निकाल देना
उस पहिले से बढ़कर है जो तू ने मुझ से किया है। परन्तु उस ने उसकी न सुनी।
17 तब उस ने अपके टहलुए जवान को बुलाकर कहा, इस स्त्री को मेरे पास से
बाहर निकाल दे, और उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दे। 18 वह तो
रंगबिरंगी कुर्ती पहिने यी; क्योंकि जो राजकुमारियां कुंवारी रहती यीं वे ऐसे ही
वस्त्र पहिनती यीं। सो अम्नोन के टहलुए ने उसे बाहर निकालकर उसके पीछे
किवाड़ में चिटकनी लगा दी। 19 तब तामार ने अपके सिर पर राख डाली, और
अपक्की रंगबिरंगी कुर्ती को फाढ़ डाला; और सिर पर हाथ रखे चिल्लाती हुई
चक्की गई। 20 उसके भाई अबशालोम ने उस से पूछा, क्या तेरा भाई अम्नोन तेरे
साय रहा है? परन्तु अब, हे मेरी बहिन, चुप रह, वह तो तेरा भाई है; इस बात की
चिन्ता न कर। तब तामार अपके भाई अबशालोम के घर में मन मारे बैठी रही।
21 जब थे सब बातें दाऊद राजा के कान में पक्कीं, तब वह बहुत फुंफला उठा। 22

और अबशालोम ने अम्नोन से भला-बुरा कुछ न कहा, क्योंकि अम्नोन ने उसकी
बहिन तामार को भ्रष्ट किया या, इस कारण अबशालोम उस से घृणा रखता या।
23 दो पर्ष के बाद अबशालोम ने एप्रैम के निकट के बाल्हासोर में अपक्की
भेड़ोंका ऊन कतरवाया और अबशालोम ने सब राजकुमारोंको नेवता दिया। 24
वह राजा के पास जाकर कहनलगा, बिनती यह है, कि तेरे दास की भेड़ोंका ऊन
कतरा जाता है, इसलिथे राजा अपके कर्मचारियो समेत अपके दास के संग चले।
25 राजा ने अबशालोम से कहा, हे मेरे बेटे, ऐसा नहीं; हम सब न चलेंगे, ऐसा न
हो कि तुझे अधिक कष्ट हो। तब अबशालोम ने उसे बिनती करके दबाया, परन्तु
उस ने जाने से इनकार किया, तौभी उसे आशीर्वाद दिया। 26 तब अबशालोम ने
कहा, यदि तू नहीं तो मेरे भाई अम्नोन को हमारे संग जाने दे। राजा ने उस से
पूछा, वह तेरे संग क्योंचले? 27 परन्तु अबशालोम ने उसे ऐसा दबाया कि उस ने
अम्नोन और सब राजकुमारोंको उसके साय जाने दिया। 28 औा अबशालोम ने
अपके सेवको को आज्ञा दी, कि सावधान रहो और जब अम्नोन दाखमधु पीकर
नशे में आ जाए, और मैं तुम से कहूं, अम्नोन को मार डालना। क्या इस आज्ञा का
देनेवाला मैं नहीं हूं? हियाव बान्धकर पुरुषार्य करना। 29 तो अबशालोम के
सेवकोंने अम्नोन के साय अबशालोम की आज्ञा के अनुसार किया। तब सब
राजकुमार उठ खड़े हुए, और अपके अपके खच्चर पर चढ़कर भाग गए। 30 वे
मार्ग ही में थे, कि दाऊद को यह समाचार मिला कि अबशालोम ने सब
राजकुमारोंको मार डाला, और उन में से एक भी नहीं बचा। 31 तब दाऊद ने
उठकर अपके वस्त्र फाड़े, और भूमि पर गिर पड़ा, और उसके सब कर्मचारी वस्त्र
फाड़े हुए उसके पास खड़े रहे। 32 तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र यानादाब ने

कहा, मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान, अर्यात् राजकुमार मार डाले गए हैं,
केवल अम्नोन मारा गया है; क्योंकि जिस दिन उस ने अबशालोम की बहिन
तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही बात ठनी यी।
33 इसलिथे अब मेरा प्रभु राजा अपके मन में यह समझकर कि सब राजकुमार
मर गए उदास न हो; क्योंकि केवल अम्नोन ही मर गया है। 34 इतने में
अबशालोम भाग गया। और जो जवान पहरा देता य उस ने आंखें उठाकर देखा,
कि पीछे की ओर से पहाड़ के पास के मार्ग से बहुत लोग चले आ रहे हैं। 35 तब
योनादाब ने राजा से कहा, देख, राजकुमार तो आ गए हैं; जैसा तेरे दास ने कहा या
वैसा ही हुआ। 36 वह कह ही चुका या, कि राजकुमार पहुंच गए, और चिल्ला
चिल्लाकर रोने लगे; और राजा भी अपके सब कर्मचारियोंसमेत बिलख बिलख
कर रोने लगा। 37 अबशालोम तो भागकर गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै
के पास गया। और दाऊद अपके पुत्र के लिथे दिन दिन विलाप करता रहा। 38
जब अबशालोम भागकर गशूर को गया, तब पहां तीन पर्ष तक रहा। 39 और
दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अम्नोन
जो मर गया या, इस कारण उस ने उसके विषय में शान्ति पाई।

2 शमूएल 14

1 और सरूयाह का पुत्र योआब ताड़ गया कि राजा का मन अबशालोम की ओर
लगा है। 2 इसलिथे योआब ने तको नगर में दूत भेजकर वहां से एक बुद्धिमान स्त्री
को बुलवाया, और उस से कहा, शोक करनेवाली बन, अर्यात् शोक का पहिरावा
पहिन, और तेल न लगा; परन्तु ऐसी स्त्री बन जो बहुत दिन से मुए के लिथे

विलाप करती रही हो। 3 तब राजा के पास जाकर ऐसी ऐसी बातें कहना। और
योआब ने उसको जो कुछ कहना या वह सिखा दिया। 4 जब वह तकोइन राजा से
बातें करने लगी, तब मुंह के बल भूमि पर गिर दणडवत् करके कहने लगी, राजा
की दोहाई 5 राजा ने उस से पूछा, तुझे क्या चाहिथे? उस ने कहा, सचमुच मेरा
पति मर गया, और मैं विधवा हो गई। 6 और तेरी दासी के दो बेटे थे, और उन
दोनोंने मैदान में मार पीट की; और उनको छुड़ानेवाला कोई न या, इसलिए एक ने
दूसरे को ऐसा मारा कि वह मर गया। 7 और यह सुन सब कुल के लोग तेरी दासी
के विरुद्ध उठकर यह कहते हैं, कि जिस ने अपके भाई को घात किया उसको हमें
सौंप दे, कि उसके मारे हुए भाई के प्राण के पलटे में उसको प्राण दणड दे; और
वारिस को भी नाश करें। इस तरह वे मेरे अंगारे को जो बच गया है बुफाएंगे, और
मेरे पति का ताम और सन्तान धरती पर से मिटा डालेंगे। 8 राजा ने स्त्री से कहा,
अपके घर जा, और मैं तेरे विषय आज्ञा दूंगा। 9 तकोइन ने राजा से कहा, हे मेरे
प्रभु, हे राजा, दोष मुझी को और मेरे पिता के घराने ही को लगे; और राजा
अपक्की गद्दी समेत निर्दोष ठहरे। 10 राजा ने कहा, जो कोई तुझ से कुछ बोले
उसको मेरे पास ला, तब वह फिर तुझे छूने न पाएगा। 11 उस ने कहा, राजा
अपके परमेश्वर यहोवा को स्मरण करे, कि खून का पलटा लेनेवाला और नाश
करने न पाए, और मेरे बेटे का नाश न होने पाए। उस ने कहा, यहोवा के जीवन
की शपय, तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा। 12 स्त्री बोली, तेरी
दासी अपके प्रभु राजा से एक बात कहने पाए। 13 उस ने कहा, कहे जा। स्त्री कहने
लगी, फिर तू ने परमेश्वर की प्रजा की हानि के लिथे ऐसी ही युक्ति क्योंकी है? राजा
ने जो यह वचन कहा है, इस से वह दोषी सा ठहरता है, क्योंकि राजा अपके

निकाले हुए को लौटा नहीं लाता। 14 हम को तो मरना ही है, और भूमि पर गिरे
हुए जल के समान ठहरेंगे, जो फिर उठाया नहीं जाता; तौभी परमेश्वर प्राण नहीं
लेता, वरन ऐसी युकित करता है कि निकाला हुआ उसके पास से निकाला हुआ न
रहे। 15 और अब मैं जो अपके प्रभु राजा से यह बात कहने को आई हूं, इसका
कारण यह है, कि लोगोंने मुझे डरा दिया या; इसलिथे तेरी दासी ने सोचा, कि मैं
राजा से बोलूंगी, कदाचित राजा अपक्की दासी की बिनती को पूरी करे। 16
नि:सन्देह राजा सुनकर अवश्य अपक्की दासी को उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा
जो पाफे और मेरे बेटे दोनोंको परमेश्वर के भाग में से नाश करना चाहता है। 17
सो तेरी दासी ने सोचा, कि मेरे प्रभु राजा के वचन से शान्ति मिले; क्योंकि मेरा
प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत की नाई भले-बुरे में भेद कर सकता है; इसलिथे
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहे। 18 राजा ने उत्तर देकर उस स्त्री से कहा, जो बात
मैं तुझ से पूछता हूं उसे मुझ से न छिपा। स्त्री ने कहा, मेरा प्रभु राजा कहे जाए।
19 राजा ने पूछा, इस बात में क्या योआब तेरा संगी है? स्त्री ने उत्तर देकर कहा, हे
मेरे प्रभुु, हे राजा, तेरे प्राण की शपय, जो कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है, उस से
कोई न दाहिनी ओर मुड़ सकता है और न बाई। तेरे दास योआब ही ने मुझे आज्ञा
दी, और थे सब बातें उसी ने तेरी दासी को सिखाई है। 20 तेरे दास योआब ने यह
काम इसलिथे किया कि बात का रंग बदले। और मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के
तुल्य बुद्धिमान है, यहां तक कि धरती पर जो कुछ होता है उन सब को वह
जानता है। 21 तब राजा ने योआब से कहा, सुन, मैं ने यह बात मानी है; तू जाकर
अबशालोम जवान को लौटा ला। 22 तब योआब ने भूमि पर मुंह के बल गिर
दणडवत् कर राजा को आशीर्वाद दिया; और योआब कहने लगा, हे मेरे प्रभु, हे

राजा, आज तेरा दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनग्रह की दृष्टि है, क्योंकि
राजा ने अपके दास की बिनती सुनी है। 23 और योआब उठकर गशूर को गया,
और अबशालोम को यरूशलेम ले आया। 24 तब राजा ने कहा, वह अपके घर
जाकर रहे; और मेरा दर्शन न पाए। तब अबशालोम अपके घर जा रहा, और राजा
का दर्शन न पाया। 25 समस्त इस्राएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य
अबशालोम के तुल्य और कोई न या; वरन उस में नख से सिख तक कुछ दोष न
या। 26 और वह वर्ष के अन्त में अपना सिर मुंढवाता या (उसके बाल उसको
भारी जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मुंड़ाता या); और जब जब वह उसे
मुंड़ाता तब तब अपके सिर के बाल तौलकर राजा के तौल के अनुसार दो सौ
शेकेल भर पाता या। 27 और अबशालोम के तीन बेटे, और तामार नाम एक बेटी
उत्पन्न हुई यी; और यह रूपवती स्त्री यी। 28 और अबशालोम राजा का दर्शन
बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा। 29 तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा
कि उसे राजा के पास भेजे; परन्तु योआब ने उसके पास आने से इनकार किया।
और उस ने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उस ने आने से इनकार
किया। 30 तब उस ने अपके सेवकोंसे कहा, सुनो, योआब का एक खेत मेरी भूमि
के निकट है, और उस में उसका जव खड़ा है; तुम जाकर उस में आग लगाओ।
और अबशालोम के सेवकोंने उस खेत में आग लगा दी। 31 तब योआब उठा, और
अबशालोम के घर में उसके पास जाकर उस से पूछने लगा, तेरे सेवकोंने मेरे खेत
में क्योंआग लगाई है? 32 अबशालोम ने योआब से कहा, मैं ने तो तेरे पास यह
कहला भेजा या, कि यहां आना कि मैं तुझे राजा के पास यह कहने को भेजूं, कि मैं
गशूर से क्योंआया? मैं अब तक वहां रहता तो अच्छा होता। इसलिथे अब राजा

मुझे दर्शन दे; और यदि मैं दोषी हूं, तो वह मुझे मार डाले। 33 तो योआब ने राजा
के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया।
और वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुंह के बल गिरके
दणडवत् की; और राजा ने अबशालोम को चूमा।

2 शमूएल 15

1 इसके बाद अबशालोम ने रय और घोड़े, और अपके आगे आगे दौड़नेवाले
पचास मनुष्य रख लिए। 2 और अबशालोम सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास
खड़ा हाआ करता या; और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास न्याय के लिथे आता,
तब तब अबशालोम उसको पुकारके पूछता या, तू किय नगर से आता है? 3 और
वह कहता या, कि तेरा दास इस्राएल के फुलाने गोत्र का है। तब अबशालोम उस से
कहता या, कि सुन, तेरा पझ तो ठीक और न्याय का है; परन्तु राजा की ओर से
तेरी युननेवाला कोई नहीं है। 4 फिर अबशालोम यह भी कहा करता या, कि भला
होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता ! कि जितने मुकद्दमावाले होते वे
सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता। 5 फिर जब कोई उसे
दणडवत् करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़के चूम लेता
या। 6 और जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुकद्दमा तै करने को आते उन
सभोंसे अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता या; इस प्रकार अबशालोम ने
इस्राएली मनुष्योंके मन को हर लिया। 7 चार वर्ष के बीतने पर अबशालोम ने
राजा से कहा, मुझे हेब्रोन जाकर अपक्की उस मन्नत को पूरी करने दे, जो मैं ने
यहोवा की मानी है। 8 तेरा दास तो जब आराम के गशूर में रहता या, तब यह

कहकर यहोवा की मन्नत मानी, कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा
ले जाए, तो मैं यहोवा की उपासना करूंगा। 9 राजा ने उस से कहा, कुशल झेम से
जा। और वह चलकर हेब्रोन को गया। 10 तब अबशालोम ने इस्राएल के समस्त
गोत्रें में यह कहने के लिथे भेदिए भेजे, कि जग नरसिंगे का शब्द तुम को सुन
पके, तब कहना, कि अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ ! 11 और अबशालोम के संग
दो सौ नेवतहारी यरूशलेम से गए; वे सीधे मन से उसका भेद बिना जाने गए। 12
फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उस ने गीलोवासी अहीतोपेल को, जो
दाऊद का मंत्री या, बुलवा भेजा कि वह अपके नगर गीलो से आए। और राजद्रोह
की गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम के पझ के लोग बराबर बढ़ते गए। 13
तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया, कि इस्राएली मनुष्योंके
मन अबशालोम की ओर हो गए हैं। 14 तब दाऊद ने अपके सब कर्मचारियोंसे जो
यरूशलेम में उसके संग थे कहा, आओ, हम भाग चलें; नहीं तो हम में से कोई भी
अबशालोम से न बचेगा; इसलिथे फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती
करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले।
15 राजा के कर्मचारियोंने उस से कहा, जैसा हमारे प्रभु राजा को अच्छा जान पके,
वैसा ही करने के लिथे तेरे दास तैयार हैं। 16 तब राजा निकल गया, और उसके
पीछे उसका समस्त घराना निकला। और राजा दस रखेलियोंको भवन की
चौकसी करने के लिथे छोड़ गया। 17 और राजा निकल गया, और उसके पीछे
सब लोग निकले; और वे बेतमेर्हक में ठहर गए। 18 और उसके सब कर्मचारी
उसके पास से होकर आगे गए; और सब करेती, और सब पकेती, और सब गती,
अर्यात् जो छः सौ पुरुष गत से उसके पीछे हो लिए थे वे सब राजा के साम्हने से

होकर आगे चले। 19 तब राजा ने गती इत्तै से पूछा, हमारे संग तू क्योंचलता है?
लौटकर राजा के पास रह; क्योंकि तू परदेशी और अपके देश से दूर है, इसलिथे
अपके स्यान को लौट जा। 20 तू तो कल ही आया है, क्या मैं आज तुझे अपके
साय मारा मारा फिराऊं? मैं तो जहां जा समूंगा वहां जाऊंगा। तू लौट जा, और
अपके भाइयोंको भी लौटा दे; ईश्वर की करुणा और यच्चाई तेरे संग रहे। 21 इत्तै
ने राजा को उत्तर देकर कहा, यहोवा के जीवन की शपय, और मेरे प्रभु राजा के
जीवन की शपय, जिस किसी स्यान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिथे
हो चाहे जीवित रहने के लिथे, उसी स्यान में तेरा दास भी रहेगा। 22 तब दाऊद ने
इत्तै से कहा, पार चल। सो गती इत्तै अपके समस्त जनोंऔर अपके साय के सब
बाल-बच्चोंसमेत पार हो गया। 23 सब रहनेवाले चिल्ला चिल्लाकर रोए; और
सब लोग पार हुए, और राजा भी किद्रोन नाम नाले के पार हुआ, और सब लोग
नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार होकर चल पके। 24 तब क्या देखने में
आया, कि सादोक भी और उसके संग सब लेवीय परमेश्वर की वाचा का सन्दूक
उठाए हुए हैं; और उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को धर दिया, तब एब्यातार चढ़ा,
और जब तक सब लोग नगर से न निकले तब तक वहीं रहा। 25 तब राजा ने
सादोक से कहा, परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपके वासस्यान
को भी दिखाएगा; 26 परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, कि मैं तुझ से प्रसन्न
नहीं, तौभी मैं हाजिर हूं, जैसा उसको भाए वैसा ही वह मेरे साय बर्त्ताव करे। 27
फिर राजा ने सादोक याजक से कहा, क्या तू दर्शी नहीं है? सो कुशल झेम से नगर
में लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातन, दोनोंतुम्हारे

संग लौटें। 28 सुनो, मैं जंगल के घाट के पास तब तक ठहरा रहूंगा, जब तक तुम
लोगोंसे मुझे हाल का समाचार न मिले। 29 तब सादोक और एब्यातार ने
परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम में लौटा दिया; और आप वही रहे। 30 तब
दाऊद जलपाइसोंके पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे, नंगे पांव, रोता हुआ चढ़ने
लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गए। 31 तब
दाऊद को यह समाचार मिला, कि अबशालोम के संगी राजद्रोहियोंके साय
अहीतोपेल है। दाऊद ने कहा, हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना
दे। 32 जब दाऊद चोटी तक पहुंचा, जहां परमेश्वर को दणडवत् किया करते थे,
तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए उस से मिलने को आया।
33 दाऊद ने उस से कहा, यदि तू मेरे संग आगे जाए, तब तो मेरे लिथे भार
ठहरेगा। 34 परन्तु यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहने लगे, हे राजा,
मैं तेरा कर्मचारी हूंगा; जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसा ही अब
तेरा रहूंगा, तो तू मेरे हित के लिथे अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल कर
सकेगा। 35 और क्या वहां तेरे संग सादोक और एब्यातार याजक न रहेंगे?
इसलिथे राजभवन में से जो हाल तुझे सुन पके, उसे सादोक और एब्यातार
याजकोंको बताया करना। 36 उनके साय तो उनके दो पुत्र, अर्यात् सादोक का पुत्र
अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातन, वहां रहेंगे; तो जो समाचार तुम
लोगोंको मिले उसे मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना। 37 और दाऊद का मित्र,
हूशै, नगर को गया, और अबशालोम भी यरूशलेम में पहुंच गया।

2 शमूएल 16

1 दाऊद चोटी पर से योड़ी दूर बढ़ गया या, कि मपीबोशेत का कर्मचारी मीबा एक
जोड़ी, जीन बान्धे हुए गदहोंपर दो सौ रोटी, किशमिश की एक सौ टिकिया,
धूपकाल के फल की एक सौ टिकिया, और कुप्पी भर दाखमधु, लादे हुए उस से
आ मिला। 2 राजा ने सीबा से पूछा, इन से तेरा क्या प्रयोजन है? सीबा ने कहा,
गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिथे हैं, और रोटी और धूपकाल के फल
जवानोंके खाने के लिथे हैं, और दाखमधु इसलिथे है कि जो कोई जंगल में यक
जाए वह उसे पीए। 3 राजा ने पूछा, फिर तेरे स्वामी का बेटा कहां है? सीबा ने
राजा से कहा, वह तो यह कहकर यरूशलेम में रह गया, कि अब इस्राएल का
घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा। 4 राजा ने सीबा से कहा, जो कुछ
मपीबोशेत का या वह सब तुझे मिल गया। सीबा ने कहा, प्रणाम; हे मेरे प्रभु, हे
राजा, मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे। 5 जब दाऊद राजा बहूरीम तक
पहुंचा, तब शाऊल का एक कुटुम्बी वहां से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी नाम
का या; और वह कोसता हुआ चला आया। 6 और दाऊद पर, और दाऊद राजा के
सब कर्मचारियोंपर पत्यर फेंकने लगा; और शूरवीरोंसमेत सब लोग उसकी
दाहिनी बाई दोनोंओर थे। 7 और शिमी कोसता हुआ योंबकता गया, कि दूर हो
खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा ! 8 यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने
के खून का पूरा पलटा लिया है, जिसके स्यान पर तू राजा बना है; यहोवा ने राज्य
को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिथे कि तू खूनी है, तू
अपक्की बुराई में आप फंस गया। 9 तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा,
यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्योंशाप देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका
सिर काटने दे। 10 राजा ने कहा, सरूयाह के बेटो, मुझे तुम से क्या काम? वह जो

कोसता है, और यहोवा ने जो उस से कहा है, कि दाऊद को शाप दे, तो उस से कौन
पूछ सकता, कि तू ने ऐसा क्योंकिया? 11 फिर दाऊद ने अबीशै और अपके सब
कर्मचारियोंसे कहा, जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का खोजी है, तो यह
बिन्यामीनी अब ऐसा क्योंन करें? उसको रहने दो, और शाप देने दो; क्योंकि
यहोवा ने उस से कहा है। 12 कदाचित् यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा
है, दृष्टि करके आज के शाप की सन्ती मुझे भला बदला दे। 13 तब दाऊद अपके
जनोंसमेत अपना मार्ग चला गया, और शिमी उसके साम्हने के पहाड़ की अलंग
पर से शाप देता, और उस पर पत्थर और धूलि फेंकता हुआ चला गया। 14
निदान राजा अपके संग के सब लोगोंसमेत अपके ठिकाने पर यका हुआ पहुंचा;
और वहां विश्रम किया। 15 अबशालोम सब इस्राएली लोगोंसमेत यरूशलेम को
आया, और उसके संग अहीतोपेल भी आया। 16 जब दाऊद का मित्र एरेकी हूशै
अबशालोम के पास पहुंचा, तब हूशै ने अबशालोम से कहा, राजा चिरंजीव रहे !
राजा चिरंजीव रहे ! 17 अबशालोम ने उस से कहा, क्या यह तेरी प्रीति है जो तू
अपके मित्र से रखता है? तू अपके मित्र के संग क्योंनहीं गया? 18 हूशै ने
अबशालोम से कहा, ऐसा नही; जिसको यहोवा और वे लोग, क्या वरन सब
इस्राएली लोग चाहें, उसी का मैं हूं, और उसी के संग मैं रहूंगा। 19 और फिर मैं
किसकी सेवा करूं? क्या उसके पुत्र के साम्हने रहकर सेवा न करूं? जैसा मैं तेरे
पिता के साम्हने रहकर सेवा करता या, वैसा ही तेरे साम्हने रहकर सेवा करूंगा।
20 तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, तुम लोग अपक्की सम्मति दो, कि
क्या करना चाहिथे? 21 अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, जिन रखेलियोंको तेरा
पिता भवन की चौकसी करने को छोड़ गया, उनके पास तू जा; और जब सब

इस्राएली यह सुनेंगे, कि अबशालोम का पिता उस से घिन करता है, तब तेरे सब
संगी हियाव बान्धेंगे। 22 सो उसकेलिथे भवन की छत के ऊपर एक तम्बू खड़ा
किया गया, और अबशालोम समस्त इस्राएल के देखते अपके पिता की
रखेलियोंके पास गया। 23 उन दिनोंजो सम्मति अहीतोपेल देता या, वह ऐसी
होती यी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछलेता हो; अहीतोपेल चाहे दाऊद को
चाहे अबशलोम को, जो जो सम्मति देता वह ऐसी ही होती यी।

2 शमूएल 17

1 फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, मुझे बारह हजार पुरुष छांटने दे, और मैं
उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूंगा। 2 और जब वह यकित और
निर्बल होगा, तब मैं उसे पकड़ूंगा, और डराऊंगा; और जितने लोग उसके साय हैं
सब भागेंगे। और मैं राजा ही को मारूंगा, 3 और मैं सब लोगोंको तेरे पास लौटा
लाऊंगा; जिस मनुष्य का तू खोजी है उसके मिलने मे समस्त प्रजा का मिलना हो
जाएगा, और समस्त प्रजा कुशल झेम से रहेगी। 4 यह बात अबशालोम और सब
इस्राएली पुरनियोंको उचित मालूम पक्की। 5 फिर अबशालोम ने कहा, एरेकी हूशै
को भी बुला ला, और जो वह कहेगा हम उसे भी सुनें। 6 जब हूशै अबशालोम के
पास आया, तब अबशालोम ने उस से कहा, अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात
कही है; क्या हम उसकी बात मानें कि नही? सदि नही, तो तू कह दे। 7 हूशै ने
अबशालोम से कहा, जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी वह अच्छी नहीं। 8
फिर हूशै ने कहा, तू तो अपके पिता और उसके जनोंको जानता है कि वे शूरवीर
हैं, और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे। और तेरा पिता योद्धा है;

और और लोगो के साय रात नहीं बिताता। 9 इस समय तो वह किसी गढ़हे, वा
किसी दूसरे स्यान में छिपा होगा। जब इन में से पहिले पहिले कोई कोई मारे
जाएं, तब इसके सब सुननेवाले कहने लगेंगे, कि अबशालोम के पझवाले हार
गए। 10 तब वीर का हृदय, जो सिंह का सा होता है, उसका भी हियाव छूट
जाएगा, समस्त इस्राएल तो जानता है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी बड़े
योद्धा हैं। 11 इसलिथे मेरी सम्मति यह है कि दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाले
समस्त इस्राएली तेरे पास समुद्रतीर की बालू के किनकोंके समान अकट्ठे किए
जाए, और तू आप ही युद्ध को जाए। 12 और जब हम उसको किसी न किसी
स्यान में जहां वह मिले जा पकड़ेंगे, तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम
उस पर टूट पकेंगे; तब न तो वह बचेगा, और न उसके संगियोंमें से कोई बचेगा।
13 और यदि वह किसी नगर में घुसा हो, तो सब इस्राएली उस नगर के पास
रस्सियां ले आएंगे, और हम उसे नाले में खींचेंगे, यहां तक कि उसका एक छोटा
सा पत्यर भी न रह जाएगा। 14 तब अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषोंने कहा,
एरेकी हूशै की बम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उम्तम है। सहोवा ने तो
अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल करने के लिथे ठाना या, कि यह
अबशालोम ही पर विपत्ति डाले। 15 तब हूशै ने सादोक और एब्यातार याजकोंसे
कहा, अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इस्राएली पुरनियोंको इस इस प्रकार की
सम्मति दी; और मैं ने इस इस प्रकार की सम्मति दी है। 16 इसलिथे अब फुतीं
कर दाऊद के पास कहला भेजो, कि आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना,
अवश्य पार ही हो जाना; ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हों, सब
नाश हो जाएं। 17 योनातन और अहीमाय एनरोगेल के पास ठहरे रहे; और एक

लौंडी जाकर उन्हें सन्देशा दे आती यी, और वे जाकर राजा दाऊद को सन्देशा देते
थे; क्योंकि वे किसी के देखते नगर में नही जा सकते थे। 18 एक छोकरे ने तो
उन्हें देखकर अबशालोम को बताया; परन्तु वे दोनोंफुर्ती से चले गए, और एक
बहूरीमवासी मनुष्य के घर पहुंचकर जिसके आंगन में कुंआ या उस में उतर गए।
19 तब उसकी स्त्री ने कपड़ा लेकर कुंए के मुंह पर बिछाया, और उसके ऊपर दलर
हुआ अन्न फैला दिया; इसलिथे कुछ मालूम न पड़ा। 20 तब अबशालोम के सेवक
उस घर में उस स्त्री के पास जाकर कहने लगे, अहीमास और योनातन कहां हैं?
स्त्री ने उन से कहा, वे तो उस छोटी नदी के पार गए। तब उन्होंने उन्हें ढूंढा, और
न पाकर यरूशलेम को लौटे। 21 जब वे चले गए, तब थे कुंए में से निकले, और
जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया; और दाऊद से कहा, तुम लोग चलो, फुर्ती
करके नदी के पार हो जाओ; क्योंकि अहीतोपेल ने तुम्हारी हानि की ऐसी ऐसी
सम्मति दी है। 22 तब दाऊद अपके सब संगियोंसमेत उठकर यरदन पार हो
गया; और पह फटने तक उन में से एक भी न रह गया जो यरदन के पार न हो
गया हो। 23 जब अहीतोपेल ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ,
तब उस ने अपके गदहे पर काठी कसी, और अपके नगर में जाकर अपके घर में
गया। और अपके घराने के विषय जो जो आज्ञा देनी यी वह देकर अपके को फांसी
लगा ली; और वह मर गया, और उसके पिता के कब्रिस्तान में उसे मिट्टी दे दी
गई। 24 दाऊद तो महनैम में पहुंचा। और अबशालोम सब इस्राएली पुरुषोंसमेत
यरदन के पार गया। 25 और अबशालोम ने अमासा को योआब के स्यान पर
प्रधान सेनापति ठहराया। यह अमासा एक पुरुष का पुत्र या जिसका नाम
इस्राएली यित्रो या, और वह योआब की माता, सरूयाह की बहिन, अबीगल नाम

नाहाश की बेटी के संग सोया या। 26 और इस्राएलियोंने और अबशालोम ने
गिलाद देश में छावनी डाली। 27 जब दाऊद महनैम में आया, तब अम्मोनियोंके
रब्बा के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी, और लोदबरवासी अम्मीएल का पुत्र
माकीर, और रोगलीमवासी गिलादी बजिल्लै, 28 चारपाइयां, तसले मिट्टी के
बर्तन, गेहूं, जव, मैदा, लोबिया, मसूर, चबेना, 29 मधु, मक्खन, भेड़बकरियां,
और गाय के दही का पक्कीर, दाऊद और उसके संगियोंके खाने को यह सोचकर
ले आए, कि जंगल में वे लोग भूखे प्यासे और यके मांदे होंगे।

2 शमूएल 18

1 तब दाऊद ने अपके संग के लोगोंकी गिनती ली, और उन पर सहस्त्रपति और
शतपति ठहराए। 2 फिर दाऊद ने लोगोंकी एक तिहाई तो योआब के, और एक
तिहाई सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै के, और एक तिहाई गती इत्ते ै के,
अधिक्कारने में करके युद्ध में भेज दिया। और राजा ने लोगोंसे कहा, मैं भी अवश्य
तुम्हारे साय चलूंगा। 3 लोगोंने कहा, तू जाने न पाएगा। क्योंकि चाहे हम भाग
जाएं, तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे; वरन चाहे हम में से आधे मारे भी जाएं,
तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे। क्योंकि हमारे सरीखे दस हज़ार पुरुष हैं;
इसलिथे अच्छा यह है कि तू नगर में से हमारी सहाथता करने को तैयार रहे। 4
राजा ने उन से कहा, जो कुछ तुम्हें भाए वही मैं करूंगा। और राजा ॅफाटक की
एक ओर खड़ा रहा, और सब लोग सौ सौ, और हज़ार, हज़ार करके निकलने लगे।
5 और राजा ने योआब, अबीशै, और इत्ते को आज्ञा दी, कि मेरे निमित्त उस
जवान, अर्यात् अबशालोम से कोमलता करना। यह आज्ञा राजा ने अबशालोम के

विषय सब प्रधानोंको सब लोगोंके सुनते दी। 6 सो लोग इस्राएल का साम्हला
करने को मैदान में निकले; और एप्रैम नाम वन में युद्ध हुआ। 7 वहां इस्राएली
लोग दाऊद के जनोंसे हार गए, और उस दिन ऐसा बड़ा संहार हुआ कि बीस हजार
खेत आए। 8 और युद्ध उस समस्त देश में फैल गया; और उस दिन जितने लोग
तलवार से मारे गए, उन से भी अधिक वन के कारण मर गए। 9 संयोग से
अबशालोम और दाऊद के जनोंकी भेंट हो गई। अबशालोम तो एक खच्चर पर
चढ़ा हुआ जा रहा या, कि खच्चर एक बड़े बांज वृझ की घनी डालियोंके नीचे से
गया, और उसका सिर उस बांज वृझ में अटक गया, और वह अधर में लटका रह
गया, और उसका खच्चर निकल गया। 10 इसको देखकर किसी मनुष्य ने
योआब को बताया, कि मैं ने अबशालोम को बांज वृझ में टंगा हुआ देखा। 11
योआब ने बतानेवाले से कहा, तू ने यह देखा ! फिर क्योंउसे वहीं मारके भूमि पर
न गिरा दिया? तो मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और एक कटिबन्द देता। 12 उस
मनुष्य ने योआब से कहा, चाहे मेरे हाथ में हज़ार टुकड़े चांदी तौलकर दिए जाऐ,
तौभी राजकुमार के विरुद्ध हाथ न बढ़ाऊंगा; क्योंकि हम लोगोंके सुनते राजा ने
तुझे और अबीशै और इत्तै को यह आज्ञा दी, कि तुम में से कोई क्योंन हो उस
जवान अर्यात् अबशालोम को न छूए। 13 यदि मैं धोखा देकर उसका प्राण लेता,
तो तू आप मेरा विरोधी हो जाता, क्योंकि राजा से कोई बात छिपी नहीं रहती। 14
योआब ने कहा, मैं तेरे संग योंही ठहरा नहीं रह सकता ! सो उस ने तीन लकड़ी
हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृझ में जीवति लटका या, छेद
डाला। 15 तब योआब के दस हयियार ढोनेवाले जवानोंने अबशालोम को घेरके
ऐसा मारा कि वह मर गया। 16 फिर योआब ने नरसिंगा फूंका, और लोग

इण््राएल का पीछा करने से लौटे; क्योंकि योआब प्रजा को बचाना चाहता या।
17 तब लोगोंने अबशालोम को उतारके उस वन के एक बड़े गड़हे में डाल दिया,
और उस पर पत्यरोंका एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया; और सब इस्राएली अपके
अपके डेरे को भाग गए। 18 अपके जीते जी अबशालोम ने यह सोचकर कि मेरे
नाम का स्मरण करानेवाला कोई पुत्र मेरे नहीं है, अपके लिथे वह लाठ खड़ी
कराई यी जो राजा की तराई में है; और लाठ का अपना ही नाम रखा, जो आज के
दिन तक अबशालोम की लाठ कहलाती है। 19 और सादोक के पुत्र अहीमास ने
कहा, मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार देने दे, कि यहोवा ने न्याय करके तुझे
तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है। 20 योआब ने उस से कहा, तू आज के दिन
समाचार न दे; दूसरे दिन समाचार देने पाएगा, परन्तु आज समाचार न दे,
इसलिथे कि राजकुमार मर गया है। 21 तब योआब ने एक कूशी से कहा जो कुछ
तू ने देखा है वह जाकर राजा को बता दे। तो वह कूशी योआब को दण्डवत् करके
दौड़ गया। 22 फिर सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसरी बार योआब से कहा, जो हो
सो हो, परन्तु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे। योआब ने कहा, हे मेरे बेटे, तेरे
समाचार का कुछ बदला न मिलेगा, फिर तू क्योंदौड़ जाना चाहता है? 23 उस ने
यह कहा, जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़ जाने दे। उसने उस से कहा, दौड़। तब
अहीमास दौड़ा, और तराई से होकर कूशी के आगे बढ़ गया। 24 दाऊद तो दो
फाटकोंके बीच बैठा या, कि पहरुआ जो फाटक की छत से होकर शहरपनाह पर
चढ़ गया या, उस ने आंखें उठाकर क्या देखा, कि एक मनुष्य अकेला दौड़ा आता
है। 25 जब पहरुए ने पुकारके राजा को यह बता दिया, तब राजा ने कहा, यदि
अकेला आता हो, तो सन्देशा लाता होगा। वह दौड़ते दौड़ते निकल आया। 26 फिर

पहरुए ने एक और मनुष्य को दौड़ते हुए देख फाटक के रखवाले को पुकारके
कहा, सुन, एक और मनुष्य अकेला दौड़ा आता है। राजा ने कहा, वह भी सन्देशा
लाता होगा। 27 पहरुए ने कहा, पुफे तो ऐसा देख पड़ता है कि पहले का दौड़ना
सादोक के पुत्र अहीमास का सा है। राजा ने कहा, वह तो भला मनुष्य है, तो भला
सन्देश लाता होगा। 28 तब अहीमास ने पुकारके राजा से कहा, कल्याण। फिर
उस ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, तेरा परमेश्वर
यहोवा धन्य है, जिस ने मेरे प्रभु राजा के विरुद्ध हाथ उठानेवाले मनुष्योंको तेरे
वश में कर दिया है ! 29 राजा ने पूछा, क्या उस जवान अबशालोम का कल्याण
है? अहीमास ने कहा, जब योआब ने राजा के कर्मचारी को और तेरे दास को भेज
दिया, तब मुझे बड़ी भीड़ देख पक्की, परन्तु मालूम न हुआ कि क्या हुआ या। 30
राजा ने कहा; हटकर यहीं खड़ा रह। और वह हटकर खड़ा रहा। 31 तब कूशी भी
आ गया; और कूशी कहने लगा, मेरे प्रभु राजा के लिथे समाचार है। यहोवा ने
आज न्याय करके तुझे उन सभोंके हाथ से बचाया है जो तेरे विरुद्ध उठे थे। 32
राजा ने कूशी से पूछा, क्या वह जवान अर्यात् अबशालोम कल्याण से है? कूशी ने
कहा, मेरे प्रभु राजा के शत्रु, और जितने तेरी हानि के लिथे उठे हैं, उनकी दशा उस
जवान की सी हो। 33 तब राजा बहुत घबराया, और फाटक के ऊपर की अटारी पर
रोता हुआ चढ़ने लगा; और चलते चलते योंकहता गया, कि हाथ मेरे बेटे
अबशालोम ! मेरे बेटे, हाथ ! मेरे बेटे अबशालोम ! भला होता कि मैं आप तेरी
सन्ती मरता, हाथ ! अबशालोम ! मेरे बेटे, मेरे बेटे !!

2 शमूएल 19

1 तब योआब को यह समाचार मिला, कि राजा अबशालोम के लिथे रो रहा है और
विलाप कर रहा है। 2 इसलिथे उस दिन का विजय सब लोगोंकी समझ में विलाप
ही का कारण बन गया; क्योंकि लोगोंने उस दिन सुना, कि राजा अपके बेटे के
लिथे खेदित है। 3 और उस दिन लोग ऐसा मुंह चुराकर नगर में घुसे, जैसा लोग
युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुंह चुराते हैं। 4 और राजा मुंह ढांपे हुए
चिल्ला चिल्लाकर पुकारता रहा, कि हाथ मेरे बेटे अबशालोम ! हाथ अबशालोम,
मेरे बेटे, मेरे बेटे ! 5 तब योआब घर में राजा के पास जाकर कहने लगा, तेरे
कर्मचारियोंने आज के दिन तेरा, और तेरे बेटे-बेटियोंका और तेरी पत्नियोंऔर
रखेलियोंका प्राण तो बचाया है, परन्तु तू ते आज के दिन उन सभोंका मुंह काला
किया है; 6 इसलिथे कि तू अपके बैरियोंसे प्रेम और अपके प्रेमियोंसे बैर रखता है।
तू ने आज यह प्रगट किया कि तुझे हाकिमोंऔर कर्मचारियोंकी कुछ चिन्ता नहीं;
वरन मैं ने आज जान लिया, कि यदि हम सब आज मारे जाते और अबशालोम
जीवित रहता, तो तू बहुत प्रसन्न होता। 7 इसलिथे अब उठकर बाहर जा, और
अपके कर्मचारियोंको शान्ति दे; तहीं तो मैं यहोवा की शपय खाकर कहता हूँ, कि
यदि तू बाहर न जाएगा, तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा; और
तेरे बचपन से लेकर अब तक जितनी विपत्तियां तुझ पर पक्की हैं उन सब से यह
विपत्ति बड़ी होगी। 8 तब राजा उठकर फाटक में जा बैठा। और जब सब लोगोंको
यह बताया गया, कि राजा फाटक में बैठा है; तब सब लोग राजा के साम्हने आए।
और इस्राएली अपके अपके डेरे को भाग गए थे। 9 और इस्राएल के सब गोत्रें में
सब लोग आपस में यह कहकर ढगड़ते थे, कि राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ
से बचाया या, और पलिश्तियोंके हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया; परन्तु अब वह

अबशालोम के डर के मारे देश छोड़कर भाग गया। 10 और अबशालोम जिसको
हम ने अपना राजा होने को अभिषेक किया या, वह युद्ध में मर गया है। तो अब
तुम क्योंचुप रहते? और जाजा को लौटा ले अपके की चर्चा क्योंनहीं करते? 11
तब राजा दाऊद ने सादोक और एब्यातार याजकोंके पास कहला भेजा, कि यहूदी
पुरनियोंसे कहो, कि तुम लोग राजा को भवन पहुंचाने के लिथे सब से पीछे
क्योंहोते हो जब कि समस्त इस्राएल की बातचीत राजा के सुनने में आई है, कि
उसको भवन में पहुंचाए? 12 तुम लोग तो मेरे भाई, वरन मेरी ही हड्डी और मांस
हो; तो तुम राजा को लौटाने में सब के पीछे क्योंहोते हो? 13 फिर अमासा से यह
कहो, कि क्या तू मेरी हड्डी और मांस नहीं है? और यदि तू योआब के स्यान पर
सदा के लिथे सेनापति न ठहरे, तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही वरन उस से भी
अधिक करे। 14 इस प्रकार उस ने सब यहूदी पुरुषोंके मन ऐसे अपक्की ओर
खींच लिया कि मानोंएक ही पुरुष या; और उन्होंने राजा के पास कहला भेजा, कि
तू अपके सब कर्पचारियोंको संग लेकर लौट आ। 15 तब राजा लौटकर यरदन
तक आ गया; और यहूदी लोग गिलगाल तक गए कि उस से मिलकर उसे यरदन
पार ले आए। 16 यहूदियोंके संग गेरा का पुत्र बिन्यामीनी शिमी भी जो बहूरीमी
या फुतीं करके राजा दाऊद से भेंट करने को गया; 17 उसके संग हज़ार
बिन्यामीनी पुरुष थे। और शाऊल के घराने का कर्मचारी सीबा अपके पन्द्रह
पुत्रोंऔर बीस दासोंसमेत या, और वे राजा के साम्हने यरदन के पार पांव पैदल
उतर गए। 18 और एक बेड़ा राजा के परिवार को पार ले आने, और जिस काम में
वह उसे लगाने चाहे उसी में लगने के लिथे पार गया। और जब राजा यरदन पार
जाने पर या, तब गेरा का पुत्र शिमी उसके पावोंपर गिरके, 19 राजा से कहने

लगा, मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न करे, और जिस दिन मेरा प्रभु राजा यरूशलेम
को छोड़ आया, उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया, उसे ऐसा स्मरण न
कर कि राजा उसे अपके ध्यान में रखे। 20 क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैं ने
पाप किया; देख, आज अपके प्रभु राजा से भेंट करने के लिथे यूसुफ के समस्त
घ्राने में से मैं ही पहिला आया हूँ। 21 तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, शिमी ने
जो यहोवा के अभिषिक्त को शाप दिया या, इस कारण क्या उसको वध करना न
चाहिथे? 22 दाऊद ने कहा, हे सरूयाह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम, कि तुम
आज मेरे विरोधी ठहरे हो? आज क्या इस्राएल में किसी को प्राण दणड मिलेगा?
क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इस्राएल का राजा हुआ हूँ? 23 फिर राजा ने शिमी
से कहा, तुझे प्राण दणड न मिलेगा। और राजा ने उस से शपय भी खाई। 24 तब
शाऊल का पोता मपीबोशेत राजा से भेंट करने को आया; उस ने राजा के चले
जाने के दिन से उसके कुशल झेम से फिर आने के दिन तक न अपके पावोंके
नाखून काटे, और न अपक्की दाढी बनवाई, और न अपके कपके धुलवाए थे। 25
तो जब यरूशलेमी राजा से मिलने को गए, तब राजा ने उस से पूछा, हे
मपीबोशेत, तू मेरे संग क्योंनहीं गया या? 26 उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरे
कर्मचारी ने मुझे धोखा दिया या; तेरा दास जो पंगु है; इसलिथे तेरे दास ने सोचा,
कि मैं गदहे पर काठी कसवाकर उस पर चढ़ राजा के साय चला जाऊंगा। 27 और
मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के साम्हने मेरी चुगली खाई। परन्तु मेरा प्रभु राजा
परमेश्वर के दूत के समान है; और जो कुछ तुझे भाए वही कर। 28 मेरे पिता का
समस्त घराना तेरी ओर से प्राण दणड के योग्य या; परन्तु तू ने अपके दास को
अपक्की मेज पर खानेवालोंमें गिना है। मुझे क्या हक है कि मैं राजा की ओर

दोहाई दूं? 29 राजा ने उस से कहा, तू अपक्की बात की चर्चा क्योंकरता रहता है?
मेरी आज्ञा यह है, कि उस भूमि को तुम और सीबा दोनोंआपस में बांट लो। 30
मपीबोशेत ने राजा से कहा, मेरे प्रभु राजा जो कुशल झेम से अपके घर आया है,
इसलिथे सीबा ही सब कुछ ले ले। 31 तब गिलादी बजिल्लै रोगलीम से आया,
और राजा के साय यरदन पार गया, कि उसको यरदन के पार पहुंचाए। 32
बजिल्लै तो वृद्ध पुरुष या, अर्यात् अस्सी पर्ष की आयु का या जब तक राजा
महनैम में रहता या तब तक वह उसका पालन पोषण करता रहा; क्योंकि वह
बहुत धनी या। 33 तब राजा ने बजिल्लै से कहा, मेरे संग पार चल, और मैं तुझे
यरूशलेम में अपके पास रखकर तेरा पालन पोषण करूंगा। 34 बजिल्लै ने राजा
से कहा, मुझे कितने दिन जीवित रहना है, कि मैं राजा के संग यरूशलेम को
जाऊं? 35 आज मैं अस्सी वर्ष का हूँ; क्या मैं भले-बुरे का विवेक कर सकता हूँ?
क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता है उसका स्वाद पहिचान सकता है? क्या मुझे
गवैय्योंवा गायिकाओं का शब्द अब सुन पड़ता है? तेरा दास अब अपके प्रभु राजा
के लिथे क्योंबोफ का कारण हो? 36 तेरे दास राजा के संग यरदन पार ही तक
जाएगा। राजा इसका ऐसा बड़ा बदला मुझे क्योंदे? 37 अपके दास को लौटने दे,
कि मैं अपके ही नगर में अपके माता पिता के कब्रिस्तान के पास मरूं। परन्तु
तेरा दास किम्हाम उपस्थित है; मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए; और जैसा
तुझे भाए वैया ही उस से व्यवहार करना। 38 राजा ने कहा, हां, किम्हान मेरे संग
पार चलेगा, और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उस से व्यवहार करूंगा वरन जो कुछ
तू मुझ से चाहेगा वह मैं तेरे लिथे करूंगा। 39 तब सब लोग यरदन पार गए, और
राजा भी पार हुआ; तब राजा ने बजिल्लै को चूमकर आशीर्वाद दिया, और वह

अपके स्यान को लौट गया। 40 तब राजा गिल्गाल की ओर पार गया, और उसके
संग किम्हाम पार हुआ; और सब सहूदी लोगोंने और आधे इस्राएली लोगोंने राजा
को पार पहुंचाया। 41 तब सब इस्राएली पुरुष राजा के पास आए, और राजा से
कहने लगे, क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आए, और परिवार
समेत राजा को और उसके सब जनोंको भी यरदन पार ले आए हैं? 42 सब यहूदी
पुरुषोंने इस्राएली पुरुषोंको उत्तर दिया, कि कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का
है। तो तुम लोग इस बात से क्योंरूठ गए हो? क्या हम ने राजा का दिया हुआ कुछ
खाया है? वा उस ने हमें कुछ दान दिया है? 43 इस्राएली पुरुषोंने यहूदी पुरुषोंको
उत्तर दिया, राजा में दस अंश हमारे हैं; और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से
बड़ा है। तो फिर तुम ने हमें क्योंतुच्छ जाना? क्या अपके राजा के लौटा ले आने
की चर्चा पहिले हम ही ने न की यी? और यहूदी पुरुषोंने इस्राएली पुरुषोंसे अधिक
कड़ी बातें कहीं।

2 शमूएल 20

1 वहां संयोग से शेबा नाम एक बिन्यामीनी या, वह ओछा पुरुष बिक्री का पुत्र या;
वह नरसिंगा फूंककर कहने लगा, दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं, और न यिशै के
पुत्र में हमारा कोई भाग है; हे इस्राएलियो, अपके अपके डेरे को चले जाओ ! 2
इसलिथे सब इस्राएली पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के
पीछे हो लिए; परन्तु सब यहूदी पुरुष यरदन से यरूशलेम तक अपके राजा के
संग लगे रहे। 3 तब दाऊद यरूशलेम को अपके भवन में आया; और राजा ने उन
दस रखेलियोंको, जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया या, अलग एक

घर में रखा, और उनका पालन पोषण करता रहा, परन्तु उन से सहवास न
किया। इसलिथे वे अपक्की अपक्की मृत्यु के दिन तक विधवापन की सी दशा में
जीवित ही बन्द रही। 4 तब राजा ने अमासा से कहा, यहूदी पुरुषोंको तीन दिन के
भीतर मेरे पास बुला ला, और तू भी यहां उपस्यित रहना। 5 तब अमासा
यहूदियोंको बुलाने गया; परन्तु उसके ठहराए हुए समय से अधिक रह गया। 6
तब दाऊद ने अबीशै से कहा, अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम से भी हमारी
अधिक हानि करेगा; इसलिथे तू अपके प्रभु के लोगोंको लेकर उसका पीछा कर,
ऐसा न हो कि वह गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए। 7 तब योआब
के जन, और करेती और पकेती लोग, और सब शूरवीर उसके पीछे हो लिए; और
बिक्री के पुत्र शेबा का पीछे करने को यरूशलेम से निकले। 8 वे गिबोन में उस
भारी पत्यर के पास पहुंचे ही थे, कि अमासा उन से आ मिला। योआब तो योद्धा
का वस्त्र फेटे से कसे हुए या, और उस फेटे में एक तलवार उसकी कमर पर
अपक्की म्यान में बन्धी हुई यी; और जब वह चला, तब वह निकलकर गिर
पक्की। 9 तो योआब ने अमासा से पूछा, हे मेरे भाई, क्या तू कुशल से है? तब
योआब ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिथे उसकी दाढ़ी
पकड़ी। 10 परन्तु अमासा ने उस तलवार की कुछ चिन्ता न की जो याआब के
हाथ में यी; और उस ने उसे अमासा के पेट में भोंक दी, जिस से उसकी अन्तडियां
निकलकर धरती पर गिर पक्की, और उस ने उसको दूसरी बार न मारा; और वह
मर गया। तब योआब और उसका भाई अबीशै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने
को चले। 11 और उसके पास याआब का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा, जो
कोई योआब के पझ और दाऊद की ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले। 12

अमासा तो सड़क के मध्य अपके लोहू में लोट रहा या। तो जब उस मनुष्य ने
देखा कि सब लोग खड़े हो गए हैं, तब अमासा को सड़क पर से मैदान में उठा ले
गया, और जब देखा कि जितने उसके पास आते हैं वे खड़े हो जाते हैं, तब उस ने
उसके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया। 13 उसके सड़क पर से सरकाए जाने पर, सब
लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को योआब के पीछे हो लिए। 14 और वह
सब इस्राएली गोत्रें में होकर आबेल और बेतमाका और बेरियोंके देश तक पहुंचा;
और वे भी इकट्ठे होकर उसके पीछे हो लिए। 15 तब उन्होंने उसको बेतमाका के
आबेल में घेर लिया; और नगर के साम्हने ऐसा दमदमा बान्धा कि वह
शहरपनाह से सट गया; और योआब के संग के सब लोग शहरपनाह को गिराने के
लिथे धक्का देने लगे। 16 तब एक बुद्धिमान स्त्री ने नगर में से पुकारा, सुनो !
सुनो ! योआब से कहो, कि यहां आए, ताकि मैं उस से कुछ बातें करूं। 17 जब
योआब उसके निकट गया, तब स्त्री ने पूछा, क्या तू योआब है? उस ने कहा, हां, मैं
वही हूँ। फिर उस ने उस से कहा, अपक्की दासी के वचन सुन। उस ने कहा, मैं तो
सुन रहा हूँ। 18 वह कहने लगी, प्राचीनकाल में तो लोग कहा करते थे, कि आबेल
में पूछा जाए; और इस रीति फगड़े को निपटा देते थे। 19 मैं तो मेलमिलापवाले
और विश्वासयोग्य इस्राएलियोंमें से हूँ; परन्तु तू एक प्रधन नगर नाश करने का
यत्न करता है; तू यहोवा के भाग को क्योंनिगल जाएगा? 20 योआब ने उत्तर देकर
कहा, यह मुझ से दूर हो, दूर, कि मैं निगल जाऊं वा नाश करूं ! 21 बात ऐसी नहीं
है। शेबा नाम एप्रैम के पहाड़ी देश का एक पुरुष जो बिक्री का पुत्र है, उस ने दाऊद
राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है; तो तुम लोग केवल उसी को सौंप दो, तब मैं
नगर को छोड़कर चला जाऊंगा। स्त्री ने योआब से कहा, उसका सिर शहरपनाह

पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा। 22 तब स्त्री अपक्की बुद्धिमानी से सब लोगोंके
पास गई। तब उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के पास फेंक
दिया। तब योआब ने नरसिंगा फूंका, और सब लोग नगर के पास से अलग अलग
होकर अपके अपके डेरे को गए। और योआब यरूशलेम को राजा के पास लौट
गया। 23 योआब तो समस्त इस्राएली सेना के ऊपर प्रधान रहा; और यहोयादा का
मुत्र बनायाह करेतियोंऔर पकेतियोंके ऊपर या; 24 और अदोराम बेगारोंके ऊपर
या; और अहीलूद का पुत्र यहोशापात इतिहास का लेखक या; 25 और शया मंत्री
या; और सादोक और एब्यातार याजक थे; 26 और याईरी ईरा भी दाऊद का एक
मंत्री या।

2 शमूएल 21

1 दाऊद के दिनोंमें लगातार तीन बरस तक अकाल पड़ा; तो दाऊद ने यहोवा से
प्रार्यना की। यहोवा ने कहा, यह शाऊल और उसके खूनी घराने के कारण हुआ,
क्योंकि उस ने गिबोनियोंको मरवा डाला या। 2 तब राजा ने गिबोनियो को
बुलाकर उन से बातें कीं। गिबोनी लोग तो इस्राएलियोंमें से नहीं थे, वे बचे हुए
एमोरियो में से थे; और इस्राएलियोंने उनके साय शपय खाई यी, परन्तु शाऊल
को जो इस्राएलियोंऔर यहूदियोंके दिथे जलन हुई यी, इस से उस ने उन्हें मार
डासने के लिथे यत्न किया या। 3 तब दाऊद ने गिबोनियोंसे पूछा, मैं तुम्हारे लिथे
क्या करूं? और क्या करके ऐसा प्रायश्चित करूं, कि तुम यहोवा के निज भाग को
आशीर्वाद दे सको? 4 गिबोनियोंने उस से कहा, हमारे और शाऊल वा उसके घराने
के मध्य रुपके पैसे का कुछ फगड़ा नहीं; और न हमारा काम है कि किसी

इस्राएली को मार डालें। उस ने कहा, जो कुछ तुम कहो, वही मैं तुम्हारे लिथे
करूंगा। 5 उन्होंने राजा से कहा, जिस पुरुष ने हम को नाश कर दिया, और हमारे
विरुद्ध ऐसी युक्ति दी कि हम ऐसे सत्यानाश हो जाएं, कि इस्राएल के देश में आगे
को न रह सकें, 6 उसके वंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएं, और हम उन्हें
यहोवा के लिथे यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नाम बस्ती में फांसी देंगे।
राजा ने कहा, मैं उनको सौंप दूंगा। 7 परन्तु दाऊद ने और शाऊल के पुत्र योनातन
ने आपस में यहोवा की शपय खाई यी, इस कारण राजा ने योनातन के पुत्र
मपीबोशेत को जो शाऊल का पोता या बचा रखा। 8 परन्तु अमॉनी और
मपीबोशेत नाम, अय्या की बेटी रिस्पा के दोनोंपुत्र जो शाऊल से उत्पन्न हुए थे;
और हा ाऊल की बेटी मीकल के पांचोंबेटे, जो वह महोलवासी बजिल्लै के पुत्र
अद्रीएल की ओर से थे, इनको राजा ने पकड़वाकर 9 गिबोनियोंके हाथ सौंप दिया,
और उन्होंने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के साम्हने फांसी दी, और सातोंएक साय नाश
हुए। उनका मार डाला जाना तो कटनी के पहिले दिनोंमें, अर्यात् जब की कटनी के
आरम्भ में हुआ। 10 तब अय्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर, कटनी के आरम्भ
से लेकर जब तक आकाश से उन पर अत्यन्त वृष्टि न पक्की, तब तक चट्टान
पर उसे अपके नीचे बिछाथे रही; और न तो दिन में आकाश के पझियोंको, और न
रात में बनैले पशुओं को उन्हें छूने दिया। 11 जब अय्या की बीटी शाऊल की
रखेली रिस्पा के इस काम का समाचार आऊद को मिला, 12 तब दाऊद ने जाकर
शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियोंको गिलादी याबेश के लोगोंसे ले
लिया, जिन्होंने उन्हें बेतशान के उस चौक से चुरा लिया या, जहां पलिश्तियोंने
उन्हें उस दिन टांगा या, जब उन्होंने शाऊल को गिल्बो पहाड़ पर मार डाला या;

13 तो वह वहां से शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियोंको ले आया; और
फांयी पाए हुओं की हड्डियां भी इकट्ठी की गई। 14 और शाऊल और उसके पुत्र
योनातन की हड्डियां बिन्यामीन के देश के जेला में शाऊल के पिता कीश के
क़ब्रिस्तान गाड़ी गई; और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ। और
उसके बाद परमेश्वर ने देश के लिथे प्रार्य्ना सुन ली। 15 पलिश्तियोंने दस्राएल से
फिर युद्ध किया, और दाऊद अपके जनोंसमेत जाकर पलिश्तियोंसे लड़ने लगा;
परन्तु दाऊद यक गया। 16 तब यिशबोबनोब, जो रपाई के वंश का या, और
उसके भाले का फल तौल में तीन सौ शेकेल पीतल का या, और वह नई तलवार
बान्धे हुए या, उस ने दाऊद को मारने को ठाना। 17 परन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै
ने दाऊद की सहाथता करके उस पलिश्ती को एसा मारा कि वह मर गया। तब
दाऊद के जनोंने शपय खाकर उस से कहा, तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न
पाएगा, ऐसा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल का दिय बुफ जाए। 18 इसके बाद
पलिश्तियोंके साय गोब में फिर युद्ध हुआ; उस समय हूशाई सिब्बकै ने रपाईवंशी
सप को मारा। 19 और गोब में पलिश्तियोंके साय फिर युद्ध हुआ; उस में बेतलेहेम
वासी यारयोरगीम के पुत्र एल्हनान ने गती गोल्यत को मार डाला, जिसके बछें
की छड़ जोलाहे की डोंगी के समान यी। 20 फिर गत में भी युद्ध हुआ, और वहां
एक बड़ी डील का रपाईवंशी पुरुष या, जिसके एक एक हाथ पांव में, छः छः
उंगली, अर्यात् गिनती में चौबीस उंगलियां यीं। 21 जब उस ने इस्राएल को
ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र यहोनातान ने उसे मारा। 22 थे ही चार
गत में उस रपाई से उत्पन्न हुए थे; और वे दाऊद और उसके जनोंसे मार डाले
गए।

2 शमूएल 22

1 और जिस समय यहोवा ने दाऊद को उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से
बचाया था, तब उस ने यहोवा के लिथे इस गीत के वचन गाए; 2 उस ने कहा,
यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ानेवाला, 3 मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर
है, जिसका मैं शरणागत हूँ, मेरी ढाल, मेरा बचानेवाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़, और
मेरा शरणस्थान है, हे मेरे उद्धार कर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है। 4
मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा, और अपके शत्रुओं से बचाया
जाऊंगा। 5 मृत्यु के तरंगोंने तो मेरे चारोंओर घेरा डाला, नास्तिकपन की धाराओं
ने मुझ को घबड़ा दिया या; 6 अधोलोक की रस्सियां मेरे चारोंओर थीं, मृत्यु के
फन्दे मेरे साम्हने थे। 7 अपके संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा; और अपके
परमेश्वर के सम्मुख चिल्लाया। औंर उस ने मेरी बात को अपके मन्दिर में से सुन
लिया, और मेरी दोहाई उसके कानोंमें पहुंची। 8 तब पृथ्वी हिल गई और डोल
उठी; और आकाश की नेवें कांपकर बहुत ही हिल गई, क्योंकि वह अति क्रोधित
हुआ था। 9 उसके नयनोंसे धुंआ निकला, और उसके मुंह से आग निकलकर
भस्म करने लगी; जिस से कोयले दहक उठे। 10 और वह स्वर्ग को फुकाकर नीचे
उतर आया; और उसके पांवोंके तले घोर अंधकार छाया था। 11 और वह करूब
पर सवार होकर उड़ा, और पवन के पंखोंपर चढ़कर दिखाई दिया। 12 और उस ने
अपके चारोंओर के अंधिक्कारने को, मेघोंके समूह, और आकाश की काली घटाओं
को अपना मणडप बनाया। 13 उसके सम्मुख की फलक तो उसके आगे आगे थी,
आग के कोयले दहक उठे। 14 यहोवा आकाश में से गरजा, और परमप्रधान ने
अपक्की वाणी सुनाई। 15 उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को तितर बितर

कर दिया, और बिजली गिरा गिराकर उसको परास्त कर दिया। 16 तब समुद्र की
याह दिखाई देने लगी, और जगत की नेवें खुल गई, यह तो यहोवा की डांट से,
और उसके नयनोंकी सांस की फोंक से हुआ। 17 उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे
यांम लिया, और मुझे गहरे जल में से खींचकर बाहर निकाला। 18 उस ने मुझे
मेरे बलवन्त शत्रु से, और मेरे बैरियोंसे, जो मुझ से अधिक सामर्यी थे, मुझे छुड़ा
लिया। 19 उन्होंने मेरी विपत्ति के दिन मेरा साम्हना तो किया; परन्तु यहोवा मेरा
आश्रय या। 20 और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्यान में पहुंचाया; उस ने मुझ
को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न या। 21 यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के
अनुसार व्यवहार किया; मेरे कामोंकी शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे बदला दिया।
22 क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और अपके परमेश्वर से मुंह
मोड़कर दुष्ट न बना। 23 उसके सब नियम तो मेरे साम्हने बने रहे, और मैं उसकी
विधियोंसे हट न गया। 24 और मैं उसके साय खरा बना रहा, और अधर्म से अपके
को बचाए रहा, जिस में मेरे फंसने का डर या। 25 इसलिथे यहोवा ने मुझे मेरे धर्म
के अनुसार बदला दिया, मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता या। 26
दयावन्त के साय तू अपके को दयावन्त दिखाता; खरे पुरुष के साय तू अपके को
खरा दिखाता है; 27 शुद्ध के साय तू अपके को शुद्ध दिखाता; और टेढ़े के साय तू
तिरछा बनता है। 28 और दीन लोगोंको तो तू बचाता है, परन्तु अभिमानियोंपर
दृष्टि करके उन्हें नीचा करता है। 29 हे यहोवा, तू ही मेरा दीपक है, और यहोवा मेरे
अन्धिक्कारने को दूर करके उजियाला कर देता है। 30 तेरी सहाथता से मैं दल
पर धावा करता, अपके परमेश्वर की सहाथता से मैं शहरपनाह को फांद जाता हूँ।
31 ईश्वर की गति खरी है; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह अपके सब

शरणागतोंकी ढाल है। 32 यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है? हमारे परमेश्वर को
छोड़ क्या और कोई चट्टान है? 33 यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ क़िला है,
वह खरे मनुष्य को अपके मार्ग में लिए चलता है। 34 वह मेरे पैरोंको हरिणियोंके
से बना देता है, और मुझे ऊंचे स्यानोंपर खड़ा करता है। 35 वह मेरे हाथोंको युद्ध
करना सिखाता है, यहां तक कि मेरी बांहें पीतल के धनुष को फुका देती हैं। 36
और तू ने मुझ को अपके उद्धार की ढाल दी है, और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है। 37
तू मेरे पैरोंके लिथे स्यान चौड़ा करता है, और मेरे पैर नहीं फिसले। 38 मैं ने
अपके शत्रुओं का पीछा करके उन्हें सत्यानाश कर दिया, और जब तक उनका
अन्त न किया तब तक न लौटा। 39 और मैं ने उनका अन्त किया; और उन्हें
ऐसा छेद डाला है कि वे उठ नहीं सकते; वरन वे तो मेरे पांवोंके नीचे गिरे पके हैं।
40 और तू ने युद्ध के लिथे मेरी कमर बलवन्त की; और मेरे विरोधियोंको मेरे ही
साम्हने परास्त कर दिया। 41 और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखाई, ताकि
मैं अपके बैरियोंको काट डालूं। 42 उन्होंने बाट तो जोही, परन्तु कोई बचानेवाला
न मिला; उन्होंने यहोवा की भी बाट जोही, परन्तु उस ने उनको कोई उत्तर न
दिया। 43 तब मैं ने उनको कूट कूटकर भूमि की धूलि के समान कर दिया, मैं ने
उन्हें सड़कोंऔर गली कूचोंकी कीचड़ के समान पटककर चारोंओर फैला दिया।
44 फिर तू ने मुझे प्रजा के फगड़ोंसे छुड़ाकर अन्य जातियोंका प्रधान होने के लिथे
मेरी रझा की; जिन लोगोंको मैं न जानता या वे भी मेरे आधीन हो जाएंगे। 45
परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे; वे मेरा नाम सुनते ही मेरे वश में आएंगे। 46 परदेशी
मुर्फाएंगे, और अपके कोठोंमें से यरयराते हुए निकलेंगे। 47 यहोवा जीवित है;
मेरी चट्टान धन्य है, और परमेश्वर जो मेरे उद्धार की चट्टान है, उसकी महिमा

हो। 48 धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला ईश्वर, जो देश देश के लोगोंको मेरे वश में
कर देता है, 49 और मुझे मेरे शत्रुओं के बीच से निकालता है; हां, तू मुझे मेरे
विरोधियोंसे ऊंचा करता है, और उपद्रवी पुरुष से बचाता है। 50 इस कारण, हे
यहोवा, मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम का भजन
गाऊंगा। 51 वह अपके ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है, वह अपके
अभिषिक्त दाऊद, और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा।

2 शमूएल 23

1 दाऊद के अन्तिम वचन थे हैं : यिशै के पुत्र की यह वाणी है, उस पुरुष की वाणी
है जो ऊंचे पर खड़ा किया गया, और याकूब के परमेश्वर का अभिषिक्त, और
इस्राएल का मधुर भजन गानेवाला है: 2 यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला,
और उसी का वचन मेरे मुंह में आया। 3 इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है, इस्राएल
की चट्टान ने मुझ से बातें की है, कि मनुष्योंमें प्रभुता करनेवाला एक धर्मी होगा,
जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा, 4 वह मानो भोर का प्रकाश होगा
जब सूर्य निकलता है, ऐसा भोर जिस में बादल न हों, जैसा वर्षा के बाद निर्मल
प्रकाश के कारण भूमि से हरी हरी घास उगती है। 5 क्या मेरा घराना ईश्वर की
दृष्टि में ऐसा नहीं है? उस ने तो मेरे साय सदा की एक ऐसी वाचा बान्धी है, जो सब
बातोंमें ठीक की हुई और अटल भी है। क्योंकि चाहे वह उसको प्रगट न करे, तौभी
मेरा पूर्ण उद्धार और पूर्ण अभिलाषा का विषय वही है। 6 परन्तु ओछे लोग सब के
सब निकम्मी फाडिय़ोंके समान हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं जातीं; 7 और जो पुरुष
उनको छूए उसे लोहे और भाले की छड़ से सुसज्जित होना चाहिथे। इसलिथे वे

अपके ही स्यान में आग से भस्म कर दिए जाएंगे। 8 दाऊद के शूरवीरोंके नाम थे
हैं : अर्यात् तहकमोनी योश्शेब्यश्शेबेत, जो सरदारोंमें मुख्य या; वह एस्नी अदीनो
भी कहलाता या; जिस ने एक ही समय में आठ सौ पुरुष मार डाले। 9 उसके बाद
अहोही दोदै का पुत्र एलीआज़र या। वह उस समय दाऊद के संग के तीनोंवीरोंमें से
या, जब कि उन्होंने युद्ध के लिथे एकत्रित हुए पलिश्तियोंको ललकारा, और
इस्राएली पुरुष चले गए थे। 10 वह कमर बान्धकर पलिश्तियोंको तब तक मारता
रहा जब तक उसका हाथ यक न गया, और तलवार हाथ से चिपट न गई; और
उस दिन यहोवा ने बड़ी विजय कराई; और जो लोग उसके पीछे हो लिए वे केवल
लूटने ही के लिथे उसके पीछे हो लिए। 11 उसके बाद आगे नाम एक पहाड़ी का
पुत्र शम्मा या। पलिश्तियोंने इकट्ठे होकर एक स्यान में दल बान्धा, जहां मसूर
का एक खेत या; और लोग उनके डर के मारे भागे। 12 तब उस ने खेत के मध्य में
खड़े होकर उसे बचाया, और पलिश्तियोंको मार लिया; और यहोवा ने बड़ी विजय
दिलाई। 13 फिर तीसोंमुख्य सरदारोंमें से तीन जन कटनी के दिनोंमें दाऊद के
पास अदुल्लाम नाम गुफ़ा में आए, और पलिश्तियोंका दल रपाईम नाम तराई में
छावनी किए हुए या। 14 उस समय दाऊद गढ़ में या; और उस समय
पलिश्तियोंकी चौकी बेतलेहेम में यी। 15 तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साय
कहा, कौन मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा? 16 तो वे
तीनोंवीर पलिश्तियोंकी छावनी में टूट पके, और बेतलेहेम के फाटक के कुंए से
पानी भरके दाऊद के पास ले आए। परन्तु उस ने पीने से इनकार किया, और
यहोवा के साम्हने अर्ध करके उणडेला, 17 और कहा, हे यहोवा, मुझ से ऐसा काम
दूर रहे। क्या मैं उन मनुष्योंका लोहू पीऊं जो अपके प्राणोंपर खेलकर गए थे?

इसलिथे उस ने उस पानी को पीने से इनकार किया। इन तीन वीरोंने तो थे ही
काम किए। 18 और अबीशै जो सरूयाह के पुत्र योआब का भाई या, वह तीनोंसे
मुख्य या। उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला, और तीनोंमें नामी
हो गया। 19 क्या वह तीनोंसे अधिक प्रतिष्ठित न या? और इसी से वह उनका
प्रधान हो गया; परन्तु मुख्य तीनोंके पद को न पहुंचा। 20 फिर यहोयादा का पुत्र
बनायाह या, जो कबसेलवासी एक बड़े काम करनेवाले वीर का पुत्र या; उस ने
सिंह सरीखे दो मोआबियोंको मार डाला। और बर्फ के समय उस ने एक गड़हे में
उतरके एक सिंह को मार डाला। 21 फिर उस ने एक रूपवान् मिस्री पुरुष को मार
डाला। मिस्री तो हाथ में भाला लिए हुए या; परन्तु बनायाह एक लाठी ही लिए हुए
उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से भाला को छीनकर उसी के भाले से उसे
घात किया। 22 ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनोंवीरोंमें
नामी हो गया। 23 वह तीसोंसे अधिक प्रतिष्ठित तो या, परन्तु मुख्य तीनोंके पद
को न पहुंचा। उसको दाऊद ने अपक्की निज सभा का सभासद नियुक्त किया। 24
फिर तीसोंमें योआब का भाई असाहेल; बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान, 25
हेरोदी शम्मा, और एलीका, पेलेती हेलेस, 26 तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, 27
अनातोती अबीएज़ेर, हूशाई मबुन्ने, 28 अहोही सल्मोन, नतोपाही महरै, 29 एक
और नतोपाही बाना का पुत्र हेलेब, बिन्यामीनियोंके गिबा नगर के रीबै का पुत्र
हुत्तै, 30 पिरातोनी, बनायाह, गाश के नालोंके पास रहनेवाला हिद्दै, 31 अराबा का
अबीअल्बोन, बहूरीमी अजमावेत, 32 शालबोनी एल्यहबा, याशेन के वंश में से
योनातन, 33 पहाड़ी शम्मा, अरारी शारार का पुत्र अहीआम, 34 अहसबै का पुत्र
एलीपेलेत्त माका देश का, गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम, 35 कम्र्मेली हेस्रो,

अराबी पारै 36 सोबाई नातान का पुत्र यिगाल, गादी बानी, 37 अम्मोनी सेलेक,
बेरोती नहरै को सरूयाह के पुत्र योआब का हयियार ढोनेवाला या, 38 थेतेरी ईरा,
और गारेब, 39 और हित्ती ऊरिय्याह या: सब मिलाकर सैंतीस थे।

2 शमूएल 24

1 और यहोवा का कोप इस्राएलियोंपर फिर भड़का, और उस ने दाऊद को इनकी
हानि के लिथे यह कहकर उभारा, कि इस्राएल और यहूदा की गिनती ले। 2 सो
राजा ने योआब सेनापति से जो उसके पास या कहा, तू दान से बेशॅबा तक
रहनेवाले सब इस्राएली गोत्रें में इधर उधर घूम, और तुम लोग प्रजा की गिनती
लो, ताकि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है। 3 योआब ने राजा से कहा,
प्रजा के लोग कितने ही क्योंन हों, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको सौगुणा बढ़ा दे,
और मेरा प्रभु राजा इसे अपक्की आंखोंसे देखने भी पाए; परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे
राजा, यह बात तू क्योंचाहता है? 4 तौभी राजा की आज्ञा योआब और
सेनापतियोंपर प्रबल हुई। सो योआब और सेनापति राजा के सम्मुख से इस्राएली
प्रजा की गिनती लेने को निकल गए। 5 उन्होंने यरदन पार जाकर अरोएर नगर
की दाहिनी ओर डेरे खड़े किए, जो गाद के नाले के मध्य में और याजेर की ओर
है। 6 तब वे गिलाद में और तहतीम्होदशी नाम देश में गए, फिर दान्यान को गए,
और चक्कर लगाकर सीदोन में पहुंचे; 7 तब वे सोर नाम दृढ़ गढ़, और
हिब्बियोंऔर कनानियोंके सब नगरोंमें गए; और उन्होंने यहूदा देश की दक्खिन
दिशा में बेर्शेबा में दौरा निपटाया। 8 और सब देश में इधर उधर घूम घूमकर वे नौ
महीने और बीस दिन के बीतने पर यरूशलेम को आए। 9 तब योआब ने प्रजा की

गिनती का जोड़ राजा को सुनाया; और तलवार चलानेवाले योद्धा इस्राएल के तो
आठ लाख, और यहूदा के पांच नाख निकले। 10 प्रजा की गणना करने के बाद
दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद ने यहोवा से कहा, यह काम जो मैं ने
किया वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा, अपके दास का अधर्म दूर कर; क्योंकि
मुझ से बड़ी मूर्खता हुई है। 11 बिहान को जब दाऊद उठा, तब यहोवा का यह
वचन गाद नाम नबी के पास जो दाऊद का दशीं या पहुंचा, 12 कि जाकर दाऊद से
कह, कि यहोवा योंकहता है, कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूँ; उन में से
एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूं। 13 सो गाद ने दाऊद के पास जाकर
इसका समाचार दिया, और उस से पूछा, क्या तेरे देश में सात वर्ष का अकाल
पके? वा तीन महीने तक तेरे शत्रु तेरा पीछा करते रहें और तू उन से भागता रहे?
वा तेरे देश में तीन दिन तक मरी फैली रहे? अब सोच विचार कर, कि मैं अपके
भेजनेवाले को क्या उत्तर दूं। 14 दाऊद ने गाद से कहा, मै बड़े संकट में हूँ; हम
यहोवा के हाथ में पकें, क्योंकि उसकी दया बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मैं न
पड़ूंगा। 15 तब यहोवा इस्राएलियोंमें बिहान से ले ठहराए हुए समय तक मरी
फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाली प्रजा में से सत्तर हज़ार पुरुष
मर गए। 16 परन्तु जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ
बढ़ाया, तब यहोवा वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करनेवाले
दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच। और यहोवा का दूत उस समय
अरौना नाम एक यबूसी के खलिहान के पास या। 17 तो जब प्रजा का नाश
करनेवाला दूत दाऊद को दिखाई पड़ा, तब उस ने यहोवा से कहा, देख, पाप तो मैं
ही ने किया, और कुटिलता मैं ही ने की है; परन्तु इन भेड़ोंने क्या किया है? सो

तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो। 18 उसी दिन गाद ने दाऊद के
पास आकर उस से कहा, जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी
बनवा। 19 सो दाऊद यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहां
गया। 20 जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्मचारियो समेत अपक्की ओर आते
देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर मुह के बल गिर राजा को दण्डवत् की।
21 और अरौना ने कहा, मेरा प्रभु राजा अपके दास के पास क्योंपधारा है? आऊद
ने कहा, तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूँ, कि यहोवा की एक बेदी बनवाऊं,
इसलिथे कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर की जाए। 22 अरौनर ने दाऊद से कहा,
मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए; देख, होमबलि के लिथे
तो बैल हैं, और दांचने के हयियार, और बैलोंका सामान ईंधन का काम देंगे। 23
यह सब अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना ने राजा से कहा, तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझ से प्रसन्न होए। 24 राजा ने अरौना से कहा, ऐसा नहीं, मै थे वस्तुएं
तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा; मैं अपके परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के
होमबलि नहीं चढ़ाने का। सो दाऊद ने खलिहान और बैलोंको चांदी के पचास
शेकेल पें मोल लिया। 25 और दाऊद ने वहां यहोवा की एक बेदी बनवाकर
होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और यहोवा ने देश के निमित्त बिनती सुन ली, तब
वह व्याधि इस्राएल पर से दूर हो गई।

1 राजा 1

1 दाऊद राजा बूढा वरन बहुत पुरनिया हुआ; और यद्यपि उसको कपके ओढ़ाथे
जाते थे, तौभी वह गर्म न होता या। 2 सो उसके कर्मचारियोंने उस से कहा, हमारे

प्रभु राजा के लिथे कोई जवान कुंवारी ढूंढ़ी जाए, जो राजा के सम्मुख रहकर
उसकी सेवा किया करे और तेरे पास लेटा करे, कि हमारे प्रभु राजा को गर्मी
पहुंचे। 3 तब उन्होंने समस्त इस्राएली देश में सुन्दर कुंवारी ढूंढ़ते ढूंढ़ते अबीशग
नाम एक शूनेमिन को पाया, और राजा के पास ले आए। 4 वह कन्या बहुत ही
सुन्दर यी; और वह राजा की दासी होकर उसकी सेवा करती रही; परन्तु राजा उस
से सहबास न हुआ। 5 तब हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सिर ऊंचा करके कहने
लगा कि मैं राजा हूंगा; सो उस ने रय और सवार और अपके आगे आगे दौड़ने को
पचास पुरुष रख लिए। 6 उसके पिता ने तो जन्म से लेकर उसे कभी यह कहकर
उदास न किया या कि तू ने ऐसा क्योंकिया। वह बहुत रूपवान या, और
अबशालोम के पीछे उसका जन्म हुआ या। 7 और उस ने सरूयाह के पुत्र योआब
से और एब्यातार याजक से बातचीत की, और उन्होंने उसके पीछे होकर उसकी
सहाथता की। 8 परन्तु सादोक याजक यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान नबी,
शिमी रेई, और दाऊद के शूरवीरोंने अदोनिय्याह का साय न दिया। 9 और
अदोनिय्याह ने जोहेलेत नाम पत्थ्र के पास जो एनरोगेल के निकट है, भेड़-बैल
और तैयार किए हुए पशू बलि किए, और अपके भाई सब राजकुमारोंको, और
राजा के सब यहूदी कर्मचारियोंको बुला लिया। 10 परन्तु नातान नबी, और
बनायाह और शूरवीरोंको और अपके भाई सुलैमान को उस ने न बुलाया। 11 तब
नातान ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा, क्या तू ने सुना है कि हग्गीत का
पुत्र अदोनिय्याह राजा बन बैठा है और हमारा प्रभु दाऊद हसे नहीं जानता? 12
इसलिथे अब आ, मैं तुझे ऐसी सम्मति देता हूँ, जिस से तू अपना और अपके पुत्र
सुलैमान का प्राण बचाए। 13 तू दाऊद राजा के पास जाकर, उस से योंपूछ, कि हे

मेरे प्रभु ! हे राजा ! क्या तू ने शपय खाकर अपक्की दासी से नहीं कहा, कि तेरा
पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरी राजगद्दी पर विराजेगा? फिर
अदोनिय्याह क्योंराजा बन बैठा है? 14 और जब तू वहां राजा से ऐसी बातें करती
रहेगी, तब मैं तेरे पीछे आकर, तेरी बातोंको पुष्ट करूंगा। 15 तब बतशेबा राजा के
पास कोठरी में गई; राजा तो बहुत बूढ़ा या, और उसकी सेवा टहल शूनेमिन
अबीशग करती यी। 16 और बतशेबा ने फुककर राजा को दणडवत् की, और राजा
ने पूछा, तू क्या चाहती है? 17 उस ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, तू ने तो अपके
परमेश्वर यहोवा की शपय खाकर अपक्की दासी से कहा या कि तेरा पुत्र सुलैमान
मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। 18 अब देख अदोनिय्याह
राजा बन बैठा है, और अब तक मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता। 19 और उस ने
बहुत से बैल तैयार किए, पशु और भेड़ें बलि कीं, और सब राजकुमारोंकी और
एब्यातार याजक और योआब सेनापति को बुलाया है, परन्तु तेरे दास सुलैमान
को नहीं बुलाया। 20 और हे मेरे प्रभु ! जे राजा ! सब इसाएली तुझे ताक रहे हैं कि
तू उन से कहे, कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उसके पीछे कौन बैठेगा। 21 नहीं
तो जब हमारा प्रभु राजा, अपके पुरखाओं के संग सोएगा, तब मैं और मेरा पुत्र
सुलैमान दोनोंअपराधी गिने जाएंगे। 22 योंबतशेबा राजा से बातें कर ही रही यी,
कि नातान नबी भी आ गया। 23 और राजा से कहा गया कि नातान नबी हाज़िर
है; तब वह राजा के सम्मुख आया, और मुह के बल गिरकर राजा को दणडवत्
की। 24 और नातान कहने लगा, हे मेरे पभु, हे राजा ! क्या तू ने कहा है, कि
अदोनिय्याह मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा? 25 देख उस ने
आज नीचे जाकर बहुत से बैल, तैयार किए हुए पशु और भेड़ें बलि की हैं, और सब

राजकुमारोंऔर सेनापतियोंको और एब्यातार याजक को भी बुलालिया है; और वे
उसके सम्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं कि अदोनिय्याह राजा जीवित रहे। 26
परन्तु मुझ तेरे दास को, और सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह, और
तेरे दास सुलैमान को उस ने नहीं बुलाया। 27 क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से
हुआ? तू ने तो अपके दास को यह नहीं जताया है, कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन
उसके पीछे विराजेगा। 28 दाऊद राजा ने कहा, बतशेबा को मेरे पास बुला लाओ।
तब वह राजा के पास आकर उसके साम्हने खड़ी हुई। 29 राजा ने शपय खाकर
कहा, यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमोंसे बचाता आया है, 30 उसके जीवन की
शपय, जैसा मैं ने तुझ से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपय खाकर कहा या,
कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर
विराजेगा, वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूंगा। 31 तब बतशेबा ने भूमि पर
मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक
जीवित रहे ! 32 तब दाऊद राजा ने कहा, मेरे पास सादोक याजक नातान नबी,
अहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ। सो वे राजा के साम्हने आए। 33 राजा
ने उन से कहा, अपके प्रभु के कर्मचारियो को साय लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे
निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गीहोन को ले जाओ; 34 और वहां सादोक याजक
और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें; तुब तुम सब
नरसिंगा फूंककर कहना, राजा सुलैमान जीवित रहे। 35 और तुम उसके पीछे
पीछे इधर आना, और वह ाकर मेरे सिंहासन पर विराजे, क्योंकि मेरे बदले में
वही राजा होगा; और उसी को मैं ने इस्राएल और यहूदा का प्रधान होने को
ठहराया है। 36 तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा, आमीन ! मेरे प्रभु राजा का

परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे। 37 जिस रीति यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा,
उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे, और उसका राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के
राज्य से भी अधिक बढ़ाए। 38 तब सादोक याजक और नातान नबी और
यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियोंऔर पकेतियोंको संग लिए हुए नीचे गए, और
सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले चले। 39 तब
सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला, और
सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे नरसिंगे फूंकने लगे; और सब लोग बोल
उठे, राजा सुलैमान जीविन रहे। 40 तब सब लोग उसके पीछे पीछे बांसुली बजाते
और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल
उठी। 41 जब अदोनिय्याह और उसके सब नेवतहरी खा चुके थे, तब यह ध्वनि
उनको सुनाई पक्की। और योआब ने नरसिंगे का शब्द सुनकर पूछा, नगर में
हलचल और चिल्लाहट का शब्द क्योंहो रहा है? 42 वह यह कहता ही या, कि
एब्यातार याजक का पुत्र योनातन आया और अदोनिय्याह ने उस से कहा, भीतर
आ; तू तो भला मनुष्य है, और भला समाचार भी लाया होगा। 43 योनातन ने
अदोनिय्याह से कहा, सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना
दिया। 44 और राजा ने सादोक याजक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र
बनायाह और करेतियोंऔर पकेतियोंको उसके संग भेज दिया, और उन्होंने
उसको राजा के खच्चर पर चढ़ाया है। 45 और सादोक याजक, और नातान नबी
ने गीहोन में उसका राज्याभिषेक किया है; और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए
ऊपर गए हैं कि नगर में हलचल मच गई, और जो शब्द तुम को सुनाई पड़ रहा है
वही है। 46 सुलैमान राजगद्दी पर विराज भी रहा है। 47 फिर राजा के कर्मचारी

हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आए, कि तेरा परमेश्वर,
सुलैमान का नाम, तेरे नाम से भी महान करे, और उसका राज्य तेरे राज्य से भी
अधिक बढ़ाए; और राजा ने अपके पलंग पर दणडवत् की। 48 फिर राजा ने यह
भी कहा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने आज मेरे देखते एक
को मेरी गद्दी पर विराजमान किया है। 49 तब जितने नेवतहरी अदोनिय्याह के
संग थे वे सब थरथरा गए, और उठकर अपना अपना मार्ग लिया। 50 और
अदोनिय्याह सुलैमान से डर कर अठा, और जाकर वेदी के सींगोंको पकड़ लिया।
51 तब सुलैमान को यह समाचार मिला कि अदोनिय्याह सुलैमान राजा से ऐसा
डर गया है कि उस ने वेदी के सींगोंको यह कहकर पकड़ लिया है, कि आज राजा
सुलैमान शपय खाए कि अपके दास को तलवार से न मार डालेगा। 52 सुलैमान ने
कहा, यदि वह भलमनसी दिखाए तो उसका एक बाल भी भूमि पर गिरने न
पाएगा, परन्तु यदि उस में दुष्टता पाई जाए, तो वह मारा जाएगा। 53 तब राजा
सुलैमान ने लोगोंको भेज दिया जो उसको वेदी के पास से उतार ले आए तब उस
ने आकर राजा सुलैमान को दणडवत् की और सुलैेमान ने उस से कहा, अपके
घर चला जा।

1 राजा 2

1 जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तब उस ने अपके पुत्र सुलैमान से
कहा, 2 कि मैं लोक की रीति पर कूच करनेवाला हूँ इसलिथे तू हियाब बांधकर
पुरुषार्य दिखा। 3 और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रझा
करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्या में लिखा है, वैसा

ही उसकी विधियोंतया आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियोंका पालन करते
रहना; जिस से जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू जाए, उस में तू सफल होए; 4
और यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उस ने मेरे विषय में कहा या, कि यदि
तेरी सन्तान अपक्की चाल के विषय में ऐसे सावधान रहें, कि अपके सम्पूर्ण
हृदय और सम्पूर्ण प्राण से सच्चाई के साय नित मेरे सम्मुख चलते रहें तब तो
इस्राएल की राजगद्दी पर विराजनेवाले की, तेरे कुल परिवार में घटी कभी न
होगी। 5 फिर तू स्वयं जानता है, कि सरूयाह के पुत्र योआब ने मुझ से क्या क्या
किया ! अर्यात् उस ने नेर के पुत्र अब्नेर, और थेतेर के पुत्र अमासा, इस्राएल के
इन दो सेनापतियोंसे क्या क्या किया। उस ने उन दोनोंको घात किया, और मेल
के सपय युद्ध का लोहू बहाकर उस से अपक्की कमर का कमरबन्द और अपके
पावोंकी जूतियां भिगो दीं। 6 इसलिथे तू अपक्की बुद्धि से काम लेना और उस
पक्के बालवाले को अधोलोक में शांति से उतरने न देना। 7 फिर गिलादी बजिल्लै
के पुत्रोंपर कृपा रखना, और वे तेरी मेज पर खानेवालोंमें रहें, क्योंकि जब मैं तेरे
भाई अबशालोम के साम्हने से भागा जा रहा या, तब उन्होंने मेरे पास आकर वैसा
ही किया या। 8 फिर सुन, तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहूरीमी शिमी रहता
है, जिस दिन मैं महनैम को जाता या उस दिन उस ने मुझे कड़ाई से शाप दिया या
पर जब वह मेरी भेंट के लिथे यरदन को आया, तब मैं ने उस से यहोवा की यह
शपय खाई, कि मैं तु ुफे तलवार से न मार डालूंगा। 9 परन्तु अब तू इसे निदॉष
न ठहराना, तू तो बुद्धिमान पुरुष है; तुझे मालूम होगा कि उसके साय क्या करना
चाहिथे, और उस पक्के बालवाले का लोहू बहाकर उसे अधोलोक में उतार देना।
10 तब दाऊद अपके पुरखाओं के संग सो गया और दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी

गई। 11 दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष राज्य किया, सात वर्ष तो उस ने हब्रोन
में और तैंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया या। 12 तब सुलैमान अपके पिता
दाऊद की गद्दी पर विराजमान हुआ और उसका राज्य बहुत दृढ़ हुआ। 13 और
हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह, सुलैमान की माता बतशेबा के पास आया, और
बतशेबा ने पूछा, क्या तू मित्रभाव से आता है? 14 उस ने उत्तर दिया, हां, मित्रभाव
से ! फिर वह कहने लगा, मुझे तुझ से एक बात कहनी है। उस ने कहा, कह ! 15
उस ने कहा, तुझे तो मालूम है कि राज्य मेरा हो गया या, और समस्त इस्राएली
मेरी ओर मुंह किए थे, कि मैं राज्य करूं; परन्तु अब राज्य पलटकर मेरे भाई का
हो गया है, क्योंकि वह यहोवा की ओर से उसको मिला है। 16 इसलिथे अब मैं
तुझ से एक बात मांगता हूँ, मुझ से नाही न करना उस ने कहा, कहे जा। 17 उस
ने कहा, राजा सुलैमान तुझ से नाही न करेगा; इसलिथे उस से कह, कि वह मुझे
शूनेमिन अबीशग को ब्याह दे। 18 बतशेबा ने कहा, अच्छा, मैं तेरे लिथे राजा से
कहूंगी। 19 तब बतशेबा अदोनिय्याह के लिथे राजा सुलैमान से बातचीत करने
को उसके पास गई, और राजा उसकी भेंट के लिथे उठा, और उसे दण्डवत् करके
अपके सिंहासन पर बैठ गया: फिर राजा ने अपक्की माता के लिथे एक सिंहासन
रख दिया, और वह उसकी दाहिनी ओर बैठ गई। 20 तब वह कहने लगी, मैं तुझ
से एक छोटा सा वरदान मांगती हूँ इसलिथे पुफ से नाही न करना, राजा ने कहा,
हे माता मांग; मैं तुझ से नाही न करूंगा। 21 उस ने कहा, वह शूनेमिन अबीशग
तेरे भाई अदोनिय्याह को ब्याह दी जाए। 22 राजा सुलैमान ने अपक्की माता को
उत्तर दिया, तू अदोनिय्याह के लिथे शूनेमिन अबीशग ही को क्यो मांगती है?
उसके लिथे राज्य भी मांग, क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है, और उसी के लिथे

क्या ! एब्यातार याजक और सरूयाह के पुत्र योआब के लिथे भी मांग। 23 और
राजा सुलैमान ने यहोवा की शपय खाकर कहा, यदि अदोनिय्याह ने यह बात
अपके प्राण पर खेलकर न कही हो तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही क्या वरन उस से
भी अधिक करे। 24 अब यहोवा जिस ने पुफे स्यिर किया, और मेरे पिता दाऊद
की राजगद्दी पर विराजमान किया है और अपके वचन के अनुसार मेरे घर बसाया
है, उसके जीपन की शपय आज ही अदोनिय्याह मार डाला जाएगा। 25 और राजा
सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेज दिया और उस ने जाकर, उसको
ऐसा मारा कि वह मर गया। 26 और एब्यातार याजक से राजा ने कहा, अनातोत
में अपक्की भूमि को जा; क्योंकि तू भी प्राणदणड के योग्य है। आज के दिन तो मैं
तुझे न मार डालूंगा, क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के साम्हने प्रभु यहोवा का सन्दूक
उठाया करता या; और उन सब दु:खोंमें जो मेरे पिता पर पके थे तू भी दु:खी या।
27 और सुलैमान ने एब्यातार को यहोवा के याजक होने के पद से उतार दिया,
इसलिथे कि जो वचन यहोवा ने एली के वंश के विषय में शीलो में कहा या, वह
पूरा हो जाए। 28 इसका समाचार योआब तक पहुंचा; योआब अबशालोम के पीछे
तो नहीं हो लिया या, परन्तु अदोनिय्याह के पीछे हो लिया या। तब योआब
यहोवा के तम्बू को भाग गया, और वेदी के सींगोंको पकड़ लिया। 29 जब राजा
सुलैमान को यह समाचार मिला, कि योआब यहोवा के तम्बू को भाग गया है,
और वह वेदी के पास है, तब सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को यह कहकर
भेज दिया, कि तू जाकर उसे मार डाल। 30 तब बनायाह ने यहोवा के तम्बू के
पास जाकर उससे कहा, राजा की यह आज्ञा है, कि निकल आ। उस ने कहा, नहीं,
मैं यहीं मर जाऊंगा। तब बनायाह ने लौटकर यह सन्देश राजा को दिया कि

योआब ने मुझे यह उत्तर दिया। 31 राजा ने उस से कहा, उसके कहने के अनुसार
उसको मार डाल, और उसे मिट्टी दे; ऐसा करके निर्दोषोंका जो खून योआब ने
किया है, उसका दोष तू मुझ पर से और मेरे पिता के घराने पर से दूर करेगा। 32
और यहोवा उसके सिर वह खून लौटा देगा क्योंकि उस ने मेरे पिता दाऊद के
बिना जाने अपके से अधिक धर्मी और भले दो पुरुषोंपर, अर्यात् इस्राएल के प्रधान
सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर और यहूदा के प्रधान सेनापति थेतेर के पुत्र अमासा
पर टूटकर उनको तलवार से मार डाला या। 33 योंयोआब के सिर पर और उसकी
सन्तान के सिर पर खून सदा तक रहेगा, परन्तु दाऊद और उसके वंश और
उसके घराने और उसके राज्य पर यहोवा की ओर से शांति सदैव तक रहेगी। 34
तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला; और उसको जंगल
में उसी के घर में मिट्टी दी गई। 35 तब राजा ने उसके स्यान पर यहोयादा के पुत्र
बनायाह को प्रधान सेनापति ठहराया; और एब्यातार के स्यान पर सादोक याजक
को ठहराया। 36 और राजा ने शिमी को बुलवा भेजा, और उस से कहा, तू
यरूशलेम में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना: और नगर से बाहर कहीं न
जाना। 37 तू निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर किद्रोन नाले के पार
उतरे, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा, और तेरा लोहू तेरे ही सिर पर
पकेगा। 38 शिमी ने राजा से कहा, बात अच्छी है; जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है,
वैसा ही तेरा दास करेगा। तब शिमी बहुत दिन यरूशलेम में रहा। 39 परन्तु तीन
वर्ष के व्यतीत होने पर शिमी के दो दास, गत नगर के राजा माका के पुत्र आकीश
के पास भाग गए, और शिमी को यह समाचार मिला, कि तेरे दास गत में हैं। 40
तब शिमी उठकर अपके गदहे पर काठी कसकर, अपके दास को ढूंढ़ने के लिथे

गत को आकीश के पास गया, और अपके दासोंको गत से ले आया। 41 जब
सुलैमान राजा को इसका समाचार मिला, कि शिमी यरूशलेम से गत को गया,
और फिर लौट आया है, 42 तब उस ने शिमी को बुलवा भेजा, और उस से कहा,
क्या मैं ने तुझे यहोवा की शपय न खिलाई यी? और तुझ से चिताकर न कहा या,
कि यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए, उसी दिन तू
नि:सन्देह मार डाला जाएगा? और क्या तू ने मुझ से न कहा या, कि जो बात मैं ने
सुनी, वह अच्छी है? 43 फिर तू ने यहोवा की शपय और मेरी दृढ़ आज्ञा क्योंनहीं
मानी? 44 और राजा ने शिमी से कहा, कि तू आप ही अपके मन में उस सब दुष्टता
को जानता है, जो तू ने मेरे पिता दाऊद से की यी? इसलिथे यहोवा तेरे सिर पर
तेरी दुष्टता लौटा देगा। 45 परन्तु राजा सुलैमान धन्य रहेगा, और दाऊद का
राज्य यहोवा के साम्हने सदैव दृढ़ रहेगा। 46 तब राजा ने यहोयादा के पुत्र
बनायाह को आज्ञा दी, और उस ने बाहर जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह भी मर
गया। और सुलैमान के हाथ मे राज्य दृढ़ हो गया।

1 राजा 3

1 फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फ़िरौन की बेटी को ब्याह कर उसका दामाद
बन गया, और उसको दाऊदपुर में लाकर जब नक अपना भवन और यहोवा का
भवन और यरूशलेम के चारोंओर की शहरपनाह न बनवा चुका, तब तक उसको
वहीं रखा। 2 क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊंचे स्यानोंपर बलि चढ़ाते थे और उन
दिनोंतक यहोवा के नाम का कोई भपन नहीं बना या। 3 सुलैमान यहोवा से प्रेम
रखता या और अपके पिता दाऊद की विधियोंपर चलता तो रहा, परन्तु वह ऊंचे

स्यानोंपर भी बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता या। 4 और राजा गिबोन को
बलि चढ़ाने गया, क्योंकि मुख्य ऊंचा स्यान वही या, तब वहां की वेदी पर
सुलैमान ने एक हज़ार होमबलि चढ़ाए। 5 गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के
द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग। 6
सुलैमान ने कहा, तू अपके दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा,
क्योंकि वह अपके को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साय सच्चाई और धर्म और
मनकी सीधाई से चलता रहा; और तू ने यहां तक उस पर करुणा की यी कि उसे
उसकी गद्दी पर बिराजनेवाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है। 7 और
अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा ! तूने अपके दास को मेरे पिता दाऊद के स्यान पर
राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं
जानता। 8 फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगोंके मध्य में है,
जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो सकती। 9 तू अपके दास को अपक्की
प्रजा का न्याय करने के लिथे समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख
सकूं; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके? 10 इस
बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा वरदान मांगा है। 11 तब परमेश्वर
ने उस से कहा, इसलिथे कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्धयु और न
धन और न अपके शत्रुओं का नाश मांगा है, परन्तु सपफने के विवेक का वरदान
मांगा है इसलिथे सुन, 12 मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूँ, तुझे बुद्धि और विवेक
से भरा मन देता हूँ, यहा तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ,
और न बाद में कोई कभी होगा। 13 फिर जो तू ने नहीं मांगा, अर्यात् धन और
महिमा, वह भी मैं तुझे यहां तक देता हूँ, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य

न होगा। 14 फिर यदि तू अपके पिता दाऊद की नाई मेरे मार्गों में चलता हुआ,
मेरी विधियोंऔर आज्ञाओं को मानता रहेगा तो मैं तेरी आयु को बढ़ाऊंगा। 15
तब सुलैमान जाग उठा; और देखा कि यह स्वप्न या; फिर वह यरूशलेम को
गया, और यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने खड़ा होकर, होमबलि और
मेलबलि चढ़ाए, और अपके सब कर्मचारियोंके लिथे जेवनार की। 16 उस समय
दो वेश्याएं राजा के पास आकर उसके सम्मुख खड़ी हुई। 17 उन में से एक स्त्री
कहने लगी, हे मेरे प्रभु ! मैं और यह स्त्री दोनोंएक ही घर में रहती हैं; और इसके
संग घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ। 18 फिर मेरे ज़च्चा के तीन दिन के बाद
ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी जच्चा हो गई; हम तो संग ही संग यीं, हम दोनोंको
छोड़कर घर में और कोई भी न या। 19 और रात में इस स्त्री का बालक इसके नीचे
दबकर मर गया। 20 तब इस ने आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो ही रही
यी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपक्की छाती में रखा, और अपना मरा
हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया। 21 भोर को जब मैं अपना बालक दूध
पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया; परन्तु भोर को मैं ने ध्यान से यह देखा,
कि वह मेरा पुत्र नही है। 22 तब दूसरी स्त्री ने कहा, नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और
मरा पुत्र तेरा है। परन्तु वह कहती रही, नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित
मेरा पुत्र है, योंवे राजा के साम्हने बातें करती रही। 23 राजा ने कहा, एक तो
कहती है जो जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ तेरा पुत्र है; और दूसरी
कहती है, नहीं, जो मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है, वह मेरा पुत्र है। 24
फिर राजा ने कहा, मेरे पास तलवार ले आओ; सो एक तलवार राजा के साम्हने
लाई गई। 25 तब राजा बोला, जीविते बालक को दो टुकड़े करके आधा इसको

और आधा उसको दो। 26 तब जीवित बालक की माता का मन अपके बेटे के
स्नेह से भर आया, और उस ने राजा से कहा, हे मेरे प्रभु ! जीवित बालक उसी को
दे; परन्तु उसको किसी भांति न मार। दूसरी स्त्री ने कहा, वह न तो मेरा हो और न
तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए। 27 तब राजा ने कहा, पहिली को जीवित बालक
दो; किसी भांति उसको न पारो; क्योंकि उसकी माता वही है। 28 जो न्याय राजा
ने चुकाया या, उसका समाचार समस्त इस्राएल को मिला, और उन्होंने राजा का
भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिथे
परमेश्वर की बुद्धि है।

1 राजा 4

1 राजा सुलैमान तो समस्त इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त हुआ या। 2 और उसके
हाकिम थे थे, अर्यात् सादोक का पुत्र अजर्याह याजक, और शीशा के पुत्र
एलीहोरोप और अहिय्याह व्रधान मंत्री थे। 3 अहीलूद का पुत्र यहोशापात,
इतिहास का लेखक या। 4 फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह प्रधान सेनापति या,
और सादोक और एब्यातार याजक थे ! 5 और नातान का पुत्र अजर्याह
भणडारियोंके ऊपर या, और नातान का पुत्र जाबूद याजक, और राजा का मित्र भी
या। 6 और अहीशार राजपरिवार के ऊपर या, और अब्दा का पुत्र अदोनीराम
बेगारोंके ऊपर मुखिया या। 7 और सुलैमान के बारह भणडारी थे, जो समस्त
इस्राएलियोंके अधिक्कारनी होकर राजा और उसके घराने के लिथे भोजन का
प्रबन्ध करते थे। एक एक पुरुष प्रति वर्ष अपके अपके नियुक्त महीने में प्रबन्ध
करता या। 8 और उनके नाम थे थे, अर्यात् एप्रैम के पहाड़ी अेश में बेन्हूर। 9 और

माकस, शाल्बीम बेतशेमेश और एलोनबेयानान में बेन्देकेर या। 10 अरुब्बोत में
बेन्हेसेद जिसके अधिक्कारने में सौको और हेपेर का समस्त देश या। 11 दोर के
समस्त ऊंचे देश में बेनबीनादाब जिसकी स्त्री सुलैमान की बेटी नापत यी। 12
और अहीलूद का पुत्र बाना जिसके अधिक्कारने में तानाक, मगिद्दो और बेतशान
का वह सब देश या, जो सारतान के पास और यिज्रेल के नीचे और प्रेतशान से ले
आबेलमहोला तक अर्यात् योकमाम की परली ओर तक है। 13 और गिला के
रामोत में बेनगेबेर या, जिसके अधिक्कारने में मनश्शेई याईर के गिलाद के गांव
थे, अर्यात् इसी के अधिक्कारने में बाशान के अगॉब का देश या, जिस में
शहरपनाह और पीतल के बेड़ेवाले साठ बड़े बड़े नगर थे। 14 और इद्दा के पुत्र
अहीनादाब के हाथ में महनैम या। 15 नप्ताली में अहीमास या, जिस ने सुलैमान
की बासमत नाम बेटी को ब्याह लिया या। 16 और आशेर और आलोत में हूशै का
पुत्र बाना, 17 इस्साकार में पारुह का पुत्र यहोशापात, 18 और बिन्यामीन में एला
का पुत्र शिमी या। 19 ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद में अर्यात् एमोरियोंके राजा
सीहान और बाशान के राजा ओग के देश में या, इस समस्त देश में वही भणडारी
या। 20 यहूदा और इस्राएल के लोग बहुत थे, वे समुद्र के तीर पर की बालू के
किनकोंके समान बहुत थे, और खाते-पीते और आनन्द करते रहे। 21 सुलैमान
तो महानद से लेकर पलिश्तियोंके देश, और मिस्र के सिवाने तक के सब राज्योंके
ऊपर प्रभुता करता या और अनके लोग सुलैमान के जीवत भर भेंट लाते, और
उसके अधीन रहते थे। 22 और सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठता
या, अर्यात् तीस कोर मैदा, 23 साठ कोर आटा, दस तैयार किए हुए बैल और
चराइयोंमें से बीस बैल और सौ भेड़-बकरी और इनको छोड़ 24 हरिन, चिकारे,

यखमूर और तैयार किए हुए पक्की क्योंकि महानद के इस पार के समस्त देश
पर अर्यात् तिप्सह से लेकर अज्जा तक जितने राजा थे, उन सभोंपर सुलैमान
प्रभुता करता, और अपके चारोंओर के सब रहनेवालोंसे मेल रखता या। 25 और
दान से बेर्शबा तक के सब यहूदी और इस्राएली अपक्की अपक्की दाखलता और
अंजीर के वृझ तले सुलैमान के जीवन भर निडर रहते थे। 26 फिर उसके रय के
घोड़ोंके लिथे सुलैमान के चालीस हज़ार यान थे, और उसके बारह हज़ार सवार थे।
27 और वे भणडारी अपके अपके महीने में राजा सुलैमान के लिथे और जितने
उसकी मेज़ पर आते थे, उन सभोंके लिथे भोजन का प्रबन्ध करते थे, किसी वस्तु
की घटी होने नहीं पाती यी। 28 और घोड़ोंऔर वेग चलनेवाले घोड़ोंके लिथे जव
और पुआल जहां प्रयोजन पड़ता या वहां आज्ञा के अनुसार एक एक जन पहुंचाया
करता या। 29 और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही
बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की बरलू के किनकोंके तुल्य अनगिनित
गुण दिए। 30 और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियोंऔर मिस्रियोंकी
भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि यी। 31 वह तो और सब मनुष्योंसे वरन एतान, एज्रेही
और हेमान, और माहोल के पुत्र कलकोल, और दर्दा से भी अधिक बुद्धिमान या:
और उसकी कीत्तिर् चारोंओर की सब जातियोंमें फैल गई। 32 उस ने तीन हज़ार
नीतिवचन कहे, और उसके एक हज़ार पांच गीत भी है। 33 फिर उस ने लबानोन
के देवदारुओं से लेकर भीत में से उगते हु जूफा तक के सब पेड़ोंकी चर्चा और
पशुओं पझियोंऔर रेंगनेवाले जन्तुओं और मछलियोंकी चर्चा की। 34 और देश
देश के लोग पृय्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की
कीत्तिर् सुनी यी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे।

1 राजा 5

1 और सोर नगर के हीराम राजा ने अपके दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योंकि उस
ने सुना या, कि वह अभिषिक्त होकर अपके पिता के स्यान पर राजा हुआ है : और
दाऊद के जीवन भर हीराम उसका मित्र बना रहा। 2 और सुलैमान ने हीराम के
पास योंकहला भेजा, कि नुफे मालूम है, 3 कि मेरा पिता दाऊद अपके परमेश्वर
यहोवा के नाम का एक भवन इसलिथे न बनवा सका कि वह चारोंओर लड़ाइयोंमें
तब तक बफा रहा, जब नक यहोवा ने उसके शत्रुओं को उसके पांव तल न कर
दिया। 4 परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारोंओर से विश्रम दिया है और
न तो कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख पड़ती है। 5 मैं ने अपके परमेश्वर
यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है अर्यात् उस बान के अनुसार जो
यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही यी; कि तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्यान में गद्दी पर
बैठाऊंगा, वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा। 6 इसलिथे अब तू मेरे लिथे
लबानोन पर से देवदारु काटने की आज्ञा दे, और मेरे दास तेरे दासोंके संग रहेंगे,
और जो कुछ मज़दूरी तू ठहराए, वही मैं तुझे तेरे दासोंके लिथे दूंगा, तुझे मालूम
तो है, कि सीदोनियोंके बराबर लमड़ी काटने का भेद हम लोगोंमें से कोई भी नहीं
जानता। 7 सुलैमान की थे बातें सुनकर, हीराम बहुत आनन्दित हुआ, और कहा,
आज यहोवा धन्य है, जिस ने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिथे
एक बुद्धिमान पुत्र दिया है। 8 तब हीराम ने सुलैपान के पास योंकहला भेजा कि
जो तू ने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ में आ गया, देवदारू और सनोवर
की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं करूंगा। 9 मेरे दास लकड़ी को
लबानोन से समुद्र तक पहुंचाएंगे, फिर मैं उनके बेड़े बनवाकर, जो स्यान तू मेरे

लिथे ठहराए, वहीं पर समुद्र के मार्ग से उनको पहुंचवा ऊंगा : वहां मैं उनको
खोलकर डलवा दूंगा, और तू उन्हें ले लेना : और तू मेरे परिवार के लिथे भोजन
देकर, मेरी भी इच्छा पूरी करना। 10 इस प्रकार हीराम सुलैमान की इच्छा के
अनुसार उसको देवदारू और सनोवर की लकड़ी देने लगा। 11 और सुलैमान ने
हीराम के परिवार के खाने के लिथे उसे बीस हज़ार कोर गेहूं और बीस कोर पेरा
हुआ तेल दिया; इस प्रकार सुलैमान हीराम को प्रति वर्ष दिया करता या। 12 और
यहोवा ने सुलैमान को अपके वचन के अनुसार बुद्धि दी, और हीराम और सुलैमान
के बीच मेल बना रहा वरन उन दोनोंने आपस में वाचा भी बान्ध ली। 13 और
राजा सुलैमान ने पूरे इस्राएल में से तीन हज़ार पुरुष बेगार लगाए, 14 और उन्हें
लबानोन पहाड़ पर पारी पारी करके, महीने महीने दस हज़ार भेज दिया करता या
और एक महीना तो वे लबानोन पर, और दो महीने घर पर रहा करते थे; और
बेगारियोंके ऊपर अदोनीराम ठहराया गया। 15 और सुलैमान के सत्तर हज़ार बोफ
ढोनेवाले और पहाड़ पर अस्सी हज़ार वृझ काटनेवाले और पत्यर निकालनेवाले
थे। 16 इनको छोड़ सुलैमान के तीन हज़ार तीन सौ मुखिथे थे, जो काम
करनेवालोंके ऊपर थे। 17 फिर राजा की आज्ञा से बड़े बड़े अनमोल पत्यर
इसलिथे खोदकर निकाले गए कि भवन की नेव, गढ़े हुए पत्यरोंसे डाली जाए। 18
और सुलैमान के कारीगरोंऔर हीराम के कारीगरोंऔर गबालियोंने उनको गढ़ा,
और भवन के बनाने के लिथे लकड़ी और पत्य्र तैयार किए।

1 राजा 6

1 इस्राएलियोंके मिस्र देश से निकलने के चार सौ अस्सीवें वर्ष के बाद जो

सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने का चौया वर्ष या, उसके जीव नाम दूसरे
महीने में वह यहोवा का भवन बनाने लगा। 2 और जो भवन राजा सुलैमान ने
यहोवा के लिथे बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ, चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई
तीस हाथ की यी। 3 और भवन के मन्दिर के साम्हने के ओसारे की लम्बाई बीस
हाथ की यी, अर्यात् भवन की चौड़ाई के बराबर यी, और ओसारे की चौड़ाई जो
भवन के साम्हने यी, वह दस हाथ की यी। 4 फिर उस ने भवन में स्यिर
फिलमिलीदार खिड़कियां बनाईं। 5 और उस ने भवन के आसपास की भीतोंसे
सटे हुए अर्यात् मन्दिर और दर्शन-स्यान दोनोंभीतोंके आसपास उस ने मंजिलें
और कोठरियां बनाईं। 6 सब से नीचेवाली मंजिल की चौड़ाई पांच हाथ, और
बीचवाली की छ : हाथ, और ऊपरवाली की सात हाथ की यी, क्योंकि उस ने भवन
के आसपास भीत को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया या इसलिथे कि कड़ियां
भवन की भीतोंको पकड़े हुए न हों। 7 और बनते समय भपन ऐसे पत्यरोंका
बनाया गया, जो वहां ले आने से पहिले गढ़कर ठीक किए गए थे, और भवन के
बनते समय हयैड़े वसूली वा और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी
सुनाई नहीं पड़ा। 8 बाहर की बीचवाली कोठरियोंका द्वार भवन की दाहिनी अलंग
में या, और लोग चक्करदार सीढियोंपर होकर बीचवाली कोठरियोंमें जाते, और
उन से ऊपरवाली कोठरियोंपर जाया करते थे। 9 उस ने भवन को बनाकर पूरा
किया, और उसकी छत देवदारु की कडियोंऔर तख्तोंसे बनी यी। 10 और पूरे
भवन से लगी हुई जो मंज़िलें उस ने बनाई वह पांच हाथ ऊंची थीं, और वे देवदारु
की कड़ियों द्वारा भवन से मिलाई गई यीं। 11 तब यहोवा का यह वचन सुलैमान
के पास पहुंचा, कि यह भवन जो तू बना रहा है, 12 यदि तू मेरी विधियोंपर

चलेगा, और मेरे नियमोंको मानेगा, और मेरी सब आज्ञाओं पर चलता हुआ
उनका पालन करता रहेगा, तो जो वचन मैं ने तेरे विषय में तेरे पिता दाऊद को
दिया या उसको मैं पूरा करूंगा। 13 और मैं इस्राएलियोंके मध्य में निवास करूंगा,
और अपक्की इस्राएली प्रजा को न तजूंगा। 14 सो सुलैमान ने भवन को बनाकर
पूरा किया। 15 और उस ने भवन की भीतोंपर भीतरवार देवदारु की तख्ताबंदी
की; और भवन के फ़र्श से छत तक भीतोंमें भीतरवार लकड़ी की तख्ताबंदी की,
और भवन के फ़र्श को उस ने सनोवर के तख्तोंसे बनाया। 16 और भवन की
पिछली अलंग में भी उस ने बीस हाथ की दूरी पर फ़र्श से ले भीतोंके ऊपर तक
देवदारु की तख्ताबंदी की; इस प्रकार उस ने परमपवित्र स्यान के लिथे भवन की
एक भीतरी कोठरी बनाई। 17 उसके साम्हने का भवन अर्यात् मन्दिर की लम्बाई
चालीस हाथ की यी। 18 और भवन की भीतोंपर भीतरवार देवदारु की लकड़ी की
तख्ताबंदी यी, और उस में इत्द्रायन और खिले हुए फूल खुदे थे, सब देवदारु ही
या : पत्भर कुछ नहीं दिखाई पड़ता या। 19 भवन के भीतर उस ते एक दर्शन
स्यान यहोवा की वाचा का सन्दूक रखने के लिथे तैयार किया। 20 और उस
दर्शन-स्यान की लम्बाई चौड़ाई और ऊंचाई बीस बीस हाथ की यी; और उस ने
उस पर चोखा सोना मढ़वाया और वेदी की तख्ताबंदी देवदारु से की। 21 फिर
सुलैमान ने भवन को भीतर भीतर चोखे सोने से मढ़वाया, और दर्शन-स्यान के
साम्हने सोने की सांकलें लगाईं; और उसको भी सोने से मढ़वाया। 22 और उस ने
पूरे भवन को सोने से मढ़वाकर उसका पूरा काम निपटा दिया। और दर्शन-स्यान
की पूरी वेदी को भी उस ने सोने से मढ़वाया। 23 दर्शन-स्यान में उस ने दस दस
हाथ ऊंचे जलपाई की लकड़ी के दो करूब बना रखे। 24 एक करूब का एक पंख

पांच हाथ का या, और उसका दूसरा पंख भी पांच हाथ का या, एक पंख के सिक्के
से, दूसरे पंख के सिक्के तक दस हाथ थे। 25 और दूसरा करूब भी दस हाथ का
या; दोनोंकरूब एक ही नाप और एक ही आकार के थे। 26 एक करूब की ऊंचाई
दस हाथ की, और दूसरे की भी इतनी ही यी। 27 और उस ने करूबोंको भीतरवाले
स्यान में धरवा दिया; और करूबोंके पंख ऐसे फैले थे, कि एक करूब का एक पंख,
एक भीत से, और दूसरे का दूसरा पंख, दूसरी भीत से लगा हुआ या, फिर उनके
दूसरे दो पंख भवन के मध्य में एक दूसरे से लगे हुए थे। 28 और करूबोंको उस ने
सोने से मढ़वाया। 29 और उस ने भवन की भीतोंमें बाहर और भीतर चारोंओर
करूब, खजूर और खिले हुए फूल खुदवाए। 30 और भवन के भीतर और
बाहरवाले फर्श उस ने सोने से मढ़वाए। 31 और दर्शन-स्यान के द्वार पर उस ने
जलपाई की लकड़ी के किवाड़ लगाए और चौखट के सिरहाने और बाजुओं की का
पांचवां भाग यी। 32 दोनोंकिवाड़ जलपाई की लकड़ी के थे, और उस ने उन में
करूब, खजूर के वृझ और खिले हुए फूल खुदवाए और सोने से मढ़ा और
करूबोंऔर खजूरोंके ऊपर सोना मढ़वा दिया गया। 33 असी की रीति उस ने
मन्दिर के द्वार के लिथे भी जलपाई की लकड़ी के चौखट के बाजू बनाए और वह
भवन की चौड़ाई की चौयाई यी। 34 दोनोंकिवाड़ सनोवर की लकड़ी के थे, जिन में
से एक किवाड़ के दो पल्ले थे; और दूसरे किवाड़ के दो पल्ले थे जो पलटकर दुहर
जाते थे। 35 और उन पर भी उस ने करूब और खजूर के वृझ और खिले हुए फूल
खुदवाए और खुदे हुए काम पर उस ने सोना मढ़वाया। 36 और उस ने भीतरवाले
आंगन के घेरे को गढ़े हुए पत्यरोंके तीन रद्दे, और एक परत देवदारू की कड़ियां
लगा कर बनाया। 37 चौथे वर्ष के जीव नाम महीने में यहोवा के भवन की नेव

डाली गई। 38 और ग्यारहवें वर्ष के बूल नाम आठवें महीने में, वह भवन उस सब
समेत जो उस में उचित समझा गया बन चुका : इस रीति सुलैमान को उसके
बनाने में सात वर्ष लगे।

1 राजा 7

1 और सुलैमान ने अपके महल को बनाया, और उसके पूरा करने में तेरह वर्ष
लगे। 2 और उस ने लबानोनी वन नाम महल बनाया जिसकी लम्बाई सौ हाथ,
चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की यी; वह तो देवदारु के खम्भोंकी चार
पांति पर बना और खम्भोंपर देवदारु की कड़ियां धरी गई। 3 और खम्भोंके ऊपर
देवदारु की छतवाली पैंतालीस कोठरियां अर्यात् एक एक महल में पन्द्रह
कोठरियां बनीं। 4 तीनोंमहलोंमें कड़ियां धरी गई, और तीनोंमें खिड़कियां आम्हने
साम्हने बनीं। 5 और सब द्वार और बाजुओं की कड़ियां भी चौकोर यी, और
तीनोंमहलोंमें खिड़कियां आम्हने साम्हने बनीं। 6 और उस ने एक खम्भेवाला
ओसारा भी बनाया जिसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ की यी,
और इन खम्भोंके साम्हने एक खम्भेवाला ओसारा और उसके साम्हने डेवढ़ी
बनाई। 7 फिर उस ने न्याय के सिंहासन के लिथे भी एक ओसारा बनाया, जो
न्याय का ओसारा कहलाया; और उस में ऐक फ़र्श से दूसरे फ़र्श तक देवदारु की
तख्ताबन्दी यी। 8 और उसी के रहने का भवन जो उस ओसारे के भीतर के एक
और आंगन में बना, वह भी उसी ढब से बना। फिर उसी ओसारे के ढब से
सुलैमान ने फ़िरौन की बेटी के लिथे जिसको उस ने ब्याह लिया या, एक और
भवन बनाया। 9 थे सब घर बाहर भीतर तेव से मुंढेर तक ऐसे अनमोल और गढ़े

हुए पत्यरोंके बने जो नापकर, और आरोंसे चीरकर तैयार किथे गए थे और बाहर
के आंगन से ले बड़े आंगन तक लगाए गए। 10 उसकी नेव तो बड़े मोल के बड़े
बड़े अर्यात् दस दस और आठ आठ हाथ के पत्यरोंकी डाली गई यी। 11 और ऊपर
भी बड़े मोल के पत्यर थे, जो नाप से गढ़े हुए थे, और देवदारु की लकड़ी भी यी।
12 और बड़े आंगन के चारोंओर के घेरे में गढ़े हुए पत्यरोंके तीन रद्दे, और देवदारु
की कड़ियोंका एक परत या, जैसे कि यहोवा के भवन के भीतरवाले आंगन और
भवन के ओसारे में लगे थे। 13 फिर राजा सुलैमान ने सोर से हीराम को बुलवा
भेजा। 14 वह नप्ताली के गोत्र की किसी विधवा का बेटा या, और उसका पिता एक
सोरवासी ठठेरा या, और वह पीतल की सब प्रकार की कारीगिरी में पूरी बुद्धि,
निमुणता और समझ रखता या। सो वह राजा सुलैमान के पास आकर उसका सब
काम करने लगा। 15 उस ने पीतल ढालकर अठारह अठाही हाथ ऊंचे दो खम्भे
बनाए, और एक एक का घेरा बारह हाथ के सूत का या। 16 और उस ने खम्भोंके
सिरोंपर लगाने को पीतल ढालकर दो कंगनी बनाई; एक एक कंगनी की ऊंचाई,
पांच पांच हाथ की यी। 17 और खम्भोंके सिरोंपर की कंगनियोंके लिथे चारखाने
की सात सात जालियां, और सांकलोंकी सात सात फालरें बनीं। 18 और उस ने
खम्भोंको भी इस प्रकार बनाया; कि खम्भोंके सिरोंपर की एक एक कंगनी के
ढांपके को चारोंओर जालियोंकी एक एक पांति पर अनारोंकी दो पांतियां हों। 19
और जो कंगनियां ओसारोंमें खम्भो के सिरोंपर बनीं, उन में चार चार हाथ ऊंचे
सोसन के फूल बने हुए थे। 20 और एक एक खम्भे के सिक्के पर, उस गोलाई के
पास जो जाली से लगी यी, एक और कंगनी बनी, और एक एक कंगनी पर जो
अनार चारोंओर पांति पांति करके बने थे वह दो सौ थे। 21 उन खम्भोंको उस ने

मन्दिर के ओसारे के पास खड़ा किया, और दाहिनी ओर के खम्भे को खड़ा करके
उसका नाम याकीन रखा; फिर बाई ओर के खम्भे को झड़ा करके उसका नाम
बोआज़ रखा। 22 और खम्भोंके सिरोंपर सोसन के फूल का काम बना या
खम्भोंका काम इसी रीति हुआ। 23 फिर उस ने एक ढाला हुआ एक बड़ा हौज़
बनाया, जो एक छोर से दूसरी छोर तक दस हाथ चौड़ा या, उसका आकार गोल
या, और उसकी ऊंचाई पांच हाथ की यी, और उसके चारोंओर का घेरा तीस हाथ
के सूत के बराबर या। 24 और उसके चारोंओर मोहड़े के नीचे एक एक हाथ में दस
दस इन्द्रायन बने, जो हौज को घेरे यीं; जब वह ढाला गया; तब थे इन्द्रायन भी दो
पांति करके ढाले गए। 25 और वह बारह बने हुए बैलोंपर रखा गया जिन में से
तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्खिन, और तीन पूर्व की ओर मुंह किए हुए थे;
और उन ही के ऊपर हौज या, और उन सभोंका पिछला अंग भीतर की ओर या।
26 और उसका दल चौबा भर का या, और उसका मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाई
सोसन के फूलो के काम से बना या, और उस में दो हज़ार बत की समाई यी। 27
फिर उस ने पीतल के दस पाथे बनाए, एक एक पाथे की लम्बाई चार हाथ, चौड़ाई
भी चार हाथ और ऊंचाई तीन हाथ की यी। 28 उन पायोंकी बनावट इस प्रकार यी;
अनके पटरियां यीं, और पटरियोंके बीचोंबीच जोड़ भी थे। 29 और जोड़ोंके
बीचोंबीच की पटरियोंपर सिंह, बैल, और करूब बने थे और जोड़ोंके ऊपर भी एक
एक और पाया बना और सिंहोंऔर बैलोंके नीचे लटकते हुए हार बने थे। 30 और
एक एक पाथे के लिथे पीतल के चार पहिथे और पीतल की धुरियां बनी; और एक
एक के चारोंकोनोंसे लगे हुए कंधे भी ढालकर बनाए गए जो हौदी के नीचे तक
पहुंचते थे, और एक एक कंधे के पास हार बने हुए थे। 31 औा हौदी का मोहड़ा जो

पाथे की कंगनी के भीतर और ऊपर भी या वह एक हाथ ऊंचा या, और पाथे का
मोहड़ा जिसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ की यी, वह पाथे की बनावट के समान गोल बना;
और पाथे के उसी मोहड़े पर भी कुछ खुदा हुआ काम या और उनकी पटरियां गोल
नहीं, चौकोर यीं। 32 और चारोंपहिथे, पटरियो के नीचे थे, और एक एक पाथे के
पहियोंमें धुरियां भी यीं; और एक एक पहिथे की ऊंचाई डेढ़ हाथ की यी। 33
पहियोंकी बनावट, रय के पहिथे की सी यी, और उनकी धुरियां, पुट्ठियां, आरे,
और नाभें सब ढाली हुर्अ यीं। 34 और एक एक पाथे के चारोंकोनोंपर चार कंधे थे,
और कंधे और पाथे दोनोंएक ही टुकड़े के बने थे। 35 और एक एक पाथे के सिक्के
पर आध हाथ ऊंची चारोंओर गोलाई यी, और पाथे के सिक्के पर की टेकें और
पटरियां पाथे से जुड़े हुए एक ही टुकड़े के बने थे। 36 और टेकोंके पाटोंऔर
पटरियोंपर जितनी जगह जिस पर यी, उस में उस ने करूब, और सिंह, और
खजूर के वृझ खोद कर भर दिथे, और चारोंओर हार भी बनाए। 37 इसी प्रकार से
उस ने दसोंपायोंको बनाया; सभोंका एक ही सांचा और एक ही नाप, और एक ही
आकार या। 38 और उस ने पीतल की दस हौदी बनाई। एक एक हौदी में चालीस
चालीस बत की समाई यी; और एक एक, चार चार हाथ चौड़ी यी, और दसोंपायोंमें
से एक एक पर, एक एक हौदी यी। 39 और उस ने पांच हौदी षवन की दक्खिन
की ओर, और पांच उसकी उत्तर की ओर रख दीं; और हौज़ को भवन की दाहिनी
ओर अर्यात् पूर्व की ओर, और दक्खिन के साम्हने धर दिया। 40 और हीराम ने
हौदियों, फावडिय़ों, और कटोरोंको भी बनाया। सो हीराम ने राजा सुलैमान के
लिथे यहोवा के भवन में जितना काम करना या, वह सब निपटा दिया, 41 अर्यात्
दो खम्भे, और उन कंगनियोंकी गोलाइयां जो दोनोंखम्भोंके सिक्के पर यीं, और

दोनोंखम्भोंके सिरोंपर की गोलाइयोंके ढांपके को दो दो जालियां, और
दोनोंजालियोंके लिय चार चार सौ अनार, 42 अर्यात् खम्भोंके सिरोंपर जो
गोलाइयां यीं, उनके ढांपके के लिथे अर्यात् एक एक जाली के लिथे अनारोंकी दो
दो पांति; 43 दस पाथे और इन पर की दस हौदी, 44 एक हौज़ और उसके नीचे के
बारह बैल, और हंडे, फावडिय़ां, 45 और कटोरे बने। थे सब पात्र जिन्हें हीराम ने
यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिथे बनाया, वह फलकाथे हुए
पीतल के बने। 46 राजा ने उनको यरदन की तराई में अर्यात् सुक्कोत और
सारतान के मध्य की चिकनी मिट्टवाली भूमि में ढाला। 47 और सुलैमान ने सब
पात्रोंको बहुत अधिक होने के कारण बिना तौले छोड़ दिया, पीतल के तौल का
वज़न मालूम न हो सका। 48 यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब
बनाए, अर्यात् सोने की वेदी, और सोने की वह मेज़ जिस पर भेंट की रोटी रखी
जाती यी, 49 और चोखे सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पांच तो
दक्खिन की ओर, और पांच उत्तर की ओर रखी गईं; और सोने के फूल, 50 दीपक
और चिमटे, और चोखे सोने के तसले, कैंचियां, कटोरे, धूपदान, और करछे और
भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्यान कहलाता है, और भवन जो मन्दिर
कहलाता है, दोनोंके किवाड़ोंके लिथे सोने के कब्जे बने। 51 निदान जो जो काम
राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिथे किया, वह सब पूरा किया गया। तब
सुलैमान ने अपके पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने चांदी और पात्रोंको भीतर
पहुंचा कर यहोवा के भवन के भणडारोंमें रख दिया।

1 राजा 8

1 तब सुलैमान ने इस्राएली पुरनियोंको और गोत्रोंके सब मुख्य पुरुष जो
इस्राएलियोंके पूर्वजोंके घरानोंके प्रधान थे,उनको भी यरूशलेम में अपके पास इस
मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर अर्यात्
सियोन से ऊपर ले आएं। 2 सो सब इस्राएली पुरुष एतानीम नाम सातवें महीने कें
पर्व के समय राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए। 3 जब सब इस्राएली पुरनिथे
आए, तब याजकोंने सन्दूक को उठा लिया। 4 और यहोवा का सन्दूक, और
मिलाप का तम्बू, और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे, उन सभोंयाजक और
लेबीय लोग ऊपर ले गए। 5 और राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली मंडली, जो
उसके पास इाट्ठी हुई यी, वे रुब सन्दूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि कर
रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं हो सकती यी। 6 तब याजकोंने यहोवा
की वाचा का सन्दूक उसके स्यान को अर्यात् भवन के दर्शन-स्यान में, जो
परमपवित्र स्यान है, पहुंचाकर करूबोंके पंखोंके तले रख दिया। 7 करूब तो
सन्दूक के स्यान के ऊपर पंख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक और
उसके डंडोंको ढांके थे। 8 डंडे तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके सिक्के उस पवित्र स्यान
से जो दर्शन-स्यान के साम्हने या दिखाई पड़ते थे परन्तु बाहर से वे दिखाई नहीं
पड़ते थे। वे आज के दिन तक यहीं वतमपान हैं। 9 सन्दूक में कुछ नहीं या, उन
दो पटरियोंको छोड़ जो मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखीं, जब यहोवा
ने इस्राएलियोंके मिस्र से निकलने पर उनके साय वाचा बान्धी यी। 10 जब
याजक पवित्रस्यान से निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। 11 और
बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का
तेज यहोवा के भवन में भर गया या। 12 तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा

या, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूंगा। 13 सचमुच मैं ने तेरे लिथे एक
वासस्यान, वरन ऐसा दृढ़ स्यान बनाया है, जिस में तू युगानुयुग बना रहे। 14
और राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुंह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया;
और पूरी सभा खड़ी रही। 15 और उस ने कहा, धन्य है इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा ! जिस ने अपके मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया या, और अपके
हाथ से उसे पूरा किया है, 16 कि जिस दिन से मैं अपक्की प्रजा इस्राएल को मिस्र
से निकाल लाया, तब से मैं ने किसी इस्राएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना, जिस
में मेरे नाम के निवास के लिथे भवन बनाया जाए; परन्तु मैं ने दाऊद को चुन
लिया, कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का अधिक्कारनी हो। 17 मेरे पिता दाऊद की
यह मनसा तो यी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाए।
18 परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, यह जो तेरी मनसा है, कि यहोवा के
नाम का एक भवन बनाए, ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया; 19 तौभी तू
उस भवन को न बनाएगा; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन
बनाएगा। 20 यह जो वचन यहोवा ने कहा या, उसे उस ने पूरा भी किया है, और
मैं अपके पिता दाऊद के स्यान पर उठकर, यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल
की गद्दी पर विराजमान हूँ, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से इस भवन
को बनाया है। 21 और इस में मैं ने एक स्यान उस सन्दूक के लिथे ठहराया है,
जिस में यहोवा की वह वाचा है, जो उस ने हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से
निकालने के समय उन से बान्धी यी। 22 तब सुलैमान इस्राएल की पूरी सभा के
देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ, और अपके हाथ स्वर्ग की ओर
फैलाकर कहा, हे यहोवा ! 23 हे इस्राएल के परमेश्वर ! तेरे समान न तो ऊपर

स्वर्ग में, और न नीचे पृय्वी पर कोई ईश्वर है : तेरे जो दास अपके सम्पूर्ण मन से
अपके को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिथे तू अपक्की वाचा मूरी
करता, और करुणा करता रहता है। 24 जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया
या, उसका तू ने पालन किया है, जैसा तू ने अपके मुंह से कहा या, वैसा ही अपके
हाथ से उसको पूरा किया है, जैसा आज है। 25 इसलिथे अब हे इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा ! इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपके दास मेरे पिता दाऊद
को दिया या, कि तेरे कुल में, मेरे साम्हने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव
बने रहेंगे : इतना हो कि जैसे तू स्वयं मुझे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही
तेरे वंश के लोग अपक्की चालचलन में ऐसी ही चौकसी करें। 26 इसलिथे अब हे
इस्राएल के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने अपके दास मेरे पिता दाऊद को दिया
या उसे सच्चा सिद्ध कर। 27 क्या परमेश्वर सचमुच पृय्वी पर वास करेगा, स्वर्ग
में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में
क्योंकर समाएगा। 28 तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा ! अपके दास की प्रार्यना और
गिड़गिड़ाहट की ओर कान लगाकर, मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्यना सुन ! जो मैं
आज तेरे साम्हने कर रहा हूँ; 29 कि तेरी आंख इस भवन की ओर अर्यात् इसी
स्यान की ओर जिसके विषय तू ने कहा है, कि मेरा नाम वहां रहेगा, रात दिन
खुली रहें : और जो प्रार्यना तेरा दास इस स्यान की ओर करे, उसे तू सुन ले। 30
और तू अपके दास, और अपक्की प्रजा इस्राएल की प्रार्यना जिसको वे इस स्यान
की ओर गिड़गिड़ा के करें उसे सुनना, वरद स्वर्ग। में से जो तेरा निवासस्यान है
सुन लेना, और सुनकर झमा करना। 31 जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे,
और उसको शपय खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने

शपय खाए, 32 तब तू स्वर्ग में सुन कर, अर्यात् अपके दासोंका न्याय करके दुष्ट
को दुष्ट ठहरा और उसकी चाल उसी के सिर लौटा दे, और निर्दोष को निर्दोष
ठहराकर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल देना। 33 फिर जब नेरी प्रजा
इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपके शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर
फिरकर तेरा नाम ले और इस भवन में तुझ से गिड़गिड़ाहट के साय प्रार्यना करे,
34 तब तू स्वर्ग में से सुनकर अपक्की प्रजा इस्राएल का पाप झमा करना : और
उन्हें इस देश में लौटा ले आना, जो तू ने उनके पुरुखाओं को दिया या। 35 जब वे
तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस कारण आकाश बन्द हो जाए, कि वर्षा न होए, ऐसे
समय यदि वे इस स्यान की ओर प्रार्यना करके तेरे नाम को मानें जब तू उन्हें
दु:ख देता है, और अपके पाप से फिरें, तो तू स्वर्ग में से सुनकर झमा करना, 36
और अपके दासों, अपक्की प्रजा इस्राएल के पाप को झ्मा करना; तू जो उनको वह
भला मार्ग दिखाता है, जिस पर उन्हें चलना चाहिथे, इसलिथे अपके इस देश पर,
जो तू ने अपक्की प्रजा का भाग कर दिया है, पानी बरसा देना। 37 जब इस देश में
काल वा मरी वा फुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उनके शत्रु उनके
देश के फाटकोंमें उन्हें घेर रखें, अयवा कोई विपत्ति वा रोग क्योंन हों, 38 तब यदि
कोई मनुष्य वा तेरी प्रजा इस्राएल अपके अपके मन का दु:ख जान लें, और
गिड़गिड़ाहट के साय प्रार्यना करके अपके हाथ इस भवन की ओर फैलाएं; 39 तो
तू अपके स्वर्गीय निवासस्यान में से सुनकर झमा करुना, और ऐसा करना, कि
एक एक के मन को जानकर उसकी समस्त चाल के अनुसार उसको फल देना : तू
ही तो सब आदमियोंके मन के भेदोंका जानने वाला है। 40 तब वे जितने दिन इस
देश में रहें, जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया या, उतने दिन तक तेरा भय मानते

रहें। 41 फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरा नाम
सुनकर, दूर देश से आए, 42 वह तो तेरे बड़े ताम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई
हुई भुजा का समाचार पाए; इसलिथे जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर
प्रार्यना करें, 43 तब तू अपके स्वर्गीय निवासस्यान में से सुन, और जिस बात के
लिथे ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसी के अनुसार व्यवहार करना जिस से पृथ्वी के
सब देशोंके लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें,
और निश्चय जानें, कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। 44
जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे, वहां अपके शत्रुओं से लड़ाई करने
को निकल जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की
ओर जिसे मैं ने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा से प्रार्यना करें, 45 तब तू स्वर्ग में
से उनकी प्रार्यना और गिड़गिड़ाहट सुनकर उनका न्याय कर। 46 निष्पाप तो
कोई मनुष्य नहीं है : यदि थे भी तेरे विरुद्ध पाप करें, और तू उन पर कोप करके
उन्हें शत्रओं के हाथ कर दे, और वे उनको बन्धुआ करके अपके देश को चाहे वह
दूर हो, चाहे निकट ले जवएं, 47 तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें,
और फिरकर अपके बन्धुआ करनेवालोंके देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें कि
हम ने पाप किया, और कुटिलता ओर दुष्टता की है; 48 और यदि वे अपके उन
शत्रुओं के देश में जो उन्हें बन्धुआ करके ले गए हों, अपके सम्पूर्ण मन और
सम्पूर्ण प्राण से तेरी ओर फिरें और अपके इस देश की ओर जो तू ने उनके
पुरुखाओं को दिया या, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन
की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, तुझ से प्रार्यना करें, 49 तो तू अपके
स्वर्गीय निवासस्यान में से उनकी प्रार्यना और गिड़गिड़ाहट सुनना; और उनका

न्याय करना, 50 और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे, और जितने
अपराध वे तेरे विरुद्ध करेंगे, सब को झमा करके, उनके बन्धुआ करनेवालोंके मन
में ऐसी दया उपजाना कि वे उन पर दया करें। 51 क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और
तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के मध्य में से अर्यात् मिस्र से निकाल
लाया है। 52 इसलिथे तेरी आंखें तेरे दाय की गिड़गिड़ाहट और तेरी प्रजा इस्राएल
की गिड़गिड़ाहट की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब वे तुझे पुकारें, तब तब तू
उनकी सुन ले; 53 क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपके उस वचन के अनुसार, जो तू ने
हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकालने के समय अपके दास मूसा के द्वारा दिया या,
तू ने इन लोगोंको अपना निज भाग होने के लिथे पृय्वी की सब जातियोंसे अलग
किया है। 54 जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्यना गिड़गिड़ाहट के साय कर
चुका, तब वह जो घुटने टेके और आकाश की ओर हाथ फैलाए हुए या, सो यहोवा
की वेदी के साम्हने से उठा, 55 और खड़ा हो, समस्त इस्राएली सभा को ऊंचे स्वर
से यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि धन्य है यहोवा, 56 जिस ने ठीक अपके कयन
के अनुसार अपक्की प्रजा इस्राएल को विश्रम दिया है, जितनी भलाई की बातें
उसने अपके दास मूसा के द्वारा कही यीं,उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।
57 हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता या, वैसे ही हमारे
संग भी रहे, वह हम को त्याग न दे और न हम को छोड़ दे। 58 वह हमारे मन
अपक्की ओर ऐसा फिराए रखे, कि हम उसके सब मार्गों पर चला करें, और
उसकी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें उसने हमारे पुरखाओं को दिया
या, नित माना करें। 59 और मेरी थे बातें जिनकी मैं ने यहोवा के साम्हने बिनती
की है, वह दिन और रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें, और जैसा

दिन दिन प्रयोजन हो वैसा ही वह अपके दास का और अपक्की प्रजा इस्राएल का
भी न्याय किया करे, 60 और इस से पृय्वी की सब जातियां यह जान लें, कि
यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। 61 तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर
यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे, कि आज की नाई उसकी विधियोंपर
चलते और उसकी आज्ञाएं मानते रहो। 62 तब राजा समस्त इस्राएल समेत
यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढ़ाने लगा। 63 और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि में
यहोवा को चढ़ाए, सो बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें यीं। इस
रीति राजा ने सब इस्राएलियोंसमेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की। 64 उस दिन
राजा ने यहोवा के भवन के साम्हनेवाले आंगन के मध्य भी एक स्यान पवित्र
किया और होमबलि, और अन्नबलि और मेलबलियोंकी चरबी वहीं चढ़ाई;
क्योंकि जो पीतल की वेदी यहोवा के साम्हने यी, वह उनके लिथे छोटी यी। 65
और सुलैमान ने और उसके संग समस्त इस्राएल की एक बड़ी सभा ने जो हमात
की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सब देशोंसे इाट्ठी हुई यी, दो सप्ताह तक
अर्यात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने पर्व को माना। फिर
आठवें दिन उस ने प्रजा के लोगोंको विदा किया। 66 और वे राजा को धन्य, धन्य,
कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपके दास दाऊद और अपक्की
प्रजा इस्राएल से की यी, आनन्दित और मगन होकर अपके अपके डेरे को चले
गए।

1 राजा 9

1 जब सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और जो कुछ उस

ने करना चाहा था, उसे कर चुका, 2 तब यहोवा ने जैसे गिबोन में उसको दर्शन
दिया था, वैसे ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया। 3 और यहोवा ने उस से कहा, जो
प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो
भवन तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिथे रखकर उसे पवित्र
किया है; और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे। 4 और यादे तू
अपके पिता दाऊद की नाई मन की खराई और सिधाई से अपके को मेरे साम्हने
जानकर चलता रहे, और मेरी सब अपज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी
विधियोंऔर नियमोंको मानता रहे, तो मैं तेरा राज्य इस्राएल के ऊपर सदा के
लिथे स्य्िर करूंगा; 5 जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था, कि तेरे
कुल में इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे। 6 परन्तु यदि तुम लोग
वा तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें; और मेरी उन आज्ञाओं और
विधियोंको जो मैं ने तुम को दी हैं, न मानें, और जाकर पराथे देवताओं की
उपासना करे और उन्हें दण्डवत करने लगें, 7 तो मैं इस्राएल को इस देश में से
जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपके नाम के
लिथे पवित्र किया है, अपक्की दृष्टि से उतार दूंगा; और सब देशोंके लोगोंमें
इस्राएल की उपमा दी जाथेगी और उसका दृष्टान्त चलेगा। 8 और यह भवन जो
ऊंचे पर रहेगा, तो जो कोई इसके पास होकर चलेगा, वह चकित होगा, और ताली
बजाएगा और वे पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश और इस भवन के साथ क्योंऐसा
किया है; 9 तब लोग कहेंगे, कि उन्होंने अपके परमेश्वर यहोवा को जो उनके
पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया था। तजकर पराथे देवताओं को पकड़
लिया, और उनको दण्डवत की और उनकी उपासना की इस कारण यहोवा ने यह

सब विपत्ति उन पर डाल दी। 10 सुलैमान को तो यहोवा के भवन और राजभवन
दोनोंके बनाने में बीस वर्ष लग गए। 11 तब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को
जिस ने उसके मनमाने देवदारू और सनोवर की लकड़ी और सोना दिया या,
गलील देश के बीस नगर दिए। 12 जब हीराम ने सोर से जाकर उन नगरोंको
देखा, जो सुलैमान ने उसको दिए थे, तब वे उसको अच्छे न लगे। 13 तब उस ने
कहा, हे मेरे भाई, थे नगर क्या तू ने मुझे दिए हैं? और उस ने उनका नाम कबूल
देश रखा। 14 और यही नाम आज के दिन तक पड़ा है। फिर हीराम ने राजा के
पास साठ किक्कार सोना भेज दिया। 15 राजा सुलैमान ने लोगोंको जो बेगारी में
रखा, इसका प्रयोजन यह या, कि यहोवा का और अपना भवन बनाए, और
मिल्लो और यरूशलेम की शहरपनाह और हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरोंको
दृढ़ करे। 16 गेजेर पर तो मिस्र के राजा फ़िरौन ने चढ़ाई करके उसे ले लिया और
आग लगाकर फूंक दिया, और उस नगर में रहनेवाले कनानियोंको मार डालकर,
उसे अपक्की बेटी सुलैमान की रानी का निज भाग करके दिया या, 17 सो
सुलैमान ने गेजेर और नीचेवाले बयोरेन, 18 बालात और तामार को जो जंगल में
हैं, दृढ़ किया, थे तो देश में हैं। 19 फिर सुलैमान के जितने भणडार के नगर थे,
और उसके रयोंऔर सवारोंके नगर, उनको वरन जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम,
लबानोन और अपके राज्य के सब देशोंमें बनाना चाहा, उन सब को उस ने दृढ़
किया। 20 एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी जो रह गए थे, जो
इस्राएलियोंमें के न थे, 21 उनके वंश जो उनके बाद देश में रह गए, और उनको
इस्राएली सत्यानाश न कर सके, उनको तो सुलैमान ने दास कर के बेगारी में
रखा, और आज तक उनको वही दशा है। 22 परन्तु इस्राएलियोंमें से सुलैमान ने

किसी को दास न बनाया; वे तो योद्धा और उसके कर्मचारी, उसके हाकिम, उसके
सरदार, और उसके रयों, और सवारोंके प्रधान हुए। 23 जो मुख्य हाकिम सुलैमान
के कामोंके ऊपर ठहर के काम करनेवालोंपर प्रभुता करते थे, थे पांच सौ पचास
थे। 24 जब फ़िरौन की बेटी दाऊदपुर में से अपके उस भवन को आ गई, जो उस
ने उसके लिथे बनाया या तब उस ने मिल्लो को बनाया। 25 और सुलैमान उस
वेदी पर जो उस ने यहोवा के लिथे बनाई यी, प्रति वर्ष में तीन बार होमबलि और
मेलबलि चढ़ाया करता या और साय ही उस वेदी पर जो यहोवा के सम्मुख यी,
धूप जलाया करता या, इस प्रकार उस ने उस भवन को तैयार कर दिया। 26 फिर
राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर में जो एदोम देश मे लाल समुद्र के तीर एलोत के
पास है, जहाज बनाए। 27 और जहाजोंमें हीराम ने अपके अधिक्कारने के
मल्लाहोंको, जो समुद्र से जानकारी रखते थे, सुलैमान के सेवकोंके संग भेज
दिया। 28 उन्होंने ओपोर को जाकर वहां से चार सौ बीस किक्कार सोना, राजा
सुलैमान को लाकर दिया।

1 राजा 10

1 जब शीबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्त्तिं सुनी, तब वह
कठिन कठिन प्रश्नोंसे उसकी पक्कीझा करने को चल पक्की। 2 वह तो बहुत भारी
दल, और मसालों, और बहुत सोने, और मणि से लदे ऊंट साय लिथे हुए
यरूशलेम को आई; और सुलैमान के पास पहुंचकर अपके मन की सब बातोंके
विषय में उस से बातें करने लगी। 3 सुलैमान ने उसके सब प्रश्नोंका उत्तर दिया,
कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसको न बता सका। 4 जब

शीबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन, और
उसकी मेज पर का भोजन देखा, 5 और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और
उसके टहलुए किस रीति खड़े रहते, और कैसे कैसे कपके पहिने रहते हैं, और
उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वह कैसी चढ़ाई है, जिस से वह यहोवा के भवन
को जाया करता है, यह सब जब उस ने देखा, तब वह चकित हो गई। 6 तब उस
ने राजा से कहा, तेरे कामोंऔर बुद्धिमानी की जो कीत्तिं मैं ने अपके देश में सुनी यी
वह सच ही है। 7 परन्तु जब तक मैं ने आप ही आकर अपक्की आंखोंसे यह न
देखा, तब तक मैं ने उन बातोंकी प्रतीत न की, परन्तु इसका आधा भी मुझे न
बताया गया या; तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीत्तिं से भी बढ़कर है, जो मैं ने
सुनी यी। 8 धन्य हैं तेरे जन ! धन्य हैं तेरे थे सेवक ! जो नित्य तेरे सम्मुख
उपस्यित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। 9 धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा ! जो
तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे इस्राएल की राजगद्दी पर विराजमान किया :
यहोवा इस्राएल से सदा प्रेम रखता है, इस कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म
करने को राजा बना दिया है। 10 और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार
सोना, बहुत सा सुगन्ध द्रव्य, और मणि दिया; जितना सुगन्ध द्रव्य शीबा की
रानी ने राजा सुलैमान को दिया, उतना फिर कभी नहीं आया। 11 फिर हीराम के
जहाज भी जो ओपीर से सोना लाते थे, वह बहुत सी चन्दन की लकड़ी और मणि
भी लाए। 12 और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के
लिथे जंगले और गवैयोंके लिथे वीणा और सारंगियां बनवाई ; ऐसी चन्दन की
लकड़ी आज तक फिर नहीं आई, और न दिखाई पक्की है। 13 और शीबा की रानी
ने जो कुछ चाहा, वही राजा सुलैमान ने उसकी इच्छा के अनुसार उसको दिया,

फिर राजा सुलैमान ने उसको अपक्की उदारता से बहुत कुछ दिया, तब वह अपके
जनोंसमेत अपके देश को लौट गई। 14 जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के पास पहुंचा
करता या, उसका तौल छ:सौ छियासठ किक्कार या। 15 इस से अधिक
सौदागरोंसे, और य्योपारियोंके लेन देन से, और दोगली जातियोंके सब राजाओं,
और अपके देश के गवर्नरो से भी बहुत कुछ मिलता या। 16 और राजा सुलैमान ने
सोना गढ़बाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनवाई; एक एक ढाल में छ: छ: सौ शेकेल
सोना लगा। 17 फिर उस ने सोना गढ़वाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनवाई; एक
एक छोटी ढाल में, तीन माने सोना लगा; और राजा ने उनको लबानोनी वन नाम
भवन में रखवा दिया। 18 और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाया,
और उत्तम कुन्दन से मढ़वाया। 19 उस सिंहासन में छ: सीढियां यीं; और
सिंहासन का सिरहाना पिछाड़ी की ओर गोल या, और बैठने के स्यान की
दोनोंअलग टेक लगी यीं, और दोनोंटेकोंके पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना या।
20 और छहोंसीढियोंकी दोनोंअलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना या, कुल बारह
हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी नहीं बना; 21 और राजा सुलैमान के पीने के सब
पात्र सोने के बने थे, और लबानोनी बन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के
थे, चांदी का कोई भी न या। सुलैमान के दिनोंमें उसका कुछ लेखा न या। 22
क्योंकि समुद्र पर हीराम के जहाजोंके साय राजा भी तर्शीश के जहाज रखता या,
ओर तीन तीन वर्ष पर तर्शीश के जहाज सोना, चांदी, हाथीदांत, बन्दर और मयूर
ले आते थे। 23 इस प्रकार राजा सुलैमान, धन और बुद्धि में पृय्वी के सब राजाओं
से बढ़कर हो गया। 24 और समस्त पृय्वी के लोग उसकी बुद्धि की बातें सुनने को
जो परमेश्वर ने मन में उत्पन्न की यीं, सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे। 25

और वे प्रति वर्ष अपक्की अपक्की भेंट, अर्यात् चांदी और सोने के पात्र, वस्त्र,
शस्त्र, सुगन्ध द्रय्य, घोड़े, और खच्चर ले आते थे। 26 और सुलैमान ने रय और
सवार इकट्ठे कर लिए, तो उसके चौदह सौ रय, और बारह हजार सवार हुए, और
उनको उस ने रयोंके नगरोंमें, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा। 27 और
राजा ने बहुतायत के कारण, यरूशलेम में चांदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्यर
और देवदारू को जैसे नीचे के देश के गूलर। 28 और जो घोड़े सुलैमान रखता या,
वे मिस्र से आते थे, और राजा के व्योपारी उन्हें फुण्ड फुण्ड करके ठहराए हुए
दाम पर लिया करते थे। 29 एक रय तो छ: सौ शेकेल चांदी पर, और एक घोड़ा
डेढ़ सौ शेकेल पर, मिस्र से आता या, और इसी दाम पर वे हित्तियोंऔर अराम के
सब राजाओं के लिथे भी व्योपारियोंके द्वारा आते थे।

1 राजा 11

1 परन्तु राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी, और बहुतेरी और पराथे स्त्रियोंसे, जो
मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोती, और हित्ती यीं, प्रीति करने लगा। 2 वे उन
जातियोंकी यीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियोंसे कहा या, कि तुम उनके
मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं, वे तुम्हारा मन अपके
देवताओं की ओर नि:सन्देह फेरेंगी; उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया। 3
और उसके सात सौ रानियां, और तीन सौ रखेलियां हो गई यीं और उसकी इन
स्त्रियोंने उसका मन बहका दिया। 4 सो जब सुलैमान बूढा हुआ, तब उसकी
स्त्रियोंने उसका मन पराथे देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपके
पिता दाऊद की नाई अपके परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। 5

सुलैमान तो सीदोनियोंकी अशतोरेत नाम देवी, और अम्मोनियोंके मिल्कोम
नाम घृणित देवता के पीछे चला। 6 और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि
में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपके पिता दाऊद की नाई पूरी रीति से न चला। 7
उन दिनोंसुलैमान ने यरूशलेम के साम्हने के पहाड़ पर मोआबियोंके कमोश नाम
घृणित देवता के लिथे और अम्मोनियोंके मोलेक नाम घृणित देवता के लिथे एक
एक ऊंचा स्यान बनाया। 8 और अपक्की सब पराथे स्त्रियोंके लिथे भी जो अपके
अपके देवताओं को धूप जलातीं और बलिदान करती यीं, उस ने ऐसा ही किया। 9
तब यहोवा ने सुलैमान पर क्रोध किया, क्योंकि उसका मन इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा से फिर गया या जिस ने दो बार उसको दर्शन दिया या। 10 और उस ने
इसी बात के विषय में आज्ञा दी यी, कि पराथे देवताओं के पीछे न हो लेना, तौभी
उस ने यहोवा की आज्ञा न मानी। 11 और यहोवा ने सुलैमान से कहा, तुझ से जो
ऐसा काम हुआ है, और मेरी बन्धाई हुई वाचा और दी हुई वीधि तू ने पूरी नहीं की,
इस कारण मैं जाज्य को निश्चय तूफ से छीनकर तेरे एक कर्मचारी को दे दूंगा। 12
तौभी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनो में तो ऐसा न करूंगा; परन्तु तेरे पुत्र के
हाथ से राज्य छीन लूंगा। 13 फिर भी मैं पूर्ण राज्य तो न छीन लूंगा, परन्तु
अपके दास दाऊद के कारण, और अपके चुने हुए यरूशलेम के कारण, मैं तेरे पुत्र
के हाथ में एक गोत्र छोड़ दूंगा। 14 सो यहोवा ने एदोमी हदद को जो एदोमी
राजवंश का या, सुलैमान का शत्रु बना दिया। 15 क्योंकि जब दाऊद एदोम में या,
और योआब सेनापति मारे हुओं को मिट्टट देने गया, 16 (योआब तो समस्त
इस्राएल समेत वहां छ: महीने रहा, जब तक कि उस ने एदोम के सब मुरुषोंको
नाश न कर दिया) 17 तब हदद जो छोटा लड़का या, अपके पिता के कई एक

एदोमी सेवकोंके संग मिस्र को जाने की मनसा से भागा। 18 और वे मिद्यान से
होकर परान को आए, और परान में से कई पुरुषोंको संग लेकर मिस्र में फ़िरौन
राजा के पास गए, और फ़िरौन ने उसको घर दिया, और उसको भोजन मिलने की
आज्ञा दी और कुछ भूमि भी दी। 19 और हदद पर फ़िरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि
हुई, और उस ने उसको अपक्की साली अर्यात् तहपकेस रानी की बहिन ब्याह दी।
20 और तहपकेस की बहिन से गनूबत उत्पन्न हुआ और इसका दूध तहपकेस ने
फ़िरौन के भवन में छुड़ाया; तब बनूबत फ़िरौन के भवन में उसी के पुत्रोंके साय
रहता या। 21 जब हदद ने मिस्र में रहते यह सुना, कि दाऊद अपके पुरखाओं के
संग सो गया, और योआब सेनापति भी मर गया है, तब उस ने फ़िरौन से कहा,
मुझे आज्ञा दे कि मैं अपके देश को जाऊं ! 22 फ़िरौन ने उस से कहा, क्यों? मेरे
यहां तुझे क्या घटी हुई कि तू अपके देश को जला जाना चाहता है? उस ने उत्तर
दिया, कुछ नहीं हुई, तौभी मुझे अपश्य जाने दे। 23 फिर परमेश्वर ने उसका एक
और शत्रु कर दिया, अर्यात् एल्यादा के पुत्र रजोन को, वह तो अपके स्वामी सोबा
के राजा हददेजेर के पास से भागा या; 24 और जब दाऊद ने सोबा के जनोंको घात
किया, तब रजोन अपके पास कई पुरुषोंको इकट्ठे करके, एक दल का प्रधान हो
गया, और वह दमिश्क को जाकर वहीं रहने और राज्य करने लगा। 25 और उस
हानि को छोड़ जो हदद ने की, रजोन भी, सुलैमान के जीवन भर अस्राएल का शत्रु
बना रहा; और वह इस्राएल से घृणा रखता हुआ अराम पर राज्य करता या 26
फिर नबात का और सरूआह नाम एक विधवा का पुत्र यारोबाम नाम एक एप्रैमी
सरेदाबासी जो सुलैमान का कर्मचारी या, उस ने भी राजा के विरुद्ध सिर उठाया।
27 उसका राजा के विरुद्ध सिर अठाने का यह कारण हुआ, कि सुलैमान मिल्लो

को बना रहा या ओर अपके पिता दाऊद के नगर के दरार बन्द कर रहा या। 28
यारोबाम बड़ा हाूरवीर या, और जब सुलैमान ने जवान को देखा, कि यह
परिश्र्मी ह; तब उस ने उसको यूसुफ के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया।
29 उन्हीं दिनोंमें यारोबाम यरूशलेम से निकलकर जा रहा या, कि शीलोबासी
अहिय्याह नबी, नई चद्दर ओढ़े हुए मार्ग पर उस से मिला; और केवल वे ही
दोनोंमैदान में थे। 30 अपैर अहिय्याह ने अपक्की उस नई चद्दर को ले लिया, और
उसे फाड़कर बारह टुकड़े कर दिए। 31 तब उस ने यारोबाम से कहा, दस टुकड़े ले
ले; क्योंकि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि सुन, मैं राज्य को
सुलैमान के हाथ से छीन कर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूंगा। 32 परन्तु मेरे दास
दाऊद के कारण और यरूशलेम के कारण जो मैं ने इस्राएल के सब गोत्रोंमें से चुना
है, उसका एक गोत्र बना रहेगा। 33 इसका कारण यह है कि उन्होंने मुझे त्याग
कर सीदोनियोंकी देवी अश्तोरेत और मोआबियोंके देवता कमोश, और
अम्मोनियोंके देवता मिल्कोम को दणडवत की, और मेरे मार्गों पर नहीं चले :
और जो मेरी दृष्टि में ठीक है, वह नहीं किया, और मेरी वेधियोंऔर नियमोंको नहीं
माना जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया। 34 तौभी मैं उसके हाथ से पूर्ण राज्य
न ले लूंगा, परन्तु मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएं और विधियां
मानता रहा, उसके कारण मैं उसको जीवन भर प्रधान ठहराए रखूंगा। 35 परन्तु
उसके पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्यात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूंगा। 36 और उसके
पुत्र को मैं एक गोत्र दूंगा, इसलिथे कि यरूश्सलेम अर्यात् उस नगर में जिसे
अपना नाम रखने को मैं ने चुना है, मेरे दास दाऊद का दीपक मेरे साम्हने सदैव
बना रहे। 37 परन्तु तुझे मैं ठहरा लूंगा, और तू अपक्की इच्छा भर इस्राएल पर

राज्य करेगा। 38 और यदि तू मेरे दास दाऊद की नाईं मेरी सब आज्ञाएं, और मेरे
मार्गों पर चले, और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है, वही करे, और मेरी विधियां
और आाापएं मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूंगा, और जिस तनह मैं ने दाऊद का
घराना बनाए रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए रखूंगा, और तेरे हाथ इस्राएल
को दूंगा। 39 इस पाप के कारण मैं दाऊद के वंश को दु:ख दूंगा, तौभी सदा तक
नहीं। 40 और सुलैमान ने यारोबाम को मार डालना चाहा, परन्तु यारोबाम मिस्र
के राजा शीशक के पास भाग गया, और सुलैमान के मरने नक वहीं रहा। 41
सुलैमान की और सब बातें और उसके सब काम और उसकी बुद्धिमानी का वर्णन,
क्या सुलैमान के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 42 सुलैमान को यरूशलेम
में सब इस्राएल पर राज्य करते हुए चालीस वर्ष बीते। 43 और सुलैमान अपके
पुरखाओं के संग सोया, और उसको उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई,
और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्यान पर राजा हुआ।

1 राजा 12

1 रहूबियाम तो शकेम को गया, क्योंकि सब इस्राएली उसको राजा बनाने के लिथे
वहीं गए थे। 2 और जब नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना, (जो अब तक मिस्र
में रहता या, य्योंकि यारोबाम सुलैमान राजा के डर के मारे भगकर मिस्र में रहता
या। 3 सो उन लोगोंने उसको बुलवा भेजा) तब यारोबाम और इस्राएल की
समस्त सभा रहूबियाम के पास जाकर योंकहने लगी, 4 कि तेरे पिता ने तो हम
लोगोंपर भारी जूआ डाल रखा या, तो अब तू अपके पिता की कठिन सेवा को, और
उस भारी जूए को, जो उस ने हम पर डाल रखा है, कुछ हलका कर; तब हम तेरे

अधीन रहेंगे। 5 उस ने कहा, उभी तो जाओ, और तीन दिन के बाद मेरे पास फिर
आना। तब वे चले गए। 6 तब राजा रहूबियाम ने उन बूढ़ोंसे जो उसके पिता
सुलैमान के जीवन भर उसके साम्हने उपस्यित रहा करते थे सम्मति ली, कि
इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? 7
उन्होंने उसको यह उत्तर दिया, कि यदि तू अभी प्रजा के लोगोंका दास बनकर
उनके अधीन हो और उन से मधुर बातें कहे, तो वे सदैव तेरे अधीन बने रहेंगे। 8
रहूबियाम ने उस सम्मति को छोड़ दिया, जो बूढ़ोंने उसको दी यी,और उन
जवानोंसे सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे, और उसके सम्मुख उपस्यित
रहा करते थे। 9 उन से उस ने पूछा, मैं प्रजा के लोगोंको कैसा उत्तर दूं? उस में तुम
क्या सम्मति देते हो? उन्हो ने तो मुझ से कहा है, कि जो जूआ तेरे पिता ने हम
पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर। 10 जवानोंने जो उसके संग बड़े हुए थे उसको
यह उत्तर दिया, कि उन लोगोंने तुझ से कहा है, कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी
किया या, परन्तु तू उसे हमारे लिऐ हलका कर; तू उन से योंकहना, कि मेरी
छिंगुलिया मेरे पिता की कमर से भी मोटी है। 11 मेरे पिता ने तुम पर जो भारी
जूआ रखा या, उसे मैं और भी भारी करूंगा; मेरा पिता तो तुम को कोड़ोंसे ताड़ना
देता या, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूंगा। 12 तीसरे दिन, जैसे राजा ने ठहराया या, कि
तीसरे दिन मेरे पास फिर आना, वैसे ही यारोबाम और समस्त प्रजागण
रहूबियाम के पास उपस्यित हुए। 13 तब राजा ने प्रजा से कड़ी बातें कीं, 14 और
बूढ़ोंकी दी हुई सम्मति छोड़कर, जवानोंकी सम्मति के अनुसार उन से कहा, कि
मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी भारी कर
दूंगा : मेरे पिता ने तो कोड़ोंसे तुम को ताड़ना दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओं से

ताड़ना दूंगा। 15 सो राजा ने प्रजा की बान नहीं मानी, इसका कारण यह है, कि जो
वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा या,
उसको पूरा करने के लिथे उस ने ऐसा ही ठहराया या। 16 जब सब इस्राएल ने
देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले, कि दाऊद के साय हमारा क्या
अंश? हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं ! हे इस्राएल अपके अपके डेरे को
चले जाओ : अब हे दाऊद, अपके ही घराने की चिन्ता कर। 17 सो इस्राएल अपके
अपके डेरे को चले गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरोंमें बसे हुए थे उन
पर रहूबियाम राज्य करता रहा। 18 तब राजा रहूबियाम ने अदोराम को जो सब
बेगारोंपर अधिक्कारनी या, भेज दिया, और सब इस्राएलियोंने असको पत्थ्रवाह
किया, और वह मर गया : तब रहूबियाम फुतीं से अपके रय पर चढ़कर यरूशलेम
को भाग गया। 19 और इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया, और आज तक
फिरा जुआ है। 20 यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है, समस्त इस्राएल ने
उसको मणडली में बुलवा भेजकर, पूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, और
यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घाराने से कोई मिला न रहा। 21 जब
रडूबियाम यरूशलेम को आया, तब उस ने यहूदा के पूर्ण घराने को, और
बिन्यामीन के गोत्र को, जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्घा थे,
इकट्ठा किया, कि वे इस्राएल के घराने के साय लड़कर सुलैमान के पुत्र रहूबियाम
के वश में फिर राज्य कर दें। 22 तब परमेश्वन का यह वचन परमेश्वर के जन
शमायाह के पास पहुंचा कि यहूदा के राजा सुलैमान के पु,ा रहूबियाम से, 23
और यहूदा और बिन्यामीन के सब घराने से, और सब लोगोंसे कह, यहोवा
योंकहता है, 24 कि अपके भाई इस्राएलियोंपर चढ़ाई करके युद्ध न करो; तुम

अपके अपके घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा का
यह वचन मानकर उन्होंने उसके अनुसार लौट जाने को अपना अपना मार्ग
लिया। 25 तब यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शकेम नगर को दृढ़ करके उस में
रहने लगा; फिर वहांसे निकलकर पनूएल को भी दृढ़ किया। 26 तब यारोबाम
सोचने लगा, कि अब राज्य दाऊद के घराने का हो जाएगा। 27 यदि प्रजा के लोग
यरूशलेम में बलि करने को जाएं, तो उनका मन अपके स्वामी यहूदा के राजा
रहूगियाम की ओर फिरेगा, और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा रहूबियाम के
हो जाएंगे। 28 तो राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगोंसे
कहा, यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है इसलिथे हे इस्राएल अपके
देवताओं को देखो, जो नुम्हें मिस्र देश से दिकाल लाए हैं। 29 तो उस ने एक बछड़े
को बेतेल, और दूसरे को दान में स्यपित किया। 30 और यह बात पाप का कारण
हुई; क्योंकि लोग उस एक के साम्हने दणडवत करने को दान तक जाने लगे। 31
और उस ने ऊंचे स्यानोंके भवन बनाए, और सब प्रकार के लोगोंमें से जो लेवीवंशी
न थे, याजक ठहराए। 32 फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहूदा
के पर्व के समान एक पर्व इहरा दिया, और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा; इस रीति
उस ने बेतेल में अपके बनाए हुए बछड़ोंके लिथे वेदी पर, बलि किया, और अपके
बनाए हुए ऊंचे स्यनोंके याजकोंको बेतेल में ठहरा दिया। 33 और जिस महीने की
उस ने अपके मन में कल्पना की यी अर्यात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह
बेतेल में अपक्की बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उस ने इस्राएलियोंके लिथे
एक पर्ब्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया।

1 राजा 13

1 तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का बक जन यहूदा से बेतेल को आया, और
यारोबाम धूप जलाने के लिथे वेदी के पास खड़ा या। 2 उस जन ने यहोवा से वचन
पाकर वेदी के विरुद्ध योंपुकारा, कि वेदी, हे वेदी ! यहोवा योंकहता है, कि सुन,
दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्यनोंके
याजकोंको जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर
पनुष्योंकी हड्डियां जलाई जाएंगी। 3 और उस ने, उसी दिन यह कहकर उस बात
का एक चिह्न भी बताया, कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिह्न यह है
कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी। 4 तब ऐसा हुआ कि
परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उस ने बेतेल के विरुद्ध पुकार कर कहा,
यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको पाड़ लो : तब उसका हाथ
जो उसकी ओर बढ़ाया गया या, सूख गया और वह उसे अपक्की ओर खींच न
सका। 5 और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई; सो वह चिह्न पूरा हुआ,
जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा या। 6 तब राजा ने परमेश्वर के
जन से कहा, अपके परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिथे प्रार्यना कर, कि मेरा
हाथ ज्योंका त्यो हो जाए : तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा
का हाथ फिर ज्योंका त्योंहो गया। 7 तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे
संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूंगा। 8 परमेश्वर के
जन ने राजा से कहा, चाहे नू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा;
और इस स्यन में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा। 9 क्योंकि यहोवा के
वचन के द्वारा मुझे योंआज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी पीना,
और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। 10 इसलिथे वह उस मार्ग से जिसे

बेतेल को गया या न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया। 11 बेतेल में एक बूढ़ा नबी
रहता या, और उसके एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामोंका वर्णन किया जो
परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; और जो बातें उस ने राजा से कही
थीं, उनको भी उस ने अपके पिता से कह सुनाया। 12 उसके बेटोंने तो यह देखा
या, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया या, किस मार्ग से चला गया, सो
उनके पिता ने उन से पूछा, वह किस मार्ग से चला गया? 13 और उस ने अपके
बेटोंसे कहा, मेरे लिथे गदहे पर काठी बान्धो्र; तब उन्होंने गदहे पर काठी
बान्धी, और वह उस पर चढ़ा, 14 और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक
बांजवृझ के तले बैठा हुआ पाया; और उस से मूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से
आया या, क्या तू वही है? 15 उस ने कहा हां, वही हूँ। उस ने उस से कहा, मेरे
संग घर चलकर भोजन कर। 16 उस ने उस से कहा, मैं न तो तेरे संग लौट
सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूँ और न मैं इस स्यान में तेरे संग रोटी
खाऊंगा, वा पानी पीऊंगा। 17 क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा
मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू
जाएगा उस से न लौटना। 18 उस ने कहा, जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूँ;
और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपके संग
अपके घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए। यह उस ने उस से फूठ
कहा। 19 अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और मानी
पीया। 20 और जब वे मेज पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास
पहुंचा, जो दूसरे को लौटा ले आया या। 21 और उस ने परमेश्वर के उस जन को
जो यहूदा से आया या, पुकार के कहा, यहोवा योंकहता है इसलिथे कि तू ने यहोवा

का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी यी उसे भी नहीं
माना; 22 परन्तु जिस स्यान के विषय उस ने तुझ से कहा या, कि उस में न तो
रोटी खाना और न पानी पीना, उसी में तू ने लौट कर रोटी खाई, और पानी भी
पिया है इस कारण तूफे अपके पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।
23 जब यह खा पी चुका, तब उस ने परमेश्वर के उस जन के लिथे जिसको वह
लौटा ले आया या गदहे पर काठी बन्धाई। 24 जब वह मार्ग में चल रहा या, तो
एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसकी लोय मार्ग पर पक्की
रही, और गदहा उसके पास खड़ा रहा और सिंह भी लोय के पास खड़ा रहा। 25 जो
लोग उधर से चले आ रहे थे उन्होंने यह देख कर कि मार्ग पर एक लोय पक्की है,
और उसके पास सिंह खड़ा है, उस नगर में जाकर जहां वह बूढा नबी रहता या यह
समाचार सुनाया। 26 यह सुनकर उस नबी ने जो उसको मार्ग पर से लौटा ले
आया या, कहा, परमेश्वर का वही जन होगा, जिस ने यहोवा के वचन के विरुद्ध
किया या, इस कारण यहोवा ने उसको सिंह के पंजे में पड़ने दिया; और यहोवा के
उस वचन के अनुसार जो उस ने उस से कहा या, सिंह ने उसे फाड़कर मार डाला
होगा। 27 तब उस ने अपके बेटोंसे कहा, मेरे लिथे गदहे पर काठी बान्धो; जब
उन्होंने काठी बान्धी, 28 तब उस ने जाकर उस जन की लोय मार्ग पर पक्की हुई,
और गदहे, और सिंह दोनोंको लोय के पास खड़े हुए पाया, और यह भी कि सिंह ने
न तो लौय को खाया, और न बदहे को फाड़ा है। 29 तब उस बूढे नबी ने परमेश्वर
के जन की लोय उठाकर गदहे पर लाद ली, और उसके लिथे छाती पीटने लगा,
और उसे मिट्टी देने को अपके नगर में लौटा ले गया। 30 और उस ने उसकी लोय
को अपके कब्रिस्तान में रखा, और लोग हाथ, मेरे भाई ! यह कहकर छाती पीटने

लगे। 31 फिर उसे मिट्टी देकर उस ने अपके बेटोंसे कहा, जब मैं मर जाऊंगा तब
मुझे इसी कब्रिस्तान में रखना, जिस में परमेश्वर का यह जन रखा गया है, और
मेरी हड्डियां उसी की हड्डियोंके पास धर देना। 32 क्योंकि जो वचन उस ने
यहोवा से पाकर बेतेल की वेदी और शोंमरोन के नगरोंके सब ऊंचे स्यानोंके
भवनोंके विरुद्ध पुकार के कहा है, वह निश्चय पूरा हो जाएगा। 33 इसके बाद
यारोबाम अपक्की बुरी चाल से न फिरा। उस ने फिर सब प्रकार के लोगो में से
ऊंचे स्यानोंके याजक बनाए, वरन जो कोई चाहता या, उसका संस्कार करके, वह
उसको ऊंचे स्यानोंका याजक होने को ठहरा देता या। 34 और यह बात यारोबाम
के घराने का पाप ठहरी, इस कारण उसका विनाश हुआ, और वह धरती पर से
नाश किया गया।

1 राजा 14

1 उस समय यारोबाम का बेटा अबिय्याह रोगी हुआ। 2 तब यारोबाम ने अपक्की
स्त्री से कहा, ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहिचान न सके कि यह यारोबाम की स्त्री
है, और शीलो को चक्की जा, वहां तो अहिय्याह नबी रहता है जिस ने मुझ से कहा
या कि तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा। 3 उसके पास तू दस रोटी, और पपड़ियां
और एक कुप्पी मधु लिथे हुए जा, और वह तुझे बताएगा कि लड़के को क्या
होगा। 4 यारोबाम की स्त्री ने वैसा ही किया, और चलकर हा◌ीलो को पहुंची और
अहिय्याह के घर पर आई : अहिय्याह को तो कुछ सूफ न पड़ता या, क्योंकि
बुढ़ापे के कारण उसकी आंखें धुन्धली पड़ गई यीं। 5 और यहोवा ने अहिय्याह से
कहा, सुन यारोबाम की स्त्री तुझ से अपके बेटे के विषय में जो रोगी है कुछ पूछने

को आती है, तू उस से थे थे बातें कहना; वह तो आकर अपके को दूसरी औरत
बनाएगी। 6 जब अहिय्याह ने द्वार में आते हुए उसके पांव की आहट सुनी तब
कहा, हे यारोबाम की स्त्री ! भीतर आ; तू अपके को क्योंदूसरी स्त्री बनाती है? मुझे
तेरे लिथे भारी सन्देश मिला है। 7 तू जाकर यारोबाम से कह कि इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा तुझ से योंकहता है, कि मैं ने तो तुझ को प्रजा में से बढ़ाकर
अपक्की प्रजा इस्राएल पर प्रधान किया, 8 और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर
तुझ को दिया, परन्तु तू मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी आज्ञाओं को
मानता, और अपके पूर्ण मन से मेरे पीछे पीछे चलता, और केवल वही करता या
जो मेरी दृष्टि में ठीक है। 9 तू ने उन सभोंसे बढ़कर जो तुझ से पहिले थे बुराई, की
है, और जाकर पराथे देवता की उपासना की और मूरतें ढालकर बनाई, जिस से
मुझे क्रोधित कर दिया और मुझे तो पीठ के पीछे फेंक दिया है। 10 इस कारण मैं
यारोबाम के घराने पर विपत्ति डालूंगा, वरन मैं यारोबाम के कुल में से हर एक
लड़के को ओर क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल के मध्य हर बक रहनेवाले को
भी नष्ट कर डालूंगा : और जैसा कोई गोबर को तब तक उठाता रहता है जब तक
वह सब उठा तहीं लिया जाता, वैसे ही मैं यारोबाम के घराने की सफाई कर दूंगा।
11 यारोबाम के घराने का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खाएंगे; और जो
मैदान में मरे, उसको आकाश के पक्की खा जाएंगे; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है !
12 इसलिथे तू उठ और अपके घर जा, और नगर के भीतर तेरे पांव पड़ते ही वह
बालक तर जाएगा। 13 उसे तो समस्त इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे;
यारोबाम के सन्तानोंमें से केवल उसी को कबर मिलेगी, क्योंकि यारोबाम के
घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दष्टि में भला

है। 14 फिर यहोवा इस्राएल के लिथे एक ऐसा राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन
यारोबाम के घराने को नाश कर डालेगा, परन्तु कब? 15 यह अभी होगा। क्योंकि
यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है,
और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उस ने उनके पुरखाओं को दी यी
उखाड़कर महानद के पार तित्तर-बित्तर करेगा; क्योंकि उन्होंने अशेरा ताम मूरतें
अपके लिथे बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है। 16 और उन पापोंके कारण जो
यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा इस्राएल को त्याग देगा। 17
तब यारोबाम की स्त्री बिदा होकर चक्की और तिरज़ा को आई, और वह भवन की
डेवढ़ी पर जैसे ही पहुंची कि वह बालक मर गया। 18 तब यहोवा के वचन के
अनुसार जो उस ने अपके दास अहिय्याह नबी से कहलाया या, समस्त इस्राएल
ने उसको मिट्टी देकर उसके लिथे शोक मनाया। 19 यारोबाम के और काम
अर्यात् उस ने कैसा कैसा युद्ध किया, और कैसा राज्य किया, यह सब इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। 20 यारोबाम बाईस वर्ष तक राज्य
करके अपके पुरखाओं के साय सो गया और नादाब नाम उसका पुत्र उसके स्यान
पर राजा हुआ। 21 और सुलैमान का पुत्र रहूबियाम यहूदा में राज्य करने लगा।
रहूबियाम इकतालीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा; और यरूशलेम जिसको
यहोवा ने सारे इस्राएली गोत्रोंमें से अपना नाम रखने के लिथे चुन लिया या, उस
नगर में वह सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नामा या
जो अम्मोनी स्त्री यी। 22 और यहूदी लोग वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में
बुरा है, और अपके पुरखाओं से भी अधिक पाप काके उसकी जलन भड़काई। 23
उन्होंने तो सब ऊंचे टीलोंपर, और सब हरे वृझोंके तले, ऊंचे स्यान, और लाठें,

और अशेरा नाम मूरतें बना लीं। 24 और उनके देश में पुरुषगामी भी थे; निदान
वे उन जातियोंके से सब घिनौने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियोंके
साम्हने से निकाल दिया या। 25 राजा सहूबियाम के पांचवें वर्ष में मिस्र का राजा
शीशक, यरूशलेम पर चढ़ाई करके, 26 यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएं और
राजभवन की अनमोल वस्तुएं, सब की सब उठा ले गया; और सोने की जो ढालें
सुलैमान ने बनाई थीं सब को वह ले गया। 27 इसलिथे राजा रहूबियाम ने उनके
बदले पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें पहरुओं के प्रधानोंके हाथ सौंप दिया जो
राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। 28 और जब जब राजा यहोवा के भवन
में जाता या तब तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते, और फिर अपक्की कोठरी में
लौटाकर रख देते थे। 29 रहूबियाम के और सब काम जो उस ने किए वह क्या
यहूदा के राजाओ के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 30 रहूबियाम और
यारोबाम में तो सदा लड़ाई होती रही। 31 और रहूबियाम जिसकी माता नामा
नाम एक अम्मोनिन यी, अपके पुरखाओं के साय सो गया; और उन्हीं के पास
दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी गई : और उसका पुत्र अबिय्याम उसके स्यान पर
राज्य करने लगा।

1 राजा 15

1 नाबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याम यहूदा पर
राज्य करने लगा। 2 और वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।
उसकी माता का नाम माका या जो अबशालोम की पुत्री यी : 3 वह वैसे ही पापोंकी
लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उस से पहिले किए थे और उसका मन

अपके परमेश्वर यहोवा की ओर अपके परदादा दाऊद की नाई पूरी रीति से सिद्ध न
या; 4 तौभी दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम में उसे एक
दीपक दिया अर्यात् उसके पुत्र को उसके बाद ठहराया और यरूशलेम को बनाए
रखा। 5 क्योंकि दाऊद वह किया करता या जो यहोवा की दृष्टि में ठीक या और
हित्ती ऊरिय्याह की बात के सिवाय और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से
जीवन भर कभी न मुड़ा। 6 रहूबियाम के जीवन भर तो उसके और यारोबाम के
बीच लड़ाई होती रही। 7 अबिय्याम के और सब काम जो उस ने किए, क्या वे
यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और अबिय्याम की
यारोबाम के साय लड़ाई होती रही। 8 निदान अबिय्याम अपके पुरखाओं के संग
सोया, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आसा उसके स्यान
पर राज्य करने लगा। 9 इस्राएल के राजा यारोबाम के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा
पर राज्य करने लगा; 10 और यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा,
और उसकी माता अबिशालोम की पुत्री माका यी। 11 और आसा ने अपके
मूलपुरुष दाऊद की नाई वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक या। 12 उस ने तो
पुरुषगामियोंको देश से निकाल दिया, और जितनी मूरतें उसके पुरखाओं ने
बनाई यी उन सभोंको उस ने दूर कर दिया। 13 वरन उसकी माता माका जिस ने
अशेरा के लिथे एक घिनौनी मूरत बनाई यी उसको उस ने राजमाता के पद से
उतार दिया, और आसा ने उसकी मूरत को काट डाला और किद्रोन के नाले में
फूंक दिया। 14 परन्तु ऊंचे स्यान तो ढाए न गए; तौभी आसा का मन जीवन भर
यहोवा की ओर पूरी रीति से लगा रहा। 15 और जो सोना चांदी और पात्र उसके
पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने स्वयं अर्पण किए थे, उन सभोंको उस ने

यहोवा के भवन में पहुंचा दिया। 16 और आसा और इस्राएल के राजा बाशा के
बीच उनके जीवन भर युद्ध होता रहा 17 और इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर
चढ़ाई की, और रामा को इसलिथे दृढ़ किया कि कोई यहूदा के राजा आसा के पास
आने जाने न पाए। 18 तब आसा ने जितना सोना चांदी यहोवा के भवन और
राजभवन के भणडारोंमें रह गया या उस सब को निकाल अपके कर्मचारियोंके
हाथ सौंपकर, दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास जो हेज्योन का पोता
और तब्रिम्मोन का पुत्र या भेजकर यह कहा, कि जैसा मेरे और तेरे पिता के मध्य
में वैसा ही मेरे और तेरे मध्य भी वाचा बान्धी जाए : 19 देख, मैं तेरे पास चांदी
सोने की भेंट भेजता हूँ, इसलिथे आ, इस्राएल के राजा बाशा के साय की अपक्की
वाचा को टाल दे, कि वह मेरे पास से चला जाए। 20 राजा आसा की यह बात
मानकर बेन्हदद ने अपके दलोंके प्रधानोंसे इस्राएली नगरोंपर चढ़ाई करवाकर
इय्योन, दान, आबेल्वेत्माका और समस्त किन्नेरेत को और नप्ताली के समस्त
देश को पूरा जीत लिया। 21 यह सुनकर बाशा ने रामा को दृढ़ करना छोड़ दिया,
और तिर्सा में रहने लगा। 22 तब राजा आसा ने सारे यहूदा में प्रचार करवाया और
कोई अनसुना न रहा, तब वे रामा के पत्थ्रोंऔर लकड़ी को जिन से बासा उसे दृढ़
करता या उठा ले गए, और उन से राजा आसा ने बिन्यामीन के गेबा और मिस्पा
को दृढ़ किया। 23 आसा के और काम और उसकी वीरता और जो कुछ उस ने
किया, और जो नगर उस ने दृढ़ किए, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास
की पुस्तक में नहीं लिखा है? 24 परन्तु उसके बुढ़ापे में तो उसे पांवोंका रोग लग
गया। निदान आसा अपके पुरखाओं के संग सो गया, और उसे उसके मूलपुरुष
दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी गई और उसका पुत्र यहोशापात उसके

स्यान पर राज्य करने लगा। 25 यहूदा के राजा आसा के दूसरे वर्ष में यारोबाम
का पुत्र नादाब इस्राएल पर राज्य करने लगा; और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।
26 उस ने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या और अपके पिता के मार्ग
पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उस ने इस्राएल से करवाया या। 27
नादाब सब इस्राएल समेत पलिश्तियोंके देश के गिब्बतोन नगर को घेरे या। और
उस्साकार के गोत्र के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी
करके गिब्बतोन के पास उसको मार डाला। 28 और यहूदा के राजा आसा के
तीसरे वर्ष में बाशा ने नादाब को मार डाला, और उसके स्यान पर राजा बन गया।
29 राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उस ने
यारोबाम के वंश को यहां तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब
यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपके दास शीलोवासी अहिय्याह
से कहवाया या। 30 यह इस कारण हुआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए, और
इस्राएल से भी करवाए थे, और उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित
किया या। 31 नादाब के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक पें नहीं लिखे हैं? 32 आसा और इस्राएल के राजा
बाशा के मध्य में तो उनके जीवन भर युद्ध होता रहा। 33 यहूदा के राजा आसा के
तीसरे वर्ष में अहिय्याह का पुत्र बाशा, तिर्सा में समस्त इस्राएल पर राज्य करने
लगा, और चौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा। 34 और उस ने वह किया, जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा या, और यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे
उस ने हस्राएल से करवाया या।

1 राजा 16

1 और बाशा के विषय यहोवा का यह वचन हनानी के पुत्र थेहू के पास पहुंचा, 2
कि मैं ने तुझ को मिट्टी पर से उठाकर अपक्की प्रजा इस्राएल का प्रधान किया,
परन्तु तू यारोबाम की सी चाल चलता और मेरी प्रजा इस्राएल से ऐसे पाप कराता
आया है जिन से वे मुझे क्रोध दिलाते हैं। 3 सुन, मैं बाशा और उसके घराने की
पूरी रीति से सफाई कर दूंगा और तेरे घराने को नबात के पुत्र यारोबाम के समान
कर दूंगा। 4 बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खा डालेंगे,
और उसका जो कोई मैदान में मर जाए, उसको आकाश के पक्की खा डालेंगे। 5
बाशा के और सब काम जो उस ने किए, और उसकी वीरता यह सब क्या इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 6 निदान बाशा अपके
पुरखाओं के संग सो गया और तिर्सा में उसे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र एला
उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 7 यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र थेहू के
द्वारा बाशा और उसके घराने के विरुद्ध आया, वह न केवल उन सब बुराइयोंके
कारण आया जो उस ने यारोबाम के घराने के समान होकर यहोवा की दृष्टि में
किया या और अपके कामोंसे उसको क्रोधित किया, वरन इस कारण भी आया,
कि उस ने उसको मार डाला या। 8 यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवे वर्ष में बाशा
का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता
रहा। 9 जब वह तिर्सा में अर्सा नाम भण्डारी के घर में जो उसके तिर्सावाले भवन
का प्रधान या, दारू पीकर मतवाला हो गया या, तब उसके जिम्री नाम एक
कर्मचारी ने जो उसके आधे रयोंका प्रधान या, 10 राजद्रोह की गोष्ठी की और
भीतर जाकर उसको मार डाला, और उसके स्यान पर राजा बन गया। यह यहूदा
के राजा आसा के सत्ताइसवें वर्ष में हुआ। 11 और जब वह राज्य करने लगा, तब

गद्दी पर बैठते ही उस ने बाशा के पूरे घराने को मार डाला, वरन उस ने न तो
उसके कुटुम्बियोंऔर न उसके मित्रोंमें से एक लड़के को भी जीवित छोड़ा। 12 इस
रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने थेहू नबी के द्वारा बाशा के विरुद्ध
कहा या, जिम्री ने बाशा का समस्त घराना नष्ट कर दिया। 13 इसका कारण बाशा
के सब पाप और उसके पुत्र एला के भी पाप थे, जो उन्होंने स्वयं आप करके और
इस्राएल से भी करवा के इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातोंसे क्रोध
दिलाया या। 14 एला के ऒर सब काम जो उस ने किए, वह क्या इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नही लिखे हैं। 15 यहूदा के राजा आसा के
सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री तिर्सा में राज्य करने लगा, और तिर्सा में सात दिन तक
राज्य करता रहा। उस समय लोग पलिश्तियोंके देश गिब्बतोन के विरुद्ध डेरे
किए हुए थे। 16 तो जब उन डेरे लगाए हुए लोगोंने सुना, कि जिम्री ने राजद्रोह की
गोष्ठी करके राजा को मार डाला, तब उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्री नाम
प्रधान सेनापति को छावनी में इस्राएल का राजा बनाया। 17 तब ओम्री ने समस्त
इस्राएल को संग ले गिब्बतोन को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया। 18 जब जिम्री ने
देखा, कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में
आग लगा दी, और उसी में स्वयं जल मरा। 19 यह उसके पापोंके कारण हुआ
क्योंकि उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या, क्योकि वह यारोबाम की
सी चाल और उसके किए हूए और इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला।
20 जिम्री के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उस ने की, यह सब क्या
इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 21 तब इस्राएली
प्रजा के दो भाग किए गए, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नाम गीनत के पुत्र को

राजा करने के लिथे उसी के पीछे हो लिए, और आधे ओम्री के पीछे हो लिए। 22
अन्त में जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र
तिब्नी के पीछे हो लिए थे, इसलिथे तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा बन गया।
23 यहूदा के राजा आशा के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल पर राज्य करने लगा,
और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छ:वर्ष तो तिर्सा में राज्य किया। 24
और उस ने शमेर से शोमरोन पहाड़ को दो किक्कार चांदी में मोल लेकर, उस पर
एक नगर बसाया; और अपके बसाए हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के
नाम पर शोमरोन रखा। 25 और ओम्री ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या
वरन उन सभोंसे भी जो उससे पहिले थे अधिक बुराई की। 26 वह नबात के पुत्र
यारोबाम की सी सब चाल चला, और उसके सब पापोंके अनुसार जो उस ने
इस्राएल से करवाए थे जिसके कारण इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को उन्होंने
अपके व्यर्य कर्मोंसे क्रोध दिलाया या। 27 ओम्री के और काम जो उस ने किए,
और जो वीरता उस ने दिखाई, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है? 28 निदान ओम्री अपके पुरखाओं के संग सो गया और
शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र अहाब उसके स्यान पर राज्य
करने लगा। 29 यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब
इस्राएल पर राज्य करने लगा, और इस्राएल पर शोमरोन में बाईस पर्ष तक राज्य
करता रहा। 30 और ओम्री के पुत्र अहाब ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले
थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। 31 उस ने तो नबात के पुत्र
यारोबाम के पापोंमें चलना हलकी सी बात जानकर, सीदोनियोंके राजा एतबाल
की बेटी ईजेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना की और उसको दणडवत

किया। 32 और उस ने बाल का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में बाल की
एक वेदी बनाई। 33 और अहाब ने एक अशेरा भी बनाया, वरन उस ने उन सब
इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को
क्रोध दिलाने के काम किए। 34 उसके दिनोंमें बेतेलवासी हीएल ने यरीहो को फिर
बसाया; जब उस ने उसकी नेव डाली तब उसका जेठा पुत्र अबीराम मर गया, और
जब उस ने उसके फाटक खड़े किए तब उसका लहुरा पुत्र सगूब मर गया, यह
यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा
कहलवाया या।

1 राजा 17

1 और तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियोंमें से या उस ने अहाब से कहा,
इस्राएल का परमेश्वा यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्य्ित रहता हूँ, उसके जीवन
की शपय इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पकेगी। 2
तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, 3 कि यहां से चलकर पूरब ओर मुख
करके करीत नाम नाले पें जो यरदन के साम्हने है छिप जा। 4 उसी नाले का पानी
तू पिया कर, और मैं ने कौवोंको आज्ञा दी है कि वे तूफे वहां खिलाएं। 5 यहोवा का
यह वचन मानकर वह यरदन के साम्हने के करीत नाम नाले में जाकर छिपा
रहा। 6 और सबेरे और सांफ को कौवे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे
और वह नाले का पानी पिया करता या। 7 कुछ दिनोंके बाद उस देश में वर्षा न
होने के कारण नाला सूख गया। 8 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, 9
कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जाकर वहीं रह : सुन, मैं ने वहां की एक

विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है। 10 सो वह वहां से चल दिया, और
सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंचकर उस ने क्या देखा कि, एक
विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उस ने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को
योड़ा पानी ले आ। 11 जब वह लेने जा रही यी, तो उस ने उसे पुकार के कहा
अपके हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ। 12 उस ने कहा, तेरे
परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपय मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में
मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में योड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर
लिए जाती हूँ कि अपके और अपके बेटे के लिथे उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं,
फिर मर जाएं। 13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जाकर अपक्की बात के
अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिथे एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ,
फिर इसके बाद अपके और अपके बेटे के लिथे बनाना। 14 क्योंकि इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब
तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा। 15 तब वह
चक्की गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और
उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। 16 यहोवा के उस वचन के अनुसार जो
उस ने एलिय्याह के द्वारा कहा या, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी
का तेल घट गया। 17 इन बातोंके बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी यी,
रोगी हुआ, और उसका रोग यहां तक बढ़ा कि उसका सांस लेना बन्द हो गया। 18
तब वह एलिय्याह से कहने लगी, हे परमेश्वर के जन ! मेरा तुझ से क्या काम?
क्या तू इसलिथे मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे
पाप का स्मरण दिलाए ? 19 उस ने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे; तब वह उसे

उसकी गोद से लेकर उस अटारी पर ले गया जहां वह स्वयं रहता या, और
अपक्की खाट पर लिटा दिया। 20 तब उस ने यहोवा को पुकारकर कहा, हे मेरे
परमेश्वर यहोवा ! क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर जिसके यहां मैं टिका
हूं, इस पर भी विपत्ति ले आया है? 21 तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और
यहोवा को पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा ! इस बालक का प्राण इस में
फिर डाल दे। 22 एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण
उस में फिर आ गया और वह जी उठा। 23 तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से
नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप
दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है। 24 स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय
हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से
निकलता है, वह सच होता है।

1 राजा 18

1 बहुत दिनोंके बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा,
कि जाकर अपके अपप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा। 2
तब एलिय्याह अपके आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय शोमरोन में
अकाल भारी या। 3 इसलिथे अहाब ने ओबद्याह को जो उसके घराने का दीवान या
बुलवाया। 4 ओबद्याह तो यहोवा का भय यहां तक मानता या कि जब हेज़ेबेल
यहोवा के नबियोंको नाश करती यी, तब ओबद्याह ने एक सौ नबियोंको लेकर
पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा; और अन्न जल देकर उनका
पालन-पोषण करता रहा। 5 और अहाब ने ओबद्याह से कहा, कि देश में जल के

सब सोतोंऔर सब नदियोंके पास जा, कदाचित इतनी घास मिले कि हम
घेड़ोंऔर खच्चरोंको जीवित बचा सकें, 6 और हमारे सब पशु न मर जाएं। और
उन्होंने आपस में देश बांटा कि उस में होकर चलें; एक ओर अहाब और दूसरी
ओर ओबद्याह चला। 7 ओबद्याह मार्ग में या, कि एलिय्याह उसको मिला; उसे
चरन्ह कर वह मुंह के बल गिरा, और कहा, हे मेरे प्रभु एलिय्यह, क्या तू है? 8
उस ने कहा हां मैं ही हूँ : जाकर अपके स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला है। 9
उस ने कहा, मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने के लिथे अहाब
के हाथ करना चाहता है? 10 तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपय कोई ऐसी
जाति वा राज्य नहीं, जिस में मेरे स्वामी ने तुझे ढूंढ़ने को न भेजा हो, और जब
उन लोगोंने कहा, कि वह यहां नहीं है, तब उस ने उस राज्य वा जाति को इसकी
शपय खिलाई कि एलिय्याह नहीं मिला। 11 और अब तू कहता है कि जाकर
अपके स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला ! 12 फिर ज्योंही मैं तेरे पास से चला
जाऊंगा, त्योंही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहां उठा ले जाएगा, सो जब मैं
जाकर अहाब को बताऊंगा, और तू उसे न मिलेगा, तब वह मुझे मार डालेगा :
परन्तु मैं तेरा दास अपके लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूँ ! 13 क्या
मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया, कि जब हेज़ेबेल यहोवा के नबियोंको घात
करती यी तब मैं ने क्या किया? कि यहोवा के नबियोंमें से एक सौ लेकर
पचाय-पचाय करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें अन्न जल देकर पालता
रहा। 14 फिर अब तू कहता है, जाकर अपके स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला
है ! तब वह मुझे घात करेगा। 15 एलिय्याह ने कहा, सेनाओं का यहोवा जिसके
साम्हने मैं रहता हूँ, उसके जीवन की शपय आज मैं अपके अप को उसे

दिखाऊंगा। 16 तब ओबद्याह अहाब से मिलने गया, और उसको बता दिया, सो
अहाब एलिय्याह से मिलने चला। 17 एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, हे
इस्राएल के सतानेवाले क्या तू ही है? 18 उस ने कहा, मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं
दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है; क्योंकि तुम यहोवा की
आज्ञाओ को टालकर बाल देवताओं की उपासना करने लगे। 19 अब दूत भेजकर
सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियोंऔर अशेरा के चार सौ
नबियोंको जो हेज़ेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा
कर ले। 20 तब अहाब ने सारे इस्राएलियोंको बुला भेजा और नबियोंको कर्म्मेल
पर्वत पर इकट्ठा किया। 21 और एलिय्याह सब लोगोंके पास आकर कहने लगा,
तुम कब तक दो विचारोंमें लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे
हो लेओ; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लेओ। लोगोंने उसके उत्तर में एक
भी बात न कही। 22 तब एलिय्याह ने लोगोंसे कहा, यहोवा के नबियोंमें से केवल
मैं ही रह गया हूँ; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं। 23 इसलिथे दो बछड़े
लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपके लिथे चुनकर उसे टुकड़े टुकड़े काटकर
लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके
लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा। 24 तब तुम तो अपके दवता से
प्रार्यना करना, और मैं यहोवा से प्रार्यना करूंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे
वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात। 25 और एलिय्याह ने
बाल के नबियोंसे कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम
तो बहुत हो; तब अपके देवता से प्रार्यना करना, परन्तु आग न लगाना। 26 तब
उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया या लेकर तैयार किया, और भोर से

लेकर दोपहर तक वह यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी
सुन, हे बाल हमारी सुन ! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देनेवाला हुआ।
तब वे अपक्की बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे। 27 दोपहर को एलिय्याह
ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊंचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह
तो ध्यान लगाए होगा, वा कहीं गया होगा वा यात्रा में होगा, वा हो सकता है कि
सोता हो और उसे जगाना चाहिए। 28 और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार पुकार के
अपक्की रीति के अनुसार छुरियोंऔर बर्छियोंसे अपके अपके को यहां तक घायल
किया कि लोहू लुहान हो गए। 29 वे दोपहर भर ही क्या, वरन भेंट चढ़ाने के
समय तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने
उत्तर दिया और न कान लगाया। 30 तब एलिय्याह ने सब लोगोंसे कहा, मेरे
निकट आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उस ने यहोवा की वेदी की
जो गिराई गई यी मरम्मत की। 31 फिर एलिय्याह ने याकूब के पुत्रोंकी गिनती
के अनुसार जिसके पास यहोवा का यह पचन आया या, 32 कि तेरा नाम इस्राएल
होगा, बारह पत्यर छांटे, और उन पत्यरोंसे यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई;
और उसके चारोंओर इतना बड़ा एक गड़हा खोद दिया, कि उस में दो सआ बीज
समा सके। 33 तब उस ने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े
काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और
लकड़ी पर उण्डेल दो। 34 तब उस ने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगोंने
दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उस ने कहा, तीसरी बार करो; तब लोगोंने तीसरी
बार भी वैसा ही किया। 35 और जल वेदी के चारोंओर बह गया, और गड़हे को भी
उस ने जल से भर दिया। 36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप

जाकर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ! आज
यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने थे
सब काम तफ से वचन पाकर किए हैं। 37 हे यहावा ! मेरी सुन, मेरी सुन, कि थे
लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।
38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और
पत्थ्रोंऔर धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया। 39
यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही
परमेश्वर है; 40 एलिय्याह ने उन से कहा, बाल के नबियोंको पकड़ लो, उन में से
एक भी छूटते न पाए; तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें
नीचे किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला। 41 फिर एलिय्याह ने अहाब से
कहा, उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पडती है। 42 तब
अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और
भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनोंके बीच किया। 43 और उस ने अपके सेवक से
कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उस ने चढ़कर देखा और लौटकर
कहा, कुछ नहीं दीखता। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा। 44 सातवीं बार
उस ने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा आदल उठ रहा है।
एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जाकर कह, कि रय जुतवा कर नीचे जा, कहीं
ऐसा न हो कि नू वर्षा के कारण रुक जाए। 45 योड़ी ही देर में आकाश वायु से
उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भरी वर्षा होने लगी; और
अहाब सवार होकर यिज्रेल को चला। 46 तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी
हुई; कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया।

1 राजा 19

1 तब अहाब ने हेज़ेबेल को एलिय्याह के सब काम विस्तार से बताए कि उस ने
सब नबियोंको तलवार से किस प्रकार मार डाला। 2 तब हेज़ेबेल ने एलिय्याह के
पास एक दूत के द्वारा कहला भेजा, कि यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण
उनका सा न कर डालूं तो देवता मेरे साय वैसा ही वरन उस से भी अधिक करें। 3
यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा, और यहूदा के बेर्शेबा को पहुंचकर
अपके सेवक को वहीं छोड़ दिया। 4 और आप जंगल में एक दिन के मार्ग पर
जाकर एक फाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहां उस ने यह कह कर अपक्की मृत्यु
मांगी कि हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपके पुरखाओं से
अच्छा नहीं हूँ। 5 चह फाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे
छूकर कहा, उठकर खा। 6 उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने
पत्यरोंपर पको ऊई एक रोटी, और एक सुराही पानी धरा है; तब उस ने खाया
और पिया और फिर लेट गया। 7 दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर
कहा, उठकर खा, क्योंकि तुझे बहुत भारी यात्रा करनी है। 8 तब उस ने उठकर
खाया पिया; और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात चलते चलते
परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुंचा। 9 वहां वह एक गुफा में जाकर टिका और
यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या काम? 10
उन ने उत्तर दिया सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है,
क्योकि इस्राएलियोंने तेरी वाचा आल दी, तेरी बेदियोंको गिरा दिया, और तेरे
नबियोंको तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे
प्राणोंके भी खोजी हैं। 11 उस ने कहा, निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर

खड़ा हो। और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के साम्हने एक बड़ी
प्रचणड आन्धी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आन्धी
में न या; फिर आन्धी के बाद भूंईडोल हूआ, तौभी यहोवा उस भूंईडोल में न या।
12 फिर भूंईडोल के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न या; फिर
आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। 13 यह सुनते ही एलिय्याह
ने अपना मुंह चद्दर से ढांपा, और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर
एक शब्द उसे सुनाई दिया, कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या काम? 14 उस ने कहा,
मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इस्राएलियोंने
तेरी वाचा टाल दी, और तेरी वेदियोंको गिरा दिया है और तेरे नबियोंको तलवार
से घात किया है; और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे प्राणोंके भी खोजी हैं।
15 यहोवा ने उस से कहा, लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहां पहुंचकर
अराम का राजा होने के लिथे हजाएल का, 16 और इस्राएल का राजा होने को
निमशी के पोते थेहू का, और अपके स्यान पर नबी होने के लिथे आबेलमहोला के
शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना। 17 और हजाएल की तलवार से जो
कोई बच जाए उसको थेहू मार डालेगा; और जो कोई थेहू की तलवार से बच जाए
उसको एलीशा मार डालेगा। 18 तौभी मैं सात हजार इस्राएलियोंको बचा रखूंगा।
थे तो वे सब हैं, जिन्होंने न तो बाल के आगे घुटने टेके, और न मुंह से उसे चूमा
है। 19 तब वह वहां से चल दिया, और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह
जोड़ी बैल अपके आगे किए हुए आप बारहवीं के साय होकर हल जोत रहा य।
उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपक्की चद्दर उस पर डाल दी। 20 तब वह
बैलोंको छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, मुझे अपके माता-पिता

को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा। उस ने कहा, लौट जा, मैं ने तुझ से क्या
किया है? 21 तब वह उसके पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर बलि
किए, और बैलोंका सामान जलाकर उनका मांस पका के अपके लोगोंको दे दिया,
और उन्होंने खाया; तब वह कमर बान्धकर एलिय्याह के पीछे चला, और उसकी
सेवा टहल करने लगा।

1 राजा 20

1 और अराम के राजा बेन्हदद ने अपक्की सारी सेना इकट्ठी की, और उसके
साय बत्तीस राजा और घोड़े और रय थे; उन्हें संग लेकर उस ने शोमरोन पर चढ़ाई
की, और उसे घेर के उसके विरुद्ध लड़ा। 2 और उस ने नगर में इस्राएल के राजा
अहाब के पास दूतोंको यह कहने के लिथे भेजा, कि बेन्हदद तुझ से योंकहता है, 3
कि तेरा चान्दी सोना मेरा है, और तेरी स्त्रियोंऔर लड़केबालोंमें जो जो उत्तम हैं वह
भी सब मेरे हैं। 4 इस्राएल के राजा ने उसके पास कहला भेजा, हे मेरे प्रभु ! हे राजा
! तेरे वचन के अनुसार मैं और मेरा जो कुछ है, सब तेरा है। 5 उन्हीं दूतोंने फिर
आकर कहा बेन्हदद तुझ से योंकहता है, कि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा या
कि तुझे अपक्की चान्दी सोना और स्त्रियां और बालक भी मुझे देने पकेंगे। 6
परन्तु कल इसी समय मैं अपके कर्मचारियोंको तेरे पास भेजूंगा और वे तेरे और
तेरे कर्मचारियोंके धरोंमें ढूंढ़-ढांढ़ करेंगे, और तेरी जो जो मनभावनी वस्तुएं
निकालें उन्हें वे अपके अपके हाथ में लेकर आएंगे। 7 तब इस्राएल के राजा ने
अपके देश के सब पुरनियोंको बुलवाकर कहा, सोच विचार करो, कि वह मनुष्य
हमारी हानि ही का अभिलाषी है; उस ने मुझ से मेरी स्त्रियां, बालक, चान्दी सोना

मंगा भेजा है, और मैं ने इन्कार न किया। 8 तब सब पुरनियोंने और सब
साधारण लोगोंने उस से कहा, उसकी न सुनना; और न मानना। 9 तब राजा ने
बेन्हदद के दूतोंसे कहा, मेरे प्रभु राजा से मेरी ओर से कहो, जो कुुछ तू ने पहिले
अपके दास से चाहा या वह तो मैं करूंगा, परन्तु यह मुझ से न होगा। तब बेन्हदद
के दूतोंने जाकर उसे यह उत्तर सुना दिया। 10 तब बेन्हदद ने अहाब के पास
कहला भेजा, यदि शोमरोन में इतनी धूलि निकले कि मेरे सब पीछे चलनेहारोंकी
मुट्ठी भर कर अट जाए तो देवता मेरे साय ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करें।
11 इस्राएल के राजा ने उत्तर देकर कहा, उस से कहो, कि जो हयियार बान्धता हो
वह उसकी नाई न फूले जो उन्हें उतारता हो। 12 यह वचन सुनते ही वह जो और
राजाओं समेत डेरोंमें पी रहा या, उस ने अपके कर्मचारियोंसे कहा, पांति बान्धो,
तब उन्होंने नगर के विरुद्ध पांति बान्धी। 13 तब एक नबी ते इस्राएल के राजा
अहाब के पास जाकर कहा, यहोवा तुझ से योंकहता है, यह बड़ी भीड़ जो तू ने
देखी है, उस सब को मैं आज तेरे हाथ में कर दूंगा, इस से तू जान लेगा, कि मैं
यहोवा हूँ। 14 अहाब ने पूछा, किस के द्वारा? उस ने कहा यहोवा योंकहता है, कि
प्रदेशोंके हाकिमोंके सेवकोंके द्वारा ! फिर उस ने पूछा, युद्ध को कौन आरम्भ करे?
उस ने उत्तर दिया, तू ही। 15 तब उस ने प्रदेशोंके हाकिमोंके सेवकोंकी गिनती ली,
और वे दो सौ बत्तीस निकले; और उनके बाद उस ने सब इस्राएली लोगोंकी गिनती
ली, और वे सात हजार निकले। 16 थे दोपहर को निकल गए, उस समय बेन्हदद
अपके सहाथक बत्तीसोंराजाओं समेत डेरोंमें दारू पीकर मतवाला हो रहा या। 17
प्रदेशोंके हाकिमोंके सेवक पहिले निकले। तब बेन्हदद ने दूत भेजे, और उन्होंने
उस से कहा, शोमरोन से कुछ मनुष्य निकले आते हैं। 18 उस ने कहा, चाहे वे मेल

करने को निकले हों, चाहे लड़ने को, तौभी उन्हें जीवित ही पकड़ लाओ। 19 तब
प्रदेशोंके हाकिमोंके सेवक और उनके पीछे की सेना के सिपाही नगर से निकले।
20 तौर वे अपके अपके साम्हने के पुरुष को पारने लगे; और अरामी भागे, और
इस्राएल ने उनका पीछा किया, और अराम का राजा बेन्हदद, सवारोंके संग घोड़े
पर चढ़ा, और भागकर बच गया। 21 तब इस्राएल के राजा ने भी निकलकर
घोड़ोंऔर रयोंको मारा, और अरामियोंको बड़ी मार से मारा। 22 तब उस नबी ने
इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा, जाकर लड़ाई के लिथे अपके को दृढ़ कर,
और सचेत होकर सोच, कि क्या करना है, क्योंकि नथे वर्ष के लगते ही अराम का
राजा फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा। 23 तब अराम के राजा के कर्मचारियोंने उस से
कहा, उन लोगोंका देवता पहाड़ी देवता है, इस कारण वे हम पर प्रबल हुए;
इसलिथे हम उन से चौरस भूमि पर लड़ें तो निश्चय हम उन पर प्रबल हो जाएंगे।
24 और यह भी काम कर, अर्यात् सब राजाओं का पद ले ले, और उनके स्यान पर
सेनापतियोंको ठहरा दे। 25 फिर एक और सेना जो तेरी उस सेना के बराबर हो जो
नष्ट हो गई है, घोड़े के बदले घोड़ा, और रय के बदले रय, अपके लिथे गिन ले; तब
हम चौरस भूमि पर उन से लड़ें, और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएंगे। उनकी यह
सम्मति मानकर बेन्हदद ने वैसा ही किया। 26 और नथे वर्ष के लगते ही
बेन्हदद ने अरामियोंको इकट्ठा किया, और इस्राएल से लड़ने के लिथे अपेक को
गया। 27 और इस्राएली भी इकट्ठे किए गए, और उनके भोजन की तैयारी हुई;
तब वे उनका साम्हना करने को गए, और इस्राएली उनके साम्हने डेरे डालकर
बकरियोंके दो छोटे फुण्ड से देख पके, परन्तु अरामियोंसे देश भर गया। 28 तब
परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा, यहोवा योंकहता है,

अरामियोंने यह कहा है, कि यहोवा पहाड़ी देवता है, परन्तु नीची भूमि का नहीं है;
इस कारण मैं उस बड़ी भीड़ को तेरे हाथ में कर दूंगा, तब तुम्हें बोध हो जाएगा कि
मैं यहोवा हूँ। 29 और वे सात दिन आम्हने साम्हने डेरे डाले पके रहे; तब सातवें
दिन युद्ध छिड़ गया; और एक दिन में इस्राएलियोंने एक लाख अरामी पियादे मार
डाले। 30 जो बच गए, वह अपेक को भागकर नगर में घुसे, और वहां उन बचे हुए
लोगोंमें से सत्ताईस हजार पुरुष श्हरपनाह की दीवाल के गिरने से दब कर मर
गए। बेन्हदद भी भाग गया और नगर की एक भीतरी कोठरी में गया। 31 तब
उसके कर्मचारियोंने उस से कहा, सुन, हम ने तो सुना है, कि इस्राएल के घराने के
राजा दयालु राजा होते हैं, इसदिथे हमें कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बान्धे
हुए इस्राएल के राजा के पास जाने दे, सम्भव है कि वह तेरा प्राण बचा ले। 32 तब
वे कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बान्ध कर इस्राएल के राजा के पास जाकर
कहने लगे, तेरा दास बेन्हदद तुझ से कहता है, कृपा कर के मुझे जीवित रहने दे।
राजा ने उत्तर दिया, क्या वह अब तक जीवित है? वह तो मेरा भाई है। 33 उन
लोगोंने इसे शुभ शकुन जानकर, फुतीं से बूफ लेने का यत्न किया कि यह उसके
मन की बात है कि नहीं, और कहा, हां तेरा भाई बेन्हदद। राजा ने कहा, जाकर
उसको ले आओ। तब बेन्हदद उसके पास निकल आया, और उस ने उसे अपके
रय पर चढ़ा लिया। 34 तब बेन्हदद ने उस से कहा, जो नगर मेरे पीता ने तेरे
पिता से ले लिए थे, उनको मैं फेर दूंगा; और जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में अपके
लिथे सड़कें बनवाई, वैसे ही तू दमिश्क में सड़कें बनवाना। अहाब ने कहा, मैं इसी
वाचा पर तुझे छोड़ देता हूँ, तब उस ने बेन्हदद से वाचा बान्धकर, उसे स्वतन्त्र
कर दिया। 35 इसके बाद नबियोंके चेलोंमें से एक जन ने यहोवा से वचन पाकर

अपके संगी से कहा, मुझे मार, जब उस मनुष्य ने उसे मारने से इनकार किया,
36 तब उस ने उस से कहा, तू ने यहोवा का वचन नहीं माना, इस कारण सुन,
ज्योंही तू मेरे पास से चला जाएगा, त्योंही सिंह से मार डाला जाएगा। तब ज्योंही
वह उसके पास से चला गया, ज्योंही उसे एक सिंह मिला, और उसको मार डाला।
37 फिर उसको दूसरा मनुष्य मिला, और उस से भी उस ने कहा, मुझे मार। और
उस ने उसको ऐसा मारा कि वह घायल हुआ। 38 तब वह नबी चला गया, और
आंखोंको पगड़ी से ढांपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग पर खड़ा रहा। 39 जब
राजा पास होकर जा रहा या, तब उस ने उसकी दोहाई देकर कहा, कि जब तेरा
दास युद्ध झेत्र में गया या तब कोइ मनुष्य मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे
पास ले आया, और मुझ से कहा, इस पतुष्य की चौकसी कर; यदि यह किसी रीति
छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा; नहीं तो किक्कार
भर चान्दी देना पकेगा। 40 उसके बाद तेरा दास इधर उधर काम में फंस गया,
फिर वह न मिला। इस्राएल के राजा ने उस से कहा, तेरा ऐसा ही न्याय होगा; तू ने
आप अपना न्याय किया है। 41 नबी ने फट अपक्की आंखोंसे पगड़ी उठाई, तब
इस्राएल के राजा ने उसे पहिचान लिया, कि वह कोई नबी है। 42 तब उस ने राजा
से कहा, यहोवा तुझ से योंकहता है, इसलिथे कि तू ने अपके हाथ से ऐसे ऐक
मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैं ने सत्यानाश हो जाने को ठहराया या, तुझे उसके
प्राण की सन्ती अपना प्राण और उसकी प्रजा की सन्ती, अपक्की प्रजा देनी
पकेगी। 43 तब इस्राएल का राजा उदास और अप्रसन्न होकर घर की ओर जला,
और शोमरोन को आया।

1 राजा 21

1 नाबोत नाम एक यिज्रेली की एक दाख की बारी शोमरोन के राजा अहाब के
राजमन्दिर के पास यिज्रेल में यी। 2 इन बातोंके बाद ओ◌ाब ने नाबोत से कहा,
तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उस में साग पात की
बारी लगाऊं; और मैं उसके बदले तुझे उस से अच्छी एक बाटिका दूंगा, नहीं तो
तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूंगा। 3 नाबोत ने यहाब से कहा, यहोवा
न करे कि मैं अपके पुरखाओं का निज भाग तुझे दूं ! 4 यिज्रेली नाबोत के इस
वचन के कारण कि मैं तुझे अपके पुरखाओं का निज भाग न दूंगा, अहाब उदास
और अप्रसन्न होकर अपके घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर
लिया, और कुछ भेजन न किया। 5 तब उसकी पत्नी हेज़ेबेल ने उसके पास आकर
पूछा, तेरा मन क्योंऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं करता? 6 उस ने कहा,
कारण यह है, कि मैं ने यिज्रेली नाबोत से कहा कि रुपया लेकर मुझे अपक्की
दाख की बारी दे, नहीं तो यदि नू चाहे तो मैं उसकी सन्ती दूसरी दाख की बारी
दूंगा; और उसने कहा, मैं अपक्की दाख की बारी तुझे न दूंगा। 7 उसकी पत्नी
हेज़ेबेल ने उस से कहा, क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठकर
भोजन कर; और तेरा मन आनन्दित हो; यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे
दिलवा दूंगी। 8 तब उस ने अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उसकी अंगूठी की
छाप लगाकर, उन पुरनियोंऔर रईसोंके पास भेज दी जो उसी नगर में नाबोत के
पड़ोस में रहते थे। 9 उस चिट्ठी में उस ने योंलिखा, कि उपवास का प्रचार करो,
और नाबोत को लोगोंके साम्हने ऊंचे स्यान पर बैठाना। 10 तब दो नीच जनोंको
उसके साम्हने बैठाना जो साझी देकर उस से कहें, तू ने परमेश्वर और राजा
दोनोंकी निन्दा की। नब नुम लोग उसे बाहर ले जाकर उसको पत्यरवाह करना,

कि वह मर जाए। 11 हेज़ेबेल की चिट्ठी में की आज्ञा के अनुसार नगर में
रहनेवाले पुरनियोंऔर रईसोंने उपवास का प्रचार किया, 12 और नाबोत को
लोगोंके साम्हने ऊंचे स्यान पर बैठाया। 13 तब दो नीच जन आकर उसके
सम्मुख बैठ गए; और उन नीच जनोंने लोगोंलोगोंके साम्हने नाबोत के विरुद्ध
यह साझी दी, कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनोंकी निन्दा की। इस पर
उन्होंने उसे नगर से बाहर ले जाकर उसको पत्यरवाह किया, और वह मर गया।
14 तब उन्होंने हेज़ेबेल के पास यह कहला भेजा कि नाबोत पत्यरवाह करके मार
डाला गया है। 15 यह सुनते ही कि नाबोत पत्यरवाह करके मारडाला गया है,
हेज़ेबेल ने अहाब से कहा, उठकर यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी को जिसे उस
ने तुझे रुपया लेकर देने से भी इनकार किया या अपके अधिक्कारने में ले,
क्योंकि नाबोत जीवित नहीं परन्तु वह मर गया है। 16 यिज्रेली नाबोत की मृत्यु
का समाचार पाते ही अहाब उसकी दाख की बारी अपके अधिक्कारने में लेने के
लिथे वहां जाने को उठ खड़ा हुआ। 17 तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्यह
के पास पहुंचा, कि चल, 18 शोमरोन में रहनेवाले इस्राएल के राजा अहाब से
मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपके अधिक्कारने में
लेने को वह वहां गया है। 19 और उस से यह कहना, कि यहोवा योंकहता है, कि
क्या तू ने घात किया, और अधिक्कारनी भी बन बैटा? फिर तू उस से यह भी
कहना, कि यहोवा योंकहता है, कि जिस स्यान पर कुत्तोंने नाबोत का लोहू चाटा,
उसी स्यान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे। 20 एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा,
हे मेरे शत्रु ! क्या तू ने मेरा पता लगाया है? उस ने कहा हां, लगाया तो है; और
इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिथे तू ने

अपके को बेच डाला है। 21 मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से
मिटा डालूंगा; और अहाब के घर के एक एक लड़के को ऊौर क्या बन्धुए, क्या
स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेवाले को भी नाश कर डालूंगा। 22 और मैं तेरा
घराना नबात के पुत्र यारोबाम, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा;
इसलिथे कि तू ने मुझे क्रोधित किया है, और इस्राएल से पाप करवाया है। 23 और
हेज़ेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास कुत्ते हेज़ेबेल
को खा डालेंगे। 24 अहाब का जो काई नगर में मर जाएगा ऊसको कुत्ते खा लेंगे;
ऊौर जो कोई मैदान में मर जाएगा ऊसको आकाश के पक्की खा जाएंगे। 25
सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न या जिसने अपक्की पत्नी हेज़ेबेल के ऊसकाने
पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपके को बेच डाला या। 26
वह तो ऊन एमोरियोंकी नाई जिनको यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने से देश से
निकाला या बहुत ही घिनौने काम करता या, अर्यात् मूरतोंकी ऊपासना करने लगा
या। 27 एलिय्याह के थे वचन सुनकर अहाब ने अपके वस्त्र फाड़े, और अपक्की
देह पर टाट लपेटकर ऊपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे
पांवोंचलने लगा। 28 और यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा,
29 कि क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे साम्हने नम्र बन गया है? इस कारण कि
वह मेरे साम्हने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति ऊसके जीते जी ऊस पर न डालूंगा
परन्तू ऊसके पुत्र के दिनोंमें मैं ऊसके घराने पर वह पिपत्ति भेजूंगा।

1 राजा 22

1 और तीन वर्ष तक अरामी और इस्राएली बिना युद्ध रहे। 2 तीसरे वर्ष में यहूदा

का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा के पास गया। 3 तब इस्राएल के राजा ने
अपके कर्मचारियोंसे कहा, क्या तुम को मालूम है, कि गिलाद का रामोत हमारा
है? फिर हम क्योंचुपचाप रहते और उसे अराम के राजा के हाथ से क्योंनहीं छीन
लेते हैं? 4 और उस ने यहोशापात से पूछा, क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से
लड़ने के लिथे जाएगा? यहोशापात ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, जैसा तू है
वैसा मैं भी हूँ। जैसी तेरी प्रजा है वैसी ही मेरी भी प्रजा है, और जैसे तेरे घोड़े हैं वैसे
ही मेरे भी घोड़े हैं। 5 फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, 6 कि आज
यहोवा की इच्छा मालूम कर ले, नब इस्राएल के राजा ने नबियोंको जो कोई चार
सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उन से पूछा, क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के
लिथे चढ़ाई करूं, वा रुका रहूं? उन्होंने उत्तर दिया, चढ़ाई कर : क्योंकि प्रभु उसको
राजा के हाथ में कर देगा। 7 परन्तु यहोशापात ने पूछा, क्या यहां यहोवा का और
भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें? 8 इस्राएल के राजा ने यहोशापात से
कहा, हां, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा से
पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उस से घृणा रखता हूँ, क्योंकि वह मेरे विष्य कल्याण की
नहीं वरन हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है। 9 यहोशापात ने कहा, राजा ऐसा न
कहे। तब दस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवा कर कहा, यिम्ला के पुत्र
मीकायाह को फुर्ती से ले आ। 10 इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा
यहोशापात, अपके अपके राजवस्त्र पहिने हुए शोमरोन के फाटक में एक खुले
स्यान में अपके अपके सिंहासन पर विराजमान थे और सब भविष्यद्वक्ता उनके
सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे। 11 तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के
सींग बनाकर कहा, यहोवा योंकहता है, कि इन से तू अरामियोंको मारते मारते

नाश कर डालेगा। 12 और सब नबियोंने इसी आशय की भविष्यद्वाणी करके कहा,
गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; क्योंकि यहोवा उसे राजा के
हाथ में कर देगा। 13 और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया या उस ने उस से
कहा, सुन, भविष्यद्वक्ता एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं तो तेरी
बातें उनकी सी हों; तू भी शुभ वचन कहना। 14 मीकायाह ने कहा, यहोवा के
जीवन की शपय जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूंगा। 15 जब वह राजा के
पास आया, तब राजा ने उस से पूछा, हे मीकायाह ! क्या हम गिलाद के रामोत से
युद्ध करने के लिथे चढ़ाई करें वा रुके रहें? उस ने उसको उत्तर दिया हां, चढ़ाई कर
और तू कृतार्थ हो; और यहोवा उसको राजा के हाथ में कर दे। 16 राजा ने उस से
कहा, मुझे कितनी बार तुझे शपय धराकर चिताना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण
करके मुझ से सच ही कह। 17 मीकायाह ने कहा मुझे समस्त इस्राएल बिना
चरपाहे की भेड़बकरियोंकी नाई पहाड़ोंपर; तित्तर बित्तर देख पड़ा, और यहोवा का
यह वचन आया, कि वे तो अनाय हैं; अतएव वे अपके अपके घर कुशल झेम से
लौट जाएं। 18 तब इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, क्या मैं ने तुझ से न
कहा या, कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की भविष्यद्वाणी करेगा। 19
मीकायाह ने कहा इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन ! मुझे सिंहासन पर
विराजमान यहोवा और उसके पास दाहिने बांथें खड़ी डुई स्वर्ग की समस्त सेना
दिखाई दी है। 20 तब यहोवा ने पूछा, अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह
गिलाद के रामो पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ते कुछ, और किसी ने कुछ
कहा। 21 निदान एक आत्मा पास आकर यहोव के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने
लगी, मैं उसको वहकाऊंगी : यहोवा ने पूछा, किस उपाय से? 22 उस ने कहा, मैं

जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में पैठकर उन से फूठ बुलवाऊंगी। यहोवा ने
कहा, तेरा उसको बहकाना सुफल होगा, जाकर ऐसा ही कर। 23 तो अब सुन
यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक फूठ बोलनेवाली आत्मा
पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विष्य हानि की बात कही है। 24 तब कनाना के पुत्र
सिदकिय्याह ने मीकायाह के निकट जा, उसके गाल पर यपेड़ा मार कर पूछा,
यहोवा का आन्मा मुझे छोड़कर तूफ से बातें करने को किधर गया? 25 मीकायाह
ने कहा, जिस दिन तू छिपके के लिथे कोठरी से कोठरी में भगेगा, तब तूफे बोधा
होगा। 26 तब इस्राएल के राजा ने कहा, मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन
और योआश राजकुमार के पास ले जा; 27 और उन से कह, राजा योंकहता है, कि
इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दु:ख
की रोटी और पानी दिया करो। 28 और मीकायाह ने कहा, यदि तू कभी कुशल से
लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा। फिर उस ने कहा, हे लोगो तुम
सब के सब सुन लो। 29 तब इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात
दोनोंने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। 30 और इस्राएल के राजा ने यहोशापात
से कहा, मैं तो भेष बदलकर युद्ध झेत्र में जाऊंगा, परन्तु तू अपके ही वस्त्र पहिने
रहना। तब इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध झेत्र में गया। 31 और अराम के
राजा ने तो अपके रयोंके बत्तीसोंप्रधानोंको आज्ञा दी यी, कि न तो छोटे से लड़ो
और न बड़े से, केवल इस्राएल के राजा से यूद्ध करो। 32 तो जब रयोंके प्रधानोंने
यहोशापात को देखा, तब कहा, निश्चय इस्राएल का राजा वही है। और वे उसी से
युद्ध करने को मुडे; तब यहोशपात चिल्ला उठा। 33 यह देखाकर कि वह इस्राएल
का राजा नहीं है, रयोंके प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए। 34 तब किसी ने

अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा के फिलम और निचले वस्त्र
के बीच छेदकर लगा; तब उसने अपके सारयी से कहा, मैं घायल हो गया हूँ
इसलिथे बागडोर फेर कर मुझे सेना में से बाहर निकाल ले चल। 35 और उस दिन
युद्ध बढ़ता गया और राजा अपके रय में औरोंके सहारे अरामियोंके सम्मुख खड़ा
रहा, और सांफ को मर गया; और उसके घाव का लोहू बहकर रय के पौदान में भर
गया। 36 सूर्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई, कि हर एक अपके नगर और
अपके देश को लौट जाए। 37 जब राजा मर गया, तब शोमरोन को पहुंचाया गया
और शोमरोन में उसे मिट्‌टी दी गई। 38 और यहोवा के वचन के अनुसार जब
उसका रय शोमरोन के पोखरे में धोया गया, तब कुत्तोंने उसका लोहू चाट लिया,
और वेश्याएं यहीं स्नान करती यीं। 39 अहाब के और सब काम जो उस ने किए,
और हाथीदांत का जो भवन उस ने बनाया, और जो जो नगर उस ने बसाए थे, यह
सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 40 निदान
अहाब अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्यान
पर राज्य करने लगा। 41 इस्राएल के राजा अहाब के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र
यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा। 42 जब यहोशापात राज्य करने लगा,
तब वह पैंतीस वर्ष का या। और पक्कीस पर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।
और उसकी माता का नाम अजूबा या, जो शिल्ही की बेटी यी। 43 और उसकी
चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी यी, अर्यात जो यहोवा की दृष्टि में
ठीक है वही वह करता रहा, और उस से कुछ न मुड़ा। तौभी ऊंचे स्यान ढाए न
गए, प्रजा के लोग ऊंचे स्यानोंपर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी
जलाया करते थे। 44 यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। 45 और

यहोशापात के काम और जो वीरता उस ने दिखाई, और उस ने जो जो लड़ाइयां
कीं, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 46
पुरुषगामियोंमें से जो उसके पिता आसा के दिनोंमें रह गए थे, उनको उस ने देश
में से नाश किया। 47 उस समय एदाम में कोई राजा न या; एक नायब राजकाज
का काम करता या। 48 फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज सोना लाने के लिथे
ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एश्योनगेबेर में टूट गए, असलिथे वहां न
जा सके। 49 तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, मेरे जहाजियोंको
अपके जहाजियोंके संग, जहाजोंमें जाने दे, परन्तु यहोशापात ने इनकार किया।
50 निदान यहोशापात अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसको उसके
पुरखाओं के साय उसके मूलपुरुष दाऊद के नबर में मिट्टी दी गई। और उसका
पुत्र यहोराम उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 51 यहूदा के राजा यहोशापत के
सत्रहवें वर्ष में अहाब का पुत्र अहज्याह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा
और दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य करता रहा। 52 और उस ने वह किया, जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा या। और उसकी चाज उसके माता पिता, और नबात के पुत्र
यारोबाम की सी यी जिस ने इस्राएल से पाप करवाया या। 53 जैसे उसका पिता
बाल की उपासने और उसे दणडवत करने से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को
क्रोधित करता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा।

2 राजा 1

1 अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के विरुद्ध हो गया। 2 और अहज्याह
एक फिलमिलीदार खिड़की में से, जो शोमरोन में उसकी अटारी में यी, गिर पड़ा,

और बीमार हो गया। तब उस ने दूतोंको यह कहकर भेजा, कि तुम जाकर एक्रोन
के बालजबूब नाम देवता से यह पूछ आओ, कि क्या मैं इस बीमारी से बचूंगा कि
नहीं? 3 तब यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा, उठकर शोमरोन के राजा
के दूतोंसे मिलने को जा, और उन से कह, क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो
तुम एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने जाते हो? 4 इसलिथे अब यहोवा तुझ से
योंकहता है, कि जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही
जाएगा। तब एलिय्याह चला गया। 5 जब अहज्याह के दूत उसके पास लौट
आए, तब उस ने उन से पूछा, तुम क्योंलौट आए हो? 6 उन्होंने उस से कहा, कि
एक मनुष्य हम से मिलने को आया, और कहा, कि जिस राजा ने तुम को भेजा
उसके पास लौटकर कहो, यहोवा योंकहता है, कि क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर
नहीं जो तू एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को भेजता है? इस कारण जिस
पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा। 7 उस ने
उन से पूछा, जो मनुष्य तुम से मिलने को आया, और तुम से थे बातें कहीं, उसका
कैसा रंग-रूप या? 8 उन्होंने उसको उत्तर दिया, वह तो रोंआर मनुष्य या और
अपक्की कमर में चमड़े का फेंटा बान्धे हुए या। उस ने कहा, वह तिशबी
एलिय्याह होगा। 9 तब उस ने उसके पास पचास सिपाहियोंके एक प्रधान को
उसके पचासोंसिपाहियोंसमेत भेजा। प्रधान ने उसके पास जाकर क्या देखा कि
वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। और उस ने उस से कहा, हे परमेश्वर के भक्त राजा
ने कहा है, कि तू उतर आ। 10 एलिय्याह ने उस पचास सिपाहियोंके प्रधान से
कहा, यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे
पचासोंसमेत भस्म कर डाले। तब आकाश से आग उतरी और उसे उसके

पचासोंसमेत भस्म कर दिया। 11 फिर राजा ने उसके पास पचास सिपाहियोंके
एक और प्रधान को, पचासोंसिपाहियोंसमेत भेज दिया। प्रधान ने उस से कहा हे
परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, कि फुर्ती से तू उतर आ। 12 एलिय्याह ने उत्तर
देकर उन से कहा, यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे,
तेरे पचासोंसमेत भस्म कर डाले; तब आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और
उसे उसके पचासोंसमेत भस्म कर दिया। 13 फिर राजा ने तीसरी बार पचास
सिपाहियोंके एक और प्रधान को, पचासोंसिपाहियोंसमेत भेज दिया, और पचास
का वह तीसरा प्रधान चढ़कर, एलिय्याह के साम्हने घुटनोंके बल गिरा, और
गिड़गिड़ा कर उस से कहने लगा, हे परमेश्वर के भक्त मेरा प्राण और तेरे इन
पचास दासोंके प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरें। 14 पचास पचास सिपाहियोंके
जो दो प्रधान अपके अपके पचासोंसमेत पहिले आए थे, उनको तो आग ने
आकाश से गिरकर भस्म कर डाला, परन्तु अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल
ठहरे। 15 तब यहोवा के दूत ने उलिय्याह से कहा, उसके संग नीचे जा, उस से पत
डर। तब एलिय्याह उठकर उसके संग राजा के पास नीचे गया। 16 और उस से
कहा, यहोवा योंकहता है, कि तू ने तो एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को दूत
भेजे थे तो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिस से तू पूछ सके? इस
कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।
17 यहोवा के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा या, वह मर गया। और
उसके सन्तान न होने के कारण यहोराम उसके स्यान पर यहूदा के राजा
यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में राज्य करने लगा। 18 अहज्याह के
और काम जो उस ने किए वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में

नहीं लिखे हैं?

2 राजा 2

1 जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को या, तब
एलिय्याह और एलीशा दोनोंसंग संग गिलगाल से चले। 2 एलिय्याह ने एलीशा से
कहा, यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिथे तू यहीं ठहरा रह। एलीशा ने कहा,
यहोवा के और तेरे जीवन की शपय मैं तुझे नहीं छोड़ने का; इसलिथे वे बेतेल को
चले गए। 3 और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने
लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर
है? उस ने कहा, हां, मुझे भी यह मालूम है, तुम चुप रहो। 4 और एलिय्याह ने उस
से कहा, हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है; इसलिथे तू यहीं ठहरा रह :
उस ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपय मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे
यरीहो को आए। 5 और यरीहोवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर
कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा
लेने पर है? उस ने उत्तर दिया, हां मुझे भी मालूम है, तुम चुप रहो। 6 फिर
एलिय्याह ने उस से कहा, यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, सो तू यहीं ठहरा रह;
उस ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपय मैं तुझे नहीं छोड़नेका; सो वे
दोनोंआगे चने। 7 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलोंमें से पचास जन जाकर उनके
साम्हने दूर खड़े हुए, और वे दोनोंयरदन के तीर खड़े हुए। 8 तब एलिय्याह ने
अपक्की चद्दर पकड़कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग
हो गया; और वे दोनोंस्यल ही स्यल पार उतर गए। 9 उनके पार पहुंचने पर

एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिये जाऊं जो
कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग; एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है,
उसका दूना भाग मुझे मिल जाए। 10 एलिय्याह ने कहा, तू ने कठिन बात मांगी
है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही
होगा; नहीं तो न होगा। 11 वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक
अग्नि मय रय और अग्निमय धोड़ोंने उनको अलग अलग किया, और एलिय्याह
बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया। 12 और उसे एलीशा देखता और मुकारता
रहा, हंाय मेरे पिता ! हाथ मेरे पिता ! हाथ इस्राएल के रय और सवारो ! जब वह
उसको फिर देख न पड़ा, तब उस ने अपके वस्त्र पाड़े और फाड़कर दो भाग कर
दिए। 13 फिर उस ने एलिय्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी यी, और वह
लौट गया, और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ। 14 और उस ने एलिय्याह की वह
चद्दर जो उस पर से गिरी यी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, एलिय्याह का
परमेश्वर यहोवा कहां है? जब उस ने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो
गया और एलीशा पार हो गया। 15 उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के चेले जो यरीहो
में उसके साम्हने थे, कहने लगे, एलिय्याह में जो आत्मा यी, वही एलीशा पर
ठहर गई है; सो वे उस से मिलने को आए और उसके साम्हने भूमि तक फुककर
दणडवत की। 16 तब उन्होंने उस से कहा, सुन, तेरे दासोंके पास पचास बलवान
पुरुष हैं, वे जाकर तेरे स्वामी को ढूढें, सम्भव है कि क्या जाने यहोवा के आत्मा ने
उसको उठाकर किसीं पहाड़ पर वा किसी तराई में डाल दिया हो; उस ने कहा, मत
भेजो। 17 जब उन्होंने उसको यहां तक दबाया कि वह लज्जित हो गया, तब उस
ने कहा, भेज दो; सो उन्होंने पचास पुरुष भेज दिए, और वे उसे तीन दिन तक

ढूंढते रहे परन्तु न पाया। 18 उस समय तक वह यरीहो में ठहरा रहा, सो जब वे
उसके पास लौट आए, तब उस ने उन से कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा या, कि
मत जाओ? 19 उस नगर के निवासियोंने एलीशा से कहा, देख, यह नगर
मनभावने स्यान पर बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी बुरा है; और
भूमि गर्भ गिरानेवाली है। 20 उस ने कहा, एक नथे प्याले में नमक डालकर मेरे
पास ले आओ; वे उसे उसके पास ले आए। 21 तब वह जल के सोते के पास
निकल गया, और उस में नमक डालकर कहा, यहोवा योंकहता है, कि मैं यह पानी
ठीक कर देता हूँ, जिस से वह फिर कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न होगा।
22 एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक ऐसा ही
है। 23 वहां से वह बेतेल को चला, और मार्ग की चढ़ाई में चल रहा या कि नगर से
छोटे लड़के निकलकर उसका ठट्ठा करके कहने लगे, हे चन्दुए चढ़ जा, हे चन्दुए
चढ़ जा। 24 तब उस ने पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के
नाम से उनको शाप दिया, तब जंगल में से दो रीछिनियोंने निकलकर उन में से
बयालीस लड़के फाड़ डाले। 25 वहां से वह कर्म्मेल को गया, और फिर वहां से
शोमरोन को लौट गया।

2 राजा 3

1 यहूदा के राजा यहोशापात के अठारहवें वर्ष में अहाब का पुत्र यहोराम शिमरोन
में राज्य करने लगा, और बारह पर्ष तक राज्य करता रहा। 2 उस ने वह किया जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा है नौभी उस ने अपके माता-पिता के बराबर नहीं किया
वरन अपके पिता की बनवाई हुई बाल की लाठ को दूर किया। 3 तौभी वह नबात

के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापोंमें जैसे उस ने इस्राएल से भी कराए लिपटा रहा और
उन से न फिरा। 4 मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़-बकरियां रखता या, और
इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़ोंका ऊन कर की रीति से
दिया करता या। 5 जब अहाब मर गया, तब मोआब के राजा ने इस्राएल के राजा
से बलवा किया। 6 उस समय राजा यहोराम ने शोमरोन से निकलकर सारे
इस्राएल की गिनती ली। 7 और उस ने जाकर यहूदा के राजा यहोशापात के पास
योंकहला भेजा, कि मोआब के राजा ने मुझ से बलवा किया है, क्या तू मेरे संग
मोआब से लड़ने को चलेगा? उस ने कहा, हां मैं चलूंगा, जैसा तू वैसा मैं, जैसी तेरी
प्रजा वैसी मेरी प्रजा, और जैसे तेरे धोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं। 8 फिर उस ने पूछा,
हम किस मार्ग से जाएं? उस ने उत्तर दिया, एदोम के जंगल से होकर। 9 तब
इस्राएल का राजा, और यहूदा का राजा, और एदोम का राजा चले और जब सात
दिन तक धूमकर चल चुके, तब सेना और उसके पीछे पीछे चलनेवाले पशुओं के
लिथे कुछ पानी न मिला। 10 और इस्राएल के राजा ने कहा, हाथ ! यहोवा ने इन
तीन राजाओं को इसलिथे इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे। 11
परन्तु सहोशापात ने कहा, क्या यहां यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके द्वारा
हम यहोवा से पूछें? इस्राएल के राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, हां,
शापात का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह के हाथोंको धुलाया करता या वह तो यहां है।
12 तब यहोशापात ने कहा, उसके पास यहोवा का वचन पहुंचा करता है। तब
इस्राएल का राजा और यहोशापात और एदोम का राजा उसके पास गए। 13 तब
एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, मेरा तुझ से क्या काम है? अपके पिता के
भविष्यद्वक्ताओं और अपक्की माता के नबियोंके पास जा। इस्राएल के राजा ने

उस से कहा, ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनोंराजाओं को इसलिथे इकट्ठा
किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे। 14 एलीशा ने कहा, सेनाओं का यहोवा
जिसके सम्मुख मैं उपस्यित रहा करता हूँ, उसके जीवन की शपय यदि मैं यहूदा
के राजा यहोशापात का आदर मान न करता, तो मैं न तो तेरी ओर मुह करता
और न तुझ पर दृष्टि करता । 15 अब कोई बजवैय्या मेरे पास ले आओ। जब
बजवैय्या बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई। 16 और उस ने कहा,
इस नाले में तुम लोग इतना खोदो, कि इस में गड़हे ही गड़हे हो जाएं। 17 क्योंकि
यहोवा योंकहता है, कि तुम्हारे साम्हने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी;
तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा; और अपके गाय बैलोंऔर पशुओं समेत तुम
पीने पाओगे। 18 और इसको हलकी सी बात जानकर यहोवा मोआब को भी
तुम्हारे हाथ में कर देगा। 19 तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरोंको नाश
करना, और सब अच्छे वृझोंको काट डालना, और जल के सब खेतोंको भर देना,
और सब अच्छे खेतोंमें पत्यर फेंककर उन्हें बिगाड़ देना। 20 बिहान को
अन्नबलि चढ़ाने के समय एदोम की ओर से जल बह आया, और देश जल से भर
गया। 21 यह सुनकर कि राजाओं ने हम से युद्ध करते के लिथे चढ़ाई की है,
जितने मोआबियोंकी अवस्या हयियार बान्धने योग्य यी, वे सब बुलाकर इकट्ठे
किए गए, और सिवाने पर खड़े हुए। 22 बिहान को जब वे उठे उस समय सूर्य की
किरणोंउस जल पर ऐसी पक्कीं कि वह मोआबियोंकी परली ओर से लोहू सा लाल
दिखाई पड़ा। 23 तो वे कहने लगे वह तो लोहू होगा, नि:सन्देह वे राजा एक दूसरे
को मारकर नाश हो गए हैं, इसलिथे अब हे मोआबियो लूट लेने को जाओ; 24
और जब वे इस्राएल की छावनी के पास आए ही थे, कि इस्राएली उठकर

मोआबियोंको मारने लगे और वे उनके साम्हने से भाग गए; और वे मोआब को
मारते मारते उनके देश में पहुंच गए। 25 और उन्होंने नगरोंको ढा दिया, और सब
अच्छे खेतोंमें एक एक पुरुष ने अपना अपना पत्यर डाल कर उन्होंभर दिया;
और जल के सब सोतोंको भर दिया; और सब अच्छे अच्छे वृझोंको काट डाला,
यहां तक कि कीर्हरेशेत के पत्य्र तो रह गए, परन्तु उसको भी चारोंओर गोफन
चलानेवालोंने जाकर मारा। 26 यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले, मोआब के
राजा ने सात सौ तलवार रखनेवाले पुरुष संग लेकर एदोम के राजा तक पांति
चीरकर पहुंचने का यत्न किया परन्तु पहुंच न सका। 27 तब उस ने अपके जेठे
पुत्र को जो उसके स्यान में राज्य करनेवाला या पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि
चढ़ाया। इस कारण इस्राएल पर बड़ा ही क्रोध हुआ, सो वे उसे छोड़कर अपके देश
को लौट गए।

2 राजा 4

1 भविष्यद्वक्ताओं के चेलोंकी पत्निियोंमें से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा,
तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला
या, और जिसका वह कर्जदार या वह आया है कि मेरे दोनोंपुत्रोंको अपके दाय
बनाने के लिथे ले जाए। 2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिथे क्या करूं? मुझ से
कह, कि तेरे घर में क्या है? उस ने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को
छोड़ और कुछ तहीं है। 3 उस ने कहा, तू बाहर जाकर अपक्की सब पड़ोसिक्कों
खाली बरतन मांग ले आ, और योड़े बरतन न लाना। 4 फिर तू अपके बेटोंसमेत
अपके घर में जा, और द्वार बन्द करकें उन सब बरतनोंमें तेल उण्डेल देना, और

जो भर जाए उन्हें अलग रखना। 5 तब वह उसके पास से चक्की गई, और अपके
बेटोंसमेत अपके घर जाकर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते
गए और वह उणडेलती गई। 6 जब बरतन भर गए, तब उस ने अपके बेटे से
कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उस ने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा।
तब तेल यम गया। 7 तब उस ने जाकर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर
उस ने कहा, जा तेल बेचकर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपके
पुत्रोंसहित अपना निर्वाह करना। 8 फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम
को गया, जहां एक कुलीन स्त्री यी, और उस ने उसे रोटी खाने के लिथे बिनती
करके विवश किया। और जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहां रोटी खाने
को उतरता या। 9 और उस स्त्री ने अपके पति से कहा, सुन यह जो बार बार हमारे
यहां से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता
है। 10 तो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं, और उस में उसके लिथे
एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहां
आए, तब तब उसी में टिका करे। 11 एक दिन की बात है, कि वह वहां जाकर उस
उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया। 12 और उस ने अपके सेवक
गेहजी से कहा, उस शुनेमिन को बुला ले। उसके बुलाने से वह उसके साम्हने खड़ी
हुई। 13 तब उस ने गेहजी से कहा, इस से कह, कि तू ने हमारे लिथे ऐसी बड़ी
चिन्ता की है, तो तेरे लिथे क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, वा प्रधान
सेनापति से की जाए? उस ने उत्तर दिया मैं तो अपके ही लोगोंमें रहती हूँ। 14 फिर
उस ने कहा, तो इसके लिथे क्या किया जाए? गेहजी ने उत्तर दिया, निश्चय उसके
कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढा है। 15 उस ने कहा, उसको बुला ले। और

जब उस ने उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई। 16 तब उस ने कहा, बसन्त
ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी। स्त्री ने कहा, हे मेरे प्रभु !
हे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं, अपक्की दासी को धोखा न दे। 17 और स्त्री को गर्भ
रहा, और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा या, उसी समय जब
दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। 18 और जब लड़का बड़ा हो गया, तब
एक दिन वह अपके पिता के पास लवनेवालोंके निकट निकल गया। 19 और उस
ने अपके पिता से कहा, आह ! मेरा सिर, आह ! मेरा सिर। तब पिता ने अपके
सेवक से कहा, इसको इसकी माता के पास ले जा। 20 वह उसे उठाकर उसकी
माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घुटनोंपर बैठा रहा, तब मर
गया। 21 तब उस ने चढ़कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया,
और निकलकर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई। 22 और उस ने अपके पति से
पुकारकर कहा, मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर
के भक्त के यहां फट पट हो आऊं। 23 उस ने कहा, आज तू उसके यहां
क्योंजाएगी? आज न तो नथे चांद का, और न विश्रम का दिन है; उस ने कहा,
कल्याण होगा। 24 तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बान्ध कर अपके सेवक से
कहा, हांके चल; और मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना। 25 तो वह चलते
चलते कर्मेल पर्वत को परमेश्वर के भक्त के निकट पहुंची। उसे दूर से देखकर
परमेश्वर के भक्त ने अपके सेवक गेहजी से कहा, देख, उधर तो वह शूनेमिन है।
26 अब उस से मिलने को दौड़ जा, और उस से पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति
भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है? पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया, हां,
कुशल से हैं। 27 वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुंची, और उसके पांव

पकड़ने लगी, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु
परमेश्वर के भक्त ने कहा, उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने
मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है। 28 तब वह कहने लगी, क्या मैं ने अपके
प्रभु से पुत्र का वर मांगा या? क्या मैं ने न कहा या मुझे धोखा न दे? 29 तब
एलीशा ने गेहजी से कहा, अपक्की कमर बान्ध, और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला
जा, मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल
पूछे, तो उसको उत्तर न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुंह पर धर देना।
30 तब लड़के की मां ने एलीशा से कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपय मैं
तुझे न छोड़ूंगी। तो वह उठकर उसके पीछे पीछे चला। 31 उन से पहिले पहुंचकर
गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और
न उस ने कान लगाया, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको
बतलादिया दिया, कि लड़का नहीं जागा। 32 जब एलीशा घर में आया, तब क्या
देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है। 33 तब उस ने अकेला भीतर
जाकर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्यना की। 34 तब वह चढ़कर लड़के
पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उसके मुंह से और अपक्की आंखें उसकी
आंखोंसे और अपके हाथ उसके हाथोंसे मिला दिथे और वह लड़के पर पसर गया,
तब लड़के की देह गर्म होने लगी। 35 और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर
टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार
छींका, और अपक्की आंखें खोलीं। 36 तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा,
शूनेमिन को बुला ले। जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, तब उस ने कहा,
अपके बेटे को उठा ले। 37 वह भीतर बई, और उसके पावोंपर गिर भूमि तक

फुककर दणडवत किया; फिर अपके बेटे को उठाकर निकल गई। 38 तब एलीशा
गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल या, और भविष्यद्वक्ताओं के
चेले उसके साम्हने बैटे हुए थे, और उस ने अपके सेवक से कहा, हण्डा चढ़ाकर
भविष्यद्वक्ताओं के चेलोंके लिथे कुछ पका। 39 तब कोई मैदान में साग तोड़ने
गया, और कोई जंगली लता पाकर अपक्की अंकवार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया,
और फांक फांक करके पकने के लिथे हण्डे में डाल दिया, और वे उसको न
पहिचानते थे। 40 तब उन्होंने उन मनुष्योंके खाने के लिथे हण्डे में से परोसा।
खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में माहुर है, और वे
उस में से खा न सके। 41 तब एलीशा ने कहा, अच्छा, कुछ मैदा ले आओ, तब
उस ने उसे हण्डे में डाल कर कहा, उन लोगोंके खाने के लिथे परोस दे, फिर हण्डे
में कुछ हानि की वस्तु न रही। 42 और कोई पतुष्य बालशालीशा से , पहिले उपके
हुए जव की बीस रोटियां, और अपक्की बोरी में हरी बालें परमेश्वर के भक्त के पास
ले आया; तो एलीशा ने कहा, उन लोगोंको खाने के लिथे दे। 43 उसके टहलुए ने
कहा, क्या मैं सौ मनुष्योंके साम्हने इतना ही रख दूं? उस ने कहा, लोगोंको दे दे
कि खएं, क्योंकि यहोवा योंकहता है, उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा। 44
तब उस ने उनके आगे धर दिया, और यहोवा के वचन के अनुसार उनके खाने के
बाद कुछ बच भी गया।

2 राजा 5

1 अराम के राजा का नामान नाम सेनापति अपके स्वामी की दृष्टि में बड़ा और
प्रतिष्ठित पुम्ष या, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियोंको विजयी किया या,

और यह शूरवीर या, परन्तु कोढ़ी या। 2 अरामी लोग दल बान्धकर इस्राएल के
देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बन्धुवाई में ले आए थे और वह नामान की
पत्नी की सेवा करती यी। 3 उस ने अपक्की स्वामिन से कहा, जो मेरा स्वामी
शोमरोन के भविष्यद्वक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता ! क्योंकि वह
उसको कोढ़ से चंगा कर देता। 4 तो किसी ने उसके प्रभु के पास जाकर कह दिया,
कि इस्राएली लड़की इस प्रकार कहती है। 5 अराम के राजा ने कहा, तू जा, मैं
इस्राएल के राजा के पास एक पत्र भेजूंगा; तब वह दस किक्कार चान्दी और
छः:हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े कपके साय लेकर रवाना हो गया। 6 और वह
इस्राएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिस में यह लिखा या, कि जब यह पत्र
तुझे मिले, तब जानना कि मैं ने नामान नाम अपके एक कर्मचारी को तेरे पास
इसलिथे भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे। 7 इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल
का राजा अपके वस्त्र फाड़कर बोला, क्या मैं मारनेवाला और जिलानेवाला
परमेश्वर हूँ कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिथे भेजा है कि मैं उसका
कोढ दूर करूं? सोच विचार तो करो, वह मुझ से फगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा। 8
यह सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपके वस्त्र फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा
ने राजा के पास कहला भेजा, तू ने क्योंअपके वस्त्र फाड़े हैं? वह मेरे पास आए,
तब जान लेगा, कि इस्राएल में भविष्यद्वक्ता तो है। 9 तब नामान धोड़ोंऔर
रयोंसमेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। 10 तब एलीशा ने एक दूत से
उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब
तेरा शरीर ज्योंका त्योंहो जाएगा, और तू शुद्ध होगा। 11 परन्तु नामान क्रोधित हो
यह कहता हुआ चला गया, कि मैं ने तो सोचा या, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर

आएगा, और खड़ा होकर अपके परमेश्वर यहोवा से प्रार्यना करके कोढ़ के स्यान
पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा ! 12 क्या दमिश्क की अबाना और
पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयोंसे अत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान
करके शुद्ध नहीं हो सकता हूँ? इसलिथे वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला
गया। 13 तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि
भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता?
फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे
मानना चाहिथे। 14 तब उस ने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को
जाकर उस में सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया;
उौर वह शुद्ध हो गया। 15 तब वह अपके सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के
यहां लौट आया, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा सुन, अब मैं ने जान
लिया है, कि समस्त पृय्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है।
इसलिथे अब अपके दास की भेंट ग्रहण कर। 16 एलीशा ने कहा, यहोवा जिसके
सम्मुख मैं उपस्यित रहता हूँ उसके जीवन की शपय मैं कुछ भेंट न लूंगा, और
जब उस ने उसको बहुत विवश किया कि भेंट को ग्रहण करे, तब भी वह इनकार
ही करता रहा। 17 तब नामान ने कहा, अच्छा, तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी
मिले, क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी ईश्वर को होमबलि वा
मेलबलि न चढ़ाएगा। 18 एक बात तो यहोवा तेरे दास के लिथे झमा करे, कि जब
मेरा स्वामी रिम्मोन के भवन में दणडवत करने को जाए, और वह मेरे हाथ का
सहारा ले, और योंमुझे भी रिम्मोन के भवन में दणडवत करनी पके, तब यहोवा
तेरे दास का यह काम झमा करे कि मैं रिम्मोन के भवन में दणडवत करूं। 19

उस ने उस से कहा, कुशल से बिदा हो। 20 वह उसके यहां से योड़ी दूर जला गया
या, कि परमेश्वर के भक्त एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा, कि मेरे स्वामी ने
तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया या उसको
उस ने न लिया, परन्तु यहोवा के जीवन की शपय मैं उसके पीछे दौड़कर उस से
कुछ न कुछ ले लूंगा। 21 तब गेहजी नामान के पीछे दौड़ा, और नामान किसी को
अपके पीछे दौड़ता हूआ देखकर, उस से मिलने को रय से उतर पड़ा, और पूछा,
सब कुशल झेम तो है? 22 उस ने कहा, हां, सब कुशल है; परन्तु मेरे स्वामी ने
मुझे यह कहने को भेजा है, कि एप्रैम के पहाड़ी देश से भविष्यद्वक्ताओं के चेलोंमें
से दो जवान मेरे यहां अभी आए हैं, इसदिथे उनके लिथे एक किक्कार चान्दी और
दो जोड़े वस्त्र दे। 23 नामान ने कहा, दो किक्कार लेने को प्रसन्न हो, तब उस ने
उस से बहुत बिनती करके दो किक्कार खन्दी अलग यैलियोंमें बान्धकर, दो जोड़े
वस्त्र समेत अपके दो सेवकोंपर लाद दिया, और वे उन्हें उसके आगे आगे ले चले।
24 जब वह टीले के पास पहुंचा, तब उस ने उन वस्तुओं को उन से लेकर घर में
रख दिया, और उन मनुष्योंको बिदा किया, और वे चले गए। 25 और वह भीतर
जाकर, अपके स्वामी के साम्हने खड़ा हुआ। एलीशा ने उस से पूछा, हे गेहजी तू
कहां से आता है? उस ने कहा, तेरा दास तो कहीं नहीं गया, 26 उस ने उस से कहा,
जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपके रय पर से उतरा, तब वह
पूरा हाल मुझे मालूम या; क्या यह समय चान्दी वा वस्त्र वा जलपाई वा दाख की
बारियां, भेड़-बकरियां, गायबैल और दास-दासी लेने का है? 27 इस कारण से
नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। तब वह हिम सा श्वेत
कोढ़ी होकर उसके साम्हने से चला गया।

2 राजा 6

1 और भ्विष्यद्वक्ताओं के चेलोंमें से किसी ने एलीशा से कहा, यह स्यान जिस में
हम तेरे साम्हने रहते हैं, वह हमारे लिथे सकेत है। 2 इसलिथे हम यरदन तक
जाएं, और वहां से एक एक बल्ली लेकर, यहां अपके रहने के लिथे एक स्यान
बना लें; उस ने कहा, अच्छा जाओ। 3 तब किसी ने कहा, अपके दासोंके संग
चलने को प्रसन्न हो, उस ने कहा, चलता हूँ। 4 तो वह उनके संग चला और वे
यरदन के तीर पहुंचकर लकड़ी काटने लगे। 5 परन्तु जब एक जन बल्ली काट
रहा या, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई; सो वह चिल्लाकर कहने
लगा, हाथ ! मेरे प्रभु, वह तो मंगनी की यी। 6 परमेश्वर के भक्त ने पूछा, वह कहां
गिरी? जब उस ने स्यान दिखाया, तब उस ने एक लकड़ी काटकर वहां डाल दी,
और वह लाहा पानी पर तैरने लगा। 7 उस ने कहा, उसे उठा ले, तब उस ने हाथ
बढ़ाकर उसे ले लिया। 8 और अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा या, और
सम्मति करके अपके कर्मचारियोंसे कहा, कि अमुक स्यान पर मेरी छावनी
होगी। 9 तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि
चौकसी कर और अमुक स्यान से होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई
करनेवाले हैं। 10 तब इस्राएल के राजा ने उस स्यान को, जिसकी चर्चा करके
परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया या, भेजकर, अपक्की रझा की; और उस प्रकार
एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ। 11 इस कारण अराम के राजा का मन
बहुत घबरा गया; सो उस ने अपके कर्मचारियोंको बुलाकर उन से पूछा, क्या तुम
मुझे न बताओगे कि हम लोगोंमें से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके
एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु ! हे राजा ! ऐसा नहीं, 12 एलीशा जो इस्राएल में

भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन
की कोठरी में बोलता है। 13 राजा ने कहा, जाकर देखो कि वह कहां है, तब मैं
भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार मिला कि वह दोतान में
है। 14 तब उस ने वहां घोड़ोंऔर रथोंसमेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात
को आकर नगर को घेर लिया। 15 भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और
निकलकर क्या देखता है कि घोड़ोंऔर रथोंसमेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा
है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाथ ! मेरे स्वामी, हम क्या करें? 16 उस ने
कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
17 तब एलीशा ने यह प्रार्यना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख
सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या
देखा, कि एलीशा के चारोंओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ोंऔर रथोंसे भरा हुआ है।
18 जब अरामी उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्यना की कि इस दल
को अन्धा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उस ने उन्हें अन्धा कर
दिया। 19 तब एलीशा ने उन से कहा, यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है,
मेरे पीछे हो लो; मैं तुम्हें उस पनुष्य के पास जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो पहुंचाऊंगा। तब
उस ने उन्हें शोमरोन को पहुंचा दिया। 20 जब वे शोमरोन में आ गए, तब एलीशा
ने कहा, हे यहोवा, इन लोगोंकी आंखें खोल कि देख सकें। तब यहोवा ने उनकी
आंखें खोलीं, और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम शोमरोन के मध्य में
हैं। 21 उनको देखकर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, हे मेरे पिता, क्या मैं
इनको मार लूं? मैं उनको मार लूं? 22 उस ने उत्तर दिया, मत मार। क्या तू उनको
मार दिया करता है, जिनको तू तलवार और धनुष से बन्धुआ बना लेता है? तू

उनको अन्न जल दे, कि खा पीकर अपके स्वामी के पास चले जाएं। 23 तब उस
ने उनके लिथे बड़ी जेवनार की, और जब वे खा पी चुके, तब उस ने उन्हें बिदा
किया, और वे अपके स्वामी के पास चले गए। इसके बाद अराम के दल इस्राएल
के देश में फिर न आए। 24 परन्तु इसके बाद अराम के राजा बेंन्हदद ने अपक्की
समस्त सेना इकट्‌ठी करके, शोमरोन पर चढ़ाई कर दी और उसको घेर लिया।
25 तब शोमरोन में बड़ा अकाल पड़ा और वह ऐसा घिरा रहा, कि अन्त में एक
गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ोंमें और कब की चौयाई भर कबूतर की बीट
पांच टुकड़े चान्दी तक बिकने लगी। 26 और इस्राएल का राजा शहरपनाह पर
टहल रहा या, कि एक स्त्री ने पुकार के उस से कहा, हे प्रभु, हे राजा, बचा। 27 उस
ने कहा, यदि यहोवा तुझे न बचाए, तो मैं कहां से तुझे बचाऊं? क्या खलिहान में
से, वा दाखरस के कुण्ड में से? 28 फिर राजा ने उस से पूछा, तुझे क्या हुआ? उस
ने उत्तर दिया, इस स्त्री ने मुझ से कहा या, मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे
खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूंगी, और हम उसे भी खाएंगी। 29 तब मेरे बेटे
को पकाकर हम ने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा कि अपना
बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इस ने अपके बेटे को छिपा रखा। 30 उस स्त्री की थे
बातें सुनते ही, राजा ने अपके वस्त्र फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा या),
जब लोगोंने देखा, तब उनको यह देख पड़ा कि वह भीतर अपक्की देह पर टाट
पहिने है। 31 तब वह बोल उठा, यदि मैं शापात के वुत्र एलीशा का सिर आज
उसके घड़ पर रहने दूं, तो परमेश्वर मेरे साय ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे।
32 एलीशा अपके घर में बैठा हुआ या, और पुरनिथे भी उसके संग बैठे थे। सो जब
राजा ने अपके पास से एब जन भेजा, तब उस दूत के पहुंचने से पहिले उस ने

पुरनियोंसे कहा, देखो, इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटते को भेजा है;
इसलिथे जब वह दूत आए, तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना। क्या उसके
स्वामी के पांव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती? 33 वह उन से योंबातें कर
ही रहा या कि दूत उसके पास आ पहुंचा। और राजा कहने लगा, यह विपत्ति
यहोवा की ओर से है, अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्योंजोहता रहूं?

2 राजा 7

1 तब एलीशा ने कहा, यहोवा का वचन सुनो, यहोवा योंकहता है, कि कल इसी
समय शोमरोन के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जव भी
एक शेकेल में बिकेगा। 2 तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर राजा तकिया करता
य, परमेश्वर के भक्त को उत्तर देकर कहा, सुन, चाहे यहोवा आकाश के फरोखे
खोले, तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी? उस ने कहा, सुन, तू यह अपक्की आंखोंसे
तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा। 3 और चार कोढ़ी फाटक
के बाहर थे; वे आपस में कहने लगे, हम क्योंयहां बैठे बैठे मर जाएं? 4 यदि हम
कहें, कि नगर में जाएं, तो वहां मर जाएंगे; क्योंकि वहां मंहगी पक्की है, और जो
हम यहीं बैठे रहें, तौभी मर ही जाएंगे। तो आओ हम अराम की सेना में पकड़े
जाएं; यदि वे हम को जिलाए रखें तो हम जीवित रहेंगे, और यदि वे हम को मार
डालें, तौभी हम को मरना ही है। 5 तब वे सांफ को अराम की छावनी में जाने को
चले, और अराम की छावनी की छोर पर पहुंचकर क्या देखा, कि वहां कोई नहीं
है। 6 क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रयोंऔर घोड़ोंकी और भारी सेना की सी
आहट सुनाई यी, और वे आपस में कहने लगे थे कि, सुनो, इस्राएल के राजा ने

हित्ती और मिस्री राजाओं को बेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें। 7
इसलिथे वे सांफ को उठकर ऐसे भाग गए, कि अपके डेरे, घोड़े, गदहे, और छावनी
जैसी की तैसी छोड़-छाड़ अपना अपना प्राण लेकर भाग गए। 8 तो जब वे कोढ़ी
छावनी की छोर के डेरोंके पास पहुंचे, तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया, और उस
में से चान्दी, सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा रखा; फिर लौटकर दूसरे डेरे में घुस
गए और उस में से भी ले जाकर छिपा रखा। 9 तब वे आपस में कहने लगे, जो
हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु
हम किसी को नहीं बताते। जो हम पह फटने तक ठहरे रहें तो हम को दणड
मिलेगा; सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें। 10
तब वे चले और नगर के चौकीदारोंको बुलाकर बताया, कि हम जो अराम की
छावनी में गए, तो क्या देखा, कि वहां कोई नहीं है, और मनुष्य की कुछ आहट
नहीं है, केवल बन्धे हूए घोड़े और गदहे हैं, और डेरे जैसे के तैसे हैं। 11 तब
चौकीदारोंने पुकार के राजभवन के भीतर समाचार दिया। 12 और राजा रात ही
को उठा, और अपके कर्मचारियोंसे कहा, मैं तुम्हें बताता हूँ कि अरामियोंने हम से
क्या किया है? वे जानते हैं, कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान
में छिपके को यह कहकर गए हैं, कि जब वे नगर से निकलेंगे, तब हम उनको
जीवित ही पकड़कर नगर में घुसने पाएंगे। 13 परन्तु राजा के किसी कर्मचारी ने
उत्तर देकर कहा, कि जो घोड़े तगर में बच रहे हैं उन में से लोग पांच घोड़े लें, और
उनको भेजकर हम हाल जान लें। (वे तो इस्राएल की सब भीड़ के समान हैं जो
नगर में रह गए हैं वरन इस्राएल की जो भीड़ मर मिट गई है वे उसी के समान हैं।
) 14 सो उन्होंने दो रय और उनके घोड़े लिथे, और राजा ने उनको अराम की सेना

के पीछे भेजा; और कहा, जाओ, देखो। 15 तब वे यरदन तक उनके पीछे चले गए,
और क्या देखा, कि पूरा मार्ग वस्त्रोंऔर पात्रोंसे भरा पड़ा है, जिन्हें अरामियोंने
उतावली के मारे फेंक दिया या; तब दूत लौट आए, और राजा से यह कह सुनाया।
16 तब लोगोंने निकलकर अराम के डेरोंको लूट लिया; और यहोवा के वचन के
अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल में, और दो सआ जव एक शेकेल में बिकने
लगा। 17 और राजा ने उस सरदार को जिसके हाथ पर वह तकिया करता या
फाटक का अधिक्कारनी ठहराया; तब वह फाटक में लोगोंके पावोंके नीचे दबकर
मर गया। यह परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने राजा से
उसके यहां आने के यमय कहा या। 18 परमेश्वर के भक्त ने जैसा राजा से यह कहा
या, कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में दो सआ जव एक शेकेल में, और
एक सआ मैदा एक शेकेल में बिकेगा, वैसा ही हुआ। 19 और उस सरदार ने
परमेश्वर के भक्त को, उत्तर देकर कहा या, कि सुन चाहे यहोवा आकाश में फरोखे
खोले तौभ्ी क्या ऐसी बात हो सकेगी? और उस ने कहा या, सुन, तू यह अपक्की
आंखोंसे तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से खाने न पाएगा। 20 सो उसके साय
ठीक वैसा ही हुआ, अतएव वह फाटक में लोगोंके पांवोंके नीचे दबकर मर गया।

2 राजा 8

1 जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने जिलाया या, उस से उस ने कहा या कि अपके
घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह; क्योंकि यहोवा की
इच्छा है कि अकाल पके, और वह इस देश में सात वर्ष तक बना रहेगा। 2
परमेश्वर के भक्त के इस वचन के अनुसार वह स्त्री अपके घराने समेत

पलिश्तियोंके देश में जाकर सात वर्ष रही। 3 सात वर्ष के बीतने पर वह
पलिश्तियोंके देश से लौट आई, और अपके घर और भूमि के लिथे दोहाई देने को
राजा के पास गई। 4 राजा परमेश्वर के भक्त के सेवक गेहजी से बातें कर रहा या,
और उस ने कहा कि जो बड़े बड़े काम एलीशा ने किथे हैं उनहें मुझ से वर्णन कर।
5 जब वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा या कि एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया,
तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने जिलाया या वही आकर अपके घर और भूमि के
लिथे दोहाई देने लगी। तब गेहजी ने कहा, हे मेरे प्रभु ! हे राजा ! यह वही स्त्री है
और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा ने जिलाया या। 6 जब राजा ने स्त्री से मूछा,
तब उस ने उस से सब कह दिया। तब राजा ने एक हाकिम को यह कहकर उसके
साय कर दिया कि लो कुछ इसका या वरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब
से इसके खेत की जितनी आमदनी अब तक हुई हो सब इसे फेर दे। 7 और
एलीशा दमिशक को गया। और जब अराम के राजा बेन्हदद को जो रोगी या यह
समाचार मिला, कि परमेश्वर का भक्त यहां भी आया है, 8 तब उस ने हजाएल से
कहा, भेंट लेकर परमेश्वर के भक्त से मिलने को जा, और उसके द्वारा यहोवा से यह
पूछ, कि क्या बेन्हदद जो रोगी है वह बचेगा कि नहीं? 9 तब हजाएल भेंट के लिथे
दमिश्क की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट लदवाकर, उस से मिलने को
चला, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा, तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद
ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है, कि क्या मैं जो रोगी हूँ तो बचूंगा कि नहीं?
10 एलीशा ने उस से कहा, जाकर कह, तू निश्चय बच सकता, तौभी यहोवा ने मुझ
पर प्रगट किया है, कि तू नि:सन्देह मर जाएगा। 11 और वह उसकी ओर
टकटकी बान्ध कर देखता रहा, यहां तक कि वह लज्जित हुआ। और परमेश्वर

का भक्त रोने लगा। 12 तब हजाएल ने पूछा, मेरा प्रभु क्योंरोता है? उस ने उत्तर
दिया, इसलिथे कि मुझे मालूम है कि नू इस्राएलियोंपर क्या क्या उपद्रव करेगा;
उनके गढ़वाले तगरोंको तू फूंक देगा; उनके जवानोंको तू तलवार से घात करेगा,
उनके बालबच्चोंको तू पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियोंको तू चीर डालेगा।
13 हजाएल ने कहा, तेरा दास जो कुत्ते सरीखा है, वह क्या है कि ऐसा बड़ा काम
करे? एलीशा ने कहा, यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू अराम का राजा
हो जाएगा। 14 तब वह एलीशा से बिदा होकर अपके स्वामी के पास गया, और
उस ने उस से पूछा, एलीशा ने तुझ से क्या कहा? उस ने उत्तर दिया, उस ने मुझ
से कहा कि बेन्हदद नि:सन्देह बचेगा। 15 दूसरे दिन उस ने राजाई को लेकर जल
से भिगो दिया, और उसको उसके मुंह पर ऐसा ओढ़ा दिया कि वह मर गया। तब
हजाएल उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 16 इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र
योराम के पांचवें वर्ष में, जब यहूदा का राजा यहोशापात जीवित या, तब
यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा पर राज्य करने लगा। 17 जब वह राजा हुआ,
तब बत्तीस वर्ष का या, और आठ वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। 18 वह
इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता या, क्योंकि
उसकी स्त्री अहाब की बेटी यी; और वह उस काम को करता या जो यहोवा की दृष्टि
में बुरा है। 19 तौभ्ी यहोवा ने यहूदा को नाश करना न चाहा, यह उसके दास
दाऊद के कारण हुआ, क्योंकि उस ने उसको वचन दिया या, कि तेरे वंश के
निमित्त मैं सदा तेरे लिथे एक दीपक जलता हुआ रखूंगा। 20 उसके दिनोंमें एदोम
ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपना एक राजा बना लिया। 21 तब योराम अपके
सब रय साय लिथे हुए साईर को गया, ओर रात को उठकर उन एदोमियोंको जो

उसे घेरे हुए थे, और रयोंके प्रधानोंको भी मारा; उाौर लोग अपके अपके डेरे को
भाग गए। 22 योंएदोम यहूदा के वश से छूट गया, और आज तक वैसा ही है। उस
समय लिब्ना ने भी यहूदा की अधीनता छोड़ दी। 23 योराम के और सब काम
और जो कुछ उस ने किया, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
नहीं लिखा है? 24 निदान योराम अपके पुरखाओं के संग सो गया और उनके बीच
दाऊदपुर में उसे मिट्‌टी दी गई; और उसका पुत्र अहज्जाह उसके स्यान पर राज्य
करने लगा। 25 अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा योराम के बारहवें वर्ष में यहूदा के
राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा। 26 जब अहज्याह राजा बना,
तब बाईस वर्ष का या, और यरूशलेम में एक ही वर्ष राज्य किया। और उसकी
माता का नाम अतल्याह या, जो इस्राएल के राजा ओम्री की पोती यी। 27 वह
अहाब के घराने की सी चाल चला, और अहाब के घराने की नाईं वह काम करता
या, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि वह अहाब के घराने का दामाद या। 28
और वह अहाब के पुत्र योराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल
से लड़ने को गया, और अरामियोंने योराम को घायल किया। 29 सो राजा योराम
इसलिथे लौट गया, कि यिज्रैल में उन घावोंका इलाज कराए, जो उसको
अरामियोंके हाथ से उस समय लगे, जब वह हजाएल के साय लड़ रहा या। और
अहाब का पुत्र योराम तो यिज्रैल में रोगी रहा, इस कारण यहूदा के राजा यहोराम
का पुत्र अहजयाह उसको देखने गया।

2 राजा 9

1 तब एलीशा भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के चेलोंमें से एक को बुलाकर उस से

कहा, कमर बान्ध, और हाथ में तेल की यह कुप्पी लेकर गिलाद के रामोत को
जा। 2 और वहां पहूंचकर थेहू को जो यहोशापात का पुत्र और निमशी का पोता है,
ढूंढ लेना; तब भीतर जा, उसकी खड़ा कराकर उसके भइयोंसे अलग एक भीतरी
कोठरी में ले जाना। 3 तब तेल की यह कुप्पी लेकर तेल को उसके सिर पर यह
कह कर डालना, यहोवा योंकहता है, कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिथे तेरा
अभिषेक कर देता हूँ। तब द्वार खोलकर भागना, विलम्ह न करना। 4 तब वह
जवान भविष्यद्वक्ता गिलाद के रामोत को गया। 5 वहां पहुंचकर उस ने क्या देखा,
कि सेनापति बैठे हए हैं; तब उस ने कहा, हे सेनापति, मुझे तुझ से कुछ कहना है।
थेहू ने पूछा, हम सभोंमें किस से ? उस ने कहा हे सेनापति, तुझी से ! 6 तब वह
उठकर घर में गया; और उस ने यह कहकर उसके सिर पर तेल डाला कि इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं अपक्की प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिथे
तेरा अभिषेक कर देता हूँ। 7 तो तू अपके स्वामी अहाब के घराने को मार डालना,
जिस से मुझे अपके दास भविष्यद्वक्ताओं के वरन अपके सब दासोंके खून का जो
हेज़ेबेल ने बहाथा, पलटा मिले। 8 क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो
जाएगा, और मैं अहाब के वंश के हर बक लड़के को और इस्राएल में के क्या
बन्धुए, क्या स्वाधीन, हर एक को नाश कर डालूंगा। 9 और मैं अहाब का घराना
नबात के पुत्र यारोबाम का सा, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा। 10
और हेज़ेबेल को यिज्रैल की भ्ूमि में कुत्ते खाएंगे, और उसको मिट्टी देनेवाला
कोई न होगा। तब वह द्वार खोलकर भाग गया। 11 तब थेहू अपके स्वामी के
कर्मचारियोंके पास निकल आया, और एक ने उस से पूछा, क्या कुशल है, वह
बावला क्योंतेरे पास आया या? उस ने उन से कहा, तुम को मालूम होगा कि वह

कौन है और उस से क्या बातचीत हुई। 12 उन्होंने कहा फूठ है, हमें बता दे। उस
ने कहा, उस ने मुझ से कहा तो बहुत, परन्तु मतलब यह है कि यहोवा योंकहता है
कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिथे तेरा अभिषेक कर देता हूँ। 13 तब उन्होंने
फट अपना अपना वस्त्र उतार कर उसके तीचे सीढ़ी ही पर बिछाया, और नरसिंगे
फूंककर कहने लगे, थेहू राजा है। 14 योंथेहू जो निमशी का पोता और यहोशापात
का पुत्र या, उस ने योराम से राजद्रोह की गोष्ठी की। (योराम तो सब इस्राएल
समेत अराम के राजा हजाएल के कराण गिलाद के रामोत की रझा कर रहा या;
15 परन्तु राजा योराम आप अपके घाव का जो अराम के राजा हजाएल से युद्ध
करने के समय उसको अरामियोंसे लगे थे, उनका इलाज कराने के लिथे यिज्रैल
को लौठ गया या।) तब थेहू ने कहा, यदि तुम्हारा ऐसा मन हो, तो इस नगर में से
कोई निकल कर यिज्रैल में सुनाने को न जाने पाए। 16 तब थेहू रय पर चढ़कर,
यिज्रैल को चला जहां योराम पड़ा हुआ या; और यहूदा का राजा अहज्याह योराम
के देखने को वहां आया या। 17 यिज्रैल के गुम्मट पर, जो पहरुआ खड़ा या, उस
ने थेहू के संग आते हुए दल को देखकर कहा, मुझे एक दल दीखता है; योराम ने
कहा, एक सवार को बुलाकर उन लोगोंसे मिलने को भेज और वह उन से पूछे,
क्या कुशल है? 18 तब बक सवार उस से मिलने को गया, और उस से कहा, राजा
पूछता है, क्या कुशल है? थेहू ने कहा, कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे
चल। तब पहरुए ने कहा, वह दूत उनके पास पहुंचा तो या, परन्तु लौटकर नहीं
आया। 19 तब उसने दूसरा सवार भेजा, और उस ने उनके पास पहुंचकर कहा,
राजा पूछता है, क्या कुशल है? थेहू ने कहा, कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे
पीछे चल। 20 तब पहरुए ने कहा, वह भी उनके पास पहुंचा तो या, परन्तु

लौटकर नहीं आया। हांकना निमशी के पोते थेहू का सा है; वह तो बौड़हे की नाई
हांकता है। 21 योराम ने कहा, मेरा रय जुतवा। जब उसका रय जुत गया, तब
इस्राएल का राजा योराम और यहूदा का राजा अहज्याह, दोनो अपके अपके रय
पर चढ़कर निकल गए, और थेहू से मिलने को बाहर जाकर यिज्रैल नाबोत की
भूमि में उस से भेंट की। 22 थेहू को देखते ही योराम ने पूछा, हे थेहू क्या कुशल है,
थेहू ने उत्तर दिया, जब तक तेरी माता हेज़ेबेल छिनालपन और टोना करती रहे,
तब तक कुशल कहां? 23 तब याराम रास फेर के, और अहज्याह से यह कहकर
कि हे अहज्याह विश्वासघात है, भाग चल। 24 तब थेहू ने धनुष को कान तक
खींचकर योराम के पखौड़ोंके बीच ऐसा तीर मारा, कि वह उसका हृदय फोड़कर
निकल गया, और वह अपके रय में फुककर गिर पड़ा। 25 तब थेहू ने बिदकर
नाम अपके एक सरदार से कहा, उसे उठाकर यिज्रैली नाबोत की भूमि में फेंक दे;
स्मरण तो कर, कि जब मैं और तू, हम दोनो एक संग सवार होकर उसके पिता
अहाब के पीछे पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उस से यह भरी वचन कहवाया या,
कि यहोवा की यह वाणी है, 26 कि नाबोत और उसके पुत्रोंका जो खून हुआ, उसे
मैं ने देखा है, और यहोवा की यह वाण्ऍी है, कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा।
तो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर उसी भूमि में फेंक दे। 27 यह
देखकर यहूदा का राजा अहज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला। और थेहू
ने उसका पीछा करके कहा, उसे भी रय ही पर मारो; तो वह भी यिबलाम के पास
की गूर की चढ़ाई पर मारा गया, और मगिद्दो तक भगकर मर गया। 28 तब
उसके कर्मचारियोंने उसे रय पर यरूशलेम को पहुंचाकर दाऊदपुर में उसके
पुरखाओं के बीच मिट्टी दी। 29 अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम के ग्यारहवें

वर्ष में यहूदा पर राज्य करने लगा या। 30 जब येहू यिज्रैल को आया, तब हेज़ेबेल
यह सुन अपक्की आंखोंमें सुर्मा लगा, अपना सिर संवारकर, खिड़की में से फांकने
लगी। 31 जब थेहू फाटक में होकर आ रहा या तब उस ने कहा, हे अपके स्वामी
के घात करने वाले जिम्री, क्या कुशल है? 32 तब उस ने खिड़की की ओर मुंह
उठाकर पूछा, मेरी ओर कौन है? कौन? इस पर दो तीन खोजोंने उसकी ओर
फांका। 33 तब उस ने कहा, उसे नीचे गिरा दो। सो उन्होंने उसको नीचे गिरा
दिया, और उसके लोहू के कुछ छींटे भीत पर और कुछ घोड़ोंपर पके, और उन्होंने
उसको पांव से लताड़ दिया। 34 तब वह भीतर जाकर खाने पीने लगा; और कहा,
जाओ उस स्रापित स्त्री को देख लो, और उसे मिट्‌टी दो; वह तो राजा की बेटी है।
35 जब वे उसे मिट्‌टी देने गए, तब उसकी खोपक्की पांवोंऔर हथेलियोंको
छोड़कर उसका और कुछ न पाया। 36 सो उन्होंने लौटकर उस से कह दिया; तब
उस ने कहा, यह यहोवा का वह वचन है, जो उस ने अपके दास तिशबी एलिय्याह
से कहलवाया या, कि हेज़ेबेल का मांस यिज्रैल की भूमि में कुत्तोंसे खाया जाएगा।
37 और हेज़ेबेल की लोय यिज्रैल की भूमि पर खाद की नाई पक्की रहेगी, यहां
तक कि कोई न कहेगा, यह हेज़ेबेल है।

2 राजा 10

1 अहाब के तो सत्तर बेटे, पोते, शोमरोन में रहते थे। सो येहू ने शोमरोन में उन
पुरनियोंके पास, और जो यिज्रैल के हाकिम थे, और जो अहाब के लड़केवालोंके
पालनेवाले थे, उनके पास पत्र लिखकर भेजे, 2 कि तुम्हारे स्वामी के बेटे, पोते तो
तुम्हारे पास रहते हैं, और तुम्हारे रय, और धेड़े भी हैं, और तुम्हारे एक गढ़वाला

नगर, और हयियार भी हैं; तो इस पत्र के हाथ लगते ही, 3 अपके स्वामी के बेटोंमें
से जो सब से अच्छा और योग्य हो, उसको छांटकर, उसके पिता की गद्दी पर
बैठाओ, और अपके स्वामी के घराने के लिथे लड़ो। 4 परंतु वे निपट डर गए, और
कहने लगे, उसके साम्हने दो राजा भी ठहर न सके, फिर हम कहां ठहर सकेंगे? 5
तब जो राज घराने के काम पर या, और जो नगर के ऊपर या, उन्होंने और
पुरनियोंऔर लड़केबालोंके पालनेवालोंने थेहू के पास योंकहला भेजा, कि हम तेरे
दास हैं, जो कुछ तू हम से कहे, उसे हम करेंगे; हम किसी को राजा न बनाएंगे, जो
तुझे भाए वहीं कर। 6 तब उस ने दूसरा पत्र लिखकर उनके पास भेजा, कि यदि
तुम मेरी ओर के हो और मेरी मानो, तो अपके स्वामी के बेटोंपोतोंके सिर
कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्रैल में हाजिर होना। राजपुत्र तो जो
सत्तर मनुष्य थे, वे उस नगर के रईसोंके पास पलते थे। 7 यह पत्र उनके हाथ
लगते ही, उन्होंने उन सत्तरोंराजपुत्रोंको पकड़कर मार डाला, और उनके सिर
टोकरियोंमें रखकर यिज्रैल को उसके पास भेज दिए। 8 और एक दूत ने उसके
पास जाकर बता दिया, कि राजकुमारोंके सिर आगए हैं। तब उस ने कहा, उन्हें
फाटक में दो ढेर करके बिहान तक रखो। 9 बिहान को उस ने बाहर जा खड़े होकर
सब लोगोंसे कहा, तुम तो निर्दोष हो, मैं ने अपके स्वामी से राजद्रोह की गोष्ठी
करके उसे घात किया, परन्तु इन सभोंको किस ने मार डाला? 10 अब जान लो
कि जो वचन यहोवा ने अपके दास एलिय्याह के द्वारा कहा या, उसे उस ने पूरा
किया है; जो वचन यहोवा ने अहाब के घराने के विषय कहा, उस में से एक भी
बात बिना पूरी हुए न रहेगी। 11 तब अहाब के घराने के जितने लोग यिज्रैल में रह
गए, उन सभोंको और उसके जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे, उन

सभोंको थेहू ने मार डाला, यहां तक कि उस ने किसी को जीवित न छोड़ा। 12 तब
वह वहां से चलकर शोमरोन को गया। और मार्ग में चरवाहोंके ऊन कतरने के
स्यान पर पहुंचा ही या, 13 कि यहूदा के राजा अहय्याह के भई थेहू से मिले और
जब उस ने पूछा, तुम कौन हो? तब उन्होंने उत्तर दिया, हम अहज्याह के भाई हैं,
और राजमुत्रोंऔर राजमाता के बेटोंका कुशलझेम पूछने को जाते हैं। 14 तब उस
ने कहा, इन्हें जीवित पकड़ो। सो उन्होंने उनको जो बयालीस पुरुष थे, जीवित
पकड़ा, और ऊन कतरते के स्यान की बाबली पर मार डाला, उस ने उन में से
किसी को न छोड़ा। 15 जब वह वहां से चला, तब रेकाब का पुत्र यहोनादाब
साम्हने से आता हुआ उसको मिला। उसका कशल उस ने पूछकर कहा, मेरा मन
तो तेरी ओर निष्कपट है सो क्या तेरा मन भी वैसा ही है? यहोनादाब ने कहा, हां,
ऐसा ही है। फिर उस ने कहा, ऐसा हो, तो अपना हाथ मुझे दे। उस ने अपना हाथ
उसे दिया, और वह यह कहकर उसे अपके पास रय पर चढ़ाने लगा, 16 कि मेरे
संग चल। और देख, कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है। तब वह
उसके रय पर चढ़ा दिया गया। 17 शोमरोन को पहुंचकर उस ने यहोवा के उस
वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह से कहा या, अहाब के जितने शोमरोन में
बचे रहे, उन सभोंको मार के विनाश किया। 18 तब थेहू ने सब लोगोंको इकट्ठा
करके कहा, अहाब ने तो बाल की योड़ी ही उपासना की यी, अब थेहू उसकी
अपासना बढ़के करेगा। 19 इसलिथे अब बाल के सब नबियों, सब उपासकोंऔर
सब याजकोंको मेरे पास बुला लाओ, उन में से कोई भी न रह जाए; क्योंकि बाल
के लिथे मेरा एक बड़ा यज्ञ होनेवाला है; जो कोई न आए वह जीवित न बचेगा।
थेहू ने यह काम कमट करके बाल के सब उपासकोंको नाश करने के लिथे किया।

20 तब थेहू ने कहा, बाल की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो। और लोगोंने
प्रचार किया। 21 और थेहू ने सारे इस्राएल में दूत भेजे; तब वाल के सब उपासक
आए, यहां तक कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो। और वे बाल के भवन में
इतने आए, कि वह एक सिक्के से दूसरे सिक्के तक भर गया। 22 तब उस ने उस
मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिक्कारनी या, कहा, बाल के सब उपासकोंके
लिथे वस्त्र निकाल ले आ; सो वह उनके लिथे वस्त्र निकाल ले आया। 23 तब थेहू
रेकाब के पुत्र यहोनादाब को संग लेकर बाल के भपन में गया, और बाल के
उपासकोंसे कहा, ढूंढ़कर देखो, कि यहां तुम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो
नहीं है, केवल बाल ही के उपासक हैं। 24 तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को
भीतर गए। थेहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहरा कर उन से कहा या, यदि उन
मनुष्योंमें से जिन्हें मैं तुम्हारे हाथ कर दूं, कोठ भी बचने पाए, तो जो उसे जाने
देगा उसका प्राण, उसके प्राण की सन्ती जाएगा। 25 फिर जब होमबलि चढ़ चुका,
तब संहू ने पहरुओं उौर सरदारोंसे कहा, भीतर जाकर उन्हें मार डालो; कोई
निकलने न पाए। तब उन्होंने उन्हें तलवार से मारा और पहरुए और सरदार
उनको बाहर फेंककर बाल के भवन के नगर को गए। 26 और उन्होंने बाल के
भवन में की लाठें निकालकर फूंक दीं। 27 और बाल की लाठ को उन्होंने तोड़
डाला; और बाल के भवन को ढाकर पायखाना बना दिया; और वह आज तक ऐसा
ही है। 28 योंथेहू ने बाल को इस्राएल में से नाश करके दूर किया। 29 ैतौभी
नबात के पुत्र यारोबाम, जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापोंके
अनुसार करने, अर्यात् बेतेल और दान में के सोने के बछड़ोंकी पूजा, उस से थेहू
अलग न हुआ। 30 और यहोवा ने थेहू से कहा, इसलिथे कि तू ने वह किया, जो

मेरी दृष्टि में ठीक है, और अहाब के घराने से मेरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया
है, तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर बिराजती रहेगी। 31
परन्तु थेहू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की य्यवस्या पर पूर्ण मन से चलने की
चौकसी न की, वरन यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापोंके
अनुसार करने से वह अलग न हुआ। 32 उन दिनोंयहोवा इस्राएल को घटाने लगा,
इसलिथे हजाएल ने इस्राएल के उन सारे देशोंमें उनको मारा : 33 यरदन से पूरब
की ओर गिलाद का सारा देश, और गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश अर्यात्
अरोएर से लेकर जो अर्नोन की तराई के पास है, गिलाद और बाशान तक। 34 थेहू
के और सब काम और जो कुछ उस ने किया, और उसकी पूर्णर् वीरता, यह सब
क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 35 निदान थेहू
अपके पुरखाओं के संग सो गया, और शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र यहोआहाज उसके स्यान पर राजा बन गया। 36 थेहू के शोमरोन में
इस्राएल पर राज्य करने का समय तो अट्ठाईस वर्ष का या।

2 राजा 11

1 जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा, कि मेरा पुत्र मर गया, तब उस ने
पूरे राजवंश को नाश कर डाला। 2 परन्तु यहोशेबा जो राजा योराम की बेटी, और
अहज्याह की बहिन यी, उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले
राजकुमारोंके बीच में से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा
दिया। और उन्होंने उसे अतल्याह से ऐसा छिपा रखा, कि वह मारा न गया। 3
और वह उसके पास यहोवा के भवन में छ:वर्ष छिपा रहा, और अतल्याह देश पर

राज्य करती रही। 4 सातवें वर्ष में यहोयादा ने जल्लादोंऔर पहरुओं के
शतपतियोंको बुला भेजा, और उनको यहोवा के भवन में अपके पास ले आया;
और उन से वाचा बान्धी और यहोवा के भवन में उनको शपय खिलाकर, उनको
राजपुत्र दिखाया। 5 और उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि एक काम करो : अर्यात् तुम में
से एक तिहाई लोग जो विश्रमदिन को आनेवाले हों, वह राजभवन के पहरे की
चौकसी करें। 6 और एक तिहाई लोग सूर नाम फाटक में ठहरे रहें, और एक
तिहाई लोग पहरुओं के पीछे के फाटक में रहें; योंतुम भवन की चौकसी करके
लोगोंको रोके रहना। 7 और तुम्हारे दो दल अर्यात् जितने विश्रम दिन को बाहर
जानेवाले होंवह राजा के आसपास होकर यहोवा के भवन की चौकसी करें। 8 और
तुम अपके अपके हाथ में हयियार लिथे हुए राजा के चारोंओर रहना, और जो कोई
पांतियोंके भीतर घुसना चाहे वह मार डाला जाए, और तुम राजा के आते-जाते
समय उसके संग रहना। 9 यहाथादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार
शतपतियोंने किया। वे विश्रमदिन को आनेवाले और जानेवाले दोनोंदलोंके अपके
अपके जनोंको संग लेकर यहोयादा याजक के पास गए। 10 तब याजक ने
शतपतियोंको राजा दाऊद के बर्छे, और ढालें जो यहोवा के भवन में यीं दे दीं। 11
इसलिथे वे पहरुए अपके अपके हाथ में हयियार लिए हुए भवन के दक्खिनी कोने
से लेकर उत्तरी कोने तक वेदी और भवन के पास राजा के चारोंओर उसकी आड़
करके खड़े हुए। 12 तब उस ने राजकुमार को बाहर लाकर उसके सिर पर मुकुट,
और साझीपत्र धर दिया; तब लोगोंने उसका अभिषेक करके उसको राजा बनाया;
फिर ताली बजा बजाकर बोल उठे, राजा जीवित रहे । 13 जब अतल्याह को
पहरुओं और लोगोंका हलचल सुन पड़ा, तब वह उनके पास यहोवा के भवन में

गई। 14 और उस ने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार खम्भे के पास खड़ा है,
और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं। और लोग आनन्द करते
और तुरहियां बजा रहे हैं। तब अतल्याह अपके वस्त्र फाड़कर राजद्रोह राजद्रोह
योंपुकारने लगी। 15 तब यहोयादा याजक ने दल के अधिक्कारनी शतपतियोंको
आज्ञा दी कि उसे अपक्की पांतियोंके बीच से निकाल ले जाओ; और जो कोई
उसके पीछे चले उसे तलवार से मार डालो। क्योंकि याजक ने कहा, कि वह यहोवा
के भवन में न मार डाली जाए। 16 इसलिथे उन्होंने दोनोंओर से उसको जगह दी,
और वह उस मार्ग के बीच से चक्की गई, जिस से घोड़े राजभवन में जाया करते
थे; और वहां वह मार डाली गई। 17 तब यहोयादा ने यहोवा के, और राजा-प्रजा के
बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बन्धाई, और उस ने राजा और प्रजा के मध्य
भी वाचा बन्धाई। 18 तब सब लोगोंने बाल के भवन को जाकर ढा दिया, और
उसकी वेदियां और मूरतें भली भंति तोड़ दीं; और मतान नाम बाल के याजक को
वेदियोंके साम्हने ही घात किया। और याजक ने यहोवा के भवन पर
अधिक्कारनी ठहरा दिए। 19 तब वह शतपतियों, जल्लादोंऔर पहरुओं और सब
लोगोंको साय लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया, और पहरुओं के
फाटक के मार्ग से राजभवन को पहुंचा दिया। और राजा राजगद्दी पर विराजमान
हुआ। 20 तब सब लोग आनन्दित हुए, और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो
राजभवन के पास तलवार से मार डाली गई यी। 21 जब योआश राजा हुआ, उस
समय वह सात पर्ष का या।

2 राजा 12

1 थेहू के सातवें वर्ष में योआश राज्य करने लगा, और यरूशलेम में चालीस वर्ष
तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम सिब्या या जो बेर्शॅबा की यी। 2 और
जब तक यहोयादा याजक योआश को शिझा देता रहा, तब तक वह वही काम
करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। 3 तौभी ऊंचे स्यान गिराए न गए; प्रजा
के लोग तब भी ऊंचे स्यान पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे। 4 और योआश ने
याजकोंसे कहा, पवित्र की हुई वस्तुओं का जितना रुपया यहोवा के भवन में
पहुंचाया जाए, अर्यात् गिने हुए लोगोंका रुपया और जितने रुपके के जो कोई
योग्य ठहराया जाए, और जितना रुपया जिसकी इच्छा यहोवा के भवन में ले
आने की हो, 5 इन सब को याजक लोग अपक्की जान पहचान के लोगोंसे लिया
करें और भवन में जो कुछ टूटा फूटा हो उसको सुधार दें। 6 तौभी याजकोंने भवन
में जो टूटा फूटा या, उसे योआश राजा के तेईसवें वर्ष तक नहीं सुधारा या। 7
इसलिथे राजा योआश ने यहोयादा याजक, और और याजकोंको बुलवाकर पूछा,
भवन में जो कुछ टूटा फूटा है, उसे तुम क्योंनहीं सुधारते? अब से अपक्की जान
पहचान के लोगोंसे और रुपया न लेना, और जो तुम्हें मिले, उसे भवन के सुधारने
के लिथे दे देना। 8 तब याजकोंने मानलिया कि न तो हम प्रजा से और रुपया लें
और न भवन को सुधारें। 9 तब यहोयादा याजक ने एक सन्दूक ले, असके ढकने
में छेद करके उसको यहोवा के भवन में आनेवालोंके दाहिने हाथ पर वेदी के पास
धर दिया; और द्वार की रखवाली करनेवाले याजक उस में वह सब रुपया डालते
लगे जो यहोवा के भवन में लाया जाता या। 10 जब उन्होंने देखा, कि सन्दूक में
बहुत रुपया है, तब राजा के प्रधान और महाथाजक ने आकर उसे यैलियोंमें बान्ध
दिया, और यहोवा के भवन में पाए हुए रुपके को गिन लिया। 11 तब उन्होंने उस

तौले हुए रुपके को उन काम करानेवालोंके हाथ में दिया, जो यहोवा के भवन में
अधिक्कारनी थे; और इन्होंने उसे यहोवा के भवन के बनानेवाले बढ़इयों, राजों,
और संगतराशोंको दिथे। 12 और लकड़ी और गढ़े हुए पत्यर मोल लेने में, वरन
जो कुछ भवन के टूटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता या, उस में लगाया। 13
मरन्तु जो रुपया यहोवा के भवन में आता या, उस से चान्दी के तसले, चिमटे,
कटोरे, तुरहियां आदि सोने वा चान्दी के किसी प्रकार के पात्र न बने। 14 परन्तु
वह काम करनेवाले को दिया गया, और उन्होंने उसे लेकर यहोवा के भवन की
मरम्मत की। 15 और जिनके हाथ में काम करनेवालोंको देने के लिथे रुपया दिया
जाता या, उन से कुछ हिसाब न लिया जाता या, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते
थे। 16 जो रुपया दोषबलियोंऔर पापबलियोंके लिथे दिया जाता या, यह तो
यहोवा के भवन में न लगाया गया, वह याजकोंको मिलता या। 17 तब अराम के
राजा हजाएल ने गत नगर पर चढ़ाई की, और उस से लड़ाई करके उसे ले लिया।
तब उस ने यरूशलेम पर भी चढ़ाई करने को अपना मुंह किया। 18 तब यहूदा के
राजा योआश ने उन सब पवित्र वस्तुओं को जिन्हें उसके पुरखा यहोशापात
यहोराम और अहज्याह नाम यहूदा के राजाओं ने पवित्र किया या, और अपक्की
पवित्र की हुई वस्तुओं को भी और जितना सोना यहोवा के भवन के भणडारोंमें
और राजभवन में मिला, उस सब को लेकर अराम के राजा हजाएल के पास भेज
दिया; और वह यरूशलेम के पास से चला गया। 19 योआश के और सब काम जो
उस ने किया, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?
20 योआश के कर्मचारियोंने राजद्रोह की गोष्ठी करके, उसको मिल्लो के भवन में
जो सिल्ला की उतराई पर या, मार डाला। 21 अर्यात् शिमात का पुत्र योजाकार

और शोमेर का पुत्र यहोजाबाद, जो उसके कर्मचारी थे, उन्होंने उसे ऐसा मारा, कि
वह मर गया। तब उसे उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी, और
उसका पुत्र अमस्याह उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 13

1 अहज्याह के पुत्र यहूदा के राजा योआश के तेईसवें वर्ष में यंहू का मुत्र
यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और सत्रह वर्ष तक राज्य
करता रहा। 2 और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या अर्यात् नबात
के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापोंके अनुसार वह
करता रहा, और उनको छोड़ न दिया। 3 इसलिथे यहोवा का क्रोध इस्राएलियोंके
विरुद्ध भड़क उठा, और उस ने उनको अराम के राजा हजाएल, और उसके पुत्र
बेन्हदद के अधीन कर दिया। 4 तब यहोआहाज यहोवा के साम्हने गिड़गिड़ाया
और यहोवा ने उसकी सुन ली; क्योंकि उस ने इस्राएल पर अन्धेर देखा कि अराम
का राजा उन पर कैसा अन्धेर करता या। 5 इसलिथे यहोवा ने इस्राएल को एक
छुड़ानेवाला दिया और वे अराम के वश से छूट गए; और इस्राएली अगले दिनोंकी
नाई फिर अपके अपके डेरे में रहने लगे। 6 तौभी वे ऐसे पापोंसे न फिरे, जैसे
यारोबाम के घराने ने किया, और जिनके अनुसार उस ने इस्राएल से पाप कराए थे
: परन्तु उन में चलते रहे, और शोमरोन में अशेरा भी खड़ी रही। 7 अराम के राजा
ने तो यहोआहाज की सेना में से केवल पचास सवार, दस रय, और दस हजार
प्यादे छोड़ दिए थे; क्योंकि उस ने उनको नाश किया, और रौंद रौंदकर के धूलि में
मिला दिया या। 8 यहोआहाज के और सब काम जो उस ने किए, और उसकी

वीरता, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?
9 निदान यहोआहाज अपके पुरखाओं के संग सो गया और शोमरोन में उसे मिट्टी
दी बई; और उसका पुत्र योआश उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 10 यहूदा के
राजा योआश के राज्य के सैंतीसवें वर्ष में यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन
में इस्राएल पर राज्य करते लगा, और सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। 11 और
उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या, अर्यात् नबात का पुत्र यारोबाम
जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापो के अनुसार वह करता रहा, और
उन से अलग न हुआ। 12 योआश के और सब काम जो उस ने किए, और ख्सि
वीरता से वह सहूदा के राजा अमस्याह से लड़ा, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 13 निदान योआश अपके पुरखाओं के
संग सो गया और यारोबाम उसकी गद्दी पर विराजमान हुआ; और योआश को
शोमरोन में इय्राएल के राजाओं के बीच मिट्‌टी दी गई। 14 और एलीशा को वह
रोग लग गया जिस से वह मरने पर या, तब इस्राएल का राजा योआश उसके पास
गया, और उसके ऊपर रोकर कहने लगा, हाथ मेरे पिता ! हाथ मेरे पिता ! हाथ
इस्राएल के रय और सवारो ! एलीश ने उस से कहा, धनुष और तीर ले आ। 15 वह
उसके पास धनुष और तीर ले आया। 16 तब उस ने इस्राएल के राजा से कहा,
धनुष पर अपना हाथ लगा। जब उस ने अपना हाथ लगाया, तब एलीशा ने अपके
हाथ राजा के हाथोंपर धर दिए। 17 तब उस ने कहा, पूर्व की खिड़की खोल। जब
उस ने उसे खोल दिया, तब एलीशा ने कहा, तीर छोड़ दे; उस ने तीर छोड़ा। और
एलीशा ने कहा, यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्यात् अराम से छुटकारे का
चिह्न है, इसलिथे तू अपेक में अराम को यहां तक मार लेगा कि उनका अन्त कर

डालेगा। 18 फिर उस ने कहा, तीरोंको ले; और जब उस ने उन्हें लिया, तब उस ने
इस्राएल के राजा से कहा, भूमि पर मार; तब वह तीन बार मार कर ठहर गया। 19
और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा, तुझे तो पांच छ: बार मारना
चाहिथे या। ऐसा करते से तो तू अराम को यहां तक मारता कि उनका अन्त कर
डालता, परन्तु अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा। 20 तब एलीशा मर गया, और
उसे मिट्टी दी गई। एक वर्ष के बाद मोआब के दल देश में आए। 21 लोग किसी
मनुष्य को मिट्ठी दे रहे थे, कि एक दल उन्हें देख पड़ा तब उन्होंने उस लोय को
एलीशा की कबर में डाल दिया, और एलीशा की हड्डियोंके छूते ही वह जी उठा,
और अपके पावोंके बल खड़ा हो गया। 22 यहोआहाज के जीवन भर अराम का
राजा हजाएल इस्राएल पर अन्धेर ही करता रहा। 23 परन्तु यहोवा ने उन पर
अनुग्रह किया, और उन पर दया करके अपक्की उस वाचा के कारण जो उस ने
इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बान्धी यी, उन पर कृपा दृष्टि की, और न तो
उन्हें नाश किया, और न अपके साम्हने से निकाल दिया। 24 तब अराम का राजा
हजाएल मर गया, और उसका पुत्र बेन्हदद उसके स्यान पर राजा बन गया। 25
और यहोआहाज के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद के हाथ से वे नगर
फिर ले लिए, जिन्हें उस ने युद्ध करके उसके पिता यहोआहाज के हाथ से छीन
लिया या। योआश ने उसको तीन बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले लिए।

2 राजा 14

1 इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र सोआश के दूसरे वर्ष में यहूदा के राजा
योआश का मुत्र असस्याह राजा हुआ। 2 जब वह राज्य करने लगा। तब वह

पक्कीस वर्ष का या, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष राज्य करता रहा। और उसकी
माता का नाम यहोअद्दीन या, जो यरूशलेम की यी। 3 उस ने वह किया जो यहोवा
की दृष्टि में ठीक या तौभी अपके मूल पुरुष दाऊद की नाईं न किया; उस ने ठीक
अपके पिता योआश के से काम किए। 4 उसके दिनोंमें ऊंचे स्यान गिराए न गए;
लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप जलाते रहे। 5 जब राज्य उसके हाथ में
स्यिर हो गया, तब उस ने अपके उन कर्मचारियोंको मार डाला, जिन्होंने उसके
पिता राजा को मार डाला या। 6 परन्तु उन खूनियोंके लड़केवालोंको उस ने न मार
डाला, क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की य्यवस्या की पुस्तक में लिखी है, कि
पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए
: जिस ने पाप किया हो, वही उस पाप के कारण मार डाला जाए। 7 उसी
अमस्याह ने लोन की तराई में दस हजार एदोमी पुरुष मार डाले, और सेला नगर
से युद्ध करके उसे ले लिया, और उसका नाम योक्तेल रखा, और वह नाम आज
तक चलता है। 8 तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा योआश के पास जो थेहू का
पोता और यहोआहाज का पुत्र या दूतोंसे कहला भेजा, कि आ हम एक दूसरे का
साम्हना करें। 9 इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास
योंकहला भेजा, कि लबानोन पर की एक फड़बेरी ने लबानोन के एक देवदारु के
पास कहला भेजा, कि अपक्की बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में लबानोन में का
एक बनपशु पास से चला गया और उस फड़बेरी को रौंद डाला। 10 तू ने
एदोमियोंको जीता तो है इसलिथे तू फूल उठा है। उसी पर बड़ाई पारता हुआ घर
रह जा; तू अपक्की हानि के लिथे यहां क्योंहाथ उठाता है, जिस से तू क्या वरन
यहूदा भी तीचा खाएगा ? 11 परन्तु अमस्साह ने न माना। तब इस्राएल के राजा

योआश ने चढाई की, और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के
बेतशेमेश में एक दूसरे का सामहना किया। 12 और यहूदा इस्राएल से हार गया,
और एक एक अपके अपके डेरे को भागा। 13 तब इस्राएल के राजा योआश ने
यहूदा के राजा अमस्याह को जो अहज्याह का पोता, और योआश का पुत्र या,
बेतशेमेश में पकड़ लिया, और यरूशलेम को गया, और यरूशलेम की शहरपनाह
में से बप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक चार सौ हाथ गिरा दिए। 14 और
जितना सोना, चान्दी और जितने पात्र यहोवा के भवन में और राजभवन के
भणडारोंमें मिले, उन सब को और बन्धक लोगोंको भी लेकर वह शोमरोन को
लौट गया। 15 योआश के और काम जो उस ने किए, ओर उसकी वीरता और उस
ने किस रीति यहूदा के राजा अमस्याह से युद्ध किया, यह सब क्या इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? 16 निदान योआश अपके
पुरखाओं के संग सो गया और उसे इस्राएल के राजाओं के बीच शोमरोन में
मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र यारोबाम उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 17
यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा यहोआश के मरने के बाद योआश का पुत्र
यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। 18 अमस्याह के और काम
क्या यहूदा के रजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 19 जब यरूशलेम
में उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की गई, तब वह लाकीश को भाग गया। सो
उन्होंने लाकीश तक उसका पीछा करके उसको वहां मार डाला। 20 तब वह
घोड़ोंपर रखकर यरूशलेम में पहुंचाया गया, और वहां उसके पुरखाओं के बीच
उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। 21 तब सररी यहूदी प्रजा ने अजर्याह को
लेकर, जो सोलह वर्ष का या, उसके पिता अमस्याह के स्यान पर राजा नियुक्त

कर दिया। 22 जब राजा अमस्याह अपके पुरखाओं के संग सो गया, उसके बाद
अजर्याह ने एलत को दृढ़ करके यहूदा के वश में फिर कर लिया। 23 यहूदा के
राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में इस्राएल के राजा
योआश का पुत्र यारोबाम शोमरोन में राज्य करने लगा, और एकतालीस वर्ष
राज्य करता रहा। 24 उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या; अर्यात्
नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापोंके अनुसार
वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ। 25 उस ने इस्राएल का सिवाना
हमात की घाटी से ले अराबा के ताल तक ज्योंका त्योंकर दिया, जैसा कि इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा ने अमित्तै के पुत्र अपके दास गथेपेरवासी योना भविष्यद्वक्ता के
द्वारा कहा या। 26 क्योंकि यहोवा ने इस्राएल का दु:ख देखा कि बहुत ही कठिन है,
वरन क्या बन्धुआ क्या स्वाधीन कोई भी बचा न रहा, और न इस्राएल के लिथे
कोई सहाथक या। 27 यहोवा ने नहीं कहा या, कि मैं इस्राएल का नाम घरती पर से
मिटा डालूंगा। सो उस ने योआश के पुत्र यारोबाम के द्वारा उनको छूटकारा दिया।
28 यारोबाम के ौर सब काम जो उस ने किए, और कैसे पराक्रम के साय उस ने
युद्ध किया, और दमिश्क और हमात को जो पहले यहूदा के राज्य में थे इस्राएल के
वश में फिर मिला लिया, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है? 29 निदान यारोबाम अपके पुरखाओं के संग जो इस्राएल
के राजा थे सो गया, और उसका पुत्र जकर्याह उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 15

1 इस्राएल के राजा यारोबाम के सताईसवें वर्ष में यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र

अजर्याह राजा हुआ। 2 जब वह राज्य करने लगा, तब सोलह वर्ष का या, और
यरूशलेम में बावन वर्ष राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम यकोल्याह या,
जो यरूशलेम की यी। 3 जैसे उसका पिता अमस्याह किया करता या जो यहोवा
की दृष्टि में ठीक या, वैसे ही वह भी करता या। 4 तौभी ऊंचे स्यान गिराए न गए;
प्रजा के लोग उस समय भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप जलाते रहे। 5 और
यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा, कि वह मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और
अलग एक घर में रहता या। और योताम नाम राजपुत्र उसके घराने के काम पर
अधिक्कारनी होकर देश के लोगोंका न्याय करता या। 6 अजर्याह के और सब
काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में तहीं
लिखे हैं? 7 निदान अजर्याह अपके पुरखाओं के संग सो गया और असको
दाऊदपुुर में उसके पुरखाओं के बीच मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र योताम
उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 8 यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें वर्ष में
यारोबाम का पुत्र जकर्याह इस्राएल पर शोमरोन में राज्य करने लगा, और छः
महीने राज्य किया। 9 उस ने अपके पुरखाओं की नाईं वह किया, जो यहोवा की
दृष्टि में बुरा है, अर्यात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया य,
उसके पापोंके अनुसार वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ। 10 और
याबेश के पुत्र शल्लूम ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसको प्रजा के साम्हने
मारा, और उसका घात करके उसके स्यान पर राजा हुआ। 11 जकर्याह के और
काम इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। 12 योंयहोवा का वह
वचन पूरा हुआ, जो उस ने थेहू से कहा या, कि तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी
सन्तान इस्राएल की गद्दी पर बैठती जाएगी। और वैसा ही हुआ। 13 यहूदा के

राजा उज्जियय्याह के उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र शल्लूम राज्य करने लगा,
और महीने भर शोमरोन में राज्य करता रहा। 14 क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम ने,
तिर्सा से शोमरोन को जाकर याबेश के पुत्र शल्लूम को वहीं मारा, और उसे घात
करके उसके स्यान पर राजा हुआ। 15 शल्लूम के और काम और उस ने राजद्रोह
की जो गोष्ठी की, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की मुस्तक में लिखा है।
16 तब मनहेम ने तिर्सा से जाकर, सब निवासियोंऔर आस पास के देश समेत
तिप्सह को इस कारण मार लिया, कि तिप्सहियोंने उसके लिथे फाटक न खेले थे,
इस कारण उस ने उन्हें मार लिया, और उस में जितनी गर्भवती स्त्रियां यीं, उस
सभोंको चीर डाला। 17 यहूदा के राजा अजर्याह के उनतालीसवें वर्ष में गादी का
पुत्र मनहेम इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दस वर्ष शोमरोन में राज्य करता
रहा। 18 उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या, अर्यात् नबात के पुत्र
यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया या, उसके पापोंके अनुसार वह करता
रहा, और उन से वह जीवन भर अलग न हुआ। 19 अश्शूर के राजा पूल ने देश पर
चढ़ाई की, और मनहेम ने उसको हजार किक्कार चान्दी इस इच्छा से दी, कि वह
उसका यहाथक होकर राज्य को उसके हाथ में स्यिर रखे। 20 यह चान्दी अश्शूर
के राजा को देने के लिथे मनहेम ने बड़े बड़े धनवान इस्राएलियोंसे ले ली, एक एक
पुरुष को पचास पचास शेकेल चान्दी देनी पक्की; तब अश्शूर का राजा देश को
छोड़कर लौट गया। 21 मनहेम के उौर काम जो उस ने किए, वे सब क्या इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 22 निदान मनहेम अपके
पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र मकहयाह उसके स्यान पर राज्य करने
लगा। 23 यहूदा के राजा अजर्याह के पचासवें वर्ष में मनहेम का पुत्र पकहयाह

शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। 24
उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या, अर्यात् नबात के पुत्र यारोबाम
जिस ने इस्राएल से पाप राि◌या या, उसके पापोंके अनुसार वह करता रहा, और
उन से वह अलग न हुआ। 25 उसके सरदार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उस से
राजद्रोह की गोष्ठी करके, शोमरोन के राजभवन के गुम्मट में उसको और उसके
संग अगॉब और अर्थे को मारा; और पेकह के संग पचास गिलादी पुरुष थे, और
वह उसका घात करके उसके स्यान पर राजा बन गया। 26 पकहयाह के और सब
काम जो उस ने किए, वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।
27 यहूदा के राजा अजर्याह के बावनवें वर्ष में रमल्याह का पुत्र पेकह शोमरोन में
इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बीस वर्ष तक राज्य करता रहा। 28 उस ने
वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या, अर्यात् नबात के पुत्र यारोबाम, जिस ने
इस्राऐल से पाप कराया या, उसके पापोंके अनुसार वह करता रहा, और उन से वह
अलग न हुआ। 29 इस्राएल के राजा पेकह के दिनोंमें अश्शूर के राजा
तिग्लत्पिलेसेर ने आकर इय्योन, अबेल्बेत्माका, यानोह, केदेश और हासोर नाम
नगरोंको और गिलाद और गालील, वरन नप्ताली के पूरे देश को भी ले लिया, और
उनके लोगोंको बन्धुआ करके अश्शूर को ले गया। 30 उजिय्याह के पुत्र योताम के
बीसवें वर्ष में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह से राजद्रोह की गोष्ठी
करके उसे मारा, और उसे घात करके उसके स्यान पर राजा बन गया। 31 पेकह
के और सब काम जो उस ने किए वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में लिखे हैं। 32 रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह के दूसरे वर्ष में यहूदा के
जाजा उजिय्याह का पुत्र योताम राजा हुआ। 33 जब वह राज्य करने लगा, तब

पक्कीस वर्ष का या, और यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और
उसकी पाता का नाम यरूशा या जो सादोक की बेटी यी। 34 उस ने वह किया जो
यहोवा की दृष्टि में ठीक या, अर्यात् जैसा उसके पिता उजिय्याह ने किया या, ठीक
वैसा ही उस ने भी किया। 35 तौभी ऊंचे स्यान गिराए न गए, प्रजा के लोग उन
पर उस समय भी बलि चढाते और धूम जलाते रहे। यहोवा के भवन के ऊंचे
फाटक को इसी ने बनाया या। 36 योताम के और सब काम जो उस ने किए, वे
क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 37 उन दिनोंमें
यहोवा अराम के राजा रसीन को, और रमल्याह के पुत्र पेकह को, यहूदा के विरुद्ध
भेजने लगा। 38 निदान योताम अपके पुरखाओं के संग सो गया और अपके
मुलपुरुष दाऊद के नगर में अपके पुरखाओं के बीच उसको मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र आहाज उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 16

1 रमल्याह के पुत्र पेकह के सत्रहवें वर्ष में यहूदा के राजा योताम का पुत्र आहाज
राज्य करने लगा। 2 जब आहाज राज्य करने लगा, तब वह बीस पर्ष का या, और
सोलह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उस ने अपके मूलपुरुष दाऊद
का सा काम नहीं किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक या। 3 परन्तु
वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, वरन उन जातियोंके घिनौने कामोंके
अनुसार, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने से देश से निकाल दिया या, उस
ने अपके बेटे को भी आग में होम कर दिया। 4 और ऊंचे स्यानोंपर, और
पहाड़ियोंपर, और सब हरे वृझोंके तले, वह बलि चढ़ाया और धूम जलाया करता

या। 5 तब अराम के राजा रसीन, और रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह ने
लड़ने के लिथे यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उन्होंने आहाज को घेर लिया, परन्तु
युद्ध करके उन से कुछ बन न पड़ा। 6 उस समय अराम के राजा रसीन ने, एलत
को अराम के वश में करके, यहूदियोंको वहां से निकाल दिया; तब अरामी लोग
एलत को गए, और आज के दिन तक वहां रहते हैं। 7 और आहाज ने दूत भेजकर
अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास कहला भेजा कि मुझे अपना दास, वरन
बेटा जानकर चढ़ाई कर, और मुझे अराम के राजा और इस्राएल के राजा के हाथ
से बचा जो मेरे विरुद्ध उठे हैं। 8 और आहाज ने यहोवा के भवन में और राजभवन
के भणडारोंमें जितना सोना-चान्दी मिला उसे अश्शूर के राजा के पास भेंट करके
भेज दिया। 9 उसकी मानकर अश्शूर के राजा ने दमिश्क पर चढ़ाई की, और उसे
लेकर उसके लोगोंको बन्धुआ करके, कीर को ले गया, और रसीन को मार डाला।
10 तब राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से भेंट करने के लिथे
दमिश्क को गया, और वहां की वेदी देखकर उसकी सब बनावट के अनुसार
उसका नकशा ऊरिय्याह याजक के पास नमूना करके भेज दिया। 11 और ठीक
इसी नमूने के अनुसार जिसे राजा आहाज ने दमिश्क से भेजा या, ऊरिय्याह
याजक ने राजा आहाज के दमिश्क से आने तक एक वेदी बना दी। 12 जब राजा
दमिश्क से आया तब उस ने उस वेदी को देखा, और उसके निकट जाकर उस पर
बलि चढ़ाए। 13 उसी वेदी पर उस ने अपना होमबलि और अन्नबलि जलौया,
और अर्ध दिया और मेलबलियोंका लोहू छिड़क दिया। 14 और पीतल की जो वेदी
यहोवा के साम्हने रहती यी उसको उस ने भवन के साम्हने से अर्यात् अपक्की
वेदी और यहोवा के भवन के बीच से हटाकर, उस वेदी की उत्तर ओर रख दिया।

15 तब राजा आहाज ने ऊरिय्याह याजक को यह आज्ञा दी, कि भोर के होपबलि
और सांफ के अन्नबलि, राजा के होमबलि और उसके अन्नबलि, और सब
साधारण लोगोंके होमबलि और अर्ध बड़ी वेदी पर चढ़ाया कर, और
होमबलियोंऔर मेलबलियोंका सब लोहू उस पर छिड़क; और पीतल की वेदी के
विषय मैं विचार करूंगा। 16 राजा आहाज की इस आज्ञा के अनुसार ऊरिय्याह
याजक ने किया। 17 फिर राजा आहाज ने कुसिर्योंकी पटरियोंको काट डाला, और
हौदियोंको उन पर से उतार दिया, और बड़े हौद को उन पीतल के बैलोंपर से जो
उसके तले थे उतारकर, पत्यरोंके फर्श पर धर दिया। 18 और विश्रम के दिन के
लिथे जो छाया हुआ स्यान भवन में बना या, और राजा के बाहर के प्रवेश करने
का फाटक, उनको उस ने अश्शूर के राजा के कारण यहोवा के भवन से अलग कर
दिया। 19 आहाज के और काम जो उस ने किए, वे क्या यहूदा के राजाओं के
इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 20 निदान आहाज अपके पुरखाओं के संग
सो गया और उसे उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका
पुत्र हिजकिय्याह उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 17

1 यहूदा के राजा आहाज के बारहवें वर्ष में एला का पुत्र होशे शोमरोन में, इस्राएल
पर राज्य करने लगा, और नौ वर्ष तक राज्य करता रहा। 2 उस ने वही किया जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा या, परन्तु इस्राएल के उन राजाओं के बराबर नहीं जो उस
से पहिले थे। 3 उस पर अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने चढ़ाई की, और होशे उसके
अधीन होकर, उसको भेंट देने लगा। 4 परन्तु अश्शूर के राजा ने होशे को राजद्रोह

की गोष्ठी करनेवाला जान लिया, क्योंकि उस ने "सो" नाम मिस्र के राजा के पास
दूत भेजे, और अश्शूर के राजा के पास सालियाना भेंट भेजनी छोड़ दी; इस कारण
अश्शूर के राजा ने उसको बन्द किया, और बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया।
5 तब अश्शूर के राजा ने पूरे देश पर चढ़ाई की, और शोमरोन को जाकर तीन वर्ष
तक उसे घेरे रहा। 6 होशे के नौवें वर्ष में अश्शूर के राजा ने शोमरोन को ले लिया,
और इस्राएल को अश्शूर में ले जाकर, हलह में और गोजान की नदी हाबोर के पास
और मादियोंके नगरोंमें बसाया। 7 इसका यह कारण है, कि यद्यपि इस्राएलियोंका
परमेश्वर यहोवा उनको मिस्र के राजा फ़िरौन के हाथ से छुड़ाकर मिस्र देश से
निकाल लाया या, तौभी उन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया, और पराथे देवताओं का
भय माना। 8 और जिन जातियोंको यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने से देश से
तिकाला या, उनकी रीति पर, और अपके राजाओं की चलाई हुई रीतियोंपर चलते
थे। 9 और इस्राएलियोंने कपठ करके अपके परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध अनुचित
काम किए, अर्यात पहरुओं के गुम्मट से लेकर गढ़वाले नगर तक अपक्की सारी
बस्तियोंमें ऊंचे स्यान बना लिए; 10 और सब ऊंची पहाडिय़ोंपर, और सब हरे
वृझोंके तले लाठें और अशेरा खड़े कर लिए। 11 और ऐसे ऊंचे स्यानोंमें उन
जातियोंकी नाई जिनको यहोवा ने उनके साम्हने से निकाल दिया या, धूप
जलाया, और यहोवा को क्रोध दिलाने के योग्य बुरे काम किए। 12 और मूरतोंकी
उपासना की, जिसके विषय यहोवा ने उन से कहा या कि तुम यह काम न करना।
13 तौभी यहोवा ने सब भविष्यद्वक्ताओं और सब दर्शियोंके द्वारा इस्राएल और
यहूदा को यह कह कर चिताया या, कि अपक्की बुरी चाल छोड़कर उस सारी
य्यवस्या के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी यी, और अपके दास

भविष्यद्वक्ताओं के हाथ तूम्हारे पास पहुंचाई है, मेरी आज्ञाओं और विधियोंको
माना करो। 14 परन्तु उन्होंने न माना, वरन अपके उन पुरखाओं की नाईं,
जिन्होंने अपके परमेश्वर यहोवा का विश्वास न किया या, वे भी हठीले बन गए।
15 और वे उसकी विधियोंऔर अपके पुरखाओं के साय उसकी वाचा, और जो
चितौनियां उस ने उन्हें दी यीं, उनको तुच्छ जानकर, निकम्मी बातोंके पीछे हो
लिए; जिस से वे आप निकम्मे हो गए, और अपके चारोंओर की उन जातियोंके
पीछे भी हो लिए जिनके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी यी कि उनके से काम न
करना। 16 वरन उन्होंने अपके परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया,
और दो बछड़ोंकी मूरतें ढालकर बनाई, और अशेरा भी बनाई; और आकाश के
सारे गणोंको दणडवत की, और बाल की उपासना की। 17 और अपके
बेटे-बेटियोंको आग में होम करके चढाया; और भावी कहनेवालोंसे पूछने, और
टोना करने लगे; और जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या जिस से वह क्रोधित भी होता
है, उसके करने को अपक्की इच्छा से बिक गए। 18 इस कारण यहोवा इस्राएल से
अति क्रोधित हुआ, और उन्हें अपके साम्हने से दूर कर दिया; यहूदा का गोत्र छोड़
और कोई बचा न रहा। 19 यहूदा ने भी अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं न
मानीं, वरन जो विधियां इस्राएल ने चलाई यीं, उन पर चलने लगे। 20 तब यहोवा
ने इस्राएल की सारी सन्तान को छोड़ कर, उनको दु:ख दिया, और लूटनेवालोंके
हाथ कर दिया, और अन्त में उन्हें अपके साम्हने से निकाल दिया। 21 उस ने
इस्राएल को तो दाऊद के घराने के हाथ से छीन लिया, और उन्होंने नबात के पुत्र
यारोबाम को अपना राजा बनाया; और यारोबाम ने इस्राएल को यहोवा के पीछे
चलने से दूर खींचकर उन से बड़ा पाप कराया। 22 सो जैसे पाप यारोबाम ने किए

थे, वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे, और उन से अलग न हुए। 23 अन्त में
यहोवा ने इस्राएल को अपके साम्हने से दूर कर दिया, जैसे कि उस ने अपके सब
दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा या। इस प्रकार इस्राएल अपके देश से
निकालकर अश्शूर को पहुंचाया गया, जहां वह आज के दिन तक रहता है। 24
और अश्शूर के राजा ने बाबेल, कूता, अब्वा हमात और सपवैंम नगरोंसे लोगोंको
लाकर, इस्राएलियोंके स्यान पर शोमरोन के नगरोंमें बसाया; सो वे शोमरोन के
अधिक्कारनी होकर उसके नगरोंमें रहने लगे। 25 जब वे वहां पहिले पहिले रहने
लगे, तब यहोवा का भय न मानते थे, इस कारण यहोवा ने उनके बीच सिंह भेजे,
जो उनको मार डालने लगे। 26 इस कारण उन्होंने अश्शूर के राजा के पास कहला
भेजा कि जो जातियां तू ने उनके देशोंसे निकालकर शोमरोन के नगरोंमें बसा दी
हैं, वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानतीं, उस से उस ने उसके मध्य सिंह भेजे
हैं जो उनको इसलिथे मार डालते हैं कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते।
27 तब अश्शूर के राजा ने आज्ञा दी, कि जिन याजकोंको तुम उस देश से ले आए,
उन में से एक को वहां पहुंचा दो; और वह वहां जाकर रहे, और वह उनको उस देश
के देवता की रीति सिखाए। 28 तब जो याजक शोमरोन से निकाले गए थे, उन में
से एक जाकर बेतेल में रहने लगा, और उनको सिखाने लगा कि यहोवा का भय
किस रीति से मानना चाहिथे। 29 तौभी एक एक जाति के लोगोंने अपके अपके
निज देवता बनाकर, अपके अपके बसाए हुए नगर में उन ऊंचे स्यानोंके भवनोंमें
रखा जो शोमरोनियोंने बसाए थे। 30 बाबेल के मनुष्योंने तो सुक्कोतबनोत को,
कूत के पनुष्योंने नेर्गल को, हमात के मनुष्योंने अशीमा को, 31 और अब्वियोंने
निभज, और तर्त्ताक को स्यापित किया; और सपवमी लोग अपके बेटोंको

अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक नाम सपवैंम के देवताओं के लिथे होम करके चढ़ाने
लगे। 32 योंवे यहावा का भय मानते तो थे, परन्तु सब प्रकार के लोगोंमें से ऊंचे
स्यानोंके याजक भी ठहरा देते थे, जो ऊंचे स्यानोंके भवनोंमें उनके लिथे बलि
करते थे। 33 वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु उन जातियोंकी रीति पर,
जिनके बीच से वे निकाले गए थे, अपके अपके देवताओं की भी उपासना करते
रहे। 34 आज के दिन तक वे अपक्की पहिली रीतियोंपर चलते हैं, वे यहोवा का
भय नहीं मानते। 35 न तो उपक्की विधियोंऔर नियमोंपर और न उस य्यवस्या
और आज्ञा के अनुसार चलते हैं, जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दी यी,
जिसका नाम उस ने इस्राएल रखा या। उन से यहोवा ने बाचा बान्धकर उन्हें यह
आज्ञा दी यी, कि तुम पाराथे देवताओं का भय न मानना और न उन्हें दणडवत
करना और न उनकी उपासना करना और न उनको बलि चढ़ाना। 36 परन्तु
यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले
आया, तुम उसी का भय मानना, उसी को दणडवत करना और उसी को बलि
चढ़ाना। 37 और उस ने जो जो विधियां और नियम और जो य्यवस्या और
आज्ञाएं तुम्हारे लिथे लिखीं, उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो; और पराथे
देवताओं का भय न मानना। 38 और जो वाचा मैं ने तुम्हारे साय बान्धी है, उसे न
भूलना और पराथे देवताओं का भय न मानना। 39 केवल अपके परमेश्वर यहोवा
का भय पानना, वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा। 40 तौभी
उन्होंने न माना, परन्तु वे अपक्की पहिली रीति के अनुसार करते रहे। 41
अतएव वे जातियां यहोवा का भय मानती तो यीं, परन्तु अपक्की खुदी हुई
मूरतोंकी उपासना भी करती रहीं, और जैसे वे करते थे वैसे ही उनके बेटे पोते भी

आज के दिन तक करते हैं।

2 राजा 18

1 एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के तीसरे वर्ष में यहूदा के राजा आहाज का
पुत्र हिजकिय्याह राजा हुआ। 2 जब वह राज्य करने लगा तब पच्चीस वर्ष का
या, और उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का
नाम अबी या, जो जकर्याह की बेटी यी। 3 जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया या
जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उस ने भी किया। 4 उस ने ऊंचे स्यान गिरा
दिए, लाठोंको तोड़ दिया, अशेरा को काट डाला। और पीतल का जो सांप मूसा ने
बनाया या, उसको उस ने इस कारण चूर चूर कर दिया, कि उन दिनोंतक इस्राएली
उसके लिथे धूप जलाते थे; और उस ने उसका नाम नहुशतान रखा। 5 वह
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता या, और उसके बाद यहूदा के सब
राजाओं में कोई उसके बराबर न हुआ, और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ
या। 6 और वह यहोवा से लिपटा रहा और उसके पीछे चलना न छोड़ा; और जो
आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी यीं, उनका वह पालन करता रहा। 7 इसलिथे यहोवा
उसके संग रहा; और जहां कहीं वह जाता या, वहां उसका काम सफल होता या।
और उस ने अश्शूर के राजा से बलवा करके, उसकी अधीनता छोड़ दी। 8 उस ने
पलिश्तियोंको राज़ा और उसके सिवानोंतक, पहरुओं के गुम्मट और गढ़वाले
नगर तक मारा। 9 राजा हिजकिय्याह के चौथे वर्ष में जो एला के पुत्र इस्राएल के
राजा होशे का सातवां वर्ष या, अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने शोमरोन पर चढ़ाई
करके उसे घेर लिया। 10 और तीन वर्ष के बीतने पर उन्होंने उसको ले लिया। इस

प्रकार हिजकिय्याह के छठवें वर्ष में जो इस्राएल के राजा होशे का नौवां वर्ष या,
शोमरोन ले लिया गया। 11 तब अश्शूर का राजा इस्राएल को बन्धुआ करके
अश्शूर में ले गया, और हलह में ओर गोजान की नदी हाबोर के पास और
मादियोंके नगरोंमें उसे बसा दिया। 12 इसका कारण यह या, कि उन्होंने अपके
परमेश्वर यहोवा की बात न मानी, वरन उसकी वाचा को तोड़ा, और जितनी
आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने दी यीं, उनको टाल दिया और न उनको सुना और
न उनके अनुसार किया। 13 हिजकिय्याह राजा के चौदहवें वर्ष में अश्शूर के राजा
सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरोंपर चढ़ाई करके उनको ले लिया। 14 तब
यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा के पास लाकीश को कहला भेजा,
कि मुझ से अपराध हुआ, मेरे पास से लौट जा; और जो भर तू मुझ पर डालेगा
उसको मैं उठाऊंगा। तो अश्शूर के राज ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिथे
तीन सौ किक्कार चान्दी और तीस किक्कार लोना ठहरा दिया। 15 तब जितनी
चान्दी यहोवा के भवन और राजभवन के भणडारोंमें मिली, उस सब को
हिजकिय्याह ने उसे दे दिया। 16 उस समय हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के
किवाड़ोंसे और उन खम्भोंसे भी जिन पर यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सोना
मढ़ा या, सोने को छीलकर अश्शूर के राजा को दे दिया। 17 तौभी अश्शूर के राजा
ने तर्त्तान, रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर, लाकीश से यरूशलेम के
पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। सो वे यरूशलेम को गए और वहां
पहुंचकर ऊपर के पोखरे की नाली के पास धेबियोंके खेत की सड़क पर जाकर खड़े
हुए। 18 और जब उन्होंने राजा को पुकारा, तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम
जो राजघराने के काम पर या, और शेब्ना जो मन्त्री या और आसाप का पुत्र

योआह जो इतिहास का लिखनेवाला या, थे तीनोंउनके पास बाहर निकल गए।
19 रबशाके ने उन से कहा, हिजकिय्याह से कहो, कि महाराजाधिराज अर्यात्
अश्शूर का राजा योंकहता है, कि तू किस पर भरोसा करता है? 20 तू जो कहता है,
कि मेरे यहां युद्ध के लिथे युक्ति और पराक्रम है, सो तो केवल बात ही बात है। तू
किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है? 21 सुन, तू तो उस
कुचले हुए नरकट अर्यात् मिस्र पर भरोसा रखता है, उस पर यदि कोई टेक
लगाए, तो वह उसके हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फ़िरौन अपके सब
भरोसा रखनेवालोंके लिथे ऐसा ही है। 22 फिर यदि तुम मुझ से कहो, कि हमारा
भरोसा अपके परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या यह वही नहीं है जिसके ऊंचे
स्यानोंऔर वेदियोंको हिजकिय्याह ने दूर करके यहूदा और यरूशलेम से कहा, कि
तुम इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम में है दणडवत करना? 23 तो अब मेरे
स्वामी अश्शूर के राजा के पास मुछ बन्धक रख, तब मैं तुझे दो हाजार घोड़े दूंगा,
क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं? 24 फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से
छोटे कर्मचारी का भी कहा न मान कर क्योंरयोंऔर सवारोंके लिथे मिस्र पर
भरोसा रखता है? 25 क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे, इस स्यान को उजाड़ने के
लिथे चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझ से कहा है, कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे
उजाड़ दे। 26 तब हिलकिय्याह के पुत्र एल्याकीम और शेब्ना योआह ने रबशाके
से कहा, अपके दासोंसे अरामी भाषा में बातें कर, क्योंकि हम उसे समझते हैं; और
हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगोंके सुनते बातें न कर। 27
रबशाके ने उन से कहा, क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के, वा तुम्हारे
ही पास थे बातें कहने को भेजा है? क्या उस ने मुझे उन लोगोंके पास नहीं भेजा,

जो शहरपनाह पर बैठे हैं, ताकि नुम्हारे संग उनको भी अपक्की बिष्ठा खाना और
अपना मूत्र पीना पके? 28 तब रबशाके ने खड़े हो, यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से
कहा, महाराजाधिराज अर्यत् अश्शूर के राजा की बात सुनो। 29 राजा योंकहता है,
कि हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न
सकेगा। 30 और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भरोसा कराने न पाए, कि
यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न
पकेगा। 31 हिजकिय्याह की मत सुनो। अश्शूर का राजा कहता है कि भेंट
भेजकर मुझे प्रसन्न करो और मेरे पास निकल आओ, और प्रत्थेक अपक्की
अपक्की दाखलता और अंजीर के वृझ के फल खाता और अपके अपके कुण्ड का
पानी पीता रहे। 32 तब मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा, जो तुम्हारे देश
के समान अनाज और नथे दाखमधु का देश, रोटी और दाख्बारियोंका देश,
जलपाइयोंऔर मधु का देश है, वहां तुम मरोगे नहीं, जीवित रहोगे; तो जब
हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए, कि यहोवा हम को बचाएगा, तब
उसकी न सुनना। 33 क्या और जातियोंके देवताओं ने अपके अपके देश को
अश्शूर के राजा के हाथ से कभी बचाया है? 34 हमात और अर्पाद के देवता कहां
रहे? सपवैंम, हेना और इव्वा के देवता कहां रहे? क्या उन्होंने शोमरोन को मेरे
हाथ से बचाया है, 35 देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है, जिस ने अपके
देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से
बचाएगा। 36 परन्तु सब लोग चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही,
क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा यी, कि उसको उत्तर न देना। 37 तब हिलकिय्याह
का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर या, और शेब्ना जो मन्त्री या, और

आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला या, अपके वस्त्र फाड़े हुए,
हिजकिय्याह के पास जाकर रबशाके की बातें कह सुनाई।

2 राजा 19

1 जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपके वस्त्र फाड़, टाट ओढ़कर
यहोवा के भपन में गया। 2 और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर
या, और शेब्ना मन्त्री को, और याजकोंके पुरनियोंको, जो सब टाट ओढ़े हुए थे,
आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के पास भेज दिया। 3 उन्होंने उस से कहा,
हिजकिय्याह योंकहता है, आज का दिन संकट, और उलहने, और निन्दा का दिन
है; बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जन्म देने का बल न रहा। 4 कदाचित तेरा
परमेश्वर यहोवा रबशाके की सब बातें सुने, जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने
जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहावा ने
सुनी हैं उन्हें डपके; इसलिथे तू इन बचे हुओं के लिथे जो रह गए हैं प्रार्यना कर। 5
जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए, 6 तब यशायाह ने उन
से कहा, अपके स्वामी से कहो, यहेवा योंकहता है, कि जो वचन तू ने सुने हैं,
जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनोंने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर। 7
सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा करूंगा, कि वह कुछ समाचार सुनकर अपके देश को
लौट जाए, और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा। 8 तब रबशाके
ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया, क्योंकि उस ने
सुना या कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। 9 और जब उस ने कूश के राजा
तिर्हाका के विष्य यह सुना, कि वह मुझ से लड़ने को निकला है, तब उस ने

हिजकिय्याह के पास दूतोंको यह कह कर भेजा, 10 तुम यहूदा के राजा
हिजकिय्याह से योंकहना : तेरा परमेश्वर जिसका तू भरोसा करता है, यह कहकर
तुझे धोखा न देने पाए, कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पकेगा। 11
देख, तू ने तो सुना है अश्शूर के राजाओं ने सब देशोंसे कैसा य्यवहार किया है
उन्हें सत्यानाश कर दिया है। फिर क्या तू बचेगा? 12 गोजान ऊ◌ौर हारान और
रेसेप और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी, जिन जातियोंको मेरे पुरखाओं ने नाश
किया, क्या उन में से किसी जाति के देवताओं ने उसको बचा लिया? 13 हमात
का राजा, और अर्पाद का राजा, और समवैंम नगर का राजा, और हेना और इय्वा
के राजा थे सब कहां रहे? इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतोंके हाथ से लेकर पढ़ा।
14 तब यहोवा के भवन में जाकर उसको यहोवा के साम्हने फैला दिया। 15 और
यहोवा से यह प्रार्यना की, कि हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ! हे करूबोंपर
विराजनेवाले ! पृय्वी के सब राज्योंके ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश और
पृय्वी को तू ही ने बनाया है। 16 हे यहोवा ! कान लगाकर सुन, हे यहोवा आंख
खोलकर देख, और सन्हेरीब के वचनोंको सुन ले, जो उस ने जीवते परमेश्वर की
निन्दा करने को कहला भेजे हैं। 17 हे यहोवा, सच तो है, कि अश्शूर के राजाओं ने
जातियोंको और उनके देशोंको उजाड़ा है। 18 और उनके देवताओं को आग में
फेंका है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्योंके बनाए हुए काठ और पत्यर ही के थे;
इस कारण वे उनको नाश कर सके। 19 इसलिथे अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू
हमें उसके हाथ से बचा, कि पृय्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही
यहोवा है। 20 तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला
भेजा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि जो प्रार्यना तू ने अश्शूर के

राजा सन्हेरीब के विषय मुझ से की, उसे मैं ने सुना है। 21 उसके विषय में यहोवा
ने यह वचन कहा है, कि सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे
ठट्ठोंमें उड़ाती है, यरूशलेम की पुत्री, तुझ पर सिर हिलाती है। 22 तू ने जो
नामधराई और निन्दा की है, वह किसकी की है? और तू ने जो बड़ा बोल बोला
और घमणड किया है वह किसके विरुद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध तू
ने किया है ! 23 अपके दूतोंके द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है, कि वहुत से
रय लेकर मैं पर्वतोंकी चोटियोंपर, वरन लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूँ, और
मैं उसके ऊंचे ऊंचे देवदारुओं और अच्छे अच्छे सनोवरोंको काट डालूंगा; और उस
में जो सब से ऊंचा टिकने का स्यान होगा उस में और उसके वन की फलदाई
बारियोंमें प्रवेश करूंगा। 24 मैं ने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया; और मिस्र
की नहरोंमें पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा। 25 क्या तू ने नहीं सुना, कि
प्राचीनकाल से मैं ने यही ठहराया? और अगले दिनोंसे इसकी तैयारी की यी, उन्हें
अब मैं ने पूरा भी किया है, कि तू गढ़वाले नगरोंको खणडहर ही खणडहर कर दे,
26 इसी कारण उनके रहनेवालोंका बल घट गया; वे विस्मित और लज्जित हुए;
वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ोंऔर हरी घास और छत पर की घास, और ऐसे अनाज
के समान हो गए, जो बढ़ने से पहिले सूख जाता है। 27 मैं तो तेरा बैठा रहना, और
कूच करना, और लौट आना जानता हूँ, और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध
भड़काता है। 28 इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे
अभिमान की बातें मेरे कानोंमें पक्की हैं; मैं तेरी नाक में अपक्की नकेल डालकर
और तेरे मुंह में अपना लगाम लगाकर, जिस मार्ग से तू आया है, उसी से तुझे
लोटा दूंगा। 29 और तेरे लिथे यह चिन्ह होगा, कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे

जो आप से आप उगे, और दूसरे वर्ष उसे जो उत्पन्न हो वह खाओगे; और तीसरे
वर्ष बीज बोने और उसे लवने पाओगे, और दाख की बारियां लगाने और उनका
फल खाने पाओगे। 30 और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे,
और फलेंगे भी। 31 क्योंकि यरूशलेम में से बचे हुए और सिय्योन पर्वत के भागे
हुए लोग निकलेंगे। यहोवा यह काम अपक्की जलन के कारण करेगा। 32
इसलिथे यहोवा अश्शूर के राजा के विषय में योंकहता है कि वह इस नगर में
प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल लेकर
इसके साम्हने आने, वा इसके विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा। 33 जिस मार्ग से
वह आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा,
यहोवा की यही वाणी है। 34 और मैं अपके निमित्त और अपके दास दाऊद के
निमित्त इस नगर की रझा करके इसे बचाऊंगा। 35 उसी रात में क्या हुआ, कि
यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियोंकी छावनी में एक लाख पचासी हजार
पुरुषोंको मारा, और भोर को जब लोग सबेरे उठे, तब देखा, कि लोय ही लोय
पक्की है। 36 तब अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया, और लौटकर नीनवे में
रहने लगा। 37 वहां वह अपके देवता निस्रोक के मन्दिर में दणडवत कर रहा या,
कि अदेम्मेलेक और सरेसेर ने उसको तलवार से मारा, और अरारात देश में भाग
गए। और उसी का पुत्र एसर्हद्दोन उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 20

1 उन दिनोंमें हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरते पर या, और आमोस के पुत्र
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा योंकहता है, कि अपके

घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा। 2
तब उस ने भीत की ओर मुंह फेर, यहोवा से प्रार्यना करके कहा, हे यहोवा ! 3 मैं
बिन्ती करता हूँ, स्मरण कर, कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपके को तेरे
सम्मुख जानकर चलता आया हूँ; और जो तुझे अच्छा तगता है वही मैं करता
आया हूँ। तब हिजकिय्याह बिलक बिलक कर रोया। 4 और ऐसा हुआ कि
यशायाह नगर के बीच तक जाने भी न पाया या कि यहोवा का यह वचन उसके
पास पहुंचा, 5 कि लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे
मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि मैं ने तेरी प्रार्यना सुनी और
तेरे आंसू देखे हैं; देख, मैं तुझे चंगा करता हूँ; परसोंतू यहोवा के भवन में जा
सकेगा। 6 और मैं तेरी आयू पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के
हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा, और मैं अपके निमित्त और अपके दास
दाऊद के निमित्त इस नगर की रझा करूंगा। 7 तब यशायाह ने कहा, अंजीरोंकी
एक टिकिया लो। जब उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बान्धा, तब वह चंगा हो गया। 8
हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं
परसोंयहोवा के भवन को जा सकूंगा, इसका क्या चिन्ह होगा? 9 यशायाह ने
कहा, यहोवा जो अपके कहे हुए वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा की ओर
से तेरे लिथे यह चिन्ह होगा, कि धूपघड़ी की छाया दस अंश आगे बढ़ जाएगी, व
दस अंश घट जाएगी। 10 हिजकिय्याह ने कहा, छाया का दस अंश आगे ण्ढ़ना तो
हलकी बात है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे लौट जाए। 11 तब
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा को पुकारा, और आहाज की घूपघड़ी की छाया, जो
दस अंश ढल चुकी यी, यहोवा ने उसको पीछे की ओर लौटा दिया। 12 उस समय

बलदान का पुत्र बरोदकबलदान जो बाबेल का राजा या, उस ने हिजकिय्याह के
रोगी होने की चर्चा सुनकर, उसके पास पत्री और भेंट भेजी। 13 उनके
लानेवालोंकी मानकर हिजकिय्याह ने उनको अपके अनमोल पदार्थों का सब
भण्डार, और चान्दी और सोना और सुगन्ध द्रव्य और उत्तम तेल और अपके
हयियारोंका पूरा घर और अपके भण्डारोंमें जो जो वस्तुएं यीं, वे सब दिखाई;
हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही, जो उस ने उन्हें
न दिख्खाई हो। 14 तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने हिजकिय्याह राजा के पास
जाकर पुछा, वे मनुष्य क्या कह गए? और कहां से तेरे पास आए थे?
हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्यात् बाबेल से आए थे। 15 फिर उस ने
पूछा, तेरे भवन में उन्होंने क्या क्या देखा है? हिजकिय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे
भवन में है, वह सब उन्होंने देखा। मेरे भण्डारोंमें कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो मैं ने
उन्हें न दिखाई हो। 16 यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, यहोवा का वचन सुन
ले। 17 ऐसे दिन आनेवाले है, जिन में जो कुछ तेरे भवन में हैं, और जो कुछ तेरे
मुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारोंमें है वह सब बाबेल को उठ
जाएगा; यहोवा यह कहता है, कि कोई वस्तु न बचेगी। 18 और जो पुत्र तेरे वंश में
उत्पन्न हों, उन में से भी कितनोंको वे बन्धुआई में ले जाएंगे; और वे खोजे
बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे। 19 हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, यहोवा
का वचन जो तू ने कहा है, वह भला ही है, फिर उस ने कहा, क्या मेरे दिनोंमें शांति
और सच्चाई बनी न रहेंगी? 20 हिजकिय्याह के और सब काम और उसकी सारी
वीरता और किस रीति उस ने एक पोखरा और नाली खुदवाकर नगर में पानी
पहुंचा दिया, यह सग क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा

है? 21 निदान हिजकिय्याह अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र
मनश्शे उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 21

1 जब मनश्शे राज्य करने लगा, तब वह बारह वर्ष का या, और यरूशलेम में
पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हेप्सीबा या। 2 उस
ने उन जातियोंके घिनौने कामोंके अनुसार, जिनको यहोवा ने इस्राएलियोंके
साम्हने देश से निकाल दिया या, वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा या। 3 उस
ने उन ऊंचे स्यानोंको जिनको उसके पिता हिजकिय्याह ने नाश किया या, फिर
बनाया, और इस्राएल के राजा अहाब की नाई बाल के लिथे वेदियां और एक
अशेरा बनवाई, और आकाश के कुल गण को दणडवत और उनकी उपासना
करता रहा। 4 और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाई जिसके विषय
यहोवा ने कहा या, कि यरूशलेम में मैं अपना नाम रखूंगा। 5 वरन यहोवा के
भवन के दोनोंआंगनोंमें भी उस ने आकाश के कुल गण के लिथे वेदियां बनाई। 6
फिर उस ने अपके बेटे को आग में होम करके चढ़ाया; और शुभअशुभ मुहुत्तोंको
मानता, और टोना करता, और ओफोंऔर भूत सिद्धिवालोंसे य्यवहार करता या;
वरन उस ने ऐसे बहुत से काम किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं, और जिन से वह
क्रोधित होता है। 7 और अशेरा की जो मूरत उस ने खुदवाई, उसको उस ने उस
भवन में स्यापित किया, जिसके विषय यहोवा ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान
से कहा या, कि इस भवन में और यरूशलेम में, जिसको मैं ने इस्राएल के सब
गोत्रोंमें से चुन लिया है, मैं सदैव अपना नाम रखूंगा। 8 और यदि वे मेरी सब

आज्ञाओं के और मेरे दास मूसा की दी हुई पूरी व्यवस्या के अनुसार करने की
चौकसी करें, तो मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने इस्राएल के पुरखओं को दिया
या, उस से वे फिर निकलकर मारे मारे फिरें। 9 परन्तु उन्होंने न माना, बरन
मनश्शे ने उनको यहां तक भटका दिया कि उन्होंने उन जातियोंसे भी बढ़कर
बुराई की जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने से विनाश किया या। 10 इसलिथे
यहोवा ने अपके दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा, 11 कि यहूदा के राजा मनश्शे
ने जो थे घृणित काम किए, और जितनी बुराइयां एमोरियोंने जो उस से पहिले थे
की यीं, उन से भी अधिक बुराइयां कीं; और यहूदियोंसे अपक्की बनाई हुई
मूरतोंकी पूजा करवा के उन्हें पाप में फंसाया है। 12 इस कारण इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा योंकहता है कि सुनो, मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति
डालना चाहता हूँ कि जो कोई उसका समाचार सुनेगा वह बड़े सन्नाटे में आ
जाएगा। 13 और जो मापके की डोरी मैं ने शोमरोन पर डाली है और जो साहुल मैं
ने अहाब के घराने पर लटकाया है वही यरूशलेम पर डालूंगा। और मैं यरूशलेम
को ऐसा पोछूंगा जैसे कोई याली को पोंछता है और उसे पोंछकर उलट देता है। 14
और मैं अपके निज भाग के बचे हुओं को त्यागकर शत्रुओं के हाथ कर दूंगा और
वे अपके सब शत्रुओं के लिए लूट और धन बन जाएंगे। 15 इसका कारण यह है,
कि जब से उनके पुरखा मिस्र से निकले तब से आज के दिन तक वे वह काम
करके जो मेरी दृष्टि में बुरा है, मुझे रिस दिलाते आ रहे हैं। 16 मनश्शे ने तो न
केवल वह काम कराके यहूदियोंसे पाप कराया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, वरन
निर्दोषोंका खून बहुत बहाथा, यहां तक कि उस ने यरूशलेम को एक सिक्के से
दूसरे सिक्के तक खून से भर दिया। 17 मनश्शे के और सब काम जो उस ने किए,

और जो पाप उस ने किए, वह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में नहीं लिखा है? 18 निदान मनश्शे अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसे
उसके भवन की बारी में जो उज्जर की बारी कहलाती यी मिट्टी दी गई; और
उसका पुत्र आमोन उसके स्यान पर राजा हुआ। 19 जब आमोन राज्य करने
लगा, तब वह बाईस पर्ष का या, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा;
और उसकी माता का नाम मशुल्लेमेत या जो योत्बावासी हारूम की बेटी यी। 20
और उस ने अपके पिता मनश्शे की नाई वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।
21 और वह अपके पिता के समान पूरी चाल चला, और जिन मूरतोंकी उपासना
उसका पिता करता या, उनकी वह भी उपासना करता, और उन्हें दणडवत करता
या। 22 और उस ने अपके पितरोंके परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया, और यहोवा
के मार्ग पर न चला। 23 और आमोन के कर्मचारियोंने द्रोह की गोष्ठी करके राजा
को उसी के भवन में मार डाला। 24 तब साधारण लोगोंने उन सभोंको मार डाला,
जिन्होंने राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की यी, और लोगोंने उसके पुत्र योशिय्याह
को उसके स्यान पर राजा किया। 25 आमोन के और काम जो उस ने किए, वह
क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। 26 उसे भी उज्जर
की बारी में उसकी निज कबर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र योशिय्याह
उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 राजा 22

1 जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का या, और यरूशलेम में
एकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यदीदा या जो

बोस्कतवासी अदाया की बेटी यी। 2 उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक
है और जिस मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर वह भी चला,
और उस से न तो दाहिनी ओर और न बाईं ओर मुड़ा। 3 अपके राज्य के अठारहवें
वर्ष में राजा योशिय्याह ने असल्याह के पुत्र शापान मंत्री को जो मशुल्लाम का
पोता या, यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा, कि हिलकिय्याह महाथाजक के
पास जाकर कह, 4 कि जो चान्दी यहोवा के भवन में लाई गई है, और द्वारपालोंने
प्रजा से इकट्‌ठी की है, 5 उसको जोड़कर, उन काम करानेवालोंको सौंप दे, जो
यहोवा के भवन के काम पर मुखिथे हैं; फिर वे उसको यहोवा के भवन में काम
करनेवाले कारीगरोंको दें, इसलिथे कि उस में जो कुछ टूटा फूटा हो उसकी वे
मरम्मत करें। 6 अर्यात् बढ़इयों, राजोंऔर संगतराशोंको दें, और भवन की
मरम्मत के लिथे लकड़ी और गढ़े हुए पत्यर मोल लेने में लगाएं। 7 परन्तु
जिनके हाथ में वह चान्दी सौंपी गई, उन से हिसाब न लिया गया, क्योंकि वे
सच्चाई से काम करते थे। 8 और हिलकिय्याह महाथाजक ने शापान मंत्री से
कहा, मुझे यहोवा के भवन में य्यवस्या की पुस्तक मिली है; तब हिलकिय्याह ने
शापान को वह पुस्तक दी, और वह उसे पढ़ने लगा। 9 तब शापान मंत्री ने राजा
के पास लौटकर यह सन्देश दिया, कि जो चानदी भवन में मिली, उसे तेरे
कर्मचारियो ने यैलियोंमें डाल कर, उनको सौंप दिया जो यहोवा के भवन में काम
करानेवाले हैं। 10 फिर शपान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया, कि
हिलकिय्याह याजक ने उसे एक पुस्तक दी है। तब शपान उसे राजा को पढ़कर
सुनाने लगा। 11 य्यवस्या की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपके वस्त्र
फाड़े। 12 फिर उस ने हिलकिय्याह याजक, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के

पुत्र अकबोर, शापान मंत्री और असाया ताम अपके एक कर्मचारी को आज्ञा दी,
13 कि यह पुस्तक जो मिली है, उसकी बातोंके विष्य तुम जाकर मेरी ओर प्रजा
की और सब सहूदियोंकी ओर से यहोवा से पूछो, क्योंकि यहोवा की बड़ी ही
जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है, कि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की
बातें न मानी कि कुछ हमारे लिथे लिखा है, उसके अनुसार करते। 14
हिलकिय्याह याजक और अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया ने हुल्दा
नबिया के पास जाकर उस से बातें की, वह उस शल्लूम की पत्नी यी जो तिकवा
का पुत्र और हर्हस का पोता और वस्त्रोंका रखवाला या, (और वह स्त्री यरूशलेम के
नथे टोले में रहती यी) । 15 उस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
योंकहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उस से यह कहो, 16 यहोवा
योंकहता है, कि सुन, जिस पुस्तक को यहूदा के राजा ने पढ़ा है, उसकी सब
बातोंके अनुसार मैं इस स्यान और इसके निवासियोंपर विपत्ति डाला चाहता हूँ।
17 उन लोगोंने मुझे त्याग कर पराथे देवताओं के लिथे धूप जलाया और अपक्की
बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट
इस स्यान पर भड़केगी और फिर शांत न होगी। 18 परन्तु यहूदा का राजा जिस
ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेजा है उस से तुम योंकहो, कि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा कहता है। 19 इसलिथे कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और मेरी वे बातें
सुनकर कि इस स्यान और इसके निवासिक्कों देखकर लोग चकित होंगे, और
शप दिया करेंगे, तू ने यहोवा के साम्हने अपना सिर नवाया, और अपके वस्त्र
फाड़कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी
है। 20 इसलिथे देख, मैं ऐसा करूंगा, कि तू अपके पुरखाओं के संग मिल जाएगा,

और तू शांति से अपक्की कबर को पहुंचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्यान पर डाला चाहता हूँ, उस में से तुझे अपक्की ओखोंसे कुछ भी देखना न पकेगा। तब उन्होंने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया।

2 राजा 23

1 राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियोंको अपके पास इकट्ठा बुलवाया।
2 और राजा, यहूदा के सब लोगोंऔर यरूशलेम के सब निवासियोंऔर
याजकोंऔर नबियोंवरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगोंको संग लेकर यहोवा के
भवन में गया। तब उस ने जो वाचा की मुस्तक यहोवा के भवन में मिली यी,
उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाई। 3 तब राजा ने खम्भे के पास खड़ा होकर
यहोवा से इस आशय की वाचा बान्धी, कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा, और
अपके सारे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञाएं, चितौनियां और विधियोंका
नित पालन किया करूंगा? और इस वाचा की बातोंको जो इस पुस्तक में लिखी है
पूरी करूंगा। और सब प्रजा वाचा में सम्भागी हुई। 4 तब राजा ने हिलकिय्याह
महाथाजक और उसके नीचे के याजकोंऔर द्वारपालोंको आज्ञा दी कि जितने पात्र
बाल और अशेरा और आकाश के सब गण के लिथे बने हैं, उन सभोंको यहोवा के
मन्दिर में से निकाल ले आओ। तब उस ने उनको यरूशलेम के बाहर किद्रोन के
खेतोंमें फूंककर उनकी राख बेतेल को पहुंचा दी। 5 और जिन पुजारियोंको यहूदा
के राजाओं ने यहूदा के नगरोंके ऊंचे स्यानोंमें और यरूशलेम के आस पास के
स्यानोंमें धूप जलाने के लिथे ठहराया या, उनको और जो बाल और सूर्य-चन्द्रमा,
राशिचक्र और आकाश के कुल गण को धूप जलाते थे, उनको भी राजा ने दूर कर

दिया। 6 और वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यरूशलेम के बाहर
किद्रोन नाले में लिवाले गया और वहीं उसको फूंक दिया, और पीसकर बुकनी कर
दिया। तब वह बुकनी साधारण लोगोंकी कबरोंपर फेंक दी। 7 फिर
पुरुषगामियोंके घर जो यहोवा के भवन में थे, जहां स्त्रियां अशेरा के लिथे पर्दे बुना
करती यीं, उनको उस ने ढा दिया। 8 और उस ने यहूदा के सब नगरोंसे याजकोंको
बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा तक के उन ऊंचे स्यानोंको, जहां उन याजकोंने धूप
जलाया या, अशुद्ध कर दिया; और फाटकोंके ऊंचे स्यान अर्यात् जो स्यान नगर के
यहोशू नाम हाकिम के फाटक पर थे, और नगर के फाटक के भीतर जानेवाले की
बाईं ओर थे, उनको उस ने ढा दिया। 9 तौभी ऊंचे स्यानोंके याजक यरूशलेम में
यहोवा की बेदी के पास न आए, वे अखमीरी रोटी अपके भइयोंके साय खाते थे।
10 फिर उस ने तोपेत को जो हिन्नोमवंशियोंकी तराई में या, अशुद्ध कर दिया,
ताकि कोई अपके बेठे वा बेटी को मोलोक के लिथे आग में होम करके न चढ़ाए।
11 और जो घोड़े यहूदा के राजाओं ने सूर्य को अर्पण करके, यहोवा के भवन के
द्वार पर नतन्मेलेक नाम खोजे की बाहर की कोठरी में रखे थे, उनको उस ने दूर
किया, और सूर्य के रयोंको आग में फूंक दिया। 12 और आहाज की अटारी की
छत पर जो वेदियां यहूदा के राजाओं की बनाई हुई यीं, और जो वेदियां मनश्शे ने
यहोवा के भवन के दोनोंआंगनोंमें बनाई यीं, उनको राजा ने ढाकर पीस डाला और
उनकी बुकनी किद्रोन नाले में फेंक दी। 13 और जो ऊंचे स्यान इस्राएल के राजा
सुलैमान ने यरूशलेम की पूर्व ओर और विकारी नाम पहाड़ी की दक्खिन अलंग,
अश्तोरेत नाम सीदोनियोंकी घिनौनी देवी, और कमोश नाम मोआबियोंके घिनौने
देवता, और मिल्कोम नाम अम्मोनियोंके घिनौने देवता के लिथे बनवाए थे,

उनको राजा ने अशुद्ध कर दिया। 14 और उस ने लाठोंको तोड़ दिया और अशेरोंको
काट डाला, और उनके स्यान मनुष्योंकी हड्डियोंसे भर दिए। 15 फिर बेतेल में
जो वेदी यी, और जो ऊंचा स्यान नबात के पुत्र यारोबाम ने बनाया या, जिस ने
इस्राएल से पाप कराया या, उस वेदी और उस ऊंचे स्यान को उस ने ढा दिया, और
ऊंचे स्यान को फूंककर बुकनी कर दिया और अशेरा को फूंक दिया। 16 और
योशिय्याह ने फिर कर वहां के पहाड़ की कबरोंको देखा, और लोगोंको भेजकर
उन कबरोंसे हड्डियां निकलवा दीं और वेदी पर जलवाकर उसको अशुद्ध किया।
यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो परमेश्वर के उस भक्त ने पुकारकर
कहा या जिस ने इन्हीं बातोंकी चर्चा की यी। 17 तब उस ने पूछा, जो खम्भा मुझे
दिखाई पड़ता है, वह क्या है? तब नगर के लोगोंने उस से कहा, वह परमेश्वर के
उस भक्त जन की कबर है, जिस ने यहूदा से आकर इसी काम की चर्चा पुकारकर
की जो तू ने बेतेल की वेदी से किया है। 18 तब उस ने कहा, उसको छोड़ दो;
उसकी हड्डियोंको कोई न हटाए। तब उन्होंने उसकी हड्डियां उस नबी की
हड्डियोंके संग जो शोमरोन से आया या, रहने दी। 19 फिर ऊंचे स्यान के जितने
भपन शोमरोन के नगरोंमें थे, जिनको इस्राएल के राजाओं ने बनाकर यहोवा को
रिस दिलाई यी, उन सभोंको योशिय्याह ने गिरा दिया; और जैसा जैसा उस ने
बेतेल में किया या, वैसा वैसा उन से भी किया। 20 और उन ऊंचे स्यानोंके जितने
याजक वहां थे उन सभोंको उस ने उन्ही वेदियोंपर बलि किया और उन पर
मनुष्योंकी हड्डियां जलाकर यरूशलेम को लौट गया। 21 और राजा ने सारी प्रजा
के लोगोंको आज्ञा दी, कि इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसके
अनुसार अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे फसह का पर्व मानो। 22 निश्चय ऐसा

फसह न तो न्यायियोंके दिनोंमें माना गया या जो इस्राएल का न्याय करते थे,
और न इस्राएल वा यहूदा के राजाओं के दिनोंमें माना गया या। 23 राजा
योशिय्याह के अठारहवें वर्ष में यहोवा के लिथे यरूशलेम में यह फसह माना
गया। 24 फिर ओफे, भूतसिद्धिवाले, गृहदेवता, मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुएं
यहूद देश और यरूशलेम में जहां कहीं दिखाई पक्कीं, उन सभोंको योशिय्याह ने
उस मनसा से नाश किया, कि य्यवस्या की जो बातें उस पुस्तक में लिखी यीं जो
हिलकिय्याह याजक को यहोवा के भवन में मिली यी, उनको वह पूरी करे। 25
और उसके तुल्य न तो उस से पहिले कोई ऐसा राजा हुआ और न उसके बाद ऐसा
कोई राजा उठा, जो मूसा की पूरी य्यवस्या के अनुसार अपके पूर्ण मन और मूर्ण
प्राण और पूर्ण शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो। 26 तौभी यहोवा का भड़का हुआ
बड़ा कोप शान्त न हुआ, जो इस कारण से यहूदा पर भड़का या, कि मनश्शे ने
यहोवा को क्रोध पर क्रोध दिलाया या। 27 और यहोवा ने कहा या जेसे मैं ने
इस्राएल को अपके साम्हने से दूर किया, वैसे ही सहूदा को भी दूर करूंगा; और इस
यरूशलेम नगर से जिसे मैं ने चुना और इस भवन से जिसके विषय मैं ने कहा,
कि यह मेरे नाम का निवास होगा, मैं हाथ उठाऊंगा। 28 योशिय्याह के और सब
काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
लिखे हैं? 29 उसके दिनोंमें फ़िरौन-नको नाम मिस्र का राजा अश्शूर के राजा के
विरुद्ध परात महानद तक गया तो योशिय्याह राजा भी उसका साम्हना करने को
गया, और उस ने उसको देखते ही मगिद्दो में मार डाला। 30 तब उसके
कर्मचारियोंने उसकी लोय एक रय पर रख मगिद्दो से ले जाकर यरूशलेम को
पहुंचाई और उसकी निज कबर में रख दी। तब साधारण लोगोंने योशिय्याह के

पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका अभिषेक करके, उसके पिता के स्यान पर राजा
नियुक्त किया। 31 जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का या,
और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम
हमूतल या, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी यी। 32 उस ने ठीक अपके पुरखाओं
की नाई वही किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 33 उसको फ़िरौन-नको ने
हमात देश के रिबला नगर में बान्ध रखा, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न करने
पाए, फिर उस ने देश पर सौ किक्कार चान्दी और किक्कार भर सोना जुरमाना
किया। 34 तब फिरौन-नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को उसके पिता
योशिय्याह के स्यान पर राजा नियुक्त किया, और उसका नाम बदलकर
यहोयाकीम रखा; और यहोआहाज को ले गया। सो यहोआहाज मिस्र में जाकर
वहीं मर गया। 35 यहोयाकीम ने फ़िरौन को वह चान्दी और सोना तो दिया परन्तु
देश पर इसलिथे कर लगाया कि फ़िरौन की अज्ञा के अनुसार उसे दे सके, अर्यात्
देश के सब लोगोंसे जितना जिस पर लगान लगा, उतनी चान्दी और सोना उस से
फ़िरौन-नको को देने के लिथे ले लिया। 36 जब सहोयाकीम राज्य करने लगा, तब
वह पक्कीस पर्ष का या, और ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और
उसकी माता का नाम जबीदा या जो रूमावासी अदायाह की बेटी यी। 37 उस ने
ठीक अपके पुरखाओं की नाई वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

2 राजा 24

1 उसके दिनोंमें बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने चढाई की और यहोयाकीम तीन
वर्ष तक उसके अधीन रहा; तब उस ने फिर कर उस से बलवा किया। 2 तब

यहावा ने उसके विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के लिथे कसदियों, अरामियों,
मोआबियोंऔर अम्मोनियोंके दल भेजे, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ,
जो उस ने अपके दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा या। 3 नि:सन्देह यह यहूदा
पर यहोवा की आज्ञा से हुआ, ताकि वह उनको अपके साम्हने से दूर करे। यह
मनश्शे के सब पापोंके कारण हुआ। 4 और निर्दोषोंके उस खून के कारण जो उस
ने किया या; क्योंकि उस ने यरूशलेम को निर्दोषोंके खून से भर दिया या, जिसको
यहोवा ने झमा करना न चाहा। 5 यहोयाकीम के और सब काम जो उस ने किए,
वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 6 निदान
यहोयाकीम अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके
स्यान पर राजा हुआ। 7 और मिस्र का राजा अपके देश से बाहर फिर कभी न
आया, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर परात महानद तक
जितना देश मिस्र के राजा का या, सब को अपके वश में कर लिया या। 8 जब
यहोयाकीन राज्य करने लगा, तब वह अठारह वर्ष का या, और तीन महीने तक
यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नम तहुश्ता या, जो
यरूशलेम के एलनातान की बेटी यी। 9 उस ने ठीक अपके पिता की नाईं वह
किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 10 उसके दिनोंमें बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर के कर्मचारियोंने यरूशलेम पर चढ़ाई करके नगर को घेर लिया।
11 और जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारी नगर को घेरे हुए थे, तब
वह आप वहां आ गया। 12 और यहूदा का राजा यहोयाकीन अपक्की माता और
कर्मचारियों, हाकिमोंऔर खोजोंको संग लेकर बाबेल के राजा के पास गया, और
बाबेल के राजा ने अपके राज्य के आठवें वर्ष मे उनको पकड़ लिया। 13 तब उस

ने यहोवा के भवन में और राजभवन में रखा हुआ पूरा धन वहां से निकाल लिया
और सोने के जो पात्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनाकर यहोवा के मन्दिर में
रखे थे, उन सभोंको उस ने टुकड़े टुकड़े कर डाला, जैसा कि यहोवा ने कहा या। 14
फिर वह पूरे यरूशलेम को अर्यात् सब हाकिमोंऔर सब धनवानोंको जो मिलकर
दस हजार थे, और सब कारीगरोंऔर लोहारोंको बन्धुआ करके ले गया, यहां तक
कि साधारण लोगोंमें से कंगालोंको छोड़ और कोई न रह गया। 15 और वह
यहोयाकीन को बाबेल में ले गया और उसकी माता और स्त्रियोंऔर खोजोंको और
देश के बड़े लोगोंको वह बन्धुआ करके यरूशलेम से बाबेल को ले गया। 16 और
सब धनवान जो सात हजार थे, और कारीगर और लोहार जो मिलकर एक हजार
थे, और वे सब वीर और युद्ध के योग्य थे, उन्हें बाबेल का राजा बन्धुआ करके
बाबेल को ले गया। 17 और बाबेल के राजा ने उसके स्यान पर उसके चाचा
मत्तन्याह को राजा नियुक्त किया और उसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रखा।
18 जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का या, और
यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हमूतल
या, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी यी। 19 उस ने ठीक यहोयाकीम की लीक
पर चलकर वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 20 क्योंकि यहोवा के कोप के
कारण यरूशलेम और यहूदा को ऐसी दशा हुई, कि अन्त में उस ने उनको अपके
साम्हने से दूर किया।

2 राजा 25

1 और सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा से बलवा किया। उसके राज्य के नौवें वर्ष

के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपक्की पूरी
सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उसके पास छावनी करके उसके
चारोंओर कोट बनाए। 2 और नगर सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा
हुआ रहा। 3 चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां तक बढ़ गई, कि देश
के लोगोंके लिथे कुछ खाने को न रहा। 4 तब नगर की शहरपनाह में दरार की
गई, और दोनोंभीतोंके बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट या उस मार्ग से
सब योद्धा रात ही रात निकल भागे। कसदी तो नगर को घेरे हुए थे, परन्तु राजा
ने अराबा का मार्ग लिया। 5 तब कसदियोंकी सेना ने राजा का पीछा किया, और
उसको यरीहो के पास के अराबा में जा लिया, और उसकी पूरी सेना उसके पास से
तितर बितर हो गई। 6 तब वे राजा को पकड़कर रिबला में बाबेल के राजा के पास
ले गए, और उसे दणड की आज्ञा दी गई। 7 और उन्होंने सिदकिय्याह के पुत्रोंको
उसके साम्हने घात किया और सिदकिय्याह की आंखें फोड़ डालीं और उसे पीतल
की बेडिय़ोंसे जकड़कर बाबेल को ले गए। 8 बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के
उन्नीसवें वर्ष के पांचवें महीने के सातवें दिन को जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान
जो बाबेल के राजा का एक कर्मचारी य, यरूशलेम में आया। 9 और उस ने यहोवा
के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सब घरोंको अर्यात् हर एक बड़े घर को
आग लगाकर फूंक दिया। 10 और यरूशलेम के चारोंओर की सब शहरपनाह को
कसदियो की पूरी सेना ने जो जल्लादोंके प्रधान के संग यी ढा दिया। 11 और जो
लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गए थे, और
साधारण लोग जो रह गए थे, इन सभें को जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान बन्धुआ
करके ले गया। 12 परन्तु जल्लादोंके प्रधान ने देश के कंगालोंमें से कितनोंको

दाख की बारियोंकी सेवा और काश्तकारी करने को छोड़ दिया। 13 और यहोवा के
भ्वन में जो पीतल के खम्भे थे और कुसिर्यां और पीतल का हौद जो यहोवा के
भवन में या, इनको कसदी तोड़कर उनका पीतल बाबेल को ले गए। 14 और
हण्डियों, फावडियों, चिमटों, धूपदानोंऔर पीतल के सब पात्राोंको जिन से सेवा
टहल होती यी, वे ले गए। 15 और करछे और कटोरियां जो सोने की यीं, और जो
कुछ चान्दी का या, वह सब सोना, चान्दी, जल्लादोंका प्रधान ले गया। 16
दोनोंखम्भे, एक हौद और जो कुसिर्यां सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिथे बनाए
थे, इन सब वस्तुओं का पीतल तौल से बाहर या। 17 एक एक खम्भे की ऊंचाई
अठारह अठारह हाथ की यी और एक एक खम्भे के ऊपर तीन तीन हाथ ऊंची
पीतल की एक एक कंगनी यी, और एक एक कंगनी पर चारोंओर जो जाली और
अनार बने थे, वे सब पीतल के थे। 18 और जल्लादोंके प्रधान ने सरायाह
महाथाजक और उसके नीचे के याजक सपन्याह और तीनोंद्वारपालोंको पकड़
लिया। 19 और नगर में से उस ने एक हाकिम को पकड़ा जो योद्वाओं के ऊपर या,
और जो पुरुष राजा के सम्मुख रहा करते थे, उन में से पांच जन जो नगर में
मिले, और सेनापति का मुन्शी जो लोगोंको सेना में भरती किया करता या; और
लोगोंमें से साठ पुरुष जो नगर में मिले। 20 इनको जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान
पकड़कर रिबला के राजा के पास ले गया। 21 तब बाबेल के राजा ने उन्हें हमात
देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। योंयहूदी बन्धुआ बनके अपके देश से
तिकाल दिए गए। 22 और जो लोग यहूदा देश में रह गए, जिनको बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर ने छोड़ दिया, उन पर उस ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को जो
शापान का पोता या अधिक्कारनी ठहराया। 23 जब दलोंके सब प्रधानोंने अर्यात्

नतन्याह के पुत्र इश्माएल कारेहू के पुत्र योहानान, नतोपाई, तन्हूमेत के पुत्र
सरायाह और किसी माकाई के पुत्र याजन्याह ने और उनके जनोंने यह सुना, कि
बाबेल के राजा ने गदल्याह को अधिक्कारनी ठहराया है, तब वे अपके अपके
जनोंसमेत मिस्पा में गदल्याह के पास आए। 24 और गदल्याह ने उन से और
उनके जनोंसे शपय खाकर कहा, कसदियोंके सिपाहियोंसे न डरो, देश में रहते हुए
बाबेल के राजा के अधीन रहो, तब नुम्हारा भला होगा। 25 परन्तु सातवें महीने में
नतन्याह का पुत्र इश्माएल, जो एलीशामा का पोता और राजवंश का या, उस ने
दस जन संग ले गदल्याह के पास जाकर उसे ऐसा मारा कि वह मर गया, और जो
यहूदी और कसदी उसके संग मिस्पा में रहते थे, उनको भी मार डाला। 26 तब
क्या छोटे क्या बड़े सारी प्रजा के लोग और दलोंके प्रधान कसदियोंके डर के मारे
उठकर मिस्र में जाकर रहने लगे। 27 फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की
बन्धुआई के तैंतीसवें वर्ष में अर्यात् जिस वर्ष में बाबेल का राजा एवील्मरोदक
राजगद्दी पर विराजमान हुआ, उसी के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन को उस ने
यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया। 28 और
उस से मधुर मधुर वचन कहकर जो राजा उसके संग बाबेल में बन्धुए थे उनके
सिंहासनोंसे उसके सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, 29 और उसके बन्दीगृह के
वस्त्र बदल दिए और उस ने जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन किया। 30
और प्रतिदिन के खर्च के लिथे राजा के यहां से नित्य का झर्च ठहराया गया जो
उसके जीवन भर लगातार उसे मिलता रहा।

1 इतिहास 1

1 आदम,शेत, एनोश; 2 केनान, महललेल, थेरेद; 3 हनोक, मतूशेलह, लेमेक; 4
नूह, शेम, हाम और थेपेत । 5 थेपेत के पुत्र : गोमेर, मागोग, मादै, सावान, तूबल,
मेशेक और तीरास हैं। 6 और गोमेर के पुत्र : अशकनज, दीपत और तोगर्मा हैं। 7
और यावान के पुत्र : एलीशा, तर्शीश, और कित्ती और रोदानी लोग हैं। 8 हाम के
पुत्र : कुश, मिस्र, पूत और कनान हैं। 9 और कूश के पुत्र : सबा, हबीला, सबाता,
रामा और सब्तका हैं; और रामा के पुत्र : शबा और ददान हैं। 10 और कूश से
निम्रोद उत्पन्न हुआ; मृय्वी पर पहिला वीर वही हुआ। 11 और मिस्र से लूदी,
अनामी, लहावी, नप्तही। 12 पत्रूसी, कसलूही (वहां से पलिश्ती निकले) और
कप्तोरी उत्पन्न हुए। 13 कनान से उसका जेठा सीदोन और हित्त। 14 और यबूसी,
एमोरी, गिर्गाशी। 15 हिय्वी, अर्की,सीनी। 16 अर्वदी, समारी और हमाती उत्पन्न
हुए। 17 शेम के पुत्र : एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद, अराम, ऊस, हूल, गेतेर और
मेशेक हैं। 18 और अर्पक्षद से शेलह और शेलह से एबेर उत्पन्न हुआ। 19 और
एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए : एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके
दिनोंमें पृय्वी बांटी गई; और उसके भाई का नाम योक्तान या। 20 और योक्तान से
अल्मोदाद, शुलेप, हसर्मावेत, थेरह। 21 हदोराम, ऊजाल, दिक्ला। 22 एबाल,
अबीमाएल, शबा, 23 ओपीर, हवीला और सोबाब उत्पन्न हुए; थे ही सब योक्तान
के पुत्र हैं। 24 शेम, अर्पक्षद, शेलह। 25 एबेर, पेलेग, रू। 26 सरूग, नाहोर, तेरह,
27 अब्राम, वही इब्राहीम भी कहलाता है। 28 इब्राहीम के पुत्र इसहाक और
इश्माएल हैं। 29 इनकी वंशावलियां थे हैं। इश्माएल का जेठा नवायोत, फिर
केदार, अदवेल, मिबसाम। 30 मिश्मा, दूमा, मस्सा, हदद, तेमा। 31 यतूर,
नापीश, केदमा। थे इश्माएल के पुत्र हुए। 32 फिर कतूरा जो इब्राहीम की रखेली

यी, उसके थे पुत्र उत्पन्न हुए, अर्यात् उस से जिम्रान, योझान, मदान, मिद्यान,
यिशबाक और शूह उत्पन्न हुए। योझान के पुत्र : शबा और ददात। 33 और
मिद्यान के पुत्र : एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एलदा, थे सब कतूरा के पुत्र हैं।
34 इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक के पुत्र : एसाव और इस्राएल। 35
एसाव के पुत्र : एलीपज, रूएल, यूश, यालाम और कोरह हैं। 36 एलीपज के थे पुत्र
हैं : तेमान, ओमार, सपी, गाताम, कनज, तिम्ना और अपालेक। 37 रूएल के पुत्र
: नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा। 38 फिर सेईर के पुत्र : लोतान, शोबाल,
सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान हैं। 39 और लोतान के पुत्र : होरी और
होमाम, और लोतान की बहिन तिम्ना यीं। 40 शोबाल के पुत्र : अल्यान, मानहत,
एबाल, शषी और ओनाम। 41 और सिबोन के पुत्र : अय्या, और अना। अना का
पुत्र : दीशोन। और दीशोन के पुत्र : हम्रान, एशबान, यित्रान और करान। 42 एसेर
के पुत्र बिल्हान, जाचान और याकान। और दीशान के पुत्र : ऊस और अरान हैं।
43 जब किसी राजा ने इस्राएलियोंपर राज्य न किया या, तब एदोम के देश में थे
राजा हुए : अर्यात् बोर का पुत्र बेला और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा या।
44 बेला के मरने पर, बोस्राई जेरह का पुत्र योबाब, उसके स्यान पर राजा हुआ।
45 और योबाब के मरने पर, तेमानियोंके देश का हूशाम उसके स्यान पर राजा
हुआ। 46 फिर हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद, उसके स्यान पर राजा हुआ
: यह वही है, जिस ने मिद्यानियोंको मोआब के देश में मार लिया; और उसकी
राजधानी का नाम अबीत या। 47 और हदद के मरने पर, मस्रेकाई सम्ला उसके
स्यान पर राजा हुआ। 48 फिर सम्ला के मरने पर शाऊल, जो महानद के तट पर
के रहोबोत नगर का या, वह उसके स्यान पर राजा हुआ। 49 और शाऊल के मरने

पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्यान पर राजा हुआ। 50 और बल्हानान के
मरने पर, हदद उसके स्यान पर राजा हुआ; और उसकी राजधानी का नाम पाई
या। और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल या जो मेज़ाहाब की नातिनी और मत्रेद
की बेटी यी। और हदद मर गया। 51 फिर एदोम के अधिपति थे थे : अर्यात्
अधिपति तिम्ना, अधिपति अल्या, अधिपति यतेत, अधिपति ओहोलीवामा, 52
अधिपति एला, अधिपति पीनोन, अधिपति कनज, 53 अधिपति तेमान,
अधिपति मिबसार, अधिपति मग्दीएल, अधिपति ईराम। 54 एदोम के थे
अधिपति हुए।

1 इतिहास 2

1 इस्राएल के थे पुत्र हुए; रूबेन, शिमोन, लेवी, सहूदा, इस्साकार, जबूलून, दान। 2
यूसुफ, बिन्यामीन, नन्ताली, गाद और आशेर। 3 यहूदा के थे पुत्र हुए : एर,
ओनान और शेला, उसके थे तीनोंपुत्र, बतशू नाम एक कनानी स्त्री से उत्पन्न
हुए। और यहूदा का जेठा एर, यहोवा की दृष्टि में बुरा या, इस कारण उस ने उसको
मार डाला। 4 यहूदा की बहू तामार से पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए। यहूदा के सब
पुत्र पांच हुए। 5 मेरेस के पुत्र : हेस्रोन और हामूल। 6 और जेरेह के पुत्र : जिम्री,
एतान, हेमान, कलकोल और दारा सब मिलकर पांच। 7 फिर कर्मी का पुत्र :
आकार जो अर्पण की हुई पस्तु के विषय में विश्वासघात करके इस्राएलियोंका कष्ट
देनेवाला हुआ। 8 और एतान का पुत्र : अजर्याह। 9 हेस्रोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए :
यरह्मेल, राम और कलूबै। 10 और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से
नहशोन उत्पन्न हुआ जो यहूदियोंका प्रधान बना। 11 और नहशोन से सल्मा

और सल्मा से बोअज, 12 और बोअज से ओबेद और ओबेद से यिशै उत्पन्न
हुआ। 13 और यिशै से उसका जेठा एलीआब और दूसरा अबीनादाब तीसरा
शिमा। 14 चौया नतनेल और पांचवां रद्दैं। छठा ओसेम और सातवां दाऊद
उत्पन्न हुआ। 15 इनकी बहिनें सरूयाह ओर अबीगैल यीं। 16 और सरूयाह के
पुत्र अबीशै, योआब और असाहेल थे तीन थे। 17 और अबीगैल से अमासा
उत्पन्न हुआ, और अमासा का पिता इश्माएली थेतेर या। 18 हेस्रोन के पुत्र
कालेब के अजूबा नाम एक स्त्री से, और यरीओत से, बेटे उत्पन्न हुए; और इसके
पुत्र थे हूए अर्यात् थेशेर, शेबाब और अदॉन। 19 जब अजूबा मर गई, सब कालेब
ने एप्रात को ब्याह लिया; और जिससे हूर उत्पन्न हुआ। 20 और हूर से ऊरी और
ऊरी से बसलेल उत्पन्न हुआ। 21 इसके बाद हेस्रोन गिलाद के पिता माकीर की
बेटी के पास गया, जिसे उस ने तब ब्याह लिया, जब वह साठ वर्ष का या; और
उस से सगूब उत्पन्न हुआ। 22 और सगूब से याईर जन्मा, जिसके गिलाद देश
में तेईस नगर थे। 23 और गशूर और अराम ने याईर की बस्तियोंको और
गांवोंसमेत कनत को, उन से ले लिया; थे सब नगर मिलकर साठ थे। थे सब
गिलाद के पिता माकीर के पुत्र हुए। 24 और जब हेस्रोन कालेबेप्राता में मर गया,
तब उसकी अबिय्याह नाम स्त्री से अशहूर उत्पन्न हुआ जो तको का पिता हुआ।
25 और हेस्रोन के जेठे यरह्मेल के थे पुत्र हुए : अर्यात् राम जो उसका जेठा या;
और बूना, ओरेन, ओसेम और यहिय्याह। 26 और यरह्मेल की एक और पत्नी यी,
जिसका नाम अतारा या; वह ओनाम की माता यी। 27 और यरह्मेल के जेठे राम
के थे पुत्र हुए, अर्यात् मास, यामीन और एकेर। 28 और ओनाम के पुत्र शम्मै और
यादा हुए। और शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर हुए। 29 और अबीशूर की पत्नी

का नाम अबीहैल या, और उस से अहबान और मोलीद उत्पन्न हुए। 30 और
नादाब के पुत्र सेलेद और अत्पैम हुए; सेलेद तो नि:सन्तान मर गया। और अत्तैम
का पुत्र यिशी। 31 और यिशी का पुत्र शेशान और शेशान का पुत्र : अहलै। 32 फिर
शम्मै के भाई यादा के पुत्र : थेतेर और योनातान हुए; थेतेर तो नि:सन्तान मर
गया। 33 यानातान के पुत्र पेलेत और जाजा; यरह्मेल के पुत्र थे हुए। 34 शेशान के
तो बेटा न हुआ, केवल बेटियां हुई। शेशान के पास यर्हा नाम एक मिस्री दास या।
35 और शेशान ने उसको अपक्की बेटी ब्याह दी, और उस से अत्तै उत्पन्न हुआ।
36 और अत्तै से नातान, नातान से जाबाद। 37 जाबाद से एपलाल, एपलाल से
ओबेद। 38 ओबेद से थेहू, थेहू से अजर्याह। 39 अजर्याह से हेलैस, हेलैस से
एलासा। 40 एलासा से सिस्मै, सिस्मै से शल्लूम। 41 शल्लूम से यकम्याह और
यकम्याह से एलीशामा उत्पन्न हुए। 42 फिर यरह्मेल के भाई कालेब के थे पुत्र
हुए : अर्यात् उसका जेठा मेशा जो जीप का पिता हुआ। और मारेशा का पुत्र हेब्रोन
भी उसी के वंश में हुआ। 43 और हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमा।
44 और शेमा से योर्काम का पिता रहम और रेकेम से शम्मै उत्पन्न हुआ या। 45
और शम्मै का पुत्र माओन हुआ; और माओन बेत्सूर का पिता हुआ। 46 फिर एपा
जो कालेब की रखेली यी, उस से हारान, मोसा और गाजेज उत्पन्न हुए; और
हारान से गाजेज उत्पन्न हुआ। 47 फिर याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान,
पेलेत, एपा और शाप। 48 और माका जो कालेब की रखेली यी, उस से शेबेर और
तिर्हाना उत्पन्न हुए। 49 फिर उस से मदमन्ना का पिता शाप और मकबेना और
गिबा का पिता शबा उत्पन्न हुए। और कालेब की बेटी अकसा यी। कालेब के पुत्र
थें हुए। 50 एप्राता के जेठे हूर का पुत्र किर्यत्यारीम का पिता शोबाल। 51 बेतलेहेम

का पिता सल्मा और बेतगादेर का पिता हारेप। 52 और किर्यत्यारीम के पिता
शोबाल के वंश में हारोए आधे मनुहोतवासी, 53 और किर्यत्यारीम के कुल अर्यात्
यित्री, पूती, शूमाती और मिश्रई और इन से सोराई और एश्ताओली निकले। 54
फिर सल्मा के वंश में बेतलेहेम और नतोपाई, अत्रोतबेत्योआब और आधे
मानहती, सोरी। 55 फिर याबेस में रहनेवाले लेखकोंके कुल अर्यात् तिराती,
शिमाती और सूकाती हुए। थे रेकाब के घराने के मूलपुरुष हम्मन के वंशवाले
केनी हैं।

1 इतिहास 3

1 दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन में उस से उत्पन्न हुए वे थे हैं : जेठा अम्नोन जो
यिज्रेली अहीनोआम से, दूसरा दानिय्थेल जो कर्मेली अबीगैल से उत्पन्न हुआ। 2
तीसरा अबशालोम जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका का मुत्र या, चौया
ओदानिय्याह जो हरगीत का पुत्र या। 3 पांचवां शपत्याह जो अबीतल से, और
छठवां यित्राम जो उसकी स्त्री एग्ला से उत्पन्न हुआ। 4 दाऊद से हेब्रोन में छः पुत्र
उत्पन्न हुए, और वहां उस ने साढ़े सात वर्ष राज्य किया; और यरूशलेम में
तैंतीस वर्ष राज्य किया। 5 और यरूशलेम में उसके थे पुत्र उत्पन्न हुए अर्यात्
शिमा, शोबाब, तातान और सुलैमान, थे चारो अम्मीएल की बेटी बतशू से
उत्पन्न हुए। 6 और यिभार, एलीशामा एलीपेलेत। 7 नेगाह, नेपेग, यापी। 8
एलीशामा, एल्यादा और एलीमेलेत, थे नौ पुत्र थे, थे सब दाऊद के पुत्र थे। 9 और
इनको छोड़ रखेलियोंके भी पुत्र थे, और इनकी बहिन तामार यी। 10 फिर
सुलैमान का पुत्र रहबाम उत्पन्न हुआ; रहबाम का अबिय्याह का आसा, आसा

का यहोशापात। 11 यहोशपात का योराम, योराम का अहज्याह, अहज्याह का
योआश। 12 योआश का अमस्याह, अमस्याह का अजर्याह, अजर्याह का योताम।
13 योताम का आहाज, आहाज का हिजकिय्याह, हिजकिय्याह का मनश्शे। 14
मनश्शे का आमोन, और आमोन का योशिय्याह पुत्र हुआ। 15 और योशिय्याह के
पुत्र उसका जेड़ा योहानान, दूसरा यहोयाकीम; तीसरा सिदकिय्याह, चौ ैया
शल्लूम। 16 और यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह, इसका पुत्र सिदकिय्याह। 17
ओर यकोन्याह का पुत्र अस्सीर, उसका पुत्र शालतीएल। 18 और मल्कीराम,
पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा और नदब्याह। 19 और पदायाह के पुत्र
जरुब्बाबेल और शिमी हुए; और जरुब्बाबेल के पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह,
जिनकी बहीन शलोमीत यी। 20 और हशूबा, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह और
यूशमेसेद, पांच। 21 और हनन्याह के पुत्र पलत्याह और यशायाह। और रपायाह
के पुत्र अर्नान के पुत्र ओबद्याह के पुत्र और शकन्याह के पुत्र। 22 और तकन्याह
का पुत्र शमायाह। और शमायाह के पुत्र हत्तूश और यिगाल, बारीह, नार्याह और
शपात, छः । 23 और नार्याह के पुत्र एल्योएनै, हिजकिय्याह और अज्रीकाम,
तीन। 24 और एल्योएनै के पुत्र होदब्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब,
योहानान, दलायाह और अनानी, सात।

1 इतिहास 4

1 यहूदा के पुत्र : पेरेस, हेस्रोन, कर्मी, हूर और शोबाल। 2 और शोबाल के पुत्र :
रायाह से यहत और यहत से अहूमै और लहद उत्पन्न हुए, थे सोराई कुल हैं। 3
और एताम के पिता के थे पुत्र हुए : अर्यात् यिज्रेल, यिश्मा और यिद्बाश, जिनकी

बहिन का नाम हस्सलेलपोनी या। 4 और गदोर का पिता पनूएल, और रूशा का
पिता एजेर। थे एप्राता के जेठे हूर के सन्तान हैं, जो बेतलेहेम का पिता हुआ। 5
और तको के पिता अशहूर के हेबा और नारा नाम दो स्त्रियां यीं। 6 और नारा से
अहुज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहशतारी उत्पन्न हुए, नारा के थे ही पुत्र, हुए। 7
और हेला के पुत्र, सेरेत, यिसहर और एम्नान। 8 फिर कोस से आनूब और सोबेवा
उत्पन्न हुए और उसेक वंश में हारून के पुत्र अहर्हेल के कुल भी उत्पन्न हुए। 9
और याबेस अपके भइयोंसे अधिक प्रतिष्ठित हुआ, और उसकी माता ने यह
कहकर उसका नाम याबेस रखा, कि मैं ने इसे पीड़ित होकर उत्पन्न किया। 10
और याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, कि भला होता, कि तू
मुझे सचमुच आशीष देता, और मेरा देश बढाता, और तेरा हाथ मेरे साय रहता,
और तू मुझे बुराई से ऐसा बचा रखता कि मैं उस से पीड़ित त होता ! और जो कुछ
उस ने मांगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया। 11 फिर शूहा के भाई कलूब से एशतोन
का पिता महीर उत्पन्न हुआ। 12 और एशतोन के वंश में रामा का घराना, और
पासेह और ईर्नाहाश का पिता तहिन्ना उत्पन्न हुए, रेका के लोग थे ही हैं। 13
और कनज के पुत्र, ओत्नीएल और सरायाह, और ओत्नीएल का पुत्र हतत। 14
मोनोतै से ओप्रा और सरायाह से योआब जो गेहराशीम का पिता हुआ; वे कारीगर
थे। 15 और यपुन्ने के पुत्र कालेब के पुत्र एला और नाम, और एला के पुत्र कनज।
16 और यहल्लेल के पुत्र, जीप, जीपा, तीरया और असरेल। 17 और एज्रा के पुत्र
थेतेर, मेरेद, एपेर और यालोन, और उसकी स्त्री से मिर्य्याम, शम्मै और एशतमो
का पिता यिशबह उत्पन्न हुए। 18 और उसकी यहूदिन स्त्री से गदोर का पिता
थेरेद, सोको के पिता हेबेर और जानोह के पिता यकूतीएल उत्पन्न हुए, थे फ़िरौन

की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेद ने ब्याह लिया या। 19 और होदिय्याह की स्त्री
जो नहम की बहिन यी, उसके पुत्र कीला का पिता एक गेरेमी और एशतमो का
पिता एक माकाई। 20 और शीमोन के पुत्र अम्नोन, रिन्ना, बेन्हानान और
तोलोन और यिशी के पुत्र जोहेत और बेनजोहेत। 21 यहूदा के पुत्र शेला के पुत्र
लेका का पिता एर, मारेशा का पिता लादा और अशबे के घराने के कुल जिस में
सन के कपके का काम होता या। 22 और योकीम और कोजेबा के मनुष्य और
योआश और साराप जो मोआब में प्रभुता करते थे और याशूब, लेहेम इनका
वृत्तान्त प्राचीन है। 23 थे कुम्हार थे, और नताईम और गदेरा में रहते थे जहां वे
राजा का कामकाज करते हुए उसके पास रहते थे। 24 शिमोन के पुत्र नमूएल,
यामीन, यारीब, जेरह और शाऊल। 25 और शाऊल का पुत्र शल्लूम, शल्लूम का
पुत्र मिबसाम और मिबसाम का मिश्मा हुआ। 26 और मिश्मा का पुत्र हम्मूएल,
उसका पुत्र जक्कूर, और उसका पुत्र शिमी। 27 शिमी के सोलह बेटे और छ:
बेटियां हुई परन्तु उसके भाइयोंके बहुत बेटे न हुए; और उनका सारा कुल
यहूदियोंके बराबर न बढ़ा। 28 वे बेर्शबा, मोलादा, हसर्शूआल। 29 बिल्हा, एसेम,
तोलाद। 30 बतूएल, होर्मा, सिल्कग, 31 बेतमर्काबोत, हसर्सूसीम, बेतबिरी और
शारैम में बस गए; दाऊद के राजय के समय तक उनके थे ही नगर रहे। 32 और
उनके गांव एताम, ऐन, रिम्मोन, तोकेन और आशान नाम पांच नगर। 33 और
बाल तक जितने गांव इन नगरोंके आसपास थे, उनके बसने के स्यान थे ही थे,
और यह उनकी वंशावली हैं। 34 फिर मशोबाब और यम्लेक और अपस्याह का
पुत्र योशा। 35 और योएल और योशिब्याह का पुत्र थेहू, जो सरायाह का पोता,
और असीएल का परमोता या। 36 और एल्योएनै और याकोबा, यशोहायाह और

असायाह और अदीएल और यसीमीएल और बनायाह। 37 और शिपी का पुत्र
जीजा जो अल्लोन का पुत्र, यह यदायाह का पुत्र, यह शिम्री का पुत्र, यह शमायाह
का पुत्र या। 38 थे जिनके नाम लिखें हुए हैं, अपके अपके कुल में प्रधान थे; और
उनके पितरोंके घराने बहुत बढ़ गए। 39 थे अपक्की भेड़-बकरियोंके लिथे चराई
ढूंढने को गदोर की घाटी की तराई की पूर्व ओर तक गए। 40 और उनको उत्तम से
उत्तम चराई मिली, और देश लम्बा-चौड़ा, चैत और शांति का या; क्योंकि वहां के
पहिले रहनेवाले हाम के वंश के थे। 41 और जिनके नाम ऊपर लिखे हैं, उन्होंने
यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनोंमें वहां आकर जो मूनी वहां मिले, उनको
डेरोंसमेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आह तक उनका पता नहीं है,
और वे उनके स्यान में रहने लगे, क्योंकि वहां उनकी भेड़-बकरियोंके लिथे चराई
यीं। 42 और उन में से अर्यात् शिमोनियोंमें से पाच सौ पुरुष अपके ऊपर
पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल नाम यिशी के पुत्रोंको अपके प्रधान
ठहराया; 43 तब वे सेईद पहाड़ को गए, और जो अमेलेकी बचकर रह गए थे
उनको मारा, और आज के दिन तब वहां रहते हैं।

1 इतिहास 5

1 इस्राएल का जेठा तो रूबेन या, परन्तु उस ने जो अपके पिता के बिछौने को
अशुद्व किया, इस कारण जेठे का अधिक्कारने इस्राएल के पुत्र यूसुफ के पुत्रोंको
दिया गया। वंशावली जेठे के अधिक्कारने के अनुसार नहीं ठहरी। 2 क्योकि
यहूदा अपके भइयोंपर प्रबल हो गया, और प्रधान उसके वंश से हुआ परन्तु जेठे
का अधिक्कारने यूसुफ का या। 3 इस्राएल के जेठे पुत्र रूबेन के पुत्र थे हुए, अर्यात्

हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी। 4 और योएल के पुत्र शमायाह, शमायाह का
गोग, गोग का शिमी। 5 शिमी का मीका, मीका का रायाह, रायाह का बाल। 6 और
बाल का पुत्र बेरा, इसको अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर बन्धुआई में ले गया;
और वह रूबेनियो का प्रधान या। 7 और उसके भाइयोंकी चंशवली के लिखते
यमय वे अपके अपके कुल के अनुसार थे ठहरे, अर्यात् मुख्य तो यीएल, फिर
जकर्याह। 8 और अजाज का पुत्र बेला जो शेमा का पोता और योएल का परपोता
या, वह अरोएर में और नबो और बाल्मोन तक रहता या। 9 और पूर्व ओर वह उस
जंगल के सिवाने तक रहा जो परात महानद तक महुंचाता है, क्योंकि उनके पशु
गिलाद देश में बढ़ गए थे। 10 और शऊल के दिनोंमें उन्होंने हग्रियोंसे युद्ध किया,
और हग्री उनके हाथ से मारे गए; तब वे गिलाद की सारी पूरबी अलंग में अपके
डेरोंमें रहने लगे। 11 गादी उनके साम्हने सल्का तक बाशान देश में रहते थे। 12
अर्यात् मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम फिर यानै और शापात, थे बाशान में
रहते थे। 13 और उनके भाई अपके अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार मीकाएल,
मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जी और एबेर, सात थे। 14 थे अबीहैल के पुत्र थे,
जो हूरी का पुत्र या, यह योराह का पुत्र, यह गिलाद का पुत्र, यह मिकाएल का पुत्र,
यह यशीशै का पुत्र, यह यहदो का पुत्र, यह बूज का पुत्र या। 15 इनके पितरोंके
घरानोंका मुख्य पूरुष अब्दीएल का पुत्र, और गूनी का पोता अही या। 16 थे लोग
बाशान में, गिलाद और उसके गांवोंमें, और शारोन की सब चराइयोंमें उसकी
परली ओर तक रहते थे। 17 इन सभोंकी वंशावली यहूदा के राजा योनातन के
दिनोंऔर इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनोंमें लिखी गई। 18 रूबेनियों,
गादियोंऔर मनश्शें के आधे गोत्र के योद्धा जो ढाल बान्धने, तलवार चलाने, और

धनुष के तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करना सीखे हुए थे, वे चौवालीस हजार
सात सौ साठ थे, जो युद्ध में जाने के योग्य थे। 19 इन्होंने हग्रियोंऔर यतूर
नापीश और नोदाब से युद्ध किया या। 20 उनके विरुद्ध इनको सहाथता मिली,
और अग्री उन सब समेत जो उनके साय थे उनके हाथ में कर दिए गए, क्योंकि
युद्ध में इन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी यी और उस ने उनकी बिनती इस कारण
सुनी, कि इन्होंने उस पर भरोसा रखा या। 21 और इन्होंने उनके पशु हर लिए,
अर्यात् ऊंट तो पचास हजार, भेड़-बकरी अढ़ाई लाख, गदहे दो हजार, और
मनुष्य एक लाख बन्धुए करके ले गए। 22 और बहुत से मरे पके थे क्योंकि वह
लड़ाई परमेश्वर की ओर से हुई। और थे उनके स्यान में बन्शुआई के समय तक
बसे रहे। 23 फिर मनश्शे के आधे गोत्र की सन्तान उस देश में बसे, और वे
बाशान से ले बाल्हेमॉन, और सनीर और हेमॉन पर्वत तक फैल गए। 24 और
उनके पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुष थे थे, अर्यात् एपेर, यिशी, एलीएल,
अज्रीएल, यिर्मयाह, होदय्याह और यहदीएल, थे बड़े वीर और नामी और अपके
पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुष थे। 25 और उन्होंने अपके पितरोंके परमेश्वर से
विश्वासघात किया, और उस देश के लोग जिनको परमेश्वर ने उनके साम्हने से
विनाश किया या, उनके देवताओं के पीछे य्यभिचारिन की नाई हो लिए। 26
इसलिथे इस्राएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल और अश्शूर के राजा
तिलगत्पिलनेसेर का मन उभारा, और इन्होंने उन्हें अर्यात् रूबेनियों,
गादियोंऔर मनश्शे के आधे गोत्र के लोगोंको बन्धुआ करके हलह, हाबोर और
हारा और गोजान नदी के पास पहुंचा दिया; और वे आज के दिन तक वहीं रहते
हैं।

1 इतिहास 6

1 लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात और मरारी। 2 और कहात के पुत्र, अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और उज्जीएल। 3 और अम्राम की सन्तान हारून, मूसा और मरियंम, और
हारून के पुत्र, नादाब, अबीहू, एलीआज़र और ईतामार। 4 एलीआज़र से पीनहास,
पीनहास से अबीशू। 5 अबीशू से बुक्की, बुक्की से उज्जी। 6 उज्जी से जरह्याह,
जरह्याह से मरायोत। 7 मरायोत से अमर्याह, अमर्याह से अहीतूब। 8 अहीतूब से
सादोक, सादोक से अहीमास। 9 अहीमास से अजर्याह, अजर्याह से योहानान। 10
और योहानान से अजर्याह, उत्पन्न हुआ (जो सुलैमान के यरूशलेम में बनाए हुए
भवन में याजक का काम करता या) 11 फिर अजर्याह से अमर्याह, अमर्याह से
यहीतूब। 12 यहीतूब से सादोक, सादोक से शल्लूम। 13 शल्लूम से हिलकिय्याह,
हिलकिय्याह से अजर्याह। 14 अजर्याह से सरायाह, और सरायाह से यहोसादाक
उत्पन्न हुआ। 15 और जब यहोवा, यहूदा और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के
द्वारा बन्धुआ करके ले गया, तब यहोसादाक भी बन्धुआ होकर गया। 16 लेवी के
पुत्र गेर्शोम, कहात और मरारी। 17 और गेर्शोम के पुत्रोंके नाम थे थे, अर्यात्
लिब्नी और शिमी। 18 और कहात के पुत्र अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और
उज्जीएल। 19 और मरारी के पुत्र महली और मूशी और अपके अपके पितरोंके
घरानोंके अनुसार लेवियोंके कुल थे हुए। 20 अर्यात्, गेर्शोन का पुत्र लिब्नी हुआ,
लिब्नी का यहत, यहत का जिम्मा। 21 जिम्मा का योआह, योआह का इद्दो, इद्दो
का जेरह, और जेरह का पुत्र यातरै हुआ। 22 फिर कहात का पुत्र अम्मीनादाब
हुआ, अम्मीनादाब का कोरह, कोरह का अस्सीर। 23 अस्सीर का एल्काना,
एल्काना का एब्यासाप, एब्यासाप का अस्सीर। 24 अस्सीर का तहत, तहत का

ऊरीएल, ऊरीएल का उज्जियय्याह और उज्जियय्याह का पुत्र शाऊल हुआ। 25 फिर
एल्काना के पुत्र अमासै और अहीमोत। 26 एल्काना का पुत्र सोपै, सोपै का नहत।
27 नहत का एलीआब, एलीआब का यरोहाम, और यरोहाम का पुत्र एल्काना
हुआ। 28 और शमूएल के पुत्र, उसका जेठा योएल और दूसरा अबिय्याह हुआ। 29
फिर मरारी का पुत्र महली, महली का लिब्नी, लिब्नी का शिमी, शिमी का उज्जा।
30 उज्जा का शिमा; शिमा का हग्गिय्याह और हग्गिय्याह का पुत्र असायाह
हुआ। 31 फिर जिनको दाऊद ने सन्दूक के ठिकाना पाने के बाद यहोवा के भवन
में गाने के अधिक्कारनी ठहरा दियया वे थे हैं। 32 जब तब सुलैमान यरूशलेम में
यहोवा के भवन को बनवा न चुका, तब तक वे मिलापवाले तम्बू के निवास के
साम्हने गाने के द्वारा सेवा करते थे; और इस सेवा में नियम के अनुसार उपस्यित
हुआ करते थे। 33 जो अपके अपके पुत्रोंसमेत उपस्यित हुआ करते थे वे थे हैं,
अर्यात् कहातियोंमें से हेमान गवैया जो योएल का पुत्र या, और योएल शमुएल
का। 34 शमूएल एल्काना का, एल्काना यरोहाम का, यरोहाम एलीएल का,
एलीएल तोह का। 35 तोह सूप का, सूप एल्काना का, एल्काना महत का, महत
अमासै का। 36 अमासै एल्काना का, एल्काना योएल का, योएल अजर्याह का,
अजर्याह सपन्याह का। 37 समन्याह तहत का, तहत अस्सीर का, अस्सीर
एब्यासाप का, एटयासाप कोरह का। 38 कोरह यिसहार का, यिसहार कहात का,
कहात लेवी का और लेवी इस्राएल का पुत्र या। 39 और उसका भाई असाप जो
उसके दाहिने खड़ा हुआ करता या वह बेरेक्याह का पुत्र या, और बेरेक्याह शिमा
का। 40 शिमा मीकाएल का, मीकाएल बासेयाह का, बासेयाह मल्मिय्याह का। 41
मल्किय्याह एत्नी का, एत्नी जेरह का, जेरह अदायाह का। 42 अदायाह एतान का,

एतान जिम्मा का, जिम्मा शिमी का। 43 शिमी यहत का, यहत गेशॉम का,
गेशॉम लेवी का पुत्र या। 44 और बाई ओर उनके भाई मरारी खड़े होते थे, अर्यात्
एताव जो कीशी का पुत्र या, और कीशी अब्दी का, अब्दी मल्लूक का। 45 मल्लूक
हशब्याह का, हशब्याह अमस्यााह का, अमस्याह हिलकिय्याह का। 46
हिलकिय्याह अमसी का, अमसी बानी का, बानी शेमेर का। 47 शेमेर महली का,
महली मूशी का, मूशी मरारी का, और मरारी लेवी का पुत्र या। 48 और इनके भाई
जो लेवीय थे वह परमेश्वर के भवन के निवास की सब प्रकार की सेवा के लिथे
अर्पण किए हुए थे। 49 परन्तु हारून और उसके पुत्र होपबलि की वेदी, और धूप
की वेदी दोनोंपर बलिदान चढ़ाते, और परम पवित्रस्यान का सब काम करते, और
इस्राएलियोंके लिथे प्रायश्चित करते थे, जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने
आज्ञााएं दी यीं। 50 और हारून के वंश में थे हुए, अर्यात् उसका पुत्र एलीआजर
हुआ, और एलीआजर का पीनहास, पीनहास का अबीशू। 51 अबीशू का बुक्की,
बुक्की का उज्जी, उज्जी का जरह्याह। 52 जरह्याह का मरायोत, मरायोत का
अमर्याह, अमर्याह का अहीतूब। 53 अहीतूब का सादोक और सादोक का अहीमास
पुत्र हुआ। 54 और उनके भागोंमें उनकी छावनियोंके अनुसार उनकी बस्तियां थे
हैं, अर्यात् कहात के कुलोंमें से पहिली चिट्ठी जो हारून की सन्तान के नाम पर
निकली। 55 अर्यात् चारोंओर की चराइयोंसमेत यहूदा देश का हेब्रोन उन्हें मिला।
56 परन्तु उस नगर के खेत और गांव यपुन्ने के पुत्र कालेब को दिए गए। 57
और हारून की सन्तान को शरणनगर हेब्रोन, और चराइयोंसमेत लिब्ना, 58 और
यत्तीर और अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत एशतमो। हीलेन, दबीर। 59 आशान
और बेतशेमेश। 60 और बिन्यामीन के गोत्र में से अपक्की अपक्की

चराइयोंसमेत गेबा, अल्लेमेत और अनातोत दिए गए। उनके घरानोंके सब नगर
तेरह थे। 61 और शेष कहातियोंके गोत्र के कुल, अर्यात् मनश्शे के आधे गोत्र में से
चिट्ठी डालकर दस नगर दिए गए। 62 और गेशॉमियोंके कुलोंके अनुसार उन्हें
इस्साकार, आशेर और नप्ताली के गोत्र, और बाशान में रहनेवाले मनश्शे के गोत्र
में से तेरह नगर मिले। 63 मरारियोंके कुलोंके अनुसार उन्हें रूबेन, गाद और
जबूलून के गोत्रें में से चिट्ठी डालकर बारह नगर दिए गए। 64 और इस्राएलियोंने
लेवियोंको थे नगर चराइयोंसमेत दिए। 65 और उन्होंने यहूदियों, शिमोनियोंऔर
बिन्यामीनियोंके गोत्रोंमें से वे नगर दिए, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं। 66 और
कहातियोंके कई कुलोंको उनके भाग के नगर एप्रैम के गोत्र में से मिले। 67 सो
उनको अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत एप्रैम के पहाड़ी देश का शकेम जो शरण
नगर या, फिर गेजेर। 68 योकमाम, बेथेरोन। 69 अय्यालोन और गत्रिम्मोन। 70
और मनश्शे के आधे गोत्र में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत आनेर और
बिलाम शेष कहातियोंके कुल को मिले। 71 फिर गेशॉमियोंको मनश्शे के आधे
गोत्र के कुल में से तो अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत बाशान का गोलान और
अशतारोत। 72 और इस्साकार के गोत्र में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत
केदेश, दाबरात। 73 रामोत और आनेम, 74 और आशेर के गोत्र में से अपक्की
अपक्की चराइयोंसमेत माशाल, अब्दोन। 75 हूकोक और रहोब। 76 और नप्ताली
के गोत्र में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत गालील का केदेश हम्मोन और
किर्यातैम मिले। 77 फिर शेष लेवियोंअर्यात् मरारियोंको जबूलून के गोत्र में से तो
अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत शिम्मोन और ताबोर। 78 और यरीहो के पास
की यरदन नदी की पूर्व और रूबेन के गोत्र में से तो अपक्की अपक्की

चराइयोंसमेत जंगल का बेसेर, यहसा। 79 कदेमोत और मेपाता। 80 और गाद के
गोत्र में से अपक्की अपक्की चराइयोंसमेत गिलाद का रामोत महनैम, 81
हेशोबोन और याजेर दिए गए।

1 इतिहास 7

1 इस्साकार के पुत्र तोला, पूआ, याशूब और शिम्रोन, चार थे। 2 और तोला के पुत्र
उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल, थे अपके अपके पितरोंके
घरानोंअर्यात् तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और दाऊद के
दिनोंमें उनके वंश की गिनती बाईस हजार छ: सौ यी। 3 और उज्जी का पुत्र
यिज्रह्याह, और यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह, योएल और यिश्शिय्यह पांच
थे; थे सब मुख्य पुरुष थे। 4 और उनके साय उनकी वंशावलियोंऔर पितरोंके
घरानोंके अनुसार सेना के दलोंके छत्तीस हजार योद्धा थे; क्योंकि उनके बहुत
स्त्रियां और पुत्र थे। 5 और उनके भाई जो इस्साकार के सब कुलोंमें से थे, वे
सत्तासी हजार बड़े वीर थे, जो अपक्की अपक्की वंशावली के अनुसार गिने गए। 6
बिन्यामीन के पुत्र बेला, बेकेर और यदीएल थे तीन थे। 7 बेला के पुत्र : एसबोन,
उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत और ईरी थे पांच थे। थे अपके अपके पितरोंके
घरातोंके मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और अपक्की अपक्की वंशाबली के
अनुसार उनकी गिनती बाईस हजार चौंतीस यी। 8 और बेकेर के पुत्र : जमीरा,
योआश, बलीएजेर, एल्योएनै, ओम्री, यरेमोत, अबिय्याह, अनातोत और
आलेमेत थे सब बेकेर के पुत्र थे। 9 थे जो अपके अपके पितरोंके घरानोंके मुख्य
पुरुष और बड़े वीर थे, इनके वंश की गिनती अपक्की अपक्की वंशावली के

अनुसार बीस हजार दो सौ यी। 10 और यदीएल का पुत्र बिल्हान, और बिल्हान के
पुत्र, यूश, बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान, तर्शीश और अहीशहर थे। 11 थे सब
जो यदीएल की सन्तान और अपके अपके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष और बड़े
वीर थे, इनके वंश से सेना में युद्ध करने के याग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष थे। 12
और ईर के पुत्र शुप्पीम और हुप्पीम और अहेर के पुत्र हूशी थे। 13 नप्ताली के पुत्र,
एहसीएल, गूनी, थेसेर और शल्लूम थे, थे बिल्हा के पोते थे। 14 मनश्शे के पुत्र,
अस्रीएल जो उसकी अरामी रखेली स्त्री से उत्पन्न हुआ या; और उस अरामी स्त्री
ने गिलाद के पिता माकीर को भी जन्म दिया। 15 और माकीर (जसकी बहिन का
नाम माका या) उस ने हुप्पीम और शुप्पीम के लिथे स्त्रियां ब्याह लीं, और दूसरे
का नाम सलोफाद या, और सलोफाद के बेटियां हुई। 16 फिर माकीर की स्त्री
माका के एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका नाम पेरेश रखा; और उसके भाई का
नाम शेरेश या; और इसके पुत्र ऊलाम और राकेम थे। 17 और ऊलाम का पुत्र
बदान। थे गिलाद की सन्तान थे जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता या। 18
फिर उसकी बहिन हम्मोलेकेत ने ईशहोद, अबीएजेर और महला को जन्म दिया।
19 और शमीदा के पुत्र अह्यान, शेकेम, लिखी और अनीआम थे। 20 और एप्रैम के
पुत्र शूतेलह और शूतेलह का बेरेद, बेरेद का तहत, तहत का एलादा, एलादा का
तहत। 21 तहत का जाबाद और जाबाद का पुत्र शूतेलह हुआ, और थेजेर और
एलाद भी जिन्हें गत के मनुष्योंने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इसलिथे घात
किया, कि वे उनके पशु हर लेने को उतर आए थे। 22 सो उनका पिता एप्रैम उनके
लिथे बहुत दिन शोक करता रहा, और उसके भाई उसे शांति देने को आए। 23
और वह अपक्की पत्नी के पास गया, और उस ने गर्भवती होकर एक पुत्र को

जन्म दिया और बप्रैम ने उसका नाम इस कारण बरीआ रखा, कि उसके घराने में
विपत्ति पक्की यी। 24 (और उसकी पुत्री शेरा यी, जिस ने निचले और ऊपरवाले
दोनोंबेयोरान नाम नगरोंको और उज्जेनशेरा को दृढ कराया।) 25 उौर उसका पुत्र
रेपा या, और रेशेप भी, और उसका पुत्र तेलह, तेलह का तहन, तहन का लादान,
26 लादान का अम्मीहूद, अम्मीहूद का एलीशामा। 27 एलीशमा का नून, और
नून का पुत्र यहोशू या। 28 और उनकी निज भूमि और बस्तियां गांवोंसमेत बेतेल
और पूर्व की ओर नारान और पश्चिम की ओर गांवोंसमेत गेजेर, फिर गांवोंसमेत
शकेम, और गांवोंसमेत अज्जा यीं। 29 और मनश्शेइयोंके सिवाने के पास अपके
अपके गांवोंसमेत बेतशान, तानाक, मगिद्दो और दोर। इन में इस्राएल के पुत्र
युसुफ की सन्तान के लोग रहते थे। 30 आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी और
बरीआ, और उनकी बहिन सेरह हुई। 31 और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल
और यह बिजॉत का पिता हुआ। 32 और हेबेर ने यपकेत, शोमेर, होताम और
उनकी बहिन शूआ को जन्म दिया। 33 और यपकेत के पुत्र पासक बिम्हाल और
अश्वात। यपकेत के थे ही पुत्र थे। 34 और शेमेर के पुत्र, अही, रोहगा, यहुब्बा और
अराम थे। 35 और उसके भाई हेलेम के पुत्र सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल
थे। 36 और सोपह के पुत्र, सूह, हर्नेपेर, शूआल, वेरी, इम्रा। 37 बेसेर, होद, शम्मा,
शिलसा, यित्रान और बेरा थे।। 38 और थेतेर के पुत्र, यपुन्ने, पिस्पा और अरा।
39 और उल्ला के पुत्र, आरह, हन्नीएल और रिस्या। 40 थे सब आशेर के वुश में
हुए, और अपके अपके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष और बड़े से बड़े वीर थे और
प्रधानोंमें मुख्य थे। और थे जो अपक्की अपक्की वंशावली के अनुसार सेना में
युद्ध करने के लिथे गिने गए, इनकी गिनती छब्बीस हजार यी।

1 इतिहास 8

1 बिन्यामीन से उसका जेठा बेला, दूसरा अशबेल, तीसरा अह्रह, 2 चौया नोहा
और पांचवां रापा उत्पन्न हुआ। 3 और बेला के पुत्र, अद्दार, गेरा, अबीहूद। 4
अबीशू, नामान, अहोह, 5 गेरा, शपूपान और हूराम थे। 6 और एहूद के पुत्र थे हुए
(गेबा के निवासियोंके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष थे थे, जिन्हें बन्धुआई में
मानहत को ले गए थे) । 7 और नामान, अहिय्याह और गेरा (इन्हें भी बन्धुआ
करके मानहत को ले गए थे), और उस ने उज्जा और अहिलूद को जन्म दिया। 8
और शहरैम से हशीम और बारा नाम अपक्की स्त्रियोंको छोड़ देने के बाद मोआब
देश में लड़के उत्पन्न हुए। 9 और उसकी अपक्की स्त्राी होदेश से योआब,
सिब्या, मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या, 10 और मिर्मा उत्पन्न हुए उसके थे पुत्र
अपके अपके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष थे। 11 और हूशीम से अबीतूब और
एल्पाल का जन्म हुआ। 12 एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम और शेमेर, इसी ने
ओनो और गांवोंसमेत लोद को बसाया। 13 फिर वरीआ और शेमा जो अय्यालोन
के निवासियोंके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष थे, और जिन्होंने गत के
निवासिक्कों भगा दिया। 14 और अह्यो, हााासक, यरमोत। 15 जबद्याह, अराद,
एदेर। 16 मीकाएल, यिस्पा, योहा, जो बीिआ के पुत्र थे। 17 जबद्याह,
मशुल्लाम, हिजकी, हेबर। 18 यिशमरै, यिजलीआ, योबाब, जो एल्पाल के पुत्र
थे। 19 और याकीम, जिक्री, जब्दी। 20 एलीएनै, सिल्लतै, एलीएल। 21 अदायाह,
बरायाह और शिम्रात जो शिमी के पुत्र थे। 22 और यिशपान, यबेर, एलीएल। 23
अब्दोन, जिक्री,हानान। 24 हनन्याह, एलाम, अन्तोतिय्याह। 25 यिपदयाह और
पनूएल जो शाशक के पुत्र थे। 26 और शमशरै, शहर्याह, अतल्याह। 27 योरेश्याह,

एलिय्याह और जिक्र जो यरोहाम के पुत्र थे। 28 थे अपक्की अपक्की पीढ़ी में
अपके अपके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष और प्रधान थे, थे यरूशलेम में रहते
थे। 29 और गिबोन में गिबोन का पिता रहता या, जिसकी पत्नी का ताम माका
या। 30 और उसका जेठा पुत्र अब्दोन या, फिर शूर, कीश, बाल, नादाब। 31 गदोर;
अह्यो और जेकेर हुए। 32 और मिकोत से शिमा उत्पन्न हुआ। और थे भी अपके
भइयोंके साम्हने यरूशलेम में रहते थे, अपके भाइयोंही के साय। 33 और नेर से
कीश उत्पन्न हुआ, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मलकीश,
अबीनादाब, और एशबाल उत्पन्न हुआ। 34 और योनातन का पुत्र मरीब्बाल
हुआ, और मरीब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। 35 और मीका के पुत्र पीतोन,
मेलेक, तारे और आहाज। 36 और आहाज से यहोअद्दा उत्पन्न हुआ। और
यहोअद्दा से आलेमेत, अजमावेत और जिम्री; और जिम्री से मोसा। 37 मोसा से
बिना उत्पन्न हुआ। और इसका पुत्र रापा हुआ, रापा का एलासा और एलासा का
पुत्र आसेल हुआ। 38 और आसेल के छः पुत्र हुए जिनके थे नाम थे, अर्यात्
अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह, और हानान। थे ही सब आसेल
के पुत्र थे। 39 ओर उसके भाई एशेक के थे पुत्र हुए, अर्यात् उसका जेठा ऊलाम,
दूसरा यूशा, तीसरा एलीपेलेत। 40 और ऊलाम के पुत्र शूरवीर और धनुर्धारी हुए,
और उनके बहुत बेटे-पोते अर्यात् डेढ़ सौ हुए। थे ही सब बिन्यामीन के वंश के थे।

1 इतिहास 9

1 इस प्रकार सब इस्राएली अपक्की अपक्की वंशावली के अनुसार, जो इस्राएल के
राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं, गिने गए। और यहूदी अपके

विश्वासघात के कारण बन्धुआई में बाबुल को पहुंचाए गए। 2 जो लोग अपक्की
अपक्की निज भूमि अर्यात् अपके नगरोंमें रहते थे, वह इस्राएली, याजक, लेवीय
और नतीन थे। 3 और यरूशलेम में कुछ यहूदी; कुछ बिन्यामीन, और कुछ
एप्रैमी, और मनश्शेई, रहते थे : 4 अर्यात् यहूदा के पुत्र पेरेस के वंश में से
अम्मीहूद का पुत्र ऊतै, जो ओम्री का पुत्र, और इम्री का पोता, और बानी का
परपोता या। 5 और शीलोइयोंमें से उसका जेठा पुत्र असायाह और उसके पुत्र। 6
और जेरह के वंश में से यूएल, और इनके भई, थे छ: सौ नब्बे हुए। 7 फिर
बिन्यामीन के वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र, होदय्याह का पोता, और
हस्सनूआ का परपोता या। 8 और यिब्रिय्याह जो यरोहाम का पुत्र या, एला जो
उज्जी का पुत्र, और मिक्री का पोता या, और मशुल्लाम जो शपत्याह का पुत्र,
रूएल का पोता, और यिब्निय्याह का परपोता या; 9 और इनके भाई जो अपक्की
अपक्की वंशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ छप्पन। थे सब पुरुष अपके अपके
पितरोंके घरानोंके अनुसार पितरोंके घरानोंमें मुख्य थे। 10 और याजकोंमें से
यदायाह, यहोयारीब और याकीन, 11 और अजर्याह जो परमेश्वर के भवन का
प्रधान और हिलकिय्याह का पुत्र या, यह पशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र,
यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र या। 12 और अदायाह जो यरोहाम का
पुत्र या, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्कियाह का पुत्र, यह मासै का पुत्र, यह अदोएल
का पुत्र, यह जेरा का पुत्र, यह पशुल्लाम का पुत्र, यह मशिल्लीत का पुत्र, यह
इम्मेर का पुत्र या। 13 और उनके भाई थे, जो अपके अपके पितरोंके घरानोंमें
सत्रह सौ साठ मुख्य पुरुष थे, वे परमेश्वर के भवन की सेवा के काम में बहुत
निपुण पुरुष थे। 14 फिर लेवियोंमें से मरारी के वंश में से शमायाह जो हश्शूव का

पुत्र, अज्रीकाम का पोता, और हशय्याह का परपोता या। 15 और बकबक्कर,
हेरेश और गालाल और आसाप के वंश में से मत्तन्याह जो मीका का पुत्र, और
जिक्री का पोता या। 16 और ओबद्याह जो शमायाह का पुत्र, गालाल का पोता और
यदूतून का परपोता या, और बेरेक्याह जो आसा का पुत्र, और एल्काना का पोता
या, जो नतोपाइयोंके गांवोंमें रहता या। 17 ओर द्वारपालोंमें से अपके अपके
भइयोंसहित शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन और अहीमान, उन में से मुख्य तो
शल्लूम या। 18 और वह अब तक पूर्व ओर राजा के फाटक के पास द्वारपाली
करता या। लेवियोंकी छावनी के द्वारपाल थे ही थे। 19 और शल्लूम जो कोरे का
पुत्र, एब्यासाप का पोता, और कोरह का परपोता या, और उसके भाई जो उसके
मूलपुरुष के घराने के अर्यात् कोरही थे, वह इस काम के अधिक्कारनी थे, कि वे
तम्बू के द्वारपाल हों। उनके पुरखा तो यहोवा की छावनी के अधिक्कारनी, और
पैठाव के रवावाले थे। 20 और अगले समय में एलीआज़र का पुत्र पीनहास
जिसके संग यहोवा रहता या वह उनका प्रधान या। 21 मेशेलेम्याह का पुत्र
जकर्याह मिलापवाले तम्बू का द्वारपाल या। 22 थे सब जो द्वारपाल होने को चुने
गए, वह दो सौ बारह थे। थे जिनके पुरखाओं को दाऊद और शमूएल दर्शी ने
विश्वासयोग्य जानकर ठहराया या, वह अपके अपके गांव में अपक्की अपक्की
वंशावली के अनुसार गिने गए। 23 सो वे और उनकी सन्तान यहोवा के भवन
अर्यात् तम्बू के भवन के फाटकोंका अधिक्कारने बारी बारी रखते थे। 24 द्वारपाल
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, चारोंदिशा की ओर चौकी देते थे। 25 ओर उनके भाई
जो गांवोंमें रहते थे, उनको सात सात दिन के बाद बारी बारी से उनके संग रहने के
लिथे आना पड़ता या। 26 क्योंकि चारोंप्रधान द्वारपाल जो लेवीय थे, वे

विश्वासयोग्य जानकर परमेश्वर के भवन की कोठरियोंऔर भण्डारोंके
अधिक्कारनी ठहराए गए थे। 27 और वे परमेश्वर के भवन के आसपास इसलिथे
रात बिताते थे, कि उसकी रझा उन्हें सौंपी गई यी, और भोर-भोर को उसे खोलना
उन्हीं का काम या। 28 और उन में से कुछ उपासना के पात्रोंके अधिक्कारनी थे,
क्योंकि थे गिनकर भीतर पहुंचाए, और गिनकर बाहर तिकाले भी जाते थे। 29
और उन में से कुछ सामान के, और पवित्रस्यान के पात्रोंके, और मैदे, दाखमधु,
तेल, लोबान और सुगन्धद्रव्योंके अधिक्कारनी ठहराए गए थे। 30 और
याजकोंके पुत्रोंमें से कुछ सुगन्धद्रव्योंमें गंधी का काम करते थे। 31 और
मतित्याह नाम एक लेवीय जो कोरही शल्लूम का जेठा या उसे बिश्वासयोग्य
जानकर तवोंपर बनाई हुई वस्तुओं का अधिक्कारनी नियुक्त किया या। 32 और
उसके भइयोंअर्यात कहातियोंमें से कुछ तो भंटवाली रोटी के अधिक्कारनी थे, कि
हर एक विश्रमदिन को उसे तैयार किया करें। 33 और थे गवैथे थे जो लेवीय
पितरोंके घरानोंमें मुख्य थे, और कोठरियोंमें रहते, और उा ोर काम से छूटे थे;
क्योंकि वे रात-दिन अपके काम में लगे रहते थे। 34 थे ही अपक्की अपक्की पीढ़ी
में लेवियोंके पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष थे, थे यरूशलेम में रहते थे। 35 और
गिबोन में गिबोन का पिता यीएल रहता या, जिसकी पत्नी का नाम माका य। 36
उसका जेठा पुत्र अब्दोन हुआ, फिर सुर, कीश, बाल, नेर, नादाब। 37 गदोर, अह्यो,
जकर्याह और मिल्कोत। 38 और मिल्कोत से शिमाम उत्पन्न हुआ और थे भी
अपके भइयोंके साम्हने अपके भइयोंके संग यरूशलेम में रहते थे। 39 और नेर से
कीश, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मल्कीश, अबीनादाब और
एशबाल उत्पन्न हुए। 40 और योनातान का पुत्र मरीब्बाल हुआ, और मरीब्बाल

से मीका उत्पन्न हुआ। 41 और मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तह्रे और अहाज थे।
42 और अहाज से यारा और यारा से आलेमेत, अजमावेत और जिम्री, और जिम्री
से मोसा। 43 और मोसा से बिना उत्पन्न हुआ और बिना का पुत्र रपायाह हुआ,
रपायाह का एलासा, और एलासा का पुत्र आसेल हुआ। 44 और आसेल के छ: पुत्र
हुए जिनके थे नाम थे, अर्यात् अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह
और हतान; आसेल के थे ही पुत्र हुए।

1 इतिहास 10

1 पलिश्ती इस्राएलियोंसे लड़े; और इस्राएली पलिश्तियोंके साम्हने से भागे, और
गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। 2 और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रोंके पीछे
लगे रहे, और पलिश्तियोंने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब और मल्कीशू को
मार डाला। 3 और शाऊल के साय धमासान युद्ध होता रहा और धनुर्धारियोंने उसे
जा लिया, और वह उनके कारण य्याकुल हो गया। 4 तब शाऊल ने अपके
हयियार ढोनेवाले से कहा, अपक्की तलवार खींचकर मुझे फोंक दे, कहीं ऐसा न
हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरी ठट्ठा करें, परन्तु उसके हय्याि‍र
ढोनेवाले ने भयभीत होकर ऐसा करने से इनकार किया, तब शाऊल अपक्की
तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। 5 यह देखकर कि शाऊल मर गया है
उसका हयियार ढोनेपसल भी अपक्की तलवार पर आप गिरकर मर गया। 6
योंशाऊल और उसके तीनोंपुत्र, और उसके घराने के सब लोग एक संग मर गए।
7 यह देखकर कि वे भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई में
रहनेवाले सब इस्राएली मनुष्य अपके अपके नगर को छोड़कर भाग गए; और

पलिश्ती आकर उन में रहने लगे। 8 दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल
को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके पुत्र गिलबो पहाड़ पर पके हुए
मिले। 9 तब उन्होंने उसके वस्त्रें को उतार उसका सिर और हयियार ले लिया और
पलिश्तियोंके देश के सब स्यानोंमें दूतोंको इसलिथे भेजा कि उनके देवताओं और
साधारण लोगोंमें यह शुभ समाचार देते जाएं। 10 तब उन्होंने उसके हयियार
अपके देवालय में रखे, और उसकी खोपक्की को दागोन के मन्दिर में लटका
दिया। 11 जब गिलाद के याबेश के सब लोगोंने सुना कि पलिश्तियोंने शाऊल से
क्या क्या किया है। 12 तब सब शूरवीर चले और शाऊल और उसके पुत्रोंकी लोथें
उठाकर याबेश में ले आए, और उनकी हड्डियोंको याबेश में एक बांज वृझ के तले
गाड़ दिया और सात दिन तक अनशन किया। 13 योंशाऊल उस विश्वासघात के
कारण मर गया, जो उस ने यहोवा से किया या; क्योंकि उस ने यहोवा का वचन
टाल दिया या, फिर उस ने भूतसिद्धि करनेवाली से पूछकर सम्मति ली यी। 14
उस ने यहोवा से न पूछा या, इसलिथे यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै के पुत्र
दाऊद को दे दिया।

1 इतिहास 11

1 तब सब इस्राएली दाऊद के पास हेब्रोन में इकट्ठे होकर कहने लगे, सुन, हम
लोग और तू एक ही हड्डी और मांस हैं। 2 अगले दिनोंमें जब शाऊल राजा या,
तब भी इस्राएलियोंका अगुआ तू ही या, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ से कहा,
कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा, और मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान, तू ही होगा।
3 इसलिथे सब इस्राएली पुरनिथे हेब्रोन में राजा के पास उाए, और दाऊद ने उनके

साय हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बान्धी; और उन्होंने यहोवा के वचन के
अनुसार, जो उस ने शमूएल से कहा या, इस्राएल का राजा होने के लिथे दाऊद का
अभिषेक किया। 4 तब सब इस्राएलियोंसमेत दाऊद यरूशलेम गया, जो यबूस भी
कहलाता या, और वहां यबूसी नाम उस देश के निवासी रहते थे। 5 तब यबूस के
निवासियोंने दाऊद से कहा, तू यहां आने नहीं पाएगा। तौभी दाऊद ने सिय्योन
नाम गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। 6 और दाऊद ने कहा, जो
कोई यबूसिक्कों सब से पहिले मारेगा, वह मुख्य सेनापति होगा, तब सरूयाह का
पुत्र योआब सब से पहिले चढ़ गया, और सेनापति बन गया। 7 और दाऊद उस
गढ़ में रहने लगा, इसलिथे उसका नाम दाऊदपुर पड़ा। 8 और उस ने नगर के
चारोंओर, अर्यात् मिल्लो से लेकर चारोंओर शहरपनाश् बनवाई, और योआब ने
शेष नगर के खण्डहरोंको फिर बसाया। 9 और दाऊद की प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती
गई और सेनाओं का यहोवा उसके संग या। 10 यहोवा ने इस्राएल के विष्य जो
वचन कहा या, उसके अनुसार दाऊद के जिन शूरवीरोंने सब इस्राएलियोंसमेत
उसके राज्य में उसके पझ में होकर, उसे राजा बनाने को ज़ोर दिया, उन में से
मुख्य पुरुष थे हैं। 11 दाऊद के शूरवीरोंकी नामावली यह है, अर्यात् किसी
हक्मोनी का पुत्र याशोबाम जो तीसोंमें मुखय य, उस ने तीन सै पुरुषोंपर भाला
चला कर, उन्हें एक ही समय में मार डाला। 12 उसके बाद अहोही दोदो का पुत्र
एलीआज़र जो तीनोंमहान वीरोंमें से एक या। 13 वह पसदम्मीम में जहां जव का
एक खेत या, दाऊद के संग रहा जब पलिश्ती वहां युद्ध करने को इट्ठे हुए थे,
और लोग पलिश्तियोंके साम्हने से भाग गए। 14 तब उन्होंने उस खेत के बीच में
खड़े होकर उसकी रझा की, और पलिश्तियोंको मारा, और यहोवा ने उनका बड़ा

उद्धार किया। 15 और तीसोंमुख्य पुरुषोंमें से तीन दाऊद के पास चट्टान को,
अर्यात् अदुल्लाम नाम गुफा में गए, और पलिश्तियोंकी छावनों रपाईम नाम
तराई में पक्की हुई यी। 16 उस समय दाऊद गढ़ में या, और उस समय
पलिश्तियोंकी एक चौकी बेतलेहेम में यी। 17 तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के
साय कहा, कौन मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा। 18
तब वे तीनोंजन पलिश्तियोंकी छावनी में टूट पके और बेतलेहेम के फाटक के
कुएं से पानी भरकर दाऊद के पास ले आए; परन्तु दाऊद ने पीने से इनकार किया
और यहोवा के साम्हने अर्ध करके उण्डेला। 19 और उस ने कहा, मेरा परमेश्वर
मुझ से ऐसा करना दूर रखे; क्या मैं इन मनुष्योंका लोहू पीऊं जिन्होंने अपके
प्राणोंपर खेला है? थे तो अपके प्राण पर खेलकर उसे ले आए हैं। इसलिथे उस ने
वह पानी पीने से इनकार किया। इन तीन वीरोंने थे ही काम किए। 20 और
अबीशै जो योआब का भाई या, वह तीनोंमें मुख्य या। और उस ने अपना भाला
चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनोंमें नामी हो गया। 21 दूसरी श्र्ेणी के
तीनोंमें वह अधिक प्रतिष्ठित या, और उनका प्रधान हो गया, परन्तु मुख्य
तीनोंका पद को न पहुंचा। 22 यहोयादा का पुत्र बनायाह या, जो कबजेल के एक
वीर का पुत्र या, जिस ने बड़े बड़े काम किए थे, उस ने सिंह समान दो
मोआबियोंको मार डाला, और हिमऋतु में उस ने एक गड़हे में उतर के एक सिंह
को मार डाला। 23 फिर उस ने एक डीलवाले अर्यात् पांच हाथ लम्बे मिस्री पुरुष
को मार डाला, वह मिस्री हाथ में जुलाहोंका ढेका का एक भाला लिए हुए या,
परन्तु बनायाह एक लाठी ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से
भाले को छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया। 24 ऐसे ऐसे काम करके

यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनोंवीरोंमें नामी हो गया। 25 वह तो तीसोंसे
अधिक प्रतिष्ठित या, परन्तु मुख्य तीनोंके पद को न पहुंचा। उसको दाऊद ने
अपक्की निज सभा में सभासद किया। 26 फिर दलोंके वीर थे थे, अर्यात् योआब
का भाई असाहेल, बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान। 27 हरोरी शम्मोत, पलोनी
हेलेस। 28 तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोती अबीएजेर। 29 सिब्बके होसाती,
अहोही ईलै। 30 महरै नतोपाई, एक और नतोपाई बाना का पुत्र हेलेद। 31
बिन्यामीनियोंके गिबा नगरवासी रीबै का पुत्र इतै, पिरातोनी बनायाह। 32
गाशके नालोंके पास रहनेवाला हूरै, अराबावासी अबीएल। 33 बहूरीमी अजमावेत,
शल्बोनी एल्यहबा। 34 गीजोई हाशेम के पुत्र, फिर हरारी शागे का पुत्र योनातान।
35 हरारी सकार का पुत्र अहीआम, ऊर का पुत्र एलीपाल। 36 मकेराई हेपेर,
पलोनी अहिय्याह। 37 कर्मेली हेस्रो, एज्बै का पुत्र नारै। 38 नातान का भाई
योएल, हग्री का पुत्र मिभार। 39 मम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै जो सरूयाह के पुत्र
योआब का हयियार ढोनेवाला या। 40 थेतेरी ईरा और गारेब। 41 हित्ती ऊरिय्याह,
अहलै का पुत्र जाबाद। 42 तीस पुरुषोंसमेत रूबेनी शीजा का पुत्र अदीना जो
रूबेनियोंका मुखिया या। 43 माका का पुत्र हानान, मेतेनी योशापात। 44
अशतारोती उज्जियाह, अरोएरी होताम के पुत्र शामा और यीएल। 45 शिम्री का
पुत्र यदीएल और उसका भाई तीसी, योहा। 46 महवीमी एलीएल, एलनाम के पुत्र
यरीबै और योशय्याह, 47 मोआबी यित्मा, एलीएल, ओबेद और मसोबाई
यासीएल।

1 इतिहास 12

1 जब दाऊद सिकलग में कीश के पुत्र शाऊल के डर के मारे छिपा रहता या, तब
थे उसके पास वहां आए, और थे उन वीरोंमें से थे जो युद्ध में उसके सहाथक थे। 2
थे धनुर्धारी थे, जो दाहिने-बाथें, दोनोंहाथोंसे गोफन के पत्यर और धनुष के तीर
चला सकते थे; और थे शाऊल के भाइयोंमें से बिन्यामीनी थे। 3 मुख्य तो
अहीएजेर और दूसरा योआश या जो गिबावासी शमाआ का पुत्र या; फिर
अजमावेत के पुत्र यजीएल और पेलेत, फिर बराका और अनातोती थेहू। 4 और
गिबोनी यिशमायाह जो तीसोंमें से एक वीर और उनके ऊपर भी या; फिर
यिर्मयाह, यहजीएल, योहानान, गदेरावासी योजाबाद। 5 एलूजै, यरीमोत,
बाल्याह, शमर्याह, हारूपी शपत्याह। 6 एल्काना, यिशिय्याह, अजरेल, योएजेर,
याशोबाम, जो सब कोरहवंशी थे। 7 और गदोरवासी यरोहाम के पुत्र योएला और
जबद्याह। 8 फिर जब दाऊद जंबल के गढ़ में रहता या, तब थे गादी जो शूरवीर थे,
और युद्ध विद्या सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेवाले थे, और उनके
मुह सिंह के से और वे पहाड़ी मृग के समान वेग से दौड़नेवाले थे, थे और
गादियोंसे अलग होकर उसके पास आए। 9 अर्यात् मुख्य तो एजेर, दूसरा
ओबद्याह, तीसरा एलीआब। 10 चौया मिश्मन्ना, पांचपां यिर्मयाह। 11 छठा अत्तै,
सातवां एलीएल। 12 आठवां योहानान, नौवां एलजाबाद। 13 दसवां यिर्मयाह और
ग्यारहवां मकबन्नै या। 14 थे गादी मुख्य योद्धा थे, उन में से जो सब से छोटा या
वह तो एक सौ के ऊपर, और जो सब से बड़ा या, वह हजार के ऊपर या। 15 थे ही
वे हैं, जो पहिले महीने में जब यरदन नदी सब कड़ाड़ोंके ऊपर ऊपर बहती यी, तब
उसके पार उतरे; और पूर्व और पश्चिम दानोंओर के सब तराई के रहनेवालोंको
भगा दिया। 16 और कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में

आए। 17 उन से मिलने को दाऊद निकला और उन से कहा, यदि तुम मेरे पास
मित्रभाव से मेरी सहाथता करने को आए हो, तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा;
परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आए हो, तो हमारे
पितरोंका परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डांटे, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं
हुआ। 18 अब आत्मा अमासै में समाया, जो तीसोंवीरोंमें मुख्य या, और उस ने
कहा, हे दाऊद ! हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र ! हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल ही
कुशल हो और तेरे सहाथकोंका कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहाथता
किया करता है। इसलिथे दाऊद ने उनको रख लिया, और अपके दल के मुखिथे
ठहरा दिए। 19 फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय दाऊद के पास भाग गए, जब
वह पलिश्तियोंके साय होकर शाऊल से लड़ने को गया, परन्तु उसकी कुछ
सहाथता न की, क्योंकि पलिश्तियोंके सरदारोंने सम्मति लेने पर वह कहकर उसे
बिदा किया, कि वह हमारे सिर कटवाकर अपके स्वामी शाऊल से फिर मिल
जाएगा। 20 जब वह सिक्लग को जा रहा या, तब थे मनश्शेई उसके पास भाग
गए; अर्यात् अदना, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतै
जो मनश्शे के हजारोंके मुखिथे थे। 21 इन्होंने लुटेरोंके दल के विरुद्ध दाऊद की
सहाथता की, क्योंकि थे सब शूरवीर थे, और सेना के प्रधान भी बन गए। 22 वरन
प्रतिदिन लोग दाऊद की सहाथता करने को उसके पास आते रहे, यहां तक कि
परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना बन गई। 23 फिर लोग लड़ने के लिथे
हयियार बान्धे हुए होब्रोन में दाऊद के पास इसलिथे आए कि यहोवा के वचन के
अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें : उनके मुखियोंकी गिनती यह है।
24 यहूदा के ढाल और भाला लिए हुए छः हजार आठ सौ हयियारबन्ध लड़ने को

बाए। 25 शिमोनी सात हजार एक सौ तैयार शूरवीर लड़ने को आए। 26 लेवीय
चार हजार छः सौ आए। 27 और हारून के घराने का प्रधान यहोयादा या, और
उसके साय तीन हजार सात सौ आए। 28 और सादोक नाम एक जवान वीर भी
आया, और उसके पिता के घराने के बाईस प्रधान आए। 29 और शाऊल के भाई
बिन्यामीनियोंमें से तीन हजार आए, क्योंकि उस समय तक आधे
बिन्यामीनियोंसे अधिक शाऊल के घराने का पक्ष करते रहे। 30 फिर एप्रैमियोंमें
से बड़े वीर और अपके अपके पितरोंके घरानोंमें नामी पुरुष बीस हजार आठ सौ
आए। 31 और मनश्शे के आधे गोत्र में से दाऊद को राजा बनाने के लिथे अठारह
हजार आए, जिनके नाम बताए गए थे। 32 और इस्साकारियोंमें से जो समय को
पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और
उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे। 33 फिर जबूलून में से युद्ध के सब प्रकार
के हयियार लिए हुए लड़ने को पांति बान्धनेवाले योद्धा पचास हजार आए, वे
पांति बान्ध्नेवाले थे : और चंचल न थे। 34 फिर नप्ताली में से प्रधान तो एक
हजार, और उनके संग ढाल और भाला लिए सैंतीस हजार आए। 35 और
दानियोंमें से लड़ने के लिथे पांति बान्धनेवाले अठाईस हजार छः सौ आए। 36
और आशेर में से लड़ने को पांति बान्धनेवाले चालीस हजार योद्धा आए। 37 और
यरदन पार रहनेवाले रूबेनी, गादी और मनश्शे के आधे गोत्रियोंमें से युद्ध के सब
प्रकार के हयियार लिए हुए एक लाख बीस हजार आए। 38 थे सब युद्ध के लिथे
पांति बान्धनेवाले दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिथे हेब्रोन में सच्चे
मन से आए, और और सब इस्राएली भी दाऊद को राजा बनाने के लिथे सहमत
थे। 39 और वे वहां तीन दिन दाऊद के संग खाते पीते रहे, क्योंकि उनक भाइयोंने

उनके लिथे तैयारी की यी। 40 और जो उनके निकट वरन इस्साकार, जबूलून
और नप्ताली तक रहते थे, वे भी गदहों, ऊंटों, खच्चरोंऔर बैलोंपर मैदा,
अंजीरोंऔर किशमिश की टिकियां, दाखमधु और तेल आदि भोजनवस्तु लादकर
लाए, और बैल और भेड़-बकरियां बहुतायत से लाए; क्योंकि इस्राएल में आनन्द
मनाया जारहा या।

1 इतिहास 13

1 और दाऊद ने सहस्त्रपतियों, शतपतियोंऔर सब प्रधानोंसे सम्मति ली। 2 तब
दाऊद ने इस्राएल की सारी मण्डली से कहा, यदि यह तुम को अच्छा लगे और
हमारे परमेश्वर की इच्छा हो, तो इस्राएल के सब देशोंमें जो हमारे भाई रह गए हैं
और उनके साय जो याजक और लेवीय अपके अपके चराईवाले नगरोंमें रहते हैं,
उनके पास भी यह कहला भेजें कि हमारे पास इकट्ठे हो जाओ। 3 और हम
अपके परमेश्वर के सन्दमक को अपके यहां ले आएं; क्योंकि शाऊल के दिनोंमें
हम उसके समीप नहीं जाते थे। 4 और समस्त मण्डली ने कहा, हम ऐसा ही
करेंगे, क्योंकि यह बात उन सब लोगोंकी दृष्टि में उचित मालूम हुई। 5 तब दाऊद
ने मिस्र के शीहोर से ले हमात की घाटी तब के सब इस्राएलियोंको इसलिथे
इकट्ठा किया, कि परमेश्वर के सन्दूक को किर्यत्यारीम से ले आए। 6 तब दाऊद
सब इस्राएलियोंको संग लेकर बाला को गया, जो किर्यत्यारीम भी कहलाता और
यहूदा के भाग में या, कि परमेश्वर यहोवा का सन्दूक वहां से ले आए; वह तो
करूबोंपर विराजनेवाला है, और उसका नाम भी यही लिया जाता है। 7 तब
उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर, अबीनादाब के घर से

निकाला, और उज्जा और अह्यो उस गाड़ी को हांकने लगे। 8 और दाऊद और सारे
इस्राएली परमेश्वर के साम्हने तन मन से गीत गाते और बीणा, सारंगी, डफ,
फांफ और तुरहियां बजाते थे। 9 जब वे कीदोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा
ने अपना हाथ सन्दूक यामने को बढ़ाया, क्योंकि बैलोंने ठोकर खाई यी। 10 तब
यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और उस ने उस को मारा क्योंकि उस ने
सन्दूक पर हाथ लगाया या; वह वहीं परमेश्वर के साम्हने मर गया। 11 तब दाऊद
अप्रसन्न हुआ, इसलिथे कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा या; और उस ने उस स्यान
का नाम पेरेसुज्जा रखा, यह नाम आज तक बना है। 12 और उस दिन दाऊद
परमेश्वर से डरकर कहने लगा, मैं परमेश्वर के सन्दूक को अपके यहां कैसे ले
आऊं? 13 तब दाऊद ने सन्दूक को अपके यहां दाऊदपुर में न लाया, परन्तु
ओबेदेदोम नाम गती के यहां ले गया। 14 और परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम के
यहां उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम के
घराने पर और जो कुछ उसका या उस पर भी आशीष दी।

1 इतिहास 14

1 और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत भेजे, और उसका भवन बनाने
को देवदारु की लकड़ी और राज और बढ़ई भेजे। 2 और दाऊद को निश्चय हो गया
कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्यिर किया, क्योंकि उसकी प्रजा
इस्राएल के निमित्त उसका राज्य अत्यन्त बढ़ गया या। 3 और यरूशलेम में
दाऊद ने और स्त्रियां ब्याह लीं, और उन से और बेटे-बेटियां उत्पन्न हुई। 4 उसके
जो सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए, उनके नाम थे हैं : अर्यात् शम्मू,शोबाब,

नातान, सुलैमान; 5 यिभार, एलीशू, एलपेलेत; 6 नोगह, नेपेग, यापी, एलीशामा,
7 बेल्यादा और एलीपेलेद। 8 जब पलिश्तियोंने सुना कि पूरे इस्राएल का राजा
होने के लिथे दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्तियोंने दाऊद की खोज में
चढ़ाई की; यह सुनकर दाऊद उनका साम्हना करने को निकल गया। 9 और
पलिश्ती आए और रपाईम नाम तराई में धावा मारा। 10 तब दाऊद ने परमेश्वर
से पूछा, क्या मैं पलिश्तियोंपर चढ़ाई करूं? और क्या तू उन्हें मेरे हाथ में कर
देगा? यहोवा ने उस से कहा, चढ़ाई कर, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर दूंगा। 11
इसलिथे जब वे बालपरासीम को आए, तब दाऊद ने उन को वहीं मार लिया; तब
दाऊद ने कहा, परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाई टूट पड़ा
है। इस कारण उस स्यान का नाम बालपरासीम रखा गया। 12 वहां वे अपके
देवताओं को छोड़ गए, और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूंक दिए गए।
13 फिर दूसरी बार पलिश्तियोंने उसी तािई में धावा मारा। 14 तब दाऊद ने
परमेश्वर से फिर पूछा, और परमेश्वर ने उस से कहा, उनका पीछा मत कर; उन से
मुड़कर तूत के वृझोंके साम्हने से उन पर छापा मार। 15 और जब तूत के वृझोंकी
फुनगियोंमें से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुन पके, तब यह जानकर युद्ध
करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिश्तियोंकी सेना को मारने के लिथे तेरे
आगे जा रहा है। 16 परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया, और
इस्राएलियोंने पलिश्तियोंकी सेना को गिबोन से लेकर गेजेर तक मार लिया। 17
तब दाऊद की कीत्तिर् सब देशोंमें फैल गई, और यहोवा ने सब जातियोंके मन में
उसका भय भर दिया।

1 इतिहास 15

1 तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाए, और परमेश्वर के सन्दूक के लिथे एक
स्यान तैयार करके एक तम्बू खड़ा किया। 2 तब दाऊद ने कहा, लेवियोंको छोड़
और किसी को परमेश्वर का सन्दूक उठाना नहीं चाहिथे, क्योंकि यहोवा ने उनको
इसी लिथे चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएं और उसकी सेवा टहल सदा
किया करें। 3 तब दाऊद ने सब इस्राएलियोंको यरूशलेम में इसलिथे इाट्ठा किया
कि यहोवा का सन्दूक उस स्यान पर पहुंचाएं, जिसे उस ने उसके लिथे तैयार
किया या। 4 इसलिथे दाऊद ने हारून के सन्तानोंऔर लेवियोंको इकट्ठा किया :
5 अर्यात् कहातियोंमें से ऊरीएल नाम प्रधान को और उसके एक सौ बीस
भाइयोंको; 6 मरारियोंमें से असायाह नाम प्रधान को और उसके दो सौ बीस
भाइयोंको; 7 गेर्शोमियोंमें से योएल नाम प्रधान को और उसके एक सौ तीस
भाइयोंको; 8 एलीसापानियोंमें से शमायाह नाम प्रधान को और उसके दो सौ
भाइयोंको; 9 हेब्रोनियोंमें से एलीएल नाम प्रधान को और उसके अस्सी भाइयोंको;
10 और उज्जीएलियोंमें से अम्मीनादाब नाम प्रधान को और उसके एक सौ बारह
भाइयोंको। 11 तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार नाम याजकोंको, और
ऊरीएल, असायाह, योएल, शमायाह, एलीएल और अम्मीनादाब नाम लेवियोंको
बुलवाकर उन से कहा, 12 तुम तो लेवीय पितरोंके घरानोंमें मुख्य पुरुष हो;
इसलिथे अपके भाइयोंसमेत अपके अपके को पवित्र करो, कि तुम इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्यान पर पहुंचा सको जिसको मैं ने उसके लिथे
तैयार किया है। 13 क्योंकि पहिली बार तुम ने उसको न उठाया इस कारण हमारा
परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार
न लगे थे। 14 तब याजकोंऔर लेवियोंने अपके अपके को पवित्र किया, कि

इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक ले जा सकें। 15 तब उस आज्ञा के अनुसार
जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी यी, लेवियोंने सन्दूक को डंडोंके बल
अपके कंधोंपर उठा लिया। 16 और दाऊद ने प्रधान लेवियोंको आज्ञा दी, कि
अपके भाई गवैयोंको बाजे अर्यात् सारंगी, वीणा और फांफ देकर बजाने और
आनन्द के साय ऊंचे स्वर से गाने के लिथे नियुक्त करें। 17 तब लेवियोंने योएल
के पुत्र हेमान को, और उसके भाइयोंमें से बेरेक्याह के पुत्र आसाप को, और अपके
भाई मरारियोंमें से कूशायाह के पुत्र एतान को ठहराया। 18 और उनके साय
उन्होंने दूसरे पद के अपके भाइयोंको अर्यात् जकर्याह, बेन, याजीएल,
शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासेयाह, मत्तित्याह, एलीपकेह,
मिकनेयाह, और ओबेदेदोम और पीएल को जो द्वारपाल थे ठहराया। 19 योंहेमान,
आसाप और एतान नाम के गवैथे तो पीतल की फांफ बजा बजाकर राग चलाने
को; 20 और जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, मासेयाह,
और बनायाह, अलामोत, नाम राग में सारंगी बजाने को; 21 और मत्तित्याह,
एलीपकेह, मिकनेयाह ओबेदेदोम, यीएल और अजज्याह वीणा खर्ज में छेड़ने को
ठहराए गए। 22 और राग उठाने का अधिक्कारनी कनन्याह नाम लेवियोंका
प्रधान या, वह राग उठाने के विषय शिझा देता या, क्योंकि वह निपुण या। 23
और बेरेक्याह और एलकाना सन्दूक के द्वारपाल थे। 24 और शबन्याह,
योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर नाम याजक
परमेश्वर के सन्दूक के आगे आगे तुरहियां बजाते हुए चले, और ओबेदेदोम और
यहिय्याह उसके द्वारपाल थे। 25 और दाऊद और इस्राएलियोंके पुरनिथे और
सहस्त्रपति सब मिलकर यहोवा की वाचा का सन्दूक ओबेदेदोम के घर से आनन्द

के साय ले आने के लिए गए। 26 जब परमेश्वर ने लेवियोंकी सहाथता की जो
यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, तब उन्होंने सात बैल और सात मेढ़े
बलि किए। 27 दाऊद, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले सब लेवीय
और गानेवाले और गानेवालोंके साय राग उठानेवाले का प्रधान कनन्याह, थे सब
तो सन के कपके के बागे पहिने थे, और दाऊद सन के कपके का एपोद पहिने या।
28 इस प्रकार सब इस्राएली यहोवा की वाचा के सन्दूक को जयजयकार करते,
और नरसिंगे, तुरहियां और फांफ बजाते और सारंगियां और वीणा बजाते हुए ले
चले। 29 जब यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर में पहुंचा तब शाऊल की बेटी
मीकल ने खिड़की में से फांककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा, और
उसे मन ही मन तूच्छ जाना।

1 इतिहास 16

1 तब परमेश्वर का सन्दूक ले आकर उस तम्हू में रखा गया जो दाऊद ने उसके
लिथे खड़ा कराया या; और परमेश्वर के साम्हने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए
गए। 2 जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा जूका, तब उस ने यहोवा के नाम
से प्रजा को आशीर्वाद दिया। 3 और उस ने क्या पुरुष, क्या स्त्री, सब
इस्राएलियोंको एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक
एक टिकिया बंटवा दी। 4 तब उस ने कई लेवियोंको इसलिथे ठहरा दिया, कि
यहोवा के सत्दूक के साम्हने सेवा टहल किया करें, और इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की चर्चा और उसका धन्यवाद और स्तुति किया करें। 5 उनका मुखिया तो
आसाप या, और उसके नीचे जकर्याह या, फिर यीएल, शमीरामोत, यहीएल,

मत्तित्याह, एलीआब बनायाह, ओबेदेदोम और यीएल थे; थे तो सारंगियां और
वीणाएं लिथे हुए थे, और आसाप फांफ पर राग बजाता या। 6 और बनायाह और
यहजीएल नाम याजक परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साम्हने नित्य तुरहियां
बजाने के लिए नियुक्त किए गए। 7 तब उसी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद
करने का काम आसाम और उसके भाइयोंको सौंप दिया। 8 यहोवा का धन्यवाद
करो, उस से प्रार्यना करो; देश देश में उसके कामोंका प्रचार करो। 9 उसका गीत
गाओ, उसका भजन करो, उसके सब आश्चर्य-कर्मों का ध्यान करो। 10 उसके
पवित्र नाम पर घपंड करो; यहोवा के खोजियोंका हृदय आनन्दित हो। 11 यहोवा
और उसकी सामर्य की खोज करो; उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो। 12
उसेक किए हुए आश्ख्यकर्म, उसके चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो। 13
हे उसके दास इस्राएल के वंश, हे याकूब की सन्तान तुम जो उसके चुने हुए हो !
14 वही हमारा परमेश्वर यहोवा है, उसके न्याय के काम पृय्वी भर में होते हैं। 15
उसकी वाचा को सदा स्मरण रखो, यह वही वचन है जो उस ने हजार पीढिय़ोंके
लिथे ठहरा दिया। 16 वह वाचा उस ने इब्राहीम के साय बान्धी, ऊौर उसी के विषय
उस ने इसहाक से शपय खाई, 17 और उसी को उस ने याकूब के लिथे विधि करके
और इस्राएल के लिथे सदा की वाचा बान्धकर यह कहकर दृढ़ किया, कि 18 मैं
कनान देश तुझी को दूंगा, वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा। 19 उस समय तो
तुम गिनती में योड़े थे, वरन बहुत ही योड़े और उस देश में परदेशी थे। 20 और वे
एक जाति से दूसरी जाति में, और एक जाज्य से दूसरे में फिरते तो रहे, 21 परन्तु
उस ने किसी पनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया; और वह राजाओं को उनके
निमित्त यह धमकी देता या, कि 22 मेरे अभिषिक्तोंको मत छुओ, और न मेरे

नबियोंकी हानि करो। 23 हे समस्त पृथ्वी के लोगो यहोवा का गीत गाओ।
प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो। 24 अन्यजातियोंमें
उसकी महिमा का, और देश देश के लोगोंमें उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।
25 क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है, वह तो सब देवताओं से
अधिक भययोग्य है। 26 क्योंकि देश देश के सब देवता मूर्तियां ही हैं; परन्तु
यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है। 27 उसके चारोंओर विभव और ऐश्वर्य है; उसके
स्यान में सामर्थ और आनन्द है। 28 हे देश देश के कुलो, यहोवा का गुणानुवाद
करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ को मानो। 29 यहोवा के नाम की महिमा ऐसी
मानो जो उसके नाम के योग्य है। भेंट लेकर उसके सम्मुख आाओ, पवित्रता से
शोभायमान होकर यहोवा को दणडवत करो। 30 हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके
साम्हने यरयराओ ! जगत ऐसा स्यिर है, कि वह टलने का नहीं। 31 आकाश
आनन्द करे और पृथ्वी मगन हो, और जाति जाति में लोग कहें, कि यहोवा राजा
32 हुआ है। समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज उठें, मैदान और जो कुछ उस
में है सो प्रफुल्लित हों। 33 उसी समय वन के वृझ यहोवा के साम्हने जयजयकार
करें, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। 34 यहोवा का धन्यवाद
करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करुणा सदा की है। 35 और यह कहो, कि हे
हमारे उद्धार करनेवाले परमेश्वर हमारा उद्धार कर, और हम को इकट्ठा करके
अन्यजातियोंसे छुड़ा, कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरी स्तुति
करते हुए तेरे विषय बड़ाई करें। 36 अनादिकाल से अनन्तकाल तक इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा धन्य है। तब सब प्रजा ने आमीन कहा : और यहोवा की स्तुति
की। 37 तब उस ने वहां अर्यात् यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने आसाप

और उसके भाइयोंको छोड़ दिया, कि प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार वे सन्दूक
के साम्हने नित्य सेवा टहल किया करें ! 38 और अड़सठ भाइयोंसमेत ओबेदेदोम
को, और द्वारपालोंके लिथे यदूतून के पुत्र ओबेदेदोम और होसा को छोड़ दिया। 39
फिर उस ने सादोक याजक और उसके भाई याजकोंको यहोवा के निवास के
साम्हने, जो गिबोन के ऊंचे स्यान में या, ठहरा दिया, 40 कि वे नित्य सवेरे और
सांफ को होमबलि की वेदी पर यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और उन सब के
अनुसार किया करें, जो यहोवा की य्यवस्या में लिखा है, जिसे उस ने इस्राएल को
दिया या। 41 और उनके संग उस ने हेमान और यदूतून और दूसरोंको भी जो
नाम लेकर चुने गए थे ठहरा दिया, कि यहोवा की सदा की करुणा के कारण
उसका धन्यवाद करें। 42 और उनके संग उस ने हेमान और यदूतून को
बजानेवालोंके लिथे तुरहियां और फांफें और परमेश्वर के गीत गाने के लिथे बाजे
दिए, और यदूतून के बेटोंको फाटक की रखवाली करने को ठहरा दिया। 43
निदान प्रजा के सब लोग अपके अपके घर चले गए, और दाऊद अपके घराने को
आशीर्वाद देने लौट गया।

1 इतिहास 17

1 जब दाऊद अपके भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नबी से कहा, देख,
मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू
में रहता है। 2 नातान ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि
परमेश्वर तेरे संग है। 3 उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास
पहुंचा, जाकर मेरे दास दाऊद से कह, 4 यहोवा योंकहता है, कि मेरे निवास के

लिथे तू घर बनवाने न पाएगा। 5 क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियोंको मिस्र से
ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परन्तु एक तम्बू से दूसरे
तम्बू को ओर एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूँ। 6 जहां जहां
मैं ने सब इस्राएलियोंके बीच आना जाना किया, क्या मैं ने इस्राएल के न्यायियोंमें
से जिनको मैं ने अपक्की प्रजा की चरवाही करने को ठहराया या, किसी से ऐसी
बात कभी कहीं, कि तुम लोगोंने मेरे लिथे देवदारु का घर क्योंनहीं बनवाया? 7 सो
अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि मैं ने
तो तुझ को भेड़शाला से और भेड़-बारियोंके पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से
बुला लिया, कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए; 8 और जहां कहीं तू आया
और गया, वहां मैं तेरे संग रहा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे साम्हने से नष्ट किया
है। अब मैं तेरे नाम को पृथ्वी के बड़े बड़े लोगोंके नामो के समान बड़ा कर दूंगा। 9
और मैं अपक्की प्रजा इस्राएल के लिथे एक स्यान ठहराऊंगा, और उसको स्यिर
करूंगा कि वह अपके ही स्यान में बसी रहे और कभी चलायमान न हो; और
कुटिल लोग उनको नाश न करने पाएंगे, जैसे कि पहिले दिनोंमें करते थे; 10 उस
समय भी जब मैं अपक्की प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता या; सो मैं तेरे
सब शत्रुओं को दबा दूंगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूँ, कि यहोवा तेरा घर
बनाथे रखेगा। 11 जब तेरी आयु पूरी हो जाथेगी और तुझे अपके पितरोंके संग
जाना पकेगा, तब मैं तेरे बाद तेरे वंश को जो तेरे पुत्रोंमें से होगा, खड़ा करके
उसके राज्य को स्यिर करूंगा। 12 मेरे लिए एक घर वही बनाएगा, और मैं उसकी
राजगद्दी को सदैव स्यिर रखूंगा। 13 मैं उसका पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र
ठहरेगा; और जैसे मैं ने अपक्की करुणा उस पर से जो तुझ से पहिले या हटाई,

वैसे मैं उस पर से न हटाऊंगा, 14 वरन मैं उसको अपके घर और अपके राज्य में
सदैव स्यिर यखूंगा और उसकी राजगद्दी सदैव अटल रहेगी। 15 इन सब
बातोंऔर इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया। 16 तब दाऊद
राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा, हे यहोवा परमेश्वर !
मैं क्या हूँ? और मेरा घराना क्या है? कि तू ने मुझे यहां तक पहुंचाया है? 17 और
हे परमेश्वर ! यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई, क्योंकि तू ने अपके दास के घराने
के विषय भविष्य के बहुत दिनोंतक की चर्चा की है, और हे यहोवा परमेश्वर ! तू ने
मुझे ऊंचे पद का मतुष्य सा जाना है। 18 जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है,
उसके विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? तू तो अपके दास को जानता
है। 19 हे यहोवा ! तू ने अपके दास के निमित्त और अपके मन के अनुसार यह बड़ा
काम किया है, कि तेरा दास उसको जान ले। 20 हे यहोवा ! जो कुछ हम ने अपके
कानोंसे सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ और कोई
परमेश्वर है। 21 फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर में
एक ही जाति है, उसे परमेश्वर ने जाकर अपक्की निज प्रजा करने को छुड़ाया,
इसलिथे कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे, और अपक्की प्रजा
के साम्हने से जो तू ने मिस्र से छुड़ा ली यी, जाति जाति के लोगोंको निकाल दे।
22 क्योंकि तू ने अपक्की प्रजा इस्राएल को अपक्की सदा की प्रजा होने के लिथे
ठहराया, और हे यहोवा ! तू आप उसका परमेश्वर ठहरा। 23 इसलिथे, अब हे
यहोवा, तू ने जो वचन अपके दास के और उसके घराने के विषय दिया है, वह
सदैव अटल रहे, और अपके वचन के अनुसार ही कर। 24 और तेरा नाम सदैव
अटल रहे, और यह कहकर तेरी बड़ाई सदा की जाए, कि सेनाओं का यहोवा

इस्राएल का परमेश्वर है, वरन वह इस्राएल ही के लिथे परमेश्वर है, और तेरा दास
दाऊद का घराना तेरे साम्हने स्थिर रहे। 25 क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू ने यह
कहकर अपके दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूंगा, इस कारण तेरे
दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाब हुआ है। 26 और अब हे यहोवा तू ही
परमेश्वर है, और तू ने अपके दास को यह भलाई करने का वचन दिया है। 27 और
अब तू ने प्रसन्न होकर, अपके दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे
सम्मुख सदैव बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिथे वह
सदैव आशीषित बना रहे।

1 इतिहास 18

1 इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियोंको जीतकर अपके अधीन कर लिया, और
गांवोंसमेत गत नगर को पलिश्तियोंके हाथ से छीन लिया। 2 फिर उस ने
मोआबियोंका भी जीत लिया, और मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट लाने लगे।
3 फिर जब सोबा का राजा हदरेजेर परात महानद के पास अपके राज्य स्थिर
करने को जा रहा या, तब दाऊद ने उसको हमात के पास जीत लिया। 4 और
दाऊद ने उससे एक हजार रय, सात हजार सवार, और बीस हजार पियादे हर
लिए, और दाऊद ने सब रयवाले घेड़ोंके सुम की नस कटवाई, परन्तु एक सौ
रयवाले धेड़े बचा रखे। 5 और जब दमिश्क के अरामी, सोबा के राजा हदरेजेर की
सहाथता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियोंमें से बाईस हजार पुरुष मारे। 6
तब दाऊद ने दमिष्क के अराम में सिपाहियोंकी चौकियां बैठाई; सो अरामी दाऊद
के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता, वहां वहां यहोवा

उसको जय दिलाता या। 7 और हदरेजेर के कर्मचारियोंके पास सोने की जो ढालें
यीं, उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को आया। 8 और हदरेजेर के तिभत और कून
नाम नगरोंसे दाऊद बहुत सा पीतल ले आया; और उसी से सुलेमान ने पीतल के
हौद और खम्भोंऔर पीतल के पात्रोंको बनवाया। 9 जब हमात के राजा तोऊ ने
सुना, कि दाऊद ने सोबा के राजा हदरेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, 10
तब उस ने हदोराम नाम अपके पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल झेम
पूछने और उसे बधाई देने को भेजा, इसलिथे कि उस ने हदरेजेर से लड़कर उसे
जीत लिया या; (क्योंकि हदरेजेर तोऊ से लड़ा करता या) और हदोराम सोने
चांदी और पीतल के सब प्रकार के पात्र लिथे हुए आया। 11 इनको दाऊद राजा ने
यहोवा के लिथे पवित्र करके रखा, और वैसा ही उस सोने-चांदी से भी किया जिसे
सब जातियो से, अर्यात् एदोमियोंमोआबियों, अम्मोनियों, पलिश्तियों, और
अमालेकियोंसे प्राप्त किया या। 12 फिर यरूयाह के पुत्र अबीशै ने लान की तराई में
अठारह हजार एदोमियोंको मार लिया। 13 तब उस ने एदोम में सिपाहियोंकी
चौकियां बैठाई; और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहां जहां
जाता या वहां वहां यहोवा उसको जय दिलाता या। 14 दाऊद तो सारे इस्राएल पर
राज्य करता या, और वह अपक्की सब प्रजा के साय न्याय और धर्म के काम
करता या। 15 और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब या; इतिहास का
लिखनेवाला अहीलूद का पुत्र यहोशापात या। 16 प्रधान याजक, अहीतूब का पुत्र
सादोक और एब्यातार का पुत्र अबीमेलेक थे; मंत्री शबशा या। 17 करेतियोंऔर
पकेतियोंका प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह या; और दाऊद के पुत्र राजा के पास
मुखिथे होकर रहते थे।

1 इतिहास 19

1 इसके बाद अम्मोनियोंका राजा नाहाश मर गया, और उसका पुत्र उसके स्यान
पर राजा हुआ। 2 तब दाऊद ने यह सोचा, कि हानून के पिता नाहाश ने जो मुझ
पर प्रीति दिखाई यी, इसलिथे मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊंगा। तब दाऊद ने उसके
पिता के विषय शांति देने के लिथे दूत भेजे। और दाऊद के कर्पचारी
अम्मोनियोंके देश में हानून के पास उसे शांति देने को आए। 3 परन्तु
अम्मोनियोंके हाकिम हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेवाले
भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे हैं?
क्या उसके कर्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नहीं आए, कि ढूंढ़-ढांढ़ करें और नष्ट
करें, और देश का भेद लें? 4 तब हानून ने दाऊद के कर्मचारियोंको पकड़ा, और
उनके बाल मुड़वाए, और आधे वस्त्र अर्यात् नितम्ब तक कटवाकर उनको जाने
दिया। 5 तब कितनोंने जाकर दाऊद को बता दिया, कि उन पुरुषोंके साय कैसा
बर्ताव किया गया, सो उस ने लोगोंको उन से मिलने के लिथे भेजा क्योंकि वे पुरुष
बहुत लजाते थे। और राजा ने कहा, जब तक तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ न जाएं, तब
तक यरीहो में ठहरे रहो, और बाद को लौट आना। 6 जब अम्मोनियोंने देखा, कि
हम दाऊद को घिनौने लगते हैं, तब हानून और अम्मोनियोंने एक हजार
किक्कार चांदी, अरम्नहरैम और अरम्माका और सोबा को भेजी, कि रय और
सवार किराथे पर बुलाएं। 7 सो उन्होंने बत्तीस हजार रय, और माका के राजा और
उसकी सेना को किराथे पर बुलाया, और इन्होंने आकर मेदबा के साम्हने, अपके
डेरे खड़े किए। और अम्मोनी अपके अपके नगर में से इकट्ठे होकर लड़ने को
आए। 8 यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरोंकी पूरी सेना को भेजा। 9 तब

अम्मोनी निकले और नगर के फाटक के पास पांति बान्धी, और जो राजा आए
थे, वे उन से अलग मैदान में थे। 10 यह देखकर कि आगे पीछे दोनोंओर हमारे
विरुद्ध पांति बन्धी हैं, योआब ने सब बड़े बड़े इस्राएली वीरोंमें से कितनोंको
छांटकर अरामियोंके साम्हने उनकी पांति बन्धाई; 11 और शेष लोगोंको अपके
भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया, और उन्होंने अम्मोनियोंके साम्हने पांति बान्धी।
12 और उस ने कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहाथता
करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें, तो मैं तेरी सहाथता करूंगा।
13 तू हियाब बान्ध और हम सब अपके लोगोंऔर अपके परमेश्वर के नगरोंके
निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे, वैसा ही करेगा। 14
तब योआब और जो लोग उसके साय थे, अरामियोंसे युद्ध करने को उनके साम्हने
गए, और वे उसके साम्हने से भागे। 15 यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं,
अम्मोनी भी उसके भाई अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब
योआब यरूशलेम को लौट आया। 16 फिर यह देखकर कि वे इस्राएलियोंसे हार
गए हैं अरामियोंने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियोंको बुलवाया, और
हदरेजेर के सेनापति शोपक को अपना प्रधान बनाया। 17 इसका समाचार पाकर
दाऊद ने सब इस्राएलियोंको इकट्ठा किया, और यरदन पार होकर उन पर चढ़ाई
की और उनके विरुद्ध पांति बन्धाई, तब वे उस से लड़ने लगे। 18 परन्तु अरामी
इस्राएलियोंसे भागे, और दाऊद ने उन में से सात हजार रयियोंऔर चालीस हजार
प्यादोंको मार डाला, और शोपक सेनापति को भी मार डाला। 19 यह देखकर कि
वे इस्राएलियोंसे हार गए हैं, हदरेजेर के कर्मचारियोंने दाऊद से संधि की और
उसके अधीन हो गए; और अरामियोंने अम्मोनियोंकी सहाथता फिर करनी न

चाही।

1 इतिहास 20

1 फिर नथे वर्ष के आरम्भ में जब राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, तब
योआब ने भारी सेना संग ले जाकर अम्मोनियोंका देश उजाड़ दिया और आकर
रब्बा को घेर लिया; परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया; और योआब ने रब्बा को
जीतकर ढा दिया। 2 तब दाऊद ने उनके राजा का मुकुट उसके सिर से उतारकर
क्या देखा, कि उसका तौल किक्कार भर सोने का है, और उस में मणि भी जड़े थे;
और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उस ने उस नगर से बहुत सामान लूट
में पाया। 3 और उस ने उसके रहनेवालोंको निकालकर आरोंऔर लोहे के हेंगोंऔर
कुल्हाडिय़ोंसे कटवाया; और अम्मोनियोंके सब नगरोंके साय भी दाऊद ने वैसा ही
किया। तब दाऊद सब लोगोंसमेत यरूशलेम को लौट गया। 4 इसके बाद गेजेर में
पलिश्तियोंके साय युद्ध हुआ; उस समय हूशाई सिब्बकै ने सिप्पै को, जो रापा की
सन्तान या, मार डाला; और वे दब गए। 5 और पलिश्तियोंके साय फिर युद्ध हुआ;
उस में याईर के पुत्र एल्हानान ने गती गोल्यत के भाई लहमी को मार डाला,
जिसके बर्छे की छड़, जुलाहे की डोंगी के समान यी। 6 फिर गत में भी युद्ध हुआ,
और वहां एक बड़े डील का पुरुष या, जो रापा की सन्तान या, और उसके एक एक
हाथ पांव में छः छः उंगलियां अर्यात् सब मिलाकर चौबीस उंगलियां यीं। 7 जब
उस ने इस्राएलियोंको ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने
उसको मारा। 8 थे ही गत में रापा से उत्पन्न हुए थे, और वे दाऊद और उसके
सेवकोंके हाथ से मार डाले गए।

1 इतिहास 21

1 और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उसकाया कि इस्राएलियोंकी
गिनती ले। 2 तब दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमोंसे कहा, तुम जाकर
बर्शेबा से ले दान तक के इस्राएल की गिनती लेकर मुझे बताओ, कि मैं जान लूं
कि वे कितने हैं। 3 योआब ने कहा, यहोवा की प्रजा के कितने ही क्योंन हों, वह
उनको सौ गुना बढ़ा दे; परन्तु हे मेरे प्रभु ! हे राजा ! क्या वे सब राजा के अधीन
नहीं हैं? मेरा प्रभु ऐसी बात क्योंचाहता है? वह इस्राएल पर दोष लगने का कारण
क्योंबने? 4 तौभी राजा की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब योआब विदा होकर
सारे इस्राएल में घूमकर यरूशलेम को लौट आया। 5 तब योआब ने प्रजा की
गिनती का जोड़, दाऊद को सुनाया और सब तलवारिथे पुरुष इस्राएल के तो
ग्यारह लाख, और यहूदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे। 6 परन्तु उन में योआब
ने लेवी और बिन्यामीन को न गिना, क्योंकि वह राजा की आज्ञा से घुणा करता
या 7 और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी, इसलिथे उस ने इस्राएल को मारा। 8
और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, यह काम जो मैं ने किया, वह महापाप है। परन्तु
अब अपके दास का अधर्म दूर कर; मुझ से तो बड़ी मूर्खता हुई है। 9 तब यहोवा ने
दाऊद के दर्शी गाद से कहा, 10 जाकर दाऊद से कह, कि यहोवा योंकहता है, कि
मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूँ, उन में से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ
पर डालूं। 11 तब गाद ने दाऊद के पास जाकर उस से कहा, यहोवा योंकहता है,
कि जिसको तू चाहे उसे चुन ले : 12 या तो तीन वर्ष का काल पके; वा तीन महीने
तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती
रहे; वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्यात् मरी देश में फैले और

यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारोंओर विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं
अपके भेजनेवाले को क्या उत्तर दूं। 13 दाऊद ने गाद से कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा
हूँ; मैं यहोवा के हाथ में पड़ूं, क्योंकि उसकी दया बहुत बड़ी है; परन्तु मनुष्य के
हाथ में मुझे पड़ना न पके। 14 तब यहोवा ने इस्राएल में मरी फैलाई, और इस्राएल
में सत्तर हजार पुरुष मर मिटे। 15 फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम को भी उसे
नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर या, कि यहोवा दु:ख देने से खेदित
हुआ, और नाश करनेवाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच ले। और
यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा या। 16 और दाऊद ने
आंखें उठाकर देखा, कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर
बढ़ाई हुई एक तलवार लिथे हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरनिथे
टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे। 17 तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, जिस ने प्रजा
की गिनती लेने की आज्ञा दी यी, वह क्या मैं नहीं हूँ? हां, जिस ने पाप किया और
बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूँ। परन्तु इन भेड़-बकरियोंने क्या किया है?
इसलिथे हे मेरे परमेश्वर यहोवा ! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो, परन्तु
तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो, कि वे मारे जाएं। 18 तब यहोवा के दूत ने गाद को
दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी, कि दाऊद चढ़कर यबूसी ओर्नान के खलिहान में
यहोवा की एक वेदी बनाए। 19 गाद के इस वचन के अनुसार जो उस ने यहोवा के
नाम से कहा या, दाऊद चढ़ गया। 20 तब ओर्नान ने पीछे फिर के दूत को देखा,
और उसके चारोंबेटे जो उसके संग थे छिप गए, ओर्नान तो गेहूं दांवता या। 21
जब दाऊद ओर्नान के पास आया, तब ओर्नान ने दृष्टि करके दाऊद को देखा और
खलिहान से बाहर जाकर भूमि तक फुककर दाऊद को दण्डवत किया। 22 तब

दाऊद ने ओर्नान से कहा, उस खलिहान का स्यान मुझे दे दे, कि मैं उस पर यहोवा
को एक वेदी बनाऊं, उसका पूरा दाम लेकर उसे पुफ को दे, कि यह विपित्त प्रजा
पर से दूर की जाए। 23 ओर्नान ने दाऊद से कहा, इसे ले ले, और मेरे प्रभु राजा को
जो कुछ भाए वह वही करे; सुन, मैं तुझे होमबलि के लिथे बैल और ईधन के लिथे
दांबने के हयियार और अन्नबलि के लिथे गेहूं, यह सब मैं देता हूँ। 24 राजा दाऊद
ने ओर्नान से कहा, सो नहीं, मैं अवश्य इसका पूरा दाम ही देकर इसे मोल लूंगा;
जो तेरा है, उसे मैं यहोवा के लिथे नहीं लूंगा, और न सेंतमेंत का होमबलि
चढ़ाऊंगा। 25 तब दाऊद ने उस स्यान के लिथे ओर्नान को छ: सौ शेकेल सोना
तौलकर दिया। 26 तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाई और होमबलि
और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से प्रार्यना की, और उस ने होपबलि की वेदी पर
स्वर्ग से आग गिराकर उसकी सुन ली। 27 तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दी; और
उस ने अपक्की तलवार फिर म्यान में कर ली। 28 यह देखकर कि यहोवा ने
यबूसी ओर्नान के खलिहान में मेरी सुन ली है, दाऊद ने उसी समय वहां बलिदान
किया। 29 यहोवा का निवास जो मूसा ने जंगल में बनाया या, और होमबलि की
वेदी, थे दोनोंउस समय गिबोन के ऊंचे स्यान पर थे। 30 परन्तु दाऊद परमेश्वर
के पास उसके साम्हने न जा सका, क्योंकि वह यहोवा के दूत की तलवार से डर
गया या।

1 इतिहास 22

1 तब दाऊद कहने लगा, यहोवा परमेश्वर का भवन यही है, और इस्राएल के लिथे
होमबलि की वेदी यही है। 2 तब दाऊद ने इस्राएल के देश में जो परदेशी थे उनको

इकट्ठा करने की आज्ञा दी, और परमेश्वर का भवन बनाने को पत्यर गढ़ने के
लिथे राज ठहरा दिए। 3 फिर दाऊद ने फाटकोंके किवाड़ोंकी कीलोंऔर जोड़ोंके
लिथे बहुत सा लोहा, और तौल से बाहर बहुत पीतल, 4 और गिनती से बाहर
देवदार के पेड़ इकट्ठे किए; क्योंकि सीदोन और सोर के लोग दाऊद के पास बहुत
से देवदार के पेड़ लाए थे। 5 और दाऊद ने कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और
लड़का है, और जो भवन यहोवा के लिथे बनाना है, उसे अत्यन्त तेजोमय और
सब देशोंमें प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिथे; इसलिथे मैं उसके लिथे तैयारी
करूंगा। सो दाऊद ने मरने से पहिले बहुत तैयारी की। 6 फिर उस ने अपके पुत्र
सुलैमान को बुलाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे भवन बनाने की आज्ञा
दी। 7 दाऊद ने अपके पुत्र सुलैमान से कहा, मेरी मनसा तो यी, कि अपके
परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं। 8 परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, कि तू ने लोहू बहुत बहाथा और बढ़े बड़े युद्ध किए हैं, सो तू मेरे नाम
का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाथा
है। 9 देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्त पुरुष होगा; और मैं उसको
चारोंओर के शत्रुओं से शान्ति दूंगा; उसका नाम तो सुलैमान होगा, और उसके
दिनोंमें मैं इस्राएल को शान्ति और चैन दूंगा। 10 वही मेरे नाम का भवन
बनाएगा। और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उसका पिता ठहरूंगा, और उसकी
राजगद्दी को मैं इस्राएल के ऊपर सदा के लिथे स्यिर रखूंगा। 11 अब हे मेरे पुत्र,
यहोवा तेरे संग रहे, और तू कृतार्य होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका भवन बनाना। 12 अब यहोवा तुझे बुद्धि और
समझ दे और इस्राएल का अधिक्कारनी ठहरा दे, और तू अपके परमेश्वर यहोवा

की य्यवस्या को मानता रहे। 13 तू तब ही कृतार्य होगा जब उन विधियोंऔर
नियमोंपर चलने की चौकसी करेगा, जिनकी आज्ञा यहोवा ने इस्राएल के लिथे
मूसा को दी यी। हियाब बान्ध और दृढ़ हो। मत डर; और तेरा मन कच्चा न हो।
14 सुन, मैं ने अपके क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिथे एक लाख किक्कार
सोना, और दस लाख किक्कार चान्दी, और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा
किया है, कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है; और लकड़ी और पत्यर मैं ने
इकट्ठे किए हैं, और तू उनको बढ़ा सकेगा। 15 और तेरे पास बहुत कारीगर हैं,
अर्यात् पत्यर और लकड़ी के काटने और गढ़नेवाले वरन सब भांति के काम के
लिथे सब प्रकार के प्रवीण पुरुष हैं। 16 सोना, चान्दी, पीतल और लोहे की तो कुछ
गिनती नहीं है, सो तू उस काम में लग जा ! यहोवा तेरे संग नित रहे। 17 फिर
दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमोंको अपके पुत्र सुलैमान की सहाथता करने की
आज्ञा यह कहकर दी, 18 कि क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं
है? क्या उस ने नुम्हें चारोंओर से विश्रम नहीं दिया? उस ने तो देश के
निवासिक्कों मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के
साम्हने दबा हुआ है। 19 सब तन मन से अपके परमेश्वर यहोवा के पास जाया
करो, और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्यान बनाना, कि तुम यहोवा
की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा
के नाम का बननेवाला है।

1 इतिहास 23

1 दाऊद तो बूढ़ा वरन बहुत बूढ़ा हो गया या, इसलिथे उस ने अपके पुत्र सुलैमान

को इसगाएल पर राजा नियुक्त कर दिया। 2 तब उस ने इस्राएल के सब
हाकिमोंऔर याजकोंऔर लेमियोंको इकट्ठा किया। 3 और जितने लेवीय तीस
वर्ष के और उस से अधिक अवस्या के थे, वे गिने एए, और एक एक पुरुष के
गिनने से उनकी गिनती अड़तीस हजार हुई। 4 इन में से चौबीस हजार तो यहोवा
के भवन का काम चलाने के लिथे नियुक्त हुए, और छ: हजार सरदार और न्यायी।
5 और चार हजार द्वारपाल नियुक्त हुए, और चार हजार उन बाजोंसे यहोवा की
स्तुति करने के लिथे ठहराए गए जो दाऊद ने स्तुति करने के लिथे बनाए थे। 6
फिर दाऊद ने उनको गेर्शोन, कहात और मरारी नाम लेवी के पुत्रोंके अनुसार
दलोंमें अलग अलग कर दिया। 7 गेर्शोनियोंमें से तो लादान और शिमी थे। 8 और
लादान के पुत्र : सरदार यहीएल, फिर जेताम और योएल थे तीन थे। 9 और शिमी
के पुत्र : शलेमीत, हजीएल और हारान से तीन थे। लादान के कुल के पूर्वजोंके
घरानोंके मुख्य पुरुष थे ही थे। 10 फिर शिमी के पुत्र : यहत, जीना, यूश, और
वरीआ के पुत्र शिमी यही चार थे। 11 यहत मुख्य या, और जीजा दूसरा; यूश और
बरीआ के वहुत बेटे न हुए, इस कारण वे सब मिलकर पितरोंका एक ही घराना
ठहरे। 12 कहात के पुत्र : अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल चार। अम्राम के
पुत्र : हारून और मूसा। 13 हारून तो इसलिथे अलग किया गया, कि वह और
उसके सन्तान सदा परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र ठहराएं, और सदा यहोवा के
सम्मुख धूप जलाया करें और उसकी सेवा टहल करें, और उसके नाम से
आशीर्वाद दिया करें। 14 परन्तु परमेश्वर के भक्त मूसा के पुत्रोंके नाम लेवी के गोत्र
के बीच गिने गए। 15 मूसा के पुत्र, गेर्शोम और एलीएजेर। 16 और गेर्शोम का पुत्र
शबूएल मुख्य या। 17 और एलीएजेर के पुत्र : रहब्याह मुख्य; और एलीएजेर के

और कोई पुत्र न हुआ, परन्तु रहब्याह के बहुत से बेटे हुए। 18 यिसहार के पुत्रें में
से शलोमीत मुख्य ठहरा। 19 हेब्रोन के पुत्र : यरीय्याह मुख्य, दूसरा अमर्याह,
तीसरा यहजीएल, और चौया यकमाम या। 20 उज्जीएल के पुत्रें में से मुख्य तो
मीका और दूसरा यिश्शिय्याह या। 21 मरारी के पुत्र : महली और मूशी। महली के
पुत्र : एलीआजर और कीश थे। 22 एलीआजर पुत्रहीन मर गया, उसके केवल
बेटियां हुई; सो कीश के पुत्रोंने जो उनके भाई थे उन्हें ब्याह लिया। 23 मूशी के पुत्र
: महली; एदोर और यरेमोत यह तीन थे। 24 लेवीय पितरोंके घरानोंके मुख्य
पुरुष थे ही थे, थे नाम ले लेकर, एक एक पुरुष करके गिने गए, और बीस वर्ष की
वा उस से अधिक अवस्या के थे और यहोवा के भवन में सेवा टहल करते थे। 25
क्योंकि दाऊद ने कहा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपक्की प्रजा को विश्रम
दिया है, और वह तो यरूशलेम में सदा के लिथे बस गया है। 26 और लेवियोंको
निवास और उस की उपासना का सामान फिर उठाना न पकेगा । 27 क्योंकि
दाऊद की पिछली आज्ञाओं के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्या के
लेवीय गिने गए। 28 क्योंकि उनका काम तो हारून की सन्तान की सेवा टहल
करना या, अर्यात यह कि वे आंगनोंऔर कोठरियोंमें, और सब पवित्र वस्तुओं के
शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन की उपासना के सब कामोंमें सेवा टहल करें।
29 और भेंट की रोटी का, अन्नबलियोंके मैदे का, और अखमीरी पपडिय़ोंका, और
तवे पर बनाए हुए और सने हुए का, और मापके और तौलने के सब प्रकार का
काम करें। 30 और प्रति भोर और प्रति सांफ को यहोवा का धन्यवाद और उसकी
स्तुति करने के लिथे खड़े रहा करें। 31 और विश्रमदिनोंऔर नथे चान्द के दिनों,
और नियत पर्व्वों में गिनती के नियम के अनुसार नित्य यहोवा के सब

होपबलियोंको बढ़ाएं। 32 और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले
नम्बू और पवित्रस्यान की रझा करें, और अपके भाई हारूनियोंके सौंपे हुए काम
को चौकसी से करें।

1 इतिहास 24

1 फिर हारून की सन्तान के दल थे थे। हारून के पुत्र तो नादाब, अबीहू,
एलीआजर और ईतामार थे। 2 परन्तु नादाब और अबीहू अपके पिता के साम्हने
पुत्रहीन मर गए, इस लिथे याजक का काम एलीआजर और ईतामार करते थे। 3
और दाऊद ने एलीआजर के वंश के सादोक और ईतामार के वंश के अहांमेलेक
की सहाथता से उनको अपक्की अपक्की सेवा के अनुसार दल दल करके बांट
दिया। 4 और एलीआजर के वंश के मुख्य पुरुष, ईतामार के वंश के मुख्य पुरुषोंसे
अधिक थे, और वे योंबांटे गए अर्यात् एलीआजर के वंश के पितरोंके घरानोंके
सोलह, और ईतामार के वंश के पितरोंके घरानोंके आठ मुख्य पुरुष थे। 5 तब वे
चिट्ठी डालकर बराबर बराबर बांटे गए, क्योंकि एलीआजर और ईतामार दोनोंके
वंशोंमें पवित्रस्यान के हाकिम और परमेश्वर के हाकिम नियुक्त हुए थे। 6 और
नतनेल के पुत्र शमायाह ने जो लेवीय या, उनके नाम राजा और हाकिमोंऔर
सादोक याजक, और एब्यातार के पुत्र अहीमेलेक और याजकोंऔर लेवियोंके
पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुषोंके साम्हने लिखे; अर्यात् पितरोंका एक घराना तो
एलीआजर के वंश में से और एक ईतामार के वंश में से लिया गया। 7 पहिली
चिट्ठी तो यहोयारीब के, और दूसरी यदायाह, 8 तीसरी हारीम के, चौयी सोरीम
के, 9 पांचक्कीं मल्किय्याह के, छठवीं मिय्यामीन के, 10 सातवीं हक्कोस के,

आठवीं अबिय्याह के, 11 नौवीं थेशू के, दसवीं शकन्याह के, 12 ग्यारहवीं
एल्याशीब के, बारहवीं याकीम के, 13 तेरहवीं हुप्पा के, चौदहवीं थेसेबाब के, 14
पन्द्रहवीं बिल्गा के, लोलहवीं इम्मेर के, 15 सतरहवीं हेजीर के, अठारहवीं
हप्पित्सेस के, 16 उन्नीसवीं पतह्याह के, बीसवीं यहेजकेल के, 17 इक्कीसवीं
याकीन के, बाईसवीं गामूल के, 18 तेईसवीं दलायाह के, और चौबीसवीं साज्याह
के नाम पर निकलीं। 19 उनकी सेवकाई के लिथे उनका यही नियम ठहराया गया
कि वे अपके उस नियम के अनुसार जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के
अनुसार उनके मूलपुरुष हारून ने चलाया या, यहोवा के भवन में जाया करें। 20
बचे हुए लेवियोंमें से अम्राम के वंश में से शूबाएल, शूबाएल के वंश में से
थेहदयाह। 21 बचा रहब्याह, सोरहब्याह, के वंश में से यिश्शिय्याह मुख्य या। 22
इसहारियोंमें से शलोमोत और हालोमोत के वंश में से यहत। 23 और हेब्रोन के
वंश में से मुख्य तो यरिय्याह, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौया
यकमाम। 24 उज्जीएल के वंश में से मीका और मीका के वंश में से शामीर। 25
मीका का भाई यिश्शिय्याह, यिश्शिय्याह के वंश में से जकर्याह। 26 मरारी के पुत्र
महली और मूशी और याजिय्याह का पुत्र बिनो या। 27 मरारी के पुत्र : याजिय्याह
से बिनो और शोहम, जक्कू और इब्री थे। 28 महली से, एलीआजर जिसके कोई
पुत्र न या। 29 कीश से कीश के वंश में यरह्मोल। 30 और मूशी के पुत्र, महली,
एदेर और यरीमोत। अपके अपके पितरो के घरानोंके अनुसार थे ही लेवीय
सन्तान के थे। 31 इन्होंने भी अपके भाई हारून की सन्तानोंकी नाई दाऊद राजा
और सादोक और अहीमेलेक और याजकोंऔर लेवियोंके पितरोंके घरानोंके मुख्य
पुरुषोंके साम्हने चिट्ठियां डालीं, अर्यात् मुख्य पुरुष के पितरोंका घराना उसके

छोटे भाई के पितरोंके घराने के बराबर ठहरा।

1 इतिहास 25

1 फिर दाऊद और सेनापतियोंने आसाप, हेमान और यदूतून के कितने पुत्रोंको
सेवकाई के लिथे अलग किया कि वे वीणा, सारंगी और फांफ बजा बजाकर
नबूवत करें। और इस सेवकाई के काम करनेवाले मनुष्योंकी गिनती यह यी : 2
अर्यात् आसाप के पुत्रोंमें से तो जक्कूर, योसेप, नतन्याह और अशरेला, आसाप
के थे पुत्र आसाप ही की आज्ञा में थे, जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत करता
या। 3 फिर यदूतून के पुत्रोंमें से गदल्याह, सरीयशायाह, हसब्याह, मत्तित्याह, थे
ही छः अपके पिता यदूतून की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति
कर करके नबूवत करता या, वीणा बजाते थे। 4 और हेमान के पुत्रोंमें से,
मुक्किय्याह, मत्तन्याह, लज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी,
एलीआता, गिद्दलती, रोममतीएजेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर और
महजीओत। 5 परमेश्वर की प्रतिज्ञानुकूल जो उसका नाम बढ़ाने की यी, थे सब
हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी या; क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे
और तीन बेटियां दीं यीं। 6 थे सब यहोवा के भवन में गाने के लिथे अपके अपके
पिता के अधीन रहकर, परमेश्वर के भवन, की सेवकाई में फांफ, सारंगी और
वीणा बजाते थे। और आसाप, यदूतून और हेमान राजा के अधीन रहते थे। 7 इन
सभोंकी गिनती भाइयोंसमेत जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से
निपुण थे, दो सौ अठासी यी। 8 और उन्होंने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरू, क्या
चेला, अपक्की अपक्की बारी के लिथे चिट्ठी डाली। 9 और पहिली चिट्ठी

आसाप के बेटोंमें से योसेप के नाम पर निकली, दूसरी गदल्याह के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 10 तीसरी जक्कूर के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 11 चौयी यिस्री के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 12 पांचक्कीं नतन्याह के नाम
पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 13 छठीं बुक्कियाह के
नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 14 सातवीं यसरेला के
नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 15 आठवीं यशायाह
के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 16 नौवीं मतन्याह
के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई समेत बारह थे। 17 दसवीं शिमी के
नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 18 ग्यारहवीं अजरेल
के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 19 बारहवीं
हशब्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 20
तेरहवी शूबाएल के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।
21 चौदहवीं मत्तिय्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह
थे। 22 पन्द्रहवीं यरेमोत के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत
बारह थे। 23 सोलहवीं हनन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस
समेत बारह थे। 24 सत्रहवीं योशबकाशा के नाम पर निकली जिसके पुत्र और
भाई उस समेत बारह थे। 25 अठारहवीं हरानी के नाम पर निकली जिसके पुत्र
और भाई उस समेत बारह थे। 26 उन्नीसवीं मल्लोती के नाम पर निकली,
जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 27 बीसवीं इलिय्याता के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 28 इक्कीसवीं होतीर के नाम

पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 29 बाईसवीं गिद्दलती के
नाम पर तिकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 30 तेईसवीं
महजीओत के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। 31
और चौबीसवीं चिट्ठी रोममतीएजेर के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई
उस समेत बारह थे।

1 इतिहास 26

1 फिर द्वारपालोंके दल थे थे : कोरहियोंमें से तो मशेलेम्याह, जो कोरे का पुत्र और
आसाप के सन्तानोंमेंसे या। 2 और मशेलेम्याह के पुत्र हुए, अर्यात् उसका जेठा
जकर्याह दूसरा यदीएल, तीसरा जवद्याह, 3 चौया यतीएल, पांचवां एलाम, छठवां
यहोहानान और सातवां एल्यहोएनै। 4 फिर ओबेदेदोम के भी पुत्र हुए, उसका
जेठा शमायाह, दूसरा यहोजाबाद, तीसरा योआह, चौया साकार, पांचवां नतनेल,
5 छठवां अम्मीएल, सातवां इस्साकार और आठवां पुल्लतै, क्योंकि परमेश्वर ने
उसे आशीष दी यी। 6 और उसके पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो शूरवीर
होने के कारण अपके पिता के घराने पर प्रभुता करते थे। 7 शमायाह के पुत्र थे थे,
अर्यात् ओती, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद और उनके भाई एलीहू और समक्याह
बलवान पुरुष थे। 8 थे सब आबेदेदोम की सन्तान में से थे, वे और उनके पुत्र और
भाई इस सेवकाई के लिथे बलवान और शक्तिमान थे; थे ओबेदेदोमी बासठ थे। 9
और मशेलेम्याह के पुत्र और भाई अठारह थे, जो बलवान थे। 10 फिर मरारी के
वंश में से होसा के भी पुत्र थे, अर्यात् मुख्य तो शिम्री (जिसको जेठा न होने पर भी
उसके पिता ने मुख्य ठहराया), 11 दूसरा हिल्किय्याह, तीसरा तबल्याह और

चौया जकर्याह या; होसा के सब पुत्र और भाई मिलकर तेरह थे। 12 द्वारपालोंके
दल इन मुख्य पुरुषोंके थे, थे अपके भाइयोंके बराबर ही यहोवा के भवन में सेवा
टहल करते थे। 13 इन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, अपके अपके पितरोंके घरानोंके
अनुसार एक एक फाटक के लिथे चिट्ठी डाली। 14 पूर्व की ओर की चिट्ठी
शेलेम्याह के नाम पर निकली। तब उन्होंने उसके पुत्र जकर्याह के नाम की
चिट्ठी डाली (वह बुद्धिमान मंत्री या) और चिट्ठी उत्तर की ओर के लिथे
निकली। 15 दक्खिन की ओर के लिथे ओबोदेदोम के नाम पर चिट्ठी निकली,
और उसके बेटोंके नाम पर खजाने की कोठरी के लिथे। 16 फिर शुप्पीम और
होसा के नामोंकी चिट्ठी पश्चिम की ओर के लिथे निकली, कि वे शल्लेकेत नाम
फाटक के पास चढ़ाई की सड़क पर आम्हने साम्हने चौकीदारी किया करें। 17 पूर्व
ओर जो छ: लेवीय थे, उत्तर की ओर प्रतिदिन चार, दक्खिन की ओर प्रतिदिन
चार, और खजाने की कोठरी के पास दो ठहरे। 18 पश्चिम ओर के पर्बार नाम
स्यान पर ऊंची सड़क के पास तो चार और पर्बार के पास दो रहे। 19 थे
द्वारपालोंके दल थे, जिन में से कितने तो कोरह के थे और कितने मरारी के वंश के
थे। 20 फिर लेवियोंमें से अहिय्याह परमेश्वर के भवन और पवित्र की हुई
वस्तुओं, दोनोंके भण्डारोंका अधिक्कारनी नियुक्त हुआ। 21 थे लादान की सन्तान
के थे, अर्यात् गेर्शोनियोंकी सन्तान जो लादान के कुल के थे, अर्यात् लादान और
गेर्शोनी के पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुष थे, अर्यात् यहोएली । 22 यहोएली के पुत्र
थे थे, अर्यात् जेताम और उसका भाई योएल जो यहोवा के भवन के खजाने के
अधिक्कारनी थे। 23 अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियोंऔर उज्जीएलियोंमें से।
24 और शबूएल जो मूसा के पुत्र गेर्शोम के वंश का या, वह खजानोंका मुख्य

अधिक्कारनी या। 25 और उसके भाइयोंका वृत्तान्त यह है : एलीआजर के कुल में
उसका पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र यशायाह, यशायाह का पुत्र योराम, योराम
का पुत्र जिक्री, और जिक्री का पुत्र शलोमोत या। 26 यही शलोमोत अपके
भाइयोंसमेत उन सब पवित्र की हुई पस्तुओं के भण्डारोंका अधिक्कारनी या, जो
राजा दाऊद और पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरुषोंऔर सहस्रपतियोंऔर
शतपतियोंऔर मुख्य सेनापतियोंने पवित्र की यीं। 27 जो लूट लड़ाइयोंमें मिलती
यी, उस में से उन्होंने यहोवा का भवन दृढ़ करने के लिथे कुछ पवित्र किया। 28
वरन जितना शमूएल दर्शी, कीश के पुत्र शाऊल, नेर के पुत्र अब्नेर, और सरूयाह
के पुत्र योआब ने पवित्र किया या, और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र कर रखा या,
वह सब शलोमोत और उसके भाइयोंके अधिक्कारने में या। 29 यिसहारियोंमें से
कनन्याह और उसके पुत्र, इस्राएल के देश का काम अर्यात् सरदार और न्यायी का
काम करने के लिथे नियुक्त हुए। 30 और हेब्रोनियोंमें से हशब्याह और उसके भाई
जो सत्रह सौ बलवान पुरुष थे, वे यहोवा के सब काम और राजा की सेवा के विषय
यरदन की पश्चिम ओर रहनेवाले इस्राएलियोंके अणिकारी ठहरे। 31 हेब्रोनियोंमें
से यरिय्याह मुख्य या, अर्यात् हेब्रोनियोंकी पीढ़ी पीढ़ी के पितरोंके घरानोंके
अनुसार दाऊद के राज्य के चालीसवें वर्ष में वे ढूंढे गए, और उन में से कई शूरवीर
गिलाद के याजेर में मिले। 32 और उसके भाई जो वीर थे, पितरोंके घरानोंके दो
हाजार सात सौ मुख्य पुरुष थे, इनको दाऊद राजा ने परमेश्वर के सब विषयोंऔर
राजा के विषय में रूबेनियों, गादियोंऔर मनश्शेके आधे गोत्र का अधिक्कारनी
ठहराया।

1 इतिहास 27

1 इस्राएलियो की गिनती, अर्यात् मितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरुषोंऔर
यहस्रपतियोंऔर शतपतियोंऔर उनके सरदारोंकी गिनती जो वर्ष भर के महीने
महीने उपस्यित होने और छुट्टी पानेवाले दलोंके सब विषयोंमें राजा की सेवा
टहल करते थे, एक एक दल में चौबीस हजार थे। 2 पहिले महीने के लिथे पहिले
दल का अधिक्कारनी जब्दीएल का पुत्र याशोबाम नियुक्त हुआ; और उसके दल में
चौबीस हजार थे। 3 वह पेरेस के वंश का या और पहिले महीने में सब
सेनापतियोंका अधिक्कारनी या। 4 और दूसरे महीने के दल का अधिक्कारनी
दोदै नाम एक अहोही या, और उसके दल का प्रधान मिक्लोत या, और उसके दल
में चौबीस हजार थे। 5 तीसरे महीने के लिथे तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का
पुत्र बनायाह या और उसके दल में चौबीस हजार थे। 6 यह वही बनायाह है, जो
तीसोंशूरोंमें वीर, और तीसोंमें श्रेष्ट भी या; और उसके दल में उसका पुत्र
अम्मीजाबाद या। 7 चौथे महीने के लिथे चौया सेनापति योआब का भाई असाहेल
या, और उसके बाद उसका पुत्र जबद्याह या और उसके दल में चौबीस हजार थे। 8
पांचवें महीने के लिथे पांचवां सेनापति यिज्राही शम्हूत या और उसके दल में
चौबीस हजार थे। 9 छठवें महीने के लिथे छठवां सेनापति तकोई इक्केश का पुत्र
ईरा या और उसके दल में चौबीस हजार थे। 10 सातवें महीने के लिथे सातवां
सेनापति एप्रैम के वंश का हेलेस पलोनी या और उसके दल में चौबीस हजार थे।
11 आठवें महीने के लिथे आठवां सेनापति जेरह के वंश में से हूशाई सिब्बकै या
और उसके दल में चौबीस हजार थे। 12 नौवें महीने के लिथे नौवां सेनापति
बिन्यामीनी अबीएजेर अनातोतवासी या और उसके दल में चौबीस हजार थे। 13
दसवें महीने के लिथे दसवां सेनापति जेरही महरै नतोपावासी या और उसके दल

में चौबीस हजार थे। 14 ग्यारहवें महीने के लिथे ग्यारहवां सेनापति एप्रैम के वंश
का बनायाह पिरातोनवासी या और उसके दल में चौबीस हजार थे। 15 बारहवें
महीने के लिथे बारहवां सेनापति ओत्नीएल के वंश का हेल्दै नतोपावासी या और
उसके दल में चौबीस हजार थे। 16 फिर इस्राएली गोत्रें के थे अधिक्कारनी थे :
अर्यात् रूबेनियोंका प्रधान जिक्री का पुत्र एलीआज़र; शिमोनियोंसे माका का पुत्र
शपत्याह। 17 लेवी से कमूएल का पुत्र हशब्याह; हारून की सन्तान का सादोक।
18 यहूदा का एलीहू नाम दाऊद का एक भाई, इस्साकार से मीकाएल का पुत्र
ओम्नी। 19 जबूलून से ओबद्याह का पुत्र यिशमायाह, नप्ताली से अज्रीएल का पुत्र
यरीमोत। 20 एप्रैम से अजज्याह का पुत्र होशे, मनश्शे से आधे गोत्र का, फ़दायाह
का पुत्र योएल। 21 गिलाद में आधे गोत्र मनश्शे से जकर्याह का पुत्र इद्दो,
बिन्यामीन से अब्नेर का पुत्र यासीएल, 22 और दान से यारोहाम का पुत्र अजरेल,
ठहरा। थे ही इस्राएल के गोत्रोंके हाकिम थे। 23 परन्तु दाऊद ने उनकी गिनती
बीस वर्ष की अवस्या के तीचे न की, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल की गिनती
आकाश के तारोंके बराबर बढ़ाने के लिथे कहा या। 24 सरूयाह का पुत्र योआब
गिनती लेने लगा, पर निपटा न सका क्योंकि ईश्वर का क्रोध इस्राएल पर भड़का,
और यह गिनती राजा दाऊद के इतिहास में नहीं लिखी गई। 25 फिर अदीएल का
पुत्र अजमावेत राज भण्डारोंका अधिक्कारनी या, और देहात और नगरोंऔर
गांवोंऔर गढ़ोंके भण्डारोंका अणिकारी उज्जिय्याह का पुत्र यहोनातान या। 26
और जो भूमि को जोतकर बोकर खेती करते थे, उनका अधिक्कारनी कलूब का
पुत्र एज्री या। 27 और दाख की बारियोंका अधिक्कारनी रामाई शिमी और दाख
की बारियोंकी उपज जो दाखमधु के भण्डारोंमें रखने के लिथे यी, उसका

अधिक्कारनी शापामी जब्दी या। 28 ओर नीचे के देश के जलपाई और गूलर के
वृझोंका अधिक्कारनी गदेरी बाल्हानान या और तेल के भण्डारोंका अधिक्कारनी
योआश या। 29 और शारोन में चरनेवाले गाय-बैलोंका अधिक्कारनी शारोनी शित्रै
या और तराइयोंके गाय-बैलोंका अधिक्कारनी अदलै का पुत्र शापात या। 30 और
ऊंटोंका अधिक्कारनी इश्माएली ओबील और गदहियोंका अधिक्कारनी
मेरोनोतवासी थेहदयाह। 31 और भैड़-बकरियोंका अधिक्कारनी हग्री याजीज या।
थे ही सब राजा दाऊद के धन सम्मत्ति के अधिक्कारनी थे। 32 और दाऊद का
भतीजा योनातान एक समझदार मंत्री और शास्त्री या, और किसी हक्मोनी का पुत्र
एहीएल राजपुत्रोंके संग रहा करता या। 33 और अहीतोपेल राजा का मंत्री या, और
एरेकी हूशै राजा का मित्र या। 34 और यहीतोपेल के बाद बनायाह का पुत्र
यहोयादा और एय्यातार मंत्री ठहराए गए। और राजा का प्रधान सेनापति योआब
या।

1 इतिहास 28

1 और दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमोंको अर्यात् गोत्रोंके हाकिमोंऔर राजा की
सेवा टहल करनेवाले दलोंके हाकिमोंको और सहस्रपतियोंऔर शतपतियोंऔर
राजा और उसके पुत्रोंके पशु आदि सब धन सम्पत्ति के अधिक्कारनेियों,
सरदारोंऔर वीरोंऔर सब शूरवीरोंको यरूशलेम में बुलवाया। 2 तब दाऊद राजा
खड़ा होकर कहने लगा, हे मेरे भाइयों! और हे मेरी प्रजा के लोगो ! मेरी सुनो, मेरी
मनसा तो यी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिथे और हम लोगोंके परमेश्वर
के चरणोंकी पीढ़ी के लिथे विश्रम का एक भवन बनाऊं, और मैं ने उसके बनाने

की तैयारी की यी। 3 परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा, तू मेरे नाम का भवन बनाने
न पाएगा, क्योंकि तू युद्ध करनेवाला है और तू ने लोहू बहाथा है। 4 तौभी इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया, कि
इस्राएल का राजा सदा बना रहूं : अर्यात् उस ने यहूदा को प्रधान होने के लिथे और
यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रोंमें से
वह मुझी को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिथे प्रसन्न हुआ। 5 और मेरे सब
पुत्रोंमें से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए हैं) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन
लिया है, कि वह इस्राएल के ऊपर यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे। 6 और
उस ने मुझ से कहा, कि तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनोंको बनाएगा,
क्योंकि मैं ने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूंगा।
7 और सदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमोंके मानने में आज कल की नाई दृढ़
रहे, तो मैं उसका राज्य सदा स्यिर रखूंगा। 8 इसलिथे अब इस्राएल के देखते
अर्यात्यहोवा की मण्डली के देखते, और अपके परमेश्वर के साम्हने, अपके
परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो; ताकि
तुम इस अच्छे देश के अधिक्कारनी बने रहो, और इसे अपके बाद अपके वंश का
सदा का भाग होने के लिथे छोड़ जाओ। 9 और हे मेरे पुत्र सुलैमान ! तू अपके
पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा
करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है
उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा; परन्तु यदि
तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिथे तुझ को छोड़ देगा। 10 अब चौकस रह,
यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्रस्यान ठहरेगा,

हियाव बान्धकर इस काम में लग जा। 11 तब दाऊद ने अपके पुत्र सुलैमान को
मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारोंअटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित
के ढकने से स्यान का नमूना, 12 और यहोवा के भवन के आंगनोंऔर चारोंओर
की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारोंऔर पवित्र की हुई वस्तुओं के
भण्डारोंके, जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे
दिए। 13 फिर याजकोंऔर लेबियोंके दलों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब
कामों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब सामान, 14 अर्यात्‌सब प्रकार की
सेवा के लिथे सोने के पात्रोंके निमित्त सोना तौलकर, और सब प्रकार की सेवा के
लिथे चान्दी के पात्रें के निमित्त चान्दी तौलकर, 15 और सोने की दीवटोंके लिथे,
और उनके दीपकोंके लिथे प्रति एक एक दीवट, और उसके दीपकोंका सोना
तौलकर और चान्दी के दीवटोंके लिथे एक एक दीवट, और उसके दीपक की
चान्दी, प्रति एक एक दीवट के काम के अनुसार तौलकर, 16 ओर भेंट की रोटी
की मेजोंके लिथे एक एक मेज का सोना तौलकर, और जान्दी की मेजोंके लिथे
चान्दी, 17 और चोखे सोने के कांटों, कटोरोंऔर प्यालोंऔर सोने की कटोरियोंके
लिथे एक एक कटोरी का सोना तौलकर, और चान्दी की कटोरियोंके लिथे एक
एक कटोरी की चान्दी तौलकर, 18 और धूप की वेदी के लिथे तपाया हुआ सोना
तौलकर, और रय अर्यत् यहोवा की वाचा का सन्दूक ढांकनेवाले और पंख फैलाए
हुए करूबोंके नमूने के लिथे सोना दे दिया। 19 मैं ने यहोवा की शक्ति से जो मुझ
को मिली, यह सब कुछ बफकर लिख दिया है। 20 फिर दाऊद ने अपके पुत्र
सुलैमान से कहा, हियाव बान्ध और दृढ़ होकर इस काम में लग जा। मत डर,
और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है, वह तेरे

संग है; और जब तक यहोवा के भवन में जितना काम करना हो वह न हो चुके,
तब तक वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा। 21 और देख परमेश्वर
के भवन के सब काम के लिथे जाजकोंऔर लेवियोंके दल ठहराए गए हैं, और सब
प्रकार की सेवा के लिथे सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेवाले बुद्धिमान पुरुष
भी तेरा साय देंगे; और हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो कुछ तू कहेगा वही
करेंगे।

1 इतिहास 29

1 फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है,
और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है; काम तो भारी है, क्योंकि यह भवन
मनुष्य के लिथे नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिथे बनेगा। 2 मैं ने तो अपक्की शक्ति
भर, अपके परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिथे सोना, चान्दी
की वस्तुओं के लिथे चान्ी, पीतल की वस्तुओं के लिथे पीतल, लोहे की वस्तुओं
के लिथे लोहा, और लकड़ी की वस्तुओं के लिथे लकड़ी, और सुलैमानी पत्यर,
और जड़ने के योग्य मणि, और पच्ची के काम के लिथे रड़ग रड़ग के नग, और
सब भांति के मणि और बहुत संगमर्मर इकट्ठा किया है। 3 फिर मेरा मन अपके
परमेश्वर के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिथे
इकट्ठा किया है, उस सब से अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चान्दी के
रूप में मेरे पास है, अपके परमेश्वर के भवन के लिथे दे देता हूँ। 4 अर्यात् तीन
हजार किक्कार ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार तपाई हुई चान्दी,
जिस से कोठरियोंकी भीतें मढ़ी जाएं। 5 और सोने की वस्तुओं के लिथे सोना,

और चान्दी की वस्तुओं के लिथे चान्दी, और कारीगरोंसे बनानेवाले सब प्रकार के
काम के लिथे मैं उसे देता हूँ। और कौन अपक्की इच्छा से यहोवा के लिथे अपके
को अर्पण कर देता है? 6 तब पितरोंके घरानोंके प्रधानोंऔर इस्राएल के गोत्रोंके
हाकिमोंऔर सहस्रपतियोंऔर शतपतियोंऔर राजा के काम के
अधिक्कारनेियोंने अपक्की अपक्की इच्छा से, 7 परमेश्वर के भवन के काम के
लिथे पांच हजार किक्कार और दस हजार दर्कनोन सोना, दस हजार किक्कार
चान्दी, अठारह हजार किक्कार पीतल, और एक लाख किक्कार लोहा दे दिया। 8
और जिनके पास मणि थे, उन्होंने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिथे
गेर्शोनी यहीएल के हाथा में दे दिया। 9 तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि
हाकिमोंने प्रसन्न होकर खरे मन और अपक्की अपक्की इच्छा से यहोवा के लिथे
भेंट दी यी; और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ। 10 तब दाऊद ने सारी
सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और दाऊद ने कहा, हे यहोवा ! हे
हमारे मूल पुरुष इस्राएल के परमेश्वर ! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य
है। 11 हे यहोवा ! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्य्थ और विभव, तेरा ही है; क्योंकि
अकाश और पृय्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा ! राज्य तेरा है, और तू
सभोंके ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। 12 धन और महिमा तेरी ओर से मिलती
हैं, और तू सभोंके ऊपर प्रभुता करता है। सामर्य्थ और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं,
और सब लोगोंको बढ़ाना इौर बल देना तेरे हाथ में है। 13 इसलिथे अब हे हमारे
परमेश्वर ! हम तेरा ध्न्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं। 14 मैं
क्या हूँ? और मेरी प्रजा क्या है? कि हम को इस रीति से अपक्की इच्छा से तुझे
भेंट देने की शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से

पाकर तुझे दिया है। 15 तेरी दृष्टि में हम तो अपके सब पुरखाओं की नाई पराए
और परदेशी हैं; पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की नाई बीते जाते हैं, और हमारा कुछ
ठिकाना नहीं। 16 हे हमारे परमेश्वर यहोवा ! वह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र
नाम का एक भवन बनाने के लिथे किया है, वह तेरे ही हाथ से हमे मिला या, और
सब तेरा ही है। 17 और हे मेरे परमेश्वर ! मैं जानता हूँ कि तू मन को जांचता है
और सिधाई से प्रसन्न रहता है; मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और
अपक्की इच्छा से दिया है; और अब मैं ने आनन्द से देखा है, कि तेरी प्रजा के
लोग जो यहां उपस्यित हैं, वह अपक्की इच्छा से तेरे लिथे भेंट देते हैं। 18 हे
यहोवा ! हे हमारे पुरखा इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर ! अपक्की
प्रजा के मन के विचारोंमें यह बात बनाए रख और उनके मन अपक्की ओर
लगाए रख। 19 और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी
आज्ञाओं चितौनियोंऔर विधियोंको मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस
भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैं ने की है। 20 तब दाऊद ने सारी सभा से कहा,
तुम अपके परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो। तब सभा के सब लोगोंने अपके
पितरोंके परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना अपना सिर फुकाकर
यहोवा को और राजा को दण्डवत किया। 21 और दूसरे दिन उन्होंने यहोवा के
लिथे बलिदान किए, अर्यात् अर्धों समेत एक हजार बैल, एक हजार मेढ़े और एक
हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाए, और सब इस्राएल के लिथे बहुत से
मेलबलि चढ़ाए। उसी दिन यहोवा के साम्हने उन्होंने बड़े आनन्द से खाया और
पिया। 22 फिर उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा ठहराकर
यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिथे उसका और याजक होने के लिथे सादोक

का अभिषेक किया। 23 तब सुलैमान अपके पिता दाऊद के स्यान पर राजा होकर
यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और भाग्यवान हुआ, और इस्राएल उसके
अधीन हुआ। 24 और सब हाकिमोंऔर शूरवीरोंऔर राजा दाऊद के सब पुत्रोंने
सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की। 25 और यहोवा ने सुलैमान को सब
इस्राएल के देखते बहुत बढ़ाया, और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य दिया, जैसा उस से
पहिले इस्राएल के किसी राजा का न हुआ या। 26 इस प्रकार यिहौ के पुत्र दाऊद ने
सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया। 27 और उसके इस्राएल पर राज्य करने का
समय चालीस वर्ष का या; उस ने सात वर्ष तो हेब्रोन में और तैंतीस वर्ष यरूशलेम
में राज्य किया। 28 और वह पूरे बूढ़ापे की अवस्या में दीर्घायु होकर और धन और
विभव, मनमाना भोगकर मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्यान पर
राजा हुआ। 29 आादि से अन्त तक राजा दाऊद के सब कामोंका वृत्तान्त, 30 और
उसके सब राज्य और पराक्रम का, और उस पर और इस्राएल पर, वरन देश देश
के सब राज्योंपर जो कुछ बीता, इसका भी वृत्तान्त शमूएल दर्शी और नातान नबी
और गाद दर्शी की पुस्तकोंमें लिखा हुआ है।

2 इतिहास 1

1 दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्यिर हो गया, और उसका परमेश्वर यहोवा
उसके संग रहा और उसको बहुत ही बढ़ाया। 2 और सुलैमान ने सारे इस्राएल से,
अर्यात् सहस्रपतियों, शतपतियों, न्यायियोंऔर इस्राएल के सब रईसोंसे जो
पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरुष थे, बातें कीं। 3 और सुलैमान पूरी मण्डली
समेत गिबोन के ऊंचे स्यान पर गया, क्योंकि परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू,

जिसे यहोवा के दास मूसा ने जंगल में बनाया या, वह वहीं पर या। 4 परन्तु
परमेश्वर के सन्दूक को दाऊद किर्यत्यारीम से उस स्यान पर ले आया या जिसे
उस ने उसके लिथे तैयार किया या, उस ने तो उसके लिथे यरूशलेम में एक तम्बू
खड़ा कराया या। 5 और पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र बसलेल ने, जो हूर का
पोता या, बनाई यी, वह गिबोन में यहोवा के निवास के साम्हने यी। इसलिथे
सुलैमान मण्डली समेत उसके पास गया। 6 और सुलैमान ने वहीं उस पीतल की
वेदी के पास जाकर, जो यहोवा के साम्हने मिलापवाले तम्बू के पास यी, उस पर
एक हजार होमबलि चड़ाए। 7 उसी दिन रात को परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन
देकर उस से कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग। 8 सुलैमान ने
परमेश्वर से कहा, तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा और मुझ को
उसके स्यान पर राजा बनाया है। 9 अब हे यहोवा परमेश्वर ! जो बचन तू ने मेरे
पिता दाऊद को दिया या, वह पूरा हो; तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया है
जो भूमि की धूलि के किनकोंके समान बहुत है। 10 अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान
दे, कि मैं इस प्रजा के साम्हने अन्दर- बाहर आना-जाना कर सकूं, क्योंकि कौन
ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके? 11 परमेश्वर ने सुलैमान से
कहा, तेरी जो ऐसी ही मनसा हुई, अर्यात तू ने न तो धन सम्पत्ति मांगी है, न
ऐश्वर्य्और न अपके बैरियोंका प्राण और न अपक्की दीर्घायु मांगी, केवल बुद्धि
और ज्ञान का वर मांगा है, जिस से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने तुझे राजा
नियुक्त किया है, न्याय कर सके, 12 इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता
है। और मैं तुझे इतना धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य दूंगा, जितना न तो तुझ से पहिले
किसी राजा को, मिला और न तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा। 13 तब सुलैमान

गिबोन के ऊंचे स्यान से, अर्यात् मिलापवाले तम्बू के साम्हने से यरूशलेम को
आया और वहां इस्राएल पर राज्य करने लगा। 14 फिर सुलैमान ने रय और
सवार इकट्ठे कर लिथे; और उसके चौदह सौ रय और बारह हजार सवार थे, और
उनको उस ने रयोंके नगरोंमें, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा। 15 और
राजा ने ऐसा किया, कि यरूशलेम में सोने-चान्दी का मूल्य बहुतायत के कारण
पत्यरोंका सा, और देवदारोंका मूल्य नीचे के देश के गूलरोंका सा बना दिया। 16
और जो घोड़े सुलैमान रखता या, वे मिस्र से आते थे, और राजा के य्यापारी उन्हें
फुण्ड के फुण्ड ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे। 17 एक रय तो छ: सौ शेकेल
चान्दी पर, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस्र से आता या; और इसी दाम पर
वे हित्तियोंके सब राजाओं और अराम के राजाओं के लिथे उन्हीं के द्वारा लाया
करते थे।

2 इतिहास 2

1 और सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने का
विचार किया। 2 इसलिए सुलैमान ने सत्तर हजार बोफिथे और अस्सी हजार पहाड़
से पत्यर काटनेवाले और वृझ काटनेवाले, और इन पर तीन हजार छ: सौ मुखिथे
गिनती करके ठहराए। 3 तब सुलैमान ने सोर के राजा हूराम के पास कहला भेजा,
कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से बर्त्ताव किया, अर्यात् उसके रहने का भवन
बनाने को देवदार भेजे थे, पैसा ही अब मुझ से भी बर्त्ताव कर। 4 देख, मैं अपके
परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूँ, कि उसे उसके लिथे पवित्र
करूं और उसके सम्मुख सुगन्धित धूम जलाऊं, और नित्य भेंट की रोटी उस में

रखी जाए; और प्रतिदिन सबेरे और सांफ को, और विश्रम और नथे चांद के
दिनोंमें और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पब्बॉं में होमबलि चढ़ाया जाए।
इस्राएल के लिथे ऐसी ही सदा की विधि है। 5 और जो भवन मैं बनाने पर हूं, वह
महान होगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सब देवताओं में महान है। 6 परन्तु किस
की इतनी शक्ति है, कि उसके लिथे भवन बनाए, वह तो स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे
स्वर्ग में भी नहीं समाता? मैं क्या हूँ कि उसके साम्हने धूप जलाने को छोड़ और
किसी मनसा से उसका भवन बनाऊं? 7 सो अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज
दे, जो सोने, चान्दी, पीतल, लोहे और बैंजनी, लाल और नीले कपके की कारीगरी
में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो, कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराए हुए
निपुण पनुष्योंके साय होकर जो मेरे पास यहूदा और यरूशलेम में रहते हैं, काम
करे। 8 फिर लबानोन से मेरे पास देवदार, सनोवर और चंदन की लकड़ी भेजना,
क्योंकि मैं जानता हूँ कि तेरे दास लबानोन में वृझ काटना जानते हैं, और तेरे
दासोंके संग मेरे दास भी रहकर, 9 मेरे लिथे बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे, क्योंकि
जो भवन मैं बनाना चाहता हूँ, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य होगा। 10 और तेरे
दास जो लकड़ी काटेंगे, उनको मैं बीस हजार कोर कूटा हुआ गंहूं, बीस हजार कोर
जव, बीस हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत तेल दूंगा। 11 तब सोर के
राजा हूराम ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी, कि यहोवा अपक्की प्रजा
से प्रेम रखता है, इस से उस ने तुझे उनका राजा कर दिया। 12 फिर हूराम ने यह
भी लिखा कि धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृय्वी का
सृजनहार है, और उस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान, चतुर और समझदार पुत्र
दिया है, ताकि वह यहोवा का एक भवन और अपना राजभवन भी बनाए। 13

इसलिथे अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार पुरुष को, अर्यात् हूराम-अबी को
भेजता हूँ, 14 जो एक दानी स्त्री का बेटा है, और उसका पिता सोर का या। और वह
सोने, चान्दी, पीतल, लोहे, पत्यर, लकड़ी, बैंजनी और नीले और लाल और सूझ्म
सन के कपके का काम, और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भांति
की कारीगरी बना सकता है : सो तेरे चतुर मनुष्याोंके संग, और मेरे प्रभु तेरे
पिता दाऊद के चतुर मनुष्योंके संग, उसको भी काम मिले। 15 और मेरे प्रभु ने
जो गेहूं, जव, तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा की है, उसे अपके दासोंके पास
भ्जिवा दे। 16 और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन
पर से काटेंगे, और बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से जापा को पहुचाएंगे, और तू
उसे यरूशलेम को ले जाना। 17 तब सुलैमान ने इस्राएली देश के सब परदेशियोंकी
गिनती ली, यह उस गिनती के बाद हुई जो उसके पिता दाऊद ने ली यी; और वे
डेढ़ लाख तीन हजार छ: सौ पुरुष निकले। 18 उन में से उस ने सत्तर हजार
बोफिथे, अस्सी हजार पहाड़ पर पत्यर काटनेवाले और वृझ काटनेवाले और तीन
हजार छ: सौ उन लोगोंसे काम करानेवाले मुखिथे नियुक्त किए।

2 इतिहास 3

1 तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह नाम पहाड़ पर उसी स्यान में यहोवा
का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी
ओर्नान के खलिहान में तैयार किया या : 2 उस ने अपके राज्य के चौथे वर्ष के
दूसरे महीने के, दूसरे दिन को बनाना आरम्भ किया। 3 परमेश्वर का जो भवन
सुलैमान ने बनाया, उसका यह ढव है, अर्यात् उसकी लम्बाई तो प्राचीन काल की

नाप के अनुसार साठ हाथ, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ् की यी। 4 और भवन के
साम्हने के ओसारे की लम्बाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की; और
उसकी ऊंचाई एक सौ बीस हाथ की थी। सुलैमान ने उसको भीतर चोखे सोने से
मढ़वाया। 5 और भवन के बड़े भाग की छत उस ने सनोवर की लकड़ी से पटवाई,
और उसको अच्छे सोने से मढ़वाया, और उस पर खजूर के वृझ की और
सांकलोंकी नक्काशी कराई। 6 फिर शोभा देने के लिथे उस ने भवन में मणि
जड़वाए। और यह सोना पवैंम का या। 7 और उस ने भवन को, अर्यात् उसकी
कडिय़ों, डेवढिय़ों, भीतोंऔर किवाडोंको सोने से मढ़वाया, और भीतोंपर करूब
खुदवाए। 8 फिर उस ने भवन के परमपवित्र स्यान को बनाया; उसकी लम्बाई तो
भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की यी, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की यी;
और उस ने उसे छ: सौ किक्कार चोखे सोने से मढ़वाया। 9 और सोने की कीलोंका
तौल पचास शेकेल या। और उस ने अटारियोंको भी सोने से मढ़वाया। 10 फिर
भवन के परमपवित्र स्यान में उसने नक्काशी के काम के दो करूब बनवाए और
वे सोने से मढ़वाए गए। 11 करूबोंके पंख तो सब मिलकर बीस हाथ लम्बे थे,
अर्यात् एक करूब का एक पंख पांच हाथ का और भवन की भीत तक पहुंचा हुआ
या; और उसका दूसरा पंख पांच हाथ का या और दूसरे करूब के पंख से मिला
हुआ या। 12 और दूसरे करूब का भी एक पंख पांच हाथ का और भवन की दूसरी
भीत तक पहुंचा या, और दूसरा पंख पांच हाथ का और पहिले करूब के पंख से
सटा हुआ या। 13 इन करूबोंके पंख बीस हाथ फैले हुए थे; और वे अपके अपके
पांवोंके बल खड़े थे, और अपना अपना मुख भीतर की ओर किए हुए थे। 14 फिर
उस ने बीचवाले पर्दे को नीले, बैंजनी और लाल रंग के सन के कपके का बनवाया,

और उस पर करूब कढ़वाए। 15 और भवन के साम्हने उस ने पैंतीस पैंतीस हाथ
ऊंचे दो खम्भे बनवाए, और जो कंगनी एक एक के ऊपर यी वह पांच पांच हाथ
की यी। 16 फिर उस ने भीतरी कोठरी में सांकलें बनवाकर खम्भोंके ऊपर लगाई,
और एक सौ अनार भी बनाकर सांकलोंपर लटकाए। 17 उस ने इन खम्भोंको
मन्दिर के साम्हने, एक तो उसकी दाहिनी ओर और दूसरा बाई ओर खड़ा कराया;
और दाहिने खम्भे का नाम याकीन और बाथें खम्भे का नाम बोअज़ रखा।

2 इतिहास 4

1 फिर उस ने पीतल की एक वेदी बनाई, उसकी लम्बाई और चौड़ाई बीस बीस
हाथ की और ऊंचाई दस हाथ की यी। 2 फिर उस ने एक ढाला हुआ हौद बनवाया;
जो छोर से छोर तक दस हाथ तक चौड़ा या, उसका आकार गोल या, और उसकी
ऊंचाई पांच हाथ की यी, और उसके चारोंओर का घेर तीस हाथ के नाप का या। 3
और उसके तले, उसके चारोंओर, एक एक हाथ में दस दस बैलोंकी प्रतिमाएं बनी
यीं, जो हौद को घेरे यीं; जब वह ढाला गया, तब थे बैल भी दो पांति करके ढाले
गए। 4 और वह बारह बने हुए बैलोंपर धरा गया, जिन में से तीन उत्तर, तीन
पश्चिम, तीन दक्खिन और तीन पूर्व की ओर मुंह किए हुए थे; और इनके ऊपर
हौद घरा या, और उन सभोंके पिछले अंग भीतरी भाग में पड़ते थे। 5 और हौद की
मोटाई चौवा भर की यी, और उसका मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाई, सोसन के
फूलोंके काम से बना या, और उस में तीन हजार बत भरकर समाता या। 6 फिर
उस ने धोने के लिथे दस हौदी बनवाकर, पांच दाहिनी और पांच बाई ओर रख दीं।
उन में होमबलि की वस्तुएं धोई जाती यीं, परन्तु याजकोंके धोने के लिलथे बड़ा

हौद था। 7 फिर उस ने सोने की दस दीवट विधि के अनुसार बनवाई, और पांच
दाहिनी ओर और पांच बाई ओर मन्दिर में रखवा दीं। 8 फिर उस ने दस मेज
बनवाकर पांच दाहिनी ओर और पाच बाई ओर मन्दिर में रखवा दीं। और उस ने
सोने के एक सौ कटोरे बनवाए। 9 फिर उस ने याजकोंके आंगन और बड़े आंगन
को बनवाया, और इस आंगन में फाटक बनवाकर उनके किवाड़ोंपर पीतल
मढ़वाया। 10 और उस ने हौद को भवन की दाहिनी ओर अर्यात् पूर्व और दक्खिन
के कोने की ओर रखवा दिया। 11 और हूराम ने हण्डों, फावड़ियों, और कटोरोंको
बनाया। और हूराम ने राजा सुलैमान के लिथे परमेश्वर के भवन में जो काम
करना या उसे निपटा दिया : 12 अर्यात् दो खम्भे और गोलोंसमेत वे कंगनियां जो
खम्भोंके सिरोंपर यीं, और खम्भोंके सिरोंपर के गोलोंको ढांपके के लिए
जालियोंकी दो दो पांति; 13 और दोनोंजालियोंके लिथे चार सौ अनार और जो
गोले खम्भोंके सिरोंपर थे, उनको ढांपकेवाली एक एक जाली के लिथे अनारोंकी
दो दो पांति बनाई। 14 फिर उस न कुसिर्यां और कुसिर्योंपर की हौदियां, 15 और
उनके नीचे के बारह बैल बनाए। 16 फिर हूराम-अबी ने हण्डों, फावड़ियों,
कांटोंऔर इनके सब सामान को यहोवा के भवन के लिथे राजा सुलैमान की आज्ञा
से फलकाए हुए पीतल के बनवाए। 17 राजा ने उसको यरदन की तराई में अर्यात्
सुक्कोत और सारतान के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढलवाया। 18
सुलैमान ने थे सब पात्र बहुत बनवाए, यहां तक कि पीतल के तौल का हिसाब न
या। 19 और सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के सब पात्र, सोने की वेदी, और वे मेज
जिन पर भेंट की रोटी रखी जाती यीं, 20 और दीपकोंसमेत चोखे सोने की दीवटें,
जो विधि के अनुसार भीतरी कोठरी के साम्हने जला करतीं यीं। 21 और सोने

बरन निरे सोने के फूल, दीपक और चिमटे; 22 और चोखे सोने की कैंचियां,
कटोरे, धूपदान और करछे बनवाए। फिर भवन के द्वार और परम पवित्र स्यान के
भीतरी किवाड़ और भवन अर्यात् मन्दिर के किवाड़ सोने के बने।

2 इतिहास 5

1 इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिथे जो जो काम बनवाया वह सब
निपट गया। तब सुलैमान ने अपके पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने, चान्दी
और सब पात्रोंको भीतर पहुंचाकर परमेश्वर के भवन के भएडारोंमें रखवा दिया।
2 तब सुलैमान ने इस्राएल के पुरनियोंको और गोत्रोंके सब मुखय पुरुष, जो
इस्राएलियोंके पितरोंके घरानोंके प्रधान थे, उनको भी यरूशलेम में इस मनसा से
इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर से अर्यात् सिय्योन से
ऊपर लिवा ले आएं। 3 सब इस्राएली पुरुष सातवें महीने के पर्व के समय राजा के
पास इकट्ठे हुए। 4 जब इस्राएल के सब पुरनिथे आए, तब लेवियोंने सन्दूक को
उठा लिया। 5 और लेवीय याजक सन्दूक और मिलाप का तम्बू और जितने
पवित्र पात्र उस तम्बू में थे उन सभोंको ऊपर ले गए। 6 और राजा सुलैमान और
सब इस्राएली मण्डली के लोग जो उसके पास इकट्ठे हुए थे, उन्होंने सन्दूक के
साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि किए, जिनकी गिनती और हिसाब बहुतायत के
कारण न हो सकती यी। 7 तब याजकोंने यहोवा की वाचा का सनदूक उसके
स्यान में, अर्यात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्यान है, पहंचाकर,
करूबोंके पंखोंके तले रख दिया। 8 सन्दूक के स्यान के ऊपर करूब तो पंख फैलाए
हुए थे, जिससे वे ऊपर से सन्दूक और उसके डणडोंको ढांपे थे। 9 डणडे तो इतने

लम्बे थे, कि उनके सिक्के सन्दूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के साम्हने देख
पड़ते थे, परन्तु बाहर से वे दिखई न पड़ते थे। वे आज के दिन तक वहीं हैं। 10
सन्दूक में पत्थ्र की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न या, जिन्हें मूसा ने होरेब में
उसके भीतर उस समय रखा, जब यहोवा ने इस्राएलियोंके मिस्र से निकलने के
बाद उनके साय वाचा बान्धी यी। 11 जब याजक पवित्रस्यान से निकले (जितने
याजक उपस्यित थे, उन सभोंने तो अपके अपके को पवित्र किया या, और अलग
अलग दलोंमें होकर सेवा न करते थे; 12 और जितने लेवीय गवैथे थे, वे सब के
सब अर्यात् मुत्रोंऔर भइयोंसमेत आसाप, हेमान और यदूतून सन के वस्त्र पहिने
फांफ, सारंगियां और वीणाएं लिथे हुए, वेदी के पूर्व अलंग में खड़े थे, और उनके
साय एक सौ बीस याजक तुरहियां बजा रहे थे।) 13 तो जब तुरहियां बजानेवाले
और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और
तुरहियां, फांफ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने
लगे, कि वह भला है और उसकी करुणा सदा की है, तब यहोवा के भवन मे बादल
छा गया, 14 और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह
सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया या।

2 इतिहास 6

1 तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा या, कि मैं घोर अंधकार मैं वास किए
रहूंगा। 2 परन्तु मैं ने तेरे लिथे एक वासस्यान वरन ऐसा दृढ़ स्यान बनाया है,
जिस में तू युग युग रहे। 3 और राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुंह फेरकर
उसको आशीर्वाद दिया, और इस्राएल की पूरी सभा खड़ी रही। 4 और उस ने कहा,

धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिस ने अपके मुंह से मेरे पिता दाऊद को
यह वचन दिया या, और अपके हाथोंसे इसे पूरा किया है, 5 कि जिस दिन से मैं
अपक्की प्रजा को मिस्र देश से निकाल लाया, तब से मैं ने न तो इस्राएल के किसी
गोत्र का कोई नगर चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिथे भवन बनाया जाए,
और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो। 6 परन्तु मैं ने
यरूशलेम को इसलिथे चुना है, कि मेरा नाम वहां हो, और दाऊद को चुन लिया है
कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो। 7 मेरे पिता दाऊद की यह मनसा यी कि
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाए। 8 परन्तु यहोवा ने
मेरे पिता दाऊद से कहा, तेरी जो मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन
बनाए, ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया; 9 तौभी तू उस भवन को बनाने न
पाएगा : तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। 10 यह वचन
जो यहोवा ने कहा या, उसे उस ने पूरा भी किया है; ओर मैं अपके पिता दाऊद के
स्यान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हूँ,
और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है। 11 और इस
में मैं ने उस सन्दूक को रख दिया है, जिस में यहोवा की वह वाचा है, जो उस ने
इस्राएलियोंसे बान्धी यी। 12 तब वह इस्राएल की सारी सभा के देखते यहोवा की
वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपके हाथ फैलाए। 13 सुलैमान ने पांच हाथ
लम्बी, पांच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊंची पीतल की एक चौकी बनाकर आंगन
के बीच रखवाई यी; उसी पर खड़े होकर उस ने सारे इस्राएल की सभा के सामने
घुटने टेककर स्वर्ग की ओर हाथ फैलाए हुए कहा, 14 हे यहोवा, हे इस्राएल के
परमेश्वर, तेरे समान न तो स्वर्ग में और न पृय्वी पर कोई ईश्वर है : तेरे जो दास

अपके सारे मन से अपके को तेरे सम्मुख जानकर जलते हैं, उनके लिथे तू
अपक्की वाचा पूरी करता और करुणा करता रहता है। 15 तू ने जो वचन मेरे
पिता दाऊद को दिया या, उसका तू ने पालन किया है; जैसा तू ने अपके मुंह से
कहा या, वैसा ही अपके हाथ से उसको हमारी आंखोंके साम्हने पूरा भी किया है।
16 इसलिथे अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा इस वचन को भी मूरा कर, जो तू
ने अपके दास मेरे पिता दाऊद को दिया या, कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल
की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपके को मेरे
सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपक्की चाल चलन में ऐसी
चौकसी करें, कि मेरी य्यवस्या पर चलें। 17 अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
जो वचन तू ने अपके दास दाऊद को दिया य, वह सव्चा किया जाए। 18 परन्तु
क्या परमेश्वर सचमुच मनुष्योंके संग पुय्वी पर वास करेगा? स्वर्ग में वरन सब
से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में तू क्योंकर
समाएगा? 19 तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपके दास की प्रार्यना और
गिड़गिड़ाहट की ओर ध्यान दे और मेरी पुकार और यह प्रार्यना सुन, जो मैं तेरे
साम्हने कर रहा हूँ। 20 वह यह है कि तेरी आंखें इस भवन की ओर, अर्यत् इसी
स्यान की ओर जिसके विषय में तू ने कहा है कि मैं उस में अपना नाम रखूंगा,
रात दिन खुली रहें, और जो प्रार्यना तेरा दास इस स्यान की ओर करे, उसे तू सुन
ले। 21 और अपके दास, और अपक्की प्रजा इस्राएल की प्रार्यना जिसको वे इस
स्यान की ओर मुंह किए हुए गिड़गिड़ाकर करें, उसे सुन लेना; स्वर्ग में से जो तेरा
निवासस्यान है, सुन लेना; और सुनकर झमा करना। 22 जब कोई किसी दूसरे
का अपराध करे और उसको शपय खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में

तेरी वेदी के साम्हने शपय खाए, 23 तब तू स्वर्ग में से सुनना और मानना, और
अपके दासोंका न्याय करके दुष्ट को बदला देना, और उसकी चाल उसी के सिर
लैटा देना, और निदॉष को निदॉष ठहराकर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल
देना। 24 फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपके
शत्रुओं से हार जाएं, और तेरी ओर फिरका तेरा नाम मानें, और इस भवन में तुझ
से प्रार्यना और गिड़गिड़ाहट करें, 25 तो तू स्वर्ग में से सुनना; और अपक्की प्रजा
इस्राएल का पाप झमा करना, और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तू ने
उनको और उनके पुरखाओं को दिया है। 26 जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस
कारण आकाश इतना बन्द हो जाए कि वर्षा न हो, ऐसे समय यदि वे इस स्यान
की ओर प्रार्यना करके तेरे नाम को मानें, और तू जो उन्हें दु:ख देता है, इस कारण
वे अपके पाप से फिरें, 27 तो तू स्वर्ग में से सुनना, और अपके दासोंऔर अपक्की
प्रजा इस्राएल के पाप को झमा करना; तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है
जिस पर उन्हें चलना चाहिथे, इसलिथे अपके इस देश पर जिसे तू ने अपक्की
प्रजा का भाग करके दिया है, पानी बरसा देना। 28 जब इस देश में काल वा मरी
वा फुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें, वा उनके शत्रु उनके देश के
फाटकोंमें उन्हें घेर रखें, वा कोई विपत्ति वा रोग हो; 29 तब यदि कोई मनुष्य वा
तेरी सारी प्रजा इस्राएल जो अपना अपना दु:ख और अपना अपना खेद जान कर
और गिड़गिड़ाहट के साय प्रार्यना करके अपके हाथ इस भवन की ओर फैलाए; 30
जो तू अपके स्वर्गीय निवासस्यान से सुनकर झमा करना, और एक एक के मन
की जानकर उसकी चाल के अनुसार उसे फल देना; (तू ही तो आदमियोंके मन का
जाननेवाला है); 31 कि वे जितने दिन इस देश में रहें, जिसे तू ने उनके पुरखाओं

को दिया या, उतने दिन तक तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें। 32 फिर
परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त
हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के कारण दूर देश से आए, और आकर इस भवन की
ओर मुंह किए हुए प्रार्यना करे, 33 तब तू अपके स्वर्गीय निवासस्यान में से सुने,
और जिस बात के लिथे ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसके अनुसार करना; जिस से
पुय्वी के सब देशोंके लोग तेरा नाम जानकर, तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय
मानें; और निश्चय करें, कि यह भवन जो मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता हैं।
34 जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहां अपके शत्रुओं से लड़ाई
करने को निकल जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन
की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, मुंह किए हुए तुझ से प्रार्यना करें, 35
तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्यना और गिड़गिड़ाहट सुनना, और उनका न्याय
करना। 36 निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है, यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू
उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उन्हें बन्धुआ करके किसी
देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएं, 37 तो यदि वे बन्धुआई के देश में
सोच विचर करें, और फिरकर अपक्की बन्धुआई करनेवालोंके देश में तुझ से
गिड़गिड़ाकर कहें, कि हम ने पाप किया, और कुटिलता और दूष्टता की है; 38 सो
यदि वे अपक्की बन्धुआई के देश में जहां वे उन्हें बन्धुआ करके ले गए होंअपके
पूरे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें, और अपके इस देश की ओर जो तू ने
उनके पुरखाओं को दिया या, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस
भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, मुंह किए हुए तुझ से प्रार्यना
करें, 39 तो तू अपके स्वर्गीय निवासस्यान में से उनकी प्रार्यना और गिड़गिड़ाहट

सुनना, और उनका न्याय करना और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करें,
उन्हें क्षमा करना। 40 और हे मेरे परमेश्वर ! जो प्रार्थना इस स्थान में की जाए
उसकी ओर अपक्की आंखें खोले रह और अपके कान लगाए रख। 41 अब हे
यहोवा परमेश्वर, उठकर अपके सामर्य्थ के सन्दूक समेत अपके विश्रमस्थान में
आ, हे यहोवा परमेश्वर तेरे याजक उद्धाररूपी वस्त्र पहिने रहें, और तेरे भक्त लोग
भलाई के कारण आनन्द करते रहें। 42 हे यहोवा परमेश्वर, अपके अभिशिक्त की
प्रार्थना को अनसुनी न कर, तू अपके दास दाऊद पर की गई करुणा के काम
स्मरण रख।

2 इतिहास 7

1 जब सुलैमान यह प्रार्थना काजुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर
होमबलियोंतया और बलियोंको भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर
गया। 2 और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि यहोवा का तेज
यहोवा के भवन में भर गया या। 3 और जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन
पर छा गया, तब सब इस्राएली देखते रहे, और फर्श पर फुककर अपना अपना
मुंह भूमि की ओर किए हुए दणडवत किया, और योंकहकर यहोवा का धन्यवाद
किया कि, वह भला है, उसकी करुणा सदा की है। 4 तब सब प्रजा समेत राजा ने
यहोवा को बलि चढ़ाई। 5 और राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख
बीस हजार भेड़ -बकरियां चढ़ाई। योंपूरी प्रजा समेत राजा ने यहोवा के भवन की
प्रतिष्ठा की। 6 और याजक अपना अपना कार्य करने को खड़े रहे, और लेवीय भी
यहोवा के गीत के गाने के लिथे बाजे लिथे हूए खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने

यहोवा की सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करने को बनाकर उनके
द्वारा स्तुति कराई यी; और इनके साम्हने याजक लोग तुरहियां बजाते रहे; और
सब इस्राएली झड़े रहे। 7 फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन के साम्हने आंगन के
बीच एक स्यान ववित्र करके होमबलि और मेलबलियोंकी चक्कीं वहीं चढ़ाई,
क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की बेदी होमबलि और अन्नबलि और
चक्कीं के लिथे छोटी यी। 8 उसी समय सुलैमान ने और उसके संग हमात की
घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सारे इस्राएल की एक बहुत बड़ी सभा ने सात
दिन तक पर्व को माना। 9 और आठवें दिन को उन्होंने महासभा की, उन्होंने वेदी
की प्रतिष्ठा सात दिन की; और पवॉ को भी सात दिन माना। 10 निदान सातवें
महीने के तेइसवें दिन को उस ने प्रजा के लोगोंको विदा किया, कि वे अपके अपके
डेरे को जाएं, और वे उस भलाई के कारण जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और
अपक्की प्रजा इस्राएल पर की यी आनन्दित थे। 11 योंसुलैमान यहोवा के भवन
और राजभवन को बना चुका, और यहोवा के भवन में और अपके भवन में जो
कुछ उस ने बनाना चाहा, उस में उसका मनोरय पूरा हुआ। 12 तब यहोवा ने रात
में उसको दर्शन देकर उस से कहा, मैं ने तेरी प्रार्याना सुनी और इस स्यान को यज्ञ
के भवन के लिथे अपनाया है। 13 यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूं, कि वर्षा न
हो, वा टिड़ियोंको देश उजाड़ने की आज्ञा दूं, वा अपक्की प्रजा में मरी फैलाऊं, 14
तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्यना करें और मेरे
दर्शन के खोजी होकर अपक्की बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका
पाप झमा करूंगा और उनके देश को ज्योंका त्योंकर दूंगा। 15 अब से जो प्रार्यना
इस स्यान में की जाएगी, उस पर मेरी आंखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। 16

और अब मैं ने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के
लिथे इस में बना रहे; मेरी आंखें और मेरा मन दोनोंनित्य यहीं लगे रहेंगे। 17
और यदि तू अपके पिता दाऊद की नाई अपके को मेरे सम्मुख जानकर चलता
रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियोंऔर
नियमोंको मानता रहे, 18 तो मैं तेरी राजगद्दी को स्यिर रखूंगा; जैसे कि मैं ने तेरे
पिता दाऊद के साय वाचा बान्धी यी, कि तेरे कुल में इस्राएल पर प्रभुता
करनेवाला सदा बना रहेगा। 19 परन्तु यदि तुम लोग फिरो, और मेरी
विधियोंऔर आज्ञाओं को जो मैं ने तुम को दी हैं त्यागो, और जाकर पराथे
देवताओं की उपासना करो और उन्हें दणडवत करो, 20 तो मैं उनको अपके देश
में से जो मैं ने उनको दिया है, जड़ से उखाड़ूंगा; और इस भवन को जो मैं ने अपके
नाम के लिथे पवित्र किया है, अपक्की दृष्टि से दूर करूंगा; और ऐसा करूंगा कि
देश देश के लोगोंके बीच उसकी उपमा और नामधराई चलेगी। 21 और यह भवन
जो इतना विशाल है, उसके पास से आने जानेवाले चकित होकर पूछेंगे कि यहोवा
ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्योंकिया है। 22 तब लोग कहेंगे, कि उन
लोगोंने अपके पितरोंके परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिस्र देश से निकाल लाया
या, त्यागकर पराथे देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें दफाडवत की और
उनकी उपासना की, इस कारण उस ने यह सब विपत्ति उन पर डाली है।

2 इतिहास 8

1 सुलैमान को यहोवा के भवन और अपके भवन के बनाने में बीस वर्ष लगे। 2
तब जो नगर हूराम ने सुलैमान को दिए थे, उन्हें सुलैमान ने दृढ़ करके उन में

इस्राएलियोंको बसाया। 3 तब सुलैमान सोबा के हमात को जाकर, उस पर
जयवन्त हुआ। 4 और उस ने तदमोर को जो जंगल में है, और हमात के सब
भण्डार नगरोंको दृढ़ किया। 5 फिर उस ने ऊपरवाले और नीचेवाले दोनोंबेयोरोन
को शहरपनाह और फाटकोंऔर बेड़ोंसे दृढ़ किया। 6 और उस ने बालात को और
सुलैमान के जितने भण्डार नगर थे और उसके रयोंऔर सवारोंके जितने नगर थे
उनको, और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और अपके राज्य के सब
देश में बनाना चाहा, उन सब को बनाया। 7 हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों,
हिव्वियोंऔर यबूसियोंके बचे हुए लोग जो इस्राएल के न थे, 8 उनके वंश जो
उनके बाद देश में रह गए, और जिनका इस्राएलियोंने अन्त न किया या, उन में
से तो कितनोंको सुलैमान ने बेगार में रखा और आज तक उनकी वही दशा है। 9
परन्तु इस्राएलियोंमें से सुलैमान ने अपके काम के लिथे किसी को दास न बनाया,
वे तो योद्धा और उसके हाकिम, उसके सरदार और उसके रथें और सवारोंके प्रधान
हुए। 10 और सुलैमान के सरदारोंके प्रधान जो प्रजा के लोगोंपर प्रभुता करनेवाले
थे, वे अढ़ाई सौ थे। 11 फिर सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस
भवन में ले आया जो उस ने उसके लिथे बनाया या, क्योंकि उस ने कहा, कि जिस
जिस स्यान में यहोवा का सन्दूक आया है, वह पवित्र है, इसलिथे मेरी रानी
इस्राएल के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी। 12 तब सुलैमान ने यहोवा
की उस वेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे बनाई यी, यहोवा को होमबलि चढ़ाई।
13 वह मूसा की आज्ञा के और दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार, अर्यात् विश्रम
और नथे चांद और प्रति वर्ष तीन बार ठहराए हुए पर्वों अर्यात् अखमीरी रोटी के
पर्व्व, और अठवारोंके पर्व्व, और फोपडिय़ोंके पर्व्व में बलि चढ़ाया करता या। 14

और उस ने अपके पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकोंकी सेवकाई के लिथे
उनके दल ठहराए, और लेवियोंको उनके कामोंपर ठहराया, कि हर एक दिन के
प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की स्तुति और याजकोंके साम्हने सेवा-टहल किया
करें, और एक एक फाटक के पास द्वारपालोंको दल दल करके ठहरा दिया; क्योंकि
परमेश्वर के भक्त दाऊद ने ऐसी आज्ञा दी यी। 15 और राजा ने भणडारोंया किसी
और बात में याजकोंऔर लेवियोंके लिथे जो जो आज्ञा दी यी, उन्होंने न टाला। 16
और सुलैमान का सब काम जो उस ने यहोवा के भ्वन की नेव डालने से लेकर
उसके पूरा करने तक किया वह ठीक हुआ। निदान यहोवा का भवन पूरा हुआ। 17
तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत को गया, जो एदोम के देश में समुद्र के तीर
पर हैं। 18 और हूराम ने उसके पास अपके जहाजियोंके द्वारा जहाज और समुद्र के
जानकार मल्लाह भेज दिए, और उन्होंने सुलैमान के जहाजियोंके संग ओपीर को
जाकर वहां से साढ़े चार सौ किक्कार सोना राजा सुलैमान को ला दिया।

2 इतिहास 9

1 जब शीबा की रानी ने सुलैमान की कीत्तिर् सुनी, तब वह कठिन कठिन प्रश्नोंसे
उसकी पक्कीझा करने के लिथे यरूशलेम को चक्की । वह बहुत भारी दल और
मसालोंऔर बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साय लिथे हुए आई, और सुलैमान
के पास पहुंचकर उससे अपके मन की सब बातोंके विषय बातें कीं। 2 सुलैमान ने
उसके सब प्रश्नोंका उत्तर दिया, कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही
कि वह उसे न बता सके। 3 जब शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और
उसका बनाया हुआ भवन 4 और उसकी मेज पर का भोजन देखा, और उसके

कर्मचारी किस रीति बैठते और उसके ठहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे कैसे
कपके पहिने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वे कैसे कपके पहिने हैं,
और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है, जब उस
ने यह सब देखा, तब वह चकित हो गई। 5 तब उस ने राजा से कहा, मैं ने तेरे
कामोंऔर बुद्धिमानी की जो कीत्तिर् अपके देश में सुनी वह सच ही है। 6 परन्तु
जब तक मैं ने आप ही आकर अपक्की आंखोंसे यह न देखा, तब तक मैं ने उनकी
प्रतीति न की; परन्तु तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई यी; तू उस
कीत्तिर् से बढ़कर है जो मैं ने सुनी यी। 7 धन्य हैं तेरे जन, धन्य हैं तेरे थे सेवक,
जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्यित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। 8 धन्य है
तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ, कि तुझे अपक्की राजगद्दी पर
इसलिथे विराजमान किया कि तू अपके परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे;
तेरा परमेश्वर जो इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिथे स्य्िर करना जाहता
य, उसी कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म करने को उनका राजा बना दिया। 9
और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा सुगन्ध द्रय्य, और
मणि दिए; जैसे सुगन्धद्रय्य शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिए, वैसे देखने
में नहीं आए। 10 फिर हूराम और सुलैमान दोनोंके जहाजी जो ओषीर से सोना
लाते थे, वे चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाते थे। 11 और राजा ने चन्दन की
लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिथे चबूतरे और गवैयोंके लिथे
वीणाएं और सारंगियां बनवाईं; ऐसी वस्तुएं उस से पहिले यहूदा देश में न देख
पक्की यीं 12 और शीबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उसको
उसकी इच्छा के अनुसार दिया; यह उस से अधिक या, जो वह राजा के पास ले

आई यी। तब वह अपके जनोंसमेत अपके देश को लौट गई। 13 जो सोना प्रति
वर्ष सुलैमान के पास पहुचा करता या, उसका तौल छ: सौ छियासठ किक्कार या।
14 यह उस से अधिक या जो सौदागर और य्यापारी लाते थे; और अरब देश के
सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना चान्दी लाते थे। 15
और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनवाई; एक एक ढाल
में छ:छ:सौ शेकेल गढ़ा हुआ सोना लगा। 16 फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ
छोटी ढालें और भी बनवाई; एक एक छोटी ढाल मे तीन सौ शेकेल सोना लगा,
और राजा ने उनको लबानोनी बन नामक भवन में रखा दिया। 17 और राजा ने
हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और चोखे सोने से मढ़ाया। 18 उस
सिंहासन में छ: सीढियां और सोने का एक पावदान या; थे सब सिंहासन से जुड़े
थे, और बैठने के स्यान की दोनोंअलंग टेक लगी यी और दोनोंटेकोंके पास एक
एक सिंह खड़ा हुआ बना या। 19 और छहोंसीढिय़ोंकी दोनोंअलंग में एक एक सिंह
खड़ा हुआ बना या, वे सब बारह हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी न बना। 20 और
रजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे, और लबानोनी बन नामक भवन के
सब पात्र भी चोखे सोने के थे; सुलैमान के दिनोंमें चान्दी का कुछ हिसाब न या।
21 क्योंकि हूराम के जहाजियोंके संग राजा के तर्शीश को जानेवाले जहाज थे,
और तीन तीन वर्ष के बाद वे तर्शीश के जहाज सोना, चान्दी, हाथीदांत, बन्दर
और मोर ले आते थे। 22 योंराजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृय्वी के सब राजाओं
से बढ़कर हो गया। 23 और पृय्वी के सब राजा सुलैमान की उस बुद्धि की बातें
सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उपजाई यीं उसका दर्शन करना चाहते थे।
24 और वे प्रति वर्ष अपक्की अपक्की भेंट अर्यात् चान्दी और सोने के पात्र, वस्त्र-

शस्त्र, सुगन्धद्रय्य, घोड़े और खच्चर ले आते थे। 25 और अपके घेड़ोंऔर रयोंके
लिथे सुलैमान के चार हजार यान और बारह हजार सवार भी थे, जिनको उस ने
रयोंके नगरोंमें और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा। 26 और वह महानद
से ले पलिश्तियोंके देश और मिस्र के सिवाने तक के सब राजाओं पर प्रभुता
करता या। 27 और राजा ने ऐसा किया, कि बहुतायत के कारण यरूशलेम में
चान्दी का मूल्य पत्यरोंका और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरोंका सा हो
गया। 28 और लोग मिस्र से और और सब देशोंसे सुलैमान के लिथे घोड़े लाते थे।
29 आदि से अन्त तक सुलैमान के और सब काम क्या नातान नबी की पुस्तक
में, और शीलोवासी अहिय्याह की तबूवत की पुस्तक में, और नबात के पुत्र
यारोबाम के विषय इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? 30 सुलैमान ने
यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। 31 और सुलैमान
अपके पुरखाओं के संग सो गया और उसको उसके पिता दाऊद के नगर में
मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्यान पर राजा हुआ।

2 इतिहास 10

1 रहूबियाम शकेम को गया, क्योंकि सारे इस्राएली उसको राजा बनाने के लिथे
वहीं गए थे। 2 और नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता या,
जहां वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया या), और यारोबाम मिस्र से लौट
आया। 3 तब उन्होंने उसको बुलवप भेजा; सो यारोबाम और सब इस्राएली आकर
रहूबियाम से कहने लगे, 4 तेरे पिता ने तो हम लोगोंपर भारी जूआ डाल रखा या,
इसलिथे अब तू अपके पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जिसे उस

ने हम पर डाल रखा है कुछ हलका कर, तब हम तेरे अधीन रहेंगे। 5 उस ने उन से
कहा, तीन दिन के उपरान्त मेरे पास फिर आना, तो वे चले गए। 6 तब राजा
रहूबियाम ने उन बूढ़ोंसे जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके साम्हने
अपस्य्ि‍त रहा करते थे, यह कहकर सम्मति ली, कि इस प्रजा को कैसा उत्तर
देना उचित है, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? 7 उन्होंने उसको यह उत्तर दिया,
कि यदि तू इस प्रजा के लोगोंसे अच्छा बर्त्ताव करके उन्हें प्रसन्न करे और उन से
मधुर बातें कहे, तो वे सदा तेरे अधीन बने रहेंगे। 8 परन्तु उस ने उस सम्मति को
जो बूढ़ोंने उसको दी यी छोड़ दिया और उन जवानोंसे सम्मति ली, जो उसके संग
बड़े हुए थे और उसके सम्मुख उपस्यित रहा करते थे। 9 उन से उस ने पूछा, मैं
प्रजा के लोगोंको कैसा उत्तर दूं, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? उन्होंने तो मुझ
से कहा है, कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर। 10
जवानोंने जो उस के संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, कि उन लागोंने तुझ से
कहा है, कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया या, परन्तु उसे हमारे लिथे
हलका कर; तू उन से योंकहना, कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कटि से भी मोटी
ठहरेगी। 11 मेरे मिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा या, उसे मैं और भी भारी
करूंगा; मेरा पिता तो तूम को कोड़ोंसे ताड़ना देता या, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूंगा।
12 तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया या, कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना, वैसे
ही यारोबाम और सारी प्रजा रहूबियाम के पास उपस्यित हुई। 13 तब राजा ने उस
से कड़ी बातें कीं, और रहूबियाम राजा ने बूढ़ोंकी दी हुई सम्मति छोड़कर 14
जवानोंकी सम्मति के अनुसार उन से कहा, मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी
कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी कठिन कर दूंगा; मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ोंसे

ताड़ना दी, परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूंगा। 15 इस प्रकार राजा ने प्रजा की
बिनती न मानी; इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी
अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा या, उसको पूरा करने के लिथे
परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया या। 16 जब सब इस्राएलियोंने देखा कि राजा हमारी
नहीं सुनता, तब वे बोले कि दाऊद के साय हमारा क्या अंश? हमारा तो यिशै के
पुत्र में कोई भाग नहीं है। हे इस्राएलियो, अपके अपके डेरे को चले जाओ। अब हे
दाऊद, अपके ही घराने की चिन्ता कर। 17 तब सब इस्राएली अपके डेरे को चले
गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरोंमें बसे हुए थे, उन्हीं पर रहूबियाम
राज्य करता रहा। 18 तब राजा रहूबियाम ने हदोराम को जो सब बेगारोंपर
अधिक्कारनी या भेज दिया, और इस्राएलियोंने उसको पत्यरवाह किया और वह
मर गया। तब रहूबियाम फुर्ती से अपके रय पर चढ़कर, यरूशलेम को भाग गया।
19 योंइस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया और आज तक फिरा हुआ है।

2 इतिहास 11

1 जब रहूबियाम यरूशलेम को आया, तब उस ने यहूदा और बिन्यामीन के घराने
को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया, कि
इस्राएल के साय युद्ध करें जिस से राज्य रहूबियाम के वश में फिर आ जाए। 2 तब
यहोवा का यह वचन परमेश्वर के भक्त शमायाह के पास पहुंचा, 3 कि यहूदा के
राजा सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सब
इस्राएलियोंसे कह, 4 यहोवा योंकहता है, कि अपके भाइयोंपर चढ़ाई करके युद्ध न
करो। तुम अपके अपके घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है।

यहोवा के थे वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना चढ़ाई किए लौट गए। 5 सो
रहूबियाम यरूशलेम में रहने लगा, और यहूदा में बचाव के लिथे थे नगर दृढ़
किए, 6 अर्यात् बेतलेहेम, एताम, तकोआ, 7 बेत्सूर, सोको, अदुल्लाम। 8 गत,
मारेशा, जीप। 9 अदोरैम, लाकीश, अजेका। 10 सोरा, अय्यालोत और हेब्रोन जो
यहूदा और बिन्यामीन में हैं, दृढ़ किया। 11 और उस ने दृढ़ नगरोंको और भी दृढ़
करके उन में प्रधान ठहराए, और भोजन वस्तु और तेल और दाखमधु के भणडार
रखवा दिए। 12 फिर एक एक नगर में उस ने ढालें और भाले रखवाकर उनको
अत्यन्त दृढ़ कर दिया। यहूदा और बिन्यामीन तो उसके थे। 13 और सारे
इस्राएल के याजक और लेवीय भी अपके सब देश से उठकर उसके पास गए। 14
योंलेवीय अपक्की चराइयोंऔर निज भूमि छोड़कर, यहूदा और यरूशलेम में
आए, क्योंकि यारोबाम और उसके पुत्रोंने उनको निकाल दिया या कि वे यहोवा के
लिथे याजक का काम न करें। 15 और उस ने ऊंचे स्यानोंऔर बकरोंऔर अपके
बनाए हुए बछड़ोंके लिथे, अपक्की ओर से याजक ठहरा लिए। 16 और लेवियोंके
बाद इस्राएल के सब गोत्रोंमें से जितने मन लगाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
के खोजी थे वे अपके पितरोंके परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिथे यरूशलेम
को आए। 17 और उन्होंने यहूदा का राज्य स्यिर किया और सुलैमान के पुत्र
रहूबियाम को तीन वर्ष तक दृढ़ कराया, क्योंकि तीन वर्ष तक वे दाऊद और
सुलैमान की लीक पर चलते रहे। 18 और रहूबियाम ने एक स्त्री को ब्याह लिया,
अर्यात् महलत को जिसका पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत और माता यिशै के पुत्र
एलीआब की बेटी अबीहैल यी। 19 और उस से यूश, शमर्याह और जाहम नाम पुत्र
उत्पन्न हुए। 20 और उसके बाद उस ने अबशलोम की बेटी माका को ब्याह

लिया, और उस से अबिय्याह, अत्ते, जीजा और शलोमीत उत्पन्न हुए। 21
रहूबियाम ने अठारह रानियां ब्याह लीं और साठ रखेलियां रखीं, और उसके
अठाईस बेटे और साठ बेटियां उत्पन्न हुई। अबशलोम की नतिनी माका से वह
अपक्की सब रानियोंऔर रखेलियोंसे अधिक प्रेम रखता या; 22 सो रहूबियाम ने
माका के बेटे अबिय्याह को मुख्य और सब भाइयोंमें प्रधान इस मनसा से ठहरा
दिया, कि उसे राजा बनाए। 23 और वह समझ बूफकर काम करता या, और उस
ने अपके सब पुत्रोंको अलग अलग करके यहूदा और बिन्यामीन के सब दाशोंके
सब गढ़वाले नगरोंमें ठहरा दिया; और उन्हें भोजन वस्तु बहुतायत से दी, और
उनके लिथे बहुत सी स्त्रियां ढूंढ़ी।

2 इतिहास 12

1 परन्तु जब रहूबियाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्यिर हो गया, तब
उस ने और उसके साय सारे इस्राएल ने यहोवा की य्यवस्या को त्याग दिया। 2
उन्होंने जो यहोवा से विश्वासघात किया, उस कारण राजा रहूबियाम के पांचपें वर्ष
में मिस्र के राजा शीशक ने, 3 बारह सौ रय और साठ हजार सवार लिथे हुए
यरूशलेम पर चढ़ाई की, और जो लोग उसके संग मिस्र से आए, अर्यात् लूबी,
सुक्कियी, कूशी, थे अनगिनत थे। 4 और उस ने यहूदा के गढ़वाले नगरोंको ले
लिया, और यरूशलेम तक आया। 5 तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के
हाकिमोंके पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इाट्ठे हुए थे, आकर कहने
लगा, यहोवा योंकहता है, कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है, इसलिथे मैं ने तुम को
छोड़कर शीशक के हाथ में कर दिया है। 6 तब इस्राएल के हाकिम और राजा दीन

हो गए, और कहा, यहोवा धर्मी है। 7 जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब
यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुंचा कि वे दीन हो गए हैं, मैं उनको नष्ट
न करूंगा; मैं उनका कुछ बचाव करूंगा, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा
यरूशलेम पर न भड़केगी। 8 तौभी वे उसके अधीन तो रहेंगे, ताकि वे मेरी और
देश देश के राज्योंकी भी सेवा जान लें। 9 तब मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम पर
चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल
वस्तुएं उठा ले गया। वह सब कुछ उठा ले गया, और सोने की जो फरियां सुलैमान
ने बनाई यीं, उनको भी वह ले गया। 10 तब राजा रहूबियाम ने उनके बदले पीतल
की ढालें बनावाई और उन्हें पहरुओं के प्रधानोंके हाथ सौंप दिया, जो राजभवन के
द्वार की रखवाली करते थे। 11 और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता, तब
तब पहरुए आकर उन्हें उठा ले चलते, और फिर पहरुओं की कोठरी में लौटाकर
रख देते थे। 12 जब रहूबियाम दीन हुआ, तब यहोवा का क्रोध उस पर से उतर
गया, और उस ने उसका पूरा विनाश न किया; और यहूदा में अच्छे गुण भी थे।
13 सो राजा रहूबियाम यरूशलेम में दृढ़ होकर राज्य करता रहा। जब रहूबियाम
राज्य करने लगा, तब एकतालीस वर्ष की आयु का या, और यरूशलेम में अर्यात्
उस नगर में, जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाए रखने के लिथे इस्राएल के सारे
गोत्र में से चुन लिया या, सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम
नामा या, जो अम्मोनी स्त्री यी। 14 उस ने वह कर्म किया जो बुरा है, अर्यात् उस ने
अपके मन को यहोवा की खोज में न लगाया। 15 आदि से अन्त तक रहूबियाम
के काम क्या शमायाह नबी और इद्दो दर्शी की पुस्तकोंमें वंशावलियोंकी रीति पर
नहीं लिखे हैं? रहूबियाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई सदा होती रही। 16 और

रहूबियाम अपके पुरखाओं के संग सो गया और दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी
गई। और उसका पुत्र अबिय्याह उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 13

1 यारोबाम के अठारहवें वर्ष में अबिय्याह यहूदा पर राज्य करने लगा। 2 वह
तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम मीकायाह
या; जो गिबावासी ऊरीएल की बेटी यी। और अबिय्याह और यारोबाम के बीच में
लड़ाई हुई। 3 अबिय्याह ने तो बड़े योद्धाओं का दल, अर्यात् चार लाख छंटे हुए
पुरुष लेकर लड़ने के लिथे पांति बन्धाई, और यारोबाम ने आठ लाख छंटे हुए
पुरुष जो एड़े शूरवीर थे, लेकर उसके विरुद्ध पांति बन्धाई। 4 तब अबिय्याह
समारैम नाम पहाड़ पर, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में है, खड़ा होकर कहने लगा, हे
यारोबाम, हे सब इस्राएलियो, मेरी सुनो। 5 क्या तुम को न जानना चाहिए, कि
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने लोनवाली वाचा बान्धकर दाऊद को और उसके
वंश को इस्राएल का राज्य सदा के लिथे दे दिया है। 6 तौभी नबात का पुत्र
यारोबाम जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का कर्मचारी या, वह अपके स्वामी के विरुद्ध
उठा है। 7 और उसके पास हलके और ओछे मनुष्य इकट्ठा हो गए हैं और जब
सुलैमान का पुत्र रहूबियाम लड़का और अल्हड़ मन का या और उनका साम्हना न
कर सकता या, तब वे उसके विरुद्ध सामर्यी हो गए। 8 और अब तुम सोचते हो कि
हम यहोवा के राज्य का साम्हना करेंगे, जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है,
क्योंकि तुम सब मिलकर बड़ा समाज बन गए हो और तुम्हारे पास वे सोने के
बछड़े भी हैं जिन्हें यारोबाम ने तुम्हारे देवता होने के लिथे बनवाया। 9 क्या तुम

ने यहोवा के याजकोंको, अर्यात् हारून की सन्तान और लेवियोंको निकालकर देश
देश के लोगोंकी नाई याजक नियुक्त नहीं कर लिए? जो कोई एक बछड़ा और सात
मेढ़े अपना संस्कार कराने को ले आता, तो उनका याजक हो जाता है जो ईश्वर
नहीं है। 10 परन्तु हम लोगोंका परमेश्वर यहोवा है और हम ने उसको नहीं त्यागा,
और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल करनेवाले याजक हारून की सन्तान और
अपके अपके काम में लगे हुए लेवीय हैं। 11 और वे नित्य सवेरे और सांफ को
यहोवा के लिथे होमबलि और सुगन्धद्रव्य का धूप जलाते हैं, और शूद्ध मेज पर
भेंट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उसके दीपक सांफ-सांफ को जलाते
हैं; हम तो अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते रहते हैं, परन्तु तुम ने
उसको त्याग दिया है। 12 और देखो, हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है, और
उसके याजक तुम्हारे विरुद्ध सांस वान्धकर फूंकने को तुरहियां लिथे हुए भी हमारे
साय हैं। हे इस्राएलियो अपके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा से मत लड़ो, क्योंकि तुम
कृतार्य न होगे। 13 परन्तु यारोबाम ने घातकोंको उनके पीछे भेज दिया, वे तो
यहूदा के साम्हने थे, और घातक उनके पीछे थे। 14 और जब यहूदियोंने पीछे को
मुंह फेरा, तो देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनोंओर से लड़ाई होनेवाली है; तब
उन्होंने यहोवा की दोहाई दी, और याजक तुरहियोंको फूंकने लगे। 15 तब यहूदी
पुरुषोंने जय जयकार किया, और जब यहूदी पुरुषोंने जय जयकार किया, तब
परमेश्वर ने अबिय्याह और यहूदा के साम्हने, यारोबाम और सारे इस्राएलियोंको
मारा। 16 और इस्राएली यहूदा के साम्हने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके
हाथ में कर दिया। 17 और अबिय्याह और उसकी प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा,
यहां तक कि इस्राएल में से पांच लाख छंटे हुए पुरुष मारे गए। 18 उस समय तो

इस्राएली दब गए, और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्होंने अपके पितरोंके
परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा या। 19 तब अबिय्याह ने यारोबाम का पीछा
करके उस से बेतेल, यशाना और एप्रोन नगरोंऔर उनके गांवोंको ले लिया। 20
और अबिय्याह के जीवन भर यारोबाम फिर सामर्थी न हुआ; निदान यहोवा ने
उसको ऐसा मारा कि वह मर गया। 21 परन्तु अबिय्याह और भी सामर्यी हो गया
और चौदह स्त्रियां ब्याह लीं जिन से बाइस बेटे और सोलह बेटियां उत्पन्न हुई।
22 और अबिय्याह के काम और उसकी चाल चलन, और उसके वचन, इद्दो नबी
की कया में लिखे हैं।

2 इतिहास 14

1 निदान अबिय्याह अपके पुरखाओं के संग सो गया, और उसको दाऊदपुर में
मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आसा उसके स्यान पर राज्य करने लगा। इसके
दिनोंमें दस वर्ष तक देश में चैन रहा। 2 और आसा ने वही किया जो उसके
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक या। 3 उस ने तो पराई वेदियोंको
और ऊंचे स्यानोंको दूर किया, और लाठोंको तुड़वा डाला, और अशेरा नाम
मूरतोंको तोड़ डाला। 4 और यहूदियोंको आज्ञा दी कि अपके पूर्वजोंके परमेश्वर
यहोवा की खोज करें और य्यवस्या और आज्ञा को मानों। 5 और उस ने ऊंचे
स्यानोंऔर सूर्य की प्रतिमाओं को यहूदा के सब नगरोंमें से दूर किया, और उसके
साम्हने राज्य में चैन रहा। 6 और उस ने यहूदा में गढ़वाले नगर बसाए, क्योंकि
देश में चैन रहा। और उन बरसोंमें उसे किसी से लड़ाई न करनी पक्की क्योंकि
यहोवा ने उसे विश्रम दिया या। 7 उस ने यहूदियोंसे कहा, आओ हम इन नगरोंको

बसाएं और उनके चारोंओर शहरपनाह, गढ़ और फाटकोंके पल्ले और बेड़े बनाएं;
देश अब तक हमारे साम्हने पड़ा है, क्योंकि हम ने, अपके परमेश्वर यहोवा की
खोज की है हमने उसकी खोज की और उस ने हमको चारोंओर से विश्रम दिया है।
तब उन्होंने उन नगरोंको बसाया और कृतार्थ हुए। 8 फिर आसा के पास ढाल और
बछीं रखनेवालोंकी एक सेना थी, अर्यात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष और
बिन्यामीन में से फरी रखनेवाले और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार थे सब
शूरवीर थे। 9 और उनके विरुद्ध दस लाख पुरुषोंकी सेना और तीन सौ रय लिथे
हुए जेरह नाम एक कूशी निकला और मारेशा तक आ गया। 10 तब आसा उसका
साम्हना करने को चला और मारेशा के निकट सापता नाम तराई में युद्ध की पांति
बान्धी गई। 11 तब आसा ने अपके परमेश्वर यहोवा की योंदोहाई दी, कि हे यहोवा
! जैसे तू सामर्यी की सहाथता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की भी; हे हमारे
परमेश्वर यहोवा ! हमारी सहाथता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे
नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरुद्ध आए हैं। हे यहोवा, तू हमारा
परमेश्वर है; मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाएगा। 12 तब यहोवा ने कूशियोंको
आसा और यहूदियोंके साम्हने मारा और कूशी भाग गए। 13 और आसा और
उसके संग के लोगोंने उनका पीछा गरार तक किया, और इतने कूशी मारे गए,
कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उसकी सेना से हार गए, और
यहूदी बहुत सा लूट ले गए। 14 और उन्होंने गरार के आस पास के सब नगरोंको
मार लिया, क्योंकि यहोवा का भय उनके रहनेवालोंके मन में समा गया और
उन्होंने उन नगरोंको लूट लिया, क्योंकि उन में बहुत सा धन या। 15 फिर
पशु-शालाओं को जीतकर बहुत सी भेड़- बकरियां और ऊंट लूटकर यरूशलेम को

लौटे।

2 इतिहास 15

1 तब परमेश्वर का आत्मा ओदेद के पुत्र अजर्याह में समा गया, 2 और वह आसा
से भेंट करने निकला, और उस से कहा, हे आसा, और हे सारे यहूदा और
बिन्यामीन मेरी सुनो, जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे
संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला
करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा। 3 बहुत
दिन इस्राएल बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेवाले याजक के और बिना
ब्यवस्या के रहा। 4 परन्तु जब जब वे संकट में पड़कर इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की ओर फिरे और उसको ढूंढ़ा, तब तब वह उनको मिला। 5 उस समय न
तो जानेवाले को कुछ शांति होती यी, और न आनेवाले को, वरन सारे देश के सब
निवासियोंमें बड़ा ही कोलाहल होता या। 6 और जाति से जाति और तगर से नगर
चूर किए जाते थे, क्योंकि परमेश्वर नाना प्रकार का कष्ट देकर उन्हें घबरा देता
या। 7 परन्तु तुम लोग हियाब बान्धो और तुम्हारे हाथ ढीले न पकें, क्योंकि
तुम्हारे काम का बदला मिलेगा। 8 जब आसा ने थे वचन और ओदेद नबी की
नबूवत सुनी, तब उस ने हियाब बान्धकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश में
से, और उन नगरोंमें से भी जो उस ने एप्रैम के पहाड़ी देश में ले लिथे थे, सब
घिनौनी वस्तुएं दूर कीं, और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे के साम्हने यी,
उसको नथे सिक्के से बनाया। 9 और उस ने सारे यहूदा और बिन्यामीन को, और
एप्रैम, मनश्शे और शिमोन में से जो लोग उसके संग रहते थे, उनको इकट्ठा

किया, क्योंकि वे यह देखकर कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता है,
इस्राएल में से उसके पास बहुत से चले आए थे। 10 आसा के राज्य के पन्द्रहवें
वर्ष के तीसरे महीने में वे यरूशलेम में इाट्ठे हुए। 11 और उसी समय उन्होंने उस
लूट में से जो वे ले आए थे, सात सौ बैल और सात हजार भेड़-बकरियां, यहोवा को
बलि करके चढ़ाई। 12 और उन्होंने वाचा बान्धी कि हम अपके पूरे मन और सारे
जीव से अपके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे। 13 और क्या बड़ा, क्या
छोटा, क्या स्त्री, क्या पुरुष, जो कोई इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे,
वह मार डाला जाएगा। 14 और उन्होंने जय जयकार के साय तुरहियां और
नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे शब्द से यहोवा की शपय खाई। 15 और यह शपय खाकर
सब यहूदी आनन्दित हुए, क्योंकि उन्होंने अपके सारे मन से शपया खाई और
बडी अभिलाषा से उसको ढूंढा और वह उनको मिला, और यहोवा ने चारोंओर से
उन्हें विश्रम दिया। 16 बरन आसा राजा की माता माका जिस ने अशेरा के पास
रखने के लिए एक घिनौनी मूरत बनाई, उसको उस ने राजमाता के पद से उतार
दिया, और आसा ने उसकी मूरत काटकर पीस डाली और किद्रोन नाले में फूंक
दी। 17 ऊंचे स्यान तो इस्राएलियोंमें से न ढाए गए, तौभी आसा का मन जीवन
भर तिष्कपट रहा। 18 और उस ने जो सोना चान्दी, और पात्र उसके पिता ने
अर्पण किए थे, और जो उस ने आप अर्पण किए थे, उनको परमेश्वर के भवन में
पहंचा दिया। 19 और राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष तक फिर लड़ाई न हुई।

2 इतिहास 16

1 आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की

और रामा को इसलिथे दृढ़ किया, कि यहूदा के राजा आसा के पास कोई आने
जाने न पाए। 2 तब आस ने यहोवा के भवन और राजभवन के भणडारोंमें से
चान्दी-सोना निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास दूत भेजकर
यह कहा, 3 कि जैसे मेरे-तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे-तेरे बीच भी वाचा बन्धे;
देख मैं तेरे पास चान्दी-सोना भेजता हूं, इसलिथे आ, इस्राएल के राजा बाशा के
साय की अपक्की वाचा को तोड़ दे, ताकि वह मुझ से दूर हो। 4 बेन्हदद ने राजा
आसा की यह बात मानकर, अपके दलोंके प्रधानोंसे इस्राएली नगरोंपर चढ़ाई
करवाकर इय्योन, दान, आबेल्मैम और नप्ताली के सब भणडारवाले नगरोंको
जीत लिया। 5 यह सुनकर बाशा ने रामा को दृढ़ करना छोड़ दिया, और अपना
वह काम बन्द करा दिया। 6 तब राजा आसा ने पूरे यहूदा देश को साय लिया और
रामा के पत्यरोंऔर लकड़ी को, जिन से बासा काम करता या, उठा ले गया, और
उन से उस ने गेवा, और मिस्पा को दृढ़ किया। 7 उस समय हनानी दर्शी यहूदा के
राजा आसा के पास जाकर कहने लगा, तू ने जो अपके परमेश्वर यहोवा पर भरोसा
नही रखा वरन अराम के राजा ही पर भरोसा रखा है, इस कारण अराम के राजा
की सेना तेरे हाथ से बच गई है। 8 क्या कूशियोंऔर लूबियोंकी सेना बड़ी न यी,
और क्या उस में बहुत ही रय, और सवार न थे? तौभी तू ने यहोवा पर भरोसा
रखा या, इस कारण उस ने उनको तेरे हाथ में कर दिया। 9 देख, यहोवा की दृष्टि
सारी पृय्वी पर इसलिथे फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कमट
रहता है, उनकी सहाथता में वह अपना सामर्य दिखाए। तूने यह काम मूर्खता से
किया है, इसलिथे अब से तू लड़ाइयोंमे फंसा रहेगा। 10 तब आसा दर्शी पर
क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया, क्योंकि वहउसकी ऐसी बात के

कारण उस पर क्रोधित या। और उसी समय से आसा प्रजा के कुछ लोगोंको पीसने
भी लगा। 11 आदि से लेकर अन्त तक आसा के काम यहूदा औ इस्राएल के
राजाओं के वृत्तान्त में लिखे हैं। 12 अपके राज्य के उनतीसवें वर्ष में आसा को
पांव का रोग हुआ, और वह रोग अत्यन्त बढ़ गया, तौभी उस ने रोगी होकर
यहोवा की नहीं वैद्योंही की शरण ली। 13 निदान आसा अपके राज्य के
एकतालीसवें वर्ष में मरके अपके पुरखाओं के साय सो गया। 14 तब उसको उसी
की कब्र में जो उस ने दाऊदपुर में खुदवा ली यी, मिट्टी दी गई; और वह
सुगन्धद्रव्योंऔर गंधी के काम के भांति भांति के मसालोंसे भरे हुए एक बिछौने
पर लिटा दिया गया, और बहुत सा सुगन्धद्रव्य उसके लिथे जलाया गया।

2 इतिहास 17

1 और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्यान पर राज्य करने लगा, और इस्राएल के
विरुद्ध अपना बल बढ़ाया। 2 और उस ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरोंमें
सिपाहियोंके दल ठहरा दिए, और यहूदा के देश में और एप्रैम के उन नगरोंमें भी
जो उसके पिता आसा ने ले लिथे थे, सिपाहियोंकी चौकियां बैठा दीं। 3 और यहोवा
यहोशापात के संग रहा, क्योंकि वह अपके मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल सी
चाल चला और बाल देवताओं की खोज में न लगा। 4 वरन वह अपके पिता के
परमेश्वर की खोज में लगा रहता या और उसी की आज्ञाओं पर चलता या, और
इस्राएल के से काम नहीं करता या। 5 इस कारण यहोवा ने रज्य को उसके हाथ में
दृढ़ किया, और सारे यहूदी उसके पास भेंट लाया करते थे, और उसके पास बहुत
धन और उसका विभव बढ़ गया। 6 और यहोवा के मार्गों पर चलते चलते उसका

मन मगन हो गया; फिर उस ने यहूदा से ऊंचे स्यान और अशेरा नाम मूरतें दूर
कर दीं। 7 और उस ने अपके राज्य के तीसरे वर्ष में बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह,
नतनेल और मीकायाह नामक अपके हाकिमोंको यहूदा के नगरोंमें शिझा देने को
भेज दिया। 8 और उनके साय शमायाह, नतन्याह, जबद्याह, असाहेल,
शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह, तोबिय्याह और तोबदोनिय्याह, नाम
लेवीय और उनके संग एलीशामा और यहोराम नामक याजक थे। 9 सो उन्होंने
यहोवा की य्यवस्या की पुस्तक अपके साय लिथे हुए यहूदा में शिझा दी, वरन वे
यहूदा के सब नगरोंमें प्रजा को सिखाते हुए घूमे। 10 और यहूदा के आस पास के
देशोंके राज्य राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया, कि उन्होंने यहोशापात से
युद्ध न किया। 11 वरन किनते पलिश्ती यहोशपात के पास भेंट और कर
समझकर चान्दी लाए; और अरबी लोग भी सात हजार सात सौ मेढ़े और सात
हजार सात सौ बकरे ले आए। 12 और यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और उस
ने यहूदा में किले और भण्डार के नगर तैयार किए। 13 और यहूदा के नगरोंमें
उसका बहुत काम होता या, और यरूशलेम में उसके योद्धा अर्यात् शूरवीर रहते
थे। 14 और इनके पितरोंके घरानोंके अनुसार इनकी यह गिनती यी, अर्यात् यहूदी
सहस्रपति तो थे थे, प्रधान अदना जिसके साय तीन लाख शूरवीर थे, 15 और
उसके बाद प्रधान यहोहानान जिसके साय दो लाख अस्सी हजार पुरुष थे। 16
और इसके बाद जिक्री का पुत्र अमस्याह, जिस ने अपके को अपक्की ही इच्छा से
यहोवा को अर्पण किया या, उसके साय दो लाख शूरवीर थे। 17 फिर बिन्यामीन
में से एल्यादा नामक एक शूरवीर जिसके साय ढाल रखनेवाले दो लाख धनुर्धारी
थे। 18 और उसके नीचे यहोजाबाद जिसके साय युद्ध के हयियार बान्धे हुए एक

लाख अस्सी हजार पुरुष थे। 19 वे थे हैं, जो राजा की सेवा में लवलीन थे। और थे
उन से अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के गढ़वाले नगरोंमें ठहरा दिया।

2 इतिहास 18

1 यहोशपात बड़ा धनवान और ऐश्वर्य्यवान हो गया; और उस ने अहाब के साय
समधियाना किया। 2 कुछ वर्ष के बाद वह शोमरोन में अहाब के पास गया, तब
अहाब ने उसके और उसके संगियोंके लिथे बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय-बैल
काटकर, उसे गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने को उसकाया। 3 और इस्राएल के
राजा अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से कहा, क्या तू मेरे साय गिलाद के
रामोत पर चढ़ाई करेगा? उस ने उसे उत्तर दिया, जैसा तू वैसा मैं भी हूँ, और जैसी
तेरी प्रजा, वैसी मेरी भी प्रजा है। हम लोग युद्ध में तेरा साय देंगे। 4 फिर
यहोशापात ते इस्राएल के राजा से कहा, आज यहोवा की आज्ञा ले। 5 तब इस्राएल
के राजा ने नबियोंको जो चार सौ पुरुष थे, इकट्ठा करके उन से पूछा, क्या हम
गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें, अयवा मैं रुका रहूं? उन्होंने उत्तर
दिया चढ़ाई कर, क्योंकि परमेश्वर उसको राजा के हाथ कर देगा। 6 परन्तु
यहोशापात ने पूछा, क्या यहोंयहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम
पूछ लें? 7 इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, हां, एक पुरुष और है, जिसके
द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं; परन्तु मैं उस से घृणा करता हूँ; क्योंकि वह मेरे
विष्य कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नबूवत करता है। वह यिम्ला का
पुत्र मीकायाह है। यहोशापात ने कहा, राजा ऐसा न कहे। 8 तब इस्राएल के राजा
ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ। 9

इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात अपके अपके राजवस्त्र पहिने
हुए, अपके अपके सिंहासन पर बैठे हुए थे; वे शोमरोन के फाटक में एक खुले
स्यान में बैठे थे और सब नबी उनके साम्हने नबूवत कर रहे थे। 10 तब कनाना
के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनवाकर कहा, यहोवा योंकहता है, कि इन
से तू अरामियोंको मारते मारते नाश कर डालेगा। 11 और सब नबियोंने इसी
आशय की नबूवत करके कहा, कि गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्य
होवे; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर देगा। 12 और जो दूत मीकायाह को
बुलाने गया या, उस ने उस से कहा, सुन, नबी लोग एक ही मुंह से राजा के विषय
हाुभ वचन कहते हैं; सो तेरी बात उनकी सी हो, तू भी शुभ वचन कहना। 13
मीकायाह ने कहा, यहोवा के जीवन की सौंह, जो कुछ मेरा परमेश्वर कहे वही मैं
भी कहूंगा। 14 जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उस से पूछा, हे
मीकायाह, क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें अयवा मैं रुका
रहूं? उस ने कहा, हां, तुम लोग चढ़ाई करो, और कृतार्य होओ; और वे तुम्हारे हाथ
में कर दिए जाएंगे। 15 राजा ने उस से कहा, मुझे कितनी बार तुझे शपय धराकर
चिताना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह। 16 मीकायाह
ने कहा, मुझे सारा इस्राएल बिना चरवाहे की भेंड़-बकरियोंकी नाईं पहाड़ोंपर
तितर बितर दिखाई पड़ा, और यहोवा का वचन आया कि वे तो अनाय हैं,
इसलिथे हर एक अपके अपके घर कुशल क्षेम से लौट जाएं। 17 तब इस्राएल के
राजा ने यहोशापात से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा या, कि वह मेरे विषय
कल्याण की नहीं, हानि ही की नबूवत करेगा? 18 मीकायाह ने कहा, इस कारण
तुम लोग यहोवा का यह वचन सुनो : मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और

उसके दाहिने बाएं खड़ी हुई स्वर्ग की सारी सेना दिखाई पक्की। 19 तब यहोवा ने
पूछा, इस्राएल के राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत
पर चढ़ाई करके खेत आए, तब किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। 20 निदान
एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, मैं उसको
बहकाऊंगी। 21 यहोवा ने पूछा, किस उपाय से? उस ने कहा, मैं जाकर उसके सब
नबियोंमें पैठ के उन से फूठ बुलवाऊंगी। यहोवा ने कहा, तेरा उसको बहकाना
सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर। 22 इसलिथे तुन अब यहोवा ने तेरे इन
नबियोंके मुंह में एक फूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय
हानि की बात कही है। 23 तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने निकट जा,
मीकायाह के गाल पर यप्पड़ मारकर पूछा, यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ
से बातें करने को किधर गया। 24 उस ने कहा, जिस दिन तू छिपके के लिथे
कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब जान लेगा। 25 इस पर इस्राएल के राजा ने कहा,
कि मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और राजकुमार योआश के पास
लौटाकर, 26 उन से कहो, राजा योंकहता है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और
जब तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दु:ख की रोटी और पानी दिया करो।
27 तब मीकायाह ने कहा, यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान, कि यहोवा ने मेरे
द्वारा नहीं कहा। फिर उस ने कहा, हे लोगो, तुम सब के सब सुन लो। 28 तब
इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात दोनोंने गिलाद के रामोत पर
चढ़ाई की। 29 और इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, मैं तो भेष बदलकर
युद्ध में जाऊंगा, परन्तु तू अपके ही वस्त्र पहिने रह। इस्राएल के राजा ने भेष बदला
और वे दोनोंयुद्ध में गए। 30 अराम के राजा ने तो अपके रयोंके प्रधानोंको आज्ञा

दी यी, कि न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल इस्राएल के राजा से लड़ो। 31
सो जब रयोंके प्रधानोंने यहोशापात को देखा, तब कहा इस्राएल का राजा वही है,
और वे उसी से लड़ने को मुड़े। इस पर यहोशापात चिल्ला उठा, तब यहोवा ने
उसकी सहाथता की। और परमेश्वर ने उनको उसके पास से फिर जाने की प्रेरणा
की। 32 सो यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नही है, रयोंके प्रधान उसका
पीछा छोड़ के लौट गए। 33 तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया, और वह
इस्राएल के राजा के फिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा; तब उस ने
अपके सारयी से कहा, मैं घायल हुआ, इसलिथे लगाम फेरके मुझे सेना में से
बाहर ले चल। 34 और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल का राजा अपके रय
में अरामियोंके सम्मुख सांफ तक खड़ा रहा, परन्तु सूर्य अस्त होते-होते वह मर
गया।

2 इतिहास 19

1 और यहूदा का राजा यहोशापात यरूशलेम को अपके भवन में कुशल से लौट
गया। 2 तब हनानी नाम दर्शी का पुत्र थेहू यहोशापात राजा से भेंट करने को
निकला और उस से कहने लगा, क्या दुष्टोंकी सहाथता करनी और यहोवा के
बैरियोंसे प्रेम रखना चाहिथे? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध
भड़का है। 3 तौभी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं। तू ने तो देश में से
अशेरोंको नाश किया और उपके मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है। 4
यहोशापात यरूशलेम में रहता या, और उस ने बेर्शेबा से लेकर बप्रैम के पहाड़ी
देश तक अपक्की प्रजा में फिर दौरा करके, उनको उनके पितरोंके परमेश्वर

यहोवा की ओर फेर दिया। 5 फिर उस ने यहूदा के एक एक गढ़वाले नगर में
न्यायी ठहराया। 6 और उस ने न्यायियोंसे कहा, सोचो कि क्या करते हो, क्योंकि
तुम जो न्याय करोगे, वह मनुष्य के लिथे नहीं, यहोवा के लिथे करोगे; और वह
न्याय करते समय तुम्हारे साय रहेगा। 7 अब यहोवा का भय तुम में बना रहे;
चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है,
और न वह किसी का पझ करता और न घूस लेता है। 8 और यरूशलेम में भी
यहोशापात ने लेवियोंऔर याजकोंऔर इस्राएल के पितरोंके घरानोंके कुछ मुख्य
पुरुषोंको यहोवा की ओर से न्याय करने और मुकद्दमोंको जांचने के लिथे
ठहराया। 9 और वे यरूशलेम को लौटे। और उस ने उनको आज्ञा दी, कि यहोवा
का भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन से ऐसा करना। 10 तुम्हारे भाई जो
अपके अपके नगर में रहते हैं, उन में से जिसका कोई मुकद्दमा तुम्हारे साम्हने
आए, चाहे वह खून का हो, चाहे य्यवस्या, अयवा किसी आज्ञा या विधि वा नियम
के विषय हो, उनको चिता देना, कि यहोवा के विषय दोषी न होओ। बेसा न हो कि
तुम पर और तुम्हारे भाइयोंपर उसका क्रोध भड़के। ऐसा करो तो तुम दोषी न
ठहरोगे। 11 और देखो, यहोवा के विष्य के सब मुकद्दमोंमें तो अमर्याह
महाथाजक और राजा के विषय के सब मुकद्दमोंमें यहूदा के घराने का प्रधान
इश्माएल का पुत्र जबद्याह तुम्हारे ऊपर अधिक्कारनी है; और लेवीय तुम्हारे
साम्हने सरदारोंका काम करेंगे। इसलिथे हियाब बान्धकर काम करो और भले
मनुष्य के साय यहोवा रहेगा।

2 इतिहास 20

1 इसके बाद मोआबियोंऔर अम्मोनियोंने और उनके साय कई मूनियोंने युद्ध
करने के लिथे यहोशाात पर चढ़ाई की। 2 तब लोगोंने आकर यहोशापात को
बता दिया, कि ताल के पार से एदोम देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुझ पर चढ़ाई
कर रही है; और देख, वह हसासोन्तामार तक जो एनगदी भी कहलाता है, पहुंच
गई है। 3 तब यहोशपात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे
यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया। 4 सो यहूदी यहोवा से सहाथता मांगने के
लिथे इकट्‍ठे हुए, वरन वे यहूदा के सब नगरोंसे यहोवा से भेंट करते को आए। 5
तब यहोशपात यहोवा के भवन में नथे आंगन के साम्हने यहूदियोंऔर
यरूशलेमियोंकी मण्डली में खड़ा होकर 6 यह कहने लगा, कि हे हमारे पितरोंके
परमेश्वर यहोवा ! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के
सब राज्योंके ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और
पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई नहीं कर सकता? 7 हे हमारे परमेश्वर ! क्या
तू ने इस देश के निवासिक्कों अपक्की प्रजा इस्राएल के साम्हने से निकालकर
इन्हें अपके मित्र इब्राहीम के वंश को सदा के लिथे नहीं दे दिया? 8 वे इस में बस
गए और इस में तेरे नाम का एक पवित्रस्यान बनाकर कहा, 9 कि यदि तलवार
या मरी अयवा अकाल वा और कोई विपत्ति हम पर पके, तौभी हम इसी भवन के
साम्हने और तेरे साम्हने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर, अपके
क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा। 10 और अब अम्मोनी
और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तू ने इस्राएल को मिस्र
देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया, और वे उनकी ओर से मुड़ गए और
उनको विनाश न किया, 11 देख, वे ही लोग तेरे दिए हुए अधिक्कारने के इस देश

में से जिसका अधिक्कारने तू ने हमें दिया है, हम को निकालकर कैसा बदला हमें
दे रहे हैं। 12 हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़
हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके साम्हने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ
सूफता नहीं कि क्या करना चाहिथे? परन्तु हमारी आंखें तेरी ओर लगी हैं। 13
और सब यहूदी अपके अपके बालबच्चों, स्त्रीयोंऔर पुत्रोंसमेत यहोवा के सम्मुख
खड़े रहे। 14 तब आसाप के वंश में से यहजीएल नाम एक लेवीय जो जकर्याह का
पुत्र और बनायाह का पोता और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का परपोता या, उस में
मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया। 15 और वह कहने लगा, हे सब
यहूदियो, हे यरूशलेम के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो;
यहोवा तुम से योंकहता है, तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा
न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है। 16 कल उनका साम्हना करने
को जाना। देखो वे सीस की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं और यरूएल नाम जंगल के
साम्हने नाले के सिक्के पर तुम्हें मिलेंगे। 17 इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा;
हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना
बचाव देखना। मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका साम्हना
करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साय रहेगा। 18 तब यहोशापात भूमि की
ओर मुंह करके भुका और सब यहूदियोंऔर यरूशलेम के निवासियोंने यहोवा के
साम्हने गिरके यहोवा को दण्डवत किया। 19 और कहातियोंऔर कोरहियोंमें से
कुछ लेवीय खड़े होकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊंचे स्वर
से करने लगे। 20 बिहान को वे सबेरे उठकर तकोआ के जंगल की ओर निकल
गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, हे यहूदियो, हे यरूशलेम के

निवासियो, मेरी सु ुनो, अपके परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्यिर
रहोगे; उसके नबियोंकी प्रतीत करो, तब तुम कृतार्य हो जाओगे। 21 तब उस ने
प्रजा के साय सम्मति करके कितनोंको ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान
होकर हयियारबन्दोंके आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते
हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा
की है। 22 जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने
अम्मोनियोंमोआबियोंऔर सेईर के पहाड़ी देश के लोगोंपर जो यहूदा के विरुद्ध आ
रहे थे, घातकोंको बैठा दिया और वे मारे गए। 23 क्योंकि अम्मोनियोंऔर
मोआबियोंने सेईर के पहाड़ी देश के निवासिक्कों डराने और सत्यानाश करने के
लिथे उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के निवासियोंका अन्त
कर चुके, तब उन सभोंने एक दूसरे के नाश करने में हाथ लगाया। 24 सो जब
यहूदियोंने जंगल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देख
कि वे भूमि पर पक्की हुई लोय हैं; और कोई नहीं बचा। 25 तब यहोशापात और
उसकी प्रजा लूट लेने को गए और लोयोंके बीचा बहुत सी सम्मत्ति और मनभावने
गहने मिले; उन्होंने इतने गहने उतार लिथे कि उनको न ले जा सके, वरन लूट
इतनी मिली, कि बटोरते बटोरते तीन दिन बीत गए। 26 चौथे दिन वे बराका नाम
तराई में इकट्ठे हुए और वहां यहोवा का धन्यवाद किया; इस कारण उस स्यान
का नाम बराका की ता िई पड़ा, जो आज तक है। 27 तब वे, अर्यात् यहूदा और
यरूशलेम नगर के सब पुरुष और उनके आगे आगे यहोशापात, आनन्द के साय
यरूशलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया या। 28 सो वे
सारंगियां, वीणाएं और तुरहियां बजाते हुए यरूशलेम में यहोवा के भवन को

आए। 29 और जब देश देश के सब राज्योंके लोगोंने सुना कि इस्राएल के शत्रुओं
से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया। 30 और यहोशापात
के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारोंओर से विश्रम
दिया। 31 योंयहोशापात ने यहूदा पर राज्य किया। जब वह राज्य करने लगा तब
वह पैंतीस वर्ष का या, और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और
उसकी माता का नाम अजूबा या, जो शिल्ही की बेटी यी। 32 और वह अपके पिता
आसा की लीक पर चला ओर उस से न मुड़ा, अर्यात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है
वही वह करता रहा। 33 तौभी ऊंचे स्यान ढाए न गए, वरन अब तक प्रजा के
लोगोंने अपना मन अपके पितरोंके परमेश्वर की ओर न लगाया या। 34 और
आदि से अन्त तक यहोशापात के और काम, हनानी के पुत्र थेहू के विषय उस
वृत्तान्त में लिखे हैं, जो इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता हैं। 35 इसके
बाद यहूद के राजा यहोशापात ने इस्राएल का राजा अहज्याह से जो बड़ी दुष्टता
करता या, मेल किया। 36 अर्यात् उस ने उसके साय इसलिथे मेल किया कि
तर्शीश जाने को जहाज बनवाए, और उन्होंने ऐसे जहाज एस्योनगेबेर में
बनवाए। 37 तब दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीआजर ने यहोशापात के
विरुृद्ध यह नबूवत कही, कि तू ने जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा
तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा। सो जहरज टूट गए और तर्शीश को न
जा सके।

2 इतिहास 21

1 निदान यहोशापात अपके पुरखाओं के संग सो गया, और उसको उसके

पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र यहोराम उसके
स्यान पर राज्य करने लगा। 2 इसके भाई जो यहोशापात के पुत्र थे, थे थे, अर्यात्
अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह; थे सब इस्राएल
के राजा यहोशापात के पुत्र थे। 3 और उनके पिता ने उन्हे चान्दी सोना और
अनमोल वस्तुएं और बड़े बड़े दान और यहूदा में गढ़वाले नगर दिए थे, परन्तु
यहोराम को उस ने राज्य दे दिया, क्योंकि वह जेठा या। 4 जब यहोराम अपके
पिता के राज्य पर नियुक्त हुआ और बलवन्त भी हो गया, तब उसने अपके सब
भाइयोंको और इस्राएल के कुछ हाकिमोंको भी तलवार से घात किया। 5 जब
यहोराम राजा हुआ, तब वह बत्तीस वर्ष का या, और वह आठ वर्ष तक यरूशलेम
में राज्य करता रहा। 6 वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का
घराना चलता या, क्योंकि उसकी पत्नी अहाब की बेटी यी। और वह उस काम को
करता या, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 7 तौभी यहोवा ने दाऊद के घराने को
नाश करना न चाहा, यह उस वाचा के कारण या, जो उसने दाऊद से बान्धी यी।
और उस वचन के अनुसार या, जो उस ने उसको दिया या, कि में ऐसा करूंगा कि
तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न बुफेगा। 8 उसके दिनोंमें एदोम ने यहूदा की
अधीनता छोड़कर अपके ऊपर एक राजा बना लिया। 9 सो यहोराम अपके
हाकिमोंऔर अपके सब रयोंको साय लेकर उधर गया, और रयोंके प्रधानोंको
मारा। 10 योंएदोम यहूदा के वश से छूट गया और आज तक वैसा ही है। उसी
समय लिब्ना ने भी उसकी अधीनता छोड़ दी, यह इस कारण हुआ, कि उस ने
अपके पितरोंके परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया या। 11 और उस ने यहूदा के
पहाड़ोंपर ऊंचे स्यान बनाए और यरूशलेम के निवासिक्कों य्यभिचार कराया,

और यहूदा को बहका दिया। 12 तब एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास
आया, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि तू जो न तो
अपके पिता यहोशापात की लीक पर चला है और न यहूदा के राजा आसा की
लीक पर, 13 वरन इस्राएल के राजाओं की लीक पर चला है, और अहाब के घराने
की नाई यहूलियोंऔर यरूशलेम के निवासिक्कों य्यभिचार कराया है और अपके
पिता के घराने में से अपके भाइयोंको जो तुझ से अच्छे थे, घात किया है, 14 इस
कारण यहोवा तेरी प्रजा, पुत्रों, स्त्रियोंऔर सारी सम्मत्ति को बड़ी मार से मारेगा।
15 और तू अंतडिय़ोंके रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा, यहां तक कि उस रोग के
कारण तेरी अंतडिय़ां प्रतिदिन निकलती जाएंगी। 16 और यहोवा ने
पलिश्तियोंको और कूशियोंके पास रहनेवाले अरबियोंको, यहोराम के विरुद्ध
उभारा। 17 और वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर टूट पके, और राजभवन में
जितनी सम्पत्ति मिली, उस सब को और राजा के पुत्रोंऔर स्त्रियोंको भी ले गए,
यहां तक कि उसके लहुरे बेटे यहोआहाज को छोड़, उसके पास कोई भी पुत्र न
रहा। 18 इन सब के बाद यहोवा ने उसे अंतडिय़ोंके असाध्यरोग से पीड़ित कर
दिया। 19 और कुछ समय के बाद अर्यात् दो वर्ष के अन्त में उस रोग के कारण
उसकी अंतडिय़ां निकल पक्कीं, ओर वह अत्यन्त पीड़ित होकर मर गया। और
उसकी प्रजा ने जैसे उसके पुरखाओं के लिथे सुगन्धद्रय्य जलाया या, वैसा उसके
लिथे कुछ न जलाया। 20 वह जब रज्य करने लगा, तब बत्तीस वर्ष का या, और
यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य करता रहा; और सब को अप्रिय होकर जाता
रहा। और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में
नहीं।

2 इतिहास 22

1 तब यरूशलेम के निवासियोंने उसके लहुरे पुत्र अहज्याह को उसके स्यान पर
राजा बनाया; क्योंकि जो दल अरबियोंके संग छावनी में आया या, उस ने उसके
सब बड़े बड़े बेटोंको घात किया या सो यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह
राजा हुआ। 2 जब अहज्याह राजा हुआ, तब वह बयालीस वर्ष का या, और
यरूशलेम में बक ही वर्ष राज्य किया, और उसकी माता का ताम अतल्याह या,
जो ओम्री की पोती यी। 3 वह अहाब के घराने की सी चाल चला, क्योंकि उसकी
माता उसे दुष्टता करने की सम्मति देती यी। 4 और वह अहाब के घराने की नाई
वह काम करता या जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के
बाद वे उसको ऐसी सम्मति देते थे, जिस से उसका विनाश हुआ। 5 और वह
उनकी सम्मति के अनुसार चलता या, और इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र
यहोराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया
और अरामियोंने यहोराम को घायल किया। 6 सो राजा यहोराम इसलिथे लौट
गया कि यिज्रेल में उन घावोंका इताज कराए जो उसको अरामियोंके हाथ से उस
समय लगे थे जब वह हजाएल के साय लड़ रहा या। और अहाब का पुत्र यहोराम
जो यिज्रेल में रोगी या, इस कारण से यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह
उसको देखने गया। 7 और अहज्याह का विनाश यहोवा की ओर से हुआ, क्योंकि
वह यहोराम के पास गया या। और जब वह वहां पहुंचा, तब यहोराम के संग
निमशी के पुत्र थेहू का साम्हना करने को निकल गया, जिसका अभिषेक यहोवा
ने इसलिथे कराया या कि वह अहाब के घराने को नाश करे। 8 और जब थेहू
अहाब के घराने को दण्ड दे रहा या, तब उसको यहूदा के हाकिम और अहज्याह

के भतीजे जो अहज्याह के टहलुए थे, मिले, और उस ने उनको घात किया। 9 तब
उस ने अहज्याह को ढूंढ़ा। वह शोमरोन में छिपा या, सो लोगोंने उसको पकड़
लिया और थेहू के पास पहुंचाकर उसको मार डाला। तब यह कहकर उसको
मिट्टी दी, कि यह यहोशपात का पोता है, जो अपके पूरे मन से यहोवा की खोज
करता या। और अहज्याह के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रहा। 10 जब
अहज्याह की माता अतल्याह ने देख कि मेरा पुत्र मर गया, तब उस ने उठकर
यहूदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया। 11 परन्तु यहोशवत जो राजा की
बेटी यी, उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारोंके बीच से
चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। इस प्रकार राजा
यहोराम की बेटी यहोशवत जो यहोयादा याजक की स्त्री और अहज्याह की बहिन
यी, उस ने योआश को अतल्याह से ऐसा छिपा रखा कि वह उसे मार डालने न
पाई। 12 और वह उसके पास परमेश्वर के भवन में छ: वर्ष छिपा रहा, इतने
दिनोंतक अतल्याह देश पर राज्य करती रही।

2 इतिहास 23

1 सातवें वर्ष में यहोयादा ने हियाब बान्धकर यरोहाम के पुत्र अजर्याह, यहोहानान
के पुत्र इश्माएल, ओबेद के पुत्र अजर्याह, अदायाह के पुत्र मासेयाह और जिक्री के
पुत्र बलीशपात, इन शतपतियोंसे वाचा बान्धी। 2 तब वे यहूदा में घूमकर यहूदा
के सब नगरोंमें से लेवियोंको और इस्राएल के पितरोंके घरानोंके मुख्य मुख्य
पुरुषोंको इकट्ठा करके यरूशलेम को ले आए। 3 और उस सारी मण्डली ने
परमेश्वर के भवन में राजा के साय वाचा बान्धी, और यहोयादा ने उन से कहा,

सुनो, यह राजकुमार राज्य करेगा जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय कहा
है। 4 तो तुम एक काम करो, अर्यात् तुम याजकोंऔर लेवियोंकी एक तिहाई लोग
जो विश्रमदिन को आनेवाले हो, वे द्वारपाली करें, 5 और एक तिहाई लोग
राजभवन में रहें और एक तिहाई लोग नेव के फाटक के पास रहें; और सब लोग
यहोवा के भवन के आंगनोंमें रहें। 6 परन्तु याजकोंऔर सेवा टहल करनेवाले
लेवियोंको छोड़ और कोई यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए; वे तो भीतर
आएं, क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सब लोग यहोवा के भवन की चौकसी करें। 7
और लेवीय लोग अपके अपके हाथ में हयियार लिथे हुए राजा के चारोंओर रहें
और जो कोई भवन के भीतर घुसे, वह मार डाला जाए। और तुम राजा के आते
जाते उसके साय रहना। 8 यहोयादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार
लेवियोंऔर सब यहूदियोंने किया। उन्होंने विश्रमदिन को आनेवाले और
विश्रमदिन को जानेवाले दोनोंदलोंके, अपके अपके जनोंको अपके साय कर लिया,
क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी दल के लेवियोंको विदा न किया य। 9 तब
यहोयादा याजक ने शतपतियोंको राजा दाऊद के बर्छे और भाले और ढालें जो
परमेश्वर के भवन में यीं, दे दीं। 10 फिर उस ने उन सब लोगोंको अपके अपके
हाथ में हयियार लिथे हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर, उत्तरी कोने तक वेदी
और भवन के पास राजा के चारोंओर उसकी आड़ करके खड़ा कर दिया। 11 तब
उन्होंने राजकुमार को बाहर ला, उसके सिर पर मुकुट रखा और साझीपत्र देकर
उसे राजा बनाया; और यहोयादा और उसके पुत्रोंने उसका अभिषेक किया, और
लोग बोल उठे, राजा जीवित रहे। 12 जब अतल्याह को उन लोगोंका हल्ला, जो
दौड़ते और राजा को सराहते थे सुन पड़ा, तब वह लोगोंके पास यहोवा के भवन में

गई। 13 और उस ने क्या देखा, कि राजा द्वार के निकट खम्भे के पास खड़ा है
और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं, और सब लोग आनन्द
कर रहे हैं और तुरहियां बजा रहे हैं और गाने बजानेवाले बाजे बजाते और स्तुति
करते हैं। तब अतल्याह अपके वस्त्र फाड़कर पुकारने लगी, राजद्रोह, राजद्रोह ! 14
तब यहोयादा याजक ने दल के अधिक्कारनी शतपतियोंको बाहर लाकर उन से
कहा, कि उसे अपक्की पांतियोंके बीच से निकाल ले जाओ; और जो कोई उसके
पीछे चले, वह तलवार से मार डाला जाए। याजक ने कहा, कि उसे यहोवा के
भवन में न मार डालो। 15 तब उन्होंने दोनोंओर से उसको जगह दी, और वह
राजभवन के घोड़ाफाटक के द्वार तक गई, और वहां उन्होंने उसको मार डाला। 16
तब यहोयादा ने अपके और सारी प्रजा के और राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने
की वाचा बन्धवाई। 17 तब सब लोगोंने बाल के भवन को जाकर ढा दिया; और
उसकी वेदियोंऔर मूरतोंको टुकड़े टुकड़े किया, और मत्तान नाम बाल के याजक
को वेदियोंके साम्हने ही घात किया। 18 तब यहोयादा ने यहोवा के भवन की सेवा
के लिथे उन लेवीय याजकोंको ठहरा दिया, जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन पर
दल दल करके इसलिथे ठहराया या, कि जैसे मूसा की य्यवस्या में लिखा है, वैसे
ही वे यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और दाऊद की चलाई हुई विधि के अनुसार
आनन्द करें और गाएं। 19 और उस ने यहोवा के भवन के फाटकोंपर द्वारपालोंको
इसलिथे खड़ा किया, कि जो किसी रीति से अशुद्ध हो, वह भीतर जाने न पाए। 20
और वह शतपतियोंऔर रईसोंऔर प्रजा पर प्रभुता करनेवालोंऔर देश के सब
लोगोंको साय करके राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और ऊंचे फाटक से
होकर राजभवन में आया, और राजा को राजगद्दी पर बैठाया। 21 तब सब लोग

आनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो तलवार से मार ही डाली गई यी।

2 इतिहास 24

1 जब योआश राजा हुआ, तब वह सात वर्ष का या, और यरूशलेम में चालीस वर्ष
तक राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम सिब्या या, जो बेर्शेबा की यी। 2 और
जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो
यहोवा की दृष्टि में ठीक है। 3 और यहसेयादा ने उसके दो ब्याह कराए और उस से
बेटे-बेटियां उत्पन्न हुई। 4 इसके बाद योआश के मन में यहोवा के भवन की
मरम्मत करने की मनसा उपक्की। 5 तब उस ने याजकोंऔर लेवियोंको इकट्‌ठा
करके कहा, प्रति वर्ष यहूदा के नगरोंमें जा जाकर सब इस्राएलियोंसे रुपके लिया
करो जिस से तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो; देखो इसकाम में फुर्ती
करो। तौभी लेवियोंने कुछ फुर्ती न की। 6 तब राजा ने यहोयादा महाथाजक को
बुलवा कर पूछा, क्या कारण है कि तू ने लेवियोंको दृढ़ आज्ञा नहीं दी कि वे यहूदा
और यरूशलेम से उस चन्दे के रुपए ले आएं जिसका नियम यहोवा के दास मूसा
और इस्राएल की मण्डली ने साझीपत्र के तम्बू के निमित्त चलाया या। 7 उस दुष्ट
स्त्री अतल्याह के बेटोंने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया और यहोवा के भवन
की सब पवित्र की हुई वस्तुएं बाल देवताओं को दे दी यीं। 8 और राजा ने एक
सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा
गया। 9 तब यहूदा और यरूशलेम में यह प्रचार किया गया कि जिस चन्दे का
नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इस्राएल में चलाया या, उसके रुपए

यहोवा के निमित्त ले आओ। 10 तो सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित
हो रुपए लाकर जब तक चन्दा पूरा न हुआ तब तक सन्दूक में डालते गए। 11
और जब जब वह सन्दूक लेवियोंके हाथ से राजा के प्रधानोंके पास पहुंचाया जाता
और यह जान पड़ता या कि उस में रुपए बहुत हैं, तब तब राजा के प्रधान और
महाथाजक का नाइब आकर सन्दूक को खाली करते और तब उसे फिर उसके
स्यान पर रख देते थे। उन्होंने प्रतिदिन ऐसा किया और बहुत रुपए इाट्ठा किए।
12 तब राजा और यहोयादा ने वह रुपए यहोवा के भवन में काम करनेवालोंको दे
दिए, और उन्होंने राजोंऔर बढ़इयोंको यहोवा के भवन के सुधारने के लिथे, और
लोहारोंऔर ठठेरोंको यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिथे मजदूरी पर
रखा। 13 और कारीगर काम करते गए और काम पूरा होता गया और उन्होंने
परमेश्धर का भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया। 14 जब उन्होंने वह काम
निपटा दिया, तब वे शेष रुपए राजा और यहोयादा के पास ले गए, और उन से
यहोवा के भवन के लिथे पात्र बनाए गए, अर्यात् सेवा टहल करने और होमबलि
चढ़ाने के पात्र और धूपदान आदि सोने चान्दी के पात्र। और जब तक यहोयादा
जीवित रहा, तब तक यहोवा के भवन में होमबलि नित्य चढ़ाए जाते थे। 15
परन्तु यहोयादा बूढा हो गया और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह मर गया तब
एक सौ तीस वर्ष का या। 16 और दाऊदपुर में राजाओं के बीच उसको मिट्टी दी
गई, क्योंकि उस ने इस्राएल में और परमेश्धर के और उसके भवन के विषय में
भला किया या। 17 यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के हाकिमोंने राजा के पास
जाकर उसे दणडवत की, और राजा ने उनकी मानी। 18 तब वे अपके पितरोंके
परमेश्धर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरोंऔर मूरतोंकी उपासना करने लगे। सो

उनके ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर
भड़का। 19 तौभी उस ने उनके पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास फेर लाएं;
और इन्होंने उन्हें चिता दिया, परन्तु उन्होंने कान न लगाया। 20 और परमेश्वर
का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया, और वह ऊंचे स्यन पर
खड़ा होकर लोगोंसे कहने लगा, परमेश्वर योंकहता है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं
को क्योंटालते हो? ऐसा करके तुम भाग्यवान नहीं हो सकते, देखो, तुम ने तो
यहोवा को त्याग दिया है, इस कारण उस ने भी तुम को त्याग दिया। 21 तब
लोगोंने उस से द्रोह की गोष्ठी करके, राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आंगन
में उसको पत्यरवाह किया। 22 योंराजा योआश ने वह प्रीति भूलकर जो यहोयादा
ने उस से की यी, उसके पुत्र को घात किया। और मरते समय उस ने कहा यहोवा
इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले। 23 तथे वर्ष के लगते अरामियोंकी सेना ने
उस पर चढ़ाई की, और यहूदा ओर यरूशलेम आकर प्रजा में से सब हाकिमोंको
नाश किया और उनका सब धन लूटकर दमिश्क के राजा के पास भेजा। 24
अरामियोंकी सेना थेड़े ही पुरुषोंकी तो आई, पन्तु यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना
उनके हाथ कर दी, क्योंकि उन्होंने अपके पितरो के परमेश्वा को त्याग दिया य।
और योआश को भी उन्होंने दणड दिया। 25 और जब वे उसे बहुत ही रोगी छोड़
गए, तब उसके कर्मचारियोंने यहोयादा याजक के पुत्रोंके खून के कारण उस से
द्रोह की गोष्ठी करके, उसे उसके बिछौने पर ही ऐसा मारा, कि वह मर गया; और
उन्होंने उसको दाऊद पुर में मिट्टी दी, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं। 26
जिन्होंने उस से राजद्रोह की गोष्ठी की, वे थे थे, अर्यात् अम्मोनिन, शिमात का पुत्र
जाबाद और शिम्रित, मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद। 27 उसके बेटोंके विषय और

उसके विरुद्ध, जो बड़े दण्ड की तबूवत हुई, उसके और परमेश्वर के भवन के बनने
के विषय थे सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उसका पुत्र
अमस्याह उसके स्यान पर राजा हुआ।

2 इतिहास 25

1 जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह वचीस वर्ष का या, और यरूशलेम में
उनतीस वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम यहोअद्दान या, जो
यरूशलेम की यी। 2 उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, परन्तु खरे
मन से न किया। 3 जब राज्य उसके हाथ में स्यिर हो गया, तब उस ने अपके उन
कर्मचारियोंको मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला या। 4 परन्तु
उस ने उनके लड़केवालोंको न मारा क्योंकि उस ने यहोवा की उस आज्ञा के
अनुसार किया, जो मूसा की य्यवस्या की पुस्तक में लिखी है, कि पुत्र के कारण
पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिस ने पाप
किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए। 5 और अमस्याह ने यहूदा को
वरन सारे यहूदियोंऔर बिन्यामीनियोंको इकट्ठा करके उनको, पितरोंके
घरानोंके अनुसार सहस्रपतियोंऔर शतपतियोंके अधिक्कारने में ठहराया; और
उन में से जितनोंकी अवस्या बीस वर्ष की अयवा उस से अधिक यी, उनकी
गिनती करके तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल उठानेवाले बड़े बड़े योद्धा
पाए। 6 फिर उस ने एक लाख इस्राएली शूरवीरोंको भी एक सौ किक्कार चान्दी
देकर बुलवा रखा। 7 परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उसके पास आकर कहा, हे
राजा इस्राएल की सेना तेरे साय जाने न पाए; क्योंकि यहोवा इस्राएल अर्यात्

एप्रैम की कुल सन्तान के संग नहीं रहता। 8 यदि तू जाकर पुरुषार्थ करे; और युद्ध
के लिथे हियाव वान्धे, तौभी परमेश्वर तुझे शत्रुओं के साम्हने गिराएगा, क्योंकि
सहाथता करने और गिरा देने दोनोंमें परमेश्वर सामर्यी है। 9 अमस्याह ने
परमेश्वर के भक्त से पूछा, फिर जो सौ किक्कार चान्दी मैं इस्राएली दल को दे चुका
हूँ, उसके विषय क्या करूं? परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, यहोवा तुझे इस से भी
बहुत अधिक दे सकता है। 10 तब अमस्याह ने उन्हें अर्यात् उस दल को जो एप्रैम
की ओर से उसके पास आया या, अलग कर दिया, कि वे अपके स्यान को लौट
जाएं। तब उनका क्रोध यहूदियो पर बहुत भड़क उठा, और वे अत्यन्त क्रोधित
होकर अपके स्यान को लौट गए। 11 परन्तु अमस्याह हियाब बान्धकर अपके
लोगोंको ले चला, और लोन की तराई में जाकर, दस हजार सेईरियोंको मार डाला।
12 और यहूलियोंने दस हजार को बन्धुआ करके चट्टान की चोटी पर ले गथे,
और चट्टान की चोटी पर से गिरा दिया, सो वे सब चूर चूर हो गए। 13 परन्तु उस
दल के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि वे उसके साय युद्ध करने को न
जाएं, शेमरोन से बेथेरोन तक यहूदा के सब नगरोंपर टूट पके, और उनके तीन
हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले ली। 14 जब अमस्याह एदोनियोंका
संहार करके लौट आया, तब उस ने सेईरियोंके देवताओं को ले आकर अपके
देवता करके खड़ा किया, और उन्हीं के साम्हने दणडवत करने, और उन्हीं के
लिथे धूप जलाने लगा। 15 तब यहोवा का क्रोध अमस्याह पर भड़क उठा और
उस ने उसके पास एक नबी भेजा जिस ने उस से कहा, जो देवता अपके लोगोंको
तेरे हाथ से बचा न सके, उनकी खोज में तू क्योंलगा है? 16 वह उस से कह ही रहा
या कि उस ने उस से पूछा, क्या हम ने तुझे राजमन्त्री ठहरा दिया है? चुप रह !

क्या तू मार खाना चाहता है? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया, कि मुझे
मालूम है कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को ठाना है, क्योंकि तू ने ऐसा किया है
और मेरी सम्मति नहीं मानी। 17 तब यहूदा के राजा अमस्याह ने सम्मति लेकर,
इस्राएल के राजा योआश के पास, जो थेहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र या,
योंकहला भेजा, कि आ हम एक दूसरे का साम्हना करें। 18 इस्राएल के राजा
योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास योंकहला भेजा, कि लबानोन पर की
एक फड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा, कि अपक्की बेटी
मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में लबानोन का कोई वन पशु पास से चला गया और
उस फड़बेरी को दौंद डाला। 19 तू कहता है, कि मैं ने एदोमियोंको जीत लिया है;
इस कारण तू फूल उठा और बड़ाई मारता है ! अपके घर में रह जा; तू अपक्की
हानि के लिथे यहां क्योंहाथ डालता है, इस से तू क्या, वरन यहूदा भी नीचा
खाएगा। 20 परन्तु अमस्याह ने न माना। यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ, कि
वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ कर दे, क्योंकि वे एदोम के देवताओं की खोज में
लग गए थे। 21 तब इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई की और उस ने और यहूदा
के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का साम्हना किया। 22
और यहूदा इस्राएल से हार गया, और हर एक अपके अपके डेरे को भागा। 23 तब
इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को, जो यहोआहाज का
पोता और योआश का पुत्र या, बेतशेमेश में पकड़ा और यरूशलेम को ले गया और
यरूशलेम की शहरपनाह में से बप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक चार सौ हाथ
गिरा दिए। 24 और जितना सोना चान्दी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में
ओबेदेदोम के पास मिले, और राजभवन में जितना खजाना या, उस सब को और

बन्धक लोगोंको भी लेकर वह शोमरोन को लोट गया। 25 यहोआहाज के पुत्र
इस्राएल के राजा योआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहूदा का राजा
अमस्याह पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। 26 आदि से अन्त तक अमस्याह के और
काम, क्या यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे
हैं? 27 जिस समय अपस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया या उस
समय से यरूशलेम में उसके विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी, और वह लाकीश को
भाग गया। सो दूतोंने लाकीश तक उसका पीछा कर के, उसको वहीं मार डाला।
28 तब वह घोड़ोंपर रखकर पहुंचाया गया और उसे उसके पुरखाओं के बीच यहूदा
के नगर में मिट्टी दी गई।

2 इतिहास 26

1 तब सब यहूदी प्रजा ने उज्जिय्याह को लेकर जो सोलह वर्ष का या, उसके पिता
अमस्याह के स्यान पर राजा बनाया। 2 जब राजा अमस्याह अपके पुरखाओं के
संग सो गया तब उज्जिय्याह ने एलोत नगर को दृढ़ कर के यहूदा में फिर मिला
लिया। 3 जब उज्जिय्याह राज्य करने लगा, तब वह सोलह वर्ष का या। और
यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम
यकील्याह या, जो यरूशलेम की यी। 4 जैसे उसका पिता अमस्याह, किया करता
या वैसा ही उसने भी किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक या। 5 और जकर्याह के
दिनोंमें जो परमेश्वर के दर्शन के विषय समझ रखता या, वह परमेश्वर की खोज
में लगा रहता या; और जब तक वह यहोवा की खोज में लगा रहा, तब तक
परमेश्वर उसको भाग्यवान किए रहा। 6 तब उस ने जाकर पलिश्तियोंसे युद्ध

किया, और गत, यब्ने और अशदोद की शहरपनाहें गिरा दीं, और अशदोद के
आसपास और पलिश्तियोंके बीच में नगर बसाए। 7 और परमेश्वर ने
पलिश्तियोंऔर गूर्बालवासी, अरबियोंऔर मूनियोंके विरुद्ध उसकी सहाथता की।
8 और अम्मोनी उज्जियय्याह को भेंट देने लगे, वरन उसकी कीत्तिर् मिस्र के
सिवाने तक भी फैल गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्यी हो गया या। 9 फिर
उज्जियय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह
के मोड़ पर गुम्मट बनवाकर दृढ़ किए। 10 और उसके बहुत जानवर थे इसलिथे
उस ने जंगल में और नीचे के देश और चौरस देश में गुम्मट बनवाए और बहुत से
हौद खुदवाए, और पहाड़ोंपर और कर्म्मेल में उसके किसान और दाख की
बारियोंके माली थे, क्योंकि वह खेती किसानी करनेवाला या। 11 फिर
उज्जियय्याह के योद्धाओं की एक सेना यी जिनकी गिनती यीएल मुंशी और
मासेयाह सरदार, हनन्याह नामक राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे,
और उसके अनुसार वह दल बान्धकर लड़ने को जाती यी। 12 पितरोंके घरानोंके
मुख्य मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे, उनकी पूरी गिनती दो हजार छ: सौ यी। 13 और
उनके अधिक्कारने में तीन लाख साढ़े सात हजार की एक बड़ी बड़ी सेना यी, जो
शत्रुओं के विरुद्ध राजा की सहाथता करने को बड़े बल से युद्ध करनेवाले थे। 14
इनके लिथे अर्यात् पूरी सेना के लिथे उज्जियय्याह ने ढालें, भाले, टोप, फिलम,
धनुष और गोफन के पत्यर तैयार किए। 15 फिर उस ने यरूशलेम में
गुम्मटोंऔर कंगूरोंपर रखने को चतुर पुरुषोंके निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए
जिनके द्वारा तीर और बड़े बड़े पत्यर फेंके जाते थे। और उसकी कीत्तिर् दूर दूर
तक फैल गई, क्योंकि उसे अदभुत यहाथता यहां तक मिली कि वह सामर्यी हो

गया। 16 परन्तु जब वह सामर्यी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उस ने
बिगड़कर अपके परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्यात् वह धूप की वेदी
पर धूम जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया। 17 और अजर्याह याजक
उसके बाद भीतर गया, और उसके संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे
गए। 18 और उन्होंने उज्जिय्याह राजा का साम्हना करके उस से कहा, हे
उज्जिय्याह यहोवा के लिथे धूप जलाना तेरा काम नहीं, हारून की सन्तान अर्यात्
उन याजकोंही का काम है, जो धूप जलाने को पवित्र किए गए हैं। तू पवित्रस्यान
से निकल जा; तू ने विश्वासघात किया है, यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी
महिमा का कारण न होगा। 19 तब उज्जिय्याह धूप जलाने को धूपदान हाथ में
लिथे हुए झुंफला उठा। और वह याजकोंपर झुंफला रहा या, कि याजकोंके देखते
देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ।
20 और अजर्याह महाथाजक और सब याजकोंने उस पर दृष्टि की, और क्या देखा
कि उसके माथे पर कोढ़ निकला है ! तब उन्होंने उसको वहां से फटपट निकाल
दिया, वरन यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है, उस ने आप बाहर
जाने को उतावली की। 21 और उज्जिय्याह राजा मरने के दिन तक कोढ़ी रहा,
और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता या, वह तो यहोवा के भवन में जाने न
पाता या। और उसका पुत्र योताम राजघराने के काम पर नियुक्त किया गया और
वह लोगोंका न्याय भी करता या। 22 आदि से अन्त तक उज्जिय्याह के और
कामोंका वर्णन तो आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने लिखा है। 23 निदान
उज्जिय्याह अपके पुरखाओं के संग सो गया, और उसको उसके पुरखाओं के
निकट राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दी गई क्योंकि उन्होंने कहा, कि

वह कोढ़ी है। और उसका पुत्र योताम उसके स्यान पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 27

1 जब योताम राज्य करने लगा तब वह पक्कीस वर्ष का या, और यरूशलेम में
सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यरूशा या, जो
सादोक की बेठी यी। 2 उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, अर्यात्
जैसा उसके पिता उज्जिय्याह ने किया या, ठीक वैसा ही उस ने भी किया : तौभी
वह यहोवा के मन्दिर में न घुसा। और प्रजा के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते
थे। 3 उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरवाले फाटक को बनाया, और ओपेल की
शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया। 4 फिर उस ने यहूदा के पहाड़ी देश में कई
नगर दृढ़ किए, और जंगलोंमें गढ़ और गुम्मट बनाए। 5 और वह अम्मोनियोंके
राजा से युद्ध करके उन पर प्रबल हो गया। उसी वर्ष अम्मोनियोंने उसको सौ
किक्कार चांदी, और दस दस हजार कोर गेहूं और जव दिया। और फिर दूसरे और
तीसरे वर्ष में भी उन्होंने उसे उतना ही दिया। 6 योंयोताम सामर्यी हो गया,
क्योंकि वह अपके आप को अपके परमेश्वर यहोवा के सम्मुख जानकर सीधी
चाल चलता या। 7 योताम के और काम और उसके सब युद्ध और उसकी चाल
चलन, इन सब बातोंका वर्णन इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास में
लिखा है। 8 जब वह राजा हुआ, तब पक्कीस वर्ष का या; और वह यरूशलेम में
सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। 9 निदान योताम अपके पुरखाओं के संग सो
गया और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र आहाज उसके स्यान
पर राज्य करने लगा।

2 इतिहास 28

1 जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस वर्ष का या, और सोलह वर्ष तक
यरूशलेम में राज्य करता रहा। और अपके मूलपुरुष दाऊद के समान काम नहीं
किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक या, 2 परन्तु वह इस्राएल के राजाओं की सी
चाल चला, और बाल देवताओं की मूतिर्यां ढलवाकर बनाई; 3 और हिन्नोम के
बेटे की तराई में धूूप जलाया, और उन जातियोंके घिनौने कामोंके अनुसार
जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने से देश से निकाल दिया या, अपके
लड़केबालोंको आग में होम कर दिया। 4 और ऊंचे स्यानोंपर, और पहाडिय़ोंपर,
और सब हरे वृझोंके तले वह बलि चढ़ाया और धूम जलाया करता या। 5 इसलिथे
उसके परमेश्वर यहोवा ने उसको अरामियोंके राजा के हाथ कर दिया, और वे
उसको जीतकर, उसके बहुत से लोगोंको बन्धुआ बनाके दमिश्क को ले गए। और
वह इस्राएल के राजा के वश में कर दिया गया, जिस ने उसे बड़ी मार से मारा। 6
और रमल्याह के पुत्र पेकह ने, यहूदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हजार
लोगोंको जो सब के सब वीर थे, घात किया, क्योंकि उन्होंने अपके पितरोंके
परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया या। 7 और जिक्री नामक एक एप्रैमी वीर ने
मासेयाह नामक एक राजपुत्र को, और राजभवन के प्रधान अज्रीकाम को, और
एलकाना को, जो राजा का मंत्री या, मार डाला। 8 और इस्राएली अपके भाइयोंमें
से त्रियों, बेटोंऔर बेटियोंको मिलाकर दो लाख लोगोंको बन्धुआ बनाके, और
उनकी बहुत लूट भी छीनकर शोमरोन की ओर ले चले। 9 परन्तु वहां ओदेद
नामक यहोवा का एक नबी या; वह शोमरोन को आनेवाली सेना से मिलकर उन
से कहने लगा, सुनो, तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर यहोवा ने यहूदियोंपर फुंफलाकर

उनको तुम्हारे हाथ कर दिया है, और तुम ने उनको ऐसा क्रोध करके घात किया
जिसकी चिल्लाहट स्वर्ग को पहुंच गई है। 10 और अब तुम ने ठाना है कि
यहूदियोंऔर यरूशलेमियोंको अपके दास-दासी बनाकर दबाए रखो। क्या तुम भी
अपके परमेश्वर यहोवा के यहां दाषी नहीं हो? 11 इसलिथे अब मेरी सुनो और इन
बन्धुओं को जिन्हें तुम अपके भाइयोंमें से बन्धुआ बनाके ले आए हो, लौटा दो,
यहोवा का क्रोध तो तुम पर भड़का है। 12 तब एप्रैमियोंके कितने मुख्य पुरुष
अर्यात् योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत का पुत्र बेरेक्याह, शल्लूम का पुत्र
यहिजकिय्याह, और हदलै का पुत्र अमासा, लड़ाई से आनेवालोंका साम्हना
करके, उन से कहने लगे। 13 तुम इन बन्धुओं को यहां मत लाओ; क्योंकि तुम ने
वह बात ठानी है जिसके कारण हम यहोवा के यहां दोषी हो जाएंगे, और उस से
हमारा पाप और दोष बढ़ जाएगा, हमारा दोष तो बड़ा है और इस्राएल पर बहुत
क्रोध भड़का है। 14 तब उन हथियार बन्धोंने बन्धुओं और लूट को हाकिमोंऔर
सारी सभा के साम्हने छोड़ दिया। 15 तब जिन पुरुषोंके नाम ऊपर लिखे हैं,
उन्होंने उठकर बन्धुओं को ले लिया, और लूट में से सब नंगे लोगोंको कपके, और
जूतियां पहिनाई; और खाना खिलाया, और पानी पिलाया, और तेल मला; और
तब निर्बल लोगोंको गदहोंपर चढ़ाकर, यरीहो को जो खजूर का नगर कहलाता है,
उनके भाइयोंके पास पहुंचा दिया। तब वे शोमरोन को लौट आए। 16 उस समय
राजा आहाज ने अश्शूर के राजाओं के पास दूत भेजकर सहाथता मांगी। 17
क्योंकि एदोमियोंने यहूदा में आकर उसको मारा, और बन्धुओं को ले गए थे। 18
और पलिश्तयोंने नीचे के देश और यहूदा के दक्खिन देश के नगरोंपर चढ़ाई
करके, बेतशेमेश, अय्यालोन और गदेरोत को, और अपके अपके गांवोंसमेत

सोको, तिम्ना, और गिमजो को ले लिया; और उन में रहने लगे थे। 19 योंयहोवा
ने इस्राएल के राजा आहाज के कारण यहूदा को दबा दिया, क्योंकि वह निरंकुश
होकर चला, और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया। 20 तब अश्शूर का राजा
तिलगतपिलनेसेर उसके विरुद्ध आया, और उसको कष्ट दिया; दृढ़ नहीं किया। 21
आहाज ने तो यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमोंके घरोंमें से धन
निकालकर अश्शूर के राजा को दिया, परन्तु इससे उसकी कुछ सहाथता न हुई।
22 और क्लेश के समय राजा आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया। 23
और उस ने दमिश्क के देवताओं के लिथे जिन्होंने उसको मारा या, बलि चढ़ाया;
क्योंकि उस ने यह सोचा, कि आरामी राजाओं के देवताओं ने उनकी यहाथता की,
तो मैं उनके लिथे बलि चढ़ाऊंगा कि वे मेरी सहाथता करें। परन्तु वे उसके और
सारे इस्राएल के पतन का कारण हुए। 24 फिर आहाज ने परमेश्वर के भवन के
पात्र बटोरकर तुड़वा डाले, और यहोवा के भवन के द्वारोंको बन्द कर दिया; और
यरूशलेम के सब कोनोंमें वेदियां बनाई। 25 और यहूदा के एक एक नगर में उस
ने पराथे देवताओं को धूप जलाने के लिथे ऊंचे स्यान बनाए, और अपके मितरोंके
परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई। 26 और उसके और कामों, और आदि से अन्त
तक उसकी पूरी चाल चलन का वर्णन यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास
की पुस्तक में लिखा है। 27 निदान आहाज अपके पुरखाओं के संग सो गया और
उसको यरूशलेम नगर में मिट्टी दी गई, परन्तु वह इस्राएल के राजाओं के
कब्रिस्तान में पहुंचाया न गया। और उसका पुत्र हिजकिय्याह उसके स्यान पर
राज्य करने लगा।

2 इतिहास 29

1 जब हिजकिय्याह राज्य करने लगा तब वह पक्कीस वर्ष का या, और उनतीस
वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का ताम अबिय्याह या,
जो जकर्याह की बेटी यी। 2 जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया या अर्यात् जो
यहोवा की दृष्टि में ठीक या वैसा ही उस ने भी किया। 3 अपके राज्य के पहिले वर्ष
के पहिले महीने में उस ने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिए, और उनकी
मरम्मत भी कराई। 4 तब उस ने याजकोंऔर लेवियोंको ले आकर पूर्व के चौक में
इकट्ठा किया। 5 और उन से कहने लगा, हे लेवियो मेरी सुनो ! अब अपके अपके
को पवित्र करो, और अपके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो,
और पवित्रस्यान में से मैल निकालो। 6 देखो हमारे पुरखाओं ने विश्वासघात
करके वह कर्म किया या, जो हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है और उसको
तज करके यहोवा के निवास से मुंह फेरकर उसको पीठ दिखाई यी। 7 फिर
उन्होंने ओसारे के द्वार बन्द किए, और दीपकोंको बुफा दिया या; और पवित्र
स्यान में इस्राएल के परमेश्वर के लिथे न तो धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया
या। 8 इसलिथे यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का है, और उस ने
ऐसा किया, कि वे मारे मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो
जाएं, जैसे कि तुम अपक्की आंखोंसे देख रहे हो। 9 देखो, अस कारण हमारे बाप
तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे-बेटियां और स्त्रियां बन्धुआई में चक्की गई
हैं। 10 अब मेरे मन ने यह निर्णय किया है कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से
वाचा बान्धूं, इसलिथे कि उसका भड़का हुआ क्रोध हम पर से दूर हो जाए। 11 हे
मेरे बेटो, ढिलाई न करो देखो, यहोवा ने अपके सम्मुख खड़े रहने, और अपक्की
सेवा टहल करने, और अपके टहलुए और धूप जलानेवाले का काम करने के लिथे

तुम्हीं को चुन लिया है। 12 तब लेवीय उठ खड़े हुए, अर्यात् कहातियोंमें से अमासै
का पुत्र महत, और अजर्याह का पुत्र योएल, और मरारियोंमें से अब्दी का पुत्र
कीश, और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह, और गेशॉनियोंमें से जिम्मा का पुत्र
योआह, और योआह का पुत्र एदेन। 13 और एलीसापान की सन्तान में से शिम्री,
और यूएल और आसाप की सन्तान में से जकर्याह और मत्तन्याह। 14 और हेमान
की सन्तान में से यहूएल और शिमी, और यदूतून की सन्तान में से शमायाह और
उज्जीएल। 15 इन्होंने अपके भाइयोंको इकट्ठा किया और अपके अपके को
पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोवा से वचन पाकर दी
यी, यहोवा के भवन के शुद्ध करने के लिथे भीतर गए। 16 तब याजक यहोवा के
भवन के भीतरी भाग को शुद्ध करने के लिथे उस में जाकर यहोवा के मन्दिर में
जितनी अशुद्ध वस्तुएं मिीं उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के आंगन में
ले गए, और लेवियोंने उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में पहुंचा दिया। 17
पहिले महीने के पहिले दिन को उन्होंने पवित्र करने का काम आरम्भ किया, और
उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे तक आ गए। इस प्रकार
उन्होंने यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया, और पहिले महीने के
सोलहवें दिन को उन्होंने उस काम को पूरा किया। 18 तब उन्होंने राजा
हिजकिय्याह के पास भीतर जाकर कहा, हम यहोवा के पूरे भवन को और
पात्रोंसमेत होमबलि की वेदी और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर चुके। 19
और जितने पात्र राजा आहाज ने अपके राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे,
उनको भी हम ने ठीक करके पवित्र किया है; और वे यहोवा की वेदी के साम्हने
रखे हुए हैं। 20 तब राजा हिजकिय्याह सबेरे उठकर नगर के हाकिमोंको इकट्ठा

करके, यहोवा के भवन को गया। 21 तब वे राज्य और पवित्रस्यान और यहूदा के
निमित्त सात बछड़े, सात मेढ़े, सात भेड़ के बच्चे, और पापबलि के लिथे सात
बकरे ले आए, और उस ने हारून की सन्तान के लेवियोंको आज्ञा दी कि इन सब
को यहोवा की वेदी पर चढ़ाएं। 22 तब उन्होंने बछड़े बलि किए, और याजकोंने
उनका लोहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया; तब उन्होंने मेढ़े बलि किए, और उनका
लोहू भी वेदी पर छिड़क दिया। और भेड़ के बच्चे बलि किए, और उनका भी लोहू
वेदी पर छिडक दिया। 23 तब वे पापबलि के बकरोंको राजा और मण्डली के
समीप ले आए और उन पर अपके अपके हाथ रखे। 24 तब याजकोंने उनको बलि
करके, उनका लोहू वेदी पर छिड़क कर पापबलि किया, जिस से सारे इस्राएल के
लिथे प्रायश्चित्त किया जाए। क्योंकि राजा ने सारे इस्राएल के लिथे होमबलि और
पापबलि किए जाने की आज्ञा दी यी। 25 फिर उस ने दाऊद और राजा के दर्शी
गाद, और नातान नबी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उसके
नबियोंके द्वारा आई यी, फांफ, सारंगियां और वीणाएं लिए हुए लेवियोंको यहोवा
के भवन में खड़ा किया। 26 तब लेवीय दाऊद के चलाए बाजे लिए हुए, और
याजक तुरहियां लिए हुए खड़े हुए। 27 तब हिजकिय्याह ने वेदी पर होमबलि
चढ़ाने की आज्ञा दी, और जब होमबलि चढ़ने लगी, तब यहोवा का गीत आरम्भ
हुआ, और तुरहियां और इस्राएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे। 28 और
मण्डली के सब लोग दणडवत करते और गानेवाले गाते और तुरही फूंकनेवाले
फूंकते रहे; यह सब तब तक होता रहा, जब तक होमबलि चढ़ न चुकी। 29 और
जब बलि चढ़ चुकी, तब राजा और जितने उसके संग वहां थे, उन सभोंने सिर
फुकाकर दणडवत किया। 30 और राजा हिजकिय्याह और हाकिमोंने लेवियोंको

आज्ञा दी, कि दाऊद और आसाप दर्शी के भजन गाकर यहोवा की स्तुति करें।
और उन्होंने आनन्द के साय स्तुति की और सिर नवाकर दण्डवत किया। 31
तब हिजकिय्याह कहने लगा, अब तुम ने यहोवा के निमित्त अपना अर्पण किया
है; इसलिथे समीप आकर यहोवा के भवन में मेलबलि और धन्यवादबलि
पहुंचाओ। तब मण्डली के लोगोंने मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचा दिए, और
जितने अपक्की इच्छा से देना चाहते थे उन्होंने भी होमबलि पहुंचाए। 32 जो
होमबलि पशु मण्डली के लाग ले आए, उनकी गिनती यह यी; सत्तर बैल, एक सौ
मेढ़े, और दो सौ भेड़ के बच्चे; थे सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम में आए।
33 और पवित्र किए हुए पशु, छः सौ बैल और तीन हजार भेड़-बकरियां यी। 34
परन्तु याजक ऐसे थेड़े थे, कि वे सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके, तब
उनके भाई लेवीय उस समय तक उनकी सहाथता करते रहे जब तक वह काम
निपट न गया, और याजकोंने अपके को पवित्र न किया; क्योंकि लेवीय अपके को
पवित्र करने के लिथे पवित्र याजकोंसे अधिक सीधे मन के थे। 35 और फिर
होमबलि पशु बहुत थे, और मेलबलि पशुओं की चक्कीं भी बहुत यी, और एक
एक होमबलि के साय अर्ध भी देना पड़ा। योंयहोवा के भवन में की उपासना ठीक
की गई। 36 तब हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण
आनन्दित हुए, जो यहोवा ने अपक्की प्रजा के लिथे तैयार किया या; क्योंकि वह
काम एकाएक हो गया या।

2 इतिहास 30

1 फिर हिजकिय्याह ने सारे इस्राएल और यहूदा में कहला भेजा, और एप्रैम और

मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे, कि तुम यरूशलेम को यहोवा के
भवन में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे फसह मनाने को आओ। 2 राजा
और उसके हाकिमोंऔर यरूशलेम की मणडली ने सम्मति की यी कि फसह को
दूसरे महीने में मनाएं। 3 वे उसे उस समय इस कारण न मना सकते थे, क्योंकि
योड़े ही याजकोंने अपके अपके को पवित्र किया या, और प्रजा के लोग यरूशलेम
में इकट्ठे न हुए थे। 4 और यह बात राजा और सारी मणडली को अच्छी लगी। 5
तब उन्होंने यह ठहरा दिया, कि बेर्शेबा से लेकर दान के सारे इस्राएलियोंमें यह
प्रचार किया जाय, कि यरूशलेम में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे फसह
मनाने को चले आओ; क्योंकि उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में उसको इस प्रकार न
मनाया या जैसा कि लिखा है। 6 इसलिथे हरकारे राजा और उसके हाकिमोंसे
चिट्ठियां लेकर, राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल और यहूदा में घूमे, और
यह कहते गए, कि हे इस्राएलियो ! इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की ओर फिरो, कि वह अश्शूर के राजाओं के हाथ से बचे हुए तुम
लोगाोंकी ओर फिरे। 7 और अपके पुरखाओं और भाइयोंके समान मत बनो,
जिन्होंने अपके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया या, और उस ने
उन्हें चकित होने का कारण कर दिया, जैसा कि तुम स्वयं देख रहे हो। 8 अब
अपके पुरखाओं की नाई हठ न करो, वरन यहोवा के अधीन होकर उसके उस
पवित्रस्यान में आओ जिसे उस ने सदा के लिथे पवित्र किया है, और अपके
परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, कि उसका भड़का हुआ क्रोध तुम पर से दूर हो
जाए। 9 यदि तुम यहोवा की ओर फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयोंऔर लड़केबालोंको
बन्धुआ बनाके ले गए हैं, वे उन पर दया करेंगे, और वे इस देश में लौट सकेंगे

क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम
उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुंह तुम से न मोड़ेगा। 10 इस प्रकार हरकारे
एप्रैम और मनश्शे के देशें में नगर नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु उन्होंने
उनकी हंसी की, और उन्हें ठट्ठोंमें उड़ाया। 11 तौभी आशेर, मनश्शे और जबूलून
में से कुछ लोग दीन होकर यरूशलेम को आए। 12 और यहूदा में भी परमेश्वर की
ऐसी शक्ति हुई, कि वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और हाकिमोंने यहोवा के
वचन के अनुसार दी यी, उसे मानने को तैयार हुए। 13 इस प्रकार अधिक लोग
यरूशलेम में इसलिथे इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व्व
मानें। और बहुत बड़ी सभा इकट्ठी हो गई। 14 और उन्होंने उठकर, यरूशलेम
की वेदियोंऔर धूम जलाने के सब स्यानोंको उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया।
15 तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्होंने फसह के पशु बलि किए तब
याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपके को पवित्र करके होमबलियोंको
यहोवा के भवन में ले आए। 16 और वे अपके नियम के अनुुसार, अर्यात्
परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्या के अनुसार, अपके अपके स्यान पर खड़े हुए,
और याजकोंने रक्त को लेवियोंके हाथ से लेकर छिड़क दिया। 17 क्योंकि सभा में
बहुते ऐसे थे जिन्होंने अपके को पवित्र न किया या; इसलिथे सब अशुद्ध लोगोंके
फसह के पशुओं को बलि करने का अधिक्कारने लेवियोंको दिया गया, कि उनको
यहोवा के लिथे पवित्र करें। 18 बहुत से लोगोंने अर्यात् एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार
और जबूलून में से बहुतोंने अपके को शुद्ध नहीं किया या, तौभी वे फसह के पशु
का मांस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकी हिजकिय्याह ने उनके लिथे
यह प्रार्यना की यी, कि यहोवा जो भला है, वह उन सभोंके पाप ढांप दे; 19 जो

परमेश्वर की अर्यात् अपके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए
हैं, चाहे वे पवित्रस्यान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों। 20 और यहोवा ने
हिजकिय्याह की यह प्रार्यन सुनकर लोगोंको चंगा किया। 21 और जो इस्राएली
यरूशलेम में उपस्यित थे, वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व्व बड़े आनन्द
से मनाते रहे; और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊंचे शब्द के बाजे यहोवा के लिथे
बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे। 22 और जितने लेवीय यहोवा का भजन
बुद्धिमानी के साय करते थे, उनको हिजकिय्याह ने शान्ति के वचन कहे। इस
प्रकार वे मेलबलि चढ़ाकर और अपके पुर्वजोंके परमेश्वर यहोवा के सम्मुख
पापांगीकार करते रहे और उस नियत पर्व्व के सातोंदिन तक खाते रहे। 23 तब
सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन वर्व मानेंगे; सो उन्होंने और
सात दिन आनन्द से पर्व्व मनाया। 24 क्योंकि यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने
सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियां दे दीं, और हाकिमोंने
सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियां दीं, और बहुत से
याजकोंने अपके को पवित्र किया। 25 तब याजकोंऔर लेवियोंसमेत यहूदा की
सारी सभा, और इस्राएल से आए हुओं की सभा, और इस्राएल के देश से आए हुए,
और यहूदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभोंने आनन्द किया। 26 सो यरूशलेम में
बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनोंसे
ऐसी बात यरूशलेम में न हुई यी। 27 अन्त में लेवीय याजकोंने खड़े होकर प्रजा
को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्यना उसके पपित्र धाम
तक अर्यात् स्वर्ग तक पहुंची।

2 इतिहास 31

1 जब यह सब हो चुका, तब जितने इस्राएली अपस्यित थे, उन सभोंने यहूदा के
नगरोंमें जाकर, सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में कि
लाठोंको तोड़ दिया, अशेरोंको काट डाला, और ऊंचे स्यानोंऔर वेदियोंको गिरा
दिया; और उन्होंने उन सब का अन्त कर दिया। तब सब इस्राएली अपके अपके
नगर को लौटकर, अपक्की अपक्की निज भूमि में पहुंचे। 2 और हिजकिय्याह ने
याजकोंके दलोंको और लेवियोंको वरन याजकोंऔर लेवियोंदोनोंको, प्रति दल के
अनुसार और एक एक मतुष्य को उसकी सेवकाई के अनुसार इसलिथे ठहरा
दिया, कि वे यहोवा की छावनी के द्वारोंके भीतर होमबलि, मेलबलि, सेवा टहल,
धन्यवाद और स्तुति किया करें। 3 फिर उस ने अपक्की सम्पत्ति में से राजभाषा
को होमबलियोंके लिथे ठहरा दिया; अर्यत् सबेरे और सांफ की होमबलि और
विश्रम और नथे चांद के दिनोंऔर नियत समयोंकी होमबलि के लिथे जैसा कि
यहोवा की व्यवस्या में लिखा है। 4 और उस ने यरूशलेम में रहनेवालोंको
याजकोंऔर लेवियोंको उनका भाग देने की आज्ञा दी, ताकि वे यहोवा की
व्यवस्या के काम मन लगाकर कर सकें। 5 यह आज्ञा सुनते ही इस्राएली अन्न,
नया दाखमधु, टटका तेल, मधु आादि खेती की सब भांति की पहिली उपज
बहुतायत से देने, और सब वस्तुओं का दशमांश अधिक मात्रा में लाने लगे। 6
और जो इस्राएली और यहूदी, यहूदा के नगरोंमें रहते थे, वे भी बैलोंऔर
भेड़-बकरियोंका दशमांश, और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश, जो उनके
परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र की गई यीं, लाकर ढेर ढेर करके रखने लगे। 7
इस प्रकार ढेर का लगाना उन्होंने तीसरे महीने में आरम्भ किया और सातवें
महीने में पूरा किया। 8 जब हिजकिय्याह और हाकिमोंने आकर उन ढेरोंको देखा,

तब यहोवा को और उसकी प्रजा इस्राएल को धन्य धन्य कहा। 9 तब
हिजकिय्याह ने याजकोंऔर लेवियोंसे उन ढेरोंके विषय पूछा। 10 और अजर्याह
महाथाजक ने जो सादोक के घराने का या, उस से कहा, जब से लोग यहोवा के
भवन में उठाई हुई भेंटें लाने लगे हैं, तब से हम लोग पेट भर खाने को पाते हैं,
वरन बहुत बचा भी करता है; क्योंकि यहोवा ने अपक्की प्रजा को आशीष दी है,
और जो शेष रह गया है, उसी का यह बड़ा ढेर है। 11 तब हिजकिय्याह ने यहोवा
के भवन में कोठरियां तैयार करने की आज्ञा दी, और वे तैयार की गई। 12 तब
लोगोंने उठाई हुई भेंटें, दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएं, सच्चाई से पहुंचाई
और उनके मुख्य अधिक्कारनी तो कोनन्याह नाम एक लेवीय और दूसरा उसका
भाई शिमी नायब या। 13 और कोनन्याह और उसके भाई शिमी के नीचे,
हिजकिय्याह राजा और परमेश्वर के भवन के प्रधान अजर्याह दोनोंकी आज्ञा से
अहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल, यरीमेत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह,
महत और बनायाह अधिक्कारनी थे। 14 और परमेश्वर के लिथे
स्वेच्छाबलियोंका अधिक्कारनी यिम्ना लेवीय का पुत्र कोरे या, जो पूर्व फाटक का
द्वारापाल या, कि वह यहोवा की उठाई हुई भेंटें, और परमपवित्र वस्तुएं बांटा करे।
15 और उसके अधिक्कारने में एदेन, मिन्यामीन, थेशू, शमायाह, अमर्याह और
शकन्याह याजकोंके नगरोंमें रहते थे, कि वे क्या बड़े, क्या छोटे, अपके भाइयोंको
उनके दलोंके अनुसार सच्चाई से दिया करें, 16 और उनके अलावा उनको भी दें,
जो पुरुषोंकी वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन वर्ष की अवस्या के वा उस से
अधिक आयु के थे, और अपके अपके दल के अनुसार अपक्की अपक्की सेवकाई
निबाहने को दिन दिन के काम के अनुसार यहोवा के भवन में जाया करते थे। 17

और उन याजकोंको भी दें, जिनकी वंशावली उनके पितरोंके घरानोंके अनुसार की
गई, और उन लेवियोंको भी जो बीस वर्ष की अवस्या से ले आगे को अपके अपके
दल के अनुसार, अपके अपके काम निबाहते थे। 18 और सारी सभा में उनके
बालबच्चों, स्त्रियों, बेटोंऔर बेटियोंको भी दें, जिनकी वंशवली यी, क्योंकि वे
सच्चाई से अपके को पवित्र करते थे। 19 फिर हारून की सन्तान के याजकोंको
भी जो अपके अपके नगरोंके चराईवाले मैदान में रहते थे, देने के लिथे वे पुरुष
नियुक्त किए गए थे जिनके नाम ऊपर लिखे हुए थे कि वे याजकोंके सब
पुरुषोंऔर उन सब लेवियोंको भी उनका भाग दिया करें जिनकी वंशावली यी। 20
और सारे यहूदा में भी हिजकिय्याह ने ऐसा ही प्रबन्ध किया, और जो कुछ उसके
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला ओर ठीक और सच्चाई का या, उसे वह करता
या। 21 और जो जो काम उस ने परमेश्वर के भवन की उपासना और व्यवस्या
और आज्ञा के विषय अपके परमेश्वर की खोज में किया, वह उस ने अपना सारा
मन लगाकर किया और उस में कृतार्य भी हुआ।

2 इतिहास 32

1 इन बातोंऔर ऐसे प्रबन्ध के बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब ने आकर यहूदा में
प्रवेश कर ओर गढ़वाले नगरोंके विरुद्ध डेरे डालकर उनको अपके लाभ के लिथे
लेना चाहा। 2 यह देखकर कि सन्हेरीब निकट आया है और यरूशलेम से लड़ने
की मनसा करता है, 3 हिजकिय्याह ने अपके हाकिमोंऔर वीरोंके साय यह
सम्मति की, कि नगर के बाहर के सोतोंको पठवा दें; और उन्होंने उसकी सहाथता
की। 4 इस पर बहुत से लोग इकट्ठे हुए, और यह कहकर, कि अश्शूर के राजा

क्योंयहां आएं, और आकर बहुत पानी पाएं, उन्होंने सब सोतोंको पाट दिया और
उस नदी को सुखा दिया जो देश के मध्य होकर बहती यी। 5 फिर हिजकिय्याह ने
हियाव बान्धकर शहरपनाह जहां कहीं टूटी यी, वहां वहां उसको बनवाया, और
उसे गुम्मटोंके बराबर ऊंचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई, और
दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़ किया। और बहुत से तीर और ढालें भी बनवाईं। 6 तब
उस ने प्रजा के ऊपर सेनापति नियुक्त किए और उनको नगर के फाटक के चौक में
इकट्ठा किया, और यह कहकर उनको धीरज दिया, 7 कि हियाव बान्धो और दृढ
हो तुम न तो अश्शूर के राजा से डरो और न उसके संग की सारी भीड़ से, और न
तुम्हारा मन कच्चा हो; क्योंकि जो हमारे साय है, वह उसके संगियोंसे बड़ा है। 8
अर्यात् उसका सहारा तो मतुष्य ही है परन्तु हमारे साय, हमारी सहाथता और
हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है। इसलिथे प्रजा के लोग
यहूदा के राजा हिजकिय्याह की बातोंपर भरोसा किए रहे। 9 इसके बाद अश्शूर
का राजा सन्हेरीब जो सारी सेना समेत लाकीश के साम्हने पड़ा या, उस ने अपके
कर्मचारियोंको यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उन सब यहूदियोंसे
जो यरूशलेम में थे योंकहने के लिथे भेजा, 10 कि अश्शूर का राजा सन्हेरीब
कहता है, कि तुम्हें किस का भरोसा है जिससे कि तुम घेरे हुए यरूशलेम में बैठे
हो? 11 क्या हिजकिय्याह तुम से यह कहकर कि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को
अश्शूर के राजा के पंजे से बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता है कि तुम को
भूखोंप्यासोंमारे? 12 क्या उसी हिजकिय्याह ने उसके ऊंचे स्यान और वेदियो दूर
करके यहूदा और यरूशलेम को आज्ञा नहीं दी, कि तुम एक ही वेदी के साम्हने
दणडवत करना और उसी पर धूप जलाना? 13 क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैं ने

और मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगोंसे क्या क्या किया है? क्या उन देशें की
जातियोंके देवता किसी भी उपाय से अपके देश को मेरे हाथ से बचा सके? 14
जितनी जातियोंका मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश किया है उनके सब देवताओं में से
ऐसा कौन या जो अपक्की प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो? फिर तुम्हारा देवता
तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा? 15 अब हिजकिय्याह तुम को इस रीति
भुलाने अयवा बहकाने न पाए, और तुम उसकी प्रतीति न करो, क्योंकि किसी
जाति या राज्य का कोई देवता अपक्की प्रजा को न तो मेरे हाथ से और न मेरे
पुरखाओं के हाथ से बचा सका। यह निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ
से नहीं बचा सकेगा। 16 इस से भी अधिक उसके कर्मचारियोंने यहोवा परमेश्वर
की, और उसके दास हिजकिय्याह की निन्दा की। 17 फिर उस ने ऐसा एक पत्र
भेजा, जिस में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की थे बातें लिखी यीं, कि
जैसे देश देश की जातियोंके देवताओं ने अपक्की अपक्की प्रजा को मेरे हाथ से
नहीं बचाया वैसे ही हिजकिय्याह का देवता भी अपक्की प्रजा को मेरे हाथ से नहीं
बचा सकेगा। 18 और उन्होंने ऊंचे शब्द से उन यरूशलेमियोंको जो शहरपनाह पर
बैठे थे, यहूदी बोली में पुकारा, कि उनको डराकर घबराहट में डाल दें जिस से
नगर को ले लें। 19 और उन्होंने यरूशलेम के परमेश्वर की ऐसी चर्चा की, कि
मानो पृय्वी के देश देश के लोगोंके देवताओं के बराबर हो, जो मनुष्योंके बनाए
हुए हैं। 20 तब इन घटनाओं के कारण राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र
यशायाह नबी दोनोंने प्रार्यना की और स्वर्ग की ओर दोहाई दी। 21 तब यहोवा ने
एक दूत भेज दिया, जिस ने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों,
प्रधानोंऔर सेनापतियोंको नाश किया। और वह लज्जित होकर, आने देश को

लौट गया। और जब वह अपके देवता के भवन में या, तब उसके निज पुत्रोंने वहीं
उसे तलवार से मार डाला। 22 योंयहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के
निवासिक्कों अश्शूर के राजा सन्हेरीब और अपके सब शत्रुओं के हाथ से बचाया,
और चारोंओर उनकी अगुवाई की। 23 और बहुत लोग यरूशलेम को यहोवा के
लिथे भेंट और यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिथे अनमोल वस्तुएं ले आने लगे,
और उस समय से वह सब जातियोंकी दृष्टि में महान ठहरा। 24 उन
दिनोंहिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ, कि वह मरा चाहता या, तब उस ने यहोवा से
प्रार्यना की; और उस ने उस से बातें करके उसके लिथे एक चमत्कार दिखाया। 25
परन्तु हिजकिय्याह ने उस उपकार का बदला न दिया, क्योंकि उसका मन फूल
उठा या। इस कारण उसका कोप उस पर और यहूदा और यरूशलेम पर भड़का।
26 तब हिजकिय्याह यरूशलेम के निवासियोंसमेत अपके मन के फूलने के
कारण दीन हो गया, इसलिथे यहोवा का क्रोध उन पर हिजकिय्याह के दिनोंमें न
भड़का। 27 और हिजकिय्याह को बहुत ही धन और विभव मिला; और उस ने
चान्दी, सोने, मणियों, सुगन्धद्रव्य, ढालोंऔर सब प्रकार के मनभावने पात्रोंके
लिथे भणडार बनवाए। 28 फिर उस ने अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल के
लिथे भणडार, और सब भांति के पशुओं के लिथे यान, और भेड़-बकरियोंके लिथे
भेड़शालाएं बनवाई। 29 और उस ने नगर बसाए, और बहुत ही भेड़-बकरियोंऔर
गाय-बैलोंकी सम्पत्ति इकट्ठा कर ली, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत ही धन दिया
या। 30 उसी हिजकिय्याह ने गीहोन नाम नदी के ऊपर के सोते को पाटकर उस
नदी को नीचे की ओर दाऊदपुर की पच्छिम अलंग को सीधा पहुंचाया, और
हिजकिय्याह अपके सब कामोंमें कृतार्य होता या। 31 तौभी जब बाबेल के

हाकिमोंने उसके पास उसके देश में किए हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत
भेजे तब परमेश्वर ने उसको इसलिथे छोड़ दिया, कि उसको परख कर उसके मन
का सारा भेद जान ले। 32 हिजकिय्याह के और काम, ओर उसके भक्ति के काम
आमोस के पुत्र यशायाह नबी के दर्शन नाम पुस्तक में, और यहूदा और इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। 33 अन्त में हिजकिय्याह अपके
पुरखाओं के संग सो गया और उसको दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान की चढाई
पर मिट्टी दी गई, और सब यहूदियोंऔर यरूशलेम के निवासियोंने उसकी मृत्यु
पर उसका आदरमान किया। और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्यान पर राज्य
करने लगा।

2 इतिहास 33

1 जब मनश्शे राज्य करने लगा तब वह बारह वर्ष का या, और यरूशलेम में
पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा। 2 उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा
या, अर्यात् उन जातियोंके घिनौने कामोंके अनुसार जिनको यहोवा ने
इस्राएलियोंके साम्हने से देश से तिकाल दिया या। 3 उस ने उन ऊंचे स्यानोंको
जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया या, फिर बनाया, और बाल नाम
देवताओं के लिथे वेदियां ओर अशेरा नाम मूरतें बनाई, और आकाश के सारे गण
को दणडवत करता, और उनकी उपासना करता रहा। 4 और उस ने यहोवा के उस
भवन मे वेदियां बनाई जिसके विषय यहोवा ने कहा या कि यरूशलेम में मेरा
नाम सदा बना रहेगा। 5 वरन यहोवा के भवन के दोनोंआंगनोंमें भी उस ने
आकाश के सारे गण के लिथे वेदियां बनाई। 6 फिर उस ने हिन्नोम के बेटे की

तराई में अपके लड़केबालोंको होम करके चढ़ाया, और शुभ-अशुभ मुहूतों को
मानता, और टोना और तंत्र-मंत्र करता, और ओफोंऔर भूतसिद्धिवालोंसे व्यवहार
करता या। वरन उस ने ऐसे बहुत से काम किए, जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं और
जिन से वह अप्रसन्न होता है। 7 और उस ने अपक्की खुदवाई हुई मूत्तिर्
परमेश्वर के उस भवन में स्यापन की जिसके विषय परमेश्वर ने दाऊद और उसके
पुत्र सुलैमान से कहा या, कि इस भवन में, और यरूशलेम में, जिसको मैं ने
इस्राएल के सब गोत्रोंमें से चुन लिया है मैं आना नाम सर्वदा रखूंगा, 8 और मैं
ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया या, उस में से इस्राएल
फिर मारा मारा फिरे; इतना अवश्य हो कि वे मेरी सब आज्ञाओं को अर्यात् मूसा
की दी हुई सारी व्यवस्या और विधियोंऔर नियमोंको पालन करने की चौकसी
करें। 9 और मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासिक्कों यहां तक भटका
दिया कि उन्होंने उन जातियोंसे भी बढ़कर बुराई की, जिन्हें यहोवा ने
इस्राएलियोंके साम्हने से विनाश किया या। 10 और यहोवा ने मनश्शे और उसकी
प्रजा से बातें कीं, परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। 11 तब यहोवा ने उन पर
अश्शूर के सेनापतियोंसे चढ़ाई कराई, और थे मनश्शे को नकेल डालकर, और
पीतल की बेडिय़ां जकड़कर, उसे बाबेल को ले गए। 12 तब संकट में पड़कर वह
अपके परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और अपके पूर्वजोंके परमेश्वर के साम्हने
बहुत दीन हुआ, और उस से प्रार्यना की। 13 तब उस ने प्रसन्न होकर उसकी
बिनती सुनी, और उसको यरूशलेम में पहुंचाकर उसका राज्य लौटा दिया। तब
मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है। 14 इसके बाद उस ने
दाऊदमुर से बाहर गीहोन के पश्चिम की ओर नाले में मच्छली फाटक तक एक

शहरपनाह बनवाई, फिर ओपेल को घेरकर बहुत ऊंचा कर दिया; और यहूदा के
सब गढ़वाले नगरोंमें सेनापति ठहरा दिए। 15 फिर उस ने पराथे देवताओं को
और यहोवा के भवन में की मूत्तिर् को, और जितनी वेदियां उस ने यहोवा के भवन
के पर्वत पर, और यरूशलेम में बनवाई यीं, उन सब को दूर करके नगर से बाहर
फेंकवा दिया। 16 तब उस ने यहोवा की वेदी की मरम्मत की, और उस पर
मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाने लगा, और यहूदियोंको इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की उपासना करते की आज्ञा दी। 17 तौभी प्रजा के लोग ऊंचे स्यानोंपर
बलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे। 18 मनश्शे के
ओर काम, और उस ने जो प्रार्यना अपके परमेश्वर से की, और उन दशिर्योंके वचन
जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से उस से बातें करते थे, यह सब इस्राएल
के राजाओं के इतिहास में लिखा हुआ है। 19 और उसकी प्रार्यना और वह कैसे
सुनी गई, और उसका सारा पाप और विश्वासघात और उस ने दीन होने से पहिले
कहां कहां ऊंचे स्यान बनवाए, और अशेरा नाम और खुदी हुई मूत्तिर्यां खड़ी कराई,
यह सब होशे के वचनोंमें जिखा है। 20 निदान मनश्शे अपके पुरखाओं के संग सो
गया और उसे उसी के घर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आमोन उसके स्यान
पर राज्य करने लगा। 21 जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईस वर्ष का
या, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा। 22 और उस ने अपके पिता
मनश्शे की नाई वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। और जितनी मूत्तिर्यां
उसके पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई यीं, वह भी उन सभोंके साम्हने बलिदान
करता और उन सभोंकी उपासना भी करता या। 23 और जैसे उसका पिता मनश्शे
यहोवा के साम्हने दीन हुआ, वैसे वह दीन न हुआ, वरन आमोन अधिक दोषी

होता गया। 24 और उसके कर्मचारियोंने द्रोह की गोष्ठी करके, उसको उसी के
भवन में मार डाला। 25 तब साधारण लोगोंने उन सभोंको मार डाला, जिन्होंने
राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की यी; और लोगोंने उसके पुत्र योशिय्याह को
उसके स्यान पर राजा बनाया।

2 इतिहास 34

1 जब योशिय्याह राज्य करने लगा तब वह आठ वर्ष का या, और यरूशलेम में
इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। 2 उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में
ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूलपुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी
चला करता या और उस से न तो दाहिनी ओर मूड़ा, और न बाईं ओर। 3 वह
लड़का ही या, अर्यात उसको गद्दी पर बैठे आठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपके
मूलमुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा, और बारहवें वर्ष में वह ऊंचे
स्यानोंऔर अश्ेरा नाम मूरतोंको और खुदी और ढली हुई मूरतोंको दूर करके,
यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध करने लगा। 4 और बालदेवताओं की वेदियां उसके
साम्हने तोड़ डाली गई, और सूर्य की प्रतिमाथें जो उनके ऊपर ऊंचे पर यी, उस ने
काट डालीं, और अशेरा नाम, और खुदी और ढली हुई मूरतोंको उस ने तोड़कर
पीस डाला, और उनकी बुकनी उन लोगोंकी कबरोंपर छितरा दी, जो उनको बलि
चढ़ाते थे। 5 और पुजारियोंकी हड्डियां उस ने उन्हीं की वेदियोंपर जलाई। योंउस
ने यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया। 6 फिर मनश्शे, एप्रैम और शिमोन के
बरन नप्ताली तक के नगरोंके खण्डहरोंमें, उस ने वेदियोंको तोड़ डाला, 7 और
अशेरा नाम और खुदी हुई मूरतोंको पीसकर बुकनी कर डाला, और इस्राएल के

सारे देश की सूर्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट गया। 8 फिर
अपके राज्य के अठारहवें वर्ष में जब वह देश और भवन दोनोंको शुद्ध कर चुका,
तब उस ने असल्याह के पुत्र शापान और नगर के हाकिम मासेयाह और
योआहाज के पुत्र इतिहास के लेखक योआह को अपके परमेश्वर यहोवा के भवन
की मरम्मत कराने के लिथे भेज दिया। 9 सो उन्होंने हिल्किय्याह महाथाजक के
पास जाकर जो रुपया परमेश्वर के भवन में लाया गया या, अर्यात् जो लेवीय
दरबानोंने मनश्शियों, एप्रैमियोंऔर सब बचे हुए इस्राएलियोंसे और सब
यहूदियोंऔर बिन्यामीनियोंसे और यरूशलेम के निवासियोंके हाथ से लेकर
इकट्ठा किया या, उसको सौंप दिया। 10 अर्यात् उन्होंने उसे उन काम
करनेवालोंके हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिथे थे, और
यहोवा के भवन के उन काम करनेवालोंने उसे भवन में जो कुछ टूटा फूटा या,
उसकी मरम्मत करने में लगाया। 11 अर्यात् उन्होंने उसे बढ़इयोंऔर राजोंको
दिया कि वे गढ़े हुए पत्यर और जोड़ोंके लिथे लकड़ी मोल लें, और उन घरोंको
पाटें जो यहूदा के राजाओं ने नाश कर दिए थे। 12 और वे मनुष्य सच्चाई से काम
करते थे, और उनके अधिक्कारनी मरारीय, यहत और ओबद्याह, लेवीय और
कहाती, जकर्याह और मशुल्लाम काम चलानेवाले और गाने-बजाने का भेद सब
जाननेवाले लेवीय भी थे। 13 फिर वे बोफियोंके अधिक्कारनी थे और भांति भांति
की सेवकाई और काम चलानेवाले थे, और कुछ लेवीय मुंशी सरदार और दरबान
थे। 14 जब वे उस रुपके को जो यहोवा के भवन में पहुंचाया गया या, निकाल रहे
थे, तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्या की
पुस्तक मिली। 15 तब हिल्किय्याह ने शापान मंत्री से कहा, मुझे यहोवा के भवन

में व्यवस्या की पुस्तक मिली है; तब हिल्किय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी।
16 तब शापान उस पुस्तक को राजा के पास ले गया, और यह सन्देश दिया, कि
जो जो काम तेरे कर्मचारियोंको सौंपा गया या उसे वे कर रहे हैं। 17 और जो रुपया
यहोवा के भवन में मिला, उसको उन्होंने उणडेलकर मुखियोंऔर कारीगरोंके
हाथोंमें सौंप दिया है। 18 फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि
हिल्किय्याह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है तब शपान ने उस में से राजा को
पढ़कर सुनाया। 19 व्यवस्या की वे बातें सुनकर राजा ने अपके वस्त्र फाढ़े। 20
फिर राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम, मीका के पुत्र अब्दोन, शापान
मंत्री और असायाह नाम अपके कर्मचारी को आज्ञा दी, 21 कि तुम जाकर मेरी
ओर से और इस्राएल और यहूदा में रहनेवालोंकी ओर से इस पाई हुई पुस्तक के
वचनोंके विष्य यहोवा से पूछो; क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर
इसलिथे भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने यहोवा का वचन नहीं माना, और इस
पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाओं का पालन नहीं किया। 22 तब हिल्कय्याह ने
राजा के और और दूतोंसमेत हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से उसी बात के
अनुसार बातें की, वह तो उस शल्लूम की स्त्री यी जो तोखत का पुत्र और हस्रा का
पोता और वस्त्रालय का रखवाला या : और वह स्त्री यरूशलेम के नथे टोले में रहती
यी। 23 उस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि जिस
पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उस से यह कहो, 24 कि यहोवा योंकहता है, कि
सुन, मैं इस स्यान और इस के निवासियोंपर विपत्ति डालकर यहूदा के राजा के
साम्हने जो पुस्तक पक्की गई, उस में जितने शाप लिखे हैं उन सभोंको पूरा
करूंगा। 25 उन लोगोंने मुझे त्यागकर पराथे देवताओं के लिथे धूप जलाया है

और अपक्की बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है, इस कारण मेरी
जलजलाहट इस स्यान पर भड़क उठी है, और शान्त न होगी। 26 परन्तु यहूदा
का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा के पूछने को भेज दिया है उस से तुम योंकहो, कि
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, 27 कि इसलिथे कि तू वे बातें सुनकर
दीन हुआ, और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया, और उसकी बातें सुनकर
जो उसने इस स्यान और इस के निवासियोंके विरुद्ध कहीं, तू ने मेरे साम्हने
अपना सिर नवाया, और वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी
सुनी है; यहोवा की यही बाणी है। 28 सुन, मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा
मिलाऊंगा कि तू शांति से अपक्की कब्र को पहुंचाया जायगा; और जो विपत्ति मैं
इस स्यान पर, और इसके निवासियोंपर डालना चाहता हूँ, उस में से तुझे
अपक्की आंखोंसे कुछ भी देखना न पकेगा। तब उन लोगोंने लौटकर राजा को
यही सन्देश दिया। 29 तब राजा ने सहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियोंको
इकट्ठे होने को बचलवा भेजा। 30 और राजा यहूदा के सब लोगोंऔर यरूशलेम
के सब निवासियोंऔर याजकोंऔर लेवियोंवरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगोंको
संग लेकर यहोवा के भवन को गया; तब उस न जो वाचा की पुस्तक यहोवा के
भवन में मिली याी उस में की सारी बातें उनको पढ़कर सुनाई। 31 तब राजा ने
अपके स्यान पर खड़ा होकर, यहोवा से इस आशय की वाचा बान्धी कि मैं यहोवा
के पीछे पीछे चलूंगा, और अपके पूर्ण मन और पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाएं,
चितौनियोंऔर विधियोंका पालन करूंगा, और इन वाचा की बातोंको जो इस
पुस्तक में लिखी हैं, पूरी करूंगा। 32 और उस ने उन सभोंसे जो यरूशलेम में और
बिन्यामीन में थे वैसी ही वाचा बन्धाई। और यरूशलेम के निवासी, परमेश्वर जो

उनके पितरोंका परमेश्वर या, उसकी वाचा के अनुसार करने लगे। 33 और
योशिय्याह ने इस्राएलियोंके सब देशोंमें से सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके
जितने इस्राएल में मिले, उन सभोंसे उपासना कराई; अर्यात् उनके परमेश्वर
सहोवा की उपासना कराई। और उसके जीवन भर उन्होंने अपके पूवजोंके
परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा।

2 इतिहास 35

1 और योशिय्याह ने यरूशलेम में यहोवा के लिथे फसह पर्व माना और पहिले
महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशु बलि किया गया। 2 और उस ने
याजकोंको अपके अपके काम में ठहराया, और यहोवा के भवन में की सेवा करने
को उनका हियाब बन्धाया। 3 फिर लेवीय जो सब इस्राएल लियोंको सिखाते और
यहोवा के लिथे पवित्र ठहरे थे, उन से उस ने कहा, तुम पवित्र सन्दूक को उस
भवन में रखो जो दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनवाया या; अब तुम
को कन्धोंपर बोफ उठाना न होगा। अब अपके परमेश्वर यहोवा की और उसकी
प्रजा इस्राएल की सेवा करो। 4 और इस्राएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र
सुलैमान दोनोंकी लिखी हुई विधियोंके अनुसार, अपके अपके पितरोंके अनुसार,
अपके अपके दल में तैयार रहो। 5 और तुम्हारे भाई लोगोंके पितरोंके घरानोंके
भागोंके अनुसार पवित्रस्यान में खड़े रहो, अर्यात् उनके एक भाग के लिथे
लेवियोंके एक एक पितर के घराने का एक भाग हो। 6 और फसह के पशुओं को
बलि करो, और अपके अपके को पवित्र करके अपके भाइयोंके लिथे तैयारी करो
कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार कर सकें, जो उस ने मूसा के द्वारा कहा या।

7 फिर योशिय्याह ने सब लोगोंको जो वहां उपस्यित थे, तीस हजार भेड़ोंऔर
बकरियोंके बच्चे और तीन हजार बैल दिए थे; थे सब फसह के बलिदानोंके लिथे
राजा की सम्पत्ति में से दिए गए थे। 8 और उसके हाकिमोंने प्रजा के लोगों,
याजकोंऔर लेवियोंको स्वेच्छा -बलियोंके लिथे पशु दिए। और हिल्किय्याह,
जकर्याह और यहीएल नाम परमेश्वर के भवन के प्रधानोंने याजकोंको दो हजार
छ:सौ भेड �-बकरियां। और तीन सौ बैल फसह के बलिदानोंके लिए दिए। 9 और
कोनन्याह ने और शमायाह और नतनेल जो उसके भाई थे, और हसब्याह, यीएल
और योजाबाद नामक लेवियोंके प्रधानोंने लेवियोंको पांच हजार भेड़-बकरियां,
और पांच सौ बैल फसह के बलिदानोंके लिथे दिए। 10 इस प्रकार उपासना की
तैयारी हो गई, और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपके अपके स्यान पर,
और लेवीय अपके अपके दल में खड़े हुऐ। 11 तब फसह के पशु बलि किए गए,
और याजक बलि करनेवालोंके हाथ से लोहू को लेकर छिड़क देते और लेवीय
उनकी खाल उतारते गए। 12 तब उन्होंने होमबलि के पशु इसलिथे अलग किए
कि उन्हें लोगोंके पितरोंके घरानोंके भागोंके अनुसार दें, कि वे उन्हें यहोवा के
लिथे चढ़वा दें जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है; और बैलोंको भी उन्होंने वैसा
ही किया। 13 तब उन्होंने फसह के पशुओं का मांस विधि के अनुसार आग में
भूंजा, और पवित्र वस्तुएं, हंडियोंऔर हंडोंऔर यालियोंमें सिफा कर फूर्ती से
लोगोंको पहुंचा दिया। 14 तब उन्होंने अपके लिथे और याजकोंके लिथे तैयारी
की, क्योंकि हारून की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चरबी रात तक
चढ़ाते रहे, इस कारण लेवियोंने अपके लिथे और हारून की सन्तान के याजकोंके
लिथे तैयारी की। 15 और आसाप के वंश के गवैथे, दाऊद, आसाप, हेमान और

राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के अनुसार अपके अपके स्यान पर रहे, और
द्वारपाल एक एक फाटक पर रहे। उन्हें अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्योंकि
उनके भई लेवियोंने उनके लिथे तैयारी की। 16 योंउसी दिन राजा योशिय्याह की
आज्ञा के अनुसार फसह मनाने और यहोवा की बेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिथे
यहोवा की सारी अपासना की तैयारी की गई। 17 जो इस्राएली वहां उपस्यित थे
उन्होंने फसह को उसी समय और अखमीरी रोटी के पर्व को सात दिन तक माना।
18 इस फसह के बराबर शमूएल नबी के दिनोंसे इस्राएल में कोई फसह मनाया न
गया या, और न इस्राएल के किसी राजा ने ऐसा मनाया, जैसा योशिय्याह और
याजकों, लेवियोंऔर जितने यहूदी और इस्राएली उपस्यित थे, उनहोंने और
यरूशलेम के निवासियोंने मनाया। 19 यह फसह योशिय्याह के राज्य के
अठारहवें वर्ष में मनाया गया। 20 इसके बाद जब योशिय्याह भवन को तैयार कर
चुका, तब मिस्र के राजा नको ने परात के पास के कुर्कमीश नगर से लड़ने को
चढ़ाई की और योशिय्याह उसका साम्हना करने को गया। 21 परन्तु उस ने
उसके पास दूतोंसे कहला भेजा, कि हे यहूदा के राजा मेरा तुझ से क्या काम !
आज मैं तुझ पर नहीं उसी कुल पर चढ़ाई कर रहा हूँ, जिसके साय मैं युद्ध करता
हूँ; फिर परमेश्वर ने मुझ से फुर्ती करने को कहा है। इसलिथे परमेश्वर जो मेरे संग
है, उससे अलग रह, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे नाश करे। 22 परन्तु योशिय्याह
ने उस से मुंह न मोड़ा, वरन उस से लड़ने के लिथे भेष बदला, और नको के उन
वचनोंको न माना जो उस ने परमेश्वर की ओर से कहे थे, और मगिद्दो की तराई में
उस से युद्ध करने को गया। 23 तब धनुर्धारियोंने राजा योशिय्याह की ओर तीर
छोड़े; और राजा ने अपके सेवकोंसे कहा, मैं तो बहुत घायल हुआ, इसलिथे मुझे

यहां से ले जाओ। 24 तब उसके सेवकोंने उसको रय पर से उतार कर उसके दूसरे
रय पर चढ़ाया, और यरूशलेम ले गथे। और वह मर गया और उसके पुरखाओं के
कब्रिस्तान में उसको मिट्टी दी गई। और यहूदियोंऔर यरूशलेमियोंने
योशिय्याह के लिए विलाप किया। 25 और यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिथे
विलाप का गीत बनाया और सब गानेवाले और गानेवालियां अपके विलाप के
गीतोंमें योशिय्याह की चर्चा आज तक करती हैं। और इनका गाना इस्राएल में
एक विधि के तुल्य ठहराया गया और थे बातें विलापक्कीतोंमें लिखी हुई हैं। 26
योशिय्याह के और काम और भक्ति के जो काम उस ने उसी के अनुसार किए जो
यहोवा की व्यवस्या में लिखा हुआ है। 27 और आदि से अन्त तक उसके सब
काम इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

2 इतिहास 36

1 तब देश के लोगोंने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसके पिता के
स्यान पर यरूशलेम में राजा बनाया। 2 जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब
वह तेईस वर्ष का या, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। 3 तब
मिस्र के राजा ने उसको यरूशलेम में राजगद्दी से उनार दिया, और देश पर सौ
किक्कार चान्दी और किक्कार भर लोना जुरमाने में दणड लगाया। 4 तब मिस्र
के राजा ने उसके भाई एल्याकीम को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया और
उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा। और नको उसके भाई यहोआहाज को
मिस्र में ले गया। 5 जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पक्कीस वर्ष का
या, और ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उस ने वह काम

किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 6 उस पर बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की, और बाबेल ले जाने के लिथे उसको बेडिय़ां पहना दीं।
7 फिर नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल ले जाकर, अपके
मन्दिर में जो बाबेल में या, रख दिए। 8 यहोयाकीम के और काम और उस ने जो
जो घिनौने काम किए, और उस में जो जो बुिराइयां पाई गई, वह इस्राएल और
यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखी हैं। और उसका पुत्र यहोयाकीन
उसके स्यान पर राज्य करने लगा। 9 जब यहोयाकीन राज्य करने लगा, तब वह
आठ वर्ष का या, और तीन महीने और दस दिन तक यरूशलेम में राज्य करता
रहा। और उस ने वह किया, जो परमेश्वर यहोवा की दुष्टि में बुरा है। 10 नथे वर्ष के
लगते ही नबूकदनेस्सर ने लोगोंको भेजकर, उसे और यहोवा के भवन के
मनभावने पात्रोंको बाबेल में मंगवा लिया, और उसके भाई सिदकिय्याह को
यहूदा और यरूशलेम पर राजा नियुक्त किया। 11 जब सिदकिय्याह राज्य करने
लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का या, और यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता
रहा। 12 और उस ने वही किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है।
यद्यापि यिर्मयाह नबी यहोवा की ओर से बातें कहता या, तौभी वह उसके साम्हने
दीन न हुआ। 13 फिर नबूकदनेस्सर जिस ने उसे परमेश्वर की शपय खिलाई यी,
उस से उस ने बलवा किया, और उस ने हठ किया और अपना मन कठोर किया,
कि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर न फिरे। 14 वरन सब प्रधान
याजकोंने और लोगोंने भी अन्य जातियोंके से घिनौने काम करके बहुत बड़ा
विश्वासघात किया, और यहोवा के भवन को जो उस ने यरूशलेम में पवित्र किया
या, अशुद्ध कर डाला। 15 और उनके पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके

अपके दूतोंसे उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपक्की प्रजा और अपके धाम
पर तरस खाता या; 16 परन्तु वे परमेश्वर के दूतोंको ठट्ठोंमें उड़ाते, उसके
वचनोंको तुच्छ जानते, और उसके नबियोंकी हंसी करते थे। निदान यहोवा
अपक्की प्रजा पर ऐसा फुंफला उठा, कि बचने का कोई उपाय न रहा। 17 तब उस
ने उन पर कसदियोंके राजा से चढ़ाई करवाई, और इस ने उनके जवानोंको उनके
पवित्र भवन ही में तलवार से मार डाला। और क्या जवान, क्या कुंवारी, क्या बूढ़े,
क्या पक्के बालवाले, किसी पर भी कोमलता न की; यहोवा ने सभोंको उसके हाथ
में कर दिया। 18 और क्या छोटे, क्या बड़े, परमेश्वर के भवन के सब पात्र और
यहोवा के भवन, और राजा, और उसके हाकिमोंके खजाने, इन सभोंको वह बाबेल
में ले गया। 19 और कसदियो ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया, और यरूशलेम की
शहरपनाह को तोड़ ड़ाला, और आग लगा कर उसके सब भवनोंको जलाया, और
उस में का सारा बहुमूल्य सामान नष्ट कर दिया। 20 और जो तलवार से बच गए,
उन्हें वह बाबेल को ले गया, और फारस के राज्य के प्रबल होने तक वे उसके और
उसके बेटों-पोतोंके आधीन रहे। 21 यह सब इसलिथे हुआ कि यहोवा का जो
वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला या, वह पूरा हो, कि देश अपके विश्रम कालोंमें
मुख भोगता रहे। इसलिथे जब तक वह सूना पड़ा रहा तब तक अर्यात् सत्तर वर्ष
के पूरे होने तक उसको विश्रम मिला। 22 फारस के राजा कूस्रू के पहिले वर्ष में
यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला या, वह
पूरा हो। इसलिथे उस ने अपके समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया, और इस
आशय की चिट्ठियां लिखवाई, 23 कि फारस का राजा कूरस्रू कहता है, कि स्वर्ग
के परमेश्वर यहोवा ने पृय्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा

दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उस में मेरा एक भवन बनवा; इसलिथे हे
उसकी प्रजा के सब लोगो, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा
उसके साय रहे, तो वह वहां रवाना हो जाए।

एज्रा 1

1 फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन
उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला या वह पूरा हो जाए,
इसलिथे उस ने अपके समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी
दिया: 2 कि फारस का राजा कुस्रू योंकहता है : कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने
पृय्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उस ने मुझे आज्ञा दी, कि यहूदा के
यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा। 3 उसकी समस्त प्रजा के लोगोंमें से तुम्हारे
मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साय रहे, और वह यहूदा के यरूशलेम
को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए - जो यरूशलेम में है वही
परमेश्वर है। 4 और जो कोई किसी स्यान में रह गया हो, जहां वह रहता हो, उस
स्यान के मनुष्य चान्दी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहाथता करें और इस
से अधिक परमेश्वर के यरूशलेम के भवन के लिथे अपक्की अपक्की इच्छा से भी
भेंट चढ़ाएं।। 5 तब यहूदा और बिन्यामीन के जितने पितरोंके घरानोंके मुख्य
पुरूषोंऔर याजकोंओर लेवियोंका मन परमेश्वर ने उभारा या कि जाकर यरूशलेम
में यहोवा के भवन को बनाएं, वे सब उठ खड़े हुए; 6 और उनके आसपास सब
रहनेवालोंने चान्दी के पात्र, सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएं देकर, उनकी
सहाथता की; यह उन सब से अधिक या, जो लोगोंने अपक्की अपक्की इच्छा से

दिया। 7 फिर यहोवा ने भवन के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से
निकालकर अपके देवता के भवन में रखे थे, 8 उनको कुस्रू राजा ने, मियूदान
खजांची से निकलवा कर, यहूदियोंके शेशबस्सर नाम प्रधान को गिनकर सौंप
दिया। 9 उनकी गिनती यह यी, अर्यात् सोने के तीस और चान्दी के एक हजार
परात और उनतीस छुरी, 10 सोने के तीस और मघ्यम प्रकार के चान्दी के चार
सौ दस कटोरे तया और प्रकार के पात्र एक हजार। 11 सोने चान्दी के पात्र सब
मिलकर पांच हजार चार सौ थे। इन सभोंको शेशबस्सर उस समय ले आया जब
बन्धुए बाबेल से यरूशलेम को आए।।

एज्रा 2

1 जिनको बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बाबेल को बन्धुआ करके ले गया या,
उन में से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से छूटकर यरूशलेम और यहूदा को अपके
अपके नगर में लौटे वे थे हैं। 2 थे जरूब्बाबेल, थेशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह,
मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम और बाना के साय आए। इस्राएली प्रजा
के मनुष्योंकी गिनती यह है, अर्यात् 3 परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर,
4 शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर, 5 आरह की सन्तान सात सौ पछहत्तर, 6
पहत्मोआब की सन्तान थेशू और योआब की सन्तान में से दो हजार आठ सौ
बारह, 7 एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, 8 जत्तू की सन्तान नौ सौ पैंतालीस,
9 जक्कै की सन्तान सात सौ पैंतालीस, 10 बानी की सन्तान छ: सौ बयालीस 11
बेबै की सन्तान छ: सौ तेईस, 12 अजगाद की सन्तान बारह सौ बाईस, 13
अदोनीकाम की सन्तान छ: सौ छियासठ, 14 बिग्वै की सन्तान दो हजार छप्पन,

15 आदीन की सन्तान चार सौ चौवन, 16 यहिजकिय्याह की सन्तान आतेर की
सन्तान में से अट्ठानवे, 17 बेसै की सन्तान तीन सौ तेईस, 18 योरा के लोग एक
सौ बारह, 19 हाशूम के लोग दो सौ तेईस, 20 गिब्बार के लोग पंचानवे, 21
बेतलेहेम के लोग एक सौ तेईस, 22 नतोपा के मनुष्य छप्पन; 23 अनातोत के
मनुष्य एक सौ अट्ठाईस, 24 अज्मावेत के लोग बयालीस, 25 किर्यतारीम
कपीरा और बेरोत के लोग सात सौ तैतालीस, 26 रामा और गेबा के लोग छः सौ
इक्कीस, 27 मिकमास के मनुष्य एक सौ बाईस, 28 बेतेल और ऐ के मनुष्य दो
सौ तेईस, 29 नबो के लोग बावन, 30 मग्बीस की सन्तान एक सौ छप्पन, 31
दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, 32 हारीम की सन्तान तीन सौ बीस, 33
लोद, हादीद और ओनो के लोग सात सौ पक्कीस, 34 यरीहो के लोग तीन सौ
पैतालीस, 35 सना के लोग तीन हजार छः सौ तीस।। 36 फिर याजकोंअर्यात् थेशू
के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर, 37 इम्मेर की सन्तान एक
हजार बावन, 38 पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस, 39 हारीम की सन्तान
एक हजार सतरह। 40 फिर लेवीय, अर्यात् थेशू की सन्तान और कदमिएल की
सन्तान होदब्याह की सन्तान में से चौहत्तर। 41 फिर गवैयोंमें से आसाप की
सन्तान एक सौ अट्ठाईस। 42 फिर दरबानोंकी सन्तान, शल्लूम की सन्तान,
आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की
सन्तान, और शोबै की सन्तान, थे सब मिलकर एक सौ उनतालीस हुए। 43 फिर
नतीन की सन्तान, सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान।
44 केरोस की सन्तान, सीअहा की सन्तान, पादोन की सन्तान, 45 लवाना की
सन्तान, हगबा की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, 46 हागाब की सन्तान, शमलै

की सन्तान, हानान की सन्तान, 47 गिद्दल की सन्तान, गहर की सन्तान, रायाह
की सन्तान, 48 रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, गज्जाम की सन्तान, 49
उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, बेसै की सन्तान, 50 अस्ना की सन्तान,
मूनीम की सन्तान, नपीसीम की सन्तान, 51 बकबूक की सन्तान, हकूपा की
सन्तान, हर्हूर की सन्तान। 52 बसलूत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की
सन्तान, 53 बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान, 54 नसीह
की सन्तान, और हतीपा की सन्तान।। 55 फिर सुलैमान के दासोंकी सन्तान,
सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत की सन्तान, परूदा की सन्तान, 56 याला की
सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, 57 शपत्याह की सन्तान, हत्तील
की सन्तान, पोकरेतसबायीम की सन्तान, और आमी की सन्तान। 58 सब
नतीन और सुलैमान के दासोंकी सन्तान, तीन सौ बानवे थे।। 59 फिर जो
तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर से आए, परन्तु वे अपके अपके
पितरोंके घराने और वंशावली न बता सके कि वे इस्राएल के हैं, वे थे हैं: 60 अर्यात्
दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह की सन्तान और नकोदा की सन्तान, जो
मिलकर छ: सौ बावन थे। 61 और याजकोंकी सन्तान में से हबायाह की सन्तान,
हक्कोस की सन्तान और बजिल्लै की सन्तान, जिस ने गिलादी बजिल्लै की एक
बेटी को ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया या। 62 इन सभोंने अपक्की
अपक्की वंशावली का पत्र औरोंकी वंशावली की पोयियोंमें ढूंढा, परन्तु वे न मिले,
इसलिथे वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गए। 63 और अधिपति ने उन
से कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न हो,
तब तक कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाए।। 64 समस्त मण्डली मिलकर

बयालीस हजार तीन सौ साठ की यी। 65 इनको छोड़ इनके सात हजार तीन सौ
सैंतीस दास-दासियां और दो सौ गानवाले और गानेवालियां यीं। 66 उन के घोड़े
सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस, ऊंट चार सौ पैंतीस, 67 और गदहे छ:
हजार सात सौ बीस थे। 68 और पितरोंके घरानोंके कुछ मुख्य मुख्य पुरूषोंने जब
यहोवा के भसन को जो यरूशलेम में है, आए, तब परमेश्वर के भवन को उसी के
स्यान पर खड़ा करने के लिथे अपक्की अपक्की इच्छा से कुछ दिया। 69 उन्होंने
अपक्की अपक्की पूंजी के अनुसार इकसठ हजार दर्कमोन सोना और पांच हजार
माने चान्दी और याजकोंके योग्य एक सौ अंगरखे अपक्की अपक्की इच्छा से
उस काम के खजाने में दे दिए। 70 तब याजक और लेवीय और लोगोंमें से कुछ
और गवैथे और द्वारपाल और नतीन लोग अपके नगर में और सब इस्राएली
अपके अपके नगर में फिर बस गए।।

एज्रा 3

1 जब सातवां महीना आया, और इस्राएली अपके अपके नगर में बस गए, तो
लोग यरूशलेम में एक मन होकर इकट्ठे हुए। 2 तब योसादाक के पुत्र थेशू ने
अपके भाई याजकोंसमेत और शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल ने अपके
भाइयोंसमेत कमर बान्धकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर
होमबलि चढ़ाएं, जैसे कि परमेश्वर के भक्त मूसा की व्यवस्या में लिखा है। 3 तब
उन्होंने वेदी को उसके स्यान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें उस ओर के देशोंके
लोगोंका भय रहा, और वे उस पर यहोवा के लिथे होमबलि अर्यात् प्रतिदिन सबेरे
और सांफ के होमबलि चढ़ाने लगे। 4 और उन्होंने फोपडिय़ोंके पर्व को माना, जैसे

कि लिखा है, और प्रतिदिन के होमबलि एक एक दिन की गिनती और नियम के
अनुसार चढ़ाए। 5 और उसके बाद नित्य होमबलि और नथे नथे चान्द और
यहोवा के पवित्र किए हुए सब नियत पर्वों के बलि और अपक्की अपक्की इच्छा
से यहोवा के लिथे सब स्वेच्छाबलि हर एक के लिथे बलि चढ़ाए। 6 सातवें महीने
के पहिले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे। परन्तु यहोवा के मन्दिर की
नेव तब तक न डाली गई यी। 7 तब उन्होंने पत्यृ गढ़नेवालोंऔर कारीगरोंको
रुपया, और सीदोनी और सोरी लोगोंको खने-पीने की वस्तुएं और तेल दिया, कि
वे फारस के राजा कुस्रू के पत्र के अनुसार देवदार की लकड़ी लबानोन से जापा के
पास के समुद्र में पहुंचाएं। 8 उनके परमेश्वर के भवन में, जो यरूशलेम में है,
अपके के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में, शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने और
योसादाक के पुत्र थेशू ने और उनके और भाइयोंने जो याजक और लेवीय थे, और
जितने बन्धुआई से यरूशलेम में आए थे उन्होंने भी काम को आरम्भ किया, और
बीस वर्ष अयवा उससे अधिक अवस्या के लेवियोंको यहोवा के भवन का काम
चलाने के लिथे नियुक्त किया। 9 तो सेशू और उसके बेटे और भाई और कदमीएल
और उसके बेटे, जो यहूदा की सन्तान थे, और हेनादाद कीं सन्तान और उनके
बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरोंका काम चलाने को खड़े हुए। 10 और जब
राजोंने यहोवा के मन्दिर की नेव डाली तब अपके वस्त्र पहिने हुए, और तुरहियां
लिथे हुए याजक, और फांफ लिथे हुए आसाप के वंश के लेवीय इसलिथे नियुक्त
किए गए कि इस्राएलियोंके राजा दाऊद की चलाई हुई रीति के अनुसार यहोवा की
स्तुति करें। 11 सो वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे,
कि वह भला है, और उसकी करुणा इस्राएल पर सदैव बनी है। और जब वे यहोवा

की स्तुति करने लगे तब सब लोगोंने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नेब
अब पड़ रही है, ऊंचे शब्द से जय जयकार किया। 12 परन्तु बहुतेरे याजक और
लेवीय और पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य पुरुष, अर्यात् वे बूढ़े जिन्होंने पहिला भवन
देखा या, जब इस भवन की नेव उनकी आंखोंके साम्हने पक्की तब फूट फूटकर
रोने लगे, और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे। 13
इसलिथे लोग, आनन्द के जय जयकार का शब्द, लोगोंके रोने के शब्द से अलग
पहिचान न सके, क्योंकि लोग ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे, और वह
शब्द दूर तक सुनाई देता या।

एज्रा 4

1 जब यहूदा और बिन्यामीन के शत्रुओं ने यह सुना कि बन्धुआई से छूटे हुए लोग
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे मन्दिर बना रहे हैं, 2 तब वे जरुब्बाबेल और
पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरुषोंके पास आकर उन से कहने लगे, हमें भी
अपके संग बनाने दो; क्योंकि तुम्हारी नाई हम भी तुम्हारे परमेश्वर की खोज में
लगे हुए हैं, और अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन जिस ने हमें यहां पहुंचाया, उसके
दिनोंसे हम उसी को बलि चढ़ाते भी हैं। 3 जरुब्बाबेल, थेशू और इस्राएल के
पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुषोंने उन से कहा, हमारे परमेश्वर के लिथे भवन
बनाने में तुम को हम से कुछ काम नहीं; हम ही लोग एक संग मिलकर फारस के
राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे उसे
बनाएंगे। 4 तब उस देश के लोग यहूदियोंके हाथ ढीला करने और उन्हें डराकर
मन्दिर बनाने में रुकावट डालने लगे। 5 और फारस के राजा कुस्रू के जीवन भर

वरन फारस के राजा द्वारा के राज्य के समय तक उनके मनोरय को निष्फल
करने के लिथे वकीलोंको रुपया देते रहे। 6 श्रयर्ष के राज्य के पहिले दिनोंमें
उन्होंने यहूदा और यरूशलेम के निवासियोंका दोषपत्र उसे लिख भेजा। 7 फिर
अर्तश्त्र के दिनोंमें बिशलाम, मियदात और ताबेल ने और उसके सहचरियोंने
फारस के राजा अर्तश्त्र को चिट्ठी लिखी, और चिट्ठी अरामी अश्रोंऔर अरामी
भाषा में लिखी गई। 8 अर्यात् रहूम राजमंत्री और शिलशै मंत्री ने यरूशलेम के
विरुद्ध राजा अर्तश्त्र को इस आशय की चिट्ठी लिखी। 9 उस समय रहूम राजमंत्री
और शिमशै मंत्री और उनके और सहचरियोंने , अर्यात् दीनी, अपर्सतकी,
तर्पक्की, अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली, शूशनी, देहवी, एलामी, 10 आदि जातियोंने
जिन्हें महान और प्रधान ओस्नप्पर ने पार ले आकर शोमरोन नगर में और
महानद के इस पार के शेष देश में बसाया या, एक चिट्ठी लिखी। 11 जो चिट्ठी
उन्होंने अर्तश्त्र राजा को लिखी, उसकी यह नकल है---तेरे दास जो महानद के
पार के मनुष्य हैं, इत्यादि। 12 राजा को यह विदित हो, कि जो यहूदी तेरे पास से
चले आए, वे हमारे पास यरूशलेम को पहुंचे हैं। वे उस दंगैत और घिनौने नगर
को बसा रहे हैं; वरन उसकी शहरपनाह को खड़ा कर चुके हैं और उसकी नेव को
जोड़ चुके हैं। 13 अब राजा को विदित हो कि यदि वह नगर बस गया और उसकी
शहरपनाह बन चुकी, तब तो वे लोग कर, चुंगी और राहदारी फिर न देंगे, और
अन्त में राजाओं की हानि होगी। 14 हम लोग तो राजमन्दिर का नमक खाते हैं
और उचित नहीं कि राजा का अनादर हमारे देखते हो, इस कारण हम यह चिट्ठी
भेजकर राजा को चिता देते हैं। 15 तेरे पुरखाओं के इतिहास की पुस्तक में खोज
की जाए; तब इतिहास की पुस्तक में तू यह पाकर जान लेगा कि वह नगर बलवा

करनेवाला और राजाओं और प्रान्तोंकी हानि करनेवाला है, और प्राचीन काल से
उस में बलवा मचता आया है। और इसी कारण वह नगर नष्ट भी किया गया या।
16 हम राजा को निश्चय करा देते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उसकी
शहरपनाह बन चुके, तब इसके कारण महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह
जाएगा। 17 तब राजा ने रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और शोमरोन और
महानद के इस पार रहनेवाले उनके और सहचरियोंके पास यह उत्तर भेजा,
कुशल, इत्यादि। 18 जो चिट्ठी तुम लोगोंने हमारे पास भेजी वह मेरे साम्हने पढ़
कर साफ साफ सुनाई गई। 19 और मेरी आज्ञा से खोज किथे जाने पर जान पड़ा
है, कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया है और उसमें
दंगा और बलवा होता आया है। 20 यरूशलेम के सामर्यी राजा भी हुए जो महानद
के पार से समस्त देश पर राज्य करते थे, और कर, चुंगी और राहदारी उनको दी
जाती यी। 21 इसलिथे अब इस आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनुष्य रोके जाएं और
जब तक मेरी ओर से आज्ञा न मिले, तब तक वह नगर बनाया न जाए। 22 और
चौकस रहो, कि इस बात में ढीले न होना; राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई
क्योंबढ़ने पाए? 23 जब राजा अर्तक्ष्त्र की यह चिट्ठी रहूम और शिमशै मंत्री और
उनके सहचरियोंको पढ़कर सुनाई गई, तब वे उतावली करके यरूशलेम को
यहूदियोंके पास गए और भुजबल और बरियाई से उनको रोक दिया। 24 तब
परमेश्वर के भवन का काम जो यरूशलेम में है, रुक गया; और फारस के राजा
दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका रहा।

एज्रा 5

1 तब हाग्गै नामक नबी और इद्दो का पोता जकर्याह यहूदा और यरूशलेम के
यहूदियोंसे नबूवत करने लगे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के नाम से उन से
नबूवत की। 2 तब शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र थेशू,
कमर बान्धकर परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है बनाने लगे; और
परमेश्वर के वे नबी उनका साय देते रहे। 3 उसी समय महानद के इस पार का
तत्तनै नाम अधिपति और शतबॉजनै अपके सहचरियोंसमेत उनके पास जाकर
योंपूछने लगे, कि इस भवन के बनाने और इस शहरपनाह के खड़े करने की किस
ने तुम को आज्ञा दी है? 4 तब हम लोगोंसे यह कहा, कि इस भवन के
बनानेवालोंके क्या क्या नाम हैं? 5 परन्तु यहूदियोंके पुरनियोंके परमेश्वर की दृष्टि
उन पर रही, इसलिथे जब तक इस बात की चर्चा दारा से न की गई और इसके
विषय चिट्ठी के द्वारा उत्तर न मिला, तब तक उन्होंने इनको न रोका। 6 जो
चिट्ठी महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतबॉजनै और महानद के
इस पार के उनके सहचक्की अपार्सकियोंने राजा दाना के पास भेजी उसकी नकल
यह है; 7 उन्होंने उसको एक चिट्ठी लिखी, जिस में यह लिखा या : कि राजा दारा
का कुशल झेम सब प्रकार से हो। 8 राजा को विदित हो, कि हम लोग यहूदा नाम
प्रान्त में महान परमेश्वर के भवन के पास गए थे, वह बड़े बड़े पत्यरोंसे बन रहा है,
और उसकी भीतोंमें कडियां जुड़ रही हैं; और यह काम उन लोगोंसे फुर्ती के साय
हो रहा है, और सुफल भी होता जाता है। 9 इसलिथे हम ने उन पुरनियोंसे योंपूछा,
कि यह भवन बनवाने, और यह शहरपनाह खड़ी करने की आाज्ञा किस ने तुम्हें
दी? 10 और हम ने उनके नाम भी पूछे, कि हम उनके मुख्य पुरुषोंके नाम
लिखकर तुझ को जता सकें। 11 और उन्होंने हमें योंउत्तर दिया, कि हम तो

शकाश और पृय्वी के परमेश्वर के दास हैं, और जिस भवन को बहुत वर्ष हुए
इस्राएलियोंके एक बड़े राजा ने बनाकर तैयार किया या, उसी को हम बना रहे हैं।
12 जब हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई यी, तब उस ने उन्हें
बाबेल के कसदी राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया या, और उस ने इस
भवन को नाश किया और लोगोंको बन्धुआ करके बाबेल को ले गया। 13 परन्तु
बाबेल के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में उसी कुस्रू राजा ने परमेश्वर के इस भवन के
बनाने की आज्ञा दी 14 और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चान्दी के पात्र
नबूकदनेस्सर यरूशलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल के मन्दिर में ले
गया या, उनको राजा कुस्रू ने बाबेल के मन्दिर में से निकलवाकर शेशबस्सर
नामक एक पुरुष को जिसे उस ने अधिपति ठहरा दिया या, सौंप दिया। 15 और
उस ने उससे कहा, थे पात्र ले जाकर यरूशलेम के मन्दिर में रख, और परमेश्वर
का वह भवन अपके स्यान पर बनाया जाए। 16 तब उसी शेशबस्सर ने आकर
परमेश्वर के भवन की जो यरूशलेम में है नेव डाली; और तब से अब तक यह बन
रहा है, परन्तु अब तक नहीं बन पाया। 17 अब यदि राजा को अच्छा लगे तो
बाबेल के राजभणडार में इस बात की खोज की जाए, कि राजा कुस्रू ने सचमुच
परमेश्वर के भवन के जो यरूशलेम में है बनवाने की आज्ञा दी यी, या नहीं। तब
राजा इस विषय में अपक्की इच्छा हम को बताए।

एज्रा 6

1 तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल के पुस्तकालय में जहां खजाना भी रहता या,
खोज की गई। 2 और मादे नाम प्रान्त के अहमता नगर के राजगढ़ में एक

पुस्तक मिली, जिस में यह वृत्तान्त लिखा या : 3 कि राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में
उसी कुस्रू राजा ने यह आज्ञा दी, कि परमेश्वर के भवन के विष्य जो यरूशलेम में
है, अर्यात् वह भवन जिस में बलिदान किए जाते थे, वह बनाया जाए और उसकी
नेव दृढ़ता से डाली जाए, उसकी ऊंचाई और चौड़ाई साठ साठ हाथ की हों; 4 उस
में तीन रद्दे भारी भारी पत्थ्रोंके हों, और एक परत नई लकड़ी का हो; और इनकी
लागत राजभवन में से दी जाए। 5 और परमेश्वर के भवन के जो सोने ओर चान्दी
के पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल को पहुंचा
दिए थे वह लौटाकर यरूशलेम के मन्दिर में अपके अपके स्यान पर पहुंचाए
जाएं, और तू उन्हें परमेश्वर के भवन में रख देना। 6 अब हे महानद के पार के
अधिपति तत्तनै ! हे शतबॉजनै ! तुम अपके सहचक्की महानद के पार के
अपार्सकियोंसमेत वहां से अलग रहो; 7 परमेश्वर के उस भवन के काम को रहने
दो; यहूदियोंका अधिपति और यहूदियोंके पुरनिथे परमेश्वर के उस भवन को उसी
के स्यान पर बनाएं। 8 वरन मैं आज्ञा देता हूं कि तुम्हें यहूदियोंके उन पुरनियोंसे
ऐसा बर्ताव करना होगा, कि परमेश्वर का वह भवन बनाया जाए; अर्यात् राजा के
धन में से, महानद के पार के कर में से, उन पुरुषोंका फुर्ती के साय खर्चा दिया
जाए; ऐसा न हो कि उनको रुकना पके। 9 और क्या बछड़े ! क्या मेढ़े ! क्या मेम्ने
! स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियोंके लिथे जिस जिस वस्तु का उन्हें प्रयोजन हो,
और जितना गेहूं, नमक, दाखमधु और तेल यरूशलेम के याजक कहें, वह सब
उन्हें बिना भूल चूक प्रतिदिन दिया जाए, 10 इसलिथे कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को
सुखदायक सुगन्धवाले बलि चढ़ाकर, राजा और राजकुमारोंके दीर्धायु के लिथे
प्रार्यना किया करें। 11 फिर मैं ने आज्ञा दी है, कि जो कोई यह आज्ञा टाले, उसके

घर में से कड़ी निकाली जाए, और उस पर वह स्वयं चढ़ाकर जकड़ा जाए, और
उसका घर इस अपराध के कारण घूरा बनाया जाए। 12 और परमेश्वर जिस ने
वहां अपके नाम का निवास ठहराया है, वह क्या राजा क्या प्रजा, उन सभोंको जो
यह आज्ञा टालने और परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है नाश करने के
लिथे हाथ बढ़ाएं, नष्ट करें। मुझ दारा ने यह आज्ञा दी है फुर्ती से ऐसा ही करना।
13 तब महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतबॉजनै और उनके
सहचरियोंने दारा राजा के चिट्ठी भेजने के कारण, उसी के अनुसार फुर्ती से काम
किया। 14 तब यहूदी पुरनिथे, हाग्गै नबी और इद्दो के पोते जकर्याह के नबूवत
करने से मन्दिर को बनाते रहे, और कृतार्थ भी हुए। ओर इस्राएल के परमेश्वर की
आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के
अनुसार बनाते बनाते उसे पूरा कर लिया। 15 इस प्रकार वह भवन राजा दारा के
राज्य के छठवें वर्ष में अदार महीने के तीसरे दिन को बनकर समाप्त हुआ। 16
इस्राएली, अर्यात् याजक लेवीय और और जितने बन्धुआई से आए थे उन्होंने
परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा उत्सव के साय की। 17 और उस भवन की
प्रतिष्ठा में उन्होंने एक सौ बैल और दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और फिर सब
इस्राएल के निमित्त पापबलि करके इस्राएल के गोत्रें की गिनती के अनुसार बारह
बकरे चढ़ाए। 18 तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है, वैसे ही उन्होंने परमेश्वर
की आराधना के लिथे जो यरूशलेम में है, बारी बारी से शजकोंऔर दल दल के
लेवियोंको नियुक्त कर दिया। 19 फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को बन्धुआई
से आए हुए लोगोंने फसह माना। 20 क्योंकि याजकोंऔर लेवियोंने एक मन
होकर, अपके अपके को शुद्ध किया या; इसलिथे वे सब के सब शुद्ध थे। और

उन्होंने बन्धुआई से आए हुए सब लोगोंऔर अपके भाई याजकोंके लिथे और
अपके अपके लिथे फसह के पशु बलि किए। 21 तब बन्धुआई से लौटे हुए
इस्राएली और जितने और देश की अन्य जातियोंकी अशुद्धता से इसलिथे अलग
हो गए थे कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, उन सभोंने भोजन किया।
22 और अखमीरी रोटी का वर्व सात दिन तक आनन्द के साय मनाते रहे; क्योंकि
यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया या, और अश्शूर के राजा का मन उनकी ओर
ऐसा फेर दिया कि वह परमेश्वर अर्यात् इस्राएल के परमेश्वर के भवन के काम में
उनकी सहाथता करे।

एज्रा 7

1 इन बातोंके बाद अर्यात् फारस के राजा अर्तझत्र के दिनोंमें, एज्रा बाबेल से
यरूशलेम को गया। वह सरायाह का पुत्र या। और सरायाह अजर्याह का पुत्र या,
अजर्याह हिल्किय्याह का, 2 हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादोक का, शदोक
3 अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह का, अमर्याह अजर्याह का, अजर्याह मरायोत का,
4 मरायोत जरह्याह का, जरह्याह उज्जी का, उज्जी बुक्की का, 5 बुक्की अबीशू
का, अबीशू पीनहास का, पीनहास एलीआज़र का और एलीआज़र हारून
महाथाजक का पुत्र या। 6 यही एज्रा मूसा की व्यवस्या के विष्य जिसे इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा ने दी यी, निपुण शास्त्री या। और उसके परमेश्वर यहोवा की
कृपादृष्टि जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मुंह मांगा वर दे दिया। 7
और कितने इस्राएली, और याजक लेवीय, गवैथे, और द्वारपाल और नतीन के
कुछ लोग अर्तझत्र राजा के सातवें वर्ष में यरूशलेम को ले गए। 8 और वह राजा

के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में यरूशलेम को पहुंचा। 9 पहिले महीने के पहिले
दिन को वह बाबेल से चल दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर रही,
इस कारएा पांचवें महीने के पहिले दिन वह यरूशलेम को पहुंचा। 10 क्योंकि एज्रा
ने यहोवा की व्यवस्या का अर्य बूफ लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल
में विधि और नियम सिखाने के लिथे अपना मन लगाया या। 11 जो चिट्ठी राजा
अर्तझख ने एज्रा याजक और शास्त्री को दी यी जो यहोवा की आज्ञाओं के
वचनोंका, और उसकी इस्राएलियोंमें चलाई हुई विधियोंका शास्त्री या, उसकी
तकल यह है; 12 अर्यात्, एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्या का पूर्ण
शास्त्री है, उसको अर्तझत्र महाराजाधिराज की ओर से, इत्यादि। 13 मैं यह आज्ञा
देता हूँ, कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उनके याजक और लेवीय अपक्की
इच्छा से यरूशलेम जाना चाहें, वे तेरे साय जाने पाएं। 14 तू तो राजा और उसके
सातोंमंत्रियोंकी ओर से इसलिथे भेजा जाता है, कि अपके परमेश्वर की व्यवस्या
के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा बूफ ले, 15 और जो
चान्दी-सोना, राजा और उसके मत्रियोंने इस्राएल के परमेश्वर को जिसका निवास
यरूशलेम में है, अपक्की इच्छा से दिया है, 16 और जितना चान्दी-सोना कुल
बाबेल प्रान्त में तुझे मिलेगा, और जो कुछ लोग और याजक अपक्की इच्छा से
अपके परमेश्वर के भवन के लिथे जो यरूशलेम में हैं देंगे, उसको ले जाए। 17 इस
कारण तू उस रुपके से फुर्ती के साय बैल, मेढ़े और मेम्ने उनके योग्य अन्नबलि
और अर्ध की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे
परमेश्वर के यरूशलेमवाले भवन में है। 18 और जो चान्दी-सोना बचा रहे, उस से
जो कुछ तुझे और तेरे भाइयोंको उचित जान पके, वही अपके परमेश्वर की इच्छा

के अनुसार करना। 19 और तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिथे जो पात्र
तुझे सौंपे जातो हैं, उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के साम्हने दे देना। 20 और इन से
अधिक जो कुछ तुझे अपके परमेश्वर के भवन के लिथे आवश्यक जानकर देना
पके, वह राजखजाने में से दे देना। 21 मैं अर्तझत्र राजा यह आज्ञा देता हूँ, कि तुम
महानद के पार के सब खजांचियोंसे जो कुछ बज्रा याजक, जो स्वर्ग के परमेश्वर
की व्यवस्या का शास्त्री है, तुम लोगोंसे चाहे, वह फुर्ती के साय किया जाए। 22
अर्यत् सौ किक्कार तक चान्दी, सौ कोर तक गेहूं, सौ बत तक दाखमधु, सौ बत
तक तेल और नमक जितना चाहिथे उतना दिया जाए। 23 जो जो आज्ञा स्वर्ग के
परमेश्वर की ओर से मिले, ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के
लिथे किया जाय, राजा और राजकुमारोंके राज्य पर परमेश्वर का क्रोध
क्योंभड़कने पाए। 24 फिर हम तुम को चिता देते हैं, कि परमेश्वर के उस भवन के
किसी याजक, लेवीय, गवैथे, द्वारपाल, नतीन या और किसी सेवक से कर, चुंगी,
अयवा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है। 25 फिर हे एज्रा ! तेरे परमेश्वर से मिली हुई
बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है, न्यायियोंऔर विचार करनेवालोंको नियुक्त कर जो
महानद के पार रहनेवाले उन सब लोगोंमें जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्या जानते
होंन्याय किया करें; और जो जो उन्हें न जानते हों, उनको तुम सिखाया करो। 26
और जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्या और राजा की व्यवस्या न माने, उसको
फुर्ती से दण्ड दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देशनिकाला, चाहे माल जप्त किया
जाना, चाहे केद करना। 27 धन्य है हमारे पितरोंका परमेश्वर यहोवा, जिस ने
ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यहोवा के यरूशलेम के भवन को
संवारे, 28 और मूफ पर राजा और उसके मंत्रियोंऔर राजा के सब बड़े हाकिमोंको

दयालु किया। मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो मुझ पर हुई, इसके अनुसार
मैं ने हियाव बान्धा, और इस्राएल में से मुख्य पुरुषोंको इकट्ठा किया, कि वे मेरे
संग चलें।

एज्रा 8

1 उनके पूर्वजोंके घरानोंके मुख्य मुख्य पुरुष थे हैं, और जो लोग राजा अर्तक्षत्र के
राज्य में बाबेल से मेरे संग यरूशलेम को गए उनकी वंशावली यह है : 2 अर्यात्
पीनहास के वंश में से गेर्शोम, ईतामार के वंश में से दानिय्थेल, दाऊद के वंश में
से हत्तूस। 3 शकन्याह के वंश के परोश के गोत्र में से जकर्याह, जिसके संग डेढ़ सौ
पुरुषें की वंशावली हुई। 4 पहत्मोआब के वंश में से जरह्याह का पुत्र एल्यहोएनै,
जिसके संग दो सौ पुरुष थे। 5 शकन्याह के वंश में से यहजीएल का पुत्र, जिसके
संग तीन सौ पुरुष थे। 6 आदीन के वंश में से योनातान का पुत्र एबेद, जिसके संग
पचास पुरुष थे। 7 एलाम के वंश में से अतल्याह का पुत्र यशायाह, जिसके संग
सत्तर पुरुष थे। 8 शपत्याह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह, जिसके संग
अस्सी पुरुष थे। 9 योआब के वंश में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह, जिसके संग दो
सौ अठारह पुरुष थे। 10 शलोमीत के वंश में से योसिब्याह का पुत्र, जिसके संग
एक सौ साठ पुरुष थे। 11 बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह, जिसके संग
अट्ठाईस पुरुष थे। 12 अजगाद के वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान,
जिसके संग एक सौ दस पुरुष थे। 13 अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गएं
उनके थे नाम हैं : अर्यात् एलीपेलेत, यीएल, और समायाह, और उनके संग साठ
पुरुष थे। 14 और बिगवै के वंश में से ऊतै और जब्बूद थे, और उनके संग सत्तर

पुरुष थे। 15 इनको मैं ने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा
कर लिया, और वहां हम लोग तीन दिन डेरे डाले रहे, और मैं ने वहां लोगोंऔर
याजकोंको देख लिया परन्तु किसी लेवीय को न पाया। 16 मैं ने एलीएजेर,
अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और
मशूल्लाम को जो मुख्य पुरुष थे, और योयारीब और एलनातान को जो बुद्धिमान
थे 17 बुलवाकर, इद्दो के पास जो कासिप्या नाम स्यान का प्रधान या, भेज दिया;
और उनको समझा दिया, कि कासिप्या स्यान में इद्दो और उसके भाई नतीन
लोगोंसे क्या क्या कहना, कि वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिथे सेवा
टहल करनेवालोंको ले आएं। 18 और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि जो हम पर हुई
इसके अनुसार वे हमारे पास ईश्शेकेल के जो इस्राएल के परपोता और लेवी के
पोता महली के वंश में से या, और शेरेब्याह को, और उसके पुत्रोंऔर भाइयोंको,
अर्यात् अठारह जनोंको; 19 और हशब्याह को, और उसके संग मरारी के वंश में से
यशायाह को, और उसके पुत्रोंऔर भाइयोंको, अर्यात् बीस जनोंको; 20 और नतीन
लोगोंमें से जिन्हें दाऊद और हाकिमोंने लेवियोंकी सेवा करने को ठहराया या दो
सौ बीस नतिनोंको ले आए। इन सभोंके नाम लिखे हुए थे। 21 तब मैं ने वहां
अर्यात् अहवा नदी के तीर पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया, कि हम
परमेश्वर के साम्हने दीन हों; और उस से अपके और अपके बालबच्चोंऔर
अपक्की समस्त सम्पत्ति के लिथे सरल यात्रा मांगें। 22 क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं
से वचने के लिथे सिपाहियोंका दल और सवार राजा से मांगने से लजाता य,
क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे कि हमारा परमेश्वर अपके सब खोजियोंपर,
भलाई के लिथे कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप

उनके विरुद्ध है। 23 इसी विषय पर हम ने उपवास करके अपके परमेश्वर से
प्रार्यना की, और उस ने हमारी सुनी। 24 तब मैं ने मुख्य याजकोंमें से बारह
पुरुषोंको, अर्यात् शेरेब्याह, हशब्याह और इनके दस भाइयोंको अलग करके, जो
चान्दी, सोना और पात्र, 25 राजा और उसके मंत्रियोंऔर उसके हाकिमोंऔर
जितने इस्राएली अपस्यित थे उन्होंने हमारे परमेश्वर के भवन के लिथे भेंट दिए
थे, उन्होंतौलकर उनको दिया। 26 अर्यात् मैं ने उनके हाथ में साढ़े छ: सौ
किक्कार चान्दी, सौ किक्कार चान्दी के पात्र, 27 सौ किक्कार सोना, हाजार
दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे, और सोने सरीखे अनमोल चोखे चमकनेवाले
पीतल के दो पात्र लौलकर दे दिथे। 28 और मैं ने उन से कहा, तुम तो यहोवा के
लिथे पवित्र हो, और थे पात्र भी पवित्र हैं; और यह चान्दी और सोना भेंट का है, जो
तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर यहोवा के लिथे प्रसन्नता से दी गई। 29 इसलिथे
जागते रहो, और जब तक तुम इन्हें यरूशलेम में प्रधान याजकोंऔर लेवियोंऔर
इस्राएल के पितरोंके घरानोंके प्रधानोंके साम्हने यहोवा के भवन की कोठरियोंमें
तौलकर न दो, तब तक इनकी रझा करते रहो। 30 तब याजकोंऔर लेवियोंने
चान्दी, सोने और पात्रोंको तौलकर ले लिया कि उन्हें यरूशलेम को हमारे परमेश्वर
के भवन में पहुंचाएं। 31 पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से
कूच करके यरूशलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि हम पर
रही; और उस ने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेवालोंके हाथ से बचाया।
32 निदान हम यरूशलेम को पहुंचे और वहां तीन दिन रहे। 33 फिर चौथे दिन वह
वान्दी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत याजक
के हाथ में तौलकर दिए गए। और उसके संग पीनहास का पुत्र एलीआजर या,

और उनके साय थेशू का पुत्र योजाबाद लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह
लेवीय थे। 34 वे सब वस्तुएं गिनी और तौली गई, और उनका तौल उसी समय
लिखा गया। 35 जो बन्धुआई से आए थे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के लिथे
होमबलि चढ़ाए; अर्यात् समस्त इस्राएल के निमित्त बारह बछड़े, छियानवे मेढ़े
और सतहत्तर मेम्ने और पापबलि के लिथे बारह बकरे; यह सब यहोवा के लिथे
होमबलि या। 36 तब उन्होंने राजा की आज्ञाएं महानद के इस पार के
अधिक्कारनेियोंऔर अधिपतियोंको दी; और उन्होंने इस्राएली लोगोंऔर
परमेश्वर के भवन के काम में सहाथता की।

एज्रा 9

1 तब थे काम हो चुके, तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे, न तो इस्राएली
लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशोंके लोगोंसे अलग हुए; वरन उनके से,
अर्यात् कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों,
मिस्रियोंऔर एमोरियोंके से घिनौने काम करते हैं। 2 क्योंकि उन्होंने उनकी
बेटियोंमें से अपके और अपके बेटोंके लिथे स्त्रियां कर ली हैं; और पवित्र वंश इस
ओर के देशोंके लोगोंमें मिल गया है। वरन हाकिम और सरदार इस विश्वासघात
में मुख्य हुए हैं। 3 यह बात सुनकर मैं ने अपके वस्त्र और बागे को फाड़ा, और
अपके सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। 4 तब जितने
लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बन्धुआई से आए हुए लोगोंके
विश्वासघात के कारण यरयराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं सांफ की
भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा। 5 परन्तु सांफ की भेंट के समय मैं

वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा, फिर घुटनोंके बल फुका, और
अपके हाथ अपके परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा, 6 हे मेरे परमेश्वर ! मुझे
तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर ! मेरा मुंह काला
है; क्योंकि हम लोगोंके अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष
बढते आकाश तक पहुंचा है 7 अपके पुरखाओं के दिनोंसे लेकर आज के दिन तक
हम बड़े दोषी हैं, और अपके अधर्म के कामोंके कारण हम अपके राजाओं और
याजकोंसमेत देश देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलवार, बन्धुआई, लूटे
जाने, और मुंह काला हो जाने की विपत्तियोंमें पकें जैसे कि आज हमारी दशा है। 8
और अब योड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम
में से कोई कोई बच निकले, और हम को उसके पवित्र स्यान में एक खूंटी मिले,
और हमारा परमेश्वर हमारी आंखोंमें जयोति आने दे, और दासत्व में हम को कुछ
विश्रन्ति मिले। 9 हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने
हम को नहीं छोड़ दिया, बरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया, कि
हम नया जीवन पाकर अपके परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खंडहरोंको
सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली। 10 और अब हे हमारे
परमेश्वर इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हम ने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़
दिया है, 11 जो तू ने यह कहकर अपके दास नबियोंके द्वारा दीं, कि जिस देश के
अधिक्कारनी होने को तुम जाने पर हो, वह तो देश देश के लोगोंकी अशुद्धता के
कारण और उनके घिनौने कामोंके कारण अशुद्ध देश है, अन्होंने उसे एक सिवाने
से दूसरे सिवाने तक अपक्की अशुद्धता से भर दिया है। 12 इसलिथे अब तू न तो
अपक्की बेठियां उनके बेटोंको ब्याह देना और न उनकी बेटियोंसे अपके बेटोंका

ब्याह करना, और न कभी उनका कुशल झेम चाहना, इसलिथे कि तुम बलवान
बनो और उस देश के अच्छे अच्छे पदार्य खाने पाओ, और उसे ऐसा छोड़ जाओ,
कि वह तुम्हारे वंश के अधिक्कारने में सदैव बना रहे। 13 और उस सब के बाद
जो हमारे बुरे कामोंऔर बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जब कि हे हमारे
परमेश्वर तू ने हमारे अधर्म के बराबर हमें दणड नहीं दिया, वरन हम में से
कितनोंको बचा रखा है, 14 तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर से उल्लंघन करके
इन घिनौने काम करनेवाले लोगोंसे समधियाना का सम्बन्ध करें? क्या तू हम
पर यहां तक कोप न करेगा लिस से हम मिट जाएं और न तो कोई बचे और न
कोई रह जाए? 15 हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ! तू तो धर्मी है, हम बचकर मुक्त
हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान हैं। देख, हम तेरे साम्हने दोषी हैं, इस कारण कोई
तेरे साम्हने खड़ा नहीं रह सकता।

एज्रा 10

1 जब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने पड़ा, रोता हुआ प्रार्यना और पाप का
अंगीकार कर रहा या, तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियोंऔर लड़केवालोंकी एक
बहुत बड़ी मणडली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलक बिलक कर रो रहे
थे। 2 तब यहीएल का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वुश में का या, एज्रा से कहने
लगा, हम लोगोंने इस देश के लोगोंमें से अन्यजाति स्त्रियां ब्याह कर अपके
परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है, परन्तु इस दशा में भी इस्राएल के लिथे
आश है। 3 अब हम अपके परमेश्वर से यह वाचा बान्धें, कि हम अपके प्रभुकी
सम्मति और अपके परमेश्वर की आज्ञा सुनकर यरयरानेवालोंकी सम्मति के

अनुसार ऐसी सब स्त्रियोंको और उनके लड़केवालोंको दूर करें; और व्यवस्था के
अनुसार काम किया जाए। 4 तू उठ, क्योंकि यह काम तेरा ही है, और हम तेरे
साथ है; इसलिथे हियाव बान्धकर इस काम में लग जा। 5 तब एज्रा उठा, और
याजकों, लेवियोंऔर सब इस्राएलियोंके प्रधानोंको यह शपथ खिलाई कि हम इसी
वचन के अनुसार करेंगे; और उन्होंने वैसी ही शपथ खाई। 6 तब बज्रा परमेश्वर के
भवन के साम्हने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र योहानान की कोठरी में गया,
और वहां पहुंचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया, क्योंकि वह बन्धुआई में से
निकल आए हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा। 7 तब उन्होंने यहूदा
और यरूशलेम में रहनेवाले बन्धुआई में से आए हुए सब लोगोंमें यह प्रचार
कराया, कि तुम यरूशलेम में इाट्ठे हो; 8 और जो कोई हाकिमोंऔर पुरनियोंकी
सम्मति न मानेगा और तीन दिन के भीतर न आए तो उसकी समस्त
धन-सम्पत्ति नष्ट की जाएगी और वह आप बन्धुआई से आए हुओं की सभा से
अलग किया जाएगा। 9 तब यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के
भीतर यरूशलेम में इकट्ठे हुए; यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और सब
लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और फड़ी के मारे कांपके
हुए बैठे रहे। 10 तब एज्रा याजक खड़ा होकर उन से कहने लगा, तुम लोगोंने
विश्वासघात करके अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह लीं, और इस से इस्राएल का दोष बढ़
गया है। 11 सो अब अपके पितरोंके परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपना पाप मान
लो, और उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के लोगोंसे और अन्यजातिस्त्रियोंसे
न्यारे हो जाओ। 12 तब पूरी मणडली के लोगोंने ऊंचे शब्द से कहा, जैसा तू ने
कहा है, वैसा ही हमें करना उचित है। 13 परन्तु लोग बहुत हैं, और फड़ी का समय

है, और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक दिन का काम नहीं है,
क्योंकि हम ने इस बात में बड़ा अपराध किया है। 14 समस्त मण्डली की ओर से
हमारे हाकिम नियुक्त किए जाएं; और जब तक हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ
कोप हम से दूर न हो, और यह काम निपट न जाए, तब तक हमारे नगरोंके
जितने निवासियोंने अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह ली हों, वे नियत समयोंपर आया
करें, और उनके संग एक नगर के पुरनिथे और न्यायी आएं। 15 इसके विरुद्ध
केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और
मशुल्लाम और शब्बतै लेवियोंने उनकी सहाथता की। 16 परन्तु बन्धुआई से
आए हुए लोगोंने वैसा ही किया। तब एज्रा याजक और पितरोंके घरानोंके कितने
मुख्य पुरुष अपके अपके पितरोंके घराने के अनुसार अपके सब नाम लिखाकर
अलग किए गए, और दसवें महीने के पहिले दिन को इस बात की तहकीकात के
लिथे बैठे। 17 और पहिले महीने के पहिले दिन तक उन्होंने उन सब पुरुषोंकी
बात निपटा दी, जिन्होंने अन्यजाति-स्त्रियोंको ब्याह लिया या। 18 और
याजकोंकी सन्तान में से; थे जन पाए गए जिन्होंने अन्यजाति-स्त्रियोंको ब्याह
लिया या, अर्यात् थेशू के पुत्र, योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह,
एलीआज़र, यारीब और गदल्याह। 19 इन्होंने हाथ मारकर वचन दिया, कि हम
अपक्की स्त्रियोंको निकाल देंगे, और उन्होंने दोषी ठहरकर, अपके अपके दोष के
कारण एक एक मेढ़ा बलि किया। 20 और इम्मेर की सन्तान में से; हनानी और
जबद्याह, 21 और हारीम की सन्तान में से; मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल
और उज्जियाह। 22 और पशहूर की सन्तान में से; उल्योएनै, मासेयाह,
इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा। 23 फिर लेवियोंमें से; योजाबाद,

शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहूदा और एलीआज़र। 24
और गवैयोंमें से; एल्याशीव और द्वारपालोंमें से शल्लूम, तेलेम और ऊरी। 25 और
इस्राएल में से; परोश की सन्तान में रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मियामीन,
एलीआज़र, मल्कियाह और बनायाह। 26 और एलाम की सन्तान में से;
मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल अब्दी, यरेमोत और एलियाह। 27 और जतू की
सन्तान में से; एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीजा।
28 और बेबै की सन्तान में से; यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। 29 और
बानी की सन्तान में से; मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और
यरामोत। 30 और पहतमोआब की सन्तान में से; अदना, कलाल, बनायाह,
मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। 31 और हारीम की सन्तान
में से; एलीआज़र, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन; 32 बिन्यामीन,
मल्लूक और शमर्याह। 33 और हाशूम की सन्तान में से; मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद,
एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी। 34 और बानी की सन्तान में से; मादै,
अम्राम, ऊएल; 35 बनायाह, बेदयाह, कलूही; 36 बन्याह, मरेमोत, एल्याशीब; 37
मत्तन्याह, मत्तनै, यासू; 38 वानी, विन्नूई, शिमी; 39 शेलेम्याह, नातान, अदायाह;
40 मक्नदबै, शाशै, शारै; 41 अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह; 42 शल्लूम, अमर्याह
और योसेफ। 43 और नबो की सन्तान में से; यीएल, मत्तिन्याह, जाबाद, जबीना,
यद्दो, योएल और बनायाह। 44 इन सभोंने अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह ली यीं, और
कितनोंकी स्त्र्ियोंसे लड़के भी उत्पन्न हुए थे।

नहेमायाह 1

1 हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलवे नाम महीने में,
जब मैं शूशन नाम राजगढ़ में रहता या, 2 तब हनानी नाम मेरा एक भाई और
यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैं ने उन से उन बचे हुए यहूदियोंके
विषय जो बन्धुआई से छूट गए थे, और यरूशलेम के विष्य में पूछा। 3 उन्होंने
मुझ से कहा, जो बचे हुए लोग बन्धुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं, वे बड़ी
दुर्दशा में पके हैं, और उनकी निन्दा होती है; क्योंकि यरूशलेम की शहरपनाह
टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं। 4 थे बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा
और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास
करता और यह कहकर प्रार्यना करता रहा। 5 हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे
महान और भययोग्य ईश्वर ! तू जो अपके प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले
के विष्य अपक्की वाचा पालता और उन पर करुणा करता है; 6 तू कान लगाए
और आंखें खोले रह, कि जो प्रार्यना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियोंके
लिथे दिन रात करता रहता हूँ, उसे तू सुन ले। मैं इस्राएलियोंके पापोंको जो हम
लोगोंने तेरे विरुद्ध किए हैं, मान लेता हूँ। मैं और मेरे पिता के घराने दोनोंने पाप
किया है। 7 हम ने तेरे साम्हने बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाएं, विधियां और
नियम तू ने अपके दास मूसा को दिए थे, उनको हम ने नहीं माना। 8 उस वचन
की सुधि ले, जो तू ने अपके दास मूसा से कहा या, कि यदि तुम लोग विश्वासघात
करो, तो मैं तुम को देश देश के लोगोंमें तितर बितर करूंगा। 9 परन्तु यदि तुम
मेरी ओर फिरो, और मेरी आज्ञाएं मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से
निकाले हुए लोग आकाश की छोर में भी हों, तौभी मैं उनको वहां से इकट्ठा करके
उस स्यान में पहुंचाऊंगा, जिसे मैं ने अपके नाम के निवास के लिथे चुन लिया है।

10 अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तू ने अपक्की बड़ी सामर्य
और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है। 11 हे प्रभु बिनती यह है, कि तू अपके
दास की प्रार्यना पर, और अपके उन दासोंकी प्रार्यना पर, जो तेरे नाम का भय
मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपके दास का काम सुफल कर, और उस
पुरुष को उस पर दयालु कर। (मैं तो राजा का पियाऊ या।)

नहेमायाह 2

1 अर्तझत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नाम महीने में, जब उसके साम्हने
दाखमधु या, तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इस से पहिले मैं उसके
साम्हने कभी उदास न हुआ या। 2 तब राजा ने मुझ से पूछा, तू तो रेगी नहीं है,
फिर तेरा मुंह क्योंउतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी। 3 तब मैं अत्यन्त डर
गया। और राजा से कहा, राजा सदा जीवित रहे ! जब वह नगर जिस में मेरे
पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुंह
क्योंन उतरे? 4 राजा ने मुझ से पूछा, फिर तू क्या मांगता है? तब मैं ने स्वर्ग के
परमेश्वर से प्रार्यना करके, राजा से कहा; 5 यदि राजा को भाए, और तू अपके दास
से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कबरोंके नगर को भेज, ताकि
मैं उसे बनाऊं। 6 तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी यी, मुझ से पूछा, तू
कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लैटेगा? सो राजा मुझे भेजने को
प्रसन्न हुआ; और मैं ने उसके लिथे एक समय नियुक्त किया। 7 फिर मैं ने राजा
से कहा, यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियोंके लिथे इस आशय
की चिट्ठियां मुझे दी जाएं कि जब तक मैं यहूदा को न महुंचूं, तब तक वे मुझे

अपके अपके देश में से होकर जाने दें। 8 और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप
के लिथे भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए
राजगढ़ की कडिय़ोंके लिथे, और शहरपनाह के, और उस घर के लिथे, जिस में मैं
जाकर रहूंगा, लकड़ी दे। मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर यी, इसलिथे राजा ने
यह बिनती ग्रहण किया। 9 तब मैं ने महानद के पार के अधिपतियोंके पास
जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियां दीं। राजा ने मेरे संग सेनापति और सवार भी भेजे
थे। 10 यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियोंके कल्याण का उपाय करने को
आया है, होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी या, उन
दोनोंको बहुत बुरा लगा। 11 जब मैं यरूशलेम पहुंच गया, तब वहां तीन दिन
रहा। 12 तब मैं योड़े पुरुषोंको लेकर रात को उठा; मैं ने किसी को नहीं बताया कि
मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिथे मेरे मन में क्या उपजाया या। और
अपक्की सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न या। 13 मैं रात को तराई के
फाटक में होकर निकला और अजगर के सोते की ओर, और कूड़ाफाटक के पास
गया, और यरूशलेम की टूटी पक्की हुई शहरपनाह और जले फाटकोंको देखा। 14
तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया; परन्तु मेरी
सवारी के पशु के लिथे आगे जाने को स्यान न या। 15 तब मैं रात ही रात नाले से
होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया; फिर घूमकर ताि‍ई के फाटक से
भीतर आया, और इस प्रकार लौट आया। 16 और हाकिम न जानते थे कि मैं कहां
गया और क्या करता या; वरन मैं ने तब तक न तो यहूदियोंको कुछ बताया या
और न याजकोंऔर न रईसोंऔर न हाकिमोंऔर न दूसरे काम करनेवालोंको। 17
तब मैं ने उन से कहा, तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि

यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। तो आओ, हम यरूशलेम
की शहरपनाह को बनाएं, कि भविष्य में हमारी नामधराई न रहे। 18 फिर मैं ने
उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने
मुझ से क्या क्या बातें कही यीं। तब उन्होंने कहा, आओ हम कमर बान्धकर
बनाने लगें। और उन्होंने इस भले काम को करने के लिथे हियाव बान्ध लिया।
19 यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी या,
और गेशेम नाम एक अरबी, हमेें ठट्ठोंमें उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर
कहन लगे, यह तुम क्या काम करते हो। 20 क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा
करोगे? तब मैं ने उनको उत्तर देकर उन से कहा, स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम
सुफल करेगा, इसलिथे हम उसके दास कमर बान्धकर बनाएंगे; परन्तु यरूशलेम
में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक्क, न स्मारक है।

नहेमायाह 3

1 तब एल्याशीब महाथाजक ने अपके भाई याजकोंसमेत कमर बान्धकर
भेड़फाटक को बनाया। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा की, और उसके पल्लोंको भी
लगाया; और हम्मेआ नाम गुम्मट तक वरन हननेल के गुम्मट के पास तक
उन्होंने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की। 2 उस से आगे यरीहो के मनुष्योंने बनाया।
और इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया । 3 फिर मछलीफाटक को
हस्सना के बेटोंने बनाया; उन्होंने उसकी कडिय़ां लगाई, और उसके पल्ले, ताले
और बेंड़े लगाए। 4 और उन से आगे मरेमोत ने जो हक्कोस का पोता और
ऊरियाह का पुत्र या, मरम्मत की। और इन से आगे मशुल्लाम ने जो मशेजबेल

का पोता, और बरेक्याह का पुत्र या, मरम्मत की। और इस से आगे बाना के पुत्र
सादोक ने मरम्मत की। 5 और इन से आगे तकोइयोंने मरम्मत की; परन्तु
उनके रईसोंने अपके प्रभु की सेवा का जूआ अपक्की गर्दन पर न लिया। 6 फिर
पुराने फाटक की मरम्मत पासेह के पुत्र योयादा और बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम
ने की; उन्होंने उसकी कडिय़ां लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंड़े लगाए। 7
और उन से आगे गिबोनी मलत्याह और मेरोनोती यादोन ने और गिबोन और
मिस्पा के मनुष्योंने महानद के पार के अधिपति के सिंहासन की ओर से
मरम्मत की। 8 उन से आगे हर्हयाह के पुत्र उजीएल ने और और सुनारोंने
मरम्मत की। और इस से आगे हनन्याह ने, जो गन्धियोंके समाज का या,
मरम्मत की; और उन्होंने चौड़ी शहरपनाह तक यरूशलेम को दृढ़ किया। 9 और
उन से आगे हूर के पुत्र रपायाह ने, जो यरूशलेम के आधे जिले का हाकिम या,
मरम्मत की। 10 और उन से आगे हरुमप के पुत्र यदायाह ने अपके ही घर के
साम्हने मरम्मत की; और इस से आगे हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने मरम्मत की।
11 हारीम के पुत्र मल्कियाह और पहत्तोआब के पुत्र हश्शूब ने एक और भाग की,
और भट्टोंके गुम्मट की मरम्मत की। 12 इस से आगे यरूशलेम के आधे जिले
के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने अपक्की बेटियोंसमेत मरम्मत की। 13
तराई के फाटक की मरम्मत हानून और जानोह के निवासियोंने की; उन्होंने
उसको बनाया, और उसके ताले, बेंड़े और पल्ले लगाए, और हजार हाथ की
शहरपनाह को भी अर्यात् कूड़ाफाटक तक बनाया। 14 और कूड़ाफाटक की
मरम्मत रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने की, जो बेयक्केरेम के जिले का हाकिम या;
उसी ने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंड़े और पल्ले लगाए। 15 और

सोताफाटक की मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की, जो मिस्पा के जिले का
हाकिम या; उसी ने उसको बनाया और पाटा, और उसके ताले, बेंड़े और पल्ले
लगाए; और उसी ने राजा की बारी के पास के शेलह नाम कुण्ड की शहरपनाह को
भी दाऊदपुर से उतरनेवाली सीढ़ी तक बनाया। 16 उसके बाद अजज अजबूक के
पुत्र नहेमायाह ने जो बेतसूर के आधे जिले का हाकिम या, दाऊद के कब्रिस्तान के
साम्हने तक और बनाए हुए पोखरे तक, वरन वीरोंके घर तक भी मरम्मत की।
17 इसके बाद बानी के पुत्र रहूम ने कितने लेवियोंसमेत मरम्मत की। इस से
आगे कीला के आधे जिले के हाकिम हशब्याह ने अपके जिले की ओर से मरम्मत
की। 18 उसके बाद उनके भाइयोंसमेत कीला के आधे जिले के हाकिम हेनादाद के
पुत्र बव्वै ने मरम्मत की। 19 उस से आगे एक और भाग की मरम्मत जो
शहरपनाह के मोड़ के पास शस्त्रें के घर की चढ़ाई के साम्हने है, थेशु के पुत्र एज़ेर
ने की, जो मिस्पा का हाकिम या। 20 फिर एक और भाग की अर्यात् उसी मोड़ से
ले एल्याशीब महाथाजक के घर के द्वार तक की मरम्मत जब्बै के पुत्र बारूक ने
तन मन से की। 21 इसके बाद एक और भाग की अर्यात् एल्याशीब के घर के द्वार
से ले उसी घर के सिक्के तक की मरम्मत, मरेमोत ने की, जो हक्कोस का पोता
और ऊरियाह का पुत्र या। 22 उसके बाद उन याजकोंने मरम्मत की जो तराई के
मनुष्य थे। 23 उनके बाद बिन्यामीन और हश्शूब ने अपके घर के साम्हने
मरम्मत की; और इनके पीछे अजर्याह ने जो मासेयाह का पुत्र और अनन्याह का
पोता या अपके घर के पास मरम्मत की। 24 तब एक और भाग की, अर्यात्
अजर्याह के घर से लेकर शहरपनाह के मोड़ तक वरन उसके कोने तक की
मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने की। 25 फिर उसी मोड़ के साम्हने जो ऊंचा

गुम्मट राजभवन से बाहर निकला हुआ बन्दीगृह के आंगन के पास है, उसके
साम्हने ऊजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत की। इसके बाद परोश के पुत्र पदायाह ने
मरम्मत की। 26 नतीन लोग तो ओपेल में पूरब की ओर जलफाटक के साम्हने
तक और बाहर निकले हुए गुम्मट तक रहते थे। 27 पदायाह के बाद तकोइयोंने
एक और भाग की मरम्मत की, जो बाहर तिकले हुए बड़े गुम्मट के साम्हने और
ओबेल की शहरपनाह तक है। 28 फिर घोड़ाफाटक के ऊपर याजकोंने अपके
अपके घर के साम्हने मरम्मत की। 29 इनके बाद इम्मेर के पुत्र सादोक ने अपके
घर के साम्हने मरम्मत की; और तब पूरवी फाटक के रखवाले शकन्याह के पुत्र
समयाह ने मरम्मत की। 30 इसके बाद शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप
के छठवें पुत्र हानून ने एक और भाग की मरम्मत की। तब बेरेक्याह के पुत्र
मशुल्लाम ने अपक्की कोठरी के साम्हने मरम्मत की। 31 उसके बाद मल्कियाह
ने जो सुनार या नतिनोंऔर व्यापारियोंके स्यान तक ठहराए हुए स्यान के फाटक
के साम्हने और कोने के कोठे तक मरम्मत की। 32 और कोनेवाले कोठे से लेकर
भेड़फाटक तक सुनारोंऔर व्यापारियोंने मरम्मत की।

नहेमायाह 4

1 जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उस ने
बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहूदियोंको ठट्ठोंमें उड़ाने लगा। 2 वह अपके
भाइयोंके और शोमरोन की सेना के साम्हने योंकहने लगा, वे निर्बल यहूदी क्या
किया चाहते हैं? क्या वे वह काम अपके बल से करेंगे? क्या वे अपना स्यान दृढ़
करेंगे? क्या वे यज्ञ करेंगे? क्या वे आज ही सब काम निपटा डालेंगे? क्या वे

मिट्टीके ढेरोंमें के जले हुए पत्थ्रोंको फिर नथे सिक्के से बनाएंगे? 3 उसके पास
तो अम्मोनी तोबियाह या, और वह कहने लगा, जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई
गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़
देगा। 4 हे हमारे परमेश्वर सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है; और उनका किया
हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बन्धुआई के देश में लुटवा दे।
5 और उनका अधर्म तू न ढांप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए;
क्योंकि उन्होंने तुझे शहरपनाह बनानेवालोंके साम्हने क्रोध दिलाया है। 6 और
हम लोगोंने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊंचाई तक जुड़
गई। क्योंकि लोगोंका मन उस काम में नित लगा रहा। 7 जब सम्बल्लत और
तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियोंऔर अशदोदियोंने सुना, कि यरूशलेम की
शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है, और उस में के नाके बन्द होने लगे हैं, तब
उन्होंने बहुत ही बुरा माना; 8 और सभोंने एक मन से गोष्ठी की, कि जाकर
यरूशलेम से लड़ें, और उस में गड़बड़ी डालें। 9 परन्तु हम लोगोंने अपके परमेश्वर
से प्रार्यना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए।
10 और यहूदी कहने लगे, ढोनेवालोंका बल घट गया, और मिट्टी बहुत पक्की है,
इसलिथे शहरपनाह हम से नहीं बन सकती। 11 और हमारे शत्रु कहने लगे, कि
जब तक हम उनके बीच में न महुंचे, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें,
तब तक उनको न कुछ मालूम होगा, और न कुछ दिखाई पकेगा। 12 फिर जो
यहूदी उनके आस पास रहते थे, उन्होंने सब स्यानोंसे दस बार आ आकर, हम
लोगोंसे कहा, तुम को हमारे पास लौट आना चाहिथे। 13 इस कारण मैं ने लोगोंको
तलवारें, बछिर्यां और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सब से नीचे के खुले

स्यानोंमें घराने घराने के अनुसार बैठा दिया। 14 तब मैं देखकर उठा, और
रईसोंऔर हाकिमोंऔर और सब लोगोंसे कहा, उन से मत डरो; प्रभु जो महान
और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपके भाइयों, बेटों, बेटियों, स्त्रियोंऔर
घरोंके लिथे युद्ध करना। 15 जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि यह बात हम को
मालूम हो गई है और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब
शहरपनाह के पास अपके अपके काम पर लौट गए। 16 और उस दिन से मेरे
आधे सेवक तो उस काम मे लगे रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषोंऔर
फिलमोंको धारण किए रहते थे; और यहूदा के सारे धराने के पीछे हाकिम रहा
करते थे। 17 शहरपनाह के बनानेवाले और बोफ के ढोनेवाले दोनोंभार उठाते थे,
अर्यत् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हयियार पकड़े रहते थे। 18
और राज अपक्की अपक्की जांघ पर तलवार लटकाए हुए बनाते थे। और
नरसिंगे का फूंकनेवाला मेरे पास रहता या। 19 इसलिथे मैं ने रईसों, हाकिमोंऔर
सब लोगोंसे कहा, काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम लोग शहरपनाह पर
अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं। 20 इसलिथे जिधर से नरसिंगा तुम्हें
सुनाई दे, उधर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी ओर से
लड़ेगा। 21 योंहम काम में लगे रहे, और उन में आधे, पौ फटने से तारोंके
निकलने तक बर्छियां लिथे रहते थे। 22 फिर उसी समय मैं ने लोगोंसे यह भी
कहा, कि एक एक मनुष्य अपके दास समेत यरूशलेम के भीतर रात बिताया करे,
कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें, और दिन को काम में लगे रहें। 23 और न
तो मैं अपके कपके उतारता या, और न मेरे भाई, न मेरे सेवक, न वे पहरुए जो
मेरे अनुचर थे, अपके कपके उतारते थे; सब कोई पानी के पास हयियार लिथे हुए

जागते थे।

नहेमायाह 5

1 तब लोग और उनकी स्त्रियोंकी ओर से उनके भाई यहूदियोंके किरुद्ध बड़ी
चिल्लाहट मची। 2 कितने तो कहते थे, हम अपके बेटे-बेटियोंसमेत बहुत प्राणी
हैं, इसलिथे हमें अन्न मिलना चाहिथे कि उसे खाकर जीवित रहें। 3 और कितने
कहते थे, कि हम अपके अपके खेतों, दाख की बारियोंऔर घरोंको महंगी के
कारण बन्धक रखते हैं, कि हमें अन्न मिले। 4 फिर कितने यह कहते थे, कि हम
ने राजा के कर के लिथे अपके अपके खेतोंऔर दाख की बारियोंपर रुपया उधार
लिया। 5 परन्तु हमारा और हमारे भाइयोंका शरीर और हमारे और उनके
लड़केबाले एक ही समान हैं, तौभी हम अपके बेटे-बेटियोंको दास बनाते हैं; वरन
हमारी कोई कोई बेटी दासी भी हो चुकी हैं; और हमारा कुछ बस नहीं जलता,
क्योंकि हमारे खेत और दाख की बारियां औरोंके हाथ पक्की हैं। 6 यह चिल्लाहट
ओर थे बातें सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ। 7 तब अपके मन में सोच विचार
करके मैं ने रईसोंऔर हाकिमोंको घुड़ककर कहा, तुम अपके अपके भाई से ब्याज
लेते हो। तब मैं ने उनके विरुद्ध एक बड़ी सभा की। 8 और मैं ने उन से कहा, हम
लोगोंने तो अपक्की शक्ति भर अपके यहूदी भाइयोंको जो अन्यजातियोंके हाथ
बिक गए थे, दाम देकर छुड़ाया है, फिर क्या तुम अपके भाइयोंको बेचोगे? क्या वे
हमारे हाथ बिकेंगे? तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके। 9 फिर मैं कहता गया,
जो काम तुम करते हो वह अच्छा नहीं है; क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर
का भय मानकर चलना न चाहिथे कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं, वे हमारी

नामधराई न करें? 10 मैं भी और मेरे भाई और सेवक उनको रुपया और अनाज
उधार देते हैं, परन्तु हम इसका ब्याज छोड़ दें। 11 आज ही अनको उनके खेत,
और दाख, और जलपाई की बारियां, और घर फेर दो; और जो रुपया, अन्न, नया
दाखमधु, और टटका तेल तुम उन से ले लेते हो, उसका सौवां भाग फेर दो? 12
अन्होंने कहा, हम उन्हें फेर देंगे, और उन से कुछ न लेंगे; जैसा तू कहता है, वैसा
ही हम करेंगे। तब मैं ने याजकोंको बुलाकर उन लोगोंको यह शपय खिलाई, कि वे
इसी वचन के अनुसार करेंगे। 13 फिर मैं ने अपके कपके की छोर फाड़कर कहा,
इसी रीति से जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको परमेश्वर फाड़कर, उसका
घर और कमाई उस से छुड़ाए, और इसी रीति से वह फाड़ा जाए, और छूछा हो
जाए। तब सारी सभा ने कहा, आमेन ! और यहोवा की स्तुति की। और लोगोंने
इस वचन के अनुसार काम किया। 14 फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका
अधिपति ठहराया गया, अर्यात् राजा अर्तझत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें
वर्ष तक, अर्यात् बारह वर्ष तक मैं और मेरे भाई अधिपति के हक का भोजन खाते
रहे। 15 परन्तु पहिले अधिपति जो मुझ से आगे थे, वह प्रजा पर भार डालते थे,
और उन से रोटी, और दाखमधु, और इस से अधिक चालीस शेकेल चान्दी लेते थे,
वरन उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिक्कारने जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं
करता या, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता या। 16 फिर मैं शहरपनाह के काम
में लिपटा रहा, और हम लोगोंने कुछ भूमि मोल न ली; और मेरे सब सेवक काम
करने के लिथे वहां इकट्ठे रहते थे। 17 फिर मेरी मेज पर खानेवाले एक सौ
पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे, जो चारोंओर की अन्यजातियोंमें से
हमारे पास आए थे। 18 और जो प्रतिदिन के लिथे तैयार किया जाता या वह एक

बैल, छ: अच्छी अच्छी भेड़ें व बकरियां यीं, और मेरे लिथे चिडिय़ें भी तैयार की
जाती यीं; दस दस दिन के बाद भांति भांति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया
जाता या; परन्तु तौभी मैं ने अधिपति के हक का भोज नहीं लिया, 19 क्योंकि
काम का भार प्रजा पर भारी या। हे मेरे परमेश्वर ! जो कुछ मैं ने इस प्रजा के लिथे
किया है, उसे तू मेरे हित के लिथे स्मरण रख।

नहेमायाह 6

1 जब सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम और हमारे और शत्रुओं को यह
समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी
मैं फाटकोंमें पल्ले न लगा चुका या, तौभी शहरपनाह में कोई दरार न रह गया
या। 2 तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास योंकहला भेजा, कि आ, हम ओनो
के मैदान के किसी गांव में एक दूसरे से भेंट करें। परन्तु वे मेरी हानि करने की
इच्छा करते थे। 3 परन्तु मैं ने उनके पास दूतोंसे कहला भेजा, कि मैं तो भारी
काम में लगा हूँ, वहां नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह
काम क्योंबन्द रहे? 4 फिर उन्होंने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी,
और मैं ने उनको वैसा ही उत्तर दिया। 5 तब पांचक्की बार सम्बल्लत ने अपके
सेवक को खुली हुई चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, 6 जिस में योंलिखा या, कि जाति
जाति के लोगोंमें यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही बात कहता है, कि तुम्हारी
और यहूदियोंकी मनसा बलवा करने की है, और इस कारण तू उस शहरपनाह को
बनवाता है; और तू इन बातोंके अनुसार उनका राजा बनना चाहता है। 7 और तू
ने यरूशलेम में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें, कि

यहूदियोंमें एक राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा। इसलिथे
अब आ, हम एक साय सम्मति करें। 8 तब मैं ने उसके पास कहला भेजा कि
जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू थे बातें अपके मन से गढ़ता है। 9
वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, कि उनके हाथ ढीले पकें, और काम
बन्द हो जाए। परन्तु अब हे परमेश्वर तू मुझे हियाव दे। 10 और मैं शमायाह के
घर में गया, जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का पोता या, वह तो बन्द घर में
या; उस ने कहा, आ, हम परमेश्वर के भवन अर्यात् मन्दिर के भीतर आपस में
भेंट करें, और मन्दिर के द्वार बन्द करें; क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएंगे,
रात ही को वे तुझे घात करने आएंगे। 11 परन्तु मैं ने कहा, क्या मुझ ऐसा मनुष्य
भागे? और तुझ ऐसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे? मैं नहीं
जाने का। 12 फिर मैं ने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है परन्तु उस
ने हर बात ईश्वर का वचन कहकर मेरी हानि के लिथे कही, क्योंकि तोबियाह और
सम्बल्लत ने उसे रुपया दे रखा या। 13 उन्होंने उसे इस कारण रुपया दे रखा या
कि मैं डर जाऊं, और वैसा ही काम करके पापी ठहरूं, और उनको अपवाद लगाने
का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सकें। 14 हे मेरे रपरमेश्वर !
तोबियाह, सम्बल्लत, और नोअद्याह, नबिया और और तितने नबी मुझे डराना
चाहते थे, उन सब के ऐसे ऐसे कामोंकी सुधि रख। 15 एलूल महीने के पक्कीसवें
दिन को अर्यात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बन चुकी। 16 जब हमारे सब
शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारोंओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और
बहुत लज्जित हुए; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की
ओर से हुआ। 17 उन दिनोंमें भी यहूदी रईसोंऔर तोबियाह के बीच चिट्ठ बहुत

आया जाया करती यी। 18 क्योंकि वह आरह के पुत्र शकम्याह का दामाद या,
और उसके पुत्र यहोहानान ने बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की बेटी की ब्याह लिया
या; इस कारण बहुत से यहूदी उसका पझ करने की शपय खाए हुए थे। 19 और वे
मेरे सुनते उसके भले कामोंकी चर्चा किया करते, और मेरी बातें भी उसको सुनाया
करते थे। और तोबियाह मुझे डराने के लिथे चिट्ठियां भेजा करता या।

नहेमायाह 7

1 जब शहरपनाह बन गई, और मैं ने उसके फाटक खड़े किए, और द्वारपाल, और
गवैथे, और लेवीय लोग ठहराथे गए, 2 तब मैं ने अपके भाई हनानी और राजगढ़
के हाकिम हनन्याह को यरूशलेम का अधिक्कारनी ठहराया, क्योंकि यह सच्चा
पुरुष और बहुतेरोंसे अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला या। 3 और मैं ने उन से
कहा, जब तक घाम कड़ा न हो, तब तक यरूशलेम के फाटक न खोले जाएं और
जब पहरुए पहरा देते रहें, तब ही फाटक बन्द किए जाएं और बेड़े लगाए जाएं।
फिर यरूशलेम के निवासियोंमें से तू रखवाले ठहरा जो अपना अपना पहरा अपके
अपके घर के साम्हने दिया करें। 4 नगर तो लम्बा चौड़ा या, परन्तु उस में लोग
योड़े थे, और घर नहीं बने थे। 5 तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया कि
रईसों, हाकिमोंऔर प्रजा के लोगोंको इसलिथे इकट्ठे करूं, कि वे अपक्की
अपक्की वंशावली के अनुसार गिने जाएं। और मुझे पहिले पहिल यरूशलेम को
आए हुओं का वंशावलीपत्र मिला, और उस में मैं ने योंलिख हुआ पाया: 6 जिनको
बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर बन्धुआ करके ले गया या, उन में से प्रान्त के जो
लोग बन्धुआई से छूटकर, यरूशलेम और यहूदा के अपके अपके नगर को आए।

7 वे जरुब्बाबेल, थेशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान,
मिस्पेरेत, विग्वै, नहूम और बाना के संग आए। 8 इस्राएली प्रजा के लोगोंकी
गिनती यह है : अर्यात् परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर, 9 सपत्याह की
सन्तान तीन सौ बहत्तर, आाह की सन्तान छः सौ बावन। 10 पहत्मोआब की
सन्तान याने थेशू और योआब की सन्तान, 11 दो हजार आठ सौ अठारह। 12
एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, 13 जत्तू की सन्तान आठ सौ पैंतालीस। 14
जवकै की सन्तान सात सौ साठ। 15 बिन्नूई की सन्तान छ:सौ अड़तालीस। 16
बेबै की सन्तान छ:सौ अट्ठाईस। 17 अजगाद की सन्तान दो हजार तीन सौ
बाईस। 18 अदोनीकाम की सन्तान छ:सौ सड़सठ। 19 बिग्बै की सन्तान दो
हजार सड़सठ। 20 आदीन की सन्तान छ:सौ पचपन। 21 हिचकिय्याह की
सन्तान आतेर के वंश में से अट्ठानवे। 22 हाशम की सन्तान तीन सौ
अट्ठाईस। 23 बैसै की सन्तान तीन सौ चौबीस। 24 हारीप की सन्तान एक सौ
बारह। 25 गिबोन के लोग पचानवे। 26 बेतलेहेम और नतोपा के मनुष्य एक सौ
अट्ठासी। 27 अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस। 28 बेतजमावत के मनुष्य
बयालीस। 29 किर्यत्यारीम, कपीर, और बेरोत के मनुष्य सात सौ तैंतालीस। 30
रामा और गेबा के मनुष्य छ:सौ इक्कीस। 31 मिकपास के मनुष्य एक सौ बाईस।
32 बेतेल और ऐ के मनुष्य एक सौ तेईस। 33 दूसरे नबो के मनुष्य बावन। 34
दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन। 35 हारीम की सन्तान तीन सौ बीस।
36 यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस। 37 लोद हादीद और ओनोंके लोग सात सौ
इक्कीस। 38 सना के लोग तीन हजार नौ सौ तीस। 39 फिर याजक अर्यात् थेशू
के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर। 40 इम्मेर की सन्तान एक

हजार बावन। 41 पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस। 42 हारीम की सन्तान
एक हजार सत्रह। 43 फिर लेवीय थे थे: अर्यात् होदवा के दंश में से कदमीएल की
सन्तान थेशू की सन्तान चौहत्तर। 44 फिर गवैथे थे थे: अर्यात् आसाप की
सन्तान एक सौ अड़तालीस। 45 फिर द्वारपाल थे थे: अर्यात् शल्लूम की सन्तान,
आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की
सन्तान, और शोबै की सन्तान, जो सब मिलकर एक सौ अड़तीस हुए। 46 फिर
नतीन अर्यत् सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान, 47
केरोस की सन्तान, सीआ की सन्तान, पादोन की सन्तान, 48 लबाना की
सन्तान, हगावा की सन्तान, शल्मै की सन्तान। 49 हानान की सन्तान, गिद्देल
की सन्तान, गहर की सन्तान, 50 राया की सन्तान, रसीन की सन्तान, नकोदा
की सन्तान, 51 गज्जाम की सन्तान, उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, 52
बेसै की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नमूशस की सन्तान, 53 बकबूक की
सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की सन्तान, 54 बसलीत की सन्तान, महीदा
की सन्तान, हर्शा की सन्तान, 55 बकॉस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमेह
की सन्तान, 56 नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान। 57 फिर सुलैमान के
दासोंकी सन्तान, अर्यात् सोतै की सन्तान, सोपेरेत की सन्तान, पक्कीदा की
सन्तान, 58 याला की सन्तान, दकॉन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, 59
शपत्याह की सन्तान, हत्तील की सन्तान, पोकेरेत सवायीम की सन्तान, और
आमोन की सन्तान। 60 नतीन और सुलैमान के दासोंकी सन्तान मिलकर तीन
सौ बानवे थे। 61 और थे वे हैं, जो तेलमेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दोन, और इम्मेर
से यरूशलेम को गए, परन्तु अपके अपके पितरोंके घराने और वंशावली न बता

सके, कि इस्राएल के हैं, वा नहीं : 62 अर्यात् दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह की
सन्तान, और दकोदा की सन्तान, जो सब मिलकर छ: सौ बयालीस थे। 63 और
याजकोंमें से होबायाह की सन्तान, हक्कोस की सन्तान, और बजिल्लै की
सन्तान, जिस ने गिलादी बजिल्लै की बेटियोंमें से एक को ब्याह लिया, और
उन्हीं का नाम रख लिया या। 64 इन्होंने अपना अपना वंशावलीपत्र और और
वंशावलीपत्रोंमें ढूंढा, परन्तु न पाया, इसलिथे वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से
निकालेगए। 65 और अधिपति ने उन से कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम
धारण करनेवाला कोई याजक न उठे, तब तक तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न
पाओगे। 66 पूरी मण्डली के लोग मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ ठहरे।
67 इनको छोड़ उनके सात हजार तीन सौ सैंतीस दास-दासियां, और दो सौ
पैंतालीस गानेवाले और गानेवालियां यीं। 68 उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर
दो सौ पैंतालीस, 69 ऊंट चार सौ पैंतीस और गदहे छ: हजार सात सौ बीस थे। 70
और पितरोंके घरानोंके कई एक मुख्य पुरुषोंने काम के लिथे दिया। अधिपति ने
तो चन्दे में हजार दर्कमोन सोना, पचास कटोरे और पांच सौ तीस याजकोंके
अंगरखे दिए। 71 और पितरोंके घरानोंके कई मुख्य मुख्य पुरुषोंने उस काम के
चन्दे में बीस हजार दर्कमोन सोना और दो हजार दो सौ माने चान्दी दी। 72 और
शेष प्रजा ने जो दिया, वह बीस हजार दर्कमोन सोना, दो हजार माने चान्दी और
सड़सठ याजकोंके अंगरखे हुए। 73 इस प्रकार याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैथे,
प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इस्राएली अपके अपके नगर में बस गए।

नहेमायाह 8

1 जब सातवां महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपके अपके नगर
में थे। तब उन सब लोगोंने एक मन होकर, जलफाटक के साम्हने के चौक में
इकट्ठे होकर, बज्रा शास्त्री से कहा, कि मूसा की जो व्यवस्या यहोवा ने इस्राएल
को दी यी, उसकी पुस्तक ले आ। 2 तब एज्रा याजक सातवें महीने के पहिले दिन
को क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभोंके साम्हने
व्यवस्या को ले आया। 3 और वह उसकी बातें भोर से दो पहर तक उस चौक के
साम्हने जो जलफाटक के साम्हने या, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने
वालोंको पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्या की पुस्तक पर कान लगाए रहे।
4 एज्रा शास्त्री, काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिथे बना या, खड़ा हो
गयां; और उसकी दाहिनी अलंग मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह,
हिल्किय्याह और मासेयाह; और बाई अलंग, पदायाह, मीशाएल, मल्किय्याह,
हाशूम, हश्बद्दाना,जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। 5 तब एज्रा ने जो सब
लोगोंसे ऊंचे पर या, सभोंके देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उस ने
उसको खोला, तब सब लोग उठ खाड़े हुए। 6 तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा
को धन्य कहा; और सब लोगोंने अपके अपके हाथ उठाकर आमेन, आमेन, कहा;
और सिर फुकाकर अपना अपना माया भूमि पर टेक कर यहोवा को दणडवत
किया। 7 और थेशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह,
मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान और पलायाह नाम लेवीय,
लोगोंको व्यवस्या समझाते गए, और लोग अपके अपके स्यान पर खड़े रहे। 8
और उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्या की पुस्तक से पढ़कर अर्य समझा दिया; और
लोगोंने पाठ को समझ लिया। 9 तब नहेमायाह जो अधिपति या, और एज्रा जो

याजक और शास्त्री या, और जो लेवीय लोगोंको समझा रहे थे, उन्होंने सब
लोगोंसे कहा, आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिथे पवित्र है; इसलिथे
विलाप न करो और न रोओ। क्योंकि सब लोग व्यवस्या के वचन सुनकर रोते
रहे। 10 फिर उस ने उन से कहा, कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और
मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिथे कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना
भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिथे पवित्र है; और उदास मत रहो,
क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है। 11 योंलेवियोंने सब लोगोंको यह
कहकर चुप करा दिया, कि चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है; और उदास
मत रहो। 12 तब सब लोग खाने, पीने, बैना भेजने और बड़ा आनन्द मनाने को
चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे। 13
और दूसरे दिन को भी समस्त प्रजा के पितरोंके घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और
याजक और लेवीय लोग, एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्या के वचन ध्यान से सुनने
के लिथे इकट्टे हुए। 14 और उन्हें व्यवस्या में यह लिखा हुआ मिला, कि यहोवा
ने मूसा से यह आज्ञा दिलाई यी, कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय
फोपडिय़ोंमें रहा करें, 15 और अपके सब नगरोंऔर यरूशलेम में यह सुनाया और
प्रचार किया जाए, कि पहाड़ पर जाकर जलपाई, तैलवृझ, मेंहदी, खजूर और घने
घने वृझोंकी डालियां ले आकर फोपडिय़ां बनाओ, जैसे कि लिखा है। 16 सो सब
लोग बाहर जाकर डालियां ले आए, और अपके अपके घर की छत पर, और अपके
आंगनोंमें, और परमेश्वर के भवन के आंगनोंमें, और जलफाटक के चौक में, और
एप्रैम के फाटक के चौक में, फोंपडिय़ां बना लीं। 17 वरन सब मणडली के लोग
जितने बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, फोंपडिय़ां बना कर उन में टिके। नून के

पुत्र यहोशू के दिनोंसे लेकर उस दिन तक इस्राएलियोंने ऐसा नहीं किया या। और
उस समय बहुत बड़ा आनन्द हुआ। 18 फिर पक्कीले दिन से पिछले दिन तक
एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्या की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। योंवे
सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और साठवें दिन नियम के अनुसार महासभा
हुई।

नहेमायाह 9

1 फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहिने और सिर
पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए। 2 तब इस्राएल के वंश के लोग सब अन्यजाति
लोगोंसे अलग हो गए, और खड़े होकर, अपके अपके पापोंऔर अपके पुरखाओं के
अधर्म के कामोंको मान लिया। 3 तब उन्होंने अपके अपके स्यान पर खड़े होकर
दिन के एक पहर तक अपके परमेश्वर यहोवा की व्यवस्या की पुस्तक पढ़ते, और
एक और पहर अपके पापोंको मानते, और अपके परमेश्वर यहोवा को दणडवत
करते रहे। 4 और थेशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और
कनानी ने लेवियोंकी सीढ़ी पर खड़े होकर ऊंचे स्वर से अपके परमेश्वर यहोवा की
दोहाई दी। 5 फिर थेशू, कदमीएल, बानी, हशब्नयाह, शेरेब्याह, होदिय्याह,
शबन्याह, और पतह्याह नाम लेवियोंने कहा, खड़े हो; अपके परमेश्वर यहोवा को
अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो। तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा
जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से पके है। 6 तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग
वरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृय्वी और जो कुछ उस में है,
और समुद्र और जो कुछ उस में है, सभोंको तू ही ने बनाया, और सभोंकी रझा तू

ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दणडवत करती हैं। 7 हे यहोवा
! तू वही परमेश्वर है, जो अब्राहाम को चुनकर कसदियोंके ऊर नगर में से निकाल
लाया, और उसका नाम इब्राहीम रखा; 8 और उसके मन को अपके साय सच्चा
पाकर, उस से वाचा बान्धी, कि मैं तेरे वंश को कनानियों, हित्तियों, एमोरियों,
परिज्जियों, यबूसियों, और गिर्गाशियोंका देश दूंगा; और तू ने अपना वह वचन
पूरा भी किया, क्योंकि तू धर्मी है। 9 फिर तू ने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दु:ख
पर दृष्टि की; और लाल समुद्र के तट पर उनकी दोहाई सुनी। 10 और फ़िरौन और
उसके सब कर्मचारी वरन उसके देश के सब लोगोंको दणड देने के लिथे चिन्ह
और चमत्कार दिखाए; क्योंकि तू जानता या कि वे उन से अभिमान करते हैं;
और तू ने अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जैसा आज तक वर्तमान है। 11 और तू ने
उनके आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे समुद्र के बीच स्यल ही स्यल
चलकर पार हो गए; और जो उनके पीछे पके थे, उनको तू ने गहिरे स्यानोंमें ऐसा
डाल दिया, जैसा पत्यर महाजलराशि में डाला जाए। 12 फिर तू ने दिन को बादल
के खम्भे में होकर और रात को आग के खम्भे में होकर उनकी अगुआई की, कि
जिस मार्ग पर उन्हें चलना या, उस में उनको उजियाला मिले। 13 फिर तू ने सीनै
पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साय बातें की, और उनको सीधे नियम,
सच्ची व्यवस्या, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। 14 और उन्हें अपके
पवित्र विश्रम दिन का ज्ञान दिया, और अपके दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और
विधियां और व्यवस्या दीं। 15 और उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें
भोजन दिया और उनकी प्यास बुफाने को चट्टान में से उनके लिथे पानी
निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैं ने शपय खाई है

उसके अधिक्कारनी होने को तुम उस में जाओ। 16 परन्तु उन्होंने और हमारे
पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएं न मानी; 17 और
आज्ञा मनने से इनकार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किए थे,
उनका स्मरण न किया, वरन हठ करके यहां तक बलवा करनेवाले बने, कि एक
प्रधान ठहराया, कि अपके दासत्व की दशा में लौटे। परन्तु तू झमा करनेवाला
अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अतिकरुणामय ईश्वर
है, तू ने उनको न त्यागा। 18 वरन जब दन्होंने बछड़ा ढालकर कहा, कि तुम्हारा
परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है, और तेरा बहुत
तिरस्कार किया, 19 तब भी तू जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्यागा; न
तो दिन को अगुआई करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को
उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का खम्भा। 20 वरन तू ने
उन्हें समझाने के लिथे अपके आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मान्ना
उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुफाने को पानी देता रहा। 21 चालीस
वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न
हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पांव में सूजन हुई। 22 फिर तू ने
राज्य राज्य और देश देश के लोगोंको उनके वश में कर दिया, और दिशा दिशा में
उनको बांट दिया; योंवे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनोंके
देशोंके अधिक्कारनी हो गए। 23 फिर तू ने उनकी सन्तान को आकाश के तारोंके
समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुंचा दिया, जिसके विषय तू ने उनके पूर्वजोंसे
कहा या; कि वे उस में जाकर उसके अधिक्कारनी हो जाएंगे। 24 सो यह सन्तान
जाकर उसकी अधिक्कारनेिन हो गई, और तू ने उनके द्वारा देश के निवासी

कनानियोंको दबाया, और राजाओं और देश के लोगोंसमेत उनको, उनके हाथ में
कर दिया, कि वे उन से जो चाहें सो करें। 25 और उन्होंने गढ़वाले नगर और
उपजाऊ भूमि ले ली, और सब भांति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरोंके, और
खुदे हुए हौदोंके, और दाख और जलपाई बारियोंके, और खाने के फलवाले बहुत
से वृझोंके अधिक्कारनी हो गए; वे उसे खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए,
और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे। 26 परन्तु वे तुझ से फिरकर
बलवा करनेवाले बन गए और तेरी व्यवस्या को त्याग दिया, और तेरे जो नबी
तेरी ओर उन्हें फेरने के लिथे उनको चिताते रहे उनको उन्होंने घात किया, और
तेरा बहुत तिरस्कार किया। 27 इस कारण तू ने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में
कर दिया, और उन्होंने उनको संकट में डाल दिया; तौभी जब जब वे संकट में
पड़कर तेरी दोहाई देते रहे तब तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता रहा; और तू जो
अतिदयालु है, इसलिथे उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ
से छुड़ाते थे। 28 परन्तु जब जब उनको चैन मिला, तब तब वे फिर तेरे साम्हने
बुराई करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओं के हाथ में कर देता या, और वे उन पर
प्रभुता करते थे; तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी
सुनता और तू जो दयालु है, इसलिथे बार बार उनको छुड़ाता, 29 और उनको
जिताता या कि उनको फिर अपक्की व्यवस्या के अधीन कर दे। परन्तु वे
अभिमान करते रहे और तेरी आज्ञाएं नहीं मानते थे, और तेरे नियम, जिनको
यदि मनुष्य माने, तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विरुद्ध पाप करते, और हठ
करके अपना कन्धा हटाते और न सुनते थे। 30 तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता
रहा, और अपके आत्मा से नबियोंके द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं

लगाते थे, इसलिथे तू ने उन्हें देश देश के लोगोंके हाथ में कर दिया। 31 तौभी तू
ने जो अतिदयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया,
क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है। 32 अब तो हे हमारे परमेश्वर ! हे
महान पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर ! जो अपक्की वाचा पालता और करुणा
करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अश्शूर के राजाओं के दिनोंसे ले आज के दिन तक हमें
और हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरखाओं, वरन तेरी समस्त प्रजा
को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में योड़ा न ठहरे। 33 तौभी जो कुछ हम पर बीता
है उसके विष्य तू तो धमीं है; तू ने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हम ने
दुष्टता की है। 34 और हमारे राजाओं और हाकिमों, याजकोंऔर पुरखाओं ने, न तो
तेरी व्यवस्या को माना है और न तेरी आज्ञाओं और चितौनियोंकी ओर ध्यान
दिया है जिन से तू ने उनको चिताया या। 35 उन्होंने अपके राज्य में, और उस
बड़े कल्याण के समय जो तू ने उन्हें दिया या, और इस लम्बे चौड़े और उपजाऊ
देश मेंं तेरी सेवा नहीं की; और न अपके बुरे कामोंसे पश्चाताप किया। 36 देख,
हम आज कल दास हैं; जो देश तू ने हमारे पितरोंको दिया या कि उसकी उत्तम
उपज खाएं, इसी में हम दास हैं। 37 इसकी उपज से उन राजाओं को जिन्हें तू ने
हमारे पापोंके कारण हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता है; और वे हमारे
शरीरोंऔर हमारे पशुओं पर अपक्की अपक्की इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं,
इसलिथे हम बड़े संकट में पके हैं। 38 इस सब के कारण, हम सच्चई के साय
वाचा बान्धते, और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, लेवीय और याजक उस
पर छाप लगाते हैं।

नहेमायाह 10

1 जिन्होंने छाप लगाई वे थे हैं, अर्यात् हकल्याह का पुत्र नहेमायाह जो अधिपति
या, और सिदकिय्याह; 2 मरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह; 3 पशहूर, अमर्याह,
मल्किय्याह; 4 हतूश, शबन्याह, मल्लूक; 5 हारीम, मरेयोत, ओबद्याह; 6
दानिय्थेल, गिन्नतोन, बारूक; 7 मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन; 8 माज्याह,
बिलगै और शमायाह; थे ही तो याजक थे। 9 और लेवी थे थे : आजन्याह का पुत्र
थेशू, हेनादाद की सन्तान में से बिन्नई और कदमीएल; 10 और उनके भाई
शबन्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह, हानान; 11 मीका, रहोब, हशब्याह; 12
जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह। 13 होदिय्याह, बानी और बनीन; 14 फिर प्रजा के
प्रधान थे थे : परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी; 15 बुनी, अजगाद, बेबै; 16
अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन; 17 आतेर, हिजकिय्याह, मज्जूर; 18 होदिय्याह,
हाशूम, बेसै; 19 हारीफ, अनातोत, नोबै; 20 मग्पीआश, मशुल्लाम, हेजीर; 21
मशेजबेल, सादोक, यद्दू; 22 पलत्याह, हानान, अनायाह; 23 होशे, हनन्याह,
हश्शूब; 24 हल्लोहेश, पिल्हा, शोबेक; 25 रहूम, हशब्ना, माशेयाह; 26 अहिय्याह,
हानान, आनान; 27 मल्लूक, हारीम और बाना। 28 शेष लोग अर्यात् याजक,
लेवीय, द्वारपाल, गवैथे और नतीन लोग, निदान जितने परमेश्वर की व्यवस्या
मानने के लिथे देश देश के लोगोंसे अलग हुए थे, उन सभें ने अपक्की स्त्रियोंऔर
उन बेटें-बेटियोंसमेत जो समझनेवाले थे, 29 अपके भाई रईसोंसे मिलकर शपय
खाई, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्या पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा
दी गई है, और अपके प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएं, नियम और विधियां मानने में
चौकसी करेंगे। 30 और हम न तो अपक्की बेटियां इस देश के लोगोंको ब्याह देंगे,
और न अपके बेटोंके लिथे उनकी बेटियां ब्याह लेंगे। 31 और जब इस देश के

लोग विश्रमदिन को अन्न वा और बिकाऊ वस्तुएं बेचने को ले आथेंगे तब हम
उन से न तो विश्रमदिन को न किसी पवित्र दिन को कुछ लेंगे; और सातवें वर्ष में
भूमि पक्की रहने देंगे, और अपके अपके ऋण की वसूली छोड़ देंगे। 32 फिर हम
लोगोंने ऐसा नियम बान्ध लिया जिस से हम को अपके परमेश्वर के भवन की
उपासना के लिथे एक एक तिहाई शेकेल देना पकेगा: 33 अर्यात् भेंट की रोटी और
नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि के लिथे, और विश्रमदिनोंऔर नथे चान्द
और नियत पब्बों के बलिदानोंऔर और पवित्र भेंटोंऔर इस्राएल के प्रायश्चित्त के
निमित्त पाप बलियोंके लिथे, निदान अपके परमेश्वर के भवन के सारे काम के
लिथे। 34 फिर क्या याजक, क्या लेवीय, क्या साधारण लोग, हम सभोंने इस
बात के ठहराने के लिथे चिट्ठियां डालीं, कि अपके पितरोंके घरानोंके अनुसार
प्रति वर्ष में ठहराए हुए समयोंपर लकड़ी की भेंट व्यवस्या में लिखी हुई बात के
अनुसार हम अपके परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के लिथे अपके परमेश्वर
के भवन में लाया करेंगे। 35 और अपक्की अपक्की भूमि की पहिली उपज और
सब भांति के वृझोंके पहिले फल प्रति वर्ष यहोवा के भवन में ले आएंगे। 36 और
व्यवस्या में लिखी हुई बात के अनुसार, अपके अपके पहिलौठे बेटोंऔर पशुओं,
अर्यात् पहिलौठे बछड़ोंऔर मेम्नोंको अपके परमेश्वर के भवन में उन याजकोंके
पास लाया करेंगे, जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा टहल करते हैं। 37 और
अपना पहिला गूंधा हुआ आटा, और उठाई हुई भेंटे, और सब प्रकार के वृझोंके
फल, और नया दाखमधु, और टटका तेल, अपके परमेश्वर के भवन की
कोठरियोंमें याजकोंके पास, और अपक्की अपक्की भूमि की उपज का दशमांश
लेवियोंके पास लाया करेंगे; क्योंकि वे लेवीय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरोंमें

दशमांश लेते हैं। 38 और जब जब लेवीय दशमांश लें, तब तब उनके संग हारून
की सन्तान का कोई याजक रहा करे; और लेवीय दशमांशोंका दशमांश हमारे
परमेश्वर के भवन की कोठरियोंमें अर्यात् भणडार में पहुंचाया करेंगे। 39 क्योंकि
जिन कोठरियोंमें पवित्र स्यान के पात्र और सेवा टहल करनेवाले याजक और
द्वारपाल और गवैथे रहते हैं, उन में इस्राएली और लेवीय, अनाज, नथे दाखपधु,
और टटके तेल की उठाई हुई भेंटे पहुंचाएंगे। निदान हम अपके परमेश्वर के भवन
को न छोड़ेंगे।

नहेमायाह 11

1 प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम में रहते थे, और शेष लोगोंने यह ठहराने के लिथे
चिट्ठियां डालीं, कि दस में से एक मनुष्य यरूशलेम में, जो पवित्र नगर है, बस
जाएं; और नौ मनुष्य और और नगरोंमें बसें। 2 और जिन्होंने अपक्की ही इच्छा
से यरूशलेम में वास करना चाहा उन सभोंको लोगोंने आशिर्वाद दिया। 3 उस
प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो यरूशलेम में रहते थे, वे थे हैं; (परन्तु यहूदा के
नगरोंमें एक एक मनुष्य अपक्की निज भूमि में रहता या; अर्यात् इस्राएली,
याजक, लेवीय, नतीन और सुलैमान के दासोंके सन्तान) 4 यरूशलेम में तो कुछ
यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे। यहूदियोंमें से तो थेरेस के वंश का अतायाह जो
अज्जिय्याह का पुत्र या, यह जकर्याह का पुत्र, यह अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह
का पुत्र, यह महललेल का पुत्र या। 5 और मासेयाह जो बारूक का पुत्र या, यह
कोलहोजे का पुत्र, यह हजायाह का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब का
पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह और यह शीलोई का पुत्र या। 6 पेरेस के वंश के जो

यरूशलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अड़सठ शूरवीर थे। 7 और
बिन्यामीनियोंमें से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र या, यह योएद का पुत्र, यह
पदायाह का पुत्र या, यह कोलायाह का पुत्र यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएह का
पुत्र, यह यशायाह का पुत्र या। 8 और उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके साय नौ सौ
अट्ठाईस पुरुष थे। 9 इनका रखवाल जिक्री का पुत्र योएल या, और हस्सनूआ का
पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नायब या। 10 फिर याजकोंमें से योयारीब का पुत्र
यदायाह और याकीन। 11 और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और
हिल्कियाह का पुत्र या, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत
का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र या। 12 और इनके आठ सौ बाईस भाई जो उस भवन
का काम करते थे; और अदायाह, जो यरोहाम का पुत्र या, यह पलल्याह का वुत्र,
यह अम्सी का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्कियाह का
पुत्र या। 13 और इसके दो सौ बयालीस भाई जो पितरोंके घरानोंके प्रधान थे; और
अमशै जो अजरेल का पुत्र या, यह अहजै का पुत्र, यह मशिल्लेमोत का पुत्र, यह
इम्मेर का पुत्र या। 14 और इनके एक सौ अट्ठाईस शूरवीर भाई थे और इनका
रखवाल हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल या। 15 फिर लेवियोंमें से शमायाह जो
हश्शूब का पुत्र या, यह अज्रीकाम का पुत्र, यह हशब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र
या। 16 ओर शब्बत और योजाबाद मुख्य लेवियोंमें से परमेश्वर के भवन के बाहरी
काम पर ठहरे थे। 17 और मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता, और
आसाप का परपोता या; वह प्रार्यना में धन्यवाद करनेवालोंका मुखिया या, और
बकबुक्याह अपके भाइयोंमें दूसरा पद रखता या; और अब्दा जो शम्मू का पुत्र,
और गालाल का पोता, और यदूतून का परपोता या। 18 जो लेवीय पवित्र नगर में

रहते थे, वह सब मिलाकर दो सौ चौरासी थे। 19 और अक्कूब और तल्मोन नाम
द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकोंके रखवाले थे, एक सौ बहत्तर थे। 20 और
शेष इस्राएली याजक और लेवीय, यहूदा के सब नगरोंमें अपके अपके भाग पर
रहते थे। 21 और नतीन लोग ओपेल में रहते; और नतिनोंके ऊपर सीहा, और
गिश्पा ठहराए गए थे। 22 और जो लेवीय यरूशलेम में रहकर परमेश्वर के भवन
के काम में लगे रहते थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के गवैयोंमें का उज्जी या,
जो बानी का पुत्र या, यह हशब्याह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र और यह
हशब्याह का पुत्र या। 23 क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा यी, और गवैयोंके
प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध या। 24 और प्रजा के सब काम के
लिथे मशेजबेल का पुत्र पतह्याह जो यहूदा के पुत्र जेरह के वंश में या, वह राजा के
पास रहता या। 25 बच गए गांव और उनके खेत, सो कुछ यहूदी किर्यतर्बा, और
उनके गांव में, कुछ दीबोन, और उसके गांवोंमें, कुछ यकब्सेल और उसके गांवोंमें
रहते थे। 26 फिर थेशू, मोलादा, बेत्पेलेत; 27 हमर्शूआल, और बेर्शेबा और और
उसके गांवोंमें; 28 और सिकलग और मकोना और उनके गांवोंमें; 29
एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत, 30 जानोह और अदूल्लाम और उनके गांवोंमें, लाकीश,
और उसके खेतोंमें अजेका, और उसके गांवोंमें वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की तराई
तक डेरे डाले हुए रहते थे। 31 और बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमश, अय्या
और बेतेल और उसके गांवोंमें; 32 अनातोत, नोब, अनन्याह, 33 हासोर, रामा,
गित्तैम, 34 हादीद, सबोईम, नबल्लत, 35 लोद, ओनो और कारीगरोंकी तराई तक
रहते थे। 36 और कितने लेवियोंके दल यहूदा और बिन्यामीन के प्रान्तोंमें बस
गए।

नहेमायाह 12

1 जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और थेशू के संग
यरूशलेम को गए थे, वे थे थे : अर्थात् सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, 2 अमर्याह,
मल्लूक, हत्तूश, 3 शकन्याह, रहूम, मरेमोत, 4 इद्दो, गिन्नतोई, अबिय्याह, 5
मीय्यामीन, माद्याह, बिलगा, 6 शमायाह, योआरीब, यदायाह, 7 सल्लू, आमोक,
हिल्किय्याह और यदायाह। थेशू के दिनोंमें याजकोंऔर उनके भाइयोंके मुख्य
मुख्य पुरुष, थे ही थे। 8 फिर थे लेवीय गए : अर्थात् थेशू, बिन्नूई, कदमीएल,
शेरेब्याह, यहूदा और वह मत्तन्याह जो अपके भाइयोंसमेत धन्यवाद के काम पर
ठहराया गया या। 9 और उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके साम्हने
अपक्की अपक्की सेवकाई में लगे रहते थे। 10 और थेशू से योयाकीम उत्पन्न
हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से योयादा, 11 और योयादा से
योनातान और योनातान से यद्द उत्पन्न हुआ। 12 और योयाकीम के दिनोंमें थे
याजक अपके अपके पितरोंके घराने के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् शरायाह का तो
मरायाह; यिर्मयाह का हनन्याह। 13 एज्रा का मशुल्लाम; अमर्याह का
यहोहानान। 14 मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का योसेप। 15 हारीम का
अदना; मरायोत का हेलकै। 16 इद्दो का जकर्याह; गिन्नतोन का मशुल्लाम। 17
अबिय्याह का जिक्री; मिन्यामीन के मोअद्याह का पिलतै। 18 बिलगा का शम्मू;
शामायह का यहोनातान। 19 योयारीब का मत्तनै; यदायाह का उज्जी। 20 सल्लै
का कल्लै; आमोक का एबेर। 21 हिल्किय्याह का हशब्याह; और यदायाह का
नतनेल। 22 एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्द के दिनोंमें लेवीय पितरोंके
घरानोंके मुख्य पुरुषोंके नाम लिखे जाते थे, और दारा फारसी के राज्य में

याजकोंके भी नाम लिखे जाते थे। 23 जो लेवीय पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरुष थे,
उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनोंतक इतिहास की पुस्तक में लिखे
जाते थे। 24 और लेवियोंके मुख्य पुरुष थे थे : अर्यात् हसब्याह, शेरेब्याह और
कदमीएल का पुत्र थेशू; और उनके साम्हने उनके भाई परमेश्वर के भक्त दाऊद की
आज्ञा के अनुसार आम्हने-साम्हने स्तुति और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे। 25
मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकोंके
पास के भणडारोंका पहरा देनेवाले द्वारपाल थे। 26 योयाकीम के दिनोंमें जो
योसादाक का पोता और थेशू का पुत्र या, और नहेमायाह अधिपति और एज्रा
याजक और शास्त्री के दिनोंमें थे ही थे। 27 और यरूशलेम की शहरपनाह की
प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपके सब स्यानोंमें ढूंढ़े गए, कि यरूशलेम को पहुंचाए
जाएं, जिस से आनन्द और धन्यवाद करके और फांफ, सारंगी और वीणा
बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। 28 तो गवैयोंके सन्तान यरूशलेम के
चारोंओर के देश से और नतोपातियोंके गांवोंसे, 29 और बेतगिलगाल से, और
गेबा और अज्मावेत के खेतोंसे इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयोंने यरूशलेम के
आस-पास गांव बसा लिथे थे। 30 तब याहकोंऔर लेवियोंने अपके अपके को शुद्ध
किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकोंऔर शहरपनाह को भी शुद्ध किया। 31
तब मैं ने यहूदी हाकिमोंको शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराए, जो
धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साय चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्खिन
ओर, अर्यात् कूड़ाफाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर ऊपर से चला; 32 और
उसके पीछे पीछे थे चले, अर्यात् होशयाह और यहूदा के आधे हाकिम, 33 और
अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34 यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह, 35

और याजकोंके कितने पुत्र तुरहियां लिथे हुए : अर्यात् जकर्याह जो योहानान का
पुत्र या, यह शमायाह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह
जक्कूर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र या। 36 और उसके भाई शमायाह, अजरेल,
मिललै, गिललै, माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे
लिथे हुए थे; और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चला। 37 थे सेताफाटक से हो
सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़, शहरपनाह की ऊंचाई पर से चलकर, दाऊद के
भवन के ऊपर से होकर, पूरब की ओर जलफाटक तक पहुंचे। 38 और धन्यवाद
करने और धूमधाम से चलनेवालोंका दूसरा दल, और उनके पीछे पीछे मैं, और
आधे लोग उन से मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर से भट्ठोंके गुम्मट के पास
से चौड़ी शहरपनाह तक। 39 और एप्रैम के फाटक और पुराने फाटक, और
मछलीफाटक, और हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नाम गुम्मट के पास से
होकर भेड़ फाटक तक चले, और पहरुओं के फाटक के पास खड़े हो गए। 40 तब
धन्यवाद करने वालोंके दोनोंदल और मैं और मेरे साय आधे हाकिम परमेश्वर के
भवन में खड़े हो गए। 41 और एल्याकीम, मासेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह,
एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह नाम याजक तुरहियां लिथे हुए थे। 42 और
मासेयाह, शमायाह, एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह, एलाम, ओर
एजेर (खड़े हुए थे) और गवैथे जिनका मुखिया यिज्रह्याह या, वह ऊंचे स्वर से
गाते बजाते रहे। 43 उसी दिन लोगोंने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द
लिया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया या; स्त्रियोंने और
बालबच्चोंने भी आनन्द किया। और यरूशलेम के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक
फैल गई। 44 उसी दिन खज़ानों के, उठाई हुई भेंटोंके, पहिली पहिली उपज के,

और दशमांशोंकी कोठरियोंके अधिक्कारनी ठहराए गए, कि उन में नगर नगर के
खेतोंके अनुसार उन वस्तुओं को जमा करें, जो व्यवस्या के अनुसार याजकोंऔर
लेवियोंके भाग में की यी; क्योंकि यहूदी उपस्य्िित याजकोंऔर लेवियोंके कारण
आनन्दित थे। 45 इसलिथे वे अपके परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय
चौकसी करते रहे; और गवैथे ओर द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की
आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे। 46 प्राचीनकाल, अर्यात् दाऊद और आसाप
के दिनोंमें तो गवैयोंके प्रधान थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत
गाए जाते थे। 47 और जरुब्बाबेल और नहेमायाह के दिनोंमें सारे इस्राएली,
गवैयोंऔर द्वारपालोंके प्रतिदिन का भाग देते रहे; और वे लेवियोंके अंश पवित्र
करके देते थे; और लेवीय हारून की सन्तान के अंश पवित्र करके देते थे।

नहेमायाह 13

1 उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगोंको पढ़कर सुनाई गई; और उस में यह लिखा
हुआ मिला, कि कोई अम्मोनी वा मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने
पाए; 2 क्योंकि उन्होंने अन्न जल लेकर इस्राएलियोंसे भेंट नहीं की, वरन बिलाम
को उन्हें शाप देने के लिथे दझिणा देकर बुलवाया या--तौभी हमारे परमेश्वर ने
उस शाप को आशीष से बदल दिया। 3 यह व्यवस्या सुनकर, उन्होंने इस्राएल में
से मिली जुली भीड़ को अलग अलग कर दिया। 4 इस से पहिले एल्याशीब याजक
जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियोंका अधिक्कारनी और तोबिय्याह का
सम्बन्धी या। 5 उस ने तोबिय्याह के लिथे एक बड़ी कोठरी तैयार की यी जिस में
पहिले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज, नथे दाखमधु

और टटके तेल के दशमांश, जिन्हें लेवियों, गवैयोंऔर द्वारपालोंको देने की आज्ञा
यी, रखी हुई यी; और याजकोंके लिथे उठाई हुई भेंट भी रखी जाती यीं। 6 परन्तु
मैं इस समय यरूशलेम में नहीं या, क्योंकि बाबेल के राजा अर्तझत्र के बत्तीसवें
वर्ष में मैं राजा के पास चला गया। फिर कितने दिनोंके बाद राजा से छुट्टी मांगी,
7 और मैं यरूशलेम को आया, तब मैं ने जान लिया, कि एल्याशीब ने तोबिय्याह
के लिथे परमेश्वर के भवन के आंगनोंमें एक कोठरी तैयार कर, क्या ही बुराई की
है। 8 इसे मैं ने बहुत बुरा माना, और तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान उस
कोठरी में से फेंक दिया। 9 तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियां शुद्ध की गई, और मैं ने
परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि का सामान और लोबान उन में फिर से
रखवा दिया। 10 फिर मुझे मालूम हुआ कि लेवियोंका भाग उन्हें नहीं दिया गया
है; और इस कारण काम करनेवाले लेवीय और गवैथे अपके अपके खेत को भाग
गए हैं। 11 तब मैं ने हाकिमोंको डांटकर कहा, परमेश्वर का भवन क्योंत्यागा गया
है? फिर मैं ने उनको इकट्ठा करके, एक एक को उसके स्यान पर नियुक्त किया।
12 तब से सब यहूदी अनाज, नथे दाखमधु और टटके तेल के दशमांश भण्डारोंमें
लाने लगे। 13 और मैं ने भण्डारोंके अधिक्कारनी शेलेम्याह याजक और सादोक
मुंशी को, और लेवियोंमें से पदायाह को, और उनके नीचे हानान को, जो मत्तन्याह
का पोता और जक्कूर का पुत्र या, नियुक्त किया; वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे,
और अपके भाइयोंके मय बांटना उनका काम या। 14 हे मेरे परमेश्वर ! मेरा यह
काम मेरे हित के लिथे स्मरण रख, और जो जो सुकर्म मैं ने अपके परमेश्वर के
भवन और उस में की आराधना के विषय किए हैं उन्हे मिटा न डाल। 15 उन्हीं
दिनोंमें मैं ने यहूदा में कितनोंको देखा जो विश्रमदिन को हैदोंमें दाख रौंदते, और

पूलियोंको ले आते, और गदहोंपर लादते थे; वैसे ही वे दाखमधु, दाख, अंजीर और
भांति भांति के बोफ विश्रमदिन को यरूशलेम में लाते थे; तब जिस दिन वे
भोजनवस्तु बेचते थे, उसी दिन मैं ने उनको चिता दिया। 16 फिर उस में सोरी
लोग रहकर मछली और भांति भांति का सौदा ले आकर, यहूदियोंके हाथ
यरूशलेम में विश्रमदिन को बेचा करते थे। 17 तब मैं ने यहूदा के रईसोंको
डांटकर कहा, तुम लोग यह क्या बुराई करते हो, जो विश्रमदिन को अपवित्र करते
हो? 18 क्या तुम्हारे पुरखा ऐसा नहीं करते थे? और क्या हमारे परमेश्वर ने यह
सब विपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली? तौभी तुम विश्रमदिन को अपवित्र
करने से इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी भड़काते जाते हो। 19 सो जब
विश्रमवार के पहिले दिन को यरूशलेम के फाटकोंके आस-पास अन्ध्ेरा होने
लगा, तब मैं ने आज्ञा दी, कि उनके पल्ले बन्द किए जाएं, और यह भी आज्ञा दी,
कि वे विश्रमवार के पूरे होने तक खोले न जाएं। तब मैं ने अपके कितने सेवकोंको
फाटकोंका अधिक्कारनी ठहरा दिया, कि विश्रमवार को कोई बोफ भीतर आने न
पाए। 20 इसलिथे व्योपारी और भांति भांति के सौदे के बेचनेवाले यरूशलेम के
बाहर दो एक बेर टिके। 21 तब मैं ने उनको चिताकर कहा, तुम लोग शहरपनाह
के साम्हने क्योंटिकते हो? यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ
बढ़ाऊंगा। इसलिथे उस समय से वे फिर विश्रमबार को नहीं आए। 22 तब मैं ने
लेवियोंको आज्ञा दी, कि अपके अपके को शुद्ध करके फाटकोंकी रखवाली करने के
लिथे आया करो, ताकि विश्रमदिन पवित्र माना जाए। हे मेरे परमेश्वर ! मेरे हित
के लिथे यह भी स्मरण रख और अपक्की बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर तरस
खा। 23 फिर उन्हीं दिनोंमें मुझ को ऐसे यहूदी दिखाई पके, जिन्होंने अशदोदी,

अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह ली यीं। 24 और उनके लड़केबालोंकी आधी
बोली अशदोदी थी, और वे यहूदी बोली न बोल सकते थे, दोनोंजाति की बोली
बोलते थे। 25 तब मैं ने उनको डांटा और कोसा, और उन में से कितनोंको पिटवा
दिया और उनके बाल नुचवाए; और उनको परमेश्वर की यह शपय खिलाई, कि
हम अपक्की बेटियां उनके बेटोंके साय ब्याह में न देंगे और न अपके लिथे वा
अपके बेटोंके लिथे उनकी बेटियां ब्याह में लेंगे। 26 क्या इस्राएल का राजा
सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फंसा य? बहुतेरी जातियोंमें उसके तुल्य कोई
राजा नहीं हुआ, और वह अपके परमेश्वर का प्रिय भी या, और परमेश्वर ने उसे
सारे इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया; परन्तु उसको भी अन्यजाति स्त्रियोंने
पाप में फंसाया। 27 तो क्या हम तुम्हारी सुनकर, ऐसी बड़ी बुराई करें कि
अन्यजाति की स्त्रियां ब्याह कर अपके परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें? 28 और
एल्याशीब महाथाजक के पुत्र योयादा का एक पुत्र, होरोनी सम्बल्लत का दामाद
या, इसलिथे मैं ने उसको अपके पास से भगा दिया। 29 हे मेरे परमेश्वर उनकी
हानि के लिथे याजकपद और याजकोंओर लेवियोंकी वाचा का तोड़ा जाना स्मरण
रख। 30 इस प्रकार मैं ने उनको सब अन्यजातियोंसे शुद्ध किया, और एक एक
याजक और लेवीय की बारी और काम ठहरा दिया। 31 फिर मैं ने लकड़ी की भेंट
ले आने के विशेष समय ठहरा दिए, और पहिली पहिली उपज के देने का प्रबन्ध
भी किया। हे मेरे परमेश्वर ! मेरे हित के लिथे मुझे स्मरण कर।

एस्तेर 1

1 झयर्ष नाम राजा के दिनोंमें थे बातें हुई :यह वही झयर्ष है, जो एक सौ सताईस

प्रान्तोंपर, अर्यात् हिन्दुस्तान से लेकर कूश देश तक राज्य करता या। 2 उन्हीं
दिनोंमें जब क्षयर्ष राजा अपक्की उस राजगद्दी पर विराजमान या जो शूशन नाम
राजगढ़ में यी। 3 वहां उस ने अपके राज्य के तीसरे वर्ष में अपके सब
हाकिमोंऔर कर्मचारियोंकी जेवनार की। फ़ारस और मादै के सेनापति और
प्रान्त- प्रान्त के प्रधान और हाकिम उसके सम्मुख आ गए। 4 और वह उन्हें
बहुत दिन वरन एक सौ अस्सी दिन तक अपके राजविभव का धन और अपके
माहात्म्य के अनमोल पदार्य दिखाता रहा। 5 इतने दिनोंके बीतने पर राजा ने
क्या छोटे क्य बड़े उन सभोंकी भी जो शूशन नाम राजगढ़ में इकट्ठे हुए थे,
राजभवन की बारी के आंगन में सात दिन तक जेवनार की। 6 वहां के पर्दे श्वेत
और नीले सूत के थे, और सन और बैंजनी रंग की डोरियोंसे चान्दी के छल्लोंमें,
संगमर्मर के खम्भोंसे लगे हुए थे; और वहां की चौकियां सोने-चान्दी की यीं; और
लाल और श्वेत और पीले और काले संगमर्मर के बने हुए फ़र्श पर धरी हुई यीं। 7
उस जेवनार में राजा के योग्य दाखमधु भिन्न भिन्न रूप के सोने के पात्रें में
डालकर राजा की उदारता से बहुतायत के साय पिलाया जाता या। 8 पीना तो
नियम के अनुसार होता या, किसी को बरबस नहीं पिलाया जाता या; क्योंकि
राजा ने तो अपके भवन के सब भणडारियोंको आज्ञा दी यी, कि जो पाहुन जैसा
चाहे उसके साय वैसा ही बर्ताव करना। 9 रानी बशती ने भी राजा क्षयर्ष के भवन
में स्त्र्िायोंकी जेवनार की। 10 सातवें दिन, जब राजा का मन दाखमधु में मग्न
या, तब उस ने महूमान, बिजता, हबॉना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस
नाम सातोंखेजोंको जो क्षयर्ष राजा के सम्मुख सेवा टहल किया करते थे, आाज्ञा
दी, 11 कि रानी वशती को राजमुकुट धारण किए हुए राजा के सम्मुख ले आओ;

जिस से कि देश देश के लोगोंऔर हाकिमोंपर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए;
क्योंकि वह देखने में सुन्दर यी। 12 खोजोंके द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी
वशती ने आने से इनकार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा। 13 तब
राजा ने समय समय का भेद जाननेवाले पण्डितोंसे पुछा (राजा तो नीति और
न्याय के सब ज्ञानियोंसे ऐसा ही किया करता या। 14 और उसके पास कर्शना,
शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान नाम फ़ारस, और मादै के
सातोंखेजे थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य मुख्य पदोंपर नियुक्त
किए गए थे।) 15 राजा ने पूछा कि रानी वशती ने राजा क्षयर्ष की खोजोंद्वारा
दिलाई हुई आज्ञा का उलंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साय क्या किया
जाए? 16 तब ममूकान ने राजा और हाकिमोंकी उपस्यिति में उत्तर दिया, रानी
वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमोंसे
और उन सब देशोंके लोगोंसे भी जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तोंमें रहते हैं। 17
क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियोंमें होगी और जब यह कहा जाएगा,
कि राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को अपके साम्हने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह
न आई, तब वे भी अपके अपके पति को तुच्छ जानने लगेंगी। 18 और आज के
दिन फ़ारसी और मादी हाकिमोंकी स्त्रियां जिन्होंने रानी की यह बात सुनी है तो वे
भी राजा के सब हाकिमोंसे ऐसा ही कहने लगेंगी; इस प्रकार बहुत ही घृणा और
क्रोध उत्पन्न होगा। 19 यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और
फासियोंऔर मादियोंके कानून में लिखी भी जाए, जिस से कभी बदल न सके, कि
रानी वशती राजा क्षयर्ष के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी
का पद किसी दूसरी को दे दे जो उस से अच्छी हो। 20 और जब राजा की यह

आज्ञा उसके सारे राज्य में सुनाई जाएगी, तब सब पत्नियां छोटे, बड़े, अपके
अपके पति का आदरमान करती रहेंगी। 21 यह बात राजा और हाकिमोंको
पसन्द आई और राजा ने ममूकान की सम्मति मान ली और अपके राज्य में, 22
अर्यत् प्रत्थेक प्रान्त के अझरोंमें और प्रत्थेक जाति की भाषा में चिट्ठियां भेजीं,
कि सब पुरुष अपके अपके घर में अधिक्कारने चलाएं, और अपक्की जाति की
भाषा बोला करें।

एस्तेर 2

1 इन बातोंके बाद जब राजा झयर्ष की जलजलाहट ठंडी हो गई, तब उस ने रानी
वशती की, और जो काम उस ने किया या, और जो उसके विषय में आज्ञा निकली
यी उसकी भी सुधि ली। 2 तब राजा के सेवक जो उसके टहलुए थे, कहने लगे,
राजा के लिथे सुन्दर तया युवती कुंवारियां ढूंढी जाएं। 3 और राजा ने अपके राज्य
के सब प्रान्तोंमें लोगोंको इसलिथे नियुक्त किया कि वे सब सुन्दर युवती
कुंवारियोंको शूशन गढ़ के रनवास में इकट्ठा करें और स्त्रियोंके रखवाले हेगे को
जो राजा का खोजा या सौप दें; और शुद्ध करने के योग्य वस्तुएं उन्हें दी जाएं। 4
तब उन में से जो कुंवारी राजा की दृष्टि में उत्तम ठहरे, वह रानी वशती के स्यान
पर पटरानी बनाई जाए। यह बात राजा को पसन्द आई और उस ने ऐसा ही
किया। 5 शूशन गढ़ में मोर्दकै नाम एक यहूदी रहता या, जो कीश नाम के एक
बिन्यामीनी का परपोता, शिमी का पोता, और याईर का पुत्र या। 6 वह उन
बन्धुओं के साय यरूशलेम से बन्धुआई में गया या, जिन्हें बाबेल का राजा
नबूकदनेस्सर, यहूदा के राजा यकोन्याह के संग बन्धुआ करके ले गया या। 7

उस ने हदस्सा नाम अपक्की चचेरी बहिन को, जो एस्तेर भी कहलाती यी,
पाला-पोसा या; क्योंकि उसके माता-मिता कोई न थे, और वह लड़की सुन्दर और
रूपवती यी, और जब उसके माता-पिता मर गए, तब मोर्दकै ने उसको अपक्की
बेटी करके पाला। 8 जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाए गए, और बहुत सी
युवती स्त्रियां, शूशन गढ़ में हेगे के अधिक्कारने में इकट्ठी की गई, तब एस्तेर
भी राजभवन में स्त्रियोंके रखवाले हेगे के अधिक्कारने में सौंपी गई। 9 और वह
युवती स्त्री उसकी दृष्टि में अच्छी लगी; और वह उस से प्रसन्न हुआ, तब उस ने
बिना विलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की वस्तुएं, और उसका भोजन, और
उसके लिथे चुनी हुई सात सहेलियां भी दीं, और उसको और उसकी सहेलियोंको
रनवास में सब से अच्छा रहने का स्यान दिया। 10 एस्तेर ने न अपक्की जाति
बताई यी, न अपना कुल; क्योंकि मोर्दकै ने उसको आज्ञा दी यी, कि उसे न
बताना। 11 मोर्दकै तो प्रतिदिन रनवास के आंगन के साम्हने टहलता या ताकि
जाने की एस्तेर कैसी है और उसके साय क्या होगा? 12 जब एक एक कन्या की
बारी हुई, कि वह क्षयर्ष राजा के पास जाए, (और यह उस समय हुआ जब उसके
साय स्त्रियोंके लिथे ठहराए हुए नियम के अनुसार बारह माह तक व्यवहार किया
गया या; अर्यात् उनके शुद्ध करने के दिन इस रीति से बीत गए, कि छः माह तक
गन्धरस का तेल लगाया जाता या, और छः माह तक सुगन्धदव्य, और स्त्रियोंके
शुद्ध करने का और और सामान लगाया जाता या) । 13 इस प्रकार से वह कन्या
जब राजा के पास जाती यी, तब जो कुछ वह चाहती कि रनवास से राजभवन में
ले जाए, वह उसको दिया जाता या। 14 सांफ को तो वह जाती यी और बिहान को
वह लौटकर रनवास के दूसरे घर में जाकर रखेलियोंके रखवाले राजा के खोजे

शाशगज के अधिक्कारने में हो जाती यी, और राजा के पास फिर नहीं जाती यी।
और यदि राजा उस से प्रसन्न हो जाता या, तब वह नाम लेकर बुलाई जाती यी।
15 जब मोर्दकै के चाचा अबीहैल की बेटी एस्तेर, जिसको मोर्दकै ने बेटी मानकर
रखा या, उसकी बारी आई कि राजा के पास जाए, तब जो कुछ स्त्रियोंके रखवाले
राजा के खोजे हेगे ने उसके लिथे ठहराया या, उस से अधिक उस ने और कुछ न
मांगा। और जितनोंने एस्तेर को देखा, वे सब उस से प्रसन्न हुए। 16 योंएस्तेर
राजभवन में राजा झयर्ष के पास उसके राज्य के सातवें वर्ष के तेबेत नाम दसवें
महीने में पहुंचाई गई। 17 और राजा ने एस्तेर को और सब स्त्रियोंसे अधिक प्यार
किया, और और सब कुंवारियोंसे अधिक उसके अनुग्रह और कृपा की दृष्टि उसी
पर हुई, इस कारण उस ने उसके सिर पर राजमुकुट रखा और उसको वशती के
स्यान पर रानी बनाया। 18 तब राजा ने अपके सब हाकिमोंऔर कर्मचारियोंकी
बड़ी जेवनार करके, उसे एस्तेर की जेवनार कहा; और प्रान्तोंमें छुट्टी दिलाई,
और अपक्की उदारता के योग्य इनाम भी बांटे। 19 जब कुंवारियां दूसरी बार
इकट्ठी की गई, तब मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा या। 20 और एस्तेर ने
अपक्की जाति और कुल का पता नहीं दिया या, क्योंकि मोर्दकै ने उसको ऐसी
आज्ञा दी यी कि न बताए; और एस्तेर मोर्दकै की बात ऐसी मानती यी जैसे कि
उसके यहां अपके पालन पोषण के समय मानती यी। 21 उन्हीं दिनोंमें जब
मोर्दकै राजा के राजभवन के फाटक में बैठा करता या, तब राजा के खोजे जो
द्वारपाल भी थे, उन में से बिकतान और तेरेश नाम दो जनोंने राजा झयर्ष से
रूठकर उस पर हाथ चलाने की युक्ति की। 22 यह बात मोर्दकै को मालूम हुई, और
उस ने एस्तेर रानी को यह बात बताई, और एस्तेर ने मोर्दकै का नाम लेकर राजा

को चितौनी दी। 23 तब जांच पड़ताल होने पर यह बात सच निकली और वे
दोनोंवृझ पर लटका दिए गए, और यह वृत्तान्त राजा के साम्हने इतिहास की
पुस्तक में लिख लिया गया।

एस्तेर 3

1 इन बातोंके बाद राजा झयर्ष ने अगामी हम्मदाता के पुत्र हामान को ऊन्च पद
दिया, और ऊसको महत्व देकर ऊसके लिथे ऊसके सायी हाकिमोंके सिंहासनोंसे
ऊंचा सिंहासन ठहराया। 2 और राजा के सब कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में
रहा करते थे, वे हामान के साम्हने फुककर दणडवत किया करते थे क्योंकि राजा
ने ऊसके विषय ऐसी ही आज्ञा दी यी; परन्तु मोर्दकै न तो फुकता या और न
ऊसको दणडवत करता या। 3 तब राजा के कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में
रहा करते थे, ऊन्होंने मोर्दकै से पूछा, 4 तू राजा की आज्ञा क्योंऊलंघन करता है?
जब वे ऊस से प्रतिदिन ऐसा ही कहते रहे, और ऊस ने ऊनकी एक न मानी, तब
ऊन्होंने यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की यह बात चलेगी कि नहीं, हामान
को बता दिया; ऊस ने तो ऊनको बता दिया या कि मैं यहूदी हूँ। 5 जब हामान ने
देखा, कि मोर्दकै नहीं फुकता, और न मुझ को दणडवत करता है, तब हामान
बहुत ही क्रोधित हुआ। 6 ऊस ने केवल मोर्दकै पर हाथ चलाना अपक्की मर्यादा के
नीचे जाना। क्योंकि ऊन्होंने हामान को यह बता दिया या, कि मोर्दकै किस जाति
का है, इसलिथे हामान ने झयर्ष के साम्राज्य में रहनेवाले सारे यहूदियोंको भी
मोर्दकै की जाति जानकर, विनाश कर डालने की युक्ति निकाली। 7 राजा झयर्ष के
बारहवें वर्ष के नीसान नाम पहिले महीने में, हामान ने अदार नाम बारहवें महीने

तक के एक एक दिन और एक एक महीने के लिथे "पूर" अर्यात् चिट्ठी अपके
साम्हने डलवाई। 8 और हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, तेरे राज्य के सब प्रान्तोंमें
रहनेवाले देश देश के लोगोंके मध्य में तितर बितर और छिटकी हुई एक जाति है,
जिसके नियम और सब लोगोंके नियमोंसे भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर
नहीं चलते, इसलिथे उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है। 9 यदि राजा को
स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राज के
भणडारियोंके हाथ में राजभणडार में पहुंचाने के लिलथे, दस हजार किक्कार
चान्दी दूंगा। 10 तब राजा ने अपक्की अंगूठी अपके हाथ से उतारकर अगागी
हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियोंका वैरी या दे दी। 11 और राजा ने
हामान से कहा, वह चान्दी तुझे दी गई है, और वे लोग भी, ताकि तू उन से जैसा
तेरा जी चाहे वैसा ही व्यवहार करे। 12 योंउसी पहिले महीने के तेरहवें दिन को
राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की आज्ञा के अनुसार राजा के सब
अधिपतियों, और सब प्रान्तोंके प्रधानों, और देश देश के लोगोंके हाकिमोंके लिथे
चिट्ठियां, एक एक प्रान्त के अझरोंमें, और एक एक देश के लोगोंकी भाषा में
राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गई; और उन में राजा की अंगूठी की छाप लगाई
गई। 13 और राज्य के सब प्रान्तोंमें इस आशय की चिट्ठियां हर डाकियोंके द्वारा
भेजी गई कि एक ही दिन में, अर्यात् अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को,
क्या जवान, क्या बूढा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी विध्वंसघात और नाश
किए जाएं; और उनकी धन सम्मत्ति लूट ली जाए। 14 उस आज्ञा के लेख की
नकलें सब प्रान्तोंमें खुली हुई भेजी गई कि सब देशोंके लोग उस दिन के लिथे
तैयार हो जाएं। 15 यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई, और डाकिए राजा की आज्ञा से

तुरन्त निकल गए। और राजा और हामान तो जेवनार में बैठ गए; परन्तु शूशन
नगर में घबराहट फैल गई।

एस्तेर 4

1 जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया है तब मोर्दकै वस्त्र फाड़, टाट
पहिन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊंचे और दुखभरे शब्द से चिल्लाने
लगा; 2 और वह राजभवन के फाटक के साम्हने पहुंचा, परन्तु टाट पहिने हुए
राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न यी। 3 और एक एक
प्रान्त में, जहां जहां राजा की आज्ञा और नियम पहुंचा, वहां वहां यहूदी बड़ा
विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे; वरन बहुतेरे टाट पहिने
और राख डाले हुए पके रहे। 4 और एस्तेर रानी की सहेलियोंऔर खोजोंने जाकर
उसको बता दिया, तब रानी शोक से भर गई; और मोर्दकै के पास वस्त्र भेजकर
यह कहलाया कि टाट उतारकर इन्हें पहिन ले, परन्तु उस ने उन्हें न लिया। 5
तब एस्तेर ने राजा के खोजोंमें से हताक को जिसे राजा ने उसके पास रहने को
ठहराया या, बुलवाकर आज्ञा दी, कि मोर्दकै के पास जाकर मालूम कर ले, कि
क्या बात है और इसका क्या कारण है। 6 तब हताक नगर के उस चौक में, जो
राजभवन के फाटक के साम्हने या, मोर्दकै के पास निकल गया। 7 मोर्दकै ने
उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है, और हामान ने
यहूदियोंके नाश करने की अनुमति पाने के लिथे राजभणडार में कितनी चान्दी
भर देने का वचन दिया है, यह भी ठीक ठीक बतला दिया। 8 फिर यहूदियोंको
विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी उस ने

हताक के हाथ में, एस्तेर को दिखाने के लिथे दी, और उसे सब हाल बताने, और
यह आज्ञा देने को कहा, कि भीतर राजा के पास जाकर अपके लोगोंके लिथे
गिड़गिड़ाकर बिनती करे। 9 तब हताक ने एस्तेर के पास जाकर मोर्दकै की बातें
कह सुनाईं। 10 तब एस्तेर ने हताक को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा दी, 11 कि
राजा के सब कर्मचारियों, वरन राजा के प्रान्तोंके सब लोगोंको भी मालूम है, कि
क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्योंन हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आंगन में राजा के
पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है; केवल जिसकी ओर राजा सोने का
राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है। परन्तु मैं अब तीस दिन से राजा के पास नहीं
बुलाई गई हूँ। 12 एस्तेर की थे बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। 13 तब मोर्दकै ने
एस्तेर के पास यह कहला भेजा, कि तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही
राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियोंमें से बची रहूंगी। 14 क्योंकि जो तू
इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियोंका छुटकारा
और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपके पिता के घराने समेत नाश होगी। फिर
क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिथे राजपद मिल गया हो? 15 तब
एस्तेर ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा, 16 कि तू जाकर शूशन के सब
यहूदियोंको इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन
दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। और मैं भी अपक्की
सहेलियोंसहित उसी रीति उपवास करूंगी। और ऐसी ही दशा में मैं नियम के
विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी; और यदि नाश हो गई तो हो गई। 17 तब
मोर्दकै चला गया और एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही उस ने किया।

एस्तेर 5

1 तीसरे दिन एस्तेर अपके राजकीय वस्त्र पहिनकर राजभवन के भीतरी आंगन
में जाकर, राजभवन के साम्हने खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में राजगद्दी पर
भवन के द्वार के साम्हने विराजमान या; 2 और जब राजा ने एस्तेर रानी को
आंगन में खड़ी हुई देखा, तब उस से प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके
हाथ में या उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की लोक
छुई। 3 तब राजा ने उस से पूछा, हे एसतेर रानी, तुझे क्या चाहिथे? और तू क्य
मांगती है? मांग और तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा। 4 एस्तेर ने कहा, यदि
राजा को स्वीकार हो, तो आज हामान को साय लेकर उस जेवनार में आए, जो मैं
ने राजा के लिथे तैयार की है। 5 तब राजा ने आज्ञा दी कि हामान को तुरन्त ले
आओ, कि एस्तेर का निमंत्रण ग्रहण किया जाए। सो राजा और हामान एस्तेर की
तैयार की हुई जेवनार में आए। 6 जेवनार के समय जब दाखमधु पिया जाता या,
तब राजा ने एस्तेर से कहा, तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू
क्या मांगती है? मांग, ओर आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा। 7 एस्तेर ने उत्तर
दिया, मेरा निवेदन और जो मैं मांगती हूँ वह यह है, 8 कि यदि राजा मुझ पर
प्रसन्न है और मेरा निवेदन सुनना और जो वरदान मैं मांगू वही देना राजा को
स्वीकार हो, तो राजा और हामान कल उस जेवनार में आएं जिसे मैं उनके लिथे
करूंगी, और कल मैं राजा के इस वचन के अनुसार करूंगी। 9 उस दिन हामान
आनन्दित ओर मन में प्रसन्न होकर बाहर गया। परन्तु जब उस ने मोर्दकै को
राजभवन के फाटक में देखा, कि वह उसके साम्हने न तो खड़ा हुआ, और न हटा,
तब वह मोर्दकै के विरुद्ध क्रोध से भर गया। 10 तौभी वह अपके को रोककर अपके
घर गया; और अपके मित्रोंऔर अपक्की स्त्री जेरेश को बुलवा भेजा। 11 तब

हामान ने, उन से अपके धन का विभव, और अपके लड़के-बालोंकी बढ़ती और
राजा ने उसको कैसे कैसे बढ़ाया, और और सब हाकिमोंऔर अपके और सब
कर्मचारियोंसे ऊंचा पद दिया या, इन सब का वर्णन किया। 12 हामान ने यह भी
कहा, कि एस्तेर रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग, अपक्की की
हुई जेवनार में आने न दिया; और कल के लिथे भी राजा के संग उस ने मुझी को
नेवता दिया है। 13 तौभी जब जब मुझे वह यहूदी मोर्दकै राजभवन के फाटक में
बैठा हुआ दिखाई पड़ता है, तब तब यह सब मेरी दृष्टि में व्यर्य है। 14 उसकी पत्नी
जेरेश और उसके सब मित्रोंने उस से कहा, पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खम्भा,
बनाया जाए, और बिहान को राजा से कहना, कि उस पर मोर्दकै लटका दिया
जाए; तब राजा के संग आनन्द से जेवनार में जाना। इस बात से प्रसन्न होकर
हामान ने बैसा ही फांसी का एक खम्भा बनवाया।

एस्तेर 6

1 उस रात राजा को नींद नहीं आई, इसलिथे उसकी आज्ञा से इतिहास की पुस्तक
लाई गई, और पढ़कर राजा को सुनाई गई। 2 और यह लिखा हुआ मिला, कि जब
राजा क्षयर्ष के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उन में से बिगताना और तेरेश नाम दो
जनोंने उस पर हाथ चलाने की युक्ति की यी उसे मोर्दकै ने प्रगट किया या। 3 तब
राजा ने पूछा, इसके बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई की गई? राजा के जो
सेवक उसकी सेवा टहल कर रहे थे, उन्होंने उसको उत्तर दिया, उसके लिथे कुछ
भी नहीं किया गया। 4 राजा ने पूछा, आंगन में कौन है? उसी समय तो हामान
राजा के भवन से बाहरी आंगन में इस मनसा से आया या, कि जो खम्भा उस ने

मोर्दकै के लिथे तैयार कराया या, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे।
5 तब राजा के सेवकोंने उस से कहा, आंगन में तो हामान खड़ा है। राजा ने कहा,
उसे भीतर बुलवा लाओ। 6 जब हामान भीतर आया, तब राजा ने उस से पूछा,
जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिथे क्या करना उचित
होगा? हामान ने यह सोचकर, कि मुझ से अधिक राजा किस की प्रतिष्ठा करना
चाहता होगा? 7 राजा को उत्तर दिया, जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, 8
तो उसके लिथे राजकीय वस्त्र लाया जाए, जो राजा पहिनता है, और एक घेड़ा भी,
जिस पर राजा सवार होता है, ओर उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता
है वह भी लाया जाए। 9 फिर वह वस्त्र, और वह घेड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम
को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह वस्त्र
पहिनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके, नगर के चौक में उसे फिराया
जाए; और उसके आगे आगे यह प्रचार किया जाए, कि जिसकी प्रतिष्ठा राजा
करना चाहता है, उसके साय ऐसा ही किया जाएगा। 10 राजा ने हामान से कहा,
फुर्तीं करके अपके कहने के अनुसार उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर, उस यहूदी
मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है, वैसा ही कर। जैसा तू ने कहा
है उस में कुछ भी कमी होने न पाए। 11 तब हामान ने उस वस्त्र, और उस घोड़े को
लेकर, मोर्दकै को पहिनाया, और उसे घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस
प्रकार पुकारता हुआ घुमाया कि जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साय
ऐसा ही किया जाएगा। 12 तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया परन्तु
हामान शोक करता हुआ और सिर ढांपे हुए फट अपके घर को गया। 13 और
हामान ने अपक्की पत्नी जेरेश और अपके सब मित्रोंसे सब कुछ जो उस पर बीता

या वर्णन किया। 14 तब उसके बुद्धिमान मित्रोंऔर उसकी पत्नी जेरेश ने उस से
कहा, मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखना चाहता है, यदि वह यहूदियोंके वंश में का है,
तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उस से पूरी रीति नीचा ही खएगा। वे उस से
बातें कर ही रहे थे, कि राजा के खोजे आकर, हामान को एस्तेर की की हुई जेवनार
में फुर्ती से लिवा ले गए।

एस्तेर 7

1 सो राजा और हामान एस्तेर रानी की जेवनार में आगए। 2 और राजा ने दूसरे
दिन दाखमधु पीते-पीते एस्तेर से फिर पूछा, हे एस्तेर रानी ! तेरा क्या निवेदन
है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या मांगती है? मांग, और आधा राज्य तक
तुझे दिया जाएगा। 3 एस्तेर रानी ने उत्तर दिया, हे राजा ! यदि तू मुझ पर प्रसन्न
है, और राजा को यह स्वीकार हो, तो मेरे निवेदन से मुझे, और मेरे मांगने से मेरे
लोगोंको प्राणदान मिले। 4 क्योंकि मैं उाौर मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं,
और हम सब विध्वंसघात और नाश किए जानेवाले हैं। यदि हम केवल दास-दासी
हो जाने के लिथे बेच डाले जाते, तो मैं चुप रहती; चाहे उस दशा में भी वह विरोधी
राजा की हानि भर न सकता। 5 तब राजा झयर्ष ने एस्तेर रानी से पूछा, वह कौन
है? और कहां है जिस ने ऐसा करने की मनसा की है? 6 एस्तेर ने उत्तर दिया है कि
वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है। तब हामान राजा-रानी के साम्हते
भयभीत हो गया। 7 राजा तो जलजलाहट में आ, मधु पीने से उठकर, राजभवन
की बारी में निकल गया; और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी
होगी, एस्तेर रानी से प्राणदान मांगने को खड़ा हुआ। 8 जब राजा राजभवन की

बारी से दाखमधु पीने के स्यान में लौट आया तब क्या देखा, कि हामान उसी
चौकी पर जिस पर एस्तेर बैठी है पड़ा है; और राजा ने कहा, क्या यह घर ही में
मेरे साम्हने ही रानी से बरबस करना चाहता है? राजा के मुंह से यह वचन निकला
ही या, कि सेवकोंने हामान का मुंह ढांप दिया। 9 तब राजा के साम्हने उपस्यित
रहनेवाले खोजोंमें से हर्वोना नाम एक ने राजा से कहा, हामान को यहां पचास
हाथ ऊंचा फांसी का एक खम्भा खड़ा है, जो उस ने मोर्दकै के लिथे बनवाया है,
जिस ने राजा के हित की बात कही यी। राजा ने कहा, उसको उसी पर लटका दो।
10 तब हामान उसी खम्भे पर जो उस ने मोर्दकै के लिथे तैयार कराया या, लटका
दिया गया। इस पर राजा की जलजलाहट ठंडी हो गई।

एस्तेर 8

1 उसी दिन राजा झयर्ष ने यहूदियोंके विरोधी हामान का घरबार एस्तेर रानी को
दे दिया। और मोर्दकै राजा के साम्हने आया, क्योंकि एस्तेर ने राजा को बताया
या, कि उस से उसका क्या नाता या 2 तब राजा ने अपक्की वह अंगूठी जो उस ने
हामान से ले ली यी, उतार कर, मोर्दकै को दे दी। और एसतेर ने मोर्दकै को हामान
के घरबार पर अधिक्कारनी नियुक्त कर दिया। 3 फिर एस्तेर दूसरी बार राजा से
बोली; और उसके पांव पर गिर, आंसू बहा बहाकर उस से गिड़गिड़ाकर बिन्ती
की, कि अगागी हामान की बुराई और यहूदियोंकी हानि की उसकी युक्ति निष्फल
की जाए। 4 तब राजा ने एस्तेर की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया। 5 तब एस्तेर
उठकर राजा के साम्हने खड़ी हुई; और कहने लगी कि यदि राजा को स्वीकार हो
और वह मुझ से प्रसन्न है और यह बात उसको ठीक जान पके, और मैं भी उसको

अच्छी लगती हूँ, तो जो चिट्ठियां हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने राजा के
सब प्रान्तोंके यहूदियोंको नाश करने की युक्ति करके लिखाई यीं, उनको पलटने के
लिथे लिखा जाए। 6 क्योंकि मैं अपके जाति के लोगोंपर पड़नेवाली उस विपत्ति
को किस रीति से देख सकूंगी? और मैं अपके भाइयोंके विनाश को क्योंकर देख
सकूंगी? 7 तब राजा झयर्ष ने एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा, मैं हामान
का घरबार तो एस्तेर को दे चुका हूँ, और वह फांसी के खम्भे पर लटका दिया गया
है, इसलिथे कि उस ने यहूदियोंपर हाथ बढ़ाया या। 8 सो तुम अपक्की समझ के
अनुसार राजा के नाम से यहूदियोंके नाम पर लिखो, और राजा की अंगूठी की
छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर
उसकी अंगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता। 9 सो उसी
समय अर्यात् सीवान नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन को राजा के लेखक
बुलवाए गए और जिस जिस बात की आज्ञा मोर्दकै ने उन्हें दी यी उसे
यहूदियोंऔर अधिपतियोंऔर हिन्दुस्तान से लेकर कूश तक, जो एक सौ सत्ताईस
प्रान्त हैं, उन सभोंके अधिपतियोंऔर हाकिमोंको एक एक प्रान्त के अझरोंमें और
एक एक देश के लोगोंकी भाषा में, और यहूदियोंको उनके अझरोंऔर भाषा में
लिखी गई। 10 मोर्दकै ने राजा झयर्ष के नाम से चिट्ठियां लिखाकर, और उन पर
राजा की अंगूठी की छाप लगाकर, वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों, खच्चरोंऔर
सांड़नियोंकी डाक लगाकर, हरकारोंके हाथ भेज दीं। 11 इन चिट्ठियोंमें सब
नगरोंके यहूदियोंको राजा की ओर से अनुमति दी गई, कि वे इकट्ठे होंऔर
अपना अपना प्राण बचाने के लिथे तैयार होकर, जिस जाति वा प्रान्त से लोग
अन्याय करके उनको वा उनकी स्त्रियोंऔर बालबच्चोंको दु:ख देना चाहें, उनको

विध्वंसघात और नाश करें, और उनकी धन सम्मत्ति लूट लें। 12 और यह राजा
झयर्ष के सब प्रान्तोंमें एक ही दिन में किया जाए, अर्यात् अदार नाम बारहवें
महीने के तेरहवें दिन को। 13 इस आज्ञा के लेख की नकलें, समस्त प्रान्तोंमें सब
देशें के लोगोंके पास खुली हुई भेजी गई; ताकि यहूदी उस दिन अपके शत्रुओं से
पलटा लेने को तैयार रहें। 14 सो हरकारे वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ोंपर सवार
होकर, राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जल्दी चले गए, और यह आज्ञा शूशन
राजगढ़ में दी गई यी। 15 तब मोर्दकै नीले और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहिने
और सिर पर सोने का बड़ा मुमुट धरे हुए और सूझ्मसन और बैंजनी रंग का बागा
पहिने हुए, राजा के सम्मुख से निकला, और शूशन नगर के लोग आनन्द के मारे
ललकार उठे। 16 और यहूदियोंको आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा
हुई। 17 और जिस जिस प्रान्त, और जिस जिस नगर में, जहां कहीं राजा की
आज्ञा और नियम पहुंचे, वहां वहां यहूदियोंको आनन्द और हर्ष हुआ, और
उन्होंने जेवनार करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगोंमें
से बहुत लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उनके मन में यहूदियोंका डर समा गया या।

एस्तेर 9

1 अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, जिस दिन राजा की आज्ञा और
नियम पूरे होने को थे, और यहूदियोंके शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे,
परन्तु इसके उलटे यहूदी अपके वैरियोंपर प्रबल हुए, उस दिन, 2 यहूदी लोग
राजा झयर्ष के सब प्रान्तोंमें अपके अपके नगर में इकट्ठे हुए, कि जो उनकी
हानि करने का यत्न करे, उन पर हाथ चलाए। और कोई उनका साम्हना न कर

सका, क्योंकि उनका भय देश देश के सब लोगोंके मन में समा गया या। 3 वरन
प्रान्तोंके सब हाकिमोंऔर अधिपतियोंऔर प्रधानोंऔर राजा के कर्मचारियोंने
यहूदियोंकी सहाथता की, क्योंकि उनके मन में मोर्दकै का भय समा गया या। 4
मोर्दकै तो राजा के यहां बहुत प्रतिष्ठित या, और उसकी कीत्तिर् सब प्रान्तोंमें फैल
गई; वरन उस पुरुष मोर्दकै की महिमा बढ़ती चक्की गई। 5 और यहूदियोंने
अपके सब शत्रुओं को तलवार से मारकर और घात करके नाश कर डाला, और
अपके वैरियोंसे अपक्की इच्छा के अनुसार बर्ताव किया। 6 और शूशन राजगढ़ में
यहूदियोंने पांच सौ मनुष्योंको घात करके नाश किया। 7 और उन्होंने पर्शन्दाता,
दल्पोन, अस्पाता, 8 पोराता, अदल्या, अरीदाता, 9 पर्मशता, अरीसै, अरीदै और
वैजाता, 10 अर्यात् हम्मदाता के पुत्र यहूदियोंके विरोधी हामान के दसोंपुत्रोंको भी
घात किया; परन्तु उनके धन को न लूटा। 11 उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात
किए हुओं की गिनती राजा को सुनाई गई। 12 तब राजा ने एस्तेर रानी से कहा,
यहूदियोंने शूशन राजगढ़ ही में पांच सौ मनुष्य और हामान के दसोंपुत्रोंको भी
घात करके नाश किया है; फिर राज्य के और और प्रान्तोंमें उन्होंने न जाने क्या
क्या किया होगा ! अब इस से अधिक तेरा निवेदन क्या है? वह भी पूरा किया
जाएगा। और तू क्या मांगती है? वह भी तुझे दिया जाएगा। 13 एस्तेर ने कहा,
यदि राजा को स्वीकार हो तो शूशन के यहूदियोंको आज की नाई कल भी करने
की आज्ञा दी जाए, और हामान के दसोंपुत्र फांसी के खम्भें पर लटकाए जाएं। 14
राजा ने कहा, ऐसा किया जाए; यह आज्ञा शूशन में दी गई, और हामान के
दसोंपुत्र लटकाए गए। 15 और शूशन के यहूदियोंने अदार महीने के चौदहवें दिन
को भी इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुरुषोंको घात किया, परन्तु धन को न

लूटा। 16 राज्य के और और प्रान्तोंके यहूदी इकट्ठे होकर अपना अपना प्राण
बचाने के लिथे खड़े हुए, और अपके वैरियोंमें से पचहत्तर हजार मनुष्योंको घात
करके अपके शत्रुओं से विश्रम पाया; परन्तु धन को न लूटा। 17 यह अदार महीने
के तेरहवें दिन को किया गया, और चौदहवें दिन को उन्होंने विश्रम करके जेवनार
की और आनन्द का दिन ठहराया। 18 परन्तु शूशन के यहूदी अदार महीने के
तेरहवें दिन को, और उसी महीने के चौदहवें दिन को इकट्ठे हुए, और उसी महीने
के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने विश्रम करके जेवनार का और आनन्द का दिन
ठहराया। 19 इस कारण देहाती यहूदी जो बिना शहरपनाह की बस्तियोंमें रहते हैं,
वे अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द ओर जेवनार और खुशी और आपस
में बैना भेजने का दिन नियुक्त करके मानते हैं। 20 इन बातोंका वृत्तान्त लिखकर,
मोर्दकै ने राजा झयर्ष के सब प्रान्तोंमें, क्या निकट क्या दूर रहनेवाले सारे
यहूदियोंके पास चिट्ठियां भेजीं, 21 और यह आज्ञा दी, कि अदार महीने के
चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को प्रति वर्ष माना करें। 22 जिन में
यहूदियोंने अपके शत्रुओं से विश्रम पाया, और यह महीना जिस में शोक आनन्द
से, और विलाप खुशी से बदला गया; (माना करें) और उनको जेवनार और
आनन्द और एक दूसरे के पास बैना भेजने ओर कंगालोंको दान देने के दिन
मानें। 23 और यहूदियोंने जैसा आरम्भ किया या, और जैसा मोर्दकै ने उन्हें
लिखा, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया। 24 क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र
हामान जो सब यहूदियोंका विरोधी या, उस ने यहूदियोंके नाश करने की युक्ति की,
और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिथे पूर अर्यात् चिट्ठी डाली यी। 25
परन्तु जब राजा ने यह जान लिया, तब उस ने आज्ञा दी और लिखवाई कि जो

दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियोंके विरुद्ध की यी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब
वह और उसके पुत्र फांसी के झम्भोंपर लटकाए गए। 26 इस कारण उन दिनोंका
नाम पूर शब्द से पूरीम रखा गया। इस चिट्ठी की सब बातोंके कारण, और जो
कुछ उन्होंने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता या, उसके कारण भी
27 यहूदियोंने अपके अपके लिथे और अपक्की सन्तान के लिथे, और उन सभोंके
लिथे भी जो उन में मिल गए थे यह अटल प्रण किया, कि उस लेख के अनुसार
प्रति वर्ष उसके ठहराए हुए समय में वे थे दो दिन मानें। 28 और पीढ़ी पीढ़ी, कुल
कुल, प्रान्त प्रान्त, नगर नगर में थे दिन स्मरण किए और माने जाएंगे। और
पूरीम नाम के दिन यहूदियोंमें कभी न मिटेंगे और उनका स्मरण उनके वंश से
जाता न रहेगा। 29 फिर अबीहैल की बेटी एस्तेर रानी, और मोर्दकै यहूदी ने,
पूरीम के विषय यह दूसरी चिट्ठी बड़े अधिक्कारने के साय लिखी। 30 इसकी
नकलें मोर्दकै ने क्षयर्ष के राज्य के, एक सौ सत्ताईसोंप्रान्तोंके सब यहूदियोंके
पास शान्ति देनेवाली और सच्ची बातोंके साय इस आशय से भेजीं, 31 कि पूरीम
के उन दिनोंके विशेष ठहराए हुए समयोंमें मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की
आज्ञा के अनुसार, और जो यहूदियोंने अपके और अपक्की सन्तान के लिथे ठान
लिया या, उसके अनुसार भी उपवास और विलाप किए जाएं। 32 और पूरीम के
विष्य का यह नियम एस्तेर की आज्ञा से भी स्यिर किया गया, और उनकी चर्चा
पुस्तक में लिखी गई।

एस्तेर 10

1 और राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापू दोनोंपर कर लगाया। 2 और उसके

माहात्म्य और पराक्रम के कामों, और मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा, जो
राजा ने उसकी की यी, क्या वह मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है? 3 निदान यहूदी मोर्दकै, क्षयर्ष राजा ही के नीचे या, और
यहूदियोंकी दृष्टि में बड़ा या, और उसके सब भाई उस से प्रसन्न थे, क्योंकि वह
अपके लोगोंकी भलाई की खोज में रहा करता या और अपके सब लोगोंसे शान्ति
की बातें कहा करता या।

अय्यूब 1

1 ऊज़ देश में अय्यूब नाम एक पुरुष या; वह खरा और सीधा या और परमेश्वर का
भय मानता और बुराई से पके रहता या। 2 उसके सात बेटे और तीन बेटियां
उत्पन्न हुई। 3 फिर उसके सात हजार भेड़-बकरियां, तीन हजार ऊंट, पांच सौ
जोड़ी बैल, और पांच सौ गदहियां, और बहुत ही दास-दासियां यीं; वरन उसके
इतनी सम्पत्ति यी, कि पूरबियोंमें वह सब से बड़ा या। 4 उसके बेटे उपके अपके
दिन पर एक दूसरे के घर में खाने-पीने को जाया करते थे; और अपक्की
तीनोंबहिनोंको अपके संग खाने-पीने के लिथे बुलवा भेजते थे। 5 और जब जब
जेवनार के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और
बड़ी भोर उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता या; क्योंकि अय्यूब
सोचता या, कि कदाचित् मेरे लड़कोंने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो। इसी
रीति अय्यूब सदैव किया करता या। 6 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके
साम्हने उपस्यित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। 7 यहोवा ने शैतान से
पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि पृय्वी पर

इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ। 8 यहोवा ने शैतान से पूछा,
क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और
सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई
नहीं है। 9 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना
लाभ के मानता है? 10 क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका
है उसके चारोंओर बाड़ा नहीं बान्धा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और
उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। 11 परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो
कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा। 12 यहोवा ने
शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर
पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया। 13 एक दिन
अय्यूब के बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पी रहे थे; 14 तब
एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा, हम तो बैलोंसे हल जोत रहे थे, और
गदहियां उनके पास चर रही यी, 15 कि शबा के लोग धावा करके उनको ले गए,
और तलवार से तेरे सेवकोंको मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार
देने को आया हूँ। 16 वह अभी यह कह ही रहा या कि दूसरा भी आकर कहने लगा,
कि परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उस से भेड़-बकरियां और सेवक
जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
17 वह अभी यह कह ही रहा या, कि एक और भी आकर कहने लगा, कि कसदी
लोग तीन गोल बान्धकर ऊंटोंपर धावा करके उन्हें ले गए, और तलवार से तेरे
सेवकोंको मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ। 18
वह अभी यह कह ही रहा या, कि एक और भी आकर कहने लगा, तेरे बेट-बेटियां

बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, 19 कि जंगल की ओर से बड़ी
प्रचणड वायु चक्की, और घर के चारोंकोनोंको ऐसा फोंका मारा, कि वह
जवानोंपर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने
को आया हूँ। 20 तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा
और दणडवत् करके कहा, 21 मैं अपक्की मां के पेट से नंगा निकला और वहीं
नंगा लौट जाऊंगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य
है। 22 इन सब बातोंमें भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर
मूर्खता से दोष लगाया।

अय्यूब 2

1 फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके साम्हने उपस्यित हुए, और
उनके बीच शैतान भी उसके साम्हने उपस्यित हुआ। 2 यहोवा ने शैतान से पूछा,
तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि इधर-उधर घूमते-फिरते
और डोलते-डालते आया हूँ। 3 यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास
अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा
भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? और
यद्यपि तू ने मुझे उसको बिना कारण सत्यानाश करते को उभारा, तौभी वह अब
तक अपक्की खराई पर बना है। 4 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, खाल के बदले
खाल, परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। 5 सो केवल अपना
हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा
करेगा। 6 यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण

छोड़ देना। 7 तब शैतान यहोवा के साम्हने से निकला, और अय्यूब को पांव के
तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ोंसे पीड़ित किया। 8 तब अय्यूब
खुजलाने के लिथे एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। 9 तब उसकी स्त्री उस से
कहने लगी, क्या तू अब भी अपक्की खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर,
और चाहे मर जाए तो मर जा। 10 उस ने उस से कहा, तू एक मूढ स्त्री की सी बातें
करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दु:ख न लें? इन सब
बातोंमें भी अय्यूब ने अपके मुंह से कोई पाप नहीं किया। 11 जब तेमानी
एलीपज, और शूही बिलदद, और नामाती सोपर, अय्यूब के इन तीन मित्रोंने इस
सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पक्की यीं, तब वे आपस में यह
ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको
शान्ति देंगे, अपके अपके यहां से उसके पास चले। 12 जब उन्होंने दूर से आंख
उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न चीन्ह सके, तब चिल्लाकर रो उठे; और
अपना अपना बागा फाड़ा, और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपके अपके सिर
पर डाली। 13 तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु
उसका दु:ख बहुत ही बड़ा जान कर किसी ने उस से एक भी बात न कही।

अय्यूब 3

1 इसके बाद अय्यूब मुंह खोलकर अपके जन्मदिन को धिम्मारने 2 और कहने
लगा, 3 वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिस में
कहा गया, कि बेटे का गर्भ रहा। 4 वह दिन अन्धिक्कारनो हो जाए ! ऊपर से
ईश्वर उसकी सुधि न ले, और न उस में प्रकाश होए। 5 अन्धिक्कारनो और मृत्यु

की छाया उस पर रहे। बादल उस पर छाए रहें; और दिन को अन्धेरा कर देनेवाली
चीजोंउसे डराएं। 6 घोर अन्धकार उस रात को पकड़े; वर्ष के दिनोंके बीच वह
आनन्द न करने पाए, और न महीनोंमें उसकी गिनती की जाए। 7 सुनो, वह रात
बांफ हो जाए; उस में गाने का शब्द न सुन पके 8 जो लोग किसी दिन को
धिक्कारते हैं, और लिब्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे ध्क्िकारें। 9 उसकी
संध्या के तारे प्रकाश न दें; वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले, वह
भोर की पलकोंको भी देखने न पाए; 10 क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख को
बन्द न किया और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया। 11 मैं गर्भ ही में क्योंन मर
गया? मैं पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्योंन छूटा? 12 मैं घुटनोंपर क्योंलिया
गया? मैं छातियोंको क्योंपीने पाया? 13 ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं
सोता रहता और विश्रम करता, 14 और मैं पृय्वी के उन राजाओं और मन्त्रियोंके
साय होता जिन्होंने अपके लिथे सुनसान स्यान बनवा लिए, 15 वा मैं उन
राजकुमारोंके साय होता जिनके पास सोना या जिन्होंने अपके घरोंको चान्दी से
भर लिया या; 16 वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाई हुआ होता, वा ऐसे बच्चोंके
समान होता जिन्होंने उजियाले को कभी देखा ही न हो। 17 उस दशा में दुष्ट लोग
फिर दु:ख नहीं देते, और यके मांदे विश्रम पाते हैं। 18 उस में बन्धुए एक संग
सुख से रहते हैं; और परिश्रम करानेवाले का शब्द नहीं सुनते। 19 उस में छोटे बड़े
सब रहते हैं, और दास अपके स्वामी से स्वतन्त्र रहता है। 20 दु:खियोंको
उजियाला, और उदास मनवालोंको जीवन क्योंदिया जाता है? 21 वे मृत्यु की बाट
जोहते हैं पर वह आती नहीं; और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं; 22
वे क़ब्र को पहुंचकर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं। 23 उजियाला उस

पुरुष की क्योंमिलता है जिसका मार्ग छिपा है, जिसके चारोंओर ईश्वर ने घेरा
बान्ध दिया है? 24 मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी लम्बी सांसें आती हैं, और
मेरा विलाप धारा की नाईं बहता रहता है। 25 क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं
डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ
पर आ जाती है। 26 मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्रम मिलता है; परन्तु दु:ख
ही आता है।

अय्यूब 4

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा, 2 यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे
बुरा लगेगा? परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है? 3 सुन, तू ने बहुतोंको शिझा दी
है, और निर्बल लोगोंको बलवन्त किया है। 4 गिरते हुओं को तू ने अपक्की
बातोंसे सम्भाल लिया, और लड़खड़ाते हुए लोगोंको तू ने बलवन्त किया। 5
परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ पक्की, और तू निराश हुआ जाता है; उस ने
तुझे छूआ और तू घबरा उठा। 6 क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा नहीं? और
क्या तेरी चालचलन जो खरी है तेरी आशा नहीं? 7 क्या तुझे मालूम है कि कोई
निदॉष भी कभी नाश हुआ है? या कहीं सज्जन भी काट डाले गए? 8 मेरे देखने में
तो जो पाप को जोतते और दु:ख बोते हैं, वही उसको काटते हैं। 9 वे तो ईश्वर की
श्वास से नाश होते, और उसके क्रोध के फोके से भस्म होते हैं। 10 सिंह का
गरजना और हिंसक सिंह का दहाड़ना बन्द हो आता है। और जवान सिंहोंके दांत
तोड़े जाते हैं। 11 शिकार न पाकर बूढा सिंह मर जाता है, और सिंहनी के वच्चे
तितर बितर हो जाते हैं। 12 एक बात चुपके से मेरे पास पहुंचाई गई, और उसकी

कुछ भनक मेरे कान में पक्की। 13 रात के स्वप्नोंकी चिन्ताओं के बीच जब
मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं, 14 मुझे ऐसी यरयराहट और कंपकंपी लगी कि
मेरी सब हड्डियां तक हिल उठीं। 15 तब एक आत्मा मेरे साम्हने से होकर
चक्की; और मेरी देह के रोएं खड़े हो गए। 16 वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी
आकृति को पहिचान न सका। परन्तु मेरी आंखोंके साम्हने कोई रुप या; पहिले
सन्नाटा छाया रहा, फिर मुझे एक शब्द सुन पड़ा, 17 क्या नाशमान मनुष्य ईश्वर
से अधिक न्यायी होगा? क्या मनुष्य अपके सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता
है? 18 देख, वह अपके सेवकोंपर भरोसा नहीं रखता, और अपके स्वर्गदूतोंको
मूर्ख ठहराता है; 19 फिर जो मिट्टी के घरोंमें रहते हैं, और जिनकी नेव मिट्टी में
डाली गई है, और जो पतंगे की नाई पिस जाते हैं, उनकी क्या गणना। 20 वे भोर
से सांफ तक नाश किए जाते हैं, वे सदा के लिथे मिट जाते हैं, और कोई उनका
विचार भी नहीं करता। 21 क्या उनके डेरे की डोरी उनके अन्दर ही अन्दर नहीं
कट जाती? वे बिना बुद्धि के ही मर जाते हैं !

अय्यूब 5

1 पुकार कर देख; क्या कोई है जो तुझे उत्तर देगा? और पवित्रोंमें से तू किस की
ओर फिरेगा? 2 क्योंकि मूढ़ तो खेद करते करते नाश हो जाता है, और भोला
जलते जलते मर मिटता है। 3 मैं ने मूढ़ को जड़ माड़ते देखा है; परन्तु अचानक
मैं ने उसके वासस्यान को धिक्कारा। 4 उसके लड़केबाले उद्धार से दूर हैं, और वे
फाटक में पीसे जाते हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें छुड़ाए। 5 उसके खेत की उपज
भूखे लोग खा लेते हैं, वरन कटीली बाड़ में से भी निकाल लेते हैं; और प्यासा

उनके धन के लिये फन्दा लगाता है। 6 क्योंकि विपत्ति धूल से उत्पन्न नहीं होती,
और न कष्ट भूमि में से उगता है; 7 परन्तु जैसे चिंगारियां ऊपर ही ऊपर को उड़
जाती हैं,वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये उत्पन्न हुआ है। 8 परन्तु मैं तो
ईश्वर ही को खोजता रहूंगा और अपना मुक़द्दमा परमेश्वर पर छोड़ दूंगा। 9 वह तो
एसे बड़े काम करता है जिनकी याह नहीं लगती, और इतने आश्चर्यकर्म करता है,
जो गिने नहीं जाते। 10 वही पृथ्वी के ऊपर वर्षा करता, और खेतोंपर जल
बरसाता है। 11 इसी रीति वह नम्र लोगोंको ऊंचे स्यान पर बिठाता है, और शोक
का पहिरावा पहिने हुए लोग ऊंचे पर पहुचकर बचते हैं। 12 वह तो धूर्त्त लोगोंकी
कल्पनाएं व्यर्थ कर देता है, और उनके हाथोंसे कुछ भी बन नहीं पड़ता। 13 वह
बुद्धिमानोंको उनकी धूर्त्तता ही में फंसाता है; और कुटिल लोगोंकी युक्ति दूर की
जाती है। 14 उन पर दिन को अन्धेरा छा जाता है, और दिन दुपहरी में वे रात की
नाई टटोलते फिरते हैं। 15 परन्तु वह दरिद्रोंको उनके वचनरुपी तलवार से और
बलवानोंके हाथ से बचाता है। 16 इसलिये कंगालोंको आशा होती है, और कुटिल
मनुष्योंका मुंह बन्द हो जाता है। 17 देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिसको
ईश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। 18
क्योंकि वही घायल करता, और वही पट्टी भी बान्धता है; वही मारता है, और
वही अपके हाथोंसे चंगा भी करता है। 19 वह तुझे छ:विपत्तियोंसे छुड़ाएगा; वरन
सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी। 20 अकाल में वह तुझे मुत्यु से, और
युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा। 21 तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा और
जब विनाश आए, तब भी तुझे भय न होगा। 22 तू उजाड़ और अकाल के दिनोंमें
हँसमुख रहेगा, और तुझे बनैले जन्तुओं से डर न लगेगा। 23 वरन मैदान के

पत्थर भी तुझ से वाचा बान्धे रहेंगे, और वनपशु तुझ से मेल रखेंगे। 24 और तुझे
निश्चय होगा, कि तेरा डेरा कुशल से है, और जब तू अपके निवास में देखे तब कोई
वस्तु खेई न होगी। 25 तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे बहुत वंश होंगे। और
मेरे सन्तान पृय्वी की घास के तुल्य बहुत होंगे। 26 जैसे पूलियोंका ढेर समय पर
खलिहान में रखा जाता है, वैसे ही तू पूरी अवस्या का होकर क़ब्र को पहुंचेगा। 27
देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है; इसे तू सुन, और अपके लाभ के लिथे
ध्यान में रख।

अय्यूब 6

1 फिर अय्यूब ने कहा, 2 भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी
विपत्ति तुला में धरी जाती ! 3 क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी ठहरती; इसी
कारण मेरी बातें उतावली से हूई हैं। 4 क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे अन्दर
चुभे हैं; और उनका विष मेरी आत्मा में वैठ गया है ;ईश्वर की भयंकर बात मेरे
विरुद्ध पांति बान्धे हैं। 5 जब बनैले गदहे को घास मिलती, तब क्या वह रेंकता है?
और बैल चारा पाकर क्या डकारता है? 6 जो फीका है वह क्या बिना नमक खाया
जाता है? क्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है? 7 जिन वस्तुओं को मैं
छूना भी नहीं चाहता वही मानो मेरे लिथे घिनौना आहार ठहरी हैं। 8 भला होता
कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता और जिस बात की मैं आशा करता हूँ वह ईश्वर
मुझे दे देता ! 9 कि ईश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता, और हाथ बढ़ाकर
मुझे काट डालता ! 10 यही मेरी शान्ति का कारण; वरन भारी पीड़ा में भी मैं इस
कारण से उछल पड़ता; क्योंकि मैं ने उस पवित्र के वचनोंका कभी इनकार नहीं

किया। 11 मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा रखूं? और मेरा अन्त ही क्या होगा,
कि मैं धीरज धरूं? 12 क्या मेरी दृढ़ता पत्यरोंकी सी है? क्या मेरा शरीर पीतल का
है? 13 क्या मैं निराधार नहीं हूँ? क्या काम करने की शक्ति मुझ से दूर नहीं हो
गई? 14 जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़
देता है। 15 मेरे भाई नाले के समान विश्वासघाती हो गए हैं, वरन उन नालोंके
समान जिनकी धार सूख जाती है; 16 और वे बरफ के कारण काले से हो जाते हैं,
और उन में हिम छिपा रहता है। 17 परन्तु जब गरमी होने लगती तब उनकी
धाराएं लोप हो जाती हैं, और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे अपक्की जगह से उड़
जाते हैं 18 वे घूमते घूमते सूख जातीं, और सुनसान स्यान में बहकर नाश होती
हैं। 19 तेमा के बनजारे देखते रहे और शबा के काफिलेवालोंने उनका रास्ता देखा।
20 वे लज्जित हुए क्योंकि उन्होंने भरोसा रखा या और वहां पहुचकर उनके मुंह
सूख गए। 21 उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न रहे; मेरी विपत्ति देखकर तुम डर
गए हो। 22 क्या मैं ने तुम से कहा या, कि मुझे कुछ दो? वा उपक्की सम्पत्ति में से
मेरे लिथे घूस दो? 23 वा मुझे सतानेवाले के हाथ से बचाओ? वा उपद्रव
करनेवालोंके वश से छुड़ा लो? 24 मुझे शिझा दो और मैं चुप रहूंगा; और मुझे
समझाओ, कि मैं ने किस बान में चूक की है। 25 सच्चाई के वचनोंमें कितना
प्रभाव होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से क्या लाभ होता है? 26 क्या तुम बातें
पकड़ने की कल्पना करते हो? निराश जन की बातें तो वायु की सी हैं। 27 तुम
अनायोंपर चिट्ठी डालते, और अपके मित्र को बेचकर लाभ उठानेवाले हो। 28
इसलिथे अब कृपा करके मुझे देखो; निश्चय मैं तुम्हारे साम्हने कदापि फूठ न
बोलूंगा। 29 फिर कुछ अन्याय न होने पाए; फिर इस मुक़द्दमे में मेरा धर्म ज्योंका

त्योंबना है, मैं सत्य पर हूँ। 30 क्या मेरे वचनोंमें कुछ कुटिलता है? क्या मैं दुष्टता
नहीं पहचान सकता?

अय्यूब 7

1 क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन सेवा करनी नहीं पड़ती? क्या उसके दिन
मजदूर के से नहीं होते? 2 जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे, वा मजदूर
अपक्की मजदूरी की आशा रखे; 3 वैसा ही मैं अनर्थ के महीनोंका स्वामी बनाया
गया हूँ, और मेरे लिथे क्लेश से भरी रातें ठहराई गई हैं। 4 जब मैं लेट लाता, तब
कहता हूँ, मैं कब उठूंगा? और रात कब बीतेगी? और पौ फटने तक छटपटाते
छटपटाते उकता जाता हूँ। 5 मेरी देह कीड़ोंऔर और मिट्टी के ढेलोंसे ढकी हुई है;
मेरा चमड़ा सिमट जाता, और फिर गल जाता है। 6 मेरे दिन जुलाहे की धड़की से
अधिक फुतीं से चलनेवाले हैं और निराशा में बीते जाते हैं। 7 याद कर कि मेरा
जीवन वायु ही है; और मैं अपक्की आंखोंसे कल्याण फिर न देखूंगा। 8 जो मुझे
अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई न दूंगा; तेरी आंखें मेरी ओर होंगी परन्तु मैं न
मिलूंगा। 9 जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरनेवाला
फिर वहां से नहीं लौट सकता; 10 वह अपके घर को फिर लौट न आएगा, और न
अपके स्यान में फिर मिलेगा। 11 इसलिथे मैं अपना मुंह बन्द न रखूंगा; अपके
मन का खेद खोलकर कहूंगा; और अपके जीव की कड़ुवाहट के कारण कुड़कुड़ाता
रहूंगा। 12 क्या मैं समुद्र हूँ, वा मगरमच्छ हूँ, कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है? 13
जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट पर शान्ति मिलेगी, और बिछौने पर मेरा खेद
कुछ हलका होगा; 14 तब तब तू मुझे स्वप्नोंसे घबरा देता, और दर्शनोंसे

भयभीत कर देता है; 15 यहां तक कि मेरा जी फांसी को, और जीवन से मृत्यु को
अधिक चाहता है। 16 मुझे अपके जीवन से घृणा आती है; मैं सर्वदा जीवित रहना
नहीं चाहता। मेरा जीवनकाल सांस सा है, इसलिथे मुझे छोड़ दे। 17 मनुष्य क्या
है, कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए, 18 और प्रति भोर को
उसकी सुधि ले, और प्रति झण उसे जांचता रहे? 19 तू कब तक मेरी ओर आंख
लगाए रहेगा, और इतनी देर के लिथे भी मुझे न छोड़ेगा कि मैं अपना यूक निगल
लूं? 20 हे मनुष्योंके ताकनेवाले, मैं ने पाप तो किया होगा, तो मैं ने तेरा क्या
बिगाड़ा? तू ने क्योंमुझ को अपना निशाना बना लिया है, यहां तक कि मैं अपके
ऊपर आपक्की बोफ हुआ हूँ? 21 और तू क्योंमेरा अपराध झमा नहीं करता? और
मेरा अधर्म क्योंदूर नहीं करता? अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊंगा, और तू मुझे यत्न
से ढूंढ़ेगा पर मेरा पता नहीं मिलेगा।

अय्यूब 8

1 तब शूही बिलदद ने कहा, 2 तू कब तक ऐसी ऐसी बातें करता रहेगा? और तेरे
मुंह की बातें कब तक प्रचणड वायु सी रहेगी? 3 क्या ईश्वर अन्याय करता है?
और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है? 4 यदि तेरे लड़केबालोंने उसके
विरुद्ध पाप किया है, तो उस ने उनको उनके अपराध का फल भुगताया है। 5 तौभी
यदि तू आप ईश्वर को यत्न से ढूंढ़ता, और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर बिनती
करता, 6 और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता, तो निश्चय वह तेरे लिथे जागता;
और तेरी धमिर्कता का निवास फिर ज्योंका त्योंकर देता। 7 चाहे तेरा भाग पहिले
छोटा ही रहा हो परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढती होती। 8 अगली पीढ़ी के लोगोंसे

तो पूछ, और जो कुछ उनके पुरखाओं ने जांच पड़ताल की है उस पर ध्यान दे। 9
क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते; और पृथ्वी पर हमारे दिन
छाया की नाईं बीतते जाते हैं। 10 क्या वे लोग तुझ से शिझा की बातें न कहेंगे?
क्या वे अपके मन से बात न निकालेंगे? 11 क्या कछार की घास पानी बिना बढ़
सकती है? क्या सरकणडा कीच बिना बढ़ता है? 12 चाहे वह हरी हो, और काटी भी
न गई हो, तौभी वह और सब भांति की घास से पहिले ही सूख जाती है। 13 ईश्वर
के सब बिसरानेवालोंकी गति ऐसी ही होती है और भक्तिहीन की आशा टूट जाती
है। 14 उसकी आश का मूल कट जाता है; और जिसका वह भरोसा करता है, वह
मकड़ी का जाला ठहराता है। 15 चाहे वह अपके घर पर टेक लगाए परन्तु वह न
ठहरेगा; वह उसे दृढ़ता से यांभेगा परन्तु वह स्य्िर न रहेगा। 16 वह चूप पाकर
हरा भरा हो जाता है, और उसकी डालियां बगीचे में चारोंओर फैलती हैं। 17 उसकी
जड़ कंकरोंके ढेर में लिपक्की हुई रहती है, और वह पत्त्र के स्यान को देख लेता
है। 18 परन्तु जब वह अपके स्यान पर से नाश किया जाए, तब वह स्यान उस से
यह कहकर मुंह मोड़ लेगा कि मैं ने उसे कभी देखा ही नहीं। 19 देख, उसकी
आनन्द भरी चाल यही है; फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे। 20 देख, ईश्वर न
तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है, और न बुराई करतेवालोंको
संभालता है। 21 वह तो तुझे हंसमुख करेगा; और तुझ से जयजयकार कराएगा।
22 तेरे वैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे, और दुष्टोंका डेरा कहीं रहने न पाएगा।

अय्यूब 9

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 मैं निश्चय जानता हूं, कि बात ऐसी ही है; परन्तु मनुष्य

ईश्वर की दृष्टि में क्योंकर धर्मी ठहर सकता है? 3 चाहे वह उस से मुक़द्दमा लड़ना
भी चाहे तौभी मनुष्य हजार बातोंमें से एक का भी उत्तर न दे सकेगा। 4 वह
बुद्धिमान और अति सामर्थी है: उसके विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल हुआ
है? 5 वह तो पर्वतोंको अचानक हटा देता है और उन्हें पता भी नहीं लगता, वह
क्रोध में आकर उन्हें उलट पुलट कर देता है। 6 वह पृथ्वी को हिलाकर उसके
स्यान से अलग करता है, और उसके खम्भे कांपके लगते हैं। 7 उसकी आज्ञा
बिना सूर्य उदय होता ही नहीं; और वह तारोंपर मुहर लगाता है; 8 वह
आकाशमण्डल को अकेला ही फैलाता है, और समुद्र की ऊंची ऊंची लहरोंपर
चलता है; 9 वह सप्तषिर्, मृगशिरा और कचपचिया और दक्खिन के नझत्रोंका
बनानेवाला है। 10 वह तो ऐसे बड़े कर्म करता है, जिनकी याह नहीं लगती; और
इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जा सकते। 11 देखो, वह मेरे साम्हने से
होकर तो चलता है परन्तु मुझको नहीं दिखाई पड़ता; और आगे को बढ़ जाता है,
परन्तु मुझे सूफ ही नहीं पड़ता है। 12 देखो, जब वह छीनने लगे, तब उसको कौन
रोकेगा? कोन उस से कह सकता है कि तू यह क्या करता है? 13 ईश्वर अपना
क्रोध ठंडा नहीं करता। अभिमानी के सहाथकोंको उसके पांव तले फुकना पड़ता
है। 14 फिर मैं क्या हूं, जो उसे उत्तर दूं, और बातें छांट छांटकर उस से विवाद
करूं? 15 चाहे मैं निदॉष भी होता परन्तु उसको उत्तर न दे सकता; मैं अपके मुद्दई
से गिड़गिड़ाकर बिनती करता। 16 चाहे मेरे पुकारने से वह उत्तर भी देता, तौभी मैं
इस बात की प्रतीति न करता, कि वह मेरी बात सुनता है। 17 वह तो आंधी
चलाकर मुझे तोड़ डालता है, और बिना कारण मेरे चोट पर चोट लगाता है। 18
वह मुझे सांस भी लेने नहीं देता है, और मुझे कड़वाहट से भरता है। 19 जो

सामर्य्य की चर्चा हो, तो देखो, वह बलवान है: और यदि न्याय की चर्चा हो, तो वह
कहेगा मुझ से कौन मुक़द्दमा लड़ेगा? 20 चाहे मैं निर्दोष ही क्योंन हूँ, परन्तु
अपके ही मुंह से दोषी ठहरूंगा; खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल ठहराएगा। 21 मैं
खरा तो हूँ, परन्तु अपना भेद नहीं जानता; अपके जीवन से मुझे घृण आती है।
22 बात तो एक ही है, इस से मैं यह कहता हूँ कि ईश्वर खरे और दुष्ट दोनोंको नाश
करता है। 23 जब लोग विपत्ति से अचानक मरने लगते हैं तब वह निर्दोष लोगोंके
जांचे जाने पर हंसता है। 24 देश दुष्टोंके हाथ में दिया गया है। वह उसके
न्यायियोंकी आंखोंको मून्द देता है; इसका करनेवाला वही न हो तो कौन है? 25
मेरे दिन हरकारे से भी अधिक वेग से चले जाते हैं; वे भागे जाते हैं और उनको
कल्याण कुछ भी दिखाई नहीं देता। 26 वे वेग चाल से नावोंकी नाई चले जाते हैं,
वा अहेर पर फपटते हुए उक़ाब की नाई। 27 जो मैं कहूं, कि विलाप करना फूल
जाऊंगा, और उदासी छोड़कर अपना मन प्रफुल्लित कर दूंगा, 28 तब मैं अपके
सब दुखोंसे डरता हूँ। मैं तो जानता हूँ, कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा। 29 मैं तो
दोषी ठहरूंगा; फिर व्यर्थ क्योंपरिश्रम करूं? 30 चाहे मैं हिम के जल में स्नान करूं,
और अपके हाथ खार से निर्मल करूं, 31 तौभी तू मुझे गड़हे में डाल ही देगा, और
मेरे वस्त्र भी मुझ से घिनाएंगे। 32 क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उस
से वादविवाद कर सकूं, और हम दोनोंएक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ सकें। 33 हम
दोनोंके बीच कोई बिचवई नहीं है, जो हम दोंनोंपर अपना हाथ रखे। 34 वह
अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे और उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए।
35 तब मैं उस से निडर होकर कुछ कह सकूंगा, क्योंकि मैं अपक्की दृष्टि में ऐसा
नहीं हूँ।

अय्यूब 10

1 मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है; मैं स्वतंत्रता पूर्वक कुड़कुड़ाऊंगा; और मैं
अपके मन की कड़वाहट के मारे बातें करूंगा। 2 मै ईश्वर से कहूंगा, मुझे दोषी न
ठहरा; मुझे बता दे, कि तू किस कारण मूफ से मुक़द्दमा लड़ता है? 3 क्या तुझे
अन्धेर करना, और दुष्टोंकी युक्ति को सुफल करके अपके हाथोंके बनाए हुए को
निकम्मा जानना भला लगता है? 4 क्या तेरी देश्धारियोंकी सी बांखें है? और क्या
तेरा देखना मनुष्य का सा है? 5 क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के समान हैं, वा तेरे
वर्ष पुरुष के समयोंके तुल्य हैं, 6 कि तू मेरा अधर्म ढूंढ़ता, और मेरा पाप पूछता
है? 7 तुझे तो मालूम ही है, कि मैं दुष्ट नहीं हूँ, और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेवाला
नहीं ! 8 तू ने अपके हाथोंसे मुझे ठीक रचा है और जोड़कर बनाया है; तौभी मुझे
नाश किए डालता है। 9 स्मरण कर, कि तू ने मुझ को गून्धी हुई मिट्‌टी की नाईं
बनाया, क्या तू मुझे फिर धूल में मिलाएगा? 10 क्या तू ने मुझे दूध की नाईं
उंडेलकर, और दही के समान जमाकर नहीं बनाया? 11 फिर तू ने मुझ पर चमड़ा
और मांस चढ़ाया और हड्डियां और नसें गूंयकर मुझे बनाया है। 12 तू ने मुझे
जीवन दिया, और मुझ पर करुणा की है; और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रझा
हई है। 13 तौभी तू ने ऐसी बातोंको अपके मन में छिपा रखा; मैं तो जान गया, कि
तू ने ऐसा ही करने को ठाना या। 14 जो मैं पाप करूं, तो तू उसका लेखा लेगा;
और अधर्म करने पर मुझे निदॉष न ठहराएगा। 15 जो मैं दुष्टता करूं तो मुझ पर
हाथ ! और जो मैं धमीं बनूं तौभी मैं सिर न उठाऊंगा, क्योंकि मैं अपमान से भरा
हुआ हूं और अपके दु:ख पर ध्यान रखता हूँ। 16 और चाहे सिर उठाऊं तौभी तू
सिंह की नाईं मेरा अहेर करता है, और फिर मेरे विरुद्ध आश्चर्यकर्म करता है। 17

तू मेरे साम्हने अपके नथे नथे साझी ले आता है, और मुझ पर अपना क्रोध
बढ़ाता है; और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है। 18 तू ने मुझे गर्भ से
क्योंनिकाला? नहीं तो मैं वहीं प्राण छोड़ता, और कोई मुझे देखने भी न पाता। 19
मेरा होना न होने के समान होता, और पेट ही से क़ब्र को पहुंचाया जाता। 20 क्या
मेरे दिन योड़े नहीं? मुझे छोड़ दे, और मेरी ओर से मुंह फेर ले, कि मेरा मन योड़ा
शान्त हो जाए 21 इस से पहिले कि मैं वहां जाऊं, जहां से फिर न लौटूंगा, अर्यात्
अन्धिक्कारने और धोर अन्धकार के देश में, जहां अन्धकार ही अन्धकार है; 22
और मृत्यु के अन्धकार का देश जिस में सब कुछ गड़बड़ है; और जहां प्रकाश भी
ऐसा है जैसा अन्धकार।

अय्यूब 11

1 तब नामाती सोपर ने कहा: 2 बहुत सी बातें जो कही गई हैं, क्या उनका उत्तर
देना न चाहिथे? क्या बकवादी मनुष्य धर्मी ठहराया जाए? 3 क्या तेरे बड़े बोल के
कारण लोग चुप रहें? और जब तू ठट्ठा करता है, तो क्या कोई तुझे लज्जित न
करे? 4 तू तो यह कहता है कि मेरा सिद्धान्त शुद्ध है और मैं ईश्वर की दृष्टि में पवित्र
हूँ। 5 परन्तु भला हो, कि ईश्वर स्वयं बातें करें, और तेरे विरुद्ध मुंह खोले, 6 और
तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगट करे, कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर है।
इसलिथे जान ले, कि ईश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल जाता है। 7 क्या तू
ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से
चांच सकता है? 8 वह आकाश सा ऊंचा है; तू क्या कर सकता है? वह अधोलोक से
गहिरा है, तू कहां समझ सकता है? 9 उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है और

समुद्र से चौड़ी है। 10 जब ईश्वर बीच से गुजरकर बन्द कर दे और अदालत में
बुलाए, तो कौन उसको रोक सकता है। 11 क्योंकि वह पाखणडी मनुष्योंका भेद
जानता है, और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किए भी जान लेता है। 12
पनन्तु मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है; क्योंकि मनुष्य जन्म ही से जंगली
गदहे के बच्चे के समान होता है। 13 यदि तू अपना मन शुद्ध करे, और ईश्वर की
ओर अपके हाथ फैलाए, 14 और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर
करे, और अपके डेरोंमें कोई कुटिलता न रहने दे, 15 तब तो तू निश्चय अपना मुंह
निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्यि्र होकर कभी न डरेगा। 16 तब तू अपना
दु:ख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो। 17
और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा; और चाहे अन्धेरा भी हो
तौभी वह भोर सा हो जाएगा। 18 और तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय
रहेगा; और अपके चारोंओर देख देखकर तू निर्भय विश्रम कर सकेगा। 19 और
जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं; और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करते का यत्न
करेंगे। 20 परन्तु दुष्ट लोगोंकी आंखें रह जाएंगी, और उन्हें कोई शरुण स्यान न
मिलेगा और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाए।

अय्यूब 12

1 तब अय्यूब ने कहा; 2 नि:सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो और जब तुम मरोगे तब
बुद्धि भी जाती रहेगी। 3 परन्तु तुम्हारी नाई मुझ में भी समझ है, मैं तुम लोगोंसे
कुछ तीचा नहीं हूँ कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो? 4 मैं ईश्वर से प्रार्यना
करता या, और वह मेरी सुन दिया करता या; परन्तु अब मेरे पड़ोसी मुझ पर

हंसते हैं; जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हंसी का कारण हो गया है। 5 दु:खी
लोग तो सुखियोंकी समझ में तुच्छ जाने जाते हैं; और जिनके पांव फिसला चाहते
हैं उनका अपमान अवश्य ही होता है। 6 डाकुओं के डेरे कुशल झेम से रहते हैं,
और जो ईश्वर को क्रोध दिलाते हैं, वह बहुत ही निडर रहते हैं; और उनके हाथ में
ईश्वर बहुत देता है। 7 पशुओं से तो पूछ और वे तुझे दिखाएंगे; और आकाश के
पझियोंसे, और वे तुझे बता देंगे। 8 पृय्वी पर ध्यान दे, तब उस से तुझे शिझा
मिलेगी; ओर समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी। 9 कौन इन बातोंको
नहीं जानता, कि यहोवा ही ने अपके हाथ से इस संसार को बनाया है। 10 उसके
हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण, और एक एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी
रहती है। 11 जैसे जीभ से भोजन चखा जाता है, क्या वैसे ही कान से वचन नहीं
परखे जाते? 12 बूढ़ां में बुद्धि पाई जाती है, और लम्बी आयुवालोंमें समझ होती तो
है। 13 ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं; युक्ति और समझ उसी में हैं।
14 देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर बनाया नहीं जाता; जिस मनुष्य को वह
बन्द करे, वह फिर खोला नहीं जाता। 15 देखो, जब वह वर्षा को रोक रखता है तो
जल सूख जाता है; फिर जब वह जल छोड़ देता है तब पृय्वी उलट जाती है। 16
उस में सामर्य्य और खरी बुद्धि पाई जाती है; धोख देनेवाला और धोखा खानेवाला
दोनोंउसी के हैं। 17 वह मंत्रियोंको लूटकर बन्धुआई में ले जाता, और न्यायियोंको
मूर्ख बना देता है। 18 वह राजाओं का अधिक्कारने तोड़ देता है; और उनकी कमर
पर बन्धन बन्धवाता है। 19 वह याजकोंको लूटकर बन्धुआई में ले जाता और
सामयियोंको उलट देता है। 20 वह विश्वासयोग्य पुरुषोंसे बोलने की शक्ति और
पुरनियोंसे विवेक की शक्ति हर लेता है। 21 वह हाकिमोंको अपमान से लादता,

और बलवानोंके हाथ ढीले कर देता है। 22 वह अन्धिक्कारने की गहरी बातें प्रगट
करता, और मृत्यु की छाया को भी प्रकाश में ले आता है। 23 वह जातियोंको
बढ़ाता, और उनको नाश करता है; वह उनको फैलाता, और बन्धुआई में ले जाता
है। 24 वह पृथ्वी के मुख्य लोगोंकी बुद्धि उड़ा देता, और उनको निर्जन स्यानोंमें
जहां रास्ता नहीं है, भटकाता है। 25 वे बिन उजियाले के अन्धेरे में टटोलते फिरते
हैं; और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मतवाले की नाईं डगमगाते हुए चलते हैं।

अय्यूब 13

1 सुनो, मैं यह सब कुछ अपक्की आंख से देख चुका, और अपके कान से सुन
चुका, और समझ भी चुका हूँ। 2 जो कुछ तुम जानते हो वह मैं भी जानता हूँ; मैं
तुम लोगोंसे कुछ कम नहीं हूँ। 3 मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूंगा, और मेरी
अभिलाषा ईश्वर से वादविवाद करने की है। 4 परन्तु तुम लोग फूठी बात के
गढ़नेवाले हो; तुम सबके सब निकम्मे वैद्य हो। 5 भला होता, कि तुम बिलकुल
चुप रहते, और इस से तुम बुद्धिमान ठहरते। 6 मेरा विवाद सुनो, और मेरी बहस
की बातोंपर कान लगाओ। 7 क्या तुम ईश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे, और
उसके पझ में कपट से बोलोगे? 8 क्या तुम उसका पझपात करोगे? और ईश्वर के
लिथे मुकद्दमा चलाओगे। 9 क्या यह भला होगा, कि वह तुम को जांचे? क्या जैसा
कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धेखा दोगे? 10 जो तुम
छिपकर पझपात करो, तो वह निश्चय तुम को डांटेगा। 11 क्या तुम उसके
माहात्म्य से भय न खाओगे? क्या उसका डर तुम्हारे मन में न समाएगा? 12
तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख के समान हैं; तुम्हारे कोट मिट्टी ही के

ठहरे हैं : 13 मुझ से बात करना छोड़ो, कि मैं भी कुछ कहने पाऊं; फिर मुझ पर
जो चाहे वह आ पके। 14 मैं क्योंअपना मांस अपके दांतोंसे चबाऊं? और
क्योंअपना प्राण हथेली पर रखूं? 15 वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं;
तौभी मैं अपक्की चाल चलन का पझ लूंगा। 16 और यह भी मेरे बचाव का कारण
होगा, कि भक्तिहीन जन उसके साम्हने नहीं जा सकता। 17 चित्त लगाकर मेरी
बात सुनो, और मेरी बिनती तुम्हारे कान में पके। 18 देखो, मैं ने अपके बहस की
पूरी तैयारी की है; मुझे निश्चय है कि मैं निदॉष ठहरूंगा। 19 कौन है जो मुझ से
मुकद्दमा लड़ सकेगा? ऐसा कोई पाया जाए, तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूंगा। 20 दो
ही काम मुझ से न कर, तब मैं तुझ से नहीं छिपूंगा: 21 अपक्की ताड़ना मुझ से
दूर कर ले, और अपके भय से मुझे भयभीत न कर। 22 तब तेरे बुलाने पर मैं
बोलूंगा; नहीं तो मैं प्रश्न करूंगा, और तू मुझे उत्तर दे। 23 मुझ से कितने अधर्म के
काम और पाप हुए हैं? मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे। 24 तू किस कारण
अपना मुंह फेर लेता है, और मुझे अपना शत्रु गिनता है? 25 क्या तू उड़ते हुए पत्ते
को भी कंपाएगा? और सूखे डंठल के पीछे पकेगा? 26 तू मेरे लिथे कठिन दु:खोंकी
आज्ञा देता है, और मेरी जवानी के अधर्म का फल मुझे भुगता देता है। 27 और
मेरे पांवोंको काठ में ठोंकता, और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता है; और मेरे
पांवोंकी चारोंओर सीमा बान्ध लेता है। 28 और मैं सड़ी गली वस्तु के तुल्य हूं जो
नाश हो जाती है, और कीड़ा खाए कपके के तुल्य हूँ।

अय्यूब 14

1 मनुष्य जो स्त्री से उत्मन्न होता है, वह थेड़े दिनोंका और दुख से भरा रहता है।

2 वह फूल की नाई खिलता, फिर तोड़ा जाता है; वह छाया की रीति पर ढल जाता,
और कहीं ठहरता नहीं। 3 फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है? क्या तू मुझे अपके
साय कचहरी में घसीटता है? 4 अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता
है? कोई नहीं। 5 मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनोंकी गिनती
तेरे पास लिखी है, और तू ने उसके लिथे ऐसा सिवाना बान्धा है जिसे वह पार
नहीं कर सकता, 6 इस कारण उस से अपना मुंह फेर ले, कि वह आराम करे, जब
तक कि वह मजदूर की नाई अपना दिन पूरा न कर ले। 7 वृझ की तो आशा रहती
है, कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तौभी फिर पनपेगा और उस से नर्म नर्म
डालियां निकलती ही रहेंगी। 8 चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए, और
उसका ठूंठ मिट्टी में सूख भी जाए, 9 तौभी वर्षा की गन्ध पाकर वह फिर
पनपेगा, और पौधे की नाई उस से शाखाएं फूटेंगी। 10 परन्तु पुरुष मर जाता,
और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहां रहा? 11 जैसे नील
नदी का जल घट जाता है, और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख जाता है,
12 वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता; जब तक आकाश बना रहेगा
तब तक वह न जागेगा, और न उसकी नींद टूटेगी। 13 भला होता कि तू मुझे
अधोलोक में छिपा लेता, और जब तक तेरा कोप ठंढा न हो जाए तब तक मुझे
छिपाए रखता, और मेरे लिथे समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता। 14 यदि
मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा? जब तक मेरा छूटकारा न होता
तब तक मैं अपक्की कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता। 15 तू मुझे
बुलाता, और मैं बोलता; तुझे अपके हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती।
16 परन्तु अब तू मेरे पग पग को गिनता है, क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा

नहीं रहता? 17 मेरे अपराध छाप लगी हुई यैली में हैं, और तू ने मेरे अधर्म को सी
रखा है। 18 और निश्चय पहाड़ भी गिरते गिरते नाश हो जाता है, और चट्टान
अपके स्यान से हट जाती है; 19 और पत्यर जल से घिस जाते हैं, और भूमि की
धूलि उसकी बाढ़ से बहाई जाती है; उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को मिटा देता
है। 20 तू सदा उस पर प्रबल होता, और वह जाता रहता है; तू उसका चिहरा
बिगाड़कर उसे निकाल देता है। 21 उसके पुत्रोंकी बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं
सूफता; और उनकी घटी होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं जानता। 22 केवल
अपके ही कारण उसकी दी को दु:ख होता है; और अपके ही कारण उसका प्राण
अन्दर ही अन्दर शोकित रहता है।

अय्यूब 15

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा, 2 क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता के
साय उत्तर दे, वा उपके अन्त:करण को पूरबी पवन से भरे? 3 क्या वह निष्फल
वचनोंसे, वा व्यर्य बातोंसे वादविवाद करे? 4 वरन तू भय मानना छोड़ देता, और
ईश्वर का ध्यान करना औरोंसे छुड़ाता है। 5 तू अपके मुंह से अपना अधर्म प्रगट
करता है, और धूर्त्त लोगोंके बोलने की रीति पर बोलता है। 6 मैं तो नहीं परन्तु तेरा
मुंह ही तुझे दोषी ठहराता है; और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साझी देते हैं। 7 क्या
पहिला मतुष्य तू ही उत्पन्न हुआ? क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ोंसे भी पहिले हुई? 8
क्या तू ईश्वर की सभा में बैठा सुनता या? क्या बुद्धि का ठीका तू ही ने ले रखा है?
9 तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते? तुझ में ऐसी कौन सी समझ है
जो हम में नहीं? 10 हम लोगोंमें तो पक्के बालवाले और अति पुरनिथे मनुष्य हैं,

जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के हैं। 11 ईश्वर की शान्तिदायक बातें, और जो
वचन तेरे लिथे कोमल हैं, क्या थे तेरी दृष्टि में तुच्छ हैं? 12 तेरा मन क्योंतुझे
खींच ले जाता है? और तू आंख से क्योंसैन करता है? 13 तू भी अपक्की आत्मा
ईश्वर के विरुद्ध करता है, और अपके मुंह से व्यर्थ बातें निकलने देता है। 14
मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि
निदॉष हो सके? 15 देख, वह अपके पवित्रोंपर भी विश्वास नहीं करता, और स्वर्ग
भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है। 16 फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है
जो कुटिलता को पानी की नाई पीता है। 17 मैं तुझे समझा दूंगा, इसलिथे मेरी
सुन ले, जो मैं ने देखा है, उसी का वर्णन मैं करता हूँ। 18 (वे ही बातें जो
बुद्धिमानोंने अपके पुरखाओं से सुनकर बिना छिपाए बताया है। 19 केवल उन्हीं
को देश दिया गया या, और उनके मध्य में कोई विदेशी आता जाता नहीं या।) 20
दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता है, और बलात्कारी के वषॉ की गिनती ठहराई
हुई है। 21 उसके कान में डरावना शब्द गूंजता रहता है, कुशल के समय भी
नाशक उस पर आ पड़ता है। 22 उसे अन्धिक्कारने में से फिर निकलने की कुछ
आशा नहीं होती, और तलवार उसकी घात में रहती है। 23 वह रोटी के लिथे मारा
मारा फिरता है, कि कहां मिलेगी। उसे निश्चय रहता है, कि अन्धकार का दिन मेरे
पास ही है। 24 संकट और दुर्घटना से असको डर लगता रहता है, ऐसे राजा की
नाई जो युद्ध के लिथे तैयार हो, वे उस पर प्रबल होते हैं। 25 उस ने तो ईश्वर के
विरुद्ध हाथ बढ़ाया है, और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल ठोंकता है, 26 और
सिर उठाकर और अपक्की मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ घमण्ड से उस पर
धावा करता है; 27 इसलिथे कि उसके मुंह पर चिकनाई छा गई है, और उसकी

कमर में चक्कीं जमी है। 28 और वह उजाड़े हुए नगरोंमें बस गया है, और जो घर
रहने योग्य नहीं, और खण्डहर होने को छोड़े गए हैं, उन में बस गया है। 29 वह
धनी न रहेगा, और न उसकी सम्पत्ति बनी रहेगी, और ऐसे लोगोंके खेत की उपज
भूमि की ओर न भुकने पाएगी। 30 वह अन्धिक्कारने से कभी न निकलेगा, और
उसकी डालियां आग की लपट से फुलस जाएंगी, और ईश्वर के मुंह की श्वास से
वह उड़ जाएगा। 31 वह अपके को धोखा देकर व्यर्थ बातोंका भरोसा न करे,
क्योंकि उसका बदला धोखा ही होगा। 32 वह उसके नियत दिन से पहिले पूरा हो
जाएगा; उसकी डालियां हरी न रहेंगी। 33 दाख की नाई उसके कच्चे फल फड़
जाएंगे, और उसके फूल जलपाई के वृझ के से गिरेंगे। 34 क्योंकि भक्तिहीन के
परिवार से कुछ बन न पकेगा, और जो घूस लेते हैं, उनके तम्बू आग से जल
जाएंगे। 35 उनके उपद्रव का पेट रहता, और अनर्थ उत्पन्न होता है: और वे
अपके अन्त:करण में छल की बातें गढ़ते हैं।

अय्यूब 16

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब
निकम्मे शान्तिदाता हो। 3 क्या व्यर्थ बातोंका अन्त कभी होगा? तू कौन सी बात
से फिड़ककर उत्तर देता। 4 जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती, तो मैं भी तुम्हारी सी
बातें कर सकता; मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता, और तुम्हारे विरुद्ध सिर
हिला सकता। 5 वरन मैं अपके वचनोंसे तुम को हियाव दिलाता, और बातोंसे
शान्ति देकर तुम्हारा शोक घटा देता। 6 चाहे मैं बोलूं तौभी मेरा शोक न घटेगा,
चाहे मैं चुप रहूं, तौभी मेरा दु:ख कुछ कम न होगा। 7 परन्तु अब उस ने पुफे

उकता दिया है; उस ने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है। 8 और उस ने जो मेरे
शरीर को सुखा डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है, और मेरा दुबलापन मेरे
विरुद्ध खड़ा होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है। 9 उस ने क्रोध में आकर मुझ को
फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा है; वह मेरे विरुद्ध दांत पीसता; और मेरा वैरी मुझ को
आंखें दिखाता है। 10 अब लोग मुझ पर मुंह पसारते हैं, और मेरी नामधराई
करके मेरे गाल पर यपेड़ा मारते, और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं। 11 ईश्वर ने मुझे
कुटिलोंके वश में कर दिया, और दुष्ट लोगोंके हाथ में फेंक दिया है। 12 मैं सुख से
रहता या, और उस ने मुझे चूर चूर कर डाला; उस ने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे
टुकड़े टुकड़े कर दिया; फिर उस ने पुफे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है। 13
उसके तीर मेरे चारोंओर उड़ रहे हैं, वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है, और
मेरा मित्त भूमि पर बहाता है। 14 वह शूर की नाईं मुझ पर धावा करके मुझे चोट
पर चोट पहुंचाकर घायल करता है। 15 मैं ने अपक्की खाल पर टाट को सी लिया
है, और अपना सींग मिट्टी में मैला कर दिया है। 16 रोते रोते मेरा मुंह सूज गया
है, और मेरी आंखोंपर घोर अन्धकार छा गया है; 17 तौभी मुझ से कोई उपद्रव
नहीं हुआ है, और मेरी प्रार्यना पवित्र है। 18 हे पृय्वी, तू मेरे लोहू को न ढांपना,
और मेरी दोहाई कहीं न रुके। 19 अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है, और मेरा गवाह
ऊपर है। 20 मेरे मित्र मुझ से घृणा करते हैं, परन्तु मैं ईश्वर के साम्हने आंसू
बहाता हूँ, 21 कि कोई ईश्वर के विरुद्ध सज्जन का, और आदमी का मुक़द्दमा
उसके पड़ोसी के विरुद्ध लड़े। 22 क्योंकि योड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग से
चला जाऊंगा, जिस से मैं फिर वापिस न लौटूंगा।

अय्यूब 17

1 मेरा प्राण नाश हुआ चाहता है, मेरे दिन पूरे हो चुके हैं; मेरे लिथे कब्र तैयार है। 2
निश्चय जो मेरे संग हैं वह ठट्ठा करनेवाले हैं, और उनका फगड़ा रगड़ा मुझे
लगातार दिखाई देता है। 3 जमानत दे अपके और मेरे बीच में तू ही जामिन हो;
कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे? 4 तू ने इनका मन समझने से रोका है, इस
कारण तू इनको प्रबल न करेगा। 5 जो अपके मित्रोंको चुगली खाकर लूटा देता,
उसके लड़कोंकी आंखें रह जाएंगी। 6 उस ने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा
देते हैं; और लोग मेरे मुंह पर यूकते हैं। 7 खेद के मारे मेरी आंखोंमें घुंघलापन छा
गया है, और मेरे सब अंग छाया की नाईं हो गए हैं। 8 इसे देखकर सीधे लोग
चकित होते हैं, और जो निदॉष हैं, वह भक्तिहीन के विरुद्ध उभरते हैं। 9 तौभी धर्मी
लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे, और शुद्ध काम करनेवाले सामर्य्य पर सामर्य्य पाते
जाएंगे। 10 तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ, परन्तु मुझे तुम लोगोंमें
एक भी बुद्धिमान न मिलेगा। 11 मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरी मनसाएं मिट
गई, और जो मेरे मन में या, वह नाश हुआ है। 12 वे रात को दिन ठहराते; वे
कहते हैं, अन्धिक्कारने के निकट उजियाला है। 13 यदि मेरी आश यह हो कि
अधोलोक मेरा धाम होगा, यदि मैं ने अन्धिक्कारने में अपना बिछौना बिछा
लिया है, 14 यदि मैं ने सड़ाहट से कहा कि तू मेरा पिता है, और कीड़े से, कि तू
मेरी मां, और मेरी बहिन है, 15 तो मेरी आशा कहां रही? और मेरी आशा किस के
देखने में आएगी? 16 वह तो अधोलोक में उतर जाएगी, और उस समेत मुझे भी
मिट्टी में विश्रम मिलेगा।

अय्यूब 18

1 तब शूही बिल्दद ने कहा, 2 तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर वचन पकड़ते
रहोगे? चित्त लगाओ, तब हम बोलेंगे। 3 हम लोग तुम्हारी दृष्टि में क्योंपशु के
तुल्य समझे जाते, और अशुद्ध ठहरे हैं। 4 हे अपके को क्रोध में फाड़नेवाले क्या
तेरे निमित्त पृय्वी उजड़ जाएगी, और चट्टान अपके स्यान से हट जाएगी? 5
तौभी दुष्टोंका दीपक बुफ जाएगा, और उसकी आग की लौ न चमकेगी। 6 उसके
डेरे में का उजियाला अन्धेरा हो जाएगा, और उसके ऊपर का दिया बुफ जाएगा। 7
उसके बड़े बड़े फाल छोटे हो जाएंगे और वह अपक्की ही युक्ति के द्वारा गिरेगा। 8
वह अपना ही पांव जाल में फंसाएगा, वह फन्दोंपर चलता है। 9 उसकी एड़ी फन्दे
में फंस जाएगी, और वह जाल में पकड़ा जाएगा। 10 फन्दे की रस्सियां उसके
लिथे भूमि में, और जाल रास्ते में छिपा दिया गया है। 11 चारोंओर से डरावनी
वस्तुएं उसे डराएंगी और उसके पीछे पड़कर उसको भगाएंगी। 12 उसका बल
दु:ख से घट जाएगा, और विपत्ति उसके पास ही तैयार रहेगी। 13 वह उसके अंग
को खा जाएगी, वरन काल का पहिलौठा उसके अंगोंको खा लेगा। 14 अपके जिस
डेरे का भरोसा वह करता है, उस से वह छीन लिया जाएगा; और वह भयंकरता के
राजा के पास पहुंचाया जाएगा। 15 जो उसके यहां का नहीं है वह उसके डेरे में
वास करेगा, और उसके घर पर गन्धक छितराई जाएगी। 16 उसकी जड़ तो सूख
जाएगी, और डालियां कट जाएंगी। 17 पृय्वी पर से उसका स्मरण मिट जाएगा,
और बाज़ार में उसका नाम कभी न सुन पकेगा। 18 वह उजियाले से
अन्धिक्कारने में ढकेल दिया जाएगा, और जगत में से भी भगाया जाएगा। 19
उसके कुटुम्बियोंमें उसके कोई पुत्रपौत्र न रहेगा, और जहां वह रहता या, वहां
कोई बचा न रहेगा। 20 उसका दिन देखकर पूरबी लोग चकित होंगे, और पश्चिम

के निवासियोंके रोएं खड़े हो जाएंगे। 21 नि:सन्देह कुटिल लोगोंके निवास ऐसे हो
जाते हैं, और जिसको ईश्वर का ज्ञान नहीं रहता उसका स्यान ऐसा ही हो जाता है।

अय्यूब 19

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 तुम कब तक मेरे प्राण को दु:ख देते रहोगे; और बातोंसे
मुझे चूर चूर करोगे? 3 इन दसोंबार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे, तुम्हें
लज्जा नहीं आती, कि तुम मेरे साय कठोरता का बरताव करते हो? 4 मान लिया
कि मुझ से भूल हुई, तौभी वह भूल तो मेरे ही सिर पर रहेगी। 5 यदि तुम सचमुच
मेरे विरुद्ध अपक्की बड़ाई करते हो और प्रमाण देकर मेरी तिन्दा करते हो, 6 तो
यह जान लो कि ईश्वर ने मुझे गिरा दिया है, और मुझे अपके जाल में फंसा लिया
है। 7 देखो, मैं उपद्रव ! उपद्रव ! योंचिल्लाता रहता हूँ, परन्तु कोई नहीं सुनता; मैं
सहाथता के लिथे दोहाई देता रहता हूँ, परन्तु कोई न्याय नहीं करता। 8 उस ने
मेरे मार्ग को ऐसा रूंधा है कि मैं आगे चल नहीं सकता, और मेरी डगरें अन्धेरी
कर दी हैं। 9 मेरा विभव उस ने हर लिया है, और मेरे सिर पर से मुकुट उतार
दिया है। 10 उस ने चारोंओर से मुझे तोड़ दिया, बस मैं जाता रहा, और मेरा
आसरा उस ने वृझ की नाई उखाड़ डाला है। 11 उस ने मुझ पर अपना क्रोध
भड़काया है और अपके शत्रुओं में मुझे गिनता है। 12 उसके दल इकट्ठे होकर
मेरे विरुद्ध मोर्चा बान्धते हैं, और मेरे डेरे के चारोंओर छावनी डालते हैं। 13 उस ने
मेरे भाइयोंको मुझ से दूर किया है, और जो मेरी जान पहचान के थे, वे बिलकुल
अनजान हो गए हैं। 14 मेरे कुटुंबी मुझे छोड़ गए हैं, और जो मुझे जानते थे वह
मुझे भूल गए हैं। 15 जो मेरे घर में रहा करते थे, वे, वरन मेरी दासियां भी मुझे

अनजाना गिनने लगीं हैं; उनकी दृष्टि में मैं परदेशी हो गया हूँ। 16 जब मैं अपके
दास को बुलाता हूँ, तब वह नहीं बोलता; मुझे उस से गिड़गिड़ाना पड़ता है। 17
मेरी सांस मेरी स्त्री को और मेरी गन्ध मेरे भाइयोंकी दृष्टि में घिनौनी लगती है।
18 लड़के भी मुझे तुच्छ जानते हैं; और जब मैं उठने लगता, तब वे मेरे विरुद्ध
बोलते हैं। 19 मेरे सब परम मित्र मुझ से द्वेष रखते हैं, और जिन से मैं ने प्रेम
किया सो पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं। 20 मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियोंसे
सट गए हैं, और मैं बाल बाल बच गया हूं। 21 हे मेरे मित्रो ! मुझ पर दया करो,
दया, क्योंकि ईश्वर ने मुझे मारा है। 22 तुम ईश्वर की नाईं क्योंमेरे पीछे पके हो?
और मेरे मांस से क्योंतृप्त नहीं हुए? 23 भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं;
भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, 24 और लोहे की टांकी और शीशे से वे
सदा के लिथे चट्टान पर खोदी जातीं। 25 मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला
जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। 26 और अपक्की खाल के इस
प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा। 27
उसका दर्शन मैं आप अपक्की आंखोंसे अपके लिथे करूंगा, और न कोई दूसरा।
यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए, 28 तौभी मुझ में तो धर्म
का मूल पाया जाता है ! और तुम जो कहते हो हम इसको क्योंकर सताएं ! 29 तो
तुम तलवार से डरो, क्योंकि जलजलाहट से तलवार का दण्ड मिलता है, जिस से
तुम जान लो कि न्याय होता है।

अय्यूब 20

1 तब नामाती सोपर ने कहा, 2 मेरा जी चाहता है कि उत्तर दूं, और इसलिथे

बोलने में फुर्ती करता हूँ। 3 मैं ने ऐसी चितौनी सुनी जिस से मेरी निन्दा हुई, और
मेरी आत्मा अपक्की समझ के अनुसार तुझे उत्तर देती है। 4 क्या तू यह नियम
नहीं जानता जो प्राचीन और उस समय का है, जब मनुष्य पृय्वी पर बसाया गया,
5 कि दुष्टोंका ताली बजाना जल्दी बन्द हो जाता और भक्तिहीनोंका आनन्द पल
भर का होता है? 6 चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश तक पहुंच जाए, और
उसका सिर बादलोंतक पहुंचे, 7 तौभी वह अपक्की विष्ठा की नाईं सदा के लिथे
नाश हो जाएगा; और जो उसको देखते थे वे पूछेंगे कि वह कहां रहा? 8 वह स्वप्न
की नाईं लोप हो जाएगा और किसी को फिर न मिलेगा; रात में देखे हुए रूप की
नाईं वह रहने न पाएगा। 9 जिस ने उसको देखा हो फिर उसे न देखेगा, और
अपके स्यान पर उसका कुछ पता न रहेगा। 10 उसके लड़केबाले कंगालोंसे भी
बिनती करेंगे, और वह अपना छीना हुआ माल फेर देगा। 11 उसकी हड्डियोंमें
जवानी का बल भरा हुआ है परन्तु वह उसी के साय मिट्टी में मिल जाएगा। 12
चाहे बुराई उसको मीठी लगे, और वह उसे अपक्की जीभ के नीचे छिपा रखे, 13
और वह उसे बचा रखे और न छोड़े, वरन उसे अपके तालू के बीच दबा रखे, 14
तौभी उसका भोजन उसके पेट में पलटेगा, वह उसके अन्दर नाग का सा विष बन
जाएगा। 15 उस ने जो धन निगल लिया है उसे वह फिर उगल देगा; ईश्वर उसे
उसके पेट में से निकाल देगा। 16 वह नागोंका विष चूस लेगा, वह करैत के डसने
से मर जाएगा। 17 वह नदियोंअर्यात् मधु और दही की नदियोंको देखने न
पाएगा। 18 जिसके लिथे उस ने परिश्रम किया, उसको उसे लौटा देना पकेगा, और
वह उसे निगलने न पाएगा; उसकी मोल ली हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना
चाहिथे, उतना तो उसे न मिलेगा। 19 क्योंकि उस ने कंगालोंको पीसकर छोड़

दिया, उस ने घर को छीन लिया, उसको वह बढ़ाने न पाएगा। 20 लालसा के मारे
उसको कभी शान्ति नहीं मिलती यी, इसलिथे वह अपक्की कोई मनभावनी वस्तु
बचा न सकेगा। 21 कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए न बचक्की यी; इसलिथे
उसका कुशल बना न रहेगा 22 पूरी सम्पत्ति रहते भी वह सकेती में पकेगा; तब
सब दु:खियोंके हाथ उस पर उठेंगे। 23 ऐसा होगा, कि उसका पेट भरने के लिथे
ईश्वर अपना क्रोध उस पर भड़काएगा, और रोटी खाने के समय वह उस पर
पकेगा। 24 वह लोहे के हयियार से भागेगा, और पीतल के धनुष से मारा जाएगा।
25 वह उस तीर को खींचकर अपके पेट से निकालेगा, उसकी चमकीली नोंक
उसके पित्ते से होकर निकलेगी, भय उस में समाएगा। 26 उसके गड़े हुए धन पर
घोर अन्धकार छा जाएगा। वह ऐसी आग से भस्म होगा, जो मनुष्य की फूंकी हुई
न हो; और उसी से उसके डेरे में जो बचा हो वह भी भस्म हो जाएगा। 27 आकाश
उसका अयर्म प्रगट करेगा, और पृय्वी उसके विरुद्ध खड़ी होगी। 28 उसके घर की
बढ़ती जाती रहेगी, वह उसके क्रोध के दिन बह जाएगी। 29 परमेश्वर की ओर से
दुष्ट मनुष्य का अंश, और उसके लिथे ईश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है।

अय्यूब 21

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 चित्त लगाकर मेरी बात सुनो; और तुम्हारी शान्ति यही
ठहरे। 3 मेरी कुछ तो सहो, कि मैं भी बातें करूं; और जब मैं बातें कर चुकूं, तब
पीछे ठट्ठा करना। 4 क्या मैं किसी मनुष्य की दोहाई देता हूँ? फिर मैं अधीर
क्योंन होऊं? 5 मेरी ओर चित्त लगाकर चकित हो, और अपक्की अपक्की उंगली
दांत तले दबाओ। 6 जब मैं स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूँ, और मेरी देह में

कंपकंपी लगती है। 7 क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीवित रहते हैं, वरन बूढ़े भी हो
जाते, और उनका धन बढ़ता जाता है? 8 उनकी सन्तान उनके संग, और उनके
बालबच्चे उनकी आंखोंके साम्हने बने रहते हैं। 9 उनके घर में भयरहित कुशल
रहता है, और ईश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती। 10 उनका सांड़ गाभिन करता
और चूकता नहीं, उनकी गाथें बियाती हैं और बच्चा कभी नहीं गिरातीं। 11 वे
अपके लड़कोंको फुण्ड के फुण्ड बाहर जाने देते हैं, और उनके बच्चे नाचते हैं।
12 वे डफ और वीणा बजाते हुए गाते, और बांसुरी के शब्द से आनन्दित होते हैं।
13 वे अपके दिन सुख से बिताते, और पल भर ही में अधोलोक में उतर जाते हैं।
14 तौभी वे ईश्वर से कहते थे, कि हम से दूर हो ! तेरी गति जानने की हम को
इच्छा नहीं रहती। 15 सर्वशक्तिमान क्या है, कि हम उसकी सेवा करें? और जो
हम उस से बिनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा? 16 देखो, उनका कुशल उनके
हाथ में नहीं रहती, दुष्ट लोगोंका विचार मुझ से दूर रहे। 17 कितनी बार दुष्टोंका
दीपक बुफ जाता है, और उन पर विपत्ति आ पड़ती है; और ईश्वर क्रोध करके
उनके बांट में शोक देता है, 18 और वे वायु से उड़ाए हुए भूसे की, और बवण्डर से
उड़ाई हुई भूसी की नाई होते हैं। 19 ईश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके
लड़केबालोंके लिथे रख छोड़ता है, वह उसका बदला उसी को दे, ताकि वह जान
ले। 20 दुष्ट अपना नाश अपक्की ही आंखोंसे देखे, और सर्वशक्तिमान की
जलजलाहट में से आप पी ले। 21 क्योंकि जब उसके महीनोंकी गिनती कट चुकी,
तो अपके बादवाले घराने से उसका क्या काम रहा। 22 क्या ईश्वर को कोई ज्ञान
सिखाएगा? वह तो ऊंचे पद पर रहनेवालोंका भी न्याय करता है। 23 कोई तो
अपके पूरे बल में बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है। 24 उसकी

दोहनियां दूध से और उसकी हड्डियां गूदे से भरी रहती हैं। 25 और कोई अपके
जीव में कुढ़ कुढ़कर बिना सुख भोगे मर जाता है। 26 वे दोनोंबराबर मिट्टी में
मिल जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढांक लेते हैं। 27 देखो, मैं तुम्हारी कल्पनाएं जानता
हूँ, और उन युक्तियोंको भी, जो तुम मेरे विषय में अन्याय से करते हो। 28 तुम
कहते तो हो कि रईस का घर कहां रहा? दुष्टोंके निवास के डेरे कहां रहे? 29 परन्तु
क्या तुम ने बटोहियोंसे कभी नहीं पूछा? क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणोंसे
अनजान हो, 30 कि विपत्ति के दिन के लिथे दुर्जन रखा जाता है; और महाप्रलय
के समय के लिथे ऐसे लोग बचाए जाते हैं? 31 उसकी चाल उसके मुंह पर कौन
कहेगा? और उस ने जो किया है, उसका पलटा कौन देगा? 32 तौभी वह क़ब्र को
पहुंचाया जाता है, और लोग उस क़ब्र की रखवाली रिते रहते हैं। 33 नाले के ढेले
उसको सुखदायक लगते हैं; और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनित जा चुके, वैसे
ही सब मनुष्य उसके बाद भी चले जाएंगे। 34 तुम्हारे उत्तरोंमें तो फूठ ही पाया
जाता है, इसलिथे तुम क्योंमुझे व्यर्थ शान्ति देते हो?

अय्यूब 22

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा, 2 क्या पुरुष से ईश्वर को लाभ पहुंच सकता है? जो
बुद्धिमान है, वह अपके ही लाभ का कारण होता है। 3 क्या तेरे धर्मी होने से
सर्वशक्तिमान सुख पा सकता है? तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो
सकता है? 4 वह तो तुझे डांटता है, और तुझ से मुकद्दमा लड़ता है, तो क्या इस
दशा में तेरी भक्ति हो सकती है? 5 क्या तेरी बुराई बहुत नहीं? तेरे अधर्म के
कामोंका कुछ अन्त नहीं। 6 तू ने तो अपके भाई का बन्धक अकारण रख लिया

है, और नंगे के वस्त्र उतार लिथे हैं। 7 यके हुए को तू ने पानी न पिलाया, और भूखे
को रोटी देने से इनकार किया। 8 जो बलवान या उसी को भूमि मिली, और जिस
पुरुष की प्रतिष्ठा हुई यी, वही उस में बस गया। 9 तू ने विधवाओं को छूछे हाथ
लौटा दिया। और अनायोंकी बाहें तोड़ डाली गई। 10 इस कारण तेरे चारोंओर
फन्दे लगे हैं, और अचानक डर के मारे तू घगरा रहा है। 11 क्या तू अन्धिक्कारने
को नहीं देखता, और उस बाढ़ को जिस में तू डूब रहा है? 12 क्या ईश्वर स्वर्ग के
ऊंचे स्यान में नहीं है? ऊंचे से ऊंचे तारोंको देख कि वे कितने ऊंचे हैं।। 13 फिर तू
कहता है कि ईश्वर क्या जानता है? क्या वह घोर अन्धकार की आड़ में होकर
न्याय करेगा? 14 काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ नहीं देख
सकता, वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता फिरता है। 15 क्या तू उस
पुराने रास्ते को पकड़े रहेगा, जिस पर वे अनर्य करनेवाले चलते हैं? 16 वे अपके
समय से पहले उठा लिए गए और उनके घर की नेव नदी बहा ले गई। 17 उन्होंने
ईश्वर से कहा या, हम से दूर हो जा; और यह कि सर्वशक्तिमान हमारा क्या कर
सकता है? 18 तौभी उस ने उनके घर अच्छे अच्छे पदायॉसे भर दिए-- परन्तु दुष्ट
लोगोंका विचार मुझ से दूर रहे। 19 धमीं लेग देखकर आनन्दित होते हैं; और
निदॉष लोग उनकी हंसी करते हैं, कि 20 जो हमारे विरुद्ध उठे थे, नि:सन्देह मिट
गए और उनका बड़ा धन आग का कौर हो गया है। 21 उस से मेलमिलाप कर तब
तुझे शान्ति मिलेगी; और इस से तेरी भलाई होगी। 22 उसके मुंह से शिझा सुन
ले, और उसके वचन अपके मन में रख। 23 यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके
समीप जाए, और अपके डेरे से कुटिल काम दूर करे, तो तू बन जाएगा। 24 तू
अपक्की अनमोल वस्तुओं को धूलि पर, वरन ओपीर का कुन्दन भी नालोंके

पत्यरोंमें डाल दे, 25 तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु और तेरे लिथे
चमकीली चान्दी होगा। 26 तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा, और ईश्वर की
ओर अपना मुंह बेखटके उठा सकेगा। 27 और तू उस से प्रार्थना करेगा, और वह
तेरी सुनेगा; और तू अपक्की मन्नतोंको पूरी करेगा। 28 जो बात तू ठाने वह तुझ
से बन भी पकेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा। 29 चाहे दुर्भाग्य हो तौभी तू
कहेगा कि सुभाग्य होगा, क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है। 30 वरन जो
निर्दोष न हो उसको भी वह बचाता है; तेरे शुद्ध कामोंके कारण तू छुड़ाया जाएगा।

अय्यूब 23

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 मेरी कुड़कुड़ाहट अब भी नहीं रुक सकती, मेरी मार मेरे
कराहने से भारी है। 3 भला होता, कि मैं जानता कि वह कहां मिल सकता है, तब
मैं उसके विराजने के स्यान तक जा सकता ! 4 मैं उसके साम्हने अपना मुक़द्दमा
पेश करता, और बहुत से प्रमाण देता। 5 मैं जान लेता कि वह मुझ से उत्तर में
क्या कह सकता है, और जो कुछ वह मुझ से कहता वह मैं समझ लेता। 6 क्या
वह अपना बड़ा बल दिखाकर मुझ से मुक़द्दमा लड़ता? नहीं, वह मुझ पर ध्यान
देता। 7 सज्जन उस से विवाद कर सकते, और इस रीति मैं अपके न्यायी के हाथ
से सदा के लिथे छूट जाता। 8 देखो, मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह नहीं मिलता; मैं
पीछे हटता हूँ, परन्तु वह दिखाई नहीं पड़ता; 9 जब वह बाईं ओर काम करता है
तब वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह तो दहिनी ओर ऐसा छिप जाता है, कि मुझे
वह दिखाई ही नहीं पड़ता। 10 परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ;
और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा। 11 मेरे पैर उसके

मार्गों में स्थिर रहे; और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े यामे रहा। 12 उसकी आज्ञा
का पालन करने से मैं न हटा, और मैं ने उसके वचन अपक्की इच्छा से कहीं
अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे। 13 परन्तु वह एक ही बात पर अड़ा रहता
है, और कौन उसको उस से फिरा सकता है? जो कुछ उसका जी चाहता है वही वह
करता है। 14 जो कुछ मेरे लिथे उस ने ठाना है, उसी को वह पूरा करता है; और
उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं। 15 इस कारण मैं उसके सम्मुख घबरा
जाता हूँ; जब मैं सोचता हूँ तब उस से थरथरा उठता हूँ। 16 क्योंकि मेरा मन ईश्वर
ही ने कच्चा कर दिया, और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को असमंजस में डाल दिया
है। 17 इसलिथे कि मैं इस अन्धयारे से पहिले काट डाला न गया, और उस ने घोर
अन्धकार को मेरे साम्हने से न छिपाया।

अय्यूब 24

1 सर्वशक्तिमान ने समय क्योंनहीं ठहराया, और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे
उसके दिन क्योंदेखने नहीं पाते? 2 कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते, और भेड़
बकरियां छीनकर चराते हैं। 3 वे अनाथोंका गदहा हांक ले जाते, और विधवा का
बैल कन्धक कर रखते हैं। 4 वे दरिद्र लोगोंको मार्ग से हटा देते, और देश के
दीनोंको इकट्ठे छिपना पड़ता है। 5 देखो, वे जंगली गदहोंकी नाईं अपके काम को
और कुछ भोजन यत्न से ढूंढ़ने को निकल जाते हैं; उनके लड़केबालोंका भोजन
उनको जंगल से मिलता है। 6 उनको खेत में चारा काटना, और दुष्टोंकी बची
बचाई दाख बटोरना पड़ता है। 7 रात को उन्हें बिना वस्त्र नंगे पके रहना और जाड़े
के समय बिना ओढ़े पके रहना पड़ता है। 8 वे पहाड़ोंपर की फडि़योंसे भीगे रहते,

और शरण न पाकर चट्टान से लिपट जाते हैं। 9 कुछ लोग अनाथ बालक को मा
की छाती पर से छीन लेते हैं, और दीन लोगोंसे बन्धक लेते हैं। 10 जिस से वे
बिना वस्त्र नंगे फिरते हैं; और भूख के मारे, पूलियां ढोते हैं। 11 वे उनकी भीतोंके
भीतर तेल पेरते और उनके कुण्डोंमें दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं। 12 वे बड़े
नगर में कराहते हैं, और घायल किए हुओं का जी दोहाई देता है; परन्तु ईश्वर
मूर्खता का हिसाब नहीं लेता। 13 फिर कुछ लोग उजियाले से बैर रखते, वे उसके
मार्गों को नहीं पहचानते, और न उसके मार्गों में बने रहते हैं। 14 खूनी, पह फटते
ही उठकर दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता, और रात को चोर बन जाता है। 15
व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए, दिन डूबने की राह देखता
रहता है, और वह अपना मुंह छिपाए भी रखता है। 16 वे अन्धिक्कारने के समय
घरोंमें सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं; वे उजियाले को जानते भी नहीं। 17
इसलिथे उन सभोंको भोर का प्रकाश घोर अन्धकार सा जान पड़ता है, क्योंकि
घोर अन्धकार का भय वे जानते हैं। 18 वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं,
उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं, और वे अपक्की दाख की बारियोंमें
लौटने नहीं पाते। 19 जैसे सूखे और घाम से हिम का जल सूख जाता है वैसे ही
पापी लोग अधोलोक में सूख जाते हैं। 20 माता भी उसको भूल जाती, और कीड़े
उसे चूसते हें, भवीष्य में उसका स्मरण न रहेगा; इस रीति टेढ़ा काम करनेवाला
वृझ की राई कट जाता है। 21 वह बांफ स्त्री को जो कभी नहीं जनी लूटता, और
विधवा से भलाई करना नहीं चाहता है। 22 बलात्कारियोंको भी ईश्वर अपक्की
शक्ति से खींच लेता है, जो जीवित रहने की आशा नहीं रखता, वह भी फिर उठ
बैठता है। 23 उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि वे सम्भले रहते हैं; ऊौर उसकी

कृपादृष्टि उनकी चाल पर लगी रहती है। 24 वे बढ़ते हैं, तब योड़ी बेर में जाते रहते
हैं, वे दबाए जाते और सभोंकी नाई रख लिथे जाते हैं, और अनाज की बाल की
नाई काटे जाते हैं। 25 क्या यह सब सच नहीं ! कौन मुझे फुठलाएगा? कौन मेरी
बातें निकम्मी ठहराएगा?

अय्यूब 25

1 तब शूही बिल्दद ने कहा, 2 प्रभुता करना और डराना यह उसी का काम है; वह
अपके ऊंचे ऊंचे स्यानोंमें शान्ति रखता है। 3 क्या उसकी सेनाओं की गिनती हो
सकती? और कौन है जिस पर उसका प्रकाश नहीं पड़ता? 4 फिर मनुष्य ईश्वर की
दृष्टि में धमीं क्योंकर ठहर सकता है? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह क्योंकर
निर्मल हो सकता है? 5 देख, उसकी दृष्टि में चन्द्रमा भी अन्धेरा ठहरता, और तारे
भी निर्मल नहीं ठहरते। 6 फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है, और आदमी
कहां रहा जो केंचुआ है !

अय्यूब 26

1 तब अय्यूब ने कहा, 2 निर्बल जन की तू ने क्या ही बड़ी सहाथता की, और
जिसकी बांह में सामर्य्य नहीं, उसको तू ने कैसे सम्भाला है? 3 निर्बुद्धि मनुष्य को
तू ने क्या ही अच्छी सम्मति दी, और अपक्की खरी बुद्धि कैसी भली भांति प्रगट
की है? 4 तू ने किसके हित के लिथे बातें कही? और किसके मन की बातें तेरे मुंह
से निकलीं? 5 बहुत दिन के मरे हुए लोग भी जलनिधि और उसके निवासियोंके
तले तड़पके हैं। 6 अधोलोक उसके साम्हने उधड़ा रहता है, और विनाश का स्यान

ढंप नहीं सकता। 7 वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना अेक
पृथ्वी को लटकाए रखता है। 8 वह जल को अपक्की काली घटाओं में बान्ध
रखता, और बादल उसके बोफ से नहीं फटता। 9 वह अपके सिंहासन के साम्हने
बादल फैलाकर उसको छिपाए रखता है। 10 उजियाले और अन्धिक्कारने के बीच
जहां सिवाना बंधा है, वहां तक उस ने जलनिधि का सिवाना ठहरा रखा है। 11
उसकी घुडकी से आकाश के खम्भे यरयराकर चकित होते हैं। 12 वह अपके बल
से समुद्र को उछालता, और अपक्की बुद्धि से घपणड को छेद देता है। 13 उसकी
आत्मा से आकाशमणडल स्वच्छ हो जाता है, वह अपके हाथ से वेग भागनेवाले
नाग को मार देता है। 14 देखो, थे तो उसकी गति के किनारे ही हैं; और उसकी
आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है, फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद
कौन समझ सकता है?

अय्यूब 27

1 अय्यूब ने और भी अपक्की गूढ बात उठाई और कहा, 2 मैं ईश्वर के जीवन की
शपय खाता हूँ जिस ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया, अर्यात् उस सर्वशक्तिमान के
जीवन की जिस ने मेरा प्राण कड़ुआ कर दिया। 3 क्योंकि अब तक मेरी सांस
बराबर आती है, और ईश्वर का आत्मा मेरे नयुनोंमें बना है। 4 मैं यह कहता हूँ कि
मेरे मुंह से कोई कुटिल बात न निकलेगी, और न मैं कपट की बातें बोलूंगा। 5
ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगोंको सच्चा ठहराऊं, जब तक मेरा प्राण न छूटे तब
तक मैं अपक्की खराई से न हटूंगा। 6 मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ
से जाने न दूंगा; क्योंकि मेरा मन जीवन भर मुझे दोषी नहीं ठहराएगा। 7 मेरा

शत्रु दुष्टोंके समान, और जो मेरे विरुद्ध उठता है वह कुटिलोंके तुल्य ठहरे। 8 जब
ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले, तब यद्यपि उस ने धन भी प्राप्त किया हो,
तौभी उसकी क्या आशा रहेगी? 9 जब वह संकट में पके, तब क्या ईश्वर उसकी
दोहाई सुनेगा? 10 क्या वह सर्वशक्तिमान में सुख पा सकेगा, और हर समय ईश्वर
को पुकार सकेगा? 11 मैं तुम्हें ईश्वर के काम के विषय शिझा दूंगा, और
सर्वशक्तिमान की बात मैं न छिपाऊंगा 12 देखो, तुम लोग सब के सब उसे स्वयं
देख चुके हो, फिर तुम व्यर्थ विचार क्योंपकड़े रहते हो? 13 दुष्ट पनुष्य का भाग
ईश्वर की ओर से यह है, और बलात्कारियोंका अंश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से
पाते हैं, वह यह है, कि 14 चाहे उसके लड़केबाले गिनती में बढ़ भी जाएं, तौभी
तलवार ही के लिथे बढ़ेंगे, और उसकी सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी। 15
उसके जो लोग बच जाएं वे मरकर क़ब्र को पहुंचेंगे; और उसके यहां की विधवाएं
न रोएंगी। 16 चाहे वह रुपया धूलि के समान बटोर रखे और वस्त्र मिट्टी के
किनकोंके तुल्य अनगिनित तैयार कराए, 17 वह उन्हें तैयार कराए तो सही,
परन्तु धर्मी उन्हें पहिन लेगा, और उसका रुपया निर्दोष लोग आपस में बांटेंगे।
18 उस ने अपना घर कीड़े का सा बनाया, और खेत के रखवाले को फोपक्की की
नाई बनाया। 19 वह धनी होकर लेट जाए परन्तु वह गाड़ा न जाएगा; आंख
खोलते ही वह जाता रहेगा। 20 भय की धाराएं उसे बहा ले जाएंगी, रात को
बवण्डर उसको उड़ा ले जाएगा। 21 पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी, और वह
जाता रहेगा और उसको उसके स्यान से उड़ा ले जाएगी। 22 क्योंकि ईश्वर उस पर
विपत्तियां बिना तरस खाए डाल देगा, उसके हाथ से वह भाग जाने चाहेगा। लोग
उस पर ताली बजाएंगे, 23 और उस पर ऐसी सुसकारियां भरेंगे कि वह अपके

स्यान पर न रह सकेगा।

अय्यूब 28

1 चांदी की खानि तो होती है, और सोने के लिथे भी स्यान होता है जहां लोग ताते
हैं। 2 जोहा मिट्टी में से निकाला जाता और पत्यर पिघलाकर पीतल बनाया
जाता है 3 मनुष्य अन्धिक्कारने को दूर कर, दूर दूर तक खोद खोद कर,
अन्धिक्कारने ओर घोर अन्धकार में पत्यर ढूंढ़ते हैं। 4 जहां लोग रहते हैं वहां से
दूर वे खानि खोदते हैं वहां पृय्वी पर चलनेवालोंके भूले बिसरे हुए वे मनुष्योंसे दूर
लटके हुए फूलते रहते हैं। 5 यह भूमि जो है, इस से रोटी तो मिलती है, परन्तु
उसके नीचे के स्यान मानो आग से उलट दिए जाते हैं। 6 उसके पत्य्र नीलमणि
का स्यान हैं, और उसी में सोने की धूलि भी है। 7 उसका मार्ग कोई मांसाहारी
पक्की नहीं जानता, और किसी गिद्ध की दृष्टि उस पर नहीं पक्की। 8 उस पर
अभिमानी पशुओं ने पांव नहीं धरा, और न उस से होकर कोई सिंह कभी गया है।
9 वह चकमक के पत्यर पर हाथ लगाता, और पहाड़ोंको जड़ ही से उलट देता है।
10 वह चट्टान खोदकर नालियां बनाता, और उसकी आंखोंको हर एक अनमोल
वस्तु दिखाई पड़ती है। 11 वह नदियोंको ऐसा रोक देता है, कि उन से एक बूंद भी
पानी नहीं टपकता और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है। 12
परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ का स्यान कहां है? 13 उसका मोल
मनुष्य को मालूम नहीं, जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती ! 14 अयाह सागर
कहता है, वह मुझ में नहीं है, और समुद्र भी कहता है, वह मेरे पास नहीं है। 15
चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता। और न उसके दाम के लिथे चान्दी तौली

जाती है। 16 न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है; और न
अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नीलमणि की। 17 न सोना, न कांच उसके बराबर
ठहर सकता है, कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती। 18 मूंगे उौर
स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चा ! बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है।
19 कूश देश के पद्‌क़राग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते; और न उस से चोखे
कुन्दन की बराबरी हो सकती है। 20 फिर बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ
का स्थान कहां? 21 वह सब प्राणियोंकी आंखोंसे छिपी है, और आकाश के
पझियोंके देखने में नहीं आती। 22 विनाश ओर मृत्यु कहती हैं, कि हमने उसकी
चर्चा सुनी है। 23 परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है, और उसका स्थान
उसको मालूम है। 24 वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है, और सारे
आकाशमण्डल के तले देखता भालता है। 25 जब उस ने वायु का तौल ठहराया,
और जल को नपुए में नापा, 26 और मेंह के लिथे विधि और गर्जन और बिजली
के लिथे मार्ग ठहराया, 27 तब उस ने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया,
और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद बूफ लिया। 28 तब उस न मनुष्य से
कहा, देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है: और बुराई से दूर रहना यही समझ
है।

अय्यूब 29

1 अय्यूब ने और भी अपक्की गूढ बात उठाई और कहा, 2 भला होता, कि मेरी
दशा बीते हुए महीनोंकी सी होती, जिन दिनोंमें ईश्वर मेरी रझा करता या, 3 जब
उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता या, और उस से उजियाला पाकर मैं

अन्धेरे में चलता या। 4 वे तो मेरी जवानी के दिन थे, जब ईश्वर की मित्रता मेरे
डेरे पर प्रगट होती यी। 5 उस समय तक तो सर्वशक्तिमान मेरे संग रहता या, और
मेरे लड़केबाले मेरे चारोंओर रहते थे। 6 तब मैं अपके पगोंको मलाई से धोता या
और मेरे पास की चट्टानोंसे तेल की धाराएं बहा करती यीं। 7 जब जब मैं नगर के
फाटक की ओर चलकर खुले स्यान में अपके बैठने का स्यान तैयार करता या, 8
तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते, और पुरनिथे उठकर खड़े हो जाते थे। 9
हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते, और हाथ से मुंह मूंदे रहते थे। 10 प्रधान
लोग चुप रहते थे और उनकी जीभ तालू से सट जाती यी। 11 क्योंकि जब कोई
मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता या, और जब कोई मुझे देखता,
तब मेरे विषय साझी देता या; 12 क्योंकि मैं दोहाई देनेवाले दीन जन को, और
असहाथ अनाय को भी छुड़ाता या। 13 जो नाश होने पर या मुझे आशीर्वाद देता
या, और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती यी। 14 मैं धर्म को पहिने रहा,
और वह मुझे ढांके रहा; मेरा न्याय का काम मेरे लिथे बागे और सुन्दर पगड़ी का
काम देता या। 15 मैं अन्धोंके लिथे आंखें, और लंगड़ोंके लिथे पांव ठहरता या। 16
दरिद्र लोगोंका मैं पिता ठहरता या, और जो मेरी पहिचान का न या उसके मुक़द्दमे
का हाल मैं पूछताछ करके जान लेता या। 17 मैं कुटिल मनुष्योंकी डाढ़ें तोड़
डालता, और उनका शिकार उनके मुंह से छीनकर बचा लेता या। 18 तब मैं
सोचता या, कि मेरे दिन बालू के किनकोंके समान अनगिनत होंगे, और अपके ही
बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा। 19 मेरी जड़ जल की ओर फैली, और मेरी डाली पर
ओस रात भर पक्की, 20 मेरी महिमा ज्योंकी त्योंबनी रहेगी, और मेरा धनुष मेरे
हाथ में सदा नया होता जाएगा। 21 लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरे रहते थे

और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे। 22 जब मैं बोल चुकता या, तब वे और
कुछ न बोलते थे, मेरी बातें उन पर मेंह की ताई बरसा करती यीं। 23 जैसे लोग
बरसात की वैसे ही मेरी भी बाट देखते थे; और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के
लिथे वैसे ही वे मुंह पसारे रहते थे। 24 जब उनको कुछ आशा न रहती यी तब मैं
हंसकर उनको प्रसन्न करता या; और कोई मेरे मुंह को बिगाड़ न सकता या। 25
मैं उनका मार्ग चुन लेता, और उन में मुख्य ठहरकर बैठा करता या, और जैसा
सेना में राजा वा विलाप करनेवालोंके बीच शान्तिदाता, वैसा ही मैं रहता या।

अय्यूब 30

1 परन्तु अब जिनकी अवस्या मुझ से कम है, वे मेरी हंसी करते हैं, वे जिनके
पिताओं को मैं अपक्की भेड़ बकरियोंके कुत्तोंके काम के योग्य भी न जानता या।
2 उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता या? उनका पौरुष तो जाता रहा। 3
वे दरिद्रता और काल के मारे दुबले पके हुए हैं, वे अन्धेरे और सुनसान स्यानोंमें
सुखी धूल फांकते हैं। 4 वे फाड़ी के आसपास का लोनिया साग तोड़ लेते, और
फाऊ की जड़ें खाते हैं। 5 वे मनुष्योंके बीच में से निकाले जाते हैं, उनके पीछे ऐसी
पुकार होती है, जैसी जोर के पीछे। 6 डरावने नालोंमें, भूमि के बिलोंमें, और
चट्टानोंमें, उन्हें रहना पड़ता है। 7 वे फाडियोंके बीच रेंकते, और बिच्छू पौधोंके
नीचे इकट्ठे पके रहते हैं। 8 वे मूढ़ोंऔर नीच लोगोंके वंश हैं जो मार मार के इस
देश से निकाले गए थे। 9 ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते, और मुझ
पर ताना मारते हैं। 10 वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते, वा मेरे मुंह पर यूकने से
भी नहीं डरते। 11 ईश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर मुझे द:ख दिया है, इसलिथे वे

मेरे साम्हने मुंह में लगाम नहीं रखते। 12 मेरी दहिनी अलंग पर बजारू लोग उठ
खड़े होते हैं, वे मेरे पांव सरका देते हैं, और मेरे नाश के लिथे अपके उपाय बान्धते
हैं। 13 जिनके कोई सहाथक नहीं, वे भी मेरे रास्तोंको बिगाड़ते, और मेरी विपत्ति
को बढ़ाते हैं। 14 मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते हैं, और उजाड़ के बीच में
होकर मुझ पर धावा करते हैं। 15 मुुफ में घबराहट छा गई है, और मेरा रईसपन
मानो वायु से उड़ाया गया है, और मेरा कुशल बादल की नाई जाता रहा। 16 और
अब मैं शोकसागर में डूबा जाता हूँ; दु:ख के दिनोंने मुझे जकड़ लिया है। 17 रात
को मेरी हड्डियां मेरे अन्दर छिद जाती हैं और मेरी नसोंमें चैन नहीं पड़ती 18
मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे वस्त्र का रूप बदल गया है; वह मेरे कुर्त्ते के गले
की नाई मुझ से लिपक्की हुई है। 19 उस ने मुझ को कीचड़ में फेंक दिया है, और
मैं मिट्टी और राख के तुल्य हो गया हूँ। 20 मैं तेरी दोहाई देता हूँ, परन्तु तू नहीं
सुनता; मैं खड़ा होता हूँ परन्तु तू मेरी ओर घूरने लगता है। 21 तू बदलकर मुझ
पर कठोर हो गया है; और अपके बली हाथ से मुझे सताता हे। 22 तू मुझे वायु पर
सवार करके उड़ाता है, और आंधी के पानी में मुझे गला देता है। 23 हां, मुझे
निश्चय है, कि तू मुझे मृत्यु के वश में कर देगा, और उस घर में पहुंचाएगा, जो
सब जीवित प्राणियोंके लिथे ठहराया गया है। 24 तौभी क्या कोई गिरते समय
हाथ न बढ़ाएगा? और क्या कोई विपत्ति के समय दोहाई न देगा? 25 क्या मैं
उसके लिथे रोता नहीं या, जिसके दुदिर्न आते थे? और क्या दरिद्र जन के कारण
मैं प्राण में दुखित न होता या? 26 जब मैं कुशल का मार्ग जोहता या, तब विपत्ति
आ पक्की; और जब मैं उजियाले का आसरा लगाए या, तब अन्धकार छा गया।
27 मेरी अन्तडियां निरन्तर उबलती रहती हैं और आराम नहीं पातीं; मेरे दु:ख के

दिन आ गए हैं। 28 मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो बिना सूर्य की गर्मी के
काला हो गया हूँ। और सभा में खड़ा होकर सहाथता के लिथे दोहाई देता हूँ। 29 मैं
गीदड़ोंका भाई और शुतुर्मुर्गों का संगी हो गया हूँ। 30 मेरा चमड़ा काला होकर मुझ
पर से गिरता जाता है, और तप के मारे मेरी हड्डियां जल गई हैं। 31 इस कारण
मेरी वीणा से विलाप और मेरी बांसुरी से रोने की ध्वनि निकलती है।

अय्यूब 31

1 मैं ने अपक्की आंखोंके विषय वाचा बान्धी है, फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर
आंखें लगाऊं? 2 क्योंकि ईश्वर स्वर्ग से कौन सा अंश और सर्वशक्तिमान ऊपर से
कौन सी सम्पत्ति बांटता है? 3 क्या वह कुटिल मनुष्योंके लिथे विपत्ति और अनर्थ
काम करनेवालोंके लिथे सत्यानाश का कारण नहीं है? 4 क्या वह मेरी गति नहीं
देखता और क्या वह मेरे पग पग नहीं गिनता? 5 यदि मैं व्यर्थ चाल चालता हूं, वा
कपट करने के लिथे मेरे पैर दौड़े हों; 6 (तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊं, ताकि
ईश्वर मेरी खराई को जान ले)। 7 यदि मेरे पग मार्ग से बहक गए हों, और मेरा
मन मेरी आंखो की देखी चाल चला हो, वा मेरे हाथोंको कुछ कलंक लगा हो; 8 तो
मैं बीज बोऊं, परन्तु दूसरा खाए; वरन मेरे खेत की उपज उखाड़ डाली जाए। 9
यदि मेरा हृदय किसी स्त्री पर मोहित हो गया है, और मैं अपके पड़ोसी के द्वार पर
घात में बैठा हूँ; 10 तो मेरी स्त्री दूसरे के लिथे पीसे, और पराए पुरुष उसको भ्रष्ट
करें। 11 क्योंकि वह तो महापाप होता; और न्यायियोंसे दणड पाने के योग्य
अधर्म का काम होता; 12 क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर भस्म कर देती है,
और वह मेरी सारी उपज को जड़ से नाश कर देती है। 13 जब मेरे दास वा दासी ने

मुझ से फगड़ा किया, तब यदि मैं ने उनका हक मार दिया हो; 14 तो जब ईश्वर
उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूंगा? और जब वह आएगा तब मैं क्या उत्तर दूंगा?
15 क्या वह उसका बनानेवाला नहीं जिस ने मुझे गर्भ में बनाया? क्या एक ही ने
हम दोनोंकी सूरत गर्भ में न रची यी? 16 यदि मैं ने कंगालोंकी इच्छा पूरी न की
हो, वा मेरे कारण विधवा की आंखें कभी रह गई हों, 17 वा मैं ने अपना टुकड़ा
अकेला खाया हो, और उस में से अनाय न खाने पाए हों, 18 (परन्तु वह मेरे
लड़कपन ही से मेरे साय इस प्रकार पला जिस प्रकार पिता के साय, और मैं जन्म
ही से विधवा को पालता आया हूँ); 19 यदि मैं ने किसी को वस्त्रहीन मरते हुए
देखा, वा किसी दरिद्र को जिसके पास ओढ़ने को न या 20 और उसको अपक्की
भेड़ोंकी ऊन के कपके न दिए हों, और उस ने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न दिया
हो; 21 वा यदि मैं ने फाटक में अपके सहाथक देखकर अनायोंके मारने को अपना
हाथ उठाया हो, 22 तो मेरी बांह पखौड़े से उखड़कर गिर पके, और मेरी भुजा की
हड्डी टूट जाए। 23 क्योंकि ईश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता या,
क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर यरयराता या। 24
यदि मैं ने सोने का भरोसा किया होता, वा कुन्दन को अपना आसरा कहा होता,
25 वा अपके बहुत से धन वा अपक्की बड़ी कमाई के कारण आनन्द किया होता,
26 वा सूर्य को चमकते वा चन्द्रमा को महाशोभा से चलते हुए देखकर 27 मैं मन
ही मन मोहित हो गया होता, और अपके मुंह से अपना हाथ चूम लिया होता; 28
तो यह भी न्यायियोंसे दणड पाने के योग्य अधर्म का काम होता; क्योंकि ऐसा
करके मैं ने सर्वश्रेष्ट ईश्वर का इनकार किया होता। 29 यदि मैं अपके बैरी के नाश
से आनन्दित होता, वा जब उस पर विपत्ति पक्की तब उस पर हंसा होता; 30

(परन्तु मैं ने न तो उसकी शाप देते हुए, और न उसके प्राणदण्ड की प्रार्यना करते
हुए अपके मुंह से पाप किया है); 31 यदि मेरे डेरे के रहनेवालोंने यह न कहा होता,
कि ऐसा कोई कहां मिलेगा, जो इसके यहां का मांस खाकर तृप्त न हुआ हो? 32
(परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता या; मैं बटोही के लिथे अपना द्वार खुला
रखता या); 33 यदि मैं ने आदम की नाई अपना अपराध छिपाकर अपके अधर्म
को ढांप लिया हो, 34 इस कारण कि मैं बड़ी भीड़ से भय खाता या, वा कुलीनोंसे
तुच्छ किए जाने से डर गया यहां तक कि मैं द्वार से बाहर न निकला--- 35 भला
होता कि मेरा कोई सुननेवाला होता ! (सर्वशक्तिमान अभी मेरा त्याय चुकाए !
देखो मेरा दस्तखत यही है)। भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने लिखा
है वह मेरे पास होता ! 36 निश्चय मैं उसको अपके कन्धे पर उठाए फिरता; और
सुन्दर पगड़ी जानकर अपके सिर में बान्धे रहता। 37 मैं उसको अपके पग पग
का हिसाब देता; मैं उसके निकट प्रधान की नाई निडर जाता। 38 यदि मेरी भूमि
मेरे विरुद्ध दोहाई देती हो, और उसकी रेघारियां मिलकर रोती हों; 39 यदि मैं ने
अपक्की भूमि की उपज बिना मजूरी दिए खई, वा उसके मालिक का प्राण लिया
हो; 40 तो गेहूं के बदले फड़बेड़ी, और जव के बदले जंगली घास उगें! अय्यूब के
वचन पूरे हुए हैं।

अय्यूब 32

1 तब उन तीनोंपुरुषोंने यह देखकर कि अय्यूब अपक्की दृष्टि में निदॉष है उसको
उत्तर देना छोड़ दिया। 2 और बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू जो राम के कुल का या,
उसका क्रोध भड़क उठा। अय्यूब पर उसका क्रोध इसलिथे भड़क उठा, कि उस ने

परमेश्वर को नहीं, अपके ही को निर्दोष ठहराया। 3 फिर अय्यूब के तीनोंमित्रोंके
विरुद्ध भी उसका क्रोध इस कारण भड़का, कि वे अय्यूब को उत्तर न दे सके, तौभी
उसको दोषी ठहराया। 4 एलीहू तो अपके को उन से छोटा जानकर अय्यूब की
बातोंके अन्त की बाट जोहता रहा। 5 परन्तु जब एलीहू ने देखा कि थे तीनोंपुरुष
कुछ उत्तर नहीं देते, तब उसका क्रोध भड़क उठा। 6 तब बूजी बारकेल का पुत्र
एलीहू कहने लगा, कि मैं तो जवान हूँ, और तुम बहुत बूढे हो; इस कारण मैं रुका
रहा, और अपना विचार तुम को बताने से डरता या। 7 मैं सोचता या, कि जो आयु
में बड़े हैं वे ही बात करें, और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएं। 8 परन्तु
मनुष्य में आत्मा तो है ही, और सर्वशक्तिमान अपक्की दी हुई सांस से उन्हें
समझने की शक्ति देता है। 9 जो बुद्धिमान हैं वे बड़े बड़े लोग ही नहीं और न्याय के
समझनेवाले बूढे ही नहीं होते। 10 इसलिथे मैं कहता हूं, कि मेरी भी सुनो; मैं भी
अपना विचार बताऊंगा। 11 मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा, मैं तुम्हारे
प्रमाण सुनने के लिथे ठहरा रहा; जब कि तुम कहने के लिथे शब्द ढूढ़ते रहे। 12
मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता रहा। परन्तु किसी ने अय्यूब के पझ का खणडन
नहीं किया, और न उसकी बातोंका उत्तर दिया। 13 तुम लोग मत समझो कि हम
को ऐसी बुद्धि मिली है, कि उसका खणडन मनुष्य नहीं ईश्वर ही कर सकता है। 14
जो बातें उस ने कहीं वह मेरे विरुद्ध तो नहीं कहीं, और न मैं तुम्हारी सी बातोंसे
उसको उत्तर दूंगा। 15 वे विस्मित हुए, और फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; उन्होंने
बातें करना छोड़ दिया। 16 इसलिथे कि वे कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े हैं,
क्या इस कारण मैं ठहरा रहूं? 17 परन्तु अब मैं भी कुछ कहूंगा मैं भी अपना
विचार प्रगट करूंगा। 18 क्योंकि मेरे मन में बातें भरी हैं, और मेरी आत्मा मुझे

उभार रही है। 19 मेरा मन उस दाखमधु के समान है, जो खोला न गया हो; वह
नई कुप्पियोंकी नाईं फटा चाहता है। 20 शान्ति पाने के लिथे मैं बोलूंगा; मैं मुंह
खोलकर उत्तर दूंगा। 21 न मैं किसी आदमी का पक्ष करूंगा, और न मैं किसी
मनुष्य को चापलूसी की पदवी दूंगा। 22 क्योंकि मुझे तो चापलूसी करना आता
ही नहीं नहीं तो मेरा सिरजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता।

अय्यूब 33

1 तौभी हे अय्यूब ! मेरी बातें सुन ले, और मेरे सब वचनोंपर कान लगा। 2 मैं ने
तो अपना मुंह खोला है, और मेरी जीभ मुंह में चुलबुला रही है। 3 मेरी बातें मेरे
मन की सिधाई प्रगट करेंगी; जो ज्ञान मैं रखता हूं उसे खराई के साय कहूंगा। 4
मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन
मिलता है। 5 यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे; मेरे साम्हने अपक्की बातें क्रम से
रचकर खड़ा हो जा। 6 देख मैं ईश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हूँ; मैं भी मिट्टी का बना
हुआ हूँ। 7 सुन, तुझे मेरे डर के मारे घबराना न पकेगा, और न तू मेरे बोफ से
दबेगा। 8 नि:सन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानोंमें पक्की है और मैं ने तेरे वचन सुने
हैं, कि 9 मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूँ; और मुझ में अध्र्म नहीं
है। 10 देख, वह मुझ से फगड़ने के दांव ढूंढ़ता है, और मुझे अपना शत्रु समझता
है; 11 वह मेरे दोनोंपांवोंको काठ में ठोंक देता है, और मेरी सारी चाल की देखभाल
करता है। 12 देख, मैं तुझे उत्तर देता हूँ, इस बात में तू सच्चा नहीं है। क्योंकि
ईश्वर मनुष्य से बड़ा है। 13 तू उस से क्योंफगड़ता है? क्योंकि वह अपक्की किसी
बात का लेखा नहीं देता। 14 क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है,

परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते। 15 स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन
में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पके रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय, 16 तब वह
मनुष्योंके कान खोलता है, और उनकी शिझा पर मुहर लगाता है, 17 जिस से वह
मनुष्य को उसके संकल्प से रोके और गर्व को मनुष्य में से दूर करे। 18 वह उसके
प्राण को गढ़हे से बचाता है, और उसके जीवन को खड़ग की मार से बचाता हे। 19
उसे ताड़ना भी हेती है, कि वह अपके बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है, और उसकी
हड्डी हड्डी में लगातार फगड़ा होता है 20 यहां तक कि उसका प्राण रोटी से, और
उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है। 21 उसका मांस ऐसा सूख
जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियां जो पहिले दिखाई नहीं देती यीं
निकल आती हैं। 22 निदान वह कबर के निकट पहुंचता है, और उसका जीवन
नाश करनेवालोंके वश में हो जाता है। 23 यदि उसके लिथे कोई बिचवई स्वर्ग दूत
मिले, जो हजार में से एक ही हो, जो भावी कहे। और जो मनुष्य को बताए कि
उसके लिथे क्या ठीक है। 24 तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, कि उसे
गढ़हे में जाने से वचा ले, मुझे छुड़ौती मिली है। 25 तब उस मनुष्य की देह बालक
की देह से अधिक स्वस्य और कोमल हो जाएगी; उसकी जवानी के दिन फिर
लौट आएंगे। 26 वह ईश्वर से बिनती करेगा, और वह उस से प्रसन्न होगा, वह
आनन्द से ईश्वर का दर्शन करेगा, और ईश्वर मनुष्य को ज्योंका त्योंधर्मी कर
देगा। 27 वह मनुष्योंके साम्हने गाने ओर कहने लगता है, कि मैं ने पाप किया,
और सच्चाई को उलट पुलट कर दिया, परन्तु उसका बदला मुझे दिया नहीं गया।
28 उस ने मेरे प्राण क़ब्र में पड़ने से बचाया है, मेरा जीवन उजियाले को देखेगा।
29 देख, ऐसे ऐसे सब काम ईश्वर पुरुष के साय दो बार क्या वरन तीन बार भी

करता है, 30 जिस से उसको क़ब्र से बचाए, और वह जीवनलोक के उजियाले का
प्रकाश पाए। 31 हे अय्यूब ! कान लगाकर मेरी सुन; चुप रह, मैं और बोलूंगा। 32
यदि तुझे बात कहनी हो, तो मुझे उत्तर दे; बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना
चाहता हूँ। 33 यदि नहीं, तो तु मेरी सुन; चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात
सिखाऊंगा।

अय्यूब 34

1 फिर एलीहू योंकहता गया; 2 हे बुद्धिमानो ! मेरी बातें सुनो, और हे ज्ञानियो !
मेरी बातोंपर कान लगाओ; 3 क्योंकि जैसे जीभ से चखा जाता है, वैसे ही वचन
कान से परखे जाते हैं। 4 जो कुछ ठीक है, हम अपके लिथे चुन लें; जो भला है,
हम आपस में समझ बूफ लें। 5 क्योंकि अय्यूब ने कहा है, कि मैं निर्दोष हूँ, और
ईश्वर ने मेरा हक़ मार दिया है। 6 यद्यपि मैं सच्चाई पर हूं, तौभी फूठा ठहरता हूँ,
मैं निरपराध हूँ, परन्तु मेरा घाव असाध्य है। 7 अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है,
जो ईश्वर की निन्दा पानी की नाईं पीता है, 8 जो अनर्थ करनेवालोंका साय देता,
और दुष्ट मनुष्योंकी संगति रखता है? 9 उस ने तो कहा है, कि मनुष्य को इस से
कुछ लाभ नहीं कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रखे। 10 इसलिऐ हे
समझवालो ! मेरी सुनो, यह सम्भव नहीं कि ईश्वर दुष्टता का काम करे, और
सर्वशकितमान बुराई करे। 11 वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्थेक
को अपक्की अपक्की चाल का फल भुगताता है। 12 नि:सन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं
करता और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता है। 13 किस ने पृय्वी को उसके हाथ
में सौंप दिया? वा किस ने सारे जगत का प्रबन्ध किया? 14 यदि वह मनुष्य से

अपना मन हटाथे और अपना आत्मा और श्वास अपके ही में समेट ले, 15 तो सब
देहधारी एक संग नाश हो जाएंगे, और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा। 16
इसलिथे इसको सुनकर समझ रख, और मेरी इन बातोंपर कान लगा। 17 जो
न्याय का बैरी हो, क्या वह शासन करे? जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दुष्ट
ठहराएगा? 18 वह राजा से कहता है कि तू नीच है; और प्रधानोंसे, कि तुम दुष्ट
हो। 19 ईश्वर तो हाकिमोंका पझ नहीं करता और धनी और कंगाल दोनोंको अपके
बनाए हुए जानकर उन में कुछ भेद नहीं करता। 20 आधी रात को पल भर में वे
मर जाते हैं, और प्रजा के लोग हिलाए जाते और जाते रहते हैं। और प्रतापी लोग
बिना हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं। 21 क्योंकि ईश्वर की आंखें मनुष्य की
चालचलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है। 22
ऐसा अन्धिक्कारनो वा घोर अन्धकार कहीं नहीं है जिस में अनर्थ करनेवाले छिप
सकें। 23 क्योंकि उस ने मनुष्य का कुछ समय नहीं ठहराया ताकि वह ईश्वर के
सम्मुख अदालत में जाए। 24 वह बड़े बड़े बलवानोंको बिना मुछपाछ के चूर चूर
करता है, और उनके स्यान पर औरोंको खड़ा कर देता है। 25 इसलिथे कि वह
उनके कामोंको भली भांति जानता है, वह उन्हें रात में ऐसा उलट देता है कि वे
चूर चूर हो जाते हैं। 26 वह उन्हें दुष्ट जानकर सभोंके देखते मारता है, 27 क्योंकि
उन्होंने उसके पीछे चलना छोड़ दिया है, और उसके किसी मार्ग पर चित्त न
लगाया, 28 यहां तक कि उनके कारण कंगालोंकी दोहाई उस तक पहुंची और उस
ने दीन लोगोंकी दोहाई सुनी। 29 जब वह चैन देता तो उसे कौन दोषी ठहरा
सकता है? और जब वह मुंह फेर ले, तब कौन उसका दर्शन पा सकता है? जाति
भर के साय और अकेले मनुष्य, दोनोंके साय उसका बराबर व्यवहार है 30 ताकि

भक्तिहीन राज्य करता न रहे, और प्रजा फन्दे में फंसाई न जाए। 31 क्या किसी ने
कभी ईश्वर से कहा, कि मैं ने दणड सहा, अब मैं भविष्य में बुराई न करूंगा, 32
जो कुछ मुझे नहीं सूफ पड़ता, वह तू मुझे सिखा दे; और यदि मैं ने टेढ़ा काम
किया हो, तो भविष्य में वैसा न करूंगा? 33 क्या वह तेरे ही मन के अनुसार
बदला पाए क्योंकि तू उस से अप्रसन्न है? क्योंकि तुझे निर्णय करना है, न कि
मुझे; इस कारण जो कुछ तुझे समझ पड़ता है, वह कह दे। 34 सब ज्ञानी पुरुष
वरन जितले बुद्धिमान मेरी सुनते हैं वे मुझ से कहेंगे, कि 35 अय्यूब ज्ञान की
बातें नहीं कहता, और न उसके वचन समझ के साय होते हैं। 36 भला होता, कि
अय्यूब अन्त तब पक्कीझा में रहता, क्योंकि उस ने अनयियोंके से उत्तर दिए हैं।
37 और वह अपके पाप में विरोध बढ़ाता है; ओर हमारे बीच ताली बजाता है, और
ईश्वर के पिरुद्ध बहुत सी बातें बनाता है।

अय्यूब 35

1 फिर एलीहू इस प्रकार और भी कहता गया, 2 कि क्या तू इसे अपना हक़
समझता है? क्या तू दावा करता है कि तेरा धर्म ईश्वर के धर्म से अधिक है? 3 जो
तू कहता है कि मुझे इस से क्या लाभ? और मुझे पापी होने में और न होने में
कौन सा अधिक अन्तर है? 4 मैं तुझे और तेरे सायियोंको भी एक संग उत्तर देता
हूँ। 5 आकाश की ओर दृष्टि करके देख; और आकाशमणडल को ताक, जो तुझ से
ऊंचा है। 6 यदि तू ने पाप किया है तो ईश्वर का क्या बिगड़ता है? यदि तेरे अपराध
बहुत ही बढ़ जाएं तौभी तू उसके साय क्या करता है? 7 यदि तू धर्मी है तो उसको
क्या दे देता है; वा उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है? 8 तेरी दुष्टता का फल तुझ

ऐसे ही पुरुष के लिथे है, और तेरे धर्म का फल भी मनुष्य मात्र के लिथे है। 9 बहुत
अन्धेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं; और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई
देते हैं। 10 तौभी कोई यह नहीं कहता, कि मेरा सृजनेवाला ईश्वर कहां है, जो रात
में भी गीत गवाता है, 11 और हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिझा देता, और
आकाश के पझियोंसे अधिक बुद्धि देता है? 12 वे दोहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर
नहीं देता, यह बुरे लोगोंके घमण्ड के कारण होता है। 13 निश्चय ईश्वर व्यर्थ बातें
कभी नहीं सुनता, और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त लगाता है। 14 तो तू
क्योंकहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता, कि यह मुक़द्दमा उसके साम्हने है,
और तू उसकी बाट जोहता हुआ ठहरा है? 15 परन्तु अभी तो उस ने क्रोध करके
दण्ड नहीं दिया है, और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया; 16 इस कारण
अय्यूब व्यर्थ मुंह खोलकर अज्ञानता की बातें बहुत बनाता है।

अय्यूब 36

1 फिर एलीहू ने यह भी कहा, 2 कुछ ठहरा रह, और मैं तुझ को समझाऊंगा,
क्योंकि ईश्वर के पझ में मुझे कुछ और भी कहना है। 3 मैं अपके ज्ञान की बात दूर
से ले आऊंगा, और अपके सिरजनहार को धमीं ठहराऊंगा। 4 निश्चय मेरी बातें
फूठी न होंगी, वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है। 5 देख, ईश्वर सामर्यी है, और
किसी को तुच्छ नहीं जानता; वह समझने की शक्ति में समर्य है। 6 वह दुष्टोंको
जिलाए नहीं रखता, और दीनोंको उनका हक देता है। 7 वह धमिर्योंसे अपक्की
आंखें नहीं फेरता, वरन उनको राजाओं के संग सदा के लिथे सिंहासन पर बैठाता
है, और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं। 8 ओर चाहे वे बेडिय़ोंमें जकड़े जाएं और

दु:ख की रस्सिक्कों बान्धे जाए, 9 तौभी ईश्वर उन पर उनके काम, और उनका
यह अपराध प्रगट करता है, कि उन्होंने गर्व किया है। 10 वह उनके कान शिझा
सुनने के लिथे खोलता है, और आज्ञा देता है कि वे बुराई से पके रहें। 11 यदि वे
सुनकर उसकी सेवा करें, तो वे अपके दिन कल्याण से, और अपके वर्ष सुख से
पूरे करते हैं। 12 परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे खड़्ग से नाश हो जाते हैं, और
अज्ञानता में मरते हैं। 13 परन्तु वे जो मन ही मन भक्तिहीन होकर क्रोध बढ़ाते,
और जब वह उनको बान्धता है, तब भी दोहाई नहीं देते, 14 वे जवानी में मर
जाते हैं और उनका जीवन लूच्चोंके बीच में नाश होता है। 15 वह दुख्यथें को
उनके दु:ख से छुड़ाता है, और उपद्रव में उनका कान खोलता है। 16 परन्तु वह
तुझ को भी क्लेश के मुंह में से निकालकर ऐसे चौड़े स्यान में जहां सकेती नहीं है,
पहुचा देता है, और चिकना चिकना भोजन तेरी मेज पर परोसता है। 17 परन्तु तू
ने दुष्टोंका सा निर्णय किया है इसलिथे निर्णय और न्याय तुझ से लिपके रहते है।
18 देख, तू जलजलाहट से उभर के ठट्ठा मत कर, और न प्रायश्चित्त को अधिक
बड़ा जानकर मार्ग से मुड। 19 क्या तेरा रोना वा तेरा बल तुझे दु:ख से छुटकारा
देगा? 20 उस रात की अभिलाषा न कर, जिस में देश देश के लोग अपके अपके
स्यान से मिटाए जाते हैं। 21 चौकस रह, अनर्य काम की ओर मत फिर, तू ने तो
द:ख से अधिक इसी को चुन लिया है। 22 देख, ईश्वर अपके सामर्ध्य से बड़े बड़े
काम करता है, उसके समान शिझक कौन है? 23 किस ने उसके चलने का मार्ग
ठहराया है? और कौन उस से कह सकता है, कि तू ने अनुचित काम किया है? 24
उसके कामोंकी महिमा और प्रशंसा करने को स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का
गीत मनुष्य गाते चले आए हैं। 25 सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं,

और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है। 26 देख, ईश्वर महान और हमारे ज्ञान से
कहीं पके है, और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है। 27 क्योंकि वह तो जल की बूंदें
ऊपर को खींच लेता है वे कुहरे से मेंह होकर टपकती हैं, 28 वे ऊंचे ऊंचे बादल
उंडेलते हैं और मनुष्योंके ऊपर बहुतायत से बरसाते हैं। 29 फिर क्या कोई
बादलोंका फैलना और उसके मणडल में का गरजना समझ सकता है? 30 देख,
वह अपके उजियाले को चहुँओर फैलाता है, और समुद्र की याह को ढांपता है। 31
क्योंकि वह देश देश के लोगोंका न्याय इन्हीं से करता है, और भोजनवस्तुएं
बहुतायत से देता है। 32 वह बिजली को अपके हाथ में लेकर उसे आज्ञा देता है
कि दुश्मन पर गिरे। 33 इसकी कड़क उसी का समाचार देती है पशु भी प्रगट
करते हैं कि अन्धड़ चढ़ा आता है।

अय्यूब 37

1 फिर इस बात पर भी मेरा ह्रदय कांपता है, और अपके स्यान से उछल पड़ता है।
2 उसके बोलने का शब्द तो सुनो, और उस शब्द को जो उसके मुंह से निकलता है
सुनो। 3 वह उसको सारे आकाश के तले, और अपक्की बिजली को पृय्वी की छोर
तक भेजता है। 4 उसके पीछे गरजने का शब्द होता है; वह अपके प्रतापी शब्द से
गरजता है, और जब उसका शब्द सुनाई देता है तब बिजली लगातार चमकने
लगती है। 5 ईश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भूत रीति से सुनाता है, और बड़े बड़े
काम करता है जिनको हम नहीं समझते। 6 वह तो हिम से कहता है, पृय्वी पर
गिर, और इसी प्रकार मेंह को भी और मूसलाधार वर्षा को भी ऐसी ही आज्ञा देता
है। 7 वह सब मनुष्योंके हाथ पर मुहर कर देता है, जिस से उसके बनाए हुए सब

मनुष्य उसको पहचानें। 8 तब वनपशु गुफाओं में घुस जाते, और अपक्की
अपक्की मांदोंमें रहते हैं। 9 दक्खिन दिशा से बवण्डर और उतरहिया से जाड़ा
आता है। 10 ईश्वर की श्वास की फूंक से बरफ पड़ता है, तब जलाशयोंका पाट जम
जाता है। 11 फिर वह घटाओं को भाफ़ से लादता, और अपक्की बिजली से भरे
हुए उजियाले का बादल दूर तक फैलाता है। 12 वे उसकी बुद्धि की युक्ति से इधर
उधर फिराए जाते हैं, इसलिथे कि जो आज्ञा वह उनको दे, उसी को वे बसाई हुई
पृय्वी के ऊपर पूरी करें। 13 चाहे ताड़ना देने के लिथे, चाहे अपक्की पृय्वी की
भलाई के लिथे वा मनुष्योंपर करुणा करने के लिथे वह उसे भेजे। 14 हे अय्यूब !
इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकमॉ का
विचार कर। 15 क्या तू जानता है, कि ईश्वर क्योंकर अपके बादलोंको आज्ञा देता,
और अपके बादल की बिजली को चमकाता है? 16 क्या तू घटाओं का तौलना, वा
सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है? 17 जब पृय्वी पर दक्खिनी हवा ही के कारण
से सन्नाटा रहता है तब तेरे वस्त्र गर्म हो जाते हैं? 18 फिर क्या तू उसके साय
आकाशमण्डल को तान सकता है, जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है? 19 तू हमें
यह सिखा कि उस से क्या कहना चाहिथे? क्योंकि हम अन्धिक्कारने के कारण
अपना व्याख्यान ठीक नहीं रच सकते। 20 क्या उसको बनाया जाए कि मैं बोलना
चाहता हूँ? क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है? 21 अभी तो आकाशमण्डल में
का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है। 22 उत्तर
दिशा से सुनहली ज्योति आती है ईश्वर भययोग्य तेज से आभूषित है। 23
सर्वशक्तिमान जो अति सामर्यी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय
और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता। 24 इसी कारण सज्जन

उसका भय मानते हैं, और जो अपक्की दृष्टि में बुद्धिमान हैं, उन पर वह दृष्टि नहीं
करता।

अय्यूब 38

1 तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यूं उत्तर दिया, 2 यह कौन है जो अज्ञानता
की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ना चाहता है? 3 पुरुष की नाई अपक्की कमर
बान्ध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे। 4 जब मैं ने पृय्वी
की नेव डाली, तब तू कहां या? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे। 5 उसकी नाप
किस ने ठहराई, क्या तू जानता है उस पर किस ने सूत खींचा? 6 उसकी नेव कौन
सी वस्तु पर रखी गई, वा किस ने उसके कोने का पत्यर लिठाया, 7 जब कि भोर
के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते
थे? 8 फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला, तब किस
ने द्वार मूंदकर उसको रोक दिया; 9 जब कि मैं ने उसको बादल पहिनाया और घोर
अन्धकार में लमेट दिया, 10 और उसके लिथे सिवाना बान्धा और यह कहकर
बेंड़े और किवाड़े लगा दिए, कि 11 यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी
उमंडनेवाली लहरें यहीं यम जाएं? 12 क्या तू ने जीवन भर में कभी भोर को आज्ञा
दी, और पौ को उसका स्यान जताया है, 13 ताकि वह पृय्वी की छोरोंको वश में
करे, और दुष्ट लोग उस में से फाड़ दिए जाएं? 14 वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर
के नीचे चिकनी मिट्टी बदलती है, और सब वस्तुएं मानो वस्त्र पहिने हुए दिखाई
देती हैं। 15 दुष्टोंसे उनका उजियाला रोक लिया जाता है, और उनकी बढ़ाई हुई
बांह तोड़ी जाती है। 16 क्या तू कभी समुद्र के सोतोंतक पहुंचा है, वा गहिरे सागर

की याह में कभी चला फिरा है? 17 क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट हुए, क्या
तू घोर अन्धकार के फाटकोंको कभी देखन पाया है? 18 क्या तू ने पृथ्वी की
चौड़ाई को पूरी रीति से समझ लिया है? यदि तू यह सब जानता है, तो बतला दे।
19 उजियाले के निवास का मार्ग कहां है, और अन्धिक्कारने का स्यान कहां है?
20 क्या तू उसे उसके सिवाने तक हटा सकता है, और उसके घर की डगर
पहिचान सकता है? 21 नि:सन्देह तू यह सब कुछ जानता होगा ! क्योंकि तू तो
उस समय उत्पन्न हुआ या, और तू बहुत आयु का है। 22 फिर क्या तू कभी हिम
के भणडार में पैठा, वा कभी ओलोंके भणडार को तू ने देखा है, 23 जिसको मैं ने
संकट के समय और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिथे रख छोड़ा है? 24 किस मार्ग
से उजियाला फैलाया जाता है, ओर पुरवाई पृय्वी पर बहाई जाती है? 25 महावृष्टि
के लिथे किस ने नाला काटा, और कड़कनेवाली बिजली के लिथे मार्ग बनाया है,
26 कि निर्जन देश में और जंगल में जहां कोई मनुष्य नहीं रहता मेंह बरसाकर,
27 उजाड़ ही उजाड़ देश को सींचे, और हरी घास उगाए? 28 क्या मेंह का कोई
पिता है, और ओस की बूंदें किस ने उत्पन्न की? 29 किस के गर्भ से बर्फ निकला
है, और आकाश से गिरे हुए पाले को कौन उत्पन्न करता है? 30 जल पत्यर के
समान जम जाता है, और गहिरे पानी के ऊपर जमावट होती है। 31 क्या तू
कचपचिया का गुच्छा गूंय सकता वा मृगशिरा के बन्धन खोल सकता है? 32
क्या तू राशियोंको ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता, वा सप्तषिर् को
सायियोंसमेत लिए चल सकता है? 33 क्या तू आकाशमणडल की विधियां
जानता और पृथ्वी पर उनका अधिक्कारने ठहरा सकता है? 34 क्या तू
बादलोंतक अपक्की वाणी पहुंचा सकता है ताकि बहुत जल बरस कर तुझे छिपा

ले? 35 क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है, कि वह जाए, और तुझ से कहे, मैं
उपस्थित हूँ? 36 किस ने अन्त:करण में बुद्धि उपजाई, और मन में समझने की
शक्ति किस ने दी है? 37 कौन बुद्धि से बादलोंको गिन सकता है? और कौन
आकाश के कुप्पोंको उण्डेल सकता है, 38 जब धूलि जम जाती है, और ढेले एक
दूसरे से सट जाते हैं? 39 क्या तू सिंहनी के लिथे अहेर पकड़ सकता, और जवान
सिंहोंका पेट भर सकता है, 40 जब वे मांद में बैठे होंऔर आड़ में घात लगाए
दबक कर बैठे हों? 41 फिर जब कौवे के बच्चे ईश्वर की दोहाई देते हुए निराहार
उड़ते फिरते हैं, तब उनको आहार कौन देता है?

अय्यूब 39

1 क्या तू जानता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियां कब बच्चे देती हैं? वा जब
हरिणियां बियाती हैं, तब क्या तू देखता रहता है? 2 क्या तू उनके महीने गिन
सकता है, क्या तू उनके बियाने का समय जानता है? 3 जब वे बैठकर अपके
बच्चोंको जनतीं, वे अपक्की पीड़ोंसे छूट जाती हैं? 4 उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होकर
मैदान में बढ़ जाते हैं; वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते। 5 किस ने बनैले
गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है? किस ने उसके बन्धन खोले हैं? 6 उसका
घर मैं ने निर्जल देश को, और उसका निवास लोनिया भूमि को ठहराया है। 7 वह
नगर के कोलाहल पर हंसता, और हांकनेवाले की हांक सुनता भी नहीं। 8
पहाड़ोंपर जो कुछ मिलता है उसे वह चरता वह सब भांति की हरियाली ढूंढ़ता
फिरता है। 9 क्या जंगली सांढ़ तेरा काम करने को प्रसन्न होगा? क्या वह तेरी
चरनी के पास रहेगा? 10 क्या तू जंगली सांढ़ को रस्से से बान्धकर रेघारियोंमें

चला सकता है? क्या वह नालोंमें तेरे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा? 11 क्या तू उसके बड़े
बल के कारण उस पर भरोसा करेगा? वा जो परिश्रम का काम तेरा हो, क्या तू उसे
उस पर छोड़ेगा? 12 क्या तू उसका विश्वास करेगा, कि वह तेरा अनाज घर ले
आए, और तेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा करे? 13 फिर शुतुरमुर्गी अपके
पंखोंको आनन्द से फुलाती है, परन्तु क्या थे पंख और पर स्नेह को प्रगट करते
हैं? 14 क्योंकि वह तो अपके अण्डे भूमि पर छोड़ देती और धूलि में उन्हें गर्म
करती है; 15 और इसकी सुधि नहीं रखती, कि वे पांव से कुचले जाएंगे, वा कोई
वनपशु उनको कुचल डालेगा। 16 वह अपके बच्चोंसे ऐसी कठोरता करती है कि
मानो उसके नहीं हैं; यद्यपि उसका कष्ट अकारय होता है, तौभी वह निश्चिन्त रहती
है; 17 क्योंकि ईश्वर ने उसको बुद्धिरहित बनाया, और उसे समझने की शक्ति नहीं
दी। 18 जिस समय वह सीधी होकर अपके पंख फैलाती है, तब घोड़े और उसके
सवार दोनोंको कुछ नहीं समझती है। 19 क्या तू ने घोड़े को उसका बल दिया है?
क्या तू ने उसकी गर्दन में फहराती हुई अयाल जमाई है? 20 क्या उसको टिड्डी
की सी उछलने की शक्ति तू देता है? उसके फुंक्कारने का शब्द डरावना होता है।
21 वह तराई में टाप मारता है और अपके बल से हर्षित रहता है, वह
हथियारबन्दोंका साम्हना करने को निकल पड़ता है। 22 वह डर की बात पर
हंसता, और नहीं घबराता; और तलवार से पीछे नहीं हटता। 23 तर्कश और
चमकता हुआ सांग ओर भाला उस पर खड़खड़ाता है। 24 वह रिस और क्रोध के
मारे भूमि को निगलता है; जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता है तब वह रुकता
नहीं। 25 जब जब नरसिंगा बजता तब तब वह हिन हिन करता है, और लड़ाई
और अफसरोंकी ललकार और जय-जयकार को दूर से सूंध लेता हे। 26 क्या तेरे

समझाने से बाज़ उड़ता है, और दक्खिन की ओर उड़ने को अपके पंख फैलाता है?
27 क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़ जाता है, और ऊंचे स्यान पर अपना
घोंसला बनाता है? 28 वह चट्टान पर रहता और चट्टान की चोटी और दृढ़स्यान
पर बसेरा करता है। 29 वह अपक्की आंखोंसे दूर तक देखता है, वहां से वह अपके
अहेर को ताक लेता है। 30 उसके बच्चे भी लोहू चूसते हैं; और जहां घात किए हुए
लोग होते वहां वह भी होता है।

अय्यूब 40

1 फिर यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा: 2 क्या जो बकवास करता है वह
सर्वशक्तिमान से फगड़ा करे? जो ईश्वर से विवाद करता है वह इसका उत्तर दे। 3
तब अय्यूब ते यहोवा को उत्तर दिया: 4 देख, मैं तो तुच्छ हूँ, मैं तुझे क्या उत्तर दूं?
मैं अपक्की अंगुली दांत तले दबाता हूँ। 5 एक बार तो मैं कह चुका, परन्तु और
कुछ न कहूंगा: हां दो बार भी मैं कह चुका, परन्तु अब कुछ और आगे न बढ़ूंगा। 6
तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यह उत्तर दिया: 7 पुरुष की नाई अपक्की
कमर बान्ध ले, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे बता। 8 क्या तू मेरा न्याय
भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी
ठहराएगा? 9 क्या तेरा बाहुबल ईश्वर के तुल्य है? क्या तू उसके समान शब्द से
गरज सकता है? 10 अब अपके को महिमा और प्रताप से संवार और ऐश्वर्य्य और
तेज के वस्त्र पहिन ले। 11 अपके अति क्रोध की बाढ़ को बहा दे, और एक एक
घमण्डी को देखते ही उसे नीचा कर। 12 हर एक घमण्डी को देखकर फुका दे,
और दुष्ट लोगोंको जहां खड़े होंवहां से गिरा दे। 13 उनको एक संग मिट्टी में मिला

दे, और उस गुप्त स्यान में उनके मुंह बान्ध दे। 14 तब मैं भी तेरे विषय में मान
लूंगा, कि तेरा ही दहिना हाथ तेरा उद्वार कर सकता है। 15 उस जलगज को देख,
जिसको मैं ने तेरे साय बनाया है, वह बैल की नाई घास खाता है। 16 देख उसकी
कटि में बल है, और उसके पेट के पट्ठोंमें उसकी सामर्य्य रहती है। 17 वह
अपक्की पूंछ को देवदार की नाई हिलाता है; उसकी जांधोंकी नसें एक दूसरे से
मिली हुई हैं। 18 उसकी हट्टियां मानो पीतल की नलियां हैं, उसकी पसुलियां
मानो लोहे के बेंड़े हैं। 19 वह ईश्वर का मुख्य कार्य है; जो उसका सिरजनहार हो
उसके निकट तलवार लेकर आए ! 20 निश्चय पहाड़ोंपर उसका चारा मिलता है,
जहां और सब वनपशु कालोल करते हैं। 21 वह छतनार वृझोंके तले नरकटोंकी
आड़ में और कीच पर लेटा करता है 22 छतनार वृझ उस पर छाया करते हैं, वह
नाले के बेंत के वृझोंसे घिरा रहता है। 23 चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह न
घबराएगा, चाहे यरदन भी बढ़कर उसके मुंह तक आए परन्तु वह निर्भय रहेगा।
24 जब वह चौकस हो तब क्या कोई उसको पकड़ सकेगा, वा फन्दे लगाकर
उसको नाय सकेगा?

अय्यूब 41

1 फिर क्या तू लिब्यातान अयवा मगर को बंसी के द्वारा खींच सकता है, वा डोरी
से उसकी जीभ दबा सकता है? 2 क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता वा
उसका जबड़ा कील से बेध सकता है? 3 क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट
करेगा, वा तुझ से मीठी बातें बोलेगा? 4 क्या वह तुझ से वाचा बान्ध्ेगा कि वह
सदा तेरा दास रहे? 5 क्या तू उस से ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, वा अपक्की

लड़कियोंका जी बहलाने को उसे बान्ध रखेगा? 6 क्या मछुओं के दल उसे बिकाऊ
माल समझेंगे? क्या वह उसे व्योपारियोंमें बांट देंगे? 7 क्या तू उसका चमड़ा भाले
से, वा उसका सिर मछुवे के तिरशूलोंसे भर सकता है? 8 तू उस पर अपना हाथ ही
धरे, तो लड़ाई को कभी न भूलेगा, और भविष्य में कभी ऐसा न करेगा। 9 देख,
उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है; उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता
है। 10 कोई ऐसा साहसी नहीं, जो उसको भड़काए; फिर ऐसा कौन है जो मेरे
साम्हने ठहर सके? 11 किस ने पुफे पहिले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पके
! देख, जो कुछ सारी धरती पर है सो मेरा है। 12 मैं उसके अंगोंके विषय, और
उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूंगा। 13 उसके
ऊपर के पहिरावे को कौन उतार सकता है? उसके दांतोंकी दोनोंपांतियोंके अर्यात्
जबड़ोंके बीच कौन आएगा? 14 उसके मुख के दोनोंकिवाड़ कौन खोल सकता है?
उसके दांत चारोंओर से डरावने हैं। 15 उसके छिलकोंकी रेखाएं घमण्ड का कारण
हैं; वे मानो कड़ी छाप से बन्द किए हुए हैं। 16 वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं, कि
उन में कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती। 17 वे आपस में मिले हुए और ऐसे सटे हुए
हैं, कि अलग अलग नहीं हो सकते। 18 फिर उसके छींकने से उजियाला चमक
उठता है, और उसकी आंखें भोर की पलकोंके समान हैं। 19 उसके मुंह से जलते
हुए पक्कीते निकलते हैं, और आग की चिनगारियां छूटती हैं। 20 उसके
नय्ुानोंसे ऐसा धुआं निकलता है, जैसा खौलती हुई हांड़ी और जलते हुए
नरकटोंसे। 21 उसकी सांस से कोयले सुलगते, और उसके मुंह से आग की लौ
निकलती है। 22 उसकी गर्दन में सामर्य्य बनी रहती है, और उसके साम्हने डर
नाचता रहता है। 23 उसके मांस पर मांस चढ़ा हुआ है, और ऐसा आपस में सटा

हुआ है जो हिल नहीं सकता। 24 उसका हृदय पत्यर सा दृढ़ है, वरन चक्की के
निचले पाट के समान दृढ़ है। 25 जब वह उठने लगता है, तब सामर्यी भी डर जाते
हैं, और डर के मारे उनकी सुध बुध लोप हो जाती है। 26 यदि कोई उस पर
तलवार चलाए, तो उस से कुछ न बन पकेगा; और न भाले और न बर्छी और न
तीर से। 27 वह लोहे को पुआल सा, और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है। 28
वह तीर से भगाया नहीं जाता, गोफन के पत्यर उसके लिथे भूसे से ठहरते हैं। 29
लाठियां भी भूसे के समान गिनी जाती हैं; वह बर्छी के चलने पर हंसता है। 30
उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं, कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है। 31
वह गहिरे जल को हंडे की नाई मय्ता है: उसके कारण नील नदी मरहम की हांडी
के समान होती है। 32 वह अपके पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है। गहिरा
जल मानो श्वेत दिखाई देने लगता है। 33 धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है,
जो ऐसा निर्भय बनाया गया है। 34 जो कुछ ऊंचा है, उसे वह ताकता ही रहता है,
वह सब घमण्डियोंके ऊपर राजा है।

अय्यूब 42

1 तब अय्यूब यहोवा को उत्तर दिया; 2 मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है,
और तेरी युक्तियोंमें से कोई रुक नहीं सकती। 3 तू कौन है जो ज्ञान रहित होकर
युक्ति पर परदा डालता है? परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता या वही कहा, अर्यात्
जो बातें मेरे लिथे अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर यीं जिनको मैं जानता
भी नहीं या। 4 मैं निवेदन करता हूं सुन, मैं कुछ कहूंगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ,
तू मुझे बता दे। 5 मैं कानोंसे तेरा समाचार सुना या, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे

देखती हैं; 6 इसलिथे मुझे अपके ऊपर घृणा आती है, और मैं धूलि और राख में
पश्चात्ताप करता हूँ। 7 और ऐसा हुआ कि जब यहोवा थे बातें अय्यूब से कह चुका,
तब उस ने तेमानी एलीपज से कहा, मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनोंमित्रोंपर भड़का
है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम
लोगोंने नहीं कही। 8 इसलिथे अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छांटकर मेरे दास
अय्यूब के पास जाकर अपके निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब
तुम्हारे लिथे प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की मैं ग्रहण करूंगा; और नहीं, तो मैं
तुम से तुम्हारी मूढता के योग्य बर्ताव करूंगा, क्योंकि तुम लोगोंने मेरे विषय मेरे
दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही। 9 यह सुन तेमानी एलीपज, शूही
बिल्दद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आाज्ञा के अनुसार किया, और
यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण की। 10 जब अय्यूब ने अपके मित्रोंके लिथे
प्रार्थना की, तब यहोरवा ने उसका सारा दु:ख दूर किया, और जितना अय्यूब का
पहिले या, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया। 11 तब उसके सब भाई, और सब
बहिनें, और जितने पहिले उसको जानते पहिचानते थे, उन सभोंने आकर उसके
यहां उसके संग भोजन किया; और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली यी,
उस सब के विषय उन्होंने विलाप किया, और उसे शान्ति दी; और उसे एक एक
सिक्का ओर सोने की एक एक बाली दी। 12 और यहोवा ने अय्यूब के पिछले
दिनोंमें उसको अगले दिनोंसे अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हजार भेंड़
बकरियां, छ:हजार ऊंट, हजार जोड़ी बैल, और हजार गदहियां हो गई। 13 और
उसके सात बेटे ओर तीन बेटियां भी उत्पन्न हुई। 14 इन में से उस ने जेठी बेटी
का नाम तो यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का केरेन्हप्पूक रखा। 15 और

उस सारे देश में एंसी स्त्रियां कहीं न यीं, जो अय्यूब की बेटियोंके समान सुन्दर हों,
और उनके पिता ने उनको उनके भाइयोंके संग ही सम्पत्ति दी। 16 इसके बाद
अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने
पाया। 17 निदान अय्यूब वृद्धावस्या में दीर्घायु होकर मर गया।

भजन संहिता 1

1 क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टोंकी युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियोंके
मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालोंकी मण्डली में बैठता है! 2 परन्तु वह
तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन
ध्यान करता रहता है। 3 वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियोंके किनारे
लगाया गया है। और अपक्की ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते
नहीं। इसलिथे जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।। 4 दुष्ट लोग ऐसे नहीं
होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। 5 इस कारण दुष्ट
लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियोंकी मण्डली में ठहरेंगे; 6
क्योंकि यहोवा धर्मियोंका मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टोंका मार्ग नाश हो जाएगा।।

भजन संहिता 2

1 जाति जाति के लोग क्योंहुल्लड़ मचाते हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें
क्योंसोच रहे हैं? 2 यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरूद्ध पृथ्वी के राजा
मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि 3 आओ, हम उनके
बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सिक्कों अपके ऊपर से उतार फेंके।। 4 वह जो

स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा, प्रभु उनको ठट्ठोंमें उड़ाएगा। 5 तब वह उन से
क्रोध करके बातें करेगा, और क्रोध में कहकर उन्हें घबरा देगा, कि 6 मैं तो अपके
ठहराए हुए राजा को अपके पवित्रा पर्वत सिरयोन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूं। 7
मैं उस वचन का प्रचार करूंगा: जो यहोवा ने मुझ से कहा, तू मेरा पुत्रा है, आज तू
मुझ से उत्पन्न हुआ। 8 मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगोंको तेरी
सम्पत्ति होने के लिथे, और दूर दूर के देशोंको तेरी निज भूमि बनने के लिथे दे
दूंगा। 9 तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा। तू कुम्हार के बर्तन की नाईं
उन्हें चकना चूर कर डालेगा।। 10 इसलिथे अब, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो; हे
पृथ्वी के न्यायियों, यह उपकेश ग्रहण करो। 11 डरते हुए यहोवा की उपासना
करो, और कांपके हुए मगन हो। 12 पुत्रा को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे,
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ; क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को
है।। धन्य है वे जिनका भरोसा उस पर है।।

भजन संहिता 3

1 हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं! वह जो मेरे विरूद्ध उठते हैं बहुत हैं।
2 बहुत से मेरे प्राण के विषय में कहते हैं, कि उसका बचाव परमेश्वर की आरे से
नहीं हो सकता। 3 परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारोंओर मेरी ढ़ाल है, तू मेरी
महिमा और मेरे मस्तिष्क का ऊंचा करनेवाला है। 4 मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को
पुकारता हूं, और वह अपके पवित्रा पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। 5 मैं लेटकर सो
गया; फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्हालता है। 6 मैं उन दस हजार
मनुष्योंसे नहीं डरता, जो मेरे विरूद्ध चारोंओर पांति बान्धे खड़े हैं।। 7 उठ, हे

यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले! क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ोंपर
मारा है और तू ने दुष्टोंके दांत तोड़ डाले हैं।। 8 उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है;
हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो।।

भजन संहिता 4

1 हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूं तब तू मुझे उत्तर दे; जब मैं सकेती में
पड़ा तब तू ने मुझे विस्तार दिया। मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन
ले।। 2 हे मनुष्योंके पुत्रों, कब तक मेरी महिमा के बदले अनादर होता रहेगा? तुम
कब तक व्यर्थ बातोंसे प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे? 3 यह
जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपके लिथे अलग कर रखा है; जब मैं यहोवा को
पुकारूंगा तब वह सुन लेगा।। 4 कांपके रहो और पाप मत करो; अपके अपके
बिछौने पर मन ही मन सोचो और चुपचाप रहो। 5 धर्म के बलिदान चढ़ाओ, और
यहोवा पर भरोसा रखो।। 6 बहुत से हैं जो कहते हैं, कि कौन हम को कुछ भलाई
दिखाएगा? हे यहोवा तू अपके मुख का प्रकाश हम पर चमका! 7 तू ने मेरे मन में
उस से कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती
से होती थी। 8 मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि, हे यहोवा,
केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है।।

भजन संहिता 5

1 हे यहोवा, मेरे वचनोंपर कान लगा; मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा। 2 हे मेरे
राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दोहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता

हूं। 3 हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी
बाट जोहूंगा। 4 क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो; बुराई तेरे साथ
नहीं रह सकती। 5 घमंडी तेरे सम्मुख खड़े होने न पांएगे; तुझे सब
अनर्थकारियोंसे घृणा है। 6 तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश करेगा; यहोवा तो
हत्यारे और छली मनुष्य से घृणा करता है। 7 परन्तु मैं तो तेरी अपार करूणा के
कारण तेरे भवन में आऊंगा, मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्रा मन्दिर की ओर
दण्डवत् करूंगा। 8 हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण अपके धर्म के मार्ग में मेरी
अगुवाई कर; मेरे आगे आगे अपके सीधे मार्ग को दिखा। 9 क्योंकि उनके मुंह में
कोई सच्चाई नहीं; उनके मन में निरी दुष्टता है। उनका गला खुली हुई कब्र है, वे
अपक्की जीभ से चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं। 10 हे परमेश्वर तू उनको दोषी
ठहरा; वे अपक्की ही युक्तियोंसे आप ही गिर जाएं; उनको उनके अपराधोंकी
अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर, क्योंकि उन्होंने तुझ से बलवा किया है।।
11 परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वदा ऊंचे स्वर
से गाते रहें; क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है, और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ में
प्रफुल्लित हों। 12 क्योंकि तू धर्मी को आशिष देगा; हे यहोवा, तू उसको अपके
अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा।।

भजन संहिता 6

1 हे यहोवा, तू मुझे अपके क्रोध में न डांट, और न झुंझलाहट में मुझे ताड़ना दे। 2
हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूं; हे यहोवा, मुझे चंगा
कर, क्योंकि मेरी हड्डियोंमें बेचैनी है। 3 मेरा प्राण भी बहुत खेदित है। और तू, हे

यहोवा, कब तक? 4 लौट आ, हे यहोवा, और मेरे प्राण बचा अपक्की करूणा के
निमित्त मेरा उद्धार कर। 5 क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक
में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? 6 मैं कराहते कराहते थक गया; मैं अपक्की खाट
आंसुओं से भिगोता हूं; प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है। 7 मेरी आंखें शोक से
बैठी जाती हैं, और मेरे सब सतानेवालोंके कारण वे धुन्धला गई हैं।। 8 हे सब
अनर्थकारियो मेरे पास से दूर हो; क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया
है। 9 यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है; यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा।
10 मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत घबराएंगे; वे लौट जाएंगे, और एकाएक
लज्जित होंगे।।

भजन संहिता 7

1 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है; सब पीछा करनेवालोंसे मुझे
बचा और छुटकारा दे, 2 ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह की नाई फाड़कर टुकड़े
टुकड़े कर डालें; और कोई मेरा छुड़ानेवाला न हो।। 3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि
मैं ने यह किया हो, यदि मेरे हाथोंसे कुटिल काम हुआ हो, 4 यदि मैं ने अपके मेल
रखनेवालोंसे भलाई के बदले बुराई की हो, (वरन मैं ने उसको जो अकारण मेरा
बैरी था बचाया है) 5 तो शत्रु मेरे प्राण का पीछा करके मुझे आ पकड़े, वरन मेरे
प्राण को भूमि पर रौंदे, और मेरी महिमा को मिट्टी में मिला दे।। 6 हे यहोवा क्रोध
करके उठ; मेरे क्रोधभरे सतानेवाले के विरूद्ध तू खड़ा हो जा; मेरे लिथे जाग! तू ने
न्याय की आज्ञा तो दे दी है। 7 देश देश के लोगोंकी मण्डली तेरे चारोंओर हो; और
तू उनके ऊपर से होकर ऊंचे स्थानोंपर लौट जा। 8 यहोवा समाज समाज का

न्याय करता है; यहोवा मेरे धर्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।। 9
भला हो कि दुष्टोंकी बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्म को तू स्थिर कर; क्योंकि
धर्मी परमेश्वर मन और मर्म का ज्ञाता है। 10 मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है, वह
सीधे मनवालोंको बचाता है।। 11 परमेश्वर धर्मी और न्यायी है, वरन ऐसा ईश्वर है
जो प्रति दिन क्रोध करता है।। 12 यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपक्की तलवार
पर सान चढ़ाएगा; वह अपना धनुष चढ़ाकर तीर सन्धान चुका है। 13 और उस
मनुष्य के लिथे उस ने मृत्यु के हथियार तैयार कर लिए हैं: वह अपके तीरोंको
अग्निबाण बनाता है। 14 देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएं हो रही हैं, उसको
उत्पात का गर्भ है, और उस से झूठ उत्पन्न हुआ। उस ने गड़हा खोदकर उसे
गहिरा किया, 15 और जो खाई उस ने बनाई थी उस में वह आप ही गिरा। 16
उसका उत्पात पलट कर उसी के सिर पर पकेगा; और उसका उपद्रव उसी के
माथे पर पकेगा।। 17 मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूंगा, और
परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा।।

भजन संहिता 8

1 हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना
विभव स्वर्ग पर दिखाया है। 2 तू ने अपके बैरियोंके कारण बच्चोंऔर दूध
पिउवोंके द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालोंको रोक
रखे। 3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथोंका कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को
जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; 4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण
रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? 5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर

से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा
है। 6 तू ने उसे अपके हाथोंके कार्योंपर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ
कर दिया है। 7 सब भेड़- बकरी और गाय- बैल और जितने वनपशु हैं, 8 आकाश
के पक्षी और समुद्र की मछलियां, और जितने जीव- जन्तु समुद्रोंमें चलते फिरते
हैं। 9 हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है।।

भजन संहिता 9

1 हे यहोवा परमेश्वर मैं अपके पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूंगा; मैं तेरे सब
आश्चर्य कर्मोंका वर्णन करूंगा। 2 मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊंगा,
हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा।। 3 जब मेरे शत्रु पीछे हटते हैं, तो वे
तेरे साम्हने से ठोकर खाकर नाश होते हैं। 4 क्योंकि तू ने मेरा न्याय और मुक मा
चुकाया है; तू ने सिंहासन पर विराजमान होकर धर्म से न्याय किया। 5 तू ने
अन्यजातियोंको झिड़का और दुष्ट को नाश किया है; तू ने उनका नाम
अनन्तकाल के लिथे मिटा दिया है। 6 शत्रु जो है, वह मर गए, वे अनन्तकाल के
लिथे उजड़ गए हैं; और जिन नगरोंको तू ने ढा दिया, उनका नाम वा निशान भी
मिट गया है। 7 परन्तु यहोवा सदैव सिंहासन पर विराजमान है, उस ने अपना
सिंहासन न्याय के लिथे सिद्ध किया है; 8 और वह आप ही जगत का न्याय धर्म
से करेगा, वह देश देश के लोगोंका मुक मा खराई से निपटाएगा।। 9 यहोवा पिसे
हुओं के लिथे ऊंचा गढ़ ठहरेगा, वह संकट के समय के लिथे भी ऊंचा गढ़ ठहरेगा।
10 और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ पर भरोसा रखेंगे, क्योंकि हे यहोवा तू ने
अपके खोजियोंको त्याग नहीं दिया।। 11 यहोवा जो सिरयोन में विराजमान है,

उसका भजन गाओ! जाति जाति के लोगोंके बीच में उसके महाकर्मोंका प्रचार
करो! 12 क्योंकि खून का पलटा लेनेवाला उनको स्मरण करता है; वह दीन
लोगोंकी दोहाई को भूलता।। 13 हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर। तू जो मुझे मृत्यु
के फाटकोंके पास से उठाता है, मेरे दु:ख को देख जो मेरे बैरी मुझे दे रहे हैं; 14
ताकि मैं सिरयोन के फाटकोंके पास तेरे सब गुणोंका वर्णन करूं, और तेरे किए
हुए उद्धार से मगन होऊं।। 15 अन्य जातिवालोंने जो गड़हा खोदा था, उसी में वे
आप गिर पके; जो जाल उन्होंने लगाया था, उस में उन्हीं का पांव फंस गया। 16
यहोवा ने अपके को प्रगट किया, उस ने न्याय किया है; दुष्ट अपके किए हुए
कामोंमें फंस जाता है। 17 दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी
जा परमेश्वर को भूल जाती है। 18 क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए
न रहेंगे, और न तो नम्र लोगोंकी आशा सर्वदा के लिथे नाश होगी। 19 उठ, हे
परमेश्वर, मनुष्य प्रबल न होने पाए! जातियोंका न्याय तेरे सम्मुख किया जाए।
20 हे परमेश्वर, उनको भय दिला! जातियां अपके को मनुष्यमात्रा ही जानें।

भजन संहिता 10

1 हे यहोवा तू क्योंदूर खड़ा रहता है? संकट के समय में क्योंछिपा रहता है? 2
दुष्टोंके अहंकार के कारण दी मनुष्य खदेड़े जाते हैं; वे अपक्की ही निकाली हुई
युक्तियोंमें फंस जाएं।। 3 क्योंकि दुष्ट अपक्की अभिलाषा पर घमण्ड करता है,
और लोभी परमेश्वर को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता है।। 4 दुष्ट
अपके अभिमान के कारण कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का; उसका पूरा विचार
यही है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।। 5 वह अपके मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता

है; तेरे न्याय के विचार ऐसे ऊंचे पर होते हैं, कि उसकी दृष्टि वहां तक नहीं
पहुंचक्की; जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह फुंकारता है। 6 वह अपके मन में
कहता है कि मैं कभी टलने का नहीं: मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दु:ख से बचा रहूंगा।। 7
उसका मुंह शाप और छल और अन्धेर से भरा है; उत्पात और अनर्थ की बातें
उसके मुंह में हैं। 8 वह गांवोंके घतोंमें बैठा करता है, और गुप्त स्थानोंमें निर्दोष को
घात करता है, उसकी आंखे लाचार की घात में लगी रहती है। 9 जैसा सिंह
अपक्की झाड़ी में वैसा ही वह भी छिपकर घात में बैठा करता है; वह दीन को
पकड़ने के लिथे घात लगाए रहता है, 10 वह दीन को अपके जाल में फंसाकर
घसीट लाता है, तब उसे पकड़ लेता है। 11 वह झुक जाता है और वह दबक कर
बैठता है; और लाचार लोग उसके महाबली हाथोंसे पटके जाते हैं। 12 वह अपके
मन में सोचता है, कि ईश्वर भूल गया, वह अपना मुंह छिपाता है; वह कभी नहीं
देखेगा।। 13 उठ, हे यहोवा; हे ईश्वर, अपना हाथ बढ़ा; और दीनोंको न भूल। 14
परमेश्वर को दुष्ट क्योंतुच्छ जानता है, और अपके मन में कहता है कि तू लेखा न
लेगा? 15 तू ने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और कलपाने पर दुष्टि रखता है,
ताकि उसका पलटा अपके हाथ में रखे; लाचार अपके को तेरे हाथ में सौंपता है;
अनाथोंका तू ही सहाथक रहा है। दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल; 16 यहोवा
अनन्तकाल के लिथे महाराज है; उसके देश में से अन्यजाति लोग नाश हो गए
हैं।। 17 हे यहोवा, तू ने नम्र लोगोंकी अभिलाषा सुनी है; तू उनका मन तैयार
करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा 18 कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे, ताकि
मनुष्य जो मिट्टी से बना है फिर भय दिखाने न पाए।।

भजन संहिता 11

1 मेरा भरोसा परमेश्वर पर है; तुम क्योंकि मेरे प्राण से कहते हो कि पक्षी की नाई
अपके पहाड़ पर उड़ जा? 2 क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं, और अपना
तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं, कि सीधे मनवालोंपर अन्धिक्कारने में तीर
चलाएं। 3 यदि नेवें ढ़ा दी जाएं तो धर्मी क्या कर सकता है? 4 परमेश्वर अपके
पवित्रा भवन में है; परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में है; उसकी आंखें मनुष्य की
सन्तान को नित देखती रहती हैं और उसकी पलकें उनको जांचक्की हैं। 5 यहोवा
धर्मी को परखता है, परन्तु वह उन से जो दुष्ट हैं और उपद्रव से प्रीति रखते हैं
अपक्की आत्मा में घृणा करता है। 6 वह दुष्टोंपर फन्दे बरसाएगा; आग और
गन्धक और प्रचण्ड लूह उनके कटोरोंमें बांट दी जाएंगी। 7 क्योंकि यहोवा धर्मी
है, वह धर्म के ही कामोंसे प्रसन्न रहता है; धर्मीजन उसका दर्शन पाएंगे।।

भजन संहिता 12

1 हे परमेश्वर बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्योंमें से विश्वासयोग्य
लाग मर मिटे हैं। 2 उन में से प्रत्थेक अपके पड़ोसी से झूठी बातें कहता है; वे
चापलूसी के ओठोंसे दो रंगी बातें करते हैं।। 3 प्रभु सब चापलूस ओठोंको और उस
जीभ को जिस से बड़ा बोल निकलता है काट डालेगा। 4 वे कहते हैं कि हम
अपक्की जीभ ही से जीतेंगे, हमारे ओंठ हमारे ही वश में हैं; हमार प्रभु कौन है? 5
दी लोगोंके लुट जाने, और दरिद्रोंके कराहने के कारण, परमेश्वर कहता है, अब मैं
उठूंगा, जिस पर वे फुंकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूंगा। 6 परमेश्वर का वचन
पवित्रा है, उस चान्दि के समान जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार
निर्मल की गई हो।। 7 तू ही हे परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा, उनको इस काल के

लोगोंसे सर्वदा के लिथे बचाए रखेगा। 8 जब मनुष्योंमें नीचपन का आदर होता है,
तब दुष्ट लोग चारोंओर अकड़ते फिरते हैं।।

भजन संहिता 13

1 हे परमेश्वर तू कब तक? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना मुखड़ा
मुझ से छिपाए रहेगा? 2 मैं कब तक अपके मन ही मन में युक्तियां करता रहूं,
और दिन भर अपके हृदय में दुखित रहा करूं, कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल
रहेगा? 3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे, मेरी
आंखोंमें ज्योति आने दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी; 4 ऐसा न हो कि
मेरा शत्रु कहे, कि मैं उस पर प्रबल हो गया; और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने
लगूं तो मेरे शत्रु मगन हों।। 5 परन्तु मैं ने तो तेरी करूणा पर भरोसा रखा है; मेरा
हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा। 6 मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊंगा, क्योंकि
उस ने मेरी भलाई की है।।

भजन संहिता 14

1 मूर्ख ने अपके मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होंने
घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं। 2 परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्योंपर दृष्टि
की है, कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। 3 वे सब के
सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। 4 क्या किसी
अनर्थकारी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता, जो मेरे लोगोंको ऐसे खा जाते हैं जैसे
रोटी, और परमेश्वर का नाम नहीं लेते? 5 वहां उन पर भय छा गया, क्योंकि

परमेश्वर धर्मी लोगोंके बीच में निरन्तर रहता है। 6 तुम तो दीन की युक्ति की हंसी
उड़ाते हो इसलिथे कि यहोवा उसका शरणस्थान है। 7 भला हो कि इस्राएल का
उद्धार सिरयोन से प्रगट होता! जब यहोवा अपक्की प्रजा को दासत्व से लौटा ले
आएगा, तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा।।

भजन संहिता 15

1 हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्रा पर्वत पर कौन बसने पाएगा? 2
वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है;
3 जो अपक्की जीभ से निन्दा नहीं करता, और न अपके मित्रा की बुराई करता,
और न अपके पड़ोसी की निन्दा सुनता है; 4 वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य
तुच्छ है, और जो यहोवा के डरवैयोंका आदर करता है, जो शपथ खाकर बदलता
नहीं चाहे हानि उठाना पके; 5 जो अपना रूपया ब्याज पर नहीं देता, और निर्दोष
की हानि करने के लिथे घूस नहीं लेता है। जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न
डगमगाएगा।।

भजन संहिता 16

1 हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूं। 2 मैं ने परमेश्वर से कहा
है, कि तू ही मेरा प्रभु है; तेरे सिवाए मेरी भलाई कहीं नहीं। 3 पृथ्वी पर जो पवित्रा
लोग हैं, वे ही आदर के योग्य हैं, और उन्हीं से मैं प्रसन्न हूं। 4 जो पराए देवता के
पीछे भागते हैं उनका दु:ख बढ़ जाएगा; मैं उनके लोहूवाले तपावन नहीं तपाऊंगा
और उनका नाम अपके ओठोंसे नहीं लूंगा।। 5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे

का हिस्सा है; मेरे बांट को तू स्थिर रखता है। 6 मेरे लिथे माप की डोरी मनभावने
स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है।। 7 मैं यहोवा को धन्य कहता हूं,
क्योंकि उस ने मुझे सम्मत्ति दी है; वरन मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है। 8
मैं ने यहोवा को निरन्तर अपके सम्मुख रखा है : इसलिथे कि वह मेरे दहिने हाथ
रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा।। 9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी
आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा। 10 क्योंकि तू मेरे प्राण को
अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपके पवित्रा भक्त को सड़ने देगा।। 11 तू मुझे जीवन
का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दहिने हाथ में सुख
सर्वदा बना रहता है।।

भजन संहिता 17

1 हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार की ओर ध्यान दे। मेरी
प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुंह से निकलती है कान लगा। 2 मेरे मुक में का
निर्णय तेरे सम्मुख हो! तेरी आंखें न्याय पर लगी रहें! 3 तू ने मेरे हृदय को जांचा
है; तू ने रात को मेरी देखभाल की, तू ने मुझे परखा परन्तु कुछ भी खोटापन नहीं
पाया; मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुंह से अपराध की बात नहीं निकलेगी। 4
मानवी कामोंमें मैं तेरे मुंह के वचन के द्वारा क्रूरोंकी सी चाल से अपके को बचाए
रहा। 5 मेरे पांव तेरे पथोंमें स्थिर रहे, फिसले नहीं।। 6 हे ईश्वर, मैं ने तुझ से
प्रार्थना की है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा। अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी
बिनती सुन ले। 7 तू जो अपके दहिने हाथ के द्वारा अपके शरणगतोंको उनके
विरोधियोंसे बचाता है, अपक्की अद्भुत करूणा दिखा। 8 अपके आंखो की पुतली

की नाई सुरक्षित रख; अपके पंखोंके तले मुझे छिपा रख, 9 उन दुष्टोंसे जो मुझ
पर अत्याचार करते हैं, मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं।। 10 उन्होंने
अपके हृदयोंको कठोर किया है; उनके मुंह से घमंड की बातें निकलती हैं। 11
उन्होंने पग पग पर हमको घेरा है; वे हमको भूमि पर पटक देने के लिथे घात
लगाए हुए हैं। 12 वह उस सिंह की नाई है जो अपके शिकार की लालसा करता है,
और जवान सिंह की नाई घात लगाने के स्थानोंमें बैठा रहता है।। 13 उठ, हे
यहोवा उसका सामना कर और उसे पटक दे! अपक्की तलवार के बल से मेरे प्राण
को दुष्ट से बचा ले। 14 अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्योंसे बचा, अर्थात्
संसारी मनुष्योंसे जिनका भाग इसी जीवन में है, और जिनका पेट तू अपके
भण्डार से भरता है। वे बालबच्चोंसे सन्तुष्ट हैं; और शेष सम्पति अपके बच्चोंके
लिथे छोड़ जाते हैं।। 15 परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब मैं
जानूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा।।

भजन संहिता 18

1 हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूं। 2 यहोवा मेरी चट्टान, और
मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं
शरणागत हूं, वह मेरी ढ़ाल और मेरी मुक्ति का गढ़ है। 3 मैं यहोवा को जो स्तुति
के योग्य है पुकारूंगा; इस प्रकार मैं अपके शत्रुओं से बचाया जाऊंगा।। 4 मृत्यु की
रस्सिक्कों मैं चारो ओर से घिर गया हूं, और अधर्म की बाढ़ ने मुझ को भयभीत
कर दिया; 5 पाताल की रस्सियां मेरे चारो ओर थीं, और मृत्यु के फन्दे मुझ पर
आए थे। 6 अपके संकट में मैं ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा; मैं ने अपके परमेश्वर

को दोहाई दी। और उस ने अपके मन्दिर में से मेरी बातें सुनी। और मेरी दोहाई
उसके पास पहुंचकर उसके कानोंमें पड़ी।। 7 तब पृथ्वी हिल गई, और कांप उठी
और पहाड़ोंकी नेवे कंपित होकर हिल गई क्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था। 8
उसके नथनोंसे धुआं निकला, और उसके मुंह से आग निकलकर भस्म करने
लगी; जिस से कोएले दहक उठे। 9 और वह स्वर्ग को नीचे झुकाकर उतर आया;
और उसके पांवोंतले घोर अन्धकार था। 10 और वह करूब पर सवार होकर उड़ा,
वरन पवन के पंखोंपर सवारी करके वेग से उड़ा। 11 उस ने अन्धिक्कारने को
अपके छिपके का स्थान और अपके चारोंओर मेघोंके अन्धकार और आकाश की
काली घटाओं का मण्डप बनाया। 12 उसकी उपस्थिति की झलक से उसकी
काली घटाएं फट गई; ओले और अंगारे। 13 तब यहोवा आकाश में गरजा, और
परमप्रधान ने अपक्की वाणी सुनाई, ओले ओर अंगारे।। 14 उस ने अपके तीर
चला चलाकर उनको तितर बितर किया; वरन बिजलियां गिरा गिराकर उनको
परास्त किया। 15 तब जल के नाले देख पके, और जगत की नेवें प्रगट हुई, यह
तो यहोवा तेरी डांट से, और तेरे नथनोंकी सांस की झोंक से हुआ।। 16 उस ने
ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थांम लिया, और गहिरे जल में से खींच लिया। 17 उस
ने मेरे बलवन्त शत्रु से, और उन से जो मुझ से घृणा करते थे मुझे छुड़ाया;
क्योंकि वे अधिक सामर्थी थे। 18 मेरी विपत्ति के दिन वे मुझ पर आ पके। परन्तु
यहोवा मेरा आश्रय था। 19 और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया,
उस ने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था। 20 यहोवा ने मुझ से मेरे
धर्म के अनुसार व्यवहार किया; और मेरे हाथोंकी शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे
बदला दिया। 21 क्योंकि मैं यहोवा के मार्गोंपर चलता रहा, और दुष्टता के कारण

अपके परमेश्वर से दूर न हुआ। 22 क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहे
और मैं ने उसकी विधियोंको न त्यागा। 23 और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा,
और अधर्म से अपके को बचाए रहा। 24 यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला
दिया, और मेरे हाथोंकी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था।। 25
दयावन्त के साथ तू अपके को दयावन्त दिखाता; और खरे पुरूष के साथ तू
अपके को खरा दिखाता है। 26 शुद्ध के साथ तू अपके को शुद्ध दिखाता, और टेढ़े के
साथ तू तिर्छा बनता है। 27 क्योंकि तू दी लोगोंको तो बचाता है; परन्तु घमण्ड
भरी आंखोंको नीची करता है। 28 हां, तू ही मेरे दीपक को जलाता है; मेरा परमेश्वर
यहोवा मेरे अन्धिक्कारने को उजियाला कर देता है। 29 क्योंकि तेरी सहाथता से
मैं सेना पर धावा करता हूं; और अपके परमेश्वर की सहाथता से शहरपनाह को
लांघ जाता हूं। 30 ईश्वर का मार्ग सच्चाई; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह
अपके सब शरणागतोंकी ढाल है।। 31 यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है? हमारे
परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है? 32 यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से
मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। 33 वही मेरे पैरोंको
हरिणियोंके पैरोंके समान बनाता है, और मुझे मेरे ऊंचे स्थानोंपर खड़ा करता है।
34 वह मेरे हाथोंको युद्ध करना सिखाता है, इसलिथे मेरी बाहोंसे पीतल का धनुष
झुक जाता है। 35 तू ने मुझ को अपके बचाव की ढाल दी है, तू अपके दहिने हाथ
से मुझे सम्भाले हुए है, और मेरी नम्रता ने महत्व दिया है। 36 तू ने मेरे पैरोंके
लिथे स्थान चौड़ा कर दिया, और मेरे पैर नहीं फिसले। 37 मैं अपके शत्रुओं का
पीछा करके उन्हें पकड़ लूंगा; और जब तब उनका अन्त न करूं तब तक न
लौटूंगा। 38 मैं उन्हें ऐसा बेधूंगा कि वे उठ न सकेंगे; वे मेरे पांवोंके नीचे गिर

पकेंगे। 39 क्योंकि तू ने युद्ध के लिथे मेरी कमर में शक्ति का पटुका बान्धा है; और
मेरे विरोधियोंको मेरे सम्मुख नीचा कर दिया। 40 तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी
ओर फेर दी, ताकि मैं उनको काट डालूं जो मुझ से द्वेष रखते हैं। 41 उन्होंने दोहाई
तो दी परन्तु उन्हें कोई भी बचानेवाला न मिला, उन्होंने यहोवा की भी दोहाई दी,
परन्तु उस ने भी उनको उत्तर न दिया। 42 तब मैं ने उनको कूट कूटकर पवन से
उड़ाई हुई धूलि के समान कर दिया; मैं ने उनको गली कूचोंकी कीचड़ के समान
निकाल फेंका।। 43 तू ने मुझे प्रजा के झगड़ोंसे भी छुड़ाया; तू ने मुझे
अन्यजातियोंका प्रधान बनाया है; जिन लोगोंको मैं जानता भी न था वे मेरे
अधीन हो गथे। 44 मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे; परदेशी मेरे
वश में हो जाएंगे। 45 परदेशी मुर्झा जाएंगे, और अपके किलोंमें से थरथराते हुए
निकलेंगे।। 46 यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है; और मेरे
मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो। 47 धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला ईश्वर! जिस ने
देश देश के लोगोंको मेरे वंश में कर दिया है; 48 और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया
है; तू मुझ को मेरे विरोधियोंसे ऊंचा करता, और उपद्रवी पुरूष से बचाता है।। 49
इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम का
भजन गाऊंगा। 50 वह अपके ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है, वह अपके
अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर युगानुयुग करूणा करता रहेगा।।

भजन संहिता 19

1 आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी
हस्तकला को प्रगट कर रहा है। 2 दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात

ज्ञान सिखाती है। 3 न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई
नहीं देता है। 4 उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत
की छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उस ने सूर्य के लिथे एक मण्डप खड़ा किया है,
5 जो दुल्हे के समान अपके महल से निकलता है। वह शूरवीर की नाई अपक्की
दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है। 6 वह आकाश की एक छोर से निकलता है, और वह
उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है; और उसकी गर्मी सबको पहुंचक्की है।।
7 यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम
विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगोंको बुद्धिमान बना देते हैं; 8 यहोवा के उपकेश
सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखोंमें
ज्योति ले आती है; 9 यहोवा का भय पवित्रा है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता
है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। 10 वे तो सोने से और
बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी
बढ़कर मधुर हैं। 11 और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने
से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। 12 अपक्की भूलचूक को कौन समझ सकता है?
मेरे गुप्त पापोंसे तू मुझे पवित्रा कर। 13 तू अपके दास को ढिठाई के पापोंसे भी
बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं! तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा, और बड़े
अपराधोंसे बचा रहूंगा।। 14 मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे
सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार
करनेवाले!

भजन संहिता 20

1 संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले! याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान
पर नियुक्त करे! 2 वह पवित्रास्थान से तेरी सहाथता करे, और सिरयोन से तुझे
सम्भाल ले! 3 वह तेरे सब अन्नबलियोंको स्मरण करे, और तेरे होमबलि को
ग्रहण करे। 4 वह तेरे मन की इच्छा को पूरी करे, और तेरी सारी युक्ति को सुफल
करे! 5 तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे स्वर से हर्षित होकर गाएंगे, और अपके
परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे। यहोवा तुझे मुंह मांगा बरदान दे् 6 अब मैं
जान गया कि यहोवा अपके अभिषिक्त का उद्धार करता है; वह अपके दहिने हाथ
के उद्धार करनेवाले पराक्रम से अपके पवित्रा स्वर्ग पर से सुनकर उसे उत्तर देगा।
7 किसी को रथोंको, और किसी को घोड़ोंका भरोसा है, परन्तु हम तो अपके
परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे। 8 वे तो झुक गए और गिर पके परन्तु हम उठे
और सीधे खड़े हैं।। 9 हे यहोवा, बचा ले; जिस दिन हम पुकारें तो महाराजा हमें
उत्तर दे।।

भजन संहिता 21

1 हे यहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा; और तेरे किए हुए उद्धार से वह
अति मगन होगा। 2 तू ने उसके मनोरथ को पूरा किया है, और उसके मुंह की
बिनती को तू ने अस्वीकार नहीं किया। 3 क्योंकि तू उत्तम आशीषें देता हुआ उस
से मिलता है और तू उसके सिर पर कुन्दन का मुकुट पहिनाता है। 4 उस ने तुझ
से जीवन मांगा, ओर तू ने जीवनदान दिया; तू ने उसको युगानुयुग का जीवन
दिया है। 5 तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा अधिक है; तू उसको विभव और
ऐश्वर्य से आभूषित कर देता है। 6 क्योंकि तू ने उसको सर्वदा के लिथे आशीषित

किया है; तू अपके सम्मुख उसको हर्ष और आनन्द से भर देता है। 7 क्योंकि
राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है; और परमप्रधान की करूणा से वह कभी नहीं
टलने का।। 8 तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ निकालेगा, तेरा दहिना हाथ तेरे
सब बैरियोंका पता लगा लेगा। 9 तू अपके मुख के सम्मुख उन्हें जलते हुए भट्टे
की नाईं जलाएगा। यहोवा अपके क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उनको
भस्म कर डालेगी। 10 तू उनके फलोंको पृथ्वी पर से, और उनके वंश को
मनुष्योंमें से नष्ट करेगा। 11 क्योंकि उन्होंने तेरी हाति ठानी है, उन्होंने ऐसी युक्ति
निकाली है जिसे वे पूरी न कर सकेंगे। 12 क्योंकि तू अपना धुनष उनके विरूद्ध
चढ़ाएगा, और वे पीठ दिखाकर भागेंगे।। 13 हे यहोवा, अपक्की सामर्थ्य में
महान हो! और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएंगे।।

भजन संहिता 22

1 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्योंछोड़ दिया? तू मेरी पुकार से
और मेरी सहाथत करने से क्योंदूर रहता है? मेरा उद्धार कहां है? 2 हे मेरे परमेश्वर,
मैं दिन को पुकारता हूं परन्तु तू उत्तर नहीं देता; और रात को भी मैं चुप नहीं
रहता। 3 परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति के सिहांसन पर विराजमान है, तू तो
पवित्रा है। 4 हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे; वे भरोसा रखते थे, और तू
उन्हें छुड़ाता था। 5 उन्होंने तेरी दोहाई दी और तू ने उनको छुड़ाया वे तुझी पर
भरोसा रखते थे और कभी लज्जित न हुए।। 6 परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं;
मनुष्योंमें मेरी नामधराई है, और लोगोंमें मेरा अपमान होता है। 7 वह सब जो
मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर

हिलाते हैं, 8 कि अपके को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको
उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है। 9 परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला; जब
मैं दूधपिउवा बच्च था, तब ही से तू ने मुझे भरोसा रखना सिखलाया। 10 मैं
जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है। 11 मुझ
से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहाथक नहीं। 12 बहुत से सांढ़ोंने
मुझे घेर लिया है, बाशान के बलवन्त सांढ़ मेरे चारोंओर मुझे घेरे हुए है। 13 वह
फाड़ने और गरजनेवाले सिंह की नाईं मुझ पर अपना मुंह पसारे हुए है।। 14 मैं
जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियोंके जोड़ उखड़ गए: मेरा हृदय मोम
हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। 15 मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो
गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में
मिला देता है। 16 क्योंकि कुत्तोंने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियोंकी मण्डली मेरी
चरोंओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। 17 मैं अपक्की सब
हड्डियां गिन सकता हूं; वे मुझे देखते और निहारते हैं; 18 वे मेरे वस्त्रा आपस में
बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं। 19 परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह!
हे मेरे सहाथक, मेरी सहाथता के लिथे फुर्ती कर! 20 मेरे प्राण को तलवार से बचा,
मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले! 21 मुझे सिंह के मुंह से बचा, हां, जंगती
सांढ़ोंके सींगो में से तू ने मुझे बचा लिया है।। 22 मैं अपन भाइयोंके साम्हने तेरे
नाम का प्रचार करूंगा; सभा के बीच में तेरी प्रशंसा करूंगा। 23 हे यहोवा के
डरवैयोंउसकी स्तुति करो! हे याकूब के वंश, तुम उसका भय मानो! 24 क्योंकि
उस ने दु:खी को तुच्छ नहीं जाना और न उस से घृणा करता है, ओर न उस से
अपना मुख छिपाता है; पर जब उस ने उसकी दोहाई दी, तब उसकी सुन ली।। 25

बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है; मैं अपके प्रण को उस से
भय रखनेवालोंके साम्हने पूरा करूंगा 26 नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे; जो
यहोवा के खोजी हैं, वे उसकी स्तुति करेंगे। तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें! 27
पृथ्वी के सब दूर दूर देशोंके लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे;
और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगे। 28 क्योंकि राज्य
यहोवा की का है, और सब जातियोंपर वही प्रभुता करता है।। 29 पृथ्वी के सब
हृष्टपुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे; वह सब जितने मिट्टी में मिल जाते हैं
और अपना अपना प्राण नहीं बचा सकते, वे सब उसी के साम्हने घुटने टेकेंगे। 30
एक वंश उसकी सेवा करेगा; दूसरा पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा। 31 वह
आएंगे और उसके धर्म के कामोंको एक वंश पर जो उत्पन्न होगा यह कहकर
प्रगट करेंगे कि उस ने ऐसे ऐसे अद्भुत काम किए।।

भजन संहिता 23

1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। 2 वह मुझे हरी हरी चराइयोंमें
बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; 3 वह मेरे जी में
जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपके नाम के निमित्त अगुवाई करता है। 4
चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा,
क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।।
5 तू मेरे सतानेवालोंके साम्हने मेरे लिथे मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल
मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। 6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे
साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।।

भजन संहिता 24

1 पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है; जगत और उस में निवास
करनेवाले भी। 2 क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रोंके ऊपर दृढ़ करके रखी, और
महानदोंके ऊपर स्थिर किया है।। 3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और
उसके पवित्रास्थान में कौन खड़ा हो सकता है? 4 जिसके काम निर्दोष और हृदय
शुद्ध है, जिस ने अपके मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से
शपथ खाई है। 5 वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा, और अपके उद्धार
करनेवाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा। 6 ऐसे ही लोग उसके खोजी है, वे
तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं।। 7 हे फाटकों, अपके सिर ऊंचे करो। हे सनातन
के द्वारों, ऊंचे हो जाओ। क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। 8 वह प्रतापी राजा
कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! 9
हे फाटकों, अपके सिर ऊंचे करो हे सनातन के द्वारोंतुम भी खुल जाओ! क्योंकि
प्रतापी राजा प्रवेश करेगा! 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही
प्रतापी राजा है।।

भजन संहिता 25

1 हे यहोवा मैं अपके मन को तेरी ओर उठाता हूं। 2 हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर
भरोसा रखा है, मुझे लज्जित होने न दे; मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न
पाएं। 3 वरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उन में से कोई लज्जित न होगा; परन्तु
जो अकारण विश्वासघाती हैं वे ही लज्जित होंगे।। 4 हे यहोवा अपके मार्ग मुझ
को दिखला; अपना पथ मुझे बता दे। 5 मुझे अपके सत्य पर चला और शिक्षा दे,

क्योंकि तू मेरा उद्वार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जाहता रहता
हूं। 6 हे यहोवा अपक्की दया और करूणा के कामोंको स्मरण कर; क्योंकि वे तो
अनन्तकाल से होते आए हैं। 7 हे यहोवा अपक्की भलाई के कारण मेरी जवानी के
पापोंऔर मेरे अपराधोंको स्मरण न कर; अपक्की करूणा ही के अनुसार तू मुझे
स्मरण कर।। 8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिथे वह पापियोंको अपना मार्ग
दिखलाएगा। 9 वह नम्र लोगोंको न्याय की शिक्षा देता, हां वह नम्र लोगोंको
अपना मार्ग दिखलाएगा। 10 जो यहोवा की वाचा और चितौनियोंको मानते हैं,
उनके लिथे उसके सब मार्ग करूणा और सच्चाई हैं।। 11 हे यहोवा अपके नाम के
निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा कर।। 12 वह कौन है जो यहोवा का भय
मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा। 13
वह कुशल से टिका रहेगा, और उसका वंश पृथ्वी पर अधिक्कारनी होगा। 14
यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उस से डरते हैं, और वह अपक्की वाचा उन
पर प्रगट करेगा। 15 मेरी आंखे सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि
वही मेरे पांवोंको जाल में से छुड़ाएगा।। 16 हे यहोवा मेरी ओर फिरकर मुझ पर
अनुग्रह कर; क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं। 17 मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है,
तू मुझ को मेरे दु:खोंसे छुड़ा ले। 18 तू मेरे दु:ख और कष्ट पर दृष्टि कर, और मेरे
सब पापोंको क्षमा कर।। 19 मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गए हैं, और मुझ
से बड़ा बैर रखते हैं। 20 मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा; मुझे लज्जित न
होने दे, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं। 21 खराई और सीधाई मुझे सुरक्षित रखें,
क्योंकि मुझे तेरे ही आशा है।। 22 हे परमेश्वर इस्राएल को उसके सारे संकटोंसे
छुड़ा ले।।

भजन संहिता 26

1 हे यहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूं, और मेरा भरोसा
यहोवा पर अटल बना है। 2 हे यहोवा, मुझ को जांच और परख; मेरे मन और
हृदय को परख। 3 क्योंकि तेरी करूणा तो मेरी आंखोंके साम्हने है, और मैं तेरे
सत्य मार्ग पर चलता रहा हूं।। 4 मैं निकम्मी चाल चलनेवालोंके संग नहीं बैठा,
और न मैं कपटियोंके साथ कहीं जाऊंगा; 5 मैं कुकर्मियोंकी संगति से घृणा रखता
हूं, और दुष्टोंके संग न बैठूंगा।। 6 मैं अपके हाथोंको निर्दोषता के जल से धोऊंगा,
तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूंगा, 7 ताकि मेरा धन्यवाद ऊंचे शब्द
से करूं, 8 और तेरे सब आश्चर्यकर्मोंका वर्णन करूं।। हे यहोवा, मैं तेरे धाम से तेरी
महिमा के निवासस्थान से प्रीति रखता हूं। 9 मेरे प्राण को पापियोंके साथ, और
मेरे जीवन को हत्यारोंके साथ न मिला। 10 वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं,
और उनका दहिना हाथ घूस से भरा रहता है।। 11 परन्तु मैं तो खराई से चलता
रहूंगा। तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर अनुग्रह कर। 12 मेरे पांव चौरस स्थान में
स्थिर है; सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूंगा।।

भजन संहिता 27

1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे
जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं? 2 जब कुकर्मियोंने जो मुझे
सताते और मुझी से बैर रखते थे, मुझे खा डालने के लिथे मुझ पर चढ़ाई की, तब
वे ही ठोकर खाकर गिर पकें।। 3 चाहे सेना भी मेरे विरूद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न
डरूंगा; चाहे मेरे विरूद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे

निशिजित रहूंगा।। 4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा;
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर
दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।। 5 क्योंकि वह तो मुझे
विपत्ति के दिन में अपके मण्डप में छिपा रखेगा; अपके तम्बू के गुप्तस्थान में वह
मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। 6 अब मेरा सिर मेरे चारोंओर के
शत्रुओं से ऊंचा होगा; और मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान
चढ़ाऊंगा; और उसका भजन गाऊंगा।। 7 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं,
तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे। 8 तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी
हो। इसलिथे मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी
रहूंगा। 9 अपना मुख मुझ से न छिपा।। अपके दास को क्रोध करके न हटा, तू
मेरा सहाथक बना है। हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे
छोड़ न दे! 10 मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे
सम्भाल लेगा।। 11 हे यहोवा, अपके मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे
द्रोहियोंके कारण मुण् को चौरस रास्ते पर ले चल। 12 मुझ को मेरे सतानेवालोंकी
इच्छा पर न छोड़, क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुन में हैं मेरे विरूद्ध
उठे हैं।। 13 यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितोंकी पृथ्वी पर यहोवा की भलाई
को देखूंगा, तो मैं मूच्छित हो जाता। 14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध
और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

भजन संहिता 28

1 हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूंगा; हे मेरी चट्टान, मेरी सुनी अनसुनी न कर, ऐसा

न हो कि तेरे चुप रहने से मैं कब्र में पके हुओं के समान हो जाऊं जो पाताल में
चले जाते हैं। 2 जब मैं तेरी दोहाई दूं, और तेरे पवित्रास्थान की भीतरी कोठरी की
ओर अपके हाथ उठाऊं, तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले। 3 उन दुष्टोंऔर
अनर्थकारियोंके संग मुझे न घसीट; जो अपके पड़ोसिक्कों बातें तो मेल की बोलते
हैं परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं। 4 उनके कामोंके और उनकी करनी की बुराई के
अनुसार उन से बर्ताव कर, उनके हाथोंके काम के अनुसार उन्हें बदला दे; उनके
कामोंका पलटा उन्हें दे। 5 वे यहोवा के कामोंपर और उसके हाथोंके कामोंपर
ध्यान नहीं करते, इसलिथे वह उन्हें पछाड़ेगा और फिर न उठाएगा।। 6 यहोवा
धन्य है; क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है। 7 यहोवा मेरा बल और मेरी
ढ़ाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहाथता मिली है; इसलिथे मेरा
हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूंगा। 8 यहोवा उनका
बल है, वह अपके अभिषिक्त के लिथे उद्धार का दृढ़ गढ़ है। 9 हे यहोवा अपक्की
प्रजा का उद्धार कर, और अपके निज भाग के लोगोंको आशीष दे; और उनकी
चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।।

भजन संहिता 29

1 हे परमेश्वर के पुत्रोंयहोवा का, हां यहोवा की का गुणानुवाद करो, यहोवा की
महिमा और सामर्थ को सराहो। 2 यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्राता से
शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो। 3 यहोवा की वाणी मेघोंके ऊपर सुन
पड़ती है; प्रतामी ईश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघोंके ऊपर रहता है। 4 यहोवा की
वाणी शक्तिशाली है, यहोवा की वाणी प्रतापमय है। 5 यहोवा की वाणी देवदारोंको

तोड़ डालती है; यहोवा लबानोन के देवदारोंको भी तोड़ डालता है। 6 वह उन्हें
बछड़े की नाईं और लबानोन और शिर्योन को जंगली बछड़े के समान उछालता
है।। 7 यहोवा की वाणी आग की लपटोंको चीरती है। 8 यहोवा की वाणी वन को
हिला देती है, यहोवा कादेश के वन को भी कंपाता है।। 9 यहोवा की वाणी से
हरिणियोंका गर्भपात हो जाता है। और अरण्य में पतझड़ होती है; और उसके
मन्दिर में सब कोई महिमा ही महिमा बोलता रहता है।। 10 जलप्रलय के समय
यहोवा विराजमान था; और यहोवा सर्वदा के लिथे राजा होकर विराजमान रहता
है। 11 यहोवा अपक्की प्रजा को बल देगा; यहोवा अपक्की प्रजा को शान्ति की
आशीष देगा।।

भजन संहिता 30

1 हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा, क्योंकि तू ने मुझे खींचकर निकाला है, और मेरे
शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया। 2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं ने तेरी
दोहाई दी और तू ने मुझे चंगा किया है। 3 हे यहोवा, तू ने मेरा प्राण अधोलोक में
से निकाला है, तू ने मुझ को जीवित रखा और कब्र में पड़ने से बचाया है।। 4 हे
यहोवा के भक्तों, उसका भजन गाओ, और जिस पवित्रा नाम से उसका स्मरण
होता है, उसका धन्यवाद करो। 5 क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पके,
परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा।। 6 मैं ने तो चैन के समय कहा था, कि मैं कभी
नहीं टलने का। 7 हे यहोवा अपक्की प्रसन्नता से तू ने मेरे पहाड़ को दृढ़ और
स्थिर किया था; जब तू ने अपना मुख फेर लिया तब मैं घबरा गया।। 8 हे यहोवा

मैं ने तुझी को पुकारा; और यहोवा से गिड़गिड़ाकर यह बिनती की, कि 9 जब मैं
कब्र में चला जाऊंगा तब मेरे लोहू से क्या लाभ होगा? क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद
कर सकती है? क्या वह तेरी सच्चाई का प्रचार कर सकती है? 10 हे यहोवा, सुन,
मुझ पर अनुग्रह कर; हे यहोवा, तू मेरा सहाथक हो।। 11 तू ने मेरे लिथे विलाप
को नृत्य में बदल डाला, तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का
पटुका बान्धा है; 12 ताकि मेरी आत्मा तेरा भजन गाती रहे और कभी चुप न हो।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा।।

भजन संहिता 31

1 हे यहोवा मेरा भरोसा तुझ पर है; मुझे कभी लज्जित होना न पके; तू अपके
धर्मी होने के कारण मुझै छुड़ा ले! 2 अपना कान मेरी ओर लगाकर तुरन्त मुझे
छुड़ा ले! 3 क्योंकि तू ने मेरे लिथे चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिथे अपके नाम
के निमित्त मेरी अगुवाई कर, और मुझे आगे ले चल। 4 जो जाल उन्होंने मेरे लिथे
बिछाया है उस से तू मुझ को छुड़ा ले, क्योंकि तू ही मेरा दृढ़ गढ़ है। 5 मैं अपक्की
आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूं; हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने मुझे
मोल लेकर मुक्त किया है।। 6 जो व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, उन से मैं घृणा
करता हूं; परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर है। 7 मैं तेरी करूणा से मगन और
आनन्दित हूं, क्योंकि तू ने मेरे दु:ख पर दृष्टि की है, मेरे कष्ट के समय तू ने मेरी
सुधि ली है, 8 और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया; तू ने मेरे पांवोंको
चौड़े स्थान में खड़ा किया है।। 9 हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं संकट
में हूं; मेरी आंखे वरन मेरा प्राण और शरीर सब शोक के मारे घुले जाते हैं। 10 मेरा

जीवन शोक के मारे और मेरी अवस्था कराहते कराहते घट चक्की है; मेरा बल
मेरे अधर्म के कारण जाता रह, ओर मेरी हड्डियां घुल गई।। 11 अपके सब
विरोधियोंके कारण मेरे पड़ोसियोंमें मेरी नामधराई हुई है, अपके
जानपहिचानवालोंके लिथे डर का कारण हूं; जो मुझ को सड़क पर देखते है वह
मुझ से दूर भाग जाते हैं। 12 मैं मृतक की नाई लोगोंके मन से बिसर गया; मैं टूटे
बासन के समान हो गया हूं। 13 मैं ने बहुतोंके मुंह से अपना अपवाद सुना,
चारोंओर भय ही भय है! जब उन्होंने मेरे विरूद्ध आपस में सम्मति की तब मेरे
प्राण लेने की युक्ति की।। 14 परन्तु हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रखा है, मैं
ने कहा, तू मेरा परमेश्वर है। 15 मेरे दिन तेरे हाथ में है; तू मुझे मेरे शत्रुओं और
मेरे सतानेवालोंके हाथ से छुड़ा। 16 अपके दास पर अपके मुंह का प्रकाश चमका;
अपक्की करूणा से मेरा उद्धार कर।। 17 हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे
क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है; दुष्ट लज्जित होंऔर वे पाताल में चुपचाप पके
रहें। 18 जो अंहकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं, उनके झूठ
बोलनेवाले मुंह बन्द किए जाएं।। 19 आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने
अपके डरवैयोंके लिथे रख छोड़ी है, और अपके शरणागतोंके लिथे मनुष्योंके
साम्हने प्रगट भी की है! 20 तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्योंकी बुरी
गोष्ठी से गुप्त रखेगा; तू उनको अपके मण्डप में झगड़े- रगड़े से छिपा रखेगा।। 21
यहोवा धन्य है, क्योंकि उस ने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्भुत
करूणा की है। 22 मैं ने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया।
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दी, तब तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुन लिया।। 23 हे
यहोवा के सब भक्तोंउस से प्रेम रखो! यहोवा सच्चे लोगोंकी तो रक्षा करता है,

परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भांति बदला देता है। 24 हे यहोवा
पर आशा रखनेवालोंहियाव बान्धोंऔर तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें!

भजन संहिता 32

1 क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढ़ापा
गया हो। 2 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और
जिसकी आत्मा में कपट न हो।। 3 जब मैं चुप रहा तक दिन भर कहरते कहरते
मेरी हड्डियां पिघल गई। 4 क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा; और
मेरी तरावट धूप काल की सी झुर्राहट बनती गई।। 5 जब मैं ने अपना पाप तुझ
पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के साम्हने
अपके अपराधोंको मान लूंगा; तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया।।
6 इस कारण हर एक भक्त तुझ से ऐसे समय में प्रार्थना करे जब कि तू मिल
सकता है। निश्चय जब जल की बड़ी बाढ़ आए तौभी उस भक्त के पास न पहुंचेगी।
7 तू मेरे छिपके का स्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा; तू मुझे चारोंओर से
छुटकारे के गीतोंसे घेर लेगा।। 8 मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना
होगा उस में तेरी अगुवाई करूंगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूंगा और सम्मत्ति दिया
करूंगा। 9 तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते, उनकी
उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है, नहीं तो वे तेरे वश में नहीं अपके के।।
10 दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी; परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करूणा
से घिरा रहेगा। 11 हे धर्मियोंयहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे
सब सीधे मनवालोंआनन्द से जयजयकार करो!

भजन संहिता 33

1 हे धर्मियोंयहोवा के कारण जयजयकार करो क्योंकि धर्मी लोगोंको स्तुति
करनी सोहती है। 2 वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो, दस तारवाली
सारंगी बजा बजाकर उसका भजन गाओ। 3 उसके लिथे नया गीत गाओ,
जयजयकार के साथ भली भांति बजाओ।। 4 क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है;
और उसका सब काम सच्चाई से होता है। 5 वह धर्म और न्याय से प्रीति रखता
है; यहोवा की करूणा से पृथ्वी भरपूर है।। 6 आकाशमण्डल यहोवा के वचन से,
और उसके सारे गण उसके मुंह ही श्वास से बने। 7 वह समुद्र का जल ढेर की नाईं
इकट्ठा करता; वह गहिरे सागर को अपके भण्डार में रखता है।। 8 सारी पृथ्वी के
लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें! 9 क्योंकि जब उस ने
कहा, तब हो गया; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।। 10
यहोवा अन्यअन्यजाथियो की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगोंकी
कल्पनाओं को निष्फल करता है। 11 यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके
मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी। 12 क्या ही धन्य है वह जाति
जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह समाज जिसे उस ने अपना निज भाग होने
के लिथे चुन लिया हो! 13 यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है, वह सब मनुष्योंको
निहारता है; 14 अपके निवास के स्थान से वह पृथ्वी के सब रहनेवालोंको देखता
है, 15 वही जो उन सभोंके हृदयोंको गढ़ता, और उनके सब कामोंका विचार करता
है। 16 कोई ऐसा राजा नहीं, जो सेना की बहुतायत के कारण बच सके; वीर
अपक्की बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता। 17 बच निकलने के लिथे घोड़ा
व्यर्थ है, वह अपके बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता है।। 18 देखो,

यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयोंपर और उन पर जो उसकी करूणा की आशा रखते
हैं बनी रहती है, 19 कि वह उनके प्राण को मृत्यु से बचाए, और अकाल के समय
उनको जीवित रखे।। 20 हम यहोवा का आसरा देखते आए हैं; वह हमारा
सहाथक और हमारी ढाल ठहरा है। 21 हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित
होगा, क्योंकि हम ने उसके पवित्रा नाम का भरोसा रखा है। 22 हे यहोवा जैसी
तुझ पर हमारी आशा है, वैसी ही तेरी करूणा भी हम पर हो।।

भजन संहिता 34

1 मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूंगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से
होती रहेगी। 2 मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा; नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित
होंगे। 3 मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर उसके नाम की
स्तुति करें। 4 मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति
से निर्भय किया। 5 जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की उन्होंने ज्योति पाई; और उनका
मुंह कभी काला न होने पाया। 6 इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया,
और उसको उसके सब कष्टोंसे छुड़ा लिया।। 7 यहोवा के डरवैयोंके चारोंओर
उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है। 8 परखकर देखो कि यहोवा कैसा
भला है! क्या ही धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है। 9 हे यहोवा के पवित्रा
लोगो, उसका भय मानो, क्योंकि उसके डरवैयोंको किसी बात की घटी नहीं होती!
10 जवान सिक्कों तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं; परन्तु यहोवा के
खोजियोंको किसी भली वस्तु की घटी न होवेगी।। 11 हे लड़कों, आओ, मेरी सुनो,
मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊंगा। 12 वह कौन मनुष्य है जो जीवन

की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे? 13 अपक्की जीभ को
बुराई से रोक रख, और अपके मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न
निकले। 14 बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूंढ और उसी का पीछा कर।।
15 यहोवा की आंखे धर्मियोंपर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उसकी दोहाई
की ओर लगे रहते हैं। 16 यहोवा बुराई करनेवालोंके विमुख रहता है, ताकि उनका
स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले। 17 धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और
उनको सब विपत्तियोंसे छुड़ाता है। 18 यहोवा टूटे मनवालोंके समीप रहता है, और
पिसे हुओं का उद्वार करता है।। 19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं,
परन्त यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है। 20 वह उसकी हड्डी हड्डी की
रक्षा करता है; और उन में से एक भी टूटने नहीं पाती। 21 दुष्ट अपक्की बुराई के
द्वारा मारा जाएगा; और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे। 22 यहोवा अपके दासोंका प्राण
मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी
न ठहरेगा।।

भजन संहिता 35

1 हे यहोवा जो मेरे साथ मुक मा लड़ते हैं, उनके साथ तू भी मुक मा लड़; जो मुझ
से युद्व करते हैं, उन से तू युद्व कर। 2 ढाल और भाला लेकर मेरी सहाथता करने
को खड़ा हो। 3 बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेवालोंके साम्हने आकर उनको
रोक; और मुझ से कह, कि मैं तेरा उद्वार हूं।। 4 जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं वे
लज्जित और निरादर हों! जो मेरी हाति की कल्पना करते हैं, वह पीछे हटाए जाएं
और उनका मुंह काला हो! 5 वे वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों, और

यहोवा का दूत उन्हें हांकता जाए! 6 उनका मार्ग अन्धिक्कारनो और फिसलाहा
हो, और यहोवा का दूत उनको खदेड़ता जाए।। 7 क्योंकि अकारण उन्होंने मेरे
लिथे अपना जाल गड़हे में बिछाया; अकारण ही उन्होंने मेरा प्राण लेने के लिथे
गड़हा खोदा है। 8 अचानक उन पर विपत्ति आ पके! और जो जाल उन्होंने
बिछाया है उसी में वे आप ही फंसे; और उसी विपत्ति में वे आप ही पकें! 9 परन्तु
मैं यहोवा के कारण अपके मन में मगन होऊंगा, मैं उसके किए हुए उद्वार से
हर्षित होऊंगा। 10 मेरी हड्डी हड्डी कहेंगी, हे यहोवा तेरे तुल्य कौन है, जो दी को
बड़े बड़े बलवन्तोंसे बचाता है, और लुटेरोंसे दीन दरिद्र लोगोंकी रक्षा करता है? 11
झूठे साक्षी खड़े होते हैं; और जो बात मैं नहीं जानता, वही मुझ से पूछते हैं। 12 वे
मुझ से भलाई के बदले बुराई करते हैं; यहां तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है। 13
जब वे रोगी थे तब तो मैं टाट पहिने रहा, और उपवास कर करके दु:ख उठाता
रहा; और मेरी प्रार्थना का फल मेरी गोद में लौट आया। 14 मैं ऐसा भाव रखता था
कि मानो वे मेरे संगी वा भाई हैं; जैसा कोई माता के लिथे विलाप करता हो, वैसा
ही मैं ने शोक का पहिरावा पहिने हुए सिर झुकाकर शोक किया।। 15 परन्तु जब
मैं लंगड़ाने लगा तब वे लोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए, नीच लोग और जिन्हें
मैं जानता भी न था वे मेरे विरूद्व इकट्ठे हुए; वे मुझे लगातार फाड़ते रहे; 16 उन
पाखण्डी भांड़ोंकी नाई जो पेट के लिथे उपहास करते हैं, वे भी मुझ पर दांत पीसते
हैं।। 17 हे प्रभु तू कब तक देखता रहेगा? इस विपत्ति से, जिस में उन्होंने मुझे
डाला है मुझ को छुड़ा! जवान सिक्कों मेरे प्राण को बचा ले! 18 मैं बड़ी सभा में
तेरा धन्यवाद करूंगा; बहुतेरे लोगोंके बीच में तेरी स्तुति करूंगा।। 19 मेरे झूठ
बोलनेवाले शत्रु मेरे विरूद्व आनन्द न करने पाएं, जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे

आपस में नैन से सैन न करने पांए। 20 क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते,
परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं, उनके विरूद्ध छल की कल्पनाएं करते हैं। 21
और उन्होंने मेरे विरूद्ध मुंह पसारके कहा; आहा, आहा, हम ने अपक्की आंखोंसे
देखा है! 22 हे यहोवा, तू ने तो देखा है; चुप न रह! हे प्रभु, मुझ से दूर न रह! 23
उठ, मेरे न्याय के लिथे जाग, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, मेरे मुक मा निपटाने के
लिथे आ! 24 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अपके धर्म के अनुसार मेरा न्याय चुका;
ओश्र उन्हें मेरे विरूद्ध आनन्द करने न दे! 25 वे मन में न कहने पाएं, कि आहा!
हमारी तो इच्छा पूरी हुई! वह यह न कहें कि हम उसे निगल गए हैं।। 26 जो मेरी
हाति से आनन्दित होते हैं उनके मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों! जो मेरे
विरूद्ध बड़ाई मारते हैं वह लज्जा और अनादर से ढ़ंप जाएं! 27 जो मेरे धर्म से
प्रसन्न रहते हैं, वह जयजयकार और आनन्द करें, और निरन्तर करते रहें,
यहोवा की बड़ाई हो, जो अपके दास के कुशल से प्रसन्न होता है! 28 तब मेरे मुंह
से तेरे धर्म की चर्चा होगी, और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी।।

भजन संहिता 36

1 दुष्ट जन का अपराण मेरे हृदय के भीतर यह कहता है कि परमेश्वर का भय
उसकी दृष्टि में नहीं है। 2 वह अपके अधर्म के प्रगट होने और घृणित ठहरने के
विषय अपके मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है। 3 उसकी बातें अनर्थ और
छल की हैं; उस ने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ उठाया है। 4 वह अपके
बिछौने पर पके पके अनर्थ की कल्पना करता है; वह अपके कुमार्ग पर दृढ़ता से
बना रहता है; बुराई से वह हाथ नहीं उठाता।। 5 हे यहोवा तेरी करूणा स्वर्ग में है,

तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है। 6 तेरा धर्म ऊंचे पर्वतोंके समान है, तेरे
नियम अथाह सागर ठहरे हैं; हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनोंकी रक्षा करता
है।। 7 हे परमेश्वर तेरी करूणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखो के तले शरण
लेते हैं। 8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपक्की सुख की
नदी में से उन्हें पिलाएगा। 9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश
के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे।। 10 अपके जाननेवालोंपर करूणा करता रह, और
अपके धर्म के काम सीधे मनवालोंमें करता रह! 11 अहंकारी मुझ पर लात उठाने
न पाए, और न दुष्ट अपके हाथ के बल से मुझे भगाने पाए। 12 वहां अनर्थकारी
गिर पके हैं; वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ न सकेंगे।।

भजन संहिता 37

1 कुकर्मियोंके कारण मत कुढ़, कुटिल काम करनेवालोंके विषय डाह न कर! 2
क्योंकि वे घास की नाई झट कट जाएंगे, और हरी घास की नाई मुर्झा जाएंगे। 3
यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन
लगाए रह। 4 यहोवा को अपके सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथोंको मूरा
करेगा।। 5 अपके मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही
पूरा करेगा। 6 और वह तेरा धर्म ज्योति की नाई, और तेरा न्याय दोपहर के
उजियाले की नाई प्रगट करेगा।। 7 यहोवा के साम्हने चुपचाप रह, और धीरज से
उसका आस्त्रा रख; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सुफल होते हैं, और
वह कुरी युक्तियोंको निकालता है! 8 क्रोध से पके रह, और जलजलाहट को छोड़
दे! मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी। 9 क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएंगे;

और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वही पृथ्वी के अधिक्कारनी होंगे। 10 थोड़े दिन
के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं; और तू उसके स्थान को भलीं भांति देखने पर भी
उसको न पाएगा। 11 परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिक्कारनी होंगे, और बड़ी
शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे। 12 दुष्ट धर्मी के विरूद्ध बुरी युक्ति निकालता
है, और उस पर दांत पीसता है; 13 परन्तु प्रभु उस पर हंसेगा, क्योंकि वह देखता
है कि उसका दिन आनेवाला है।। 14 दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष बढ़ाए हुए
हैं, ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें, और सीधी चाल चलनेवालोंको वध करें। 15
उनकी तलवारोंसे उन्हीं के हृदय छिदेंगे, और उनके धनुष तोड़े जाएंगे।। 16 धर्मी
को थोड़ा से माल दुष्टोंके बहुत से धन से उत्तम है। 17 क्योंकि दुष्टोंकी भुजाएं तो
तोड़ी जाएंगी; परन्तु यहोवा धर्मियोंको सम्भालता है।। 18 यहोवा खरे लोगोंकी
आयु की सुधि रखता है, और उनका भाग सदैव बना रहेगा। 19 विपत्ति के समय,
उनकी आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होंगे, और अकाल के दिनोंमें वे तृप्त
रहेंगे।। 20 दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे; और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास की
नाई नाश होंगे, वे धूएं की नाई बिलाय जाएंगे।। 21 दुष्ट ऋण लेता है, और भरता
नहीं परनतु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है; 22 क्योंकि जो उस से आशीष पाते हैं
वे तो पृथ्वी के अधिक्कारनी होंगे, परन्तु जो उस से शापित होते हैं, वे नाश को
जाएंगे।। 23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से
वह प्रसन्न रहता है; 24 चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा
उसका हाथ थांभे रहता है।। 25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं;
परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा
है। 26 वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है, और उसके वंश पर

आशीष फलती रहती है।। 27 बुराई को छोड़ भलाई कर; और तू सर्वदा बना
रहेगा। 28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता; और अपके भक्तोंको न तजेगा।
उनकी तो रक्षा सदा होती है, परन्तु दुष्टोंका वंश काट डाला जाएगा। 29 धर्मी लोग
पृथ्वी के अधिक्कारनी होंगे, और उस में सदा बसे रहेंगे।। 30 धर्मी अपके मुंह से
बुद्धि की बातें करता, और न्याय का वचन कहता है। 31 उसके परमेश्वर की
व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है, उसके पैर नहीं फिसलते।। 32 दुष्ट धर्मी की
ताक में रहता है। और उसके मार डालने का यत्न करता है। 33 यहोवा उसको
उसके हाथ में न छोड़ेगा, और जब उसका विचार किया जाए तब वह उसे दोषी न
ठहराएगा।। 34 यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, और वह
तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिक्कारनी कर देगा; जब दुष्ट काट डाले जाएंगे, तब तू
देखेगा।। 35 मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुए देखा, जैसा कोई हरा
पेड़ अपके निज भूमि में फैलता है। 36 परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि
वह वहां है ही नहीं; और मैं ने भी उसे ढूंढा, परन्तु कहीं न पाया।। 37 खरे मनुष्य
पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरूष का अन्तफल
अच्छा है। 38 परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएंगे; दुष्टोंका
अन्तफल सर्वनाश है।। 39 धर्मियोंकी मुक्ति यहोवा की ओर से होती है; संकट के
समय वह उनका दृढ़ गढ़ है। 40 और यहोवा उनकी सहाथता करके उनको बचाता
है; वह उनको दुष्टोंसे छुड़ाकर उनका उद्वार करता है, इसलिथे कि उन्होंने उस में
अपक्की शरण ली है।।

भजन संहिता 38

1 हे यहोवा क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे, और न जलजलाहट में आकर मेरी
ताड़ना कर! 2 क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे हैं, और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूं। 3
तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं; और मेरे पाप के कारण
मेरी हड्डियोंमें कुछ भी चैन नहीं। 4 क्योंकि मेरे अधर्म के कामोंमें मेरा सिर डूब
गया, और वे भारी बोझ की नाई मेरे सहने से बाहर हो गए हैं।। 5 मेरी मूढ़ता के
कारण से मेरे कोड़े खाने के घाव बसाते हैं और सड़ गए हैं। 6 मैं बहुत दुखी हूं और
झूक गया हूं; दिन भर मैं शौक का पहिरावा पहिने हुए चलता फिरता हूं। 7 क्योंकि
मेरी कमर में जलन है, और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं। 8 मैं निर्बल और बहुत
ही चूर हो गया हूं; मैं अपके मन की घबराहट से कराहता हूं।। 9 हे प्रभु मेरी सारी
अभिलाषा तेरे सम्मुख है, और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। 10 मेरा हृदय
धड़कता है, मेरा बल घटता जाता है; और मेरी आंखोंकी ज्योति भी मुझ से जाती
रही। 11 मेरे मित्रा और मेरे संगी मेरी विपत्ति में अलग हो गए, और मेरे कुटुम्बी
भी दूर जा खड़े हुए।। 12 मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिथे जाल बिछाते हैं, और मेरी
हाति के यत्न करनेवाले दुष्टता की बातें बोलते, और दिन भर छल की युक्ति सोचते
हैं। 13 परन्तु मैं बहिरे की नाई सुनता ही नहीं, और मैं गूंगे के समान मूंह नहीं
खोलता। 14 वरन मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हूं जो कुछ नहीं सुनता, और जिसके
मुंह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती।। 15 परन्तु हे यहोवा, मैं ने तुझ ही
पर अपक्की आशा लगाई है; हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर देगा। 16 क्योंकि मैं
ने कहा, ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें; जो, जब मेरा पांव फिसल जाता है,
तब मुझ पर अपक्की बड़ाई मारते हैं।। 17 क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हूं,
और मेरा शोक निरन्तर मेरे साम्हने है। 18 इसलिथे कि मैं तो अपके अधर्म को

प्रगट करूंगा, और अपके पाप के कारण खेदित रहूंगा। 19 परन्तु मेरे शत्रु फुर्तीले
और सामर्थी हैं, और मेरे विरोधी बैरी बहुत हो गए हैं। 20 जो भलाई के बदले में
बुराई करते हैं, वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के कारण मुझ से विरोध करते
हैं।। 21 हे यहोवा, मुझे छोड़ न दे! हे मेरे परमेश्वर, मुझ से दूर न हो! 22 हे यहोवा,
हे मेरे उद्वारकर्त्ता, मेरी सहाथता के लिथे फुर्ती कर!

भजन संहिता 39

1 मैं ने कहा, मैं अपक्की चालचलन में चौकसी करूंगा, ताकि मेरी जीभ से पाप न
हो; जब तक दुष्ट मेरे साम्हने है, तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुंह बन्द किए
रहूंगा। 2 मैं मौन धारण कर गूंगा बन गया, और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे
रहा; और मेरी पीड़ा बढ़ गई, 3 मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर जल रहा था। सोचते
सोचते आग भड़क उठी; तब मैं अपक्की जीभ से बोल उठा; 4 हे यहोवा ऐसा कर
कि मेरा अन्त मुझे मालुम हो जाए, और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं;
जिस से मैं जान लूं कि कैसा अनित्य हूं! 5 देख, तू ने मेरे आयु बालिश्त भर की
रखी है, और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं। सचमुच सब मनुष्य कैसे
ही स्थिर क्योंन होंतौभी व्यर्थ ठहरे हैं। 6 सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता
है; सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं; वह धन का संचय तो करता है परन्तु नहीं जानता
कि उसे कौन लेगा! 7 और अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूं? मेरी आशा तो
तेरी ओर लगी है। 8 मुझे मेरे सब अपराधोंके बन्धन से छुड़ा ले। मूढ मेरी निन्दा
न करने पाए। 9 मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला; क्योंकि यह काम तू ही ने
किया है। 10 तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे मुझ से दूर कर दे, क्योंकि मैं

तो तरे हाथ की मार से भस्म हुआ जाता हूं। 11 जब तू मनुष्य को अधर्म के
कारण दपट दपटकर ताड़ना देता है; तब तू उसकी सुन्दरता को पतिंगे की नाईं
नाश करता है; सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं।। 12 हे यहोवा, मेरी
प्रार्थना सुन, और मेरी दोहाई पर कान लगा; मेरा रोना सुनकर शांत न रह!
क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री की नाईं रहता हूं, और अपके सब पुरखाओं
के समान परदेशी हूं। 13 आह! इस से पहिले कि मैं यहां से चला जाऊं और न रह
जाऊं, मुझे बचा ले जिस से मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूं!

भजन संहिता 40

1 मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी
दोहाई सुनी। 2 उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा,
और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरोंको दृढ़ किया है। 3 और उस ने मुझे
एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर
डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।। 4 क्या ही धन्य है वह पुरूष, जो यहोवा पर
भरोसा करता है, और अभिमानियोंऔर मिथ्या की ओर मुड़नेवालोंकी ओर मुंह न
फेरता हो। 5 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत से काम किए हैं! जो आश्चर्यकर्म
और कल्पनाएं तू हमारे लिथे करता है वह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं! मैं तो
चाहता हूं की खोलकर उनकी चर्चा करूं, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती।। 6
मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं।
होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा। 7 तब मैं ने कहा, देख, मैं आया हूं;
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है। 8 हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी

इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में बनी है।। 9
मैं ने बड़ी सभा में धर्म के शुभ समाचार का प्रचार किया है; देख, मैं ने अपना मुंह
बन्द नहीं किया हे यहोवा, तू इसे जानता है। 10 मैं ने तेरा धर्म मन ही में नहीं
रखा; मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किए हुए उधार की चर्चा की है; मैं ने तेरी करूणा
और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी।। 11 हे यहोवा, तू भी अपक्की बड़ी दया
मुझ पर से न हटा ले, तेरी करूणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे!
12 क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयोंसे घिरा हुआ हूं; मेरे अधर्म के कामोंने मुझे आ
पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता; वे गिनती में मेरे सिर के बालोंसे भी अधिक
हैं; इसलिथे मेरा हृदय टूट गया।। 13 हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा ले! हे
यहोवा, मेरी सहाथता के लिथे फुर्ती कर! 14 जो मेरे प्राण की खोज में हैं, वे सब
लज्जित हों; और उनके मुंह काले होंऔर वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएं
जो मेरी हाति से प्रसन्न होते हैं। 15 जो मुझ से आहा, आहा, कहते हैं, वे अपक्की
लज्जा के मारे विस्मित हों।। 16 परन्तु जितने तुझे ढूंढते हैं, वह सब तेरे कारण
हर्षित औश्र आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते
रहें, यहोवा की बड़ाई हो! 17 मैं तो दीन और दरिद्र हूं, तौभी प्रभु मेरी चिन्ता
करता है। तू मेरा सहाथक और छुड़ानेवाला है; हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर।।

भजन संहिता 41

1 क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विपत्ति के दिन यहोवा
उसको बचाएगा। 2 यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा, और वह
पृथ्वी पर भाग्यवान होगा। तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़। 3 जब वह

व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा; तू रोग में उसके पूरे
बिछौने को उलटकर ठीक करेगा।। 4 मैं ने कहा, हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर;
मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैं ने तो तेरे विरूद्ध पाप किया है! 5 मेरे शत्रु यह
कहकर मेरी बुराई करते हैं: वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा? 6 और
जब वह मुझ से मिलने को आता है, तब वह व्यर्थ बातें बकता है, जब कि उसका
मन अपके अन्दर अधर्म की बातं! संचय करता है; और बाहर जाकर उनकी चर्चा
करता है। 7 मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरूद्ध कानाफूसी करते हैं; मे मेरे विरूद्ध
होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं।। 8 वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग
लग गया है; अब जो यह पड़ा है, तो फिर कभी उठने का नहीं। 9 मेरा परम मित्रा
जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उस ने भी मेरे विरूद्ध लात
उठाई है। 10 परन्तु हे यहोवा, तु मुझ पर अनुग्रह करके मुझ को उठा ले कि मैं
उनको बदला दूं! 11 मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता, इस से मैं ने
जान लिया है कि तू मुझ से प्रसन्न है। 12 और मुझे तो तू खराई से सम्भालता,
और सर्वदा के लिथे अपके सम्मुख स्थिर करता है।। 13 इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा आदि से अनन्तकाल तक धन्य है आमीन, फिर आमीन।।

भजन संहिता 42

1 जैसे हरिणी नदी के जल के लिथे हांफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिथे
हांफता हूं। 2 जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं, मैं कब जाकर परमेश्वर को
अपना मुंह दिखाऊंगा? 3 मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग
दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है? 4 मैं भीड़ के संग जाया

करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच
में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण
शोकित हो जाता है। 5 हे मेरे प्राण, तू क्योंगिरा जाता है? और तू अन्दर ही अन्दर
क्योंव्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार
पाकर फिर उसका धन्यवाद करूंगा।। 6 हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे भीतर
गिरा जाता है, इसलिथे मैं यर्दन के पास के देश से और हर्मोन के पहाड़ोंऔर
मिसगार की पहाड़ी के ऊपर से तुझे स्मरण करता हूं। 7 तेरी जलधाराओं का शब्द
सुनकर जल, जल को पुकारता है; तेरी सारी तरंगोंऔर लहरोंमें मैं डूब गया हूं। 8
तौभी दिन को यहोवा अपक्की शक्ति और करूणा प्रगट करेगा; और रात को भी मैं
उसका गीत गाऊंगा, और अपके जीवनदाता ईश्वर से प्रार्थना करूंगा।। 9 मैं ईश्वर
से जो मेरी चट्टान है कहूंगा, तू मुझे क्योंभूल गया? मैं शत्रु के अन्धेर के मारे
क्योंशोक का पहिरावा पहिने हुए चलता फिरता हूं? 10 मेरे सतानेवाले जो मेरी
निन्दा करते हैं मानो उस में मेरी हड्डियां चूर चूर होती हैं, मानो कटार से छिदी
जाती हैं, क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है? 11 हे
मेरे प्राण तू क्योंगिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्योंव्याकुल है? परमेश्वर पर
भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका
धन्यवाद करूंगा।।

भजन संहिता 43

1 हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुक मा लड़; मुझ को
छली और कुटिल पुरूष से बचा। 2 क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही मेरी शरण है, तू ने

क्योंमुझे त्याग दिया है? मैं शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए
क्योंफिरता रहूं? 3 अपके प्रकाश और अपक्की सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई
करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्रा पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुंचाए! 4 तब
मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा, उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का
कुण्ड है; और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद
करूंगा।। 5 हे मेरे प्राण तू क्योंगिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्योंव्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है; मैं
फिर उसका धन्यवाद करूंगा।।

भजन संहिता 44

1 हे परमेश्वर हम ने अपके कानोंसे सुना, हमारे बापदादोंने हम से वर्णन किया है,
कि तू ने उनके दिनोंमें और प्राचीनकाल में क्या क्या काम किए हैं। 2 तू ने अपके
हाथ से जातियोंको निकाल दिया, और इनको बसाया; तू ने देश देश के लोगोंको
दु:ख दिया, और इनको चारोंओर फैला दिया; 3 क्योंकि वे न तो अपक्की तलवार
के बल से इस देश के अधिक्कारनी हुए, और न अपके बाहुबल से; परन्तु तेरे
दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए; क्योंकि
तू उनको चाहता था।। 4 हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है, तू याकूब के उद्धार
की आज्ञा देता है। 5 तेरे सहारे से हम अपके द्रोहियोंको ढकेलकर गिरा देंगे; तेरे
नाम के प्रताप से हम अपके विरोधियोंको रौंदेंगे। 6 क्योंकि मैं अपके धनुष पर
भरोसा न रखूंगा, और न अपक्की तलवार के बल से बचूंगा। 7 परन्तु तू ही ने हम
को द्रोहियोंसे बचाया है, और हमारे बैरियोंको निराश और लज्जित किया है। 8

हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर करते रहते हैं, और सदैव तेरे नाम का धन्यवाद
करते रहेंगे।। 9 तौभी तू ने अब हम को त्याग दिया और हमारा अनादर किया है,
और हमारे दलोंके साथ आगे नहीं जाता। 10 तू हम को शत्रु के साम्हने से हटा
देता है, और हमारे बैरी मनमाने लूट मार करते हैं। 11 तू ने हमें कसाई की भेडोंके
समान कर दिया है, और हम को अन्य जातियोंमें तित्तर बित्तर किया है। 12 तू
अपक्की प्रजा को सेंतमेंत बेच डालता है, परन्तु उनके मोल से तू धनी नहीं
होता।। 13 तू हमारे पड़ोसिक्कों हमारी नामधराई कराता है, और हमारे चारोंओर
से रहनेवाले हम से हंसी ठट्‌ठा करते हैं। 14 तू हम को अन्यजातियोंके बीच में
उपमा ठहराता है, और देश देश के लेग हमारे कारण सिर हिलाते हैं। दिन भर हमें
तिरस्कार सहना पड़ता है, 15 और कलंक लगाने और निन्दा करनेवाले के बोल
से, 16 और शत्रु और बदला लेनेवालोंके कारण, बुरा- भला कहनेवालोंऔर निन्दा
करनेवालोंके कारण। 17 यह सब कुछ हम पर बीता तौभी हम तुझे नहीं भूले, न
तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है। 18 हमारे मन न बहके, न हमारे पैर
तरी बाट से मुड़े; 19 तौभी तू ने हमें गीदड़ोंके स्थान में पीस डाला, और हम को
घोर अन्धकार में छिपा दिया है।। 20 यदि हम अपके परमेश्वर का नाम भूल
जाते, वा किसी पराए देवता की ओर अपके हाथ फैलाते, 21 तो क्या परमेश्वर
इसका विचार न करता? क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातोंको जानता है। 22
परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते हैं, और उन भेड़ोंके समान समझे
जाते हैं जो वध होने पर हैं।। 23 हे प्रभु, जाग! तू क्योंसोता है? उठ! हम को सदा
के लिथे त्याग न दे! 24 तू क्योंअपना मुंह छिपा लेता है? और हमारा दु:ख और
सताया जाना भूल जाता है? 25 हमारा प्राण मिट्‌टी से लग गया; हमारा पेट भूमि

से सट गया है। 26 हमारी सहाथता के लिथे उठ खड़ा हो! और अपक्की करूणा के
निमित्त हम को छुड़ा ले।।

भजन संहिता 45

1 मेरा हृदय एक सुन्दर विषय की उमंग से उमण्ड रहा है, जो बात मैं ने राजा के
विषय रची है उसको सुनाता हूं; मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी बनी है। 2 तू
मनुष्य की सन्तानोंमें परम सुन्दर है; तेरे ओठोंमें अनुग्रह भरा हुआ है; इसलिथे
परमेश्वर ने तुझे सदा के लिथे आशीष दी है। 3 हे वीर, तू अपक्की तलवार को जो
तेरा विभव और प्रताप है अपक्की कटि पर बान्ध! 4 सत्यता, नम्रता और धर्म के
निमित्त अपके ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो; तेरा दहिना हाथ तुझे
भयानक काम सिखलाए! 5 तेरे तीर तो तेज हैं, तेरे साम्हने देश देश के लोग
गिरेंगे; राजा के शत्रुओं के हृदय उन से छिदेंगे।। 6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा
सर्वदा बना रहेगा; तेरा राजदण्ड न्याय का है। 7 तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से
बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियोंसे
अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। 8 तेरे सारे वस्त्रा, गन्धरस, अगर, और
तेल से सुगन्धित हैं, तू हाथीदांत के मन्दिरोंमें तारवाले बाजोंके कारण आनन्दित
हुआ है। 9 तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियोंमें राजकुमारियां भी हैं; तेरी दहिनी ओर पटरानी,
ओपीर के कुन्दन से विभूषित खड़ी है।। 10 हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर
ध्यान दे; अपके लोगोंऔर अपके पिता के घर को भूल जा; 11 और राजा तेरे रूप
की चाह करेगा। क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर। 12 सोर की
राजकुमारी भी भेंट करने के लिथे उपस्थित होगी, प्रजा के धनवान लोग तुझे

प्रसन्न करने का यत्न करेंगे।। 13 राजकुमारी महल में अति शोभायमान है, उसके
वस्त्रा में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं; 14 वह बूटेदार वस्त्रा पहिने हुए राजा के पास
पहुंचाई जाएगी। जो कुमारियां उसकी सहेलियां हैं, वे उसके पीछे पीछे चलती हुई
तेरे पास पहुंचाई जाएंगी। 15 वे आनन्दित और मगन होकर पहुंचाई जाएंगी,
और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी।। 16 तेरे पितरोंके स्थान पर तेरे पुत्रा होंगे;
जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा। 17 मैं ऐसा करूंगा, कि तेरी नाम की
चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी तक होती रहेगी; इस कारण देश देश के लोग सदा सर्वदा तेरा
धन्यवाद करते रहेंगे।।

भजन संहिता 46

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला
सहाथक। 2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़
समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं; 3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़
उसकी बाढ़ से कांप उठे।। 4 एक नदी है जिसकी नहरोंसे परमेश्वर के नगर में
अर्थात् परमप्रधान के पवित्रा निवास भवन में आनन्द होता है। 5 परमेश्वर उस
नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहाथता
करता है। 6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे;
वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई। 7 सेनाओं का यहोवा हमारे संगे है; याकूब
का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है।। 8 आओ, यहोवा के महाकर्म देखो, कि उस ने
पृथ्वी पर कैसा कैसा उजाड़ किया है। 9 वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयोंको
मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और

रथोंको आग में झोंक देता है! 10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर
हूं। मैं जातियोंमें महान् हूं, मैं पृथ्वी भर में महान् हूं! 11 सेनाओं का यहोवा हमारे
संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है।।

भजन संहिता 47

1 हे देश देश के सब लोगों, तालियोंबजाओ! ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिथे
जयजयकार करो! 2 क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है, वह सारी पृथ्वी
के ऊपर महाराजा है। 3 वह देश के लोगोंको हमारे सम्मुख नीचा करता, और
अन्यजातियोंको हमारे पांवोंके नीचे कर देता है। 4 वह हमारे लिथे उत्तम भाग
चुन लेगा, जो उसके प्रिय याकूब के घमण्ड का कारण है।। 5 परमेश्वर
जयजयकार सहित, यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है। 6 परमेश्वर का
भजन गाओ, भजन गाओ! हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ! 7
क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का महाराजा है; समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ
8 परमेश्वर जाति जाति पर राज्य करता है; परमेश्वर अपके पवित्रा सिंहासन पर
विराजमान है। 9 राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा होने के लिथे
इकट्ठे हुए हैं। क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर के वश में हैं, वह तो शिरोमणि है!

भजन संहिता 48

1 हमारे परमेश्वर के नगर में, और अपके पवित्रा पर्वत पर यहोवा महान् और
अति स्तुति के योग्य है! 2 सिरयोन पर्वत ऊंचाई में सुन्दर और सारी पृथ्वी के हर्ष
का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिक्के पर है। 3 उसके महलोंमें

परमेश्वर ऊंचा गढ़ माना गया है। 4 क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए, वे एक
संग आगे बढ़ गए। 5 उन्होंने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हुए, वे
घबराकर भाग गए। 6 वहां कपकपी ने उनको आ पकड़ा, और जच्चा की सी
पीड़ाएं उन्हें होने लगीं। 7 तू पूर्वी वायु से तर्शीश के जहाजोंको तोड़ डालता है। 8
सेनाओं के यहोवा के नगर में, अपके परमेश्वर के नगर में, जैसा हम ने सुना था,
वैसा देखा भी है; परमेश्वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर रखेगा।। 9 हे परमेश्वर हम
ने तेरे मन्दिर के भीतर तेरी करूणा पर ध्यान किया है। 10 हे परमेश्वर तेरे नाम
के योग्य तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है। तेरा दहिना हाथ धर्म से भरा है;
11 तेरे न्याय के कामोंके कारण सिरयोन पर्वत आनन्द करे, और यहूदा के नगर
की पुत्रियां मगन हों! 12 सिरयोन के चारोंओर चलो, और उसकी परिक्रमा करो,
उसके गुम्मटोंको गिन लो, 13 उसकी शहरपनाह पर दृष्टि लगाओ, उसके
महलोंको ध्यान से देखो; जिस से कि तुम आनेवाली पीढ़ी के लोगोंसे इस बात का
वर्णन कर सको। 14 क्योंकि वह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है, वह
मृत्यु तक हमारी अगुवाई करेगा।।

भजन संहिता 49

1 हे देश देश के सब लोगोंयह सुनो! हे संसार के सब निवासियों, कान लगाओ! 2
क्या ऊंच, क्या नीच क्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ! 3 मेरे मुंह से बुद्धि की
बातें निकलेंगी; और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी। 4 मैं नीतिवचन की ओर
अपना कान लगाऊंगा, मैं वीणा बजाते हुए अपक्की गुप्त बात प्रकाशित करूंगा।।
5 विपत्ति के दिनोंमें जब मैं अपके अड़ंगा मारनेवालोंकी बुराइयोंसे घिरूं, तब मैं

क्योंडरूं? 6 जो अपक्की सम्पत्ति पर भरोसा रखते, और अपके धन की बहुतायत
पर फूलते हैं, 7 उन में से कोई अपके भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है;
और न परमेश्वर को उसकी सन्ती प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है, 8 (क्योंकि उनके
प्राण की छुड़ौती भारी है वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे)। 9 कोई ऐसा नहीं जो
सदैव जीवित रहे, और कब्र को न देखे।। 10 क्योंकि देखने में आता है, कि
बुद्धिमान भी मरते हैं, और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनोंनाश होते हैं, और
अपक्की सम्पत्ति औरोंके लिथे छोड़ जाते हैं। 11 वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि
उनका घर सदा स्थिर रहेगा, और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे;
इसलिथे वे अपक्की अपक्की भूमि का नाम अपके अपके नाम पर रखते हैं। 12
परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है,
जो मर मिटते हैं।। 13 उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है, तौभी उनके बाद लोग
उनकी बातोंसे प्रसन्न होते हैं। 14 वे अधोलोक की मानोंभेड़- बकरियां ठहराए गए
हैं; मृत्यु उनका गड़ेरिया ठहरी; और बिहान को सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे;
और उनका सुन्दर रूप अधोलोक का कौर हो जाएगा और उनका कोई आधार न
रहेगा। 15 परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, क्योंकि
वही मुझे ग्रहण कर अपनाएगा।। 16 जब कोई धनी हो जाए और उसके घर का
विभव बढ़ जाए, तब तू भय न खाना। 17 क्योंकि वह मर कर कुछ भी साथ न ले
जाएगा; न उसका विभव उसके साथ कब्र में जाएगा। 18 चाहे वह जीते जी अपके
आप को धन्य कहता रहे, (जब तू अपक्की भलाई करता है, तब वे लोग तेरी
प्रशंसा करते हैं) 19 तौभी वह अपके पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा, जो
कभी उजियाला न देखेंगे। 20 मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी होंपरन्तु यदि वे समझ

नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं।।

भजन संहिता 50

1 ईश्वर परमेश्वर यहोवा ने कहा है, और उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वी
के लोगोंको बुलाया है। 2 सिरयोन से, जो परम सुन्दर है, परमेश्वर ने अपना तेज
दिखाया है। 3 हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा, आग उसके आगे
आगे भस्म करती जाएगी; और उसके चारोंओर बड़ी आंधी चलेगी। 4 वह
अपक्की प्रजा का न्याय करने के लिथे ऊपर से आकाश को और पृथ्वी को भी
पुकारेगा: 5 मेरे भक्तोंको मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ
से वाचा बान्धी है! 6 और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर
तो आप ही न्यायी है।। 7 हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलता हूं, और हे इस्राएल, मैं तेरे
विषय साक्षी देता हूं। परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूं। 8 मैं तुझ पर तेरे
मेलबलियोंके विषय दोष नहीं लगाता, तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिथे चढ़ते हैं।
9 मैं न तो तेरे घर से बैल न तेरे पशुशालोंसे बकरे ले लूंगा। 10 क्योंकि वन के सारे
जीवजन्तु और हजारोंपहाड़ोंके जानवर मेरे ही हैं। 11 पहाड़ोंके सब पक्षियोंको मैं
जानता हूं, और मैदान पर चलने फिरनेवाले जानवार मेरे ही हैं।। 12 यदि मैं भूखा
होता तो तुझ से न कहता; क्योंकि जगत् और जो कुछ उस में है वह मेरा है। 13
क्या मैं बैल का मांस खाऊं, वा बकरोंका लोहू पीऊं? 14 परमेश्वर को धन्यवाद ही
का बलिदान चढ़ा, और परमप्रधान के लिथे अपक्की मन्नतें पूरी कर; 15 और
संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊंगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।।
16 परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है: तुझे मेरी विधियोंका वर्णन करने से क्या

काम? तू मरी वाचा की चर्चा क्योंकरता है? 17 तू तो शिक्षा से बैर करता, और मेरे
वचनोंको तुच्छ जातना है। 18 जब तू ने चोर को देखा, तब उसकी संगति से
प्रसन्न हुआ; और परस्त्रीगामियोंके साथ भागी हुआ।। 19 तू ने अपना मुंह बुराई
करने के लिथे खोला, और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है। 20 तू बैठा हुआ
अपके भाई के विरूद्ध बोलता; और अपके सगे भाई की चुगली खाता है। 21 यह
काम तू ने किया, और मैं चुप रहा; इसलिथे तू ने समझ लिया कि परमेश्वर
बिलकुल मेरे साम्हने है। परन्तु मैं तुझे समझाऊंगा, और तेरी आंखोंके साम्हने
सब कुछ अलग अलग दिखाऊंगा।। 22 हे ईश्वर को भूलनेवालो यह बात भली
भांति समझ लो, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं, और कोई छुड़ानेवाला न
हो! 23 धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है; और जो
अपना चरित्रा उत्तम रखता है उसको मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊंगा!

भजन संहिता 51

1 हे परमेश्वर, अपक्की करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपक्की बड़ी
दया के अनुसार मेरे अपराधोंको मिटा दे। 2 मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म
दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर! 3 मैं तो अपके अपराधोंकोंजानता
हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है। 4 मैं ने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप
किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और
न्याय करने में निष्कलंक ठहरे। 5 देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप
के साथ अपक्की माता के गर्भ में पड़ा।। 6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न
होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा। 7 जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं

पवित्रा हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा। 8 मुझे हर्ष
और आनन्द की बातें सुना, जिस से जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वह मगन हो
जाएं। 9 अपना मुख मेरे पापोंकी ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामोंको
मिटा डाल।। 10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर
स्थिर आत्मा नथे सिक्के से उत्पन्न कर। 11 मुझे अपके साम्हने से निकाल न
दे, और अपके पवित्रा आत्मा को मुझ से अलग न कर। 12 अपके किए हुए उद्धार
का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।। 13 जब मैं
अपराधियोंको तेरा मार्ग सिखाऊंगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे। 14 हे परमेश्वर,
हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरे धर्म का
जयजयकार करने पाऊंगा।। 15 हे प्रभु, मेरा मुंह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद
कर सकूंगा। 16 क्योकि तू मेलबलि में प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता;
होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। 17 टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है;
हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।। 18 प्रसन्न होकर
सिरयोन की भलाई कर, यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना, 19 तब तू धर्म के
बलिदानोंसे अर्थात् सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा; तब लोग तेरी वेदी
पर बैल चढ़ाएंगे।।

भजन संहिता 52

1 हे वीर, तू बुराई करने पर क्योंघमण्ड करता है? ईश्वर की करूणा तो अनन्त है।
2 तेरी जीभ केवल दुष्टता गढ़ती है; सारे धरे हुए अस्तुरे की नाईं वह छल का काम
करती है। 3 तू भलाई से बढ़कर बुराई में और अधर्म की बात से बढ़कर झूठ से

प्रीति रखता है। 4 हे छली जीभ तू सब विनाश करनेवाली बातोंसे प्रसन्न रहती
है।। 5 हे ईश्वर तुझे सदा के लिथे नाश कर देगा; वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से
निकाल देगा; और जीवतोंके लोक में तुझे उखाड़ डालेगा। 6 तब धर्मी लोग इस
घटना को देखकर डर जाएंगे, और यह कहकर उस पर हंसेंगे, कि 7 देखो, यह वही
पुरूष है जिस ने परमेश्वर को अपक्की शरण नहीं माना, परन्तु अपके धन की
बहुतायत पर भरोसा रखता था, और अपके को दुष्टता में दृढ़ करता रहा! 8 परन्तु
मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के समान हूं। मैं ने परमेश्वर की
करूणा पर सदा सर्वदा के लिथे भरोसा रखा है। 9 मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता
रहूंगा, क्योंकि तू ही ने यह काम किया है। मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूंगा,
क्योंकि यह तेरे पवित्रा भक्तोंके साम्हने उत्तम है।।

भजन संहिता 53

1 मूढ ने अपके मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होंने
कुटिलता के घिनौने काम किए हैं; कोई सुकर्मी नहीं।। 2 परमेश्वर ने स्वर्ग पर से
मनुष्योंके ऊपर दृष्टि की ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला वा परमेश्वर को
पूछनेवाला है कि नहीं।। 3 वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिगड़ गए; कोई
सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।। क्या उन सब अनर्थकारियोंको कुछ भी ज्ञान नहीं 4
जो मेरे लोगोंको ऐसे खाते हैं जैसे रोटी और परमेश्वर का नाम नहीं लेते? 5 वहां
उन पर भय छा गया जहां भय का कोई कारण न था। क्योंकि यहोवा न उनकी
हड्डियोंको, जो तेरे विरूद्ध छावनी डाले पके थे, तितर बितर कर दिया; तू ने तो
उन्हें लज्जित कर दिया इसलिथे कि परमेश्वर ने उनको निकम्मा ठहराया है।। 6

भला होता कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिरयोन से निकलता! जब परमेश्वर
अपक्की प्रजा को बन्धुवाई से लौटा ले आएगा तब याकूब मगन और इस्राएल
आनन्दित होगा।।

भजन संहिता 54

1 हे परमेश्वर अपके नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर, और अपके पराक्रम से मेरा
न्याय कर। 2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन ले; मेरे मुंह के वचनोंकी ओर कान
लगा।। 3 क्योंकि परदेशी मेरे विरूद्व उठे हैं, और बलात्कारी मेरे प्राण के ग्राहक
हुए हैं; उन्होंने परमेश्वर को अपके सम्मुख नहीं जाना।। 4 देखो, परमेश्वर मेरा
सहाथक है; प्रभु मेरे प्राण के सम्भालनेवालोंके संग है। 5 वह मेरे द्रोहियोंकी बुराई
को उन्हीं पर लौटा देगा; हे परमेश्वर, अपक्की सच्चाई के कारण उन्हें विनाश
कर।। 6 मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा; हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद
करूंगा, क्योंकि यह उत्तम है। 7 क्योंकि तू ने मुझे सब दुखोंसे छुड़ाया है, और मैं
अपके शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हुआ हूं।।

भजन संहिता 55

1 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा; और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुंह न
मोड़! 2 मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे; मैं चिन्ता के मारे छटपटाता हूं और
व्याकुल रहता हूं। 3 क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव कर रहें हैं; वे मुझ पर
दोषारोपण करते हैं, और क्रोध में आकर मुझे सताते हैं।। 4 मेरा मन भीतर ही
भीतर संकट में है, और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है। 5 भय और कंपकपी

ने मुझे पकड़ लिया है, और भय के कारण मेरे रोंए रोंए खड़े हो गए हैं। 6 और मैं
ने कहा, भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्राम
पाता! 7 देखो, फिर तो मैं उड़ते उड़ते दूर निकल जाता और जंगल में बसेरा लेता,
8 मैं प्रचण्ड बयार और आन्धी के झोंके से बचकर किसी शरण स्थान में भाग
जाता।। 9 हे प्रभु, उनको सत्यानाश कर, और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे;
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है। 10 रात दिन वे उसकी
शहरपनाह पर चढ़कर चारोंओर घूमते हैं; और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात
होता है। 11 उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है; और अन्धेर, अत्याचार और
छल उसके चौक से दूर नहीं होते।। 12 जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु नहीं
था, नहीं तो मैं उसको सह लेता; जो मेरे विरूद्व बड़ाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं
है, नहीं तो मैं उस से छिप जाता। 13 परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का
मनुष्य मेरा परममित्रा और मेरी जान पहचान का था। 14 हम दोनोंआपस में
कैसी मीठी मीठी बातें करते थे; हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे।
15 उनको मृत्यु अचानक आ दबाए; वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएं;
क्योंकि उनके घर और मन दोनोंमें बुराइयां और उत्पात भरा है।। 16 परन्तु मैं
तो परमेश्वर को पुकारूंगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। 17 सांझ को, भोर को,
दोपहर को, तीनोंपहर मैं दोहाई दूंगा और कराहता रहूंगा। और वह मेरा शब्द सुन
लेगा। 18 जो लड़ाई मेरे विरूद्व मची थी उस से उस ने मुझे कुशल के साथ बचा
लिया है। उन्होंने तो बहुतोंको संग लेकर मेरा साम्हना किया था। 19 ईश्वर जो
आदि से विराजमान है यह सुनकर उनको उत्तर देगा। थे वे है जिन में कोई
परिवर्तन नहीं और उन में परमेश्वर का भय है ही नहीं।। 20 उस ने अपके मेल

रखनेवालोंपर भी हाथ छोड़ा है, उस ने अपक्की वाचा को तोड़ दिया है। 21 उसके
मुंह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थी परन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें थीं;
उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे परन्तु नंगी तलवारें थीं।। 22 अपना बोझ
यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा।। 23
परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगोंको विनाश के गड़हे में गिरा देगा; हत्यारे और
छली मनुष्य अपक्की आधी आयु तक भी जीवित न रहेंगे। परन्तु मैं तुझ पर
भरोसा रखे रहूंगा।।

भजन संहिता 56

1 हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं। वे
दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं। 2 मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं,
क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझ से लड़ते हैं वे बहुत हैं। 3 जिस समय मुझे
डल लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा। 4 परमेश्वर की सहाथता से मैं उसके वचन
की प्रशंसा करूंगा, परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूंगा। कोई प्राणी
मेरा क्या कर सकता है? 5 वे दिन भर मेरे वचनोंको, उलटा अर्थ लगा लगाकर
मरोड़ते रहते हैंद्ध उनकी सारी कल्पनाएं मेरी ही बुराई करने की होती है। 6 वे सब
मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं; वे मेरे कदमोंको देखते भालते हैं
मानोंवे मेरे प्राणोंकी घात में ताक लगाए बैठें हों। 7 क्या वे बुराई करके भी बच
जाएंगे? हे परमेश्वर, अपके क्रोध से देश देश के लोगोंको गिरा दे! 8 तू मेरे मारे
मारे फिरने का हिसाब रखता है; तू मेरे आंसुओं को अपक्की कुप्पी में रख ले!
क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है? 9 जब जिस समय मैं पुकारूंगा, उसी

समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे। यह मैं जानता हूं, कि परमेश्वर मेरी ओर है। 10
परमेश्वर की सहाथता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा, यहोवा की सहाथता से
मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा। 11 मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न
डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? 12 हे परमेश्वर, तेरी मन्नतोंका भरा मुझ
पर बना है; मैं तुझ को धन्यवाद बलि चढ़ाऊंगा। 13 क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु
से बचाया है; तू ने मेरे पैरोंको भी फिसलने से न बचाया, ताकि मैं ईश्वर के साम्हने
जीवतोंके उजियाले में चलूं फिरूं?

भजन संहिता 57

1 हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं तेरा
शरणागत हूं; और जब तक थे आपत्तियां निकल न जाएं, तब तक मैं तेरे पंखोंके
तले शरण लिए रहूंगा। 2 मैं परम प्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा, ईश्वर को जो मेरे
लिथे सब कुछ सिद्ध करता है। 3 ईश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा, जब मेरा
निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो। परमेश्वर अपक्की करूणा और सच्चाई प्रगट
करेगा।। 4 मेरा प्राण सिंहोंके बीच में है, मुझे जलते हुओं के बीच में लेटना पड़ता
है, अर्थात् ऐसे मनुष्योंके बीच में जिन के दांत बर्छी और तीर हैं, और जिनकी
जीभ तेज तलवार है।। 5 हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय
है, तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए! 6 उन्होंने मेरे पैरोंके लिथे जाल
लगाया है; मेरा प्राण ढला जाता है। उन्होंने मेरे आगे गड़हा खोदा, परन्तु आप ही
उस में गिर पके।। 7 हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गाऊंगा
वरन भजन कीर्तन करूंगा। 8 हे मेरी आत्मा जाग जा! हे सारंगी और वीणा जाग

जाओ। मैं भी पौ फटते ही जाग उठूंगा। 9 हे प्रभु, मैं देश के लोगोंके बीच तेरा
धन्यवाद करूंगा; मैं राज्य राज्य के लोगोंके बीच में तेरा भजन गाऊंगा। 10
क्योंकि तेरी करूणा स्वर्ग तक बड़ी है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक
पहुंचक्की है।। 11 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान है! तेरी महिमा सारी
पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

भजन संहिता 58

1 हे मनुष्यों, क्या तुम सचमुच धर्म की बात बोलते हो? और हे मनुष्यवंशियोंक्या
तुम सीधाई से न्याय करते हो? 2 नहीं, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो;
तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो।। 3 दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे
पेट से निकलते ही झूठ बालते हुए भटक जाते हैं। 4 उन में सर्प का सा विष है; वे
उस नाम के समान हैं, जो सुनना नहीं चाहता; 5 और सपेरा कैसी ही निपुणता से
क्योंन मंत्रा पढ़े, तौभी उसकी नहीं सुनता।। 6 हे परमेश्वर, उनके मुंह में से
दांतोंको तोड़ दे; हे यहोवा उन जवान सिंहोंकी दाढ़ोंको उखाड़ डाल! 7 वे घुलकर
बहते हुए पानी के समान हो जाएं; जब वे अपके तीर चढ़ाएं, तब तीर मानोंदो
टुकड़े हो जाएं। 8 वे घोंघे के समान हो जाएं जो घुलकर नाश हो जाता है, और स्त्री
के गिरे हुए गर्भ के समान हो जिस ने सूरज को देखा ही नहीं। 9 उस से पहिले कि
तुम्हारी हांबियोंमें कांटोंकी आंच लगे, हरे व जले, दोनोंको वह बवंडर से उड़ा ले
जाएगा।। 10 धर्मी ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा; वह अपके पांव दुष्ट के
लोहू में धोएगा।। 11 तब मनुष्य कहने लगेंगे, निश्चय धर्मी के लिथे फल है;
निश्चय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है।।

भजन संहिता 59

1 हे मेरे परमेश्वर, मुझ को शत्रुओं से बचा, मुझे ऊंचे स्थान पर रखकर मेरे
विरोधियोंसे बचा, 2 मुझ को बुराई करनेवालोंके हाथ से बचा, और हत्यारोंसे मेरा
उद्वार कर।। 3 क्योंकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं; हे यहोवा, मेरा कोई दोष वा
पाप नहीं है, तौभी बलवन्त लोग मेरे विरूद्ध इकट्ठे होते हैं। 4 वह मुझ निर्दोष पर
दौड़े दौड़कर लड़ने को तैयार हो जाते हैं।। मुझ से मिलने के लिथे जाग उठ, और
यह देख! 5 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर सब
अन्यजातिवालोंको दण्ड देने के लिथे जाग; किसी विश्वासघाती अत्याचारी पर
अनुग्रह न कर।। 6 वे लागे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राते हैं, और नगर के
चारोंओर घूमते हैं। देख वे डकारते हैं, 7 उनके मुंह के भीतर तलवारें हैं, क्योंकि वे
कहते हैं, कौन सुनता है? 8 परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हंसेगा; तू सब अन्य
जातियोंको ठट्ठों में उड़ाएगा। 9 हे मेरे बल, मुझे तेरी ही आस होगी; क्योंकि
परमेश्वर मेरा ऊंचा गढ़ है।। 10 परमेश्वर करूणा करता हुआ मुझ से मिलेगा;
परमेश्वर मेरे द्रोहियोंके विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा।। 11 उन्हें घात न कर, न
हो कि मेरी प्रजा भूल जाए; हे प्रभु, हे हमारी ढाल! अपक्की शक्ति के उन्हें तितर
बितर कर, उन्हें दबा दे। 12 वह अपके मुंह के पाप, और ओठोंके वचन, और शाप
देने, और झूठ बोलने के कारण, अभिमान में फंसे हुए पकड़े जाएं। 13
जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर, उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएं
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर, वरन पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता
है।। 14 वे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राएं, और नगर के चारोंओर घूमें। 15
वे टुकड़े के लिथे मारे मारे फिरें, और तृप्त न होन पर रात भर वहीं ठहरे रहें।। 16

परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊंगा, और भोर को तेरी करूणा का जय
जयकार करूंगा। क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा
शरणस्थान ठहरा है। 17 हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊंगा, क्योंकि हे परमेश्वर, तू
मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा करूणामय परमेश्वर है।।

भजन संहिता 60

1 हे परमेश्वर तू ने हम को त्याग दिया, और हम को तोड़ डाला है; तू क्रोधित हुआ;
फिर हम को ज्योंका त्योंकर दे। 2 तू ने भूमि को कंपाया और फाड़ डाला है; उसके
दरारोंको भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है। 3 तू ने अपक्की प्रजा को कठिन
दु:ख भुगताया; तू ने हमें लड़खड़ा देनेवाला दाखमधु पिलाया है।। 4 तू ने अपके
डरवैयोंको झण्डा दिया है, कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए। 5 तू अपके
दहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएं।। 6 परमेश्वर
पवित्राता के साथ बोला है मैं प्रफुल्लित हूंगा; मैं शकेम को बांट लूंगा, और
सुक्कोत की तराई को नपवाऊंगा। 7 गिलाद मेरा है; मनश्शे भी मेरा है; और
एप्रैम मेरे सिर का टोप, यहूदा मेरा राजदण्ड है। 8 मोआब मेरे धोने का पात्रा है; मैं
एदोम पर अपना जूता फेंकूंबा; हे पलिश्तीन मेरे ही कारण जयजयकार कर।। 9
मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा? एदोम तक मेरी अगुवाई किस ने की है?
10 हे परमेश्वर, क्या तू ने हम को त्याग नही दिया? हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के
साथ नहीं जाता। 11 द्रोही के विरूद्ध हमारी सहाथता कर, क्योंकि मनुष्य का
किया हुआ छुटकारा व्यर्थ होता है। 12 परमेश्वर की सहाथता से हम वीरता
दिखाएंगे, क्योंकि हमारे द्रोहियोंको वही रौंदेगा।।

भजन संहिता 61

1 हे परमेश्वर, मेरा चिल्लाना सुन, मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे। 2 मूर्छा खाते
समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे पुकारूंगा, जो चट्टान मेरे लिथे ऊंची है, उस
पर मुझ को ले चला; 3 क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है, और शत्रु से बचने के लिथे
ऊंचा गढ़ है।। 4 मै तेरे तम्बू में युगानुयुग बना रहूंगा। 5 क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने
मेरी मन्नतें सुनीं, जो तेरे नाम के डरवैथे हैं, उनका सा भाग तू ने मुझे दिया है।।
6 तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा; उसके वर्ष पीढ़ी पीढ़ी के बराबर होंगे। 7 वह
परमेश्वर के सम्मुख सदा बना रहेगा; तू अपक्की करूणा और सच्चाई को उसकी
रक्षा के लिथे ठहरा रख। 8 और मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर अपक्की
मन्नतें हर दिन पूरी किया करूंगा।।

भजन संहिता 62

1 सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेरश्वर की ओर मन लगाए हूं; मेरा उद्धार उसी से
होता है। 2 सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; मैं बहुत
न डिगूंगा।। 3 तुम कब तक एक पुरूष पर धावा करते रहोगे, कि सब मिलकर
उसका घात करो? वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते हुए बाड़े के समान है। 4
सचमुच वे उसको, उसके ऊंचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं; वे झूठ से
प्रसन्न रहते हैं। मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं।। 5 हे मेरे मन,
परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है। 6 सचमुच वही
मेरी चट्टान, और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; इसलिथे मैं न डिगूंगा। 7 मेरा
उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है; मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा

शरणस्थान परमेश्वर है। 8 हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा रखो; उस से अपके
अपके मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। 9 सचमुच
नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं; तौल में वे हलके निकलते हैं;
वे सब के सब सांस से भी हलके हैं। 10 अन्धेर करने पर भरोसा मत रखो, और
लूट पाट करने पर मत फूलो; चाहे धन सम्पति बढ़े, तौभी उस पर मन न
लगाना।। 11 परमेश्वर ने एक बार कहा है; और दो बार मैं ने यह सुना है: कि
सामर्थ्य परमेश्वर का है। 12 और हे प्रभु, करूणा भी तेरी है। क्योंकि तू एक एक
जन को उसके काम के अनुसार फल देता है।।

भजन संहिता 63

1 हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि
पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। 2 इस प्रकार से मैं
ने पवित्रास्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं। 3
क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है मैं तेरी प्रशंसा करूंगा। 4 इसी प्रकार मैं
जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा; और तेरा नाम लेकर अपके हाथ उठाऊंगा।। 5
मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके
तेरी स्तुति करूंगा। 6 जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा, तब रात के एक
एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा; 7 क्योंकि तू मेरा सहाथक बना है, इसलिथे मैं
तेरे पंखोंकी छाया में जयजयकार करूंगा। 8 मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता
है; और मुझे तो तू अपके दहिने हाथ से थाम रखता है।। 9 परन्तु जो मेरे प्राण के
खोजी हैं, वे पृथ्वी के नीचे स्थानोंमें जा पकेंगे; 10 वे तलवार से मारे जाएंगे, और

गीदड़ोंका आहार हो जाएंगे। 11 परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा;
जो कोई ईश्वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा; परन्तु झूठ बोलनेवालोंका
मुंह बन्द किया जाएगा।।

भजन संहिता 64

1 हे परमेश्वर, जब मैं तेरी दोहाई दूं, तब मेरी सुन; शत्रु के उपजाए हुए भय के
समय मेरे प्राण की रक्षा कर। 2 कुकर्मियोंकी गोष्ठी से, और अनर्थकारियोंके
हुल्लड़ से मेरी आड़ हो। 3 उन्होंने अपक्की जीभ को तलवार की नाईं तेज किया
है, और अपके कड़वे बचनोंके तीरोंको चढ़ाया है; 4 ताकि छिपकर खरे मनुष्य को
मारें; वे निडर होकर उसको अचानक मारते भी हैं। 5 वे बुरे काम करने को हियाव
बान्धते हैं; वे फन्दे लगने के विषय बातचीत करते हैं; और कहते हैं, कि हम को
कौन देखेगा? 6 वे कुटिलता की युक्ति निकालते हैं; और कहते हैं, कि हम ने पक्की
युक्ति खोजकर निकाली है। क्योंकि मनुष्य का मन और हृदय अथाह हैं! 7 परन्तु
परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा; वे अचानक घायल हो जाएंगे। 8 वे अपके ही
वचनोंके कारण ठोकर खाकर गिर पकेंगे; जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपके
अपके सिर हिलाएंगे 9 तब सारे लोग डर जाएंगे; और परमेश्वर के कामोंका बखान
करंगे, और उसके कार्यक्रम को भली भांति समझेंगे।। 10 धर्मी तो यहोवा के
कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा, और सब सीधे मनवाले बड़ाई
करेंगे।।

भजन संहिता 65

1 हे परमेश्वर, सिरयोन में स्तुति तेरी बाट जोहती है; और तेरे लिथे मन्नतें पूरी
की जाएंगी। 2 हे प्रार्थना के सुननेवाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएंगे। 3 अर्धम के
काम मुझ पर प्रबल हुए हैं; हमारे अपराधोंको तू ढांप देगा। 4 क्या ही धन्य है वह;
जिसको तू चुनकर अपके समीप आने देता है, कि वह तेरे आंगनोंमें बास करे! हम
तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्रा मन्दिर के उत्तम उत्तम पदार्थोंसे तृप्त होंगे।। 5 हे
हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हे पृथ्वी के सब दूर दूर देशोंके और दूर के समुद्र पर के
रहनेवालोंके आधार, तू धर्म से किए हुए भयानक कामोंके द्वारा हमारा मुंह मांगा
वर देगा; 6 तू जो पराक्रम का फेंटा कसे हुए, अपक्की सामर्थ्य के पर्वतोंको स्थिर
करता है; 7 तू जो समुद्र का महाशब्द, उसकी तरंगो का महाशब्द, और देश देश
के लोगोंका कोलाहल शन्त करता है; 8 इसलिथे दूर दूर देशोंके रहनेवाले तेरे
चिन्ह देखकर डर गए हैं; तू उदयाचल और अस्ताचल दोनोंसे जयजयकार कराता
है।। 9 तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता हैं, तू उसको बहुत फलदायक करता
है; परमेश्वर की नहर जल से भरी रहती है; तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्योंके
लिथे अन्न को तैयार करता है। 10 तू रेघारियोंको भली भांति सींचता है, और
उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है, तू भूमि को मेंह से नरम करता है, और
उसकी उपज पर आशीष देता है। 11 अपक्की भलाई से भरे हुए वर्ष पर तू ने
मानो मुकुट धर दिया है; तेरे मार्गोंमें उत्तम उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं। 12 वे जंगल
की चराइयोंमें पाए जाते हैं; और पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बान्धे हुए है।। 13 चराइयां
भेड़- बकरियोंसे भरी हुई हैं; और तराइयां अन्न से ढंपी हुई हैं, वे जयजयकार
करतीं और गाती भी हैं।।

भजन संहिता 66

1 हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्वर के लिथे जयजयकार करो; 2 उसके नाम की
महिमा का भजन गाओ; उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा करो। 3 परमेश्वर
से कहो, कि तेरे काम क्या ही भयानक हैं! तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी
चापलूसी करेंगे। 4 सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे, और तेरा भजन
गाएंगे; वे तेरे नाम का भजन गाएंगे।। 5 आओ परमेश्वर के कामोंको दखो; वह
अपके कार्योंके कारण मनुष्योंको भययोग्य देख पड़ता है। 6 उस ने समुद्र को
सूखी भूमि कर डाला; वे महानद में से पांव पावं पार उतरे। वहां हम उसके कारण
आनन्दित हुए, 7 जो पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है, और अपक्की आंखोंसे
जाति जाति को ताकता है। हठीले अपके सिर न उठाएं।। 8 हे देश देश के लोगो,
हमारे परमेश्वर को धन्य कहो, और उसकी स्तुति में राग उठाओ, 9 जो हम को
जीवित रखता है; और हमारे पांव को टलने नहीं देता। 10 क्योंकि हे परमेश्वर तू
ने हम को जांचा; तू ने हमें चान्दी की नाईं ताया था। 11 तू ने हम को जाल में
फंसाया; और हमारी कटि पर भारी बोझ बान्धा था; 12 तू ने घुड़चढ़ोंको हमारे
सिरोंके ऊपर से चलाया, हम आग और जल से होकर गए; परन्तु तू ने हम को
उबार के सुख से भर दिया है।। 13 मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आंऊंगा मैं उन
मन्नतोंको तेरे लिथे पूरी करूंगा, 14 जो मैं ने मुंह खोलकर मानीं, और संकट के
समय कही थीं। 15 मैं तुझे मोटे पशुओं के होमबलि, मेंढ़ोंकी चर्बी के धूप समेत
चढ़ऊंगा; मैं बकरोंसमेत बैल चढ़ाऊंगा।। 16 हे परमेश्वर के सब डरवैयोंआकर
सुनो, मैं बताऊंगा कि उस ने मेरे लिथे क्या क्या किया है। 17 मैं ने उसको पुकारा,
और उसी का गुणानुवाद मुझ से हुआ। 18 यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता तो
प्रभु मेरी न सुनता। 19 परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है; उस ने मेरी प्रार्थना की ओर

ध्यान दिया है।। 20 धन्य है परमेश्वर, जिस ने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की,
और न मुझ से अपक्की करूणा दूर कर दी है!

भजन संहिता 67

1 परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हम को आशीष दे; वह हम पर अपके मुख
को प्रकाश चमकाए 2 जिस से तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्वार
सारी जातियोंमें जाना जाए। 3 हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।। 4 राज्य राज्य के लोग आनन्द करें,
और जयजयकार करें, क्योंकि तू देश देश के लोंगोंका न्याय धर्म से करेगा, और
पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगोंकी अगुवाई करेगा।। 5 हे परमेश्वर, देश देश के
लोग तेरा धन्यवाद करें; देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।। 6 भूमि ने
अपक्की उपज दी है, परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उस ने हमें आशीष दी है। 7
परमेश्वर हम को आशीष देगा; और पृथ्वी के दूर दूर देशोंके सब लोग उसका भय
मानेंगे।।

भजन संहिता 68

1 परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तित्तर बितर हों; और उसके बैरी उसके साम्हने से भाग
जाएं। 2 जैसे धुआं उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे; जैसे मोम आग की आंच
से पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नाश हों। 3 परन्तु
धर्मी आनन्दित हों; वे परमेश्वर के साम्हने प्रफुल्लित हों; वे आनन्द से मगन हों!
4 परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ; जो निर्जल देशोंमें सवार

होकर चलता है, उसके लिथे सड़क बनाओ; उसका नाम याह है, इसलिथे तुम
उसके साम्हने प्रफुल्लित हो! 5 परमेश्वर अपके पवित्रा धाम में, अनाथोंका पिता
और विधवाओं का न्यायी है। 6 परमेश्वर अनाथोंका घर बसाता है; और बन्धुओं
को छुड़ाकर भाग्यवान करता है; परन्तु हठीलोंको सूखी भूमि पर रहना पड़ता है।।
7 हे परमेश्वर, जब तू अपक्की प्रजा के आगे आगे चलता था, जब तू निर्जल भूमि
में सेना समेत चला, 8 तब पृथ्वी कांप उठी, और आकाश भी परमेश्वर के साम्हने
टपकने लगा, उधर सीनै पर्वत परमेश्वर, हां इस्राएल के परमेश्वर के साम्हने कांप
उठा। 9 हे परमेश्वर, तू ने बहुत से वरदान बरसाए; तेरा निज भाग तो बहुत सूखा
था, परन्तू तू ने उसको हरा भरा किया है; 10 तेरा झुण्ड उस में बसने लगा; हे
परमेश्वर तू ने अपक्की भलाई से दीन जन के लिथे तैयारी की है। 11 प्रभु आज्ञा
देता है, तब शुभ समाचार सुनानेवालियोंकी बड़ी सेना हो जाती है। 12 अपक्की
अपक्की सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं, और गृहस्थिन लूट को बांट लेती है।
13 क्या तुम भेड़शालोंके बीच लेट जाओगे? और ऐसी कबूतरी के समान होगे
जिसके पंख चान्दी से और जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुए हों? 14 जब
सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को तित्तर बितर किया, तब मानो सल्मोन पर्वत
पर हिम पड़ा।। 15 बाशान का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ है; बाशान का पहाड़ बहुत
शिखरवाला पहाड़ है। 16 परन्तु हे शिखरवाले पहाड़ों, तुम क्योंउस पर्वत को घूरते
हो, जिसे परमेश्वर ने अपके वास के लिथे चाहा है, और जहां यहोवा सदा वास
किए रहेगा? 17 परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारोंहजार हैं; प्रभु उनके बीच
में है, जैसे वह सीनै पवित्रास्थान में है। 18 तू ऊंचे पर चढ़ा, तू लोगोंको बन्धुवाई
में ले गया; तू ने मनुष्योंसे, वरन हठीले मनुष्योंसे भी भेंटें लीं, जिस से याह

परमेश्वर उन में वास करे।। 19 धन्य है प्रभु, जो प्रति दिन हमारा बोझ उठाता है;
वही हमारा उद्धारकर्ता ईश्वर है। 20 वही हमारे लिथे बचानेवाला ईश्वर ठहरा;
यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है।। 21 निश्चय परमेश्वर अपके शत्रुओं के सिर पर,
और जो अधर्म के र्माग पर चलता रहता है, उसके बाल भरे चोंडें पर मार मार के
उसे चूर करेगा। 22 प्रभु ने कहा है, कि मैं उन्हें बाशान से निकाल लाऊंगा, मैं
उनको गहिरे सागर के तल से भी फेर ले आऊंगा, 23 कि तू अपके पांव को लोहू में
डुबोए, और तेरे शत्रु तेरे कुत्तोंका भाग ठहरें।। 24 हे परमशॅवर तेरी गति देखी गई,
मेरे ईश्वर, मेरे राजा की गति पवित्रास्थान में दिखाई दी है; 25 गानेवाले आगे
आगे और तारवाले बाजोंके बजानेवाले पीछे पीछे गए, चारोंओर कुमारियां डफ
बजाती थीं। 26 सभाओं में परमेश्वर का, हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगों,
प्रभु का धन्यवाद करो। 27 वहां उनको अध्यक्ष छोटा बिन्यामीन है, वहां यहूदा के
हाकिम अपके अनुचरोंसमेत हैं, वहां जबूलून और नप्ताली के भी हाकिम हैं।। 28
तेरे परमेश्वर ने आज्ञा दी, कि तुझे सामर्थ्य मिले; हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे
लिथे किया है, उसे दृढ़ कर। 29 तेरे मन्दिर के कारण जो यरूशलेम में हैं, राजा
तेरे लिथे भेंट ले आएंगे। 30 नरकटोंमें रहनेवाले बनैले पशुओं को, सांड़ोंके झुण्ड
को और देश देश के बछड़ोंको झिड़क दे। वे चान्दी के टुकड़े लिथे हुए प्रणाम
करेंगे; जो लोगे युद्ध से प्रसन्न रहते हैं, उनको उस ने तितर बितर किया है। 31
मि से रईस आएंगे; कूशी अपके हाथोंको परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएंगे।। 32
हे पृथ्वी पर के राज्य राज्य के लोगोंपरमेश्वर का गीत गाओ; प्रभु का भजन
गाओ, 33 जो सब से ऊंचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है; देखो वह
अपक्की वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली है। 34 परमशॅवर की

सामर्थ्य की स्तुति करो, उसका प्रताप इस्राएल पर छाया हुआ है, और उसकी
सामर्थ्य आकाशमण्डल में है। 35 हे परमेश्वर, तू अपके पवित्रास्थानोंमें भययोग्य
है, इस्राएल का ईश्वर ही अपक्की प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला है।
परमेश्वर धन्य है।।

भजन संहिता 69

1 हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर, मैं जल में डूबा जाता हूं। 2 मैं बड़े दलदल में धसा
जाता हूं, और मेरे पैर कहीं नहीं रूकते; मैं गहिरे जल में आ गया, और धारा में
डूबा जाता हूं। 3 मैं पुकारते पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है; अपके
परमेश्वर की बाट जोहते जोहते, मेरी आंखे रह गई हैं।। 4 जो अकारण मेरे बैरी हैं,
वे गिनती में मेरे सिर के बालोंसे अधिक हैं; मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे
शत्रु हैं, वे सामर्थी हैं, इसलिथे जो मैं ने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा है। 5 हे
परमेश्वर, तू तो मेरी मूढता को जानता है, और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं।। 6 हे
प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं, उनकी आशा मेरे कारण न टूटे;
हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तुझे ढूंढते हैं उनका मुंह मेरे कारण काला न हो। 7 तेरे
ही कारण मेरी निन्दा हुई है, और मेरा मुंह लज्जा से ढंपा है। 8 मैं अपके भाइयोंके
साम्हने अजनबी हुआ, और अपके सगे भाइयोंकी दृष्टि में परदेशी ठहरा हूं।। 9
क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म हुआ, और जो निन्दा वे तेरी
करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है। 10 जब मैं रोकर और उपवास करके
दु:ख उठाता था, तब उस से भी मेरी नामधराई ही हुई। 11 और जब मैं टाट का
वस्त्रा पहिने था, तब मेरा दृष्टान्त उन में चलता था। 12 फाटक के पास बैठनेवाले

मेरे विषय बातचीत करते हैं, और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गाते
हैं। 13 परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है; हे
परमेश्वर अपक्की करूणा की बहुतायात से, और बचाने की अपक्की सच्ची
प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी सुन ले। 14 मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धंस न
जाऊं; मैं अपके बैरियोंसे, और गहिरे जल में से बच जाऊं। 15 मैं धारा में डूब न
जाऊं, और न मैं गहिरे जल में डूब मरूं, और न पाताल का मुंह मेरे ऊपर बन्द
हो।। 16 हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करूणा उत्तम है; अपक्की दया की
बहुतायत के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे। 17 अपके दास से अपना मुंह न मोड़;
क्योंकि मैं संकट में हूं, फुर्ती से मेरी सुन ले। 18 मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे।। 19 मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर
को तू जानता है: मेरे सब द्रोही तेरे साम्हने हैं। 20 मेरा हृदय नामधराई के कारण
फट गया, और मैं बहुत उदास हूं। मैं ने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की,
परन्तु किसी को न पाया, और शान्ति देनेवाले ढूंढ़ता तो रहा, परन्तु कोई न
मिला। 21 और लोगोंने मेरे खाने के लिथे इन्द्रायन दिया, और मेरी प्यास बुझाने
के लिथे मुझे सिरका पिलाया।। 22 उनको भोजन उनके लिथे फन्दा हो जाए; और
उनके सुख के समय जाल बन जाए। 23 उनकी आंखोंपर अन्धेरा छा जाए, ताकि
वे देख न सकें; और तू उनकी कटि को निरन्तर कंपाता रह। 24 उनके ऊपर
अपना रोष भड़का, और तेरे क्रोध की आंच उनको लगे। 25 उनकी छावनी उजड़
जाए, उनके डेरोंमें कोई न रहे। 26 क्योंकि जिसको तू ने मारा, वे उसके पीछे पके
हैं, और जिनको तू ने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं। 27 उनके
अधर्म पर अधर्म बढ़ा; और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें। 28 उनका नाम जीवन की

पुस्तक में से काटा जाए, और धर्मियोंके संग लिखा न जाए।। 29 परन्तु मैं तो
दु:खी और पीड़ित हूं, इसलिथे हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर
बैठा। 30 मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूंगा, और धन्यवाद करता हुआ
तेरी बड़ाई करूंगा। 31 यह यहोवा को बैल से अधिक, वरन सींग और खुरवाले बैल
से भी अधिक भाएगा। 32 नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे, हे परमेश्वर के
खोजियोंतुम्हारा मन हरा हो जाए। 33 क्योंकि यहोवा दरिद्रोंकी ओर कान लगाता
है, और अपके लोगोंको जो बन्धुए हैं तुच्छ नही जानता।। 34 स्वर्ग और पृथ्वी
उसकी स्तुति करें, और समुद्र अपके सब जीव जन्तुओं समेत उसकी स्तुति करे।
35 क्योंकि परमेश्वर सिरयोन का उद्धार करेगा, और यहूदा के नगरोंको फिर
बसाएगा; और लोग फिर वहां बसकर उसके अधिक्कारनी हो जाएंगे। 36 उसके
दासोंको वंश उसको अपके भाग में पाएगा, और उसके नाम के प्रेमी उस में वास
करेंगे।।

भजन संहिता 70

1 हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिथे, हे यहोवा मेरी सहाथता करने के लिथे फुर्ती
कर! 2 जो मेरे प्राण के खोजी हैं, उनकी आशा टूटे, और मुंह काला हो जाए! जो
मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं, वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएं। 3 जो कहते
हैं, आहा, आहा, वे अपक्की लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएं।। 4 जितने तुझे ढूंढ़ते
हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों! और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे
निरन्तर कहते रहें, कि परमेश्वर की बड़ाई हो। 5 मैं तो दीन और दरिद्र हूं; हे
परमेश्वर मेरे लिथे फुर्ती कर! तू मेरा सहाथक और छुड़ानेवाला है; हे यहोवा

विलम्ब न कर!

भजन संहिता 71

1 हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं; मेरी आशा कभी टूटने न पाए! 2 तू तो धर्मी है,
मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर; मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर! 3 मेरे
लिथे सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिस में मैं नित्य जा सकूं; तू ने मेरे
उद्धार की आज्ञा तो दी है, क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है।। 4 हे मेरे
परमेश्वर दुष्ट के, और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर। 5 क्योंकि
हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूं; बचपन से मेरा आधार तू है। 6 मैं
गर्भ से निकलते ही, तुझ से सम्भाला गया; मुझे मां की कोख से तू ही ने निकाला;
इसलिथे मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूंगा।। 7 मैं बहुतोंके लिथे चमत्कार बना हूं;
परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है। 8 मेरे मुंह से तेरे गुणानुवाद, और दिन भर तेरी
शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे। 9 बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर; जब मेरा
बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे। 10 क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं, और
जो मेरे प्राण की ताक में हैं, वे आपस में यह सम्मति करते हैं, कि 11 परमेश्वर ने
उसको छोड़ दिया है; उसका पीछा करके उसे पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई
छुड़ानेवाला नहीं।। 12 हे परमेश्वर, मुझ से दूर न रह; हे मेरे परमेश्वर, मेरी
सहाथता के लिथे फुर्ती कर! 13 जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, उनकी आशा टूटे और
उनका अन्त हो जाए; जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे नामधराई और अनादर में
गड़ जाएं। 14 मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूंगा, और तेरी स्तुति अधिक अधिक
करता जाऊंगा। 15 मैं अपके मुंह से तेरे धर्म का, और तेरे किए हुए उद्धार का

वर्णन दिन भर करता रहूंगा, परन्तु उनका पूरा ब्योरा जाना भी नहीं जाता। 16 मैं
प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामोंका वर्णन करता हुआ आऊंगा, मैं केवल तेरे ही
धर्म की चर्चा किया करूंगा।। 17 हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता
आया है, और अब तक मैं तेरे आश्चर्य कर्मोंका प्रचार करता आया हूं। 18 इसलिथे
हे परमेश्वर जब मैं बूढा हो जाऊं और मेरे बाल पक जाएं, तब भी तू मुझे न छोड़,
जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगोंको तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न
होनेवालोंको तेरा पराक्रम सुनाऊं। 19 और हे परमेश्वर, तेरा धर्म अति महान है।।
तू जिस ने महाकार्य किए हैं, हे परमेवर तेरे तुल्य कौन है? 20 तू ने तो हम को
बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैं परन्तु अब तू फिर से हम को जिलाएगा; और
पृथ्वी के गहिरे गड़हे में से उबार लेगा। 21 तू मेरी बड़ाई को बढ़ाएगा, और
फिरकर मुझे शान्ति देगा।। 22 हे मेरे परमेश्वर, मैं भी तेरी सच्चाई को धन्यवाद
सारंगी बजाकर गाऊंगा; हे इस्राएल के पवित्रा मैं वीणा बजाकर तेरा भजन
गाऊंगा। 23 जब मैं तेरा भजन गाऊंगा, तब अपके मुंह से और अपके प्राण से भी
जो तू ने बचा लिया है, जयजयकार करूंगा। 24 और मैं तेरे धर्म की चर्चा दिन भर
करता रहूंगा; क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे, उनकी आशा टूट गई और
मुंह काले हो गए हैं।।

भजन संहिता 72

1 हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता, राजपुत्रा को अपना धर्म सिखला! 2
वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से, और तेरे दी लोगोंका न्याय ठीक ठीक चुकाएगा।
3 पहाडोंऔर पहाड़ियोंसे प्रजा के लिथे, धर्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी 4 वह

प्रजा के दीन लोगोंका न्याय करेगा, और दरिद्र लोगोंको बचाएगा; और अन्धेर
करनेवालोंको चूर करेगा।। 5 जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे तब तक लोग
पीढ़ी- पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे। 6 वह घास की खूंटी पर बरसनेवाले मेंह, और
भूमि सींचनेवाली झाड़ियोंके समान होगा। 7 उसके दिनोंमें धर्मी फूले फलेंगे, और
जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शान्ति बहुत रहेगी।। 8 वह समुद्र से समुद्र
तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा। 9 उसके साम्हने जंगल के
रहनेवाले घुटने टेकेंगे, और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे। 10 तर्शीश और द्वीप द्वीप के
राजा भेंट ले आएंगे, शेबा और सबा दोनोंके राजा द्रव्य पहुंचाएंगे। 11 सब राजा
उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएंगे।। 12 क्योंकि
वह दोहाई देनेवाले दरिद्र को, और दु:खी और असहाथ मनुष्य का उद्धार करेगा।
13 वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा, और दरिद्रोंके प्राणो को बचाएगा। 14
वह उनके प्राणोंको अन्धेर और उपद्रव से छुड़ा लेगा; और उनका लोहू उसकी दृष्टि
में अनमोल ठहरेगा।। 15 वह तो जीवित रहेगा और शेबा के सोने में से उसको
दिया जाएगा। लोग उसके लिथे नित्य प्रार्थना करेंगे; और दिन भर उसको धन्य
कहते हरेंगे। 16 देश में पहाड़ोंकी चोटियोंपर बहुत से अन्न होगा; जिसकी बालें
लबानोन के देवदारूओं की नाईं झूमेंगी; और नगर के लोग घास की नाई
लहलहाएंगे। 17 उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा,
तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपके को उसके कारण
धन्य गिनेंगे, सारी जातियां उसको भाग्यवान कहेंगी।। 18 धन्य है, यहोवा
परमेश्वर जो इस्राएल का परमेश्वर है; आश्चर्य कर्म केवल वही करता है। 19 उसका
महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण

होगी। आमीन फिर आमीन।। 20 यिशै के पुत्रा दाऊद की प्रार्थना समाप्त हुई।।

भजन संहिता 73

1 सचमुच इस्राएल के लिथे अर्थात् शुद्ध मनवालोंके लिथे परमेश्वर भला है। 2 मेरे
डग तो उखड़ना चाहते थे, मेरे डग फिसलने ही पर थे। 3 क्योंकि जब मैं दुष्टोंका
कुशल देखता था, तब उन घमण्डियोंके विषय डाह करता था।। 4 क्योंकि उनकी
मृत्यु में बेधनाएं नहीं होतीं, परन्तु उनका बल अटूट रहता है। 5 उनको दूसरे
मनुष्योंकी नाईं कष्ट नहीं होता; और और मनुष्योंके समान उन पर विपत्ति नहीं
पड़ती। 6 इस कारण अहंकार उनके गले का हार बना है; उनका ओढ़ना उपद्रव है।
7 उनकी आंखें चर्बी से झलकती हैं, उनके मन की भवनाएं उमण्डती हैं। 8 वे
ठट्ठा मारते हैं, और दुष्टता से अन्धेर की बात बोलते हैं; 9 वे डींग मारते हैं। वे
मानोंस्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं, और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं।। 10 तौभी
उसकी प्रजा इधर लौट आएगी, और उनको भरे हुए प्याले का जल मिलेगा। 11
फिर वे कहते हैं, ईश्वर कैसे जानता है? क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है? 12
देखो, थे तो दुष्ट लोग हैं; तौभी सदा सुभागी रहकर, धन सम्पत्ति बटोरते रहते हैं।
13 निश्चय, मैं ने अपके हृदय को व्यर्थ शुद्ध किया और अपके हाथोंको निर्दोषता
में धोया है; 14 क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया हूं और प्रति भोर को मेरी
ताड़ना होती आई है।। 15 यदि मैं ने कहा होता कि मैं ऐसा ही कहूंगा, तो देख मैं
तेरे लड़कोंकी सन्तान के साथ क्रूरता का व्यवहार करता, 16 जब मैं सोचने लगा
कि इसे मैं कैसे समझूं, तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी, 17 जब तक
कि मैं ने ईश्वर के पवित्रा स्थान में जाकर उन लोगोंके परिणाम को न सोचा। 18

निश्चय तू उन्हें फिसलनेवाले स्थानोंमें रखता है; और गिराकर सत्यानाश कर
देता है। 19 अहा, वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए हैं! वे मिट गए, वे घबराते घबराते
नाश हो गए हैं। 20 जैसे जागनेहारा स्वप्न को तुच्छ जानता है, वैसे ही हे प्रभु जब
तू उठेगा, तब उनको छाया से समझकर तुच्छ जानेगा।। 21 मेरा मन तो
चिड़चिड़ा हो गया, मेरा अन्त:करण छिद गया था, 22 मैं तो पशु सरीखा था, और
समझता न था, मैं तेरे संग रहकर भी, पशु बन गया था। 23 तौभी मैं निरन्तर तेरे
संग ही था; तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रखा। 24 तू सम्मति देता हुआ, मेरी
अगुवाई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपके पास रखेगा। 25 स्वर्ग
में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। 26
मेरे हृदय और मन दोनोंतो हार गए हैं, परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिथे मेरा भाग
और मेरे हृदय की चट्टान बना है।। 27 जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे; जो
कोई तेरे विरूद्ध व्यभिचार करता है, उसको तू विनाश करता है। 28 परन्तु
परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिथे भला है; मैं ने प्रभु यहोवा को अपना
शरणस्थान माना है, जिस से मैं तेरे सब कामोंको वर्णन करूं।।

भजन संहिता 74

1 हे परमेश्वर, तू ने हमें क्योंसदा के लिथे छोड़ दिया है? तेरी कोपाग्नि का धुआं
तेरी चराई की भेंड़ोंके विरूद्ध क्योंउठ रहा है? 2 अपक्की मण्डली को जिसे तू ने
प्राचीनकाल में मोल लिया था, और अपके निज भाग का गोत्रा होने के लिथे छुड़ा
लिया था, और इस सिरयोन पर्वत को भी, जिस पर तू ने वास किया था, स्मारण
कर! 3 अपके डग सनातन की खंडहर की ओर बढ़ा; अर्थात् उन सब बुराइयोंकी

ओर जो शत्राृ ने पवित्रास्थान में किए हैं।। 4 तेरे द्रोही तेरे सभास्थान के बीच
गरजते रहे हैं; उन्होंने अपक्की ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया है। वे उन
मनुष्योंके समान थे 5 जो घने वन के पेड़ोंपर कुल्हाड़े चलाते हैं। 6 और अब वे
उस भवन की नक्काशी को, कुल्हाडियोंऔर हथौड़ोंसे बिलकुल तोड़े डालते हैं। 7
उन्होंने तेरे पवित्रास्थान को आग में झोंक दिया है, और तेरे नाम के निवास को
गिराकर अशुद्ध कर डाला है। 8 उन्होंने मन में कहा है कि हम इनको एकदक दबा
दें; उन्होंने इस देश में ईश्वर के सब सभास्थानोंकोंफूंक दिया है।। 9 हम को हमारे
निशान नहीं देख पड़ते; अब कोई नबी नहीं रहा, न हमारे बीच कोई जानता है कि
कब तक यह दशा रहेगी। 10 हे परमेश्वर द्रोही कब तक नामधराई करता रहेगा?
क्या शत्रु, तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा? 11 तू अपना दहिना हाथ
क्योंरोके रहता है? उसे अपके पांजर से निकाल कर उनका अन्त कर दे।। 12
परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है, वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता
आया है। 13 तू ने अपक्की शक्ति से समुद्र को दो भाग कर दिया; तू ने जल में
मगरमच्छोंके सिक्कों फोड़ दिया। 14 तू ने तो लिव्यातानोंके सिर टुकड़े टुकड़े
करके जंगली जन्तुओं को खिला दिए। 15 तू ने तो सोता खोलकर जल की धारा
बहाई, तू ने तो बारहमासी नदियोंको सुखा डाला। 16 दिन तेरा है रात भी तेरी है;
सूर्य और चन्द्रमा को तू ने स्थिर किया है। 17 तू ने तो पृथ्वी के सब सिवानोंको
ठहराया; धूपकाल और जाड़ा दोनोंतू ने ठहराए हैं।। 18 हे यहोवा स्मरण कर, कि
शत्रु ने नामधराई ही है, और मूढ लोगोंने तेरे नाम की निन्दा की है। 19 अपक्की
पिण्डुकी के प्राण को वनपशु के वश में न कर; अपके दी जनोंको सदा के लिथे न
भूल 20 अपक्की वाचा की सुधि ले; क्योंकि देश के अन्धेरे स्थान अत्याचार के

घरोंसे भरपूर हैं। 21 पिसे हुए जन को निरादर होकर लौटना न पके; दीन दरिद्र
लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएं।। 22 हे परमेश्वर उठ, अपना मुक मा आप ही
लड़; तेरी जो नामधराई मूढ से दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर। 23 अपके
द्रोहियोंका बड़ा बोल न भूल, तेरे विरोधियोंको कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता
है।

भजन संहिता 75

1 हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते, हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं; क्योंकि
तेरा नाम प्रगट हुआ है, तेरे आश्चर्यकर्मोंका वर्णन हो रहा है।। 2 जब ठीक समय
आएगा तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय करूंगा। 3 पृथ्वी अपके सब
रहनेवालोंसमेत गल रही है, मैं ने उसके खम्भोंको स्थिर कर दिया है। 4 मैं ने
घमंडियोंसे कहा, घमंड मत करो, और दुष्टोंसे, कि सींग ऊंचा मत करो; 5 अपना
सींग बहुत ऊंचा मत करो, न सिर उठाकर ढिठाई की बात बोलो।। 6 क्योंकि
बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से, और न जंगल की ओर से आती है; 7 परन्तु
परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है। 8 यहोवा के
हाथ में एक कटोरा है, जिस में का दाखमधु झागवाला है; उस में मसाला मिला है,
और वह उस में से उंडेलता है, निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दृष्ट लोग
पी जाएंगे।। 9 परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहूंगा, मैं याकूब के परमेश्वर का
भजन गांऊगा। 10 दुष्टोंके सब सींगोंको मैं काट डालूंगा, परन्तु धर्मी के सींग ऊंचे
किए जाएंगे।

भजन संहिता 76

1 परमेश्वर यहूदा में जाना गया है, उसका नाम इस्राएल में महान हुआ है। 2 और
उसका मण्डप शालेम में, और उसका धाम सिरयोन में है। 3 वहां उस ने
चमचमाते तीरोंको, और ढाल ओर तलवार को तोड़कर, निदान लड़ाई ही को तोड़
डाला है।। 4 हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है; तू अहेर से भरे हुए पहाड़ोंसे अधिक
उत्तम और महान है। 5 दृढ़ मनवाले लुट गए, और भरी नींद में पके हैं; 6 और
शूरवीरोंमें से किसी का हाथ न चला। हे याकूब के परमेश्वर, तेरी घुडकी से,
रथोंसमेत घोड़े भारी नींद में पके हैं। 7 केवल तू ही भययोग्य है; और जब तू क्रोध
करने लगे, तब तेरे साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा? 8 तू ने स्वर्ग से निर्णय सुनाया
है; पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही, 9 जब परमेश्वर न्याय करने
को, और पृथ्वी के सब नम्र लोगोंका उद्धार करने को उठा।। 10 निश्चय मनुष्य की
जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी, और जो जलजलाहट रह जाए,
उसको तू रोकेगा। 11 अपके परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो, और पूरी भी करो;
वह जो भय के योग्य है, उसके आस पास के सब उसके लिथे भेंट ले आएं। 12 वह
तो प्रधानोंका अभिमान मिटा देगा; वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान
पड़ता है।।

भजन संहिता 77

1 मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दूंगा, मैं परमेश्वर की दोहाई दूंगा, और
वह मेरी ओर कान लगाएगा। 2 संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा; रात
को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ, मुझ में शांति आई ही नहीं। 3 मैं
परमेश्वर का स्मरण कर करके कहरता हूं; मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो चला

हूं। (सेला) 4 तू मुझे झपक्की लगने नहीं देता; मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह से
बात नहीं निकलती।। 5 मैं प्राचीनकाल के दिनोंको, और युग युग के वर्षोंको सोचा
है। 6 मैं रात के समय अपके गीत को स्मरण करता; और मन में ध्यान करता हूं,
और मन में भली भांति विचार करता हूं: 7 क्या प्रभु युग युग के लिथे छोड़ देगा;
और फिर कभी प्रसन्न न होगा? 8 क्या उसकी करूणा सदा के लिथे जाती रही?
क्या उसका वचन पीढ़ी पीढ़ी के लिथे निष्फल हो गया है? 9 क्या ईश्वर अनुग्रह
करना भूल गया? क्या उस ने क्रोध करके अपक्की सब दया को रोक रखा है?
(सेला) 10 मैने कहा यह तो मेरी दुर्बलता ही है, परन्तु मैं परमप्रधान के दहिने
हाथ के वर्षोंको विचारता हूं।। 11 मैं याह के बड़े कामोंकी चर्चा करूंगा; निश्चय मैं
तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामोंको स्मरण करूंगा। 12 मैं तेरे सब कामोंपर
ध्यान करूंगा, और तेरे बड़े कामोंको सोचूंगा। 13 हे परमेश्वर तेरी गति पवित्राता
की है। कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है? 14 अद्भुत काम करनेवाला ईश्वर
तू ही है, तू ने अपके देश देश के लोगोंपर अपक्की शक्ति प्रगट की है। 15 तू ने
अपके भुजबल से अपक्की प्रजा, याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है।।
(सेला) 16 हे परमेश्वर समुद्र ने तुझे देखा, समुद्र तुझे देखकर ड़र गया, गहिरा
सागर भी कांप उठा। 17 मेघोंसे बड़ी वर्षा हुई; आकाश से शब्द हुआ; फिर तेरे तीर
इधर उधर चले। 18 बवणडर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था; जगत बिजली
से प्रकाशित हुआ; पृथ्वी कांपी और हिल गई। 19 तेरे मार्ग समुद्र में है, और तेरा
रास्ता गहिरे जल में हुआ; और तेरे पांवोंके चिन्ह मालम नहीं होते। 20 तू ने मूसा
और हारून के द्वारा, अपक्की प्रजा की अगुवाई भेड़ोंकी सी की।।

भजन संहिता 78

1 हे मेरे लागो, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनोंकी ओर कान लगाओ! 2 मैं अपना मूंह
नीतिवचन कहने के लिथे खोलूंगा; मैं प्राचीकाल की गुप्त बातें कहूंगा, 3 जिन
बातोंको हम ने सुना, ओर जान लिया, और हमारे बाप दादोंने हम से वर्णन किया
है। 4 उन्हे हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगें, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगोंसे,
यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ और आश्चर्यकर्मोंका वर्णन करेंगें।। 5
उस ने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई, और इस्त्राएल में एक व्यवस्था चलाई,
जिसके विषय उस ने हमारे पितरोंको आज्ञा दी, कि तुम इन्हे अपके अपके
लड़केवालोंको बताना; 6 कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात जो लड़केवाले
उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हे जानें; और अपके अपके लड़केवालोंसे इनका बखान
करने में उद्यत हों, जिस से वे परमेश्वर का आस्त्रा रखें, 7 और ईश्वर के बड़े
कामोंको भूल न जाएं, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें; 8 और अपके
पितरोंके समान न हों, क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और झगड़ालू थे, और
उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था, और न उनकी आत्मा ईश्वर की ओर सच्ची
रही।। 9 एप्रेमयोंने तो शस्त्राधारी और धनुर्धारी होने पर भी, युठ्ठ के समय पीठ
दिखा दी। 10 उन्हो ने परमेश्वर की वाचा पूरी नहीं की, और उसकी व्यवस्था पर
चलने से इनकार किया। 11 उन्हो ने उसके बड़े कामोंको और जो आश्चर्यकर्म उस
ने उनके साम्हने किए थे, उनको भुला दिया। 12 उस ने तो उनके बापदादोंके
सम्मुख मिस्त्रा देश के सोअन के मैदान में अद्भुत कर्म किए थे। 13 उस ने समुद्र
को दो भाग करके उन्हे पार कर दिया, और जल को ढ़ेर की नाई खड़ा कर दिया।
14 और उस ने दिन को बादल के खम्भोंसे और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा
उनकी अगुवाई की। 15 वह जंगल में चट्टानें फाड़कर, उनको मानो गहिरे

जलाशयोंसे मनमाने पिलाता था। 16 उस ने चट्टान से भी धाराएं निकालीं और
नदियोंका सा जल बहाथा।। 17 तौभी वे फिर उसके विरूद्ध अघिक पाप करते गए,
और निर्जल देश में परमप्रधान के विरूद्ध उठते रहे। 18 और अपक्की चाह के
अनुसार भोजन मांगकर मन ही मन ईश्वर की पक्कीक्षा की। 19 वे परमेश्वर के
विरूद्ध बोले, और कहने लगे, क्या ईश्वर जंगल में मेज लगा सकता है? 20 उस ने
चट्टान पर मारके जल बहा तो दिया, और धाराएं उमण्ड़ चक्की, परन्तु क्या वह
रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपक्की प्रजा के लिथे मांस भी तैयार कर सकता?
21 यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया, तब याकूब के बीच आग लगी, और इस्त्राएल
के विरूद्ध क्रोध भड़का; 22 इसलिए कि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखा था,
न उसकी उठ्ठार करने की शक्ति पर भरोसा किया। 23 तौभी उस ने आकाश को
आज्ञा दी, और स्वर्ग के ठ्ठारोंको खोला; 24 और उनके लिथे खाने को मान
बरसाया, और उन्हे स्वर्ग का अन्न दिया। 25 उनको शूरवीरोंकी सी रोटी मिली;
उस ने उनको मनमाना भोजन दिया। 26 उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया,
और अपक्की शक्ति से दक्खिनी बहाई; 27 और उनके लिथे मांस धूलि की नाईं
बहुत बरसाया, और समुद्र के बालू के समान अनगिनित पक्षी भेजे; 28 और
उनकी छावनी के बीच में, उनके निवासोंके चारोंओर गिराए। 29 और वे खाकर
अति तृप्त हुए, और उस ने उनकी कामना पूरी की। 30 उनकी कामना बनी ही रही,
उनका भोजन उनके मुंह ही में था, 31 कि परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का, और
उस ने उनके हृष्टपुष्टोंको घात किया, और इस्त्राएल के जवानोंको गिरा दिया।। 32
इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए; और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मोंकी
प्रतीति न की। 33 तब उस ने उनके दिनोंको व्यर्थ श्रम में, और उनके वर्षोंको

धबराहट में कटवाया। 34 जब जब वह उन्हे घात करने लगता, तब तब वे उसको
पूछते थे; और फिरकर ईश्वर को यत्न से खोजते थे। 35 और उनको स्मरण होता
था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ानेवाला है।
36 तौभी उन्होंने उस से चापलूसी की; वे उस से झूठ बोले। 37 क्योंकि उनका
ह्रदय उसकी ओर दृढ़ न था; न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे। 38 परन्तु वह
जो दयालु है, वह अधर्म को ढांपता, और नाश नहीं करता; वह बारबार अपके क्रोध
को ठण्डा करता है, और अपक्की जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता।
39 उसको स्मरण हुआ कि थे नाशमान हैं, थे वायु के समान हैं जो चक्की जाती
और लौट नहीं आती। 40 उन्होंने कितनी ही बार जंगल में उस से बलवा किया,
और निर्जल देश में उसको उदास किया! 41 वे बारबार ईश्वर की पक्कीक्षा करते
थे, और इस्त्राएल के पवित्रा को खेदित करते थे। 42 उन्होने न तो उसका भुजबल
स्मरण किया, न वह दिन जब उस ने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था; 43 कि
उस ने क्योंकर अपके चिन्ह मिस्त्रा में, और अपके चमत्कार सोअन के मैदान में
किए थे। 44 उस ने तो मिस्त्रियोंकी नहरोंको लोहू बना डाला, और वे अपक्की
नदियोंका जल पी न सके। 45 उस ने उनके बीच में डांस भेजे जिन्होंने उन्हे काट
खाया, और मेंढक भी भेजे, जिन्होंने उनका बिगाड़ किया। 46 उस ने उनकी भूमि
की उपज कीड़ोंको, और उनकी खेतीबारी टिड्डयोंको खिला दी थी। 47 उस ने
उनकी दाखलताओं को ओलोंसे, और उनके गूलर के पेड़ोंको बड़े बड़े पत्थ्र
बरसाकर नाश किया। 48 उस ने उनके पशुओं को ओलोंसे, और उनके ढोरोंको
बिजलियोंसे मिटा दिया। 49 उस ने उनके ऊपर अपना प्रचणड क्रोध और रोष
भड़काया, और उन्हे संकट में डाला, और दुखदाई दूतोंका दल भेजा। 50 उस ने

अपके क्रोध का मार्ग खोला, और उनके प्राणोंको मृत्यु से न बचाया, परन्तु उनको
मरी के वश में कर दिया। 51 उस ने मिस्त्रा के सब पहिलौठोंको मारा, जो हाम के
डेरोंमें पौरूष के पहिले फल थे; 52 परन्तु अपक्की प्रजा को भेड़- बकरियोंकी नाईं
पयान कराया, और जंगल में उनकी अगुवाई पशुओं के झुण्ड की सी की। 53 तब
वे उसके चलाने से बेखटके चले और उनको कुछ भय न हुआ, परन्तु उनके शत्रु
समुद्र में डूब गए। 54 और उस ने उनको अपके पवित्रा देश के सिवाने तक, इसी
पहाड़ी देश में पहुंचाया, जो उस ने अपके दहिने हाथ से प्राप्त किया था। 55 उस ने
उनके साम्हने से अन्यजातियोंको भगा दिया; और उनकी भूमि को डोरी से माप
मापकर बांट दिया; और इस्त्राएल के गोत्रोंको उनके डेरोंमें बसाया।। 56 तौभी
उन्होने परमप्रधान परमेश्वर की पक्कीक्षा की और उस से बलवा किया, और
उसकी चितौनियोंको न माना, 57 और मुड़कर अपके पुरखाओं की नाईं
विश्वासघात किया; उन्होंने निकम्मे धनुष की नाईं धोखा दिया। 58 क्योंकि
उन्होंने ऊंचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई, और खुदी हुई मुर्तियोंके द्वारा उस
में जलन उपजाई। 59 परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया, और उस ने इस्त्राएल को
बिलकुल तज दिया। 60 उस ने शीलो के निवास, अर्थात् उस तम्बु को जो उस ने
मनुष्योंके बीच खडा किया था, त्याग दिया, 61 और अपक्की सामर्थ को
बन्धुआई में जाने दिया, और अपक्की शोभा को द्रोही के वश में कर दिया। 62
उस ने अपक्की प्रजा को तलवार से मरवा दिया, और अपके निज भाग के
लोगोंपर रोष से भर गया। 63 उन के जवान आग से भस्म हुए, और उनकी
कुमारियोंके विवाह के गीत न गाए गए। 64 उनके याजक तलवार से मारे गए,
और उनकी विधवाएं रोने न पाईं। 65 तब प्रभु मानो नींद से चौंक उठा, और ऐसे

वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो। 66 और उस ने अपके
द्रोहियोंको मारकर पीछे हटा दिया; और उनकी सदा की नामधराई कराई।। 67
फिर उस ने यूसुफ के तम्बू को तज दिया; और एप्रैम के गोत्रा को न चुना; 68
परन्तु यहूदा ही के गोत्रा को, और अपके प्रिय सिरयोन पर्वत को चुन लिया। 69
उस ने अपके पवित्रास्थान को बहुत ऊंचा बना दिया, और पृथ्वी के समान स्थिर
बनाया, जिसकी नेव उस ने सदा के लिथे डाली है। 70 फिर उसने अपके दास
दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से ले लिया; 71 वह उसको बच्चेवाली भेड़ोंके
पीछे पीछे फिरने से ले आया कि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात उसके निज
भाग इस्त्राएल की चरवाही करे। 72 तब उस ने खरे मन से उनकी चरवाही की,
और अपके हाथ की कुशलता से उनकी अगुवाई की।।

भजन संहिता 79

1 हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे निज भग में घुस आई; उन्होंने तेेरे पवित्रा
मन्दिर को अशुठ्ठ किया; और यरूशलेम को खंडहर कर दिया है। 2 उन्होंने तेरे
दासोंकी लोथोंको आकाश के पक्षियोंका आहार कर दिया, और तेरे भक्तोंका मांस
वनपशुओं को खिला दिया है। 3 उन्होंने उनका लोहू यरूशलेम के चारोंओर जल
की नाई बहाथा, और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था। 4 पड़ोसियोंके बीच
हमारी नामधराई हुई; चारोंओर के रहनेवाले हम पर हंसते, और ठट्ठा करते हैं।।
5 हे यहोवा, तू कब तक लगातार क्रोध करता रहेगा? तुझ में आग की सी जलन
कब तक भड़कती रहेगी? 6 जो जातियां तुझ को नहीं जानती, और जिन राज्योंके
लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते, उन्ही पर अपक्की सब जलजलाहट भड़का! 7

क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया, और उसके वासस्थान को उजाड़ दिया
है। 8 हमारी हानि के लिथे हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामोंको स्मरण न कर;
तेरी दया हम पर शीघ्र हो, क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पके हैं। 9 हे हमारे
उठ्ठारकर्त्ता परमेश्वर, अपके नाम की महिमा के निमित हमारी सहाथता कर;
और अपके नाम के निमित हम को छुड़ाकर हमारे पापोंको ढांप दे। 10
अनयजातियां क्योंकहने पाएं कि उनका परमेश्वर कहां रहा? अन्यजातियोंके बीच
तेरे दासोंके खून का पलटा लेना हमारे देखते उन्हें मालूम हो जाए।। 11 बन्धुओं
का कराहना तेरे कान तक पहुंचे; घात होनेवालोंको अपके भुजबल के द्वारा बचा।
12 और हे प्रभु, हमारे पड़ोसियोंने जो तेरी निन्दा की है, उसका सातगुणा बदला
उनको दे! 13 तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़ें हैं, तेरा धन्यवाद सदा
करते रहेंगे; और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानुवाद करते रहेंगें।।

भजन संहिता 80

1 हे इस्त्राएल के चरवाहे, तू जो यूसुफ की अगुवाई भेड़ोंकी सी करता है, कान
लगा! तू जो करूबोंपर विराजमान है, अपना तेज दिखा! 2 एप्रैम, बिन्यामीन,
और मनश्शे के साम्हने अपना पराक्रम दिखाकर, हमारा उठ्ठार करने को आ! 3
हे परमेश्वर, हम को ज्योंके त्योंकर दे; और अपके मुख का प्रकाश चमका, तब
हमारा उठ्ठार हो जाएगा! 4 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तू कब तक अपक्की
प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा? 5 तू ने आंसुओं को उनका आहार कर दिया,
और मटके भर भरके उन्हें आंसु पिलाए हैं। 6 तू हमें हमारे पड़ोसियोंके झगड़ने
का कारण कर देता है; और हमारे शत्रु मनमाने ठट्ठा करते हैं।। 7 हे सेनाओं के

परमेश्वर, हम को ज्योंके त्योंकर दे; और अपके मुख का प्रकाश हम पर चमका,
तब हमारा उद्धार हो जाएगा।। 8 तू मि से एक दाखलता ले आया; और
अन्यजातियोंको निकालकर उसे लगा दिया। 9 तू ने उसके लिथे स्थान तैयार
किया है; और उस ने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया। 10 उसकी छाया
पहाड़ोंपर फैल गई, और उसकी डालियां ईश्वर के देवदारोंके समान हुई; 11 उसकी
शाखाएं समुद्र तक बढ़ गई, और उसके अंकुर महानद तक फैल गए। 12 फिर तू
ने उसके बाड़ोंको क्योंगिरा दिया, कि सब बटोही उसके फलोंको तोड़ते है? 13
वनसूअर उसको नाश किए डालता है, और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं।।
14 हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ! स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता
की सुधि ले, 15 थे पौधा तू ने अपके दहिने हाथ से लगाया, और जो लता की
शाखा तू ने अपके लिथे दृढ़ की है। 16 वह जल गई, वह कट गई है; तेरी घुड़की से
वे नाश होते हैं। 17 तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुअ पुरूष पर तेरा हाथ रखा रहे,
उस आदमी पर, जिसे तू ने अपके लिथे दृढ़ किया है। 18 तब हम लोग तुझ से न
मुड़ेंगे: तू हम को जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे। 19 हे सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा, हम को ज्योंका त्योंकर दे! और अपके मुख का प्रकाश हम पर
चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

भजन संहिता 81

1 परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ; याकूब के परमेश्वर
का जयजयकार करो! 2 भजन उठाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा और
सारंगी को ले आओ। 3 नथे चाँद के दिन, और पूणमासी को हमारे पर्व के दिन

नरसिंगा फुको। 4 क्योंकि यह इस्त्राएल के लिथे विधि, और याकूब के परमेश्वर
का ठहराया हुआ नियम है। 5 इसको उस ने यूसुफ में चितौनी की रीति पर उस
समय चलाया, जब वह मिस्त्र देश के विरूद्ध चला।। वहां मैं ने एक अनजानी भाषा
सुनी; 6 मैं ने उनके कन्धोंपर से बोझ को उतार दिया; उनका टोकरी ढोना छुट
गया। 7 तू ने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैं ने तुझे छुड़ाया; बादल गरजने के
गुप्त स्थान में से मैं ने तेरी सुनी, और मरीबा नाम सोते के पास तेरी पक्कीक्षा की।
(सेला) 8 हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूं! हे इस्त्राएल भला हो कि तू मेरी
सुने! 9 तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो; और न तू किसी पराए देवता को दणडवत्
करना! 10 तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूं, जो तुझे मिस्त्र देश से निकाल लाया है। तू
अपना मुंह पसार, मैं उसे भर दूंगा।। 11 परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी; इस्त्राएल
ने मुझ को न चाहा। 12 इसलिथे मैं ने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया, कि
वह अपक्की ही युक्तियोंके अनुसार चले। 13 यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि
इस्त्राएल मेरे मार्गोंपर चले, 14 तो क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊं, और
अपना हाथ उनके द्रोहयोंके विरूद्ध चलाऊं। 15 यहोवा के बैरी तो उस के वश में हो
जाते, और वे सदाकाल बने रहते हैं। 16 और वह उनको उत्तम से उत्तम गेहूं
खिलाता, और मैं चट्टान में के मधु से उनको तृप्त करूं।।

भजन संहिता 82

1 परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है; वह ईश्वरोंके बीच में न्याय करता है।
2 तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते और दुष्टोंका पक्ष लेते रहोगे? 3 कंगाल और
अनाथोंका न्याय चुकाओ, दीन दरिद्र का विचार धर्म से करो। 4 कंगाल और

निर्धन को बचा लो; दुष्टोंके हाथ से उन्हें छुड़ाओ।। 5 वे न तो कुछ समझते और न
कुछ बूझते हैं, परन्तु अन्धेरे में चलते फिरते रहते हैं; पृथ्वी की पूरी नीव हिल
जाती है।। 6 मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्रा
हो; 7 तौभी तुम मनुष्योंकी नाई मरोगे, और किसी प्रधान के समान गिर
जाओगे।। 8 हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर; क्योंकि तू ही सब जातियोंको
अपके भाग में लेगा!

भजन संहिता 83

1 हे परमेश्वर मौन न रह; हे ईश्वर चुप न रह, और न शांत रह! 2 क्योंकि देख तेरे
शत्रु धूम मचा रहे हैं; और तेरे बैरियोंने सिर उठाया है। 3 वे चतुराई से तेरी प्रजा
की हानि की सम्मति करते, और तेरे रक्षित लोगोंके विरूद्ध युक्तियां निकालते हैं।
4 उन्होंने कहा, आओ, हम उनको ऐसा नाश करें कि राज्य भी मिट जाए; और
इस्त्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे। 5 उन्होंने एक मन होकर युक्ति
निकाली है, और तेरे ही विरूद्ध वाचा बान्धी है। 6 थे तो एदोम के तम्बूवाले और
इश्माइली, मोआबी और हग्री, 7 गबाली, अम्मोनी, अमालेकी, और सोर समेत
पलिश्ती हैं। 8 इनके संग अश्शूरी भी मिल गए हैं; उन से भी लोतवंशियोंको
सहारा मिला है। 9 इन से ऐसा कर जैसा मिद्यानियोंसे, और कीशोन नाले में
सीसरा और याबीन से किया था, जो एन्दोर में नाश हुए, 10 और भूमि के लिथे
खाद बन गए। 11 इनके रईसोंको ओरेब और जाएब सरीखे, और इनके सब
प्रधानोंको जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे, 12 जिन्होंने कहा था, कि हम
परमेश्वर की चराइयोंके अधिक्कारनी आप ही हो जाएं।। 13 हे मेरे परमेश्वर

इनको बवन्डर की धूलि, वा पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे। 14 उस
आग की नाईं जो वन को भस्म करती है, और उस लौ की नाईं जो पहाड़ोंको जला
देती है, 15 तू इन्हे अपक्की आंधी से भाग दे, और अपके बवन्डर से घबरा दे! 16
इनके मुंह को अति लज्जित कर, कि हे यहोवा थे तेरे नाम को ढूंढ़ें। 17 थे सदा के
लिथे लज्जित और घबराए रहें इनके मुंह काले हों, और इनका नाश हो जाए, 18
जिस से यह जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है, सारी पृथ्वी के ऊपर
परमप्रधान है।।

भजन संहिता 84

1 हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं! 2 मेरा प्राण यहोवा के
आंगनोंकी अभिलाषा करते करते मूर्च्छित हो चला; मेरा तन मन दोंनो जीवते
ईश्वर को पुकार रहे।। 3 हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी
वेदियोंमे गौरैया ने अपना बसेरा और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है जिस में
वह अपके बच्चे रखे। 4 क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं; वे तेरी स्तुति
निरन्तर करते रहेंगे।। 5 क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता है,
और वे जिनको सिरयोन की सड़क की सुधि रहती है। 6 वें रोने की तराई में जाते
हुए उसको सोतोंका स्थान बनाते हैं; फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष
ही आशीष उपजाती है। 7 वे बल पर बल पाते जाते हैं; उन में से हर एक जन
सिरयोन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा।। 8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
मेरी प्रार्थना सुन, हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा! 9 हे परमेश्वर, हे हमारी ढ़ाल,
दृष्टि कर; और अपके अभिषिक्ति का मुख देख! 10 क्योंकि तेरे आंगनोंमें का एक

दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है। दुष्टोंके डेरोंमें वास करने से अपके
परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है। 11 क्योंकि
यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और
जो लोग खरी चाल चलते हैं; उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा। 12 हे
सेनाओं के यहोवा, क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता है!

भजन संहिता 85

1 हे यहोवा, तू अपके देश पर प्रसन्न हुआ, याकूब को बन्धुआई से लौटा ले आया
है। 2 तू ने अपक्की प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है; और उसके सब पापोंको ढांप
दिया है। 3 तू ने अपके रोष को शान्त किया है; और अपके भड़के हुए कोप को दूर
किया है।। 4 हे हमारे उठ्ठारकर्त्ता परमेश्वर हम को फेर, और अपना क्रोध हम पर
से दूर कर! 5 क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा? क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी तक कोप
करता रहेगा? 6 क्या तू हम को फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द
करे? 7 हे यहोवा अपक्की करूणा हमें दिखा, और तू हमारा उठ्ठार कर।। 8 मैं
कान लगाए रहूंगा, कि ईश्वर यहोवा क्या कहता है, वह तो अपक्की प्रजा से जो
उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा; परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगें। 9
निश्चय उसके डरवैयोंके उठ्ठार का समय निकट है, तब हमारे देश में महिमा का
निवास होगा।। 10 करूणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने
आपस में चुम्बन किया हैं। 11 पृथ्वी में से सच्चाई उगती और स्वर्ग से धर्म
झुकता है। 12 फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा, और हमारी भूमि अपक्की उपज
देगी। 13 धर्म उसके आगे आगे चलेगा, और उसके पांवोंके चिन्होंको हमारे लिथे

मार्ग बनाएगा।।

भजन संहिता 86

1 हे यहोवा कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं। 2 मेरे प्राण
की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूं; तू मेरा परमेश्वर है, इसलिथे अपके दास का,
जिसका भरोसा तुझ पर है, उठ्ठार कर। 3 हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं
तुझी को लगातार पुकारता रहता हूं। 4 अपके दास के मन को आनन्दित कर,
क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं। 5 क्योंकि हे प्रभु, तू भला
और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभोंके लिथे तू अति
करूणामय है। 6 हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा, और मेरे गिड़गिड़ाने
को ध्यान से सुन। 7 संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा, क्योंकि तू मेरी सुन
लेगा।। 8 हे प्रभु देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं, और ने किसी के काम तेरे
कामोंके बराबर हैं। 9 हे प्रभु जितनी जातियोंको तू ने बनाया है, सब आकर तेरे
साम्हने दणडवत् करेंगी, और तेरे नाम की महिमा करेंगी। 10 क्योंकि तू महान्
और आश्चर्यकर्म करनेवाला है, केवल तू ही परमेश्वर है। 11 हे यहोवा अपना मार्ग
मुझे दिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा, मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे
नाम का भय मानूं। 12 हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपके सम्पूर्ण मन से तेरा
धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा। 13 क्योंकि तेरी
करूणा मेरे ऊपर बड़ी है; और तू ने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा
लिया है।। 14 हे परमेश्वर अभिमानी लोग तो मेरे विरूद्ध उठे हैं, और
बलात्कारियोंका समाज मेरे प्राण का खोजी हुआ है, और वे तेरा कुछ विचार नहीं

रखते। 15 परन्तु प्रभु दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर है, तू विलम्ब से कोप
करनेवाला और अति करूणामय है। 16 मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर;
अपके दास को तू शक्ति दे, और अपक्की दासी के पुत्रा का उठ्ठार कर।। 17 मुझे
भलाई का कोई लक्षण दिखा, जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों, क्योंकि हे यहोवा
तू ने आप मेरी सहाथता की और मुझे शान्ति दी है।।

भजन संहिता 87

1 उसकी नेव पवित्रा पर्वतोंमें है; 2 और यहोवा सिरयोन के फाटकोंको याकूब के
सारे निवासोंसे बढ़कर प्रीति रखता है। 3 हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय महिमा
की बातें कही गई हैं। 4 मैं अपके जान- पहचानवालोंसे रहब और बाबेल की भी
चर्चा करूंगा; पलिश्त, सोर और कूश को देखो, यह वहां उत्पन्न हुआ था। 5 और
सिरयोन के विषय में यह कहा जाएगा, कि अमुक अमुक मनुष्य उस में उत्पन्न
हुआ था; और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखेगा। 6 यहोेवा जब देश देश
के लोगोंके नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा, कि यह वहां उत्पन्न हुआ
था।। 7 गवैथे और नृतक दोनोंकहेंगे कि हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं।।

भजन संहिता 88

1 हे मेरे उठ्ठारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता
आया हूं। 2 मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा! 3
क्योंकि मेरा प्राण क्लेश में भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा
है। 4 मैं कबर में पड़नेवालोंमें गिना गया हूं; मैं बलहीन पुरूष के समान हो गया

हूं। 5 मैं मुर्दोंके बीच छोड़ा गया हूं, और जो घात होकर कबर में पके हैं, जिनको तू
फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहाथता रहित हैं, उनके समान मैं हो गया
हूं। 6 तू ने मुझे गड़हे के तल ही में, अन्धेरे और गहिरे स्थान में रखा है। 7 तेरी
जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है, और तू ने अपके सब तरंगोंसे मुझे दु:ख दिया
है; 8 तू ने मेरे पहिचानवालोंको मुझ से दूर किया है; और मुझ को उनकी दृष्टि में
घिनौना किया है। मैं बन्दी हूं और निकल नही सकता; 9 दु:ख भोगते भोगते मेरी
आंखे धुन्धला गई। हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता और अपके हाथ तेरी ओर
फैलाता आया हूं। 10 क्या तू मुर्दोंके लिथे अदभुत् काम करेगा? क्या मरे लोग
उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे? 11 क्या कबर में तेरी करूणा का, और विनाश की
दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा? 12 क्या तेरे अदभुत् काम
अन्धकार में, वा तेरा धर्म विश्वासघात की दशा में जाना जाएगा? 13 परन्तु हे
यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी है; और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचेगी। 14 हे
यहोवा, तू मुझ को क्योंछोड़ता है? तू अपना मुख मुझ से क्योंछिपाता रहता है?
15 मैं बचपन ही से दु:खी वरन अधमुआ हूं, तुझ से भय खाते मैं अति व्याकुल हो
गया हूं। 16 तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है; उस भय से मैं मिट गया हूं। 17 वह दिन
भर जल की नाई मुझे घेरे रहता है; वह मेरे चारोंओर दिखाई देता है। 18 तू ने
मित्रा और भाईबन्धु दोनोंको मुझ से दूर किया है; और मेरे जान- पहिचानवालोंको
अन्धकार में डाल दिया है।।

भजन संहिता 89

1 मैं यहोवा की सारी करूणा के विषय सदा गाता रहूंगा; मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी

पीढ़ी तक जताता रहूंगा। 2 क्योंकि मैं ने कहा है, तेरी करूणा सदा बनी रहेगी, तू
स्वर्ग में अपक्की सच्चाई को स्थिर रखेगा। 3 मैं ने अपके चुने हुए से वाचा
बान्धी है, मैं ने अपके दास दाऊद से शपथ खाई है, 4 कि मैं तेरे वंश को सदा
स्थिर रखूंगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी पीढ़ी तक बनाए रखूंगा। 5 हे यहोवा,
स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की, और पवित्रोंकी सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा
होगी। 6 क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा? बलवन्तोंके
पुत्रोंमें से कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी? 7 ईश्वर पवित्रोंकी
गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य, और अपके चारोंओर सब रहनेवालोंसे अधिक
भययोग्य है। 8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे याह, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है?
तेरी सच्चाई तो तेरे चारोंओर है! 9 समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है; जब उसके
तरंग उठते हैं, तब तू उनको शान्त कर देता है। 10 तू ने रहब को घात किए हुए
के समान कुचल डाला, और अपके शत्रुओं को अपके बाहुबल से तितर बितर
किया है। 11 आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है; जगत और जो कुछ उस में है, उसे
तू ही ने स्थिर किया है। 12 उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा; ताबोर और
हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं। 13 तेरी भुजा बलवन्त है; तेरा हाथ
शक्तिमान और तेरा दहिना हाथ प्रबल है। 14 तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और
न्याय है; करूणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है। 15 क्या ही धन्य है वह
समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है; हे हयोवा वे लोग मेरे मुख के
प्रकाश में चलते हैं, 16 वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं, और तेरे धर्म के
कारण महान हो जाते हैं। 17 क्योंकि तू उनके बल की शोभा है, और अपक्की
प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊंचा करेगा। 18 क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर

से है हमारा राजा इस्राएल के पवित्रा की ओर से है।। 19 एक समय तू ने अपके
भक्त को दर्शन देकर बातें की; और कहा, मैं ने सहाथता करने का भार एक वीर पर
रखा है, और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है। 20 मैं ने अपके दास दाऊद को
लेकर, अपके पवित्रा तेल से उसका अभिषेक किया है। 21 मेरा हाथ उसके साथ
बना रहेगा, और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी। 22 शत्रु उसको तंग करने न पाएगा,
और न कुटिल जन उसको दु:ख देने पाएगा। 23 मैं उसके द्रोहियोंको उसके
साम्हने से नाश करूंगा, और उसके बैरियोंपर विपत्ति डालूंगा। 24 परन्तु मेरी
सच्चाई और करूणा उस पर बनी रहेंगी, और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊंचा
हो जाएगा। 25 मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे और महानदोंको उसके दहिने हाथ
के नीचे कर दूंगा। 26 वह मुझे पुकारके कहेगा, कि तू मेरा पिता है, मेरा ईश्वर
और मेरे बचने की चट्टान है। 27 फिर मैं उसको अपना पहिलौठा, और पृथ्वी के
राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा। 28 मैं अपक्की करूणा उस पर सदा बनाए रहूंगा,
और मेरी वाचा उसके लिथे अटल रहेगी। 29 मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूंगा,
और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी। 30 यदि उसके वंश के
लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें और मेरे नियमोंके अनुसार न चलें, 31 यदि वे मेरी
विधियोंका उल्लंघन करें, और मेरी आज्ञाओं को न मानें, 32 तो मैं उनके अपराध
का दण्ड सोंटें से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ोंसे दूंगा। 33 परन्तु मैं अपक्की
करूणा उस पर से हटाऊंगा, और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूंगा। 34 मैं
अपक्की वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा। 35
एक बार मैं अपक्की पवित्राता की शपथ खा चुका हूं; मैं दाऊद को कभी धोखा न
दूंगा। 36 उसका वंश सर्वदा रहेगा, और उसकी राजगद्दी सूर्य की नाईं मेरे सम्मुख

ठहरी रहेगी। 37 वह चन्द्रमा की नाईं, और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी
की नाई सदा बना रहेगा। 38 तौभी तू ने अपके अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज
दिया, और उस पर अति क्रोध किया है। 39 तू अपके दास के साथ की वाचा से
घिनाया, और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है। 40 तू ने उसके
सब बाड़ोंको तेड़ डाला है, और उसके गढ़ोंको उजाड़ दिया है। 41 सब बटोही
उसको लूट लेते हैं, और उसके पड़ोसिक्कों उसकी नामधराई होती है। 42 तू ने
उसके द्रोहियोंको प्रबल किया; और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया; और
उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है। 43 फिर तू उसकी तलवार की धार को
मोड़ देता है, और युद्ध में उसके पांव जमने नहीं देता। 44 तू ने उसका तेज हर
लिया है और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है। 45 तू ने उसकी जवानी
को घटाया, और उसको लज्जा से ढांप दिया है।। 46 हे यहोवा तू कब तक
लगातार मूंह फेरे रहेगा, तेरी जलजलाहट कब तक आग की नाईं भड़की रहेगी।।
47 मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हूं, तू ने सब मनुष्योंको क्योंव्यर्थ
सिरजा है? 48 कौन पुरूष सदा अमर रहेगा? क्या कोई अपके प्राण को अधोलोक
से बचा सकता है? 49 हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करूणा कहां रही, जिसके विषय
में तू ने अपक्की सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी? 50 हे प्रभु अपके दासोंकी
नामधराई की सुधि कर; मैं तो सब सामर्थी जातियोंका बोझ लिए रहता हूं। 51 तेरे
उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर उसकी नामधराई की
है।। 52 यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा! आमीन फिर आमीन।।

भजन संहिता 90

1 हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिथे धाम बना है। 2 इस से पहिले कि पहाड़
उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से
अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है।। 3 तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता है, और
कहता है, कि हे आदमियों, लौट आओ! 4 क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं,
जैसा कल का दिन जो बीत गया, वा रात का एक पहर।। 5 तू मनुष्योंको धारा में
बहा देता है; वे स्वप्न से ठहरते हैं, वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं। 6
वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और सांझ तक काटकर मुर्झा जाती है।। 7
क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं। 8 तू
ने हमारे अधर्म के कामोंसे अपके सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापोंको अपके
मुख की ज्योति में रखा है।। 9 क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं,
हम अपके वर्ष शब्द की नाईं बिताते हैं। 10 हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं,
और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष के भी हो जाएं, तौभी उनका घमण्ड केवल नष्ट
और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। 11
तेरे क्रोध की शक्ति को और तेरे भय के योग्य रोष को कौन समझता है? 12 हम
को अपके दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं।। 13 हे यहोवा लौट
आ! कब तक? और अपके दासोंपर तरस खा! 14 भोर को हमें अपक्की करूणा से
तृप्त कर, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें। 15 जितने दिन
तू ने हमें दु:ख देता आया, और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैं उतने ही वर्ष
हम को आनन्द दे। 16 तेरी काम तेरे दासोंको, और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर
प्रगट हो। 17 और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो, तू हमारे
हाथोंका काम हमारे लिथे दृढ़ कर, हमारे हाथोंके काम को दृढ़ कर।।

भजन संहिता 91

1 जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में
ठिकाना पाएगा। 2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़
है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा। 3 वह तो मुझे बहेलिथे के जाल
से, और महामारी से बचाएगा; 4 वह तुझे अपके पंखोंकी आड़ में ले लेगा, और तू
उसके पैरोंके नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिथे ढाल और झिलम
ठहरेगी। 5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, 6
न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में
उजाड़ता है।। 7 तेरे निकट हजार, और तेरी दहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु
वह तेरे पास न आएगा। 8 परनतु तू अपक्की आंखोंकी दृष्टि करेगा और दुष्टोंके
अन्त को देखेगा।। 9 हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान
को अपना धाम मान लिया है, 10 इसलिथे कोई विपत्ति तुझ पर न पकेगी, न कोई
दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा।। 11 क्योंकि वह अपके दूतोंको तेरे निमित्त आज्ञा
देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। 12 वे तुझ को हाथोंहाथ उठा लेंगे,
ऐसा न हो कि तेरे पांवोंमें पत्थर से ठेस लगे। 13 तू सिंह और नाग को कुचलेगा,
तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा। 14 उस ने जो मुझ से स्नेह किया है,
इसलिथे मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उस ने मेरे
नाम को जान लिया है। 15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट
में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा। 16 मैं उसको
दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपके किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा।।

भजन संहिता 92

1 यहोवा का धन्यवाद करना भला है, हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना; 2
प्रात:काल को तेरी करूणा, और प्रति रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना, 3 दस
तारवाले बाजे और सारंगी पर, और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना भला है। 4
क्योंकि, हे यहोवा, तू ने मुझ को अपके काम से आनन्दित किया है; और मैं तेरे
हाथोंके कामोंके कारण जयजयकार करूंगा।। 5 हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े
है! तेरी कल्पनाएं बहुत गम्भीर है! 6 पशु समान मनुष्य इसको नहीं समझता,
और मूर्ख इसका विचार नहीं करता: 7 कि दुष्ट जो घास की नाईं फूलते- फलते हैं,
और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं, यह इसलिथे होता है, कि वे सर्वदा के
लिथे नाश हो जाएं, 8 परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान रहेगा। 9 क्योंकि थे
यहोवा, तेरे शत्रु, हां तेरे शत्रु नाश होंगे; सब अनर्थकारी तितर बितर होंगे।। 10
परन्तु मेरा सींग तू ने जंगली सांढ़ का सा ऊंचा किया है; मैं टटके तेल से चुपड़ा
गया हूं। 11 और मैं अपके द्रोहियोंपर दृष्टि करके, और उन कुकर्मियोंका हाल मेरे
विरूद्ध उठे थे, सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूं।। 12 धर्मी लोग खजूर की नाई फूले फलेंगे,
और लबानोन के देवदार की नाई बढ़ते रहेंगे। 13 वे यहोवा के भवन में रोपे
जाकर, हमारे परमेश्वर के आंगनोंमें फूले फलेंगे। 14 वे पुराने होने पर भी फलते
रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे, 15 जिस से यह प्रगट हो, कि यहोवा
सीधा है; वह मेरी चट्टान है, और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं।।

भजन संहिता 93

1 यहोवा राजा है; उस ने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है; यहोवा पहिरावा पहिने

हुए, और सामर्थ्य का फेटा बान्धे है। इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने
का। 2 हे यहोवा, तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है, तू सर्वदा से है।। 3 हे
यहोवा, महानदोंका कोलाहल हो रहा है, महानदोंका बड़ा शब्द हो रहा है, महानद
गरजते हैं। 4 महासागर के शब्द से, और समुद्र की महातरंगोंसे, विराजमान
यहोवा अधिक महान है।। 5 तेरी चितौनियां अति विश्वासयोग्य हैं; हे यहोवा तेरे
भवन को युग युग पवित्राता ही शोभा देती है।।

भजन संहिता 94

1 हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, अपना तेज दिखा! 2
हे पृथ्वी के न्यायी उठ; और घमण्ड़ियोंको बदला दे! 3 हे यहोवा, दुष्ट लोग कब
तक, दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे? 4 वे बकते और ढ़िठाई की बातें बोलते
हैं, सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं। 5 हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते हैं, वे
तेरे निज भाग को दु:ख देते हैं। 6 वे विधवा और परदेशी का घात करते, और
बपमूओं को मार डालते हैं; 7 और कहते हैं, कि याह न देखेगा, याकूब का परमेश्वर
विचार न करेगा।। 8 तुम जो प्रजा में पशु सरीखे हो, विचार करो; और हे मूर्खोंतुम
कब तक बुद्धिमान हो जाओगे? 9 जिस ने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता?
जिस ने आंख रची, क्या वह आप नहीं देखता? 10 जो जाति जाति को ताड़ना
देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है, क्या वह न समझाएगा? 11 यहोवा मनुष्य
की कल्पनाओं को तो जानता है कि वे मिथ्या हैं।। 12 हे यहा, क्या ही धन्य है वह
पुरूष जिसको तू ताड़ना देता है, और अपक्की व्यवस्था सिखाता है, 13 क्योंकि तू
उसको विपत्ति के दिनोंमें उस समय तक चैन देता रहता है, जब तक दुष्टोंके लिथे

गड़हा नहीं खोदा जाता। 14 क्योंकि यहोवा अपक्की प्रजा को न तजेगा, वह
अपके निज भाग को न छोड़ेगा; 15 परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया
जाएगा, और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे पीछे हो लेंगे।। 16 कुकर्मियोंके
विरूद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा? मेरी ओर से अनर्थकारियोंका कौन साम्हना
करेगा? 17 यदि यहोवा मेरा सहाथक न होता, तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर
रहना पड़ता। 18 जब मैं ने कहा, कि मेरा पांव फिसलने लगा है, तब हे यहोवा,
तेरी करूणा ने मुझे थाम लिया। 19 जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं होती हैं,
तब हे यहोवा, तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है। 20 क्या तेरे और
दुष्टोंके सिंसाहन के बीच सन्धि होगी, जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते हैं? 21
वे धर्मी का प्राण लेने को दल बान्धते हैं, और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं। 22
परन्तु यहोवा मेरा गढ़, और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चट्टान ठहरा है। 23
और उस ने उनका अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है, और वह उन्हें उन्हीं की बुराई
के द्वारा सन्यानाश करेगा; हमारा परमेश्वर यहोवा उनको सत्यानाश करेगा।।

भजन संहिता 95

1 आओ हम यहोवा के लिथे ऊंचे स्वर से गाएं, अपके उद्धार की चट्टान का
जयजयकार करें! 2 हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएं, और भजन गाते
हुए उसका जयजयकार करें! 3 क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं
के ऊपर महान राजा है। 4 पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं; और पहाड़ोंकी
चोटियां भी उसी की हैं। 5 समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल
भी उसी के हाथ का रख है।। 6 आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपके कर्ता

यहोवा के साम्हने घुटने टेकें! 7 क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी
चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं।। भला होता, कि आज तुम उसकी बात
सुनते! 8 अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा में, वा मस्सा के
दिन जंगल में हुआ था, 9 जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा, उन्होंने मुझ को
जांचा और मेरे काम को भी देखा। 10 चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के लोगोंसे
रूठा रहा, और मैं ने कहा, थे तो भरमनेवाले मन के हैं, और इन्होंने मेरे मार्गोंको
नहीं पहिचाना। 11 इस कारण मैं ने क्रोध में आकर शपथ खाई कि थे मेरे
विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएंगे।।

भजन संहिता 96

1 यहोवा के लिथे एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगोंयहोवा के लिथे
गाओ! 2 यहोवा के लिथे गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन दिन उसके किए
हुए उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो। 3 अन्य जातियोंमें उसकी महिमा का,
और देश देश के लोगोंमें उसके आश्चर्यकर्मोंका वर्णन करो। 4 क्योंकि यहोवा
महान और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।
5 क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को
बनाया है। 6 उसके चारोंओर विभव और ऐश्वर्य है; उसके पवित्रास्थान में सामर्थ्य
और शोभा है। 7 हे देश देश के कुलों, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की
महिमा और सामर्थ्य को मानो! 8 यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके
योग्य है; भेंट लेकर उसके आंगनोंमें आओ! 9 पवित्राता से शोभायमान होकर
यहोवा को दण्डवत करो; हे सारी पृथ्वी के लोगोंउसके साम्हने कांपके रहो! 10

जाति जाति में कहो, यहोवा राजा हुआ है! और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने
का नहीं; वह देश देश के लोगोंका न्याय सीधाई से करेगा।। 11 आकाश आनन्द
करे, और पृथ्वी मगन हो; समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज उठें; 12 मैदान
और जो कुछ उस में है, वह प्रफुल्लित हो; उसी समय वन के सारे वृक्ष
जयजयकार करेंगे। 13 यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि वह आनेवाला है। वह
पृथ्वी का न्याय करने को आने वाला है, वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से
देश देश के लोगोंका न्याय करेगा।।

भजन संहिता 97

1 यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो; और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी आनन्द
करें! 2 बादल और अन्धकार उसके चारोंओर हैं; उसके सिंहासन का मूल धर्म और
न्याय है। 3 उसके आगे आगे आग चलती हुइ उसके द्रोहियोंको चारोंओर भस्म
करती है। 4 उसकी बिजलियोंसे जगल प्रकाशित हुआ, पृथ्वी देखकर थरथरा गई
है! 5 पहाड़ यहोवा के साम्हने, मोम की नाई पिघल गए, अर्थात् सारी पृथ्वी के
परमेश्वर के साम्हने।। 6 आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश देश के सब
लोगोंने उसकी महिमा देखी है। 7 जितने खुदी हुई मूत्तियोंकी उपासना करते और
मूरतोंपर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत् करो। 8
सिरयोन सुनकर आनन्दित हुई, और यहूदा की बेटियां मगन हुई; हे यहोवा, यह
तेरे नियमोंके कारण हुआ। 9 क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर
परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है। 10 हे यहोवा के
प्रेमियों, बुराई से घृणा करो; वह अपके भक्तोंके प्राणो की रक्षा करता, और उन्हें

दुष्टोंके हाथ से बचाना है। 11 धर्मी के लिथे ज्योति, और सीधे मनवालोंके लिथे
आनन्द बोया गया है। 12 हे धर्मियोंयहोवा के कारण आनन्दित हो; और जिस
पवित्रा नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

भजन संहिता 98

1 यहोवा के लिथे एक नया गीत गाओ, क्योंकि उस ने आश्चर्यकर्म किए है! उसके
दहिने हाथ और पवित्रा भुजा ने उसके लिथे उद्धार किया है! 2 यहोवा ने अपना
किया हुआ उद्धार प्रकाशित किया, उस ने अन्यजातियोंकी दृष्टि में अपना धर्म
प्रगट किया है। 3 उस ने इस्राएल के घराने पर की अपक्की करूणा और सच्चाई
की सुधि ली, और पृथ्वी के सब दूर दूर देशोंने हमारे परमेश्वर का किया हुआ
उद्धार देखा है।। 4 हे सारी पृथ्वी के लोगोंयहोवा का जयजयकार करो;
उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और भजन गाओ! 5 वीणा बजाकर यहोवा का
भजन गाओ, वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओं। 6 तुरहियां और नरसिंगे
फूंक फूंककर यहोवा राजा का जयजयकार करो।। 7 समुद्र औश्र उस में की सब
वस्तुएं गरज उठें; जगत और उसके निवासी महाशब्द करें! 8 नदियां तालियां
बजाएं; पहाड़ मिलकर जयजयकार करें। 9 यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि वह
पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। वह धर्म से जगत का, और सीधाई से देश
देश के लोगोंका न्याय करेगा।।

भजन संहिता 99

1 यहोवा राजा हुआ है; देश देश के लोग कांप उठें! वह करूबोंपर विराजमान है;

पृथ्वी डोल उठे! 2 यहोवा सिरयोन में महान है; और वह देश देश के लोगोंके ऊपर
प्रधान है। 3 वे तेरे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें! वह तो पवित्रा है।
4 राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल रखती है, तू ही ने सीधाई को स्थापित किया;
न्याय और धर्म को याकूब में तू ही ने चालू किया है। 5 हमारे परमेश्वर यहोवा को
सराहो; और उसके चरणोंकी चौकी के साम्हने दण्डवत् करो! वह पवित्रा है! 6
उसके याजकोंमें मूसा और हारून, और उसके प्रार्थना करनेवालोंमें से शमूएल
यहोवा को पुकारते थे, और वह उनकी सुन लेता था। 7 वह बादल के खम्भे में
होकर उन से बातें करता था; और वे उसी चितौनियोंऔर उसकी दी हुई
विधियोंपर चलते थे।। 8 हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उनकी सुन लेता था; तू
उनके कामोंका पलटा तो लेता था तौभी उनके लिथे क्षमा करनेवाला ईश्वर था। 9
हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्रा पर्वत पर दण्डवत् करो;
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्रा है!

भजन संहिता 100

1 हे सारी पृथ्वी के लोगोंयहोवा का जयजयकार करो! 2 आनन्द से यहोवा की
आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ! 3 निश्चय जानो, कि
यहोवा की परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी
प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।। 4 उसके फाटकोंसे धन्यवाद, और उसके
आंगनोंमें स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को
धन्य कहो! 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिथे, और उसकी
सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।।

भजन संहिता 101

1 मैं करूणा और न्याय के विषय गाऊंगा; हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊंगा। 2
मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा। तू मेरे पास कब आएगा! मैं अपके घर में मन
की खराई के साथ अपक्की चाल चलूंगा; 3 मैं किसी आछे काम पर चित्त न
लगाऊंगा।। मैं कुमार्ग पर चलनेवालोंके काम से घिन रखता हूं; ऐसे काम में मैं न
लगूंगा। 4 टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा; मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं।। 5 जो
छिपकर अपके पड़ोसी की चुगली खाए, उसको मैं सत्यानाश करूंगा; जिसकी
आंखें चढ़ी होंऔर जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूंगा।। 6 मेरी आंखें देश
के विश्वासयोग्य लोगोंपर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें; जो खरे मार्ग पर चलता
है वही मेरा टहलुआ होगा।। 7 जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने
पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने बना न रहेगा।। 8 भोर ही भोर को मैं
देश के सब दुष्टोंको सत्यानाश किया करूंगा, इसलिथे कि यहोवा के नगर के सब
अनर्थकारियोंको नाश करूं।।

भजन संहिता 102

1 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे! 2 मेरे संकट के दिन
अपना मुख मुझ से न छिपा ले; अपना कान मेरी ओर लगा; जिस समय मैं
पुकारूं, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले! 3 क्योंकि मेरे दिन धुएं की नाईं उड़े जाते
हैं, और मेरी हड्डियां लुकटी के समान जल गई हैं। 4 मेरा मन झुलसी हुई घास
की नाईं सूख गया है; और मैं अपक्की रोटी खाना भूल जाता हूं। 5 कहरते कहरते
मेरा चमड़ा हड्डियोंमें सट गया है। 6 मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हूं, मैं

उजड़े स्थानोंके उल्लू के समान बन गया हूं। 7 मैं पड़ा पड़ा जागता रहता हूं और
गौरे के समान हो गया हूं जो छत के ऊपर अकेला बैठता है। 8 मेरे शत्रु लगातार
मेरी नामधराई करते हैं, जो मेरे विराध की धुन में बावले हो रहे हैं, वे मेरा नाम
लेकर शपथ खाते हैं। 9 क्योंकि मैं ने रोटी की नाईं राख खाईं और आंसू मिलाकर
पानी पीता हूं। 10 यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है, क्योंकि तू ने मुझे
उठाया, और फिर फेंक दिया है। 11 मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है; और
मैं आप घास की नाईं सूख चला हूं।। 12 परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान
रहेगा; और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है, वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।
13 तू उठकर सिरयोन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया
हुअ समय आ पहुंचा है। 14 क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरोंको चाहते हैं, और
उसकी धूलि पर तरस खाते हैं। 15 इसलिथे अन्यजातियां यहोवा के नाम का भय
मानेंगी, और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डरेंगे। 16 क्योंकि यहोवा ने
सिरयोन को फिर बसाया है, और वह अपक्की महिमा के साथ दिखाई देता है; 17
वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुंह करता है, और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं
जानता। 18 यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिथे लिखी जाएगी, और एक जाति जो
सिरजी जाएगी वही याह की स्तुति करेगी। 19 क्योंकि यहोवा ने अपके ऊंचे और
पवित्रा स्थान से दृष्टि करके स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है, 20 ताकि बन्धुओं का
कराहना सुने, और घात होनवालोंके बन्धन खोले; 21 और सिरयोन में यहोवा के
नाम का वर्णन किया जाए, और यरूशलेम में उसकी स्तुति की जाए; 22 यह उस
समय होगा जब देश देश, और राज्य राज्य के लोग यहोवा की उपासना करने को
इकट्ठे होंगे।। 23 उस ने मुझे जीवन यात्रा में दु:ख देकर, मेरे बल और आयु को

घटाया। 24 मैं ने कहा, हे मेरे ईश्वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले, मेरे वर्ष पीढ़ी से
पीढ़ी तक बने रहेंगे! 25 आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और आकाश तेरे
हाथोंका बनाया हुआ है। 26 वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब
कपके के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्रा की नाईं बदलेगा, और वह तो
बदल जाएगा; 27 परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षोंका अन्त नहीं होने का। 28 तेरे
दासोंकी सन्तान बनी रहेगी; और उनका वंश तेरे साम्हने स्थिर रहेगा।।

भजन संहिता 103

1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्रा
नाम को धन्य कहे! 2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार
को न भूलना। 3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगोंको
चंगा करता है, 4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर
करूणा और दया का मुकुट बान्धता है, 5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थोंसे
तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है।। 6 यहोवा सब
पिसे हुओं के लिथे धर्म और न्याय के काम करता है। 7 उस ने मूसा को अपक्की
गति, और इस्राएलियोंपर अपके काम प्रगट किए। 8 यहोवा दयालु और
अनुग्रहकरी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करूणामय है। 9 वह सर्वदा
वादविवाद करता न रहेगा, न उसका क्रोध सदा के लिथे भड़का रहेगा। 10 उस ने
हमारे पापोंके अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामोंके
अनुसार हम को बदला दिया है। 11 जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही
उसकी करूणा उसके डरवैयोंके ऊपर प्रबल है। 12 उदयाचल अस्ताचल से जितनी

दूर है, उस ने हमारे अपराधोंको हम से उतनी ही दूर कर दिया है। 13 जैसे पिता
अपके बालकोंपर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपके डरवैयोंपर दया करता है।
14 क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य
मिट्टी ही है।। 15 मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की
नाईं फूलता है, 16 जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपके स्थान
में फिर मिलता है। 17 परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयोंपर युग युग, और
उसका धर्म उनके नाती- पोतोंपर भी प्रगट होता रहता है, 18 अर्थात् उन पर जो
उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपकेशोंको स्मरण करके उन पर चलते
हैं।। 19 यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य
पूरी सृष्टि पर है। 20 हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के
मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो! 21 हे यहोवा की सारी सेनाओं,
हे उसके टहलुओं, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो! 22 हे
यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानोंमें उसको धन्य कहो। हे मेरे
मन, तू यहोवा को धन्य कह!

भजन संहिता 104

1 हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह! हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त महान
है! तू विभव और ऐश्वर्य का वस्त्रा पहिने हुए है, 2 जो उजियाले को चादर की नाईं
ओढ़े रहता है, और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है, 3 जो अपक्की
अटारियोंकी कड़ियां जल में धरता है, और मेघोंको अपना रथ बनाता है, और
पवन के पंखोंपर चलता है, 4 जो पवनोंको अपके दूत, और धधकती आग को

अपके टहलुए बनाता है।। 5 तू ने पृथ्वी को उसकी नीव पर स्थिर किया है, ताकि
वह कभी न डगमगाए। 6 तू ने उसको गहिरे सागर से ढांप दिया है जैसे वस्त्रा से;
जल पहाड़ोंके ऊपर ठहर गया। 7 तेरी घुड़की से वह भाग गया; तेरे गरजने का
शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया। 8 वह पहाड़ोंपर चढ़ गया, और
तराईयोंके मार्ग से उस स्थान में उतर गया जिसे तू ने उसके लिथे तैयार किया
था। 9 तू ने एक सिवाना ठहराया जिसको वह नहीं लांघ सकता है, और न फिरकर
स्थल को ढांप सकता है।। 10 तू नालोंमें सोतोंको बहाता है; वे पहाड़ोंके बीच से
बहते हैं, 11 उन से मैदान के सब जीव- जन्तु जल पीते हैं; जंगली गदहे भी
अपक्की प्यास बुझा लेते हैं। 12 उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते, और
डालियोंके बीच में से बोलते हैं। 13 तू अपक्की अटारियोंमें से पहाड़ोंको सींचता है
तेरे कामोंके फल से पृथ्वी तृप्त रहती है।। 14 तू पशुओं के लिथे घास, और
मनुष्योंके काम के लिथे अन्नादि उपजाता है, और इस रीति भूमि से वह भोजन-
वस्तुएं उत्पन्न करता है, 15 और दाखमधु जिस से मनुष्य का मन आनन्दित
होता है, और तेल जिस से उसका मुख चमकता है, और अन्न जिस से वह
सम्भल जाता है। 16 यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं, अर्थात् लबानोन के देवदार जो
उसी के लगाए हुए हैं। 17 उन में चिड़ियां अपके घोंसले बनाती हैं; लगलग का
बसेरा सनौवर के वृक्षोंमें होता है। 18 ऊंचे पहाड़ जंगली बकरोंके लिथे हैं; और
चट्टानें शापानोंके शरणस्थान हैं। 19 उस ने नियत समयोंके लिथे चन्द्रमा को
बनाया है; सूर्य अपके अस्त होने का समय जानता है। 20 तू अन्धकार करता है,
तब रात हो जाती है; जिस में वन के सब जीव जन्तु घूमते फिरते हैं। 21 जवान
सिंह अहेर के लिथे गरजते हैं, और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं। 22 सूर्य उदय

होते ही वे चले जाते हैं और अपक्की मांदोंमें जा बैठते हैं। 23 तब मनुष्य अपके
काम के लिथे और सन्ध्या तक परिश्रम करने के लिथे निकलता है। 24 हे यहोवा
तेरे काम अनगिनित हैं! इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी
सम्पत्ति से परिपूर्ण है। 25 इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उस
में अनगिनित जलचक्की जीव- जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पके हैं। 26 उस में
जहाज भी आते जाते हैं, और लिब्यातान भी जिसे तू ने वहां खेलने के लिथे
बनाया है।। 27 इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया
करे। 28 तू उन्हें देता हे, वे चुन लेते हैं; तू अपक्की मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम
पदार्थोंसे तृप्त होते हैं। 29 तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी सांस
ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। 30
फिर तू अपक्की ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को
नया कर देता है।। 31 यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे, यहोवा अपके
कामोंसे आन्दित होवे! 32 उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी कांप उठती है, और उसके छूते
ही पहाड़ोंसे धुआं निकलता है। 33 मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा; जब
तक मैं बना रहूंगा तब तक अपके परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा। 34 मेरा ध्यान
करना, उसको प्रिय लगे, क्योंकि मैं तो याहेवा के कारण आनन्दित रहूंगा। 35
पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएं, और दुष्ट लोग आगे को न रहें! हे मेरे मन
यहोवा को धन्य कह! याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 105

1 यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो, देश देश के लोगोंमें उसके

कामोंका प्रचार करो! 2 उसके लिथे गीत गाओ, उसके लिथे भजन गाओ, उसके
सब आश्चर्यकर्मोंपर ध्यान करो! 3 उसके पवित्रा नाम की बढ़ाई करो; यहोवा के
खोजियोंका हृदय आनन्दित हो! 4 यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो, उसके
दर्शन के लगातार खोजी बने रहो! 5 उसके किए हु आश्चर्यकर्म स्मरण करो, उसके
चमत्कार और निर्णय स्मरण करो! 6 हे उसके दास इब्राहीम के वंश, हे याकूब की
सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो! 7 वही हमारा परमेश्वर यहोवा है; पृथ्वी भर में
उसके निर्णय होते हैं। 8 वह अपक्की वाचा को सदा स्मरण रखता आया है, यह
वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ीयोंके लिथे ठहराया है; 9 वही वाचा जो उस ने
इब्राहीम के साथ बान्धी, और उसके विषय में उस ने इसहाक से शपथ खाई, 10
और उसी को उस ने याकूब के लिथे विधि करके, और इस्राएल के लिथे यह
कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया, 11 कि मैं कनान देश को तुझी को दूंगा,
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा।। 12 उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे,
वरन बहुत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे। 13 वे एक जाति से दूसरी जाति
में, और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे; 14 परन्तु उस ने किसी मनुष्य
को उन पर अन्धेर करने न दिया; और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी
देता था, 15 कि मेरे अभिषिक्तोंको मत छुओं, और न मेरे नबियोंकी हानि करो! 16
फिर उस ने उस देश में अकाल भेजा, और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया।
17 उस ने यूसुफ नाम एक पुरूष को उन से पहिले भेजा था, जो दास होने के लिथे
बेचा गया था। 18 लोंगोंने उसके पैरोंमें बेड़ियां डालकर उसे दु:ख दिया; वह लोहे
की सांकलोंसे जकड़ा गया; 19 जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक
यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा। 20 तब राजा के दूत भेजकर उसे

निकलवा लिया, और देश देश के लोगोंके स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए; 21
उस ने उसको अपके भवन का प्रधान और अपक्की पूरी सम्पत्ति का
अधिक्कारनी ठहराया, 22 कि वह उसके हाकिमोंको अपक्की इच्छा के अनुसार
कैद करे और पुरनियोंको ज्ञान सिखाए।। 23 फिर इस्राएल मि में आया; और
याकूब हाम के देश में पकेदशी रहा। 24 तब उस ने अपक्की प्रजा को गिनती में
बहुत बढ़ाया, और उसके द्रोहियो से अधिक बलवन्त किया। 25 उस ने
मिस्त्रियोंके मन को ऐसा फेर दिया, कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने, और उसके
दासोंसे छल करने लगे।। 26 उस ने अपके दास मूसा को, और अपके चुने हुए
हारून को भेजा। 27 उन्होंने उनके बीच उसकी ओर से भांति भांति के चिन्ह, और
हाम के देश में चमत्कार दिखाए। 28 उस ने अन्धकार कर दिया, और
अन्धिक्कारनो हो गया; और उन्होंने उसकी बातोंको न टाला। 29 उस ने
मिस्त्रियोंके जल को लोहू कर डाला, और मछलियोंको मार डाला। 30 मेंढक उनकी
भूमि में वरन उनके राजा की कोठरियोंमें भी भर गए। 31 उस ने आज्ञा दी, तब
डांस आ गए, और उनके सारे देश में कुटकियां आ गईं। 32 उस ने उनके लिथे
जलवृष्टि की सन्ती ओले, और उनके देश में धधकती आग बरसाई। 33 और उस
ने उनकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षोंको वरन उनके देश के सब पेड़ोंको तोड़
डाला। 34 उस ने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डियां, और कीड़े आए, 35 और
उन्होंने उनके देश के सब अन्नादि को खा डाला; औश्र उनकी भूमि के सब
फलोंको चट कर गए। 36 उस ने उनके देश के सब पहिलौठोंको, उनके पौरूष के
सब पहिले फल को नाश किया।। 37 तब वह अपके गोत्रियोंको सोना चांदी
दिलाकर निकाल लाया, और उन में से कोई निर्बल न था। 38 उनके जाने से

मिस्त्रि आनन्दित हुए, क्योंकि उनका डर उन में समा गया था। 39 उस ने छाया
के लिथे बादल फैलाया, और रात को प्रकाश देने के लिथे आग प्रगट की। 40
उन्होंने मांगा तब उस ने बटेरें पहुंचाई, और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया।
41 उस ने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला; और निर्जल भूमि पर नदी बहने
लगी। 42 क्योंकि उस ने अपके पवित्रा वचन और अपके दास इब्राहीम को स्मरण
किया।। 43 वह अपक्की प्रजा को हर्षित करके और अपके चुने हुओं से
जयजयकार करोके निकाल लाया। 44 और उनको अन्यजातियोंके देश दिए; और
वे और लोगोंके श्रम के फल के अधिक्कारनी किए गए, 45 कि वे उसकी
विधियोंको मानें, और उसकी व्यवस्था को पूरी करें। याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 106

1 याह की स्तुति करो! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी
करूणा सदा की है! 2 यहोवा के पराक्रम के कामोंका वर्णन कौन कर सकता है, न
उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता? 3 क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर
चलते, और हर समय धर्म के काम करते हैं! 4 हे यहोवा, अपक्की प्रजा पर की
प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर, मेरे उद्धार के लिथे मेरी सुधि ले, 5 कि मैं
तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं, और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊं;
और तेरे निज भाग के संग बड़ाई करने पाऊं।। 6 हम ने तो अपके पुरखाओं की
नाईं पाप किया है; हम ने कुटिलता की, हम ने दुष्टता की है! 7 मि में हमारे
पुरखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्मोंपर मन नहीं लगाया, न तेरी अपार करूणा को
स्मरण रखा; उन्होंने समुद्र के तीर पर, अर्थात् लाल समुद्र के तीर पर बलवा

किया। 8 तौभी उस ने अपके नाम के निमित्त उनका उद्धार किया, जिस से वह
अपके पराक्रम को प्रगट करे। 9 तब उस ने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख
गया; और वह उन्हें गहिरे जल के बीच से मानोंजंगल में से निकाल ले गया। 10
उस ने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा, और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया। 11 और उनके
द्रोही जल में डूब गए; उन में से एक भी न बचा। 12 तब उनहोंने उसके वचनोंका
विश्वास किया; और उसकी स्तुति गाने लगे।। 13 परन्तु वे झट उसके कामोंको
भूल गए; और उसकी युक्ति के लिथे न ठहरे। 14 उन्होंने जंगल में अति लालसा
की और निर्जल स्थान में ईश्वर की पक्कीक्षा की। 15 तब उस ने उन्हें मुंह मांगा
वर तो दिया, परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया।। 16 उन्होंने छावनी में मूसा के,
और यहोवा के पवित्रा जन हारून के विषय में डाह की, 17 भूमि फट कर दातान
को निगल गई, और अबीराम के झुण्ड को ग्रस लिया। 18 और उनके झुण्ड में
आग भड़क उठी; और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गए।। 19 उन्होंने होरब में बछड़ा
बनाया, और ढली हुई मूत्ति को दण्डवत् की। 20 योंउन्होंने अपक्की महिमा
अर्थात् ईश्वर को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला। 21 वे अपके
उद्धारकर्ता ईश्वर को भूल गए, जिस ने मि में बड़े बड़े काम किए थे। 22 उस ने तो
हाम के देश में आश्चर्यकर्म और लाल समुद्र के तीर पर भयंकर काम किए थे। 23
इसलिथे उस ने कहा, कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालता यदि मेरा चुना हुआ मूसा
जोखिम के स्थान में उनके लिथे खड़ा न होता ताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा
करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूं।। 24 उन्होंने मनभावने देश को
निकम्मा जाना, और उसके वचन की प्रतीति न की। 25 वे अपके तम्बुओं में
कुड़कुड़ाए, और यहोवा का कहा न माना। 26 तब उस ने उनके विषय में शपथ

खाई कि मैं इनको जंगल में नाश करूंगा, 27 और इनके वंश को अन्यजातियोंके
सम्मुख गिरा दूंगा, और देश देश में तितर बितर करूंगा।। 28 वे पोरवाले बाल
देवता को पूजने लगे और मुर्दोंको चढ़ाए हुए पशुओं का मांस खाने लगे। 29
योंउन्होंने अपके कामोंसे उसको क्रोध दिलाया और मरी उन में फूट पड़ी। 30 तब
पीहास ने उठकर न्यायदण्ड दिया, जिस से मरी थम गई। 31 और यह उसके लेखे
पीढ़ी से पीढ़ी तक सर्वदा के लिथे धर्म गिना गया।। 32 उन्होंने मरीबा के सोते के
पास भी यहोवा का क्रोध भड़काया, और उनके कारण मूसा की हानि हुई; 33
क्योंकि उन्होंने उसकी आत्मा से बलवा किया, तब मूसा बिन सोचे बोल उठा। 34
जिन लोगोंके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनको उन्होंने सत्यानाश न
किया, 35 वरन उन्हीं जातियोंसे हिलमिल गए और उनके व्यवहारोंको सीख
लिया; 36 और उनकी मूत्तियोंकी पूजा करने लगे, और वे उनके लिथे फन्दा बन
गई। 37 वरन उन्होंने अपके बेटे- बेटियोंको पिशाचोंके लिथे बलिदान किया; 38
और अपके निर्दोष बेटे- बेटियोंका लोहू बहाथा जिन्हें उन्होंने कनान की
मूत्तियोंपर बलि किया, इसलिथे देश खून से अपवित्रा हो गया। 39 और वे आप
अपके कामोंके द्वारा अशुद्ध हो गए, और अपके कार्योंके द्वारा व्यभिचारी भी बन
गए।। 40 तब यहोवा का क्रोध अपक्की प्रजा पर भड़का, और उसको अपके निज
भाग से घृणा आई; 41 तब उस ने उनको अन्यजातियोंके वश में कर दिया, और
उनके बैरियो ने उन पर प्रभुता की। 42 उनके शत्रुओं ने उन पर अन्धेर किया,
और वे उनके हाथ तले दब गए। 43 बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया, परन्तु वे उसके
विरूद्ध युक्ति करते गए, और अपके अधर्म के कारण दबते गए। 44 तौभी जब जब
उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा, तब तब उस ने उनके संकट पर दृष्टि की! 45

और उनके हित अपक्की वाचा को स्मरण करके अपक्की अपार करूणा के
अनुसार तरस खाया, 46 औश्र जो उन्हें बन्धुए करके ले गए थे उन सब से उन पर
दया कराई।। 47 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा उद्धार कर, और हमें
अन्यजातियोंमें से इकट्ठा कर ले, कि हम तेरे पवित्रा नाम का धन्यवाद करें,
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय में बड़ाई करें।। 48 इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है! और सारी प्रजा कहे आमीन!
याह की स्तुति करो।।

भजन संहिता 107

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा की है! 2
यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें, जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से दाम देकर छुड़ा
लिया है, 3 और उन्हें देश देश से पूरब- पश्चिम, उत्तर और दक्खिन से इकट्ठा
किया है।। 4 वे जंगल में मरूभूमि के मार्ग पर भटकते फिरे, और कोई बसा हुआ
नगर न पाया; 5 भूख और प्यास के मारे, वे विकल हो गए। 6 तब उन्होंने संकट
में यहोवा की दोहाई दी, और उस ने उनको सकेती से छुड़ाया; 7 और उनको ठीक
मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिथे किसी नगर को जा पहुंचे। 8 लोग यहोवा
की करूणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मोंके कारण, जो वह मनुष्योंके लिथे
करता है, उसका धन्यवाद करें! 9 क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता
है, और भूखे को उत्तम पदार्थोंसे तृप्त करता है।। 10 जो अन्धिक्कारने और मृत्यु
की छाया में बैठे, और दु:ख में पके और बेड़ियोंसे जकड़े हुए थे, 11 इसलिथे कि वे
ईश्वर के वचनोंके विरूद्ध चले, और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना। 12

तब उसने उनको कष्ट के द्वारा दबाया; वे ठोकर खाकर गिर पके, और उनको कोई
सहाथक न मिला। 13 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उस न
सकेती से उनका उद्धार किया; 14 उस ने उनको अन्धिक्कारने और मृत्यु की
छाया में से निकाल लिया; और उनके बन्धनोंको तोड़ डाला। 15 लोग यहोवा की
करूणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मोंके कारण जो वह मनुष्योंके लिथे करता
है, उसका धन्यवाद करें! 16 क्योंकि उस ने पीतल के फाटकोंको तोड़ा, और लोहे
के बेण्डोंको टुकड़े टुकड़े किया।। 17 मूढ अपक्की कुचाल, और अधर्म के कामोंके
कारण अति दु:खित होते हैं। 18 उनका जी सब भांति के भोजन से मिचलाता है,
और वे मृत्यु के फाटक तक पहुंचते हैं। 19 तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते
हैं, और व सकेती से उनका उद्धार करता है; 20 वह अपके वचन के द्वारा उनको
चंगा करता और जिस गड़हे में वे पके हैं, उस से निकालता है। 21 लोग यहोवा की
करूणा के कारण और उन आश्चर्यकर्मोंके कारण जो वह मनुष्योंके लिथे करता है,
उसका धन्यवाद करें! 22 और वे धन्यवादबलि चढ़ाएं, और जयजयकार करते
हुए, उसके कामोंका वर्णन करें।। 23 जो लोग जहाजोंमें समुद्र पर चलते हैं, और
महासागर पर होकर व्योपार करते हैं; 24 वे यहोवा के कामोंको, और उन
आश्चर्यकर्मोंको जो वह गहिरे समुद्र में करता है, देखते हैं। 25 क्योंकि वह आज्ञा
देता है, वह प्रचण्ड बयार उठकर तरंगोंको उठाती है। 26 वे आकाश तक चढ़
जाते, फिर गहराई में उतर आते हैं; और क्लेश के मारे उनके जी में जी नहीं रहता;
27 वे चक्कर खाते, और मतवाले की नाई लड़खड़ाते हैं, और उनकी सारी बुद्धि
मारी जाती है। 28 तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह उनको सकेती
से निकालता है। 29 वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं। 30 तब वे

उनके बैठने से आनन्दित होते हैं, और वह उनको मन चाहे बन्दर स्थान में पहुंचा
देता है। 31 लोग यहोवा की करूणा के कारण, और वह उन आश्चर्यकर्मोंके कारण
जो वह मनुष्योंके लिथे करता है, उसका धन्यवाद करें। 32 और सभा में उसको
सराहें, और पुरतियोंके बैठक में उसकी स्तुति करें।। 33 वह नदियोंको जंगल बना
डालता है, और जल के सोतोंको सूखी भूमि कर देता है। 34 वह फलवन्त भूमि को
नोनी करता है, यह वहां के रहनेवालोंकी दुष्टता के कारण होता है। 35 वह जंगल
को जल का ताल, और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है। 36 और वहां वह
भूखोंको बसाता है, कि वे बसने के लिथे नगर तैयार करें; 37 और खेती करें, और
दाख की बारियां लगाएं, और भांति भांति के फल उपजा लें। 38 और वह उनको
ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं, और उनके पशुओं को भी वह घटने
नहीं देता।। 39 फिर अन्धेर, विपत्ति और शोक के कारण, वे घटते और दब जाते
हैं। 40 और वह हाकिमोंको अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है;
41 वह दरिद्रोंको दु:ख से छुड़ाकर ऊंचे पर रखता है, और उनको भेड़ोंके झुंड सा
परिवार देता है। 42 सीधे लोग देखकर आनन्दित होते हैं; और सब कुटिल लोग
अपके मुंह बन्द करते हैं। 43 जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातोंपर ध्यान करेगा;
और यहोवा की करूणा के कामोंपर ध्यान करेगा।।

भजन संहिता 108

1 हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है; मैं गाऊंगा, मैं अपक्की आत्मा से भी भजन
गाऊंगा। 2 हे सारंगी और वीणा जागो! मैं आप पौ फटते जाग उठूंगा! 3 हे यहोवा,
मैं देश देश के लोगोंके मध्य में तेरा धन्यवाद करूंगा, और राज्य राज्य के

लोगोंके मध्य में तेरा भजन गाऊंगा। 4 क्योंकि तेरी करूणा आकाश से भी ऊंची
है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है।। 5 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर हो!
और तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो! 6 इसलिथे कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएं, तू
अपके दहिने हाथ से बचा ले और हमारी बिनती सुन ले! 7 परमेश्वर ने अपक्की
पवित्राता में होकर कहा है, मैं प्रफुल्लित होकर शेकेम को बांट लूंगा, और सुक्कोत
की तराई को नपवाऊंगा। 8 गिलाद मेरा है, मनश्शे भी मेरा है; और एप्रैम मेरे सिर
का टोप है; यहूदा मेरा राजदण्ड है। 9 मोआब मेरे धोने का पात्रा है, मैं एदोम पर
अपना जूता फेंकूंगा, पलिश्त पर मैं जयजयकार करूंगा।। 10 मुझे गढ़वाले नगर
में कौन पहुंचाएगा? ऐदोम तक मेरी अगुवाई किस ने की हैं? 11 हे परमेश्वर, क्या
तू ने हम को नहीं त्याग दिया, और हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ पयान
नहीं करता। 12 द्रोहियोंके विरूद्ध हमारी सहाथता कर, क्योंकि मनुष्य का किया
हुआ छुटकारा व्यर्थ है! 13 परमेश्वर की सहाथता से हम वीरता दिखाएंगे, हमारे
द्रोहियोंको वही रौंदेगा।।

भजन संहिता 109

1 हे परमेश्वर तू जिसकी मैं स्तुति करता हूं, चुप न रह। 2 क्योंकि दुष्ट और
कपक्की मनुष्योंने मेरे विरूद्ध मुंह खोला है, वे मेरे विषय में झूठ बोलते हैं। 3 और
उन्होंने बैर के वचनोंसे मुझे चारोंओर घेर लिया है, और व्यर्थ मुझ से लड़ते हैं। 4
मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से विरोध करते हैं, परन्तु में तो प्रार्थना में लवलीन
रहता हूं। 5 उन्होंने भलाई के पलटे में मुझ से बुराई की और मेरे प्रेम के बदले
मुझ से बैर किया है।। 6 तू उसको किसी दुष्ट के अधिक्कारने में रख, और कोई

विरोधी उसकी दहिनी ओर खड़ा रहे। 7 जब उसका न्याय किया जाए, तब वह
दोषी निकले, और उसकी प्रार्थना पाप गिनी जाए! 8 उसके दिन थोड़े हों, और
उसके पद को दूसरा ले! 9 उसक लड़केबाले अनाथ हो जाएं और उसकी स्त्री
विधवा हो जाए! 10 और उसके लड़के मारे मारे फिरें, और भीख मांगा करे; उनको
उनके उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े मांगना पके! 11 महाजन फन्दा लगाकर,
उसका सर्वस्व ले ले; और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें! 12 कोई न हो जो उस
पर करूणा करता रहे, और उसके अनाथ बालकोंपर कोई अनुग्रह न करे! 13
उसका वंश नाश हो जाए, दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए! 14 उसके
पितरोंका अधर्म यहोवा को स्मरण रहे, और उसकी माता का पाप न मिटे! 15 वह
निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे, कि वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटा डाले! 16
क्योंकि वह दुष्ट, कृपा करना भूल गया वरन दी और दरिद्र को सताता था और
मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालोंके पीछे पड़ा रहता था।। 17 वह शाप देने
में प्रीति रखता था, और शाप उस पर आ पड़ा; वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न
होता था, सो आर्शीवाद उस से दूर रहा। 18 वह शाप देना वस्त्रा की नाई पहिनता
था, और वह उसके पेट में जल की नाई और उसकी हड्डियोंमें तेल की नाई समा
गया। 19 वह उसके लिथे ओढ़ने का काम दे, और फेंटे की नाईं उसकी कटि में
नित्य कसा रहे।। 20 यहोवा की ओर से मेरे विरोधियोंको, और मेरे विरूद्ध बुरा
कहनेवालोंको यही बदला मिले! 21 परन्तु मुझ से हे यहोवा प्रभु, तू अपके नाम के
निमित्त बर्ताव कर; तेरी करूणा तो बड़ी है, सो तू मुझे छुटकारा दे! 22 क्योंकि मैं
दी और दरिद्र हूं, और मेरा हृदय घायल हुआ है। 23 मैं ढलती हुई छाया की नाई
जाता रहा हूं; मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं। 24 उपवास करते करते मेरे

घुटने निर्बल हो गए; और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूं। 25 मेरी तो उन
लोगोंसे नामधराई होती है; जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं।। 26 हे मेरे
परमेश्वर यहोवा, मेरी सहाथता कर! अपक्की करूणा के अनुसार मेरा उद्धार कर!
27 जिस से वे जाने कि यह तेरा काम है, और हे यहोवा, तू ही ने यह किया है! 28
वे कोसते तो रहें, परन्तु तू आशीष दे! वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास
आनन्दित हो! 29 मेरे विरोधियोंको अनादररूपी वस्त्रा पहिनाया जाए, और वे
अपक्की लज्जा को कम्बल की नाईं ओढ़ें! 30 मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद
करूंगा, और बहुत लोगोंके बीच में उसकी स्तुति करूंगा। 31 क्योंकि वह दरिद्र की
दहिनी ओर खड़ा रहेगा, कि उसको घात करनेवाले न्यायियोंसे बचाए।।

भजन संहिता 110

1 मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे
शत्रुओं को तेरे चरणोंकी चौकी न कर दूं।। 2 तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा
सिरयोन से बढ़ाएगा। तू अपके शत्रुओं के बीच में शासन कर। 3 तेरी प्रजा के
लोगर तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं; तेरे जवान लोग पवित्राता से
शोभायमान, और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं। 4 यहोवा
ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा का
याजक है।। 5 प्रभु तेरी दहिनी ओर होकर अपके क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर
देगा। 6 वह जाति जाति में न्याय चुकाएगा, रणभूमि लोथोंसे भर जाएगी; वह
लम्बे चौड़े देश के प्रधान को चूर चूर कर देगा। 7 वह मार्ग में चलता हुआ नदी का
जल पीएगा इस कारण वह सिर को ऊंचा करेगा।।

भजन संहिता 111

1 याह की स्तुति करो। मैं सीधे लोगोंकी गोष्ठी में और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन
से यहोवा का धन्यवाद करूंगा। 2 यहोवा के काम बड़े हैं, जितने उन से प्रसन्न
रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं। 3 उसके काम का विभवमय और ऐश्वर्य्यमय
होते हैं, और उसका धन सदा तक बना रहेगा। 4 उस ने अपके आश्चर्यकर्मोंका
स्मरण कराया है; यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है। 5 उस ने अपके
डरवैयोंको आहार दिया है; वह अपक्की वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा। 6 उस
ने अपक्की प्रजा को अन्यजातियोंका भाग देने के लिथे, अपके कामोंका प्रताप
दिखाया है। 7 सच्चाई और न्याय उसके हाथोंके काम हैं; उसके सब उपकेश
विश्वासयोग्य हैं, 8 वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे, वे सच्चाई और सिधाई से किए हुए
हैं। 9 उस ने अपक्की प्रजा का उद्धार किया है; उस ने अपक्की वाचा को सदा के
लिथे ठहराया है। उसका नाम पवित्रा और भययोग्य है। 10 बुद्धि का मूल यहोवा
का भय है; जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उनकी बुद्धि अच्छी होती है।
उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।।

भजन संहिता 112

1 याह की स्तुति करो। क्या ही धन्य है वह पुरूष जो यहोवा का भय मानता है,
और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है! 2 उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी
होगा; सीधे लोगोंकी सन्तान आशीष पाएगी। 3 उसके घर में धन सम्पत्ति रहती
है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा। 4 सीधे लोगोंके लिथे अन्धकार के बीच में
ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है। 5 जो पुरूष

अनुग्रह करता और उधार देता है, उसका कल्याण होता है, वह न्याय में अपके
मुक में को जीतेगा। 6 वह तो सदा तक अटल रहेगा; धर्मी का स्मरण सदा तक
बना रहेगा। 7 वह बुरे समाचार से नहीं डरता; उसका हृदय यहोवा पर भरोसा
रखने से स्थिर रहता है। 8 उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिथे वह न डरेगा,
वरन अपके द्रोहियोंपर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा। 9 उस ने उदारता से दरिद्रोंको
दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा और उसका सींग महिमा के साथ ऊंचा
किया जाएगा। 10 दुष्ट उसे देखकर कुढेगा; वह दांत पीस- पीसकर गल जाएगा;
दुष्टोंकी लालसा पूरी न होगी।।

भजन संहिता 113

1 याह की स्तुति करो हे यहोवा के दासोंस्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति
करो! 2 यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाय! 3 उदयाचल से
लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। 4 यहोवा सारी
जातियोंके ऊपर महान है, और उसकी महिमा आकाश से भी ऊंची है।। 5 हमारे
परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है? वह तो ऊंचे पर विराजमान है, 6 और आकाश
और पृथ्वी पर भी, दृष्टि करने के लिथे झुकता है। 7 वह कंगाल को मिट्टी पर से,
और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊंचा करता है, 8 कि उसको प्रधानोंके संग,
अर्थात् अपक्की प्रजा के प्रधानोंके संग बैठाए। 9 वह बांझ को घर में लड़कोंकी
आनन्द करनेवाली माता बनाता है। याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 114

1 जब इस्राएल ने मि से, अर्थात् याकूब के घराने ने अन्य भाषावालोंके बीच में
कूच किया, 2 तब यहूदा यहोवा का पवित्रास्थान और इस्राएल उसके राज्य के
लोग हो गए।। 3 समुद्र देखकर भागा, यर्दन नदी उलटी बही। 4 पहाड़ मेढ़ोंकी
नाईं उछलने लगे, और पहाड़ियां भेड़- बकरियोंके बच्चोंकी नाईं उछलने लगीं।। 5
हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलठी
बही? 6 हे पहाड़ोंतुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ोंकी नाईं, और हे पहाड़ियोंतुम्हें क्या
हुआ, कि तुम भेड़- बकरियोंके बच्चोंकी नाईं उछलीं? 7 हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने,
हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा। 8 वह चट्टान को जल का ताल,
चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है।।

भजन संहिता 115

1 हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन अपके ही नाम की महिमा, अपक्की
करूणा और सच्चाई के निमित्त कर। 2 जाति जाति के लोग क्योंकहने पांए, कि
उनका परमेश्वर कहां रहा? 3 हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं; उस ने जो चाहा वही
किया है। 4 उन लोगोंकी मूरतें सोने चान्दी ही की तो हैं, वे मनुष्योंके हाथ की
बनाई हुई हैं। 5 उनक मुंह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकती; उनके आंखें तो
रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकतीं। 6 उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं
सकतीं; उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूंघ नहीं सकतीं। 7 उनके हाथ तो रहते
हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं; उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं
सकतीं; और उनके कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं। 8 जैसी वे हैं वैसे
ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे।। 9 हे

इस्राएल यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहाथक और ढाल वही है। 10 हे हारून के
घराने यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहाथक और ढाल वही है। 11 हे यहोवा के
डरवैयो, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहाथक और ढाल वही है।। 12 यहोवा
ने हम को स्मरण किया है; वह आशीष देगा; वह इस्राएल के घराने को आशीष
देगा; वह हारून के घराने को आशीष देगा। 13 क्या छोटे क्या बड़े जितने यहोवा
के डरवैथे हैं, वह उन्हें आशीष देगा।। 14 यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कोंको
भी अधिक बढ़ाता जाए! 15 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, उसकी
ओर से तुम अशीष पाए हो।। 16 स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उस ने
मनुष्योंको दी है। 17 मृतक जितने चुपचाप पके हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर
सकते, 18 परन्तु हम लोग याह को अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे।
याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 116

1 मैं प्रेम रखता हूं, इसलिथे कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है। 2 उस ने जो
मेरी ओर कान लगाया है, इसलिथे मैं जीवन भर उसको पुकारा करूंगा। 3 मृत्यु
की रस्सियां मेरे चारोंओर थीं; मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था; मुझे संकट और
शोक भोगना पड़ा। 4 तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की, कि हे यहोवा बिनती सुनकर
मेरे प्राण को बचा ले! 5 यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है; और हमारा परमेश्वर
दया करनेवाला है। 6 यहोवा भोलोंकी रक्षा करता है; जब मैं बलहीन हो गया था,
उस ने मेरा उद्धार किया। 7 हे मेरे प्राण तू अपके विश्रामस्थान में लौट आ; क्योंकि
यहोवा ने तेरा उपकार किया है।। 8 तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंख को

आंसू बहाने से, और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है। 9 मैं जीवित रहते हुए,
अपके को यहोवा के साम्हने जानकर नित चलता रहूंगा। 10 मैं ने जो ऐसा कहा
है, इसे विश्वास की कसौटी पर कस कर कहा है, कि मैं तो बहुत की दु:खित हुआ;
11 मैं ने उतावली से कहा, कि सब मनुष्य झूठें हैं।। 12 यहोवा ने मेरे जितने
उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं? 13 मैं उद्धार का कटोरा उठाकर,
यहोवा से प्रार्थना करूंगा, 14 मैं यहोवा के लिथे अपक्की मन्नतें सभोंकी दृष्टि में
प्रगट रूप में उसकी सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा। 15 यहोवा के भक्तोंकी
मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है। 16 हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूं; मैं तेरा
दास, और तेरी दासी का पुत्रा हूं। तू ने मेरे बन्धन खोल दिए हैं। 17 मैं तुझ को
धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा। 18 मैं यहोवा के लिथे
अपक्की मन्नतें, प्रगट में उसकी सारी प्रजा के साम्हने 19 यहोवा के भवन के
आंगनोंमें, हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूंगा। याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 117

1 हे जाति जाति के सब लोगोंयहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो,
उसकी प्रशंसा करो! 2 क्योंकि उसकी करूणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा
की सच्चाई सदा की है याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 118

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा की है! 2
इस्राएल कहे, उसकी करूणा सदा की है। 3 हारून का घराना कहे, उसकी करूणा

सदा की है। 4 यहोवा के डरवैथे कहे, उसकी करूणा सदा की है। 5 मैं ने सकेती में
परमेश्वर को पुकारा, परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े स्थान में पहुंचाया। 6
यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? 7 यहोवा मेरी
ओर मेरे सहाथकोंमें है; मैं अपके बैरियोंपर दृष्टि कर सन्तुष्ट हूंगा। 8 यहोवा की
शरण लेनी, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है। 9 यहोवा की शरण लेनी,
प्रधानोंपर भी भरोसा रखने से उत्तम है।। 10 सब जातियोंने मुझ को घेर लिया है;
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा! 11 उन्होंने मुझ को घेर
लिया है, नि:सन्देह घेर लिया है; परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश
कर डालूंगा! 12 उन्होंने मुझे मधुमक्खियोंकी नाईं घेर लिया है, परन्तु कांटोंकी
आग की नाईं वे बुझ गए; यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा! 13
तू ने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पडूं परन्तु यहोवा ने मेरी सहाथता
की। 14 परमेश्वर मेरा बल और भजन का विषय है; वह मेरा उद्धार ठहरा है।। 15
धर्मियोंके तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है, यहोवा के
दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है, 16 यहोवा का दहिना हाथ महान हुआ है,
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है! 17 मैं न मरूंगा वरन जीवित
रहूंगा, और परमेश्वर परमेश्वर के कामोंका वर्णन करता रहूंगा। 18 परमेश्वर ने
मेरी बड़ी ताड़ना तो की है परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया।। 19 मेरे लिथे
धर्म के द्वार खोलो, मैं उन से प्रवेश करके याह का धन्यवाद करूंगा।। 20 यहोवा
का द्वार यही है, इस से धर्मी प्रवेश करने पाएंगे।। 21 हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद
करूंगा, क्योंकि तू ने मेरी सुन ली है और मेरा उद्धार ठहर गया है। 22
राजमिस्त्रियोंने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया

है। 23 यह तो यहोवा की ओर से हुआ है, यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है। 24 आज
वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इस में मगन और आनन्दित हों। 25 हे
यहोवा, बिनती सुन, उद्धार कर! हे यहोवा, बिनती सुन, सफलता दे! 26 धन्य है
वह जो यहोवा के नाम से आता है! हम ने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद
दिया है। 27 यहोवा ईश्वर है, और उस ने हम को प्रकाश दिया है। यज्ञपशु को वेदी
के सींगोंसे रस्सिक्कों बान्धो! 28 हे यहोवा, तू मेरा ईश्वर है, मैं तेरा धन्यवाद
करूंगा; तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझ को सराहूंगा।। 29 यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा बनी रहेगी!

भजन संहिता 119

1 क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं! 2
क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियोंको मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास
आते हैं! 3 फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते, वे उसके मार्गोंमें चलते हैं। 4 तू
ने अपके उपकेश इसलिथे दिए हैं, कि वे यत्न से माने जाएं। 5 भला होता कि तेरी
विधियोंके मानने के लिथे मेरी चालचलन दृढ़ हो जाए! 6 तब मैं तेरी सब
आज्ञाओं की ओर चित्त लगाए रहूंगा, और मेरी आशा न टूटेगी। 7 जब मैं तेरे
धर्ममय नियमोंको सीखूंगा, तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूंगा। 8 मैं तेरी
विधियोंको मानूंगा: मुझे पूरी रीति से न तज! 9 जवान अपक्की चाल को किस
उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। 10 मैं पूरे मन से तेरी
खोज मे लगा हूं; मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे! 11 मैं ने तेरे वचन
को अपके हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं। 12 हे यहोवा, तू धन्य

है; मुझे अपक्की विधियां सिखा! 13 तेरे सब कहे हुए नियमोंका वर्णन, मैं ने
अपके मुंह से किया है। 14 मैं तेरी चितौनियोंके मार्ग से, मानोंसब प्रकार के धन
से हर्षित हुआ हूं। 15 मैं तेरे उपकेशोंपर ध्यान करूंगा, और तेरे मार्गोंकी ओर दृष्टि
रखूंगा। 16 मैं तेरी विधियोंसे सुख पाऊंगा; और तेरे वचन को न भूलूंगा।। 17
अपके दास का उपकार कर, कि मैं जीवित रहूं, और तेरे वचन पर चलता रहूं। 18
मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं। 19 मैं तो पृथ्वी
पर परदेशी हूं; अपक्की आज्ञाओं को मुझ से छिपाए न रख! 20 मेरा मन तेरे
नियमोंकी अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है। 21 तू ने
अभिमानियोंको, जो शापित हैं, घुड़का है, वे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटके हुए
हैं। 22 मेरी नामधराई और अपमान दूर कर, क्योंकि मैं तेरी चितौनियोंको पकड़े
हूं। 23 हाकिम भी बैठे हुए आपास में मेरे विरूद्ध बातें करते थे, परन्तु तेरा दास
तेरी विधियोंपर ध्यान करता रहा। 24 तेरी चितौनियां मेरा सुखमूल और मेरे
मन्त्री हैं।। 25 मैं धूल में पड़ा हूं; तू अपके वचन के अनुसार मुझ को जिला! 26 मैं
ने अपक्की चालचलन का तुझ से वर्णन किया है और तू ने मेरी बात मान ली है;
तू मुझ को अपक्की विधियां सिखा! 27 अपके उपकेशोंका मार्ग मुझे बता, तब मैं
तेरे आश्चर्यकर्मोंपर ध्यान करूंगा। 28 मेरा जीवन उदासी के मारे गल चला है; तू
अपके वचन के अनुसार मुझे सम्भल! 29 मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर; और
करूणा करके अपक्की व्यवस्था मुझे दे। 30 मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,
तेरे नियमोंकी ओर मैं चित्त लगाए रहता हूं। 31 मैं तेरी चितौनियोंमें लवलीन हूं, हे
यहोवा, मेरी आशा न तोड़! 32 जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा, तब मैं तेरी आज्ञाओ
के मार्ग में दौडूंगा।। 33 हे यहोवा, मुझे अपक्की विधियोंका मार्ग दिखा दे; तब मैं

उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा। 34 मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े
रहूंगा और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा। 35 अपक्की आज्ञाओं के पथ में मुझ को
चला, क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं। 36 मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपक्की
चितौनियोंही की ओर फेर दे। 37 मेरी आंखोंको व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे;
तू अपके मार्ग में मुझे जिला। 38 तेरा वचन जो तेरे भय माननेवालोंके लिथे है,
उसको अपके दास के निमित्त भी पूरा कर। 39 जिस नामधराई से मैं डरता हूं, उसे
दूर कर; क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं। 40 देख, मैं तेरे उपकेशोंका अभिलाषी हूं;
अपके धर्म के कारण मुझ को जिला। 41 हे यहोवा, तेरी करूणा और तेरा किया
हुआ उद्धार, तेरे वचन के अनुसार, मुझ को भी मिले; 42 तब मैं अपक्की
नामधराई करनेवालोंको कुछ उत्तर दे सकूंगा, क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर
है। 43 मुझे अपके सत्य वचन कहने से न रोक क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमोंपर
है। 44 तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूंगा; 45 और मैं
चोड़े स्थान में चला फिरा करूंगा, क्योंकि मैं ने तेरे उपकेशोंकी सुधि रखी है। 46
और मैं तेरी चितौनियोंकी चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा, और संकोच न
करूंगा; 47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूं, और मैं उन से प्रीति रखता
हूं। 48 मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में मैं प्रीति रखता हूं, हाथ फैलाऊंगा और
तेरी विधियोंपर ध्यान करूंगा।। 49 जो वचन तू ने अपके दास को दिया है, उसे
स्मरण कर, क्योंकि तू ने मुझे आशा दी है। 50 मेरे दु:ख में मुझे शान्ति उसी से
हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है। 51 अभिमानियोंने मुझे
अत्यन्त ठट्ठे में उड़ाया है, तौभी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा। 52 हे यहोवा, मैं
ने तेरे प्राचीन नियमोंको स्मरण करके शान्ति पाई है। 53 जो दुष्ट तेरी व्यवस्था

को छोड़े हुए हैं, उनके कारण मैं सन्ताप से जलता हूं। 54 जहां मैं परदेशी होकर
रहता हूं, वहां तेरी विधियां, मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं। 55 हे यहोवा, मैं ने
रात को तेरा नाम स्मरण किया और तेरी व्यवस्था पर चला हूं। 56 यह मुझ से
इस कारण हुआ, कि मैं तेरे उपकेशोंको पकड़े हुए था।। 57 यहोवा मेरा भाग है; मैं
ने तेरे वचनोंके अनुसार चलने का निश्चय किया है। 58 मैं ने पूरे मन से तुझे
मनाया है; इसलिथे अपके वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर। 59 मैं ने
अपक्की चालचलन को सोचा, और तेरी चितौनियोंका मार्ग लिया। 60 मैं ने तेरी
आज्ञाओं के मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है। 61 मैं दुष्टोंकी रस्सिक्कों बन्ध
गया हूं, तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला। 62 तेरे धर्ममय नियमोंके कारण मैं
आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा। 63 जितने तेरा भय मानते और तेरे
उपकेशोंपर चलते हैं, उनका मैं संगी हूं। 64 हे यहोवा, तेरी करूणा पृथ्वी में भरी
हुई है; तू मुझे अपक्की विधियां सिखा! 65 हे यहोवा, तू ने अपके वचन के
अनुसार अपके दास के संग भलाई की है। 66 मुझे भली विवेक- शक्ति और ज्ञान
दे, क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है। 67 उस से पहिले कि मैं
दु:खित हुआ, मैं भटकता था; परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूं। 68 तू भला
है, और भला करता भी है; मुझे अपक्की विधियां सिखा। 69 अभिमानियोंने तो
मेरे विरूद्ध झूठ बात गढ़ी है, परन्तु मैं तेरे उपकेशोंको पूरे मन से पकड़े रहूंगा। 70
उनका मन मोटा हो गया है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूं। 71 मुझे
जो दु:ख हुआ वह मेरे लिथे भला ही हुआ है, जिस से मैं तेरी विधियोंको सीख
सकूं। 72 तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिथे हजारोंरूपयोंऔर मुहरोंसे भी उत्तम है।।
73 तेरे हाथोंसे मैं बनाया और रचा गया हूं; मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को

सीखूं। 74 तेरे डरवैथे मुझे देखकर आनन्दित होंगे, क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर
आशा लगाई है। 75 हे यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम धर्ममय हैं, और तू ने
अपके सच्चाई के अनुसार मुझे दु:ख दिया है। 76 मुझे अपक्की करूणा से शान्ति
दे, क्योंकि तू ने अपके दास को ऐसा ही वचन दिया है। 77 तेरी दया मुझ पर हो,
तब मैं जीवित रहूंगा; क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं। 78 अभिमानियोंकी
आशा टूटे, क्योंकि उन्होंने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है; परन्तु मैं तेरे
उपकेशोंपर ध्यान करूंगा। 79 जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी ओर फिरें, तब वे
तेरी चितौनियोंको समझ लेंगे। 80 मेरा मन तेरी विधियोंके मानने में सिद्ध हो,
ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पके।। 81 मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिथे बैचेन है;
परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है। 82 मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की
बाट जोहते जोहते रह गईं है; और मैं कहता हूं कि तू मुझे कब शान्ति देगा? 83
क्योंकि मैं धूएं में की कुप्पी के समान हो गया हूं, तौभी तेरी विधियोंको नहीं भूला।
84 तेरे दास के कितने दिन रह गए हैं? तू मेरे पीछे पके हुओं को दण्ड कब देगा?
85 अभिमानी जो तरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते, उन्होंने मेरे लिथे गड़हे
खोदे हैं। 86 तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं; वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे
पके हैं; तू मेरी सहाथता कर! 87 वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने ही पर थे,
परन्तु मैं ने तेरे उपकेशोंको नहीं छोड़ा। 88 अपक्की करूणा के अनुसार मुझ को
जिला, तब मैं तेरी दी हुई चितौनी को मानूंगा।। 89 हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश
में सदा तक स्थिर रहता है। 90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है; तू ने
पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिथे वह बनी है। 91 वे आज के दिन तक तेरे
नियमोंके अनुसार ठहरे हैं; क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है। 92 यदि मैं तेरी

व्यवस्था से सुखी न होता, तो मैं दु:ख के समय नाश हो जाता। 93 मैं तेरे
उपकेशोंको कभी न भूलूंगा; क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है। 94 मैं
तेरा ही हूं, तू मेरा उद्धार कर; क्योंकि मैं तेरे उपकेशोंकी सुधि रखता हूं। 95 दुष्ट
मेरा नाश करने के लिथे मेरी घात में लगे हैं; परन्तु मैं तेरी चितौनियोंपर ध्यान
करता हूं। 96 जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं, उन सब को तो मैं ने अधूरी पाया है,
परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा है।। 97 अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति
रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है। 98 तू अपक्की आज्ञाओं के
द्वारा मुझे अपके शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है, क्योंकि वे सदा मेरे मन में
रहती हैं। 99 मैं अपके सब शिक्षकोंसे भी अधिक समझ रखता हूं, क्योंकि मेरा
ध्यान तेरी चितौनियोंपर लगा है। 100 मैं पुरनियोंसे भी समझदार हूं, क्योंकि मैं
तेरे उपकेशोंको पकड़े हुए हूं। 101 मैं ने अपके पांवोंको हर एक बुरे रास्ते से रोक
रखा है, जिस से मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं। 102 मैं तेरे नियमोंसे नहीं हटा,
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है। 103 तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे
मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं! 104 तेरे उपकेशोंके कारण मैं समझदार हो जाता हूं,
इसलिथे मैं सब मिथ्या मार्गोंसे बैर रखता हूं।। 105 तेरा वचन मेरे पांव के लिथे
दीपक, और मेरे मार्ग के लिथे उजियाला है। 106 मैं ने शपथ खाई, और ठाना भी
है कि मैं तेरे धर्ममय नियमोंके अनुसार चलूंगा। 107 मैं अत्यन्त दु:ख में पड़ा हूं;
हे यहोवा, अपके वचन के अनुसार मुझे जिला। 108 हे यहोवा, मेरे वचनोंको
स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर, और अपके नियमोंको मुझे सिखा। 109 मेरा
प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है, तौभी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।
110 दुष्टोंने मेरे लिथे फन्दा लगाया है, परन्तु मैं तेरे उपकेशोंके मार्ग से नहीं

भटका। 111 मैं ने तेरी चितौनियोंको सदा के लिथे अपना निज भाग कर लिया है,
क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण है। 112 मैं ने अपके मन को इस बात पर
लगाया है, कि अन्त तक तेरी विधियोंपर सदा चलता रहूं। 113 मैं दुचित्तोंसे तो
बैर रखता हूं, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं। 114 तू मेरी आड़ और ढ़ाल
है; मेरी आशा तेरे वचन पर है। 115 हे कुकर्मियों, मुझ से दूर हो जाओ, कि मैं
अपके परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूं। 116 हे यहोवा, अपके वचन के
अनुसार मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूं, और मेरी आशा को न तोड़! 117 मुझे
थांभ रख, तब मैं बचा रहूंगा, और निरन्तर तेरी विधियोंकी ओर चित्त लगाए
रहूंगा! 118 जितने तेरी विधियोंके मार्ग से भटक जाते हैं, उन सब को तू तुच्छ
जानता है, क्योंकि उनकी चतुराई झूठ है। 119 तू ने पृथ्वी के सब दुष्टोंको धातु के
मैल के समान दूर किया है; इस कारण मैं तेरी चितौनियोंमें प्रीति रखता हूं। 120
तेरे भय से मेरा शरीर कांप उठता है, और मैं तेरे नियमोंसे डरता हूं।। 121 मैं ने तो
न्याय और धर्म का काम किया है; तू मुझे अन्धेर करनेवालोंके हाथ में न छोड़।
122 अपके दास की भलाई के लिथे जामिन हो, ताकि अभिमानी मुझ पर अन्धेर
न करने पांए। 123 मेरी आंखें तुझ से उद्धार पाने, और तेरे धर्ममय वचन के पूरे
होने की बाट जोहते जोहते रह गई हैं। 124 अपके दास के संग अपक्की करूणा के
अनुसार बर्ताव कर, और अपक्की विधियां मुझे सिखा। 125 मैं तेरा दास हूं, तू
मुझे समझ दे कि मैं तेरी चितौनियोंको समझूं। 126 वह समय आया है, कि
यहोवा काम करे, क्योंकि लोगोंने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है। 127 इस कारण
मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं। 128 इसी
कारण मैं तेरे सब उपकेशोंको सब विषयोंमें ठीक जानता हूं; और सब मिथ्या

मार्गोंसे बैर रखता हूं।। 129 तेरी चितौनियां अनूप हैं, इस कारण मैं उन्हें अपके
जी से पकड़े हुए हूं। 130 तेरी बातोंके खुलने से प्राकाश होता है; उस से भोले लोग
समझ प्राप्त करते हैं। 131 मैं मुंह खोलकर हांफने लगा, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं
का प्यासा था। 132 जैसी तेरी रीति अपके नाम की प्रीति रखनेवालोंसे है, वैसे ही
मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर। 133 मेरे पैरोंको अपके वचन के मार्ग
पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे। 134 मुझे
मनुष्योंके अन्धेर से छुड़ा ले, तब मैं तेरे उपकेशोंको मानूंगा। 135 अपके दास पर
अपके मुख का प्रकाश चमका दे, और अपक्की विधियां मुझे सिखा। 136 मेरी
आंखोंसे जल की धारा बहती रहती है, क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं
मानते।। 137 हे यहोवा तू धर्मी है, और तेरे नियम सीधे हैं। 138 तू ने अपक्की
चितौनियोंको धर्म और पूरी सत्यता से कहा है। 139 मैं तेरी धुन में भस्म हो रहा
हूं, क्योंकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनोंको भूल गए हैं। 140 तेरा वचन पूरी रीति से
ताया हुआ है, इसलिथे तेरा दास उस में प्रीति रखता है। 141 मैं छोटा और तुच्छ
हूं, तौभी मैं तेरे उपकेशोंको नही भूलता। 142 तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी
व्यवस्था सत्य है। 143 मैं संकट और सकेती में फंसा हूं, परन्तु मैं तेरी आज्ञाओं
से सुखी हूं। 144 तेरी चितौनियां सदा धर्ममय हैं; तू मुझ को समझ दे कि मैं
जीवित रहूं।। 145 मैं ने सारे मन से प्रार्थना की है, हे यहोवा मेरी सुन लेना! मैं तेरी
विधियोंको पकड़े रहूंगा। 146 मैं ने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा उद्धार कर, और
मैं तेरी चितौनियोंको माना करूंगा। 147 मैं ने पौ फटने से पहिले दोहाई दी; मेरी
आशा तेरे वचनोंपर थी। 148 मेरी आंखें रात के एक एक पहर से पहिले खुल गईं,
कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं। 149 अपक्की करूणा के अनुसार मेरी सुन ले; हे

यहोवा, अपक्की रीति के अनुसार मुझे जीवित कर। 150 जो दुष्टता में धुन लगाते
हैं, वे निकट आ गए हैं; वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं। 151 हे यहोवा, तू निकट है,
और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं। 152 बहुत काल से मैं तेरी चितौनियोंको जानता
हूं, कि तू ने उनकी नेव सदा के लिथे डाली है।। 153 मेरे दु:ख को देखकर मुझे
छुड़ा ले, क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया। 154 मेरा मुक मा लड़, और
मुझे छुड़ा ले; अपके वचन के अनुसार मुझ को जिला। 155 दुष्टोंको उद्धार मिलना
कठिन है, क्योंकि वे तेरी विधियोंकी सुधि नहीं रखते। 156 हे यहोवा, तेरी दया तो
बड़ी है; इसलिथे अपके नियमोंके अनुसार मुझे जिला। 157 मेरा पीछा करनेवाले
और मेरे सतानेवाले बहुत हैं, परन्तु मैं तेरी चितौनियोंसे नहीं हटता। 158 मैं
विश्वासघातियोंको देखकर उदास हुआ, क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते। 159
देख, मैं तेरे नियमोंसे कैसी प्रीति रखता हूं! हे यहोवा, अपक्की करूणा के अनुसार
मुझ को जिला। 160 तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय
नियम सदा काल तक अटल है।। 161 हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पके हैं, परन्तु मेरा
हृदय तेरे वचनोंका भय मानता है। 162 जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है,
वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूं। 163 झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता
हूं, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं। 164 तेरे धर्ममय नियमोंके कारण मैं
प्रतिदिन सात बेर तेरी स्तुति करता हूं। 165 तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालोंको
बड़ी शान्ति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती। 166 हे यहोवा, मैं तुझ
से उद्धार पाने की आशा रखता हूं; और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं। 167 मैं
तेरी चितौनियोंको जी से मानता हूं, और उन से बहुत प्रीति रखता आया हूं। 168
मैं तेरे उपकेशोंऔर चितौनियोंको मानता आया हूं, क्योंकि मेरी सारी चालचलन

तेरे सम्मुख प्रगट है।। 169 हे यहोवा, मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे; तू अपके वचन
के अनुसार मुझे समझ दे! 170 मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे; तू अपके वचन
के अनुसार मुझे छुड़ा ले। 171 मेरे मुंह से स्तुति निकला करे, क्योंकि तू मुझे
अपक्की विधियां सिखाता है। 172 मैं तेरे वचन का गीत गाऊंगा, क्योंकि तेरी सब
आज्ञाएं धर्ममय हैं। 173 तेरा हाथ मेरी सहाथता करने को तैयार रहता है, क्योंकि
मैं ने तेरे उपकेशोंको अपनाया है। 174 हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की
अभिलाषा करता हूं, मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं। 175 मुझे जिला, और मैं तेरी
स्तुति करूंगा, तेरे नियमोंसे मेरी सहाथता हो। 176 मैं खोई हुई भेड़ की नाईं
भटका हूं; तू अपके दास को ढूंढ ले, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया।।

भजन संहिता 120

1 संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा, और उस ने मेरी सुन ली। 2 हे यहोवा,
झूठ बोलनेवाले मुंह से और छली जीभ से मेरी रक्षा कर।। 3 हे छली जीभ, तुझ
को क्या मिले? और तेरे साथ और क्या अधिक किया जाए? 4 वीर के नोकीले तीर
और झाऊ के अंगारे! 5 हाथ, हाथ, क्योंकि मुझे मेशेक में परदेशी होकर रहना पड़ा
और केदार के तम्बुओं में बसना पड़ा है! 6 बहुत काल से मुझ को मेल के बैरियोंके
साथ बसना पड़ा है। 7 मैं तो मेल चाहता हूं; परन्तु मेरे बोलते ही, वे लड़ना चाहते
हैं!

भजन संहिता 121

1 मैं अपक्की आंखें पर्वतोंकी ओर लगाऊंगा। मुझे सहाथता कहां से मिलेगी? 2

मुझे सहाथता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है।।
3 वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघे। 4 सुन, इस्राएल का
रक्षक, न ऊंघेगा और न सोएगा।। 5 यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दहिनी ओर
तेरी आड़ है। 6 न तो दिन को धूप से, और न रात को चांदनी से तेरी कुछ हाति
होगी।। 7 यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; यह तेरे प्राण की रक्षा करेगा। 8
यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा।।

भजन संहिता 122

1 जब लोगोंने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित
हुआ। 2 हे यरूशलेम, तेरे फाटकोंके भीतर, हम खड़े हो गए हैं! 3 हे यरूशलेम, तू
ऐसे नगर के समान बना है, जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं। 4 वहां याह के
गोत्रा गोत्रा के लोग यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं; यह इस्राएल के
लिथे साक्षी है। 5 वहां तो न्याय के सिंहासन, दाऊद के घराने के लिथे धरे हुए हैं।।
6 यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें! 7 तेरी
शहरपनाह के भीतर शान्ति, और तेरे महलोंमें कुशल होवे! 8 अपके भाइयोंऔर
संगियोंके निमित्त, मैं कहूंगा कि तुझ में शान्ति होवे! 9 अपके परमेश्वर यहोवा के
भवन के निमित्त, मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा।।

भजन संहिता 123

1 हे स्वर्ग में विराजमान मैं अपक्की आंखें तेरी ओर लगाता हूं! 2 देख, जैसे
दासोंकी आंखें अपके स्वामियोंके हाथ की ओर, और जैसे दासियोंकी आंखें

अपक्की स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती है, वैसे ही हमारी आंखें हमारे
परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी, जब तक वह हम पर अनुग्रह
न करे।। 3 हम पर अनुग्रह कर, हे यहोवा, हम पर अनुग्रह कर, क्योंकि हम
अपमान से बहुत ही भर गए हैं। 4 हमारा जीव सुखी लोगोंके ठट्ठोंसे, और
अहंकारियोंके अपमान से बहुत ही भर गया है।।

भजन संहिता 124

1 इस्राएल यह कहे, कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता, 2 यदि यहोवा उस समय
हमारी ओर न होता जब मनुष्योंने हम पर चढ़ाई की, 3 तो वे हम को उसी समय
जीवित निगल जाते, जब उनका क्रोध हम पर भड़का था, 4 हम उसी समय जल
में डूब जाते और धारा में बह जाते; 5 उमड़ते जल में हम उसी समय ही बह
जाते।। 6 धन्य है यहोवा, जिस ने हम को उनके दातोंतले जाने न दिया! 7 हमार
जीव पक्षी की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया; जाल फट गया, हम बच
निकले! 8 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है, हमारी सहाथता उसी के
नाम से होती है।

भजन संहिता 125

1 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिरयोन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं,
वरन सदा बना रहता है। 2 जिस प्रकार यरूशलेम के चारोंओर पहाड़ हैं, उसी
प्रकार यहोवा अपक्की प्रजा के चारोंओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा। 3
क्योंकि दुष्टोंका राजदण्ड धर्मियोंके भाग पर बना न रहेगा, ऐसा न हो कि धर्मी

अपके हाथ कुटिल काम की ओर बढ़ाएं।। 4 हे यहोवा, भलोंका, और सीधे
मनवालोंका भला कर! 5 परन्तु जो मुड़कर टेढ़े मार्गोंमें चलते हैं, उनको यहोवा
अनर्थकारियोंके संग निकाल देगा! इस्राएल को शान्ति मिले!

भजन संहिता 126

1 जब यहोवा सिरयोन से लौअनेवालोंको लौटा ले आया, तब हम स्वप्न देखनेवाले
से हो गए। 2 तब हम आनन्द से हंसने और जयजयकार करने लगे; तब जाति
जाति के बीच में कहा जाता था, कि यहोवा ने, इनके साथ बड़े बड़े काम किए हैं। 3
यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किए हैं; और इस से हम आनन्दित हैं।। 4 हे
यहोवा, दक्खिन देश के नालोंकी नाईं, हमारे बन्धुओं को लौटा ले आ! 5 जो आंसू
बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। 6 चाहे बोनेवाला बीज
लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ
निश्चय लौट आएगा।।

भजन संहिता 127

1 यदि घर को यहोवा न बानाए, तो उसके बनानेवालोंको परिश्रम व्यर्थ होगा।
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे, तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा। 2 तुम
जो सवेरे उठते और देर करके विश्राम करते और दु:ख भरी रोटी खाते हो, यह सब
तुम्हारे लिथे व्यर्थ ही है; क्योंकि वह अपके प्रियोंको योंही नींद दान करता है।। 3
देखे, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है। 4
जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं। 5 क्या ही धन्य है वह

पुरूष जिस ने अपके तर्कश को उन से भर लिया हो! वह फाटक के पास शत्रुओं से
बातें करते संकोच न करेगा।।

भजन संहिता 128

1 क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है, और उसके मार्गोंपर
चलता है! 2 तू अपक्की कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा
भला ही होगा।। 3 तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी
मेज के चारोंओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे। 4 सुन, जो पुरूष यहोवा का
भय मानता हो, वह ऐसी ही आशीष पाएगा।। 5 यहोवा तुझे सिरयोन से आशीष
देवे, और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे! 6 वरन तू अपके नाती-
पोतोंको भी देखने पाए! इस्राएल को शान्ति मिले!

भजन संहिता 129

1 इस्राएल अब यह कहे, कि मेरे बचपन से लोग मुझे बार बार क्लेश देते आए हैं,
2 मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश देते तो आए हैं, परन्तु मुझ पर प्रबल
नहीं हुए। 3 हलवाहोंने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया, और लम्बी लम्बी रेखाएं
कीं। 4 यहोवा धर्मी है; उस ने दुष्टोंके फन्दोंको काट डाला है। 5 जितने सिरयोन से
बैर रखते हैं, उन सभोंकी आशा टूटे, ओर उनको पीछे हटना पके! 6 वे छत पर की
घास के समान हों, जो बढ़ने से पहिले सूख जाती है; 7 जिस से कोई लवैया
अपक्की मुट्ठी नहीं भरता, न पूलियोंका कोई बान्धनेवाला अपक्की अंकवार भर
पाता है, 8 और न आने जानेवाले यह कहते हैं, कि यहोवा की आशीष तुम पर

होवे! हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!

भजन संहिता 130

1 हे यहोवा, मैं ने गहिरे स्थानोंमें से तुझ को पुकारा है! 2 हे प्रभु, मेरी सुन! तेरे
कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहें! 3 हे याह, यदि तू अधर्म के
कामोंका लेखा ले, तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा? 4 परन्तु तू क्षमा करनेवाला
है? जिस से तेरा भय माना जाए। 5 मैं यहोवा की बाट जोहता हूं, मैं जी से उसकी
बाट जोहता हूं, और मेरी आशा उसके वचन पर है; 6 पहरूए जितना भोर को
चाहते हैं, हां, पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, उस से भी अधिक मैं यहोवा को
अपके प्राणोंसे चाहता हूं।। 7 इस्राएल यहोवा पर आशा लगाए रहे! क्योंकि यहोवा
करूणा करनेवाला और पूरा छुटकारा देनेवाला है। 8 इस्राएल को उसके सारे
अधर्म के कामोंसे वही छुटकारा देगा।।

भजन संहिता 131

1 हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है; और जो
बातें बड़ी और मेरे लिथे अधिक कठिन हैं, उन से मैं काम नहीं रखता। 2 निश्चय
मैं ने अपके मन को शान्त और चुप कर दिया है, जैसे दूध छुड़ाया हुआ लड़का
अपक्की मां की गोद में रहता है, वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन
भी रहता है।। 3 हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए
रह!

भजन संहिता 132

1 हे यहोवा, दाऊद के लिथे उसकी सारी दुर्दशा को स्मरण कर; 2 उस ने यहोवा से
शपथ खाई, और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी है, 3 कि निश्चय मैं उस
समय तक अपके घर में प्रवेश न करूंगा, और ने अपके पलंग पर चढूंगा; 4 न
अपक्की आंखोंमें नींद, और न अपक्की पलकोंमें झपक्की आने दूंगा, 5 जब तक
मैं यहोवा के लिथे एक स्थान, अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिथे निवास
स्थान न पाऊं।। 6 देखो, हम ने एप्राता में इसकी चर्चा सुनी है, हम ने इसको वन
के खेतोंमें पाया है। 7 आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें, हम उसके चरणोंकी
चौकी के आगे दण्डवत् करें! 8 हे यहोवा, उठकर अपके विश्रामस्थान में अपक्की
सामर्थ्य के सन्दूक समेत आ। 9 तेरे याजक धर्म के वस्त्रा पहिने रहें, और तेरे भक्त
लोग जयजयकार करें। 10 अपके दास दाऊद के लिथे अपके अभिषिक्त की प्रार्थना
की अनसुनी न कर।। 11 यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है और वह उस से
न मुकरेगा: कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्रा को बैठाऊंगा। 12 यदि तेरे वंश
के लोग मेरी वाचा का पालन करें और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा, उस पर
चलें, तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग युग बैठते चले जाएंगे। 13
क्योंकि यहोवा ने सिरयोन को अपनाया है, और उसे अपके निवास के लिथे चाहा
है।। 14 यह तो युग युग के लिथे मेरा विश्रामस्थान हैं; यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैं ने
इसका चाहा है। 15 मैं इस में की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और
इसके दरिद्रोंको रोटी से तृप्त करूंगा। 16 इसके याजकोंको मैं उद्धार का वस्त्रा
पहिनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे। 17 वहां मैं
दाऊद के एक सींग उगाऊंगा; मैं ने अपके अभिषिक्त के लिथे एक दीपक तैयार
कर रखा है। 18 मैं उसे शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्रा पहिनाऊंगा, परन्तु उसी के

सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।।

भजन संहिता 133

1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! 2
यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और
उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्रा की छोर तक पहुंच गया। 3 वह हेर्मोन् की
उस ओस के समान है, जो सिरयोन के पहाड़ोंपर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा
के जीवन की आशीष ठहराई है।।

भजन संहिता 134

1 हे यहोवा के सब सेवको, सुनो, तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े
रहते हो, यहोवा को धन्य कहो। 2 अपके हाथ पवित्रास्थान में उठाकर, यहोवा को
धन्य कहो। 3 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, वह सिरयोन में से तुझे
आशीष देवे।।

भजन संहिता 135

1 याह की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो, हे यहोवा के सेवको तुम
स्तुति करो, 2 तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के
आंगनोंमें खड़े रहते हो! 3 याह की स्तुति करो, क्योंकि यहोवा भला है; उसके नाम
का भजन गाओ, क्योंकि यह मनभाऊ है! 4 याह ने तो याकूब को अपके लिथे
चुना है, अर्थात् इस्राएल को अपके निज धन होने के लिथे चुन लिया है। 5 मैं तो

जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा सब देवताओं से महान है। 6 जो कुछ यहोवा ने
चाहा उसे उस ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहिरे स्थानोंमें किया
है। 7 वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है, और वर्षा के लिथे बिजली बनाता है,
और पवन को अपके भण्डार में से निकालता है। 8 उस ने मि में क्या मनुष्य क्या
पशु, सब के पहिलौठोंको मार डाला! 9 हे मि , उस ने तेरे बीच में फिरौन और
उसके सब कर्मचारियोंके बीच चिन्ह और चमत्कार किए। 10 उस ने बहुत सी
जातियां नाश की, और सामर्थी राजाओं को, 11 अर्थात् एमोरियोंके राजा सीहोन
को, और बाशान के राजा ओग को, और कनान के सब राजाओं को घात किया; 12
और उनके देश को बांटकर, अपक्की प्रजा इस्राएल के भाग होने के लिथे दे
दिया।। 13 हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है, हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण
होता है, वह पीढ़ी- पीढ़ी बना रहेगा। 14 यहोवा तो अपक्की प्रजा का न्याय
चुकाएगा, और अपके दासोंकी दुर्दशा देखकर तरस खाएगा। 15 अन्यजातियोंकी
मूरतें सोना- चान्दी ही हैं, वे मनुष्योंकी बनाई हुई हैं। 16 उनके मुंह तो रहता है,
परन्तु वे बोल नहीं सकतीं, उनके आंखें तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकतीं,
17 उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं, न उनके कुछ भी सांस
चलती है। 18 जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले भी हैं; और उन पर सब भरोसा
रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे! 19 हे इस्राएल के घराने यहोवा को धन्य कह! हे
हारून के घराने यहोवा को धन्य कह! 20 हे लेवी के घराने यहोवा को धन्य कह! हे
यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य कहो! 21 यहोवा जो यरूशलेम में वास करता
है, उसे सिरयोन में धन्य कहा जावे! याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 136

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी करूणा सदा की है।
2 जो ईश्वरोंका परमेश्वर है, उसका धन्यवाद करो, उसकी करूणा सदा की है। 3 जो
प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्यवाद करो, उसकी करूणा सदा की है।। 4 उसको
छोड़कर कोई बड़े बड़े अशचर्यकर्म नहीं करता, उसकी करूणा सदा की है। 5 उस ने
अपक्की बुद्धि से आकाश बनाया, उसकी करूणा सदा की है। 6 उस ने पृथ्वी को
जल के ऊपर फैलाया है, उसकी करूणा सदा की है। 7 उस ने बड़ी बड़ी
ज्योतियोंबनाईं, उसकी करूणा सदा की है। 8 दिन पर प्रभुता करने के लिथे सूर्य
को बनाया, उसकी करूणा सदा की है। 9 और रात पर प्रभुता करने के लिथे
चन्द्रमा और तारागण को बनाया, उसकी करूणा सदा की है। 10 उस ने
मिस्त्रियोंके पहिलौठोंको मारा, उसकी करूणा सदा की है।। 11 और उनके बीच से
इस्राएलियोंको निकाला, उसकी करूणा सदा की है। 12 बलवन्त हाथ और बढ़ाई
हुई भुजा से निकाल लाया, उसकी करूणा सदा की है। 13 उस ने लाल समुद्र को
खण्ड खण्ड कर दिया, उसकी करूणा सदा की है। 14 और इस्राएल को उसके बीच
से पार कर दिया, उसकी करूणा सदा की है। 15 और फिरौन को सेना समेत लाल
समुद्र में डाल दिया, उसकी करूणा सदा की है। 16 वह अपक्की प्रजा को जंगल में
ले चला, उसकी करूणा सदा की है। 17 उस ने बड़े बड़े राजा मारे, उसकी करूणा
सदा की है। 18 उस ने प्रतापी राजाओं को भी मारा, उसकी करूणा सदा की है। 19
एमोरियोंके राजा सीहोन को, उसकी करूणा सदा की है। 20 और बाशान के राजा
ओग को घात किया, उसकी करूणा सदा की है। 21 और उनके देश को भाग होने
के लिथे, उसकी करूणा सदा की है। 22 अपके दास इस्राएलियोंके भाग होने के
लिथे दे दिया, उसकी करूणा सदा की है। 23 उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि

ली, उसकी करूणा सदा की है। 24 और हम को द्रोहियोंसे छुड़ाया है, उसकी
करूणा सदा की है। 25 वह सब प्राणियोंको आहार देता है, उसकी करूणा सदा की
है। 26 स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो, उसकी करूणा सदा की है।

भजन संहिता 137

1 बाबुल की नहरोंके किनारे हम लोग बैठ गए, और सिरयोन को स्मरण करके रो
पके! 2 उसके बीच के मजनू वक्षोंपर हम ने अपक्की वीणाओं को टांग दिया; 3
क्योंकि जो हम को बन्धुए करके ले गए थे, उन्होंने वहां हम से गीत गवाना चाहा,
और हमारे रूलानेवलोंने हम से आनन्द चाहकर कहा, सिरयोन के गीतोंमें से
हमारे लिथे कोई गीत गाओ! 4 हम यहोवा के गीत को, पराए देश में क्योंकर
गाएं? 5 हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं, तो मेरा दहिना हाथ झूठा हो जाए! 6
यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं, यदि मैं यरूशलेम को अपके सब आनन्द से श्रेष्ठ न
जानूं, तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए! 7 हे यहोवा, यरूशलेम के दिन को
एदोमियोंके विरूद्ध स्मरण कर, कि वे क्योंकर कहते थे, ढाओ! उसको नेव से ढा
दो। 8 हे बाबुल तू जो उजड़नेवाली है, क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा
बर्ताव करेगा जैसा तू ने हम से किया है! 9 क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे
बच्चोंको पकड़कर, चट्टान पर पटक देगा!

भजन संहिता 138

1 मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा; देवताओं के साम्हने भी मैं तेरा भजन
गाऊंगा। 2 मैं तेरे पवित्रा मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा, और तेरी करूणा और

सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने अपके वचन को
अपके बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है। 3 जिस दिन मैं ने पुकारा, उसी दिन तू
ने मेरी सुन ली, और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया।। 4 हे यहोवा, पृथ्वी के
सब राजा तेरा धन्यवाद करेंगे, क्योंकि उन्होंने तेरे वचन सुने हैं; 5 और वे यहोवा
की गति के विषय में गाएंगे, क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है। 6 यद्यपि यहोवा
महान है, तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है; परन्तु अहंकारी को दूर ही
से पहिचानता है।। 7 चाहे मैं संकट के बीच में रहूं तौभी तू मुझे जिलाएगा, तू मेरे
क्रोधित शत्रुओं के विरूद्ध हाथ बढ़ाएगा, और अपके दहिने हाथ से मेरा उद्धार
करेगा। 8 यहोवा मेरे लिथे सब कुछ पूरा करेगा; हे यहोवा, तेरी करूणा सदा की है।
तू अपके हाथोंके कार्योंको त्याग न दे।।

भजन संहिता 139

1 हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है।। 2 तू मेरा उठना बैठना जानता है;
और मेरे विचारोंको दूर ही से समझ लेता है। 3 मेरे चलने और लेटने की तू भली
भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है। 4 हे यहोवा,
मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। 5 तू ने मुझे
आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। 6 यह ज्ञान मेरे
लिथे बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है।। 7 मैं तेरे आत्मा
से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं? 8 यदि मैं आकाश पर
चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है! 9
यदि मैं भोर की किरणोंपर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं, 10 तो वहां भी तू अपके

हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपके दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। 11 यदि
मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा, और मेरे चारोंओर का उजियाला रात
का अन्धेरा हो जाएगा, 12 तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के
तुल्य प्रकाश देगी; क्योंकि तेरे लिथे अन्धिक्कारनो और उजियाला दोनोंएक
समान हैं।। 13 मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा। 14 मैं
तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिथे कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं।
तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं। 15 जब मैं गुप्त में
बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे स्थानोंमें रचा जाता था, तब मेरी हड्डियां तुझ
से छिपी न थीं। 16 तेरी आंखोंने मेरे बेड़ौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो
दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे। 17
और मेरे लिथे तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़
कैसा बड़ा है।। 18 यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकोंसे भी अधिक
ठहरते। जब मैं जाग उठता हूं, तब भी तेरे संग रहता हूं।। 19 हे ईश्वर निश्चय तू
दुष्ट को घात करेगा! हे हत्यारों, मुझ से दूर हो जाओ। 20 क्योंकि वे तेरी चर्चा
चतुराई से करते हैं; तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं। 21 हे यहोवा, क्या मैं
तेरे बैरियोंसे बैर न रखूं, और तेरे विरोधियोंसे रूठ न जाऊं? 22 हां, मैं उन से पूर्ण
बैर रखता हूं; मैं उनको अपना शत्रु समझता हूं। 23 हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान
ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! 24 और देख कि मुझ में कोई बुरी
चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

भजन संहिता 140

1 हे यहोवा, मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले; उपद्रवी पुरूष से मेरी रक्षा कर, 2
क्योंकि उन्होंने मन में बुरी कल्पनाएं की हैं; वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं। 3
उनका बोलना सांप का काटना सा है, उनके मुंह में नाग का सा विष रहता है।। 4
हे यहोवा, मुझे दुष्ट के हाथोंसे बचा ले; उपद्रवी पुरूष से मेरी रक्षा कर, क्योंकि
उन्होंने मेरे पैरोंके उखाड़ने की युक्ति की है। 5 घमण्डियोंने मेरे लिथे फन्दा और
पासे लगाए, और पथ के किनारे जाल बिछाया है; उन्होंने मेरे लिथे फन्दे लगा
रखे हैं।। 6 हे यहोवा, मैं ने तुझ से कहा है कि तू मेरा ईश्वर है; हे यहोवा, मेरे
गिड़गड़ाने की ओर कान लगा! 7 हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्धारकर्ता, तू ने
युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है। 8 हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न होने दे,
उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर, नहीं तो वह घमण्ड करेगा।। 9 मेरे
घेरनेवालोंके सिर पर उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात पके! 10 उन पर अंगारे डाले
जाएं! वे आग में गिरा दिए जाएं! और ऐसे गड़होंमें गिरें, कि वे फिर उठ न सकें!
11 बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं होने का; उपद्रवी पुरूष को गिराने के लिथे बुराई
उसका पीछा करेगी।। 12 हे यहोवा, मुझे निश्चय है कि तू दीन जन का और
दरिद्रोंका न्याय चुकाएगा। 13 नि:सन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने
पाएंगे; सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे।।

भजन संहिता 141

1 हे यहोवा, मैं ने तुझे पुकारा है; मेरे लिथे फुर्ती कर! जब मैं तुझ को पुकारूं, तब
मेरी ओर कान लगा! 2 मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्ध धूप, और मेरा हाथ
फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे! 3 हे हयोवा, मेरे मुख का पहरा बैठा, मेरे

हाठोंके द्वार पर रखवाली कर! 4 मेरा मन किसी बुरी बात की ओर फिरने न दे; मैं
अनर्थकारी पुरूषोंके संग, दुष्ट कामोंमें न लगूं, और मै उनके स्वादिष्ट
भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊं! 5 धर्मी मुझ को मारे तो यह कुपा मानी
जाएगी, और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का लेत ठहरेगा; मेरा सिर
उस से इन्कार न करेगा।। लोगोंके बुरे काम करने पर भी मैं प्रार्थना में लवलीन
रहूंगा। 6 जब उनके न्यायी चट्टान के पास गिराए गए, तब उन्होंने मेरे वचन
सुन लिए; क्योंकि वे मधुर हैं। 7 जैसे भूमि में हल चलने से ढेले फूटते हैं, वैसे ही
हमारी हड्डियां अधोलोक के मुंह पर छितराई हुई हैं।। 8 परन्तु हे यहोवा, प्रभु,
मेरी आंखे तेरी ही ओर लगी हैं; मैं तेरा शरणागत हूं; तू मेरे प्राण जाने न दे! 9
मुझे उस फन्दे से, जो उन्होंने मेरे लिथे लगाया है, और अनर्थकारियोंके जाल से
मेरी रक्षा कर! 10 दुष्ट लोग अपके जालोंमें आप ही फंसें, और मैं बच निकलूं।।

भजन संहिता 142

1 मैं यहोवा की दोहाई देता, मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं, 2 मैं अपके शोक की बातें
उस से खोलकर कहता, मैं अपना संकट उसके आगे प्रगट करता हूं। 3 जब मेरी
आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल हो रही थी, तब तू मेरी दशा को जानता था! जिस
रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी में उन्होंने मेरे लिथे फन्दा लगाया। 4 मैं ने दहिनी
ओर देखा, परन्तु कोई मुझे नहीं देखता है। मेरे लिथे शरण कहीं नहीं रही, न मुझ
को कोई पूछता है।। 5 हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी है; मैं ने कहा, तू मेरा
शरणस्थान है, मेरे जीते ही तू मेरा भाग है। 6 मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर
सुन, क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है! जो मेरे पीछे पके हैं, उन से मुझे बचा ले;

क्योंकि वे मुझ से अधिक सामर्थी हैं। 7 मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं तेरे
नाम का धन्यवाद करूं! धर्मी लोग मेरे चारोंओर आएंगे; क्योंकि तू मेरा उपकार
करेगा।।

भजन संहिता 143

1 हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन; मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा! तू जो सच्चा
और धर्मी है, सो मेरी सुन ले, 2 और अपके दास से मुक मा न चला! क्योंकि कोई
प्राणी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता।। 3 शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ
है; उस ने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है, और मुझे ढेर दिन के मरे हुओं के
समान अन्धेरे स्थान में डाल दिया है। 4 मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है
मेरा मन विकल है।। 5 मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब
अद्भुत कामोंपर ध्यान करता हूं, और तेरे काम को सोचता हूं। 6 मैं तेरी ओर
अपके हाथ फैलाए हूए हूं; सूखी भूमि की नाईं मैं तेरा प्यासा हूं।। 7 हे यहोवा, फुर्ती
करके मेरी सुन ले; क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर हैं मुझ से अपना मुंह न
छिपा, ऐसा न हो कि मैं कबर में पके हुओं के समान हो जाऊं। 8 अपक्की करूणा
की बात मुझे शीघ्र सुना, क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग से मुझे
चलना है, वह मुझ को बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं।। 9 हे
हयोवा, मुझे शत्रुओं से बचा ले; मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूं। 10 मुझ को यह
सिखा, कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है! तेरा
भला आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले! 11 हे यहोवा, मुझे अपके नाम के
निमित्त जिला! तू जो धर्मी है, मुझ को संकट से छुड़ा ले! 12 और करूणा करके

मेरे शत्रुओं को सत्यानाश कर, और मेरे सब सतानेवालोंका नाश कर डाल,
क्योंकि मैं तेरा दास हूं।।

भजन संहिता 144

1 धन्य है यहोवा, जो मेरी चट्टान है, वह मेरे हाथोंको लड़ने, और युद्ध करने के
लिथे तैयार करता है। 2 वह मेरे लिथे करूणानिधान और गढ़, ऊंचा स्थान और
छुड़ानेवाला है, वह मेरी ढ़ाल और शरणस्थान है, जो मेरी प्रजा को मेरे वश में कर
देता है।। 3 हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, या आदमी क्या
है, कि तू उसकी कुछ चिन्ता करता है? 4 मनुष्य तो सांस के समान है; उसके दिन
ढलती हुई छाया के समान हैं।। 5 हे यहोवा, अपके स्वर्ग को नीचा करके उतर आ!
पहाड़ोंको छू तब उन से धुंआं उठेंगा! 6 बिजली कड़काकर उनके तितर बितर कर
दे, अपके तीर चलाकर उनको घबरा दे! 7 अपके हाथ ऊपर से बढ़ाकर मुझे
महासागर से उबार, अर्थात् परदेशियोंके वश से छुड़ा। 8 उनके मुंह से तो व्यर्थ
बातें निकलती हैं, और उनके दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं।। 9 हे परमेश्वर,
मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊंगा; मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन
गाऊंगा। 10 तू राजाओं का उद्धार करता है, और अपके दास दाऊद को तलवार की
मार से बचाता है। 11 तू मुझ को उबार और परदेशियोंके वश से छुड़ा ले, जिन के
मुंह से व्यर्थ बातें निकलती हैं, और जिनका दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है।।
12 जब हमारे बेटे जवानी के समय पौधोंकी नाईं बढ़े हुए हों, और हमारी बेटियां
उन कोनेवाले पत्थरोंके समान हों, जो मन्दिर के पत्थरोंकी नाईं बनाए जाएं; 13
जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए, और हमारी

भेड़- बकरियोंहमारे मैदानोंमें हजारोंहजार बच्चे जनें; 14 जब हमारे बैल खूब लदे
हुए हों; जब हमें न विघ्न हो और न हमारा कहीं जाना हो, और न हमारे चौकोंमें
रोना- पीटना हो, 15 तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा! जिस
राज्य का परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है!

भजन संहिता 145

1 हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूंगा, और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य
कहता रहूंगा। 2 प्रति दिन मैं तुझ को धन्य कहा करूंगा, और तेरे नाम की स्तुति
सदा सर्वदा करता रहूंगा। 3 यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है, और
उसकी बड़ाई अगम है।। 4 तेरे कामोंकी प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामोंका
वर्णन, पीढ़ी पीढ़ी होता चला जाएगा। 5 मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप पर
और तेरे भांति भांति के आश्चर्यकर्मोंपर ध्यान करूंगा। 6 लोग तेरे भयानक
कामोंकी शक्ति की चर्चा करेंगे, और मैं तेरे बड़े बड़े कामोंका वर्णन करूंगा। 7 लोग
तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे, और तेरे धर्म का
जयजयकार करेंगे।। 8 यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध
करनेवाला और अति करूणामय है। 9 यहोवा सभोंके लिथे भला है, और उसकी
दया उसकी सारी सृष्टि पर है।। 10 हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी,
और तेरे भक्त लाग तुझे धन्य कहा करेंगे! 11 वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा
करेंगे, और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे; 12 कि वे आदमियोंपर तेरे
पराक्रम के काम और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें। 13 तेरा राज्य
युग युग का और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियोंतक बनी रहेगी।। 14 यहोवा सब गिरते

हुओं को संभालता है, और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है। 15 सभोंकी
आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू उनको आहार समय पर देता है। 16 तू
अपक्की मुट्ठी खोलकर, सब प्राणियोंको आहार से तृप्त करता है। 17 यहोवा
अपक्की सब गति में धर्मी और अपके सब कामोंमे करूणामय है। 18 जिनते
यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हें; उन सभोंके वह
निकट रहता है। 19 वह अपके डरवैयोंकी इच्छा पूरी करता है, ओर उनकी दोहाई
सुनकर उनका उद्धार करता है। 20 यहोवा अपके सब प्रेमियोंकी तो रक्षा करता,
परन्तु सब दुष्टोंको सत्यानाश करता है।। 21 मैं यहोवा की स्तुति करूंगा, और
सारे प्राणी उसके पवित्रा नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें।।

भजन संहिता 146

1 याह की स्तुति करो। हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर! 2 मैं जीवन भर यहोवा
की स्तुति करता रहूंगा; जब तक मैं बना रहूंगा, तब तक मैं अपके परमेश्वर का
भजन गाता रहूंगा।। 3 तुम प्रधानोंपर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर,
क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं। 4 उसका भी प्राण निकलेगा, वही
भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी।। 5
क्या ही धन्य वह है, जिसका सहाथक याकूब का ईश्वर है, और जिसका भरोसा
अपके परमेश्वर यहोवा पर है। 6 वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उन में
जो कुछ है, सब का कर्ता है; और वह अपना वचन सदा के लिथे पूरा करता रहेगा।
7 वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है; और भूखोंको रोटी देता है।। यहोवा बन्धुओं
को छुड़ाता है; 8 यहोवा अन्धोंको आंखें देता है। यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा

करता है; यहोवा धर्मियोंसे प्रेम रखता है। 9 यहोवा परदेशियोंकी रक्षा करता है;
और अनाथोंऔर विधवा को तो सम्भालता है; परन्तु दुष्टोंके मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा
करता है।। 10 हे सिरयोन, यहोवा सदा के लिथे, तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य
करता रहेगा। याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 147

1 याह की स्तुति करो! क्योंकि अपके परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है; क्योंकि
वह मनभावना है, उसकी स्तुति करनी मनभावनी है। 2 यहोवा यरूशलेम को
बसा रहा है; वह निकाले हुए इस्राएलियोंको इकट्ठा कर रहा है। 3 वह खेदित
मनवालोंको चंगा करता है, और उनके शोक पर मरहम- पट्टी बान्धता है। 4 वह
तारोंको गिनता, और उन में से एक एक का नाम रखता है। 5 हमारा प्रभु महान
और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है। 6 यहोवा नम्र लोगोंको सम्भलता
है, और दुष्टोंको भूमि पर गिरा देता है।। 7 धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत
गाओ; वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ। 8 वह आकाश को
मेघोंसे छा देता है, और पृथ्वी के लिथे मेंह की तैयारी करता है, और पहाड़ोंपर
घास उगाता है। 9 वह पशुओं को और कौवे के बच्चोंको जो पुकारते हैं, आहार
देता है। 10 न तो वह घोड़े के बल को चाहता है, और न पुरूष के पैरोंसे प्रसन्न
होता है; 11 यहोवा अपके डरवैयोंही से प्रसन्न होता है, अर्थात् उन से जो उसकी
करूणा की आशा लगाए रहते हैं।। 12 हे यरूशलेम, यहोवा की प्रशंसा कर! हे
सिरयोन, अपके परमेश्वर की स्तुति कर! 13 क्योंकि उस ने तेरे फाटकोंके
खम्भोंको दृढ़ किया है; और तेरे लड़के बालोंको आशीष दी है। 14 और तेरे

सिवानोंमें शान्ति देता है, और तुझ को उत्तम से उत्तम गेहूं से तृप्त करता है। 15
वह पृथ्वी पर अपक्की आज्ञा का प्रचार करता है, उसका वचन अति वेग से
दौड़ता है। 16 वह ऊन के समान हिम को गिराता है, और राख की नाईं पाला
बिखेरता है। 17 वह बर्फ के टुकड़े गिराता है, उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह
सकता है? 18 वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है; वह वायु बहाता है, तब जल बहने
लगता है। 19 वह याकूब को अपना वचन, और इस्राएल को अपक्की विधियां
और नियम बताता है। 20 किसी और जाति से उस ने ऐसा बर्ताव नहीं किया; और
उसके नियमोंको औरोंने नहीं जाता।। याह की स्तुति करो।

भजन संहिता 148

1 याह की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो, उसकी स्तुति ऊंचे
स्थानोंमें करो! 2 हे उसके सब दूतों, उसकी स्तुति करो: हे उसकी सब सेना उसकी
स्तुति कर! 3 हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण
उसकी स्तुति करो! 4 हे सब से ऊंचे आकाश, और हे आकाश के ऊपरवाले जल,
तुम दोनोंउसकी स्तुति करो। 5 वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी ने
आज्ञा दी और थे सिरजे गए। 6 और उस ने उनको सदा सर्वदा के लिथे स्थिर
किया है; और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं।। 7 पृथ्वी में से यहोवा की
स्तुति करो, हे मगरमच्छोंऔर गहिरे सागर, 8 हे अग्नि और ओलो, हे हिम और
कुहरे, हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड बयार! 9 हे पहाड़ोंऔर सब टीलो, हे
फलदाई वृक्षोंऔर सब देवदारों! 10 हे वन- पशुओं और सब घरैलू पशुओं, हे
रेंगनेवाले जन्तुओं और हे पक्षियों! 11 हे पृथ्वी के राजाओं, और राज्य राज्य के

सब लोगों, हे हाकिमोंऔर पृथ्वी के सब न्यायियों! 12 हे जवनोंऔर कुमारियों, हे
पुरनियोंऔर बालकों! 13 यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसकी का
नाम महान है; उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है। 14 और उस ने
अपक्की प्रजा के लिथे एक सींग ऊंचा किया है; यह उसके सब भक्तोंके लिथे
अर्थात् इस्राएलियोंके लिथे और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिथे स्तुति
करने का विषय है। याह की स्तुति करो।

भजन संहिता 149

1 याह की स्तुति करो! यहोवा के लिथे नया गीत गाओ, भक्तोंकी सभा में उसकी
स्तुति गाओ! 2 इस्राएल अपके कर्त्ता के कारण आनन्दित को, सिरयोन के
निवासी अपके राजा के कारण मगन हों! 3 वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति
करें, और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं! 4 क्योंकि यहोवा
अपक्की प्रजा से प्रसन्न रहता है; वह नम्र लोगोंका उद्धार करके उन्हें शोभायमान
करेगा। 5 भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपके बिछौनोंपर भी
पके पके जयजयकार करें। 6 उनके कण्ठ से ईश्वर की प्रशंसा हो, और उनके
हाथोंमें दोधारी तलवारें रहें, 7 कि वे अन्यजातियोंसे पलटा ले सकें; और राज्य
राज्य के लोगोंको ताड़ना दें, 8 और उनके राजाओं को सांकलोंसे, और उनके
प्रतिष्ठित पुरूषोंको लोहे की बेड़ियोंसे जकड़ रखें, 9 और उनको ठहराया हुआ दण्ड
दें! उसके सब भक्तोंकी ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। याह की स्तुति करो।

भजन संहिता 150

1 याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रास्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी
सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो! 2 उसके पराक्रम के
कामोंके कारण उसकी स्तुति करो; उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी
स्तुति करो! 3 नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते
हुए उसकी स्तुति करो! 4 डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले
बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो! 5 ऊंचे शब्दवाली झांझ बाजाते
हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति
करो! 6 जिते प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें! याह की स्तुति करो!

नीतिवचन 1

1 दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन: 2 इनके द्वारा पढ़नेवाला
बुद्धि और शिझा प्राप्त करे, और समझ की बातें समझे, 3 और काम करने में
प्रवीणता, और धर्म, न्याय और सीधाई की शिझा पाए; 4 कि भोलोंको चतुराई,
और जवान को ज्ञान और विवेक मिले; 5 कि बुद्धिमान सुनकर अपक्की विद्या
बढ़ाए, और समझदार बुद्धि का उपकेश पाए, 6 जिस से वे नितिवचन और
दृष्टान्त को, और बुद्धिमानोंके वचन और उनके रहस्योंको समझें।। 7 यहोवा का
भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिझ को मूढ ही लोग तुच्छ जानते हैं।। 8
हे मेरे पुत्र, अपके पिता की शिझा पर कान लगा, और अपक्की माता की शिझा
को न तज; 9 क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिथे शोभायमान मुकुट, और तेरे गले
के लिथे कन्ठ माला होगी। 10 हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाए, तो
उनकी बात न मानना। 11 यदि वे कहें, हमारे संग चल कि, हम हत्या करने के

लिथे घात जगाएं हम निर्दोषोंकी ताक में रहें; 12 हम अधोलोक की नाईं उनको
जीवता, कबर में पके हुओं के समान समूचा निगल जाएं; 13 हम को सब प्रकार
के अनमोल पदार्थ मिलेंगे, हम अपके घरोंको लूट से भर लेंगे; 14 तू हमारा साफी
हो जा, हम सभोंका एक ही बटुआ हो, 15 तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न
चलना, वरन उनकी डगर में पांव भी न धरना; 16 क्योंकि वे बुराई की करने को
दौड़ते हैं, और हत्या करने को फुर्ती करते हैं। 17 क्योंकि पक्की के देखते हुए जाल
फैलाना व्यर्थ होता है; 18 और थे लोग तो अपक्की ही हत्या करने के लिथे घात
लगाते हैं, और अपके ही प्राणोंकी घात की ताक में रहते हैं। 19 सब लालचियोंकी
चाल ऐसी ही होती है; उनका प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है।। 20 बुद्धि
सड़क में ऊंचे स्वर से बोलती है; और चौकोंमें प्रचार करती है; 21 वह बाजारोंकी
भीड़ में पुकारती है; वह फाटकोंके बीच में और नगर के भीतर भी थे बातें बोलती
है: 22 हे भोले लोगो, तुम कब तक भोलेपन से प्रीति रखोगे? और हे ठट्ठा
करनेवालो, तुम कब तक ठट्ठा करने से प्रसन्न रहोगे? और हे मूर्खों, तुम कब
तक ज्ञान से बैर रखोगे? 23 तुम मेरी डांट सुनकर मन फिराओ; सुनो, मैं अपक्की
आत्मा तुम्हारे लिथे उण्डेल दूंगी; मैं तुम को अपके वचन बताऊंगी। 24 मैं ने तो
पुकारा परन्तु तुम ने इनकार किया, और मैं ने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने
ध्यान न दिया, 25 वरन तुम ने मेरी सारी सम्मति को अनसुनी किया, और मेरी
ताड़ना का मूल्य न जाना; 26 इसलिथे मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हंसूंगी;
और जब तुम पर भय आ पकेगा, 27 वरन आंधी की नाई तुम पर भय आ पकेगा,
और विपत्ति बवण्डर के समान आ पकेगी, और तुम संकट और सकेती में फंसोगे,
तब मैं ठट्ठा करूंगी। 28 उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूंगी; वे मुझे

यत्न से तो ढूंढेंगे, परन्तु न पाएंगे। 29 क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और
यहोवा का भय मानना उनको न भाया। 30 उन्होंने मेरी सम्पत्ति न चाही वरन
मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। 31 इसलिथे वे अपक्की करनी का फल आप
भोगेंगे, और अपक्की युक्तियोंके फल से अघा जाएंगे। 32 क्योंकि भोले लोगोंका
भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के
कारण मूढ लोग नाश होंगे; 33 परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और
बेखटके सुख से रहेगा।।

नीतिवचन 2

1 हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपके हृदय में
रख छोड़े, 2 और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर
सोचे; 3 और प्रवीणता और समझ के लिथे अति यत्न से पुकारे, 4 ओर उसको
चान्दी की नाईं ढूंढ़े, और गुप्त धन के समान उसी खोज में लगा रहे; 5 तो तू यहोवा
के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा। 6 क्योंकि बुद्धि
यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं। 7 वह
सीधे लोगोंके लिथे खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिथे वह
ढाल ठहरता है। 8 वह न्याय के पर्योंकी देख भाल करता, और अपके भक्तोंके मार्ग
की रझा करता है। 9 तब तू धर्म और न्याय, और सीधाई को, निदान सब
भली-भली चाल समझ सकेगा; 10 क्योंकि बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और
ज्ञान तुझे मनभाऊ लगेगा; 11 विवेक तुझे सुरझित रखेगा; और समझ तेरी
रझक होगी; 12 ताकि तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट फेर की बातोंके कहने

वालोंसे बचाए, 13 जो सीधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अन्धेरे मार्ग में चलें;
14 जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं, और दुष्ट जन की उलट फेर की बातोंमें
मगन रहते हैं; 15 जिनकी चालचलन टेढ़ी मेढ़ी और जिनके मार्ग बिगड़े हुए हैं।।
16 तब तू पराई स्त्री से भी बचेगा, जो चिकनी चुपक्की बातें बोलती है, 17 और
अपक्की जवानी के सायी को छोड़ देती, और जो अपके परमेश्वर की वाचा को भूल
जाती है। 18 उसका घर मृत्यु की ढलान पर है, और उसी डगरें मरे हुओं के बीच
पहुंचाती हैं; 19 जो उसके पास जाते हैं, उन में से कोई भी लौटकर नहीं आता; और
न वे जीवन का मार्ग पाते हैं।। 20 तू भले मनुष्योंके मार्ग में चल, और धमिर्योंकी
बाट को पकड़े रह। 21 क्योंकि धर्मी लोग देश में बसे रहेंगे, और खरे लोग ही उस
में बने रहेंगे। 22 दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे, और विश्वासघाती उस में से उखाड़े
जाएंगे।।

नीतिवचन 3

1 हे मेरे पुत्र, मेरी शिझा को न भूलना; अपके हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे
रहना; 2 क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।
3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उनको अपके गले का हार
बनाना, और अपक्की हृदयरूपी पटिया पर लिखना। 4 और तू परमेश्वर और
मनुष्य दोनोंका अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।। 5 तू अपक्की समझ
का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। 6 उसी को
स्मरण करके सब काम करना, तब वे तेरे लिथे सीधा मार्ग निकालेगा। 7 अपक्की
दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। 8

ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी। 9 अपक्की
संपत्ति के द्वारा और अपक्की भूमि की पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा
करना; 10 इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डोंसे नया
दाखमधु उमण्डता रहेगा।। 11 हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिझा से मुंह न मोड़ना, और
जब वह तुझे डांटे, तब तू बुरा न मानना, 12 क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है
उसको डांटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।। 13 क्या
ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे, 14
क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ चोखे सोने के
लाभ से भी उत्तम है। 15 वह मूंगे से अधिक अनमोल है, और जितनी वस्तुओं की
तू लालसा करता है, उन में से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी। 16 उसके दहिने
हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएं हाथ में धन और महिमा है। 17 उसके मार्ग
मनभाऊ हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं। 18 जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं,
उनके लिथे वह जीवन का वृझ बनती है; और जो उसको पकड़े रहते हैं, वह धन्य
हैं।। 19 यहोवा ने पृय्वी की नेव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा
स्यिर किया। 20 उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट निकले, और
आकाशमण्डल से ओस टपकती है।। 21 हे मेरे पुत्र, थे बातें तेरी दृष्टि की ओट न
हाने पाएं; खरी बुद्धि और विवेक की रझा कर, 22 तब इन से तुझे जीवन मिलेगा,
और थे तेरे गले का हार बनेंगे। 23 और तू अपके मार्ग पर निडर चलेगा, और तेरे
पांव में ठेस न लगेगी। 24 जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा, जब तू लेटेगा, तब
सुख की नींद आएगी। 25 अचानक आनेवाले भय से न डरना, और जब दुष्टोंपर
विपत्ति आ पके, तब न घबराना; 26 क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और

तेरे पांव को फन्दे में फंसने न देगा। 27 जिनका भला करना चाहिथे, यदि तुझ में
शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रूकना।। 28 यदि तेरे पास देने को कुछ हो,
तो अपके पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे दूंगा। 29 जब
तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है, तब उसके विरूद्ध बुरी युक्ति न बान्धना। 30
जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उस से अकारण मुकद्दमा खड़ा
न करना। 31 उपद्रवी पुरूष के विषय में डाह न करना, न उसकी सी चाल चलना;
32 क्योंकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है, परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगोंपर
खोलता है।। 33 दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप और धमिर्योंके वासस्यान पर
उसकी आशीष होती है। 34 ठट्ठा करनेवालोंसे वह निश्चय ठट्ठा करता है और
दीनोंपर अनुग्रह करता है। 35 बुद्धिमान महिमा को पाएंगे, और मूर्खोंकी बढ़ती
अपमान ही की होगी।।

नीतिवचन 4

1 हे मेरे पुत्रो, पिता की शिझा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ। 2
क्योंकि मैं ने तुम को उत्तम शिझा दी है; मेरी शिझा को न छोड़ो। 3 देखो, मैं भी
अपके पिता का पुत्र या, और माता का अकेला दुलारा या, 4 और मेरा पिता मुझे
यह कहकर सिखाता या, कि तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे; तू मेरी आज्ञाओं का
पालन कर, तब जीवित रहेगा। 5 बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर;
उनको भूल न जाना, न मेरी बातोंको छोड़ना। 6 बुद्धि को न छोड़, वह तेरी रझा
करेगी; उस से प्रीति रख, वह तेरा पहरा देगी। 7 बुद्धि श्रेष्ट है इसलिथे उसकी प्राप्ति
के लिथे यत्न कर; जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर परन्तु समझ की प्राप्ति का

यत्न घटने न पाए। 8 उसकी बड़ाई कर, वह तुझ को बढ़ाएगी; जब तू उस से
लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी। 9 वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण
बान्धेगी; और तुझे सुन्दर मुकुट देगी।। 10 हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण
कर, तब तू बहुत वर्ष तब जीवित रहेगा। 11 मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है;
और सीधाई के पय पर चलाया है। 12 चलने में तुझे रोक टोक न होगी, और चाहे
तू दौड़े, तौभी ठोकर न खाएगा। 13 शिझा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी
रझा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है। 14 दुष्टोंकी बाट में पांव न धरना, और न बुरे
लोगोंके मार्ग पर चलना। 15 उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल, उसके निकट
से मुड़कर आगे बढ़ जा। 16 क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद
नहीं आती; और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएं, तब तक उन्हें नींद नहीं
मिलती। 17 वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते, और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ
दाखमधु पीते हैं। 18 परन्तु धमिर्योंकी चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान
है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है। 19 दुष्टोंका मार्ग
घोर अन्धकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं।। 20 हे मेरे पुत्र
मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातोंपर लगा। 21 इनको
अपक्की आंखोंकी ओट न होने दे; वरन अपके मन में धारण कर। 22 क्योंकि
जिनकोंवे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे
रहने का कारण होती हैं। 23 सब से अधिक अपके मन की रझा कर; क्योंकि
जीवन का मूल स्रोत वही है। 24 टेढ़ी बात अपके मुंह से मत बोल, और चालबाजी
की बातें कहना तुझ से दूर रहे। 25 तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें, और
तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें। 26 अपके पांव धरने के लिथे मार्ग को समयर

कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें। 27 न तो दहिनी ओर मुढ़ना, और न बाईं ओर;
अपके पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले।।

नीतिवचन 5

1 हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातोंपर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा; 2
जिस से तेरा विवेक सुरझित बना रहे, और तू ज्ञान के वचनोंको यामें रहे। 3
क्योंकि पराई स्त्री के ओठोंसे मधु टपकता है, और उसकी बातें तेल से भी अधिक
चिकनी होती हैं; 4 परन्तु इसका परिणाम नागदौना सा कड़ुवा और दोधारी
तलवार सा पैना होता है। 5 उसके पांव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं; और उसके पग
अधोलोक तक पहुंचते हैं।। 6 इसलिथे उसे जीवन का समयर पय नहीं मिल पाता;
उसके चालचलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह आप नहीं जानती।। 7 इसलिथे
अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातोंसे मुंह न मोड़ो। 8 ऐसी स्त्री से दूर ही
रह, और उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना; 9 कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश
औरोंके हाथ, और अपना जीवन क्रूर जन के वश में कर दे; 10 या पराए तेरी
कमाई से अपना पेट भरें, और पकेदशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपके घर में
रखें; 11 और तू अपके अन्तिम समय में जब कि तेरा शरीर झीण हो जाए तब
यह कहकर हाथ मारने लगे, कि 12 मैं ने शिझा से कैसा बैर किया, और
डांटनेवाले का कैसा तिरस्कार किया! 13 मैं ने अपके गुरूओं की बातें न मानी और
अपके सिखानेवालोंकी ओर ध्यान न लगाया। 14 मैं सभा और मण्डली के बीच में
प्राय: सब बुराइयोंमें जा पड़ा।। 15 तू अपके ही कुण्ड से पानी, और अपके ही कूंए
से सोते का जल पिया करना। 16 क्या तेरे सोतोंका पानी सड़क में, और तेरे जल

की धारा चौकोंमें बह जाने पाए? 17 यह केवल तेरे ही लिथे रहे, और तेरे संग
औरोंके लिथे न हो। 18 तेरा सोता धन्य रहे; और अपक्की जवानी की पत्नी के
साय आनन्दित रह, 19 प्रिय हरिणी वा सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन
सर्वदा तुझे संतुष्ट रखे, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकषिर्त करता रहे। 20 हे
मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर क्योंमोहित हो, और पराई को क्योंछाती से लगाए?
21 क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब
मार्गोंपर ध्यान करता है। 22 दुष्ट अपके ही अधर्म के कर्मोंसे फंसेगा, और अपके
ही पाप के बन्धनोंमें बन्धा रहेगा। 23 वह शिझा प्राप्त किए बिना मर जाएगा,
और अपक्की ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।।

नीतिवचन 6

1 हे मरे पुत्र, यदि तू अपके पड़ोसी का उत्तरदायी हुआ हो, अयवा परदेशी के लिथे
हाथ पर हाथ मार कर उत्तरदायी हुआ हो, 2 तो तू अपके ही मूंह के वचनोंसे फंसा,
और अपके ही मुंह की बातोंसे पकड़ा गया। 3 इसलिथे हे मेरे पुत्र, एक काम कर,
अर्यात् तू जो अपके पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है, तो जा, उसको साष्टांग प्रणाम
करके मना ले। 4 तू ने तो अपक्की आखोंमें नींद, और न अपक्की पलकोंमें
झपक्की आने दे; 5 और अपके आप को हरिणी के समान शिकारी के हाथ से,
और चिडिय़ा के समान चिडिक़ार के हाथ से छुड़ा।। 6 हे आलसी, च्यूंटियोंके पास
जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो। 7 उनके न तो कोई न्यायी होता
है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला, 8 तौभी वे अपना आहार धूपकाल में
संचय करती हैं, और कटनी के समय अपक्की भोजनवस्तु बटोरती हैं। 9 हे

आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी? 10 कुछ और सो लेना,
योड़ी सी नींद, एक और झपक्की, योड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना, 11 तब
तेरा कंगालपन बटमार की नाई और तेरी घटी हयियारबन्द के समान आ
पकेगी।। 12 ओछे और अनर्यकारी को देखो, वह टेढ़ी टेढ़ी बातें बकता फिरता है,
13 वह नैन से सैन और पांव से इशारा, और अपक्की अगुंलियोंसे सकेंत करता है,
14 उसके मन में उलट फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और
फगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता है। 15 इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ
पकेगी, वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा।।
16 छ: वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको धृणा है 17
अर्यात् घमण्ड से चक्की हुई आंखें, फूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू
बहानेवाले हाथ, 18 अनर्य कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग
दौड़नेवाले पांव, 19 फूठ बोलनेवाला साझी और भाइयोंके बीच में फगड़ा उत्पन्न
करनेवाला मनुष्य। 20 हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपक्की माता की
शिझा का न तज। 21 इन को अपके हृदय में सदा गांठ बान्धे रख; और अपके
गले का हार बना ले। 22 वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई, और सोते समय तेरी
रझा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी। 23 आज्ञा तो दीपक है और शिझा
ज्योति, और सिखानेवाले की डांट जीवन का मार्ग है, 24 ताकि तुझ को बुरी स्त्री
से बचाए और पराई स्त्री की चिकनी चुपक्की बातोंसे बचाए। 25 उसकी सुन्दरता
देखकर अपके मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपके कटाक्ष से फंसाने
न पाए; 26 क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य टुकड़ोंका भिखारी हो जाता है,
परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है। 27 क्या हो सकता है

कि कोई अपक्की छाती पर आग रख ले; और उसके कपके न जलें? 28 क्या हो
सकता है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पांव न फुलसें? 29 जो पराई स्त्री के
पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है; वरन जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड से न
बचेगा। 30 जो चारे भूख के मारे अपना पेट भरने के लिथे चोरी करे, उसके तो
लोग तुच्छ नहीं जानते; 31 तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सातगुणा भर
देना पकेगा; वरन अपके घर का सारा धन देना पकेगा। 32 परनतु जो
परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्ध है; जो अपके प्राणोंको नाश करना चाहता
है, वह ऐसा करता है।। 33 उसको घायल और अपमानित होना पकेगा, और
उसकी नामधराई कभी न मिटेगी। 34 क्योंकि जलन से पुरूष बहुत ही क्रोधित हो
जाता है, और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं दिखाता। 35 वह घूस
पर दृष्टि न करेगा, और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तौभी वह न मानेगा।।

नीतिवचन 7

1 हे मेरे पुत्र, मेरी बातोंको माना कर, और मेरी आज्ञाओं को अपके मन में रख
छोड़। 2 मेरी आज्ञाओं को मान, इस से तू जीवित रहेगा, और मेरी शिझा को
अपक्की आंख की पुतली जान; 3 उनको अपक्की उंगलियोंमें बान्ध, और अपके
हृदय की पटिया पर लिख ले। 4 बुद्धि से कह कि, तू मेरी बहिन है, और समझ को
अपक्की सायिन बना; 5 तब तू पराई स्त्री से बचेगा, जो चिकनी चुपक्की बातें
बोलती है।। 6 मैं ने एक दिन अपके घर की खिड़की से, अर्यात् अपके फरोखे से
फांका, 7 तब मैं ने भोले लोगोंमें से एक निर्बुद्धि जवान को देखा; 8 वह उस स्त्री के
घर के कोने के पास की सड़क पर चला जाता या, और उस ने उसके घर का मार्ग

लिया। 9 उस समय दिन ढल गया, और संध्याकाल आ गया या, वरन रात का
घोर अन्धकार छा गया या। 10 और उस से एक स्त्री मिली, जिस का भेष वेश्या
का सा या, और वह बड़ी धूर्त यी। 11 वह शान्तिरहित और चंचल यी, और अपके
घर में न ठहरती यी; 12 कभी वह सड़क में, कभी चौक में पाई जाती यी, और एक
एक कोने पर वह बाट जोहती यी। 13 तब उस ने उस जवान को पकड़कर चूमा,
और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस से कहा, 14 मुझे मेलबलि चढ़ाने थे, और मैं
ने अपक्की मन्नते आज ही पूरी की हैं; 15 इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को
निकली, मैं तेरे दर्शन की खोजी यी, सो अभी पाया है। 16 मैं ने अपके पलंग के
बिछौने पर मिस्र के बेलबूटेवाले कपके बिछाए हैं; 17 मैं ने अपके बिछौने पर
गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है। 18 इसलिथे अब चल हम प्रेम से भोर
तक जी बहलाते रहें; हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें। 19 क्योंकि मेरा
पति घर में नहीं है; वह दूर देश को चला गया है; 20 वह चान्दी की यैली ले गया
है; और पूर्णमासी को लौट आएगा।। 21 ऐसी ही बातें कह कहकर, उस ने उसको
अपक्की प्रबल माया में फंसा लिया; और अपक्की चिकनी चुपक्की बातोंसे
उसको अपके वश में कर लिया। 22 वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया, और बैल
कसाई-खाने को, वा जौसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ ताड़ना पाने को जाता है। 23
अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा; वह उस चिडिय़ा के समान है
जो फन्दे की ओर वेग से उड़े और न जानती हो कि उस में मेरे प्राण जाएंगे।। 24
अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातोंपर मन लगाओ। 25 तेरा मन ऐसी स्त्री
के मार्ग की ओर न फिरे, और उसकी डगरोंमें भूल कर न जाना; 26 क्योंकि बहुत
लोग उस से मारे पके हैं; उसके घात किए हुओं की एक बड़ी संख्या होगी। 27

उसका घर अधोलोक का मार्ग है, वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है।।

नीतिवचन 8

1 क्या बुद्धि नहीं पुकारती है, क्या समझ ऊंचे शब्द से नहीं बोलती है? 2 वह तो
ऊंचे स्यानोंपर मार्ग की एक ओर ओर तिर्मुहानियोंमें खड़ी होती है; 3 फाटकोंके
पास नगर के पैठाव में, और द्वारोंही में वह ऊंचे स्वर से कहती है, 4 हे मनुष्यों, मैं
तुम को पुकारती हूं, और मेरी बात सब आदमियोंके लिथे है। 5 हे भोलो, चतुराई
सीखो; और हे मूर्खों, अपके मन में समझ लों 6 सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें
कहूंगी, और जब मुंह खोलूंगी, तब उस से सीधी बातें निकलेंगी; 7 क्योंकि मुझ से
सच्चाई की बातोंका वर्णन होगा; दुष्टता की बातोंसे मुझ को घृणा आती है।। 8 मेरे
मुंह की सब बातें धर्म की होती हैं, उन में से कोई टेढ़ी वा उलट फेर की बात नहीं
निकलती है। 9 समझवाले के लिथे वे सब सहज, और ज्ञान के प्राप्त करनेवालोंके
लिथे अति सीधी हैं। 10 चान्दी नहीं, मेरी शिझा ही को लो, और उत्तम कुन्दन से
बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो। 11 क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है, और सारी
मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है। 12 मैं जो बुद्धि हूं, सो चतुराई
में वास करती हूं, और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूं। 13 यहोवा का भय
मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अंहकार, और बुरी चाल से, और उलट फेर
की बात से भी मैं बैर रखती हूं। 14 उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है, मैं तो
समझ हूं, और पराक्रम भी मेरा है। 15 मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और
अधिक्कारनी धर्म से विचार करते हैं; 16 मेरे ही द्वारा राजा हाकिम और रईस,
और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते हैं। 17 जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं

भी प्रेम रखती हूं, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।
18 धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है, वरन ठहरनेवाला धन और धर्म भी हैं। 19 मेरा
फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से
अच्छी है। 20 मैं धर्म की बाट में, और न्याय की डगरोंके बीच में चलती हूं, 21
जिस से मैं अपके प्रेमियोंको परमार्थ के भागी करूं, और उनके भण्डारोंको भर दूं।
22 यहोवा ने मुझे काम करते के आरम्भ में, वरन अपके प्राचीनकाल के कामोंसे
भी पहिले उत्पन्न किया। 23 मैं सदा से वरन आदि ही से पृय्वी की सृष्टि के पहिले
ही से ठहराई गई हूं। 24 जब न तो गहिरा सागर या, और न जल के सोते थे तब
ही से मैं उत्पन्न हुई। 25 जब पहाड़ वा पहाडिय़ां स्यिर न की गई यीं, 26 जब
यहोवा ने न तो पृय्वी और न मैदान, न जगत की धूलि के परमाणु बनाए थे, इन
से पहिले मैं उत्पन्न हुई। 27 जब उस ने अकाश को स्यिर किया, तब मैं वहां यी,
जब उस ने गहिरे सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया, 28 जब उस ने
आकाशमण्डल को ऊपर से स्यिर किया, और गहिरे सागर के सोते फूटने लगे, 29
जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया, कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर
सके, और जब वह पृय्वी की नेव की डोरी लगाता या, 30 तब मैं कारीगर सी
उसके पास यी; और प्रति दिन मैं उसकी प्रसन्नता यी, और हर समय उसके
साम्हने आनन्दित रहती यी। 31 मैं उसकी बसाई हुई पृय्वी से प्रसन्न यी और
मेरा सुख मनुष्योंकी संगति से होता या।। 32 इसलिथे अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो;
क्या ही धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं। 33 शिझा को सुनो, और
बुद्धिमान हो जाओ, उसके विषय में अनसुनी न करो। 34 क्या ही धन्य है वह
मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन मेरी डेवढ़ी पर प्रति दिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारोंके

खंभोंके पास दृष्टि लगाए रहता है। 35 क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को
पाता है, और यहोवा उस से प्रसन्न होता है। 36 परन्तु जो मेरा अपराध करता है,
वह अपके ही पर उपद्रव करता है; जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति
रखते हैं।।

नीतिवचन 9

1 बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके सातोंखंभे गढ़े हुए हैं। 2 उस ने अपके पशु
वध करके, अपके दाखमधु में मसाला मिलाया है, और अपक्की मेज़ लगाई है। 3
उस ने अपक्की सहेलियां, सब को बुलाने के लिथे भेजी है; वह नगर के ऊंचे
स्यानोंकी चोटी पर पुकारती है, 4 जो कोई भोला हे वह मुड़कर यहीं आए! और जो
निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है, 5 आओ, मेरी रोटी खाओ, और मेरे मसाला
मिलाए हुए दाखमधु को पीओ। 6 भोलोंका संग छोड़ो, और जीवित रहो, समझ के
मार्ग में सीधे चलो। 7 जो ठट्ठा करनेवाले को शिझा देता है, सो अपमानित होता
है, और जो दुष्ट जन को डांटता है वह कलंकित होता है।। 8 ठट्ठा करनेवाले को न
डांट ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर रखे, बुद्धिमान को डांट, वह तो तुझ से प्रेम
रखेगा। 9 बुद्धिमान को शिझा दे, वह अधिक बुद्धिमान होगा; धर्मी को चिता दे,
वह अपक्की विद्या बढ़ाएगा। 10 यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और
परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है। 11 मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी, और
तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे। 12 यदि तू बुद्धिमान हो, ते बुद्धि का फल तू ही
भोगेगा; और यदि तू ठट्ठा करे, तो दण्ड केवल तू ही भोगेगा।। 13 मूर्खतारूपी
स्त्री हौरा मचानेवाली है; वह तो भोली है, और कुछ नहीं जानती। 14 वह अपके घर

के द्वार में, और नगर के ऊंचे स्यानोंमें मचिया पर बैठी हुई 15 जो बटोही अपना
अपना मार्ग पकड़े हुए सीधे चले जाते हैं, उनको यह कह कहकर पुकारती है, 16
जो कोई भोला है, वह मुड़कर यहीं आए; जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है, 17
चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती है। 18 और
वह नहीं जानता है, कि वहां मरे हुए पके हैं, और उस स्त्री के नेवतहारी अधोलोक
के निचले स्यानोंमें पहुंचे हैं।।

नीतिवचन 10

1 सुलैमान के नीतिवचन।। बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख
पुत्र के कारण माता उदास रहती है। 2 दुष्टोंके रखे हुए धन से लाभ नही होता,
परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है। 3 धर्मी को यहोवा भूखोंमरने नहीं
देता, परन्तु दुष्टोंकी अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता। 4 जो काम में ढिलाई
करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु काममाजु लोग अपके हाथोंके द्वारा धनी
होते हैं। 5 जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करनेवाला है, परन्तु
जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।
6 धर्मी पर बहुत से आर्शीवाद होते हैं, परन्तु उपद्रव दुष्टोंका मुंह छा लेता है। 7
धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टोंका नाम मिट जाता है।
8 जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को स्वीकार करता है, परन्तु जो बकवादी और
मूढ है, वह पछाड़ खाता है। 9 जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु
जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है। 10 जो नैन से सैन करता है
उस से औरोंको दुख मिलता है, और जो बकवादी और मूढ है, वह पछाड़ खाता है।

11 धर्मी का मुंह तो जीवन का सोता है, परन्तु उपद्रव दुष्टोंका मुंह छा लेता है। 12
बैर से तो फगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं। 13
समझवालोंके वचनोंमें बुद्धि पाई जाती है, परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिथे कोड़ा
है। 14 बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं, परन्तु मूढ के बोलने से विनाश
निकट आता है। 15 धनी का धन उसका दृढ़ नगर है, परन्तु कंगाल लोग निर्धन
होने के कारण विनाश होते हैं। 16 धर्मी का परिश्र्म जीवन के लिथे होता है, परन्तु
दुष्ट के लाभ से पाप होता है। 17 जो शिझा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है,
परन्तु जो डांट से मुंह मोड़ता, वह भटकता है। 18 जो बैर को छिपा रखता है, वह
फूठ बोलता है, और जो अपवाद फैलाता है, वह मूर्ख है। 19 जहां बहुत बातें होती
हैं, वहां अपराध भी होता है, परन्तु जो अपके मुंह को बन्द रखता है वह बुद्धि से
काम करता है। 20 धर्मी के वचन तो उत्तम चान्दी हैं; परन्तु दुष्टोंका मन बहुत
हलका होता है। 21 धर्मी के वचनोंसे बहुतोंका पालनपोषण होता है, परन्तु मूढ
लोग निर्बुद्धि होने के ारण मर जाते हैं। 22 धन यहोवा की आशीष ही से मिलता
है, और वह उसके साय दु:ख नहीं मिलाता। 23 मूर्ख को तो महापाप करना हंसी
की बात जान पड़ती है, परन्तु समझवाले पुरूष में बुद्धि रहती है। 24 दुष्ट जन
जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है, परन्तु धमिर्योंकी लालसा पूरी
होती है। 25 बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन लोप हो जाता है, परन्तु धर्मी सदा
लोंस्यिर है। 26 जैसे दांत को सिरका, और आंख को धूंआ, वैसे आलसी उनको
लगात है जो उसको कहीं भेजते हैं। 27 यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है,
परन्तु दुष्टोंका जीवन योड़े ही दिनोंका होता है। 28 धमिर्योंको आशा रखने में
आनन्द मिलता है, परन्तु दुष्टोंकी आशा टूट जाती है। 29 यहोवा खरे मनुष्य का

गढ़ ठहरता है, परन्तु अनर्यकारियोंका विनाश होता है। 30 धर्मी सदा अटल
रहेगा, परन्तु दुष्ट पृय्वी पर बसने न पाएंगे। 31 धर्मी के मुंह से बुद्धि टपकती है,
पर उलट फेर की बात कहने वाले की जीभ काटी जाथेगी। 32 धर्मी गहणयोग्य
बात समझ कर बोलता है, परन्तु दुष्टोंके मुंह से उलट फेर की बातें निकलती हैं।।

नीतिवचन 11

1 छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न
होता है। 2 जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगोंमें बुद्धि
होती है। 3 सीधे लोग अपक्की खराई से अगुवाई पाते हैं, परन्तु विश्वासघाती
अपके कपट से विनाश होते हैं। 4 कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता,
परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है। 5 खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा
होता है, परन्तु दुष्ट अपक्की दुष्टता के कारण गिर जाता है। 6 सीधे लोगोंको
बचाव उनके धर्म के कारण होता है, परन्तु विश्वासघाती लोग अपक्की ही दुष्टता
में फंसते हैं। 7 जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है, और अधर्मी की
आशा व्यर्य होती है। 8 धर्मी विपत्ति से छूट जाता है, परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में
पड़ जाता है। 9 भक्तिहीन जन अपके पड़ोसी को अपके मुंह की बात से बिगाड़ता
है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं। 10 जब धमिर्योंका कल्याण होता है,
तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं, परन्तु जब दुष्ट नाश होते, तब जय-जयकार
होता है। 11 सीधे लोगोंके आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है, परन्तु दुष्टोंके मुंह
की बात से वह ढाया जाता है। 12 जो अपके पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह
निर्बुद्धि है, परन्तु समझदार पुरूष चुपचाप रहता है। 13 जो लुतराई करता फिरता

वह भेद प्रगट करता है, परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है। 14
जहां बुद्धि की युक्ति नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति
देनेवालोंकी बहुतायत के कारण बचाव होता है। 15 जो परदेशी का उत्तरदायी होता
है, वह बड़ा दु:ख उठाता है, परन्तु जो उत्तरदायित्व से घृणा करता, वह निडर
रहता है। 16 अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है, और बलात्कारी लाग
धन को नहीं खोते। 17 कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है, परन्तु जो क्रूर है,
वह अपक्की ही देह को दु:ख देता है। 18 दुष्ट मिय्या कमाई कमाता है, परन्तु जो
धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल मिलता है। 19 जो धर्म में दृढ़ रहता, वह
जीवन पाता है, परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मृत्यु का कौर हो जाता है।
20 जो मन के टेढ़े है, उन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह खरी चालवालोंसे
प्रसन्न रहता है। 21 मैं दृढ़ता के साय कहता हूं, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा,
परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा। 22 जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती, वह
यूयन में सोने की नत्य पहिने हुए सूअर के समान है। 23 धमिर्योंकी लालसा तो
केवल भलाई की होती है; परन्तु दुष्टोंकी आशा का फल क्रोध ही होता है। 24 ऐसे
हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यर्याय से
कम देते हैं, और इस से उनकी घटती ही होती है। 25 उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता
है, और जो औरोंकी खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी। 26 जो अपना
अनाज रख छोड़ता है, उसकी लोग शाप देते हैं, परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको
आशीर्वाद दिया जाता है। 27 जो यत्न से भलाई करता है वह औरोंकी प्रसन्नता
खोजता है, परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती
है। 28 जो अपके धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नथे

पत्ते की नाई लहलहाते हैं। 29 जो अपके घराने को दु:ख देता, उसका भाग वायु ही
होगा, और मूढ़ बुद्धिमान का दास हो जाता है। 30 धर्मी का प्रतिफल जीवन का
वृझ होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगोंके मन को मोह लेता है। 31 देख, धर्मी
को पृय्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।।

नीतिवचन 12

1 जो शिझा पाने में प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डांट से
बैर रखता, वह पशु सरीखा है। 2 भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु
बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है। 3 कोई मनुष्य दुष्टता के कारण
स्यिर नहीं होता, परन्तु धमिर्योंकी जड़ उखड़ने की नहीं। 4 भली स्त्री अपके पति
का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियोंके सड़ने
का कारण होती है। 5 धमिर्योंकी कल्पनाएं न्याय ही की होती हैं, परन्तु दुष्टोंकी
युक्तियां छल की हैं। 6 दुष्टोंकी बातचीत हत्या करने के लिथे घात लगाने के विषय
में होती है, परन्तु सीधे लोग अपके मुंह की बात के द्वारा छुड़ानेवाले होते हैं। 7
जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धमिर्योंका घर स्यिर रहता
है। 8 मनुष्य कि बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ
जाना जाता है। 9 जो रोटी की आस लगाए रहता है, और बड़ाई मारता है, उस से
दास रखनेवाला तुच्छ मनुष्य भी उत्तम है। 10 धर्मी अपके पशु के भी प्राण की
सुधि रखता है, परन्तु दुष्टोंकी दया भी निर्दयता है। 11 जो अपक्की भूमि को
जोतता, वह पेट भर खाता है, परन्तु जो निकम्मोंकी संगति करता, वह निर्बुद्धि
ठहरता है। 12 दुष्ट जन बुरे लोगोंके जाल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धमिर्योंकी

जड़ हरी भरी रहती है। 13 बुरा मनुष्य अपके दुर्वचनोंके कारण फन्दे में फंसता है,
परन्तु धर्मी संकट से निकास पाता है। 14 सज्जन अपके वचनोंके फल के द्वारा
भलाई से तृप्त होता है, और जैसी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी होती है। 15
मूढ को अपक्की ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह
बुद्धिमान है। 16 मूढ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है, परन्तु चतुर अपमान
को छिपा रखता है। 17 जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है, परन्तु जो फूठी
साझी देता, वह छल प्रगट करता है। 18 ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोचविचार का
बोलना तलवार की नाई चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।
19 सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु फूठ पल ही भर का होता है। 20 पुरी युक्ति
करनेवालोंके मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालोंको आनन्द
होता है। 21 धर्मी को हानि नहीं होती है, परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते
हैं। 22 फूठोंसे यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से
वह प्रसन्न होता है। 23 चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता है, परन्तु मूढ
अपके मन की मूढता ऊंचे शब्द से प्रचार करता है। 24 कामकाजी लोग प्रभुता
करते हैं, परन्तु आलसी बगारी में पकड़े जाते हैं। 25 उदास मन दब जाता है,
परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है। 26 धर्मी अपके पड़ोसी की अगुवाई
करता है, परन्तु दुष्ट लोग अपक्की ही चाल के कारण भटक जाते हैं। 27 आलसी
अहेर का पीछा नहीं करता, परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है। 28
धर्म की बाट में जीवन मिलता है, और उसके पय में मृत्यु का पता भी नहीं।।

नीतिवचन 13

1 बुद्धिमान पुत्रा पिता की शिक्षा सुनता है, परन्तु ठट्ठा करनेवाला घुड़की को भी
नहीं सुनता। 2 सज्जन अपक्की बातोंके कारण उत्तम वस्तु खाने पाता है, परन्तु
विश्वासघाती लोगोंका पेट उपद्रव से भरता है। 3 जो अपके मुंह की चौकसी करता
है, वह अपके प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो गाल बजाता उसका विनाश जो
जाता है। 4 आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता,
परन्तु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं। 5 धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु
दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है। 6 धर्म खरी चाल चलनेवाली की
रक्षा करता है, परन्तु पापी अपक्की दुष्टता के कारण उलट जाता है। 7 कोई तो
धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता, और कोई धन उड़ा देता, तौभी
उसके पास बहुत रहता है। 8 प्राण की छुड़ौती मनुष्य का धन है, परन्तु निर्धन
घुड़की को सुनता भी नहीं। 9 धर्मियोंकी ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु
दुष्टोंका दिया बुझ जाता है। 10 झगड़े रगड़े केवल अंहकार ही से होते हैं, परन्तु जो
लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है। 11 निर्धन के पास माल नहीं
रहता, परन्तु जो अपके परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है। 12 जब आशा
पूरी होने से विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी
होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है। 13 जो वचन को तुच्छ जानता, वह नाश हो
जाता है, परन्तु आज्ञा के डरवैथे को अच्छा फल मिलता है। 14 बुद्धिमान की
शिक्षा का जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दोंसे बच सकते
हैं। 15 सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु विश्वासघातियोंका मार्ग कड़ा
होता है। 16 सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं, परन्तु मूर्ख अपक्की मूढ़ता
फैलाता है। 17 दुष्ट दूत बुराई में फंसता है, परन्तु विश्वासयोग्य दूत से कुशलक्षेम

होता है। 18 जो शिक्षा को सुनी- अनसुनी करता वह निर्धन होता और अपमान
पाता है, परन्तु जो डांट को मानता, उसकी महिमा होती है। 19 लालसा का पूरा
होना तो प्राण को मीठा लगता है, परन्तु बुराई से हटना, मूर्खोंके प्राण को बुरा
लगता है। 20 बुद्धिमानोंकी संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु
मूर्खोंका साथी नाश हो जाएगा। 21 बुराई पापियोंके पीछे पड़ती है, परन्तु
धर्मियोंको अच्छा फल मिलता है। 22 भला मनुष्य अपके नाती- पोतोंके लिथे
भाग छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिथे रखी जाती है। 23
निर्बल लोगोंको खेती बारी से बहुत भोजनवस्तु मिलती है, परन्तु ऐसे लोग भी हैं
जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं। 24 जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका
बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है। 25 धर्मी
पेट भर खाते पाता है, परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते हैं।।

नीतिवचन 14

1 हर बुद्धिमान स्त्री अपके घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपके ही हाथोंसे
ढा देती है। 2 जो सीधाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है, परन्तु जो
टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है। 3 मूढ़ के मुंह में गर्व का
अंकुर है, परन्तु बुद्धिमान लोग अपके वचनोंके द्वारा रझा पाते हैं। 4 जहां बैल
नहीं, वहां गौशाला निर्मल तो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती
हाती है। 5 सच्चा साझी फूठ नहीं बोलता, परन्तु फूठा साझी फूठी बातें उड़ाता है।
6 ठट्ठा करनेवाला बुद्धि को ढूंढ़ता, परन्तु नहीं पाता, परन्तु समझवाले को ज्ञान
सहज से मिलता है। 7 मूर्ख से अलग हो जा, तू उस से ज्ञान की बात न पाएगा। 8

चतुर की बुद्धि अपक्की चाल का जानना है, परन्तु मूर्खोंकी मूढ़ता छल करना है।
9 मूढ़ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं, परन्तु सीधे लोगोंके बीच अनुग्रह होता
है। 10 मन अपना ही दु:ख जानता है, और परदेशी उसके आनन्द में हाथ नहीं
डाल सकता। 11 दुष्टोंको घर विनाश हो जाता है, परन्तु सीधे लोगोंके तम्बू में
आबादी होती है। 12 ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके
अन्त में मृत्यु ही मिलती है। 13 हंसी के समय भी मन उदास होता है, और
आनन्द के अन्त में शोक होता है। 14 जिसका मन ईश्वर की ओर से हट जाता है,
वह अपक्की चालचलन का फल भोगता है, परन्तु भला मनुष्य आप ही आप
सन्तुष्ट होता है। 15 भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य
समझ बूफकर चलता है। 16 बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है, परन्तु मूर्ख ढीठ
होकर निडर रहता है। 17 जो फट क्रोध करे, वह मूढ़ता का काम भी करेगा, और
जो बुरी युक्तियां निकालता है, उस से लोग बैर रखते हैं। 18 भोलोंका भाग मूढ़ता
ही होता है, परन्तु चतुरोंको ज्ञानरूपी मुकुट बान्धा जाता है। 19 बुरे लोग भलोंके
सम्मुख, और दुष्ट लोग धर्मी के फाटक पर दण्डवत् करते हैं। 20 निर्धन का
पड़ोसी भी उस से घृणा करता है, परन्तु धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं। 21 जो अपके
पड़ोसी को तुच्छ जानता, वह पाप करता है, परन्तु जो दीन लोगोंपर अनुग्रह
करता, वह धन्य होता है। 22 जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे भ्रम में नहीं
पड़ते? परन्तु भली युक्ति निकालनेवालोंसे करूणा और सच्चाई का व्यवहार किया
जाता है। 23 परिश्रम से सदा लाभ होता है, परन्तु बकवाद करने से केवल घटती
होती है। 24 बुद्धिमानोंका धन उनका मुकुट ठहरता है, परन्तु मूर्खोंकी मूढ़ता निरी
मूढ़ता है। 25 सच्चा साझी बहुतोंके प्राण बचाता है, परन्तु जो फूठी बातें उड़ाया

करता है उस से धोखा ही होता है। 26 यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है,
और उसके पुत्रोंको शरणस्यान मिलता है। 27 यहोवा का भय मानना, जीवन का
सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दोंसे बच जाते हैं। 28 राजा की महिमा
प्रजा की बहुतायत से होती है, परन्तु जहां प्रजा नहीं, वहां हाकिम नाश हो जाता
है। 29 जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझवाला है, परन्तु जो अधीर
है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है। 30 शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु मन के
जलने से हड्डियां भी जल जाती हैं। 31 जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके
कर्ता की निन्द करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा
करता है। 32 दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है, परन्तु धर्मी को मृत्यु
के समय भी शरण मिलती है। 33 समझवाले के मन में बुद्धि वास किए रहती है,
परन्तु मूर्खोंके अन्त:काल में जो कुछ है वह प्रगट हो जाता है। 34 जाति की
बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगोंका अपमान होता है। 35 जो
कर्मचारी बुद्धि से काम करता है उस पर राजा प्रसन्न होता है, परन्तु जो लज्जा
के काम करता, उस पर वह रोष करता है।।

नीतिवचन 15

1 कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध
धधक उठता है। 2 बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते हैं, परन्तु मूर्खोंके मुंह से
मूढ़ता उबल आती है। 3 यहोवा की आंखें सब स्यानोंमें लगी रहती हैं, वह बुरे भले
दोनोंको देखती रहती हैं। 4 शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृझ है, परन्तु उलट फेर
की बात से आत्मा दु:खित होती है। 5 मूढ़ अपके पिता की शिझा का तिरस्कार

करता है, परन्तु जो डांट को मानता, वह चतुर हो जाता है। 6 धर्मी के घर में बहुत
धन रहता है, परन्तु दुष्ट के उपार्जन में दु:ख रहता है। 7 बुद्धिमान लोग बातें करने
से ज्ञान को फैलाते हैं, परन्तु मूर्खोंका मन ठीक नहीं रहता। 8 दुष्ट लोगोंके
बलिदान से यहोवा धृणा करता है, परन्तु वह सीधे लोगोंकी प्रार्यना से प्रसन्न
होता है। 9 दुष्ट के चालचलन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो धर्म का पीछा
करता उस से वह प्रेम रखता है। 10 जो मार्ग को छोड़ देता, उसको बड़ी ताड़ना
मिलती है, और जो डांट से बैर रखता, वह अवश्य मर जाता है। 11 जब कि
अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के साम्हने खुले रहते हैं, तो निश्चय मनुष्योंके
मन भी। 12 ठट्ठा करनेवाला डांटे जाने से प्रसन्न नहीं होता, और न वह
बुद्धिमानोंके पास जाता है। 13 मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा
जाती है, परन्तु मन के दु:ख से आत्मा निराश होती है। 14 समझनेवाले का मन
ज्ञान की खोज में रहता है, परन्तु मूर्ख लोग मूढता से पेट भरते हैं। 15 दुखिया के
सब दिन दु:ख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है, वह मानो नित्य
भोज में जाता है। 16 घबराहट के साय बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के
साय योड़ा ही धन उत्तम है, 17 प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन, बैर वाले घर
में पाले हुए बैल का मांस खाने से उत्तम है। 18 क्रोधी पुरूष फगड़ा मचाता है,
परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमोंको दबा देता है। 19 आलसी
का मार्ग कांटोंसे रून्धा हुआ होता है, परन्तु सीधे लोगोंका मार्ग राजमार्ग ठहरता
है। 20 बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख अपक्की माता को
तुच्छ जानता है। 21 निर्बुद्धि को मूढता से आनन्द होता है, परन्तु समझवाला
मनुष्य सीधी चाल चलता है। 22 बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ

करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियोंकी सम्मत्ति से बात ठहरती है। 23 सज्जन उत्तर
देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है!
24 बुद्धिमान के लिथे जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह
अधोलोक में पड़ने से बच जाता है। 25 यहोवा अहंकारियोंके घर को ढा देता है,
परन्तु विधवा के सिवाने को अटल रखता है। 26 बुरी कल्पनाएं यहोवा को
घिनौनी लगती हैं, परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने हैं। 27 लालची अपके
घराने को दु:ख देता है, परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है। 28 धर्मी
मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूं, परन्तु दुष्टोंके मुंह से बुरी बातें उबल आती हैं।
29 यहोवा दुष्टोंसे दूर रहता है, परन्तु धमिर्योंकी प्रार्यना सुनता है। 30 आंखोंकी
चमक से मन को आनन्द होता है, और अच्छे समाचार से हड्डियां पुष्ट होती हैं।
31 जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है, वह बुद्धिमानोंके संग ठिकाना
पाता है। 32 जो शिझा को सुनी-अनसुनी करता, वह अपके प्राण को तुच्छ जानता
है, परन्तु जो डांट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है। 33 यहोवा के भय मानने से
शिझा प्राप्त होती है, और महिमा से पहिले नम्रता होती है।।

नीतिवचन 16

1 मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुंह से कहना यहोवा की ओर से
होता है। 2 मनुष्य का सारा चालचलन अपक्की दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु
यहोवा मन को तौलता है। 3 अपके कामोंको यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी
कल्पनाएं सिद्ध होंगी। 4 यहोवा ने सब वस्तुएं विशेष उद्देश्य के लिथे बनाई हैं,
वरन दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिथे बनाया है। 5 सब मन के घमण्डियोंसे

यहोवा घृणा करता है करता है; मैं दृढ़ता से कहता हूं, ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे।
6 अधर्म का प्रायश्चित कृपा, और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने
के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं। 7 जब किसी का चालचलन यहोवा को
भवता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है। 8 अन्याय के बड़े
लाभ से, न्याय से योड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है। 9 मनुष्य मन में अपके मार्ग पर
विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरोंको स्यिर करता है। 10 राजा के मुंह
से दैवीवाणी निकलती है, न्याय करने में उस से चूक नहीं होती। 11 सच्चा तराजू
और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं, यैली में जितने बटखरे हैं, सब उसी के
बनवाए हुए हैं। 12 दुष्टता करना राजाओं के लिथे घृणित काम है, क्योंकि उनकी
गद्दी धर्म ही से स्यिर रहती है। 13 धर्म की बात बोलनेवालोंसे राजा प्रसन्न होता
है, और जो सीधी बातें बोलता है, उस से वह प्रेम रखता है। 14 राजा का क्रोध
मृत्यु के दूत के समान है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठण्डा करता है। 15
राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है, और उसकी प्रसन्नता बरसात के
अन्त की घटा के समान होती है। 16 बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है!
और समझ की प्राप्ति चान्दी से अति योग्य है। 17 बुराई से हटना सीधे लोगोंके
लिथे राजमार्ग है, जो अपके चालचलन की चौकसी करता, वह अपके प्राण की भी
रझा करता है। 18 विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता
है। 19 घमण्डियोंके संग लूट बांट लने से, दीन लोगोंके संग नम्र भाव से रहना
उत्तम है। 20 जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण पाता है, और जो यहोवा पर
भरोसा रखता, वह धन्य होता है। 21 जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझवाला
कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है। 22 जिसके बुद्धि है, उसके

लिथे वह जीवन का सोता है, परन्तु मूढ़ोंको शिझा देना मूढ़ता ही होती है। 23
बुद्धिमान का मन उसके मुंह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता है, और उसके वचन में
विद्या रहती है। 24 मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की नाईं प्राणोंको मीठे लगते,
और हड्डियोंको हरी-भरी करते हैं। 25 ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख
पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। 26 परिश्र्मी की लालसा
उसके लिथे परिश्र्म करती है, उसकी भूख तो उसको उभारती रहती है। 27 अधर्मी
मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है, और उसके वचनोंसे आग लगा जाती है। 28
टेढ़ा मनुष्य बहुत फगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रोंमें भी
फूट करा देता है। 29 उपद्रवी मनुष्य अपके पड़ोसी को फुसलाकर कुमार्ग पर
चलाता है। 30 आंख मूंदनेवाला छल की कल्पनाएं करता है, और ओंठ
दबानेवाला बुराई करता है। 31 पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं; वे धर्म के
मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं। 32 विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपके
मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है। 33 चिट्ठी डाली जाती तो
है, परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।

नीतिवचन 17

1 चैन के साय सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेझा उत्तम है जो मेलबलि-पशुओं से
भरा हो, परन्तु उस में फगड़े रगड़े हों। 2 बुद्धि से चलनेवाला दास अपके स्वामी के
उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा, और उस पुत्र के भाइयोंके
बीच भागी होगा। 3 चान्दी के लिथे कुठाली, और सोने के लिथे भट्ठी हाती है,
परन्तु मनोंको यहोवा जांचता है। 4 कुकर्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है,

और फूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है। 5 जो निर्धन को
ठट्ठोंमें उड़ाता है, वह उसके कर्त्ता की निन्दा करता है; और जो किसी की विपत्ति
पर हंसता, वह निर्दोष नहीं ठहरेगा। 6 बूढ़ोंकी शोभा उनके नाती पोते हैं; और
बाल-बच्चोंकी शोभा उनके माता-पिता हैं। 7 मूढ तो उत्तम बात फबती नहीं, और
अधिक करके प्रधान को फूठी बात नहीं फबती। 8 देनेवाले के हाथ में घूस मोह
लेनेवाले मणि का काम देता है; जिधर ऐसा पुरूष फिरता, उधर ही उसका काम
सुफल होता है। 9 जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है,
परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रोंमें भी फूट करा देता है।
10 एक घुड़की समझनेवाले के मन में जितनी गड़ जाती है, उतना सौ बार मार
खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता। 11 बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है,
इसलिथे उसके पास क्रूर दूत भेजा जाएगा। 12 बच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना
तो भला है, परन्तु मूढता में डूबे हुए मूर्ख से मिलना भला नहीं। 13 जो कोई
भलाई के बदले में बुराई करे, उसके घर से बुराई दूर न होगी। 14 फगड़े का
आरम्भ बान्ध के छेद के समान है, फगड़ा बढ़ने से पहिले उसको छोड़ देता उचित
है। 15 जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष को दोषी ठहराता है, उन दोनोंसे
यहोवा घृणा करता है। 16 बुद्धि मोल लेने के लिथे मूर्ख अपके हाथ में दाम
क्योंलिए हैं? वह उसे चाहता ही नहीं। 17 मित्र सब समयोंमें प्रेम रखता है, और
विपत्ति के दिन भाई बन जाता है। 18 निर्बुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता है, और
अपके पड़ोसी के सामने उत्तरदायी होता है। 19 जो फगड़े-रगड़े में प्रीति रखता,
वह अपराण करने में भी प्रीति रखता है, और जो अपके फाटक को बड़ा करता,
वह अपके विनाश के लिथे यत्न करता है। 20 जो मन का टेढ़ा है, उसका कल्याण

नहीं होता, और उलट-फेर की बात करनेवाला विपत्ति में पड़ता है। 21 जो मूर्ख को
जन्माता है वह उस से दु:ख ही पाता है; और मूढ़ के पिता को आनन्द नहीं होता।
22 मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियां सूख जाती
हैं। 23 दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिथे, अपक्की गांठ से घूस निकालता है। 24
बुद्धि समझनेवाले के साम्हने ही रहती है, परन्तु मूर्ख की आंखे पृय्वी के दूर दूर
देशोंमें लगी रहती है। 25 मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है, और जननी को शोक
होता है। 26 फिर धर्मी से दण्ड लेना, और प्रधानोंको सिधाई के कारण पिटवाना,
दोनोंकाम अच्छे नहीं हैं। 27 जो संभलकर बोलता है, वही ज्ञानी ठहरता है; और
जिसी आत्मा शान्त रहती है, सोई समझवाला पुरूष ठहरता है। 28 मूढ़ भी जब
चुप रहता है, तब बुद्धिमान गिना जाता है; और जो अपना मुंह बन्द रखता वह
समझवाला गिना जाता है।।

नीतिवचन 18

1 जो औरोंसे अलग हो जाता है, वह अपक्की ही इच्छा पूरी करने के लिथे ऐसा
करता है, 2 और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर करता है। मूर्ख का मन समझ की
बातोंमें नहीं लगता, वह केवल अपके मन की बात प्रगट करना चाहता है। 3 जहां
दुष्ट आता, वहां अपमान भी आता है; और निन्दित काम के साय नामधराई होती
है। 4 मनुष्य के मुंह के वचन गहिरा जल, वा उमण्डनेवाली नदी वा बुद्धि के सोते
हैं। 5 दुष्ट का पझ करना, और धर्मी का हक मारना, अच्छा नहीं है। 6 बात बढ़ाने
से मूर्ख मुकद्दमा खड़ा करता है, और अपके को मार खाने के योग्य दिखाता है। 7
मूर्ख का विनाश उसकी बातोंसे होता है, और उसके वचन उसके प्राण के लिथे

फन्दे होते हैं। 8 कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन की नाईं लगते हैं;
वे पेट में पच जाते हैं। 9 जो काम में आलस करता है, वह खोनेवाले का भाई
ठहरता है। 10 यहोवा का नाम दृढ़ कोट है; धर्मी उस में भागकर सब दुर्घटनाओं
से बचता है। 11 धनी का धन उसकी दृष्टि में गढ़वाला नगर, और ऊंचे पर बनी हुई
शहरपनाह है। 12 नाश होने से पहिले मनुष्य के मन में घमण्ड, और महिमा पाने
से पहिले नम्रता होती है। 13 जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूढ ठहरता है,
और उसका अनादर होता है। 14 रोग में मनुष्य अपक्की आत्मा से सम्भलता है;
परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है? 15 समझवाले का
मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं। 16 भेंट
मनुष्य के लिथे मार्ग खोल देती है, और उसे बड़े लोगोंके साम्हने पहुंचाती है। 17
मुकद्दमें में जो पहिले बोलता, वही धर्मी जान पड़ता है, परन्तु पीछे दूसरा
पझवाला आका उसे खोज लेता है। 18 चिट्ठी डालने से फगड़े बन्द होते हैं, और
बलवन्तोंकी लड़ाई का अन्त होता है। 19 चिढ़े हुए भाई को मनाना दृढ़ नगर के ले
लेने से कठिन होता है, और फगड़े राजभवन के बेण्डोंके समान हैं। 20 मनुष्य का
पेट मुंह की बातोंके फल से भरता है; और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उस से
वह तृप्त होता है। 21 जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनोंहोते हैं, और जो उसे
काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा। 22 जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने
उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है। 23 निर्धन
गिड़गिड़ाकर बोलता है। परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है। 24 मित्रोंके बढ़ाने से तो
नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

नीतिवचन 19

1 जो निर्धन खराई से चलता है, वह उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है।
2 मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं, और जो उतावली से दौड़ता है वह चूक
जाता है। 3 मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन
यहोवा से चिढ़ने लगता है। 4 धनी के तो बहुत मित्र हो जाते हैं, परन्तु कंगाल के
मित्र उस से अलग हो जाते हैं। 5 फूठा साझी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो फूठ
बोला करता है, वह न बचेगा। 6 उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं, और
दानी पुरूष का मित्र सब कोई बनता है। 7 जब निर्धन के सब भाई उस से बैर
रखते हैं, तो निश्चय है कि उसके मित्र उस से दूर हो जाएं। वह बातें करते हुए
उनका पीछा करता है, परन्तु उनको नहीं पाता। 8 जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपके
प्राण को प्रेमी ठहरता है; और जो समझ को धरे रहता है उसका कल्याण होता है।
9 फूठा साझी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो फूठ बोला करता है, वह नाश होता है।
10 जब सुख में रहना मूर्ख को नहीं फबता, तो हाकिमोंपर दास का प्रभुता करना
कैसे फबे! 11 जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और
अपराध को फुलाना उसको सोहता है। 12 राजा का क्रोध सिंह की गरजन के
समान है, परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की ओस के तुल्य होती है। 13 मूर्ख
पुत्र पिता के लिथे विपत्ति ठहरता है, और पत्नी के फगड़े-रगड़े सदा टपकने के
समान है। 14 घर और धन पुरखाओं के भाग में, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही
से मिलती है। 15 आलस से भारी नींद आ जाती है, और जो प्राणी ढिलाई से काम
करता, वह भूखा ही रहता है। 16 जो आज्ञा को मानता, वह अपके प्राण की रझा
करता है, परन्तु जो अपके चालचलन के विषय में निश्चिन्त रहता है, वह मर
जाता है। 17 जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और

वह अपके इस काम का प्रतिफल पाएगा। 18 जबतक आशा है तो अपके पुत्र को
ताड़ना कर, जान बूफकर उसका मार न डाल। 19 जो बड़ा क्रोधी है, उसे दण्ड
उठाने दे; क्योंकि यदि तू उसे बचाए, तो बारम्बार बचाना पकेगा। 20 सम्मति को
सुन ले, और शिझा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे। 21 मनुष्य
के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्यिर
रहती है। 22 मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है, और निर्धन जन
फूठ बोलनेवाले से उत्तम है। 23 यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और
उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ती नहीं पड़ने
की। 24 आलसी अपना हाथ याली में डालता है, परन्तु अपके मुंह तक कौर नहीं
उठाता। 25 ठट्ठा करनेवाले को मार, इस से भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा;
और समझवाले को डांट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा। 26 जो पुत्र अपके बाप को
उजाड़ता, और अपक्की मां को भगा देता है, वह अपमान और लज्जा का कारण
होगा। 27 हे मेरे पुत्र, यदि तू भटकना चाहता है, तो शिझा का सुनना छोड़ दे। 28
अधम साझी न्याय को ठट्ठोंमें उड़ाता है, और दुष्ट लोग अनर्य काम निगल लेते
हैं। 29 ठट्ठा करनेवालोंके लिथे दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खोंकी पीठ के लिथे
कोड़े हैं।

नीतिवचन 20

1 दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है; जो कोई उसके
कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं। 2 राजा का भय दिखाना, सिंह का
गरजना है; जो उस पर रोष करता, वह अपके प्राण का अपराधी होता है। 3

मुकद्दमें से हाथ उठाना, पुरूष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ फगड़ने को
तैयार होते हैं। 4 आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता; इसलिथे कटनी
के समय वह भीष मांगता, और कुछ नहीं पाता। 5 मनुष्य के मन की युक्ति अयाह
तो है, तौभी समझवाला मनुष्य उसको निकाल लेता है। 6 बहुत से मनुष्य
अपक्की कृपा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा पुरूष कौन पा सकता है? 7 धर्मी
जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके लड़केबाले धन्य होते हैं। 8 राजा
जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है, वह अपक्की दृष्टि ही से सब बुराई को
उड़ा देता है। 9 कौन सह सकता है कि मैं ने अपके हृदय को पवित्र किया; अयवा
मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं? 10 घटती-बढ़ती बटखरे और घटते-बढ़ते नपुए इन
दोनोंसे यहोवा घृणा करता है। 11 लड़का भी अपके कामोंसे पहिचाना जाता है, कि
उसका काम पवित्र और सीधा है, वा नहीं। 12 सुनने के लिथे कान और देखने के
लिथे जो आंखें हैं, उन दोनोंको यहोवा ने बनाया है। 13 नींद से प्रीति न रख, नहीं
तो दरिद्र हो जाएगा; आंखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा। 14 मोल लेने के समय
ग्राहक तुच्छ तुच्छ कहता है; परन्तु चले जाने पर बढ़ाई करता है। 15 सोना और
बहुत से मूंगे तो हैं; परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणी ठहरी हैं। 16 जो अनजाने
का उत्तरदायी हुआ उसका कपड़ा, और जो पराए का उत्तरदायी हुआ उस से बंधक
की वस्तु ले रख। 17 चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु
पीछे उसका मुंह कंकड़ से भर जाता है। 18 सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्यिर
होती हैं; और युक्ति के साय युद्ध करना चाहिथे। 19 जो लुतराई करता फिरता है
वह भेद प्रगट करता है; इसलिथे बकवादी से मेल जोल न रखना। 20 जो अपके
माता-पिता को कोसता, उसका दिया बुफ जाता, और घोर अन्धकार हो जाता है।

21 जो भाग पहिले उतावली से मिलता है, अन्त में उस पर आशीष नहीं होती। 22
मत कह, कि मैं बुराई का पलटा लूंगा; वरन यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझ
को छुड़ाएगा। 23 घटती बढ़ती बटखरोंसे यहोवा घृणा करता है, और छल का
तराजू अच्छा नहीं। 24 मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है;
आदमी क्योंकर अपना चलना समझ सके? 25 जो मनुष्य बिना विचारे किसी
वस्तु को पवित्र ठहराए, और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फन्दे
में फंसेगा। 26 बुद्धिमान राजा दुष्टोंको फटकता है, ओर उन पर दावने का पहिया
चलवाता है। 27 मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातोंकी
खोज करता है। 28 राजा की रझा कृपा और सच्चाई के कारण होती है, और कृपा
करने से उसकी गद्दी संभलती है। 29 जवानोंका गौरव उनका बल है, परन्तु
बूढ़ोंकी शोभा उनके पक्के बाल हैं। 30 चोट लगने से जो घाव होते हैं, वह बुराई दूर
करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है।।

नीतिवचन 21

1 राजा का मन नालियोंके जल की नाई यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह
चाहता उधर उसको फेर देता है। 2 मनुष्य का सारा चालचलन अपक्की दृष्टि में
तो ठीक होता है, परन्तु यहोवा मन को जांचता है, 3 धर्म और न्याय करना,
यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है। 4 चक्की आंखें, घमण्डी मन,
और दुष्टोंकी खेती, तीनोंपापमय हैं। 5 कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ
होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है। 6 जो धन फूठ के
द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है, उसके ढूंढ़नेवाले मृत्यु ही को

ढूंढ़ते हैं। 7 जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं, उस से उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे
न्याय का काम करने से इनकार करते हैं। 8 पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत
ही टेढ़ा होता है, परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है। 9 लम्बे-चौड़े घर
में फगड़ालू पत्नी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है। 10 दुष्ट जन
बुराई की लालसा जी से करता है, वह अपके पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नही
करता। 11 जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो
जाता है; और जब बुद्धिमान को उपकेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता
है। 12 धर्मी जन दुष्टोंके घराने पर बुद्धिमानी से विचार करता है; ईश्वर दुष्टोंको
बुराइयोंमें उलट देता है। 13 जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे, वह आप
पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी। 14 गुप्त में दी हुई भेंट से क्रोध ठण्डा होता
है, और चुपके से दी हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी यामती है। 15 न्याय का
काम, करना धर्मी को तो आनन्द, परन्तु अनर्यकारियोंको विनाश ही का कारण
जान पड़ता है। 16 जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए, उसका ठिकाना मरे
हुओं के बीच में होगा। 17 जो रागरंग से प्रीति रखता है, वह कंगाल होता है; और
दो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नहीं होता। 18 दुष्ट
जन धर्मी की छुडौती ठहरता है, और विश्वासघाती सीधे लोगोंकी सन्ती दण्ड
भोगते हैं। 19 फगड़ालू और चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से जंगल में रहना
उत्तम है। 20 बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं, परन्तु मूर्ख
उनको उड़ा डालता है। 21 जो धर्म और कृपा का पीछा पकड़ता है, वह जीवन, धर्म
और महिमा भी पाता है। 22 बुद्धिमान शूरवीरोंके नगर पर चढ़कर, उनके बल को
जिस पर वे भरोसा करते हैं, नाश करता है। 23 जो अपके मुंह को वश में रखता है

वह अपके प्राण को विपत्तियोंसे बचाता है। 24 जो अभिमन से रोष में आकर काम
करता है, उसका नाम अभिमानी, और अंहकारी ठट्ठा करनेवाला पड़ता है। 25
आलसी अपक्की लालसा ही में मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से
इन्कार करते हैं। 26 कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है, परन्तु
धर्मी लगातार दान करता रहता है। 27 दुष्टोंका बलिदान घृणित लगता है; विशेष
करके जब वह महापाप के निमित्त चढ़ाता है। 28 फूठा साझी नाश होता है, जिस
ने जो सुना है, वही कहता हुआ स्यिर रहेगा। 29 दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता
है, और जो सीधा है, वह अपक्की चाल सीधी करता है। 30 यहोवा के विरूद्ध न तो
कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है। 31 युद्ध के दिन के लिथे
घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।।

नीतिवचन 22

1 बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चान्दी से औरोंकी
प्रसन्नता उत्तम है। 2 धनी और निर्धन दोनोंएक दूसरे से मिलते हैं; यहोवा उन
दोनोंका कर्त्ता है। 3 चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु
भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं। 4 नम्रता और यहोवा के भय मानने का
फल धन, महिमा और जीवन होता है। 5 टेढ़े मनुष्य के मार्ग में कांटे और फन्दे
रहते हैं; परन्तु जो अपके प्राणोंकी रझा करता, वह उन से दूर रहता है। 6 लड़के
को शिझा उसी मार्ग की दे जिस में उसको चलना चाहिथे, और वह बुढ़ापे में भी
उस से न हटेगा। 7 धनी, निर्धन लोगोंपर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला
उधार देनेवाले का दास होता है। 8 जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही

काटेगा, और उसके रोष का सोंटा टूटेगा। 9 दया करनेवाले पर आशीष फलती है,
क्योंकि वह कंगाल को अपक्की रोटी में से देता है। 10 ठट्ठा करनेवाले को
निकाल दे, तब फगड़ा मिट जाएगा, और वाद-विवाद और अपमान दोनोंटूट
जाएंगे। 11 जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके वचन मनोहर होते
हैं, राजा उसका मित्र होता है। 12 यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके, उसकी रझा करता
है, परन्तु विश्वासघाती की बातें उलट देता है। 13 आलसी कहता है, बाहर तो सिंह
होगा! मैं चौक के बीच घात किया जाऊंगा। 14 पराई स्त्रियोंका मुंह गहिरा गड़हा
है; जिस से यहोवा क्रोधित होता, सोई उस में गिरता है। 15 लड़के के मन में मूढ़त
बन्धी रहती है, परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उस से दूर की जाती है। 16 जो
अपके लाभ के निमित्त कंगाल पर अन्धेर करता है, और जो धनी को भेंट देता, वे
दोनो केवल हानि ही उठाते हैं।। 17 कान लगाकर बुद्धिमानोंके वचन सुन, और
मेरी ज्ञान की बातोंकी ओर मन लगा; 18 यदि तू उसको अपके मन में रखे, और
वे सब तेरे मुंह से निकला भी करें, तो यह मनभावनी बात होगी। 19 मैं आज
इसलिथे थे बातें तुझ को जता देता हूं, कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो। 20 मैं बहुत
दिनोंसे तेरे हित के उपकेश और ज्ञान की बातें लिखता आया हूं, 21 कि मैं तुझे
सत्य वचनोंका निश्चय करा दूं, जिस से जो तुझे काम में लगाएं, उनको सच्चा
उत्तर दे सके।। 22 कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करता कि वह कंगाल है, और
न दीन जन को कचहरी में पीसना; 23 क्योंकि यहोवा उनका मुकद्दमा लड़ेगा,
और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा। 24 क्रोधी
मनुष्य का मित्र न होना, और फट क्रोध करनेवाले के संग न चलना, 25 कहीं ऐसा
न हो कि तू उसकी चाल सीखे, और तेरा प्राण फन्दे में फंस जाए। 26 जो लोग

हाथ पर हाथ मारते, और ऋणियोंके उत्तरदायी होते हैं, उन में तू न होना। 27 यदि
भर देने के लिथे तेरे पास कुछ न हो, तो वह क्योंतेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?
28 जो सिवाना तेरे पुरखाओं ने बान्धा हो, उस पुराने सिवाने को न बढ़ाना। 29
यदि तू ऐसा पुरूष देखे जो कामकाज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख
खड़ा होगा; छोटे लोगोंके सम्मुख नहीं।।

नीतिवचन 23

1 जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे, तब इस बात को मन
लगाकर सोचना कि मेरे साम्हने कौन है? 2 और यदि तू खाऊ हो, तो योड़ा खाकर
भूखा उठ जाना। 3 उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना, क्योंकि
वह धोखे का भोजन है। 4 धनी होने के लिथे परिश्रम न करना; अपक्की समझ का
भरोसा छोड़ना। 5 क्या तू अपक्की दृष्टि उस वस्तु पर लगाएगा, जो है ही नहीं?
वह उकाब पक्की की नाईं पंख लगाकर, नि:सन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है।
6 जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना, और न उसकी स्वादिष्ट
भोजनवस्तुओं की लालसा करना; 7 क्योंकि जैसा वह अपके मन में विचार करता
है, वैसा वह आप है। वह तुझ से कहता तो है, खा पी, परन्तु उसका मन तुझ से
लगा नहीं। 8 जो कौर तू ने खाया हो, उसे उगलना पकेगा, और तू अपक्की मीठी
बातोंका फल खोएगा। 9 मूर्ख के साम्हने न बोलना, नहीं तो वह तेरे बुद्धि के
वचनोंको तुच्छ जानेगा। 10 पुराने सिवानोंको न बढ़ाना, और न अनायोंके खेत में
घुसना; 11 क्योंकि उनका छुड़ानेवाला सामर्यी है; उनका मुकद्दमा तेरे संग वही
लड़ेगा। 12 अपना हृदय शिझा की ओर, और अपके कान ज्ञान की बातोंकी ओर

लगाना। 13 लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसका छड़ी से मारे, तो
वह न मरेगा। 14 तू उसका छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा।
15 हे मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो, तो विशेष करके मेरा ही मन आनन्दित होगा।
16 और जब तू सीधी बातें बोले, तब मेरा मन प्रसन्न होगा। 17 तू पापियोंके
विषय मन में डाह न करना, दिन भर यहोवा का भय मानते रहना। 18 क्योंकि
अन्त में फल होगा, और तेरी आशा न टूटेगी। 19 हे मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान
हो, और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला। 20 दाखमधु के पीनेवालोंमें न होना, न
मांस के अधिक खानेवालोंकी संगति करना; 21 क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ
अपना भाग खोते हैं, और पीनकवाले को चियड़े पहिनने पड़ते हैं। 22 अपके
जन्मानेवाले की सुनना, और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न
जानना। 23 सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं; और बुद्धि और शिझा और समझ
को भी मोल लेना। 24 धर्मी का पिता बहुत मगन होता है; और बुद्धिमान का
जन्मानेवाला उसके कारण आनन्दित होता है। 25 तेरे कारण माता-पिता
आनन्दित और तेरी जननी मगन होए।। 26 हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर
लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चालचलन पर लगी रहे। 27 वेश्या गहिरा गड़हा ठहरती
है; और पराई स्त्री सकेत कुंए के समान है। 28 वह डाकू की नाईं घात लगाती है,
और बहुत से मनुष्योंको विश्वासघाती कर देती है।। 29 कौन कहता है, हाथ? कौन
कहता है, हाथ हाथ? कौन फगड़े रगड़े में फंसता है? कौन बक बक करता है?
किसके अकारण घाव होते हैं? किसकी आंखें लाल हो जाती हैं? 30 उनकी जो
दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं।
31 जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है,

और जब वह धार के साय उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। 32 क्योंकि
अन्त में वह सर्प की नाई डसता है, और करैत के समान काटता है। 33 तू विचित्र
वस्तुएं देखेगा, और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा। 34 और तू समुद्र के बीच
लेटनेवाले वा मस्तूल के सिक्के पर सोनेवाले के समान रहेगा। 35 तू कहेगा कि
मैं ने मान तो खाई, परन्तु दु:खित न हुआ; मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ
सुधि न यी। मैं होश में कब आऊं? मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा।।

नीतिवचन 24

1 बुरे लोगोंके विषय में डाह न करना, और न उसकी संगति की चाह रखना; 2
क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं, और उनके मुंह से दुष्टता की बात निकलती है। 3
घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्यिर होता है। 4 ज्ञान के द्वारा कोठरियां
सब प्रकार की बहुमूल्य और मनभाऊ वस्तुओं से भर जाती हैं। 5 बुद्धिमान पुरूष
बलवान् भी होता है, और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान् होता है। 6 इसलिथे जब तू
युद्ध करे, तब युक्ति के साय करना, विजय बहुत से मन्त्रियोंके द्वारा प्राप्त होती है।
7 बुद्धि इतने ऊंचे पर है कि मूढ उसे पा नहीं सकता; वह सभा में अपना मुंह खोल
नहीं सकता।। 8 जो सोच विचार के बुराई करता है, उसको लोग दुष्ट कहते हैं। 9
मूर्खता का विचार भी पाप है, और ठट्ठा करनेवाले से मनुष्य घृणा करते हैं।। 10
यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है। 11 जो मार
डाले जाने के लिथे घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किए जाने को हैं उन्हें
मत पकड़ा। 12 यदि तू कहे, कि देख मैं इसको जानता न या, तो क्या मन का
जांचनेवाला इसे नहीं समझता? और क्या तेरे प्राणोंका रझक इसे नहीं जानता?

और क्या वह हर एक मनुष्य के काम का फल उसे न देगा? 13 हे मेरे पुत्र तू मधु
खा, क्योंकि वह अच्छा है, और मधु का छत्ता भी, क्योंकि वह तेरे मुंह में मीठा
लगेगा। 14 इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही मीठी लगेगी; यदि तू उसे पा जाए तो
अन्त में उसका फल भी मिलेगा, और तेरी आशा न टूटेगी।। 15 हे दुष्ट, तू धर्मी के
निवास को नाश करने के लिथे घात को न बैठ; ओर उसके विश्रमस्यान को मत
उजाड़; 16 क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है; परन्तु दुष्ट
लोग विपत्ति में गिरकर पके ही रहते हैं। 17 जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू
आनन्दित न हो, और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा मन मगन न हो। 18 कहीं
ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर अप्रसन्न हो और अपना क्रोध उस पर से हटा
ले।। 19 कुकर्मियोंके कारण मत कुढ़ दुष्ट लोगोंके कारण डाह न कर; 20 क्योंकि
बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ फल न मिलेगा, दुष्टोंका दिया बुफा दिया जाएगा।।
21 हे मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनोंका भय मानना; और बलवा करनेवालोंके
साय न मिलना; 22 क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ पकेगी, और दोनोंकी
ओर से आनेवाली आपत्ति को कौन जानता है? 23 बुद्धिमानोंके वचन यह भी हैं।।
न्याय में पझपात करना, किसी रीति भी अच्छा नहीं। 24 जो दुष्ट से कहता है कि
तू निर्दोष है, उसको तो हर समाज के लोग शाप देते और जाति जाति के लोग
धमी देते हैं; 25 परन्तु जो लोग दुष्ट को डांटते हैं उनका भला होता है, और उत्तम
से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है। 26 जो सीधा उत्तर देता है, वह होठोंको चूमता
है।। 27 अपना बाहर का कामकाज ठीक करना, और खेत में उसे तैयार कर लेना;
उसके बाद अपना घर बनाना।। 28 व्यर्य अपके पड़ोसी के विरूद्ध साझी न देना,
और न उसको फुसलाना। 29 मत कह, कि जैसा उस ने मेरे साय किया वैसा ही मैं

भी उसके साय करूंगा; और उसको उसके काम के अनुसा पलटा दूंगा।। 30 मैं
आलसी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास होकर
जाता या, 31 तो क्या देखा, कि वहां सब कहीं कटीले पेड़ भर गए हैं; और वह
बिच्छू पेड़ोंसे ढंप गई है, और उसके पत्यर का बाड़ा गिर गया है। 32 तब मैं ने
देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया; हां मैं ने देखकर शिझा प्राप्त की। 33
छोटी सी नींद, एक और झपक्की, योड़ी देर हाथ पर हाथ रख के और लेटे रहना,
34 तब तेरा कंगालपन डाकू की नाई, और तेरी घटी हयियारबन्द के समान आ
पकेगी।।

नीतिवचन 25

1 सुलैमान के नीतिवचन थे भी हैं; जिन्हें यहूदा के राजा हिजकिय्याह के जनोंने
नकल की यी।। 2 परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा
गुप्त बात के पता लगाने से होती है। 3 स्वर्ग की ऊंचाई और पृय्वी की गहराई और
राजाओं का मन, इन तीनोंका अन्त नहीं मिलता। 4 चान्दी में से मैल दूर करने
पर सुनार के लिथे एक पात्र हो जाता है। 5 राजा के साम्हने से दुष्ट को निकाल देने
पर उसकी गद्दी धर्म के कारण स्यिर होगी। 6 राजा के साम्हने अपक्की बड़ाई न
करना और बड़े लोगोंके स्यान में खड़ा न होना; 7 क्योंकि जिस प्रधान का तू ने
दर्शन किया हो उसके साम्हने तेरा अपमान न हो, वरन तुझ से यह कहा जाए,
आगे बढ़कर विराज।। 8 फगड़ा करने में जल्दी न करना नहीं तो अन्त में जब
तेरा पड़ोसी तेरा मुंह काला करे तब तू क्या कर सकेगा? 9 अपके पडोसी के साय
वादविवाद एकान्त में करना और पराथे का भेद न खोलना; 10 ऐसा न हो कि

सुननेवाला तेरी भी निन्दा करे, और तेरा अपवाद बना रहे।। 11 जैसे चान्दी की
टोकरियोंमें सोनहले सेब होंवैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है। 12
जैसे सोने का नत्य और कुन्दन का जेवन अच्छा लगता है, वैसे ही माननेवाले के
कान में बुद्धिमान की डांट भी अच्छी लगती है। 13 जैसे कटनी के समय बर्फ की
ठण्ड से, वैसे ही विश्वासयोग्य दूत से भी, भेजनेवालोंका जी ठण्डा होता है। 14
जैसे बादल और पवन बिना दृष्टि निर्लाभ होते हैं, वैसे ही फूठ-मूठ दान देनेवाले
का बड़ाई मारना होता है।। 15 धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता है, और
कोमल वचन हड्डी को भी तोड़ डालता है। 16 क्या तू ने मधु पाया? तो जितना
तेरे लिथे ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे। 17
अपके पड़ोसी के घर में बारम्बार जाने से अपके पांव हो रोक ऐसा न हो कि वह
खिन्न होकर घृणा करने लगे। 18 जो किसी के विरूद्ध फूठी साझी देता है, वह
मानो हयौड़ा और तलवार और पैना तीर है। 19 विपत्ति के समय विश्वासघाती का
भरोसा टूटे हुए दांत वा उखड़े पांव के समान है। 20 जैसा जाड़े के दिनोंमें किसी
का वस्त्र उतारना वा सज्जी पर सिरका डालना होता है, वैसा ही उदास मनवाले के
साम्हने गीत गाना होता है। 21 यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना;
और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना; 22 क्योंकि इस रीति तू उसके सिर
पर अंगारे डालेगा, और यहोवा तुझे इसका फल देगा। 23 जैसे उत्तरीय वायु वर्षा
को लाती है, वैसे ही चुगली करने से मुख पर क्रोध छा जाता है। 24 लम्बे चौड़े घर
में फगड़ालू पत्नी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है। 25 जैसा यके
मान्दे के प्राणोंके लिथे ठण्डा पानी होता है, वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ
समाचार भी होता है। 26 जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है, वह गंदले सोते और

बिगड़े हुए कुण्ड के समान है। 27 बहुत मधु खाना अच्छा नहीं, परन्तु कठिन
बातोंकी पूछताछ महिमा का कारण होता है। 28 जिसकी आत्मा वश में नहीं वह
ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह नाका करके तोड़ दी गई हो।।

नीतिवचन 26

1 जैसा धूपकाल में हिम का, और कटनी के समय जल का पड़ना, वैसा ही मूर्ख
की महिमा भी ठीक नहीं होती। 2 जैसे गौरिया घूमते घूमते और सूपाबेनी
उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता। 3 घोड़े के लिथे कोड़ा, गदहे
के लिथे बाग, और मूर्खोंकी पीठ के लिथे छड़ी है। 4 मूर्ख को उसको मूर्खता के
अनुसार उत्तर न देना ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे। 5 मूर्ख को उसकी
मूढता के अनुसार उत्तर न देना, ऐसा न हो कि वह अपके लेखे बुद्धिमान ठहरे। 6
जो मूर्ख के हाथ से संदेशा भेजता है, वह मानो अपके पांव में कुल्हाड़ा मारता और
विष पीता है। 7 जैसे लंगड़े के पांव लड़खड़ाते हैं, वैसे ही मूर्खोंके मुंह में नीतिवचन
होता है। 8 जैसे पत्यरोंके ढेर में मणियोंकी यैली, वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी
होती है। 9 जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गड़ता है, वैसे ही मूर्खोंका कहा हुआ
नीतिवचन भी दु:खदाई होता है। 10 जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को
मारता हो, वैसा ही मूर्खोंवा बटोहियोंका मजदूरी में लगानेवाला भी होता है। 11
जैसे कुत्ता अपक्की छाँट को चाटता है, वैसे ही मूर्ख अपक्की मूर्खता को दुहराता
है। 12 यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपक्की दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उस
से अधिक आशा मूर्ख ही से है। 13 आलसी कहता है, कि मार्ग में सिंह है, चौक में
सिंह है! 14 जैसे किवाड़ अपक्की चूल पर घूमता है, वैसे ही आलसी अपक्की खाट

पर करवटें लेता है। 15 आलसी अपना हाथ याली में तो डालता है, परन्तु आलस्य
के कारण कौर मुंह तक नहीं उठाता। 16 आलसी अपके को ठीक उत्तर देनेवाले
सात मनुष्योंसे भी अधिक बुद्धिमान समझता है। 17 जो मार्ग पर चलते हुए पराथे
फगड़े में विघ्न डालता है, सो वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानोंसे पकड़ता है।
18 जैसा एक पागल जो जंगली लकडियां और मृत्यु के तीर फेंकता है, 19 वैसा ही
वह भी होता है जो अपके पड़ोसी को धोखा देकर कहता है, कि मैं तो ठट्ठा कर
रहा या। 20 जैसे लकड़ी न होने से आग बुफती है, उसी प्रकार जहां कानाफूसी
करनेवाला नहीं वहां फगड़ा मिट जाता है। 21 जैसा अंगारोंमें कोयला और आग में
लकड़ी होती है, वैसा ही फगड़े के बढ़ाने के लिथे फगडालू होता है। 22 कानाफूसी
करनेवाले के वचन, स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं। 23 जैसा कोई
चान्दी का पानी चढ़ाया हुअ मिट्टी का बर्तन हो, वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे
वचन होते हैं। 24 जो बैरी बात से तो अपके को भोला बनाता है, परन्तु अपके
भीतर छल रखता है, 25 उसकी मीठी-मीठी बात प्रतीति न करना, क्योंकि उसके
मन में सात घिनौनी वस्तुएं रहती हैं; 26 चाहे उसका बैर छल के कारण छिप भी
जाए, तौभी उसकी बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी। 27 जो गड़हा खोदे, वही
उसी में गिरेगा, और जो पत्यर लुढकाए, वह उलटकर उसी पर लुढक आएगा। 28
जिस ने किसी को फूठी बातोंसे घायल किया हो वह उस से बैर रखता है, और
चिकनी चुपक्की बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है।।

नीतिवचन 27

1 कल के दिन के विषय में मत फूल, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या

होगा। 2 तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना; दूसरा तूफे
सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपक्की सराहना न करना। 3 पत्यर तो भारी है और
बालू में बोफ है, परन्तु मूढ का क्रोध उन दोनोंसे भी भारी है। 4 क्रोध तो क्रूर, और
प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु जब कोई जल उठता है, तब कौन ठहर
सकता है? 5 खुली हुई डांट गुप्त प्रेम से उत्तम है। 6 जो घाव मित्र के हाथ से लगें
वह विश्वासयोग्य है परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है। 7 सन्तुष्ट होने पर मधु
का छत्ता भी फीका लगता है, परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएं भी मीठी जान
पड़ती हैं। 8 स्यान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिडिया के समान है, जो
घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है। 9 जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के
हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है। 10 जो तेरा और तेरे पिता
का भी मित्र हो उसे न छोड़ना; और अपक्की विपत्ति के दिन अपके भाई के घर न
जाना। प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है। 11 हे मेरे पुत्र,
बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर, तब मैं अपके निन्दा करनेवाले को उत्तर
दे सकूंगा। 12 बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है; परन्तु
भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते हैं। 13 जो पराए का उत्तरदायी हो
उसका कपड़ा, और जो अनजान का उत्तरदायी हो उस से बन्धक की वस्तु ले ले।
14 जो भोर को उठकर अपके पड़ोसी को ऊंचे शब्द से आशीर्वाद देता है, उसके
लिथे यह शाप गिना जाता है। 15 फड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना, और
फगडालू पत्नी दोनोंएक से हैं; 16 जो उसको रोक रखे, वह वायु को भी रोक रखेगा
और दहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा। 17 जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे
ही मनुष्य का मुख अपके मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है। 18 जो अंजीर

के पेड़ की रझ्ञा करता है वह उसका फल खाता है, इसी रीति से जो अपके स्वामी
की सेवा करता उसकी महिमा होती है। 19 जैसे जल में मुख की परछाई सुख से
मिलती है, वैसे ही एक मनुष्य का मन दूसरे मनुष्य के मन से मिलता है। 20 जैसे
अधोलोक और विनाशलोक, वैसे ही मनुष्य की आंखें भी तृप्त नहीं होती। 21 जैसे
चान्दी के लिथे कुठाई और सोने के लिथे भट्ठी हैं, वैसे ही मनुष्य के लिथे उसकी
प्रशंसा है। 22 चाहे तू मूर्ख को अनाज के बीच ओखली में डालकर मूसल से कूटे,
तौभी उसकी मूर्खता नहीं जाने की। 23 अपक्की भेड़-बकरियोंकी दशा भली-भांति
मन लगाकर जान ले, और अपके सब पशुओं के फुण्डोंकी देखभाल उचित रीति से
कर; 24 क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती; और क्या राजमुकुट पीढ़ी-पीढ़ी चला
जाता है? 25 कटी हुई घास उठ गई, नई घास दिखाई देती हैं, पहाड़ोंकी हरियाली
काटकर इकट्ठी की गई है; 26 भेड़ोंके बच्चे तेरे वस्त्र के लिथे हैं, और बकरोंके
द्वारा खेत का मूल्य दिया जाएगा; 27 और बकरियोंका इतना दूध होगा कि तू
अपके घराने समेत पेट भरके पिया करेगा, और तेरी लौण्डियोंका भी जीवन
निर्वाह होता रहेगा।।

नीतिवचन 28

1 दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं, परन्तु धर्मी लोग जवान
सिहोंके समान निडर रहते हैं। 2 देश में पाप होन के कारण उसके हाकिम बदलते
जाते हैं; परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिन के लिथे
बना रहेगा। 3 जो निर्धन पुरूष कंगालोंपर अन्धेर करता है, वह ऐसी भारी वर्षा के
समान है। जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती। 4 जो लोग व्यवस्या को छोड़ देते हैं,

वे दुष्ट की प्रशंसा करते हैं, परन्तु व्यवस्था पर चलनेवाले उन से लड़ते हैं। 5 बुरे
लोग न्याय को नहीं समझ सकते, परन्तु यहोवा को ढूंढनेवाले सब कुछ समझते
हैं। 6 टेढ़ी चाल चलनेवाले धनी मनुष्य से खराई से चलनेवाला निर्धन पुरूष ही
उत्तम है। 7 जो व्यवस्था का पालन करता वह समझदार सुपूत होता है, परन्तु
उड़ाऊ का संगी अपके पिता का मुंह काला करता है। 8 जो अपना धन ब्याज आदि
बढ़ती से बढ़ाता है, वह उसके लिथे बटोरता है जो कंगालोंपर अनुग्रह करता है। 9
जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है, उसकी प्रार्यना घृणित ठहरती है।
10 जो सीधे लोगोंको भटकाकर कुमार्ग में ले जाता है वह अपके खोदे हुए गड़हे में
आप ही गिरता है; परन्तु खरे लोग कल्याण के भागी होते हैं। 11 धनी पुरूष
अपक्की दृष्टि में बुद्धिमान होता है, परन्तु समझदार कंगाल उसका मर्म बूफ लेता
है। 12 जब धर्मी लोग जयवन्त होते हैं, तब बड़ी शोभा होती है; परन्तु जब दुष्ट
लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य अपके आप को छिपाता है। 13 जो अपके अपराध
छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और
छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाथेगी। 14 जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय
मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति
में पड़ता है। 15 कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेवाला दुष्ट गरजनेवाले सिंह और
घूमनेवाले रीछ के समान है। 16 जो प्रधान मन्दबुद्धि का होता है, वही बहुत
अन्धेर करता है; और जो लालच का बैरी होता है वह दीर्घायु होता है। 17 जो
किसी प्राणी की हत्या का अपराधी हो, वह भागकर गड़हे में गिरेगा; कोई उसको
न रोकेगा। 18 जो सीधाई से चलता है वह बचाया जाता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल
चलता है वह अचानक गिर पड़ता है। 19 जो अपक्की भूमि को जोता-बोया करता

है, उसका तो पेट भरता है, परन्तु जो निकम्मे लोगोंकी संगति करता है वह
कंगालपन से घिरा रहता है। 20 सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते रहते हैं,
परन्तु जो धनी होन से उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता। 21 पझपात
करना अच्छा नहीं; और यह भी अच्छा नहीं कि पुरूष एक टुकड़े रोटी के लिथे
अपराध करे। 22 लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नहीं
जानता कि वह घटी में पकेगा। 23 जो किसी मनुष्य को डांटता है वह अन्त में
चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है। 24 जो अपके मां-बाप को
लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं, वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता है।
25 लालची मनुष्य फगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह
हृष्टपुष्ट हो जाता है। 26 जो अपके ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; और जो बुद्धि
से चलता है, वह बचता है। 27 जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती,
परन्तु जो उस से दुष्टि फेर लेता है वह शाप पर शाप पाता है। 28 जब दुष्ट लोग
प्रबल होते हैं तब तो मनुष्य ढूंढ़े नहीं मिलते, परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तब
धर्मी उन्नति करते हैं।।

नीतिवचन 29

1 जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाश हो जाएगा और
उसका कोई भी उपाय काम न आएगा। 2 जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब
प्रजा आनन्दित होती है; परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाथ मारती है।
3 जो पुरूष बुद्धि से प्रीति रखता है, अपके पिता को आनन्दित करता है, परन्तु
वेश्याओं की संगति करनेवाला धन को उड़ा देता है। 4 राजा न्याय से देश को

स्यिर करता है, परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है। 5 जो पुरूष
किसी से चिकनी चुपक्की बातें करता है, वह उसके पैरोंके लिथे जाल लगाता है। 6
बुरे मनुष्य का अपराध फन्दा होता है, परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जयजयकार
करता है। 7 धर्मी पुरूष कंगालोंके मुकद्दमें में मन लगाता है; परन्तु दुष्ट जन उसे
जानने की समझ नहीं रखता। 8 ठट्ठा करनेवाले लोग नगर को फूंक देते हैं,
परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठण्डा करते हैं। 9 जब बुद्धिमान मूढ के साय
वादविवाद करता है, तब वह मूढ क्रोधित होता और ठट्ठा करता है, और वहां
शान्ति नहीं रहती। 10 हत्यारे लोग खरे पुरूष से बैर रखते हैं, और सीधे लोगोंके
प्राण की खोज करते हैं। 11 मूर्ख अपके सारे मन की बात खोल देता है, परन्तु
बुद्धिमान अपके मन को रोकता, और शान्त कर देता है। 12 जब हाकिम फूठी
बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं। 13 निर्धन
और अन्धेर करनेवाला पुरूष एक समान है; और यहोवा दोनोंकी आंखोंमें ज्योति
देता है। 14 जो राजा कंगालोंका न्याय सच्चाई से चुकाता है, उसकी गद्दी सदैव
स्यिर रहती है। 15 छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का योंही
छोड़ा जाता है वह अपक्की माता की लज्जा का कारण होता है। 16 दुष्टोंके बड़ने
से अपराध भी बढ़ता है; परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका गिरना देख लेते हैं। 17
अपके बेटे की ताड़ना कर, तब उस से तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो
जाएगा। 18 जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो
व्यवस्या को मानता है वह धन्य होता है। 19 दास बातोंही के द्वारा सुधारा नहीं
जाता, क्योंकि वह समझदार भी नहीं मानता। 20 क्या तू बातें करने में उतावली
करनेवाले मनुष्य को देखता है? उस से अधिक तो मूर्ख ही से आशा है। 21 जो

अपके दास को उसके लड़कपन से सुकुमारपन में पालता है, वह दास अन्त में
उसका बेटा बन बैठता है। 22 क्रोध करनेवाला मनुष्य फगड़ा मचाता है और
अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी होता है। 23 मनुष्य गर्व के कारण नीचा खाता
है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिक्कारनी होता है। 24 जो चोर की
संगति करता है वह अपके प्राण का बैरी होता है; शपय खाने पर भी वह बात को
प्रगट नहीं करता। 25 मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा
पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्यान पर चढ़ाया जाता है। 26 हाकिम से भेंट करना
बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा की करता है। 27 धर्मी लोग
कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेवाले से घृणा
करता है।।

नीतिवचन 30

1 याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन।। उस पुरूष ने ईतीएल और उक्काल
से यह कहा, 2 निश्चय मैं पशु सरीखा हूं, वरन मनुष्य कहलाने के योग्य भी नहीं;
और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है। 3 न मैं ने बुद्धि प्राप्त की है, और न
परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है। 4 कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर अया? किस
ने वायु को अपक्की मुट्ठी में बटोर रखा है? किस ने महासागर को अपके वस्त्र में
बान्ध लिया है? किस ने पृय्वी के सिवनोंको ठहराया है? उसका नाम क्या है? और
उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता! 5 ईश्वर का एक एक वचन
ताया हुआ है; वह अपके शरणागतोंकी ढाल ठहरा है। 6 उसके वचनोंमें कुछ मत
बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू फूठा ठहरे।। 7 मैं ने तुझ से दो वर मांगे

हैं, इसलिथे मेरे मरने से पहिले उन्हें मुझे देने से मुंह न मोड़: 8 अर्यात व्यर्य और
फूठी बात मुझ से दूर रख; मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की
रोटी मुझे खिलाया कर। 9 ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार
करके कहूं कि यहोवा कौन है? वा अपना भाग खोकर चोरी करूं, और अपके
परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं। 10 किसी दास की, उसके स्वामी से
चुगली न करना, ऐसा न हो कि वह तुझे शाप दे, और तू दोषी ठहराया जाए।। 11
ऐसे लोग हैं, जो अपके पिता को शाप देते और अपक्की माता को धन्य नहीं
कहते। 12 ऐसे लोग हैं जो अपक्की दृष्टि में शुद्ध हैं, तौभी उनका मैल धोया नहीं
गया। 13 एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं उनकी दृष्टि क्या ही घमण्ड से भरी रहती है,
और उनकी आंखें कैसी चक्की हुई रहती हैं। 14 एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं, जिनके
दांत तलवार और उनकी दाढ़ें छुरियां हैं, जिन से वे दीन लोगोंको पृथ्वी पर से,
और दरिद्रोंको मनुष्योंमें से मिटा डालें।। 15 जैसे जोंक की दो बेछियां होती हैं, जो
कहती हैं दे, दे, वैसे ही तीन वस्तुएं हैं, जो तृप्त नहीं होतीं; वरन चार हैं, जो कभी
नहीं कहतीं, बस। 16 अधोलोक और बांफ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तृप्त
नहीं होती, और आग जो कभी नहीं कहती, बस।। 17 जिस आंख से कोई अपके
पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साय अपक्की माता की आज्ञा न
माने, उस आंख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे
खा डालेंगे।। 18 तीन बातें मेरे लिथे अधिक कठिन है, वरन चार हैं, जो मेरी
समझ से पके हैं: 19 आकाश में उकाब पक्की का मार्ग, चट्टान पर सर्प की चाल,
समुद्र में जहाज की चाल, और कन्या के संग पुरूष की चाल।। 20 व्यभिचारिणी
की चाल भी वैसी ही है; वह भोजन करके मुंह पोंछती, और कहती है, मैं ने कोई

अनर्थ काम नहीं किया।। 21 तीन बातोंके कारण पृथ्वी कांपक्की है; वरन चार है,
जो उस से सही नहीं जातीं: 22 दास का राजा हो जाना, मूढ़ का पेट भरना 23
घिनौनी स्त्री का ब्याहा जाना, और दासी का अपक्की स्वामिन की वारिस होना।।
24 पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं, जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं: 25 च्यूटियां निर्बल
जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपक्की भोजनवस्तु बटोरती हैं; 26 शापान बली
जाति नहीं, तौभी उनकी मान्दें पहाड़ोंपर होती हैं; 27 टिड्डियोंके राजा तो नहीं
होता, तौभी वे सब की सब दल बान्ध बान्धकर पयान करती हैं; 28 और
छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है, तौभी राजभवनोंमें रहती है।। 29 तीन
सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं; वरन चार हैं, जिन की चाल सुन्दर है: 30 सिंह जो सब
पशुओं में पराक्रमी हैं, और किसी के डर से नहीं हटता; 31 शिकारी कुत्ता और
बकरा, और अपक्की सेना समेत राजा। 32 यदि तू ने अपक्की बढ़ाई करने की
मूढ़ता की, वा कोई बुरी युक्ति बान्धी हो, तो अपके मुंह पर हाथ धर। 33 क्योंकि
जैसे दूध के मयने से मक्खन और नाक के मरोड़ने से लोहू निकलता है, वैसे ही
क्रोध के भड़काने से फगड़ा उत्पन्न होता है।।

नीतिवचन 31

1 लमूएल राजा के प्रभावशाली वचन, जो उसकी माता ने उसे सिखाए।। 2 हे मेरे
पुत्र, हे मेरे निज पुत्र! हे मेरी मन्नतोंके पुत्र! 3 अपना बल स्त्रियोंको न देना, न
अपना जीवन उनके वश कर देता जो राजाओं का पौरूष खो देती हैं। 4 हे लमूएल,
राजाओं का दाखमघु पीना उनको शोभा नहीं देता, और मदिरा चाहना, रईयोंको
नहीं फबता; 5 ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्या को भूल जाएं और किसी दु:खी के

हक को मारें। 6 मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है, और दाखमधु उदास
मनवालोंको ही देना; 7 जिस से वे पीकर अपक्की दरिद्रता को भूल जाएं और
अपके कठिन श्रम फिर स्मरण न करें। 8 गूंगे के लिथे अपना मुंह खोल, और सब
अनाथोंका न्याय उचित रीति से किया कर। 9 अपना मुंह खोल और धर्म से न्याय
कर, और दीन दरिद्रोंका न्याय कर। 10 भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि
उसका मूल्य मूंगोंसे भी बहुत अधिक है। उसके पति के मन में उसके प्रति
विश्वास है। 11 और उसे लाभ की घटी नहीं होती। 12 वह अपके जीवन के सारे
दिनोंमें उस से बुरा नहीं, वरन भला ही व्यवहार करती है। 13 वह ऊन और सन
ढूंढ ढूंढकर, अपके हाथोंसे प्रसन्नता के साथ काम करती है। 14 वह व्योपार के
जहाजोंकी नाई अपक्की भोजनवस्तुएं दूर से मंगवाती हैं। 15 वह रात ही को उठ
बैठती है, और अपके घराने को भोजन खिलाती है और अपक्की लौण्डियोंको
अलग अलग काम देती है। 16 वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है
और उसे मोल ले लेती है; और अपके परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है।
17 वह अपक्की कटि को बल के फेंटे से कसती है, और अपक्की बाहोंको दृढ़
बनाती है। 18 वह परख लेती है कि मेरा व्योपार लाभदायक है। रात को उसका
दिया नहीं बुफता। 19 वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है। 20
वह दीन के लिथे मुट्ठी खोलती है, और दरिद्र के संभालने को हाथ बढ़ाती है। 21
वह अपके घराने के लिथे हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल
कपके पहिनते हैं। 22 वह तकिथे बना लेती है; उसके वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंजनी
रंग के होते हैं। 23 जब उसका पति सभा में देश के पुरनियोंके संग बैठता है, तब
उसका सन्मान होता है। 24 वह सन के वस्त्र बनाकर बेचक्की है; और व्योपारी को

कमरबन्द देती है। 25 वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती है, और
आनेवाले काल के विषय पर हंसती है। 26 वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके
वचन कृपा की शिझा के अनुसार होते हैं। 27 वह अपके घराने के चालचलन को
ध्यान से देखती है, और अपक्की रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती। 28 उसके पुत्र
उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं, उनका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा
करता है: 29 बहुत सी स्त्रियोंने अच्छे अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभोंमें
श्रेष्ट है। 30 शोभा तो फूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय
मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी। 31 उसके हाथोंके परिश्रम का फल उसे दो,
और उसके कार्योंसे सभा में उसकी प्रशंसा होगी।।

सभोपदेशक 1

1 यरूशलेम के राजा, दाऊद के पुत्र और उपकेशक के वचन। 2 उपकेशक का यह
वचन है, कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है। 3 उस सब परिश्रम
से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? 4 एक पीढ़ी
जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है। 5 सूर्य उदय
होकर अस्त भी होता है, और अपके उदय की दिशा को वेग से चला जाता है। 6
वायु दक्खिन की ओर बहती है, और उत्तर की ओर घूमती जाती है; वह घूमती
और बहती रहती है, और अपके चक्करोंमें लौट आती है। 7 सब नदियां समुद्र में
जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्यान से नदियां निकलती हैं;
उधर ही को वे फिर जाती हैं। 8 सब बातें परिश्रम से भरी हैं; मनुष्य इसका वर्णन
नहीं कर सकता; न तो आंखें देखने से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से भरते हैं।

9 जो कुछ हुआ या, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया
जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है। 10 क्या ऐसी कोई बात है जिसके
विषय में लोग कह सकें कि देख यह नई है? यह तो प्राचीन युगोंमें वर्तमान यी।
11 प्राचीन बातोंका कुछ स्मरण नहीं रहा, और होनेवाली बातोंका भी स्मरण
उनके बाद होनेवालोंको न रहेगा।। 12 मैं उपकेशक यरूशलेम में इस्राएल का राजा
या। 13 और मैं ने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है,
उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूं; यह बड़े दु:ख का काम है जो
परमेश्वर ने मनुष्योंके लिथे ठहराया है कि वे उस में लगें। 14 मैं ने उन सब
कामोंको देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; देखो वे सब व्यर्य और मानो वायु को
पकड़ना है। 15 जो टेढ़ा है, वह सीधा नहीं हो सकता, और जितनी वस्तुओं में घटी
है, वे गिनी नहीं जातीं।। 16 मैं ने मन में कहा, देख, जितने यरूशलेम में मुझ से
पहिले थे, उन सभोंसे मैं ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की है; और मुझ को बहुत बुद्धि
और ज्ञान मिल गया है। 17 और मैं ने अपना मन लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और
बावलेपन और मूर्खता को भी जान लूं। मुझे जान पड़ा कि यह भी वायु को
पकड़ना है।। 18 क्योंकि बहुत बुद्धि के साय बहुत खेद भी होता है, और जो अपना
ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दु:ख भी बढ़ाता है।।

सभोपदेशक 2

1 मैं ने अपके मन से कहा, चल, मैं तुझ को आनन्द के द्वारा जांचूंगा; इसलिथे
आनन्दित और मगन हो। परन्तु देखो, यह भी व्यर्य है। 2 मैं ने हंसी के विषय में
कहा, यह तो बावलापन है, और आनन्द के विषय में, उस से क्या प्राप्त होता है? 3

मैं ने मन में सोचा कि किस प्रकार से मेरी बुद्धि बनी रहे और मैं अपके प्राण को
दाखमधु पीने से क्योंकर बहलाऊं और क्योंकर मूर्खता को यामे रहूं, जब तक
मालूम न करूं कि वह अच्छा काम कौन सा है जिसे मनुष्य जीवन भर करता रहे।
4 मैं ने बड़े बड़े काम किए; मैं ने अपके लिथे घर बनवा लिए और अपके लिथे
दाख की बारियां लगवाई; 5 मैं ने अपके लिथे बारियां और बाग लगावा लिए, और
उन में भांति भांति के फलदाई वृझ लगाए। 6 मैं ने अपके लिथे कुण्ड खुदवा लिए
कि उन से वह वन सींचा जाए जिस में पौधे लगाए जाते थे। 7 मैं ने दास और
दासियां मोल लीं, और मेरे घर में दास भी उत्पन्न हुए; और जितने मुझ से पहिले
यरूशलेम में थे उस ने कहीं अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियोंका मैं स्वामी या।
8 मैं ने चान्दी और सोना और राजाओं और प्रान्तोंके बहुमूल्य पदार्योंका भी संग्रह
किया; मैं ने अपके लिथे गवैयोंऔर गानेवालियोंको रखा, और बहुत सी
कामिनियां भी, जिन से मनुष्य सुख पाते हैं, अपक्की कर लीं।। 9 इस प्रकार मैं
अपके से पहिले के सब यरूशलेमवासिक्कों अधिक महान और धनाढय हो गया;
तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही। 10 और जितनी वस्तुओं के देखने की मैं ने लालसा
की, उन सभोंको देखने से मैं न रूका; मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द
भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ;
और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। 11 तब मैं ने फिर से अपके हाथोंके
सब कामोंको, और अपके सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्य
और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं।। 12 फिर मैं ने अपके मन
को फेरा कि बुद्धि और बावलेपन और मूर्खता के कार्योंको देखूं; क्योंकि जो मनुष्य
राजा के पीछे आएगा, वह क्या करेगा? केवल वही जो होता चला आया है। 13 तब

मैं ने देखा कि उजियाला अंधिक्कारने से जितना उत्तम है, उतना बुद्धि भी मूर्खता
से उत्तम है। 14 जो बुद्धिमान है, उसके सिर में आंखें रहती हैं, परन्तु मूर्ख
अंधिक्कारने में चलता है; तौभी मैं ने जान लिया कि दोनोंकी दशा एक सी होती
है। 15 तब मैं ने मन में कहा, जैसी मूर्ख की दशा होगी, वैसी ही मेरी भी होगी; फिर
मैं क्योंअधिक बुद्धिमान हुआ? और मैं ने मन में कहा, यह भी व्यर्थ ही है। 16
क्योंकि ने तो बुद्धिमान का और न मूर्ख का स्मरण सर्वदा बना रहेगा, परन्तु
भविष्य में सब कुछ बिसर जाएगा। 17 बुद्धिमान क्योंकर मूर्ख के समान मरता
है! इसलिथे मैं ने अपके जीवन से घृणा की, क्योंकि जो काम संसार में किया
जाता है मुझे बुरा मालूम हुआ; क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।
18 मैं ने अपके सारे परिश्रम के प्रतिफल से जिसे मैं ने धरती पर किया या घृणा
की, क्योंकि अवश्य है कि मैं उसका फल उस मनुष्य के लिथे छोड़ जाऊं जो मेरे
बाद आएगा। 19 यह कौन जानता है कि वह मनुष्य बुद्धिमान होगा वा मूर्ख?
तौभी धरती पर जितना परिश्रम मैं ने किया, और उसके लिथे बुद्धि प्रयोग की उस
सब का वही अधिक्कारनी होगा। यह भी व्यर्थ ही है। 20 तब मैं अपके मन में उस
सारे परिश्रम के विषय जो मैं ने धरती पर किया या निराश हुआ, 21 क्योंकि ऐसा
मनुष्य भी है, जिसका कार्य परिश्रम और बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी
होता है, तौभी उसको ऐसे मनुष्य के लिथे छोड़ जाना पड़ता है, जिस ने उस में
कुछ भी परिश्रम न किया हो। यह भी व्यर्थ और बहुत ही बुरा है। 22 मनुष्य जो
धरती पर मन लगा लगाकर परिश्रम करता है उस से उसको क्या लाभ होता है?
23 उसके सब दिन तो दु:खोंसे भरे रहते हैं, और उसका काम खेद के साय होता है;
रात को भी उसका मन चैन नहीं पाता। यह भी व्यर्थ ही है। 24 मनुष्य के लिथे

खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपके जीव को सुखी रखने के सिवाय और कुछ
भी अच्छा नहीं। मैं ने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है। 25 क्योंकि
खाने-पीने और सुख भोगने में मुझ से अधिक समर्थ कौन है? 26 जो मनुष्य
परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है, उसको वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है;
परन्तु पापी को वह दु:खभरा काम ही देता है कि वह उसका देने के लिथे संचय
करके ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो। यह भी व्यर्थ और वायु को
पकड़ना है।।

1 हर एक बात का एक अवसर और प्रत्थेक काम का, जो आकाश के नीचे होता है,
एक समय है। 2 जन्म का समय, और मरन का भी समय; बोने का समय; और
बोए हुए को उखाड़ने का भी समय है; 3 घात करने का समय, और चंगा करने का
भी समय; ढा देने का समय, और बनाने का भी समय है; 4 रोने का समय, और
हंसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है; 5 पत्थर
फेंकने का समय, और पत्थर बटोरने का भी समय; गल लगाने का समय, और
गल लगाने से रूकने का भी समय है; 6 ढूंढ़ने का समय, और खो देने का भी
समय; बचा रखने का समय, और फेंक देने का भी समय है; 7 फाड़ने का समय,
और सीने का भी समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है; 8 प्रेम
का समय, और बैर करने का भी समय; लड़ाई का समय, और मेल का भी समय
है। 9 काम करनेवाले को अधिक परिश्रम से क्या लाभ होता है? 10 मैं ने उस
दु:खभरे काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्योंके लिथे ठहराया है कि वे उस में
लगे रहें। 11 उस ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपके अपके समय पर वे सुन्दर
होते है; फिर उस ने मनुष्योंके मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न

किया है, तौभी काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य
बूफ नहीं सकता। 12 मैं ने जान लिया है कि मनुष्योंके लिथे आनन्द करने और
जीवन भर भलाई करने के सियाव, और कुछ भी अच्छा नहीं; 13 और यह भी
परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए-पीए और अपेन सब परिश्रम में सुखी रहे। 14
मैं जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्यिर रहेगा; न तो उस में
कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर एसा
इसलिथे करता है कि लोग उसका भय मानें। 15 जो कुछ हुआ वह इस से पहिले
भी हो चुका; जो होनेवाला है, वह हो भी चुका है; और परमेश्वर बीती हुई बात को
फिर पूछता है। 16 फिर मैं ने संसार में क्या देखा कि न्याय के स्यान में दुष्टता
होती है, और धर्म के स्यान में भी दुष्टता होती है। 17 मैं ने मन में कहा, परमेश्वर
धर्मी और दुष्ट दोनोंका न्याय करेगा, क्योंकि उसके यहां एक एक विषय और एक
एक काम का समय है। 18 मैं ने मन में कहा कि यह इसलिथे होता है कि परमेश्वर
मनुष्योंको जांचे और कि वे देख सकें कि वे पशु-समान हैं। 19 क्योंकि जैसी
मनुष्योंकी वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है; दोनोंकी वही दशा होती है, जैसे
एक मरता वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभोंकी स्वांस एक सी है, और मनुष्य पशु
से कुछ बढ़कर नहीं; सब कुछ व्यर्य ही है। 20 सब एक स्यान मे जाते हैं; सब
मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। 21 क्या मनुष्य का प्राण
ऊपर की ओर चढ़ता है और पशुओं का प्राण नीचे की ओर जाकर मिट्टी में मिल
जाता है? कौन जानता है? 22 सो मैं ने यह देखा कि इस से अधिक कुछ अच्छा
नहीं कि मनुष्य अपके कामोंके आनन्दित रहे, क्योंकि उसका भाग्य यही है; कौन
उसके पीछे होनेवाली बातोंको देखने के लिथे उसको लौटा लाएगा?

सभोपदेशक 4

1 तब मैं ने वह सब अन्धेर देखा जो संसार में होता है। और क्या देखा, कि अन्धेर
सहनेवालोंके आंसू बह रहे हैं, और उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं! अन्धेरे
करनेवालोंके हाथ में शक्ति यी, परन्तु उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं या। 2
इसलिथे मैं ने मरे हुओं को जो मर चुके हैं, उन जीवतोंसे जो अब तक जीवित हैं
अधिक सराहा; 3 वरन उन दोनोंसे अधिकर सुभागी वह है जो अब तक हुआ ही
नहीं, न थे बुरे काम देखे जो संसार में होते हैं।। 4 तब में ने सब परिश्रम के काम
और सब सफल कामोंको देखा जो लोग अपके पड़ोसी से जलन के कारण करते
हैं। यह भी व्यर्थ और मन का कुढ़ना है।। 5 मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता और
अपना मांस खाता है। 6 चैन के साय एक मुट्ठर एप उसे मुट्ठियोंसे अच्छा है,
जिनके साय परिश्रम और मन का कुढ़ना हो।। 7 फिर मैं ने धरती पर यह भी व्यर्थ
बात देखी। 8 कोई अकेला रहता और उसका कोई नहीं है; न उसके बेटा है, न भाई
है, तौभी उसके परिश्रम का अन्त नहीं होता; न उसकी आंखें धन से सन्तुष्ट होती
हैं, और न वह कहता है, मैं किस के लिथे परिश्रम करता और अपके जीवन को
सुखरहित रखता हूं? यह भी व्यर्थ और निरा दु:खभरा काम है। 9 एक से दो अच्छे
हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। 10 क्योंकि यदि उन में से
एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाथ उस पर जो अकेला होकर गिरे
और उसका कोई उठानेवाला न हो। 11 फिर यदि दो जन एक संग सोए तो वे गर्म
रहेंगे, परन्तु कोई अकेला क्योंकर गर्म हो सकता है? 12 यदि कोई अकेले पर
प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका साम्हना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी
हो वह जल्दी नहीं टूटती।। 13 बुद्धिमान लड़का दरिद्र होन पर भी ऐसे बूढ़े और

मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे, 14 चाहे वह उसके
राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ या बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ हो। 15 मैं ने
सब जीवतोंको जो धरती पर चलते फिरते हैं देखा कि वे उस दूसरे लड़के के संग
हो लिथे हैं जो उनका स्यान लेने के लिथे खड़ा हुआ। 16 वे सब लोग अनगिनित
थे जिन पर वह प्रधान हुआ या। तौभी भविष्य में होनेवाले लोग उसके कारण
आनन्दित न होंगे। नि:सन्देह यह भी व्यर्य और मन का कुढ़ना है।।

सभोपदेशक 5

1 जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना; सुनने के लिथे
समीप जाना मूर्खोंके बलिदान चढ़ाने से अच्छा है; क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा
करते हैं। 2 बातें करने में उतावली न करना, और न अपके मन से कोई बात
उतावली से परमेश्वर के साम्हने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तू
पृय्वी पर है; इसलिथे तेरे वचन योड़े ही हों।। 3 क्योंकि जैसे कार्य की अधिकता के
कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत सी बातोंका बोलनेवाला मूर्ख ठहरता है।
4 जब तू परमेश्वर के लिथे मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न
करना; क्यांकि वह मूर्खोंसे प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तू ने मानी हो उसे पूरी
करना। 5 मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है। 6
कोई वचन कहकर अपके को पाप में ने फंसाना, और न ईश्वर के दूत के साम्हने
कहना कि यह भूल से हुआ; परमेश्वर क्योंतेरा बोल सुनकर अप्रसन्न हो, और तेरे
हाथ के कार्योंको नष्ट करे? 7 क्योंकि स्वप्नोंकी अधिकता से व्यर्य बातोंकी
बहुतायत होती है: परन्तु तू परमेश्वर को भय मानना।। 8 यदि तू किसी प्रान्त में

निर्धनोंपर अन्धेर और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखे, तो इस से चकित न
होना; क्योंकि एक अधिक्कारनी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातोंकी सुधि
रहती है, और उन से भी ओर अधिक बड़े रहते हैं। 9 भूमि की उपज सब के लिथे
है, वरन खेती से राजा का भी काम निकलता है। 10 जो रूपके से प्रीति रखता है
वह रूपके से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से: यह भी
व्यर्थ है। 11 जब सम्पत्ति बढ़ती है, तो उसके खानेवाले भी बढ़ते हैं, तब उसके
स्वामी को इसे छोड़ और क्या लाभ होता है कि उस सम्पत्ति को अपक्की आंखोंसे
देखे? 12 परिश्रम करनेवाला चाहे योड़ा खाए, या बहुत, तौभी उसकी नींद सुखदाई
होती है; परन्तु धनी के धन के बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती। 13 मैं ने
धरती पर एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्यात् वह धन जिसे उसके मालिक ने
अपक्की ही हानि के लिथे रखा हो, 14 और वह किसी बुरे काम में उड़ जाता है;
और उसके घर में बेटा उत्पन्न होता है परन्तु उसके हाथ मे कुछ नही रहता। 15
जैसा वह मां के पेट से निकला वैसा ही लौट जाएगा; नंगा ही, जैसा आया या, और
अपके परिश्रम के बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह अपके हाथ में ले जा सके। 16
यह भी एक बड़ी बला है कि जैसा वह आया, ठीक वैसा ही वह जाएगा; उसे उस
व्यर्य परिश्रम से और क्या लाभ है? 17 केवल इसके कि उस ने जीवन भर बेचैनी
से भोजन किया, और बहुत ही दु:खित और रोगी रहा और क्रोध भी करता रहा?
18 सुन, जो भली बात मैं ने देखी है, वरन जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए
और पीए और अपके परिश्रम से जो वह धरती पर रिता है, अपक्की सारी आयु
भर जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे: क्योंकि उसका भाग यही है। 19 वरन हर
एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन सम्पत्ति दी हो, और उन से आनन्द भोगने और

उस में से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने को शक्ति भी दी हो- यह परमेश्वर का वरदान है। 20 इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है।।

सभोपदेशक 6

1 एक बुराई जो मैं ने धरती पर देखी है, वह मनुष्योंको बहुत भारी लगती है: 2
किसी मनुष्य को परमेश्वर धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहां तक देता है कि जो कुछ
उसका मन चाहता है उसे उसकी कुछ भी घटी नहीं होती, तौभी परमश्ेवर
उसको उस में से खाने नहीं देता, कोई दूसरा की उसे खाता है; यह व्यर्थ और
भयानक दु:ख है। 3 यदि किसी पुरूष के सौ पुत्र हों, और वह बहुत वर्ष जीवित रहे
और उसकी आयु बढ़ जाए, परन्तु न उसको प्राण प्रसन्न रहे और न उसकी
अन्तिम क्रिया की जाए, तो मैं कहता हूं कि ऐसे मनुष्य से अधूरे समय का जन्मा
हुआ बच्चा उत्तम है। 4 क्योंकि वह व्यर्थ ही आया और अन्धेरे में चला गया, ओर
उसका नाम भी अन्धेरे में छिप गया; 5 और न सूर्य को देखा, न किसी चीज को
जानने पाया; तौभी इसको उस मनुष्य से अधिक चैन मिला। 6 हां चाहे वह दो
हजार वर्ष जीवित रहे, और कुछ सुख भोगने न पाए, तो उसे क्या? क्या सब के
सब एक ही स्यान में नहीं जाते? 7 मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिथे
होता है तौभी उसका मन नहीं भरता। 8 जो बुद्धिमान है वह मूर्ख से किस बात में
बढ़कर है? और कंगाल जो यह जानता है कि इस जीवन में किस प्रकार से चलना
चाहिथे, वह भी उस से किस बात में बढ़कर है? 9 आंखोंसे देख लेना मन की
चंचलता से उत्तम है: यह भी व्यर्थ और मन का कुढना है। 10 जो कुछ हुआ है

उसका नाम युग के आरम्भ से रखा गया है, और यह प्रगट है कि वह आदमी है,
कि वह उस से जो उस से अधिक शक्तिमान है फगड़ा नहीं कर सकता है। 11 बहुत
सी ऐसी बातें हैं जिनके कारण जीवन और भी व्यर्थ होता है तो फिर मनुष्य को
क्या लाभ? 12 क्योंकि मनुष्य के झणिक व्यर्य जीवन में जो वह परछाई की नाई
बिताता है कौन जानता है कि उसके लिथे अच्छा क्या है? क्योंकि मनुष्य को कौन
बता सकता है कि उसके बाद दुनिया में क्या होगा?

सभोपदेशक 7

1 अच्छा नाम अनमोल इत्र से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है। 2
जेवनार के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है; क्योंकि सब मनुष्योंका
अन्त यही है, और जो जीवित है वह मन लगाकर इस पर सोचेगा। 3 हंसी से खेद
उत्तम है, क्योंकि मुंह पर के शोक से मन सुधरता है। 4 बुद्धिमानोंका मन शोक
करनेवालोंके घर की ओर लगा रहता है परन्तु मूर्खोंका मन आनन्द करनेवालोंके
घर लगा रहता है। 5 मूर्खोंके गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुनना उत्तम है। 6
क्योंकि मूर्ख की हंसी हांडी के नीचे जलते हुए कांटो ही चरचराहट के समान होती
है; यह भी व्यर्य है। 7 निश्चय अन्धेर से बुद्धिमान बावला हो जाता है; और घूस से
बुद्धि नाश होती है। 8 किसी काम के आरम्भ से उसका अन्त उत्तम है; और
धीरजवन्त पुरूष गर्वी से उत्तम है। 9 अपके मन में उतावली से क्रोधित न हो,
क्योंकि क्रोध मूर्खोंही के हृदय में रहता है। 10 यह न कहना, बीते दिन इस से
क्योंउत्तम थे? क्योंकि यह तू बुद्धिमानी से नहीं पूछता। 11 बुद्धि बपौती के साय
अच्छी होती है, वरन जीवित रहनेवालोंके लिथे लाभकारी है। 12 क्योंकि बुद्धि की

आड़ रूपके की आड़ का काम देता है; परन्तु ज्ञान की श्रेष्टता यह है कि बुद्धि से
उसके रखनेवालोंके प्राण की रझा होती है। 13 परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर;
जिस वस्तु को उस ने टेढ़ा किया हो उसे कौन सीधा कर सकता है? 14 सुख के
दिन सुख मान, और दु:ख के दिन सोच; क्योंकि परमेश्वर ने दोनोंको एक ही संग
रखा है, जिस से मनुष्य अपके बाद होनेवाली किसी बात को न बूफ सके। 15
अपके व्यर्थ जीवन में मैं ने यह सब कुछ देखा है; कोई धर्मी अपके धर्म का काम
करते हुए नाश हो जाता है, और दुष्ट बुराई करते हुए दीर्घायु होता है। 16 अपके को
बहुत धर्मी न बना, और न अपके को अधिक बुद्धिमान बना; तू क्योंअपके की
नाश का कारण हो? 17 अत्यन्त दुष्ट भी न बन, और न मूर्ख हो; तू क्योंअपके
समय से पहिले मरे? 18 यह अच्छा है कि तू इस बात को पकड़े रहे; ओर उस बात
पर से भी हाथ न उठाए; क्योंकि जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब
कठिनाइयोंसे पार जो जाएगा।। 19 बुद्धि ही से नगर के दस हाकिमोंकी अपेझा
बुद्धिमान को अधिक सामर्थ प्राप्त होती है। 20 नि:सन्देह पृय्वी पर कोई ऐसा धर्मी
मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो।। 21 जितनी बातें
कही जाएं सब पर कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझी को
शाप देता है; 22 क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने भी बहुत बेर औरोंको शाप
दिया है।। 23 यह सब मैं ने बुद्धि से जांच लिया है; मैं ने कहा, मैं बुद्धिमान हो
जाऊंगा; परन्तु यह मुझ से दूर रहा। 24 वह जो दूर और अत्यन्त गहिरा है,
उसका भेद कौन पा सकता है? 25 मैं ने अपना मन लगाया कि बुद्धि के विषय में
जान लूं; कि खोज निकालूं और उसका भेद जानूं, और कि दुष्टता की मूर्खता और
मूर्खता जो निरा बावलापन है जानूं। 26 और मैं ने मृत्यु से भी अधिक दृ:खदाई

एक वस्तु पाई, अर्यात् वह स्त्री जिसका मन फन्दा और जाल है और जिसके हाथ
हयकडिय़ां है; (जिस पुरूष से परमेश्वर प्रसन्न है वही उस से बचेगा, परन्तु पापी
उसका शिकाल होगा) 27 देख, उपकेशक कहता है, मैं ने ज्ञान के लिथे अलग
अलग बातें मिलाकर जांचीं, और यह बात निकाली, 28 जिसे मेरा मन अब तक
ढूंढ रहा है, परन्तु नहीं पाया। हजार में से मैं ने एक पुरूष को पाया, परन्तु उन में
एक भी स्त्री नहीं पाई। 29 देखो, मैं ने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने
मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्होंने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं।।

सभोपदेशक 8

1 बुद्धिमान के तुल्य कौन है? और किसी बात का अर्य कौन लगा सकता है?
मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख चमकता, और उसके मुचा की कठोरता दूर
हो जाती है। 2 मैं तुझे सम्मति देता हूं कि परमेश्वर की शपय के कारण राजा की
आज्ञा मान। 3 राजा के साम्हने से उतावली के साय न लौटना और न बुरी बात
पर हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है। 4 क्योंकि राजा के वचन
में तो सामर्य्य रहती है, और कौन उस से कह सकता है कि तू क्या करता है? 5 जो
आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और
न्याय का भेद जानता है। 6 क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है,
यद्यिप मनुष्य का दु:ख उसके लिथे बहुत भारी होता है। 7 वह नहीं जानता कि
क्या होनेवाला है, और कब होगा? यह उसको कौन बता सकता है? 8 ऐसा कोई
मनुष्य नहीं जिसका वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले, और
न कोई मृत्यु के दिन पर अधिक्कारनी होता है; और न उसे लड़ाई से छुट्टी मिल

सकती है, और न दुष्ट लोग अपक्की दुष्टता के कारण बच सकते हैं। 9 जितने
काम धरती पर किए जाते हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखने में यह सब कुछ मैं ने
देखा, और यह भी देखा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिक्कारनी होकर
अपके ऊपर हानि लाता है।। 10 तब मैं ने दुष्टोंको गाढ़े जाते देखा; अर्यात् उनकी
तो कब्र बनी, परन्तु जिन्होंने ठीक काम किया या वे पवित्रस्यान से निकल गए
और उनका स्मरण भी नगर में न रहा; यह भी व्यर्य ही है। 11 बुरे काम के दण्ड
की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्योंका मन बुरा काम करने की
इच्छा से भरा रहता है। 12 चाहे पापी सौ बार पाप करे अपके दिन भी बढ़ाए,
तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और अपके तई उसको सम्मुख
जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा; 13 परन्तु दुष्ट का भला नहीं होने
का, और न उसकी जीवनरूपी छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का
भय नहीं मानता।। 14 एक व्यर्य बात पृय्वी पर होती है, अर्यात् ऐसे धर्मी हैं
जिनकी वह दशा होती है जो दुष्टोंकी होनी चाहिथे, और ऐसे दुष्ट हैं जिनकी वह
दशा होती है हो धमिर्योंकी होनी चाहिथे। मैं ने कह कि यह भी व्यर्य ही है। 15 तब
मैं ने आनन्द को सराहा, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिथे खाने-पीने और
आनन्द करने को छोड़ और कुछ भी अच्छा नहीं, क्योंकि यही उसके जीवन भर
जो परमेश्वर उसके लिथे धरती पर ठहराए, उसके परिश्रम में उसके संग बना
रहेगा।। 16 जब मैं ने बुद्धि प्राप्त करने और सब काम देखने के लिथे जो पृय्वी पर
किए जाते हैं अपना मन लगाया, कि कैसे मनुष्य रात-दिन जागते रहते हैं; 17
तब मैं ने परमेश्वर का सारा काम देखा जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी याह
मनुष्य नहीं पा सकता। चाहे मनुष्य उसकी खोज में कितना भी परिश्रम करे,

तौभी उसको न जान पाएगा; और यद्यिप बुद्धिमान कहे भी कि मैं उसे समझूंगा,
तौभी वह उसे न पा सकेगा।।

सभोपदेशक 9

1 यह सब कुछ मैं ने मन लगाकर विचारा कि इन सब बातोंका भेद पाऊं, कि
किस प्रकार धर्मी और बुद्धिमान लाग और उनके काम परमेश्वर के हाथ में हैं;
मनुष्य के आगे सब प्रकार की बातें हैं परन्तु वह नहीं जानता कि वह प्रेम है व
बैर। 2 सब बातें सभोंको एक समान होती है, धर्मी हो या दुष्ट, भले, शुद्ध या अशुद्ध,
यज्ञ करने और न करनेवाले, सभोंकी दशा एक ही सी होती है। जैसी भले मनुष्य
की दशा, वैसी ही पापी की दशा; जैसी शपय खानेवाले की दशा, वैसी ही उसकी जो
शपय खाने से डरता है। 3 जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में यह एक दोष
है कि सब लोगोंकी एक सी दशा होती है; और मनुष्योंके मनोंमें बुराई भरी हुई है,
और जब तक वे जीवित रहते हैं उनके मन में बावलापन रहता है, और उसके बाद
वे मरे हुओं में जा मिलते हैं। 4 उसको परन्तु जो सब जीवतोंमें है, उसे आशा है,
क्योंकि जीवता कुत्ता मरे हुए सिंह से बढ़कर है। 5 क्योंकि जीवते तो इतना जानते
हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और
बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। 6 उनका प्रेम और
उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया
जाता है उस में सदा के लिथे उनका और कोई भाग न होगा।। 7 अपके मार्ग पर
चला जा, अपक्की रोटी आनन्द से खाया कर, और मन में सुख मानकर अपना
दाखमधु पिया कर; क्योंकि परमेश्वर तेरे कामोंसे प्रसन्न हो चुका है।। 8 तेरे वस्त्र

सदा उजले रहें, और तेरे सिर पर तेल की घटी न हो।। 9 अपके व्यर्थ जीवन के
सारे दिन जो उस ने सूर्य के नीचे तेरे लिथे ठहराए हैं अपक्की प्यारी पत्नी के संग
में बिताना, क्योंकि तेरे जीवन और तेरे परिश्रम में जो तू सूर्य के नीचे करता है
तेरा यही भाग है। 10 जो काम तुझे मिले उसे अपक्की शक्ति भर करना, क्योंकि
अधोलोक में जहां तू जानेवाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है।। 11
फिर मैं ने धरती पर देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेवाले और न युद्ध में शूरवीर
जीतते; न बुद्धिमान लोग रोटी पाते न समझवाले धन, और न प्रवीणोंपर अनुग्रह
होता है, वे सब समय और संयोग के वश में है। 12 क्योंकि मनुष्य अपना समय
नहीं जानता। जैसे मछलियां दुखदाई जाल में बफती और चिडिय़े फन्दे में फंसती
हैं, वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फंस जाते
हैं।। 13 मैं ने सूर्य के नीचे इस प्रकार की बुद्धि की बात भी देखी है, जो मुझे बड़ी
जान पक्की। 14 एक छोटा सा नगर या, जिस में योड़े ही लोग थे; और किसी बड़े
राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया, और उसके विरूद्ध बड़े बड़े घुस
बनवाए। 15 परन्तु उस में एक दरिद्र बुद्धिमान पुरूष पाया गया, और उस ने उस
नगर को अपक्की बुद्धि के द्वारा बचाया। तौभी किसी ने उस दरिद्र का स्मरण न
रखा। 16 तब मैं ने कहा, यद्यपि दरिद्र की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है और उसका
वचन कोई नहीं सुनता तौभी पराक्रम से बुद्धि उत्तम है। 17 बुद्धिमानोंके वचन जो
धीमे धीमे कहे जाते हैं वे मूर्खोंके बीच प्रभुता करनेवाले के चिल्ला चिल्लाकर
कहने से अधिक सुने जाते हैं। 18 लड़ाई के हयियारोंसे बुद्धि उत्तम है, परन्तु एक
पापी बहुत भलाई नाश करता है।।

सभोपदेशक 10

1 मार हुई मक्खियोंके कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है; और
योड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा को घटा देती है। 2 बुद्धिमान का मन उचित
बात की ओर रहता है परन्तु मूर्ख का मन उसके विपक्कीत रहता है। 3 वरन जब
मूर्ख मार्ग पर चलता है, तब उसकी समझ काम नहीं देती, अैर वह सब से कहता
है, मैं मूर्ख हूं।। 4 यदि हाकिम का क्रोध तुझ पर भड़के, तो अपना स्यान न
छोड़ना, क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रूकते हैं।। 5 एक बुराई है जो मैं ने
सूर्य के नीचे देखी, वह हाकिम की भूल से होती है: 6 अर्यात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के
स्यानोंमें ठहराए जाते हैं, और धनवाल लोग नीचे बैठते हैं। 7 मैं ने दासोंको
घोड़ोंपर चढ़े, और रईसोंको दासोंकी नाई भूमि पर चलते हुए देखा है।। 8 जो
गड़हा खोदे वह उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़े उसको सर्प डसेगा। 9 जो पत्यर
फोड़े, वह उन से घायल होगा, और जो लकड़ी काटे, उसे उसी से डर होगा। 10 यदि
कुल्हाड़ा योया हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना
पकेगा; परन्तु सफल होने के लिथे बुद्धि से लाभ होता है। 11 यदि मंत्र से पहिले
सर्प डसे, तो मंत्र पढ़नेवाले को कुछ भी लाभ नहीं।। 12 बुद्धिमान के वचनोंके
कारण अनुग्रह होता है, परन्तु मूर्ख अपके वचनोंके द्वारा नाश होते हैं। 13 उसकी
बात का आरम्भ मूर्खता का, और उनका अन्त दुखदाई बावलापन होता है। 14
मूर्ख बहुत बातें बढ़ाकर बोलता है, तौभी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा,
और कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होनेवाला है? 15 मूर्ख को परिश्रम से
यकावट ही होती है, यहां तक कि वह नहीं जानता कि नगर को कैसे जाए।। 16 हे
देश, तुझ पर हाथ जब तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रात:काल भोज करते
हैं! 17 हे देश, तू धन्य है जब तेरा राजा कुलीन है; और तेरे हाकिम समय पर भोज

करते हैं, और वह भी मतवाले होने को नहीं, वरन्त बल बढ़ाने के लिथे! 18
आलस्य के कारण छत की कडिय़ां दब जाती हैं, और हाथोंकी सुस्ती से घर चूता
है। 19 भोज हंसी खुशी के लिथे किया जाता है, और दाखमधु से जीवन को
आनन्द मिलता है; और रूपयोंसे सब कुछ प्राप्त होता है। 20 राजा को मन में भी
शाप न देना, न धनवान को अपके शयन की कोठरी में शाप देना; क्योंकि कोई
आकाश का पक्की तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़ानेवाला जन्तु उस बात
को प्रगट कर देगा।।

सभोपदेशक 11

1 अपक्की रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर
पाएगा। 2 सात वरन आठ जनोंको भी भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथ्वी
पर क्या विपत्ति आ पकेगी। 3 यदि बादल जल भरे हैं, तब उसका भूमि पर उण्डेल
देते हैं; और वृझ चाहे दक्खिन की ओर गिरे या उत्तर की ओर, तौभी जिस स्यान
पर वृझ गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा। 4 जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न
पाएगा; और जो बादलोंको देखता रहेगा वह लवने न पाएगा। 5 जैसे तू वायु के
चलने का मार्ग नहीं जानता और किस रीति से गर्भवती के पेट में हड्डियां बढ़ती
हैं, वैसे ही तू परमेश्वर का काम नहीं जानता जो सब कुछ करता है।। 6 भोर को
अपना बीज बो, और सांफ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि
कौन सुफल होगा, यह वा वह वा दोनोंके दोनोंअच्छे निकलेंगे। 7 उजियाला
मनभावना होता है, और धूप के देखने से आंखोंको सुख होता है। 8 यदि मनुष्य
बहुत वर्ष जीवित रहे, तो उन सभोंमें आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि

अन्धिक्कारने से दिन भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है वह व्यर्थ है।। 9 हे जवान,
अपक्की जवानी में आनन्द कर, और अपक्की जवानी के दिनोंके मगन रह;
अपक्की मनमानी कर और अपक्की आंखोंकी दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह
जान रख कि इन सब बातोंके विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।। 10 अपके
मन से खेद और अपक्की देह से दु:ख दूर कर, क्योंकि लड़कपन और जवानी
दोनो व्यर्थ है।

सभोपदेशक 12

1 अपक्की जवानी के दिनोंमें अपके सृजनहार को स्मरण रख, इस से पहिले कि
विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगाता।
2 इस से पहिले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाएं,
और वर्षा होने के बादल फिर घिर जाएं; 3 उस समय घर के पहरूथे कांपेंगे, और
बलवन्त फुक जायंगे, और पिसनहारियां योड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी,
और फरोखोंमें से देखनेवालियां अन्धी हो जाएगी, 4 और सड़क की ओर के
किवाड़ बन्द होंगे, और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा, और तड़के चिडिय़ा
बोलते ही एक उठ जाएगा, और सब गानेवालियोंका शब्द धीमा हो जाएगा। 5
फिर जो ऊंचा हो उस से भय खाया जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी
जाएंगी; और बादाम का पेड़ फूलेगा, और टिड्डी भी भारी लगेगी, और भूख
बढ़ानेवाला फल फिर काम न देगा; क्योंकि मनुष्य अपके सदा के घर को जाथेगा,
और रोने पीटनेवाले सड़क सड़क फिरेंगे। 6 उस समय चान्दी का तार दो टूकड़े हो
जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा; और सोते के पास घड़ा फूटेगा, और कुण्ड के

पास रहट टूट जाएगा, 7 जब मिट्टी ज्योंकी त्योंमिट्टी में मिल जाएगी, और
आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी। 8 उपकेशक कहता है,
सब व्यर्थ ही व्यर्थ; सब कुछ व्यर्थ है। 9 उपकेशक जो बुद्धिमान या, वह प्रजा को
ज्ञान भी सिखाता रहा, और ध्यान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत से
नीतिवचन क्रम से रखता या। 10 उपकेशक ने मनभावने शब्द खोजे और सीधाई
से थे सच्ची बातें लिख दीं।। 11 बुद्धिमानोंके वचन पैनोंके समान होते हैं, और
सभाओं के प्रधानोंके वचन गाड़ी हुई कीलोंके समान हैं, क्योंकि एक ही चरवाहे की
ओर से मिलते हैं। 12 हे मेरे पुत्र, इन्ही में चौकसी सीख। बहुत पुस्तकोंकी रचना
का अन्त नहीं होता, और बहुत पढ़ना देह को यका देता है।। 13 सब कुछ सुना
गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का
पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। 14 क्योंकि परमेश्वर सब
कामोंऔर सब गुप्त बातोंका, चाहे वे भली होंया बुरी, न्याय करेगा।।

श्रेष्ठगीत 1

1 श्रेष्टगीत जो सुलैमान का है।। 2 वह अपके मुंह के चुम्बनोंसे मुझे चूमे! क्योंकि
तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है, 3 तेरे भांति भांति के इत्रोंका सुगन्ध उत्तम है, तेरा
नाम उंडेले हुए इत्र के तुल्य है; इसीलिथे कुमारियां तुझ से प्रेम रखती हैं 4 मुझे
खींच ले; हम तेरे पीछे दौड़ेंगे राजा मुझे अपके महल में ले आया है। हम तुझ में
मगन और आनन्दित होंगे; हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे; वे
ठीक ही तुझ से प्रेम रखती हैं।। 5 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं काली तो हूं परन्तु
सुन्दर हूं, केदार के तम्बुओं के और सुलैमान के पर्दोंके तुल्य हूं। 6 मुझे इसलिथे

न घूर कि मैं साँवली हूं, क्योंकि मैं धूप से फुलस गई। मेरी माता के पुत्र मुझ से
अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियोंकी रखवालिन बनाया; परन्तु मैं ने
अपक्की निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की! 7 हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता, तू
अपक्की भेड़-बकरियां कहां चराता है, दोपहर को तू उन्हें कहां बैठाता है; मैं
क्योंतेरे संगियोंकी भेड़-बकरियोंके पास घूंघट काढ़े हुए भटकती फिरूं? 8 हे
स्त्रियोंमें सुन्दरी, यदि तू यह न जानती हो तो भेड़-बकरियोंके खुरोंके चिन्होंपर
चल और चरावाहोंके तम्बुओं के पास अपक्की बकरियोंके बच्चोंको चरा।। 9 हे
मेरी प्रिय मैं ने तेरी तुलना फिरौन के रथोंमें जुती हुई घोड़ी से की है। 10 तेरे गाल
केशोंके लटोंके बीच क्या ही सुन्दर हैं, और तेरा कण्ठ हीरोंकी लड़ोंके बीच। 11
हम तेरे लिथे चान्दी के फूलदार सोने के आभूषण बनाएंगे। 12 जब राजा अपक्की
मेज के पास बैठा या मेरी जटामासी की सुगन्ध फैल रही यी। 13 मेरा प्रेमी मेरे
लिथे लोबान की यैली के समान है जो मेरी छातियोंके बीच में पक्की रहती है।।
14 मेरा प्रमी मेरे लिथे मेंहदी के फूलोंके गुच्छे के समान है, जो एनगदी की दाख
की बारियोंमें होता है।। 15 तू सुन्दरी है, हे मेरी प्रिय, तू सुन्दरी है; तेरी आंखें
कबूतरी की सी हैं। 16 हे मेरी प्रिय तू सुन्दर और मनभावनी है। और हमारा
बिछौना भी हरा है; 17 हमारे घर के बरगे देवदार हैं और हमारी छत की कडियां
सनौवर हैं।।

श्रेष्ठगीत 2

1 मैं शारोन देश का गुलाब और तराइयोंमें का सोसन फूल हूं।। 2 जैसे सोसन फूल
कटीले पेड़ोंके बीच वैसे ही मेरी प्रिय युवतियोंके बीच में है।। 3 जैसे सेब के वृझ

जंगल के वृझोंके बीच में, वैसे ही मेरा प्र्रेमी जवानोंके बीच में है। मैं उसकी छाया
में हषिर्त होकर बैठ गई, और उसका फल मुझे खाने मे मीठा लगा। 4 वह मुझे
भोज के घर में ले आया, और उसका जो फन्डा मेरे ऊपर फहराता या वह प्रेम या।
5 मुझे सूखी दाखोंसे संभालो, सेब खिलाकर बल दो: क्योंकि मैं प्रेम में रोगी
हूं। 6 काश, उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और अपके दहिने हाथ से
वह मेरा आलिंगन करता! 7 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियोंऔर
मैदान की हरिणियोंकी शपय धराकर कहती हूं, कि जब तक प्रेम आप से न उठे,
तब तक उसको न उसकाओ न जगाओ।। 8 मेरे प्रेमी का शब्द सुन पड़ता है!
देखो, वह पहाड़ोंको फान्दता हुआ आता है। 9 मेरा प्रेमी चिकारे वा जवान हरिण
के समान है। देखो, वह हमारी भीत के पीछे खड़ा है, और खिड़कियोंकी ओर ताक
रहा है, और फंफरी में से देख रहा है। 10 मेरा प्रेमी मुझ से कह रहा है, हे मेरी प्रिय,
हे मेरी सुन्दरी, उठकर चक्की आ; 11 क्योंकि देख, जाड़ा जाता रहा; वर्षा भी हो
चुकी और जाती रही है। 12 पृय्वी पर फूल दिखाई देते हैं, चिडिय़ोंके गाने का
समय आ पहुंचा है, और हमारे देश में पिन्डुक का शब्द सुनाई देता है। 13 अंजीर
पकने लगे हैं, और दाखलताएं फूल रही हैं; वे सुगन्ध दे रही हैं। हे मेरी प्रिय, हे
मेरी सुन्दरी, उठकर चक्की आ। 14 हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दरारोंमें और
टीलोंके कुज्ज में तेरा मुख मुझे देखने दे, तेरा बोल मुझे सुनने दे, क्योंकि तेरा
बोल मीठा, और तेरा मुख अति सुन्दर है। 15 जो छोटी लोमडिय़ां दाख की
बारियोंको बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले, क्योंकि हमारी दाख की बारियोंमें फूल लगे
हैं।। 16 मेरा प्रमी मेरा है और मैं उसकी हूं, वह अपक्की भेड़-बकरियोंसोसन
फूलोंके बीच में चराता है। 17 जब तक दिन ठण्डा न हो और छाया लम्बी होते

होते मिट न जाए, तब तक हे मेरे प्रेमी उस चिकारे वा जवान हरिण के समान बन
जो बेतेर के पहाड़ोंपर फिरता है।

श्रेष्ठगीत 3

1 रात के समय में अपके पलंग पर अपके प्राणप्रिय को ढूंढ़ती रही; मैं उसे ढूंढ़ती
तो रही, परन्तु उसे न पाया; मैं ने कहा, मैं अब उठकर नगर में, 2 और सड़कोंऔर
चौकोंमें घूमकर अपके प्राणप्रिय को ढूंढूंगी। मैं उसे ढूंढती तो रही, परन्तु उसे न
पाया। 3 जो पहरूए नगर में घूमते थे, वे मुझे मिले, मैं ने उन से पूछा, क्या तुम ने
मेरे प्राणप्रिय को देखा है? 4 मुझ को उनके पास से आगे बढ़े योड़े ही देर हुई यी
कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया। मैं ने उसको पकड़ लिया, और उसको जाने न
दिया जब तक उसे अपक्की मात के घर अर्यात् अपक्की जननी की कोठरी में न
ले आई।। 5 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियोंऔर मैदान की
हरिणियोंकी शपय धराकर कहती हूं, कि जब तक प्रेम आप से न उठे, तब तक
उसको न उसकाओ और न जगाओ।। 6 यह क्या है जो धूएं के खम्भे के समान,
गन्धरस और लोबान से सुगन्धित, और व्योपारी की सब भांति की बुकनी लगाए
हुए जंगल से निकला आता है? 7 देखो, यह सुलैमान की पालकी है! उसके
चारोंओर इस्राएल के शूरवीरोंमें के साठ वीर चल रहे हैं। 8 वे सब के सब तलवार
बान्धनेवाले और युद्ध विद्या में निपुण हैं। प्रत्थेक पुरूष रात के डर से जांघ पर
तलवार लटकाए रहता है। 9 सुलैमान राजा ने अपके लिथे लबानोन के काठ की
एक बड़ी पालकी बनावा ली। 10 उस ने उसके खम्भे चान्दी के, उसका सिरहाना
सोने का, और गद्दी अर्गवानी रंग की बनवाई हे; और उसके बीच का स्यान

यरूशलेम की पुत्रियोंकी ओर से बड़े प्रेम से जड़ा गया है। 11 हे सिय्योन की
पुत्रियोंनिकलकर सुलैमान राजा पर दृष्टि डालो, देखो, वह वही मुकुट पहिने हुए है
जिसे उसकी माता ने उसके विवाह के दिन और उसके मन के आनन्द के दिन,
उसके सिर पर रखा या।।

श्रेष्ठगीत 4

1 हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर है! तेरी आंखें तेरी लटोंके बीच में कबूतरोंकी
सी दिखाई देती है। तेरे बाल उन बकरियोंके फुण्ड के समान हैं जो गिलाद पहाड़
के ढाल पर लेटी हुई हों। 2 तेरे दान्त उन ऊन कतरी हुई भेड़ोंके फुण्ड के समान हैं,
जो नहाकर ऊपर आईं हों, उन में हर एक के दो दो जुड़वा बच्चे होते हैं। और उन
में से किसी का साझी नहीं मरा। 3 तेरे होंठ लाल रंग की डोरी के समान हैं, और
तेरा मुंह मनोहर है, तेरे कपोल तेरी लटोंके नीचे अनार की फाँक से देख पड़ते हैं।
4 तेरा गला दाऊद के गुम्मट के समान है, जो अस्त्र-शस्त्र के लिथे बना हो, और
जिस पर हजार ढालें टंगी हुई हों, वे सब ढालें शूरवीरोंकी हैं। 5 तेरी दोनोंछातियां
मृग के दो जुड़वे बच्चोंके तुल्य हैं, जो सोसन फूलोंके बीच में चरते हों। 6 जब तक
दिन ठण्डा न हो, और छाया लम्बी होते होते मिट न जाए, तब तक मैं शीघ्रता से
गन्धरस के पहाड़ और लोबान की पहाड़ी पर चला जाऊंगा। 7 हे मेरी प्रिय तू
सर्वांग सुन्दरी है; तुझ में कोई दोष नहीं। 8 हे मेरी दुल्हिन, तू मेरे संग लबानोन
से, मेरे संग लबानोन से चक्की आ। तू आमाना की चोटी पर से, शनीर और
हेर्मोन की चोटी पर से, सिहोंकी गुफाओं से, चितोंके पहाड़ोंपर से दृष्टि कर। 9 हे
मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तू ने मेरा मन मोह लिया है, तू ने अपक्की आंखोंकी

एक ही चितवन से, और अपके गले के एक ही हीरे से मेरा हृदय मोह लिया है। 10
हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तेरा प्रेम क्या ही मनोहर है! तेरा प्रेम दाखमधु से
क्या ही उत्तम है, और तेरे इत्रोंका सुगन्ध इस प्रकार के मसालोंके सुगन्ध से! 11
हे मेरी दुल्हिन, तेरे होठोंसे मधु टपकता है; तेरी जीभ के नीचे मधु ओर दूध रहता
है; तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध रहता है; तेरे वस्त्रोंका सुगन्ध लबानोन का सा
है। 12 मेरी बहिन, मेरी दुल्हिन, किवाड़ लगाई हुई बारी के समान, किवाड़ बन्द
किया हुआ सोता, ओर छाप लगाया हुआ फरना है। 13 तेरे अंकुर उत्तम फलवाली
अनार की बारी के तुल्य है, जिस में मेंहदी और सुम्बुल, 14 जटामासी और केसर,
लोबान के सब भांति के पेड़, मुश्क और दालचीनी, गन्धरस, अगर, आदि सब
मुख्य मुख्य सुगन्धद्रव्य होते हैं। 15 तू बारियोंका सोता है, फूटते हुए जल का
कुआँ, और लबानोन से बहती हुई धाराएं हैं।। 16 हे उत्तर वायु जाग, और हे
दक्खिनी वायु चक्की आ! मेरी बारी पर बह, जिस से उसका सुगन्ध फैले। मेरा
प्रेमी अपक्की बारी में आथे, और उसके उत्तम उत्तम फल खाए।।

श्रेष्ठगीत 5

1 हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, मैं अपक्की बारी में आया हूं, मैं ने अपना
गन्धरस और बलसान चुन लिया; मैं ने मधु समेत छत्ता खा लिया, मैं ने दूध और
दाखमधु भी लिया।। हे मित्रों, तुम भी खाओ, हे प्यारों, पियो, मनमाना पियो! 2
मैं मोती यी, परन्तु मेरा मन जागता या। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और
कहता है, हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लिथे द्वार
खोल; क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दोंसे

भीगी हैं। 3 मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मैं उसे फिर कैसे पहिनूं? मैं तो अपके
पांव धो चुकी थी अब उनको कैसे मैला करूं? 4 मेरे प्रेमी ने अपना हाथ किवाड़ के
छेद से भीतर डाल दिया, तब मेरा हृदय उसके लिथे उभर उठा। 5 मैं अपके प्रेमी
के लिथे द्वार खोलने को उठी, और मेरे हाथोंसे गन्धरस टपका, और मेरी
अंगुलियोंपर से टपकता हुआ गन्धरस बेण्डे की मूठोंपर पड़ा। 6 मैं ने अपके प्रेमी
के लिथे द्वार तो खोला परन्तु मेरा प्रेमी मुड़कर चला गया था। जब वह बोल रहा
था, तब मेरा प्राण घबरा गया था मैं ने उसको ढूंढ़ा, परन्तु न पाया; मैं ने उसको
पुकारा, परन्तु उस ने कुछ उत्तर न दिया। 7 पहरेवाले जो नगर में घूमते थे, मुझे
मिले, उन्होंने मुझे मारा और घायल किया; शहरपनाह के पहरूओं ने मेरी चद्दर
मुझ से छीन ली। 8 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूं,
यदि मेरा प्रेमी तुमको मिल जाए, तो उस से कह देना कि मैं प्रेम में रोगी हूं। 9 हे
स्त्रियोंमें परम सुन्दरी तेरा प्रेमी और प्रेमियोंसे किस बात में उत्तम है? तू क्योंहम
को ऐसी शपथ धराती है? 10 मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है, वह दस हजार में
उत्तम है। 11 उसका सिर चोखा कुन्दन है; उसकी लटकती हुई लटें कौवोंकी नाईं
काली हैं। 12 उसकी आंखें उन कबूतरोंके समान हैं जो दुध में नहाकर नदी के
किनारे अपके फुण्ड में एक कतार से बैठे हुए हों। 13 उसके गाल फूलोंकी फुलवारी
और बलसान की उभरी हुई क्यारियां हैं। उसके होंठ सोसन फूल हैं जिन से
पिघला हुआ गन्धरस टपकता है।। 14 उसके हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने के
किवाड़ हैं। उसका शरीर नीलम के फूलोंसे जड़े हुए हाथीदांत का काम है। 15
उसके पांव कुन्दन पर बैठाथे हुए संगमर्मर के खम्भे हैं। वह देखने में लबानोन
और सुन्दरता में देवदार के वृझोंके समान मनोहर है। 16 उसकी वाणी अति

मधुर है, हां वह परम सुन्दर है। हे यरूशलेम की पुत्रियो, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है।।

श्रेष्ठगीत 6

1 हे स्त्रियोंमें परम सुन्दरी, तेरा प्रेमी कहां गया? तेरा प्रेमी कहां चला गया कि हम
तेरे संग उसको ढूंढने निकलें? 2 मेरा प्रेमी अपक्की बारी में अर्यात् बलसान की
क्यारियोंकी ओर गया है, कि बारी में अपक्की भेड़-बकरियां चराए और सोसन
फूल बटोरे। 3 मैं अपके प्रेमी की हूं और मेरा प्रेमी मरा है, वह अपक्की
भेड़-बकरियां सोसन फूलोंके बीच चराता है। 4 हे मेरी प्रिय, तू तिर्सा की नाईं
सुन्दरी है तू यरूशलेम के समान रूपवान है, और पताका फहराती हुई सेना के
तुल्य भयंकर है। 5 अपक्की आंखें मेरी ओर से फेर ले, क्योंकि मैं उन से घबराता
हूं; तेरे बाल ऐसी बकरियोंके फुण्ड के समान हैं, जो गिलाद की ढलान पर लेटी हुई
देख पड़ती हों। 6 तेरे दांत ऐसी भेड़ोंके फुण्ड के समान हैं जिन्हें स्नान कराया
गया हो, उन में प्रत्थेक दो दो जुड़वा बच्चे देती हैं, जिन में से किसी का सायी नहीं
मरा। 7 तेरे कपोल तेरी लटोंके नीचे अनार की फाँक से देख पड़ते हैं। 8 वहां साठ
रानियां और अस्सी रखेलियां और असंख्य कुमारियां भी हैं। 9 परन्तु मेरी
कबूतरी, मेरी निर्मल, अद्वैत है अपक्की माता की एकलौती अपक्की जननी की
दुलारी है। पुत्रियोंने उसे देखा और धन्य कहा; रानियोंऔर रखेलियोंने देखकर
उसकी प्रशंसा की। 10 यह कौन है जिसकी शोभा भोर के तुल्य है, जो सुन्दरता में
चन्द्रमा और निर्मलता में सूर्य और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर
दिखाई पड़ती है? 11 मैं अखरोट की बारी में उत्तर गई, कि तराई के फूल देखूं, और

देखूं की दाखलता में कलिथें लगीं, और अनारोंके फूल खिले कि नहीं। 12 मुझे
पता भी न या कि मेरी कल्पना ने मुझे अपके राजकुमार के रय पर चढ़ा दिया।।
13 लौट आ, लौट आ, हे शूलम्मिन, लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ पर दृष्टि
करें।। क्या तुम शूलेम्मिन को इस प्रकार देखोगे जैसा महनैम के नृत्य को देखते
हो?

श्रेष्ठगीत 7

1 हे कुलीन की पुत्री, तेरे पांव जूतियोंमें क्या ही सुन्दर हैं! तेरी जांघोंकी गोलाई
ऐसे गहनोंके समान है, जिसको किसी निपुण कारीगर ने रचा हो। 2 तेरी नाभि
गोल कटोरा है, जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो तेरा पेट गेहूं के ढेर के
समान है जिसके चहुँओर सोसन फूल हों। 3 तेरी दोनोंछातियां मृगनी के दो जुड़वे
बच्चोंके समान हैं। 4 तेरा गला हाथीदांत का गुम्मट है। तेरी आंखें हेशबोन के उन
कुन्डोंके समान हैं, जो बत्रब्बीम के फाटक के पास हैं। तेरी नाक लबानोन के
गुम्मट के तुल्य है, जिसका मुख दमिश्क की ओर है। 5 तेरा सिर तुझ पर कर्मेल
के समान शोभायमान है, और तेरे सर की लटें अर्गवानी रंग के वस्त्र के तुल्य है;
राजा उन लआओं में बंधुआ हो गया है। 6 हे प्रिय और मनभावनी कुमारी, तू कैसी
सुन्दर और कैसी मनोहर है! 7 तेरा डील डौल खजूर के समान शानदार है और
तेरी छातियां अंगूर के गुच्छोंके समान हैं।। 8 मैं ने कहा, मैं इस खजूर पर चढ़कर
उसकी डालियोंको पकडूंगा। तेरी छातियां अंगूर के गुच्छे हो, और तेरी श्वास का
सुगन्ध सेबोंके समान हो, 9 और तेरे चुम्बन उत्तम दाखमधु के समान हैं जो
सरलता से ओठोंपर से धीरे धीरे बह जाती है।। 10 मैं अपक्की प्रेमी की हूं। और

उसकी लालसा मेरी ओर नित बनी रहती है। 11 हे मेरे प्रेमी, आ, हम खेतोंमें
निकल जाएं और गांवोंमें रहें; 12 फिर सबेरे उठकर दाख की बारियोंमें चलें, और
देखें कि दाखलता में कलिथें लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिलें हैं या नहीं,
और अनार फूले हैं वा नहीं वहां मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊंगी। 13 दोदाफलोंसे
सुगन्ध आ रही है, और हमारे द्वारोंपर सब भांति के उत्तम फल हैं, नथे और पुराने
भी, जो, हे मेरे प्रेमी, मैं ने तेरे लिथे इकट्ठे कर रखे हैं।।

श्रेष्ठगीत 8

1 भला होता कि तू मेरे भाई के समान होता, जिस ने मेरी माता की छातियोंसे दूध
पिया! तब मैं तुझे बाहर पाकर तेरा चुम्बन लेती, और कोई मेरी निन्दा न करता।
2 मैं तुझ को अपक्की माता के घर ले चलती, और वह मुझ को सिखाती, और मैं
तुझे मसाला मिला हुआ दाखमघु, और अपके अनारोंका रस पिलाती। 3 काश,
उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और अपके दहिने हाथ से वह मेरा
आलिंगन करता! 4 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपय धराती हूं, कि तुम
मेरे प्रेमी को न जगाना जब तक वह स्वयं न उठना चाहे।। 5 यह कौन है जो
अपके प्रेमी पर टेक लगाथे हुए जंगल से चक्की आती है? सेब के पेड़ के नीचे मैं ने
तुझे जगया। वहां तेरी माता ने तुझे जन्म दिया वहां तेरी माता को पीड़ाएं उठीं।।
6 मुझे नगीने की नाईं अपके हृदय पर लगा रख, और ताबीज की नाईं अपक्की
बांह पर रख; क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्यी है, और ईर्षा कब्र के समान
निर्दयी है। उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है। 7
पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुफ सकता, और न महानदोंसे डूब सकता है। यदि

कोई अपके घर की सारी सम्पत्ति प्रेम की सन्ती दे दे तौभी वह अत्यन्त तुच्छ
ठहरेगी।। 8 हमारी एक छोटी बहिन है, जिसकी छातियां अभी नहीं उभरी। जिस
दिन हमारी बहिन के ब्याह की बात लगे, उस दिन हम उसके लिथे क्या करें? 9
यदि वह शहरपनाह हो तो हम उस पर चान्दी का कंगूरा बनाएंगे; और यदि वह
फाटक का किवाड़ हो, तो हम उस पर देवदारू की लकड़ी के पटरे लगाएंगे।। 10 मैं
शहरपनाह यी और मेरी छातियां उसके गुम्मट; तब मैं अपके प्रेमी की दृष्टि में
शान्ति लानेवाले के नाईं यी।। 11 बाल्हामोन में सुलैमान की एक दाख की बारी
यी; उस ने वह दाख की बारी रखवालोंको सौंप दी; हर एक रखवाले को उसके
फलोंके लिथे चान्दी के हजार हजार टुकड़े देने थे। 12 मेरी निज दाख की बारी मेरे
ही लिथे है; हे सुलैमान, हजार तुझी को और फल के रखवालोंको दो सौ मिलें।। 13
तू जो बारियोंमें रहती है, मेरे मित्र तेरा बोल सुनना चाहते हैं; उसे मुझे भी सुनने
दे।। 14 हे मेरे प्रेमी, शीघ्रता कर, और सुगन्धद्रव्योंके पहाड़ोंपर चिकारे वा जवान
हरिण के नाई बन जा।।

यशायाह 1

1 आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन, जिसको उस ने यहूदा और यरूशलेम के
विषय में उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह नाम यहूदा के राजाओं
के दिनोंमें पाया। 2 हे स्वर्ग सुन, और हे पृय्वी कान लगा; क्योंकि यहोवा कहता
है: मैं ने बालबच्चोंका पालन पोषण किया, और उनको बढ़ाया भी, परन्तु उन्होंने
मुझ से बलवा किया। 3 बैल तो अपके मालिक को और गदहा अपके स्वामी की
चरनी को पहिचानता है, परन्तु इस्राएल मुझें नहीं जानता, मेरी प्रजा विचार नहीं

करती।। 4 हाथ, यह जाति पाप से कैसी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा
हुआ है! इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, थे लड़केबाले कैसे बिगड़े हुए हैं! उन्होंने
यहोवा को छोड़ दिया, उन्होंने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है! वे पराए
बनकर दूर हो गए हैं।। 5 तुम बलवा कर करके क्योंअधिक मार खाना चाहते हो?
तुम्हारा सिर घावोंसे भर गया, और तुम्हारा हृदय दु:ख से भरा है। 6 नख से सिर
तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और
सड़े हुए घाव हैं जो न दबाथे गए, न बान्धे गए, न तेल लगाकर नरमाथे गए हैं।।
7 तुम्हारा देश उजड़ा पड़ा है, तुम्हारे नगर भस्म हो गए हैं; तुम्हारे खेतोंको
परदेशी लोग तुम्हारे देखते ही निगल रहे हैं; वह परदेश्यथें से नाश किए हुए देश
के समान उजाड़ है। 8 और सिय्योन की बेटी दाख की बारी में की फोपक्की की
नाईं छोड़ दी गई है, वा ककड़ी के खेत में की छपरिया या घिरे हुए नगर के समान
अकेली खड़ी है। 9 यदि सेनाओं का यहोवा हमारे योड़े से लोगोंको न बचा रखता,
तो हम सदोम के समान हो जाते, और अमोरा के समान ठहरते।। 10 हे सदोम के
न्याइयों, यहोवा का वचन सुनो! हे अमोरा की प्रजा, हमारे परमेश्वर की शिझा पर
कान लगा। 11 यहोवा यह कहता है, तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के
हैं? मैं तो मेढ़ोंके होमबलियोंसे और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं; 12
मैं बछड़ोंवा भेड़ के बच्चोंवा बकरोंके लोहू से प्रसन्न नहीं होता।। तुम जब अपके
मुंह मुझे दिखाने के लिथे आते हो, तब यह कौन चाहता है कि तुम मेरे आंगनोंको
पांव से रौंदो? 13 व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ; धूप से मुझे घृणा है। नथे चांद
और विश्रमदिन का मानना, और सभाओं का प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता
है। महासभा के साय ही साय अनर्य काम करना मुझ से सहा नहीं जाता। 14

तुम्हारे नथे चांदोंऔर नियत पर्वोंके मानने से मैं जी से बैर रखता हूं; वे सब मुझे
बोफ से जान पड़ते हैं, मैं उनको सहते सहते उकता गया हूं। 15 जब तुम मेरी ओर
हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुंह फेर लूंगा; तुम कितनी ही प्रार्यना क्योंन करो,
तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। 16 अपके को
धोकर पवित्र करो: मेरी आंखोंके साम्हने से अपके बुरे कामोंको दूर करो; भविष्य
में बुराई करता छोड़ दो, 17 भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को
सुधारो; अनाय का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकद्दमा लड़ो।। 18 यहोवा कहता
है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे
हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के
समान श्वेत हो जाएंगे। 19 यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, 20 तो इस देश
के उत्तम से उत्तम पदार्यै खाओगे; और यदि तुम ने मानो और बलवा करो, तो
तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है।। 21 जो नगरी सती यी सो
क्योंकर व्यभिचारिन हो गई! वह न्याय से भरी यी और उस में धर्म पाया जाता
या, परन्तु अब उस में हत्यारे ही पाए जाते हैं। तेरी चान्दी घातु का मैल हो गई,
22 तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है। 23 तेरे हाकिम हठीले और चोरोंसे मिले
हैं। वे सब के सब घूस खानेवाले और भेंट के लालची हैं। वे अनाय का न्याय नहीं
करते, और न विधवा का मुकद्दमा अपके पास आने देते हैं। 24 इस कारण प्रभु
सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है: सुनो, मैं अपके शत्रुओं
को दूर करके शान्ति पाऊंगा, और अपके बैरियोंसे पलटा लूंगा। 25 और मैं तुम
पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा धातु का मैल पूरी रीति से दूर करूंगा। 26 और मैं तुम में
पहिले की नाईं न्यायी और आदि काल के समान मंत्री फिर नियुक्त करूंगा। उसके

बाद तू धम्र्पुरी और सती नगरी कहलाएगी।। 27 सिय्योन न्याय के द्वारा, और
जो उस में फिरेंगे वे धर्म के द्वारा छुड़ा लिए जाएंगे। 28 परन्तु बलवाइयोंऔर
पापियोंका एक संग नाश होगा, और जिन्होंने यहोवा को त्यागा है, उनका अन्त
हो जाएगा। 29 क्योंकि जिन बांजवृझोंसे तुम प्रीति रखते थे, उन से वे लज्जित
होंगे, और जिन बारियोंसे तुम प्रसन्न रहते थे, उसके कारण तुम्हारे मुंह काले
होंगे। 30 क्योंकि तुम पत्ते मुर्फाए हुए बांजवृझ के, और बिना जल की बारी के
समान हो जाओगे। 31 और बलवान तो सन और उसका काम चिंगारी बनेगा,
और दोनोंएक साय जलेंगे, और कोई बुफानेवाला न होगा।।

यशायाह 2

1 आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उस ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में
दर्शन में पाया।। 2 अन्त के दिनोंमें ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब
पहाड़ोंपर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाडि़योंसे अधिक ऊंचा किया जाएगा;
और हर जाति के लागे धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगें। 3 और बहुत देशोंके लागे
आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के
परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपके मार्ग सिखाएगा, और हम उसके
पयोंपर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्या सिय्योन से, और उसका वचन
यरूशलेम से निकलेगा। 4 वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के
लोगोंके फगड़ोंको मिटाएगा; और वे अपक्की तलवारें पीटकर हल के फाल और
अपके भालोंको हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध फिर
तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे।। 5 हे याकूब के

घराने, आ, हम यहोवा के प्रकाश में चलें।। 6 तू ने अपक्की प्रजा याकूब के घराने
को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्वियोंके व्यवहार पर तन मन से चलते और
पलिश्तियोंकी नाईं टोना करते हैं, और परदेशियोंके साय हाथ मिलाते हैं। 7
उनका देश चान्दी और सोने से भरपूर है, और उनके रय अनगिनित हैं। 8 उनका
देश मूरतोंसे भरा है; वे अपके हाथोंकी बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उनहोंने
अपक्की उंगलियोंसे संवारा है, दण्डवत् करते हैं। 9 इस से मनुष्य फुकते, और
बड़े मनुष्य प्रणाम करते हैं, इस कारण उनको झमा न कर! 10 यहोवा के भय के
कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टान में घुस जा, और मिट्टी में छिप जा। 11
क्योंकि आदमियोंकी घमण्ड भरी आंखें नीची की जाएंगी और मनुष्योंका घमण्ड
दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा।। 12
क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियोंऔर ऊंची गर्दनवालोंपर और
उन्नति से फूलनेवालोंपर आएगा; और वे फुकाए जाएंगे; 13 और लबानोन के
सब देवदारोंपर जो ऊंचे और बड़ें हैं; 14 बासान के सब बांजवृझोंपर; और सब ऊंचे
पहाड़ोंऔर सब ऊंची पहाड़ियोंपर; 15 सब ऊंचे गुम्मटोंऔर सब दृढ़
शहरपनाहोंपर; 16 तर्शीश के सब जहाजोंऔर सब सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन
आता है। 17 और मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा, और मनुष्योंका घमण्ड नीचा
किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा। 18 और
मूरतें सब की सब नष्ट हो जाएंगी। 19 और जब यहोवा पृय्वी के कम्पित करने के
लिथे उठेगा, तब उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानोंकी
गुफाओं और भूमि के बिलोंमें जा घुसेंगे।। 20 उस दिन लोग अपक्की चान्दी-सोने
की मूरतोंको जिन्हें उन्होंने दण्डवत् करने के लिथे बनाया या, छछून्दरोंऔर

चमगीदड़ोंके आगे फेंकेंगे, 21 और जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिथे
उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टानोंकी
दरारोंओर पहाडिय़ोंके छेदोंमें घुसेंगे। 22 सो तुम मनुष्य से पके रहो जिसकी श्वास
उसके नयनोंमें है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

यशायाह 3

1 सुनों, प्रभु सेनाओं का यहोवा यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार का सहारा
और सिरहाना अर्यात् अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर
देगा; 2 और वी और योद्धा को, न्यायी और नबी को, भावी वक्ता और वृद्ध को,
पचास सिपाहियोंके सरदार और प्रतिष्ठित पुरूष को, 3 मन्त्री और चतुर कारीगर
को, और निपुण टोन्हे को भी दूर कर देगा। 4 और मैं लड़कोंको उनके हाकिम कर
दूंगा, और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे। 5 और प्रजा के लागे आपस में एक दूसरे
पर, और हर एक अपके पड़ोसी पर अंधेर करेंगे; और जवान वृद्ध जनोंसे और नीच
जन माननीय लोगोंसे असभ्यता का व्यवहार करेंगे।। 6 उस समय जब कोई
पुरूष अपके पिता के घर में अपके भाई को पकड़कर कहेगा कि तेरे पास तो वस्त्र
है, आ हमारा न्यायी हो जा और इस उजड़े देश को अपके वश में कर ले; 7 तब वह
शपय खाकर कहेगा, मैं चंगा करनेहारा न हूंगा; क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है
और न कपके; इसलिथे तुम मुझे प्रजा का न्यायी नहीं नियुक्त कर सकोगे। 8
यरूशलेम तो डगमगाया और यहूदा गिर गया है; क्योंकि उनके वचन औश्र् उनके
काम यहोवा के विरूद्ध हैं, जो उसकी तेजोमय आंखोंके साम्हने बलवा करनेवाले
ठहरे हैं।। 9 उनका चिहरा भी उनके विरूद्ध साझी देता है; वे सदोमियोंकी नाई

अपके आप को आप ही बखानते और नहीं छिपाते हैं। उन पर हाथ! क्योंकि
उन्होंने अपक्की हानि आप ही की है। 10 धमिर्योंसे कहो कि उनका भला होगा,
क्योंकि उसके कामोंका फल उसको मिलेगा। 11 दुष्ट पर हाय!उसका बुरा होगा,
क्योंकि उसके कामों का फल उसको मिलेगा। 12 मेरी प्रजा पर बच्चे अंधेर करते
और स्त्रियां उन पर प्रभुता करती हैं। हे मेरी प्रजा, तेरे अगुव तुझे भटकाते हैं, और
तेरे चलने का मार्ग भुला देते हैं।। 13 यहोवा देश देश के लोगोंसे मुकद्दमा लड़ने
और उनका न्याय करने के लिथे खड़ा है। 14 यहोवा अपक्की प्रजा के वृद्ध और
हाकिमोंके साय यह विवाद करता है, तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और
दीन लोगोंका धन लूटकर तुम ने अपके घरोंमें रखा है। 15 सेनाओं के प्रभु यहोवा
की यह वाणी है, तुम क्योंमेरी प्रजा को दलते, और दीन लोगोंको पीस डालते हो!
16 यहोवा ने यह भी कहा है, क्योंकि सिय्योन की स्त्रियां घमण्ड करतीं और सिर
ऊंचे किथे आंखें मटकातीं और घुंघुरूओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक चलती
हैं, 17 इसलिथे प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को
उघरवाएगा।। 18 उस समय प्रभु घुंघुरूओं, जालियों, 19 चंद्रहारों, फुमकों, कड़ों,
घूंघटों, 20 पगडिय़ों, पैकरियों, पट्ुकों, सुगन्धपात्रों, गण्डों, 21 अंगूठियों, नत्यों,
22 सुन्दर वों, कुत्तियों, चद्दरों, बटुओं, 23 दर्पणों, मलमल के वों, बुन्दियों,
दुपट्टोंइन सभोंकी शोभा को दूर करेगा। 24 और सुगन्ध की सन्ती सड़ाहट,
सुन्दर कर्धनी की सन्ती बन्धन की रस्सी, गुंथें हुए बालोंकी सन्ती गंजापन,
सुन्दर पटुके की सन्ती टाट की पेटी, और सुन्दरता की सन्ती दाग होंगे। 25 तेरे
पुरूष तलवार से, और शूरवीर युद्ध मे मारे जाएंगे। 26 और उसके फाटकोंमें सांस
भरना और विलाप करना होगा; और भूमि पर अकेली बैठी रहेगी।

यशायाह 4

1 उस समय सात स्त्रियां एक पुरूष को पकड़कर कहेंगी कि रोटी तो हम अपक्की
ही खाएंगी, और वस्त्र अपके ही पहिनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएं; हमारी
नामधराई को दूर कर।। 2 उस समय इस्राएल के बचे हुओं के लिथे यहोवा का
पल्लव, भूषण और महिमा ठहरेगा, और भूमि की उपज, बड़ाई और शोभा
ठहरेगी। 3 और जो कोई सिय्योन में बचा रहे, और यरूशलेम में रहे, अर्यात्
यरूशलेम में जितनोंके नाम जीवनपत्र में लिखे हों, वे पवित्र कहलाएंगे। 4 यह
तब होगा, जब प्रभु न्याय करनेवाली और भस्म करनेवाली आत्मा के द्वारा
सिय्योन की स्त्रियोंके मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के खून को दूर कर
चुकेगा। 5 तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक एक घर के ऊपर, और उसके
सभास्यनोंके ऊपर, दिन को तो धूंए का बादल, और रात को धधकती आग का
प्रकाश सिरजेगा, और समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा। 6 वह
दिन को घाम से बचाने के लिथे और आंधी-पानी और फड़ी में एक शरण और
आड़ होगा।।

यशायाह 5

1 अब मैं अपके प्रिय के लिथे और उसकी दाख की बारी के विषय में गीत गाऊंगा:
एक अति उपजाऊ टीले पर मेरे प्रिय की एक दाख की बरी यी। 2 उस ने उसकी
मिट्टी खोदी और उसके पत्यर बीनकर उस में उत्तम जाति की एक दाखलता
लगाई; उसके बीच में उस ने एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिथे एक कुण्ड
भी खोदा; तब उस ने दाख की आशा की, परन्तु उस में निकम्मी दाखें ही लगीं।।

3 अब हे यरूशलेम के निवासियोंऔर हे यहूदा के मनुष्यों, मेरे और मेरी दाख की
बारी के बीच न्याय करो। 4 मेरी दाख की बारी के लिथे और क्या करना रह गया
जो मैं ने उसके लिथे न किया हो? फिर क्या कारण है कि जब मैं ने दाख की आशा
की तब उस में निकम्मी दाखें लगीं? 5 अब मैं तुम को जताता हूं कि अपक्की
दाख की बारी से क्या करूंगा। मैं उसके कांटेवाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह चट
की जाए, और उसकी भीत को ढा दूंगा कि वह रौंदी जाए। 6 मैं उसे उजाड़ दूंगा;
वह न तो फिर छांटी और न खोदी जाएगी और उस में भांति भांति के कटीले पेड़
उगेंगे; मैं मेघोंको भी आज्ञा दूंगा कि उस पर जल न बरसाएं।। 7 क्योंकि सेनाओं
के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल का घराना, और उसका मनभाऊ पौधा यहूदा
के लोग है; और उस ने उन में न्याय की आशा की परन्तु अन्याय देख पड़ा; उस
ने धर्म की आशा की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुन पक्की! 8 हाथ उन पर जो घर
से घर, और खेत से खेत यहां तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्यान नहीं बचता, कि
तुम देश के बीच अकेले रह जाओ। 9 सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते कहा है:
निश्चय बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे, और बड़ें बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो
जाएंगे। 10 क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा,
और होमेर भर के बीच से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा।। 11 हाथ उन पर जो
बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक दाखमधु पीते रहते हैं
जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए! 12 उनकी जेवनारोंमें वीणा, सारंगी, डफ,
बांसली और दाखमधु, थे सब पाथे जाते हैं; परन्तु वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि
नहीं करते, और उसके हाथोंके काम को नहीं देखते।। 13 इसलिथे अज्ञानता के
कारण मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है, उसके प्रतिष्ठित पुरूष भूखोंमरते और

साधारण लोग प्यास से ब्याकुल होते हैं। 14 इसलिथे अधोलोक ने अत्यन्त
लालसा करके अपना मुंह बेपरिमाण पसारा है, और उनका विभव और भीड़ भाड़
और आनन्द करनेवाले सब के सब उसके मुंह में जा पड़ते हैं। 15 साधारण
मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे किए जाते हैं, और अभिमानियोंकी
आंखें नीची की जाती हैं। 16 परन्तु सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण
महान ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है! 17 तब
भेड़ोंके बच्चे मानो अपके खेत में चरेंगे, परन्तु हृष्टपुष्टोंके उजड़े स्यान
परदेशियोंको चराई के लिथे मिलेंगे।। 18 हाथ उन पर जो अधर्म को अनर्थ की
रस्सिक्कों और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच ले आते हैं, 19 जो कहते हैं,
वह फुर्ती करे और अपके काम को शीघ्र करे कि हम उसको देखें; और इस्राएल के
पवित्र की युक्ति प्रगट हो, वह निकट आए कि हम उसको समझें! 20 हाथ उन पर
जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधिक्कारने को उजियाला और
उजियाले को अंधिक्कारनो ठहराते, और कडुवे को मीठा और मीठे को कड़वा
करके मानते हैं! 21 हाथ उन पर जो अपक्की दृष्टि में ज्ञानी और अपके लेखे
बुद्धिमान हैं! 22 हाथ उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज बनाने
में बहादुर हैं, 23 जो घूस लेकर दुष्टोंको निर्दोष, और निर्दोषोंको दोषी ठहराते हैं!
24 इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती है और सूखी घास जलकर
बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़
जाएंगे; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्या को निकम्मी जाना, और
इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है। 25 इस कारण यहोवा का क्रोध
अपक्की प्रजा पर भड़का है, और उस ने उनके विरूद्ध हाथ बढ़ाकर उनको मारा है,

और पहाड़ कांप उठे; और लोगोंकी लोथें सड़कोंके बीच कूड़ा सी पक्की हैं। इतने
पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।। 26
वह दूर दूर की जातियोंके लिथे फण्डा खड़ा करेगा, और सींटी बजाकर उनको
पृथ्वी की छोर से बुलाएगा; देखो, वे फुर्ती करके वेग से आएंगे! 27 उन में कोई
यका नहीं न कोई ठोकर खाता है; कोई ऊंघने वा सोनेवाला नहीं, किसी का फेंटा
नहीं खुला, और किसी के जूतोंका बन्धन नहीं टूटा; 28 उनके तीर चोखे और
धनुष चढ़ाए हुए हैं, उनके घोड़ोंके खुर वज्र के से और रथोंके पहिथे बवण्डर सरीखे
हैं। 29 वे सिंह वा जवान सिंह की नाईं गरजते हैं; वे गुर्राकर अहेर को पकड़ लेते
और उसको ले भागते हैं, और कोई उसे उन से नहीं छुड़ा सकता। 30 उस समय वे
उन पर समुद्र के गर्जन की नाईं गर्जेंगे और यदि कोई देश की ओर देखे, तो उसे
अन्धकार और संकट देख पकेगा और ज्योति मेघोंसे छिप जाएगी।।

यशायाह 6

1 जिस वर्ष उज्जियय्याह राजा मरा, मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर
विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया। 2 उस से ऊंचे पर
साराप दिखाई दिए; उनके छ: छ: पंख थे; दो पंखोंसे वे अपके मुंह को ढांपे थे और
दो से अपके पांवोंको, और दो से उड़ रहे थे। 3 और वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर
कह रहे थे: सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से
भरपूर है। 4 और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढियोंकी नेवें डोल उठीं, और भवन
धूंए से भर गया। 5 तब मैं ने कहा, हाथ! हाथ! मैं नाश हूआ; क्योंकि मैं अशुद्ध
होंठवाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध होंठवाले मनुष्योंके बीच में रहता हूं; क्योंकि मैं ने

सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपक्की आंखोंसे देखा है! 6 तब एक
साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया या,
मेरे पास उड़ कर आया। 7 और उस ने उस से मेरे मुंह को छूकर कहा, देख, इस ने
तेरे होंठोंको छू लिया है, इसलिय तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप झमा हो
गए। 8 तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किस को भेंजूं, और हमारी ओर से
कौन जाएगा? तब मैं ने कहा, मैं यहां हूं! मुझे भेज 9 उस ने कहा, जा, और इन
लोगोंसे कह, सुनते ही रहो, परन्तु न समझो; देखते ही रहो, परन्तु न बूफो। 10 तू
इन लोगोंके मन को मोटे और उनके कानोंको भारी कर, और उनकी आंखोंको
बन्द कर; ऐसा न हो कि वे आंखोंसे देखें, और कानोंसे सुनें, और मन से बूफें, और
मन फिरावें और चंगे हो जाएं। 11 तब मैं ने पूछा, हे प्रभु कब तक? उस ने कहा,
जब तक नगर न उजड़े और उन में कोई रह न जाए, और घरोंमें कोई मनुष्य न
रह जाए, और देश उजाड़ और सुनसान हो जाए, 12 और यहोवा मनुष्योंको उस में
से दूर कर दे, और देश के बहुत से स्यान निर्जन हो जाएं। 13 चाहे उसके
निवासियोंका दसवां अंश भी रह जाए, तौभी वह नाश किया जाएगा, परनतु जैसे
छोटे वा बड़े बांजवृझ को काट डालने पर भी उसका ठूंठ बना रहता है, वैसे ही
पवित्र वंश उसका ठूंठ ठहरेगा।।

यशायाह 7

1 यहूदा का राजा आहाज जो योताम का पुत्र और उज्जिय्याह का पोता या, उसके
दिनोंमें आराम के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने
यरूशलेम से लड़ने के लिथे चढ़ाई की, परन्तु युद्ध करके उन से कुछ बन न पड़ा 2

जब दाऊद के घराने को यह समाचार मिला कि अरामियोंने एप्रैमियोंसे सन्धि की
है, तब उसका और प्रजा का भी मन ऐसा कांप उठा जैसे वन के वृझ वायु चलने से
कांप जाते हैं। 3 तब यहोवा ने यशायाह से कहा, अपके पुत्र शार्याशूब को लेकर
धोबियोंके खेत की सड़क से ऊपरली पोखरे की नाली के सिक्के पर आहाज से भेंट
करने के लिथे जा, 4 और उस से कह, सावधान और शान्त हो; और उन दोनोंधूंआं
निकलती लुकटियोंसे अर्यात् रसीन और अरामियोंके भड़के हुए कोप से, और
रमल्याह के पुत्र से मत डर, और न तेरा मन कच्चा हो। 5 क्यांकि अरामियोंऔर
रमल्याह के पुत्र समेत एप्रैमियोंने यह कहकर तेरे विरूद्ध बुरी युक्ति ठानी है कि
आओ, 6 हम यहूदा पर चढ़ाई करके उसको घबरा दें, और उसको अपके वश में
लाकर ताबेल के पुत्र को राजा नियुक्त कर दें। 7 इसलिथे प्रभु यहोवा ने यह कहा है
कि यह युक्ति न तो सफल होगी और न पूरी। 8 क्योंकि आराम का सिर दमिश्क,
ओर दमिश्क का सिर रसीन है। फिर एप्रैम का सिर शोमरोन और शोमरोन का
सिर रमल्याह का पुत्र है। 9 पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रैम का बल इतना टूट जाएगा
कि वह जाति बनी न रहेगी। यदि तुम लोग इस बात की प्रतीति न करो; तो
निश्चय तुम स्यिर न रहोगे।। 10 फिर यहोवा ने आहाज से कहा, 11 अपके
परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग; चाहे वह गहिरे स्यान का हो, वा ऊपर
आसमान का हो। 12 आहाज ने कहा, मैं नहीं मांगने का, और मैं यहोवा की
पक्कीझा नहीं करूंगा। 13 तब उस ने कहा, हे दाऊद के घराने सुनो! क्या तुम
मनुष्योंको उकता देना छोटी बात समझकर अब मेरे परमेश्वर को भी उकता
दोगे? 14 इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी
गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी। 15 और जब

तक वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना न जाने तब तक वह मक्खन
और मधु खाएगा। 16 क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और
भले को ग्रहण करना जाने, वह देश जिसके दोनोंराजाओं से तू घबरा रहा है
निर्जन हो जाएगा। 17 यहोवा तुझ पर, तेरी प्रजा पर और तेरे पिता के घराने पर
ऐसे दिनोंको ले आएगा कि जब से एप्रैम यहूदा से अलग हो गया, तब वे वैसे दिन
कभी नहीं आए -- अर्यात् अश्शूर के राजा के दिन ।। 18 उस समय यहोवा उन
मक्खियोंको जो मिस्र की नदियोंके सिरोंपर रहती हैं, और उन मधुमक्खियोंको
जो अश्शूर देश में रहती हैं, सीटी बजाकर बुलाएगा। 19 और वे सब की सब
आकर इस देश के पहाड़ी नालोंमें, और चट्टानोंकी दरारोंमें, और सब
भटकटैयोंऔर सब चराइयोंपर बैठ जाएंगी।। 20 उसी समय प्रभु महानद के
पारवाले अश्शूर के राजारूपी भाड़े के छूरे से सिर और पांवोंके रोंएं मूंड़ेगा, उस से
दाढ़ी भी पूरी मुंड जाएगी।। 21 उस समय ऐसा होगा कि मनुष्य केवल एक कलोर
और दो भेड़ोंको पालेगा; 22 और वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा;
क्योंकि जितने इस देश में रह जाएंगे वह सब मक्खन और मधु खाया करेंगे।। 23
उस समय जिन जिन स्यानें में हजार टुकड़े चान्दी की हजार दाखलताएं हैं, उन
सब स्यानें में कटीले ही कटीले पेड़ होंगे। 24 तीर और धनुष लेकर लोग वहां
जाया करेंगे, क्योंकि सरे देश में कटीले पेड़ हो जाएंगे; और जितने पहाड़ कुदाल
से खोदे जाते हैं, 25 उन सभोंपर कटीले पेड़ोंके डर के मारे कोई न जाएगा, वे गाथे
बैलोंके चरने के, और भेड़ बकरियोंके रौंदने के लिथे होंगे।।

यशायाह 8

1 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, एक बड़ी पटिया लेकर उस पर साधारण अझरोंसे
यह लिख: महेर्शालाल्हाशबज के लिथे। 2 और मैं विश्वासयोग्य पुरूषोंको अर्यात्
ऊरिय्याह याजक और जेबेरेक्याह के पुत्र जकर्याह को इस बात की साझी करूंगा।
3 और मैं अपक्की पत्नी के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके पुत्र
उत्पन्न हुआ। तब यहोवा ने मुझ से कहा, उसका नाम महेर्शालाल्हाशबज रख; 4
क्योंकि इस से पहिले कि वह लड़का बापू और माँ पुकारण जाने, दमिश्क और
शोमरोन दोनोंकी धन-सम्पत्ति लूटकर अश्शूर का राजा अपके देश को भेजेगा।। 5
यहोवा ने फिर मुझ से दूसरी बार कहा, 6 इसलिथे कि लोग शीलोह के धीरे धीरे
बहनेवाले सोते को निकम्मा जानते हैं, और रसीन और रमल्याह के पुत्र के संग
एका करके आनन्द करते हैं, 7 इस कारण सुन, प्रभु उन पर उस प्रबल और गहिरे
महानद को, अर्यात् अश्शूर के राजा को उसके सारे प्रताप के साय चढ़ा लाएगा;
और वह उनके सब नालोंको भर देगा और सारे कड़ाड़ोंसे छलककर बहेगा; 8 और
वह यहूदा पर भी चढ़ आएगा, और बढ़ते बढ़ते उस पर चढ़ेगा और गले तक
पहुंचेगा; और हे इम्मानुएल, तेरा समस्त देश उसके पंखोंके फैलने से ढंप
जाएगा।। 9 हे लोगों, हल्ला करो तो करो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा।
हे पृय्वी के दूर दूर देश के सब लोगोंकान लगाकर सुनो, अपक्की अपक्की कमर
कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारे टुकड़े टुकड़े किए जाएंगे; अपक्की कमर कसो तो
कसो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। 10 तुम युक्ति करो तो करो, परन्तु
वह निष्फल हो जाएगी, तुम कुछ भी कहो, परन्तु तुम्हारा कहा हुआ ठहरेगा नहीं,
क्योंकि परमेश्वर हमारे संग है।। 11 क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साय मुझ से बोला
और इन लोगोंकी सी चाल चलने को मुझे मना किया, 12 और कहा, जिस बात

को यह लोग राजद्रोह कहें, उसको तुम राजद्रोह न कहना, और जिस बात से वे
डरते हैं उस से तुम न डरना और न भय खाना। 13 सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र
जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना। 14 और वह शरणस्यान
होगा, परन्तु इस्राएल के दोनो घरानोंके लिथे ठोकर का पत्यर और ठेस की
चट्टान, और यरूशलेम के निवासियोंके लिथे फन्दा और जाल होगा। 15 और
बहुत से लोग ठोकर खाएंगे; वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फन्दे में फसेंगे और
पकड़े जाएंगे। 16 चितौनी का पत्र बन्द कर दो, मेरे चेलोंके बीच शिझा पर छाप
लगा दो। 17 मैं उस यहोवा की बाट जोहता रहूंगा जो अपके मुंख को याकूब के
घराने से छिपाथे है, और मैं उसी पर आशा लगाए रहूंगा। 18 देख, मैं और जो
लड़के यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन
पर्वत पर निवास किए रहता है इस्राएलियोंके लिथे चिन्ह और चमत्कार हैं। 19
जब लोग तुम से कहें कि ओफाओं और टोन्होंके पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते
और फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहना कि क्या प्रजा को अपके परमेश्वर ही के
पास जाकर न पूछना चाहिथे? क्या जीवतोंके लिथे मुर्दोंसे पूछना चाहिथे? 20
व्यवस्या और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनोंके अनुसार
न बोलें तो निश्चय उनके लिथे पौ न फटेगी 21 वे इस देश में क्लेशित और भूखे
फिरते रहेंगे; और जब वे भूखे होंगे, तब वे क्रोध में आकर अपके राजा और अपके
परमेश्वर को शाप देंगे, और अपना मुख ऊपर आकाश की ओर उठाएंगे; 22 तब वे
पृय्वी की ओर दृष्टि करेंगे परन्तु उन्हें सकेती और अन्धिक्कारनो अर्यात् संकट
भरा अन्धकार ही देख पकेगा; और वे घोर अन्धकार में ढकेल दिए जाएंगे।।

यशायाह 9

1 तौभी संकट-भरा अन्धकार जाता रहेगा। पहिले तो उस ने जबूलून और नप्ताली
के देशोंका अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनोंमें ताल की ओर यरदन के पार
की अन्यजातियोंके गलील को महिमा देगा। 2 जो लोग अन्धिक्कारने में चल रहे
थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के
देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी। 3 तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसको
बहुत आनन्द दिया; वे तेरे साम्हने कटनी के समय का सा आनन्द करते हैं, और
ऐसे मगन हैं जैसे लोग लूट बांटने के समय मगन रहते हैं। 4 क्योंकि तू ने उसकी
गर्दन पर के भारी जूए और उसके बहंगे के बांस, उस पर अंधेर करनेवाले की
लाठी, इन सभोंको ऐसा तोड़ दिया है जेसे मिद्यानियोंके दिन में किया या। 5
क्योंकि युद्ध में लड़नेवाले सिपाहियोंके जूते और लोहू में लयड़े हुए कपके सब
आग का कौर हो जाएंगे। 6 क्योंकि हमारे लिथे एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें
एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत
युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का
राजकुमार रखा जाएगा। 7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति
का अन्त न होगा, इसलिथे वि उसको दाऊद की राजगद्दीपर इस समय से लेकर
सर्वदा के लिथे न्याय और धर्म के द्वारा स्यिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के
यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।। 8 प्रभु ने याकूब के पास एक संदेश भेजा
है, और वह इस्राएल पर प्रगट हुआ है; 9 और सारी प्रजा को, एप्रैमियोंऔर
शोमरोनवासिक्कों मालूम हो जाएगा जो गर्व और कठोरता से बोलते हैं: ईंटें तो
गिर गई हैं, 10 परन्तु हम गढ़ें हुए पत्यरोंसे घर बनाएंगे; गूलर के वृझ तो कट
गए हैं परन्तु हम उनकी सन्ती देवदारोंसे काम लेंगे। 11 इस कारण यहोवा उन

पर रसीन के बैरियोंको प्रबल करेगा, 12 और उनके शत्रुओं को अर्यात् पहिले
आराम को और तब पलिश्तियोंको उभारेगा, और वे मुंह खोलकर इस्राएलियोंको
निगल लेंगे। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक
बढ़ा हुआ है।। 13 तौभी थे लोग अपके मारनेवाले की ओर नहीं फिरे और न
सेनाओं के यहोवा की खोज करते हैं। 14 इस कारण यहोवा इस्राएल में से सिर
और पूंछ को, खजूर की डालियोंऔर सरकंडे को, एक ही दिन में काट डालेगा। 15
पुरनिया और प्रतिष्ठित पुरूष तो सिर हैं, और फूठी बातें सिखानेवाला नबी पूंछ है;
16 क्योंकि जो इन लोगोंकी अगुवाई करते हैं वे इनको भटका देते हैं, और जिनकी
अगुवाई होती है वे नाश हो जाते हैं। 17 इस कारण प्रभु न तो इनके जवानोंसे
प्रसन्न होगा, और न इनके अनाय बालकोंऔर विधवाओं पर दया करेगा; क्योंकि
हर एक के मुख से मूर्खता की बातें निकलती हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त
नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।। 18 क्योंकि दुष्टता आग की
नाई धधकती है, वह ऊंटकटारोंऔर कांटोंको भस्म करती है, वरन वह घने वन
की फाडियोंमें आग लगाती है और वह धुंआ में चकरा चकराकर ऊपर की ओर
उठती है। 19 सेनाओं के यहोवा के रोष के मारे यह देश जलाया गया है, और थे
लोग आग की ईंधन के समान हैं; वे आपस में एक दूसरे से दया का व्यवहार नहीं
करते। 20 वे दहिनी ओर से भोजनवस्तु छीनकर भी भूखे रहते, और बाथें ओर से
खाकर भी तृप्त नहीं होते; उन में से प्रत्थेक मनुष्य अपक्की अपक्की बांहोंका मांस
खाता है, 21 मनश्शे एप्रैम को और एप्रैम मनश्शे को खाता है, और वे
दोनोंमिलकर यहूदा के विरूद्ध हैं इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, और
उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।।

यशायाह 10

1 हाथ उन पर जो दुष्टता से न्याय करते, और उन पर जो उत्पात करने की आज्ञा
लिख देते हैं, 2 कि वे कंगालोंका न्याय बिगाड़ें और मेरी प्रजा के दी लोगोंका हक
मारें, कि वे विधवाओं को लूटें और अनायोंका माल अपना लें! 3 तुम दण्ड के दिन
और उस आपत्ति के दिन जो दूर से आएगी क्या करोगे? तुम सहाथता के लिथे
किसके पास भाग कर जाओगे? और तुम अपके विभव को कहां रख छोड़ोगे?4 वे
केवल बंधुओं के पैरोंके पास गिर पकेंगे और मरे हुओं के नीचे दबे पके रहेंगे।
इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ
है।। 5 अश्शूर पर हाथ, जो मेरे क्रोध का लठ और मेरे हाथ में का सोंटा है! वह मेरा
क्रोध है। 6 मैं उसको एक भक्तिहीन जाति के विरूद्ध भेजूंगा, और जिन लोगोंपर
मेरा रोष भड़का है उनके विरूद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि छीन छान करे और लूट ले,
और उनको सड़कोंकी कीच के समान लताड़े। 7 परन्तु उसकी ऐसी मनसा न
होगी, न उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियोंका नाश और अन्त कर
डालूं। 8 कयोंकि वह कहता है, क्या मेरे सब हाकिम राजा के तुल्य नहीं है? 9 क्या
कलनो कर्कमीश के समान नहीं है? क्या हमात अर्पद के और शोमरोन दमिश्क के
समान नहीं? 10 जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतोंसे भरे हुए उन राज्योंपर पहुंचा
जिनकी मूरतें यरूशलेम और शोमरोन की मूरतोंसे बढ़कर यीं, और जिस प्रकार
मैं ने शोमरोन और उसकी मूरतोंसे किया, 11 क्या उसी प्रकार मैं यरूशलेम से
और उसकी मूरतोंसे भी न करूं? 12 इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और
यरूशलेम में अपना सब काम का चुकेगा, तब मैं अश्शूर के राजा के गर्व की
बातोंका, और उसकी घमण्ड भरी आंखोंका पलटा दूंगा। 13 उस ने कहा है, अपके

ही बाहुबल और बुद्धि से मैं ने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूं; मैं ने देश देश
के सिवानोंको हटा दिया, और उनके रखे हुए धन को लूअ लिया; मैं ने वीर की
नाईं गद्दी पर विराजनेहारोंको उतार दिया है। 14 देश देश के लोगोंकी धनसम्पत्ति,
चिडिय़ोंके घोंसलोंकी नाईं, मेरे हाथ आई है, और जैसे कोई छोड़े हुए अण्डोंको
बटोर ले वैसे ही मैं ने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है; और कोई पंख फड़फड़ाने वा
चोंच खोलने वा चीं चीं करनेवाला न या।। 15 क्या कुल्हाड़ा उसक विरूद्ध जो उस
से काटता हो डींग मारे, वा आरी उसके विरूद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या
सोंटा अपके चलानेवाले को चलाए वा छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है! 16 इस
कारण प्रभु अर्यात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबला कर
देगा, और उसके ऐश्वर्य के नीचे आग की सी जलन होगी। 17 इस्राएल की ज्योति
तो आग ठहरेगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके फाड़
फंखार को एक ही दीन में भस्म करेगा। 18 और जैसे रोगी के झीण हो जाने पर
उसकी दशा होती है वैसी ही वह उसके वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति
से नाश करेगा। 19 उस वन के वृझ इतने योड़े रह जाएंगे कि लड़का भी उनको
गिन कर लिख लेगा।। 20 उस समय इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के
घराने के भागे हुए, अपके मारनेवाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु
यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे। 21 याकूब
में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे। 22 क्योंकि हे इस्राएल, चाहे
तेरे लोग समुद्र की बालू के किनकोंके समान भी बहुत हों, तौभी निश्चय है कि उन
में से केवल बचे लोग भी लौटेंगे। सत्यानाश तो पूरे न्याय के साय ठाना गया है।
23 क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा ने सारे देश का सत्यानाश कर देना ठाना है।।

24 इसलिथे प्रभु सेनाओं का यहोवा योंकहता है, हे सिय्योन में रहनेवालोंमेरी
प्रजा, अश्शूर से मत डर; चाहे वह सोंटें से तुझे मारे और मिस्र की नाईं तेरे ऊपर
छड़ी उठाएं। 25 क्योंकि अब योड़ी ही देर है कि मेरी जलन और क्रोध उनका
सत्यानाश करके शान्त होगा 26 और सेनाओं का यहोवा उसके विरूद्ध कोड़ा
उठाकर उसको ऐसा मारेगा जैसा उस ने ओरेब नाम चट्टान पर मिद्यानियोंको
मारा या; और जेया उस ने मिस्रियोंके विरूद्ध समुद्र पर लाठी बढ़ाई, वैसा ही
उसकी ओर भी बढ़ाएगा। 27 उस समय ऐसा होगा कि उसका बोफ तेरे कंधे पर से
और उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण
वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।। 28 वह अय्यात् में आया है, और मिग्रोन में से
होकर आगे बढ़ गया है; मिकमाश में उस ने अपना सामान रखा है। 29 वे घाटी से
पार हो गए, उन्होंने गेबा में रात काटी; रामा यरयरा उठा है, शाऊल का गिबा भाग
निकला है। 30 हे गल्लीम की बेटी चिल्ला! हे लैशा के लागोंकान लगाओ! हाथ
बेचारा अनातोत! 31 मदमेना मारा मारा फिरता है, गेबीम के निवासी भागने के
लिथे अपना अपना समान इकट्टा कर रहे हैं। 32 आज ही के दिन वह नोब में
टिकेगा; तब वह सिय्योन पहाड़ पर, और यरूशलेम की पहाड़ी पर हाथ उठाकर
घमाकएगा। 33 देखो, प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ोंको भयानक रूप से छांट
डालेगा; ऊँचे ऊँचे वृझ काटे जाएंगे, और जो ऊँचे हैं सो नीचे किए जाएंगे। 34 वह
घने वन को लोहे से काट डालेगा और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया
जाएगा।।

यशायाह 11

1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा
निकलकर फलवन्त होगी। 2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की
आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा
उस पर ठहरी रहेगी। 3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा।। वह मुंह
देखा न्याय न करेगा और न अपके कानोंके सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; 4
परन्तु वह कंगालोंका न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगोंका निर्णय खाराई से
करेगा; और वह पृथ्वी को अपके वचन के सोंटे से मारेगा, और अपके फूंक के
फोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा। 5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का
फेंटा सच्चाई होगी।। 6 तब भेडिय़ा भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता
बकरी के बच्चे के साय बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा
हुआ बैल तीनोंइकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। 7 गाय
और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की
नाईं भूसा खाया करेगा। 8 दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध
छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। 9 मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न
तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर
जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।। 10 उस समय यिशै की जड़ देश देश के
लोगोंके लिथे एक फण्ड़ा होगी; सब राज्योंके लोग उसे ढूंढेंगें, और उसका
विश्रमस्यान तेजोमय होगा।। 11 उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर
बचे हुओं को, जो उसकी प्रजा के रह गए हैं, अश्शूर से, मिस्र से, पत्रोस से, कूश से,
एलाम से, शिनार से, हमात से, और समुद्र के द्वीपोंसे मोल लेकर छुड़ाएगा। 12
वह अन्यजातियोंके लिथे फण्ड़ा खड़ा करके इस्राएल के सब निकाले हुओं को,

और यहूदा के सब बिखरे हुओं को पृथ्वी की चारोंदिशाओं से इकट्ठा करेगा। 13
एप्रैम फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग करनेवाले काट डाले जाएंगे; न तो
एप्रैम यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम को तंग करेगा। 14 परन्तु वे
पश्चिम की ओर पलिश्तियोंके कंधे पर फपट्टा मारेंगे, और मिलकर पूर्वियोंको
लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएंगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो
जाएंगे। 15 और यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा डालेगा, और महानद
पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लू से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा,
और लोग लूता पहिने हुए भी पार हो जाएंगे। 16 और उसकी प्रजा के बचे हुओं के
लिथे अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय
इस्राएल के लिथे हुआ या।।

यशायाह 12

1 उस दिन तू कहेगा, हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि यद्यपि तू मुझ
पर क्रोधित हुआ या, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ, और तू ने मुझे शान्ति दी
है।। 2 परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूंगा और न यरयराऊंगा; क्योंकि प्रभु
यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया
है।। 3 तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतोंसे जल भरोगे। 4 और उस दिन तुम
कहोगे, यहोवा की स्तुति करो, उस से प्रार्थना करो; सब जातियोंमें उसके बड़े
कामोंका प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है।। 5 यहोवा का भजन
गाओ, क्योंकि उस ने प्रतापमय काम किए हैं, इसे सारी पृथ्वी पर प्रगट करो। 6 हे
सिय्योन में बसनेवाली तू जयजयकार कर और ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल

का पवित्र तुझ में महान है।।

यशायाह 13

1 बाबुल के विषय की भारी भविष्यवाणी जिसको आमोस के पुत्र यशायाह ने
दर्शन में पाया। 2 मुंडे पहाड़ पर एक फंडा खड़ा करो, हाथ से सैन करो और और
उन से ऊंचे स्वर से पुकारो कि वे सरदारोंके फाटकोंमें प्रवेश करें। 3 मैं ने स्वयं
अपके पवित्र किए हुओं को आज्ञा दी है, मैं ने अपके क्रोध के लिथे अपके वीरोंको
बुलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न हैं।। 4 पहाड़ोंपर एक बड़ी भीड़ का सा
कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी फौज की हलचल हों। राज्य राजय की इकट्ठी
की हुई जातियां हलचल मचा रही हैं। सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिथे अपक्की
सेना इकट्ठी कर रहा है। 5 वे दूर देश से, आकाश के छोर से आए हैं, हाँ, यहोवा
अपके क्रोध के हयियारोंसमेत सारे देश को नाश करने के लिथे आया है।। 6
हाथ-हाथ करो, क्योंकि यहोवा का दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान् की ओर से
मानो सत्यानाश करने के लिथे आता है। 7 इस कारण सब के हाथ ढ़ीले पकेंगे,
और हर एक मनुष्य का ह्रृदय पिघल जाएगा, 8 और वे घबरा जाएगें। उनको पीड़ा
और शोक होगा; उनको जच्चा की सी पीड़ाएं उठेंगी। वे चकित होकर एक दूसरे
को ताकेंगे; उनके मुंह जल जाथेंगे।। 9 देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध
और निर्दयता के साय आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियोंको उस
में से नाश करे। 10 क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े बड़े नझत्र अपना प्रकाश
न देंगे, और सूर्य उदय होते होते अन्धेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश
न देगा। 11 मैं जगत के लोगोंको उनकी बुराई के कारण, और दुष्टोंको उनके

अधर्म का दण्ड दूंगा; मैं अभिमानियोंके अभिमान को नाश करूंगाए और उपद्रव
करनेवालोंके घमण्ड को तोड़ूंगा। 12 मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को
ओपीर के सोने से भी अधिक महंगा करूंगा। 13 इसलिथे मैं आकाश को
कंपाऊंगा, और पृथ्वी अपके स्यान से टल जाएगी; यह सेनाओं के यहोवा के रोष
के कारण और उसके भड़के हुए क्रोध के दिन होगा। 14 और वे खदेड़े हुए हरिण,
वा बिन चरवाहे की भेड़ोंकी नाईं अपके अपके लोगोंकी ओर फिरेंगे, और अपके
अपके देश को भाग जाएंगे। 15 जो कोई मिले सो बेधा जाएगा, और जो कोई
पकड़ा जाए, वह तलवार से मार डाला जाएगा। 16 उनके बाल-बच्चे उनके
साम्हने पटक दिए जाएंगे; और उनके घर लूटे जाएंगे, और उनकी स्त्रियां भ्रष्ट की
जाएंगी।। 17 देखो, मैं उनके विरूद्ध मादी लोगोंको उभारूंगा जो न तो चान्दी का
कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे। 18 वे तीरोंसे जवानोंको मारेंगे,
और बच्चोंपर कुछ दया न करेंगे, वे लड़कोंपर कुछ तरस न खाएंगे। 19 और
बाबुल जो सब राज्योंका शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते
हैं, वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया
या। 20 वह फिर कभी न बसेगा और युग युग उस में कोई वास न करेगा; अरबी
लोग भी उस में डेरा खड़ा न करेंगे, और न चरवाहे उस में अपके पशु बैठाएंगे। 21
वहां जंगली जन्तु बैठेंगे, और उल्लू उनके घरोंमें भरे रहेंगे; वहां शुतुर्मुर्ग बसेंगे,
और छगलमानस वहां नाचेंगे। उस नगर के राज-भवनोंमें हुंडार, 22 और उसके
सुख-विलास के मन्दिरोंमें गीदड़ बोला करेंगे; उसके नाश होने का समय निकट
आ गया है, और उसके दिन अब बहुत नहीं रहे।।

यशायाह 14

1 यहोवा याकूब पर दया करेगा, और इस्राएल को फिर अपनाकर, उन्हीं के देश में
बसाएगा, और परदेशी उन से मिल जाएंगे और अपके अपके को याकूब के घराने
से मिला लेंगे। 2 और देश देश के लोग उनको उन्हीं के स्यान में पहुंचाएंगे, और
इस्राएल का घराना यहोवा की भूमि पर उनका अधिक्कारनी होकर उनको दास
और दासियां बनाएगा; क्योंकि वे अपके बंधुवाई में ले जानेवालोंको बंधुआ करेंगे,
और जो उन पर अत्याचार करते थे उन पर वे शासन करेंगे।। 3 और जिस दिन
यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से, और उस कठिन श्रम से जो तुझ से
लिया गया विश्रम देगा, 4 उस दिन तू बाबुल के राजा पर ताना मारकर कहेगा कि
परिश्रम करानेवाला कैसा नाश हो गया है, सुनहले मन्दिरोंसे भरी नगरी कैसी
नाश हो गई है! 5 यहोवा ने दुष्टोंके सोंटे को और अन्याय से शासन करनेवालोंके
लठ को तोड़ दिया है, 6 जिस से वे मनुष्योंको लगातार रोष से मारते रहते थे, और
जाति जाति पर क्रोध से प्रभुता करते और लगातार उनके पीछे पके रहते थे। 7
अब सारी पृय्वी को विश्रम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं। 8
सनौवर और लबानोन के देवदार भी तुझ पर आनन्द करके कहते हैं, जब से तू
गिराया गया तब से कोई हमें काटने को नहीं आया। 9 पाताल के नीचे अधोलो में
तुझ से मिलने के लिथे हलचल हो रही है; वह तेरे लिथे मुर्दोंको अर्यात्‌पृय्वी के
सब सरदारोंको जगाता है, और वह जाति जाति से सब राजाओं को उनके
सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है। 10 वे सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी
नाई निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान ही बन गया? 11 तेरा विभव और
तेरी सारंगियोंको शब्द अधोलोक में उतारा गया है; कीड़े तेरा बिछौना और केचुए
तेरा ओढ़ना हैं।। 12 हे भोर के चमकनेवाले तारे तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा

है? तू जो जाति जाति को हरा देता या, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया
है? 13 तू मन में कहता तो या कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपके सिंहासन को ईश्वर
के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत
पर बिराजूंगा; 14 मैं मेघोंसे भी ऊंचे ऊंचे स्यानोंके ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के
तुल्य हो जाऊंगा। 15 परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा
जाएगा। 16 जो तुझे देखेंगे तुझ को ताकते हुए तेरे विषय में सोच सोचकर कहेंगे,
क्या यह वही पुरूष है जो पृय्वी को चैन से रहने न देता या और राज्य राज्य में
घबराहट डज्ञल देता या; 17 जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरोंको ढा
देता या, और अपके बंधुओं को घर जाने नहीं देता या? 18 जाति जाति के सब
राजा अपके अपके घर पर महिमा के साय आराम से पके हैं; 19 परन्तु तू
निकम्मी शाख की नाईं अपक्की कबर में से फेंका गया; तू उन मारे हुओं की
लोयोंसे घिरा है जो तलवार से बिधकर गड़हे में पत्यरोंके बीच में लताड़ी हुई लोय
के समान पके है। 20 तू उनके साय कब्र में न गाड़ा जाएगा, क्योंकि तू ने अपके
देश को उजाड़ दिया, और अपक्की प्रजा का घात किया है। कुकर्मियोंके वंश का
नाम भी कभी न लिया जाएगा। 21 उनके पूर्वजोंके अधर्म के कारण पुत्रोंके घात
की तैयारी करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर पृय्वी के अधिक्कारनी हो जाएं,
और जगत में बहुत से नगर बसाएं।। 22 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं
उनके विरूद्ध उठूंगा, और बाबुल का नाम और निशान मिटा डालूंगा, और बेटों-
पोतोंको काट डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 23 मैं उसको साही की मान्द और
जल की फीलें कर दूंगा, और मैं उसे सत्यानाश के फाड़ू से फाड़ डालूंगा, सेनाओं के
यहोवा की यही वाणी है।। 24 सेनाओं के यहोवा ने यह शपय खाई है, निःसन्देह

जैसा मैं ने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी
होगी, 25 कि मैं अश्शूर को अपके ही देश में तोड़ दूंगा, और अपके पहाड़ोंपर उसे
कुचल डालूंगा; तब उसका जूआ उनकी गर्दनोंपर से और उसका बोफ उनके
कंधोंपर से उतर जाएगा। 26 यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिथे ठहराई गई है; और
यह वही हाथ है जो सब जातियोंपर बढ़ा हुआ है। 27 क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने
युक्ति की है और कौन उसका टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन
रोक सकता है? 28 जिस वर्ष में आहाज राजा मर गया उसी वर्ष यह भारी
भविष्यद्वाणी हुई: 29 हे सारे पलिश्तीन तू इसलिथे आनन्द न कर, कि तेरे
मारनेवाले की लाठी टूट गई, क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न
होगा, और उसका फल एक उड़नेवाला और तेज विषवाला अग्निसर्प होगा। 30
तब कंगालोंके जेठे खाएंगे और दरिद्र लोग निडर बैठने पाएंगे, परन्तु मैं तेरे वंश
को भूख से मार डालूंगा, और तेरे बचे हुए लोग घात किए जाएंगे। 31 हे फाटक, तू
हाथ हाथ कर; हे नगर, तू चिल्ला; हे पलिश्तीन तू सब का सब पिघल जा! क्योंकि
उत्तर से एक धूआं उठेगा और उसकी सेना में से कोई पीछे न रहेगा।। 32 तब
अन्यजातियोंके दूतोंको क्या उत्तर दिया जाएगा? यह कि यहोवा ने सिय्योन की
नेव डाली है, और उसकी प्रजा के दीन लोग उस में शरण लेंगे।।

यशायाह 15

1 मोआब के विषय भारी भविष्यद्वाणी। निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात
में उजाड़ और नाश हो गया है; निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में उजाड़
और नाश हो गया है। 2 बैत और दीबोन ऊंचे स्यानोंपर रोने के लिथे चढ़ गए हैं;

नबो और मेदबा के ऊपर मोआब हाथ हाथ करता है। उन सभोंके सिर मुड़े हुए,
और सभोंकी दाढिय़ां मुंढी हुई हैं; 3 सड़कोंमें लोग टाट पहिने हैं; छतोंपर और
चौकोंमें सब कोई आंसू बहाते हुए हाथ हाथ करते हैं। 4 हेशबोन और एलाले
चिल्ला रहे हैं, उनका शब्द यहस तक सुनाई पड़ता है; इस कारण मोआब के
हयियारबन्द चिल्ला रहे हैं; उसका जी अति उदास है। 5 मेरा मन मोआब के लिथे
दोहाई देता है; उसके रईस सोअर और एग्लतशलीशिय्या तक भागे जाते हैं।
देखो, लूहीत की चढ़ाई पर वे रोते हुए चढ़ रहे हैं; सुनो, होरीनैम के मार्ग में वे नाश
होने की चिल्लाहट मचा रहे हैं। 6 निम्रीम का जल सूख गया; घास कुम्हला गई
और हरियाली मुर्फा गई, और नमी कुछ भी नहीं रही। 7 इसलिथे जो धन उन्होंने
बचा रखा, और जो कुद उन्होंने इकट्ठा किया है, उस सब को वे उस नाले के पार
लिथे जा रहे हैं जिस में मजनूवृझ हैं। 8 इस कारण मोआब के चारोंओर के सिवाने
में चिल्लाहट हो रही है, उस में का हाहाकार एगलैम और बेरेलीम में भी सुन
पड़ता है। 9 क्योंकि दीमोन का सोता लोहू से भरा हुआ है; तौभी मैं दीमोन पर
और दु:ख डालूंगा, मैं बचे हुए मोआबियोंऔर उनके देश से भागे हुओं के विरूद्ध
सिंह भेजूंगा।।

यशायाह 16

1 जंगल की ओर से सेला नगर से सिय्योन की बेटी के पर्वत पर देश के हाकिम के
लिथे भेड़ोंके बच्चोंको भेजो। 2 मोआब की बेटियां अर्नोन के घाट पर उजाड़े हुए
बच्चोंके समान हैं। 3 सम्मति करो, न्याय चुकाओ; दोपहर ही में अपक्की छाया
को रात के समान करो; घर से निकाले हुओं को छिपा रखो, जो मारे मारे फिरते हैं

उनको मत पकड़वाओ। 4 मेरे लोग जो निकाले हुए हैं वे तेरे बीच में रहें; नाश
करनेवाले से मोआब को बचाओ। पीसनेवाला नहीं रहा, लूट पाट फिर न होगी;
क्योंकि देश में से अन्धेर करनेवाले नाश हो गए हैं। 5 तब दया के साय एक
सिंहासन स्यिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तम्बू में सच्चाई के साय एक
विराजमान होगा जो सोच विचार कर सच्चा न्याय करेगा और धर्म के काम पर
तत्पर रहेगा।। 6 हम ने मोआब के गर्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त
अभिमानी या; उसके अभिमान और गर्व और रोष के सम्बन्ध में भी सुना है
परन्तु उसका बड़ा बोल व्यर्य है। 7 क्योंकि मोआब हाथ हाथ करेगा; सब के सब
मोआब के लिथे हाहाकार करेंगे। कीरहरासत की दाख की टिकियोंके लिथे वे अति
निराश होकर लम्बी लम्बी सांस लिया करेंगे।। 8 क्योंकि हेशबोन के खेत और
सिबमा की दाख लताएं मुर्फा गईं; अन्यजातियोंके अधिक्कारनेियोंने उनकी
उत्तम उत्तम लताओं को काट काटकर गिरा दिया है, थे याजेर तक पहुंची और
जंगल में भी फैलती गईं; और बढ़ते बढ़ते ताल के पार दूर तक बढ़ गई यीं। 9 मैं
याजेर के साय सिबमा की दाखलताओं के लिथे भी रोऊंगा; हे हेशबोन और
एलाले, मैं तुम्हें अपके आंसुओं से सींचूंगा; क्योंकि तुम्हारे धूपकाल के फलोंके
और अनाज की कटनी के समय की ललकार सुनाई पक्की है। 10 और फलदाई
बारियोंमें से आनन्द और मगनता जाती रही; दाख की बारियोंमें गीत न गाया
जाएगा, न हर्ष का शब्द सुनाई देगा; और दाखरस के कुण्डोंमें कोई दाख न रौंदेगा,
क्योंकि मैं उनके हर्ष के शब्द को बन्द करूंगा। 11 इसलिथे मेरा मन मोआब के
कारण और मेरा हृदय कीरहैरेस के कारण वीणा का सा क्रन्दन करता है।। 12
और जब मोआब ऊंचे स्यान पर मुंह दिखाते दिखाते यक जाए, और प्रार्यना करने

को अपके पवित्र स्यान में आए, तो उसे कुछ लाभ न होगा। 13 यही वह बात है
जो यहोवा ने इस से पहिले मोआब के विषय में कही यी। 14 परन्तु अब यहोवा ने
योंकहा है कि मजदूरोंके वर्षोंके समान ती वर्ष के भीतर मोआब का विभव और
उसकी भीड़-भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी; और योड़े जो बचेंगे उनका कोई बल न
होगा।।

यशायाह 17

1 दमिश्क के विषय भारी भविष्यवाणी। देखो, दमिश्क नगर न रहेगा, वह खंडहर
ही खंडहर हो जाएगा। 2 अरोएर के नगर निर्जन हो जाएंगे, वे पशुओं के फुण्ड़ोंकी
चराई बनेंगे; पशु उन में बैठेंगे और उनका कोई भगानेवाला न होगा। 3 एप्रैम के
गढ़वाले नगर, और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी, तीनोंभविष्य में न
रहेंगे; और जो दशा इस्राएलियोंके विभव की हुई वही उनकी होगी; सेनाओं के
यहोवा की यही वाणी है।। 4 और उस समय याकूब का विभव घट जाएगा, और
उसकी मोटी देह दुबली हो जाएगी। 5 और ऐसा होगा जैसा लवनेवाला अनाज
काटकर बालोंको अपक्की अंकवार में समेटे वा रपाईम नाम तराई में कोई सिला
बीनता हो। 6 तौभी जैसे जलपाई वृझ के फाड़ते समय कुछ फल रह जाते हैं,
अर्यात् फुनगी पर दो-तीन फल, और फलवन्त डालियोंमें कहीं कहीं चार-पांच फल
रह जाते हैं, वैसे ही उन में सिला बिनाई होगी, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है।। 7 उस समय मनुष्य अपके कर्ता की ओर दृष्टि करेगा, और उसकी आंखें
इस्राएल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी; 8 वह अपक्की बनाई हुई वेदियोंकी ओर
दृष्टि न करेगा, और न अपक्की बनाई हुई अशेरा नाम मूरतोंवा सूर्य की प्रतिमाओं

की ओर देखेगा। 9 उस समय उनके गढ़वाले नगर घने वन, और उनके निर्जन
स्यान पहाड़ोंकी चोटियोंके समान होंगे जो इस्राएलियोंके डर के मारे छोड़ दिए गए
थे, और वे उजाड़ पके रहेंगे।। 10 क्योंकि तू अपके उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल
गया और अपक्की दृढ़ चट्टान का स्मरण नहीं रखा; इस कारण चाहे तू
मनभावने पौधे लगाथे और विदेशी कलम जमाथे, 11 चाहे रोपके के दिन तू
अपके चारोंओर बाड़ा बान्धे, और बिहान ही को उन में फूल खिलने लगें, तौभी
सन्ताप और असाध्य दु:ख के दिन उसका फल नाश हो जाथेगा।। 12 हाथ, हाथ!
देश देश के बहुत से लोगोंका कैसा नाद हो रहा है, वे समुद्र की लहरोंकी नाईं
गरजते हैं। राज्य राज्य के लोगोंका कैसा गर्जन हो रहा है, वे प्रचण्ड धारा के
समान नाद करते हैं! 13 राज्य राज्य के लोग बाढ़ के बहुत से जल की नाईं नाद
करते हैं, परन्तु वह उनको घुड़केगा, और वे दूर भाग जाएंगे, और ऐसे उड़ाए
जाएंगे जैसे पहाड़ोंपर की भूसी वायु से, और धूलि बवण्डर से घुमाकर उड़ाई जाती
है। 14 सांफ को, देखो, घबराहट है! और भोर से पहिले, वे लोप हो गथे हैं! हमारे
नाश करनेवालोंको भाग और हमारे लूटनेवाले की यही दशा होगी।।

यशायाह 18

1 हाथ, पंखोंकी फड़फड़ाहट से भरे हुए देश, तू जो कूश की नदियोंके पके है; 2
और समुद्र पर दूतोंको नरकट की नावोंमें बैठाकर जल के मार्ग से यह कहके
भेजता है, हे फुर्तीले दूतो, उस जाति के पास जाओ जिसके लोग बलिष्ट और
सुन्दर हैं, जो आदि से अब तक डरावने हैं, जो मापके और रौंदनेवाला भी हैं, और
जिनका देश नदियोंसे विभाजित किया हुआ है।। 3 हे जगत के सब रहनेवालों,

और पृथ्वी के सब निवासियों, जब फंड़ा पहाड़ोंपर खड़ा किया जाए, उसे देखो!
जब नरसिंगा फूंका जाए, तब सुनो! 4 क्योंकि यहोवा ने मुझ से योंकहा है, धूप की
तेज गर्मी वा कटनी के समय के ओसवाले बादल की नाईं मैं शान्त होकर
निहारूंगा। 5 क्योंकि दाख तोड़ने के समय से पहिले जब फूल फूल चुकें, और दाख
के गुच्छे पकने लगें, तब वह टहनियोंको हंसुओं से काट डालेगा, और फैली हुई
डालियोंको तोड़ तोड़कर अलग फेंक देगा। 6 वे पहाड़ोंके मांसाहारी पक्षियोंऔर
वन-पशुओं के लिथे इकट्ठे पके रहेंगे। और मांसाहारी पक्की तो उनको नोचते
नोचते धूपकाल बिताएंगे, और सब भांति के वनपशु उनको खाते खाते जाड़ा
काटेंगे। 7 उस समय जिस जाति के लोग बलिष्ट और सुन्दर हैं, और जो आदि ही
से डरावने होते आए हैं, और मापके और रौंदनेवाले हैं, और जिनका देश नदियोंसे
विभाजित किया हुआ है, उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्यान
सिय्योन पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेंट पहुंचाई जाएगी।।

यशायाह 19

1 मिस्र के विषय में भारी भविष्यवाणी। देखो, यहोवा शीघ्र उड़नेवाले बादल पर
सवार होकर मिस्र में आ रहा है; 2 और मिस्र की मूरतें उसके आने से यरयरा
उठेंगी, और मिस्रियोंका हृदय पानी-पानी हो जाएगा। और मैं मिस्रियोंको एक
दूसरे के विरूद्ध उभारूंगा, और वे आपस में लड़ेंगे, प्रत्थेक अपके भाई से और हर
एक अपके पड़ोसी से लड़ेगा, नगर नगर में और राज्य राज्य में युद्ध छिड़ेंगा; 3
और मिस्रियोंकी बुद्धि मारी जाएगी और मैं उनकी युक्तियोंको व्यर्थ कर दूंगा; और
वे अपक्की मूरतोंके पास और ओफोंऔर फुसफुसानेवाले टोन्होंके पास जा जाकर

उन से पूछेंगे; 4 परन्तु मैं मिस्रियोंको एक कठोर स्वामी के हाथ में कर दूंगा; और
एक क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।। 5
और समुद्र का जल सूख जाएगा, और महानदी सूख कर खाली हो जाएगी; 6 और
नाले बसाने लगेंगे, और मिस्र की नहरें भी सूख जाएंगी, और नरकट और हूगले
कुम्हला जाएंगे। 7 नील नदी के तीर पर के कछार की घास, और जो कुछ नील
नदी के पास बोया जाएगा वह सूखकर नष्ट हो जाएगा, और उसका पता तक न
लगेगा। 8 सब मछुवे जितने नील नदी में बंसी डालते हैं विलाप करेंगे और लम्बी
लम्बी सासें लेंगे, और जो जल के ऊपर जाल फेंकते हैं वे निर्बल हो जाएंगे। 9 फिर
जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उनकी आशा टूट
जाएगी। 10 मिस्र के रईस तो निराश और उसके सब मजदूर उदास हो जाएंगे।।
11 निश्चय सोअन के सब हाकिम मूर्ख हैं; और फिरौन के बुद्धिमान मन्त्रियोंकी
युक्ति पशु की सी ठहरी। फिर तुम फिरौन से कैसे कह सकते हो कि मैं
बुद्धिमानोंका पुत्र और प्राचीन राजाओं की सन्तान हूं? 12 अब तेरे बुद्धिमान कहां
है? सेनाओं के यहोवा ने मिस्र के विषय जो युक्ति की है, उसको यदि वे जानते
होंतो तुझे बताएं। 13 सोअन के हाकिम मूढ़ बन गए हैं, नोप के हाकिमोंने धोखा
खाया है; और जिन पर मिस्र के गोत्रोंके प्रधान लोगोंका भरोसा या उन्होंने मिस्र
को भरमा दिया है। 14 यहोवा ने उस में भ्रमता उत्पन्न की है; उन्होंने मिस्र को
उसके सारे कामोंमें वमन करते हुए मतवाले की नाई डगमगा दिया है। 15 और
मिस्र के लिथे कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर वा पूंछ से अयवा प्रधान वा
साधारण से हो सके।। 16 उस समय मिस्री, स्त्रियोंके समान हो जाएंगे, और
सेनाओं का यहोवा जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उसके डर के मारे वे

थरथराएंगे और कांप उठेंगे। 17 ओर यहूदा का देश मिस्र के लिथे यहां तक भय
का कारण होगा कि जो कोई उसकी चर्चा सुनेगा वह थरथरा उठेगा; सेनाओं के
यहोवा की उस युक्ति का यही फल होगा जो वह मिस्र के विरूद्ध करता है।। 18 उस
समय मिस्र देश में पांच नगर होंगे जिनके लोग कनान की भाषा बोलेंगे और
यहोवा की शपय खाथेंगे। उन में से एक का नाम नाशनगर रखा जाएगा।। 19 उस
समय मिस्र देश के बीच में यहोवा के लिथे एक वेदी होगी, और उसके सिवाने के
पास यहोवा के लिथे एक खंभा खड़ा होगा। 20 वह मिस्र देश में सेनाओं के यहोवा
के लिथे चिन्ह और साझी ठहरेगा; और जब वे अंधेर करनेवाले के कारण यहोवा
की दोहाई देंगे, तब वह उनके पास एक उद्धारकर्ता और रझक भेजेगा, और उन्हें
मुक्त करेगा। 21 तब यहोवा अपके आप को मिस्रियोंपर प्रगट करेगा; और मिस्री
उस समय यहोवा को पहिचानेंगे और मेलबलि और अन्नबलि चढ़ाकर उसकी
उपासना करेंगे, और यहोवा के लिथे मन्नत मानकर पूरी भी करेंगे। 22 और
यहोवा मिस्रियोंको मारेगा, और मारेगा और चंगा भी करेगा, और वे यहोवा की
ओर फिरेंगे और वह उनकी बिनती सुनकर उनको चंगा करेगा।। 23 उस समय
मिस्र से अश्शूर जाने का एक राजमार्ग होगा, और अश्शूरी मिस्र में आएंगे और
मिस्री लोग अश्शूर को जाएंगे, और मिस्री अश्शूरियोंके संग मिलकर आराधना
करेंगे।। 24 उस समय इस्राएल, मिस्र और अश्शूर तीनोंमिलकर पृथ्वी के लिथे
आशीष का कारण होंगे। 25 क्योंकि सेनाओं का यहोवा उन तीनोंको यह कहकर
आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र, और मेरा रख हुआ अश्शूर, और मेरा निज
भाग इस्राएल।।

यशायाह 20

1 जिस वर्ष में अश्शूर के राजा सर्गोन की आज्ञा से तर्तान ने अशदोद आकर उस
से युद्ध किया और उसको ले भी लिया, 2 उसी वर्ष यहोवा ने आमोस के पुत्र
यशायाह से कहा, जाकर अपक्की कमर का टाट खोल और अपक्की जूतियां
उतार; सो उस ने वैसा ही किया, और वह नंगा और नंगे पांव घूमता फिरता या। 3
और यहोवा ने कहा, जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन वर्ष से उघाड़ा और नंगे
पांव चलता आया है, कि मिस्र और कूश के लिथे चिन्ह और चमत्कार हो, 4 उसी
प्रकार अश्शूर का राजा मिस्री और कूश के लोगोंको बंधुआ करके देश-निकाल
करेगा, क्या लड़के क्या बूढे, सभोंको बंधुए करके उघाड़े और नंगे पांव और
नितम्ब खुले ले जाएगा, जिस से मिस्र लज्जित हो। 5 तब वे कूश के कारण जिस
पर उनकी आशा यी, और मिस्र के हेतु जिस पर वे फूलते थे व्याकुल और
लज्जित हो जाएंगे। 6 और समुद्र के इस पार के बसनेवाले उस समय यह कहेंगे,
देखो, जिन पर हम आशा रखते थे ओर जिनके पास हम अश्शूर के राजा से बचने
के लिथे भागने को थे उनकी ऐसी दशा हो गई है। तो फिर हम लोग कैसे बचेंगे?

यशायाह 21

1 समुद्र के पास के जंगल के विषय भारी वचन। जैसे दक्खिनी प्रचण्ड बवण्डर
चला आता है, वह जंगल से अर्यात् डरावने देश से निकट आ रहा है। 2 कष्ट की
बातोंका मुझे दर्शन दिखाया गया है; विश्वासघाती विश्वासघात करता है, और
नाशक नाश करता है। हे एलाम, चढ़ाई कर, हे मादै, घेर ले; उसका सब कराहना
मैं बन्द करता हूं। 3 इस कारण मेरी कटि में कठिन पीड़ा है; मुझ को मानो जच्चा
पीडें हो रही है; मैं ऐसे संकट में पडत्र् गया हूं कि कुछ सुनाई नहीं देता, मैं एसा

घबरा गया हूं कि कुछ दिखाई नहीं दंता। 4 मेरा ह्रदय धड़कता है, मैं अत्यन्त
भयभीत हूं, जिस सांफ की मैं बाट जोहता या उसे उस ने मेरी यरयराहट का
कारण कर दिया है। 5 भोजन की तैयारी हो रही है, पहरूए बैठाए जा रहे हैं,
खाना-पीना हो रहा है। हे हाकिमो, उठो, ढाल में तेल मलो! 6 क्योंकि प्रभु ने मुझ
से योंकहा है, जाकर एक पहरूआ खड़ा कर दे, और वह जो कुछ देखे उसे बताए। 7
जब वह सवार देखे जो दो-दो करके आते हों, और गदहोंऔर ऊंटोंके सवार, तब
बहुत ही ध्यान देकर सुने। 8 और उस ने सिंह के से शब्द से पुकारा, हे प्रभु मैं दिन
भर खड़ा पहरा देता रहा और मैं ने पूरी रातें पहरे पर काटा। 9 और क्या देखता हूं
कि मनुष्योंका दल और दो-दो करके सवा चले आ रहे हैं! और वह बोल उठा, गिर
पड़ा, बाबुल गिर पड़ा; और उसके देवताओं के सब खुदी हुई मूरतें भूमि पर
चकनाचूर कर डाली गई हैं। 10 हे मेरे दाएं हुए, और मेरे खलिहान के अन्न, जो
बातें मैं ने इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी है, उनको मैं ने तुम्हें
जता दिया है। 11 दूमा के विषय भारी वचन। सेईर में से कोई मुझे पुकार रहा है,
हे पहरूए, रात का क्या समाचार है? हे पहरूए, रात की क्या खबर है? 12 पहरूए
ने कहा, भोर होती है और रात भी। यदि तुम पूछना चाहते हो तो पूछो; फिर
लौटकर आना।। 13 अरब के विरूद्ध भारी वचन। हे ददानी बटोहियों, तुम को
अरब के जंगल में रात बितानी पकेगी। 14 वे प्यासे के पास जल लाए, तेमा देश
के रहनेवाले रोटी लेकर भागनेवाले से मिलने के लिथे निकल आ रहे हैं। 15
क्योंकि वे तलवारोंके साम्हने से वरन नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और
घोर युद्ध से भागे हैं। 16 क्योंकि प्रभु ने मुझ से योंकहा है, मजदूर के वर्षोंके
अनुसार एक वर्ष में केदार का सारा विभव मिटाया जाएगा; 17 और केदार के

धनुर्धारी शूरवीरोंमें से योड़े ही रह जाएंगे; क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने
ऐसा कहा है।।

यशायाह 22

1 दर्शन की तराई के विषय में भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब के सब
छतोंपर चढ़ गए हो, 2 हे कोलाहल और ऊधम से भरी प्रसन्न नगरी? तुझ में जो
मारे गए हैं वे न तो तलवार से और न लड़ाई में मारे गए हैं। 3 तेरे सब न्यायी एक
संग भाग गए और धनुर्धारियोंसे बान्धे गए हैं। और तेरे जितने शेष पाए गए वे
एक संग बान्धे गए, वे दूर भागे थे। 4 इस कारण मैं ने कहा, मेरी ओर से मुंह फेर
लो कि मैं बिलक बिलककर रोऊं; मेरे नगर सत्यनाश होने के शोक में मुझे
शान्ति देने का यत्न मत करो।। 5 क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा का ठहराया हुआ
दिन होगा, जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदा जाना और बेचैनी होगी;
शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दोहाई का शब्द पहाड़ोंतक पहुंचेगा। 6
और एलाम पैदलोंके दल और सवारोंसमेत तर्कश बान्धे हुए है, और कीर ढाल
खोले हुए है। 7 तेरी उत्तम उत्तम तराइयां रयोंसे भरी हुई होंगी और सवार फाटक
के साम्हने पांति बान्धेंगे। उस ने यहूदा का घूंघट खोल दिया है। 8 उस दिन तू ने
वन नाम भवन के अस्त्र-शस्त्र का स्मरण किया, 9 और तू ने दाऊदपुर की
शहरपनाह की दरारोंको देखा कि वे बहुत हैं, और तू ने निचले पोखरे के जल को
इकट्ठा किया। 10 और यरूशलेम के घरोंको गिनकर शहरपनाह के दृढ़ करने के
लिथे घरोंको ढा दिया। 11 तू ने दोनोंभीतोंके बीच पुराने पोखरे के जल के लिथे
एक कुंड खोदा। परन्तु तू ने उसके कर्ता को स्मरण नहीं किया, जिस ने

प्राचीनकाल से उसको ठहरा रखा या, और न उसकी ओर तू ने दृष्टि की।। 12 उस
समय सेनाओं के प्रभु यहोवा ने रोने-पीटने, सिर मुंडाने और टाट पहिनने के लिथे
कहा या; 13 परन्तु क्या देखा कि हर्ष और आनन्द मनाया जा रहा है, गाय-बैल
का घात और भेड़-बकरी का वध किया जा रहा है, मांस खाया और दाखमधु पीया
जा रहा है। और कहते हैं, आओ खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो हमें मरना है। 14
सेनाओं के यहोवा ने मेरे कान में कहा और अपके मन की बात प्रगट की, निश्चय
तुम लोगोंके इस अधर्म का कुछ भी प्रायश्चित्त तुम्हारी मृत्यु तक न हो सकेगा,
सेनाओं के प्रभु यहोवा का यही कहना है। 15 सेनाओं का प्रभु यहोवा योंकहता है,
शेबना नाम उस भण्डारी के पास जो राजघराने के काम पर नियुक्त है जाकर कह,
यहां तू क्या करता है? 16 और यहां तेरा कौन है कि तू ने अपक्की कबर यहां
खुदवाई है? तू अपक्की कबर ऊंचे स्यान में खुदवाता और अपके रहने का स्यान
चट्टान में खुदवाता है? 17 देख, यहोवा तुझ को बड़ी शक्ति से पकड़कर बहुत दूर
फेंक देगा। 18 वह तुझे मरोड़कर गेन्द की नाई लम्बे चौड़े देश में फेंक देगा; हे
अपके स्वामी के घराने को लज्जित करनेवाले वहां तू मरेगा और तेरे विभव के
रय वहीं रह जाएंगे। 19 मैं तुझ को तेरे स्यान पर से ढकेल दूंगा, और तू अपके
पद से उतार दिया जाथेगा। 20 उस समय मैं हिल्कियाह के पुत्र अपके दास
एल्याकीम को बुलाकर, उसे तेरा अंगरखा पहनाऊंगा, 21 और उसकी कमर में
तेरी पेटी कसकर बान्धूंगा, और तेरी प्रभुता उसके हाथ में दूंगा। और वह
यरूशलेम के रहनेवालोंऔर यहूदा के घराने का पिता ठहरेगा। 22 और मैं दाऊद
के घराने की कुंजी उसके कंधे पर रखूंगा, और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर
सकेगा; वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा। 23 और मैं उसको दृढ़ स्यान

में खूंटी की नाईं गाड़ूंगा, और वह अपके पिता के घराने के लिथे विभव का कारण
होगा। 24 और उसके पिता से घराने का सारा विभव, वंश और सन्तान, सब
छोटे-छोटे पात्र, क्या कटोरे क्या सुराहियां, सब उस पर टांगी जाएंगी। 25 सेनाओं
के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय वह खूंटी जो दृढ़ स्यान में गाड़ी गई यी,
वह ढीली हो जाएगी, और काटकर गिराई जाएगी; और उस का बोफ गिर जाएगा,
क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।

यशायाह 23

1 सोर के विषय भारी वचन। हे तर्शीश के जहाजोंहाथ, हाथ, करो; क्योंकि वह
उजड़ गया; वहां न तो कोई घर और न कोई शरण का स्यान है! यह बात उनको
कित्तियोंके देश में से प्रगट की गई है। 2 हे समुद्र के तीर के रहनेवालों, जिनको
समुद्र के पार जानेवाले सीदोनी व्यापारियोंने धन से भर दिया है, चुप रहो! 3
शीहोर का अन्न, और नील नदी के पास की उपज महासागर के मार्ग से उसको
मिनती यी, क्योंकि वह और जातियोंके लिथे व्योपार का स्यान या। 4 हे सीदोन,
लज्जित हो, क्योंकि समुद्र ने अर्यात् समुद्र के दृढ़ स्थान ने यह कहा है, मैं ने न
तो कभी जन्माने की पीड़ा जानी और न बालक को जन्म दिया, और न बेटोंको
पाला और न बेटियोंको पोसा है। 5 जब सोर का समाचार मिस्र में पहुंचे, तब वे
सुनकर संकट में पकेंगे। 6 हे समुद्र के तीर के रहनेवालोंहाथ, हाथ, करो! पार
होकर तर्शीश को जाओ। 7 क्या यह तुम्हारी प्रसन्नता से भरी हुई नगरी है जो
प्राचीनकाल से बसी यी, जिसके पांव उसे बसने को दूर ले जाते थे? 8 सोर जो
राजाओं की गद्दी पर बैठाती यी, जिसके व्योपारी हाकिम थे, और जिसके महाजन

पृथ्वी भर में प्रतिष्ठित थे, उसके विरूद्ध किस ने ऐसी युक्ति की है? 9 सेनाओं के
यहोवा ही ने ऐसी युक्ति की है कि समस्त गौरव के घमण्ड को तुच्छ कर दे और
पृथ्वी के प्रतिष्ठितोंका अपमान करवाए। 10 हे तर्शीश के निवासियोंनील नदी की
नाई अपके देश में फैल जाओ; अब कुछ बन्धन नहीं रहा। 11 उस ने अपना हाथ
समुद्र पर बढ़ाकर राज्योंको हिला दिया है; यहोवा ने कनान के दृढ़ किलोंके नाश
करने की आज्ञा दी है। 12 और उस ने कहा है, हे सीदोन, हे भ्रष्ट की हुई कुमारी, तू
फिर प्रसन्न होने की नहीं; उठ, पार होकर कित्तियोंके पास जा, परन्तु वहां भी
तुझे चैन न मिलेगा।। 13 कसदियोंके देश को देखो, वह जाति अब न रही; अश्शूर
ने उस देश को जंगली जन्तुओं का स्यान बनाया। उन्होंने अपके गुम्मट उठाए
और राजभवनोंको ढ़ा दिया, और उसको खण्डहर कर दिया। 14 हे तर्शीश के
जहाजों, हाथ, हाथ, करो, क्योंकि तुम्हारा दृढ़स्यान उजड़ गया है। 15 उस समय
एक राजा के दिनोंके अनुसार सत्तर वर्ष के बीतने पर सोर वेश्या की नाईं गीत
गाने लगेगा। 16 हे बिसरी हुई वेश्या, वीणा लेकर नगर में घूम, भली भांति बजा,
बहुत गीत गा, जिस से लोग फिर तुझे याद करें। 17 सत्तर वर्ष के बीतने पर
यहोवा सोर की सुधि लेगा, और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर
धरती भर के सब राज्योंके संग छिनाला करेंगी। 18 उसके व्योपार की प्राप्ति, और
उसके छिनाले की कमाई, यहोवा के लिथे पवित्र कि जाएगी; वह न भण्डार में
रखी जाएगी न संचय की जाएगी, क्योंकि उसके व्योपार की प्राप्ति उन्हीं के काम
में आएगी जो यहोवा के साम्हने रहा करेंगे, कि उनको भरपूर भोजन और
चमकीला वस्त्र मिले।।

यशायाह 24

1 सुनों, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है, वह उसको उलटकर
उसके रहनेवालोंको तितर बितर करेग। 2 और जैसी यजमान की वैसी याजक
की; जैसी दास की वैसी स्वमी की; जैसी दासी की वैसी स्वामिनी की; जैसी
लेनेवाले की वैसी बेचनेवाले की; जैसी उधार देनेवाले की वैसी उधार लेनेवाले की;
जैसी ब्याज लेनेवाले की वैसी ब्याज देनेवाले की; सभोंकी एक ही दशा होगी। 3
पृथ्वी शून्य और सत्यानाश हो जाएगी; क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है।। 4
पृथ्वी विलाप करेगी और मुर्फाएगी, जगत कुम्हलाएगा और मुर्फा जाएगा; पृथ्वी
के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे। 5 पृथ्वी अपके रहनेवालोंके कारण अशुद्ध हो
गई है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्या का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला,
और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। 6 इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा और उस
में रहनेवाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और योड़े
ही मनुष्य रह जाएंगे। 7 नया दाखमधु जाता रहेगा, दाखलता मुर्फा जाएगी, और
जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी लम्बी सांस लेंगे। 8 डफ का सुखदाई
शब्द बन्द हो जाएगा, वीणा का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा। 9 वे गाकर फिर
दाखमधु न पीएंगे; पीनेवाले को मदिरा कड़ुकी लगेगी। 10 गड़बड़ी मचानेवाली
नगरी नाश होगी, उसका हर एक घर ऐसा बन्द किया जाएगा कि कोई पैठ न
सकेगा। 11 सड़कोंमें लोग दाखमधु के लिथे चिल्लाएंगे; आनन्द मिट जाएगा:
देश का सारा हर्ष जाता रहेगा। 12 नगर उजाड़ ही उजाड़ रहेगा, और उसके फाटक
तोड़कर नाश किए जाएंगे। 13 क्योंकि पृथ्वी पर देश देश के लोगोंमें ऐसा होगा
जैसा कि जलपाइयोंके फाड़ने के समय, वा दाख तोड़ने के बाद कोई कोई फल रह
जाते हैं।। 14 वे लोग गला खोलकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा के महात्म्य

को देखकर समुद्र से ललकारेंगे। 15 इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो,
और समुद्र के द्वीपोंमें इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो। 16
पृथ्वी की छोर से हमें ऐसे गीत की ध्वनि सुन पड़ती है, कि धर्मी की महिमा और
बड़ाई हो। परन्तु मैं ने कहा, हाथ, हाथ! मैं नाश हो गया, नाश! क्योंकि
विश्वासघाती विश्वासघात करते, वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं।। 17 हे पृथ्वी के
रहनेवालोंतुम्हारे लिथे भय और गड़हा और फन्दा है! 18 जो कोई भय के शब्द से
भागे वह गड़हे में गिरेगा, और जो कोई गड़हे में से निकले वह फन्दे में फंसेगा।
क्योंकि आकाश के फरोखे खुल जाएंगे, और पृथ्वी की नेव डोल उठेगी। पृथ्वी
अत्यन्त कम्पायमान होगी। 19 वह मतवाले की नाईं बहुत डगमगाएगी 20 और
मचान की नाईं डोलेगी; वह अपके पाप के बोफ से दबकर गिरेगी और फिर न
उठेगी।। 21 उस समय ऐसा होगा कि यहोवा आकाश की सेना को आकाश में और
पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी ही पर दण्ड देगा। 22 वे बंधुओं की नाईं गड़हे में
इकट्ठे किए जाएंगे और बन्दीगृह में बन्द किए जाएंगे; और बहुत दिनोंके बाद
उनकी सुधि ली जाएगी। 23 तब चन्द्रमा संकुचित हो जाएगा और सूर्य लज्जित
होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपक्की
प्रजा के पुरनियोंके साम्हने प्रताप के साय राज्य करेगा।।

यशायाह 25

1 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा;
क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साय
युक्तियां की हैं। 2 तू ने नगर को डीह, और उस गढ़वाले नगर को खण्डहर कर

डाला है; तू ने परदेशियोंकी राजपुरी को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा; वह
फिर कभी बसाया न जाएगा। 3 इस कारण बलवन्त राज्य के लोग तेरी महिमा
करेंगे; भयंकर अन्यजातियोंके नगरोंमें तेरा भय माना जाएगा। 4 क्योंकि तू
संकट में दीनोंके लिथे गढ़, और जब भयानक लोगोंका फोंका भीत पर बौछार के
समान होता या, तब तू दरिद्रोंके लिथे उनकी शरण, और तपन में छाया का स्यान
हुआ। 5 जैसे निर्जल देश में बादल की छाया से तपन ठण्डी होती है वैसे ही तू
परदेशियोंका कोलाहल और क्रूर लोगोंको जयजयकार बन्द करता है।। 6 सेनाओं
का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशोंके लोगोंके लिथे ऐसी जेवनार करेगा जिस में
भांति भांति का चिकना भोजन और नियरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम
चिकना भोजन और बहुत ही नियरा हुआ दाखमधु होगा। 7 और जो पर्दा सब
देशोंके लोगोंपर पड़ा है, जो घूंघट सब अन्यजातियोंपर लटका हुआ है, उसे वह
इसी पर्वत पर नाश करेगा। 8 वह मृत्यु को सदा के लिथे नाश करेगा, और प्रभु
यहोवा सभोंके मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपक्की प्रजा की नामधराई
सारी पृय्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है।। 9 और उस समय
यह कहा जाएगा, देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं,
कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उस
से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे। 10 क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का
हाथ सर्वदा बना रहेगा और मोआब अपके ही स्यान में ऐसा लताड़ा जाएगा जैसा
घूरे में पुआल लताड़ा जाता है। 11 और वह उस में अपके हाथ इस प्रकार
फैलाएगा, जैसे कोई तैरते हुए फैलाए; परन्तु वह उसके गर्व को तोड़ेगा; और
उसकी चतुराई को निष्फल कर देगा। 12 और उसकी ऊंची ऊंची औश्र् दृढ़

शहरपनाहोंको वह फुकाएगा और नीचा करेगा, वरन भूमि पर गिराकर मिट्टी में
मिला देगा।।

यशायाह 26

1 उस समय यहूदा देश में यह गीत गाया जाएगा, हमारा एक दृढ़ नगर है; उद्धार
का काम देने के लिथे वह उसकी शहरपनाह और गढ़ को नियुक्त करता है। 2
फाटकोंको खोलो कि सच्चाई का पालन करनेवाली एक धर्मी जाति प्रवेश करे। 3
जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साय रझा करता
है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। 4 यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि
प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है। 5 वह ऊंचे पदवाले को फुका देता, जो नगर ऊंचे
पर बसा है उसको वह नीचे कर देता। वह उसको भूमि पर गिराकर मिट्टी में
मिला देता है। 6 वह पांवोंसे, वरन दरिद्रोंके पैरोंसे रौंदा जाएगा।। 7 धर्मी का मार्ग
सच्चाई है; तू जो स्वयं सच्चाई है, तू धर्मी की अगुवाई करता है। 8 हे यहोवा, तेरे
न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे
प्राणोंमें लालसा बनी रहती है। 9 रात के समय मैं जी से तरी लालसा करता हूं,
मेरा सम्पूर्ण मन से यत्न के साय तुझे ढूंढ़ता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम
पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धर्म की सीखते हैं। 10 दुष्ट पर
चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म को न सीखेगा; धर्मराज्य में भी वह कुटिलता
करेगा, और यहोवा को महात्म्य उसे सूफ न पकेगा।। 11 हे यहोवा, तेरा हाथ बढ़ा
हुआ है, पर वे नहीं देखते। परन्तु वे जानेंगे कि तुझे प्रजा के लिथे कैसी जलन है,
और लजाएंगे। 12 तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिथे शान्ति

ठहराएगा, हम ने जो कुछ किया है उसे तू ही ने हमारे लिथे किया है। 13 हे हमारे
परमेश्वर यहोवा, तेरे सिवाय और स्वामी भी हम पर प्रभुता करते थे, परन्तु तेरी
कृपा से हम केवल तेरे ही नाम का गुणानुवाद करेंगे। 14 वे मर गए हैं, फिर कभी
जीवित नहीं होंगे; उनको मरे बहुत दिन हुए, वे फिर नहीं उठने के; तू ने उनका
विचार करके उनको ऐसा नाश किया कि वे फिर स्मरण में न आएंगे। 15 परन्तु
तू ने जाति को बढ़ाया; हे यहोवा, तू ने जाति को बढ़ाया है; तू ने अपक्की महिमा
दिखाई है और उस देश के सब सिवानोंको तू ने बढ़ाया है।। 16 हे यहोवा, दु:ख में
वे तुझे स्मरण करते थे, जब तू उन्हें ताड़ना देता या तब वे दबे स्वर से अपके
मन की बात तुझ पर प्रगट करते थे। 17 जैसे गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती
और पीड़ोंके कारण चिल्ला उठती है, हम लोग भी, हे यहोवा, तेरे साम्हने वैसे ही
हो गए हैं। 18 हम भी गर्भवती हुए, हम भी ऐंठें, हम ने मानो वायु ही को जन्म
दिया। हम ने देश के लिथे कोई उद्धार का काम नहीं किया, और न जगत के
रहनेवाले उत्पन्न हुए। 19 तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे
मिट्टी में बसनेवालो, जागकर जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से
उत्पन्न होती है, और पृय्वी मुर्दों को लौटा देगी।। 20 हे मेरे लोगों, आओ,
अपक्की अपक्की कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ोंको बन्द करो; योड़ी देर तक जब
तक क्रोध शान्त न हो तब तक अपके को छिपा रखो। 21 क्योंकि देखो, यहोवा
पृय्वी निवासिक्कों अधर्म का दण्ड देने के लिथे अपके स्यान से चला आता है,
और पृय्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किए हुओं को और अधिक न छिपा
रखेगी।।

यशायाह 27

1 उस समय यहोवा अपक्की कड़ी, बड़ी, और पोढ़ तलवार से लिव्यातान नाम
वेग और टेढ़े चलनेवाले सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर समुद्र में रहता है
उसको भी घात करेगा।। 2 उस समय एक सुन्दर दाख की बारी होगी, तुम उसका
यश गाना! 3 मैं यहोवा उसकी रझा करता हूं; मैं झण झण उसको सींचता रहूंगा।
ऐसा न हो कि कोई उसकी हाति करे। 4 मेरे मन में जलजलाहट नहीं है। यदि कोई
भांति भांति के कटीले पेड़ मुझ से लड़ने को खड़े करता, तो मैं उन पर पांव
बढ़ाकर उनको पूरी रीति से भस्म कर देता। 5 वा मेरे साय मेल करने को वे मेरी
शरण लें, वे मेरे साय मेल कर लें।। 6 भविष्य में याकूब जड़ पकड़ेगा, और
इस्राएल फूल-फलेगा, और उसके फलोंसे जगत भर जाएगा।। 7 क्या उस ने उसे
मारा जैसा उस ने उसके मारनेवालोंको मारा या? क्या वह घात किया गया जैसे
उसके घात किए हुए घात हुए? 8 जब तू ने उसे निकाला, तब सोच-विचार कर
उसको दु:ख दिया : उसे ने पुरवाई के दिन उसको प्रचण्ड वायु से उड़ा दिया है। 9
इस से याकूब के अधर्म का प्रायश्चित किया जाएगा और उसके पाप के दूर होने
का प्रतिफल यह होगा कि वे वेदी के सब पत्यरोंको चूना बनाने के पत्यरोंके
समान चकनाचूर करेंगे, और अशेरा और सूर्य की प्रतिमाएं फिर खड़ी न रहेंगी।
10 क्योंकि गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है, वह छोड़ी हुई बस्ती के समान निर्जन
और जंगल हो गया है; वहां बछड़े चरेंगे और वहीं बैठेंगे, और पेड़ोंकी डालियोंकी
फुनगी को खो लेंगे। 11 जब उसकी शाखाएं सूख जाएं तब तोड़ी जाएंगी; और
स्त्रियां आकर उनको तोड़कर जला देंगी। क्योंकि थे लोग निर्बुद्धि हैं; इसलिथे
उनका कर्ता उन पर दया न करेगा, और उनका रचनेवाला उन पर अनुग्रह न
करेगा।। 12 उस समय यहोवा महानद से लेकर मिस्र के नाले तक अपके अन्न

को फटकेगा, और हे इस्राएलियोंतुम एक एक करके इकट्ठे किए जाओगे। 13
उस समय बड़ा नरसिंगा ा फूंका जाएगा, और जो अश्शूर देश में नाश हो रहे थे
और जो मिस्र देश में बरबस बसाए हुए थे वे यरूशलेम में आकर पवित्र पर्वत पर
यहोवा को दण्डवत् करेंगे।।

यशायाह 28

1 घमण्ड के मुकुट पर हाथ! जो एप्रैम के मतवालोंका है, और उनकी भड़कीली
सुन्दरता पर जो मुर्फानेवाला फूल है, जो अति उपजाऊ तराई के सिक्के पर
दाखमधु से मतवालोंकी है। 2 देखो, प्रभु के पास एक बलवन्त और समर्यी है जो
ओले की वर्षा वा उजाड़नेवाली आंधी या बाढ़ की प्रचण्ड धार की नाईं है वह उसको
कठोरता से भूमि पर गिरा देगा। 3 एप्रैमी मतवालोंके घमण्ड का मुकुट पांव से
लताड़ा जाएगा; 4 और उनकी भड़कीली सुन्दरता का मुर्फानेवाला फूल जो अति
उपजाऊ तराई के सिक्के पर है, वह ग्रीष्मकाल से पहिले पके अंजीर के समान
होगा, जिसे देखनेवाला देखते ही हाथ में ले और निगल जाए।। 5 उस समय
सेनाओं का यहोवा स्वयं अपक्की प्रजा के बचे हुओं के लिथे सुन्दर और प्रतापी
मुकुट ठहरेगा; 6 और जो न्याय करने को बैठते हैं उनके लिथे न्याय करनेवाली
आत्मा और जो चढ़ाई करते हुए शत्रुओं को नगर के फाटक से हटा देते हैं, उनके
लिथे वह बल ठहरेगा।। 7 थे भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा से
लड़खड़ाते हैं; याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं, दाखमधु ने
उनको भुला दिया है, वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते और दर्शन पाते हुए भटके
जाते, और न्याय में भूल करते हैं। 8 क्योंकि सब भोजन आसन वमन और मल

से भरे हैं, कोई शुद्ध स्यान नहीं बचा।। 9 वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और
किसको अपके समाचार का अर्य समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और
स्तन से अलगाए हुए हैं? क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, 10 नियम
पर नियम, नियम पर नियम योड़ा यहां, योड़ा वहां।। 11 वह तो इन लोगोंसे
परदेशी होंठोंऔर विदेशी भाषावालोंके द्वारा बातें करेगा; 12 जिन से उस ने कहा,
विश्रम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा यके हुए को विश्रम दो; परन्तु उन्होंने सुनना
न चाहा। 13 इसलिथे यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर
आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, योड़ा यहां, योड़ा वहां, जिस से वे
ठोकर खाकर चित्त गिरें और घायल हो जाएं, और फंदे में फंसकर पकड़े जाएं।।
14 इस कारण हे ठट्ठा करनेवालो, यरूशलेमवासी प्रजा के हाकिमों, यहोवा का
वचन सुनो! 15 तुम ने कहा है कि हम ने मृत्यु से वाचा बान्धी और अधोलोक से
प्रतिज्ञा कराई है; इस कारण विपत्ति जब बाढ़ की नाई बढ़ आए तब हमारे पास न
आएगी; क्योंकि हम ने फूठ की शरण ली और मिय्या की आड़ में छिपे हुए हैं। 16
इसलिथे प्रभु यहोवा योंकहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का पत्यर रखा है,
एक परखा हुआ पत्यर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्यर:
और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा। 17 और मैं न्याय की डोरी और
धर्म को साहुल ठहराऊंगा; और तुम्हारा फूठ का शरणस्यान ओलोंसे बह जाएगा,
और तुम्हारे छिपके का स्यान जल से डूब जाएगा। 18 तब जो वाचा तुम ने मृत्यु
से बान्धी है वह टूट जाएगी, और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई वह न
ठहरेगी; जब विपत्ति बाढ़ की नाई बढ़ आए, तब तुम उस में डूब ही जाओगे। 19
जब जब वह बढ़ आए, तब तब वह तुम को ले जाएगी; वह प्रति दिन वरन रात

दिन बढ़ा करेंगी; और इस समाचार का सुनना ही व्याकुल होने का कारण होगा।
20 क्योंकि बिछौना टांग फैलाने के लिथे छोटा, और ओढ़ना ओढ़ने के लिथे
सकरा है।। 21 क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नाम पर्वत
पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उस ने क्रोध दिखाया या; वह अब
फिर क्रोध दिखाएगा, जिस से वह अपना काम करे, जो अचम्भित काम है, और
वह कार्य करे जो अनोखा है। 22 इसलिथे अब तुम ठट्ठा मत करो, नहीं तो
तुम्हारे बन्धन कसे जाएंगे; क्योंकि मैं ने सेनाओं के प्रभु यहोवा से यह सुना है कि
सारे देश का सत्यानाश ठाना गया है।। 23 कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान धरकर
मेरा वचन सुनो। 24 क्या हल जोतनेवाला बीज बोने के लिथे लगातार जोतता
रहता है? क्या वह सदा धरती को चीरता और हेंगाता रहता है? 25 क्या वह उसको
चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता, जीरे को नहीं बखेरता और गेहूं को पांति
पांति करके और जब को उसके निज स्यान पर, और कठिथे गेहूं को खेत की छोर
पर नहीं बोता? 26 क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक ठीक काम करना
सिखलाता और बतलाता है।। 27 दांवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती, और
गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर नहीं चलाया जाता; परन्तु सौंफ छड़ी से, और जीरा
सोंटें से फाड़ा जाता है। 28 रोटी के अन्न पर दाथें की जाती है, परन्तु कोई उसको
सदा दांवता नहीं रहता; और न गाड़ी के पहिथे न घोड़े उस पर चलाता है, वह उसे
चूर चूर नहीं करता। 29 यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह
अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है।।

यशायाह 29

1 हाथ, अरीएल, अरीएल, हाथ उस नगर पर जिस में दाऊद छावनी किए हुए रहा!
वर्ष पर वर्ष जाड़ते जाओ, उत्सव के पर्व अपके अपके समय पर मनाते जाओ। 2
तौभी मैं तो अरीएल को सकेती में डालूंगा, वहां रोना पीटना रहेगा, और वह मेरी
दृष्टि में सचमुच अरीएल सा ठहरेगा। 3 और मैं चारोंओर तेरे विरूद्ध छावनी करके
तुझे कोटोंसे घेर लूंगा, और तेरे विरूद्ध गढ़ भी बनाऊंगा। 4 तब तू गिराकर भूमि
में डाला जाएगा, और धूल पर से बोलेगा, और तेरी बात भूमि से धीमी धीमी
सुनाई देगी; तेरा बोल भूमि पर से प्रेत का सा होगा, और तू धूल से गुनगुनाकर
बोलेगा।। 5 तब तेरे परदेशी बैरियोंकी भीड़ सूक्ष्म धूलि की नाईं, और उन
भयानक लो◌ागोंकी भीड़ भूसे की नाई उड़ाई जाएगी। 6 और सेनाओं का यहोवा
अचानक बादल गरजाता, भूमि को कम्पाता, और महाध्वनि करता, बवण्डर और
आंधी चलाता, और नाश करनेवाली अग्नि भड़काता हुआ उसके पास आएगा। 7
और जातियोंकी सारी भीड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी, ओर जितने लोग उसके
और उसके गढ़ के विरूद्ध लड़ेंगे और उसको सकेती में डालेंगे, वे सब रात के देखे
हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे। 8 और जैसा कोई भूखा स्वपन में तो देखता है कि
वह खा रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका पेट भूखा ही है, वा कोई प्यासा
स्वपन में देखें की वह पी रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका गला सूखा
जाता है और वह प्यासा मर रहा है; वैसी ही उन सब जातियोंकी भीड़ की दशा
होगी जो सिय्योन पर्वत से युद्ध करेंगी।। 9 ठहर जाओ और चकित होओ! वे
मतवाले तो हैं, परन्तु दाखमधु से नहीं, वे डगमगाते तो हैं, परन्तु मदिरा पीने से
नहीं! 10 यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया है और उस ने तुम्हारी नबीरूपी
आंखोंको बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरोंपर पर्दा डाला है। 11

इसलिथे सारे दर्शन तुम्हारे लिथे एक लपेटी और मुहर की हुई पुस्तक की बातोंके
समान हैं, जिसे कोई पके-लिखे मनुष्य को यह कहकर दे, इसे पढ़, और वह कहे,
मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर मुहर की हुई है। 12 तब वही पुस्तक अनपके
को यह कहकर दी जाए, इसे पढ़, और वह कहे, मैं तो अनपढ़ हूं।। 13 और प्रभु ने
कहा, थे लोग जो मुंह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ
से दूर रखते हैं, और जो केवल मनुष्योंकी आज्ञा सुन सुनकर मेरा भय मानते हैं।
14 इस कारण सुन, मैं इनके साय अद्‌भुत काम वरन अति अद्‌भुत और अचम्भे
का काम करूंगा; तब इनके बुद्धिमानोंकी बुद्धि नष्ट होगी, और इनके प्रवीणोंकी
प्रवीणता जाती रहेगी।। 15 हाथ उन पर जो अपक्की युक्ति को यहोवा से छिपाने
का बड़ा यत्न करते, और अपके काम अन्धेरे में करके कहते हैं, हम को कौन
देखता है? हम को कौन जानता है? 16 तुम्हारी कैसी उलटी समझ है! क्या
कुम्हार मिट्‌टी के तुल्य गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु अपके कर्त्ता के
विषय कहे कि उस ने मुझे नहीं बनाया, वा रची हुई वस्तु अपके रचनेवाले के
विषय कहे, कि वह कुछ समझ नहीं रखता? 17 क्या अब योड़े ही दिनोंके बीतने
पर लबानोन फिर फलदाई बारी न बन जाएगा, और फलदाई बारी जंगल न गिनी
जएगी? 18 उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लेगेंगे, और अन्धे जिन्हें अब
कुछ नहीं सूफता, वे देखने लेगेंगे। 19 नम्र लोग यहोवा के कारण फिर आनन्दित
होंगे, और दरिद्र मनुष्य इस्राएल के पवित्र के कारण मगन होंगे। 20 क्योंकि
उपद्रवी फिर न रहेंगे और ठट्‌ठा करनेवालोंका अन्त होगा, और जो अनर्य करने
के लिथे जागते रहते हैं, जो मनुष्योंको वचन में फंसाते हैं, 21 और जो सभा में
उलहना देते उनके लिथे फंदा लगाते, और धर्म को व्यर्य बात के द्वारा बिगाड़ देते

हैं, वे सब मिट जाएंगे।। 22 इस कारण इब्राहीम का छुड़ानेवाला यहोवा, याकूब के
घराने के विषय योंकहता है, याकूब को फिर लज्जित होना न पकेगा, उसका मुख
फिर नीचा न होगा। 23 क्योंकि जब उसके सन्तान मेरा काम देखेंगे, जो मैं उनके
बीच में करूंगा, तब वे मेरे नाम को पवित्र मानेंगे, और इस्राएल के परमेश्वर को
अति भय मानेंगे। 24 उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और
जो कुड़कुड़ाते हैं वह शिझा ग्रहण करेंगे।।

यशायाह 30

1 यहोवा की यह वाणी है, हाथ उन बलवा करनेवाले लड़कोंपर जो युक्ति तो करते
परन्तु मेरी ओर से नहीं; वाचा तो बान्धते परन्तु मेरे आत्मा के सिखाथे नहीं;
और इस प्रकार पाप पर पाप बढ़ाते हैं। 2 वे मुझ से बिन पूछे मिस्र को जाते हैं कि
फिरौन की रझा में रहे और मिस्र की छाया में शरण लें। 3 इसलिथे फिरौन का
शरणस्यान तुम्हारी लज्जा का, और मिस्र की छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा
का कारण होगा। 4 उसके हाकिम सोअन में आए तो हैं और उसके दूत अब हानेस
में पहुंचे हैं। 5 वे सब एक ऐसी जाति के कारण लज्जित होंगे जिस से उनका कुछ
लाभ न होगा, जो सहाथता और लाभ के बदले लज्जा और नामधराई का कारण
होगी।। 6 दक्खिन देश के पशुओं के विषय भारी वचन। वे अपक्की धन सम्पति
को जवान गदहोंकी पीठ पर, और अपके खजानोंको ऊंटोंके कूबड़ोंपर लादे हुए,
संकट और सकेती के देश में होकर, जहां सिंह और सिंहनी, नाग और उड़नेवाले
तेज विषधर सर्प रहते हैं, उन लोगोंके पास जा रहे हैं जिन से उनको लाभ न
होगा। 7 क्योंकि मिस्र की सहाथता व्यर्थ और निकम्मी है, इस कारण मैं ने

उसको बैठी रहनेवाली रहब कहा है।। 8 अब आकर इसको उनके साम्हने पत्यर
पर खोद, और पुस्तक में लिख, कि वह भविष्य के लिथे वरन सदा के लिथे साझी
बनी रहे। 9 क्योंकि वे बलवा करनेवाले लोग और फूठ बोलनेवाले लड़के हैं जो
यहोवा की शिझा को सुनना नहीं चाहते। 10 वे दशिर्योंसे कहते हैं, दर्शी मत बनो;
और नबियोंसे कहते हैं, हमारे लिथे ठीक नबूवत मत करो; हम से चिकनी
चुपक्की बातें बोलो, धोखा देनेवाली नबूवत करो। 11 मार्ग से मुड़ो, पय से हटो,
और इस्राएल के पवित्र को हमारे साम्हने से दूर करो। 12 इस कारण इस्राएल का
पवित्र योंकहता है, तुम लोग जो मेरे इस वचन को निकम्मा जानते और अन्धेर
और कुटिलता पर भरोसा करके उन्हीं पर टेक लगाते हो; 13 इस कारण यह
अधर्म तुम्हारे लिथे ऊंची भीत का टूटा हुआ भाग होगा जो फटकर गिरने पर हो,
और वह अचानक पल भर में टूटकर गिर पकेगा, 14 और कुम्हार के बर्तन की
नाई फूटकर ऐसा चकनाचूर होगा कि उसके टुकड़ोंका एक ठीकरा भी न मिलेगा
जिस से अंगेठी में से आग ली जाए वा हौद में से जल निकाला जाए।। 15 प्रभु
यहोवा, इस्राएल का पवित्र योंकहता है, लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा
उद्धार है; शान्त रहते और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है। परन्तु तुम ने ऐसा
नहीं किया, 16 तुम ने कहा, नहीं, हम तो घोड़ोंपर चढ़कर भागेंगे, इसलिथे तुम
भागोगे; और यह भी कहा कि हम तेज सवारी पर चलेंगे, सो तुम्हारा पीछा
करनेवाले उस से भी तेज होंगे। 17 एक ही की धमकी से एक हजार भागेंगे, और
पांच की धमकी से तुम ऐसा भागोगे कि अन्त में तुम पहाड़ की चोटी के डण्डे वा
टीले के ऊपर की ध्वजा के समान रह जाओगे जो चिन्ह के लिथे गाड़े जाते हैं। 18
तौभी यहोवा इसलिथे विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और इसलिथे

ऊंचे उठेगा कि तुम पर दया करे। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य
हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं।। 19 हे सिय्योन के लोगोंतुम यरूशलेम में
बसे रहो; तुम फिर कभी न रोओगे, वह तुम्हारी दोहाई सुनते ही तुम पर निश्चय
अनुग्रह करेगा: वह सुनते ही तुम्हारी मानेगा। 20 और चाहे प्रभु तुम्हें विपत्ति की
रोटी और दु:ख का जल भी दे, तौभी तुम्हारे उपकेशक फिर न छिपें, और तुम
अपक्की आंखोंसे अपके उपकेशकोंको देखते रहोगे। 21 और जब कभी तुम
दहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानोंमें
पकेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो। 22 तब तुम वह चान्दी जिस से तुम्हारी खुदी
हुई मूत्तियां मढ़ी हैं, और वह सोना जिस से तुम्हारी ढली हुई मूत्तियां आभूषित हैं,
अशुद्ध करोगे। तुम उनको मैले कुचैले वस्त्र की नाईं फेंक दोगे और कहोगे, दूर हो।
23 और वह तुम्हारे लिथे जल बरसाएगा कि तुम खेत में बीज बो सको, और भूमि
की उपज भी उत्तम और बहुतायत से होगी। उस समय तुम्हारे जानवरोंको
लम्बी-चौड़ी चराई मिलेगी। 24 और बैल और गदहे जो तुम्हारी खेती के काम में
आएंगे, वे सूप और डलिया से फटका हुआ स्वादिष्ट चारा खाएंगे। 25 और उस
महासंहार के समय जब गुम्मट गिर पकेंगे, सब ऊंचे ऊंचे पहाड़ोंऔर पहाड़ियोंपर
नालियां और सोते पाए जाएंगे। 26 उस समय यहोवा अपक्की प्रजा के लोगोंका
घाव बान्धेगा और उनकी चोट चंगा करेगा; तब चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य का सा,
और सूर्य का प्रकाश सातगुना होगा, अर्यात् अठवारे भर का प्रकाश एक दिन में
होगा।। 27 देखो, यहोवा दूर से चला आता है, उसका प्रकोप भड़क उठा है, और
धूएं का बादल उठ रहा है; उसके होंठ क्रोध से भरे हुए और उसकी जीभ भस्म
करनेवाली आग के समान है। 28 उसकी सांस ऐसी उमण्डनेवाली नदी के समान

है जो गले तक पहुंचक्की है; वह सब जातियोंको नाश के सूप से फटकेगा, और
देश देश के लोगोंको भटकाने के लिथे उनके जभड़ोंमें लगाम लगाएगा।। 29 तब
तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत गाओगे, और जैसा लोग यहोवा के पर्वत की
ओर उस से मिलने को, जो इस्राएल की चट्टान है, बांसुली बजाते हुए जाते हैं,
वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा। 30 और यहोवा अपक्की प्रतापीवाणी
सुनाएगा, और अपना क्रोध भड़काता और आग की लौ से भस्म करता हुआ, और
प्रचण्ड आन्धी और अति वर्षा और ओलोंके साय अपना भुजबल दिखाएगा। 31
अश्शूर यहोवा के शब्द की शक्ति से नाश हो जाएगा, वह उसे सोंटे से मारेगा। 32
और जब जब यहोवा उसको दण्ड देगा, तब तब साय ही डफ और वीणा बजेंगी;
और वह हाथ बढ़ाकर उसको लगातार मारता रहेगा। 33 बहुत काल से तोपेत
तैयार किया गया है, वह राजा की के लिथे ठहराया गया है, वह लम्बा चौड़ा और
गहिरा भी बनाया गया है, वहां की चिता में आग और बहुत सी लकड़ी हैं; यहोवा
की सांस जलती हुई गन्धक की धारा की नाईं उसको सुलगाएगी।।

यशायाह 31

1 हाथ उन पर जो सहाथता पाने के लिथे मिस्र को जाते हैं और घोड़ोंका आसरा
करते हैं; जो रयोंपर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारोंपर, क्योंकि वे
अति बलवान हैं, पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की
खोज करते हैं! 2 परन्तु वह भी बुद्धिमान है और दु:ख देगा, वह अपके वचन न
टालेगा, परन्तु उठकर कुकमिर्योंके घराने पर और अनर्यकारियोंके सहाथकोंपर
भी चढ़ाई करेगा। 3 मिस्री लोग ईश्वर नहीं, मनुष्य ही हैं; और उनके घोड़े आत्मा

नहीं, मांस ही हैं। जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा, तब सहाथता करनेवाले और
सहाथतक चाहनेवाले दोनोंठोकर खाकर गिरेंगे, और वे सब के सब एक संग नष्ट
हो जाएंगे। 4 फिर यहोवा ने मुझ से योंकहा, जिस प्रकार सिंह वा जवान सिंह जब
अपके अहेर पर गुर्राता हो, और चरवाहे इकट्ठे होकर उसके विरूद्ध बड़ी भीड़
लगाएं, तौभी वह उनके बोल से न घबराएगा और न उनके कोलाहल के कारण
दबेगा, उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा, सिय्योन पर्वत और यरूशलेम की पहाड़ी
पर, युद्ध करने को उतरेगा। 5 पंख फैलाई हुई चिड़ियोंकी नाईं सेनाओं का यहोवा
यरूशलेम की रझा करेगा; वह उसकी रझा करके बचाएगा, और उसको बिन छूए
ही उद्धार करेगा।। 6 हे इस्राएलियों, जिसके विरूद्ध तुम ने भारी बलवा किया है,
उसी की ओर फिरो। 7 उस समय तुम लोग सोने चान्दी की अपक्की अपक्की
मूतिर्योंसे जिन्हें तुम बनाकर पापी हो गए हो धृणा करोगे। 8 तब अश्शूर उस
तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं; वह उस तलवार का कौर हो
जाएगा जो आदमी की नहीं; और वह तलवार के साम्हने से भागेगा और उसके
जवान बेगार में पकड़े जाएंगे। 9 वह भय के मारे अपके सुन्दर भवन से जाता
रहेगा, और उसके हाकिम धबराहट के कारण ध्वजा त्याग कर भाग जाएंगे,
यहोवा जिस की अग्नि सिय्योन में और जिसका भट्ठा यरूशेलम में हैं, उसी यह
वाणी है।।

यशायाह 32

1 देखो, एक राजा धर्म से राज्य करेगा, और राजकुमा न्याय से हुकूमत करेंगे। 2
हर एक मानो आंधी से छिपके का स्यान, और बौछार से आड़ होगा; या निर्जल

देश में जल के फरने, व तप्त भूमि में बड़ी चट्टान की छाया। 3 उस समय
देखनेवालोंकी आंखें धुंधली न होंगी, और सुननेवालोंके कान लगे रहेंगे। 4
उतावलोंके मन ज्ञान की बातें समझेंगे, और तुतलानेवालोंकी जीभ फुर्ती से और
साफ बोलेगी। 5 मूढ फिर उदार न कहलाएगा और न कंजूस दानी कहा जाएगा। 6
क्योंकि मूढ तो मूढता ही की बातें बोलता और मन में अनर्थ ही गढ़ता रहता है कि
वह बिन भक्ति के काम करे और यहोवा के विरूद्ध फूठ कहे, भूखे को भूखा ही रहने
दे और प्यासे का जल रोक रखे। 7 छली की चालें बुरी होती हैं, वह दुष्ट युक्तियां
निकालता है कि दरिद्र को भी फूठी बातोंमें लूटे जब कि वे ठीक और नम्रता से भी
बोलते हों। 8 परन्तु उदार मनुष्य उदारता ही की युक्तियां निकालता है, वह
उदारता में स्यिर भी रहेगा।। 9 हे सुखी स्त्रियों, उठकर मेरी सुनो; हे निश्चिन्त
पुत्रियों, मेरे वचन की ओर कान लगाओ। 10 हे निश्चिन्त स्त्रियों, वर्ष भर से कुछ
ही अधिक समय में तुम विकल हो जाओगी; क्योंकि तोड़ने को दाखें न होंगी और
न किसी भांति के फल हाथ लगेंगे। 11 हे सुखी स्त्रियों, यरयराओ, हे निश्चिन्त
स्त्रियों, विकल हो; अपके अपके वस्त्र उतारकर अपक्की अपक्की कमर में टाट
कसो। 12 वे मनभाऊ खेतोंऔर फलवन्त दाखलताओं के लिथे छाती पीटेंगी। 13
मेरे लागोंके वरन प्रसन्न नगर के सब हर्ष भरे घरोंमें भी भांति भांति के कटीले
पेड़ उपकेंगे। 14 क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा, कोलाहल से भरा नगर
सुनसान हो जाएगा और पहाड़ी और उन पर के पहरूओं के घर सदा के लिथे मांदे
और जंगली गदहोंको विहारस्यान और घरैलू पशुओं की चराई उस समय तक
बने रहेंगे 15 जब तक आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाए, और जंगल
फलदायक बारी न बने, और फलदायक बारी फिर वन न गिनी जाए। 16 तब उस

जंगल में न्याय बसेगा, और उस फलदायक बारी में धर्म रहेगा। 17 और धर्म का
फल शांति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा। 18 मेरे
लोग शान्ति के स्यानोंमें निश्चिन्त रहेंगे, और विश्रम के स्यानोंमें सुख से रहेंगे।
19 और वन के विनाश के समय ओले गिरेंगे, और नगर पूरी रीति से चौपट हो
जाएगा। 20 क्या ही धन्य हो तुम जो सब जलाशयोंके पास बीच बोते, और
बैलोंऔर गदहोंको स्वतन्त्रता से चराते हो।।

यशायाह 33

1 हाथ तुझ नाश करनेवाले पर जो नाश नहीं किया गया या; हाथ तुझ
विश्वासघाती पर, जिसके साय विश्वासघात नहीं किया गया! जब तू नाश कर
चुके, तब तू नाश किया जाएगा; और जब तू विश्वासघात कर चुके, तब तेरे साय
विश्वासघात किया जाएगा।। 2 हे यहोवा, हम लोगोंपर अनुग्रह कर; हम तेरी ही
बाट जोहते हैं। भोर को तू उनका भुजबल, संकट के समय हमारा उद्धारकर्त्ता
ठहर। 3 हुल्लडक्ष सुनते ही देश देश के लोग भाग गए, तेरे उठने पर
अन्यजातियां तित्तर-बित्तर हुई। 4 और जैसे टिड्डियां चट करती हैं वैसे ही
तुम्हारी लूट चट की जाएगी, और जैसे टिड्डियां टूट पड़ती हैं, वैसे ही वे उस पर
टूट पकेंगे।। 5 यहोवा महान हुआ है, वह ऊंचे पर रहता है; उस ने सिय्योन को
न्याय और धर्म से परिपूर्ण किया है; 6 और उद्धार, बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत
तेरे दिनोंका आधार होगी; यहोवा का भय उसका धन होगा।। 7 देख, उनके
शूरवीर बाहर चिल्ला रहे हैं; संधि के दूत बिलक बिलककर रो रहे हैं। 8 राजमार्ग
सुनसान पके हैं, उन पर बटोही अब नहीं चलते। उस ने वाचा को टाल दिया,

नगरोंको तुच्छ जाना, उस ने मनुष्य को कुछ न समझा। 9 पृथ्वी विलाप करती
और मुर्फा गई है; लबानोन कुम्हला गया और उस पर सियाही छा गई है; शारोन
मरूभूमि के समान हो गया; बाशान और कर्मेल में पतफड़ हो रहा है।। 10 यहोवा
कहता है, अब मैं उठूंगा, मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा; अब मैं महान ठहरूंगा। 11
तुम में सूखी घास का गर्भ रहेगा, तुम से भूसी उत्पन्न होगी; तुम्हारी सांस आग
है जो तुम्हें भस्म करेगी। 12 देश देश के लोग फूंके हुए चूने के सामान हो जाएंगे,
और कटे हुए कटीले पेड़ोंकी नाई आग में जलाए जाएंगे।। 13 हे दूर दूर के लोगों,
सुनो कि मैं ने क्या किया है? और तुम भी जो निकट हो, मेरा पराक्रम जान लो।
14 सिय्योन के पापी यरयरा गए हैं: भक्तिहीनोंको कंपकंपी लगी है: हम में से कोन
प्रचण्ड आग में रह सकता? हम में से कौन उस आग में बना रह सकता है जो
कभी नहीं बुफेगी? 15 जो धर्म से चलता और सीधी बातें बोलता; जो अन्धेर के
लाभ से घृणा करता, जो घूस नही लेता; जो खून की बात सुनने से कान बन्द
करता, और बुराई देखने से आंख मूंद लेता है। वही ऊंचे स्यानोंमें निवास करेगा।
16 वह चट्टानोंके गढ़ोंमें शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी
की घटी कभी न होगी।। 17 तू अपक्की आंखोंसे राजा को उसकी शोभा सहित
देखेगा; और लम्बे चौड़े देश पर दृष्टि करेगा। 18 तू भय के दिनोंको स्मरण करेगा:
लेखा लेनेवाला और कर तौल कर लेनेवाला कहां रहा? गुम्मटोंका गिननेवाला
कहां रहा? 19 जिनकी कठिन भाषा तू नहीं समझता, और जिनकी लड़बड़ाती
जीभ की बात तू नहीं बूफ सकता उन निर्दय लोगोंको तू फिर न देखेगा। 20 हमारे
पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर! तू अपक्की आंखोंसे यरूशेलम को देखेगा, वह
विश्रम का स्यान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई

खूंटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी। 21 वहां महाप्रतापी
यहोवा हमारे लिथे रहेगा, वह बहुत बड़ी बड़ी नदियोंऔर नहरो का स्यान होगा,
जिस में डांड़वाली नाव न चलेगी और न शोभायमान जहाज उस में होकर
जाएगा। 22 क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा हाकिम, यहोवा हमारा
राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा।। 23 तेरी रस्सियां ढीली हो गईं, वे मस्तूल की
जड़ को दृढ़ न रख सकीं, और न पाल को तान सकीं।। तब बड़ी लूट छीनकर बांटी
गई, लंगड़े लोग भी लूट के भागी हुए। 24 कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं;
और जो लाग उस में बसेंगे, उनका अधर्म झमा किया जाएगा।।

यशायाह 34

1 हे जाति जाति के लोगों, सुनने के लिथे निकट आओ, और हे राज्य राज्य के
लोगों, ध्यान से सुनो! पृय्वी भी, और जो कुछ उस में है, जगत और जो कुछ उस
में उत्पन्न होता है, सब सुनो। 2 यहोवा सब जातियोंपर क्रोध कर रहा है, और
उनकी सारी सेना पर उसकी जलजलाहट भड़की हुई है, उस ने उनको सत्यानाश
होने, और संहार होने को छोड़ दिया है। 3 उनके मारे हुए फेंक दिथे जाएंगे, और
उनकी लोयोंकी दुर्गन्ध उठेगी; उनके लोहू से पहाड़ गल जाएंगे। 4 आकाश के सारे
गण जाते रहेंगे और आकाश कागज की नाई लपेटा जाएगा। और जैसे दाखलता
वा अंजीर के वृझ के पत्ते मुर्फाकर गिर जाते हैं, वैसे ही उसके सारे गण धुंधले
होकर जाते रहेंगे।। 5 क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तृप्त हुई है; देखो, वह
न्याय करने को एदोम पर, और जिन पर मेरा शाप है उन पर पकेगी। 6 यहोवा
की तलवार लोहू से भर गई है, वह चर्बी से और भेड़ोंके बच्चोंऔर बकरोंके लोहू से,

और मेढ़ोंके गुर्दोंकी चर्बी से तृप्त हुई है। क्योंकि बोस्रा नगर में यहोवा का एक यज्ञ
और एदोम देश में बड़ा संहार हुआ है। 7 उनके संग जंगली सांढ़ और बछड़े और
बैल वध होंगे, और उनकी भूमि लोहू से भीग जाएगी और वहां की मिट्टी चर्बी से
अघा जाएगी।। 8 क्योंकि पलटा लेने को यहोवा का एक दिन और सिय्योन का
मुकद्दमा चुकाने का एक वर्ष नियुक्त है। 9 और एदोम की नदियां राल से और
उसकी मिट्टी गन्धक से बदल जाएगी; उसकी भूमि जलती हुई राल बन जाएगी।
10 वह रात-दिन न बुफेगी; उसका धूंआ सदैव उठता रहेगा। युग युग वह उजाड़
पड़ा रहेगा; कोई उस में से होकर कभी न चलेगा। 11 उस में धनेशपक्की और
साही पाए जाएंगे और वह उल्लू और कौवे का बसेरा होगा। वह उस पर गड़बड़ की
डोरी और सुनसानी का साहूल तानेगा। 12 वहां न तो रईस होंगे और न ऐसा कोई
होगा जो राज्य करने को ठहराया जाए; उसके सब हाकिमोंका अन्त होगा।। 13
उसके महलोंमें कटीले पेड़, गढ़ोंमें बिच्छू पौधे और फाड़ उगेंगे। वह गीदड़ोंका
वासस्यान और शुतुर्मुर्गोंका आंगन हो जाएगा। 14 वहां निर्जल देश के जन्तु
सियारोंके संग मिलकर बसेंगे और रोंआर जन्तु एक दूसरे को बुलाएंगे; वहां
लीलीत नाम जन्तु वासस्यान पाकर चैन से रहेगा।। 15 वहां उड़नेवाली सांपिन
का बिल होगा; वे अण्डे देकर उन्हें सेवेंगी और अपक्की छाया में बटोर लेंगी; वहां
गिद्ध अपक्की सायिन के साय इकट्ठे रहेंगे। 16 यहोवा की पुस्तक से ढूंढ़कर पढ़ो
इन में से एक भी बात बिना पूरा हुए न रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि
मैं ने अपके मुंह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है।
17 उसी ने उनके लिथे चिट्ठी डाली, उसी ने अपके हाथ से डोरी डालकर उस दंश
को उनके लिथे बांट दिया है; वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी

तब उस में बसे रहेंगे।।

यशायाह 35

1 जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरूभूमि मगन होकर केसर की नाईं
फूलेगी; 2 वह अत्यन्त प्रभुल्लित होगी और आनन्द के साय जयजयकार
करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य
तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे।। 3
ढीले हाथोंको दृढ़ करो और यरयराते हुए घुटनोंको स्यिर करो। 4 घबरानेवालोंसे
कहो, हियाव बान्धो, मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल
देने को आ रहा है। हां, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।। 5 तब अन्धोंकी
आंखे खोली जाएंगी और बहिरोंके कान भी खोले जाएंगे; 6 तब लंगड़ा हरिण की
सी चौकडिय़ां भरेगा और गूंगे अपक्की जीभ से जयजयकार करेंगे। क्योंकि
जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरूभूमि में नदियां बहने लगेंगीद्ध 7
मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्यान में
सियार बैठा करते हैं उस में घास और नरकट और सरकण्डे होंगे।। 8 और वहां
एक सड़क अर्यात् राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा; कोई अशुद्ध जन
उस पर से न चलने पाएगा; वह तो उन्हीं के लिथे रहेगा और उस मार्ग पर जो
चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी होंतौभी कभी न भटकेंगे। 9 वहां सिंह न होगा ओर न कोई
हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा न वहां पाया जाएगा, परन्तु छुड़ाए हुए उस में
नित चलेंगे। 10 और यहोवा ने छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए
सिय्योन में आएंगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और

आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा।।

यशायाह 36

1 हिजकिय्याह राजा के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब
गढ़वाले नगरोंपर चढ़ाई करके उनको ले लिया। 2 और अश्शूर के राजा ने रबशाके
की बड़ी सेना देकर लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरूद्ध
भेज दिया। और वह उत्तरी पोखरे की नाली के पास धोबियोंके खेत की सड़क पर
जाकर खड़ा हुआ। 3 तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम
पर नियुक्त या, और शेब्ना जो मन्त्री या, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास
का लेखक या, थे तीनोंउस से मिलने को बाहर निकल गए।। 4 रबशाके ने उन से
कहा, हिजकिय्याह से कहा, महाराजाधिराज अश्शूर का राजा योंकहता है कि तू
किसका भरोसा किए बैठा है? 5 मेरा कहना है कि क्या मुंह से बातें बनाना ही युद्ध
के लिथे पराक्रम और युक्ति है? तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से
बलवा किया है? 6 सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्यात् मिस्र पर भरोसा
रखता है; उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उसके हाथ में चुभकर छेद कर
देगा। मिस्र का राजा फिरौन उन सब के साय ऐसा ही करता है जो उस पर भरोसा
रखते हैं। 7 फिर यदि तू मुझ से कहे, हमारा भरोसा अपके परमेश्वर यहोवा पर है,
तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊंचे स्यानोंऔर वेदियोंको ढा कर हिजकिय्याह ने
यहूदा और यरूशलेम के लोगोंसे कहा कि तुम इस वेदी के साम्हने दण्डवत् किया
करो? 8 इसलिथे अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के साय वाचा बान्ध तब मैं तुझे
दो हजार घोड़े दूंगा यदि तू उन पर सवार चढ़ा सके। 9 फिर तू रयोंऔर सवारोंके

लिथे मिस्र पर भरोसा रखकर मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी को भी कैसे
हटा सकेगा? 10 क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस देश को उजाड़ने के लिथे
चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझ से कहा है, उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे।।
11 तब एल्याकीम, शेब्ना और योआह ने रबशाके से कहा, अपके दासोंसे अरामी
भाषा में बात कर क्योंकि हम उसे समझते हैं; हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह
पर बैठे हुए लोगोंके सुनते बातें न कर। 12 रबशाके ने कहा, क्या मेरे स्वामी ने
मुझे तेरे स्वामी ही के वा तुम्हारे ही पास थे बातें कहने को भेजा है? क्या उस ने
मुझे उन लोगोंके पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं जिन्हें तुम्हारे संग
अपक्की विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पकेगा? 13 तब रबशाके ने खड़े होकर
यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा, महाराजाधिराज अश्शूर के राजा की बातें सुनो!
14 राजा योंकहता है, हिजकिय्याह तुम को धोखा न दे, क्योंकि वह तुम्हें बचा न
सकेगा। 15 ऐसा न हो कि हिजकिय्याह तुम से यह कहकर भुलवा दे कि यहोवा
निश्चय हम को बचाएगा कि यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पकेगा। 16
हिजकिय्याह की मत सुनो; अश्शूर का राजा कहता है, भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न
करो और मेरे पास निकल आओ; तब तुम अपक्की अपक्की दाखलता और
अंजीर के वृझ के फल खा पाओगे, और अपके अपके कुण्ड का पानी पिया करोगे;
17 जब तक मैं आकर तुम को ऐसे देश में न ले जाऊं जो तुम्हारे देश के समान
अनाज और नथे दाखमधु का देश और रोटी और दाख की बारियोंका देश है। 18
ऐसा न हो कि हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम को
बचाएगा। क्या और जातियोंके देवताओं ने अपके अपके देश को अश्शूर के राजा
के हाथ से बचाया है? 19 हमात और अर्पाद के देवता कहां रहे? सपर्वैम के देवता

कहां रहे? क्या उन्होंने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया? 20 देश देश के देवतओं
में से ऐसा कौन है जिस ने अपके देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा
यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा? 21 परन्तु वे चुप रहे और उसके उत्तर में एक
बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा यी कि उसको उत्तर न देना। 22 तब
हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त या और शेब्ना
जो मन्त्री या और आसाप या, इन्होंने हिजकिय्याह के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर
रबशाके की बातें कह सुनाई।।

यशायाह 37

1 जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपके वस्त्र फाड़ और टाट ओढ़कर
यहोवा के भवन में गया। 2 और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर
नियुक्त या और शेब्ना मन्त्री को और याजकोंके पुरनियोंको जो सब टाट ओढ़े हुए
थे, आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेज दिया। 3 उन्होंने उस से कहा,
हिजकिय्याह योंकहता है कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का
दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जनने का बल न रहा। 4 सम्भव है
कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने रबशाके की बातें सुनी जिसे उसके स्वामी अश्शूर के
राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जा बातें तेरे परमेश्वर
यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपके; सो तू इन बचे हुओं के लिथे जो रह गए हैं, प्रार्यना
कर।। 5 जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए। 6 तब
यशायाह ने उन से कहा, अपके स्वामी से कहो, यहोवा योंकहता है कि जो वचन तू
ने सुने हैं जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनोंमें मेरी निन्दा की है, उनके कारण

मत डर। 7 सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा करूंगा जिस से वह कुछ समचार सुनकर
अपके देश को लौट जाए; और मैं उसको उसी देश में तलवार से मरवा डालूंगा।। 8
तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया;
क्योंकि उस ने सुना या कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। 9 उस ने कूश के
राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह उस से लड़ने को निकला है। तब उस ने
हिजकिय्याह के पास दूतोंको यह कहकर भेजा। 10 कि तुम यहूदा के राजा
हिजकिय्याह से योंकहना, तेरा परमेश्वर जिस पर तू भरोसा करता है, यह कहकर
तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पकेगा। 11
देख, तू ने सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशोंसे कैसा व्यवहार किया कि
उन्हें सत्यानाश ही कर दिया। 12 फिर क्या तू बच जाएगा? गोज़ान और हारान
और रेसेप में रहनेवाली जिन जातियोंको और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी
लोगोंको मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उनके देवताओं ने उन्हें बचा लिया? 13
हमात का राजा, अर्पाद का राजा, सपर्वैम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के
राजा, थे सब कहां गए? 14 इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतोंके हाथ से लेकर
पढ़ा; तब उस ने यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को यहोवा के साम्हने फैला
दिया। 15 और यहोवा से यह प्रार्यना की, 16 हे सेनाओं के यहोवा, हे करूबोंपर
विराजमान इस्राएल के परमेश्वर, पृथ्वी के सब राज्योंके ऊपर केवल तू ही
परमेश्वर है; आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है। 17 हे यहोवा, कान लगाकर
सुन; यहोवा आंख खोलकर देख; और सन्हेरीब के सब वचनोंको सुन ले, जिस ने
जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है। 18 हे यहोवा, सच तो है कि
अश्शूर के राजाओं ने सब जातियोंके देशोंको उजाड़ा है 19 और उनके देवताओं को

आग में फोंका है; क्योंकि वे ईश्वर न थे, वे केवल मनुष्योंकी कारीगरी, काठ और
पत्यर ही थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। 20 अब हे हमारे परमेश्वर
यहोवा, तू हमें उसके हाथ से बचा जिस से पृय्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें
कि केवल तू ही यहोवा है।। 21 तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के
पास यह कहला भेजा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, तू ने जो अश्शूर
के राजा सन्हेरीब के विषय में मुझ से प्रार्यना की है, 22 उसके विषय यहोवा ने
यह वचन कहा है, सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती है और ठट्ठोंमें
उड़ाती है; यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है।। 23 तू ने किस की
नामधराई और निन्दा की है? और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है, वह
किस के विरूद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र के विरूद्ध! 24 अपके कर्मचारियोंके
द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रय लेकर मैं पर्वतोंकी
चोटियोंपर वरन लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूं; मैं उसके ऊंचे ऊंचे
देवदारोंऔर अच्छे अच्छे सनौबरोंको काट डालूंगा और उसके दूर दूर के ऊंचे
स्यानोंमें और उसके वन की फलदाई बारियोंमें प्रवेश करूंगा। 25 मैं ने खुदवाकर
पानी पिया और मिस्र की नहरोंमें पांव धरते ही उन्हें सुखा दिया। 26 क्या तू ने
नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैं ने यही ठाना और पूर्वकाल से इसकी तैयारी की
यी? इसलिथे अब मैं ने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरोंको खण्डहर की
खण्डहर कर दे। 27 इसी कारण उनके रहनेवालोंका बल घट गया और वे
विस्मित और लज्जित हुए: वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ोंऔर हरी घास और छत
पर की घास और ऐसे अनाज के समान हो गए जो बढ़ने से पहिले ही सूख जाता
है।। 28 मैं तो तेरा बैठना, कूच करना और लौट आना जानता हूं; और यह भी कि

तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है। 29 इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध
भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानोंमें पक्की हैं, मैं तेरी नाक में नकेल
डालकर और तेरे मुंह में अपक्की लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी
मार्ग से तुझे लौटा दूंगा।। 30 और तेरे लिथे यह चिन्ह होगा कि इस वर्ष तो तुम
उसे खाओगे जो आप से आप उगे, और दूसरे वर्ष वह जो उस से उत्पन्न हो, और
तीसरे वर्ष बीज बोकर उसे लवने पाओगे और दाख की बारियां लगाने और उनका
फल खाने पाओगे। 31 और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे
और फूलें-फलेंगे; 32 क्योंकि यरूशलेम से बचे हुए और सिय्योन पर्वत से भागे
हुए लोग निकलेंगे। सेनाओं का यहोवा अपक्की जलन के कारण यह काम
करेगा।। 33 इसलिथे यहोवा यश्शूर के राजा कि विषय योंकहता है कि वह इस
नगर में प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा; और न वह ढाल
लेकर इसके साम्हने आने वा इसके विरूद्ध दमदमा बान्धने पाएगा। 34 जिस
मार्ग से वह आया है उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने
पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। 35 क्योंकि मैं अपके निमित्त और अपके दास
दाऊद के निमित्त, इस नगर की रझा करके उसे बचाऊंगा।। 36 ब यहोवा के दूत ने
निकलकर अश्शूरियोंकी छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरूषोंको मारा; और
भोर को जब लोग सवेरे उठे तब क्या देखा कि लोय ही लोय पक्की हैं। 37 तब
अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने लगा। 38 वहां
वह अपके देवता निस्रोक के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा या कि इतने में उसके
पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेन ने उसको तलवार से मारा और अरारात देश में भाग
गए। और उसका पुत्र एसर्हद्दोन उसके स्यान पर राज्य करने लगा।।

यशायाह 38

1 उन दिनोंमें हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर या। और आमोस के
पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा योंकहता है, अपके घराने के
विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा। 2 तब
हिजकिय्याह ने भी की ओर मुंह फेरकर यहोवा से प्रार्यना करके कहा; 3 हे यहोवा,
मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपके को तेरे
सम्मुख जानकर चलता आया हूं और जो तेरी दृष्टि में उचित या वही करता आया
हूं। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा। 4 तब यहोवा का यह वचन
यशायाह के पास पहुंचा, 5 जाकर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरूष दाऊद का
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं ने तेरी प्रार्यना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं
तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। 6 अश्शूर के राजा के हाथ से मैं तेरी और इस
नगर की रझा करके बचाऊंगा।। 7 यहोवा अपके इस कहे हुए वचन को पूरा
करेगा, 8 और यहोवा की ओर से इस बात का तेरे लिथे यह चिन्ह होगा कि धूप
की छाया जो आहाज की धूपघड़ी में ढल गई है, मैं दस अंश पीछे की ओर लौटा
दूंगा। सो वह छाया जो दस अंश ढल चुकी यी लौट गई।। 9 यहूदा के राजा
हिजकिय्याह का लेख जो उस ने लिखा जब वह रोगी होकर चंगा हो गया या, वह
यह है: 10 मैं ने कहा, अपक्की आयु के बीच ही मैं अधोलोक के फाटकोंमें प्रवेश
करूंगा; क्योंकि मेरी शेष आयु हर ली गई है। 11 मैं ने कहा, मैं याह को जीवितोंकी
भूमि में फिर न देखने पाऊंगा; इस लोक के निवासिक्कों मैं फिर न देखूंगा। 12
मेरा घर चरवाहे के तम्बू की नाई उठा लिया गया है; मैं ने जोलाहे की नाईं अपके
जीवन को लपेट दिया है; वह मुझे तांत से काट लेगा; एक ही दिन में तू मेरा अन्त

कर डालेगा। 13 मैं भोर तक अपके मन को शान्त करता रहा; वह सिंह की नाईं
मेरी सब हड्डियोंको तोड़ता है; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालता है। 14 मैं
सूपाबेने वा सारस की नाईं च्यूं च्यूं करता, मैं पिण्डुक की नाईं विलाप करता हूं।
मेरी आंखें ऊपर देखते देखते पत्यरा गई हैं। हे यहोवा, मुझ पर अन्धेर हो रहा है;
तू मेरा सहारा हो! 15 मैं क्या कहूं? उसी ने मुझ से प्रतिज्ञा की और पूरा भी किया
है। मैं जीवन भर कड़ुआहट के साय धीरे धीरे चलता रहूंगा।। 16 हे प्रभु, इन्हीं
बातोंसे लोग जीवित हैं, और इन सभोंसे मेरी आत्मा को जीवन मिलता है। तू
मुझे चंगा कर और मुझे जीवित रख! 17 देख, शान्ति ही के लिथे मुझे बड़ी
कड़ुआहट मिली; परन्तु तू ने स्नेह करके मुझे विनाश के गड़हे से निकाला है,
क्योंकि मेरे सब पापोंको तू ने अपक्की पीठ के पीछे फेंक दिया है। 18 क्योंकि
अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति कर सकती है; जो
कबर में पकें वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते 19 जीवित, हो जीवित ही
तेरा धन्यवाद करता है, जैसा मैं आज कर रहा हूं; पिता तेरी सच्चाई का समाचार
पुत्रोंको देता है।। 20 यहोवा मेरा उद्धार करेगा, इसलिथे हम जीवन भर यहोवा के
भवन में तारवाले बाजोंपर अपके रचे हुए गीत गातें रहेंगे।। 21 यशायाह ने कहा
या, अंजीरोंकी एक टिकिया बनाकर हिजकिय्याह के फाड़े पर बान्धी जाए, तब
वह बचेगा। 22 और हिजकिय्याह ने पूछा या कि इसका क्या चिन्ह है कि मैं
यहोवा के भवन को फिर जाने पाऊंगा?

यशायाह 39

1 उस समय बलदान का पुत्र मरोदक बलदान, जो बाबुल का राजा या, उस ने

हिजकिय्याह के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उसके पास
पत्री और भेंट भेजी। 2 इन से हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर अपके अनमोल
पदार्योंका भण्डार और चान्दी, सोना, सुगन्ध द्रव्य, उत्तम तेल ओर भण्डारोंमें जो
जो वस्तुएं यी, वे सब उनको दिखलाईं। हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में
कोई ऐसी वस्तु नहीं रह गई जो उस ने उन्हें न दिखाई हो। 3 तब यशायाह नबी ने
हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा, वे मनुष्य क्या कह गए? और वे कहां से
तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्यात् बाबुल से मेरे
पास आए थे। 4 फिर उस ने पूछा, तेरे भवन में उन्होंने क्या क्या देखा है?
हिजकिय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे भवन में है वह सब उन्होंने देखे है; मेरे
भण्डारोंमें कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो।। 5 तब यशायाह ने
हिजकिय्याह से कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले: 6 ऐसे दिन
आनेवाले हैं, जि में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे
पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भण्डारोंमें हैं, वह सब बाबुल को उठ जाएगा; यहोवा
यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। 7 और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन
में से भी कितनोंको वे बंधुआई में ले जाएंगे; और वह खोजे बनकर बाबुल के
राजभवन में रहेंगे। 8 हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, यहोवा का वचन जो तू ने
कहा है वह भला ही है। फिर उस ने कहा, मेरे दिनोंमें तो शान्ति और सच्चाई बनी
रहेगी।।

यशायाह 40

1 तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति! 2 यरूशलेम से

शान्ति की बातें कहो; और उस से पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है,
तेरे अधर्म का दण्ड अंगीकार किया गया है : यहोवा के हाथ से तू अपके सब
पापोंका दूना दण्ड पा चुका है।। 3 किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा
का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिथे अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। 4
हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा
है वह सीधा और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस किया जाए। 5 तब यहोवा का तेज
प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे; क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा
कहा है।। 6 बोलनेवाले का वचन सुनाई दिया, प्रचार कर! मैं ने कहा, मैं क्या
प्रचार करूं? सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। 7 जब
यहोवा की सांस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्फा जाता है;
नि:सन्देह प्रजा घास है। 8 घास तो सूख जाती, और फूल मुर्फा जाता है; परन्तु
हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।। 9 हे सिय्योन को शुभ समचार
सुनानेवाली, ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा; हे यरूशलेम को शुभ समाचार सुनानेवाली,
बहुत ऊंचे शब्द से सुना, ऊंचे शब्द से सुना, मत डर; यहूदा के नगरोंसे कह, अपके
परमेश्वर को देखो! 10 देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ रहा है, वह अपके
भुजबल से प्रभुता करेगा; देखा, जो मजदूरी देने की है वह उसके पास है और जो
बदला देने का है वह उसके हाथ में है। 11 वह चरवाहे की नाईं अपके फुण्ड को
चराएगा, वह भेड़ोंके बच्चोंको अंकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियोंको
धीरे धीरे ले चलेगा।। 12 किस ने महासागर को चुल्लू से मापा और किस के बित्ते
से आकाश का नाप हुआ, किस ने पृथ्वी की मिट्टी को नपके में भरा और
पहाड़ोंको तराजू में और पहाडिय़ोंको कांटे में तौला है? 13 किस ने यहोवा की

आत्मा को मार्ग बताया वा उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है? 14 उस
ने किस से सम्मति ली और किस ने उसे समझाकर न्याय का पय बता दिया और
ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है? 15 देखो, जातियां तो डोल की एक
बून्द वा पलड़ोंपर की धूलि के तुल्य ठहरीं; देखो, वह द्वीपोंको धूलि के
किनकोंसरीखे उठाता है। 16 लबानोन की ईधन के लिथे योड़ा होगा और उस में के
जीव-जन्तु होमबलि के लिथे बस न होंगे। 17 सारी जातियां उसके साम्हने कुछ
नहीं हैं, वे उसकी दृष्टि में लेश और शून्य से भी घट ठहरीं हैं।। 18 तुम ईश्वर को
किस के समान बताओगे और उसकी उपमा किस से दोगे? 19 मूरत! कारीगर
ढालता है, सोनार उसको सोने से मढ़ता और उसके लिथे चान्दी की सांकलें
ढालकर बनाता है। 20 जो कंगाल इतना अर्पण नहीं कर सकता, वह ऐसा वृझ
चुन लेता है जो न घुने; तब एक निपुण कारीगर ढूंढकर मूरत खुदवाता और उसे
ऐसा स्यिर कराता है कि वह हिल न सके।। 21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने
नहीं सुना? क्या तुम को आरम्भ ही से नहीं बताया गया? क्या तुम ने पृय्वी की
नेव पड़ने के समय ही से विचार नहीं किया? 22 यह वह है जो पृय्वी के घेरे के
ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है; और पृय्वी के रहनेवाले टिड्डी के तुल्य
है; जो आकाश को मलमल की नाईं फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के
लिथे तम्बू ताना जाता है; 23 जो बड़े बड़े हाकिमोंको तुच्छ कर देता है, और पृय्वी
के अधिक्कारनेियोंको शून्य के समान कर देता है।। 24 वे रोपे ही जाते, वे बोए
ही जाते, उनके ठूंठ भूमि में जड़ ही पकड़ पाते कि वह उन पर पवन बहाता और वे
सूख जाते, और आंधी उन्हें भूसे की नाई उड़ा ले जाती है।। 25 सो तुम मुझे किस
के समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। 26

अपक्की आंखें ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको सिरजा? वह इन गणोंको गिन
गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और
अत्यन्त बली है कि उन में के कोई बिना आए नहीं रहता।। 27 हे याकूब, तू
क्योंकहता है, हे इस्राएल तू क्योंबोलता है, मेरा मार्ग यहोवा के छिपा हुआ है, मेरा
परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता? 28 क्या तुम नहीं जानते? क्या
तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है,
वह न यकता, न श्रिमत होता है, उसकी बुद्धि अगम है। 29 वह यके हुए को बल
देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है। 30 तरूण तो यकते और श्रिमत हो
जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; 31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते
हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबोंकी नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रिमत न
होंगे, चलेंगे और यकित न होंगे।।

यशायाह 41

1 हे द्वीपों, मेरे साम्हने चुप रहो; देश देश के लोग नया बल प्राप्त करें; वे समीप
आकर बोलें; हम आपस में न्याय के लिथे एक दूसरे के समीप आएं।। 2 किस ने
पूर्व दिशा से एक को उभारा है, जिसे वह धर्म के साय अपके पांव के पास बुलाता
है? वह जातियोंको उसके वश में कर देता और उसको राजाओं पर अधिक्कारनी
ठहराता है; उसकी तलवार वह उन्हें धूल के समान, और उसके धनुष से उड़ाए हुए
भूसे के समान कर देता है। 3 वह उन्हें खदेड़ता और ऐसे मार्ग से, जिस पर वह
कभी न चला या, बिना रोक टोक आगे बढ़ता है। 4 कि ने यह काम किया है और
आदि से पीढिय़ोंको बुलाता आया है? मैं यहोवा, जो सब से पहिला, और अन्त के

समय रहूंगा; मैं वहीं हूं।। 5 द्वीप देखकर डरते हैं, पृथ्वी के दूर देश कांप उठे और
निकट आ गए हैं। 6 वे एक दूसरे की सहाथता करते हैं और उन में से एक अपके
भाई से कहता है, हियाव बान्ध! 7 बढ़ई सोनार को और हयौड़े से बराबर
करनेवाला निहाई पर मारनेवाले को यह कहकर हियाव बन्धा रहा है, जोड़ तो
अच्छी है, सो वह कील ठोंक ठोंककर उसको ऐसा दृढ़ करता है कि वह स्यिर रहे।।
8 हे मेरे दास इस्राएल, हे मेरे चुने हुए याकूब, हे मेरे प्रेमी इब्राहीम के वंश; 9 तू
जिसे मैं ने पृथ्वी के दूर दूर देशोंसे लिया और पृथ्वी की छोर से बुलाकर यह कहा,
तू मेरा दास है, मैं ने तुझे चुला है और तजा नहीं; 10 मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग
हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी
सहाथता करूंगा, अपके धर्ममय दहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा।। 11 देख,
जो तुझ से क्रोधित हैं, वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से फगड़ते हैं उनके मुंह काले
होंगे और वे नाश होकर मिट जाएंगे। 12 जो तुझ से लड़ते हैं उन्हें ढूंढने पर भी तू
न पएगा; जो तुझ से युद्ध करते हैं वे नाश होकर मिट जाएंगे। 13 क्योंकि मैं तेरा
परमेश्वर यहोवा, तेरा दहिना हाथ पकड़कर कहूंगा, मत डर, मैं तेरी सहाथता
करूंगा।। 14 हे कीड़े सरीखे याकूब, हे इस्राएल के मनुष्यों, मत डरो! यहोवा की
यह वाणी है, मैं तेरी सहयता करूंगा; इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है। 15
देख, मैं ने तुझे छुरीवाले दांवने का एक नया और चोखा यन्त्र ठहराया है; तू
पहाड़ोंको दांय दांयकर स्ूक्ष्म धूलि कर देगा, और पहाडियोंको तू भूसे के समान
कर देगा। 16 तू उनको फटकेगा, और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी, और आंधी उन्हें
तितर-बितर कर देगी। परन्तु तू यहोवा के कारण मगन होगा; और इस्राएल के
पवित्र के कारण बड़ाई मारेगा।। 17 जब दी और दरिद्र लोग जल ढूंढने पर भी न

पाथें और उनका तालू प्यास के मारे सूख जाथे; मैं यहोवा उनकी बिनती सुनूंगा,
मैं इस्राएल का परमेश्वर उनको त्याग न दूंगां 18 मैं मुण्डे टीलोंसे भी नदियां और
मैदानोंके बीच में सोते बहऊंगा; मैं जंगल को ताल और निर्जल देश को सोते ही
सोते कर दूंगा। 19 मैं जंगल में देवदार, बबूल, मेंहदी, और जलपाई उगाऊंगा; मैं
अराबा में सनौवर, तिधार वृझ, और सीधा सनौबर इकट्ठे लगाऊंगा; 20 जिस से
लोग देखकर जान लें, और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ
का किया हुआ और इस्राएल के पवित्र का सृजा हुआ है।। 21 यहोवा कहता है,
अपना मुकद्दमा लड़ो; याकूब का राजा कहता है, अपके प्रमाण दो। 22 वे उन्हें
देकर हम को बताएं कि भविष्य में क्या होगा? पूर्वकाल की घटनाएं बताओ कि
आदि में क्या क्या हुआ, जिस से हम उन्हें सोचकर जान सकें कि भविष्य में
उनका क्या फल होगा; वा होनेवाली घटनाएं हम को सुना दो। 23 भविष्य में जो
कुछ घटेगा वह बताओ, तब हम मानेंगे कि तुम ईश्वर हो; भला वा बुरा; कुछ तो
करो कि हम देखकर एक चकित को जाएं। 24 देखो, तुम कुछ नहीं हो, तुम से
कुछ नहीं बनता; जो कोई तुम्हें जानता है वह घृणित है।। 25 मैं ने एक को उत्तर
दिशा से उभारा, वह आ भी गया है; वह पूर्व दिशा से है और मेरा नाम लेता है;
जैसा कुम्हार गिली मिट्टी को लताड़ता है, वैसा ही वह हाकिमोंको कीच के समान
लताड़ देगा। 26 किस ने इस बात को पहिले से बताया या, जिस से हम यह
जानते? किस ने पूर्वकाल से यह प्रगट किया जिस से हम कहें कि वह सच्चा है?
कोई भी बतानेवाला नहीं, कोई भी सुनानेवाला नहीं, तुम्हारी बातोंका कोई भी
सुनानेवाला नहीं है। 27 मैं ही ने पहिले सिय्योन से कहा, देख, उन्हें देख, और मैं
ने यरूशलेम को एक शुभ समाचार देनेवाला भेजा। 28 मैं ने देखने पर भी किसी

को न पाया; उन में से कोई मन्त्री नहीं जो मेरे पूछने पर कुछ उत्तर दे सके। 29
सुनो, उन सभोंके काम अनर्य हैं; उनके काम तुच्छ हैं, और उनकी ढली हुई
मूत्तियां वायु और मिय्या हैं।।

यशायाह 42

1 मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न
है; मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियोंके लिथे न्याय प्रगट
करेगा। 2 न वह चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा, न सड़क में अपक्की
वाणी सुनाथेगा। 3 कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बत्ती
को बुफाएगा; वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा। 4 वह न यकेगा और न हियाव
छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृय्वी पर स्यिर न करे; और द्वीपोंके लोग उसकी
व्यवस्या की बाट जाहेंगे।। 5 ईश्वर जो आकाश का सृजने और ताननेवाला है, जो
उपज सहित पृय्वी का फैलानेवाला और उस पर के लोगोंको सांस और उस पर के
चलनेवालोंको आत्मा देनेवाला यहावो है, वह योंकहता है: 6 मुझ यहोवा ने तुझ
को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ याम कर तेरी रझा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के
लिथे वाचा और जातियोंके लिथे प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धोंकी आंखें खोले, 7
बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और जो अन्धिक्कारने में बैठे हैं उनको
कालकोठरी से निकाले। 8 मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपक्की महिमा मैं दूसरे
को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतोंको न दूंगा। 9 देखो,
पहिली बातें तो हो चुकी हैं, अब मैं नई बातें बताता हूं; उनके होने से पहिले मैं तुम
को सुनाता हूं।। 10 हे समुद्र पर चलनेवालो, हे समुद्र के सब रहनेवालो, हे द्वीपो,

तुम सब अपके रहनेवालो समेत यहोवा के लिथे नया गीत गाओ और पृय्वी की
छोर से उसकी स्तुति करो। 11 जंगल और उस में की बस्तियां और केदार के बसे
हुए गांव जयजयकार करें; सेला के रहनेवाले जयजयकार करें, वे पहाड़ोंकी
चोटियोंपर से ऊंचे शब्द से ललकारें। 12 वे यहोवा की महिमा प्रगट करें और
द्वीपोंमें उसका गुणानुवाद करें। 13 यहोवा वीर की नाईं निकलेगा और योद्वा के
समान अपक्की जलन भड़काएगा, वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और अपके
शत्रुओं पर जयवन्त होगा।। 14 बहुत काल से तो मैं चुप रहा और मौन साधे
अपके को रोकता रहा; परन्तु अब जच्चा की नाईं चिल्लाऊंगा मैं हांफ हांफकर
सांस भरूंगा। 15 पहाड़ोंऔर पहडिय़ोंको मैं सुखा डालूंगा और उनकी सब हरियाली
फुलसा दूंगा; मैं नदियोंको द्वीप कर दूंगा और तालोंको सुखा डालूंगा। 16 मैं
अन्धोंको एक मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे नहीं जानते और उनको ऐसे पयोंसे
चलाऊंगा जिन्हें वे नहीं जानते। उनके आगे मैं अन्धिक्कारने को उजियाला
करूंगा और टेढ़े मार्गोंको सीधा कयंगा। मैं ऐसे ऐसे काम करूंगा और उनको न
त्यागूंगा। 17 जो लोग खुदी हुई मूरतोंपर भरोसा रखते और ढली हुई मूरतोंसे
कहते हैं कि तुम हमारे ईश्वर हो, उनको पीछे हटना और अत्यन्त लज्जित होना
पकेगा।। 18 हे बहिरो, सुनो; हे अन्धो, आंख खोलो कि तुम देख सको! 19 मेरे
दास के सियाव कौन अन्धा है? और मेरे भेजे हुए दूत के तुल्य कौन बहिरा है? मेरे
मित्र के समान कौन अन्धा या यहोवा के दास के तुल्य अन्धा कौन है? 20 तू
बहुत सी बातोंपर दृष्टि करता है परन्तु उन्हें देखता नहीं है; कान तो खुले हैं परन्तु
सुनता नहीं है।। 21 यहोवा को अपक्की धामिर्कता के निमित्त ही यह भाया है कि
व्यवस्या की बड़ाई अधिक करे। 22 परन्तु थे लोग लुट गए हैं, थे सब के सब

गड़हियोंमें फंसे हुए और कालकोठरियोंमें बन्द किए हुए हैं; थे पकड़े गए और
कोई इन्हें नहीं छुड़ाता; थे लुट गए और कोई आज्ञा नहीं देता कि फेर दो। 23 तुम
में से कौन इस पर कान लगाएगा? कौन ध्यान धरके होनहार के लिथे सुनेगा? 24
किस ने याकूब को लुटवाया और इस्राएल को लुटेरोंके वश में कर दिया? क्या
यहोवा ने यह नहीं किया जिसके विरूद्ध हम ने पाप किया, जिसके मार्गोंपर
उन्होंने चलना न चाहा और न उसकी व्यवस्या को माना? 25 इस काण उस पर
उस ने अपके क्रोध की आग भड़काई और युद्ध का बल चलाना; और यद्यिप आग
उसके चारोंओर लग गई, तौभी वह न समझा; वह जल भी गया, तौभी न चेता।।

यशायाह 43

1 हे इस्राएल तेरा रचनेवाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब योंकहता है,
मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा
ही है। 2 जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियोंमें
होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न
लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। 3 क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं,
इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूं। तेरी छुड़ौती में मैं मिस्र को और तेरी
सन्ती कूश और सबा को देता हूं। 4 मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा
है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्योंको और तेरे
प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगोंको दे दूंगा। 5 मत डर, क्योंकि मैं तेरे साय
हूं; मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊंगा, और पच्छिम से भी इकट्ठा करूंगा। 6 मैं
उत्तर से कहूंगा, दे दे, और दक्खिन से कि रोक मत रख; मेरे पुत्रोंको दूर से और

मेरी पुत्रियोंको पृथ्वी की छोर से ले आओ; 7 हर एक को जो मेरा कहलाता है,
जिसको मैं ने अपक्की महिमा के लिथे सृजा, जिसको मैं ने रचा और बनाया है।।
8 आंख रहते हुए अन्धोंको और कान रहते हुए बहिरोंको निकाल ले आओ! 9
जाति जाति के लोग इकट्ठे किए जाएं और राज्य राज्य के लोग एकत्रित हों। उन
में से कौन यह बात बता सकता वा बीती हुई बातें हमें सुना सकता है? वे अपके
साझी ले आएं जिस से वे सच्चे ठहरें, वे सुन लें और कहें, यह सत्य है। 10 यहोवा
की वाणी है कि तुम मेरे साझी हो और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिथे चुना है
कि समझकर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूं। मुझ से पहिले
कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा। 11 मैं ही यहोवा हूं और मुझे छोड़
कोई उद्धारकर्ता नहीं। 12 मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार किया और वर्णन भी
किया, जब तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न या; इसलिथे तुम ही मेरे साझी
हो, यहोवा की यह वाणी है। 13 मैं ही ईश्वर हूं और भविष्य में भी मैं ही हूं; मेरे हाथ
से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूं तब कौन मुझे रोक सकेगा।। 14
तुम्हारा छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र यहोवा योंकहता है, तुम्हारे निमित्त मैं
ने बाबुल को भेजा है, और उसके सब रहनेवालोंको भगोड़ोंकी दशा में और
कसदियोंको भी उन्हीं के जहाजोंपर चढ़ाकर ले आऊंगा जिन के विषय वे बड़ा
बोल बोलते हैं। 15 मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र, इस्राएल का सृजनहार, तुम्हारा राजा
हूं। 16 यहोवा जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पय बनाता है, 17 जो
रयोंऔर घोड़ोंको और शूरवीरोंसमेत सेना को निकाल लाता है, (वे तो एक संग
वहीं रह गए और फिर नहीं उठ सकते, वे बुफ गए, वे सन की बत्ती की नाईं बुफ
गए हैं।) वह योंकहता है, 18 अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न

प्राचीनकाल की बातोंपर मन लगाओ। 19 देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह
अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग
बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। 20 गीदड़ और शुतर्मुर्ग आदि
जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे; क्योंकि मैं अपक्की चुनी हुई प्रजा के पीने के
लिथे जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। 21 इस प्रजा को मैं ने
अपके लिथे बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें।। 22 तौभी हे याकूब, तू ने मुझ
से प्रार्यना नहीं की; वरन हे इस्राएल तू मुझ से ऊकता गया है! 23 मेरे लिथे
होमबलि करने को तू मेम्ने नहीं लाया और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा की
है। देख, मैं ने अन्नबलि चढ़ाने की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई, न तुझ से धूप
लेकर तुझे यका दिया है। 24 तू मेरे लिथे सुगन्धित नरकट रूपऐ से मोल नहीं
लाया और न मेलबलियोंकी चर्बी से मुझे तृप्त किया। परन्तु तू ने अपके पापोंके
कारण मुझ पर बोफ लाट दिया है, और अपके अधर्म के कामोंसे मुझे यका दिया
है।। 25 मैं वही हूं जो अपके नाम के निमित्त तेरे अपराधोंको मिटा देता हूं और तेरे
पापोंको स्मरण न करूंगा। 26 मुझे स्मरण करो, हम आपस में विवाद करें; तू
अपक्की बात का वर्णन कर जिस से तू निर्दोष ठहरे। 27 तेरा मूलपुरूष पापी हुआ
और जो जो मेरे और तुम्हारे बीच बिचवई हुए, वे मुझ से बलवा करते चले आए
हैं। 28 इस कारण मैं ने पवित्रस्यान के हाकिमोंको अपवित्र ठहराया, मैं ने याकूब
को सत्यानाश और इस्राएल को निन्दित होने दिया है।।

यशायाह 44

1 परन्तु अब हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए इस्राएल, सुन ले! 2 तेरा कर्त्ता

यहोवा, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया और तेरी सहाथता करेगा, योंकहता है, हे
मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए यशूरून, मत डर! 3 क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर
जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपक्की आत्मा और
तेरी सन्तान पर अपक्की आशीष उण्डेलूंगा। 4 वे उन मजनुओं की नाईं बढ़ेंगे जो
धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं। 5 कोई कहेगा, मैं यहोवा का हूं, कोई
अपना नाम याकूब रखेगा, कोई अपके हाथ पर लिखेगा, मैं यहोवा का हूं, और
अपना कुलनाम इस्राएली बताएगा।। 6 यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्यात्
सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह योंकहता है, मैं सब से पहिला हूं,
और मैं ही अन्त तक रहूंगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं। 7 और जब से मैं
ने प्राचीनकाल में मनुष्योंको ठहराया, तब से कौन हुआ जो मेरी नाईं उसको प्रचार
करे, वा बताए वा मेरे लिथे रचे अयवा होनहार बातें पहिले ही से प्रगट करे? 8 मत
डरो और न भयमान हो; क्या मैं ने प्राचीनकाल ही से थे बातें तुम्हें नहीं सुनाईं
और तुम पर प्रगट नहीं कीं? तुम मेरे साझी हो। क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर
है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता।। 9 जो मूरत
खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूंढते
उन से कुछ लाभ न होगा; उसके साझी, न तो आप कुछ देखते और न कुछ जानते
हैं, इसलिथे उनको लज्जित होना पकेगा। 10 किस ने देवता वा निष्फल मूरत
ढाली है? 11 देख, उसके सब संगियोंको तो लज्जित होना पकेगा, कारीगर तो
मनुष्य ही है; वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों; वे डर जाएंगे; वे सब के सब
लज्जित होंगे। 12 लोहार एक बसूला अंगारोंमे बनाता और हयौड़ोंसे गढ़कर
तैयार करता है, अपके भुजबल से वह उसको बनाता है; फिर वह भूखा हो जाता है

और उसका बल घटता है, वह पानी नहीं पीता और यक जाता है। 13 बढ़ई सूत
लगाकर टांकी से रखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा
खींचता है, वह उसका आकार और मनुष्य की सी सुन्दरता बनाता है ताकि लोग
उस घर में रखें। 14 वह देवदार को काटता वा वन के वृझोंमें से जाति जाति के
बांजवृझ चुनकर सेवता है, वह एक तूस का वृझ लगाता है जो वर्षा का जल पाकर
बढ़ता है। 15 तब वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है; वह उस में से कुछ
सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है; उसी से वह देवता भी
बनाकर उसको दण्डवत् करता है; वह मूरत खुदवाकर उसके साम्हने प्रणाम
करता है। 16 और उसके बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्यात् एक मूरत
उसका एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता
है, वह मांस भूनकर तृप्त होता; फिर तपाकर कहता है, अहा, मैं गर्म हो गया, मैं ने
आग देखी है! 17 खोदकर बनाता है; तब वह उसके साम्हने प्रणाम और दण्डवत्
करता और उस से प्रार्यना करके कहता है, मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है।
वे कुछ नहीं जानते, न कुछ समझ रखते हैं; 18 क्योंकि उनकी आंखें ऐसी मून्दी
गई हैं कि वे देख नहीं सकते; और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बूफ नहीं सकते। 19
कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान वा समझ रहती है
कि कह सके, उसका एक भाग तो मैं ने जला दिया और उसके कोयलोंपर रोटी
बनाई; और मांस भूनकर खाया है; फिर क्या मैं उसके बचे हुए भाग को घिनौनी
वस्तु बनाऊं? क्या मैं काठ को प्रणाम करूं? 20 वह राख खाता है; भरमाई हुई
बुद्धि के कारण वह भटकाया गया है और वह न अपके को बचा सकता और न यह
कह सकता है, क्या मेरे दहिने हाथ में मिय्या नहीं? 21 हे याकूब, हे इस्राएल, इन

बातोंको स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे रचा है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है,
मैं तुझ को न बिसराऊंगा। 22 मैं ने तेरे अपराधोंको काली घटा के समान और तेरे
पापोंको बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे
छुड़ा लिया है।। 23 हे आकाश, ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया
है; हे पृय्वी के गहिरे स्यानों, जयजयकार करो; हे पहाड़ों, हे वन, हे वन के सब
वृझों, गला खोलकर ऊंचे स्वर से गाओ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है
और इस्राएल में महिमावान होगा।। 24 यहोवा, तेरा उद्धारकर्त्ता, जो तुझे गर्भ ही
से बनाता आया है, योंकहता है, मैं यहोवा ही सब का बनानेवाला हूं जिस ने अकेले
ही आकाश को ताना और पृय्वी को अपक्की ही शक्ति से फैलाया है। 25 मैं फूठे
लोगोंके कहे हुए चिन्होंको व्यर्य कर देता और भावी कहनेवालोंको बावला कर
देता हूं; जो बुद्धिमानोंको पीछे हटा देता और उनकी पण्डिताई को मूर्खता बनाता
हूं; 26 और अपके दास के वचन को पूरा करता और अपके दूतोंकी युक्ति को सुफल
करता हूं; जो यरूशलेम के विषय कहता है, वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के
नगरोंके विषय, वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरोंको सुधारूंगा; 27 जो
गहिरे जल से कहता है, तू सूख जा, मैं तेरी नदियोंको सुखाऊंगा; 28 जो कुस्रू के
विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा;
यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जाएगी और मन्दिर के विषय कि तेरी
नेव डाली जाएगी।।

यशायाह 45

1 यहोवा अपके अभिषिक्त कुस्रू के विषय योंकहता है, मैं ने उस के दहिने हाथ को

इसलिथे याम लिया है कि उसके साम्हने जातियोंको दबा दूं और राजाओं की
कमर ढीली करूं, उसके साम्हने फाटकोंको ऐसा खोल दूं कि वे फाटक बन्द न
किए जाएं। 2 मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंची ऊंची भूमि को चौरस करूंगा, मैं
पीतल के किवाड़ोंको तोड़ डालूंगा और लोहे के बेड़ोंको टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। 3 मैं
तुझ को अन्धकार में छिपा दूंगा, जिस से तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा हूं जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। 4 अपके दास याकूब और अपके चुने हुए
इस्राएल के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यिप तू मुझे नहीं जानता,
तौभी मैं ने तुझे पदवी दी है। 5 मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई
परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा, 6 जिस से
उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं है।
7 मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धिक्कारने का सृजनहार हूं, मैं शान्ति का
दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभोंका कर्त्ता हूं। 8 हे आकाश,
ऊपर से धर्म बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार
उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया
है।। 9 हाथ उस पर जो अपके रचनेवाले से फगड़ता है! वह तो मिट्टी के ठीकरोंमें
से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, तू यह क्या करता है? क्या
कारीगर का बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा कि उसके हाथ नहीं है? 10
हाथ उस पर जो अपके पिता से कहे, तू क्या जन्माता है? और मां से कहे, तू किस
की माता है? 11 यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है, वह
योंकहता है, क्या तुम आनेवाली घटनाएं मुझ से पूछोगे? क्या मेरे पुत्रोंऔर मेरे
कामोंके विषय मुझे आज्ञा दोगे? 12 मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर

मनुष्योंको सृजा है; मैं ने अपके ही हाथोंसे आकाश को ताना और उसके सारे
गणोंकोंआज्ञा दी है। 13 मैं ही ने उस पुरूष को धामिर्कता से उभारा है और मैं
उसके सब मार्गोंको सीधा करूंगा; वह मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बंधुओं
को बिना दाम या बदला लिए छुड़ा देगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।। 14
यहोवा योंकहता है, मिस्रियोंकी कमाई और कूशियोंके ब्योपार का लाभ और
सबाई लोग जो डील-डौलवाले हैं, तेरे पास चले आएंगे, और तेरे ही हो जाएंगे, वे
तेरे पीछे पीछे चलेंगे; वे सांकलोंमें बन्धे हुए चले आएंगे और तेरे साम्हने दण्डवत्
कर तुझ से बिनती करके कहेंगे, निश्चय परमेश्वर तेरे ही साय है और दूसरा कोई
नहीं; उसके सिवाय कोई और परमेश्वर नहीं।। 15 हे इस्राएल के परमेश्वर, हे
उद्धारकर्त्ता! निश्चय तू ऐसा ईश्वर है जो अपके को गुप्त रखता है। 16 मूत्तियोंके
गढ़नेवाले सब के सब लज्जित और चकित होंगे, वे सब के सब व्याकुल होंगे। 17
परनतु इस्राएल यहोवा के द्वारा युग युग का उद्धार पाएगा; तुम युग युग वरन
अनन्तकाल तक न तो कभी लज्जित और न कभी व्याकुल होगे।। 18 क्योंकि
यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृय्वी को रख और
बनाया, उसी ने उसको स्यिर भी किया; उस ने उसे सुनसान रहने के लिथे नहीं
परन्तु बसने के लिथे उसे रचा है। वही योंकहता है, मैं यहोवा हूं, मेरे सिवा दूसरा
और कोई नहीं है। 19 मैं ने न किसी गुप्त स्यान में, न अन्धकार देश के किसी
स्यान में बातें कीं; मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा, मुझे व्यर्य में ढूंढो। मैं यहोवा
सत्य ही कहता हूं, मैं उचित बातें ही बताता हूं।। 20 हे अन्यजातियोंमें से बचे हुए
लोगो, इकट्ठे होकर आओ, एक संग मिलकर निकट आओ! वह जो अपक्की
लकड़ी की खोदी हुई मूरतें लिए फिरते हैं और ऐसे देवता से जिस से उद्धार नहीं हो

सकता, प्रार्थना करते हैं, वे अज्ञान हैं। 21 तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हां, वे
आपस में सम्मति करें किस ने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया? किस ने
प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहिले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं
किया? इसलिथे मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता
ईश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है।। 22 हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो,
तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं
है। 23 मैं ने अपक्की ही शपय खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन
निकला है और वह नहीं टलेगा, प्रत्थेक घुटना मेरे सम्मुख फुकेगा और प्रत्थेक
के मुख से मेरी ही शपय खाई जाएगी।। 24 लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल
यहोवा ही में धर्म और शक्ति है। उसी के पास लोग आएंगे। और जो उस से रूठे
रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पकेगा। 25 इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा ही के
कारण धर्मी ठहरेंगे, और उसकी महिमा करेंगे।।

यशायाह 46

1 बेल देवता फुक गया, नबो देवता नब गया है, उनकी प्रतिमाएं पशुओं वरन
घरैलू पशुओं पर लदी हैं; जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे, वे अब भारी बोफ
हो गईं और यकित पशुओं पर लदी हैं। 2 वे नब गए, वे एक संग फुक गए, वे उस
भार को छुड़ा नहीं सके, और आप भी बंधुआई में चले गए हैं।। 3 हे याकूब के
घराने, हे इस्राएल के घराने के सब बचे हुए लोगो, मेरी ओर कान लगाकर सुनो;
तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और जन्म ही से लिए फिरता आया
हूं। 4 तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूंगा और तुम्हारे बाल पकने के समय

तक तुम्हें उठाए रहूंगा। मैं ने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूंगा; 5 मैं
तुम्हें उठाए रहूंगा और छुड़ाता भी रहूंगा।। तुम किस से मेरी उपमा दोगे और मुझे
किस के समान बताओगे, किस से मेरा मिलान करोगे कि हम एक समान ठहरें?
6 जो यैली से सोना उण्डेलते वा कांटे में चान्दी तौलते हैं, जो सुनार को मजदुरी
देकर उस से देवता बनवाले हैं, तब वे उसे प्रणाम करते वरन दण्डवत् भी करते हैं!
7 वे उसको कन्धे पर उठाकर लिए फिरते हैं, वे उसे उसके स्यान में रख देते और
वह वहीं खड़ा रहता है; वह अपके स्यान से हट नहीं सकता; यदि कोई उसकी
दोहाई भी दे, तौभी न वह सुन सकता है और न विपत्ति से उसका उद्धार कर
सकता है।। 8 हे अपराधियों, इस बात को स्मरण करो और ध्यान दो, इस पर
फिर मन लगाओ। 9 प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है;
क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी
नहीं है। 10 मै तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता
आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्यिर रहेगी और मैं
अपक्की इच्छा को पूरी करूंगा। 11 मैं पूर्व से एक उकाब पक्की को अर्यात् दूर
देश से अपक्की युक्ति के पूरा करनेवाले पुरूष को बुलाता हूं। मैं ही ने यह बात
कही है और उसे पूरी भी करूंगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सुफल भी
करूंगा। 12 हे कठोर मनवालो तुम जो धर्म से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो। 13
मैं अपक्की धामिर्कता को समीप ले आने पर हूं वह दूर नहीं है, और मेरे उद्धार
करने में विलम्ब न होगा; मैं सिय्योन का उद्धार करूंगा और इस्राएल को महिमा
दूंगा।।

यशायाह 47

1 हे बाबुल की कुमारी बेटी, उतर आ और धूलि पर बैठ; हे कसदियोंकी बेटी तू
बिना सिंहासन भूमि पर बैठ! क्योंकि तू अब फिर कोमल और सुकुमार न
कहलाएगी। 2 चक्की लेकर आटा पीस, अपना घूंघट हटा और घाघरा समेंट ले
और उघारी टांगोंसे नदियोंको पार कर। 3 तेरी नग्नता उघाड़ी जाएगी और तेरी
लज्जा प्रगट होगी। मैं बदला लूंगा और किसी मनुष्य को ग्रहण न करूंगा।। 4
हमारा छुटकारा देनेवाले का नाम सेनाओं का यहोवा और इस्राएल का पवित्र है।।
5 हे कसदियोंकी बेटी, चुपचाप बैठी रह और अन्धिक्कारने में जो; क्योंकि तू अब
राज्य राज्य की स्वामिन न कहलाएगी। 6 मैं ने अपक्की प्रजा से क्रोधित होकर
अपके निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया; तू न उन पर
कुछ दया न की; बूढ़ोंपर तू ने अपना अत्यन्त भारी जूआ रख दिया। 7 तू ने कहा,
मैं सर्वदा स्वामिन बनी रहूंगी, सो तू ने अपके मन में इन बातोंपर विचार न किया
और यह भी न सोचा कि उनका क्या फल होगा।। 8 इसलिथे सुन, तू जो राग-रंग
में उलफी हुई निडर बैठी रहती है और मन में कहती है कि मैं ही हूं, और मुझे छोड़
कोई दूसरा नहीं; मैं विधवा की नाईं न बैठूंगी और न मेरे लड़केबोल मिटेंगे। 9
सुन, थे दोनोंदु:ख अर्यात् लड़कोंका जाता रहता और विधवा हो जाना, अचानक
एक ही दिन तुझ पर आ पकेंगे। तेरे बहुत से टोनोंऔर तेरे भारी भारी तन्त्र-
मन्त्रोंके रहते भी थे तुझ पर अपके पूरे बल से आ पकेंगे।। 10 तू ने अपक्की
दुष्टता पर भरोसा रखा, तू ने कहा, मुझे कोई नहीं देखता; तेरी बुद्धि और ज्ञान ने
तुझे बहकाया और तू ने अपके मन में कहा, मैं ही हूं और मेरे सिवाय कोई दूसरा
नहीं। 11 परन्तु तेरी ऐसी दुर्गती होगी जिसका मन्त्र तू नहीं जानती, और तुझ
पर ऐसी विपत्ति पकेगी कि तू प्रायश्चित करके उसका निवारण न कर सकेगी;

अचानक विनाश तुझ पर आ पकेगा जिसका तुझे कुछ भी पता नहीं।। 12 अपके
तन्त्र मन्त्र और बहुत से टोनहोंको, जिनका तू ने बाल्यावस्या ही से अभ्यास
किया है उपयोग में ला, सम्भव है तू उन से लाभ उठा सके या उनके बल से स्यिर
रह सके। 13 तू तो युक्ति करते करते यक गई है; अब तेरे ज्योतिषी जो नझत्रोंको
ध्यान से देखते और नथे नथे चान्द को देखकर होनहार बताते हैं, वे खड़े होकर
तुझे उन बातोंसे बचाए जो तुझ पर घटेंगी।। 14 देख; वे भूसे के समान होकर
आग से भस्म हो जाएंगे; वे अपके प्राणोंको ज्वाला से न बचा सकेंगे। वह आग
तापके के लिथे नहीं, न ऐसी होगी जिसके साम्हने कोई बैठ सके! 15 जिनके लिथे
तू परिश्र्म करती आई है वे सब तेरे लिथे वैसे ही होंगे, और जो तेरी युवावस्या से
तेरे संग व्योपार करते आए हैं, उन मे ंसे प्रत्थेक अपक्की अपक्की दिशा की
ओर चले जाएंगे; तेरा बचानेवाला कोई न रहेगा।।

यशायाह 48

1 हे याकूब के घराने, यह बात सुन, तुम जो इस्राएली कहलाते हो; जो यहोवा के
नाम की शपय खाते हो और इस्राएल के परमेश्वर की चर्चा तो करते हो, परन्तु
सच्चाई और धर्म से नहीं करते। 2 क्योंकि वे अपके को पवित्र नगर के बताते हैं,
और इस्राएल के परमेश्वर पर जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है भरोसा करते
हैं।। 3 होनेवाली बातोंको तो मैं ने प्राचीनकाल ही से बताया है, और उनकी चर्चा
मेरे मुंह से निकली, मैं ने अचानक उन्हें प्रगट किया और वे बातें सचमुच हुईं। 4
मैं जानता या कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माया पीतल
का है। 5 इस कारण मैं ने इन बातोंको प्राचीनकाल ही से तुझे बताया उनके होने

से पहिले ही मैं ने तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह पाए कि यह मेरे
देवता का काम है, मेरी खोदी और ढली हुई मूत्तिर्योंकी आज्ञा से यह हुआ ।। 6 तू
ने सुना हे, सो अब इन सब बातोंपर ध्यान कर; और देखो, क्या तुम उसका प्रचार
न करोगे? अब से मैं तुझे नई नई बातें और एसी गुप्त बातें सुनाऊंगा जिन्हें तू नही
जानता। 7 वे अभी अभी सृजी गई हैं, प्राचीनकाल से नहीं; परन्तु आज से पहिले
तू ने उन्हें सुना भी न या, ऐसा न हो कि तू कहे कि देख मैं तो इन्हें जानता या। 8
हां निश्चय तू ने उन्हें न तो सुना, न जाना, न इस से पहिले तेरे कान ही खुले थे।
क्योंकि मैं जानता या कि तू निश्चय विश्वासघात करेगा, और गर्भ ही से तेरा नाम
अपराधी पड़ा है।। 9 अपके ही नाम के निमित्त मैं क्रोध करने में विलम्ब करता हूं,
ओर अपक्की महिमा के निमित्त अपके तईं रोक रखता हूं, ऐसा न हो कि मैं तुझे
काट डालूं। 10 देख, मैं ने तुझे निर्मल तो किया, परन्तु, चान्दी की नाईं नहीं; मैं ने
दु:ख की भट्ठी में परखकर तुझे चुन लिया है। 11 अपके निमित्त, हां अपके ही
निमित्त मैं ने यह किया है, मेरा नाम क्योंअपवित्र ठहरे? अपक्की महिमा मैं दूसरे
को नहीं दूंगा।। 12 हे याकूब, हे मेरे बुलाए हुए इस्राएल, मेरी ओर कान लगाकर
सुन! मैं वही हूं, मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूं। 13 निश्चय मेरे ही हाथ ने पृय्वी
की नेव डाली, और मेरे ही दहिने हाथ ने आकाश फैलाया; जब मैं उनको बुलाता हूं,
वे एक साय उपस्यित हो जाते हैं।। 14 तुम सब के सब इकट्ठे होकर सुनो! उन में
से किस ने कभी इन बातोंका समाचार दिया? यहोवा उस से प्रेम रखता है: वह
बाबुल पर अपक्की इच्छा पूरी करेगा, और कसदियोंपर उसका हाथ पकेगा। 15
मैं ने, हां मैं ही ने कहा और उसको बुलाया है, मैं उसको ले आया हूं, और, उसका
काम सुफल होगा। 16 मेरे निकट आकर इस बात को सुनो: आदि से लेकर अब

तक मैं ने कोई भी बात गुप्त में नही कही; जब से वह हुआ तब से मैं वहां हूं। और
अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा ने मुझे भेज दिया है।। 17 यहोवा जो तेरा
छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र है, वह यो कहता है, मैं ही तेरा परमेश्वर
यहोवा हूं जो तुझे तेरे लाभ के लिथे शिझा देता हूं, और जिस मार्ग से तुझे जाना है
उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूं। 18 भला होता कि तू ने मेरी आज्ञाओं को ध्यान
से सुना होता! तब तेरी शान्ति नदी के समान और तेरा धर्म समुद्र की लहरोंके
नाई होता; 19 तेरा वंश बालू के किनकोंके तुल्य होता, और तेरी निज सन्तान
उसके कणोंके समान होती; उनका नाम मेरे सम्मुख से न कभी काटा और न
मिटाया जाता।। 20 बाबुल में से निकल जाओ, कसदियोंके बीच में से भाग जाओ;
जयजयकार करते हुए इस बात को प्रचार करके सुनाओ, पृय्वी की छोर तक
इसकी चर्चा फैलाओ; कहते जाओ कि यहोवा ने अपके दास याकूब को छुड़ा लिया
है! 21 जब वह उन्हें निर्जल देशोंमें ले गया, तब वे प्यासे न हुए; उस ने उनके
लिथे चट्टान में से पानी निकाला; उस ने चट्टान को चीरा और जल बह निकला।
22 दुष्टोंके लिथे कुछ शान्ति नहीं, यहोवा का यही वचन है।।

यशायाह 49

1 हे द्वीपो, मेरी और कान लगाकर सुनो; हे दूर दूर के राज्योंके लागों, ध्यान
लगाकर मेरी सुनो! यहोवा ने मुझे गर्भ ही में से बुलाया, जब मैं माता के पेट में
या, तब ही उस ने मेरा नाम बताया। 2 उस ने मेरे मुंह को चोखी तलवार के समान
बनाया और अपके हाथ की आड़ में मुझे छिपा रखा; उस ने मुझ को चमकिला
तीर बनाकर अपके तर्कश में गुप्त रखा। 3 ओर मुझ से कहा, तू मेरा दास इस्राएल

है, मैं तुझ में अपक्की महिमा प्रगट करूंगा। 4 तब मैं ने कहा, मैं ने तो व्यर्थ
परिश्रम किया, मैं ने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है; तौभी निश्चय मेरा न्याय
यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है।। 5 ओर
अब यहोवा जिस ने मुझे जन्म ही से इसलिथे रख कि मैं उसका दास होकर
याकूब को उसकी ओर फेर ले आऊं अर्यात् इस्राएल को उसके पास इकट्ठा करूं,
क्योंकि यहोवा की दृष्टि में मैं आदरयोग्य हूं और मेरा परमेश्वर मेरा बल है, 6 उसी
ने मुझ से यह भी कहा है, यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रोंका उद्धार
करने और इस्राएल के रझित लोगोंको लौटा ले आने के लिथे मेरा सेवक ठहरे; मैं
तुझे अन्यजातियोंके लिथे ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से
दूसरी ओर तक फैल जाए।। 7 जो मनुष्योंसे तुच्छ जाना जाता, जिस से
जातियोंको घृणा है, और, जो अपराधियोंका दास है, इस्राएल का छुड़ानेवाला और
उसका पवित्र अर्यात् यहावो योंकहता है, कि राजा उसे देखकर खड़े हो जाएंगे और
हाकिम दण्डवत् करेंगे; यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा और इस्राएल का
पवित्र है और जिस ने तुझे चुन लिया है।। 8 यहोवा योंकहता है, अपक्की
प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहाथता की
है; मैं तेरी रझा करके तुझे लोगोंके लिथे एक वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्यिर
करे और उजड़े हुए स्यानोंको उनके अधिक्कारनेियोंके हाथ में दे दे; और बंधुओं
से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ; 9 और जो अन्धिक्कारने में हैं उन से कहे,
अपके आप को दिखलाओ! वे मार्गोंके किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे, सब मुण्डे
टीलोंपर भी उनको चराई मिलेगी। 10 वे भूखे और प्यासे होंगे, न लूह और न घाम
उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जा उन पर दया करता है, वही उनका अगुवा होगा, और

जल के सोतोंके पास उन्हें ले चलेगा। 11 और, मैं अपके सब पहाड़ोंको मार्ग बना
दूंगा, और मेरे राजमार्ग ऊंचे किए जाएंगे। 12 देखो, थे दूर से आएंगे, और, थे
उत्तर और पच्छिम से और सीनियोंके देश से आएंगे। 13 हे आकाश, जयजयकार
कर, हे पृथ्वी, मगन हो; हे पहाड़ों, गला खोलकर जयजयकार करो! क्योंकि
यहोवा ने अपक्की प्रजा को शान्ति दी है और अपके दीन लोगोंपर दया की है।।
14 परन्तु सिय्योन ने कहा, यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया
है। 15 क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपके दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए
और अपके जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु
मैं तुझे नहीं भूल सकता। 16 देख, मैं ने तेरा चित्र हथेलियोंपर खोदकर बनाया है;
तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के साम्हने बनी रहती है। 17 तेरे लड़के फुर्ती से
आ रहे हैं और खण्डहर बनानेवाले और उजाड़नेवाले तेरे बीच से निकले जा रहे हैं।
18 अपक्की आंखें उठाकर चारोंओर देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास
आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपय, तू निश्चय उन सभोंको
गहने के समान पहिन लेगी, तू दुल्हिन की नाई अपके शरीर में उन सब को बान्ध
लेगी।। 19 तेरे जो स्यान सुनसान और उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही
खण्डहर हैं, उन में अब निवासी न समाएंगे, और, तुझे नष्ट करनेवाले दूर हो
जाएंगे। 20 तेरे पुत्र जो तुझ से ले लिए गए वे फिर तेरे कान में कहने पाएंगे कि
यह स्यान हमारे लिथे सकेत है, हमें और स्यान दे कि उस में रहें। 21 तब तू मन
में कहेगी, किस ने इनको मेरे लिथे जन्माया? मैं तो पुत्रहीन और बांफ हो गई यीं,
दासत्व में और यहां वहां मैं घूमती रही, इनको किस ने पाला? देख, मैं अकेली रह
गई यी; फिर थे कहां थे? 22 प्रभु यहोवा योंकहता है, देख, थे अपना हाथ जाति

जाति के लोगोंकी ओर उठाऊंगा, और देश देश के लोगोंके साम्हने अपना फण्डा
खड़ा करूंगा; तब वे तेरे पुत्रोंको अपक्की गोद में लिए आएंगे, और तेरी पुत्रियोंको
अपके कन्धे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुंचाएंगे। 23 राजा तेरे बच्चोंके निज-सेवक
और उनकी रानियां दूध पिलाने के लिथे तेरी धाइयोंहोंगी। वे अपक्की नाक भूमि
पर रगड़कर तुझे दण्डवत् करेंगे और तेरे पांवोंकी धूलि चाटेंगे। तब तू यह जान
लेगी कि मैं ही यहोवा हूं; मेरी बाट जोहनेवाले कभी लज्जित न होंगे।। 24 क्या
वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है? क्या दुष्ट के बंघुए छुड़ाए जा सकते हैं?
25 तौभी यहोवा योंकहता है, हां, वीर के बंधुए उस से छीन लिए जांएगे, और
बलात्कारी का शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा, क्योंकि जो तुझ से लड़ते
हैं उन से मैं आप मुकद्दमा लड़ूंगा, और तेरे लड़केबालोंका मैं उद्धार करूंगा। 26 जो
तुझ पर अन्धेर करते हैं उनको मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा, और, वे अपना लोहू
पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नथे दाखमधु से होते हैं। तब सब प्राणी जान लेंगे
कि तेरा उद्धारकर्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिमान मैं ही हूं।।

यशायाह 50

1 तुम्हारी माता का त्यागपत्र कहां है? जिसे मैं ने उसे त्यागते समय दिया या? या
मैं ने किस व्योपारी के हाथ तुम्हें बेचा? यहोवा योंकहता है, सुनो, तुम अपके ही
अधर्म के कामोंके कारण बिक गए, और तुम्होर ही अपराधोंके कारण तुम्हारी
माता छोड़ दी गई। 2 इसका क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला?
और जब मैं ने पुकारा, तब कोई न बोला? क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि
छुड़ा नहीं सकता? क्या मुझ में उद्धार करने की शक्ति नहीं? देखो, मै एक धमकी से

समुद्र को सुखा देता हूं, मैं महानदोंको रेगिस्यान बना देता हूं, उनकी मछलियां
जल बिना मर जाती और बसाती हैं। 3 मैं आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा
पहिनाता, और टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूं।। 4 प्रभु यहोवा ने मुझे
सीखनेवालोंकी जीभ दी है कि मैं यके हुए को अपके वचन के द्वारा संभालना जानूं।
भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान
सुनूं। 5 प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैं ने विरोध न किया, न पीछे हटा।
6 मैं ने मारनेवालोंको अपक्की पीठ और गलमोछ नोचनेवालोंकी ओर अपके
गाल किए; अपमानित होने और यूकने से मैं ने मुंह न छिपाया।। 7 क्योंकि प्रभु
यहोवा मेरी सहाथता करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया; वरन अपना
माया चकमक की नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय या कि मुझे लज्जित होना
न पकेगा। 8 जो मुझे धर्मी ठहराता है वह मेरे निकट है। मेरे साय कौन मुकद्दमा
करेगा? हम आमने-साम्हने खड़े हों। मेरा विरोधी कौन है? वह मेरे निकट आए। 9
सुनो, प्रभु यहोवा मेरी सहाथता करता है; मुझे कौन दोषी ठहरा कसेगा? देखो, वे
सब कपके के समान पुराने हो जाएंगे; उनको कीड़े खा जाएंगे।। 10 तुम में से
कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो
अन्धिक्कारने में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का
भरोसा रखे, और अपके परमेश्वर पर आशा लगाए रहे। 11 देखो, तुम सब जो
आग जलाते और अग्निबाणोंको कमर में बान्धते हो! तुम सब अपक्की जलाई
हुई आग में और अपके जलाए हुए अग्निबाणोंके बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह
दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पके रहोगे।।

यशायाह 51

1 हे धर्म पर चलनेवालो, हे यहोवा के ढूंढ़नेवालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस
चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खानि में से तुम निकाले गए, उस पर
ध्यान करो। 2 अपके मूलपुरूष इब्राहीम और अपक्की माता सारा पर ध्यान करो;
जब वह अकेला या, तब ही से मैं ने उसको बुलाया और आशीष दी और बढ़ा
दिया। 3 यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उस ने उसके सब खण्डहरोंको
शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उसक निर्जल देश को
यहोवा की बाटिका के समान बनाएगा; उस में हर्ष और आनन्द और धन्यवाद
और भजन गाने का शब्द सुनाई पकेगा।। 4 हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर
ध्यान धरो; हे मेरे लोगो, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्या
दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश देश के लोगोंकी ज्योति होने के लिथे स्यिर
करूंगा। 5 मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपके भुजबल से
देश देश के लोगोंका न्याय करूंगा। द्वीप मेरी बाट जाहेंगे और मेरे भुजबल पर
आशा रखेंगे। 6 आकाश की ओर अपक्की आंखें उठाओ, और पृय्वी को निहारो;
क्योंकि आकाश धुंए ही नाई लोप हो जाएगा, पृय्वी कपके के समान पुरानी हो
जाएगी, और उसके रहनेवाले योंही जाते रहेंगे; परन्तु जो उद्धार मैं करूंगा वह
सर्वदा ठहरेगा, और मेरे धर्म का अन्त न होगा।। 7 हे धर्म के जाननेवलो, जिनके
मन में मेरी व्यवस्या है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्योंकी नामधराई से
मत डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न हो। 8 क्योंकि धुन उन्हें कपके
की नाईं और कीड़ा उन्हें ऊन की नाईं खाएगा; परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक,
और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा। 9 हे यहोवा की भुजा, जाग ! जाग
और बल धारण कर; जैसे प्राचीनकाल में और बीते हुए पीढिय़ोंमें, वैसे ही अब भी

जाग। क्या तू वही नहीं है जिस ने रहब को टुकड़े टुकड़े किया और मगरमच्छ को
छेदा? 10 क्या तू वही नहीं जिस ने समुद्र को अर्यात् गहिरे सागर के जल को सुखा
डाला और उसकी गहराई में अपके छुड़ाए हओं के पार जाने के लिथे मार्ग निकाला
या? 11 सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में
आएंगे, और उनके सिरोंपर अनन्त आनन्द गूंजता रहेगा; वे हर्ष और आनन्द
प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियोंका अन्त हो जाएगा।। 12 मैं, मैं ही तेरा
शान्तिदाता हूं; तू कौन है जो मरनेवाले मनुष्य से, और घास के समान
मुर्फानेवाले आदमी से डरता है, 13 और आकाश के ताननेवाले और पृय्वी की नेव
डालनेवाले अपके कर्ता यहोवा को भूल गया है, और जब द्रोही नाश करने को
तैयार होता है तब उसकी जलजलाहट से दिन भर लगातार यरयराता है? परन्तु
द्रोही की जलजलाहट कहां रही? 14 बंधुआ शीघ्र ही स्वतन्त्र् किया जाएगा; वह
गड़हे में न मरेगा और न उसे रोटी की कमी होगी। 15 जो समुद्र को उयल-पुयल
करता जिस से उसकी लहरोंमे गरजन होती है, वह मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं
मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है। और मैं ने तेरे मुंह में अपके वचन डाले, 16 और
तुझे अपके हाथ की आड़ में छिपा रखा है; कि मैं आकाश को तानूं और पृय्वी की
नेव डालूं, और सिय्योन से कहूं, तुम मेरी प्रजा हो।। 17 हे यरूशलेम जाग ! जाग
उठ ! खड़ी हो जा, तू ने यहोवा के हाथ से उसकी जलजलाहट के कटोरे में से पिया
है, तू ने कटोरे का लड़खड़ा देनेवाला मद पूरा पूरा ही पी लिया है। 18 जितने
लड़कोंने उस से जन्म लिया उन में से कोई न रहा जो उसकी अगुवाई करके ले
चले; और जितने लड़के उस ने पाले-पोसे उन में से कोई न रहा जो उसके हाथ को
याम ले। 19 थे दो विपत्तियां तुझ पर आ पक्की हैं; कौन तेरे संग विलाप करेगा?

उजाड़ और विनाश और महंगी और तलवार आ पक्की है; कौन तुझे शान्ति देगा?
20 तेरे लड़के मूच्छिर्त होकर हर एक सड़क के सिक्के पर, महाजाल में फंसे हुए
हरिण की नाई पके हैं; याहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की धमकी के
कारण वे अचेत पके हैं।। 21 इस कारण हे दुखियारी सुन, तू मतवाली तो है,
परन्तु दाखमधु पीकर नहीं; 22 तेरा प्रभु यहोवा जो अपक्की प्रजा का मुकद्दमा
लड़नेवाला तेरा परमेश्वर है, वह योंकहता है, सुन मैं लड़खड़ा देनेवाले मद के
कटोरे को अर्यात् अपक्की जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूं; तुझे
उस में से फिर कभी पीना न पकेगा। 23 और मैं उसे तेरे उन दु:ख देनेवालोंके हाथ
में दूंगा, जिन्होंने तुझ से कहा, लेट जा, कि हम तुझ पर पांव धरकर आगे चलें;
और तू ने औंधे मुंह गिरकर अपक्की पीठ को भूमि और आगे चलनेवालोंके लिथे
सड़क बना दिया।।

यशायाह 52

1 हे सिय्योन, जाग, जाग ! अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यरूशलेम,
अपके शोभायमान वस्त्र पहिन ले; क्योंकि तेरे बीच खतनारहित और अशुद्ध लोग
फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे। 2 अपके ऊपर से धूल फाड़ दे, हे यरूशलेम, उठ;
हे सिय्योन की बन्दी बेटी अपके गले के बन्धन को खोल दे।। 3 क्योंकि यहोवा
योंकहता है, तुम जो सेंतमेंत बिक गए थे, इसलिथे अब बिना रूपया दिए छुड़ाए
भी जाओगे। 4 प्रभु यहोवा योंकहता है, मेरी प्रजा पहिले तो मिस्र में परदेशी होकर
रहने को गई यी, और अश्शूरियोंने भी बिना कारण उन पर अत्याचार किया। 5
इसलिथे यहोवा की यह वाणी है कि मैं अब यहां क्या करूं जब कि मेरी प्रजा

संतमेंत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे
उधम मचा रहे हैं, और, मेरे नाम कि निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है। 6
इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी; वह उस समय जान लेगी कि जो बातें
करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूं।। 7 पहाड़ोंपर उसके पांव क्या ही सुहावने
हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ
समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता हे, तेरा परमेश्वर
राज्य करता है। 8 सुन, तेरे पहरूए पुकार रहे हैं, वे एक साय जयजयकार कर रहें
हैं; क्योंकि वे साझात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है। 9 हे
यरूशलेम के खण्डहरों, एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि
यहोवा ने अपक्की प्रजा को शान्ति दी है, उस ने यरूशलेम को छुड़ा लिया है। 10
यहोवा ने सारी जातियोंके साम्हने अपक्की पवित्र भुजा प्रगट की है; और पृय्वी
के दूर दूर देशोंके सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख
लेंगे।। 11 दूर हो, दूर, वहां से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छुओ; उसके
बीच से निकल जाओ; हे यहोवा के पात्रोंके ढोनेवालो, अपके को शुद्ध करो। 12
क्योंकि तुम को उतावली से निकलना नहीं, और न भागते हुए चलना पकेगा;
क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे अगुवाई करता हुआ चलेगा, और, इस्राएल का
परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रझा करता चलेगा।। 13 देखो, मेरा दास बुद्धि से काम
करेगा, वह ऊंचा, महान और अति महान हो जाएगा। 14 जैसे बहुत से लोग उसे
देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ या कि मनुष्या का
सा न जान पड़ता या और उसकी सुन्दरता भी आदमियोंकी सी न रह गई यी), 15
वैसे ही वह बहुत सी जातियोंको पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त

रहेंगे; क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया,
और, ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न यी।।

यशायाह 53

1 जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास कया? और यहोवा का
भुजबल किस पर प्रगट हुआ? 2 क्योंकि वह उसके साम्हने अंकुर की नाईं, और
ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ
सुन्दरता यी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा
कि हम उसको चाहते। 3 वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्योंका त्यागा हुआ या;
वह दु:खी पुरूष या, रोग से उसकी जान पहिचान यी; और लोग उस से मुख फेर
लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना।। 4 निश्चय उस
ने हमारे रोगोंको सह लिया और हमारे ही दु:खोंको उठा लिया; तौभी हम ने उसे
परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। 5 परन्तु वह हमारे ही
अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामोंके हेतु कुचला
गया; हमारी ही शान्ति के लिथे उस पर ताड़ना पक्की कि उसके कोड़े खाने से हम
चंगे हो जाएं। 6 हम तो सब के सब भेड़ोंकी नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने
अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभोंके अधर्म का बोफ उसी पर लाद
दिया।। 7 वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस
प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती
है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। 8 अत्याचार करके और दोष लगाकर वे
उसे ले गए; उस समय के लोगोंमें से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह

जीवतोंके बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगोंके अपराधोंके कारण उस पर
मार पक्की। 9 और उसकी कब्र भी दुष्टोंके संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय
वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव न किया या
और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली यी।। 10 तौभी यहोवा को यही
भया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि
करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ
से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। 11 वह अपके प्राणोंका दु:ख उठाकर उसे
देखेगा और तृप्त होगा; अपके ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरोंको धर्मी
ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामोंका बोफ आप उठा लेगा। 12 इस कारण मैं
उसे महान लोगोंके संग भाग दूंगा, और, वह सामयियोंके संग लूट बांट लेगा;
क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिथे उण्डेल दिया, वह अपराधियोंके संग
गिना गया; तौभी उस ने बहुतोंके पाप का बोफ उठ लिया, और, अपराधियोंके
लिथे बिनती करता है।।

यशायाह 54

1 हे बांफ तू जो पुत्रहीन है जयजयकार कर; तू जिसे जन्माने की पीड़े नहीं हुई,
गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार! क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन
के लड़कोंसे अधिक होंगे, यहोवा का यही वचन है। 2 अपके तम्बू का स्यान चौड़ा
कर, और तेरे डेरे के पट लम्बे किए जाएं; हाथ मत रोक, रस्सिक्कों लम्बी और
खूंटोंको दृढ़ कर। 3 क्योंकि तू दहिने-बाएं फैलेगी, और तेरा वंश जाति-जाति का
अधिक्कारनी होगा और उजड़े हुए नगरोंको फिर से बसाएगा।। 4 मत डर,

क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटेगी; मत घबरा, क्योंकि तू फिर लज्जित न होगी
और तुझ पर सियाही न छाएगी; क्योंकि तू अपक्की जवानी की लज्जा भूल
जाएगी, और, अपके विधवापन की नामधराई को फिर स्मरण न करेगी। 5
क्योकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का
पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा। 6 क्योंकि
यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है, मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया और जवानी
की त्यागी हुई स्त्री हो, तेरे परमेश्वर का यही वचन है। 7 झण भर ही के लिथे मैं ने
तुझे छोड़ दिया या, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा। 8 क्रोध के
फकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिथे तुझ से मुंह छिपाया या, परन्तु अब
अनन्त करूणा से मैं तुझ पर दया करूंगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन
है। 9 यह मेरी दृष्टि में नूह के समय के जलप्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैं ने
शपय खाई यी कि नूह के समय के जलप्रलय से पृथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैं ने
यह भी शपय खाई है कि फिर कभी तुझ पर क्रोध न करूंगा और न तुझ को
धमकी दूंगा। 10 चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाडियां टल जाएं, तौभी मेरी करूणा
तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो
तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।। 11 हे दु:खियारी, तू जो आंधी की
सताई है और जिस को शान्ति नहीं मिली, सुन, मैं तेरे पत्यरोंकी पच्चीकारी
करके बैठाऊंगा, और तेरी नेव नीलमणि से डालूंगा। 12 तेरे कलश मैं माणिकों,
तेरे फाटक लालडियोंसे और तेरे सब सिवानोंको मनोहर रत्नोंसे बनाऊंगा। 13 तू
धामिर्कता के द्वारा स्यिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पकेगा;
और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा। 14 तू

धामिर्कता के द्वारा स्यिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पकेगा;
और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा। 15
सुन, लोग भीड़ लगाएंगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने तेरे विरूद्ध भीड़ लगाएंगे
वे तेरे कारण गिरेंगे। 16 सुन, एक लोहर कोएले की आग धोंककर इसके लिथे
हयियार बनाता है, वह मेरा ही सृजा हुआ है। उजाड़ने के लिथे भी मेरी ओर से एक
नाश करनेवाला सृजा गया है। 17 जितने हयियार तेरी हानि के लिथे बनाए जाएं,
उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें
उन सभोंसे तू जीत जाएगा। यहोवा के दासोंका यही भाग होगा, और वे मेरे ही
कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।।

यशायाह 55

1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम
भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही
आकर ले लो। 2 जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिथे तुम क्योंरूपया लगाते हो,
और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिथे क्योंपरिश्रम करते हो? मेरी ओर मन
लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर
सन्तुष्ट हो जाओगे। 3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित
रहोगे; और मैं तुम्हारे साय सदा की वाचा बान्धूंगा अर्यात् दाऊद पर की अटल
करूणा की वाचा। 4 सुनो, मैं ने उसको राज्य राज्य के लोगोंके लिथे साझी और
प्रधान और आज्ञा देनेवाला ठहराया है। 5 सुन, तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं
जानता बुलाएगा, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं तेरे पास दौड़ी आएंगी,

वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योंकि उस
ने तुझे शोभायमान किया है।। 6 जब जब यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी
खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; 7 दुष्ट अपक्की
चालचलन और अनर्थकारी अपके सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे,
वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से
उसको झमा करेगा। 8 क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार
एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। 9 क्योंकि मेरी और
तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारोंमें, आकाश और पृथ्वी का
अन्तर है।। 10 जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां योंही
लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोलनेवाले को
बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, 11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो
मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी
इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिथे मैं ने उसको भेजा है उसे वह
सुफल करेगा।। 12 क्योंकि तुम आनन्द के साय निकलोगे, और शान्ति के साय
पहुंचाए जाओगे; तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाडिय़ां गला खोलकर
जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृझ आनन्द के मारे ताली बजाएंगे। 13
तब भटकटैयोंकी सन्ती सनौवर उगेंगे; और बिच्छू पेड़ोंकी सन्ती मेंहदी उगेगी;
और इस से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।

यशायाह 56

1 यहोवा योंकहता है, न्याय का पालन करो, और धर्म के काम करो; क्योंकि मैं

शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूंगा, और मेरा धर्मी होना प्रगट होगा। 2 क्या ही धन्य है
वह मनुष्य जो ऐसा ही करता, और वह आदमी जो इस पर स्यिर रहता है, जो
विश्रपदिन को पवित्र मानता और अपवित्र करने से बचा रहता है, और अपके हाथ
को सब भांति की बुराई करने से रोकता है। 3 जो परदेशी यहोवा से मिल गए हैं, वे
न कहें कि यहोवा हमें अपक्की प्रजा से निश्चय अलग करेगा; और खोजे भी न कहें
कि हम तो सूखे वृझ हैं। 4 क्योंकि जो खोजे मेरे विश्रमदिन को मानते और जिस
बात से मैं प्रसन्न रहता हूं उसी को अपनाते और मेरी वाचा को पालते हैं, उनके
विषय यहोवा योंकहता है 5 कि मैं अपके भवन और अपक्की शहर-पनाह के
भीतर उनको ऐसा नाम दूंगा जो पुत्र-पुत्रियोंसे कहीं उत्तम होगा; मैं उनका नाम
सदा बनाए रखूंगा और वह कभी न मिटाया जाएगा। 6 परदेशी भी जो यहोवा के
साय इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से
प्रीति रखें और उसके दास हो जाएं, जितने विश्रमदिन को अपवित्र करने से बचे
रहते और मेरी वाचा को पालते हैं, 7 उनको मैं अपके पवित्र पर्वत पर ले आकर
अपके प्रार्यना के भवन में आनन्दित करूंगा; उनके होमबलि और मेलबलि मेरी
वेदी पर ग्रहण किए जाएंगे; क्योंकि मेरा भवन सब देशोंके लोगोंके लिथे प्रार्यना
का घर कहलाएगा। 8 प्रभु यहोवा, जो निकाले हुए इस्राएलियोंको इकट्ठे
करनेवाला है, उसकी यह वाणी है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साय मैं
औरोंको भी इकट्ठे करके मिला दूंगा।। 9 हे मैदान के सब जन्तुओं, हे वन के सब
पशुओं, खाने के लिथे आओ। 10 उसके पहरूए अन्धे हैं, वे सब के सब अज्ञानी हैं,
वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भूंक नहीं सकते; वे स्वप्न देखनेवाले और लेटे
रहकर सोते रहना चाहते हैं। 11 वे मरभूखे कुत्ते हैं जो कभी तृप्त नहीं होते। वे

चरवाहे हैं जिन में समझ ही नहीं; उन सभोंने अपके अपके लाभ के लिथे अपना
अपना मार्ग लिया है। 12 वे कहते हैं कि आओ, हम दाखमधु ले आएं, आओ
मदिरा पीकर छक जाएं; कल का दिन भी तो आज ही के समान अत्यन्त सुहावना
होगा।।

यशायाह 57

1 धर्मी जन नाश होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य
उठा लिए जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिथे उठा लिया गया
कि आनेवाली आपत्ति से बच जाए, 2 वह शान्ति को पहुंचता है; जो सीधी चाल
चलता है वह अपक्की खाट पर विश्रम करता है।। 3 परन्तु तुम, हे जादूगरती के
पुत्रों, हे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की सन्तान, यहां निकट आओ। 4 तुम
किस पर हंसी करते हो? तुम किस पर मुंह खोलकर जीभ निकालते हो? क्या तुम
पाखण्डी और फूठे के वंश नहीं हो, 5 तुम, जो सब हरे वृझोंके तले देवताओं के
कारण कामातुर होते और नालोंमें और चट्टानोंही दरारोंके बीच बाल-बच्चोंको
वध करते हो? 6 नालोंके चिकने पत्यर ही तेरा भाग और अंश ठहरे; तू ने उनके
लिथे तपावन दिया और अन्नबलि चढ़ाया है। क्या मैं इन बातोंसे शान्त हो जाऊं?
7 एक बड़े ऊंचे पहाड़ पर तू ने अपना बिछौना छािया है, वहीं तू बलि चढ़ाने को
चढ़ गई। 8 तू ने अपक्की चिन्हानी अपके द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही
में रखी; मुझे छोड़कर तू औरोंको अपके तई दिखाने के लिथे चक्की, तू ने
अपक्की खाट चौड़ी की और उन से वाचा बान्ध ली, तू ने उनकी खाट को जहां
देखा, पसन्द किया। 9 तू तेल लिए हुए राजा के पास गई और बहुत सुगन्धित

तेल अपके काम में लाई; अपके दूत तू ने दूर तक भेजे और अधोलोक तक अपके
को नीचा किया। 10 तू अपक्की यात्रा की लम्बाई के कारण यक गई, तौभी तू ने
न कहा कि यह व्यर्य है; तेरा बल कुछ अधिक हो गया, इसी कारण तू नहीं यकी।।
11 तू ने किस के डर से फूठ कहा, और किसका भय मानकर ऐसा किया कि मुझ
को स्मरण नहीं रखा न मुझ पर ध्यान दिया? क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं
रहा? इस कारण तू मेरा भय नहीं मानती। 12 मैं आप तेरे धर्म और कर्मोंका वर्णन
करूंगा, परन्तु, उन से तुझे कुछ लाभ न होगा। 13 जब तू दोहाई दे, तब जिन
मूत्तिर्योंको तू ने जमा किया है वह ही तुझे छुड़ाएं ! वे तो सब की सब वायु से वरन
एक ही फूंक से उड़ जाएंगी। परन्तु जो मेरी शरण लेगा वह देश का अधिक्कारनी
होगा, और मेरे पवित्र पर्वत को भी अधिक्कारनी होगा।। 14 और यह कहा
जाएगा, पांति बान्ध बान्धकर राजमार्ग बनाओ, मेरी प्रजा के मार्ग में से हर एक
ठोकर दूर करो। 15 क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्यिर रहता, और
जिसका नाम पवित्र है, वह योंकहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्यान में निवास
करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि, नम्र लोगोंके
हृदय और खेदित लोगोंके मन को हर्षित करूं। 16 मैं सदा मुकद्दमा न लड़ता
रहूंगा, न सर्वदा क्रोधित रहूंगा; क्योंकि आत्मा मेरे बनाए हुए हैं और जीव मेरे
साम्हने मूच्छिर्त हो जाते हैं। 17 उसके लोभ के पाप के कारण मैं ने क्रोधित होकर
उसको दु:ख दिया या, और क्रोध के मारे उस से मुंह छिपाया या; परन्तु वह अपके
मनमाने मार्ग में दूर भटकता चला गया या। 18 मैं उसकी चाल देखता आया हूं,
तौभी अब उसको चंगा करूंगा; मैं उसे ले चलूंगा और विशेष करके उसके शोक
करनेवालोंको शान्ति दूंगा। 19 मैं मुंह के फल का सृजनहार हूं; यहोवा ने कहा है,

जो दूर और जो निकट हैं, दोनोंको पूरी शान्ति मिले; और मैं उसको चंगा करूंगा।
20 परन्तु दुष्ट तो लहराते समु्द्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और
उसका जल मैल और कीच उछालता है। 21 दुष्टोंके लिथे शान्ति नहीं है, मेरे
परमेश्वर का यही वचन है।।

यशायाह 58

1 गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़, नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर; मेरी
प्रजा को उसका अपराध अर्थात् याकूब के घराने को उसका पाप जता दे। 2 वे प्रति
दिन मेरे पास आते और मेरी गति बूफने की इच्छा ऐसी रखते हैं मानो वे धर्मी
लोगे हैं जिन्होंने अपके परमेश्वर के नियमोंको नहीं टाला; वे मुझ से धर्म के
नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं। 3 वे कहते हैं, क्या
कारएा है कि हम ने तो उपवास रखा, परन्तु तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हम ने
दु:ख उठाया, परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया? सुनो, उपवास के दिन तुम
अपक्की ही इच्छा पूरी करते हो और अपके सेवकोंसे कठिन कामोंको कराते हो।
4 सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और फगड़ते
और दुष्टता से घूंसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकर रखते हो, उस से
तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। 5 जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं
अर्थात् जिस में मनुष्य स्वयं को दीन करे, क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या
सिर को फाऊ की नाईं फुकाना, अपके नीचे टाट बिछाना, और राख फैनाने ही को
तुम उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो? 6 जिस उपवास से
मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और

अन्धेर सहनेवालोंका जुआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े
टूकड़े कर देना? 7 क्या वह यह नहीं है कि अपक्की रोटी भूखोंको बांट देना,
अनाय और मारे मारे फिरते हुओं को अपके घर ले आना, किसी को नंगा देखकर
वस्त्र पहिनाना, और अपके जातिभाइयोंसे अपके को न छिपाना? 8 तब तेरा
प्रकाश पौ फटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे
आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रझा करते चलेगा। 9 तब तू पुकारेगा
और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मैं यहां हूं। यदि तू अन्धेर
करना और उंगली मटकाना, और, दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे, 10 उदारता से भूखे
की सहाथता करे और दीन दु:खियोंको सन्तुष्ट करे, तब अन्धिक्कारने में तेरा
प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।
11 और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी
हड्डियोंको हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा
जिसका जल कभी नहीं सूखता। 12 और तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए
स्यानोंको फिर बसाएंगे; तू पीढ़ी पीढ़ी की पक्की हुई नेव पर घर उठाएगा; तेरा
नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पयोंका ठीक करनेवाला पकेगा।। 13 यदि तू
विश्रमदिन को अशुद्ध न करे अर्यात् मेरे उस पवित्र दिन में अपक्की इच्छा पूरी
करने का यत्न न करे, और विश्रमदिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र
किया हुआ दिन समझकर माने; यदि तू उसका सन्मान करके उस दिन अपके
मार्ग पर न चले, अपक्की इच्छा पूरी न करे, और अपक्की ही बातें न बोले, 14 तो
तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊंचे स्यानोंपर चलने दूंगा; मैं
तेरे मूलपुरूष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा, क्योंकि यहोवा ही के

मुख से यह वचन निकला है।।

यशायाह 59

1 सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा
बहिरा हो गया है कि सुन न सके; 2 क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी
अंगुलियां अधर्म के कर्मो से अपवित्र हो गई है; तुम्हारे मुंह से तो फूठ और
तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं। 3 क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और
तुम्हारी अंगुलियां अधर्म के कर्मोंसे अपवित्र हो गईं हैं; तुम्हारे मुंह से तो फूठ और
तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं। 4 कोई धर्म के साय नालिश नहीं
करता, न कोई सच्चाई से मुकद्दमा लड़ता है; वे मिय्या पर भरोसा रखते हैं और
फूठ बातें बकते हैं, उसको मानो उत्पात का गर्भ रहता, और वे अनर्य को जन्म
देते हैं। 5 वे सांपिन के अण्डे सेते और मकड़ी के जाले बनाते हैं; जो कोई उनके
अण्डे खाता वह मर जाता है, और जब कोई एक को फोड़ता तब उस में से सपोला
निकलता है। 6 उनके जाले कपके का काम न देंगे, न वे अपके कामोंसे अपके को
ढाप सकेंगे। क्योंकि उनके काम अनर्य ही के होते हैं, और उनके हाथोंसे अपद्रव
का काम होता है। 7 वे बुराई करने को दौड़ते हैं, और निर्दोष की हत्या करने को
तत्पर रहते हैं; उनकी युक्तियां व्यर्य हैं, उजाड़ और विनाश ही उनके मार्गोंमें हैं। 8
शान्ति का मार्ग वे जानते ही नहीं और न उनके व्यवहार में न्याय है; उनके पय
टेढ़े हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा।। 9 इस कारण न्याय हम से
दूर है, और धर्म हमारे समीप ही नहीं आता हम उजियाले की बाट तो जोहते हैं,
परन्तु, देखो अन्धिक्कारनो ही बना रहता है, हम प्रकाश की आशा तो लगाए हैं,

परन्तु, घोर अन्धकार ही में चलते हैं। 10 हम अन्धोंके समान भीत टटोलते हैं,
हां, हम बिना आंख के लोगोंकी नाईं टटोलते हैं; हम दिन-दोपहर रात की नाईं
ठोकर खाते हैं, हृष्टपुष्टोंके बीच हम मुर्दोंके समान हैं। 11 हम सब के सब रीछोंकी
नाई चिल्लाते हैं और पण्डुकोंके समान च्यूं च्यूं करते हैं; हम न्याय की बाट तो
जोहते हैं, पर वह कहीं नहीं; और उद्धार की बाट जोहते हैं पर वह हम से दूर ही
रहता है। 12 क्योंकि हमारे अपराध तेरे साम्हने बहुत हुए हैं, हमारे पाप हमारे
विरूद्ध साक्षी दे रहे हैं; हमारे अपराध हमारे संग हैं और हम अपके अधर्म के काम
जानते हैं: 13 हम ने यहोवा का अपराध किया है, हम उस से मुकर गए और
अपके परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दिया, हम अन्धेर करने लगे और उलट फेर
की बातें कहीं, हम ने फूठी बातें मन में गढ़ीं और कही भी हैं। 14 न्याय तो पीछे
हटाया गया और धर्म दूर खड़ा रह गया; सच्चाई बाजार में गिर पक्की और
सिधाई प्रवेश नहीं करने पाती। 15 हां, सच्चाई खोई, और जो बुराई से भागता है
सो शिकार हो जाता है।। यह देखकर यहोवा ने बुरा माना, क्योंकि न्याय जाता
रहा, 16 उस ने देखा कि कोई भी पुरूष नहीं, और इस से अचम्भा किया कि कोई
बिनती करनेवाला नहीं; तब उस ने अपके ही भुजबल से उद्धार किया, और अपके
धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया। 17 उस ने धर्म को फिलम की नाईं पहिन
लिया, और उसके सिर पर उद्धार का टोप रखा गया; उस ने पलटा लेने का वस्त्र
धारण किया, और जलजलाहट को बागे की नाईं पहिन लिया है। 18 उनके कर्मोंके
अनुसार वह उनको फल देगा, अपके द्रोहियोंपर वह अपना क्रोध भड़काएगा और
अपके शत्रुओं को उनकी कमाई देगा; वह द्वीपवासिक्कों भी उनकी कमाई भर
देगा। 19 तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी

महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब यहोवा
का आत्मा उसके विरूद्ध फण्डा खड़ा करेगा।। 20 और याकूब में जो अपराध से
मन फिराते हैं उनके लिथे सिय्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा, यहोवा की यही
वाणी है। 21 और यहोवा यह कहता है, जो वाचा मैं ने उन से बान्धी है वह यह है,
कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपके वचन जो मैं ने तेरे मुंह में डाले हैं
अब से लेकर सर्वदा तक वे मेरे मुंह से, और, तेरे पुत्रोंऔर पोतोंके मुंह से भी कभी
न हटेंगे।।

यशायाह 60

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे
ऊपर उदय हुआ है। 2 देख, पृय्वी पर तो अन्धिक्कारनो और राज्य राज्य के
लोगोंपर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और
उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। 3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिथे
और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे।। 4 अपक्की आंखें चारो ओर
उठाकर देख; वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं; तेरे पुत्र दूर से आ
रहे हैं, और तेरी पुत्रियां हाथों-हाथ पहुंचाई जा रही हैं। 5 तब तू इसे देखेगी और
तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय यरयराएगा और आनन्द से भर जाएगा; क्योंकि
समुद्र का सारा धन और अन्यजातियोंकी धन-सम्पति तुझ को मिलेगी। 6 तेरे
देश में ऊंटोंके फुण्ड और मिद्यान और एपादेशोंकी साड़नियां इकट्ठी होंगी; शिबा
के सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का गुणानुवाद
आनन्द से सुनाएंगे। 7 केदार की सब भेड़-बकरियां इकट्ठी होकर तेरी हो

जाएंगी, नबायोत के मेढ़े तेरी सेवा टहल के काम में आएंगे; मेरी वेदी पर वे ग्रहण
किए जाएंगे और मैं अपके शोभायमान भवन को और भी प्रतापी कर दूंगा।। 8 थे
कौन हैं जो बादल की नाई और दर्बाओं की ओर उड़ते हुए कबूतरोंकी नाई चले
आते हैं? 9 निश्चय द्वीप मेरी ही बाट देखेंगे, पहिले तो तर्शीश के जहाज आएंगे,
कि, मेरे पुत्रोंको सोने चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्यात् इस्राएल के पवित्र
के नाम के निमित्त दूर से पहुंचाए, क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है।। 10
परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएंगे, और उनके राजा तेरी सेवा टहल करेंगे;
क्योंकि मैं ने क्रोध में आकर तुझे दु:ख दिया या, परन्तु अब तुझ से प्रसन्न होकर
तुझ पर दया की है। 11 तेरे फाटक सदैव खुले रहेंगे; दिन और रात वे बन्द न
किए जाएंगे जिस से अन्यजातियोंकी धन-सम्पत्ति और उनके राजा बंधुए होकर
तेरे पास पहुंचाए जाएं। 12 क्योंकि जो जाति और राज्य के लोग तेरी सेवा न करें
वे नष्ट हो जाएंगे; हां ऐसी जातियां पूरी रीति से सत्यानाश हो जाएंगी। 13
लबानोन का विभव अर्यात् सनौबर और देवदार और सीधे सनौबर के पेड़ एक
सा ा ि तेरे पास आएंगे कि मेरे पवित्रस्यान को सुशोभित करें; और मैं अपके
चरणोंके स्यान को महिमा दूंगा। 14 तेरे दु:ख देनेवालोंकी सन्तान तेरे पास सिर
फुकाए हुए आंएगें; और जिन्होंने तेरा तिरस्कार किया सब तेरे पांवोंपर गिरकर
दण्डवत् करेंगे; वे तेरा नाम यहोवा का नगर, इस्राएल के पवित्र का सिय्योन
रखेंगे।। 15 तू जो त्यागी गई और घृणित ठहरी, यहां तक कि कोई तुझ में से
होकर नहीं जाता या, इसकी सन्ती मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी पीढ़ी के
हर्ष का कारण ठहराऊंगा। 16 तू अन्यजातियोंका दूध पी लेगी, तू राजाओं की
छातियां चूसेगी; और तू जान लेगी कि मैं याहवो तेरा उद्धारकर्त्ता और तेरा

छुड़ानेवाला, याकूब का सर्वशक्तिमान हूं।। 17 मैं पीतल की सन्ती लोहा, लोहे की
सन्ती चान्दी, लकड़ी की सन्ती पीतल और पत्थर की सन्ती लोहा लाऊंगा। मैं
तेरे हाकिमोंको मेल-मिलाप और चौधरियोंको धामिर्कता ठहराऊंगा। 18 तेरे देश
में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानोंके भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा न
सुनाई पकेगी; परन्तु तू अपक्की शहरपनाह का नाम उद्धार और अपके
फाटकोंका नाम यश रखेगी। 19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न
चान्दनी के लिथे चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिथे सदा का उजियाला और तेरा
परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा। 20 तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे
चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और
तरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे। 21 और तेरे लोग सब के सब धर्मी होंगे; वे
सर्वदा देश के अधिक्कारनी रहेंगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे हाथोंका काम
ठहरेंगे, जिस से मेरी महिमा प्रगट हो। 22 छोटे से छोटा एक हजार हो जाएगा
और सब से दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा। मैं यहोवा हूं; ठीक समय पर
यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूंगा।।

यशायाह 61

1 प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिथे
मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिथे भेजा है कि खेदित मन के लोगोंको शान्ति
दूं; कि बंधुओं के लिथे स्वतंत्रता का और कैदियोंके लिथे छुटकारे का प्रचार करूं;
2 कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन
का प्रचार करूं; कि सब विलाप करनेवालोंको शान्ति दूं 3 और सिय्योन के विलाप

करनेवालोंके सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप
दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं;
जिस से वे धर्म के बांजवृझ और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और जिस से
उसकी महिमा प्रगट हो। 4 तब वे बहुत काल के उजड़े हुए स्यानोंको फिर
बसाएंगे, पूर्वकाल से पके हुए खण्डहरोंमें वे फिर घर बनाएंगे; उजड़े हुए नगरोंको
जो पीढ़ी पीढ़ी में उजड़े हुए होंवे फिर नथे सिक्के से बसाएंगे।। 5 परदेशी आ खड़े
होंगे और तुम्हारी भेड़-बकरियोंको चराएंगे और विदेशी लोग तुम्हारे चरवाहे और
दाख की बारी के माली होंगे; 6 पर तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, वे तुम को
हमरो परमेश्वर के सेवक कहेंगे; और तुम अन्यजातियोंकी धन-सम्पत्ति को
खाओगे, उनके विभव की वस्तुएं पाकर तुम बड़ाई करोगे। 7 तुम्हारी नामधराई
की सन्ती दूना भाग मिलेगा, अनादर की सन्ती तुम अपके भाग के कारण
जयजयकार करोगे; तुम अपके देश में दूने भाग के अधिक्कारनी होगे; और सदा
आनन्दित बने रहोगे।। 8 क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति रखता हूं, मैं अन्याय
और डकैती से घृणा करता हूं; इसलिथे मैं उनको उनके साय सदा की वाचा
बान्धूंगा। 9 उनका वंश अन्यजातियोंमें और उनकी सन्तान देश देश के लोगोंके
बीच प्रसिद्ध होगी; जितने उनको देखेंगे, पहिचान लेंगे कि यह वह वंश है जिसको
परमेश्वर ने आशीष दी है।। 10 मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा
प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उस ने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए,
और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलोंकी माला से अपके आपको
सजाता और दुल्हिन अपके गहनोंसे अपना सिंगार करती है। 11 क्योंकि जैसे
भूमि अपक्की उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह

उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियोंके साम्हने धामिर्कता और धन्यवाद
को बढ़ाएगा।।

यशायाह 62

1 सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूंगा, और यरूशलेम के निमित्त मैं चैन न लूंगा,
जब तक कि उसकी धामिर्कता प्रकाश की नाईं और उसका उद्धार जलते हुए
पक्कीते के समान दिखाई न दे। 2 जब अन्यजातियां तेरा धर्म और सब राजा
तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से
निकलेगा। 3 तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपके पकेश्वर की
हथेली में राजमुकुट ठहरेगी। 4 तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि
फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी;
क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागन होगी। 5 क्योंकि जिस
प्रकार जवान पुरूष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे;
और, जैसे दुल्हा अपक्की दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर
तेरे कारण हर्षित होगा।। 6 हे यरूशलेम, मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरूए बैठाए
हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो, 7
और, जब तक वह यरूशलेम को स्यिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे,
तब तक उसे भी चैन न लेने दो। 8 यहोवा ने अपके दहिने हाथ की और अपक्की
बलवन्त भुजा की शपय खाई है: निश्चय मैं भविष्य में तेरा अन्न अब फिर तेरे
शत्रुओं को खाने के लिथे न दूंगा, और परदेशियोंके पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके
लिथे तू ने परिश्रम किया है, नहीं पीने पाएंगे; 9 केवल वे ही, जिन्होंने उसे खत्ते में

रखा हो, उस से खाकर यहोवा की स्तुति करेंगे, और जिन्होंने दाखमधु भण्डारोंमें
रखा हो, वे ही उसे मेरे पवित्रस्यान के आंगनोंमें पीने पाएंगे।। 10 जाओ,
फाटकोंमें से निकल जाओ, प्रजा के लिथे मार्ग सुधारो; राजमार्ग सुधारकर ऊंचा
करो, उस में के पत्यर बीन बीनकर फेंक दो, देश देश के लोगोंके लिथे फण्डा खड़ा
करो। 11 देखो, यहोवा ने पृय्वी की छोर तक इस आज्ञा का प्रचार किया है:
सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा उद्धारकर्ता आता है, देख, जो मजदूरी उसको
देनी है वह उसके पास है और उसका काम उसके सामने है। 12 और लोग उनको
पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाए हुए कहेंगे; और तेरा नाम ग्रहण की हुई अर्यात्
न-त्यागी हुई नगरी पकेगा।।

यशायाह 63

1 यह कौन है जो एदोम देश के बोस्रा नगर से बैंजनी वस्त्र पहिने हुए चला आता
है, जो अति बलवान और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए फूमता चला आता है? यह
मैं ही हूं, जो धर्म से बोलता और पूरा उद्धार करने की शक्ति रखता हूं। 2 तेरा
पहिरावा क्योंलाल है? और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदनेवाले के
समान हैं? 3 मैं ने तो अकेले ही हौद में दाखें रौंदी हैं, और देश के लोगोंमें से किसी
ने मेरा साय नहीं दिया; हां, मैं ने अपके क्रोध में आकर उन्हें रौंदा और जलकर
उन्हें लताड़ा; उनके लोहू के छींटे मेरे वस्त्रोंपर पके हैं, इस से मेरा सारा पहिरावा
धब्बेदार हो गया है। 4 क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में या, और मेरी छुड़ाई
हुई प्रजा का वर्ष आ पहुंचा है। 5 मैं ने खोजा, पर कोई सहाथक न दिखाई पड़ा; मैं
ने इस से अचम्भा भी किया कि कोई सम्भालनेवाला नहीं या; तब मैं ने अपके ही

भुजबल से उद्धार किया, और मेरी जलजलाहट ही ने मुझे सम्हाला। 6 हां, मैं ने
अपके क्रोध में आकर देश देश के लोगोंको लताड़ा, अपक्की जलजलाहट से मैं ने
उन्हें मतवाला कर दिया, और उनके लोहू को भूमि पर बहा दिया।। 7 जितना
उपकार यहोवा ने हम लोगोंका किया अर्यात् इस्राएल के घराने पर दया और
अत्यन्त करूणा करके उस ने हम से जितनी भलाई, कि उस सब के अनुसार मैं
यहोवा के करूणामय कामोंका वर्णन और उसका गुणानुवाद करूंगा। 8 क्योंकि
उस ने कहा, निस्न्देह थे मेरी प्रजा के लोग हैं, ऐसे लड़के हैं जो धोखा नदेंगे; और
वह उनका उद्धारकर्ता हो गया। 9 उनके सारे संकट में उस ने भी कष्ट उठाया, और
उसके सम्मुख रहनेवाले दूत ने उनका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उस ने
आप की उनको छुड़ाया; उस ने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिए
फिरा। 10 तौभी उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया;
इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उन से लड़ने लगा। 11
तब उसके लोगोंको उनके प्राचीन दिन अर्यात् मूसा के दिन स्मरण आए, वे कहने
लगे कि जो अपक्की भेड़ोंको उनके चरवाहे समेत समुद्र में से निकाल लाया वह
कहां है? जिस ने उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला, वह कहां है? 12 जिस ने
अपके प्रतापी भुजबल को मूसा के दहिने हाथ के साय कर दिया, जिस ने उनके
साम्हने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया, 13 जो उनको
गहिरे समुद्र में से ले चला; जैसा घोड़े को जंगल में वैसे ही उनको भी ठोकर न
लगी, वह कहां है? 14 जैसे घरैलू पशु तराई में उतर जाता है, वैसे ही यहोवा के
आत्मा न उनको विश्रम दिया। इसी प्रकार से तू ने अपक्की प्रजा की अगुवाई की
ताकि अपना नाम महिमायुक्त बनाए।। 15 स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और

महिमापूर्ण वासस्यान है, दृष्टि कर। तेरी जलन और पराक्रम कहां रहे? तेरी दया
और करूणा मुझ पर से हट गई हैं। 16 निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि इब्राहीम
हमें नहीं पहिचानता, और इस्राएल हमें ग्रहण नहीं करता; तौभी, हे यहोवा, तू
हमारा पिता और हमारा छुड़ानेवाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है। 17 हे
यहोवा, तू क्योंहम को अपके मार्गोंसे भटका देता, और हमारे मन ऐसे कठोर
करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते? अपके दास, अपके निज भाग के गोत्रोंके
निमित्त लौट आ। 18 तेरी पवित्र प्रजा तो योड़े ही काल तक मेरे पवित्रस्यान की
अधिक्कारनी रही; हमारे द्रोहियोंने उसे लताड़ दिया है। 19 हम लोग तो ऐसे हो
गए हैं, मानो तू ने हम पर कभी प्रभुता नहीं की, और उनके समान जो कभी तेरे न
कहलाए।।

यशायाह 64

1 भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे साम्हने कांप उठे।
2 जैसे आग फाड़-फंखाड़ को जला देती वा जल को उबालती है, उसी रीति से तू
अपके शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप
से कांप उठें! 3 जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर
थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे। 4 क्योंकि प्राचीनकाल ही से
तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न काल से उसकी
चर्चा सुनी गई जो अपक्की बाट जोहनेवालोंके लिथे काम करे। 5 तू तो उन्हीं से
मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साय करते, और तेरे मार्गोंपर चलते हुए तुझे
स्मरण करते हैं। देख, तू क्रोधित हुआ या, क्योंकि हम ने पाप किया; हमारी यह

दशा तो बहुत काल से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है? 6 हम तो सब के सब
अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चियड़ोंके समान
हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्फा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामोंने हमें
वायु की नाईं उड़ा दिया है। 7 कोई भी तुझ से सहाथता लेने के लिथे चौकसी
करता है कि तुझ से लिपटा रहे; क्योंकि हमारे अधर्म के कामोंके कारण तू ने हम
से अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयोंके वश में छोड़ दिया है।। 8
तौभी, हे यहोवा, तू हमार पिता है; देख, हम तो मिट्टी है, और तू हमारा कुम्हार
है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं। 9 इसलिथे हे यहोवा, अत्यन्त क्रोधित न
हो, और अनन्तकाल तक हमारे अधर्म को स्मरण न रख। विचार करके देख, हम
तेरी बिनती करते हैं, हम सब तेरी प्रजा हैं। 10 देख, तेरे पवित्र नगर जंगल हो
गए, सिय्योन सुनसान हो गया है, यरूशलेम उजड़ गया है। 11 हमारा पवित्र और
शोभायमान मन्दिर, जिस में हमारे पूर्वज तेरी स्तुति करते थे, आग से जलाया
गया, और हमारी मनभावनी वस्तुएं सब नष्ट हो गई हैं। 12 हे यहोवा, क्या इन
बातोंके होते भी तू अपके को रोके रहेगा? क्या तू हम लोगोंको इस अत्यन्त दुर्दशा
में रहने देगा?

यशायाह 65

1 जो मुझ को पूछते भी न थे वे मेरे खोजी हैं; जो मुझे ढूंढ़ते भी न थे उन्होंने मुझे
पा लिया, और जो जाति मेरी नहीं कहलाई यी, उस से भी मैं कहता हूं, देख, मैं
उपस्यित हूं। 2 मैं एक हठीली जाति के लोगोंकी ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा,
जो अपक्की युक्तियोंके अनुसार बुरे मार्गोंमें चलते हैं। 3 ऐसे लो, जो मेरे साम्हने

ही बारियोंमें बलि चढ़ा चढ़ाकर और ईंटोंपर धूप जला जलाकर, मुझे लगातार
क्रोध दिलाते हैं। 4 थे कब्र के बीच बैठते और छिपे हुए स्यानोंमें रात बिताते; जो
सूअर का मांस खाते, और घृणित वस्तुओं का रस अपके बर्तनोंमें रखते; 5 जो
कहते हैं, हट जा, मेरे निकट मत आ, क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूं। थे मेरी नाक में
धूंएं व उस आग के समान हैं जो दिन भर जलती रहती है। 6 देखो, यह बात मेरे
साम्हने लिखी हुई है: मैं चुप न रहूंगा, मैं निश्चय बदला दूंगा वरन तुम्हारे और
तुम्हारे पुरखाओं के भी अधर्म के कामोंका बदला तुम्हारी गोद में भर दूंगा। 7
क्योंकि उन्होंने पहाड़ोंपर धूप जलाया और पहाडिय़ोंपर मेरी निन्दा की है,
इसलिथे मैं यहोवा कहता हूं, कि, उनके पिछले कामोंके बदले को मैं इनकी गोद में
तौलकर दूंगा।। 8 यहोवा योंकहता है, जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब
नया दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उस में
आशीष है; उसी भांति मैं अपके दासोंके निमित्त ऐसा करूंगा कि सभोंको नाश न
करूंगा। 9 मैं याकूब में से एक वंश, और यहूदा में से अपके पर्वतोंका एक वारिस
उत्पन्न करूंगा; मेरे चुने हुए उसके वारिस होंगे, और मेरे दास वहां निवास करेंगे।
10 मेरी प्रजा जो मुझे ढूंढ़ती है, उसकी भेंड़-बकरियां तो शारोन में चरेंगी, और
उसके गाय-बैल आकोर नाम तराई में विश्रम करेंगे। 11 परन्तु तुम जो यहोवा को
त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य देवता के लिथे मेंज
पर भोजन की वस्तुएं सजाते और भावी देवी के लिथे मसाला मिला हुआ दाखमधु
भर देते हो; 12 मैं तुम्हें गिन गिनकर तलवार का कौर बनाऊंगा, और तुम सब
घात होने के लिथे फुकोगे; क्योंकि, जब मैं ने तुम्हें बुलाया तुम ने उत्तर न दिया,
जब मैं बोला, तब तुम ने मेरी न सुनी; वरन जो मुझे बुरा लगता है वही तुम ने

नित किया, और जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं, उसी को तुम ने अपनाया।। 13 इस
कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, देखो, मेरे दास तो खाएंगे, पर तुम भूखे रहोगे; मेरे
दास पीएंगे, पर तुम प्यासे रहोगे; मेरे दास आनन्द करेंगे, पर तुम लज्जित होगे;
14 देखो, मेरे दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम शोक से चिल्लाओगे
और खेद के मारे हाथ हाथ, करोगे। 15 मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा दे देकर
शाप देंगे, और प्रभु यहोवा तुझ को नाश करेगा; परन्तु अपके दासोंका दूसरा नाम
रखेगा। 16 तब सारे देश में जो कोई अपके को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर
का नाम लेकर अपके को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपय खाए वह सच्चे
परमेश्वर के नाम से शपय खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो गया और वह मेरी
आंखोंसे छिप गया है।। 17 क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृय्वी उत्पन्न
करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी।
18 इसलिथे जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा
सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को
आनन्दित बनाऊंगा। 19 मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपक्की प्रजा
के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पकेगा। 20
उस में फिर न तो योड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढा जाता रहेगा जिस ने
अपक्की आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का
होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रपित ठहरेगा। 21 वे घर बनाकर उन
में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। 22 ऐसा नहीं होगा कि
वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की
आयु वृझोंकी सी होगी, और मेरे चुने हुए अपके कामोंका पूरा लाभ उठाएंगे। 23

उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिथे उत्पन्न होंगे;
क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगोंका वंश ठहरेंगे, और उनके बालबच्चे उन से
अलग न होंगे। 24 उनके पुकारने से पहिले ही मैं उनको उत्तर दूंगा, और उनके
मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। 25 भेडिय़ा और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और
सिंह बैल की नाई भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे
पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दु:ख देगा और न कोई किसी की हानि
करेगा, यहोवा का यही वचन है।।

यशायाह 66

1 यहोवा योंकहता है, आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणोंकी चौकी है;
तुम मेरे लिथे कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्रम का कौन सा स्यान होगा? 2
यहोवा की यह वाणी है, थे सब वस्तुएं मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, सो थे सब मेरी
ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दी और खेदित मन का हो, और मेरा
वचन सुनकर थरथराता हो।। 3 बैल का बलि करनेवाला मनुष्य के मार
डालनेवाले के समान है; जो भेड़ के चढ़ानेवाला है वह उसके समान है जो कुत्ते का
गला काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह मानो सूअर का लोहू चढ़ानेवाले के
समान है; और, जो लोबान जलाता है, वह उसके समान है जो मूरत को धन्य
कहता है। इन सभोंने अपना अपना मार्ग चुन लिया है, और घिनौनी वस्तुओं से
उनके मन प्रसन्न हाते हैं। 4 इसलिथे मैं भी उनके लिथे दु:ख की बातें निकालूंगा,
और जिन बातोंसे वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊंगा; क्योंकि जब मैं ने उन्हें
बुलाया, तब कोई न बोला, और जब मैं ने उन से बातें की, तब उन्होंने मेरी न

सुनी; परन्तु जो मेरी दृष्टि में बुरा या वही वे करते रहे, और जिस से मैं अप्रसन्न
होता या उसी को उन्होंने अपनाया।। तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते
हो यहोवा का यह वचन सुनो: 5 तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते और मेरे नाम
के निमित्त तुम को अलग कर देते हैं उन्होंने कहा है, यहोवा की महिमा तो बढ़े,
जिस से हम तुम्हारा आनन्द देखते पाएं; परन्तु उन्हीं को लज्जित होना
पकेगा।। 6 सुनो, नगर से कोलाहल की धूम, मन्दिर से एक शब्द, सुनाई देता है!
वह यहोवा का शब्द है, वह अपके शत्रुओं को उनकी करनी का फल दे रहा है! 7
उसकी पीड़ाएं उठाने से पहले ही उस ने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएं होने से पहिले
ही उस से बेटा जन्मा। 8 ऐसी बात किस ने कभी सुनी? किस ने कभी ऐसी बातें
देखी? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है? क्या एक जाति झण मात्र
में ही उत्पन्न हो सकती है? क्योंकि सिय्योन की पीड़ाएं उठी ही यीं कि उस से
सन्तान उत्पन्न हो गए। 9 यहोवा कहता है, क्या मैं उसे जन्माने के समय तक
पहुंचाकर न जन्माऊं? तेरा परमेश्वर कहता है, मैं जो गर्भ देता हूं क्या मैं कोख
बन्द करूं? 10 हे यरूशलेम से सब प्रेम रखनेवालो, उसके साय आनन्द करो और
उसके कारण मगन हो; हे उसके विषय सब विलाप करनेवालो उसके साय हर्षित
हो! 11 जिस से तुम उसके शान्तिरूपी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो; और दूध
पीकर उसकी महिमा की बहुतायत से अत्यन्त सुखी हो।। 12 क्योंकि यहोवा
योंकहता है, देखो, मैं उसकी ओर शान्ति को नदी की नाईं, और अन्यजातियोंके
धन को नदी की बाढ़ के समान बहा दूंगा; और तुम उस से पीओगे, तुम उसकी
गोद में उठाए जाओगे और उसके घुटनोंपर कुदाए जाओगे। 13 जिस प्रकार माता
अपके पुत्र को शान्ति देती है, वैस ही मैं भी तुम्हें शान्ति दुंगा; तुम को यरूशलेम

ही में शान्ति मिलेगी। 14 तुम यह देखोगे और प्रफुल्लित होगे; तुम्हारी हड्डियां
घास की नाईं हरी भरी होंगी; और यहोवा का हाथ उसके दासोंके लिथे प्रगट होगा,
और, उसके शत्रुओं के ऊपर उसका क्रोध भड़केगा।। 15 क्योंकि देखो, यहोवा आग
के साय आएगा, और उसके रय बवण्डर के समान होंगे, जिस से वह अपके क्रोध
को जलजलाहट के साय और अपक्की चितौनी को भस्म करनेवाली आग की
लपट में प्रगट करे। 16 क्योंकि यहोवा सब प्राणियोंका न्याय आग से और
अपक्की तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे हुए बहुत होंगे।। 17 जो लोग
अपके को इसलिथे पवित्र और शुद्ध करते हैं कि बारियोंमें जाएं और किसी के पीछे
खड़े होकर सूअर वा चूहे का मांस और और घृणित वस्तुएं खाते हैं, वे एक ही संग
नाश हो जाएंगे, यहोवा की यही वाणी है।। 18 क्योंकि मैं उनके काम और उनकी
कल्पनाएं, दोनोंअच्छी रीति से जानता हूं। और वह समय आता है जब मैं सारी
जातियोंऔर भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवालोंको इकट्ठा करूंगा; और वे आकर
मेरी महिमा देखेंगे। 19 और मैं उन से एक चिन्ह प्रगट करूंगा; और उनके बचे
हुओं को मैं उन अन्यजातियोंके पास भेजूंगा जिन्होंने न तो मेरा समाचार सुना है
और न मेरी महिमा देखी है, अर्यात् तर्शीशियोंऔर धनुर्धारी पूलियोंऔर लूदियोंके
पास, और तबलियोंऔर यूनानियोंऔर दूर द्वीपवासियोंके पास भी भेज दूंगा और
वे अन्यजातियोंमें मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। 20 और जैसे इस्राएली लोग
अन्नबलि को शुद्ध पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे
सब भाइयोंको घोड़ों, रयों, पालयथें, खच्चरोंऔर साड़नियोंपर चढ़ा चढ़ाकर मेरे
पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के लिथे ले आएंगे, यहोवा का यही
वचन है। 21 और उन में से मैं कितने लोगोंको याजक और लेवीय पद के लिथे भी

चुन लूंगा।। 22 क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर
हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना
रहेगा; यहोवा की यही वाणी है। 23 फिर ऐसा होगा कि एक नथे चांद से दूसरे नथे
चांद के दिन तक और एक विश्रम दिन से दूसरे विश्रम दिन तक समस्त प्राणी
मेरे साम्हने दण्डवत् करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है।। 24 तब वे
निकलकर उन लोगोंकी लोयोंपर जिन्होंने मुझ से बलवा किया दृष्टि डालेंगे;
क्योंकि उन में पके हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आस कभी न बुफेगी, और सारे
मनुष्योंको उन से अत्यन्त घृणा होगी।।

यिर्मयाह 1

1 हिल्किय्याह का पुत्र यिर्मयाह जो बिन्यामीन देश के अनातोत में रहनेवाले
याजकोंमें से या, उसी के थे वचन हैं। 2 यहोवा का वचन उसके पास आमोन के
पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनोंमें उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में पहुंचा। 3
इसके बाद योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के दिनोंमें, और
योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के अन्त
तक भी प्रगट होता रहा जब तक उसी वर्ष के पांचवें महीने में यरूशलेम के
निवासी बंधुआई में न चले गए। 4 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 5
गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहिले
ही मैं ने तुझे अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियोंका भविष्यद्वक्ता ठहराया। 6 तब
मैं ने कहा, हाथ, प्रभु यहोवा ! देख, मैं तो बोलना ही नहीं जानता, क्योंकि मैं
लड़का ही हूँ। 7 परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, मत कह कि मैं लड़का हूँ; क्योंकि

जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूं वहां तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आजा दूं
वही तू कहेगा। 8 तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिथे
मैं तेरे साय हूँ, यहोवा की यही वाणी है। 9 तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को
छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, देख, मैं ने अपके वचन तेरे मुंह में डाल दिथे
हैं। 10 सुन, मैं ने आज के दिन तुझे जातियोंऔर राज्योंपर अधिक्कारनी ठहराया
है; अन्हें गिराने और ढा देने के लिथे, नाश करने और काट डालने के लिथे, या
उन्हें बनाने और रोपके के लिथे। 11 और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे
यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे बादाम की एक टहनी
दिखाई पड़ती है। 12 तब यहोवा ने मुझ से कहा, तुझे ठीक दिखाई पड़ता है,
क्योंकि मैं अपके वचन को पूरा करने के लिथे जागृत हूँ। 13 फिर यहोवा का वचन
दूसरी बार मेरे पास पहंचा, और उस ने पूछा, तुझे क्या दिखाई पड़ता है? मैं ने
कहा, मुझे उबलता हुआ एक हण्डा दिखाई पड़ता है जिसका मुंह उत्तर दिशा की
ओर से है। 14 तब यहोवा ने मुझ से कहा, इस देश के सब रहनेवालोंपर उत्तर
दिशा से विपत्ति आ पकेगी। 15 यहोवा की यह वाणी है, मैं उत्तर दिशा के
राज्योंऔर कुलोंको बुलाऊंगा; और वे आकर यरूशलेम के फाटकोंमें और उसके
चारोंओर की शहरपनाह, और यहूदा के और सब नगरोंके साम्हने अपना अपना
सिंहासन लगाएंगे। 16 और उनकी सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड की
आज्ञा दूंगा; क्योंकि उन्होंने मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के लिथे धूप जलाया
और अपक्की बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है। 17 इसलिथे तू अपक्की
कमर कसकर उठ; और जो कुछ कहने की मैं तुझे आज्ञा दूं वही उन से कह। तू
उनके मुख को देखकर न घबराना, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके साम्हने घबरा दूं।

18 क्योंकि सुन, मैं ने आज तुझे इस सारे देश और यहूद के राजाओं, हाकिमों,
और याजकोंऔर साधारण लोगोंके विरुद्ध गढ़वाला नगर, और लोहे का खम्भा,
और पीतल की शहरपनाह बनाया है। 19 वे तुझ से लड़ेंगे तो सही, परन्तु तुझ पर
प्रबल न होंगे, क्योंकि बचाने के लिथे मैं तेरे साय हूँ, यहोवा की यही वाणी है।

यिर्मयाह 2

1 यहोवा का वह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 और यरूशलेम में पुकारकर यह सुना दे,
यहोवा यह कहता है, तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे
स्मरण आता है कि तू कैसे जंगल में मेरे पीछे पीछे चक्की जहां भूमि जोती-बोई
न गई यी। 3 इस्राएल, यहोवा के लिथे पवित्र और उसकी पहली अपज यी। उसे
खानेवाले सब दोषी ठहरेंगे और विपत्ति में पकेंगे, यहोवा की यही वाणी है। 4 हे
याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के कुलोंके लोगो, यहोवा का वचन सुनो ! 5
यहोवा योंकहता है, तुम्हारे पुरखाओं ने मुझ में कौन ऐसी कुटिलता पाई कि मुझ
से दूर हट गए और निकम्मी वस्तुओं के पीछे होकर स्वयं निकम्मे हो गए? 6
उन्होंने इतना भी न कहा कि जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया वह यहोवा
कहां है? जो हमें जंगल में से ओर रेत और गड़होंसे भरे हुए निर्जल और घोर
अन्धकार के देश से जिस में होकर कोई नहीं चलता, और जिस में कोई मनुष्य
नहीं रहता, हमें निकाल ले आया। 7 और मैं तुम को इस उपजाऊ देश में ले आया
कि उसका फल और उत्तम उपज खाओ; परन्तु मेरे इस देश में आकर तुम ने इसे
अशुद्ध किया, और मेरे इस निज भाग को घृणाित कर दिया है। 8 याजकोंने भी
नहीं पूछा कि यहोवा कहां है; जो व्यवस्या सिखाते थे वे भी मुझ को न जानते थे;

चरवाहोंने भी मुझ से बलवा किया; भविष्यद्वक्ताओं ने बाल देवता के नाम से
भविष्यद्वाणी की और निष्फल बातोंके पीछे चले। 9 इस कारण यहोवा यह कहता
है, मैं फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और पोतोंसे भी प्रश्न करूंगा। 10
कित्तियोंके द्वीपोंमें पार जाकर देखो, या केदार में दूत भेजकर भली भांति विचार
करो और देखो; देखो, कि ऐसा काम कहीं और भी हुआ है? क्या किसी जाति ने
अपके देवताओं को बदल दिया जो परमेश्वर भी नहीं हैं? 11 परन्तु मेरी प्रजा ने
अपक्की महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है। 12 हे आकाश, चकित हो,
बहुत ही थरथरा और सुनसान हो जा, यहोवा की यह वाणी है। 13 क्योंकि मेरी
प्रजा ने दो बुराइयां की हैं : उन्होंने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है,
और, अन्होंने हौद बना लिए, वरन बेसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं
रह सकता। 14 क्या इस्राएल दास है? क्या वह घर में जन्मा हुआ दांस है? फिर
वह क्योंशिकार बना? 15 जवान सिंहोंने उसके विरुद्ध गरजकर नाद किया।
उन्होंने उसके देश को उजाड़ दिया; उन्होंने उसके नगरोंको ऐसा उजाड़ दिया कि
उन में कोई बसनेवाला ही न रहा। 16 और नोप और तहपन्हेस के निवासी भी तेरे
देश की उपज चट कर गए हैं। 17 क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं, जो तू ने
अपके परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया जो तुझे मार्ग में लिए चला? 18 और अब
तुझे मिस्र के मार्ग से क्या लाभ है कि तू सीहोर का जल पीए? अयवा अश्शूर के
मार्ग से भी तुझे क्या लाभ कि तू महानद का जल पीए? 19 तेरी बुराई ही तेरी
ताड़ना करेगी, और तेरा भटक जाना तुझे उलाहना देगा। जान ले और देख कि
अपके परमेश्वर यहोवा को त्यागना, यह बुरी और कड़वी बात है; तुझे मेरा भय ही
नहीं रहा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। 20 क्योंकि बहुत समय पहिले

मैं ने तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोल दिए; परन्तु तू ने कहा, मैं सेवा न
करूंगी। और सब ऊंचे-ऊंचे टीलोंपर और सब हरे पेड़ोंके नीचे तू व्यभिचारिण का
सा काम करती रही। 21 मैं ने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और उत्तम बीज
करके लगाया या, फिर तू क्योंमेरे लिथे जंगली दाखलता बन गई? 22 चाहे तू
अपके को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी प्रयोग करे, तौभी तेरे अधर्म का
धब्बा मेरे साम्हने बना रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 23 तू क्योंकर कह
सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चक्की? तराई में की
अपक्की चाल देख और जान ले कि तू ने क्या किया है? तू वेग से चलनेवाली और
इधर उधर फिरनेवाली सांड़नी है, 24 जंगल में पक्की हुई जंगली गदही जो
कामातुर होकर वायु सूंधती फिरती है तब कौन उसे वश में कर सकता है? जितने
उसको ढूंढ़ते हैं वे व्यर्य परिश्रम न करें; क्योंकि वे उसे उसकी ऋतु में पाएंगे। 25
अपके पांव नंगे और गला सुखाए न रह। परन्तु तू ने कहा, नहीं, ऐसा नहीं हो
सकता, क्योंकि मेरा प्रेम दूसरोंसे लग गया है और मैं उनके पीछे चलती रहूंगी।
26 जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना राजाओं,
हाकिमों, याजकोंऔर भविष्यद्वक्ताओं समेत लज्जित होगा। 27 वे काठ से कहते
हैं, तू मेरा बाप है, और पत्यर से कहते हैं, तू ने मुझे जन्म दिया है। इस प्रकार
उन्होंने मेरी ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है; परन्तु विपत्ति के समय वे कहते हैं,
उठकर हमें बचा ! 28 परन्तु जो देवता तू ने बना लिए हैं, वे कहां रहे? यदि वे तेरी
विपत्ति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें; क्योंकि हे यहूदा, तेरे नगरोंके
बराबर तेरे देवता भी बहुत हैं। 29 तुम क्योंमुझ से वादविवाद करते हो? तुम
सभोंने मुझ से बलवा किया है, यहोवा की यही वाणी है। 30 मैं ने व्यर्य ही तुम्हारे

बेटोंकी ताड़ना की, उन्होंने कुछ भी नहीं माना; तुम ने अपके भविष्यद्वक्ताओं को
अपक्की ही तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा सिंह फाड़ता है। 31 हे लोगो,
यहोवा के वचन पर ध्यान दो ! क्या मैं इस्राएल के लिथे जंगल वा घोर अन्धकार
का देश बना? तब मेरी प्रजा क्योंकहती है कि हम तो आजाद हो गए हैं सो तेरे
पास फिर न आएंगे? 32 क्या कुमारी अपके मिड़गार वा दुल्हिन अपक्की सजावट
भूल सकती है? तौभी मेरी प्रजा ने युगोंसे मुझे बिसरा दिया है। 33 प्रेम लगाने के
लिथे तू कैसी सुन्दर चाल चलती है ! बुरी स्त्रियोंको भी तू ने अपक्की सी चाल
सिखाई है। 34 तेरे घांघरे में निदॉष और दरिद्र लोगोंके लोहू का चिन्ह पाया जाता
है; तू ने उन्हें सेंध लगाते नहीं पकड़ा। परन्तु इन सब के होते हुए भी तू कहती है,
मैं निदॉष हूं; 35 निश्चय उसका क्रोध मुझ पर से हट जाएगा। देख, तू जो कहती है
कि मैं ने पाप नहीं किया, इसलिथे मैं तेरा न्याय कराऊंगा। 36 तू क्योंनया मार्ग
पकड़ने के लिथे इतनी डांवाडोल फिरती है? जैसे अश्शूरियोंसे तू लज्जित हुई वैसे
ही मिस्रियोंसे भी होगी। 37 वहां से भी तू सिर पर हाथ रखे हुए योंही चक्की
आएगी, क्योंकि जिन पर तू ने भरोसा रखा है उनको यहोवा ने निकम्मा ठहराया
है, और उसके कारण तू सफल न होगी।

यिर्मयाह 3

1 वे कहते हैं, यदि कोई अपक्की पत्नी को त्याग दे, और वह उसके पास से जाकर
दूसरे पुरुष की हो जाए, तो वह पहिला क्या उसके पास फिर जाएगा? क्या वह
देश अति अशुद्ध न हो जाएगा? यहोवा की यह वाणी है कि तू ने बहुत से प्रेमियोंके
साय व्यभिचार किया है, क्या तू अब मेरी ओर फिरेगी? 2 मुण्डे टीलोंकी ओर

आंखें उठाकर देख ! ऐसा कौन सा स्यान है जहां तू ने कुकर्म न किया हो? मार्गों में
तू ऐसी बैठी जैसे एक अरबी जंगल में। तू ने देश को अपके व्यभिचार से अशुद्ध
कर दिया है। 3 इसी कारण फडिय़ां और बरसात की पिछली वर्षा नहीं होती; तौभी
तेरा माया वेश्या का सा है, तू लज्जित होना ही नहीं जानती। 4 क्या तू अब मुझे
पुकारकर कहेगी, हे मेरे पिता, तू ही मेरी जवानी का सायी है? 5 क्या वह मन में
सदा क्रोध रखे रहेगा? क्या वह उसको सदा बनाए रहेगा? तू ने ऐसा कहा तो है,
परन्तु तू ने बुरे काम प्रबलता के साय किए हैं। 6 फिर योशिय्याह राजा के दिनोंमें
यहोवा ने मुझ से यह भी कहा, क्या तू ने देखा कि भटकनेवाली इस्राएल ने क्या
किया है? उस ने सब ऊंचे पहाड़ोंपर और सब हरे पेड़ोंके तले जा जाकर व्यभिचार
किया है। 7 तब मैं ने सोवा, जब थे सब काम वह कर चुके तब मेरी ओर फिरेगी;
परन्तु वह न फिरी, और उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा ने यह देखा। 8 फिर मैं
ने देखा, जब मैं ने भटकनेवाली इस्राएल को उसके व्यभिचार करने के कारण
त्यागकर उसे त्यागपत्र दे दिया; तौभी उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा न डरी,
वरन जाकर वह भी व्यभिचारिणी बन गई। 9 उसके निर्लज्ज-व्यभिचारिणी होने
के कारण देश भी अशुद्ध हो गया, उस ने पत्यर और काठ के साय भी व्यभिचार
किया। 10 इतने पर भी उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा पूर्ण मन से मेरी ओर
नहीं फिरी, परन्तु कपट से, यहोवा की यही वाणी है। 11 और यहोवा ने मुझ से
कहा, भटकनेवाली इस्राएल, विश्वासघातिन यहूदा से कम दोषी निकली है। 12 तू
जाकर उत्तर दिशा में थे बातें प्रचार कर, यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली
इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूंगा; क्योंकि यहोवा की यह
वाणी है, मैं करुणामय हूँ; मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूंगा। 13 केवल अपना यह

अधर्म मान ले कि तू अपके परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ोंके तले
इधर उधर दूसरोंके पास गई, और मेरी बातोंको नहीं माना, यहोवा की यह वाणी
है। 14 हे भटकनेवाले लड़को लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हरा स्वामी हूँ; यहोवा की
यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्थेक नगर पीछे एक, और प्रत्थेक कुल पीछे दो को लेकर
मैं सिय्योन में पहुंचा दूंगा। 15 और मैं तुम्हें अपके मन के अनुकूल चरवाहे दूंगा,
जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे। 16 उन दिनोंमें जब तुम इस देश में बढ़ो,
और फूलो-फलो, तब लोग फिर ऐसा न कहेंगे, “यहोवा की वाचा का सन्दूक”;
यहोवा की यह भी वाणी हे। उसका विचार भी उनके मन में न आएगा, न लोग
उसके न रहने से चिन्ता करेंगे; और न उसकी मरम्मत होगी। 17 उस समय
सरूशलेम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियां उसी यरूशलेम में
मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी, और, वे फिर अपके बुरे मन के हठ पर
न चलेंगी। 18 उन दिनोंमें यहूदा का घराना इस्राएल के घराने के साय चलेगा और
वे दोनोंमिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे मैं ने उनके पूर्वजोंको
निज भाग करके दिया या। 19 मैं ने सोचा या, मैं कैसे तुझे लड़कोंमें गिनकर वह
मनभावना देश दूं जो सब जातियोंके देशोंका शिरोमणि है। और मैं ने सोचा कि तू
मुझे पिता कहेगी, और मुझ से फिर न भटकेगी। 20 इस में तो सन्देह नहीं कि
जैसे विश्वासघाती स्त्री अपके प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने,
तू मुझ से फिर गया है, यहोवा की यही वाणी है। 21 मुण्डे टीलोंपर से
इस्राएलियोंके रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई दे रहा है, क्योंकि वे टेढ़ी चाल
चलते रहे हैं और अपके परमेश्वर यहोवा को भूल गए हैं। 22 हे भटकनेवाले
लड़को, लौट आओ, मैं तुम्हारा भटकना सुधार दूंगा। देख, हम तेरे पास आए हैं;

क्योंकि तू ही हमारा परमेश्वर यहोवा है। 23 निश्‍चय पहाड़ोंऔर पहाडिय़ोंपर का
कोलाहल व्यर्थ ही है। इस्राएल का उद्धार निश्चय हमारे परमेश्वर यहोवा ही के द्वारा
है। 24 परन्तु हमारी जवानी ही से उस बदनामी की वस्तु ने हमारे पुरखाओं की
कमाई अर्यात् उनकी भेड़-बकरी और गाय-बैल और उनके बेटे-बेटियोंको निगल
लिया है। 25 हम लज्जित होकर लेट जाएं, और हमारा संकोच हमारी ओढ़नी बन
जाए; क्योंकि हमारे पुरखा और हम भी युवा अवस्या से लेकर आज के दिन तक
अपके परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करते आए हैं; और हम ने अपके परमेश्वर
यहोवा की बातोंको नहीं माना है।

यिर्मयाह 4

1 यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल यदि तू लौट आथे, तो मेरे पास लौट आ।
यदि तू घिनौनी वस्तुओं को मेरे साम्हने से दूर करे, तो तुझे अवारा फिरना न
पकेगा, 2 और यदि तू सच्चाई और न्याय और धर्म से यहोवा के जीवन की शपय
खाए, तो अन्यजातियां उसके कारण अपके आपको धन्य कहेंगी, और उसी पर
घमण्ड करेंगी। 3 क्योंकि यहूदा और यरूशलेम के लोगोंसे यहोवा ने योंकहा है,
अपक्की पड़ती भूमि को जोतो, और कटीले फाड़ोंमें बीज मत बोओ। 4 हे यहूदा के
लोगो और यरूशलेम के निवासियो, यहोवा के लिथे अपना खतना करो; हां, अपके
मन का खतना करो; नहीं तो तुम्हारे बुरे कामोंके कारण मेरा क्रोध आग की नाईं
भड़केगा, और ऐसा होगा की कोई उसे बुफा न सकेगा। 5 यहूदा में प्रचार करो और
यरूशलेम में यह सुनाओ; पूरे देश में नरसिंगा फूंको; गला खोलकर ललकारो और
कहो, आओ, हम इकट्ठे होंओर गढ़वाले नगरोंमें जाएं ! 6 सिय्योन के मार्ग में

फण्डा खड़ा करो, अपना सामान बटोरके भागो, खड़े मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की
दिशा से विपत्ति और सत्यानाश ले आया चाहता हूँ। 7 एक सिंह अपक्की फाड़ी से
निकला, जाति जाति का नाश करनेवाला चढ़ाई करके आ रहा है; वह कूच करके
अपके स्यान से इसलिथे निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे और तुम्हारे
नगरोंको ऐसा सुनसान कर दे कि उन में कोई बसनेवाला न रहने पाए। 8 इसलिथे
कमर में टाट बान्धो, विलाप और हाथ हाथ करो; क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ
कोप हम पर से टला नहीं है। 9 उस समय राजा और हाकिमोंका कलेजा कांप
उठेगा; याजक चकित होंगे और नबी अचम्भित हो जाएंगे, यहोवा की यह वाणी
है। 10 तब मैं ने कहा, हाथ, प्रभु यहोवा, तू ने तो यह कहकर कि तुम को शान्ति
मिलेगी निश्चय अपक्की इस प्रजा को और यरूशलेम को भी बड़ा धोखा दिया है;
क्योंकि तलवार प्राणोंको मिटाने पर है। 11 उस समय तेरी इस प्रजा से और
यरूशलेम सें भी कहा जाएगा, जंगल के मुण्डे टीलोंपर से प्रजा के लोगोंकी ओर लू
बह रही है, वह ऐसी वायु नहीं जिस से ओसाना वा फरछाना हो, 12 परन्तु मेरी
ओर से ऐसे कामोंके लिथे अधिक प्रचण्ड वायु बहेगी। अब मैं उनको दण्ड की
आज्ञा दूंगा। 13 देखो, वह बादलोंकी नाईं चढ़ाई करके आ रहा है, उसके रय
बवण्डर के समान और उसके घोड़े उकाबोंसे भी अधिक वेग से चलते हैं। हम पर
हाथ, हम नाश हुए ! 14 हे यरूशलेम, अपना हृदय बुराई से धो, कि, तुम्हारा उद्धार
हो जाए। तुम कब तक व्यर्य कल्पनाएं करते रहोगे? 15 क्योंकि दान से शब्द सुन
पड़ रहा है और एप्रैम के पहाड़ी देश से विपत्ति का समाचार आ रहा है। 16
अन्यजातियोंमें सुना दो, यरूशलेम को भी इसका समाचार दो, पहरुए दूर देश से
आकर यहूदा के नगरोंके विरुद्ध ललकार रहे हैं। 17 वे खेत के रखवालोंकी नाईं

उसको चारोंओर से घेर रहे हैं, क्योंकि उस ने मुझ से बलवा किया है, यहोवा की
यही वाणी है। 18 यह तेरी चाल और तेरे कामोंही का फल हैं। यह तेरी दुष्टता है
और अति दुखदाई है; इस से तेरा हृदय छिद जाता है। 19 हाथ ! हाथ ! मेरा हृदय
भीतर ही भीतर तड़पता है ! और मेरा मन घबराता है ! मैं चुप नहीं रह सकता;
क्योंकि हे मेरे प्राण, नरसिंगे का शब्द और युद्ध की ललकार तुझ तक पहुंची है।
20 नाश पर नाश का समाचार आ रहा है, सारा देश लूट लिया गया है। मेरे डेरे
अचानक ओर मेरे तम्बू एकाएक लूटे गए हैं। 21 और कितने दिन तक मुझे
उनका फगडा देखना और नरसिंगे का शब्द सुनना पकेगा? 22 क्योंकि मेरी प्रजा
मूढ है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं जिन में कुछ भी समझ नहीं।
बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते। 23 मैं ने
पृय्वी पर देखा, वह सूनी और सुनसान पक्की यी; और आकाश को, और उस में
कोई ज्योति नहीं यी। 24 मैं ने पहाड़ोंको देखा, मे हिल रहे थे, और सब
पहाडिय़ोंको कि वे डोल रही यीं। 25 फिर मैं ने क्या देखा कि कोई पनुष्य भी न या
और सब पक्की भी उड़ गए थे। 26 फिर मैं क्या देखता हूँ कि यहोवा के प्रताप
और उस भड़के हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल, और उसके सारे नगर
खण्डहर हो गए थे। 27 क्योंकि यहोवा ने यह बताया कि सारा देश उजाड़ हो
जाएगा; तौभी मैं उसका अन्त न कर डालूंगा। 28 इस कारण पृय्वी विलाप करेगी,
और आकाश शोक का काला वस्त्र पहिनेगा; क्योंकि मैं ने ऐसा ही करते को ठाना
और कहा भी है; मैं इस से नहीं पछताऊंगा और न अपके प्रण को छोड़ूंगा। 29
नगर के सारे लोग सवारोंऔर धनुर्धारियोंका कोलाहल ससुनकर भागे जाते हैं; वे
फाडिय़ोंमें घुसते और चट्टानोंपर चढ़े जाते हैं; सब नगर निर्जन हो गए, और उन

में कोई बाकी न रहा। 30 और तू जब उजड़ेगी तब क्या करेगी? चाहे तू लाल रङ्ग
के वस्त्र पहिने और सोने के आभूषण धारण करे और अपक्की आंखोंमें अंजन
लगाए, परन्तु व्यर्थ ही तू अपना शृंगार करेगी। क्योंकि तेरे मित्र तुझे निकम्मी
जानते हैं; वे तेरे प्राणोंके खोजी हैं। 31 क्योंकि मैं ने ज़च्चा का शब्द, पहिलौठा
जनती हुई स्त्री की सी चिल्लाहट सुनी है, यह सिय्योन की बेटी का शब्द है, जो
हांफती और हाथ फैलाए हुए योंकहती है, हाथ मुझ पर, मैं हत्यारोंके हाथ पड़कर
मूछिर्त हो चक्की हूँ।

यिर्मयाह 5

1 यरूशलेम की सड़कोंमें इधर उधर दौड़कर देखो ! उसके चौकोंमें ढूंढ़ो यदि कोई
ऐसा मिल सके जो त्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो; तो मैं उसका
पाप झमा करूंगा। 2 यद्यमि उसके निवासी यहोवा के जीवन की शपय भी खाएं,
तौभी निश्चय वे फूठी शपय खाते हैं। 3 हे यहोवा, क्या तेरी दृष्टि सच्चाई पर नहीं
है? तू ने उनको दु:ख दिया, परन्तु वे शोकित नहीं हुए; तू ने उनको नाश किया,
परन्तु उन्होंने ताड़ना से भी नहीं माना। उन्होंने अपना मन चट्टान से भी अधिक
कठोर किया है; उन्होंने पश्चात्ताप करने से इनकार किया है। 4 फिर मैं ने सोचा, थे
लोग तो कड़गाल और अबोध ही हैं; क्योंकि थे यहोवा का मार्ग और अपके
परमेश्वर का नियम नहीं जानते। 5 इसलिथे मैं बड़े लोगोंके पास जाकर उनको
सुनाऊंगा; क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपके परमेश्वर का नियम जानते
हैं। परन्तु उन सभोंने मिलकर जूए को तोड़ दिया है और बन्धनोंको खोल डाला
है। 6 इस कारण वन में से एक सिंह आकर उनहें मार डालेगा, निर्जल देश का एक

भेडिय़ा उनको नाश करेगा। और एक चीता उनके नगरोंके पास घात लगाए
रहेगा, और जो कोई उन में से निकले वह फाडा जाएगा; क्योंकि उनके अपराध
बहुत बढ़ गए हैं और वे मुझ से बहुत ही दूर हट गए हैं। 7 मैं क्योंकर तेरा पाप
झमा करूं? तेरे लड़कोंने मुझ को छोड़कर उनकी शपय खाई है जो परमेश्वर नहीं
है। जब मैं ने उनका पेट भर दिया, तब उन्होंने व्यभिचार किया और वेश्याओं के
घरोंमें भीड़ की भीड़ जाते थे। 8 वे खिलाए-पिलाए बे-लगाम घेड़ोंके समान हो गए,
वे अपके अपके पड़ोसी की स्त्री पर हिनहिनाने लगे। 9 क्या मैं ऐसे कामोंका उन्हें
दण्ड न दूं? यहोवा की यह वाणी है; क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं? 10
शहरपनाह पर चढ़के उसका नाश तो करो, तौभी उसका अन्त मत कर डालो;
उसकी जड़ रहने दो परन्तु उसकी डालियोंको तोड़कर फेंक दो, क्योंकि वे यहोवा
की नहीं हैं। 11 यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल और यहूदा के घरानोंने मुझ से
बड़ा विश्वासघात किया है। 12 उन्होंने यहोवा की बातें फुठलाकर कहा, वह ऐसा
नहीं है; विपत्ति हम पर न पकेगी, न हम तलवार को और न महंगी को देखेंगे। 13
भविष्यद्वक्ता हवा हो जाएंगे; उन में ईश्वर का वचन नहीं है। उनके साय ऐसा ही
किया जाएगा ! 14 इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, थे लोग
जो ऐसा कहते हैं, इसलिथे देख, मैं अपना वचन तेरे मुंह में आग, और इस प्रजा
को काठ बनाऊंगा, और वह उनको भस्म करेगी। 15 यहोवा की यह वाणी है, हे
इस्राएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से ऐसी जाति को चढ़ा लाऊंगा जो
सामर्यी और प्राचीन है, उसकी भाषा तुम न समझोगे, और न यह जानोगे कि वे
लोग क्या कह रहे हैं। 16 उनका तर्कश खुली क़ब्र है और वे सब के सब शूरवीर हैं।
17 तुम्हारे पक्के खेत और भोजनवस्तुएं जो तुम्हारे बेटे-बेटियोंके खाने के लिथे

हैं उन्हें वे खा जाएंगे। वे तुम्हारी भ्ोड़-बकरियोंऔर गाय-बैलोंको खा डालेंगे; वे
तुम्हारी दाखोंऔर अंजीरोंको खा जाएंगे; और जिन गढ़वाले नगरोंपर तुम भरोसा
रखते हो उन्हें वे तलवार के बल से नाश कर देंगे। 18 तौभी, यहोवा की यह वाणी
है, उन दिनोंमें भी मैं तुम्हारा अन्त न कर डालूंगा। 19 और जब तुम पूछोगे कि
हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से थे सब काम किस लिथे किए हैं, तब तुम उन से
कहना, जिस प्रकार से तुम ने मुझ को त्यागकर अपके देश में दूसरे देवताओं की
सेवा की है, उसी प्रकार से तुम को पराथे देश में परदेशियोंकी सेवा करनी पकेगी।
20 याकूब के घराने में यह प्रचार करो, और यहूदा में यह सुनाओ: 21 हे मूर्ख और
निर्बुद्धि लोगो, तुम जो आंखें रहते हुए नहीं देखते, जो कान रहते हुए नहीं सुनते,
यह सुनो। 22 यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम लोग मेरा भय नहीं मानते? क्या
तुम मेरे सम्मुख नहीं थरथराते? मैं ने बालू को समुद्र का सिवाना ठहराकर युग
युग का ऐसा बान्ध ठहराया कि वह उसे लांघ न सके; और चाहे उसकी लहरें भी
उठें, तौभी वे प्रबल न हो सकें, या जब वे गरजें तौभी उसको न लांध सकें। 23 पर
इस प्रजा का हठीला और बलवा करनेवाला मन है; इन्होंने बलवा किया और दूर
हो गए हैं। 24 वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो
बरसात के आरम्भ और अन्त दोनोंसमयोंका जल समय पर बरसाता है, और
कटनी के नियत सप्ताहोंको हमारे लिथे रखता है, इसलिथे हम उसका भय मानें।
25 परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामोंही के कारण वे रुक गए, और तुम्हारे पापोंही के
कारण तुम्हारी भलाई नहीं होती। 26 मेरी प्रजा में दुष्ट लोग पाए जाते हैं; जैसे
चिड़ीमार ताक में रहते हैं, वैसे ही वे भी घात लगाए रहते हैं। वे फन्दा लगाकर
मनुष्योंको अपके वश में कर लेते हैं। 27 जैसा पिंजड़ा चिड़ियोंसे भरा हो, वैसे ही

उनके घर छल से भरे रहते हैं; इसी प्रकार वे बढ़ गए और धनी हो गए हैं। 28 वे
मोटे और चिकने हो गए हैं। बुरे कामोंमें वे सीमा को लांध गए हैं; वे न्याय, विशेष
करके अनाथोंका न्याय नहीं चुकाते; इस से उनका काम सफल नहीं होता : वे
कंगालोंका हक़ भी नहीं दिलाते। 29 इसलिथे, यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं इन
बातोंका दण्ड न दूं? क्या मैं ऐसी जाति से पलटा न लूं? 30 देश में ऐसा काम होता
है जिस से चकित और रोमांचित होना चाहिथे। 31 भचिष्यद्वक्ता फूठमूठ
भविष्यद्वाणी करते हैं; और याजक उनके सहारे से प्रभुता करते हैं; मेरी प्रजा को
यह भाता भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या करोगे?

यिर्मयाह 6

1 हे बिन्यामीनियो, यरूशलेम में से अपना अपना सामान लेकर भागो ! तकोआ
में नरसिंगा फूंको, और बेय्क्केरेम पर फण्डा ऊंचा करो; क्योंकि उत्तर की दिशा से
आनेवाली विपत्ति बड़ी और विनाश लानेवाली है। 2 सिय्योन की सुन्दर और
सुकुमार बेटी को मैं नाश करने पर हूँ। 3 चरवाहे अपक्की अपक्की भेड़-बकरियां
संग लिए हुए उस पर चढ़कर उसके चारोंओर अपके तम्बू खड़े करेंगे, वे अपके
अपके पास की घास चरा लेंगे। 4 आओ, उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो; उठो,
हम दो पहर को चढ़ाई करें ! हाथ, हाथ, दिन ढलता जाता है, और सांफ की
परछाई लम्बी हो चक्की है ! 5 उठो, हम रात ही रात चढ़ाई करें और उसके
महलोंको ढा दें। 6 सेनाओं का यहोवा तुम से कहता है, वृझ काट काटकर
यरूशलेम के विरुद्ध दमदमा बान्धो ! यह वही नगर है जो दणड के योग्य है; इस
में अन्धेर ही अनधेर भरा हुआ है। 7 जैसा कूएं में से नित्य नया जल निकला

करता है, वैसा ही इस नगर में से नित्य नई बुराई निकलती है; इस में उत्पात
और उपद्रव का कोलाहल मचा रहता है; चोट और मारपीट मेरे देखने में निरन्तर
आती है। 8 हे यरूशलेम, ताड़ना से ही मान ले, नहीं तो तू मेरे मन से भी उतर
जाएगी; और, मैं तुझ को उजाड़कर निर्जन कर डालूंगा। 9 सेनाओं का यहोवा
योंकहता है, इस्राएल के सब बचे हुए दाखलता की नाई ढूंढ़कर तोड़े जाएंगे;
दाखके तोड़नेवाले की नाई उस लता की डालियोंपर फिर अपना हाथ लगा। 10 मैं
किस से बोलूं और किसको चिताकर कहूं कि वे मानें? देख, थे ऊंचा सुनते हैं, वे
ध्यान भी नहीं दे सकते; देख, यहोवा के वचन की वे निन्दा करते और उसे नहीं
चाहते हैं। 11 इस कारण यहोवा का कोप मेरे मन में भर गया हे; मैं उसे रोकते
रोकते उकता गया हूँ। बाज़ारोंमें बच्चोंपर और जवानोंकी सभा में भी उसे उंडेल दे;
क्योंकि पति अपक्की पत्नी के साय और अधेड़ बूढे के साय पकड़ा जाएगा। 12
उन लोगोंके घर और खेत और स्त्रियां सब औरोंको हो जाएंगीं; क्योंकि मैं इस देश
के रहनेवालोंपर हाथ बढ़ाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है। 13 क्योंकि उन में छोटे
से लेकर बड़े तक सब के सब लालची हैं; और क्या भविष्यद्वक्ता क्या याजक सब
के सब छल से काम करते हैं। 14 वे, “शान्ति है, शान्ति,” ऐसा कह कहकर मेरी
प्रजा के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा करते हैं, परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं। 15
क्या वे कभी अपके घृणित कामोंके कारण लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी
लज्जित नहीं हुए; वे लज्जित होना जानते ही नहीं; इस कारण जब और लोग
नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे, और जब मैं उनको दण्ड देने लगूंगा, तब वे ठोकर
खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही वचन है। 16 यहोवा योंभी कहता है, सड़कोंपर खडे
होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो,

और तुम अपके अपके मन में चैन पाओगे। पर उन्होंने कहा, हम उस पर न
चलेंगे। 17 मैं ने तुम्हारे लिथे पहरुए बैठाकर कहा, नरसिंगे का शब्द ध्यान से
सुनना ! पर उन्होंने कहा, हम न सुनेंगे। 18 इसलिथे, हे जातियो, सुनो, और हे
मण्डली, देख, कि इन लोगोंमें क्या हो रहा है। 19 हे पृथ्वी, सुन; देख, कि मैं इस
जाति पर वह विपत्ति ले आऊंगा जो उनकी कल्पनाओं का फल है, क्योंकि इन्होंने
मेरे वचनोंपर ध्यान नहीं लगाया, और मेरी शिझा को इन्होंने निकम्मी जाना है।
20 मेरे लिथे जो लोबान शबा से, और सुगन्धित नरकट जो दूर देश से आता है,
इसका क्या प्रयोजन है? तुम्हारे होमबलियोंसे मैं प्रसन्न नहीं हूँ, और न तुम्हारे
मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं। 21 इस कारण यहोवा ने योंकहा है, देखो, मैं इस
प्रजा के आगे ठोकर खाऊंगा, और बाप और बेटा, पड़ोसी और मित्र, सब के सब
ठोकर खाकर नाश होंगे। 22 यहोवा योंकहता है, देखो, उत्तर से वरन पृथ्वी की
छोर से एक बड़ी जाति के लोग इस देश के विरोध में उभारे जाएंगे। 23 वे धनुष
और बर्छी धारण किए हुए आएंगे, वे क्रूर और निर्दय हैं, और जब वे बोलते हैं तब
मानो समुद्र गरजता है; वे घोड़ोंपर चढ़े हुए आएंगे, हे सिय्योन, वे वीर की नाईं
सशस्त्र होकर तुझ पर चढ़ाई करेंगे। 24 इसका समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले
पड़ गए हैं; हम संकट में पके हैं; जच्चा की सी पीड़ा हम को उठी है। 25 मैदान में
मत निकलो, मार्ग में भी न चलो; क्योंकि वहां शत्रु की तलवार और चारोंओर भय
देख पड़ता है। 26 हे मेरी प्रजा कमर में टाट बान्ध, और राख में लोट; जैसा
एकलौते पुत्र के लिथे विलाप होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर; क्योंकि
नाश करनेवाला हम पर अचानक आ पकेगा। 27 मैं ने इसलिथे तुझे अपक्की
प्रजा के बीच गुम्मट वा गढ़ ठहरा दिया कि तू उनकी चाल परखे और जान ले।

28 वे सब बहुत ही हटी हैं, वे लुतराई करते फिरते हैं; उन सभोंकी चाल बिगड़ी है,
वे निरा ताम्बा और लोहा ही हैं। 29 धैंकनी जल गई, शीशा आग में जल गया;
ढालनेवाले ने व्यर्थ ही ढाला है; क्योंकि बुरे लोग नहीं निकाले गए। 30 उनका
नाम खोटी चान्दी पकेगा, क्योंकि यहोवा ने उनको खोटा पाया है।

यिर्मयाह 7

1 जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुंचा वह यह है: 2 यहोवा के
भवन के फाटक में खड़ा हो, और यह वचन प्रचार कर, ओर कह, हे सब यहूदियो,
तुम जो यहोवा को दण्डवत् करने के लिथे इन फाटकोंसे प्रवेश करते हो, यहोवा
का वचन सुनो। 3 सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, योंकहता है,
अपक्की अपक्की चाल और काम सुधारो, तब मैं तुम को इस स्यान में बसे रहने
दूंगा। 4 तुम लोग यह कहकर फूठी बातोंपर भरोसा मत रखो, कि यही यहोवा का
मन्दिर है; यही यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर। 5 यदि तुम सचमुच
अपक्की अपक्की चाल और काम सुधारो, और सचमुच मनुष्य-मनुष्य के बीच
न्याय करो, 6 परदेशी और अनाय और विधवा पर अन्धेर न करो; इस स्यान में
निदॉष की हत्या न करो, और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिस से तुम्हारी
हानि होती है, 7 तो मैं तुम को इस नगर में, और इस देश में जो मैं ने तुम्हारे
पूर्वजोंको दिया या, युग युग के लिथे रहने दूंगा। 8 देखो, तुम फूठी बातोंपर
भरोसा रखते हो जिन से कुछ लाभ नहीं हो सकता। 9 तुम जो चोरी, हत्या और
व्यभिचार करते, फूठी शपय खाते, बाल देवता के लिथे धूप जलाते, और दूसरे
देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहिले नहीं जानते थे चलते हो, 10 तो क्या यह

उचित है कि तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहलाता है, और मेरे साम्हने खड़े
होकर यह कहो कि हम इसलिथे छूट गए हैं कि थे सब घृणित काम करें? 11 क्या
यह भवन जो मेरा कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में डाकुओं की गुफ़ा हो गया है? मैं ने
स्वयं यह देखा है, यहोवा की यह वाणी है। 12 मेरा जो स्यान शीलो में या, जहां मैं
ने पहिले अपके नाम का निवास ठहराया या, वहां जाकर देखो कि मैं ने अपक्की
प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण उसकी क्या दशा कर दी है? 13 अब यहोवा की
यह वाणी है, कि तुम जो थे सब काम करते आए हो, और यद्यपि मैं तुम से बड़े
यत्न से बातें करता रहा हूँ, तौभी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें बुलाता आया परन्तु
तुम नहीं बोले, 14 इसलिथे यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा
रखते हो, और यह स्यान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे पूर्वजोंको दिया या, इसकी
दशा मैं शीलो की सी कर दूंगा। 15 और जैसा मैं ने तुम्हारे सब भाइयोंको अर्यात
सारे एप्रैमियोंको अपके साम्हने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम को भी दूर कर
दूंगा। 16 इस प्रजा के लिथे तू प्रार्यना मत कर, न इन लोगोंके लिथे ऊंचे स्वर से
पुकार न मुझ से बिनती कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूंगा। 17 क्या तू नहीं देखता
कि थे लोग यहूदा के नगरोंऔर यरूशलेम की सड़कोंमें क्या कर रहे हैं? 18 देख,
लड़के बाले तो ईंधन बटोरते, बाप आग सुलगाते और स्त्रियां आटा गूंधती हैं, कि
स्वर्ग की रानी के लिथे रोटियां चढ़ाए; और मुझे क्रोधित करने के लिथे दूसरे
देवताओं के लिथे तपावन दें। 19 यहोवा की यह वाणी है, क्या वे मुझी को क्रोध
दिलाते हैं? क्या वे अपके ही को नहीं जिस से उनके मुंह पर सियाही छाए? 20 सो
प्रभु यहोवा ने योंकहा है, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या मैदान के वृझ, क्या भूमि
की उपज, उन सब पर जो इस स्यान में हैं, मेरे कोप की आग भड़कने पर है; वह

नित्य जलती रहेगी और कभी न बुफेगी। 21 सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का
परमेश्वर है, योंकहता है, अपके मेलबलियोंके साय अपके होमबलि भी चढ़ाओ
और मांस खाओ। 22 क्योंकि जिस समय मैं ने तुम्हारे पूर्वजोंको मिस्र देश में से
निकाला, उस समय मैं ने उन्हें होमबलि और मेलबलि के विष्य कुछ आज्ञा न दी
यी। 23 परन्तु मैं ने तो उनको यह आज्ञा दी कि मेरे वचन को मानो, तब मैं
तुम्हारा परमेश्वर हूंगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे; और जिस मार्ग की मैं तुम्हें
आज्ञा दूं उसी में चलो, तब तुम्हारा भला होगा। 24 पर उन्होंने मेरी न सुनी और
न मेरी बातोंपर कान लगाया; वे अपक्की ही युक्तियोंऔर अपके बुरे मन के हठ
पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े। 25 जिस दिन तुम्हारे पुरखा
मिस्र देश से निकले, उस दिन से आज तक मैं तो अपके सारे दासों,
भविष्यद्वक्ताओं को, तुम्हारे पास बड़े यत्न से लगातार भेजता रहा; 26 परन्तु
उन्होंने मेरी नहीं सुनी, न अपना कान लगाया; उन्होंने हठ किया, और अपके
पुरखाओं से बढ़कर बुराइयां की हैं। 27 तू सब बातें उन से कहेगा पर वे तेरी न
सुनेंगे; तू उनको बुलाएगा, पर वे न बोलेंगे। 28 तब तू उन से कह देना, यह वही
जाति है जो अपके परमेश्वर यहोवा की नहीं सुनती, और ताड़ना से भी नहीं
मानती; सच्चाई नाश हो गई, और उनके मुंह से दूर हो गई है। 29 अपके बाल
मुंड़ाकर फेंक दे; मुण्डे टीलोंपर चढ़कर विलाप का गीत गा, क्योंकि यहोवा ने इस
समय के निवासियोंपर क्रोध किया और उन्हें निकम्मा जानकर त्याग दिया है।
30 यहोवा की यह वाणी है, इसका कारण यह है कि यहूदियोंने वह काम किया है,
जो मेरी दृष्टि में बुरा है; उन्होंने उस भवन में जो मेरा कहलाता है, अपक्की घृणित
वस्तुएं रखकर उसे अशुद्ध कर दिया है। 31 और उन्होंने हिन्नोमवंशियोंकी तराई

में तोपेत नाम ऊंचे स्यान बनाकर, अपके बेटे-बेटियोंको आग में जलाया है;
जिसकी आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी और न मेरे मन में वह कभी आया। 32 यहोवा
की यह वाणी है, इसलिथे ऐसे दिन आते हैं कि वह तराई फिर न तो तोपेत की
और न हिन्नोमवंशियोंकी कहलाएगी, वरन घात की तराई कहलाएगी; और
तोपेत में इतनी क़ब्रें होंगी कि और स्यान न रहेगा। 33 इसलिथे इन लोगोंकी
लोथें आकाश के पझियोंऔर पृथ्वी के पशुओं का आहार होंगी, और उनको
भगानेवाला कोई न रहेगा। 34 उस समय मैं ऐसा करूंगा कि यहूदा के नगरोंऔर
यरूशलेम की सड़कोंमें न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पकेगा, और न दुल्हे
वा दुल्हिन का; क्योंकि देश उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा।

यिर्मयाह 8

1 यहोवा की यह वाणी है, उस समय यहूदा के राजाओं, हाकिमों, याजकों,
भविष्यद्वक्ताओं और यरूशलेम के रहनेवालोंकी हड्डियां क़ब्रोंमें से निकालकर, 2
सूर्य, चन्द्रमा और आकाश के सारे गणोंके साम्हने फैलाई जाएंगी; क्योंकि वे
उन्हीं से प्रेम रखते, उन्हीं की सेवा करते, उन्हीं के पीछे चलते, और उन्हीं के पास
जाया करते और उन्हीं को दण्डवत् करते थे; और न वे इकट्ठी की जाएंगी न क़ब्र
में रखी जाएंगी; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पक्की रहेंगी। 3 तब इस बुरे कुल
के बचे हुए लोग उन सब स्यानोंमें जिस में मैं ने उन्हें निकाल दिया है, जीवन से
मृत्यु ही को अधिक चाहेंगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। 4 तू उन से यह
भी कह, यहोवा योंकहता है कि जब मनुष्य गिरते हैं तो क्या फिर नहीं उठते? 5
जब कोई। भटक जाता है तो क्या वह लौट नहीं आता? फिर क्या कारण है कि थे

यरूशलेमी सदा दूर ही दूर भटकते जाते हैं? थे छल नहीं छोड़ते, और फिर लौटने
से इनकार करते हैं। 6 मैं ने ध्यान देकर सुना, परन्तु थे ठीक नहीं बोलते; इन में
से किसी ने अपक्की बुराई से पछताकर नहीं कहा, हाथ ! मैं ने यह क्या किया है?
जैसा घोड़ा लड़ाई में वेग से दौड़ता है, वैसे ही इन में से हर एक जन अपक्की ही
दौड़ में दौड़ता है। 7 आकाश में लगलग भी अपके नियत समयोंको जानता है,
और पणडुकी, सूपाबेनी, और सारस भी अपके आने का समय रखते हैं; परन्तु
मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानती। 8 तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम
बुद्धिमान हैं, और यहोवा की दी हुई व्यपस्या हमारे साय है? परन्तु उनके
शास्त्रियोंने उसका फूठा विवरण लिखकर उसको फूठ बना दिया है। 9 बुद्धिमान
लज्जित हो गए, वे विस्मित हुए और पकड़े गए; देखो, उन्होंने यहोवा के वचन
को निकम्मा जाना है, उन में बुद्धि कहां रही? 10 इस कारण मैं उनकी स्त्रियोंको
दूसरे पुरुषोंको और उनके खेत दूसरे अधिक्कारनेियोंके वश में कर दूंगा,
क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक वे सब के सब लालची हैं; क्या भविष्यद्वक्ता क्या
याजक, वे सब के छल से काम करते हैं। 11 उन्होंने, “शान्ति है, शान्ति” ऐसा
कह कहकर मेरी प्रजा के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया, परन्तु शान्ति कुछ
भी नहीं है। 12 कया वे घृणित काम करके लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी
लज्जित नहीं हुए, वे लज्जित होना जानते ही नहीं। इस कारण जब और लेग
नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे; जब उनके दण्ड का समय आएगा, तब वे भी ठोकर
खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही वचन है। 13 यहोवा की सह भी वाण्ी है, मैं उन
सभोंका अन्त कर दूंगा। न तो उनकी दाखलताओं में दाख पाई जाएंगी, और न
अंजीर के पृझ में अंजीर वरन उनके पत्ते भी सूख जाएंगे, और जो कुछ मैं ने उन्हें

दिया है वह उनके पास से जाता रहेगा। 14 हम क्योंचुप-चाप बैठे हैं? आओ, हम
चलकर गढ़वाले नगरोंमें इकट्ठे नाश हो जाएं; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा
हम को नाश करना चाहता है, और हमें विष पीने को दिया है; क्योंकि हम ने
यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। 15 हम शान्ति की बाट जोहते थे, परन्तु कुछ
कल्याण नहीं मिला, और चंगाई की आशा करते थे, परन्तु घबराना ही पड़ा है। 16
उनके घोड़ोंका फुर्राना दान से सुन पड़ता है, और बलवन्त घोड़ोंके हिनहिनाने के
शब्द से सारा देश कांप उठा है। उन्होंने आकर हमारे देश को और जो कुछ उस में
है, और हमारे नगर को निवासियोंसमेत नाश किया है। 17 क्योंकि देखो, मैं
तुम्हारे बीच में ऐसे सांप और नाग भेजूंगा जिन पर मंत्र न चलेगा, और वे तुम को
डसेंगे, यहोवा की यही वाणी है। 18 हाथ ! हाथ ! इस शोक की दशा में मुझे शान्ति
कहां से मिलेगी? मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है ! 19 मुझे अपके लोगोंकी
चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है : क्या यहोवा सिय्योन में नहीं हैं? क्या
उसका राजा उस में नहीं? उन्होंने क्योंमुझ को अपक्की खोदी हुई मूरतोंऔर
परदेश की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा क्योंक्रोध दिलाया है? 20 कटनी का समय बीत
गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई, और हमारा उद्धार नहीं हुआ। 21
अपके लोगोंके दु:ख से मैं भी दु:खित हुआ, मैं शोक का पहिरावा पहिने अति
अचम्भे में डूबा हूँ। 22 क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं? क्या
उस में कोई वैद्य नहीं? यदि है, तो मेरे लोगोंके घाव क्योंचंगे नहीं हुए?

यिर्मयाह 9

1 भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें आँसुओं का सोता होतीं,

कि मैं रात दिन अपके मारे हुए लोगोंके लिथे रोता रहता। 2 भला होता कि मुझे
जंगल में बटोहियोंका कोई टिकाब मिलता कि मैं अपके लोगोंको छोड़कर वहीं
चला जाता ! क्योंकि वे सब व्यभिचारी हैं, वे विश्वासघातियोंका समाज हैं। 3
अपक्की अपक्की जीभ को वे धनुष की नाई फूठ होलने के लिथे तैयार करते हैं,
और देश में बलवन्त तो हो गए, परन्तु सच्चाई के लिथे नहीं; वे बुराई पर बुराई
बढ़ाते जाते हैं, और वे मुझ को जानते ही नहीं, यहोवा की यही वाणी है। 4 अपके
अपके संगी से चौकस रहो, अपके भाई पर भी भरोसा न रखो; क्योंकि सब भाई
निश्चय अड़ंगा मारेंगे, और हर एक पड़ोसी लुतराई करते फिरेंगे। 5 वे एक दूसरे
को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे; उन्होंने फूठ ही बोलना सीखा है; और कुटिलता ही
में परिश्रम करते हैं। 6 तेरा निवास छल के बीच है; छल ही के कारण वे मेरा ज्ञान
नहीं चाहते, यहोवा की यही वाणी है। 7 इसलिथे सेनाओं का यहोवा योंकहता है,
देख, मैं उनको तपाकर परखूंगा, क्योंकि अपक्की प्रजा के कारण मैं उन से और
क्या कर सकता हूं? 8 उनकी जीभ काल के तीर के समान बेधनेवाली है, उस से
छल की बातें निकलती हैं; वे मुंह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते हैं पर
मन ही मन एक दूसरे की घात में लगे रहते हैं। 9 क्या मैं ऐसी बातोंका दणड न
दूं? यहोवा की सह वाणी है, क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं? 10 मैं
पहाड़ोंके लिथे रो उठूंगा और शोक का गीत गाऊंगा, और जंगल की चराइयोंके
लिथे विलाप का गीत गाऊंगा, क्योंकि वे ऐसे जल गए हैं कि कोई उन में से होकर
नहीं चलता, और उन में ढोर का शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता; पशु-पक्की सब भाग
गए हैं। 11 मैं यरूशलेम को डीह ही डीह करके गीदड़ोंका स्यान बनाऊंगा; और
यहूदा के नगरोंको ऐसा उजाड़ दूंगा कि उन में कोई न बसेगा। 12 जो बुद्धिमान

मुरुष हो वह इसका भेद समझ ले, और जिस ने यहोवा के मुख से इसका कारण
सुना हो वह बता दे। देश का नाश क्योंहुआ? क्योंवह जंगल की नाई ऐसा जल
गया कि उस में से होकर कोई नहीं चलता? 13 और यहोवा ने कहा, क्योंकि
उन्होंने मेरी व्यवस्या को जो मैं ने उनके आगे रखी यी छोड़ दिया; और न मेरी
बात मानी और न उसके अनुसार चले हैं, 14 वरन वे उपके हठ पर बाल नाम
देवताओं के पीछे चले, जैसा उनके पुरखाओं ने उनको सिखलाया। 15 इस कारण,
सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर योंकहता है, सुन, मैं अपक्की इस प्रजा
को कड़वी वस्तु खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा। 16 और मैं उन लोगोंको ऐसी
जातियोंमें तितर बितर करूंगा जिन्हें न तो वे न उनके पुरखा जानते थे; और जब
तक उनका अन्त न हो जाए तब तक मेरी ओर से तलवार उनके पीछे पकेगी। 17
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, सोचो, और विलाप करनेवालियोंको बुलाओ;
बुद्धिमान स्त्रियोंको बतलवा भेजो; 18 वे फुर्ती करके हम लोगोंके लिथे शोक का
गीत गाएं कि हमारी आंखोंसे आंसू बह चलें और हमारी पलकें जल बहाए। 19
सिय्योन से शोक का यह गीत सुन पड़ता है, हम कैसे नाश हो गए ! हम
क्योंलज्जा में पड़ गए हैं, क्योंकि हम को अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर
गिरा दिए गए हैं। 20 इसलिथे, हे स्त्रियो, यहोवा का यह वचन सुनो, और उसकी
यह आज्ञा मानो; तुम अपक्की अपक्की बेटियोंको शोक का गीत, और अपक्की
अपक्की पड़ोसिक्कों विलाप का गीत सिखाओ। 21 क्योंकि मृत्यु हमारी
खिड़कियोंसे होकर हमारे महलोंमें घुस आई है, कि, हमारी सड़कोंमें बच्चोंको और
चौकोंमें जवानोंको मिटा दे। 22 तू कह, यहोवा योंकहता है, मनुष्योंकी लोथें ऐसी
पक्की रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर, और पूलियां काटनेवाले के पीछे पक्की

रहती हैं, और उनका कोई उठानेवाला न होगा। 23 यहोवा योंकहता है, बुद्धिमान
अपक्की बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपक्की वीरता पर, त धनी अपके धन
पर घमण्ड करे; 24 परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह
मुझे जानता और समझता हे, कि मैं ही वह यहोवा हूँ, जो पृय्वी पर करुणा, न्याय
और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातोंसे प्रसन्न रहता हूँ। 25 देखो,
यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आनेवाले हैं कि जिनका खतना हुआ हो,
उनको खतनारहितोंके समान दण्ड दूंगा, 26 अर्यात् मिस्रियों, यहूदियों,
एदोमियों, अम्मोनियों, मोआबियोंको, और उन रेगिस्तान के निवासियोंके
समान जो अपके गाल के बालोंको मुंड़ा डालते हैं; क्योंकि थे सब जातिथें तो
खतनारहित हैं, और इस्राएल का सारा घराना भी मन में खतनारहित है।

यिर्मयाह 10

1 यहोवा योंकहता है, हे इस्राएल के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है उसे
सुनो। 2 अन्यजातियोंको चाल मत सीखो, न उनकी नाई आकाश के चिन्होंसे
विस्मित हो, इसलिथे कि अन्यजाति लोग उन से विस्मित होते हैं। 3 क्योंकि
देशोंके लोगोंकी रीतियां तो निकम्मी हैं। मूरत तो बन में से किसी का काटा हुआ
काठ है जिसे कारीगर ने बसूले से बनाया है। 4 लोग उसको सोने-चान्दी से सजाते
और हयैड़े से कील ठोंक ठोंककर दृढ़ करते हैं कि वह हिल-डुल न सके। 5 वे
खरादकर ताड़ के पेड़ के समान गोल बनाई जाती हैं, पर बोल नहीं सकतीं; उन्हें
उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकतीं। उन से मत डरो, क्योंकि, न
तो वे कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला। 6 हे यहोवा, तेरे समान कोई नहीं

है; तू महान है, और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है। 7 हे सब जातियोंके राजा, तुझ
से कौन न डरेगा? क्योंकि यह तेरे योग्य है; अन्यजातियोंके सारे बुद्धिमानोंमें,
और उनके सारे राज्योंमें तेरे समान कोई नहीं है। 8 परन्तु वे पशु सरीखे निरे मूर्ख
हैं; मूत्तिर्योंसे क्या शिझा? वे तो काठ ही हैं ! 9 पत्तर बनाई हुई चान्दी तर्शीश से
लाई जाती है, और ऊफाज से सोना। वे कारीगर और सुनार के हाथोंकी कारीगरी
हैं; उनके पहिरावे नीले और बैंजनी रंग के वस्त्र हैं; उन में जो कुछ है वह निपुण
कारीगरोंकी कारीगरी ही है। 10 परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित
परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी कांपक्की है, और
जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते। 11 तुम उन से यह कहना,
थे देवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और
आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे। 12 उसी ने पृथ्वी को अपक्की सामर्थ से
बनाया, उस ने जगत को अपक्की बुद्धि से स्यिर किया, और आकाश को अपक्की
प्रवीणता से तान दिया है। 13 जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा
शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिथे
बिजली चमकाता, और अपके भणडार में से पवन चलाता है। 14 सब मनुष्य पशु
सरीखे ज्ञानरहित हैं; अपक्की खोदी हुई मूरतोंके कारण सब सुनारोंकी आशा
टूटती है; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें फूठी हैं, और उन में सांस ही नहीं है। 15
वे व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं; जब उनके दण्ड का समय आएगा तब वे नाश
हो जाएंगीं। 16 परन्तु याकूब का निज भाग उनके समान नहीं है, क्योंकि वह तो
सब का सृजनहार है, और इस्राएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का
यहोवा उसका नाम है। 17 हे घेरे हुए नगर की रहनेवाली, अपक्की गठरी भूमि पर

से उठा ! 18 क्योंकि यहोवा योंकहता है, मैं अब की बार इस देश के रहनेवालोंको
मानो गोफ़न में धरके फेंक दूंगा, और उन्हें ऐसे ऐसे संकट में डालूंगा कि उनकी
समझ में भी नहीं आएगा। 19 मुझ पर हाथ ! मेरा घाव चंगा होने का नहीं। फिर
मैं ने सोचा, यह तो रोग ही है, इसलिथे मुझ को इसे सहना चाहिथे। 20 मेरा तम्बू
लूटा गया, और सब रस्सियां टूट गई हैं; मेरे लड़केबाले मेरे पास से चले गए, और
नहीं हैं; अब कोई नहीं रहा जो मेरे तम्बू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे। 21
क्योंकि चरवाहे पशु सरीखे हैं, और वे यहोवा को नहीं पुकारते; इसी कारण वे बुद्धि
से नहीं चलते, और उनकी सब भेड़ें तितर-बितर हो गई हैं। 22 सुन, एक शब्द
सुनाई देता है ! देख, वह आ रहा है ! उत्तर दिशा से बड़ा हुल्लड़ मच रहा है ताकि
यहूदा के नगरोंको उजाड़कर गीदड़ोंका स्यान बना दे। 23 हे यहोवा, मैं जान गया
हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके
डग उसके अधीन नहीं हैं। 24 हे यहोवा, मेरी ताड़ना कर, पर न्याय से; क्रोध में
आकर नहीं, कहीं ऐसा न हो कि मैं नाश हो जाऊं। 25 जो जाति तुझे नहीं जानती,
और जो तुझ से प्रार्यना नहीं करते, उन्हीं पर अपक्की जलजलाहट उण्डेल;
क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया, वरन, उसे खाकर अन्त कर दिया है,
और उसके निवासस्यान को उजाड़ दिया है।

यिर्मयाह 11

1 यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा : 2 इस वाचा के वचन सुनो, और
यहूदा के पुरुषोंऔर यरूशलेम के रहनेवालोंसे कहो। 3 उन से कहो, इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, स्रापित है वह मनुष्य, जो इस वाचा के वचन न माने

4 जिसे मैं ने तुम्हारे पुरखाओं के साय लोहे की भट्ठी अर्यात् मिस्र देश में से
निकालने के समय, यह कहके बान्धी यी, मेरी सुनो, और जितनी आज्ञाएं मैं
तुम्हें देता हूँ उन सभोंका पालन करो। इस से तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं
तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा; 5 और जो शपय मैं ने तुम्हारे पितरोंसे खई यी कि
जिस देश में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, उसे मैं तुम को दूंगा, उसे पूरी
करूंगा; और देखो, वह पूरी हुई है। यह सुनकर मैं ने कहा, हे यहोवा, ऐसा ही हो। 6
तब यहोवा ने मुझ से कहा, थे सब वचन यहूद के नगरोंऔर यरूशलेम की
सड़कोंमें प्रचार करके कह, इस वाचा के वचन सुनो और उसके अनुसार चलो। 7
क्योंकि जिस समय से मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से छुड़ा ले आया तब से
आज के दिन तक उनको दृढ़ता से चिताता आया हूँ, मेरी बात सुनो। 8 परन्तु
अन्होंने न सुनी और न मेरी बातोंपर कान लगाया, किन्तु अपके अपके बुरे मन
के हठ पर चलते रहे। इसलिथे मैं ने उनके विषय इस वाचा की सब बातोंको पूर्ण
किया है जिसके मानने की मैं ने उन्हें आज्ञा दी यी और उन्होंने न मानी। 9 फिर
यहोवा ने मुझ से कहा, यहूदियोंऔर यरूशलेम के निवासियोंमें विद्रोह पाया गया
है। 10 जैसे इनके पुरखा मेरे वचन सुनने से इनकार करते थे, वेसे ही थे भी उनके
अधर्मों का अनुसरण करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उनकी उपासना
करते हैं; इस्राएल और यहूदा के घरानोंने उस वाचा को जो मैं ने उनके पूर्वजोंसे
बान्धी यी, तोड़ दिया है। 11 इसलिथे यहोवा योंकहता है, देख, मैं इन पर ऐसी
विपत्ति डालने पर हूँ जिस से थे बच न सकेंगे; और चाहे थे मेरी दोहाई दें तौभी मैं
इनकी न सुनूंगा। 12 उस समय सरूशलेम और यहूदा के नगरोंके निवासी उन
देवताओं की दोहाई देंगे जिनके लिथे वे धूप जलाते हैं, परन्तु वे उनकी विपत्ति के

समय उनको कभी न बचा सकेंगे। 13 हे यहूदा, जितने तेरे नगर हैं उतने ही तेरे
देवता भी हैं; और यरूशलेम के निवासियोंने हर एक सड़क में उस लज्जापूर्ण बाल
की वेदियां बना बनाकर उसके लिथे धूप जलाया है। 14 इसलिथे तू मेरी इस प्रजा
के लिथे प्रार्थना न करना, न कोई इन लोगोंके लिथे ऊंचे स्वर से बिनती करे,
क्योंकि जिस समय थे अपक्की विपत्ति के मारे मेरी दोहाई देंगे, तब मैं उनकी न
सुनूंगा। 15 मेरी प्रिया को मेरे घर में क्या काम है? उस ने तो बहुतोंके साय कुकर्म
किया, और तेरी पवित्रता पूरी रीति से जाती रही है। जब तू बुराई करती है, तब
पुसन्न होती है। 16 यहोवा ने तुझ को हरी, मनोहर, सुन्दर फलवाली जलपाई तो
कहा या, परन्तु उस ने बड़े हुल्लड़ के शब्द होते ही उस में आग लगाई गई, और
उसकी डालियां तोड़ डाली गई। 17 सेनाओं का यहोवा, जिस ने तुझे लगाया, उस
ने तुझ पर विपत्ति डालने के लिथे कहा है; इसका कारण इस्राएल और यहूदा के
घरानोंकी यह बुराई है कि उन्होंने मुझे रिस दिलाने के लिथे बाल के निमित्त धूप
जलाया। 18 यहोवा ने मुझे बताया और यह बात मुझे मालूम हो गई; क्योंकि
यहोवा ही ने उनकी युक्तियां मुझ पर प्रगट कीं। 19 मैं तो वध होनेवाले भेड़ के
बच्चे के समान अनजान या। मैं न जानता या कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियां
यह कहकर करते हैं, आओ, हम फल समेत इस वृझ को उखाड़ दें, और जीवितोंके
बीच में से काट डालें, तब इसका नाम तक फिर स्मरण न रहे। 20 परन्तु, अब हे
सेनाओं के यहोवा, हे धमीं न्यायी, हे अन्त:करण की बातोंके ज्ञाता, तू उनका
पलटा ले और मुझे दिखा, क्योंकि मैं ने अपना मुक़द्दमा तेरे हाथ में छोड़ दिया है।
21 इसलिथे यहोवा ने मुझ से कहा, अनातोत के लोग जो तेरे प्राण के खोजी हैं
और यह कहते हैं कि तू यहोवा का नाम लेकर भविष्यद्वाणी न कर, नहीं तो हमारे

हाथोंसे मरेगा। 22 इसलिथे सेनाओं का यहोवा उनके विषय योंकहता है, मैं उनको
दण्ड दूंगा; उनके जवान तलवार से, और उनके लड़के-लड़कियां भूखोंमरेंगे; 23
और उन में से कोई भी न बचेगा। मैं अनातोत के लोगोंपर यह विपत्ति डालूंगा;
उनके दण्ड का दिन आनेवाला है।

यिर्मयाह 12

1 हे यहोवा, यदि मैं तुझ से मुक़द्दमा लड़ूं, तौभी तू धमीं है; मुझे अपके साय इस
विषय पर वादविवाद करने दे। दुष्टोंकी चाल क्योंसफंल होती है? क्या कारण है
कि विश्वासघाती बहुत सुख से रहते हैं? 2 तू उनको बोता और वे जड़ भी पकड़ते;
वे बढ़ते और फलते भी हैं; तू उनके मुंह के निकट है परन्तु उनके मनोंसे दूर है। 3
हे यहोवा तू मुझे जानता है; तू मुझे देखता है, और तू ने मेरे मन की पक्कीझा
करके देखा कि मैं तेरी ओर किस प्रकार रहता हूँ। जैसे भेड़-बकरियां घात होने के
लिथे फुण्ड में से निकाली जाती हैं, वैसे ही उनको भी निकाल ले और वध के दिन
के लिथे तैयार कर। 4 कब तक देश विलाप करता रहेगा, और सारे मैदान की
घास सूखी रहेगी? देश के निवासियोंकी बुराई के कारण पशु-पक्की सब नाश हो
गए हैं, क्योंकि उन लोगोंने कहा, वह हमारे अन्त को न देखेगा। 5 तू जो प्यादोंही
के संग दौड़कर यक गया है तो घेड़ोंके संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा? और
यद्यपि तू शान्ति के इस देश में निडर है, परन्तु यरदन के आसपास के धने जंगल
में तू क्या करेगा? 6 क्योंकि तेरे भाई और तेरे घराने के लोगोंने भी तेरा
विश्वासघात किया है; वे तेरे पीछे ललकारते हैं, यदि वे तुझ से मीठी बातें भी कहें,
तौभी उनकी प्रतीति न करना। 7 मैं ने अपना घर छोड़ दिया, अपना निज भाग मैं

ने त्याग दिया है; मैं ने अपक्की प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में कर दिया है। 8
क्योंकि मेरा निज भाग मेरे देखने में वन के सिंह के समान हो गया और मेरे
विरुद्ध गरजा है; इस कारण मैं ने उस से बैर किया है। 9 क्या मेरा निज भाग मेरी
दृष्टि में चित्तीवाले शिकारी पक्की के समान नहीं है? क्या शिकारी पक्की चारोंओर
से उसे घेरे हुए हैं? जाओ सब जंगली पशुओं को इकट्ठा करो; उनको लाओ कि
खा जाएं। 10 बहुत से चरवाहोंने मेरी दाख की बारी को बिगाड़ कर दिया, उन्होंने
मेरे भाग को लताड़ा, वरन मेरे मनोहर भाग के खेत को सुनसान जंगल बना दिया
है। 11 उन्होंने उसको उजाड़ दिया; वह उजड़कर मेरे साम्हने विलाप कर रहा है।
सारा देश उजड़ गया है, तौभी कोई नहीं सोचता। 12 जंगल के सब मुंडे टीलोंपर
नाशक चढ़ आए हैं; क्योंकि यहोवा की तलवार देश के एक छोर से लेकर दूसरी
छोर तक निगलती जाती है; किसी मनुष्य को शांन्ति नहीं मिलती। 13 उन्होंने
गेहूं तो बोया, परन्तु कटीले पेड़ काटे, उन्होंने कष्ट तो उठाया, परन्तु उस से कुछ
लाभ न हुआ। यहोवा के क्रोध के भड़कने के कारण तुम अपके खेतोंकी उपज के
विषय में लज्जित हो। 14 मेरे दुष्ट पड़ोसी उस भाग पर हाथ लगाते हैं, जिसका
भागी मैं ने अपक्की प्रजा इस्राएल को बनाया है। उनके विष्य यहोवा योंकहता है
कि मैं उनको उनकी भूमि में से उखाड़ डालूंगा, और यहूदा के घराने को भी उनके
बीच में से उखड़ूंगा। 15 उन्हें उखाड़ने के बाद मैं फिर उन पर दया करूंगा, और
उन में से हर एक को उसके निज़ भाग और भूमि में फिर से लगाऊंगा। 16 और
यदि वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही नाम की सौगन्ध, यहोवा के जीवन की
सौगन्ध, खाने लगें, जिस प्रकार से उन्होंने मेरी प्रजा को बाल की सौगन्ध खाना
सिखलाया या, तब मेरी प्रजा के बीच उनका भी वंश बढ़ेगा। 17 परन्तु यदि वे न

मानें, तो मैं उस जाति को ऐसा उखाड़ूंगा कि वह फिर कभी न पनंपेगी, यहोवा की
यही वाणी है।

यिर्मयाह 13

1 यहोवा ने मुझ से योंकहा, जाकर सनी की एक पेटी मोल ले, उसे कमर में बान्ध
और जल में मत भीगने दे। 2 तब मैं ने एक पेटी मोल लेकर यहोवा के वचन के
अनुसार अपक्की कमर में बान्ध ली। 3 तब तूसरी बार यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा कि 4 जो पेटी तू ने मोल लेकर कटि में कस ली है, उसे परात के तीर
पर ले जा और वहां उसे कड़ाड़े पर की एक दरार में छिपा दे। 5 यहोवा की इस
आज्ञा के अनुसार मैं ने उसको परात के तीर पर ले जाकर छिपा दिया। 6 बहुत
दिनोंके बाद यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, फिर परात के पास जा, और जिस पेटी
को मैं ने तुझे वहां छिपाने की आज्ञा दी उसे वहां से ले ले। 7 तब मैं परात के पास
गया ओर खोदकर जिस स्यान में मैं ने पेटी को छिपाया या, वहां से उसको
निकाल लिया। और देखो, पेटी बिगड़ गई यी; वह किसी काम की न रही। 8 तब
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुचा, यहोवा योंकहता है, 9 इसी प्रकार से मैं
यहूदियोंका गर्व, और यरूशलेम का बड़ा गर्व नष्ट कर दूंगा। 10 इस दुष्ट जाति के
लोग जो मेरे वचन सुनने से इनकार करते हैं जो अपके मन के हठ पर चलते,
दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते ओर उनको दण्डवत् करते
हैं, वे इस पेटी के समान हो जाएंगे जो किसी काम की नहीं रही। 11 यहोवा की यह
वाणी है कि जिस प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार से
मैं ने इस्राएल के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपक्की कटि में बान्ध

लिया या कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और कीत्तिर् और शोभा का कारण हों,
परन्तु उन्होंने न माना। 12 इसलिथे तू उन से यह वचन कह, इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिए जाएंगे।
तब वे तुझ से कहेंगे, क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से
भर दिए जाएंगे? 13 तब तू उन से कहना, यहोवा योंकहता है, देखो, मैं इस देश के
सब रहनेवालोंको, विशेष करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजमान राजा और
याजक और भविष्यद्वक्ता आदि यरूशलेम के सब निवासिक्कों अपक्की कोपरूपी
मदिरा पिलाकर अचेत कर दूंगा। 14 तब मैं उन्हें एक दूसरे से टकरा दूंगा; अर्यात्
बाप को बेटे से, और बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है। मैं उन पर कोमलता
नहीं दिखाऊंगा, न तरस खऊंगा और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊंगा।
15 देखो, और कान लगाओ, गर्व मत करो, क्योंकि यहोवा ने योंकहा है। 16 अपके
परमेश्वर यहोवा की बड़ाई करो, इस से पहिले कि वह अन्धकार लाए और तुम्हारे
पांव अन्धेरे पहाड़ोंपर ठोकर खाएं, और जब तुम प्रकाश का आसरा देखो, तब वह
उसको मृत्यु की छाया से बदल और उसे घोर अन्धकार बना दे। 17 और यदि तुम
इसे न सुनो, तो मैं अकेले में तुम्हारे गर्व के कारण रोऊंगा, और मेरी आंखोंसे
आंसुओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बंधुआ कर ली गई हैं। 18
राजा और राजमाता से कह, नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे सिरोंके शोभायमान
मुकुट उतार लिए गए हैं। 19 दक्खिन देश के नगर घेरे गए हैं, कोई उन्हें बचा न
सकेगा; सम्पूर्ण यहूदी जाति बन्दी हो गई है, वह पूरी रीति से बंधुआई में चक्की
गई है। 20 अपक्की ओखें उठाकर उनको देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं। वह
सुन्दर फुण्ड जो तुझे सौंपा गया या कहां है? 21 जब वह तेरे उन मित्रोंको तेरे

ऊपर प्रधान ठहराएगा जिन्हें तू ने अपक्की हानि करने की शिझा दी है, तब तू
क्या कहेगी? क्या उस समय तुझे ज़च्चा की सी पीड़ाएं न उठेंगी? 22 और यदि तू
अपके मन में सोचे कि थे बातें किस कारण मुझ पर पक्की हैं, तो तेरे बड़े अधर्म
के कारण तेरा आंचल उठाया गया है और तेरी एडियां बरियाई से नंगी की गई हैं।
23 क्या हबशी अपना चमड़ा, वा चीता अपके धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा
कर सकें, तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगी। 24 इस
कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर करूंगा, जैसा भूसा जंगल के पवन से
तितर-बितर किया जाता है। 25 यहोवा की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझ से
ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि तू ने मुझे भूलकर फूठ पर भरोसा रखा है।
26 इसलिथे मैं भी तेरा आंचल तेरे मुंह तक उठाऊंगा, तब तेरी लाज जानी
जाएगी। 27 व्यभिचार और चोचला और छिनालपन आदि तेरे घिनौने काम जो तू
ने मैदान और टीलोंपर किए हैं, वे सब मैं ने देखे हैं। हे यरूशलेम, तुझ पर हाथ !
तू अपके आप को कब तक शुद्ध न करेगी? और कितने दिन तक तू बनी रहेगी?

यिर्मयाह 14

1 यहोवा का वचन जो यिर्मयाह के पास सूखे वर्ष के विषय में पहुंचा: 2 यहूदा
विलाप करता और फाटकोंमें लोग शोक का पहिरावा पहिने हुए भूमि पर उदास
बैठे हैं; और यरूशलेम की चिल्लाहट आकाश तक पहुंच गई है। 3 और उनके बड़े
लोग उनके छोटे लोगोंको पानी के लिथे भेजते हैं; वे गड़होंपर आकर पानी नहीं
पाते इसलिथे छूछे बर्तन लिए हुए घर लौट जाते हैं; वे लज्जित और निराश होकर
सिर ढांप लेते हैं। 4 देश में पानी न बरसने से भूमि में दरार पड़ गए हैं, इस कारण

किसान लोग निराश होकर सिर ढांप लेते हैं। 5 हरिणी भी मैदान में बच्चा जनकर
छोड़ जाती है क्योंकि हरी घास नहीं मिलती। 6 जंगली गदहे भी मुंडे टीलोंपर खड़े
हुए गीदड़ोंकी नाईं हांफते हैं; उनकी आंखें धुंधला जाती हैं क्योंकि हरियाली कुछ
भी नहीं है। 7 हे यहोवा, हमारे अधर्म के काम हमारे विरुद्ध साझी दे रहे हैं, हम तेरा
संग छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं, और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है; तौभी, तू
अपके नाम के निमित्त कुछ कर। 8 हे इस्राएल के आधार, संकट के समय उसका
बचानेवाला तू ही है, तू क्योंइस देश में परदेशी की नाईं है? तू क्योंउस बटोही के
समान है जो रात भर रहने के लिथे कहीं टिकता हो? 9 तू क्योंएक विस्मित पुरुष
या ऐसे वीर के समान है जो बचा न सके? तौभी हे यहोवा तू हमारे बीच में है, और
हम तेरे कहलाते हैं; इसलिथे हमको न तज। 10 यहोवा ने इन लोगोंके विषय
योंकहा : इनको ऐसा भटकना अच्छा लगता है; थे कुकर्म में चलने से नहीं रुके;
इसलिथे यहोवा इन से प्रसन्न नहीं है, वह इनका अधर्म स्मरण करेगा और उनके
पाप का दण्ड देगा। 11 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, इस प्रजा की भलाई के लिथे
प्रार्यना मत कर। 12 चाहे वे उपवास भी करें, तौभी मैं इनकी दुहाई न सुनूंगा, और
चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएं, तौभी मैं उन से प्रसन्न न होऊंगा; मैं
तलवार, महंगी और मरी के द्वारा इनका अन्त कर डालूंगा। 13 तब मैं ने कहा,
हाथ, प्रभु यहोवा, देख, भविष्यद्वक्ता इन से कहते हैं कि न तो तुम पर तलवार
चलेगी और न महंगी होगी, यहोवा तुम को इस स्यान में सदा की शान्ति देगा।
14 और यहोवा ने मुझ से कहा, थे भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर फूठी भविष्यद्वाणी
करते हैं, मैं ने उनको न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उन से कोई भी
बात कही। वे तुम लोगोंसे दर्शन का फूठा दावा करके अपके ही मन से व्यर्य और

धोखे की भविष्यद्वाणी करते हैं। 15 इस कारण जो भविष्यद्वक्ता मेरे बिना भेजे
मेरा नाम लेकर भविष्यद्वाणी करते हैं कि उस देश में न तो तलवार चलेगी और न
महंगी होगी, उनके विषय यहोवा योंकहता है, कि, वे भविष्यद्वक्ता आप तलवार
और महंगी के द्वारा नाश किए जाएंगे। 16 और जिन लोगोंसे वे भविष्यद्वाणी
कहते हैं, वे महंगी और तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार यरूशलेम की
सड़कोंमें फेंक दिए जाएंगे, कि न तो उनका, न उनकी स्त्रियोंका और न उनके
बेटे-बेटियोंका कोई मिट्टी देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी बुराई उन्हीं के ऊपर
उण्डेलूंगा। 17 तू उन से यह बात कह, मेरी ओखोंसे दिन रात आंसू लगातार बहते
रहें, वे न रुकें क्योंकि मेरे लोगोंकी कुंवारी बेटी बहुत ही कुचक्की गई और घायल
हुई है। 18 यदि मैं मैदान में जाऊं, तो देखो, तलवार के मारे हुए पके हैं ! और यदि
मैं नगर के भीतर आऊं, तो देखो, भूख से अध्मूए पके हैं ! क्योंकि भविष्यद्वक्ता
और याजक देश में कमाई करते फिरते और समझ नहीं रखते हैं। 19 क्या तू ने
यहूदा से बिलकुल हाथ उठा लिया? क्या तू सिय्योन से घिन करता है? नहीं, तू ने
क्योंहम को ऐसा मारा है कि हम चंगे हो ही नहीं सकते? हम शान्ति की बाट
जोहते रहे, तौभी कुछ कल्याण नहीं हुआ; और यद्यपि हम अच्छे हो जाने की
आशा करते रहे, तौभी घबराना ही पड़ा है। 20 हे यहोवा, हम अपक्की दुष्टता और
अपके पुरखाओं के अधर्म को भी मान लेते हैं, क्योंकि हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया
है। 21 अपके नाम के निमित्त हमें न ठुकरा; अपके तेजोमय सिंहासन का अपमान
न कर; जो वाचा तू ने हमारे साय बान्धी, उसे स्मरण कर और उसे न तोड़। 22
क्या अन्यजातियोंकी मूरतोंमें से कोई वर्षा कर सकता है? क्या आकाश फडिय़ां
लगा सकता है? हे हमारे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ही इन सब बातोंका करनेवाला

नहीं है? हम तेरा ही आसरा देखते रहेंगे, क्योंकि इन सारी वस्तुओं का सृजनहार
तू ही है।

यिर्मयाह 15

1 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, यदि मूसा और शमूएल भी मेरे साम्हने खड़े होते,
तौभी मेरा मन इन लोगोंकी ओर न फिरता। इनको मेरे साम्हने से निकाल दो कि
वे निकल जाएं! 2 और यदि वे तुझ से पूछें कि हम कहां निकल जाएं? तो कहना
कि यहोवा योंकहता है, जो मरनेवाले हैं, वे मरने को चले जाएं, जो तलवार से
मरनेवाले हैं, वे तलवार से मरने को; जो आकाल से मरनेवाले हैं, वे आकाल से
मरने को, और जो बंधुए होनेवाले हैं, वे बंधुआई में चले जाएं। 3 मैं उनके विरुद्ध
चार प्रकार के विनाश ठहराऊंगा : मार डालने के लिथे तलवार, फाड़ डालने के
लिथे कुत्ते, नोच डालने के लिथे आकाश के पक्की, और फाड़कर खाने के लिथे
मैदान के हिंसक जन्तु, यहोवा की यह वाणी है। 4 यह हिजकिय्याह के पुत्र, यहूदा
के राजा मनश्शे के उन कामोंके कारण होगा जो उस ने यरूशलेम में किए हैं, और
मैं उन्हें ऐसा करूंगा कि वे पृय्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे। 5 हे
यरूशलेम, तुझ पर कौन तरस खाएगा, और कौन तेरे लिथे शोक करेगा? कौन
तेरा कुशल पूछने को तेरी ओर मुड़ेगा? 6 यहोवा की यह वाणी है कि तू मुझ को
त्यागकर पीछे हट गई है, इसलिथे मैं तुझ पर हाथ बढ़ाकर तेरा नाश करूंगा;
क्योंकि, मैं तरस खाते खाते उकता गया हूँ। 7 मैं ने उनको देश के फाटकोंमें सूप
से फटक दिया है; उन्होंने कुमार्ग को नहीं छोड़ा, इस कारण मैं ने अपक्की प्रजा
को निर्वंश कर दिया, और नाश भी किया है। 8 उनकी विधवाएं मेरे देखने में

समुद्र की बालू के किनकोंसे अधिक हो गई हैं; उनके जवानोंकी माताओं के विरुद्ध
दुपहरी ही को मैं ने लुटेरोंको ठहराया है; मैं ने उनको अचानक संकट में डाल दिया
और घबरा दिया है। 9 सात लड़कोंकी माता भी बेहाल हो गई और प्राण भी छोड़
दिया; उसका सूर्य दोपहर ही को अस्त हो गया; उसकी आशा टूट गई और उसका
मुंह काला हो गया। और जो रह गए हैं उनको भी मैं शत्रुओं की तलवार से मरवा
डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 10 हे मेरी माता, मुझ पर हाथ, कि तू ने मुझ
ऐसे मनुष्य को उत्पन्न किया जो संसार भर से फगड़ा और वादविवाद करनेवाला
ठहरा है ! न तो मैं ने व्याज के लिथे रुपके दिए, और न किसी से उधार लिए हैं,
तौभी लोग मुझे कोसते हैं। 11 यहोवा ने कहा, निश्चय मैं तेरी भलाई के लिथे तुझे
दृढ़ करूंगा; विपत्ति और कष्ट के समय मैं शत्रु से भी तेरी बिनती कराऊंगा। 12
क्या कोई पीतल वा लोहा, उत्तर दिशा का लोहा तोड़ सकता है? 13 तेरे सब पापोंके
कारण जो सर्वत्र देश में हुए हैं मैं तेरी धन-सम्पत्ति और खजाने, बिना दाम दिए
लुट जाने दूंगा। 14 मैं ऐसा करूंगा कि वह शत्रुओं के हाथ ऐसे देश में चला जाएगा
जिसे तू नहीं जानती है, क्योंकि मेरे क्रोध की आग भड़क उठी है, और वह तुम को
जलाएगी। 15 हे यहोवा, तू तो जानता है; मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर
मेरे सतानेवालोंसे मेरा पलटा ले। तू धीरज के साय क्रोध करनेवाला है, इसलिथे
मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है। 16 जब तेरे वचन मेरे पास
पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द
का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ। 17
तेरी छाया मुझ पर डुई; मैं मन बहलानेवालोंके बीच बैठकर प्रसन्न नहीं हुआ; तेरे
हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा, क्योंकि तू ने मुझे क्रोध से भर दिया या। 18 मेरी

पीड़ा क्योंलगातार बनी रहती है? मेरी चोट की क्योंकोई औषधि नहीं है? क्या तू
सचमुच मेरे लिथे धोखा देनेवाली नदी और सूखनेवाले जल के समान होगा? 19
यह सुनकर यहोवा ने योंकहा, यदि तू फिरे, तो मैं फिरसे तुझे अपके साम्हने खड़ा
करूंगा। यदि तू अनमोल को कहे और निकम्मे को न कहे, तब तू मेरे मुख के
समान होगा। वे लोग तेरी ओर फिरेंगे, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना। 20 और
मैं तुझ को उन लोगोंके साम्हने पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा; वे तुझ से
लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने
के लिथे तेरे साय हूँ, यहोवा की यह वाणी है। मैं तुझे दुष्ट लोगोंके हाथ से
बचाऊंगा, 21 और उपद्रवी लोगोंके पंजे से छुड़ा लूंगा।

यिर्मयाह 16

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 इस स्यान में विवाह करके बेटे-बेटियां
मत जन्मा। 3 क्योंकि जो बेटे-बेटियां इस स्यन में उत्पन्न होंऔर जो माताएं
उन्हें जनें और जो पिता उन्हें इस देश में जन्माएं, 4 उनके विषय यहोवा योंकहता
है, वे बुरी बुरी बीमारियोंसे मरेंगे। उनके लिथे कोई छाती न पीटेगा, न उनको
मिट्टी देगा; वे भूमि के ऊपर खाद की नाई पके रहेंगे। वे तलवार और महंगी से
मर मिटेंगे, और उनकी लोथें आकाश के पझियोंऔर मैदान के पशुओं का आहार
होंगी। 5 यहोवा ने कहा, जिस घर में रोनापीटना हो उस में न जाना, न छाती
पीटने के लिथे कहीं जाना और न इन लोगोंके लिथे शोक करना; क्योंकि यहोवा
की यह वाणी है कि मैं ने अपक्की शान्ति और करुणा और दया इन लोगोंपर से
उठा ली है। 6 इस कारण इस देश के छोटे-बड़े सब मरेंगे, न तो इनको मिट्टी दी

जाएगी, न लोग छाती पीटेंगे, न अपना शरीर चीरेंगे, और न सिर मुंड़ाएंगे। इनके
लिथे कोई शोक करनेवालोंको रोटी न बाटेंगे कि शोक में उन्हें शान्ति दें; 7 और न
लोग पिता वा माता के मरने पर किसी को शान्ति के लिथे कटोरे में दाखमधु
पिलाएंगे। 8 तू जेवनार के घर में इनके साय खाने-पीने के लिथे न जाना। 9
क्योंकि सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर योंकहता है, देख, तुम लोगोंके
देखते और तुम्हारे ही दिनोंमें मैं ऐसा करूंगा कि इस स्यान में न तो हर्ष और न
आनन्द का शब्द सुनाई पकेगा, न दुल्हे और न दुल्हिन का शब्द। 10 और जब तू
इन लोगोंसे थे सब बातें कहे, और वे तुझ से पूछें कि यहोवा ने हमारे ऊपर यह
सारी बड़ी विपत्ति डालने के लिथे क्योंकहा है? हमारा अधर्म क्या है और हम ने
अपके परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कौन सा पाप किया है? 11 तो तू इन लोगोंसे
कहना, यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरखा मुझे त्यागकर दूसरे
देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दण्डवत् की, और मुझ
को त्याग दिया और मेरी व्यवस्या का पालन नहीं किया, 12 ओर जितनी बुराई
तुम्हारे पुरखाओं ने की यी, उस से भी अधिक तुम करते हो, क्योंकि तुम अपके
बुरे मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते; 13 इस कारण मैं तुम को इस
देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूंगा, जिसको न तो तुम जानते हो और न
तुम्हारे पुरखा जानते थे; और वहां तुम रात-दिन दूसरे देवताओं की उपासना
करते रहोगे, क्योंकि वहां मैं तुम पर कुछ अनुग्रह न करूंगा। 14 फिर यहोवा की
यह वाणी हुई, देखो, ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में फिर यह न कहा जाएगा कि
यहोवा जो इस्राएलियोंको मिस्र देश से छुड़ा ले आया उसके जीवन की सौगन्ध, 15
वरन यह कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियोंको उत्तर के देश से और उन सब

देशोंसे जहां उस ने उनको बरबस कर दिया या छुड़ा ले आया, उसके जीवन की
सौगन्ध। क्योंकि मैं उनको उनके निज देश में जो मैं ने उनके पूर्वजोंको दिया या,
लौटा ले आऊंगा। 16 देखो, यहोवा की यह वाणी है कि मै बहुत से मछुओं को
बुलवा भेजूंगा कि वे इन लोगोंको पकड़ लें, और, फिर मैं बहुत से बहेलियोंको
बुलवा भेजूंगा कि वे इनको अहेर करके सब पहाड़ोंऔर पहाडिय़ोंपर से और
चट्टानोंकी दरारोंमें से निकालें। 17 क्योंकि उनका पूरा चाल-चलन मेरी आंखोंके
साम्हने प्रगट है; वह मेरी दृष्टि से छिपा नहीं है, न उनका अधर्म मेरी आखोंसे गुप्त
है। सो मैं उनके अधर्म और पाप का दूना दण्ड दूंगा, 18 क्योंकि उन्होंने मेरे देश
को अपक्की घृणित वस्तुओं की लोयोंसे अशुद्ध किया, और मेरे निज भाग को
अपक्की अशुद्धता से भर दिया है। 19 हे यहोवा, हे मेरे बल और दृढ़ गढ़, संकट के
समय मेरे शरणस्यान, जातिजाति के लोग पृय्वी की चहुंओर से तेरे पास आकर
कहेंगे, निश्चय हमारे पुरखा फूठी, व्यर्थ और निष्फल वस्तुओं को अपनाते आए
हैं। 20 क्या मनुष्य ईश्वरोंको बनाए? नहीं, वे ईश्वर नहीं हो सकते ! 21 इस कारण,
एक इस बार, मैं इन लोगोंको अपना भुजबल और पराक्रम दिखाऊंगा, और वे
जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।

यिर्मयाह 17

1 यहूदा का पाप लोहे की टांकी और हीरे की नोक से लिखा हुआ है; वह उनके
हृदयरूपी पटिया और उनकी वेदियोंके सींगोंपर भी खुदा हुआ है। 2 उनकी वेदियां
और अशेरा नाम देवियां जो हरे पेड़ोंके पास और ऊंचे टीलोंके ऊपर हैं, वे उनके
लड़कोंको भी स्मरण रहती हैं। 3 हे मेरे पर्वत, तू जो मैदान में है, तेरी धन-सम्पत्ति

और भण्डार मैं तेरे पाप के कारण लुट जाने दूंगा, और तेरे पूजा के ऊंचे स्यान भी
जो तेरे देश में पाए जाते हैं। 4 तू अपके ही दोष के कारण अपके उस भाग का
अधिक्कारनी न रहने पाएगा जो मैं ने तुझे दिया है, और मैं ऐसा करूंगा कि तू
अनजाने देश में अपके शत्रुओं की सेवा करेगा, क्योंकि तू ने मेरे क्रोध की आग
ऐसी भड़काई जो सर्वदा जलती रहेगी। 5 यहोवा योंकहता है, स्रापित है वह पुरुष
जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा
से भटक जाता है। 6 वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा और कभी
भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तया लोनछाई भूमि पर बसेगा। 7 धन्य
है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिस ने परमेश्वर को अपना आधार
माना हो। 8 वह उस वृझ के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी
जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे
रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब
भी फलता रहेगा। 9 मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोख देनेवाला होता है, उस में
असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? 10 मैं यहोवा मन की
खोजता और हृदय को जांचता हूँ ताकि प्रत्थेक जन को उसकी चाल-चलन के
अनुसार अर्यात् उसके कामोंका फल दूं। 11 जो अन्याय से धन बटोरता है वह उस
तीतर के समान होता है जो दूसरी चिडिय़ा के दिए हुए अंडोंको सेती है, उसकी
आधी आयु में ही वह उस धन को छोड़ जाता है, और अन्त में वह मूढ ही ठहरता
है। 12 हमारा पवित्र आराधनालय आदि से ऊंचे स्यान पर रखे हुए एक तेजोमय
सिंहासन के समान है। 13 हे यहोवा, हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड देते
हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे

जाएंगे, क्योंकि उन्होंने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है। 14 हे यहोवा
मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊंगा; क्योंकि मैं
तेरी ही स्तुति करता हूँ। 15 सुन, वे मुझ से कहते हैं, यहोवा का वचन कहां रहा?
वह अभी पूरा हो जाए ! 16 परन्तु तू मेरा हाल जानता है, मैं ने तेरे पीछे चलते हुए
उतावली करके चरवाहे का काम नहीं छोड़ा; न मैं ने उस आनेवाली विपत्ति के दिन
की लालसा की है; जो कुछ मैं बोला वह तुझ पर प्रगट या। 17 मुझे न घबरा;
संकट के दिन तू ही मेरा शरणस्यान है। 18 हे यहोवा, मेरी आशा टूटने न दे, मेरे
सतानेवालोंही की आशा टूटे; उन्हीं को विस्मित कर; परन्तु मुझे निराशा से बचा;
उन पर विपत्ति डाल और उनको चकनाचूर कर दे ! 19 यहोवा ने मुझ से योंकहा,
जाकर सदर फाटक में खड़ा हो जिस से यहूदा के राजा वरन यरूशलेम के सब
रहनेवाले भीतर-बाहर आया जाया करते हैं; 20 और उन से कह, हे यहूदा के
राजाओ और सब यहूदियो, हे यरूशलेम के सब निवासियो, और सब लोगो जो
इन फाटकोंमें से होकर भीतर जाते हो, यहोवा का वचन सुनो। 21 यहोवा
योंकहता है, सावधान रहो, विश्रम के दिन कोई बोफ मत उठाओ; और न कोई
बोफ यरूशलेम के फाटकोंके भीतर ले आओ। 22 विश्रम के दिन अपके अपके घर
से भी कोई बोफ बाहर मत लेओ और न किसी रीति का काम काज करो, वरन उस
आज्ञा के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी यी, विश्रम के दिन को पवित्र
माना करो। 23 परन्तु उन्होंने न सुना और न कान लगाया, परन्तु इसके
विपक्कीत हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें। 24 परन्तु यदि तुम
सचमुच मेरी सुनो, यहोवा की यह वाणी है, और विश्रम के दिन इस नगर के
फाटकोंके भीतर कोई बोफ न ले आओ और विश्रमदिन को पवित्र मानो, और उस

में किसी रीति का काम काज न करो, 25 तब तो दाऊद की गद्दी पर विराजमान
राजा, रथोंऔर घोड़ोंपर चढ़े हुए हाकिम और यहूदा के लोग और यरूशलेम के
निवासी इस नगर के फाटकोंसे होकर प्रवेश किया करेंगे और यह नगर सर्वदा
बसा रहेगा। 26 और लोग होमबलि, मेलबलि अन्नबलि, लोबान और
धन्यवादबलि लिए हुए यहूदा के नगरोंसे और यरूशलेम के आसपास से,
बिन्यामीन के देश और नीचे के देश से, पहाड़ी देश और दक्खिन देश से, यहोवा
के भवन में आया करेंगे। 27 परन्तु यदि तुम मेरी सुनकर विश्रम के दिन को
पवित्र न मानो, और उस दिन यरूशलेम के फाटकोंसे बोफ लिए हुए प्रवेश करते
रहो, तो मैं यरूशलेम के फाटकोंमें आग लगाऊंगा; और उस से यरूशलेम के महल
भी भस्म हो जाएंगे और वह आग फिर न बुफेगी।

यिर्मयाह 18

1 यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, उठकर कुम्हार के घर जा,
2 और वहां मैं तुझे अपके वचन सुनवाऊंगा। 3 सो मैं कुम्हार के घर गया और
क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है ! 4 और जो मिट्टी का बासन वह
बना रहा या वह बिगड़ गया, तब उस ने उसी का दूसरा बासन अपक्की समझ के
अनुसार बना दिया। 5 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे इस्राएल के
घराने, 6 यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाई तुम्हारे साय क्या मैं भी
काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे
इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। 7 जब मैं किसी जाति वा राज्य के
विषय कहूं कि उसे उखाड़ूंगा वा ढा दूंगा अयवा नाश करूंगा, 8 तब यदि उस जाति

के लोग जिसके विषय मैं ने कह बात कही हो अपक्की बुराई से फिरें, तो मैं उस
विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊंगा। 9 और जब मैं
किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि मैं उसे बनाऊंगा और रोपूंगा; 10 तब यदि
वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस
भलाई के विष्य जिसे मैं ने उनके लिथे करने को कहा हो, पछताऊंगा। 11
इसलिथे अब तू यहूदा और यरूशलेम के निचसिक्कों यह कह, यहोवा योंकहता
है, देखो, मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध प्रबन्ध कर रहा हूँ।
इसलिथे तुम अपके अपके बुरे मार्ग से फिरो और अपना अपना चालचलन और
काम सुधारो। 12 परन्तु वे कहते हैं, ऐसा नहीं होने का, हम तो अपक्की ही
कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपके बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे। 13 इस
कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, अन्यजातियोंसे पूछ कि ऐसी बातें क्या कभी
किसी के सुनने में आई है? इस्राएल की कुमारी ने जो काम किया है उसके सुनने
से रोम रोम खड़े हो जाते हैं। 14 क्या लबानोन का हिम जो चट्टान पर से मैदान
में बहता है बन्द हो सकता है? क्या वह ठण्डा जल जो दूर से बहता है कभी सूख
सकता है? 15 परन्तु मेरी प्रजा मुझे भूल गई है; वे निकम्मी वस्तुओं के लिथे धूप
जलाते हैं; उन्होंने अपके प्राचीनकाल के मार्गों में ठोकर खाई है, और
पगडण्डियोंऔर बेहड़ मार्गों में भटक गए हैं। 16 इस से उनका देश ऐसा उजाड़ हो
गया है कि लोग उस पर सदा ताली बजाते रहेंगे; और जो कोई उसके पास से चले
वह चकित होगा और सिर हिलाएगा। 17 मैं उनको पुरवाई से उड़ाकर शत्रु के
साम्हने से तितर-बितर कर दूंगा। उनकी विपत्ति के दिन मैं उनको मुंह नहीं
परन्तु पीठ दिखाऊंगा। 18 तब वे कहने लगे, चलो, यिर्मयाह के विरुद्ध युक्ति करें,

क्योंकि न याजक से व्यवस्या, न ज्ञानी से सम्मति, न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर
होंगे। आओ, हम उसकी कोई बात पकड़कर उसको नाश कराएं और फिर उसकी
किसी बात पर ध्यान न दें। 19 हे यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे, और जो लोग मेरे
साय फगड़ते हैं उनकी बातें सुन। 20 क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार
किया जाए? तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उनकी भलाई के लिथे तेरे साम्हने
प्रार्यना करने को खड़ा हुआ जिस से तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए, और
अब उन्होंने मेरे प्राण लेने के लिथे गड़हा खोदा है। 21 इसलिथे उनके
लड़केबालोंको भूख से मरने दे, वे तलवार से कट मरें, और उनकी स्त्रियां निर्वंश
और विधवा हो जाएं। उनके पुरुष मरी से मरें, और उनके जवान लड़ाई में तलवार
से मारे जाएं। 22 जब तू उन पर अचानक शत्रुदल चढ़ाए, तब उनके घरोंसे
चिल्लाहट सुनाई दे ! क्योंकि उन्होंने मेरे लिथे गड़हा खोदा और मेरे फंसाने को
फन्दे लगाए हैं। 23 हे यहोवा, तू उनकी सब युक्तियां जानता है जो वे मेरी मृत्यु के
लिथे करते हैं। इस कारण तू उनके इस अधर्म को न ढांप, न उनके पाप को अपके
साम्हने से मिटा। वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएं, अपके क्रोध में आकर
उन से इसी प्रकार का व्यवहार कर।

यिर्मयाह 19

1 यहोवा ने योंकहा, तू जाकर कुम्हार से मिट्टी की बनाई हुई एक सुराही मोल ले,
और प्रजा के कुछ पुरनियोंमें से और याजकोंमें से भी कुछ प्राचीनोंको साय लेकर,
2 हिन्नोमियोंकी तराई की ओर उस फाटक के निकट चला जा जहां ठीकरे फेंक
दिए जाते हैं; और जो वचन मैं कहूं, उसे वहां प्रचार कर। 3 तू यह कहना, हे यहूदा

के राजाओ और यरूशलेम के सब निवासियो, यहोवा का वचन सुनो। इस्राएल का
परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है, इस स्यान पर मैं ऐसी विपत्ति डालने पर
हूँ कि जो कोई उसका समाचार सुने, उस पर सन्नाटा छा जाएगा। 4 क्योंकि यहां
के लोगोंने मुझे त्याग दिया, और इस स्यान में दूसरे देवताओं के लिथे जिनको न
तो वे जानते हैं, और न उनके पुरखा वा यहूदा के पुराने राजा जानते थे धूप
जलाया है और इसको पराया कर दिया है; और उन्होंने इस स्यान को निदॉषोंके
लोहू से भर दिया, 5 और बाल की पूजा के ऊंचे स्यानोंको बनाकर अपके
लड़केबालोंको बाल के लिथे होम कर दिया, यद्यपि मैं ने कभी भी जिसकी आज्ञा
नहीं दी, न उसकी चर्चा की और न वह कभी मेरे मन में आया। 6 इस कारण
यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्यान फिर तोपेत वा
हिन्नोमियोंकी तराई न कहलाएगा, वरन घात ही की तराई कहलाएगा। 7 और मैं
इस स्यान में यहूदा और यरूशलेम की युक्तियोंको निष्फल कर दूंगा; और उन्हें
उनके प्राणोंके शत्रुओं के हाथ की तलवार चलवाकर गिरा दूंगा। उनकी लोयोंको मैं
आकाश के पझियोंऔर भूमि के जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा। 8 और मैं इस
नगर को ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इसे देखकर डरेंगे; जो कोई इसके पास से
होकर जाए वह इसकी सब विपत्तियोंके कारण चकित होगा और घबराएगा। 9
और घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में उनके प्राण के शत्रु उन्हें डाल
देंगे, मैं उनके बेटे-बेटियोंका मांस उन्हें खिलाऊंगा और एक दूसरे का भी मांस
खिलाऊंगा। 10 तब तू उस सुराही को उन मनुष्योंके साम्हने तोड़ देना जो तेरे संग
जाएंगे, 11 और उन से कहना, सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि जिस प्रकार यह
मिट्टी का बासन जो टूट गया कि फिर बनाया न जा सके, इसी प्रकार मैं इस देश

के लोगोंको और इस नगर को तोड़ डालूंगा। और तोपेत नाम तराई में इतनी कब्रें
होंगी कि क़ब्र के लिथे और स्यान न रहेगा। 12 यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस
स्यान और इसके रहनेवालोंके साय ऐसा ही काम करूंगा, मैं इस नगर को तोपेत
के समान बना दूंगा। 13 और यरूशलेम के घर और यहूदा के राजाओं के भवन,
जिनकी छतोंपर आकाश की सारी सेना के लिथे धूप जलाया गया, और अन्य
देवताओं के लिथे तपावन दिया गया है, वे सब तोपेत के समान अशुद्ध हो जाएंगे।
14 तब यिर्मयाह तोपेत से लौटकर, जहां यहोवा ने उसे भविष्यद्वाणी करने को
भेजा या, यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा हुआ, और सब लोगोंसे कहने लगा;
15 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता हे, देखो, सब गांवोंसमेत
इस नगर पर वह सारी विपत्ति डालना चाहता हूँ जो मैं ने इस पर लाने को कहा है,
क्योंकि उन्होंने हठ करके मेरे वचन को नहीं माना है।

यिर्मयाह 20

1 जब यिर्मयाह यह भविष्यद्वाणी कर रहा या, तब इम्मेर का पुत्र पशहूर ने जो
याजक और यहोवा के भवन का प्रधान रखवाला या, वह सब सुना। 2 सो पशहूर
ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मारा और उसे उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के
भवन के ऊपर बिन्यामीन के फाटक के पास है। 3 बिहान को जब पशहूर ने
यिर्मयाह को काठ में से निकलवाया, तब यिर्मयाह ने उस से कहा, यहोवा ने तेरा
नाम पशहूर नहीं मागोमिस्सीबीब रखा है। 4 क्योंकि यहोवा ने योंकहा है, देख, मैं
तुझे तेरे लिथे और तेरे सब मित्रोंके लिथे भी भय का कारण ठहराऊंगा। वे अपके
शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही वध किए जाएंगे। और मैं सब यहूदियोंको

बाबुल के राजा के वश में कर दूंगा; वह उनको बंधुआ करके बाबुल में ले जाएगा,
और तलवार से मार डालेगा। 5 फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इस में की
कमाई और सब अनमोल वस्तुओं को और यहूदा के राजाओं का जितना रखा
हुआ धन है, उस सब को उनके शत्रुओं के वश में कर दूंगा; और वे उसको लूटकर
अपना कर लेंगे और बाबुल में ले जाएंगे। 6 और, हे पशहूर, तू उन सब समेत जो
तेरे घर में रहते हैं बंधुआई में चला जाएगा; अपके उन मित्रोंसमेत जिन से तू ने
फूठी भविष्यद्वाणी की, तू बाबुल में जाएगा और वहीं मरेगा, और वहीं तुझे और
उन्हें भी मिट्टी दी जाएगी। 7 हे यहोवा, तू ने मुझे धोखा दिया, और मैं ने धोखा
खाया; तू मुझ से बलवन्त है, इस कारण तू मुझ पर प्रबल हो गया। दिन भर मेरी
हंसी होती है; सब कोई मुझ से ठट्ठा करते हैं। 8 क्योंकि जब मैं बातें करता हूँ,
तब मैं जोर से पुकार पुकारकर ललकारता हूँ कि उपद्रव और उत्पात हुआ, हां
उत्पात ! क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिथे निन्दा और ठट्ठा का
कारण होता रहता है। 9 यदि मैं कहूं, मैं उसकी चर्चा न करूंगा न उसके नाम से
बोलूंगा, तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियोंमें धधकती हुई आग
हो, और मैं अपके को रोकते रोकते यक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता। 10 मैं ने
बहुतोंके मुंह से अपना अपवाद सुना है। चारोंओर भय ही भय है ! मेरी जान
पहचान के सब जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते हैं, वे कहते हैं, उसके दोष
बताओ, तब हम उनकी चर्चा फैला देंगे। कदाचित वह धोखा खाए, तो हम उस पर
प्रबल होकर, उस से बदला लेंगे। 11 परन्तु यहोवा मेरे साय है, वह भयंकर वीर के
समान है; इस कारण मेरे सतानेवाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे
बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिथे उन्हें बहुत लज्जित होना पकेगा। उनका

अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा। 12 हे सेनाओं के यहोवा, हे
धमिर्योंके परखनेवाले और हृदय और मन के ज्ञाता, जो बदला तू उन से लेगा,
उसे मैं देखूं, क्योंकि मैं ने अपना मुक़द्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है। 13 यहोवा के
लिथे गाओ; यहोवा की स्तुति करो ! क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को
कुकमिर्योंके हाथ से बचाता है। 14 स्रापित हो वह दिन जिस में मैं उत्पन्न हुआ !
जिस दिन मेरी माता ने मुझ को जन्म दिया वह धन्य न हो ! 15 स्रापित हो वह
जन जिस ने मेरे पिता को यह समाचार देकर उसको बहुत आनन्दित किया कि
तेरे लड़का उत्पन्न हुआ है। 16 उस जन की दशा उन नगरोंकी सी हो जिन्हें
यहोवा ने बिन दया ढा दिया; उसे सवेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की
ललकार सुनाई दिया करे, 17 क्योंकि उस ने मुझे गर्भ ही में न मार डाला कि मेरी
माता का गर्भाशय ही मेरी क़ब्र होती, और मैं उसी में सदा पड़ा रहता। 18 मैं
क्योंउत्पात और शोक भोगने के लिथे जन्मा और कि अपके जीवन में परिश्र्म
और दु:चा देखूं, और उपके दिन नामधराई में व्यतीत करूं?

यिर्मयाह 21

1 यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास उस समय पहुंचा जब
सिदकिय्याह राजा ने उसके पास मल्किय्याह के पुत्र पशहूर और मासेयाह
याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ से यह कहला भेजा कि, 2 हमारे लिथे यहोवा से
पूछ, क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है;
कदाचित यहोवा हम से अपके सब आश्चर्यकमॉ के अनुसार ऐसा व्यवहार करे कि
वह हमारे पास से उठ जाए। 3 तब यिर्मयाह ने उन से कहा, तुम सिदकिय्याह से

योंकहो, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, 4 देखो, युद्ध के जो हथियार
तुम्हारे हाथोंमें है, जिन से तुम बाबुल के राजा और शहरपनाह के बाहर घेरनेवाले
कसदियोंसे लड़ रहे हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर के बीच में इकट्ठा करूंगा; 5
और मैं स्वयं हाथ बढ़ाकर और बलवन्त भुजा से, और क्रोध और जलजलाहट
और बड़े क्रोध में आकर तुम्हारे विरुद्ध लड़ूंगा। 6 और मैं इस नगर के
रहनेवालोंको क्या मनुष्य, क्या पशु सब को मार डालूंगा; वे बड़ी मरी से मरेंगे। 7
और उसके बाद, यहोवा की यह वाणी है, हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, मैं तुझे,
तेरे कर्मचारियोंऔर लोगोंको वरन जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और महंगी
से बचे रहेंगे उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उनके प्राण के शत्रुओं के
वश में कर दूंगा। वह उनको तलवार से मार डालेगा; उन पर न तो वह तरस
खाएगा, न कुछ कोमलता दिखाएगा और न कुछ दया करेगा। 8 और इस प्रजा के
लोगोंसे कह कि यहोवा योंकहता है, देखो, मैं तुम्हारे साम्हने जीवन का मार्ग और
मृत्यु का मार्ग भी बताता हूँ। 9 जो कोई इस नगर में रहे वह तलवार, महंगी और
मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई निकलकर उन कसदियोंके पास जो तुम को घेर रहे
हैं भाग जाए वह जीवित रहेगा, और उसका प्राण बचेगा। 10 क्योंकि यहोवा की
यह वाणी है कि मैं ने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिथे नहीं, वरन
बुराई ही के लिथे किया है; यह बाबुल के राजा के वश में पड़ जाएगा, और वह
इसको फुंकवा देगा। 11 ओर यहूदा के राजकुल के लोगोंसे कह, यहोवा का वचन
सुनो, 12 हे दाऊद के घराने ! यहोवा योंकहता है, भोर को न्याय चुकाओ, और लुटे
हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ, नहीं तो तुम्हारे बुरे कामोंके कारण मेरे
क्रोध की आग भड़केगी, और ऐसी जलती रहेगी कि कोई उसे बुफा न सकेगा। 13

हे तराई में रहनेवाली और समयर देश की चट्टान; तुम जो कहते हो कि हम पर
कौन चढ़ाई कर सकेगा, और हमारे वासस्यान में कौन पकेश कर सकेगा? यहोवा
कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। 14 और यहोवा की वाणी है कि मैं तुम्हें दण्ड
देकर तुम्हारे कामोंका फल तुम्हें भुगताऊंगा। मैं उसके वन में आग लगाऊंगा,
और उसके चारोंओर सब कुछ भस्म हो जाएगा।

यिर्मयाह 22

1 यहोवा ने योंकहा, यहूदा के राजा के भवन में उतरकर यह वचन कह, 2 हे दाऊद
की गद्दी पर विराजमान यहूदा के राजा, तू अपके कर्मचारियोंऔर अपक्की प्रजा
के लोगोंसमेत जो इन फाटकोंसे आया करते हैं, यहोवा का वचन सुन। 3 यहोवा
योंकहता है, न्याय और धर्म के काम करो; और लुटे हुए को अन्धेर करनेवाले के
हाथ से छुड़ाओ। और परदेशी, अनाय और विधवा पर अन्धेर व उपद्रव मत करो,
न इस स्यान में निदॉषोंका लोहू बहाओ। 4 देखो, यदि तुम ऐसा करोगे, तो इस
भवन के फाटकोंसे होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा रयोंऔर घोड़ोंपर
चढ़े हुए अपके अपके कर्मचारियोंऔर प्रजा समेत प्रवेश किया करेंगे। 5 परन्तु,
यदि तुम इन बातोंको न मानो तो, मैं अपक्की ही सौगन्ध खाकर कहता हूँ,
यहोवा की यह वाणी है, कि यह भवन उजाड़ हो जाएगा। 6 क्योंकि यहोवा यहूदा
के राजा के इस भवन के विषय में योंकहता है, तू मुझे गिलाद देश सा और
लबानोन के शिखर सा दिखाई पड़ता है, परन्तु निश्चय मैं तुझे मरुस्यल व एक
निर्जन नगर बनाऊंगा। 7 मैं नाश करनेवालोंको हयियार देकर तेरे विरुद्ध भेजूंगा;
वे तेरे सुन्दर देवदारोंको काटकर आग में फोंक देंगे। 8 और जाति जाति के लोग

जब इस नगर के पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पूछेंगे, यहोवा ने इस बड़े
नगर की ऐसी दशा क्योंकी है? 9 तब लोग कहेंगे, इसका कारण यह हे कि उन्होंने
अपके परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् की और
उनकी उपासना भी की। 10 मरे हुओं के लिथे मत रोओ, उसके लिथे विलाप मत
करो। उसी के लिथे फूट फूटकर रोओ जो परदेश चला गया है, क्योंकि वह लौटकर
अपक्की जन्मभूमि को फिर कभी देखने न पाएगा। 11 क्योंकि यहूदा के राजा
योशिय्याह का पुत्र शल्लूम, जो अपके पिता योशिय्याह के स्यान पर राजा या
और इस स्यान से निकल गया, उसके विषय में यहोवा योंकहता है कि वह फिर
यहां लौटकर न आने पाएगा। 12 वह जिस स्यान में बंधुआ होकर गया है उसी में
मर जाएगा, और इस देश को फिर कभी देखने न पाएगा। 13 उस पर हाथ जो
अपके घर को अधर्म से और अपक्की उपरौठी कोठरियोंको अन्याय से बनवाता
है; जो अपके पड़ोसी से बेगारी में काम कराता है और उसकी मज़दूरी नहीं देता।
14 वह कहता है, मैं अपके लिथे लम्बा-चौड़ा घर और हवादार कोठा बना लूंगा,
और वह खिड़कियां बनाकर उन्हें देवदार की लकड़ी से पाट लेता है, और सिन्दूर
से रंग देता है। 15 तू जो देवदार की लकड़ी का अभिलाषी है, क्या इस रीति से तेरा
राज्य स्यिर रहेगा। देख, तेरा पिता न्याय और धर्म के काम करता या, और वह
खाता पीता और सुख से भी रहता या ! 16 वह इस कारण सुख से रहता या
क्योंकि वह दीन और दरिद्र लोगोंका न्याय चुकाता या। क्या यही मेरा ज्ञान
रखना नहीं है? यहोवा की यह वाणी है। 17 परन्तु तू केवल अपना ही लाभ देखता
है, और निदाॅषोंकी हत्या करने और अन्धेर और उपद्रव करने में अपना मन और
दृष्टि लगाता है। 18 इसलिथे योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के

विषय में यहोवा यह कहता है, कि जैसे लोग इस रीति से कहकर रोते हैं, हाथ मेरे
भाई, हाथ मेरी बहिन ! इस प्रकार कोई हाथ मेरे प्रभु वा हाथ तेरा विभव कहकर
उसके लिथे विलाप न करेगा। 19 वरन उसको गदहे की नाई मिट्टी दी जाएगी,
वह घसीटकर यरूशलेम के फाटकोंके बाहर फेंक दिया जाएगा। 20 लबानोन पर
चढ़कर हाथ हाथ कर, तब बाशान जाकर ऊंचे स्वर से चिल्ला; फिर अबारीम
पहाड़ पर जाकर हाथ-हाथ कर, क्योंकि तेरे सब मित्र नाश हो गए हैं। 21 तेरे सुख
के समय मैं ने तुझ को चिताया या, परन्तु तू ने कहा, मैं तेरी न सुनूंगी।
युवावस्या ही से तेरी चाल ऐसी है कि तू मेरी बात नहीं सुनती। 22 तेरे सब चरवाहे
वायु से उड़ाए जाएंगे, और तेरे मित्र बंधुआई में चले जाएंगे; निश्चय तू उस समय
अपक्की सारी बुराइयोंके कारण लज्जित होगी और तेरा मुंह काला हो जाएगा।
23 हे लबानोन की रहनेवाली, हे देवदार में अपना घोंसला बनानेवालो, जब तुझ
को जच्चा की सी पीड़ाएं उठें तब तू व्याकुल हो जाएगी ! 24 यहोवा की यह वाणी
है, मेरे जीवन की सौगन्ध, चाहे यहोयाकीम का पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह, मेरे
दहिने हाथ की अंगूठी भी होता, तोभी मैं उसे उतार फेंकता। 25 मैं तुझे तेरे प्राण
के खोजियोंके हाथ, और जिन से तू डरता है उनके अर्यात् बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर और कसदियोंके हाथ में कर दूंगा। 26 मैं तुझे तेरी जननी समेत
एक पराए देश में जो तुम्हारी जन्मभूमि नहीं है फेंक दूंगा, और तुम वहीं मर
जाओगे। 27 परन्तु जिस देश में वे लौटने की बड़ी लालसा करते हैं, वहां कभी
लौटने न पाएंगे। 28 क्या, यह पुरुष कोन्याह तुच्छ और टूटा हुआ बर्तन है? क्या
यह निकम्मा बर्तन है? फिर वह वंश समेत अनजाने देश में क्योंनिकालकर फेंक
दिया जाएगा? 29 हे पृय्वी, पृय्वी, हे पृय्वी, यहोवा का वचन सुन ! 30 यहोवा

योंकहता है कि इस पुरुष को निर्वंश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल से न
बीतेगा; और न उसके वंश में से कोई भाग्यवान होकर दाऊद की गद्दी पर
विराजमान वा यहूदियोंपर प्रभुता करनेवाला होगा।

यिर्मयाह 23

1 उन चरवाहोंपर हाथ जो मेरी चराई की भेड़-बकरियोंको तितर-बितर करते ओर
नाश करते हैं, यहोवा यह कहता है। 2 इसलिथे इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
अपक्की प्रजा के चरवाहोंसे योंकहता है, तुम ने मेरी भेड़-बकरियोंकी सुधि नहीं
ली, वरन उनको तितर-बितर किया और बरबस निकाल दिया है, इस कारण
यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामोंका दण्ड दूंगा। 3 तब मेरी
भेड़-बकरियां जो बची हैं, उनको मैं उन सब देशोंमें से जिन में मैं ने उन्हें बरबस
भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूंगा,
और वे फिर फूलें-फलेंगी। 4 मैं उनके लिथे ऐसे चरवाहे नियुक्त करूंगा जो उन्हें
चराएंगे; और तब वे न तो फिर डरेंगी, न विस्मित होंगी और न उन में से कोई खो
जाएंगी, यहोवा की यह वाणी है। 5 यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते
हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि
से राज्य करेगा, और अपके देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। 6 उसके
दिनोंमें यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे : और यहोवा
उसका नाम यहोवा "हमारी धामिर्कता" रखेगा। 7 सो देख, यहोवा की यह वाणी है
कि ऐसे दिन आएंगे जिन में लोग फिर न कहेंगे, कि "यहोवा जो हम
इस्राएलियोंको मिस्र देश से छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध," 8 परन्तु वे

यह कहेंगे, “यहोवा जो इस्राएल के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशोंसे भी
जहां उस ने हमें बरबस निकाल दिया, छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध।”
तब वे अपके ही देश में बसे रहेंगे। 9 भविष्यद्वक्ताओं के विषय मेरा हृदय भीतर ही
भीतर फटा जाता है, मेरी सब हड्डियां यरयराती है; यहोवा ने जो पवित्र वचन कहे
हैं, उन्हें सुनकर, मैं ऐसे मनुष्य के समान हो गया हूँ जो दाखमधु के नशे में चूर हो
गया हो, 10 क्योंकि यह देश व्यभिचारियोंसे भरा है; इस पर ऐसा शाप पड़ा है कि
यह विलाप कर रहा है; वन की चराइयां भी सूख गई। लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं,
परन्तु बुराई ही की ओर; और वीरता तो करते हैं, परन्तु अन्याय ही के साय। 11
क्योंकि भविष्यद्वक्ता और साजक दोनोंभक्तिहीन हो गए हैं; अपके भवन में भी मैं
ने उनकी बुराई पाई है, यहोवा की यही वाणी है। 12 इस कारण उनका मार्ग
अन्धेरा और फिसलाहा होगा जिस में वे ढकेलकर गिरा दिए जाएंगे; क्योंकि,
यहोवा की यह वाणी है कि मैं उनके दण्ड के वर्ष में उन पर विपत्ति डालूंगा ! 13
शोमरोन के भविष्यद्वक्ताओं में मैं ने यह मूर्खता देखी यी कि वे बाल के नाम से
भविष्यद्वाणी करते और मेरी प्रजा इस्राएल को भटका देते थे। 14 परन्तु
यरूशलेम के नबियोंमें मैं ने ऐसे काम देखे हैं, जिन से रोंगटे खड़े हो जाते हैं,
अर्यात् व्यभिचार और पाखण्ड; वे कुकमिर्योंको ऐसा हियाव बन्धाते हैं कि वे
अपक्की अपक्की बुराई से पश्चात्ताप भी नहीं करते; सब निवासी मेरी दृष्टि में
सदोमियोंऔर अमोरियोंके समान हो गए हैं। 15 इस कारण सेनाओं का यहोवा
यरूशलेम के भविष्यद्वक्ताओं के विषय में योंकहता है, देख, मैं उनको कडुवी
वस्तुएं खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा; क्योंकि उनके कारण सारे देश में
भक्तिहीनता फैल गई है। 16 सेनाओं के यहोवा ने तुम से योंकहा है, इन

भविष्यद्वक्ताओं की बातोंकी ओर जो तुम से भविष्सद्वाणी करते हैं कान मत
लगाओ, क्योंकि थे तुम को व्यर्य बातें सिखाते हैं; थे दर्शन का दावा करके यहोवा
के मुख की नहीं, अपके ही मन की बातें कहते हैं। 17 जो लोग मेरा तिरस्कार
करते हैं उन मे थे भविष्यद्वक्ता सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है, तुम्हारा
कल्याण होगा; और जितने लोग अपके हठ ही पर चलते हैं, उन से थे कहते हैं,
तुम पर कोई विपत्ति न पकेगी। 18 भला कौन यहोवा की गुप्त सभा में खड़ा होकर
उसका वचन सुनने और समझने पाया है? 19 वा किस ने ध्यान देकर मेरा वचन
सुना है? देखो, यहोवा की जलजलाहट का प्रचाण्ड बवण्डर और आंधी चलने लगी
है; और उसका फोंका दुष्टोंके सिर पर जोर से लगेगा। 20 जब तक यहोवा अपना
काम और अपक्की युक्तियोंको पूरी न कर चुके, तब तक उसका क्रोध शान्त न
होगा। अन्त के दिनोंमें तुम इस बात को भली भांति समझ सकोगे। 21 थे
भविष्यद्वक्ता बिना मेरे भेजे दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे भविष्यद्वाणी करने
लगते हैं। 22 यदि थे मेरी शिझा में स्यिर रहते, तो मेरी प्रजा के लोगोंको मेरे
वचन सुनाते; और वे अपक्की बुरी चाल और कामोंसे फिर जाते। 23 यहोवा की
यह वाणी है, कया मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूँ? 24 फिर
यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्यानोंमें छिप सकता है, कि मैं उसे न
देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृय्वी दोनोंमुझ से परिपूर्ण नहीं हैं? 25 मैं ने इन
भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी सुनीं हैं जो मेरे नाम से यह कहकर फूठी भविष्यद्वाणी
करते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है, स्वप्न ! 26 जो भविष्यद्वक्ता फूठमूठ
भविष्यद्वाणी करते और अपके मन ही के छल के भविष्यद्वक्ता हैं, यह बात कब
तक उनके मन में समाई रहेगी? 27 जैसे मेरी प्रजा के लोगोंके पुरखा मेरा नाम

भूलकर बाल का नाम लेने लगे थे, वैसे ही अब थे भविष्यद्वक्ता उन्हें अपके अपके
स्वप्न बता बताकर मेरा नाम भुलाना चाहते हैं। 28 यदि किसी भविष्यद्वक्ता ने
स्वप्न देखा हो, तो वह उसे बताए, परन्तु जिस किसी ने मेरा वचन सुना हो तो
वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए। यहोवा की यह वाणी है, कहां भूसा और कहां
गेहूं? 29 यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या
वह ऐसा हयौड़ा नहीं जो पत्यर को फोड़ डाले? 30 यहोवा की यह वाणी है, देखो,
जो भविष्यद्वक्ता मेरे वचन औरोंसे चुरा चुराकर बोलते हैं, मैं उनके विरुद्ध हूँ। 31
फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो भविष्यद्वक्ता "उसकी यह वाणी है", ऐसी
फूठी वाणी कहकर अपक्की अपक्की जीभ डुलाते हैं, मैं उनके भी विरुद्ध हूँ। 32
यहावा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे वा बिना मेरी आज्ञा पाए स्वप्न
देखने का फूठा दावा करके भविष्यद्वाणी करते हैं, और उसका वर्णन करके मेरी
प्रजा को फूठे घमण्ड में आकर भरमाते हैं, उनके भी मैं विरुद्ध हूँ; और उन से मेरी
प्रजा के लोगोंका कुछ लाभ न हेगा। 33 यदि साधारण लोगोंमें से कोई जन वा
कोई भविष्यद्वक्ता वा याजक तुम से पूछे कि यहोवा ने क्या प्रभवशाली वचन कहा
है, तो उस से कहना, क्या प्रभवशाली वचन? यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम को
त्याग दूंगा। 34 और जो भविष्यद्वक्ता वा याजक वा साधारण मनुष्य "यहोवा का
कहा हुआ भारी वचन" ऐसा कहता रहे, उसको घराने समेत मैं दण्ड दूंगा। 35 तुम
लोग एक दूसरे से और अपके अपके भाई से योंपुछना, यहोवा ने क्या उत्तर दिया?
36 वा, यहोवा ने क्या कहा है? "यहोवा का कहा हुआ भारी वचन", इस प्रकार तुम
भविष्य में न कहना नहीं तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा;
क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीवित परमेश्वर है, तुम लोगोंने

उसके वचन बिगाड़ दिए हैं। 37 तू भविष्यद्वक्ता से यों पूछ कि यहोवा ने तुझे क्या
उत्तर दिया? 38 वा, यहोवा ने क्या कहा है? यदि तुम "यहोवा का कहा हुआ
प्रभावशाली वचन": इसी प्रकार कहोगे, तो यहोवा का यह वचन सुनो, मैं ने तो
तुम्हारे पास कहला भेजा है, भविष्य में ऐसा न कहना कि "यहोवा का कहा हुआ
प्रभावशाली वचन।" परन्तु तुम यह कहते ही रहते हो, कि "यहोवा का कहा हुआ
प्रभावशाली वचन।" 39 इस कारण देखो, मैं तुम को बिलकुल भूल जाऊंगा और
तुम को और इस नगर को जिसे मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को, और तुम को भी दिया
है, 40 त्यागकर अपके साम्हने से दूर कर दूंगा। और मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हारी
नामधराई और अनादर सदा बना रहेगा; और कभी भूला न जाएगा।

यिर्मयाह 24

1 जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर, यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा
यकोन्याह को, और यहूदा के हाकिमोंऔर लोहारोंऔर और कारीगरोंको बंधुआ
करके यरूशलेम से बाबुल को ले गया, तो उसके बाद यहोवा ने मुझ को अपके
मन्दिर के साम्हने रखे हुए अंजीरोंके दो टोकरे दिखाए। 2 एक टोकरे में तो पहिले
से पके अच्छे अच्छे अंजीर थे, और दूसरे टोकरे में बहुत निकम्मे अंजीर थे, वरन
वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के योग्य भी न थे। 3 फिर यहोवा ने मुझ से पूछा, हे
यिर्मयाह, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, अंजीर; जो अंजीर अच्छे हैं सो तो
बहुत ही अच्छे हैं, परन्तु जो निकम्मे हैं, सो बहुत ही निकम्मे हैं; वरन ऐसे
निमम्मे हैं कि खाने के योग्य भी नहीं हैं। 4 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 5 कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जैसे अच्छे अंजीरोंको, वैसे

ही मैं यहूदी बंधुओं को जिन्हें मैं ने इस स्यान से कसदियोंके देश में भेज दिया है,
देखकर प्रसन्न हूंगा। 6 मैं उन पर कृपादृष्टि रखूंगा और उनको इस देश में लौटा
ले आऊंगा; और उन्हें नाश न करूंगा, परन्तु बनाऊंगा; उन्हें उखाड़ न डालूंगा,
परन्तु लगाए रखूंगा। 7 मैं उनका ऐसा मन कर दूंगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं
यहोवा हूँ; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, क्योंकि वे
मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे। 8 परन्तु जेसे निकम्मे अंजीर, निकम्मे होने के
कारण खाए नहीं जाते, उसी प्रकार से मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके
हाकिमोंऔर बचे हुए यरूशलेमियोंको, जो इस देश में वा मिस्र में रह गए हैं, छोड़
दूंगा। 9 इस कारण वे पृय्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरते हुए दु:ख भोगते
रहेंगे; और जितने स्यानोंमें मैं उन्हें बरबस निकाल दूंगा, उन सभोंमें वे नामधराई
और दृष्टांत और स्राप का विषय होंगे। 10 और मैं उन में तलवार चलाऊंगा, और
महंगी और मरी फैलाऊंगा, और अन्त में इस देश में से जिसे मैं ने उनके पुरखाओं
को और उनको दिया, वे मिट जाएंगे।

यिर्मयाह 25

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में जो बाबुल
के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य का पहिला वर्ष या, 2 यहोवा का जो वचन
यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा, और जिसे यिर्मयाह नबी ने सब यहूदियोंऔर
यरूशलेम के सब निवासिक्कों कहा, वह यह है: 3 आमोन के पुत्र यहूदा के राजा
योशिय्याह के राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन तक अर्यात् तेईस वर्ष
से यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचता आया हे; और मैं उसे बड़े यत्न के साय तुम से

कहता आया हूँ; परन्तु तुम ने उसे नहीं सुना। 4 और यद्यपि यहोवा तुम्हारे पास
अपके सारे दासोंअयवा भविष्यद्वक्ताओं को भी यह कहने के लिथे बड़े यत्न से
भेजता आया है 5 कि अपक्की अपक्की बुरी चाल और अपके अपके बुरे कामोंसे
फिरो : तब जो देश यहोवा ने प्राचीनकाल में तुम्हारे पितरोंको और तुम को भी
सदा के लिथे दिया है उस पर बसे रहने पाओगे; परन्तु तुम ने न तो सुना और न
कान लगाया है। 6 और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उनकी उपासना और उनको
दण्डवत् मत करो, और न अपक्की बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ;
तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूंगा। 7 यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नहीं मानी,
वरन अपक्की बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आए हो जिस से
तुम्हारी हानि ही हो सकती है, यहोवा की यही वाणी है। 8 इसलिथे सेनाओं का
यहोवा योंकहता है कि तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, 9 जसलिथे सुनो, मैं उत्तर
में रहनेवाले सब कुलोंको बुलाऊंगा, और अपके दास बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा; और उन सभोंको इस देश और इसके
निवासियोंके विरुद्ध और इसके आस पास की सब जातियोंके विरुद्ध भी ले
आऊंगा; और इन सब देशोंका मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग
इन्हें देखकर ताली बजाएंगे; वरन थे सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है।
10 और मैं ऐसा करूंगा कि इन में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई
पकेगा, और न दुल्हे वा दुल्हिन का, और न चक्की का भी शब्द सुनाई पकेगा
और न इन में दिया जलेगा। 11 सारी जातियोंका यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा,
और थे सब जातियां सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के आधीन रहेंगी। 12 जब
सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति के लोगोंऔर

कसदियोंके देश के सब निवासिक्कों अधर्म का दण्ड दूंगा, यहोवा की यह वाणी है;
और उस देश को सदा के लिथे उजाड़ दूंगा। 13 मैं उस देश में अपके वे सब वचन
पूरे करूंगा जो मैं ने उसके विषय में कहे हैं, और जितने वचन यिर्मयाह ने सारी
जातियोंके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके पुस्तक में लिखे हैं। 14 क्योंकि बहुत सी
जातियोंके लोग और बड़े बड़े राजा भी उन से अपक्की सेवा कराएंगे; और मैं
उनको उनकी करनी का फल भुगताऊंगा। 15 इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझ
से योंकहा, मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब
जातियोंको पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। 16 वे उसे पीकर उस तलवार
के कारण जो मैं उनके बीच में चलाऊंगा लड़खड़ाएंगे और बावले हो जाएंगे। 17
सो मैं ने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियोंको जिनके पास
यहोवा ने मुझे भेजा, पिला दिया। 18 अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के नगरोंके
निवासिक्कों, और उनके राजाओं और हाकिमोंको पिलाया, ताकि उनका देश
उजाड़ हो जाए और लोग ताली बजाएं, और उसकी उपमा देकर शाप दिया करें;
जैसा आजकल होता है। 19 और मिस्र के राजा फिरौन और उसके कर्मचारियों,
हाकिमों, और सारी प्रजा को; 20 और सब दोगले मनुष्योंकी जातियोंको और उस
देश के सब राजाओं को; और पलिश्तियोंके देश के सब राजाओं को और
अश्कलोन अज्जा और एक्रोन के और अशदोद के बचे हुए लोगोंको; 21 और
एदोनियों, मोआबियोंऔर अम्मोनियोंको और सारे राजाओं को; 22 और सीदोन
के सब राजाओं को, और समुद्र पार के देशोंके राजाओं को; 23 फिर ददानियों,
तेमाइयोंऔर बूजियोंको और जितने अपके गाल के बालोंको मुंडा डालते हैं, उन
सभोंको भी; 24 और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेवाले दोगले

मनुष्योंके सब राजाओं को; 25 और जिम्री, एलाम और मादै के सब राजाओं को;
26 और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया,
निदान धरती भर में रहनेवाले जगत के राज्योंके सब लोगोंको मैं ने पिलाया।
और इन सब के पीछे शेषक के राजा को भी पीना पकेगा। 27 तब तू उन से यह
कहना, सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, योंकहता है, पीओ, और
मतवाले हो और छाँट करो, गिर पड़ो और फिर कभी न उठो, क्योंकि यह उस
तलवार के कारण से होगा जो मैं तुम्हारे बीच में चलाऊंगा। 28 और यदि वे तेरे
हाथ से यह कटोरा लेकर पीने से इनकार करें तो उन से कहना, सेनाओं का यहोवा
योंकहता है कि तुम को निश्चय पीना पकेगा। 29 देखो, जो नगर मेरा कहलाता है,
मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा, फिर क्या तुम लोग निदॉष ठहरके
बचोगे? तुम निदॉष ठहरके न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहनेवालोंपर
तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी हे। 30 इतनी बातें
भविष्यद्वाणी की रीति पर उन से कहकर यह भी कहना, यहोवा ऊपर से गरजेगा,
और अपके उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपक्की चराई के
स्यान के विरुद्ध जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियोंके विरद्ध भी दाख
लताड़नेवालोंकी नाई ललकारेगा। 31 पृथ्वी की छोर लोंभी कोलाहल होगा,
क्योंकि सब जातियोंसे यहोवा का मुक़द्दमा है; वह सब मतुष्योंसे वादविवाद
करेगा, और दुष्टोंको तलवार के वश में कर देगा। 32 सेनाओं का यहोवा योंकहता
है, देखो, विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति में फैलेगी, और बड़ी आंधी पृथ्वी की
छोर से उठेगी ! 33 उस समय यहोवा के मारे हुओं की लोथें पृथ्वी की एक छोर से
दूसरी छोर तक पक्की रहेंगी। उनके लिथे कोई रोने-पीटनेवाला न रहेगा, और

उनकी लोथें न तो बटोरी जाएंगी और न कबरोंमें रखी जाएंगी; वे भूमि के ऊपर
खाद की नाई पक्की रहेंगी। 34 हे चरवाहो, हाथ हाथ करो और चिल्लाओ, हे
बलवन्त मेढ़ो और बकरो, राख में लोटो, क्योंकि तुम्हारे वध होने के दिन आ
पहुंचे हैं, और मैं मनभाऊ बरतन की नाई तुम्हारा सत्यानाश करूंगा। 35 उस
समय न तो चरवाहोंके भागने के लिथे कोई स्यान रहेगा, और न बलवन्त मेढ़े
और बकरे भागने पाएंगे। 36 चरवाहोंकी चिल्लाहट और बलवन्त मेढ़ोंऔर
बकरोंके मिमियाने का शब्द सुनाई पड़ता है ! क्योंकि यहोवा उनकी चराई को
नाश करेगा, 37 और यहोवा के क्रोध भड़कने के कारण शान्ति के स्यान नष्ट हो
जाएंगे, जिन वासस्यानोंमें अब शान्ति है, वे नष्ट हो जाएंगे। 38 युवा सिंह की नाई
वह अपके ठौ ैर को छोड़कर निकलता है, क्योंकि अंधेर करनेहारी तलवार और
उसके भड़के हुए कोप के कारण उनका देश उजाड़ हो गया है।

यिर्मयाह 26

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राजय के आरम्भ में, यहोवा
की ओर से यह वचन पहुंचा, यहोवा योंकहता है, 2 यहोवा के भवन के आंगन में
खड़ा होकर, यहूदा के सब नगरोंके लोगोंके साम्हने जो यहोवा के भवन में
दण्डवत् करने को आएं, थे वचन जिनके विषय उन से कहने की आज्ञा मैं तुझे
देता हूँ कह दे; उन में से कोई वचन मत रख छोड़। 3 सम्भव है कि वे सुनकर
अपक्की अपक्की बुरी चाल से फिरें और मैं उनकी हानि करने से पछताऊं जो
उनके बुरे कामोंके कारण मैं ने ठाना या। 4 इसलिथे तू उन से कह, यहोवा
योंकहता है, यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्या के अनुसार जो मैं ने तुम को

सुनवा दी है न चलो, 5 और न मेरे दास भविष्यद्वक्ताओं के वचनोंपर कान
लगाओगे, (जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके भेजता आया हूँ, परन्तु तुम ने
उनकी नहीं सुनी), 6 तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ दूंगा, और इस
नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूंगा कि पृय्वी की सारी जातियोंके लोग उसकी
उपमा दे देकर शाप दिया करेंगे। 7 जब यिर्मयाह थे वचन यहोवा के भवन में कह
रहा या, तब याजक और भविष्यद्वक्ता और सब साधारण लोग सुन रहे थे। 8 और
जब यिर्मयाह सब कुछ जिसे सारी प्रजा से कहने की आज्ञा यहोवा ने दी यी कह
चुका, तब याजकोंऔर भविष्यद्वक्ताओं और सब साधारण लोगोंने यह कहकर
उसको पकड़ लिया, निश्चय तुझे प्राणदण्ड होगा। 9 तू ने क्योंयहोवा के नाम से
यह भविष्यद्वाणी की कि यह भवन शीलो के समान उजाड़ हो जाएगा, और यह
नगर ऐसा उजड़ेगा कि उस में कोई न रह जाएगा? इतना कहकर सब साधारण
लोगोंने यहोवा के भवन में यिर्मयाह के विरुद्ध भीड़ लगाई। 10 यहूदा के हाकिम थे
बातें सुनकर, राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ आए और उसके नथे
फाटक में बैठ गए। 11 तब याजकोंऔर भविष्यद्वक्ताओं ने हाकिमोंऔर सब
लोगोंसे कहा, यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि इस ने इस नगर के विरुद्ध
ऐसी भविष्यद्वाणी की है जिसे तुम भी अपके कानोंसे सुन चुके हो। 12 तब
यिर्मयाह ने सब हाकिमोंऔर सब लोगोंसे कहा, जो वचन तुम ने सुने हैं, उसे
यहोवा ही ने मुझे इस भवन और इस नगर के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की रीति पर
कहने के लिथे भेज दिया है। 13 इसलिथे अब अपना चालचलन और अपके काम
सुधारो, और अपके परमेश्वर यहोवा की बात मानो; तब यहोवा उस विपत्ति के
विषय में जिसकी चर्चा उस ने तुम से की है, पछताएगा। 14 देखो, मैं तुम्हारे वश

में हूँ; जो कुछ तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक हो वही मेरे साय करो। 15 पर यह
निश्चय जानो, कि, यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो अपके को और इस नगर को
और इसके निवासिक्कों निदॉष के हत्यारे बनाओगे; क्योंकि सचमुच यहोवा ने
मुझे तुम्हारे पास थे सब वचन सुनाने के लिथे भेजा हे। 16 तब हाकिमोंऔर सब
लोगोंने याजकोंऔर नबियोंसे कहा, यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं है क्योंकि
उस ने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हम से कहा है। 17 और देश के
पुरनियोंमें से कितनोंने उठकर प्रजा की सारी मण्डली से कहा, 18 यहूदा के राजा
हिजकिय्याह के दिनोंमें मोरसेती मीकायाह भविष्यद्वाणी कहता या, उस ने यहूदा
के सारे लोगोंसे कहा, सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि सिय्योन जोतकर खेत
बनाया जाएगा और यरूशलेम खएडहर हो जाएगा, और भवनवाला पर्वत जंगली
स्यान हो जाएगा। 19 क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने वा किसी यहूदी ने
उसको कहीं मरवा डाला? क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना ओर उस से
बिनती न की? और तब यहोवा ने जो विपत्ति उन पर डालने के लिथे कहा या,
उसके विषय क्या वह न पछताया? ऐसा करके हम अपके प्राणोंकी बड़ी हानि
करेंगे। 20 फिर शमायाह का पुत्र ऊरिय्याह नाम किर्यत्यारीम का एक पुरुष जो
यहोवा के नाम से भविष्यद्वाणी कहता या उस ने भी इस नगर और इस देश के
विरुद्ध ठीक ऐसी ही भविष्यद्वाणी की जैसी यिर्मयाह ने अभी की है। 21 और जब
यहोयाकीम राजा और उसके सब वीरोंऔर सब हाकिमोंने उसके वचन सुने, तब
राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न किया; और ऊरिय्याह यह सुनकर डर के मारे
मिस्र को भाग गया। 22 तब यहोयाकीम राजा ने मिस्र को लोग भेजे अर्यात्
अकबोर के पुत्र एलनातान को कितने और पुरुषोंके साय मिस्र को भेजा। 23 और

वे ऊरिय्याह को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले आए; और उस
ने उसे तलवार से मरवाकर उसकी लोय को साधारण लोगोंकी कबरोंमें फिंकवा
दिया। 24 परन्तु शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह की सहाथता करने लगा और
वह लोगोंके वश में वध होने के लिथे नहीं दिया गया।

यिर्मयाह 27

1 योशिय्याह के पुत्र, यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के आरम्भ में यहोवा
की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। 2 यहोवा ने मुझ से यह कहा,
बन्धन और जूए बनवाकर अपक्की गर्दन पर रख। 3 तब उन्हें एदोम और
मोआब और अम्मोन और सोर और सीदोन के राजाओं के पास, उन दूतोंके हाथ
भेजना जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास यरूशलेम में आए हैं। 4 और
उनको उनके स्वामियोंके लिथे यह कहकर आज्ञा देना, कि, इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, 5 अपके अपके स्वामी से योंकहो कि पृथ्वी को
और पृथ्वी पर के मनुष्योंऔर पशुओं को अपक्की बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा
के द्वारा मैं ने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूँ उसी को मैं उन्हें दिया
करता हूँ। 6 अब मैं ने थे सब देश, अपके दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को
आप ही दे दिए हैं; और मैदान के जीवजन्तुओं को भी मैं ने उसे दिया है कि वे
उसके आधीन रहें। 7 थे सब जातियां उसके और उसके बाद उसके बेटे और पोते
के आधीन उस समय तक रहेंगी जब तक उसके भी देश का दिन न आए; तब
बहुत सी जातियां और बड़े बड़े राजा उस से भी अपक्की सेवा करवाएंगे। 8 सो जो
जाति वा राज्य बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के आधीन न हो और उसका जूआ

अपक्की गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, महंगी और मरी का दण्ड
उस समय तक देता रहूंगा जब तक उसको उसके हाथ के द्वारा मिटा न दूं यहोवा
की यही वाणी है। 9 इसलिथे तुम लोग अपके भविष्यद्वक्ताओं और भावी
कहनेवालोंऔर टोनहोंऔर तांत्रिकोंकी ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से कहते हैं
कि तुम को बाबुल के राजा के आधीन नहीं होना पकेगा। 10 क्योंकि वे तुम से
फूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, जिस से तुम अपके अपके देश से दूर हो जाओ और मैं
आप तुम को दूर करके नष्ट कर दूं। 11 परन्तु जो जाति बाबुल के राजा का जूआ
अपक्की गर्दन पर लेकर उसके आधीन रहेगी उसको मैं उसी के देश में रहने दूंगा;
और वह उस में खेती करती हुई बसी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है। 12 और
यहूदा के राजा सिदकिय्याह से भी मैं ने थे बातें कहीं, अपक्की प्रजा समेत तू
बाबुल के राजा का जूआ अपक्की गर्दन पर ले, और उसके और उसकी प्रजा के
आधीन रहकर जीवित रह। 13 जब यहोवा ने उस जाति के विषय जो बाबुल के
राजा के आधीन न हो, यह कहा है कि वह तलवार, महंगी और मरी से नाश होगी;
तो फिर तू क्योंअपक्की प्रजा समेत मरना चाहता है? 14 जो भविष्यद्वक्ता तुझ से
कहते हैं कि तुझ को बाबुल के राजा के आधीन न होना पकेगा, उनकी मत सुन;
क्योंकि वे तुझ से फूठी भविष्यद्वाणी करते हैं। 15 यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने
उन्हें नहीं भेजा, वे मेरे नाम से फूठी भ्किष्यद्वाणी करते हैं; और इसका फल यही
होगा कि मैं तुझ को देश से निकाल दूंगा, और तू उन नबियोंसमेत जो तुझ से
भविष्यद्वाणी करते हैं नष्ट हो जाएगा। 16 तब याजकोंऔर साधारण लोगोंसे भी मैं
ने कहा, यहोवा योंकहता है, तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से यह भविष्यद्वाणी
करते हैं कि यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबुल से लौटा दिए जाएंगे,

उनके वचनोंकी ओर कान मत धरो, क्योंकि वे तुम से फूठी भविष्यद्वाणी करते
हैं। 17 उनकी मत सुनो, बाबुल के राजा के आधीन होकर और उसकी सेवा करके
जीवित रहो। 18 यह नगर क्योंउजाड़ हो जाए? यदि वे भविष्यद्वक्ता भी हों, और
यदि यहोवा का वचन उनके पास हो, तो वे सेनाओं के यहोवा से बिनती करें कि
जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह
गए हैं, वे बाबुल न जाने पाएं। 19 क्योंकि सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि जो
खम्भे और पीतल की नान्द, गंगाल और कुसिर्यां और और पात्र इस नगर में रह
गए हैं, 20 जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब वह
यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को और यहूदा और यरूशलेम के
सब कुलीनोंको बंधुआ करके यरूशलेम से बाबुल को ले गया या, 21 जो पात्र
यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं,
उनके विषय में इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि वे भी
बाबुल में पहुंचाए जाएंगे; 22 और जब तक मैं उनकी सुधि न लूं तब तक वहीं
रहेंगे, और तब मैं उन्हें लाकर इस स्यान में फिर रख दूंगा, यहोवा की यही वाणी
है।

यिर्मयाह 28

1 फिर उसी वर्ष, अर्यात् यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष के
पांचवें महीने में, अज्जूर का पुत्र हनन्याह जो गिबोन का एक भविष्यद्वक्ता या,
उस ने मुझ से यहोवा के भवन में, याजकोंऔर सब लोगोंके साम्हने कहा, 2
इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि मैं ने बाबुल के राजा के

जूए को तोड़ डाला है। 3 यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबुल का राजा
नबूकदनेस्सर इस स्यान से उठाकर बाबुल ले गया, उन्हें मैं दो वर्ष के भीतर फिर
इसी स्यान में ले आऊंगा। 4 और मैं यहूदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह
और सब यहूदी बंधुए जो बाबुल को गए हैं, उनको भी इस स्यान में लौटा ले
आऊंगा; क्योंकि मैं ने बाबुल के राजा के जूए को तोड़ दिया है, यहोवा की यही
वाणी है। 5 तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से, याजकोंऔर उन सब लोगोंके
साम्हने जो यहोवा के भवन में खड़े हुए थे कहा, 6 आमीन ! यहोवा ऐसा ही करे;
जो बातें तू ने भविष्यद्वाणी करके कही हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब
बंधुए बाबुल से इस स्यान में फिर आएंगे, अन्हें यहोवा पूरा करे। 7 तौभी मेरा यह
वचन सुन, जो मैं तुझे और सब लोगोंको कह सुनाता हूँ। 8 जो भविष्यद्वक्ता
प्राचीनकाल से मेरे और तेरे पहिले होते आए थे, उन्होंने तो बहुत से देशोंऔर बड़े
राज्योंके विरुद्ध युद्ध और विपत्ति और मरी के विषय भविष्यद्वाणी की यी। 9
परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन
पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विष्य यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच
यहोवा का भेजा हुआ है। 10 तब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने उस जूए को जो
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर या, उतारकर तोड़ दिया। 11 और हनन्याह ने
सब लोगोंके साम्हने कहा, यहोवा योंकहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो वर्ष के
भीतर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के जूए को सब जातियोंकी गर्दन पर से
उतारकर तोड़ दूंगा। तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता चला गया। 12 जब हनन्याह
भविष्यद्वक्ता ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर से जूआ उतारकर तोड़ दिया,
उसके बाद यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: 13 जाकर हनन्याह से

यह कह, यहोवा योंकहता है कि तू ने काठ का जूआ तो तोड़ दिया, परन्तु ऐसा
करके तू ने उसकी सन्ती लोहे का जूआ बना लिया है। 14 क्योंकि इस्राएल का
परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि मैं इन सब जातियोंकी गर्दन पर लोहे
का जूआ रखता हूँ और वे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के आधीन रहेंगे, और
इनको उसके अधीन होना पकेगा, क्योंकि मैदान के जीवजन्तु भी मैं उसके वश
में कर देता हूँ। 15 और यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह भी कहा, हे
हनन्याह, देख यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, तू ने इन लोगोंको फूठी आशा दिलाई है।
16 इसलिथे यहोवा तुझ से योंकहता है, कि देख, मैं तुझ को पृथ्वी के ऊपर से उठा
दूंगा, इसी वर्ष में तू मरेगा; क्योंकि तू ने यहोवा की ओर से फिरने की बातें कही
हैं। 17 इस वचन के अनुसार हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने में मर गया।

यिर्मयाह 29

1 उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस आशय की पत्री, उन पुरनियोंऔर भविष्यद्वक्ताओं
और साधारण लोगोंके पास भेजीं जो बंधुओं में से बचे थे, जिनको नबूकदनेस्सर
यरूशलेम से बाबुल को ले गया या। 2 यह पत्री उस समय भेजी गई, जब
यकोन्याह राजा और राजमाता, खोजे, यहूदा और यरूशलेम के हाकिम, लोहार
और अन्य कारीगर यरूशलेम से चले गए थे। 3 यह पत्री शापान के पुत्र एलासा
और हिल्किय्याह के पुत्र गमर्याह के हाथ भेजी गई, जिन्हें यहूदा के राजा
सिदकिय्याह ने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास बाबुल को भेजा। 4 उस में
लिखा या कि जितने लोगोंको मैं ने यरूशलेम से बंधुआ करके बाबुल में पहुंचवा
दिया है, उन सभोंसे इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता हे: 5 घर

बनाकर उन में बस जाओ; बारियां लगाकर उनके फल खाओ। 6 ब्याह करके
बेटेबेटियां जन्माओ; और अपके बेटोंके लिथे स्त्रियां ब्याह लो और अपक्की
बेटियां पुरुषोंको ब्याह दो, कि वे भी बेटे-बेटियां जन्माएं; और वहां घटो नहीं वरन
बढ़ते जाओ। 7 परन्तु जिस नगर में मैं ने तुम को बंधुआ कराके भेज दिया है,
उसके कुशल का यत्न किया करो, और उसके हित के लिथे यहोवा से प्रार्यना किया
करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साय रहोगे। 8 क्योंकि इस्राएल
का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा तुम से योंकहता है कि तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता
और भावी कहनेवाले तुम्हारे बीच में हैं, वे तुम को बहकाने न पाएं, और जो
स्वप्न वे नुम्हारे निमित्त देखते हैं उनकी ओर कान मत धरो, 9 क्योंकि वे मेरे
नाम से तुम को फूठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं; मैं ने उन्हें नहीं भेजा, मुझ यहोवा
की यह वाणी है। 10 यहोवा योंकहता है कि वाबुल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं
तुम्हारी सुधि लूंगा, और अपना यह मनभवना वचन कि मैं तुम्हें इस स्यान में
लौटा ले आऊंगा, पूरा करूंगा। 11 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो
कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानी की नहीं, वरन
कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा। 12 तब उस समय तुम
मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्यना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। 13
तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपके सम्पूर्ण मन से मेरे पास
आओगे। 14 मैं तुम्हें मिलूंगा, यहोवा की यह वाणी है, और बंधुआई से लौटा ले
आऊंगा; और तुम को उन सब जातियोंऔर स्यानोंमें से जिन में मैं ने तुम को
बरबस निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्यान में लौटा ले आऊंगा
जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआ करवाके निकाल दिया या, यहोवा की यही वाणी है। 15

तुम कहते तो हो कि यहोवा ने हमारे लिथे बाबुल में भविष्यद्वक्ता प्रगट किए हैं।
16 परन्तु जो राजा दाऊद की बद्दी पर विराजमान है, और जो प्रजा इस नगर में
रहती है, अर्यात् तुम्हारे जो भाई तुम्हारे संग बंधुआई में नहीं गए, उन सभोंके
विषय सेनाओं का यहोवा यह कहता है, 17 सुनो, मैं उनके बीच तलवार चलाऊंगा
और महंगी करूंगा, और मरी फैलाऊंगा; और उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरोंके समान
करूंगा जो निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते। 18 मैं तलवार, महंगी और
मरी लिए हुए उनका पीछा करूंगा, और ऐसा करूंगा कि वे पृय्वी के राज्य राज्य
में मारे मारे फिरेंगे, और उन सब जातियोंमें जिन के बीच मैं उन्हें बरबस कर
दूंगा, उनकी ऐसी दशा करूंगा कि लोग उन्हें देशकर चकित होंगे और ताली
बजाएंगे और उनका अपमान करेंगे, और उनकी उपमा देकर शाप दिया करेंगे।
19 क्योंकि जो वचन मैं ने अपके दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनके पास बड़ा
यत्न करके कहला भेजे हैं, उनको उन्होंने नहीं सुना, यहोवा की यही वाणी है। 20
इसलिथे हे सारे बंधुओ, जिन्हें मैं ने यरूशलेम से बाबुल को भेजा है, तुम उसका
यह वचन सुनो: 21 कोलायाह का पुत्र अहाब और मासेयाह का पुत्र सिदकिय्याह
जो मेरे नाम से तुम को फूठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं, उनके विषय इस्राएल का
परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि सुनो, मैं उनको बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दूंगा, और वह उनको तुम्हारे साम्हने मार डालेगा।
22 और सब यहूदी बंधुए जो बाबुल में रहते हैं, उनकी उपमा देकर यह शाप दिया
करेंगे: यहोवा तुझे सिदकिय्याह और अहाब के समान करे, जिन्हें बाबुल के राजा
ने आग में भून डाला, 23 क्योंकि उन्होंने इस्राएलियोंमें मूढता के काम किए,
अर्यात् अपके पड़ोसियोंकी स्त्रियोंके साय व्यभिचार किया, और बिना मेरी आज्ञा

पाए मेरे नाम से फूठे वचन कहे। इसका जाननेवाला और गवाह मैं आप ही हूं,
यहोवा की यही वाणी है। 24 और नेहेलामी शमायाह से तू यह कह, कि, इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा ने योंकहा है, 25 इसलिथे कि तू ने यरूशलेम के सब
रहनेवालोंऔर सब याजकोंको और यासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को अपके ही
नाम की इस आशय की पत्री भेजी, 26 कि, यहावा ने यहोयादा याजक के स्यान
पर तुझे याजक ठहरा दिया ताकि तू यहोवा के भवन में रखवाल होकर जितने
वहां पागलपन करते और भविष्यद्वक्ता बन बैठे हैं उन्हें काठ में ठोंके और उनके
गले में लोहे के पट्टे डाले। 27 सो यिर्मयाह अनातोती जो तुम्हारा भविष्यद्वक्ता
बन बैठा है, उसको तू ने क्योंनहीं घुड़का? 28 उस ने तो हम लोगोंके पास बाबुल में
यह कहला भेजा है कि बंधुआई तो बहुत काल तक रहेगी, सो घर बनाकर उन में
रहो, और बारियां लगाकर उनके फल खाओ। 29 यह पत्री सपन्याह याजक ने
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पढ़ सुनाई। 30 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के
पास पहुंचा कि सब बंधुओं के पास यह कहला भेज, 31 यहोवा नेहेलामी शमायाह
के विषय योंकहता है कि शमायाह ने मेरे बिना भेजे तुम से जो भविष्यद्वाणी की
और तुम को फूठ पर भरोसा दिलाया है, 32 इसलिथे यहोवा योंकहता है, कि सुनो,
मैं उस नेहेलामी शमायाह और उसके वंश को दण्ड दिया चाहता हूँ; उसके घर में
से कोई इन प्रजाओं में न रह जाएगा। (33) और जो भलाई मैं अपक्की प्रजा की
करनेवाला हूँ, उसको वह देखने न पाएगा, क्योंकि उस ने यहोवा से फिर जाने की
बातें कही हैं, यहोवा की यही वाणी है।

यिर्मयाह 30

1 यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा वह यह है: 2 इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा तुझ से योंकहता है, जो वचन मैं ने तुझ से कहे हैं उन सभोंको पुस्तक में
लिख ले। 3 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपक्की
इस्राएली और यहूदी प्रजा को बंधुआई से लौटा लाऊंगा; और जो देश मैं ने उनके
पितरोंको दिया या उस में उन्हें फेर ले आऊंगा, और वे फिर उसके अधिक्कारनी
होंगे, यहोवा का यही वचन हे। 4 जो वचन यहोवा ने इस्राएलियोंऔर यहूदियोंके
विषय कहे थे, वे थे हैं : 5 यहोवा योंकहता है: थरथरा देनेवाला शब्द सुनाई दे रहा
है, शान्ति नहीं, भय ही का है। 6 पूछो तो भला, और देखो, क्या पुरुष को भी कहीं
जनने की पीड़ा उठती है? फिर क्या कारण है कि सब पुरुष ज़च्चा की नाई
अपक्की अपक्की कमर अपके हाथोंसे दबाए हुए देख पड़ते हैं? क्योंसब के मुख
फीके रंग के हो गए हैं? 7 हाथ, हाथ, वह दिन क्या ही भारी होगा ! उसके समान
और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी
छुड़ाया जाएगा। 8 और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका
रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूंगा, और तुम्हारे बन्धनोंको
टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा; और परदेशी फिर उन से अपक्की सेवा न कराने पाएंगे।
9 परन्तु वे अपके परमेश्वर यहोवा और अपके राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसको
मैं उन पर राज्य करने के लिथे ठहराऊंगा। 10 इसलिथे हे मेरे दास याकूब, तेरे
लिथे यहोवा की यह वाणी है, मत डर; हे इस्राएल, विस्मित न हो; क्योंकि मैं दूर
देश से तुझे और तेरे वंश को बंधुआई के देश से छुड़ा ले आऊंगा। तब याकूब
लौटकर, चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसको डराने न पाएगा। 11 क्योंकि
यहोवा की यह वाणी है, तुम्हारा उद्धार करने के लिथे मैं तुम्हारे संग हूँ; इसलिथे

मैं उन सब जातियोंका अन्त कर डालूंगा, जिन में मैं ने उन्हें तितर-बितर किया
है, परन्तु तुम्हारा अन्त न करूंगा। तुम्हारी ताड़ना मैं विचार करके करूंगा, और
तुम्हें किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा। 12 यहोवा योंकहता है: तेरे दु:ख की
कोई औषध नहीं, और तेरी चोट गहिरी और दुखप्रद है। 13 तेरा मुक़द्दमा लड़ने के
लिथे कोई नहीं, तेरा घाव बान्धने के लिथे न पट्टी, न मलहम है। 14 तेरे सब
मित्र तुझे भूल गए; वे तुम्हारी सुधि नहीं लेते; क्योंकि तेरे बड़े अधर्म और भारी
पापोंके कारण, मैं ने शत्रु बनकर तुझे मारा है; मैं ने क्रूर बनकर ताड़न दी है। 15 तू
अपके घाव के मारे क्योंचिल्लाती है? तेरी पीड़ा की कोई औषध नहीं। तेरे बड़े
अधर्म और भारी पापोंके कारण मैं ने तुझ से ऐसा व्यवहार किया है। 16 परन्तु
जितने तुझे अब खाए लेते हैं, वे आप ही खाए जाएंगे, और तेरे द्रोही आप सब के
सब बंधुआई में जाएंगे; और तेरे लूटनेवाले आप लुटेंगे ओर जितने तेरा धन
छीनते हैं, उनका धन मैं छिनवाऊंगा। 17 मैं तेरा इलाज करके तेरे घावोंको चंगा
करूंगा, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि तेरा नाम ठुकराई हुई पड़ा है: वह तो
सिय्योन है, उसकी चिन्ता कौन करता है? 18 यहोवा कहता है: मैं याकूब के तम्बू
को बंधुआई से लौटाता हूँ और उसके घरोंपर दया करूंगा; ओर नगर अपके ही
खण्डहर पर फिर बसेगा, और राजभवन पहिले के अनुसार फिर बन जाएगा। 19
तब उन में से धन्य कहने, और आनन्द करने का शब्द सुनाई पकेगा। 20 मैं
उनका विभव बढ़ाऊंगा, और वे योड़े न होंगे। उनके लड़केवाले प्राचीनकाल के
समान होंगे, और उनकी मण्डली मेरे साम्हने स्यिर रहेगी; और जितने उन पर
अन्धेर करते हैं उनको मैं दण्ड दूंगा। 21 उनका महापुरुष उन्हीं में से होगा, और
जो उन पर प्रभुता करेगा, वह उन्हीं में से उत्पन्न होगा; मैं उसे अपके निकट

बुलाऊंगा, और वह मेरे समीप आ भी जाएगा, क्योंकि कौन है जो अपके आप मेरे
समीप आ सकता है? यहोवा की यही वाणी है। 22 उस समय तुम मेरी प्रजा
ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा। 23 देखो, यहोवा की जलजलाहट की
आंधी चल रही है ! वह अति प्रचण्ड आंधी है; दुष्टोंके सिर पर वह जोर से लगेगी।
24 जब तक यहोवा अपना काम न कर चुके और अपक्की युक्तियोंको पूरी न कर
चुके, तब तक उसका भड़का हुआ क्रोध शान्त न होगा। अन्त के दिनोंमें तुम इस
बात को समझ सकोगे।

यिर्मयाह 31

1 उन दिनोंमें मैं सारे इस्राएली कुलोंका परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे,
यहोवा की यही वाणी है। 2 यहोवा योंकहता है: जो प्रजा तलवार से बच निकली,
उन पर जंगल में अनुग्रह हुआ; मैं इस्राएल को विश्रम देने के लिथे तैयार हुआ। 3
यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस
कारण मैं ने तुझ पर अपक्की करुणा बनाए रखी है। 4 हे इस्राएली कुमारी कन्या !
मैं तुझे फिर बसाऊंगा; वहां तू फिर सिंगार करके डफ बजाने लगेगी, और आनन्द
करनेवालोंके बीच में नाचक्की हुई निकलेगी। 5 तू शोमरोन के पहाड़ोंपर अंगूर की
बारियं फिर लगाएगी; और जो उन्हें लगाएंगे, वे उनके फल भी खाने पाएंगे। 6
क्योंकि ऐसा दिन आएगा, जिस में एप्रैम के पहाड़ी देश के पहरुए पुकारेंगे: उठो,
हम अपके परमेश्वर यहोवा के पास सिय्योन को चलें। 7 क्योंकि यहोवा योंकहता
है: याकूब के कारण आनन्द से जयजयकार करो: जातियोंमें जो श्रेष्ट है उसके
लिथे ऊंचे शबद से स्तुति करो, और कहो, हे यहोवा, अपक्की प्रजा इस्राएल के

बचे हुए लोगोंका भी उद्धार कर। 8 देखो, मैं उनको उत्तर देश से ले आऊंगा, और
पृथ्वी के कोने कोने से इकट्ठे करूंगा, और उनके बीच अन्धे, लंगड़े, गर्भवती,
और जच्चा स्त्रियां भी आएंगी; एक बड़ी मण्डली यहां लौट आएगी। 9 वे आंसू
बहाते हुए आएंगे और गिड़गिड़ाते हुए मेरे द्वारा पहुंचाए जाएंगे, मैं उन्हें नदियोंके
किनारे किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊंगा, जिस से वे ठोकर न खाने
पाएंगे; क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूँ, और एप्रैम मेरा जेठा है। 10 हे जाति जाति
के लोगो, यहोवा का वचन सुनो, और दूर दूर के द्वीपोंमें भी इसका प्रचार करो;
कहो, कि जिस ने इस्राएलियोंको तितर- बितर किया या, वही उन्हें इकट्ठे भी
करेगा, और उनकी ऐसी रझा करेगा जैसी चरवाहा अपके फुण्ड की करता है। 11
क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उस से
अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है। 12 इसलिथे वे सिय्योन की चोटी पर
आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल,
भेड़-बकरियां और गाय-बैलोंके बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान पाने के लिथे तांता
बान्धकर चलेंगे; और उनका प्राण सींची हुई बारी के समान होगा, और वे फिर
कभी उदास न होंगे। 13 उस समय उनकी कुमारियां नाचक्की हुई हर्ष करेंगी,
और जवान और बूढे एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके
उन्हें आनन्दित करूंगा, मैं उन्हें शान्ति दूंगा, और दु:ख के बदले आनन्द दूंगा।
14 मैं याजकोंको चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम
दानोंसे सन्तुष्ट होगी, यहोवा की यही वाणी है। 15 यहोवा यह भी कहता है: सुन,
रामा नगर में विलाप और बिलक बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है।
राहेल अपके लड़कोंके लिथे रो रही है; और अपके लड़कोंके कारण शान्त नहीं

होती, क्योंकि वे जाते रहे। 16 यहोवा योंकहता हे: रोने-पीटने और आंसू बहाने से
रुक जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट
आएंगे। 17 अन्त में तेरी आशा पूरी होगी, यहोवा की यह वाणी है, तेरे वंश के
लोग अपके देश में लौट आएंगे। 18 निश्चय मैं ने एप्रैम को थे बातें कहकर विलाप
करते सुना है कि तू ने मेरी ताड़ना की, और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो
निकाला न गया हो; परन्तु अब तू मुझे फेर, तब मैं फिरूंगा, क्योंकि तू मेरा
परमेश्वर है। 19 भटक जाने के बाद मैं पछताया: और सिखाए जाने के बाद मैं ने
छाती पीटी: पुराने पापोंको स्मसण कर मैं लज्जित हुआ और मेरा मुंह काला हो
गया। 20 क्या एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं है?
जब जब मैं उसके विरुद्ध बातें करता हूं, तब तब मुझे उसका स्मरण हो आता है।
इसलिथे मेरा मन उसके कारण भर आता है; और मैं निश्चय उस पर दया करूंगा,
यहोवा की यही वाणी है। 21 हे इस्राएली कुमारी, जिस राजमार्ग से तू गई यी, उसी
में खम्भे और फण्डे खड़े कर; और अपके इन नगरोंमें लौट आने पर मन लगा।
22 हे भटकनेवाली कन्या, तू कब तक इधर उधर फिरती रहेगी? यहोवा की एक
नई सृष्टि पृथ्वी पर प्रगट होगी, अर्यात् नारी पुरुष की सहाथता करेगी। 23
इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है: जब मैं यहूदी बंधुओं को
उनके देश के नगरोंमें लौटाऊंगा, तब उन में यह आशीर्वाद फिर दिया जाएगा: हे
धर्मभरे वासस्यान, हे पवित्र पर्वत, यहोवा तुझे आशीष दे ! 24 और यहूदा और
उसके सब नगरोंके लोग और किसान और चरवाहे भी उस में इकट्ठे बसेंगे। 25
क्योंकि मैं ने यके हुए लोगोंका प्राण तृप्त किया, और उदास लोगोंके प्राण को भर
दिया है। 26 इस पर मैं जाग उठा, और देखा, ओर मेरी नीन्द मुझे मीठी लगी। 27

देख, यहोवा की यह वाणी है, कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में मैं इस्राएल और
यहूदा के घरानोंके लड़केबाले और पशु दोनोंको बहुत बढ़ाऊंगा। 28 और जिस
प्रकार से मैं सोच सोचकर उनको गिराता और ढाता, नष्ट करता, काट डालता और
सत्यानाश ही करता या, उसी प्रकार से मैं अब सोच सोचकर उनको रोपूंगा और
बढ़ाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है। 29 उन दिनोंमें वे फिर न कहेंगे कि पुरखा
लोगोंने तो जंगली दाख खाई, परन्तु उनके वंश के दांत खट्टे हो गए हैं। 30
क्योंकि जो कोई जंगली दाख खाए उसी के दांत खट्टे हो जाएंगे, और हर एक
मनुष्य अपके ही अधर्म के कारण मारा जाएगा। 31 फिर यहोवा की यह भी वाणी
है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानोंसे नई वाचा
बान्धूंगा। 32 वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस
समय बान्धी यी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया,
क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति या, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। 33
परन्तु जो वाचा मैं उन दिनोंके बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं
अपक्की व्यवस्या उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा;
और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी
है। 34 और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पकेगा कि यहोवा को जानो,
क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान
रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म झमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न
करूंगा। 35 जिसने दिन को प्रकाश देने के लिथे सूर्य को और रात को प्रकाश देने
के लिथे चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराए हैं, जो समुद्र को उछालता और
उसकी लहरोंको गरजाता है, और जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, वही यहोवा

योंकहता है: 36 यदि थे नियम मेरे साम्हने से टल जाएं तब ही यह हो सकेगा कि
इस्राएल का वंश मेरी दृष्टि में सदा के लिथे एक जाति ठहरने की अपेझा मिट
सकेगा। 37 यहोवा योंभी कहता है, यदि ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे से
पुथ्वी की नेव खोद खोदकर पता लगाया जाए, तब ही मैं इस्राएल के सारे वंश को
अनके सब पापोंके कारण उन से हाथ उठाऊंगा। 38 देख, यहोवा की यह वाणी है,
ऐसे दिन आ रहे हैं जिन में यह नगर हननेल के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक
तक यहोवा के लिथे बनाया जाएगा। 39 और मापके की रस्सी फिर आगे बढ़कर
सीधी गारेब पहाड़ी तक, और वहां से घूमकर गोआ को पहुंचेगी। 40 और
लोयोंऔर राख की सब तराई और किद्रोन नाले तक जितने खेत हैं, घोड़ोंके पूर्वी
फाटक के कोने तक जितनी भूमि है, वह सब यहोवा के लिथे पवित्र ठहरेगी। सदा
तक वह नगर फिर कभी न तो गिराया जाएगा और न ढाया जाएगौ

यिर्मयाह 32

1 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के दसवें वर्ष में जो नबूकदनेस्सर के
राज्य का अठारहवां वर्ष या, यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास
पहुंचा। 2 उस समय बाबुल के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेर लिया या और
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता यहूदा के राजा के पहरे के भवन के आंगन में कैदी या। 3
क्योंकि यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने यह कहकर उसे कैद किया या, कि, तू ऐसी
भविष्यद्वाणी क्योंकरता है कि यहोवा योंकहता है: देखो, मैं यह नगर बाबुल के
राजा के वश में कर दूंगा, वह इसको ले लेगा; 4 और यहूदा का राजा सिदकिय्याह
कसदियोंके हाथ से न बचेगा परन्तु वह बाबुल के राजा के वश में अवश्य ही

पकेगा, और वह और बाबुल का राजा आपस में आम्हने-साम्हने बातें करेंगे; और
अपक्की अपक्की आंखोंसे एक दूसरे को देखेंगे। 5 और वह सिदकिय्याह को
बाबुल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसकी सुधि न लूं, तब तक वह वहीं रहेगा,
यहोवा की यह वाणी है। चाहे तुम लोग कसदियोंसे लड़ो भी, तौभी तुम्हारे लड़ने
से कुछ बन न पकेगा। 6 यिर्मयाह ने कहा, यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचा, 7
देख, शल्लम का पुत्र हनमेल जो तेरा चचेरा भाई है, सो तेरे पास यह कहने को
आने पर है कि मेरा खेत जो अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसे मोल लेकर
छुड़ाने का अधिक्कारने तेरा ही है। 8 सो यहोवा के वचन के अनुसार मेरा चचेरा
भाई हनमेल पहरे के आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा, मेरा जो खेत
बिन्यामीन देश के अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसके स्वामी होने और
उसके छुड़ा लेने का अधिक्कारने तेरा ही है; इसलिथे तू उसे मोल ले। तब मैं ने
जान लिया कि वह यहोवा का वचन या। 9 इसलिथे मैं ने उस अनातोत के खेत को
अपके चचेरे भाई हनमेल से मोल ले लिया, और उसका दाम चान्दी के सत्तरह
शेकेल तौलकर दे दिए। 10 और मैं ने दस्तावेज़ में दस्तख़त और मुहर हो जाने
पर, गवाहोंके साम्हने वह चान्दी कांटे में तौलकर उसे दे दी। 11 तब मैं ने मोल
लेने की दोनोंदस्ताबेजें जिन में सब शतं लिखी हुई यीं, और जिन में से एक पर
मुहर यी और दूसरी खुली यी, 12 उन्हें लेकर अपके चचेरे भाई हनमेल के और
उन गवाहोंके साम्हने जिन्होंने दस्तावेज़ में दस्तख़त किए थे, और उन सब
यहूदियोंके साम्हने भी जो पहरे के आंगन में बैठे हुए थे, नेरिय्याह के पुत्र बारूक
को जो महसेयाह का पोता या, सौंप दिया। 13 तब मैं ने उनके साम्हने बारूक को
यह आज्ञा दी 14 कि इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा योंकहता है, इन मोल

लेने की दस्तावेज़ोंको जिन पर मुहर की हुई है और जो खुली हुई है, इन्हें लेकर
मिट्टी के बर्तन में रख, ताकि थे बहुत दिन तक रहें। 15 क्योंकि इस्राएल का
परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है, इस देश में घर और खेत ओर दाख की
बारियां फिर बेची और मोल ली जाएंगी। 16 जब मैं ने मोल लेने की वह दस्तावेज़
नेरिय्याह के पुत्र बारूक के हाथ में दी, तब मैं ने यहोवा से यह प्रार्यना की, 17 हे
प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृय्वी को
बनाया है ! तेरे लिथे कोई काम कठिन नहीं है। 18 तू हजारोंपर करुणा करता
रहता परन्तु पूर्वजोंके अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंष के लोगोंको भी देता
है, हे महान और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, 19 तू
बड़ी युक्ति करनेवाला और सामर्य के काम करनेवाला है; तेरी दृष्टि मनुष्योंके सारे
चालचलन पर लगी रहती है, और तू हर एक को उसके चालचलन और कर्म का
फल भुगताता है। 20 तू ने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किए, और आज
तक इस्राएलियोंवरन सब मनुष्योंके बीच वैसा करता आया है, और इस प्रकार तू
ने अपना ऐसा नाम किया है जो आज के दिन तक बना है। 21 तू अपक्की प्रजा
इस्राएल को मिस्र देश में से चिन्होंऔर चमत्कारोंऔर सामर्यी हाथ और बढ़ाई हुई
भुजा के द्वारा, और बड़े भयानक कामोंके साय निकाल लाया। 22 फिर तू ने यह
देश उन्हें दिया जिसके देने की शपय तू ने उनके पूर्वजोंसे खाई यी; जिसमें दूध
और मधु की धाराएं बहती हैं, और वे आकर इसके अधिक्कारनी हुए। 23 तौभी
उन्होंने तेरी नहीं मानी, और न तेरी व्यवस्या पर चले; वरन जो कुछ तू ने उनको
करने की आज्ञा दी यी, उस में से उन्होंने कुछ भी नहीं किया। इस कारण तू ने उन
पर यह सब विपत्ति डाली है। 24 अब इन दमदमोंको देख, वे लोग इस नगर को ले

लेने के लिथे आ गए हैं, ओर यह नगर तलवार, महंगी और मरी के कारण इन
चढ़े हुए कसदियोंके वश में किया गया है। जो तू ने कहा या वह अब पूरा हुआ है,
और तू इसे देखता भी है। 25 तौभी, हे प्रभु यहोवा, तू ने मुझ से कहा है कि गवाह
बुलाकर उस खेत को मोल ले, यद्यपि कि यह नगर कसदियोंके वश में कर दिया
गया है। 26 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, मैं तो सब
प्राणियोंका परमेश्वर यहोवा हूँ; 27 क्या मेरे लिथे कोई भी काम कठिन है? 28 सो
यहोवा योंकहता है, देख, मैं यह नगर कसदियोंऔर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
के वश में कर देने पर हूँ, और वह इसको ले लेगा। 29 जो कसदी इस नगर से युद्ध
कर रहे हैं, वे आकर इस में आग लगाकर फूंक देंगे, और जिन घरोंकी छतोंपर
उन्होंने बाल के लिथे धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को तपावन देकर मुझे
रिस दिलाई है, वे घर जला दिए जाएंगे। 30 क्योंकि इस्राएल और यहूदा, जो काम
मुझे बुरा लगता है, वही लड़कपन से करते आए हैं; इस्राएली अपक्की बनाई हुई
वस्तुओं से मुझ को रिस ही रिस दिलाते आए हैं, यहोवा की यह वाणी है। 31 यह
नगर जब से बसा है तब से आज के दिन तक मेरे क्रोध और जलजलाहट के
भड़कने का कारण हुआ है, इसलिथे अब मैं इसको अपके साम्हने से इस कारण
दूर करूंगा 32 क्योंकि इस्राएल और यहूदा अपके राजाओं हाकिमों, याजकोंओर
भविष्यद्वक्ताओं समेत, क्या यहूदा देश के, क्या यरूशललेम के निवासी, सब के
सब बुराई पर बुराई करके मुझ को रिस दिलाते आए हें। 33 उन्होंने मेरी ओर मुंह
नहीं वरन पीठ ही फेर दी है; यद्यपि मैं उन्हें बड़े यत्न से सिखाता आया हूँ, तौभी
उन्होंने मेरी शिझा को नहीं माना। 34 वरन जो भवन मेरा कहलाता है, उस में भी
उन्होंने अपक्की घृणित वस्तुएं स्यापन करके उसे अशुद्ध किया है। 35 उन्होंने

हिन्नोमियोंकी तराई में बाल के ऊंचे ऊंचे स्यान बनाकर अपके बेटे-बेटियोंको
मोलक के लिथे होम किया, जिसकी आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी, और न यह बात
कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घृणित काम किया जाए और जिस से यहूदी लोग
पाप में फंसे। 36 परन्तु अब इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय में,
जिसके लिथे तुम लोग कहते हो कि वह तलवार, महंगी और मरी के द्वारा बाबुल
के राजा के वश में पड़ा हुआ है योंकहता है: 37 देखो, मैं उनको उन सब देशोंसे
जिन में मैं ने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें बरबस निकाल दिया या,
लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूंगा, और निडर करके बसा दूंगा। 38 और
वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा 39 मैं उनको एक ही मन
और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें, जिस से उनका और
उनके बाद उनके वंश का भी भला हो। 40 मैं उन से यह वाचा बान्धूंगा, कि मैं
कभी उनका संग छोड़कर उनका भला करना न छोडूंगा; और अपना भय मैं उनके
मन से ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे। 41 मैं बड़ी
प्रसन्नता के साय उनका भला करता रहूंगा, और सचमुच उन्हें इस देश में अपके
सारे मन ओर प्राण से बसा दूंगा। 42 देख, यहोवा योंकहता है कि जैसे मैं ने
अपक्की इस प्रजा पर यह सब बड़ी विपत्ति डाल दी, वैसे ही निश्चय इन से वह सब
भलाई भी करूंगा जिसके करने का वचन मैं ने दिया हे। सो यह देश जिसके विषय
तुम लोग कहते हो 43 कि यह उजाड़ हो गया है, इस में न तो मनुष्य रह गए हैं
और न पशु, यह तो कसदियोंके वश में पड़ चुका है, इसी में फिर से खेत मोल
लिए जाएंगे, 44 और बिन्यामीन के देश में, यरूशलेम के आस पास, और यहूदा
देश के अर्यात् पहाड़ी देश, नीचे के देश और दक्खिन देश के नगरोंमें लोग गवाह

बुलाकर खेत मोल लेंगे, और दस्तावेज़ में दस्तखत और मुहर करेंगे; क्योंकि मैं
उनके दिनोंको लौटा ले आऊंगा; यहोवा की यही वाणी है।

यिर्मयाह 33

1 जिस समय यिर्मयाह पहरे के आंगन में बन्द या, उस समय यहोवा का वचन
दूसरी बार उसके पास पहुंचा, 2 यहोवा जो पृथ्वी का रचनेवाला है, जो उसको
स्यिर करता है, उसका नाम यहोवा है; वह यह कहता है, 3 मुझ से प्रार्यना कर
और मैं तेरी सुनकर तुझे बढ़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं
समझता। 4 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के घरोंऔर यहूदा के
राजाओं के भवनोंके विषय में जो इसलिथे गिराए जाते हैं कि दमदमोंऔर तलवार
के साय सुभीते से लड़ सकें, योंकहता है, 5 कसदियोंसे युद्ध करने को वे लोग आते
तो हैं, परन्तु मैं क्रोध और जलजलाहट में आकर उनको मरवाऊंगा और उनकी
लोथें उसी स्यान में भर दूंगा; क्योंकि उनकी दुष्टता के कारण मैं ने इस नगर से
मुख फेर लिया है। 6 देख, मैं इस नगर का इलाज करके इसके निवासिक्कों चंगा
करूंगा; और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूंगा। 7 मैं यहूदा और
इस्राएल के बंधुओं को लौटा ले आऊंगा, और उन्हें पहिले की नाई बसाऊंगा। 8 मैं
उनको उनके सारे अधर्म और पाप के काम से शुद्ध करूंगा जो उन्होंने मेरे विरुद्ध
किए हैं; और उन्होंने जितने अधर्म और अपराध के काम मेरे विरुद्ध किए हैं, उन
सब को मैं झमा करूंगा। 9 क्योंकि वे वह सब भलाई के काम सुनेंगे जो मैं उनके
लिथे करूंगा और वे सब कल्याण और शान्ति की चर्चा सुनकर जो मैं उन से
करूंगा, डरेंगे और यरयराएंगे; वे पृथ्वी की उन जातियोंकी दृष्टि में मेरे लिथे

हर्षानेवाले और स्तुति और शोभा का कारण हो जाएंगे। 10 यहोवा योंकहता है,
यह स्यान जिसके विषय तुम लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हो गया है, इस में
न तो मनुष्य रह गया है और न पशु, अर्यात् यहूदा देश के नगर और यरूशलेम
की सड़कें जो ऐसी सुनसान पक्की हैं कि उन में न तो कोई मनुष्य रहता है और न
कोई पशु, 11 इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द, दुल्हे-दुल्हिन का शब्द, और
इस बात के कहनेवालोंका शब्द फिर सुनाई पकेगा कि सेनाओं के यहोवा का
धन्यवाद करो, क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी करुणा सदा की है। और
यहोवा के भवन में धन्यवादबलि लानेवालोंका भी शब्द सुनाई देगा; क्योंकि मैं
इस देश की दशा पहिले की नाई ज्योंकी त्योंकर दूंगा, यहोवा का यही वचन है।
12 सेनाओं का यहोवा कहता है: सब गांवोंसमेत यह स्यान जो ऐसा उजाड़ है कि
इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु, इसी में भेड़-बकरियां बैठानेवाले
चरवाहे फिर बसेंगे। 13 पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, दक्खिन देश के
नगरोंमें, बिन्यामीन देश में, और यरूशलेम के आस पास, निदान यहूदा देश के
सब नगरोंमें भेड़-बकरियां फिर गिन-गिनकर चराई जाएंगी, यहोवा का यही
वचन हे। 14 यहोवा की यह भी वाणी है, देख, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि कल्याण
का जो वचन मैं ने इस्राएल और यहूदा के घरानोंके विषय में कहा है, उसे पूरा
करूंगा। 15 उन दिनोंमें और उन समयोंमें मैं दाऊद के वंश में धर्म की एक डाल
उगाऊंगा; और वह इस देश में न्याय और धर्म के काम करेगा। 16 उन दिनोंमें
यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम निडर बसा रहेगा; और उसका नाम यह रखा
जाएगा अय्रात् यहोवा हमारी धामिर्कता। 17 यहोवा योंकहता है, दाऊद के कुल में
इस्राएल के घराने की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, 18 और लेवीय

याजकोंके कुलोंमें प्रतिदिन मेरे लिथे होमबलि चढ़ानेवाले और अन्नबलि
जलानेवाले और मेलबलि चढ़ानेवाले सदैव बने रहेंगे। 19 फिर यहोवा का यह
वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, यहोवा योंकहता है, 20 मैं ने दिन और रात के
विषय में जो वाचा बान्धी है, जब तुम उसको ऐसा तोड़ सको कि दिन और रात
अपके अपके समय में न हों, 21 तब ही जो वाचा मैं ने अपके दास दाऊद के संग
बान्धी है टूट सकेगी, कि तेरे वंश की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, और
मेरी वाचा मेरी सेवा टहल करतेवाले लेवीय याजकोंके संग बन्धी रहेगी। 22 जैसा
आकाश की सेना की गिनती और समुद्र की बालू के किनकोंका परिमाण नहीं हो
सकता है उसी प्रकार मैं अपके दास दाऊद के वंश और अपके सेवक लेवियोंको
बढ़ाकर अनगिनित कर दूंगा। 23 यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुचा,
क्या तू ने नहीं देखा 24 कि थे लोग क्या कहते हैं, कि, जो दो कुल यहोवा ने चुन
लिए थे उन दोनोंसे उस ने अब हाथ उठाया है? यह कहकर कि थे मेरी प्रजा को
तुच्छ जानते हैं और कि यह जाति उनकी दृष्टि में गिर गई है। 25 यहोवा योंकहता
है, यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे, और यदि आकाश और
पृथ्वी के नियम मेरे ठहराए हुए न रह जाएं, 26 तब ही मैं याकूब के वंश से हाथ
उठाऊंगा।,और इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिथे
अपके दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊंगा। परन्तु इसके
विपक्कीत मैं उन पर दया करके उनको बंधुआई से लौटा लाऊंगा।

यिर्मयाह 34

1 जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर अपक्की सारी सेना समेत और पृथ्वी के

जितने राज्य उसके वश में थे, उन सभोंके लोगोंसमेत यरूशलेम और उसके सब
गांवोंसे लड़ रहा या, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, 2 इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जाकर यहूदा के राजा सिदकिय्याह से कह,
यहोवा योंकहता है, कि देख, मैं इस नगर को बाबुल के राजा के वश में कर देने पर
हूँ, और वह इसे फुंकवा देगा। 3 और तू उसके हाथ से न बचेगा, निश्चय पकड़ा
जाएगा और उसके वश में कर दिया जाएगा; और तेरी आंखें बाबुल के राजा को
देखेंगी, और तुम आम्हने-साम्हने बातें करोगे; और तू बाबुल को जाएगा। 4 तौभी
हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, यहोवा का यह भी वचन तुन जिसे यहोवा तेरे
विषय में कहता है, कि तू तलवार से मारा न जाएगा। 5 तू शान्ति के साय मरेगा।
और जैसा तेरे पितरोंके लिथे अर्यात् जो तुझ से पहिले राजा थे, उनके लिथे
सुगन्ध द्रव्य जलाया गया, वैसा ही तेरे लिथे भी जलाया जाएगा; और लोग यह
कहकर, हाथ मेरे प्रभु ! तेरे लिथे छाती पीटेंगे, यहोवा की यही वाणी है। 6 थे सब
वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह से यरूशलेम में उस
समय कहे, 7 जब बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम से और यहूदा के जितने
नगर बच गए थे, उन से अर्यात् लाकीश और अजेका से लड़ रही यी; क्योंकि
यहूदा के जो गढ़वाले नगर थे उन में से केवल वे ही रह गए थे। 8 यहोवा का यह
वचन यिर्मयाह के पास उस समय आया जब सिदकिय्याह राजा ने सारी प्रजा से
जो यरूशलेम में यी यह वाचा बन्धाई कि दासोंके स्वाधीन होने का प्रचार किया
जाए, 9 कि सब लोग अपके अपके दास-दासी को जो इब्री वा इब्रिन होंस्वाधीन
करके जाने दें, और कोई अपके यहुदी भाई से फिर अपक्की सेवा न कराए। 10
तब सब हाकिमोंऔर सारी प्रजा ने यह प्रण किया कि हम अपके अपके

दास-दासिक्कों स्वतंत्र कर देंगे और फिर उन से अपक्की सेवा न कराएंगे; सो उस
प्रण के अनुसार उनको स्वतंत्र कर दिया। 11 परन्तु इसके बाद वे फिर गए और
जिन दास-दासिक्कों उन्होंने स्वतत्र करके जाने दिया या उनको फिर अपके वश
में लाकर दास और दासी बना लिया। 12 तब यहोवा की ओर से यह वचन
यिर्मयाह के पास पहुंचा, 13 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुम से योंकहता है, जिस
समय मैं तुम्हारे पितरोंको दासत्व के घर अर्यात् मिस्र देश से निकाल ले आया,
उस समय मैं ने आप उन से यह कहकर वाचा बान्धी 14 कि तुम्हारा जो इब्री भाई
तुम्हारे हाथ में बेचा जाए उसको तुम सातवें बरस में छोड़ देना; छ: बरस तो वह
तुम्हारी सेवा करे परन्तु इसके बाद तुम उसको स्वतंत्र करके अपके पास से जाने
देना। परन्तु तुम्हारे पितरोंने मेरी न सुनी, न मेरी ओर कान लगाया। 15 तुम
अभी फिरे तो थे और अपके अपके भाई को स्वतंत्र कर देने का प्रचार कराके जो
काम मेरी दृष्टि में भला हे उसे तुम ने किया भी या, और जो भवन मेरा कहलाता है
उस में मेरे साम्हने वाचा भी बान्धी यी; 16 पर तुम भटक गए और मेरा नाम इस
रीति से अशुद्ध किया कि जिन दास-दासिक्कों तुम स्वतंत्र करके उनकी इच्छा पर
छोड़ चुके थे उन्हें तुम ने फिर अपके वश में कर लिया है, और वे फिर तुम्हारे
दास- दासियां बन गए हैं। 17 इस कारण यहोवा योंकहता है कि तुम ने जो मेरी
आज्ञा के अनुसार अपके अपके भाई के स्वतंत्र होने का प्रचार नहीं किया, सो
यहोवा का यह वचन है, सुनो, मैं तुम्हारे इस प्रकार से स्वतंत्र होने का प्रचार
करता हूँ कि तुम तलवार, मरी और महंगी में पड़ोगे; और मैं ऐसा करूंगा कि तुम
पृय्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरोगे। 18 और जो लोग मेरी वाचा का
उल्लंघन करते हैं और जो प्रण उन्होंने मेरे साम्हने और बछड़े को दो भाग करके

उसके दोनोंभागोंके बीच होकर किया परन्तु उसे पूरा न किया, 19 अर्यात् यहूदा
देश और यरूशलेम नगर के हाकिम, खोजे, याजक और साधारण लोग जो बछड़े
के भागोंके बीच होकर गए थे, 20 उनको मैं उनके शत्रुओं अर्यात् उनके प्राण के
खोजियोंके वश में कर दूंगा और उनकी लोय आकाश के पझियोंऔर मैदान के
पशुओं का आहार हो जाएंगी। 21 और मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके
हाकिमोंको उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियोंअर्यात् बाबुल के राजा की
सेना के वश में कर दूंगा जो तुम्हारे साम्हने से चक्की गई है। 22 यहोवा का यह
वचन है कि देखो, मैं उनको आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा ले आऊंगा और वे
लड़कर इसे ले लेंगे और फूंक देंगे; और यहूदा के नगरोंको मैं ऐसा उजाड़ दूंगा कि
कोई उन में न रहेगा।

यिर्मयाह 35

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य में यहोवा की ओर से यह
वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा 2 रेकाबियोंके घराने के पास जाकर उन से बातें कर
और उन्हें यहोवा के भवन की एक कोठरी में ले जाकर दाखमधु पिला। 3 तब मैं
ने याजन्याह को जो हबस्सिन्याह का पोता और यिर्मयाह का पुत्र या, और उसके
भाइयोंऔर सब पुत्रोंको, निदान रेकाबियोंके सारे घराने को साय लिया। 4 और मैं
उनको परमेश्वर के भवन में, यिग्दल्याह के पुत्र हानान, जो परमेश्वर का एक जन
य, उसकी कोठरी में ले आया जो हाकिमोंकी उस कोठरी के पास यी और शल्लूम
के प्रत्र डेवढ़ी के रखवाले मासेयाह की कोठरी के ऊपर यी। 5 तब मैं ने रेकाबियोंके
घराने को दाखमधु से भरे हुए हंडे और कटोरे देकर कहा, दाखमधु पीओ। 6

उन्होंने कहा, हम दाखमधु न पीएंगे क्योंकि रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो हमारा
पुरखा या हम को यह आज्ञा दी यी कि तुम कभी दाखमधु न पीना; न तुम, न
तुम्हारे पुत्र। 7 न घर बनाना, न बीज बोना, न दाख की बारी लगाना, और न
उनके अधिक्कारनी होना; परन्तु जीवन भर तम्बुओं ही में रहना जिस से जिस
देश में तुम परदेशी हो, उस में बहुत दिन तक जीते रहो। 8 इसलिथे हम रेकाब के
पुत्र अपके पुरखा योनादाब की बात मानकर, उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार
चलते हैं, न हम और न हमारी स्त्रियां वा पुत्र-पुत्रियां कभी दाख मधु पीती हैं, 9
और न हम घर बनाकर उन में रहते हैं। हम न दाख की बारी, न खेत, और न बीज
रखते हैं; 10 हम तम्बुओं ही में रहा करते हैं, और अपके पुरखा योनादाब की बात
मानकर उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार काम करते हैं। 11 परन्तु जब बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की, तब हम ने कहा, चलो,
कसदियोंऔर अरामियोंके दलोंके डर के मारे यरूशलेम में जाएं। इस कारण हम
अब यरूशलेम में रहते हैं। 12 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा।
13 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि जाकर यहूदा देश के
लोगोंऔर यरूशलेम नगर के निवासिक्कों कह, यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम
शिझा मानकर मेरी न सुदोगे? 14 देखो, रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो आज्ञा
अपके वंश को दी यी कि तुम दाखमधु न पीना सो तो मानी गई है यहां तक कि
आज के दिन भी वे लोग कुछ नहीं पीते, वे अपके पुरखा की आज्ञा मानते हैं; पर
यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से कहता आया हूँ, तैभी तुम ने मेरी नहीं सुनी। 15 मैं
तुम्हारे पास अपके सारे दास नबियोंको बड़ा यत्न करके यह कहने को भेजता
आया हूँ कि अपक्की बुरी चाल से फिरो, और अपके काम सुधारो, और दूसरे

देवताओं के पीछे जाकर उनकी उपासना मत करो तब ुतुम इस देश में जो मैं ने
तुम्हारे पितरोंको दिया या और तुम को भी दिया है, बसने पाओगे। पर तुम ने
मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है। 16 देखो रेकाब के पुत्र योनादाब के
वंश ने तो अपके पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी। 17
इसलिथे सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, जो इस्राएल का परमेश्वर है, योंकहता है कि
देखो, यहूदा देश और यरूशलेम नगर के सारे निवासियोंपर जितनी विपत्ति डालने
की मैं ने चर्चा की है वह उन पर अब डालता हूँ; क्योंकि मैं ने उनको सुनाया पर
उन्होंने नहीं सुना, मैं ने उनको बुलाया पर उन्होंने उत्तर न दिया। 18 और
रेकाबियोंके घराने से यिर्मयाह ने कहा, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा
तुम से योंकहता है, इसलिथे कि तुम ने जो अपके पुरखा योनादाब की आज्ञा
मानी, वरन उसकी सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उस ने कहा उसके
अनुसार काम किया है, 19 इसलिथे इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा
योंकहता है, रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश में सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे
सम्मुख खड़ा रहे।

यिर्मयाह 36

1 फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे बरस में
यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, 2 एक पुस्तक लेकर जितने
वचन मैं ने तुझ से योशिय्याह के दिनोंसे लेकर अर्यात् जब मैं तुझ से बातें करने
लगा उस समय से आज के दिन तक इस्राएल और यहूदा और सब जातियोंके
विषय में कहे हैं, सब को उस में लिख। 3 क्या जाने यहूदा का घराना उस सारी

विपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना कर रहा हूँ अपक्की
बुरी चाल से फिरे और मैं उनके अधर्म और पाप को झमा करूं। 4 तो यिर्मयाह ने
नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया, और बारूक ने यहोवा के सब वचन जो उस ने
यिर्मयाह से कहे थे, उसके मुख से सुनकर पुस्तक में लिख दिए। 5 फिर यिर्मयाह
ने बारूक को आज्ञा दी और कहा, मैं तो बन्धा हुआ हूँ, मैं यहोवा के भवन में नहीं
जा सकता। 6 सो तु उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उसके जो वचन तू
ने मुझ से सुनकर लिखे हैं, पुस्तक में से लोगोंको पढ़कर सुनाना, और जितने
यहूदी लोग अपके अपके नगरोंसे आएंगे, उनको भी पढ़कर सुनाना। 7 क्या जाने
वे यहोवा से गिड़गिड़ाकर प्रार्यना करें और अपक्की अपक्की बुरी चाल से फिरें;
क्योंकि जो क्रोध और जलजलाहट यहोवा ने अपक्की इस प्रजा पर भड़काने को
कहा है, वह बड़ी है। 8 यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की इस आज्ञा के अनुसार नेरिय्याह
के पुत्र बारूक ने, यहोवा के भवन में उस पुस्तक में से उसके वचन पढ़कर सुनाए।
9 और योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के पांचवें बरस के
नौवें महीने में यरूशलेम में जितने लोग थे, और यहूदा के नगरोंसे जितने लोग
यरूशलेम में आए थे, उन्होंने यहोवा के साम्हने उपवास करने का प्रचार किया।
10 तब बारूक ने यहोवा के भवन में सब लोगोंको शापान के पुत्र गमर्याह जो
प्रधान या, उसकी कोठरी में जो ऊपर के आंगन में यहोवा के भवन के नथे फाटक
के पास यी, यिर्मयाह के सब वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाए। 11 तब शापान के
पुत्र गमर्याह के बेटे मीकायाह ने यहोवा के सारे वचन पुस्तक में से सुने। 12 और
वह राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया, और क्या देखा कि वहां
एलीशमा प्रधान और शमायाह का पुत्र दलायाह और अबबोर का पुत्र एलनातान

और शापान का पुत्र गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और सब हाकिम
बैठे हुए हैं। 13 और मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने, जब बारूक ने
पुस्तक में से लोगोंको पढ़ सुनाए थे, वे सब वर्णन किए। 14 उन्हें सुनकर सब
हाकिमोंने यहूदी की जो नतन्याह का पुत्र ओर शेलेम्याह का पोता और कूशी का
परपोता या, बारूक के पास यह कहने को भेजा, कि जिस पुस्तक में से तू ने सब
लोगोंको पढ़ सुनाया हे, उसे अपके हाथ में लेता आ। सो नेरिय्याह का पुत्र बारूक
वह पुस्तक हाथ में लिए हुए उनके पास आया। 15 तब उन्होंने उस से कहा, अब
बैठ जा और हमें यह पढ़कर सुना। तब बारूक ने उनको पढ़कर सुना दिया। 16
जब वे उन सब वचनोंको सुन चुके, तब थरथराते हुए एक दूसरे को देखने लगे;
और उन्होंने बारूक से कहा, हम निश्चय राजा से इन सब वचनोंका वर्णन करेंगे।
17 फिर उन्होंने बारूक से कहा, हम से कह, क्या तू ने थे सब वचन उसके मुख से
सुनकर लिखे? 18 बारूक ने उन से कहा, वह थे सब वचन अपके मुख से मुझे
सुनाता गया ओर मैं इन्हें पुस्तक में स्याही से लिखता गया। 19 तब हाकिमोंने
बारूक से कहा, जा, तू अपके आपको और यिर्मयाह को छिपा, और कोई न जानने
पाए कि तुम कहां हो। 20 तब वे पुस्तक को एलीशमा प्रधान की कोठरी में रखकर
राजा के पास आंगन में आए; और राजा को वे सब वचन कह सुनाए। 21 तब
राजा ने यहूदी को पुस्तक ले आने के लिथे भेजा, उस ने उसे एलीशामा प्रधान की
कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस पास खड़े थे उनको भी
पढ़ सुनाया। 22 राजा शीतकाल के भवन में बैठा हुआ या, क्योंकि नौवां महीना
या और उसके साम्हने अंगीठी जल रही यी। 23 जब यहूदी तीन चार पृष्ठ पढ़
चुका, तब उस ने उसे चाकू से काटा और जो आग अंगीठी में यी उस में फेंक दिया;

सो अंगीठी की आग में पूरी पूस्तक जलकर भस्म हो गई। 24 परन्तु न कोई डरा
और न किसी ने अपके कपके फाड़े, अर्यात् न तो राजा ने और न उसके
कम्रचारियोंमें से किसी ने ऐसा किया, जिन्होंने वे सब वचन सुने थे। 25
एलनातान, और दलायाह, और गमर्याह ने तो राजा से बिनती भी की यी कि
पुस्तक को न जलाए, परन्तु उस ने उनकी एक न सुनी। 26 ओर राजा ने राजपुत्र
यरहमेल को और अज्रीएल के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को
आज्ञा दी कि बारूक लेखक और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ लें, परन्तु यहोवा
ने उनको छिपा रखा। 27 जब राजा ने उन वचनोंकी पुस्तक को जो बारूक ने
यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर लिखी यी, जला दिया, तब यहोवा का यह वचन
यिर्मयाह के पास पहुंचा कि 28 फिर एक और पुस्तक लेकर उस में यहूदा के राजा
यहोयाकीम की जलाई हई पहिली पुस्तक के सब वचन लिख दे। 29 और यहूदा
के राजा यहोयाकीम के विषय में कह कि यहोवा योंकहता है, तू ने उस पुस्तक को
यह कहकर जला दिया है कि तू ने उस में यह क्योंलिखा है कि बाबुल का राजा
निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा, और उस में न तो मनुष्य को छोड़ेगा और
न पशु को। 30 इसलिथे यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में योंकहता
है, कि उसका कोई दाऊद की गद्दी पर विराजमान न रहेगा; और उसकी लोय ऐसी
फेंक दी जाएगी कि दिन को धाम में ओर रात को पाले में पक्की रहेगी। 31 और
मैं उसको और उसके वंश और कर्मचारियोंको उनके अधर्म का दण्ड दूंगा; और
जितनी विपत्ति मैं ने उन पर और यरूशलेम के निवासियोंऔर यहूदा के सब
लोगोंपर डालने को कहा है, और जिसको उन्होंने सच नहीं माना, उन सब को मैं
उन पर डालूंगा। 32 तब यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरिय्याह के पुत्र बारूक

लेखक को दी, और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दी यी,
उस में के सब वचनोंको बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर उस में लिख
दिए; और उन वचनोंमें उनके समान और भी बहुत सी बातें बढ़ा दी गई।

यिर्मयाह 37

1 और यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के स्यान पर योशिय्याह का पुत्र सिदकिय्याह
राज्य करने लगा, क्योंकि बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में
राजा ठहराया या। 2 परन्तु न तो उस ने, न उसके कर्मचारियोंने, और न साधारण
लोगोंने यहोवा के वचनोंको माना जो उस ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा
या। 3 सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के पुत्र यहूकल ओर मासेयाह के पुत्र
समन्याह याजक को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहला भेजा, कि, हमारे
निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्यना कर। 4 उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह में
न डाला गया या, ओर लोगोंके बीच आया जाया करता या। 5 उस समय फिरौन
की सेना चढ़ाई के लिथे मिस्र से निकली; तब कसदी जो यरूशलेम को घेरे हुए थे,
उसका समाचार सुनकर यरूश्लेम के पास से चले गए। 6 तब यहोवा का यह वचन
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, 7 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा योंकहता है,
यहुदा के जिस राजा ने तुम को प्रार्यना करने के लिथे मेरे पास भेजा है, उस से
योंकहो, कि देख, फिरौन की जो सेना तुम्हारी सहाथता के लिथे निकली है वह
अपके देश मिस्र में लौट जाएगी। 8 और कसदी फिर वापिस आकर इस नगर से
लड़ेंगे; वे इसको ले लेंगे और फूंक देंगे। 9 यहोवा योंकहता है, यह कहकर तुम
अपके अपके मन में धोखा न खाओ कि कसदी हमारे पास से निश्चय चले गए हैं;

क्योंकि वे नहीं चले गए। 10 क्योंकि यदि तुम ने कसदियोंकी सारी सेना को जो
तुम से लड़ती है, ऐसा मार भी लिया होता कि उन में से केवल घायल लोग रह
जाते, तौभी वे अपके अपके तम्बू में से उठकर इस नगर को फूंक देते। 11 जब
कसदियोंकी सेना फिरौन की सेना के डर के मारे यरूशलेम के पास से कूच कर
गई, 12 तब यिर्मयाह यरूशलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर
इसलिथे जा निकला कि वहां से और लोगोंके संग अपना अंश ले। 13 जब वह
बिन्यामीन के फाटक में पहुंचा, तब यिरिय्याह नामक पहरुओं का एक सरदार
वहां या जो शेलेम्याह का पुत्र और हनन्याह का पोता या, और उस ने यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता को यह कहकर पकड़ लिया, तू कसदियोंके पास भागा जाता है। 14
तब निर्मयाह ने कहा, यह फूठ है; मैं कसदियोंके पास नहीं भागा जाता हूँ। परन्तु
यिरिय्याह ने उसकी एक न मुनी, सो वह उसे पकड़कर हाकिमोंके पास ले गया।
15 तब हाकिमोंने यिर्मयाह से क्रोधित होकर उसे पिटवाया, और योनातान प्रधान
के घर में बन्दी बनाकर डलवा दिया; क्योंकि उन्होंने उसको साधारण बन्दीगृह
बना दिया या। 16 यिर्मयाह उस तलघर में जिस में कई एक कोठरियां यीं, रहने
लगा। 17 उसके बहुत दिन बीतने पर सिदकिय्याह राजा ने उसको बुलवा भेजा,
और अपके भवन में उस से छिपकर यह प्रश्न किया, क्या यहोवा की ओर से कोई
वचन पड़ुंचा है? यिर्मयाह ने कहा, हां, पहुंचा है। वह यह है, कि तू बाबुल के राजा
के वश में कर दिया जाएगा। 18 फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा, मैं
ने तेरा, तेरे कर्मचारियोंका, व तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है, कि तुम लोगोंने
मुझ को बन्दीगृह में डलवाया है? 19 तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से भविष्यद्वाणी
करके कहा करते थे कि बाबुल का राजा तुम पर और इस देश पर चढ़ाई नहीं

करेगा, वे अब कहां है? 20 अब, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरी प्रार्यना ग्रहण कर कि
मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर न भेज, नहीं तो मैं वहां मर जाऊंगा। 21 तब
सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह पहरे के आंगन में रखा गया, और जब
तक नगर की सब रोटी न चुक गई, तब तक उसको रोटीवालोंकी दूकान में से
प्रतिदिन एक रोटी दी जाती यी। ओर यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा।

यिर्मयाह 38

1 फिर जो वचन यिर्मयाह सब लोगोंसे कहता या, उनको मत्तान के पुत्र शपन्याह,
पशहूर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह के पुत्र यूकल और मल्किय्याह के पुत्र पशहूर
ने सुना, 2 कि, यहोवा योंकहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार,
पहंगी ओर मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई कसदियोंके पास निकल भागे वह
अपना प्राण बचाकर जीवित रहेगा। 3 यहोवा योंकहता है, यह नगर बाबुल के
राजा की सेना के वश में कर दिया जाएगा और वह इसको ले लेगा। 4 इसलिथे
उन हाकिमोंने राजा से कहा कि उस पुरुष को मरवा डाल, क्योंकि वह जो इस
नगर में बचे हुए योद्धाओं और अन्य सब लोगोंसे ऐसे ऐसे वचन कहता है जिस से
उनके हाथ पांव ढीले हो जाते हैं। क्योंकि वह पुरुष इस प्रजा के लोगोंकी भलाई
नहीं वरन बुराई ही चाहता है। 5 सिदकिय्याह राजा ने कहा, सुनो, वह तो तुम्हारे
वश में हे; क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि राजा तुम्हारे विरुद्ध कुछ कर सके। 6
तब उन्होंने यिर्मयाह को लेकर राजपुत्र मल्किय्याह के उस गड़हे में जो पहरे के
आंगन में या, रस्सिक्कों उतारकर डाल दिया। और उस गड़हे में पानी नहीं केवल
दलदल या, और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया। 7 उस समय राजा बिन्यामीन के

फाटक के पास बैठा या सो जब एबेदमेलेक कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा
या, सुना, कि उन्होंने यिर्मयाह को गड़हे में डाल दिया है--- 8 तब एबेदमेलेक
राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा, 9 हे मेरे स्वामी, हे राजा, उन लोगोंने
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से जो कुछ किया है वह बुरा किया है, क्योंकि उन्होंने
उसको गड़हे में डाल दिया है; वहां वह भूख से मर जाएगा क्योंकि नगर में कुछ
रोटी नहीं रही है। 10 तब राजा ने एबेदमेलेक कूशी को यह आज्ञा दी कि यहां से
तीस पुरुष साय लेकर यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मरने से पहिले गड़हे में से
निकाल। 11 सो एबेदमेलेक उतने पुरुषोंको साय लेकर राजभवन के भण्डार के
तलघर में गया; और वहां से फटेपुराने कपके और चियड़े लेकर यिर्मयाह के पास
उस गड़हे में रस्सिक्कों उतार दिए। 12 और एबेदमेलेक कूशी ने यिर्मयाह से
कहा, थे पुराने कपके और चियढ़े अपक्की कांखोंमें रस्सियोंके नीचे रख ले। सो
यिर्मयाह ने वैसा ही किया। 13 तब उन्होंने यिर्मयाह को रस्सिक्कों खींचकर,
गड़हे में से निकाला। और यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा। 14
सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में
अपके पास बुलवा भेजा। और रजा ने यिर्मयाह से कहा, मैं तुझ से एक बात
पुछता हूँ; मुझ से कुछ न छिपा। 15 यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, यदि मैं
तुझे बताऊं, तो क्या तू मुझे मरवा न डालेगा? और चाहे मैं तुझे सम्मति भी दूं,
तौभी तू मेरी न मानेगा। 16 तब सिदकिय्याह राजा ने अकेले में यिर्मयाह से
शपय खाई, यहोवा जिस ने हमारा यह जीव रचा है, उसके जीवन की सौगन्ध न
मैं तो तुझे मरवा डालूंगा, और न उन मनुष्योंके वश में कर दूंगा जो तेरे प्राण के
खोजी हैं। 17 यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो

इस्राएल का परमेश्वर है, वह योंकहता है, यदि तू बाबुल के राजा के हाकिमोंके
पास सचमुच निकल जाए, तब तो तेरा प्राण बचेगा, और यह नगर फूंका न
जाएगा, और तू अपके घराने समेत जीवित रहेगा। 18 परन्तु, यदि तू बाबुल के
राजा के हाकिमोंके पास न निकल जाए, तो यह नगर कसदियोंके वश में कर
दिया जाएगा, ओर वे इसे फूंक देंगे, और तू उनके हाथ से बच न सकेगा। 19
सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, जो यहूदी लोग कसदियोंके पास भाग गए हैं, मैं
उन से डरता हूँ, ऐसा न हो कि मैं उनके वश में कर दिया जाऊं और वे मुझ से
ठट्ठा करें। 20 यिर्मयाह ने कहा, तू उनके वश में न कर दिया जाएगा; जो कुछ मैं
तुझ से कहता हूँ उसे यहोवा की बात समझकर मान ले तब तेरा भला होगा, और
तेरा प्राण बचेगा। 21 और यदि तू निकल जाना स्वीकार न करे तो जो बात यहोवा
ने मुझे दर्शन के द्वारा बताई है, वह यह है: 22 देख, यहूदा के राजा के रनवास में
जितनी स्त्रियां रह गई हैं, वे बाबुल के राजा के हाकिमोंके पास निकाल कर
पहुंचाई जाएंगी, और वे तुझ से कहेंगी, तेरे मित्रोंने तुझे बहकाया, और उनकी
इच्छा पूरी हो गई; और जब तेरे पांव कीच में धंस गए तो वे पीछे फिर गए हैं। 23
तेरी सब स्त्रियां और लड़केबाले कसदियोंके पास निकाल कर पहुंचाए जाएंगे; और
तू भी कसदियोंके हाथ से न बचेगा, वरन तू पकड़कर बाबुल के राजा के वश में
कर दिया जाएगा ओर इस नगर के फूंके जाने का कारण तू ही होगा। 24 तब
सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, इन बातोंको कोई न जानने पाए, तो तू मारा न
जाएगा। 25 यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैं ने तुझ से बातचीत की है तेरे
पास आकर कहने लगें, हमें बता कि तू ने राजा से क्या कहा, हम से कोई बात न
छिपा, और हम तुझे न मरवा डालेंगे; और यह भी बता, कि राजा ने तुझ से क्या

कहा, 26 तो तू उन से कहना, कि मैं ने राजा से गिड़गिड़ाकर बिनती की यी कि
मुझे योनातान के घर में फिर बापिस न भेज नहीं तो वहां मर जाऊंगा। 27 फिर
सब हाकिमोंने यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा राजा ने उसको आज्ञा दी
यी, ठीक वैसा ही उस ने उनको उत्तर दिया। सो वे उस से और कुछ न बोले और न
वह भेद खुला। 28 इस प्रकार जिस दिन यरूशलेम ले लिया गया उस दिन तक
वह पहरे के आंगन ही में रहा।

यिर्मयाह 39

1 यहूदा के राजा सिदकिय्साह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने में, बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर ने अपक्की सारी सेना समेत यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसे
घेर लिया। 2 और सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें
दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़ी गई। 3 सो जब यरूशलेम ले लिया गया,
तब नेर्गलसरेसेर, और समगर्नबो, और खेजोंका प्रधान सर्सकीम, और मगोंका
प्रधान नेर्गलसरेसेर आदि, बाबुल के राजा के सब हाकिम बीच के फाटक में प्रवेश
करके बैठ गए। 4 जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह और सब योद्वाओं ने उन्हें देखा
तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनोंभीतोंके बीच के फाटक से होकर
नगर से निकलकर भाग चले और अराबा का मार्ग लिया। 5 परन्तु कसदियोंकी
सेना ने उनको खदेड़कर सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में जा लिया और
उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला में ले गए; और
उस ने वहां उसके दण्ड की आज्ञा दी। 6 तब बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के
पुत्रोंको उसकी आंखोंके साम्हने रिबला में घात किया; और सब कुलीन

यहूदियोंको भी घात किया। 7 उस ने सिदकिय्याह की आंखोंको फुड़वा डाला और
उसको बाबुल ले जाने के लिथे बेडिय़ोंसे जकड़वा रखा। 8 कसदियोंने राजभवन
और प्रजा के घरोंको आग लगाकर फूंक दिया, ओर यरूशलेम की शहरपनाह को
ढा दिया। 9 तब जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में
रह गए थे, और जो लोग उसके पास भाग आए थे उनको अर्यात् प्रजा में से जितने
रह गए उन सब को बंधुआ करके बाबुल को ले गया। 10 परन्तु प्रजा में से जो ऐसे
कंगाल थे जिनके पास कुछ न या, उनको जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान यहूदा
देश में छोड़ गया, और जाते समय उनको दाख की बारियां और खेत दे दिए। 11
बाबुल के राजा नगूकदनेस्सर ने जल्लादोंके प्रधान नबूजरदान को यिर्मयाह के
विषय में यह आज्ञा दी, 12 कि उसको लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाए रखना और
उसकी कुछ हानि न करना; जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उस से व्यवहार करना।
13 सो जल्लादोंके प्रधान नबूजरदान और खेजोंके प्रधान नबूसजबान और मगोंके
प्रधान नेर्गलसरेसेर ज्योतिषियोंके सरदार, 14 और बाबुल के राजा के सब
प्रधानोंने, लोगोंको भेजकर यिर्मयाह को पहरे के आंगन में से बुलवा लिया और
गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता या सौंप दिया कि वह
उसे घर पहुंचाए। तब से वह लोगोंके साय रहने लगा। 15 जब यिर्मयाह पहरे के
आंगन में कैद या, तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, 16 कि, जाकर
एबेदमेलेक कूशी से कह कि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझ से
योंकहता है, देख, मैं अपके वे वचन जो मैं ने इस नगर के विषय में कहो हैं इस
प्रकार पूरा करूंगा कि इसका कुशल न होगा, हानि ही होगी, ओर उस समय
उनका पूरा होना तुझे दिखाई पकेगा। 17 परन्तु यहोवा की यह वाणी है कि उस

समय मैं तुझे बचाऊंगा, और जिन मनुष्योंसे तू भय खाता है, तू उनके वश में
नहीं किया जाएगा। 18 क्योंकि मैं तुझे, निश्चय बचाऊंगा, और तू तलवार से न
मरेगा, तेरा प्राण बचा रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। यह इस कारण होगा, कि तू
ने मुझ पर भरोसा रखा है।

यिर्मयाह 40

1 जब जल्लादोंके प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामा में उन सब यरूशलेमी
और यहूदी बंधुओं के बीच हयकड़ियोंसे बन्धा हुआ पाकर जो बाबुल जाने को थे
छुड़ा लिया, उसके बाद यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा। 2 जल्लादोंके प्रधान
नबूजरदान ने यिर्मयाह को उस समय अपके पास बुला लिया, ओर कहा, इस
स्यान पर यह जो विपत्ति पक्की है वह तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई यी। 3
ओर जैसा यहोवा ने कहा या वैसा ही उस ने पूरा भी किया है। तुम लोगोंने जो
यहोवा के विरुद्व पाप किया ओर उसकी आज्ञा नहीं मानी, इस कारण तुम्हारी यह
दशा हुई है। 4 अब मैं तेरी इन हयकड़ियोंको काटे देता हूँ, और यदि मेरे संग
बाबुल में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल, वहां मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूंगा; और
यदि मेरे संग बाबुल जाना तुझे न भाए, तो यहीं रह जा। देख, सारा देश तेरे
साम्हने पड़ा हे, जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक जंचे उधर ही चला जा। 5 वह
वहीं या कि नबूजरदान ने फिर उस से कहा, गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और
शापान का पोता है, जिसको बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरोंपर अधिक्कारनी
ठहराया है, उसके पास लौट जा और उसके संग लोगोंके बीच रह, वा जहां कहीं
तुझे जाना ठीक जान पके वहीं चला जा। से जल्लादोंके प्रधान ने उसको सीधा

और कुछ द्रव्य भी देकर विदा किया। 6 तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह
के पास मिस्पा को गया, और वहां उन लोगोंके बीच जो देश में रह गए थे, रहने
लगा। 7 योद्वाओं के जो दल दिहात में थे, जब उनके सब प्रधानोंने अपके
जनोंसमेत सुना कि बाबुल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश का
अधिक्कारनी ठहराया है, और देश के जिन कंगाल लोगोंको वह बाबुल को नहीं ले
गया, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालबच्चे, उन सभोंको उसे सौंप दिया है, 8 तब
नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह के पुत्र योहानान, योनातान और तन्हूसेत का
पुत्र सरायाह, एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह
अपके जनोंसमेत गदल्याह के पास मिस्पा में आए। 9 और गदल्याह जो
अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता या, उस ने उन से और उनके जनोंसे शपय
खाकर कहा, कसदियोंके आधीन रहने से मत डरो। इसी देश में रहते हुए बाबुल के
राजा के आधीन रहो तब नुम्हारा भला होगा। 10 मैं तो इसीलिथे मिस्पा में रहता
हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां आएं, उनके साम्हने हाज़िर हुआ करूं; परन्तु
तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोरके अपके बरतनोंमें रखो
और अपके लिए हुए नगरोंमें बसे रहो। 11 फिर जब मोआबियों, अम्मोनियों,
एदोमियोंऔर अन्य सब जातियोंके बीच रहनेवाले सब यहूदियोंने सुना कि बाबुल
के राजा ने यहूदियोंमें से कुछ लोगोंको बचा लिया और उन पर गदल्याह को जो
अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है अधिक्कारनी नियुक्त किया है, 12 तब
सब यहूदी जिन जिन स्यानोंमें तितर-बितर हो गए थे, वहां से लौटकर यहूदा देश
के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास, और बहुत दाखमधु और धूपकाल के फल
बटोरने लगे। 13 तब कारेह का पुत्र योहानान और मैदान में रहनेवाले योद्वाओं के

सब दलोंके प्रधान मिस्पा में गदल्याह के पास आकर कहने लगे, क्या तू जानता
है 14 कि अम्मोनियोंके राजा बालीस ने नतत्याह के पुत्र इश्माएल को तुझे जान
से मारने के लिथे भेजा है? परन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उनकी प्रतीति न
की। 15 फिर कारेह के पुत्र योहानान ने गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, मुझे
जाकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दे ओर कोई इसे न जानेगा। वह
क्योंतुझे मार डाले, और जितने यहूदी लोग तेरे पास इकट्ठे हुए हैं वे
क्योंतितर-बितर हो जाएं और बचे हुए यहूदी क्योंनाश हों? 16 यहीकाम के पुत्र
गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, ऐसा काम मत कर, तू इश्माएल के
विषय में फूठ बोलता है।

यिर्मयाह 41

1 और सातवें महीने में ऐसा हुआ कि इश्माएल जो नतन्याह का पुत्र और
एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषोंमें से या, सो दस
जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। वहां मिस्पा
में उन्होंने एक संग भोजन किया। 2 तब नतन्याह के पुत्र इश्माएल और उसके
संग के दस जनोंने उठकर गदल्याह को, जो अहीकाम का पुत्र और शपान का
पोता या, ओर जिसे बाबुल के राजा ने देश का अधिक्कारनी ठहराया या, उसे
तलवार से ऐसा मारा कि वह मर गया। 3 और इश्माएल ने गदल्याह के संग
जितने यहूदी मिस्पा में थे, और जो कसदी योद्वा वहां मिले, उन सभोंको मार
डाला। 4 गदल्याह के मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता या, 5 तब
शकेम और शीलो और शोमरोन से अस्सी पुरुष डाढ़ी मुड़ाए, वस्त्र फाड़े, शरीर चीरे

हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान लिए हुए, यहोवा के भवन में जाने को
आते दिखाई दिए। 6 तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल उन से मिलने को मिस्पा से
निकला, और रोता हुआ चला। जब वह उन से मिला, तब कहा, अहीकाम के पुत्र
गदल्याह के पास चलो। 7 जब वे उस नगर में आए तब नतन्याह के पुत्र
इश्माएल ने अपके संगी जनोंसमेत उनको घात करके गड़हे में फेंक दिया। 8
परन्तु उन में से दस मनुष्य इश्माएल से कहने लगे, हम को न मार; क्योंकि
हमारे पास मैदान में रखा हुआ गेहूं, जव, तेल और मधु है। सो उस ने उन्हें छोड़
दिया और उनके भाइयोंके साय नहीं मारा। 9 जिस गड़हे में इश्माएल न उन
लोगोंकी सब लोथें जिन्हें उस ने मारा या, गदल्याह की लोय के पास फेंक दी यी,
(यह वही गड़हा है जिसे आसा राजा ने इस्राएल के राजा बाशा के डर के मारे
खुदवाया या), उसको नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मारे हुओं से भर दिया। 10 तब
जो लोग मिस्पा में बचे हुए थे, अर्यात् राजकुमारियां और जितने और लोग
मिस्पा में रह गए थे जिन्हें जल्लादोंके प्रधान नबूजरदान ने अहीकाम के पुत्र
गदल्याह को सौंप दिया या, उन सभोंको नतन्याह का पुत्र इश्माएल बंधुआ करके
अम्मोनियोंके पास ले जाने को चला। 11 जब कारेह के पुत्र योहानान ने और
योद्धाओं के दलोंके उन सब प्रधानोंने जो उसके संग थे, सुना, कि नतन्याह के पुत्र
इश्माएल ने यह सब बुराई की है, 12 तब वे सब जनोंको लेकर नतन्याह के पुत्र
इश्माएल से लड़ने को निकले और उसको उस बड़े जलाशय के पास पाया जो
गिबोन में है। 13 कारेह के पुत्र योहानान को, और दलोंके सब प्रधानोंको देखकर
जो उसके संग थे, इश्माएल के साय जो लोग थे, वे सब आनन्दित हुए। 14 और
जितने लोगोंको इश्माएल मिस्पा से बंधुआ करके लिए जाता या, वे पलटकर

कारेह के पुत्र योहानान के पास चले आए। 15 परन्तु नतन्याह का पुत्र इश्माएल
आठ पुरुष समेत योहानान के हाथ से बचकर अम्मोनियोंके पास चला गया। 16
तब प्रजा में से जितने बच गए थे, अर्यात् जिन योद्वाओं, स्त्रियों, बालबच्चोंऔर
खोजोंको कारेह का पुत्र योहानान, अहीकाम के पुत्र गदल्याह के मिस्पा में मारे
जाने के बाद नतन्याह के पुत्र इश्माएल के पास से छुड़ाकर गिबोन से फेर ले
आया या, उनको वह अपके सब संगी दलोंके प्रधानोंसमेत लेकर चल दिया। 17
और बेतलेहेम के निकट जो किम्हाम की सराय है, उस में वे इसलिथे टिक गए
कि मिस्र में जाएं। 18 क्योंकि वे कसदियोंसे डरते थे; इसका कारण यह या कि
अहीकाम का पुत्र गदल्याह जिसे बाबुल के राजा ने देश का अधिक्कारनी ठहराया
या, उसे नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मार डाला या।

यिर्मयाह 42

1 तब कारेह का पुत्र योहानान, होशयाह का पुत्र याजन्याह, दलोंके सब प्रधान
और छोटे से लेकर बड़े तक, सब लोग यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के निकट आकर
कहने लगे, 2 हमारी बिनती ग्रहण करके अपके परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे
हुओं के लिथे प्रार्यना कर, क्योंकि तू अपक्की आंखोंसे देख रहा है कि हम जो
पहले बहुत थे, अब योड़े ही बच गए हैं। 3 इसलिथे प्रार्यना कर कि तेरा परमेश्वर
यहोवा हम को बताए कि हम किस मार्ग से चलें, और कौन सा काम करें? 4 सो
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उन से कहा, मैं ने तुम्हारी सुनी है; देखो, मैं तुम्हारे
वचनोंके अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्यना करूंगा ओर जो उत्तर यहोवा
तुम्हारे लिथे देगा मैं तुम को बताऊंगा; मैं तुम से कोई बात न छिपाऊंगा। 5 तब

उन्होंने यिर्मयाह से कहा, यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई
वचन पहुंचाए और हम उसके अनुसार न करें, तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा
और विश्वासयोग्य साझी ठहरे। 6 चाहे वह भली बात हो, चाहे बुरी, तौभी हम
अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञा, जिसके पास हम तुझे भेजते हैं, मानेंगे, क्योंकि
जब हम अपके परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो। 7 दस दिन के
बीतने पर यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। 8 तब उस ने कारेह के पुत्र
योहानान को, उसके साय के दलोंके प्रधानोंको, और छोटे से लेकर बड़े तक जितने
लोग थे, उन सभोंको बुलाकर उन से कहा, 9 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके
पास तुम ने मुझ को इसलिथे भेजा कि मैं तुम्हारी बिनती उसके आगे कह सुनाऊं,
वह योंकहता है, 10 यदि तुम इसी देश में रह जाओ, तब तो मैं तुम को नाश नहीं
करूंगा वरन बनाए रखूंगा; और तुम्हें न उखाडूंगा, वरन रोपे रखूंगा; क्योंकि
तुम्हारी जो हानि मैं ने की है उस से मैं पछताता हूँ। 11 तुम बाबुल के राजा से
डरते हो, सो उस से मत डरो; यहोवा की यह वाणी है, उस से मत डरो, क्योंकि मैं
तुम्हारी रझा करने और तुम को उसके हाथ से बचाने के लिथे तुम्हारे साय हूँ। 12
मैं तुम पर दया करूंगा, कि वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भूमि पर
फिर से बसा देगा। 13 परन्तु यदि तुम यह कहकर कि हम इस देश में न रहेंगे
अपके परमेश्वर यहोवा की बात न मानो, और कहो कि हम तो मिस्र देश जाकर
वहीं रहेंगे, 14 क्योंकि वहां न हम युद्ध देखेंगे, न नरसिंगे का शब्द सुनेंगे और न
हम को भोजन की धटी होगा, तो, हे बचे हुए यहूदियो, यहोवा का यह वचन सुनो:
15 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि यदि तुम सचमुच
मिस्र की ओर जाने का मुंह करो, और वहां रहने के लिथे जाओ, 16 तो ऐसा होगा

कि जिस तलवार से तुम डरते हो, वही वहां मिस्र देश में तुम को जा लेगी, और
जिस महंगी का भय तुम खाते हो, वह मिस्र में तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी; और वहीं
तुम मरोगे। 17 जितने मनुष्य मिस्र में रहने के लिथे उसकी ओर मुंह करें, वे सब
तलवार, महंगी और मरी से मरेंगे, और जो विपत्ति मैं उनके बीच डालूंगा, उस से
कोई बचा न रहेगा। 18 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि
जिस प्रकार से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम के निवासियोंपर भड़क उठी
यी, उसी प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ, तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर
ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे, और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया
करेंगे और तुम्हारी निन्दा किया करेंगे। तुम उस स्यान को फिर न देखने
पाओगे। 19 हे बचे हुए यहूदियो, यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है, मिस्र में मत
जाओ। तुम निश्चय जानो कि मैं ने आज तुम को चिताकर यह बात बता दी है। 20
क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपके परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया
कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्यना कर और जो कुछ हमारा
परमेश्वर यहोवा कहे उससी के अनुसार हम को बता और हम वैसा ही करेंगे, तब
तुम जान बूफके अपके ही को धोखा देते थे। 21 देखो, मैं आज तुम को बताए देता
हूं, परन्तु, और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिथे मुझ को
भेजा है, उस में से तुम कोई बात नहीं मानते। 22 अब तुम निश्चय जानो, कि जिस
स्यान में तुम परदेशी होके रहने की इच्छा करते हो, उस में तुम तलवार, महंगी
और मरी से मर जाओगे।

यिर्मयाह 43

1 जब यिर्मयाह उनके परमेश्वर यहोवा के वे सब वचन कह चुका, जिनके कहने के
लिथे उस ने उसको उन सब लोगोंके पास भेजा या, 2 तब होशाया के पुत्र अजर्याह
और कारेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषोंने यिर्मयाह से कहा, तू फूठ
बोलता है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने के लिथे नहीं भेजा कि मिस्र में
रहने के लिथे मत जाओ; 3 परन्तु नेरिय्याह का पुत्र बारूक तुझ को हमारे विरुद्ध
उसकाता है कि हम कसदियोंके हाथ में पकें और वे हम को मार डालें वा बंधुआ
करके बाबुल को ले जाएं। 4 सो कारेह का पुत्र योहानान और दलोंके सब
प्रधानोंऔर सब लोगोंने यहोवा की यह आज्ञा न मानी कि वे यहूदा के देश में ही
रहें। 5 और कारेह का पुत्र योहानान और दलोंके और सब प्रधान उन सब
यहूदियोंको जो अन्यजातियोंके बीच तितरबितर हो गए थे, और उन में से
लौटकर यहूदा देश में रहने लगे थे, वे उनको ले गए-- 6 पुरुष, स्त्री, बालबच्चे,
राजकुमारियां, और जितने प्राणियोंको जल्लादोंके प्रधान नबूजरदान ने गदल्याह
को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का मोता या, सौंप दिया या, उनको और
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता और नेरिय्याह के पुत्र बारूक को वे ले गए; 7 और यहोवा
की आज्ञा न मानकर वे मिस्र देश में तहपन्हेस नगर तक आ गए। 8 तब यहोवा
का यह वचन तहपन्हेस में यिर्मयाह के पास पहुंचा: 9 अपके हाथ से बड़े पत्यर
ले, और यहूदी पुरुषोंके साम्हने उस ईट के चबूतरे में जो तहपन्हेस में फिरौन के
भवन के द्वार के पास है, चूना फेर के छिपा दे, 10 और उन पुरुषोंसे कह, कि
इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, योंकहता है, देखो, मैं बाबुल के राजा
अपके सेवक नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा, और वह अपना सिंहासन इन
पत्यरोंके ऊपर जो मैं ने छिपा रखे हैं, रखेगा; और अपना छत्र इनके ऊपर

तनवाएगा। 11 वह आके मिस्र देश को मारेगा, तब जो मरनेवाले होंवे मृत्यु के
वश में, जो बंधुए होनेवाले होंवे बंधुआई में, और जो तलवार के लिथे हें वे तलवार
के वश में कर दिए जाएंगे। 12 मैं मिस्र के देवालयोंमें आग लगाऊंगा; और वह
उन्हें फुंकवा देगा और बंधुआई में ले जाएगा; और जैसा कोई चरवाहा अपना वस्त्र
ओढ़ता है, वैसा ही वह मिस्र देश को समेट लेगा; और तब बेखटके चला जाएगा।
13 वह मिस्र देश के सूर्यगृह के खम्भोंको तुड़वा डालेगा; और मिस्र के देवालयोंको
आग लगाकर फूंकवा देगा।

यिर्मयाह 44

1 जितने यहूदी लोग मिस्र देश में मिग्दोल, तहपन्हेस और नोप नगरोंऔर पत्रोस
देश में रहते थे, उनके विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुंचा, 2 इस्राएल का
परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा
के सब नगरोंपर डाल चुका हूँ, वह सब तुम लोगोंने देखी है। देखो, वे आज के दिन
कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं, 3 क्योंकि उनके निवासियोंने वह बुराई की जिस से
उन्होंने मुझे रिस दिलाई यी वे जाकर दूसरे देवताओं के लिथे धूप जलाते थे और
उनकी उपासना करते थे, जिन्हें न तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते थे। 4
तौभी मैं अपके सब दास भविष्यद्वक्ताओं को बड़े यत्न से यह कहने के लिथे तुम्हारे
पास भेजता रहा कि यह घृणित काम मत करो, जिस से मैं घृणा रखता हूँ। 5 पर
उन्होंने मेरी न सुनी और न मेरी ओर कान लगाया कि अपक्की बुराई से फिरें
और दूसरे देवताओं के लिथे धूम न जलाएं। 6 इस कारण मेरी जलजलाहट और
कोप की आग यहूदा के नगरोंऔर यरूशलेम की सड़कोंपर भड़क गई; और वे

आज के दिन तक उजाड़ और सुनसान पके हैं। 7 अब यहोवा, सेनाओं का
परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है, योंकहता है, तुम लोग क्योंअपक्की यह
बड़ी हानि करते हो, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या दूधपिउवा बच्चा,
तुम सब यहूदा के बीच से नाश किए जाओ, और कोइ न रहे? 8 क्योंकि इस मिस्र
देश में जहां तुम परदेशी होकर रहने के लिथे आए हो, तुम अपके कामोंके द्वारा,
अर्यात् दूसरे देवताओं के लिथे धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिस से तुम
नाश हो जाओगे ओर पृय्वी भर की सब जातियोंके लोग तुम्हारी जाति की
नामधराई करेंगे और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया करेंगे। 9 जो जो बुराइयां
तुम्हारे पुरखा, यहूदा के राजा और उनकी स्त्रियां, और तुम्हारी स्त्रियां, वरन तुम
आप यहूदा देश और यरूशलेम की सड़कोंमें करते थे, क्या उसे तुम भूल गए हो?
10 आज के दिन तक उनका मन चूर नहीं हुआ ओर न वे डरते हैं; और न मेरी उस
व्यवस्या और उन विधियोंपर चलते हैं जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजोंको और तुम को भी
सुनवाई हैं। 11 इस कारण इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, योंकहता है,
देखो, मैं तुम्हारे विरुद्व होकर तुम्हारी हानि करूंगा, ताकि सब यहूदियोंका अन्त
कर दूं। 12 और बचे हुए यहूदी जो हठ करके मिस्र देश में आकर रहने लगे हैं, वे
सब मिट जाएंगे; इस मिस्र देश में छोटे से लेकर बड़े तक वे तलवार और महंगी
के द्वारा मरक मिट जाएंगे; और लोग उन्हें कोसेंगे और चकित होंगे; और उनकी
उपमा देकर शाप दिया करेंगे और निन्दा भी करेंगे। 13 सो जैसा मैं ने यरूशलेम
को तलवार, महंगी और मरी के द्वारा दण्ड दिया है, वैसा ही मिस्र देश में
रहनेवालोंको भी दण्ड दूंगा, 14 कि जो बचे हुए यहूदी मिस्र देश में परदेशी होकर
रहने के लिथे आए हैं, यद्यपि वे यहूदा देश में रहने के लिथे लौटने की बड़ी

अभिलाषा रखते हैं, तौभी उन में से एक भी बचकर वहां न लौटने पाएगा; केवल
कुछ ही भागे हुओं को छोड़ कोई भी वहां न लौटने पाएगा। 15 तब मिस्र देश के
पत्रोस में रहनेवाले जितने पुरुष जानते थे कि उनकी स्त्रियां दूसरे देवताओं के
लिथे धूप जलाती हैं, और जितनी स्त्रियां बड़ी मण्डली में पास खड़ी यी, उन सभोंने
यिर्मयाह को यह उत्तर दिया, 16 जो वचन तू ने हम को यहोवा के नाम से सुनाया
है, उसको हम नहीं सुनने की। 17 जो जो मन्नतें हम मान चुके हैं उन्हें हम
निश्चय पूरी करेंगी, हम स्वर्ग की रानी के लिथे धूप जलाएंगे और तपावन देंगे,
जैसे कि हमारे पुरखा लोग और हम भी अपके राजाओं और और हाकिमोंसमेत
यहूदा के नगरोंमें और यरूशलेम की सड़कोंमें करते थे; क्योंकि उस समय हम पेट
भरके खाते और भले चंगे रहते और किसी विपत्ति में नहीं पड़ते थे। 18 परन्तु
जब से हम ने स्वर्ग की रानी के लिथे धूप जलाना और तपावन देना छोड़ दिया,
तब से हम को सब वस्तुओं की घटी है; और हम तलवार और महंगी के द्वारा मिट
चले हैं। 19 और स्त्रियोंने कहा, जब हम स्वर्ग की रानी के लिथे धूप जलातीं और
चन्द्राकार रोटियां बनाकर तपावन देती यीं, तब अपके अपके पति के बिन जाने
ऐसा नहीं करती यीं। 20 तब यिर्मयाह ने, क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने लोगोंने यह
उत्तर दिया, उन सब से कहा, 21 तुम्हारे पुरखा और तुम जो अपके राजाओं और
हाकिमोंऔर लोगोंसमेत यहूदा देश के नगरोंऔर यरूशलेम की सड़कोंमें धूप
जलाते थे, क्या वह यहोवा के ध्यान में नहीं आया? 22 क्या उस ने उसको स्मरण
न किया? सो जब यहोवा तुम्हारे बुरे और सब घृणित कामोंको और अधिक न सह
सका, तब तुम्हारा देश उजड़कर निर्जन और सुनसान हो गया, यहां तक कि लोग
उसकी उपमा देकर शाप दिया करते हैं, जैसे कि आज होता है। 23 क्योंकि तुम

धूप जलाकर यहोवा के विरुद्व पाप करते और उसकी नहीं सुनते थे, और उसकी
व्यवस्या और विधियोंऔर चितौनियोंके अनुसार नहीं चले, इस कारण यह
विपत्ति तुम पर आ पक्की है, जैसे कि आज है। 24 फिर यिर्मयाह ने उन सब
लोगोंसे और उन सब स्त्रियोंसे कहा, हे सारे मिस्र देश में रहनेवाले यहूदियो,
यहोवा का वचन सुनो: 25 इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, योंकहता है,
कि तुम ने और तुम्हारी स्त्रियोंने मन्नतें मानी और यह कहकर उन्हें पूरी करते हो
कि हम ने स्वर्ग की रानी के लिथे धूप जलाने और तपावन देने की जो जो मन्नतें
मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे; और तुम ने अपके हाथोंसे ऐसा ही किया।
सो अब तुुम अपक्की अपक्की मन्नतोंको मानकर पूरी करो ! 26 परन्तु हे मिस्र
देश में रहनेवाले सारे यहूदियो यहोवा का वचन सुनो: सुनो, मैं ने अपके बड़े नाम
की शपय खाई है कि अब पूरे मिस्र देश में कोई यहूदी मनुष्य मेरा नाम लेकर फिर
कभी यह न कहने पाएगा कि “प्रभु यहोवा के जीवन की सौगन्ध”। 27 सुनो, अब
मैं उनकी भलाई नहीं, हानि ही की चिन्ता करूंगा; सो मिस्र देश में रहनेवाले सब
यहूदी, तलवार और महंगी के द्वारा मिटकर नाश हो जाएंगे जब तक कि उनका
सर्वनाश न हो जाए। 28 और जो तलवार से बचकर और मिस्र देश से लौटकर
यहूदा देश में पहुंचेंगे, वे योड़े ही होंगे; और मिस्र देश में रहने के लिथे आए हुए
सब यहूदियोंमें से जो बच पाएंगे, वे जान लेंगे कि किसका वचन पूरा हुआ, मेरा
वा उनका। 29 इस बात का मैं यह चिन्ह देता हूं, यहोवा की यह वाणी है, कि मैं
तुम्हें इसी स्यान में दण्ड दूंगा, जिस से तुम जान लोगे कि तुम्हारी हानि करने में
मेरे वचन निश्चय पूरे होंगे। 30 यहोवा योंकहता हे, देखो, जैसा मैं ने यहूदा के राजा
सिदकिय्याह को उसके शत्रु अर्यात् उसके प्राण के खोजी बाबुल के राजा

नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया, वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन होप्रा को भी
उसके शत्रुओं के, अर्यात् उसके प्राण के खोजियोंके हाथ में कर दूंगा।

यिर्मयाह 45

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में, जब
नेरिय्याह का पुत्र बारूक यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से भविष्यद्वाणी के थे वचन
सुनकर पुस्तक में लिख चुका या, 2 तब उस ने उस से यह वचन कहा, कि
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा,तुझ से योंकहता है, 3 हे बारूक, तू ने कहा, हाथ मुझ
पर ! क्योंकि यहोवा ने मुझे दु:ख पर दु:ख दिया है; मैं कराहते कराहते यक गया
और मुझे कुछ चैन नहीं मिलता। 4 तू योंकह, यहोवा योंकहता है, कि देख, इस
सारे देश को जिसे मैं ने बनाया या, उसे मैं आप ढा दूंगा, और जिन को मैं ने रोपा
या, उन्हें स्वयं उखाड़ फेंकूंगा। 5 इसलिथे सुन, क्या तू अपके लिथे बड़ाई खोज
रहा है? उसे मत खोज; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि मैं सारे मनुष्योंपर
विपत्ति डालूंगा; परन्तु जहां कहीं तू जाएगा वहां मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित
रखूंगा।

यिर्मयाह 46

1 अन्यजातियोंके विषय यहोवा का जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास
पहुंचा, वह यह है। 2 मिस्र के विषय। मिस्र के राजा फिरौन निको की सेना जो
परात महानद के तीर पर कर्कमीश में यी, और जिसे बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे

वर्ष में जीत लिया या, 3 उस सेना के विषय:--ढालें और फरियां तैयार करके लड़ने
को निकट चले आओ। 4 घोड़ोंको जुतवाओ; और हे सवारो, घोड़ोंपर चढ़कर टोप
पहिने हुए खड़े हो जाओ; भालोंको पैना करो, फिलमोंको पहिन लो ! 5 मैं
क्योंउनको व्साकुल देखता हूँ? वे विस्मित होकर पीछे हट गए। उनके शूरवीर
गिराए गए और उतावली करके भाग गए; वे पीछे देखते भी नहीं; क्योंकि यहोवा
की यह वाणी है, कि चारोंओर भय ही भय हे ! 6 न वेग चलनेवाला भागने पाएगा
और न वीर बचने पाएगा; क्योंकि उत्तर दिशा में परात महानद के तीर पर वे सब
ठोकर खाकर गिर पके। 7 यह कौन है, जो नील नदी की नाई, जिसका जल
महानदोंका सा उछलता है, बढ़ा चला आता है? 8 मिस्र नील नदी की नाई बढ़ता
है, उसका जल महानदोंका सा उछलता है। वह कहता है, मैं चढ़कर पृय्वी को भर
दूंगा, मैं नगरोंको उनके निवासियोंसमेत नाश कर दूंगा। 9 हे मिस्री सवारो आगे
बढ़ो, हे रयियो बहुत ही वेग से चलाओ ! हे ढाल पकड़नेवाले कूशी और पूती वीरो,
हे धनुर्धारी लूदियो चले आओ। 10 क्योंकि वह दिन सेनाओं के यहोवा प्रभु के
बदला लेने का दिन होगा जिस में वह अपके द्रोहियोंसे बदला लेगा। सो तलवार
खाकर तृप्त होगी, और उनका लोहू पीकर छक जाएगी। क्योंकि, उत्तर के देश में
परान महानद के तीर पर, सेनाओं के यहोवा प्रभु का यज्ञ है। 11 हे मिस्र की
कुमारी कन्या, गिलाद को जाकर बलसान औषधि ले; तू व्यर्य ही बहुत इलाज
करती है, तू चंगी नहीं होगी ! 12 क्योंकि सब जाति के लोगोंने सुना है कि तू नीच
हो गई और पृय्वी तेरी चिल्लाहट से भर गई है; वीर से वीर ठोकर खाकर गिर
पके; वे दोनोंएक संग गिर गए हैं। 13 यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से यह
वचन भी कहा कि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर क्योंकर आकर मिस्र देश को

मार लेगा: 14 मिस्र में वर्णन करो, और मिग्दोल में सुनाओ; हां, ओर नोप और
तहपन्हेस में सुनाकर यह कहो कि खड़े होकर तैयार हो जाओ; क्योंकि तुम्हारे
चारोंओर सब कुछ तलवार खा गई है। 15 तेरे बलवन्त जन क्योंबिलाय गए हैं? वे
इस कारण खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें ढकेल दिया। 16 उस ने
बहुतोंको ठोकर खिलाई, वे एक दूसरे पर गिर पके; और वे कहने लगे, उठो, चलो,
हम अन्धेर करनेवाले की तलवार के डर के मारे अपके अपके लोगोंओर अपक्की
अपक्की जन्मभूमि में फिर लौट जाएं। 17 वहां वे पुकार के कहते हैं, मिस्र का
राजा फिरौन सत्यानाश हुआ; क्योंकि उस ने अपना बहुमूल्य अवसर खे दिया।
18 वह राजाधिराज जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी यह वाणी है कि
मेरे जीवन की सौगन्ध, जैसा ताबोर अन्य पहाड़ोंमें, और जैसा कमल समुद्र के
किनारे है, वैसा ही वह आएगा। 19 हे मिस्र की रहनेवाली पुत्री ! बंधुआई में जाने
का सामान तैयार कर, क्योंकि नोप नगर उजाड़ और ऐसा भस्म हो जाएगा कि
उस में कोई भी न रहेगा। 20 मिस्र बहुत ही सुन्दर बछिया तो है, परन्तु उत्तर
दिशा से नाश चला आता है, वह आ ही गया है। 21 उसके जो सिपाही किराथे पर
आए हैं वह पोसे हुए बछड़ोंके समान हैं; उन्होंने मुंह मोड़ा, और एक संग भाग
गए, वे खड़े नहीं रहे; क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन और दण्ड पाने का समय आ
गया। 22 उसकी आहट सर्प के भागने की सी होगी; क्योंकि वे वृझोंके
काटनेवालोंकी सेना और कुल्हाडियां लिए हुए उसके विरुद्व चढ़ आएंगे। 23
यहोवा की यह वाणी है, कि चाहे उसका वन बहुत ही घना हो, परन्तु वे उसको
काट डालेंगे, क्योंकि वे टिड्डियोंसे भी अधिक अनगिनित हैं। 24 मिस्री कन्या
लज्जित होगी, वह उत्तर दिशा के लोगोंके वश में कर दी जाएगी। 25 इस्राएल का

परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा कहता है, देखो, मैं नगरवासी आमोन और फिरौन
राजा और मिस्र को उसके सब देवताओं और राजाओं समेत और फिरौन को उन
समेत जो उस पर भरोसा रखते हैं दण्ड देने पर हूँ। 26 मैं उनको बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर और उसके कर्मचारियोंके वश में कर दूंगा जो उनके प्राण के खोजी
हैं। उसके बाद वह प्राचीनकाल की नाईं फिर बसाया जाएगा, यहोवा की यह वाणी
है। 27 परन्तु हे मेरे दास याकूब, तू मत डर, और हे इस्राएल, विस्मित न हो;
क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को बंधुआई के दूर देश से छुड़ा ले आऊंगा। याकूब
लैटकर चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसे डराने न पाएगा। 28 हे मेरे दास
याकूब, यहोवा की यह वाणी है, कि तू मत डर, क्योंकि मैं तेरे साय हूँ। ओर यद्यपि
मैं उन सब जातियोंका अन्त कर डालूंगा जिन में मैं ने तुझे बरबस निकाल दिया
है, तौभी तेरा अन्त न करूंगा। मैं तेरी ताड़ना विचार करके करूंगा, परन्तु तुझे
किसी प्रकार से निदॉष न ठहराऊंगा।

यिर्मयाह 47

1 फिरोन के गज़्जा नगर को जीत लेने से पहिले यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास
पलिश्तियोंके विषय यहोवा का यह वचन पहुंचा: 2 यहोवा योंकहता है कि देखो,
उत्तर दिशा से उमण्डनेवाली नदी देश को उस सब समेत जो उस में है, और
निवासियोंसमेत नगर को डुबो लेगी। तब मनुष्य चिल्लाएंगे, वरन देश के सब
रहनेवाले हाथ-हाथ करेंगे। 3 शत्रुओं के बलवन्त घोड़ोंकी टाप, रयोंके वेग चलने
और उनके पहियोंके चलने का कोलाहल सुनकर पिता के हाथ-पांव ऐसे ढीले पड़
जाएंगे, कि वह मुंह मोड़कर अपके लड़कोंको भी न देखेगा। 4 क्योंकि सब

पलिश्तियोंके नाश होने का दिन आता है; और सोर और सिदोन के सब बचे हुए
सहाथक मिट जाएंगे। क्योंकि यहोवा पलिश्तियोंको जो कप्तोर नाम समुद्र तीर के
बचे हुए रहनेवाले हैं, उनको भी नाश करने पर है। 5 गज़्जा के लोग सिर मुड़ाए हैं,
अश्कलोन जो पलिश्तियोंके नीचान में अकेला रह गया है, वह भी मिटाया गया है;
तू कब तक अपक्की देह चीरता रहेगा? 6 हे यहोवा की तलवार ! तू कब तक
शान्त न होगी? तू अपक्की मियान में घुस जा, शान्त हो, और यमी रह ! 7 तू
क्योंकर यम सकती है? क्योंकि यहोवा ने तुझ को आज्ञा देकर अश्कलोन और
समुद्रतीर के विरुद्व ठहराया है।

यिर्मयाह 48

1 मोआब के विषय इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा योंकहता है: नबू पर
हाथ, क्योंकि वह नाश हो गया ! किर्यातैम की आशा टूट गई, वह ले लिया गया है;
ऊंचा गढ़ निराश और विस्मित हो गया है। 2 मोआब की प्रशंसा जाती रही।
हेशबोन में उसकी हानि की कल्पना की गई है: आओ, हम उसको ऐसा नाश करें
कि वह राज्य न रह जाए। हे मदमेन, तू भी सुनसान हो जाएगा; तलवार तेरे पीछे
पकेगी। 3 होरोनैम से चिल्लाहट का शब्द सुनो ! नाश और बड़े द:ख का शब्द
सुनाई देता है ! 4 मोआब का सत्यानाश हो रहा है; उसके नन्हे बच्चोंकी
चिल्लाहट सुन पक्की। 5 क्योंकि लूहीत की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए
चढ़ेंगे; और होरोनैम की उतार में नाश की चिल्लाहट का संकट हुआ है। 6 भागो !
अपना अपना प्राण बचाओ ! उस अधमूए पेड़ के समान हो जाओ जंगल में होता
है ! 7 क्योंकि तू जो अपके कामोंऔर सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, इस कारण तू

भी पकड़ा जाएगा; और कमोश देवता भी अपके याजकोंऔर हाकिमोंसमेत
बंधुआई में जाएगा। 8 यहोवा के वचन के अनुसार नाश करनेवाले तुम्हारे हर एक
नगर पर चढ़ाई करेंगे, और कोई नगर न बचेगा; नीचानवाले और पहाड़ पर की
चौरस भूमिवाले दोनोंनाश किए जाएंगे। 9 मोआब के पंख लगा दो ताकि वह
उड़कर दूर हो जए; क्योंकि उसके नगर ऐसे उजाड़ हो जाएंगे कि उन में कोई भी
न बसने पाएगा। 10 शापित है वह जो यहोवा का काम आलस्य से करता है; और
वह भी जो अपक्की तलवार लोहू बहाने से रोक रखता है। 11 मोआब बचपन ही
से सुखी है, उसके नीचे तलछट है, वह एक बरतन से दूसरे बरतन में उण्डेला नहीं
गया और न बंधुआई में गया; इसलिथे उसका स्वाद उस में स्यिर है, और उसकी
गन्ध ज्योंकी त्योंबनी रहती है। 12 इस कारण यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन
आएंगे, कि मैं लोगोंको उसके उण्डेलने के लिथे भेजूंगा, और वे उसको उण्डेलेंगे,
और जिन घड़ोंमें वह रखा हुआ है, उनको छूछे करके फोड़ डालेंगे। 13 तब जैसे
इस्राएल के घराने को बेतेल से लज्जित होना पड़ा, जिस पर वे भरोसा रखते थे,
वैसे ही मोआबी लोग कमोश से लज्जित हांगे। 14 तुम कैसे कह सकते हो कि हम
वीर और पराक्रमी योद्वा हैं? 15 मोआब तो नाश हुआ, उसके नगर भस्म हो गए
और उसके चुने हुए जवान घात होने को उतर गए, राजाधिराज, जिसका नाम
सेनाओं का यहोवा है, उसकी यही वाणी है। 16 मोआब की विपत्ति निकट आ गई,
और उसके संकट में पड़ने का दिन बहुत ही वेग से आता है। 17 उसके आस पास
के सब रहनेवालो, और उसकी कीत्तिर् के सब जाननेवालो, उसके लिथे विलाप
करो; कहो हाथ ! यह मजबूत सोंटा और सुन्दर छड़ी कैसे टूट गई है? 18 हे दीबोन
की रहनेवाली तू अपना विभव छोड़कर प्यासी बैठी रह ! क्योंकि मोआब के नाश

करनेवाले ने तुझ पर चढ़ाई करके तेरे दृढ़ गढ़ोंको नाश किया है। 19 हे अरोएर की
रहनेवाली तू मार्ग में खड़ी होकर ताकती रह ! जो भागता है उस से, और जो बच
निकलती है उस से पूछ, कि, क्या हुआ है? 20 मोआब की आशा टूटेगी, वह
विस्मित हो गया; तुम हाथ हाथ करो और चिल्लाओ; अर्नॉन में भी यह बताओ
कि मोआब नाश हुआ है। 21 चौरस भूमि के देश में होलोन, 22 यहसा, मेपात,
दीबोन, नबो, बेतदिबलातैम, 23 और किर्य्यातैम, बेतगामूल, बेतमोन, 24 और
करिय्योत, बोस्रा, और क्या दूर क्या निकट, मोआब देश के सारे नगरोंमें दण्ड की
आज्ञा पूरी हुई है। 25 यहोवा की यह वाणी है, मोआब का सींग कट गया, और
भुजा टूट गई है। 26 उसको मतवाल करो, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद् व बड़ाई
मारी है; इसलिथे मोआब अपक्की छांट में लोटेगा, और ठट्ठोंमें उड़ाया जाएगा।
27 क्या तू ने भी इस्राएल को ठट्ठोंमें नहीं उड़ाय? क्या वह चोरोंके बीच पाड़ा गया
या कि जब तू उसकी चर्चा करता तब तू सिर हिलाता या? 28 हे मोआब के
रहनेवालो अपके अपके नगर को छोड़कर ढांग की दरार में बसो ! उस पएडुकी के
समान हो जो गुफा के मुंह की एक ओर घोंसला बनाती हो। 29 हम ने मोआब के
गर्व के विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी है; उसका गर्व, अभिमान
और अहंकार, और उसका मन फूलना प्रसिद्व है। 30 यहोवा की यह वाणी है, मैं
उसके रोष को भी जानता हूँ कि वह व्यर्य ही है, उसके बड़े बोल से कुछ बन न
पड़ा। 31 इस कारण मैं मोआबियोंके लिथे हाथ-हाथ करूंगा; हां मैं सारे
मोआबियोंके लिथे चिल्लाऊंगा; कीहरेस के लोगोंके लिथे विलाप किया जाएगा।
32 हे सिबमा की दाखलता, मैं तुम्हारे लिथे याजेर से भी अधिक विलाप करूंगा !
तेरी डालियां तो ताल के पार बढ़ गई, वरन याजेर के ताल तक भी पहुंची यीं; पर

नाश करनेवाला तेरे धूपकाल के फलोंपर, और तोड़ी हुई दाखोंपर भी टूट पड़ा है।
33 फलवाली बारियोंसे और मोआब के देश से आनन्द और मगन होना उठ गया
है; मैं ने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डोंमें कुछ दाखमधु न रहा; लोग फिर
ललकारते हुए दाख न रौंदेंगे; जो ललकार होनेवाली है, वह अब नहीं होगी। 34
हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले और यहस तक, और सोआर से
होरोनैम और एग्लतशलीशिया तक भी चिल्लाते हुए भागे चले गए हैं। क्योंकि
निम्रीम का जल भी सूख गया है। 35 और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ऊंचे
स्यान पर चढ़ावा चढ़ाना, और देवताओं के लिथे धूप जलाना, दोनोंको मोआब में
बन्द कर दूंगा। 36 इस कारण मेरा मन मोआब और कीहरेस के लोगोंके लिथे
बांसुली सा रो रोकर आलापता है, क्योंकि जो कुछ उन्होंने कमाकर बचाया है, वह
नाश हो गया है। 37 क्योंकि सब के सिर मुंड़े गए और सब की दाढियां नोची गई;
सब के हाथ चीरे हुए, और सब की कमरोंमें टाट बन्धा हुआ है। 38 मोआब के सब
घरोंकी छतोंपर और सब चौकोंमें रोना पीटना हो रहा है; क्योंकि मैं ने मोआब को
तुच्छ बरतन की नाई तोड़ डाला है यहोवा की यह वाणी है। 39 मोआब कैसे
विस्मित हो गया ! हाथ, हाथ, करो ! क्योंकि उस ने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी
है ! इस प्रकार मोआब के चारोंओर के सब रहनेवाले उसका ठट्ठा करेंगे और
विस्मित हो जाएंगे। 40 क्योंकि यहोवा योंकहता है, देखो, वह उकाब सा उड़ेगा
और मोआब के ऊपर अपके पंख फैलाएगा। 41 करिय्योत ले लिया गया, और
गढ़वाले नगर दूसरोंके वश में पड़ गए। उस दिन मोआबी वीरोंके मन जच्चा स्त्री
के से हो जाएंगे; 42 और मोआब ऐसा तितर-बितर हो जाएगा कि उसका दल टूट
जाएगा, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है। 43 यहोवा की यह वाणी है

कि हे मोआब के रहनेवाले, तेरे लिथे भय और गड़हा और फन्दे ठहराए गए हैं।
44 जो कोई भय से भागे वह गड़हे में गिरेगा, और जो कोई गड़हे में से निकले, वह
फन्दे में फंसेगा। क्योंकि मैं मोआब के रण्ड का दिन उस पर ले आऊंगा, यहोवा
की यही वाणी है। 45 जो भागे हुए हैं वह हेशबोन में शरण लेकर खड़े हो गए हैं;
परन्तु हेशबोन से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली, जिस से मोआब देश
के कोने और बलवैयोंके चोण्डे भस्म हो गए हैं। 46 हे मोआब तुझ पर हाथ !
कमोश की प्रजा नाश हो गई; क्योंकि तेरे स्त्री-पुरुष दोनोंबंधुआई में गए हैं। 47
तौभी यहोवा की यह वाणी है, कि अन्त के दिनोंमें मैं मोआब को बंधुआई से लौटा
ले आऊंगा। मोआब के दण्ड का वचन यहीं तक हुआ।

यिर्मयाह 49

1 अम्मोनियोंके विषय यहोवा योंकहता है, क्या इस्राएल के पुत्र नहीं हैं? क्या
उसका कोई वारिस नहीं रहा? फिर मल्काम क्योंगाद के देश का अधिक्कारनी
हुआ? और उसकी प्रजा क्योंउसके नगरोंमें बसने पाई है? 2 यहोवा की यह वाणी
है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि मैं अम्मोनियोंके रब्बा नाम नगर के विरुद्ध युद्ध की
ललकार सुनवाऊंगा, और वह उजड़कर खण्डहर हो जाएगा, और उसकी बस्तियां
फूंक दी जाएंगी; तब जिन लोगोंने इस्राएलियोंके देश को अपना लिया है, उनके
देश को इस्राएली अपना लेंगे, यहोवा का यही वचन है। 3 हे हेशबोन हाथ-हाथ
कर; क्योंकि थे नगर नाश हो गया। हे रब्बा की बेटियो चिल्लाओ ! और कमर में
टाट बान्धो, छाती पीटती हुई बाड़ोंमें इधर उधर दौड़ो ! क्योंकि मल्काम अपके
याजकोंऔर हाकिमोंसमेत बंधुआई में जाएगा। 4 हे भटकनेवाली बेटी ! तू अपके

देश की तराइयोंपर, विशेष कर अपके बहुत ही अपजाऊ तराई पर क्योंफूलती है?
तू क्योंयह कहकर अपके रखे हुए धन पर भरोसा रखती है, कि मेरे विरुद्ध कौन
चढ़ाई कर सकेगा? 5 प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख, मैं तेरे चारोंओर
के सब रहनेवालोंकी ओर से तेरे मन में भय उपजाने पर हूँ, और तेरे लोग अपके
अपके साम्हने की ओर ढकेल दिए जाएंगे; और जब वे मारे मारे फिरेंगे, तब कोई
उन्हें इकट्ठा न करेगा। 6 परन्तु उसके बाद मैं अम्मोनियोंको बंधुआई से लौटा
लाऊंगा; यहोवा की यही वाणी है। 7 एदोम के विषय, सेनाओं का यहोवा योंकहता
है, क्या तेमान में अब कुछ बुद्धि नहीं रही? क्या वहां के ज्ञानियोंकी युक्ति निष्फल
हो गई? क्या उनकी बुद्धि जाती रही है? 8 हे ददान के रहनेवालो भागो, लौट जाओ,
वहां छिपकर बसो ! क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड देने लगूंगा, तब उस पर भारी
विपत्ति पकेगी। 9 यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं कहीं
दाख न छोड़ जाते? और यदि चोर रात को आते तो क्या वे जितना चाहते उतना
धन लूटकर न ले जाते? 10 क्योंकि मैं ने एसाव को उधारा है, मैं ने उसके छिपके
के स्यानोंको प्रगट किया है; यहां तक कि वह छिप न सका। उसके वंश और भाई
और पड़ोसी सब नाश हो गए हैं और उसका अन्त हो गया। 11 अपके अनाय
बालकोंको छोड़ जाओ, मैं उनको जिलाऊंगा; और तुम्हारी विधवाएं मुझ पर
भरोसा रखें। 12 क्योंकि यहोवा योंकहता है, देखो, जो इसके योग्य न थे कि कटोरे
में से पीएं, उनको तो निश्चय पीना पकेगा, फिर क्या तू किसी प्रकार से निदॉष
ठहरकर बच जाएगा? तू निदॉष ठहरकर न बचेगा, तुझे अवश्य ही पीना पकेगा।
13 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैं ने अपक्की सौगन्ध खाई है, कि बोस्रा ऐसा
उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे, और उसकी उपमा देकर निन्दा किया करेंगे

और शाप दिया करेंगे; और उसके सारे गांव सदा के लिथे उजाड़ हो जाएंगे। 14 मैं
ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, वरन जाति जाति में यह कहने को एक दूत
भी भेजा गया है, इकट्ठे होकर एदोम पर चढ़ाई करो; और उस से लड़ने के लिथे
उठो। 15 क्योंकि मैं ने तुझे जातियोंमें छोटा, और मनुष्योंमें तुच्छ कर दिया है।
16 हे चट्टान की दरारोंमें बसे हुए, हे पहाड़ी की चोटी पर किला बनानेवाले ! तेरे
भयानक रूप और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है। चाहे तू उकाब की
नाई। अपना बसेरा ऊंचे स्यान पर बनाए, तौभी मैं वहां से तुझे उतार लाऊंगा,
यहोवा की यही वाणी है। 17 एदोम यहां तक उजड़ जाएगा कि जो कोई उसके
पास से चले वह चकित होगा, और उसके सारे दु:खोंपर ताली बजाएगा। 18
यहोवा का यह वचन है, कि जैसी सदोम बौर अमोरा और उनके आस पास के
नगरोंके उलट जाने से उनकी दशा हुई यी, वैसी ही उसकी दशा होगी, वहां न कोई
मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उस में टिकेगा। 19 देखो, वह सिंह की नाई
यरदन के आस पास के घने जंगलोंसे सदा की चराई पर चढ़ेगा, और मैं उनको
उसके साम्हने से फट भगा दूंगा; तब जिसको मैं चुन लूं, उसको उन पर
अधिक्कारनी ठहराऊंगा। मेरे तुल्य कौन है? और कौन मुझ पर मुक़द्दमा
चलाएगा? वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा? 20 देखो, यहोवा ने
एदोम के विरुद्व क्या युक्ति की है; और तेमान के रहनेवालोंके विरुद्व कैसी कल्पना
की है? निश्चय वह भेड़-बकरियोंके बच्चोंको घसीट ले जाएगा; वह चराई को
भेड़-बकरियोंसे निश्चय खाली कर देगा। 21 उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी कांप
उठेगी; और ऐसी चिल्लाहट मचेगी जो लाल समुद्र तक सुनाई पकेगी। 22 देखो,
वह उकाब की नाई निकलकर उड़ आएगा, ओर बोस्रा पर अपके पंख फैलाएगा,

और उस दिन एदोमी शूरवीरोंका मन जच्चा स्त्री का सा हो जाएगा। 23 दमिश्क
के विषय, हमात और अर्पद की आश टूटी है, क्योंकि उन्होंने बुरा समाचार सुना
है, वे गल गए हैं; समुद्र पर चिन्ता है, वह शान्त नहीं हो सकता। 24 दमिश्क
बलहीन होकर भागने को फिरती है, परन्तु कंपकंपी ने उसे पकड़ा है, जच्चा की
सी पीड़ें उसे उठी हैं। 25 हाथ, वह नगर, वह प्रशंसा योग्य पुरी, जो मेरे हर्ष का
कारण है, वह छोड़ा जाएगा ! 26 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उसके
जवान चौकोंमें गिराए जाएंगे, और सब योद्वाओं का बोलना बन्द हो जाएगा। 27
और मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊंगा जिस से बेन्हदद के राजभवन
भस्म हो जाएंगे। 28 केदार और हासोर के राज्योंके विषय जिन्हें बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने मार लिया। यहोवा योंकहता है, उठकर केदार पर चढ़ाई करो !
पूरबियोंको नाश करो ! 29 वे उनके डेरे और भेड़-बकरियां ले जाएंगे, उनके तम्बू
और सब बरतन उठाकर ऊंटोंको भी हांक ले जाएंगे, और उन लोगोंसे पुकारके
कहेंगे, चारोंओर भय ही भय है। 30 यहोवा की यह वाणी है, हे हासोर के रहनेवालो
भागो ! दूर दूर मारे मारे फिरो, कहीं जाकर छिपके बसो। क्योंकि बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्व युक्ति और कल्पना की है। 31 यहोवा की यह वाणी
है, उठकर उस चैन से रहनेवाली जाति के लोगोंपर चढ़ाई करो, जो निडर रहते हैं,
और बिना किवाड़ और बेण्डे के योंहो बसे हुए हैं। 32 उनके ऊंट और अनगिनित
गाय-बैल और भेड़-बकरियां लूट में जाएंगी, क्योंकि मैं उनके गाल के बाल
मुंडानेवालोंको उडाकर सब दिशाओं में तितर-बितर करूंगा; और चारोंओर से उन
पर विपत्ति लाकर डालूंगा, यहोव की यह वाणी है। 33 हासोर गीदड़ोंका वासस्यान
होगा और सदा के लिथे उजाड़ हो जाएगा, वहां न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई

आदमी उस में टिकेगा। 34 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के आरम्भ में
यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास एलाम के विषय पहुंचा। 35
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, कि मैं एलाम के धनुष को जो उनके पराक्रम का
मुख्य कारण है, तोड़ूंगा; 36 और मैं आकाश के चारोंओर से वायु बहाकर उन्हें
चारोंदिशाओं की ओर यहां तक तितर-बितर करूंगा, कि ऐसी कोई जाति न रहेगी
जिस में एलामी भागते हुए न आएं। 37 मैं एलाम को उनके शत्रुओं और उनके
प्राण के खोजियोंके साम्हने विस्मित करूंगा, और उन पर अपना कोप भड़काकर
विपत्ति डालूंगा। और यहोवा की यह वाणी है, कि तलवार को उन पर चलवाते
चलवाते मैं उनका अन्त कर डालूंगा; 38 और मैं एलाम में अपना सिंहासन
रखकर उनके राजा और हाकिमोंको नाश करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 39
परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है, कि अन्त के दिनोंमें मैं एलाम को बंधुआई से
लौटा ले आऊंगा।

यिर्मयाह 50

1 बाबुल और कसदियोंके देश के विषय में यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के
द्वारा यह वचन कहा: 2 जातियोंमें बताओ, सुनाओ और फण्डा खड़ा करो; सुनाओ,
मत छिपाओ कि बाबुल ले लिया गया, बेल का मुंह काला हो गया, मरोदक
विस्मित हो गया। बाबुल की प्रतिमाएं लज्जित हुई और उसकी बेडौल मूरतें
विस्मित हो गई। 3 क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उसके
देश को यहां तक उजाड़ कर देगी, कि क्या मनुष्य, क्या पशु, अस में कोई भी न
रहेगा; सब भाग जाएंगे। 4 यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनोंमें इस्राएली और

यहूदा एक संग आएंगे, वे रोते हुए अपके परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ने के लिथे चले
आएंगे। 5 वे सिय्योन की ओर मुंह किए हुए उसका मार्ग पूछते और आपस में
यह कहते आएंगे, कि आओ हम यहोवा से मेल कर लें, उसके साय ऐसी वाचा
बान्धे जो कभी भूली न जाए, परन्तु सदा स्यिर रहे। 6 मेरी प्रजा खोई हुई भेडें हैं;
उनके चरवाहोंने उनको भटका दिया और पहाड़ोंपर भटकाया है; वे पहाड़-पहाड़
और पहाड़ी-पहाड़ी घूमते-घूमते अपके बैठने के स्यान को भूल गई हैं। 7 जितनोंने
उन्हें पाया वे उन्को खा गए; और उनके सतानेवालोंने कहा, इस में हमारा कुछ
दोष नहीं, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है जो धर्म का आधार है,
और उनके पूर्वजोंका आश्रय या। 8 बाबुल के बीच में से भागो, कसदियोंके देश से
जैसे बकरे अपके फुण्ड के अगुवे होते हैं, वैसे ही निकल आओ। 9 क्योंकि देखो, मैं
उत्तर के देश से बड़ी जातियोंको उभारकर उनकी मण्डली बाबुल पर चढ़ा ले
आऊंगा, और वे उसके विरुद्ध पांति बान्धेंगे; और उसी दिशा से वह ले लिया
जाएगा। उनके तीर चतुर वीर के से होंगे; उन में से कोई अकारय न जाएगा। 10
और कसदियोंका देश ऐसा लुटेगा कि सब लूटनेवालोंका पेट भर जाएगा, यहोवा
की यह वाणी है। 11 हे मेरे भाग के लूटनेवालो, तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द
करते और हुलसते हो, और घास चरनेवाली बछिया की नाई उछलते और
बलवन्त घोड़ोंके समान हिनहिनाते हो, 12 तुम्हारी माता अत्यन्त लज्जित होगी
और तुम्हारी जननी का मुंह काला होगा। क्योंकि वह सब जातियोंमें नीच होगी,
वह जंगल और मरु और निर्जल देश हो जाएगी। 13 यहोवा के क्रोध के कारण,
वह देश निर्जन रहेगा, वह उजाड़ ही उजाड़ होगा; जो कोई बाबुल के पास से
चलेगा वह चकित होगा, और उसके सब दु:ख देखकर ताली बजाएगा। 14 हे सब

धनुर्धारियो, बाबुल के चारोंओर उसके विरुद्व पांति बान्धो; उस पर तीर चलाओ,
उन्हें मत रख छोड़ो, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्व पाप किया है। 15 चारोंओर
से उस पर ललकारो, उस ने हार मानी; उसके कोट गिराए गए, उसकी शहरपनाह
ढाई गई। क्ययोंकि यहोवा उस से अपना बदला लेने पर है; सो तुम भी उस से
अपना अपना बदला लो, जैसा उस ने किया है, वैसा ही तुम भी उस से करो। 16
बाबुल में से बोनेवाले और काटनेवाले दोनोंको नाश करो, वे दुखदाई तलवार के
डर के मारे अपके अपके लोगोंको ओर फिरें, और अपके अपके देश की भाग जाएं।
17 इस्राएल भगाई हुई भेड़ है, सिंहोंने उसको भगा दिया है। पहिले तो अश्शूर के
राजा ने उसको खा डाला, और तब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी
हड्डियोंको तोड़ दिया है। 18 इस कारण इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा
योंकहता है, देखो, जैसे मैं ने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया या, वैसे ही अब देश
समेत बाबुल के राजा को दण्ड दूंगा। 19 मैं इस्राएल को उसकी चराई में लौटा
लाऊंगा, और वह कमल और बाशान में फिर चरेगा, और एप्रैम के पहाड़ोंपर और
गिलाद में फिर भर पेट खाने पाएगा। 20 यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनोंमें
इस्राएल का अधर्म ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा, और यहूदा के पाप खोजने पर भी
नहीं मिलेंगे; क्योंकि जिन्हें मैं बचाऊं, उनके पाप भी झमा कर दूंगा। 21 तू
मरातैम देश और पकोद नगर के निवासियोंपर चढ़ाई कर। मनुष्योंको तो मार
डाल, और धन का सत्यानाश कर; यहोवा की यह वाणी है, और जो जो आज्ञा मैं
तुझे देता हूँ, उन सभोंके अनुसार कर। 22 सुनो, उस देश में युद्व और सत्यानाश
का सा शब्द हो रहा है। 23 जो हयौड़ा सारी पृय्वी के लोगोंको चूर चूर करता या,
वह कैसा काट डाला गया है ! बाबुल सब जातियोंके बीच में कैसा उजाड़ हो गया

है! 24 हे बाबुल, मैं ने तेरे लिथे फन्दा लगाया, और तू अनजाने उस में फँस भी
गया; तू ढूंढ़कर पकड़ा गया है, क्योंकि तू यहोवा का विरोध करता या। 25 प्रभु,
सेनाओं के यहोवा ने अपके शस्त्रोंका घर खोलकर, अपके क्रोध प्रगट करने का
सामान निकाला है; क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा को कसदियोंके देश में एक
काम करना है। 26 पृथ्वी की छोर से आओ, और उसकी बखरियोंको खोलो;
उसको ढेर ही ढेर बना दो; ऐसा सत्यानाश करो कि उस में कुछ भी न बचा रहें। 27
उसके सब बैलोंको नाश करो, वे घात होने के स्यान में उतर जाएं। उन पर हाथ !
क्योंकि उनके दण्ड पाने का दिन आ पहुंचा है। 28 सुनो, बाबुल के देश में से
भागनेवालोंका सा बोल सुनाई पड़ता है जो सिय्योन में यह समाचार देने को दौड़े
आते हैं, कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपके मन्दिर का बदला ले रहा है। 29 सब
धनुर्धारियोंको बाबुल के विरुद्व इकट्‌ठे करो, उसके चारोंओर छावनी डालो, कोई
जन भागकर निकलने न पाए। उसके काम का बदला उसे देओ, जैसा उस ने
किया है, ठीक वैसा ही उसके साय करो; क्योंकि उस ने यहोवा इस्राएल के पवित्र
के विरुद्व अभिमान किया है। 30 इस कारण उसके जवान चौकोंमें गिराए जाएंगे,
और सब योद्वाओं का बोल बन्द हो जाएगा, यहोवा की यही वाणी है। 31 प्रभु
सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे अभिमानी, मैं तेरे विरुद्व हूँ; तेरे दण्ड पाने
का दिन आ गया है। 32 अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा ओर कोई उसे फिर न
उठाएगा; और मैं उसके नगरोंमें आग लगाऊंगा जिस से उसके चारोंओर सब कुछ
भस्म हो जाएगा। 33 सेनाओं का यहोवा योंकहता है, इस्राएल और यहूदा
दोनोंबराबर पिसे हुए हैं; और जितनोंने उनको बंधुआ किया वे उन्हें पकड़े रहते हैं,
और जाने नहीं देते। 34 उनका छुड़ानेवाला सामर्यी है; सेनाओं का यहोवा, यही

उसका नाम हे। वह उनका मुक़द्दमा भली भांति लड़ेगा कि पृय्वी को चैन दे परन्तु
बाबुल के निवासिक्कों व्याकुल करे। 35 यहोवा की यह वाणी है, कसदियोंऔर
बाबुल के हाकिम, पण्डित आदि सब निवासियोंपर तलवार चलेगी ! 36 बड़ा बोल
बोलनेवालोंपर तलवार चलेगी, और वे मूर्ख बनेंगे ! उसके शूरवीरोंपर भी तलवार
चलेगी, और वे विस्मित हो जाएंगे ! 37 उसके सवारोंऔर रयियोंपर और सब
मिले जुले लोगोंपर भी तलवार चलेगी, और वे स्त्रिथें बन जाएंगे ! उसके
भण्डारोंपर तलवार चलेगी, और वे लुट जाएंगे ! 38 उसके जलाशयोंपर सूखा
पकेगा, और वे सूख जाएंगे ! क्योंकि वह खुदी हुई मूरतोंसे भरा हुआ देश है, और
वे अपक्की भयानक प्रतिमाओं पर बावले हैं। 39 इसलिथे निर्जल देश के जन्तु
सियारोंके संग मिलकर वहां बसेंगे, और शुतुर्मुर्ग उस में वास करेंगे, और वह फिर
सदा तक बसाया न जाएगा, न युग युग उस में कोई वास कर सकेगा। 40 यहोवा
की यह वाणी है, कि सदोम और अमोरा और उनके आस पास के नगरोंकी जैसी
दशा उस समय हुई यी जब परमेश्वरने उनको उलट दिया या, वैसी ही दशा बाबुल
की भी होगी, यहां तक कि कोई मनुष्य उस में न रह सकेगा, और न कोई आदमी
उस में टिकेगा। 41 सुनो, उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं, और पृय्वी की
छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर चढ़ाई करेंगे। 42 वे धनुष और
बर्छी पकड़े हुए हैं; वे क्रूर और निर्दय हैं; वे समुद्र की नाईं गरजेंगे; और घोड़ोंपर
चढ़े हुए तुझ बाबुल की बेटी के विरुद्व पांति बान्धे हुए युद्वा करनेवालोंकी नाईं
आएंगे। 43 उनका समाचार सुनते ही बाबुल के राजा के हाथ पांव ढीले पड़ गए,
और उसको ज़च्चा की सी पीड़ें उठीं। 44 सुनो, वह सिंह की नाईं आएगा जो
यरदन के आस पास के घने जंगल से निकलकर दृढ़ भेड़शाले पर चढ़े, परन्तु मैं

उनको उसके साम्हने से फट भगा दूंगा; तब जिसको मैं चुन लूं, उसी को उन पर
अधिक्कारनी ठहराऊंगा। देखो, मेरे तुल्य कौन हे? कौन मुझ पर मुक़द्दमा
चलाएगा? वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा? 45 सो सुनो कि
यहोवा ने बाबुल के विरुद्ध क्या युक्ति की है और कसदियोंके देश के विरुद्ध कौन सी
कल्पना की है: निश्चय वह भेड़-बकरियोंके बच्चोंको घसीट ले जाएगा, निश्चय वह
उनकी चराइयोंको भेड़-बकरियोंसे खाली कर देगा। 46 बाबुल के लूट लिए जाने के
शब्द से पृथ्वी कांप उठी है, और उसकी चिल्लाहट जातियोंमें सुनाई पड़ती है।

यिर्मयाह 51

1 यहोवा योंकहता है, मैं बाबुल के और लेबकामै के रहनेवालोंके विरुद्ध एक नाश
करनेवाली वायु चलाऊंगा; 2 और मैं बाबुल के पास ऐसे लोगोंको भेजूंगा जो
उसको फटक-फटककर उड़ा देंगे, और इस रीति उसके देश को सुनसान करेंगे;
और विपत्ति के दिन चारोंओर से उसके विरुद्ध होंगे। 3 धनुर्धारी के विरुद्ध और जो
अपना फिलम पहिने हैं धनुर्धारी धनुष चढ़ाए हुए उठे; उसके जवानोंसे कुछ
कोमलता न करना; उसकी सारी सेना को सत्यानाश करो। 4 कसदियोंके देश में
मरे हुए और उसकी सड़कोंमें छिदे हुए लोग गिरेंगे। 5 क्योंकि, यद्यपि इस्राएल
और यहूदा के देश, इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध किए हुए पापोंसे भरपूर हो गए हैं,
तौभी उनके परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा ने उनको त्याग नहीं दिया। 6 बाबुल में
से भागो, अपना अपना प्राण बचाओ ! उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी न
मिट जाओ; क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने का समय है, वह उसको बदला देने
पर है। 7 बाबुल यहोवा के हाथ में सोने का कटोरा या, जिस से सारी पृथ्वी के लोग

मतवाले होते थे; जाति जाति के लोगोंने उसके दाखमधु में से पिया, इस कारण वे
भी बावले हो गए। 8 बाबुल अचानक ले ली गई और नाश की गई है। उसके लिथे
हाथ-हाथ करो ! उसके घावोंके लिथे बलसान औषधि लाओ; सम्भव है वह चंगी
हो सके। 9 हम बाबुल का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई। सो आओ,
हम उसको तजकर उपके अपके देश को चले जाएं; क्योंकि उस पर किए हुए
न्याय का निर्णय आकाश वरन स्वर्ग तक भी पहुंच गया है। 10 यहोवा ने हमारे
धर्म के काम प्रगट किए हैं; सो आओ, हम सिय्योन में अपके परमेश्वर यहोवा के
काम का वर्णन करें। 11 तीरोंको पैना करो ! ढालें यामे रहो ! क्योंकि यहोवा ने
मादी राजाओं के मन को उभारा है, उस ने बाबुल को नाश करने की कल्पना की
है, क्योंकि यहोवा अर्यात् उसके मन्दिर का यही बदला है 12 बाबुल की
शहरपनाह के विरुद्व फण्डा खड़ा करो; बहुत पहरुए बैठाओ; घात लगानेवालोंको
बैठाओ; क्योंकि यहोवा ने बाबुल के रहनेवालोंके विरुद्व जो कुछ कहा या, वह अब
करने पर है वरन किया भी है। 13 हे बहुत जलाशयोंके बीच बसी हुई और बहुत
भण्डार रखनेवाली, तेरा अन्त आ गया, तेरे लोभ की सीमा पहुंच गई है। 14
सेनाओं के यहोवा ने अपक्की ही शपय खाई है, कि निश्चय मैं तुझ को टिड्डियोंके
समान अनगिनित मनुष्योंसे भर दूंगा, और वे तेरे विरुद्व ललकारेंगे। 15 उसी ने
पृय्वी को अपके सामर्य से बनाया, और जगत को अपक्की बुद्विं से स्यिर किया;
और आकाश को अपक्की प्रवीणता से तान दिया है। 16 जब वह बोलता है तब
आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, वह पृय्वी की छोर से कुहरा उठाता है। वह
वर्षा के लिथे बिजली बनाता, और अपके भण्डार में से पवन निकाल ले आता है।
17 सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित है; सब सोनारोंको अपक्की खोदी हुई

मूरतोंके कारण लज्जित होना पकेगा; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें धोखा
देनेवाली हैं, और उनके कुछ भी सांस नहीं चलती। 18 वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के
योग्य है; जब उनके नाश किए जाने का समय आएगा, तब वे नाश ही होंगी। 19
परन्तु जो याकूब का निज भाग है, वह उनके समान नहीं, वह तो सब का
बनानेवाला है, और इस्राएल उसका निज भाग है; उसका नाम सेनाओं का यहोवा
है। 20 तू मेरा फरसा और युद्ध के लिथे हयियार ठहराया गया है; तेरे द्वारा मैं जाति
जाति को तितर-बितर करूंगा; और तेरे ही द्वारा राज्य राज्य को नाश करूंगा। 21
तेरे ही द्वारा मैं सवार समेत घोड़ोंको टुकड़े टुकड़े करूंगा; 22 तेरे ही द्वारा रयी समेत
रय को भी टुकड़े टुकड़े करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं स्त्री पुरुष दोनोंको टुकड़े टुकड़े
करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं बूढे और लड़के दोनोंको टुकढ़े टुकड़े करूंगा, और जवान
पुरुष और जवन स्त्री दोनोंको मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा; 23 तेरे ही द्वारा मैं
भेड़-बकरियोंसमेत चरवाहे को टुकड़े टुकड़े करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं किसान और
उसके जोड़े बैलोंको भी टुकड़े टुकड़े करूंगा; अधिपतियोंओर हाकिमोंको भी मैं तेरे
ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा। 24 मैं बाबुल को और सारे कसदियोंको भी उन सब
बुराइयोंका बदला दूंगा, जो उन्होंने तुम लोगोंके साम्हने सिय्योन में की है; यहोवा
की यही वाणी है। 25 हे नाश करनेवाले पहाड़ जिसके द्वारा सारी पृय्वी नाश हुई है,
यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूँ और हाथ बढ़ाकर तुझे ढांगोंपर से
लुढका दूंगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊंगा। 26 लोग तुझ से न तो घर के कोने के
लिथे पत्यर लेंगे, और न नेव के लिथे, क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा, यहोवा की
यही वाणी है। 27 देश में फण्डा खड़ा करो, जाति जाति में नरसिंगा फूंको; उसके
विरुद्ध जाति जाति को तैयार करो; अरारात, मिन्नी और अश्कनज नाम राज्योंको

उसके विरुद्ध बुललाओ, उसके विरुद्ध सेनापति भी ठहराओ; घोड़ोंको शिखरवाली
टिड्डियोंके समान अनगिनित चढ़ा ले आओ। 28 उसके विरुद्ध जातियोंको तैयार
करो; मादी राजाओं को उनके अधिपतियोंसब हाकिमोंसहित और उस राज्य के
सारे देश को तैयार करो। 29 यहोवा ने विचारा है कि वह बाबुल के देश को ऐसा
उजाड़ करे कि उस में कोई भी न रहे; इसलिथे पृय्वी कांपक्की है और दु:खित
होती है 30 बाबुल के शूरवीर गढ़ोंमें रहकर लड़ने से इनकार करते हैं, उनकी
वीरता जाती रही है; और यह देखकर कि उनके वासस्यानोंमें आग लग गई वे स्त्री
बन गए हैं; उसके फाटकोंके बेण्डे तोड़े गए हैं। 31 एक हरकारा दूसरे हरकारे से
और एक समाचार देनेवाला दूसरे समाचार देनेवाले से मिलने और बाबुल के राजा
को यह समाचार देने के लिथे दौड़ेगा कि तेरा नगर चारोंओर से ले लिया गया है;
32 और घाट शत्रुओं के वश में हो गए हैं, ताल भी सुखाथे गए, ओर योद्धा घबरा
उठे हैं। 33 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा योंकहता है: बाबुल
की बेटी दांवते समय के खलिहान के समान है, योड़े ही दिनोंमें उसकी कटनी का
समय आएगा। 34 बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने मुझ को खा लिया, मुझ को
पीस डाला; उस ने मुझे छूछे बर्तन के समान कर दिया, उस ने मगरमच्छ की नाई
मुझ को निगल लिया है; और मुझ को स्वादिष्ट भेजन जानकर अपना पेट मुझ से
भर लिया है, उस ने मुझ को बरबस निकाल दिया हे। 35 सिय्योन की रहनेवाली
कहेगी, कि जो उपद्रव मुझ पर और मेरे शरीर पर हुआ है, वह बाबुल पर पलट
जाए। और यरूशलेम कहेगी कि मुझ में की हुई हत्याओं का दोष कसदियोंके देश
के रहनेवालोंपर लगे। 36 इसलिथे यहोवा कहता है, मैं तेरा कुक़द्दमा लड़ूंगा और
तेरा बदला लूंगा। मैं उसके ताल को और उसके सोतोंको सुखा दूंगा; 37 और

बाबुल खण्डहर, और गीदड़ोंका वासस्यान होगा; और लोग उसे देखकर चकित
होंगे और ताली बजाएंगे, और उस में कोई न रहेगा। 38 लोग एक संग ऐसे
गरजेंगे और गुर्राएंगे, जैसे युवा सिंह व सिंह के बच्चे आहेर पर करते हैं। 39
परन्तु जब जब वे उत्तेजित हों, तब मैं जेवनार तैयार करके उन्हें ऐसा मतवाला
करूंगा, कि वे हुलसकर सदा की नींद में पकेंगे और कभी न जागेंगे, यहोवा की
यही वाणी है। 40 मैं उनको, भेड़ोंके बच्चों, और मेढ़ोंऔर बकरोंकी नाईं घात करा
दूंगा। 41 शेशक, जिसकी प्रशंसा सारे पृथ्वी पर होती यी कैसे ले लिया गया? वह
कैसे पकड़ा गया? बाबुल जातियोंके बीच कैसे सुनसान हो गया है? 42 बाबुल के
ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी बहुत सी लहरोंमें डूब गया है। 43 उसके नगर
उजड़ गए, उसका देश निर्जन और निर्जल हो गया है, उस में कोई मनुष्य नहीं
रहता, और उस से होकर कोई आदमी नहीं चलता। 44 मैं बाबुल में बेल को दण्ड
दूंगा, और उस ने जो कुछ निगल लिया है, वह उसके मुंह से उगलवाऊंगा।
जातियोंके लोग फिर उसकी ओर तांता बान्धे हुए न चलेंगे; बाबुल की शहरपनाह
गिराई जाएगी। 45 हे मेरी प्रजा, उस में से निकल आओ ! अपके अपके प्राण को
यहोवा के भड़के हुए कोप से बचाओ ! 46 जब उड़ती हुई बात उस देश में सुनी
जाए, तब तुम्हारा मन न धबराए; और जो उड़ती हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी
तुम उस से न डरना: उसके एक वर्ष बाद एक और बात उड़ती हुई आएगी, तब
उसके बाद दूसरे वर्ष में एक और बात उड़ती हुई आएगी, और उस देश में उपद्रव
होगा, और एक हाकिम दूसरे के विरुद्व होगा। 47 इसलिथे देख, वे दिन आते हैं
जब मैं बाबुल की खुदी हुई मूरतोंपर दण्ड की आज्ञा करूंगा; उस सारे देश के
लोगोंका मुंह काला हो जाएगा, और उसके सब मारे हुए लोग उसी में पके रहेंगे।

48 तब स्वर्ग और पृथ्वी के सारे निवासी बाबुल पर जयजयकार करेंगे; क्योंकि
उत्तर दिशा से नाश करनेवाले उस पर चढ़ाई करेंगे, यहोवा की यही वाणी है। 49
जैसे बाबुल ने इस्राएल के लोगोंको मारा, वैसे ही सारे देश के लोग उसी में मार
डाले जाएंगे। 50 हे तलवार से बचे हुओ, भगो, खड़े मत रहो ! यहोवा को दूर से
स्मरण करो, और यरूशलेम की भी सुधि लो: 51 हम व्याकुल हैं, क्योंकि हम ने
अपक्की नामधराई सुनी है; यहोवा के पवित्र भवन में विधर्मी घुस आए हैं, इस
कारण हम लज्जित हैं। 52 सो देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले
हैं कि मैं उसकी खुदी हुई मूरतोंपर दण्ड भेजूंगा, और उसके सारे देश में लोग
घायल होकर कराहते रहेंगे। 53 चाहे बाबुल ऐसा ऊंचा बन जाए कि आकाश से
बातें करे और उसके ऊंचे गढ़ और भी दृढ़ किए जाएं, तौभी मैं उसे नाश करने के
लिथे, लोगोंको भेजूंगा, यहोवा की यह बाणी है। 54 बाबुल से चिल्लाहट का शब्द
सुनाई पड़ता है ! कसदियोंके देश से सत्यानाश का बड़ा कोलाहल सुनाइ्र देता है।
55 क्योंकि यहोवा बाबुल को नाश कर रहा है और उसके बड़े कोलाहल को बन्द
कर रहा है। इस से उनका कोलाहल महासागर का सा सुनाई देता है। 56 बाबुल
पर भी नाश करनेवाले चढ़ आए हैं, और उसके शूरवीर पकड़े गए हैं और उनके
धनुष तोड़ डाले गए; क्योंकि यहोवा बदला देनेवाला परमेश्वर है, वह अवश्य ही
बदला लेगा। 57 मैं उसके हाकिमों, पण्डितों, अधिपतियों, रईसों, और शूरवीरोंको
ऐसा मतवाला करूंगा कि वे सदा की नींद में पकेंगे और फिर न जागेंगे, सेनाओं
के यहोवा, जिसका नाम राजाधिराज है, उसकी यही वाणी है 58 सेनाओं का
यहोवा योंभी कहता है, बाबुल की चौड़ी शहरपनाह नेव से ढाई जाएगी, और उसके
ऊंचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएंगे। और उस में राज्य राज्य के लोगोंका

परिश्रम व्यर्य ठहरेगा, और जातियोंका परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे
यक जाएंगे। 59 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष में जब उसके
साय सरायाह भी बाबुल को गया या, जो नेरिय्याह का पुत्र और महसेयाह का
पोता और राजभवन का अधिक्कारनी भी या, 60 तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने
उसको थे बातें बताई अर्यात् वे सब बातें जो बाबुल पर पड़नेवाली विपत्ति के
विषय लिखी हुई हैं, उन्हें यिर्मयाह ने पुस्तक में लिख दिया। 61 और यिर्मयाह ने
सरायाह से कहा, जब तू बाबुल में पहुंचे , तब अपश्य ही थे सब वचन पड़ना, 62
और यह कहना, हे यहोवा तू ने तो इस स्यान के विषय में यह कहा है कि मैं इसे
ऐसा मिटा दूंगा कि इस में क्या मनुष्य, क्या पशु, कोई भी न रहेगा, वरन यह
सदा उजाड़ पड़ा रहेगा। 63 और जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुके, तब इसे एक
पत्यर के संग बान्धकर परात महानद के बीच में फेंक देना, 64 और यह कहना,
योंही बाबुल डूब जाएगा और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि वह फिर कभी न
उठेगा। योंउसका सारा परिश्रम व्यर्य ही ठहरेगा और वे यके रहेंगे। यहां तक
यिर्मयाह के वचन हैं।

52

1 जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का या; और
यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम हमूतल या
जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी यी। 2 और उस ने यहोयाकीम के सब कामोंके
अनुसार वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 3 निश्चय यहोवा के कोप के
कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उनको अपके
साम्हने से दूर कर दिया। और सिदकिय्याह ने बाबुल के राजा से बलवा किया। 4

और उसके राजय के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने अपक्की सारी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उस ने
उसके पास छावनी करके उसके चारोंओर क़िला बनाया। 5 योंनगर घेरा गया,
और सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा रहा। 6 चौथे महीने के नौवें
दिन से नगर में महंगी यहां तक बढ़ गई, कि लोगोंके लिथे कुछ रोटी न रही। 7
तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनोंभीतोंके बीच जो फाटक राजा
की बारी के निकट या, उस से सब योद्वा भागकर रात ही रात नगर से निकल गए,
और अराबा का मार्ग लिया। (उस समय कसदी लोग नगर को घेरे हुए थे)। 8
परन्तु उनकी सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको यरीहो के पास के अराबा
में जा पकड़ा; तब उसकी सारी सेना उसके पास से तितर-बितर हो गई। 9 सो वे
राजा को पकड़कर हमात देश के रिबला में बाबुल के राजा के पास ले गए, और
वहां उस ने उसके दण्ड की आज्ञा दी। 10 बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के
पुत्रोंको उसके साम्हने घात किया, और यहूदा के सारे हाकिमोंको भी रिबला में
घात किया। 11 फिर बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह की आंखोंको फुड़वा डाला,
और उसको बेडिय़ोंसे जकड़कर बाबुल तक ले गया, और उसको बन्दीगृह में डाल
दिया। सो वह मृत्यु के दिन तक वहीं रहा। 12 फिर उसी वर्ष अर्यात् बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के उन्नीसवें वर्ष के पांचवें महीने के दसवें दिन को
जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान जो बाबुल के राजा के सम्मुख खड़ा रहता या
यरूशलेम में आया। 13 और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और
यरूशलेम के सब बड़े बड़े घरोंको आग लगवाकर फुंकवा दिया। 14 और
कसदियोंकी सारी सेना ने जो जल्लादोंके प्रधान के संग यी, यरूशलेम के चारोंओर

की सब शहरपनाह को ढा दिश। 15 और जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान कंगाल
लोगोंमें से कितनोंको, और जो लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबुल के
राजा के पास भाग गए थे, और जो कारीगर रह गए थे, उन सब को बंधुआ करके
ले गया। 16 परन्तु, दिहात के कंगाल लोगोंमें से कितनोंको जल्लादोंके प्रधान
नबूजरदान ने दाख की बारियोंकी सेवा और किसानी करने को छोड़ दिया। 17
और यहोवा के भवन में जो पीतल के खम्भे थे, और कुसिर्योंऔर पीतल के हौज
जो यहोवा के भवन में थे, उन सभोंको कसदी लोग लोड़कर उनका पीतल बाबुल
को ले गए। 18 और हांडियों, फावडियों, कैंचियों, कटोरों, घूपदानों, निदान पीतल
के और सब पात्रोंको, जिन से लोग सेवा टहल करते थे, वे ले गए। 19 और तसलों,
करछों, कटोरियों, हांडियों, दीवटों, धूपदानों, और कटोरोंमें से जो कुछ सोने का
या, उनके सोने को, और जो कुछ चान्दी का या उनकी चान्दी को भी जल्लादोंका
प्रधान ले गया। 20 दोनोंखम्भे, एक हौज और पीतल के बारहोंबैल जो पायोंके
नीचे थे, इन सब को तो सुलैमान राजा ने यहोवा के भवन के लिथे बनवाया या,
और इन सब का पीतल तौल से बाहर या। 21 जो खम्भे थे, उन में से एक एक की
ऊंचाई अठारह हाथ, और घेरा बारह हाथ, और मोटाई चार अंगुल की यी, और वे
खोखले थे। 22 एक एक की कंगनी पीतल की यी, और एक एक कंगनी की ऊंचाई
पांच हाथ की यी; और उस पर चारोंओर जो जाली और अनार बने थे वे सब पीतल
के थे। 23 कंगनियोंके चारोंअलंगोंपर छियानवे अनार बने थे, और जाली के ऊपर
चारोंओर एक सौ अनार थे। 24 और जल्लादोंके प्रधान ने सरायाह महाथाजक
और उसके नीचे के सपन्याह याजक, और तीनोंडेवढ़ीदारोंको पकड़ लिया; 25
और नगर में से उस ने एक खोजा पकड़ लिया, जो योद्वाओं के ऊपर ठहरा या;

और जो पुरुष राजा के सम्मुख रहा करते थे, उन में से सात जन जो नगर में
मिले; और सेनापति का मुन्शी जो साधारण लोगोंको सेना में भरती करता या;
और साधारण लोगोंमें से साठ पुरुष जो नगर में मिले, 26 इन सब को
जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान रिबला में बाबुल के राजा के पास ले गया। 27 तब
बाबुल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। 28 यो
यहूदी अपके देश से बंधुए होकर चले गए। जिन लोगोंको नबूकदनेस्सर बंधुआ
करके ले गया, सो थे हैं, अर्यत् उसके राज्य के सातवें वर्ष में तीन हजार तेईस
यहूदी; 29 फिर अपके राज्य के अठारहवें वर्ष में नबूकदनेस्सर यरूशलेम से आठ
सौ बत्तीस प्राणियोंको बंधुआ करके ले गया; 30 फिर नबूकदनेस्सर के राज्य के
तेईसवें वर्ष में जल्लादोंका प्रधान नबूजरदान सात सौ पैंतालीस यहूदी जनोंको
बंधुए करके ले गया; सब प्राणी मिलकर चार हाजार छ:सौ हुए। 31 फिर यहूदा के
राजा यहोयाकीन की बंधुआई के सैंतीसवें वर्ष में अर्यात् जिस वर्ष बाबुल का राजा
एबीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ, उसी के बारहवें महीने के पक्कीसवें
दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद
दिया; 32 और उस से मधुर मधुर वचन कहकर, जो राजा उसके साय बाबुल में
बंधुए थे, उनके सिंहासनोंसे उसके सिंहासन को अधीक ऊंचा किया। 33 और
उसके बन्दीगृह के वस्त्र बदल दिए; और वह जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख
भोजन करता रहा; 34 और प्रति दिन के खर्च के लिथे बाबुल के राजा के यहां से
उसको नित्य कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ। यह प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दिन तक
उसके जीवन भर लगातार बना रहा।

विलापगीत 1

1 जो नगरी लोगोंसे भरपूर यी वह अब कैसी अकेली बैठी हुई है ! वह क्योंएक
विधवा के समान बन गई? वह जो जातियोंकी दृष्टि में महान और प्रान्तोंमें रानी
यी, अब क्योंकर देनेवाली हो गई है। 2 रात को वह फूट फूट कर रोती है, उसके
आंसू गालोंपर ढलकते हैं; उसके सब यारोंमें से अब कोई उसे शान्ति नहीं देता;
उसके सब मित्रोंने उस से विश्वासघात किया, और उसके शत्रु बन गए हैं। 3 यहूदा
दु:ख और कठिन दासत्व से बचने के लिथे परदेश चक्की गई; परन्तु
अन्यजातियोंमें रहती हुई वह चैन नहीं पाती; उसके सब खदेड़नेवालोंने उसकी
सकेती में उसे पकड़ लिया है। 4 सिय्योन के मार्ग विलाप कर रहे हैं, क्योंकि
नियत पर्वों में कोई नहीं आता है; उसके सब फाटक सुनसान पके हैं, उसके
याजक कराहते हैं; उसकी कुमारियां शोकित हैं, और वह आप कठिन दु:ख भोग
रही है। 5 उसके द्रोही प्रधान हो गए, उसके शत्रु उन्नति कर रहे हैं, क्योंकि यहोवा
ने उसके बहुत से अपराधोंके कारण उसे दु:ख दिया है; उसके बालबच्चोंको शत्रु
हांक हांक कर बंधुआई में ले गए। 6 सिय्योन की पुत्री का सारा प्रताप जाता रहा
है। उसके हाकिम ऐसे हरिणोंके समान हो गए हैं जो कुछ चराई नहीं पाते; वे
खदेड़नेवालोंके साम्हने से बलहीन होकर भागते हैं। 7 यरूशलेम ने, इन द:ख भरे
और संकट के दिनोंमें, जब उसके लोग द्रोहियोंके हाथ में पके और उसका कोई
यहाथक न रहा, तब अपक्की सब मनभावनी वस्तुओं को जो प्राचीनकाल से
उसकी यीं, स्मरण किया है। उसके द्रोहियोंने उसको उजड़ा देखकर ठट्ठोंमें
उड़ाया है। 8 यरूशलेम ने बड़ा पाप किया, इसलिथे वह अशुद्ध स्त्री सी हो गई है;
जितने उसका आदर करते थे वे उसका निरादर करते हैं, क्योंकि उन्होंने उसकी
नंगाई देखी है; हां, वह कराहती हुई मुंह फेर लेती है। 9 उसकी अशुद्धता उसके

वस्त्र पर है; उस ने अपके अन्त का स्मरण न रखा; इसलिथे वह भयंकर रीति से
गिराई गई, और कोई उसे शान्ति नहीं देता है। हे यहोवा, मेरे दु:ख पर दृष्टि कर,
क्योंकि शत्रु मेरे विरुद्ध सफल हुआ है ! 10 द्रोहियोंने उसकी सब मनभावनी
वस्तुओं पर हाथ बढ़ाया है; हां, अन्यजातियोंको, जिनके विषय में तू ने आज्ञा दी
यी कि वे तेरी सभा में भागी न होने पाएंगी, उनको उस ने तेरे पवित्रस्यान में घुसा
हुआ देखा है। 11 उसके सब निवासी कराहते हुए भोजनवस्तु ढूंढ़ रहे हैं; उन्होंने
अपना प्राण बचान के लिऐ अपक्की मनभावनी वस्तुएं बेचकर भोजन मोल
लिया है। हे यहोवा, दृष्टि कर, और ध्यान से देख, क्योंकि मैं तुच्छ हो गई हूं। 12 हे
सब बटोहियो, क्या तुम्हें इस बात की कुछ भी चिन्ता नहीं? दृष्टि करके देखो,
क्या मेरे दु:ख से बढ़कर कोई और पीड़ा है जो यहोवा ने अपके क्रोध के दिन मुझ
पर डाल दी है? 13 उस ने ऊपर से मेरी हड्डियोंमें आग लगाई है, और वे उस से
भस्म हो गई; उस ने मेरे पैरोंके लिथे जाल लगाया, और मुझ को उलटा फेर दिया
है; उस ने ऐसा किया कि मैं त्यागी हुई सी और रोग से लगातार निर्बल रहती हूँ।
14 उस ने जूए की रस्सियोंकी नाई मेरे अपराधोंको अपके हाथ से कसा है; उस ने
उन्हें बटकर मेरी गर्दन पर चढ़ाया, और मेरा बल घटा दिया है; जिनका मैं
साम्हना भी नहीं कर सकती, उन्हीं के वश में यहोवा ने मुझे कर दिया है। 15
यहोवा ने मेरे सब पराक्रमी पुरुषोंको तुच्छ जाना; उस ने नियत पर्व का प्रचार
करके लोगोंको मेरे विरुद्ध बुलाया कि मेरे जवानोंको पीस डालें; यहूदा की कुमारी
कन्या को यहोवा ने मानो कोल्हू में पेरा है। 16 इन बातोंके कारण मैं रोती हूँ; मेरी
आंखोंसे आंसू की धारा बहती रहती है; क्योंकि जिस शान्तिदाता के कारण मेरा
जी हरा भरा हो जाता या, वह मुझ से दूर हो गया; मेरे लड़केबाले अकेले हो गए,

क्योंकि शत्रु प्रबल हुआ है। 17 सिय्योन हाथ फैलाए हुए हैं, उसे कोई शान्ति नहीं
देता; यहोवा ने याकूब के विषय में यह आज्ञा दी है कि उसके चारोंओर के निवासी
उसके द्रोही हो जाएं; यरूशलेम उनके बीच अशुद्ध स्त्री के समान हो गई है। 18
यहोवा सच्चाई पर है, क्योंकि मैं ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है; हे सब
लोगो, सुनो, और मेरी पीड़ा को देखो ! मेरे कुमार और कुमारियां बंधुआई में
चक्की गई हैं। 19 मैं ने अपके मित्रोंको पुकारा परन्तु उन्होंने भी मुझे छोखा
दिया; जब मेरे याजक और पुरनिथे इसलिथे भोजनवस्तु ढूंढ़ रहे थे कि खाने से
उनका जी हरा हो जाए, तब नगर ही में उनके प्राण छूट गए। 20 हे यहोवा, दृष्टि
कर, क्योंकि मैं संकट में हूँ, मेरी अन्तडिय़ां ऐंठी जाती हैं, मेरा हृदय उलट गया है,
क्योंकि मैं ने बहुत बलवा किया है। वाहर तो मैं तलवार से निर्वंश होती हूँ; और
घर में मृत्यु विराज रही है। 21 उन्होंने सुना है कि मैं कराहती हूँ, परन्तु कोई मुझे
शान्ति नहीं देता। मेरे सब शत्रुओं ने मेरी विपत्ति का समाचार सुना है; वे इस से
हर्षित हो गए कि तू ही ने यह किया है। परन्तु जिस दिन की चर्चा तू ने प्रचार
करके सुनाई है उसको तू दिखा, तब वे भी मेरे समान हो जाएंगे। 22 उनकी सारी
दुष्टता की ओर दृष्टि कर; और जैसा मेरे सारे अपराधोंके कारण तू ने मुझे दण्ड
दिया, वैसा ही उनको भी दण्ड दे; क्योंकि मैं बहुत ही कराहती हूँ, और मेरा हृदय
रोग से निर्बल हो गया है।

विलापगीत 2

1 यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को किस प्रकार अपके कोप के बादलोंसे ढांप दिया है
! उस ने इस्राएल की शोभा को आकाश से धरती पर पटक दिया; और कोप के

दिन अपके पांवोंकी चौकी को स्मरण नहीं किया। 2 यहोवा ने याकूब की सब
बस्तियोंको निठुरता से नष्ट किया है; उस ने रोष में आकर यहूदा की पुत्री के दृढ़
गढ़ोंको ढाकर मिट्टी में मिला दिया है; उस ने हाकिमोंसमेत राज्य को अपवित्र
ठहराया है। 3 उस ने क्रोध में आकर इस्राएल के सींग को जड़ से काट डाला है; उस
ने शत्रु के साम्हने उनकी सहाथता करने से अपना दहिना हाथ खींच लिया हे; उस
ने चारोंओर भस्म करती हुई लौ की नाई याकूब को जला दिया है। 4 उस ने शत्रु
बनकर धनुष चढ़ाया, और वैरी बनकर दहिना हाथ बढ़ाए हुए खड़ा है; और जितने
देखने में मनभावने थे, उन सब को उस ने घात किया; सिय्योन की पुत्री के तम्बू
पर उस ने आग की नाई अपक्की जलजलाहट भड़का दी है। 5 यहोवा शत्रु बन
गया, उस ने इस्राएल को निगल लिया; उसके सारे भवनोंको उस ने मिटा दिया,
और उसके दृढ़ गढ़ोंको नष्ट कर डाला है; और यहूदा की पुत्री का दोना-पीटना बहुत
बढ़ाय है। 6 उस ने अपना मण्डप बारी के मचान की नाई अचानक गिरा दिया,
अपके मिलापस्यान को उस ने नाश किया है; यहोवा ने सिय्योन में नियत वर्वर्
और विश्रमदिन दोनोंको भुला दिया है, और अपके भड़के हुए कोप से राजा और
साजक दोनोंका तिरस्कार किया है। 7 यहोवा ने अपक्की वेदी मन से उतार दी,
और अपना कवित्रस्यान अपमान के साय तज दिया है; उसके भवनोंकी भीतोंको
उस ने शत्रुओं के वश में कर दिया; यहोवा के भवन में उन्होंने ऐसा कोलाहल
मचाया कि मानो नियत वर्ष का दिन हो। 8 यहोवा ने सिय्योन की कुमारी की
शहरपनाह तोड़ डालने को ठाना या: उस ने डोरी डाली और अपना हाथ उसे नाश
करने से नहीं खींचा; उस ने किले और शहरपनाह दोनोंसे विलाप करवाया, वे
दोनोंएक साय गिराए गए हैं। 9 उसके फाटक भूमि में धय गए हैं, उनके बेड़ोंको

उस ने तोडकर नाश किया। उसके राजा और हाकिम अन्यजातियोंमें रहने के
कारण व्यवस्यारहित हो गए हैं, और उसके भविष्यद्वक्ता यहोवा से दर्शन नहीं
पाते हैं। 10 सिय्योन की पुत्री के पुरनिथे भूमि पर चुपचाप बैठे हैं; उन्होंने अपके
सिर पर धूल उड़ाई और टाट का फेंटा बान्धा है; यरूशलेम की कूमारियोंने अपना
अपना सिर भूमि तक फुकाया है। 11 मेरी आंखें आंसू बहाते बहाते रह गई हैं; मेरी
अन्तडियां ऐंठी जाती हैं; मेरे लोगोंकी पुत्री के विनाश के कारण मेरा कलेजा फट
गया है, क्योंकि बच्चे वरन दूधपिउवे बच्चे भी नगर के चौकोंमे मूच्छिर्त होते हैं।
12 वे अपक्की अपक्की माता से रोकर कहते हैं, अन्न और दाखमधु कहां हैं? वे
नगर के चौकोंमें घायल किए हुए मनुष्य की नाई मूच्छिर्त होकर अपके प्राण
अपक्की अपक्की माता की गोद में छोड़ते हैं। 13 हे यरूशलेम की पुत्री, मैं तुझ से
क्या कहूं? मैं तेरी उपमा किस से दूं? हे सिय्योन की कुमारी कन्या, मैं कौन सी
वस्तु तेरे समान ठहराकर तुझे शान्ति दूं? क्योंकि तेरा दु:ख समुद्र सा अपार है;
तुझे कौन चंगा कर सकता है? 14 तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने दर्शन का दावा करके
तुझ से व्यर्थ और मूर्खता की बातें कही हैं; उन्होंने तेरा अधर्म प्रगट नहीं किया,
नहीं तो तेरी व्रधुआई न होने पाती; परन्तु उन्होंने तुझे व्यर्थ के और फूठे वचन
बताए। जो तेरे लिथे देश से निकाल दिए जाने का कारण हुए। 15 सब बटोही तुझ
पर ताली बजाते हैं; वे यरूशलेम की पुत्री पर यह कहकर ताली बजाते और सिर
हिलाते हैं, क्या यह वही नगरी है जिसे परमसुन्दरी और सारी पृथ्वी के हर्ष का
कारण कहते थे? 16 तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुंह पसारा है, वे ताली बजाते और
दांत पीसते हैं, वे कहते हैं, हम उसे निगल गए हैं ! जिस दिन की बाट हम जोहते
थे, वह यही है, वह हम को मिल गया, हम उसको देख चुके हैं ! 17 यहोवा ने जो

कुछ ठाना या वही किया भी है, जो वचन वह प्राचीनकाल से कहता आया है वही
उस ने पूरा भी किया है; उस ने निठुरता से तुझे ढा दिया है, उस ने शत्रुओं को तुझ
पर आनन्दित किया, और तेरे द्रोहियोंके सींग को ऊंचा किया है। 18 वे प्रभु की
ओर तन मन से पुकारते हैं ! हे सिय्योन की कुमारी (की शहरपनाह), अपके आंसू
रात दिन नदी की नाई बहाती रह ! तनिक भी विश्रम न ले, न तेरी आंख की
पुतली चैन ले ! 19 रात के हर पहर के आरम्भ में उठकर चिल्लाया कर ! प्रभु के
सम्मुख अपके मन की बातोंको घारा की नाई उण्डेल ! तेरे बालबच्चे जो हर एक
सड़क के सिक्के पर भूख के कारण मूच्छिर्त हो रहे हैं, उनके प्राण के निमित्त
अपके हाथ उसकी ओर फैला। 20 हे यहोवा दृष्टि कर, और ध्यान से देख कि तू ने
यह सब दु:ख किस को दिया है? क्या स्त्रियां अपना फल अर्यात् अपक्की गोद के
बच्चोंको खा डालें? हे प्रभु, क्या याजक और भविष्यद्वक्ता तेरे पवित्रस्यान में घात
किए जएं? 21 सड़कोंमें लड़के और बूढ़े दोनोंभूमि पर पके हैं; मेरी कुमारियां और
जवान लोग तलवार से गिर गए हैं; तू ने कोप करने के दिन उन्हें घात किया; तू ने
निठुरता के साय उनका वध किया है। 22 तू ने मेरे भय के कारणोंके नियत पर्व
की भीड़ के समान चारोंओर से बुलाया है; और यहोवा के कोप के दिन न तो कोई
भाग निकला और न कोई बच रहा है; जिन को मैं ने गोद में लिया और
पाल-पोसकर बढ़ाया या, मेरे शत्रु ने उनका अन्त कर डाला है।

विलापगीत 3

1 उसके रोष की छड़ी से दु:ख भोगनेवाला पुरुष मैं ही हूं; 2 वह मुझे ले जाकर
उजियाले में नहीं, अन्धिक्कारने ही में चलाता है; 3 उसका हाथ दिन भर मेरे ही

विरुद्ध उठता रहता है। 4 उस ने मेरा मांस और चमड़ा गला दिया है, और मेरी
हड्डियोंको तोड़ दिया है; 5 उस ने मुझे रोकने के लिथे किला बनाया, और मुझ को
कठिन दु:ख और श्रम से घेरा है; 6 उस ने मुझे बहुत दिन के मरे हुए लोगोंके
समान अन्धेरे स्यानोंमें बसा दिया है। 7 मेरे चारोंओर उस ने बाड़ा बान्धा है कि मैं
निकल नहीं सकता; उस ने मुझे भारी सांकल से जकड़ा है; 8 मैं चिल्ला चिल्लाके
दोहाई देता हूँ, तौभी वह मेरी प्रार्यता नहीं सुनता; 9 मेरे मार्गों को उस ने गढ़े हुए
पत्यरोंसे रोक रखा है, मेरी डगरोंको उस ने टेढ़ी कर दिया है। 10 वह मेरे लिथे
घात में बैठे हुए रीछ और घात लगाए हुए सिंह के समान है; 11 उस ने मुझे मेरे
मार्गों से भुला दिया, और मुझे फाड़ डाला; उस ने मुझ को उजाड़ दिया है। 12 उस
ने धनुष चढ़ाकर मुझे अपके तीर का निशाना बनाया है। 13 उस ने अपक्की
तीरोंसे मेरे हृदय को बेध दिया है; 14 सब लोग मुझ पर हंसते हैं और दिन भर
मुझ पर ढालकर गा ीत गाते हैं, 15 उस ने मुझे कठिन दु:ख से भर दिया, और
नागदौना पिलाकर तृप्त किया है। 16 उस ने मेरे दांतोंको कंकरी से तोड़ डाला, और
मुझे राख से ढांप दिया है; 17 और मुझ को मन से उतारकर कुशल से रहित किया
है; मैं कल्याण भूल गया हूँ; 18 इसलिऐ मैं ने कहा, मेरा बल नाश हुआ, और मेरी
आश जो यहोवा पर यी, वह टूट गई है। 19 मेरा दु:ख और मारा मारा फिरना, मेरा
नागदौने और-और विष का पीना स्मरण कर ! 20 मैं उन्हीं पर सोचता रहता हूँ,
इस से मेरा प्राण ढला जाता है। 21 परन्तु मैं यह स्मरण करता हूँ, इसीलिथे मुझे
आाशा है: 22 हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि
उसकी दया अमर है। 23 प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।
24 मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा। 25

जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिथे यहोवा भला है। 26
यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है। 27 पुरुष के लिथे
जवानी में जूआ उठाना भला है। 28 वह यह जानकर अकेला चुपचाप रहे, कि
परमेश्वर ही ने उस पर यह बोफ डाला है; 29 वह अपना मुंह धूल में रखे, कया
जाने इस में कुछ आशा हो; 30 वह अपना गाल अपके मारनेवाले की ओर फेरे,
और नामधराई सहता रहे। 31 क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतारे नहीं रहता, 32
चाहे वह दु:ख भी दे, तौभी अपक्की करुणा की बहुतायत के कारण वह दया भी
करता है; 33 क्योंकि वह मनुष्योंको अपके मन से न तो दबाता है और न दु:ख
देता है। 34 पृय्वी भर के बंधुओं को पांव के तले दलित करना, 35 किसी पुरुष का
हक़ परमप्रधान के साम्हने मारना, 36 और किसी मनुष्य का मुक़द्दमा बिगाड़ना,
इन तीन कामोंको यहोवा देख नहीं सकता। 37 यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब
कौन है कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए? 38 विपत्ति और कल्याण, क्या
दोनोंपरमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते? 39 सो जीवित मनुष्य क्योंकुड़कुड़ाए?
और पुरुष अपके पाप के दण्ड को क्योंबुरा माने? 40 हम अपके चालचलन को
ध्यान से परखें, और यहोवा की ओर फिरें ! 41 हम स्वर्गवासी परमेश्वर की ओर
मन लगाएं और हाथ फैलाएं और कहें: 42 हम ने तो अपराध और बलवा किया है,
और तू ने झमा नहीं किया। 43 तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे पड़ा है, तू ने
बिना तरस खाए घात किया है। 44 तू ने अपके को मेघ से घेर लिया है कि तुझ
तक प्रार्यना न पहुंच सके। 45 तू ने हम को जाति जाति के लोगोंके बीच में
कूड़ा-कर्कट सा ठहराया है। 46 हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना अपना मुंह
फैलाया है; 47 भय और गड़हा, उजाड़ और विनाश, हम पर आ पके हैं; 48 मेरी

आंखोंसे मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण जल की धाराएं बह रही है। 49
मेरी आंख से लगातार आंसू बहते रहेंगे, 50 जब तक यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न
देखे; 51 अपक्की नगरी की सब स्त्रियोंका हाल देखने पर मेरा दु:ख बढ़ता है। 52
जो व्यर्थ मेरे शत्रु बने हैं, उन्होंने निर्दयता से चिडिय़ा के समान मेरा आहेर किया
है; 53 उन्होंने मुझे गड़हे में डालकर मेरे जीवन का अन्त करने के लिथे मेरे ऊपर
पत्यर लुढकाए हैं; 54 मेरे सिर पर से जल बह गया, मैं ने कहा, मैं अब नाश हो
गया। 55 हे यहोवा, गहिरे गड़हे में से मैं ने तुझ से प्रार्यना की; 56 तू ने मेरी सुनी
कि जो दोहाई देकर मैं चिल्लाता हूँ उस से कान न फेर ले ! 57 जब मैं ने तुझे
पुकारा, तब तू ने मुझ से कहा, मत डर ! 58 हे यहोवा, तू ने मेरा मुक़द्दमा लड़कर
मेरा प्राण बचा लिया है। 59 हे यहोवा, जो अन्याय मुझ पर हुआ है उसे तू ने देखा
है; तू मेरा न्याय चुका। 60 जो बदला उन्होंने मुझ से लिया, और जो कल्पनाएं
मेरे विरुद्ध कीं, उन्हें भी तू ने देखा है। 61 हे यहोवा, जो कल्पनाएं और निन्दा वे
मेरे विरुद्ध करते हैं, वे भी तू ने सुनी हैं। 62 मेरे विरोधियोंके वचन, और जो कुछ
भी वे मेरे विरुद्ध लगातार सोचते हैं, उन्हें तू जानता है। 63 उनका उठना-बैठना
ध्यान से देख; वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं। 64 हे यहोवा, तू उनके कामोंके
अनुसार उनको बदला देगा। 65 तू उनका मन सुन्न कर देगा; तेरा शाप उन पर
होगा। 66 हे यहोवा, तू अपके कोप से उनको खदेड़-खदेड़कर धरती पर से नाश
कर देगा।

विलापगीत 4

1 सोना कैसे खोटा हो गया, अत्यन्त खरा सोना कैसे बदल गया है? पवित्रस्यान

के पत्यर तो हर एक सड़क के सिक्के पर फेंक दिए गए हैं। 2 सिय्योन के उत्तम
पुत्र जो कुन्दन के तुल्य थे, वे कुम्हार के बनाए हुए मिट्टी के घड़ोंके समान कैसे
तुच्छ गिने गए हैं ! 3 गीदड़िन भी अपके बच्चोंको यन से लगाकर पिलाती है,
परन्तु मेरे लोगोंकी बेटी वन के शुतुर्मुगों के तुल्य निर्दयी हो गई है। 4 दूधपीउवे
बच्चोंकी जीभ प्यास के मारे तालू में चिपट गई है; बालबच्चे रोटी मांगने हैं,
परन्तु कोई उनको नहीं देता। 5 जो स्वादिष्ट भेजन खाते थे, वे अब सड़कोंमें
व्याकुल फिरते हैं; जो मखमल के वस्त्रोंमें पके यो अब घूरोंपर लेटते हैं। 6 मेरे
लोगोंकी बेटी का अधर्म सदोम के पाप से भी अधिक हो गया जो किसी के हाथ
डाले बिना भी झण भर में उलट गया या। 7 उसके कुलीन हिम से निर्मल और दूध
से भी अधिक उज्ज्वल थे; उनकी देह मूंगोंसे अधिक लाल, और उनकी सुन्दरता
नीलमणि की सी यी। 8 परन्तु अब उनका रूप अन्धकार से भी अधिक काला है,
वे सड़कोंमें चीन्हें नहीं जाते; उनका चमड़ा हड्डियोंमें सट गया, और लकड़ी के
समान सूख गया है। 9 तलवार के मारे हुए भूख के मारे हुओं से अधिक अच्छे थे
जिनका प्राण खेत की उपज बिना भूख के मारे सूखता जाता हे। 10 दयालु
स्त्रियोंने अपके ही हाथोंसे अपके बच्चोंको पकाया है; मेरे लोगोंके विनाश के समय
वे ही उनका आहार बन गए। 11 यहोवा ने अपक्की पूरी जलजलाहट प्रगट की,
उस ने अपना कोप बहुत ही भड़काया; और सिय्योन में ऐसी आग लगाई जिस से
उसकी नेव तक भस्म हो गई हे। 12 पृय्वी का कोई राजा वा जगत का कोई बांसी
इसकी कभी प्रतीति न कर सकता या, कि द्रोही और शत्रु यरूशलेम के फाटकोंके
भीतर घुसने पाएंगे। 13 यह उसके भविष्यद्वक्ताओं के पापोंऔर उसके याजकोंके
अधर्म के कामोंके कारण हुआ है; क्योंकि वे उसके बीच धमिर्योंकी हत्या करते

आए हैं। 14 वे अब सड़कोंमें अन्धे सरीखे मारे मारे फिरते हैं, और मानो लोहू की
छींटोंसे यहां तक अशुद्ध हैं कि कोई उनके वस्त्र नहीं छू सकता। 15 लोग उनको
पुकारकर कहते हैं, अरे अशुद्ध लोगो, हट जाओ ! हट जाओ ! हम को मत छूओ !
जब वे भागकर मारे मारे फिरने लगे, तब अन्यजाति लोगोंने कहा, भविष्य में वे
यहां टिकने नहीं पाएंगे। 16 यहोवा ने अपके कोप से उन्हें तितर-बितर किया, वह
फिर उन पर दया दृष्टि न करेगा; न तो याजकोंका सन्मान हुआ, और न
पुरनियोंपर कुछ अनुग्रह किया गया। 17 हमारी आंखें व्यर्थ ही सहाथता की बाट
जोहते जोहते रह गई हैं, हम लगातार एक ऐसी जाति की ओर ताकते रहे जो बचा
नहीं सकी। 18 लोग हमारे पीछे ऐसे पके कि हम अपके नगर के चौकोंमें भी नहीं
चल सके; हमारा अन्त निकट आया; हमारी आयु पूरी हुई; क्योंकि हमारा अन्त
आ गया या। 19 हमारे खदेड़नेवाले आकाश के उकाबोंसे भी अधिक वेग से चलते
थे; वे पहाड़ोंपर हमारे पीछे पड़ गए और जंगल में हमारे लिथे घात लगाकर बैठ
गए। 20 यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा प्राण या, और जिसके विषय हम ने
सोचा या कि अन्यजातियोंके बीच हम उसकी शरण में जीवित रहेंगे, वह उनके
खोदे हुए गड़होंमें पकड़ा गया। 21 हे एदोम की पुत्री, तू जो ऊज देश में रहती है,
हर्षित और आनन्दित रह; परन्तु यह कटोरा तुझ तक भी पहुंचेगा, और तू
मनवाली होकर अपके आप को नंगा करेगी। 22 हे यिय्योन की पुत्री, तेरे अधर्म
का दण्ड समाप्त हुआ, वह फिर तुझे बंधुआई में न ले जाएगा; परन्तु हे एदोम की
पुत्री, तेरे अधर्म का दण्ड वह तुझे देगा, वह तेरे पापोंको प्रगट कर देगा।

विलापगीत 5

1 हे यहोवा, स्मरण कर कि हम पर क्या क्या बीता है; हमारी ओर दृष्टि करके
हमारी नामधराई को देख ! 2 हमारा भाग परदेशियोंका हो गया ओर हमारे घर
परायोंके हो गए हैं। 3 हम अनाय और पिताहीन हो गए; हमारी माताएं विधवा सी
हो गई हैं। 4 हम मोल लेकर पानी पीते हैं, हम को लकड़ी भी दाम से मिलती है। 5
खदेड़नेवाले हमारी गर्दन पर टूट पके हैं; हम यक गए हैं, हमें विश्रम नहीं
मिलता। 6 हम स्वयं मिस्र के अधीन हो गए, और अश्शूर के भी, ताकि पेट भर
सकें। 7 हमारे पुरखाओं ने पाप किया, ओर मर मिटे हैं; परन्तु उनके अधर्म के
कामोंका भार हम को उठाना पड़ा है। 8 हमारे ऊपर दास अधिक्कारने रखते हैं;
उनके हाथ से कोई हमें नहीं छुड़ाता। 9 जंगल में की तलवार के कारण हम अपके
प्राण जोखिम में डालकर भोजनवस्तु ले आते हैं। 10 भूख की फुलसाने वाली आग
के कारण, हमारा चमड़ा तंदूर की नाई काला हो गया है। 11 सिय्योन में स्त्रियां,
और यहूदा के नगरोंमें कुमारियां भ्रष्ट की गई हैं। 12 हाकिम हाथ के बल टांगे गए
हैं; और पुरनियोंका कुछ भी आदर नहीं किया गया। 13 जवानोंको चक्की चलानी
पड़ती है; और लड़केबाले लकड़ी का बोफ उठाते हुए लडखड़ाते हैं। 14 अब फाटक
पर पुरनिथे नहीं बैठते, न जवानोंका गीत सुनाई पड़ता है। 15 हमारे मन का हर्ष
जाता रहा, हमारा नाचना विलाप में बदल गया है। 16 हमारे सिर पर का मुकुट
गिर पड़ा हे; हम पर हाथ, क्योंकि हम ने पाप किया है ! 17 इस कारण हमारा
हृदय निर्बल हो गया है, इन्हीं बातोंसे हमारी आंखें धुंधली पड़ गई हैं, 18 क्योंकि
सिय्योन पर्वत उजाड़ पड़ा है; उस में सियार घूमते हैं। 19 परन्तु हे यहोवा, तू तो
सदा तक विराजमान रहेगा; तेरा राज्य पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा। 20 तू ने क्योंहम
को सदा के लिथे भुला दिया है, और क्योंबहुत काल के लिथे हमें छोड़ दिया है? 21

हे यहोवा, हम को अपक्की ओर फेर, तब हम फिर सुधर जाएंगे। प्राचीनकाल की
नाई हमारे दिन बदलकर ज्योंके त्योंकर दे ! 22 क्या तू ने हमें बिल्कुल त्याग
दिया हे? क्या तू हम से अत्यन्त क्रोधित है?

यहेजकेल 1

1 तीसवें वर्ष के चौथे महीने के पांचवें दिन, मैं बंधुओं के बीच कबार नदी के तीर
पर या, तब स्वर्ग खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाए। 2 यहोयाकीम
राजा की बंधुआई के पांचवें वर्ष के चौथे महीने के पांचवें दिन को, कसदियोंके देश
में कबार नदी के तीर पर, 3 यहोवा का वचन बूजी के पुत्र यहेजकेल याजक के
पास पहुचा; और यहोवा की शक्ति उस पर वहीं प्रगट हुई। 4 जब मैं देखने लगा,
तो क्या देखता हूँ कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा, और लहराती हुई आग सहित बड़ी
आंधी आ रही है; और घटा के चारोंओर प्रकाश और आग के बीचों-बीच से
फलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है। 5 फिर उसके बीच से चार
जीवधारियोंके समान कुछ निकले। और उनका रूप मनुष्य के समान या, 6
परन्तु उन में से हर एक के चार चार मुख और चार चार पंख थे। 7 उनके पांव
सीधे थे, और उनके पांवोंके तलुए बछड़ोंके खुरोंके से थे; और वे फलकाए हुए
पीतल की नाई चमकते थे। 8 उनकी चारोंअलंग पर पंखोंके नीचे मनुष्य के से
हाथ थे। और उन चारोंके मुख और पंख इस प्रकार के थे: 9 उनके पंख एक दूसरे
से परस्पर मिले हुए थे; वे अपके अपके साम्हने सीधे ही चलते हुए मुड़ते नहीं थे।
10 उनके साम्हने के मुखोंका रूप मनुष्य का सा या; और उन चारोंके दहिनी ओर
के मुख सिंह के से, बाई ओर के मुख बैल के से थे, और चारोंके पीछे के मुख

उकाब पक्की के से थे। 11 उनके चेहरे ऐसे थे। और उनके मुख और पंख ऊपर की
ओर अलग अलग थे; हर एक जीवधारी के दो दो पंख थे, जो एक दूसरे के पंखोंसे
मिले हुए थे, और दो दो पंखोंसे उनका शरीर ढंपा हुआ या। 12 और वे सीधे अपके
अपके साम्हने ही चलते थे; जिध्र आत्मा जाना चाहता या, वे उधर ही जाते थे,
और चलते समय मुड़ते नहीं थे। 13 और जीबधारियोंके रूप अंगारोंऔर जलते
हुए पक्कीतोंके समान दिखाई देते थे, और वह आग जीवधारियोंके बीच इधर उध्र
चलती फिरती हुई बड़ा प्रकाश देती रही; और उस आग से बिजली निकलती यी।
14 और जीवधारियोंका चलना-फिरना बिजली का सा या। 15 जब मैं
जीवधारियोंको देख ही रहा या, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके पास चारोंमुखें
की गिनती के अनुसार, एक एक पहिया या। 16 पहियोंका रूप और बनावट
फीरोजे की सी यी, और चारोंका एक ही रूप या; और उनका रूप और बनावट ऐसी
यी जैसे एक पहिथे के बीच दूसरा पहिया हो। 17 चलते समय वे अपक्की
चारोंअलंगोंकी ओर चल सकते थे, और चलने में मुड़ते नहीं थे। 18 और उन
चारोंपहियोंके घेरे बहुत बड़े और डरावने थे, और उनके घेरोंमें चारोंओर आंखें ही
आंखें भरी हुई यीं। 19 और जब जीवधारी चलते थे, तब पहिथे भी उनके साय
चलते थे; और जब जीवधारी भूमि पर से उठते थे, तब पहिथे भी उठते थे। 20
जिधर आत्मा जाना चाहती यी, उधर ही वे जाते, और और पहिथे जीवधारियोंके
साय उठते थे; क्योंकि उनकी आत्मा पहियोंमें यी। 21 जब वे चलते थे तब थे भी
चलते थे; और जब जब वे खड़े होते थे तब थे भी खड़े होते थे; और जब वे भूमि
पर से उठते थे तब पहिथे भी उनके साय उठते थे; क्योंकि जीवधारियोंकी आत्मा
पहियोंमें यी। 22 जीवधारियोंके सिरोंके ऊपर आकाशमण्डल सा कुछ या जो बर्फ

की नाई भयानक रीति से चमक्ता या, और वह उनके सिरोंके ऊपर फैला हुआ या।
23 और आकाशमण्डल के नीचे, उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे;
और हर एक जीवधारी के दो दो और पंख थे जिन से उनके शरीर ढंपे हुए थे। 24
और उनके चलते समय उनके पंखोंकी फड़फड़ाहट की आहट मुझे बहुत से जल,
वा सर्पशक्तिमान की वाणी, वा सेना के हलचल की सी सुनाई पड़ती यी; और जब
वे खड़े होते थे, तब अपके पंख लटका लेते थे। 25 फिर उनके सिरोंके ऊपर जो
आकाशमण्डल या, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता या; और जब वे खड़े
होते थे, तब अपके पंख लटका लेते थे। 26 और जो आकाशमण्डल उनके सिरोंके
ऊपर या, उसके ऊपर मानो कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन या; इस सिंहासन
के ऊपर मनुष्य के समान कोई दिखाई देता या। 27 और उसकी मानो कमर से
लेकर ऊपर की ओर मुझे फलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पड़ा, और उसके भीतर
और चारोंओर आग सी दिखाई पड़ती यी; फिर उस मनुष्य की कमर से लेकर
नीचे की ओर भी मुझे कुछ आग सी दिखाई पड़ती यी; और उसके चारोंओर
प्रकाश या। 28 जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही
चारोंओर का प्रकाश दिखाई देता या। यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही या। और उसे
देखकर, मैं मुंह के बल गिरा, तब मैं ने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है।

यहेजकेल 2

1 और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपके पांवोंके बल खड़ा हो, और
मैं तुझ से बातें करूंगा। 2 जैसे ही उस ने मुझ से यह कहा, त्योंही आत्मा ने मुझ
में समाकर मुझे पांवोंके बल खड़ा कर दिया; और जो मुझ से बातें करता या मैं ने

उसकी सुनी। 3 और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे
इस्राएलियोंके पास अर्यात् बलवा करनेवाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने
मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिल तक मेरा अपराध
करते चले आए हैं। 4 इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज
और हठीले हैं; 5 और तू उन से कहना, प्रभु यहोवा योंकहता हे, इस से वे, जो
बलवा करनेवाले घराने के हैं, चाहे वे सुनें व न सुनें, तौभी वे इतना जान लेंगे कि
हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है। 6 और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से
न डरना; चाहे तुझे कांटों, ऊंटकटारोंओर बिच्चुओं के बीच भी रहना पके, तौभी
उनके वचनोंसे न डरना; यद्यपि वे बलवई घराने के हैं, तौभी न तो उनके वचनोंसे
डरना, और न उनके मुंह देखकर तेरा मन कच्चा हो। 7 सो चाहे वे सुनें या न सुनें;
तौभी तू मेरे वचन उन से कहना, वे तो बड़े बलवई हैं। 8 परन्तु हे मनुष्य के
सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ, उसे तू सुन ले, उस बलवई घराने के समान तू भी
बलवई न बनना; जो में तुझे देता हूँ, उसे मुंह खोलकर खा ले। 9 तब मैं ने दृष्टि की
और क्या देख, कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है और उस में एक पुसतक है। 10
उसको उस ने मेरे साम्हने खोलकर फैलाया, ओर वह दोनोंओर लिखी हुई यी;
और जो उस में लिखा या, वे विलाप और शोक और दु:खभरे वचन थे।

यहेजकेल 3

1 तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिला है उसे खा ले;
अर्यात् इस पुस्तक को खा, तब जाकर इस्राएल के घराने से बातें कर। 2 सो मैं ने
मुंह खोला और उस ने वह पुस्तक पुफे खिला दी। 3 तब उस ने मुझ से कहा, हे

मनुष्य के सन्तान, यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूँ उसे पचा ले, और अपक्की
अन्तडियां इस से भर ले। सो मैं ने उसे खा लिया; और मेरे मुंह में वह मधु के
तुल्य मीठी लगी। 4 फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के
घराने के पास जाकर उनको मेरे वचन सुना। 5 ंक्यांकि तू किसी अनोखी बोली
वा कठिन भाषावाली जाति के पास नहीं भेजा जाता है, परन्तु इस्राएल ही के
घराने के पास भेजा जाता है। 6 अनोखी बोली वा कठिन भाषावाली बहुत सी
जातियोंके पास जो तेरी बात समझ न सकें, तू नहीं भेजा जाता। नि:सन्देह यदि
मैं तुझे ऐसोंके पास भेजता तो वे तेरी सुनते। 7 परन्तु इस्राएल के घरानेवाले तेरी
सुनने से इनकार करेंगे; वे मेरी भी सुनने से इनकार करते हैं; क्योंकि इस्राएल का
सारा घराना ढीठ और कठोर मन का है। 8 देख, मैं तेरे मुख को उनके मुख के
साम्हने, और तेरे माथे को उनके माथे के साम्हने, ढीठ कर देता हूँ। 9 मैं तेरे माथे
को हीरे के तुल्य कड़ा कर दोता हूँ जो चकमक पत्थ्र से भी कड़ा होता है; सो तू उन
से न डरना, और न उनके मुंह देखकर तेरा मन कच्चा हो; क्योंकि वे बलवई
घराने के हैं। 10 फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, ेिकतने वचन
मैं तुझ से कहूँ, वे सब हृदय में रख और कानोंसे सुन। 11 और उन बंधुओं के पास
जाकर, जो तेरे जाति भाई हैं, उन से बातें करना और कहना, कि प्रभु यहोवा
योंकहता है; चाहे वे सुनें, व न सुनें। 12 तब आत्मा ने मुझे उठाया, और मैं ने
अपके पीछे बड़ी घड़घड़ाहट के साय एक शब्द सुना, कि यहोवा के भवन से उसका
तेज धन्य है। 13 और उसके साय ही उन जीवधारियोंके पंखोंका शब्द, जो एक
दूसरे से लगते थे, और उनके संग के पहियोंका शब्द और एक बड़ी ही घड़घड़ाहट
सुन पक्की। 14 सो आत्मा मुझे उठाकर ले गई, और मैं कठिन दु:ख से भरा हुआ,

और मन में जलता हुआ चला गया; और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल यी; 15
और मैं उन बंधुओं के पास आया जो कबार नदी के तीर पर तेलाबीब में रहते थे।
और वहां मैं सात दिन तक उनके बीच व्याकुल होकर बैठा रहा। 16 सात दिन के
व्यतीत होने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 17 हे मनुष्य के सन्तान मैं
ने तुझे इस्राएल के घराने के लिथे पहरुआ नियुक्त किया है; तू मेरे मुंह की बात
सुनकर, उन्हें मेरी ओर से चिताना। 18 जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा,
और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से कि वह सचेत
हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपके अधर्म में फंसा
हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। 19 पर यदि तू दुष्ट को
चिताए, और वह अपक्की दुष्टता ओर दुष्ट पार्ग से न फिरे, तो वह तो अपके अधर्म
में फंसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपके प्राणोंको बचाएगा। 20 फिर जब धर्मी
जन अपके धर्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे, और मैं उसके साम्हने ठोकर
रखूं, तो वह मर जाएगा, क्योंकि तू ने जो उसको नहीं चिताया, इसलिथे वह
अपके पाप में फंसा हुआ मरेगा; और जो धर्म के कर्म उस ने किए हों, उनकी सुधि
न ली जाएगी, पर उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। 21 परन्तु यदि तू धर्मी
को ऐसा कहकर चिताए, कि वह पाप न करे, और वह पाप से बच जाए, तो वह
चितौनी को ग्रहण करने के कारण निश्चय जीवित रहेगा, और तू अपके प्राण को
बचाएगा। 22 फिर यहोवा की शक्ति वहीं मुझ पर प्रगट हुई, और उस ने मुझ से
कहा, उठकर मैदान में जा; और वहां मैं तुझ से बातें करूंगा। 23 तब मैं उठकर
मैदान में गया, और वहां क्या देखा, कि यहोवा का प्रताप जैसा मुझे कबार नदी के
तीर पर, वैसा ही यहां भी दिखाई पड़ता है; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। 24 तब

आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवोंके बल खड़ा कर दिया; फिर वह मुझ से
कहने लगा, जा अपके घर के भीतर द्वार बन्द करके बैठ रह। 25 और हे मनुष्य के
सन्तान, देख; वे लोग तुझे रस्सिक्कों जकड़कर बान्ध रखेंगे, और तू निकलकर
उनके बीच जाने नहीं पाएगा। 26 और मैं तेरी जीभ तेरे तालू से लगाऊंगा; जिस से
तू मौ◌ैन रहकर उनका डांटनेवाला न हो, क्योंकि वे बलवई घराने के हैं। 27
परन्तु जब जब मैं तुझ से बातें करूं, तब तब तेरे मुंह को खोलूंगा, और तू उन से
ऐसा कहना, कि प्रभु यहोवा योंकहता है, जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं
सुनता वह न सुने, वे तो बलवई घराने के हैं ही।

यहेजकेल 4

1 और हे मनुष्य के सन्तान, तू एक ईट ले और उसे अपके साम्हने रखकर उस
पर एक नगर, अर्यात् यरूशलेम का चित्र ख्◌ी◌ंच; 2 तब उसे घेर अर्यात् उसके
विरुद्ध क़िला बना और उसके साम्हने दमदमा बान्ध; और छावनी डाल, और
उसके चारोंओर युद्ध के यंत्र लगा। 3 तब तू लोहे की याली लेकर उसको लोहें की
शहरपनाह मानकर अपके ओर उस नगर के बीच खड़ा कर; तब अपना मुंह उसके
साम्हने करके उसे घेरवा, इस रीति से तू उसे घेर रखना। यह इस्राएल के घराने के
लिथे चिन्ह ठहरेगा। 4 फिर तू अपके बांथें पांजर के बल लेटकर इस्राएल के घराने
का अधर्म अपके ऊपर रख; क्योंकि जितने दिन तू उस पांजर के बल लेटा रहेगा,
उतने दिन तक उन लोगोंके अधर्म का भार सहता रह। 5 मैं ने उनके अधर्म के
बर्षों के तुल्य तेरे लिथे दिन ठहराए हैं, अर्यात् तीन सौ नब्बे दिन; उतने दिन तक
तू इस्राएल के घराने के अधर्म का भार सहता रह। 6 और जब इतने दिन पूरे हो

जाएं, तब अपके दहिने पांजर के बल लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म का भार
सह लेना; मैं ने उसके लिथे भी और तेरे लिथे एक वर्ष की सन्ती एक दिन अर्यात्
चालीस दिन ठहराए हैं। 7 और तू यरूशलेम के घेरने के लिथे बांह उघाड़े हुए
अपना मुंह उधर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करना। 8 और देख, मैं तुझे
रस्सिक्कों जकड़ूंगा, और जब तक उसके घेरने के दिन पूरे न हों, तब तक तू
करवट न ले सकेगा। 9 और तू गेहूं, जव, सेम, मसूर, बाजरा, और कठिया गेहूं
लेकर, एक बासन में रखकर उन से रोटी बनाया करना। जितने दिन तू अपके
पांजर के बल लेटा रहेगा, उतने अर्यात् तीन सौ नब्बे दिन तक उसे खाया करना।
10 और जो भेजन तू खाए, उसे तौल तौलकर खाना, अर्यात् प्रति दिन बीस बीस
शेकेल भर खाया करता, और उसे समय समय पर खाना। 11 पानी भी तू मापकर
पिया करना, अर्यात् प्रति दिन हीन का छठवां अंश पीना; और उसको समय
समय पर पीना। 12 और अपना भोजन जब की रोटियोंकी नाईं बनाकर खाया
करना, और उसको मनुष्य की बिष्ठा से उनके देखते दनाया करना। 13 फिर
यहोवा ने कहा, इसी प्रकार से इस्राएल उन जातियोंके बीच अपक्की अपक्की रोटी
अशुद्धता से खाया करेंगे, जहां में उन्हें बरबस पहुंचाऊंगा। 14 तब मैं ने कहा, हाथ,
यहोवा परमेश्वर देख, मेरा मन कभी अशुद्ध नहीं हुआ, और न मैं ने बचपन से
लेकर अब तक अपक्की मृत्यु से मरे हुए वा फाड़े हुए पशु का मांस खाया, और न
किसी प्रकार का घिनौना मांस मेरे पुंह में कभी गया है। 15 तब उस ने मुझ से
कहा, देख, मैं ने तेरे लिथे मनुष्य की विष्ठा की सन्ती गोबर ठहराया है, और उसी
से तू अपक्की रोठी बनाना। 16 फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
देख, मैं यरूशलेम में अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा; सो वहां के लोग तौल

तोलकर और चिन्ता कर करके रोटी खाया करेंगे; और माप मापकर और
विस्मित हो होकर पानी पिया करेंगे। 17 और इस से उन्हें रोटी और पानी की
घटी होगी; और वे सब के सब घबराएंगे, और अपके अधर्म में फंसे हुए सूख्
जाएंगे।

यहेजकेल 5

1 और हे मनुष्य के सन्तान, एक पैनी तलवार ले, और उसे नाऊ के छुरे के काम
में लाकर अपके सिर और दाढ़ी के बाल मूंड़ डाल; तब तौलने का कांटा लेकर
बालोंके भाग कर। 2 जब नगर के घिरने के दिन पूरे हों, तब नगर के भीतर एक
तिहाई आग में डालकर जलाना; और एक तिहाई लेकर चारोंओर तलवार से
मारना; ओर एक तिहाई को पवन में उड़ाना, और मैं तलवार खींचकर उसके पीछे
चलाऊंगा। 3 तब इन में से योड़े से बाल लेकर अपके कपके की छोर में बान्धना।
4 फिर उन में से भी योड़े से लेकर आग के बीच डालना कि वे आग में जल जाएं;
तब उसी में से एक लो भड़ककर इस्राएल के सारे धराने में फैल जाएगी। 5 प्रभु
यहोवा योंकहता है, यरूशलेम गेसी ही है; मैं ने उसको अन्यजातियोंके बीच में
ठहराया, और वह चारोंओर देशोंसे घिरी है। 6 उस ने मेरे नियमोंके विरुद्ध काम
करके अन्यजातियोंसे अधिक दुष्टता की, और मेरी विधियोंके विरुद्ध चारोंओर के
देशोंके लोगोंसे अधिक बुराई की है; क्योंकि उन्होंने मेरे नियम तुच्छ जाने, और
वे मेरी विधियोंपर नहीं चले। 7 इस कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, तुम लोग जो
अपके चारोंओर की जातियोंसे अधिक हुल्लड़ मचाते, और न मेरी विधियोंपर
चलते, न मेरे नियमोंको मानते और अपके चारोंओर की जातियोंके नियमोंके

अनुसार भी न किया, 8 इस कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, देख, मैं स्वयं तेरे
विरुद्ध हूँ; और अन्यजातियोंके देखते मैं तेरे बीच न्याय के काम करूंगा। 9 और
तेरे सब घिनौने कामोंके कारण मैं तेरे बीच ऐसा करूंगा, जैसा न अब तक किया
है, और न भविष्य में फिर करूंगा। 10 सो तेरे बीच लड़केबाले अपके अपके बाप
का, और बाप अपके अपके लड़केबालोंका मांस खाएंगे; और मैं तुझ को दण्ड दूंगा,
11 और तेरे सब बचे हुओं को चारोंओर तितर-बितर करूंगा। इसलिथे प्रभु यहोवा
की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, इसलिथे कि तू ने मेरे पवित्रस्यान
को अपक्की सारी घिनौनी मूरतोंऔर सारे घिनौने कामोंसे अशुद्ध किया है, मैं तुझे
घटाऊंगा, और तुझ पर दया की दृष्टि न करूंगा, और तुझ पर कुछ भी कोमलता न
करूंगा। 12 तेरी एक तिहाई तो मरी से मरेगी, और तेरे बीच भूख से मर मिटेगी;
एक तिहाई तेरे आस पास तलवार से मारी जाएगी; और एक तिहाई को मैं
चारोंओर तितर-बितर करूंगा और तलवार खींचकर उनके पीछे चलाऊंगा। 13
इस प्रकार से मेरा कोप शान्त होगा, और अपक्की जलजलाहट उन पर पूरी रीति
से भड़काकर मैं शान्ति पाऊंगा; और जब मैं अपक्की जलजलाहट उन पर पूरी
रीति से भड़का चुकूं, तब वे जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने जलन में आकर यह
कहा है। 14 और मैं तुझे तेरे चारोंओर की जातियोंके बीच, सब बटोहियोंके देखते
हुए उजाडूंगा, और तेरी नामधराई कराऊंगा। 15 सो जब मैं तुझ को कोप और
जलजलाहट और रिसवाली घुडकियोंके साय दण्ड दूंगा, तब तेरे चारोंओर की
जातियोंके साम्हने नामधराई, ठट्ठा, शिझा और विस्मय होगा, क्योंकि मूफ
यहोवा ने यह कहा है। 16 यह उस समय होगा, जब मैं उन लोगोंको नाश करने के
लिथे तुम पर महंगी के तीखे तीर चलाकर, तुम्हारे बीच महंगी बढ़ाऊंगा, और

तुम्हारे अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा। 17 और मैं तुम्हारे बीच महंगी और दुष्ट
जन्तु भेजूंगा जो तुम्हें नि:सन्तान करेंगे; और मरी और खून तुम्हारे बीच चलते
रहेंगे; और मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा, मुझ यहोवा ने यह कहा है।

यहेजकेल 6

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा। 2 हे मतुष्य के सन्तान अपना मुख
इस्राएल के पहाड़ोंकी ओर करके उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, 3 और कह, हे
इस्राएल के पहाड़ो, प्रभु यहोवा का वचन सुनो ! प्रभु यहोवा पहाड़ोंऔर पहाडिय़ोंसे,
और नालोंऔर तराइयोंसे योंकहता है, देखो, मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा, और
तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्यानोंको नाश करूंगा। 4 तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और
तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ी जाएंगी; और मैं तुम में से मारे हुओं को तुम्हारी
मूरतोंके आगे फेंक दूंगा। 5 मैं इस्राएलियोंकी लोयोंको उनकी मूरतोंके साम्हने
रखूंगा, और उनकी हड्डियोंको तुम्हारी वेदियोंके आस पास छितरा दूंगां 6 तुम्हारे
जितने बसाए हुए नगर हैं, वे सब ऐसे उजड़ जाएंगे, कि तुम्हारे पूजा के ऊंचे
स्यान भी उजाड़ हो जाएंगे, तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और ढाई जाएंगी, तुम्हारी
मूरतें जाती रहेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं काटी जाएंगी; और तुम्हारी
सारी कारीगरी मिटाई जाएगी। 7 और तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे, और तुम जान
लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 8 तौभी मैं कितनोंको बचा रखूंगा। सो जब तुम देश देश में
तितर-बितर होगे, तब अन्यजातियोंके बीच तुम्हारे कुछ लोग तलवार से बच
जाएंगे। 9 और वे बचे हुए जोग, उन जातियोंके बीच, जिन में वे बंधुए होकर
जाएंगे, मुझे स्मरण करेंगे; और यह भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से

कैसे हट गया है और व्यभिचारिणी की सी हमारी आंखें मूरतोंपर कैसी लगी हैं
जिस से यहोवा का मन टूटा है। इस रीति से उन बुराइयोंके कारण, जो उन्होंने
अपके सारे घिनौने काम करके की हैं, वे अपक्की दृष्टि में घिनौने ठहरेंगे। 10 तब
वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ, और उनकी सारी हानि करने को मैं ने जो यह कहा
है, उसे व्यर्थ नहीं कहा। 11 प्रभु यहोवा योंकहता है, कि अपना हाथ मारकर और
अपना पांव पटककर कह, इस्राएल के घराने के सारे घिनौने कामोंपर हाथ, हाथ,
क्योंकि वे तलवार, भूख, और मरी से नाश हो जाएंगे। 12 जो दूर हो वह मरी से
मरेगा, और जो निकट हो वह तलवार से मार डाला जाएगा; और जो बचकर नगर
में रहते हुए घेरा जाए, वह भूख से मरेगा। इस भांति मैं अपक्की जलजलाहट उन
पर पूरी रीति से उतारूंगा। 13 और जब हर एक ऊंची पहाड़ी और पहाड़ोंकी हर
एक चोटी पर, और हर एक हरे पेड़ के नीचे, और हर एक घने बांजवृझ की छाया
में, जहां जहां वे अपक्की सब मूरतोंको सुखदायक सुगन्ध द्रव्य चढ़ाते हैं, वहां
उनके मारे हुए लोग अपक्की वेदियोंके आस पास अपक्की मूरतोंके बीच में पके
रहेंगे; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 14 मैं अपना हाथ उनके विरुद्ध
बढ़ाकर उस देश को सारे घरोंसमेत जंगल से ले दिबला की ओर तक उजाड़ ही
उजाड़ कर दूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 7

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, प्रभु यहोवा
इस्राएल की भूमि के विषय में योंकहता है, कि अन्त हुआ; चारोंकोनोंसमेत देश
का अन्त आ गया है। 3 तेरा अन्त भी आ गया, और मैं अपना कोप तुझ पर

भड़काकर तेरे चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा; और तेरे सारे घिनौने
कामोंका फल तुझे दूंगा। 4 मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी, और न मैं कोतलता
करूंगा; और जब तक तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तक मैं तेरे
चालचलन का फल तुझे दूंगा। तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ। 5 प्रभु यहोवा
योंकहता है, विपत्ति है, एक बड़ी विपत्ति है ! देखो, वह आती है। 6 अन्त आ गया
है, सब का अन्त आया है; वह तेरे विरुद्ध जागा है। देखो, वह आता है। 7 हे देश के
निवासी, तेरे लिथे चक्र घूम चुका, समय आ गया, दिन निकट है; पहाड़ोंपर
आनन्द के शब्द का दिन नहीं, हुल्लड़ ही का होगा। 8 अब योड़े दिनोंमें मैं
अपक्की जलजलाहट तुझ पर भड़काऊंगा, और तुझ पर पूरा कोप उण्डेलूंगा और
तेरे चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा। और तेरे सारे घिनौने कामोंका फल
तुझे भुगताऊंगा। 9 मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं तुझ पर कोपलता
करूंगा। मैं तेरी चालचलन का फल तुझे भुगताऊंगा, और तेरे घिनौने पाप तुझ में
बने रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा दण्ड देनेवाला हूँ। 10 देखो, उस दिन
को देखो, वह आता है ! चक्र घूम चुका, छड़ी फूल चुकी, अभिमान फूला है। 11
उपद्रव बढ़ते बढ़ते दुष्टता का दण्ड बन गया; उन में से कोई न बचेगा, और न
उनकी भीड़-भाड़, न उनके धन में से कुछ रहेगा; और न उन में से किसी के लिथे
विलाप सुन पकेगा। 12 समय आ गया, दिन निकट आ गया है; न तो मोल
लेनेवाला आनन्द करे और न बेचनेवाला शोक करे, क्योंकि उनकी सारी भीड़ पर
कोप भड़क उठा है। 13 चाहे वे जीवित रहें, तौभी बेचनेवाला बेची हुई वस्तु के
पास कभी लौटने न पाएगा; क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़ पर
घटेगी; कोई न लौटेगा; कोई भी मनुष्य, जो अधर्म में जीवित रहता है, बल न

पकड़ सकेगा। 14 उन्होंने नरसिंगा फूंका और सब कुछ तैयार कर दिया; परन्तु
युद्ध में कोई नहीं जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ पर मेरा कोप भड़का हुआ है। 15
बाहर तलवार और भीतर महंगी और मरी हैं; जो मैदान में हो वह तलवार से
मरेगा, और जो नगर में हो वह भूख और मरी से मारा जाएगा। 16 और उन में से
जो बच निकलेंगे वे बचेंगे तो सही परन्तु अपके अपके अधर्म में फसे रहकर
तराइयोंमें रहनेवाले कबूतरोंकी नाई पहाड़ोंके ऊपर विलाप करते रहेंगे। 17 सब
के हाथ ढीले और सब के घुटने अति निर्बल हो जाएंगे। 18 और वे कमर में टाट
कसेंगे, और उनके रोए खड़े होंगे; सब के मुंह सूख जाएंगे और सब के सिर मूंड़े
जाएंगे। 19 वे अपक्की चान्दी सड़कोंमें फेंक देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु
छहरेगा; यहोवा की जलन के दिन उनका सोना चान्दी उनको बचा न सकेगी, न
उस से उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट भरेंगे। क्योंकि वह उनके अधर्म के
ठोकर का कारण हुआ है। 20 उनका देश जो शोभायमान और शिरोमणि या,
उसके विषय में उन्होंने गर्व ही गर्व करके उस में अपक्की घृणित वस्तु ओं की
मूरतें, और घृणित वस्तुएं बना रखीं, इस कारण मैं ने उसे उनके लिथे अशुद्ध
वस्तु ठहराया हे। 21 और मैं उसे लूटने के लिथे परदेशियोंके हाथ, और घन
छा ीनने के लिथे पृय्वी के बुष्ट लोगोंके वश में कर दूंगा; और वे उसे अपवित्र कर
डालेंगे। 22 मैं उन से मुंह फेर लूंगा, तब वे मेरे रझित स्यान को अपवित्र करेंगे;
डाकू उस में घुसकर उसे अपवित्र करेंगे; 23 एक सांकल बना दे, क्योंकि देश
अन्याय की हत्या से, और नगर उपद्रव से भरा हुआ है। 24 मैं अन्यजातियोंके बुरे
से बुरे लोगोंको लाऊंगा, जो उनके घरोंके स्वामी हो जाएंगे; और मैं सामयियोंका
गर्व तोड़ दूंगा और उनके पवित्रस्यान अपवित्र किए जाएंगे। 25 सत्यानाश होने

पर है तब ढूंढ़ने पर भी उन्हें शान्ति न मिलेगी। 26 विपत्ति पर विपत्ति आएगी
और उड़ती हुई चर्चा पर चर्चा सुनाई पकेगी; और लोग भविष्यद्वक्ता से दर्शन की
बात पूछेंगे, परन्तु याजक के पास से व्यवस्या, और पुरनिथे के पास से सम्मति
देने की शक्ति जाती रहेगी। 27 राजा तो शोक करेगा, और रईस उदासीरूपी वस्त्र
पहिनेंगे, और देश के लोगोंके हाथ ढीले पकेंगे। मैं उनके चलन के अनुसार उन से
बर्ताव करूंगा, और उनकी कमाई के समान उनको दण्ड दूंगा; तब वे जान लेंगे कि
मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 8

1 फिर छठवें वर्ष के छठवें महीने के पांचवें दिन को जब मैं अपके घर में बैठा या,
और यहूदियोंके पुरदिथे मेरे साम्हने बैठे थे, तब प्रभु यहोवा की शक्ति वहीं मुझ
पर प्रगट हुई। 2 और मैं ने देखा कि आग का सा एक रूप दिखई देता है; उसकी
कमर से नीचे की ओर आग है, और उसकी कमर से ऊपर की ओर फलकाए हुए
पीतल की फलक सी कुछ है। 3 उस ने हाथ सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल
पकड़े; तब आत्मा ने मुझे पृय्वी और आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के
दिखाए हुए दर्शनोंमें यरूशलेम के मन्दिर के भीतर, आंगन के उस फाटक के पास
पहुचा दिया जिसका मुंह उत्तर की ओर है; और जिस में उस जलन उपजानेवाली
प्रतिमा का स्यान या जिसके कारण द्वेष उपजता है। 4 फिर वहां इस्राएल के
परमेश्वर का तेज वैसा ही या जैसा मैं ने मैदान में देखा या। 5 उस ने मुझ से कहा,
हे मनुष्य के सन्तान, अपक्की आंखें उत्तर की ओर उठाकर देख। सो मैं ने
अपक्की आंखें उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक की उत्तर की ओर

उसके प्रवेशस्यान ही में वह डाह उपजानेवाली प्रतिमा है। 6 तब उस ने मुझ से
कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि थे लोग क्या कर रहे हैं? इस्राएल
का घराना क्या ही बड़े घृणित काम यहां करता है, ताकि मैं अपके पवित्रस्यान से
दूर हो जाऊं; परन्तु तू इन से भी अधिक घृणित काम देखेगा। 7 तब वह मुझे
आंगन के द्वार पर ले गया, और मैं ने देखा, कि भीत में एक छेद है। 8 तब उस ने
मूफ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, भीत को फोड़; तो मैं ने भीत को फोड़कर क्या
देखा कि एक द्वार है 9 उस ने मुझ से कहा, भीतर जाकर देख कि थे लोग यहां कैसे
कैसे और अति घृणित काम कर रहे हैं। 10 सो मैं ने भीतर जाकर देखा कि
चारोंओर की भीत पर जाति जाति के रेंगनेवाले जन्तुओं और घृणित पशुओं और
इस्राएल के घराने की सब मूरतोंके चित्र खिचे हुए हैं। 11 और इस्राएल के घराने के
पुरनियोंमें से सत्तर पुरुष जिन के बीच में शापान का पुत्र याजन्याह भी है, वे उन
चित्रोंके साम्हने खड़े हैं, और हर एक पुरुष अपके हाथ में घूपदान लिए हुए है;
और धूप के धूएं के बादल की सुगन्ध उठ रही है। 12 तब उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने देखा है कि इस्राएल के घराने के पुरनिथे अपक्की
अपक्की नक्काशीवाली कोठरियोंके भीतर अर्यात् अन्धिक्कारने में क्या कर रहे
हैं? वे कहते हैं कि यहोवा हम को नहीं देखता; यहोवा ने देश को त्याग दिया है।
13 फिर उस ने मुझ से कहा, तू इन से और भी अति घृणित काम देखेगा जो वे
करते हैं। 14 तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर
की ओर या और वहां स्त्रियाँ बैठी हुई तम्मूज के लिथे रो रही यीं। 15 तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है? फिर इन से भी बड़े
घृणित काम तू देखेगा। 16 तब वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आंगन में ले

गया; और वहां यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई
पच्चीस पुरुष अपक्की पीठ यहोवा के भवन की ओर और अपके मुख पूर्व की
ओर किए हुए थे; और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को दण्डवत् कर रहे थे। 17 तब
उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा? क्या यहूदा के
घराने के लिथे घृणित कामोंका करना जो वे यहां करते हैं छोटी बात है? उन्होंने
अपके देश को उपद्रव से भर दिया, और फिर यहां आकर मुझे रिस दिलाते हैं।
वरन वे डाली को अपक्की नाक के आगे लिए रहते हैं। 18 इसलिथे मैं भी
जलजलाहट के साय काम करूंगा, न मैं दया करूंगा और न मैं कोमलता करूंगा;
और चाहे वे मेरे कानोंमें ऊंचे शब्द से पुकारें, तौभी मैं उनकी बात न सुनूंगा।

यहेजकेल 9

1 फिर उस ने मेरे कानोंमें ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, नगर के
अधिक्कारनेियोंको अपके अपके हाथ में नाश करने का हयियार लिए हुए
निकट लाओ। 2 इस पर छ:पुरुष, उत्तर की ओर ऊपक्की फाटक के मार्ग से अपके
अपके हाथ में घात करने का हयियार लिए हुए आए; और उनके बीच सन का
वस्त्र पहिने, कमर में लिखने की दवात बान्धे हुए एक और पुरुष या; और वे सब
भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए। 3 और इस्राएल के
परमेश्वर का तेज करूबोंपर से, जिनके ऊपर वह रहा करता या, भवन की डेवढ़ी
पर उठ आया या; और उस ने उस सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो कमर में
दवात बान्धे हुए या, पुकारा। 4 और यहोवा ने उस से कहा, इस यरूशलेम नगर के
भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामोंके कारण जो उस में

किए जाते हैं, सांसें भरते और दु:ख के मारे चिल्लाते हैं, उनके मायोंपर चिन्ह कर
दे। 5 तब उस ने मेरे सुनते हुए दूसरोंसे कहा, नगर में उनके पीछे पीछे चलकर
मारते जाओ; किसी पर दया न करना और न कोमलता से काम करना। 6 बूढ़े,
युवा, कुंवारी, बालबच्चे, स्त्रियां, सब को मारकर नाश करो, परन्तु जिस किसी
मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो, उसके निकट न जाना। और मेरे पवित्रस्यान ही
से आरम्भ करो। और उन्होंने उन पुरनियोंसे आरम्भ किया जो भवन के साम्हने
थे। 7 फिर उस ने उन से कहा, भवन को अशुद्ध करो, और आंगनोंको लोयोंसे भर
दो। चलो, बाहर निकलो। तब वे निकलकर नगर में मारने लगे। 8 जब वे मार रहे
थे, और मैं अकेला रह गया, तब मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाकर कहा, हाथ
प्रभु यहोवा ! क्या तू अपक्की जलजलाहट यरूशलेम पर भड़काकर इस्राएल के
सब बचे हुओं को भी नाश करेगा? 9 तब उस ने मुझ से कहा, इस्राएल और यहूदा
के घरानोंका अधर्म अत्यन्त ही अधिक है, यहां तक कि देश हत्या से और नगर
अन्याय से भर गया है; क्योंकि वे कहते हैं कि यहोवा ने पृय्वी को त्याग दिया
और यहोवा कुछ नहीं देखता। 10 इसलिथे उन पर दया न होगी, न मैं कोमलता
करूंगा, वरन उनकी चाल उन्हीं के सिर लौटा दूंगा। 11 तब मैं ने क्या देखा, कि
जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए और कमर में दवात बान्धे या, उस ने यह
कहकर समाचार दिया, जैसे तू ने आज्ञा दी, मैं ने वैसे ही किया है।

यहेजकेल 10

1 इसके बाद मैं ने देखा कि करूबोंके सिरोंके ऊपर जो आकाशमण्डल है, उस में
नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है। 2 तब यहोवा ने उस सन के वस्त्र

पहिने हुए पुरुष से कहा, घूमनेवाले पहियोंके बीच करूबोंके नीचे जा और अपक्की
दोनोंमुट्ठियोंको करूबोंके बीच के अंगारोंसे भरकर नगर पर छितरा दे। सो वह
मेरे देखते देखते उनके बीच में गया। 3 जब वह पुरुष भीतर गया, तब वे करुब
भवन की दक्खिन ओर खड़े थे; और बादल भीतरवाले आंगन में भरा हुआ या। 4
तब यहोवा का तेज करूबोंके ऊपर से उठकर भवन की डेवढ़ी पर आ गया; और
बादल भवन में भर गया; और वह आंगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर गया। 5
और करूबोंके पंखोंका शब्द बाहरी आंगन तक सुनाई देता या, वह सर्वशक्तिमान्
परमेश्वर के बोलने का सा शब्द या। 6 जब उस ने सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष को
घूमनेवाले पहियोंके भीतर करूबोंके बीच में से आग लेने की आज्ञा दी, तब वह
उनके बीच में जाकर एक पहिथे के पास खड़ा हुआ। 7 तब करूबोंके बीच से एक
करूब ने अपना हाथ बढ़ाकर, उस आग में से जो करूबोंके बीच में यी, कुछ
उठाकर सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष की मुट्ठी में दे दी; और वह उसे लेकर बाहर
चला गया। 8 करूबोंके पंखोंके नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ दिखाई देता या।
9 तब मैं ने देखा, कि करूबें के पास चार पहिथे हैं; अर्यात् एक एक करूब के पास
एक एक पहिया है, और पहियोंका रूप फीरोज़ा का सा है। 10 और उनका ऐसा रूप
है, कि चारोंएक से दिखाई देते हैं, जैसे एक पहिथे के बीच दूसरा पहिया हो। 11
चलने के समय वे अपक्की चारोंअलंगोंके बल से चलते हैं; और चलते समय
मुड़ते नहीं, वरन जिधर उनका सिर रहता है वे उधर ही उसके पीछे चलते हैं और
चलते समय वे मुड़ते नहीं। 12 और पीठ हाथ और पंखोंसमेत करूबोंका सारा
शरीर और जो पहिथे उनके हैं, वे भी सब के सब चारोंओर आंखोंसे भरे हुए हैं। 13
मेरे सुनते हुए इन पहियोंको चक्कर कहा गया, अर्यात् घूमनेवाले पहिथे। 14 और

एक एक के चार चार मुख थे; एक मुख तो करूब का सा, दूसरा पनुष्य का सा,
तीसरा सिंह का सा, और चौया उकाब पक्की का सा। 15 और करूब भूमि पर से
उठ गए। थे वे ही जीवधारी हैं, जो मैं ने कबार नदी के पास देखे थे। 16 और जब
जब वे करूब चलते थे तब तब वे पहिथे उनके पास पास चलते थे; और जब जब
करूब पृय्वी पर से उठने के लिथे अपके पंख उठाते तब तब पहिथे उनके पास से
नहीं मुड़ते थे। 17 जब वे खड़े होते तब थे भी खड़े होते थे; और जब वे उठते तब थे
भी उनके संग उठते थे; क्योंकि जीवधारियोंकी आत्मा इन में भी रहती यी। 18
यहोवा का तेज भवन की डेवढ़ी पर से उठकर करूबोंके ऊपर ठहर गया। 19 और
करूब अपके पंख उठाकर मेरे देखते देखते पृय्वी पर से उठकर निकल गए; और
पहिथे भी उनके संग संग गए, और वे सब यहोवा के भवन के पूवीं फाटक में खड़े
हो गए; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा रहा। 20 थे वे ही
जीवधारी हैं जो मैं ने कबार नदी के पास इस्राएल के परमेश्वर के नीचे देखे थे; और
मैं ने जान लिया कि वे भी करूब हैं 21 हर एक के चार मुख और चार पंख और
पंखोंके नीचे मनुष्य के से हाथ भी थे। 22 और उनके मुखोंका रूप वही है जो मैं ने
कबार नदी के तीर पर देखा या। और उनके मुख ही क्या वरन उनकी सारी देह भी
वैसी ही यी। वे सीधे अपके अपके साम्हने ही चलते थे।

यहेजकेल 11

1 तब आत्मा ने मुझे उठाकर यहोवा के भवन के पूवीं फाटक के पास जिसका मुंह
पूवीं दिशा की ओर है, पहुंचा दिया; और वहां मैं ने क्या देखा, कि फाटक ही में
पच्चीस पुरुष हैं। और मैं ने उनके बीच अज्जूर के पुत्र याजन्याह को और

बनायाह के पुत्र पलत्याह को देखा, जो प्रजा के प्रधान थे। 2 तब उस ने मुझ से
कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो मनुष्य इस नगर में अनर्थ कल्पना और बुरी युक्ति
करते हैं वे थे ही हैं। 3 थे कहते हैं, घर बनाने का समय निकट नहीं, यह नगर हंडा
और हम उस में का मांस है। 4 इसलिथे हे मनुष्य के सन्तान, इनके विरुद्ध
भविष्यद्वाणी कर, भविष्यद्वाणी। 5 तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और
मुझ से कहा, ऐसा कह, यहोवा योंकहता है, कि हे इस्राएल के घराने तुम ने ऐसा
ही कहा हे; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूँ। 6 तुम ने तो इस
नगर में बहुतोंको मार डाला वरन उसकी सड़कोंको लोयोंसे भर दिया है। 7 इस
कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, कि जो मनुष्य तुम ने इस में मार डाले हैं, उनकी
लोथें ही इस नगररूपी हंडे में का मांस है; और तुम इसके बीच से निकाले
जाओगे। 8 तुम तलवार से डरते हो, और मैं तुम पर तलवार चलाऊंगा, प्रभु
यहोवा की यही वाणी है। 9 मैं तुम को इस में से निकालकर परदेशियोंके हाथ में
कर दूंगा, और तुम को दण्ड दिलाऊंगा। 10 तुम तलवार से मरकर गिरोगे, और मैं
तुम्हारा मुकद्दमा, इस्राएल के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा; तब तुम जान लोगे
कि मैं यहोवा हूँ। 11 यह नगर तुम्हारे लिथे हंडा न बनेगा, और न तुम इस में का
मांस होगे; मैं तुम्हारा मुक़द्दमा इस्राएल के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा। 12 तब
तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ; तुम तो मेरी विधियोंपर नहीं चले, और मेरे
नियमोंको तुम ने नहीं माना; परन्तु अपके चारोंओर की अन्यजातियोंकी
रीतियोंपर चले हो। 13 मैं इस प्रकार की भविष्यद्वाणी कर रहा या, कि बनायाह
का पुत्र पलत्याह मर गया। तब मैं मुंह के बल गिरकर ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा,
और कहा, हाथ प्रभु यहोवा, क्या तू इस्राएल के बचे हुओं को सत्यानाश कर

डालेगा? 14 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 15 हे मनुष्य के सन्तान,
यरूशलेम के निवासियोंने तेरे निकट भाइयोंसे वरन इस्राएल के सारे घराने से भी
कहा है कि तुम यहोवा के पास से दूर हो जाओ; यह देश हमारे ही अधिक्कारने में
दिया गया है। 16 परन्तु तू उन से कह, प्रभु यहोवा योंकहता है कि मैं ने तुम को
दूर दूर की जातियोंमें बसाया और देश देश में तितर-बितर कर दिया तो है, तौभी
जिन देशोंमें तुम आए हुए हो, उन में मैं स्वयं तुम्हारे लिथे योड़े दिन तक
पवित्रस्यान ठहरूंगा। 17 इसलिथे, उन से कह, प्रभु यहोवा योंकहता है, कि मैं
तुम को जाति जाति के लोगोंके बीच से बटोरूंगा, और जिन देशोंमें तुम
तितर-बितर किए गए हो, उन में से तुम को इकट्ठा करूंगा, और तुम्हें इस्राएल
की भूमि दूंगा। 18 और वे वहां पहुंचकर उस देश की सब घृणित मूरतें और सब
घृणित काम भी उस में से दूर करेंगे। 19 और मैं उनका हृदय एक कर दूंगा; और
उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, और उनकी देह में से पत्यर का सा
हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूंगा, 20 जिस से वे मेरी विधियोंपर नित
चला करें और मेरे नियमोंको मानें; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका
परमेश्वर ठहरूंगा। 21 परन्तु वे लोग जो अपक्की घृणित मूरतोंऔर घृणित
कामोंमें मन लगाकर चलते रहते हैं, उनको मैं ऐसा करूंगा कि उनकी चाल उन्हीं
के सिर पर पकेंगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 22 इस पर करूबोंने अपके पंख
उठाए, और पहिथे उनके संग संग चले; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके
ऊपर या। 23 तब यहोवा का तेज नगर के बीच में से उठकर उस पर्वत पर ठहर
गया जो नगर की पूर्व ओर है। 24 फिर आत्मा ने मुझे उठाया, और परमेश्वर के
आत्मा की शक्ति से दर्शन में मुझे कसदियोंके देश में बंधुओं के पास पहुंचा

दिया। और जो दर्शन मैं ने पाया या वह लोप हो गया। 25 तब जितनी बातें यहोवा
ने मुझे दिखाई यीं, वे मैं ने बंधुओं को बता दीं।

यहेजकेल 12

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, तू बलवा
करनेवाले घराने के बीच में रहता है, जिनके देखने के लिथे आंखें तो हैं, परन्तु
नहीं देखते; और सुनने के लिथे कान तो हैं परन्तु नहीं सुनते; क्योंकि वे बलवा
करनेवाले घराने के हैं। 3 इसलिथे हे मनुष्य के सन्तान दिन को बंधुआई का
सामान, तैयार करके उनके देखते हुए उठ जाना, उनके देखते हुए अपना स्यान
छोड़कर दूसरे स्यान को जाना। यद्यपि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं, तौभी
सम्भव है कि वे ध्यान दें। 4 सो तू दिन को उनके देखते हुए बंधुआई के सामान
की नाई अपना सामान निकालना, और तब तू सांफ को बंधुआई में जानेवाले के
समान उनके देखते हुए उठ जाना। 5 उनके देखते हुए भीत को फोड़कर उसी से
अपना सामान निकालना। 6 उनके देखते हुए उसे अपके कंधे पर उठाकर अन्धेरे
में निकालना, और अपना मुंह ढांपे रहना कि भूमि तुझे न देख पके; क्योंकि मैं ने
तुझे इस्राएल के घराने के लिथे एक चिन्ह ठहराया है। 7 उस आज्ञा के अनुसार मैं
ने वैसा ही किया। दिन को मैं ने अपना सामान बंधुआई के सामान की नाई
निकाला, और सांफ को अपके हाथ से भीत को फोड़ा; फिर अन्धेरे में सामान को
निकालकर, उनके देखते हुए अपके कंधे पर उठाए हुए चला गया। 8 बिहान को
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 9 हे मनुष्य के सन्तान, क्या इस्राएल के
घराने ने अर्यात् उस बलवा करनेवाले घराने ने तुझ से यह नहीं पूछा, कि यह तू

क्या करता है? 10 तू उन से कह कि प्रभु यहोवा योंकहता है, यह प्रभावशाली
वचन यरूशलेम के प्रधान पुरुष और इस्राएल के सारे घराने के विष्य में है जिसके
बीच में वे रहते हैं। 11 तू उन से कह, मैं नुम्हारे लिथे चिन्ह हूँ; जैसा मैं ने किया है,
वैसा ही इस्राएली लागोंसे भी किया जाएगा; उनको उठकर बंधुआई में जाना
पकेगा। 12 उनके बीच में जो प्रधान है, सो अन्धेरे में अपके कंधे पर बोफ उठाए
हुए निकलेगा; वह अपना सामान निकालने के लिथे भीत को फोड़ेगा, और अपना
मुंह ढांपे रहेगा कि उसको भूमि न देख पके। 13 और मैं उस पर अपना जाल
फैलाऊंगा, और वह मेरे फंदे में फंसेगा; और मैं उसे कसदियोंके देश के बाबुल में
पहुंचा दूंगा; यद्यपि वह उस नगर में मर जाएगा, तौभी उसको न देखेगा। 14 और
जितने उसके सहाथक उसके आस पास होंगे, उनको और उसकी सारी टोलियोंको
मैं सब दिशाओं में तितर-बितर कर दूंगा; और तलवार खींचकर उनके पीछे
चलवाऊंगा। 15 और जब मैं उन्हे जाति जाति में तितर-बितर कर दूंगा, और देश
देश में छिन्न भीन्न कर दूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 16 परन्तु मैं उन
में से थेड़े से लोगोंको तलवार, भूख और मरी से बचा रखूंगा; और वे अपके घृणित
काम उन जातियोंमें बखान करेंगे जिनके बीच में वे पहुंचेंगे; तब वे जान लेंगे कि
मैं यहोवा हूँ। 17 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 18 हे मनुष्य के
सन्तान, कांपके हुए अपक्की रोटी खाना और यरयराते और चिन्ता करते हुए
अपना पानी पीना; 19 और इस देश के लोगोंसे योंकहना, कि प्रभु यहोवा
यरूशलेम और इस्राएल के देश के निवासियोंके विषय में योंकहता है, वे अपक्की
रोटी चिन्ता के साय खाएंगे, और अपना पानी विस्मय के साय पीएंगे; क्योंकि
देश अपके सब रहनेवालोंके उपद्रव के कारण अपक्की सारी भरपूरी से रहित हो

जाएगा। 20 और बसे हुए नगर उजड़ जाएंगे, और देश भी उजाड़ हो जाएगा; तब
तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 21 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 22 हे मनुष्य के सन्तान यह क्या कहावत है जो तुम लोग इस्राएल के देश
में कहा करते हो, कि दिन अधिक हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं
हुई? 23 इसलिथे उन से कह, पभु यहोवा योंकहता है, मैं इस कहावत को बन्द
करूंगा; और यह कहावत इस्राएल पर फिर न चलेगी। और तू उन से कह कि वह
दिन निकट आ गया है, और दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं। 24 क्योंकि
इस्राएल के घराने में न तो और अधिक फूठे दर्शन की कोई बात और न कोई
चिकनी-चुपक्की बात फिर कही जाएगी। 25 क्योंकि मैं यहोवा हूँ; जब मैं बोलूं,
तब जो वचन मैं कहूं, वह पूरा हो जाएगा। उस में विलम्ब न होगा, परन्तु, हे
बलवा करनेवाले घराने तुम्हारे ही दिनोंमें मैं वचन कहूंगा, और वह पूरा हो
जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 26 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 27 हे मनुष्य के सन्तान, देख, इस्राएल के घराने के लोग यह कह रहे हैं कि
जो दर्शन वह देखता है, वह बहुत दिन के बाद पूरा होनेवाला है; और कि वह दूर
के समय के विषय में भविष्यद्वाणी करता है। 28 इसलिथे तू उन से कह, प्रभु
यहोवा योंकहता है, मेरे किसी बचन के पूरा होने में फिर विलम्ब न होगा, वरन
जो वचन मैं कहूं, सो वह निश्चय पूरा होगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 13

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के जो
भविष्यद्वक्ता अपके ही मन से भविष्यवाणी करते हैं, उनके विरुद्व भविष्यवाणी

करके तू कह, यहोवा का वचन सुनो। 3 प्रभु यहोवा योंकहता है, हाथ, उन मूढ
भविष्यद्वक्ताओं पर जो अपक्की ही आत्मा के पीछे भटक जाते हैं, और कुछ दर्शन
नहीं पाया ! 4 हे इस्राएल, तेरे भविष्यद्वक्ता खण्डहरोंमें की लोमड़ियोंके समान बने
हैं। 5 तुम ने नाकोंमें चढ़कर इस्राएल के घराने के लिथे भीत नहीं सुधारी, जिस से
वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकते। 6 वे लोग जो कहते हैं, यहोवा की यह
वाणी है, उन्होंने भावी का व्यर्थ और फूठा दावा किया है; और तब भी यह आशा
दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा करेगा; तौभी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा। 7 क्या
तुम्हारा दर्शन फूठा नहीं है, और क्या तुम फूठमूठ भावी नहीं कहते? तुम कहते
हो, कि यहोवा की यह वाणी है; परन्तु मैं ने कुछ नहीं कहा है। 8 इस कारण प्रभु
यहोवा तुम से योंकहता है, तुम ने जो व्यर्थ बात कही और फूठे दर्शन देखे हैं,
इसलिथे मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 9 जो भविष्यद्वक्ता फूठे
दर्शन देखते और फूठमूठ भावी कहते हैं, मेरा हाथ उनके विरुद्ध होगा, और वे मेरी
प्रजा की गोष्ठी में भागी न होंगे, न उनके नाम इस्राएल की नामावली में लिखे
जाएंगे, और न वे इस्राएल के देश में प्रवेश करने पाएंगे; इस से तुम लोग जान
लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। 10 क्योंकि हां, क्योंकि उन्होंने “शान्ति है”, ऐसा
कहकर मेरी प्रजा को बहकाया हे जब कि शान्ति नहीं है; और इसलिथे कि जब
कोई भीत बनाता है तब वे उसकी कच्ची लेसाई करते हैं। 11 उन कच्ची लेसाई
करनेवालोंसे कह कि वह गिर जाएगी। क्योंकि बड़े जोर की वर्षा होगी, और बड़े
बड़े ओले भी गिरेंगे, और प्रचण्ड आंधी उसे गिराएगी। 12 सो जब भीत गिर
जाएगी, तब क्या लोग तुम से यह न कहेंगे कि जो लेसाई तुम ने की वह कहां
रही? 13 इस कारण प्रभु यहोवा तुम से योंकहता है, मैं जलकर उसको पचण्ड

आंधी के द्वारा गिराऊंगा; और मेरे कोप से भारी वर्षा होगी, और मेरी जलजलाहट
से बड़े बड़े ओले गिरेंगे कि भीत को नाश करें। 14 इस रीति जिस भीत पर तुम ने
कच्ची लेसाई की है, उसे मैं ढा दूंगा, वरन मिट्टी में मिलाऊंगा, और उसकी नेव
खुल जाएगी; और जब वह गिरेगी, तब तुम भी उसके नीचे दबकर नाश होगे; और
तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 15 इस रीति मैं भीत और उसकी कच्ची लेसाई
करनेवाले दोनोंपर अपक्की जलजलाहट पूर्ण रीति से भड़काऊंगा; फिर तुम से
कहूंगा, न तो भीत रही,और न उसके लेसनेवाले रहे, 16 अर्यात् इस्राएल के वे
भविष्यद्वक्ता जो यरूशलेम के विषय में भविष्यद्वाणी करते और उनकी शान्ति का
दर्शन बताते थे, परन्तु प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि शान्ति है ही नहीं। 17
फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू अपके लोगोंकी स्त्रियोंसे विमुख होकर, जो अपके ही
मन से भविष्यद्वाणी करती हे; उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके कह, 18 प्रभु
यहोवा योंकहता है, जो स्त्रियां हाथ के सब जोड़ो के लिथे तकिया सीतीं और
प्राणियोंका अहेर करने को सब प्रकार के मनुष्योंकी आंख ढांपके के लिथे कपके
बनाती हैं, उन पर हाथ ! क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणोंका अहेर करके अपके निज
प्राण बचा रखोगी? 19 तुम ने तो मुुट्ठी मुट्ठी भर जव और रोटी के टुकड़ोंके
बदले मुझे मेरी प्रजा की दृष्टि में अपवित्र ठहराकर, और अपक्की उन फूठी
बातोंके द्वारा, जो मेरी प्रजा के लोग तुम से सुनते हैं, जो नाश के योग्य न थे,
उनको मार डाला; और जो बचने के योग्य न थे उन प्राणोंको बचा रखा है। 20 इस
कारण प्रभु यहोवा तुम से योंकहता है, देखो, मैं तुम्हारे उन तकियोंके विरुद्ध हूं,
जिनके द्वारा तुम प्राणोंका अहेर करती हो, इसलिथे जिन्हें तुम अहेर कर करके
उड़ाती हो उनको मैं तुम्हारी बांह पर से छीनकर उनको छुड़ा दूंगा। 21 मैं तुम्हारे

सिर के बुक को फाड़कर अपक्की प्रजा के लोगोंको तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा, और
आगे को वे तुम्हारे वश में न रहेंगे कि तुम उनका अहेर कर सको; तब तुम जान
लोगी कि मैं यहोवा हूँ। 22 तुम ने जो फूठ कहकर धर्मी के मन को उदास किया है,
यद्यपि मैं ने उसको उदास करना नहीं चाहा, और तुम ने दुष्ट जन को हियाव
बन्धाया है, ताकि वह अपके बुरे मार्ग से न फिरे और जीवित रहे। 23 इस कारण
तुम फिर न तो फूठा दर्शन देखोगी, और न भावी कहोगी; क्योंकि मैं अपक्की
प्रजा को तुम्हारे हाथ से दुड़ाऊंगा। तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 14

1 फिर इस्राएल के कितने पुरनिथे मेरे पास आकर मेरे साम्हने बैठ गए। 2 तब
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 3 हे मनुष्य के सन्तान, इन पुरुषोंने तो
अपक्की मूरतें अपके मन में स्यापित कीं, और अपके अधर्म की ठोकर अपके
साम्हने रखी है; फिर क्या वे मुझ से कुछ भी पूछने पाएंगे? 4 सो तू उन से कह,
प्रभु यहोवा योंकहता है, कि इस्राएल के घराने में से जो कोई अपक्की मूरतें अपके
मन में स्यापित करके, और अपके अधर्म की ठोकर अपके साम्हने रखकर
भविष्यद्वक्ता के पास आए, उसको, मैं यहोवा, उसकी बहुत सी मूरतोंके अनुसार ही
उत्तर दूंगा, 5 जिस से इस्राएल का घराना, जो अपक्की मूरतोंके द्वारा मुझे
त्यागकर दूर हो गया है, उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फंसाऊंगा। 6 सो इस्राएल
के घराने से कह, प्रभु यहोवा योंकहता हे, फिरो और अपक्की मूरतोंको पीठ के
पीछे करो; और अपके सब घृणित कामोंसे मुंह मोड़ो। 7 क्योंकि इस्राएल के घराने
में से और उसके बीच रहनेवाले परदेशियोंमें से भी कोई क्योंन हो, जो मेरे पीछे हो

लेना छोड़कर अपक्की मूरतें अपके मन में स्यापित करे, और अपके अधर्म की
ठोकर अपके साम्हने रखे, और तब मुझ से अपक्की कोई बात पूछने के लिथे
भविष्यद्वक्ता के पास आए, तो उसको, मैं यहोवा आप ही उत्तर दूंगा। 8 और मैं उस
मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको विस्मित करूंगा, और चिन्ह ठहराऊंगा; और
उसकी कहावत चनाऊंगा और उसे अपक्की प्रजा में से नाश करूंगा; तब तुम लोग
जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 9 और यदि भविष्यद्वक्ता ने धोखा खाकर कोई वचन
कहा हो, तो जानो कि मुझ यहोवा ने उस भविष्यद्वक्ता को धोखा दिया है; और मैं
अपना हाथ उसके विरुद्ध बढ़ाकर उसे अपक्की प्रजा इस्राएल में से नाश करूंगा।
10 वे सब लोग अपके अपके अधर्म का बोफ उठाएंगे, अर्यात् जैसा भविष्यद्वक्ता से
पूछनेवाले का अधर्म ठहरेगा, वैसा ही भविष्यद्वक्ता का भी अधर्म ठहरेगा। 11
ताकि इस्राएल का घराना आगे को मेरे पीछे हो लेना न छोड़े और न अपके भांति
भांति के अपराधोंके द्वारा आगे को अशुद्ध बने; वरन वे मेरी प्रजा बनें और मैं
उनका परमेश्वर ठहरूं, प्रभु यहोवा की यही आणी है। 12 और यहोवा का यह वचन
मेरे पास महुंचा, 13 हे मनुष्य के सन्तान, जब किसी देश के लोग मुझ से
विश्वासघात करके पापी हो जाएं, और मैं अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर
उसका अन्नरूपी आधार दूर करूं, और उस में अकाल डालकर उस में से मनुष्य
और पशु दोनोंको नाश करूं, 14 तब चाहे उस में नूह, दानिय्थेल और अय्यूब थे
तीनोंपुरुष हों, तौभी वे अपके धर्म के द्वारा केवल अपके ही प्राणोंको बचा सकेंगे;
प्रभु यहोवा की यही वाणी हे। 15 यदि मैं किसी देश में दुष्ट जन्तु भेजूं जो उसको
निर्जन करके उजाड़ कर डालें, और जन्तुओं के कारण कोई उस में होकर न जाएं,
16 तो चाहे उसे में वे तीन पुरुष हों, तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन

की सौगन्ध, न वे पुत्रोंको ओर न पुत्रियोंको बचा सकेंगे; वे ही अकेले बचेंगे; परन्तु
देश उजाड़ हो जाएगा। 17 और यदि मैं उस देश पर तलवार खीचकर कहूं, हे
तलवार उस देश में चल; और इस रीति मैं उस में से मनुष्य और पशु नाश करूं,
18 तब चाहे उस में वे तीन पुरुष भी हों, तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, न तो वे पुत्रोंको और न पुत्रियोंको बचा सकेंगे, वे ही अकेले
बचेंगे। 19 यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊं और उस पर अपक्की जलजलाहट
भड़काकर उसका लोहू ऐसा बहाऊं कि वहां के मनुष्य और पशु दोनोंनाश हों, 20
तो चाहे नूह, दानिय्थेल और अय्यूब भी उस में हों, तौभी, प्रभु यहोवा की यह
वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, वे न पुत्रोंको और न पुत्रियोंको बचा सकेंगे,
अपके धर्म के द्वारा वे केवल अपके ही प्राणोंको बचा सकेंगे। 21 क्योंकि प्रभु
यहोवा योंकहता है, मैं यरूशलेम पर अपके चारोंदण्ड पहुंचाऊंगा, अर्यात् तलवार,
अकाल, दुष्ट जन्तु और मरी, जिन से मनुष्य और पशु सब उस में से नाश हों। 22
तौभी उस में योड़े से पुत्र-पुत्रियां बचेंगी जो वहां से निकालकर तुम्हारे पास
पहुंचाई जाएंगी, और तुम उनके चालचलन और कामोंको देखकर उस विपत्ति के
विषय में जो मैं यरूशलेम पर डालूंगा, वरन जितनी विपत्ति मैं उस पर डालूंगा,
उस सब के विषय में शान्ति पाओगे। 23 जब तुम उनका चालचलन और काम
देखो, तब वे तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे; और तुम जान लोगे कि मैं ने
यरूशलेम में जो कुछ किया, वह बिना कारण नहीं किया, प्रभु यहोवा की यही
वाणी हैं

यहेजकेल 15

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, सब वृझोंमें
अंगूर की लता की क्या श्रेष्टता है? अंगूर की शाखा जो जंगल के पेड़ोंके बीच
उत्पन्न होती है, उस में क्या गुण है? 3 क्या कोई वस्तु बनाने के लिथे उस में से
लकड़ी ली जाती, वा कोई बर्तन टांगने के लिथे उस में से खूंटी बन सकती है? 4
वह तो ईन्धन बनाकर आग में फोंकी जाती है; उसके दोनोंसिक्के आग से जल
जाते, और उसके बीख् का भाग भस्म हो जाता है, क्या वह किसी भी काम की है?
5 देख, जब वह बनी यी, तब भी वह किसी काम की न यी, फिर जब वह आग का
ईन्धन होकर भस्म हो गई है, तब किस काम की हो सकती है? 6 सो प्रभु यहोवा
योंकहता है, जैसे जंगल के पेड़ोंमें से मैं अंगूर की लता को आग का ईन्धन कर
देता हूँ, वैसे ही मैं यरूशलेम के निवासिक्कों नाश कर दूंगा। 7 मैं उन से विरुद्ध
हूंगा, और वे एक आग में से निकलकर फिर दूसरी आग का ईन्धन हो जाएंगे;
और जब मैं उन से विमुख हूंगा, तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 8 और
मैं उनका देश उजाड़ दूंगा, क्योंकि उन्होंने मुझ से विश्वासघात किया है, प्रभु
यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 16

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, यरूशलेम
को उसके सब घृणित काम जता दे। 3 और उस से कह, हे यरूशलेम, प्रभु यहोवा
तुझ से योंकहता है, तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियोंके देश से हुई; तेरा
पिता तो एमोरी और तेरी माता हित्तिन यी। 4 और तेरा जन्म ऐसे हुआ कि जिस
दिन तू जन्मी, उस दिन न तेरा नाल काटा गया, न तू शुद्ध होने के लिथे धोई गई,

न तेरे कुछ लोन मला गया और न तू कुछ कपड़ोंमें लमेटी गई। 5 किसी की
दयादृष्टि तुझ पर नहीं हुई कि इन कामोंमें से तेरे लिथे एक भी काम किया जाता;
वरन अपके जन्म के दिन तू घृणित होने के कारण खुले मैदान में फेंक दी गई
यी। 6 और जब मैं तेरे पास से होकर निकला, और तुझे लोहू में लोटते हुए देखा,
तब मैं ने तुझ से कहा, हे नोहू में लोटती हुई जीवित रह; हां, तुझ ही से मैं ने कहा,
हे लोहू मे लोटती हुई, जीवित रह। 7 फिर मैं ने तुझे खेत के बिरुले की नाईं
बढाया, और तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई; तेरी छातियां
सुडौल हुई, और तेरे बाल बढे; तौभी तू नंगी यी। 8 मैं ने फिर तेरे पास से होकर
जाते हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी स्त्री हो गई यी; सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र
ओढ़ाकर तेरा तन ढांप दिया; और सौगन्ध खाकर तुझ से पाचा बान्धी और तू
मेरी हो गई, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 9 तब मैं ने तुझे जल से नहलाकर तुझ
पर से लोहू धो दिया, और तेरी देह पर तेल मला। 10 फिर मैं ने तुझे बूटेदार वस्त्र
और सूइसोंके चमड़े की जूतियां पहिनाई; और तेरी कमर में सूझ्म सन बान्धा,
और तुझे रेशमी कपड़ा ओढ़ाया। 11 तब मैं ने तेरा श्ृंगार किया, और तेरे हाथें
में चूडिय़ां और गले में तोड़ा पहिनाया। 12 फिर मैं ने तेरी नाक में नत्य और तेरे
कानोंमें बालियां पहिनाई, और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा। 13 तेरे
आभूषण सोने चान्दी के और तेरे वस्त्र सूझ्म सन, रेशम और बूटेदार कमड़े के
बने; फिर तेरा भोजन मैदा, मधु और तेल हुआ; और तू अत्यन्त सुन्दर, वरन
रानी होने के योग्य हो गई। 14 और तेरी सुन्दरता की कीत्तिर् अन्यजातियोंमें
फैल गई, क्योंकि उस प्रताप के कारण, जो मैं ने अपक्की ओर से तुझे दिया या, तू
अत्यन्त सुन्दर यी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 15 परन्तु तू अपक्की सुन्दरता

पर भरोसा करके अपक्की नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी, और सब
यात्रियोंके संग बहुत कुकर्म किया, और जो कोई तुझे चाहता या तू उसी से
मिलती यी। 16 तू ने अपके वस्त्र लेकर रंग बिरंग के ऊंचे स्यान बना लिए, और
उन पर व्यभिचार किया, ऐसे कुकर्म किए जो न कभी हुए और न होंगे। 17 और
तू ने अपके सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिए हुए सोने-चान्दी के थे, उन से
पुरुषोंकी मूरतें बना ली, और उन से भी व्यभिचार करने लगी; 18 और अपके
बूटेदार वस्त्र लेकर उनको पहिनाए, और मेरा तेल और मेरा धूप उनके साम्हने
चढ़ाया। 19 और जो भोजन मैं ने तुझे दिया या, अर्यात् जो मैदा, तेल और मधु मैं
तुझे खिलाता या, वह सब तु ने उनके साम्हने सुखदायक सुगत्ध करके रखा; प्रभु
यहोवा की यही वाणी है कि योंही हुआ। 20 फिर तू ने अपके पुत्र-पुत्रियां लेकर
जिन्हें तू ने मेरे लिथे जन्म दिया, उन मूरतोंको नैवेद्य करके चढ़ाई। क्या तेरा
व्सभिचार ऐसी छोटी बात यीं; 21 कि तू ने मेरे लड़केबाले उन मूरतोंके आगे आग
में चढ़ाकर घात किए हैं? 22 और तू ने अपके सब घृणित कामोंमें और व्यभिचार
करते हुए, अपके बचपन के दिनोंकी कभी सुधि न ली, जब कि तू नंगी अपके लोहू
में लोटनी यी। 23 और तेरी उस सारी बुराई के पीछे क्या हुआ? 24 प्रभु यहोवा की
यह वाणी है, हाथ, तुझ पर हाथ ! कि तू ने एक गुम्मट बनवा लिया, और हर एक
चौक में एक ऊंचा स्यान बनवा लिया; 25 और एक एक सड़क के सिक्के पर भी तू
ने अपना ऊंचा स्यान बनवाकर अपक्की सुन्दरता घृणित करा दी, और हर एक
यात्री को कुकर्म के लिथे बुलाकर महाव्यभिचारिणी हो गई। 26 तू ने अपके
पड़ोसी मिस्री लोगोंसे भी, जो मोटे-ताजे हैं, व्यभिचार किया और मुझे क्रोध
दिलाने के लिथे अपना व्यभिचार चढ़ाती गई। 27 इस कारण मैं ने अपना हाथ

तेरे विरुद्ध बढ़ाकर, तेरा प्रति दिन का खाना घटा दिया, और तेरी बैरिन पलिश्ती
स्त्रियां जो तेरे महापाप की चाल से लजाती है, उनकी इच्छा पर मैं ने तुझे छोड़
दिया है। 28 फिर भी तेरी तृष्णा न बुफी, इसलिथे तू ने अश्शूरी लोगोंसे भी
व्यभिचार किया; और उन से व्यभिचार करने पर भी तेरी तृष्णा न बुफी। 29 फिर
तू लेन देन के देश में व्यभिचार करते करते कसदियोंके देश तक पहुंची, और वहां
भी तेरी तृष्णा न बुफी। 30 प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तेरा हृदय कैसा चंचल
है कि तू थे सब काम करती है, जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम हैं? 31 तू ने हर एक
सड़क के सिक्के पर जो अपना गुम्मट, और हर चौक में अपना ऊंचा स्यान
बनवाया है, क्या इसी में तू वेश्या के समान नहीं ठहरी? क्योंकि तू ऐसी कमाई पर
हंसती है। 32 तू व्यभिचारिणी पत्नी है। तू पराथे पुरुषोंको अपके पति की सन्ती
ग्रहण करती है। 33 सब वेश्याओं को तो रुपया मिलता है, परन्तु तू ने अपके सब
मित्रोंको स्वयं रुपए देकर, और उनको लालच दिखाकर बुलाया है कि वे चारोंओर
से आकर तुझ से व्यभिचार करें। 34 इस प्रकार तेरा व्यभिचार और
व्यभिचारियोंसे उलटा है। तेरे पीछे कोई व्यभिचारी नहीं चलता, और तू किसी से
दाम लेती नहीं, वरन तू ही देती है; इसी कारण तू उलटी ठहरी। 35 इस कारण, हे
वेश्या, यहोवा का वचन सुन, 36 प्रभु यहोवा योंकहता है, कि तू ने जो व्यभिचार में
अति निर्लज्ज होकर, अपक्की देह अपके मित्रोंको दिखाई, और अपक्की मूरतोंसे
घृणित काम किए, और अपके लड़केबालोंका लोहू बहाकर उन्हें बलि चढ़ाया है,
37 इस कारण देख, मैं तेरे सब मित्रोंको जो तेरे प्रेमी हैं और जितनोंसे तू ने प्रीति
लगाई, और जितनोंसे तू ने वैर रखा, उन सभोंको चारोंओर से तेरे विरुद्ध इकट्ठा
करके उनको तेरी देह नंगी करके दिखाऊंगा, और वे तेरा तन देखेंगे। 38 तब मैं

तुझ को ऐसा दण्ड दूंगा, जैसा व्यभिचारिणियोंऔर लोहू बहानेवाली स्त्रियोंको
दिया जाता है; और क्रोध और जलन के साय तेरा लोहू बहाऊंगा। 39 इस रीति मैं
तुझे उनके वश में कर दूंगा, और वे तेरे गुम्मटोंको ढा देंगे, और तेरे ऊंचे
स्यानोंको तोड़देंगे; वे तेरे वस्त्र बरबस उतारेंगे, और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे,
और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे। 40 तब तेरे विरुद्ध एक सभा इकट्ठी करके वे तुझ
को पत्यरवाह करेंगे, और अपक्की कटारोंसे वारपार छेदेंगे। 41 तब वे आग
लगाकर तेरे घरोंको जला देंगे, और तूफे बहुत सी स्त्रियोंके देखते दण्ड देंगे; और
मैं तेरा व्यभिचार बन्द करूंगा, और तू फिर छिनाले के लिथे दाम न देगी। 42
और जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चुकूंगा, तब तुझ पर और न
जलूंगा वरन शान्त हो जाऊंगा: और फिर न रिसियाऊंगा। 43 तू ने जो अपके
बचपन के दिन स्मरण नही रखे, वरन इन सब बातोंके द्वारा मुझे चिढाया; इस
कारण मैं तेरा चालचलन तेरे सिर पर डालूंगा और तू अपके सब पिछले घृणित
कामोंसे और अधिक महापाप न करेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 44 देख,
सब कहावत कहनेवाले तेरे विषय यह कहावत कहेंगे, कि जैसी मां वैसी पुत्री। 45
तेरी मां जो अपके पति और लड़केबालोंसे घृणा करती यी, तू भी ठीक उसकी पुत्री
ठहरी; और तेरी बहिनें जो अपके अपके पति और लड़केबालोंसे घृृणा करती यीं,
तू भी ठीक उनकी बहिन निकली। तेरी माता हित्तिन और पिता एमोरी या। 46
तेरी बड़ी बहिन हाोमरोन है, जो अपक्की पुत्रियोंसमेत तेरी बाई ओर रहती है,
और तेरी छोटी बहिन, जो तेरी दहिनी ओर रहती है वह पुत्रियोंसमेत सदोम है।
47 तू उनकी सी चाल नहीं चक्की, और न उनके से घृणित कामोंही से सन्तुष्ट हुई;
यह तो बहुत छोटी बात ठहरती, परन्तु तेरा सारा चालचलन उन से भी अधिक

बिगड़ गया। 48 प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरी बहिन
सदोम ने अपक्की पुत्रियोंसमेत तेरे ओर तेरी पुत्रियोंके समान काम नहीं किए।
49 देख, तेरी बहिन सदोम का अधर्म यह या, कि वह अपक्की पुत्रियोंसहित
घमण्ड करती, पेट भर भरके खाती, और सुख चैन से रहती यी: और दीन दरिद्र
को न संभालती यी। 50 सो वह गर्व करके मेरे साम्हने घृणित काम करने लगी,
और यह देखकर मैं ने उन्हें दूर कर दिया। 51 फिर शोमरोन ने तेरे पापोंके आधे
भी पाप नहीं किए: तू ने तो उस से बढ़कर घृणित काम किए ओर अपके घोर
घृणित कामोंके द्वारा अपक्की बहिनोंको जीत लिया। 52 सो तू ने जो अपक्की
बहिनोंका न्याय किया, इस कारण लज्जित हो, क्योंकि तू ने उन से बढ़कर
घृणित पाप किए हैं; इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं। सो तू इस बात से
लज्जा कर और लजाती रह, क्योंकि तू ने अपक्की बहिनोंको कम दोषी ठहराया
है। 53 जब मैं उनको अर्यात् पुत्रियोंसहित सदोम और शोमरोन को बंधुआई से
फेर लाऊंगा, तब उनके बीच ही तेरे बंधुओं को भी फेर लाऊंगा, 54 जिस से तू
लजाती रहे, और अपके सब कामोंको देखकर लजाए, क्योंकि तू उनकी शान्ति ही
का कारण हुई है। 55 और तेरी बहिनें सदोम और शोमरोन अपक्की अपक्की
पुत्रियोंसमेत अपक्की पहिली दशा को फिर पहुंचेंगी, और तू भी अपक्की
पुत्रियोंसहित अपक्की पहिली दशा को फिर पहंचेगी। 56 जब तक तेरी बुराई
प्रगट न हुई यी, अर्यात् जिस समय तक तू आस पास के लोगोंसमेत अरामी और
पलिश्ती स्त्रियोंकी जो अब चारोंओर से तुझे तुच्छ जानती हैं, नामधराई करती
यी, 57 उन अपके घ्मण्ड के दिनोंमें तो तू अपक्की बहिन सदोम का नाम भी न
लेती यी। 58 परन्तु अब तुझ को अपके महापाप और घृणित कामोंका भार आप

ही उठाना पड़ा है, यहोवा की यही वाणी है। 59 प्रभु यहोवा यह कहता है, मैं तेरे
साय ऐसा ही बर्ताव करूंगा, जैसा तू ने किया है, क्योंकि तू ने तो वाचा तोड़कर
शपय तुच्छ जानी है, 60 तौभी मैं तेरे बचपन के दिनोंकी अपक्की वाचा स्मरण
करूंगा, और तेरे साय सदा की वाचा बान्धूंगा। 61 और जब तू अपक्की बहिनोंको
अर्यात् अपक्की बड़ी और छोटी बहिनोंको ग्रहण करे, तब तू अपना चालचलन
स्मरण करके लज्जित होगी; और मैं उन्हें तेरी पुत्रियां ठहरा दूंगा; परन्तु यह तेरी
वाचा के अनुसार न करूंगा। 62 मैं तेरे साय अपक्की वाचा स्यिर करूंगा, और तब
तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ, 63 जिस से तू स्मरण करके लज्जित हो, और
लज्जा के मारे फिर कभी मुंह न खोले। यह उस समय होगा, जब मैं तेरे सब
कामोंको ढांपूंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 17

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने
से यह पकेली और दृष्टान्त कह; प्रभू यहोवा योंकहता हे, 3 एक लम्बे पंखवाले,
परोंसे भरे और रडंगे बिरडंगे बडे उकाब पक्की ने लबानोन जाकर एक देवदार की
फुनगी नोच ली। 4 तब उस ने उस फुनगी की सब से ऊपर की पतली टहनी को
तोड़ लिया, और उसे लेन देन करनेवालोंके देश में ले जाकर व्योपारियोंके एक
नगर में लगाया। 5 तब उस ने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में
बोया, और उसे बहुत जल भरे स्यान में मजनू की नाई लगाया। 6 और वह
उगकर छोटी फैलनेवाली अंगूर की लता हो गई जिसकी डालियां उसकी ओर
फुकीं, और उसकी सोर उसके नीचे फैलीं; इस प्रकार से वह अंगूर की लता होकर

कनखा फोड़ने और पत्तोंसे भरने लगी। 7 फिर और एक लम्बे पंखवाला और
परोंसे भरा हुआ बड़ा उकाब पक्की या; और वह अंगूर की लता उस स्यान से जहां
वह लगाई गई यी, उस दूसरे उकाब की ओर अपक्की सोर फैलाने और अपक्की
डालियां फुकाने लगी कि वह उसे ख्ींचा करे। 8 परन्तु वह तो इसलिथे अच्छी
भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई यी, कि कनखएं फोड़े, और फले, और उत्तम
अंगूर की लता बने। 9 सो तू यह कह, कि प्रभु यहोवा योंपूछता है, क्या वह फूले
फलेगी? क्या वह उसको जड़ से न उखाड़ेगा, और उसके फलोंको न फाड़ डालेगा
कि वह अपक्की सब हरी नई पत्तियोंसमेत सूख जाए? इसे जड़ से उखाड़ने के
लिथे अधिक बल और बहुत से मनुष्योंकी आवश्यकता न होगी। 10 चाहे, वह
लगी भी रहे, तौभी क्या वह फूले फलेगी? जब पुरवाई उसे लगे, तब क्या वह
बिलकुल सूख न जाएगी? वह तो जहां उगी है उसी क्यारी में सूख जाएगी। 11
फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, उस बलवा करनेवाले घराने से कह, 12
क्या तुम इन बातोंका अर्य नहीं समझते? फिर उन से कह, बाबुल के राजा ने
यरूशलेम को जाकर उसके राजा और और प्रधानोंको लेकर अपके यहां बाबुल में
पहुंचाया। 13 तब राजवंश में से एक पुरुष को लेकर उस से वाचा बान्धी, और
उसको वश में रहने की शपय खिलाई, और देश के सामर्यी पुरुषोंको ले गया 14
कि वह राज्य निर्बल रहे और सिर न उठा सके, वरन वाचा पालने से स्यिर रहे।
15 तौभी इस ने घोड़े और बड़ी सेना मांगने को अपके दूत मिस्र में भेजकर उस से
बलवा किया। क्या वह फूले फलेगा? क्या ऐसे कामोंका करनेवाला बचेगा? क्या
वह अपक्की वाचा तोड़ने पर भी बच जाएगा? 16 प्रभु यहोवा योंकहता है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, जिस राजा की खिलाई हुई शपय उस ने तुच्छ जानी, और

जिसकी वाचा उस ने तोड़ी, उसके यहां जिस ने उसे राजा बनाया या, अर्यात् बाबुल
में ही वह उसके पास ही मर जाएगा। 17 और जब वे बहुत से प्राणियोंको नाश
करने के लिथे दमदमा बान्धे, और गढ़ बनाएं, तब फिरौन अपक्की बड़ी सेना
और बहुतोंकी मण्डली रहते भी युद्ध में उसकी सहाथता न करेगा। 18 क्योंकि उस
न शपय को तुच्छ जाना, और वाचा को तोड़ा; देखो, उस ने वचन देने पर भी ऐसे
ऐसे काम किए हैं, सो वह बचने न पाएगा। 19 प्रभु यहोवा योंकहता है कि मेरे
जीवन की सौगन्ध, उस ने मेरी शपय तुच्छ जानी, और मेरी वाचा तोड़ी है; यह
पाप मैं उसी के सिर पर डालूंगा। 20 और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और
वह मेरे फन्दे में फंसेगा; और मैं उसको बाबुल में पहुंचाकर उस विश्वासघात का
मुक़द्दमा उस से लड़ूंगा, जो उस ने मुझ से किया है। 21 और उसके सब दलोंमें से
जितने भागें वे सब तलवार से मारे जाएंगे, और जो रह जाएं सो चारोंदिशाओं में
तितर-बितर हो जाएंगे। तब तुम लोग जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा
है। 22 फिर प्रभु यहोवा योंकहता है, मैं भी देवदार की ऊंची फुनगी में से कुछ
लेकर लगाऊंगा, और उसकी सब से ऊपरवाली कनखाओं में से एक कोमल
कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा। 23 अर्यात् इस्राएल के ऊंचे
पर्वत पर लगाऊंगा; सो वह डालियां फोड़कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन
जाएगा, और उसके नीचे अर्यात् उसकी डालियोंकी छाया में भांति भांति के सब
पक्की बसेरा करेंगे। 24 तब मैदान के सब वृझ जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने
ऊंचे वृझ को नीचा और नीचे पृझ को ऊंचा किया, हरे वृझ को सुखा दिया, और
सूखे वृझ को फुलाया फलाया है। मुझ यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर भी
दिया है।

यहेजकेल 18

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 तुम लोग जो इस्राएल के देश के
विषय में यह कहावत कहते हो, कि जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते, परन्तु
दांत खट्टे होते हैं लड़केबालोंके। इसका क्या अर्य है? 3 प्रभु यहोवा योंकहता है
कि मेरे जीवन की शपय, तुम को इस्राएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर
न मिलेगा। 4 देखो, सभोंके प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का
भी प्राण है; दोनोंमेरे ही हैं। इसलिथे जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। 5 जो
कोई धमीं हो, और न्याय और धर्म के काम करे, 6 और न तो पहाड़ोंपर भोजन
किया हो, न इस्राएल के घराने की मूरतोंकी ओर आंखें उठाई हों; न पराई स्त्री को
बिगाड़ा हो, और न ऋतुमती के पास गया हो, 7 और न किसी पर अन्धेर किया हो
वरन ऋणी को उसकी बन्धक फेर दी हो, न किसी को लूटा हो, वरन भूखे को
अपक्की रोटी दी हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, 8 न ब्याज पर रुपया दिया
हो, न रुपए की बढ़ती ली हो, और अपना हाथ कुटिल काम से रोका हो, मनुष्य के
बीच सच्चाई से न्याय किया हो, 9 और मेरी विधियोंपर चलता और मेरे
नियमोंको मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा मनुष्य धमीं है, वह
निश्चय जीवित रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 10 परन्तु यदि उसका पुत्र
डाकू, हत्यारा, वा ऊपर कहे हुए पापोंमें से किसी का करनेवाला हो, 11 और ऊपर
कहे हुए उचित कामोंका करनेवाला न हो, और पहाड़ोंपर भोजन किया हो, पराई
स्त्री को बिगाड़ा हो, 12 दीन दरिद्र पर अन्धेर किया हो, औरोंको लूटा हो, बन्धक
न फेर दी हो, मूरतोंकी ओर आंख उठाई हो, घृणित काम किया हो, 13 ब्याज पर
रुपया दिया हो, और बढ़ती ली हो, तो क्या वह जीवित रहेगा? वह जीवित न

रहेगा; इसलिथे कि उस ने थे सब घिनौने काम किए हैं वह निश्चय मरेगा और
उसका खून उसी के सिर पकेगा। 14 फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र होंऔर वह
अपके पिता के थे सब पाप देखकर भय के मारे उनके समान न करता हो। 15
अर्यात् न तो पहाड़ोंपर भोजन किया हो, न इस्राएल के घराने की मूरतोंकी ओर
आंख उठाई हो, न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, 16 न किसी पर अन्धेर किया हो, न
कुछ बन्धक लिया हो, न किसी को लूटा हो, वरन अपक्की रोटी भूखे को दी हो,
नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, 17 दीन जन की हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज
और बढ़ी न ली हो, मेरे नियमोंको माना हो, और मेरी विधियोंपर चला हो, तो वह
अपके पिता के अधर्म के कारण न मरेगा, वरन जीवित ही रहेगा। 18 उसका
पिता, जिस ने अन्धेर किया और लूटा, और अपके भाइयोंके बीच अनुचित काम
किया है, वही अपके अधर्म के कारण मर जाएगा। 19 तौभी तुम लोग कहते हो,
क्यों? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठाता? जब पुत्र ने न्याय और धर्म
के काम किए हों, और मेरी सब विधियोंका पालनकर उन पर चला हो, तो वह
जीवित ही रहेगा। 20 जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का
भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपके ही धर्म का फल, और दुष्ट को
अपक्की ही दुष्टता का फल मिलेगा। 21 परन्तु यदि दुष्ट जन अपके सब पापोंसे
फिरकर, मेरी सब विधियोंका पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो
वह न मरेगा; वरन जीवित ही रहेगा। 22 उस ने जितने अपराध किए हों, उन में
से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा; जो धर्म का काम उस ने किया
हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। 23 प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट
के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह

अपके मार्ग से फिरकर जीवित रहे? 24 परन्तु जब धर्मी अपके धर्म से फिरकर
टेढ़े काम, वरन दुष्ट के सब घृणित कामोंके अनुसार करने लगे, तो क्या वह
जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उस ने किए हों, उन में से किसी का स्मरण न
किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उस ने किया हो, उसके कारण वह मर
जाएगा। 25 तौभी तुम लोग कहते हो, कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के
घराने, देख, क्या मेरी गति एकसी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं है?
26 जब धर्मी अपके धर्म से फिरकर, टेढ़े काम करने लगे, तो वह उनके कारण
मरेगा, अर्यात् वह अपके टेढ़े काम ही के कारण मर जाएगा। 27 फिर जब दुष्ट
अपके दुष्ट कामोंसे फिरकर, न्याय और धर्म के काम करने लगे, तो वह अपना
प्राण बचाएगा। 28 वह जो सोच विचार कर अपके सब अपराधोंसे फिरा, इस
कारण न मरेगा, जीवित ही रहेगा। 29 तौभी इस्राएल का घराना कहता है कि प्रभु
की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने, क्या मेरी गति एकसी नहीं? क्या
तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं? 30 प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के
घराने, मैं तुम में से हर एक मनुष्य का न्याय उसकी चालचलन के अनुसार ही
करूंगा। पश्चात्ताप करो और अपके सब अपराधोंको छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म
तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा। 31 अपके सब अपराधोंको जो तुम ने
किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपक्की आत्मा बदल डालो ! हे इस्राएल के
घराने, तुम क्योंमरो? 32 क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे, उसके
मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिथे पश्चात्ताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।

यहेजकेल 19

1 और इस्राएल के प्रधानोंके विषय तू यह विलापक्कीत सुना, 2 तेरी माता एक
कैसी सिंहनी यी ! वह सिंहोंके बीच बैठा करती और अपके बच्चोंको जवान
सिंहोंके बीच पालती पोसती यी। 3 अपके बच्चोंमें से उस ने एक को पाला और
वह जवान सिंह हो गया, और अहेर पकडना सीख गया; उस ने मनुष्योंको भी
फाड़ खाया। 4 और जाति जाति के लोगोंने उसकी चर्चा सुनी, और उसे अपके
खोदे हुए गड़हे में फंसाया; और उसके नकेल डालकर उसे मिस्र देश में ले गए। 5
जब उसकी मां ने देखा कि वह धीरज धरे रही तौभी उसकी आशा टूट गई, तब
अपके एक और बच्चे को लेकर उसे जवान सिंह कर दिया। 6 तब वह जवान सिंह
होकर सिंहोंके बीच चलने फिरने लगा, और वह भी अहेर पकड़ना सीख गया; और
मनुष्योंको भी फाड़ खाया। 7 और उस ने उनके भवनोंको बिगाड़ा, और उनके
नगरोंको उजाड़ा वरन उसके गरजने के डर के मारे देश और जो कुछ उस में या
सब उजड़ गया। 8 तब चारोंओर के जाति जाति के लोग अपके अपके प्रान्त से
उसके विरुद्ध निकल आए, और उसके लिथे जाल लगाया; और वह उनके खोदे
हुए गड़हे में फंस गया। 9 तब वे उसके नकेल डालकर और कठघरे में बन्द करके
बाबुल के राजा के पास ले गए, और गढ़ में बन्द किया, कि उसका बोल इस्राएल
के पहाड़ी देश में फिर सुनाई न दे। 10 तेरी माता जिस से तू अत्पन्न हुआ, वह
तीर पर लगी हुई दाखलता के समान यी, और गहिरे जल के कारण फलोंऔर
शाखाओं से भरी हुई यी। 11 और प्रभुता करनेवालोंके राजदण्डोंके लिथे उस में
मोटी मोटी टहनियां यीं; और उसकी ऊंचाई इतनी डुई कि वह बादलोंके बीच तक
पहुंची; और अपक्की बहुत सी डालियोंसमेत बहुत ही लम्बी दिखाई पक्की। 12
तौभी वह जलजलाहट के साय उखाड़कर भूमि पर गिराई गई, और उसके फल

पुरवाई हवा के लगने से सूख गए; और उसकी मोटी टहनियां टूटकर सूख गई;
और वे आग से भस्म हो गई। 13 अब वह जंगल में, वरन निर्जल देश में लगाई
गई है। 14 और उसकी शाखाओं की टहनियोंमें से आग निकली, जिस से उसके
फल भस्म हो गए, और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड के लिथे उस में अब कोई
मोटी टहनी न रही। यही विलापक्कीत है, और यह विलापक्कीत बना रहेगा।

यहेजकेल 20

1 सातवें वर्ष के पांचवें महीने के दसवें दिन को इस्राएल के कितने पुरनिथे यहोवा
से प्रश्न करने को आए, और मेरे साम्हने बैठ गए। 2 तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, 3 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएली पुरनियोंसे यह कह, प्रभु यहोवा
योंकहता है, क्या तुम मुझ से प्रश्न करने को आए हो? प्रभु यहोवा की यह वाणी है
कि मेरे जीवन की सौगन्ध, तुम मुझ से प्रश्न करने न पाओगे। 4 हे मनुष्य के
सन्तान, क्या तू उनका न्याय न करेगा? क्या तू उनका न्याय न करेगा? उनके
पुरखाओं के घिनौने काम उन्हें जता दे, 5 और उन से कह, प्रभु यहोवा योंकहता
है, जिस दिन मैं ने इस्राएल को चुन लिया, और याकूब के घराने के वंश से शपय
खाई, और मिस्र देख में अपके को उन पर प्रगट किया, और उन से शपय खाकर
कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, 6 उसी दिन मैं ने उन से यह भी शपय खाई,
कि मैं तुम को मिस्र देश से निकालकर एक देश में पहुंचाऊंगा, जिसे मैं ने तुम्हारे
लिथे चुन लिया है; वह सब देशोंका शिरोमणि है, और उस में दूध और मधु की
धराएं बहती हैं। 7 फिर मैं ने उन से कहा, जिन घिनौनी वस्तुओं पर तुम में से हर
एक की आंखें लगी हैं, उन्हें फेंक दो; और मिस्र की मूरतोंसे अपके को अशुद्ध न

करो; मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8 परन्तु वे मुझ से बिगड़ गए और मेरी
सुननी न चाही; जिन घिनौनी वस्तुओं पर उनकी आंखें लगी यीं, उनकी किसी ने
फेंका नहीं, और न मिस्र की मूरतोंको छोड़ा। तब मैं ने कहा, मैं यहीं, मिस्र देश के
बीच मुम पर अपक्की जलजलाहट भड़काऊंगा। और पूरा कोप दिखाऊंगा। 9
तौभी मैं ने अपके नाम के निमित्त ऐसा किया कि जिनके बीच वे थे, और जिनके
देखते हुए मैं ने उनको मिस्र देश से निकलने के लिथे अपके को उन पर प्रगट
किया या उन जातियोंके साम्हने वे अपवित्र न ठहरे। 10 मैं उनको मिस्र देश से
निकालकर जंगल में ले आया। 11 वहां उनको मैं ने अपक्की विधियां बताई और
अपके नियम भी बताए कि जो मतुष्य उनको माने, वह उनके कारण जीवित
रहेगा। 12 फिर मैं ने उनके लिथे अपके विश्रमदिन ठहराए जो मेरे और उनके
बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करनेवाला हूँ। 13 तौभी
इस्राएल के घराने ने जंगल में मुझ से बलवा किया; वे मेरी विधियोंपर न चले,
और मेरे नियमोंको तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण
जीवित रहेगा; और उन्होंने मेरे विश्रमदिनोंको अति अपवित्र किया। तब मैं ने
कहा, मैं जंगल में इन पर अपक्की जलजलाहट भड़काकर इनका अन्त कर
डालूंगा। 14 परन्तु मैं ने अपके नाम के निमित्त ऐसा किया कि वे उन जातियोंके
साम्हने, जिनके देखते मैं उनको निकाल लाया या, अपवित्र न ठहरे। 15 फिर मैं
ने जंगल में उन से शपय खाई कि जो देश मैं ने उनको दे दिया, और जो सब
देशोंका शिरोमणि है, जिस में दूध और मधु की धराएं बहती हैं, उस में उन्हें न
पहुंचाऊंगा, 16 क्योंकि उन्होंने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियोंपर न
चले, और मेरे विश्रमदिन अपवित्र किए थे; इसलिथे कि उनका मन उनकी

मूरतोंकी ओर लगा रहा। 17 तौभी मैं ने उन पर कृपा की दृष्टि की, और उन्हें नाश
न किया, और न जंगल में पूरी रीति से उनका अन्त कर डाला। 18 फिर मैं ने
जंगल में उनकी सन्तान से कहा, अपके पुरखाओं की विधियोंपर न चलो, न
उनकी ीिति योंको मानो और न उनकी मूरतें पूजकर अपके को अशुुद्ध करो।
19 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, मेरी विधियोंपर चलो, ओर मेरे नियमोंके
मानने में चौकसी करो, 20 और मेरे विश्रमदिनोंको पवित्र मानो कि वे मेरे और
तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें, और जिस से तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूँ। 21 परन्तु उनकी सन्तान ने भी मुझ से बलवा किया; वे मेरी विधियोंपर न
चले, न मेरे नियमोंके मानने में चौकसी की; जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह
उनके कारण जीवित रहेगा; मेरे विश्रमदिनोंको उन्होंने अपवित्र किया। तब मैं ने
कहा, मैं जंगल में उन पर अपक्की जलजलाहट भड़काकर अपना कोप
दिखलाऊंगा। 22 तौभी मैं ने हाथ खींच लिया, और अपके नाम के निमित्त ऐसा
किया, कि उन जातियोंके साम्हने जिनके देखते हुए मैं उन्हें निकाल लाया या, वे
अपवित्र न ठहरे। 23 फिर मैं ने जंगल में उन से शपय खाई, कि मैं तुम्हें जाति
जाति में तितर-बितर करूंगा, और देश देश में छितरा दूंगा, 24 क्योंकि उन्होंने
मेरे नियम न माने, मेरी विधियोंको तुच्छ जाना, मेरे विश्रमदिनोंको अपवित्र
किया, और अपके पुरखाओं की मूरतोंकी ओर उनकी आंखें लगी रहीं। 25 फिर मैं
ने उनके लिथे ऐसी ऐसी विधियां ठहराई जो अच्छी न यी और ऐसी ऐसी रीतियां
जिनके कारण वे जीवित न रह सकें; 26 अर्यात् वे अपके सब पहिलौठोंको आग में
होम करने लगे; इस रीति मैं ने उन्हें उनहीं की भेंटोंके द्वारा अशुद्ध किया जिस से
उन्हें निर्वंश कर डालूं; और तब वे जान लें कि मैं यहोवा हूँ। 27 हे मनुष्य के

सन्तान, तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा योंकहता है, तुम्हारे पुरखाओं ने
इस में भी मेरी निन्दा की कि उन्होंने मेरा विश्वासघात किया। 28 क्योंकि जब मैं
ने उनको उस देश में पहुंचाया, जिसके उन्हें देने की शपय मैं ने उन से खाई यी,
तब वे हर एक ऊंचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपके मेलबलि
करने लगे; और वहीं रिस दिलानेवाली अपक्की भेंटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना
सुखदायक सुगन्धद्रव्य जलाने लगे, और वहीं अपके तपावन देने लगे। 29 तब मैं
ने उन से पूछा, जिस ऊंचे स्यान को तुम लोग जाते हो, उस से क्या प्रयोजन है?
इसी से उसका नाम आज तक बामा कहलाता है। 30 इसलिथे इस्राएल के घराने
से कह, प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है, क्या तुम भी अपके पुरखाओं की रीति
पर चलकर अशुद्ध होकर, और उनके घिनौने कामोंके अनुसार व्यभिचारिणी की
नाई काम करते हो? 31 आज तक जब जब तुम अपक्की भेंटें चढ़ाते और अपके
लड़केबालोंको होम करके आग में चढ़ाते हो, तब तब तुम अपक्की मूरतोंके
निमित्त अशुद्ध ठहरते हो। हे इस्राएल के घराने, क्या तुम मुझ से पूघने पाओगे?
प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की शपय तुम मुझ से पूछने न पाओगे।
32 जो बात तुम्हारे मन में आती है कि हम काठ और पत्यर के उपासक होकर
अन्यजातियोंऔर देश देश के कुलोंके समान हो जाएंगे, वह किसी भांति पूरी नहीं
होने की। 33 प्रभु यहोवा योंकहता है, मेरे जीवन की शपय मैं निश्चय बली हाथ
और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के साय तुम्हारे ऊपर राज्य
करूंगा। 34 मैं बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के
साय तुम्हें देश देश के लोगोंमें से अलग करूंगा, और उन देशें से जिन में तुम
तितर-बितर हो गए थे, इकट्ठा करूंगा; 35 और मैं तुम्हें देश देश के लोगोंके

जंगल में ले जाकर, वहां आम्हने-साम्हने तुम से मुक़द्दमा लड़ूंगा। 36 जिस प्रकार
मैं तुम्हारे पूर्वजोंसे मिस्र देशरूपी जंगल में मुक़द्दमा लड़ता या, उसी प्रकार तुम से
मुक़द्दमा लड़ूंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 37 मैं तुम्हें लाठी के तले
चलाऊंगा। और तुम्हें वाचा के बन्धन में डालूंगा। 38 मैं तुम में से सब
बलवाइयोंको निकालकर जो मेरा अपराध करते है; तुम्हें शुद्ध करूंगा; और जिस
देश में वे टिकते हैं उस में से मैं उन्हें निकाल दूंगा; परन्तु इस्राएल के देश में
घुसने न दूंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 39 और हे इस्राएल के घराने
तुम से तो प्रभु यहोवा योंकहता है कि जाकर अपक्की अपक्की मूरतोंकी उपासना
करो; और यदि तुम मेरी न सुनोगे, तो आगे को भी यही किया करो; परन्तु मेरे
पवित्र नाम को अपक्की भेंटोंओर मूरतोंके द्वारा फिर अपवित्र न करना। 40
क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल का सारा घरानाा अपके देश में
मेरे पवित्र पर्वत पर, इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर, सब का सब मेरी उपासना करेगा;
वही मैं उन से प्रसन्न हूंगा, और वहीं मैं तुम्हारी उठाई हुई भेंटें और चढ़ाई हुई
उत्तम उत्तम वस्तुएं, और तुमहारी सब पवित्र की हुई वस्तुएं तुम से लिया करूंगा।
41 जब मैं तुम्हें देश देश के लोगोंमें से अलग करूं और उन देशोंसे जिन में तुम
तितर-बितर हुए हो, इकट्ठा करूं, तब तुम को सुखदायक सुगन्ध जानकर ग्रहण
करूंगा, और अन्य जातियोंके साम्हने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊंगा। 42
और जब मैं तुम्हें इस्राएल के देश में पहुंचाऊं, जिसके देने की शपय मैं ने तुम्हारे
पूर्वजोंसे खाई यी, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 43 और वहां तुम अपक्की
चाल चलन और अपके सब कामोंको जिनके करने से तुम अशुद्ध हुए हो स्मरण
करोगे, और अपके सब बुरे कामोंके कारण अपक्की दृष्टि में घिनौने ठहरोगे। 44

और हे इस्राएल के घराने, जब मैं तुम्हारे साय तुत्हारे बुरे चालचलन और बिगड़े
हुए कामोंके अनुसार नहीं, परन्तु अपके ही नाम के निमित्त बर्ताव करूं, तब तुम
जान लोगे कि मेैं यहोवा हूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 45 और यहोवा का
यह वचन मेरे पास पहुंचा, 46 हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख दक्खिन की ओर
कर, दक्खिन की ओर वचन सुना, और दक्खिन देश के वन के विषय में
भविष्यद्वाणी कर; 47 और दक्खिन देश के वन से कह, यहोवा का यह वचन सुन,
प्रभु यहोवा योंकहता हेै, मैं तुझ में आग लगाऊंगा, और तुझ में क्या हरे, क्या
सूखे, जितने पेड़ हैं, सब को वह भस्म करेगी; असकी धधकती ज्वाला न बुफेगी,
और उसके कारण दक्खिन से उत्तर तक सब के मुख फुलस जाएंगे। 48 तब सब
प्राणियोंको सूफ पकेगा कि वह आग यहोवा की लगाई हुई है; और वह कभी न
बुफेगी। 49 तब मैं ने कहा, हाथ परमेश्वर यहोवा ! लोग तो मेरे विषय में कहा
करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेवाला नहीं है?

यहेजकेल 21

1 यहोवा का सह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख
यरूशलेम की ओर कर और पवित्रस्यानोंकी ओर वचन सुना; इस्राएल देश के
विषय में भविष्यद्वाणी कर और उस से कह, 3 प्रभु यहोवा योंकहता है, देख, मैं
तेरे विरुद्ध हूँ, ओर अपक्की तलवार मियान में से खींचकर तुझ में से धर्मी और
अधर्मी दोनोंको नाश करूंगा। 4 इसलिथे कि मैं तुझ में से धर्मी और अधर्मी सब
को नाश करनेवाला हूँ, इस कारण, मेरी तलवार मियान से निकलकर दक्खिन से
उत्तर तक सब प्राणियोंके विरुद्ध चलेगी; 5 तब सब प्राणी जान लेंगे कि यहोवा ने

मियान में से अपक्की तलवार खींची है; ओर वह उस में फिर रखी न जाएगी। 6
सो हे मनुष्य के सन्तान, तू आह मार, भारी खेद कर, और टूटी कमर लेकर
लोगोंके साम्हने आह मार। 7 और जब वे तुझ से पूछें कि तू क्योंआह मारता है,
तब कहना, समाचार के कारण। क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन
टूट जाएंगे और सब के हाथ ढीले पकेंगे, सब की आत्मा बेबस और सब के घूटने
निर्बल हो जाएंगे। देखो, ऐसी ही बात आनेवाली है, और वह अवश्य पूरी होगी,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 8 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे
मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, 9 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देख,
सात चढ़ाई हुई तलवार, और फलकाई हुई तलवार ! 10 वह इसलिथे सान चढ़ाई
गई कि उस से घात किया जाए, और इसलिथे फलकाई गई कि बिजली की नाई
चमके ! तो क्या हम हर्षित हो? वह तो यहोवा के पुत्र का राजदण्ड है और सब
पेड़ोंको तुच्छ जाननेवाला है। 11 और वह फलकाने को इसलिथे दी गई कि हाथ
में ली जाए; वह इसलिथे सान चढ़ाई और फलकाई गई कि घात करनेवालोंके हाथ
में दी जाए। 12 हे मनुष्य के सन्तान चिल्ला, और हाथ, हाथ, कर ! क्योंकि वह
मेरी प्रजा पर चला चाहती है, वह इस्राएल के सारे प्रधानोंपर चला चाहती है; मेरी
प्रजा के संग वे भी तलवार के वश में आ गए। इस कारण तू अपक्की छाती पीट।
13 क्योंकि सचमुच उसकी जांच हुई है, और यदि उसे तुच्छ जाननेवाला राजदण्ड
भी न रहे, तो क्या? परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 14 सो हे मनुष्य के
सन्तान, भविष्यद्वाणी कर, और हाथ पर हाथ दे मार, और तीन बार तलवार का
बल दुगुना किया जाए; वह तो घात करने की तलवार वरन बड़े से बड़े के घात
करने की तलवार है, जिस से कोठरियोंमें भी कोई नहीं बच सकता। 15 मैं ने घात

करनेवाली तलवार को उनके सब फाटकोंके विरुद्ध इसलिथे चलाया है कि लोगोंके
मन टूट जाएं, और वे बहुत ठोकर खाएं। हाथ, हाथ ! वह तो बिजली के समान
बनाई गई, और घात करने को सान चढ़ाई गई है। 16 सिकुड़कर दहिनी ओर जा,
फिर तैयार होकर बाई ओर मुड़, जिधर भी तेरा मुख हो। 17 मैं भी ताली बजाऊंगा
और अपक्की जलजलाहट को ठंडा करूंगा, मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है। 18 फिर
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 19 हे मनुष्य के सन्तान, दो मार्ग ठहरा ले
कि बाबुल के राजा की तलवार आए; दोनोंमार्ग एक ही देश से निकलें ! फिर एक
चिन्ह कर, अर्यात् नगर के मार्ग के सिर पर एक चिन्ह कर; 20 एक मार्ग ठहरा
कि तलवार अम्मोनियोंके रब्बा नगर पर, और यहूदा देश के गढ़वाले नगर
यरूशलेम पर भी चले। 21 क्योंकि बाबुल का राजा तिर्मुहाने अर्यात् दोनोंमागों के
निकलने के स्यान पर भावी बूफने को खड़ा हुआ है, उस ने तीरोंको हिला दिया,
और गृहदेवताओं से प्रश्न किया, और कलेजे को भी देखा। 22 उसके दहिने हाथ में
यरूशलेम का नाम है कि वह उसकी ओर युद्ध के यन्त्र लगाए, और गला फाड़कर
घात करने की आज्ञा दे और ऊंचे शब्द से ललकारे, फाटकोंकी ओर युद्ध के यन्त्र
लगाए और दमदमा बान्धे और कोट बनाए। 23 परन्तु लोग तो उस भावी कहने
को मिय्या समझेंगे; उन्होंने जो उनकी शपय खाई है; इस कारण वह उनके अधर्म
का स्मरण कराकर उन्हें पकड़ लेगा। 24 इस कारण प्रभु यहोवा योंकहता है,
इसलिथे कि तुम्हारा अधर्म जो स्मरण किया गया है, और तुम्हारे अपराध जो
खुल गए हैं, कसोंकि तुम्हारे सब कामोंमें पाप ही पाप दिखाई पड़ा है, और तुम
स्मरण में आए हो, इसलिथे तुम उन्हीं से पकड़े जाओगे। 25 और हे इस्राएल दुष्ट
प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अधर्म के अन्त का समय पहुंच गया है। 26 तेरे

विषय में परमेश्वर यहोवा योंकहता है, पगड़ी उतार, और मुकुट भी उतार दे; वह
ज्योंका त्योंनहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊंचा कर और जो ऊंचा है उसे नीचा
कर। 27 मैं इसको उलट दूंगा और उलट पुलट कर दूंगा; हां उलट दूंगा और जब
तक उसका अधिक्कारनी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे
दूंगा। 28 फिर हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा
अम्मोनियोंऔर उनकी की हुई नामधराई के विषय में योंकहता है; तू योंकह,
खींची हुई तलवार है, वह तलवार घात के लिथे फलकाई हुई है कि नाश करे और
बिजली के समान हो--- 29 जब तक कि वे तेरे विषय में फूठे दर्शन पाते, और फूठे
भावी तुझ को बताते हैं---कि तू उन दुष्ट असाध्य घायलोंकी गर्दनोंपर पके जिनका
दिन आ गया, और जिनके अधर्म के अन्त का समय आ पहुंचा है। 30 उसको
मियान में फिर रख। जिस स्यान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति
हुई, उसी में मैं तेरा न्याय करूंगा। 31 और मैं तुझ पर अपना क्रोध भड़काऊंगा
और तुझ पर अपक्की जलजलाहट की आग फूंक दूंगा; ओर तुझे पशु सरीखे
मनुष्य के हाथ कर दूंगा जो नाश करने में निपुण हैं। 32 तू आग का कौर होगी;
तेरा खून देश में बना रहेगा; तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा
कहा है।

यहेजकेल 22

1 और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू उस
हत्यारे नगर का न्याय न करेगा? क्या तू उसका न्याय न करेगा? उसको उसके
सब घिनौने काम जता दे, 3 और कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, हे नगर तू

अपके बीच में हत्या करता है जिस से तेरा समय आए, और अपक्की ही हानि
करने और अशुद्ध होने के लिथे मूरतें बनाता है। 4 जो हत्या तू ने की है, उस से तू
दोषी ठहरी, और जो मूरतें तू ने बनाई है, उनके कारण तू अशुद्ध हो गई है; तू ने
अपके अन्त के दिन को समीप कर लिया, और अपके पिछले वषार्ें तक पहुंच
गई है। इस कारण मैं ने तुझे जाति जाति के लोगोंकी ओर से नामधराई का और
सब देशोंके ठट्ठे का कारण कर दिया है। 5 हे बदनाम, हे हुल्लड़ से भरे हुए नगर,
जो निकट और जो दूर है, वे सब तुझे ठट्ठोंमें उड़ाएंगे। 6 देख, इस्राएल के प्रधान
लोग अपके अपके बल के अनुसार तुझ में हत्या करनेवाले हुए हैं। 7 तुझ में
माता-पिता तुच्छ जाने गए हैं; तेरे बीच परदेशी पर अन्धेर किया गया; और
अनाय और विधवा तुझ में पीसी गई हैं। 8 तू ने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ
जाना, और मेरे विश्रमदिनोंको अपवित्र किया है। 9 तुझ में लुच्चे लोग हत्या
करने का तत्पर हुए, और तेरे लोगोंने पहाड़ोंपर भोजन किया है; तेरे बीच महापाप
किया गया है। 10 तुझ में पिता की देश उधारी गई; तुझ में ऋतुमती स्त्री से भी
भोग किया गया है। 11 किसी ने तुझ में पड़ोसी की स्त्री के साय घिनौना काम
किया; और किसी ने अपक्की बहू को बिगाड़कर महापाप किया है, और किसी ने
अपक्की बहिन अर्यात् अपके पिता की बेटी को भ्रष्ट किया है। 12 तुझ में हत्या
करने के लिथे उन्होंने घूस ली है, तू ने ब्याज और सूद लिया और अपके
पड़ोसिक्कों पीस पीसकर अन्याय से लाभ उठाया; और मुझ को तू ने फुला दिया
है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 13 सो देख, जो लाभ तू ने अन्याय से उठाया और
अपके बीच हत्या की है, उस से मैं ने हाथ पर हाथ दे मारा है। 14 सो जिन दिनोंमें
तेरा न्याय करूंगा, क्या उन में तेरा हृदय दृढ़ यौर तेरे हाथ स्यिर रह सकेंगे? मुझ

यहोवा ने यह कहा है, और ऐसा ही करूंगा। 15 मैं तेरे लोगोंको जाति जाति में
तितर-बितर करूंगा, और देश देश में छितरा दूंगा, और तेरी अशुद्धता को तुझ में
से नाश करूंगा। 16 और तू जाति जाति के देखते हुए अपक्की ही दृष्टि में अपवित्र
ठहरेगी; तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ। 17 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 18 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल का घराना मेरी दृष्टि में धातु का मैल हो
गया है; वे सब के सब भट्टी के बीच के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे के
समान बन गए; वे चान्दी के मैल के समान हो गए हैं। 19 इस कारण प्रभु यहोवा
उन से योंकहता है, इसलिथे कि तुम सब के सब धातु के मैल के समान बन गए
हो, हो देखो, तैं तुम को यरूशलेम के भीतर इकट्ठा करने पर हूँ। 20 जैसे लोग
चान्दी, पीतल, लोहा, शीशा, और रांगा इसलिथे भट्ठी के भीतर बटोरकर रखते हैं
कि उन्हे आग फूंककर पिघलाएं, वैसे ही मैं तुम को अपके कोप और जलजलाहट
से इकट्ठा करके वहीं रखकर पिघला दूंगा। 21 मैं तुम को वहां बटोरकर अपके
रोष की आग से फूंकूंगा, और तुम उसके बीच पिघलाए जाओगे। 22 जैसे चान्दी
भट्ठी के बीच में पिघलाई जाती है, वैसे ही तुम उसके बीच में पिघलाए जाओगे;
तब तुम जान लोगे कि जिस ने हम पर अपक्की जलजलाहट भड़काई है, वह
यहोवा है। 23 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 24 हे मनुष्य के सन्तान,
उस देश से कह, तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन में
तुझ पर वर्षा नहीं हुई; 25 तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने तुझ में राजद्रोह की गोष्ठी की,
उन्होंने गरजनेवाले सिंह की नाई अहेर पकड़ा और प्राणियोंको खा डाला है; वे रखे
हुए अनमोल धन को छीन लेते हैं, और तुझ में बहुत स्त्रियोंको विधवा कर दिया
हे। 26 उसके याजकोंने मेरी व्यवस्या का अर्य खींचखांचकर लगाया है, और मेरी

पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है; उन्होंने पवित्रन्अपवित्र का कुछ भेद नहीं
माना, और न औरोंको शुद्ध-अशुद्ध का भेद सिखाया है, और वे मेरे विश्रमदिनोंके
विषय में निश्चिन्त रहते हैं, जिस से मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता हूँ। 27 उसके
प्रधान हुंड़ारोंकी नाई अहेर पकड़ते, और अन्याय से लाभ उठाने के लिथे हत्या
करते हैं और प्राण घात करने को तत्पर रहते हैं। 28 और उसके भविष्यद्वक्ता
उनके लिथे कच्ची लेसाई करते हैं, उनका दर्शन पाना मिध्या है; यहोवा के बिना
कुछ कहे भी वे यह कहकर फूठी भावी बताते हैं कि "प्रभु यहोवा योंकहता है"। 29
देश के साधारण लोग भी अन्धेर करते और पराया धन छीनते हैं, वे दीन दरिद्र
को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अन्धेर करते हैं। 30 और मैं
ने उन में ऐसा मनुष्य ढूंढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में
मेरे साम्हने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पके, परन्तु ऐसा कोई न
मिला। 31 इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया और अपक्की
जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है; मैं ने उनकी चाल उन्ही के सिर
पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।।

यहेजकेल 23

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, दो स्त्रियां यी, जो
एक ही मा की बेटी यी, 3 वे अपके बचपन ही में वेश्या का काम मिस्र में करने
लगी; उनकी छातियां कुंवारपन में पहिले वहीं मींजी गई और उनका मरदन भी
हुआ। 4 उन लड़कियोंमें से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहिन का नाम
ओहोलीबा या। वे मेरी हो गई, और उनके पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुई। उनके नामोंमें

से ओहोला तो शोमरोन, और ओहेलीबा यरूशलेम है। 5 ओहोला जब मेरी यी, तब
ही व्यभिचारिणी होकर अपके मित्रोंपर मोहित होने लगी जो उसके पड़ोसी
अश्शूरी थे। 6 वे तो सब के सब नीले वस्त्र पहिननेवाले मनभावने जवान,
अधिपति और प्रधान थे, और घोड़ोंपर सवार थे। 7 सो उस ने उन्हीं के साय
व्यभिचार किया जो सब के सब सर्वोत्तम अश्शूरी थे; और जिस किसी पर वह
मोहित हुई, उसी की मूरतोंसे वह अशुद्ध हुई। 8 जो व्यभिचार उस ने मिस्र में
सीखा या, उसको भी उस ने न छोड़ा; क्योंकि बचपन में मनुष्योंने उसके साय
कुकर्म किया, और उसकी छातियां मींजी, और तन-मन से उसके साय व्यभिचार
किया गया या। 9 इस कारण मैं ने उसको उन्हीं अश्शूरी मित्रोंके हाथ कर दिया
जिन पर वह मोहित हुई यी। 10 उन्होंने उसको नंगी किया; उसके पुत्र-मुत्रियां
छीनकर उसको तलवार से घात किया; इस प्रकार उनके हाथ से दण्ड पाकर वह
स्त्रियोंमें प्रसिद्ध हो गई। 11 उसकी बहिन ओहोलीबा ने यह देखा, तौभी वह
मोहित होकर व्यभिचार करने में अपक्की बहिन से भी अधिक बढ़ गई। 12 वह
अपके अश्शूरी पड़ोसियोंपर मोहित होती यी, जो सब के सब अति सुन्दर वस्त्र
पहिननेवाले और घोड़ोंके सवार मनभावने, जवानन अधिपति और और प्रकार के
प्रधान थे। 13 तब मैं ने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई; उन दोनोंबहिनोंकी एक ही
चाल यी। 14 परन्तु ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई; सो जब उस ने भीत
पर सेंदूर से खींचे हुए ऐसे कसदी पुरुषें के चित्र देखे, 15 जो कटि में फेंटे बान्धे
हुए, सिर में छोर लटकती हुई रंगीली पगडिय़ां पहिने हुए, और सब के सब
अपक्की कसदी जन्मभूमि अर्यात् बाबुल के लोगोंकी रीति पर प्रधानोंका रूप धरे
हुए थे, 16 तब उनको देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उनके पास

कसदियोंके देश में दूत भेजे। 17 सो बाबुली लोग उसके पास पलंग पर आए, और
उसके साय व्यभिचार करके उसे अशुद्ध किया; और जब वह उन से अशुद्ध हो गई,
तब उसका मन उन से फिर गया। 18 तौभी जब वह तन उधड़ती और व्यभिचार
करती गई, तब मेरा मन जैसे उसकी बहिन से फिर गया या, वैसे ही उस से भी
फिर गया। 19 इस पर भी वह मिस्र देश के अपके बचपन के दिन स्मरण करके
जब वह वेश्या का काम करती यी, और अधिक व्यभिचार करती गई; 20 और ऐसे
मिस्रोंपर मोहित हुई, जिनका मांस गदहोंका सा, और वीर्य घोड़ोंका सा या। 21 तू
इस प्रकार से अपके बचपन के उस समय के महापाप का स्मरण कराती है जब
मिस्री लोग तेरी छातियां मींजते थे। 22 इस कारण हे ओहोलीबा, परमेश्वर यहोवा
तुझ से योंकहता है, देख, मैं तेरे मिस्रोंको उभारकर जिन से तेरा मन फिर गया
चारोंओर से तेरे विरुद्ध ले आऊंगा। 23 अर्यात् बाबुलियोंऔर सब कसदियोंको,
और पकोद, शो और कोआ के लोगोंको; और उनके साय सब अश्शूरियोंको
लाऊंगा जो सब के सब घोड़ोंके सवार मनभावने जवान अधिपति, और कई प्रकार
के प्रतिनिधि, प्रधान और नामी पुरुष हैं। 24 वे लोग हयियार, रय, छकड़े और देश
देश के लोगोंका दल लिए हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे; और ढाल और फरी और टोप
धारण किए हुए तेरे विरुद्ध चारोंओर पांति बान्धेंगे; और मैं उन्हीं के हाथ न्याय
का काम सौंपूंगा, और वे अपके अपके नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे। 25
और मैं तुझ पर जलूंगा, जिस से वे जलजलाहट के साय तुझ से बर्ताव करेंगे। वे
तेरी नाक और कान काट लेंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा वह तलवार से मारा
जाएगा। वे तेरे पुत्र-पुत्रियोंको छीन ले जाएंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा, वह
आग से भस्म हो जाएगा। 26 वे तेरे वस्त्र भी उतारकर तेरे सुन्दर-सुन्दर गहने

छीन ले जाएंगे। 27 इस रीति से मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तू ने
मिस्र देश में सीखा या, उसे भी तुझ से छुड़ाऊंगा, यहां तक कि तू फिर अपक्की
आंख उनकी ओर न लगाएगी और न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी। 28
क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से योंकहता है, देख, मैं तुझे उनके हाथ सौंपूंगा जिन से तू
वैर रखती है और जिन से तेरा मन फिर गया है; 29 और वे तुझ से वैर के साय
बर्ताव करेंगे, और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे, और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे,
और तेरे तन के उघाड़े जाने से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा। 30
थे काम तुझ से इस कारण किए जाएंगे क्योंकि तू अन्यजातियोंके पीछे
व्यभिचारिणी की नाई हो गई, और उनकी मूरतें पूजकर अशुद्ध हो गई है। 31 तू
अपक्की बहिन की लीक पर चक्की है; इस कारण मैं तेरे हाथ में उसका सा कटोरा
दूंगा। 32 प्रभु यहोवा योंकहता है, अपक्की बहिन के कटोरे से तुझे पीना पकेगा
जीॆ गहिरा और चौड़ा है; तू हंसी और ठट्ठोंमें उड़ाई जाएगी, क्योंकि उस कटोरे
में बहुत कुछ समाता है। 33 तू मतवालेपन और दु:ख से छक जाएगी। तू अपक्की
बहिन शोमरोन के कटोरे को, अर्यात् विस्मय और उजाड़ को पीकर छक जाएगी।
34 उस में से तू गार गारकर पीएगी, और उसके ठिकरोंको भी चबाएगी और
अपक्की छातियां घायल करेगी; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, प्रभु यहोवा की यही
वाणी है। 35 तू ने जो मुझे भुला दिया है और अपना मुंह मुझ से फेर लिया है,
इसलिथे तू आप ही अपके महापाप और व्यभिचार का भार उठा, परमेश्वर यहोवा
का यही वचन है। 36 यहोवा ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू
ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा? तो फिर उनके घिनौने काम उन्हें जता
दे। 37 क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है, और उनके हाथोंमें खून लगा है;

उन्होंने अपक्की मूरतोंके साय व्यभिचार किया, और अपके लड़केबाले जो मुझ
से उत्पन्न हुए थे, उन मूरतोंके आगे भस्म होने के लिथे चढ़ाए हैं। 38 फिर
उन्होंने मुझ से ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी के साय मेरे पवित्रस्यान को भी
अशुद्ध किया और मेरे विश्रमदिनोंको अपवित्र किया है। 39 वे अपके लड़केबाले
अपक्की मूरतोंके साम्हने बलि चढ़ाकर उसी दिन मेरा पवित्रस्यान अपवित्र करने
को उस में घुसी। देख, उन्होंने इस भांति का काम मेरे भवन के भीतर किया हे।
40 और उन्होंने दूर से पुरुषोंको बुलवा भेजा, और वे चले भी आए। उनके लिथे तू
नहा धो, आंखोंमें अंजन लगा, गहने पहिनकर; 41 सुन्दर पलंग पर बैठी रही;
और तेरे साम्हने एक मेज़ बिछी हुई यी, जिस पर तू ने मेरा धूप और मेरा तेल
रखा या। 42 तब उसके साय निश्चिन्त लोगोंकी भीड़ का कोलाहल सुन पड़ा, और
उन साधारण लोगोंके पास जंगल से बुलाए हुए पियक्कड़ लोग भी थे; उन्होंने उन
दोनोंबहिनोंके हाथोंमें चूडियां पहिनाई, और उनके सिरोंपर शोभायमान मुकुट
रखे। 43 तब जो क्यभिचार करते करते बुढिय़ा हो गई यी, उसके विषय में बोल
उठा, अब तो वे उसी के साय व्यभिचार करेंगे। 44 क्योंकि वे उसके पास ऐसे गए
जैसे लोग वेश्या के पास जाते हैं। वैसे ही वे ओहोला और ओहोलीबा नाम
महापापिनी स्त्रियोंके पास गए। 45 सो धमीं लोग व्यभिचारिणियोंऔर हत्यारोंके
योग्य उसका न्याय करें; क्योंकि वे व्यभिचारिणीयोंऔर हत्यारोंके योग्य उसका
न्याय करें; क्योंकि वे व्यभिचारिण्ी है, और उनके हाथोंमें खून लगा है। 46 इस
कारण परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं एक भीड़ से उन पर चढ़ाई कराकर उन्हें
ऐसा करूंगा कि वे मारी मारी फिरेंगी और लटी जाएंगी। 47 और उस भीड़ के लोग
उनको पत्त्रवाह करके उन्हें अपक्की तलवारोंसे काट डालेंगे, तब वे उनके पुत्र-

पुत्रियोंको घात करके उनके घर भी आग लगाकर फूंक देंगे। 48 इस प्रकार मैं
महापाप को देश में से दूर करूंगा, और सब स्त्रियां शिझा माकर तुम्हारा सा
महापाप करने से बची रहेगी। 49 तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर पकेगा; और
तुम निश्चय अपक्की मूरतोंको पूजा के पापोंका भार उठाओगे; और तब तुम जान
लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूं।

यहेजकेल 24

1 नवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को, यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
2 हे मनुष्य के सन्तान, आज का दिन लिख रख, क्योंकि आज ही के दिन बाबुल
के राजा ने यरूशलेम आ घेरा है। 3 और इस बलबई घराने से यह दृष्टान्त कह,
प्रभु यहोवा कहता है, हण्डे को आग पर घर दो; उसे धरकर उस में पानी डाल दो; 4
तब उस में जांध, कन्धा और सब अच्छे अच्छे टुकड़े बटोरकर रखो; और उसे
उत्तम उत्तम हड्डियोंसे भर दो। 5 फुंड में से सब से अच्छे पशु लेकर उन
हड्डियोंको हगडे के नीचे ढेर करो; और उनको भली-भांति पकाओ ताकि भीतर ही
हड्डियां भी पक जाएं। 6 इसलिथे प्रभु यहोवा योंकहता है, हाथ, उस हत्यारी
नगरी पर ! हाथ उस हण्डे पर ! जिसका मोर्चा उस में बना है और छूटा नहीं; उस
में से टुकड़ा टुकड़ा करके निकाल लो, उस पर चिट्ठी न डाली जाए। 7 क्योंकि उस
नगरी में किया हुआ खून उस में है; उस ने उसे भूमि पर डालकर धूलि से नहीं
ढांपा, परन्तु नंगी चट्टान पर रख दिया। 8 इसलिथे मैं ने भी उसका खून नंगी
चट्टान पर रखा है कि वह ढंप न सके और कि बदला लेने को जलजलाहट
भड़के। 9 प्रभु यहोवा योंकहता है, हाथ, उस खूनी नगरी पर ! मैं भी ढेर को बड़ा

करूंगा। 10 और अधिक लकड़ी डाल, आग को बहुत तेज कर, मांस को भली
भांति पका और मसाला मिला, और हड्डियां भी जला दो। 11 तब हण्डे को छूछा
करके अंगारोंपर रख जिस से वह गर्म हो और उसका पीतल जले और उस में का
मैल गले, और उसका मोर्चा नष्ट हो जाए। 12 मैं उसके कारण परिश्र्म करते करते
यक गया, परन्तु उसका भारी मोर्चा उस से छूटता नहीं, उसका मोर्चा आग के
द्वारा भी नहीं छूटता। 13 हे नगरी तेरी अशुद्धता महापाप की है। मैं तो तुझे शुद्ध
करना चाहता या, परन्तु तू शुद्ध नहीं हुई, इस कारण जब तक मैं अपक्की
लजलजाहट तुझ पर शान्त न कर लूं, तब तक तू फिर शुद्ध न की जाएगी। 14
मुझ यहोवा ही ने यह कहा है; और वह हो जाएगा, मैं ऐसा ही करूंगा, मैं तुझे न
छोड़ूंगा, न तुझ पर तरस खऊंगा न पछताऊंगा; तेरे चालचलन और कामोंही के
अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। 15 यहोवा का
यह भी वचन मेरे पास पहुंचा, 16 हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं तेरी आंखोंकी
प्रिय को मारकर तेरे पास से ले लेने पर हूँ; परन्तु न तू रोना-पीटना और न आंसू
बहाना। 17 लम्बी सांसें ले तो ले, परन्तु वे सुनाई न पकें; मरे हुओं के लिथे भी
विलाप न करना । सिर पर पगड़ी बान्धे और पांवोंमें जूती पहने रहना; और न तो
अपके होंठ को ढांपना न शोक के योग्य रोटी खाना। 18 तब मैं सवेरे लोगोंसे
बोला, और सांफ को मेरी स्त्री मर गई। और बिहान को मैं ने आज्ञा के अनुसार
किया। 19 तब लोग मुझ से कहने लगे, क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू
करता है, इसका हम लोगोंके लिथे क्या अर्य है? 20 मैं ने उनको उत्तर दिया,
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 21 तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा
योंकहता है, देखो, मैं अपके पवित्रस्यान को जिसके गढ़ होने पर तुम फूलते हो,

और जो तम्हारी आंखोंका चाहा हुआ है, और जिसको तुम्हारा मन चाहता है, उसे
मैं अपवित्र करने पर हूं; और अपके जिन बेटे-बेटियोंको तुम वहां छोड़ आए हो, वे
तलवार से मारे जाएंगे। 22 और जैसा मैं ने किया है वैसा ही तुम लोग करोगे, तुम
भी अपके होंठ न ढांपोगे, न शोक के योग्य रोटी खाओगे। 23 तूम सिर पर पगड़ी
बान्धे और पांवोंमें जूती पहिने रहोगे, न तुम रोओगे, न छाती पीटोगे, वरन अपके
अधर्म के कामोंमें फंसे हुए गलते जाओगे और एक दूसरे की ओर कराहते रहोगे।
24 इस रीति यहोजकेल तुम्हारे लिथे चिन्ह ठहरेगा; जैसा उस ने किया, ठीक
वैसा ही तुम भी करोगे। और जब यह हो जाए, तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर
यहोवा हूँ। 25 और हे मनुष्य के सन्तान, क्या यह सच नहीं, कि जिस दिन मैं
उनका दृढ़ गढ़, उनकी शोभा, और हर्ष का कारण, और उनके बेटे-बेटियां जो
उनकी शोभा, उनकी आंखोंका आनन्द, और मन की चाह हैं, उनको मैं उन से ले
लूंगा, 26 उसी दिन जो भागकर बचेगा, वह तेरे पास आकर तुझे समाचार
सुनाएगा। 27 उसी दिन तेरा मुंह खुलेगा, और तू फिर चुप न रहेगा परन्तु उस
बचे हुए के साय बातें करेगा। सो तू इन लोगोंके लिथे चिन्ह ठहरेगा; और थे जान
लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 25

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अम्मोनियोंकी
ओर मुंह करके उनके विषय में भविष्यद्वाणी कर। 3 उन से कह, हे अम्मोनियो,
परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा योंकहता है कि तुम ने जो मेरे
पवित्रस्यान के विषय जब वह अपवित्र किया गया, और इस्राएल के देश के विषय

जब वह उजड़ गया, और यहूदा के घराने के विषय जब वे बंधुआई में गए, अहा,
अहा ! कहा ! 4 इस कारण देखो, मैं तुझ को पूरबियोंके अधिक्कारने में करने पर
हूँ; और वे तेरे बीच अपक्की छावनियां डालेंगे और अपके घर बनाएंगे; वे तेरे फल
खाएंगे और तेरा दूध पीएंगे। 5 और मैं रब्बा नगर को ऊंटोंके रहने और
अम्मोनियोंके देश को भेड़-बकरियोंके बैठने का स्यान कर दूंगा; तब तुम जान
लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 6 क्योंकि परमेश्वर यहोवा योंकहता है, तुम ने जो इस्राएल
के देश के कारण ताली बजाई और नाचे, और अपके सारे मन के अभिमान से
आनन्द किया, 7 इस कारण देख, मैं ने अपना हाथ तेरे ऊपर बढ़ाया है; और तुझ
को जाति जाति की लूट कर दूंगा, और देश देश के लोगोंमें से तुझे मिटाऊंगा; और
देश देश में से नाश करूंगा। मैं तेरा सत्यानाश कर डालूंगा; तब तू जान लेगा कि
मैं यहोवा हूँ। 8 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मोआब और सेईर जो कहते हैं, देखो,
यहूदा का घराना और सब जातियोंके समान हो गया हे। 9 इस कारण देख,
मोआब के देश के किनारे के नगरोंको बेत्यशीमोत, बालमोन, और किर्यातैम, जो
उस देश के शिरोमणि हैं, मैं उनका मार्ग खोलकर 10 उन्हें पूरबियोंके वश में ऐसा
कर दूंगा कि वे अम्योनियोंपर चढ़ाई करें; और मैं अम्मोनियोंको यहां तक उनके
अधिक्कारने में कर दूंगा कि जाति जाति के बीच उनका स्मरण फिर न रहेगा।
11 और मैं मोआब को भी दण्ड दूंगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 12
परमेश्वर यहोवा योंभी कहता है, एदोम ने जो यहूदा के घराने से पलटा लिया, और
उन से बदला लेकर बड़ा दोषी हो गया है, 13 इस कारण परमेश्वर यहोवा योंकहता
है, मैं एदोम के देश के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाकर उस में से मनुष्य और पशु
दोनोंको मिटाऊंगा; और तेमान से लेकर ददान तक उसको उजाड़ कर दूंगा; और

वे तलवार से मारे जाएंगे। 14 और मैं अपक्की प्रजा इस्राएल के द्वारा एदोम से
अपना बदला लूंगा; और वे उस देश में मेरे कोप और जलजलाहट के अनुसार
काम करेंगे। तब वे मेरा पलटा लेना जान लेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।
15 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, क्योंकि पलिश्ती लोगोंने पलटा लिया, वरन
अपक्की युग युग की शत्रुता के कारण अपके मन के अभिमान से बदला लिया कि
नाश करें, 16 इस कारण परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देख, मैं पलिश्तियोंके
विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने पर हूँ, और करेतियोंको मिटा डालूंगा; और समुद्रतीर के
बचे हुए रहनेवालोंको नाश करूंगा। 17 और मैं जलजलाहट के साय मुक़द्दमा
लड़कर, उन से कड़ाई के साय पलटा लूंगा। और जब मैं उन से बदला ले लूंगा, तब
वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 26

1 ग्यारहवें वर्ष के पक्कीले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, सोर ने जो यरूशलेम के विष्य में कहा है,
अहा, अहा। जो देश देश के लोगोंके फाटक के समान यी, वह नाश होगई। 3 उसके
उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा ! इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है, हे सोर,
देख, मैं तेरे पिरुद्ध हूँ; और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसी
उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। 4 और वे सोर की शहरपनाह को गिराएंगी,
और उसके गुम्मटोंको तोड़ डालेंगी; और मैं उस पर से उसकी मिट्टी खुरचकर
उसे नंगी चट्टान कर दूंगा। 5 वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्यान हो
जएगा; क्योंकि परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है; और वह जाति जाति से लुट

जाएगा; 6 और उसकी जो बेटियां मैदान में हैं, वे तलवार से मारी जाएंगी। तब वे
जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 7 क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, मैं सोर
के विरुद्ध राजाधिराज बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को घेड़ों, रयों, सवारों, बड़ी
भीड़, और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊंगा। 8 और तेरी जो बेटियां मैदान में
हों, उनको वह तलवार से मारेगा, और तेरे विरुद्ध कोट बनाएगा और दमदमा
बान्धेगा; और ढाल उठाएगा। 9 और वह तेरी शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यन्त्र
चलाएगा और तेरे गुम्मटोंको फरसोंसे ढा देगा। 10 उसके घोड़े इतने होंगे, कि तू
उनकी धूलि से ढंप जाएगा, और जब वह तेरे फाटकोंमें ऐसे घुसेगा जैसे लोग
नाकेवाले नगर में घुसते हैं, तब तेरी शहरपनाह सवारों, छकड़ों, और रयोंके शब्द
से कांप उठेगी। 11 वह अपके घेड़ोंकी टापोंसे तेरी सब सड़कोंको रौन्द डालेगा,
और तेरे निवासिक्कों तलवार से मार डालेगा, और तेरे बल के खंभे भूमि पर
बिराए जाएंगे। 12 और लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्योपार की वस्तुएं छीन
लेंगे; वे तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे; तेरे पत्यर और
काठ, और तेरी धूलि वे जल में फेंक देंगे। 13 और मैं तेरे गीतोंका सुरताल बन्द
करूंगा, और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी। 14 मैं तुझे नंगी चट्टान
कर दूंगा; तू जाल फैलाने ही का स्यान हो जाएगा; और फिर बसाया न जाएगा;
क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है। 15
परमेश्वर यहोवा सोर से योंकहता है, तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग
कराहेंगे और तुझ में घात ही घात होगा, तब क्या टापू न कांप उठेंगे? 16 तब
समुद्रतीर के सब प्रधान लोग अपके अपके सिंहासन पर से उतरेंगे, और अपके
बाग�े और बूटेदार वस्त्र उतारकर यरयराहट के वस्त्र पहिनेंगे और भूमि पर

बैठकर झण झण में कांपेंगे; और तेरे कारण विस्मित रहेंगे। 17 और वे तेरे
विषय में विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे, हाथ ! मल्लाहोंकी बसाई हुई
हाथ ! सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियोंसमेत सामर्यी रही और सब
टिकनेवालोंकी डरानेवाली नगरी यी, तू कैसी नाश हुई है? 18 तेरे गिरने के दिन
टापू कांप उठेंगे, और तेरे जाते रहने के कारण समुद्र से सब टापू घबरा जाएंगे।
19 क्योंकि परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जब मैं तुझे निर्जन नगरोंके समान
उजाड़ करूंगा और तेरे ऊपर महासागर चढ़ाऊंगा, और तू गहिरे जल में डूब
जाएगा, 20 तब गड़हे में और गिरनेवालोंके संग मैं तुझे भी प्राचीन लोगोंमें उतार
दूंगा; और गड़हे में और गिरनेवालोंके संग तुझे भी नीचे के लोक में रखकर
प्राचीनकाल के उजड़े हुए स्यानोंके समान कर दूंगा; यहां तक कि तू फिर न बसेगा
और न जीवन के लोक में कोई स्यान पाएगा। 21 मैं तुझे घबराने का कारण
करूंगा, और तू भविष्य में फिर न रहेगा, वरन ढूंढने पर भी तेरा पता न लगेगा,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 27

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, सोर के विषय
एक विलाप का गीत बनाकर उस से योंकह, 3 हे समुद्र के पैठाव पर रहनेवाली, हे
बहुत से द्वीपोंके लिथे देश देश के लोगोंके साय व्योपार करनेवाली, परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, हे सोर तू ने कहा है कि मैं सर्वांग सुन्दर हूँ। 4 तेरे सिवाने
समुद्र के बीच हैं; तेरे बनानेवाले ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया। 5 तेरी सब पटरियां
सनीर पर्वत के सनौवर की लकड़ी की बनी हैं; तेरे मस्तूल के लिथे लबानोन के

देवदार लिए गए हैं। 6 तेरे डांड़ बाशान के बांजवृझोंके बने; तेरे जहाज़ोंका पटाव
कित्तियोंके द्वीपोंसे लाए हुए सीधे सनौवर की हाथीदांत जड़ी हुई लकड़ी का बना। 7
तेरे जहाज़ोंके पाल मिस्र से लाए हुए बूटेदार सन के कपके के बने कि तेरे लिथे
फणडे का काम दें; तेरी चांदनी एलीशा के द्वीपोंसे लाए हुए नीले और बैंजनी रंग के
कपड़ोंकी बनी। 8 तेरे खेनेवाले सीदोन और अर्बद के रहनेवाले थे; हे सोर, तेरे ही
बीच के बुद्धिमान लोग तेरे मांफी थे। 9 तेरे कारीगर जोड़ाई करनेवाले गबल नगर
के पुरनिथे और बुद्धिमान लोग थे; तुझ में व्योपार करने के लिथे मल्लाहोंसमेत
समुद्र पर के सब जहाज तुझ में आ गए थे। 10 तेरी सेना में फारसी, लूदी, और
पूती लोग भरती हुए थे; उन्होंने तुझ में ढाल, और टोपी टांगी; और उन्हीं के
कारण तेरा प्रताप बढ़ा या। 11 तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साय अर्बद के
लोग चारोंओर थे, और तेरे गुम्मटोंमें शूरवीर खड़े थे; उन्होंने अपक्की ढालें तेरी
चारोंओर की शहरपनाह पर टांगी यी; तेरी सुन्दरता उनके द्वारा पूरी हुई यी। 12
अपक्की सब प्रकार की सम्पत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे व्योपारी
थे; उन्होंने चान्दी, लोहा, रांगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया। 13 यावान,
तूबल, और मेशेक के लोग तेरे माल के बदले दास-दासी और पीतल के पात्र तुझ
से व्योपार करते थे। 14 तोगर्मा के घराने के लोगोंने तेरी सम्पत्ति लेकर घोड़े,
सवारी के घोड़े और खच्चर दिए। 15 ददानी तेरे व्योपारी थे; बहुत से द्वीप तेरे हाट
बने थे; वे तेरे पास हाथीदांत की सींग और आबनूस की लकड़ी व्योपार में लाते थे।
16 तेरी बहुत कारीगरी के कारण आराम तेरा व्योपारी या; मरकत, बैजनी रंग का
और बूटेदार वस्त्र, सन, मूगा, और लालड़ी देकर वे तेरा माल लेते थे। 17 यहूदा
और इस्राएल भी तेरे व्योपारी थे; उन्होंने मिन्नीत का गेहूं, पन्नग, और मधु,

तेल, और बलसान देकर तेरा माल लिया। 18 तुझ में बहुत कारीगरी हुई और सब
प्रकार का धन इकट्टा हुआ, इस से दमिश्क तेरा व्योपारी हुआ; तेरे पास हेलबोन
का दाखमधु और उजला ऊन पहुंचाया गया। 19 बदान और यावान ने तेरे माल के
बदले में सूत दिया; और उनके कारण फौलाद, तज और अगर में भी तेरा व्योपार
हुआ। 20 सवारी के चार-जामे के लिथे ददान तेरा व्योपारी हुआ। 21 अरब और
केदार के सब प्रधान तेरे व्योपारी ठहरे; उन्होंने मेम्ने, मेढ़े, और बकरे लाकर तेरे
साय लेन-देन किया। 22 शबा और रामा के व्योपारी तेरे व्योपारी ठहरे; उन्होंने
उत्तम उत्तम जाति का सब भांति का मसाला, सर्व भांति के मणि, और सोना देकर
तेरा माल लिया। 23 हारान, कन्ने, एदेन, शबा के व्योपारी, और अश्शूर और
कलमद, थे सब नेरे व्योपारी ठहरे। 24 इन्होंने उत्तम उत्तम वस्तुएं अर्यात् ओढ़ने
के नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियोंसे बन्धी और देवदार की बनी हुई चि?ा
विचित्र कपड़ोंकी पेटियां लाकर तेरे साय लेन-देन किया। 25 तर्शीश के जहाज तेरे
व्योपार के माल के ढोनेवाले हुए। उनके द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत
धनवान् और प्रतापी हो गई यी। 26 तेरे खिवैयोंने तुझे गहिरे जल में पहुंचा दिया
है, और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया है। 27 जिस दिन तू डूबेगी, उसी
दिन तेरा धन-सम्पत्ति, व्योपार का माल, मल्लाह, मांफी, जुड़ाई का काम
करनेवाले, व्योपारी लोग, और तुझ में जितने सिपाही हैं, और तेरी सारी भीड़-भाड़
समुद्र के बीच गिर जाएंगी। 28 तेरे मांफियोंकी चिल्लाहट के शब्द के मारे तेरे
आस पास के स्यान कांप उठेंगे। 29 और सब खेनेवाले और मल्लाह, और समुद्र
में जितने मांफी रहते हैं, वे अपके अपके जहाज पर से उतरेंगे, 30 और वे भूमि
पर खड़े होकर तेरे पिषय में ऊंचे शब्द से बिलक बिलककर रोएंगे। वे अपके

अपके सिर पर धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे; 31 और तेरे शोक में अपके सिर
मुंड़वा देंगे, और कमर में टाट बान्धकर अपके मन के कड़े दु:ख के साय तेरे
विषय में रोएंगे और छाती पीटेंगे। 32 वे विलाप करते हुए तेरे विषय में विलाप
का यह गीत बनाकर गाएंगे, सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पक्की है, उसके
तुल्य कौन नगरी है? 33 जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता या, तब बहुत सी
जातियोंके लोग तृप्त होते थे; तेरे धन और व्योपार के माल की बहुतायत से पृय्वी
के राजा धनी होते थे। 34 जिस समय तू अयाह जल में लहरोंसे टूटी, उस समय
तेरे वयोपार का माल, और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गए। 35
टापुओं के सब रहनेवाले तेरे कारण विस्मित हुए; और उनके सब राजाओं के रोएं
खड़े हो गए, और उनके मुंह उदास देख पके हैं। 36 देश देश के व्योपारी तेरे विरुद्ध
हयौड़ी बजा रहे हैं; तू भय का कारण हो गई है और फिर स्यिर न रह सकेगी।

यहेजकेल 28

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, सोर के प्रधान से
कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है कि तू ने मन में फूलकर यह कहा है, मैं ईश्वर हूँ,
मैं समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूँ, परन्तु, यद्यपि तू अपके आपको
परमेश्वर सा दिखाता है, तौभी तू ईश्वर नहीं, मनुष्य ही है। 3 तू दानिय्थेल से
अधिक बुद्धिमान तो है; कोई भेद तुझ से छिपा न होगा; 4 तू ने अपक्की बुद्धि और
समझ के द्वारा धन प्राप्त किया, और अपके भण्डारोंमें सोना-चान्दी रखा है; 5 तू ने
बड़ी बुद्धि से लेन-देन किया जिस से तेरा धन बढ़ा, और धन के कारण तेरा मन
फूल उठा है। 6 इस कारण परमेश्वर यहोवा योंकहता है, तू जो अपना मन

परमेश्वर सा दिखाता है, 7 इसलिथे देख, मैं तुझ पर ऐसे परदेशियोंसे चढ़ाई
कराऊंगा, जो सब जातियोंसे अधिक बलात्कारी हैं; वे अपक्की तलवारें तेरी बुद्धि
की शोभा पर चलाएंगे और तेरी चमक-दमक को बिगाड़ेंगे। 8 वे तुझे कबर में
उतारेंगे, और तू समुद्र के बीच के मारे हुओं की रीति पर मर जाएगा। 9 तब, क्या
तू अपके घात करनेवाले के साम्हने कहता रहेगा कि तू परमेश्वर है? तू अपके
घायल करनेवाले के हाथ में ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरेगा। 10 तू परदेशियोंके
हाथ से खतनाहीन लोगोंकी नाई मारा जाएगा; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है,
परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है। 11 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
12 हे मनुष्य के सन्तान, सोर के राजा के विषय में विलाप का गीत बनाकर उस
से कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, तू तो उत्तम से भी उत्तम है; तू बुद्धि से भरपूर
और सर्वांग सुन्दर है। 13 तू परमेश्वर की एदेन नाम बारी में या; तेरे पास
आभूषण, माणिक, पद्‌क़राग, हीरा, फीरोज़ा, सुलैमानी मणि, यशब, तीलमणि,
मरकद, और लाल सब भांति के मणि और सोने के पहिरावे थे; तेरे डफ और
बांसुलियां तुझी में बनाई गई यीं; जिस दिन तू सिरजा गया या; उस दिन वे भी
तैयार की गई यीं। 14 तू छानेवाला अभिषिक्त करूब या, मैं ने तुझे ऐसा ठहराया
कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता या; तू आग सरीखे चमकनेवाले
मणियोंके बीच चलता फिरता या। 15 जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस
दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपक्की सारी
चालचलन में निदॉष रहा। 16 परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव
से भरकर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर
से उतारा, और हे छानेवाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मण्यथें के

बीच से नाश किया है। 17 सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा या; और विभव
के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई यी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं
के साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। 18 तेरे अधर्म के कामो की बहुतायत से
और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्यान अपवित्र हो गए; सो मैं ने तुझ
में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब
देखनेवालोंके साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है। 19 देश देश के लोगोंमें से
जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और
फिर कभी पाया न जाएगा। 20 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 21 हे मनुष्य
के सन्तान, अपना मुख सीदोन की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, 22
और कह, प्रभु यहोवा योंकहता है, हे सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; मैं तेरे बीच अपक्की
महिमा कराऊंगा। जब मैं उसके बीच दण्ड दूंगा और उस में अपके को पवित्र
ठहराऊंगा, तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 23 मैं उस में मरी फैलाऊंगा, और
उसकी सड़कोंमें लोहू बहाऊंगा; और उसके चारोंओर तलवार चलेगी; तब उसके
बीच घायल लोग गिरेंगे, और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 24 और इस्राएल के
घराने के चारोंओर की जितनी जातियां उनके साय अभिमान का बर्ताव करती हैं,
उन में से कोई उनका चुभनेवाला काँटा वा बेधनेवाला शूल फिर न ठहरेगी; तब वे
जान लेंगी कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ। 25 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जब में
इस्राएल के घराने को उन सब लोगोंमें से इकट्ठा करूंगा, जिनके बीच वे
तितर-बितर हुए हैं, और देश देश के लोगोंके साम्हने उनके द्वारा पवित्र ठहरूंगा,
तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैं ने अपके दास याकूब को दिया या। 26 वे उस
में निडर बसे रहेंगे; वे घर बनाकर और दाख की बारियां लगाकर निडर रहेंगे; तब

मैं उनके चारोंओर के सब लोगोंको दण्ड दूंगा जो उन से अभिमान का बर्ताव करते
हैं, तब वे जान लेंगे कि उनका परमेश्वर यहोवा ही है।

यहेजकेल 29

1 दसवें वर्ष के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख मिस्र के राजा फिरौन की ओर करके
उसके और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर; 3 यह कह, परमेश्वर यहोवा
योंकहता हे, हे मिस्र के राजा फिरौन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, हे बड़े नगर, तू जो अपक्की
नदियोंके बीच पड़ा रहता है, जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी निज की है, और मैं
ही ने उसको अपके लिथे बनाया है। 4 मैं तेरे जबड़ोंमें आँकड़े डालूंगा, औरतेरी
नदियोंकी मछलियोंको तेरी खाल में चिपटाऊंगा, और तेरी खाल में चिपक्की हुई
तेरी नदियोंकी सब मछलियोंसमेत तुझ को तेरी नदियोंमें से निकालूंगा। 5 तब मैं
तुझे तेरी नदियोंकी सारी मछलियोंसमेत जंगल में निकाल दूंगा, और तू मैदान में
पड़ा रहेगा; किसी भी प्रकार से तेरी सुधि न ली जाएगी। मैं ने तुझे वनपशुओं और
आकाश के पझियोंका आहार कर दिया है। 6 तब मिस्र के सारे निवासी जान लेंगे
कि मैं यहोवा हूँ। वे तो इस्राएल के घराने के लिथे नरकट की टेक ठहरे थे। 7 जब
उन्होंने तुझ पर हाथ का बल दिया तब तू टूट गया और उनके पखौड़े उखड़ ही
गए; और जब उन्होंने तुझ पर टेक लगाई, तब तू टूट गया, और उनकी कमर की
सारी नसें चढ़ गई। 8 इस कारण प्रभु यहोवा योंकहता है, देख, मैं तुझ पर तलवार
चलवाकर, तेरे मनुष्य और पशु, सभोंको नाश करूंगा। 9 तब मिस्र देश उजाड़ ही
अजाड़ होगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। डस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी

अपक्की ही है, और मैं ही ने उसे बनाया। 10 इस कारण देख, मैं तेरे और तेरी
नदियोंके विरुद्ध हूँ, और मिस्र देश को मिग्दोल से लेकर सवेने तक वरन कूश देश
के सिवाने तक उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा। 11 चालीस वर्ष तक उस में मनुष्य वा
पशु का पांव तक न पकेगा; और न उस में कोई बसेगा। 12 चालीस वर्ष तक मैं
मिस्र देश को उजड़े हुए देशोंके बीच उजाड़ कर रखूंगा; और उसके नगर उजड़े हुए
नगरोंके बीच खण्डहर ही रहेंगे। मैं मिस्रियोंको जाति जाति में छिन्न-भिन्न कर
दूंगा, और देश देश में तितर-बितर कर दूंगा। 13 परमेश्वर यहोवा योंकहता है कि
चालीस वर्ष के बीतने पर मैं मिस्रियोंको उन जातियोंके बीच से इकट्ठा करूंगा,
जिन में वे तितर-बितर हुए; 14 और मैं मिस्रियोंको बंधुआई से छुड़ाकर पत्रास
देश में, जो उनकी जन्मभूमि है, फिर पहुंचाऊंगा; और वहां उनका छोटा सा राज्य
हो जाएगा। 15 वह सब राज्योंमें से छोटा होगा, और फिर अपना सिर और
जातियोंके ऊपर न उठाएगा; क्योंकि मैं मिस्रियोंको ऐसा घटाऊंगा कि वे
अन्यजातियोंपर फिर प्रभुता न करने पाएंगे। 16 और वह फिर इस्राएल के घराने
के भरोसे का कारण न होगा, क्योंकि जब वे फिर उनकी बोर देखने लगें, तब वे
उनके अधर्म को स्मरण करेंगे। और तब वे जान लेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।
17 फिर सत्ताइसवें वर्ष के पहले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, 18 हे मनुष्य के सन्तान, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के
घेरने में अपक्की सेना से बड़ा परिश्रम कराया; हर एक का सिर चन्दला हो गया,
और हर एक के कन्धोंका चमड़ा उड़ गया; तौभी उसको सोर से न तो इस बड़े
परिश्रम की मज़दूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को। 19 इस कारण परमेश्वर
यहोवा योंकहता हे, देख, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूंगा; और

वह उसकी भीड़ को ले जाएगा, और उसकी धन सम्पत्ति को लूटकर अपना कर
लेगा; सो यही पजदूरी उसकी सेना को मिलेगी। 20 मैं ने उसके परिश्रम के बदले
में उसको मिस्र देश इस कारण दिया है कि उन लोगोंने मेरे लिथे काम किया या,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी हे। 21 उसी समय मैं इस्राएल के घराने का एक
सींग उगाऊंगा, और उनके बीच तेरा मुंह खोलूंगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा
हूँ।

यहेजकेल 30

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी
करके कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, हाथ, हाथ करो, हाथ उस दिन पर ! 3
क्योंकि वह दिन अर्यात् यहोवा का दिन निकट है; वह बादलोंका दिन, और
जातियोंके दण्ड का समय होगा। 4 मिस्र में तलवार चलेगी, और जब मिस्र में
लोग मारे जाकर गिरेंगे, तब कूश में भी संकट पकेगा, लोग मिस्र को लूट ले
लाएंगे, और उसकी तेवें उलट दी जाएंगी। 5 कूश, पूत, लूद और सब दोगले, और
कूब लोग, और वाचा बान्धे हुए देश के निवासी, मिस्रियोंके संग तलवार से मारे
जाएंगे। 6 यहोवा योंकहता है, मिस्र के संभालनेवाले भी गिर जाएंगे, और
अपक्की जिस सामर्य पर मिस्री फूलते हैं, वह टूटेगी; मिग्दोल से लेकर सवेने तक
उसके निवासी तलवार से मारे जाएंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 7 और वे
उजड़े हुए देशोंके बीच उजड़े ठहरेंगे, और उनके नगर खण्डहर किए हुए नगरोंमें
गिने जाएंगे। 8 जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा। और उसके सब सहाथक नाश
होंगे, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 9 उस समय मेरे साम्हने से दूत

जहाज़ोंपर चढ़कर निडर निकलेंगे और कूशियोंको डराएंगे; और उन पर ऐसा
संकट पकेगा जैसा कि मिस्र के दण्ड के समय; क्योंकि दख, वह दिन आता है !
10 परमेश्वर यहोवा योंकहता हे, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ से मिस्र
की भीड़-भाड़ को नाश करा दूंगा। 11 वह अपक्की प्रजा समेत, जो सब जातियोंमें
भयानक है, उस देश के नाश करने को पहुंचाया जाएगा; और वे मिस्र के विरुद्ध
तलवार खींचकर देश को मरे हुओं से भर देंगे। 12 और मैं नदियोंको सुखा डालूंगा,
और देश को बुरे लोगोंके हाथ कर दूंगा; और मैं परदेशियोंके द्वारा देश को, और जो
कुछ उस में है, उजाड़ करा दूंगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है। 13 परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, मैं नोप में से मूरतोंको नाश करूंगा और उस में की मूरतोंको
रहने न दूंगा; फिर कोई प्रधान मिस्र देश में न उठेगा; और में मिस्र देश में भय
उपजाऊंगा। 14 मैं पत्रोस को उजाड़ूंगा, और सोअन में आग लगाऊंगा, और नो को
दण्ड दूंगा। 15 और सीन जो मिस्र का दृढ़ स्यान है, उस पर मैं अपक्की
जलजलाहट भड़काऊंगा, और नो की भीड़-भाड़ का अन्त कर डालूंगा। 16 और मैं
मिस्र में आग लगाऊंगा; सीन बहुत यरयराएगा; और नो फाड़ा जाएगा और नोप
के विरोधी दिन दहाड़े उठेंगे। 17 आवेन और पीवेसेत के जवान तलवार से गिरेंगे,
और थे नगर बंधुआई में चले जाएंगे। 18 जब मैं मिस्रियोंके जुओं को तहपन्हेस
में तोड़ूंगा, तब उस में दिन को अन्धेरा होगा, और उसकी सामर्य जिस पर वह
फूलता है, वह नाश हो जाएगी; उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियां
बंधुआई में चक्की जाएंगी। 19 इस प्रकार मैं मिस्रियोंको दण्ड दूंगा। और वे जान
लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 20 फिर ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने के सातवें दिन को
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 21 हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने मिस्र के राजा

फिरौन की भुजा तोड़ दी है; और देख? न तो वह जोड़ी गई, न उस पर लेप
लगाकर पट्‌टी चढ़ाई गई कि वह बान्धने से तलवार पकड़ने के योग्य बन सके।
22 सो प्रभु यहोवा योंकहता है, देख, मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूँ, और
उसकी अच्छी और टूटी दीनोंभुजाओं को तोड़ूंगा; और तलवार को उसके हाथ से
गिराऊंगा। 23 मैं मिस्रियोंको जाति जाति में तितर-बितर करूंगा, और देश देश में
छितराऊंगा। 24 और मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को बली करके अपक्की
तलवार उसके हाथ में दूंगा; परन्तु फिरौन की भुजाओं को तोड़ूंगा, और वह उसके
साम्हने ऐसा कराहेगा जैसा मरनहार घायल कराहता है। 25 मैं बाबुल के राजा की
भुजाओं को सम्भालूंगा, और फिरौन की भुजाएं ढीली पकेंगी, तब वे जानेंगे कि मैं
यहोवा हूँ। जब मैं बाबुल के राजा के हाथ में अपक्की तलवार दूंगा, तब वह उसे
मिस्र देश पर चलाएगा; 26 और मैं मिस्रियोंको जाति जाति में तितर-बितर
करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 31

1 ग्यारहवें वर्ष के तीसरे महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन और उसकी भीड़ से कह,
अपक्की बड़ाई में तू किस के समान है। 3 देख, अश्शूर तो लबानोन का एक
देवदार या जिसकी सुन्दर सुन्दर शाखें, घनी छाया देतीं और बड़ी ऊंची यीं, और
उसकी फुनगी बादलोंतक पहुंचक्की यी। 4 जल ने उसे बढ़ाया, उस गहिरे जल के
कारण वह ऊंचा हुआ, जिस से नदियां उसके स्यान के चारोंओर बहती यीं, और
उसकी नालियां निकलकर मैदान के सारे वृझोंके पास पहुंचक्की यीं। 5 इस

कारण उसकी ऊंचाई मैदान के सब वृझोंसे अधिक हुई; उसकी टहनियां बहुत हुई,
और उसकी शाखाएं लम्बी हो गई, क्योंकि जब वे निकलीं, तब उनको बहुत जल
मिला। 6 उसकी टहनियोंमें आकाश के सब प्रकार के पक्की बसेरा करते थे, और
उसकी शाखाओं के नीचे मैदान के सब भांति के जीवजन्तु जन्मते थे; और उसकी
छाया में सब बड़ी जातियां रहती यीं। 7 वह अपक्की बड़ाई और अपक्की
डालियोंकी लम्बाई के कारण सुन्दर हुआ; क्योंकि उसकी जड़ बहुत जल के
निकट यी। 8 परमेश्वर की बारी के देवदार भी उसको न छिपा सकते थे, सनौबर
उसकी टहनियोंके समान भी न थे, और न अमॉन वृझ उसकी शाखाओं के तुल्य
थे; परमेश्वर की बारी का भी कोई वृझ सुन्दरता में उसके बराबर न या। 9 मैं ने
उसे डालियोंकी बहुतायत से सुन्दर बनाया या, यहां तक कि एदेन के सब वृझ जो
परमेश्वर की बारी में थे, उस से डाह करते थे। 10 इस कारण परमेश्वर यहोवा ने
योंकहा है, उसकी ऊंचाई जो बढ़ गई, और उसकी फुनगी जो बादलोंतक पहुंची है,
और अपक्की ऊंचाई के कारण उसका मन जो फूल उठा है, 11 इसलिथे जातियोंमें
जो सामर्यी है, मैं उसी के हाथ उसको कर दूंगा, और वह निश्चय उस से बुरा
व्यवहार करेगा। उसकी दुष्टता के कारण मैं ने उसको निकाल दिया है। 12
परदेशी, जो जातियोंमें भयानक लोग हैं, वे उसको काटकर छोड़ देंगे, उसकी
डालियां पहाड़ोंपर, और सब तराइयोंमें गिराई जाएंगी, और उसकी शाखाएं देश के
सब नालोंमें टूटी पक्की रहेंगी, और जाति जाति के सब लोग उसकी छाया को
छोड़कर चले जाएंगे। 13 उस गिरे हुए वृझ पर आकाश के सब पक्की बसेरा करते
हैं, और उसकी शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढ़ने पाते हैं। 14 यह
इसलिथे हुआ है कि जल के पास के सब वृझोंमें से कोई अपक्की ऊंचाई न बढ़ाए,

न अपक्की फुनगी को बादलोंतक पहुंचाए, और उन में से जितने जल पाकर दृढ़
हो गए हैं वे ऊंचे होने के कारण सिर न उठाएं; क्योंकि वे भी सब के सब कबर में
गड़े हुए मनुष्योंके समान मृत्यु के वश करके अधोलोक में डाल दिए जाएंगे। 15
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया, उस दिन मैं
ने विलाप कराया और गहिरे समुद्र को ढांप दिया, और नदियोंका बहुत जल रुक
गया; और उसके कारण मैं ने लबानोन पर उदासी छा दी, और मैदान के सब वृझ
मूछिर्त हुए। 16 जब मैं ने उसको कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में फेंक
दिया, तब उसके गिरने के शब्द से जाति जाति थरथरा गई, और एदेन के सब
वृझ अर्यात् लबानोन के उत्तम उत्तम वृझोंने, जितने उस से जल पाते हैं, उन
सभोंने अधोलोक में शान्ति पाई। 17 वे भी उसके संग तलवार से मारे हुओं के
पास अधोलोक में उतर गए; अर्यात् वे जो उसकी भुजा थे, और जाति जाति के
बीच उसकी छाया में रहते थे। 18 सो महिमा और बड़ाई के विषय में एदेन के
वृझोंमें से तू किस के समान है? तू तो एदेन के और वृझोंके साय अधोलोक में
उतारा जाएगा, और खतनाहीन लोगोंके बीच तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा
रहेगा। फिरौन अपक्की सारी भेड़-भाड़ समेत योंही होगा, परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है।

यहेजकेल 32

1 बारहवें वर्ष के बारहवें महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत
बनाकर उसको सुना: जाति जाति में तेरी उपमा जवान सिंह से दी गई यी, परन्तु

तू समुद्र के मगर के समान है; तू अपक्की नदियोंमें टूट पड़ा, और उनके जल को
पांवोंसे मयकर गंदला कर दिया। 3 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं बहुत सी
जातियोंकी सभा के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊंगा, और वे तुझे मेरे
महाजाल में खींच लेंगे। 4 तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा, और मैदान में फेंककर
आकाश के सब पझियोंको तुझ पर बैठाऊंगा; और तेरे मांस से सारी पृय्वी के
जीवजन्तुओं को तृप्त करूंगा। 5 मैं तेरे मांस को पहाड़ोंपर रखूंगा, और तराइयोंको
तेरी ऊंचाई से भर दूंगा। 6 और जिस देश में तू तैरता है, उसको पहाड़ोंतक मैं तेरे
लोहू से खींचूंगा; और उसके नाले तुझ से भर जाएंगे। 7 जिस समय मैं तुझे
मिटाने लगूं, उस समय मैं आकाश को ढांपूंगा और तारोंको धुन्धला कर दूंगा; मैं
सूर्य को बादल से छिपाऊंगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। 8 आकाश में
जितनी प्रकाशमान ज्योतियां हैं, उन सब को मैं तेरे कारण धुन्धला कर दूंगा,
और तेरे देश में अन्धकार कर दूंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 9 जब मैं
तेरे विनाश का समाचार जाति जाति में और तेरे अनजाने देशोंमें फैलाऊंगा, तब
बड़े बड़े देशोंके लोगोंके मन में रिस उपजाऊंगा। 10 मैं बहुत सी जातियोंको तेरे
कारण विस्मित कर दूंगा, और जब मैं उनके राजाओं के साम्हने अपक्की तलवार
भेजूंगा, तब तेरे कारण उनके रोएं खड़े हो जाएंगे, और तेरे गिरने के दिन वे अपके
अपके प्राण के लिथे कांपके रहेंगे। 11 क्योंकि पामेश्वर यहोवा योंकहता है, बाबुल
के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी। 12 मैं तेरी भीड़ को ऐसे शूरवीरोंकी
तलवारोंके द्वारा गिराऊंगा जो सब जातियोंमे भयानक हैं। वे मिस्र के घमण्ड को
तोड़ेंगे, और उसकी सारी भीड़ का सत्यानाश होगा। 13 मैं उसके सब पशुओं को
उसके बहुतेरे जलाशयोंके तीर पर से नाश करूंगा; और भविष्य में वे न तो मनुष्य

के पांव से और न पशुओं के खुरोंसे गंदले किए जाएंगे। 14 तब मैं उनका जल
निर्मल कर दूंगा, और उनकी नदियां तेल की नाई बहेंगी, परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है। 15 जब मैं मिस्र देश को उजाड़ कर दूंगा और जिस से वह भरपूर है, उस
से छूछा कर दूंगा, और जब मैं उसके सब रहनेवालोंको मारूंगा, तब वे जान लेंगे
कि मैं यहोवा हूँ। 16 लोगोंके विलाप करने के लिथे विलाप का गीत यही है;
जाति-जाति की स्त्रियां इसे गाएंगी; मिस्र और उसकी सारी भीड़ के विषय वे यही
विलापक्कीत गाएंगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 17 फिर बारहवें वर्ष के
पहिले महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 18 हे
मनुष्य के सन्तान, मिस्र की भीड़ के लिथे हाथ-हाथ कर, और उसको प्रतापी
जातियोंकी बेटियोंसमेत कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में उतार। 19 तू
किस से मनोहर है? तू उतरकर खतनाहीनोंके संग पड़ा रह। 20 वे तलवार से मरे
हुओं के बीच गिरेंगे, उन के लिथे तलवार ही ठहराई गई है; सो मिस्र को उसकी
सारी भीड़ समेत घसीट ले जाओ। 21 सामर्थी शूरवीर उस से और उसके
सहाथकोंसे अधोलोक में बातें करेंगे; वे खतनाहीन लोग वहां तलवार से मरे पके
हैं। 22 अपक्की सारी सभा समेत अश्शूर भी वहां है, उसकी कबरें उसके चारोंओर
हैं; सब के सब तलवार से मारे गए हैं। 23 उसकी कबरें गड़हे के कोनोंमें बनी हुई
हैं, और उसकी कबर के चारोंओर उसकी सभा है; वे सब के सब जो जीवनलोक में
भय उपजाते थे, अब तलवार से मरे पके हैं। 24 वहां एलाम है, और उसकी कबर
की चारोंओर उसकी सारी भीड़ है; वे सब के सब तलवार से मारे गए हैं, वे
खतनाहीन अधोलोक में उतर गए हैं; वे जीवनलोक में भय उपजाते थे, परन्तु
अब कबर में और गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर भी सियाही छाई हुई है। 25

उसकी सारी भीड़ समेत उसे मारे हुओं के बीच सेज मिली, उसकी कबरें उसी के
चारोंओर हैं, वे सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गए; उन्होंने जीवनलोक में
भय उपजाया या, परन्तु अब कबर में और गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर
सियाही छाई हुई है; और वे मरे हुओं के बीच रखे गए हैं। 26 वहां सारी भीड़ समेत
मेशेक और तूबल हैं, उनके चारोंओर कबरें हैं; वे सब के सब खतनाहीन तलवार से
मारे गए, क्योंकि जीवनलोक में वे भय उपजाते थे। 27 और उन गिरे हुए
खतनाहीन शूरवीरोंके संग वे पके न रहेंगे जो अपके अपके युद्ध के हयियार लिए
हुए अधोलोक में उतर गए हैं, वहां उनकी तलवारें उनके सिरोंके नीचे रखी हुई हैं,
और उनके अधर्म के काम उनकी हड्डियोंमें व्यापे हैं; क्योंकि जीवनलोक में उन
से शूरवीरोंको भी भय उपजता या। 28 इसलिथे तू भी खतनाहीनोंके संग अंग-भंग
होकर तलवार से मरे हुओं के संग पड़ा रहेगा। 29 वहां एदोम और उसके राजा
और उसके सारे प्रधान हैं, जो पराक्रमी होने पर भी तलवार से मरे हुओं के संग
रखे हैं; गड़हे में गड़े हुए खतनाहीन लोगोंके संग वे भी पके रहेंगे। 30 वहां उत्तर
दिशा के सारे प्रधान और सारे सीदोनी भी हैं जो मरे हुओं के संग उतर गए;
उन्होंने अपके पराक्रम से भय उपजाया या, परन्तु अब वे लज्जित हुए और
तलवार से और मरे हुओं के साय वे भी खतनाहीन पके हुए हैं, और कबर में अन्य
गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर भी सियाही छाई हुई है। 31 इन्हें देखकर फिरौन
भी अपक्की सारी भीड़ के विषय में शान्ति पाएगा, हां फिरौन और उसकी सारी
सेना जो तलवार से मारी गई है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 32 क्योंकि मैं
ने उसके कारण जीवनलोक में भय उपजाया या; इसलिथे वह सारी भीड़ समेत
तलवार से और मरे हुओं के सहित खतनाहीनोंके बीच लिटाया जाएगा, परमेश्वर

यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 33

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अपके लोगोंसे
कह, जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूं, और उस देश के लोग किसी को
अपना पहरुआ करके ठहराएं, 3 तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार
चला चाहती है, नरसिंगा फूंककर लोगोंको चिता दे, 4 तो जो कोई नरसिंगे का
शब्द सुनने पर न चेते और तलवार के चलने से मर जाए, उसका खून उसी के
सिर पकेगा। 5 उस ने नरसिंगे का शब्द सुना, परनतु न चेता; सो उसका खून उसी
को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत जाता, तो अपना प्राण बचा लेता। 6 परन्तु यदि
पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगोंको न
चिताए, और तलवार के चलने से उन में से कोई मर जाए, तो वह तो अपके अधर्म
में फंसा हुआ मर जाएगा, परन्तु उसके खुन का लेखा मैं पहरुए ही से लूंगा। 7
इसलिथे, हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा
दिया है; तु मेरे मुंह से वचन सुन सुनकर उन्होंमेरी ओर से चिता दे। 8 यदि मैं दुष्ट
से कहूं, हे दुष्ट, तू निश्चय मरेगा, तब यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय न
चिताए, तो वह दुष्ट अपके अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा
में तुझी से लूंगा। 9 परन्तु यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय चिताए कि वह
अपके मार्ग से फिरे और वह अपके मार्ग मे न फिरे, तो वह तो अपके अधर्म में
फंसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना प्राण बचा लेगा। 10 फिर हे मनुष्य के सन्तान,
इस्राएल के घराने से यह कह, तुम लोग कहते हो, हमारे अपराधोंऔर पापोंका

भार हमारे ऊपर लदा हुआ है और हम उसके कारण गलते जाते हैं; हम कैसे
जीवित रहें? 11 सो तू ने उन से यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इस से
कि दुष्ट अपके मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपके अपके
बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्योंमरो? 12 और हे मनुष्य के सन्तान, अपके
लोगोंसे यह कह, जब धर्मी जन अपराध करे तब उसका धर्म उसे बचा न सकेगा;
और दुष्ट की दुष्टता भी जो हो, जब वह उस से फिर जाए, तो उसके कारण वह न
गिरेगा; और धर्मी जन जब वह पाप करे, तब अपके धर्म के कारण जीवित न
रहेगा। 13 यदि मैं धर्मी से कहूं कि तू निश्चय जीवित रहेगा, और वह अपके धर्म
पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे, तब उसके धर्म के कामोंमें से किसी का
स्मरण न किया जाएगा; जो कुटिल काम उस ने किए होंवह उन्ही में फंसा हुआ
मरेगा। 14 फिर जब मैं दुष्ट से कहूं, तू दिश्चय मरेगा, और वह अपके पाप से
फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, 15 अर्थात् यदि दुष्ट जन बन्धक फेर
दे, अपक्की लूटी हुई वस्तुएं भर दे, और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक
विधियोंपर चलने लगे, तो वह न मरेगा; वह निश्चय जीवित रहेगा। 16 जितने
पाप उस ने किए हों, उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; उस ने न्याय
और धर्म के काम किए और वह निश्चय जीवित रहेगा। 17 तौभी तुम्हारे लोग
कहते हैं, प्रभु की चाल ठीक नहीं; परन्तु उन्हीं की चाज ठीक नहीं है। 18 जब धर्मी
अपके धर्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे, तब निश्चय वह उन में फंसा हुआ
मर जाएगा। 19 और जब दुष्ट अपक्की दुष्टता से फिरकर न्याय और धर्म के काम
करने लगे, तब वह उनके कारण जीवित रहेगा। 20 तौभी तुम कहते हो कि प्रभु

की चाल ठीक नहीं? हे इस्राएल के घराने, मैं हर एक व्यक्ति का न्याय उसकी चाल
ही के अनुसार करूंगा। 21 फिर हमारी बंधुआई के ग्यारहवें वर्ष के दसवें महीने के
पांचवें दिन को, एक व्यक्ति जो यरूशलेम से भागकर बच गया या, वह मेरे पास
आकर कहने लगा, नगर ले लिया गया। 22 उस भागे हुए के आने से पहिले सांफ
को यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई यी; और भोर तक अर्यात् उस मनुष्य के आने
तक उस ने मेरा मुंह खोल दिया; यो मेरा मुह खुला ही रहा, और मैं फिर गूंगा न
रहा। 23 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 24 हे मनुष्य के सन्तान,
इस्राएल की भूमि के उन खण्डहरोंके रहनेवाले यह कहते हैं, इब्राहीम एक ही
मनुष्य या, तौभी देश का अधिक्कारनी हुआ; परन्तु हम लोग बहुत से हैं,
इसलिथे देश निश्चय हमारे ही अधिक्कारने में दिया गया है। 25 इस कारण तू उन
से कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, तुम लोग तो मांस लोहू समेत खाते और
अपक्की मूरतोंकी ओर दृष्टि करते, और हत्या करते हो; फिर क्या तुम उस देश के
अधिक्कारनी रहने पाओगे? 26 तुम अपक्की अपक्की तलवार पर भरोसा करते
और घिनौने काम करते, और अपके अपके पड़ोसी की स्त्री को अशुद्ध करते हो;
फिर क्या तुम उस देश के अधिक्कारनी रहने पाओगे? 27 तू उन से यह कह,
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध, नि:सन्देह जो लोग
खण्डहरोंमें रहते हैं, वे तलवार से गिरेंगे, और जो खुले मैदान में रहता है, उसे मैं
जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा, और जो गढ़ोंऔर गुफाओं में रहते हैं, वे मरी से
मरेंगे। 28 और मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा; और उसके बल का
घमण्ड जाता रहेगा; और इस्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न
चलेगा। 29 सो जब मैं उन लोगोंके किए हुए सब घिनौने कामोंके कारण उस देश

को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 30 और हे मनुष्य
के सन्तान, तेरे लोग भीतोंके पास और घरोंके द्वारोंमें तेरे विषय में बातें करते
और एक दूसरे से कहते हैं, आओ, सुनो, कि यहोवा की ओर से कौन सा वचन
निकलता है। 31 वे प्रजा की नाई तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर तेरे
साम्हने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं, परन्तु वे उन पर चलते नहीं; मुंह से तो वे
बहुत प्रेम दिखाते हैं, परन्तु उनका मन लालच ही में लगा रहता है। 32 और तू
उनकी दृष्टि में प्रेम के मधुर गीत गानेवाले और अच्छे बजानेवाले का सा ठहरा है,
क्योंकि वे तेरे वचन सुनते तो है, परन्तु उन पर चलते नहीं। 33 सो जब यह बात
घटेगी, और वह निश्चय घटेगी ! तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता
आया या।

यहेजकेल 34

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के
चरवाहोंके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके उन चरवाहोंसे कह, परमेश्वर यहोवा
योंकहता हे, हाथ इस्राएल के चरवाहोंपर जो अपके अपके पेट भरते हैं ! क्या
चरवाहोंको भेड़- बकरियोंका पेट न भरना चाहिए? 3 तुम लोग चक्कीं खाते, ऊन
पहिनते और मोटे मोटे पशुओं को काटते हो; परन्तु भेड़-बकरियोंको तुम नहीं
चराते। 4 तुम ने बीमारोंको बलवान न किया, न रोगियोंको चंगा किया, न
घयलोंके घावोंको बान्धा, न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई़ डुई को खोजा,
परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिक्कारने चलाया है। 5 वे चरवाहे के न
होने के कारण तितर-बितर हुई; और सब वनपशुओं का आहार हो गई। 6 मेरी

भेड़-बकरियां तितर-बितर हुई है; वे सारे पहाड़ोंऔर ऊंचे ऊंचे टीलोंपर भटकती
यीं; मेरी भेड़-बकरियां सारी पृय्वी के ऊपर तितर-बितर हुई; और न तो कोई
उनकी सुधि लेता या, न कोई उनको ढूंढ़ता या। 7 इस कारण, हे चरवाहो, यहोवा
का वचन सुनो। 8 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी
भेड़-बकरियां जो लुट गई, और मेरी भेड़-बकरियां जो चरवाहे के न होने के कारण
सब वनपशुओं का आहार हो गई; और इसलिथे कि मेरे चरवाहोंने मेरी
भेड़-बकरियोंकी सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़- बकरियोंका पेट नहीं, अपना ही
अपना पेट भरा; 9 इस कारण हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो, 10 परमेश्वर
यहोवा योंकहता हे, देखो, मैं चरवाहोंके विरुद्ध हूँ; और मैं उन से अपक्की
भेड़-बकरियोंका लेखा लूंगा, और उनको फिर उन्हें चराने न दूंगा; वे फिर अपना
अपना पेट भरने न पाएंगे। मैं अपक्की भेड़-बकरियां उनके मुंह से छुड़ाऊंगा कि
आगे को वे उनका आहार न हों। 11 क्योंकि परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देखो, मैं
आप ही अपक्की भेड़-करियोंकी सुधि दूंगा, और उन्हें ढूंढूंगा। 12 जैसे चरवाहा
अपक्की भेड़-बकरियोंमें से भटकी हुई को फिर से अपके फुण्ड में बटोरता है, वैसे
ही मैं भी अपक्की भेड़-बकरियोंको बटोरूंगा; मैं उन्हे उन सब स्यानोंसे निकाल ले
आऊंगा, जहां जहां वे बादल और घोर अन्धकार के दिन तितर-बितर हो गई हों।
13 और मैं उन्होंदेश देश के लोगोंमें से निकालूंगा, और देश देश से इाट्ठा करूंगा,
और उन्हीं के निज भूमि में ले आऊंगा; और इस्राएल के पहाड़ोंपर ओर नालोंमें
और उस देश के सब बसे हुए स्यानोंमें चराऊंगा। 14 मैं उन्हें अच्छी चराई में
चराऊंगा, और इस्राएल के ऊंचे ऊंचे पहाड़ोंपर उनको चराई मिलेगी; वहां वे अच्छी
हरियाली में बैठा करेंगी, और इस्राएल के पहाड़ोंपर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी।

15 मैं आप ही अपक्की भेड़-बकरियोंका चरवाहा हूंगा, और मैं आप ही उन्हें
बैठाऊंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 16 मैं खोई हुई को ढूंढूंगा, और
निकाली हुई को फेर लाऊंगा, और घायल के घाव बान्धूंगा, और बीमार को
बलवान् करूंगा, और जो मोटी और बलवन्त हैं उन्हें मैं नाश करूंगा; मैं उनकी
चरवाही न्याय से करूंगा। 17 और हे मेरे फुण्ड, तुम से परमेश्वर यहोवा योंकहता
है, देखो मैं भेड़-भेड़ के बीच और मेढ़ोंऔर बकरोंके बीच न्याय करता हूँ। 18 क्या
तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम अच्छी चराई चर लो और शेष चराई
को अपके पांवोंसे रौंदो; और क्या तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम
निर्मल जल पी लो और शेष जल को अपके पांवोंसे गंदला करो? 19 और क्या मेरी
भेड़-बकरियोंको तुम्हारे पांवोंसे रौंदे हुए को चरना, और तुम्हारे पांवोंसे गंदले
किए हुए को पीना पकेगा? 20 इस कारण परमेश्वर यहोवा उन से योंकहता है,
देखो, मैं आप मोटी और दुबली भेड़-बकरियोंके बीच न्याय करूंगा। 21 तुम जो
सब बीमारोंको पांजर और कन्धे से यहां तक ढकेलते और सींग से यहां तक
मारते हो कि वे तितर-बितर हो जाती हैं, 22 इस कारण मैं अपक्की
भेड़-बकरियोंको छुड़ाऊंगा, और वे फिर न लुटेंगी, और मैं भेड़-भेड़ के और
बकरी-बकरी के बीच न्याय करूंगा। 23 और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा
ठहराऊंगा जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उनको
चराएगा, और वही उनका चरवाहा होगा। 24 और मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर
ठहरूंगा, और मेरा दास दाऊद उनके बीच प्रधान होगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा
है। 25 मैं उनके साय शान्ति की वाचा बान्धूंगा, और दुष्ट जन्तुओं को देश में न
रहने दूंगा; सो वे जंगल में निडर रहेंगे, और वन में सोएंगे। 26 और मैं उन्हें और

अपक्की पहाड़ी के आस पास के स्यानोंको आशीष का कारण बना दूंगा; और मेंह
को मैं ठीक समय में बरसाया करूंगा; और वे आशीषोंकी वर्षा होंगी। 27 और
मैदान के वृझ फलेंगे और भूमि अपक्की उपज उपजाएगी, और वे अपके देश में
निडर रहेंगे; जब मैं उनके जूए को तोड़कर उन लोगोंके हाथ से छुड़ाऊंगा, जो उन
से सेवा कराते हैं, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 28 वे फिर जाति-जाति से लूटे
न जाएंगे, और न वनपशु उन्हें फाड़ खाएंगे; वे निडर रहेंगे, और उनको कोई न
डराएगा। 29 और मैं उनके लिथे महान बारिथें उपजाऊंगा, और वे देश में फिर
भूखोंन मरेंगे, और न जाति-जाति के लोग फिर उनकी निन्दा करेंगे। 30 और वे
जानेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा, उनके संग हूँ, और वे जो इस्राएल का घराना है, वे
मेरी प्रजा हैं, मुझ परमेश्वर यहोवा की यही वाणी हैं। 31 तुम तो मेरी
भेड़-बकरियां, मेरी चराई की भेड़-बकरियां हो, तुम तो मनुष्य हो, और मैं तुम्हारा
परमेश्वर हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 35

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुंह सेईर
पहाड़ की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, 3 और उस से कह, परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, हे सेईर पहाड़, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; और अपना हाथ तेरे विरुद्ध
बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा। 4 मैं तेरे नगरोंको खण्डहर कर दूंगा, और
तू उजाड़ हो जाएगा; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ। 5 क्योंकि तू इस्राएलियोंसे
युग-युग की शत्रुता रखता या, और उनकी विपत्ति के समय जब उनके अधर्म के
दण्ड का समय पहुंचा, तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया। 6 इसलिथे

परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे हत्या किए जाने
के लिथे तैयार करूंगा ओर खून तेरा पीछा करेगा; तू तो खून से न घिनाता या,
अस कारण खून तेरा पीछा करेगा। 7 इस रीति मैं सेईर पहाड़ को उजाड ही उजाड़
कर दूंगा, और जो उस में आता-जाता हो, मैं उसको नाश करूंगा। 8 और मैं उसके
पहाड़ोंको मारे हुओं से भर दूंगा; तेरे टीलों, तराइयोंऔर सब नालोंमें तलवार से
मारे हुए गिरेंगे ! 9 मैं तुझे युग युग के लिथे उजाड़ कर दूंगा, और तेरे नगर फिर
न बसेंगे। तब तुम जान लागे कि मैं यहोवा हूँ। 10 क्योंकि तू ने कहा है, कि थे
दोनोंजातियां और थे दोनोंदेश मेरे होंगे; और हम ही उनके स्वामी हो जाएंगे,
यद्यपि यहोवा वहां या। 11 इस कारण, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगनध, तेरे कोप के अनुसार, और जो जलजलाहट तू ने उन पर
अपके वैर के कारण की है, उसी के अनुसार मैं तुझ से बर्ताव करूंगा, और जब मैं
तेरा न्याय करूं, तब तुम में अपके को प्रगट करूंगा। 12 और तू जानेगा, कि मुझ
यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी हैं, जो तू ने इस्राएल के पहाड़ोंके विषय
में कहीं, कि, वे तो उजड़ गए, वे हम ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें खा डालें। 13
तुम ने अपके मुुंह से मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी, और मेरे विरुद्ध बहुत बातें कही हैं;
इसे मैं ने सुना है। 14 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जब पृय्वी भर में आनन्द
होगा, तब मैं तुझे उजाड़ करूंगा। 15 तू इस्राएल के घराने के निज भाग के उजड़
जाने के कारण आनन्दित हुआ, सो मैं भी तुझ से वैसा ही करूंगा; हे सेईर पहाड़,
हे एदोम के सारे देश, तू उजाड़ हो जाएगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 36

1 फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के पहाड़ोंसे भविष्यद्वाणी करके कह, हे
इस्राएल के पहाड़ो, यहोवा का वचन सुनो। 2 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, शत्रु ने
तो तुम्हारे विषय में कहा है, आहा ! प्राचीनकाल के ऊंचे स्यान अब हमारे
अधिक्कारने में आ गए। 3 इस कारण भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा
योंकहता हे, लोगोंने जो तुम्हें उजाड़ा और चारोंओर से तुम्हें ऐसा निगल लिया कि
तुम बची हुई जातियोंका अधिक्कारने हो जाओ, और लुतरे तुम्हारी चर्चा करते
और साधारण लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं; 4 इस कारण, हे इस्राएल के पहाड़ो,
परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा तुम से योंकहता है, अर्यात्
पहाड़ोंऔर पहाडिय़ोंसे और नालोंऔर तराइयोंसे, और उजड़े हुए खण्डहरोंऔर
निर्जन नगरोंसे जो चारोंओर की बची हुई जातियोंसे लुट गए और उनके हंसने के
कारण हो गए हैं; 5 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, निश्चय मैं ने अपक्की जलन की
आग में बची हुई जातियोंके और सारे एदोम के विरुद्ध में कहा है कि जिन्होंने मेरे
देश को अपके मन के पूरे आनन्द और अभिमान से अपके अधिक्कारने में किया
है कि वह पराया होकर लूटा जाए। 6 इस कारण इस्राएल के देश के विषय में
भविष्यद्वाणी करके पहाड़ों, पहाडिय़ों, नालों, और तराइयोंसे कह, परमेश्वर यहोवा
योंकहता है, देखो, तुम ने जातियोंकी निन्दा सही है, इस कारण मैं अपक्की बड़ी
जलजलाहट से बोला हूँ। 7 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं ने यह शपय खाई है
कि नि:सन्देह तुम्हारे चारोंओर जो जातियां हैं, उनको अपक्की निन्दा आप ही
सहनी पकेगी। 8 परन्तु, हे इस्राएल के पहाड़ो, तुम पर डालियां पनपेंगी और
उनके फल मेरी प्रजा इस्राएल के लिथे लगेंगे; क्योंकि उसका लौट आना निकट
है। 9 और देखो, मैं तुम्हारे पझ में हूँ, और तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करूंगा, और

तुम जोते-बोए जाओगे; 10 और मैं तुम पर बहुत मनुष्य अर्यात् इस्राएल के सारे
घराने को बसाऊंगा; और नगर फिर बसाए और खण्डहर फिर बनाएं जाएंगे। 11
और मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनोंको बहुत बढ़ाऊंगा; और वे बढ़ेंगे और फूलें-
फलेंगे; और मैं तुम को प्राचीनकाल की नाई बसाऊंगा, और पहिले से अधिक
तुम्हारी भलाई करूंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 12 और मैं ऐसा
करूंगा कि मनुष्य अर्यत् मेरी प्रजा इस्राएल तुम पर चल-फिरेगी; और वे तुम्हारे
स्वामी होंगे, और तुम उनका निज भाग होंगे, और वे फिर तुम्हारे कारण निर्वंश
न हो जाएंगे। 13 परमेश्वर यहोवा योंकहता हे, जो लोग तुम से कहा करते हैं, कि
तू मनुष्योंका खानेवाला है, और अपके पर बसी हुई जाति को तिर्वंश कर देता है,
14 सो फिर तू मनुष्योंको न खएगा, और न अपके पर बसी हुई जाति को निर्वंश
करेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 15 और मैं फिर जाति-जाति के लोगोंसे
तेरी निन्दा न सुनवाऊंगा, और तुझे जाति-जाति की ओर से फिर नामधराई न
सहनी पकेगी, और तुझ पर बसी हुई जाति को तू फिर ठोकर न खिलाएगा,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 16 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
17 हे मनुष्य के सन्तान, जब इस्राएल का घराना अपके देश में रहता या, तब
अपक्की चालचलन और कामोंके द्वारा वे उसको अशुद्ध करते थे; उनकी
चालचलन मुझे ऋतुमती की अशुद्धता सी जान पड़ती यी। 18 सो जो हत्या
उन्होंने देश में की, और देश को अपक्की मूरतोंके द्वारा अशुद्ध किया, इसके कारण
मैं ने उन पर अपक्की जलजलाहट भड़काई। 19 और मैं ने उन्हें जाति-जाति में
तितर-बितर किया, और वे देश देश में छितर गए; उनके चालचलन और कामोंके
अनुसार मैं ने उनको दण्ड दिया। 20 परन्तु जब वे उन जातियोंमें पहुंचे जिन में वे

पहुंचाए गए, तब उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया, क्योंकि लोग
उनके विषय में यह कहने लगे, थे यहोवा की प्रजा हैं, पर्रनतु उसके देश से निकाले
गए हैं। 21 परन्तु मैं ने अपके पवित्र नाम की सुधि ली, जिसे इस्राएल के घराने ने
उन जातियोंके बीच अपवित्र ठहराया या, जहां वे गए थे। 22 इस कारण तू
इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, हे इस्राएल के घराने, मैं
इस को तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपके पवित्र नाम के निमित्त करता हूँ जिसे
तुम ने उन जातियोंमें अपवित्र ठहराया जहां तुम गए थे। 23 और मैं अपके बड़े
नाम को पवित्र ठहराऊंगा, जो जातियोंमें अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने
उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा,
तब वे जातियां जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 24
मैं तुम को जातियोंमें से ले लूंगा, और देशोंमें से इकट्‌ठा करूंगा; और तुम को
तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा। 25 मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध
हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतोंसे शुद्ध करूंगा। 26
मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और
तुम्हारी देह में से पत्यर का ह्रदय निकालकर तुम को मांस का ह्रदय दूंगा। 27
और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियोंपर
चलोगे और मेरे नियमोंको मानकर उनके अनुसार करोगे। 28 तुम उस देश में
बसोगे जो मैं ने तुम्हारे पितरोंको दिया या; और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं
तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा। 29 और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता से
छुड़ाऊंगा, और अन्न उपजने की आज्ञा देकर, उसे बढ़ाऊंगा और तुम्हारे बीच
अकाल न डालूंगा। 30 मैं वृझोंके फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा, कि जातियोंमें

अकाल के कारण फिर तुम्हारी नामधराई न होगी। 31 तब तुम अपके बुरे
चालचलन और अपके कामोंको जो अच्छे नहीं थे, स्मरण करके अपके अधर्म
और घिनौने कामोंके कारण अपके आप से घृणा करोगे। 32 परमेश्वर यहोवा की
यह वाणी है, तुम जान जो कि मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं करता। हे इस्राएल के
घराने अपके चालचलन के विषय में लज्जित हो और तुम्हारा मुख काला हो
जाए। 33 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म के
कामोंसे शुद्ध करूंगा, तब तुम्हारे नगरोंको बसाऊंगा; और तुम्हारे खण्डहर फिर
बनाए जाएंगे। 34 और तुम्हारा देश जो सब आने जानेवालोंके साम्हने उजाड़ है,
वह उजाड़ होने की सन्ती जोता बोया जाएगा। 35 और लोग कहा करेंगे, यह देश
जो उजाड़ या, सो एदेन की बारी सा हो गया, और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो
गए और ढाए गए थे, सो गढ़वाले हुए, और बसाए गए हैं। 36 तब जो जातियां
तुम्हारे आस पास बची रहेंगी, सो जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाए हुए को फिर
बनाया, और उजाड़ में पेड़ रोपे हैं, मुझ यहोवा ने यह कहा, और ऐसा ही करूंगा।
37 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, इस्राएल के घराने में फिर मुझ से बिनती की
जाएगी कि मैं उनके लिथे यह करूं; अर्यात् मैं उन में मनुष्योंकी गिनती
फोड़-बकरियोंकी नाई बढ़ाऊं। 38 जैसे पवित्र समयोंकी भेड़-बकरियां,
अर्यात्नियत पर्वों के समय यरूशलेम में की भेड़-बकरियां अनगिनित होती हैं
वैसे ही जो नगर अब खण्ढहर हैं वे अनगिनित मनुष्योंके फुण्डोंसे भर जाएंगे।
तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 37

1 यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर बाहर
ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियोंसे भरी हुई यी।
2 तब उस ने मुझे उनके चारोंओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही
हड्डियोंयीं; और वे बहुत सूखी यीं। 3 तब उस ने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के
सन्तान, क्या थे हड्डियां जी सकती हैं? मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, तू ही
जानता है। 4 तब उस ने मुझ से कहा, इन हड्डियोंसे भविष्यद्वाणी करके कह, हे
सूखी हड्डियो, यहोवा का वचन सुनो। 5 परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियोंसे योंकहता
हे, देखो, मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगी। 6 और मैं तुम्हारी
नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस
समवाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ। 7 इस
आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा; और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा
या, कि एक आहट आई, और भुईडोल हुआ, और वे हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी
से हड्डी जुड़ गई। 8 और मैं देखता रहा, कि उन में नसें उत्पन्न हुई और मांस
चढ़ा, और वे ऊपर चमड़े से ढंप गई; परन्तु उन में सांस कुछ न यी। 9 तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान सांस से भविष्यद्वाणी कर, और सांस से
भविष्यद्वाणी करके कह, हे सांस, परमेश्वर यहोवा योंकहता है कि चारोंदिशाओं से
आकर इन घात किए हुओं में समा जा कि थे जी उठें। 10 उसकी इस आज्ञा के
अनुसार मैं ने भविष्यद्वाणी की, तब सांस उन में आ गई, ओर वे जीकर अपके
अपके पांवोंके बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई। 11 फिर उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, थे हड्डियां इस्राएल के सारे घराने की उपमा
हैं। वे कहत हैं, हमारी हड्डियां सूख गई, और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी

रीति से कट चूके हैं। 12 इस कारण भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर
यहोवा योंकहता है, हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुमहारी कबरें खोलकर तुम को
उन से निकालूंगा, और इस्राएल के देश में पहुंचा दूंगा। 13 सो जब मैं तुमहारी
कबरें खोलूं, और तुम को उन से निकालूं, तब हे मेरी प्रजा के लोगो, तुम जान
लोगे कि मैं यहोवा हूँ। 14 और मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊंगा, और तुम
जीओगे, और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ
यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है। 15 फिर यहोवा
का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 16 हे मनुष्य के सन्तान, एक लकड़ी लेकर उस पर
लिख, यहूदा की और उसके संगी इस्राएलियोंकी; तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर
लिख, यूसुफ की अर्यात् गप्रैम की, और उसके संगी इस्राएलियोंकी लकड़ी। 17
फिर उन लकडिय़ोंको एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक
ही लकड़ी बन जाएं। 18 और जब तेरे लोग तुझ से पूछें, क्या तू हमें न बताएगा
कि इन से तेरा क्या अभिप्राय है? 19 तब उन से कहना, परमेश्वर यहोवा योंकहता
है, देखो, मैं यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम के हाथ में है, और इस्राएल के जो गोत्र
उसके संगी हैं, उनको लेकर यहूदा की लकड़ी से जोड़कर उसके साय एक ही
लकड़ी कर दूंगा; और दोनोंमेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी। 20 और जिन
लकडिय़ोंपर तू ऐसा लिखेगा, वे उनके साम्हने तेरे हाथ में रहें। 21 और तू उन
लोगोंसे कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देखो, मैं इस्राएलियोंको उन जातियोंमें
से लेकर जिन में वे चले गए हैं, चारोंओर से इकट्ठा करूंगा; और उनके निज देश
में पहुचाऊंगा। 22 और मैं उनको उस देश अर्यात् इस्राएल के पहाड़ोंपर एक ही
जाति कर दूंगा; और उन सभोंका एक ही राजा होगा; और वे फिर दो न रहेंगे और

न दो राज्योंमें कभी बटेंगे। 23 वे फिर अपक्की मूरतों, और घिनौने कामोंवा
अपके किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपके को अशुद्ध न करेंगे; परन्तु मैं उनको
उन सब बस्तियोंसे, जहां वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध रूिंगा, और वे मेरी
प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर हूंगा। 24 मेरा दास दाऊद उनका राजा होगा;
सो उन सभोंका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमोंपर चलेंगे और मेरी
विधियोंको मानकर उनके अनुसार चलेंगे। 25 वे उस देश में रहेंगे जिसे मैं ने
अपके दास याकूब को दिया या; और जिस में तुम्हारे पुरखा रहते थे, उसी में वे
और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान
रहेगा। 26 मैं उनके साय शान्ति की वाचा बान्धूंगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी;
और मैं उन्हें स्यान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्यान
सदा बनाए रखूंगा। 27 मेरे निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं
उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। 28 और जब मेरा पवित्रस्यान उनके
बीच सदा के लिथे रहेगा, तब सब जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल का
पवित्र करनेवाला हूँ।

यहेजकेल 38

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुंह
मागोग देश के गोग की ओर करके, जो रोश, मेशेक और तूबल का प्रधान है,
उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर। 3 और यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक, और
तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ। 4 मैं तुझे
घुमा ले आऊंगा, और तेरे जबड़ोंमें आंकड़े डालकर तुझे निकालूंगा; और तेरी सारी

सेना को भी अर्यात् घोड़ोंऔर सवारोंको जो सब के सब कवच पहिने हुए एक बड़ी
भीड़ हैं, जो फरी और ढाल लिए हुए सब के सब तलवार चलानेवाले होंगे; 5 और
उनके संग फारस, कूश और पूत को, जो सब के सब ढाल लिए और टोप लगाए
होंगे; 6 और गोमेर और उसके सारे दलोंको, और उत्तर दिशा के दूर दूर देशोंके
तोगर्मा के घराने, और उसके सारे दलोंको निकालूंगा; तेरे संग बहुत से देशोंके
लोग होंगे। 7 इसलिथे तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों,
तैयार रहना, और तू उनका अगुवा बनना। 8 बहुत दिनोंके बीतने पर तेरी सुधि
ली जाएगी; और अन्त के वर्षों में तू उस देश में आएगा, जो तलवार के वश से
छूटा हुआ होगा, और जिसके निवासी बहुत सी जातियोंमें से इकट्ठे होंगे; अर्यात्
तू इस्राएल के पहाड़ोंपर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं; परन्तु वे देश देश के
लोगोंके वश से छुड़ाए जाकर सब के सब निडर रहेंगे। 9 तू चढ़ाई करेगा, और
आंधी की नाई आएगा, और अपके सारे दलोंऔर बहुत देशोंके लोगोंसमेत मेघ के
समान देश पर छा जाएगा। 10 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, उस दिन तेरे मन में
ऐसी ऐसी बातें आएंगी कि तू एक बुरी युक्ति भी निकालेगा; 11 और तू कहेगा कि
मैं बिन शहरपनाह के गांवोंके देश पर चढ़ाई करूंगा; मैं उन लोगोंके पास जाऊंगा
जो चैन से निडर रहते हैं; जो सब के सब बिना शहरपनाह ओर बिना बेड़ोंऔर
पल्लोंके बसे हुए हैं; 12 ताकि छीनकर तू उन्हें लूटे और अपना हाथ उन
खण्डहरोंपर बढ़ाए जो फिर बसाए गए, और उन लोगोंके विरुद्ध फेरे जो जातियोंमें
से इाट्ठे हुए थे और पृय्वी की नाभी पर बसे हुए ढोर और और सम्पत्ति रखते हैं।
13 शबा और ददान के लोग और तर्शीश के व्योपारी अपके देश के सब जवान
सिंहोंसमेत तुझ से कहेंगे, क्या तू लूटने को आता है? क्या तू ने धन छीनने,

सोना-चाँदी उठाने, ढोर और और सम्पत्ति ले जाने, और बड़ी लूट अपना लेने को
अपक्की भीड़ इकट्‌टी की है? 14 इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी
करके गोग से कह, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जिस समय मेरी प्रजा इस्राएल
निडर बसी रहेगी, क्या तुझे इसका समाचार न मिलेगा? 15 और तू उत्तर दिशा के
दूर दूर स्यानोंसे आएगा; तू और तेरे साय बहुत सी जातियोंके लोग, जो सब के
सब घोड़ोंपर चढ़े हुए होंगे, अर्यात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना। 16 और जैसे
बादल भूमि पर छा जाता है, वैसे ही तू मेरी प्रजा इस्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई
करेगा। इसलिथे हे गोग, अन्त के दिनोंमें ऐसा ही होगा, कि मैं तुझ से अपके देश
पर इसलिथे चढ़ाई कराऊंगा, कि जब मैं जातियोंके देखते तेरे द्वारा अपके को
पवित्र ठहराऊं, तब वे मुझे पहिचान लेंगे। 17 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, क्या तू
वही नहीं जिसकी चर्चा मैं ने प्राचीनकाल में अपके दासोंके, अर्यात् इस्राएल के उन
भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की यी, जो उन दिनोंमें वर्षों तक यह भविष्यद्वाणी करते गए,
कि यहोवा गोग से इस्राएलियोंपर चढ़ाई कराएगा? 18 और जिस दिन इस्राएल के
देश पर गोग चढ़ाई करेगा, उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख से प्रगट होगी,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 19 और मैं ने जलजलाहट और क्रोध की आग
में कहा कि नि:सन्देह उस दिन इस्राएल के देश में बड़ा भुईडोल होगा। 20 और
मेरे दर्शन से समुद्र की मछलियां और आकाश के पक्की, मैदान के पशु और भूमि
पर जितने जीवजन्तु रेंगते हैं, और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं, सब
कांप उठेंगे; और पहाड़ गिराए जाएंगे; और चढ़ाइयां नाश होंगी, और सब भीतें
गिरकर मिट्‌टी में मिल जाएंगी। 21 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसके
विरुद्ध तलवार चलाने के लिथे अपके सब पहाड़ोंको पुकारूंगा और हर एक की

तलवार उसके भाई के विरुद्ध उठेगी। 22 और मैं मरी और झून के द्वारा उस से
मुकद्दमा लड़ूंगा; और उस पर और उसके दलोंपर, और उन बहुत सी जातियोंपर
जो उसके पास होंगी, मैं बड़ी फड़ी लगाऊंगा, और ओले और आग और गन्धक
बरसाऊंगा। 23 इस प्रकार मैं अपके को महान और पवित्र ठहराऊंगा और बहुत
सी जातियोंके साम्हने अपके को प्रगट करूंगा। तब वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ।

यहेजकेल 39

1 फिर हे मनुष्य के सन्तान, गोग के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके यह कह, हे गोग,
हे रोश, मेशेक और तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, मैं तेरे विरुद्ध हूँ।
2 मैं तुझे घुमा ले आऊंगा, और उत्तर दिशा के दूर दूर देशोंसे चढ़ा ले आऊंगा, और
इस्राएल के पहाड़ोंपर पहुंचाऊंगा। 3 वहां मैं तेरा धनुष तेरे बाएं हाथ से गिराऊंगा,
और तेरे तीरोंको तेरे दहिने हाथ से गिरा दूंगा। 4 तू अपके सारे दलोंऔर अपके
साय की सारी जातियोंसमेत इस्राएल के पहाड़ोंपर मार डाला जाएगा; मैं तुझे
भांति भांति के मांसाहारी पझ्ियोंऔर वनपशुओं का आहार कर दूंगा। 5 तू खेत
में गिरेगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 6 मैं
मागोग में और द्वीपोंके निडर रहनेवालोंके बीच आग लगाऊंगा; और वे जान लेंगे
कि मैं यहोवा हूँ। 7 और मैं अपक्की प्रजा ईस्राएल के बीच अपना नाम प्रगट
करूंगा; और अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र न होने दूंगा; तब जाति-जाति के
लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा, इस्राएल का पवित्र हूँ। 8 यह घटना हुआ चाहती
है और वह हो जाएगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी
चर्चा मैं ने की है। 9 तब इस्राएल के नगरोंके रहनेवाले निकलेंगे और हयियारोंमें

आग लगाकर जला देंगे, ढाल, और फरी, धनुष, और तीर, लाठी, बछ, सब को वे
सात वर्ष तक जलाते रहेंगे। 10 और इसके कारण वे मैदान में लकड़ी न बीनेंगे, न
जंगल में काटेंगे, क्योंकि वे हयियारोंही को जलाया करेंगे; वे अपके लूटनेवाले को
लूटेंगे, और अपके छीननेवालोंसे छीनेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 11
उस समय मैं गोग को इस्राएल के देश में कब्रिस्तान दूंगा, वह ताल की पूर्व ओर
होगा; वह आने जानेवालोंकी तराई कहलाएगी, और आने जानेवालोंको वहां
रुकना पकेगा; वहां सब भीड़ समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और उस स्यान का
नाम गोग की भीड़ की तराई पकेगा। 12 इस्राएल का घराना उनको सात महीने
तक मिट्टी देता रहेगा ताकि अपके देश को शुद्ध करे। 13 देश के सब लोग
मिलकर उनको मिट्टी देंगे; और जिस समय मेरी महिमा होगी, उस समय
उनका भी नाम बड़ा होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 14 तब वे मनुष्योंको
नियुक्त करेंगे, जो निरन्तर इसी काम में लगे रहेंगे, अर्यात् देश में घूम-घामकर
आने जानेवालोंके संग होकर देश को शुद्ध करने के लिथे उनको जो भूमि के ऊपर
पके हों, मिट्टी देंगे; और सात महीने के बीतने तक वे ढूंढ ढूंढ़कर यह काम करते
रहेंगे। 15 और देश में आने जानेवालोंमें से जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब
उसके पास एक चिन्ह खड़ा करेगा, यह उस समय तक बना रहेगा जब तक
मिट्टी देनेवाले उसे गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें। 16 वहां के नगर का
नाम भी "हमोना है"। योंदेश शुद्ध किया जाएगा। 17 फिर हे मनुष्य के सन्तान,
परमेश्वर यहोवा योंकहता हे, भांति भांति के सब पझियोंऔर सब वनपशुओं को
आज्ञा दे, इकट्ठे होकर आओ, मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिथे इस्राएल के
पहाड़ोंपर करता हूँ, हर एक दिशा से इकट्ठे हो कि तुम मांस खाओ और लोहू

पीओ। 18 तुम शूरवीरोंका मांस खाओगे, और पृय्वी के प्रधानोंका लोहू पीओगे
और मेढ़ों, मेम्नों, बकरोंऔर बैलोंका भी जो सब के सब बाशान के तैयार किए हुए
होंगे। 19 और मेरे उस भोज की चक्कीं से जो मैं तुम्हारे लिथे करता हूँ, तुम
खाते-खाते अधा जाओगे, और उसका लोहू मीते-पीते छक जाओगे। 20 तुम मेरी
मेज़ पर घाड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होंगे, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। 21 और मैं जाति-जाति के बीच अपक्की महिमा प्रगट
करूंगा, और जाति-जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूंगा, और मेरा
हाथ जो उन पर पकेगा, देख लेंगे। 22 उस दिन से आगे इस्राएल का घराना जान
लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है। 23 और जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि
इस्राएल का घराना अपके अधर्म के कारण बंधुआई में गया या; क्योंकि उन्होंने
मुझ से ऐसा विश्वासघात किया कि मैं ने अपना मुंह उन से फेर लिया और अनको
उनके वैरियोंके वश कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए। 24 मैं ने उनकी
अशुद्धता और अपराधोंही के अनुसार उन से बर्ताव करके उन से अपना मुंह फेर
लिया या। 25 इसलिथे परमेश्वर यहोवा योंकहता है, अब मैं याकूब को बंधुआई से
फेर लाऊंगा, और इस्राएल के सारे घराने पर दया करूंगा; और अपके पवित्र नाम
के लिथे मुझे जलन होगी। 26 तब उस सारे विश्वासघात के कारण जो उन्होंने मेरे
विरुद्ध किया वे लज्जित होंगे; और अपके देश में निडर रहेंगे; और कोई उनको न
डराएगा। 27 और जब मैं उनको जाति-जाति के बीच से फेर लाऊंगा, और उन
शत्रुओं के देशोंसे इकट्ठा करूंगा, तब बहुत जातियोंकी दृष्टि में उनके द्वारा पवित्र
ठहरूंगा। 28 और तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैं ने
उनको जाति-जाति में बंधुआ करके फिर उनके निज देश में इकट्ठा किया है। मैं

उन में से किसी को फिर परदेश में न छोड़ूंगा, 29 और उन से अपना मुंह फिर
कभी न फेर लूंगा, क्योंकि मैं ने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 40

1 हमारी बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष अर्यात् यरूशलेम नगर के ले लिए जाने के बाद
चौदहवें वर्ष के पहिले महीने के दसवें दिन को, यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और
उस ने मुझे वहां पहुंचाया। 2 अपके दर्शनोंमें परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश में
पहुंचाया और वहां एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर खड़ा किया, जिस पर दक्खिन ओर
मानो किसी नगर का आकार या। 3 जब वह मुझे वहां ले गया, तो मैं ने क्या देखा
कि पीतल का रूप घरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापके का बांस लिए
हुए एक पुरुष फाटक में खड़ा है। 4 उस पुरुष ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के
सन्तान, अपक्की आंखोंसे देख, और अपके कानोंसे सुन; और जो कुछ मैं तुझे
दिखाऊंगा उस सब पर ध्यान दे, क्योंकि तू इसलिथे यहां पहुंचाया गया है कि मैं
तुझे थे बातें दिखाऊं; और जो कुछ तू देखे वह इस्राएल के घराने को बताए। 5 और
देखो, भवन के बाहर चारोंओर एक भीत यी, और उस पुरुष के हाथ में मापके का
बांस या, जिसकी लम्बाई ऐसे छ:हाथ की यी जो साधारण हाथोंसे चौवा भर
अधिक है; सो उस ने भीत की मोटाई मापकर बांस भर की पाई, फिर उसकी
ऊंचाई भी मापकर बांस भर की पाई। 6 तब वह उस फाटक के पास आया जिसका
मुंह पूर्व की ओर या, और उसकी सीढ़ी पर चढ़कर फाटक की दोनोंडेवढ़ियोंकी
चौड़ाई मापकर एक एक बांस भर की पाई। 7 और पहरेवाली कोटरियां बांस भर

लम्बी और बांस भर चौड़ी यी; और दो कोठरियोंका अन्तर पांच हाथ का या; और
फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर यी, वह भी बांस भर
की यी। 8 तब उस ने फाटक का वह ओसारा जो भवन के साम्हने या, मापकर
बांस भर का पाया। 9 और उस ने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया,
और उसके खम्भे दो दो हाथ के पाए, और फाटक का ओसारा भवन के साम्हने
या। 10 और पूर्वी फाटक की दोनोंओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां यीं जो सब
एक ही माप की यीं, और दोनोंओर के खम्भे भी एक ही माप के थे। 11 फिर उस
न फाटक के द्वार की चौड़ाई मापकर दस हाथ की पाई; और फाटक की लम्बाई
मापकर तेरह हाथ की पाई। 12 और दोनोंओर की पहरेवाली कोठरियोंके आगे
हाथ भर का स्यान या और दोनोंओर कोठरियां छ:छ: हाथ की यीं। 13 फिर उस ने
फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की
पहरेवाली कोठरी की छत तक मापकर पच्चीस हाथ की दूरी पाई, और द्वार
आम्हने-साम्हने थे। 14 फिर उस ने साठ हाथ के खम्भे मापे, और आंगन, फाटक
के आस पास, खम्भोंतक या। 15 ओर फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर
उसके भीतरी ओसारे के आगे तक पचास हाथ का अन्तर या। 16 और पहरेवाली
कोठरियोंमें, और फाटक के भीतर चारोंओर कोठरियोंके बीच के खम्भे के बीच
बीच में फिलमिलीदार खिड़कियां यी, और खम्भोंके ओसारे में भी वैसी ही यी;
और फाटक के भीतर के चारोंओर खिड़कियां यीं; और हर एक खम्भे पर खजूर के
पेड़ खुदे हुए थे। 17 तब वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया; और उस आंगन के
चारोंओर कोठरियां यीं; और एक फर्श बना हुआ या; जिस पर तीस कोठरियां बनी
यीं। 18 और यह फर्श अर्यात् निचला फर्श फाटकोंसे लगा हुआ या और उनकी

लम्बाई के अनुसार या। 19 फिर उस ने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी
आंगन के बाहर के आगे तक मापकर सौ हाथ पाए; वह पूर्व और उत्तर दोनोंओर
ऐसा ही या। 20 तब बाहरी आंगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई
उस ने मापी। 21 और उसकी दोनोंओर तीन तीन पहरेवााली कोठरियां यीं, और
इसके भी खम्भोंके ओसारे की माप पहिले फाटक के अनुसार यी; इसकी लम्बाई
पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की यी। 22 और इसकी भी खिड़कियोंऔर
खम्भोंके ओसारे और खजूरोंकी माप पूर्वमुखी फाटक की सी यी; और इस पर
चढ़ने को सात सीढिय़ां यीं; और उनके साम्हने इसका ओसारा या। 23 और
भीतरी आंगन की उत्तर और पूर्व ओर दूसरे फाटकोंके साम्हने फाटक थे और उस
ने फाटकोंकी दूरी मापकर सौ हाथ की पाई। 24 फिर वह मुझे दक्खिन ओर ले
गया, और दक्खिन ओर एक फाटक या; और उस ने इसके खम्भे और खम्भोंका
ओसारा मापकर इनकी वैसी ही माप पाई। 25 और उन खिड़कियोंकी नाई इसके
और इसके खम्भोंके ओसारोंके चारोंओर भी खिड़कियां यीं; इसकी भी लम्बाई
पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की यी। 26 और इस में भी चढ़ने के लिथे सात
सीढिय़ां यीं और उनके साम्हने खम्भोंका ओसारा या; और उसके दोनोंओर के
खम्भोंपर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। 27 और दक्खिन ओर भी भीतरी आंगन का
एक फाटक या, और उस ने दक्खिन ओर के दोनोंफाटकोंकी दूरी मापकर सौ हाथ
की पाई। 28 तब वह दक्खिनी फाटक से होकर मुझे भीतरी आंगन में ले गया,
और उस ने दक्खिनी फाटक को मापकर वैसा ही पाया। 29 अर्यात् इसकी भी
पहरेवाली कोठरियां, और खम्भे, और खम्भोंका ओसारा, सब वैसे ही थे; और
इसके और इसके खम्भोंके ओसारे के भी चारोंओर भी खिड़कियां यीं; और इसकी

लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की यी। 30 और इसके चारोंओर के
खम्भोंका ओसार भी पच्चीस हाथ लम्बा, और पचास हाथ चौड़ा या। 31 और
इसका खम्भोंका ओसारा बाहरी आंगन की ओर या, और इसके खम्भोंपर भी
खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, और इस पर चढ़ने को आठ सीढिय़ां यीं। 32 फिर वह
पुरुष मुझे पूर्व की ओर भीतरी आंगन में ले गया, और उस ओर के फाटक को
मापकर वैसा ही पाया। 33 और इसकी भी पहरेवाली कोठरियां और खम्भे और
खम्भोंका ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भोंके ओसारे के
चारोंओर भी खिड़कियां यीं; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की
यी। 34 इसका ओसारा भी बाहरी आंगन की ओर या, और उसके दोनोंओर के
खम्भोंपर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और इस पर भी चढ़ने को आठ सीढिय़ां यीं।
35 फिर उस पुरुष ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा, और उसकी
भी माप वैसी ही पाई। 36 उसके भी पहरेवाली कोठरियां और खम्भे और उनका
ओसारा या; और उसके भी चारोंओर खिड़कियां यीं; उसकी लम्बाई पचास और
चौड़ाई पच्चीस हाथ की यी। 37 उसके खम्भे बाहरी आंगन की ओर थे, और उन
पर भी दोनोंओर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और उस में चढ़ने को आठ सीढिय़ां यीं।
38 फिर फाटकोंके पास के खम्भोंके निकट द्वार समेत कोठरी यी, जहां होमबलि
धोया जाता या। 39 और होमबलि, पापबलि, और दोषबलि के पशुओं के वध
करने के लिथे फाटक के ओसारे के पास उसके दोनोंओर दो दो मेज़ें यीं। 40 और
फाटक की एक बाहरी अलंग पर अर्यात् उत्तरी फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेज़ें
यीं; और उसकी दूसरी बाहरी अलंग पर भी, जो फाटक के ओसारे के पास यी, दो
मेजें यीं। 41 फाटक की दोनोंअलंगोंपर चार चार मेजें यीं, सो सब मिलकर आठ

मेज़ें यीं, जो बलिपशु वध करने के लिथे यीं। 42 फिर होमबलि के लिथे तराशे हुए
पत्यर की चार मेज़ें यीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी, और हाथ भर ऊंची यीं;
उन पर होमबलि और मेलबलि के पशुओं को वध करने के हयियार रखे जाते थे।
43 भीतर चारोंओर चौवे भर की अंकडियां लगी यीं, और मेज़ोंपर चढ़ावे का मांस
रखा हुआ या। 44 और भीतरी आंगन की उत्तरी फाटक की अलंग के बाहर
गानेवालोंकी कोठरियां यीं जिनके द्वार दक्खिन ओर थे; और पूर्वी फाटक की
अलंग पर एक कोठरी यी, जिसका द्वार उत्तर ओर या। 45 उस ने मुझ से कहा, यह
कोठरी, जिसका द्वार दक्खिन की ओर है, उन याजकोंके लिथे है जो भवन की
चौकसी करते हैं, 46 और जिस कोठरी का द्वार उत्तर ओर है, वह उन याजकोंके
लिथे है जो वेदी की चौकसी करते हैं; थे सादोक की सन्तान हैं; और लेवियोंमें से
यहोवा की सेवा टहल करने को केवल थे ही उसके समीप जाते हैं। 47 फिर उस ने
आंगन को मापकर उसे चौकोना अर्यात् सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा पाया;
और भवन के साम्हने वेदी यी। 48 फिर वह मुझे भवन के ओसारे में ले गया, और
ओसारे के दोनोंओर के खम्भोंको मापकर पांच पांच हाथ का पाया; और दोनोंओर
फाटक की चौड़ाई तीन तीन हाथ की यी। 49 ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और
चौड़ाई ग्यारह हाथ की यी; और उस पर चढ़ने को सीढियां यीं; और दोनोंओर के
खम्भोंके पास लाटें यीं।

यहेजकेल 41

1 फिर वह मुझे मन्दिर के पास ले गया, और उसके दोनोंओर के खम्भोंको
मापकर छ:छ: हाथ चौड़े पाया, यह तो तम्बू की चौड़ाई यी। 2 और द्वार की चौड़ाई

दस हाथ की यी, और द्वार की दोनोंअलंगें पांच पांच हाथ की यीं; और उस ने
मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ की, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की
पाई। 3 तब उस ने भीतर जाकर द्वार के खम्भोंको मापा, और दो दो हाथ का पाया;
और द्वार छः हाथ का या; और द्वार की चौड़ाई सात हाथ की यी। 4 तब उस ने
भीतर के भवन की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के साम्हने मापकर बीस बीस
हाथ की पाई; और उस ने मुझ से कहा, यह तो परमपवित्र स्यान है। 5 फिर उस ने
भवन की भीत को मापकर छः हाथ की पाया, और भवन के आस पास चार चार
हाथ चौड़ी बाहरी कोठरियां यीं। 6 और थे बाहरी कोठरियां तिमहली यीं; और एक
एक महल में तीस तीस कोठरियां यीं। भवन के आस पास की भीत इसलिथे यी
कि बाहरी कोठरियां उसके सहारे में हो; और उसी में कोठरियोंकी कड़ियां पैठाई
हुई यीं और भवन की भीत के सहारे में न यीं। 7 और भवन के आस पास जो
कोठरियां बाहर यीं, उन में से जो ऊपर यीं, वे अधिक चौड़ी यीं; अर्यात् भवन के
आस पास जो कुछ बना या, वह जैसे जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया, वैसे वैसे
चौड़ा होता गया; इस रीति, इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई यी, और
लोग नीचले महल के बीच से उपरले महल को चढ़ सकते थे। 8 फिर मैं ने भवन
के आस पास ऊंची भूमि देशी, और बाहरी कोठरियोंकी ऊंचाई जोड़ तक छः हाथ
के बांस की यी। 9 बाहरी कोठरियोंके लिथे जो भीत यी, वह पांच हाथ मोटी यी,
और जो स्यान खाली रह गया या, वह भवन की बाहरी कोठरियोंका स्यान या। 10
बाहरी कोठरियोंके बीच बीच भवन के आस पास बीस हाथ का अन्तर या। 11
और बाहरी कोठरियोंके द्वार उस स्यान की ओर थे, जो खाली या, अर्यात् एक द्वार
उत्तर की ओर और दूसरा दक्खिन की ओर या; और जो स्यान रह गया, उसकी

चौड़ाई चारोंओर पांच हाथ की यी। 12 फिर जो भवन मन्दिर के पश्चिमी आंगन के
साम्हने या, वह सत्तर हाथ चौडा या; और भवन के आस पास की भीत पांच हाथ
मोटी यी, और उसकी लम्बाई नब्बे हाथ की यी। 13 तब उस न भवन की लम्बाई
मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतोंसमेत आंगन की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ
की पाई। 14 और भवन का पूर्वी साम्हना और उसका आंगन सौ हाथ चौड़ा या।
15 फिर उस ने पीछे के आंगन के साम्हने की भीत की लम्बाई जिसके दोनोंओर
छज्जे थे, मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतरी भवन और आंगन के ओसारोंको
भी मापा। 16 तब उस ने डेवढिय़ोंऔर फिलमिलीदार खिड़कियों, और आस पास
के तीनोंमहलोंके छज्जोंको मापा जो डेवढ़ी के साम्हने थे, और चारोंओर उनकी
तखता-बन्दी हुई यी; और भूमि से खिड़कियोंतक और खिड़कियोंके आस पास
सब कहीं तख़ताबन्दी हुई यी। 17 फिर उस ने द्वार के ऊपर का स्यान भीतरी
भवन तक ओर उसके बाहर भी और आस पास की सारी भीत के भीतर और बाहर
भी मापा। 18 और उस में करूब और खजूर के पेड़ ऐसे हुदे हुए थे कि दो दो
करूबोंके बीच एक एक खजूर का पेड़ या; और करूबोंके दो दो मुख थे। 19 इस
प्रकार से एक एक खजूर की एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ या, और दूसरी
ओर जवान सिंह का मुख बनाया हुआ या। इसी रीति सारे भवन के चारोंओर बना
या। 20 भूमि से लेकर द्वार के ऊपर तक करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे,
मन्दिर की भीत इसी भांति बनी हुई यी। 21 भवन के द्वारोंके खम्भे चौपहल थे,
और पवित्रस्यान के साम्हने का रूप मन्दिर का सा या। 22 वेदी काठ की बनी यी,
और उसकी ऊंचाई तीन हाथ, ओर लम्बाई दो हाथ की यी; और उसके कोने और
उसका सारा पाट और अलंगें भी काठ की यीं। और उस ने मुक्से कहा, यह तो

यहोवा के सम्मुख की मेज़ है। 23 और मन्दिर और पवित्रस्यान के द्वारोंके दो दो
किवाड़ थे। 24 और हर एक किवाड़ में दो दो मुड़नेवाले पल्ले थे, हर एक किवाड़
के लिथे दो दो पल्ले। 25 और जैसे मन्दिर की भीतोंमें करूब और खजूर के पेड़
खुदे हुए थे, वैसे ही उसके किवाड़ोंमें भी थे, और ओसारे की बाहरी ओर लकड़ी की
मोटी मोटी धरनें यीं। 26 और ओसारे के दोनोंओर फिलमिलीदार खिड़कियां यीं
और खजूर के पेड़ खुदे थे; और भवन की बाहरी कोठरियां और मोटी मोटी धरनें
भी यीं।

यहेजकेल 42

1 फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर की ओर ले गया, और मुझे उन दो
कोठरियोंके पास लाया जो भवन के आंगन के साम्हने और उसकी उत्तर ओर यीं।
2 सौ हाथ की दूरी पर उत्तरी द्वार या, और चौड़ाई पचास हाथ की यी। 3 भीतरी
आंगन के बीस हाथ साम्हने और बाहरी आंगन के फर्श के साम्हने तीनोंमहलोंमें
छज्जे थे। 4 और कोठरियोंके साम्हने भीतर की ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा
एक मार्ग या; और हाथ भर का एक और मार्ग या; और कोठरियोंके द्वार उत्तर ओर
थे। 5 और उपरली कोठरियां छोटी यीं, अर्यात् छज्जोंके कारण वे निचक्की और
बिचक्की कोठरियोंसे छोटी यीं। 6 क्योंकि वे सिमहली यीं, और आंगनोंके समान
उनके खम्भे न थे; इस कारण उपरली कोठरियां निचक्की और बिचक्की
कोठरियोंसे छोटी यीं। 7 और जो भीत कोठरियोंके बाहर उनके पास पास यी
अर्यात् कोठरियोंके साम्हने बाहरी आंगन की ओर यी, उसकी लम्बाई पचास हाथ
की यी। 8 क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियां पचास हाथ लम्बी यीं, और मन्दिर

के साम्हने की अलंग सौ हाथ की यी। 9 और इन कोठरियोंके नीचे पूर्व की ओर
मार्ग या, जहां लोग बाहरी आंगन से इन में जाते थे। 10 आंगन की भीत की
चौड़ाई में पूर्व की ओर अलग स्यान और भवन दोनोंके साम्हने कोठरियां यीं। 11
और उनके साम्हने का मार्ग उत्तरी कोठरियोंके मार्ग सा य; उनकी लम्बाई-चौड़ाई
बराबर यी और निकास और ढंग उनके द्वार के से थे। 12 और दक्खिनी
कोठरियोंके द्वारोंके अनुसार मार्ग के सिक्के पर द्वार या, अर्यात् पूर्व की ओर की
भीत के साम्हने, जहां से लोग उन में प्रवेश करते थे। 13 फिर उस ने मुझ से कहा,
थे उत्तरी और दक्खिनी कोठरियां जो आंगन के साम्हने हैं, वे ही पवित्र कोठरियां
हैं, जिन में यहोवा के समीप जानेवाले याजक परमपवित्र वस्तुएं खाया करेंगे; वे
परमपवित्र वस्तुएं, और अन्नबलि, और पापबलि, और दोषबलि, वहीं रखेंगे;
क्योंकि वह स्यान पवित्र है। 14 जब जब याजक लोग भीतर जाएंगे, तब तब
निकलने के समय वे पवित्रस्यान से बाहरी आंगन में योंही न निकलेंगे, अर्यात् वे
पहिले अपक्की सेवा टहल के वस्त्र पवित्रस्यान में रख देंगे; क्योंकि थे कोठरियां
पवित्र हैं। तब वे और वस्त्र पहिनकर साधारण लोगोंके स्यान में जाएंगे। 15 जब
वह भीतरी भवन को माप चुका, तब मुझे पूर्व दिशा के फाटक के मार्ग से बाहर ले
जाकर बाहर का स्यान चारोंओर मापके लगा। 16 उस ने पूर्वी अलंग को मापके के
बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। 17 तब उस ने उत्तरी अलंग को मापके के
बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। 18 तब उस ने दक्खिनी अलंग को मापके
के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। 19 और पच्छिमी अलंग को मुड़कर
उस ने मापके के बांस से मापकर उसे पांच सौ बांस का पाया। 20 उस ने उस
स्यान की चारोंअलंगें मापीं, और उसकी चारोंओर एक भीत यी, वह पांच सौ बांस

लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी यी, और इसलिथे बनी यी कि पवित्र और
सर्वसाधारण को अलग अलग करे।

यहेजकेल 43

1 फिर वह मुझ को उस फाटक के पास ले गया जो पूर्वमुखी या। 2 तब इस्राएल के
परमेश्वर का तेज पूर्व दिशा से आया; और उसकी वाणी बहुत से जल की
घरघराहट सी हुई; और उसके तेज से पृय्वी प्रकाशित हुई। 3 और यह दर्शन उस
दर्शन के तुल्य या, जो मैं ने उसे नगर के नाश करने को आते समय देखा या; और
उस दर्शन के समान, जो मैं ने कबार नदी के तीर पर देखा या; और मैं मुंह के बल
गिर पड़ा। 4 तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी या, भवन में
आ गया। 5 तब आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में पहुंचाया; और यहोवा
का तेज भवन में भरा या। 6 तब मैं ने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से
मुझ से बोल रहा या, और वह पुरुष मेरे पास खड़ा या। 7 उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, यहोवा की यह वाणी है, यह तो मेरे सिंहासन का स्यान और
मेरे पांव रखने की जगह है, जहां मैं इस्राएल के बीच सदा वास किए रहूंगा। और
न तो इस्राएल का घराना, और न उसके राजा अपके व्यभिचार से, वा उपके ऊंचे
स्यानोंमें अपके राजाओं की लोयोंके द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएंगे।
8 वे अपक्की डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास, और अपके द्वार के खम्भे मेरे द्वार के
खम्भोंके निकट बनाते थे, और मेरे और उनके बीच केवल भीत ही यी, और
उन्होंने अपके घिनौने कामोंसे मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया या; इसलिथे मैं ने
कोप करके उन्हें नाश किया। 9 अब वे अपना व्यभिचार और अपके राजाओं की

लोथें मेरे सम्मुख से दूर कर दें, तब मैं उनके बीच सदा वास किए रहूंगा। 10 हे
मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने को इस भवन का नमूना दिखा कि वे
अपके अधर्म के कामोंसे लज्जित होकर उस नमूने को मापें। 11 और यदि वे
अपके सारे कामोंसे लज्जित हों, तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप, और
इसके बाहर भीतर आने जाने के मार्ग, और इसके सब आकार और विधियां, और
नियम बतलाना, और उनके साम्हने लिख रखना; जिस से वे इसका सब आकार
और इसकी सब विधियां स्मरण करके उनके अनुसार करें। 12 भवन का नियम
यह है कि पहाड़ की चोटी के चारोंओर का सम्पूर्ण भाग परमपवित्र है। देख भवन
का नियम यही है। 13 और ऐसे हाथ के माप से जो साधारण हाथ से चौवा भर
अधिक हो, वेदी की माप यह है, अर्यात् उसका आधार एक हाथ का, और उसकी
चौड़ाई एक हाथ की, और उसके चारोंओर की छोर पर की पटरी एक चौवे की।
और वेदी की ऊंचाई यह है: 14 भूमि पर धरे हुए आधार से लेकर निचक्की कुर्सी
तक दो हाथ की ऊंचाई रहे, और उसकी चा।ड़ाई हाथ भर की हो; और छोटी कुर्सी
से लेकर बड़ी कुर्सी तक चार हाथ होंऔर उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; 15 और
उपरला भाग चार हाथ ऊंचा हो; और वेदी पर जलाने के स्यान के चार सींग ऊपर
की ओर निकले हों। 16 और वेदी पर जलाने का स्यान चौकोर अर्यात् बारह हाथ
लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो। 17 और निचक्की कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और
चौदह चौड़ी हो, और उसके चारोंओर की पटरी आधे हाथ की हो, और उसका
आधर चारोंऔर हाथ भर का हो। उसकी सीढ़ी उसकी पूर्व ओर हो। 18 फिर उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जिस दिन
हामबलि चढ़ाने और लोहू छिडकने के लिथे वेदी बनाई जाए, उस दिन की

विधियां थे ठहरें: 19 अर्यात् लेवीय याजक लोग, जो सादोक की सन्तान हैं, और
मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं, उन्हें तू पापबलि के लिथे एक बछड़ा
देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 20 तब तू उसके लोहू में से कुछ लेकर
वेदी के चारोंसींगोंऔर कुसीं के चारोंकोनोंऔर चारोंओर की पटरी पर लगाना; इस
प्रकार से उसके लिथे प्रायश्चित्त करने के द्वारा उसको पवित्र करना। 21 तब
पापबलि के बछड़े को लेकर, भवन के पवित्रस्यान के बाहर ठहराए हुए स्यान में
जला देना। 22 और दूसरे दिन एक निदॉष बकरा पापबलि करके चढ़ाना; और
जैसे बछड़े के द्वारा वेदी पवित्र की जाए, वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी पवित्र
की जाएगी। 23 जब तू उसे पवित्र कर चूके, तब एक निदॉष बछड़ा और एक
निदॉष मेढ़ा चढ़ाना। 24 तू उन्हें यहोवा के साम्हने ले आना, और याजक लोग
उन पर लोन डालकर उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएं। 25 सात दिन तक नू
प्रति दिन पापबलि के लिथे एक बकरा तैयार करना, और निदॉष बछड़ा और
भेड़ोंमें से निदॉष मेढ़ा भी तैयार किया जाए। 26 सात दिन तक याजक लोग वेदी
के लिथे प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें; इसी भांति उसका संस्कार हो। 27
और जब वे दिन समाप्त हों, तब आठवें दिन के बाद से याजक लोग तुम्हारे
होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें; तब मैं तुम से प्रसन्न हूंगा, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है।

यहेजकेल 44

1 फिर वह मुझे पवित्रस्यान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो
पूर्वमुखी है; और वह बन्द या। 2 तब यहोवा ने मुझ से कहा, यह फाटक बन्द रहे

और खेला न जाए; कोई इस से होकर भीतर जाने न पाए; क्योंकि इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा इस से होकर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे। 3 केवल
प्रधान ही, प्रधान होने के कारण, मेरे साम्हने भोजन करने को वहां बैठेगा; वह
फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाए, और इसी से होकर निकले। 4 फिर वह
उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के साम्हने ले गया; तब मैं ने देश कि
यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। 5
तब यहोवा ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, ध्यान देकर अपक्की आंखोंसे
देख, और जो कुछ मैं तुझ से अपके भवन की सब विधियोंऔर नियमोंके विषय
में कहूं, वह सब अपके कानोंसे सुन; और भवन के पैठाव और पवित्रस्यान के सब
निकासोंपर ध्यान दे। 6 और उन बलवाइयोंअर्यात् इस्राएल के घराने से कहना,
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, हे इस्राएल के घराने, अपके सब घृणित कामोंसे अब
हाथ उठा। 7 जब तुम मेरा भोजन अर्यात् चक्कीं और लोहू चढ़ाते थे, तब तुम
बिराने लोगोंको जो मन और तन दोनोंके खतनाहीन थे, मेरे पवित्रस्यान में आने
देते थे कि वे मेरा भवन अपवित्र करें; और उन्होंने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिस
से तुम्हारे सब घृणित काम बढ़ गए। 8 और तूम ने मेरी पवित्र वस्तुओं की रझा
न की, परन्तु तुम ने अपके ही मन से अन्य लोगोंको मेरे पवित्रस्यान में मेरी
वस्तुओं की रझा करनेवाले ठहराया। 9 इसलिथे परमेश्वर यहोवा योंकहता है, कि
इस्राएलियोंके बीच जितने अन्य लोग हों, जो मन और तन दोनोंके खतनाहीन हैं,
उन में से कोई मेरे पवित्रस्यान में न आने पाए। 10 परन्तु लेवीय लोग जो उस
समय मुझ से दूर हो गए थे, जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपक्की मूरतोंके
पीछे भटक गए थे, वे अपके अधर्म का भार उठाएंगे। 11 परन्तु वे मेरे

पवित्रस्यान में टहलुए होकर भवन के फाटकोंका पहरा देनेवाले और भवन के
टहलुग रहें; वे होमबलि और मेलबलि के पशु लोगोंके लिथे वध करें, और उनकी
सेवा टहल करने को उनके साम्हने खड़े हुआ करें। 12 क्योंकि इस्राएल के घराने
की सेवा टहल वे उनकी मूरतोंके साम्हने करते थे, और उनके ठोकर खाने और
अधर्म में फंसने का कारण हो गए थे; इस कारण मैं ने उनके विषय में शपय खाई
है कि वे अपके अधर्म का भार उठाएं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 13 वे मेरे
समीप न आएं, और न मेरे लिथे याजक का काम करें; और न मेरी किसी पवित्र
पस्तु, वा किसी परमपवित्र वसतु को छूने पाएं; वे अपक्की लज्जा का और जो
घृणित काम उन्होंने किए, उनका भी भार उठाएं। तौभी मैं उन्हें भवन में की सौंपी
हुई वस्तुओं का रझक ठहराऊंगा; 14 उस में सेवा का जितना काम हो, और जो
कुछ उस में करना हो, उसके करनेवाले वे ही हों 15 फिर लेवीय याजक जो सादोक
की सन्तान हैं, और जिन्होंने उस समय मेरे पवित्रस्यान की रझा की जब
इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप आया
करें, और मुझे चक्कीं और लोहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। 16 वे मेरे पवित्रस्यान में आया करें, और मेरी मेज़ के
पास मेरी सेवा टहल करने को आएं और मेरी वस्तुओं की रझा करें। 17 और जब
वे भीतरी आंगन के फाटकोंसे होकर जाया करें, तब सन के वस्त्र पहिने हुए जाएं,
और जब वे भीतरी आंगन के फाटकोंमें वा उसके भीतर सेवा टहल करते हों, तब
कुछ ऊन के वस्त्र न पहिनें। 18 वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियां पहिनें और
कमर में सन की जांघिया बान्धें हों; किसी ऐसे कपके से वे कमर न बांधें जिस से
पक्कीना होता है। 19 और जब वे बाहरी आंगन में लोगोंके पास निकलें, तब जो

वस्त्र पहिने हुए वे सेवा टहल करते थे, उन्हें उतारकर और पवित्र कोठरियोंमें
रखकर दूसरे वस्त्र पहिनें, जिस से लोग उनके वस्त्रें के कारण पवित्र न ठहरें। 20
और न तो वे सिर मुण्डाएं, और न बाल लम्बे होने दें; वे केवल अपके बाल कटाएं।
21 और भीतरी आंगन में जाने के समय कोई याजक दाखमधु न पीए। 22 वे
विधवा वा छोड़ी हुई सत्री को ब्याह न लें; केवल इस्राएल के घराने के पंश में से
कुंवारी वा ऐसी विधवा बयाह लें जो किसी याजक की स्त्री हुई हो। 23 वे मेरी प्रजा
को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें।
24 और जब कोई मुक़द्दमा हो तब न्याय करने को भी वे ही बैठें, और मेरे
नियमोंके अनुसार न्याय करें। मेरे सब नियत पर्बों के विषय भी वे मेरी व्यवस्या
और विधियां पालन करें, और मेरे विश्रमदिनोंको पवित्र मानें। 25 वे किसी मनुष्य
की लोय के पास न जाएं कि अशुद्ध हो जाएं; केवल माता-पिता, बेटे-बेटी; भाई,
और ऐसी बहिन की लोय के कारण जिसका विवाह न हुआ हो वे अपके को अशुद्ध
कर सकते हैं। 26 और जब वे अशुद्ध हो जाएं, तब उनके लिथे सात दिन गिने जाएं
और तब वे शुद्ध ठहरें, 27 और जिस दिन वे पवित्रस्यान अर्यात् भीतरी आंगन में
सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करें, उस निद अपके लिथे पापबलि चढ़ाएं,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी हे। 28 और उनका एक ही निज भाग होगा, अर्यात्
उनका भाग मैं ही हूँ; तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उनकी
निज हो; उनकी निज भूमि मैं ही हूँ। 29 वे अन्नबलि, पापबलि और दोषबलि
खाया करें; और इस्राएल में जो वस्तु अर्पण की जाए, वह उनको मिला करे। 30
और सब प्रकार की सब से पहिली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो
तुम उठाकर चढ़ाओ, याजकोंको मिला करे; और नथे अन्न का पहिला गूंधा हुआ

आटा भी याजक को दिया करना, जिस से तुम लोगोंके घर में आशीष हो। 31 जो
कुछ अपके आप मरे वा फाड़ा गया हो, चाहे पक्की हो या पशु उसका मांस याजक
न खाए।

यहेजकेल 45

1 जब तुम चिट्‌ठी डालकर देश को बांटो, तब देश में से एक भाग पवित्र जानकर
यहोवा को अर्पण करना; उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बांस की और चौड़ाई दस
हजार बांस की हो; वह भाग अपके चारोंओर के सिवाने तक पवित्र ठहरे। 2 उस में
से पवित्रस्यान के लिथे पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी चौकोनी भूमि
हो, और उसकी चारोंओर पचास पचास हाथ चौड़ी भूमि छूटी पक्की रहे। 3 उस
पवित्र भाग में तुम पच्चीस हाजार बांस लम्बी और दस हजार बांस चौड़ी भूमि को
मापना, और उसी में पवित्रस्यान बनाना, जो परमपवित्र ठहरे। 4 जो याजक
पवित्रस्यन की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएं,
वह उन्हीं के लिथे हो; वहां उनके घरोंके लिथे स्यान हो और पवित्रस्यान के लिथे
पवित्र ठहरे। 5 फिर पच्चीस हजार बांस लम्बा, और दस हजार बांस चौड़ा एक
भाग, भवन की सेवा टहल करनेवाले लेवियोंकी बीस कोठरियोंके लिथे हो। 6 फिर
नगर के लिथे, अर्पण किए हुए पवित्र भाग के पास, तुम पांच हजार बांस चौड़ी
और पच्चीस हाजार बांस लम्बी, विशेष भूमि ठहराना; वह इस्राएल के सारे घराने
के लिथे हो। 7 और प्रधान का निज भाग पवित्र अर्पण किए हुए भाग और नगर
की विशेष भूमि की दोनोंओर अर्यात् दोनो की पश्चिम और पूर्व दिशाओं में
दोनोंभागोंके साम्हने हों; और उसकी लम्बाई पश्चिम से लेकर पूर्व तक उन दो

भागोंमें से किसी भी एक के तुल्य हो। 8 इस्राएल के देश में प्रधान की यही निज
भूमि हो। और मेरे ठहराए हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अन्धेर न करें; परन्तु
इस्राएल के घराने को उसके गोत्रोंके अनुसार देश मिले। 9 परमेश्वर यहोवा
योंकहता है, हे इस्राएल के प्रधनो ! बस करो, उपद्रव और उत्पात को दूर करो,
और न्याय और धर्म के काम किया करो; मेरी प्रजा के लोगोंको निकाल देना छोड़
दो, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 10 तुम्हारे पास सच्चा तराजू, सच्चा एपा,
और सच्चा बत रहे। 11 एपा और बत दोनोंएक ही नाप के हों, अर्यात् दोनोंमें
होमेर का दसवां अंश समाए; दोनोंकी नाप होमेर के हिसाब से हो। 12 और शेकेल
बीस गेरा का हो; और तुम्हारा माना बीस, पच्चीस, या पन्द्रह शेकेल का हो। 13
तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो, अर्यात् गेहूं के होमेर से एपा का छठवां अंश, और
जव के होमेर में से एपा का छठवां अंश देना। 14 और तेल का नियत अंश कोर में
से बत का दसवां अंश हो; कोर तो दस बत अर्यात् एक होमेर के तुल्य है, क्योंकि
होमेर दस बत का होता है। 15 और इस्राएल की उत्तम उत्तम चराइयोंसे दो दो सौ
भेड़बकरियोंमें से एक भेड़ वा बकरी दी जाए। थे सब वस्तुएं अन्नबलि, होमबलि
और मेलबलि के लिथे दी जाएं जिस से उनके लिथे प्रायश्चित्त किया जाए,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 16 इस्राएल के प्रधान के लिथे देश के सब लोग
यह भेंट दें। 17 पर्वों, नथे चांद के दिनों, विश्रमदिनोंऔर इस्राएल के घराने के सब
नियत समयोंमें होमबलि, अन्नबलि, और अर्ध देना प्रधान ही का काम हो।
इस्राएल के घराने के लिथे प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि, अन्नबलि, होमबलि,
और मेलबलि तैयार करे। 18 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, पहिले महीने के पहले
दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्यान को पवित्र करता। 19 इस

पापबलि के लोहू में से याजक कुछ लेकर भवन के चौखट के खम्भों, और वेदी की
कुर्सी के चारोंकोनों, और भीतरी आंगन के फाटक के खम्भोंपर लगाए। 20 फिर
महीने के सातवें दिन को सब भूल में पके हुओं और भोलोंके लिथे भी योंही करना;
इसी प्रकार से भवन के लिथे प्रायश्चित्त करना। 21 पहिले महीने के चौदहवें दिन
को तुम्हारा फसह हुआ करे, वह सात दिन का पर्व हो और उस में अखमीरी रोटी
खई जाए। 22 उस दिन प्रधान अपके और प्रजा के सब लोगोंके निमित्त एक
बछड़ा पापबलि के लिथे तैयार करे। 23 और पर्व के सातोंदिन वह यहोवा के लिथे
होमबलि तैयार करे, अर्यात् हर एक दिन सात सात निदॉष बछड़े और सात सात
निदॉष मेढ़े और प्रति दिन एक एक बकरा पापबलि के लिथे तैयार करे। 24 और
हर एक बछड़े और मेढ़े के साय वह एपा भर अन्नबलि, और एपा पीछे हीन भर
तेल तैयार करे। 25 सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन तक अर्यात्
पर्व के दिनोंमें वह पापबलि, होमबलि, अन्नबलि, और तेल इसी विधि के
अनुसार किया करे।

यहेजकेल 46

1 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, भीतरी आंगन का पूर्वमुखी फाटक काम काज के
छहोंदिन बन्द रहे, परन्तु विश्रमदिन को खुला रहे। और नथे चांद के दिन भी
खुला रहे। 2 प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक
खम्भे के पास खड़ा हो जाए, और याजक उसका होमबलि और मेलबलि तैयार
करें; और वह फाटक की डेवढ़ी पर दण्डवत् करे; तब वह बाहर जाए, और फाटक
सांफ से पहिले बन्द न किया जाए। 3 और लोग विश्रम और नथे चांद के दिनोंमें

उस फाटक के द्वार में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करें। 4 और विश्रमदिन में जो
होमबलि प्रधान यहोवा के लिथे चढ़ाए, वह भेड़ के छ: निदॉष बच्चे और एक
निदॉष मेढ़े का हो। 5 और अन्नबलि यह हो, अर्यात् मेढ़े के साय एपा भर अन्न
और भेड़ के बच्चोंके साय ययाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल। 6 और
नथे चांद के दिन वह एक निदॉष बछड़ा और भेड़ के छ: बच्चे और एक मेढ़ा
चढ़ाए; थे सब निदॉष हों। 7 और बछड़े और मेढ़े दोनोंके साय वह एक एक एपा
अन्नबलि तैयार करे, और भेड़ के बच्चोंके साय ययाशक्ति अन्न, और एपा पीछे
हीन भर तेल। 8 और जब प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के ओसारे से होकर
जाए, और उसी मार्ग से निकल जाए। 9 जब साधारण लोग नियत समयोंमें
यहोवा के साम्हने दण्डवत् करने आएं, तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत्
करने को भीतर आए, वह दक्खिनी फाटक से होकर निकले, और जो दक्खिनी
फाटक से होकर भीतर आए, वह उत्तरी फाटक से होकर निकले, अर्यात् जो जिस
फाटक से भीतर आया हो, वह उसी फाटक से न लौटे, अपके साम्हने ही निकल
जाए। 10 और जब वे भीतर आएं तब प्रधान उनके बीच होकर आएं, और जब वे
निकलें, तब वे एक साय निकलें। 11 और पवॉ और अन्य नियत समयोंका
अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर, और मेढ़े पीछे एपा भर का हो; और भेड़ के
बच्चोंके साय ययाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल। 12 फिर जब प्रधान
होमबलि वा मेलबलि को स्वेच्छा बलि करके यहोवा के लिथे तैयार करे, तब
पूर्वमुखी फाटक उनके लिथे खोला जाए, और वह अपना होमबलि वा मेलबलि
वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रमदिन को करता है; तब वह निकले, और उसके
निकलने के पीछे फाटक बन्द किया जाए। 13 और प्रति दिन तू वर्ष भर का एक

निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के होमबलि के लिथे तैयार करना, यह प्रति भोर को
तैयार किया जाए। 14 और प्रति भोर को उसके साय एक अन्नबलि तैयार करना,
अर्यात् एपा का छठवां अंश और मैदा में मिलाने के लिथे हीन भर तेल की तिहाई
यहोवा के लिथे सदा का अन्नबलि नित्य विधि के अनुसार चढ़ाया जाए। 15 भेड़
का बच्चा, अन्नबलि और तेल, प्रति भोर को नित्य होमबलि करके चढ़ाया जाए।
16 परमेश्वर यहोवा योंकहता है, यदि प्रधान अपके किसी पुत्र को कुछ दे, तो वह
उसका भाग होकर उसके पोतोंको भी मिले; भाग के नियम के अनुसार वह उनका
भी निज घन ठहरे। 17 परन्तु यदि वह अपके भाग में से अपके किसी कर्मचारी
को कुछ दे, तो छुट्टी के वर्ष तक तो वह उसका बना रहे, परन्तु उसके बाद प्रधान
को लैटा दिया जाए; और उसका निज भाग ही उसके पुत्रोंको मिले। 18 और प्रजा
का ऐसा कोई भाग प्रधान न ले, जो अन्धेर से उनकी निज भूमि से छीना हो;
अपके पुत्रोंको वह अपक्की ही निज भूमि में से भाग दे; ऐसा न हो कि मेरी प्रजा
के लोग अपक्की अपक्की निज भूमि से तितर-बितर हो जाएं। 19 फिर वह मुझे
फाटक की एक अलंग में द्वार से होकर याजकोंकी उत्तरमुखी पवित्र कोठरियोंमें ले
गया; वहां पश्चिम ओर के कोने में एक स्यान या। 20 तब उस ने मुझ से कहा, यह
वह स्यान है जिस में याजक लोग दोषबलि और पापबलि के मांस को पकाएं और
अन्नबलि को पकाएं, ऐसा न हो कि उन्हें बाहरी आंगन में ले जाने से साधारण
लोग पवित्र ठहरें। 21 तब उस ने मुझे बाहरी आंगन में ले जाकर उस आंगन के
चारोंकोनोंमें फिराया, और आंगन के हर एक कोने में एक एक ओट बना या, 22
अर्यात् आंगन के चारोंकोनोंमें चालीस हाथ लम्बे और तीस हाथ चौड़े ओट थे;
चारोंकोनोंके ओटोंकी एक ही माप यी। 23 और भीतर चारोंओर भीत यी, और

भीतोंके नीचे पकाने के चूल्हे बने हुए थे। 24 तब उस ने मुझ से कहा, पकाने के
घर, जहां भवन के टहलुए लोगोंके बलिदानोंको पकाएं, वे थे ही हैं।

यहेजकेल 47

1 फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से
एक सोता निकलकर पूर्व ओर बह रहा या। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी या, और
सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्खिन, नीचे से निकलता या। 2 तब वह मुझे
उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्यात्
पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया; और दक्खिनी अलंग से जल पक्कीजकर
वह रहा या। 3 जब वह पुरुष हाथ में मापके की डोरी लिए हुए पूर्व ओर निकला,
तब उस ने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में
से चलाया, और जल टखनोंतक या। 4 उस ने फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल
में से चलाया, और जल घुटनोंतक या, फिर ओर हजार हाथ मापकर मुझे जल में
से चलाया, और जल कमर तक या। 5 तब फिर उस ने एक हजार हाथ मापे, और
ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य
या; अर्यात् ऐसी नदी यी जिसके पार कोई न जा सकता या। 6 तब उस ने मुझ से
पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है? फिर उस ने मुझे नदी के तीर
लौटाकर पहुंचा दिया। 7 लौटकर मैं ने क्या देखा, कि नदी के दोनोंतीरोंपर बहुत
से वृझ हैं। 8 तब उस ने मुझ से कहा, यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और
अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा
ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। 9 और जहां जहां यह

नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएंगे और
मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल
का जल मीठा हो जाएगा; और जहा कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे।
10 ताल के तीर पर मछवे खड़े रहेंगे, और एनगदी से लेकर ऐनेग्लैम तक वे जाल
फैलाए जाएंगे, और उन्हें महासागर की सी भांति भांति की अनगिनित मछलियां
मिलेंगी। 11 परन्तु ताल के पास जो दलदल ओर गड़हे हैं, उनका जल मीठा न
होगा; वे खारे ही रहेंगे। 12 और नदी के दोनोंतीरोंपर भांति भांति के खाने योग्य
फलदाई पृझ उपकेंगे, जिनके पत्ते न मुर्फाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न
होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्यान से तिकला है। उन में महीने महीने, नथे
नथे फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, ओर पत्ते औषधि के काम आएंगे। 13
परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जिस सिवाने के भीतर तुम को यह देश अपके
बारहोंगोत्रोंके अनुसार बांटना पकेगा, वह यह है: यूसुफ को दो भाग मिलें। 14
और उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पाओगे, क्योंकि मैं ने शपय खाई
कि उसे तुम्हारे पितरोंको दूंगा, सो यह देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा। 15 देश
का सिवाना यह हो, अर्यात् उत्तर ओर का सिवाना महासागर से लेकर हेतलोन के
पास से सदाद की घाटी तक पहुंचे, 16 और उस सिवाने के पास हमात बेरोता,
और सिब्रैम जो दमिश्क ओर हमात के सिवानोंके बीच में है, और हसर्हत्तीकोन
तक, जो हौरान के सिवाने पर है। 17 और यह सिवाना समुद्र से लेकर दमिश्क के
सिवाने के पास के हसरेनोन तक महुंचे, और उसकी उत्तर ओर हमात हो। उत्तर
का सिवाना यही हो। 18 और पूवीं सिवाना जिसकी एक ओर हौरान दमिश्क; और
यरदन की ओर गिलाद और इस्राएल का देश हो; उत्तरी सिवाने से लेकर पूवीं ताल

तक उसे मापना। पूर्वी सिवाना तो यही हो। 19 और दक्खिनी सिवाना तामार से
लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक अर्यात् मिस्र के नाले तक, और
महासागर तक महुंचे। दक्खिनी सिवाना यही हो। 20 और पश्चिमीसिवाना
दक्खिनी सिवाने से लेकर हमात की घाटी के साम्हने तक का महासागर हो।
पच्छिमी सिवाना यही हो। 21 इस प्रकार देश को इस्राएल के गोत्रोंके अनुसार
आपस में बांट लेना। 22 और इसको आपस में और उन परदेशियोंके साय बांट
लेना, जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकोंको जन्माएं। वे तुम्हारी दृष्टि में देशी
इस्राएलियोंकी नाई ठहरें, और तुम्हारे गोत्रोंके बीच अपना अपना भाग पाएं। 23
जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो, उसको वहीं भाग देना, परमेश्वर यहोवा
की यही वाणी है।

यहेजकेल 48

1 गोत्रें के भाग थे हों; उत्तर सिवाने से लगा हुआ हेतलोन के मार्ग के पास से हमात
की घाटी तक, और दमिश्क के सिवाने के पास के हमरेनान से उत्तर ओर हमात के
पास तक एक भाग दान का हो; और उसके पूर्वी और पश्चिमी सिवाने भी हों। 2
दान के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक आशेर का एक भाग हो। 3 आशेर
के सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक नसाली का एक भाग हो। 4 तसाली के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक मनश्शे का एक भाग। 5 मनश्शे के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक एप्रैम का एक भाग हो। 6 एप्रैम के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक रूबेन का एक भाग हो। 7 और रूबेन के
सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पच्छिम तक यहूदा का एक भाग हो। 8 यहूदा के

सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक वह अर्पण किया हुआ भाग हो, जिसे
तुम्हें अर्पण करना होगा, वह पच्चीस हजार बांस चौड़ा और पूर्व से पच्छिम तक
किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य लम्बा हो, और उसके बीच में पवित्रस्यान हो। 9
जो भाग तुम्हें यहोवा को अर्पण करना होगा, उसकी लम्बाई पच्चास हजार बांस
और चौड़ाई दस हजार बांस की हो। 10 यह अर्पण किया हुआ पवित्र भाग
याजकोंको मिले; वह उत्तर ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा, पच्छिम ओर दस
हजार बांस चौड़ा, पूर्व ओर दस हजार बांस चौड़ा और दक्खिन ओर पच्चीस हजार
बांस लम्बा हो; और उसके बीचोबीच यहोवा का पवित्रस्यान हो। 11 यह विशेष
पवित्र भाग सादोक की सन्तान के उन याजकोंका हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते
रहे, और इस्राएलियोंके भटक जाने के समय लेवियोंकी नाई न भटके थे। 12 सो
देश के अर्पण किए हुए भाग में से यह उनके लिथे अर्पण किया हुआ भाग,
अर्यात्् परमपवित्र देश ठहरे; और लेवियोंके सिवाने से लगा रहे। 13 और
याजकोंके सिवाने से लगा हुआ लेवियोंका भाग हो, वह पच्चीस हजार बांस लम्बा
और दस हजार बांस चौड़ा हो। सारी लम्बाई पच्चीस हजार बांस की और चोड़ाई
दस हजार बांस की हो। 14 वे उस में से न तो कुछ बेजें, न दूसरी भूमि से बदलें;
और न भूमि की पहिली उपज और किसी को दी जाए। क्योंकि वह यहोवा के लिथे
पवित्र है। 15 और चौड़ाई के पच्चीस हजार बांस के साम्हने जो पांच हजार बचा
रहेगा, वह नगर और बस्ती और चराई के लिथे साधारण भाग हो; और नगर
उसके बीच में हो। 16 ओर नगर की यह माप हो, अर्यात् उत्तर, दक्खिन, पूर्व और
पच्छिम ओर साढ़े चार चार हजार हाथ। 17 और नगर के पास उत्तर, दक्खिन,
पूर्व, पच्छिम, चराइयां होंजो अढ़ाई अढ़ाई सौ बांस चौड़ी हों। 18 और अर्पण किए

हुए पवित्र भाग के पास की लम्बाई में से जो कुछ बचे, अर्यात् पूर्व और पच्छिम
दोनोंओर दस दस बांस जो अर्पण किए हुए भाग के पास हो, उसकी उपज नगर में
परिश्रम करनेवालोंके खाने के लिथे हो। 19 और इस्राएल के सारे गोत्रोंमें से जो
तगर में परिश्रम करें, वे उसकी खेती किया करें। 20 सारा अर्पण किया हुआ भाग
पच्चीस हजार बांस लम्बा और पच्चीस हजार बांस चौड़ा हो; तुम्हें चौकोना पवित्र
भाग अर्पण करना होगा जिस में नगर की विशेष भूमि हो। 21 और जो भाग रह
जाए, वह प्रधान को मिले। पवित्र अर्पण किए हुए भाग की, और नगर की विशेष
भूमि की दोनोंओर अर्यात् उनकी पूर्व और पच्छिम अलंगोंके पच्चीस पच्चीस
हजार बांस की चौड़ाई के पास, जो ओर गोत्रोंके भागोंके पास रहे, वह प्रधान को
मिले। और अर्पण किया हुआ पवित्र भाग और भवन का पवित्रस्यान उनके बीच
में हो। 22 जो प्रधान का भाग होगा, वह लेवियोंके बीच और नगरोंकी विशेष भूमि
हो। प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन के सिवाने के बीच में हो। 23 अन्य
गोत्रें के भाग इस प्रकार हों: पूर्व से पच्छिम तक बिन्यामीन का एक भाग हो। 24
बिन्यामीन के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक शिमोन का एक भाग।
25 शिमोन के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक इस्साकार का एक भाग।
26 इस्साकार के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक जबूलून का एक भाग।
27 जबूलून के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक गाद का एक भाग। 28
और गाद के सिवाने के पास दक्खिन ओर का सिवाना तामार से लेकर कादेश के
मरीबोत नाम सोते तक, और मिस्र के नाले ओर महासागर तक पहुंचे। 29 जो
देश तुम्हें इस्राएल के गोत्रोंको बांटना होगा वह यही है, और उनके भाग भी थे ही
हैं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। 30 तगर के निकास थे हों, अर्यात् उत्तर की

अलंग जिसकी लम्बाई साढ़े चार हजार बांस की हो। 31 उस में तीन फाटक हों,
अर्यात् एक रूबेन का फाटक, एक यहूदा का फाटक, और एक लेवी का फाटक हो;
क्योंकि नगर के फाटकोंके नाम इस्राएल के गोत्रोंके नामोंपर रखने होंगे। 32 और
पूरब की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी जो, और उस में तीन फाटक हों;
अर्यात् एक यूसुफ का फाटक, एक बिन्यामीन का फाटक, और एक दान का
फाटक हो। 33 और दक्खिन की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो, और उस
में तीन फाटक हों; अर्यात् एक शिमोन का फाटक, एक इस्साकार का फाटक, और
एक जबूलून का फाटक हो। 34 और पश्चिम की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी
हो, और उस में तीन फाटक हों; अर्यत् एक गाद का फाटक, एक आशेर का फाटक
और नप्ताली का फाटक हो। 35 तगर की चारोंअलंगोंका घेरा अठारह हजार बांस
का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम "यहोवा शाम्मा" रहेगा।

दानिय्येल 1

1 यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने यरूशेलम पर चढ़ाई करके उसको घेर लिया। 2 तब परमेश्वर ने
यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पात्रोंसहित उसके हाथ में
कर दिया; और उस ने उन पात्रोंको शिनार देश में अपके देवता के मन्दिर में ले
जाकर, अपके देवता के भण्डार में रख दिया। 3 तब उस राजा ने अपके खोजोंके
प्रधान अशपनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रोंऔर प्रतिष्ठित पुरूषोंमें से ऐसे
कई जवानोंको ला, 4 जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और
ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर में हाजिर रहने के योग्य हों; और

उन्हें कसदियोंके शास्त्र और भाषा की शिझा दे। 5 और राजा ने आज्ञा दी कि
उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया
जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे; तब उसके बाद वे
राजा के साम्हने हाजिर किए जाएं। 6 उन में यहूदा की सन्तान से चुने हुए,
दानिय्थेल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह नाम यहूदी थे। 7 और खोजोंके
प्रधान ने उनके दूसरे नाम रखें; अर्यात् दानिय्थेल का नाम रखे; अर्यात् दानिय्थेल
का नाम उस ने बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का मेशक, और
अजर्याह का नाम अबेदनगो रखा।। 8 परन्तु दानिय्थेल ने अपके मन में ठान
लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर
अपवित्र न होए; इसलिथे उस ने खोजोंके प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न
होना पके। 9 परमेश्वर ने खोजोंके प्रधान के मन में दानिय्थेल के प्रति कृपा और
दया भर दी। 10 और खोजोंके प्रधान ने दानिय्थेल से कहा, मैं अपके स्वामी राजा
से डरता हूं, क्योंकि तुम्हारा खाना-पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि
वह तेरा मुंह तेरे संगी के जवानोंसे उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर
राजा के साम्हने जाखिम में डालो। 11 तब दानिय्थेल ने उस मुखिथे से, जिसको
खोजोंके प्रधान ने दानिय्थेल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के ऊपर
देखभाल करने के लिथे नियक्त किया या, कहा, 12 मैं तेरी बिनती करता हूं, अपके
दासोंको दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिथे सागपात और पीने के लिथे
पानी ही दिया जाए। 13 फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का
भोजन खाते हैं उनके मुंह को देख; और जैसा तुझे देख पके, उसी के अनुसार
अपके दासोंसे व्यवहार करना। 14 उनकी यह बिनती उस ने मान ली, और दास

दिन तक उनको जांचता रहा। 15 दस दिन के बाद उनके मुंह राजा के भोजन के
खानेवाले सब जवानोंसे अधिकर अच्छे और चिकने देख पके। 16 तब वह
मुखिया उनका भोजन और उनके पीने के लिथे ठहराया हुआ दाखमधु
दोनोंछुड़ाकर, उनको सागपात देने लगा।। 17 और परमेश्वर ने उन चारोंजवानोंको
सब शस्त्रों, और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और
दानिय्थेल सब प्रकार के दर्शन और स्वपन के अर्य का ज्ञानी हो गया। 18 तब
जितने दिन के बाद नबूकदनेस्सर राजा ने जवानोंको भीतर ले आने की आज्ञा दी
यी, उतने दिन के बीतने पर खोजोंके प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। 19 और
राजा उन से बातचीत करने लगा; और दानिय्थेल, हनन्याह, मीशाएल, और
अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा; इसलिथे वे राजा के सम्मुख हाजिर
रहने लगे। 20 और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उन
से पूछता या उस में वे राज्य भर के सब ज्योतिषयोंऔर तन्त्रियोंसे दसगुणे
निपुण ठहरते थे। 21 और दानिय्थेल कुस्रू राजा के पहिले वर्ष तक बना रहा।।

दानिय्येल 2

1 अपके राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका
मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई। 2 तब राजा ने आज्ञा दी,
कि ज्योतिषी, तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न
बताएं; सो वे आए और राजा के साम्हने हाजिर हुए। 3 तब राजा ने उन से कहा,
मैं ने एक स्वप्न देखा है, और मेरा मन व्याकुल है कि स्वपन को कैसे समझूं। 4
कसदियोंने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे! अपके

दासोंको स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे। 5 राजा ने कसदियोंको उत्तर
दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूं कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो
तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिए जाएंगे। 6 और यदि
तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी
प्रतिष्ठा पाओगे। 7 इसलिथे तुम मुझे फल समेत स्वप्न बाताओ। उन्होंने दूसरी
बार कहा, हे राजा स्वप्न तेरे दासोंको बताया जाए, और हम उसका फल
समझा ा देंगे। 8 राजा ने उत्तर दिया, मैं निश्चय जानता हूं कि तुम यह देखकर,
कि राजा के मुंह से आज्ञा निकल चुकी है, समय बढ़ाना चाहते हो। 9 इसलिथे
यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे लिथे एक ही आज्ञा है। क्योंकि तुम ने
गोष्ठी की होगी कि जब तक समय न बदले, तब तक हम राजा के साम्हने फूठी
और गपशप की बातें कहा करेंगे। इसलिथे तुम मुझे स्वप्न को बताओ, तब मैं
जानूंगा कि तुम उसका फल भी समझा सकते हो। 10 कसदियोंने राजा से कहा,
पृय्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके; और न
कोई ऐसा राजा, वा प्रधान, वा हाकिम कभी हुआ है जिस ने किसी ज्योतिषी वा
तन्त्री, वा कसदी से ऐसी बात पूछी हो। 11 जो बात राजा पूछता है, वह अनोखी है,
और देवताओं को छोड़कर जिनका निवास मनुष्योंके संग नहीं है, और कोई दूसरा
नहीं, जो राजा को यह बता सके।। 12 इस पर राजा ने फुंफलाकर, और बहुत की
क्रोधित होकर, बाबुल के सब पण्डितोंके नाश करने की आज्ञा दे दी। 13 सो यह
आज्ञा निकली, और पण्डित लोगोंका घात होने पर या; और लोग दानिय्थेल और
उसके संगियोंको ढूंढ़ रहे थे कि वे भी घात किए जाएं। 14 तब दानिय्थेल ने,
जल्लादोंके प्रधान अर्योक से, जो बाबुल के पण्डितोंको घात करने के लिथे निकला

या, सोच विचारकर और बुद्धिमानी के साय कहा; 15 और राजा के हाकिम अर्योक
से पूछने लगा, यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साय क्योंनिकली?
तब अर्योक ने दानिय्थेल को इसका भेद बता दिया। 16 और दानिय्थेल ने भीतर
जाकर राजा से बिनती की, कि उसके लिथे कोई समय ठहराया जाए, तो वह
महाराज को स्वप्न का फल बता देगा। 17 तब दानिय्थेल ने अपके घर जाकर,
अपके संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा, 18 इस
भेद के विषश्‍ में स्वर्ग के परमश्‍ेवर की दया के लिथे यह कहकर प्रार्यना करो,
कि बाबुल के और सब पण्डितोंके संग दानिय्थेल और उसके संगी भी नाश न
किए जाएं। 19 तब वह भेद दानिय्थेल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट
किया गया। सो दानिय्थेल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया,
20 परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं।
21 समयोंऔर ऋतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही
करता है; बुद्धिमानोंको बुद्धि और समझवालोंको समझ भी वही देता है; 22 वही
गूढ़ और गुप्त बातोंको प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धिक्कारने में क्या है,
और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। 23 हे मेरे पूर्वजोंके परमश्‍ेवर, मैं तेरा
धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस
भेद का खुलना हम लोगोंन तुझ से मांगे या, उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू
ने हम को राजा की बात बताई है। 24 तब दानिय्थेल ने अर्योक के पास, जिसे
राजा ने बाबुल के पण्डितोंके नाश करने के लिथे ठहराया या, भीतर जाकर कहा,
बाबुल के पण्डितोंका नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं फल
बताऊंगा।। 25 तब अर्योक ने दानिय्थेल को राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले

जाकर उस से कहा, यहूदी बंधुओं में से एक पुरूष मुझ को मिला है, जो राजा को
स्वप्न का फल बताएगा। 26 राजा ने दानिय्थेल से, जिसका नाम बेलतशस्सर
भी या, पूछा, क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैं ने देखा है, उसे फल
समेत मुझे बताए? 27 दानिय्थेल ने राजा का उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है,
वह न तो पण्डित न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बतानेवाले राजा को बता
सकते हैं, 28 परन्तु भेदोंका प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने
नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनोंमें क्या क्या होनवाला है।
तेरा स्वपन और जो कुछ तू ने पलंग पर पके हुए देखा, वह यह है: 29 हे राजा,
जब तुझ को पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होनेवाला है, तब
भेदोंको खोलनेवाले ने तुझ को बताया, कि क्या क्या होनेवाला है। 30 मुझ पर
यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियोंसे अधिक बुद्धिमान
हूं, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वपन का फल राजा को बताया
जाए, और तू अपके मन के विचार समझ सके।। 31 हे राजा, जब तू देख रहा या,
तब एक बड़ी मूत्तिर् देख पक्की, और वह मूत्तिर् जो तेरे साम्हने खड़ी यी, सो
लम्बी चौड़ी यी; उसकी चमक अनुपम यी, और उसका रूप भयंकर या। 32 उस
मूत्तिर् का सिर तो चोखे सोने का या, उसकी छाती और भुजाएं चान्दी की, उसका
पेट और जांघे पीतल की, 33 उसकी टांगे लोहे की और उसके पांव कुछ तो लोहे के
और कुछ मिट्टी के थे। 34 फिर देखते देखते, तू ने क्या देखा, कि एक पत्यर ने,
बिना किसी के खोदे, आप ही आप उखड़कर उस मूत्तिर् के पांवोंपर लगकर जो
लोहे और मिट्टी के थे, उनको चूर चूर कर डाला। 35 तब लोहा, मिट्टी, पीतल,
चान्दी और सोना भी सब चूर चूर हो गए, और धूपकाल में खलिहानोंके भूसे की

नाईं हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्यर जो मूत्तिर्
पर लगा या, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृय्वी में फैल गया।। 36 स्वपन तो योंही
हुआ; और अब हम उसका फल राजा को समझा देते हैं। 37 हे राजा, तू तो
महाराजाधिरा है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझ को राज्य, सामर्य, शक्ति और
महिमा दी है, 38 और जहां कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, वहां उस ने उन सभोंको,
और मैदान के जीवजन्तु, और आकाश के पक्की भी तेरे वश में कर दिए हैं; और
तुझ को उन सब का अधिक्कारनी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है। 39 तेरे
बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसरा
पीतल का सा राज्य होगा जिस में सारी पृय्वी आ जाएगी। 40 और चौया राज्य
लोहे के तुल्य मजबूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस
जाती हैं; इसलिथे जिस भांति लोहे से वे सब कुचक्की जाती हैं, उसी भांति, उस
चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर होकर पिस जाएगा। 41 और तू ने जो मूत्तिर् के
पांवोंऔर उनकी उंगलियोंको देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे
की यीं, इस से वह चौया राज्य बटा हुआ होगा; तौभी उस में लोहे का सा कड़ापन
रहेगा, जैसे कि तू ने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा या। 42
और जैसे पांवोंकी उंगलियां कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की यीं, इसका अर्य
यह है, कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल होगा। 43 और तू ने जो लोहे
को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्य यह है, कि उस राज्य
के लोग एक दूसरे मनुष्योंसे मिले जुले तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साय
मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे। 44 और उन राजाओं के दिनोंमें
स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा,

और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब
राज्योंको चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्यिर
रहेगा; 45 जैसा तू ने देखा कि एक पत्यर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से
उखड़ा, और उस ने लोहे, पीतर, मिट्टी, चान्दी, और सोने को चूर चूर किया, इसी
रीति महान् परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या क्या होनेवाला है।
न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है।। 46 इतना सुनकर
नबूकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिरकर दानिय्थेल को दण्डवत् की, और आज्ञा
दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके साम्हने सुगन्ध वस्तु जलाओ। 47 फिर
राजा ने दानिय्थेल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगोंका परमेश्वर, सब
ईश्वरोंका ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदोंका खोलनेवाला है, इसलिथे तू यह भेद
प्रगट कर पाया। 48 तब राजा ने दानिय्थेल का पद बड़ा किया, और उसको बहुत
से बड़े बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम
और बाबुल के सब पण्डितोंपर मुख्य प्रधान बने। 49 तब दानिय्थेल के बिनती
करने से राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को बाबुल के प्रान्त के कार्य के
ऊपर नियुक्त कर दिया; परन्तु दानिय्थेल आप ही राजा के दरबार में रहा करता
या।।

दानिय्येल 3

1 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिनकी ऊंचाई साठ हाथ,
और चौड़ाई छ: हाथ की यी। और उस ने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम
मैदान में खड़ा कराया। 2 तब नबूकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों, हाकिमों,

गवर्नरों, जजों, खजांनचियों, न्यायियों, शास्त्रियों, आदि प्रान्त-प्रान्त के सब
अधिक्कारनेियोंको बुलवा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में आएं जो उस ने
खड़ी कराई यी। 3 तब अधिपति, हाकिम, गर्वनर, जज, खजांनची, न्यायी, शास्त्री
आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिक्कारनी नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई
मूरत की प्रतिष्ठा के लिथे इकट्ठे हुए, और उस मूरत के साम्हने खड़े हुए। 4 तब
ढिंढोरिथे ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों,
और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, 5
जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब
प्रकार के बाजोंका शब्द सुनो, तुम उसी समय गिरकर नबूकदनेस्सर राजा की
खड़ी कराई हुए सोने की मूरत को दण्डवत् करो। 6 और जो कोई गिरकर दण्डवत्
न करेगा वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा। 7 इस
कारण उस समय ज्योंही सब जाति के लोगोंको नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी,
सितार शहनाई आदि सब प्रकार के बाजोंका शब्द सुन पड़ा, त्योंही देश-देश और
जाति-जाति के लोगोंऔर भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालोंने गिरकर उस सोने की
मूरत को जो नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई यी, दण्डवत् की।। 8 उसी समय
कई एक कसदी पुरूष राजा के पास गए, और कपट से यहूदियोंकी चुगली खाई। 9
वे नबुकदनेस्सर राजा से कहने लगे, हे राजा, तू चिरंजीव रहे। 10 हे राजा, तू ने
तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार,
शहनाई आदि सब प्रकार के बाजोंका शब्द सुने, वह गिरकर उस सोने की मूरत
को दण्डवत करे; 11 और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करे वह धधकते हुए भट्ठे
के बीच में डाल दिया जाए। 12 देख, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम कुछ

यहूदी पुरूष हैं, जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है। उन
पुरूषोंने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना
नहीं करते, और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत् नहीं
करते।। 13 तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि
शद्रक मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब वे पुरूष राजा के साम्हने हाजिर किए
गए। 14 नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग
जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को
दण्डवत् नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो? 15 यदि तुम अभी
तैयार हो, कि जब नरसिंगे, बा◌ुसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब
प्रकार के बाजोंका शब्द सुनो, और उसी झण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को
दण्डवत् करो, तो बचोगे; और यदि तुम दण्डवत् ने करो तो इसी घड़ी धधकते हुए
भट्ठे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से
छुड़ा सके? 16 शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर,
इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। 17 हमारा
परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की
आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा
सकता है। 18 परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे
देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को
दण्डवत् करेंगे।। 19 तब नबूकदनेस्सर झुंफला उठा, और उसके चेहरे का रंग
शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उस ने आज्ञा दी कि भट्ठे
को सातगुणा अधिक धधका दो। 20 फिर अपक्की सेना में के कई एक बलवान्

पुरूषोंको उस ने आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बान्धकर उन्हें
धधकते हुए भट्ठे में डाल दो। 21 तब वे पुरूष अपके मोजों, अंगरखों, बागोंऔर
और वस्त्रोंसहित बान्धकर, उस धधकते हुए भट्ठे में डाल दिए गए। 22 वह
भट्ठा तो राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया या, इस
कारण जिन पुरूषोंने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उठाया वे ही आग की आंच
से जल मरे। 23 और उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच थे तीनोंपुरूष, शद्रक, मेशक
और अबेदनगो, बन्धे हुए फेंक दिए गए।। 24 तब नबूकदनेस्सरे राजा अचम्भित
हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ। और अपके मन्त्रियोंसे पूछने लगा, क्या हम
ने उस आग के बीच तीन ही पुरूष बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्होंने राजा को उत्तर
दिया, हां राजा, सच बात तो है। 25 फिर उस ने कहा, अब मैं देखता हूं कि चार
पुरूष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उनको कुछ भी हानि नहीं पहुंची;
और चौथे पुरूष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है।। 26 फिर नबूकदनेस्सर
उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा, हे शद्रक, मेशक और
अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकलकर यहां आओ! यह सुनकर
शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए। 27 जब अधिपति,
हाकिम, गर्वनर और राजा के मन्त्रियोंने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुरूषोंकी ओर
देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया; और उनके सिर का
एक बाल भी न फुलसा, न उनके मोजे कुछ बिगड़े, न उन में जलने की कुछ गन्ध
पाई गई। 28 नबूकदनेस्सर कहने लगा, धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का
परमेश्वर, जिस ने अपना दूत भेजकर अपके इन दासोंको इसलिथे बचाया,
क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मानकर, उसी पर भरोसा रखा, और यह

सोचकर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपके परमेश्वर को छोड़, किसी
देवता की उपासना वा दण्डवत् न करेंगे। 29 इसलिथे अब मैं यह आज्ञा देता हूं
कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालोंमें से
जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह
टुकड़े टुकड़े किया जाएगा, और उसका घर घूरा बनाया जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई
और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके। 30 तब राजा ने बाबुल के प्रान्त में
शद्रक, मेशक, अबेदनगो का पद और ऊंचा किया।।

दानिय्येल 4

1 नबूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति जाति के लोगों, और
भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले जितने सारी पृथ्वी पर रहते हैं, उन सभोंको यह
वचन मिला, तुम्हारा कुशल झेम बए�े! 2 मुझे यह अच्छा लगा, कि
परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उनको प्रगट
करूं। 3 उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारोंमें क्या ही बड़ी
शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनी रहती है।। 4 मैं नबूकदनेस्सर अपके भवन में चैन से और प्रफुल्लित
रहता या। 5 मैं ने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मैं डर गया; और पलंग पर पके
पके जो विचार मेरे मन में आए और जो बातें मै ने देखीं, उनके कारण मैं घबरा
गया या। 6 तब मैं ने आज्ञा दी कि बाबुल के सब पण्डित मेरे स्वप्न का फल मुझे
बताने के लिथे मेरे साम्हने हाजिर किए जाएं। 7 तब ज्योतिषी, तन्त्री, कसदी
और होनहार बतानेवाले भीतर आए, और मैं ने उनको अपना स्वप्न बताया,

परन्तु वे उसका फल न बता सके। 8 निदान दानिय्थेल मेरे सम्मुख आया,
जिसका नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेलतशस्सर रखा गया या, और जिस
में पवित्र ईश्वरोंकी आत्मा रहती है; और मैं ने उसको अपना स्वप्न यह कहकर
बता दिया, 9 कि, हे बेलेतश्स्सर तू तो सब ज्योतिषियोंका प्रधान है, मैं जानता हूं
कि तुझ में पवित्र ईश्वरोंकी आत्मा रहती है, और तू किसी भेद के कारण नहीं
घबराता; इसलिथे जो स्वपन मैं ने देखा है उसे फल समेत मुझे बताकर समझा
दे। 10 जो दर्शन मैं ने पलंग पर पाया वह यह है: मैं ने देखा, कि पृय्वी के
बीचोबीच एक वृझ लगा है; उसकी ऊंचाई बहुत बड़ी है। 11 वह वृझ बड़ा होकर
दृढ़ हो गया, और उसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुंची, और वह सारी पृय्वी की छोर
तक देख पड़ता या। 12 उसके पत्ते सुन्दर, और उस में बहुत फल थे, यहां तक कि
उस में सभोंके लिथे भोजन या। उसके नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया
मिलती यी, और उसकी डालियोंमें आकाश की सब चिडिय़ां बसेरा करता यीं, और
सब प्राणी उस से आहार पाते थे।। 13 मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा,
कि एक पवित्र पहरूआ स्वर्ग से उतर आया। 14 उस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर
यह कहा, वृझ को काट डालो, उसकी डालियोंको छांट दो, उसके पत्ते फाड़ दो और
उसके फल छितरा डालो; पशु उसके नीचे से हट जाएं, और चिडिय़ें उसकी
डालियोंपर से उड़ जाएं। 15 तौभी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और
उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के बीच रहने
दो। वह आकाश की ओस से भींगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान के
पशुओं के संग भागी हो। 16 उसका मन बदले और मनुष्य का न रहे, परन्तु पशु
का सा बन जाए; और उस पर सात काल बीतें। 17 यह आज्ञा पहरूओं के निर्णय

से, और यह बात पवित्र लोगोंके वचन से निकली, कि जो जीवित हैं वे जान लें कि
परमप्रधान परमश्ेवर मनुष्योंके राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे
चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता
है। 18 मुझ नबूकदनेस्सर राजा ने यही स्वपन देखा। सो हे बेलतशस्सर, तू
इसका फल बता, क्योंकि मेरे राज्य में और कोई पण्डित इसका फल मुझे समझा
नहीं सकता, परन्तु तुझ में तो पवित्र ईश्वरोंकी आत्मा रहती है, इस कारण तू उसे
समझा सकता है।। 19 तब दानिय्थेल जिसका नाम बेलतशस्सर भी या, घड़ी भर
घबराता रहा, और सोचते सोचते व्याकुल हो गया। तब राजा कहने लगा, हे
बेलतशस्सर इस स्वप्न से, वा इसके फल से तू व्याकुल मत हो। बेलतशस्सर ने
कहा, हे मेरे प्रभु, यह स्वप्न तेरे बैरियोंपर, और इसका अर्य तेरे द्रोहियोंपर फले!
20 जिस वृझ हो तू ने देखा, जो बड़ा और दृढ़ हो गया, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग
तक पहुंची और जो पृय्वी के सिक्के तक दिखाई देता या; 21 जिसके पत्ते सुन्दर
और फल बहुत थे, और जिस में सभोंके लिथे भोजन या; जिसके नीचे मैदान के
सब पशु रहते थे, और जिसकी डालियोंमें आकाश की चिडियां बसेरा करती यीं,
22 हे राजा, वह तू ही है। तू महान और सामर्यी हो गया, तेरी महिमा बढ़ी और
स्वर्ग तक पहुंच गई, और तेरी प्रभुता पृय्वी की छोर तक फैली है। 23 और हे
राजा, तू ने जो एक पवित्र पहिरूए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि
वृझ को काट डालो और उसका नाश करो, तौभी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में
छोड़ो, और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के
बीच में रहने दो; वह आकाश की ओस से भीगा करे, और उसको मैदान के पशुओं
के संग ही भाग मिले; और जब तक सात युग उस पर बीत न चुकें, तब तक

उसकी ऐसी ही दशा रहे। 24 हे राजा, इसका फल जो परमप्रधान ने ठाना है कि
राजा पर घटे, वह यह है, 25 कि तू मनुष्योंके बीच से निकाला जाएगा, और
मैदान के पशुओं के संग रहेगा; तू बैलोंकी नाई घास चरेगा; और सात युग तुझ
पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्योंके राज्य में परमप्रधान ही
प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। 26 और उस वृझ के ठूंठ को
जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिथे
बना रहेगा; और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है, तब तू फिर से
राज्य करने पाएगा। 27 इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि
यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे, और अधर्म छोड़कर दीन-हीनोंपर दया करने
लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे।। 28 यह सब कुछ
नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। 29 बारह महीने बीतने पर जब वह बाबुल के
राजभवन की छत पर टहल रहा या, तब वह कहने लगा, 30 क्या यह बड़ा बाबुल
नहीं है, जिसे मैं ही ने अपके बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपके
प्रताप की बड़ाई के लिथे बसाया है? 31 यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न
पाया या कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा
निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया, 32 और तू मनुष्योंके बीच में से
निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलोंकी नाईं घास
चरेगा9 और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि
परमप्रधान, मनुष्योंके राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता
है। 33 उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्योंमें से
निकाला गया, और बैलोंकी नाईं घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की

ओस से भीगती यी, यहां तक कि उसके बाल उकाब पझियोंके परोंसे और उसके
नाखून चिड़िय़ोंके चंगुलोंके समान बढ़ गए।। 34 उन दिनोंके बीतने पर, मुझ
नबूकदनेस्सर ने अपक्की आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं, और मेरी बुद्धि फिर ज्योंकी
त्योंहो गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी
स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका
राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहनेवाला है। 35 पृय्वी के सब रहनेवाले उसके
साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृय्वी के रहनेवालोंके
बीच अपक्की इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से
नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है? 36 उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्योंकी
त्योंहो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिथे मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर
फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिथे आने
लगे, और मैं राज्य में स्यिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी। 37
अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और
महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय
के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है।।

दानिय्येल 5

1 बेलशस्सर नाम राजा ने अपके हजार प्रधानोंके लिथे बड़ी जेवनार की, और उन
हजार लोगोंके साम्हने दाखमधु पिया।। 2 दाखमधु पीते पीते बेलशस्सर ने आज्ञा
दी, कि सोने-चान्दी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में
से निकाले थे, उन्हें ले आओ कि राजा अपके प्रधानों, और रानियोंऔर

रखेलियोंसमेत उन में से पीए। 3 तब जो सोने के पात्र यरूशलेम में परमेश्वर के
भवन के मन्दिर में से निकाले गए थे, वे लाए गए; और राजा अपके प्रधानों, और
रानियों, और रखेलियोंसमेत उन में से पीने लगा।। 4 वे दाखमधु पी पीकर सोने,
चान्दी, पीतल, लोहे, काठ और पत्यर के देवताओं की स्तुति कर ही रहे थे, 5 कि
उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियां निकलकर दीवट के साम्हने
राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगीं; और हाथ का जो भाग लिख
रहा या वह राजा को दिखाई पड़ा। 6 उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह
अपके सोच में घबरा गया, और उसकी कटि के जोड़ ढ़ीले हो गए, और कांपके
कांपके उसके घुटने एक दूसरे से लगने लगे। 7 तब राजा ने ऊंचे शब्द से
पुकारकर तन्त्रियों, कसदियोंऔर और होनहार बतानेवालोंको हाजिर करवाने की
आज्ञा दी। जब बाबुल के पण्डित पास आए, तब राज उन से कहने लगा, जो कोई
वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्य मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र और
उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी; और मेरे राज्य में तीसरा वही
प्रभुता करेगा। 8 तब राजा के सब पण्डित लोग भीतर आए, परन्तु उस लिखे हुए
को न पढ़ सके और न राजा को उसका अर्य समझा सके। 9 इस पर बेलशस्सर
राजा निपट घबरा गया और भयातुर हो गया; और उसके प्रधान भी बहुत व्याकुल
हुए।। 10 राजा और प्रधानोंके वचनोंको सुनकर, रानी जेवनार के घर में आई और
कहने लगी, हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे, अपके मन में न घबरा और न उदास
हो। 11 तेरे राज्य में दानिय्थेल एक पुरूष है जिसका नाम तेरे पिता ने
बेलतशस्सर रखा या, उस में पवित्र ईश्वरोंकी आत्मा रहती है, और उस राजा के
दिनोंमें उस में प्रकाश, प्रवीणता और ईश्वरोंके तुल्य बुद्धि पाई गई। और हे राजा,

तेरा पिता जो राजा या, उस ने उसको सब ज्योतिषियों, तन्त्रियों, कसदियोंऔर
और होनहार बतानेवालोंका प्रधान ठहराया या, 12 क्योंकि उस में उत्तम आत्मा,
ज्ञान और प्रवीणता, और स्वप्नोंका फल बताने और पकेलियां खोलने, और
सन्देह दूर करने की शक्ति पाई गई। इसलिथे अब दानिय्थेल बुलाया जाए, और
वह इसका अर्य बताएगा।। 13 तब दानिय्थेल राजा के साम्हने भीतर बुलाया
गया। राजा दानिय्थेल से पूछने लगा, क्या तू वही दानिय्थेल है जो मेरे पिता
नबूकदनेस्सर राजा के यहूदा देश से लाए हुए यहूदी बंधुओं में से है? 14 मैं ने तेरे
विषय में सुना है कि ईश्वर की आत्मा तुझ में रहती है; और प्रकाश, प्रवीणता और
उत्तम बुद्धि तुझ में पाई जाती है। 15 देख, अभी पण्डित और तन्त्री लोग मेरे
साम्हने इसलिथे लाए गए थे कि यह लिखा हुआ पकें और उसका अर्य मुझे
बताएं, परन्तु वे उस बात का अर्य न समझा सके। 16 परन्तु मैं ने तेरे विषय में
सुना है कि दानिय्थेल भेद खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता है। इसलिथे
अब यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्य भी मुझे समझा सके, तो
तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी,
और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा।। 17 दानिय्थेल ने राजा से कहा, अपके
दान अपके ही पास रख; और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह
लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़ सुनाऊंगा, और उसका अर्य भी तुझे समझाऊंगा।
18 हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई,
प्रतिष्ठा और प्रताप दिया या; 19 और उस बड़ाई के कारण जो उस ने उसको दी यी,
देश-देश और जाति जाति के सब लोग, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले उसके
साम्हने कांपके और यरयराते थे, जिसे वह चाहता उसे वह घात करता या, और

जिसको वह चाहता उसे वह जीवित रखता या जिसे वह चाहता उसे वह ऊंचा पद
देता या, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता या। 20 परन्तु जब उसका
मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गई, यहां तक कि वह अभिमान
करने लगा, तब वह अपके राजसिंहासन पर से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा
भंग की गई; 21 वह मनुष्योंमें से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा,
और उसका निवास जंगली गदहोंके बीच हो गया; वह बैलोंकी नाईं घास चरता,
और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता या, जब तक कि उस ने जान
न लिया कि परमप्रधान परमश्ेवर मनुष्योंके राज्य में प्रभुता करता है और
जिसे चाहता उसी को उस पर अधिक्कारनी ठहराता है। 22 तौभी, हे बेलशस्सर,
तू जो उसका पुत्र है, और यह सब कुछ जानता या, तौभी तेरा मन नम्र न हुआ।
23 वरन तू ने स्वर्ग के प्रभु के विरूद्ध सिर उठाकर उसके भवन के पात्र मंगवाकर
अपके साम्हने धरवा लिए, और अपके प्रधानोंऔर रानियोंऔर रखेलियोंसमेत तू
ने उन में दाखमधु पिया; और चान्दी-सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्यर के
देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु
परमेश्वर, जिसके हाथ में तेरा प्राण है, और जिसके वश में तेरा सब चलना फिरना
है, उसका सन्मान तू ने नहीं किया।। 24 तब ही यह हाथ का एक भाग उसी की
ओर से प्रगट किया गया है और वे शब्द लिखे गए हैं। 25 और जो शब्द लिखे गए
वे थे हैं, मने, मने, तकेल, और ऊपर्सीन। 26 इस वाक्य का अर्य यह है, मने,
अर्यात् परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। 27
तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हलका पाया गया। 28 पकेस, अर्यात्
तेरा राज्य बांटकर मादियोंऔर फारसिक्कों दिया गया है।। 29 तब बेलशस्सर ने

आज्ञा दी, और दानिय्थेल को बैंजनी रंग का वस्त्र और उसके गले में सोने की
कण्ठमाला पहिनाई गई; और ढिंढोरिथे ने उसके विषय में पुकारा, कि राज्य में
तीसरा दानिय्थेल ही प्रभुता करेगा।। 30 उसी रात कसदियोंका राजा बेलशस्सर
मार डाला गया। 31 और दारा मादी जो कोई बासठ वर्ष का या राजगद्दी पर
विराजमान हुआ।।

दानिय्येल 6

1 दारा को यह अच्छा लगा कि अपके राज्य के ऊपर एक सौ बीस ऐसे अधिपति
ठहराए, जो पूरे राज्य में अधिक्कारने रखें। 2 और उनके ऊपर उस ने तीन
अध्यझ, जिन में से दानिय्थेल एक या, इसलिथे ठहराए, कि वे उन अधिपतियोंसे
लेखा लिया रकें, और इस रीति राजा की कुछ हानि न होने पाए। 3 जब यह देखा
गया कि दानिय्थेल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यझोंऔर
अधिपतियोंसे अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा यह भी सोचता या कि उसको सारे
राज्य के ऊपर ठहराए। 4 तब अध्यझ और अधिपति राजकार्य के विषय में
दानिय्थेल के विरूद्ध दोष ढूंढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य या, और उसके
काम में कोई भूल वा दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध वा दोष न पा
सके। 5 तब वे लोग कहने लगे, हम उस दानिय्थेल के परमेश्वर की व्यवस्या को
छोड़ और किसी विषय में उसके विरूद्ध कोई दोष न पा सकेंगे।। 6 तब वे अध्यझ
और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और उस से कहा, हे राजा दारा, तू
युगयुग जीवित रहे। 7 राज्य के सारे अध्यझोंने, और हाकिमों, अधिपतियों,
न्यायियों, और गवर्नरोंने भी आपास में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे

और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई, हे राजा, तुझे छोड़
किसी और मनुष्य वा देवता से बिनती करे, वह सिंहोंकी मान्द में डाल दिया
जाए। 8 इसलिथे अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताझर कर,
जिस से यह बात मादियोंऔर फारसियोंकी अटल व्यवस्या के अनुसार
अदल-बदल न हो सके। 9 तब दारा राजा ने उस आज्ञापत्र पर हस्ताझर कर
दिया।। 10 जब दानिय्थेल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताझर किया गया
है, तब वह अपके घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम के
सामने खुली रहती यीं, और अपक्की रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार
अपके परमेश्वर के साम्हने घुटने टेककर प्रार्यना और धन्यवाद करता या, वैसा
ही तब भी करता रहा। 11 तब उन पुरूषोंने उतावली से आकर दानिय्थेल को
अपके परमेश्वर के सामने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया। 12 सो वे राजा
के पास जाकर, उसकी राजआज्ञा के विषय में उस से कहने लगे, हे राजा, क्या तू
ने ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताझर नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़
किसी मनुष्य वा देवता से बिनती करेगा, वह सिंहोंकी मान्द में डाल दिया
जाएगा? राजा ने उत्तर दिया, हां, मादियोंऔर फारसियोंकी अटल व्यवस्या के
अनुसार यह बात स्यिर है। 13 तब उन्होंने राजा से कहा, यहूदी बंधुओं में से जो
दानिय्थेल है, उस ने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और न तेरे
हस्ताझर किए हुए आज्ञापत्र की ओर; वह दिन में तीन बार बिनती किया करता
है।। 14 यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्थेल के बचाने के
उपाय सोचने लगा; और सूर्य के अस्त होने तक उसके बचाने का यत्न करता रहा।
15 तब वे पुरूष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान

रख, कि मादियोंऔर फारसियोंमें यह व्यवस्या है कि जो जो मनाही वा आज्ञा
राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती।। 16 तब राजा ने आज्ञा दी, और दानिय्थेल
लाकर सिंहोंकी मान्द में डाल दिया गया। उस समय राजा ने दानिय्थेल से कहा,
तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए! 17 तब एक
पत्यर लाकर उस गड़हे के मुंह पर रखा गया, और राजा ने उस पर अपक्की
अंगूठी से, और अपके प्रधानोंकी अंगूठियोंसे मुहर लगा दी कि दानिय्थेल के
विषय में कुछ बदलने ने पाए। 18 तब राजा अपके महल में चला गया, और उस
रात को बिना भोजन पड़ा रहा; और उसके पास सुख विलास की कोई वस्तु नहीं
पहुंचाई गई, और उसे नींद भी नहीं आई।। 19 भोर को पौ फटते ही राजा उठा,
और सिंहोंके गड़हे की ओर फुर्ती से चला गया। 20 जब राजा गड़हे के निकट
आया, तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्थेल से कहा, हे
दानिय्थेल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य
उपासना करता है, तुझे सिंहोंसे बचा सका है? 21 तब दानिय्थेल ने राजा से कहा,
हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे! 22 मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहोंके
मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण
यह है, कि मैं उसके साम्हने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैं ने
कोई भूल नहीं की। 23 तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्थेल को गड़हे
में से निकालने की आज्ञा दी। सो दानिय्थेल गड़हे में से निकाला गया, और उस
पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपके परमेश्वर पर विश्वास
रखता या। 24 और राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरूषोंने दानिय्थेल की चुगली खाई
यी, वे अपके अपके लड़केबालोंऔर स्त्रियोंसमेत लाकर सिंहोंके गड़हे में डाल दिए

जाएं; और वे गड़हे की पेंदी तक भी न पहुंचे कि सिंहोंने उन पर फपटकर सब
हड्डियोंसमेत उनको चबा डाला।। 25 तब दारा राजा ने सारी पृय्वी के रहनेवाले
देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालोंके
पास यह लिखा, तुम्हारा बहुत कुशल हो। 26 मैं यह आज्ञा देता हूं कि जहां जहां
मेरे राज्य का अधिक्कारने है, वहां के लोग दानिय्थेल के परमेश्वर के सम्मुख
कांपके और थरथराते रहें, क्योंकि जीवता और युगानयुग तक रहनेवाला परमेश्वर
वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्यिर रहेगी। 27 जिस ने
दानिय्थेल को सिंहोंसे बचाया है, वही बचाने और छुड़ानेवाला है; और स्वर्ग में
और पृय्वी पर चिन्होंऔर चमत्कारोंका प्रगट करनेवाला है। 28 और दानिय्थेल,
दारा और कुस्रू फारसी, दोनोंके राज्य के दिनोंमें भाग्यवान् रहा।।

दानिय्येल 7

1 बाबुल के राजा बेलशस्सर के पहिले वर्ष में, दानिय्थेल ने पलंग पर स्वप्न
देखा। तब उस ने वह स्वप्न लिखा, और बातोंका सारांश भी वर्णन किया। 2
दानिय्थेल ने यह कहा, मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी
आंधी चलने लगी। 3 तब समुद्र में से चार बड़े बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न
थे, निकल आए। 4 पहिला जन्तु सिंह के समान या और उसके पंख उकाब के से
थे। और मेरे देखते देखते उसके पंखोंके पर नीचे गए और वह भूमि पर से
उठाकर, मनुष्य की नाईं पांवोंके बल खड़ा किया गया; और उसको मनुष्य का
हृदय दिया गया। 5 फिर मैं ने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान या, और
एक पांजर के बल उठा हुआ या, और सके मुंह में दांतोंके बीच तीन पसुली यीं;

और लाग उस से कह रहे थे, उठकर बहुत मांस खा। 6 इसके बाद मैं ने दृष्टि की
और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्की के से चार
पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिक्कारने दिया गया। 7
फिर इसके बाद मैं ने स्वप्न में दृष्टि की और देखा, कि एक चौया जन्तु है जो
भयंकर और डरावना और बहुत सामर्यी है; और उसके बड़े बड़े लोहे के दांत हैं; वह
सब कुछ खा डालता है और चूर चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरोंसे
रौंदता है। और वह सब पहिले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग हैं। 8 मैं
उन सींगोंको ध्यान से देख रहा या तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा
सींग निकला, और उसके बल से उन पहिले सींगोंमें से तीन उखाड़े गए; फिर मैं ने
देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आंखें, और बड़ा बोल बोलनेवाला मुंह भी है।
9 मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति
प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल
ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिथे धधकती हुई आग के
से देख पड़ते थे। 10 उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही
यी; फिर हजारोंहजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखोंलाख लोग
उसके साम्हने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं। 11 उस
समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखते अन्त में
देखा कि वह जन्तु घात किया गया, और उसका शरीर धधकती हुई आग में भस्म
किया गया। 12 और रहे हुए जन्तुओं का अधिक्कारने ले लिया गया, परन्तु
उनका प्राण कुछ समय के लिथे बचाया गया। 13 मैं ने रात में स्वप्न में देखा,
और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलोंसमेत आ रहा या, और

वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। 14 तब
उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति
के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बालनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता
सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।। 15 और मुझ दानिय्थेल
का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैं ने देखा या उसके कारण मैं घबरा गया।
16 तब जो लोग पास खड़े थे, उन में से एक के पास जाकर मैं ने उन सारी बातोंका
भेद पूछा, उस न यह कहकर मुझे उन बातोंका अर्य बताया, 17 उन चार बड़े बड़े
जन्तुओं का अर्य चार राज्य हैं, जो पृय्वी पर उदय होंगे। 18 परन्तु परमप्रधान के
पवित्र लोग राज्य को पाएंगे और युगानयुग उसके अधिक्कारनी बन रहेंगे।। 19
तब मेरे मन में यह इच्छा हुई की उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लूं जो और
तीनोंसे भिन्न और अति भयंकर या और जिसके दांत लोहे के और नख पीतल के
थे; वह सब कुछ खा डालता, और चूर चूर करता, और बचे हुए को पैरोंसे रौंद
डालता या। 20 फिर उसके सिर में के दस सींगोंका भेद, और जिस नथे सींग के
निकलने से तीन सींग गिर गए, अर्यात् जिस सींग की आंखें और बड़ा बोल
बोलनेवाला मुंह और सब और सींगोंसे अधिक भयंकर या, उसका भी भेद जानने
की मुझे इच्छा हुई। 21 और मैं ने देखा या कि वह सींग पवित्र लोगोंके संग लड़ाई
करके उन पर उस समय तक प्रबल भी हो गया, 22 जब तब वह अति प्राचीन न
आया, और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगोंके
राज्याधिक्कारनी होने का समय न आ पहुंचा।। 23 उस ने कहा, उस चौथे जन्तु
का अर्य, एक चौया राज्य है, जो पृय्वी पर होकर और सब राज्योंसे भिन्न होगा,
और सारी पृय्वी को नाश करेगा, और दांवकर चूर-चूर करेगा। 24 और उन दस

सींगोंका अर्थ यह है, कि उस राज्य में से दास राजा उठेंगे, और उनके बाद उन
पहिलोंसे भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा। 25 और
वह परमप्रधान के विरूद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगोंको पीस
डालेगा, और समयोंऔर व्यवस्या के बदल देने की आशा करेगा, वरन साढ़े तीन
काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएंगे। 26 परन्तु, तब न्यायी बैठेंगे,
और उसकी प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश की जाएगी; यहां तक कि उसका
अन्त ही हो जाएगा। 27 तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की
महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्यात् उसके पवित्र लोगोंको दी जाएगी, उसका
राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी
आज्ञा मानेंगे। 28 इस बात का वर्णन मैं अब कर चुका, परन्तु मुझ दानिय्थेल के
मन में बड़ी घबराहट बनी रही, और मैं भयभीत हो गया; और इस बात को मै।
अपके मन में रखे रहा।।

दानिय्येल 8

1 बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष में उस पहिले दर्शन के बाद एक और
बात मुझ दानिय्थेल को दर्शन के द्वारा दिखाई गई। 2 जब मैं एलाम नाम प्रान्त
में, शूशन नाम राजगढ़ में रहता या, तब मैं ने दर्शन में देखा कि मैं ऊलै नदी के
किनारे पर हूं। 3 फिर मैं ने आंख उठाकर देखा, कि उस नदी के साम्हने दो
सींगवाला एक मेढ़ा खड़ा है, उसके दोनोंसींग बड़े हैं, परन्तु उन में से एक अधिक
बड़ा है, और जो बड़ा है, वह दूसरे के बाद निकला। 4 मैं ने उस मेढ़े को देखा कि
वह पश्चिम, उत्तर और दक्खिन की ओर सींग मारता है, और कोई जन्तु उसके

साम्हने खड़ा नहीं रह सकता, और न उसके हाथ से कोई किसी को बचा सकता है;
और वह अपक्की ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता या।। 5 मैं सोच
ही रहा या, तो फिर क्या देखा कि एक बकरा पश्चिम दिशा से निकलकर सारी
पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिर कि चलते समय भूमि पर पांव न छुआया और उस बकरे
की आंखोंके बीच एक देखने योग्य सींग या। 6 वह उस दो सींगवाले मेढ़े के पास
जाकर, जिसको मैं ने नदी के साम्हने खड़ा देखा या, उस पर जलकर अपके पूरे
बल से लपका। 7 मैं ने देखा कि वह मेढ़े के निकट आकर उस पर फुंफलाया; और
मेढ़े को मारकर उसके दोनोंसींगोंको तोड़ दिया; और उसका साम्हना करने को
मेढ़े का कुछ भी वश न चला; तब बकरे ने उसको भूमि पर गिराकर रौंद डाला;
और मेढ़े को उसके हाथ से छुड़ानेवाला कोई न मिला। 8 तब बकरा अत्यन्त
बड़ाई मारने लगा, और जब बलवन्त हुआ, तक उसका बड़ा सींग टूट गया, और
उसकी सन्ती देखने योग्य चार सींग निकलकर चारोंदिशाओं की ओर बढ़ने
लगे।। 9 फिर इन में से एक छोटा सा सींग और निकला, जो दक्खिन, पूरब और
शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया। 10 वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया;
और उस में से और तारोंमें से भी कितनोंको भूमि पर गिराकर रौंद डाला। 11
वरन वह उस सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका नित्य होमबलि बन्द
कर दिया गया; और उसका पवित्र वासस्यान गिरा दिया गया। 12 और लोगोंके
अपराध के कारण नित्य होमबलि के साय सेना भी उसके हाथ में कर दी गई,
और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया, और वह काम करते करते
सफल हो गया। 13 तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते सुना; फिर एक और
पवित्र जन ने उस पहिले बोलनेवाले अपराध के विषय में जो कुछ दर्शन देखा

गया, वह कब तक फलता रहेगा; अर्यात् पवित्रस्यान और सेना दोनोंको रौंदा
जाना कब तक होता रहेगा? 14 और उस ने मुझ से कहा, जब तक सांफ और
सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा; तब पवित्रस्यान शुद्ध
किया जाएगा।। 15 यह बात दर्शन मे देखकर, मैं, दानिय्थेल, इसके समझने का
यत्न करने लगा; इतने में पुरूष के रूप धरे हुए कोई मेरे सम्मुख खड़ा हुआ देख
पड़ा। 16 तब मुझे ऊलै नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा, जो
पुकारकर कहता या, हे जिब्राएल, उस जन को उसकी देखी हुई बातें समझा दे। 17
तब जहां मैं खड़ा या, वहां वह मेरे निकट आया; औश्र् उसके आते ही मैं घबरा
गया, और मुंह के बल गिर पड़ा। तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
उन देखी हुई बातोंको समझ ले, क्योंकि उसका अर्य अन्त ही के समय में
फलेगा।। 18 जब वह मुझ से बातें कर रहा या, तब मैं अपना मुंह भुमि की ओर
किए हुए भारी नींद में पड़ा या, परन्तु उस ने मुझे छूकर सीधा खड़ा कर दिया। 19
तब उस ने कहा, क्रोध भड़काने के अन्त के दिनोंमें जो कुछ होगा, वह मैं तुझे
जताता हूं; क्योंकि अन्त के ठहराए हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा। 20 जो
दो सींगवाला मेढ़ा तू ने देखा है, उसका अर्य मादियोंऔर फारसियोंके राज्य से है।
21 और वह रोंआर बकरा यूनान का राज्य है; और उसकी आंखोंके बीच जो बड़ा
सींग निकला, वह पहिला राजा ठहरा। 22 और वह सींग जो टूट गया और उसकी
सन्ती जो चार सींग निकले, इसका अर्य यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय
होंगे, परन्तु उनका बल उस पहिले का सा न होगा। 23 और उन राज्योंके अन्त
समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे, तब क्रूर दृष्टिवाला और पकेली
बूफनेवाला एक राजा उठेगा। 24 उसका सामर्य्य बड़ा होगा, परन्तु उस पहिले

राजा का सा नहीं; और वह अदभुत् रीति से लोगोंको नाश करेगा, और सफल
होकर काम करता जाएगा, और सामयियोंऔर पवित्र लोगोंके समुदाय को नाश
करेगा। 25 उसकी चतुराई के कारण उसका छल सफल होगा, और वह मन में
फूलकर निडर रहते हुए बहुत लोगोंको नाश करेगा। वह सब हाकिमोंके हाकिम के
विरूद्ध भी खड़ा होगा; परन्तु अन्त को वह किसी के हाथ स ेबिना मार खाए टूट
जाएगा। 26 सांफ और सवेरे के विषय में जो कुछ तू ने देखा और सुना है वह सच
है; परन्तु जो कुछ तू ने दर्शन में देखा है उसे बन्द रख, क्योंकि वह बहुत दिनोंके
बाद फलेगा।। 27 तब मुझ दानिय्थेल का बल जाता रहा, और मैं कुछ दिन तक
बीमार पड़ा रहा; तब मैं उठकर राजा का कामकाज फिर करने लगा; परन्तु जो
कुछ मैं ने देखा या उस से मैं चकित रहा, क्योंकि उसका कोई समझानेवाला न
या।।

दानिय्येल 9

1 मादी झयर्ष का पुत्र दारा, जो कसदियोंके देश पर राजा ठहराया गया या, 2
उसके राज्य के पहिले वर्ष में, मुझ दानिय्थेल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि
यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो यिर्मयाह नबी
के पास पहुंचा या, कुछ वर्षोंके बीतने पर अर्यात् सत्तर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी।
3 तब मैं अपना मुख परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साय प्रार्यना करने
लगा, और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठकर वरदान मांगने लगा। 4 मैं ने
अपके परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्यना की और पाप का अंगीकार किया, हे
प्रभु, तू महान और भययोग्य परमेश्वर है, जो अपके प्रेम रखने और आज्ञा

माननेवालोंके साथ अपक्की वाचा को पूरा करता और करूणा करता रहता है, 5
हम लोगोंने तो पाप, कुटिलता, दुष्टता और बलवा किया है, और तेरी आज्ञाओं
और नियमोंको तोड़ दिया है। 6 और तेरे जो दास नबी लोग, हमारे राजाओं,
हाकिमों, पूर्वजोंऔर सब साधारण लोगोंसे तेरे नाम से बातें करते थे, उनकी हम
ने नहीं सुनी। 7 हे प्रभु, तू धर्मी है, परन्तु हम लोगोंको आज के दिन लज्जित
होना पड़ता है, अर्यात् यरूशलेम के निवासी आदि सब यहूदी, क्या समीप क्या दूर
के सब इस्राएली लोग जिन्हें तू ने उस विश्वासघात के कारण जो उन्होंने तेरा
किया या, देश देश में बरबस कर दिया है, उन सभोंको लज्जित होना पड़ता है। 8
हे यहोवा हम लोगोंने अपके राजाओं, हाकिमोंऔर पूर्वजोंसमेत तेरे विरूद्ध पाप
किया है, इस कारण हम को लज्जित होना पड़ता है। 9 परन्तु, यद्यपि हम अपके
परमेश्वर प्रभु से फिर गए, तौभी तू दयासागर और झमा की खानि है। 10 हम तो
अपके परमेश्वर यहोवा की शिझा सुनने पर भी उस पर नहीं चले जो उस ने अपके
दास नबियोंसे हमको सुनाई। 11 वरन सब इस्राएलियोंने तेरी व्यवस्या का
उल्लंघन किया, और ऐसे हट गए कि तेरी नहीं सुनी। इस कारण जिस शाप की
चर्चा परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्या में लिखी हुई है, वह शाप हम पर घट
गया, क्योंकि हम ने उसके विरूद्ध पाप किया है। 12 सो उस ने हमारे और
न्यायियोंके विषय जो वचन कहे थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा
किया है; यहां तक कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पक्की है, वैसी सारी धरती पर
और कहीं नहीं पक्की। 13 जैसे मूसा की व्यवस्या में लिखा है, वैसे ही यह सारी
विपत्ति हम पर आ पक्की है, तौभी हम अपके परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिथे
न तो अपके अधर्म के कामोंसे फिरे, और ने तेरी सत्य बातोंपर ध्यान दिया। 14

इस कारण यहोवा ने सोच विचारकर हम पर विपत्ति डाली है; क्योंकि हमारा
परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभोंमें धर्मी ठहरता है; परन्तु हम ने
उसकी नहीं सुनी। 15 और अब, हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु, तू ने अपक्की प्रजा को
मिस्र देश से, बली हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जो
आज तक प्रसिद्ध है, परन्तु हम ने पाप किया है और दुष्टता ही की है। 16 हे प्रभु,
हमारे पापोंऔर हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामोंके कारण यरूशलेम की और
तेरी प्रजा की, और हमारे आस पास के सब लोगोंकी ओर से नामधराई हो रही है;
तौभी तू अपके सब धर्म के कामोंके कारण अपना क्रोध और जलजलाहट अपके
नगर यरूशलेम पर से उतार दे, जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है। 17 हे हमारे
परमेश्वर, अपके दास की प्रार्यना और गिड़गड़ाहट सुनकर, अपके उजड़े हुए
पवित्रस्यान पर अपके मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपके नाम के निमित्त यह
कर। 18 हे मेरे परमेश्वर, कान लगाकर सुन, आंख खोलकर हमारी उजड़ी हुई दशा
और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है; क्योंकि हम जो तेरे साम्हने
गिड़गिड़ाकर प्रार्यना करते हैं, सो अपके धर्म के कामोंपर नहीं, वरन तेरी बड़ी दया
ही के कामोंपर भरोसा रखकर करते हैं। 19 हे प्रभु, सुन ले; हे प्रभु, पाप झमा कर;
हे प्रभु, ध्यान देकर जो करता है उसे कर, विलम्ब न कर; हे मेरे परमेश्वर, तेरा
नगर और तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है; इसलिथे अपके नाम के निमित्त ऐसा ही
कर।। 20 इस प्रकार मैं प्रार्यना करता, और अपके और अपके इस्राएली जाति
भाइयोंके पाप का अंगीकार करता हुआ, अपके परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उसके
पवित्र पर्वत के लिथे गिड़गिड़ाकर बिनती करता ही या, 21 तब वह पुरूष
जिब्राएल जिस मैं ने उस समय देखा जब मुझे पहिले दर्शन हुआ या, उस ने वेग

से उड़ने की आज्ञा पाकर, सांफ के अन्नबलि के समय मुझ को छू लिया; और
मुझे समझाकर मेरे साय बातें करने लगा। 22 उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्थेल,
मैं तुझे बुद्धि और प्रविणता देने को अभी निकल आया हूं। 23 जब तू गिड़गिड़ाकर
बिनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिथे मैं तुझे बताने आया हूं,
क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिथे उस विषय को समझ ले और दर्शन की
बात का अर्य बूफ ले।। 24 तेरे लोगोंऔर तेरे पवित्र नगर के लिथे सत्तर सप्ताह
ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापोंको अन्त
और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युगयुग की धामिर्कता प्रगट होए; और
दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का
अभिषेक किया जाए। 25 सो यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम के फिर
बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह
बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहोंके बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के
समय में फिर बसाया जाएगा। 26 और उन बासठ सप्ताहोंके बीतने पर अभिषिक्त
पुरूष काटा जाएगा : और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की
प्रजा नगर और पवित्रस्यान को नाश तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा
होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि
उसका उजड़ जाना निश्चय ठाना गया है। 27 और वह प्रधान एक सप्ताह के लिथे
बहुतोंके संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु आधे सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि
और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएं
दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध
उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।।

दानिय्येल 10

1 फारस देश के राजा कुस्रू के राज्य के तीसरे वर्ष में दानिय्थेल पर, जो
बेलतशस्सर भी कहलाता है, एक बात प्रगट की गई। और वह बात सच यी कि
बड़ा युद्ध होगा। उस ने इस बात को बूफ लिया, और उसको इस देखी हुई बात की
समझ आ गई।। 2 उन दिनोंमैं, दानिय्थेल, तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। 3
उन तीन सप्ताहोंके पूरे होने तक, मैं ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस
वा दाखमधु अपके मुंह में रखा, और न अपक्की देह में कुछ भी तेल लगाया। 4
फिर पहिले महिने के चौबीसवें दिन को जब मैं हिद्देकेल नाम नबी के तीर पर या,
5 तब मैं ने आंखें उठाकर देखा, कि सन का वस्त्र पहिने हुए, और ऊफाज देश के
कुन्दन से कमर बान्धे हुए एक पुरूष खड़ा है। 6 उसका शरीर फीरोजा के समान,
उसका मुख बिजली की नाईं, उसकी आंखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बाहें
और पांव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनोंके शब्द भीड़ोंके शब्द का
सा या। 7 उसको केवल मुझ दानिय्थेल ही ने देखा, और मेरे संगी मनुष्योंको
उसका कुछ भी दर्शन न हुआ; परन्तु वे बहुत ही यरयराने लगे, और छिपके के
लिथे भाग गए। 8 तब मैं अकेला रहकर यह अद्‌भुत दर्शन देखता रहा, इस से
मेरा बल जाता रहा; मैं भयातुर हो गया, और मुझ में कुछ भी बल न रहा। 9 तौभी
मैं ने उस पुरूष के वचनोंका शब्द सुना, और जब वह मुझे सुन पड़ा तब मैं मुंह के
बल गिर गया और गहरी नींद में भूमि पर औंधे मुंह पड़ा रहा।। 10 फिर किसी ने
अपके हाथ से मेरी देह को छुआ, और मुझे उठाकर घुटनोंऔर हथेलियोंके बल
यरयराते हुए बैठा दिया। 11 तब उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्थेल, हे अति प्रिय
पुरूष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूं उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं

अभी तेरे पास भेजा गया हूं। जब उस ने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो
गया परन्तु थरथराता रहा। 12 फिर उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्थेल, मत डर,
क्योंकि पहिले ही दिन को जब तू ने समझने-बूफने के लिथे मन लगाया और
अपके परमेश्वर के साम्हने अपके को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए,
और मैं तेरे वचनोंके कारण आ गया हूं। 13 फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस
दिन तक मेरा साम्हना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानोंमें से है, वह
मेरी सहाथता के लिथे आया, इसलिथे मैं फारस के राजाओं के पास रहा, 14 और
जब मैं तुझे समझाने आया हूं, कि अन्त के दिनोंमें तेरे लोगोंकी क्या दशा होगी।
क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है, वह कुछ दिनोंके बाद पूरा होगा।। 15 जब वह
पुरूष मुझ से ऐसी बातें कह चुका, तब मैं ने भूमि की ओर मुंह किया और चुपका
रह गया। 16 तब मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे ओंठ छुए, और मैं
मुंह खोलकर बालने लगा। और जो मेरे साम्हने खड़ा या, उस से मैं ने कहा, हे मेरे
प्रभु, दर्शन की बातोंके कारण मुझ को पीड़ा सी उठी, और मुझ में कुछ भी बल
नहीं रहा। 17 सो प्रभु का दास, अपके प्रभु के साय क्योंकर बातें कर सके? क्योंकि
मेरी देह में ने तो कुछ बल रहा, और न कुछ सांस ही रह गई।। 18 तब मनुष्य के
समान किसी ने मुझे छूकर फिर मेरा हियाव बन्धाया। 19 और उस ने कहा, हे
अति प्रिय पुरूष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे।
जब उस ने यह कहा, तब मैं ने हियाव बान्धकर कहा, हे मेरे प्रभु, अब कह,
क्योंकि तू ने मेरा हियाव बन्धाया है। 20 तब उस ने कहा, क्या तू जानता है कि मैं
किस कारण तेरे पास आया हूं? अब मैं फारस के प्रधार से लडने को लौटूंगा; और
जब मैं निकलूंगा, तब यूनाना का प्रधान आएगा। 21 और जो कुछ सच्ची बातोंसे

भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूं; उन प्रधानोंके विरूद्ध,
तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़, मेरे संग स्यिर रहनेवाला और कोई भी नहीं है।।

दानिय्येल 11

1 और दारा नाम मादी राजा के राज्य के पहिले वर्ष में उसको हियाव दिलाने और
बल देने के लिथे मैं खड़ा हो गया ।। 2 और अब मैं तुझ को सच्ची बात बताता हूं।
देख, फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे; और चौया राजा उन सभोंसे
अधिक धनी होगा; और जब वह धन के कारण सामर्यी होगा, तब सब लोगोंको
यूनान के राज्य के विरूद्ध उभारेगा। 3 उसके बाद एक पराक्रमी राजा उठकर
अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा, और अपक्की इच्छा के अनुसार ही काम किया
करेगा। 4 और जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य टूटेगा और चारोंदिशाओं में
बटकर अलग अलग हो जाएगा; और न तो उसके राज्य की शक्ति ज्योंकी
त्योंरहेगी और न उसके वंश को कुछ मिलेगा; क्योंकि उसका राज्य उखड़कर,
उनकी अपेझा और लोगोंको प्राप्त होगा।। 5 तब दक्खिन देश का राजा बल
पकड़ेगा; परन्तु उसका एक हाकिम उस से अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा;
यहां तक कि उसकी प्रभुता बड़ी हो जाएगी। 6 कई वर्षोंके बीतने पर, वे
दोनोंआपस में मिलेंगे, और दक्खिन देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के
पास शान्ति की वाचा बान्धने को आएगी; परन्तु उसका बाहुबल बना न रहेगा,
और न वह राजा और न उसका नाम रहेगा; परन्तु वह स्त्री अपके
पहुंचानेवालोंऔर अपके पिता और अपके सम्भालनेवालोंसमेत अलग कर दी
जाएगी।। 7 फिर उसकी जड़ोंमें से एक डाल उत्पन्न होकर उसके स्यान में बढ़ेगी;

वह सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा, ओश्र् उन से युद्ध करके प्रबल
होगा। 8 तब वह उसके देवताओं की ढली हुई मूरतों, और सोने-चान्दी के मनभाऊ
पात्रोंको छीनकर मिस्र में ले जाएगा; इसके बाद वह कुछ वर्ष तक उत्तर देश के
राजा के विरूद्ध हाथ रोके रहेगा। 9 ृतब वह राजा दक्खिन देश के राजा के देश में
आएगा, परन्तु फिर अपके देश में लौट जाएगा।। 10 उसके पुत्र फगड़ा मचाकर
बहुत से बड़े बड़े दल इकट्टे करेंगे, और उपण्डनेवाली नदी की नाईं आकर देश के
बीच होकर जाएंगे, फिर लौटते हुए उसके गढ़ तक फगड़ा मचाते जाऐंगे। 11 तब
दक्खिन देश का राजा चिढ़ेगा, और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध
करेगा, और वह राजा लड़ने के लिथे बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा, परन्तु वह भीड़
उसके हाथ में कर दी जाएगी। 12 उस भीड़ को जीत करके उसका मन फूल
उठेगा, और वह लाखोंलोगोंको गिराएगा, परन्तु वह प्रबल न होगा। 13 क्योंकि
उत्तर देश का राजा लौटकर पहिली से भी बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा; और कई
दिनोंवरन वर्षोंके बीतने पर वह निश्चय बड़ी सेना और सम्पत्ति लिए हुए
आएगा।। 14 उन दिनोंमें बहुत से लोग दक्खिन देश के राजा के विरूद्ध उठेंगे;
वरन तेरे लोगोंमें से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे, जिस से इस दर्शन की बात
पूरी हो जाएगी; परन्तु वे ठोकर खाकर गिरेंगे। 15 तब उत्तर देश का राजा आकर
किला बान्धेगा और दृढ़ नगर ले लेगा। और दक्खिन देश के न तो प्रधान खड़े
रहेंगे और न बड़े वीर; क्योंकि किसी के खड़े रहने का बल न रहेगा। 16 तब जो भी
उनके विरूद्ध आएगा, वह अपक्की इच्छा पूरी करेगा, और वह हाथ में स्त्यानाश
लिए हुए शिरोमणि देश में भी खड़ा होगा और उसका साम्हना करनेवाला कोई न
रहेगा। 17 तब वह अपके राज्य के पूर्ण बल समेत, कई सीधे लोगोंको संग लिए

हुए आने लगेगा, और अपक्की इच्छा के अनुसार काम किया करेगा। और वह
उसको एक स्त्री इसलिथे देगा कि उसका राज्य बिगाडा जाए; परन्तु वह स्यिर न
रहेगी, न उस राजा की होगी। 18 तब वह द्वीपोंकी ओर मुंह करके बहुतोंको ले
लेगा; परन्तु एक सेनापति उसके अहंकार को मिटाएगा; वरन उसके अहंकार के
अनुकूल उसे बदला देता। 19 तब वह अपके देश के गढ़ोंकी ओर मुंह फेरेगा, और
वह ठोकर खाकर गिरेगा, और कहीं उसका पता न रहेगा। 20 तब उसके स्यान में
कोई ऐसा उठेगा, जो शिरोमणि राज्य में अन्धेर करनेवाले को घुमाएगा; परन्तु
योड़े दिन बीतने पर वह क्रोध वा युद्ध किए बिना ही नाश हो जाएगा। 21 उसके
स्यान में एक तुच्छ मनुष्य उठेगा, जिसकी राजप्रतिष्ठा पहिले तो न होगी, तौभी
वह चैन के समय आकर चिकनी-चुपक्की बातोंके द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा। 22
तब उसकी भुजारूपी बाढ़ से लोग, वरन वाचा का प्रधान भी उसके साम्हने से
बहकर नाश होंगे। 23 क्योंकि वह उसके संग वाचा बान्धने पर भी छल करेगा,
और योड़े ही लोगोंको संग लिए हुए चढ़कर प्रबल होगा। 24 चैन के समय वह
प्रान्त के उत्तम से उत्तम स्यानोंपर चढ़ाई करेगा; और जो काम न उसके पुरखा
और न उसके पुरखाओं के पुरखा करते थे, उसे वह करेगा; और लूटी हुई
धन-सम्पत्ति उन में बहुत बांटा करेगा। वह कुछ काल तक दृढ़ नगरोंके लेने की
कल्पना करता रहेगा। 25 तब वह दक्खिन देश के राजा के विरूद्ध बड़ी सेना लिए
हुए अपके बल और हियाव को बढ़ाएगा, और दक्खिन देश का राजा अत्यन्त बड़ी
सामर्यी सेना लिए हुए युद्ध तो करेगा, परन्तु ठहर न सकेगा, क्योंकि लोग उसके
विरूद्ध कल्पना करेंगे। 26 उसके भोजन के खानेवाले भी उसको हरवाएंगे; और
यद्यपि उसकी सेना बाढ़ की नाईं चढ़ेंगी, तौभी उसके बहुत से लोग मर मिटेंगे। 27

तब उन दोनोंराजाओं के मन बुराई करने में लगेंगे, यहां तक कि वे एक ही मेज
पर बैठे हुए आपस में फूठ बोलेंगे, परन्तु इस से कुछ बन न पकेगा; क्योंकि इन
सब बातोंका अन्त नियत ही समय में होनेवाला है। 28 तब उत्तर देश का राजा
बड़ी लूट लिए हुए अपके देश को लौटेगा, और उसका मन पवित्र वाचा के विरूद्ध
उभरेगा, और वह अपक्की इच्छ पूरी करके अपके देश को लौट जाएगा।। 29
नियत समय पर वह फिर दक्खिन देश की ओर जाएगा, परन्तु उस पिछली बार
के समान इस बार उसका वश न चलेगा। 30 क्योंकि कित्तियोंके जहाज उसके
विरूद्ध आएंगे, और वह उदास होकर लौटेगा, और पवित्र वाचा पर चिढ़कर
अपक्की इच्छा पूरी करेगा। वह लौटकर पवित्र वाचा के तोड़नेवालोंकी सुधि
लेगा। 31 तब उसके सहाथक खड़े होकर, दृढ़ पवित्र स्यान को अपवित्र करेंगे,
और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे। और वे उस घृणित वस्तु को खड़ा करेंगे जो
उजाड़ करा देती है। 32 और जो दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे, उनको वह
चिकनी-चुपक्की बातें कह कहकर भक्तिहीन कर देगा; परन्तु जो लोग अपके
परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बान्धकर बड़े काम करेंगे। 33 और लोगोंको
सिखानेवाले बुद्धिमान जन बहुतोंको समझाएंगे, तौभी वे बहुत दिन तक तलवार
से छिदकर और आग में जलकर, और बंधुए होकर और लुटकर, बड़े दु:ख में पके
रहेंगे। 34 जब वे दु:ख में पकेंगे तब योड़ा बहुत सम्भलेंगे, परन्तु बहुत से लोग
चिकनी-चुपक्की बातें कह कहकर उन से मिल जाएंगे; 35 और सिखानेवालोंमें से
कितनें गिरेंगे, और इसलिथे गिरने पाएंगे कि जांचे जाएं, और निर्मल और उजले
किए जाएं। यह दशा अन्त के समय तक बनी रहेगी, क्योंकि इन सब बातोंका
अन्त नियत समय में होनेवाला है।। 36 तब वह राजा अपक्की इच्छा के अनुसार

काम करेगा, और अपके आप को सारे देवताओं से ऊंचा और बड़ा ठहराएगा; वरन
सब देवताओं के परमेश्वर के विरूद्ध भी अनोखी बातें कहेगा। 37 और जब तक
परमेश्वर का क्रोध न हो जाए तब तक उस राजा का कार्य सफल होता रहेगा;
क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठाना हुआ है वह अवश्य ही पूरा होनेवाला है।38
वह अपके राजपद पर स्यिर रहकर दृढ़ गढ़ोंही के देवता का सम्मान करेगा, एक
ऐसे देवता का जिसे उसके पुरखा भी न जानते थे, वह सोना, चान्दी, मणि और
मनभावनी वस्तुएं चढ़ाकर उसका सम्मान करेगा। 39 उस बिराने देवता के सहारे
से वह अति दृढ़ गढ़ोंसे लड़ेगा, और जो कोई उसको माने उसे वह बड़ी प्रतिष्ठा
देगा। ऐसे लोगोंको वह बहुतोंके ऊपर प्रभुता देगा, और अपके लाभ के लिए अपके
देश की भूमि को बांट देगा।। 40 अन्त के समय दक्खिन देश का राजा उसको
सींग मारने लगेगा; परन्तु उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर की नाईं बहुत से
रय-सवार और जहाज लेकर चढ़ाई करेगा; इस रीति से वह बहुत से देशोंमें फैल
जाएगा, और उन में से निकल जाएगा। 41 वह शिरोमणि देश में भी आएगा। और
बहुत से देश उजड़ जाएंगे, परन्तु ऐदोमी, मोआबी और मुख्य मुख्य अम्मोनी
आदि जातियोंके देश उसके हाथ से बच जाएंगे। 42 वह कई देशोंपर हाथ बढ़ाएगा
और मिस्र देश भी न बचेगा। 43 वह मिस्र के सोने चान्दी के खजानोंऔर सब
मनभावनी वस्तुओं का स्वामी हो जाएगा; और लूबी और कूशी लोग भी उसके
पीछे हो लेंगे। 44 उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर
घबराएगा, और बड़े क्रोध में आकर बहुतोंको सत्यानाश करने के लिथे निकलेगा।
45 और वह दोनोंसमुद्रोंके बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय
तम्बू खड़ा कराएगा; इतना करने पर भी उसका अन्त आ जाएगा, और कोई

उसका सहाथक न रहेगा।।

दानिय्येल 12

1 उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-भाइयोंका पझ करने को
खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के
उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय
तेरे लोगोंमें से जितनोंके नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच
निकलेंगे। 2 और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे,
कितने तो सदा के जीवन के लिथे, और कितने अपक्की नामधराई और सदा तक
अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिथे। 3 तब सिखानेवालोंकी चमक आकाशमण्डल
की सी होगी, और जो बहुतोंको धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।
4 परन्तु हे दानिय्थेल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनोंको अन्त समय
तक के लिथे बन्द रख। और बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ-ढांढ करेंगे, और इस
से ज्ञान बढ़ भी जाएगा।। 5 यह सब सुन, मुझ दानिय्थेल ने दृष्टि करके क्या देखा
कि और दो पुरूष खड़ें हैं, एक तो नदी के इस तीर पर, और दूसरा नदी के उस तीर
पर है। 6 यह सब सुन, मुझ दानिय्थेल ने दृष्टि करके क्या देशा कि और दो पुरूष
खड़ें हैं, एक तो नदी के इस तीर पर, और दूसरा नदी के उस तीर पर है। 7 तब जो
पुरूष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर या, उस से उन पुरूषोंमें से एक
ने पूछा, इन आश्चर्यकर्मोंका अन्त कब तक होगा? 8 तब जो पुरूष सन का वस्त्र
पहिने हुए नदी के जल के ऊपर या, उस ने मेरे सुनते दहिना और बांया अपके
दोनोंहाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपय खाकर कहा,

यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी; और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते टूटते
समाप्त हो जाएगी, तब थे बातें पूरी होंगी। 9 उस ने कहा, हे दानिय्थेल चला जा;
क्योंकि थे बातें अन्तसमय के लिथे बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है। 10 बहुत
लोग तो अपके अपके को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएंगे; परन्तु
दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टोंमें से कोई थे बातें न समझेगा; परन्तु जो
बुद्धिमान है वे ही समझेंगे। 11 और जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और
वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्यापित की जाएगी, तब से बारह सौ
नब्बे दिन बीतेंगे। 12 क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन
के अन्त तक भी पहुंचे। 13 अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्रम
करता रहेगा; और उन दिनोंके अन्त में तू अपके निज भाग पर खड़ा होगा।।

होशे 1

1 यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के दिनोंमें और
इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनोंमें, यहोवा का वचन बेरी के पुत्र
होशे के पास पहुंचा।। 2 जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले पहिल बातें कीं, तब
उस ने होशे से यह कहा, जाकर एक वेश्या को अपक्की पत्नी बना ले, और उसके
कुकर्म के लड़केबालोंको अपके लड़केबाले कर ले, क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे
चलना छोड़कर वेश्या का सा बहुत काम करता है। 3 सो उस ने जाकर दिबलैम की
बेटी गोमेर को अपक्की पत्नी कर लिया, और वह उस से गर्भवती हुई और उसके
पुत्र उत्पन्न हुआ। 4 तब यहोवा ने उस से कहा, उसका नाम यिज्रैल रख; क्योंकि
योड़े ही काल में मैं थेहू के घराने को यिज्रैल की हत्या का दण्ड दूंगा, और मैं

इस्राएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूंगा। 5 और उस समय मैं यिज्रैल की
तराई में इस्राएल के धनुष को तोड़ डालूंगा।। 6 और वह स्त्री फिर गर्भवती हुई और
उसके एक बेटी उत्पन्न हुई। तब यहोवा ने होशे से कहा, उसका नाम लोरूहामा
रख; क्योंकि मैं इस्राएल के घराने में फिर कभी दया करके उनका अपराध किसी
प्रकार से झमा न करूंगा। 7 परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूंगा, और उनका
उद्धार करूंगा; उनका उद्धार मैं धनुष वा तलवार वा युद्ध वा घोड़ोंवा सवारोंके द्वारा
नहीं, परन्तु उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूंगा।। 8 जब उस स्त्री ने लोरूहामा
का दुध छुड़ाया, तब वह गर्भवती हुई और उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 9 तब
यहोवा ने कहा, इसका नाम लोअम्मी रख; क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो,
और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूंगा।। 10 तौभी इस्राएलियोंकी गिनती समुद्र की
बालू की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्यान में
उन से यह कहा जाता या कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी स्यान में वे जीवित
परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। 11 तब यहूदी और इस्राएली दोनोंइकट्ठे हो अपना
एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएंगे; क्योंकि यिज्रेल का दिन प्रसिद्ध होगा।

होशे 2

1 इसलिथे तुम लोग अपके भाइयोंसे अम्मी और अपक्की बहिनोंसे रूहामा
कहो।। 2 अपक्की माता से विवाद करो, विवाद क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं और न
मैं उसका पति हूं। वह अपके मुंह पर से अपके छिनालपन को और छातियोंके
बीच से व्यभिचारोंको अलग करे; 3 नहीं तो मैं उसके वस्त्र उतारकर उसको जन्म
के दिन के समान नंगी कर दूंगा, और उसको मरूस्यल के समान और मरूभूमि

सरीखी बनाऊंगा, और उसे प्यास से मार डालूंगा। 4 उसके लड़केबालोंपर भी मैं
कुछ दया न करूंगा, क्योंकि वे कुकर्म के लड़के हैं। 5 उनकी माता ने छिनाला
किया है; जिसके गर्भ में वे पके, उस ने लज्जा के योग्य काम किया है। उस ने
कहा, मेरे यार जो मुझे रोटी-पानी, ऊन, सन, तेल और मद्य देते हैं, मैं उन्हीं के
पीछे चलूंगी। 6 इसलिथे देखो, मैं उसके मार्ग को कांटोंसे घेरूंगा, और ऐसा बाड़ा
खड़ा करूंगा कि वह राह न पा सकेगी। 7 वह अपके यारोंके पीछे चलने से भी न
पाएगी; और उन्हें ढूंढ़ने से भी न पाएगी। तब वह कहेगी, मैं अपके पहिले पति के
पास फिर जाऊंगी, क्योंकि मेरी पहिली दशा इस समय की दशा से अच्छी यी। 8
वह यह नहीं जानती यी, कि अन्न, नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता या,
और उसके लिथे वह चान्दी सोना जिसको वे बाल देवता के काम में ले आते हैं, मैं
ही बढ़ाता या। 9 इस कारण मैं अन्न की ऋतु में अपके अन्न को, और नथे
दाखमधु के होने के समय में अपके नथे दाखमधु को हर लूंगा; और अपना ऊन
और सन भी जिन से वह अपना तन ढांपक्की है, मैं छीन लूंगा। 10 अब मैं उसके
यारोंके साम्हने उसके तन को उघाडूंगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुड़ा न सकेगा।
11 और मैं उसके पर्व, नथे चांद और विश्रमदिन आदि सब नियत समयोंके
उत्सवोंका अन्त कर दूंगा। 12 और मैं उसकी दाखलताओं और अंजीर के
वृझोंको, जिनके विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे
यारोंने मुझे दी है, उन्हें ऐसा उजाडूंगा कि वे जंगल से हो जाएंगे, और वन-पशु
उन्हें चर डालेंगे। 13 और वे दिन जिन में वह बाल देवताओं के लिथे धूप जलाती,
और नत्य और हार पहिने अपके यारोंके पीछे जाती और मुझको भूले रहती यी,
उन दिनोंका दण्ड मैं उसे दूंगा, यहोवा की यही वाणी है।। 14 इसलिथे देखो, मैं

उसे मोहित करके जंगल में ले जाऊंगा, और वहंा उस से शान्ति की बातें कहूंगा।
15 और वहीं मैं उसको दाख की बारियां दूंगा, और आकोर की तराई को आशा का
द्वार कर दूंगा और वहां वह मुझ से ऐसी बातें कहेगी जैसी अपक्की जवानी के
दिनोंमें अर्यात् मिस्र देश से चले आने के समय कहती यी। 16 और यहोवा की यह
वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी कहेगी और फिर बाली न कहेगी। 17 क्योंकि
भविष्य में मैं उसे बाल देवताओं के नाम न लेने दूंग; और न उनके नाम फिर
स्मरण में रहेंगे। 18 और उस समय मैं उनके लिथे वन-पशुओं और आकाश के
पझियोंऔर भूमि पर के रेंगनेवाले जन्तुओं के साय वाचा बान्धूंगा, और धनुष
और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर कर दूंगा; और ऐसा करूंगा कि वे
लोग निडर सोया करेंगे। 19 और मैं सदा के लिथे तुझे अपक्की स्त्री करने की
प्रतिज्ञा करूंगा, और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करूणा, और दया के साय
करूंगा। 20 और यह सच्चाई के साय की जाएगी, और तू यहोवा को जान लेगी।।
21 और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं आकाश की सुनकर उसको उत्तर
दूंगा, और वह पृय्वी की सुनकर उसे उत्तर देगा; 22 और पृय्वी अन्न, नथे
दाखमधु, और ताजे तेल की सुनकर उनको उत्तर देगी, और वे यिज्रेल को उत्तर
देंगे। 23 और मैं अपके लिथे उसे देश में बोऊंगा, और लोरूहामा पर दया करूंगा,
और लोअम्मी से कहूंगा, तू मेरी प्रजा है, और वह कहेगा, "हे मेरे परमेश्वर"।।

होशे 3

1 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, अब जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर, जो
व्यभिचारिणी होने पर भी अपके प्रिय की प्यारी हो; क्योंकि उसी भांति यद्यपि

इस्राएली पराए देवताओं की ओर फिरे, और दाख की टिकियोंसे प्रीति रखते हैं,
तौभी यहोवा उन से प्रीति रखता है। 2 तब मैं ने एक स्त्री को चान्दी के पन्द्रह
टुकड़े और डेढ़ होमेर जव देकर मोल लिया। 3 और मैं ने उस से कहा, तू बहुत
दिन तक मेरे लिथे बैठी रहना; और न तो छिनाला करना, और न किसी पुरूष की
स्त्री हो जाना; और मैं भी तेरे लिथे ऐसा ही रहूंगा। 4 क्योंकि इस्राएली बहुत दिन
तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद वा
गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। 5 उसके बाद वे अपके परमेश्वर यहोवा और अपके
राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनोंमें यहोवा के पास, और उसी
उत्तम वस्तुओं के लिथे थरथराते हुए आएंगे।।

होशे 4

1 हे इस्राएलियों, यहोवा का वचन सुनो; इस देश के निवासियोंके साय यहोवा का
मुकद्दमा है। इस दंश में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करूणा और न कुछ
परमेश्वर का ज्ञान ही है। 2 यहां शाप देने, फूठ बोलने, वध करने, चुराने, और
व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता; वे व्यवस्या की सीमा को लांघकर कुकर्म
करते हैं और खून ही खून होता रहता है। 3 इस कारण यह देश विलाप करेगा,
और मैदान के जीव-जन्तुओं, और आकाश के पझियोंसमेत उसके सब निवासी
कुम्हला जाएंगे; और समुद्र की मछलियां भी नाश हो जाएंगी।। 4 देखो, कोई
वाद-विवाद न करे, न कोई उलहना दे, क्योंकि तेरे लोग तो याजकोंसे वाद-विवाद
करनेवालोंके समान हैं। 5 तू दिनदुपहरी ठोकर खाएगा, और रात को भविष्यद्वक्ता
भी तेरे साय ठोकर खाएगा; और मैं तेरी माता को नाश करूंगा। 6 मेरे ज्ञान के न

होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिथे मैं तुझे
अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा। और इसलिथे कि तू ने अपके परमेश्वर
की व्यवस्या को तज दिया है, मैं भी तेरे लड़केबालोंको छोड़ दूंगा। 7 जैसे वे बढ़ते
गए, वैसे ही वे मेरे विरूद्ध पाप करते गए; मैं उनके विभव के बदले उनका अनादर
करूंगा। 8 वे मेरी प्रजा के पापबलियोंको खाते हैं, और प्रजा के पापी होने की
लालसा करते हैं। 9 इसलिथे जो प्रजा की दशा होगी, वही याजक की भी होगी; मैं
उनके चालचलन का दण्ड दूंगा, और उनके कामोंके अनुकूल उन्हें बदला दूंगा। 10
वे खाएंगे तो सही, परन्तु तृप्त न होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु न बढ़ेंगे;
क्योंकि उन्होंने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है।। 11 वेश्यागमन और
दाखमधु और ताजा दाखमधु, थे तीनोंबुद्धि को भ्रष्ट करते हैं। 12 मेरी प्रजा के लोग
काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि
छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपके परमेश्वर की
अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं। 13 बांज, चिनार और छोटे बांज वृझोंकी
छाया अच्छी होती है, इसलिथे वे उनके नीचे और पहाड़ोंकी चोटियोंपर यज्ञ करते,
और टीलोंपर धूप जलाते हैं।। इस कारण तुम्हारी बेटियां छिनाल और तुम्हारी
बहुएं व्यभिचारिणी हो गई हैं। 14 जब तुम्हारी बेटियां छिनाला और तुम्हारी
बहुएं व्यभिचार करें, तब मैं उनको दण्ड न दूंगा; क्योंकि मनुष्य आप ही वेश्याओं
के साय एकान्त में जाते, और देवदासियोंके सायी होकर यज्ञ करते हैं; और जो
लोग समझ नहीं रखते, वे नाश हो जाएंगे।। 15 हे इस्राएल, यद्यपि तू छिनाला
करता है, तौभी यहूदा दोषी न बने। गिलगाल को जाओ; और न बेतावेन को चढ़
जाओ; और यहोवा के जीवन की सौगन्ध कहकर शपय न खाओ। 16 क्योंकि

इस्राएल ने हठीली कलोर की नाईं हठ किया है, क्या अब यहोवा उन्हें भेड़ के बच्चे
की नाईं लम्बे चौड़े मैदान में चराएगा? 17 एप्रैम मूरतोंका संगी हो गया है;
इसलिथे उसको रहने दे। 18 वे जब दाखमधु पी चुकते हैं तब वेश्यागमन करने में
लग जाते हैं; उनके प्रधान लोग निरादर होने से अधिक प्रीति रखते हैं। 19 आंधी
उनको अपके पंखोंमें बान्धकर उड़ा ले जाएगी, और उनके बलिदानोंके कारण
उनकी आशा टूट जाएगी।।

होशे 5

1 हे याजकों, यह बात सुनो! हे इस्राएल के घराने, ध्यान देकर सुनो! हे राजा के
घराने, तुम भी कान लगाओ! क्योंकि तुम पर न्याय किया जाएगा; क्योंकि तुम
मिसपा में फन्दा, और ताबोर पर लगाया हुआ जाल बन गए हो। 2 उन बिगड़े
हुओं ने घोर हत्या की है, इसलिथे मैं उन सभोंको ताड़ना दूंगा।। 3 मैं एप्रैम का
भेद जानता हूं, और इस्राएल की दशा मुझ से छिपी नहीं है; हे एप्रैम, तू ने छिनाला
किया, और इस्राएल अशुद्ध हुआ है। 4 उनके काम उन्हें अपके परमेश्वर की ओर
फिरने नहीं देते, क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा उन में रहती है; और वे
यहोवा को नहीं जानते हैं।। 5 इस्राएल का गर्व उसी के विरूद्ध साझी देता है, और
इस्राएल और एप्रैम अपके अधर्म के कारण ठोकर खाएंगे, और यहूदा भी उनके
संग ठोकर खाएगा। 6 वे अपक्की भेड़-बकरियां और गाय-बैल लेकर यहोवा को
ढूंढने चलेंगे, परन्तु वह उनको न मिलेगा; क्योंकि वह उन से दूर हो गया है। 7 वे
व्यभिचार के लड़के जने हैं; इस से उन्होंने यहोवा का विश्वासघात किया है। इस
कारण अब चांद उनका और उनके भागोंके नाश का कारण होगा।। 8 गिबा में

नरसिंगा, और रामा में तुरहीं फूंको। बेतावेन में ललकार कर कहो; हे बिन्यामीन,
अपके पीछे देख! 9 न्याय के दिन में एप्रैम उजाड़ हो जाएगा; जिस बात को होना
निश्चय है, मैं ने उसी का सन्देश इस्राएल के सब गोत्रोंको दिया है। 10 यहूदा के
हाकिम उनके समान हुए हैं जो सिवाना बढ़ा लेते हैं; मैं उन पर अपक्की
जलजलाहट जल की नाईं उण्डेलूंगा। 11 एप्रैम पर अन्धेर किया गया है, वह
मुकद्दमा हार गया है; क्योंकि वह जी लगाकर उस आज्ञा पर चला। 12 इसलिथे मैं
एप्रैम के लिथे कीड़े के समान और यहूदा के घराने के लिथे सड़ाहट के समान
हूंगा।। 13 जब एप्रैम ने अपना रोग, और यहूदा ने अपना घाव देखा, तब एप्रैम
अश्शूर के पास गया, और यारेब राजा को कहला भेजा। परन्तु न वह तुम्हें चंगा
कर सकता और न तुम्हार घाव अच्छा कर सकता है। 14 क्योंकि मैं एप्रैम के
लिथे सिंह, और यहूदा के घराने के लिथे जवान सिंह बनूंगा। मैं आप ही उन्हें
फाड़कर ले जाऊंगा; जब मैं उठा ले जाऊंगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा।
15 जब तक वे अपके को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोजी न होंगे तब तक मैं
अपके स्यान को लौटूंगा, और जब वे संकट में पकेंगे, तब जी लगाकर मुझे ढूंढ़ने
लगेंगे।।

होशे 6

1 चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही चंगा भी करेगा;
उसी ने मारा, और वही हमारे घावोंपर पट्टी बान्धेगा। 2 दो दिन के बाद वह हम
को जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तब हम उसके
सम्मुख जीवित रहेंगे। 3 आओ, हम ज्ञान ढूंढ़े, वरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने

के लिथे यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चिन्त है; वह
वर्षा की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस
से भूमि सिंचक्की है।। 4 हे एप्रैम, मैं तुझ से क्या करूं? हे यहूदा, मैं तुझ से क्या
करूं? तुम्हार स्नेह तो भोर के मेघ के समान, और सवेरे उड़ जानेवाली ओस के
समान है। 5 इस कारण मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा मानो उन पर कुल्हाड़ी
चलाकर उन्हें काट डाला, और अपके वचनोंसे उनको घात किया, और मेरा न्याय
प्रकाशा के समान चमकता है। 6 क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्यिर प्रेम ही से
प्रसन्न होता हूं, और होमबलियोंसे अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का
ज्ञान रखें।। 7 परन्तु उन लोगोंने आदम की नाई वाचा को तोड़ दिया; उन्होंने वहां
मुझ से विश्वासघात किया है। 8 गिलाद नाम गढ़ी तो अनर्यकारियोंसे भरी है, वह
खून से भरी हुई है। 9 जैसे डाकुओं के दल किसी की घात में बैठते हैं, वैसे ही
याजकोंका दल शकेम के मार्ग में वध करता है, वरन उन्होंने महापाप भी किया
है। 10 इस्राएल के घराने में मैं ने रोएं खड़े होने का कारण देखा है; उस में एप्रैम का
छिनाला और इस्राएल की अशुद्धता पाई जाती है।। 11 और हे यहूदा, जब मैं
अपक्की प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, उस समय के लिथे तेरे निमित्त भी
बदला ठहराया हुआ है।।

होशे 7

1 जब मैं इस्राएल को चंगा करता हूं तब एप्रैम का अधर्म और शोमरोन की
बुराइयां प्रगट हो जाती हैं; वे छल से काम करते हैं, चोर भीतर घुसता, और
डाकुओं का दल बाहर छीन लेता है। 2 तौभी वे नहीं सोचते कि यहोवा हमारी सारी

बुराई को स्मरण रखता है। इसलिथे अब वे अपके कामोंके जाल में फसेंगे,
क्योंकि उनके कार्य मेरी दृष्टि में बने हैं। 3 वे राजा को बुराई करने से, और
हाकिमोंको फूठ बोलने से आनन्दित करते हैं। 4 वे सब के सब व्यभिचारी हैं; वे
उस तन्दूर के समान हैं जिसको पकानेवाला गर्म करता है, पर जब तक आटा
गूंधा नहीं जाता और खमीर से फूल नहीं चुकता, तब तक वह आग को नहीं
उसकाता। 5 हमारे राजा के जन्म दिन में हाकिम दाखमधु पीकर चूर हुए; उस ने
ठट्ठा करनेवालोंसे अपना हाथ मिलाया। 6 जब तक वे घात लगाए रहते हैं, तब
तक वे अपना मन तन्दूर की नाई तैयार किए रहते हैं; उनका पकानेवाला रात भर
सोता रहता है; वह भोर को तन्दूर की धधकती लौ के समान लाल हो जाता है। 7
वे सब के सब तन्दूर की नाई धधकते, और अपके न्यायियोंको भस्म करते हैं।
उनके सब राजा मारे गए हैं; और उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं देता है।। 8 एप्रैम
देश देश के लोगोंसे मिलाजुला रहता है; एप्रैम ऐसी चपाती ठहरा है जो उलटी न
गई हो। 9 परदेशियोंने उसका बल तोड़ डाला, परन्तु वह इसे नहीं जानता; उसके
सिर में कहीं कहीं पके बाल हैं, परन्तु वह इसे भी नहीं जानता। 10 इस्राएल का
गर्व उसी के विरूद्व साझी देता है; इन सब बातोंके रहते हुए भी वे अपके परमेश्वर
यहोवा की ओर नहीं फिरे, और न उसको ढूंढ़ा है।। 11 एप्रैम एक भोली पण्डुकी के
समान हो गया है जिस के कुछ बुद्धि नहीं; वे मिस्रियोंकी दोहाई देते, और अश्शूर
को चले जाते हैं। 12 जब वे जाएं, तब उनके ऊपर मैं अपना जाल फैलाऊंगा; मैं
उन्हें ऐसा खींच लूंगा जैसे आकाश के पक्की खींचे जाते हैं; मैं उनको ऐसी ताड़ना
दूंगा, जैसी उनकी मण्डली सुन चुकी है। 13 उन पर हाथ, क्योंकि वे मेरे पास से
भटक गए! उनका सत्यानाश होए, क्योंकि उन्होंने मुझ से बलवा किया है! मैं तो

उन्हें छुड़ाता रहा, परन्तु वे मुझ से फूठ बोलते आए हैं।। 14 वे मन से मेरी दोहाई
नहीं देते, परन्तु अपके बिछौने पर पके हुए हाथ, हाथ, करते हैं; वे अन्न और नथे
दाखमधु पाने के लिथे भीड़ लगाते, और मुझ से बलवा करते हैं। 15 मैं उनको
शिझा देता रहा और उनकी भुजाओं को बलवन्त करता आया हूं, तौभी वे मेरे
विरूद्ध बुरी कल्पना करते हैं। 16 वे फिरते तो हैं, परन्तु परमप्रधान की ओर नहीं;
वे धोखा देनेवाले धनुष के समान हैं; इसलिथे उनके हाकिम अपक्की क्रोधभरी
बातोंके कारण तलवार से मारे जाएंगे। मिस्र देश में उनके ठट्ठोंमें उड़ाए जाने का
यही कारण होगा।।

होशे 8

1 अपके मुंह में नरसिंगा लगा। वह उकाब की नाईं यहोवा के घर पर फपकेगा,
क्योंकि मेरे घर के लोगोंने मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्या का उल्लंघन किया
है। 2 वे मुझ से पुकारकर कहेंगे, हे हमारे परमेश्वर, हम इस्राएली लोग तुझे जानते
हैं। 3 परन्तु इस्राएल ने भलाई को मन से उतार दिया है; शत्रु उसके पीछे पकेगा।।
4 वे राजाओं को ठहराते रहे, परन्तु मेरी इच्छा से नहीं। वे हाकिमोंको भी ठहराते
रहे, परन्तु मेरे अनजाने में। उन्होंने अपना सोना-चान्दी लेकर मूरतें बना लीं
जिस से वे ही नाश हो जाएं। 5 हे शोमरोन, उस ने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया
है, मेरा क्रोध उन पर भड़का है। वे निर्दोष होने में कब तक विलम्ब करेंगे? 6 यह
इस्राएल से हुआ है।। एक कारीगर ने उसे बनाया; वह परमेश्वर नहीं है। इस कारण
शोमरोन का वह बछड़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।। 7 वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर
लवेंगे। उनके लिथे कुछ खेत रहेगा नहीं न उनकी उपज से कुछ आटा होगा; और

यदि हो भी तो परदेशी उसको खा डालेंगे। 8 इस्राएल निगला गया; अब वे
अन्यजातियोंमें ऐसे निकम्मे ठहरे जैसे तुच्छ बरतन ठहरता है। 9 क्योंकि वे
अश्शूर को ऐसे चले गए, जैसा जंगली गदहा फुण्ड से बिछुड़ के रहता है; एप्रैम ने
यारोंको मजदूरी पर रखा है। 10 यद्यपि वे अन्यजातियोंमें से मजदूर बनाकर रखें,
तौभी मैं उनको इकट्ठा करूंगा। और वे हाकिमोंऔर राजा के बोफ के कारण
घटने लेगेंगे। 11 एप्रैम ने पाप करने को बहुत सी वेदियां बनाई हैं, वे ही वेदियां
उसके पापी ठहरने का कारण भी ठहरीं। 12 मैं तो उनके लिथे अपक्की व्यवस्या
की लाखोंबातें लिखता आया हूं, परन्तु वे उन्हें पराया समझते हैं। 13 वे मेरे लिथे
बलिदान तो करते हैं, और पशु बलि भी करते हैं, परन्तु उसका फल मांस ही है; वे
आप ही उसे खाते हैं; परन्तु यहोवा उन से प्रसन्न नहीं होता। अब वह उनके
अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा; वे मिस्र में लौट जाएंगे। 14
क्योंकि इस्राएल ने अपके कर्त्ता को बिसरा कर महल बनाए, और यहूदा ने बहुत से
गढ़वाले नगरोंको बसाया है; परन्तु मैं उनके नगरोंमें आग लगाऊंगा, और उस से
उनके गढ़ भस्म हो जाएंगे।

होशे 9

1 हे इस्राएल, तू देश देश के लोगोंकी नाईं आनन्द में मगन मत हो! क्योंकि तू
अपके परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी। तू ने अन्न के हर एक खलिहान पर
छिनाले की कमाई आनन्द से ली है। 2 वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त होंगे,
और न कुण्ड के दाखमधु से; और न नथे दाखमधु के धटने से वे धोखा खाएंगे। 3
वे यहोवा के देश में रहने न पाएंगे; परन्तु एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और वे

अश्शूर में अशुद्ध वस्तुएं खाएंगे।। 4 वे यहोवा के लिथे दाखमधु का अर्ध न देंगे,
और न उनके बलिदान उसको भाएंगे। उनकी रोटी शोक करनेवालोंका सा भोजन
ठहरेगी; जितने उसे खाएंगे सब अशुद्ध हो जाएंगे; क्योंकि उनकी भोजनवसतु
उनकी भूख बुफाने ही के लिथे होगी; वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी।। 5
नियत समय के पर्व और यहोवा के उत्सव के दिन तुम क्या करोगे? 6 देखो, वे
सत्यानाश होने के डर के मारे चले गए; परन्तु वहां मर जाएंगे और मिस्री उनकी
लोथें इकट्‍ठी करेंगे; और मोप के निवासी उनको मिट्‍टी देंगे। उनकी मनभावनी
चान्दी की वस्तुएं बिच्छु पेड़ोंके बीच में पकेंगी, और उनके तम्बुओं में फड़बेरी
उगेगी। 7 दण्ड के दिन आए हैं; बदला लेने के दिन आए हैं; और इस्राएल यह जान
लेगा। उनके बहुत से अधर्म और बड़े द्वेष के कारण भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख, और
जिस पुरूष पर आत्मा उतरता है, वह बावला ठहरेगा।। 8 एप्रैम मेरे परमेश्वर की
ओर से पहरूआ है; भविष्यद्वक्ता सब मार्गोंमें बहेलिथे का फन्दा है, और वह अपके
परमेश्वर के घर में बैरी हुआ है। 9 वे गिबा के दिनोंकी भांति अत्यन्त बिगड़े हैं; सो
वह उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा।। 10 मैं ने इस्राएल को
ऐसा पाया जैसे कोई जंगल में दाख पाए; और तुमहारे पुरखाओं पर ऐसे दृष्टि की
जैसे अंजीर के पहिले फलोंपर दृष्टि की जाती है। परन्तु उन्होंने पोर के बाल के
पास जाकर अपके तई लज्जा का कारण होने के लिथे अर्पण कर दिया, और जिस
पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान घिनौने हो गए। 11 एप्रैम का विभव
पक्की की नाईं उड़ जाएगा; न तो किसी का जन्म होगा, न किसी को गर्भ रहेगा,
और न कोई स्त्री गर्भवती होगी! 12 चाहे वे अपके लड़केबालोंका पालनपोषण कर
बड़े भी करें, तौभी मैं उन्हें यहां तक निर्वंश करूंगा कि कोई भी न बचेगा। जब मैं

उन से दूर हो जाऊंगा, तब उन पर हाथ! 13 जैसा मैं ने सोर को देखा, वैसा एप्रैम
को भी मनभाऊ स्यान में बसा हुआ देखा; तौभी उसे अपके लड़केबालोंको घातक
के साम्हने ले जाना पकेगा। 14 हे यहोवा, उनको दण्ड दे! तू क्या देगा? यह, कि
उनकी स्त्रियोंके गर्भ गिर जाएं, और स्यान सूखे रहें।। 15 उनकी सारी बुराई
गिल्गाल में है; वहीं मैं ने उन से घृणा की। उनके बुरे कामोंके कारण मैं उनको
अपके घर से निकाल दूंगा। और उन से फिर प्रीति न रखूंगा, क्योंकि उनके सब
हाकिम बलवा करनेवाले हैं। 16 एप्रैम मारा हुआ है, उनकी जड़ सूख गई, उन में
फल न लगेगा। और चाहे उनकी स्त्रियां बच्चे भी न जनें तौभी मैं उनके जन्मे हुए
दुलारोंको मार डालूंगा।। 17 मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा ठहराएगा, क्योंकि
उन्होंने उसकी नहीं सुनी। वे अन्यजातियोंके बीच मारे मारे फिरेंगे।।

होशे 10

1 इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सी है, जिस में बहुत से फल भी लगे,
परन्तु ज्योंज्योंउसके फल बढ़े, त्योंत्योंउस ने अधिक वेदियां बनाईं जैसे जैसे
उसकी भूमि सुधरी, वैसे ही वे सुन्दर लाटें बनाते गथे। 2 उनका मन बटा हुआ है;
अब वे दोषी ठहरेंगे। वह उनकी वेदियोंको तोड़ डालेगा, और उनकी लाटोंको टुकड़े
टुकड़े करेगा। 3 अब वे कहेंगे, हमारे कोई राजा नहीं है, क्योंकि हम ने यहोवा का
भय नहीं माना; सो राजा हमारा क्या कर सकता है? 4 वे बातें बनाते और फूठी
शपय खाकर वाचा बान्धते हैं; इस कारण खेत की रेघारियोंमें धतूरे की नाईं दण्ड
फूले फलेगा। 5 सामरिया के निवासी बेतावेन के बछड़े के लिथे डरते रहेंगे, और
उसके लोग उसके लिथे विलाप करेंगे; और उसके पुजारी जो उसके कारण मगन

होते थे उसके प्रताप के लिथे इस कारण विलाप करेंगे क्योंकि वह उन में से उठ
गया है। 6 वह यारेब राजा की भेंट ठहरने के लिथे अश्शूर देश में पहुंचाया जएगा।
एप्रैम लज्जित होगा, और इस्राएल भी अपक्की युक्ति से लजाएगा।। 7 सामरिया
अपके राजा समेत जल के बुलबुले की नाईं मिट जाएगा। 8 और आवेन के ऊंचे
स्यान जो इस्राएल क पाप है, वे नाश होंगे। उनकी वेदियोंपर फड़बेरी, पेड़ और
ऊंटकटारे उगेंगे; और उस समय लोग पहाड़ोंसे कहने लगेंगे, हम को छिपा लो,
और टीलोंसे कि हम पर गिर पड़ो।। 9 हे इस्राएल, तू गिबा के दिनोंमें पाप करता
आया है; वे उसी में बने रहें; क्या वे गिबा में कुटिल मनुष्योंके संग लड़ाई में न
फंसे? 10 जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूंगा, और देश देश के लोग
उनके विरूद्ध इकट्ठे हो जाएंगे; क्योंकि वे अपके दोनोंअधर्मोंमें फसें हुए हैं।। 11
एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दांवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने उसकी
सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है; मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊंगा; यहूदा हल, और
याकूब हेंगा खींचेगा। 12 अपके लिथे धर्म का बीज बोओ, तब करूणा के अनुसार
खेत काटने पाओगे; अपक्की पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो
लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए।। 13 तुम ने
दुष्टता के लिथे हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल
खाया है। और यह इसलिथे हुआ क्योंकि तुम ने अपके कुव्यवहार पर, और अपके
बहुत से वीरोंपर भरोसा रखा या। 14 इस कारण तुम्हारे लोगोंमें हुल्लड़ उठेगा,
और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे नाश किए जाएंगे जैसा बेतर्बेल नगर युद्ध के समय
शल्मन के द्वारा नाश किया गया; उस समय माताएं अपके बच्चोंसमेत पटक दी
गईं यी। 15 तुम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण बेतेल से भी इसी प्रकार का व्यवहार

किया जाएगा। भोर होते ही इस्राएल का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा।।

होशे 11

1 जब इस्राएल बालक या, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपके पुत्र को मिस्र से
बुलाया। 2 परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल
देवताओं के लिथे बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतोंके लिथे धूप जलाते गए।।
3 मैं ही एप्रैम को पांव-पांव चलाता या, और उनको गोद में लिए फिरता या,
परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करनेवाला मैं हूं। 4 मैं उनको मनुष्य
जानकर प्रेम की डोरी से खींचता या, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर
उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैं ने उन से किया। 5 वह मिस्र देश में
लौटने न पाएगा; अश्शूर ही उसका राजा होगा, क्योंकि उस ने मेरी ओर फिरने से
इनकार कर दिया है। 6 तलवार उनके नगरोंमें चलेगी, और उनके बेड़ोंको पूरा
नाश करेगी; और यह उनकी युक्तियोंके कारण होगा। 7 मेरी प्रजा मुझ से फिर
जाने में लगी रहती है; यद्यपि वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते हैं, तौभी उन में
से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता।। 8 हे एप्रैम, मैं तुझे क्योंकि छोड़ दूं? हे
इस्राएल, मैं क्योंकर तुझे शत्रु के वश में कर दूं? मैं क्योंकर तुझे अदमा की नाई
छोड़ दूं, और सबोयीम के समान कर दूं? मेरा हृदय तो उलट पुलट हो गया, मेरा
मन स्नेह के मारे पिघल गया है। 9 मैं अपके क्रोध को भड़कने न दूंगा, और न मैं
फिर एप्रैम को नाश करूंगा; क्योंकि मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूं, मैं तेरे बीच में
रहनेवाला पवित्र हूं; मैं क्रोध करके न आऊंगा।। 10 वे यहोवा के पीछे पीछे चलेंगे;
वह तो सिंह की नाईं गरजेगा; और तेरे लड़के पश्चिम दिशा से यरयराते हुए

आएंगे। 11 वे मिस्र से चिडिय़ोंकी नाईं और अश्शूर के देश से पण्डुकी की भांति
यरयराते हुए आएंगे; और मैं उनको उन्हीं के घरोंमें बसा दूंगा, यहोवा की यही
वाणी है।। 12 एप्रैम ने मिय्या से, और इस्राएल के घराने ने छल से मुझे घेर रखा
है; और यहूदा अब तक पवित्र और विश्वासयोग्य परमेश्वर की ओर चंचल बना
रहता है।।

होशे 12

1 एप्रैम पानी पीटता और पुरवाइ्र का पीछा करता रहता है; वह लगातार फूठ और
उत्पात को बढ़ाता रहता है; वे अश्शूर के साय वाचा बान्धते और मिस्र में तेल
भेजते हैं। 2 यहूदा के साय भी यहोवा का मुकद्दमा है, और वह याकूब को उसके
चालचलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके कामोंके अनुसार वह उसको बदला देगा।
3 अपक्की माता की कोख ही में उस ने अपके भाई को अड़ंगा मारा, और बड़ा
होकर वह परमेश्वर के साय लड़ा। 4 वह दूत से लड़ा, और जीत भी गया, वह रोया
और उस ने गिड़गिड़ाकर बिनती की। बेतेल में वह उसको मिला, और वहीं उस ने
हम से बातें की। 5 यहोवा, सेनाओं का परमश्ेवर, जिसका स्मरण यहोवा नाम
से होता है। 6 इसलिथे तू अपके परमेश्वर की ओर फिर; कृपा और न्याय के काम
करता रह, और अपके परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह।। 7 वह व्योपारी है,
और उसके हाथ में छल का तराजू है; अन्धेर करता ही उसको भाता है। 8 एप्रैम
कहता है, मैं धनी हो गया, मैं ने सम्पत्ति प्राप्त की है; मेरे किसी काम में ऐसा
अधर्म नहीं पाया गया जिस से पाप लगे। 9 मैं यहोवा, मिस्र देश ही से तेरा
परमेश्वर हूं; मैं फिर तुझे तम्बुओं में ऐसा बसाऊंगा जैसा नियत पर्व के दिनोंमें

हुआ करता है।। 10 मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं, और बार बार दर्शन
देता रहा; और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दृष्टान्त कहता आया हूं। 11 क्या गिलाद
कुकर्मी नहीं? वे पूरे छली हो गए हैं। गिल्गाल में बैल बलि किए जाते हैं, वरन
उनकी वेदियां उन ढेरोंके समान हैं जो खेत की रेघारियोंके पास हों। 12 याकूब
अराम के मैदान में भाग गया या; वहां इस्राएल ने एक पत्नी के लिथे सेवा की, और
पत्नी के लिथे वह चरवाही करता या। 13 एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा इस्राएल
को मिस्र से निकाल ले आया, और भविष्यद्वक्ता ही के द्वारा उसकी रझा हुई। 14
एप्रैम ने अत्यन्त रिस दिलाई है; इसलिथे उसका किया हुआ खून उसी के ऊपर
बना रहेगा, और उस ने अपके परमेश्वर के नाम में जो बट्टा लगाया है, वह उसकी
को लौटाता जाएगा।।

होशे 13

1 जब एप्रैम बोलता या, तब लोग कांपके थे; और जब इस्राएल में बड़ा या; परन्तु
जब वह बाल के कारण दोषी हो गया, तब वह मर गया। 2 और अब वे लोग पाप
पर पाप बढ़ाते जाते हैं, और अपक्की बुद्धि से चान्दी ढालकर ऐसी मूरतें बनाई हैं
जो कारीगरोंही से बनीं। उन्हीं के विषय लोग कहते हैं, जो नरमेघ करें, वे
बछड़ोंको चूमें! 3 इस कारण वे भोर के मेघ, तड़के सूख जानेवाली ओस, खलिहान
पर से आंधी के मारे उड़नेवाली भूसी, या चिमनी से निकलते हुए धूएं के समान
होंगे।। 4 मिस्र देश ही से मैं यहोवा, तेरा परमेश्वर हूं; तू मुझे छोड़ किसी को
परमेश्वर करके न जानना; क्योंकि मेरे सिवा कोई तेरा उद्धारकर्ता नहीं हैं। 5 मैं ने
उस समय तुझ पर मन लगाया जब तू जंगल में वरन अत्यन्त सूखे देश में या। 6

परन्तु जब इस्राएली चराए जाते थे और वे तृप्त हो गए, तब तृप्त होने पर उनका
मन घमण्ड से भर गया; इस कारण वे मुझ को भूल गए। 7 सो मैं उनके लिथे
सिंह सा बना हूं; मैं चीते की नाईं उनके मार्ग में घात लगाए रहूंगा। 8 मैं बच्चे
छीनी हुई रीछनी के समान बनकर उनको मिलूंगा, और उनके हृदय की फिल्ली
को फाड़ूंगा, और सिंह की नाईं उनको वहीं खा डालूंगा, जैसे बन-पशु उनको फाड़
डाले।। 9 हे इस्राएल, तेरे विनाश का कारण यह है, कि तू मेरा अर्यात् अपके
सहाथक का विरोधी है। 10 अब तेरा राजा कहां रहा कि तेरे सब नगरोंमें वह तुझे
बचाए? और तेरे न्यायी कहां रहे, जिनके विषय में तू ने कहा या कि मेरे लिथे
राजा और हाकिम ठहरा दें? 11 मैं ने क्रोध में आकर तेरे लिथे राजा बनाथे, और
फिर जलजलाहट में आकर उनको हटा भी दिया। 12 एप्रैम का अधर्म गठा हुआ
है, उनका पाप संचय किया हुआ है। 13 उसको जच्चा की सी पीड़ाए उठेंगी, परन्तु
वह निर्बुद्धि लड़का है जो जन्म के समय ठीक से नहीं आता। 14 मैं उसको
अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा और मृत्यु से उसको छुटकारा दूंगा। हे मृत्यु, तेरी
मारने की शक्ति कहां रही? हे अधोलोक, तेरी नाश करने की शक्ति कहां रहीं? मैं
फिर कभी नहीं पछताऊंगा।। 15 चाहे वह अपके भाइयोंसे अधिक फूलें-फलें, तौभी
पुरवाई उस पर चलेगी, और यहोवा की ओर से मरूस्यल से आएगी, और उसका
कुण्ड सूखेगा; और उसका सोता निर्जन हो जाएगा। उसकी रखी हुई सब
मनभावनी वस्तुएं वह लूट ले जाएगा। 16 सामरिया दोषी ठहरेगा, क्योंकि उस ने
अपके परमेश्वर से बलवा किया है; वे तलवार से मारे जाएंगे, उनके बच्चे पटके
जाएंगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियां चीर डालीं जाएंगी।।

होशे 14

1 हे इस्राएल, अपके परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपके अधर्म
के कारण ठोकर खाई है। 2 बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, उस से
कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी
बलि चढ़ाएंगे। 3 अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ोंपर सवार न होंगे; और
न हम फिर अपक्की बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, तुम हमारे ईश्वर हो; क्योंकि
अनाय पर तू ही दया करता है।। 4 मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा;
मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। 5 मैं
इस्राएल के लिथे ओस के समान हूंगा; वह सोसन की नाई फूले-फलेगा, और
लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा। 6 उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी
शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी। 7 जो उसकी
छाया में बैठेंगे, वे अन्न ही नाईं बढ़ेंगे, वे दाखलता की नाई फूले-फलेंगे; और
उसकी कीत्तिर् लबानोन के दाखमधु की सी होगी।। 8 एप्रैम कहेगा, मूरतोंसे अब
मेरा और क्या काम? मैं उसकी सुनकर उस पर दृष्टि बनाए रखूंगा। मैं हरे सनौवर
सा हूं; मुझी से तू फल पाया करेगा।। 9 जो बुद्धिमान हो, वही इन बातोंको
समझेगा; जो प्रवीण हो, वही इन्हें बूफ सकेगा; क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं,
और धर्मी उन में चलते रहेंगे, परन्तु अपराधी उन में ठोकर खाकर गिरेंगे।।

योएल 1

1 यहोवा का वचन जो पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुंचा, वह यह है: 2 हे
पुरनियो, सुनो, हे देश के सब रहनेवालो, कान लगाकर सुनो! क्या ऐसी बात
तुम्हारे दिनोंमें, वा तुम्हारे पुरखाओं के दिनोंमें कभी हुई है? 3 अपके लड़केबालोंसे

इसका वर्णन करो, और वे अपके लड़केबालोंसे, और फिर उनके लड़केबाले
आनेवाली पीढ़ी के लोगोंसे।। 4 जो कुछ गाजाम नाम टिड्डी से बचा; उसे अर्बे
नाम टिड्डी ने खा लिया। और जो कुछ अर्बे नाम टिड्डी से बचा, उसे थेलेक नाम
टिड्डी ने खा लिया, और जो कुछ थेलेक नाम टिड्डी से बचा, उसे हासील नाम
टिड्डी ने खा लिया है। 5 हे मतवालो, जाग उठो, और रोओ; और हे सब दाखमधु
पीलेवालो, नथे दाखमधु के कारण हाथ, हाथ, करो; क्योंकि वह तुम को अब न
मिलेगा।। 6 देखो, मेरे देश पर एक जाति ने चढ़ाई की है, वह सामर्यी है, और
उसके लोग अनगिनित हैं; उसके दांत सिंह के से, और डाढ़ें सिहनी की सी हैं। 7
उस ने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया, और मेरे अंजीर के वृझ को तोड़ डाला है;
उस ने उसकी सब छाल छीलकर उसे गिरा दिया है, और उसकी डालियां छिलने से
सफेद हो गई हैं।। 8 जैसे युवती अपके पति के लिथे कटि में टाट बान्धे हुए
विलाप करती है, वैसे ही तुम भी विलाप करो। 9 यहोवा के भवन में न तो
अन्नबलि और न अर्ध आता है। उसके टहलुए जो याजक हैं, वे विलाप कर रहे हैं।
10 खेती मारी गई, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन्न नाश हो गया, नया
दाखमधु सूख गया, तेल भी सूख गया है।। 11 हे किसानो, लज्जित हो, हे दाख
की बारी के मालियों, गेहूं और जव के लिथे हाथ, हाथ करो; क्योंकि खेती मारी गई
है। 12 दाखलता सूख गई, और अंजीर का वृझ कुम्हला गया है। अनार, ताड़, सेव,
वरन मैदान के सब वृझ सूख गए हैं; और मनुष्योंका हर्ष जाता रहा है।। 13 हे
याजको, कटि में टाट बान्धकर छाती पीट-पीट के रोओ! हे वेदी के टहलुओ, हाथ,
हाथ, करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात बिताओ!
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्ध अब नहीं आते।। 14

उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियोंको, वरन देश के सब
रहनेवालोंको भी अपके परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठे करके उसकी दोहाई
दो।। 15 उस दिन के कारण हाथ! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है। वह
सर्वशक्तिमान की ओर से सत्यानाश का दिन होकर आएगा। 16 क्या
भोजनवस्तुएं हमारे देखते नाश नहीं हुईं? क्या हमारे परमेश्वर के भवन का
आनन्द और मगन जाता नहीं रहा? 17 बीज ढेलोंके नीचे फुलस गए, भण्डार सूने
पके हैं; खत्ते गिर पके हैं, क्योंकि खेती मारी गई। 18 पशु कैसे कराहते हैं? फुण्ड के
फुण्ड गाय-बैल विकल हैं, क्योंकि उनके लिथे चराई नहीं रही; और फुण्ड के फुण्ड
भेड़-बकरियां पाप का फल भोग रही हैं।। 19 हे यहोवा, मैं तेरी दोहाई देता हूं,
क्योंकि जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं, और मैदान के सब वृक्ष ज्वाला
से जल गए। 20 वन-पशु भी तेरे लिथे हांफते हैं, क्योंकि जल के सोते सूख गए,
और जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं।।

योएल 2

1 सिय्योन में नरसिंगा फूंको; मेरे पवित्र पर्वत पर सांस बान्धकर फूंको! देश के
सब रहनेवाले कांप उठें, क्योंकि यहोवा का दिन आता है, वरन वह निकट ही है। 2
वह अन्धकार और तिमिर का दिन है, वह बदली का दिन है और अन्धिक्कारने
का सा फैलता है। जैसे भोर का प्रकाश पहाड़ोंपर फैलता है, वैसे ही एक बड़ी और
सामर्थी जाति आएगी; प्राचीनकाल में वैसी कभी न हुई, और न उसके बाद भी
फिर किसी पीढ़ी में होगी।। 3 उसके आगे आगे तो आग भस्म करती जाएगी,
और उसके पीछे पीछे लौ जलती जाएगी। उसके आगे की भूमि तो एदेन की बारी

के समान होगी, परन्तु उसके पीछे की भूमि उजाड़ मरूस्यल बन जाएगी, और
उस से कुछ न बचेगा।। 4 उनका रूप घोड़ोंका सा है, और वे सवारी के घोड़ोंकी नाईं
दौड़ते हैं। 5 उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ोंकी चोटियोंपर रयोंके
चलने का, वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का, या जैसे पांति बान्धे हुए बली योद्धाओं
का शब्द होता है।। 6 उनके सामने जाति जाति के लोग पीड़ित होते हैं, सब के
मुख मलीन होते हैं। 7 वे शूरवीरोंकी नाईं दौड़ते, और योद्धाओं की भांति
शहरपनाह पर चढ़ते हैं वे अपके अपके मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपक्की
पांति से अलग न चलेगा। 8 वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपक्की
अपक्की राह पर चलते हैं; शस्त्रोंका साम्हना करने से भी उनकी पांति नहीं टूटती।
9 वे नगर में इधर-उधर दौड़ते, और शहरपनाह पर चढ़ते हैं; वे घरोंमें ऐसे घुसते
हैं जैसे चोर खिड़कियोंसे घुसते हैं।। 10 उनके आगे पृय्वी कांप उठती है, और
आकाश यरयराता है। सूर्य और चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं फलकते।
11 यहोवा अपके उस दल के आगे अपना शब्द सुनाता है, क्योंकि उसकी सेना
बहुत ही बड़ी है; जो अपना वचन पूरा करनेवाला है, वह सामर्यी है। क्योंकि यहोवा
का दिन बड़ा और अति भयानक है; उसको कौन सह सकेगा? 12 तौभी यहोवा की
यह वाणी है, अभी भी सुनो, उपवास के साय रोते-पीटते अपके पूरे मन से फिरकर
मेरे पास आओ। 13 अपके वस्त्र नहीं, अपके मन ही को फाड़कर अपके परमेश्वर
यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध
करनेवाला, करूणानिधान और दु:ख देकर पछतानेहारा है। 14 क्या जाने वह
फिरकर पछताए और ऐसी आशीष दे जिस से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का
अन्नबलि और अर्ध दिया जाए।। 15 सिय्योन में नरसिंगा फूंको, उपवास का दिन

ठहराओ, महासभा का प्रचार करो; 16 लोगोंको इकट्ठा करो। सभा को पवित्र
करो; पुरनियोंको बुला लो; बच्चोंऔर दूधपीउवोंको भी इकट्ठा करो। दुल्हा
अपक्की कोठरी से, और दुल्हिन भी अपके कमरे से निकल आएं।। 17 याजक जो
यहोवा के टहलुए हैं, वे आंगल और वेदी के बीच में रो रोकर कहें, हे यहोवा
अपक्की प्रजा पर तरस खा; और अपके निज भाग की नामधराई न होने दे; न
अन्यजातियां उसकी उपमा देने पाएं। जाति जाति के लोग आपस में क्यां कहने
पाएं, कि उनका परमेश्वर कहां रहा? 18 तब यहोवा को अपके देश के विषय में
जलन हुई, और उस ने अपक्की प्रजा पर तरस खाया। 19 यहोवा ने अपक्की प्रजा
के लोगोंको उत्तर दिया, सुनो, मैं अन्न और नया दाखमधु और ताजा तेल तुम्हें
देने पर हूं, और तुम उन्हें पाकर तृप्त होगे; और मैं भविष्य में अन्यजातियोंसे
तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा।। 20 मैं उत्तर की ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे
पास से दूर करूंगा, और उसे एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूंगा; उसका
आगा तो पूरब के ताल की ओर और उसका पीछा पश्चिम के समुद्र की ओर होगा;
उस से दुर्गन्ध उठेगी, और उसकी सड़ी गन्ध फैलेगी, क्योंकि उस ने बहुत बुरे
काम किए हैं।। 21 हे देश, तू मत डर; तू मगन हो और आनन्द कर, क्योंकि
यहोवा ने बड़े बड़े काम किए हैं! 22 हे मैदान के पशुओं, मत डरो, क्योंकि जंगल में
चराई उगेगी, और वृझ फलने लेगेंगे; अंजीर का वृझ और दाखलता अपना अपना
बल दिखाने लगेंगी। 23 हे सिय्योनियों, तुम अपके परमेश्वर यहोवा के कारण
मगन हो, और आनन्द करो; क्योंकि तुम्हारे लिथे वह वर्षा, अर्यात् बरसात की
पहिली वर्षा बहुतायत से देगा; और पहिले के समान अगली और पिछली वर्षा को
भी बरसाएगा।। 24 तब खलिहान अन्न से भर जाएंगे, और रासकुण्ड नथे

दाखमधु और ताजे तेल से उमड़ेंगे। 25 और जिन वर्षोंकी उपज अर्बे नाम
टिड्डियों, और थेलेक, और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियोंने, अर्यात् मेरे
बड़े दल ने जिसको मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली यी, मैं उसकी हानि तुम को
भर दूंगा।। 26 तुम पेट भरकर खाओगे, और तृप्त होगे, और अपके परमेश्वर
यहोवा के नाम की स्तुति करोगे, जिस ने तुम्हारे लिथे आश्चर्य के काम किए हैं।
और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी। 27 तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल
के बीच में हूं, और मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है। और
मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी।। 28 उन बातोंके बाद मैं सब प्राणियोंपर
अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे
पुरनिथे स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। 29 तुम्हारे दास और
दासियोंपर भी मैं उन दिनोंमें अपना आत्मा उण्डेलूंगा।। 30 और मैं आकाश में
और पृय्वी पर चमत्कार, अर्यात् लोहू और आग और धूएं के खम्भे दिखाऊंगा।
31 यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धिक्कारनो
होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। 32 उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्यना
करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर,
और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्वार पाएंगे।।

योएल 3

1 क्योंकि सुनो, जिन दिनोंमें और जिस समय मैं यहूदा और यरूशलेम वासिक्कों
बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, 2 उस समय मैं सब जातियोंको इकट्ठी करके
यहोशपात की तराई में ले जाऊंगा, और वहां उनके साय अपक्की प्रजा अर्यात्

अपके निज भाग इस्राएल के विषय में जिसे उन्होंने अन्यजातियोंमें तितर-बितर
करके मेरे देश को बांट लिया है, उन से मुकद्दमा लड़ूंगा। 3 उन्होंने तो मेरी प्रजा
पर चिट्ठी डाली, और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया, और एक लड़की
बेचकर दाखमधु पीया है।। 4 हे सोर, और सीदोन और पलिश्तीन के सब प्रदेशो,
तुम को मुझ से क्या काम? क्या तुम मुझ को बदला दोगे? यदि तुम मुझे बदला
भी दो, तो मैं शीघ्र ही तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा। 5
क्योंकि तुम ने मेरी चान्दी-सोना ले लिया, और मेरी अच्छी और मनभावनी
वस्तुएं अपके मन्दिरोंमें ले जाकर रखी है; 6 और यहूदियोंऔर यरूशलेमियोंको
यूनानियोंके हाथ इसलिथे बेच डाला है कि वे अपके देश से दूर किए जाएं। 7
इसलिथे सुनो, मैं उनको उस स्यान से, जहां के जानेवालोंके हाथ तुम ने उनको
बेच दिया, बुलाने पर हूं, और तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल
दूंगा। 8 मैं तुम्हारे बेटे-बेटियोंको यहूदियोंके हाथ बिकवा दूंगा, और वे उसको
शबाइयोंके हाथ बेच देंगे जो दूर देश के रहनेवाले हैं; क्योंकि यहोवा ने यह कहा
है।। 9 जाति जाति में यह प्रचार करो, युद्ध की तैयारी करो, अपके शूरवीरोंको
उभारो। सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़ें। 10 अपके अपके हल की फाल को
पीटकर तलवार, और अपक्की अपक्की हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ; जो
बलहीन हो वह भी कहे, मैं वीर हूं।। 11 हे चारोंओर के जाति जाति के लोगो, फुर्ती
करके आओ और इकट्ठे हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपके शूरवीरोंको वहां ले
जा। 12 जाति जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएं और यहोशापात की तराई में
जाएं, क्योंकि वहां मैं चारोंआरे की सारी जातियोंका न्याय करने को बैठूंगा।। 13
हंसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौंदो, क्योंकि हौज़ भर

गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है।। 14 निबटारे
की तराई में भीड़ की भीड़ है! क्योंकि निबटारे की तराई में यहोवा का दिन निकट
है। 15 सूर्य और चन्द्रमा अपना अपना प्रकाश न देंगे, और न तारे चमकेंगे।। 16
और यहोवा सिय्योन से गरजेगा, और यरूशलेम से बड़ा शब्द सुनाएगा; और
आकाश और पृथ्वी यरयराएंगे। परन्तु यहोवा अपक्की प्रजा के लिथे शरणस्यान
और इस्राएलियोंके लिथे गढ़ ठहरेगा।। 17 इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो
अपके पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है। और
यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी उस में होकर फिर न जाने पाएंगे।। 18
और उस समय पहाड़ोंसे नया दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलोंसे दूध बहने
लगेगा, और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएंगे; और यहोवा के भवन में से
एक सोता फूट निकलेगा, जिस से शित्तीम का नाम नाला सींचा जाएगा।। 19
यहूदियोंपर उपद्रव करने के कारण, मिस्र उजाड़ और एदोम उजड़ा हुआ मरूस्यल
हो जाएगा, क्योंकि उन्होंने उनके देश में निर्दोष की हत्या की यी। 20 परन्तु
यहूदा सर्वदा और यरूशलेम पीढ़ी पीढ़ी तब बना रहेगा। 21 क्योंकि उनका खून,
जो अब तक मैं ने पवित्र नहीं ठहराया या, उसे अब पवित्र ठहराऊंगा, क्योंकि
यहोवा सिय्योन में वास किए रहता है।।

आमोस 1

1 आमोस तकोई जो भेड़-बकरियोंके चरानेवालोंमें से या, उसके थे वचन हैं जो
उस ने यहूदा के राजा उज्जियाह के, और योआश के पुत्र इस्राएल के राजा
यरोबाम के दिनोंमें, भुईंडोल से दो वर्ष पहिले, इस्राएल के विषय में दर्शन देकर

कहे।। 2 यहोवा सिय्योन से गरजेगा और यरूशलेम से अपना शब्द सुनाएगा; तब
चरवाहोंकी चराइयां विलाप करेंगी, और कर्म्मेल की चोटी फुलस जाएगी।। 3
यहोवा योंकहता है, दमिश्क के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण मैं उसका
दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उन्होंने गिलाद को लोहे के दांवनेवाले यन्त्रोंसे रौंद डाला
है। 4 इसलिथे मैं हजाएल के राजभवन में आग जलाऊंगा, और उस से बेन्हदद के
राजभवन भी भस्म हो जाएंगे। 5 मैं दमिश्क के बेण्डोंको तोड़ डालूंगा, और आवेन
नाम तराई के रहनेवालोंको और एदेन के घर में रहनेवाले राजदण्डधारी को नाश
करूंगा; और अराम के लोग बंधुए होकर कीर को जाएंगे, यहोवा का यही वचन
है।। 6 यहोवा योंकहता है, अज्जा के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण मैं
उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि वे सब लोगोंको बंधुआ करके ले गए कि उन्हें
एदोम के वश में कर दें। 7 इसलिथे मैं अज्जा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा,
और उस से उसके भवन भस्म हो जाएंगे। 8 मैं अशदोद के रहनेवालोंको और
अश्कलोन के राजदण्डधारी को भी नाश करूंगा; मैं अपना हाथ एक्रोन के विरूद्ध
चलाऊंगा, और शेष पलिश्ती लोग नाश होंगे, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।।
9 यहोवा योंकहता है, सोर के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण मैं उसका
दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उन्होंने सब लोगोंको बंधुआ करके एदोम के वश में कर
दिया और भाई की सी वाचा का स्मरण न किया। 10 इसलिथे मैं सोर की
शहरपनाह पर आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे।। 11
यहोवा योंकहता है, एदोम के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण मैं उसका
दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उस ने अपके भाई को तलवार लिए हुए खदेड़ा और कुछ
भी दया न की, परन्तु क्रोध से उनको लगातार फाड़ता ही रहा, और अपके रोष को

अनन्त काल के लिथे बनाए रहा। 12 इसलिथे मैं तेमान में आग लगाऊंगा, और
उस से बोस्रा के भवन भस्म हो जाएंगे।। 13 यहोवा योंकहता है, अम्मोन के तीन
क्या, वरन चार अपराधोंके कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा, क्योंकि उन्होंने
अपके सिवाने को बढ़ा लेने के लिथे गिलाद की गभिर्णी स्त्रियोंका पेट चीर डाला।
14 इसलिथे मैं रब्बा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन
भी भस्म हो जाएंगे। उस युद्ध के दिन में ललकार होगी, वह आंधी वरन बवण्डर
का दिन होगा; 15 और उनका राजा अपके हाकिमोंसमेत बंधुआई में जाएगा,
यहोवा का यही वचन है।।

आमोस 2

1 यहोवा योंकहता है, मोआब के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण, मैं
उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उस ने एदोम के राजा की हड्डियोंको जलाकर
चूना कर दिया। 2 इसलिथे मैं मोआब में ाग लगाऊंगा, और उस से करिय्योत के
भवन भस्म हो जाएंगे; और मोआब हुल्लड़ और ललकार, और नरसिंगे के शब्द
होते-होते मर जाएगा। 3 मैं उसके बीच में से न्यायी को नाश करूंगा, और साय ही
साय उसके सब हाकिमोंको भी घात करूंगा, यहोवा का यही वचन है।। 4 यहोवा
योंकहता है, यहूदा के तीन क्या, वरन चार अपराधोंके कारण, मैं उसका दण्ड न
छोड़ूंगा; क्योंकि उनहोंने यहोवा की व्यवस्या को तुच्छ जाना और मेरी विधियोंका
नहीं माना; और अपके फूठे देवताओं के कारण जिनके पीछे उनके पुरखा चलते
थे, वे भी भटक गए हैं। 5 इसलिथे मैं यहूदा में आग लगाऊंगा, और उस से
यरूशलेम के भवन भस्म हो जाएंगे।। 6 यहोवा योंकहता है, इस्राएल के तीन क्या,

वरन चार अपराधोंके कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उन्होंने निर्दोष
को रूपके के लिथे और दरिद्र को एक जोड़ी जूतियोंके लिथे बेच डाला है। 7 वे
कंगालोंके सिर पर की धूलि का भी लालच करते, और नम्र लोगोंको मार्ग से हटा
देते हैं; और बाप-बेटा दोनोंएक ही कुमारी के पास जाते हैं, जिस से मेरे पवित्र नाम
को अपवित्र ठहराएं। 8 वे हर एक वेदी के पास बन्धक के वस्त्रोंपर सोते हैं, और
दण्ड के रूपके से मोल लिया हुआ दाखमधु अपके देवता के घर में पी लेते हैं।। 9
मैं ने उनके साम्हने से एमोरियोंको नाश किया या, जिनकी लम्बाई देवदारोंकी
सी, और जिनका बल बांज वृझोंका सा या; तौभी मैं ने ऊपर से उसके फल, और
नीचे से उसकी जड़ नाश की। 10 और मैं तुम को मिस्र देश से निकाल लाया, और
जंगल में चालीस वर्ष तक लिए फिरता रहा, कि तुम एमोरियोंके देश के
अधिक्कारनी हो जाओ। 11 और मैं ने तुम्हारे पुत्रोंमें से नबी होने के लिथे और
तुम्हारे कुछ जवानोंमें से नाजीर होने के लिथे ठहराया। हे इस्राएलियो, क्या यह
सब सच नहीं है? यहोवा की यही वाणी है। 12 परन्तु तुम ने नाजीरोंको दाखमधु
पिलाया, और नबियोंको आज्ञा दी कि भविष्यद्ववाणी न करें।। 13 देखो, मैं तुम
को ऐसा दबाऊंगा, जैसी पूलोंसे भरी हुई गाड़ी नीचे को दबाई जाती है। 14
इसलिथे वेग दौड़नेवाले को भाग जाने का स्यान न मिलेगा, और सामर्यी का
सामर्य कुछ काम न देगा; और न पराक्रमी अपना प्राण बचा सकेगा; 15 धनुर्धारी
खड़ा न रह सकेगा, और फुर्ती से दौड़नेवाला न बचेगा; सवार भी अपना प्राण न
बचा सकेगा; 16 और शूरवीरोंमें जो अधिक धीर हो, वह भी उस दिन नंगा होकर
भाग जाएगा, यहोवा की यही वाणी है।।

आमोस 3

1 हे इस्राएलियो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में अर्थात् उस सारे
कुल के विषय में कहा है जिस मैं मिस्र देश से लाया हूं: 2 पृथ्वी के सारे कुलोंमें से
मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है, इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म के
कामोंका दण्ड दूंगा।। 3 यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग
चल सकेंगे? 4 क्या सिंह बिना अहेर पाए वन में गरजेंगे? क्या जवान सिंह बिना
कुछ पकड़े अपक्की मांद में से गुर्राएगा? 5 क्या चिड़िया बिना फन्दा लगाए
फंसेगी? क्या बिना कुछ फंसे फन्दा भूमि पर से उचकेगा? 6 क्या किसी नगर में
नरसिंगा फूंकने पर लोग न थरथराएंगे? क्या यहोवा के बिना भेजे किसी नगर में
कोई विपत्ति पकेगी? 7 इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपके दास भविष्यद्वक्ताओं पर
अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा। 8 सिंह गरजा; कौन न डरेगा?
परमेश्वर यहोवा बोला; कौन भविष्यवाणी न करेगा? 9 अश्दोद के भवन और
मिस्र देश के राजभवन पर प्रकार करके कहो, सामरिया के पहाड़ोंपर इकट्ठे
होकर देखो कि उस में क्या ही बड़ा कोलाहल और उसके बीच क्या ही अन्धेर के
काम हो रहे हैं। 10 यहोवा की यह वाणी है, कि जो लो अपके भवनोंमें उपद्रव और
डकैती का धन बटोर रखते हैं, वे सीधाई से काम करना जानते ही नहीं। 11 इस
कारण परमेश्वर यहोवा योंकहता है, देश का घेरनेवाला एक शत्रु होगा, और वह
तेरा बल तोड़ेगा, और तेरे भवन लूटे जाएंगे।। 12 यहोवा योंकहता है, जिस भांति
चरवाहा सिंह के मुंह से दो टांगे वा कान का एक टुकड़ा छुड़ाता है, वैसे ही इस्राएली
लोग, जो सामरिया में बिछौने के एक कोने वा रेशमी गद्दी पर बैठा करते हैं, वे भी
छुड़ाए जाएंगे।। 13 सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, देखो, और
याकूब के घराने से यह बात चिताकर कहो, 14 जिस समय मैं इस्राएल को उसके

अपराधोंका दण्ड दूंगा, उसी समय मैं बेतेल की वेदियोंको भी दण्ड दूंगा, और वेदी
के सींग टूटकर भमि पर गिर पकेंगे। 15 और मैं जाड़े के भवन को और धूपकाल
के भवन, दोनोंको गिराऊंगा; और हाथीदांत के बने भवन भी नाश होंगे, और बड़े
बड़े घर नाश हो जएंगे, यहोवा की यही वाणी है।।

आमोस 4

1 हे बाशान की गायो, यह वचन सुनो, तुम जो सामरिया पर्वत पर हो, जो
कंगालोंपर अन्धेर करतीं, और दरिद्रोंको कुचल डालती हो, और अपके अपके पति
से कहती हो कि ला, दे हम पीएं! 2 परमेश्वर यहोवा अपक्की पवित्रता की शपय
खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि तुम कटियाओं से, और
तुम्हारी सन्तान मछली की बन्सिक्कों खींच लिए जाएंगे। 3 और तुम बाड़े के
नाकोंसे होकर सीधी निकल जाओगी और हर्म्मोन में डाली जाआगी, यहोवा की
यही वाणी है।। 4 बेतेल में आकर अपराध करो, और गिल्गाल में आकर बहुत से
अपराध करो; अपके चढ़ावे भोर को, और अपके दशमांश हर तीसरे दिन ले आया
करो; 5 धन्यवादबलि खमीर मिलाकर चढ़ाओ, और अपके स्वेच्छाबलियोंकी
चर्चा चलाकर उनका प्रचार करो; क्योंकि हे इस्राएलियो, ऐसा करना तुमको भवता
है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।। 6 मैं ने तुम्हारे सब नगरोंमें दांत की सफाई
करा दी, और तुम्हारे सब स्यानोंमें रोटी की घटी की है, तौभी तुम मेरी ओर
फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी है।। 7 और जब कटनी के तीन महीने रह
गए, तब मैं ने तुम्हारे लिथे वर्षा न की; मैं ने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में
न बरसाया; एक खेत में जल बरसा, और दूसरा खेत जिस में न बरसा; वह सूख

गया। 8 इसलिथे दो तीन नगरोंके लोग पानी पीने को मारे मारे फिरते हुए एक ही
नगर में आए, परन्तु तृप्त न हुए; तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही
वाणी है।। 9 मैं ने तुमको लूह और गेरूई से मारा है; और जब तुम्हारी वाटिकाएं
और दाख की बारियां, और अंजीर और जलपाई के वृझ बहुत हो गए, तब
टिड्डियां उन्हें खा गईं; तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही
वाणी है।। 10 मैं ने तुम्हारे बीच में मिस्र देश की सी मरी फैलाई; मैं ने तुम्हारे
घाड़ोंको छिनवा कर तुम्हारे जवानोंको तलवार से घात करा दिया; और तुम्हारी
छावनी की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुंचाई; तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,
यहोवा की यही वाणी है।। 11 मैं ने तुम में से कई एक को ऐसा उलट दिया, जैसे
परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को उलट दिया या, और तुम आग से निकाली हुई
लुकटी के समान ठहरे; तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी
है।। 12 इस कारण, हे इस्राएल, मैं तुझ से ऐसा ही करूंगा, और इसलिथे कि मैं
तुझ में यह काम करने पर हूं, हे इस्राएल, अपके परमेश्वर के साम्हने आने के
लिथे तैयार हो जा।। 13 देख, पहाड़ोंका बनानेवाला और पवन का सिरजनेवाला,
और मनुष्य को उसके मन का विचार बतानेवाला और भोर को अन्धकार
करनेवाला, और जो पृय्वी के ऊंचे स्यानोंपर चलनेवाला है, उसी का नाम सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा है।।

आमोस 5

1 हे इस्राएल के घरोन, इस विलाप के गीत के वचन सुन जो मैं तुम्हारे विषय में
कहता हूं: 2 इस्राएल की कुमारी कन्या गिर गई, और फिर उठ न सकेगी; वह

अपक्की ही भूमि पर पटक दी गई है, और उसका उठानेवाला कोई नहीं।। 3
क्योंकि परमेश्वर यहोवा योंकहता है, जिस नगर से हजार निकलते थे, उस में
इस्राएल के घराने के सौ ही बचे रहेंगे, और जिस से सौ निकलते थे, उस में दस
बचे रहेंगे।। 4 यहोवा, इस्राएल के घराने से योंकहता है, मेरी खोज में लगो, तब
जीवित रहोगे। 5 बेतेल की खोज में न लगो, न गिल्गाल में प्रवेश करो, और न
बर्शेबा को जाओ; क्योंकि गिल्गाल निश्चय बंधुआई में जाएगा, और बेतेल सूना
पकेगा।। 6 यहोवा की खोज करो, तब जीवित रहोगे, नहीं तो वह यूसुफ के घराने
पर आग की नाईं भड़केगा, और वह उसे भस्म करेगी, और बेतेल में कोई उसका
बुफानेवाला न होगा। 7 हे न्याय के बिगाड़नेवालोंऔर धर्म को मिट्टी में
मिलानेवालों! 8 जो कचपचिया और मृगशिरा का बनानेवाला है, जो घोर
अन्धकार को भोर का प्रकाश बनाता है, जो दिन को अन्धकार करके रात बना
देता है, और समुद्र का जल स्यल के ऊपर बहा देता है, उसका नाम यहोवा है। 9
वह तुरन्त ही बलवन्त को विनाश कर देता, और गढ़ का भी सत्यानाश करता
है।। 10 जो सभा से उलाहना देता है उस से वे बैर रखते हैं, और खरी बात
बोलनेवाले से घृणा करते हैं। 11 तुम जो कंगालोंको लताड़ा करते, और भेंट
कहकर उस से अन्न हर लेते हो, इसलिथे जो घर तुम ने गढ़े हुए पत्यरोंके बनाए
हैं, उन में रहने न पाओगे; और जो मनभावनी दाख की बारियां तुम ने लगाई हैं,
उनका दाखमधु न पीने पाओगे। 12 क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे पाप भारी
हैं। तुम धर्मी को सताते और घूस लेते, और फाटक में दरिद्रोंका न्याय बिगाड़ते
हो। 13 इस कारण जो बुद्धिमान् हो, वह ऐसे समय चुपका रहे, क्योंकि समय बुरा
है।। 14 हे लोगो, बुराई को नहीं, भलाई को ढूंढो, ताकि तुम जीवित रहो; और

तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग है। 15
बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो, और फाटक में न्याय को स्यिर करो; क्या
जाने सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यूसुफ से बचे हुओं पर अनुग्रह करे।। 16 इस
कारण सेनाओं का परमेश्वर, प्रभु यहोवा योंकहता है, अब चौकोंमें रोना-पीटना
होगा; और सब सड़कोंमें लोग हाथ, हाथ, करेंगे! वे किसानोंको शोक करने के
लिथे, और जो लोग विलाप करने कें निपुण हैं, उन्हें रोने-पीटने को बुलाएंगे। 17
और सब दाख की बारियोंमें रोना-पीटना होगा, क्योंकि यहोवा योंकहता है, मैं
तुम्हारे बीच में से होकर जाऊंगा। 18 हाथ तुम पर, जो यहोवा के दिन की
अभिलाषा करते हो! यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा? वह जो उजियाले
का नहीं, अन्धिक्कारने का दिन होगा। 19 जैसा कोई सिंह से भागे और उसे भालू
मिले; वा घर में आकर भीत पर हाथ टेके और सांप उसको डसे। 20 क्या यह सच
नहीं है कि यहोवा का दिन उजियाले का नहीं, वरन अन्धिक्कारने ही का होगा?
हां, ऐसे घोर अन्धकार का जिस में कुछ भी चमक न हो।। 21 मैं तुम्हारे पर्वोंसे
बैर रखता, और उन्हें निकम्मा जानता हूं, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न
नहीं। 22 चाहे तुम मेरे लिथे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न
हूंगा, और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियोंकी ओर न ताकूंगा। 23 अपके
गीतोंको कोलाहल मुझ से दूर करो; तुम्हारी सारंगियोंका सुन मैं न सुनूंगा। 24
परन्तु न्याय को नदी की नाईं, और धर्म महानद की नाईं बहने दो। 25 हे इस्राएल
के घराने, तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि क्या मुझी को
चढ़ाते रहे? 26 नहीं, तुम तो अपके राजा का तम्बू, और अपक्की मूरतोंको
चरणपीठ, और अपके देवता का तारा लिए फिरते रहे। 27 इस कारण मैं तुम को

दमिश्क के उस पार बंधुआई में कर दूंगा, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यही
वचन है।।

आमोस 6

1 हाथ उन पर जो सिय्योन में सुख से रहते, और उन पर जो सामरिया के पर्वत
पर निश्चिन्त रहते हैं, वे जो श्रेष्ट जाति में प्रसिद्ध हैं, जिन के पास इस्राएल का
घराना आता है! 2 कलने नगर को जाकर देखो, और वहां से हमात नाम बड़े नगर
को जाओ; फिर पलिश्तियोंके गत नगर को जाओ। क्या वे इन राज्योंसे उत्तम हैं?
क्या उनका देश तुम्हारे देश से कुछ बड़ा है? 3 तुम बुरे दिन को दूर कर देते, और
उपद्रव की गद्दी को निकट ले आते हो।। 4 तुम हाथी दांत के पलंगोंपर लेटते, और
अपके अपके बिछौने पर पांव फैलाए सोते हो, और भेड़-बकरियोंमें से मेम्ने और
गौशालाओं में से बछड़े खाते हो। 5 तुम सारंगी के साय गीत गाते, और दाऊद की
नाईं भांति भांति के बाजे बुद्धि से निकालते हो; 6 और कटोरोंमें से दाखमधु पीते,
और उत्तम उत्तम तेल लगाते हो, परन्तु यूसुफ पर आनेवाली विपत्ति का हाल
सुनकर शोकित नहीं होते। 7 इस कारण वे अब बंधुआई में पहिले जाएंगे, और जो
पांव फैलाए सोते थे, उनकी धूम जाती रहेगी।। 8 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की
यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपक्की ही शपय खाकर कहा है): जिस पर
याकूब घमण्ड करता है, उस से मैं घृणा, और उसे राजभवनोंसे बैर रखता हूं; और
मैं इस नगर को उस सब समेत जो उस में हैं, शत्रु के वश में कर दूंगा।। 9 और
यदि किसी घर में दस पुरूष बचे रहें, तौभी वे मर जाएंगे। 10 और जब किसी का
चचा, जो उसका जलानेवाला हो, उसकी हड्डियोंको घर के निकालने के लिथे

उठाएगा, और जो घर के कोने में हो उस से कहेगा, क्या तेरे पास कोई और है?
तब वह कहेगा, कोई नहीं; तब वह कहेगा, चुप रहे! हमें यहोवा का नाम नहीं लेना
चाहिए।। 11 क्योंकि यहोवा की आज्ञा से बड़े घर में छेद्छ, और छोटे घर में दरार
होगी। 12 क्या घोड़े चट्टान पर दौड़ें? क्या कोई ऐसे स्यान में बैलोंसे जोतें जहां
तुम लोगोंने न्याय को विष से, और धर्म के फल को कड़वे फल से बदल डाला है?
13 तुम ऐसी वस्तु के कारण आनन्द करते हो जो व्यर्य है; और कहते हो, क्या
हम अपके ही यत्न से सामर्यी नहीं हो गए? 14 इस कारण सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विरूद्ध एक ऐसी
जाति खड़ी करूंगा, जो हमात की घाटी से लेकर अराबा की नदी तक तुमको संकट
में डालेगी।।

आमोस 7

1 परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया, और मैं क्या देखता हूं कि उस ने पिछली
घास के उगने के आरम्भ मे टिड्डियां उत्पन्न की; और वह राजा की कटनी के
बाद की पिछली घास यीं। 2 जब वे घास खा चुकीं, तब मैं ने कहा, हे परमेश्वर
यहोवा, झमा कर! नहीं तो याकूब कैसे स्यिर रह सकेगा? वह कितना निर्बल है! 3
इसके विषय में यहोवा पछताया, और उस से कहा, ऐसी बात अब न होगी।। 4
परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया : और क्या देखता हूं कि परमेश्वर यहोवा ने
आग के द्वारा मुकद्दमा लड़ने को पुकारा, और उस आग से महासागर सूख गया,
और देश भी भस्म हुआ चाहता या। 5 तब मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, यम जा!
नहीं तो याकूब कैसे स्यिर रह सकेगा? वह कैसा निर्बल है। 6 इसके विषय में भी

यहोवा पछताया; और परमेश्वर यहोवा ने कहा, ऐसी बात फिर न होगी।। 7 उस ने
मुझे यह भी दिखाया: मैं ने देखा कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी भीत पर
खड़ा है, और उसके हाथ में साहुल है। 8 और यहोवा ने मुझ से कहा, हे आमोस,
तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, एक साहुल। तब परमेश्वर ने कहा, देख, मैं
अपक्की प्रजा इस्राएल के बीच में साहुल लगाऊंगा। 9 मैं अब उनको न छोड़ूंगा।
इसहाक के ऊंचे स्यान उजाड़, और इस्राएल के पवित्रस्यान सुनसान हो जाएंगे,
और मैं यारोबाम के घराने पर तलवार खीचे हुए चढ़ाई करूंगा।। 10 तब बेतेल के
याजक अमस्याह ने इस्राएल के राजा यारोबाम के पास कहला भेजा, कि, आमोस
ने इस्राएल के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है; उसके सारे
वचनोंको देश नहीं सह सकता। 11 क्योंकि आमोस योंकहता है, कि, यारोबाम
तलवार से मारा जाएगा, और इस्राएल अपक्की भूमि पर से निश्चय बंधुआई में
जाएगा।। 12 और अमस्याह ने आमोस से कहा, हे दर्शी, यहां से निकलकर यहूदा
देश में भाग जा, और वहीं रोटी खाया कर, और वहीं भविष्यद्वाणी किया कर; 13
परन्तु बेतेल में फिर कभी भविष्यद्वाणी न करना, क्योंकि यह राजा का
पवित्रस्यान और राज-नगर है। 14 आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा, मैं ने
तो भविष्यद्वक्ता या, और न भविष्यद्वक्ता का बेटा; मैं तो गाय-बैल का चरवाहा,
और गूलर के वृझोंका छांटनेहारा या, 15 और यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियोंके पीछे
पीछे फिरने से बुलाकर कहा, जा, मेरी प्रजा इस्राएल से भविष्यद्वाणी कर। 16
इसलिथे अब तू यहोवा का वचन सुन, तू कहता है कि इस्राएल के विरूद्ध
भविष्यद्वाणी मत कर; और इसहाक के घराने के विरूद्ध बार बार वचन मत सुना।
17 इस कारण यहोवा योंकहता है, तेरी स्त्री नगर में वेश्या हो जाएगी, और तेरे

बेटे-बेटियां तलवार से मारी जाएंगी, और तेरी भूमि डोरी डालकर बांट ली जाएगीं;
और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा, और इस्राएल अपक्की भूमि पर से निश्चय
बंधआई में जाएगा।।

आमोस 8

1 परमेश्वर यहोवा ने मुझ को योंदिखाया: कि, धूपकाल के फलोंसे भरी हुई एक
टोकरी है। 2 और उस ने कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा,
धूपकाल के फलोंसे भरी एक टोकरी। तब यहोवा ने मुण् से कहा, मेरी प्रजा
इस्राएल का अन्त आ गया है; मैं अब उसको और न छोड़ूंगा। 3 परमेश्वर यहोवा
की वणी है, कि उस दिन राजमन्दिर के गीत हाहाकार में बदल जाएंगे, और
लायोंका बड़ा ढेर लगेगा; और सब स्यानोंमें वे चुपचाप फेंक दी जाएंगी।। 4 यह
सुनो, तुम जो दरिद्रोंको निगलना और देश के नम्र लोगोंको नाश करना चाहते हो,
5 जो कहते हो नया चांद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? और विश्रमदिन
कब बीतेगा, कि हम अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को भारी
कर दें, और छल से दण्डी मारें, 6 कि हम कंगालोंको रूपया देकर, और दरिद्रोंको
एक जोड़ी जूतियां देकर मोल लें, और निकम्मा अन्न बेचें? 7 यहोवा, जिस पर
याकूब को घमण्ड करना उचित है, वही अपक्की शपय खाकर कहता है, मैं
तुम्हारे किसी काम को किभी न भूलूंगा। 8 क्या इस कारण भूमि न कांपेगी? और
क्या उन पर के सब रहनेवाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का सब मिस्र की
नील नदी के समान होगा, जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट जाती है।। 9
परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं सूर्य का दोपहर के समय अस्त

करूंगा, और इस देश को दिन दुपहरी अन्धिक्कारनो कर दूंगा। 10 मैं तुम्हारे
पर्वोंके उत्सव दूर करके विलाप कराऊंगा, और तुम्हारे सब गीतोंको दूर करके
विलाप के गीत गवाऊंगा; मैं तुम सब की कटि में टाट बंधाऊंगा, और तुम सब के
सिक्कों मुंडाऊंगा; और ऐसा विलाप कराऊंगा जैसा एकलौते के लिथे होता है, और
उसका अन्त कठिन दु:ख के दिन का सा होगा।। 11 परमेश्वर यहोवा की यह
वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महंगी करूंगा; उस में ने तो
अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनोंके सुनने ही
की भूख प्यास होगी। 12 और लोग यहोवा के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र
तब और उत्तर से पूरब तक मारे मारे फिरेंगे, परन्तु उसको न पाएंगे।। 13 उस
समय सुन्दर कुमारियां और जवान पुरूष दोनोंप्यास के मारे मूर्छा खाएंगे। 14 जो
लोग सामरिया के पाप मूल देवता की शपय खाते हैं, और जो कहते हैं कि दान के
देवता के जीवन की शपय, और बेर्शेबा के पन्य की शपय, वे सब गिर पकेंगे, और
फिर न उठेंगे।।

आमोस 9

1 मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा देखा, और उस ने कहा, खम्भे की कंगनियोंपर
मार जिस से डेवढ़ियां हिलें, और उनको सब लोगोंके सिर पर गिराकर टुकड़े टुकड़े
कर; और जो नाश होने से बचें, उन्हें मैं तलवार से घात करूंगा; उन में से एक भी
न भाग निकलेगा, और जो अपके को बचाए, वह बचने न पाएगा।। 2 क्योंकि
चाहे वे खोदकर अधोलोक में उतर जाएं, तो वहां से मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें लाऊंगा;
चाहे वे आकाश पर चढ़ जाएं, तो वहां से मैं उन्हें उतार लाऊंगा। 3 चाहे वे कर्म्मेल

में छिप जाएं, परन्तु वहां भी मैं उन्हें ढूंढ-ढूंढकर पकड़ लूंगा, और चाहे वे समुद्र
की याह में मेरी दृष्टि से ओट हों, वहां भी मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूंगा। 4
और चाहे शत्रु उन्हें हांककर बंधुआई में ले जाएं, वहां भी मैं आज्ञा देकर तलवार से
उन्हें घात कराऊंगा; और मैं उन पर भलाई करने के लिथे नहीं, बुराई की करने के
लिथे दृष्टि करूंगा।। 5 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के स्पर्श करने से पृथ्वी
पिघलती है, और उसके सारे रहनेवाले विलाप करते हैं; और वह सब की सब मिस्र
की नदी के समान जो जाती है, जो बढ़ती है फिर लहरें मारती, और घट जाती है।
6 जो आकाश में अपक्की कोठरियां बनाता, और अपके आकाशमण्डल की नेव
पृथ्वी पर डालता, और समुद्र का जल घरती पर बहा देता है, उसी का नाम यहोवा
है।। 7 हे इस्राएलियों, यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम मेरे लेखे कूशियोंके समान
नहीं हो? क्या मैं इस्राएल को मिस्र देश से और पलिश्तियोंको कप्तोर से नहीं
निकाल लाया? और अरामियोंको कीर से नहीं निकाल लाया? 8 देखो, परमेश्वर
यहोवा की दृष्टि इस पाप-मय राज्य पर लगी है, और मैं इसको धरती पर से नाश
करूंगा; तौभी मैं पूरी रीति से याकूब के घराने को नाश न करूंगा, यहोवा की यही
वाणी है। 9 मेरी आज्ञा से इस्राएल का धराना सब जातियोंमें ऐसा चला जाएगा
जैसा अन्न चलनी में चला जाता है, परन्तु उसका एक भी पुष्ट दाना भूमि पर न
गिरेगा। 10 मेरी प्रजा में के सब पापी जो कहते हैं कि वह विपत्ति हम पर न
पकेगी, और न हमें घेरेगी, वे सब तलवार से मारे जाएंगे। 11 उस समय मैं दाऊद
की गिरी हुई फोपक्की को खड़ा करूंगा, और उसके बाड़े के नाकोंको सुधारूंगा,
और उसके खण्डहरोंको फिर बनाऊंगा, और जैसा वह प्राचीनकाल से या, उसको
वैसा ही बना दुंगा; 12 जिस से वे बचे हुए एदोमियोंको वरन सब अन्यजातियोंको

जो मेरी कहलाती है, अपके अधिक्कारने में लें, यहोवा जो यह काम पूरा करता है,
उसकी यही वाणी है।। 13 यहोवा की यह भी वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, कि
हल जोतनेवाला लवनेवाले को और दाख रौंदनेवाला बीच बोनेवाले को जा लेगा;
और पहाड़ोंसे नया दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाडिय़ोंसे बह निकलेगा।
14 मैं अपक्की प्रजा इस्राएल के बंधुओं को फेर ले आऊंगा, और वे उजड़े हुए
नगरोंको सुधारकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर दाखमधु पीएंगे,
और बगीचे लगाकर उनके फल खाएंगे। 15 मैं उन्हें, उन्हीं की भूमि में बोऊंगा,
और वे अपक्की भूमि में से जो मैं ने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जाएंगे,
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।।

ओबद्दाह 1

1 ओबद्याह का दर्शन।। हम लोगोंने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, और एक
दूत अन्यजातियोंमें यह कहने को भेजा गया है: 2 उठो! हम उस से लड़ने को उठें!
मैं तुझे जातियोंमें छोटा कर दूंगा, तू बहुत तुच्छ गिना जाएगा। 3 हे पहाड़ोंकी
दरारोंमें बसनेवाले, हे ऊंचे स्यान में रहनेवाले, तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया
है; तू मन में कहता है, 4 कौन मुझे भूमि पर उतार देगा? परन्तु चाहे तू उकाब की
नाईं ऊंचा उड़ता हो, वरन तारागण के बीच अपना घोंसला बनाए हो, तौभी मैं तुझे
वहां से नीचे गिराऊंगा, यहोवा की यही वाणी है।। 5 यदि चोर-डाकू रात को तेरे
पास आते, (हाथ, तू कैसे मिटा दिया गया है!) तो क्या वे चुराए हुए धन से तृप्त
होकर चले न जाते? और यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं
कहीं दाख न छोड़ जाते? 6 परन्तु एसाव का धन कैसे खोजकर लूटा गया है,

उसका गुप्त धन कैसे पता लगा लगाकर निकाला गया है! 7 जितनोंने तुझ से
वाचा बान्धी यी, उन सभोंने तुझे सिवाने तक ढकेल दिया है; जो लोग तुझ से मेल
रखते थे, वे तुझ को धोका देकर तुझ पर प्रबल हुए हैं; वे तेरी रोटी खाते हैं, वे तेरे
लिथे फन्दा लगाते हैं-- उस में कुछ समझ नहीं है। 8 यहोवा की यह वाणी है, क्या
मैं उस समय एदोम में से बुद्धिमानोंको, और एसाव के पहाड़ में से चतुराई को
नाश न करूंगा? 9 और हे तेमान, तेरे शूरवीरोंका मन कच्चा न हो जाएगा, और
योंएसाव के पहाड़ पर का हर एक पुरूष घात होकर नाश हो जाएगा। 10 हे एसाव,
एक उपद्रव के कारण जो तू ने अपके भाई याकूब पर किया, तू लज्जा से ढंपेगा;
और सदा के लिथे नाश हो जाएगा। 11 जिस दिन परदेशी लोग उसकी धन
सम्पत्ति छीनकर ले गए, और बिराने लोगोंने उसके फाटकोंसे घुसकर यरूशलेम
पर चिट्ठी डाली, उस दिन तू भी उन में से एक या। 12 परन्तु तुझे उचित न या
कि तू अपके भाई के दिन में, अर्यात् उसकी विपत्ति के दिन में उसकी ओर देखता
रहता, और यहूदियोंके नाश होने के दिन उनके ऊपर आनन्द करता, और उनके
संकट के दिन बड़ा बोल बोलता। 13 तुझे उचित न या कि मेरी प्रजा की विपत्ति के
दिन तू उसके फाटक से घुसता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी धन सम्पत्ति
पर हाथ लगाता। 14 तुझे उचित न या कि तिरमुहाने पर उसके भागनेवालोंको
मार डालने के लिथे खड़ा होता, और संकट के दिन उसके बचे हुओं को पकड़ाता।।
15 क्योंकि सारी अन्यजातियोंपर यहोवा के दिन का आना निकट है। जैसा तु ने
किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर
पकेगा। 16 जिस प्रकार तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी
अन्यजातियां लगातार पीती रहेंगी, वरन वे सुड़क-सुड़ककर पीएंगी, और एसी हो

जाएंगी जैसी कभी हुई ही नहीं। 17 परन्तु उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए
लोग रहेंगे, ओर वह पवित्रस्यान ठहरेगा; और याकूब का घराना अपके निज
भागोंका अधिक्कारनी होगा। 18 तब याकूब का घराना आग, और यूसुफ का
घराना लौ, और एसाव का घराना खूंटी बनेगा; और वे उन में आग लगाकर उनको
भस्म करेंगे, और एसाव के घराने का कोई न बचेगा; क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा
कहा है।। 19 दक्खिन देश के लोग एसाव के पहाड़ के अधिक्कारनी हो जाएंगे,
और नीचे के देश के लोग पलिश्तियोंके अधिक्कारनी होंगे; और यहूदी, एप्रैम और
समरिया के दिहात को अपके भाग में कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का
अधिक्कारनी होगा। 20 इस्राएलियोंके उस दल में से जो लाग बंधुआई में जाकर
कनानियोंके बीच सारपत तक रहते हैं, और यरूशलेमियोंमें से जो लोग बंधुआई
में जाकर सपारद में रहते हैं, वे सब दक्खिन देश के नगरोंके अधिक्कारनी हो
जाएंगे। 21 और उद्धार करनेवाले एसाव के पहाड़ का न्याय करने के लिथे
सिय्योन पर्वत पर चढ़ आएंगे, और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा।।

योना 1

1 यहोवा का यह वचन अमितै के पुत्र योना के पास पहुंचा, 2 उठकर उस बड़े नगर
नीनवे को जा, और उसके विरूद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़
गई है। 3 परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिथे उठा,
और यापो नगर को जाकर तर्शीश जानेवाला एक जहाज पाया; और भाड़ा देकर
उस पर चढ़ गया कि उनके साय होकर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को चला
जाए।। 4 तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई, और समुद्र में बड़ी

आंधी उठी, यहां तक कि जहाज टूटने पर या। 5 तब मल्लाह लोग डरकर अपके
अपके देवता की दोहाई देने लगे; और जहाज में जो व्योपार की सामग्री यी उसे
समुद्र में फेंकने लगे कि जहाज हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज के निचले
भाग में उतरकर सो गया या, और गहरी नींद में पड़ा हुआ या। 6 तब मांफी उसके
निकट आकर कहने लगा, तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है? उठ, अपके
देवता की दोहाई दे! सम्भव है कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करे, और हमारा नाश
न हो।। 7 तब उन्होंने आपस में कहा, आओ, हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह
विपत्ति हम पर किस के कारण पक्की है। तब उन्होंने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी
योना के नाम पर निकली। 8 तब उन्होंने उस से कहा, हमें बता कि किस के
कारण यह विपत्ति हम पर पक्की है? तेरा उद्यम क्या है? और तू कहां से आया है?
तू किस देश और किस जाति का है? 9 उस ने उन से कहा, मैं इब्री हूं; और स्वर्ग
का परमेश्वर यहोवा जिस ने जल स्यल दोनोंको बनाया है, उसी का भय मानता
हूं। 10 तब वे निपट डर गए, और उस से कहने लगे, तू ने यह क्या किया है? वे
जान गए थे कि वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है, क्योंकि उस ने आप ही
उनको बता दिया या।। 11 तब उन्होंने उस से पूछा, हम तेरे साय क्या करें जिस
से समुद्र शान्त हो जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती यीं। 12 उस ने
उन से कहा, मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि
मैं जानता हूं, कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है। 13 तौभी वे
बड़े यत्न से खेते रहे कि उसको किनारे पर लगाएं, परन्तु पहुंच न सके, क्योंकि
समुद्र की लहरें उनके विरूद्ध बढ़ती ही जाती यीं। 14 तब उन्होंने यहोवा को
पुकारकर कहा, हे यहोवा हम बिनती करते ळें, कि इस पुरूष के प्राण की सन्ती

हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे हयोवा,
जो कुछ तेरी इच्छा यी वही तू ने किया है। 15 तब उन्होंने योना को उठाकर समुद्र
में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें यम गईं। 16 तब उन मनुष्योंने
यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको भेंट चढ़ाई और मन्नतें मानीं।। 17
यहोवा ने एक बड़ा सा मगरमच्छ ठहराया या कि योना को निगल ले; और योना
उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा।।

योना 2

1 तब योना ने उसके पेट में से अपके परमेश्वर यहोवा से प्रार्यना करके कहा, 2 मैं
ने संकट में पके हुए यहोवा की दोहाई दी, और उस ने मेरी सुन ली है; अधोलोक के
उदर में से मैं चिल्ला उठा, और तू ने मेरी सुन ली। 3 तू ने मुझे गहिरे सागर में
समुद्र की याह तक डाल दिया; और मैं धाराओं के बीच में पड़ा या, तेरी भड़काई
हुई सब तरंग और लहरें मेरे ऊपर से बह गईं। 4 तब मैं ने कहा, मैं तेरे साम्हने से
निकाल दिया गया हूं; तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा। 5 मैं जल से
यहां तक घिरा हुआ या कि मेरे प्राण निकले जाते थे; गहिरा सागर मेरे चारोंओर
या, और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ या। 6 मैं पहाड़ोंकी जड़ तक पहुंच गया
या; मैं सदा के लिथे भूमि में बन्द हो गया या; तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने
मेरे प्राणोंको गड़हे में से उठाया है। 7 जब मैं मूर्छा खाने लगा, तब मैं ने यहोवा को
स्मरण किया; और मेरी प्रार्यना तेरे पास वरन तेरे पवित्र मन्दिर में पहुंच गई। 8
जो लोग धोखे की व्यर्य वस्तुओं पर मन लगाते हैं, वे अपके करूणानिधान को
छोड़ देते हैं। 9 परन्तु मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलिदान चढ़ाऊंगा; जो

मन्नत मैं ने मानी, उसको पूरी करूंगा। उद्धार यहोवा ही से होता है। 10 और
यहोवा ने मगरमच्छ को आज्ञा दी, और उस ने योना को स्यल पर उगल दिया।।

योना 3

1 तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा, 2 उठकर उस बड़े
नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूंगा, उसका उस में प्रचार कर। 3
तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा लगर
या, वह तीन दिन की यात्रा का या। 4 और योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन
की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, अब से चालीस दिन के बीतने पर
नीनवे उलट दिया जाएगा। 5 तब नीनवे के मनुष्योंने परमेश्वर के वचन की
प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभोंने
टाट ओढ़ा। 6 तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुंचा; और उस ने
सिंहासन पर से उठ, अपना राजकीय ओढ़ना उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख
पर बैठ गया। 7 और राजा के प्रधानोंसे सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का
ढींढोरा पिटवाया, कि क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या और पशु,
कोई कुछ भी न खाएं; वे ने खांए और न पानी पीवें। 8 और मनुष्य और पशु
दोनोंटाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपके
कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें। 9 सम्भव है,
परमेश्वर दया करे और अपक्की इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप
शान्त हो जाए और हम नाश होने से बच जाएं।। 10 जब परमेश्वर ने उनके
कामोंको देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपक्की इच्छा बदल

दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी यी, उसको न किया।।

योना 4

1 यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का। 2 और उस ने
यहोवा से यह कहकर प्रार्यना की, हे यहोवा जब मैं अपके देश में या, तब क्या मैं
यही बात न कहता या? इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग
जाने के लिथे फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता या कि तू अनुग्रहकारी और दयालु
परमेश्वर है, विलम्ब से कोप करनेवाला करूणानिधान है, और दु:ख देने से
प्रसन्न नहीं होता। 3 सो अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिथे जीवित
रहने से मरना ही भला है। 4 यहोवा ने कहा, तेरा जो क्रोध भड़का है, क्या वह
उचित है? 5 इस पर योना उस नगर से निकलकर, उसकी पूरब ओर बैठ गया;
और वहां एक छप्पर बनाकर उसकी छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर
को क्या होगा? 6 तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ लगाकर ऐसा बढ़ाया कि
योना के सिर पर छाया हो, जिस से उसका दु:ख दूर हो। योना उस रेंड़ के पेड़ के
कारण बहुत ही आनन्दित हुआ। 7 बिहान को जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर
ने एक कीड़े को भेजा, जिस ने रेंड़ का पेड़ एसा काटा कि वह सूख गया। 8 जब
सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और घाम योना के सिर पर
ऐसा लगा कि वह मूर्च्छा खाने लगा; और उस ने यह कहकर मृत्यु मांगी, मेरे
लिथे जीवित रहने से मरना ही अच्छा है। 9 परमेश्वर ने योना से कहा, तेरा क्रोध,
जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित है? उस ने कहा, हां, मेरा जो
क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है, वरन क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता। 10 तब

यहोवा ने कहा, जिस रेंड़ के पेड़ के लिथे तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको
बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नाश भी हुआ; उस पर तू ने
तरस खाई है। 11 फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिस में एक लाख बीस हजार से
अधिम मनुष्य हैं, जो अपके दहिने बाएं हाथोंका भेद नहीं पहिचानते, और बहुत
घरेलू पशु भी उस में रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊं?

मीका 1

1 यहोवा का वचन, जो यहूदा के राजा योताम, आहाज और हिजकिय्याह के
दिनोंमें मीका मोरेशेती को पहुंचा, जिस को उस ने शोमरोन और यरूशलेम के
विषय में पाया।। 2 हे जाति-जाति के सब लोगों, सुनो! हे पृथ्वी तू उस सब समेत
जो तुझ में है, ध्यान दे! और प्रभु यहोवा तुम्हारे विरूद्ध, वरन परमेश्वर अपके
पवित्र मन्दिर में से तुम पर साझी दे। 3 कयोंकि देख, यहोवा अपके पवित्रस्यान
से बाहर निकल रहा है, और वह उतरकर पृथ्वी के ऊंचे स्यानोंपर चलेगा। 4 और
पहाड़ उसके नीचे गल जाएंगे, और तराई ऐसे फटेंगी, जैसे मोम आग की आंच से,
और पानी जो घाट से नीचे बहता है। 5 यह सब याकूब के अपराध, और इस्राएल
के घराने के पाप के कारण से होता है। याकूब का अपराध क्या है? क्या सामरिया
नहीं? और यहूदा के ऊंचे स्यान क्या हैं? क्या यरूशलेम नहीं? 6 इस कारण मैं
सामारिया को मैदान के खेत का ढेर कर दूंगा, और दाख का बगीचा बनाऊंगा;
और मैं उसके पत्यरोंको खड्ड में लुढका दूंगा, और उसकी नेव उखाड़ दूंगा। 7
उसकी सब खुदी हुई मूरतें टुकड़े टुकड़े की जाएंगी; और जो कुछ उस ने छिनाला
करके कमाया है वह आग से भस्म किया जाएगा, और उसकी सब प्रतिमाओं को

मैं चकनाचूर करूंगा; क्योंकि छिनाले ही की कमाई से उसने उसको संचय किया
है, और वह फिर छिनाले की सी कमाई हो जाएगी।। 8 इस कारण मैं छाती
पीटकर हाथ, हाथ, करूंगा; मैं लुटा हुआ सा और नंगा चला फिरा करूंगा; मैं
गीदड़ोंकी नाई चिल्लाऊंगा, और शतुर्मुर्गोंकी नाईं रोऊंगा। 9 क्योंकि उसका घाव
असाध्य है; और विपत्ति यहूदा पर भी आ पक्की, वरन वह मेरे जातिभाइयोंपर
पड़कर यरूशलेम के फाटक तक पहुंच गई है।। 10 गात नगर में इसकी चर्चा मत
करो, और मत रोओ; बेतआप्रा में धूलि में लोटपोट करो। 11 हे शापीर की
रहनेवाली नंगी होकर निर्लज चक्की जा; सानान की रहनेवाली नहीं निकल
सकती; बेतसेल के रोने पीटने के कारण उसका शरणस्यान तुम से ले लिया
जाएगा। 12 क्योंकि मारोत की रहनेवाली तो कुशल की बाट जोहते-जोहते तड़प
गई है, क्योंकि यहोवा की ओर से यरूशलेम के फाटक तक विपत्ति आ पहुंची है।
13 हे लाकिश की रहनेवाली अपके रयोंमें वेग चलनेवाले घोड़े जोत; तुझी से
सिय्योन की प्रजा के पाप का आरम्भ हुआ, क्योंकि इस्राएल के अपराध तुझी में
पाए गए। 14 इस कारण तू गात के मोरेशेत को दान देकर दूर कर देगा; अकजीब
के घर से इस्राएल के राजा धोशा ही खाएंगे। 15 हे मारेशा की रहनेवाली मैं फिर
तुझ पर एक अधिक्कारनी ठहराऊंगा, और इस्राएल के प्रतिष्ठित लोगोंको
अदुल्लाम में आना पकेगा। 16 अपके दुलारे लड़कोंके लिथे अपना केश कटवाकर
सिर मुंड़ा, वरन अपना पूरा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे, क्योंकि वे बंधुए
होकर तेरे पास से चले गए हैं।

मीका 2

1 हाथ उन पर, जो बिछौनोंपर पके हुए बुराइयोंकी कल्पना करते और दुष्ट कर्म
की इच्छा करते हैं, और बलवन्त होने के कारण भोर को दिन निकलते ही वे
उसको पूरा करते हैं। 2 वे खेतोंका लालच करके उन्हें छली लेते हैं, और घरोंका
लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं; और उसके घराने समेत पुरूष पर, और उसके
निज भाग समेत किसी पुरूष पर अन्धेर और अत्याचार कहते हैं। 3 इस कारण,
यहोवा योंकहता है, मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं, जिस के नीचे से तुम
अपक्की गर्दन हटा न सकोगे; क्योंकि वह विपत्ति का समय होगा। 4 उस समय
यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति पर गाया जाएगा: हम तो सर्वनाश
हो गए; वह मेरे लोगोंके भाग को बिगाड़ता है; हाथ, वह उसे मुझ से कितनी दूर
कर देता है! वह हमारे खेत बलवा करनेवाले को दे देता है। 5 इस कारण तेरा ऐसा
कोई न हो, जो यहोवा की मण्डली में चिट्ठी डालकर नापके की डोरी डाले।। 6
बकवासी कहा करते हैं, कि बकवास न करो। इन बातें के लिथे न कहा करो; ऐसे
लोगोंमें से अपमान न मिटेगा। 7 हे याकूब के घराने, क्या यह कहा जाए कि
यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है? क्या थे काम उसी के किए हुए हैं? क्या मेरे
वचनोंसे उसका भला नहीं होता जो सीधाई से चलता है? 8 परन्तु कल की बात है
कि मेरी प्रजा शत्रु बनकर मेरे विरूद्ध उठी है; तुम शान्त और भोले-भाले राहियोंके
तन पर से चादर छीन लेते हो जो लड़ाई का विचार न करके निधड़क चले जाते हैं।
9 मेरी प्रजा की स्त्रियोंको तुम उनके सुखधामोंसे निकाल देते हो; और उनके नन्हें
बच्चोंसे तुम मेरी दी हुई उत्तम वस्तुएं सर्वदा के लिथे छीन लेते हो। 10 उठो, चले
जाओ! क्योंकि यह तुम्हारा विश्रमस्यान नहीं है; इसका कारण वह अशुद्धता है जो
कठिन दु:ख के साय तुम्हारा नाश करेगी। 11 यदि कोई फूठी आत्मा में चलता

हुए झूठी और व्यर्थ बातें कहे और कहे कि मैं तुम्हें नित्य दाखमधु और मदिरा के
लिथे प्रचार सुनाता रहूंगा, तो वही इन लोगोंका भविष्यद्वक्ता ठहरेगा।। 12 हे
याकूब, मैं निश्चय तुम सभोंको इकट्ठा करूंगा; मैं इस्राएल के बचे हुओं को निश्चय
इकट्ठा करूंगा; और बोस्रा की भेड़बकरियोंकी नाईं एक संग रखूंगा। उस फुण्ड की
नाईं जो अच्छी चराई में हो, वे मनुष्योंकी बहुतायत के मारे कोलाहल मचाएंगे।
13 उनके आगे आगे बाड़े का तोड़नेवाला गया है, इसलिथे वे भी उसे तोड़ रहे हैं,
और फाटक से होकर निकल जा रहे हैं; उनका राजा उनके आगे आगे गया अर्थात्
यहोवा उनका सरदार और अगुवा है।।

मीका 3

1 और मैं ने कहा, हे याकूब के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के न्याइयों, सुनो! क्या
न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं? 2 तुम तो भलाई से बैर, और बुराई से
प्रीति रखते हो, मानो, तुम, लोगोंपर से उनकी खाल, और उनकी हड्डियोंपर से
उनका मांस उधेड़ लेते हो; 3 वरन तुम मेरे लोगोंका मांस खा भी लेते, और उनकी
खाल उधेड़ते हो; तुम उनकी हड्डियोंको हांड़ी में पकाने के लिथे टुकड़े टुकड़े करते
हो। 4 वे उस समय यहोवा की दोहाई देंगे, परन्तु वह उनकी न सुनेगा, वरन उस
समय वह उनके बुरे कामोंके कारण उन से मुंह फेर लेगा।। 5 यहोवा का यह
वचन है कि जो भविष्यद्वक्ता मेरी प्रजा को भटका देते हैं, और जब उन्हें खाने को
मिलता है तब शान्ति, शान्ति, पुकारते हैं, और यदि कोई उनके मुंह में कुछ न दे,
तो उसके विरूद्ध युद्ध करते को तैयार हो जाते हैं। 6 इस कारण तुम पर ऐसी रात
आएगी, कि तुम को दर्शन न मिलेगा, और तुम ऐसे अन्धकार में पड़ोगे कि भावी

न कह सकोगे। भविष्यद्वक्ताओं के लिथे सूर्य अस्त होगा, और दिन रहते उन पर
अन्धिक्कारनो छा जाएगा। 7 दर्शी लज्जित होंगे, और भावी कहनेवालोंके मुंह
काले होंगे; और वे सब के सब अपके ओठोंको इसलिथे ढांपेंगे कि परमेश्वर की
ओर से उत्तर नहीं मिलता। 8 परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और
पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूं कि मैं याकूब को उसका अपराध और इस्राएल को
उसका पाप जता सकूं। 9 हे याकूब के घराने के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के
न्यायियो, हे न्याय से धृणा करनेवालो और सब सीधी बातोंकी टेढ़ी-मेढ़ी
करनेवालो, यह बात सुनो। 10 तुम सिय्योन को हत्या करके और यरूशलेम को
कुटिलता करके दृढ़ करते हो। 11 उसके प्रधान घूस ले लेकर विचार करते, और
याजक दाम ले लेकर व्यवस्या देते हैं, और भविष्यद्वक्ता रूपके के लिथे भावी
कहते हैं; तौभी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, यहोवा हमारे बीच में है,
इसलिथे कोई विपत्ति हम पर न आएगी। 12 इसलिथे तुम्हारे कारण सिय्योन
जोतकर खेत बनाया जाएगा, और यरूशलेम डीह ही डीह हो जाएगा, और जिस
पर्वत पर भवन बना है, वह वन के ऊंचे स्यान सा हो जाएगा।।

मीका 4

1 अन्त के दिनोंमें ऐसा होगा कि यहोवा के भवन के भवन का पर्वत सब
पहाड़ोंपर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाडिय़ोंसे अधिक ऊंचा किया जाएगा;
और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। 2 और बहुत जातियोंके
लाग जाएंगे, और आपस में कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब
के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपके मार्ग सिखाएगा, और हम

उसके पयोंपर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्या सिय्योन से, और उसका वचन
यरूशलेम से निकलेगा। 3 वह बहुत देखोंके लोगोंका न्याय करेगा, और दूर दूर
तक की सामर्यी जातयोंके फगड़ोंको मिटाएगा; सो वे अपक्की तलवारें पीटकर
हल के फाल, और अपके भालोंसे हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के
विरूद्ध तलवार फिर न चलाएगी; 4 और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे।
परन्तु वे अपक्की अपक्की दाखलता और अंजीर के वृझ तले बैठा करेंगे, और
कोई उनको न डराएगा; सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है।। 5 सब राज्योंके
लोग तो अपके अपके देवता का नाम लेकर चलते हैं, परन्तु हम लोग अपके
परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे।। 6 यहोवा की यह वाणी
है, उस समय मैं प्रजा के लंगड़ोंको, और बरबस निकाले हुओं को, और जिन को मैं
ने दु:ख दिया है उन सब को इकट्ठे करूंगा। 7 और लंगड़ोंको मैं बचा रखाूंगा,
और दूर किए हुओं को एक सामर्यी जाति कर दूंगा; और यहोवा उन पर सिय्योन
पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा।। 8 और हे एदेर के गुम्मट, हे सिय्योन
की पहाड़ी, पहिली प्रभुता अर्यात् यरूशलेम का राज्य तुझे मिलेगा।। 9 अब तू
क्योंचिल्लाती है? क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा? क्या तेरा युक्ति करनेवाला
नाश हो गया, जिस से जच्चा स्त्री की नाईं तुझे पीड़ा उठती है? 10 हे सिय्योन की
बेटी, जच्चा स्त्री की नाईं पीड़ा उठाकर उत्पन्न कर; क्योंकि अब तू गढ़ी में से
निकलकर मैदान में बसेगी, वरन बाबुल तक जाएगी; वहीं तू छुड़ाई जाएगी,
अर्यात् वहीं यहोवा तुझे तेरे शत्रुओं के वश में से छुड़ा लेगा।। 11 और अब बहुत
सी जातियां तेरे विरूद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय में कहेंगी सिय्योन अपवित्र की
जाए, और हम अपक्की आंखोंसे उसको निहारें। 12 परन्तु वे यहोवा की

कल्पनाएं नहीं जानते, न उसकी युक्ति समझते हैं, कि वह उन्हें ऐसा बटोर लेगा
जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं। 13 हे सिय्योन, उठ और दांव कर, मैं तेरे
सींगोंको लोहे के, और तेरे खुओं कोंपीतल के बना दूंगा; ओर तू बहुत सी
जातियोंको चूरचूर करेगी, ओर उनकी कमाई यहोवा को और उनकी धन-सम्पित्ति
पृय्वी के प्रभु के लिथे अर्पण करेगी।।

मीका 5

1 अब हे बहुत दलोंकी स्वामिनी, दल बान्ध-बान्धकर इकट्ठी हो, क्योंकि उस ने
हम लोगोंको घेर लिया है; वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे। 2 हे
बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारोंमें गिना नहीं जाता,
तौभी तुझ में से मेरे लिथे एक पुरूष निकलेगा, जो इस्राएलियोंमें प्रभुता
करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से
होता आया है। 3 इस कारण वह उनको उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक
जच्चा उत्पन्न न करे; तब इस्राएलियोंके पास उसके बचे हुए भाई लौटकर उन से
मिल जाएंगे। 4 और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपके
परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। और वे सुरझित
रहेंगे, क्योंकि अब वह पृय्वी की छोर तक महान् ठहरेगा।। 5 और वह शान्ति का
मूल होगा, जब अश्शूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें, और हमारे राजभवनोंमें पांव
धरें, तब हम उनके विरूद्ध सात चरवाहे वरन आठ प्रधान मनुष्य खड़ें करेंगे। 6
और वे अश्शूर के देश को वरन पैठाव के स्यानोंतक निम्रोद के देश को तलवार
चलाकर मार लेंगे; और जब अश्शूरी लोग हमारे देश में आएं, और उसके सिवाने

के भीतर पांव धरें, तब वही पुरूष हम को उन से बचाएगा। 7 और याकूब के बचे
हुए लोग बहुत राज्योंके बीच ऐसा काम देंगे, जैसा यहोवा की ओर से पड़नेवाली
ओस, और घास पर की वर्षा, जो किसी के लिथे नहीं ठहरती और मनुष्योंकी बाट
नहीं जोहती। 8 और याकूब के बचे हुए लोग जातियोंमें और देश देश के लोगोंके
बीच ऐसे होंगे जैसे वनपशुओं में सिंह, वा भेड़-बकरियोंके फुण्डोंमें जवान सिंह
होता है, क्योंकि जब वह उनके बीच में से जाए, तो लताड़ता और फाड़ता जाएगा,
और कोई बचा न सकेगा। 9 तेरा हाथ तेरे द्रोहियोंपर पके, और तेरे सब शत्रु नाश
हो जाएं।। 10 यहोवा की यही वाणी है, उस समय मैं तेरे घोड़ोंको तेरे बीच में से
नाश करूंगा; और तेरे रथोंका विनाश करूंगा। 11 ओर मैं तेरे देश के नगरोंको भी
नाश करूंगा, और तेरे किलोंको ढा दूंगा। 12 और मैं तेरे तन्त्र-मन्त्र नाश करूंगा,
और तुझ में टोन्हे आगे को न रहेंगे। 13 ओर मैं तेरी खुदी हुई मूरतें, और तेरी
लाठें, तेरे बीच में से नाश करूंगा; और तू आगे को अपके हाथ की बनाई हुई
वस्तुओं को दण्डवत् न करेगा। 14 और मैं तेरी अशेरा नाम मूरतोंको तेरी भूमि में
से उखाड़ डालूंगा, और तेरे नगरोंका विनाश करूंगा। 15 और मैं अन्यजातियोंसे
जो मेरा कहा नहीं मानतीं, क्रोध और जल जलाहट के साय पलटा लूंगा।।

मीका 6

1 जो बात यहोवा कहता है, उसे सुनो: उठकर, पहाड़ोंके साम्हने वादविवाद कर,
और टीले भी तेरी सुनने पाएं। 2 हे पहाड़ों, और हे पृय्वी की अटल नेव, यहोवा का
वादविवाद सुनो, क्योंकि यहोवा का अपक्की प्रजा के साय मुकद्दमा है, और वह
इस्राएल से वादविवाद करता है।। 3 हे मेरी प्रजा, मैं ने तेरा क्या किया, और क्या

करके मैं ने तुझे ऊकता दिया है? 4 मेरे विरूद्ध साझी दे! मैं तो तुझे मिस्र देश से
निकाल ले आया, और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया; और तेरी अगुवाई
करने को मूसा, हारून और मरियम को भेज दिया। 5 हे मेरी प्रजा, स्मरण कर,
कि मोआब के राजा बालक ने तेरे विरूद्ध कौन सी युक्ति की? और बोर के पुत्र
बिलाम ने उसको क्या सम्मत्ति दी? और शित्तिम से गिल्गाल तक की बातोंका
स्मरण कर, जिस से तू यहोवा के धर्म के काम समझ सके।। 6 मैं क्या लेकर
यहोवा के सम्मुख आऊं, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के साम्हने फुकूं? क्या मैं
होमबलि के लिथे एक एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख आऊं? 7 क्या
यहोवा हजारोंमेढ़ोंसे, वा तेल की लाखोंनदियोंसे प्रसन्न होगा? क्या मैं अपके
अपराध के प्रायश्चित्त में अपके पहिलौठे को वा अपके पाप के बदले में अपके
जन्माए हुए किसी को दूं? 8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है;
और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और
कृपा से प्रीति रखे, और अपके परमेश्वर के साय नम्रता से चले? 9 यहोवा इस
नगर को पुकार रहा है, और सम्पूर्ण ज्ञान, तेरे नाम का भय मानना है: राजदण्ड
की, और जो उसे देनेवाला है उसकी बात सुनो! 10 क्या अब तक दुष्ट के घर में
दुष्टता से पाया हुआ धन और छोटा एपा घृणित नहीं है? 11 क्या मैं कपट का
तराजू और घटबढ़ के बटखरोंकी यैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूं? 12 यहां के
धनवान् लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं; और यहां के सब रहनेवाले फूठ
बोलते हैं और उनके मुंह से छल की बातें निकलती हैं। 13 इस कारण मैं तुझे
मारते मारते बहुत ही घायल करता हूं, और तेरे पापोंके कारण तुझ को उजाड़
डालता हूं। 14 तू खाएगा, परन्तु तृप्त न होगा, तेरा पट जलता ही रहेगा; और तू

अपक्की सम्पत्ति लेकर चलेगा, परन्तु न बचा सकेगा, और जो कुछ तू बचा भी
ले, उसको मैं तलवार चलाकर लुटवा दूंगा। 15 तू बोएगा, परन्तु लवेगा नहीं; तू
जलपाई का तेल निकालेगा, परन्तु लगाने न पाएगा; और दाख रौंदेगा, परन्तु
दाखमधु पीने न पाएगा। 16 क्योंकि वे ओम्री की विधियोंपर, और अहाब के
घराने के सब कामोंपर चलते हैं; और तुम उनकी युक्तियोंके अनुसार चलते हो;
इसलिथे मैं तुझे उजाड़ दूंगा, और इस नगर के रहनेवालोंपर ताली बजवाऊंगा,
और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे।।

मीका 7

1 हाथ मुझ पर ! क्योंकि मैं उस जल के समान हो गया हूं जो धूपकाल के फल
तोड़ने पर, वा रही हुठ दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए, मुझे तो पक्की
अंजीरोंकी लालसा यी, परन्तु खाने के लिथे कोई गुच्छा नही रहा। 2 भक्त लोग
पृथ्वी पर से नाश हो गए हैं, और मनुष्योंमें एक भी सीधा नहीं जन नहीं रहा; वे
सब के सब हत्या के लिथे घात लगाते, और जाल लगाकर अपके अपके भाई का
आहेर करते हैं। 3 वे अपके दोनोंहाथोंसे मन लगाकर बुराई करते हैं; हाकिम घूस
मांगता, और न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है, और रईस अपके मन की दुष्टता
वर्णन करता है; इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं। 4 उन में से जो
सब से उत्तम है, जो सब से सीधा है, वह कांटेवाले बाड़े से भी बुरा है। तेरे पहरूओं
का कहा हुआ दिन, अर्यात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है। अब वे शीघ्र चौंधिया
जाएंगे। 5 मित्र पर विश्वास मत करो, परममित्र पर भी भरोसा मत रखो; वरन
अपक्की अर्द्धांगिन से भी संभलकर बोलना। 6 क्योंकि पुत्र पिता का अपमान

करता, और बेटी माता के, और पतोह सास के विरूद्ध उठती है; मनुष्य के शत्रु
उसके घर ही के लोग होते हैं। 7 परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा, मैं अपके
उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।। 8 हे मेरी
बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्योंही मैं गिरूंगा त्योंही उठूंगा; और
ज्योंही मैं अन्धकार में पडूंगा त्योंहि यहोवा मेरे लिथे ज्योति का काम देगा। 9 मैं
ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध को
सहता रहूंगा जब तक कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा। उस
समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा, और मैं उसका धर्म देखूंगा। 10
तब मेरी बैरिन जो मुझ से यह कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहां रहा, वह भी
उसे देखेगी और लज्जा से मुंह ढांपेगी। मैं अपक्की आंखोंसे उसे देखूंगा; तब वह
सड़कोंकी कीच की नाईं लताड़ी जाएगी।। 11 तेरे बाड़ोंके बान्धने के दिन उसकी
सीमा बढ़ाई जाएगी। 12 उस दिन अश्शूर से, और मिस्र और महानद के बीच के,
और समुद्र-समुद्र और पहाड़-पहाड़ के बीच में देशोंसे लोग तेरे पास आंएगे। 13
तौभी यह देश अपके रहनेवालोंके कामोंके कारण उजाड़ ही रहेगा।। 14 तू लाठी
लिथे हुए अपक्की प्रजा की चरवाही कर, अर्यात् अपके निज भाग की
भेड़-बकरियोंकी, जो कर्म्मेल के वन में अलग बैठती है; वे पूर्वकाल की नाईं
बाशान और गिलाद में चरा करें।। 15 जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के
दिनोंमें, वैसी ही अब मैं उसको अद्भुत काम दिखाऊंगा। 16 अन्यजातियां
देखकर अपके सारे पराक्रम के विषय में लजाएंगी; वे अपके मुंह को हाथ से
छिपाएंगी, और उनके कान बहिरे हो जाएंगे। 17 वे सर्प की नाईं मिट्टी चाटेंगी,
और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं की भांति अपके बिलोंमें से कांपक्की हुई

निकलेंगी; हे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएंगी, और वे तुझ से
डरेंगी।। 18 तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को झमा करे और अपके
निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे? वह अपके क्रोध को सदा बनाए
नहीं रहता, क्योंकि वह करूणा से प्रीति रखता है। 19 वह फिर हम पर दया
करेगा, और हमारे अधर्म के कामोंको लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापोंको गहिरे
समुद्र में डाल देगा। 20 तू याकूब के विषय में वह सच्चई, और इब्राहीम के विषय
में वह करूणा पूरी करेगा, जिस की शपय तू प्राचक्कीनकाल के दिनोंसे लेकर अब
तक हमारे पितरोंसे खाता आया है।।

नहूम 1

1 नीनवे के विषय में भारी वचन। एल्कोशी नहूम के दर्शन की पुस्तक।। 2 यहोवा
जल उठनेवाला और बदला लेनेवाला ईश्वर है; यहोवा बदला लेनेवाला और
जलजलाहट करनेवाला है; यहोवा अपके द्रोहियोंसे बदला लेता है, और अपके
शत्रुओं का पाप नहीं भूलता। 3 यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा
शक्तिमान है; वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।। यहोवा बवंडर और
आंधी में होकर चलता है, और बादल उसके पांवोंकी धूलि है। 4 उसके घुड़कने से
महानद सूख जाते हैं, और समुद्र भी निर्जल हो जाता है; बाशान और कर्म्मेल
कुम्हलाते और लबानोन की हरियाली जाती रहती है। 5 उसके स्पर्श से पहाड़
कांप उठते हैं और पहाडिय़ां गल जाती हैं; उसके प्रताप से पृथ्वी वरन सारा संसार
अपके सब रहनेवालोंसमेत थरथरा उठता है।। 6 उसके क्रोध का साम्हना कौन
कर सकता है? और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी

जलजलाहट आग की नाईं भड़क जाती है, और चट्टानें उसकी शक्ति से फट
फटकर गिरती हैं। 7 यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और
अपके शरणागतोंकी सुधी रखता है। 8 परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके
स्यान का अन्त कर देगा, और अपके शत्रुओं को खदेड़कर अन्धकार में भगा
देगा। 9 तुम यहोवा के विरूद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह तुम्हारा अन्त कर
देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। 10 क्योंकि चाहे वे कांटोंसे उलफे हुए हों,
और मदिरा के नशे में चूर भी हों, तौभी वे सूखी खूंटी की नाईं भस्म किए जाएंगे।
11 तुझ में से एक निकला है, जो यहोवा के विरूद्ध कल्पना करता और नीचता की
युक्ति बान्धता है।। 12 यहोवा योंकहता है, चाहे वे सब प्रकार के सामर्यी हों, और
बहुत भी हों, तौभी पूरी रीति से काटे जाएंगे और शून्य हो जाएंगे। मैं ने तुझे दु:ख
दिया है, परन्तु फिर न दूंगा। 13 क्योंकि अब मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से
उतारकर तोड़ डालूंगा, और तेरा बन्धन फाड़ डालूंगा।। 14 यहोवा ने तेरे विषय में
यह आज्ञा दी है कि आगे को तेरा वंश न चले; मैं तेरे देवालयोंमें से ढली और गढ़ी
हुई मूरतोंको काट डालूंगा, मैं तेरे लिथे कबर खोदूंगा, क्योंकि तू नीच है।। 15
देखो, पहाड़ोंपर शुभसमाचार का सुनानेवाला और शान्ति का प्रचार करनेवाला आ
रहा है! अब हे यहूदा, अपके पर्व मान, और अपक्की मन्नतें पूरी कर, क्योंकि वह
ओछा फिर कभी तेरे बीच में होकर न चलेगा, और पूरी रीति से नाश हुआ है।।

नहूम 2

1 सत्यानाश करनेवाला तेरे विरूद्ध चढ़ आया है। गढ़ को दृढ़ कर; मार्ग देखता
हुआ चौकस रह; अपक्की कमर कस; अपना बल बढ़ा दे।। 2 यहोवा याकूब की

बड़ाई इस्राएल की बड़ाई के समान ज्योंकी त्योंकर रहा है, क्योंकि उजाड़नेवालोंने
उनको उजाड़ दिया है और दाखलता की डालियोंको नाश किया है।। 3 उसके
शूरपीरोंकी ढालें लाल रंग से रंगी गईं, और उसके योद्धा लाल रंग के वस्त्र पहिने
हुए हैं। तैयारी के दिन रयोंका लोहा आग की नाई चमकता है, और भाले हिलाए
जाते हैं। 4 रय सड़कोंमें बहुत वेग से हांके जाते हैं; वे पक्कीतोंके समान दिखाईं
देते हैं, और उनका वेग बिजली का सा है। 5 वह अपके शूरवीरोंको स्मरण करता
है; वे चलते चलते ठोकर खाते हैं, वे शहरपनाह की ओर फुर्ती से जाते हैं, और
काठ का गुम्मट तैयार किया जाता है। 6 नहरोंके द्वार खुल जाते हैं, और
राजभवन गलकर बैठा जाता है। 7 हुसेब नंगी करके बंधुवाई में ले ली जाएगी,
और उसकी दासियां छाती पीटती हुई पिण्डुकोंकी नाईं विलाप करेंगी। 8 नीनवे
जब से बनी है, तब से तालाब के समान है, तौभी वे भागे जाते हैं, और "खड़े हो;
खड़े हो", ऐसा पुकारे जाने पर भी कोई मुंह नहीं फेरता। 9 चांदी को लूटो, सोने को
लूटो, उसके रखे हुए धन की बहुतायत, और विभव की सब प्रकार की मनभावनी
सामग्री का कुछ परिमाण नहीं।। 10 वह खाली, छूछीं और सूनी हो गई है! मन
कच्चा हो गया, और पांव कांपके हैं; और उन सभोंकि कटियोंमें बड़ी पीड़ा उठी,
और सभोंके मुख का रंग उड़ गया है! 11 सिंहोंकी वह मांद, और जवान सिंह के
आखेट का वह स्यान कहां रहा जिस में सिंह और सिंहनी अपके बच्चोंसमेत
बेखटके फिरते थे? 12 सिंह तो अपके डांवरूओं के लिथे बहुत आहेर को फाड़ता
या, और अपक्की सिंहनियोंके लिथे आहेर का गला घोंट घोंटकर ले जाता या,
और अपक्की गुफाओं और मांदोंको आहेर से भर लेता या।। 13 सेनाओं के यहोवा
की यह वाणी है, मैं तेरे विरूद्ध हूं, और उसके रयोंको भस्म करके धुंएं में उड़ा दूंगा,

और उसके जवान सिंह सरीखे वीर तलवार से मारे जाएंगे; मैं तेरे आहेर को पृथ्वी
पर से नाश करूंगा, और तेरे दूतोंका बोल फिर सुना न जाएगा।।

नहूम 3

1 हाथ उस हत्यारी नगरी पर, वह तो छल और लूट के धन से भरी हुई है; लूट
कम नहीं होती है। 2 कोड़ो की फटकार और पहियोंकी घड़घड़ाहट हो रही है; घोड़े
कूदते-फांदते और रथ उछलते चलते हैं। 3 सवार चढ़ाई करते, तलवारें और भाले
बिजली की नाईं चमकते हैं, मारे हुओं की बहुतायत और लोयोंका बड़ा ढेर है;
मुर्दोंकी कुछ गिनती नहीं, लोग मुर्दोंसे ठोकर खा खाकर चलते हैं! 4 यह सब उस
अति सुन्दर वेश्या, और निपुण टोनहिन के छिनाले के द्वारा जाति-जाति के
लोगोंको, और टोने के द्वारा कुल-कुल के लोगोंको बेच डालती है।। 5 सेनाओं के
यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरे विरूद्ध हूं, और तेरे वस्त्र को उठाकर, तुझे
जाति-जाति के साम्हने नंगी और राज्य-राज्य के साम्हने नीचा दिखाऊंगा। 6 मैं
तुझ पर घिनौनी वस्तुएं फेंककर तुझे तुच्छ कर दूंगा, और सब से तेरी हंसी
कराऊंगा। 7 और जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से भागकर कहेंगे, नीनवे नाश
हो गई; कौन उसके कारण विलाप करे? हम उसके लिथे शान्ति देनेवाला कहां से
ढूंढ़कर ले आएं? 8 क्या तू अमोन नगरी से बढ़कर है, जो नहरोंके बीच बसी यी,
और उसके लिथे किला और शहरपनाह का काम देता या? 9 कूश और मिस्री
उसको अनगिनित बल देते थे, पूत और लूबी तेरे सहाथक थे।। 10 तौभी उसको
बंधुवाई में ले गए, और उसके नन्हें बच्चे सड़कोंके सिक्के पर पटक दिए गए;
और उसके प्रतिष्ठित पुरूषोंके लिथे उन्होंने चिट्ठी डाली, और उसके सब रईस

बेडियोंसे जकड़े गए। 11 तू भी मतवाली होगी, तू घबरा जाएगी; तू भी शत्रु के डर
के मारे शरण का स्यान ढूंढेगी। 12 तेरे सब गढ़ ऐसे अंजीर के वृझोंके समान होंगे
जिन में पहिले पक्के अंजीर लगे हों, यदि वे हिलाए जाएं तो फल खानेवाले के मुंह
में गिरेंगे। 13 देख, तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं, वे स्त्रियां बन गथे हैं। तेरे देश में
प्रवेश करने के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिथे बिलकुल खुले पके हैं; और रूकावट की
छड़ें आग के कौर हो गई हैं।। 14 घिर जाने के दिनोंके लिथे पानी भर ले, और
गढ़ोंको अधिक दृढ़ कर; कीचड ले आकर गारा लताड़, और भट्ठे को सजा! 15
वहां तू आग में भस्म होगी, और तलवार से तू नाश हो जाएगी। वह थेलेक नाम
टिड्डी की नाईं तुझे निगल जाएगी।। यद्यपि तू अर्बे नाम टिड्डी के समान
अनगिनित भी हो जाए! 16 तेरे व्योपारी आकाश के तारागण से भी अधिक
अनगिनित हुए। टिड्डी चट करके उड़ जाती है। 17 तेरे मुकुटधारी लोग
टिड्डियोंके समान, और सेनापति टिड्डियोंके दलोंसरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन
में बाड़ोंपर टिकते हैं, परन्तु जब सूर्य दिखाई देता है तब भाग जाते हैं; और कोई
नहीं जानता कि वे कहां गए।। 18 हे अश्शूर के राजा, तेरे ठहराए हुए चरवाहे
ऊंघते हैं; तेरे शूरवीर भारी नींद में पड़ गए हैं। तेरी प्रजा पहाड़ोंपर तितर-बितर हो
गई है, और कोई उनको फिर इकट्ठे नहीं करता। 19 तेरा घाव न भर सकेगा, तेरा
रोग असाध्य है। जितने तेरा समाचार सुनेंगे, वे तेरे ऊपर ताली बजाएंगे। क्योंकि
ऐसा कौन है जिस पर तेरी लगातार दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो?

हबक्कूक 1

1 भारी वचन जिसको हबक्कूक नबी ने दर्शन में पाया।। 2 हे यहोवा मैं कब तक

तेरी दोहाई देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख “उपद्रव”,
“उपद्रव” चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा? 3 तू मुझे अनर्थ काम
क्योंदिखाता है? और क्या कारण है कि तू उत्पात को देखता ही रहता है? मेरे
साम्हने लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं; और फगड़ा हुआ करता है और
वादविवाद बढ़ता जाता है। 4 इसलिथे व्यवस्या ढीली हो गई और न्याय कभी
नहीं प्रगट होता। दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं; सो न्याय का खून हो रहा है।। 5
अन्यजातियोंकी ओर चित्त लगाकर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि मैं
तुम्हारे ही दिनोंमें ऐसा काम करने पर हूं कि जब वह तुम को बताया जाए तो तुम
उसकी प्रतीति न करोगे। 6 देखो, मैं कसदियोंको उभारने पर हूं, वे क्रूर और
उतावली करनेवाली जाति हैं, जो पराए वासस्यानोंके अधिक्कारनी होने के लिथे
पृथ्वी भर में फैल गए हैं। 7 वे भयानक और डरावने हैं, वे आप ही अपके न्याय
की बड़ाई और प्रशंसा का कारण हैं। 8 उनके घोड़े चीतोंसे भी अधिक वेग
चलनेवाले हैं, और सांफ को आहेर करनेवाले हुंडारोंसे भी अधिक क्रूर हैं; उनके
सवार दूर दूर कूदते-फांदते आते हैं। हां, वे दूर से चले आते हैं; और आहेर पर
फपटनेवाले उकाब की नाई फपट्टा मारते हैं। 9 वे सब के सब उपद्रव करने के
लिथे आते हैं; साम्हने की ओर मुख किए हुए वे सीधे बढ़े चले जाते हैं, और बंधुओं
को बालू के किनकोंके समान बटोरते हैं। 10 राजाओं को वे ठट्ठोंमें उड़ाते और
हाकिमोंका उपहास करते हैं; वे सब दृढ़ गढ़ोंको तुच्छ जानते हैं, क्योंकि वे
दमदमा बान्धकर उनको जीत लेते हैं। 11 तब वे वायु की नाई चलते और मर्यादा
छोड़कर दोषी ठहरते हैं, क्योंकि उनका बल ही उनका देवता है।। 12 हे मेरे प्रभु
यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर, क्या तू अनादि काल से नहीं है? इस कारण हम

लोग नहीं मरने के। हे यहोवा, तू ने उनको न्याय करने के लिथे ठहराया है; हे
चट्टान, तू ने उलाहना देने के लिथे उनको बैठाया है। 13 तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं
कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता;
फिर तू विश्वासघातियोंको क्योंदेखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल
जाता है, तब तू क्योंचुप रहता है? 14 तू क्योंमनुष्योंको समुद्र की मछलियोंके
समान और उन रेंगनेवाले जन्तुओं के समान बनाता है जिन पर कोई शासन
करनेवाला नहीं है। 15 वह उन सब मनुष्योंको बन्सी से पकड़कर उठा लेता और
जाल में घसीटता और महाजाल में फंसा लेता है; इस कारण वह आनन्दित और
मगन है। 16 इसीलिथे वह अपके जाल के साम्हने बलि चढ़ाता और अपके
महाजाल के आगे धूप जलाता है; क्योंकि इन्हीं के द्वारा उसका भाग पुष्ट होता,
और उसका भोजन चिकना होता है। 17 परन्तु क्या वह जाल को खाली करने
और जाति जाति के लोगोंको लगातार निर्दयता से घात करने से हाथ न रोकेगा?

हबक्कूक 2

1 मैं अपके पहरे पर खड़ा रहूंगा, और गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहूंगा, और
ताकता रहूंगा कि मुझ से वह क्या कहेगा? और मैं अपके दिए हुए उलाहने के
विषय में उत्तर दूं? 2 यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन
पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पक्की जाएं। 3
क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन इसके पूरे होने
के समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी
उसकी बाट जाहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देन न होगी।

4 देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपके
विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा। 5 दाखमधु से धोखा होता है; अहंकारी पुरूष घर में
नहीं रहता, और उसकी लालसा अधोलोक के समान पूरी नहीं होती, और मृत्यु की
नाईं उसका पेट नहीं भरता। वह सब जातियोंको अपके पास खींच लेता, और सब
देशोंके लोगोंको अपके पास इकट्ठे कर रखता है।। 6 क्या वे सब उसका दृष्टान्त
चलाकर, और उस पर ताना मारकर न कहेंगे कि हाथ उस पर जो पराया धन
छीन छीनकर धनवान हो जाता है? कब तक? हाथ उस पर जो अपना घर बन्धक
की वस्तुओं से भर लेता है। 7 जो तुझ से कर्ज लेते हैं, क्या वे लोग अचानक न
उठेंगे? और क्या वे न जागेंगे जो तुझ को संकट में डालेंगे? 8 और क्या तू उन से
लूटा न जाएगा? तू ने बहुत सी जातियोंको लूट लिया है, सो सब बचे हुए लोग तुझे
भी लूट लेंगे। इसका कारण मनुष्योंकी हत्या, और वह अपद्रव भी जो तू ने इस
देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालोंपर किया है।। 9 हाथ उस पर, जो
अपके धर के लिथे अन्याय के लाभ का लोभी है ताकि वह अपना घोंसला ऊंचे
स्यान में बनाकर विपत्ति से बचे। 10 तू ने बहुत सी जातियोंको काटकर अपके घर
लिथे लज्जा की युक्ति बान्धी, और अपके ही प्राण का दोषी ठहरा है। 11 क्योंकि
घर की भीत का पत्यर दोहाई देता है, और उसके छत की कड़ी उनके स्वर में स्वर
मिलाकर उत्तर देती हैं। 12 हाथ उस पर जो हत्या करके नगर को बनाता, और
कुटिलता करके गढ़ को दृढ़ करता है। 13 देखो, क्या सेनाओं के यहोवा की ओर से
यह नहीं होता कि देश देश के लोग परिश्रम तो करते हैं परन्तु वे आग का कौर
होते हैं; और राज्य-राज्य के लोगोंका परिश्रम व्यर्थ ही ठहरता है? 14 क्योंकि
पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता

है।। 15 हाथ उस पर, जो अपके पड़ोसी को मदिरा पिलाता, और उस में विष
मिलाकर उसको मतवाला कर देता है कि उसको नंगा देखे। 16 तू महिमा की
सन्ती अपमान ही से भर गया है। तू भी पी, और अपके को खतनाहीन प्रगट कर!
जो कटोरा यहोवा के दहिने हाथ में रहता है, सो घूमकर तेरी ओर भी जाएगा, और
तेरा विभव तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा। 17 क्योंकि लबानोन में तेरा किया
हुआ उपद्रव और वहां के पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात, जिन से वे भयभीत
हो गए थे, तुझी पर आ पकेंगे। यह मनुष्योंकी हत्या और उस उपद्रव के कारण
होगा, जो इस देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालोंपर किया गया है।। 18
खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेवाले ने उसे खोदा है? फिर फूठ
सिखानेवाली और ढली हुई मूरत में क्या लाभ देखकर ढालनेवाले ने उस पर
इतना भरोसा रखा है कि न बोलनेवाली और निकम्मी मूरत बनाए? 19 हाथ उस
पर जो काठ से कहता है, जाग, वा अबोल पत्यर से, उठ! क्या वह सिखाएगा?
देखो, वह सोने चान्दी में मढ़ा हुआ है, परन्तु उस में आत्मा नहीं है।। 20 परन्तु
यहोवा अपके पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृय्वी उसके साम्हने शान्त रहे।।

हबक्कूक 3

1 शग्ियोनीत की रीति पर हबक्कूक नबी की प्रार्यना।। 2 हे यहोवा, मैं तेरी
कीत्तिर् सुनकर डर गया। हे यहोवा, वर्तमान युग में अपके काम को पूरा कर; इसी
युग में तू उसको प्रकट कर; क्रोध करते हुए भी दया करना स्मरण कर।। 3 ईश्वर
तेमान से आया, पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है। उसका तेज आकाश पर
छाया हुआ है, और पृय्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है।। 4 उसकी ज्योति

सूर्य के तुल्य यी, उसके हाथ से किरणे निकल रही यीं; और इन में उसका सामर्य
छिपा हुआ या। 5 उसके आगे आगे मरी फैलती गई, और उसके पांवोंसे महाज्वर
निकलता गया। 6 वह खड़ा होकर पृय्वी को नाप रहा या; उस ने देखा और जाति
जाति के लोग घबरा गए; तब सनातन पर्वत चकनाचूर हो गए, और सनातन की
पहाडिय़ां फुक गई उसकी गति अनन्त काल से एक सी है। 7 मुझे कूशान के तम्बू
में रहनेवाले दु:ख से दबे दिखाई पके; और मिद्यान देश के डेरे डगमगा गए। 8 हे
यहोवा, क्या तू नदियोंपर रिसियाया या? क्या तेरा क्रोध नदियोंपर भड़का या,
अयवा क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर भड़की यी, जब तू अपके घोड़ोंपर और
उद्धार करनेवाले विजयी रयोंपर चढ़कर आ रहा या? 9 तेरा धनुष खोल में से
निकल गया, तेरे दण्ड का वचन शाप के साय हुआ या। तू ने धरती को नदियोंसे
चीर डाला। 10 पहाड़ तुझे देखकर कांप उठे; आंधी और जलप्रलय निकल गए;
गहिरा सागर बोल उठा और अपके हाथोंअर्यात् लहरोंको ऊपर उठाया। 11 तेरे
उड़नेवाले तीरोंके चलने की जयोति से, और तेरे चमकीले भाले की फलक के
प्रकाश से सूर्य और चन्द्रमा अपके अपके स्यान पर ठहर गए।। 12 तू क्रोध में
आकर पृय्वी पर चल निकला, तू ने जाति जाति को क्रोध से नाश किया। 13 तू
अपक्की प्रजा के उद्धार के लिथे निकला, हां, अपके अभिषिक्त के संग होकर उद्धार
के लिथे निकला। तू ने दुष्ट के घर के सिर को घायल करके उसे गल से नेव तक
नंगा कर दिया। 14 तू ने उसके योद्धाओं के सिक्कों उसी की बर्छी से छेदा है, वे
मुझ को तितर-बितर करने के लिथे बवंडर की आंधी की नाईं आए, और दीन
लोगोंको घात लगाकर मार डालने की आशा से आनन्दित थे। 15 तू अपके
घोड़ोंपर सवार होकर समुद्र से हां, जलप्रलय से पार हो गया।। 16 यह सब सुनते

ही मेरा कलेजा कांप उठा, मेरे ओंठ यरयराने लगे; मेरी हड्डियां सड़ने लगीं, और
मैं खड़े खड़े कांपके लगा। मैं शान्ति से उस दिन की बाट जोहता रहूंगा जब दल
बांधकर प्रजा चढ़ाई करे।। 17 क्योंकि चाहे अंजीर के वृझोंमें फूल न लगें, और न
दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृझ से केवल धोखा पाया जाए और खेतोंमें
अन्न न उपके, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न यानोंमें गाय बैल हों,
18 तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपके उद्धारकर्त्ता
परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा।। 19 यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है, वह
मेरे पांव हरिणोंके समान बना देता है, वह मुझ को मेरे ऊंचे स्यानोंपर चलाता
है।।

सपन्याह 1

1 आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनोंमें, सपन्याह के पास जो
हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का परपोता और गदल्याह का पोता और कूशी का
पुत्र या, यहोवा का यह वचन पहुंचा: 2 मैं धरती के ऊपर से सब का अन्त कर
दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 3 मैं मनुष्य और पशु दोनोंका अन्त कर दूंगा; मैं
आकाश के पझियोंऔर समुद्र की मछलियोंका, और दुष्टोंसमेत उनकी रखी हुई
ठोकरोंके कारण का भी अन्त कर दूंगा; मैं मनुष्य जाति को भी धरती पर से नाश
कर डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 4 मैं यहूदा पर और यरूशलेम के सब
रहनेवालोंपर हाथ उठाऊंगा, और इस स्यान में बाल के बचे हुओं को और
याजकोंसमेत देवताओं के पुजारियोंके नाम को नाश कर दूंगा। 5 जो लोग अपके
अपके घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते हुए यहोवा की सेवा

करने की शपय खाते हैं; 6 और जो यहोवा के पीछे चलने से लौट गए हैं, और
जिन्होंने न तो यहोवा को ढूंढा, और न उसकी खोज में लगे, उनको भी मैं
सत्यानाश कर डालूंगा।। 7 परमेश्वर यहोवा के साम्हने शान्त रहो! क्योंकि यहोवा
का दिन निकट है; यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया है, और अपके पाहुनोंको पवित्र
किया है। 8 और यहोवा के यज्ञ के दिन, मैं हाकिमोंऔर राजकुमारोंको और
जितने परदेश के वस्त्र पहिना करते हैं, उनको भी दण्ड दूंगा। 9 उस दिन मैं उन
सभोंको दण्ड दूंगा जो डेवढ़ी को लांघते, और अपके स्वामी के घर को उपद्रव और
छल से भर देते हैं।। 10 यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मछली फाटक के
पास चिल्लाहट का और नथे टोले मिश्नाह में हाहाकार का और टीलोंपर बड़े
धमाके का शब्द होगा। 11 हे मक्तेश के रहनेवालो, हाथ, हाथ, करो! क्योंकि सब
व्योपारी मिट गए; जितने चान्दी से लदे थे, उन सब का नाश हो गया है। 12 उस
समय मैं दीपक लिए हुए यरूशलेम में ढूंढ-ढांढ़ करूंगा, और जो लोग दाखमधु के
तलछट तया मैल के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा
और न बुरा, उनको मैं दण्ड दूंगा। 13 तब उनकी धन सम्पत्ति लूटी जाएगी, और
उनके घर उजाड़ होंगे; वे घर तो बनाएंगे, परन्तु उन में रहने न पाएंगे; और वे
दाख की बारियां लगाएंगे, परन्तु उन से दाखमधु न पीने पाएंगे।। 14 ृयहोवा का
भयानक दिन निकट है, वह बहुत वेग से समीप चला आता है; यहोवा के दिन का
शब्द सुन पड़ता है, वहां वीर दु:ख के मारे चिल्लाता है। 15 वह रोष का दिन, वह
उजाड़ और उधेड़ का दिन, वह बादल और काली घटा का दिन होगा। 16 वह
गढ़वाले नगरोंऔर ऊंचे गुम्मटोंके विरूद्ध नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन
होगा। 17 मैं मनुष्योंको संकट में डालूंगा, और वे अन्धोंकी नाईं चलेंगे, क्योंकि

उन्होंने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है; उनका लोहू धूलि के समान, और उनका
मांस विष्ठा की नाईं फेंक दिया जाएगा। 18 यहोवा के रोष के दिन में, न तो चान्दी
से उनका बचाव होगा, और न सोने से; क्योंकि उसके जलन की आग से सारी
पृथ्वी भस्म हो जाएगी; वह पृथ्वी के सारे रहनेवालोंको घबराकर उनका अन्त
कर डालेगा।।

सपन्याह 2

1 हे निर्लज्ज जाति के लोगो, इकट्ठे हो! 2 इस से पहिले कि दण्ड की आज्ञा पूरी
हो और बचाव का दिन भूसी की नाईं निकले, और यहोवा का भड़कता हुआ क्रोध
तुम पर आ पके, और यहोवा के क्रोध का दिन तुम पर आए, तुम इकट्ठे हो। 3 हे
पृथ्वी के सब नम्र लोगों, हे यहोवा के नियम के माननेवालों, उसको ढूंढ़ते रहो;
धर्म से ढूंढ़ों, नम्रता से ढूंढ़ो; सम्भव है तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ।
4 क्योंकि अज्जा तो निर्जन और अश्कलोन उजाड़ हो जाएगा; अशदोद के
निवासी दिनदुपहरी निकाल दिए जाएंगे, और एक्रोन उखाड़ा जाएगा।। 5
समुद्रतीर के रहनेवालोंपर हाथ; करेती जाति पर हाथ; हे कनान, हे पलिश्तियोंके
देश, यहोवा का वचन तेरे विरूद्ध है; और मैं तुझ को ऐसा नाश करूंगा कि तुझ में
कोई न बचेगा। 6 और उसी समुद्रतीर पर चरवाहोंके घर होंगे और भेड़शालाओं
समेत चराई होगी। 7 अर्थात् वही समुद्रतीर यहूदा के घराने के बचे हुओं को
मिलेगी, वे उस पर चराएंगे; वे अश्कलोन के छोड़े हुए घरोंमें सांफ को लेटेंगे,
क्योंकि उनका परमेश्वर यहोवा उनकी सुधि लेकर उनके बंधुओं को लौटा ले
जाएगा।। 8 मोआब ने जो मेरी प्रजा की नामधराई और अम्मोनियोंने जो उसकी

निन्दा करके उसके देश की सीमा पर चढ़ाई की, वह मेरे कानोंतक पहुंची है। 9
इस कारण इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन
की शपय, निश्चय मोआब सदोम के समान, और अम्मोनी अमोरा की नाईं बिच्छू
पेड़ोंके स्यान और नमक की खानियां हो जाएंगे, और सदैव उजड़े रहेंगे। मेरी प्रजा
के बचे हुए उनको लूटेंगे, और मेरी जाति के शेष लोग उनको अपके भाग में
पाएंगे। 10 यह उनके गर्व का पलटा होगा, क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की
प्रजा की नामधराई की, और उस पर बड़ाई मारी है। 11 यहोवा उनको डरावना
दिखाई देगा, वह पृय्वी भर के देवताओं को भूखोंमार डालेगा, और
अन्यजातियोंके सब द्वीपोंके निवासी अपके अपके स्यान से उसको दण्डवत्
करेंगे।। 12 हे कूशियों, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। 13 वह अपना हाथ
उत्तर दिशा की ओर बढ़ाकर अश्शूर को नाश करेगा, और नीनवे को उजाड़ कर
जंगल के समान निर्जल कर देगा। 14 उसके बीच में सब जाति के वनपशु फुंड के
फुंड बैठेंगे; उसके खम्भोंकी कंगनियोंपर धनेश और साही दोनोंरात को बसेरा
करेंगे और उसकी खिड़कियोंमें बोला करेंगे; उसकी डेवढ़ियां सूनी पक्की रहेंगी,
और देवदार की लकड़ी उघारी जाएगी। 15 यह वही नगरी है, जो मगन रहती और
निडर बैठी रहती यी, औश्र् सोचक्की यी कि मैं ही हूं, और मुझे छोड़ कोई है ही
नहीं। परन्तु अब यह उजाड़ और वनपशुओं के बैठने का स्यान बन गया है, यहां
तक कि जो कोई इसके पास होकर चले, वह ताली बजाएगा और हाथ हिलाएगा।

सपन्याह 3

1 हाथ बलवा करनेवाली और अशुद्ध और अन्धेर से भरी हुई नगरी! 2 उस ने मेरी

नहीं सुनी, उस ने ताड़ना से भी नहीं माना, उस ने यहोवा पर भरोसा नहीं रखा, वह
अपके परमेश्वर के समीप नहीं आई।। 3 उसके हाकिम गरजनेवाले सिंह ठहरे;
उसके न्यायी सांफ को आहेर करनेवाले हुंडार हैं जो बिहान के लिथे कुछ नहीं
छोड़ते। 4 उसके भविष्यद्वक्ता व्यर्थ बकनेवाले और विश्वासघाती हैं, उसके
याजकोंने पवित्रस्यान को अशुद्ध किया और व्यवस्या में खींच-खांच की है। 5
यहोवा जो उसके बीच में है, वह धर्मी है, वह कुटिलता न करेगा; वह अपना न्याय
प्रति भोर प्रगट करता है और चूकता नहीं; परन्तु कुटिल जन को लज्जा आती ही
नहीं। 6 मैं ने अन्यजातियोंको यहां तक नाश किया, कि उनके कोनेवाले गुम्मट
उजड़ गए; मैं ने उनकी सड़कोंको यहां तक सूनी किया, कि कोई उन पर नहीं
चलता; उनके नगर यहां तक नाश हुए कि उन में कोई मनुष्य वरन कोई भी प्राणी
नहीं रहा। 7 मैं ने कहा, अब तू मेरा भय मानेगी, और मेरी ताड़ना अंगीकार करेगी
जिस से उसका धाम उस सब के अनुसर जो मैं ने ठहराया या, नाश न हो। परन्तु
वे सब प्रकार के बुरे बुरे काम यत्न से करने लगे।। 8 इस कारण यहोवा की यह
वाणी है, कि जब तक मैं नाश करने को न उठूं, तब तक तुम मेरी बाट जोहते रहो।
मैं ने यह ठाना है कि जाति-जाति के और राज्य-राज्य के लोगोंको मैं इकट्ठा
करूं, कि उन पर अपके क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊं; क्योंकि सारी पृथ्वी
मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी।। 9 और उस समय मैं देश-देश के
लोगोंसे एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊंगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्यना
करें, और एक मन से कन्धे से कन्धा मिलाए हुए उसकी सेवा करें। 10 मेरी
तितर-बितर की हुई प्रजा मुझ से बिनती करती हुई मेरी भेंट बनकर आएगी।। 11
उस दिन, तू अपके सब बड़े से बड़े कामोंसे जिन्हें करके तू मुझ से फिर गई यी,

फिर लज्जित न होगी। उस समय मैं तेरे बीच से सब फूले हुए घमण्डियोंको दूर
करूंगा, और तू मेरे पवित्र पर्वत पर फिर कभी अभिमान न करेगी। 12 क्योंकि मैं
तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगोंका एक दल बचा रखूंगा, और वे यहोवा के नाम
की शरण लेंगे। 13 इस्राएल के बचे हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न फूठ
बोलेंगे, और न उनके मुंह से छल की बातें निकलेंगी। वे चरेंगे और विश्रम करेंगे,
और कोई उनको डरानेवाला न होगा।। 14 हे सिय्योन, ऊंचे स्वर से गा; हे
इस्राएल, जयजयकार कर! हे यरूशलेम अपके सम्पूर्ण मन से आनन्द कर, और
प्रसन्न हो! 15 यहोवा ने तेरा दण्ड दूर कर दिया और तेरा शत्रु भी दूर किया गया
है। इस्राएल का राजा यहोवा तेरे बीच में है, इसलिथे तू फिर विपत्ति न भोगेगी। 16
उस समय यरूशलेम से यह कहा जाएगा, हे सिय्योन मत डर, तेरे हाथ ढीले न
पड़ने पाएं। 17 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है;
वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपके प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर
ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।। 18 जो लोग नियत पर्वो में
सम्मिलित न होने के कारण खेदित रहते हैं, उनको मैं इकट्ठा करूंगा, क्योंकि वे
तेरे हैं; और उसकी नामधराई उनको बोफ जान पड़ती है। 19 उस समय मैं उन
सभोंसे जो तुझे दु:ख देते हैं, उचित बर्ताव करूंगा। और मैं लंगड़ोंको चंगा करूंगा,
और बरबस निकाले हुओं को इकट्ठा करूंगा, और जिनकी लज्जा की चर्चा सारी
पृथ्वी पर फैली है, उनकी प्रशंसा और कीत्ति सब कहीं फैलाऊंगा। 20 उसी समय
मैं तुम्हें ले जाऊंगा, और उसी समय मैं तुम्हें इकट्ठा करूंगा; और जब मैं तुम्हारे
साम्हने तुम्हारे बंधुओं को लौटा लाऊंगा, तब पृथ्वी की सारी जातियोंके बीच में
तुम्हारी कीत्तिर् और प्रशंसा फैला दूंगा, यहोवा का यही वचन है।।

हाग्गै 1

1 दारा राजा के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के पहिले दिन, यहोवा का यह वचन,
हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा, शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल के पास, जो यहूदा का
अधिपति या, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक के पास पहुंचा: 2 सेनाओं
का यहोवा योंकहता है, थे लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं
आया है। 3 फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुंचा, 4 क्या
तुम्हारे लिथे अपके छतवाले घरोंमें रहने का समय है, जब कि यह भवन उजाड़
पड़ा है? 5 इसलिथे अब सेनाओं का यहोवा योंकहता है, अपक्की अपक्की
चाल-चलन पर ध्यान करो। 6 तुम ने बहुत बोया परन्तु योड़ा काटा; तुम खाते हो,
परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बुफती; तुम कपके पहिनते
हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपक्की मजदूरी की
कमाई को छेदवाली यैली में रखता है।। 7 सेनाओ का यहोवा तुम से योंकहता हे,
अपके अपके चालचलन पर सोचो। 8 पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ
और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न हूंगा, और मेरी महिमा
होगी, यहोवा का यही वचन है। 9 तुम ने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो
थेड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैं ने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के
यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्योंहुआ? क्या इसलिथे नहीं, कि मेरा भवन उजाड़
पड़ा है और तुम में से प्रत्थेक अपके अपके घर को दौड़ा चला जाता है? 10 इस
कारण आकाश से ओस गिरना और पृय्वी से अन्न उपजना दोनोंबन्द हैं। 11 और
मेरी आज्ञा से पृय्वी और पहाड़ोंपर, और अन्न और नथे दाखमधु पर और ताजे
तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्योंऔर घरैलू पशुओं

पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है।। 12 तब
शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक ने सब
बचे हुए लोगोंसमेत अपके परमश्ेवर यहोवा की बात मानी; और जो वचन
उनके परमेश्वर यहोवा ने उन से कहने के लिथे हाग्गै भविष्यद्वक्ता को भेज दिया
या, उसे उन्होंने मान लिया; और लोगोंने यहोवा का भय माना। 13 तब यहोवा के
दूत हाग्गै ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन लोगोंसे यह कहा, यहोवा की यह वाणी है,
मैं तुम्हारे संग हूं। 14 और यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल को जो यहूदा
का अधिपति या, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक को, और सब बचे हुए
लोगोंके मन को उभार का उत्साह से भर दिया कि वे आकर अपके परमेश्वर,
सेनाओं के यहोवा के भवन को बनाने में लग जाएं। 15 यह दारा राजा के दूसरे वर्ष
के छठवें महीने के चौबीसवें दिन हुआ।।

हाग्गै 2

1 फिर सातवें महीने के इक्कीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै
भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, 2 शालतीएल के पुत्र यहूदा के अधिपति जरूब्बाबेल,
और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक और सब बचे हुए लोगोंसे यह बात कह,
3 तुम में से कौन है, जिस ने इस भवन की पहिली महिमा देखी है? अब तुम इसे
कैसी दशा में देखते हो? क्या यह सच नहीं कि यह तुम्हारी दृष्टि में उस पहिले की
अपेझा कुछ भी अच्छा नहीं है? 4 तौभी, अब यहोवा की यह वाणी है, हे
जरूब्बाबेल, हियाव बान्ध; और हे यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक, हियाव
बान्ध; और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश के सब लोगो हियाव बान्धकर

काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। 5
तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से बान्धी यी, उसी वाचा के
अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है; इसलिथे तुम मत डरो। 6 क्योंकि
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, अब योड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृय्वी
और समुद्र और स्यल सब को कम्पित करूंगा। 7 औश्र् मै। सारी जातियोंको
कम्पकपाऊंगा, और सारी जातियोंकी मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस
भवन को अपक्की महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है। 8 चान्दी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी
है। 9 इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहिली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं
के यहोवा का यही वचन है, और इस स्यान में मैं शान्ति दूंगा, सेनाओं के यहोवा
की यही वाणी है।। 10 दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने के चौबीसवे दिन को,
यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, 11 सेनाओं का यहोवा
योंकहता है: याजकोंसे इस बात की व्यवस्या पूछ, 12 यदि कोई अपके वस्त्र के
आंचल से रोटी वा पकाए हुए भोजन वा दाखमधु वा तेल वा किसी प्रकार के
भोजन को छुए, तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा? याजकोंने उत्तर दिया, नहीं।
13 फिर हाग्गै ने पूछा, यदि कोई जन मनुष्य की लोय के कारण अशुद्ध होकर
ऐसी किसी वस्तु को छुए, तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी? याजकोंने उत्तर दिया, हां
अशुद्ध ठहरेगी। 14 फिर हाग्गै ने कहा, यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि में
यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है, और इनके सब काम भी वैसे हैं; और जो कुछ
वे वहां चढ़ाते हैं, वह भी अशुद्ध है; 15 अब सोच-विचार करो कि आज से पहिले
अर्यात् जब यहोवा के मन्दिर में पत्यर पर पत्यर रखा ही नहीं गया या, 16 उन

दिनोंमें जब कोई अन्न के बीस नपुओं की आशा से जाता, तब दास ही पाता या,
और जब कोई दाखरस के कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बर्तन भर
निकालें, तब बीस ही निकलते थे। 17 मैं ने तुम्हारी सारी खेती को लू और गरूई
और ओलोंसे मारा, तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही वाणी है। 18 अब
सोच-विचार करो, कि आज से पहिले अर्यात् जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नेव
डाली गई, उस दिन से लेकर नौवें महीने के इसी चौबीसवें दिन तक क्या दशा यी?
इसका सोच-विचार करो। 19 क्या अब तक बीच खत्ते में है? अब तक दाखलता
और अंजीर और अनार और जलपाई के वृझ नहीं फले, परन्तु आज के दिन से मैं
तुम को आशीष देता रहूंगा।। 20 उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार
यहोवा का यह वचन हाग्गै के पास पहुंचा, यहूदा के अधिपति जरूब्बाबेल से
योंकह: 21 मैं आकाश और पृय्वी दोनोंको कम्पाऊंगा, 22 और मैं राज्य-राज्य की
गद्दी को उलट दूंगा; मैं अन्यजातियोंके राज्य-राज्य का बल तोड़ूंगा, और रयोंको
चढ़वैयोंसमेत उलट दूंगा; और घोड़ोंसमेत सवार एक दूसरे की तलवार से गिरेंगे।
23 सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, उस दिन, हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास
जरूब्बाबेल, मैं तुझे लेकर अंगूठी के समान रखूंगा, यहोवा की यही वाणी है;
क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।।

जकर्याह 1

1 दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में जकर्याह भविष्यद्वक्ता के पास जो
बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता या, यहोवा का यह वचन पहुंचा: 2 यहोवा तुम
लोगोंके पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ या। 3 इसलिथे तू इन लोगोंसे कह,

सेनाओं का यहोवा योंकहता है: तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही
वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। 4
अपके पुरखाओं के समान न बनो, उन से तो अगले भविष्यद्वक्ता यह पुकार
पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा योंकहता है, अपके बुरे मार्गोंसे, और
अपके बुरे कामोंसे फिरो; परन्तु उन्होंने न तो सुना, और न मेरी ओर ध्यान दिया,
यहोवा की यही वाणी है। 5 तुम्हारे पुरखा कहां रहे? और भविष्यद्वक्ता क्या सदा
जीवित रहते हैं? 6 परन्तु मेरे वचन और मेरी आज्ञाएं जिन को मैं ने अपके दास
नबियोंको दिया या, क्या वे तुम्हारे पुरखाओं पर पूरी न हुई? तब उन्होंने मन
फिराया और कहा, सेनाओं के यहोवा ने हमारे चालचलन और कामोंके अनुसार
हम से जैसा व्यवहार करने को कहा या, वैसा ही उस ने हम को बदला दिया है।। 7
दारा के दूसरे वर्ष के शबात नाम ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह
नबी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता या, यहोवा का वचन
योंपहुंचा: 8 मैं ने रात को स्वप्न में क्या देखा कि एक पुरूष लाल घोड़े पर चढ़ा
हुआ उन मेंहदियोंके बीच खड़ा है जो नीचे स्यान में हैं, और उसके पीछे लाल और
सुरंग और श्वेत घोड़े भी खड़े हैं। 9 तब मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु थे कौन हैं? तब जो
दूत मुझ से बातें करता या, उस ने मुझ से कहा, मैं तुझे बताऊंगा कि थे कौन हैं।
10 फिर जो पुरूष मेंहदियोंके बीच खड़ा या, उस ने कहा, यह वे हैं जिन को यहोवा
ने पृय्वी पर सैर अर्यात् धूमने के लिथे भेजा है। 11 तब उन्होंने यहोवा के उस दूत
से जो मेंहदियोंके बीच खड़ा या, कहा, हम ने पृय्वी पर सैर किया है, और क्या
देखा कि सारी पृय्वी में शान्ति और चैन है। 12 तब यहोवा के दूत ने कहा, हे
सेनाओं के यहोवा, तू जो यरूशलेम और यहूदा के नगरोंपर सत्तर वर्ष से क्रोधित

है, सो तू उन पर कब तक दया न करेगा? 13 और यहोवा ने उत्तर में उस दूत से
जो मुझ से बातें करता या, अच्छी अच्छी और शान्ति की बातें कहीं। 14 तब जो
दूत मुझ से बातें करता या, उस ने मुझ से कहा, तू पुकारकर कह कि सेनाओं का
यहोवा योंकहता है, मुझे यरूशलेम और सिय्योन के लिथे बड़ी जलन हुई है। 15
और जो जातियां सुख से रहती हैं, उन से मैं क्रोधित हूं; क्योंकि मैं ने तो योड़ा से
क्रोध किया या, परन्तु उन्होंने विपत्ति को बढ़ा दिया। 16 इस कारण यहोवा
योंकहता है, अब मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हूं; मेरा भवन उस में
बनेगा, और यरूशलेम पर नापके की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की
यही वाणी है। 17 फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा योंकहता है,
मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएंगे, और यहोवा फिर सिय्योन को शान्ति
देगा; और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा।। 18 फिर मैं ने जो आंखें उठाई,
तो क्या देखा कि चार सींग हैं। 19 तब जो दूत मुझ से बातें करता या, उस से मैं ने
पूछा, थे क्या हैं? उस ने मुझ से कहा, थे वे ही सींग हैं, जिन्होंने यहूदा और
इस्राएल और यरूशलेम को तितर-बितर किया है। 20 फिर यहोवा ने मुझे चार
लोहार दिखाए। 21 तब मैं ने पूछा, थे क्या करने को आए हैं? उस ने कहा, थे वे ही
सींग हैं, जिन्होंने यहूदा को ऐसा तितर-बितर किया कि कोई सिर न उठा सका;
परन्तु थे लोग उन्हें भगाने के लिथे और उन जातियोंके सींगोंको काट डालने के
लिथे आए हैं जिन्होंने यहूदा के देश को तितर-बितर करने के लिथे उनके विरूद्ध
अपके अपके सींग उठाए थे।।

जकर्याह 2

1 फिर मैं ने आंखें उठाईं तो क्या देखा, कि हाथ में नापके की डोरी लिए हुए एक
पुरूष है। 2 तब मैं ने उस से पूछा, तू कहां जाता है? उस ने मुझ से कहा, यरूशलेम
को नापके जाता हूं कि देखूं उसकी चौड़ाई कितनी, और लम्बाई कितनी है। 3 तब
मैं ने क्या देखा, कि जो दूत मुझ से बातें करता या वह चला गया, और दूसरा दूत
उस से मिलने के लिथे आकर, 4 उस से कहता है, दौड़कर उस जवान से कह,
यरूशलेम मनुष्योंऔर घरैलू पशुओं की बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर
बाहर भी बसेगी। 5 और याहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारोंओर
आग की से शहरपनाह ठहरूंगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूंगा।।
6 यहोवा की यह वाणी है, देखो, सुनो उत्तर के देश में से भाग जाओ, क्योंकि मैं ने
तुम को आकाश की चारोंवायुओं के समान तितर बितर किया है। 7 हे बाबुलवाली
जाति के संग रहनेवाली, सिय्योन को बचकर निकल भाग! 8 क्योंकि सेनाओं का
यहोवा योंकहता है, उस तेल के प्रगट होने के बाद उस ने मुझे उन जातियोंके पास
भेजा है जो तुम्हें लूटती यीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आंख की पुतली
ही को छूता है। 9 देखो, मैं अपना हाथ उन पर उठाऊंगा, तब वे उन्हीं से लूटे
जाएंगे जो उनके दास हुए थे। तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा
है। 10 हे सिय्योन, ऊंचे स्वर से गा और आनन्द कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे
बीच में निवास करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 11 उस समय बहुत सी जातियां
यहोवा से मिल जाएंगी, और मेरी प्रजा हो जाएंगी; और मैं तेरे बीच में बास
करूंगा, 12 और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है।
और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना भाग कर लेगा, और यरूशलेम को फिर
अपना ठहराएगा।। 13 हे सब प्राणियों! यहोवा के साम्हने चुपके रहो; क्योंकि वह

जागकर अपके पवित्र निवासस्यान से निकला है।।

जकर्याह 3

1 फिर उस ने यहोशू महाथाजक को यहोवा के दूत के साम्हने खड़ा हुआ मुझे
दिखाया, और शैतान उसकी दहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा या। 2 तब
यहोवा ने शैतान से कहा, हे शैतान यहोवा तुझ को घुड़के! यहोवा जो यरूशलेम को
अपना लेता है, वही तुझे घुड़के! क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है?
3 उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने मैला वस्त्र पहिने हुए खड़ा या। 4 तब दूत ने
उन से जो साम्हने खड़े थे कहा, इसके थे मैले वस्त्र उतारो। फिर उस ने उस से
कहा, देख, मैं ने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं।
5 तब मैं ने कहा, इसके सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रखी जाए। और उन्होंने उसके
सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी, और उसको वस्त्र पहिनाए; उस समय
यहोवा का दूत पास खड़ा रहा।। 6 तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा,
7 सेनाओं का यहोवा तुझ से योंकहता है: यदि तू मेरे मार्गोंपर चले, और जो कुछ
मैं ने तुझे सौंप दिया है उसकी रझा करे, तो तू मेरे भवन का न्यायी, और मेरे
आंगनोंका रझक होगा; और मैं तुझ को इनके बीच में आने जाने दूंगा जो पास
खड़े हैं। 8 हे यहोशू महाथाजक, तू सुन ले, और तेरे भाईबन्धु जो तेरे साम्हने खड़े
हैं वे भी सुनें, क्योंकि वे मनुष्य शुभ शकुन हैं: सुनो, मैं अपके दास शाख को प्रगट
करूंगा। 9 उस पत्यर को देख जिसे मैं ने यहोशू के आगे रखा है, उस एक ही
पत्यर के ऊपर सात आंखें बनी हैं, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख मैं उस
पत्यर पर खोद देता हूं, और इस देश के अधर्म को एक ही दिन में दूर कर दूंगा।

10 उसी दिन तुम अपके अपके भाईबन्धुओं को दाखलता और अंजीर के वृझ के
नीचे आने के लिथे बुलाओगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।।

जकर्याह 4

1 फिर जो दूत मुझ से बातें करता या, उस ने आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई
नींद से जगाया जाए। 2 और उस ने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने
कहा, एक दीवट है, जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है,
और उस पर उसके सात दीपक है; जिन के ऊपर बत्ती के लिथे सात सात नालियां
हैं। 3 और दीवट के पास जलपाई के दो वृझ हैं, एक उस कटोरे की दहिनी ओर,
और दूसरा उसकी बाईं ओर। 4 तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता या,
पूछा, हे मेरे प्रभु, थे क्या हैं? 5 जो दूत मुझ से बातें करता या, उस ने मुझ को
उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता कि थे क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं
जानता। 6 तब उस ने मुझे उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिथे यहोवा का यह
वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ
सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। 7 हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरूब्बाबेल के
साम्हने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पत्यर यह पुकारते हुए आएगा,
उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह! 8 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 9
जरूब्बाबेल ने अपके हाथोंसे इस भवन की नेव डाली है, और वही अपके हाथोंसे
उसको तैयार भी करेगा। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है। 10 क्योंकि किस ने छोटी बातोंके दिन तुच्छ जाना है? यहोवा अपक्की
इन सातोंआंखोंसे सारी पृथ्वी पर दृष्टि करके साहुल को जरूब्बाबेल के हाथ में

देखेगा, और आनन्दित होगा। 11 तब मैं ने उस से फिर पूछा, थे दो जलपाई के
वृझ क्या हैं जो दीवट की दहिनी-बाई ओर हैं? 12 फिर मैं ने दूसरी बार उस से
पूछा, जलपाई की दोनोंडालिथें क्या हैं जो सोने की दोनोंनालियोंके द्वारा अपके में
से सोनहला तेल उण्डेलती हैं? 13 उस ने मुझ से कहा, क्या तू नहीं जानता कि थे
क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता। 14 तब उस ने कहा, इनका अर्य
ताजे तेल से भरे हुए वे दो पुरूष हैं जो सारी पृय्वी के परमेश्वर के पास हाजिर रहते
हैं।।

जकर्याह 5

1 मैं ने फिर आंखें उठाईं तो क्या देखा, कि एक लिखा हुआ पत्र उड़ रहा है। 2 दूत
ने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे एक लिखा हुआ पत्र
उड़ता हुआ देख पड़ता है, जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ की है।
3 तब उस ने मुझ से कहा, यह वह शाप है जो इस सारे देश पर पड़नेवाला है;
क्योंकि जो कोई चोरी करता है, वह उसकी एक ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की
नाईं निकाल दिया जाएगा; और जो कोई शपय खाता है, वह उसकी दूसरी ओर
लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा। 4 सेनाओं के यहोवा की
यही वाणी है, मैं उसको ऐसा चलाऊंगा कि वह चोर के घर में और मेरे नाम की
फूठी शपय खानेवाले के घर में घुसकर ठहरेगा, और उसको लकड़ी और
पत्यरोंसमेत नाश कर देगा।। 5 तब जो दूत मुझ से बातें करता या, उस ने बाहर
जाकर मुझ से कहा, आंखें उठाकर देख कि वह क्या वस्तु निकली जा रही हैं? 6 मैं
ने पूछा, वह क्या है? उस ने कहा? वह वस्तु जो निकली जा रही है वह एक एपा

का नाप है। और उस ने फिर कहा, सारे देश में लोगोंका यही रूप है। 7 फिर मैं ने
क्या देखा कि किक्कार भर शीशे का एक बटखरा उठाया जा रहा है, और एक स्त्री
है जो एपा के बीच में बैठी है। 8 और दूत ने कहा, इसका अर्थ दुष्टता है। और उस
ने उस स्त्री को एपा के बीच में दबा दिया, और शीशे के उस बटखरे को लेकर उस
से एपा का मुंह ढांप दिया। 9 तब मैं ने आंखें उठाईं, तो क्या देखा कि दो स्त्रिथें
चक्की जाती हैं जिन के पंख पवन में फैले हुए हैं, और उनके पंख लगलग के से हैं,
और वे एपा को आकाश और पृय्वी के बीच में उड़ाए लिए जा रही हैं। 10 तब मैं ने
उस दूत से जो मुझ से बातें करता या, पूछा, कि वे एपा को कहां लिए जाती हैं? 11
उस ने कहा, शिनार देश में लिए जाती हैं कि वहां उसके लिथे एक भवन बनाएं;
और जब वह तैयार किया जाए, तब वह एपा वहां अपके ही पाए पर खड़ा किया
जाएगा।।

जकर्याह 6

1 मैं ने फिर आंखें उठाईं, और क्या देखा कि दो पहाड़ोंके बीच से चार रय चले
आते हैं; और वे पहाड़ पीतल के हैं। 2 पहिले रय में लाल घोड़े और दूरे रय में काले,
3 तीसरे रय में श्वेत और चौथे रय में चितकबरे और बादामी घोड़े हैं। 4 तब मैं ने
उस दूत से जो मुझ से बातें करता या, पूछा, हे मेरे प्रभु, थे क्या हैं? 5 दूत ने मुझ
से कहा, थे आकाश के चारोंवायु हैं जो सारी पृय्वी के प्रभु के पास उपस्यित रहते
हैं, परन्तु अब निकल आए हैं। 6 जिस रय में काले घोड़े हैं, वह उत्तर देश की ओर
जाता है, और श्वेत घोडे उनके पीछे पीछे चले जाते हैं, और चितकबरे घोड़े
दक्खिन देश की ओर जाते हैं। 7 और बादामी घोड़ोंने निकलकर चाहा कि जाकर

पृथ्वी पर फेरा करें। सो दूत ने कहा, जाकर पृथ्वी पर फेरा करो। तब वे पृथ्वी पर
फेरा करने लगे। 8 तब उस ने मुझ से पुकारकर कहा, देख, वे जो उत्तर के देश की
ओर जाते हैं, उन्होंने वहां मेरे प्राण को ठण्डा किया हैं।। 9 फिर यहोवा का यह
वचन मेरे पास पहुंचा : 10 बंधुआई के लोगोंमें से, हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह
से कुछ ले और उसी दिन तू सपन्याह के पुत्र योशियाह के घर में जा जिस से वे
बाबुल से आकर उतरे हैं। 11 उनके हाथ से सोना चान्दी ले, और मुकुट बनाकर
उन्हें यहोसादाक के पुत्र यहोशू महाथाजक के सिर पर रख; 12 और उस से यह
कह, सेनाओं का यहोवा योंकहता है, उस पुरूष को देख जिस का नाम शाख है, वह
अपके ही स्यान से उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा। 13 वही यहोवा के
मन्दिर को बनाएगा, और महिमा पाएगा, और अपके सिंहासन पर विराजमान
होकर प्रभुता करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा, और
दोनोंके बीच मेल की सम्मति होगी। 14 और वे मुकुट हेलेम, तोबिय्याह,
यदायाह, और सपन्याह के पुत्र हेन को मिलें, और वे यहोवा के मन्दिर में स्मरण
के लिथे बने रहें।। 15 फिर दूर दूर के लोग आ आकर यहोवा के मन्दिर बनाने में
सहाथता करेंगे, और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा
है। और यदि तुम मन लगाकर अपके परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन
करो तो यह बात पूरी होगी।।

जकर्याह 7

1 फिर दारा राजा के चौथे वर्ष में किसलेव नाम नौवें महीने के चौथे दिन को,
यहोवा का वचन जकर्याह के पास पहुंचा। 2 बेतेलवासियोंने शरेसेर और

रेगेम्मेलेक को इसलिथे भेजा या कि यहोवा से बिनती करें, 3 और सेनाओं के
यहोवा के भवन के याजकोंसे और भविष्यद्वक्ताओं से भी यह पूछें, क्या हमें
उपवास करके रोना चाहिथे जैसे कि कितने वर्षोंसे हम पांचवें महीने में करते आए
हैं? 4 तब सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा; 5 सब साधारण लोगोंसे
और याजकोंसे कह, कि जब तुम इन सत्तर वर्षोंके बीच पांचवें और सातवें
महीनोंमें उपवास और विलाप करते थे, तब क्या तुम सचमुच मेरे ही लिथे
उपवास करते थे? 6 और जब तुम खाते-पीते हो, तो क्या तुम अपके ही लिथे नहीं
खाते, और क्या तुम अपके ही लिथे नहीं पीते हो? 7 क्या यह वही वचन नहीं है,
जो यहोवा अगले भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा जब
यरूशलेम अपके चारोंओर के नगरोंसमेत चैन से बसा हुआ या, और दक्खिन देश
और नीचे का देश भी बसा हुआ या? 8 फिर यहोवा का यह वचन जकर्याह के पास
पहुंचा, सेनाओं के यहोवा ने योंकहा है, 9 खराई से न्याय चुकाना, और एक दूसरे
के साय कृपा और दया से काम करना, 10 न तो विधवा पर अन्धेर करता, न
अनायोंपर, न परदेशी पर, और न दीन जन पर; और न अपके अपके मन में एक
दूसरे की हानि की कल्पना करना। 11 परन्तु उन्होंने चित्त लगाना न चाहा, और
हठ किया, और अपके कानोंको मूंद लिया ताकि सुन न सकें। 12 वरन उन्होंने
अपके हृदय को इसलिथे बज्र सा बना लिया, कि वे उस व्यवस्या और उस
वचनोंको न मान सकें जिन्हें सेनाओं के यहोवा ने अपके आत्मा के द्वारा अगले
भविष्यद्वक्ताओं से कहला भेजा या। इस कारण सेनाओं के यहोवा की ओर से उन
पर बड़ा क्रोध भड़का। 13 और सेनाओं के यहोवा का यह वचन हुआ, कि जैसे मेरे
पुकारने पर उन्होंने नहीं सुना, वैसे ही उसके पुकारने पर मैं भी न सुनूंगा; 14 वरन

मैं उन्हें उन सब जातियोंके बीच जिन्हें वे नहीं जानते, आंधी के द्वारा तितर-बितर
कर दूंगा, और उनका देश उनके पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उस में किसी का
आना जाना न होगा; इसी प्राकर से उन्होंने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया।।

जकर्याह 8

1 फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 2 सेनाओं का यहोवा
योंकहता है: सिय्योन के लिथे मुझे बड़ी जलन हुई वरन बहुत ही जलजलाहट
मुझ में उत्पन्न हुई है। 3 यहोवा योंकहता है, मैं सिय्योन में लौट आया हूं, और
यरूशेलम के बीच में वास किए रहूंगा, और यरूशलेम की सच्चाई का नगर
कहलाएगा, और सेनाओं के यहोवा का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा। 4 सेनाओं
का यहोवा योंकहता है, यरूशलेम के चौकोंमें फिर बूढे और बूढियां बहुत आयु की
होने के कारण, अपके अपके हाथ में लाठी लिए हुए बैठा करेंगी। 5 और नगर में
चौक खेलनेवाले लड़कोंऔर लड़कियोंसे भरे रहेंगे। 6 सेनाओं का याहोवा योंकहता
है, चाहे उन दिनोंमें यह बात इन बचे हुओं की दृष्टि में अनोखी ठहरे, परन्तु क्या
मेरी दृष्टि में भी यह अनोखी ठहरेगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है? 7
सेनाओं का यहोवा योंकहता है, देखो, मैं अपक्की प्रजा का उद्धार करके उसे पूरब
से और पच्छिम से ले आऊंगा; 8 और मैं उन्हें ले आकर यरूशलेम के बीच में
बसाऊंगा; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, यह तो
सच्चाई और धर्म के साय होगा।। 9 सेनाओं का यहोवा योंकहता है, तुम इन
दिनोंमें थे वचन उन भविष्यद्वक्ताओं के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के यहोवा के
भवन की नेव डालने के समय अर्यात् मन्दिर के बनने के समय में थे। 10 उन

दिनोंके पहिले, न तो मनुष्य की मजदूरी मिलती यी और न पशु का भाड़ा, वरन
सतानेवालोंके कारण न तो आनेवाले को चैन मिलता या और न जानेवाले को;
क्योंकि मैं सब मनुष्योंसे एक दूसरे पर चढ़ाई कराता या। 11 परन्तु अब मैं इस
प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्ताव न करूंगा जैसा कि अगले दिनोंमें करता या,
सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। 12 क्योंकि अब शान्ति के समय की उपज
अर्यात् दाखलता फला करेंगी, पृय्वी अपक्की उपज उपजाया करेगी, और आकाश
से ओस गिरा करेगी; क्योंकि मैं अपक्की इस प्रजा के बचे हुओं को इन सब का
अधिक्कारनी कर दूंगा। 13 और हे यहूदा के घराने, और इस्राएल के घराने, जिस
प्रकार तुम अन्यजातियोंके बीच शाप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार
करूंगा, और तुम आशीष के कारण होगे। इसलिथे तुम मत डरो, और न तुम्हारे
हाथ ढीले पड़ने पाएं।। 14 क्योंकि सेनाओं का यहोवा योंकहता है, जिस प्रकार
जब तुम्हारे पुरखा मुझे रिस दिलाते थे, तब मैं ने उनकी हानि करने के लिथे ठान
लिया या और फिर न पछताया, 15 उसी प्रकार मैं ने इन दिनोंमें यरूशलेम की
और यहूदा के घराने की भलाई करने को ठाना है; इसलिथे तुम मत डरो। 16 जो
जो काम तुम्हें करना चाहिथे, वे थे हैं: एक दूसरे के साय सत्य बोला करना,
अपक्की कचहरियोंमें सच्चाई का और मेलमिलाप की नीति का न्याय करना, 17
और अपके अपके मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना न करना, और फूठी
शपय से प्रीति न रखना, क्योंकि इन सब कामोंसे मैं धृणा करता हूं, यहोवा की
यही वाणी है।। 18 फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, 19
सेनाओं का यहोवा योंकहता है: चौथे, पांचवें, सातवें और दसवें महीने में जो जो
उपवास के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के लिथे हर्ष और आनन्द और उत्सव

के पर्वोंके दिन हो जाएगें; इसलिथे अब तुम सच्चाई और मेलमिलाप से प्रीति
रखो।। 20 सेनाओं का यहोवा योंकहता है, ऐसा समय आनेवाला है कि देश देश के
लोग और बहुत नगरोंके रहनेवाले आएंगे। 21 और एक नगर के रहनेवाले दूसरे
नगर के रहनेवालोंके पास जाकर कहेंगे, यहोवा से बिनती करने और सेनाओं के
यहोवा को ढूंढ़ने के लिथे चलो; मैं भी चलूंगा। 22 बहुत से देशोंके वरन सामर्थी
जातियोंके लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और यहोवा से बिनती
करने के लिथे आएंगे। 23 सेनाओं का यहोवा योंकहता है: उस दिनोंमें भांति भांति
की भाषा बोलनेवाली सब जातियोंमें से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरूष के वस्त्र की
छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, कि, हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना
है कि परमेश्वर तुम्हारे साय है।।

जकर्याह 9

1 हद्राक देश के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन जो दमिश्क पर भी
पकेगा। क्योंकि यहोवा की दृष्टि मनुष्य जाति की, और इस्राएल के सब गोत्रोंकी
ओर लगी है; 2 हमात की ओर जो दमिश्क के निकट है, और सोर और सीदोन की
ओर, थे तो बहुत ही बुद्धिमान् हैं। 3 सोर ने अपके लिथे एक गढ़ बनाया, और धूलि
के किनकोंकी नाईं चान्दी, और सड़कोंकी कीच के समान चोखा सोना बटोर रखा
है। 4 देखो, परमेश्वर उसको औरोंके अधिक्कारने में कर देगा, और उसके घमण्ड
को तोड़कर समुद्र में डाल देगा; और वह नगर आग का कौर हो जाएगा।। 5 यह
देखकर अशकलोन डरेगा; अज्जा को दुख होगा, और एक्रोन भी डरेगा, क्योंकि
उसकी आशा टूटेगी; और अज्जा में फिर राजा न रहेगा और अश्कलोन फिर बसी

न रहेगी। 6 और अश्दोद में अनजाने लोग बसेंगे; इसी प्रकार मैं पलिश्तियोंके गर्व
को तोड़ूंगा। 7 मैं उसके मुंह में से आहेर का लोहू और घिनौनी वस्तुएं निकाल
दूंगा, तब उन में से जो बचा रहेगा, वह हमारे परमेश्वर का जन होगा, और यहूदा
में अधिपति सा होगा; और एक्रोन के लोग यबूसियोंके समान बनेंगे। 8 तब मैं
उस सेना के कारण जो पास से होकर जाएगी और फिर लौट आएगी, अपके भवन
के आस पास छावनी किए रहूंगा, और कोई सतानेवाला फिर उनके पास से होकर
न जाएगा, क्योंकि मैं थे बातें अब भी देखता हूं।। 9 हे सिय्योन बहुत ही मगन हो।
हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और
उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ
आएगा। 10 मैं एप्रैम के रथ और यरूशलेम के घोड़े नाश करूंगा; और युद्ध के
धनुष तोड़ डाले जाएंगे, और वह अन्यजातियोंसे शान्ति की बातें कहेगा; वह
समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी के दूर दूर के देशोंतक प्रभुता करेगा।।
11 और तू भी सुन, क्योंकि मेरी वाचा के लोहू के कारण, मैं ने तेरे बन्दियोंको
बिना जल के गड़हे में से उबार लिया है। 12 हे आशा धरे हुए बन्दियों! गढ़ की
ओर फिरो; मैं आज ही बताता हूं कि मैं तुम को बदले में दूना सुख दूंगा। 13
क्योंकि मैं ने धनुष की नाईं यहूदा को चढ़ाकर उस पर तीर की नाईं एप्रैम को
लगाया है। मैं सिय्योन के निवासिक्कों यूनान के निवासियोंके विरूद्ध उभारूंगा,
और उन्हें वीर की तलवार सा कर दूंगा। 14 तब यहोवा उनके ऊपर दिखाई देगा,
और उसका तीर बिजली की नाईं छूटेगा; और परमेश्वर यहोवा नरसिंगा फूंककर
दक्खिन देश की सी आंधी में होके चलेगा। 15 सेनाओं का यहोवा ढाल से उन्हें
बचाएगा, और वे अपके शत्रुओं का नाश करेंगे, और उनके गोफन के पत्यरोंपर

पांव धरेंगे; और वे पीकर ऐसा कोलाहल करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते हैं;
और वे कटोरे की नाईं वा वेदी के कोने की नाईं भरे जाएगें ।। 16 उस समय उनका
परमेश्वर यहोवा उनको अपक्की प्रजारूपी भेड़-बकरियां जानकर उनका उद्धार
करेगा; और वे मुकुटमणि ठहरके, उसकी भूमि से बहुत ऊंचे पर चमकते रहेंगे।
17 उसका क्या ही कुशल, और क्या ही शोभा उसकी होगी! उसके जवान लोग
अन्न खाकर, और कुमारियां नया दाखमधु पीकर हृष्टपुष्ट हो जाएंगी।।

जकर्याह 10

1 बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा मांगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है,
और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा। 2 क्योंकि
गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी कहनेवाले फूठा दर्शन देखते और फूठे
स्वपन सुनाते, और व्यर्थ शान्ति देते हैं। इस कारण लोग भेड़-बकरियोंकी नाईं
भटक गए; और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पके हैं।। 3 मेरा क्रोध
चरवाहोंपर भड़का है, और मैं उन बकरोंको दण्ड दूंगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा
अपके फुण्ड अर्यात् यहूदा के घराने का हाल देखने का आएगा, और लड़ाई में
उनको अपना हृष्टपुष्ट घोड़ा सा बनाएगा। 4 उसी में से कोने का पत्यर, उसी में से
खूंटी, उसी में से युद्ध का धनुष, उसी में से सब प्रधान प्रगट होंगे। 5 और वे ऐसे
वीरोंके समान होंगे जो लड़ाई में अपके बैरियोंको सड़कोंके कीच की नाईं रौंदते हों;
वे लड़ेंगे, क्योंकि यहोवा उनके संग रहेगा, इस कारण वे वीरता से लड़ेंगे और
सवारोंकी आशा टूटेगी।। 6 मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी करूंगा, और यूसुफ के
घराने का उद्धार करूंगा। और मुझे उन पर दया आई है, इस कारण मैं उन्हें लौटा

लाकर उन्हीं के देश में बसाऊंगा, और वे ऐसे होंगे, मानोंमैं ने उनको मन से नहीं
उतारा; मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूं, इसलिथे उनकी सुन लूंगा। 7 एप्रैमी लोग
वीर के समान होंगे, और उनका मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता
है। यह देखकर उनके लड़केबालें आनन्द करेंगे और उनका मन यहोवा के कारण
मगन होगा।। 8 मैं सींटी बजाकर उनको इकट्ठा करूंगा, क्योंकि मैं उनका
छुड़ानेवाला हूं, और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे पहले बढ़े थे। 9 यद्यपि मैं उन्हें जाति-जाति
के लोगोंके बीच छितराऊंगा तौभी वे दूर दूर देशोंमें मुझे स्मरण करेंगे, और अपके
बालकोंसमेत जीवित लौट आएंगे। 10 मैं उनहें मिस्र देश से लौटा लाऊंगा, और
अश्शूर से इकट्ठा करूंगा, और गिलाद और लबानोन के देशोंमें ले आकर इतना
बढ़ाऊंगा कि वहां उनकी समाई न होगी। 11 वह उस कष्टदाई समुद्र में से होकर
उसकी लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी का सब गहिरा जल सूख जाएगा।
और अश्शूर का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा। 12 मैं
उन्हें यहोवा द्वारा पराक्रमी करूंगा, और वे उसके नाम से चलें फिरेंगे, यहोवा की
यही वाणी है।।

जकर्याह 11

1 हे लबानोन, आग को रास्ता दे कि वह आकर तेरे देवदारोंको भस्म करे! 2 हे
सनौबरों, हाथ, हाथ, करो! क्योंकि देवदार गिर गया है और बड़े से बड़े वृझ नाश
हो गए हैं! हे बाशा के बांज वृझों, हाथ, हाथ, करो! क्योंकि अगम्य वन काटा गया
है! 3 चरवाहोंके हाहाकार का शब्द हो रहा है, क्योंकि उनका विभव नाश हो गया
है! जवान सिंहोंका गरजना सुनाई देता है, क्योंकि यरदन के तीर का घना वन

नाश किया गया है! 4 मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी: घात हानेवाली
भेड़-बकरियोंका चरवाहा हो जा। 5 उनके मोल लेनेवाले उन्हें घात करने पर भी
अपके को दोषी नहीं जानते, और उनके बेचनेवाले कहते हैं, यहोवा धन्य है, हम
धनी हो गए हैं; और उनके चरवाहे उन पर कुछ दया नहीं करते। 6 यहोवा की यह
वाणी है, मैं इस देश के रहनेवालोंपर फिर दया न करूंगा। देखो, मैं मनुष्योंको एक
दूसरे के हाथ में, और उनके राजा के हाथ में पकड़वा दूंगा; और वे इस देश को
नाश करेंगे, और मैं उसके रहनेवालोंको उनके वश से न छुड़ाऊंगा।। 7 सो मैं घात
होनेवाली भेड़-बकरियोंको और विशेष करके उन में से जो दीन यीं उनको चराने
लगा। और मैं ने दो लाठियां लीं; एक का नाम मैं ने अनुग्रह रखा, और दूसरी का
नाम एकता। इनको लिथे हुए मैं उन भेड़-बकरियोंको चराने लगा। 8 और मैं ने
उनके तीनोंचरवाहोंको एक महीने में नाश कर दिया, परन्तु मैं उनके कारण
अधीर या, और वे मुझे से घृणा करती यीं। 9 तब मैं ने उन से कहा, मैं तुम को न
चराऊंगा। तुम में से जो मरे वह मरे, और जो नाश हो वह नाश हो, और जो बची
रहें वे एक दूसरे का मांस खाएं। 10 और मैं ने अपक्की वह लाठी तोड़ डाली,
जिसका नाम अनुग्रह या, कि जो वाचा मैं ने सब अन्यजातियोंके साय बान्धी यी
उसे तोड़ूं। 11 वह उसी दिन तोड़ी गई, और इस से दीन भेड़-बकरियां जो मुझे
ताकती यीं, उन्होंने जान लिया कि यह यहोवा का वचन है। 12 तब मैं ने उन से
कहा, यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो। तब
उन्होंने मेरी मजदूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए। 13 तब यहोवा ने मुझ से
कहा, इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे, यह क्या ही भारी दाम है जो उन्होंने मेरा
ठहराया है? तब मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ोंको लेकर यहोवा के घर में कुम्हार

के आगे फेंक दिया। 14 तब मैं ने अपक्की दूसरी लाठी जिस का नाम एकता या,
इसलिथे तोड़ डाली कि मैं उस भाईचारे के नाते को तोड़ डालूं जो यहूदा और
इस्राएल के बीच में है।। 15 तब यहोवा ने मुझ से कहा, अब तू मूढ़ चरवाहे के
हथियार ले ले। 16 क्योंकि मैं इस देश में एक ऐसा चरवाहा ठहराऊंगा, जो खोई
हुई को न ढूंढेगा, न तितर-बितर को इकट्ठी करेंगा, न घायलोंको चंगा करेगा, न
जो भली चंगी हैं उनका पालन-पोषण करेगा, वरन मोटियोंका मांस खाएगा और
उनके खुरोंको फाड़ डालेगा। 17 हाथ उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़-बकरियोंको
छोड़ जाता है! उसकी बांह, और दहिनी आंख दोनोंपर तलवार लगेगी, तब उसकी
बांह सूख जाएगी और उसकी दहिनी आंख फूट जाएगी।।

जकर्याह 12

1 इस्राएल के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन: यहोवा को आकाश का
ताननेवाला, पृथ्वी की नेव डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का रचनेवाला है,
उसकी यह वाणी है, 2 देखो, मैं यरूशलेम को चारोंओर की सब जातियोंके लिथे
लड़खड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूंगा; और जब यरूशलेम घेर लिया जाएगा
तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी। 3 और उस समय पृथ्वी की सारी जातियां
यरूशलेम के विरूद्ध इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊंगा, कि
जो उसको उठाएंगे वे बहुत ही घायल होंगे। 4 यहोवा की यह वाणी है, उस समय
मैं हर एक घोड़े का घबरा दूंगा, और उसके सवार को धायल करूंगा। परन्तु मैं
यहूदा के घराने पर कृपादृष्टि रखूंगा, जब मैं अन्यजातियोंके सब घोड़ोंको अन्धा
कर डालूंगा। 5 तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे कि यरूशलेम के निवासी अपके

परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की सहाथता से मेरे सहाथक बनेंगे।। 6 उस समय मैं
यहूदा के अधिपतियोंको ऐसा कर दूंगा, जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अंगेठी वा
पूले में जलती हुई मशाल होती है, अर्यात् वे दहिने बांए चारोंओर के सब लोगोंको
भस्म कर डालेंगे; और यरूशलेम जहां अब बसी है, वहीं बसी रहेगी, यरूशलेम
में।। 7 और हे यहोवा पहिले यहूदा के तम्बुओं का उद्धार करेगा, कहीं ऐसा न हो
कि दाऊद का घराना और यरूशलेम के निवासी अपके अपके विभव के कारण
यहूदा के विरूद्ध बढ़ाई मारें। 8 उस समय यहोवा यरूशलेम के निवासिक्कों मानो
ढाल से बचा लेगा, और उस सकय उन में से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के
समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्यात् यहोवा के
उस दूत के समान जो उनके आगे आगे चलता या। 9 और उस समय मैं उन सब
जातियोंको नाश करने का यत्न करूंगा जो यरूशलेम पर चढ़ाई करेंगी।। 10 और
मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियोंपर अपना अनुग्रह करनेवाली
और प्रार्यना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूंगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्यात् जिसे
उन्होंने बेधा है, और उसके लिथे ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिथे रोते-पीटते
हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिथे करते हैं। 11 उस समय
यरूशलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा मगिद्दोन की तराई में हदद्रिम्मोन में
हुआ या। 12 सारे देश में विलाप होगा, हर एक परिवार में अलग अलग; अर्यात्
दाऊद के घराने का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियां अलग; नातान के घराने का
परिवार अलग, और उनकी स्त्रियां अलग; 13 लेवी के घराने का परिवार अलग
और उनकी स्त्रियां अलग; शिमियोंका परिवार अलग; और उनकी स्त्रियां अलग;
14 और जितने परिवार रह गए होंहर एक परिवार अलग और उनकी स्त्रियां भी

अलग अलग;

जकर्याह 13

1 उसी समय दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियोंके लिथे पाप और
मलिनता धोने के निमित्त एक बहता हुआ सोता होगा।। 2 और सेनाओं के यहोवा
की यह वाणी है, कि उस समय मैं इस देश मे से मूर्तो के नाम मिटा डालूंगा, और
वे फिर स्मरण में न रहेंगी; और मैं भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्मा को इस
देश में से निकाल दूंगा। 3 और यदि कोई फिर भविष्यद्वा्ाणी करे, तो उसके
माता-पिता, जिन से वह उत्पन्न हुआ, उस से कहेंगे, तू जीवित न बचेगा, क्योंकि
तू ने यहोवा के नाम से फूठ कहा है; सो जब वह भविष्यद्वाणी करे, तब उसके
माता-पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उसको बेध डालेंगे। 4 उस समय हर एक
भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी करते हुए अपके अपके दर्शन से लज्जित होंगे, और
धोखा देने के लिथे कम्बल का वस्त्र न पहिनेंगे, 5 वरन्तु वह कहेगा, मैं
भविष्यद्वक्ता नहीं, किसान हूं; क्योंकि लड़कपन ही से मैं औरोंका दास हूं। 6 तब
उस से यह पूछा जाएगा, तेरी छाती पर थे घाव कैसे हुए, तब वह कहेगा, थे वे ही
हैं जो मेरे प्रेमियोंके घर में मुझे लगे हैं।। 7 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे
तलवार, मेरे ठहराए हुए चरवाहे के विरूद्ध अर्यात् जो पुरूष मेरा स्वजाति है,
उसके विरूद्ध चल। तू उस चरवाहे को काट, तब भेड़-बकरियां तितर-बितर हो
जाएंगी; और बच्चोंपर मैं अपके हाथ बढ़ाऊंगा। 8 यहोवा की यह भी वाणी है, कि
इस देश के सारे निवासियोंकी दो तिहाई मार डाली जाएगाी और बची हुई तिहाई
उस में बनी रहेगी। 9 उस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूंगा, जैसा

रूपा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जाचूंगा जैसा सोना जांचा जाता है। वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे, और मैं उनकी सुनूंगा। मैं उनके विषय में कहूंगा, थे मेरी प्रजा हैं, और वे मेरे विषय में कहेंगे, यहोवा हमारा परमेश्वर है।।

जकर्याह 14

1 सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन आनेवाल है जिस में तेरा धन लूटकर तेरे बीच
में बांट लिया जाएगा। 2 क्योंकि मैं सब जातियोंको यरूशलेम से लड़ने के लिथे
इकट्ठा करूंगा, और वह नगर ले लिया नगर। और घर लूटे जाएंगे और स्त्रियां
भ्रष्ट की जाएंगी; नगर के आधे लोग बंधुवाई में जाएंगे, परन्तु प्रजा के शेष लोग
नगर ही में रहने पाएंगे। 3 तब यहोवा निकलकर उन जातियोंसे ऐसा लड़ेगा जैसा
वह संग्राम के दिन में लड़ा या। 4 और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर पांव
धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के साम्हने है; तब जलपाई का पर्वत पूरब से
लेकर पच्छिम तक बीचोबीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा
पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन की ओर हट जाएगा। 5 तब तुम मेरे
बनाए हुए उस खड्ड आसेल तक पहुंचेगा, वरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस
भुईडौल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनोंमें हुआ या। तब
मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके साय होंगे।। 6 उस
समय कुछ उजियाला न रहेगा, क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएंगे। 7 और
लगातार एक ही दिन होगा जिसे यहोवा ही जानता है, न तो दिन होगा, और न
रात होगी, परन्तु सांफ के समय उजियाला होगा।। 8 उस समय यरूशलेम से
बहता हुआ जल फूट निकलेगा उसकी एक शाखा पूरब के ताल और दूसरी

पच्छिम के समुद्र की ओर बहेगी, और धूप के दिनोंमें और जाड़े के दिनोंमें भी
बराबर बहती रहेंगी।। 9 तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस समय
एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा।। 10 गेबा से लेकर
यरूशलेम की दक्खिन ओर के रिम्मोन तक सब भूमि अराबा के समान हो
जाएगी। परन्तु वह ऊंची होकर बिन्यामीन के फाटक से लेकर पहिले फाटक के
स्यान तक, और कोनेवाले फाटक तक, और हननेल के गुम्मट से लेकर राजा के
दाखरसकुण्ड़ोंतक अपके स्यान में बसेगी। 11 और लोग उस में बसेंगे क्योंकि
फिर सत्यानाश का शाप न होगा; और यरूशलेम बेखटके बसी रहेगी। 12 और
जितनी जातियोंने यरूशलेम से युद्ध किया है उन सभोंको यहोवा ऐसी मार से
मारेगा, कि खड़े खड़े उनका मांस सड़ जाएगा, और उनकी आंखें अपके गोलकोंमें
सड़ जाएंगीं, और उनकी जीभ उनके मुंह में सड़ जाएगी। 13 और उस समय
यहोवा की ओर से उन में बड़ी घबराहट पैठेगी, और वे एक दूसरे पर अपके अपके
हाथ उठाएंगे। 14 यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा, और सोना, चान्दी, वस्त्र आदि
चारोंओर की सब जातियोंकी धन सम्पत्ति उस में बटोरी जाएगी। 15 और घोड़े,
खच्चर, ऊंट और गदहे वरन जितने पशु उनकी छावनियोंमें होंगे वे भी ऐसी ही
बीमारी से मारे जाएंगे।। 16 तब जिने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब
जातियोंमें से बचे रहेंगे, वे प्रति वर्ष राजा को अर्यात् सेनाओं के यहोवा को
दण्डवत् करने, और फोपडिय़ोंका पर्व मानने के लिथे यरूशलेम को जाया करेंगे।
17 और पृथ्वी के कुलोंमें से जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्यात् सेनाओं के यहोवा
को दण्डवत करने के लिथे न जाएंगे, उनके यहां वर्षा न होगी। 18 और यदि मिस्र
का कुल वहां न आए, तो क्या उन पर वह मरी न पकेगी जिस से यहोवा उन

जातियोंको मारेगा जो फोपडिय़ोंका पर्व मानने के लिथे न जाएंगे? 19 यह मिस्र
का और उन सब जातियोंका पाप ठहरेगा, जो फोपडिय़ोंका पर्व मानने के लिथे न
जाएंगे। 20 उस समय घोड़ोंकी घंटियोंपर भी यह लिखा रहेगा, यहोवा के लिथे
पवित्र। और यहोवा के भवन कि हंडिय़ां उन कटोरोंके तुल्य पवित्र ठहरेंगी, जो
वेदी के साम्हने रहते हैं। 21 वरन यरूशलेम में और यहूदा देश में सब हंडिय़ां
सेनाओं के यहोवा के लिथे पवित्र ठहरेंगी, और सब मेलबलि करनेवाले आ आकर
उन हंडियोंमें मांस सिफाया करेंगे। और सब सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर
कोई व्योपारी न पाया जाएगा।।

मलाकी 1

1 मलाकी के द्वारा इस्राएल के विषय में कहा हुआ यहोवा का भारी वचन।। 2
यहोवा यह कहता है, मैं ने तुम से प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, तू ने किस
बात में हम से प्रेम किया है? यहोवा की यह वाणी है, क्या एसाव याकूब का भाई
न या? 3 तौभी मैं ने याकूब से प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर उसके
पहाड़ोंको उजाड़ डाला, और उसकी बपौती को जंगल के गीदड़ोंका कर दिया है। 4
एदोम कहता है, हमारा देश उजड़ गया है, परन्तु हम खण्डहरोंको फिरकर
बसाएंगे; सेनाओं का यहोवा योंकहता है, यदि वे बनाए भी, परन्तु मैं ढा दूंगा;
उनका नाम दुष्ट जाति पकेगा, और वे ऐसे लोग कहलाएंगे जि पर यहोवा सदैव
क्रोधित रहे। 5 तुम्हारी आंखे इसे देखेंगी, और तुम कहोगे, यहोवा का प्रताप
इस्राएल के सिवाने की परली ओर भी बढ़ता जाए।। 6 पुत्र पिता का, और दास
स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूं, तो मेरा आदर मानना कहां है? और

यदि मैं स्वामी हूं, तो मेरा भय मानना कहां? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकोंसे
भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो,
हम ने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है? तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध
भोजन चढ़ाते हो। 7 तौभी तुम पूछते हो कि हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते
हैं? इस बात में भी, कि तुम कहते हो, यहोवा की मेज तुच्छ है। 8 जब तुम अन्धे
पशु को बलि करने के लिथे समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? और जब
तुम लंगड़े वा रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपके हाकिम के
पास ऐसी भेंट ले आओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा वा तुम पर अनुग्रह करेगा?
सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।। 9 और अब मैं तुम से कहता हूं, ईश्वर से
प्रार्यना करो कि वह हम लोगोंपर अनुग्रह करे। यह तुम्हारे हाथ से हुआ है; तब
कया तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा? सेनाओं के
यहोवा का यही वचन है। 10 भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ोंको
बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग जलाने न पाते! सेनाओं के यहोवा
का यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न नहीं हूं, और न तुम्हारे हाथ से भेंट
ग्रहण करूंगा। 11 क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियोंमें
मेरा नाम महान है, और हर कहीं मेरे नाम पर धूप और शुद्ध भेंट चढ़ाई जाती है;
क्योंकि अन्यजातियोंमें मेरा नाम महान है, सेनाओं का यही वचन है। 12 परन्तु
तुम लोग उसको यह कहकर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज अशुद्ध है,
और जो भोजनवस्तु उस पर से मिलती है वह भी तुच्छ है। 13 फिर तुम यह भी
कहते हो, कि यह कैसा बड़ा उपद्रव है! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। तुम ने
उस भोजनवस्तु के प्रति नाक भौं सिकोड़ी, और अत्याचार से प्राप्त किए हुए और

लंगड़े और रोगी पशु की भेंट ले आते हो! क्या मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण
करूं? यहोवा का यही वचन है। 14 जिस छली के फुण्ड में नरपशु हो परन्तु वह
मन्नत मानकर परमेश्वर को बर्जा हुआ पशु चढ़ाए, वह शापित है; मैं तो महाराजा
हूं, और मेरा नाम अन्यजातियोंमें भययोग्य है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है।।

मलाकी 2

1 और अब हे याजको, यह आज्ञा तुम्हारे लिथे है। 2 यदि तुम इसे न सुनो, और
मन लगाकर मेरे नाम का आदर न करो, तो सेनाओं का यहोवा योंकहता है कि मैं
तुम को शाप दूंगा, और जो वस्तुएं मेरी आशीष से तुम्हें मिलीं हैं, उन पर मेरा
शाप पकेगा, वरन तुम जो मन नहीं लगाते हो इस कारण मेरा शाप उन पर पड़
चुका है। 3 देखो, मैं तुम्हारे कारण बीज को फिड़कूंगा, और तुम्हारे पर्वोंके
यज्ञपशुओं का मल फैलाऊंगा, और उसके संग तुम भी उठाकर फेंक दिए
जाओगे। 4 तक तुम जानोगे कि मैं ने तुम को यह आज्ञा इसलिथे दिलाई है कि
लेवी के साय मेरी बन्धी हुई वाचा बनी रहे; सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। 5
मेरी जो वाचा उसके साय बन्धी यी वह जीवन और शान्ति की यी, ओर मैं ने यह
इसलिथे उसको दिया कि वह भय मानता रहे; और उस ने मेरा भय मान भी लिया
और मेरे नाम से अत्यन्त भय खाता या। 6 उसको मेरी सच्ची व्यवस्या कण्ठ यी,
और उसके मुंह से कुटिल बात न निकलती यी। वह शान्ति और सीधाई से मेरे
संग संग चलता या, और बहुतोंको अधर्म से लौटा ले आया या। 7 क्योंकि याजक
को चाहिथे कि वह अपके आंठोंसे ज्ञान की रझा करे, और लोग उसके मुंह से

व्यवस्या पूछें, क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है। 8 परन्तु तुम लोग धर्म
के मार्ग से ही हट गए; तुम बहुतोंके लिथे व्यवस्या के विषय में ठोकर का कारण
हुए; तुम ने लेवी की वाचा को तोड़ दिया है, सेनाओं के यहोवा क यही वचन है। 9
इसलिथे मैं ने भी तुम को सब लोगोंके साम्हने तुच्छ और नीचा कर दिया है,
क्योंकि तुम मेरे मार्गो पर नहीं चलते, वरन व्यवस्या देने में मुंह देखा विचार
करते हो।। 10 क्या हम सभोंका एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम
को उत्पन्न नहीं किया? हम क्योंएक दूसरे का विश्वासघात करके अपेन पूर्वजोंकी
वाचा को तोड़ देते हैं? 11 यहूदा ने विश्वासघात किया है, और इस्राएल में और
यरूशलेम में घृणित काम किया गया है; क्योंकि यहूदा ने बिराने देवता की कन्या
से विवाह करके यहोवा के पवित्र स्यान को जो उसका प्रिय है, अपवित्र किया है।
12 जो पुरूष ऐसा काम करे, उसके तम्बुओं में से याकूब का परमेश्वर उसके घर के
रझक और सेनाओं के यहोवा की भेंट चढ़ानेवाले को यहूदा से काट डालेगा! 13
फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है कि तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेवालोंऔर
आहें भरनेवालोंके आंसुओं से भिगो दिया है, यहां तक कि वह तुम्हारी भेंट की
ओर दृष्टि तक नहीं करता, और न प्रसन्न होकर उसको तुम्हारे हाथ से ग्रहण
करता है। तुम पूछते हो, ऐसा क्यों? 14 इसलिथे, क्योंकि यहोवा तेरे और तेरी उस
जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच साझी हुआ या जिस का तू ने
विश्वासघात किया है। 15 क्या उस ने एक ही को नहीं बनाया जब कि और
आत्माएं उसके पास यीं? ओर एक ही को क्योंबनाया? इसलिथे कि वह परमेश्वर
के योग्य सन्तान चाहता है। इसलिथे तुम अपक्की आत्मा के विषय में चौकस
रहो, और तुम में से कोई अपकी जवानी की स्त्री से विश्वासघात न करे। 16

क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री-त्याग से घृणा
करता हूं, और उस से भी जो अपके वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है। इसलिथे तुम
अपक्की आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो, सेनाओं के
यहोवा का यही वचन है।। 17 तुम लोगोंने अपक्की बातोंसे यहोवा को उकता
दिया है। तौभी पूछते हो, कि हम ने किस बाते में उसे उकता दिया? इस में, कि
तुम कहते हो कि जो कोई बुरा करता है, वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है,
और वह ऐसे लोगोंसे प्रसन्न रहता है, और यह, कि न्यायी परमेश्वर कहां है?

मलाकी 3

1 देखो, मैं अपके दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और
प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपके मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का
वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है। 2 परन्तु उसके आने के दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे,
तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के
समान है। 3 वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवियोंको
शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट
धर्म से चढ़ाएंगे। 4 तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी,
जैसी पहिले दिनोंमें और प्राचीनकाल में भावती यी।। 5 तब मैं न्याय करने को
तुम्हारे निकट आऊंगा; और टोन्हों, और व्यभिचारियों, और झूठी किरिया
खानेवालोंके विरूद्ध, और जो मजदूर की मजदूरी को दबाते, और विधवा और
अनाथोंपर अन्धेर करते, और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं

मानते, उन सभोंके विरूद्ध मैं तुरन्त साक्षी दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है।। 6 क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम
नाश नहीं हुए। 7 अपके पुरखाओं के दिनोंसे तुम लोग मेरी विधियोंसे हटते आए
हो, ओर उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर
फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है; परन्तु तुम पूछते हो, हम किस बात
में फिरें? 8 क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा
देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और
उठाने की भेंटोंमें। 9 तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन
सारी जाति ऐसा करती है। 10 सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में
भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो
कि मैं आकाश के फरोखे तुम्हारे लिथे खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष
की वर्षा करता हूं कि नहीं। 11 मैं तुम्हारे लिथे नाश करनेवाले को ऐसा घुड़कूंगा
कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल
कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।। 12 तब सारी जातियां तुम
को धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का
यही वचन है।। 13 यहोवा यह कहता है, तुम ने मेरे विरूद्ध ढिठाई की बातें कही
हैं। परन्तु तुम पूछते हो, हम ने तेरे विरूद्ध में क्या कहा है? 14 तुम ने कहा है कि
परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है। हम ने जो उसके बताए हुए कामोंको पूरा किया
और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए चले हैं, इस से
क्या लाभ हुआ? 15 अब से हम अभिमानी लोगोंको धन्य कहते हैं; क्योंकि
दुराचारी तो सफल बन गए हैं, वरन वे परमेश्वर की पक्कीझा करने पर भी बच

गए हैं।। 16 तब यहोवा का भय माननेवालोंने आपस में बातें की, और यहोवा
ध्यान धर कर उनकी सुनता या; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम
का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके साम्हने एक पुस्तक लिखी
जाती यी। 17 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि जो दिन मैं ने ठहराया है, उस
दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मै उन से ऐसी कोमलता करूंगा
जैसी कोई अपके सेवा करनेवाले पुत्र से करे। 18 तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट
का भेद, अर्यात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता,
उन दोनोंको भेद पहिचान सकोगे।।

मलाकी 4

1 क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और
सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे
भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है। 2 परन्तु तुम्हारे लिथे जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा,
और उसकी किरणोंके द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए
बछड़ोंकी नाई कूदोगे और फांदोगे। 3 तब तुम दुष्टोंको लताड़ डालोगे, अर्यात्क़ेरे
उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवोंके नीचे की राख बन जाएंगे, सेनाओं के
यहोवा का यही वचन है।। 4 मेरे दास मूसा की व्यवस्या अर्यात् जो जो विधि और
नियम मैं ने सारे इस्राएलियोंके लिथे उसको होरेब में दिए थे, उनको स्मरण
रखो।। 5 देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे
पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। 6 और वह माता पिता के मन को उनके पुत्रोंकी

ओर, और पुत्रोंके मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं
आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं।।

मत्ती 1

1 इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली। 2 इब्राहीम
से इसहाक उत्पन्न हुआ; इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से यहूदा
और उसके भाई उत्पन्न हुए। 3 यहूदा से फिरिस, और यहूदा और तामार से
जोरह उत्पन्न हुए; और फिरिस से हिस्रोन उत्पन्न हुआ, और हिस्रोन से एराम
उत्पन्न हुआ। 4 और एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ; और अम्मीनादाब से
नहशोन और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। 5 और सलमोन और राहब से
बोअज उत्पन्न हुआ। और बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ; और ओबेद
से यिशै उत्पन्न हुआ। 6 और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ।। 7 और दाऊद
से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की पत्नी यी। 8 और
सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ; और रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ; और
अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ; और आसा से यहोशफात उत्पन्न हुआ; और
यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्ज़ियाह उत्पन्न हुआ। 9
और उज्ज़ियाह से योताम उत्पन्न हुआ; और योताम से आहाज उत्पन्न हुआ;
और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ। 10 और िहिजकिय्याह से
मनश्शिह उत्पन्न हुआ। और मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुआ; और आमोन से
योशिय्याह उत्पन्न हुआ। 11 और बन्दी होकर बाबूल जाने के समय में
योशिय्याह से यकुन्याह, और उस के भाई उत्पन्न हुए।। 12 बन्दी होकर बाबुल

पहुंचाए जाने के बाद यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ; और शालतिएल से
जरूब्बाबिल उत्पन्न हुआ। 13 और जरूब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न हुआ, और
अबीहूद से इल्याकीम उत्पन्न हुआ; और इल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। 14
और अजोर से सदोक उत्पन्न हुआ; और सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ; और
अखीम से इलीहूद उत्पन्न हुआ। 15 और इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुआ;
और इलियाजर से मत्तान उत्पन्न हुआ; और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। 16
और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ; जो मरियम का पति या जिस से यीशु जो
मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ।। 17 इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई
और दाऊद से बाबुल को बन्दी होकर पहुंचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बन्दी
होकर बाबुल को पहुंचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।। 18
अब यीशु मसीह का जन्क़ इस प्रकार से हुआ, कि जब उस की माता मरियम की
मंगनी यूसुफ के साय हो गई, तो उन के इकट्ठे होने के पहिले से वह पवित्र
आत्क़ा की ओर से गर्भवती पाई गई। 19 सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी या
और उसे बदनाम करना नहीं चाहता या, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।
20 जब वह इन बातोंके सोच ही में या तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई
देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपक्की पत्नी मरियम को
अपके यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्क़ा की
ओर से है। 21 वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपके
लोगोंका उन के पापोंसे उद्वार करेगा। 22 यह सब कुछ इसलिथे हुआ कि जो वचन
प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा या; वह पूरा हो। 23 कि, देखो एक कुंवारी
गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा

जिस का अर्य यह है ?परमेश्वर हमारे साय। 24 सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के
दूत की आज्ञा अनुसार अपक्की पत्नी को अपके यहां ले आया। 25 और जब तक
वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उस ने उसका नाम यीशु
रखा।।

मत्ती 2

1 हेरोदेस राजा के दिनोंमें जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्क़ हुआ, तो
देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे। 2 कि यहूदियोंका
राजा जिस का जन्क़ हुआ है, कहां है क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है
और उस को प्रणाम करने आए हैं। 3 यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साय
सारा यरूशलेम घबरा गया। 4 और उस ने लोगोंके सब महाथाजकोंऔर
शास्त्रियोंको इकट्ठे करके उन से पूछा, कि मसीह का जन्क़ कहाँ होना चाहिए 5
उन्होंने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा
योंलिखा है। 6 कि हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के
अधिक्कारनेियोंमें सब से छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति
निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा। 7 तब हेरोदेस ने
ज्योतिषियोंको चुपके से बुलाकर उन से पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई
दिया या। 8 और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक
के विषय में ठीक ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो
ताकि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं। 9 वे राजा की बात सुनकर चले गए, और
देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा या, वह उन के आगे आगे चला, और जंहा

बालक या। उस जगह के ऊपर पंहुचकर ठहर गया।। 10 उस तारे को देखकर वे
अति आनन्दित हुए। 11 और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उस की माता
मरियम के साय देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना
अपना यैला खोलकर उसे सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। 12
और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग
से होकर अपके देश को चले गए।। 13 उन के चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक
दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, उठ; उस बालक को और उस की
माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक
वही रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। 14 वह
रात ही को उठकर बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को चल दिया। 15
और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा; इसलिथे कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा या कि मैं ने अपके पुत्र को मिस्र से बुलाया पूरा हो। 16 जब हेरोदेस
ने यह देखा, कि ज्योतिषियोंने मेरे साय ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर
गया; और लोगोंको भेजकर ज्योतिषियोंसे ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार
बैतलहम और उसके आस पास के सब लड़कोंको जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे,
मरवा डाला। 17 तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया या, वह
पूरा हुआ, 18 कि रामाह में एक करूण-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप,
राहेल अपके बालकोंके लिथे रो रही यी, और शान्त होना न चाहती यी, क्योंकि वे
हैं नहीं।। 19 हेरोदेस के मरने के बाद देखो, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को
स्वप्न में दिखाई देकर कहा। 20 कि उठ, बालक और उस की माता को लेकर
इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकिं जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर

गए। 21 वह उठा, और बालक और उस की माता को साय लेकर इस्राएल के देश
में आया। 22 परन्तु यह सुनकर कि अरिखलाउस अपके पिता हेरोदेस की जगह
यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा; और स्वप्न में चितौनी पाकर
गलील देश में चला गया। 23 और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह
वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया या, कि वह नासरी
कहलाएगा।।

मत्ती 3

1 उन दिनोंमें यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार
करने लगा। कि 2 मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। 3 यह
वही है जिस की चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक
पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी
करो। 4 यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने या, और अपक्की कमर में चमड़े
का पट्का बान्धे हुए या, और उसका भोजन टि्टड्डियाँ और बनमधु या। 5 तब
यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग
उसके पास निकल आए। 6 और अपके अपके पापोंको मानकर यरदन नदी में
उस से बपतिस्क़ा लिया। 7 जब उस ने बहुतेरे फरीसियोंऔर सदूकियोंको
बपतिस्क़ा के लिथे अपके पास आते देखा, तो उन से कहा, कि हे सांप के
बच्चोंतुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो 8 सो मन फिराव के
योग्य फल लाओ। 9 और अपके अपके मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता
इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्यरोंसे इब्राहीम के

लिथे सन्तान उत्पन्न कर सकता है। 10 और अब कुल्हाड़ा पेड़ोंकी जड़ पर रखा
हुआ है, इसलिथे जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में फोंका
जाता है। 11 मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्क़ा देता हूं, परन्तु जो मेरे
बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं,
वह तुम्हें पवित्र आत्क़ा और आग से बपतिस्क़ा देगा। 12 उसका सूप उस के हाथ
में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपके गेहूं को
तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुफने की
नहीं।। 13 उस समय यीशु मसीह गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास
उस से बपतिस्क़ा लेने आया। 14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि
मुझे तेरे हाथ से बपतिस्क़ा लेने की आवश्यक्ता है, और तू मेरे पास आया है 15
यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति
से सब धामिर्कता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली। 16
और यीशु बपतिस्क़ा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिथे
आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्क़ा को कबूतर की नाईं उतरते
और अपके ऊपर आते देखा। 17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा
प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।।

मत्ती 4

1 तब उस समय आत्क़ा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की
पक्कीझा हो। 2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे
भूख लगी। 3 तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र

है, तो कह दे, कि थे पत्यर रोटियां बन जाएं। 4 उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि
मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से
निकलता है जीवित रहेगा। 5 तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और
मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। 6 और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है,
तो अपके आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपके
स्वर्गदूतोंको आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथोंहाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे
पांवोंमें पत्यर से ठेस लगे। 7 यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु
अपके परमेश्वर की पक्कीझा न कर। 8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर
ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर 9 उस से कहा, कि
यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। 10 तब यीशु ने
उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपके परमेश्वर को
प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। 11 तब शैतान उसके पास से चला
गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे।। 12 जब उस ने यह
सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। 13 और
नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो फील के किनारे जबूलून और नपताली के
देश में है जाकर रहने लगा। 14 ताकि जो यशायाह भविष्द्वक्ता के द्वारा कहा गया
या, वह पूरा हो। 15 कि जबूलून और नपताली के देश, फील के मार्ग से यरदन के
पास अन्यजातियोंका गलील। 16 जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी
ज्योंति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।।
17 उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन
फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। 18 उस ने गलील की फील के

किनारे फिरते हुए दो भाइयोंअर्यात्‌ शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके
भाई अन्द्रियास को फील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछवे थे। 19 और उन
से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्योंके पकड़नेवाले बनाऊंगा। 20
वे तुरन्त जालोंको छोड़कर उसके पीछे हो लिए। 21 और वहां से आगे बढ़कर, उस
ने और दो भाइयोंअर्यात्‌ जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपके
पिता जब्दी के साय नाव पर अपके जालोंको सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया
22 वे तुरन्त नाव और अपके पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।। 23 और
यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपकेश करता और राज्य का
सुसमाचार प्रचार करता, और लोगोंकी हर प्रकार की बीमारी और र्दुबलता को दूर
करता रहा। 24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब
बीमारोंको, जो नाना प्रकार की बीमारियोंऔर दुखोंमें जकड़े हुए थे, और जिन में
दुष्टात्क़ाएं यीं और मिर्गीवालोंऔर फोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और
उस ने उन्हें चंगा किया। 25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और
यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।।

मत्ती 5

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले
उसके पास आए। 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपकेश देने लगा, 3
धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। 4 धन्य हैं वे,
जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। 5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे
पृय्वी के अधिक्कारनी होंगे। 6 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया

की जाएगी। 7 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। 8
धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। 9 धन्य
हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। 10
धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण फूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब
प्रकार की बुरी बात कहें। 11 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिथे
स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिथे कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले
थे इसी रीति से सताया या।। 12 तुम पृय्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का
स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा 13 तुम
पृय्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस
वस्तु से नमकीन किया जाएगा फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि
बाहर फेंका जाए और मनुष्योंके पैरोंतले रौंआ जाए। 14 तुम जगत की ज्योति हो;
जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। 15 और लोग दिया
जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब
लोगोंको प्रकाश पहुंचता है। 16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्योंके साम्हने
चमके कि वे तुम्हारे भले कामोंको देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई
करें।। 17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्या या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकोंको लोप
करने आया हूं। 18 लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से
सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृय्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्या से
एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। 19 इसलिथे जो कोई इन छोटी
से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगोंको सिखाए, वह
स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा

और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। 20 क्योंकि मैं
तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धामिर्कता शास्त्रियोंऔर फरीसियोंकी
धामिर्कता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न
पाओगे।। 21 तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगोंसे कहा गया या कि हत्या न
करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। 22 परन्तु
मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपके भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में
दण्ड के योग्य होगा: और जो कोई अपके भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा
में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे ?अरे मूर्ख वह नरक की आग के दण्ड के
योग्य होगा। 23 इसलिथे यदि तू अपक्की भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्क़रण
करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपक्की भेंट वहीं वेदी
के साम्हने छोड़ दे। 24 और जाकर पहिले अपके भाई से मेल मिलाप कर; तब
आकर अपक्की भेंट चढ़ा। 25 जब तक तू अपके मुद्दई के साय मार्ग में हैं, उस से
फटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और
हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। 26 मैं तुम
से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न
पाएगा।। 27 तुम सुन चुके हो कि कहा गया या, कि व्यभिचार न करना। 28
परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपके
मन में उस से व्यभिचार कर चुका। 29 यदि तेरी दिहनी आंख तुझे ठोकर
खिलाए, तो उसे निकालकर अपके पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिथे यही भला है
कि तेरे अंगोंमें से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
30 और यदि तेरा दिहना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर अपके पास

से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिथे यही भला है, कि तेरे अंगोंमें से एक नाश हो जाए और
तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।। 31 यह भी कहा गया या, कि जो कोई
अपक्की पत्नी को त्याग दे तो उसे त्यागपत्र दे। 32 परन्तु मैं तुम से यह कहता
हूं कि जो कोई अपक्की पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़
दे, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह
करे, वह व्यभिचार करता है।। 33 फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगोंसे
कहा गया या कि फूठी शपय न खाना, परन्तु प्रभु के लिथे अपक्की शपय को पूरी
करना। 34 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि कभी शपय न खाना; न तो स्वर्ग
की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। 35 न धरती की, क्योंकि वह उसके
पांवोंकी चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। 36 अपके
सिर की भी शपय न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर
सकता है। 37 परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ
इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है।। 38 तुम सुन चुके हो, कि कहा गया
या, कि आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। 39 परन्तु मैं तुम से यह
कहता हूं, कि बुरे का सामना न करता; परन्तु जो कोई तेरे दिहने गाल पर यप्पड़
मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे। 40 और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा
कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। 41 और जो कोई तुझे कोस भर
बेगार में ले जाए तो उसके साय दो कोस चला जा। 42 जो कोई तुझ से मांगे, उसे
दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़।। 43 तुम सुन चुके हो, कि
कहा गया या; कि अपके पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपके बैरी से बैर। 44 परन्तु
मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपके बैरियोंसे प्रेम रखो और अपके सतानेवालोंके

लिथे प्रार्यना करो। 45 जिस से तुम अपके स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे
क्योंकि वह भलोंऔर बुरोंदोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्योंऔर
अधमिर्योंदोनोंपर मेंह बरसाता है। 46 क्योंकि यदि तुम अपके प्रेम रखनेवालोंही
से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिथे क्या लाभ होगा क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही
नहीं करते 47 और यदि तुम केवल अपके भाइयोंकी को नमस्कार करो, तो कौन
सा बड़ा काम करते हो क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते 48 इसलिथे चाहिथे
कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।।

मत्ती 6

1 सावधान रहो! तुम मनुष्योंको दिखाने के लिथे अपके धर्म के काम न करो, नहीं
तो अपके स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। 2 इसलिथे जब तू दान करे,
तो अपके आगे तुरही न बजवा, जैसा कपक्की, सभाओं और गलियोंमें करते हैं,
ताकि लोग उन की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके।
3 परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दिहना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न
जानने पाए। 4 ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता
है, तुझे प्रतिफल देगा।। 5 और जब तू प्रार्यना करे, तो कपटियोंके समान न हो
क्योंकि लोगोंको दिखाने के लिथे सभाओं में और सड़कोंके मोड़ोंपर खड़े होकर
प्रार्यना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना
प्रतिफल पा चुके। 6 परन्तु जब तू प्रार्यना करे, तो अपक्की कोठरी में जा; और
द्वार बन्द कर के अपके पिता से जो गुप्त में है प्रार्यना कर; और तब तेरा पिता जो
गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। 7 प्रार्यना करते समय अन्यजातियोंकी

नाई बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी
जाएगी। 8 सो तुम उन की नाई न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से
पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है। 9 सो तुम इस रीति से
प्रार्थना किया करो; ?हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में हैं; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। 12 और जिस प्रकार हम ने अपके
अपराधियोंको झमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधोंको झमा कर। 13 और
हमें पक्कीझा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और
महिमा सदा तेरे ही है। आमीन। 14 इसलिथे यदि तुम मनुष्य के अपराध झमा
करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें झमा करेगा। 15 और यदि तुम
मनुष्योंके अपराध झमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध झमा न
करेगा।। 16 जब तुम उपासना करो, तो कपटियोंकी नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी
न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जातें;
मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। 17 परन्तु जब तू उपवास
करे तो अपके सिर पर तेल मल और मुंह धो। 18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा
पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता
है, तुझे प्रतिफल देगा।। 19 अपके लिथे पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा
और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। 20 परन्तु अपके
लिथे स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और
जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। 21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा
मन भी लगा रहेगा। 22 शरीर का दिया आंख है: इसलिथे यदि तेरी आंख निर्मल

हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। 23 परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो
तेरा सारा शरीर भी अन्धिक्कारनो होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है
यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा। 24 कोई मनुष्य दो
स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर ओर दूसरे से प्रेम
रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; ?तुम परमेश्वर और
धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते। 25 इसलिथे मैं तुम से कहता हूं, कि अपके
प्राण के लिथे यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे और न
अपके शरीर के लिथे कि क्या पहिनेंगे क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से
बढ़कर नहीं 26 आकाश के पझियोंको देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न
खत्तोंमें बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन
से अधिक मूल्य नहीं रखते। 27 तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपक्की
अवस्या में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है 28 और वस्त्र के लिथे क्योंचिन्ता करते हो
जंगली सोसनोंपर ध्यान करो, कि वै कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्र्म करते हैं, न
कातते हैं। 29 तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपके सारे विभव में उन
में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न या। 30 इसलिथे जब परमेश्वर मैदान की
घास को, जो आज है, और कल भाड़ में फोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो
हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा 31 इसलिथे तुम चिन्ता
करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे 32
क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय
पिता जानता है, कि तुम्हें थे सब वस्तुएं चाहिए। 33 इसलिथे पहिले तुम उसे
राज्य और धर्म की खोज करो तो थे सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएंगी। 34 सो कल

के लिथे चिन्ता न करो, क्योकि कल का दिन अपक्की चिन्ता आप कर लेगा;
आज के लिथे आज ही का दुख बहुत है।।

मत्ती 7

1 दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। 2 क्योंकि जिस प्रकार
तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप
से तुम नापके हो, उसी से तुम्हारे लिथे भी नापा जाएगा। 3 तू क्योंअपके भाई की
आंख के तिनके को देखता है, और अपक्की आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूफता
और जब तेरी ही आंख मे लट्ठा है, तो तू अपके भाई से क्योंकर कह सकता है,
कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। 4 हे कपक्की, पहले अपक्की आंख में
से लट्ठा निकाल ले, तक तू अपके भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर
निकाल सकेगा।। 5 पवित्र वस्तु कुत्तोंको न दो, और अपके मोती सूअरोंके आगे
मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवोंतले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।।
6 मोंगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे
लिथे खोला जाएगा। 7 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढता
है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिथे खोला जाएगा। 8 तुम में से
ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे 9
वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे 10 सो जब तुम बुरे होकर, अपके बच्चोंको अच्छी
वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपके मांगनेवालोंको अच्छी
वस्तुएं क्योंन देगा 11 इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साय
करें, तुम भी उन के साय वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्या और भविष्यद्वक्तओं की

शिझा यही है।। 12 सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और
चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश
करते हैं। 13 क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को
पहुंचाता है, और योड़े हैं जो उसे पाते हैं।। 14 क्योंकि सकेत है वह फाटक और
सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और योड़े हैं जो उसे पाते हैं। 15 फूठे
भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ोंके भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु
अन्तर में फाड़नेवाले भेडिए हैं। 16 उन के फलोंसे तुम उन्हें पहचान लोगे क्या
फाडिय़ोंसे अंगूर, वा ऊंटकटारोंसे अंजीर तोड़ते हैं 17 इसी प्रकार हर एक अच्छा
पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। 18 अच्छा पेड़ बुरा
फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। 19 जो जो
पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। 20 सो उन के
फलोंसे तुम उन्हें पहचान लोगे। 21 जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से
हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की
इच्छा पर चलता है। 22 उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने
तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्क़ाओं को नहीं निकाला,
और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए 23 तब मैं उन से खुलकर कह
दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले
जाओ। 24 इसलिथे जो कोई मेरी थे बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस
बुिद्धमान मनुष्य की नाई ठहरेगा जिस ने अपना घर चटान पर बनाया। 25 और
मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चक्कीं, और उस घर पर ट?रें लगीं,
परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चटान पर डाली गई यी। 26 परन्तु जो

कोई मेरी थे बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की
नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। 27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें
आईं, और आन्धियां चक्कीं, और उस घर पर ट?रें लगीं और वह गिरकर
सत्यानाश हो गया।। 28 जब यीशु थे बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके
उपकेश से चकित हुई। 29 क्योंकि वह उन के शास्त्रियोंके समान नहीं परन्तु
अधिक्कारनी की नाई उन्हें उपकेश देता या।।

मत्ती 8

1 जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। 2 और देखो,
एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो
मुझे शुद्ध कर सकता है। 3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं,
तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। 4 यीशु ने उस से कहा; देख,
किसी से न कहना परन्तु जाकर अपके आप को याजक को दिखला और जो
चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिथे गवाही हो। 5 और जब वह
कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की। 6
कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में फोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है। 7 उस ने उस से
कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा। 8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य
नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो
जाएगा। 9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब
एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और
अपके दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है। 10 यह सुनकर यीशु ने

अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता
हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। 11 और मैं तुम से कहता हूं,
कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साय
स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। 12 परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धिक्कारने में डाल
दिए जाएंगे: वहां रोना और दांतोंका पीसना होगा। 13 और यीशु ने सूबेदार से
कहा, जो; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिथे हो: और उसका सेवक उसी घड़ी
चंगा हो गया।। 14 और यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सांस को ज्वर में
पड़ी देखा। 15 उस ने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह
उठकर उस की सेवा करने लगी। 16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से
लोगोंको लाए जिन में दुष्टात्क़ाएं यीं और उस ने उन आत्क़ाओं को अपके वचन
से निकाल दिया, और सब बीमारोंको चंगा किया। 17 ताकि जो वचन यशायाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा का गया या वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी र्दुबलताओं
को ले लिया और हमारी बीमारियोंको उठा लिया।। 18 यीशु ने अपक्की चारोंओर
एक बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा दी। 19 और एक शास्त्री ने पास
आकर उस से कहा, हे गुरू, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा। 20
यीशु ने उस से कहा, लोमडिय़ोंके भट और आकाश के पझियोंके बसेरे होते हैं;
परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिथे सिर धरने की भी जगह नहीं है। 21 एक और चेले ने
उस से कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे, कि अपके पिता को गाढ़ दूं। 22 यीशु ने
उस से कहा, तू मेरे पीछे हो ले; और मुरदोंको अपके मुरदे गाड़ने दे।। 23 जब वह
नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। 24 और देखो, फील में एक एसा
बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरोंसे ढंपके लगी; और वह सो रहा या। 25 तब

उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते
हैं। 26 उस ने उन से कहा; हे अल्पविश्वासियों, क्योंडरते हो तब उस ने उठकर
आन्धी और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया। 27 और लोग अचम्भा
करके कहने लगे कि यह कैसा मनुष्य है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा
मानते हैं। 28 जब वह उस पार गदरेनियोंके देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिन में
दुष्टात्क़ाएं यीं कब्रोंसे निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस
मार्ग से जा नहीं सकता या। 29 और देखो, उन्होंने चिल्लाकर कहा; हे परमेश्वर के
पुत्र, हमारा तुझ से क्या कहा क्या तू समय से पहिले हमें दु:ख देने यहां आया है
30 उन से कुछ दूर बहुत से सूअरोंका फुण्ड चर रहा या। 31 दुष्टात्क़ाओं ने उस से
यह कहकर बिनती की, कि यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरोंके फुण्ड में भेज
दे। 32 उस ने उन से कहा, जाओ, वे निकलकर सूअरोंमें पैठ गए और देखो, सारा
फुण्ड कड़ाड़े पर से फपटकर पानी में जा पड़ा और डूब मरा। 33 और चरवाहे भागे,
और नगर में जाकर थे सब बातें और जिन में दुष्टात्क़ाएं भीं उन का सारा हाल
कह सुनाया। 34 और देखो, सारे नगर के लोगे यीशु से भेंट करने को निकल आए
और उसे देखकर बिनती की, कि हमारे सिवानोंसे बाहर निकल जा।।

मत्ती 9

1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपके नगर में आया। 2 और देखो,
कई लोग एक फोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए; यीशु ने उन
का विश्वास देखकर, उस फोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप
झमा हुए। 3 और देखो, कई शास्त्रियोंने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा

करता है। 4 यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपके
अपके मन में बुरा विचार क्योंकर रहे हो 5 सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप
झमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर। 6 परन्तु इसलिथे कि तुम जान
लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप झमा करने का अधिक्कारने है (उस ने
फोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपक्की खाट उठा, और अपके घर चला जा। 7
वह उठकर अपके घर चला गया। 8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की
महिमा करने लगे जिस ने मनुष्योंको ऐसा अधिक्कारने दिया है।। 9 वहां से आगे
बढ़कर यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और
उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उसके पीछे हो लिया।। 10 और जब वह
घर में भोजन करने के लिथे बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवालोंऔर पापी आकर
यीशु और उसके चेलोंके साय खाने बैठे। 11 यह देखकर फरीसियोंने उसके चेलोंसे
कहा; तुम्हारा गुरू महसूल लेनेवालोंऔर पापियोंके साय क्योंखाता है 12 उस ने
यह सुनकर उन से कहा, वैद्य भले चंगोंको नहीं परन्तु बीमारोंको अवश्य है। 13
सो तुम जाकर इस का अर्य सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं;
क्योंकि मैं धमिर्योंको नहीं परन्तु पापियोंको बुलाने आया हूं।। 14 तब यूहन्ना के
चेलोंने उसके पास आकर कहा; क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास
करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते 15 यीशु ने उन से कहा; क्या बराती, जब
तक दुल्हा उन के साय है शोक कर सकते हैं पर वे दिन आएंगे कि दूल्हा उन से
अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे। 16 कोरे कपके का पैबन्द
पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द पहिरावन से और कुछ
खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। 17 और नया दाखरस पुरानी

मशकोंमें नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मश्कें फट जाती हैं, और दाखरस बह
जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई मश्कोंमें भरते हैं
और वह दोनोंबची रहती हैं। 18 वह उन से थे बातें कह ही रहा या, कि देखो, एक
सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु
चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी। 19 यीशु उठकर
अपके चेलोंसमेत उसके पीछे हो लिया। 20 और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह
वर्ष से लोहू बहता या, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।
21 क्योंकि वह अपके मन में कहती यी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंबी तो
चंगी हो जाऊंगी। 22 यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे
विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई। 23 जब यीशु उस
सरदार के घर में पहुंचा और बांसली बजानेवालोंऔर भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा
तब कहा। 24 हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उस की हंसी
करने लगे। 25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की
का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी। 26 और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल
गई। 27 जब यीशु वहां से आगे बढ़ा, तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए
चले, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। 28 जब वह घर में पहुंचा, तो वे
अन्धे उस के पास आए; और यीशु ने उन से कहा; क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं
यह कर सकता हूं उन्होंने उस से कहा; हां प्रभु। 29 तब उस ने उन की आंखे छूकर
कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिथे हो। 30 और उन की आंखे खुल गई
और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा; सावधान, कोई इस बात को न जाने। 31 पर
उन्होंने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया।। 32 जब वे बाहर जा रहे

थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्क़ा यी उस के पास लाए। 33 और
जब दुष्टात्क़ा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा; और भीड़ ने अचम्भा करके
कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया। 34 परन्तु फरीसियोंने कहा, यह
तो दुष्टात्क़ाओं के सरदार की सहाथता से दुष्टात्क़ओं को निकालता है।। 35 और
यीशु सब नगरोंऔर गांवोंमें फिरता रहा और उन की सभाओं में उपकेश करता,
और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और र्दुबलता
को दूर करता रहा। 36 जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगोंपर तरस आया,
क्योंकि वे उन भेड़ोंकी नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए
से थे। 37 तब उस ने अपके चेलोंसे कहा, पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर योड़े हैं।
38 इसलिथे खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपके खेत काटने के लिथे
मजदूर भेज दे।।

मत्ती 10

1 फिर उस ने अपके बारह चेलोंको पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्क़ाओं पर
अधिक्कारने दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियोंऔर सब
प्रकार की र्दुबलताओं को दूर करें।। 2 और बारह प्रेरितोंके नाम थे हैं: पहिला
शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र
याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; 3 फिरिलप्पुस और बर-तुल्मै योमा और
महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफै का पुत्र याकूब और तद्दै। 4 शमौन कनानी, और
यहूदा इस्किरयोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।। 5 इन बारहोंको यीशु ने यह
आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियोंकी ओर न जाना, और सामरियोंके किसी

नगर में प्रवेश न करना। 6 परन्तु इस्त्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ोंके पास
जाना। 7 और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
8 बीमारोंको चंगा करो: मरे हुओं को जिलाओ: कोढि़योंको शुद्ध करो: दुष्टात्क़ाओं
को निकालो: तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। 9 अपके पटुकोंमें न तो सोना,
और न रूपा, और न तांबा रखना। 10 मार्ग के लिथे न फोली रखो, न दो कुरते, न
जूते और न लाठी लो, क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए। 11 जिस
किसी नगर या गांव में जाओ तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है और जब
तक वहां से न निकलो, उसी के यहां रहो। 12 और घर में प्रवेश करते हुए उस को
आशीष देना। 13 यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर
पहुंचेगा परन्तु यदि वे योगय न होंतो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट
आएगा। 14 और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर
या उस नगर से निकलते हुए अपके पांवोंकी धूल फाड़ डालो। 15 मैं तुम से सच
कहता हूं, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की
दशा अधिक सहने योग्य होगी।। 16 देखो, मैं तुम्हें भेड़ोंकी नाई भेडि़योंके बीच में
भेजता हूं सो सांपोंकी नाई बुद्धिमान और कबूतरोंकी नाई भोले बनो। 17 परन्तु
लोगोंसे सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपक्की
पंचायत में तुम्हें कोड़े मारेंगे। 18 तुम मेरे लिथे हाकिमोंओर राजाओं के साम्हने
उन पर, और अन्यजातियोंपर गवाह होने के लिथे पहुंचाए जाओगे। 19 जब वे
तुम्हें पकड़वाएंगे तो यह चिन्ता न करता, कि हम किस रीति से; या क्या कहेंगे:
क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। 20
क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्क़ा तुम में बोलता है।

21 भाई, भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिथे सौंपेंगे, और लड़केबाले
माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। 22 मेरे नाम के कारण सब
लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।
23 जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच
कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरोंमें न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ
जाएगा।। 24 चेला अपके गुरू से बड़ा नहीं; और न दास अपके स्वामी से। 25 चेले
का गुरू के, और दास का स्वामी के बाराबर होना ही बहुत है; जब उन्होंने घर के
स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालोंको क्योंन कहेंगे 26 सो उन से मत
डरना, क्योंकि कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो
जाना न जाएगा। 27 जो मैं तुम से अन्धिक्कारने मे कहता हूं, उसे उजियाले में
कहो; और जो कानोंकान सुनते हो, उसे कोठोंपर से प्रचार करो। 28 जो शरीर को
घात करते हैं, पर आत्क़ा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से
डरो, जो आत्क़ा और शरीर दोनोंको नरक में नाश कर सकता है। 29 क्या पैसे मे
दो गौरैथे नहीं बिकती तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी
भूमि पर नहीं गिर सकती। 30 तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। 31
इसलिथे, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयोंसे बढ़कर हो। 32 जो कोई मनुष्योंके साम्हने
मुझे मान लेगा, उसे मैं भी स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा। 33 पर जो कोई
मनुष्योंके साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपके स्वर्गीय पिता के
साम्हने इन्कार करूंगा। 34 यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को
आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। 35 मैं तो आया
हूं, कि मनुष्य को उसक पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की

सास से अलग कर दूं। 36 मनुष्य के बैरी उसक घर ही के लोग होंगे। 37 जो माता
या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या
बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। 38 और जो अपना
क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। 39 जो अपके प्राण बचाता है, वह
उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा। 40 जो
तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह
मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। 41 जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर
ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और जो धर्मी जानकर धर्मी को
ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा। 42 जो कोई इन छोटोंमें से एक को चेला
जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी
रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।।

मत्ती 11

1 जब यीशु अपके बारह चेलोंको आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरोंमें उपकेश
और प्रचार करने को वहां से चला गया।। 2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के
कामोंका समाचार सुनकर अपके चेलोंको उस से यह पूछने भेजा। 3 कि क्या
आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें 4 यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ
तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। 5 कि अन्धे देखते
हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे
जिलाए जाते हैं; और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है। 6 और धन्य है वह,
जो मेरे कारण ठोकर न खाए। 7 जब वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के

विषय में लोगोंसे कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखते गए थे क्या हवा से हिलते
हुए सरकण्डे को 8 फिर तुम क्या देखने गए थे देखो, जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं,
वे राजभवनोंमें रहते हैं। 9 तो फिर क्योंगए थे क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने
को हां; मैं तुम से कहता हूं, बरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को। 10 यह वही है, जिस
के विषय में लिखा है, कि देख; मैं अपके दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे
तेरा मार्ग तैयार करेगा। 11 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियोंसे जन्क़े हैं,
उन में से यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवालोंसे कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के
राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। 12 यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाले के
दिनोंसे अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवाल उसे छीन लेते
हैं। 13 यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्या भविष्यद्ववाणी करते रहे। 14
और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आनेवाला या, वह यही है। 15 जिस के सुनने
के कान हों, वह सुन ले। 16 मैं इस समय के लोगोंकी उपमा किस से दूं वे उन
बालकोंके समान हैं, जो बाजारोंमें बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं। 17 कि
हम ने तुम्हारे लिथे बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने विलाप किया, और
तुम ने छाती नहीं पीटी। 18 क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता, और वे
कहते हैं कि उस में दुष्टात्क़ा है। 19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे
कहते हैं कि देखो, पेटू और पिय?ड़ मनुष्य, महसूल लेनेवालोंऔर पापियोंका
मित्र; पर ज्ञान अपके कामोंमें सच्चा ठहराया गया है। 20 तब वह उन नगरोंको
उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्य के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने
अपना मन नहीं फिराया या। 21 हाथ, खुराजीन; हाथ, बैतसैदा; जो सामर्य के
काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और

राख में बैठकर, वे कब से मन फिरा लेते। 22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि
न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा तू तो अधोलोक तक
नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते,
तो वह आज तक बना रहता। 24 पर मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तेरी
दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी। 25 उसी समय यीशु ने
कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन
बातोंको ज्ञानियोंऔर समझदारोंसे छिपा दखा, और बालकोंपर प्रगट किया है। 26
हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। 27 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा
है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता,
केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। 28 हे सब परिश्रम
करनेवालोंऔर बोफ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्रम दूंगा। 29 मेरा
जूआ अपके ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दी हूं:
और तुम अपके मन में विश्रम पाओगे। 30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा
बोफ हल्का है।।

मत्ती 12

1 उस समय यीशु सब्त के दिन खेतोंमें से होकर जा रहा या, और उसके चेलोंको
भूख लगी, सो वे बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। 2 फरीसियोंने यह देखकर उस से
कहा, देख तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं। 3
उस ने उन से कहा; क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके सायी

भूखे हुए तो क्या किया 4 वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की
रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और उसके साथियोंको, पर केवल याजकोंको
उचित था 5 या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में
सब्त के दिन के विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं। 6 पर मैं तुम से कहता
हूं, कि यहां वह है, जो मन्दिर से भी बड़ा है। 7 यदि तुम इस का अर्थ जानते कि मैं
दया से प्रसन्न हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। 8 मनुष्य
का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।। 9 वहां से चलकर वह उन की सभा के घर
में आया। 10 और देखो, एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था; और
उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिय उस से पूछा, कि क्या सब्त के दिन चंगा
करना उचित है 11 उस ने उन से कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिस की एक भेड़ हो,
और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले 12
भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है; इसलिथे सब्त के दिन भलाई
करना उचित है: तब उस ने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा। 13 उस ने
बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया। 14 तब फरीसियोंने
बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें 15 यह
जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लागे उसके पीछे हो लिथे; और उस ने
सब को चंगा किया। 16 और उन्हें चिताया, कि मुझे प्रगट न करना। 17 कि जो
वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। 18 कि देखो, यह
मेरा सेवक है, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना
आत्क़ा उस पर डालूंगा; और वह अन्यजातियोंको न्याय का समाचार देगा। 19
वह न फगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारोंमें कोई उसका शब्द

सुनेगा। 20 वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धूआं देती हुई बत्ती को न
बुफाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए। 21 और अन्यजातियां उसके नाम
पर आशा रखेंगी। 22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्क़ा यी, उसके
पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है
24 परन्तु फरीसियोंने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्क़ाओं के सरदार शैतान की
सहाथता के बिना दुष्टात्क़ाओं को नहीं निकालता। 25 उस ने उन के मन की बात
जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और
कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। 26 और यदि शैतान ही
शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य
क्योंकर बना रहेगा 27 भला, यदि मैं शैतान की सहाथता से दुष्टात्क़ाओं को
निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहाथता से निकालते हैं इसलिथे वे ही
तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। 28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्क़ा की सहाथता से
दुष्टात्क़ाओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
29 या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट
सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले और तब वह उसका
घर लूट लेगा। 30 जो मेरे साय नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साय नहीं
बटोरता, वह बियराता है। 31 इसलिथे मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब
प्रकार का पाप और निन्दा झमा की जाएगी, पर आत्क़ा की निन्दा झमा न की
जाएगी। 32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह
अपराध झमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्रआत्क़ा के विरोध में कुछ

कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में झमा किया जाएगा।
33 यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; या पेड़ को
निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। 34 हे सांप के बच्चों, तुम
बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह
पर आता है। 35 भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और
बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। 36 और मै तुम से कहता हूं, कि
जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। 37
क्योंकि तू अपक्की बातोंके कारण निर्दोष और अपक्की बातोंही के कारण दोषी
ठहराया जाएगा।। 38 इस पर कितने शास्त्रियोंऔर फरीसियोंने उस से कहा, हे
गुरू, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। 39 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि इस
युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं; परन्तु यूनुस भविष्यद्वक्ता के
चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन को न दिया जाएगा। 40 यूनुस तीन राज दिन
जल जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृय्वी के भीतर
रहेगा। 41 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगोंके साय उठकर उन्हें
दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने यूनुस का प्रचार सुनकर, मन फिराया और देखो,
यहां वह है जो यूनुस से बड़ा है। 42 दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस युग के
लोगोंके साय उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने
के लिथे पृय्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।
43 जब अशुद्ध आत्क़ा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहोंमें विश्रम
ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। 44 तब कहती है, कि मैं अपके उसी घर में जहां
से निकली यी, लौट जाऊंगी, और आकर उसे सूना, फाड़ा-बुहारा और सजा

सजाया पाती है। 45 तब वह जाकर अपके से और बुरी सात आत्क़ाओं को अपके
साय ले आती है, और वे उस में पैठकर वहां वास करती है, और उस मनुष्य की
पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है; इस युग के बुरे लोगोंकी दशा भी ऐसी
ही होगी। 46 जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा या, तो देखो, उस की माता और
भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे। 47 किसी ने उस से कहा;
देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं। 48
यह सुन उस ने कहनेवाले को उत्तर दिया; कौन है मेरी माता 49 और कौन है मेरे
भाई और अपके चेलोंकी ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो, मेरी माता और मेरे
भाई थे हैं। 50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा
भाई और बहिन और माता है।।

मत्ती 13

1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर फील के किनारे जा बैठा। 2 और उसके पास
ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर
खड़ी रही। 3 और उस ने उन से दृष्टान्तोंमें बहुत सी बातें कही, कि देखो, एक
बोनेवाला बीज बोने निकला। 4 बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और
पझियोंने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पत्यरीली भूमि पर गिरे, जहां उन्हें
बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आए। 6
पर सूरज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए। 7 कुछ
फाडियोंमें गिरे, और फाडियोंने बढ़कर उन्हें दबा डाला। 8 पर कुछ अच्छी भूमि
पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। 9 जिस

के कान होंवह सुन ले।। 10 और चेलोंने पास आकर उस से कहा, तू उन से
दृष्टान्तोंमें क्योंबातें करता है 11 उस ने उत्तर दिया, कि तुम को स्वर्ग के राज्य के
भेदोंकी समझ दी गई है, पर उन को नहीं। 12 क्योंकि जिस के पास है, उसे दिया
जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिस के पास कुछ नहीं है, उस से
जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। 13 मैं उन से दृष्टान्तोंमें इसलिथे
बातें करता हूं, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं
समझते। 14 और उन के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्ववाणी पूरी होती है,
कि तुम कानोंसे तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखोंसे तो देखोगे, पर तुम्हें
न सूफेगा। 15 क्योंकि इन लोगोंका मन मोटा हो गया है, और वे कानोंसे ऊंचा
सुनते हैं और उन्होंने अपक्की आंखें मूंद लीं हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखोंसे
देखें, और कानोंसे सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा
करूं। 16 पर धन्य है तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे
सुनते हैं। 17 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने और
धमिर्योंने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें पर न देखीं; और जो बातें तुम
सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं। 18 सो तुम बानेवाले का दृष्टान्त सुनो। 19 जो कोई
राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया या, उसे
वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया या।
20 और जो पत्यरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त
आनन्द के साय मान लेता है। 21 पर अपके में जड़ न रखने के कारण वह योड़े ही
दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर
खाता है। 22 जो फाडिय़ोंमें बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस

संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं
लाता। 23 जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर
समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। 24
उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है
जिस ने अपके खेत में अच्छा बीज बोया। 25 पर जब लोग सो रहे थे तो उसका
बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। 26 जब अंकुर निकले और
बालें लगी, तो जंगली दाने भी दिखाई दिए। 27 इस पर गृहस्य के दासोंने आकर
उस से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपके खेत में अच्छा बीज न बोया या फिर
जंगती दाने के पौधे उस में कहां से आए 28 उस ने उन से कहा, यह किसी बैरी का
काम है। दासोंने उस से कहा क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उन को बटोर लें
29 उस ने कहा, ऐसा नहीं, न हो कि जंगती दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साय
गेहूं भी उखाड़ लो। 30 कटनी तक दोनोंको एक साय बढ़ने दो, और कटनी के
समय मैं काटनेवालोंसे कहूंगा; पहिले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के
लिथे उन के गट्ठे बान्ध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।। 31 उस ने
उन्हें एक और दृष्टान्त दिया; कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है,
जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपके खेत में बो दिया। 32 वह सब बीजोंसे छोटा तो
है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता
है, कि आकाश के पक्की आकर उस की डालियोंपर बसेरा करते हैं।। 33 उस ने
एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया; कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को
किसी स्त्री ने लेकर तीन पकेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर
हो गया।। 34 थे सब बातें यीशु ने दृष्टान्तोंमें लोगोंसे कहीं, और बिना दृष्टान्त

वह उन से कुछ न कहता या। 35 कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया या,
वह पूरा हो कि मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा: मैं उन बातोंको जो
जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रगट करूंगा।। 36 तब वह भीड़ को छोड़कर घर
में आया, और उसके चेलोंने उसके पास आकर कहा, खेत के जंगली दाने का
दृष्टान्त हमें समझा दे। 37 उस ने उन को उत्तर दिया, कि अच्छे बीज का
बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। 38 खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान,
और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं। 39 जिस बैरी ने उन को बोया वह शैतान है;
कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। 40 सो जैसे जंगली दाने
बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। 41 मनुष्य का
पुत्र अपके स्वर्गदूतोंको भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणोंको
और कुकर्म करनेवालोंको इकट्ठा करेंगे। 42 और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे,
वहां रोना और दांत पीसना होगा। 43 उस समय धर्मी अपके पिता के राज्य में
सूर्य की नाई चमकेंगे; जिस के कान होंवह सुन ले।। 44 स्वर्ग का राज्य खेत में
छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे
आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया।। 45
फिर स्वर्ग का राज्य एक व्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियोंकी खोज में या।
46 जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला
और उसे मोल ले लिया।। 47 फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो
समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछिलयोंको समेट लाया। 48 और जब
भर गया, तो उस को किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी अच्छी तो
बरतनोंमें इकट्ठा किया और निकम्मी, निकम्मीं फेंक दी। 49 जगत के अन्त में

ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत आकर दुष्टोंको धर्मियोंसे अलग करेंगे, और उन्हें आग के
कुंड में डालेंगे। 50 वहां रोना और दांत पीसना होगा। 51 क्या तुम ने थे सब बातें
समझीं 52 उन्होंने उस से कहा, हां; उस ने उन से कहा, इसलिथे हर एक शास्त्री
जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपके भण्डार से
नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।। 53 जब यीशु ने सब दृष्टान्त कह चुका, तो
वहां से चला गया। 54 और अपके देश में आकर उन की सभा में उन्हें ऐसा
उपकेश देने लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे; कि इस को यह ज्ञान और
सामर्थ के काम कहां से मिले 55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं और क्या इस की
माता का नाम मरियम और इस के भाइयोंके नाम याकूब और यूसुफ और शमौन
और यहूदा नहीं 56 और क्या इस की सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहती फिर
इस को यह सब कहां से मिला 57 सो उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु
ने उन से कहा, भविष्यद्वक्ता अपके देश और अपके घर को छोड़ और कहीं निरादर
नहीं होता। 58 और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम
नहीं किए।।

मत्ती 14

1 उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी। 2 और अपके
सेवकोंसे कहा, यह यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाला है: वह मरे हुओं में से जी उठा है,
इसी लिथे उस से सामर्थ के काम प्रगट होते हैं। 3 क्योंकि हेरोदेस ने अपके भाई
फिलप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बान्धा, और
जेलखाने में डाल दिया या। 4 क्योंकि यूहन्ना ने उस से कहा या, कि इस को

रखना तुझे उचित नहीं है। 5 और वह उसे मार डालना चाहता या, पर लोगोंसे
डरता या, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे। 6 पर जब हेरोदेस का जन्क़ दिन
आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया।
7 इसलिथे उस ने शपय खाकर वचन दिया, कि जो कुछ तू मांगेगी, मैं तुझे दूंगा।
8 वह अपक्की माता की उस्काई हुई बोली, यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाले का सिर
याल में यहीं मुझे मंगवा दे। 9 राजा दुखित हुआ, पर अपक्की शपय के, और साय
बैठनेवालोंके कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए। 10 और जेलखाने में लोगोंको
भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया। 11 और उसका सिर याल में लाया गया,
और लड़की को दिया गया; और वह उस को अपक्की मां के पास ले गई। 12 और
उसके चेलोंने आकर और उस की लोय को ले जाकर गाढ़ दिया और जाकर यीशु
को समाचार दिया।। 13 जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी
सुनसान जगह एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर नगर से पैदल
उसके पीछे हो लिए। 14 उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस
खाया; और उस ने उन के बीमारोंको चंगा किया। 15 जब सांफ हुई, तो उसके
चेलोंने उसके पास आकर कहा; यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है,
लोगोंको विदा किया जाए कि वे बस्तियोंमें जाकर अपके लिथे भोजन मोल लें।
16 यीशु ने उन से कहा उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।
17 उन्होंने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछिलयोंको छोड़ और
कुछ नहीं है। 18 उस ने कहा, उन को यहां मेरे पास ले आओ। 19 तब उस ने
लोगोंको घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियोंऔर दो मछिलयोंको लिया;
और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलोंको दीं,

और चेलोंने लोगोंको। 20 और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए
टुकड़ोंसे भरी हुई बारह टोकिरयां उठाई। 21 और खानेवाले स्त्रियोंऔर बालकोंको
छोड़कर पांच हजार पुरूषोंके अटकल थे।। 22 और उस ने तुरन्त अपके चेलोंको
बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह
लोगोंको विदा करे। 23 वह लोगोंको विदा करके, प्रार्यना करने को अलग पहाड़
पर चढ़ गया; और सांफ को वहां अकेला या। 24 उस समय नाव फील के बीच
लहरोंसे डगमगा रही यी, क्योंकि हवा साम्हने की यी। 25 और वह रात के चौथे
पहर फील पर चलते हुए उन के पास आया। 26 चेले उस को फील पर चलते हुए
देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डार के मारे चिल्ला उठे। 27
यीशु ने तुरन्त उन से बातें की, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत। 28
पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपके पास पानी पर
चलकर आने की आज्ञा दे। 29 उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतरकर
यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। 30 पर हवा को देखकर डर गया,
और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा। 31 यीशु ने तुरन्त
हाथ बढ़ाकर उसे याम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्योंसन्देह
किया 32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा यम गई। 33 इस पर जो नाव पर थे,
उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा; सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।। 34 वे पार
उतरकर गन्नेसरत देश में पहुंचे। 35 और वहां के लोगोंने उसे पहचानकर आस
पास के सारे देश में कहला भेजा, और सब बीमारोंको उसके पास लाए। 36 और
उस से बिनती करने लगे, कि वह उन्हें अपके वस्त्र के आंचल ही को छूने दे: और
जितनोंने उसे छूआ, वे चंगे हो गए।।

मत्ती 15

1 तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। 2
तेरे चेले पुरिनयोंकी रीतोंको क्योंटालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं 3 उस
ने उन को उत्तर दिया, कि तुम भी अपक्की रीतोंके कारण क्योंपरमेश्वर की आज्ञा
टालते हो 4 क्योंकि परमेश्वर ने कहा या, कि अपके पिता और अपक्की माता का
आदर करना: और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। 5 पर
तुम कहते हो, कि यदि कोई अपके पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ
से लाभ पहुंच सकता या, वह परमेश्वर को भेंट चढ़ाई जा चुकी। 6 तो वह अपके
पिता का आदर न करे, सो तुम ने अपक्की रीतोंके कारण परमेश्वर का वचन टाल
दिया। 7 हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की। 8
कि थे लोग होठोंसे तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। 9
और थे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की विधियोंको धर्मोपकेश
करके सिखाते हैं। 10 और उस ने लोगोंको अपके पास बुलाकर उन से कहा, सुनो;
और समझो। 11 जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो
मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। 12 तब चेलोंने आकर उस से
कहा, क्या तू जानता है कि फरीसियोंने यह वचन सुनकर ठोकर खाई 13 उस ने
उत्तर दिया, हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा। 14
उन को जाने दो; वे अन्धे मार्ग दिखानेवाले हैं: और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग
दिखाए, तो दोनोंगड़हे में गिर पकेंगे। 15 यह सुनकर, पतरस ने उस से कहा, यह
दृष्टान्त हमें समझा दे। 16 उस ने कहा, क्या तुम भी अब तक ना समझ हो 17
क्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता, वह पेट में पड़ता है, और सण्डास में

निकल जाता है 18 पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और
वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। 19 क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन,
व्यभिचार, चोरी, फूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है। 20 यही हैं जो
मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को
अशुद्ध नहीं करता।। 21 यीशु वहां से निकलकर, सूर और सैदा के देशोंकी ओर
चला गया। 22 और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर
कहने लगी; हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्क़ा
बहुत सता रहा है। 23 पर उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलोंने आकर
उस से बिनती कर कहा; इसे विदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती
है। 24 उस ने उत्तर दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ोंको छोड़ मैं किसी
के पास नहीं भेजा गया। 25 पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी; हे
प्रभु, मेरी सहाथता कर। 26 उस ने उत्तर दिया, कि लड़कोंकी रोटी लेकर कुत्तोंके
आगे डालना अच्छा नहीं। 27 उस ने कहा, सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार
खाते हैं, जो उन के स्वामियोंकी मेज से गिरते हैं। 28 इस पर यीशु ने उस को उत्तर
देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिथे वैसा ही हो;
और उस की बेटी उसी घड़ी चंगी हो गई।। 29 यीशु वहां से चलकर, गलील की
फील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया। 30 और भीड़ पर भीड़
लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों, और बहुत औरोंको लेकर उसके पास आए; और उन्हें
उसके पांवोंपर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया। 31 सो जब लोगोंने देखा,
कि गूंगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो
अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की।। 32 यीशु ने अपके चेलोंको

बुलाकर कहा, मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साय हैं
और उन के पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं
चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में यककर रह जाएं। 33 चेलोंने उस से कहा, हमें
जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें 34
यीशु ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्होंने कहा; सात और योड़ी
सी छोटी मछिलयां। 35 तब उस ने लोगोंको भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। 36 और
उन सात रोटियोंऔर मछिलयोंको ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपके चेलोंको
देता गया; और चेले लोगोंको। 37 सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए
टुकड़ोंसे भरे हुए सात टोकरे उठाए। 38 और खानेवाले स्त्रियोंऔर बालकोंको छोड़
चार हजार पुरूष थे। 39 तब वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और
मगदन देश के सिवानोंमें आया।।

मत्ती 16

1 और फरीसियोंऔर सदूकियोंने पास आकर उसे परखने के लिथे उस से कहा,
कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखा। 2 उस ने उन को उत्तर दिया, कि सांफ को
तुम कहते हो कि खुला रहेगा क्योंकि आकाश लाल है। 3 और भोर को कहते हो,
कि आज आन्धी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है; तुम आकाश का
लझण देखकर भेद बता सकते हो पर समयोंके चिन्होंको भेद नहीं बता सकते 4
इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़
कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा, और वह उन्हें छोड़कर चला गया।। 5 और
चेले पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे। 6 यीशु ने उन से कहा, देखो;

फरीसियोंऔर सदूकियोंके खमीर से चौकस रहना। 7 वे आपस में विचार करने
लगे, कि हम तो रोटी नहीं लाए। 8 यह जानकर, यीशु ने उन से कहा, हे
अल्पविश्वासियों, तुम आपस में क्योंविचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं 9
क्या तुम अब तक नहीं समझे और उन पांच हजार की पांच रोटी स्क़रण नहीं
करते, और न यह कि कितनी टोकिरयां उठाईं यीं 10 और न उन चार हजार की
सात रोटी; और न यह कि कितने टोकरे उठाए गए थे 11 तुम क्योंनहीं समझते
कि मैं ने तुम से रोटियोंके विषय में नहीं कहा फरीसियोंऔर सदूकियोंके खमीर से
चौकस रहना। 12 तब उन को समझ में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं,
पर फरीसियोंऔर सदूकियोंकी शिझा से चौकस रहने को कहा या। 13 यीशु
कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपके चेलोंसे पूछने लगा, कि लोग मनुष्य
के पुत्र को क्या कहते हैं 14 उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाला
कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से
कोई एक कहते हैं। 15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो 16
शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। 17 यीशु ने
उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू
ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। 18 और
मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्यर पर अपक्की
कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। 19 मैं तुझे
स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृय्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में
बन्धेगा; और जो कुछ तू पृय्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा। 20 तब उस ने
चेलोंको चिताया, कि किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूं। 21 उस समय से यीशु

अपके चेलोंको बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और
पुरिनयोंऔर महाथाजकोंऔर शास्त्रियोंके हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार
डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं। 22 इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर
फिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा। 23 उस ने
फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिथे ठोकर का
कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्योंकी बातोंपर मन लगाता
है। 24 तब यीशु ने अपके चेलोंसे कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपके
आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो
कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिथे अपना
प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। 26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और
अपके प्राण की हाति उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा या मनुष्य अपके प्राण के
बदले में क्या देगा 27 मनुष्य का पुत्र अपके स्वर्गदूतोंके साय अपके पिता की
महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामोंके अनुसार
प्रतिफल देगा। 28 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने
ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब
तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।

मत्ती 17

1 छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साय
लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। 2 और उनके साम्हने
उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाई चमका और उसका वस्त्र

ज्योति की नाईं उजला हो गया। 3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साय
बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। 4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा
यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिथे, एक
मूसा के लिथे, और एक एलिय्याह के लिथे। 5 वह बोल ही रहा या, कि देखो, एक
उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि
यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो। 6 चेले यह सुनकर मुंह
के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए। 7 यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और
कहा, उठो; डरो मत। 8 तब उन्होंने अपक्की आंखे उठाकर यीशु को छोड़ और
किसी को न देखा। 9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी;
कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने
देखा है किसी से न कहना। 10 और उसके चेलोंने उस से पूछा, फिर शास्त्री
क्योंकहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है 11 उस ने उत्तर दिया, कि
एलिय्याह तो आएगा: और सब कुछ सुधारेगा। 12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि
एलिय्याह आ चुका; और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही
उसके साय किया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ से दुख उठाएगा।
13 तब चेलोंने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाले के विषय में
कहा है। 14 जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और
घुटने टेककर कहने लगा। 15 हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी
आती है: और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी
में गिर पड़ता है। 16 और मैं उस को तेरे चेलोंके पास लाया या, पर वे उसे अच्छा
नहीं कर सके। 17 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगोंमैं कब

तक तुम्हारे साथ रहूंगा कब तक तुम्हारी सहूंगा उसे यहां मेरे पास लाओ। 18 तब
यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्क़ा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी
अच्छा हो गया। 19 तब चेलोंने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे
क्योंनहीं निकाल सके 20 उस ने उन से कहा, अपके विश्वास की घटी के कारण:
क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी
हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला
जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिथे अन्होनी न होगी। 21 जब वे गलील में थे, तो
यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्योंके हाथ में पकड़वाया जाएगा। 22 और
वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा। 23 इस पर वे बहुत उदास
हुए।। 24 जब वे कफरनहूम में पहुंचे, तो मन्दिर के लिथे कर लेनेवालोंने पतरस
के पास आकर पूछा, कि क्या तुम्हारा गुरू मन्दिर का कर नहीं देता उस ने कहा,
हां देता तो है। 25 जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहिले उस से
कहा, हे शमौन तू क्या समझता है पृय्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं
अपके पुत्रोंसे या परायोंसे पतरस ने उन से कहा, परायोंसे। 26 यीशु न उस से
कहा, तो पुत्र बच गए। 27 तौभी इसलिथे कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू फील
के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहिले निकले, उसे ले; तो तुझे
उसका मुंह खोलने पर एक सि?ा मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपके बदले
उन्हें दे देना।।

मत्ती 18

1 उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन

है 2 इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया। 3
और कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकोंके समान न
बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। 4 जो कोई अपके आप को
इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। 5 और जो
कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। 6
पर जो कोई इन छोटोंमें से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए,
उसके लिथे भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता,
और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता। 7 ठोकरोंके कारण संसार पर हाथ!
ठोकरोंका लगना अवश्य है; पर हाथ उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती
है। 8 यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक दे; टुण्डा या
लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिथे इस से भला है, कि दो हाथ या दो
पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। 9 और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर
खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे। 10 काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे
लिथे इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए। 11
देखो, तुम इन छोटोंमें से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं,
कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। 12 तुम क्या
समझते हो यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो
क्या निन्नानवे को छोड़कर, और पहाड़ोंपर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा
13 और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह उन
निन्नानवे भेड़ोंके लिथे जो भटकी नहीं यीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि
इस भेड़ के लिथे करेगा। 14 ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा

नहीं, कि इन छोटोंमें से एक भी नाश हो। 15 यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो
जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपके
भाई को पा लिया। 16 और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपके साय
ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहोंके मुंह से ठहराई जाए। 17 यदि वह उन
की भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने,
तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। 18 मैं तुम से सच
कहता हूं, जो कुछ तुम पृय्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग पर बन्धेगा और जो कुछ
तुम पृय्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग पर खुलेगा। 19 फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि
तुम में से दो जन पृय्वी पर किसी बात के लिथे जिसे वे मांगें, एक मन के हों, तो
वह मेरे पिता की ओर से स्वर्ग में है उन के लिथे हो जाएगी। 20 क्योंकि जहां दो
या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उन के बीच में होता हूं।। 21 तब
पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो
मैं कितनी बार उसे झमा करूं, क्या सात बार तक 22 यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ
से यह नहीं कहता, कि सात बार, बरन सात बार के सत्तर गुने तक। 23 इसलिथे
स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपके दासोंसे लेखा लेना चाहा।
24 जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार
तोड़े धारता या। 25 जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न या, तो उसके स्वामी ने
कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इस का है सब बेचा
जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। 26 इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम
किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा। 27 तब उस दास के
स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका धार झमा किया। 28 परन्तु

जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासोंमें से एक उस को मिला, जो
उसके सौ दीनार धारता या; उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा; जो
कुछ तू धारता है भर दे। 29 इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती
करने लगा; कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा। 30 उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे
बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे। 31
उसके संगी दास यह जो हुआ या देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपके
स्वामी को पूरा हाल बता दिया। 32 तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से
कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज
झमा किया। 33 सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपके संगी
दास पर दया करना नहीं चाहिए या 34 और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे
दण्ड देनेवालोंके हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक
उन के हाथ में रहे। 35 इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपके भाई को मन से
झमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।।

मत्ती 19

1 जब यीशु थे बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के देश में
यरदन के पार आया। 2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस ने उन्हें वहां
चंगा किया।। 3 तब फरीसी उस की पक्कीझा करने के लिथे पास आकर कहने
लगे, क्या हर एक कारण से अपक्की पत्नी को त्यागना उचित है 4 उस ने उत्तर
दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और
नारी बनाकर कहा। 5 कि इस कारण मनुष्य अपके माता पिता से अलग होकर

अपक्की पत्नी के साय रहेगा और वे दोनोंएक तन होंगे 6 सो व अब दो नहीं,
परन्तु एक तन हैं: इसलिथे जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।
7 उन्होंने उस से कहा, फिर मूसा ने क्योंयह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़
दे 8 उस ने उन से कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपक्की
पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं या। 9 और मैं तुम
से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपक्की पत्नी
को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो छोड़ी हुई को
ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है। 10 चेलोंने उस से कहा, यदि पुरूष का स्त्री
के साय ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं। 11 उस ने उन से कहा, सब
यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है। 12
क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्के; और कुछ नंपुसक
ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक एसे हैं, जिन्होंने स्वर्ग
के राज्य के लिथे अपके आप को नपुंसक बनाया है, जो इस को ग्रहण कर सकता
है, वह ग्रहण करे। 13 तब लोग बालकोंको उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ
रखे और प्रार्यना करे; पर चेलोंने उन्हें डांटा। 14 यीशु ने कहा, बालकोंको मेरे पास
आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसोंही का है। 15 और
वह उन पर हाथ रखकर, वहां से चला गया। 16 और देखो, एक मनुष्य ने पास
आकर उस से कहा, हे गुरू; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं
17 उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्योंपूछता है भला तो एक
ही है; पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। 18
उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना,

व्यभिचार न करना, चोरी न करना, फूठी गवाही न देना। 19 अपके पिता और
अपक्की माता का आदर करना, और अपके पड़ोसी से अपके समान प्रेम रखना।
20 उस जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात
की घटी है 21 यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना
माल बेचकर कंगालोंको दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे
हो ले। 22 परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह
बहुत धनी या।। 23 तब यीशु ने अपके चेलोंसे कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि
धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना किठन है। 24 फिर तुम से कहता हूं,
कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से
निकल जाना सहज है। 25 यह सुनकर, चेलोंने बहुत चकित होकर कहा, फिर
किस का उद्धार हो सकता है 26 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्योंसे तो
यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। 27 इस पर पतरस
ने उस से कहा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिथे हैं: तो हमें क्या
मिलेगा 28 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब
मनुष्य का पुत्र अपक्की महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे
हो लिथे हो, बारह सिंहासनोंपर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रोंका न्याय करोगे।
29 और जिस किसी ने घरोंया भाइयोंया बहिनोंया पिता या माता या
लड़केबालोंया खेतोंको मेरे नाम के लिथे छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा:
और वह अनन्त जीवन का अधिक्कारनी होगा। 30 परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं,
पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे।।

मत्ती 20

1 स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्य के समान है, जो सबेरे निकला, कि अपके दाख
की बारी में मजदूरोंको लगाए। 2 और उस ने मजदूरोंसे एक दीनार राज पर
ठहराकर, उन्हें अपके दाख की बारी में भेजा। 3 फिर पहर एक दिन चढ़े,
निकलकर, और औरोंको बाजार में बेकार खड़े देखकर, 4 उन से कहा, तुम भी
दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए। 5 फिर
उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। 6 और एक घंटा
दिन रहे फिर निकलकर औरोंको खड़े पाया, और उन से कहा; तु क्योंयहां दिन
भर बेकार खड़े रहे उन्होंने उस से कहा, इसलिथे, कि किसी ने हमें मजदूरी पर
नहीं लगाया। 7 उस ने उन से कहा, तुम भी दा,ा की बारी में जाओ। 8 सांफ को
दाख बारी के स्वामी ने अपके भण्डारी से कहा, मजदूरोंको बुलाकर पिछलोंसे
लेकर पहिलोंतक उन्हें मजदूरी दे दे। 9 सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे
लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला। 10 जो पहिले आए, उन्होंने यह
समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। 11
जब मिला, तो वह गृहस्य पर कुडकुड़ा के कहने लगे। 12 कि इन पिछलोंने एक
ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का
भार उठाया और घाम सहा 13 उस ने उन में से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं
तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया 14 जो
तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस
पिछले को भी दूं। 15 क्या उचित नहीं कि मं अपके माल से जो चाहूं सो करूं क्या
तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है 16 इसी रीति से जो पिछले हैं,
वह पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे।। 17 यीशु यरूशलेम को जाते

हुए बारह चेलोंको एकान्त में ले गया, और मार्ग में उन से कहने लगा। 18 कि
देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र महाथाजकोंऔर शास्त्रियोंके
हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। 19 और उस को
अन्यजातियोंके हाथ सोंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठोंमें उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस
पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।। 20 जब जब्दी के पुत्रोंकी माता
ने अपके पुत्रोंके साय उसके पास आकर प्रणाम किया, और उस से कुछ मांगने
लगी। 21 उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती है वह उस से बोली, यह कह, कि मेरे
थे दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दिहने और एक तेरे बाएं बैठें। 22 यीशु ने उत्तर
दिया, तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी
सकते हो उन्होंने उस से कहा, पी सकते हैं। 23 उस ने उन से कहा, तुम मेरा
कटोरा तो पीओगे पर अपके दिहने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं, पर
जिन के लिथे मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हें के लिथे है। 24 यह
सुनकर, दसोंचेले उन दोनोंभाइयोंपर क्रुद्ध हुए। 25 यीशु ने उन्हें पास बुलाकर
कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियोंके हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और
जो बड़े हैं, वे उन पर अधिक्कारने जताते हैं। 26 परन्तु तुम में ऐसा न होगा;
परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। 27 और जो तुम में
प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने। 28 जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिथे
नहीं आया कि उस की सेवा टहल किई जाए, परन्तु इसलिथे आया कि आप सेवा
टहल करे और बहुतोंकी छुडौती के लिथे अपके प्राण दे।। 29 जब वे यरीहो से
निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। 30 और देखो, दो अन्धे, जो
सड़कर के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे;

कि हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। 31 लोगोंने उन्हें डांटा, कि चुप
रहे, पर वे और भी चिल्लाकर बोले, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
32 तब यीशु ने खडे होकर, उन्हें बुलाया, और कहा; 33 तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिथे करूं उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु; यह कि हमारी आंखे खुल जाएं। 34
यीशु ने तरस खाकर उन की आंखे छूई, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके
पीछे हो लिए।।

मत्ती 21

1 जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो
यीशु ने दो चेलोंको यह कहकर भेजा। 2 कि अपके साम्हने के गांव में जाओ, वहां
पंहुचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साय बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें
खोलकर, मेरे पास ले आओ। 3 यदि तुम में से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु
को इन का प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा। 4 यह इसलिथे हुआ, कि
जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया या, वह पूरा हो; 5 कि सिय्योन की बेटी
से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गदहे पर बैठा है; बरन
लादू के बच्चे पर। 6 चेलोंने जाकर, जैसा यीशु ने उन से कहा या, वैसा ही किया।
7 और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपके कपके डाले, और वह उन पर
बैठ गया। 8 और बहुतेरे लोगोंने अपके कपके मार्ग में बिछाए, और और लोगोंने
पेड़ोंसे डालियां काटकर मार्ग में बिछाई। 9 और जो भीड़ आगे आगे जाती और
पीछे पीछे चक्की आती यी, पुकार पुकार कर कहती यी, कि दाऊद की सन्तान को
होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना। 10 जब उस

ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने
लगे, यह कौन है 11 लोगोंने कहा, यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु
है।। 12 यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन
कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफोंके पीढ़े और कबूतरोंके बेचनेवालोंकी
चौकियां उलट दीं। 13 और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर
कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो। 14 और अन्धे और लंगड़े,
मन्दिर में उसके पास लाए, और उस ने उन्हें चंगा किया। 15 परन्तु जब
महाथजकोंऔर शास्त्रियोंने इन अद्भुत कामोंको, जो उस ने किए, और लड़कोंको
मन्दिर में दाऊद की सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस
से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि थे क्या कहते हैं 16 यीशु ने उन से कहा, हां;
क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकोंऔर दूध पीते बच्चोंके मुंह से तु ने
स्तुति सिद्ध कराई 17 तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया,
ओर वहंा रात बिताई।। 18 भोर को जब वह नगर को लौट रहा या, तो उसे भूख
लगी। 19 और अंजीर के पेड़ सड़क के किनारे देखकर वह उसके पास गया, और
पत्तोंको छोड़ उस में और कुछ न पाकर उस से कहा, अब से तुझ में फिर कभी फल
न लगे; और अंजीर का पेड़ तुरन्त सुख गया। 20 यह देखकर चेलोंने अचम्भा
किया, और कहा, यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया 21 यीशु ने उन को
उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम विश्वास रखो, और सन्देह न
करो; तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि
इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जो; और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जाएगा।
22 और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा।। 23

वह मन्दिर में जाकर उपकेश कर रहा या, कि महाथाजकोंऔर लोगोंके पुरिनयोंने
उसके पास आकर पूछा, तू थे काम किस के अधिक्कारने से करता है और तुझे
यह अधिक्कारने किस ने दिया है 24 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से
एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि थे काम
किस अधिक्कारने से करता हूं। 25 यूहन्ना का बपतिस्क़ा कहां से या स्वर्ग की
ओर से या मनुष्योंकी ओर से या तब वे आपस में विवाद करने लगे, कि यदि हम
कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हमे से कहेगा, फिर तुम ने उस की प्रतीति क्योंन की
26 और यदि कहें मनुष्योंकी ओर से तो हमें भीड़ का डर है; क्योंकि वे सब युहन्ना
को भविष्यद्वक्ता जानते हैं। 27 सो उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं
जानते; उस ने भी उन से कहा, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि थे काम किस
अधिक्कारने से करता हूं। 28 तुम क्या समझते हो किसी मनुष्य के दो पुत्र थे;
उस ने पहिले के पास जाकर कहा; हे पुत्र आज दाख की बारी में काम कर। 29 उस
ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछता कर गया। 30 फिर दूसरे के
पास जाकर ऐसा ही कहा, उस ने उत्तर दिया, जी हां जाता हूं, परन्तु नहीं गया। 31
इन दोनोंमें से किस ने पिता की इच्छा पूरी की उन्होंने कहा, पहिले ने: यीशु ने उन
से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। 32 क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे
पास आया, और तुम ने उस की प्रतीति न की: पर महसूल लेनेवालोंऔर वेश्याओं
ने उस की प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उस की
प्रतीति कर लेते।। 33 एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ या, जिस ने दाख की
बारी लगाई; और उसके चारोंओर बाड़ा बान्धा; और उस मे रस का कुंड खोदा;

और गुम्मट बनाया; और किसानोंको उसका ठीका देकर परदेश चला गया। 34
जब फल का समय निकट आया, तो उस ने अपके दासोंको उसका फल लेने के
लिथे किसानोंके पास भेजा। 35 पर किसानोंने उसके दासोंको पकड़ के, किसी को
पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी को पत्यरवाह किया। 36 फिर उस ने
और दासोंको भेजा, जो पहिलोंसे अधिक थे; और उन्होंने उन से भी वैसा ही
किया। 37 अन्त में उस ने अपके पुत्र को उन के पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे
पुत्र का आदर करेंगे। 38 परन्तु किसानोंने पुत्र को देखकर आपस में कहा, यह तो
वारिस है, आओ, उसे मार डालें: और उस की मीरास ले लें। 39 और उन्होंने उसे
पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। 40 इसलिथे जब दाख
की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानोंके साय क्या करेगा 41 उन्होंने उस से
कहा, वह उन बुरे लोगोंको बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठीका
और किसानोंको देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। 42 यीशु ने उन से
कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्यर को
राजमिस्त्रियोंने निकम्मा ठहराया या, वही कोने के सिक्के का पत्यर हो गया 43
यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे देखते में अद्भुत है, इसलिथे मैं तुम से कहता
हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका
फल लाए, दिया जाएगा। 44 जो इस पत्यर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा:
और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा। 45 महाथाजक और फरीसी
उसके दृष्टान्तोंको सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है। 46 और
उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगोंसे डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता
जानते थे।।

मत्ती 22

1 इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तोंमें कहने लगा। 2 स्वर्ग का राज्य उस राजा
के समान है, जिस ने अपके पुत्र का ब्याह किया। 3 और उस ने अपके दासोंको
भेजा, कि नेवताहारियोंको ब्याह के भोज में बुलाएं; परन्तु उन्होंने आना न चाहा।
4 फिर उस ने और दासोंको यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियोंसे कहो, देखो; मैं
भोज तैयार कर चुका हूं, और मेरे बैल और पके हुए पशु मारे गए हैं: और सब कुछ
तैयार है; ब्याह के भोज में आओ। 5 परन्तु वे बेपरवाई करके चल दिए: कोई
अपके खेत को, कोई अपके ब्योपार को। 6 औरोंने जो बच रहे थे उसके दासोंको
पकड़कर उन का अनादर किया और मार डाला। 7 राजा ने क्रोध किया, और
अपक्की सेना भेजकर उन हत्यारोंको नाश किया, और उन के नगर फूंक दिया। 8
तब उस ने अपके दासोंसे कहा, ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु नेवताहारी
योग्य न ठहरे। 9 इसलिथे चौराहोंमें जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को
ब्याह के भोज में बुला लाओ। 10 सो उन दासोंने सड़कोंपर जाकर क्या बुरे, क्या
भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया; और ब्याह का घर जेवनहारोंसे भर
गया। 11 जब राजा जेवनहारोंके देखने को भीतर आया; तो उस ने वहां एक
मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने या। 12 उस ने उससे पूछा हे मित्र;
तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्योंआ गया उसका मुंह बन्द हो गया। 13 तब
राजा ने सेवकोंसे कहा, इस के हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धिक्कारने में
डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा। 14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु
चुने हुए योड़े हैं।। 15 तब फरीसियोंने जाकर आपस में विचार किया, कि उस को
किस प्रकार बातोंमें फंसाएं। 16 सो उन्होंने अपके चेलोंको हेरोदियोंके साय उसके

पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरू; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर
का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवा नहीं करता, क्योंकि तू
मनुष्योंका मुंह देखकर बातें नही करता। 17 इस लिथे हमें बता तू क्या समझता
है कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं। 18 यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा,
हे कपटियों; मुझे क्योंपरखते हो 19 कर का सि?ा मुझे दिखाओ: तब वे उसके
पास एक दीनार ले आए। 20 उस ने, उन से पूछा, यह मूत्तिर् और नाम किस का है
21 उन्होंने उस से कहा, कैसर का; तब उस ने, उन से कहा; जो कैसर का है, वह
कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो। 22 यह सुनकर उन्होंने
अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए।। 23 उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि
मरे हुओं का पुनरूत्यान है ही नहीं उसके पास आए, और उस से पूछा। 24 कि हे
गुरू; मूसा ने कहा या, कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उस
की पत्नी को ब्याह करके अपके भाई के लिथे वंश उत्पन्न करे। 25 अब हमारे
यहां सात भाई थे; पहिला ब्याह करके मर गया; और सन्तान न होने के कारण
अपक्की पत्नी को अपके भाई के लिथे छोड़ गया। 26 इसी प्रकार दूसरे और
तीसरे ने भी किया, और सातोंतक यही हुआ। 27 सब के बाद वह स्त्री भी मर गई।
28 सो जी उठने पर, वह उन सातोंमें से किस की पत्नी होगी क्योंकि वह सब की
पत्नी हो चुकी यी। 29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और
परमेश्वर की सामर्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो। 30 क्योंकि जी
उठने पर ब्याह शादी न होगी; परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतोंकी नाई होंगे।
31 परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो
परमेश्वर ने तुम से कहा। 32 कि मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का

परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतोंका
परमेश्वर है। 33 यह सुनकर लोग उसके उपकेश से चकित हुए। 34 जब
फरीसियोंने सुना, कि उस ने सदूकियोंका मुंह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए।
35 और उन में से एक व्यवस्यापक ने परखने के लिथे, उस से पूछा। 36 हे गुरू;
व्यवस्या में कौन सी आज्ञा बड़ी है 37 उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपके प्रभु
से अपके सारे मन और अपके सारे प्राण और अपक्की सारी बुद्धि के साय प्रेम
रख। 38 बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। 39 और उसी के समान यह दूसरी भी
है, कि तू अपके पड़ोसी से अपके समान प्रेम रख। 40 थे ही दो आज्ञाएं सारी
व्यवस्या और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।। 41 जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु
ने उन से पूछा। 42 कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का
सन्तान है उन्होंने उस से कहा, दाऊद का। 43 उस ने उन से पूछा, तो दाऊद
आत्क़ा में होकर उसे प्रभु क्योंकहता है 44 कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दिहने
बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियोंको तेरे पांवोंके नीचे न कर दूं। 45 भला, जब दाऊद
उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा 46 उसके उत्तर में कोई भी
एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का
हियाव न हुआ।।

मत्ती 23

1 तब यीशु ने भीड़ से और अपके चेलोंसे कहा। 2 शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी
पर बैठे हैं। 3 इसलिथे वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन
के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। 4 वे एक ऐसे भारी

बोफ को जिन को उठाना किठन है, बान्धकर उन्हें मनुष्योंके कन्धोंपर रखते हैं;
परन्तु आप उन्हें अपक्की उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते । 5 वे अपके सब
काम लोगोंको दिखाने के लिथे करते हैं: वे अपके तावीजोंको चौड़े करते, और
अपके वस्त्रोंकी कोरें बढ़ाते हैं। 6 जेवनारोंमें मुख्य मुख्य जगहें, और सभा में
मुख्य मुख्य आसन। 7 और बाजारोंमें नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना
उन्हें भाता है। 8 परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; कयोंकि तुम्हारा एक ही गुरू है:
और तुम सब भाई हो। 9 और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, कयोंकि
तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। 10 और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि
तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्यात मसीह। 11 जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा
सेवक बने। 12 जो कोई अपके आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा:
और जो कोई अपके आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।। 13 हे
कपक्की शास्त्रियोंऔर फरीसियोंतुम पर हाथ!14 तुम मनुष्योंके विरोध में स्वर्ग
के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस
में प्रवेश करनेवालोंको प्रवेश करने देते हो।।15 हे कपक्की शास्त्रियोंऔर
फरीसियोंतुम पर हाथ! तुम एक जन को अपके मत में लाने के लिथे सारे जल
और यल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपके से दूना
नारकीय बना देते हो।। 16 हे अन्धे अगुवों, तुम पर हाथ, जो कहते हो कि यदि
कोई मन्दिर की शपय खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की
सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा। 17 हे मूर्खो, और अन्धों, कौन बड़ा है,
सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है 18 फिर कहते हो कि यदि कोई
वेदी की शपय खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उस की

शपथ खाए तो बन्ध जाएगा। 19 हे अन्धों, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी: जिस से भेंट
पवित्र होता है 20 इसलिथे जो वेदी की शपथ खाता है, वह उस की, और जो कुछ
उस पर है, उस की भी शपथ खाता है। 21 और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह
उस की और उस में रहनेवालोंकी भी शपथ खाता है। 22 और जो स्वर्ग की शपथ
खाता है, वह परमेश्वर के सिहांसन की और उस पर बैठनेवाले की भी शपथ खाता
है।। 23 हे कपक्की शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाथ; तुम पोदीने और सौंफ
और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्या की गम्भीर बातोंको छोड़
दिया है; चाहिथे या कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। 24 हे अन्धे
अगुवों, तुम मच्छड़ को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो। 25 हे
कपक्की शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाथ, तुम कटोरे और याली को ऊपर
ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर असंयम से भरे हुए हैं। 26 हे अन्धे
फरीसी, पहिले कटोरे और याली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों।।
27 हे कपक्की शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाथ; तुम चूना फिरी हुई कब्रोंके
समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दोंकी
हिड्डयोंऔर सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। 28 इसी रीति से तुम भी ऊपर से
मनुष्योंको धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।।
29 हे कपक्की शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाथ; तुम भविष्यद्वक्ताओं की
कब्रें संवारते और धर्मियोंकी कब्रें बनाते हो। 30 और कहते हो, कि यदि हम अपके
बापदादोंके दिनोंमें होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उन के साफी न होते। 31
इस से तो तुम अपके पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के
घातकोंकी सन्तान हो। 32 सो तुम अपके बापदादोंके पाप का घड़ा भर दो। 33 हे

सांपो, हे करैतोंके बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे 34 इसलिथे देखो,
मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानोंऔर शास्त्रियोंको भेजता हूं; और
तुम उन में से कितनोंको मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कितनोंको
अपक्की सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते
फिरोगे। 35 जिस से धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे
तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला या, जितने धर्मियोंका लोहू पृय्वी
पर बहाथा गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पकेगा। 36 मैं तुम से सच कहता हूं,
थे सब बातें इस समय के लोगोंपर आ पकेंगी।। 37 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू
जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्यरवाह
करता है, कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपके बच्चोंको अपके पंखोंके
नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकोंको इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने
न चाहा। 38 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिथे उजाड़ छोड़ा जाता है। 39 क्योंकि मैं
तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के
नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।।

मत्ती 24

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा या, तो उसके चेले उस को मन्दिर की
रचना दिखाने के लिथे उस के पास आए। 2 उस ने उन से कहा, क्या तुम यह सब
नहीं देखते मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्यर पर पत्यर भी न छूटेगा, जो ढाया
न जाएगा। 3 और जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा या, तो चेलोंने अलग उसके पास
आकर कहा, हम से कह कि थे बातें कब होंगी और तेरे आने का, और जगत के

अन्त का क्या चिन्ह होगा 4 यीशु ने उन को उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें
न भरमाने पाए। 5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं
मसीह हूं: और बहुतोंको भरमाएंगे। 6 तुम लड़ाइयोंऔर लड़ाइयोंकी चर्चा सुनोगे;
देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न
होगा। 7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह
जगह अकाल पकेंगे, और भुईडोल होंगे। 8 थे सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।
9 तब वे क्लेश दिलाने के लिथे तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे
नाम के कारण सब जातियोंके लोग तुम से बैर रखेंगे। 10 तब बहुतेरे ठोकर
खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। 11 और बहुत से फूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े
होंगे, और बहुतोंको भरमाएंगे। 12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतोंका प्रेम ठण्डा हो
जाएगा। 13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। 14 और
राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियोंपर
गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।। 15 सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित
वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्थेल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई यी, पवित्र स्यान में
खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। 16 तब जो यहूदिया में होंवे पहाड़ोंपर भाग
जाएं। 17 जो कोठे पर हो, वह अपके घर में से सामान लेने को न उतरे। 18 और
जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। 19 उन दिनोंमें जो
गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिथे हाथ, हाथ। 20 और प्रार्यना करो; कि
तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पके। 21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी
क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। 22
और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के

कारण वे दिन घटाए जाएंगे। 23 उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो,
मसीह यहां हैं! या वहां है तो प्रतीति न करना। 24 क्योंकि फूठे मसीह और फूठे
भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो
सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। 25 देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ
कह दिया है। 26 इसलिथे यदि वे तुम से कहें, देखो, वह जंगल में है, तो बाहर न
निकल जाना; देखो, वह कोठिरयोंमें हैं, तो प्रतीति न करना। 27 क्योंकि जैसे
बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र
का भी आना होगा। 28 जहां लोय हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।। 29 उन दिनोंके
क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अन्धिक्कारनो हो जाएगा, और चान्द का प्रकाश जाता
रहेगा, और तारे आकाश से गिर पकेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
30 तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृय्वी के सब
कुलोंके लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्य और ऐश्वर्य के साय
आकाश के बादलोंपर आते देखेंगे। 31 और वह तुरही के बड़े शब्द के साय, अपके
दूतोंको भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारोंदिशा से उसके
चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे। 32 अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उस की
डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्क़
काल निकट है। 33 इसी रीति से जब तुम इन सब बातोंको देखो, तो जान लो, कि
वह निकट है, बरन द्वार पर है। 34 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जबतब थे सब
बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। 35 आकाश और पृय्वी टल
जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। 36 उस दिन और उस घड़ी के विषय में
कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। 37 जैसे नूह

के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। 38 क्योंकि जैसे जल-प्रलय
से पहिले के दिनोंमें, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक
लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती यी। 39 और जब तक जल-प्रलय
आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे
ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। 40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले
लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 41 दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी,
एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। 42 इसलिथे जागते रहो, क्योंकि
तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। 43 परन्तु यह जान लो कि
यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता;
और अपके घर में सेंघ लगने न देता। 44 इसलिथे तुम भी तैयार रहो, क्योंकि
जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ
जाएगा। 45 सो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने
अपके नौकर चाकरोंपर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे 46 धन्य है,
वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा की करते पाए। 47 मैं तुम से सच
कहता हूं; वह उसे अपक्की सारी संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। 48 परन्तु यदि वह
दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है। 49 और अपके सायी
दासोंको पीटने लगे, और पिय?ड़ोंके साय खाए पीए। 50 तो उस दास का स्वामी
ऐसे दिन आएगा, जब वह उस की बाट न जोहता हो। 51 और ऐसी घड़ी कि वह न
जानता हो, और उसे भारी ताड़ना देकर, उसका भाग कपटियोंके साय ठहराएगा:
वहां रोना और दांत पीसना होगा।।

मत्ती 25

1 तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियोंके समान होगा जो अपक्की मशालें लेकर
दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। 2 उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार यीं। 3
मूर्खोंने अपक्की मशालें तो लीं, परन्तु अपके साय तेल नहीं लिया। 4 परन्तु
समझदारोंने अपक्की मशालोंके साय अपक्की कुप्पियोंमें तेल भी भर लिया। 5
जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गई। 6 आधी रात को
धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिथे चलो। 7 तब वे
सब कुंवारियां उठकर अपक्की अपक्की मशलें ठीक करने लगीं। 8 और मूर्खोंने
समझदारोंसे कहा, अपके तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुफी
जाती हैं। 9 परन्तु समझदारोंने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिथे
पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालोंके पास जाकर अपके लिथे मोल ले
लो। 10 जब वे मोल लेने को जा रही यीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार यीं, वे
उसके साय ब्याह के घर में चक्कीं गई और द्वार बन्द किया गया। 11 इसके बाद
वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिथे द्वार
खोल दे। 12 उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिथे जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।।
14 क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपके
दासोंको बुलाकर, अपक्की संपत्ति उन को सौंप दी। 15 उस ने एक को पांच तोड़,
दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्यात हर एक को उस की सामर्य के अनुसार
दिया, और तब परदेश चला गया। 16 तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने
तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। 17 इसी रीति से
जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। 18 परन्तु जिस को एक मिला

था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपके स्वामी के रूपके छिपा दिए। 19 बहुत
दिनोंके बाद उन दासोंका स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। 20 जिस को पांच
तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े
सौंपे थे, देख मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं। 21 उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य
है अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत
वस्तुओं का अधिक्कारनी बनाऊंगा अपके स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। 22
और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े
सौंपें थे, देख, मैं ने दो तोड़े और कमाएं। 23 उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे
अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं
का अधिक्कारनी बनाऊंगा अपके स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। 24 तब
जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था,
कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां नहीं छीटता वहां से बटोरता है। 25 सो मैं डर
गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है। 26
उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब यह तू जानता
था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं; और जहां मैं ने नहीं छीटा वहां से
बटोरता हूं। 27 तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रूपया सर्राफोंको दे देता, तब मैं
आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता। 28 इसलिथे वह तोड़ा उस से ले लो, और
जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो। 29 क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे
और दिया जाएगा; औश्र् उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है,
उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। 30 और इस निकम्मे दास को
बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना औश्र् दांत पीसना होगा। 31 जब मनुष्य का

पुत्र अपक्की महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साय आएंगे तो वह
अपक्की महिमा के सिहांसन पर विराजमान होगा। 32 और सब जातियां उसके
साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ोंको बकिरयोंसे अलग कर
देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। 33 और वह भेड़ोंको अपक्की
दिहनी ओर और बकिरयोंको बाई और खड़ी करेगा। 34 तब राजा अपक्की दिहनी
ओर वालोंसे कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के
अधिक्कारनी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिथे तैयार किया हुआ है।
35 क्योंकि मै। भूखा या, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा या, और
तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी या, तुम ने मुझे अपके घर में ठहराया। 36
मैं नंगा या, तुम ने मुझे कपके पहिनाए; मैं बीमार या, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं
बन्दीगृह में या, तुम मुझ से मिलने आए। 37 तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे
प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और सिखाया या पियासा देखा, और पिलाया 38
हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपके घर में ठहराया या नंगा देखा, और
कपके पहिनाए 39 हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से
मिलने आए 40 तब राजा उन्हें उत्तर देगा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो
मेरे इन छोटे से छोटे भाइयोंमें से किसी एक के साय किया, वह मेरे ही साय
किया। 41 तब वह बाईं ओर वालोंसे कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस
अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतोंके लिथे तैयार की गई है।
42 क्योंकि मैं भूखा या, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं पियासा या, और
तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। 43 मैं परदेशी या, और तुम ने मुझे अपके घर में
नहीं ठहराया; मैं नंगा या, और तुम ने मुझे कपके नहीं पहिनाए; बीमार और

बन्दीगृह में या, और तुम ने मेरी सुधि न ली। 44 तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम
ने तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में
देखा, और तेरी सेवा टहल न की 45 तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता
हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटोंमें से किसी एक के साय नहीं किया, वह मेरे
साय भी नहीं किया। 46 और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन
में प्रवेश करेंगे।

मत्ती 26

1 जब यीशु थे सब बातें कह चुका, तो अपके चेलोंसे कहने लगा। 2 तुम जानते हो,
कि दो दिन के बाद फसह का पर्व्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने
के लिथे पकड़वाया जाएगा। 3 तब महाथाजक और प्रजा के पुरिनए काइफा नाम
महाथाजक के आंगन में इकट्ठे हुए। 4 और आपस में विचार करने लगे कि यीशु
को छत से पकड़कर मार डालें। 5 परन्तु वे कहते थे, कि पर्व्व के समय नहीं; कहीं
ऐसा न हो कि लोगोंमें बलवा मच जाए। 6 जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी
के घर में या। 7 तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास
आई, और जब वह भोजन करने बैठा या, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। 8 यह
देखकर, उसके चेले रिसयाए और कहने लगे, इस का क्योंसत्यनाश किया गया 9
यह तो अच्छे दाम पर बिककर कंगालोंको बांटा जा सकता या। 10 यह जानकर
यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्योंसताते हो उस ने मेरे साय भलाई की है। 11
कंगाल तुम्हारे साय सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साय सदैव न रहूंगा। 12 उस
ने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाढ़े जाने के लिथे किया है 13 मैं

तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया
जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्क़रण में किया जाएगा। 14
तब यहूदा इस्किरयोती नाम बारह चेलोंमें से एक ने महाथाजकोंके पास जाकर
कहा। 15 यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे उन्होंने उसे तीस
चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए। 16 और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का
अवसर ढूंढ़ने लगा।। 17 अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, चेले यीशु के पास
आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिथे फसह खाने की तैयारी करें
18 उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरू कहता है, कि
मेरा समय निकट है, मैं अपके चेलोंके साय तेरे यहां पर्व्व मनाऊंगा। 19 सो
चेलोंने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया। 20 जब सांफ हुई, तो वह
बारहोंके साय भोजन करने के लिथे बैठा। 21 जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं
तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। 22 इस पर वे बहुत
उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरू, क्या वह मैं हूं 23 उस ने उत्तर
दिया, कि जिस ने मेरे साय याली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। 24
मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य
के लिथे शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य
का जन्क़ न होता, तो उसके लिथे भला होता। 25 तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा
ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हूं 26 उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा
रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलोंको देकर कहा,
लो, खाओ; यह मेरी देह है। 27 फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और
उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। 28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू

है, जो बहुतोंके लिथे पापोंकी झमा के निमित्त बहाथा जाता है। 29 मैं तुम से
कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे
साय अपके पिता के राज्य में नया न पीऊं।। 30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़
पर गए।। 31 तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में
ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और फुण्ड की भेड़ें
तित्तर बित्तर हो जाएंगी। 32 परन्तु मैं अपके जी उठने के बाद तुम से पहले
गलील को जाऊंगा। 33 इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में
ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा। 34 यीशु ने उस से
कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि आज ही राज को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू
तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। 35 पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साय
मरना भी हो, तौभी, मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलोंने भी
कहा।। 36 तब यीशु ने अपके चेलोंके साय गतसमनी नाम एक स्यान में आया
और अपके चेलोंसे कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर
प्रार्यना करूं। 37 और वह पतरस और जब्दी के दोनोंपुत्रोंको साय ले गया, और
उदास और व्याकुल होने लगा। 38 तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास
है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साय जागते
रहो। 39 फिर वह योड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्यना करने
लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा
मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। 40 फिर चेलोंके पास
आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साय एक घड़ी भी न
जाग सके 41 जागते रहो, और प्रार्यना करते रहो, कि तुम पक्कीझा में न पड़ो:

आत्क़ा तो तैयार है, परन्तु शरीर र्दुबल है। 42 फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह
प्रार्यना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी
इच्छा पूरी हो। 43 तब उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें
नींद से भरी यीं। 44 और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर
कहकर, तीसरी बार प्रार्यना की। 45 तब उस ने चेलोंके पास आकर उन से कहा;
अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र
पापियोंके हाथ पकड़वाया जाता है। 46 उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वानेवाला
निकट आ पहुंचा है।। 47 वह यह कह ही रहा या, कि देखो यहूदा जो बारहोंमें से
एक या, आया, और उसके साय महाथाजकोंऔर लोगोंके पुरिनयोंकी ओर से बड़ी
भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई। 48 उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह
पता दिया या कि जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना। 49 और तुरन्त यीशु
के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उस को बहुत चूमा। 50 यीशु ने उस
से कहा; हे मित्र, जिस काम के लिथे तू आया है, उसे कर ले। तब उन्होंने पास
आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया। 51 और देखो, यीशु के
सायियोंमें से एक ने हाथ बढ़ाकर अपक्की तलवार खींच ली और महाथाजक के
दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया। 52 तब यीशु ने उस से कहा; अपक्की
तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश
किए जाएंगे। 53 क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपके पिता से बिनती कर सकता
हूं, और वह स्वर्गदूतोंकी बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्यित कर
देगा 54 परन्तु पवित्र शास्त्र की बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी
होंगी 55 उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर

मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिथे निकले हो मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर
उपकेश दिया करता या, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। 56 परन्तु यह सब
इसलिथे हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन के पूरे हों: तब सब चेलें उसे छोड़कर
भाग गए।। 57 और यीशु के पकड़नेवाले उस को काइफा नाम महाथाजक के पास
ले गए, जहां शास्त्री और पुरिनए इकट्ठे हुए थे। 58 और पतरस दूर से उसके पीछे
पीछे महाथाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादोंके
साय बैठ गया। 59 महाथाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिथे
उसके विरोध में फूठी गवाही की खोज में थे। 60 परन्तु बहुत से फूठे गवाहोंके
आने पर भी न पाई। 61 अन्त में दो जनोंने आकर कहा, कि उस ने कहा है; कि मैं
परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं। 62 तब
महाथाजक ने खड़े होकर उस से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता थे लोग तेरे
विरोध में क्या गवाही देते हैं परन्तु यीशु चुप रहा: महाथाजक ने उस से कहा। 63
मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपय देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है,
तो हम से कह दे। 64 यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया: बरन मैं तुम से
यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दिहनी ओर
बैठे, और आकाश के बादलोंपर आते देखोगे। 65 तब महाथाजक ने अपके वस्त्र
फाड़कर कहा, इस ने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहोंका क्या प्रयोजन
66 देखो, तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो उन्होंने उत्तर
दिया, यह वध होने के योग्य है। 67 तब उन्होंने उस से मुंह पर यूका, और उसे
घूंसे मारे, औरोंने यप्पड़ मार के कहा। 68 हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके
कह: कि किस ने तुझे मारा 69 और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ या: कि एक

लौंड़ी ने उसके पास आकर कहा; तू भी यीशु गलीली के साथ था। 70 उस ने सब के
साम्हने यह कह कर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।
71 जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे
कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था। 72 उस ने शपय खाकर फिर इन्कार
किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। 73 योड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे,
उन्होंने पतरस के पास आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है;
क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। 74 तब वह धिक्कारने देने और शपय
खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी। 75
तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्क़रण आई की मुर्ग के बांग देने से पहिले
तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।।

मत्ती 27

1 जब भोर हुई, तो सब महाथाजकोंऔर लोगोंके पुरिनयोंने यीशु के मार डालने
की सम्मति की। 2 और उन्होंने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के
हाथ में सौंप दिया।। 3 जब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी
ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महाथाजकोंऔर
पुरिनयोंके पास फेर लाया। 4 और कहा, मैं ने निर्दोषी को घात के लिथे
पकड़वाकर पाप किया है उन्होंने कहा, हमें क्या तू ही जान। 5 तब वह उन
सिक्कों मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपके आप को फांसी दी। 6
महाथाजकोंने उन सिक्कों लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि
यह लोहू का दाम है। 7 सो उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों परदेशियोंके गाड़ने

के लिथे कुम्हार का खेत मोल ले लिया। 8 इस कारण वह खेत आज तक लोहू का
खेत कहलाता है। 9 तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया या वह
पूरा हुआ; कि उन्होंने वे तीस सिक्के अर्यात उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे
इस्त्राएल की सन्तान में से कितनोंने ठहराया या) ले लिए। 10 और जैसे प्रभु ने
मुझे आज्ञा दी यी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।। 11 जब यीशु
हाकिम के साम्हने खड़ा या, तो हाकिम ने उस से पूछा; कि क्या तू यहूदियोंका
राजा है यीशु ने उस से कहा, तू आप ही कह रहा है। 12 जब महाथाजक और
पुरिनए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। 13 इस पर
पीलातुस ने उस से कहा: क्या तू नहीं सुनता, कि थे तेरे विरोध में कितनी
गवाहियां दे रहे हैं 14 परन्तु उस ने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां
तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। 15 और हाकिम की यह रीति यी, कि उस
पर्व्व में लोगोंके लिथे किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता या। 16
उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ या। 17 सो जब वे
इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे
लिथे छोड़ दूं बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है 18 क्योंकि वह
जानता या कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है। 19 जब वह न्याय की गद्दी पर
बैठा हुआ या तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी के मामले में
हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है।
20 महाथाजकोंऔर पुरिनयोंने लोगोंको उभारा, कि वे बरअब्बा को मांग ले, और
यीशु को नाश कराएं। 21 हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनोंमें से किस को
चाहते हो, कि तुम्हारे लिथे छोड़ दूं उन्होंने कहा; बरअब्बा को। 22 पीलातुस ने

उन से पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं सब ने उस से कहा,
वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। 23 हाकिम ने कहा; क्योंउस ने क्या बुराई की है परन्तु
वे और भी चिल्ला, चिल्लाकर कहने लगे, ?वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। 24 जब
पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इस के विपक्कीत हुल्लड़ होता
जाता है, तो उस ने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपके हाथ धोए, और कहा; मैं इस
धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। 25 सब लोगोंने उत्तर दिया, कि इस का
लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। 26 इस पर उस ने बरअब्बा को उन के
लिथे छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया
जाए।। 27 तब हाकिम के सिपाहियोंने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन
उसके चहुं ओर इकट्ठी की। 28 और उसके कपके उतारकर उसे किरिमजी बागा
पहिनाया। 29 और काटोंको मुकुट गूंयकर उसके सिर पर रखा; और उसके दिहने
हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे,
कि हे यहूदियोंके राज नमस्कार। 30 और उस पर यूका; और वही सरकण्डा लेकर
उसके सिर पर मारने लगे। 31 जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो वह बागा उस पर
से उतारकर फिर उसी के कपके उसे पहिनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिथे ले
चले।। 32 बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे
बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। 33 और उस स्यान पर जो गुलगुता
नाम की जगह अर्यात् खोपड़ी का स्यान कहलाता है पहुंचकर। 34 उन्होंने पित्त
मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उस ने चखकर पीना न चाहा।
35 तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियां डालकर उसके कपके बांट
लिए। 36 और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे। 37 और उसका दोषपत्र, उसके

सिर के ऊपर लगाया, कि ?यह यहूदियोंका राजा यीशु है। 38 तब उसके साय दो
डाकू एक दिहने और एक बाएं क्रूसोंपर चढ़ाए गए। 39 और आने जाने वाले सिर
हिला हिलाकर उस की निन्दा करते थे। 40 और यह कहते थे, कि हे मन्दिर के
ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपके आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर
का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। 41 इसी रीति से महाथाजक भी शास्त्रियोंऔर
पुरिनयोंसमेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरोंको बचाया, और अपके को
नहीं बचा सकता। 42 यह तो ?इस्राएल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो
हम उस पर विश्वास करें। 43 उस ने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इस को
चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा या, कि ?मैं परमेश्वर का पुत्र
हूं। 44 इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साय क्रूसोंपर चढ़ाए गए थे उस की निन्दा
करते थे।। 45 दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया
रहा। 46 तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली,
लमा शबक्तनी अर्यात्‌ हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्योंछोड़ दिया
47 जो वहां खड़े थे, उन में से कितनोंने यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को
पुकारता है। 48 उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया,
और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। 49 औरोंने कहा, रह जाओ, देखें,
एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। 50 तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से
चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। 51 और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट
कर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़कर गईं। 52 और कब्रें
खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें जी उठीं। 53 और उसके जी
उठने के बाद वे कब्रोंमें से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतोंको दिखाई

दिए। 54 तब सूबेदार और जो उसके साय यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईडोल और
जो कुछ हुआ या, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच ?यह परमेश्वर का
पुत्र या। 55 वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुईं उसके
साय आईं यीं, दूर से देख रही यीं। 56 उन में मरियम मगदलीली और याकूब और
योसेस की माता मरियम और जब्दी के पुत्रोंकी माता यीं। 57 जब सांफ हुई तो
यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला या
आया: उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोय मांगी। 58 इस पर पीलातुस
ने दे देने की आज्ञा दी। 59 यूसुफ ने लोय को लेकर उसे उज्ज़वल चादर में लपेटा।
60 और उसे अपक्की नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई यी, और कब्र
के द्वार पर बड़ा पत्यर लुढकाकर चला गया। 61 और मरियम मगदलीनी और
दूसरी मरियम वहां कब्र के साम्हने बैठी यीं।। 62 दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के
बाद का दिन या, महाथाजकोंऔर फरीसियोंने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर
कहा। 63 हे महाराज, हमें स्क़रण है, कि उस भरमानेवाले ने अपके जीते जी कहा
या, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। 64 सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र
की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और
लोगोंसे कहनें लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहिले से
भी बुरा होगा। 65 पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरूए तो हैं जाओ,
अपक्की समझ के अनुसार रखवाली करो। 66 सो वे पहरूओं को साय ले कर गए,
और पत्यर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।।

मत्ती 28

1 सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी
और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। 2 और देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ,
क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्यर को लुढका
दिया, और उस पर बैठ गया। 3 उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले
की नाई उज्ज़्वल या। 4 उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो
गए। 5 स्वर्गदूत ने स्त्रियोंसे कहा, कि तुम मत डरो : मै जानता हूँ कि तुम यीशु
को जो क्रुस पर चढ़ाया गया या ढूंढ़ती हो। 6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपके वचन
के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्यान देखो, जहाँ प्रभु पड़ा या। 7 और शीघ्र
जाकर उसके चेलोंसे कहो, कि वह मृतकोंमें से जी उठा है; और देखो वह तुम से
पहिले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह
दिया। 8 और वे भय और बड़े आनन्द के साय कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलोंको
समाचार देने के लिथे दौड़ गई। 9 और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; ?सलाम
और उन्होंने पास आकर और उसके पाँव पकड़कर उसको दणडवत किया। 10
तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाईयोंसे जाकर कहो, कि गलील को चलें
जाएं वहाँ मुझे देखेंगे।। 11 वे जा ही रही यी, कि देखो, पहरूओं में से कितनोंने
नगर में आकर पूरा हाल महाथाजकोंसे कह सुनाया। 12 तब उन्होंने पुरिनयोंके
साय इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियोंको बहुत चान्दी देकर कहा। 13
कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले
गए। 14 और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे
और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। 15 सो उन्होंने रूपए लेकर जैसा सिखाए गए थे,
वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियोंमें प्रचलित है।। 16 और ग्यारह

चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया या। 17 और उन्होंने
उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ। 18 यीशु
ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृय्वी का सारा अधिक्कारने मुझे दिया
गया है। 19 इसलिथे तुम जाकर सब जातियोंके लोगोंको चेला बनाओ और उन्हें
पिता और पुत्र और पवित्रआत्क़ा के नाम से बपतिस्क़ा दो। 20 और उन्हें सब
बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त
तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

मरकुस 1

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। 2 जैसे यशायाह
भविष्यद्वकता की पुस्तक में लिखा है कि देख; मैं अपके दूत को तेरे आगे भेजता
हूं, जो तेरे लिथे मार्ग सुधारेगा। 3 जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे
रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उस की सड़कें सीधी करो। 4 यूहन्ना
आया, जो जंगल में बपतिस्क़ा देता, और पापोंकी झमा के लिथे मनफिराव के
बपतिस्क़ा का प्रचार करता या। 5 और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के
सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपके पापोंको मानकर यरदन
नदी में उस से बपतिस्क़ा लिया। 6 यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और
अपक्की कमर में चमड़ें का पटुका बान्धे रहता या ओर टिड्डियाँ और वन मधु
खाया करता या। 7 और यह प्रचार करता या, कि मेरे बाद वह आने वाला है, जो
मुझ से शक्तिमान है; मैं इस योग्य नहीं कि फुककर उसके जूतोंका बन्ध खोलूं। 8
मैं ने तो तुम्हें पानी से बपतिस्क़ा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्क़ा से

बपतिस्क़ा देगा।। 9 उन दिनोंमें यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में
यूहन्ना से बपतिस्क़ा लिया। 10 और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो
तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्क़ा को कबूतर की नाईं अपके ऊपर
उतरते देखा। 11 और यह आकाशवाणी हई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं
प्रसन्न हूं।। 12 तब आत्क़ा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर भेजा। 13 और
जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उस की पक्कीझा की; और वह वन पशुओं
के साय रहा; और स्वर्गदूत उन की सेवा करते रहे।। 14 यूहन्ना के पकड़वाए जाने
के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
15 और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन
फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।। 16 गलील की फील के किनारे किनारे
जाते हुए, उस ने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को फील में जाल डालते देखा;
क्योंकि वे मछुवे थे। 17 और यीशु ने उन से कहा; मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को
मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। 18 वे तुरन्त जालोंको छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19 और कुछ आगे बढ़कर, उस ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यहून्ना
को, नाव पर जालोंको सुधारते देखा। 20 उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपके
पिता जब्दी को मजदूरी के साय नाव पर छोड़कर, उसके पीछे चले गए।। 21 और
वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन सभा के घर में जाकर
उपकेश करने लगा। 22 और लोग उसके उपकेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें
शास्त्रियोंकी नाईं नहीं, परन्तु अधिक्कारनी की नाई उपकेश देता या। 23 और
उसी समय, उन की सभा के घर में एक मनुष्य या, जिस में एक अशुद्ध आत्क़ा
यी। 24 उस ने चिल्लाकर कहा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम क्या तू हमें

नाश करने आया है मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन! 25 यीशु
ने उसे डांटकर कहा, चुप रह; और उस में से निकल जा। 26 तब अशुद्ध आत्क़ा
उस को मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से निकल गई। 27 इस पर
सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे कि यह क्या बात है
यह तो कोई नया उपकेश है! वह अधिक्कारने के साय अशुद्ध आत्क़ाओं को भी
आज्ञा देता है, और वे उस की आज्ञा मानती हैं। 28 सो उसका नाम तुरन्त गलील
के आस पास के सारे देश में हर जगह फैल गया।। 29 और वह तुरन्त
आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साय शमौन और
अन्द्रियास के घर आया। 30 और शमौन की सास ज्वर से पीडित यी, और
उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उस से कहा। 31 तब उस ने पास जाकर उसका
हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उन
की सेवा-टहल करने लगी।। 32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब
बीमारोंको और उन्हें जिन में दुष्टात्क़ा भीं उसके पास लाए। 33 और सारा नगर
द्वार पर इकट्ठा हुआ। 34 और उस ने बहुतोंको जो नाना प्रकार की बीमारियोंसे
दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्क़ाओं को निकाला; और दुष्टात्क़ाओं को
बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती यीं।। 35 और भोर को दिन निकलने से
बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्यान में गया और वहां
प्रार्यना करने लगा। 36 तब शमौन और उसके सायी उस की खोज में गए। 37
जब वह मिला, तो उस से कहा; कि सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं। 38 उस न उन से
कहा, आओ; हम ओर कहीं आस पास की बस्तियोंमें जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार
करूं, क्योंकि मै। इसी लिथे निकला हूं। 39 सो वह सारे गलील में उन की सभाओं

में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्क़ाओं को निकालता रहा।। 40 और एक
कोढ़ी ने उसके पास आकर, उस से बिनती की, और उसके साम्हने घुटने टेककर,
उस से कहा; यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। 41 उस ने उस पर तरस
खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा; मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा। 42 और
तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। 43 तब उस ने उसे चिताकर
तुरन्त विदा किया। 44 और उस से कहा, देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु
जाकर अपके आप को याजक को दिखा, और अपके शुद्ध होने के विषय में जो
कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो। 45 परन्तु वह बाहर
जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा, कि यीशु फिर
खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्यानोंमें रहा; औश्र्
चहुंओर से लागे उसके पास आते रहे।।

मरकुस 2

1 कई दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया और सुना गया, कि वह घर में
है। 2 फिर इतने लोग इकट्ठे हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली; और वह
उन्हें वचन सुना रहा या। 3 और लोग एक फोले के मारे हुए को चार मनुष्योंसे
उठवाकर उसके पास ले आए। 4 परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न
पंहुच सके, तो उन्होंने उस छत को जिस के नीचे वह या, खोल दिया और जब उसे
उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर फोले का मारा हुआ पड़ा या, लटका दिया। 5
यीशु न, उन का विश्वास देखकर, उस फोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, तेरे पाप
झमा हुए। 6 तब कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपके अपके मन में विचार

करने लगे। 7 कि यह मनुष्य क्योंऐसा कहता है यह तो परमेश्वर की निन्दा करता
है, परमेश्वर को छोड़ और कोन पाप झमा कर सकता है 8 यीशु ने तुरन्त अपक्की
आत्क़ा में जान लिया, कि वे अपके अपके मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उन
से कहा, तुम अपके अपके मन में यह विचार क्योंकर रहे हो 9 सहज क्या है क्या
फोले के मारे से यह कहता कि तेरे पाप झमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपक्की
खाट उठा कर चल फिर 10 परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को
पृथ्वी पर पाप झमा करने का भी अधिक्कारने है (उस ने उस फोले के मारे हुए से
कहा)। 11 मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपक्की खाट उठाकर अपके घर चला जा।
12 और वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के साम्हने से निकलकर
चला गया, इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि
हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।। 13 वह फिर निकलकर फील के किनारे गया, और
सारी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपकेश देने लगा। 14 जाते हुए उस ने
हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा; मेरे पीछे
हो ले। 15 और वह उठकर, उसके पीछे हो लिया: और वह उसके घर में भोजन
करने बैठे; क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिथे थे। 16 और
शास्त्रियोंऔर फरीसियोंने यह देखकर, कि वह तो पापियोंऔर चुंगी लेनेवालोंके
साय भोजन कर रहा है, उसक चेलोंसे कहा; वह तो चुंगी लेनेवालोंऔर पापियोंके
साय खाता पिता है!! 17 यीशु ने यह सुनकर, उन से कहा, भले चंगोंको वैद्य की
आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारोंको है: मैं धमिर्योंको नहीं, परन्तु पापियोंको
बुलाने आया हूं।। 18 यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; सो उन्होंने
आकर उस से यह कहा; कि यूहन्ना के चेले और फरीसियोंके चेले क्योंउपवास

रखते हैं परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते। 19 यीशु ने उन से कहा, जब तक
दुल्हा बरातियोंके साथ दहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं सो जब तक दूल्हा
उन के साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। 20 परन्तु वे दिन आएंगे, कि
दूल्हा उन से अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे। 21 कोरे कपके का
पैबन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैबन्द उस में से कुछ
खींच लेगा, अर्थात नया, पुराने से, और वह और फट जाएगा। 22 नथे दाखरस को
पुरानी मशकोंमें कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मश्कोंको फाड़ देगा, और
दाखरस और मश्कें दोनोंनष्ट हो जाएंगी; परन्तु दाख का नया रस नई मश्कोंमें
भरा जाता है।। 23 और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतोंमें से होकर जा रहा
था; और उसके चेले चलते हुए बालें तोड़ने लगे। 24 तब फरीसियोंने उस से कहा,
देख; थे सब्त के दिन वह काम क्योंकरते हैं जो उचित नहीं 25 उस ने उन से कहा,
क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई और जब वह और
उसके साथी भूखे हुए, तब उस ने क्या किया था 26 उस ने क्योंकर अबियातार
महाथाजक के समय, परमेश्वर के भवन में जाकर, भेंट की रोटियां खाईं, जिसका
खाना याजकोंको छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपके साथियोंको भी
दीं 27 और उस ने उन से कहा; सब्त का दिन मनुष्य के लिथे बनाया गया है, न
कि मनुष्य सब्त के दिन के लिथे। 28 इसलिथे मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का
भी स्वामी है।।

मरकुस 3

1 और वह आराधनालय में फिर गया; और वहां एक मनुष्य था, जस का हाथ

सूख गया या। 2 और वे उस पर दोष लगाने के लिथे उस की घात में लगे हुए थे,
कि देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं। 3 उस ने सूखे हाथवाले
मनुष्य से कहा; बीच में खड़ा हो। 4 और उन से कहा; क्या सब्त के दिन भला
करना उचित है या बुरा करता, प्राण को बचाना या मारना पर वे चुप रहे। 5 और
उस ने उन के मन की कठोरता से उदास होकर, उन को क्रोध से चारोंओर देखा,
और उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा उस ने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा
हो गया। 6 तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियोंके साय उसके विरोध में
सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें।। 7 और यीशु अपके चेलोंके
साय फील की ओर चला गया: और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। 8
और यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से, और यरदन के पार, और सूर और
सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम
करता है, उसके पास आई। 9 और उस ने अपके चेलोंसे कहा, भीड़ के कारण एक
छोटी नाव मेरे लिथे तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें। 10 क्योंकि उस ने
बहुतोंको चंगा किया या; इसलिथे जितने लोगे रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिथे
उस पर गिरे पड़ते थे। 11 और अशुद्ध आत्क़ांए भी, जब उसे देखती यीं, तो उसके
आगे गिर पड़ती यीं, और चिल्लाकर कहती यीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है। 12 और
उस ने उन्हें बहुत चिताया, कि मुझे प्रगट न करना।। 13 फिर वह पहाड़ पर चढ़
गया, और जिन्हें वह चाहता या उन्हें अपके पास बुलाया; और वे उसके पास चले
आए। 14 तब उस ने बारह पुरूषोंको नियुक्त किया, कि वे उसके साय साय रहें,
और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें। 15 और दुष्टात्क़ाओं के निकलने का
अधिक्कारने रखें। 16 और वे थे हैं: शमौन जिस का नाम उस ने पतरस रखा। 17

और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उस ने
बूअनरिगस, अर्यात गर्जन के पुत्र रखा। 18 और अन्द्रियास, और फिलप्पुस, और
बरतुल्मै, और मत्ती, और योमा, और हलफई का पुत्र याकूब; और तद्दी, और
शमौन कनानी। 19 और यहूदा इस्किरयोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।। 20
और वह घर में आया: और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा सके।
21 जब उसके कुटुम्बियोंने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिथे निकले; क्योंकि
कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है। 22 और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे,
यह कहते थे, कि उस में शैतान है, और यह भी, कि वह दुष्टात्क़ाओं के सरदार
की सहाथता से दुष्टात्क़ाओं को निकालता है। 23 और वह उन्हें पास बुलाकर,
उन से दुष्टान्तोंमें कहने लगा; शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है 24
और यदि किसी राज्य में फूट पके, तो वह राज्य क्योंकर स्यिर रह सकता है 25
और यदि किसी घर में फूट पके, तो वह घर क्योंकर स्यिर रह सकेगा 26 और
यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपके में फूट डाले, तो वह क्योंकर बना रह
सकता है उसका तो अन्त ही हो जाता है। 27 किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त
के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहिले उस
बलवन्त को न बान्ध ले; और तब उसके घर को लूट लेगा। 28 मैं तुम से सच
कहता हूं, कि मनुष्योंकी सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, झमा की
जाएगी। 29 परन्तु जो कोई पवित्रात्क़ा के विरूद्ध निन्दा करे, वह कभी भी झमा
न किया जाएगा: वरन वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है। 30 क्योंकि वे यह
कहते थे, कि उस में अशुद्ध आत्क़ा है।। 31 और उस की माता और उसके भाई
आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। 32 और भीड़ उसके आसपास बैठी

यी, और उन्होंने उस से कहा; देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढते हैं।
33 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं 34 और उन पर
जो उसके आस पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, देखो, मेरी माता और मेरे भाई यह
हैं। 35 क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरे भाई, और बहिन
और माता है।।

मरकुस 4

1 वह फिर फील के किनारे उपकेश देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास
इकट्ठी हो गई, कि वह फील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़
भूमि पर फील के किनारे खड़ी रही। 2 और वह उन्हें दृष्टान्तोंमें बहुत सी बातें
सिखाने लगो, और अपके उपकेश में उन से कहा। 3 सुनो: देखो, एक बोनेवाला,
बीज बाने के लिथे निकला! 4 और बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और
पझियोंने आकर उसे चुग लिया। 5 और कुछ पत्यरीली भूमि पर गिरा जहां उस
की बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण जल्द उग
आया। 6 और जब सूर्य निकला, तो जल गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख
गया। 7 और कुछ तो फाडिय़ोंमें गिरा, और फाडिय़ोंने बढ़कर उसे दबा लिया, और
वह फल न लाया। 8 परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा; और वह उगा, और बढ़कर
फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल
लाया। 9 और उस ने कहा; जिस के पास सुनने के लिथे कान होंवह सुन ले।। 10
जब वह अकेला रह गया, तो उसके सायियोंने उन बारह समेत उस से इन
दृष्टान्तोंके विषय में पूछा। 11 उस ने उन से कहा, तुम को तो परमेश्वर के राज्य

के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालोंके लिथे सब बातें दृष्टान्तोंमें होती
हैं। 12 इसलिथे कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सुफाई न पके और सुनते हुए सुनें
भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और झमा किए जाएं। 13 फिर उस ने
उन से कहा; क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते तो फिर और सब दृष्टान्तोंको
क्योंकर समझोगे 14 बानेवाला वचन बोता है। 15 जो मार्ग के किनारे के हैं जहां
वचन बोया जाता है, थे वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन
को जो उन में बोया गया या, उठा ले जाता है। 16 और वैसे ही जो पत्यरीली भूमि
पर बोए जाते हैं, थे वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर
लेते हैं। 17 परन्तु अपके भीतर जड़ न रखते के कारण वे योड़े भी दिनोंके लिथे
रहते हैं; इस के बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे
तुरन्त ठोकर खाते हैं। 18 और जो फाडियोंमें बोए गए थे वे हैं जिन्होंने वचन
सुना। 19 और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ
उन में समाकर वचन को दबा देता है। और वह निष्फल रह जाता है। 20 और जो
अच्छी भूमि में बोए गए, थे वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं,
कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।। 21 और उस ने उन से
कहा; क्या दिथे को इसलिथे लाते हैं कि पैमाने या खाट के निचे रखा जाए क्या
इसलिथे नहीं, कि दीवट पर रखा जाए 22 क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु
इसलिथे कि प्रगट हो जाए; 23 और न कुछ गुप्त है पर इसलिथे कि प्रगट हो
जाए। यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले। 24 फिर उस ने उन से कहा;
चौकस रहो, कि क्या सुनते हो जिस नाप से तुम नापके हो उसी से तुम्हारे लिथे
भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिय जाएगा। 25 क्योंकि जिस के पास है,

उस को दिया जाएगा; परन्तु जिस के पास नहीं है उस से वह भी जो उसके पास
है; ले लिया जाएगा।। 26 फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राजय ऐसा है, जैसे कोई
मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। 27 और रात को सोए, और दिन को जागे और वह
बीच ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। 28 पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले
अंकुर, तब बाल, और तब बालोंमें तैयार दाना। 29 परन्तु जब दाना पक जाता है,
तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।। 30 फिर उस ने
कहा, हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका
वर्णन करें 31 वह राई के दाने के समान हैं; कि जब भूमि में बोया जाता है तो
भूमि के सब बीजोंसे छोटा होता है। 32 परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब
साग पात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं, कि
आकाश के पक्की उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।। 33 और वह उन्हें इस
प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे देकर उन की समझ के अनुसार वचन सुनाता या।
34 और बिना दृष्टान्त कहे उन से कुछ भी नहीं कहता या; परन्तु एकान्त में वह
अपके निज चेलोंको सब बातोंका अर्य बताता या।। 35 उसी दिन जब सांफ हुई,
तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें,। 36 और वे भीड़ को छोड़कर जैसा
वह या, वैसा की उसे नाव पर साय ले चले; और उसके साय, और भी नावें यीं। 37
तब बड़ी आन्धी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से
भरी जाती यी। 38 और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा या; तब उन्होंने
उसे जगाकर उस से कहा; हे गुरू, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं
39 तब उस ने उठकर आन्धी को डांटा, और पानी से कहा; ?शान्त रह, यम जा :
और आन्धी यम गई और बड़ा चैन हो गया। 40 और उन से कहा; तुम क्योंडरते

हो क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं 41 और वे बहुत ही डर गए और आपस में
बोले; यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं

मरकुस 5

1 और वे फील के पार गिरासेनियोंके देश में पहुंचे। 2 और जब वह नाव पर से
उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्क़ा यी कब्रोंसे निकलकर उसे
मिला। 3 वह कब्रोंमें रहा करता या। और कोई उसे सांकलोंसे भी न बान्ध सकता
या। 4 क्योंकि वह बार बार बेडिय़ोंऔर सांकलोंसे बान्धा गया या, पर उस ने
साकलोंको तोड़ दिया, और बेडिय़ोंके टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश
में नहीं कर सकता या। 5 वह लगातार रात-दिन कब्रोंऔर पहाड़ो में चिल्लाता,
और अपके को पत्यरोंसे घायल करता या। 6 वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा,
और उसे प्रणाम किया। 7 और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा; हे यीशु, परमप्रधान
परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम मैं तुझे परमेश्वर की शपय देता हूं, कि
मुझे पीड़ा न दे। 8 क्योंकि उस ने उस से कहा या, हे अशुद्ध आत्क़ा, इस मनुष्य में
से निकल आ। 9 उस ने उस से पूछा; तेरा कया नाम है उस ने उस से कहा; मेरा
नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं। 10 और उस ने उस से बहुत बिनती की, हमें
इस देश से बाहर न भेज। 11 वहां पहाड़ पर सूअरोंका एक बड़ा फुण्ड चर रहा या।
12 और उन्होंने उस से बिनती करके कहा, कि हमें उन सूअरोंमें भेज दे, कि हम
उन के भीतर जाएं। 13 सो उस ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्क़ा निकलकर
सूअरोंके भीतर पैठ गई और फुण्ड, जो कोई दो हजार का या, कड़ाडे पर से
फपटकर फील में जा पड़ा, और डूब मरा। 14 और उन के चरवाहोंने भागकर नगर

और गांवोंमें समाचार सुनाया। 15 और जो हुआ या, लोग उसे देखने आए। और
यीशु के पास आकर, वे उस में सेना समाई यी, कपके पहिने और सचेत बैठे
देखकर, डर गए। 16 और देखनेवालोंने उसका जिस में दुष्टात्क़ाएं यीं, और
सूअरोंका पूरा हाल, उन को कह सुनाया। 17 और वे उस से बिनती कर के कहने
लगे, कि हमारे सिवानोंसे चला जा। 18 और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह
जिस में पहिले दुष्टात्क़ाएं यीं, उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपके साय
रहने दे। 19 परन्तु उस ने उसे आज्ञा न दी, और उस से कहा, अपके घर जाकर
अपके लोगोंको बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिथे कैसे बड़े काम किए
हैं। 20 वह जाकर दिकपुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे
लिथे कैसे बड़े काम किए; और सब अचम्भा करते थे।। 21 जब यीशु फिर नाव से
पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई; और वह फील के किनारे
या। 22 और याईर नाम आराधनालय के सरदारोंमें से एक आया, और उसे
देखकर, उसके पांवोंपर गिरा। 23 और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की, कि
मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर
जीवित रहे। 24 तब वह उसके साय चला; और बड़ी भीड़ उसके पीदे हो ली, यहां
तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।। 25 और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष से लोहू
बहने का रोग या। 26 और जिस ने बहुत वैद्योंसे बड़ा दुख उठाया और अपना सब
माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया या, परन्तु और भी रोगी हो गई यी।
27 यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू
लिया। 28 क्योंकि वह कहती यी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो
जाऊंगह। 29 और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उस ने अपक्की

देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई। 30 यीशु ने तुरन्त अपके
में जान लिया, कि मुझ से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरा
वस्त्र किस ने छूआ 31 उसके चेलोंने उस से कहा; तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर
गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किस ने मुझे छुआ 32 तब उस ने उसे देखने
के लिथे जिस ने यह काम किया या, चारोंओर दृष्टि की। 33 तब वह स्त्री यह
जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपक्की हुई आई, और उसके
पांवोंपर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया। 34 उस ने उस से कहा; पुत्री
तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपक्की इस बीमारी से बची
रह।। 35 वह यह कह ही रहा या, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगोंने
आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरू को क्योंदुख देता है 36 जो बात वे
कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा; मत
डर; केवल विश्वास रख। 37 और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई
यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपके साय आने न दिया। 38 और अराधनालय
के सरदार के घर में पहुंचकर, उस ने लोगोंको बहुत रोते और चिल्लाते देखा। 39
तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा, तुम क्योंहल्ला मचाते और रोते हो लड़की
मरी नहीं, परन्तु सो रही है। 40 वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु उस ने सब को
निकालकर लड़की के मातापिता और अपके सायियोंको लेकर, भीतर जंहा लड़की
पड़ी यी, गया। 41 और लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा, ?तलीता कूमी; जिस
का अर्य यह है कि ?हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ। 42 और लड़की तुरन्त
उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की यी। और इस पर लोग बहुत
चकित हो गए। 43 फिर उस ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने

न पाए और कहा; कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।।

मरकुस 6

1 वहां से निकलकर वह अपके देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
2 सब्त के दिन वह आराधनालय में उपकेश करने लगा; और बहुत लोग सुनकर
चकित हुए और कहने लगे, इस को थे बातें कहां से आ गईं और यह कौन सा ज्ञान
है जो उस को दिया गया है और कैसे सामर्थ के काम इसके हाथोंसे प्रगट होते हैं 3
क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब और योसेस और यहूदा
और शमौन का भाई है और क्या उस की बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं
इसलिथे उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई। 4 यीशु ने उन से कहा, कि
भविष्यद्वक्ता अपके देश और अपके कुटुम्ब और अपके घर को छोड़ और कहीं भी
निरादर नहीं होता। 5 और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल योड़े
बीमारोंपर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।। 6 और उस ने उन के अविश्वास पर
आश्चर्य किया और चारोंओर से गावोंमें उपकेश करता फिरा।। 7 और वह
बारहोंको अपके पास बुलाकर उन्हें दो दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशुद्ध
आत्क़ाओं पर अधिक्कारने दिया। 8 और उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि मार्ग के लिथे
लाठी छोड़ और कुछ न लो; न तो रोटी, न फोली, न पटुके में पैसे। 9 परन्तु
जूतियां पहिनो और दो दो कुरते न पहिनो। 10 और उस ने उन से कहा; जहां कहीं
तुम किसी घर में उतरो तो जब तक वहां से विदा न हो, तब तक उसी में ठहरे
रहो। 11 जिस स्यान के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, और तुम्हारी न सुनें, वहां से
चलते ही अपके तलवोंकी धूल फाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो। 12 और उन्होंने

जाकर प्रचार किया, कि मन फिराओ। 13 और बहुतेरे दुष्टात्क़ाओं को निकाला,
और बहुत बीमारोंपर तेल मलकर उन्हें चंगा किया।। 14 और हेरोदेस राजा ने उस
की चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल गया या, और उस ने कहा, कि यूहन्ना
बपतिस्क़ा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिथे उस से थे सामर्य के काम
प्रगट होते हैं। 15 और औरोंने कहा, यह एलिय्याह है, परन्तु औरोंने कहा,
भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक के समान है। 16 हेरोदेस ने यह
सुन कर कहा, जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया या, वही जी उठा है। 17
क्योंकि हेरोदेस ने आप अपके भाई फिलप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण,
जिस से उस ने ब्याह किया या, लोगोंको भेजकर यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह
में डाल दिया या। 18 क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा या, कि अपके भाई की
पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं। 19 इसलिथे हेरोदियास उस से बैर रखती यी
और यह चाहती यी, कि उसे मरवा डाले, परन्तु ऐसा न हो सका। 20 क्योंकि
हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी और पवित्र पुरूष जानकर उस से डरता या, और उसे
बचाए रखता या, और उस की सुनकर बहुत घबराता या, पर आनन्द से सुनता
या। 21 और ठीक अवसर पर जब हेरोदेस ने अपके जन्क़ दिन में अपके
प्रधानोंऔर सेनापतियों, और गलील के बड़े लोगोंके लिथे जेवनार की। 22 और
उसी हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को और उसके साय
बैठनेवालोंको प्रसन्न किया; तब राजा ने लड़की से कहा, तू जो चाहे मुझ से मांग
मैं तुझे दूंगा। 23 और उस ने शपय खाई, कि मैं अपके आधे राज्य तक जो कुछ तू
मुझ से मांगेगी मैं तुझे दूंगा। 24 उस ने बाहर जाकर अपक्की माता से पूछा, कि
मैं क्या मांगूं वह बोली; यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाले का सिर। 25 वह तुरन्त राजा

के पास भीतर आई, और उस से बिनती की; मैं चाहती हूं, कि तू अभी यूहन्ना
बपतिस्क़ा देनेवाले का सिर एक याल में मुझे मंगवा दे। 26 तब राजा बहुत उदास
हुआ, परन्तु अपक्की शपय के कारण और साय बैठनेवालोंके कारण उसे टालना
न चाहा। 27 और राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा, कि उसका
सिर काट लाए। 28 उस ने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा, और एक याल में
रखकर लाया और लड़की को दिया, और लड़की ने अपक्की मां को दिया। 29 यह
सुनकर उसके चेले आए, और उस की लोय को उठाकर कब्र में रखा। 30 प्रेरितोंने
यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्होंने किया, और सिखाया या, सब उस को
बता दिया। 31 उस ने उन से कहा; तुम आप अलग किसी जंगली स्यान में आकर
योड़ा विश्रम करो; क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हें खाने का अवसर भी
नहीं मिलता या। 32 इसलिथे वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में अलग चले
गए। 33 और बहुतोंने उन्हें जाते देखकर पचानि लिया, और सब नगरोंसे इकट्ठे
होकर वहां पैदल दौड़े और उन से पहिले जा पहुंचे। 34 उस ने निकलकर बड़ी भीड़
देखी, और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ोंके समान थे, जिन का कोई
रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। 35 जब दिन बहुत ढल
गया, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे; यह सुनसान जगह है, और
दिन बहुत ढल गया है। 36 उन्हें विदा कर, कि चारोंओर के गांवोंऔर बस्तियोंमें
जाकर, अपके लिथे कुछ खाने को मोल लें। 37 उस ने उन्हें उत्तर दिया; कि तुम ही
उन्हें खाने को दो : उनहोंने उस से कहा; क्या हम सौ दीनार की रोटियां मोल लें,
और उन्हें खिलाएं 38 उस ने उन से कहा; जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी
रोटियां हैं उन्होंने मालूम करके कहा; पांच और दो मछली भी। 39 तब उस ने

उन्हें आज्ञा दी, कि सब को हरी घास पर पांति पांति से बैठा दो। 40 वे सौ सौ और
पचास पचास करके पांति पांति बैठ गए। 41 और उस ने उन पांच रोटियोंको और
दो मछिलयोंको लिया, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां
तोड़ तोड़ कर चेलोंको देता गया, कि वे लोगोंको परोसें, और वे दो मछिलयां भी
उन सब में बांट दीं। 42 और सब खाकर तृप्त हो गए। 43 और उन्होंने टुकडोंसे
बारह टोकिरयां भर कर उठाई, और कुछ मछिलयोंसे भी। 44 जिन्होंने रोटियां
खाई, वे पांच हजार पुरूष थे।। 45 तब उस ने तुरन्त अपके चेलोंको बरबस नाव
पर चढाया, कि वे उस से पहिले उस पार बैतसैदा को चले जांए, जब तक कि वह
लोगोंको विदा करे। 46 और उन्हें विदा करके पहाड़ पर प्रार्यना करने को गया। 47
और जब सांफ हुई, तो नाव फील के बीच में यी, और वह अकेला भूमि पर या। 48
और जब उस ने देखा, कि वे खेते खेते घबरा गए हैं, क्योंकि हवा उन के विरूद्ध यी,
तो रात के चौथे पहर के निकट वह फील पर चलते हुए उन के पास आया; और
उन से आगे निकल जाना चाहता या। 49 परन्तु उन्होंने उसे फील पर चलते
देखकर समझा, कि भूत है, और चिल्ला उठे, क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गए
थे। 50 पर उस ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा; ढाढ़स बान्धों: मैं हूं; डरो मत।
51 तब वह उन के पास नाव पर आया, और हवा यम गई: वे बहुत ही आश्चर्य
करने लगे। 52 क्योंकि वे उन रोटियोंके विषय में ने समझे थे परन्तु उन के मन
कठोर हो गए थे।। 53 और वे पार उतरकर गन्नेसरत में पहुंचे, और नाव घाअ
पर लगाई। 54 और जब वे नाव पर से उतरे, तो लोग तुरन्त उस को पहचान कर।
55 आसपास के सारे देश में दोड़े, और बीमारोंको खांटोंपर डालकर, जहां जहां
समाचार पाया कि वह है, वहां वहां लिए फिरे। 56 और जहां कहीं वह गांवों,

नगरों, या बस्तियोंमें जाता या, तो लोग बीमारोंको बाजारोंमें रखकर उस से
बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपके वस्त्र के आंचल ही हो छू लेने दे: और जितने
उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे।।

मरकुस 7

1 तब फरीसी और कई एक शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे
हुए। 2 और उन्होंने उसके कई चेलोंको अशुद्ध अर्यात बिना हाथ धोए रोटी खाते
देखा। 3 क्योंकि फरीसी और सब यहूदी, पुरिनयोंकी रीति पर चलते हैं और जब
तक भली भांति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते। 4 और बाजार से आकर,
जब तक स्नान नहीं कर लेते, तब तक नहीं खाते; और बहुत सी और बातें हैं, जो
उन के पास मानने के लिथे पहुंचाई गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे के
बरतनोंको धोना-मंाजना। 5 इसलिथे उन फरीसियोंऔर शास्त्रियोंने उस से
पूछा, कि तेरे चेले क्योंपुरिनयोंकी रीतोंपर नहीं चलते, और बिना हाथ धोए रोटी
खाते हैं 6 उस ने उन से कहा; कि यशायाह ने तुम कपटियोंके विषय में बहुत ठीक
भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है; कि थे लोग होठोंसे तो मेरा आदर करते हैं, पर
उन का मन मुझ से दूर रहता है। 7 और थे व्यर्य मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि
मनुष्योंकी आज्ञाओं को धर्मोपादेश करके सिखाते हैं। 8 क्योंकि तुम परमेश्वर की
आज्ञा को टालकर मनुष्योंकी रीतियोंको मानते हो। 9 और उस ने उन से कहा;
तुम अपक्की रीतियोंको मानने के लिथे परमेश्वर आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल
देते हो! 10 क्योंकि मूसा ने कहा है कि अपके पिता और अपक्की माता का आदर
कर; ओर जो कोई पिता वा माता को बुरा कहे, वह अवश्य मार डाला जाए। 11

परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपके पिता वा माता से कहे, कि जो कुछ तुझे
मुझ से लाभ पहुंच सकता या, वह कुरबान अर्यात् संकल्प हो चुका। 12 तो तुम
उस को उसके पिता वा उस की माता की कुछ सेवा करने नहीं देते। 13 इस प्रकार
तुम अपक्की रीतियोंसे, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो;
और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो। 14 और उस ने लोगोंको अपके पास
बुलाकर उन से कहा, तुम सब मेरी सुनो, और समझो। 15 ऐसी तो कोई वस्तु नहीं
जो मनुष्य को बाहर से समाकर अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएं मनुष्य के भीतर से
निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। 16 यदि किसी के सुनने के कान होंतो सुन
ले। 17 जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलोंने इस दृष्टान्त के
विषय में उस से पूछा। 18 उस ने उन से कहा; क्या तुम भी ऐसे ना समझ हो क्या
तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध
नहीं कर सकती 19 क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और
संडास में निकल जाती है यह कहकर उस ने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध
ठहराया। 20 फिर उस ने कहा; जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को
अशुद्ध करता है। 21 क्योंकि भीतर से अर्यात् मनुष्य मे मन से, बुरी बुरी चिन्ता
व्यभिचार। 22 चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि,
निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। 23 थे सब बुरी बातें भीतर ही से
निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।। 24 फिर वह वहां से उठकर सूर
और सैदा के देशोंमें आया; और एक घर में गया, और चाहता या, कि कोई न
जाने; परन्तु वह छिप न सका। 25 और तुरन्त एक स्त्री जिस की छोटी बेटी में
अशुद्ध आत्क़ा यी, उस की चर्चा सुन कर आई, और उसके पांवोंपर गिरी। 26 यह

यूनानी और सूरूिफनीकी जाति की यी; और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी
बेटी में से दुष्टात्क़ा निकाल दे। 27 उस ने उस से कहा, पहिले लड़कोंको तृप्त
होने दे, क्योंकि लड़कोंको रोटी लेकर कुत्तोंके आगे डालना उचित नहीं है। 28 उस
ने उस को उत्तर दिया; कि सच है प्रभु; तौभी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकोंकी
रोटी का चूर चार खा लेते हैं। 29 उस ने उस सके कहा; इस बात के कारण चक्की
जा; दुष्टात्क़ा तेरी बेटी में से निकल गई है। 30 और उस ने अपके घर आकर
देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है, और दुष्टात्क़ा निकल गई है।। 31 फिर वह सूर
और सैदा के देशोंसे निकलकर दिकपुलिस देश से होता हुआ गलील की फील पर
पहुंचा। 32 और लोगोंने एक बहिरे को जो हक्ला भी या, उसके पास लाकर उस से
बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे। 33 तब वह उस को भीड़ से अलग ले
गया, और अपक्की उंगलियां उसके कानोंमें डालीं, और यूक कर उस की जीभ को
छूआ। 34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह,
अर्यात् खुल जा। 35 और उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी
खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा। 36 तब उस ने उन्हें चिताया कि किसी
से न कहना; परन्तु जितना उस ने उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार करने
लगे। 37 और वे बहुत ही आश्चर्य में होकर कहने लगे, उस ने जो कुछ किया सब
अच्छा किया है; वह बहिरोंको सुनने, की, और गूंगोंको बोलने की शक्ति देता है।।

मरकुस 8

1 उन दिनोंमें, जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उन के पास कुछ खाने को न
या, तो उस ने अपके चेलोंको पास बुलाकर उन से कहा। 2 मुझे इस भीड़ पर तरस

आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साय हैं, और उन के पास कुछ भी
खाने को नहीं। 3 यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूं, तो मार्ग में यक कर रह जाएंगे;
क्योकि इन में से कोई कोई दूर से आए हैं। 4 उसके चेलोंने उस को उत्तर दिया, कि
यहां जंगल में इतनी रोटी कोई कहां से लाए कि थे तृप्त हों5 उस ने उन से पूछा;
तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्होंने कहा, सात। 6 तब उस ने लोगोंको भूमि
पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियां लीं, और धन्यवाद करके तोड़ी, और
अपके चेलोंको देता गया कि उन के आगे रखें, और उन्होंने लोगोंके आगे परोस
दिया 7 उन के पास योड़ी सी छोटी मछिलयोंभी यीं; और उसने धन्यवाद करके
उन्हें भी लोगोंके आगे रखने की आज्ञा दी। 8 सो वे खाकर तृप्त हो गए और शेष
टुकड़ोंके सात टोकरे भरकर उठाए। 9 और लोग चार हजार के लगभग थे; और
उस ने उन को विदा किया। 10 और वह तुरन्त अपके चेलोंके साय नाव पर
चढ़कर दलमनूता देश को चला गया।। 11 फिर फरीसी निकलकर उस से
वाद-विवाद करने लगे, और उसे जांचने के लिथे उस से कोई स्वर्गीय चिन्ह
मांगा। 12 उस ने अपक्की आत्क़ा में आह मार कर कहा, इस समय के लोग
क्योंचिन्ह ढूंढते हैं मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस समय के लोगोंको कोई चिन्ह
नहीं दिया जाएगा। 13 और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया और पार
चला गया।। 14 और वे रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उन के पास एक ही
रोटी यी। 15 और उस ने उन्हें चिताया, कि देखो, फरीसियोंके खमीर और हेरोदेस
के खमीर से चौकस रहो। 16 वे आपस में विचार करके कहने लगे, कि हमारे पास
तो रोटी नहीं है। 17 यह जानकर यीशु ने उन से कहा; तुम क्योंआपस में विचार
कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते

18 क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है क्या आंखे रखते हुए भी नहीं देखते, और
कान रखते हुए भी नहीं सुनते और तुम्हें स्क़रण नहीं। 19 कि जब मैं ने पांच
हजार के लिथे पांच रोटी तोड़ी यीं तो तुम ने टुकड़ोंकी कितनी टोकिरयां भरकर
उठाईं उन्होंने उस से कहा, सात टोकरे। 20 उस ने उन से कहा, सात टोकरे। 21
उस ने उन से कहा, क्या तुम अब तक नहीं समझते 22 और वे बैतसैदा में आए;
और लोग एक अन्धे को उसके पास ले आए और उस से बिनती की, कि उस को
छूए। 23 वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया, और उस की
आंखोंमें यूककर उस पर हाथ रखे, और उस से पूछा; क्या तू कुछ देखता है 24
उस ने आंख उठा कर कहा; मैं मनुष्योंको देखता हूं; क्योंकि वे मुझे चलते हुए
दिखाई देते हैं, जैसे पेड़। 25 तब उस ने फिर दोबारा उस की आंखोंपर हाथ रखे,
और उस ने ध्यान से देखा, और चंगा हो गया, और सब कुछ साफ साफ देखने
लगा। 26 और उस ने उस से यह कहकर घर भेजा, कि इस गांव के भीतर पांव भी
न रखना।। 27 यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गावोंमें चले गए: और
मार्ग में उस ने अपके चेलोंसे पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं 28 उन्होंने उत्तर
दिया, कि यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाला; पर कोई कोई; एलिय्याह; और कोई कोई
भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते हैं। 29 उस ने उन से पूछा; परन्तु तुम मुझे
क्या कहते हो पतरस ने उस को उत्तर दिया; तू मसीह है। 30 तब उस ने उन्हें
चिताकर कहा, कि मेरे विषय में यह किसी से न कहना। 31 और वह उन्हें
सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिथे अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और
पुरिनए और महाथाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन
दिन के बाद जी उठे। 32 उस ने यह बात उन से साफ साफ कह दी: इस पर

पतरस उसे अलग ले जाकर फिड़कने लगा। 33 परन्तु उस ने फिरकर, और
अपके चेलोंकी ओर देखकर पतरस को फिड़कर कर कहा; कि हे शैतान, मेरे
साम्हने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातोंपर नहीं, परन्तु मनुष्य की
बातोंपर मन लगाता है। 34 उस ने भीड़ को अपके चेलोंसमेत पास बुलाकर उन से
कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपके आपे से इन्कार करे और अपना
क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। 35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह
उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिथे अपना प्राण खोएगा, वह
उसे बचाएगा। 36 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपके प्राण की
हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा 37 और मनुष्य अपके प्राण के बदले क्या
देगा 38 जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातोंसे
लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतोंके साय अपके पिता की महिमा
सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा।

मरकुस 9

1 और उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से
कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्य सहित आता हुआ न देख
लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।। 2 छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस
और याकूब और यूहन्ना को साय लिया, और एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले
गया; और उन के साम्हने उसका रूप बदल गया। 3 और उसका वस्त्र ऐसा
चमकने लगा और यहां तक अति उज्ज़वल हुआ, कि पृय्वी पर कोई धोबी भी
वैसा उज्ज़वल नहीं कर सकता। 4 और उन्हें मूसा के साय एलिय्याह दिखाई

दिया; और वे यीशु के साय बातें करते थे। 5 इस पर पतरस ने यीशु से कहा; हे
रब्बी, हमारा यहां रहना अच्छा है: इसलिथे हम तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिथे,
एक मूसा के लिथे, और एक एलिय्याह के लिथे। 6 क्योंकि वह न जानता या, कि
क्या उत्तर दे; इसलिथे कि वे बहुत डर गए थे। 7 तब एक बादल ने उन्हें छा लिया,
और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है; उस की सुनो। 8
तब उन्होंने एकाएक चारोंऔर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपके साय और
किसी को न देखा।। 9 पहाड़ से उतरते हुए, उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक
मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह
किसी से न कहना। 10 उन्होंने इस बात को स्क़रण रखा; और आपस में
वाद-विवाद करने लगे, कि मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्य है 11 और
उन्होंने उस से पूछा, शास्त्री क्योंकहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है
12 उस ने उन्हें उत्तर दिया कि एलिय्याह सचमुच पहिले आकर सब कुछ
सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्योंलिखा है, कि वह बहुत दुख
उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा 13 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह
तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके
साय किया।। 14 और जब वह चेलोंके पास आया, तो देखा कि उन के चारोंऔर
बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के साय विवाद कर रहें हैं। 15 और उसे देखते ही
सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया।
16 उस ने उन से पूछा; तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो 17 भीड़ में से एक ने
उसे उत्तर दिया, कि हे गुरू, मैं अपके पुत्र को, जिस में गूंगी आत्क़ा समाई है, तेरे
पास लाया या। 18 जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटकर देती है: और वह मुंह

में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है: और मैं ने चेलोंसे कहा
ाि कि वे उसे निकाल दें परन्तु वह निकाल न सके। 19 यह सुनकर उस ने
उन से उत्तर देके कहा: कि हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साय रहूंगा
और कब तक तुम्हारी सहूंगा उसे मेरे पास लाओ। 20 तब वे उसे उसके पास ले
आए: और जब उस ने उसे देखा, तो उस आत्क़ा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह
भूमि पर गिरा, और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। 21 उस ने उसके पिता से
पूछा; इस की यह दशा कब से है 22 उस ने कहा, बचपन से : उस ने इसे नाश
करने के लिथे कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर
सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर। 23 यीशु ने उस से कहा; यदि तू
कर सकता है; यह क्या बता है विश्वास करनेवाले के लिथे सब कुछ हो सकता है।
24 बालक के पिता ने तुरन्त गिड़िगड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे
अविश्वास का उपाय कर। 25 जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं,
तो उस ने अशुद्ध आत्क़ को यह कहकर डांटा, कि हे गूंगी और बहिरी आत्क़ा, मैं
तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल आ, और उस में फिर कभी प्रवेश न कर। 26
तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ
सा हो गया, यहां तक कि बहुत लागे कहने लगे, कि वह मर गया। 27 परन्तु यीशु
ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। 28 जब वह घर में
आया, तो उसके चेलोंने एकान्त में उस से पूछा, हम उसे क्या न निकाल सके 29
उस ने उन से कहा, कि यह जाति बिना प्रार्यना किसी और उपाय से निकल नहीं
सकती।। 30 फिर वे वहां से चले, और गलील में होकर जा रहे थे, और वह अपके
चेलोंको उपकेश देता और उन से कहता या, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्योंके हाथ में

पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, और वह मरने के तीन दिन बाद जी
उठेगा। 31 पर यह बात उन की समझ में नहीं आई, और वे उस से पूछने से डरते
थे।। 32 फिर वे कफरनहूम में आए; और घर में आकर उस ने उन से पूछा कि
रास्ते में तुम किस बात पर विवाद करते थे 33 वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्होंने
आपस में यह वाद-विवाद किया या, कि हम में से बड़ा कौन है 34 वे चुप रहे,
क्योंकि मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया या, कि हम में से बड़ा
कौन है 35 तब उस ने बैठकर बारहोंको बुलाया, और उन से कहा, यदि कोई बड़ा
होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने। 36 और उस ने एक बालक
को लेकर उन के बीच में खड़ा किया, और उसके गोद में लेकर उन से कहा। 37 जो
कोई मेरे नाम से ऐसे बालकोंमें से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे
ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, बरन मेरे
भेजनेवाले को ग्रहण करता है।। 38 तब यूहन्ना ने उस से कहा, हे गुरू हम ने एक
मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्क़ओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने
लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता या। 39 यीशु ने कहा, उस को मत मना
करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे, और जल्दी से
मुझे बुरा कह सके। 40 क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। 41
जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिथे पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम
से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा। 42 पर जो
कोई इन छोटोंमें से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खालिाए तो
उसके लिथे भला यह हे कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए
और वह समुद्र में डाल दिया जाए। 43 यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे

काट डाल44 टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिथे इस से भला है कि दो
हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुफने की नहीं।45
और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। 46 लंगड़ा होकर जीवन
में प्रवेश करना तेरे लिथे इस से भला है, कि दो पांव रहते हुए नरक में डाला जाए।
47 और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिथे इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए
तू नरक में डाला जाए। 48 जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुफती।
49 क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। 50 नमक अच्छा है, पर
यदि नमक की नमकीनी जाती रहे, तो उसे किस से स्वादित करोगे अपके में
नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।।

मरकुस 10

1 फिर वह वहां से उठकर यहूदिया के सिवानोंमें और यरदन के पार आया, और
भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपक्की रीति के अनुसार उन्हें
फिर उपकेश देने लगा। 2 तब फरीसियोंने उसके पास आकर उस की पक्कीझा
करने को उस से पूछा, क्या यह उचित है, कि पुरूष अपक्की पत्नी को त्यागे 3
उस ने उन को उत्तर दिया, कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है 4 उन्होंने कहा, मूसा
ने त्याग पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है। 5 यीशु ने उन से कहा, कि
तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने तुम्हारे लिथे यह आज्ञा लिखी। 6 पर
सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उन को बनाया है। 7 इस
कारण मनुष्य अपके माता-पिता से अलग होकर अपक्की पत्नी के साय रहेगा,

और वे दोनोंएक तन होंगे। 8 इसलिथे वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। 9 इसलिथे
जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। 10 और घर में चेलोंने इस के
विषय में उस से फिर पूछा। 11 उस ने उन से कहा, जो कोई अपक्की पत्नी को
त्यागकर दूसरी से ब्याह करे तो वह उस पहिली के विरोध में व्यभिचार करता है।
12 और यदि पत्नी अपके पति को छोड़कर दूसरे से ब्याह करे, तो वह व्यभिचार
करता है। 13 फिर लोग बालकोंको उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ
रखे, पर चेलोंने उनको डांटा। 14 यीशु ने यह देख क्रुध होकर उन से कहा,
बालकोंको मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य
ऐसोंही का है। 15 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को
बालक की नाई ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा। 16 और उस
ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।। 17 और जब
वह निकलकर मार्ग में जाता या, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया,
और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन का
अधिक्कारनी होने के लिथे मैं क्यां करूं 18 यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम
क्योंकहता है कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्यात् परमेश्वर। 19 तू आज्ञाओं को तो
जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, फूठी गवाही न
देना, छल न करना, अपके पिता और अपक्की माता का आदर करना। 20 उस ने
उस से कहा, हे गुरू, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। 21 यीशु ने उस
पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है;
जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालोंको दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा,
और आकर मेरे पीछे हो ले। 22 इस बात से उसके चिहरे पर उदासी छा गई, और

वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी या। 23 यीशु ने चारोंओर
देखकर अपके चेलोंसे कहा, धनवानोंको परमेश्वरके राज्य में प्रवेश करना कैसा
किठन है! 24 यीशु ने चारोंऔर देखकर अपके चेलोंसे कहा, धनवानोंको परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करना कैसा किठन है! 25 चेले उस की बातोंसे अचम्भित हुए,
इस पर यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया, हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं,
उन के लिथे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा किठन है! 26 वे बहुत ही
चकित होकर आपस में कहने लगे तो फिर किस का उद्धार हो सकता है। 27 यीशु
ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्योंसे तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से
हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। 28 पतरस उस से कहने
लगा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिथे हैं। 29 यीशु ने कहा, मैं
तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिथे घर
या भाइयोंया बहिनोंया माता या पिता या लड़के-बालोंया खेतोंको छोड़ दिया हो।
30 और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरोंऔर भाइयोंऔर बहिनोंऔर माताओं
और लड़के-बालोंऔर खेतोंको पर उपद्रव के साय और परलोक में अनन्त जीवन।
31 पर बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे। 32
और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा या:
और वे अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे पीछे चलते थे डरने लगे, तब वह
फिर उन बारहोंको लेकर उन से वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली यीं। 33
कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महाथाजकोंऔर
शास्त्रियोंके हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे, और
अन्यजातियोंके हाथ में सौंपेंगे। 34 और वे उस को ठट्ठोंमें उड़ाएंगे, और उस पर

थूकेंगे, और उसे कोड़े मारेंगे, और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी
उठेगा।। 35 तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, हे
गुरू, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम तुझ से मांगे, वही तू हमारे लिथे करे। 36 उस
ने उन से कहा, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिथे करूं 37 उन्होंने उस से
कहा, कि हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दिहने और दूसरा तेरे
बांए बैठे। 38 यीशु न उन से कहा, तुम नहीं जानते, कि क्या मांगते हो जो कटोरा
मैं पीने पर हूं, क्या पी सकते हो और जो बपतिस्क़ा मैं लेने पर हूं, क्या ले सकते
हो 39 उन्होंने उस से कहा, हम से हो सकता है: यीशु ने उन से कहा: जो कटोरा मैं
पीने पर हूं, तुम पीओंगे; और जो बपतिस्क़ा मैं लेने पर हूं, उसे लोगे। 40 पर जिन
के लिथे तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपके दिहने और अपके
बाएं बिठाना मेरा काम नहीं। 41 यह सुनकर दसोंयाकूब और यूहन्ना पर
िरिसयाने लगे। 42 और यीशु ने उन को पास बुला कर उन से कहा, तुम जानते
हो, कि जो अन्यजातियोंके हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और
उन में जो बड़ें हैं, उन पर अधिक्कारने जताते हैं। 43 पर तुम में ऐसा नहीं है, बरन
जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। 44 और जो कोई तुम में
प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। 45 क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिथे नहीं
आया, कि उस की सेवा अहल की जाए, पर इसलिथे आया, कि आप सेवा टहल
करे, और बहुतोंकी छुड़ौती के लिथे अपना प्राण दे।। 46 और वे यरीहो में आए,
और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती यी, तो
तिमाई का पुत्र बरितमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा या। 47 वह
यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की

सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर। 48 बहुतोंने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और
भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। 49 तब यीशु ने
ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगोंने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा,
ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है। 50 वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा,
और यीशु के पास आया। 51 इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं
तेरे लिथे करूं अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं। 52 यीशु ने
उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त
देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।।

मरकुस 11

1 जब वे यरूशलेम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास
आए, तो उस ने अपके चेलोंमें से दो को यह कहकर भेजा। 2 कि अपके साम्हने के
गांव में जाओ, और उस में पंहुचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई
नहीं चढ़ा, बन्धाहुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ। 3 यदि तुम से कोई पूछे,
यह क्योंकरते हो तो कहना, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है; और वह शीघ्र उसे
यहां भेज देगा। 4 उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बन्धा
हुआ पाया, और खोलते लगे। 5 और उन में से जो वहां खड़े थे, कोई कोई कहने
लगे कि यह क्या करते हो, गदही के बच्चे को क्योंखेलते हो 6 उन्होंने जैसा यीशु
ने कहा या, वैसा ही उन से कह दिया; तब उन्होंने उन्हें जाने दिया। 7 और उन्होंने
बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपके कपके डाले और वह उस पर बैठ
गया। 8 और बहुतोंने अपके कपके मार्ग में बिछाए और औरोंने खेतोंमें से डालियां

काट काट कर फैला दीं। 9 और जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले
आते थे, पुकार पुकार कर कहते जाते थे, कि होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम
से आता है। 10 हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है: आकाश में
होशाना।। 11 और वह यरूशलेम पहुंचकर मन्दिर में आया, और चारोंओर सब
वस्तुओं को देखकर बारहोंके साय बैतनिय्याह गया क्योंकि सांफ हो गई यी।। 12
दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उस को भूख लगी। 13 और वह दूर से
अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया, कि क्या जाने उस में कुछ पाए: पर
पत्तोंको छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न या। 14 इस पर उस ने उस से
कहा अब से कोई तेरा फल कभी न खाए। और उसके चेले सुन रहे थे। 15 फिर वे
यरूशलेम में आए, और वह मन्दिर में गया; और वहां जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें
बाहर निकालने लगा, और सर्राफोंके पीढ़े और कबूतर के बेचनेवालोंकी चौकियां
उलट दीं। 16 और मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया।
17 और उपकेश करके उन से कहा, क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब
जातियोंके लिथे प्रार्यना का घर कहलाएगा पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना
दी है। 18 यह सुनकर महाथाजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूंढ़ने
लगे; क्योंकि उस से डरते थे, इसलिथे कि सब लोग उसके उपकेश से चकित होते
थे।। 19 और प्रति दिन सांफ होते ही वह नगर से बाहर जाया करता या। 20 फिर
भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा
हुआ देखा। 21 पतरस को वह बात स्क़रण आई, और उस ने उस से कहा, हे रब्बी,
देख, यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने स्राप दिया या सूख गया है। 22 यीशु ने उस को
उत्तर दिया, कि परमेश्वर पर विश्वास रखो। 23 मैं तुम से सच कहता हूं कि जो

कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपके मन में
सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिथे
वही होगा। 24 इसलिथे मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्यना करके
मांगोंतो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिथे हो जाएगा। 25
और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्यना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की
और से कुछ विरोध, हो तो झमा करो: इसलिथे कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी
तुम्हारे अपराध झमा करे।। 26 और यदि तुम झमा न करो तो तुम्हारा पिता भी
जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध झमा न करेगा। 27 वे फिर यरूशलेम में आए,
और जब वह मन्दिर में टहल रहा या तो महाथाजक और शास्त्री और पुरिनए
उसके पास आकर पूछने लगे। 28 कि तू थे काम किस अधिक्कारने से करता है
और यह अधिक्कारने तुझे किस ने दिया है कि तू थे काम करे 29 यीशु ने उस से
कहा: मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; मुझे उत्तर दो: तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि थे
काम किस अधिक्कारने से करता हूं। 30 यूहन्ना का बपतिस्क़ा क्या स्वर्ग की
ओर से या वा मनुष्योंकी ओर से या मुझे उत्तर दो। 31 तब वे आपस में विवाद
करने लगे कि यदि हम कहें, स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की
प्रतीति क्योंनहीं की 32 और यदि हम कहें, मनुष्योंकी ओर से तो लोगोंका डर है,
क्योंकि सब जानते हैं कि यूहन्ना सचमुच भविष्यद्वक्ता है। 33 सो उन्होंने यीशु को
उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते : यीशु ने उन से कहा, मैं भी तुम को नहीं बताता,
कि थे काम किस अधिक्कारने से करता हूं।।

मरकुस 12

1 फिर वह दृष्टान्त में उन से बातें करने लगा: कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी
लगाई, और उसके चारोंओर बाड़ा बान्धा, और रस का कुंड खोदा, और गुम्मट
बनाया; और किसानोंको उसका ठीका देकर परदेश चला गया। 2 फिर फल के
मौसम में उस ने किसानोंके पास एक दास को भेजा कि किसान से दाख की बारी
के फलोंका भाग ले। 3 पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया।
4 फिर उस ने एक और दास को उन के पास भेजा और उन्होंने उसका सिर फोड़
डाला और उसका अपमान किया। 5 फिर उस ने एक और को भेजा, और उन्होंने
उसे मार डाला: तब उस ने और बहुतोंको भेजा: उन में से उन्होंने कितनो को पीटा,
और कितनोंको मार डाला। 6 अब एक ही रह गया या, जो उसका प्रिय पुत्र या;
अन्त में उस ने उसे भी उन के पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर
करेंगे। 7 पर उन किसानोंने आपस में कहा; यही तो वारिस है; आओ, हम उसे
मार डालें, तब मीरास हमारी हो जाएगी। 8 और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला,
और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। 9 इसलिथे दाख की बारी का स्वामी क्या
करेगा वह आकर उन किसानोंको नाश करेगा, और दाख की बारी औरोंको दे
देगा। 10 क्या तुम ने पवित्र शास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा, कि जिस पत्यर को
राजमिस्त्रयोंने निकम्मा ठहराया या, वही कोने का सिरा हो गया 11 यह प्रभु की
ओर से हुआ, और हमारी दुष्टि मे अद्भुत है। 12 तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा;
क्योंकि समझ गए थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है: पर वे
लोगोंसे डरे; और उसे छोड़ कर चले गए।। 13 तब उन्होंने उसे बातोंमें फंसाने के
लिथे कई एक फरीसियोंऔर हेरोदियोंको उसके पास भेजा। 14 और उन्होंने
आकर उस से कहा; हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और किसी की परवा

नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्योंका मुंह देख कर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्वर
का मार्ग सच्चाई से बताता है। 15 तो क्या कैसा को कर देना उचित है, कि नहीं
हम दें, या न दें उस ने उन का कपट जानकर उन से कहा; मुझे क्योंपरखते हो
एक दीनार मेरे पास लाओ, कि मैं देखूं। 16 वे ले आए, और उस ने उन से कहा;
यह मूतिर् और नाम किस का है उन्होंने कहा, कैसर का। 17 यीशु ने उन से कहा;
जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो: तब वे उस
पर बहुत अचम्भा करने लगे।। 18 फिर सदूकियोंने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं
का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उसे पूछा। 19 कि हे गुरू, मूसा ने
हमारे लिथे लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उस की
पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपके भाई के
लिथे वंश उत्पन्न करे : सात भाई थे। 20 पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान
मर गया। 21 तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और बिना सन्तान मर
गया; और वैसे ही तीसरे ने भी। 22 और सातोंसे सन्तान न हुई: सब के पीछे वह
स्त्री भी मर गई। 23 सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी क्योंकि
वह सातोंकी पत्नी हो चुकी यी। 24 यीशु ने उन से कहा; क्या तुम इस कारण से
भूल में नहीं पके हो, कि तुम न तो पवित्र शास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर
की सामर्य को। 25 क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उन में ब्याह शादी
न होगी; पर स्वर्ग में दूतोंकी नाई होंगे। 26 मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या
तुम ने मूसा की पुस्तक में फाड़ी की कया में नही पढ़ा, कि परमेश्वर ने उस से
कहा, मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का
परमेश्वर हूं 27 परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन जीवतोंका परमेश्वर है: सो तुम

बड़ी भूल में पके हो।। 28 और शास्त्रियोंमें से एक ने आकर उन्हें विवाद करते
सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा,
सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है 29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह
मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। 30 और तू प्रभु
अपके परमेश्वर से अपके सारे मन से और अपके सारे प्राण से, और अपक्की सारी
बुद्धि से, और अपक्की सारी शक्ति से प्रेम रखना। 31 और दूसरी यह है, कि तू
अपके पड़ोसी से अपके समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। 32
शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरू, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और
उसे छोड़ और कोई नहीं। 33 और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण
और सारी शक्ति के साय प्रेम रखना और पड़ोसी से अपके समान प्रेम रखना, सारे
होमोंऔर बलिदानोंसे बढ़कर है। 34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर
दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं: और किसी को फिर उस से
कुछ पूछने का साहस न हुआ।। 35 फिर यीशु ने मन्दिर में उपकेश करते हुए यह
कहा, कि शास्त्री क्योंकर कहते हैं, कि मसीह दाऊद का पुत्र है 36 दाऊद ने
आपक्की पवित्र आत्क़ा में होकर कहा है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने
बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियोंको तेरे पांवोंकी पीढ़ी न कर दूं। 37 दाऊद तो आप
ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहां से ठहरा और भीड़ के लोग उस की
आनन्द से सुनते थे।। 38 उस ने अपके उपकेश में उन से कहा, शस्त्रियोंसे चौकस
रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना। 39 और बाजारोंमें नमस्कार, और
आराधनालयोंमें मुख्य मुख्य आसन और जेवनारोंमें मुख्य मुख्य स्यान भी
चाहते हैं। 40 वे विधवाओं के घरोंको खा जाते हैं, और दिखाने के लिथे बड़ी देर

तक प्रार्यना करते रहते हैं, थे अधिक दण्ड पाएंगे।। 41 और वह मन्दिर के भण्डार
के साम्हने बैठकर देख रहा या, कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे
डालते हैं, और बहुत धनवानोंने बहुत कुछ डाला। 42 इतने में एक कंगाल विधवा
ने आकर दो दमडिय़ां, जो एक अधेले के बराबर होती है, डाली। 43 तब उस ने
अपके चेलोंको पास बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के
भण्डार में डालने वालोंमें से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। 44
क्योंकि सब ने अपके धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपक्की घटी में
से जो कुछ उसका या, अर्यात् अपक्की सारी जीविका डाल दी है।

मरकुस 13

1 जब वह मन्दिर से निकल रहा या, तो उसके चलोंमें से एक ने उस से कहा; हे
गुरू, देख, कैसे कैसे पत्यर और कैसे कैसे भवन हैं! 2 यीशु ने उस से कहा; क्या
तुम थे बड़े बड़े भवन देखते हो: यहां पत्यर पर पत्यर भी बचा न रहेगा जो ढाया
न जाएगा।। 3 जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के साम्हने बैठा या, तो पतरस
और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उस से पूछा। 4 कि हमें
बता कि थे बातें कब होंगी और जब थे सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का
क्या चिन्ह होगा 5 यीशु उन से कहने लगा; चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए।
6 बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूं और बहुतोंको भरमाएंगे। 7 और
जब तुम लड़ाइयां, और लड़ाइयोंकी चर्चा सुनो; तो न घबराना: क्योंकि इन का
होना अवश्य है; परन्तु उस समय अन्त न होगा। 8 क्योंकि जाति पर जाति, और
राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और हर कहीं भूईंडोल होंगे, और अकाल पकेंगे; यह

तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।। 9 परन्तु तुम अपके विषय में चौकस रहो;
क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतोंमें पीटे जाओगे; और
मेरे कारण हाकिमोंऔर राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उन के लिथे
गवाही हो। 10 पर अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियोंमें प्रचार किया
जाए। 11 जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम
क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना; क्योंकि
बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्क़ा है। 12 और भाई को भाई, और
पिता को पुत्र घात के लिथे सौंपेंगे, और लड़केबाले माता-पिता के विरोध में
उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। 13 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर
करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।। 14 सो जब तुम
उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो, (पढ़नेवाला
समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ोंपर भाग जाएं। 15 सो कोठे पर हो, वह
अपके घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए। 16 और जो खेत में
हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिथे पीछे न लौटे। 17 उन दिनोंमें जो गर्भवती और
दूध पिलाती होंगी, उन के लिथे हाथ हाथ! 18 और प्रार्यना किया करो कि यह जाड़े
में न हो। 19 क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो
परमेश्वर ने सृजी है अब तक न तो हुए, और न कभी फिर होंगे। 20 और यदि प्रभु
उन दिनोंको न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण
जिन को उस ने चुना है, उन दिनोंको घटाया। 21 उस समय यदि कोई तुम से कहे;
देखो, मसीह यहां है, या देखो, वहां है, तो प्रतीति न करना। 22 क्योंकि फूठे मसीह
और फूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि

यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। 23 पर तुम चौकस रहो: देखो, मैं ने
तुम्हें सब बातें पहिले ही से कह दी हैं। 24 उन दिनोंमें, उस क्लेश के बाद सूरज
अन्धेरा हो जाएगा, और चान्द प्रकाश न देगा। 25 और आकाश से तारागण
गिरने लगेंगे: और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। 26 तब लोग मनुष्य के
पुत्र को बड़ी सामर्थ और महिमा के साय बादलोंमें आते देखंेगे। 27 उस समय
वह अपके दूतोंको भेजकर, पृय्वी के इस छोर से आकाश की उस छोर तक
चारोंदिशा से अपके चुने हुए लोगोंको इकट्ठे करेगा। 28 अंजीर के पेड़ से यह
दृष्टान्त सीखो: जब उस की डाली कोमल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं;
तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्क़काल निकट है। 29 इसी रीति से जब तुम इन
बातोंको होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है वरन द्वार ही पर है। 30 मैं तुम
से सच कहता हूं, कि जब तक थे सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह लोग जाते न
रहेंगे। 31 आकाश और पृय्वी अल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। 32
उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र;
परन्तु केवल पिता। 33 देखो, जागते और प्रार्यना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं
जानते कि वह समय कब आएगा। 34 यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश
जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपके दासोंको अधिक्कारने दे: और हर
एक को उसका काम जता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। 35
इसलिथे जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा,
सांफ को या आधी रात को, या मुर्ग के बांग देने के समय या भोर को। 36 ऐसा न
हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। 37 और जो मैं तुम से कहता हूं, वही
सब से कहता हूं, जागते रहो।।

मरकुस 14

1 दो दिन के बाद फसह और अखमीरी रोटी का पर्व्व होनेवाला या: और
महाथाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे क्योंकर छल से पकड़ कर
मार डालें। 2 परन्तु कहते थे, कि पर्व्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगोंमे
बलवा मचे।। 3 जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा
हुआ या जब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर
आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। 4 परन्तु कोई कोई अपके
मन में िरिसयाकर कहने लगे, इस इत्र को क्योंसत्यनाश किया गया 5 क्योकि
यह इत्र तो ती सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर कंगालोंको बांटा जा सकता
या, ओर वे उस को फिड़कने लगे। 6 यीशु ने कहा; उसे छोड़ दो; उसे क्योंसताते हो
उस ने तो मेरे साय भालाई की है। 7 कंगाल तुम्हारे साय सदा रहते हैं: और तुम
जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साय सदा न रहूंगा। 8
जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया; उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से
मेरी देह पर इत्र मला है। 9 मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं
सुसमाचार प्रचर किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्क़रण में
की जाएगी।। 10 तब यहूदा इसकिरयोती जो बारह में से एक या, महाथाजकोंके
पास गया, कि उसे उन के हाथ पकड़वा दे। 11 वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और
उस को रूपके देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूंढ़ने लगा कि उसे किसी
प्रकार पकड़वा दे।। 12 अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, जिस में से फसह
का बलिदान करते थे, उसके चेलोंने उस से पूछा, तू कहां चाहता है, कि हम जाकर
तेरे लिथे फसह खाने की तैयारी करे 13 उस ने अपके चेलोंमें से दो को यह कहकर

भेजा, कि नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए, हुए तुम्हें मिलेगा,
उसके पीछे हो लेना। 14 और वह जिस घर में जाए उस घर के स्वामी से कहना;
गुरू कहता है, कि मेरी पाहुनशाला जिस में मैं अपके चेलोंके साय फसह खाऊं
कहां है 15 वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा,
वहां हमारे लिथे तैयारी करो। 16 सो चेले निकलकर नगर में आथे और जैसा उस
ने उन से कहा या, वैसा की पाया, और फसह तैयार किया।। 17 जब सांफ हुई, तो
वह बारहोंके साय आया। 18 और जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा;
मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक, जो मेरे साय भोजन कर रहा है, मुझे
पकड़वाएगा। 19 उन पर उदासी छा गई और वे एक एक करके उस से कहने लगे;
क्या वह मैं हूं 20 उस ने उन से कहा, वह बारहोंमें से एक है, जो मेरे साय याली में
हाथ डालता है। 21 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है,
जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाथ जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया
जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्क़ ही न होताख तो उसके लिथे भला होता।। 22
और जब वे खा ही रहे थे तो उस ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और
उनहें दी, और कहा, लो, यह मेरी देह है। 23 फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद
किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उस में से पीया। 24 और उस ने उन से
कहा, यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतोंके लिथे बहाथा जाता है। 25 मैं तुम
से सच कहता हूं, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊंगा, जब तक
परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।। 26 फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़
पर गए।। 27 तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है,
कि मैं रखवाले को मारूंगा, और भेड़ तित्तर बित्तर हो जाएंगी। 28 परन्तु मैं अपके

जी उठने के बाद तुम से पहिले गलील को जाऊंगा। 29 पतरस ने उस से कहा;
यदि एक ठोकर खाएं तो खांए, पर मैं ठोकर नहीं खाऊंगा। 30 यीशु ने उस से
कहा; मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही इसी रात को मुर्गे के दो बार बांग देने
से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। 31 पर उस ने और भी जोर देकर
कहा, यदि मुझे तेरे साय मरना भी पके तौभी तेरा इन्कार कभी न करूंगा: इसी
प्रकार और सब ने भी कहा।। 32 फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए, और
उस ने अपके चेलोंसे कहा, यहां बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्यना करूं। 33 और वह
पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपके साय ले गया: और बहुत ही अधीर,
और व्याकुल होने लगा। 34 और उन से कहा; मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक
कि मैं मरने पर हूं: तुम यहां ठहरो, और जागते रहो। 35 और वह योड़ा आगे बढ़ा,
और भूमि पर गिरकर प्रार्यना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से
टल जाए। 36 और कहा, हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस
कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता
है वही हो। 37 फिर वह आया, और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा; हे शमौन तू
सो रहा है क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका 38 जागते और प्रार्यना करते रहो कि
तुम पक्कीझा में न पड़ो: आत्क़ा तो तैयार है, पर शरीर र्दुबल है। 39 और वह फिर
चला गया, और वही बात कहकर प्रार्यना की। 40 और फिर आकर उन्हें सोते
पाया, क्योंकि उन की आंखे नींद से भरी यीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या
उत्तर दें। 41 फिर तीसरी बार आकर उन से कहा; अब सोते रहो और विश्रम करो,
बस, घड़ी आ पहुंची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियोंके हाथ पकड़वाया जाता है। 42
उठो, चलें: देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है।। 43 वह यह कह ही रहा

या, कि यहूदा जो बारहोंमें से या, अपके साय महाथाजकोंऔर शास्त्रियोंऔर
पुरिनयोंकी ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिए हुए तुरन्त आ
पहुंची। 44 और उसके पकड़नेवाले ने उन्हें यह पता दिया या, कि जिस को मैं चूमूं
वही है, उसे पकड़कर यतन से ले जाना। 45 और वह आया, और तुरन्त उसके
पास जाकर कहा; हे रब्बी और उस को बहुत चूमा। 46 तब उन्होंने उस पर हाथ
डालकर उसे पकड़ लिया। 47 उन में से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींच कर
महाथाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया। 48 यीशु ने उन से
कहा; क्या तुम डाकू जानकर मेरे पकड़ने के लिथे तलवारें और लाठियां लेकर
निकले हो 49 मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साय रहकर उपकेश दिया करता
या, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा: परन्तु यह इसलिथे हुआ है कि पवित्र शास्त्र
की बातें पूरी हों। 50 इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।। 51 और एक
जवान अपक्की नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीदे हो लिया; और लोगोंने
उसे पकड़ा। 52 पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया।। 53 फिर वे यीशु को
महाथाजक के पास ले गए; और सब महाथाजक और पुरिनए और शास्त्री उसके
यहां इकट्ठे हो गए। 54 पतरस दूर ही दूर से उसके पीछे पीछे महाथाजक के
आंगन के भीतर तक गया, और प्यादोंके साय बैठ कर आग तापके लगा। 55
महाथाजक और सारी महासभा यीशु के मार डालने के लिथे उसके विरोध में
गवाही की खोज में थे, पर न मिली। 56 क्योंकि बहुतेरे उसके विरोध में फूठी
गवाही दे रहे थे, पर उन की गवाही एक सी न यी। 57 तब कितनोंने उठकर उस
पर यह फूठी गवाही दी। 58 कि हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इस हाथ के
बनाए हुए मन्दिर को ढ़ा दूंगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊंगा, जो हाथ से न

बना हो। 59 इस पर भी उन की गवाही एक सी न निकली। 60 तब महाथाजक ने
बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा; कि तू कोई उत्तर नहीं देता थे लोग तेरे विरोध में
क्या गवाही देते हैं 61 परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया:
महाथाजक ने उस से फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है 62 यीशु
ने कहा; हां मैं हूं: और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दिहनी और बैठे,
और आकाश के बादलोंके साय आते देखोगे। 63 तब महाथाजक ने अपके वस्त्र
फाड़कर कहा; अब हमें गवाहोंका क्या प्रयोजन है 64 तुम ने यह निन्दा सुनी:
तुम्हारी क्या राय है उन सब ने कहा, वह वध के योग्य है। 65 तब कोई तो उस पर
यूकने, और कोई उसका मुंह ढांपके और उसे घूसे मारने, और उस से कहने लगे,
कि भविष्यद्वाणी कर: और प्यादोंने उसे लेकर यप्पड़ मारे।। 66 जब पतरस नीचे
आंगन में या, तो महाथाजक की लौंडियोंमें से एक वहां आई। 67 और पतरस को
आग तापके देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, तू भी तो
उस नासरी यीशु के साय या। 68 वह मुकर गया, और कहा, कि मैं तो नहीं जानता
औश्र् नहीं समझता कि तू क्या कह रही है: फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया; और मुर्गे
ने बांग दी। 69 वह लौंडी उसे देखकर उन से जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, कि
उन में से एक है। 70 परन्तु वह फिर मुकर गया और योड़ी देर बाद उन्होंने जो
पास खड़े थे फिर पतरस से कहा; निश्चय तू उन में से एक है; क्योंकि तू गलीली
भी है। 71 तब वह धिक्कारने देन और शपय खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को,
जिस की तुम चर्चा करते हो, नहंीं जानता। 72 तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग ने
बांग दी: पतरस को यह बात जो यीशु ने उस से कही यी स्क़रण आई, कि मुर्ग के
दो बार बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा: वह इस बात को

सोचकर रोने लगा।।

मरकुस 15

1 और भोर होते ही तुरन्त महाथाकों, पुरिनयों, और शास्त्रियोंने वरन सारी
महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पीलातुस के हाथ
सौंप दिया। 2 और पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियोंका राजा है उस ने
उस को उत्तर दिया; कि तू आप ही कह रहा है। 3 और महाथाजक उस पर बहुत
बातोंका दोष लगा रहे थे। 4 पीलातुस ने उस से फिर पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं
देता, देख थे तुझ पर कितनी बातोंका दोष लगाते हैं 5 यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं
दिया; यहां तक कि पीलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।। 6 और वह उस पर्व्व में
किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उन के लिथे छोड़ दिया करता या। 7 और
बरअब्बा नाम एक मनुष्य उन बलवाइयोंके साय बन्धुआ या, जिन्होंने बलवे में
हत्या की यी। 8 और भीड़ ऊपर जाकर उस से बिनती करने लगी, कि जैसा तू
हमारे लिथे करता आया है वैसा ही कर। 9 पीलातुस ने उन को यह उत्तर दिया,
क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिथे यहूदियोंके राजा को छोड़ दूं 10 क्योंकि
वह जानता या, कि महाथाजकोंने उसे डाह से पकड़वाया या। 11 परन्तु
महाथाजकोंने लोगोंको उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उन के लिथे छोड़ दे। 12
यह सून पीलातुस ने उन से फिर पूछा; तो जिसे तुम यहूदियोंका राजा कहते हो,
उस को मैं क्या करूं वे फिर चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। 13 पीलातुस ने
उन से कहा; क्यों, इस ने क्या बुराई की है 14 परन्तु वे और भी चिल्लाए, कि उसे
क्रूस पर चढ़ा दे। 15 तक पीलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से,

बरअब्बा को उन के लिथे छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि
क्रूस पर चढ़ाया जाए। 16 और सिपाही उसे किले के भीतर आंगत में ले गए जो
प्रीटोरियुन कहलाता है, और सारी पलटन को बुला लाए। 17 और उन्होंने उसे
बैंजनी वस्त्र पहिनाया और कांटोंका मुकुट गूंयकर उसके सिर पर रखा। 18 और
यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, कि हे यहूदियोंके राजा, नमस्कार! 19 और
वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर यूकते, और घुटने टेककर उसे
प्रणाम करते रहे। 20 और जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उस पर बैंजनी वस्त्र
उतारकर उसी के कपके पहिनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिथे बाहर ले
गए। 21 और सिकन्दर और रूफुस का पिता, शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य, जो
गांव से आ रहा या उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा, कि उसका क्रूस
उठा ले चले। 22 और वे उसे गुलगुता नाम जगह पर जिस का अर्य खोपड़ी की
जगह है लाए। 23 और उसे मुर्र मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उस ने नहीं
लिया। 24 तब उन्होंने उस को क्रूस पर चढ़ाया, और उसके कपड़ोंपर चिट्ठियां
डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बांट लिया। 25 और पहर दिन चढ़ा या,
जब उन्होंने उस को क्रूस पर चढ़ाया। 26 और उसका दोषपत्र लिखकर उसके
ऊपर लगा दिया गया कि ?यहूदियोंका राजा। 27 और उन्होंने उसके साय दो
डाकू, एक उस की दिहनी और एक उस की बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। 28 तब
धर्मशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियोंके संग गिना गया पूरा हुआ। 29 और
मार्ग में जानेवाले सिर हिला हिलाकर और यह कहकर उस की निन्दा करते थे,
कि वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर
अपके आप को बचा ले। 30 इसी रीति से महाथाजक भी, शास्त्रियोंसमेत, 31

आपस में ठट्ठे से कहते थे; कि इस ने औरोंको बचाया, और अपके को नहीं बचा
सकता। 32 इस्राएल का राजा मसीह अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर
विश्वास करें: और जो उसके साय क्रूसोंपर चढ़ाए गए थे, वे भी उस की निन्दा
करते थे।। 33 और दोपहर होने पर, सारे देश में अन्धिक्कारनो छा गया; और
तीसरे पहर तक रहा। 34 तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, इलोई,
इलोई, लमा शबक्तनी जिस का अर्य है; हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे
क्योंछोड़ दिया 35 जो पास खड़े थे, उन में से कितनोंने यह सुनकर कहा: देखो यह
एलिय्याह को पुकारता है। 36 और एक ने दौड़कर इस्पंज को सिरके से डुबोया,
और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया; और कहा, ठहर जाओ, देखें, कि एलिय्याह
उसे उतारने कि लिथे आता है कि नहीं। 37 तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर
प्राण छोड़ दिथे। 38 और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो
गया। 39 जो सूबेदार उसके सम्हने खड़ा या, जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते
हुए देखा, तो उस ने कहा, सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र या। 40 कई
स्त्रियां भी दूर से देख रही यीं: उन में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब की
और योसेस की माता मरियम और शलोमी यीं। 41 जब वह गलील में य, तो थे
उसके पीछे हो लेती यीं और उस की सेवाटहल किया करती यीं; और और भी बहुत
सी स्त्रियां यीं, जो उसके साय यरूशलेम में आई यीं।। 42 जब संध्या हो गई, तो
इसलिथे कि तैयारी का दिन या, जो सब्त के एक दिन पहिले होता है। 43
अिरिमतिया का रहेनवाला यूसुुफ आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी
परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता या; वह हियाव करके पीलातुस के पास गया
और यीशु की लोय मांगी। 44 पीलातुस ने आश्चर्य किया, कि वह इतना शीघ्र मर

गया; और सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि क्या उस को मरे हुए देर हुई 45 सो जब
सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो लोय यूसुफ को दिला दी। 46 तब उस ने एक
पतली चादर मोल ली, और लोय को उतारकर चादर में लपेटा, और एक कब्र मे
जो चट्टान में खोदी गई यी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्यर लुढकार दिया।
47 और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही यीं, कि वह
कहां रखा गया है।।

मरकुस 16

1 जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता
मरियम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल ली, कि आकर उस पर मलें। 2
और सप्ताह के पहिले दिन बड़ी भोर, जब सूरज निकला ही या, वे कब्र पर आईं।
3 और आपस में कहती यीं, कि हमारे लिथे कब्र के द्वार पर से पत्यर कौन
लुढाएगा 4 जब उन्होंने आंख उठाई, तो देखा कि पत्यर लुढका हुआ है! क्योंकि
वह बहुत ही बड़ा या। 5 और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत
वस्त्र पहिने हुए दिहनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुई। 6 उस ने उन से
कहा, चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया या, ढूंढती हो:
वह जी उठा है; यहां नहीं है; देखो, यही वह स्यान है, जहां उन्होंने उसे रखा या। 7
परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलोंऔर पतरस से कहो, कि वह तुम से पहिले
गलील को जाएगा; जैसा उस ने तुम से कहा या, तुम वही उसे देखोगे। 8 और वे
निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कपकपी और घबराहट उन पर छा गई यीं
और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती यीं।। 9 सप्ताह के पहिले दिन

भोर होते ही वह जी उठ कर पहिले पहिल मरियम मगदलीनी को जिस में से उस
ने सात दुष्टात्क़ाएं निकाली यीं, दिखाई दिया। 10 उस ने जाकर उसके
सायियोंको जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। 11 और उन्होंने
यह सुनकर की वह जीवित है, और उस ने उसे देखा है प्रतीति न की।। 12 इस के
बाद वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई
दिया। 13 उन्होंने भी जाकर औरोंको समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उन की भी
प्रतीति न की।। 14 पीछे वह उन ग्यारहोंको भी, जब वे भोजन करने बैठे थे
दिखाई दिया, और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया,
क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा या, इन्होंने उन की प्रतीति न
की यी। 15 और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के
लोगोंको सुसमाचार प्रचार करो। 16 जो विश्वास करे और बपतिस्क़ा ले उसी का
उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास ने करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। 17 और
विश्वास करनेवालोंमें थे चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्क़ाओं को निकालेंगे।
18 नई नई भाषा बोलेंगे, सांपोंको उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए
तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारोंपर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।
19 निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और
परमेश्वर की दिहनी ओर बैठ गया। 20 और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार
किया, और प्रभु उन के साय काम करता रहा, और उन चिन्होंके द्वारा जो साय
साय होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा। आमीन।

लूका 1

1 इसलिथे कि बहुतोंने उन बातोंको जो हमारे बीच में होती हैं इतिहास लिखने में
हाथ लगाया है। 2 जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातोंके देखनेवाले और
वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। 3 इसलिथे हे श्र्ीमान यियुफिलुस मुझे भी
यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातोंका सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक
जांच करके उन्हें तेरे लिथे क्रमानुसार लिखूं। 4 कि तू यह जान ले, कि थे बातें
जिनकी तू ने शिझा पाई है, कैसी अटल हैं।। 5 यहूदियोंके राजा हेरोदेस के समय
अबिय्याह के दल में जकरयाह नाम का एक याजक या, और उस की पत्नी हारून
के वंश की यी, जिस का नाम इलीशिबा या। 6 और वे दोनोंपरमेश्वर के साम्हने
धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियोंपर निर्दोष चलनेवाले थे। उन के
कोई सन्तान न यी, 7 क्योंकि इलीशिबा बांफ यी, और वे दोनोंबूढ़े थे।। 8 जब वह
अपके दलकी पारी पर परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता या। 9 तो
याजकोंकी रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में
जाकर धूप जलाए। 10 और धूप जलाने के समय लोगोंकी सारी मण्डली बाहर
प्रार्यना कर रही यी। 11 कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दिहनी ओर
खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया। 12 और जकरयाह देखकर घबराया और उस पर
बड़ा भय छा गया। 13 परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकरयाह, भयभीत न
हो क्योंकि तेरी प्रार्यना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिथे एक
पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। 14 और तुझे आनन्द और
हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्क़ के कारण आनन्दित होंगे। 15 क्योंकि वह
प्रभु के साम्हने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पिएगा; और
अपक्की माता के गर्भ ही से पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो जाएगा। 16 और

इस्राएलियोंमें से बहुतेरोंको उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। 17 वह
एलिय्याह की आत्क़ा और सामर्थ में हो कर उसके आगे आगे चलेगा, कि
पितरोंका मन लड़केबालोंकी ओर फेर दे; और आज्ञा न माननेवालोंको धमिर्योंकी
समझ पर लाए; और प्रभु के लिथे एक योग्य प्रजा तैयार करे। 18 जकरयाह ने
स्वर्गदूत से पूछा; यह मैं कैसे जानूं क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूं; और मेरी पत्नी भी बूढ़ी
हो गई है। 19 स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के
साम्हने खड़ा रहता हूं; और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने
को भेजा गया हूं। 20 और देख जिस दिन तक थे बातें पूरी न हो लें, उस दिन तक
तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा, इसलिथे कि तू ने मेरी बातोंकी जो अपके
समय पर पूरी होंगी, प्रतीति न की। 21 और लोग जकरयाह की बाट देखते रहे
और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्योंलगी 22 जब वह बाहर
आया, तो उन से बोल न सका: सो वे जान गए, कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन
पाया है; और व उन से संकेत करता रहा, और गूंगा रह गया। 23 जब उस की सेवा
के दिन पूरे हुए, तो वह अपके घर चला गया।। 24 इन दिनोंके बाद उस की पत्नी
इलीशिबा गर्भवती हुई; और पांच महीने तक अपके आप को यह कह के छिपाए
रखा। 25 कि मनुष्योंमें मेरा अपमान दूर करने के लिथे प्रभु ने इन दिनोंमें
कृपादृष्टि करके मेरे लिथे ऐसा किया है।। 26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से
जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। 27
जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई यी: उस कुंवारी
का नाम मरियम या। 28 और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द
और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साय है। 29 वह उस

वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है
30 स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का
अनुग्रह तुझ पर हुआ है। 31 और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र
उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। 32 वह महान होगा; और परमप्रधान
का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को
देगा। 33 और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का
अन्त न होगा। 34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा मैं तो पुरूष को
जानती ही नहीं। 35 स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्क़ा तुझ पर
उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिथे वह पवित्र जो
उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। 36 और देख, और तेरी
कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो बांफ
कहलाती यी छठवां महीना है। 37 क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है
वह प्रभावरिहत नहीं होता। 38 मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे
वचन के अनुसार हो: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।। 39 उन दिनोंमें
मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई। 40 और
जकरयाह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया। 41 ज्योंही इलीशिबा ने
मरियम का नमस्कार सुना, त्योंही बच्चा उसके पेट में उछला, और इलीशिबा
पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो गई। 42 और उस ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, तू
स्त्रियोंमें धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है। 43 और यह अनुग्रह मुझे कहां
से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई 44 और देख ज्योंही तेरे नमस्कार
का शब्द मेरे कानोंमें पड़ा त्योंही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। 45 और

धन्य है, वह जिस ने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उस से कही गई,
वे पूरी होंगी। 46 तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। 47 और
मेरी आत्क़ा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। 48 क्योंकि उस ने
अपक्की दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिथे देखो, अब से सब युग युग के
लोग मुझे धन्य कहेंगे। 49 क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिथे बड़े बड़े काम किए
हैं, और उसका नाम पवित्र है। 50 और उस की दया उन पर, जो उस से डरते हैं,
पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। 51 उस ने अपना भुजबल दिखाया, और जो
अपके आप को बड़ा समझते थे, उन्हें तित्तर-बित्तर किया। 52 उस ने बलवानोंको
सिंहासनोंसे गिरा दिया; और दीनोंको ऊंचा किया। 53 उस ने भूखोंको अच्छी
वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानोंको छूछे हाथ निकाल दिया। 54 उस ने
अपके सेवक इस्राएल को सम्भाल लिया। 55 कि अपक्की उस दया को स्क़रण
करे, जो इब्राहीम और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा उस ने हमारे बाप-दादोंसे
कहा या। 56 मरियम लगभग तीन महीने उसके साय रहकर अपके घर लोट
गई।। 57 तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और व पुत्र जनी। 58 उसके
पड़ोसियोंऔर कुटुम्बियोंने यह सुन कर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके
साय आनन्दित हुए। 59 और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना
करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकरयाह रखने लगे। 60
और उस की माता ने उत्तर दिया कि नहीं; बरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए।
61 और उन्होंने उस से कहा, तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं। 62 तब
उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा। 63 कि तू उसका नाम क्या रखना
चाहता है और उस ने लिखने की पट्टी मंगाकर लिख दिया, कि उसका नाम

यूहन्ना है: और सभोंने अचम्भा किया। 64 तब उसका मुंह और जीभ तुरन्त खुल
गई; और वह बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा। 65 और उसके आस
पास के सब रहनेवालोंपर भय छा गया; और उन सब बातोंकी चर्चा यहूदया के
सारे पहाड़ी देश में फैल गई। 66 और सब सुननेवालोंने अपके अपके मन में
विचार करके कहा, यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साय या।।
67 और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो गया, और
भविष्यद्ववाणी करने लगा। 68 कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने
अपके लोगोंपर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है। 69 ओर अपके सेवक
दाऊद के घराने में हमारे लिथे एक उद्धार का सींग निकाला। 70 जैसे उस ने अपके
पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा या। 71
अर्यात हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियोंके हाथ से हमारा उद्धार किया है।
72 कि हमारे बाप-दादोंपर दया करके अपक्की पवित्र वाचा का स्क़रण करे। 73
और वह शपय जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई यी। 74 कि वह हमें यह
देगा, कि हम अपके शत्रुओं के हाथ से छुटकर। 75 उसके साम्हने पवित्रता और
धामिर्कता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें। 76 और तू हे
बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार
करने के लिथे उसके आगे आगे चलेगा, 77 कि उसके लोगोंको उद्धार का ज्ञान दे,
जो उन के पापोंकी झमा से प्राप्त होता है। 78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी
करूणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा। 79
कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालोंको ज्योति दे, और हमारे पांवोंको
कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।। 80 और वह बालक बढ़ता और आत्क़ा में

बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलोंमें रहा।

लूका 2

1 उन दिनोंमें औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के
लोगोंके नाम लिखे जाएं। 2 यह पहिली नाम लिखाई उस समय हुई, जब
क्विरिनयुस सूरिया का हाकिम या। 3 और सब लोग नाम लिखवाने के लिथे
अपके अपके नगर को गए। 4 सो यूसुफ भी इसलिथे कि वह दाऊद के घराने और
वंश का या, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को
गया। 5 कि अपक्की मंगेतर मरियम के साय जो गर्भवती यी नाम लिखवाए। 6
उस के वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए। 7 और वह अपना पहिलौठा
पुत्र जनी और उसे कपके में लपेटकर चरनी में रखा: क्योंकि उन के लिथे सराय
में जगह न यी। 8 और उस देश में कितने गड़ेरिथे थे, जो रात को मैदान में रहकर
अपके फुण्ड का पहरा देते थे। 9 और प्रभु का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ;
और प्रभु का तेज उन के चारोंओर चमका, और वे बहुत डर गए। 10 तब स्वर्गदूत
ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता
हूं जो सब लोगोंके लिथे होगा। 11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिथे एक
उद्धारकर्ता जन्क़ा है, और यही मसीह प्रभु है। 12 और इस का तुम्हारे लिथे यह
पता है, कि तुम एक बालक को कपके मे लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।
13 तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साय स्वर्गदूतोंका दल परमेश्वर की स्तुति करते
हुए और यह कहते दिखाई दिया। 14 कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और
पृथ्वी पर उन मनुष्योंमें जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।। 15 जब स्वर्गदूत उन

के पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियोंने आपस में कहा, आओ, हम बैतलहम
जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें। 16 और उन्होंने
तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। 17
इन्हें देखकर उन्होंने वह बात जो इस बालक के विषय में उन से कही गई यी,
प्रगट की। 18 और सब सुननेवालोंने उन बातोंसे जो गड़िरयोंने उन से कहीं
आश्चर्य किया। 19 परन्तु मरियम थे सब बातें अपके मन में रखकर सोचक्की
रही। 20 और गडिरथे जैसा उन से कहा गया या, वैसा ही सब सुनकर और देखकर
परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।। 21 जब आठ दिन पूरे हुए,
और उसके खतने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो स्वर्गदूत
ने उसके पेट में आने से पहिले कहा या। 22 और जब मूसा को व्यवस्या के
अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वे उसे यरूशलेम में ले गए, कि प्रभु
के सामने लाएं। 23 (जैसा कि प्रभु की व्यवस्या में लिखा है कि हर एक पहिलौठा
प्रभु के लिथे पवित्र ठहरेगा)। 24 और प्रभु की व्यवस्या के वचन के अनुसार
पंडुकोंका एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे ला कर बलिदान करें। 25 और देखो,
यरूशलेम में शमौन नाम एक मनुष्य या, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त या;
और इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा या, और पवित्र आत्क़ा उस पर या। 26
और पवित्र आत्क़ा से उस को चितावनी हुई यी, कि जब तक तू प्रभु के मसीह को
देख ने लेगा, तक तक मृत्यु को न देखेगा। 27 और वह आत्क़ा के सिखाने से
मन्दिर में आया; और जब माता-पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए, कि उसके
लिथे व्यवस्या की रीति के अनुसार करें। 28 तो उस ने उसे अपक्की गोद में लिया
और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, 29 हे स्वामी, अब तू अपके दास को

अपके वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है। 30 क्योंकि मेरी आंखो ने तेरे
उद्धार को देख लिया है। 31 जिसे तू ने सब देशोंके लोगोंके साम्हने तैयार किया
है। 32 कि वह अन्य जतियोंको प्रकाश देने के लिथे ज्योति, और तेरे निज लोग
इस्राएल की महिमा हो। 33 और उसका पिता और उस की माता इन बातोंसे जो
उसके विषय में कही जाती यीं, आश्चर्य करते थे। 34 तब शमौन ने उन को
आशीष देकर, उस की माता मरियम से कहा; देख, वह तो इस्राएल में बहुतोंके
गिरने, और उठने के लिथे, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिथे ठहराया गया है,
जिस के विरोध में बातें की जाएगीं -- 35 वरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार
छिद जाएगा-- इस से बहुत ह्रदयोंके विचार प्रगट होंगे। 36 और अशेर के गोत्र में
से हन्नाह नाम फनूएल की बेटी एक भविष्यद्वक्तिन यी: वह बहुत बूढी यी, और
ब्याह होने के बाद सात वर्ष अपके पति के साय रह पाई यी। 37 वह चौरासी वर्ष
से विधवा यी: और मन्दिर को नहीं छोड़ती यी पर उपवास और प्रार्यना कर करके
रात-दिन उपासना किया करती यी। 38 और वह उस घड़ी वहां आकर प्रभु का
धन्यवाद करने लगी, और उन सभोंसे, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते
थे, उसके विषय में बातें करने लगी। 39 और जब वे प्रभु की व्यवस्या के अनुसार
सब कुछ निपटा चुके तो गलील में अपके नगर नासरत को फिर चले गए।। 40
और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और
परमेश्वर का अनुग्रह उस पर या। 41 उसके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्ब्ब में
यरूशलेम को जाया करते थे। 42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्ब्ब की रीति
के अनुसार यरूशलेम को गए। 43 और जब वे उन दिनोंको पूरा करके लौटने लगे,
तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता-पिता नहीं जानते

थे। 44 वे यह समझकर, कि वह और यात्रियोंके साय होगा, एक दिन का पड़ाव
निकल गए: और उसे अपके कुटुम्बियोंऔर जानपहचानोंमें ढूंढ़ने लगे। 45 पर
जब नहीं मिला, तो ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यरूशलेम को फिर लौट गए। 46 और तीन दिन के
बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपकेशकोंके बीच में बैठे, उन की सुनते और उन से
प्रश्न करते हुए पाया। 47 और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ
और उसके उत्तरोंसे चकित थे। 48 तब वे उसे देखकर चकित हुए और उस की
माता ने उस से कहा; हे पुत्र, तू ने हम से क्योंऐसा व्यवहार किया देख, तेरा पिता
और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। 49 उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्योंढूंढ़ते थे
क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपके पिता के भवन में होना अवश्य है 50 परन्तु
जो बात उस ने उन से कही, उन्होंने उसे नहीं समझा। 51 तब वह उन के साय
गया, और नासरत में आया, और उन के वश में रहा; और उस की माता ने थे सब
बातें अपके मन में रखीं।। 52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और
मनुष्योंके अनुग्रह में बढ़ता गया।।

लूका 3

1 तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया
का हाकिम या, और गलील में हेरोदेस नाम चौयाई का इतूरैया, और त्रखोनीतिस
में, उसका भाई फिलप्पुस, और अबिलेने में लिसानियास चौयाई के राजा थे। 2
और जब हन्ना और कैफा महाथाजक थे, उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में
जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। 3 और वह यरदन के आस पास के सारे
देश में आकर, पापोंकी झमा के लिथे मन फिराव के बपतिस्क़ा का प्रचार करने

लगा। 4 जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए वचनोंकी पुस्तक में लिखा है, कि
जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा हे कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की
सड़कें सीधी बनाओ। 5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और
टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस
मार्ग बनेगा। 6 और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।। 7 जो भीड़ की भीड़
उस से बपतिस्क़ा लेने को निकल कर आती यी, उन से वह कहता या; हे सांप के
बच्चो, तुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो। 8 सो मन फिराव
के योग्य फल लाओ: और अपके अपके मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता
इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्यरोंसे इब्राहीम के
लिथे सन्तान उत्पन्न कर सकता है। 9 और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ोंकी जड़ पर धरा
है, इसलिथे जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में फोंका जाता
है। 10 और लोगोंने उस से पूछा, तो हम क्या करें 11 उस ने उनहें उतर दिया, कि
जिस के पास दो कुरते होंवह उसके साय जिस के पास नहीं हैं बांट दे और जिस के
पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे। 12 और महसूल लेनेवाले भी बपतिस्क़ा लेने
आए, और उस से पूछा, कि हे गुरू, हम क्या करें 13 उस ने उन से कहा, जो
तुम्हारे लिथे ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना। 14 और सिपाहियोंने भी
उस से यह पूछा, हम क्या करें उस ने उन से कहा, किसी पर उपद्रव न करना,
और न फूठा दोष लगाना, और अपक्की मजदूरी पर सन्तोष करना।। 15 जब
लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपके अपके मन में यूहन्ना के विषय में
विचार कर रहे थे, कि क्या यही मसीह तो नहीं है। 16 तो यूहन्ना ने उन सब के
उत्तर में कहा: कि मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्क़ा देता हूं, परन्तु वह आनेवाला है,

जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं, कि उसके जूतोंका बन्ध खोल
सकूं, वह तुम्हें पवित्र आत्क़ा और आग से बपतिस्क़ा देगा। 17 उसका सूप,
उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; और गेहूं
को अपके खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुफने की नहीं
जला देगा।। 18 सो वह बहुत सी शिझा दे देकर लोगोंको सुसमाचार सुनाता रहा।
19 परन्तु उस ने चौयाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलप्पुस की पत्नी
हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मोंके विषय में जो उस ने किए थे, उलाहना
दिया। 20 इसलिथे हेरोदेस ने उन सब से बढ़कर यह कुकर्म भी किया, कि यूहन्ना
को बन्दीगृह में डाल दिया।। 21 जब सब लोगोंने बपतिस्क़ा लिया, और यीशु भी
बपतिस्क़ा लेकर प्रार्यना कर रहा या, तो आकाश खुल गया। 22 और पवित्र
आत्क़ा शारीरिक रूप में कबूतर की नाई उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी
हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।। 23 जब यीशु आप उपकेश
करने लगा, जो लगभग तीस वर्ष की आयु का या और (जैसा समझा जाता या)
यूसुफ का पुत्र या; और व एली का। 24 और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और
वह मलकी का, और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का। 25 और वह मत्तिन्याह
का, और वह आमोस का, और वह नहूम का, और वह असल्याह का, और वह
नोगह का। 26 और वह मात का, और वह मत्तित्याह का, और वह शिमी का, और
वह योसेख का, और वह योदाह का। 27 और वह यूहन्ना का, और वह रेसा का,
और वह जरूब्बाबिल का, और वह शलतिथेल का, और वह नेरी का। 28 और वह
मलकी का, और वह अद्दी का, और वह कोसाम का, और वह इलमोदाम का, और
वह एर का। 29 और वह थेशू का, और वह इलाजार का, और वह योरीम का, ओर

वह मत्तात का, और वह लेवी का। 30 और वह शमौन का, और वह यहूदाह का,
और वह यूसुफ का, और वह योनान का, और वह इलयाकीम का। 31 और वह
मलेआह का, और वह मिन्नाह का, और वह मत्तता का, और वह नातान का, और
वह दाऊद का। 32 और वह यिशै का, और वह ओबेद का, और वह बोअज का,
और वह सलमोन का, और वह नहशोन का। 33 और वह अम्मीनादाब का, और
वह अरनी का, और वह हिस्रोन का, और वह फिरिस का, और वह यहूदाह का। 34
और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह इब्राहीम का, और वह तिरह
का, और वह नाहोर का। 35 और वह सरूग का, और वह रऊ का, और वह
िफिलग का, और वह एबिर का, और वह शिलह का। 36 और वह केनान का,
वह अरफक्षद का, और वह शेम का, वह नूह का, वह लिमिक का। 37 और वह
मयूशिलह का, और वह हनोक का, और वह यिरिद का, और वह महललेल का,
और वह केनान का। 38 और वह इनोश का, और वह शेत का, और वह आदम
का, और वह परमेश्वर का या।।

लूका 4

1 फिर यीशु पवित्रआत्क़ा से भरा हुआ, यरदन से लैटा; और चालीस दिन तक
आत्क़ा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा; और शैतान उस की पक्कीझा करता
रहा। 2 उन दिनोंमें उस ने कुछ न खाया और जब वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख
लगी। 3 और शैतान ने उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्यर से
कह, कि रोटी बन जाए 4 यीशु ने उसे उत्तर दिया; कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी
से जीवित न रहेगा। 5 तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के

सारे राज्य दिखाए। 6 और उस से कहा; मैं यह सब अधिक्कारने, और इन का
विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं, उसी को दे
देता हूं। 7 इसलिथे, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा। 8 यीशु
ने उसे उत्तर दिया; लिखा है; कि तू प्रभु अपके परमेश्वर को प्रणाम कर; और केवल
उसी की उपासना कर। 9 तब उस ने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगूरे
पर खड़ा किया, और उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपके आप को
यहां से नीचे गिरा दे। 10 क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपके
स्वर्गदूतोंको आज्ञा देगा, कि वे तेरी रझा करें। 11 और वे तुझे हाथोंहाथ उठा लेंगे
ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्यर से ठेस लगे। 12 यीशु ने उस को उत्तर दिया; यह
भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपके परमेश्वर की पक्कीझा न करना। 13 जब
शैतान सब पक्कीझा कर चुका, तब कुछ समय के लिथे उसके पास से चला
गया।। 14 फिर यीशु आत्क़ा की सामर्य से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस
की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई। 15 और वह उन ही आराधनालयोंमें
उपकेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे।। 16 और वह नासरत में
आया; जहां पाला पोसा गया या; और अपक्की रीति के अनुसार सब्त के दिन
आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिथे खड़ा हुआ। 17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की
पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह
लिखा या। 18 कि प्रभु का आत्क़ा मुझ पर है, इसलिथे कि उस ने कंगालोंको
सुसमाचार सुनाने के लिथे मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिथे भेजा है, कि
बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धोंको दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और
कुचले हुओं को छुड़ाऊं। 19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं। 20

तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और
आराधनालय के सब लोगोंकी आंख उस पर लगी यी। 21 तब वह उन से कहने
लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है। 22 और सब ने उसे
सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थीं, उन से अचम्भा
किया; और कहने लगे; क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं 23 उस ने उस से कहा; तुम
मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य, अपके आप को अच्छा कर! जो
कुछ हम ने सुना है कि कफरनहूम में किया गया है उसे यहां अपके देश में भी
कर। 24 और उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यद्वक्ता अपके देश
में मान-सम्मान नहीं पाता। 25 और मैं तुम से सच कहता हूं, कि एलिय्याह के
दिनोंमें जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहां तक कि सारे देश में बड़ा
आकाल पड़ा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं यीं। 26 पर एलिय्याह उन में से
किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारफत में एक विधवा के पास। 27
और इलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर नामान
सूरयानी को छोड़ उन में से काई शुद्ध नहीं किया गया। 28 थे बातें सुनते ही जितने
आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर गए। 29 और उठकर उसे नगर से बाहर
निकाला, और जिस पहाड़ पर उन का नगर बसा हुआ या, उस की चोटी पर ले
चले, कि उसे वहां से नीचे गिरा दें। 30 पर वह उन के बीच में से निकलकर चला
गया।। 31 फिर वह गलील के कफरनहूम नगर में गया, और सब्त के दिन
लोगोंको उपकेश दे रहा या। 32 वे उस के उपकेश से चकित हो गए क्योंकि उसका
वचन अधिक्कारने सहित या। 33 आराधनालय में एक मनुष्य या, जिस में
अशुद्ध आत्क़ा यी। 34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से

क्या काम क्या तू हमें नाश करने आया है मैं तुझे जानता हूं तू कौन है तू परमेश्वर
का पवित्र जन है। 35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल
जा: तब दुष्टात्क़ा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल
गई। 36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे,
यह कैसा वचन है कि वह अधिक्कारने और सामर्य के साय अशुद्ध आत्क़ाओं को
आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं। 37 सो चारोंओर हर जगह उस की धूम मच
गई।। 38 वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की
सास को ज्वर चढ़ा हुआ या, और उन्होंने उसके लिथे उस से बिनती की। 39 उस
ने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह
तुरन्त उठकर उन की सेवा टहल करने लगी।। 40 सूरज डूबते समय जिन जिन
के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियोंमें पके हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले
आएं, और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। 41 और दुष्टात्क़ा
चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू परमेश्वर का पुत्र है, बहुतोंमें से निकल गई
पर वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं देता या, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह
है।। 42 जब दिन हुआ तो वह निकलकर एक जंगली जगह में गया, और भीड़ की
भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई उसके पास आई, और उसे रोकने लगी, कि हमारे पास से न
जा। 43 परन्तु उस ने उन से कहा; मुझे और और नगरोंमें भी परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी लिथे भेजा गया हूं।। 44 और वह
गलील के अराधनालयोंमें प्रचार करता रहा।।

लूका 5

1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह
गन्नेसरत की फील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ। 2 कि उस ने फील के
किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। 3
उन नावोंमें से एक पर जो शमौन की थी, चढ़कर, उस ने उस से बिनती की, कि
किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगोंको नाव पर से उपकेश देने
लगा। 4 जब वे बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में ले चल, और मछिलयां
पकड़ने के लिथे अपके जाल डालो। 5 शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी,
हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।
6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछिलयां घेर लाए, और उन के जाल फटने
लगे। 7 इस पर उन्होंने अपके साथियोंको जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि
आकर हमारी सहाथता करो: और उन्होंने आकर, दोनो नाव यहां तक भर लीं कि
वे डूबने लगीं। 8 यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवोंपर गिरा, और कहा; हे
प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं। 9 क्योंकि इतनी मछिलयोंके
पकड़े जाने से उसे और उसके साथियोंको बहुत अचम्भा हुआ। 10 और वैसे ही
जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा
हुआ: तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर: अब से तू मनुष्योंको जीवता पकड़ा
करेगा। 11 और व नावोंको किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे
हो लिए।। 12 जब वह किसी नगर में था, तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक
मनुष्य था, और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा, और बिनती की; कि हे प्रभु
यदि तू चाहे हो मुझे शुद्ध कर सकता है। 13 उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और
कहा मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। 14 तब उस

ने उसे चिताया, कि किसी से न कह, परन्तु जाके अपके आप को याजक को
दिखा, और अपके शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे
चढ़ा; कि उन पर गवाही हो। 15 परन्तु उस की चर्चा और भी फैलती गई, और
भीड़ की भीड़ उस की सुनने के लिथे और अपक्की बिमारियोंसे चंगे होने के लिथे
इकट्ठी हुई। 16 परन्तु वह जंगलोंमें अलग जाकर प्रार्यना किया करता या।। 17
और एक दिन हुआ कि वह उपकेश दे रहा या, और फरीसी और व्यवस्यापक वहां
बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए
थे; और चंगा करने के लिथे प्रभु की सामर्य उसके साय यी। 18 और देखो कई
लोग एक मनुष्य को जो फोले का मारा हुआ या, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर
ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे। 19 और जब भीड़ के
कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने कोठे पर चढ़ कर और खप्रैल हटाकर,
उसे खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतरा दिया। 20 उस ने उन का विश्वास
देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप झमा हुए। 21 तब शास्त्री और फरीसी
विवाद करने लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है परमेश्वर का
छोड़ कौन पापोंकी झमा कर सकता है 22 यीशु ने उन के मन की बातें जानकर,
उन से कहा कि तुम अपके मनोंमें क्या विवाद कर रहे हो 23 सहज क्या है क्या
यह कहना, कि तेरे पाप झमा हुए, या यह कहना कि उठ, और चल फिर 24
परन्तु इसलिथे कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृय्वी पर पाप झमा करने का
भी अधिक्कारने है (उस ने उस फोले के मारे हुए से कहा), मैं तुझ से कहता हूं, उठ
और अपक्की खाट उठाकर अपके घर चला जा। 25 वह तुरन्त उन के साम्हने
उठा, और जिस पर वह पड़ा या उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ

अपके घर चला गया। 26 तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे,
और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने अनोखी बातें देखी हैं।। 27 और
इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुंगी लेनेवाले को चुंगी की चौकी
पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। 28 तब वह सब कुछ छोड़कर
उठा, और उसके पीछे हो लिया। 29 और लेवी ने अपके घर में उसके लिथे बड़ी
जवनार की; और चुंगी लेनेवालोंकी और औरोंकी जो उसके साय भोजन करने बैठे
थे एक बड़ी भीड़ यी। 30 और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलोंसे यह कहकर
कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुंगी लेनेवालोंऔर पापियोंके साय क्योंखाते-पीते हो 31
यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि वैद्य भले चंगोंके लिथे नहीं, परन्तु बीमारोंके लिथे
अवश्य है। 32 मैं धमिर्योंको नहीं, परन्तु पापियोंको मन फिराने के लिथे बुलाने
आया हूं। 33 और उन्होंने उस से कहा, यूहन्ना के चेले तो बराबर उपवास रखते
और प्रार्यना किया करते हैं, और वैसे ही फरीसियोंके भी, परन्तु तेरे चेले तो खाते
पीते हैं! 34 यीशु ने उन से कहा; क्या तुम बरातियोंसे जब तक दूल्हा उन के साय
रहे, उपवास करेंगे। 35 परन्तु वे दिन आएंगे, जिन में दूल्हा उन से अलग किया
जाएगा, तब वे उन दिनोंमें उपवास करेंगे। 36 उस ने एक और दृष्टान्त भी उन से
कहा; कि कोई मनुष्य नथे पहिरावन में से फाड़कर पुराने पहिरावन में पैबन्द
नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैबन्द पुराने में मेल भी नहीं
खाएगा। 37 और कोई नया दाखरस पुरानी मशकोंमें नही भरता, नहीं तो नया
दाखरस मशकोंको फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएंगी। 38
परन्तु नया दाखरस नई मशकोंमें भरना चाहिथे। 39 कोई मनुष्य पुराना दाखरस
पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।।

लूका 6

1 फिर सब्त के दिन वह खेतोंमें से होकर जा रहा या, और उसके चेले बालें तोड़
तोड़कर, और हाथोंसे मल मल कर खाते जाते थे। 2 तब फरीसियोंमें से कई एक
कहने लगे, तुम वह काम क्योंकरते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं 3 यीशु
ने उन का उत्तर दिया; क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके
सायी भूखे थे तो क्या किया 4 वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की
रोटियां लेकर खाई, जिन्हें खाना याजकोंको छोड़ और किसी को उचित नहंी,
और अपके सायियोंको भी दी 5 और उस ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र सब्त के
दिन का भी प्रभु है। 6 और ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन को वह
आराधनालय में जाकर उपकेश करने लगा; और वहां एक मनुष्य या, जिस का
दिहना हाथ सूखा या। 7 शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने
के लिथे उस की ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं।
8 परन्तु वह उन के विचार जानता या; इसलिथे उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से
कहा; उठ, बीच में खड़ा हो: वह उठ खड़ा हुआ। 9 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से
यह पूछता हूं कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करन या बुरा करना; प्राण को
बचाना या नाश करना 10 और उस ने चारोंओर उन सभोंको देखकर उस मनुष्य
से कहा; अपना हाथ बढ़ा: उस ने ऐसा ही किया, और उसका हाथ फिर चंगा हो
गया। 11 परन्तु वे आपे से बाहर होकर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु
के साय क्या करें 12 और उन दिनोंमें वह पहाड़ पर प्रार्यना करने को निकला,
और परमेश्वर से प्रार्यना करने में सारी रात बिताई। 13 जब दिन हुआ, तो उस ने
अपके चेलोंको बुलाकर उन में से बारह चुन लिए, और उन को प्रेरित कहा। 14

और वे थे हैं शमौन जिस का नाम उस ने पतरस भी रखा; और उसका भाई
अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना और फिलप्पुस और बरतुलमै। 15 और मत्ती
और योमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है। 16
और याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इसकिरयोती, जो उसका पकड़वानेवाला
बना। 17 तब वह उन के साय उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके
चेलोंकी बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र
के किनारे से बहुतेरे लोग, जो उस की सुनने और अपक्की बीमारियोंसे चंगा होने
के लिय उसके पास आए थे, वहां थे। 18 और अशुद्ध आत्क़ाओं के सताए हुए लोग
भी अच्छे किए जाते थे। 19 और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उस में से सामर्य
निकलकर सब को चंगा करती यी।। 20 तब उस ने अपके चेलोंकी ओर देखकर
कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। 21 धन्य
हो तुम, जो अब भूखे हो; क्योंकि तृप्त किए जाओगे; धन्य हो तुम, जो अब रोते
हो, क्योंकि हंसोगे। 22 धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से
बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम
बुरा जानकर काट देंगे। 23 उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो,
तुम्हारे लिथे स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है: उन के बाप-दादे भविष्यद्वक्ताओं के साय
भी वैसा ही किया करते थे। 24 परन्तु हाथ तुम पर; जो धनवान हो, क्योंकि तुम
अपक्की शान्ति पा चुके। 25 परन्तु हाथ तुम पर; जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे
होगे: हाथ, तुम पर; जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे। 26 हाथ,
तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बाप-दादे फूठे
भविष्यद्वक्ताओं के साय भी ऐसा ही किया करते थे।। 27 परन्तु मैं तुम

सुननेवालोंसे कहता हूं, कि अपके शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का
भला करो। 28 जो तुम्हें स्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन
के लिथे प्रार्यना करो। 29 जो तेरे एक गाल पर यप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी
फेर दे; और जो तेरी दोहर छीन ले, उस को कुरता लेने से भी न रोक। 30 जो कोई
तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उस से न मांग। 31 और जैसा
तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साय करें, तुम भी उन के साय वैसा ही करो। 32
यदि तुम अपके प्रेम रखनेवालोंके साय प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि
पापी भी अपके प्रेम रखनेवालोंके साय प्रेम रखते हैं। 33 और यदि तुम अपके
भलाई करनेवालोंही के साय भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी
भी ऐसा ही करते हैं। 34 और यदि तुम उसे उधार दो, जिन से फिर पाने की आशा
रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी पापियोंको उधार देते हैं, कि उतना
ही फिर पाएं। 35 बरन अपके शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने
की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिथे बड़ा फल होगा; और तुम
परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और
बुरोंपर भी कृपालु है। 36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी
दयावन्त बनो। 37 दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा:
दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: झमा करो, तो तुम्हारी भी
झमा की जाएगी। 38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाम दबा
दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि
जिस नाम से तुम नापके हो, उसी से तुम्हारे लिथे भी नापा जाएगा।। 39 फिर उस
ने उन से एक दृष्टान्त कहा; क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता है क्या दोनो

गड़हे में नहीं गिरेंगे 40 चेला अपके गुरू से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा,
वह अपके गुरू के समान होगा। 41 तू अपके भाई की आंख के तिनके को
क्योंदेखता है, और अपक्की ही आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूफता 42 और जब तू
अपक्की ही आंख का लट्ठा नहीं देखता, तो अपके भाई से क्योंकर कह सकता है,
हे भाई, ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं हे कपक्की, पहिले अपक्की
आंख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आंख में है, भली भांति
देखकर निकाल सकेगा। 43 कोई अच्छा पेड़ नहीं, जो निकम्मा फल लाए, और न
तो कोई निकम्मा पेड़ है, जो अच्छा फल लाए। 44 हर एक पेड़ अपके फल से
पहचाना जाता है; क्योंकि लोग फाडिय़ोंसे अंजीर नहीं तोड़ते, और न फड़बेरी से
अंगूर। 45 भला मनुष्य अपके मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और
बुरा मनुष्य अपके मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में
भरा है वही उसके मुंह पर आता है।। 46 जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो
क्योंमुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो 47 जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें
सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है 48 वह उस
मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान की
नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न
सकी; क्योंकि वह प?ा बना या। 49 परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस
मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर
धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।।

लूका 7

1 जब वह लोगोंको अपक्की सारी बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में आया। 2
और किसी सूबेदार का एक दास जो उसका प्रिय या, बीमारी से मरने पर या। 3
उस ने यीशु की चर्चा सुनकर यहूदियोंके कई पुरिनयोंको उस से यह बिनती करने
को उसके पास भेजा, कि आकर मेरे दास को चंगा कर। 4 वे यीशु के पास आकर
उस से बड़ी बिनती करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि तू उसके लिथे यह
करे। 5 क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय
को बनाया है। 6 यीशु उन के साय साय चला, पर जब वह घर से दूर न या, तो
सूबेदार ने सके पास कई मित्रोंके द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु दुख न उठा,
क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए। 7 इसी कारण मैं ने
अपके आप को इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊं, पर वचन ही कह दे
तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। 8 मैं भी पराधीन मनुष्य हूं; और सिपाही मेरे हाथ
में हैं, और जब एक को कहता हूं, जा, तो वह जाता है, और दूसरे से कहता हूं कि
आ, तो आता है; और अपके किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है। 9
यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उसके
पीछे आ रही यी कहा, मैं तुम से कहताह हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास
नहीं पाया। 10 और भेजे हुए लोगोंने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया।। 11
योड़े दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी
भीड़ उसके साय जा रही यी। 12 जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो,
लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपक्की मां का एकलौता पुत्र या,
और वह विधवा यी: और नगर के बहुत से लोग उसके साय थे। 13 उसे देख कर
प्रभु को तरस आया, और उस ने कहा; मत रो। 14 तब उस ने पास आकर, अर्यी

को छुआ; और उठानेवाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता
हूं, उठ। 15 तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां
को सौंप दिया। 16 इस से सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके
कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपके
लोगोंपर कृपा दृष्टि की है। 17 और उसके विषय में यह बात सारे यहूदिया और
आस पास के सारे देश में फैल गई।। 18 और यूहन्ना को उसके चेलोंने इन सब
बातोंका समचार दिया। 19 तब यूहन्ना ने अपके चेलोंमें से दो को बुलाकर प्रभु के
पास यह पूछने के लिथे भेजा; कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और
दूसरे की बाट देखें 20 उन्होंने उसके पास आकर कहा, यूहन्ना बपतिस्क़ा
देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम
दूसरे की बाट जोहें 21 उसी घड़ी उस ने बहुतोंको बीमारियों; और पीड़ाओं, और
दुष्टात्क़ाओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धोंको आंखे दी। 22 और उस ने उन से
कहा; जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे
देखते हैं, लंगडे चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं; और कंगालोंको
सुसमाचार सुनाया जाता है। 23 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।।
24 जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगोंसे
कहने लगा, तुम जंगल में क्या देखने गए थे क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को
25 तो तुम फिर क्या देखने गए थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को देखो,
जो भड़कीला वस्त्र पहिनते, और सुख विलास से रहते हैं, वे राजभवनोंमें रहते हैं।
26 तो फिर क्या देखने गए थे क्या किसी भविष्यद्वक्ता को हां, मैं तुम से कहता हूं,
वरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को। 27 यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि

देख, मैं अपके दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा।
28 मैं तुम से कहता हूं, कि जो स्त्रियोंसे जन्क़े हैं, उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई
नहीं: पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से भी बड़ा है। 29 और
सब साधारण लोगोंने सुनकर और चुंगी लेनेवालोंने भी यूहन्ना का बपतिस्क़ा
लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। 30 पर फरीसियोंऔर व्यवस्यापकोंने उस
से बपतिस्क़ा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपके विषय में टाल दिया। 31 सो
मैं इस युग के लोगोंकी उपमा किस से दूं कि वे किस के समान हैं 32 वे उन
बालकोंके समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, कि हम
ने तुम्हारे लिथे बांसली बजाई, और तुम न नाचे, हम ने विलाप किया, और तुम
न रोए। 33 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्क़ा देनेवाला ने रोटी खाता आया, न दाखरस
पीता आया, और तुम कहते हो, उस में दुष्टात्क़ा है। 34 मनुष्य का पुत्र
खाता-पीता आया है; और तुम कहते हो, देखो, पेटू और पिय?ड़ मनुष्य, चुंगी
लेनेवालोंका और पापियोंका मित्र। 35 पर ज्ञान अपक्की सब सन्तानोंसे सच्चा
ठहराया गया है।। 36 फिर किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साय
भोजन कर; सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। 37 और देखो,
उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने
बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई। 38 और उसके पांवोंके पास, पीछे खड़ी
होकर, रोती हुई, उसके पांवोंको आंसुओं से भिगाने और अपके सिर के बालोंसे
पोंछने लगी और उसके पांव बारबार चूमकर उन पर इत्र मला। 39 यह देखकर,
वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया या, अपके मन में सोचने लगा, यदि यह
भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी

स्त्री है क्यशेंकि वह तो पापिनी है। 40 यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा; कि हे
शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला, हे गुरू कह। 41 किसी महाजन के दो
देनदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पचास दीनार धारता या। 42 जब कि उन के
पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनो को झमा कर दिया: सो उन में से कौन
उस से अधिक प्रेम रखेगा। 43 शमौन ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिस का
उस ने अधिक छोड़ दिया: उस ने उस से कहा, तू ने ठीक विचार किया है। 44 और
उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा; क्या तू इस स्त्री को देखता है मैं
तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धाने के लिथे पानी न दिया, पर इस ने मेरे
पांव आंसुओं से भिगाए, और अपके बालोंसे पोंछा! 45 तू ने मुझे चूमा न दिया,
पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवोंका चूमना न छोड़ा। 46 तू ने मेरे
सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवोंपर इत्र मला है। 47 इसलिथे मैं तुझ
से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, झमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम
किया; पर जिस का योड़ा झमा हुआ है, वह योड़ा प्रेम करता है। 48 और उस ने
स्त्री से कहा, तेरे पाप झमा हुए। 49 तब जो लोग उसके साय भोजन करने बैठे थे,
वे अपके अपके मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापोंको भी झमा करता है 50
पर उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चक्की जा।।

लूका 8

1 इस के बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा। 2 और वे बाहर उसके साय थे:
और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्टात्क़ाओं से और बीमारियोंसे छुड़ाई गई यीं, और

वे यह हैं, मरियम जो मगदलीनी कहलाती यी, जिस में से सात दुष्टात्क़ाएं
निकली यीं। 3 और हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह
और बहुत सी और स्त्रियां: थे तो अपक्की सम्पत्ति से उस की सेवा करती यीं।। 4
जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और नगर नगर के लोग उसके पास चले आते थे, तो
उस ने दृष्टान्त में कहा। 5 कि एक बोने वाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ
मार्ग के किनारे गिरा, और रौंदा गया, और आकाश के पझियोंने उसे चुग लिया। 6
और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा, परन्तु तरी न मिलने से सूख गया। 7
कुछ फाडिय़ोंके बीच में गिरा, और फाडिय़ोंने साय साय बढ़कर उसे दबा लिया। 8
और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा फल लाया: यह कहकर उस
ने ऊंचे शब्द से कहा; जिस के सुनने के कान होंवह सुन लें।। 9 उसके चेलोंने उस
से पूछा, कि यह दृष्टान्त क्या है उस ने कहा; 10 तुम को परमेश्वर के राज्य के
भेदोंकी समझ दी गई है, पर औरोंको दृष्टान्तोंमें सुनाया जाता है, इसलिथे कि वे
देखते हुए भी न देखें, और सुनते हुए भी न समझें। 11 दृष्टान्त यह है; बीज तो
परमेश्वर का वचन है। 12 मार्ग के किनरे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान
आकर उन के मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास
करके उद्धार पाएं। 13 चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन
को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ते से वे योड़ी देर तक विश्वास रखते हैं,
और पक्कीझा के समय बहक जाते हैं। 14 जो फाडिय़ोंमें गिरा, सो वे हैं, जो सुनते
हैं, पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और
उन का फल नहीं पकता। 15 पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले
और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।। 16 कोई दीया

बार के बरतन से नहीं छिपाता, और न खाट के नीचे रखता है, परन्तु दीवट पर
रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पांए। 17 कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो;
और न कुछ गुप्त है, जो जाना न जाए, और प्रगट न हो। 18 इसलिथे चौकस रहो,
कि तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और
जिस के पास नहीं है, उस वे वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना समझता
है।। 19 उस की माता और भाई उसके पास आए, पर भीड़ के कारण उस से भेंट न
कर सके। 20 और उस से कहा गया, कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए
तुझ से मिलना चाहते हैं। 21 उस ने उसके उत्तर में उन से कहा कि मेरी माता और
मेरे भाई थे ही है, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।। 22 फिर एक दिन
वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उस ने उन से कहा; कि आओ, फील के पार
चलें: सो उन्होंने नाव खोल दी। 23 पर जब नाव चल रही यी, तो वह सो गया:
और फील पर आन्धी आई, और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे।
24 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा; हे स्वामी! स्वामी! हम नाश
हुए जाते हैं: तब उस ने उठकर आन्धी को और पानी की लहरोंको डांटा और वे
यम गए, और चैन हो गया। 25 और उस ने उन से कहा; तुम्हारा विश्वास कहां या
पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, यह कौन है जो आन्धी
और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उस की मानते हैं।। 26 फिर वे
गिरासेनियोंके देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है। 27 जब वह
किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्क़ाएं यीं
और बहुत दिनोंसे न कपके पहिनता या और न घर में रहता या वरन कब्रोंमें रहा
करता या। 28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे

शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी
बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे! 29 क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्क़ा को उस
मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा या, इसलिथे कि वह उस पर बार बार
प्रबल होती यी; और यद्यपि लोग उसे सांकलोंऔर बेडिय़ोंसे बांधते थे, तौभी वह
बन्धनोंको तोड़ डालता या, और दुष्टात्क़ा उस में पैठ गई यी। 30 और उन्होंने
उस से बिनती की, कि हमें अयाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। 31 वहां पहाड़ पर
सूअरोंका एक बड़ा फुण्ड चर रहा या, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में
पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया। 32 वहां पहाड़ पर सूअरोंका एक बड़ा फुण्ड
चर रहा या, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें
जाने दिया। 33 तब दुष्टात्क़ाएं उस मनुष्य से निकलकर सूअरोंमें गई और वह
फुण्ड कड़ाडे पर से फपटकर फील में जा गिरा और डूब मरा। 34 चरवाहे यह जो
हुआ या देखकर भागे, और नगर में, और गांवोंमें जाकर उसका समाचार कहा।
35 और लोग यह जो हुआ या उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर
जिस मनुष्य से दुष्टात्क़ाएं निकली यीं, उसे यीशु के पांवोंके पास कपके पहिने
और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए। 36 और देखनेवालोंने उन को बताया, कि वह
दुष्टात्क़ा का सताया हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ। 37 तब
गिरासेनियोंके आस पास के सब लोगोंने यीशु से बिनती की, कि हमारे यहां से
चला जा; क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया या: सो वह नाव पर चढ़कर लौट
गया। 38 जिस मनुष्य से दुष्टात्क़ाऐं निकली यीं वह उस से बिनती करने लगा,
कि मुझे अपके साय रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा। 39 अपके घर
में लौट जा और लोगोंसे कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिथे कैसे बड़े काम किए हैं:

वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिथे कैसे बड़े काम
किए।। 40 जब यीशु लौट रहा या, तो लोग उस से आनन्द के साय मिले; क्योंकि
वे सब उस की बाट जोह रहे थे। 41 और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो
आराधनालय का सरदार या, आया, और यीशु के पांवोंपर गिर के उस से बिनती
करने लगा, कि मेरे घर चल। 42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी यी,
और वह मरने पर यी: जब वह जा रहा या, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे।। 43
और एक स्त्री ने जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग या, और जो अपक्की
सारी जिविका वैद्योंके पीछे व्यय कर चुकी यी और तौभी किसी के हाथ से चंगी न
हो सकी यी। 44 पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छूआ, और तुरन्त
उसका लोहू बहना यम गया। 45 इस पर यीशु ने कहा, मुझे किस ने छूआ जब
सब मुकरने लगे, तो पतरस और उसके सायियोंने कहा; हे स्वामी, तुझे तो भीड़
दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है। 46 परन्तु यीशु ने कहा: किसी ने मुझे
छूआ है क्योंकि मैं ने जान लिया है कि मुझ में से सामर्य निकली है। 47 जब स्त्री
ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपक्की हुई आई, और उसके पांवोंपर
गिरकर सब लोगोंके साम्हने बताया, कि मैं ने किस कारण से तुझे छूआ, और
क्योंकर तुरन्त चंगी हो गई। 48 उस ने उस से कहा, बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा
किया है, कुशल से चक्की जा। 49 वह यह कह ही रहा या, कि किसी ने
आराधनालय के सरदार के यहां से आकर कहा, तेरी बेटी मर गई: गुरु को दु:ख न
दे। 50 यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह बच
जाएगी। 51 घर में आकर उस ने पतरस औरा यूहन्ना और याकूब और लड़की के
माता-पिता को छोड़ और किसी को अपके साय भीतर आने न दिया। 52 और सब

उसके लिथे रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा; रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो
रही है। 53 वे यह जानकर, कि मर गई है, उस की हंसी करने लगे। 54 परन्तु उस
ने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लकड़ी उठ! 55 तब उसके प्राण फिर
आए और वह तुरन्त उठी; फिर उस ने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया
जाए। 56 उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु उस ने उन्हें चिताया, कि यह जो
हुआ है, किसी से न कहना।।

लूका 9

1 फिर उस ने बारहोंको बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्क़ाओं और बिमारियोंको दूर
करने की सामर्थ और अधिक्कारने दिया। 2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का
प्रचार करने, और बिमारोंको अच्छा करने के लिथे भेजा। 3 और उस ने उससे
कहा, मार्ग के लिथे कुछ न लेना: न तो लाठी, न फोली, न रोटी, न रूपके और न
दो दो कुरते। 4 और जिस किसी घर में तुम उतरो, वहीं रहो; और वहीं से विदा हो।
5 जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस नगर से निकलते हुए अपके पांवोंकी धूल
फाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो। 6 सो वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार
सुनाते, और हर कहीं लोगोंको चंगा करते हुए फिरते रहे।। 7 और देश की चौयाई
का राजा हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि कितनोंने कहा, कि यूहन्ना
मरे हुओं में से जी उठा है। 8 और कितनोंने यह, कि एलिय्याह दिखाई दिया है:
औरोंने यह, कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है। 9 परन्तु हेरोदेस ने
कहा, युहन्ना का तो मैं ने सिर कटवाया अब यह कौन है, जिस के विषय में ऐसी
बातें सुनता हूं और उस ने उसे देखने की इच्छा की।। 10 फिर प्रेरितोंने लौटकर

जो कुछ उन्होंने किया या, उस को बता दिया, और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा
नाम एक नगर को ले गया। 11 यह जानकर भीड़ उसके पीछे हो ली: और वह
आनन्द के साय उन से मिला, और उन से परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा:
और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया। 12 जब दिन ढलने लगा, तो
बारहोंने आकर उससे कहा, भीड़ को विदा कर, कि चारोंओर के गावोंऔर
बस्तियोंमें जाकर टिकें, और भोजन का उपाय करें, क्योंकि हम यहां सुनसान
जगह में हैं। 13 उस ने उन से कहा, तुम ही उन्हें खाने को दो: उन्होंने कहा, हमारे
पास पांच रोटियां और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं: परन्तु हां, यदि हम
जाकर इन सब लोगोंके लिथे भोजन मोल लें, तो हो सकता है: वे लोग तो पांच
हजार पुरूषोंके लगभग थे। 14 जब उस ने अपके चेलोंसे कहा, उन्हें पचास पचास
करके पांति में बैठा दो। 15 उन्होंने ऐसा ही किया, और सब को बैठा दिया। 16
तब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछली लीं, और स्वर्ग की और देखकर
धन्यवाद किया, और तोड़ तोड़कर चेलोंको देता गया, कि लोगोंको परोसें। 17 सो
सब खाकर तृप्त हुए, और बचे हुए टुकड़ोंसे बारह टोकरी भरकर उठाई।। 18 जब
वह एकान्त में प्रार्यना कर रहा या, और चेले उसके साय थे, तो उस ने उन से
पूछा, कि लोग मुझे क्या कहते हैं 19 उन्होंने उत्तर दिया, युहन्ना बपतिस्क़ा
देनेवाला, और कोई कोई एलिय्याह, और कोई यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से
कोई जी उठा है। 20 उस ने उन से पूछा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो पतरस ने
उत्तर दिया, परमेश्वर का मसीह। 21 तब उस ने उन्हें चिताकर कहा, कि यह किसी
से न कहना। 22 और उस ने कहा, मनुष्य के पुत्र के लिथे अवश्य है, कि वह बहुत
दुख उठाए, और पुरिनए और महाथाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार

डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे। 23 उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे
आना चाहे, तो अपके आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए
मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा,
परन्तु जो कोई मेरे लिय अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। 25 यदि मनुष्य
सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या उस की हानि उठाए, तो उसे
क्या लाभ होगा 26 जो कोई मुझ से और मेरी बातोंसे लजाएगा; मनुष्य का पुत्र
भी जब अपक्की, और अपके पिता की, और पवित्र स्वर्ग दूतोंकी, महिमा सहित
आएगा, तो उस से लजाएगा। 27 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन
में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु
का स्वाद न चखेंगे। 28 इन बातोंके कोई आठ दिन बाद वह पतरस और यूहन्ना
और याकूब को साय लेकर प्रार्यना करने के लिथे पहाड़ पर गया। 29 जब वह
प्रार्यना कर ही रहा या, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया: और उसका वस्त्र श्वेत
होकर चमकने लगा। 30 और देखो, मूसा और एलिय्याह, थे दो पुरूष उसके साय
बातें कर रहे थे। 31 थे महिमा सहित दिखाई दिए; और उसके मरने की चर्चा कर
रहे थे, जो यरूशलेम में होनवाला या। 32 पतरस और उसके सायी नींद से भरे थे,
और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उस की महिमा; और उन दो पुरूषोंको, जो
उसके साय खड़े थे, देखा। 33 जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु
से कहा; हे स्वामी, हमारा यहां रहना भला है: सो हम तीन मण्डप बनाएं, एक तेरे
लिथे, एक मूसा के लिथे, और एक एलिय्याह के लिथे। वह जानता न या, कि क्या
कह रहा है। 34 वह यह कह ही रहा या, कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया,
और जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए। 35 और उस बादल में से यह

शब्द निकला, कि यह मेरा पुत्र और मेरा चुना हुआ है, इस की सुनो। 36 यह शब्द
होते ही यीशु अकेला पाया गया: और वे चुप रहे, और कुछ देखा या, उस की कोई
बात उन दिनोंमें किसी से न कही।। 37 और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे, तो
एक बड़ी भीड़ उस से आ मिली। 38 और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्ला
कर कहा, हे गुरू, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर;
क्योंकि वह मेरा एकलौता है। 39 और देख, एक दुष्टात्क़ा उसे पकड़ता है, और
वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ता है, कि वह मुंह में फेन
भर लाता है; और उसे कुचलकर किठनाई से छोड़ता है। 40 और मै ने तेरे चेलोंसे
बिनती की, कि उसे निकालें; परन्तु वे न निकाल सके। 41 यीशु न उत्तर दिया, हे
अविश्वासी और हिठले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साय रहूंगा, और तुम्हारी सहूंगा
अपके पुत्र को यहां ले आ। 42 वह आ ही रहा या कि दुष्टात्क़ा ने उसे पटककर
मरोड़ा, परन्तु यीशु ने अशुद्ध आत्क़ा को डांटा और लकड़े को अच्छा करके उसके
पिता को सौंप दिया। 43 तब सब लोग परमेश्वर के महासामर्य से चकित हुए।।
44 परन्तु जब सब लोग उन सब कामोंसे जो वह करता या, अचम्भा कर रहे थे,
तो उस ने अपके चेलोंसे कहा; थे बातें तुम्हारे कानोंमें पड़ी रहें, क्योंकि मनुष्य का
पुत्र मनुष्योंके हाथ में पकड़वाया जाने को है। 45 परन्तु वे इस बात को न
समझते थे, और यह उन से छिपी रही; कि वे उसे जानने न पाएं, और वे इस बात
के विषय में उस से पूछने से डरते थे।। 46 फिर उन में यह विवाद होने लगा, कि
हम में से बड़ा कौन है 47 पर यीशु ने उन के मन का विचार जान लिया : और एक
बालक को लेकर अपके पास खड़ा किया। 48 और उन से कहा; जो कोई मेरे नाम
से इस बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को

ग्रहण करता है क्योंकि जो तुम में सब से छोटे से छोटा है, वही बड़ा है। 49 तब
युहन्ना ने कहा, हे स्वामी, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्क़ाओं को
निकालते देखा, और हम ने उसे मना किया, कयोंकि वह हमारे साय होकर तेरे
पीछे नहीं हो लेता। 50 यीशु ने उस से कहा, उसे मना मत करो; क्योंकि जो
तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।। 51 जब उसके ऊपर उठाए जाने के
दिन पूरे होने पर थे, जो उस ने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया। 52 और
उस ने अपके आगे दूत भेजे: वे सामरियोंके एक गांव में गए, कि उसके लिथे
जगह तैयार करें। 53 परन्तु उन लोगोंने उसे उतरने न दिया, क्योंकि वह
यरूशलेम को जा रहा या। 54 यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा;
हे प्रभु; क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें
भस्क़ कर दे। 55 परन्तु उस ने फिरकर उन्हें डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि
तुम कैसी आत्क़ा के हो। 56 क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगोंके प्राणोंको नाश करने
नहीं बरन बचाने के लिथे आया है: और वे किसी और गांव में चले गए।। 57 जब
वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी न उस से कहा, जहां जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे
हो लूंगा। 58 यीशु ने उस से कहा, लोमडिय़ोंके भट और आकाश के पझियोंके
बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं। 59 उस ने दूसरे
से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपके पिता
को गाड़ दूं। 60 उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपके मुरदे गाड़ने दे, पर तू
जाकर परमेश्वर के राज्य की कया सुना। 61 एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे
पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपके घर के लोगोंसे विदा हो आऊं। 62
यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हर पर रखकर पीछे देखता है, वह

परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।।

लूका 10

1 और इन बातोंके बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस
नगर और जगह को वह आप जाने पर या, वहां उन्हें दो दो करके अपके आगे
भेजा। 2 और उस ने उन से कहा; पके खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर योड़े हैं:
इसलिथे खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपके खेत काटने को मजदूर
भेज दे। 3 जाओ; देखोंमैं तुम्हें भेड़ोंकी नाईं भेडियोंके बीच में भेजता हूं। 4
इसलिथे न बटुआ, न फोली, न जूते लो; और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।
5 जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो, कि इस घर पर कल्याण हो। 6 यदि वहां
कोई कल्याण के योग्य होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो
तुम्हारे पास लौट आएगा। 7 उसी घर में रहो, और जो कुछ उन से मिले, वही
खाओ पीओ, क्योंकि मजदूर को अपक्की मजदूरी मिलनी चाहिए: घर घर न
फिरना। 8 और जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें उतारें, तो तो कुछ
तुम्हारे साम्हने रखा जाए वही खाओ। 9 वहां के बीमारोंको चंगा करो: और उन से
कहो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। 10 परन्तु जिस नगर में
जाओ, और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसके बाजारोंमें जाकर कहो। 11
कि तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पांवोंमें लगी है, हम तुम्हारे साम्हने फाड़
देते हैं, तौभी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। 12
मैं तुम से कहता हूं, कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा सहने
योग्य होगी। 13 हाथ खुराजीन ! हाथ बैतसैदा ! जो सामर्य के काम तुम में किए

गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे
कब के मन फिराते। 14 परन्तु न्याय के दिन तुम्हरी दशा से सूर और सैदा की
दशा सहने योग्य होगी। 15 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया
जाएगा तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा। 16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी
सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे
तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है। 17 वे सत्तर आनन्द से
फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्क़ा भी हमारे वश में है। 18 उस
ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा या। 19
देखो, मैने तुम्हे सांपोंऔर बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्य पर
अधिक्कारने दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। 20 तौभी इस
से आनन्दित मत हो, कि आत्क़ा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो
कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।। 21 उसी घड़ी वह पवित्र आत्क़ा में होकर
आनन्द से भर गया, और कहा; हे पिता, स्वर्ग और पृय्वी के प्रभु, मैं तेरा
धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातोंको ज्ञानियोंऔर समझदारोंसे छिपा रखा,
और बालकोंपर प्रगट किया: हां, हे पित, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। 22 मेरे
पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल
पिता और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र के और वह जिस पर
पुत्र उसे प्रकट करना चाहे। 23 और चेलोंकी ओर फिरकर निराले में कहा, धन्य हैं
वे आंखे, जो थे बाते जो तुम देखते हो देखती हैं। 24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं,
कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने चाहा, कि जो बातें तुम देखते हो देखें;
पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनीं।। 25 और देखो, एक

व्यवस्यापक उठा; और यह कहकर, उस की पक्कीझा करने लगा; कि हे गुरू,
अनन्त जीवन का वारिस होने के लिथे मैं क्या करूं 26 उस ने उस से कहा; कि
व्यवस्या में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है 27 उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपके
परमेश्वर से अपके सारे मन और अपके सारे प्राण और अपक्की सारी शक्ति और
अपक्की सारी बुद्धि के साय प्रेम रख; और अपके पड़ोसी से अपके समान प्रेम
रख। 28 उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है, यही कर: तो तू जीवित
रहेगा। 29 परन्तु उस ने अपक्की तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो
मेरा पड़ोसी कौन है 30 यीशु ने उत्तर दिया; कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को
जा रहा या, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपके उतार लिए, और मारपीटकर उसे
अधमूआ छोड़कर चले गए। 31 और ऐसा हुआ; कि उसी मार्ग से एक याजक जा
रहा या: परन्तु उसे देख के कतराकर चला गया। 32 इसी रीति से एक लेवी उस
जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतराकर चला गया। 33 परन्तु एक सामरी
यात्री वहां आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया। 34 और उसके पास आकर
और उसके घावोंपर तेल और दाखरस डालकर पट्टियां बान्धी, और अपक्की
सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उस की सेवा टहल की। 35 दूसरे दिन
उस ने दो दिनार निकालकर भटियारे को दिए, और कहा; इस की सेवा टहल
करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा। 36 अब
मेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया या, इन तीनोंमें से उसका पड़ोसी कौन
ठहरा 37 उस ने कहा, वही जिस ने उस पर तरस खाया: यीशु ने उस से कहा, जा,
तू भी ऐसा ही कर।। 38 फिर जब वे जा रहे थे, तो वह ऐ गांव में गया, और मार्या
नाम एक स्त्री ने उसे अपके घर में उतारा। 39 और मरियम नाम उस की एक

बहिन थी; वह प्रभु के पांवोंके पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। 40 पर मार्था
सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे
कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिथे अकेली ही छोड़ दिया
है सो उस से कह, कि मेरी सहाथता करे। 41 प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे
मार्था; तू बहुत बातोंके लिथे चिन्ता करती और घबराती है। 42 परन्तु एक बात
अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न
जाएगा।।

लूका 11

1 फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था: और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो
उसके चेलोंमें से एक ने उस से कहा; हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपके चेलोंको प्रार्थना
करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे। 2 उस ने उन से कहा; जब तुम
प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। 3
हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। 4 और हमारे पापोंको झमा कर,
क्योंकि हम भी अपके हर एक अपराधी को झमा करते हैं, और हमें पक्कीझा में
न ला।। 5 और उस ने उन से कहा, तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और
वह आधी रात को उसके पास आकर उस से कहे, कि हे मित्र; मुझे तीन रोटियां दे।
6 क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे रखने के लिथे मेरे
पास कुछ नहीं है। 7 और वह भीतर से उत्तर दे, कि मुझे दुख न दे; अब तो द्वार
बन्द है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिथे मैं उठकर तुझे दे नहीं
सकता 8 मैं तुम से कहता हूं, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी

उसके लज्ज़ा छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी
उठकर देगा। 9 और मैं तुम से कहता हूं; कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ोंतो
तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिथे खोला जाएगा। 10 क्योंकि जो कोई
मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है,
उसके लिथे खोला जाएगा। 11 तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका
पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे: या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे
12 या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे 13 सो जब तुम बुरे होकर अपके
लड़केबालोंको अच्छी वस्तुऐ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपके
मांगनेवालोंको पवित्र आत्क़ा क्योंन देगा।। 14 फिर उस ने एक गूंगी दुष्टात्क़ा
को निकाला: जब दुष्टात्क़ा निकल गई, तो गूंगा बोलने लगा; और लोगोंने
अचम्भा किया। 15 परन्तु उन में से कितनोंने कहा, यह तो शैतान नाम
दुष्टात्क़ाओं के प्रधान की सहाथता से दुष्टात्क़ाओं को निकालता है। 16 औरोंने
उस की पक्कीझा करने के लिथे उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा। 17 परन्तु
उस ने, उन के मन की बातें जानकर, उन से कहा; जिस जिस राज्य में फूट होती
है, वह राज्य उजड़ जाता है: और जिस घर में फूट होती है, वह नाश हो जाता है।
18 और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य क्योंकर बना
रहेगा क्योंकि तुम मेरे विषय में तो कहते हो, कि यह शैतान की सहाथता से
दुष्टात्क़ा निकालता है। 19 भला यदि मैं शैतान की सहाथता से दुष्टात्क़ाओं को
निकालता हूं, तो तुम्हारी सन्तान किस की सहाथता से निकालते हैं इसलिथे वे ही
तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। 20 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ से दुष्टात्क़ाओं
को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा। 21 जब बलवन्त

मनुष्य हिययार बान्धे हुए अपके घर की रखवाली करता है, तो उस की संपत्ति
बची रहती है। 22 पर जब उस से बढ़कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे
जीत लेता है, तो उसके वे हिययार जिन पर उसका भरोसा या, छीन लेता है और
उस की संपत्ति लूटकर बांट देता है। 23 जो मेरे साय नहीं बटोरता वह बियराता
है। 24 जब अशुद्ध आत्क़ा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहोंमें विश्रम
ढूंढ़ती फिरती है; और जब नहीं पाती तो कहती है; कि मैं अपके उसी घर में जहां
से निकली यी लौट जाऊंगी। 25 औश्र् आकर उसे फाड़ा-बुहारा और सजाढाया
पाती है। 26 तब वह आकर अपके से और बुरी सात आत्क़ाओं को अपके साय ले
आती है, और वे उस में पैठकर वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा
पहिले से भी बुरी हो जाती है।। 27 जब वह थे बातें कह ही रहा या तो भीड़ में से
किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा, धन्य वह गर्भ जिस में तू रहा; और वे स्तन, जो तू
ने चूसे। 28 उस ने कहा, हां; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और
मानते हैं।। 29 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती यी तो वह कहने लगा; कि इस
युग के लोग बुरे हैं; वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं; पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह
उन्हें न दिया जाएगा। 30 जैसा यूनुस नीनवे के लोगोंके लिथे चिन्ह ठहरा, वैसा
ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगोंके लिथे ठहरेगा। 31 दक्खिन की रानी
न्याय के दिन इस समय के मनुष्योंके साय उठकर, उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि
वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृय्वी की छोर से आई, और देखो यहां वह है जो
सुलैमान से भी बड़ा है। 32 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगोंके
साय खड़े होकर, उन्हें दोषी ठहराएंगे; क्योंकि उन्होंने यूनुस का प्रचार सुनकर
मन फिराया और देखो, यहां वह है, जो यूनुस से भी बड़ा है।। 33 कोई मनुष्य

दीया बार के तलघरे में, या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है
कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएं। 34 तेरे शरीर का दीया तेरी आंख है, इसलिथे
जब तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब वह बुरी
है, तो तेरा शरीर भी अन्धेरा है। 35 इसलिथे चौकस रहना, कि जो उजियाला तुझ
में है वह अन्धेरा न हो जाए। 36 इसलिथे यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, ओर
उसका कोई भाग अन्धेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उलियाला होगा, जैसा उस
समय होता है, जब दीया अपक्की चमक से तुझे उजाला देता है।। 37 जब वह
बातें कर रहा या, तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे यहां भेजन कर;
और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। 38 फरीसी ने यह देखकर अचम्भा
दिया कि उस ने भोजन करने से पहिले स्नान नहीं किया। 39 प्रभु ने उस से कहा,
हे फरीसियों, तुम कटोरे और याली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो, परन्तु तुम्हारे
भीतर अन्धेर और दुष्टता भरी है। 40 हे निर्बुद्धियों, जिस ने बाहर का भाग
बनाया, क्या उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया 41 परन्तु हां, भीतरवाली
वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिथे शुद्ध हो जाएगा।। 42 पर
हे फरीसियों, तुम पर हाथ ! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के
साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल
देते हो: चाहिए तो या कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। 43 हे
फरीसियों, तुम पर हाथ ! तुम आराधनालयोंमें मुख्य मुख्य आसन और बाजारोंमें
नमस्कार चाहते हो। 44 हाथ तुम पर ! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रोंके समान हो,
जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते।। 45 तब एक व्यवस्यापक ने उस को
उत्तर दिया, कि हे गुरू, इन बातोंके कहने से तू हमारी निन्दा करता है। 46 उस ने

कहा; हे व्यवस्यापकों, तुम पर भी हाथ ! तुम ऐसे बोफ जिन को उठाना किठन है,
मनुष्योंपर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोफोंको अपक्की एक उंगली से भी
नहीं छूते। 47 हाथ तुम पर ! तुम उन भविष्यद्वक्तओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें
तुम्हारे बाप-दादोंने मार डाला या। 48 सो तुम गवाह हो, और अपके बाप-दादोंके
कामोंमें सम्मत हो; क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कब्रें
बनाते हो। 49 इसलिथे परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उन के पास
भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितोंको भेजूंगी: और वे उन में से कितनोंको मार डालेंगे,
और कितनोंको सताएंगे। 50 ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की
उत्पत्ति से बहाथा गया है, सब का लेखा, इस युग के लोगोंसे लिया जाए। 51
हाबील की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक जो वेदी और मन्दिर के बीच
में घात किया गया: मैं तुम से सच कहता हूं; उसका लेखा इसी समय के लोगोंसे
लिया जाएगा। 52 हाथ तुम व्यवस्यापकोंपर ! कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो
ली, परन्तु तुम ने आपक्की प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालोंको भी रोक
दिया। 53 जब वह वहां से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और
छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातोंकी चर्चा करे। 54 और उस की घात में लगे रहे,
कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें।।

लूका 12

1 इतने में जब हजारोंकी भीड़ लग गई, यहां तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे,
तो वह सब से पहिले अपके चेलोंसे कहने लगा, कि फरीसियोंके कपटरूपी खमीर
से चौकस रहना। 2 कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो

जाना न जाएगा। 3 इसलिथे जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा है, वह उजाले में सुना
जाएगा: और जो तुम ने कोठरियोंमें कानोंकान कहा है, वह कोठोंपर प्रचार किया
जाएगा। 4 परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते
हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते उन से मत डरो। 5 मैं तुम्हें
चिताता हूं कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, घात करते के बाद जिस को नरक में
डालने का अधिक्कारने है, उसी से डरो : बरन मैं तुम से कहता हूं उसी से डरो। 6
क्या दो पैसे की पांच गौरैयां नहीं बिकती तौभी परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं
भूलता। 7 बरन तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, सो डरो नहीं, तुम बहुत
गौरैयोंसे बढ़कर हो। 8 मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्योंके साम्हने मुझे मान
लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतोंके सामहने मान लेगा। 9
परन्तु जो मनुष्योंके साम्हने मुझे इन्कार करे उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतोंके
साम्हने इन्कार किया जाएगा। 10 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात
कहे, उसका वह अपराध झमा किया जाएगा। 11 जब लोग तुम्हें सभाओं और
हाकिमोंऔर अधिक्कारनेियोंके साम्हने ले जाएं, तो चिन्ता न करना कि हम
किस रीति से या क्या उत्तर दें, या क्या कहें। 12 क्योंकि पवित्र आत्क़ा उसी घड़ी
तुम्हें सिखा देगा, कि क्या कहना चाहिए।। 13 फिर भीड़ में से एक ने उस से कहा,
हे गुरू, मेरे भाई से कह, कि पिता की संपत्ति मुझे बांट दे। 14 उस ने उस से कहा;
हे मनुष्य, किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या बांटनेवाला नियुक्त किया है 15 और
उस ने उन से कहा, चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपके आप को बचाए
रखो: क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता। 16 उस
ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। 17

तब वह अपके मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह
नहीं, जहां अपक्की उपज इत्यादि रखूं। 18 और उस ने कहा; मैं यह करूंगा: मैं
अपक्की बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा; 19 और वहां अपना सब अन्न
और संपत्ति रखूंगा: और अपके प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षोंके
लिथे बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। 20 परन्तु परमेश्वर ने
उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तू
ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा 21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपके
लिथे धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।। 22 फिर उस ने
अपके चेलोंसे कहा; इसलिथे मैं तुम से कहता हूं, अपके प्राण की चिन्ता न करो,
कि हम क्या खाएंगे; न अपके शरीर की कि क्या पहिनेंगे। 23 क्योंकि भोजन से
प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है। 24 कौवोंपर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते;
न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा
मूल्य पझियोंसे कहीं अधिक है। 25 तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से
अपक्की अवस्या में ऐक घड़ी भी बड़ा सकता है 26 इसलिथे यदि तुम सब से
छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातोंके लिथे क्योंचिन्ता करते हो 27
सोसनोंके पेड़ोंपर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न कातते हैं:
तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपके सारे विभव में, उन में से किसी
एक के समान वस्त्र पहिने हुए न या। 28 इसलिथे यदि परमेश्वर मैदान की घास
को जो आज है, और कर भाड़ में फोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प
विश्वासियों, वह तुम्हें क्योंन पहिनाएगा 29 और तुम इस बात की खोज में न रहो,
कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो। 30 क्योंकि संसार की

जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि
तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। 31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो,
तो थे वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी। 32 हे छोटे फुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे
पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे। 33 अपक्की संपत्ति बेचकर दान कर दो;
और अपके लिथे ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्यात स्वर्ग पर ऐसा धन
इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं
बिगाड़ता। 34 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।। 35
तुम्हारी कमरें बन्धी रहें, और तुम्हारे दीथे जलते रहें। 36 और तुम उन मनुष्योंके
समान बनो, जो अपके स्वामी की बाट देख रहे हों, कि वह ब्याह से कब लौटेगा;
कि जब वह आकर द्वार खटखटाए, ातें तुरन्त उसके खोल दें। 37 धन्य हैं वे
दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह कमर
बान्ध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उन की सेवा करेगा।
38 यदि वह रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर में आकर उन्हें जागते पाए, तो वे
दास धन्य हैं। 39 परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि
चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता, और अपके घर में सेंध लगने न देता।
40 तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का
पुत्र आ जावेगा। 41 तब पतरस ने कहा, हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या
सब से कहता है। 42 प्रभु ने कहा; वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन
है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरोंपर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा
दे। 43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। 44 मैं
तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपक्की सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। 45

परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और
दासोंऔर दासिक्कों मारने पीटने और खाने पीने और पिय?ड़ होने लगे। 46 तो
उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जाहता न रहे, और ऐसी घड़ी
जिसे वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग
अविश्वासियोंके साय ठहराएगा। 47 और वह दास जो अपके स्वामी की इच्छा
जानता या, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला बहुत मार
खाएगा। 48 परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह योड़ी मार
खाएगा, इसलिथे जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे
बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगें।। 49 मैं पृय्वी पर आग लगाने आया हूं;
और क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती ! 50 मुझे तो एक बपतिस्क़ा
लेता है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा 51 क्या तुम
समझते हो कि मैं पृय्वी पर मिलाप कराने आया हूं मैं कहता हूं; नहीं, बरन अलग
कराने आया हूं। 52 क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे,
तीन दो से दो तीन से। 53 पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; मां बेटी
से, और बेटी मां से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी।। 54 और उस ने
भीड़ से भी कहा, जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो, तो तुरन्त कहते हो,
कि वर्षा होगी; और ऐसा ही होता है। 55 और जब दक्खिना चलती दखते हो तो
कहते हो, कि लूह चलेगी, और ऐसा ही होता है। 56 हे कपटियों, तुम धरती और
आकाश के रूप में भेद कर सकते हो, परन्तु इस युग के विषय में क्योंभेद करना
नहीं जानते 57 और तुम आप ही निर्णय क्योंनहीं कर लेते, कि उचित क्या है 58
जब तू अपके मुद्दई के साय हाकिम के पास जा रहा है, तो मार्ग ही में उस से छूटने

का यत्न कर ले ऐसा न हो, कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाए, और न्यायी
तुझे प्यादे को सौंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृह में डाल दे। 59 मैं तुम से कहता हूं,
कि जब तक तू दमड़ी दमड़ी भर न देगा तब तक वहां से छूटने न पाएगा।।

लूका 13

1 उस समय कुछ लोग आ पहुंचे, और उस से उन गलीलियोंकी चर्चा करने लगे,
जिन का लोहू पीलातुस ने उन ही के बलिदानोंके साय मिलाया या। 2 यह सुन उस
ने उन से उत्तर में यह कहा, क्या तुम समझते हो, कि थे गलीली, और सब
गलीलियोंसे पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी 3 मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं;
परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। 4 या
क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा, और
वे दब कर मर गए: यरूशलेम के और सब रहनेवालोंसे अधिक अपराधी थे 5 मैं
तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम भी सब इसी
रीति से नाश होगे। 6 फिर उस ने यह दृष्टान्त भी कहा, कि किसी की अंगूर की
बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ या: वह उस में फल ढूंढ़ने आया, परन्तु न
पाया। 7 तब उस ने बारी के रखवाले से कहा, देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के
पेड़ में फल ढूंढ़ने आता हूं, परन्तु नहीं पाता, इसे काट डाल कि यह भूमि को भी
क्योंरोके रहे। 8 उस ने उस को उत्तर दिया, कि हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो और
रहने दे; कि मैं इस के चारो ओर खोदकर खाद डालूं। 9 सो आगे को फले तो भला,
नहीं तो उसे काट डालना। 10 सब्त के दिन वह एक आराधनालय में उपकेश कर
रहा या।। 11 और देखो, एक स्त्री यी, जिसे अठारह वर्ष से एक र्दुबल करनेवाली

दुष्टात्क़ा लगी यी, और वह कुबड़ी हो गई यी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो
सकती यी। 12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा हे नारी, तू अपक्की
र्दुबलता से छूट गई। 13 तब उस ने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो
गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। 14 इसलिथे कि यीशु ने सब्त के दिन
उसे अच्छा किया या, आराधनालय का सरदार िरिसयाकर लोगोंसे कहने लगा,
छ: दिन हैं, जिन में काम करना चाहिए, सो उन ही दिनोंमें आकर चंगे होओ;
परन्तु सब्त के दिन में नहीं। 15 यह सुन कर प्रभु ने उत्तर देकर कहा; हे कपटियों,
क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपके बैल या गदहे को यान से खोलकर
पानी पिलाने नहीं ले जाता 16 और क्या उचित न या, कि यह स्त्री जो इब्राहीम की
बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा या, सब्त के दिन इस बन्धन से
छुड़ाई जाती 17 जब उस ने थे बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्ज़ित हो गए,
और सारी भीड़ उन महिमा के कामोंसे जो वह करता या, आनन्दित हुई।। 18
फिर उस ने कहा, परमेश्वर का राज्य किस के समान है और मैं उस की उपमा
किस से दूं 19 वह राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर
अपक्की बारी में बोया: और वह बढ़कर पेड़ हो गया; और आकाश के पझियोंने
उस की डालियोंपर बसेरा किया। 20 उस ने फिर कहा; मैं परमेश्वर के राज्य कि
उपमा किस से दूं 21 वह खमीर के समान है, जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन
पकेरी आटे में मिलाया, और होते होते सब आटा खमीर हो गया।। 22 वह नगर
नगर, और गांव गांव होकर उपकेश करता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा या।
23 और किसी ने उस से पूछा; हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले योड़े हैं 24 उस ने उन
से कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि

बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। 25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार
बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु,
हमारे लिथे खोल दे, और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो 26
तब तुम कहने लगोगे, कि हम ने तेरे साम्हने खाया पीया और तू ने हमारे
बजारोंमें उपकेश किया। 27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूं, मैं नहीं
जानता तुम कहां के हो, हे कुकर्म करनेवालो, तुम सब मुझ से दुर हो। 28 वहां
रोना और दांत पीसना होगा: जब तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब
भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपके आप को बाहर निकाले
हुए देखोगे। 29 और पूर्व और पच्छिम; उत्तर और दक्खिन से लोग आकर
परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। 30 और देखो, कितने पिछले हैं वे प्रयम
होंगे, और कितने जो प्रयम हैं, वे पिछले होंगे।। 31 उसी घड़ी कितने फरीसियो ने
आकर उस से कहा, यहां से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना
चाहता है। 32 उस ने उन से कहा; जाकर उस लोमड़ी से कह दो, कि देख मैं आज
और कल दुष्टात्क़ाओं को निकालता और बिमारोंको चंगा करता हूं और तीसरे
दिन पूरा करूंगा। 33 तौभी मुझे आज और कल और परसोंचलना अवश्य है,
क्योंकि हो नही सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर मारा जाए। 34 हे
यरूशलेम ! हे यरूशलेम ! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है, और जो तेरे
पास भेजे गए उन्हें पत्यरवाह करती है; कितनी बार मैं ने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी
अपके बच्चोंको अपके पंखो के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकोंको
इकट्ठे करूं, पर तुम ने यह न चाहा। 35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिथे उजाड़
छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूं; जब तक तुम ने कहोगे, कि धन्य है वह,

जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।।

लूका 14

1 फिर वह सब्त के दिन फरीसियोंके सरदारोंमें से किसी के घर में रोटी खाने
गया: और वे उस की घात में थे। 2 और देखो, एक मनुष्य उसके साम्हने या,
जिसे जलन्धर का रोग या। 3 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकोंऔर फरीसिक्कों
कहा; क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं परन्तु वे चुपचाप रहे। 4
तब उस ने उसे हाथ लगा कर चंगा किया, और जाने दिया। 5 और उन से कहा;
कि तुम में से ऐसा कौन है, जिस का गदहा या बैल कुएं में गिर जाए और वह
सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले 6 वे इन बातोंका कुछ उत्तर न दे
सके।। 7 जब उस ने देखा, कि नेवताहारी लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन
लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन से कहा। 8 जब कोई तुझे ब्याह में बुलाए, तो
मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि उस ने तुझ से भी किसी बड़े को
नेवता दिया हो। 9 और जिस ने तुझे और उसे दोनोंको नेवता दिया है: आकर तुझ
से कहे, कि इस को जगह दे, और तब तुझे लज्ज़ित होकर सब से नीची जगह में
बैठना पके। 10 पर जब तू बुलाया जाए, तो सब से नीची जगह जा बैठ, कि जब
वह, जिस ने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे कि हे मित्र, आगे बढ़कर
बैठ; तब तेरे साय बैठनेवालोंके साम्हने तेरी बड़ाई होगी। 11 और जो कोई अपके
आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपके आप को
छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।। 12 तब उस ने अपके नेवता देनेवाले से
भी कहा, जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपके मित्रोंया भाइयोंया

कुटुम्बियोंया धनवान पड़ोसिक्कों न बुला, कहीं ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता
दें, और तेरा बदला हो जाए। 13 परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों,
लंगड़ोंऔर अन्धोंको बुला। 14 तब तू धन्य होगा, क्योंकि उन के पास तुझे बदला
देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धमिर्योंके जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा।
15 उसके साय भोजन करनेवालोंमें से एक ने थे बातें सुनकर उस से कहा, धन्य है
वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा। 16 उस ने उस से कहा; किसी
मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतोंको बुलाया। 17 जब भोजन तैयार हो गया,
तो उस ने अपके दास के हाथ नेवतहारियोंको कहला भेजा, कि आओ; अब भोजन
तैयार है। 18 पर वे सब के सब झमा मांगने लगे, पहिले ने उस से कहा, मैं ने खेत
मोल लिया है; और अवश्य है कि उसे देखूं: मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे झमा
करा दे। 19 दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं: और उन्हें परखने
जाता हूं : मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे झमा करा दे। 20 एक और ने कहा; मै
ने ब्याह किया है, इसलिथे मैं नहीं आ सकता। 21 उस दास ने आकर अपके
स्वामी को थे बातें कह सुनाईं, तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपके दास से
कहा, नगर के बाजारोंऔर गलियोंमें तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ोंऔर
अन्धोंको यहां ले आओ। 22 दास ने फिर कहा; हे स्वामी, जैसे तू ने कहा या, वैसे
ही किया गया है; फिर भी जगह है। 23 स्वामी ने दास से कहा, सड़कोंपर और
बाड़ोंकी ओर जाकर लोगोंको बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए। 24
क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार को न
चखेगा। 25 और जब बड़ी भीड़ उसके साय जा रही यी, तो उस ने पीछे फिरकर
उन से कहा। 26 यदि कोई मेरे पास आए, और अपके पिता और माता और पत्नी

और लड़केबालोंऔर भाइयोंऔर बहिनोंबरन अपके प्राण को भी अप्रिय न जाने,
तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। 27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे
पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। 28 तुम में से कौन है कि गढ़
बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे
पास है कि नहीं 29 कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो
सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठोंमें उड़ाने लगें। 30 कि यह मनुष्य बनाने तो
लगा, पर तैयार न कर सका 31 या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने
जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर उसका
साम्हना कर सकता हूं, कि नहीं 32 नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतोंको
भेजकर मिलाप करना चाहेगा। 33 इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब
कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। 34 नमक तो अच्छा है, परन्तु
यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा।
35 वह न तो भूमि के और न खाद के लिथे काम में आता है: उसे तो लोग बाहर
फेंक देते हैं: जिस के सुनने के कान होंवह सुन ले।।

लूका 15

1 सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उस की सुनें। 2
और फरीसी और शास्त्री कुडकुडाकर कहने लगे, कि यह तो पापियोंसे मिलता है
और उन के साय खाता भी है।। 3 तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा। 4 तुम में
से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को
जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे 5 और

जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है। 6 और घर
में आकर मित्रोंऔर पड़ोसिक्कों इकट्ठे करके कहता है, मेरे साय आनन्द करो,
क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। 7 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से
एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा,
जितना कि निन्नानवे ऐसे धमिर्योंके विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की
आवश्यकता नहीं।। 8 या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के पास दस सिक्के हों, और
उन में से एक खो जाए; तो वह दीया बारकर और घर फाड़ बुहारकर जब तक
मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे 9 और जब मिल जाता है, तो वह अपके
सखियोंऔर पड़ोसिनियोंको इकट्ठी करके कहती है, कि मेरे साय आनन्द करो,
क्योंकि मेरा खोया हुआ सि?ा मिल गया है। 10 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी
रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतोंके साम्हने
आनन्द होता है।। 11 फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। 12 उन में से
छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे
दीजिए। उस ने उन को अपक्की संपत्ति बांट दी। 13 और बहुत दिन न बीते थे कि
छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में
अपक्की संपत्ति उड़ा दी। 14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा
अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। 15 और वह उस देश के निवासियोंमें से
एक के यहंा जो पड़ा : उस ने उसे अपके खेतोंमें सूअर चराने के लिथे भेजा। 16
और वह चाहता या, कि उन फिलयोंसे जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और
उसे कोई कुछ नहीं देता या। 17 जब वह अपके आपे में आया, तब कहने लगा,
कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरोंको भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं

यहां भूखा मर रहां हूं। 18 मैं अब उठकर अपके पिता के पास जाऊंगा और उस से
कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्‍टि में पाप किया है। 19
अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपके एक मजदूर की नाईं
रख ले। 20 तब वह उठकर, अपके पिता के पास चला: वह अभी दूर ही या, कि
उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत
चूमा। 21 पुत्र न उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्‍टि में
पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं। 22 परन्तु
पिता ने अपके दासोंसे कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ,
और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवोंमें जूतियां पहिनाओ। 23 और पला हुआ
बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें। 24 क्योंकि मेरा यह पुत्र
मर गया या, फिर जी गया है : खो गय या, अब मिल गया है: और वे आनन्द
करने लगे। 25 परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में या : और जब वह आते हुए घर के
निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना। 26 और उस ने
एक दास को बुलाकर पूछा; यह क्या हो रहा है 27 उस ने उस से कहा, तेरा भाई
आया है; और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिथे कि उसे भला
चंगा पाया है। 28 यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा :
परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। 29 उस ने पिता को उत्तर
दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं
टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपके
मित्रोंके साय आनन्द करता। 30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति
वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिथे तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया। 31

उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साय है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही
है। 32 परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई
मर गया या फिर जी गया है; खो गया या, अब मिल गया है।।

लूका 16

1 फिर उस ने चेलोंसे भी कहा; किसी धनवान का एक भण्डारी या, और लोगोंने
उसके साम्हने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति उड़ाए देता है। 2
सो उस ने उसे बुलाकर कहा, यह क्या है जो मै तेरे विषय में सुन रहा हूं अपके
भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता। 3 तब
भण्डारी सोचने लगा, कि अब मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का
काम मुझ से छीन ले रहा है: मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती: और भीख
मांगने से मुझे लज्ज़ा आती है। 4 मैं समण गया, कि क्या करूंगा: ताकि जब मैं
भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपके घरोंमें ले लें। 5 और उस ने
अपके स्वामी के देनदारो में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा, कि तुझ पर
मेरे स्वामी का क्या आता है 6 उस ने कहा, सौ मन तेल; तब उस ने उस से कहा,
कि अपक्की खाता-बही ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे। 7 फिर दूसरे से
पूछा; तुझ पर क्या आता है उस ने कहा, सौ मन गेहूं; तब उस ने उस से कहा;
अपक्की खाता-बही लेकर अस्सी लिख दे। 8 स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को
सराहा, कि उस ने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस संसार के लोग अपके
समय के लोगोंकी रीति व्यवहारोंमें ज्योति के लोगोंसे अधिक चतुर हैं। 9 और मैं
तुम से कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपके लिथे मित्र बना लो; ताकि जब वह

जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासोंमें ले लें। 10 जो योड़े से योड़े में सच्चा है,
वह बहुत में भी सच्चा है: और जो योड़े से योड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी
अधर्मी है। 11 इसलिथे जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें
कौन सौंपेगा। 12 और यदि तुम पराथे धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है,
उसे तुम्हें कौन देगा 13 कोई दास दो स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि
वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिल रहेगा और दूसरे को
तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनोंकी सेवा नहीं कर सकते।। 14 फरीसी
जो लोभी थे, थे सब बातें सुनकर उसे ठट्ठोंमें उड़ाने लगे। 15 उस ने उन से कहा;
तुम तो मनुष्योंके साम्हने अपके आप को धर्मी ठहराते हो: परन्तु परमेश्वर
तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्योंकी दृष्टि में महान है, वह
परमेश्वर के निकट घृणित है। 16 व्यवस्या और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे,
उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई
उस में प्रबलता से प्रवेश करता है। 17 आकाश और पृय्वी का टल जाना व्यवस्या
के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। 18 जो कोई अपक्की पत्नी को त्यागकर
दूसरी से ब्याह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई
स्त्री से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है। 19 एक धनवान मनुष्य या जो
बैंजनी कपके और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख-विलास और धूम-धाम
के साय रहता या। 20 और लाजर नाम का एक कंगाल घावोंसे भरा हुआ उस की
डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता या। 21 और वह चाहता या, कि धनवान की मेज पर
की जूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावोंको चाटते थे। 22
और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतोंने उसे लेकर इब्राहीम की

गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। 23 और अधोलोक में
उस ने पीड़ा में पके हुए अपक्की आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में
लाजर को देखा। 24 और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दय
करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपक्की उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर
मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। 25 परन्तु इब्राहीम
ने कहा; हे पुत्र स्क़रण कर, कि तू अपके जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और
वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प
रहा है। 26 और इन सब बातोंको छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा
ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें,
और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। 27 उस ने कहा; तो हे पिता मैं
तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। 28 क्योंकि मेरे पांच
भाई हैं, वह उन के साम्हने इन बातोंकी गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा
की जगह में आएं। 29 इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। 30 उस ने कहा; नहीं, हे पिता
इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। 31
उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि
मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे।।

लूका 17

1 फिर उस ने अपके चेलोंसे कहा; हो नहीं सकता कि ठोकरें न लगें, परन्तु हाथ,
उस मनुष्य पर जिस के कारण वे आती है! 2 जो इन छोटोंमें से किसी एक को

ठोकर खिलाता है, उसके लिथे यह भला होता, कि चक्की का पाट उसके गले में
लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता। 3 सचेत रहो; यदि तेरा भाई
अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे झमा कर। 4 यदि दिन भर
में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातोंबार तेरे पास फिर आकर कहे, कि मैं
पछताता हूं, तो उसे झमा कर।। 5 तब प्रेरितोंने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढ़ा।
6 प्रभु ने कहा; कि यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम
इस तूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी
मान लेता। 7 पर तुम में से ऐसा कौन है, जिस का दास हल जोतता, या भेंड़ें
चराता हो, और जब वह खेत से आए, तो उस से कहे तुरन्त आकर भोजन करने
बैठ 8 और यह न कहे, कि मेरा खाना तैयार कर: और जब तक मैं खाऊं-पीऊं तब
तक कमर बान्धकर मेरी सेवा कर; इस के बाद तू भी खा पी लेना। 9 क्या वह उस
दास का निहोरा मानेगा, कि उस ने वे ही काम किए जिस की आज्ञा दी गई यी 10
इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामोंको कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी
गई यी, तो कहा, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए या वही किया
है।। 11 और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के
बीच से होकर जो रहा या। 12 और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी
मिले। 13 और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम
पर दया कर। 14 उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपके तई याजकोंको
दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए। 15 तब उन में से एक यह देखकर कि
मैं चंगा हो गया हूं, ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा। 16 और
यीशु के पांवोंपर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह

सामरी या। 17 इस पर यीशु ने कहा, क्या दसोंशुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं 18
क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता 19
तब उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।। 20
जब फरीसियोंने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा तो उस ने उन
को उत्तर दिया, कि पकेश्वर का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता। 21 और लोग यह
न कहेंगे, कि देखो, यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
बीच में है।। 22 और उस ने चेलोंसे कहा; वे दिन आएंगे, जिन में तुम मनुष्य के
पुत्र के दिनोंमें से एक दिन को देखना चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे। 23 लोग
तुम से कहेंगे, देखो, वहां है, या देखो यहां है; परन्तु तुम चले न जाना और न उन
के पीछे हो लेना। 24 क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक ओर से कौन्धकर
आकाश की दूसरी ओर चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपके दिन में प्रगट
होगा। 25 परन्तु पहिले अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और इस युग के लोग
उसे तुच्छ ठहराएं। 26 जैसा नूह के दिनोंमें हुआ या, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के
दिनोंमें भी होगा। 27 जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग
खाते-पीते थे, और उन में ब्याह-शादी होती थीं; तब जल-प्रलय ने आकर उन सब
को नाश किया। 28 और जैसा लूत के दिनोंमें हुआ या, कि लोग खाते-पीते
लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे। 29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम से
निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर
दिया। 30 मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। 31 उस दिन जो
कोठे पर हो; और उसका सामान घर में हो, वह उसे लेने को न उतरे, और वैसे ही
जो खेत में हो वह पीछे न लौटे। 32 लूत की पत्नी को स्क़रण रखो। 33 जो कोई

अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई उसे खोए वह उसे जीवित
रखेगा। 34 मैं तुम से कहता हूं, उस रात को मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले
लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 35 दो स्त्रियां एक साय चक्की
पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। 36 दो जन खेत में
होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा। 37 यह सुन उन्होंने उस से
पूछा, हे प्रभु यह कहां होगा उस ने उन से कहा, जहां लोय हैं, वहां गिद्ध इकट्ठे
होंगे।।

लूका 18

1 फिर उस ने इस के विषय में कि नित्य प्रार्यना करना और हियाव न छोड़ना
चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा। 2 कि किसी नगर में एक न्यायी रहता या; जो
न परमेश्वर से डरता य और न किसी मनुष्य की परवाह करता या। 3 और उसी
नगर में एक विधवा भी रहती यी: जो उसके पास आ आकर कहा करती यी, कि
मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा। 4 उस ने कितने समय तक तो न माना
परन्तु अन्त में मन में विचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न
मनुष्योंकी कुछ परवाह करता हूं। 5 तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है,
इसलिथे मैं उसका न्याय चुकाऊंगा कहीं ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त को
मेरा नाक में दम करे। 6 प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है 7
सो क्या परमेश्र अपके चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की
दुहाई देते रहते; और क्या वह उन के विषय में देन करेगा 8 मैं तुम से कहता हूं;
वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या

वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा 9 और उस ने कितनो से जो अपके ऊपर भरोसा
रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरोंको तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा। 10
कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिथे गए; एक फरीसी या और दूसरा
चुंगी लेनेवाला। 11 फरीसी खड़ा होकर अपके मन में योंप्रार्थना करने लगा, कि हे
परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्योंकी नाई अन्धेर
करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान
हूं। 12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपक्की सब कमाई का दसवां
अंश भी देता हूं। 13 परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंख
उठाना भी न चाहा, बरन अपक्की छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी
पर दया कर। 14 मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी
ठहराया जाकर अपके घर गया; क्योंकि जो कोई अपके आप को बड़ा बनाएगा,
वह छोटा किया जाएगा; और जो अपके आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया
जाएगा।। 15 फिर लोग अपके बच्चोंको भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर
हाथ रखे; और चेलोंने देखकर उन्हें डांटा। 16 यीशु न बच्चोंको पास बुलाकर कहा,
बालकोंको मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य
ऐसोंकी का है। 17 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमश्ेवर के राज्य को
बालक की नाई ग्रहण न करेगा वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा।। 18 किसी
सरदार ने उस से पूछा, हे उत्तम गुरू, अनन्तजीवन का अधिक्कारनी होने के लिथे
मैं क्या करूं 19 यीशु ने उस से कहा; तू मुझे उत्तम क्योंकहता है कोई उत्तम नहीं,
केवल एक, अर्यात परमेश्वर। 20 तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न
करना, फूठी गवाही न देना, अपके पिता और अपक्की माता का आदर करना। 21

उस ने कहा, मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूं। 22 यह सुन, यीशु
ने उस से कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर
कंगालोंको बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। 23
वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी या। 24 यीशु ने उसे
देखकर कहा; धनवानोंका परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा किठन है 25
परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल
जाना सहज है। 26 और सुननेवालोंने कहा, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है
27 उस ने कहा; जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है। 28
पतरस ने कहा; देख, हम तो घर बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिथे हैं। 29 उस ने उन
से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के
लिथे घर या पत्नी या भाइयोंया माता पिता या लड़के-बालोंको छोड़ दिया हो। 30
और इस समय कई गुणा अधिक न पाए; और परलोक में अनन्त जीवन।। 31
फिर उस ने बारहोंको साय लेकर उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं,
और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिथे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं वे
सब पूरी होंगी। 32 क्योंकि वह अन्यजातियोंके हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसे
ठट्ठोंमें उड़ाएंगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर यूकेंगे। 33 और उसे
कोड़े मारेंगे, और घात करेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा। 34 और उन्होंने इन
बातोंमें से कोई बात न समझी: और यह बात उन में छिपी रही, और जो कहा गया
या वह उन की समझ में न आया।। 35 जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक
अन्धा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा या। 36 और वह भीड़ के चलने
की आहट सुनकर पूछने लगा, यह क्या हो रहा है 37 उन्होंने उस को बताया, कि

यीशु नासरी जा रहा है। 38 तब उस ने पुकार के कहा, हे यीशु दाऊद की सन्तान,
मुझ पर दया कर। 39 जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे: परन्तु वह
और भी चिल्लाने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। 40 तब यीशु
ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, और जब वह निकट आया, तो
उस ने उस से यह पूछा। 41 तू क्या चाहता है, कि मैं तेरे लिथे करूं उस ने कहा; हे
प्रभु यह कि मैं देखने लगूं। 42 यीशु ने कहा; देखने लग, तेरे विश्वास ने तुझे
अच्छा कर दिया है। 43 और वह तुरन्त देखने लगा; और परमेश्वर की बड़ाई
करता हुआ उसके पीछे हो लिया, और सब लोगोंने देखकर परमेश्वर की स्तुति
की।।

लूका 19

1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा या। 2 और देखो, ज?ई नाम एक मनुष्य या
जो चुंगी लेनेवालोंका सरदार और धनी या। 3 वह यीशु को देखना चाहता या कि
वह कोन सा है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता या। क्योंकि वह नाटा या। 4
तब उस को देखने के लिथे वह आगे दौड़कर एक गूलर क पेड़ पर चढ़ गया,
क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला या। 5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर
दृष्टि कर के उस से कहा; हे ज?ई फट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में
रहना अवश्य है। 6 वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपके घर को ले गया। 7
यह देखकर सब लोगे कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा
उतरा है। 8 ज?ई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपक्की आधी
सम्पत्ति कंगालोंको देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है

तो उसे चौगुना फेर देता हूं। 9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार
आया है, इसलिथे कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। 10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र
खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।। 11 जब वे थे बातें सुन रहे
थे, तो उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिथे कि वह यरूशलेम के निकट या, और वे
समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ चाहता है। 12 सो उस ने कहा,
एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर फिर आए। 13 औश्र् उस
ने अपके दासोंमें से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और उन से कहा, मेरे लौट
आने तक लेन-देन करना। 14 परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते
थे, और उसके पीछे दूतोंके द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर
राज्य करे। 15 जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उस ने अपके
दासोंको जिन्हें रोकड़ दी यी, अपके पास बुलवाया ताकि मालूम करे कि उन्होंने
लेन-देन से क्या क्या कमाया। 16 तब पहिले ने आकर कहा, हे स्वामी तेरे मोहर
से दस और मोहरें कमाई हैं। 17 उस ने उस से कहा; धन्य हे उत्तम दास, तुझे
धन्य है, तू बहुत ही योड़े में विश्वासी निकला अब दस नगरोंका अधिक्कारने रख।
18 दूसरे ने आकर कहा; हे स्वामी तेरी मोहर से पांच और मोहरें कमाई हैं। 19 उस
ने कहा, कि तू भी पांच नगरोंपर हाकिम हो जा। 20 तीसरे ने आकर कहा; हे
स्वामी देख, तेरी मोहर यह है, जिसे मैं ने अंगोछे में बान्ध रखी। 21 क्योंकि मैं
तुझ से डरता या, इसलिथे कि तू कठोर मनुष्य है: जो तू ने नहीं रखा उसे उठा
लेता है, और जो तू ने नहीं बोया, उसे काटता है। 22 उस ने उस से कहा; हे दुष्ट
दास, मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराता हूं: तू मुझे जानता या कि कठोर मनुष्य
हूं, जो मैं ने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैं ने नहीं बोया, उसे काटता हूं। 23

तो तू ने मेरे रूपके कोठी में क्योंनहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता
24 और जो लोग निकट खड़े थे, उस ने उन से कहा, वह मोहर उस से ले लो, और
जिस के पास दस मोहरें हैं उसे दे दो। 25 (उन्होंने उस से कहा; हे स्वामी, उसके
पास दस मोहरें तो हैं)। 26 मैं तुम से कहता हूं, कि जिस के पास है, उसे दिया
जाएगा; और जिस के पास नहीं, उस से वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।
27 परन्तु मेरे उन बैरियोंको जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं, उन को
यहां लाकर मेरे सामने घात करो।। 28 थे बातें कहकर वह यरूशलेम की ओर उन
के आगे आगे चला।। 29 और जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैतफगे और
बैतनियाह के पास पहुंचा, तो उस ने अपके चेलोंमें से दो को यह कहके भेजा। 30
कि साम्हने के गांव में जाओ, और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस
पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर लाओ। 31
और यदि कोई तुम से पूछे, कि क्योंखोलते हो, तो यह कह देना, कि प्रभु को इस
का प्रयोजन है। 32 जो भेजे गए थे; उन्होंने जाकर जैसा उस ने उन से कहा या,
वैसा ही पाया। 33 जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकोंने उन
से पूछा; इस बच्चे को क्योंखोलते हो 34 उन्होंने कहा, प्रभु को इस का प्रयोजन
है। 35 वे उस को यीशु के पास ले आए और अपके कपके उस बच्चे पर डालकर
यीशु को उस पर सवार किया। 36 जब वह जा रहा या, तो वे अपके कपके मार्ग में
बिछाते जाते थे। 37 और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर
पहुंचा, तो चेलोंकी सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामोंके कारण जो उन्होंने
देखे थे, आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी। 38 कि
धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है; स्वर्ग में शान्ति और आकाश

मण्डल में महिमा हो। 39 तब भीड़ में से कितने फरीसी उस से कहने लगे, हे गुरू
अपके चेलोंको डांट। 40 उस ने उत्तर दिया, कि तुम में से कहता हूं, यदि थे चुप
रहें, तो पत्यर चिल्ला उठेंगे।। 41 जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस
पर रोया। 42 और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल
की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखोंसे छिप गई हैं। 43 क्योंकि वे दिन तुझ
पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बान्धकर तुझे घेर लेंगे, और चारोंओर से तुझे
दबाएंगे। 44 और तुझे और तेरे बालकोंको जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिलाएंगे, और
तुझ में पत्यर पर पत्यर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा
दृष्टि की गई न पहिचाना।। 45 तब वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालोंको बाहर
निकालने लगा। 46 और उन से कहा, लिखा है; कि मेरा घर प्रार्थना का घर होगा:
परन्तु तुम ने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है।। 47 और वह प्रति दिन मन्दिर
में उपकेश करता या: और महाथाजक और शास्त्री और लोगोंके रईस उसे नाश
करने का अवसर ढूंढ़ते थे। 48 परन्तु कोई उपाय न निकाल सके; कि यह किस
प्रकार करें क्योंकि सब लोग बड़ी चाह से उस की सुनते थे।

लूका 20

1 एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह मन्दिर में लोगोंको उपकेश देता और
सुसमाचार सुना रहा या, तो महाथाजक और शास्त्री, पुरिनयोंके साय पास आकर
खड़े हुए। 2 और कहने लगे, कि हमें बता, तू इन कामोंको किस अधिक्कारने से
करता है, और वह कौन है, जिस ने तुझे यह अधिक्कारने दिया है 3 उस ने उन को
उत्तर दिया, कि मैं भी तुम में से एक बात पूछता हूं; मुझे बताओ। 4 यूहन्ना का

बपतिस्क़ा स्वर्ग की ओर से या या मनुष्योंकी ओर से या 5 तब वे आपस में कहने
लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की
प्रतीति क्योंन की 6 और यदि हम कहें, मनुष्योंकी ओर से, तो सब लोग हमें
पत्यरवाह करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वकता या। 7
सो उन्होंने उत्तर दिया, हम नहीं जानते, कि वह किस की ओर से या। 8 यीशु ने
उन से कहा, तो मैं भी तुम को नहीं बताता, कि मैं थे काम किस अधिक्कारने से
करता हूं। 9 तब वह लोगोंसे यह दृष्टान्त कहने लगा, कि किसी मनुष्य ने दाख
की बारी लगाई, और किसानोंको उसका ठेका दे दिया और बहुत दिनोंके लिथे
पकेदश चला गया। 10 समय पर उस ने किसानोंके पास एक दास को भेजा, कि वे
दाख की बारी के कुछ फलोंका भाग उसे दें, पर किसानोंने उसे पीटकर छूछे हाथ
लौटा दिया। 11 फिर उस ने एक और दास को भेजा, ओर उन्होंने उसे भी पीटकर
और उसका अपमान करके छूछे हाथ लौटा दिया। 12 फिर उस ने तीसरा भेजा,
और उन्होंने उसे भी घायल करके निकाल दिया। 13 तब दाख की बारी के स्वामी
ने कहा, मैं क्या करूं मैं अपके प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसका आदर करें।
14 जब किसानोंने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, कि यह तो वारिस है;
आओ, हम उसे मार डालें, कि मिरास हमारी हो जाए। 15 और उन्होंने उसे दाख
की बारी से बाहर निकालकर मार डाला: इसलिथे दाख की बारी का स्वामी उन के
साय क्या करेगा 16 वह आकर उन किसानोंको नाश करेगा, और दाख की बारी
औरोंको सौंपेगा : यह सुनकर उन्होंने कहा, परमेश्वर ऐसा न करे। 17 उस ने उन
की ओर देखकर कहा; फिर यह क्या, लिखा है, कि जिस पत्यर को
राजमिस्त्रियोंने निकम्मा ठहराया या, वही कोने का सिरा हो गया। 18 जो कोई

उस पत्यर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उसे
वह पीस डालेगा।। 19 उसी घड़ी शास्त्रियोंऔर महाथाजकोंने उसे पकड़ना चाहा,
क्योंकि समझ गए, कि उस ने हम पर यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे लोगोंसे डरे।
20 और वे उस की ताक में लगे और भेदिथे भेजे, कि धर्म का भेष धरकर उस की
कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे हाकिम के हाथ और अधिक्कारने में सौंप दें। 21
उन्होंने उस से यह पूछा, कि हे गुरू, हम जानते हैं कि तू ठीक कहता, और
सिखाता भी है, और किसी का पझपात नहीं करता; बरन परमेश्वर का मार्ग
सच्चाई से बताता है। 22 क्या हमें कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं। 23 उस
ने उन की चतुराई को ताड़कर उन से कहा; एक दीनार मुझे दिखाओ। 24 इस पर
किस की मूत्तिर् और नाम है उन्होंने कहा, कैसर का। 25 उस ने उन से कहा; तो
जो कैसर का है, वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो। 26
वे लोगोंके साम्हने उस बात को पकड़ न सके, बरन उसके उत्तर से अचम्भित
होकर चुप रह गए। 27 फिर सदूकी जो कहते हैं, कि मरे हुओं का जी उठना है ही
नहीं, उन में से कितनोंने उसके पास आकर पूछा। 28 कि हे गुरू, मूसा ने हमारे
लिथे यह लिखा है, कि यदि किसी का भाई अपक्की पत्नी के रहते हुए बिना
सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले, और अपके भाई के
लिथे वंश उत्पन्न करे। 29 सो सात भाई थे, पहिला भाई ब्याह करके बिना
सन्तान मर गया। 30 फिर दूसरे और तीसरे ने भी उस स्त्री को ब्याह लिया। 31
इसी रीति से सातोंबिना सन्तान मर गए। 32 सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। 33
सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी, क्योंकि वह सातोंकी पत्नी हो
चुकी यी। 34 यीशु ने उन से कहा; कि इस युग के सन्तानोंमें तो ब्याह शादी होती

है। 35 पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे, कि उस युग को और मरे हुओं में से जी
उठना प्राप्त करें, उन में ब्याह शादी न होगी। 36 वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि
वे स्वर्गदूतोंके समान होंगे, और जी उठने के सन्तान होने से परमेश्वर के भी
सन्तान होंगे। 37 परन्तु इस बात को कि मरे हुए जी उठते हैं, मूसा न भी फाड़ी
की कया में प्रगट की है, कि वह प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का
परमेश्वर, और याकूब का परमश्ेवर कहता है। 38 परमेश्वर तो मुरदोंका नहीं
परन्तु जीवतोंका परमेश्वर है: क्योंकि उसके निकट सब जीवित हैं। 39 तब यह
सुनकर शास्त्रियोंमें से कितनोंने कहा, कि हे गुरू, तू ने अच्छा कहा। 40 और उन्हें
फिर उस से कुछ और पूछने का हियाव न हुआ।। 41 फिर उस ने उन से पूछा,
मसीह को दाऊद का सन्तान क्योंकर कहते हैं। 42 दाऊद आप भजनसंहिता की
पुस्तक में कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा। 43 मेरे दिहने बैठ, जब तक कि
मैं तेरे बैरियोंको तेरे पांवोंके तले न कर दूं। 44 दाऊद तो उसे प्रभु कहता है; तो
फिर वह उस की सन्तान क्योंकर ठहरा 45 जब सब लोग सुन रहे थे, तो उस ने
अपके चेलोंसे कहा। 46 शास्त्रियोंसे चौकस रहो, जिन को लम्बे लम्बे वस्त्र पहिने
हुए फिरना भला है, और जिन्हें बाजारोंमें नमस्कार, और सभाओं में मुख्य
आसन और जेवनारोंमें मुख्य स्यान प्रिय लगते हैं। 47 वे विधवाओं के घर खा
जाते हैं, और दिखाने के लिथे बड़ी देर तक प्रार्यना करते रहते हैं: थे बहुत ही दण्ड
पाएंगे।।

लूका 21

1 फिर उस ने आंख उठाकर धनवानोंको अपना अपना दान भण्डार में डालते

देखा। 2 और उस ने एक कंगाल विधवा को भी उस में दो दमड़ियां डालते देखा। 3
तब उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर
डाला है। 4 क्योंकि उन सब ने अपक्की बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु
इस ने अपक्की घटी में से अपक्की सारी जीविका डाल दी है।। 5 जब कितने लोग
मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरोंऔर भेंट की वस्तुओं
से संवारा गया है तो उस ने कहा। 6 वे दिन आएंगे, जिन में यह सब जो तुम
देखते हो, उन में से यहां किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न
जाएगा। 7 उन्होंने उस से पूछा, हे गुरू, यह सब कब होगा और थे बातें जब पूरी
होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा 8 उस ने कहा; चौकस रहो, कि
भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूं; और
यह भी कि समय निकट आा पहुंचा है: तुम उन के पीछे न चले जाना। 9 और जब
तुम लड़ाइयोंऔर बलवोंकी चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इन का पहिले
होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा। 10 तब उस ने उन से
कहा, कि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। 11 और बड़ें बड़ें
भूईडोल होंगे, और जगह जगह अकाल और मरियां पकेंगी, और आकाश में
भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे। 12 परन्तु इन सब बातोंसे पहिले वे
मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएंगे, और पंचायतोंमें सौंपेंगे, और
बन्दीगृह मे डलवाएंगे, और राजाओं और हाकिमोंके साम्हने ले जाएंगे। 13 पर
यह तुम्हारे लिथे गवाही देने का अवसर हो जाएगा। 14 इसलिथे अपके अपके
मन में ठान रखो कि हम पहिले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। 15 क्योंकि मैं
तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न कर

सकेंगे। 16 और तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें
पकड़वाएंगे; यहां तक कि तुम में से कितनोंको मरवा डालेंगे। 17 और मेरे नाम के
कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। 18 परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बांका
न होगा। 19 अपके धीरज से तुम अपके प्राणोंको बचाए रखोगे।। 20 जब तुम
यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना
निकट है। 21 तब जो यहूदिया में होंवह पहाड़ोंपर भाग जाएं, और जो यरूशलेम
के भीतर होंवे बाहर निकल जाएं; और जो गावोंमें हो वे उस में न जांए। 22
क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो
जाएंगी। 23 उन दिनोंमें जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिथे हाथ,
हाथ, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगोंपर बड़ी आपत्ति होगी। 24 वे
तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशोंके लोगोंमें बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे,
और जब तक अन्य जातियोंका समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य
जातियोंसे रौंदा जाएगा। 25 और सूरज और चान्द और तारोंमें चिन्ह दिखाई देंगें,
और पृथ्वी पर, देश देश के लोगोंको संकट होगा; क्योंकि वे समुद्र के गरजने और
लहरोंके कोलाहल से घबरा जाएंगे। 26 और भय के कारण और संसार पर
आनेवाली घटनाओं की बांट देखते देखते लोगोंके जी में जी न रहेगा क्योंकि
आकाश की शक्तियोंहिलाई जाएंगी। 27 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी
महिमा के साय बादल पर आते देखेंगे। 28 जब थे बातें होने लगें, तो सीधे होकर
अपके सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।। 29 उस ने उन
से एक दृष्टान्त भी कहा कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ोंको देखो। 30 ज्योंहि उन
की कोंपकें निकलती हैं, तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो, कि ग्रीष्क़काल

निकट है। 31 इसी रीति से जब तुम थे बातें होते देखो, तब जान लो कि परमेश्वर
का राज्य निकट है। 32 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक थे सब बातें न हो लें,
तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा। 33 आकाश और पृय्वी टल जाएंगे,
परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।। 34 इसलिथे सावधान रहो, ऐसा न हो कि
तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो
जाएं, और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं अचानक आ पके। 35 क्योंकि वह सारी
पृय्वी के सब रहनेवालोंपर इसी प्रकार आ पकेगा। 36 इसलिथे जागते रहो और
हर समय प्रार्यना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने, और
मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो।। 37 और वह दिन को मन्दिर
में उपकेश करता या; और रात को बाहर जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा करता
या। 38 और भोर को तड़के सब लोग उस की सुनने के लिथे मन्दिर में उसके पास
आया करते थे।

लूका 22

1 अखमीरी रोटी का पर्व्व जो फसह कहलाता है, निकट या। 2 और महाथाजक
और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उस को क्योंकर मार डालें, पर वे लोगोंसे
डरते थे।। 3 और शैतान यहूदा में समाया, जो इस्किरयोती कहलाता और बारह
चेलोंमें गिना जाता या। 4 उस ने जाकर महाथाजकोंऔर पहरूओं के सरदारोंके
साय बातचीत की, कि उस को किस प्रकार उन के हाथ पकड़वाए। 5 वे आनन्दित
हुए, और उसे रूपके देने का वचन दिया। 6 उस ने मान लिया, और अवसर ढूंढ़ने
लगा, कि बिना उपद्रव के उसे उन के हाथ पकड़वा दे।। 7 तब अखमीरी रोटी के

पर्व्व का दिन आया, जिस में फसह का मेम्ना बली करना अवश्य या। 8 और यीशु
ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा, कि जाकर हमारे खाने के लिथे फसह
तैयार करो। 9 उन्होंने उस से पूछा, तू कहां चाहता है, कि हम तैयार करें 10 उस ने
उन से कहा; देखो, नगर में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए
तुम्हें मिलेगा, जिस घर में वह जाए; तुम उसके पीछे चले जाना। 11 और उस घर
के स्वामी से कहो, कि गुरू तुझ से कहता है; कि वह पाहुनशाला कहां है जिस में
मैं अपके चेलोंके साय फसह खाऊं 12 वह तुम्हें एक सजी सजाई बड़ी अटारी
दिखा देगा; वहां तैयारी करना। 13 उन्होंने जाकर, जैसा उस ने उन से कहा या,
वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया।। 14 जब घड़ी पहुंची, तो वह प्रेरितोंके
साय भोजन करने बैठा। 15 और उस ने उन से कहा; मुझे बड़ी लालसा यी, कि
दुख-भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साय खाऊं। 16 क्योंकि मैं तुम से कहता
हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न
खाऊंगा। 17 तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा, इस को लो और
आपस में बांट लो। 18 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का
राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। 19 फिर उस ने रोटी
ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है,
जो तुम्हारे लिथे दी जाती है: मेरे स्क़रण के लिथे यही किया करो। 20 इसी रीति
से उस ने बियारी के बाद कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिथे बहाथा जाता है
नई वाचा है। 21 पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साय मेज पर है। 22
क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिथे ठहराया गया जाता ही है, पर हाथ
उस मनुष्य पर, जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है! 23 तब वे आपस में पूछ

पाछ करने लगे, कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा 24 उन में यह
वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है 25 उस ने उन से
कहा, अन्यजातियोंके राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिक्कारने
रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। 26 परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में
बड़ा है, वह छोटे की नाई और जो प्रधान है, वह सेवक की नाई बने। 27 क्योंकि
बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है क्या वह नहीं जो
भोजन पर बैठा है पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं। 28 परन्तु तुम वह हो,
जो मेरी पक्कीझाओं में लगातार मेरे साय रहे। 29 और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिथे
एक राज्य ठहराया है, 30 वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिथे ठहराता हूं, ताकि तुम मेरे
राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पिओ; बरन सिंहासनोंपर बैठकर इस्त्राएल के बारह
गोत्रोंका न्याय करो। 31 शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगोंको मांग
लिया है कि गेंहूं की नाई फटके। 32 परन्तु मैं ने तेरे लिथे बिनती की, कि तेरा
विश्वास जाता न रहे: और जब तू फिरे, तो अपके भाइयोंको स्यिर करना। 33 उस
ने उस से कहा; हे प्रभु, मैं तेरे साय बन्दीगृह जाने, वरन मरने को भी तैयार हूं। 34
उस ने कहा; हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं, कि आज मुर्ग बांग देगा जब तक तू
तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।। 35 और उस ने उन से
कहा, कि जब मैं ने तुम्हें बटुए, और फोली, और जूते बिना भेजा या, तो क्या तुम
को किसी वस्तु की घटी हुई यी उन्होंने कहा; किसी वस्तु की नहीं। 36 उस ने उन
से कहा, परन्तु अब जिस के पास बटुआ हो वह उसे ले, और वैसे ही फोली यी,
और जिस के पास तलवार न हो वह अपके कपके बेचकर एक मोल ले। 37
क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यह जो लिखा है, कि वह अपराधियोंके साय गिना

गया, उसका मुझ में पूरा होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होन पर
हैं। 38 उन्होंने कहा; हे प्रभु, देख, यहां दो तलवारें हैं: उस ने उन से कहा; बहुत हैं।।
39 तब वह बाहर निकलकर अपक्की रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गया,
और चेले उसके पीछे हो लिए। 40 उस जगह पहुंचकर उस ने उन से कहा; प्रार्यना
करो, कि तुम पक्कीझा में न पड़ो। 41 और वह आप उन से अलग एक ढेला
फेंकने के टप्पे भर गया, और घुटने टेककर प्रार्यना करने लगा। 42 कि हे पिता
यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही
इच्छा पूरी हो। 43 तब स्वर्ग से एक दूत उस को दिखाई दिया जो उसे सामर्य देता
या। 44 और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय वेदना से प्रार्यना
करने लगा; और उसका पक्कीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बून्दोंकी नाई भूमि पर
गिर रहा या। 45 तब वह प्रार्यना से उठा और अपके चेलोंके पास आकर उन्हें
उदासी के मारे सोता पाया; और उन से कहा, क्योंसोते हो 46 उठो, प्रार्यना करो,
कि पक्कीझा में न पड़ो।। 47 वह यह कह ही रहा या, कि देखो एक भीड़ आई,
और उन बारहोंमें से एक जिस का नाम यहूदा या उनके आगे आगे आ रहा या,
वह यीशु के पास आया, कि उसका चूमा ले। 48 यीशु ने उस से कहा, हे यहूदा,
क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है 49 उसके सायियोंने जब देखा
कि क्या होनेवाला है, तो क्हा; हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं 50 और उन में से
एक ने महाथाजक के दास पर चलाकर उसका दिहना कान उड़ा दिया। 51 इस पर
यीशु ने कहा; अब बस करो : और उसका कान छूकर उसे अच्छा किया। 52 तब
यीशु ने महाथाजकों; और मन्दिर के पहरूओं के सरदरोंऔर पुरिनयोंसे, जो उस
पर चढ़ आए थे, कहा; क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें और लाठियां लिए हुए

निकले हो 53 जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साय या, तो तुम ने मुझ पर हाथ
न डाला; पर यह तुम्हारी घड़ी है, और अन्धकार का अधिक्कारने है।। 54 फिर वे
उसे पकड़कर ले चले, और महाथाजक के घर में लाए और पतरस दूर ही दूर
उसके पीछे पीछे चलता या। 55 और जब वे आंगन में आग सुलगाकर इकट्ठे
बैठे, तो पतरस भी उन के बीच में बैठ गया। 56 और एक लौंडी उसे आग के
उजियाले में बैठे देखकर और उस की ओर ताककर कहने लगी, यह भी तो उसके
साय या। 57 परनतु उस ने यह कहकर इन्कार किया, कि हे नारी, मैं उसे नहीं
जानता। 58 योड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, तू भी तो उन्हीं में से है:
पतरस ने कहा; हे मनुष्य मैं नहीं हूं। 59 कोई घंटे भर के बाद एक और मनुष्य
दृढ़ता से कहने लगा, निश्चय यह भी तो उसके साय या; क्योंकि यह गलीली है।
60 पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है वह कह ही रहा
या कि तुरन्त मुर्ग ने बांग दी। 61 तब प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और
पतरस को प्रभु की वह बात याद आई जो उस ने कही यी, कि आज मुर्ग के बांग
देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। 62 और वह बाहर निकलकर फूट
फूट कर रोने लगा।। 63 जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसे ठट्ठोंमें उड़ाकर
पीटने लगे। 64 और उस की आंखे ढांपकर उस से पूछा, कि भविष्यद्वाणी करके
बता कि तुझे किसने मारा। 65 और उन्होंने बहुत सी और भी निन्दा की बातें
उसके विरोध में कहीं।। 66 जब दिन हुआ तो लोगोंके पुरिनए और महाथाजक
और शास्त्री इकट्ठे हुए, और उसे अपक्की महासया में लाकर पूछा, 67 यदि तू
मसीह है, तो हम से कह दे! उस ने उन से कहा, यदि मैं तुम से कहूं तो प्रतीति न
करोगे। 68 और यदि पूंछूं, तो उत्तर न दोगे। 69 परनतु अब से मनुष्य का पुत्र

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दिहनी और बैठा रहेगा। 70 इस पर सब ने कहा, तो
क्या तू परमेश्वर का पुत्र है उस ने उन से कहा; तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं
हूं। 71 तब उन्होंने कहा; अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है; क्योंकि हम ने आप
ही उसके मुंह से सुन लिया है।।

लूका 23

1 तब सारी सभा उठकर उसे पीलातुस के पास ले गई। 2 और वे यह कहकर उस
पर दोष लगाने लगे, कि हम ने इसे लोगोंको बहकाते और कैसर को कर देने से
मना करते, और अपके आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है। 3 पीलातुस ने
उस से पूछा, क्या तू यहूदियोंका राजा है उस ने उसे उत्तर दिया, कि तू आप ही कह
रहा है। 4 तब पीलातुस ने महाथाजकोंऔर लोगोंसे कहा, मैं इस मनुष्य में कुछ
दोष नहीं पाता। 5 पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, यह गलील से लेकर यहां
तक सारे यहूदिया में उपकेश दे दे कर लोगोंको उसकाता है। 6 यह सुनकर
पीलातुस ने पूछा, क्या यह मनुष्य गलीली है 7 और यह जानकर कि वह हेरोदेस
की रियासत का है, उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनोंमें वह भी
यरूशलेम में या।। 8 हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह
बहुत दिनोंसे उस को देखना चाहता या: इसलिथे कि उसके विषय में सुना या,
और उसका कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता या। 9 वह उस ने बहुतेरी बातें
पूछता रहा, पर उस ने उस को कुछ भी उत्तर न दिया। 10 और महाथाजक और
शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। 11 तब हेरोदेस ने अपके
सिपाहियोंके साय उसका अपमान करके ठट्ठोंमें उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र

पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया। 12 उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस
मित्र हो गए। इसके पहिले वे एक दूसरे के बैरी थे।। 13 पीलातुस ने
महाथाजकोंऔर सरदारोंऔर लोगोंको बुलाकर उन से कहा। 14 तुम इस मनुष्य
को लोगोंका बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे
साम्हने उस की जांच की, पर जिन बातोंका तुम उस पर दोष लगाते हो, उन
बातोंके विषय में मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया है। 15 न हेरोदेस ने, क्योंकि
उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि
वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए। 16 इसलिथे मैं उसे पिटवाकर छोड़
देता हूं। 17 तब सब मिलकर चिल्ला उठे,18 इस का काम तमाम कर, और हमारे
लिथे बरअब्बा को छोड़ दे। 19 यही किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ या,
और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया या। 20 पर पीलातुस ने यीशु को
छोड़ने की इच्छा से लोगोंको फिर समझाया। 21 परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा:
कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर। 22 उस ने तीसरी बार उन से कहा; क्योंउस ने
कौन सी बुराई की है मैं ने उस में मृत्यु दण्ड के योग्य कोठ बात नहीं पाई!
इसलिथे मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। 23 परन्तु वे चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़
गए, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उन का चिल्लाना प्रबल हुआ। 24 सो
पीलातुस ने आज्ञा दी, कि उन की बिनती के अनुसार किया जाए। 25 और उस ने
उस मनुष्य को जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया या, और
जिसे वे मांगते थे, छोड़ दिया; और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप
दिया।। 26 जब वे उसे लिए जाते थे, तो उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी को जो
गांव से आ रहा या, पकड़कर उस पर क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे

पीछे ले चले।। 27 और लोगोंकी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली: और बहुत सी स्त्रियां
भी, जो उसके लिथे छाती-पीटती और विलाप करती यीं। 28 यीशु ने उन की ओर
फिरकर कहा; हे यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिथे मत रोओ; परन्तु अपके और
अपके बालकोंके लिथे रोओ। 29 क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे,
धन्य हैं वे जो बांफ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दूध न
पिलाया। 30 उस समय वे पहाड़ोंसे कहने लगेंगे, कि हम पर गिरो, और टीलोंसे
कि हमें ढाँप लो। 31 क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साय ऐसा करते हैं, तो सूखे के साय
क्या कुछ न किया जाएगा 32 वे और दो मनुष्योंको भ्ज़्त्री जो कुकर्मी थे उसके
साय घात करने को ले चले।। 33 जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे,
तो उन्होंने वहां उसे और उन कुकिर्मयोंको भी एक को दिहनी और और दूसरे को
बाईं और क्रूसोंपर चढ़ाया। 34 तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें झमा कर, क्योंकि
थे जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं और उन्होंने चिट्ठियां डालकर उसके कपके
बांट लिए। 35 लोग खड़े खड़े देख रहे थे, और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते
थे, कि इस ने औरोंको बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना
हुआ है, तो अपके आप को बचा ले। 36 सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर
उसका ठट्ठा करके कहते थे। 37 यदि तू यहूदियोंका राजा है, तो अपके आप को
बचा। 38 और उसके ऊपर एक पत्र भी लगा या, कि यह यहूदियोंका राजा है। 39
जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा; क्या तू
मसीह नहीं तो फिर अपके आप को और हमें बचा। 40 इस पर दूसरे ने उसे
डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। 41
और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपके कामोंका ठीक फल पा

रहे हैं; पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। 42 तब उस ने कहा; हे यीशु,
जब तू अपके राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना। 43 उस ने उस से कहा, मैं तुझ से
सच कहता हूं; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।। 44 और लगभग दो
पहर से तीसरे पहर तक सारे देश में अन्धिक्कारनो छाया रहा। 45 और सूर्य का
उजियाला जाता रहा, और मन्दिर का परदा बीच में फट गया। 46 और यीशु ने
बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे पिता, मैं अपक्की आत्मा तेरे हाथोंमें सौंपता हूं:
और यह कहकर प्राण छोड़ दिए। 47 सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था देखकर,
परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा; निश्चय यह मनुष्य धर्मी था। 48 और भीड़ जो
यह देखने को इकट्ठी हुई भी, इस घटना को, देखकर छाती- पीटती हुई लौट गई।
49 और उसके सब जान पहचान, और जो स्त्रियां गलील से उसके पास आई थी,
दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं।। 50 और देखो यूसुफ नाम एक मन्त्री जो
सज्जन और धर्मी पुरूष था। 51 और उन के विचार और उन के इस काम से
प्रसन्न न था; और वि यहूदियोंके नगर अरिमतीया का रहनेवाला और परमेश्वर
के राज्य की बाट जोहनेवाला था। 52 उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की
लोथ मांग ली। 53 और उसे उतारकर चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो
चट्टान में खोदी हुई थी; और उस में कोई कभी न रखा गया था। 54 वह तैयारी
का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था। 55 और उन स्त्रियोंने जो
उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी
कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है। 56 और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं
और इत्रा तैयार किया: और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम
किया।।

लूका 24

1 परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो
उन्होंने तैयार की यी, ले कर कब्र पर आईं। 2 और उन्होंने पत्यर को कब्र पर से
लुढका हुआ पाया। 3 और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोय न पाई। 4 जब वे इस
बात से भौचक्की हो रही यीं तो देखो, दो पुरूष फलकते वस्त्र पहिने हुए उन के
पास आ खड़े हुए। 5 जब वे डर गईं, और धरती की ओर मुंह फुकाए रहीं; तो
उन्होंने उस ने कहा; तुम जीवते को मरे हुओं में क्योंढूंढ़ती हो 6 वह यहां नहीं,
परन्तु जी उठा है; स्क़रण करो; कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा या। 7
कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियोंके हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर
चढ़ाया जाए; और तीसरे दिन जी उठे। 8 तब उस की बातें उन को स्क़रण आईं। 9
और कब्र से लौटकर उन्होंने उन ग्यारहोंको, और, और सब को, थे बातें कह
सुनाई। 10 जिन्होंने प्रेरितोंसे थे बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना
और याकूब की माता मरियम और उन के साय की और स्त्रियां भी यीं। 11 परन्तु
उन की बातें उनहें कहानी सी समझ पड़ीं, और उन्होंने उन की प्रतीति न की। 12
तब पतरस उठकर कब्र पर दौड़ गया, और फुककर केवल कपके पके देखे, और
जो हुआ या, उस से अचम्भा करता हुआ, अपके घर चला गया।। 13 देखो, उसी
दिन उन में से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से
कोई सात मील की दूरी पर या। 14 और वे इन सब बातोंपर जो हुईं यीं, आपस में
बातचीत करते जा रहे थे। 15 और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर
रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साय हो लिया। 16 परनतु उन की आंखे
ऐसी बन्द कर दी गईं यी, कि उसे पहिचान न सके। 17 उस ने उन से पूछा; थे

क्या बातें हैं, जो तुम चलते चलते आपस में करते हो वे उदास से खड़े रह गए। 18
यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नाम एक व्यक्ति ने कहा; क्या तू यरूशलेम में
अकेला परदेशी है; जो नहीं जानता, कि इन दिनोंमें उस में क्या हुआ है 19 उस ने
उन से पूछा; कौन सी बातें उन्होंने उस से कहा; यीशु नासरी के विषय में जो
परमेश्वर और सब लोगोंके निकट काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता या। 20
और महाथाजकोंऔर हमारे सरदारोंने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की
आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया। 21 परन्तु हमें आशा यी, कि यही
इस्त्रएल को छुटकारा देगा, और इन सब बातोंके सिवाय इस घटना को हुए
तीसरा दिन है। 22 और हम में से कई स्त्रियोंने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है,
जो भोर को कब्र पर गई यीं। 23 और जब उस की लोय न पाई, तो यह कहती हुई
आईं, कि हम ने स्वर्गदूतोंका दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है। 24
तब हमारे सायियोंमें से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियोंने कहा या, वैसा
ही पाया; परन्तु उस को न देखा। 25 तब उस ने उन से कहा; हे निर्बुद्धियों, और
भविष्यद्वक्ताओं की सब बातोंपर विश्वास करने में मन्दमतियों! 26 क्या अवश्य न
या, कि मसीह थे दुख उठाकर अपक्की महिमा में प्रवेश करे 27 तब उस ने मूसा
से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रोंमें से, अपके
विषय में की बातोंका अर्य, उन्हें समझा दिया। 28 इतने में वे उस गांव के पास
पहुंचे, जहां वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जन पड़ा, कि वह आगे बड़ा
चाहता है। 29 परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, कि हमारे साय रह; क्योंकि
संध्या हो चक्की है और दिन अब बहुत ढल गया है। तब वह उन के साय रहने के
लिथे भीतर गया। 30 जब वह उन के साय भोजन करने बैठा, तो उस ने रोटी

लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उन को देने लगा। 31 तब उन की आंखे
खुल गईं; और उन्होंने उसे पहचान लिया, और वह उन की आंखोंसे छिप गया।
32 उन्होंने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता या, और पवित्र
शस्त्र का अर्य हमें समझाता या, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई 33
वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए, और उन ग्यारहोंऔर उन के
सायियोंको इकट्ठे पाया। 34 वे कहते थे, प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को
दिखाई दिया है। 35 तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि
उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना।। 36 वे थे बातें कह ही रहे थे, कि
वह आप ही उन के बीच में आ खड़ा हुआ; और उन से कहा, तुम्हें शन्ति मिले। 37
परन्तु वे घबरा गए, और डर गए, और समझे, कि हम किसी भूत को देखते हैं।
38 उस ने उन से कहा; क्योंघबराते हो और तुम्हारे मन में क्योंसन्देह उठते हैं 39
मेरे हाथ और मेरे पांव को देखो, कि मैं वहीं हूं; मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्क़ा
के हड्डी मांस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो। 40 यह कहकर उस ने उनहें
अपके हाथ पांव दिखाए। 41 जब आनन्द के मारे उन को प्रतीति न हुई, और
आश्चर्य करते थे, तो उस ने उन से पूछा; क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है 42
उन्होंने उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया। 43 उस ने लेकर उन के साम्हने खाया।
44 फिर उस ने उन से कहा, थे मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साय रहते हुए, तुम
से कही यीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्या और भविष्यद्वक्ताओं
और भजनोंकी पुस्तकोंमें, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। 45 तब उस ने
पवित्र शास्त्र बूफने के लिथे उन की समझ खोल दी। 46 और उन से कहा,
योंलिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा।

47 और यरूशलेम से लेकर सब जातियोंमें मन फिराव का और पापोंकी झमा का
प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। 48 तुम इन सब बातें के गवाह हो। 49 और
देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब
तक स्वर्ग में सामर्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।। 50 तब वह
उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपके हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी।
51 और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग से उठा लिया
गया। 52 और वे उस को दण्डवत करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।
53 और लगातार मन्दिर में उपस्यित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे।।

यूहन्ना 1

1 आदि में वचन या, और वचन परमेश्वर के साय या, और वचन परमेश्वर या। 2
यही आदि में परमेश्वर के साय या। 3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो
कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। 4 उस
में जीवन या; और वह जीवन मुनष्योंकी ज्योति यी। 5 और ज्योति अन्धकार में
चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। 6 एक मनुष्य परमेश्वर की
ओर से आ उपस्यित हुआ जिस का नाम यूहन्ना या। 7 यह गवाही देने आया, कि
ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं। 8 वह आप तो वह
ज्योति न या, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिथे आया या। 9 सच्ची
ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली यी। 10 वह
जगत में या, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं
पहिचाना। 11 वह अपके घर में आया और उसके अपनोंने उसे ग्रहण नहीं किया।

12 परन्तु जितनोंने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का
अधिक्कारने दिया, अर्यात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। 13 वे न तो
लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न
हुए हैं। 14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर
हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के
एकलौते की महिमा। 15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर
कहा, कि यह वही है, जिस का मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह
मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहिले या। 16 क्योंकि उस की परिपूर्णता से
हम सब ने प्राप्त किया अर्यात अनुग्रह पर अनुग्रह। 17 इसलिथे कि व्यवस्या तो
मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। 18
परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी
ने उसे प्रगट किया।। 19 यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियोंने यरूशलेम
से याजकोंऔर लेवीयोंको उस से यह पूछने के लिथे भेजा, कि तू कौन है 20 तो
उस ने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह
नहीं हूं। 21 तब उन्होंने उस से पूछा, तो फिर कौन है क्या तू एलिय्याह है उस ने
कहा, मैं नहीं हूं: तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है उस ने उत्तर दिया, कि नहीं। 22 तब
उन्होंने उस से पूछा, फिर तू है कौन ताकि हम अपके भेजनेवालोंको उत्तर दें; तू
अपके विषय में क्या कहता है 23 उस ने कहा, मैं जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने
कहा है, जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूं कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।
24 थे फरीसियोंकी ओर से भेजे गए थे। 25 उन्होंने उस से यह प्रश्न पूछा, कि
यदि तू न मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर

बपतिस्क़ा क्योंदेता है 26 यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि मैं तो जल से
बपतिस्क़ा देता हूं; परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं
जानते। 27 अर्यात मेरे बाद आनेवाला है, जिस की जूती का बन्ध मैं खोलने के
योग्य नहीं। 28 थे बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई, जहां यूहन्ना बपतिस्क़ा
देता या। 29 दूसरे दिन उस ने यीशु को अपक्की ओर आते देखकर कहा, देखो,
यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है। 30 यह वही है,
जिस के विषय में मैं ने कहा या, कि एक पुरूष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से
श्र्ेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहिले या। 31 और मैं तो उसे पहिचानता न या,
परन्तु इसलिथे मैं जल से बपतिस्क़ा देता हुआ आया, कि वह इस्त्राएल पर प्रगट
हो जाए। 32 और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्क़ा को कबूतर की नाईं
आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। 33 और मैं तो उसे
पहिचानता न या, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्क़ा देने को भेजा, उसी ने
मुझ से कहा, कि जिस पर तू आत्क़ा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र
आत्क़ा से बपतिस्क़ा देनेवाला है। 34 और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही
परमेश्वर का पुत्र है।। 35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलोंमें से दो जन
खड़े हुए थे। 36 और उस ने यीशु पर जो जा रहा या दृष्टि करके कहा, देखो, यह
परमेश्वर का मेम्ना है। 37 तब वे दोनोंचेले उस की सुनकर यीशु के पीछे हो लिए।
38 यीशु ने फिरकर और उन को पीछे आते देखकर उन से कहा, तुम किस की
खोज में हो उन्होंने उस से कहा, हे रब्बी, अर्यात (हे गुरू) तू कहां रहता है उस ने
उन से कहा, चलो, तो देख लोगे। 39 तब उन्होंने आकर उसके रहने का स्यान
देखा, और उस दिन उसी के साय रहे; और यह दसवें घंटे के लगभग या। 40 उन

दोनोंमें से जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमौन
पतरस का भाई अन्द्रियास या। 41 उस ने पहिले अपके सगे भाई शमौन से
मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्तस अर्यात मसीह मिल गया। 42 वह उसे
यीशु के पास लाया: यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, कि तू यूहन्ना का पुत्र
शमौन है, तू केफा, अर्यात पतरस कहलाएगा।। 43 ूदूसरे दिन यीशु ने गलील को
जाना चाहा; और फिलप्पुस से मिलकर कहा, मेरे पीछे हो ले। 44 फिलप्पुस तो
अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी या। 45 फिलप्पुस ने
नतनएल से मिलकर उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्या में और
भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी
है। 46 नतनएल ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल
सकती है फिलप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख ले। 47 यीशु ने नतनएल को
अपक्की ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्त्राएली है:
इस में कपट नहीं। 48 नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहां से जानता है यीशु ने
उस को उत्तर दिया; उस से पहिले कि फिलप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के
पेड़ के तले या, तब मैं ने तुझे देखा या। 49 नतनएल ने उस को उत्तर दिया, कि हे
रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्त्राएल का महाराजा है। 50 यीशु ने उस को
उत्तर दिया;51 मैं ने जो तुझ से कहा, कि में ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा,
क्या तू इसी लिथे विश्वास करता है तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा।

यूहन्ना 2

1 फिर उस से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ,

और परमेश्वर के स्वर्गदूतोंको मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते
देखोगे।। 2 फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह या, और यीशु की
माता भी वहां यी। 3 और यीशु और उसके चेले भी उस ब्याह में नेवते गए थे। 4
जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, कि उन के पास दाखरस
नहीं रहा। 5 यीशु ने उस से कहा, हे महिला मुझे तुझ से क्या काम अभी मेरा
समय नहीं आया। 6 उस की माता ने सेवकोंसे कहा, जो कुद वह तुम से कहे, वही
करना। 7 वहां यहूदियोंके शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्यर के छः मटके धरे
थे, जि में दो दो, तीन तीन मन समाता या। 8 यीशु ने उन से कहा, अब
निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ। 9 वे ले गए, जब भोज के प्रधान ने
वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया या, और नहीं जानता या, कि वह कहां से
आया हे, (परन्तु जिन सेवकोंने पानी निकाला या, वे जानते थे) तो भोज के प्रधान
ने दूल्हे को बुलाकर, उस से कहा। 10 हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता
है और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तू ने अच्छा
दाखरस अब तक रख छोड़ा है। 11 यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला
चिन्ह दिखाकर अपक्की महिमा प्रगट की और उसके चेलोंने उस पर विश्वास
किया।। 12 इस के बाद वह और उस की माता और उसके भाई और उसके चेले
कफरनहूम को गए और वहां कुछ दिन रहे।। 13 यहूदियोंका फसह का पर्ब्ब
निकट या और यीशु यरूशलेम को गया। 14 और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़
और कबूतर के बेचनेवालोंओर सर्राफोंको बैठे हुए पाया। 15 और रस्सियोंका
कोड़ा बनाकर, सब भेड़ोंऔर बैलोंको मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफोंके पैसे
बियरा दिए, और पीढ़ोंको उलट दिया। 16 और कबूतर बेचनेवालोंसे कहा; इन्हें

यहां से ले जाओ: मेरे पिता के भवन को व्योपार का घर मत बनाओ। 17 तब
उसके चेलोंको स्क़रण आया कि लिखा है, ?तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी। 18
इस पर यहूदियोंने उस से कहा, तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह
दिखाता हे 19 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे
तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। 20 यहूदियोंने कहा; इस मन्दिर के बनाने में
छियालीस वर्ष लगे हें, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा 21 परन्तु उस
ने अपक्की देह के मन्दिर के विषय में कहा या। 22 सो जब वह मुर्दोंमें से जी उठा
तो उसके चेलोंको स्क़रण आया, कि उस ने यह कहा या; और उन्होंने पवित्र
शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा या, प्रतीति की।। 23 जब वह यरूशलेम
में फसह के समय पर्ब्ब में या, तो बहुतोंने उन चिन्होंको जो वह दिखाता या
देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। 24 परन्तु यीशु ने अपके आप को उन के
भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता या। 25 और उसे प्रयोजन न या,
कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप जानता या, कि मनुष्य
के मन में क्या है

यूहन्ना 3

1 फरीसियोंमें से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य या, जो यहूदियोंका सरदार या। 2
उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू
परमेश्वर की आरे से गुरू हो कर अया है; क्योंकि कोई इन चिन्होंको जो तू
दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साय न हो, तो नहीं दिखा सकता। 3 यीशु ने उस
को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नथे सिक्के से न

जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। 4 नीकुदेमुस ने उस से कहा,
मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है 5 यीशु ने उत्तर दिया, कि
मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे
तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। 6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा
है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। 7 अचम्भा न कर,
कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नथे सिक्के से जन्म लेना अवश्य है। 8 हवा
जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं
जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है जो कोई आत्मा से जन्मा
है वह ऐसा ही है। 9 नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि थे बातें क्योंकर हो
सकती हैं 10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियोंका गुरू हो कर भी
क्या इन बातोंको नहीं समझता। 11 मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो
जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम
हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। 12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और
तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर
प्रतीति करोगे 13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वहीं जो स्वर्ग से उतरा,
अर्यात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। 14 और जिस रीति से मूसा ने जंगल में
सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर
चढ़ाया जाए। 15 ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए।। 16
क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे
दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन
पाए। 17 परमेश्वर ने अपके पुत्र को जगत में इसलिथे नहीं भेजा, कि जगत पर

दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिथे कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। 18 जो उस पर
विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास
नहीं करता, वह दोषी ठहरा चुका; इसलिथे कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के
नाम पर विश्वास नहीं किया। 19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति
जगत में आई है, और मनुष्योंने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना
क्योंकि उन के काम बुरे थे। 20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर
रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामोंपर दोष
लगाया जाए। 21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता हैख वह ज्योति के निकट आता
है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं। 22 इस
के बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहां उन के सायर
रहकर बपतिस्क़ा देने लगा। 23 और यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में
बपतिस्क़ा देता या। क्योंकि वहां बहुत जल या और लोग आकर बपतिस्क़ा लेते
थे। 24 क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया या। 25 वहां
यूहन्ना के चेलोंका किसी यहूदी के साय शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ। 26
और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के
पार तेरे साय या, और जिस की तू ने गवाही दी है देख, वह बपतिस्क़ा देता है,
और सब उसके पास आते हैं। 27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग
से न दिया जाए तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। 28 तुम तो आप ही मेरे गवाह
हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूं। 29 जिस की
दुलहिन है, वही दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है,
दूल्हे के शब्द से बहुत हिर्षत होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। 30 अवश्य है

कि वह बढ़े और मैं घटूं।। 31 जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से
आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है,
वह सब के ऊपर है। 32 जो कुछ उस ने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है;
और कोई उस की गवाही ग्रहण नहीं करता। 33 जिस ने उस की गवाही ग्रहण कर
ली उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है। 34 क्योंकि जिसे
परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्क़ा नाप
नापकर नहीं देता। 35 पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उस ने सब वस्तुएं उसके
हाथ में दे दी हैं। 36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु
जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस
पर रहता है।।

यूहन्ना 4

1 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियोंने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से
अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्क़ा देता है। 2 (यद्यपि यीशु आप नहीं बरन
उसके चेले बपतिस्क़ा देते थे)। 3 तब यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला
गया। 4 और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य या। 5 सो वह सूखार नाम
सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिस याकूब ने अपके
पुत्र यूसुफ को दिया या। 6 और याकूब का कूआं भी वहीं या; सो यीशु मार्ग का
यका हुआ उस कूएं पर योंही बैठ गया, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई। 7
इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी
पिला। 8 क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। 9 उस

सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्योंमांगता है
(क्योंकि यहूदी सामरियोंके साय किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)। 10 यीशु
ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के बरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह
कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे
जीवन का जल देता। 11 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो
कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहा से
आया 12 क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और
आपक्की अपके सन्तान, और अपके ढारोंसमेत उस में से पीया 13 यीशु ने उस
को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर पियासा होगा। 14 परन्तु
जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक पियासा
न होगा: बरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त
जीवन के लिथे उमड़ता रहेगा। 15 सी ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे
ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं। 16 यीशु ने उस से
कहा, जा, अपके पति को यहां बुला ला। 17 स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति
की हूं: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं। 18 क्योंकि
तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह
तू ने सच कहा है। 19 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू
भविष्यद्वक्ता है। 20 हमारे बापदादोंने उसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते
हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है। 21 यीशु ने उस से
कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस
पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में। 22 तुम जिसे नहीं जानते,

उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि
उद्धार यहूदियोंमें से है। 23 परन्तु वह समय आता है, बरन अब भी है जिस में
सच्चे भक्त पिता का भजन आत्क़ा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपके
लिथे ऐसे ही भजन करनेवालोंको ढूंढ़ता है। 24 परमेश्वर आत्क़ा है, और अवश्य है
कि उसके भजन करनेवाले आत्क़ा और सच्चाई से भजन करें। 25 स्त्री ने उस से
कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह
आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा। 26 यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल
रहा हूं, वही हूं।। 27 इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह
स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न कहा, कि तू क्या चाहता है या किस लिथे
उस से बातें करता है। 28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चक्की गई, और
लोगोंसे कहने लगी। 29 आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने
किया मुझे बता दिया: कहीं यह तो मसीह नहीं है 30 सो वे नगर से निकलकर
उसके पास आने लगे। 31 इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि
हे रब्बी, कुछ खा ले। 32 परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिथे ऐसा
भोजन है जिसे तुम नहीं जानते। 33 तब चेलोंने आपस में कहा, क्या कोई उसके
लिथे कुछ खाने को लाया है 34 यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपके
भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं। 35 क्या तुम
नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पके हैं देखो, मैं तुम से कहता हूं,
अपक्की आंखे उठाकर खेतोंपर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिथे पक चुके हैं। 36
और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिथे फल बटोरता है;
ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनोंमिलकर आनन्द करें। 37 क्योंकि इस पर

यह कहावत ठीक बैठती है कि बानेवाला और है और काटनेवाला और। 38 मैं ने
तुम्हें वह खेत काटने के लिथे भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: औरोंने
परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।। 39 और उस नगर
के बहुत सामरियोंने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी यी, कि उस ने
सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया। 40 तब जब थे सामरी
उसके पास आए, तो उस से बिनती करने लगे, कि हमारे यहां रह: सो वह वहां दो
दिन तक रहा। 41 और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरोंने विश्वास किया।
42 और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने की से विश्वास नहीं करते; क्योंकि
हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता
है।। 43 फिर उन दो दिनोंके बाद वह वहां से कूच करके गलील को गया। 44
क्योंकि यीशु ने आप ही साझी दी, कि भविष्यद्वक्ता अपके देश में आदर नहीं
पाता। 45 जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साय उस से मिले;
क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्ब्ब के समय किए थे, उन्होंने उन सब
को देखा या, क्योंकि वे भी पर्ब्ब में गए थे।। 46 तब वह फिर गलील के काना में
आया, जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया या: और राजा का कर्मचारी या जिस
का पुत्र कफरनहूम में बीमार या। 47 वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील
में आ गया है, उसके पास गया और उस से बिनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र
को चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर या। 48 यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम
चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे। 49 राजा के
कर्मचारी ने उस से कहा; हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने के पहिले चल। 50 यीशु
ने उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है: उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की

प्रतीति की, और चला गया। 51 वह मार्ग में जा रहा या, कि उसके दास उस से आ
मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है। 52 उस न उन से पूछा कि किस
घड़ी वह अच्दा होने लगा उन्होंने उस से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर
उतर गया। 53 तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस
से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।
54 यह दूसरा आश्चर्यकर्म या, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।।

यूहन्ना 5

1 इन बातोंके पीछे यहूदियोंका एक पर्ब्ब हुआ और यीशु यरूशलेम को गया।। 2
यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा
कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैंं। 3 इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े
और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पके रहते थे। 4 (क्योंकि नियुक्ति
समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी
हिलते ही जो कोई पहिले उतरता वह चंगा हो जाता या चाहे उसकी कोई बीमारी
क्योंन हो।) 5 वहां एक मनुष्य या, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा या। 6 यीशु
ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनोंसे इस दशा में पड़ा है,
उस से पूछा, क्या तू चंगा होना चाहता है 7 उस बीमार ने उस को उत्तर दिया, कि
हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में
उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है। 8 यीशु ने
उस से कहा, उठ, अपक्की खाट उठाकर चल फिर। 9 वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो
गया, और अपक्की खाट उठाकर चलने फिरने लगा। 10 वह सब्त का दिन या।

इसलिथे यहूदी उस से, जो चंगा हुआ या, कहने लगे, कि आज तो सब्त का दिन
है, तुझे खाट उठानी उचित्त नहीं। 11 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे
चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, अपक्की खाट उठाकर चल फिर। 12 उन्होंने
उस से पूछा वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, खाट उठाकर चल फिर 13
परन्तु जो चंगा हो गया या, वह नहीं जानता या वह कौन है; क्योंकि उस जगह में
भीड़ होने के कारण यीशु वहां से हट गया या। 14 इन बातोंके बाद वह यीशु को
मन्दिर में मिला, तब उस न उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप
मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पके। 15 उस
मनुष्य ने जाकर यहूदियोंसे कह दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, वह यीशु है।
16 इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के
दिन करता या। 17 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम
करता है, और मैं भी काम करता हूं। 18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके
मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को
तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपके आप को परमेश्वर के
तुल्य ठहराता या।। 19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं,
पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि
जिन जिन कामोंको वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। 20 क्योंकि
पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे
दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।
21 क्योकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें
चाहता है उन्हें जिलाता है। 22 और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु

न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। 23 इसलिथे कि सब लोग जैसे
पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें: जो पुत्र का आदर नहीं
करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। 24 मैं तुम से सच
सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त
जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार
होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। 25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय
आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो
सुनेंगे वे जीएंगे। 26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपके आप में जीवन रखता है,
उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिक्कारने दिया है कि अपके आप में जीवन
रखे। 27 बरन उसे न्याय करने का भी अधिक्कारने दिया है, इसलिथे कि वह
मनुष्य का पुत्र है। 28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि
जितने कब्रोंमें हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। 29 जिन्होंने भलाई की है वे
जीवन के पुनरूत्यान के लिथे जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के
पुनरूत्यान के लिथे जी उठेंगे। 30 मैं अपके आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा
सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपक्की
इच्छा नहीं, परन्तु अपके भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं। 31 यदि मैं आप ही
अपक्की गवाही दूं; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। 32 एक और है जो मेरी गवाही
देता है वह सच्ची है। 33 तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सच्चाई की
गवाही दी है। 34 परन्तु मैं अपके विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी
मैं थे बातें इसलिथे कहता हूं, कि तुम्हें उद्धार मिले। 35 वह जो जलता और
चमकता हुआ दीपक या; और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में, मगन होना

अच्छा लगा। 36 परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है:
क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्यात यही काम जो मैं
करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है। 37 और पिता जिस ने मुझे
भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न
उसका रूप देखा है। 38 और उसके वचन को मन में स्यिर नहीं रखते क्योंकि
जिसे उस ने भेजा उस की प्रतीति नहीं करते। 39 तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो,
क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है,
जो मेरी गवाही देता है। 40 फिर भी तुम जीवन पाने के लिथे मेरे पास आना नहीं
चाहते। 41 मैं मनुष्योंसे आदर नहीं चाहता। 42 परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं, कि
तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। 43 मैं अपके पिता के नाम से आया हूं, और तुम
मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपके ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर
लोगे। 44 तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर
की ओर से है, नहीं चाहते, किसी प्रकार विश्वास कर सकते हो 45 यह न समझो,
कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगानेवाला तो है,
अर्यात मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। 46 क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति
करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिथे कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। 47
परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातोंकी प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातोंकी
क्योंकर प्रतीति करोगे।।

यूहन्ना 6

1 इन बातोंके बाद यीशु गलील की फील अर्यात तिबिरियास की फील के पास

गया। 2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली कयोंकि जो आश्‍चर्य कर्म वह
बीमारोंपर दिखाता या वे उन को देखते थे। 3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपके
चेलोंके साय वहां बैठा। 4 और यहूदियोंके फसह के पर्ब्ब निकट या। 5 तब यीशु ने
अपक्की आंखे उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपके पास आते देखा, और फिलप्पुस
से कहा, कि हम इन के भोजन के लिथे कहां से रोटी मोल लाएं 6 परन्तु उस ने
यह बात उसे परखने के लिथे कही; क्योंकि वह आप जानता या कि मैं क्या
करूंगा। 7 फिलप्पुस ने उस को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी उन के लिथे
पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को योड़ी योड़ी मिल जाए। 8 उसके चेलोंमें
से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा। 9 यहां एक लड़का है जिस के
पास जव की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं परन्तु इतने लोगोंके लिथे वे क्या हैं।
10 यीशु ने कहा, कि लोगोंको बैठा दो। उस जगह बहुत घास यी: तब वे लोग जो
गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए: 11 तब यीशु ने रोटियां लीं, और
धन्यवाद करके बैठनेवालोंको बांट दी: और वैसे ही मछिलयोंमें से जितनी वे
चाहते थे बांट दिया। 12 जब वे खाकर तृप्‍त हो गए तो उस ने अपके चेलोंसे कहा,
कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए। 13 सो उन्होंने बटोरा, और
जव की पांच रोटियोंके टुकड़े जो खानेवालोंसे बच रहे थे उन की बारह टोकिरयां
भरीं। 14 तब जो आश्‍चर्य कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे;
कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला या निश्‍चय यही है। 15 यीशु यह
जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिथे आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर
अकेला चला गया। 16 फिर जब संध्या हुई, तो उसके चेले फील के किनारे गए।
17 और नाव पर चढ़कर फील के पार कफरनहूम को जाने लगे: उस समय

अन्धेरा हो गया या, और यीशु अभी तक उन के पास नहीं आया या। 18 और
आन्धी के कारण फील में लहरे उठने लगीं। 19 सो जब वे खेते खेते तीन चार
मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को फील पर चलते, और नाव के
निकट आते देखा, और डर गए। 20 परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हूं; डरो मत।
21 सो वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिथे तैयार हुए और तुरन्त वह नाव के स्यान
पर जा पहुंची जहां वह जाते थे। 22 दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो फील के पार खड़ी
यी, यह देखा, कि यहां एक को छोड़कर और कोई छोटी नाव न यी, और यीशु
अपके चेलोंके साय उस नाव पर न चढ़ा, परन्तु केवल उसके चेले चले गए थे। 23
(तौभी और छोटी नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आई, जहां उन्होंने प्रभु
के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई यी।) 24 सो जब भीड़ ने देखा, कि यहां न
यीशु है, और न उसके चेले, तो वे भी छोटी छोटी नावोंपर चढ़ के यीशु को ढूंढ़ते
हुए कफरनहूम को पहुंचे। 25 और फील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू
यहां कब आया 26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम
मुझे इसलिथे नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिथे कि
तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए। 27 नाशमान भोजन के लिथे परिश्र्म न करो,
परन्तु उस भोजन के लिथे जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र
तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्यात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है। 28 उन्होंने
उस से कहा, परमेश्वर के कार्य्य करने के लिथे हम क्या करें 29 यीशु ने उन्हें उत्तर
दिया; परमेश्वर का कार्य्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास
करो। 30 तब उन्होंने उस से कहा, फिर तू कौन का चिन्ह दिखाता है कि हम उसे
देखकर तेरी प्रतीति करें, तू कौन सा काम दिखाता है 31 हमारे बापदादों ने जंगल

में मन्ना खाया; जैसा लिखा है; कि उस ने उन्हें खाने के लिथे स्वर्ग से रोटी दी।
32 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी
स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। 33 क्योंकि
परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है। 34 तब
उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर। 35 यीशु ने उन से
कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो
मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा। 36 परन्तु मैं ने तुम से कहा,
कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तोभी विश्वास नहीं करते। 37 जो कुछ पिता मुझे
देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। 38 क्योंकि मैं
अपक्की इच्छा नहीं, बरन अपके भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिथे स्वर्ग
से उतरा हूं। 39 और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया
है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं। 40
क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास
करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। 41
सो यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिथे कि उस ने कहा या; कि जो रोटी स्वर्ग
से उतरी, वह मैं हूं। 42 और उन्होंने कहा; क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिस
के माता पिता को हम जानते हैं तो वह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं।
43 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ। 44 कोई मेरे पास
नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस
को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। 45 भविष्यद्वक्ताओं के लेखोंमें यह लिखा है,
कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना

और सीखा है, वह मेरे पास आता है। 46 यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा
परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। 47 मैं तुम से
सच सच कहता हूं, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। 48
जीवन की रोटी मैं हूं। 49 तुम्हारे बापदादोंने जंगल में मन्ना खाया और मर गए।
50 यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न
मरे। 51 जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए,
तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिथे दूंगा, वह मेरा
मांस है। 52 इस पर यहूदी यह कहकर आपस में फगड़ने लगे, कि यह मनुष्य
क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है 53 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से
सच सच कहता हूं जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न
पीओ, तुम में जीवन नहीं। 54 जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता हे,
अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। 55
क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहू वास्तव में पीन की
वस्तु है। 56 जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में स्यिर बना
रहता है, और मैं उस में। 57 जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के
कारण जीवित हूं वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। 58
जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, बापदादोंके समान नहीं कि खाया, और मर गए:
जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा। 59 थे बातें उस ने कफरनहूम
के एक आराधनालय में उपकेश देते समय कहीं। 60 इसलिथे उसके चेलोंमें से
बहुतोंने यह सुनकर कहा, कि यह बात नागवार है; इसे कौन सुन सकता है 61
यीशु ने अपके मन में यह जान कर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते

हैं, उन से पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है 62 और यदि तुम मनुष्य
के पुत्र को जहां वह पहिले या, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा 63 आत्क़ा
तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे
आत्क़ा है, और जीवन भी हैं। 64 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं
करते: क्योंकि यीशु तो पहिले ही से जानता या कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन
हैं और कौन मुझे पकड़वाएगा। 65 और उस ने कहा, इसी लिथे मैं ने तुम से कहा
या कि जब तक किसी को पिता की ओर यह बरदान न दिया जाए तक तक वह
मेरे पास नहीं आ सकता। 66 इस पर उसके चेलोंमें से बहुतेरे उल्टे फिर गए और
उसके बाद उसके साय न चले। 67 तब यीशु ने उन बारहोंसे कहा, क्या तुम भी
चले जाना चाहते हो 68 शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस
के पास जाएं अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। 69 और हम ने विश्वास
किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है। 70 यीशु ने उन्हें
उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम बारहोंको नहीं चुन लिया तौभी तुम में से एक व्यक्ति
शैतान है। 71 यह उस ने शमौन इस्किरयोती के पुत्र यहूदाह के विषय में कहा,
क्योंकि यही जो उन बारहोंमें से या, उसे पकड़वाने को या।।

यूहन्ना 7

1 इन बातोंके बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का
यत्न कर रहे थे, इसलिथे वह यहूदिया में फिरना न चाहता या। 2 और
यहूदियोंका मण्डपोंका पर्ब्ब निकट या। 3 इसलिथे उसके भाइयोंने उस से कहा,
यहां से कूच करके यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी

देखें। 4 क्योंकिं ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे:
यदि तू यह काम करता है, तो अपके तई जगत पर प्रगट कर। 5 क्योंकि उसके
भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। 6 तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय
अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिथे सब समय है। 7 जगत तुम से बैर नहीं कर
सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही
देता हूं, कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम पर्ब्ब में जाओ: मैं अभी इस पर्ब्ब में नहीं
जाता; क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ। 9 वह उन से थे बातें कहकर
गलील ही में रह गया।। 10 परन्तु जब उसके भाई पर्ब्ब में चले गए, तो वह आप
ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानोंगुप्त होकर गया। 11 तो यहूदी पर्ब्ब में उसे यह
कहकर ढूंढ़ने लगे कि वह कहां है 12 और लोगोंमें उसके विषय चुपके चुपके बहुत
सी बातें हुईं: कितने कहते थे; वह भला मनुष्य है: और कितने कहते थे; नहीं, वह
लोगोंको भरमाता है। 13 तौभी यहूदियोंके भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय
में खुलकर नहीं बोलता या। 14 और जब पर्ब्ब के आधे दिन बीत गए; तो यीशु
मन्दिर में जाकर उपकेश करने लगा। 15 तब यहूदियोंने अचम्भा करके कहा, कि
इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई 16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा उपकेश मेरा
नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है। 17 यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे,
तो वह इस उपकेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं
अपक्की ओर से कहता हूं। 18 जो अपक्की ओर से कुछ कहता है, वह अपक्की ही
बढ़ाई चाहता है; परन्तु जो अपके भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है,
और उस में अधर्म नहीं। 19 क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्या नहीं दी तौभी तुम में से
काई व्यवस्या पर नहीं चलता। तुम क्योंमुझे मार डालना चाहते हो 20 लोगोंने

उत्तर दिया; कि तुझ में दुष्टात्क़ा है; कौन तुझे मार डालना चाहता है 21 यीशु ने
उन को उत्तर दिया, कि मैं ने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो। 22
इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से
है परन्तु बाप-दादोंसे चक्की आई है), और तुम सब्त के दिन को मनुष्य का
खतना करते हो। 23 जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि
मूसा की व्यवस्या की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्योंइसलिथे क्रोध
करते हो, कि मैं ने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया। 24 मुंह
देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ।। 25 तब कितने
यरूशलेमी कहने लगे; क्या यह वह नहीं, जिस के मार डालने का प्रयत्न किया जा
रहा है। 26 परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उस से
कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारोंने सच सच जान लिया है; कि यही
मसीह है। 27 इस को तो हम जानते हैं, कि यह कहां का है; परन्तु मसीह जब
आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहां का है। 28 तब यीशु ने मन्दिर में उपकेश
देते हुए पुकार के कहा, तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का
हूं: मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उस को तुम नहीं
जानते। 29 मैं उसे जानता हूं; क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा
है। 30 इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला,
क्योंकि उसका समय अब तक न आया या। 31 और भीड़ में से बहुतेरोंने उस पर
विश्वास किया, और कहने लगे, कि मसीह जब आएगा, तो क्या इस से अधिक
आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इस ने दिखाए 32 फरीसियोंने लोगोंको उसके विषय में
थे बातें चुपके चुपके करते सुना; और महाथाजकोंऔर फरीसियोंने उसके पकड़ने

को सिपाही भेजे। 33 इस पर यीशु ने कहा, मैं योड़ी देर तक और तुम्हारे साय हूं;
तब अपके भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा। 34 तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं
पाओगे और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते। 35 यहूदियोंने आपस में कहा,
यह कहां जाएगा, कि हम इसे न पाएंगे: क्या वह उन के पास जाएगा, जो
यूनानियोंमें तित्तर बित्तर होकर रहते हैं, और यूनानियोंको भी उपकेश देगा 36 यह
क्या बात है जो उस ने कही, कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु न पाओगे: और जहां मैं
हूं, वहां तुम नहीं आ सकते 37 फिर पर्ब्ब के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु
खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आकर पीए।
38 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके ह्रृदय में से
जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी। 39 उस ने यह वचन उस आत्क़ा के
विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्क़ा अब
तक न उतरा या; क्योंकि यीशु अब तक अपक्की महिमा को न पहुंचा या। 40 तब
भीड़ में से किसी किसी ने थे बातें सुन कर कहा, सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।
41 औरोंने कहा; यह मसीह है, परन्तु किसी ने कहा; क्योंक्या मसीह गलील से
आएगा 42 क्या पवित्र शास्त्र में नहीं आया, कि मसीह दाऊद के वंश से और
बैतलहम गांव से आएगा जहां दाऊद रहता या 43 सो उसके कारण लोगोंमें फूट
पड़ी। 44 उन में से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न
डाला।। 45 तब सिपाही महाथाजकोंऔर फरीसियोंके पास आए, और उन्होंने उन
से कहा, तुम उसे क्योंनहीं लाए 46 सिपाहियोंने उत्तर दिया, कि किसी मनुष्य ने
कभी ऐसी बातें न की। 47 फरीसियोंने उन को उत्तर दिया, क्या तुम भी भरमाए
गए हो 48 क्या सरदारोंया फरीसियोंमें से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है 49

परन्तु थे लोग जो व्यवस्या नहीं जानते, स्त्रापित हैं। 50 नीकुदेमुस ने, (जो
पहिले उसके पास आया या और उन में से एक या), उन से कहा। 51 क्या हमारी
व्यवस्या किसी व्यक्ति को जब तक पहिले उस की सुनकर जान न ले, कि वह
क्या करता है; दोषी ठहराती है 52 उन्होंने उसे उत्तर दिया; क्या तू भी गलील का
है ढूंढ़ और देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का। 53 तब सब
कोई अपके अपके घर को गए।।

यूहन्ना 8

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया। 2 और भोर को फिर मन्दिर में आया,
और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपकेश देने लगा। 3 तब
शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई यी, और उस को
बीच में खड़ी करके यीशु से कहा। 4 हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई
है। 5 व्यवस्या में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियोंकोंपत्यरवाह करें: सो तू
इस स्त्री के विषय में क्या कहता है 6 उन्होंने उस को परखने के लिथे यह बात
कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिथे कोई बात पाएं, परन्तु यीशु फुककर
उंगली से भूमि पर लिखने लगा। 7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर
उन से कहा, कि तू ुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्यर मारे। 8 और
फिर फुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा। 9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ोंसे
लेकर छोटोंतक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री
वहीं बीच में खड़ी रह गई। 10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां
गए क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी। 11 उसा ने कहा, हे प्रभु, किसी ने

नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न
करना।। 12 तब यीशु ने फिर लोगोंसे कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे
हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। 13
फरीसियोंने उस से कहा; तू अपक्की गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।
14 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपक्की गवाही आप देता हूं, तौभी
मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां को
जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं या कहां को जाता हूं। 15
तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। 16 और
यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं
हूं, और पिता है जिस ने मुझे भेजा। 17 और तुम्हारी व्यवस्या में भी लिखा है; कि
दो जनोंकी गवाही मिलकर ठीक होती है। 18 एक तो मैं आप अपक्की गवाही
देता हूं, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिस ने मुझे भेजा। 19 उन्होंने उस
से कहा, तेरा पिता कहां है यीशु ने उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते, तो मेरे
पिता को भी जानते। 20 थे बातें उस ने मन्दिर में उपकेश देते हुए भण्डार घर में
कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया या।।
21 उस ने फिर उन से कहा, मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपके आप में
मरोगे: जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते। 22 इस पर यहूदियोंने कहा,
क्या वह अपके आप को मार डालेगा, जो कहता है; कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम
नहीं आ सकते 23 उस ने उन से कहा, तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूं; तुम संसार
के हो, मैं संसार का नहीं। 24 इसलिथे मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपके पापोंमें
मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वहीं हूं, तो अपके पापोंमें मरोगे।

25 उन्होंने उस से कहा, तू कौन है यीशु ने उन से कहा, वही हूं जो प्रारम्भ से तुम
से कहता आया हूं। 26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना
है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उस से सुना हे, वही जगत से
कहहा हूं। 27 वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है। 28 तब यीशु ने
कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं,
और अपके आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही थे
बातें कहता हूं। 29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साय है; उस ने मुझे अकेला नहीं
छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है। 30 वह
थे बातें कह ही रहा या, कि बहुतेरोंने उस पर विश्वास किया।। 31 तब यीशु ने उन
यहूदियोंसे जिन्होंने उन की प्रतीति की यी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने
रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। 32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें
स्वतंत्र करेगा। 33 उन्होंने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं
और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो
जाओगे 34 यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई
पाप करता है, वह पाप का दास है। 35 और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा
रहता है। 36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो
जाओगे। 37 मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो; तौभी मेरा वचन तुम्हारे
हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिथे तुम मुझे मार डालना चाहते हो। 38 मैं वही
कहता हूं, जो अपके पिता के यहां देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने
अपके पिता से सुना है। 39 उन्होंने उन को उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो
इब्राहीम है: यीशु ने उन से कहा; यदि तुम इब्राहीम के सन्तान होते, तो इब्राहीम

के समान काम करते। 40 परन्तु अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते
हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने
नहीं किया या। 41 तुम अपके पिता के समान काम करते हो: उन्होंने उस से कहा,
हम व्यभिचार से नहीं जन्के; हमारा एक पिता है अर्यात परमेश्वर। 42 यीशु ने उन
से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं
परमेश्वर में से निकल कर आया हूं; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे
भेजा। 43 तुम मेरी बात क्योंनहीं समझते इसलिथे कि मेरा वचन सुन नहीं
सकते। 44 तुम अपके पिता शैतान से हो, और अपके पिता की लालसाओं को पूरा
करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्यिर न रहा,
क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह फूठ बोलता, तो अपके स्वभाव ही से
बोलता है; क्योंकि वह फूठा है, बरन फूठ का पिता है। 45 परन्तु मैं जो सच
बोलता हूं, इसीलिथे तुम मेरी प्रतीति नहीं करते। 46 तुम में से कौन मुझे पापी
ठहराता है और यदि मैं सच बोलता हूं, तो तुम मेरी प्रतीति क्योंनहीं करते 47 जो
परमेश्वर से होता हे, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिथे नहीं सुनते
कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो। 48 यह सुन यहूदियोंने उस से कहा; क्या हम
ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्क़ा है 49 यीशु ने उत्तर दिया,
कि मुझ में दुष्टात्क़ा नहीं; परन्तु मैं अपके पिता का आदर करता हूं, और तुम
मेरा निरादर करते हो। 50 परन्तु मैं अपक्की प्रतिष्ठा नहीं चाहता, हां, एक तो है
जो चाहता है, और न्याय करता है। 51 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि यदि कोई
व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा। 52
यहूदियोंने उस से कहा, कि अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्क़ा है:

इब्राहीम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं और तू कहता है, कि यदि कोई
मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा। 53
हमारा पिता इब्राहीम तो मर गया, क्या तू उस से बड़ा है और भविष्यद्वक्ता भी मर
गए, तू अपके आप को क्या ठहराता है। 54 यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप
अपक्की महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला
मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है। 55 और तुम ने तो
उसे नहीं जाना: परन्तु मैं उसे जानता हूं; और यदि कहूं कि मैं उसे नहीं जानता,
तो मैं तुम्हारी नाईं फूठा ठहरूंगा: परन्तु मैं उसे जानता, और उसके वचन पर
चलता हूं। 56 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन या;
और उस ने देखा, और आनन्द किया। 57 यहूदियोंने उस से कहा, अब तक तू
पचास वर्ष का नहीं; फिर भी तू ने इब्राहीम को देखा है 58 यीशु ने उन से कहा; मैं
तुम से सच सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं। 59
तब उन्होंने उसे मारने के लिथे पत्यर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से
निकल गया।।

यूहन्ना 9

1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्क़ का अन्धा या। 2 और
उसके चेलोंने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया या कि यह अन्धा जन्क़ा,
इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने 3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप
किया या, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिथे हुआ, कि परमेश्वर के काम
उस में प्रगट हों। 4 जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना

अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता। 5 जब तक
मैं जंगल में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। 6 यह कहकर उस ने भूमि पर यूका
और उस यूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखोंपर लगाकर।
7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्य भेजा हुआ है) सो उस
ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। 8 तब पड़ोसी और जिन्होंने पिहले
उसे भीख मांगते देखा या, कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख मांगा
करता या 9 कितनोंने कहा, यह वही है: औरोंने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान है:
उस ने कहा, मैं वही हूं। 10 तब वे उस से पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गई
11 उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी
आंखोंपर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और
धोकर देखने लगा। 12 उन्होंने उस से पूछा; वह कहां है उस ने कहा; मैं नहीं
जानता।। 13 लोग उसे जो पहिले अन्धा या फरीसियोंके पास ले गए। 14 जिस
दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आंखे खोली यी वह सब्त का दिन या। 15
फिर फरीसियोंने भी उस से पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गई उस न ेउन
से कहा; उस ने मेरी आंखो पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब
देखता हूं। 16 इस पर कई फरीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से
नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता। औरोंने कहा, पापी मनुष्य क्योंकर
ऐसे चिन्ह दिखा सकता है सो उन में फूट पड़ी। 17 उन्होंने उस अन्धे से फिर
कहा, उस ने जो तेरी आंखे खोली, तू उसके विषय में क्या कहता है उस ने कहा,
यह भविष्यद्वक्ता है। 18 परन्तु यहूदियोंको विश्वास न हुआ कि यह अन्धा या और
अब देखता है जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को जिस की आंखे खुल गई यी,

बुलाकर। 19 उन से न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि
अन्धा जन्क़ा या फिर अब क्योंकर देखता है 20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया;
हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्क़ा या। 21 परन्तु हम यह
नहीं जानते हैं कि अब क्योंकर देखता है; और न यह जानते हैं, कि किस ने उस
की आंखे खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपके विषय में आप कह
देगा। 22 थे बातें उसके माता-पिता ने इसलिथे कहीं क्योंकि वे यहूदियोंसे डरते
थे; क्योकि यहूदी एका कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो
आराधनालय से निकाला जाए। 23 इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, कि वह
सयाना है; उसी से पूछ लो। 24 तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अन्धा या दूसरी
बार बुलाकर उस से कहा, परमेश्वर की स्तुति कर; हम तो जानते हैं कि वह
मनुष्य पापी है। 25 उस ने उत्तर दिया: मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं: मैं
एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा या और अब देखता हूं। 26 उन्होंने उस से फिर
कहा, कि उस ने तेरे साय क्या किया और किस तेरह तेरी आंखें खोली 27 उस ने
उन से कहा; मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने ने सुना; अब दूसरी बार
क्योंसुनना चाहते हो क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो 28 तब वे उसे
बुरा-भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं। 29 हम
जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की
कहां का है। 30 उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं
जानते की कहां का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं। 31 हम जानते हैं कि
परमेश्वर पापियोंकी नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस
की इच्छा पर चलता है, तो वह उस की सुनता है। 32 जगत के आरम्भ से यह

कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्क़ के अन्धे की आंखे खोली हों। 33
यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता। 34
उन्होंने उस को उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल पापोंमें जन्क़ा है, तू हमें क्या
सिखाता है और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।। 35 यीशु ने सुना, कि उन्होंने
उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उसे भेंट हुई तो कहा, कि क्या तू परमेश्वर के
पुत्र पर विश्वास करता है 36 उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस
पर विश्वास करूं 37 यीशु ने उस से कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साय
बातें कर रहा है वही है। 38 उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उसे
दंडवत किया। 39 तब यीशु ने कहा, मैं इस जगत में न्याय के लिथे आया हूं,
ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं। 40 जो फरीसी
उसके साय थे, उन्होंने थे बातें सुन कर उस से कहा, क्या हम भी अन्धे हैं 41 यीशु
ने उन से कहा, यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि
हम देखते हैं, इसलिथे तुम्हारा पाप बना रहता है।।

यूहन्ना 10

1 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता,
परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। 2 परन्तु जो द्वार से
भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ोंका चरवाहा है। 3 उसके लिथे द्वारपाल द्वार खोल
देता है, और भेंड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपक्की भेड़ोंको नाम ले लेकर
बुलाता है और बाहर ले जाता है। 4 और जब वह अपक्की सब भेड़ोंको बाहर
निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो

लेती हैं; क्योंकि वे उसक शब्द पहचानती हैं। 5 परन्तु वे पराथे के पीछे नहीं
जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायोंका शब्द नहीं पहचानती। 6 यीशु
ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि थे क्या बातें हैं जो वह हम से
कहता है।। 7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि
भेड़ोंका द्वार मैं हूं। 8 जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु
भेड़ोंने उन की न सुनी। 9 द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार
पाएगा औश्र् भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। 10 चोर किसी
और काम के लिथे नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने
को आता है। मैं इसलिथे आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। 11
अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ोंके लिथे अपना प्राण देता है। 12 मजदूर
जो न चरवाहा है, और न भेड़ोंका मालिक है, भेडिए को आते हुए देख, भेड़ोंको
छोड़कर भाग जाता है, और भेडिय़ा उन्हें पकड़ता और तित्तर बित्तर कर देता है।
13 वह इसलिथे भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उस को भेड़ोंकी चिन्ता
नहीं। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को
जानता हूं। 15 इसी तरह मैं अपी भेड़ोंको जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं,
और मैं भेड़ोंके लिथे अपना प्राण देता हूं। 16 और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस
भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक
ही फुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। 17 पिता इसलिथे मुझ से प्रेम रखता है, कि
मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। 18 कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन
मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का अधिक्कारने है, और उसे फिर लेने का
भी अधिक्कारने है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।। 19 इन बातोंके कारण

यहूदियोंमें फिर फूट पड़ी। 20 उन में से बहुतेरे कहने लगे, कि उस में दुष्टात्क़ा है,
और वह पागल है; उस की क्योंसुनते हो 21 औरोंने कहा, थे बात ऐसे मनुष्य की
नहीं जिस में दुष्टात्क़ा हो: क्या दुष्टात्क़ा अन्धोंकी आंखे खोल सकती है 22
यरूशलेम में स्यापन पर्ब्ब हुआ, और जाड़े की ऋतु यी। 23 और यीशु मन्दिर में
सुलैमान के ओसारे में टहल रहा या। 24 तब यहूदियोंने उसे आ घेरा और पूछा, तू
हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही
नहीं, जो काम मैं अपके पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं। 26 परन्तु
तुम इसलिथे प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ोंमें से नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरा
शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। 28 और
मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे
हाथ से छीन न लेगा। 29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है,
और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और पिता एक हैं। 31
यहूदियोंने उसे पत्यरवाह करते को फिर पत्यर उठाए। 32 इस पर यीशु ने उन से
कहा, कि मैं ने तुम्हें अपके पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में
से किस काम के लिथे तुम मुझे पत्यरवाह करते हो 33 यहूदियोंने उस को उत्तर
दिया, कि भले काम के लिथे हम तुझे पत्यरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की
निन्दा के कारण और इसलिथे कि तू मनुष्य होकर अपके आप को परमेश्वर
बनाता है। 34 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्या में नहीं लिखा है
कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो 35 यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास
परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती।) 36 तो

जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा
करता है, इसलिथे कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। 37 यदि मैं अपके पिता
के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो। 38 परन्तु यदि मैं करता हूं, तो चाहे
मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामोंकी तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो,
और समझो, कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं। 39 तब उन्होंने फिर उसे
पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया।। 40 फिर वह
यरदन के पार उस स्यान पर चला गया, जहां यूहन्ना पहिले बपतिस्क़ा दिया
करता या, और वहीं रहा। 41 और बहुतेरे उसके पास आकर कहते थे, कि युहन्ना
ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इस के विषय में कहा
या वह सब सच या। 42 और वहां बहुतेरोंने उस पर विश्वास किया।।

यूहन्ना 11

1 मरियम और उस की बहिन मरया के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक
मनुष्य बीमार या। 2 यह वही मरियम यी जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर उसके
पांवोंको अपके बालोंसे पोंछा या, इसी का भाई लाजर बीमार या। 3 सो उस की
बहिनोंने उसे कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार
है। 4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की
महिमा के लिथे है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। 5 और यीशु
मरया और उस की बहन और लाजर से प्रेम रखता या। 6 सो जब उस ने सुना, कि
वह बीमार है, तो जिस स्यान पर वह या, वहां दो दिन और ठहर गया। 7 फिर इस
के बाद उस ने चेलोंसे कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें। 8 चेलोंने उस

से कहा, हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या तू
फिर भी वहीं जाता है 9 यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते यदि
कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता है, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता
है। 10 परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश
नहीं। 11 उस ने थे बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र
लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं। 12 तब चेलोंने उस से कहा, हे
प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा। 13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय
में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा। 14 तब
यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है। 15 और मैं तुम्हारे कारण
आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम
उसके पास चलें। 16 तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपके साथ के चेलोंसे
कहा, आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें। 17 सो यीशु को आकर यह मालूम
हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। 18 बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप
कोई दो मील की दूरी पर था। 19 और बहुत से यहूदी मरथा और मरियम के पास
उन के भाई के विषय में शान्ति देने के लिथे आए थे। 20 सो मरथा यीशु के आने
का समचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही। 21
मरथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।
22 और अब भी मैं जानती हूं, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे
देगा। 23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा। 24 मरथा ने उस से कहा, मैं
जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरूत्थान के समय वह जी उठेगा। 25 यीशु ने
उस से कहा, पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूं, जा कोई मुझ पर विश्वास करता है

वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। 26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर
विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास
करती है 27 उस ने उस से कहा, हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर
का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला या, वह तू ही है। 28 यह कहकर वह चक्की
गई, और अपक्की बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, गुरू यहीं है, और
तुझे बुलाता है। 29 वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास आई। 30 (यीशु अभी
गांव में नहीं पहुंचा या, परन्तु उसी स्यान में या जहां मरया ने उस से भेंट की यी।)
31 तब जो यहूदी उसके साय घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि
मरियम तुरन्त उठके बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को
जाती है, उसके पीछे हो लिथे। 32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु या, तो उसे
देखते ही उसके पांवोंपर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न
मरता। 33 जब यीशु न उस को और उन यहूदियोंको जो उसके साय आए थे रोते
हुए देखा, तो आत्क़ा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे
कहां रखा है 34 उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले। 35 यीशु के आंसू
बहने लगे। 36 तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता या। 37
परन्तु उन में से कितनोंने कहा, क्या यह जिस ने अन्धे की आंखें खोली, यह भी
न कर सका कि यह मनुष्य न मरता 38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर
कब्र पर आया, वह एक गुफा यी, और एक पत्यर उस पर धरा या। 39 यीशु ने
कहा; पत्यर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मरया उस से कहने लगी, हे प्रभु,
उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए। 40 यीशु ने उस
से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा ािि कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर

की महिमा को देखेगी। 41 तब उन्होंने उस पत्यर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें
उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 और
मै जानता या, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के
कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है। 43 यह
कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ। 44 जो मर गया या,
वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा
हुआ यारू यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो।। 45 तब जो यहूदी मरियम
के पास आए थे, और उसका यह काम देखा या, उन में से बहुतोंने उस पर विश्वास
किया। 46 परन्तु उन में से कितनोंने फरीसियोंके पास जाकर यीशु के कामोंका
समाचार दिया।। 47 इस पर महाथाजकोंऔर फरीसियोंने मुख्य सभा के लोगोंको
इकट्ठा करके कहा, हम करते क्या हैं यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है। 48
यदि हम उसे योंही छोड़ दे, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर
हमारी जगह और जाति दोनोंपर अधिक्कारने कर लेंगे। 49 तब उन में से काइफा
नाम एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महाथाजक या, उन से कहा, तुम कुछ नहीं
जानते। 50 और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिथे यह भला है, कि हमारे लोगोंके
लिथे एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो। 51 यह बात उस ने
अपक्की ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महाथाजक होकर भविष्यद्वणी की,
कि यीशु उस जाति के लिथे मरेगा। 52 और न केवल उस जाति के लिथे, बरन
इसलिथे भी, कि परमेश्वर की तित्तर बित्तर सन्तानोंको एक कर दे। 53 सो उसी
दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे।। 54 इसलिथे यीशु उस
समय से यहूदियोंमें प्रगट होकर न फिरा; परन्तु वहां से जंगल के निकट के देख

में इफ्राईम नाम, एक नगर को चला गया; और अपके चेलोंके साय वहीं रहने
लगा। 55 और यहूदियोंका फसह निकट या, और बहुतेरे लोग फसह से पहिले
दिहात से यरूशलेम को गए कि अपके आप को शुद्ध करें। 56 सो वे यीशु को ढूंढने
और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो 57 क्या वह
पर्ब्ब में नहीं आएगा और महाथाजकोंऔर फरीसियोंने भी आज्ञा दे रखी यी, कि
यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए, कि उसे पकड़ लें।।

यूहन्ना 12

1 फिर यीशु फतह से छ: दिन पहिले बैतनिय्याह में आया, जंहा लाजर या: जिसे
यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया या। 2 वहां उन्होंने उसके लिथे भोजन तैयार
किया, और मरया सेवा कर रही यी, और लाजर उन में से एक या, जो उसके साय
भोजन करने के लिथे बैठे थे। 3 तब मरियम ने जटामासी का आध सेर बहुमोल
इत्र लेकर यीशु के पावोंपर डाला, और अपके बालोंसे उसके पांव पोंछे, और इत्र की
सुगंध से घर सुगन्धित हो गया। 4 परन्तु उसके चेलोंमें से यहूदा इस्किरयोती
नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने पर या, कहने लगा। 5 यह इत्र तीन सौ दीनार में
बेचकर कंगालोंको कयोंन दिया गया 6 उस ने यह बात इसलिथे न कही, कि उसे
कंगालोंकी चिन्ता यी, परन्तु इसलिथे कि वह चोर या और उसके पास उन की
यैली रहती यी, और उस में जो कुछ डाला जाता या, वह निकाल लेता या। 7 यीशु
ने कहा, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिथे रहने दे। 8 क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे
साय सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साय सदा न रहूंगा।। 9 यहूदियोंमें से
साधारण लोग जान गए, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के कारण आए

परन्तु इसलिथे भी कि लाजर को देंखें, जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया या।
10 तब महाथाजकोंने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की। 11 क्योंकि
उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया।। 12 दूसरे
दिन बहुत से लोगोंने जो पर्ब्ब में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यरूशलेम में
आता है। 13 खजूर की, डालियां लीं, और उस से भेंट करने को निकले, और
पुकारने लगे, कि होशाना, धन्य इस्त्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।
14 जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला, तो उस पर बैठा। 15 जैसा लिखा है,
कि हे सिय्योन की बेटी, मत डर, देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला
आता है। 16 उसके चेले, थे बातें पहिले न समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा
प्रगट हुई, तो उन को स्क़रण आया, कि थे बातें उसके विषय में लिखी हुई यीं;
और लोगोंने उस से इस प्रकार का व्यवहार किया या। 17 तब भीड़ के लोगोंने जो
उस समय उसके साय थे यह गवाही दी कि उस ने लाजर को कब्र में से बुलाकर,
मरे हुओं में से जिलाया या। 18 इसी कारण लोग उस से भेंट करने को आए थे
क्योंकि उन्होंने सुना या, कि उस ने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है। 19 तब
फरीसियोंने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता: देखो,
संसार उसके पीछे हो चला है।। 20 जो लोग उस पर्ब्ब में भजन करने आए थे उन
में से कई यूनानी थे। 21 उन्होंने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलप्पुस के
पास आकर उस से बिनती की, कि श्र्ीमान् हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं। 22
फिलप्पुस ने आकर अद्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलप्पुस ने यीशु से
कहा। 23 इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र
कि महिमा हो। 24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि

में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत
फल लाता है। 25 जो अपके प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो
इस जगत में अपके प्राण को अप्रिय जानता हे, वह उसे खो देता है; और जो इस
जगत में अपके प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिथे उस की
रझा करता करेगा। 26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं
वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।
27 जब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिथे अब मैं क्या कहूं हे पिता, मुझे इस
घड़ी से बचा परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। 28 हे पिता अपके नाम
की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और
फिर भी करूंगा। 29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्होंने कहा; कि बादल
गरजा, औरोंने कहा, कोई स्वर्गदूत उस से बोला। 30 इस पर यीशु ने कहा, यह
शब्द मेरे लिथे नहीं परन्तु तुम्हारे लिथे आया है। 31 अब इस जगत का न्याय
होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं यदि पृय्वी
पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपके पास खीचंूगा। 33 ऐसा कहकर
उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा। 34 इस पर लोगोंने उस
से कहा, कि हम ने व्यवस्या की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू
क्योंकहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है 35 यह
मनुष्य का पुत्र कौन है यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब योड़ी देन तक तुम्हारे
बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साय है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि
अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर
जाता है। 36 जब तक ज्योति तुम्हारे साय है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम

ज्योति के सन्तान होओ।। थे बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा रहा।
37 और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास
न किया। 38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे
प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट
हुआ 39 इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहा। 40
कि उस ने उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो,
कि आंखोंसे देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं। 41
यशायाह ने थे बातें इसलिथे कहीं, कि उस ने उस की महिमा देखी; और उस ने
उसके विषय में बातें की। 42 तौभी सरदारोंमें से भी बहुतोंने उस पर विश्वास
किया, परन्तु फरीसियोंके कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि
आराधनालय में से निकाले जाएं। 43 क्योंकि मनुष्योंकी प्रशंसा उन को परमेश्वर
की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती यी।। 44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर
विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, बरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। 45
और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। 46 मैं जगत में ज्योति
होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में ने रहे। 47
यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं
जगत को दोषी ठहराने के लिथे नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिथे आया
हूं। 48 जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी
ठहरानेवाला तो एक है: अर्यात जो वचन मैं ने कहा है, वह पिछले दिन में उसे
दोषी ठहराएगा। 49 क्योंकि मैं ने अपक्की ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता
जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूं और क्या क्या

बोलूं 50 और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिथे मैं जो
बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं।।

यूहन्ना 13

1 फसह के पर्ब्ब से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है
कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपके लोगोंसे, जो जगत में थे, जैसा
प्रेम वह रखता या, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा। 2 और जब शैतान शमौन
के पुत्र यहूदा इस्किरयोती के मन में यह डाल चुका या, कि उसे पकड़वाए, तो
भोजन के समय। 3 यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर
दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं। 4
भोजन पर से उठकर अपके कपके उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपक्की कमर
बान्धी। 5 तब बरतन में पानी भरकर चेलोंके पांव धोने और जिस अंगोछे से उस
की कमर बन्धी यी उसी से पोंछने लगा। 6 जब वह शमौन पतरस के पास आया:
तब उस ने उस से कहा, हे प्रभु, 7 क्या तू मेरे पांव धोता है यीशु ने उस को उत्तर
दिया, कि जो मैं करता हूं, तू अब नहीं जानता, परन्तु इस के बाद समझेगा। 8
पतरस ने उस से कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा: यह सुनकर यीशु ने उस
से कहा, यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साय तेरा कुछ भी साफा नहीं। 9 शमौन
पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तो मेरे पांव ही नहीं, बरन हाथ और सिर भी धो दे।
10 यीशु ने उस से कहा, जो नहा चुका है, उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का
प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब
नहीं। 11 वह तो अपके पकड़वानेवाले को जानता या इसी लिथे उस ने कहा, तुम

सब के सब शुद्ध नहीं।। 12 जब वह उन के पांव धो चुका और अपके कपके
पहिनकर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा, क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे
साय क्या किया 13 तुम मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो,
क्योंकि मैं वहीं हूं। 14 यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें
भी एक दुसरे के पांव धोना चाहिए। 15 क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है,
कि जैसा मैं ने तुम्हारे साय किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। 16 मैं तुम से
सच सच कहता हूं, दास अपके स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपके
भेजनेवाले से। 17 तुम तो थे बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।
18 मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता
हूं: परन्तु यह इसलिथे है, कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी
खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई। 19 अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए
देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वहीं हूं। 20 मैं तुम से सच सच
कहता हूं, कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और
जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।। 21 थे बातें
कहकर यीशु आत्क़ा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच
कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। 22 चेले यह संदेह करते हुए, कि
वह किस के विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे। 23 उसके चेलोंमें
से एक जिस से यीशु प्रेम रखता या, यीशु की छाती की ओर फुका हुआ बैठा या।
24 तब शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा, कि बता तो, वह किस के
विषय में कहता है 25 तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती की ओर फुक कर पूछा,
हे प्रभु, वह कौन है यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा,

वही है। 26 और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्किरयोती को
दिया। 27 और टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गया: तब यीशु ने उस से कहा,
जो तू करता है, तुरन्त कर। 28 परन्तु बैठनेवालोंमें से किसी ने न जाना कि उस
ने यह बात उस से किस लिथे कही। 29 यहूदा के पास यैली रहती यी, इसलिथे
किसी किसी ने समझा, कि यीशु उस से कहता है, कि जो कुछ हमें पर्ब्ब के लिथे
चाहिए वह मोल ले, या यह कि कंगालोंको कुछ दे। 30 तब वह टुकड़ा लेकर
तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय या।। 31 जब वह बाहर चला गया तो
यीशु ने कहा; अब मनुष्य पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में
हुई। 32 और परमेश्वर भी अपके में उस की महिमा करेगा, बरन तुरन्त करेगा।
33 हे बालको, मैं और योड़ी देन तुम्हारे पास हूं: फिर तुम मुझे ढूंढोगे, और जैसा
मैं ने यहूदियोंसे कहा, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते वैसा ही मैं
अब तुम से भी कहता हूं। 34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम
रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। 35
यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।। 36
शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहां जाता है यीशु ने उत्तर दिया, कि जहां
मैं जाता हूं, वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे
आएगा। 37 पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्योंनहीं आ सकता
मैं तो तेरे लिथे अपना प्राण दूंगा। 38 यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिथे अपना
प्राण देगा मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि मुर्ग बांग न देगा जब तक तू तीन बार
मेरा इन्कार न कर लेगा।

यूहन्ना 14

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी
विश्वास रखो। 2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्यान हैं, यदि न होते, तो मैं
तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिथे जगह तैयार करने जाता हूं। 3 और यदि
मैं जाकर तुम्हारे लिथे जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपके यहंा ले
जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। 4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का
मार्ग जानते हो। 5 योमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है
तो मार्ग कैसे जानें 6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;
बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। 7 यदि तुम ने मुझे जाना
होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।
8 फिलप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिथे बहुत
है। 9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साय हूं, और क्या
तू मुझे नहीं जानता जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्योंकहता है
कि पिता को हमें दिखा। 10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और
पिता मुझ में हैं थे बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपक्की ओर से नहीं कहता,
परन्तु पिता मुझ में रहकर अपके काम करता है। 11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं
पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामोंही के कारण मेरी प्रतीति करो। 12
मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, थे काम जो मैं
करता हूं वही भी करेगा, बरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास
जाता हूं। 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा
पिता की महिमा हो। 14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे
करूंगा। 15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। 16 और

मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहाथक देगा, कि वह सर्वदा
तुम्हारे साय रहे। 17 अर्यात सत्य का आत्क़ा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता,
क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि
वह तुम्हारे साय रहता है, और वह तुम में होगा। 18 मैं तुम्हें अनाय न छोड़ूंगा, मैं
तुम्हारे पास आता हूं। 19 और योड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा,
परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिथे कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। 20 उस
दिन तुम जानोगे, कि मैं अपके पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। 21
जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है,
और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम
रखूंगा, और अपके आप को उस पर प्रगट करूंगा। 22 उस यहूदा ने जो
इस्किरयोती न या, उस से कहा, हे प्रभु, क्या हुआ की तू अपके आप को हम पर
प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं। 23 यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि
कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम
रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साय वास करेंगे। 24 जो मुझ से
प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा
नहीं वरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा।। 25 थे बातें मैं ने तुम्हारे साय रहते
हुए तुम से कही। 26 परन्तु सहाथक अर्यात पवित्र आत्क़ा जिसे पिता मेरे नाम से
भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब
तुम्हें स्क़रण कराएगा। 27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपक्की शान्ति तुम्हें
देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
28 तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर

आता हूं: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता
के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। 29 और मैं ने अब इस के होने के
पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो। 30 मैं अब
से तुम्हारे साय और बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है,
और मुझ में उसका कुछ नहीं। 31 परन्तु यह इसलिथे होता है कि संसार जाने कि
मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता
हूं: उठो, यहां से चलें।।

यूहन्ना 15

1 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। 2 जो डाली मुझ में है, और
नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि
और फले। 3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। 4 तुम
मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो
अपके आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं
फल सकते। 5 में दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं
उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं
कर सकते। 6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया
जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में फोंक देते हैं, और वे
जल जाती हैं। 7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो
चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिथे हो जाएगा। 8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती
है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। 9 जैसा पिता ने

मुझ से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। 10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो
मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपके पिता की आज्ञाओं को माना है, और
उसके प्रेम में बना रहता हूं। 11 मैं ने थे बातें तुम से इसलिथे कही हैं, कि मेरा
आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। 12 मेरी आज्ञा यह
है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। 13 इस
से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपके मित्रोंके लिथे अपना प्राण दे। 14 जो
कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। 15 अब से मैं
तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है:
परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपके पिता से सुनीं, वे सब
तुम्हें बता दीं। 16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें
ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे
नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। 17 इन बातें की आज्ञा मैं तुम्हें
इसलिथे देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। 18 यदि संसार तुम से बैर रखता
है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। 19 यदि तुम
संसार के होते, तो संसार अपनोंसे प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार
में से चुन लिया है इसी लिथे संसार तुम से बैर रखता है। 20 जो बात मै। ने तुम से
कही यी, कि दास अपके स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो: यदि उन्होंने
मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी
मानेंगे। 21 परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साय करेंगे क्योंकि
वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। 22 यदि मैं न आता और उन से बातें न करता,
तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिथे कोई बहाना नहीं। 23

जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। 24 यदि मैं उन में वे
काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो
उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनोंको देखा, और दोनोंसे बैर किया। 25 और यह
इसलिथे हुआ, कि वहि वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्या में लिखा है, कि
उन्होंने मुझ से व्यर्य बैर किया। 26 परन्तु जब वह सहाथक आएगा, जिसे मैं
तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्यात सत्य का आत्क़ा जो पिता की ओर से निकलता है, तो
वह मेरी गवाही देगा। 27 और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साय
रहे हो।।

यूहन्ना 16

1 थे बातें मैं ने तुम से इसलिथे कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। 2 वे तुम्हें
आराधनालयोंमें से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार
डालेगा यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। 3 और यह वे इसलिथे
करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं। 4 परन्तु थे बातें मैं
ने इसलिथे तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्क़रण आ जाए,
कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया या: और मैं ने आरम्भ में तुम से थे बातें
इसलिथे नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साय या। 5 अब मैं अपके भेजनेवाले के पास
जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता हैं 6 परन्तु मैं
ने जो थे बातें तुम से कही हैं, इसलिथे तुम्हारा मन शोक से भर गया। 7 तौभी मैं
तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिथे अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न
जाऊं, तो वह सहाथक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे

तुम्हारे पास भेज दूंगा। 8 और वह आकर संसार को पाप और धामिर्कता और
न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा। 9 पाप के विषय में इसलिथे कि वे मुझ पर
विश्वास नहीं करते। 10 और धामिर्कता के विषय में इसलिथे कि मैं पिता के पास
जाता हूं, 11 और तुम मुझे फिर न देखोगे: न्याय के विषय में इसलिथे कि संसार
का सरदार दोषी ठहराया गया है। 12 मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं,
परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। 13 परन्तु जब वह अर्यात्‌ सत्य का
आत्क़ा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपक्की ओर
से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें
बताएगा। 14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातोंमें से लेकर तुम्हें
बताएगा। 15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिथे मैं ने कहा, कि वह
मेरी बातोंमें से लेकर तुम्हें बताएगा। 16 योड़ी देर तुम मुझे न देखोगे, और फिर
योड़ी देर में मुझे देखोगे। 17 तब उसके कितने चेलोंने आपस में कहा, यह क्या है,
जो वह हम से कहता है, कि योड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर योड़ी देर में
मुझे देखोगे और यह इसलिथे कि मैं कि मैं पिता के मास जाता हूं 18 तब उन्होंने
कहा, यह योड़ी देर जो वह कहता है, क्या बात है हम नहीं जानते, कि क्या कहता
है। 19 यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उन से कहा, क्या तुम
आपस में मेरी इस बाते के विषय में पूछ पाछ करते हो, कि योड़ी देर में तुम मुझे
न देखोगे, और फिर योड़ी देर में मुझे देखोगे। 20 मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि
तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक होगा,
परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा। 21 जब स्त्री जनने लगती है तो उस को
शोक होता है, क्योंकि उस की दु:ख की घड़ी आ पहुंची, परन्तु जब वह बालक

जन्क़ चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट
को फिर स्क़रण नहीं करती। 22 और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से
फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से
छीन न लेगा। 23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच सच कहता
हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। 24 अब तक तुम ने
मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो
जाए।। 25 मैं ने थे बातें तुम से दृष्टान्तोंमें कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि
मैं तुम से दृष्टान्तोंमें और फिर नहीं कहूंगा परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय
में बताऊंगा। 26 उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं
कहता, कि मैं तुम्हारे लिथे पिता से बिनती करूंगा। 27 क्योंकि पिता तो आप ही
तुम से प्रीति रखता है, इसलिथे कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी
प्रतीति की है, कि मैं पिता कि ओर से निकल आया। 28 मैं पिता से निकलकर
जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं। 29 उसके
चेलोंने कहा, देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और कोई दृष्टान्त नहीं कहता।
30 अब हम जान गए, कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि
कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, कि तू परमेश्वर से निकला है। 31
यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब प्रतीति करते हो 32 देखो, वह घड़ी
आती है वरन आ पहुंची कि तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे,
और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साय है। 33 मैं
ने थे बातें तुम से इसलिथे कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें
क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीन लिया है।।

यूहन्ना 17

1 यीशु ने थे बातें कहीं और अपक्की आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे
पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपके पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
2 क्योंकि तू ने उस का सब प्राणियोंपर अधिक्कारने दिया, कि जिन्हें तू ने उस
को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे। 3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे
तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। 4
जो काम तू ने मुझे करने को दिया या, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा
की है। 5 और अब, हे पिता, तू अपके साय मेरी महिमा उस महिमा से कर जो
जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साय यी। 6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्योंपर प्रगट
किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और
उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। 7 अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ तू ने मुझे
दिया है, सब तेरी ओर से है। 8 क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दीं, मैं ने उन्हें
उनको पहुंचा दिया और उन्होंने उन को ग्रहण किया: और सच सच जान लिया है,
कि मैं तेरी ओर से निकला हूं, और प्रतीति कर ली है कि तू ही ने मुझे भेजा। 9 मैं
उन के लिथे बिनती करता हूं, संसार के लिथे बिनती नहीं करता हूं परन्तु उन्हीं के
लिथे जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। 10 और जो कुछ मेरा है वह सब
तेरा है; और जो तेरा है वह मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है, वह मेरा है; और
इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है। 11 मैं आगे को जगत में न रहूंगा, परन्तु थे
जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूं; हे पवित्र पिता, अपके उस नाम से जो तू
ने मुझे दिया है, उन की रझा कर, कि वे हमारी नाई एक हों। 12 जब मै। उन के
साय या, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रझा की, मैं ने

उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से काई नाश न हुआ,
इसलिथे कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो। 13 परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूं,
और थे बातें जगत में कहता हूं, कि वे मेरा आनन्द अपके में पूरा पाएं। 14 मैं ने
तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया, क्योंकि जैसा मैं
संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 15 मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू
उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। 16 जैसे मैं
संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर:
तेरा वचन सत्य है। 18 जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत
में भेजा। 19 और उन के लिथे मैं अपके आप को पवित्र करता हूं ताकि वे भी सत्य
के द्वारा पवित्र किए जाएं। 20 मैं केवल इन्हीं के लिथे बिनती नहीं करता, परन्तु
उन के लिथे भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक
हों। 21 जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों,
इसलिथे कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। 22 और वह महिमा जो तू
ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक होंजैसे की हम एक हैं। 23 मैं उन में
और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे
भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा। 24 हे पिता, मै।
चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साय होंकि वे
मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से
पहिले मुझ से प्रेम रखा। 25 हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं
ने तुझे जाना और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा। 26 और मैं ने तेरा
नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से या, वह उन में

रहे और मैं उन में रहूं।।

यूहन्ना 18

1 यीशु थे बातें कहकर अपके चेलोंके साय किद्रोन के नाले के पार गया, वहां एक
बारी यी, जिस में वह और उसके चेले गए। 2 और उसका पकड़वानेवाला यहूदा
भी वह जगह जानता या, क्योंकि यीशु अपके चेलोंके साय वहां जाया करता या। 3
तब यहूदा पलटन को और महाथाजकोंऔर फरीसियोंकी ओर से प्यादोंको लेकर
दीपकोंऔर मशालोंऔर हिययारोंको लिए हुए वहां आया। 4 तब यीशु उन सब
बातोंको जो उस पर आनेवाली यीं, जानकर निकला, और उन से कहने लगा, किसे
ढूंढ़ते हो 5 उन्होंने उसको उत्तर दिया, यीशु नासरी को: यीशु ने उन से कहा, मैं ही
हूं: और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साय खड़ा या। 6 उसके यह कहते
ही, कि मैं हूं, वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पके। 7 तब उस ने फिर उन से पूछा,
तुम किस को ढूंढ़ते हो। 8 वे बोले, यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर दिया, मैं तो तुम
से कह चुका हूं कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो। 9 यड़ इसलिथे
हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उस ने कहा या कि जिन्हें तू ने मुझे दिया, उन में
से मैं ने एक को भी न खोया। 10 शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास यी,
खींची और महाथाजक के दास पर चलाकर, उसका दिहना कान उड़ा दिया, उस
दास का नाम मलखुस या। 11 तब यीशु ने पतरस से कहा, अपक्की तलवार
काठी में रख: जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं 12 तब
सिपाहियोंऔर उन के सूबेदार और यहूदियोंके प्यादोंने यीशु को पकड़कर बान्ध
लिया। 13 और पहिले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस वर्ष के

महाथाजक काइफा का ससुर या। 14 यह वही काइफा या, जिस ने यहूदियोंको
सलाह दी यी कि हमारे लोगोंके लिथे एक पुरूष का मरना अच्छा है। 15 शमौन
पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए: यह चेला महाथाजक का
जाना पहचाना या और यीशु के साय महाथाजक के आंगत में गया। 16 परन्तु
पतरस द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महाथाजक का जाना पहचाना
या, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया। 17 उस
दासी ने जो द्वारपालिन यी, पतरस से कहा, क्या तू भी इस मनुष्य के चेलोंमें से है
उस ने कहा, मैं नहीं हूं। 18 दास और प्यादे जाड़े के कारण कोएले धधकाकर खड़े
ताप रहे थे और पतरस भी उन के साय खड़ा ताप रहा या।। 19 तक महाथाजक ने
यीशु से उसके चेलोंके विषय में और उसके उपकेश के विषय में पूछा। 20 यीशु ने
उस को उत्तर दिया, कि मैं ने जागत से खोलकर बातें की; मैं ने सभाओं और
आराधनालय में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपकेश किया और
गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। 21 तू मुझ से क्योंपूछता है सुननेवालोंसे पूछ: कि मैं
ने उन से क्या कहा देख वे जानते हैं; कि मैं ने क्या क्या कहा 22 तब उस ने यह
कहा, तो प्यादोंमें से एक ने जो पास खड़ा या, यीशु को यप्पड़ मारकर कहा, क्या
तू महाथाजक को इस प्रकार उत्तर देता है। 23 यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं ने
बुरा कहा, तो उस बुराई पर गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्योंमारता
है 24 हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महाथाजक के पास भेज दिया।। 25 शमौन
पतरस खड़ा हुआ ताप रहा या। तब उन्होंने उस से कहा; क्या तू भी उसके चेलोंमें
से है उस न इन्कार करके कहा, मैं नहीं हूं। 26 महाथाजक के दासोंमें से एक जो
उसके कुटुम्ब में से या, जिसका कान पतरस ने काट डाला या, बोला, क्या मैं ने

तुझे उसके साय बारी में न देखा या 27 पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त
मुर्ग ने बांग दी।। 28 और वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गए और भोर
का समय या, परन्तु वे आप किले के भीतर न गए ताकि अशुद्ध न होंपरन्तु फसह
खा सकें। 29 तब पीलातुस उन के पास बाहर निकल आया और कहा, तुम इस
मनुष्य पर किस बात की नालिया करते हो 30 उन्होंने उस को उत्तर दिया, कि
यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपके। 31 पीलातुस ने उन से
कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपक्की व्यवस्या के अनुसार उसका न्याय करो:
यहूदयोंने उस से कहा, हमें अधिक्कारने नहीं कि किसी का प्राण लें। 32 यह
इसलिथे हुआ, कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उस ने यह पता देते हुए कही यी,
कि उसका मरना कैसा होगा।। 33 तब पीलातुस फिर किले के भीतर गया और
यीशु को बुलाकर, उस से पूछा, क्या तू यहूदियोंका राजा है 34 यीशु ने उत्तर दिया,
क्या तू यह बात अपक्की ओर से कहता है या औरोंने मेरे विषय में तुझ से कही
35 पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं तेरी ही जाति और महाथाजकोंने तुझे
मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है 36 यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस
जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं
यहूदियोंके हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं। 37 पीलातुस
ने उस से कहा, कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैं ने इसलिथे जन्क़ लिया,
और इसलिथे जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह
मेरा शब्द सुनता है। 38 पीलातुस ने उस से कहा, सत्य क्या है और यह कहकर
वह फिर यहूदियोंके पास निकल गया और उन से कहा, मैं तो उस में कुछ दोष
नहीं पाता। 39 पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिथे एक व्यक्ति

को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिथे यहूदियोंके राजा को छोड़ दूं
40 तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं परन्तु हमारे लिथे बरअब्बा को
छोड़ दे; और बरअब्बा डाकू या।।

यूहन्ना 19

1 इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। 2 और सिपाहियोंने कांटोंका
मुकुट गूंयकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया। 3 और उसके
पास आ आकर कहने लगे, हे यहूदियोंके राजा, प्रणाम! और उसे यप्पड़ मारे। 4
तक पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगोंसे कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास
फिर बाहर लाता हूं; ताकि तुम जानो कि मैं कुछ भी दोष नहीं पाता। 5 तक यीशु
कांटोंका मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से
कहा, देखो, यह पुरूष। 6 जब महाथाजकोंऔर प्यादोंने उसे देखा, तो चिल्लाकर
कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर : पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर
क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। 7 यहूदियोंने उस को उत्तर
दिया, कि हमारी भी व्यवस्या है और उस व्यवस्या के अनुसार वह मारे जाने के
योग्य है क्योंकि उस ने अपके आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया। 8 जब पीलातुस
ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। 9 और फिर किले के भीतर गया और यीशु
से कहा, तू कहां का है परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया। 10 पीलातुस ने
उस से कहा, मुझ से क्योंनहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का
अधिक्कारने मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिक्कारने है। 11
यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ

अधिक्कारने न होता; इसलिथे जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप
अधिक है। 12 इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदयोंने चिल्ला
चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो
कोई अपके आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है। 13 थे बातें
सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा या जो इब्रानी
में गब्बता कहलाता है, और न्याय आसन पर बैठा। 14 यह फसह की तैयारी का
दिन या और छठे घंटे के लगभग या: तब उस ने यहूदियोंसे कहा, देखो, यही है,
तुम्हारा राजा! 15 परन्तु वे चिल्लाए कि ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा:
पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं महाथाजकोंने
उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं। 16 तब उस ने उसे उन
के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।। 17 तब वे यीशु को ले गए।
और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्यान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्यान
कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता। 18 वहां उन्होंने उसे और उसके साय और दो
मनुष्योंको क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु
को। 19 और पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में
यह लिखा हुआ या, यीशु नासरी यहूदियोंका राजा। 20 यह दोष-पत्र बहुत
यहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह स्यान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया या नगर के
पास या और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ या। 21 तब
यहूदियोंके महाथाजकोंने पीलातुस से कहा, यहूदियोंका राजा मत लिख परन्तु
यह कि ?उस ने कहा, मैं यहूदियोंका राजा हूं। 22 पीलातुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने
जो लिख दिया, वह लिख दिया।। 23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो

उसके कपके लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिथे एक भाग और कुरता भी
लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ या: इसलिथे
उन्होंने आपस में कहा, हम इस को न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह
किस का होगा। 24 यह इसलिथे हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि
उन्होंने मेरे कपके आपस में बांट लिथे और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली: सो
सिपाहियोंने ऐसा ही किया। 25 परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और
उस की माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी
खड़ी यी। 26 यीशु ने अपक्की माता से कहा; हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। 27 तब
उस चेले से कहा, यह तेरी माता है, और उसी समय से वह चेला, उसे अपके घर ले
गया।। 28 इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिथे
कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूं। 29 वहां एक सिरके से भरा
हुआ बर्तन धरा या, सो उन्होंने सिरके के भिगोए हुए इस्पंज को जूफे पर रखकर
उसके मुंह से लगाया। 30 जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा पूरा हुआ और
सिर फुकाकर प्राण त्याग दिए।। 31 और इसलिथे कि वह तैयारी का दिन या,
यहूदियोंने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे
जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसोंपर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन
या। 32 सो सिपाहियोंने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके
साय क्रूसोंपर चढ़ाए गए थे। 33 परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर
चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं। 34 परन्तु सिपाहियोंमें से एक ने बरछे से
उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला। 35 जिस ने यह
देखा, उसी ने गवाही दी है, और उस की गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि

सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो। 36 थे बातें इसलिथे हुईं कि पवित्र शास्त्र
की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी। 37 फिर एक और
स्यान पर यह लिखा है, कि जिसे उन्हों‍ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।। 38 इन
बातोंके बाद अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का चेला या, (परन्तु यहूदियोंके
डर से इस बात को छिपाए रखता या), पीलातुस से बिनती की, कि मैं यीशु की
लोय को ले जाऊं, और पीलातुस ने उस की बिनती सुनी, और वह आकर उस की
लोय ले गया। 39 निकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया या पचास
सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। 40 तब उन्हों‍ने यीशु
की लोय को लिया और यहूदियोंके गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य
के साय कफन में लपेटा। 41 उस स्यान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया या,
एक बारी यी; और उस बारी में एक नई कब्र यी; जिस में कभी कोई न रखा गया
या। 42 सो यहूदियोंकी तैयारी के दिन के कारण, उन्हों‍ने यीशु को उसी में रखा,
क्योंकि वह कब्र निकट यी।।

यूहन्ना 20

1 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर
आई, और पत्यर को कब्र से हटा हुआ देखा। 2 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस
और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता या आकर कहा, वे प्रभु को
कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है। 3
तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। 4 और दोनोंसाय
साय दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा।

5 और फुककर कपके पके देखे: तौभी वह भीतर न गया। 6 तब शमौन पतरस
उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपके पके देखे। 7 और वह
अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ या, कपड़ोंके साय पड़ा हुआ नहीं परन्तु
अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। 8 तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले
पहुंचा या, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। 9 वे तो अब तक पवित्र शास्त्र
की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा। 10 तब थे चेले
अपके घर लौट गए। 11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही
और रोते रोते कब्र की ओर फुककर, 12 दो स्वर्गदूतोंको उज्ज़वत कपके पहिने
हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोय पड़ी यी।
13 उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्योंरोती है उस ने उन से कहा, वे मरे प्रभु को
उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है। 14 यह कहकर वह पीछे
फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है। 15 यीशु ने उस से
कहा, हे नारी तू क्योंरोती है जिस को ढूंढती है उस ने माली समझकर उस से कहा,
हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और
मैं उसे ले जाऊंगी। 16 यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से
इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्यात हे गुरू। 17 यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू
क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयोंके पास
जाकर उन से कह दे, कि मैं अपके पिता, और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर
जाता हूं। 18 मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलोंको बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा
और उस ने मुझ से बातें कहीं।। 19 उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन या,
सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियोंके डर के मारे बन्द थे,

तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले। 20 और
यह कहकर उस ने अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाए: तब चेले प्रभु को
देखकर आनन्दित हुए। 21 यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे
पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। 22 यह कहकर उस ने उन पर
फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्क़ा लो। 23 जिन के पाप तुम झमा करो वे उन
के लिथे झमा किए गए हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं।। 24 परन्तु बारहोंमें से
एक व्यक्ति अर्यात् योमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उन के साय
न या। 25 जब और चेले उस से कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा है: तब उस ने
उन से कहा, जब तक मैं उस के हाथोंमें कीलोंके छेद न देख लूं, और कीलोंके
छेदोंमें अपक्की उंगली न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा।। 26 आठ दिन
के बाद उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और योमा उन के साय या, और द्वार
बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले। 27
तब उस ने योमा से कहा, अपक्की उंगली यहां लाकर मेरे पंजर में डाल और
अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। 28 यह सुन योमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे
मेरे परमेश्वर! 29 यीशु ने उस से कहा, तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है,
धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।। 30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह
चेलोंके साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। 31 परन्तु थे इसलिथे
लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और
विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।।

यूहन्ना 21

1 इन बातोंके बाद यीशु ने अपके आप को तिबिरियास फील के किनारे चेलोंपर
प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया। 2 शमौन पतरस और योमा जो
दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र,
और उसके चेलोंमें से दो और जन इकट्ठे थे। 3 शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं
मछली पकड़ने जाता हूं: उन्होंने उस से कहा, हम भी तेरे साय चलते हैं: सो वे
निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा। 4 भोर होते ही यीशु
किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलोंने न पहचाना कि यह यीशु है। 5 तब यीशु ने उन
से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं।
6 उस ने उन से कहा, नाव की दिहनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने
जाल डाला, और अब मछिलयोंकी बहुतायत के कारण उसे खींच न सके। 7
इसलिथे उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता या पतरस से कहा, यह तो प्रभु है:
शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह
नंगा या, और फील में कूद पड़ा। 8 परन्तु और चेले डोंगी पर मछिलयोंसे भरा
हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ
पर थे। 9 जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोएले की आग, और उस र मछली
रखी हुई, और रोटी देखी। 10 यीशु ने उन से कहा, जो मछिलयां तुम ने अभी
पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ। 11 शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ
तिर्मन बड़ी मछिलयोंसे भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछिलयां
होने पर भी जान न फटा। 12 यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और
चेलोंमें से किसी को हियाव न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है 13 यीशु आया,
और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी। 14 यह तीसरी बार है, कि यीशु

ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलोंको दर्शन दिए।। 15 भोजन करने के बाद
यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर
मुझ से प्रेम रखता है उस ने उस से कहा, हां प्रभु तू तो जानता है, कि मैं तुझ से
प्रीति रखता हूं: उस ने उस से कहा, मेरे मेमनोंको चरा। 16 उस ने फिर दूसरी बार
उस से कहा, हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है उस ने उन से
कहा, हां, प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: उस ने उस से कहा, मेरी
भेड़ोंकी रखवाली कर। 17 उस ने तीसरी बार उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के
पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है पतरस उदास हुआ, कि उस ने उसे तीसरी बार
ऐसा कहा; कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है और उस से कहा, हे प्रभु, तू तो सब
कुछ जानता है: तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: यीशु ने उस से
कहा, मेरी भेड़ोंको चरा। 18 मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तू जवान या, तो
अपक्की कमर बान्धकर जहां चाहता या, वहां फिरता या; परन्तु जब तू बूढा
होगा, तो अपके हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहां तू न
चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा। 19 उस ने इन बातोंसे पता दिया कि पतरस कैसी
मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो
ले। 20 पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखता
या, और जिस ने भोजन के समय उस की छाती की और फुककर पूछा हे प्रभु, तेरा
पकड़वानेवाला कौन है 21 उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का
क्या हाल होगा 22 यीशु ने उस से कहा, यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा
रहे, तो तुझे क्या तू मेरे पीछे हो ले। 23 इसलिथे भाइयोंमें यह बात फैल गई, कि
वह चेला न मरेगा; तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा, कि यह न मरेगा, परन्तु

यह कि यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या 24 यह
वही चेला है, जो इन बातोंकी गवाही देता है और जिस ने इन बातोंको लिखा है
और हम जानते हैं, कि उस की गवाही सच्ची है। 25 और भी बहुत से काम हैं, जो
यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें
जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।

प्रेरितों के काम 1

1 हे थियुफिलुस, मैं ने पहिली पुस्तिका उन सब बातोंके विषय में लिखी, जो यीशु
ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा। 2 उस दिन तक जब वह उन
प्रेरितोंको जिन्हें उस ने चुना या, पवित्र आत्क़ा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया
न गया। 3 और उस ने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पके प्रमाणोंसे अपके आप को
उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और
परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। 4 ओर उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि
यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जाहते
रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। 5 क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में
बपतिस्क़ा दिया है परन्तु योड़े दिनोंके बाद तुम पवित्रात्क़ा से बपतिस्क़ा
पाओगे। 6 सो उन्हीं ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय
इस्त्राएल को राज्य फेर देगा 7 उस ने उन से कहा; उन समयोंया कालोंको जानना,
जिन को पिता ने अपके ही अधिक्कारने में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। 8 परन्तु
जब पवित्र आत्क़ा तुम पर आएगा तब तुम सामर्य पाओगे; और यरूशलेम और
सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृय्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। 9 यह

कहकर वह उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की
आंखोंसे छिपा लिया। 10 और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे
थे, तो देखो, दो पुरूष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। 11 और
कहने लगे; हे गलीली पुरूषों, तुम क्योंखड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो यही यीशु,
जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग
को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।। 12 तब वे जैतून नाम के पहाड़
से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।
13 और जब वहां पहुंचे तो वे उस अटारी पर गए, जहां पतरस और यूहन्ना और
याकूब और अन्द्रियास और फिलप्पुस और योमा और बरतुलमाई और मत्ती और
हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा रहते थे।
14 थे सब कई स्त्रियोंऔर यीशु की माता मरियम और उसके भाइयोंके साय एक
चित्त होकर प्रार्यना में लगे रहे।। 15 और उन्हीं दिनोंमें पतरस भाइयोंके बीच में
जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा। 16 हे
भाइयों, अवश्य या कि पवित्र शास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्क़ा ने
दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेवालोंका अगुवा या, पहिले
से कही यी। 17 क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में सहभागी
हुआ। 18 (उस ने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल
गिरा, और उसका पेट फट गया, और उस की सब अन्तडियां निकल पड़ी। 19
और इस बात को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहां तक कि उस खेत का
नाम उन की भाषा में हकलदमा अर्यात लोहू का खेत पड़ गया।) 20 क्योंकि भजन
सहिंता में लिखा है, कि उसका घर उजड़ जाए, और उस में कोई न बसे और

उसका पद कोई दूसरा ले ले। 21 इसलिथे जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साय
आता जाता रहा, अर्यात् यूहन्ना के बपतिस्क़ा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए
जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साय रहे। 22 उचित है कि उन में से एक व्यक्ति
हमारे साय उसके जी उठने का गवाह हो जाए। 23 तक उन्होंने दो को खड़ा किया,
एक युसुफ को, जो बर-सबा कहलाता है, जिस का उपनाम यूसतुस है, दूसरा
मत्तिय्याह को। 24 और यह कहकर प्रार्यना की; कि हे प्रभु, तू जो सब के मन
जानता है, यह प्रगट कर कि इन दानोंमें से तू ने किस को चुना है। 25 कि वह इस
सेवकाई और प्ररिताई का पद ले जिसे यहूदा छोड़ कर अपके स्यान को गया। 26
तब उन्होंने उन के बारे में चिट्ठियां डालीं, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर
निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितोंके साय गिना गया।।

प्रेरितों के काम 2

1 जब पिन्तेकुस का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। 2 और एकाएक
आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर
जहां वे बैठे थे, गूंज गया। 3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं;
और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। 4 और वे सब पवित्र आत्क़ा से भर गए, और
जिस प्रकार आत्क़ा ने उन्हें बोलने की सामर्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने
लगे।। 5 और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में
रहते थे। 6 जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर
एक को यही सुनाई देता या, कि थे मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। 7 और वे सब
चकित और अचम्भित होकर कहने लगे; देखो, थे जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली

नहीं 8 तो फिर क्योंहम में से हर एक अपक्की अपक्की जन्क़ भूमि की भाषा
सुनता है 9 हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और
यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया। 10 और फ्रूगिया और
पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आस पास है, इन सब
देशोंके रहनेवाले और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी मत धारण करनेवाले,
क्रेती और अरबी भी हैं। 11 परन्तु अपक्की अपक्की भाषा में उन से परमेश्वर के
बड़े बड़े कामोंकी चर्चा सुनते हैं। 12 और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक
दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है 13 परन्तु औरोंने ठट्ठा करके
कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में हैं।। 14 पतरस उन ग्यारह के साय खड़ा हुआ
और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो,
यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। 15 जैसा तुम समझ रहे हो, थे
नशें में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। 16 परन्तु यह वह बात है, जो
योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है। 17 कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि
दिनोंमें ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्क़ा सब मनुष्योंपर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे
और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और
तुम्हारे पुरिनए स्वप्त देखेंगे। 18 बरन मैं अपके दासोंऔर अपक्की दासियोंपर
भी उन दिनोंमें अपके आत्क़ा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। 19 और
मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्यात लोहू, और
आग और धूएं का बादल दिखाऊंगा। 20 प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने
से पहिले सूर्य अन्धेरा और चान्द लोहू हो जाएगा। 21 और जो कोई प्रभु का नाम
लेगा, वही उद्धार पाएगा। 22 हे इस्त्राएलियों, थे बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक

मनुष्य या जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामोंऔर
आश्चर्य के कामोंऔर चिन्होंसे प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा
कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो। 23 उसी को, जब वह परमेश्वर की
ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने
अधमिर्योंके हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। 24 परन्तु उसी को
परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनोंसे छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना या कि वह
उसके वश में रहता। 25 क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को
सर्वदा अपके साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दिहनी ओर है, ताकि मैं डिग न
जाऊं। 26 इसी कारण मेरा मन आनन्द हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; बरन
मेरा श्रीर भी आशा में बसा रहेगा। 27 क्योंकि तू मेरे प्राणोंको अधोलोक में न
छोड़ेगा; और न अपके पवित्र जन को सड़ने ही देगा! 28 तू ने मुझे जीवन का मार्ग
बताया हे; तू मुझे अपके दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा। 29 हे भाइयो, मैं उस
कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साय कह सकता हूं कि वह तो मर
गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। 30 सो
भविष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपय खाई है, कि
परमेश्वर ने मुझ से शपय खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे
सिंहासन पर बैठाऊंगा। 31 उस ने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी
उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया,
और न उस की देह सड़ने पाई। 32 इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिस के
हम सब गवाह हैं। 33 इस प्रकार परमेश्वर के दिहने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर,
और पिता से वह पवित्र आत्क़ा प्राप्त करके जिस की प्रतिज्ञा की गई यी, उस ने

यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सनते हो। 34 क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर
नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; 35 मेरे दिहने
बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियोंको तेरे पांवोंतले की चौकी न कर दूं। 36 सो अब
इस्त्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम
ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।। 37 तब सुननेवालोंके हृदय
छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितोंसे पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या
करें 38 पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपके अपके
पापोंकी झमा के लिथे यीशु मसीह के नाम से बपतिस्क़ा ले; तो तुम पवित्र
आत्क़ा का दान पाओगे। 39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों,
और उन सब दूर दूर के लोगोंके लिथे भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपके
पास बुलाएगा। 40 उस ने बहुत ओर बातोंमें भी गवाही दे देकर समझाया कि
अपके आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। 41 सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण
किया उन्होंने बपतिस्क़ा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्योंके लगभग उन
में मिल गए। 42 और वे प्ररितोंसे शिझा पाने, और संगति रखने में और रोटी
तोड़ने में और प्रार्यना करने में लौलीन रहे।। 43 और सब लोगोंपर भय छा गया,
और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितोंके द्वारा प्रगट होते थे। 44 और वे सब
विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साफे की यी। 45 और
वे अपक्की अपक्की सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की
आवश्यकता होती यी बांट दिया करते थे। 46 और वे प्रति दिन एक मन होकर
मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की
सीधाई से भोजन किया करते थे। 47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब

लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला
देता या।।

प्रेरितों के काम 3

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्यना के समय मन्दिर में जा रहे थे। 2 और
लोग एक जन्क़ के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार
पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालोंसे भीख
मांगे। 3 जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से भीख
मांगी। 4 पतरस ने यूहन्ना के साय उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी
ओर देख। 5 सो वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन की ओर ताकने
लगा। 6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे
पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर। 7 और उस ने
उसका दिहना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पावोंऔर टखनोंमें
बल आ गया। 8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और
चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साय मन्दिर में
गया। 9 सब लोगोंने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर। 10
उस को पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठ कर
भीख मांगा करता या; और उस घटना से जो उसके साय हुई यी; वे बहुत
अचम्भित और चकित हुए।। 11 जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए या,
तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है,
उन के पास दौड़े आए। 12 यह देखकर पतरस ने लोगोंसे कहा; हे इस्त्राएलियों,

तुम इस मनुष्य पर क्योंअचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्योंइस प्रकार देख
रहे हो, कि मानो हम ही ने अपक्की सामर्थ या भक्ति से इसे चलना-फिरता कर
दिया। 13 इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे बापदादोंके
परमेश्वर ने अपके सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और
जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके साम्हने उसका
इन्कार किया। 14 तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और बिनती की,
कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिथे छोड़ दिया जाए। 15 और तुम ने जीवन के कर्त्ता
को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम
गवाह हैं। 16 और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस
मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ दी है; और निश्चय उसी
विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इस को तुम सब के साम्हने बिलकुल भला चंगा कर
दिया है। 17 और अब हे भाइयो, मैं जानता हूं कि यह काम तुम ने अज्ञानता से
किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारोंने भी किया। 18 परन्तु जिन बातोंको
परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहिले ही बताया या, कि उसका मसीह
दु:ख उठाएगा; उन्हें उस ने इस रीति से पूरी किया। 19 इसलिथे, मन फिराओ
और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख से
विश्रन्ति के दिन आएं। 20 और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिथे
पहिले ही से ठहराया गया है। 21 अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे
जब तक कि वह सब बातोंका सुधार न कर ले जिस की चर्चा परमेश्वर ने अपके
पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं। 22
जैसा कि मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयोंमें से तुम्हारे लिथे मुझ सा

एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उस की सुनना। 23 परन्तु
प्रत्थेक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगोंमें से नाश किया जाएगा।
24 और सामुएल से लेकर उकसे बाद बालोंतक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात
कीहं उन सब ने इन दिनोंका सन्देश दिया है। 25 तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान
और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादोंसे बान्धी, जब उस ने
इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे। 26
परमेश्वर ने अपके सेवक को उठाकर पहिल तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर
एक की उस की बुराइयोंसे फेरकर आशीष दे।।

प्रेरितों के काम 4

1 जब वे लोगोंसे यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी
उन पर चढ़ आएं। 2 क्योंकि वे बहुत क्रोधित हुए कि वे लोगोंको सिखाते थे और
यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे। 3 और
उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि सन्धया हो गई
यी। 4 परन्तु वचन के सुननेवालोंमें से बहुतोंने विश्वास किया, और उन की
गिनती पांच हजार पुरूषोंके लगभग हो गई।। 5 दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उन के
सरदार और पुरिनथे और शास्त्री। 6 और महाथाजक हन्ना और कैफा और
यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महाथाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में
इकट्ठे हुए। 7 और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, कि तुम ने यह काम
किस सामर्य से और किस नाम से किया है 8 तब पतरस ने पवित्र आत्क़ा से
परिपूर्ण होकर उन से कहा। 9 हे लोगोंके सरदारोंऔर पुरिनयों, इस दुॅबल मनुष्य

के साय जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछ पाछ की
जाती है, कि वह क्योंकर अच्छा हुआ। 10 तो तुम सब और सारे इस्त्राएली लोग
जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और
परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा
है। 11 यह वही पत्यर है जिसे तुम राजमिस्त्रियोंने तुच्छ जाता और वह कोने के
सिक्के का पत्यर हो गया। 12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग
के नीचे मनुष्योंमें और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार
पा सकें।। 13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, ओर यह जाना
कि थे अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना,
कि थे यीशु के साय रहे हैं। 14 और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ या, उन के
साय खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके। 15 परन्तु उन्हें सभा के बाहर
जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे, 16 कि हम इन मनुष्योंके
साय क्या करें क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालोंपर प्रगट है, कि इन के द्वारा
एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहंी कर सकते। 17
परन्तु इसलिथे कि यह बात लोगोंमें और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें
धमकाएं, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें। 18 तब उन्हें
बुलाया और चितौनी देकर यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और
न सिखलाना। 19 परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि तुम ही
न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से
बढ़कर तुम्हारी बात मानें। 20 क्योंकि यह तो हम में हो नहीं सकता, कि जो हम
ने देखा और सुना है, वह न कहें। 21 तब उन्होंने उन को और धमकाकर छोड़

दिया, क्योंकि लोगोंके कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दांव नहीं मिला, इसलिथे
कि जो घटना हुई यी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे। 22
क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया या, चालीस
वर्ष से अधिक आयु का या। 23 वे छूटकर अपके सायियोंके पास आए, और जो
कुछ महाथाजकोंऔर पुरिनयोंने उन से कहा या, उनको सुना दिया। 24 यह
सुनकर, उन्होंने एक चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, हे स्वामी, तू वही
है जिस ने सवर्ग और पृय्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया। 25 तू ने
पवित्र आत्क़ा के द्वारा अपके सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, कि अन्य
जातियोंने हुल्लड़ क्योंमचाया और देश के लोगोंने क्योंव्यर्य बातें सोची 26 प्रभु
और उसके मसीह के विरोध में पृय्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साय
इकट्ठे हो गए। 27 क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिस तू ने
अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियोंऔर
इस्त्राएलियोंके साय इस नगर में इकट्ठे हुए। 28 कि जो कुछ पहिले से तेरी
सामर्य और मति से ठहरा या वही करें। 29 अब, हे प्रभु, उन की धमकियोंको देख;
और अपके दासोंको यह बरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं। 30 और
चंगा करने के लिथे तू अपना हाथ बढ़ा; कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र
सेवक यीशु के नाम से किए जाएं। 31 जब वे प्रार्यना कर चुके, तो वह स्यान जहां
वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो गए, और
परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।। 32 और विश्वास करनेवालोंकी मण्डली
एक चित्त और एक मन के थे यहां तक कि कोई भी अपक्की सम्पति अपक्की
नहीं कहता या, परन्तु सब कुछ साफे का या। 33 और प्ररित बड़ी सामर्य से प्रभु

यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह या। 34 और
उन में कोई भी दिरद्र न या, क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उन को बेच
बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्ररितोंके पांवोंपर रखते थे। 35
और जैसी जिसे आवश्यकता होती यी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते
थे। 36 और यूसुफ नाम, कुप्रुस का एक लेवी या जिसका नाम प्रेरितोंने बर-नबा
अर्यात (शान्ति का पुत्र) रखा या। 37 उस की कुछ भूमि यी, जिसे उस ने बेचा,
और दाम के रूपके लाकर प्रेरितोंके पांवोंपर रख दिए।।

प्रेरितों के काम 5

1 और हनन्याह नाम एक मनुष्य, और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची।
2 और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उस की पत्नी भी जानती
यी, और उसका एक भाग लाकर प्ररितोंके पावोंके आगे रख दिया। 3 परन्तु
पतरस ने कहा; हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्योंडाली है कि तू
पवित्र आत्क़ा से फूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े 4 जब तक वह
तेरे पास रही, क्या तेरी न यी और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न यी तू ने
यह बात अपके मन में क्योंविचारी तू मनुष्योंसे नहीं, परन्तु परमेश्वर से फूठ
बोला। 5 थे बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए; और सब
सुननेवालोंपर बड़ा भय छा गया। 6 फिर जवानोंने उठकर उसकी अर्यी बनाई और
बाहर ले जाकर गाढ़ दिया।। 7 लगभग तीन घंटे के बाद उस की पत्नी, जो कुछ
हुआ या न जानकर, भीतर आई। 8 तब पतरस ने उस से कहा; मुझे बता क्या तुम
ने वह भूमि इतने ही में बेची यी उस ने कहा; हां, इतने ही में। 9 पतरस ने उस से

कहा; यह क्या बात है, कि तुम दोनोंने प्रभु की आत्क़ा की पक्कीझा के लिथे एका
किया है देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले
जाएंगे। 10 तब वह तुरन्त उसके पांवोंपर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए: और
जवानोंने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास
गाड़ दिया। 11 और सारी कलीसिया पर और इन बातोंके सब सुननेवालोंपर, बड़ा
भय छा गया।। 12 और प्रेरितोंके हाथोंसे बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगोंके
बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में
इकट्ठे हुआ करते थे। 13 परन्तु औरोंमें से किसी को यह हियाव न होता या, उन
में जा मिलें; तौभी लोग उन की बड़ाइ। करते थे। 14 और विश्वास करनेवाले
बहुतेरे पुरूष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते
रहे।) 15 यहां तक कि लोग बीमारोंको सड़कोंपर ला लाकर, खाटोंऔर खटोलोंपर
लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़
जाए। 16 और यरूशलेम के आस पास के नगरोंसे भी बहुत लोग बीमारोंऔर
अशुद्ध आत्क़ाओं के सताए हुओं का ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे
कर दिए जाते थे।। 17 तब महाथाजक और उसके सब सायी जो सदूकियोंके पंय
के थे, डाह से भर कर उठे। 18 और प्ररितोंको पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर
दिया। 19 परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें
बाहर लाकर कहा। 20 कि जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें
लोगोंको सुनाओ। 21 वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपकेश देने
लगे: परन्तु महाथाजक और उसके सायियोंने आकर महासभा को और
इस्त्राएलियोंके सब पुरिनयोंको इकट्ठे किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि

उन्हें लाएं। 22 परन्तु प्यादोंने वहां पहुंचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और
लौटकर संदेश दिया। 23 कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी चौकसी से बन्द किया हुआ,
और पहरेवालोंको बाहर द्वारोंपर खड़े हुए पाया; परनतु जब खोला, तो भीतर कोई
न मिला। 24 जब मन्दिर के सरदार और महाथाजकोंने थे बातें सनीं, तो उन के
विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि यह क्या हुआ चाहता है 25 इतने में किसी ने
आकर उन्हें बताया, कि देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द रखा या, वे मनुष्य
मन्दिर में खड़े हुए लोगोंको उपकेश दे रहे हैं। 26 तक सरदार, प्यादोंके साय
जाकर, उन्हें ले आया, परन्तु बरबस नहीं, क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे, कि हमें
पत्यरवाह न करें। 27 उन्होंने उन्हें फिर लाकर महासभा के साम्हने खड़ा कर
दिश: और महाथाजक ने उन से पूछा। 28 क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी
यी, कि तुम इस नाम से उपकेश न करना तौभी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को
अपके उपकेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना
चाहते हो। 29 तक पतरस और, और प्रेरितोंने उत्तर दिया, कि मनुष्योंकी आज्ञा से
बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। 30 हमारे
बापदादोंके परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार
डाला या। 31 उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपके दिहने हाथ
से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियोंको मन फिराव की शक्ति और पापोंकी
झमा प्रदान करे। 32 और हम इन बातोंके गवाह हैं, और पवित्र आत्क़ा भी, जिसे
परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं।। 33 यह सुनकर वे जल
गए, और उन्हें मार डालना चाहा। 34 परन्तु गमलीएल नाम एक फरीसी ने जो
व्यवस्यापक और सब लोगोंमें माननीय या, न्यायालय में खड़े होकर प्रेरितोंको

योड़ी देर के लिथे बाहर कर देने की आज्ञा दी। 35 तक उस ने कहा, हे
इस्त्राएलियों, जो कुछ इन मनुष्योंसे किया चाहते हो, सोच समझ के करना। 36
क्योंकि इन दिनोंसे पहले यियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूं; और
कोई चार सौ मनुष्य उसके साय हो लिथे, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग
उसे मानते थे, सब तित्तर बित्तर हुए और मिट गए। 37 उसके बाद नाम लिखाई
के दिनोंमें यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपक्की ओर कर लिथे: वह भी
नाश हो गया, और जितने लागे उसे मानते थे, सब तित्तर बित्तर हो गए। 38
इसलिथे अब मैं तुम से कहता हूं, इन मनुष्योंसे दूर ही रहो और उन से कुछ काम
न रखो; क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्योंकी ओर से हो तब तो मिट
जाएगा। 39 परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न
सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो। 40 तब उन्होंने
उस की बात मान ली; और प्रेरितोंको बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर
छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना। 41 वे इस बात से आनन्दित
होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिथे निरादर होने
के योग्य हो ठहरे। 42 और प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपकेश करने,
और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके।।

प्रेरितों के काम 6

1 उन दिनोंमें जब चेले बहुत होने जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलनेवाले
इब्रानियोंपर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रति दिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की
सुधि नहीं ली जाती। 2 तब उन बारहोंने चेलोंकी मण्डली को अपके पास बुलाकर

कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलानेपिलाने की सेवा
में रहें। 3 इसलिथे हे भाइयो, अपके में से सात सुनाम पुरूषोंको जो पवित्र आत्क़ा
और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। 4 परन्तु
हम तो प्रार्यना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। 5 यह बात सारी मण्डली को
अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिुफनुस नाम एक पुरूष को जो विश्वास और पवित्र
आत्क़ा से परिपूर्ण या, और फिलप्पुस और प्रखुरूस और नीकानोर और तीमोन
और परिमनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया या,
चुन लिया। 6 और इन्हें प्रेरितोंके साम्हने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्यना करके
उन पर हाथ रखे। 7 और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में
चेलोंकी गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकोंका एक बड़ा समाज इस मत के
अधीन हो गया। 8 स्तिफुनुस अनुग्रह और सामर्य में परिपूर्ण होकर लोगोंमें बड़े
बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता या। 9 तब उस अराधनालय में से जो
लिबरतीनोंकी कहलाती यी, और कुरेनी और सिकन्दिरया और किलकिया और
एशीया के लोगोंमें से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। 10
परन्तु उस ज्ञान और उन आत्क़ा का जिस से वह बातें करता या, वे साम्हना न
कर सके। 11 इस पर उन्हो ने कई लोगोंको उभारा जो कहने लगे, कि हम ने इस
मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है। 12 और लोगोंऔर
प्राचीनोंऔर शास्त्रियोंको भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले
आए। 13 और फूठे गवाह खड़े किए, जिन्होंने कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र
स्यान और व्यवस्या के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता। 14 क्योंकि हम ने उसे यह
कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढ़ा देगा, और उन रीतोंको बदल

डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं। 15 तब सब लोगोंने जो सभा में बैठे थे, उस की
ओर ताककर उसका मुखड़ा स्वर्गदूत का सा देखा।।

प्रेरितों के काम 7

1 तब महाथाजक ने कहा, क्या थे बातें योंही है 2 उस ने कहा; हे भाइयो, और
पितरो सुनो, हमारा पिता इब्राहीम हारान में बसने से पहिले जब मिसुपुतामिया
में या; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। 3 और उस से कहा कि तू अपके
देश और अपके कुटुम्ब से निकलकर उस देश मे चला जा, जिसे मैं तुझे
दिखाऊंगा। 4 तब वह कसदियोंके देश से निकलकर हारान में जा बसा; और
उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहां से इस देश में लाकर बसाया
जिस में अब तुम बसते हो। 5 और उसको कुछ मीरास बरन पैर रखने भर की भी
उस में जगह न दी, परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के
हाथ कर दूंगा; यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न या। 6 और परमेश्वर ने
योंकहा; कि तेरी सन्तान के लोग पराथे देश में परदेशी होंगे, और वे उन्हें दास
बनाएंगे, और चार सौ वर्ष तक दुख देंगे। 7 फिर परमेश्वर ने कहा; जिस जाति के
वे दास होंगे, उस को मैं दण्ड दूंगा; और इस के बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी
सेवा करेंगे। 8 और उस ने उस से खतने की वाचा बान्धी; और इसी दशा में
इसहाक उस से उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और
इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए। 9 और
कुलपतियोंने यूसुफ से डाह करके उसे मिसर देश जानेवालोंके हाथ बेचा; परन्तु
परमेश्वर उसके साय या। 10 और उसे उसके सब क्लेशोंसे छुड़ाकर मिसर के राजा

फिरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, और उस ने उसे मिसर पर और अपके सारे
घर पर हाकिम ठहराया। 11 तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल पडा;
जिस से भारी क्लेश हुआ, और हमारे बापदादोंको अन्न नहीं मिलता या। 12
परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिसर में अनाज है, हमारे बापदादोंको पहिली
बार भेजा। 13 और दूसरी बार यूसुफ अपके भाइयोंपर प्रगट को गया, और
यूसुुफ की जाति फिरौन को मालूम हो गई। 14 तब यूसुफ ने अपके पिता याकूब
और अपके सारे कुटुम्ब को, जो पछत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा। 15 तब याकूब
मिसर में गया; और वहां वह और हमारे बापदादे मर गए। 16 और वे शिकिम में
पहुंचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे इब्राहीम न चान्दी देकर शिकिम में
हमोर की सन्तान से मोल लिया या। 17 परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का
समय निकट आया, तो परमेश्वर ने इब्राहीम से की यी, तो मिसर में वे लोग बढ़
गए; और बहुत हो गए। 18 जब तक कि मिसर में दूसरा राजा न हुआ जो यूसुफ
को नहीं जानता या। 19 उस ने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादोंके
साय यहां तक कुव्योहार किया, कि उन्हें अपके बालकोंको फेंक देना पड़ा कि वे
जीवित न रहें। 20 उस समय मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर या; और वह
तीन महीने तक अपके पिता के घर में पाला गया। 21 परन्तु जब फेंक दिया गया
तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला। 22 और मूसा
को मिसरियोंकी सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातोंऔर कामोंमें सामर्यी या। 23
जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपके इस्त्राएली
भाइयोंसे भेंट करूं। 24 और उस ने एक व्यक्ति पर अन्याय होने देखकर, उसे
बचाया, और मिसरी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। 25 उस ने सोचा, कि

मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथोंसे उन का उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न
समझा। 26 दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहां आ निकला; और
यह कहके उन्हें मेल करने के लिथे समझाया, कि हे पुरूषो, तुम तो भाई भाई हो,
एक दूसरे पर क्योंअन्याय करते हो 27 परन्तु जो अपके पड़ोसी पर अन्याय कर
रहा या, उस ने उसे यह कहकर हटा दिया, कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और
न्यायी ठहराया है 28 क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार डाला मुझे भी
मार डालना चाहता है 29 यह बात सुनकर, मूसा भागा; और मिद्यान देश में
परदेशी होकर रहने लगा: और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। 30 जब पूरे
चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्ग दूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई
फाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया। 31 मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा
किया, और जब देखने के लिथे पास गया, तो प्रभु का यह शब्द हुआ। 32 कि मैं
तेरे बापदादों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं: तब तो मूसा कांप
उठा, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा। 33 तब प्रभु ने उस से कहा;
अपके पावोंसे जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है।
34 मैं ने सचमुच अपके लोगोंकी र्दुदशा को जो मिसर में है, देखी है; और उन की
आह और उन का रोना सुन लिया है; इसलिथे उन्हें छुड़ाने के लिथे उतरा हूं। अब
आ, मैं तुझे मिसर में भेंजूंगा। 35 जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा या
कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है; उसी को परमेश्वर ने
हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्ग दूत के द्वारा जिस ने उसे फाड़ी में
दर्शन दिया या, भेजा। 36 यही व्यक्ति मिसर और लाल समुद्र और जंगल में
चालीस वर्ष तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर उन्हें निकाल लाया। 37

यह वही मूसा है, जिस ने इस्त्राएलियोंसे कहा; कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयोंमें से
तुम्हारे लिथे मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा। 38 यह वही है, जिस ने जंगल में
कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साय सीनै पहाड़ पर उस से बातें की, और
हमारे बापदादोंके साय या: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए। 39
परन्तु हमारे बापदादोंने उस की मानना न चाहा; बरन उसे हटाकर अपके मन
मिसर की ओर फेरे। 40 और हारून से कहा; हमारे लिथे ऐसा देवता बना, जो
हमारे आगे आगे चलें; क्योंकि यह मूसा जा हमें मिसर देश से निकाल लाया, हम
नहीं जानते उसे क्या हुआ 41 उन दिनोंमें उन्होंने एक बछड़ा बनाकर, उस की
मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपके हाथोंके कामोंमें मगन होने लगे। 42 सो
परमेश्वर ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकशगण पूजें; जैसा
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है; कि हे इस्त्राएल के घराने, क्या तुम जंगल
में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे 43 और तुम
मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे; अर्यात उन
आकारोंको जिन्हें तुम ने दण्डवत करने के लिथे बनाया या: सो मैं तुम्हें बाबुर के
पके ले जाकर बसाऊंगा। 44 साझी का तम्बू जंगल में हमारे बापदादोंके बीच में
या; जैसा उस ने ठहराया, जिस ने मूसा से कहा; कि जो आकर तू ने देखा है, उसके
अनुसार इसे बना। 45 उसी तम्बू को हमारे बापदादे पूर्वकाल से पाकर यहोशू के
साय यहां ले आए; जिस समय कि उन्होंने उन अन्यजातियोंका अधिक्कारने
पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बापदादोंके साम्हने से निकाल दिया; और वह
दाऊद के समय तक रहा। 46 उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया, सो उस ने
बिनती की, कि मैं याकूब के परमेश्वर के लिथे निवास स्या ठहराऊं। 47 परन्तु

सुलैमान ने उसके लिथे घर बनाया। 48 परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाए घरोंमें
नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा। 49 कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा
सिहांसन और पृय्वी मेरे पांवोंतले की पीढ़ी है, मेरे लिथे तुम किस प्रकार का घर
बनाओगे और मेरे विश्रम का कौन सा स्यान होगा 50 क्या थे सब वस्तुएं मेरे
हाथ की बनाई नहीं हे हठीले, और मन और कान के खतनारिहत लोगो, तुम सदा
पवित्र आत्क़ा का साम्हना करते हो। 51 जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही
तुम भी करते हो। 52 भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादोंने नहीं
सताया, और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालोंको
मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए। 53
तुम ने स्वर्गदूतोंके द्वारा ठहराई हुई व्यवस्या तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं
किया।। 54 थे बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे। 55 परन्तु
उस ने पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की
महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दिहनी ओर खड़ा देखकर। 56 कहा; देखों,
मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दिहनी ओर खड़ा हुआ
देखता हूं। 57 तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक
चित्त होकर उस पर फपके। 58 और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्यरवाह
करने लगे, और गवाहोंने अपके कपके उतार रखे। 59 और वे स्तिुफनुस को
पत्यरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्यना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी
आत्क़ा को ग्रहण कर। 60 फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह
पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया: और शाऊल उसके बध में
सहमत या।।

प्रेरितों के काम 8

1 उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितोंको
छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशोंमें तित्तर बित्तर हो गए। 2 और
भक्तोंने स्तिफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिथे बड़ा विलाप किया। 3 शाऊल
कलीसिया को उजाड़ रहा या; और घर घर घुसकर पुरूषोंऔर स्त्रियोंको घसीट
घसीटकर बन्दीगृह में डालता या।। 4 जो तित्तर बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार
सुनाते हुए फिरे। 5 और फिलप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगोंमें मसीह का
प्रचार करने लगा। 6 और जो बातें फिलप्पुस ने कहीं उन्हें लोगोंने सुनकर और
जो चिन्ह वह दिखाता या उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। 7
क्योंकि बहुतोंमें से अशुद्ध आत्क़ाएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और
बहुत से फोले के मारे हुए और लंगडे भी अच्छे किए गए। 8 और उस नगर में बड़ा
आनन्द हुआ।। 9 इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य या, जो
टोना करके सामरिया के लोगोंको चकित करता और अपके आप को कोई बड़ा
पुरूष बनाता यां 10 और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे, कि यह
मनुष्य परमश्ेवर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है। 11 उस ने बहुत
दिनोंसे उन्हें अपके टोने के कामोंसे चकित कर रखा या, इसी लिथे वे उस को
बहुत मानते थे। 12 परन्तु जब उन्होंने फिलप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के
राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता या तो लोग, क्या पुरूष, क्या स्त्री
बपतिस्क़ा लेने लगे। 13 तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्क़ा लेकर
फिलप्पुस के साय रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्य के काम होते
देखकर चकित होता या। 14 जब प्ररितोंने जो यरूशलेम में थे सुना कि

सामरियोंने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के
पास भेजा। 15 और उन्होंने जाकर उन के लिथे प्रार्यना की कि पवित्र आत्क़ा
पाएं। 16 क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा या, उन्होंने तो केवल
प्रभु यीशु में नाम में बपतिस्क़ा लिया या। 17 तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और
उन्होंने पवित्र आत्क़ा पाया। 18 जब शमौन ने देखा कि प्ररितोंके हाथ रखने से
पवित्र आत्क़ा दिया जाता है, तो उन के पास रूपके लाकर कहा। 19 कि यह
अधिक्कारने मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्क़ा पाए।
20 पतरस ने उस से कहा; तेरे रूपके तेरे साय नाश हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का
दान रूपयोंसे मोल लेने का विचार किया। 21 इस बात में न तेरा हिस्सा है, न
बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। 22 इसलिथे अपक्की इस
बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्यना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार झमा
किया जाए। 23 क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के
बन्धन में पड़ा है। 24 शमौन ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे लिथे प्रभु से प्रार्यना करो
कि जो बातें तुम ने कहीं, उन में से कोई मुझ पर न आ पके।। 25 सो वे गवाही
देकर और प्रभु का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए, और सामरियोंके बहुत
गावोंमें सुसमाचार सुनाते गए।। 26 फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलप्पुस से
कहा; उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्ज़ाह को
जाता है, और जंगल में है। 27 वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक
मनुष्य आ रहा या जो खोजा और कूशियोंकी रानी कन्दाके का मन्त्री और
खजांची या, और भजन करने को यरूशलेम आया या। 28 और वह अपके रय पर
बैठा हुआ या, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा

या। 29 तब आत्क़ा ने फिलप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रय के साय हो ले।
30 फिलप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए
सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है 31 उस ने कहा,
जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्यांेकर समझूं और उस ने फिलप्पुस से
बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। 32 पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़
रहा या, वह यह या; कि वह भेड़ की नाईं वध होने को पहुंचाया गया, और जैसा
मेम्ना अपके ऊन कतरनेवालोंके साम्हने चुपचाप रहता है, वैसे ही उस ने भी
अपना मुंह न खोला। 33 उस की दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और
उसके समय के लोगोंका वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृय्वी से उसका प्राण उठाया
जाता है। 34 इस पर खोजे ने फिलप्पुस से पूछा; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह
बता कि भविष्यद्वक्ता यह किस विषय में कहता है, अपके या किसी दूसरे के
विषय में। 35 तब फिलप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ
करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। 36 मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की
जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्क़ा लेने में क्या
रोक है। 37 फिलप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता
है: उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। 38
तब उस ने रय खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलप्पुस और खोजा दोनोंजल में
उतर पके, और उस ने उसे बपतिस्क़ा दिया। 39 जब वे जल में से निकलकर
ऊपर आए, तो प्रभु का आत्क़ा फिलप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न
देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपके मार्ग चला गया। 40 और फिलप्पुस
अशदोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुंचा, तब तक नगर नगर

सुसमाचार सुनाता गया।।

प्रेरितों के काम 9

1 और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलोंको धमकाने और घात करने की धुन में
या, महाथाजक के पास गया। 2 और उस से दिमश्क की अराधनालयोंके नाम पर
इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंय
पर पाए उन्हें बान्धकर यरूशलेम में ले आए। 3 परन्तु चलते चलते जब वह
दिमश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारोंओर ज्योति चमकी।
4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू
मुझे क्योंसताता है 5 उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे
तू सताता है। 6 परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो कुछ करना है, वह तुझ
से कहा जाएगा। 7 जो मनुष्य उसके साय थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो
सुनते थे, परन्तु किसी को दखते न थे। 8 तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु
जब आंखे खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दिमश्क
में ले गए। 9 और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया। 10
दिमश्क में हनन्याह नाम एक चेला या, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह!
उस ने कहा; हां प्रभु। 11 तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी
कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि
देख, वह प्रार्यना कर रहा है। 12 और उस ने हनन्याह नाम एक पुरूष को भीतर
आते, और अपके ऊपर आते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए। 13 हनन्याह ने
उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतोंसे सुना है, कि इस ने

यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगोंके साय बड़ी बड़ी बुराईयां की हैं। 14 और यहां भी
इस को महाथाजकोंकी ओर से अधिक्कारने मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते
हैं, उन सब को बान्ध ले। 15 परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा; क्योंकि
यह, तो अन्यजातियोंऔर राजाओं, और इस्त्राएलियोंके साम्हने मेरा नाम प्रगट
करने के लिथे मेरा चुना हुआ पात्र है। 16 और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के
लिथे उसे कैसा कैसा दुख उठाना पकेगा। 17 तब हनन्याह उठकर उस घर में
गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्यात्‌ यीशु, जो
उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया या, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू
फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो जाए। 18 और तुरन्त उस की
आंखोंसे छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्क़ा लिया; फिर
भोजन करके बल पाया।। 19 और वह कई दिन उन चेलोंके साय रहा जो दिमश्क
में थे। 20 और वह तुरन्त आराधनालयोंमें यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह
परमेश्वर का पुत्र है। 21 और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह
वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता या,
और यहां भी इसी लिथे आया या, कि उन्होंबान्धकर महाथाजकोंके पास ले आए
22 परन्तु शाऊल और भी सामर्यी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर
कि मसीह यही है, दिमश्क के रहनेवाले यहूदियोंका मुंह बन्द करता रहा।। 23
जब बहुत दिन बीत गए, तो यहूदियोंने मिलकर उसके मार डालने की युक्ति
निकाली। 24 परन्तु उन की युक्ति शाऊल को मालूम को गई: वे तो उसके मार
डालने के लिथे रात दिन फाटकोंपर लगे रहे थे। 25 परन्तु रात को उसके चेलोंने
उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर ऐ लटकाकर उतार दिया।। 26

यरूशलेम में पहुंचकर उस ने चेलोंके साय मिल जाने का उपाय किया: परन्तु सब
उस से डरते थे, क्योंकि उन को प्रतीति न होता या, कि वह भी चेला है। 27 परन्तु
बरनबा उसे अपके साय प्रेरितोंके पास ले जाकर उन से कहा, कि इस ने किस
रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और इस ने इस से बातें कीं; फिर दिमश्क में इस ने
कैसे हियाव से यीशु के नाम का प्रचार किया। 28 वह उन के साय यरूशलेम में
आता जाता रहा। 29 और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता या: और
यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियोंके साय बातचीत और वाद-विवाद करता या;
परन्त ुवे उसके मार डालने का यत्न करने लगे। 30 यह जानकर भाई उसे
कैसरिया में ले आए, और तरसुस को भेज दिया।। 31 सो सारे यहूदिया, और
गलील, और समरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई;
और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्क़ा की शान्ति में चलती और बढ़ती जाती
यी।। 32 और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगोंके
पास भी पहुंचा, जो लुद्दा में रहते थे। 33 वहां उसे ऐनियास नाम फोले का मारा
हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा या। 34 पतरस ने उस से
कहा; हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना बिछौना बिछा; तब
वह तुरन्त उठ खड़ हुआ। 35 और लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर
प्रभु की ओर फिरे।। 36 याफा में तबीता अर्यात दोरकास नाम एक विश्वासिनी
रहती यी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती यी। 37 उन्हीं दिनोंमें
वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया। 38
और इसलिथे कि लुद्दा याफा के निकट या, चेलोंने यह सुनकर कि पतरस वहां है
दो मनुष्य भेजकर उस ने बिनती की कि हमारे पास आने में देर न कर। 39 तब

पतरस उठकर उन के साय हो लिया, और जब पहुंच गया, तो वे उसे उस अटारी
पर ले गए; और सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई: और जो कुरते
और कपके दोरकास ने उन के साय रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं। 40 तब
पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्यना की; और लोय की
ओर देखकर कहा; हे तबीता उठ: तब उस ने अपक्की आंखे खोल दी; और पतरस
को देखकर उठ बैठी। 41 उस ने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगोंऔर
विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया। 42 यह बात सारे
याफा मे फैल गई: और बहुतेरोंने प्रभु पर विश्वास किया। 43 और पतरस याफा में
शमौन नाम किसी चमड़े के धन्धा करनेवाले के यहां बहुत दिन तक रहा।।

प्रेरितों के काम 10

1 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम ऐक मनुष्य या, जो इतालियानी नाम पलटन का
सूबेदार या। 2 वह भक्त या, और अपके सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता या,
और यहूदी लागोंको बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्यना करता या। 3
उस ने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का
एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है; कि हे कुरनेलियुस। 4 उस ने उसे
ध्यान से देखा; और डरकर कहा; हे प्रभु क्या है उस ने उस से कहा, तेरी प्रार्यनाएं
और तेरे दान स्क़रण के लिथे परमेश्वर के साम्हने पहुंचे हैं। 5 और अब याफा में
मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 6 वह शमौन चमड़े
के धन्धा करनेवाले के यहां पाहुन है, जिस का घर समुद्र के किनारे हैं। 7 जब वह
स्वर्गदूत जिस ने उस से बातें की यीं चला गया, तो उस ने दो सेवक, और जो

उसके पास उपस्थित रहा करते थे उन में से एक भक्त सिपाही को बुलाया। 8 और
उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा।। 9 दूसरे दिन, जब वे चलते चलते नगर
के पास पहुंचे, तो दो पहर के निकट पतरस कोठे पर प्रार्यना करने चढ़ा। 10 और
उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता या; परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह
बेसुध हो गया। 11 और उस ने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी
चादर के समान चारोंकोनोंसे लटकता हुआ, प्य्वी की ओर उतर रहा है। 12 जिस
में पृय्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्की थे।
13 और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, कि हे पतरस उठ, मार के खा। 14
परन्तु पतरस ने कहा, नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या
अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है। 15 फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, कि जो कुछ
परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह। 16 तीन बार ऐसा ही हुआ;
तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया।। 17 जब पतरस अपके मन में
दुबधा कर रहा या, कि यह दर्शन जो मैं ने देखा क्या है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें
कुरनेलियुस ने भेजा या, शमौन के घर का पता लगाकर डेवढ़ी पर आ खड़े हुए।
18 और पुकारकर पूछने लगे, क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं पाहुन है
19 पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा या, कि आत्क़ा ने उस से कहा, देख,
तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। 20 सो उठकर नीचे जा, और बेखटके उन के साय हो
ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है। 21 तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्योंसे कहा;
देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है
22 उन्होंने कहा; कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और
सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह

चितावनी पाई है, कि तुझे अपके घर बुलाकर तुझ से वचन सुने। 23 तब उस ने
उन्हें भीतर बुलाकर उन की पहुनाई की।। और दूसरे दिन, वह उनके साय गया;
और याफा के भाइयोंमें से कई उसके साय हो लिए। 24 दूसरे दिन वे कैसरिया में
पहुंचे, और कुरनेलियुस अपके कुटुम्बियोंऔर प्रिय मित्रोंको इकट्ठे करके उन की
बाट जोह रहा या। 25 जब पतरस भीतर आ रहा या, तो कुरनेलियुस ने उस से
भेंट की, और पांवोंपड़के प्रणाम किया। 26 परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा,
खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं। 27 और उसके साय बातचीत करता हुआ भीतर
गया, और बहुत से लोगोंको इकट्ठे देखकर। 28 उन से कहा, तुम जानते हो, कि
अन्यजाति की संगति करता या उसके यहां जाना यहूदी के लिथे अधर्म है, परन्तु
परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। 29
इसी लिथे मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे चला आया: अब मैं पूछता हूं कि
मुझे किस काम के लिथे बुलाया गया है 30 कुरनेलियुस ने कहा; कि इस घड़ी पूरे
चार दिन हुए, कि मैं अपके घर में तीसरे पहर को प्रार्यना कर रहा या; कि देखो,
एक पुरूष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे साम्हने आ खड़ा हुआ। 31 और कहने
लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्यना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के साम्हने
स्क़रण किए गए हैं। 32 इस लिथे किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस
कहलाता है, बुला; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े के धन्धा करनेवाले के घर में
पाहुन है। 33 तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया, जो आ
गया: अब हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से
कहा है उसे सुनें। 34 तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा; 35 अब मुझे निश्चय हुआ,
कि परमेश्वर किसी का पझ नहीं करता, बरन हर जाति में जो उस से डरता और

धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। 36 जो वचन उस ने इस्त्राएलियोंके पास
भेजा, जब कि उस ने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का
सुसमाचार सुनाया। 37 वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्क़ा के
प्रचार के बाद गलील से आरम्भ करके सारे यहूदिया में फैल गई। 38 कि परमेश्वर
ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्क़ा और सामर्थ से अभिषेक किया: वह
भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा;
क्योंकि परमेश्वर उसके साय या। 39 और हम उन सब कामोंके गवाह हैं; जो उस
ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर
लटकाकर मार डाला। 40 उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी
कर दिया है। 41 सब लोगोंको नहीं बरन उन गवाहोंको जिन्हें परमेश्वर ने पहिले
से चुन लिया या, अर्यात हमको जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद
उसके साय खाया पीया। 42 और उस ने हमें आज्ञा दी, कि लोगोंमें प्रचार करो;
और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतोंऔर मरे हुओं का न्यायी
ठहराया है। 43 उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हें, कि जो कोई उस पर
विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापोंकी झमा मिलेगी।। 44 पतरस थे
बातें कह ही रहा या, कि पवित्र आत्क़ा वचन के सब सुननेवालोंपर उतर आया।
45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साय आए थे, वे सब चकित
हुए कि अन्यजातियोंपर भी पवित्र आत्क़ा का दान उंडेला गया है। 46 क्योंकि
उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। 47
इस पर पतरस ने कहा; क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि थे बपतिस्क़ा न
पाएं, जिन्होंने हमारी नाई पवित्र आत्क़ा पाया है 48 और उस ने आज्ञा दी कि

उन्हें यीशु मसीह ने नाम में बपतिस्क़ा दिया जाए: तब उन्होंने उस से बिनती की
कि कुछ दिन हमारे साय रह।।

प्रेरितों के काम 11

1 और प्रेरितोंऔर भाइयोंने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियोंने भी
परमेश्वर का वचन मान लिया है। 2 और जब पतरस यरूशलेम में आया, तो
खतना किए हुए लोग उस से वाद-विवाद करने लगे। 3 कि तू ने खतनारिहत
लोगोंके यहां जाकर उन से साय खाया। 4 तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से
क्रमानुसार कह सुनाया; 5 कि मैं याफा नगर में प्रार्यना कर रहा या, और बेसुध
होकर एक दर्शन देखा, कि एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारोंकोनोंसे लटकाया
हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास आया। 6 जब मैं ने उस पर ध्यान किया, तो
पृय्वी के चौपाए और बनपशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्की देखे। 7
और यह शब्द भी सुना कि हे पतरस उठ मार और खा। 8 मैं ने कहा, नहीं प्रभु,
नहीं, क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई। 9 इस के
उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है,
उसे अशुद्ध मत कह। 10 तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर
खींच लिया गया। 11 और देखो, तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे
गए थे, उस घर पर जिस में हम थे, आ खड़े हुए। 12 तब आत्क़ा ने मुझ से उन के
साय बेखटके हो लेने को कहा, और थे छ: भाई भी मेरे साय हो लिए; और हम उस
मनुष्य के घर में गए। 13 और उस ने बताया, कि मैं ने एक स्वर्गदूत को अपके
घर में खड़ा देखा, जिस ने मुझ से कहा, कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को

जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 14 वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा
तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा। 15 जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र
आत्क़ा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा या।
16 तब मुझे प्रभु का वह वचन स्क़रण आया; जो उस ने कहा; कि यूहन्ना ने तो
पानी से बपतिस्क़ा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्क़ा से बपतिस्क़ा पाओगे। 17 सो
जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास
करने से मिला या; तो मैं कौन या जो परमेश्वर को रोक सकता 18 यह सुनकर, वे
चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तक तो परमेश्वर ने
अन्यजातियोंको भी जीवन के लिथे मन फिराव का दान दिया है।। 19 सो जो
लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा या, तित्तर बित्तर हो गए थे,
वे फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियोंको
छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। 20 परन्तु उन में से कितने कुप्रुसी और
कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर युनानियोंको भी प्रभु यीशु का सुसमचार की
बातें सुनाने लगे। 21 और प्रभु का हाथ उन पर या, और बहुत लोग विश्वास करके
प्रभु की ओर फिरे। 22 तब उन की चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में
आई, और उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। 23 वह वहां पहुंचकर, और
परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सब को उपकेश दिया कि
तन मन लगाकर प्रभु से लिपके रहो। 24 क्योंकि वह एक भला मनुष्य या; और
पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण या: और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। 25 तब
वह शाऊल को ढूंढने के लिथे तरसुस को चला गया। 26 और जब उन से मिला तो
उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साय

मिलते और बहुत लोगोंको उपकेश देते रहे, और चेले सब से पहिले अन्ताकिया
ही में मसीही कहलाए।। 27 उन्हीं दिनोंमें कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से
अन्ताकिया में आए। 28 उन में से अगबुस नाम एक ने खड़े होकर आत्क़ा की
प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पकेगा, और वह अकाल
क्लौदियुस के समय में पड़ा। 29 तब चेलोंने ठहराया, कि हर एक अपक्की
अपक्की पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयोंकी सेवा के लिथे कुछ
भेजे। 30 और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ
प्राचीनोंके पास कुछ भेज दिया।।

प्रेरितों के काम 12

1 उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियोंको दुख देने के लिथे
उन पर हाथ डाले। 2 उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। 3
और जब उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं, तो उस ने पतरस
को भी पकड़ लिया: वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे। 4 और उस ने उसे पकड़ के
बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिथे, चार चार सिपाहियोंके चार पहरोंमें
रखा: इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगोंके साम्हने लाए। 5 सो बन्दीगृह
में पतरस की रखवाली हो रही यी; परन्तु कलीसिया उसके लिथे लौ लगाकर
परमेश्वर से प्रार्यना कर रही यी। 6 और जब हेरोदेस उसे उन के साम्हने लाने को
या, तो उसी रात पतरस दो जंजीरोंसे बन्धा हुआ, दो सिपाहियोंके बीच में सो रहा
या: और पहरूए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। 7 तो देखो, प्रभु का
एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ: और उस कोठरी में ज्योति चमकी: और उस ने

पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया, और कहा; उठ, फुरती कर, और
उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं। 8 तब स्वर्गदूत ने उस से कहा; कमर
बान्ध, और अपके जूते पहिन ले: उस ने वैसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा;
अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले। 9 वह निकलकर उसके पीछे हो लिया;
परन्तु यह न जानता या, कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सचमुच है, बरन
यह समझा, कि मैं दर्शन देख रहा हूं। 10 तब वे पहिल और दूसरे पहरे से
निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे, जो नगर की ओर है; वह उन के लिथे
आप से आप खुल गया: और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इतने में
र्स्वगदूत उसे छोड़कर चला गया। 11 तब पतरस ने सचेत होकर कहा; अब मैं ने
सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा
लिया, और यहूदियोंकी सारी आशा तोड़ दी। 12 और यह सोचकर, वह उस
यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है; वहां बहुत लोग
इकट्ठे होकर प्रार्यना कर रहे थे। 13 जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई; तो
रूदे नाम एक दासी सुनने को आई। 14 और पतरस का शब्द पहचानकर, उस ने
आनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि
पतरस द्वार पर खड़ा है। 15 उन्होंने उस से कहा; तू पागल है, परन्तु वह दृढ़ता से
बोली, कि ऐसा ही है: तब उन्होंने कहा, उसका स्वर्गदूत होगा। 16 परन्तु पतरस
खटखटाता ही रहा: सो उन्होंने खिड़की खोली, और उसे देखकर चकित हो गए।
17 तब उस ने उन्हें हाथ से सैन किया, कि चुप रहें; और उन को बताया, कि प्रभु
किस रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया है: फिर कहा, कि याकूब और
भाइयोंको यह बात कह देना; तब निकलकर दूसरी जगह चला गया। 18 भोर को

सिपाहियोंमें बड़ी हलचल होने लगी, कि पतरस क्या हुआ। 19 जब हेरोदेस ने उस
की खोज की, और न पाया; तो पहरूओं की जांच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले
जाएं; और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जा रहा। 20 और वह सूर और
सैदा के लोगोंसे बहुत अप्रसन्न या; सो वे एक चित्त होकर उसके पास आए और
बलास्तुस को, जो राजा का एक कर्मचारी या, मनाकर मेल करता चाहा; क्योंकि
राजा के देश से उन के देश का पालन पोषण होता या। 21 और ठहराए हुए दिन
हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा; और उन को व्याख्यान देने लगा।
22 और लोग पुकार उठे, कि यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है। 23
उसी झण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उस ने परमश्ेवर की
महिमा नही की और वह कीड़े पड़के मर गया।। 24 परन्तु परमेश्वर का वचन
बढ़ता और फैलता गया।। 25 जब बरनबास और शाऊल अपक्की सेवा पूरी कर
चुके, तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साय लेकर यरूशलेम से लौटे।।

प्रेरितों के काम 13

1 अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपकेशक थे; अर्यात
बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और देश की
चौयाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। 2 जब वे उपवास
सहित प्रभु की उपासना कर रहे या, तो पवित्र आत्क़ा ने कहा; मेरे निमित्त
बरनबास और शाऊल को उस काम के लिथे अलग करो जिस के लिथे मैं ने उन्हें
बुलाया है। 3 तब उन्होंने उपवास और प्रार्यना करके और उन पर हाथ रखकर
उन्हें विदा किया।। 4 सो वे पवित्र आत्क़ा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और

वहां से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले। 5 और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर
का वचन यहूदियोंकी अराधनालयोंमें सुनाया; और यूहन्ना उन का सेवक या। 6
और उस सारे टापू में होते हुए, पाफुस तक पहुंचे: वहां उन्हें बार-यीशु नाम एक
यहूदी टोन्हा और फूठा भविष्यद्वक्ता मिला। 7 वह सिरिगयुस पौलुस सूबे के साय
या, जो बुद्धिमान पुरूष या: उस ने बरनबास और शाऊल को अपके पास बुलाकर
परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। 8 परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके
नाम का अर्य है उन का साम्हना करके, सूबे को विश्वास करने से रोकता चाहा। 9
तब शाऊल ने जिस का नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण हो उस की
ओर टकटकी लगाकर कहा। 10 हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान
की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गोंको टेढ़ा करना न
छोड़ेगा 11 अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अन्धा
रहेगा और सूर्य को न देखेगा: तब तुरन्त धुन्धलाई और अन्धेरा उस पर छा गया,
और वह इधर उधर टटोलने लगा, ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले। 12
तब सूबे ने जो कुछ हुआ या, देखकर और प्रभु के उपकेश से चकित होकर विश्वास
किया।। 13 पौलुस और उसके सायी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के
पिरगा में आए: और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। 14 और
पिरगा से आगे बढ़कर के पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे; और सब्त के दिन
अराधनालय में जाकर बैठ गए। 15 और व्यवस्या और भविष्यद्वक्ताओं की
पुस्तक के पढ़ने के बाद सभा के सरदारोंने उन के पास कहला भेजा, कि हे
भाइयों, यदि लोगोंके उपकेश के लिथे तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो। 16
तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से सैन करके कहा; हे इस्त्राएलियों, और

परमेश्वर से डरनेवालों, सुनो। 17 इन इस्त्राएली लोगोंके परमेश्वर ने हमारे
बापदादोंको चुन लिया, और जब थे मिसर देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उन
की उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। 18 और वह कोई चालीस
वर्ष तक जंगल में उन की सहता रहा। 19 और कनान देश में सात जातियोंका
नाश करके उन का देश कोई साढ़े चार सौ वर्ष में इन की मीरास में कर दिया। 20
इस के बाद उस ने सामुएल भविष्यद्वक्ता तक उन में न्यायी ठहराए। 21 उसके
बाद उन्होंने एक राजा मांगा: तब परमेश्वर ने चालीस वषै के लिथे बिन्यामीन के
गोत्र में से एक मनुष्य अर्यात कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। 22
फिर उसे अलग करके दाऊद को उन का राजा बनाया; जिस के विषय में उस ने
गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल
गया है। वही मेरे सारी इच्छा पूरी करेगा। 23 इसी के वंश में से परमेश्वर ने
अपक्की प्रतिज्ञा के अनुसार इस्त्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्यात यीशु को
भेजा। 24 जिस के आने से पहिले यूहन्ना ने सब इस्त्राएलियोंको मन फिराव के
बपतिस्क़ा का प्रचार किया। 25 और जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने पर या,
तो उस ने कहा, तुम मुझे क्या समझते हो मैं वह नहीं! बरन देखो, मेरे बाद एक
आनेवाला है, जिस के पांवोंकी जूती मैं खोलने के योग्य नहीं। 26 हे भाइयो, तुम
जो इब्राहीम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस
उद्धार का वचन भेजा गया है। 27 क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालोंऔर उनके
सरदारोंने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझी; जो हर सब्त
के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिथे उसे दोषी ठहराकर उन को पूरा किया। 28 उन्होंने
मार डालने के योग्य कोई दोष उस में ने पाया, तौभी पीलातुस से बिनती की, कि

वह मार डाला जाए। 29 और जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी
की, तो उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रखा। 30 परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे
हुओं में से जिलाया। 31 और वह उन्हें जो उसके साय गलील से यरूशलेम आए
थे, बहुत दिनोंतक दिखाई देता रहा; लोगोंके साम्हने अब वे भी उसके गवाह हैं।
32 और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बापदादोंसे की गई यी, यह
सुसमाचार सुनाते हैं। 33 कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी
सन्तान के लिथे पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है;
आज मैं ही ने तुझे जन्क़ाया है। 34 और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने
के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उस ने योंकहा है; कि मैं दाऊद पर की पवित्र
और अचल कृपा तुम पर करूंगा। 35 इसलिथे उस ने एक और भजन में भी कहा
है; कि तू अपके पवित्र जन को सड़ने न देगा। 36 क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की
इच्छा के अनुसार अपके समय में सेवा करके सो गया; और अपके बापदादोंमें जा
मिला; और सड़ भी गया। 37 परन्तु जिस को परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं
पाया। 38 इसलिथे, हे भाइयो; तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापोंकी झमा का
समाचार तुम्हें दिया जाता है। 39 और जिन बातोंसे तुम मूसा की व्यवस्या के
द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब से हर एक विश्वास करनेवाला उसके
द्वारा निर्दोष ठहरता है। 40 इसलिथे चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में आया है, 41 तुम प्र भी आ पके कि हे निन्दा
करनेवालो, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनोंमें एक
काम करता हूं; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी
प्रतीति न करोगे।। 42 उन के बाहर निकलते समय लोग उन से बिनती करने

लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें थे बातें फिर सुनाई जाएं। 43 और जब सभा उठ
गई तो यहूदियोंऔर यहूदी मत में आए हुए भक्तोंमें से बहुतेरे पौलुस और
बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उन से बातें करके समझाया, कि परमेश्वर
के अनुग्रह में बने रहो।। 44 अगले सब्त के दिन नगर के प्राय: सब लोग परमेश्वर
का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए। 45 परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर
गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातोंके विरोध में बोलने लगे। 46 तब
पोलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, अवश्य या, कि परमेश्वर का वचन
पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपके को
अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियोंकी ओर फिरते
हैं। 47 क्योकिं प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैं। ने तुझे अन्याजातियोंके लिथे
ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृय्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो। 48 यह सुनकर
अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और
जितने अनन्त जीवन के लिथे ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। 49 तब प्रभु
का वचन उस सारे देश में फैलने लगा। 50 परन्तु यहूदियोंने भक्त और कुलीन
स्त्रियोंको और नगर के बड़े लोगोंको उसकाया, और पौलुस और बरनबास पर
उपद्रव करवाकर उन्हें अपके सिवानोंसे निकाल दिया। 51 तब वे उन के साम्हने
अपके पांवोंकी धूल फाड़कर इकुनियुम को गए। 52 और चेले आनन्द से और
पवित्र आत्क़ा से परिपूर्ण होते रहे।।

प्रेरितों के काम 14

1 इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियोंकी आराधनालय में साय साय गए, और

ऐसी बातें की, कि यहूदियोंऔर यूनानियोंदोनोंमें से बहुतोंने विश्वास किया। 2
परन्तु न माननेवाले यहूदियोंने अन्यजातियोंके मन भाइयोंके विरोध में उसकाए,
और बिगाड़ कर दिए। 3 और वे बहुत दिन तक वहां रहे, और प्रभु के भरोसे पर
हियाव से बातें करते थे: और वह उन के हाथोंसे चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर
अपके अनुग्रह के वचन पर गवाही देता या। 4 परन्तु नगर के लोगोंमें फूट पड़
गई यी; इस से कितने तो यहूदियोंकी ओर, और कितने प्रेरितोंकी ओर हो गए। 5
परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी उन का अपमान और उन्हें पत्यरवाह करने के
लिथे अपके सरदारोंसमत उन पर दोड़े। 6 तो वे इस बात को जान गा, और
लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरोंमें, और आसपास के देश में भाग गए। 7
और वहां सुसमाचार सुनाने लगे।। 8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा या, जो पांवोंका
निर्बल या: वह जन्क़ ही से लंगड़ा या, और कभी न चला या। 9 वह पौलुस को
बातें करते सुन रहा या और इस ने उस की ओर टकटकी लगाकर देखा कि इस को
चंगा हो जाने का विश्वास है। 10 और ऊंचे शब्द से कहा, अपके पांवोंके बल सीधा
खड़ा हो: तब वह उछलकर चलने फिरने लगा। 11 लोगोंने पौलुस का यह काम
देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊंचे शब्द से कहा; देवता हमारे पास उतर आए हैं।
12 और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिरमेस कहा, क्योंकि यह
बातें करने में मुख्य या। 13 और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उस के नगर
के साम्हने या, बैल और फूलोंके हार फाटकोंपर लाकर लोगोंके साय बलिदान
करना चाहता या। 14 परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितोंने जब सुना, तो अपके
कपके फाड़े, और भीड़ में लपक गए, और पुकारकर कहने लगे; हे लोगो तुम क्या
करते हो 15 हम भी तो तुम्हारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें

सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्य वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर
की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग और पृय्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है
बनाया। 16 उस ने बीते समयोंमें सब जातियोंको अपके अपके मार्गोंमें चलने
दिया। 17 तौभी उस ने अपके आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता
रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और
आनन्द से भरता रहा। 18 यह कहकर भी उन्होंने लोगोंको किठनता से रोका कि
उन के लिथे बलिदान न करें।। 19 परन्तु कितने यहूदियोंने अन्ताकिया और
इकुनियम से आकर लोगोंको अपक्की ओर कर लिया, और पौलुस को पत्यरवाह
किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए। 20 पर जब चेले उस
की चारोंओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास
के साय दिरबे को चला गया। 21 और वे उस नगर के लोगोंको सुसमाचार
सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियम और अन्ताकिया को
लौट आए। 22 और चेलोंके मन को स्यिर करते रहे और यह उपकेश देते थे, कि
हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा। 23 और उन्होंने
हर एक कलीसिया में उन के लिथे प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्यना
करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया या। 24 और
पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया में पहुंचे; 25 और पिरगा में वचन सुनाकर
अत्तलिया में आए। 26 और वहां से जहाज से अन्ताकिया में आए, जहां से वे उस
काम के लिथे जो उन्होंने पूरा किया या परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गए थे। 27
वहां पहुंचकर, उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि परमेश्वर ने हमारे
साय होकर कैसे बड़े बड़े काम किए! और अन्यजातियोंके लिथे विश्वास का द्वार

खोल दिया। 28 और वे चेलोंके साय बहुत दिन तक रहे।।

प्रेरितों के काम 15

1 फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयोंको सिखाने लगे कि यदि मूसा की
रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते। 2 जब पौलुस और
बरनबास का उन से बहुत फगड़ा और वाद-विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि
पौलुस और बरनबास, और हम में से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में
यरूशलेम को प्रेरितोंऔर प्राचीनोंके पास जांए। 3 सो मण्डली ने उन्हें कुछ दूर
तक पहुंचाया; और वे फीनीके ओर सामरिया से होते हुए अन्यजातियोंके मन
फेरने का समाचार सुनाते गए, और सब भाइयोंको बहुत आनन्दित किया। 4 जब
यरूशलेम में पहुंचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उन से आनन्द क
ेसाय मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उन के साय होकर कैसे कैसे
काम किए थे। 5 परन्तु फरीसियोंके पंय में से जिन्होंने विश्वास किया या, उन में
से कितनोंने उठकर कहा, कि उन्हें खतना कराना और मूसा की व्यवस्या को
मानने की आज्ञा देना चाहिए। 6 तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में
विचार करने के लिथे इकट्ठे हुए। 7 तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद के बाद खड़े
होकर उन से कहा।। हे भाइयो, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने
तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर
विश्वास करें। 8 और मन के जांचनेवाले परमेश्वर ने उन को भी हमारी नाई पवित्र
आत्क़ा देकर उन की गवाही दी। 9 और विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके
हम में और उन में कुछ भेद न रखा। 10 तो अब तुम क्योंपरमेश्वर की पक्कीझा

करते हो कि चेलोंकी गरदन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके
थे और न हम उठा सकते। 11 हां, हमारा यह तो निश्चय है, कि जिस रीति से वे
प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे।। 12 तब सारी
सभा चुपचाप होकर बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उन के
द्वारा अन्यजातियोंमें कैसे कैसे चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाए। 13 जब वे चुप
हुए, तो याकूब कहने लगा, कि ।। 14 हे भाइयो, मेरी सुनो: शमौन ने बताया, कि
परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यजातियोंपर कैसी कृपादृष्टि की, कि उन में से
अपके नाम के लिथे एक लोग बना ले। 15 और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें
मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि। 16 इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ
डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरोंको फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा। 17
इसलिथे कि शेष मनुष्य, अर्यात सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु
को ढूंढें। 18 यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातोंका समाचार
देता आया है। 19 इसलिथे मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियोंमें से जो लोग
परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दु:ख न दें। 20 परन्तु उन्हें लिख भेंजें, कि वे
मूरतोंकी अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से
पके रहें। 21 क्योंकि पुराने समय से नगर नगर मूसा की व्यवस्या के प्रचार
करनेवाले होते चले आए है, और वह हर सब्त के दिन अराधनालय में पढ़ी जाती
है। 22 तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितोंऔर प्राचीनोंको अच्छा लगा, कि अपके
में से कई मनुष्योंको चुनें, अर्यात यहूदा, जो बरसब्बा कहलाता है, और सीलास को
जो भाइयोंमें मुखिया थे; और उन्हें पौलुस और बरनबास के साय अन्ताकिया को
भेजें। 23 और उन के हाथ यह लिख भेजा, कि अन्ताकिया और सूरिया और

किलिकिया के रहनेवाले भाइयोंको जो अन्यजातियोंमें से हैं, प्रेरितोंऔर प्राचीन
भाइयोंका नमस्कार! 24 हम ने सुना है, कि हम में से कितनोंने वहां जाकर, तुम्हें
अपक्की बातोंसे घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु हम ने उन को
आज्ञा नहीं दी यी। 25 इसलिथे हम ने एक चित्त होकर ठीक समझा, कि चुने हुऐ
मनुष्योंको अपके प्यारे बरनबास और पौलुस के साय तुम्हारे पास भेजें। 26 थे तो
ऐसे मनुष्य हैं, जिन्होंने अपके प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिथे
जोखिम में डाले हैं। 27 और हम ने यहूदा और सीलास को भेजा है, जो अपके मुंह
से भी थे बातें कह देंगे। 28 पवित्र आत्क़ा को, और हम को ठीक जान पड़ा, कि इन
आवश्यक बातोंको छोड़; तुम पर और बोफ न डालें; 29 कि तुम मूरतोंके बलि
किए हुओं से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से,
पके रहो। इन से पके रहो; तो तुम्हारा भला होगा आगे शुभ।। 30 फिर वे विदा
होकर अन्ताकिया में पहुंचे, और सभा को इकट्ठी करके वह उन्हें पत्री दे दी। 31
और वे पढ़कर उस उपकेश की बात से अति आनन्दित हुए। 32 और यहूदा और
सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातोंसे भाइयोंको उपकेश देकर
स्यिर किया। 33 वे कुछ दिन रहकर भाइयोंसे शान्ति के साय विदा हुए, कि
अपके भेजनेवालोंके पास जाएं। 34 (परन्तु सीलास को वहां रहना अच्छा लगा।)
35 और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए: और बहुत और लोगोंके
साय प्रभु के वचन का उपकेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।। 36 कुछ दिन
बाद पौलुस ने बरनबास से कहा; कि जिन जिन नगरोंमें हम ने प्रभु का वचन
सुनाया या, आओ, फिर उन में चलकर अपके भाइयोंको देखें; कि कैसे हैं। 37 तब
बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साय लेने का विचार किया। 38

परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उन से अलग हो गया या, और काम पर उन
के साय न गया, साय ले जाना अच्छा न समझा। 39 सो ऐसा टंटा हुआ, कि वे
एक दूसरे से अलग हो गए: और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर कुप्रुस को
चला गया। 40 परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयोंसे परमेश्वर के
अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहां से चला गया। 41 और कलीसियाओं को स्यिर
करता हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते हुआ निकला।।

प्रेरितों के काम 16

1 फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और देखो, वहां तीमुयियुस नाम एक
चेला या, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र या, परन्तु उसका पिता यूनानी या।
2 वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयोंमें सुनाम या। 3 पौलुस ने चाहा, कि यह
मेरे साय चले; और जो यहूदी लोग उन जगहोंमें थे उन के कारण उसे लेकर
उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते या, कि उसका पिता यूनानी या। 4
और नगर नगर जाते हुए वे उन विधियोंको जो यरूशलेम के प्रेरितोंऔर प्राचीनोंने
ठहराई यीं, मानने के लिथे उन्हें पहुंचाते जाते थे। 5 इस प्रकार कलीसिया विश्वास
में स्यिर होती गई और गिनती में प्रति दिन बढ़ती गई। 6 और वे फ्रूगिया और
गलतिया देशोंमें से होकर गए, और पवित्र आत्क़ा ने उन्हें ऐशिया में वचन सुनाने
से मना किया। 7 और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना
चाहा; परन्तु यीशु के आत्क़ा ने उन्हें जाने न दिया। 8 सो मूसिया से होकर वे
त्रोआस में आए। 9 और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरूष
खड़ा हुआ, उस से बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ;

और हमारी सहाथता कर। 10 उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त
मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार
सुनाने के लिथे बुलाया है।। 11 सो त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके
और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। 12 वहां से हम फिलिप्पी में पहुंचे, जो
मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियोंकी बस्ती है; और हम उस नगर
में कुछ दिन तक रहे। 13 सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के
किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्यान होगा; और बैठकर
उन स्त्रियोंसे जो इकट्ठी हुई यीं, बातें करने लगे। 14 और लुदिया नाम युआयीरा
नगर की बैंजनी कपके बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती यी, और प्रभु ने उसका
मन खोला, ताकि पौलुस की बातोंपर चित्त लगाए। 15 और जब उस ने अपके
घराने समेत बपतिस्क़ा लिया, तो उस ने बिनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की
विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो; और वह हमें मनाकर ले गई।।
16 जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिस में
भावी कहनेवाली आत्क़ा यी; और भावी कहने से अपके स्वामियोंके लिथे बहुत
कुछ कमा लाती यी। 17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि
थे मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कया सुनाते
हैं। 18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दु:खित हुआ, और
मुंह फेरकर उस आत्क़ा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि
उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।। 19 जब उसके स्वामियोंने
देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़ कर
चौक में प्राधानोंके पास खींच ले गए। 20 और उन्हें फौजदारी के हाकिमोंके पास

ले जाकर कहा; थे लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं। 21
और ऐसे व्यवहार बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियोंके लिथे
ठीक नहीं। 22 तब भीड़ के लागे उन के विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और
हाकिमोंने उन के कपके फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी।
23 और बहुत बेत लगवाकर उन्हें बन्दीगृह में डाला; और दारोगा को आज्ञा दी,
कि उन्हें चौकसी से रखे। 24 उस ने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में
रखा और उन के पांव काठ में ठोंक दिए। 25 आधी रात के लगभग पौलुस और
सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उन की सुन
रहे थे। 26 कि इतने में एकाएक बड़ा भुईडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव
हिल गईं, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पके। 27 और
दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग
गए, सो उस ने तलवार खींचकर अपके आप को मार डालना चाहा। 28 परन्तु
पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपके आप को कुछ हानि न पहुंचा,
क्योंकि हम सब यहां हैं। 29 तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और
कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। 30 और उन्हें बाहर लाकर कहा,
हे साहिबो, उद्धार पाने के लिथे मैं क्या करूं 31 उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर
विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। 32 और उन्होंने उस को, और
उसके सारे घर के लोगोंको प्रभु का वचन सुनाया। 33 और रात को उसी घड़ी उस
ने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए, और उस ने अपके सब लोगोंसमेत तुरन्त
बपतिस्क़ा लिया। 34 और उस ने उन्हें अपके घर में ले जाकर, उन के आगे
भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।।

35 जब दिन हुआ तक हाकिमोंने प्यादोंके हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्योंको
छोड़ दो। 36 दारोगा ने थे बातें पौलुस से कह सुनाई, कि हाकिमोंने तुम्हारे छोड़
देने की आज्ञा भेज दी है, सो अब निकलकर कुशल से चले जाओ। 37 परन्तु
पौलुस ने उस से कहा, उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहाराए बिना,
लोगोंके साम्हने मारा, और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या चुपके से निकाल
देते हैं ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएं। 38 प्यादोंने थे बातें
हाकिमोंसे कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए। 39 और आकर उन्हें
मनाया, और बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर से चले जाएं। 40 वे बन्दीगृह से
निकल कर लुदिया के यहां गए, और भाइयोंसे भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और
चले गए।।

प्रेरितों के काम 17

1 फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर यिस्सलुनीके में आए, जहां
यहूदियोंका एक आराधनालय या। 2 और पौलुस अपक्की रीति के अनुसार उन के
पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रोंसे उन के साय विवाद किया। 3
और उन का अर्य खोल खोलकर समझाता या, कि मसीह का दुख उठाना, और
मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य या; और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कया
सुनाता हूं, मसीह है। 4 उन में से कितनोंने, और भक्त यूनानियोंमें से बहुतेरोंने
और बहुत सी कुलीन सित्रयोंने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साय मिल
गए। 5 परन्तु यहूदियोंने डाह से भरकर बजारू लोगोंमें से कई दुष्ट मनुष्योंको
अपके साय में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन

के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगोंके साम्हने लाना चाहा। 6 और उन्हें न पाकर,
वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाइयोंको नगर के हाकिमोंके
साम्हने खींच लाए, कि थे लोग जिन्होंने जगल को उलटा पुलटा कर दिया है, यहां
भी आए हैं। 7 और यामोन ने उन्हें अपके यहां उतारा है, और थे सब के सब यह
कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं। 8 उन्होंने
लोगोंको और नगर के हाकिमोंको यह सुनाकर घबरा दिया। 9 और उन्होंने
यासोन और बाकी लोगोंसे मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया।। 10 भाइयोंने तुरन्त
रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया: और वे वहां पहुंचकर
यहूदियोंके आराधनालय में गए। 11 थे लोग तो यिस्सलुनीके के यहूदियोंसे भले
थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रोंमें
ढूंढ़ते रहे कि थे बातें योहीं हैं, कि नहीं। 12 सो उन में से बहुतोंने, और यूनानी
कुलीन स्त्रियोंमें से, और पुरूषोंमें से बहुतेरोंने विश्वास किया। 13 किन्तु जब
यिस्सलुनीके के यहूदी जान गए, कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन
सुनाता है, तो वहां भी आकर लोगोंको उसकाने और हलचल मचाने लगे। 14 तब
भाइयोंने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु
सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। 15 पौलुस के पहुंचानेवाले उसे अथेने तक
ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिथे यह आज्ञा लेकर विदा हुए, कि मेरे
पास बहुत शीघ्र आओ।। 16 जब पौलुस अथेने में उन की बाट जोह रहा या, तो
नगर को मूरतोंसे भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया। 17 सो वह
आराधनालय में यहूदियोंऔर भक्तोंसे और चौक में जो लोग मिलते थे, उन से हर
दिन वाद-विवाद किया करता या। 18 तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितोंमें से

कितने उस से तर्क करने लगे, और कितनोंने कहा, यह बकवादी क्या कहना
चाहता है परन्तु औरोंने कहा; वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है,
क्योंकि वह यीशु का, और पुनरूत्यान का सुसमाचार सुनाता या। 19 तब वे उसे
अपके साय अरियुपगुस पर ले गए और पूछा, क्या हम जान सकते हैं, कि यह
नया मत जो तू सुनाता है, क्या है 20 क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है,
इसलिथे हम जानना चाहते हैं कि इन का अर्य क्या है 21 (इसलिथे कि सब
अथेनवी और परदेशी जो वहां रहते थे नई नई बातें कहने और सुनने के सिवाय
और किसी काम में समय नहीं बिताते थे)। 22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच
में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगोंमैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के
बड़े माननेवाले हो। 23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख
रहा या, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा या, कि ?अनजाने ईश्वर के
लिथे। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। 24
जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और
पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरोंमें नहीं रहता। 25 न किसी
वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्योंके हाथोंकी सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही
सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। 26 उस ने एक ही मूल से
मनुष्योंकी सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिथे बनाई हैं; और उन के
ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानोंको इसलिथे बान्धा है। 27 कि वे
परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से
दूर नहीं! 28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्यिर
रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियोंने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

29 सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझता उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने
या रूपे या पत्यर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पता से गढ़े गए
हों। 30 इसलिथे परमेश्वर आज्ञानता के समयोंमें अनाकानी करके, अब हर जगह
सब मनुष्योंको मन फिराने की आज्ञा देता है। 31 क्योंकि उस ने एक दिन
ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे
उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रामाणित
कर दी है।। 32 मरे हुओं के पुनरूत्यान की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने
लगे, और कितनोंने कहा, यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। 33 इस पर
पौलुस उन के बीच में से निकल गया। 34 परन्तु कई एक मनुष्य उसके साय
मिल गए, और विश्वास किया, जिन में दियुनुसियुस अरियुपक्की या, और
दमरिस नाम एक स्त्री यी, और उन के साय और भी कितने लोग थे।।

प्रेरितों के काम 18

1 इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिन्युस में आया। 2 और वहां अक्विला
नाम एक यहूदी मिला, जिस का जन्क़ पुन्तुस का या; और अपक्की पत्नी
प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया आया या, क्योंकि क्लौदियुस ने सब
यहूदियोंको रोम से निकल जाने की आज्ञा दी यी, सो वह उन के यहां गया। 3 और
उसका और उन का एक ही उद्यम या; इसलिथे वह उन के साय रहा, और वे काम
करने लगे, और उन का उद्यम तम्बू बनाने का या। 4 और वह हर एक सब्त के
दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियोंऔर यूनानियोंको भी समझाता
या।। 5 जब सीलास और तीमुयियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने

की धुन में लगकर यहूदियोंको गवाही देता या कि यीशु ही मसीह है। 6 परन्तु जब
वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उस ने अपके कपके फाड़कर उन से कहा;
तुम्हारा लोहू तुम्हारी गर्दन पर रहे: मैं निदौष हूं: अब ऐ मैं अन्यजातियोंके पास
जाऊंगा। 7 और वहां से चलकर वह तितुस युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त के
घर में आया, जिस का घर आराधनालय से लगा हुआ या। 8 तब आराधनालय के
सरदार क्रिस्पुस ने अपके सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से
कुरिन्यी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्क़ा लिया। 9 और प्रभु ने रात को दर्शन
के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, बरन कहे जा, और चुप मत रह। 10 क्योंकि मैं
तेरे साय हूं: और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हाति न करेगा; क्योंकि इस नगर
में मेरे बहुत से लोग हैं। 11 सो वह उन में परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष
तक रहा।। 12 जब गल्लियो अखाया देश का हाकिम या तो यहूदी लोग एका
करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन के साम्हने लाकर, कहने लगे।
13 कि यह लोगोंको समझाता है, कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें, जो
व्यवस्या के विपक्कीत है। 14 जब पौलुस बोलने पर या, तो गल्लियो ने
यहूदियोंसे कहा; हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो
उचित या कि मैं तुम्हारी सुनता। 15 परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और
नामों, और तुम्हारे यहां की व्यवस्या के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं
इन बातोंका न्यायी बनना नहीं चाहता। 16 और उस ने उन्हें न्याय आसन के
साम्हने से निकलवा दिया। 17 तब सब लोंागें ने अराधनालय के सरदार
सोस्यिनेस को पकड़ के न्याय आसन के साम्हने मारा: परन्तु गल्लियो ने इन
बातोंकी कुछ भी चिन्ता न की।। 18 सो पौलुस बहुत दिन तक वहां रहा, फिर

भाइयोंसे विदा होकर किंख्रिया में इसलिथे सिर मुण्डाया क्योंकि उस ने मन्नत
मानी यी और जहाज पर सूरिया को चल दिया और उसके साय प्रिस्किल्ला और
अक्विला थे। 19 और उस ने इफिसुस में पहुंचकर उन को वहां छोड़ा, और आप
ही अराधनालय में जाकर यहूदियोंसे विवाद करने लगा। 20 जब उन्होंने उस से
बिनती की, कि हमारे साय और कुछ दिन रह, तो उस ने स्वीकार न किया। 21
परन्तु यह कहकर उन से विदा हुआ, कि यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास
फिर आऊंगा। 22 तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया, और कैसरिया में
उतर कर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में
आया। 23 फिर कुछ दिन रहकर वहां से चला गया, और एक ओर से गलतिया
और फ्रूगिया में सब चेलोंको स्यिर करता फिरा।। 24 अपुल्लोस नाम एक यहूदी
जिस का जन्क़ सिकन्दिरया में हुआ या, जो विद्वान पुरूष या और पवित्र शास्त्र
को अच्छी तरह से जानता या इफिसुस में आया। 25 उस ने प्रभु के मार्ग की
शिझा पाई यी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक ठीक सुनाता, और
सिखाता या, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्क़ा की बात जानता या। 26 वह
आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की
बातें सुनकर, उसे अपके यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक
ठीक बताया। 27 और जब उस ने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को
जाए तो भाइयोंने उसे ढाढ़स देकर चेलोंको लिखा कि वे उस से अच्छी तरह मिलें,
और उस ने पहुंचकर वहां उन लोगोंकी बड़ी सहाथता की जिन्होंने अनुग्रह के
कारण विश्वास किया या। 28 क्योंकि वह पवित्र शास्त्र से प्रमाण दे देकर, कि
यीशु ही मसीह है; बड़ी प्रबलता से यहूदियोंको सब के साम्हने निरूत्तर करता

रहा।।

प्रेरितों के काम 19

1 और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर से सारे देश से होकर
इफिसुस में आया, और कई चेलोंको देखकर। 2 उन से कहा; क्या तुम ने विश्वास
करते समय पवित्र आत्क़ा पाया उन्होंने उस से कहा, हम ने तो पवित्र आत्क़ा की
चर्चा भी नहीं सुनी। 3 उस ने उन से कहा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्क़ा
लिया उन्होंने कहा; यूहन्ना का बपतिस्क़ा। 4 पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने यह
कहकर मन फिराव का बपतिस्क़ा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर
अर्थात्‌ यीशु पर विश्वास करना। 5 यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का
बपतिस्क़ा लिया। 6 और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र
आत्क़ा उतरा, और वे भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्ववाणी करने लगे। 7 थे
सब लगभग बारह पुरूष थे।। 8 और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक
निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और
समझाता रहा। 9 परन्तु जब कितनोंने कठोर होकर उस की नहीं मानी बरन
लोगोंके साम्हने इस मार्ग को बुरा कहने लगे, तो उस ने उन को छोड़कर चेलोंको
अलग कर लिया, और प्रति दिन तुरन्नुस की पाठशाला में विवाद किया करता
था। 10 दो वर्ष तक यही होता रहा, यहां तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी,
क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया। 11 और परमेश्वर पौलुस के हाथोंसे
सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था। 12 यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उस की
देह से छुलवाकर बीमारोंपर डालते थे, और उन की बीमारियां जाती रहती थी;

और दुष्टात्क़ाएं उन में से निकल जाया करती यीं। 13 परन्तु कितने यहूदी जो
फाड़ा फूंकी करते फिरते थे, यह करने लगे, कि जिन में दुष्टात्क़ा होंउन पर प्रभु
यीशु का नाम यह कहकर फूंके कि जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें
उसी की शपय देता हूं। 14 और स्क्किवा नाम के एक यहूदी महाथाजक के सात
पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे। 15 पर दुष्टात्क़ा ने उत्तर दिया, कि यीशु को मैं
जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं; परन्तु तुम कौन हो 16 और उस
मनुष्य ने जिस में दुष्ट आत्क़ा यी; उन पर लपककर, और उन्हें वश में लाकर,
उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।
17 और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और
उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। 18 और जिन्होंने
विश्वास किया या, उन में से बहुतेरोंने आकर अपके अपके कामोंको मान लिया
और प्रगट किया। 19 और जादू करनेवालोंमें से बहुतोंने अपक्की अपक्की
पोयियां इकट्ठी करके सब के साम्हने जला दीं; और जब उन का दाम जोड़ा गया,
जो पचास हजार रूपके की निकलीं। 20 योंप्रभु का वचन बल पूर्वक फैलता गया
और प्रबल होता गया।। 21 जब थे बातें हो चुकीं, तो पौलुस ने आत्क़ा में ठाना कि
मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊं, और कहा, कि वहां जाने
के बाद मुझे रोमा को भी देखना अवश्य है। 22 सो अपक्की सेवा करनेवालोंमें से
तीमुयियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में
रह गया। 23 उस समय में पन्य के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ। 24 क्योंकि
देमेत्रियुस नाम का ऐ सुनार अरितमिस के चान्दी के मन्दिर बनवाकर
कारीगरोंको बहुत काम दिलाया करता या। 25 उस ने उन को, और, और ऐसी

वस्तुओं के कारीगरोंको इकट्ठे करके कहा; हे मनुष्यो, तुम जानते हो, कि इस
काम में हमें कितना धन मिलता है। 26 और तुम देखते और सुनते हो, कि केवल
इफिसुस ही में नहीं, बरन प्राय: सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने
बहुत लोगोंको समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी है, वे ईश्वर
नहीं। 27 और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं, कि हमारे इस धन्धे की
प्रतिष्ठा जाती रहेगी; बरन यह कि महान देवी अरितमिस का मन्दिर तुच्छ
समझा जाएगा और जिस सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी
जाता रहेगा। 28 वे यह सुनकर क्रोध से भर गए, और चिल्ला चिल्लाकर कहने
लगे, ?इफिसियोंकी अरितमिस महान है! 29 और सारे नगर में बड़ा कोलाहल
मच गया और लोगोंने गयुस और अरिस्तरखुस मकिदुनियोंको जो पौलुस के
संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एकिचत्त होकर रंगशाला में दौड़ गए। 30 जब
पौलुस ने लोगोंके पास भीतर जाना चाहा तो चेलोंने उसे जाने न दिया। 31
आसिया के हाकिमोंमें से भी उसके कई मित्रोंने उसके पास कहला भेजा, और
बिनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। 32 सो कोई कुछ
चिल्लाया, और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही यी, और बहुत से
लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिथे इकट्ठे हुए हैं। 33 तब उन्होंने
सिकन्दर को, जिस यहूदियोंने खड़ा किया या, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और
सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगोंके साम्हने उत्तर दिया चाहता या। 34 परन्तु
जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक शब्द से कोई दो घंटे
तक चिल्लाते रहे, कि इफिसयोंकी अरितमिस महान है। 35 तब नगर के मन्त्री
ने लोगोंको शान्त करके कहा; हे इफिसयों, कौन नहीं जानता, कि इफिसयोंका

नगर बड़ी देवी अरितमिस के मन्दिर, और ज्यूस की ओर से गिरी हुई मूरत का
टहलुआ है। 36 सो जब कि इन बातोंका खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित्त है,
कि तुम चुपके रहो; और बिना सोचे विचारे कुछ न करो। 37 क्योंकि तुम इन
मनुष्योंको लाए हो, जो न मन्दिर के लूटनेवाले है, और न हमारी देवी के निन्दक
हैं। 38 यदि देमेत्रियुस और उसके सायी कारीगरोंको किसी से विवाद हो तो
कचहरी खुली है, और हाकिम भी हैं; वे एक दूसरे पर नालिश करें। 39 परन्तु यदि
तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला
किया जाएगा। 40 क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का
डर है, इसलिथे कि इस का कोई कारण नहीं, सो हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का
कोई उत्तर न दे सकेंगे। 41 और यह कह के उस ने सभा को विदा किया।।

प्रेरितों के काम 20

1 जब हुल्लड़ यम गया, तो पौलुस ने चेलोंको बुलवाकर समझाया, और उन से
विदा होकर मकिदुनिया की और चल दिया। 2 और उस सारे देश में से होकर और
उन्हें बहुत समझाकर, वह यूनान में आया। 3 जब तीन महीने रहकर जहाज पर
सूरिया की ओर जाने पर या, तो यहूदी उस की घात में लगे, इसलिथे उस ने यह
सलाह की कि मकिदुनिया होकर लोट आए। 4 बिरीया के पुंरूस का पुत्र सोपत्रुस
और यिस्सलूनीकियोंमें से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और आसिया का
तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साय हो लिए। 5 वे आगे जाकर
त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे। 6 और हम अखमीरी रोटी के दिनोंके बाअ
फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में उन के पास पहुंचे, और

सात दिन तक वहीं रहे।। 7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिथे
इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर या, उन से बातें की, और
आधी रात तक बातें करता रहा। 8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत
दीथे जल रहे थे। 9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी
नींद से फुक रहा या, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के फोके
में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। 10 परन्तु पौलुस
उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि
उसका प्राण उसी में है। 11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर
तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया। 12 और वे उस
लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई।। 13 हम पहिले से जहाज पर
चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहां से हम पौलुस को चढ़ा लें
क्योंकि उस ने यह इसलिथे ठहराया या, कि आप ही पैदल जानेवाला या। 14 जब
वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में आए। 15 और वहां से
जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के साम्हने पहुंचे, और अगले दिन सामुस
में लगान किया, फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए। 16 क्योंकि पौलुस ने इफिसुस
के पास से होकर जाने की ठानी यी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर
लगे; क्योंकि वह जल्दी करता या, कि यदि हो सके, तो उसे पिन्तेकुस का दिन
यरूशलेम में कटे।। 17 और उस ने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और
कलीसिया के प्राचीनोंको बुलवाया। 18 जब वे उस के पास आए, तो उन से कहा,
तुम जानते हो, कि पहिले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुंचा, मैं हर समय
तुम्हारे साय किस प्रकार रहा। 19 अर्यात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर,

और उन पक्कीझाओं में जो यहूदियोंके षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं
प्रभु की सेवा करता ही रहा। 20 और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की यीं, उन को
बताने और लोगोंके साम्हने और घर घर सिखाने से कभी न फिफका। 21 बरन
यहूदियोंऔर यूनानियोंके साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन
फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। 22 और अब
देखो, मैं आत्क़ा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां
मुझ पर क्या क्या बीतेगा 23 केवल यह कि पवित्र आत्क़ा हर नगर में गवाही दे
देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिथे तैयार है। 24 परन्तु मैं
अपके प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, बरन यह कि मैं अपक्की
दौड़ को, और उस सेवाकाई को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के
सुसमाचार पर गवाही देने के लिथे प्रभु यीशु से पाई है। 25 और अब देखो, मैं
जानता हूं, कि तुम सब जिन से मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा
मुंह फिर न देखोगे। 26 इसलिथे मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूं,
कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूं। 27 क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें
पूरी रीति से बनाने से न फिफका। 28 इसलिथे अपक्की और पूरे फुंड की चौकसी
करो; जिस से पवित्र आत्क़ा ने तुम्हें अध्यझ ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की
कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपके लोहू से मोल लिया है। 29 मैं
जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएंगे, जो फुंड को न
छोड़ेंगे। 30 तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलोंको अपके
पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। 31 इसलिथे जागते रहो; और स्क़रण
करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहाकर, हर एक को चितौनी देना

न छोड़ा। 32 और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप
देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, ओश्र् सब पवित्रोंमें साफी करके मीरास
दे सकता है। 33 मैं ने किसी की चान्दी सोने या कपके का लालच नहीं किया। 34
तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथोंने मेरी और मेरे सायियोंकी आवश्यकताएं
पूरी कीं। 35 मैं ने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्र्म करते
हुए निर्बलोंको सम्भालना, और प्रभु यीशु की बातें स्क़रण रखना अवश्य है, कि
उस ने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है।। 36 यह कहकर उस ने घुटने
टेके और उन सब के साय प्रार्यना की। 37 तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के
गले में लिपट कर उसे चूमने लगे। 38 वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे,
जो उस ने कही यी, कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे; और उन्होंने उसे जहाज तक
पहुंचाया।।

प्रेरितों के काम 21

1 जब हम ने उन से अलग होकर जहाज खोला, तो सीधे मार्ग से कोस में आए,
और दूसरे दिन रूदुस में, ओर वहां से पतरा में। 2 और एक जहाज फीनीके को
जाता हुआ मिला, और उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया। 3 जब कुप्रुस दिखाई
दिया, जो हम ने उसे बाएं हाथ छोड़ा, और सूरिया को चलकर सूर में उतरे;
क्योंकि वहां जहाज का बोफ उतारना या। 4 और चेलोंको पाकर हम वहां सात
दिन तक रहे: उन्होंने आत्क़ा के सिखाए पौलुस से कहा, कि यरूशलेम में पांव न
रखना। 5 जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहां से चल दिए; ओर सब स्त्रियोंऔर
बालकोंसमेत हमें नगर के बाहर तक पहुंचाया और हम ने किनारे पर घुटने

टेककर प्रार्यना की। 6 तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और
वे अपके अपके घर लौट गए।। 7 जब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके
पतुलिमयिस में पहुंचे, और भाइयोंको नमस्कार करके उन के साय एक दिन रहे।
8 दूसरे दिन हम वहां से चलकर कैसरिया में आए, और फिलप्पुस सुसमाचार
प्रचारक के घर में जो सातोंमें से एक या, जाकर उसके यहां रहे। 9 उस की चार
कुंवारी पुत्रियां यीं; जो भविष्यद्वाणी करती यीं। 10 जब हम वहां बहुत दिन रह
चुके, तो अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। 11 उस ने हमारे पास
आकर पौलुस का पटका लिया, और अपके हाथ पांव बान्धकर कहा; पवित्र
आत्क़ा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उस को यरूशलेम में
यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियोंके हाथ में सौंपेंगे। 12 जब थे बातें
सुनी, तो हम और वहां के लोगोंने उस से बिनती की, कि यरूशलेम को न जाए।
13 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, कि तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन
तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिथे यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के
लिथे बरन मरने के लिथे भी तैयार हूं। 14 जब उन से न माना तो हम यह कहकर
चुप हो गए; कि प्रभु की इच्छा पूरी हो।। 15 उन दिनोंके बाद हम बान्ध छान्ध
कर यरूशलेम को चल दिए। 16 कैसरिया के भी कितने चेले हमारे साय हो लिए,
और मनासोन नाम कुप्रुस के एक पुराने चेले को साय ले आए, कि हम उसके यहां
टिकें।। 17 जब हम यरूशलेम में पहुंचे, तो भाई बड़े आनन्द के साय हम से मिले।
18 दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहां सब प्राचीन इकट्ठे थे।
19 तब उस ने उन्हें नमस्कार करके, जो जो काम परमेश्वर ने उस की सेवकाई के
द्वारा अन्यजातियोंमें किए थे, एक एक करके सब बताया। 20 उन्होंने यह सुनकर

परमेश्वर की महिमा की, फिर उस से कहा; हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियोंमें से
कई हजार ने विश्वास किया है; और सब व्यवस्या के लिथे धुन लगाए हैं। 21 औश्र्
उन को तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियोंमें रहनेवाले
यहूदियोंको मूसा से फिर जाने को सिखाया है, और कहता है, कि न अपके
बच्चोंका खतना कराओ ओर न रीतियोंपर चलो: सो क्या किया जाए 22 लोग
अवश्य सुनेंगे, कि तू आया है। 23 इसलिथे जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर:
हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। 24 उन्हें लेकर उस के साय
अपके आप को शुद्ध कर; और उन के लिथे खर्चा दे, कि वे सिर मुड़ाएं: तब सब
जान लेगें, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उन की कुछ जड़ नहीं है
परन्तु तू आप भी व्यवस्या को मानकर उसके अनुसार चलता है। 25 परन्तु उन
अन्यजातियोंके विषय में जिन्होंने विश्वास किया है, हम ने यह निर्णय करके
लिख भेजा है कि वे मरतोंके साम्हने बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और
गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से, बचे रहें। 26 तब पौलुस उन
मनुष्योंको लेकर, और दूसरे दिन उन के साय शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और
बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्यात उन में से हर एक के लिथे चढ़ावा चढ़ाए
जाने तक के दिन कब पूरे होंगे।। 27 जब वे सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया
के यहूदियोंने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगोंको उसकाया, और
योंचिल्लाकर उस को पकड़ लिया। 28 कि हे इस्त्राएलियों, सहाथता करो; यह वही
मनुष्य है, जो लोगोंके, और व्यवस्या के, और इस स्यान के विरोध में हर जगह
सब लोगोंको सिखाता है, यहां तक कि युनानियोंको भी मन्दिर में लाकर उस ने
इस पवित्र स्यान को अपवित्र किया है। 29 उन्होंने तो इस से पहिले त्रुफिमुस

इफिसी को उसके साय नगर में देखा या, और समझते थे, कि पौलुस उसे मन्दिर
में ले आया है। 30 तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर
इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त
द्वार बन्द किए गए। 31 जब वे उसके मार डालता चाहते थे, तो पलटन के सारदार
को सन्देश पहुंचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है। 32 तब वह तुरन्त
सिपाहियोंऔर सूबेदारोंको लेकर उन के पास नीचे दौड़ आया; और उन्होंने
पलटन के सरदार को और सिपाहियोंको देख कर पौलुस को मारने पीटने से हाथ
उठाया। 33 तब पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो
जंजीरोंसे बान्धने की आज्ञा देकर पूछने लगा, यह कौन है, और इस ने क्या किया
है 34 परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब हुल्लड़ के
मारे ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। 35 जब वह
सीढ़ी पर पहुंचा, तो ऐसा हुआ, कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहिथें को उसे
उठाकर ले जाना पड़ा। 36 क्योंकि लोगोंकी भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे
पड़ी, कि उसका अन्त कर दो।। 37 जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो
उस ने पलटन के सरदार से कहा; क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूं उस
ने कहा; क्या तू यूनानी जानता है 38 क्या तू वह मिसरी नहीं, जो इन दिनोंसे
पहिले बलवाई बनाकर चार हजार कटारबन्द लोगोंको जंगल में ले गया 39
पौलुस ने कहा, मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का
निवासी हूं: और मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे लोगोंसे बातें करने दे। 40
जब उस ने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगोंको हाथ से सैन
किया: जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा, कि,

प्रेरितों के काम 22

1 हे भाइयों, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे साम्हने कहता
हूं।। 2 वे यह सुनकर कि वह हम से इब्रानी भाषा में बोलता है, और भी चुप रहे।
तब उस ने कहा; 3 मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्क़ा;
परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवोंके पास बैठकर पढ़ाया गया, और
बापदादोंकी व्यवस्या की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिथे
ऐसी धुन लगाए या, जैसे तुम सब आज लगाए हो। 4 और मैं ने पुरूष और स्त्री
दोनोंको बान्ध बान्धकर, और बन्दीगृह में डाल डालकर, इस पंय को यहां तक
सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला। 5 इस बात के लिथे महाथाजक और सब
पुरिनथे गवाह हैं; कि उन में से मैं भाइयोंके नाम पर चिट्ठियां लेकर दिमश्क को
चला जा रहा या, कि जो वहां होंउन्हें भी दण्ड दिलाने के लिथे बान्धकर यरूशलेम
में लाऊं। 6 जब मैं चलते चलते दिमश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दो
पहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारोंओर चमकी। 7
और मैं भूमि पर गिर पड़ा: और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे
क्योंसताता है मैं ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है 8 उस ने मुझ से कहा; मैं
यीशु नासरी हूं, जिस तू सताता है 9 और मेरे सायियोंने ज्योति तो देखी, परन्तु
जो मुझ से बोलता या उसका शब्द न सुना। 10 तब मै। ने कहा; हे प्रभु मैं क्या
करूं प्रभु ने मुझ से कहा; उठकर दिमश्क में जा, और जो कुद तेरे करने के लिथे
ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा। 11 जब उस ज्योति के तेज के
मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपके सायियोंके हाथ पकड़े हुए दिमश्क में
आया। 12 और हनन्याह नाम का व्यवस्या के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां

के रहनेवाले सब यहूदियोंमें सुनाम या, मेरे पास आया। 13 और खड़ा होकर मुझ
से कहा; हे भाई शाऊल फिर देखने लग: उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैं ने उसे
देखा। 14 तब उस ने कहा; हमारे बापदादोंके परमेश्वर ने तुझे इसलिथे ठहराया है,
कि तू उस की इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें
सुने। 15 क्योंकि तू उस की ओर से सब मनुष्योंके साम्हने उन बातोंका गवाह
होगा, जो तू ने देखी और सुनी हैं। 16 अब क्योंदेर करता है उठ, बपतिस्क़ा ले,
और उसका नाम लेकर अपके पापोंको धो डाल। 17 जब मैं फिर यरूशलेम में
आकर मन्दिर में प्रार्यना कर रहा या, तो बेसुध हो गया। 18 और उस ने देखा कि
मुझ से कहता है; जल्दी करके यरूशलेम से फट निकल जा: क्योंकि वे मेरे विषय
में तेरी गवाही न मानेंगे। 19 मैं ने कहा; हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ
पर विश्वास करनेवालोंको बन्दीगृह में डालता और जगह जगह आराधनालय में
पिटवाता या। 20 और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाथा जा रहा या तब
मैं भी वहां खड़ा या, और इस बात में सहमत या, और उसके घातकोंके कपड़ोंकी
रखवाली करता या। 21 और उस ने मुझ से कहा, चला जा: क्योंकि मैं तुझे
अन्यजातियोंके पास दूर दूर भेजूंगा।। 22 वे इस बात तक उस की सुनते रहे; तब
ऊंचे शब्द से चिल्लाए, कि ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहता
उचित नहीं। 23 जब वे चिल्लाते और कपके फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे;
24 तो पलटन के सूबेदार ने कहा; कि इसे गढ़ में ले जाओ; और कोड़े मारकर
जांचो, कि मैं जानूं कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं। 25
जब उन्होंने उसे तसमोंसे बान्धा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा या
कहा, क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी

ठहराए हुए कोड़े मारो 26 सूबेदार ने यह सुनकर पलटन के सरदार के पास जाकर
कहा; तू यह क्या करता है यह तो रामी है। 27 तब पलटन के सरदार ने उसके
पास आकर कहा; मुझे बता, क्या तू रोमी है उस ने कहा, हां। 28 यह सुनकर
पलटन के सरदार ने कहा; कि मैं ने रोमी होने का पद बहुत रूपके देकर पाया है:
पौलुस ने कहा, मैं तो जन्क़ से रोमी हूं। 29 तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे
तुरन्त उसके पास से हट गए; और पलटन का सरदार भी यह जानकर कि यह
रोमी है, और मैं ने उसे बान्धा है, डर गया।। 30 दूसरे दिन वह ठीक ठीक जानने
की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्योंदोष लगाते हैं, उसके बन्धन खोल दिए; और
महाथाजकोंऔर सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी, और पौलुस को
नीचे ले जाकर उन के साम्हने खड़ा कर दिया।।

प्रेरितों के काम 23

1 पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, हे भाइयों, मैं ने
आज तक परमेश्वर के लिथे बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया। 2 हनन्याह
महाथाजक ने, उन की जो उसके पास खड़े थे, उसके मूंह पर यप्पड़ मारने की
आज्ञा दी। 3 तब पौलुस ने उस से कहा; हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे
मारेगा: तू व्यवस्या के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या
व्यवस्या के विरूद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है 4 जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा,
क्या तू परमेश्वर के महाथाजक को बुरा कहता है 5 पौलुस ने कहा; हे भाइयों, मैं
नहीं जानता या, कि यह महाथाजक है; क्योंकि लिखा है, कि अपके लोगोंके
प्रधान को बुरा न कह। 6 तब पौलुस ने यह जानकर, कि कितने सदूकी और

कितने फरीसी हैं, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियोंके
वंश का हूं, मरे हुओं ही आशा और पुनरूत्यान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा
है। 7 जब उस ने यह बात कही तो फरीसियोंऔर सदूकियोंमें फगड़ा होने लगा;
और सभा में फूट पड़ गई। 8 क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरूत्यान है,
न स्वर्गदूत और न आत्क़ा है; परन्तु फरीसी दोनोंको मानते हैं। 9 तब बड़ा हल्ला
मचा और कितने शास्त्री जो फरीसियोंके दल के थे, उठकर योंकहकर फगड़ने
लगे, कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्क़ा या
स्वर्गदूत उस से बोला है तो फिर क्या 10 जब बहुत फगड़ा हुआ, तो पलटन के
सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े टुकड़े न कर डालें पलटन को आज्ञा दी,
कि उतरकर उस को उन के बीच में से बरबस निकालो, और गढ़ में ले आओ। 11
उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढ़ाढ़स बान्ध; क्योंकि
जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी
होगी।। 12 जब दिन हुआ, तो यहूदियोंने एका किया, और शपय खाई कि जब
तक हम पौलुस को मान न डालें, तब तक खांए या पीएं तो हम पर धिक्कारने।
13 जिन्होंने आपस में यह शपय खाई यी, वे चालीस जनोंके ऊपर थे। 14 उन्होंने
महाथाजकोंऔर पुरिनयोंके पास आकर कहा, हम ने यह ठाना है; कि जब तक
हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ चखें भी, तो हम पर धिक्कारने पर
धिक्कारने है। 15 इसलिथे अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ,
कि उसे तुम्हारे पास ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक जांच
करना चाहते हो, और हम उसके पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिथे
तैयार रहेंगे। 16 और पौलुस के भांजे न सुना, कि वे उस की घात में हैं, तो गढ़ में

जाकर पौलुस को सन्देश दिया। 17 पौलुस ने सूबेदारोंमें से एक को अपके पास
बुलाकर कहा; इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाओ, यह उस से कुछ
कहना चाहता है। 18 सो उस ने उसको पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा;
पौलुस बन्धुए ने मुझे बुलाकर बिनती की, कि यह जवान पलटन के सरदार से
कुछ कहना चाहता है; उसे उसके पास ले जा। 19 पलटन के सरदार ने उसका हाथ
पकड़कर, और अलग ले जाकर पूछा; मुझ से क्या कहना चाहता है 20 उस ने
कहा; यहूदियोंने एकसा किया है, कि तुझ से बिनती करें, कि कल पौलुस को
महासभा में लाए, मानो तू और ठीक से उस की जांच करना चाहता है। 21 परन्तु
उन की मत मानना, क्योंकि उन में से चालीस के ऊपर मनुष्य उस की घात में हैं,
जिन्होंने यह ठान लिया है, कि जब तक हम पौलुस को मान न डालें, तब तक
खाएं, पीएं, तो हम पर धिक्कारने; और अभी वे तैयार हैं और तेरे वचन की आस
देख रहे हैं। 22 तब पलटन के सरदार ने जवान को यह आज्ञा देकर विदा किया,
कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ को थे बातें बताई हैं। 23 और दो सूबेदारोंको
बुलाकर कहा; दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत, पहर रात बीते
कैसरिया को जाने के लिथे तैयार कर रखो। 24 और पौलुस की सवारी के लिथे
घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुंचा दें। 25 उस ने
इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी; 26 महाप्रतापी फेलिक्स हाकिम को क्लौदियुस
लूसियास को नमस्कार; 27 इस मनुष्य को यहूदियोंने पकड़कर मार डालता
चाहा, परन्तु जब मैं ने जाना कि रोमी है, तो पलटन लेकर छुड़ा लाया। 28 और मैं
जानना चाहता या, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिथे उसे उन की
महासभा में ले गया। 29 तब मैं ने जान लिया, कि वे अपक्की व्यवस्या के

विवादोंके विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने
के योग्य उस में कोई दोष नहीं। 30 और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य
की घात में लगे हैं तो मैं ने तुरन्त उस को तेरे पास भेज दिया; और मुद्दइयोंको भी
आज्ञा दी, कि तेरे साम्हने उस पर नालिश करें।। 31 सो जैसे सिपाहियोंको आज्ञा
दी गई यी वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस में लाए। 32 दूसरे दिन
वे सवारोंको उसके साय जाने के लिथे छोड़कर आप गढ़ को लौटे। 33 उन्होंने
कैसरिया में पहुंचकर हाकिम को चिट्ठी दी: और पौलुस को भी उसके साम्हने
खड़ा किया। 34 उस ने पढ़कर पूछा यह किस देश का है 35 और जब जान लिया
कि किलकिया का है; तो उस से कहा; जब तेरे मुद्दई भी आएगें, तो मैं तेरा
मुकद्दमा करूंगा: और उस ने उसे हेरोदेस के किले में, पहरे में रखने की आज्ञा
दी।।

प्रेरितों के काम 24

1 पांच दिन के बाद हनन्याह महाथाजक कई पुरिनयोंऔर तिरतुल्लुस नाम
किसी वकील को साय लेकर आया; उन्होंने हाकिम के साम्हने पौलुस पर नालिश
की। 2 जब वह बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उन पर दोष लगाकर कहने लगा, कि,
हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध से
इस जाति के लिथे कितनी बुराइयां सुधरती जाती हैं। 3 इस को हम हर जगह
और हर प्रकार से धन्यवाद के साय मानते हैं। 4 परन्तु इसलिथे कि तुझे और
दुख नहीं देना चाहता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि कृपा करके हमारी दो एक
बातें सुन ले। 5 क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे

यहूदियोंमें बलवा करानेवाला, और नासरियोंके कुपन्य का मुखिया पाया है। 6
उस ने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा, और हम ने उसे पकड़ा। 7 इन सब बातोंको
जिन के विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू आपक्की उस को जांच करके
जान लेगा। 8 यहूदियोंने भी उसका साय देकर कहा, थे बातें इसी प्रकार की हैं।। 9
जब हाकिम ने पौलुस को बोलने के लिथे सैन किया तो उस ने उत्तर दिया, मैं यह
जानकर कि तू बहुत वर्षोंसे इस जाति का न्याय करता है, आनन्द से अपना
प्रत्युत्तर देता हूं। 10 तू आप जान सकता है, कि जब से मैं यरूशलेम में भजन
करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं हुए। 11 और उन्होंने मुझे न
मन्दिर में न सभा के घरोंमें, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते
पाया। 12 और न तो वे उन बातोंको, जिन का वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे
साम्हने सच ठहरा सकते हैं। 13 परन्तु यह मैं तेरे साम्हने सच ठहरा सकते हैं।
14 परन्तु यह मैं तेरे साम्हने मान लेता हूं, कि जिस पन्य को वे कुपन्य कहते हैं,
उसी की रीति पर मैं अपके बापदादोंके परमेश्वर की सेवा करता हूं: और जो बातें
व्यवस्या और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकोंमें लिखी है, उन सब की प्रतीति करता
हूं। 15 और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और
अधर्मी दोनोंका जी उठना होगा। 16 इस से मैं आप भी यतन करता हूं, कि
परमेश्वर की, और मनुष्योंकी ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे। 17 बहुत वर्षोंके
बाद मैं अपके लोगोंको दान पहुंचाने, और भेंट चढ़ाने आया या। 18 उन्होंने मुझे
मन्दिर में, शुद्ध दशा में बिना भीड़ के साय, और बिना दंगा करते हुए इस काम में
पाया - हां आसिया के कई यहूदी थे - उन को उचित या, 19 कि यदि मेरे विरोध में
उन की कोई बात हो तो यहां तेरे साम्हने आकर मुझ पर दोष लगाते। 20 या थे

आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के साम्हने खड़ा या, तो उन्होंने मुझ से कौन सा
अपराध पाया 21 इस एक बात को छोड़ जो मैं ने उन के बीच में खड़े होकर
पुकारकर कहा या, कि मरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे
साम्हने मुकद्दमा हो रहा है।। 22 फेलिक्स ने जो इस पन्य की बातें ठीक ठीक
जानता या, उन्हें यह कहकर टाल दिया, कि जब पलटन का सरदार लूसियास
आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करूंगा। 23 और सूबेदार को आज्ञा दी, कि
पौलुस को सुख से रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रोंमें से किसी को भी
उस की सेवा करने से न रोकना।। 24 कितने दिनोंके बाद फेलिक्स अपक्की
पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी यी, साय लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर
उस विश्वास के विषय में जे मसीह यीशु पर है, उस से सुना। 25 और जब वह धर्म
और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा करता या, तो फेलिक्स ने भयमान
होकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा: अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा। 26 उसे
पौलुस से कुछ रूपके मिलने की भी आस यी; इसलिथे और भी बुला बुलाकर उस
से बातें किया करता या। 27 परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो पुरिकयुस फेस्तुस
फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहूदियोंको खुश करने की इच्छा से
पौलुस को बन्धुआ छोड़ गया।।

प्रेरितों के काम 25

1 फेस्तुस उन प्रान्त में पहुंचकर तीन दिन के बार कैसरिया से यरूशलेम को
गया। 2 तब महाथाजकोंने, और यहूदियोंके बड़े लोगोंने, उसके साम्हने पौलुस की
नालिश की। 3 और उसे से बिनती करके उसके विरोध में यह बर चाहा, कि वह

उसे यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात लगाए
हुए थे। 4 फेस्तुस ने उत्तर दिया, कि पौलुस कैसरिया में पहरे में है, और मैं आप
जल्द वहां आऊंगा। 5 फिर कहा, तुम से जो अधिक्कारने रखते हैं, वे साय चलें,
और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएं।। 6
और उन के बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे दिन
न्याय आसन पर बैठकर पौलुस के लाने की आज्ञा दी। 7 जब वह आया, तो जो
यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्होंने आस पास खड़े होकर उस पर बहुतेरे भारी
दोष लगाए, जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। 8 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया,
कि मैं ने न तो यहूदियोंकी व्यवस्या का और न मन्दिर का, और न कैसर का कुछ
अपराध किया है। 9 तब फेस्तुस ने यहूदियोंको खुश करने की इच्छा से पौलुस को
उत्तर दिया, क्या तू चाहता है कि यरूशलेम को जाए; और वहां मेरे साम्हने तेरा
यह मुकद्दमा तय किया जाए 10 पौलुस ने कहा; मैं कैसर के न्याय आसन के
साम्हने खड़ा हूं: मेरे मुकद्दमें का यहीं फैसला होना चाहिए: जैसा तू अच्छी तरह
जानता है, यहूदियोंका मैं ने कुछ अपराध नहीं किया। 11 यदि अपराधी हूं और
मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है; तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन
बातोंका थे मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उन में से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई
मुझे उन के हाथ नहीं सौंप सकता: मैं कैसर की दोहाई देता हूं। 12 तब फेस्तुस ने
मन्त्रियोंकी सभा के साय बातें करके उत्तर दिया, तू ने कैसर की दोहाई दी है, तू
कैसर के पास जाएगा।। 13 और कुछ दिन बीतने के बाद अग्रिप्पा राजा और
बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की। 14 और उन के बहुत दिन वहां
रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस की कया राजा को बताई; कि एक मनुष्य है, जिसे

फेलिक्स बन्धुआ छोड़ गया है। 15 जब मैं यरूशलेम में या, तो महाथाजक और
यहूदियोंके पुरिनयोंने उस की नालिश की; और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा
दी जाए। 16 परन्तु मैं ने उन को उत्तर दिया, कि रोमियोंकी यह रीति नहीं, कि
किसी मनुष्य को दण्ड के लिथे सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपके मुद्दइयोंके
आमने सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले। 17 सो जब वे यहां
इकट्ठे हुए, तो मैं ने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर
बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। 18 जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो
उन्होंने ऐसी बुरी बातोंका दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता या। 19 परन्तु
अपके मत के, और यीशु नाम किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया या, और
पौलुस उस को जीवित बताता या, विवाद करते थे। 20 और मैं उलफन में या, कि
इन बातोंका पता कैसे लगाऊं इसलिथे मैं ने उस से पूछा, क्या तू यरूशलेम
जाएगा, कि वहां इन बातोंका फैसला हो 21 परन्तु जब पौलुस ने दोहाई दी, कि
मेरे मुकद्दमें का फैसला महाराजाधिराज के यहां हो; तो मैं ने आज्ञा दी, कि जब
तक उसे कैसर के पास न भेजूं, उस की रखवाली की जाए। 22 तब अग्रिप्पा ने
फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूं: उस ने कहा, तू कल सुन
लेगा।। 23 सो दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर
पलटन के सरदारोंऔर नगर के बड़े लोगोंके साय दरबार में पहुंचे, तो फेस्तुस ने
आज्ञा दी, कि वे पौलुस को ले आएं। 24 फेस्तुस ने कहा; हे महाराजा अग्रिप्पा,
और हे सब मनुष्योंजो यहां हमारे साय हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिस के
विषय में सारे यहूदियोंने यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला चिल्लाकर मुझ से
बिनती की, कि इस का जीवित रहना उचित नहीं। 25 परन्तु मैं ने जान लिया, कि

उस ने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जब कि उस ने आप ही
महाराजाधिराज की दोहाई दी, तो मैं ने उसे भेजने का उपाय निकाला। 26 परन्तु
मैं ने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपके स्वामी के पास लिखूं,
इसलिथे मैं उसे तुम्हारे साम्हने और विशेष करके हे महाराजा अग्रिप्पा तेरे
साम्हने लाया हूं, कि जांचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले। 27 क्योंकि
बन्धुए को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ
समझ पड़ता है।।

प्रेरितों के काम 26

1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा; तुझे अपके विषय में बोलने की आज्ञा है: तब पौलुस
हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा, कि, 2 हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातोंका यहूदी मुझ
पर दोष लगाते हैं, आज तेरे साम्हने उन का उत्तर देने में मैं अपके को धन्य
समझता हूं। 3 विशेष करके इसलिथे कि तू यहूदियोंके सब व्यवहारोंऔर
विवादोंको जानता है, सो मैं बिनती करता हूं, धीरज से मेरी सुन ले। 4 जैसा मेरा
चाल चलन आरम्भ से अपक्की जाति के बीच और यरूशलेम में या, यह सब
यहूदी जानते हैं। 5 वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो आरम्भ से मुझे पहिचानते हैं,
कि मैं फरीसी होकर अपके धर्म के सब से खरे पन्य के अनुसार चला। 6 और अब
उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बापदादोंसे की यी, मुझ पर
मुकद्दमा चल रहा है। 7 उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए, हमारे
बारहोंगोत्र अपके सारे मन से रात दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं: हे राजा,
इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। 8 जब कि परमेश्वर मरे

हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्योंविश्वास के योग्य नहीं समझी
जाती 9 मैं ने भी समझा या कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ
करना चाहिए। 10 और मैं ने यरूशलेम में ऐसा ही किया; और महाथाजकोंसे
अधिक्कारने पाकर बहुत से पवित्र लोगोंको बन्दीगृह में डाल, और जब वे मार
डाले जाते थे, तो मैं भी उन के विरोध में अपक्की सम्पति देता या। 11 और हर
आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता या, यहां
तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरोंमें भी जाकर उन्हें
सताता या। 12 इसी धुन में जब मैं महाथाजकोंसे अधिक्कारने और परवाना
लेकर दिमश्क को जा रहा या। 13 तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैं ने
आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति अपके और अपके साय
चलनेवालोंके चारोंओर चमकती हुई देखी। 14 और जब हम सब भूमि पर गिर
पके, तो मैं ने इब्रानी भाषा में, मुझ से यह कहते हुए यह शब्द सुना, कि हे शाऊल,
हे शाऊल, तू मुझे क्योंसताता है पैने पर लात मारना तेरे लिथे किठन है। 15 मैं ने
कहा, हे प्रभु तू कौन है प्रभु ने कहा, मैं यीशु हूं: जिसे तू सताता है। 16 परन्तु तू
उठ, अपके पांवोंपर खड़ा हो; क्योंकि मैं ने तुझे इसलिथे दर्शन दिया है, कि तुझे
उन बातोंपर भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तू ने देखी हैं, और उन का भी जिन
के लिथे मैं तुझे दर्शन दूंगा। 17 और मैं तुझे तेरे लोगोंसे और अन्यजातियोंसे
बचाता रहूंगा, जिन के पास मैं अब तुझे इसलिथे भेजता हूं। 18 कि तू उन की
आंखे खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिक्कारने से
परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापोंकी झमा, और उन लोगोंके साय जो मुझ पर
विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं। 19 सो हे राजा अग्रिप्पा, मैं ने

उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली। 20 परन्तु पहिले दिमश्क के, फिर यरूशलेम
के रहनेवालोंको, तब यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियोंको समझाता रहा,
कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो।
21 इन बातोंके कारण यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने का यत्न करते
थे। 22 सो परमेश्वर की सहाथता से मैं आज तक बना हूं और छोटे बड़े सभी के
साम्हने गवाही देता हूं और उन बातोंको छोड़ कुछ नहीं कहता, जो
भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं। 23 कि मसीह को दुख
उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगोंमें
और अन्यजातियोंमें ज्योति का प्रचार करेगा।। 24 जब वह इस रीति से उत्तर दे
रहा या, तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा; हे पौलुस, तू पागल है: बहुत विद्या ने
तुझे पागल कर दिया है। 25 परन्तु उस ने कहा; हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल
नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं। 26 राजा भी जिस के साम्हने मैं
निडर होकर बोल रहा हूं, थे बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातोंमें से
कोई उस से छिपी नहीं, क्योंकि उस घटना तो कोने में नहीं हुई। 27 हे राजा
अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं की प्रतीति करता है हां, मैं जानता हूं, कि तू
प्रतीति करता है। 28 अब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा तू योड़े ही समझाने से मुझे
मसीही बनाना चाहता है 29 पौलुस ने कहा, परमेश्वर से मेरी प्रार्यना यह है कि
क्या योड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते
हैं, इन बन्धनोंको छोड़ वे मेरे समान हो जाएं।। 30 तब राजा और हाकिम और
बिरनीके और उन के साय बैठनेवाले उठ खड़े हुए। 31 और अलग जाकर आपस
में कहने लगे, यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता, जो मृत्यु या बन्धन के योग्य

हो। 32 अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा; यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो
दूट सकता या।।

प्रेरितों के काम 27

1 जब यह ठहराया गया, कि हम जहाज पर इतालिया को जाएं, तो उन्होंने पौलुस
और कितने और बन्धुओं को भी यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन के एक
सूबेदार के हाथ सौंप दिया। 2 और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के
किनारे की जगहोंमें जाने पर या, चढ़कर हम ने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्खुस
नाम यिस्सलुनीके का एक मकिदूनी हमारे साय या। 3 दूसरे दिन हम ने सैदा में
लंगर डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रोंके यहां जाने दिया
कि उसका सत्कार किया जाए। 4 वहां से जहाज खोलकर हवा विरूद्ध होने के
कारण हम कुप्रुस की आड़ में होकर चले। 5 और किलिकिया और पंफूलिया के
निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे। 6 वहां सूबेदार को
सिकन्दिरया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उस ने हमें उस पर
चढ़ा दिया। 7 और जब हम बहुत दिनोंतक धीरे धीरे चलकर किठनता से
किनदुस के साम्हने पहुंचे, तो इसलिथे कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती यी,
सलमोने के साम्हने से होकर क्रेते की आड़ में चले। 8 और उसके किनारे किनारे
किठनता से चलकर शुभ लंगरबारी नाम एक जगह पहुंचे, जहां से लसया नगर
निकट या।। 9 जब बहुत दिन बीत गए, और जल यात्रा में जाखिम इसलिथे होती
यी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर
समझाया। 10 कि हे सज्ज़नो मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि इस यात्रा में बिपत्ति

और बहुत हानि न केवल माल और जहाज की बरन हमारे प्राणोंकी भी होनेवाली
है। 11 परन्तु सूबेदार ने पौलुस की बातोंसे मांफी और जहाज के स्वामी की
बढ़कर मानी। 12 और वह बन्दर स्यान जाड़ा काटने के लिथे अच्छा न या;
इसलिथे बहुतोंका विचार हुआ, कि वहां से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो
सके, तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा काटें: यह तो क्रेते का एक बन्दर स्यान है जो
दक्खिन-पच्छिम और उत्तर-पच्छिम की ओर खुलता है। 13 जब कुछ कुछ
दक्खिनी हवा बहने लगी, तो यह समझकर कि हमारा मतलब पूरा हो गया, लंगर
उठाया और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने लगे। 14 परन्तु योड़ी देर में वहां
से एक बड़ी आंधी उठी, जो यूरकुलीन कहलाती है। 15 जब यह जहाज पर लगी,
तब वह हवा के साम्हने ठहर न सका, सो हम ने उसे बहने दिया, और इसी तरह
बहते हुए चले गए। 16 तब कौदा नाम एक छोटे से टापू की आड़ में बहते बहते
हम किठनता से डोंगी को वश मे कर सके। 17 मल्लाहोंने उसे उठाकर, अनेक
उपाय करके जहाज को नीचे से बान्धा, और सुरितस के चोरबालू पर टिक जाने
के भय से पाल और सामान उतार कर, बहते हुए चले गए। 18 और जब हम ने
आंधी से बहुत हिचकोले और ध?े खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने
लगे। और तीसरे दिन उन्होंने अपके हाथोंसे जहाज का सामान फेंक दिया। 19
और तीसरे दिन उन्होंने अपके हाथोंसे जहाज का सामान फेंक दिया। 20 और
जब बहुत दथें तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही यी, तो
अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। 21 जब वे बहुत उपवास कर
चुके, तो पौलुस ने उन के बीच में खड़ा होकर कहा; हे लोगो, चाहिए या कि तुम
मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह बिपत और हाति उठाते।

22 परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुम में से किसी के
प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। 23 क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं,
और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा।
24 हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है: और देख,
परमेश्वर ने सब को जो तेरे साय यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। 25 इसलिथे, हे
सज्ज़नोंढाढ़स बान्धों; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से
कहा गया है, वैसा ही होगा। 26 परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।। 27
जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र में टकराते फिरते थे, तो आधी रात
के निकट मल्लाहोंने अटकल से जाना, कि हम किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं।
28 और याह लेकर उन्होंने बीस पुरसा गहरा पाया और योड़ा आगे बढ़कर फिर
याह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया। 29 तब पत्यरीली जगहोंपर पड़ने के डर से
उन्होंने जहाज की पिछाड़ी चार लंगर डाले, और भोर का होना मनाते रहे। 30
परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के
बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी। 31 तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियोंसे कहा;
यदि थे जहाज पर न रहें, तो तुम नहीं बच सकते। 32 तब सिपाहियोंने रस्से
काटकर डोंगी गिरा दो। 33 जब भोर होने पर या, तो पौलुस ने यह कहके, सब को
भोजन करने को समझाया, कि आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते देखते
भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया। 34 इसलिथे तुम्हें समझाता हूं; कि कुछ खा
लो, जिस से तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुम में से किसी के सिर पर एक बाल भी
न गिरेगा। 35 और यह कहकर उस ने रोटी लेकर सब के साम्हने परमेश्वर का
धन्यवाद किया; और तोड़कर खाने लगा। 36 तब वे सब भी ढाढ़स बान्धकर

भोजन करने लगे। 37 हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिहत्तर जन थे। 38
जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेंहू को समुद्र में फेंक कर जहाज हल्का करने
लगे। 39 जब बिहान हुआ, तो उन्होंने उस देश को नहीं पहिचाना, परन्तु एक
खाड़ी देखी जिस का चौरस किनारा या, और विचार किया, कि यदि हो सके, तो
इसी पर जहाज को टिकाएं। 40 तब उन्होंने लंगरोंको खोलकर समुद्र में छोड़
दिया और उसी समय पतवारोंके बन्धन खोल दिए, और हवा के साम्हने अगला
पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले। 41 परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर
उन्होंने जहाज को टिकाया, और गलही तो ध?ा खाकर गड़ गई, और टल न
सकी; परन्तु पिछाड़ी लहरोंके बल से टूटने लगी। 42 तब सिपाहियोंको विचार
हुआ, कि बन्धुओं को मार डालें; ऐसा न हो, कि कोई तैरके निकल भागे। 43
परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने को इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका, और
यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहिले कूदकर किनारे पर निकल जाएं। 44 और
बाकी कोई पटरोंपर, और कोई जहाज की और वस्तुओं के सहारे निकल जाए,
और इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले।।

प्रेरितों के काम 28

1 जब हम बच निकले, तो जाना कि यह टापू मिलिते कहलाता है। 2 और उन
जंगली लोगोंने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा या
और जाड़े के कारण उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया। 3 जब पौलुस
ने लकिडय़ोंका गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक सांप आंच पाकर निकला
और उसके हाथ से लिपट गया। 4 जब उन जंगलियोंने सांप को उसके हाथ में

लटके हुए देखा, तो आपस में कहा; सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि
समुद्र से बच गया, तौभी न्याय ने जीवित रहने न दिया। 5 तब उस ने सांप को
आग में फटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुंची। 6 परन्तु वे बाट जोहते थे, कि
वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरके मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक
देखते रहे, और देखा, कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा;
यह तो कोई देवता है।। 7 उस जगह के आसपास पुबलियुस नाम उस टापू के
प्रधान की भूमि यी: उस ने हमें अपके घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुनाई
की। 8 पुबलियुस का पिता ज्वर और आंव लोहू से रोगी पड़ा या: सो पौलुस ने
उसके पास घर में जाकर प्रार्यना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। 9
जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए। 10 और
उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमें
अवश्य या, जहाज पर रख दिया।। 11 तीन महीने के बाद हम सिकन्दिरया के
एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े भर रहा या; और जिस का चिन्ह
दियुसकूरी या। 12 सुरकूसा में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे। 13 वहां
से हम घूमकर रेगियुम में आए: और एक दिन पुतियुली में आए। 14 वहां हम को
भाई मिले, और उन के कहने से हम उन के यहां सात दिन तक रहे; और इस रीति
से रोम को चले। 15 वहां से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और
तीन-सराए तक हमारी भेंट करने को निकल आए जिन्हें देखकर पौलुस ने
परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बान्धा।। 16 जब हम रोम में पहुंचे, तो
पौलुस को एक सिपाही के साय जो उस की रखवाली करता या, अकेले रहने की
आज्ञा हुई।। 17 तीन दिन के बाद उस ने यहूदियोंके बड़े लोगोंको बुलाया, और

जब वे इकट्ठे हुए तो उन से कहा; हे भाइयों, मैं ने अपके लोगोंके या बापदादोंके
व्यवहारोंके विरोध में कुछ भी नहीं किया, तौभी बन्धुआ होकर यरूशलेम से
रोमियोंके हाथ सौंपा गया। 18 उन्होंने मुझे जांच कर छोड़ देना चाहा, क्योंकि
मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न या। 19 परन्तु जब यहूदी इस के विरोध में
बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी: न यह कि मुझे अपके लागोंपर
कोई दोष लगाना या। 20 इसलिथे मैं ने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूं और
बातचीत करूं; क्योंकि इस्त्राएल की आशा के लिथे मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ
हूं। 21 उन्होंने उस से कहा; न हम ने तेरे विषय में यहूदियोंसे चिट्ठियां पाईं, और
न भाइयोंमें से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा। 22
परन्तु तेरा विचार क्या है वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं,
कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें कहते हैं।। 23 तब उन्होंने उसके
लिथे एक दिन ठहराया, और बहुत लोग उसके यहां इकट्ठे हुए, और वह परमेश्वर
के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्या और भाविष्यद्वक्ताओं की
पुस्तकोंसे यीशु के विषय में समझा समझाकर भोर से सांफ तक वर्णन करता
रहा। 24 तब कितनोंने उन बातोंको मान लिया, और कितनोंने प्रतीति न की। 25
जब आपस में एक मत न हुए, तो पौलुस के इस एक बात के कहने पर चले गए,
कि पवित्र आत्क़ा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादोंसे अच्छा
कहा, कि जाकर इन लोगोंसे कह। 26 कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे,
और देखते तो रहोगे, परन्तु न बुफोगे। 27 क्योंकि इन लोगोंका मन मोटा, और
उन के कान भारी हो गए, और उन्होंने अपक्की आंखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि
वे कभी आंखोंसे देखें, और कानोंसे सुनें, और मन से समझें और फिरें, और मैं

उन्हें चंगा करूं। 28 सो तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कया
अन्यजातियोंके पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे। 29 जब उस ने यह कहा तो
यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहां से चले गए।। 30 और वह पूरे
दो वर्ष अपके भाड़े के घर में रहा। 31 और जो उसके पास आते थे, उन सब से
मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार
करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।।

रोमियो 1

1 पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और पे्ररित होने के लिथे बुलाया
गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिथे अलग किया गया है। 2 जिस की
उस ने पहिले ही से अपके भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में। 3 अपके पुत्र
हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की यी, जो शरीर के भाव से तो दाद के
वंश से उत्पन्न हुआ। 4 और पवित्रता की आत्क़ा के भाव से मरे हुओं में से जी
उठने के कारण सामर्य के साय परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। 5 जिस के द्वारा हमें
अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियोंके लोग
विश्वास करके उस की मानें। 6 जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिथे
बुलाए गए हो। 7 उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने
के लिथे बुलाए गए हैं।। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से
तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।। 8 पहिले मैं तुम सब के लिथे यीशु मसीह
के द्वारा अपके परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे
जगत में हो रही है। 9 परमेश्वर जिस की सेवा मैं अपक्की आत्क़ा से उसके पुत्र के

सुसमाचार के विषय में करता हूं, वही मेरा गवाह है; कि मैं तुम्हें किस प्रकार
लगातार स्क़रण करता रहता हूं। 10 और नित्य अपक्की प्रार्यनाओं में बिनती
करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की
इच्छा से सुफल हो। 11 क्योंकि मै। तुम से मिलने की लालसा करता हूं, कि मैं
तुम्हें कोई आत्क़िक बरदान दूं जिस से तुम स्यिर हो जाओ। 12 अर्यात् यह, कि
मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साय उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में
है, शान्ति पां। 13 और हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस से अनजान रहो,
कि मैं ने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और अन्यजातियोंमें
फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रूका रहा। 14 मैं
यूनानियोंऔर अन्यभाषियोंका और बुद्धिमानोंऔर निर्बुद्धियोंका कर्जदान हूं। 15
सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं। 16
क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिथे कि वह हर एक विश्वास करनेवाले
के लिथे, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिथे उद्धार के निमाि परमेश्वर की
सामर्य है। 17 क्योंकि उस में परमेश्वर की धामिर्कता विश्वास से और विश्वास के
लिथे प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।। 18
परमेश्वर का ोध तो उन लोगोंकी सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता
है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। 19 इसलिथे कि परमश्ेवर के विषय में
ज्ञान उन के मनोंमें प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। 20
क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्यात् उस की सनातन सामर्य, और परमेश्वरत्व
जगत की सृष्टि के समय से उसके कामोंके द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे
निरूत्तर हैं। 21 इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के

योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि
उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। 22 वे अपके आप को बुद्धिमान जताकर
मूर्ख बन गए। 23 और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और
पझियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल
डाला।। 24 इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषोंके अुनसार
अशुद्धता के लिथे छोड़ दिया, कि वे आपस में अपके शरीरोंका अनादर करें। 25
क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर फूठ बना डाला, और सृष्टि की
उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन।। 26
इसलिथे परमश्ेवर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि
उन की स्त्रियोंने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरूद्ध है,
बदल डाला। 27 वैसे ही पुरूष भी स्त्रियोंके साय स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर
आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरूषोंने पुरूषोंके साय निर्लज्ज़ काम
करके अपके भ्रम का ठीक फल पाया।। 28 और जब उन्होंने परमेश्वर को
पहिचानना न चाहा, इसलिथे परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़
दिया; कि वे अनुचित काम करें। 29 सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और
लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और फगड़े, और छल, और
ईर्षा से भरपूर हो गए, और चुगलखोर। 30 बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने
में घृणित, औरोंका अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातोंके
बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले। 31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती,
मयारिहत और निर्दय हो गए। 32 वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे
ऐसे काम करनेवाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम

करते हैं, बरन करनेवालोंसे प्रसन्न भी होते हैं।।

रोमियो 2

1 सो हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्योंन हो; तू निरूार है! क्योंकि जिस बात में तू
दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपके आप को भी दोषी ठहराता है,
इसलिथे कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है। 2 और हम जातने
हैं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवालोंपर परमेश्वर की ओर से ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा
होती है। 3 और हे मनुष्य, तू जो ऐसे ऐसे काम करनेवालोंपर दोष लगाता है, और
आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा
से बच जाएगा 4 क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को
तुच्छ जानता है और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन
फिराव को सिखाती है 5 पर अपक्की कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके
ोध के दिन के लिथे, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपके
निमाि ोध कमा रहा है। 6 वह हर एक को उसके कामोंके अनुसार बदला देगा।
7 जो सुकर्म में स्यिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है,
उन्हें अनन्त जीवन देगा। 8 पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, बरन
अधर्म को मानते हैं, उन पर ोध और कोप पकेगा। 9 और क्लेश और संकट हर
एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। 10
पर महिमा और आदर ओर कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है,
पहिले यहूदी को फिर यूनानी को। 11 क्योंकि परमेश्वर किसी का पझ नहीं करता।
12 इसलिथे कि जिन्होंने बिना व्यवस्या पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्या के

नाश भी होंगे, और जिन्होंने व्यवस्या पाकर पाप किया, उन का दण्ड व्यवस्या के
अनुसार होगा। 13 क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्या के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर
व्यवस्या पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे। 14 फिर जब अन्यजाति लोग जिन
के पास व्यवस्या नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्या की बातोंपर चलते हैं, तो व्यवस्या
उन के पास न होने पर भी वे अपके लिथे आप ही व्यवस्या हैं। 15 वे व्यवस्या की
बातें अपके दयोंमें लिखी हुई दिखने हैं और उन के विवेक भी गवाही देते हैं, और
उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती है। 16 जिस दिन
परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्योंकी गुप्त बातोंका
न्याय करेगा।। 17 यदि तू यहूदी कहलाता है, और व्यवस्या पर भरोसा रखता है,
और परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है। 18 और उस की इच्छा जानता और
व्यवस्या की शिझा पाकर उाम उाम बातोंको प्रिय जानता है। 19 और अपके पर
भरोसा रखता है, कि मैं अन्धोंका अगुवा, और अन्धकार में पके हुओं की ज्योति।
20 और बुद्धिहीनोंका सिखानेवाला, और बालकोंका उपकेशक हूं, और ज्ञान, और
सत्य का नमूना, जो व्यवस्या में है, मुझे मिला है। 21 सो क्या तू जो औरोंको
सिखाता है, अपके आप को नहीं सिखाता क्या तू चोरी न करने का उपकेश देता
है, आप ही चोरी करता है 22 तू जो कहता है, व्यभिचार न करना, क्या आप ही
व्यभिचार करता है तू जो मूरतोंसे घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरोंको लूटता
है। 23 तू जो व्यवस्या के विषय में घमण्ड करता है, क्या व्यवस्या न मानकर,
परमेश्वर का अनादर करता है 24 क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियोंमें परमेश्वर
के नाम की निन्दा की जाती है जैसा लिखा भी है। 25 यदि तू व्यवस्या पर चले,
तो खतने से लाभ तो है, परन्तु यदि तू व्यवस्या को न माने, तो तेरा खतना बिन

खतना की दशा ठहरा। 26 सो यदि खतनारिहत मनुष्य व्यवस्या की विधियोंको
माना करे, तो क्या उस की बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिनी जाएगी
27 और जो मनुष्य जाति के कारण बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्या को पूरा
करे, तो क्या तुझे जो लेख पाने और खतना किए जाने पर भी व्यवस्या को माना
नहीं करता है, दोषी न ठहराएगा 28 क्योंकि वह यहूदी नहीं, पर प्रगट में है, और
देह में है। 29 पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो दय का और
आत्क़ा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्योंकी ओर से नहीं, परन्तु
परमेश्धर की ओर से होती है।।

रोमियो 3

1 सो यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ 2 हर प्रकार से बहुत कुछ।
पहिले तो यह कि परमश्ेवर के वचन उन को सौंपे गए। 3 यदि कितने
विश्धसघाती निकले भी तो क्या हुआ। क्या उनके विश्धासघाती होने से परमेश्धर
की सच्चाई व्यर्य ठहरेगी 4 कदापि नहीं, बरन परमेश्धर सच्चा और हर एक
मनुष्य फूठा ठहरे, जैसा लिखा है, कि जिस से तू अपक्की बातोंमें धर्मी ठहरे और
न्याय करते समय तू जय पाए। 5 सो यदि हमारा अधर्म परमेश्धर की धामिर्कता
ठहरा देता है, तो हम क्या कहें क्या यह कि परमेश्धर जो ोध करता है अन्यायी है
यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं। 6 कदापि नहीं, नहीं तो परमेश्धर क्योंकर
जगत का न्याय करेगा 7 यदि मेरे फूठ के कारण परमेश्धर की सच्चाई उस को
महिमा के लिथे अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्योंपापी की नाई मैं दण्ड के
योग्य ठहराया जाता हूं 8 और हम क्योंबुराई न करें, कि भलाई निकले जब हम

पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कितने कहते हैं कि इन का यही कहना है:
परन्तु ऐसोंका दोषी ठहराना ठीक है।। 9 तो फिर क्या हुआ क्या हम उन से अच्छे
हैं कभी नहंी; क्योंकि हम यहूदियोंऔर यूनानियोंदोनोंपर यह दोष लगा चुके हैं
कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। 10 जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी
नहीं। 11 कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। 12 सब भटक
गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं।
13 उन का गला खुली हुई कब्र है: उन्हीं ने अपक्की जीभोंसे छल किया है: उन के
होठोंमें सापोंका विष है। 14 और उन का मुंह श्रप और कड़वाहट से भरा है। 15
उन के पांव लोहू बहाने को फुतीले हैं। 16 उन के मार्गोंमें नाश और क्लेश है। 17
उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। 18 उन की आंखोंके साम्हने परमेश्वर का भय
नहीं। 19 हम जानते हैं, कि व्यवस्या जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो
व्यवस्या के आधीन हैं: इसलिथे कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा
संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। 20 क्योंकि व्यवस्या के कामोंसे कोई
प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिथे कि व्यवस्या के द्वारा पाप की
पहिचान होती है। 21 पर अब बिना व्यवस्या परमेश्वर की धामिर्कता प्रगट हुई है,
जिस की गवाही व्यवस्या और भविष्यद्वक्ता देते हैं। 22 अर्यात परमेश्वर की वह
धामिर्कता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालोंके लिथे है;
क्योंकि कुछ भेद नहीं। 23 इसलिथे कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की
महिमा से रिहत है। 24 परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह
यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। 25 उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के
कारण एक ऐसा प्रायश्चाि ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि

जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपक्की सहनशीलता से
आनाकानी की; उन के विषय में वह अपक्की धामिर्कता प्रगट करे। 26 बरन इसी
समय उस की धामिर्कता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो
यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो। 27 तो घमण्ड करना कहां
रहा उस की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्या के कारण से क्या कर्मोंकी
व्यवस्या से नहीं, बरन विश्वास की व्यवस्या के कारण। 28 इसलिथे हम इस
परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्या के कामोंके बिना विश्वास के द्वारा
धर्मी ठहरता है। 29 क्या परमेश्वर केवल यहूदियोंहीं का है क्या अन्यजातियोंका
नहीं हां, अन्यजातियोंका भी है। 30 क्योंकि एक ही परमेश्वर है, जो
खतनावालोंको विश्वास से और खतनारिहतोंको भी विश्वास के द्वारा धर्मी
ठहराएगा। 31 तो क्या हम व्यवस्या को विश्वास के द्वारा व्यर्य ठहराते हैं कदापि
नहीं; बरन व्यवस्या को स्यिर करते हैं।।

रोमियो 4

1 सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ 2
क्योंकि यदि इब्राहीम कामोंसे धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह
होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। 3 पवित्र शास्त्र क्या कहता है यह कि
इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिथे धामिर्कता गिना
गया। 4 काम करनेवाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु ह? समझा जाता है। 5
परन्तु जो काम नहीं करता बरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता
है, उसका विश्वास उसके लिथे धामिर्कता गिना जाता है। 6 जिसे परमेश्वर बिना

कर्मोंके धर्मी ठहराता है, उसे दाद भी धन्य कहता है। 7 कि धन्य वे हैं, जिन के
अधर्म झमा हुए, और जिन के पाप ढ़ापे गए। 8 धन्य है वह मनुष्य जिसे
परमेश्वर पापी न ठहराए। 9 तो यह धन्य कहना, क्या खतनावालोंही के लिथे है,
या खतनारिहतोंके लिथे भी हम यह कहते हैं, कि इब्राहीम के लिथे उसका विश्वास
धामिर्कता गिना गया। 10 तो वह क्योंकर गिना गया खतने की दशा में या बिना
खतने की दशा में खतने की दशा में नहीं परन्तु बिना खतने की दशा में। 11 और
उस ने खतने का चिन्ह पाया, कि उस विश्वास की धामिर्कता पर छाप हो जाए, जो
उस ने बिना खतने की दशा में रखा या: जिस से वह उन सब का पिता ठहरे, जो
बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें। 12 और उन
खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे
पिता इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं, जो उस ने बिन खतने की
दशा में किया या। 13 क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न
इब्राहीम को, न उसके वंश को व्यवस्या के द्वारा दी गई यी, परन्तु विश्वास की
धामिर्कता के द्वारा मिली। 14 क्योंकि यदि व्यवस्यावाले वारिस हैं, तो विश्वास
व्यर्य और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। 15 व्यवस्या तो ◌ोध उपजाती है और जहां
व्यवस्या नहीं वहां उसका टालना भी नहीं। 16 इसी कारण वह विश्वास के द्वारा
मिलती है, कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिथे दृढ़ हो, न कि
केवल उसक लिथे जो व्यवस्यावाला है, बरन उन के लिथे भी जो इब्राहीम के
समान विश्वासवाले हैं: वही तो हम सब का पिता है। 17 जैसा लिखा है, कि मैं ने
तुझे बहुत सी जातियोंका पिता ठहराया है उस परमश्◌ेवर के साम्हने जिस पर
उस ने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं,

उन का नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं। 18 उस ने निराशा में भी आशा रखकर
विश्वास किया, इसलिथे कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह
बहुत सी जातियोंका पिता हो। 19 और वह जो एक सौ वर्ष का या, अपके मरे हुए
से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल
न हुआ। 20 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर
विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। 21 और निश्चय जाना, कि जिस
बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्यी है। 22 इस
कारण, यह उसके लिथे धामिर्कता गिना गया। 23 और यह वचन, कि विश्वास
उसके लिथे धामिर्कता गिया गया, न केवल उसी के लिथे लिखा गया। 24 बरन
हमारे लिथे भी जिन के लिथे विश्वास धामिर्कता गिना जाएगा, अर्यात् हमारे लिथे
जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।
25 वह हमारे अपराधोंके लिथे पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिथे
जिलाया भी गया।।

रोमियो 5

1 से जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपके प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर
के साय मेल रखें। 2 जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में
हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड
करें। 3 केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशोंमें भी घमण्ड करें, यही जानकर कि
क्लेश से धीरज। 4 ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा
उत्पन्न होती है। 5 और आशा से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्क़ा जो हमें

दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। 6 क्योंकि
जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनोंके लिथे मरा। 7 किसी
धर्मी जन के लिथे कोई मरे, यह तो र्दुलभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य
के लिथे कोई मरने का भी हियाव करे। 8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपके प्रेम की
भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे
लिथे मरा। 9 सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा
ोध से क्योंन बचेंगे 10 क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के
द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साय हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के
कारण हम उद्धार क्योंन पाएंगे 11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपके प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में
घमण्ड भी करते हैं।। 12 इसलिथे जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया,
और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्योंमें फैल गई,
इसलिथे कि सब ने पाप किया। 13 क्योंकि व्यवस्या के दिए जाने तक पाप
जगत में तो या, परन्तु जहां व्यवस्या नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता। 14 तौभी
आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगोंपर भी राज्य किया, जिन्होंने उस
आदम के अपराध की नाईं जो उस आनेवाले का चिन्ह है, पाप न किया। 15 पर
जैसा अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के बरदान की नहीं, क्योंकि जब एक
मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो
दान एक मनुष्य के, अर्यात यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लागोंपर
अवश्य ही अधिकाई से हुआ। 16 और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल
हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का

फैसला हुअ, परन्तु बहुतेरे अपराधोंसे ऐसा बरदान उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी
ठहरे। 17 क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कराण मृत्यु ने उस एक ही के
द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूमी बरदान बहुतायत से पाते हैं
वे एक मनुष्य के, अर्यात‍ यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य
करेंगे। 18 इसलिथे जैसा एक अपराध सब मनुष्योंके लिथे दण्ड की आज्ञा का
कारण हुआ, वेसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्योंके लिथे जीवन के निमाि
धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। 19 क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न
मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत
लोग धर्मी ठहरेंगे। 20 और व्यवस्या बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु
जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। 21 कि जैसा पाप
ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह
भी अनन्त जीवन के लिथे धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।।

रोमियो 6

1 सो हम क्या कहें क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो 2 कदापि नहीं,
हम जब पाप के लिथे मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिनाएं 3
क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनोंने मसीह यीशु का बपतिस्क़ा लिया तो उस
की मृत्यु का बपतिस्क़ा लिया 4 सो उस मृत्यु का बपतिस्क़ा पाने से हम उसके
साय गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया
गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। 5 क्योंकि यदि हम उस की
मृत्यु की समानता में उसके साय जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की

समानता में भी जुट जाएंगे। 6 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व
उसके साथ ूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम
आगे को पाप के दासत्व में न रहें। 7 क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर
धर्मी ठहरा। 8 सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि
उसके साथ जीएंगे भी। 9 क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी
उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। 10
क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिथे एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित
है, तो परमेश्वर के लिथे जीवित है। 11 ऐसे ही तुम भी अपके आप को पाप के
लिथे तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिथे मसीह यीशु में जीवित समझो। 12
इसलिथे पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं
के अधीन रहो। 13 और न अपके अंगो को अधर्म के हियार होने के लिथे पाप को
सौंपो, पर अपके आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमश्ेवर को
सौंपो, और अपके अंगो को धर्म के हियार होने के लिथे परमेश्वर को सौंपो। 14
और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन
अनुग्रह के आधीन हो।। 15 तो क्या हुआ क्या हम इसलिथे पाप करें, कि हम
व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हैं कदापि नहीं। 16 क्या तुम
नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिथे तुम अपके आप को दासोंकी नाईं
सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का
अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धामिर्कता है 17 परन्तु
परमश्ेवर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपकेश
के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। 18 और पाप से छुड़ाए जाकर

धर्म के दास हो गए। 19 मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्योंकी रीति
पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपके अंगो को कुकर्म के लिथे अशुद्धता और कुकर्म के
दास करके सौंपा या, वैसे ही अब अपके अंगोंको पवित्रता के लिथे धर्म के दास
करके सौंप दो। 20 जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। 21 सो
जिन बातोंसे अब तुम लज्ज़ित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे
22 क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और
परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और
उसका अन्त अनन्त जीवन है। 23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु
परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।।

रोमियो 7

1 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जातने मैं व्यवस्या के जाननेवालोंसे कहता हूं, कि जब
तक मनुष्य जीवित रहता है, तक तक उस पर व्यवस्या की प्रभूता रहती है 2
क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्या के अनुसार अपके पति के जीते जी उस से बन्धी
है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्या से छूट गई। 3 सो यदि
पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरूष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी,
परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्या से छूट गई, यहां तक कि यदि
किसी दूसरे पुरूष की हो जाए, तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। 4 सो हे मेरे भाइयो,
तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्या के लिथे मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के
हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिथे फल लाएं। 5
क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापोंकी अभिलाषाथें जो व्यवस्या के द्वारा यी,

मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिथे हमारे अंगोंमें काम करती यीं। 6 परन्तु
जिस के बन्धन में हम थे उसके लिथे मर कर, अब व्यवस्या से ऐसे छूट गए, कि
लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्क़ा की नई रीति पर सेवा करते हैं।। 7 तो
हम क्या कहें क्या व्यवस्या पाप है कदापि नहीं! बरन बिना व्यवस्या के मैं पाप
को नहीं पहिचानता: व्यवस्या यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच
को न जानता। 8 परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार
का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्या के पाप मुर्दा है। 9 मैं तो
व्यवस्या बिना पहिले जीवित या, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और
मैं मर गया। 10 और वही आज्ञा जो जीवन के लिथे यी; मेरे लिथे मृत्यु का कारण
ठहरी। 11 क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझै बहकाया, और उसी
के द्वारा मुझे मार भी डाला। 12 इसलिथे व्यवस्या पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक
और अच्छी है। 13 तो क्या वह जो अच्छी यी, मेरे लिथे मृत्यु ठहरी कदापि नहीं!
परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिथे मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ
कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। 14
क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्या तो आत्क़िक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप
के हाथ बिका हुआ हूं। 15 और जो मैं करता हूं, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो
मैं चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता
हूं। 16 और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि
व्यवस्या भली है। 17 तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, बरन पाप है, जो
मुझ में बसा हुआ है। 18 क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्यात् मेरे शरीर में
कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से

बन नहीं पड़ते। 19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं
करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं। 20 परन्तु
यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा,
परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। 21 सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब
भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है। 22 क्योंकि मैं भीतरी
मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। 23 परन्तु मुझे
अपके अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की
व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे
अंगोंमें है। 24 मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा
25 मैं अपके प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं
आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का
सेवन करता हूं।।

रोमियो 8

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के
अनुसार नहीं बरन आत्क़ा के अनुसार चलते हैं। 2 क्योंकि जीवन की आत्क़ा की
व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर
दिया। 3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण र्दुबल होकर न कर सकी, उस
को परमेश्वर ने किया, अर्यात् अपके ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में,
और पाप के बलिदान होने के लिथे भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिथे कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्क़ा

के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। 5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातोंपर
मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्क़िक आत्क़ा की बातोंपर मन लगाते हैं। 6 शरीर
पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्क़ा पर मन लगाना जीवन और शान्ति
है। 7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो
परमेश्वर की व्यवस्या के अधीन है, और न हो सकता है। 8 और जो शारीरिक दशा
में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। 9 परन्तु जब कि परमेश्वर का
आत्क़ा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्क़िक दशा में
हो। यदि किसी में मसीह का आत्क़ा नहीं तो वह उसका जन नहीं। 10 और यदि
मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्क़ा धर्म के कारण
जीवित है। 11 और यदि उसी का आत्क़ा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया
तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी
मरनहार देहोंको भी अपके आत्क़ा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा। 12
सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदान नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें। 13
क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्क़ा से देह
की यािओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। 14 इसलिथे कि जितने लोग परमेश्वर
के आत्क़ा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। 15 क्योंकि तुम को
दासत्व की आत्क़ा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की
आत्क़ा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। 16 आत्क़ा
आप ही हमारी आत्क़ा के साय गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के
संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साय दुख उठाएं कि उसके साय महिमा भी

पाएं।। 18 क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा
के साम्हने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं। 19 ँक्योंकि सृष्टि
बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रोंके प्रगट होने की बाट जोह रही है। 20
क्योंकि सृष्टि अपक्की इच्छा से नहीं पर आधीन करनेवाले की ओर से व्यर्यता के
आधीन इस आशा से की गई। 21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से
छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानोंकी महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। 22
क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कहरती और पीड़ाओं में
पड़ी तड़पक्की है। 23 और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्क़ा का
पहिला फल है, आप ही अपके में कहरते हैं; और लेपालक होने की, अर्यात
अपक्की देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। 24 आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार
हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर
आशा कहां रही क्योकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उस की आशा क्या करेगा
25 परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज
से उस की बाट जाहते भी हैं।। 26 इसी रीति से आत्क़ा भी हमारी दुर्बलता में
सहाथता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्यना किस रीति से करना
चाहिए; परन्तु आत्क़ा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे
लिथे बिनती करता है। 27 और मनोंका जांचनेवाला जानता है, कि आत्क़ा की
मनसा क्या है क्योंकि वह पवित्र लोगोंके लिथे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार
बिनती करता है। 28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं,
उन के लिथे सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्यात उन्हीं के
लिथे जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। 29 क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले

से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में होंताकि
वह बहुत भाइयोंमें पहिलौठा ठहरे। 30 फिर जिन्हें उन से पहिले से ठहराया, उन्हें
बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी
ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।। 31 सो हम इन बातोंके विषय में क्या कहें यदि
परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है 32 जिस ने अपके
निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिथे दे दिया: वह उसके
साय हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा 33 परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन
लगाएगा परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। 34 फिर कौन है जो
दण्ड की आज्ञा देगा मसीह वह है जो मर गया बरन मुर्दोंमें से जी भी उठा, और
परमेश्वर की दिहती ओर है, और हमारे लिथे निवेदन भी करता है। 35 कौन हम
को मसीह के प्रेम से अलग करेगा क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल,
या नंगाई, या जोखिम, या तलवार 36 जैसा लिखा है, कि तेरे लिथे हम दिन भर
घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेंडोंकी नाई गिने गए हैं। 37 परन्तु इन सब
बातोंमें हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न
प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्य, न ंचाई, 39 न गहिराई और न
कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग
कर सकेगी।।

रोमियो 9

1 मैं मसीह में सच कहता हूं, फूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्क़ा

में गवाही देता है। 2 कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। 3
क्योंकि मैं यहां तक चाहता या, कि अपके भाईयों, के लिथे जो शरीर के भाव से
मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता। 4 वे इस्त्राएली हैं; और
लेपालकपन का ह? और महिमा और वाचाएं और व्यवस्या और उपासना और
प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। 5 पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से
उन्हीं में से हुआ, जो सब के पर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन। 6
परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिथे कि जो इस्त्राएल के
वंश हैं, वे सब इस्त्राएली नहीं। 7 और न इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उस
की सन्तान ठहरे, परन्तु लिखा है कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। 8
अर्यात शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान
वंश गिने जाते हैं। 9 क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है, कि मैं इस समय के अनुसार
आंगा, और सारा के पुत्र होगा। 10 और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी
एक से अर्यात हमारे पिता इसहाक से गर्भवती यी। 11 और अभी तक न तो
बालक जन्के थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया या कि उस ने कहा, कि
जेठा छुटके का दास होगा। 12 इसलिथे कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन
लेने के अनुसार है, कर्मोंके कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले पर बनी रहे। 13 जैसा
लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना।। 14 सो हम
क्या कहें क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है कदापि नहीं! 15 क्योंकि वह मूसा से
कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस
किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा। 16 सो यह न तो चाहनेवाले की,
न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है। 17 क्योंकि पवित्र

शास्त्र में फिरौन से कहा गया, कि मैं ने तुझे इसी लिथे खड़ा किया है, कि तुझ में
अपक्की सामर्थ दिखां, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृय्वी पर हो। 18 सो वह
जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर
देता है। 19 सो तू मुझ से कहेगा, वह फिर क्योंदोष लगाता है कौन उस की इच्छा
का साम्हना करता हैं 20 हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का साम्हना
करता है क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा
क्योंबनाया है 21 क्या कुम्हार को मिी पर अधिक्कारने नहीं, कि एक ही लौंदे मे
से, एक बरतन आदर के लिथे, और दूसरे को अनादर के लिथे बनाए तो इस में
कौन सी अचम्भे की बात है 22 कि परमेश्वर ने अपना ोध दिखाने और अपक्की
सामर्थ प्रगट करने की इच्छा से ोध के बरतनोंकी, जो विनाश के लिथे तैयार
किए गए थे बड़े धीरज से सही। 23 और दया के बरतनोंपर जिन्हें उस ने महिमा
के लिथे पहिले से तैयार किया, अपके महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा
की 24 अर्यात हम पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियोंमें से बरन अन्यजातियोंमें
से भी बुलाया। 25 जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, कि जो मेरी प्रजा न
यी, उन्हें मैं अपक्की प्रजा कहूंगा, और जो प्रिया न यी, उसे प्रिया कहूंगा। 26 और
ऐसा होगा कि जिस जगह में उन से यह कहा गया या, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो,
उसी जगह वे जीवते परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे। 27 और यशायाह इस्त्राएल
के विषय में पुकारकर कहता है, कि चाहे इस्त्राएल की सन्तानोंकी गिनती समुद्र
के बालू के बारबर हो, तौभी उन में से योड़े ही बचेंगे। 28 क्योंकि प्रभु अपना वचन
पृय्वी पर पूरा करके, धामिर्कता से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा। 29 जैसा यशायाह ने
पहिले भी कहा या, कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिथे कुछ वंश न छोड़ता, तो

हम सदोम की नाईं हो जाते, और अमोरा के सरीखे ठहरते।। 30 सो हम क्या कहें
यह कि अन्यजातियोंने जो धामिर्कता की खोज नहीं करते थे, धामिर्कता प्राप्त
की अर्यात्‌ उस धामिर्कता को जो विश्वास से है। 31 परन्तु इस्त्राएली; जो धर्म की
व्यवस्या की खोज करते हुए उस व्यवस्या तक नहीं पहुंचे। 32 किस लिथे
इसलिथे कि वे विश्वास से नहीं, परन्तु मानोंकर्मोंसे उस की खोज करते थे:
उन्होंने उस ठोकर के पत्यर पर ठोकर खाई। 33 जैसा लिखा है; देखो मैं सियोन
में एक ठेस लगने का पत्यर, और ठोकर खाने की चटान रखता हूं; और जो उस
पर विश्वास करेगा, वह लज्ज़ित न होगा।।

रोमियो 10

1 हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिथे परमेश्वर से मेरी प्रार्यना है,
कि वे उद्धार पाएं। 2 क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि उन को परमेश्वर के
लिथे धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साय नहीं। 3 क्योकिं वे परमेश्वर की
धामिर्कता से अनजान होकर, और अपक्की धामिर्कता स्यापन करने का यत्न
करके, परमेश्वर की धामिर्कता के आधीन न हुए। 4 क्योंकि हर एक विश्वास
करनेवाले के लिथे धामिर्कता के निमाि मसीह व्यवस्या का अन्त है। 5 क्योंकि
मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धामिर्कता पर जो व्यवस्या से है, चलता
है, वह इसी कारण जीवित रहेगा। 6 परन्तु जो धामिर्कता विश्वास से है, वह
योंकहती है, कि तू अपके मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा अर्यात
मसीह को उतार लाने के लिथे! 7 या गहिराव में कौन उतरेगा अर्यात्‌ मसीह को
मरे हुओं में से जिलाकर पर लाने के लिथे! 8 परन्तु क्या कहती है यह, कि वचन

तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम
प्रचार करते हैं। 9 कि यदि तू अपके मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे
और अपके मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू
निश्चय उद्धार पाएगा। 10 क्योंकि धामिर्कता के लिथे मन से विश्वास किया जाता
है, और उद्धार के लिथे मुंह से अंगीकार किया जाता है। 11 क्योंकि पवित्र शास्त्र
यह कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा। 12
यहूदियोंऔर यूनानियोंमें कुछ भेद नहीं, इसलिथे कि वह सब का प्रभु है; और
अपके सब नाम लेनेवालोंके लिथे उदार है। 13 क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम
लेगा, वह उद्धार पाएगा। 14 फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका
नाम क्योंकर लें और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें 15 और
प्रचारक बिना क्योंकर सुनें और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें जैसा
लिखा है, कि उन के पांव क्या ही सोहावने हैं, जो अच्छी बातोंका सुसमाचार
सुनाते हैं। 16 परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया: यशायाह कहता
है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है 17 सो विश्वास सुनने से,
और सुनना मसीह के वचन से होता है। 18 परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्होंने नहीं
सुना सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के
वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। 19 फिर मैं कहता हूं। क्या इस्त्राएली नहीं
जानते थे पहिले तो मूसा कहता है, कि मैं उन के द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन
में जलन उपजांगा, मैं एक मूढ जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलांगा। 20 फिर
यशायाह बड़े हियाव के साय कहता है, कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे, उन्होंने मुझे पा
लिया: और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया। 21 परन्तु इस्त्राएल

के विषय में वह यह कहता है कि मैं सारे दिन अपके हाथ एक आज्ञा न
माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा।।

रोमियो 11

1 इसलिथे मैं कहता हूं, क्या परमेश्वर ने अपक्की प्रजा को त्याग दिया कदापि
नहीं; मैं भी तो इस्त्राएली हूं: इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूं। 2
परमेश्वर ने अपक्की उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उस ने पहिले ही से जाना:
क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र शास्त्र एलियाह की कया में क्या कहता है; कि
वह इस्त्राएल के विरोध में परमेश्वर से बिनती करता है। 3 कि हे प्रभु, उन्होंने तेरे
भविष्यद्वक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियोंको ढ़ा दिया है; और मैं ही अकेला
बच रहा हूं, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं। 4 परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उार
मिला कि मैं ने अपके लिथे सात हजार पुरूषोंको रख छोड़ा है जिन्होंने बाअल के
आग घुटने नहीं टेके हैं। 5 सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए
कितने लोग बाकी हैं। 6 यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मोंसे नहीं, नहीं तो
अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा। 7 सो परिणाम क्या हुआ यह कि इस्त्राएली जिस
की खोज में हैं, वह उन को नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं को मिला और शेष लोग
कठोर किए गए हैं। 8 जैसा लिखा है, कि परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी
नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें। 9
और दाद कहता है; उन का भोजन उन के लिथे जाल, और फन्दा, और ठोकर,
और दण्ड का कारण हो जाए। 10 उन की आंखोंपर अन्धेरा छा जाए ताकि न
देखें, और तू सदा उन की पीठ को फुकाए रख। 11 सो मैं कहता हूं क्या उन्होंने

इसलिथे ठोकर खाई, कि गिर पकें कदापि नहीं: परन्तु उन के गिरने के कारण
अन्यजानियोंको उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो। 12 सो यदि उन का गिरना
जगत के लिथे धन और उन की घटी अन्यजातियोंके लिथे सम्पाि का कारण
हुआ, तो उन की भरपूरी से कितना न होगा।। 13 मैं तुम अन्यजातियोंसे यह बातें
कहता हूं: जब कि मैं अन्याजातियोंके लिथे प्रेरित हूं, तो मैं अपक्की सेवा की
बड़ाई करता हूं। 14 ताकि किसी रीति से मैं अपके कुटुम्बियोंसे जलन करवाकर
उन में से कई एक का उद्धार करां। 15 क्योंकि जब कि उन का त्याग दिया जाना
जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन का ग्रहण किया जाना मरे हुओं में
से जी उठने के बराबर न होगा 16 जब भेंट का पहिला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा
गुंधा हुआ आटा भी पवित्र है: और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियां भी ऐसी ही
हैं। 17 और यदि कई एक डाली तोड़ दी गई, और तू जंगली जलपाई होकर उन में
साटा गया, और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है। 18 तो
डालियोंपर घमण्ड न करना: और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को
नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। 19 फिर तू कहेगा डालियां इसलिथे तोड़ी
गई, कि मैं साटा जां। 20 भला, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गई, परन्तु तू
विश्वास से बना रहता है इसलिथे अभिमानी न हो, परन्तु भय कर। 21 क्योंकि
जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ी, तो तुझे भी न छोड़ेगा। 22 इसलिथे
परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए, उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ
पर कृपा, यदि तू उस में बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा। 23 और वे भी
यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे क्योंकि परमश्ेवर उन्हें फिर साट
सकता है। 24 क्योंकि यदि तू उस जलपाई से, जो स्वभाव से जंगली है काटा गया

और स्वभाव के विरूद्ध अच्छी जलपाई में साटा गया तो थे जो स्वाभाविक
डालियां हैं, अपके ही जलपाई में साटे क्योंन जाएंगे। 25 हे भाइयों, कहीं ऐसा न
हो, कि तुम अपके आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिथे मैं नहीं चाहता कि तुम
इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें,
तब तक इस्त्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। 26 और इस रीति से सारा
इस्त्राएल उद्धार पाएगा; जैसा लिखा है, कि छुड़ानेवाला सियोन से आएगा, और
अभक्ति को याकूब से दूर करेगा। 27 और उन के साय मेरी यही वाचा होगी, जब
कि मैं उन के पापोंको दूर कर दूंगा। 28 वे सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे बैरी हैं,
परन्तु चुन लिथे जाने के भाव से बापदादोंके प्यारे हैं। 29 क्योंकि परमेश्वर अपके
बरदानोंसे, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता। 30 क्योंकि जैसे तुम ने पहिले
परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी उन के आज्ञा न मानने से तुम पर दया
हुई। 31 वैसे ही उन्होंने भी अब आज्ञा न मानी कि तुम पर जो दया होती है इस से
उन पर भी दया हो। 32 ैक्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण
बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे।। 33 आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि
और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अयाह, और उसके मार्ग कैसे
अगम हैं! 34 प्रभु कि बुद्धि को किस ने जाना या उसका मंत्री कौन हुआ 35 या
किस ने पहिले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए। 36 क्योंकि उस
की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिथे सब कुछ है: उस की महिमा
युगानुयुग होती रहे: आमीन।।

रोमियो 12

1 इसलिथे हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्क़रण दिला कर बिनती करता
हूं, कि अपके शरीरो कोंजीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ
बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्क़िक सेवा है। 2 और इस संसार के
सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नथे हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी
बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा
अनुभव से मालूम करते रहो।। 3 क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को
मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर
कोई भी अपके आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के
अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साय अपके को समझे। 4 क्योंकि जैसे
हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगोंका एक ही सा काम नहीं। 5 वैसा
ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। 6 और
जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न बरदान
मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के
अनुसार भविष्यद्वाणी करे। 7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा
रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। 8 जो उपकेशक हो, वह
उपकेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह
उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे। 9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा
करो; भलाई मे लगे रहो। 10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो; परस्पर
आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। 11 प्रयत्न करने में आलसी न हो;
आत्क़िक उन्क़ाद में भरो रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। 12 आशा मे आनन्दित
रहो; क्लेश मे स्यिर रहो; प्रार्यना मे नित्य लगे रहो। 13 पवित्र लोगोंको जो कुछ

अवश्य हो, उस में उन की सहाथता करो; पहुनाई करने मे लगे रहो। 14 अपके
सतानेवालोंको आशीष दो; आशीष दो स्त्राप न दो। 15 आनन्द करनेवालोंके साय
आनन्द करो; और रोनेवालोंके साय रोओ। 16 आपस में एक सा मन रखो;
अभिमानी न हो; परन्तु दीनोंके साय संगति रखो; अपक्की दृष्टि में बुद्धिमान न
हो। 17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगोंके निकट भली हैं,
उन की चिन्ता किया करो। 18 जहां तक हो सके, तुम अपके भरसक सब
मनुष्योंके साय मेल मिलाप रखो। 19 हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु ोध
को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही
बदला दूंगा। 20 परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा
हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारोंका
ढेर लगाएगा। 21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो।।

रोमियो 13

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिक्कारनेियोंके अधीन रहे; क्योंकि कोई
अधिक्कारने ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिक्कारने हैं, वे
परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। 2 इस से जो कोई अधिक्कारने का विरोध करता है,
वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और साम्हना करनेवाले दण्ड
पाएंगे। 3 क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिथे डर का
कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और
उस की ओर से तेरी सराहना होगी; 4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिथे परमेश्वर का
सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योकि वह तलवार व्यर्थ लिथे हुए

नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके ोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को
दण्ड दे। 5 इसलिथे अधीन रहना न केवल उस ोध से परन्तु डर से अवश्य है,
वरन विवेक भी यही गवाही देता है। 6 इसलिथे कर भी दो, क्योंकि परमश्ेवर के
सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। 7 इसलिथे हर एक का ह? चुकाया
करो, जिस कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिस
से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो।। 8
आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदान न हो; क्योंकि जो
दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्या पूरी की है। 9 क्योंकि यह कि व्यभिचार न
करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को छोड़ और
कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपके पड़ोसी
से अपके समान प्र्रेम रख। 10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिथे प्रेम
रखना व्यवस्या को पूरा करना है।। 11 और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो,
इसलिथे कि अब तुम्हारे लिथे नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकिं
जिस समय हम ने विश्वास किया या, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार
निकट है। 12 रात बहुत बीन गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिथे हम
अन्धकार के कामोंको तज कर ज्योति के हिययार बान्ध लें। 13 जैसा दिन को
सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला ीड़ा, और पिय?ड़पन, न
व्यभिचार, और लुचपन में, और न फगड़े और डाह में। 14 बरन प्रभु यीशु मसीह
को पहिन लो, और शरीर

रोमियो 14

1 जो विश्वास के निर्बल है, उसे अपक्की संगति में ले लो; परन्तु उसी शंकाओं पर
विवाद करने के लिथे नहीं। 2 क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना
उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है। 3 और
खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर दोष न
लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। 4 तू कौन है जो दूसरे के सेवक
पर दोष लगाता है उसक स्थिर रहता या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध
रखता है, बरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता
है। 5 कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा
जानता है: हर एक अपके ही मन में निश्चय कर ले। 6 जो किसी दिन को मानता
है, वह प्रभु के लिथे मानता है: जो खाता है, वह प्रभु के लिथे खाता है, क्योंकि
परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जा नहीं खाता, वह प्रभु के लिथे नहीं खाता
और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। 7 क्योंकि हम में से न तो कोई पअने लिथे
जीता है, और न कोई अपके लिथे मरता है। 8 क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु
के लिथे जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिथे मरते हैं; सो हम जीएं या
मरें, हम प्रभु ही के हैं। 9 क्योंकि मसीह इसी लिथे मरा और जी भी उठा कि वह
मरे हुओं और जीवतों, दोनोंका प्रभु हो। 10 तू अपके भाई पर क्योंदोष लगाता है
या तू फिर क्योंअपके भाई को तुच्छ जानता है हम सब के सब परमेश्वर के न्याय
सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे। 11 क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन
की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर
को अंगीकार करेगा। 12 सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा
देगा।। 13 सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि

कोई अपके भाई के साम्हने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे। 14 मैं जानता
हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्‍चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपके आप से अशुद्ध
नहीं, परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके लिथे अशुद्ध है। 15 यदि तेरा
भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता:
जिस के लिथे मसीह मरा उस को तू अपके भोजन के द्वारा नाश न कर। 16 अब
तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए। 17 क्योंकि परमश्ेवर का राज्या
खानापीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है; 18 जो
पवित्रआत्क़ा से होता है और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह
परमेश्वर को भाता है और मनुष्योंमें ग्रहणयोग्य ठहरता है। 19 इसलिथे हम उन
बातोंका प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। 20 भोजन
के लिथे परमेश्वर का काम न बिगाड़: सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के
लिथे बुरा है, जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है। 21 भला तो यह है,
कि तू न मांस खाए, और न दाख रस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा
भाई ठोकर खाए। 22 तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपके ही मन
में रख: धन्य है वह, जो उस बात में, जिस वह ठीक समझता है, अपके आप को
दोषी नहीं ठहराता । 23 परन्तु जो सन्देह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर
चुका, क्योंकि वह निश्‍चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं,
वह पाप है।।

रोमियो 15

1 निदान हम बलवानोंको चाहिए, कि निर्बलोंकी निर्बलताओं को सहें; न कि

अपके आप को प्रसन्न करें। 2 हम में से हर एक अपके पड़ोसी को उस की भलाई
के लिथे सुधारने के निमाि प्रसन्न करे। 3 क्योंकि मसीह ने अपके आप को
प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकोंकी निन्दा मुझ पर आ
पड़ी। 4 जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिझा के लिथे लिखी गईं हैं
कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें। 5 और धीरज,
और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह बरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार
आपस में एक मन रहो। 6 ताकि तुम एक मन औश्र् एक मुंह होकर हमारे प्रभु
यीशु मसीह कि पिता परमेश्वर की बड़ाई करो। 7 इसलिथे, जैसा मसीह ने भी
परमेश्वर की महिमा के लिथे तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को
ग्रहण करो। 8 मैं कहता हूं, कि जो प्रतिज्ञाएं बापदादोंको दी गई यीं, उन्हें दृढ़
करने के लिथे मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिथे खतना किए
हुए लोगोंका सेवक बना। 9 और अन्यजाति भी दया के कारण परमेश्वर की बड़ाई
करें, जैसा लिखा है, कि इसलिथे मैं जाति जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे
नाम के भजन गांगा। 10 फिर कहा है, हे जाति जाति के सब लोगों, उस की प्रजा
के साय आनन्द करो। 11 और फिर हे जाति जाति के सब लागो, प्रभु की स्तुति
करो; और हे राज्य राज्य के सब लोगो; उसे सराहो। 12 और फिर यशायाह कहता
है, कि यिशै की एक जड़ प्रगट होगी, और अन्यजातियोंका हाकिम होने के लिथे
एक उठेगा, उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी। 13 सो परमेश्वर जो आशा का
दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे,
कि पवित्रआत्क़ा की सामर्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।। 14 हे मेरे भाइयो; मैं
आप भी तुम्हारे विषय में निश्‍चय जानता हूं, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे

और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को चिता सकते हो। 15 तौभी मैं ने
कहीं कहीं याद दिलाने के लिथे तुम्हें जो बहुत हियाव करके लिखा, यह उस
अनुग्रह के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। 16 कि मैं अन्याजातियोंके
लिथे मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक की नाईं
करूं; जिस से अन्यजातियोंका मानोंचढ़ाया जाना, पवित्र आत्क़ा से पवित्र बनकर
ग्रहण किया जाए। 17 सो उन बातोंके विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं,
मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूं। 18 क्योंकि उन बातोंको छोड़ मुझे और
किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियोंकी
अधीनता के लिथे वचन, और कर्म। 19 और चिन्होंऔर अदभुत कामोंकी सामर्थ
से, और पवित्र आत्क़ा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए : यहां तक कि मैं ने
यरूशलेम से लेकर चारोंओर इल्लुरिकुस तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा
प्रचार किया। 20 पर मेरे मन की उमंग यह है, कि जहां जहां मसीह का नाम नहीं
लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनां; ऐसा न हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं
पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।। 21 परन्तु जैसा
लिखा है, वैसा ही हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और
जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।। 22 इसी लिथे मैं तुम्हारे पास आने से बार
बार रूका रहा। 23 परन्तु अब मुझे इन देशोंमें और जगह नहीं रही, और बहुत
वर्षोंसे मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। 24 इसलिथे जब इसपानिया को
जांगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जांगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम
से भेंट करूं, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ
दूर आगे पहुंचा दो। 25 परन्तु अभी तो पवित्र लोगोंकी सेवा करने के लिथे

यरूशलेम को जाता हूं। 26 क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगोंको यह
अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगोंके कंगालोंके लिथे कुछ चन्दा करें। 27
अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उन की
आत्क़िक बातोंमें भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातोंमें उन की
सेवा करें। 28 सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे
पास होता हुआ इसपानिया को जांगा। 29 और मैं जानता हूं, कि जब मैं तुम्हारे
पास आंगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साय आंगा।। 30 और हे भाइयों; मैं यीशु
मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्क़ा के प्रेम का स्क़रण दिला कर, तुम
से बिनती करता हूं, कि मेरे लिथे परमेश्वर से प्रार्यना करने में मेरे साय मिलकर
लौलीन रहो। 31 कि मैं यहूदिया के अविश्वासिक्कों बचा रहूं, और मेरी वह सेवा
जो यरूशलेम के लिथे है, पवित्र लोगोंको भाए। 32 और मैं परमेश्वर की इच्छा से
तुम्हारे पास आनन्द के साय आकर तुम्हारे साय विश्रम पां। 33 शान्ति का
परमेश्वर तुम सब के साय रहे। आमीन।।

रोमियो 16

1 मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है,
बिनती करता हूं। 2 कि तुम जैसा कि पवित्र लोगोंको चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण
करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहाथता करो;
क्योंकि वह भी बहुतोंकी बरन मेरी भी उपकारिणी हुई है।। 3 प्रिसका और
अक्विला को भी यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। 4 उन्होंने मेरे प्राण के लिथे
अपना सिर दे रखा या और केवल मैं ही नहीं, बरन अन्यजातियोंकी सारी

कलीसियाएं भी उन का धन्यवाद करती हैं। 5 और उस कलीसिया को भी
नमस्कार जो उन के घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिथे आसिया
का पहिला फल है, नमस्कार। 6 मरियम को जिस ने तुम्हारे लिथे बहुत परिश्रम
किया, नमस्कार। 7 अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटम्बी हैं, और मेरे
साय कैद हुए थे, और प्रेरितोंमें नामी हैं, और मुझ से पहिले मसीह में हुए थे,
नमस्कार। 8 अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार। 9 उरबानुस
को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार। 10
अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को
नमस्कार। 11 मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरिकयुस के घराने के जो
लोग प्रभु में हैं, उन को नमस्कार। 12 त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम
करती हैं, नमस्कार। प्रिया पिरिसस को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया,
नमस्कार। 13 रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है, और उस की माता को जो मेरी
भी है, दोनोंको नमस्कार। 14 असुतिुस और फिलगोन और हिमस ओर पत्रुबास
और हिमांस और उन के साय के भाइयोंको नमस्कार। 15 फिलुलुगुस और
यूलिया और नेर्युस और उस की बहिन, और उलुम्पास और उन के साय के सब
पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो: तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से
नमस्कार।। 16 आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो तुम को मसीह की
सारी कलीस्याि◌ओं की ओर से नमस्कार। 17 अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती
करता हूं, कि जो लोग उस शिझा के विपक्कीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और
ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। 18
क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपके पेट की सेवा करते है;

और चिकनी चुमड़ी बातोंसे सीधे सादे मन के लोगोंको बहका देते हैं। 19 तुम्हारे
आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगोंमें फैल गई है; इसलिथे मैं तुम्हारे विषय में
आनन्द करता हूं; परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिथे बुद्धिमान,
परन्तु बुराई के लिथे भोले बने रहो। 20 शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे
पांवोंसे शीघ्र कुचलवा देगा।। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।
21 तीमुयियुस मेरे सहकर्मी का, और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे
कुटुम्बियोंका, तुम को नमस्कार। 22 मुझ पत्री के लिखनेवाले तिरितयुस का प्रभु
में तुम को नमस्कार। 23 गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई
करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार: 24 इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है, और
भाई क्वारतुस का, तुम को नमस्कार।।25 अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्यात
यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्यिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश
के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। 26 परन्तु अब प्रगट होकर सनातन
परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकोंके द्वारा सब जातियोंको बताया
गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं। 27 उसी अद्वैत बुद्धिमान
परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।।

1 कुरिन्थियों 1

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिथे
बुलाया गया और भाई सोस्यिनेस की ओर से। 2 परमेश्वर की उस कलीसिया के
नामि जो कुरिन्युस में है, अर्यात उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए,
और पवित्र होने के लिथे बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह

हमारे और अपके प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं। 3 हमारे पिता
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे।। 4 मैं तुम्हारे विषय में अपके परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूं, इसलिथे
कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ। 5 कि उस में होकर तुम
हर बात में अर्यात्‌ सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए। 6 कि मसीह की
गवाही तुम में पक्की निकली। 7 यहां तक कि किसी बरदान में तुम्हें घटी नहीं,
और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो। 8 वह
तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष
ठहरो। 9 परमेश्वर सच्चा है; जिस ने तुम को अपके पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की
संगति में बुलाया है।। 10 हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके
नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न
हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। 11 क्योंकि हे मेरे
भाइयों, खलोए के घराने के लोगोंने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में
फगड़े हो रहे हैं। 12 मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपके आप को
पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। 13 क्या
मसीह बट गया क्या पौलुस तुम्हारे लिथे क्रूस पर चढ़ाया गया या तुम्हें पौलुस के
नाम पर बपतिस्क़ा मिला 14 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि क्रिस्पुस
और गयुस को छोड़, मैं ने तुम में से किसी को भी बपतिस्क़ा नहीं दिया। 15 कहीं
ऐसा नह हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्क़ा मिला। 16 और मैं ने
स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्क़ा दिया; इन को छोड़, मैं नहीं जानता कि मैं
ने और किसी को बपतिस्क़ा दिया। 17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्क़ा देने को

नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दोंके ज्ञान के अनुसार
नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। 18 क्योंकि क्रूस की कथा नाश
होनेवालोंके निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालोंके निकट परमेश्वर की
सामर्थ है। 19 क्योकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानोंके ज्ञान को नाश करूंगा, और
समझदारोंकी समझ को तुच्छ कर दूंगा। 20 कहां रहा ज्ञानवान कहां रहा शास्त्री
कहां इस संसार का विवादी क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं
ठहराया 21 क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर
को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रकार की मूर्खता के द्वारा
विश्वास करनेवालोंको उद्धार दे। 22 यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान
की खोज में हैं। 23 परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं
जो यहूदियोंके निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियोंके निकट मूर्खता है।
24 परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उन के निकट मसीह
परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है। 25 क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता
मनुष्योंके ज्ञान से ज्ञानवान है; और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्योंके बल से बहुत
बलवान है।। 26 हे भाइयो, अपके बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के
अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।
27 परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खोंको चुन लिया है, कि ज्ञानवालोंको लज्ज़ित
करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलोंको चुन लिया है, कि बलवानोंको लज्ज़ित
करे। 28 और परमेश्वर ने जगत के नीचोंऔर तुच्छोंको, बरन जो हैं भी नहीं उन
को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए। 29 ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के
साम्हने घमण्ड न करने पाए। 30 परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो,

जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिथे ज्ञान ठहरा अर्यात धर्म, और पवित्रता, और
छुटकारा। 31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में
घमण्ड करे।।

1 कुरिन्थियों 2

1 और हे भाइयों, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो
वचन या ज्ञान की उत्तमता के साय नहीं आया। 2 क्योंकि मैं ने यह ठान लिया या,
कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी
बात को न जानूं। 3 और मैं निर्बलता और भय के साय, और बहुत यरयराता हुआ
तुम्हारे साय रहा। 4 ओर मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें
नहीं; परन्तु आत्क़ा और सामर्य का प्रमाण या। 5 इसलिथे कि तुम्हारा विश्वास
मनुष्योंके ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्य पर निर्भर हो।। 6 फिर भी
सिद्ध लोगोंमें हम ज्ञान सुनाते हैं: परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश
होनेवाले हाकिमोंका ज्ञान नहीं। 7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की
रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिथे ठहराया।
8 जिसे इस संसार के हाकिमोंमें से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो
तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। 9 परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं
देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं,
जो परमेश्वर ने अपके प्रेम रखनेवालोंके लिथे तैयार की हैं। 10 परन्तु परमेश्वर ने
उन को अपके आत्क़ा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्क़ा के द्वारा हम
पर प्रगट किया; क्योंकि आत्क़ा सब बातें, बरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता

है। 11 मनुष्योंमें से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता, केवल मनुष्य की बातें
भी कोई नहीं जानता, केवल परमेवर का आत्क़ा। 12 परन्तु हम ने संसार की
आत्क़ा नहीं, परन्तु वह आत्क़ा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन
बातोंको जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। 13 जिन को हम मनुष्योंके ज्ञान की
सिखाई हुई बातोंमें नहीं, परन्तु आत्क़ा की सिखाई हुई बातोंमें, आत्क़िक बातें
आत्क़िक बातोंसे मिला मिलाकर सुनाते हैं। 14 परनतु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर
के आत्क़ा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें
हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्क़िक रीति से होती
है। 15 आत्क़िक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं
जाता। 16 क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए परन्तु हम में
मसीह का मन है।।

1 कुरिन्थियों 3

1 हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्क़िक लोगोंसे;
परन्तु जैसे शारीरिक लोगोंसे, और उन से जो मसीह में बालक हैं। 2 में ने तुम्हें
दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उस को न खा सकते थे; बारन अब
तक भी नहीं खा सकते हो। 3 क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिथे, कि जब
तुम में डाह और फगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं और मनुष्य की रीति पर
नहीं चलते 4 इसलिथे कि जब एक कहता है, कि मैं पौलुस का हूं, और दूसरा कि
मैं अपुल्लोस का हूं, तो क्या तुम मनुष्य नहीं 5 अपुल्लोस क्या है और पौलुस
क्या केवल सेवक, जिन के द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने

दिया। 6 मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। 7 इसलिथे
न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।
8 लगानेवाला और सींचनेवाला दानोंएक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपके ही
परिश्रम के अनुसार अपक्की ही मजदूरी पाएगा। 9 क्योंकि हम परमेश्वर के
सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। 10 परमेश्वर के
उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री की नाईं
नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि
वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। 11 क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह
यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। 12 और यदि कोई इस नेव पर
सोना या चान्दी या बहुमोल पत्यर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है। 13
तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिथे कि
आग के साय प्रगट होगा: और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है 14
जिस का काम उस पर बना हुआ स्यिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। 15 और यदि
किसी का काम जल जाएगा, तो हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु
जलते जलते।। 16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और
परमेश्वर का आत्क़ा तुम में वास करता है 17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को
नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है,
और वह तुम हो। 18 कोई अपन आप को धोखा न दे: यदि तुम में से कोई इस
संसार में अपके आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए। 19
क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह
ज्ञानियोंको उन की चतुराई में फंसा देता है। 20 और फिर प्रभु ज्ञानियोंकी

चिन्ताओं को जानता है, कि व्यर्थ हैं। 21 इसलिथे मनुष्योंपर कोई घमण्ड न करे,
क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। 22 क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या
जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है,
23 और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।।

1 कुरिन्थियों 4

1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदोंके भण्डारी समझे। 2 फिर
यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले। 3 परन्तु मेरी
दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्योंका कोई न्यायी मुझे परखे,
बरन मैं आप ही अपके आप को नहीं परखता। 4 क्योंकि मेरा मन मुझे किसी
बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा
परखने वाला प्रभु है। 5 सो जब तक प्रभु न आए, समय से पहिले किसी बात का
न्याय न करो: वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनोंकी
मतियोंको प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।। 6 हे
भाइयों, मैं ने इन बातोंमें तुम्हारे लिथे अपक्की और अपुल्लोस की चर्चा, दृष्टान्त
की रीति पर की है, इसलिथे कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो, कि लिखे हुए से आगे
न बढ़ना, और एक के पझ में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना। 7 क्योंकि
तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से)
नहीं पाया: और जब कि तु ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्योंकरता है, कि
मानोंनही पाया 8 तुम तो तृप्त हो चुके; तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना
राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साय

राज्य करते। 9 मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्ररितोंको सब के बाद उन लोगोंकी
नाई ठहराया है, जिन की मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और
स्वर्गदूतोंऔर मनुष्योंके लिथे तमाशा ठहरे हैं। 10 हम मसीह के लिथे मूर्ख है;
परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो: हम निर्बल हैं परन्तु तुम बलवान हो: तुम
आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। 11 हम इस घड़ी तक भूखे-प्यासे और
नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते हैं; और अपके ही हाथोंके काम
करके परिश्रम करते हैं। 12 लोग बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं,
हम सहते हैं। 13 वे बदना करते हैं, हम बिनती करते हैं: हम आज तक जगत के
कूड़े और सब वस्तुओं की खुरचन की नाई ठहरे हैं।। 14 मैं तुम्हें लज्ज़ित करते
के लिथे थे बातें नहीं लिखता, परन्तु अपके प्रिय बालक जानकर उन्हें चितात हूं।
15 क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हजार भी होते, तौभी तुम्हारे
पिता बहुत से नहीं, इसलिथे कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा
पिता हुआ। 16 सो मैं तुम से बिनती करता हूं, कि मेरी सी चाल चलो। 17
इसलिथे मैं ने तीमुयियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है,
तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्क़रण कराएगा, जैसे
कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपकेश करता हूं। 18 कितने तो उसे फूल
गए हैं, मानोंमैं तुम्हारे पास आने ही का नहीं। 19 परन्तु प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे
पास शीघ्र ही आऊंगा, और उन फूले हुओं की बातोंको नहीं, परन्तु उन की सामर्य
को जान लूंगा। 20 क्योंकि परमश्ेवर का राज्य बातोंमें नहीं, परन्तु सामर्य में है।
21 तुम क्या चाहते हो क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं या प्रेम और नम्रता
की आत्क़ा के साय

1 कुरिन्थियों 5

1 यहां तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है, बरन ऐसा व्यभिचार
जो अन्यजातियोंमें भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपके पिता की पत्नी को
रखता है। 2 और तुम शोक तो नहीं करते, जिस से ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे
बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो। 3 मैं तो शरीर के भाव से दूर
या, परन्तु आत्क़ा के भाव से तुम्हारे साय होकर, मानो उपस्यिति ही दशा में ऐसे
काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं। 4 कि जब तुम, और मेरी
आत्क़ा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्य के साय इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु
यीशु के नाम से। 5 शरीर के विनाश के लिथे शैतान को सौंपा जाए, ताकि उस की
आत्क़ा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। 6 तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं;
क्या तुम नहीं जानते, कि योड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता
है। 7 पुराना खमीर निकाल कर, अपके आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ
आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है,
बलिदान हुआ है। 8 सो आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर
से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की
अखमीरी रोटी से।। 9 मैं ने अपक्की पत्री में तुम्हें लिखा है, कि व्यभिचारियोंकी
संगति न करना। 10 यह नहीं, कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या
लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूत्तिपूजकोंकी संगति न करो; क्योंकि इस
दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। 11 मेरा कहना यह है; कि
यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूत्तिपूजक, या गाली
देनेवाला, या पिय?ड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उस की संगति मत करना;

बरन ऐसे मनुष्य के साय खाना भी न खाना। 12 क्योंकि मुझे बाहरवालोंका
न्याय करने से क्या काम क्या तुम भीतरवालोंका न्याय नहीं करते 13 परन्तु
बाहरवालोंका न्याय परमेश्वर करता है: इसलिथे उस कुकर्मी को अपके बीच में से
निकाल दो।।

1 कुरिन्थियों 6

1 क्या तुम में से किसी को यह हियाव है, कि जब दूसरे के साय फगड़ा हो, तो
फैसले के लिथे अधिमिर्योंके पास जाए; और पवित्र लागोंके पास न जाए 2 क्या
तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे सो जब तुम्हें जगत का
न्याय करना हे, तो क्या तुम छोटे से छोटे फगड़ोंका भी निर्णय करने के योग्य
नहीं 3 क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदूतोंका न्याय करेंगे तो क्या सांसारिक
बातोंका निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं
समझे जाते हैं 4 सो यदि तुम्हें सांसारिक बातोंका निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं
को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं 5 मैं तुम्हें लज्ज़ित करने
के लिथे यह कहता हूं: क्या सचमुच तुम में से एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो
अपके भाइयोंका निर्णय कर सके 6 बरन भाई भाई में मुकद्दमा होता है, और वह
भी अविश्वासियोंके साम्हने। 7 परन्तु सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है, कि
आपस में मुकद्दमा करते हो: बरन अन्याय क्योंनहीं सहते अपक्की हानि
क्योंनहीं सहते 8 बरन अन्याय करते और हानि पहुंचाते हो, और वह भी
भाइयोंको। 9 क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के
वारिस न होंगे धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूत्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न

लुच्चे, न पुरूषगामी। 10 न चोर, न लोभी, न पियऽ्ड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर
करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। 11 और तुम में से कितने ऐसे ही थे,
परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्क़ा से धोए
गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।। 12 सब वस्तुएं मेरे लिथे उचित तो हैं,
परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं, सब वस्तुएं मेरे लिथे उचित हैं, परन्तु मैं किसी
बात के आधीन न हूंगा। 13 भोजन पेट के लिथे, और पेट भोजन के लिथे है,
परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनोंको नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार
के लिथे नहीं, बरन प्रभु के लिथे; और प्रभु देह के लिथे है। 14 और परमेश्वर ने
अपक्की सामर्थ से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा। 15 क्या तुम नहीं
जानते, कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं सो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें
वेश्या के अंग बनाऊं कदापि नहीं। 16 क्या तुम नहीं जानते, कि जो कोई वेश्या से
संगति करता है, वह उसके साय एक तन हो जाता है क्योंकि वह कहता है, कि वे
दोनोंएक तन होंगे। 17 और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साय एक
आत्क़ा हो जाता है। 18 व्यभिचार से बचे रहो: जितने और पाप मनुष्य करता है,
वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपक्की ही देह के विरूद्ध पाप
करता है। 19 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्क़ा का मन्दिर है; जो
तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपके नहीं
हो 20 कयोंकि दाम देकर मोल लिथे गए हो, इसलिथे अपक्की देह के द्वारा
परमेश्वर की महिमा करो।।

1 कुरिन्थियों 7

1 उन बातोंके विषय में जो तुम ने लिखीं, यह अच्छा है, कि पुरूष स्त्री को न छुए।
2 परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरूष की पत्नी, और हर एक सत्री का पति
हो। 3 पति अपक्की पत्नी का ह? पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपके पति का।
4 पत्नी को अपक्की देह पर अधिक्कारने नहीं पर उसके पति का अधिक्कारने है;
वैसे ही पति को भी अपक्की देह पर अधिक्कारने नहीं, परन्तु पत्नी को। 5 तुम
एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से
कि प्रार्यना के लिथे अवकाश मिले, और फिर एक साय रहो, ऐसा न हो, कि
तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे। 6 परन्तु मैं जो यह कहता हूं वह
अनुमति है न कि आज्ञा। 7 मैं यह चाहता हूं, कि जैसा मैं हूं, वैसा ही सब मनुष्य
हों; परन्तु हर एक को परमेश्वर की ओर से विशेष विशेष बरदान मिले हैं; किसी
को किसी प्रकार का, और किसी को किसी और प्रकार का।। 8 परन्तु मैं
अविवाहितोंऔर विधवाओं के विषय में कहता हूं, कि उन के लिथे ऐसा ही रहना
अच्छा है, जैसा मैं हूं। 9 परन्तु यदि वे संयम न कर सकें, तो विवाह करें; क्योंकि
विवाह करना कामतुर रहने से भला है। 10 जिन का ब्याह हो गया है, उन को मैं
नहीं, बरन प्रभु आज्ञा देता है, कि पत्नी अपके पति से अलग न हो। 11 (और यदि
अलग भी हो जाए, तो बिन दूसरा ब्याह किए रहे; या अपके पति से फिर मेल कर
ले) और न पति अपक्की पत्नी को छोड़े। 12 दूसरें से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही
कहता हूं, यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साय रहते से
प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े। 13 और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो,
और उसके साय रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े। 14 क्योंकि ऐसा पति
जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी

जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे
लड़केबालें अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं। 15 परन्तु जो पुरूष विश्वास नहीं
रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग होने दो, ऐसी दशा में कोई भाई या बहिन
बन्धन में नहीं; परन्तु परमेश्वर ने तो हमें मेल मिलाप के लिथे बुलाया है। 16
क्योंकि हे स्त्री, तू क्या जानती है, कि तुम अपके पति का उद्धार करा ले और हे
पुरूष, तू क्या जानता है कि तू अपक्की पत्नी का उद्धार करा ले 17 पर जैसा प्रभु
ने हर एक को बांटा है, और परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है; वैसा ही वह चले:
और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही ठहराताह हूं। 18 जो खतना किया हुअ
बुलाया गया हो, वह खतनारिहत न बने: जो खतनारिहत बुलाया गया हो, वह
खतना न कराए। 19 न खतना कुछ है, और न खतनारिहत परन्तु परमेश्वर की
आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है। 20 हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया
हो, उसी में रहे। 21 यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर;
परन्तु यदि तू स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर। 22 क्योंकि जो दास की दशा
में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है: और वैसे ही जो
स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है। 23 तुम दाम देकर
मोल लिथे गए हो, मनुष्योंके दास न बनो। 24 हे भाइयो, जो कोई जिस दशा में
बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर के साय रहे।। 25 कुंवारियोंके विषय में प्रभु
की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु विश्वासयोग्य होने के लिथे जैसी दया प्रभु
ने मुझ पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूं। 26 सो मेरी समझ में यह
अच्छा है, कि आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे। 27 यदि तेरे
पत्नी है, तो उस से अलग होने का यत्न न कर: और यदि तेरे पत्नी नहीं, तो

पत्नी की खोज न कर: 28 परन्तु यदि तू ब्याह भी करे, तो पाप नहीं; और यदि
कुंवारी ब्याही जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसोंको शारीरिक दुख होगा, और मैं
बचाना चाहता हूं। 29 हे भाइयो, मैं यह कहता हूं, कि समय कम किया गया है,
इसलिथे चाहिए कि जिन के पत्नी हों, वे ऐसे होंमानो उन के पत्नी नहीं। 30 और
रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द
नहीं करते; और मोल लेनेवाले एसे हों, कि मानो उन के पास कुछ है नहीं। 31 और
इस संसार के बरतनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हो लें; क्योंकि इस संसार की
रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं। 32 सो मैं यह चाहता हूं, कि तुम्हें चिन्ता न
हो: अविवाहित पुरूष प्रभु की बातोंकी चिन्ता में रहता है, कि प्रभु को क्योंकर
प्रसन्न रखे। 33 परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातोंकी चिन्ता में रहता है,
कि अपक्की पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे। 34 विवाहिता और अविवाहिता
में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है, कि वह देह और आत्क़ा
दोनोंमें पवित्र हो, परन्तु विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती है, कि अपके पति
को प्रसन्न रखे। 35 यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिथे कहता हूं, न कि तुम्हें
फंसाने के लिथे, बरन इसलिथे कि जैसा सोहता है, वैसा ही किया जाए; कि तुम
एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो। 36 और यदि कोई यह समझे, कि मैं
अपक्की उस कुंवारी का ह? मान रहा हूं, जिस की जवानी ढल चक्की है, और
प्रयोजन भी होए, तो जैसा चाहे, वैसा करे, इस में पाप नहीं, वह उसका ब्याह होने
दे। 37 परन्तु जो मन में दृढ़ रहता है, और उस को प्रयोजन न हो, बरन अपक्की
इच्छा पूरी करने में अधिक्कारने रखता हो, और अपके मन में यह बात ठान ली
हो, कि मैं अपक्की कुंवारी लड़की को बिन ब्याही रखूंगा, वह अच्छा करता है। 38

सो जो अपक्की कुंवारी का ब्याह कर देता है, वह अच्छा करता है और जो ब्याह
नहीं कर देता, वह और भी अच्छा करता है। 39 जब तक किसी स्त्री का पति
जीवित रहता है, तब तक वह उस से बन्धी हुई है, परन्तु जब उसका पति मर
जाए, तो जिस से चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु में। 40 परनतु
जेसी है यदि वैसी ही रहे, तो मेरे विचार में और भी धन्य है, और मैं समझता हूं,
कि परमेश्वर का आत्क़ा मुझ में भी है।।

1 कुरिन्थियों 8

1 अब मूरतोंके साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में हम जानते हैं, कि हम
सब को ज्ञान है: ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। 2
यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूं, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक
नहीं जानता। 3 परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो उसे परमेश्वर
पहिचानता है। 4 सो मूरतोंके साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में
हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई
परमेश्वर नहीं। 5 यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं,
(जैसा कि बहुत से ईश्वर ओर बहुत से प्रभु हैं)। 6 तौभी हमारे निकट तो एक ही
परमेश्वर है: अर्यात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिथे हैं,
और एक ही प्रभु है, अर्यात यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुई, और हम भी
उसी के द्वारा हैं। 7 परन्तु सब को यह ज्ञान नही; परन्तु कितने तो अब तक मूरत
को कुछ समझने के कारण मूरतोंके साम्हने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर
खाते हैं, और उन का विवेक निर्बल होकर अशुद्ध होता है। 8 भेजन हमें परमेश्वर

के निकट नहीं पहुंचाता, यदि हम न खांए, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि
खाएं, तो कुछ लाभ नहीं। 9 परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह
स्वतंत्रता कहीं निर्बलोंके लिथे ठोकर का कारण हो जाए। 10 क्योंकि यदि कोई
तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो
क्या उसके विवेक में मूरत के साम्हने बलि की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो
जाएगा। 11 इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के लिथे मसीह
मरा नाश हो जाएगा। 12 सो भाइयोंका अपराध करने से ओर उन के निर्बल
विवेक को चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते हो। 13 इस कारण यदि
भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा, न
हो कि मैं अपके भाई के ठोकर का कारण बनूं।

1 कुरिन्थियों 9

1 क्या मैं स्वतंत्र नहीं क्या मैं प्ररित नहीं क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है,
नहीं देखा, क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं 2 यदि मैं औरोंके लिथे प्रेरित नहीं,
तौभी तुम्हारे लिथे तो हूं; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो। 3 जो मुझे
जांचते हैं, उन के लिथे यीह मेरा उत्तर है। 4 क्या हमें खाने-पीने का अधिक्कारने
नहीं 5 क्या हमें यह अधिक्कारने नहीं, कि किसी मसीही बहिन को ब्याह कर के
लिए फिरें, जैसा और प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं 6 या केवल मुझे
और बरनबास को अधिक्कारने नहीं कि कमाई करना छोड़ें। 7 कौन कभी
अपक्की गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है: कौन दाख की बारी लगाकर
उसका फल नहीं खाता कौन भेड़ोंकी रखवाली करके उन का दूध नहीं पीता 8 क्या

मैं थे बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूं 9 क्या व्यवस्या भी यही नहीं कहती
क्योंकि मूसा की व्यवस्या में लिखा है कि दांए में चलते हुए बैल का मुंह न
बान्धना: क्या परमेश्वर बैलोंही की चिन्ता करता है या विशेष करके हमारे लिथे
कहता है। 10 हां, हमारे लिथे ही लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि जातनेवाला
आशा से जोते, और दावनेवाला भागी होने की आशा से दावनी करे। 11 सो जब
कि हम ने तुम्हारे लिथे आत्क़िक वस्तुएं बोई, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि
तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें। 12 जब औरोंका तुम पर यह
अधिक्कारने है, तो क्या हमारा इस से अधिक न होगा परन्तु हम यह
अधिक्कारने काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह
के सुसमाचार की कुछ रोक न हो। 13 क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र वस्तुओं
की सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी
के साय भागी होते हैं 14 इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार
सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो। 15 परन्तु मैं इन में से कोई भी बात
काम में न लाया, और मैं ने तो थे बातें इसलिथे नहीं लिखीं, कि मेरे लिथे ऐसा
किया जाए, क्योंकि इस से तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई मेरा घमण्ड व्यर्य
ठहराए। 16 और यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि
यह तो मेरे लिथे अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाथ।
17 क्योंकि यदि अपक्की इच्छा से यह करता हूं, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और
यदि अपक्की इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है। 18 सो
मेरी कौन सी मजदूरी है यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार
सेंत मेंत कर दूं; यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिक्कारने है, उस को मैं

पूरी रीति से काम में लाऊं। 19 क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपके
आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगोंको खींच लाऊं। 20 मैं
यहूदियोंके लिथे यहूदी बना कि यहूदियोंको खींच लाऊं, जो लोग व्यवस्या के
आधीन हैं उन के लिथे मैं व्यवस्या के आधीन न होने पर भी व्यवस्या के आधीन
बना, कि उन्हें जो व्यवस्या के आधीन हैं, खींच लाऊं। 21 व्यवस्याहीनोंके लिथे मैं
(जो परमेश्वर की व्यवस्या से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्या के आधीन हूं)
व्यवस्याहीन सा बना, कि व्यवस्याहीनोंको खींच लाऊं। 22 मैं निर्बलोंके लिथे
निर्बल सा बना, कि निर्बलोंको खींच लाऊं, मैं सब मनुष्योंके लिथे सब कुछ बना
हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। 23 और मैं सब कुछ
सुसमाचार के लिथे करता हूं, कि औरोंके साय उसका भागी हो जाऊं। 24 क्या तुम
नहीं जानते, कि दौड़ में तो छौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है तुम
वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। 25 और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है,
वे तो एक मुरफानेवाले मुकुट को पाने के लिथे यह सब करते हैं, परन्तु हम तो
उस मुकुट के लिथे करते हैं, जो मुरफाने का नहीं। 26 इसलिथे मैं तो इसी रीति से
दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मु?ोंसे लड़ता हूं, परन्तु
उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। 27 परनतु मैं अपक्की देह को
मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरोंको प्रचार करके, मैं आप
ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।।

1 कुरिन्थियों 10

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब

बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। 2 और
सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपितिस्क़ा लिया। 3 और सब ने एक ही
आत्क़िक भोजन किया। 4 और सब ने एक ही आत्क़िक जल पीया, क्योंकि वे
उस आत्क़िक चटान से पीते थे, जो उन के साय-साय चलती यी; और वह चटान
मसीह या। 5 परन्तु परमेश्वर उन में के बहुतेरोंसे प्रसन्न न हुआ, इसलिथे वे
जंगल में ढेर हो गए। 6 थे बातें हमारे लिथे दृष्टान्त ठहरी, कि जैसे उन्होंने
लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें। 7 और न तुम मूरत
पूजनेवाले बनों; जैसे कि उन में से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग
खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे। 8 और न हम व्यभिचार करें; जैसा उन में
से कितनोंने किया: एक दिन में तेईस हजार मर गथे। 9 और न हम प्रभु को
परखें; जैसा उन में से कितनोंने किया, और सांपोंके द्वारा नाश किए गए। 10 और
नतुम कुड़कुड़ाए, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले
के द्वारा नाश किए गए। 11 परन्तु थे सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति
पर भी: और वे हमारी चितावनी के लिथे जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं
लिखी गईं हैं। 12 इसलिथे जो समझता है, कि मैं स्यिर हूं, वह चौकस रहे; कि
कहीं गिर न पकें। 13 तुम किसी ऐसी पक्कीझा में नहीं पके, जो मनुष्य के सहने
से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्य से बाहर पक्कीझा में न पड़ने
देगा, बरन पक्कीझा के साय निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।। 14 इस
कारण, हे मेरे प्यारोंमूत्तिर् पूजा से बचे रहो। 15 मैं बुद्धिमान जानकर, तुम से
कहता हूं: जो मैं कहता हूं, उसे तुम परखो। 16 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर
हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं वह रोटी जिसे

हम तोड़ते हैं, क्या मसीह की देह की सहभागिता नहीं 17 इसलिथे, कि एक ही
रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी
होते हैं। 18 जो शरीर के भाव से इस्त्रएली हैं, उन को देखो: क्या बलिदानोंके
खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं 19 फिर मैं क्या कहता हूं क्या यह कि मूरत का
बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है 20 नहीं, बरन यह, कि अन्यजाति जो बलिदान
करते हैं, वे परमेश्वर के लिथे नहीं, परन्तु दुष्टात्क़ाओं के लिथे बलिदान करते हैं:
और मैं नहीं चाहता, कि तुम दुष्टात्क़ाओं के सहभागी हो। 21 तुम प्रभु के कटोरे,
और दुष्टात्क़ाओं के कटोरे दानोंमें से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और
दुष्टात्क़ाओं की मेज दानोंके साफी नहीं हो सकते। 22 क्या हम प्रभु को रिस
दिलाते हैं क्या हम उस से शक्तिमान हैं 23 सब वस्तुएं मेरे लिथे उचित तो हैं,
परन्तु सब लाभ की नहीं: सब वस्तुएं मेरे लिथे उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं
से उन्नित नहीं। 24 कोई अपक्की ही भलाई को न ढूंढे, बरन औरोंकी। 25 जो
कुछ कस्साइयोंके यहां बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो।
26 क्योकि पृय्वी और उसकी भरपूरी प्रभु की है। 27 और यदि अविश्वायथें में से
कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए
वही खाओ: और विवेक के कारण कुछ न पूछो। 28 परन्तु यदि कोई तुम से कहे,
यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है, तो उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक
के कारण न खाओ। 29 मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का।
भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्योंपरखी जाए: 30 यदि मैं धन्यवाद
करके साफी होता हूं, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूं, उसके कारण मेरी
बदनामीं क्योंहोती है 31 सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब

कुछ परमेश्वर की महीमा के लिथे करो। 32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न
परमेश्वर की कलीसिया के लिथे ठोकर का कारण बनो। 33 जैसा मैं भी सब
बातोंमें सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं, परन्तु बहुतोंका लाभ ढूंढता हूं,
कि वे उद्धार पाएं।

1 कुरिन्थियों 11

1 तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।। 2 हे भाइयों, मैं
तुम्हें सराहता हूं, कि सब बातोंमें तुम मुझे स्क़रण करते हो: और जो व्यवहार मैं
ने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो। 3 सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान
लो, कि हर एक पुरूष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरूष है: और मसीह का
सिर परमेश्वर है। 4 जो पुरूष सिर ढांके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह
अपके सिर का अपमान करता है। 5 परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या
भविष्यद्ववाणी करती है, वह अपके सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी
होने के बराबर है। 6 यदि स्त्री आढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के
लिथे बाल कटाना या मुण्डाना लज्ज़ा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े। 7 हां पुरूष को
अपना सिर ढांकना उचित हनीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है;
परन्तु स्त्री पुरूष की महिमा! 8 क्योंकि पुरूष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री से हुई
है। 9 और पुरूष स्त्री के लिथे नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरूष के लिथे सिरजी
गई है। 10 इसीलिथे स्वर्गदूतोंके कारण स्त्री को उचित है, कि अधिक्कारने अपके
सिर पर रखे। 11 तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरूष और न पुरूष बिना स्त्री के है।
12 क्योंकि जैसे स्त्री पुरूष से है, वैसे ही पुरूष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं

परमेश्वर के द्वारा हैं। 13 तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर
परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहना है 14 क्या स्वाभिविक रीति से भी तुम नहीं
जानते, कि यदि पुरूष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिथे अपमान है। 15 परन्तु यदि
स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिथे शोभा है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिथे
दिए गए हैं। 16 परनतु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने कि न हमारी
और न परमेश्वर की कलीसियोंकी ऐसी रीति है।। 17 परनतु यह आज्ञा देते हुए, मैं
तुम्हें नहीं सराहता, इसलिथे कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि
होती है। 18 क्योंकि पहिले तो मैं यह सुनता हूं, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे
हाते हो, तो तुम में फूट होती है और मैं कुछ कुछ प्रतीति भी करता हूं। 19 क्यांकि
विधर्म भी तुम में अवश्य होंगे, इसलिथे कि जो लागे तुम में खरे निकले हैं, वे
प्रगट हो जांए। 20 सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने
के लिथे नहीं। 21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहिले अपना भोज खा लेता
है, सो कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है। 22 क्या खाने पीने
के लिथे तुम्हारे घर नहीं या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और
जिन के पास नहीं है उन्हें लज्ज़ित करते हो मैं तुम से क्या कहूं क्या इस बात में
तुम्हारी प्रशंसा करूं मैं प्रशंसा नहीं करता। 23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से
पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया
रोटी ली। 24 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो
तुम्हारे लिथे है: मेरे स्क़रण के लिथे यही किया करो। 25 इसी रीति से उस ने
बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है:
जब कभी पीओ, तो मेरे स्क़रण के लिथे यही किया करो। 26 क्योंकि जब कभी

तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक
वह न आए, प्रचार करते हो। 27 इसलिथे जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी
खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा।
28 इसलिथे मनुष्य अपके आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से
खाए, और इस कटोरे में से पीए। 29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को
न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपके ऊपर दण्ड लाता है। 30 इसी कारण
तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। 31 यदि हम
अपके आप में जांचते, तो दण्ड न पाते। 32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी
ताड़ना करता है इसलिथे कि हम संसार के साय दोषी न ठहरें। 33 इसलिथे, हे मेरे
भाइयों, जब तुम खाने के लिथे इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिथे ठहरा करो।
34 यदि कोई भूखा हो, तो अपके घर में खा ले जिस से तुम्हार इकट्ठा होना दण्ड
का कारण न हो: और शेष बातोंको मैं आकर ठीक कर दूंगा।।

1 कुरिन्थियों 12

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्क़िक बरदानोंके विषय में अज्ञात रहो। 2
तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतोंके पीछे जेसे चलाए
जाते थे वैसे चलते थे। 3 इसलिथे मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर
की आत्क़ा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्त्रापित है; और न
कोई पवित्र आत्क़ा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।। 4 बरदान तो कई
प्रकार के हैं, परन्तु आत्क़ा एक ही है। 5 और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु
प्रभु एक ही है। 6 और प्रभावशाली कार्य्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमश्ेवर एक

ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। 7 किन्तु सब के लाभ
पहुंचाने के लिथे हर एक को आत्क़ा का प्रकाश दिया जाता है। 8 क्योंकि एक को
आत्क़ा के द्वारा बुिद्व की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्क़ा के अनुसार
ज्ञान की बातें। 9 और किसी को उसी आत्क़ा से विश्वास; और किसी को उसी एक
आत्क़ा से चंगा करने का बरदान दिया जाता है। 10 फिर किसी को सामर्थ के
काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को अनेक
प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। 11 परन्तु थे सब
प्रभावशाली कार्य्य वही एक आत्क़ा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट
देता है।। 12 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और
उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी
प्रकार मसीह भी है। 13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास,
क्या स्वतंत्र एक ही आत्क़ा के द्वारा एक देह होने के लिथे बपतिस्क़ा लिया, और
हम एक को एक ही आत्क़ा पिलाया गया। 14 इसलिथे कि देह में एक ही अंग
नहीं, परन्तु बहुत से हैं। 15 यदि पांव कहे: कि मैं हाथ नहीं, इसलिथे देह का नहीं,
तो क्या वह इस कारण देह का नहीं 16 और यदि कान कहे; कि मैं आंख का नहीं,
इसलिथे देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं। 17 यदि सारी देह
आंख की होती तो सुनना कहां से होता यदि सारी देह कान ही होती तो सूंघना कहां
होता 18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपक्की इच्छा के अनुसार एक एक
करके देह में रखा है। 19 यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती 20
परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है। 21 आंख हाथ से नहीं कह
सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, और न सिर पांवोंसे कह सकता है, कि मुझे

तुम्हारा प्रयोजन नहीं। 22 परन्तु देह के वे अंग जो औरोंसे निर्बल देख पड़ते हैं,
बहुत ही आवश्यक हैं। 23 और देह के जिन अंगो को हम आदर के योग्य नहीं
समझते हैं उन्ही को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी
बहुत शोभायमान हो जाते हैं। 24 फिर भी हमारे शोभायमान अंगो को इस का
प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी
यी उसी को और भी बहुत आदर हो। 25 ताकि देह में फूट न पके, परन्तु अंग एक
दूसरे की बराबर चिन्ता करें। 26 इसलिथे यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब
अंग उसके साय दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साय
सब अंग आनन्द मनाते हैं। 27 इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो,
और अलग अलग उसके अंग हो। 28 और परमश्ेवर ने कलीसिया में अलग
अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रयम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिझक,
फिर सामर्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले,
और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बालनेवाले। 29 क्या सब प्रेरित हैं क्या
सब भविष्यद्वक्ता हैं क्या सब उपकेशक हैं क्या सब सामर्य के काम करनेवाले हैं
30 क्या सब को चंगा करने का बरदान मिला है क्या सब नाना प्रकार की भाषा
बोलते हैं 31 क्या सब अनुवाद करते हैं तुम बड़ी से बड़ी बरदानोंकी धुन में रहो!
परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।।

1 कुरिन्थियों 13

1 यदि मैं मनुष्यों, और सवर्गदूतोंकी बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं
ठनठनाता हुआ पीतल, और फंफनाती हुई फांफ हूं। 2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी

कर सकूं, और सब भेदोंऔर सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक
पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ोंको हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। 3
और यदि मैं अपक्की सम्पूर्ण संपत्ति कंगालोंको खिला दूं, या अपक्की देह जलाने
के लिथे दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। 4 प्रेम धीरजवन्त है,
और कृपाल है; प्रेम डाल नहीं करता; प्रेम अपक्की बड़ाई नहीं करता, और फूलता
नहीं। 5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपक्की भलाई नहीं चाहता, फुंफलाता
नहीं, बुरा नहीं मानता। 6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सन्य से
आनन्दित होता है। 7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातोंकी प्रतीति करता है,
सब बातोंकी आशा रखता है, सब बातोंमें धीरज धरता है। 8 प्रेम कभी टलता नहीं;
भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो
मिट जाएगा। 9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परन्तु जब सवर्सिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा। 11 जब मैं बालक या, तो
मैं बालकोंकी नाईं बोलता या, बालकोंका सा मन या बालकोंकी सी समझ यी;
परन्तु सियाना हो गया, तो बालकोंकी बातें छोड़ दी। 12 अब हमें दर्पण में धुंधला
सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने साम्हने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान
अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया
हूं। 13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनोंस्याई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम
है।

1 कुरिन्थियों 14

1 प्रेम का अनुकरण करो, और आत्क़िक बरदानोंकी भी धुन में रहो विशेष करके

यह, कि भविष्यद्वाणी करो। 2 क्योंकि जो अन्यभाषा में बातें करता है; वह
मनुष्योंसे नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिथे कि उस की कोई नहीं
समझता; क्योंकि वह भेट की बातें आत्क़ा में होकर बोलता है। 3 परन्तु जो
भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्योंसे उन्नति, और उपकेश, और शान्ति की बातें
कहता है। 4 जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपक्की ही उन्नति करता है;
परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। 5 मैं
चाहता हूं, कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता
हूं कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की
उन्नति के लिथे अनुवाद न करे तो भविष्यद्ववाणी करनेवाला उस से बढ़कर है। 6
इसलिथे हे भाइयों, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्यान्य भाषा में बातें करूं, और
प्रकाश, या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपकेश की बातें तुम से न कहूं, तो मुझ से
तुम्हें क्या लाभ होगा 7 इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएं भी, जिन से ध्वनि
निकलती है जेसे बांसुरी, या बीन, यदि उन के स्वरोंमें भेद न हो तो जो फूंका या
बजाया जाता है, वह क्योंकर पहिचाना जाएगा 8 और यदि तुरही का शब्द साफ
न हो तो कौन लड़ाई के लिथे तैयारी करेगा 9 ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ
बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह क्योंकर समझा जाएगा तुम तो हवा से
बातें करनेवाले ठहरोगे। 10 जगत में कितने की प्रकार की भाषाएं क्योंन हों,
परन्तु उन में से कोई भी बिना अर्थ की न होगी। 11 इसलिथे यदि मैं किसी भाषा
का अर्थ न समझूं, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूंगा; और बोलनेवाला
मेरे दृष्टि में परदेशी ठहरेगा। 12 इसलिथे तुम भी जब आत्क़िक बरदानोंकी धुन
में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे बरदानोंकी उन्नति से कलीसिया की

उन्नति हो। 13 इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे, कि उसका
अनुवाद भी कर सके। 14 इसलिथे यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी
आत्क़ा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। 15 सो क्या करना
चाहिए मैं आत्क़ा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्क़ा
से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा। 16 नहीं तो यदि तू आत्क़ा ही से धन्यवाद
करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकि कहेगा इसलिथे कि वह
तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है 17 तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है,
परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती। 18 मैं अपके परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं,
कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं। 19 परन्तु कलीसिया में
अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है,
कि औरोंके सिखाने के लिथे बुद्धि से पांच ही बातें कहूं।। 20 हे भाइयो, तुम समझ
में बालक न बनो: तौभी बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बानो।
21 व्यवस्या में लिखा है, कि प्रभु कहता है; मैं अन्य भाषा बोलनेवालोंके द्वारा,
और पराए मुख के द्वारा इन लोगोंसे बात करूंगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे। 22
इसलिथे अन्यान्य भाषाएं विश्वासियोंके लिथे नहीं, परन्तु अविश्वासियोंके लिथे
चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासीयोंके लिथे नहीं परन्तु विश्वासियोंके लिथे
चिन्ह हैं। 23 सो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब
अन्यान्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं तो क्या वे
तुम्हें पागल न कहेंगे 24 परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई
अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और
परख लेंगे। 25 और उसके मन के भेअ प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल

गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर
तुम्हारे बीच में है। 26 इसलिथे हे भाइयो क्या करना चाहिए जब तुम इकट्ठे होते
हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपकेश, या अन्यभाषा, या प्रकाश, या
अन्यभाषा का अर्य बताना रहता है: सब कुछ आत्क़िक उन्नति के लिथे होना
चाहिए। 27 यदि अन्य भाषा में बातें करनीं हों, तो दो दो, या बहुत हो तो तीन
तीन जन बारी बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। 28 परन्तु यदि अनुवाद
करनेवाला न हो, तो अन्यभाषा बालनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपके
मन से, और परमेश्वर से बातें करे। 29 भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और
शेष लोग उन के वचन को परखें। 30 परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ
ईश्वरीय प्रकाश हो, तो पहिला चुप हो जाए। 31 क्योंकि तुम सब एक एक करके
भविष्यद्वाणी कर सकते हो ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं। 32 और
भविष्यद्वक्ताओं की आत्क़ा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है। 33 क्थेंकि परमेश्वर
गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है; जैसा पवित्र लोगोंकी सब
कलीसियाओं में है।। 34 स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें
करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्या में लिखा
भी है। 35 और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपके अपके पति से पूछें,
क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्ज़ा की बात है। 36 क्योंपरमश्ेवर
का वचन तुम में से निकला या केवल तुम ही तक पहुंचा है 37 यदि कोई मनुष्य
अपके आप को भविष्यद्वक्ता या आत्क़िक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो
बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं। 38 परन्तु यदि कोई न जाने, तो न
जाने।। 39 सो हे भाइयों, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्यभाषा

बोलने से मना न करो। 40 पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।

1 कुरिन्थियों 15

1 हे भाइयों, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम
ने अंगीकार भी किया या और जिस में तुम स्यिर भी हो। 2 उसी के द्वारा तुम्हारा
उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया या स्क़रण रखते
हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्य हुआ। 3 इसी कारण मैं ने सब से पहिले
तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची यी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार
यीशु मसीह हमारे पापोंके लिथे मर गया। 4 ओर गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के
अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। 5 और कैफा को तब बारहोंको दिलाई दिया। 6
फिर पांच सौ से अधिक भाइयोंको एक साय दिखाई दिया, जिन में से बहुतेरे अब
तक वर्तमान हैं पर कितने सो गए। 7 फिर याकूब को दिखाई दिया तक सब
प्रेरितोंको दिखाई दिया। 8 और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो
अधूरे दिनोंका जन्क़ा हूं। 9 क्योंकि मैं प्रिरितोंमें सब से छोटा हूं, बरन प्रिरित
कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया को सताया या।
10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो
मुझ पर हुआ, वह व्यर्य नहीं हुआद्ध परनतु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी
किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर
या। 11 सो चाहे मैं हूं, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने
विश्वास भी किया।। 12 सो जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह
मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते हैं, कि मरे हुओं का

पुनरूत्यान है ही नहीं 13 यदि मरे हुओं का पुनरूत्यान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं
जी उठा। 14 और यदि मसीह भी नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ
है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। 15 बरन हम परमश्ेवर के फूठे गवाह ठहरे;
क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उस ने मसीह को जिला
दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते। 16 और यदि मुर्दे नहीं जी
उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा
विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपके पापोंमें फंसे हो। 18 बरन जो मसीह मे
सो गए हैं, वे भी नाश हुए। 19 यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा
रखते हैं तो हम सब मनुष्योंसे अधिक अभागे हैं।। 20 परन्तु सचमुच मसीह
मुर्दोंमें से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ। 21 क्योंकि जब
मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरूत्यान भी
आया। 22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए
जाएंगे। 23 परन्तु हर एक अपक्की अपक्की बारी से; पहिला फल मसीह; फिर
मसीह के आने पर उसके लोग। 24 इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी
प्रधानता और सारा अधिक्कारने और सामर्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर
पिता के हाथ में सौंप देगा। 25 क्योंकि जब तक कि वह अपके बैरियोंको अपके
पांवोंतले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। 26 सब से अन्तिम
बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। 27 क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके
पांवोंतले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर
दिया गया है तो प्रत्यझ है, कि जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह
आप अलग रहा। 28 और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी

उसके आधीन हो जाएगा जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में
परमेश्वर ही सब कुछ हो।। 29 नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिथे बपतिस्क़ा लेते
हैं, वे क्या करेंगे यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्योंउन के लिथे बपतिस्क़ा
लेते हैं 30 और हम भी क्योंहर घड़ी जाखिम में पके रहते हैं 31 हे भाइयो, मुझे
उस घमण्ड की सोंह जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं, कि मैं
प्रति दिन मरता हूं। 32 यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में बन-पशुओं से
लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाए-पीए,
क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे। 33 धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को
बिगाड़ देती है। 34 धर्म के लिथे जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे
हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें लज्ज़ित करते के लिथे यह कहता हूं।।
35 अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और किसी देह के
साय आते हैं 36 हे निर्बुिद्धि, जो कुछ तु बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं
जाता। 37 ओर जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु
निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। 38 परन्तु परमेश्वर
अपक्की इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की
विशेष देह। 39 सब शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्योंका शरीर और है,
पशुओं का शरीर और है; पझियोंका शरीर और है; मिछिलयोंका शरीर और है। 40
स्वर्गीय देह है, और पायिर्व देह भी है: परन्तु स्वर्गीयह देहोंका तेज और हैं, और
पायिर्व का और। 41 सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणोंका
तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज मे अन्तर है)। 42 मुर्दोंका जी
उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में

जी उठता है। 43 वह अनादर के साय बोया जाता है, और तेज के साय जी उठता
है; निर्बलता के साय बोया जाता है; और सामर्य के साय जी उठता है। 44
स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्क़िक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक
देह है, तो आत्क़िक देह भी है। 45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रयम मनुष्य, अर्यात
आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्क़ा बना। 46
परन्तु पहिले आत्क़िक न या, पर स्वाभाविक या, इस के बाद आत्क़िक हुआ। 47
प्रयम मनुष्य धरती से अर्यात मिट्टी का या; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। 48 जैसा
वह मिट्टी का या वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और
भी स्वर्गीय हैं। 49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का या धारण किया वैसे
ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे।। 50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस
और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिक्कारनी नहीं हो सकते, और न विनाश
अविनाशी का अधिक्कारनी हो सकता है। 51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता
हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। 52 और यह झण भर में,
पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और
मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि अवश्य
है, कि वह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता
को पहिन ले। 54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह
मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि
जय ने मृत्यु को निगल लिया। 55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रहीं 56 हे मृत्यु तेरा डंक
कहां रहा मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल ब्यवस्या है। 57 परन्तु परमेश्वर
का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। 58

सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते
जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।।

1 कुरिन्थियों 16

1 अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगोंके लिथे किया जाता है, जैसी आज्ञा
मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। 2 सप्ताह के पहिले
दिन तुम में से हर एक अपक्की आमदनी के अनुसार कुछ अपके पास रख छोड़ा
करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पके। 3 और जब मैं आऊंगा, तो जिन्हें तुम
चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियां देकर भेज दूंगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुंचा दें। 4
और यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साय जाएंगे। 5 और मैं
मकिदुनिया होकर तो जाना ही है। 6 परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहां ही ठहर
जाऊं और शरद ऋतु तुम्हारे यंहा काटूं, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस ओर
तुम मुझे पहुंचा दो। 7 क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता;
परन्तु मुझे आशा है, कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साय रहूंगा। 8
परनतु मैं पेन्तिकुस्त तक इफिसुस में रहूंगा। 9 क्योंकि मेरे लिथे एक बड़ा और
उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।। 10 यदि तीमुयियुस आ जाए, तो
देखना, कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे; क्योंकि वह मेरी नाई प्रभु का काम करता
है। 11 इसलिथे कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुंचा
देना, कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उस की बाट जोह रहा हूं, कि वह भाइयोंके
साय आए। 12 और भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत बिनती की है कि तुम्हारे पास
भाइयोंके साय जाए; परन्तु उस ने उस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की,

परन्तु जब अवसर पाएगा, तब आ जाएगा। 13 जागते रहो, विश्वास में स्यिर
रहो, पुरूषार्थ करो, बलवन्त होओ। 14 जो कुछ करते हो प्रेम से करो।। 15 हे
भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो, कि वे अखया के पहिले फल हैं,
और पवित्र लोगोंकी सेवा के लिथे तैयार रहते हैं। 16 सो मैं तुम से बिनती करता
हूं कि ऐसोंके आधीन रहो, बरन हर एक के जो इस काम में परिश्र्मी और सहकर्मी
हैं। 17 और मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित
हूं, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी धटी को पूरी की है। 18 और उन्होंने मेरी और तुम्हारी
आत्क़ा को चैन दिया है इसलिथे ऐसोंको मानो।। 19 आसिया की कलीसियाओं
की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिसका का और उन के घर की
कलीसिया को भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार। 20 सब भाइयोंका तुम
को नमस्कार: पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।। 21 मुझ पौलुस का
अपके हाथ का लिखा हुआ नमस्कार: यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह
स्त्रापित हो। 22 हमारा प्रभु आनेवाला है। 23 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर
होता रहे। 24 मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब से रहे। आमीन।।

2 कुरिन्थियों 1

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई
तीमुयियुस की ओर से परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्युस में है;
और सारे अखमा के सब पवित्र लागोंके नाम।। 2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।। 3 हमारे प्रभु यीशु
मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार

की शान्ति का परमेश्वर है। 4 वह हमारे सब क्लेशोंमें शान्ति देता है; ताकि हम
उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी
प्रकार के क्लेश में हों। 5 क्योंकि जैसे मसीह के दुख हम को अधिक होते हैं, वैसे
ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिक हाती है। 6 यदि हम क्लेश पाते हैं, तो
यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिथे है और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह
तुम्हारी शान्ति के लिथे है; जिस के प्रभाव से तुम धीरज के साय उन क्लेशोंको
सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते हैं। 7 और हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है;
क्योंकि हम जानते हैं, कि तुम जैसे दुखोंके वैसे ही शान्ति के भी सहभागी हो। 8 हे
भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो आसिया में
हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोफ से दब गए थे, जो हमारी समर्थ से बाहर या, यहां
तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। 9 बरन हम ने अपके मन में समझ
लिया या, कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें,
बरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है। 10 उसी ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से
बचाया, और बचाएगा; और उस से हमारी यह आशा है, कि वह आगे को भी
बचाता रहेगा। 11 और तुम भी मिलकर प्रार्यना के द्वारा हमारी सहाथता करोगे,
कि जो बरदान बहुतोंके द्वारा हमें मिला, उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर से
धन्यवाद करें।। 12 क्योंकि हम अपके विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं,
कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी
पवित्रता और सच्चाई सहित या, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के
अनुग्रह के साय या। 13 हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते, केवल वह जो तुम पढ़ते
या मानते भी हो, और मुझे आशा है, कि अन्त तक भी मानते रहोगे। 14 जैसा

तुम में से कितनोंने मान लिया है, कि हम तुम्हारे घमण्ड का कारण है; वैसे तुम
भी प्रभु यीशु के दिन हमारे लिथे घमण्ड का कारण ठहरोगे।। 15 और इस भरोसे
से मैं चाहता या कि पहिले तुम्हारे पास आऊं; कि तुम्हें एक और दान मिले। 16
और तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को जाऊं, और तुम मुछे यहूदिया की ओर
कुद दूर तक पहुंचाओ। 17 इसलिथे मैं ने जो यह इच्छा की यी तो क्या मैं ने
चंचलता दिखाई या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूं,
कि मैं बात में हां, हां भी करूं; 18 और नहीं नहीं भी करूं परमेश्वर सच्चा गवाह है,
कि हमारे उस वचन में जो तुम से कहा हां और नहीं दानोंपाई नहीं जातीं। 19
क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिसका हमारे द्वारा अर्यात मेरे और
सिलवानुस और तीमुयियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ; उस में हां और
नहीं दोनोंन यी; परन्तु, उस में हां ही हां हुई। 20 क्यांकि परमेश्वर की जितनी
प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साय हैं: इसलिथे उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि
हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। 21 और जो हमें तुम्हारे साय मसीह में दृढ़
करता है, और जिस ने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। 22 जिस ने हम पर
छाप भी कर दी है और बयान में आत्क़ा को हमारे मनोंमें दिया।। 23 मैं परमेश्वर
को गवाह करता हूं, कि मै अब तक कुरिन्युस में इसलिथे नहीं आया, कि मुझे
तुम पर तरस आता या। 24 यह नहीं, कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता
जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहाथक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से
स्यिर रहते हो।

2 कुरिन्थियों 2

1 मैंने अपके मन में यही ठान लिया या कि फिर तुम्हारे पास उदास होकर न
आऊं। 2 क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूं, तो मुझे आनन्द देनेवाला कौन होगा,
केवल वही जिस को मैं ने उदास किया 3 और मैं ने यही बात तुम्हें इसलिथे
लिखी, कि कहीं ऐसा न हो, कि मेरे आने पर जिन से आनन्द मिलना चाहिए, मैं
उन से उदास होऊं; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है, कि जो मेरा
आनन्द है, वही तुम सब का भी है। 4 बड़े क्लेश, और मन के कष्ट से, मैं ने बहुत
से आंसु बहा बहाकर तुम्हें लिखा, इसलिथे नहीं, कि तुम उदास हो, परन्तु
इसलिथे कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है।। 5 और यदि किसी
ने उदास किया है, तो मुझे ही नहीं बरन (कि उसके साय बहुत कड़ाई न करूं) कुछ
कुछ तुम सब को भी उदास किया है। 6 ऐसे जन के लिथे यह दण्ड जो भाइयोंमें से
बहुतोंने दिया, बहुत है। 7 इसलिथे इस से यह भला है कि उसका अपराध झमा
करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य उदासी में डूब जाए। 8 इस कारण मैं
तुम से बिनती करता हूं, कि उस को अपके प्रेम का प्रमाण दो। 9 क्योंकि मैं ने
इसलिथे भी लिखा या, कि तुम्हें परख लूं, कि सब बातोंके मानने के लिथे तैयार
हो, कि नहीं। 10 जिस का तुम कुछ झमा करते हो उस मैं भी झमा करता हूं,
क्योंकि मैं ने भी जो कुछ झमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह
की जगह में होकर झमा किया है। 11 कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि
हम उस की युक्तियोंसे अनजान नहीं। 12 और जब मैं मसीह का सुसमाचार,
सुनाने को त्रोआस में आया, और प्रभु ने मेरे लिथे एक द्वार खोल दिया। 13 तो मेरे
मन में चैन ने मिला, इसलिथे कि मैं ने अपके भाई तितुस को नहीं पाया; सो उन
से विदा होकर मैं मकिदुनिया को चला गया। 14 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो,

जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिथे फिरता है, और अपके ज्ञान का
सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। 15 क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार
पानेवालों, और नाश होनेवालों, दोनो के लिथे मसीह के सुगन्ध हैं। 16 कितनो के
लिथे तो मरने के निमित्त मृन्यु की गन्ध, और कितनो के लिथे जीवन के निमित्त
जीवन की सुगन्ध, और इन बातोंके योग्य कौन है 17 क्योंकि हम उन बहुतोंके
समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई
से, और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।।

2 कुरिन्थियों 3

1 क्या हम फिर अपक्की बड़ाई करने लगे या हमें कितनोंकि नाई सिफारिश की
पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुम से लेनी हैं 2 हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे
हृदयोंपर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते है। 3 यह प्रगट
है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकोंकी नाई लिखा; और जो
सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्क़ा से पत्यर की पटियोंपर नहीं,
परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियोंपर लिखी है। 4 हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर
ऐसा ही भरोसा रखते हैं। 5 यह नहीं, कि हम अपके आप से इस योग्य हैं, कि
अपक्की ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की
ओर से है। 6 जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के
सेवक नहीं बरन आत्क़ा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्क़ा जिलाता है। 7
और यहद मृत्यु की यह वाचा जिस के अझर पत्यरोंपर खोद गए थे, यहां तक
तेजोमय हुई, कि मूसा के मुंह पर के तेज के कराण जो घटता भी जाता या,

इस्त्राएल उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। 8 तो आत्क़ा की वाचा और भी
तेजोमय क्योंन होगी 9 क्योंकि जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय यी, तो धर्मी
ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्योंन होगी 10 और जो तेजोमय या, वह भी
उस तेज के कारण जो उस से बढ़कर तेजामय या, कुछ तेजोमय न ठहरा। 11
क्योंकि जब वह जो घटता जाता या तेजोमय या, तो वह जो स्यिर रहेगा, और भी
तेजोमय क्योंन होगा 12 सो ऐसी आशा रखकर हम हियाव के साय बोलते हैं। 13
और मूसर की नाईं नहीं, जिस ने अपके मुंह पर परदा डाला या ताकि इस्त्राएली
उस घटनेवाली वस्तु के अन्त को न देखें। 14 परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि
आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उन के ह्रृदयोंपर वही परदा पड़ा रहता है;
पर वह मसीह में उठ जाता है। 15 और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी
जाती है, तो उन के ह्रृदय पर परदा पड़ा रहता है। 16 परन्तु जब कभी उन का
ह्रृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा। 17 प्रभु तो आत्क़ा है: और
जहां कहीं प्रभु का आत्क़ा है वहां स्वतंत्रता है। 18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े
चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के
द्वारा जो आत्क़ा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।।

2 कुरिन्थियों 4

1 इसलिथे जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं
छोड़ते। 2 परन्तु हम ने लज्ज़ा के गुप्त कामोंको त्याग दिया, और न चतुराई से
चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट
करके, परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक में अपक्की भलाई बैठाते हैं।

3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालोंही के लिथे
पड़ा है। 4 और उन अविश्वासियोंके लिथे, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने
अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय
सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। 5 क्योंकि हम अपके को नहीं, परन्तु
मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं,
कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। 6 इसलिथे कि परमेश्वर ही है, जिस ने
कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयोंमें चमका, कि
परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान
हो।। 7 परन्तु महारे पास यह धन मिट्ठी के बरतनोंमें रखा है, कि यह असीम
सामर्थ हमारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। 8 हम चारोंओर से
क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते।
9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।
10 हम यीशु की मृत्यु को अपक्की देह में हर समय लिथे फिरते हैं; कि यीशु का
जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। 11 क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण
मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में
प्रगट हो। 12 सो मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर। 13 और
इसलिथे कि हम में वही विश्वास की आत्क़ा है, (जिस के विषय मे लिखा है, कि मैं
ने विश्वास किया, इसलिथे मैं बोला) सो हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिथे बोलते
हैं। 14 क्योंकि हम जातने हैं, जिस ने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में
भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साय अपके साम्हने उपस्यित करेगा। 15
क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारे लिथे हैं, ताकि अनुग्रह बहुतोंके द्वारा अधिक होकर

परमेश्वर की महिमा के लिथे धन्यवाद भी बढ़ाए।। 16 इसलिथे हम हियाव नहीं
छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी
मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। 17 क्योंकि हमारा पल भर का
हल्का सा क्लेश हमारे लिथे बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त जीवन महिमा
उत्पन्न करता जाता है। 18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु
अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं योड़े ही दिन की हैं,
परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

2 कुरिन्थियों 5

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृय्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया
जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथोंसे
बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्याई है। 2 इस में तो हम कहरते, और बड़ी लालसा
रखते हैं; कि अपके स्वर्गीय घर को पहिन लें। 3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न
पाए जाएं। 4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोफ से दबे कहरते रहते हैं; क्योंकि
हम उतारना नहीं, बरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन
में डूब जाए। 5 और जिस ने हमें इसी बात के लिथे तैयार किया है वह परमेश्वर है,
जिस ने हमें बयाने में आत्क़ा भी दिया है। 6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं
और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। 7
क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। 8 इसलिथे हम ढाढ़स
बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साय रहना और भी उत्तम समझते
हैं। 9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साय रहें, चाहे अलग रहें पर

हम उसे भाते रहें। 10 क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय
आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपके अपके भले बुरे कामोंका
बदला जो उस ने देह के द्वारा किए होंपाए।। 11 सो प्रभु का भय मानकर हम
लोगोंको समझाते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा यह
है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा। 12 हम फिर भी अपक्की बड़ाई
तुम्हारे साम्हने नहीं करते बरन हम अपके विषय में तुम्हें घमण्ड करने का
अवसर देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे सको, जो मन पर नहीं, बरन दिखवटी
बातोंपर घमण्ड करते हैं। 13 यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिथे; और यदि
चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिथे हैं। 14 क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है;
इसलिथे कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिथे मरा तो सब मर गए।
15 और वह इस निमित्त सब के लिथे मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपके
लिथे न जीएं परन्तु उसके लिथे जो उन के लिथे मरा और फिर जी उठा। 16 सो
अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी
शरीर के अनुसार जाना या, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे। 17 सो यदि
कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो
गईं। 18 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपके साय
हमारा मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। 19 अर्यात् परमेश्वर ने मसीह में होकर
अपके साय संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधोंका दोष उन
पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।। 20 सो हम
मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर
से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साय मेल मिलाप कर लो। 21 जो पाप से

अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिथे पाप ठहराया, कि हम उस में होकर
परमेश्वर की धामिर्कता बन जाएं।।

2 कुरिन्थियों 6

1 और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुगंह जो
तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो। 2 क्योंकि वह तो कहता है, कि अपक्की प्रसन्नता
के समय मैं ने तेरी सहाथता की: देखो, अभी उद्धार का दिन है। 3 हम किसी बात
में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न
आए। 4 परन्तु हर बात में परमेश्वर के सेवकोंकी नाई अपके सद्गुणोंको प्रगट
करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशोंसे, दिरद्रता से, संकटो से। 5 कोड़े खाने से, कैद होने
से, हुल्लड़ोंसे, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से। 6 पवित्रता से, ज्ञान
से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्क़ा से। 7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से,
परमेश्वर की सामर्थ से; धामिर्कता के हियथारोंसे जो दिहने, बाएं हैं। 8 आदर और
निरादर से, दुरनाम और सुनाम से, यद्यपि भरमानेवालोंके ऐसे मालूम होते हैं
तौभी सच्चे हैं। 9 अनजानोंके सदृश्य हैं; तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के ऐसे हैं और
देखोंजीवित हैं; मारखानेवालोंके सदृश हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते। 10 शोक
करनेवाले के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं, कंगालोंके ऐसे हैं, परन्तु
बहुतोंको धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ
रखते हैं। 11 हे कुरिन्थियों, हम ने खुलकर तुम से बातें की हैं, हमारा हृदय
तुम्हारी ओर खुला हुआ है। 12 तुम्हारे लिथे हमारे मन में कुछ सकेती नहीं, पर
तुम्हारे ही मनोंमें सकेती है। 13 पर अपके लड़के-बाले जानकर तुम से कहता हूं,

कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय खोल दो।। 14 अविश्वासियोंके साय
असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धामिर्कता और अधर्म का क्या मेल जोल या
ज्योति और अन्धकार की क्या संगति 15 और मसीह का बलियाल के साय क्या
लगाव या विश्वासी के साय अविश्वासी का क्या नाता 16 और मूरतोंके साय
परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर
हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा;
और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। 17 इसलिथे प्रभु कहता है,
कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो
मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। 18 और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां
होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।।

2 कुरिन्थियों 7

1 सो हे प्यारो जब कि थे प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपके आप को
शरीर और आत्क़ा की सब मलिनता शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए
पवित्रता को सिद्ध करें।। 2 हमें अपके हृदय में जगह दो: हम ने न किसी से
अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को ठगा। 3 मैं तुम्हें दोषी
ठहराने के लिथे यह नहीं कहता: क्योंकि मैं पहिले ही कह चूका हूं, कि तुम हमारे
हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साय मरने जीने के लिथे तैयार हैं। 4 मैं
तुम से बहुत हियाव के साय बोल रहा हूं, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है: मैं शान्ति से
भर गया हूं; अपके सारे क्लेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूं।। 5 क्योंकि
जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम

चारोंओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयां यीं, भीतर भयंकर बातें यी। 6 तौभी
दानोंको शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तितुस के आने से हम को शान्ति दी। 7 और
न केवल उसके आने से परन्तु उस की उस शान्ति से भी, जो उस को तुम्हारी ओर
से मिली यी; और उस ने तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुख ओर मेरे लिथे तुम्हारी
धुन का समाचार हमें सुनाया, जिस से मुझे और भी आनन्द हुआ। 8 क्योंकि
यद्यपि मैं ने अपक्की पत्री से तुम्हें शोकित किया, परन्तु उस से पछताता नहीं
जैसा कि पहिले पछताता या क्योंकि मैं देखता हूं, कि उस पत्री से तुम्हें शोक तो
हुआ परन्तु वह योड़ी देर के लिथे या। 9 अब मैं आनन्दित हूं पर इसलिथे नहीं कि
तुम को शोक पहुंचा बरन इसलिथे कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया,
क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार या, कि हमारी ओर से तुम्हें
किसी बात में हानि न पहुंचे। 10 क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप
उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं
पड़ता: परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है। 11 सो देखो, इसी बात से कि
तुम्हें परमेश्वर-भक्ति का शोक हुआ तुम में कितनी उत्तेजना और प्रत्यत्तर और
रिस, और भय, और लालसा, और धुन और पलआ लेने का विचार उत्पन्न हुआ
तुम ने सब प्रकार से यह सिद्ध कर दिखाया, कि तुम इस बात में निर्दोष हो। 12
फिर मैं ने जो तुम्हारे पास लिखा या, वह न तो उसके कारण लिखा, जिस ने
अन्याय किया, और न उसके कारण जिस पर अन्याय किया गया, परन्तु
इसलिथे कि तुम्हारी उत्तेजना जो हमारे लिथे है, वह परमेश्वर के साम्हने तुम पर
प्रगट हो जाए। 13 इसलिथे हमें शान्ति हुई; और हमारी इस शान्ति के साय
तितुस के आनन्द के कारण और भी आनन्द हुआ कयोंकि उसका जी तुम सब के

कारण हरा भरा हो गया है। 14 क्योंकि यदि मैं ने उसके साम्हने तुम्हारे विषय में
कुछ घमण्ड दिखाया, तो लज्ज़ित नहीं हुआ, परन्तु जैसे हम ने तुम से सब बातें
सच सच कह दी यीं, वैसे ही हमारा धमण्ड दिखाना तितुस के साम्हने भी सच
निकला। 15 और जब उस को तुम सब के आज्ञाकारी होने का स्क़रण आता है,
कि क्योंकर तुम ने डरते और कांपके हुए उस से भेंट की; तो उसका प्रेम तुम्हारी
ओर और भी बढ़ता जाता है। 16 मैं आनन्द करता हूं, कि तुम्हारी ओर से मुझे हर
बात में ढाढ़स होता है।।

2 कुरिन्थियों 8

1 अब हे भाइयों, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं, जो
मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ है। 2 कि क्लेश की बड़ी पक्कीझा में उन
के बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उन की उदारता बहुत बढ़
गई। 3 और उनके विषय में मेरी यह गवाही है, कि उन्होंने अपक्की सामर्य भर
बरन सामर्य से भी बाहर मन से दिया। 4 और इस दान में और पवित्र लोगोंकी
सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में हम से बार बार बहुत बिनती की। 5
और जैसी हम ने आज्ञा की यी, वैसी ही नहीं, बरन उन्होंने प्रभु को, फिर परमेश्वर
की इच्छा से हम को भी अपके तई दे दिया। 6 इसलिथे हम ने तितुस को
समझाया, कि जेसा उस ने पहिले आरम्भ किया या, वैसा ही तुम्हारे बीच में इस
दान के काम को पूरा भी कर ले। 7 सो जैसे हर बात में अर्यात विश्वास, वचन, ज्ञान
और सब प्रकार के यत्न में, और उस प्रेम में, जो हम से रखते हो, बढ़ते जाते हो,
वैसे ही इस दान के काम में भी बढ़ते जाओ। 8 मैं आज्ञा की रीति पर तो नहीं,

परन्तु और के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिथे कहता हूं। 9
तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे
लिथे कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ। 10
और इस बात में मेरा विचार यही है, क्योंकि यह तुम्हारे लिथे अच्छा है; जो एक
वर्ष से न तो केवल इस काम को करने ही में, परन्तु इस बात के चाहने में भी
प्रयम हुए थे। 11 इसलिथे अब यह काम पूरा करो; कि इच्छा करने में तुम तैयार
थे, वैसा ही अपक्की अपक्की पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। 12 कयोंकि यदि मन
की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि
उसके अनुसार जो उसके पास नहीं। 13 यह नहींख कि औरो को चैन और तुम को
क्लेश मिले। 14 परनतु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी
घटी में काम आए, ताकि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए, कि
बराबरी हो जाए। 15 जेसा लिखा है, कि जिस ने बहुत बटोरा उसका कुछ अधिक
न निकला और जिस ने योड़ा बटोरा उसका कुछ कम न निकला।। 16 और
परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिस ने तुम्हारे लिथे वही उत्साह तितुस के हृदय में
डाल दिया है। 17 कि उस ने हमारा समझाना मान लिया बरन बहुत उत्साही
होकर वह अपक्की इच्छा से तुम्हारे पास गया है। 18 और हम ने उसके साय उस
भाई को भेजा है जिस का नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में फैला
हुआ है। 19 और इतना ही नहीं, परन्तु वह कलीसिया से ठहराया भी गया कि इस
दान के काम के लिथे हमारे साय जाए और हम यह सेवा इसलिथे करते हैं, कि
प्रभु की महिमा और हमारे मन की तैयारी प्रगट हो जाए। 20 हम इस बात में
चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं,

कोई हम पर दोष न लगाते पाए। 21 क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट
नहीं, परन्तु मनुष्योंके निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं। 22 और
हम ने उसके साय अपके भाई को भेजा है, जिस को हम ने बार बार परख के बहुत
बातोंमें उत्साही पाया है; परन्तु अब तुम पर उस को बड़ा भरोसा है, इस कारण
वह और भी अधिक उत्साही है। 23 यदि कोई तितुस के विषय में पूछे, तो वह
मेरा सायी, और तुम्हारे लिथे मेरा सहकर्मी है, और यदि हमारे भाइयोंके विषय में
पूछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा हैं। 24 सो अपना प्रेम
और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के साम्हने उन्हें
सिद्ध करके दिखाओ।।

2 कुरिन्थियों 9

1 अब उस सेवा के विषय में जो पवित्र लोगोंके लिथे की जाती है, मुझे तुम को
लिखना अवश्य नहीं। 2 क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं, जिस के
कारण मैं तुम्हारे विषय में मकिदुनियोंके साम्हने घमण्ड दिखाता हूं, कि अखया
के लोग एक वर्ष से तैयार हुए हैं, और तुमहारे उत्साह ने और बहुतोंको भी उभारा
है। 3 परन्तु मैं ने भाइयोंको इसलिथे भेजा है, कि हम ने जो घमण्ड तुम्हारे विषय
में दिखाया, वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे; परन्तु जैसा मैं ने कहा; वैसे ही तुम
तैयार हो रहो। 4 ऐसा न हो, कि यदि कोई मकिदुनी मेरे साय आए, और तुम्हें
तैयार न पाए, तो क्या जानें, इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम)
लज्ज़ित हों। 5 इसलिथे मैं ने भाइयोंसे यह बिनती करना अवश्य समझा कि वे
पहिले से तुम्हारे पास जाएं, और तुम्हारी उदारता का फल जिस के विषय में

पहिले से वचन दिया गया या, तैयार कर रखें, कि यह दबाव से नहीं परन्तु
उदारता के फल की नाई तैयार हो।। 6 परन्तु बात तो यह है, कि जो योड़ा बोता है
वह योड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। 7 हर एक जन
जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करेद्ध न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि
परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। 8 और परमेश्वर सच प्रकार का अनुग्रह
तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो
तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिथे तुम्हारे पास
बहुत कुछ हो। 9 जेसा लिखा है, उस ने बियराया, उस ने कंगालोंको दान दिया,
उसका धर्म सदा बना रहेगा। 10 सो जो बोनेवाले को बीज, और भोजन के लिथे
रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के
फलोंको बढ़ाएगा। 11 कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिथे जो
हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ। 12 क्योंकि
इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगोंकी घटियां पूरी होती हैं, परन्तु
लोगोंकी ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। 13 क्योंकि इस सेवा से
प्रमाण लेकर परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को
मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहाथता करने में
उदारता प्रगट करते रहते हो। 14 ओर वे तुम्हारे लिथे प्रार्यना करते हैं; और
इसलिथे कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते
हैं। 15 परमेश्वर को उसके उस दान के लिथे जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।।

2 कुरिन्थियों 10

1 मैं वही पौलुस जो तुम्हारे साम्हने दीन हूं, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस
करता हूं; तुम को मसीह की नम्रता, और कोमलता के कारण समझाता हूं। 2 मैं
यह बिनती करता हूं, कि तुम्हारे साम्हने मुझे निर्भय होकर साहस करना न पके;
जैसा मैं कितनोंपर जो हम को शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं, वीरता
दिखाने का विचार करता हूं। 3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी
शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। 4 क्योकि हमारी लड़ाई के हियार शारीरिक नहीं,
पर गढ़ोंको ढा देने के लिथे परमेश्वर के द्वारा सामर्यी हैं। 5 सो हम कल्पनाओं को,
और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है,
खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना
देते हैं। 6 और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर
एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें। 7 तुम इन्हीं बातोंको दखते हो, जो
आंखोंके साम्हने हैं, यदि किसी का अपके पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूं,
तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं। 8 क्योंकि
यदि मैं उस अधिक्कारने के विषय में और भी घमण्ड दिखाऊं, जो प्रभु ने तुम्हारे
बिगाड़ने के लिथे नहीं पर बनाने के लिथे हमें दिया है, तो लज्ज़ित न हूंगा। 9 यह
मैं इसलिथे कहता हूं, कि पत्रियोंके द्वारा तुम्हें डरानेवाला न ठहरूं। 10 क्योंकि
कहते हैं, कि उस की पत्रियां तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब देखते हैं,
तो वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का जान पड़ता है। 11 सो जो ऐसा कहता
है, कि समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे पत्रियोंमें हमारे वचन हैं, वैसे ही तुम्हारे
साम्हने हमारे काम भी होंगे। 12 क्योंकि हमें यह हियाव नहीं कि हम अपके आप
को उन में से ऐसे कितनोंके साय गिनें, या उन से अपके को मिलाएं, जो अपक्की

प्रशंसा करते हैं, और अपके आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान
करके मूर्ख ठहरते हैं। 13 हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु
उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिथे ठहरा दी है, और उस में तुम भी आ
गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे। 14 क्योंकि हम अपक्की सीमा से
बाहर अपके आप को बढ़ाना नहीं चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुंचने की दशा में
होता, बरन मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुंच चुके हैं। 15 और हम
सीमा से बाहर औरोंके परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु हमें आशा है, कि
ज्योंज्योंतुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा त्योंत्योंहम अपक्की सीमा के अनुसार
तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएंगे। 16 कि हम तुम्हारे सिवानोंसे आगे बढ़कर
सुसमाचार सुनाएं, और यह नहीं, कि हम औरोंकी सीमा के भीतर बने बनाए
कामोंपर घमण्ड करें। 17 परनतु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करें। 18
क्योंकि जो अपक्की बड़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिस की बड़ाई प्रभु करता
है, वही ग्रहण किया जाता है।।

2 कुरिन्थियों 11

1 यदि तुम मेरी योड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता; हां, मेरी सह भी लेते
हो। 2 क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिथे कि मैं ने
एक ही पुरूष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाई मसीह को
सौंप दूं। 3 परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपक्की चतुराई से हव्वा को
बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साय
होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। 4 यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी

दूसरे यीशु को प्रचार करे, जिस का प्रचार हम ने नहीं किया: या कोई और आत्क़ा
तुम्हें मिले; जो पहिले न मिला या; या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहिले न
माना या, तो तुम्हारा सहना ठीक होता। 5 मैं तो समझता हमं, कि मैं किसी बात
में बड़े से बड़े प्रेरितोंसे कम नहीं हूं। 6 यदि मैं व्क्तवय में अनाड़ी हूं, तौभी ज्ञान में
नहीं; बरन हम ने इस को हर बात में सब पर तुम्हारे लिथे प्रगट किया है। 7 क्या
इस में मैं ने कुछ पाप किया; कि मैं ने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सेंत मेंत
सुनाया; और अपके आप को नीचा किया, कि तुम ऊंचे हो जाओ 8 मैं ने और
कलीसियाओं को लूटा अर्यात मैं ने उन से मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूं। 9
ओर जब तुम्हारे साय या, और मुझे घटी हुई, तो मैं ने किसी पर भार नहीं दिया,
क्योंकि भाइयोंने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को पक्की की: और मैं ने हर
बात में अपके आप को तुम पर भार होने से रोका, और रोके रहूंगा। 10 यदि
मसीह की सच्चाई मुझ में है, तो अखया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न
रोकेगा। 11 किस लिथे क्या इसलिथे कि मैं तुम से प्रेम नहीं रखता परमेश्वर यह
जानता है। 12 परन्तु जो मैं करता हूं, वही करता रहूंगा; कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं,
उन्हें मैं दांव पाने दूं, ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उस में वे हमारे ही
समान ठहरें। 13 क्योंकि ऐसे लोग फूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और
मसीह के प्रेरितोंका रूप धरनेवाले हैं। 14 और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं
क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। 15 सो यदि
उसके सेवक भी धर्म के सेवकोंका सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं परन्तु उन
का अन्त उन के कामोंके अनुसार होगा। 16 मैं फिर कहता हूं, कोई मुझे मूर्ख न
समझे; नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो, ताकि योड़ा सा मैं भी घमण्ड करूं।

17 इस बेधड़क घमण्ड से बोलने में जो कुछ मैं कहता हूं वह प्रभू की आज्ञा के
अनुसार नहीं पर मानोंमूर्खता से ही कहता हूं। 18 जब कि बहुत लोग शरीर के
अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी घमण्ड करूंगा। 19 तुम तो समझदार होकर
आनन्द से मूर्खोंकी सह लेते हो। 20 क्योंकि जब तुम्हें कोई दास बना लेता है, या
खा जाता है, या फसा लेता है, या अपके आप को बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मुंह
पर यप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो। 21 मेरा कहता अनादर की रीति पर है,
मानो कि हम निर्बल से थे; परन्तु जिस किसी बात में कोई हियाव करता है (मैं
मूर्खता से कहता हूं) तो मैं भी हियाव करता हूं। 22 क्या वे ही इब्रानी हैं मैं भी हूं:
क्या वे ही इब्राहीम के वंश के हैं मैं भी हूं: क्या वे ही मसीह के सेवक हैं 23 (मैं
पागल की नाई कहता हूं) मैं उन से बढ़कर हूं! अधिक परिश्रम करने में; बार बार
कैद होने में; कोड़े खाते में; बार बार मृत्यु के जोखिमोंमें। 24 पांच बार मैं ने
यहूदियोंके हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। 25 तीन बार मैं ने बेंतें खाईं;
एक बार पत्यरवाह किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा या, टूट गए;
एक राज दिन मैं ने समुद्र में काटा। 26 मैं बार बार यात्राओं में; नदियोंके
जोखिमोंमें; डाकुओं के जोखिमोंमें; अपके जातिवालोंसे जोखिमोंमें;
अन्यजातियोंसे जोखिमोंमें; नगरोंमें के जाखिमोंमें; जंगल के जोखिमोंमें; समुद्र
के जाखिमोंमें; फूठे भाइयोंके बीच जोखिमोंमें; 27 परिश्रम और कष्ट में; बार बार
जागते रहने में; भूख-पियास में; बार बार उपवास करते में; जाड़े में; उघाड़े रहने
में। 28 और और बातोंको छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब
कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है। 29 किस की निर्बलता से मैं
निर्बल नहीं होता किस के ठोकर खाने से मेरा जी नहीं दुखता 30 यदि घमण्ड

करना अवश्य है, तो मैं अपक्की निर्बलता की बातोंपर करूंगा। 31 प्रभु यीशु का
परमेश्वर और पिता जो सदा धन्य है, जानता है, कि मैं फूठ नहीं बोलता। 32
दिमश्क में अरितास राजा की ओर से जो हाकिम या, उस ने मेरे पकड़ने को
दिमश्ििकियोंके नगर पर पहरा बैठा रखा या। 33 और मैं टोकरे में खिड़की से
होकर भीत पर से उतारा गया, और उसके हाथ से बच निकला।।

2 कुरिन्थियों 12

1 यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिथे ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है; सो मैं प्रभु के
दिए हुए दर्शनोंऔर प्रकाशोंकी चर्चा करूंगा। 2 मैं मसीह में एक मनुष्य को
जानता हूं, चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित, न जाने देहरिहत, परमेश्वर
जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। 3 मैं ऐसे मनुष्य को
जानता हूं न जाने देहसहित, न जाने देहरिहत परमेश्वर ही जानता है। 4 कि स्वर्ग
लोक पर उठा लिया गया, और एसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं; और जिन का
मुंह में लाना मनुष्य को उचित नहींं। 5 ऐसे मनुष्य पर तो मैं घमण्ड करूंगा,
परन्तु अपके पर अपक्की निर्बलताओं को छोड़, अपके विषय में घमण्ड न
करूंगा। 6 क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूं भी तो मूंर्ख न हूंगा, क्योंकि सच
बोलूंगा; तोभी रूक जाता हूं, ऐसा न हो, कि जैसा कोई मुझे देखता है, या मुझ से
सुनता है, मुझे उस से बढ़कर समझे। 7 और इसलिथे कि मैं प्रकाशोंकी बहुतायत
से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्यात्‌ शैतान का एक दूत
कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। 8 इस के विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार
बिनती की, कि मुझ से यह दूर हो जाए। 9 और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह

तेरे लिथे बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिथे मैं बड़े
आनन्द से अपक्की निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ
पर छाया करती रहे। 10 इस कारण मैं मसीह के लिथे निर्बलताओं, और
निन्दाओं में, और दिरद्रता में, और उपद्रवोंमें, और संकटोंमें, प्रसन्न हूं; क्योंकि
जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।। 11 मैं मूर्ख तो बना, परन्तु तुम ही
ने मुझ से यह बरबस करवाया: तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिए यी, क्योंकि
यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, तौभी उन बड़े से बड़े प्ररितोंसे किसी बात में कम नहीं हूं।
12 प्ररित के लझण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और
अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामोंसे दिखाए गए। 13 तुम कोैन सी बात में और
कलीसिक्कों कम थे, केवल इस में कि मैं ने तुम पर अपना भार न रखा: मेरा यह
अन्याय झमा करो। 14 देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं, और
मैं तुम पर कोई भार न रखूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं, बरन तुम ही को
चाहता हूं: क्योंकि लड़के-बालोंको माता-पिता के लिथे धन बटोरना न चाहिए, पर
माता-पिता को लड़के-बालोंके लिथे। 15 मैं तुम्हारी आत्क़ाओं के लिथे बहुत
आनन्द से खर्च करूंगा, बरन आप भी खर्च हो जाऊंगा: क्या जितना बढ़कर मैं
तुम से प्रेम रखता हूं, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रखोगे 16 ऐसा हो सकता
है, कि मैं ने तुम पर बोफ नहीं डाला, परन्तु चतुराई से तुम्हें धोखा देकर फंसा
लिया। 17 भला, जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास भेजा, क्या उन में से किसी के द्वारा मैं ने
छल करके तुम से कुछ ले लिया 18 मै ने तितुस को समझाकर उसके साय उस
भाई को भेजा, तो क्या तीतुस ने छल करके तुम से कुछ लिया क्या हम एक ही
आत्क़ा के चलाए न चले क्या एक ही लीक पर न चले 19 तुम अभी तक समझ

रहे होगे कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं, हम तो परमेश्वर को उपस्यित
जानकर मसीह में बोलते हैं, और हे प्रियों, सब बातें तुम्हारी उन्नति ही के लिथे
कहते हैं। 20 क्योंकि मुझे डर है, कहीं ऐसा न हो, कि मैं आकर जैसे चाहता हूं, वैसे
तुम्हें न पाऊं; और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ, कि तुम में
फगड़ा, डाह, क्रोध, विराध, ईर्ष्या, चुगली, अभिमान और बखेड़े हों। 21 और मेरा
परमेश्वर कहीं मेरे फिर से तुम्हारे यहां आने पर मुझ पर दबाव डाले और मुझे
बहुतोंके लिथे फिर शोक करना पके, जिन्होंने पहिले पाप किया या, और उस
गन्दे काम, और व्यभिचार, और लुचपन से, जो उन्होंने किया, मन नहीं
फिराया।।

2 कुरिन्थियों 13

1 अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूं: दो या तीन गवाहोंके मुंह से हर एक बात
ठहराई जाएगी। 2 जैसे जब दूसरी बार तुम्हारे साय या, सो वैसे ही अब दूर रहते
हुए उन लोगोंसे जिन्होंने पहिले पाप किया, और और सब लोगोंसे अब पहिले से
कहे देता हूं, कि यदि मैं फिर आऊंगा, तो नहीं छोड़ूंगा। 3 तुम तो इस का प्रमाण
चाहते हो, कि मसीह मुझ में बोलता है, जो तुम्हारे लिथे निर्बल नहीं; परन्तु तुम
में सामर्यी है। 4 वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया, तौभी परमेश्वर
की सामर्य से जीवित है, हम भी तो उस में निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की सामर्य से
जो तुम्हारे लिथे है, उसके साय जीएंगे। 5 अपके प्राण को परखो, कि विश्वास में
हो कि नहीं; अपके आप को जांचो, क्या तुम अपके विषय में यह नहीं जानते, कि
यीशु मसीह तुम में है नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो। 6 पर मेरी आशा है, कि

तुम जान लोगे, कि हम निकम्मे नहीं। 7 और हम अपके परमेश्वर से प्रार्यना
करते हैं, कि तुम कोई बुराई न करो; इसलिथे हनीं, कि हम खरे देख पकें, पर
इसलिथे कि तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरें। 8 क्योंकि हम सत्य के
विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिथे कर सकते हैं। 9 जब हम निर्बल
हैं, और तुम बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं, और यह प्रार्यना भी करते हैं,
कि तुम सिद्ध हो जाओ। 10 इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे थे बातें लिखता हूं, कि
उपस्यित होकर मुझे उस अधिक्कारने के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिथे
नहीं पर बनाने के लिथे मुझे दिया है, कढ़ाई से कुछ करना न पके।। 11 निदान, हे
भाइयो, आनन्दित रहो; सिद्ध बनते जाओ; ढाढ़स रखो; एक ही मन रखो; मेल से
रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साय होगा। 12 एक दूसरे को
पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। 13 सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं। 14
प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्क़ा की
सहभागिता तुम सब के साय होती रहे।।

गलातियों 1

1 पौलुस की, जो न मनुष्योंकी ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, बरन यीशु मसीह
और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिस ने मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है। 2 और
सारे भाइयोंकी आरे से, जो मेरे साय हैं; गलतिया की कलीसियाओं के नाम। 3
परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की आरे से तुम्हें अनुगंह और शान्ति
मिलती रहे। 4 उसी ने अपके आप को हमारे पापोंके लिथे दे दिया, ताकि हमारे
परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। 5

उस की स्तुति और बड़ाइ। युगानुयुग होती रहे। आमीन।। 6 मुझे आश्चर्य होता
है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर
कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर फुकने लगे। 7 परन्तु वह दूसरा
सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और
मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। 8 परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई
दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और
सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्त्रमित हो। 9 जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं
अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि
कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्त्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्योंको मानता हूं
या परमेश्वर को क्या मैं मनुष्योंको प्रसन्न करना चाहता हूं 10 यदि मैं अब तक
मनुष्योंको प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।। 11 हे भाइयो, मैं
तुम्हें जताए देता हूं, कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं।
12 क्योंकि वह मुझै मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया,
पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला। 13 यहूदी मत में जो पहिले मेरा चाल चलन
या, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश
करता या। 14 और अपके बहुत से जातिवालोंसे जो मेरी अवस्या के थे यहूदी मत
में बढ़ता जाता या और अपके बापदादोंके व्यवहारोंमें बहुत ही उत्तेजित या। 15
परन्तु परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपके
अनुग्रह से बुला लिया, 16 जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपके पुत्र को प्रगट करे कि
मैं अन्यजातियोंमें उसका सुसमाचार सुनाऊं; तो न मैं ने मांस और लोहू से सलाह
ली; 17 और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहिले प्रेरित थे, पर

तुरन्त अरब को चला गया: और फिर वहां से दिमश्क को लौट आया।। 18 फिर
तीन बरस के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिथे यरूशलेम को गया, और उसके
पास पन्द्रह दिन तक रहा। 19 परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितोंमें
से किसी से न मिला। 20 जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, देखो परमेश्वर को उपस्थित
जानकर कहता हूं, कि वे फूठी नहीं। 21 इस के बाद मैं सूरिया और किलकिया के
देशोंमें आया। 22 परन्तु यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में यी, मेरा मुह
तो कभी नहीं देखा या। 23 परन्तु यही सुना करती यीं, कि जो हमें पहिले सताता
या, वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहिले नाश करता या। 24
और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती यीं।।

गलातियों 2

1 चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साय यरूशलेम को गया और तितुस को भी
साय ले गया। 2 और मेरा जाना ईश्वरीय प्रकाश के अनुसार हुआ: और जो
सुसमाचार मैं अन्यजातियोंमें प्रचार करता हूं, उस को मैं ने उन्हें बता दिया, पर
एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय
की, या अगली दौड़ धूप व्यर्य ठहरे। 3 परन्तु तितुस भी जो मेरे साय या और जो
यूनानी है; खतना कराने के लिथे विवश नहीं किया गया। 4 और यह उन फूठे
भाइयोंके कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह
यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएं। 5 उन के आधीन होना हम ने
एक घड़ी भर न माना, इसलिथे कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। 6
फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे ही थे, मुझे इस से कुछ काम नहीं,

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता) उन से जो कुछ भी समझे जाते थे, मुझे
कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। 7 परन्तु इसके विपक्कीत जब उन्होंने देखा, कि जैसा
खतना किए हुए लोगोंके लिथे सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही
खतनारिहतोंके लिथे मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। 8 (क्योंकि जिस ने
पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य्य बड़े प्रभाव सहित करवाया,
उसी ने मुझ से भी अन्यजातियोंमें प्रभावशाली कार्य्य करवाया) 9 और जब
उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला या जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और
यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को
दिहना हाथ देकर संग कर लिया, कि हम अन्यजातियोंके पास जाएं, और वे
खतना किए हुओं के पास। 10 केवल यह कहा, कि हम कंगालोंकी सुधि लें, और
इसी काम के करने का मैं आप भी यत्न कर रहा या। 11 पर जब कैफा
अन्ताकिया में आया तो मैं ने उसके मुंह पर उसका साम्हना किया, क्योंकि वह
दोषी ठहरा या। 12 इसलिथे कि याकूब की ओर से कितने लोगोंके आने से पहिले
वह अन्यजातियोंके साय खाया करता या, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए
हुए लोगोंके डर के मारे उन से हट गया और किनारा करने लगा। 13 और उसके
साय शेष यहूदियोंने भी कपट किया, यहां तक कि बरनबास भी उन के कपट में
पड़ गया। 14 पर जब मैं ने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल
नहीं चलते, तो मैं ने सब के साम्हने कैफा से कहा; कि जब तू यहूदी होकर
अन्यजातियोंकी नाई चलता है, और यहूदियोंकी नाईं नहीं तो तू अन्यजातियोंको
यहूदियोंकी नाईं चलने को क्योंकहता है 15 हम जो जन्क़ के यहूदी हैं, और पापी
अन्यजातियोंमें से नहीं। 16 तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्या के कामोंसे

नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप
भी मसीह यीशु पर विश्वास किया, कि हम व्यवस्या के कामोंसे नहीं पर मसीह
पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिथे कि व्यवस्या के कामोंसे कोई प्राणी धर्मी
न ठहरेगा। 17 हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी
निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है कदापि नहीं। 18 क्योंकि जो कुछ मैं ने
गिरा दिया, यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपके आप को अपराधी ठहराता हूं।
19 मैं जो व्यवसाि के द्वारा व्यवस्या के लिथे मर गया, कि परमेश्वर के लिथे
जीऊं। 20 मैं मसीह के साय क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा,
पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस
विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और
मेरे लिथे अपके आप को दे दिया। 21 मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्य नहीं
ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्या के द्वारा धामिर्कता होती, तो मसीह का मरना
व्यर्य होता।।

गलातियों 3

1 हे निर्बुद्धि गलतियों, किस ने तुम्हें मोह लिया तुम्हारी तो मानोंआंखोंके साम्हने
यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया! 2 मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं, कि
तुम ने आत्क़ा को, क्या व्यवस्या के कामोंसे, या विश्वास के समाचार से पाया 3
क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्क़ा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की
रीति पर अन्त करोगे 4 क्या तुम ने इतना दुख योंही उठाया परन्तु कदाचित
व्यर्य नहीं। 5 सो जो तुम्हें आत्क़ा दान करता और तुम में सामर्य के काम करता

है, वह क्या व्यवस्या के कामोंसे या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है 6
इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिथे धामिर्कता गिनी
गई। 7 तो यह जान लो, कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही इब्राहीम की सन्तान
हैं। 8 और पवित्रशास्त्र ने पहिले ही से यह जानकर, कि परमेश्वर अन्यजातियोंको
विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहिले हीे से इब्राहीम को यह सुसमाचार सुना दिया,
कि तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी। 9 तो जो विश्वास करनेवाले हैं, वे
विश्वासी इब्राहीम के साय आशीष पाते हैं। 10 सो जितने लोग व्यवस्या के
कामोंपर भरोसा रखते हैं, वे सब स्त्राप के आधीन हैं, क्योंकि लिखा है, कि जो
कोई व्यवस्या की पुस्तक में लिखी हुई सब बातोंके करने में स्यिर नहीं रहता, वह
स्त्रापित है। 11 पर यह बात प्रगट है, कि व्यवस्या के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई
धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। 12 पर व्यवस्या
का विश्वास से कुछ सम्बन्ध नहीं; पर जो उन को मानेगा, वह उन के कारण
जीवित रहेगा। 13 मसीह ने जो हमारे लिथे स्त्रापित बना, हमें मोल लेकर
व्यवस्या के स्त्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता
है वह स्त्रापित है। 14 यह इसलिथे हुआ, कि इब्राहिम की आशीष मसीह यीशु में
अन्यजातियोंतक पंहुचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्क़ा को प्राप्त करें,
जिस की प्रतिज्ञा हुई है।। 15 हे भाइयों, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं, कि
मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उस
में कुछ बढ़ाता है। 16 निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को, और उसके वंश को दी गईं;
वह यह नहीं कहता, कि वशोंको; जेसे बहुतोंके विषय में कहा, पर जैसे एक के
विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है। 17 पर मैं यह कहता हूं की जो वाचा

परमेश्वर ने पहिले से पक्की की यी, उस को व्यवस्या चार सौ तीस बरस के बाद
आकर नहीं टाल देती, कि प्रतिज्ञा व्यर्य ठहरे। 18 क्योंकि यदि मीरास व्यवस्या
से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा के
द्वारा दे दी है। 19 तब फिर व्यवस्या क्या रही वह तो अपराधोंके कारण बाद में दी
गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई यी, और वह
स्वर्गदूतोंके द्वारा एक मध्यस्य के हाथ ठहराई गई। 20 मध्यस्य तो एक का नहीं
होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। 21 तो क्या व्यवस्या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के
विरोध में है कदापि न हो क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्या दी जाती जो जीवन दे
सकती, तो सचमुच धामिर्कता व्यवस्या से होती। 22 परन्तु पवित्र शास्त्र ने सब
को पाप के आधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिस का आधार यीशु मसीह पर
विश्वास करना है, विश्वास करनेवालोंके लिथे पूरी हो जाए।। 23 पर विश्वास के
आने से पहिले व्यवस्या की अधीनता में हमारी रखवाली होती यी, और उस
विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला या, हम उसी के बन्धन में रहे। 24
इसलिथे व्यवस्या मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिझक हुई है, कि हम विश्वास
से धर्मी ठहरें। 25 परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिझक के आधीन न
रहे। 26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है,
परमेश्वर की सन्तान हो। 27 और तुम में से जितनोंने मसीह में बपतिस्क़ा लिया
है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। 28 अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न
कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक
हो। 29 और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार
वारिस भी हो।।

गलातियों 4

1 मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी
है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं। 2 परन्तु पिता के ठहराए हुए समय
तक रझकोंऔर भण्डारियोंके वश में रहता है। 3 वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो
संसार की आदि शिझा के वश में होकर दास बने हुए थे। 4 परन्तु जब समय पूरा
हुआ, तो परमेश्वर ने अपके पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्क़ा, और व्यवस्या के
आधीन उत्पन्न हुआ। 5 ताकि व्यवस्या के आधीनोंको मोल लेकर छुड़ा ले, और
हम को लेपालक होने का पद मिले। 6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिथे परमेश्वर ने
अपके पुत्र के आत्क़ा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे ह्रृदय में
भेजा है। 7 इसलिथे तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो
परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ। 8 भला, तक तो तुम परमेश्वर को न जानकर
उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं। 9 पर अब जो तुम ने परमेश्वर को
पहचान लिया बरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी
आदि-शिझा की बातोंकी ओर क्योंफिरते हो, जिन के तुम दोबारा दास होना चाहते
हो 10 तुम दिनोंऔर महीनोंऔर नियत समयोंऔर वर्षोंको मानते हो। 11 मैं
तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्र्म मैं नं तुम्हारे लिथे
किया है व्यर्थ ठहरे।। 12 हे भाइयों, मैं तुम से बिनती करता हूं, तुम मेरे समान हो
जाओ: क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। 13
पर तुम जानते हो, कि पहिले पहिल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें
सुसमाचार सुनाया। 14 और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी पक्कीझा
का कारण यी, तुच्छ न जाना; न उस ने घृणा की; और परमेश्वर के दूत बरन

मसीह के समान मुझे ग्रहण किया। 15 तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया
मैं तुम्हारा गवाह हूं, कि यदि हो सकता, तो तुम अपक्की आंखें भी निकालकर
मुझे दे देते। 16 तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूं।
17 वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से नहीं; बरन तुम्हें अलग
करना चाहते हैं, कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो। 18 पर यह भी अच्छा है, कि
भली बात में हर समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए, न केवल उसी समय, कि
जब मैं तुम्हारे साय रहता हूं। 19 हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न
बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिथे फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं। 20 इच्छा
तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलू, क्योंकि
तुम्हारे विषय में मुझे सन्देह है।। 21 तुम जो व्यवस्या के आधीन होना चाहते हो,
मुझ से कहो, क्या तुम व्यवस्या की नहीं सुनते 22 यह लिखा है, कि इब्राहीम के
दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। 23 परन्तु जो दासी से हुआ,
वह शारीरिक रीति से जन्क़ा, और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार
जन्क़ा। 24 इन बातोंमें दृष्टान्त है, थे स्त्रियां मानोंदो वाचाएं हैं, एक तो सीना
पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। 25 और हाजिरा
मानो अरब का सीना पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसे तुल्य है, क्योंकि वह
अपके बालकोंसमेत दासत्व में है। 26 पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह
हमारी माता है। 27 क्योंकि लिखा है, कि हे बांफ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर,
तु जिस को पीड़ाएं नहीं उठतीं गला खोलकर जय जयकार कर, क्योंकि त्यागी
हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है। 28 हे भाइयो, हम इसहाक
की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। 29 और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्क़ा

हुआ आत्क़ा के अनुसार जन्क़े हुए को सताता या, वैसा ही अब भी होता है। 30
परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि
दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साय उत्तराधिक्कारनी नहीं होगा। 31 इसलिथे
हे भाइयों, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र स्त्री के सन्तान हैं।

गलातियों 5

1 मसीह ने स्वतंत्रता के लिथे हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्यिर रहो, और
दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।। 2 देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं, कि यदि
खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। 3 फिर भी मैं हर एक
खतना करानेवाले को जताए देता हूं, कि उसे सारी व्यवस्या माननी पकेगी। 4
तुम जो व्यवस्या के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से
गिर गए हो। 5 क्योंकि आत्क़ा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धामिर्कता
की बाट जोहते हैं। 6 और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारिहत कुछ काम का
है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। 7 तुम तो भली
भांति दौड रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो। 8 ऐसी
सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। 9 योड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को
खमीर कर डालता है। 10 मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखताह हूं, कि
तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्योंन
हो दण्ड पाएगा। 11 परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं,
तो क्योंअब तक सताया जाता हूं; फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही। 12 भला
होता, कि जो तुम्हें डांवाडोल करते हैं, वे काट डाले जाते! 13 हे भाइयों, तुम

स्वतंत्र होने के लिथे बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक
कामोंके लिथे अवसर बने, बरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। 14 क्योंकि सारी
व्यवस्या इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपके पड़ोसी से अपके
समान प्रेम रख। 15 पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो,
तो चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो।। 16 पर मैं कहता हूं,
आत्क़ा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
17 क्योंकि शरीर आत्क़ा के विरोध में लालसा करती है, और थे एक दूसरे के
विरोधी हैं; इसलिथे कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। 18 और यदि
तुम आत्क़ा के चलाए चलते हो तो व्यवस्या के आधीन न रहे। 19 शरीर के काम
तो प्रगट हैं, अर्यात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। 20 मूत्ति पूजा, टोना, बैर,
फगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। 21 डाह, मलवालापन, लीलाक्रीड़ा, और
इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं
जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के
वारिस न होंगे। 22 पर आत्क़ा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, 23 और कृपा,
भालाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामोंके विरोध में कोई व्यवस्या
नहीं। 24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और
अभिलाषोंसमेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।। 25 यदि हम आत्क़ा के द्वारा जीवित हैं,
तो आत्क़ा के अनुसार चलें भी। 26 हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और
न ऐ दूसरे से डाह करें।

गलातियों 6

1 हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए, तो तुम जो आत्क़िक
जो, नम्रता के साय ऐसे को संभालो, और अपक्की भी चौकसी रखो, कि तुम भी
पक्कीझा में न पड़ो। 2 तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की
व्यवस्या को पूरी करो। 3 क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपके आप को
कुछ समझता है, तो अपके आप को धोखा देता है। 4 पर हर एक अपके ही काम
को जांच ले, और तक दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपके ही विषय में उसको
घमण्ड करने का अवसर होगा। 5 क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोफ
उठाएगा।। 6 जो वचन की शिझा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले
को भागी करे। 7 धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठोंमें नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि
मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। 8 क्योंकि जो अपके शरीर के लिथे बोता है,
वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्क़ा के लिथे बोता है, वह
आत्क़ा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। 9 हम भले काम करने में
हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हांे, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
10 इसलिथे जहां तक अवसर मिले हम सब के साय भलाई करें; विशेष करके
विश्वासी भाइयोंके साय।। 11 देखो, मैं ने कैसे बड़े बड़े अझरोंमें तुम को अपके
हाथ से लिखा है। 12 जितने लोग शरीरिक दिखव चाहते हैं वे तुम्हारे खतना
करवाने के लिथे दबाव देते हैं, केवल इसलिथे कि वे मसीह के क्रूस के कारण
सताए न जाएं। 13 क्योंकि खतना करानेवाले आप तो, व्यवस्या पर नहीं चलते,
पर तुम्हारा खतना कराना इसलिथे चाहते हैं, कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर
घमण्ड करें। 14 पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल
हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार

की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। 15 क्योंकि न खतना, और न खतनारिहत
कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। 16 और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और
परमेश्वर के इस्त्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे।। 17 आगे को कोई मुझे
दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागोंको अपक्की देह में लिथे फिरता हूं।। 18 हे
भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्क़ा के साय रहे।
आमीन।।

इफिसियों 1

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र
और मसीह यीशु में विश्वासी लोगोंके नाम जो इफिसुस में हैं।। 2 हमारे पिता
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे।। 3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने
हमें मसीह में स्वर्गीय स्यानोंमें सब प्रकार की आशीष दी है। 4 जैसा उस ने हमें
जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र
और निर्दोष हों। 5 और अपक्की इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपके लिथे
पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, 6 कि
उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत
मेंत दिया। 7 हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्यात् अपराधोंकी
झमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। 8 जिसे उस ने सारे ज्ञान
और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। 9 कि उस ने अपक्की इच्छा का
भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपके आप में ठान लिया या।

10 कि समयोंके पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ
पृय्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। 11 उसी में जिस में हम भी उसी
की मनसा से जो अपक्की इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से
ठहराए जाकर मीरास बने। 12 कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी
यी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों। 13 और उसी में तुम पर भी जब तुम
ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने
विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्क़ा की छाप लगी। 14 वह उसके मोल
लिए हुओं के छुटकारे के लिथे हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की
स्तुति हो।। 15 इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम
लोगोंमें प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगोंपर प्रगट है। 16 तुम्हारे लिथे
धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपक्की प्रार्यनाओं में तुम्हें स्क़रण किया
करता हूं। 17 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है,
तुम्हें अपक्की पहचान में, ज्ञान और प्रकाश का आत्क़ा दे। 18 और तुम्हारे मन
की आंखें ज्योतिर्मय होंकि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है,
और पवित्र लोगोंमें उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। 19 और उस की
सामर्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, स की शक्ति के प्रभाव के
उस कार्य्य के अनुसार। 20 जो उस ने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे
हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्यानोंमें अपक्की दिहनी ओर। 21 सब प्रकार की
प्रधानता, और अधिक्कारने, और सामर्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के
ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया।
22 और सब कुछ उसके पांवोंतले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि

ठहराकर कलीसिया को दे दिया। 23 यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है,
जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।।

इफिसियों 2

1 और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपके अपराधोंऔर पापोंके कारण मरे हुए
थे। 2 जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिक्कारने
के हाकिम अर्यात्‌ उस आत्क़ा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न
माननेवालोंमें कार्य्य करता है। 3 इन में हम भी सब के सब पहिले अपके शरीर
की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे,
और और लोगोंके समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। 4 परन्तु परमेश्वर ने
जो दया का धनी है; अपके उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम
किया। 5 जब हम अपराधोंके कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साय जिलाया;
(अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।) 6 और मसीह यीशु में उसके साय उठाया,
और स्वर्गीय स्यानोंमें उसके साय बैठाया। 7 कि वह अपक्की उस कृपा से जो
मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयोंमें अपके अनुग्रह का असीम धन
दिखाए। 8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह
तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। 9 और न कर्मोंके कारण, ऐसा न
हो कि कोई घमण्ड करे। 10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में
उन भले कामोंके लिथे सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिथे
तैयार किया।। 11 इस कारण स्क़रण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से
अन्यजाति हो, (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले

कहलाते हैं, वे तुम को खतनारिहत कहते हैं)। 12 तुम लोग उस समय मसीह से
अलग और इस्त्राए की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं
के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररिहत थे। 13 पर अब तो मसीह
यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। 14
क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनोंको एक कर लिया: और अलग करनेवाल
दीवार को जो बीच में यी, ढा दिया। 15 और अपके शरीर में बैर अर्यात् वह
व्यवस्या जिस की आज्ञाएं विधियोंकी रीति पर यीं, मिटा दिया, कि दोनोंसे अपके
में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। 16 और क्रूस पर बैर को नाश
करके इस के द्वारा दानोंको एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। 17 और उस ने
आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दानोंको मेल-मिलाप का
सुसमाचार सुनाया। 18 क्योंकि उस ही के द्वारा हम दानोंकी एक आत्क़ा में पिता
के पास पंहुच होती है। 19 इसलिथे तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे,
परन्तु पवित्र लोगोंके संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। 20 और
प्रेरितोंऔर भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्यर मसीह यीशु आप
ही है, बनाए गए हो। 21 जिस में सारी रचना एक साय मिलकर प्रभु में एक पवित्र
मन्दिर बनती जाती है। 22 जिस में तुम भी आत्क़ा के द्वारा परमेश्वर का
निवासस्यान होने के लिथे एक साय बनाए जाते हो।।

इफिसियों 3

1 इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियोंके लिथे मसीह यीशु का बन्धुआ हूं
2 यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे

लिथे मुझे दिया गया। 3 अर्यात यह, कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट
हुआ, जैसा मैं पहिले संझेप में लिख चुका हूं। 4 जिस से तुम पढ़कर जान सकते
हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं। 5 जो और और समयोंमें
मनुष्योंकी सन्तानोंको ऐसा नहीं बताया गया या, जैसा कि आत्क़ा के द्वारा अब
उसके पवित्र प्ररितोंऔर भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया हैं। 6 अर्यात यह, कि
मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लाग मीरास में साफी, और एक
ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। 7 और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के
अनुसार, जो सामर्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का
सेवक बना। 8 मुझ पर जो सब पवित्र लोगोंमें से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह
हुआ, कि मैं अन्यजातियोंको मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं। 9
और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के
सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त या। 10 ताकि अब कलीसिया के द्वारा,
परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानोंऔर अधिक्कारनेियोंपर, जो
स्वर्गीय स्यानोंमें हैं प्रगट किया जाए। 11 उस सनातन मनसा के अनुसार, जो
उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की यीं। 12 जिस में हम को उस पर विश्वास
रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिक्कारने है। 13 इसलिथे मैं
बिनती करता हूं कि जो क्लेश तुम्हारे लिथे मुझे हो रहे हैं, उनके कारण हियाव न
छोड़ो, क्योंकि उन में तुम्हारी महिमा है।। 14 मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने
घुटने टेकता हूं, 15 जिस से स्वर्ग और पृय्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा
जाता है। 16 कि वह अपक्की महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि
तुम उसके आत्क़ा से अपके भीतरी मनुष्यत्व में सामर्य पाकर बलवन्त होते

जाओ। 17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़
पकड़कर और नेव डाल कर। 18 सब पवित्र लागोंके साय भली भांति समझने की
शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है।
19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से पके है, कि तुम परमेश्वर की
सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।। 20 अब जो ऐसा सामर्यी है, कि हमारी
बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्य के अनुसार जो
हम में कार्य्य करता है, 21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा
पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।।

इफिसियों 4

1 सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम
बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। 2 अर्यात सारी दीनता और नम्रता सहित,
और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे को सह लो। 3 और मेल के बन्ध में आत्क़ा
की एकता रखने का यत्न करो। 4 एक ही देह है, और एक ही आत्क़ा; जैसे तुम्हें
जो बुलाए गए थे अपके बुलाए जाने से एक ही आशा है। 5 एक ही प्रभु है, एक ही
विश्वास, एक ही बपतिस्क़ा। 6 और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब
के ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है। 7 पर हम में से हर एक को मसीह
के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। 8 इसलिथे वह कहता है, कि वह ऊंचे पर
चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्योंको दान दिए। 9 (उसके चढ़ने
से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृय्वी की निचक्की जगहोंमें उतरा
भी या। 10 और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया,

कि सब कुछ परिपूर्ण करे)। 11 और उस ने कितनोंको भविष्यद्वकता नियुक्त
करके, और कितनोंको सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनोंको
रखवाले और उपकेशक नियुक्त करके दे दिया। 12 जिस से पवित्र लोग सिद्ध जो
जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। 13 जब
तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो
जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़
जाएं। 14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्योंकी ठग-विद्या और चतुराई
से उन के भ्रम की युक्तियोंकी, और उपकेश की, हर एक बयार से उछाले, और
इधर-उधर घुमाए जाते हों। 15 बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातोंमें
उस में जा सिर है, अर्यात मसीह में बढ़ते जाएं। 16 जिस से सारी देह हर एक जोड़
की सहाथता से एक साय मिलकर, और एक साय गठकर उस प्रभाव के अनुसार
जो हर एक भाग के परिमाण से उस में हाता है, अपके आप को बढ़ाती है, कि वह
प्रेम में उन्नति करती जाए।। 17 इसलिथे मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए
देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपके मन की अनर्य की रीति पर चलते हैं,
तुम अब से फिर ऐसे न चलो। 18 क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस
अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे
परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। 19 और वे सुन्न होकर, लुचपन में लग
गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें। 20 पर तुम ने मसीह
की ऐसी शिझा नहीं पाई। 21 बरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु
मे सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। 22 कि तुम अगले चालचलन के पुराने
मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है,

उतार डालो। 23 और अपके मन के आत्क़िक स्वभाव में नथे बनते जाओ। 24
और नथे मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता,
और पवित्रता में सृजा गया है।। 25 इस कारण फूठ बोलना छोड़कर हर एक
अपके पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। 26 क्रोध
तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। 27 और न
शैतान को अवसर दो। 28 चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे; बरन भले काम करने
में अपके हाथोंसे परिश्रम करे; इसलिथे कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके
पास कुछ हो। 29 कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के
अनुसार वही जो उन्नति के लिथे उत्तम हो, ताकि उस से सुननेवालोंपर अनुग्रह
हो। 30 और परमेश्वर के पवित्र आत्क़ा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर
छुटकारे के दिन के लिथे छाप दी गई है। 31 सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप
और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। 32
और एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में
तुम्हारे अपराध झमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध झमा करो।।

इफिसियों 5

1 इसलिथे प्रिय, बालकोंकी नाई परमेश्वर के सदृश बनो। 2 और प्रेम में चलो; जैसे
मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिथे अपके आप को सुखदायक
सुगन्ध के लिथे परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। 3 और जैसा
पवित्र लागोंके योग्य है, वैसा तु में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या
लोभ की चर्चा तक न हो। 4 और न निर्लज्ज़ता, न मूढ़ता की बातचीत की, न

ठट्ठे की, क्योंकि थे बातें सोहती नहीं, बरन धन्यवाद ही सुना जाएं। 5 क्योंकि
तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो
मूरत पूजनेवाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। 6
कोई तुम्हें व्यर्थ बातोंसे धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामोंके कारण परमेश्वर का
क्रोध आज्ञा ने माननेवालोंपर भड़कता है। 7 इसलिथे तुम उन के सहभागी न हो।
8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की
सन्तान की नाई चलो। 9 (क्योंकि ज्योंति का फल सब प्रकार की भलाई, और
धामिर्कता, और सत्य है)। 10 और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है 11 और
अन्धकार के निष्फल कामोंमें सहभागी न हो, बरन उन पर उलाहना दो। 12
क्योंकि उन के गुप्त कामोंकी चर्चा भी लाज की बात है। 13 पर जितने कामोंपर
उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को
प्रगट करता है, वह ज्योंति है। 14 इस कारण वह कहता है, हे सोनेवाले जाग और
मुर्दोंमें से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।। 15 इसलिथे ध्यान से
देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियोंकी नाईं नहीं पर बुद्धिमानोंकी नाईं चलो।
16 और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17 इस कारण निर्बुद्धि न
हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है 18 और दाखरस से मतवाले न
बनो, क्योंकि इस से लुचपर होता है, पर आत्क़ा से परिपूर्ण होते जाओ। 19 और
आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्क़िक गीत गाया करो, और अपके
अपके मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो। 20 और सदा सब
बातोंके लिथे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते
रहो। 21 और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।। 22 हे पत्नियों, अपके

अपके पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के। 23 क्योंकि पति पत्नी का सिर है
जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। 24 पर
जैसे कलीसिया मसही के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपके अपके
पति के आधीन रहें। 25 हे पतियों, अपक्की अपक्की पत्नी से प्रेम रखो, जैसा
मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपके आप को उसके लिथे दे दिया। 26 कि
उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए। 27 और उसे एक
ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपके मास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न फुरी,
न कोई ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो। 28 इसी प्रकार उचित है, कि
पति अपक्की अपक्की पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपके आप से प्रेम रखता है।
29 क्योंकि किसी ने कभी अपके शरीर से बैर नहीं रखा बरन उसका पालन-पोषण
करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साय करता है 30 इसलिथे कि हम उस की
देह के अंग हैं। 31 इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपक्की पत्नी से
मिला रहेगा, और वे दोनोंएक तन होंगे। 32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और
कलीसिया के विषय में कहता हूं। 33 पर तुम में से हर एक अपक्की पत्नी से
अपके समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपके पति का भय माने।।

इफिसियों 6

1 हे बालकों, प्रभु में अपके माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।
2 अपक्की माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साय
प्रतिज्ञा भी है)। 3 कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। 4
और हे बच्चेवालोंअपके बच्चोंको रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिझा, और

चितावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो।। 5 हे दासो, जो लोग शरीर के
अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपके मन की सीधाई से डरते, और कांपके हुए, जैसे
मसीह की, वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो। 6 और मनुष्योंको प्रसन्न
करनेवालोंकी नाई दिखाने के लिथे सेवा न करो, पर मसीह के दासोंकी नाई मन
से परमेश्वर की इच्छा पर चलो। 7 और उस सेवा को मनुष्योंकी नहीं, परन्तु प्रभु
की जानकर सुइच्छा से करो। 8 क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा
काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा। 9 और हे
स्वामियों, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साय वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि
जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दानोंका स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का
पझ नहीं करता।। 10 निदान, प्रभु में और उस की शक्ति में बलवन्त बनो। 11
परमेश्वर के सारे हियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियोंके साम्हने खड़े रह
सको। 12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानोंसे
और अधिक्कारनेियोंसे, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमोंसे, और उस
दुष्टता की आत्क़िक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। 13 इसलिथे परमेश्वर के सारे
हियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा
करके स्यिर रह सको। 14 सो सत्य से अपक्की कमर कसकर, और धार्मीकता की
फिलम पहिन कर। 15 और पांवोंमें मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन
कर। 16 और उन सब के साय विश्वास की ढाल लेकर स्यिर रहो जिस से तुम उस
दुष्ट के सब जलते हुए तीरोंको बुफा सको। 17 और उद्धार का टोप, और आत्क़ा
की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। 18 और हर समय और हर प्रकार से
आत्क़ा में प्रार्यना, और बिनती करते रहो, और इसी लिथे जागते रहो, कि सब

पवित्र लोगोंके लिथे लगातार बिनती किया करो। 19 और मेरे लिथे भी, कि मुझे
बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद
बता सकूं जिस के लिथे मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। 20 और यह भी कि
मैं उस के विषय में जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं।। 21 और तुखिकुस जो प्रिय
भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बताएगा, कि तुम भी मेरी
दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं। 22 उसे मैं ने तुम्हारे पास इसी लिथे भेजा है, कि
तुम हमारी दशा जानो, और वह तुम्हारे मनोंको शान्ति दे।। 23 परमेश्वर पिता
और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयोंको शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले।
24 जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता
रहे।।

फिलिप्पियों 1

1 मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुयियुस की ओर से सब पवित्र लोगोंके
नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यझोंऔर सेवकोंसमेत। 2
हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे।। 3 मैं जब जब तुम्हें स्क़रण करता हूं, तब तब अपके परमेश्वर का
धन्यवाद करता हूं। 4 और जब कभी तुम सब के लिथे बिनती करता हूं, तो सदा
आनन्द के साय बिनती करता हूं। 5 इसलिथे, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज
तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो। 6 और मुझे इस बात का
भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह
के दिन तक पूरा करेगा। 7 उचित है, कि मैं तुम सब के लिथे ऐसा ही विचार करूं

क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार के लिथे
उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साय अनुग्रह में सहभागी हो। 8 इस में
परमेश्वर मेरा गवाह है, कि मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा
करता हूं। 9 और मैं यह प्रार्यना करता हूं, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार
के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए। 10 यहां तक कि तुम उत्तम से उत्तम
बातोंको प्रिय जानो, और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो; और ठोकर न खाओ।
11 और उस धामिर्कता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते
जाओ जिस से परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे।। 12 हे भाइयों, मैं
चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की
बढ़ती हुई है। 13 यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगोंमें
यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिथे कैद हूं। 14 और प्रभु में जो भाई हैं, उन
में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन
निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं। 15 कितने तो डाह और फगड़े के
कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कितने भली मनसा से। 16 कई एक तो यह
जान कर कि मैं सुसमाचार के लिथे उत्तर देने को ठहराया गया हूं प्रेम से प्रचार
करते हैं। 17 और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कया सुनाते
हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिथे क्लेश उत्पन्न करें। 18 सो क्या हुआ
केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कया सुनाई
जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूं, और आनन्दित रहूंगा भी। 19 क्योंकि मैं
जानता हूं, कि तुम्हारी बिनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्क़ा के दान के
द्वारा इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा। 20 मैं तो यही हादिर्क लालसा और आशा

रखता हूं, कि मैं किसी बात में लज्ज़ित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के
कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे
मैं जीवित रहूं वा मर जाऊं। 21 क्योंकि मेरे लिथे जीवित रहना मसीह है, और मर
जाना लाभ है। 22 पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिथे
लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं। 23 क्योंकि मैं दोनोंके बीच
अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि
यह बहुत ही अच्छा है। 24 परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी
आवश्यक है। 25 और इसलिथे कि मुझे इस का भरोसा है सो मैं जानता हूं कि मैं
जीवित रहूंगा, बरन तुम सब के साय रहूंगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते
जाओ और उस में आनन्दित रहो। 26 और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते
हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए। 27 केवल
इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं
आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यह सुनूं, कि तुम एक ही
आत्क़ा में स्यिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिथे परिश्रम
करते रहते हो। 28 और किसी बात में विरोधियोंसे भय नहीं खाते यह उन के लिथे
विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिथे उद्धार का, और यह परमेश्वर की
ओर से है। 29 क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल
उस पर विश्वास करो पर उसके लिथे दुख भी उठाओ। 30 और तुम्हें वैसा ही
परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं
वैसा ही करता हूं।।

फिलिप्पियों 2

1 सो यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्क़ा की सहभागिता,
और कुछ करूणा और दया है। 2 तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो
और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। 3 विरोध या फूठी बड़ाई
के लिथे कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपके से अच्छा समझो। 4 हर
एक अपक्की ही हित की नहीं, बरन दूसरोंकी हित की भी चिन्ता करे। 5 जैसा
मसीह यीशु का स्वभाव या वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। 6 जिस ने परमेश्वर के
स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपके वश में रखने की वस्तु न
समझा। 7 बरन अपके आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण
किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। 8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर
अपके आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की
मृत्यु भी सह ली। 9 इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और
उसको वह नाम दिया जो सब नामोंमें श्र्ेष्ठ है। 10 कि जो स्वर्ग में और पृय्वी
पर और जो पृय्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। 11 और
परमेश्वर पिता की महिमा के लिथे हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह
ही प्रभु है।। 12 सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो,
वैसे ही अब भी न केवल मेरे साय रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर
भी डरते और कांपके हुए अपके अपके उद्धार का कार्य्य पूरा करते जाओ। 13
क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपक्की सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा
और काम, दोनोंबातोंके करने का प्रभाव डाला है। 14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए
और बिना विवाद के किया करो। 15 ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और
हठीले लोगोंके बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, (जिन के बीच में

तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकोंकी नाईं दिखाई देते हो)। 16
कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो, कि न मेरा दौड़ना और न मेरा
परिश्रम करना व्यर्थ हुआ। 17 और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और
सेवा के साय अपना लोहू भी बहाना पके तौभी मैं आनन्दित हूं, और तुम सब के
साय आनन्द करता हूं। 18 वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साय आनन्द
करो।। 19 मुझे प्रभु यीशु में आशा है, कि मैं तीमुयियुस को तुम्हारे पास तुरन्त
भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले। 20 क्योंकि मेरे पास ऐसे
स्वाभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। 21 क्योंकि सब
अपके स्वार्य की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। 22 पर उसको तो तुम ने
परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साय करता है, वैसा ही उस ने
सुसमाचार के फैलाने में मेरे साय परिश्रम किया। 23 सो मुझे आशा है, कि ज्योंही
मुझे जान पकेगा कि मेरी क्या दशा होगी, त्योंही मैं उसे तुरन्त भेज दूंगा। 24
और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा। 25 पर मैं ने इपफ्रदीतुस
को जो मेरा भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत, और आवश्यक
बातोंमें मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। 26
क्योंकि उसका मन तुम सब में लगा हुआ या, इस कारण वह व्याकुल रहता या
क्योंकि तुम ने उस की बीमारी का हाल सुना या। 27 और निश्चय वह बीमार तो
हो गया या, यहां तक कि मरने पर या, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और
केवल उस ही पर नहीं, पर मुझ पर भी, कि मुझे शोक पर शोक न हो। 28 इसलिथे
मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस से फिर भेंट करके
आनन्दित हो जाओ और मेरा शोक घट जाए। 29 इसलिथे तुम प्रभु में उस से

बहुत आनन्द के साय भेंट करना, और ऐसोंका आदर किया करना। 30 क्योंकि
वही मसीह के काम के लिथे अपके प्राणोंपर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो
गया या, ताकि जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई, उसे पूरा करे।।

फिलिप्पियों 3

1 निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो: वे ही बातें तुम को बार बार
लिखने में मुझे तो कोई कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता है। 2
कुत्तोंसे चौकस रहो, उन बुरे काम करनेवालोंसे चौकस रहो, उन काट कूट
करनेवालोंसे चौकस रहो। 3 क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के
आत्क़ा की अगुवाई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं
और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। 4 पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूं
यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उस से भी बढ़कर
रख सकता हूं। 5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्त्राएल के वंश, और बिन्यामीन
के गोत्र का हूं; इब्रानियोंका इब्रानी हूं; व्यवस्या के विषय में यदि कहो तो फरीसी
हूं। 6 उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्या
की धामिर्कता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष या। 7 परन्तु जो जो बातें मेरे
लाभ की यीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। 8 बरन मैं
अपके प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातोंको हानि
समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा
समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। 9 और उस में पाया जाऊं; न कि
अपक्की उस धामिर्कता के साय, जो व्यवस्या से है, बरन उस धामिर्कता के साय

जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने
पर मिलती है। 10 और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके
साय दुखोंमें सहभागी हाने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को
प्राप्त करूं। 11 ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक
पहुंचूं। 12 यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ
को पकड़ने के लिथे दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिथे मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा
या। 13 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह
एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातोंकी
ओर बढ़ता हुआ। 14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं,
जिस के लिथे परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। 15 सो हम में से
जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार
हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा। 16 सो जहां तक हम पहुंचे हैं,
उसी के अनुसार चलें।। 17 हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और
उन्हें पहिचान रखो, जो इस रीति पर चलते हैं जिस का उदाहरण तुम हम में पाते
हो। 18 क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिन की चर्चा मैं ने तुम से बार बार
किया है और अब भी रो रोकर कहता हूं, कि वे अपक्की चालचलन से मसीह के
क्रूस के बैरी हैं। 19 उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपक्की
लज्ज़ा की बातोंपर घमण्ड करते हैं, और पृय्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते
हैं। 20 पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम पर उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के
वहां से आन ही बाट जोह रहे हैं। 21 वह अपक्की शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार
जिस के द्वारा वह सब वस्तुओं को अपके वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन

देह का रूप बदलकर, अपक्की महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।।

फिलिप्पियों 4

1 इसलिथे हे मेरे प्रिय भाइयों, जिन में मेरा जी लगा रहता है जो मेरे आनन्द और
मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में इसी प्रकार स्यिर रहो।। 2 मैं यूआदिया को भी
समझाता हूं, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। 3 और हे सच्चे
सहकर्मी मैं तुझ से भी बिनती करता हूं, कि तू उन स्त्रियोंकी सहयता कर, क्योंकि
उन्होंने मेरे साय सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे उन और
सहकिर्मयोंसमेत परिश्र्म किया, जिन के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।
4 प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो। 5 तुम्हारी
कोमलता सब मनुष्योंपर प्रगट हो: प्रभु निकट है। 6 किसी भी बात की चिन्ता
मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्यना और बिनती के द्वारा
धन्यवाद के साय परमेश्वर के सम्मुख अपस्यित किए जाएं। 7 तब परमेश्वर की
शान्ति, जो समझ से बिलकुल पके है, तुम्हारे ह्रृदय और तुम्हारे विचारोंको
मसीह यीशु में सुरिझत रखेगी।। 8 निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और
जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं,
और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो
सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो। 9 जो बातें तुम ने
मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन
किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साय रहेगा।। 10 मैं प्रभु
में बहुत आनन्दित हूं कि अब इतने दिनोंके बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में

फिर जागृत हुआ है; निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार या, पर तुम्हें
अवसर न मिला। 11 यह नहीं कि मैं अपक्की घटी के कारण यह कहता हूं;
क्योंकि मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं। 12 मैं दीन
होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात और सब दशाओं में
तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है। 13 जो मुझे सामर्य देता है
उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं। 14 तौभी तुम ने भला किया, कि मेरे क्लेश में
मेरे सहभागी हुए। 15 और हे फिलप्पियो, तुम आप भी जानते हो, कि सुसमाचार
प्रचार के आरम्भ में जब मैं ने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और
किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहयता नहीं की। 16 इसी प्रकार जब
मैं यिस्सलुनीके में या; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिथे एक बार क्या
बरन दो बार कुछ भेजा या। 17 यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु मैं ऐसा फल
चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिथे बढ़ता जाए। 18 मेरे पास सब कुछ है, बरन
बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी यीं उन्हें पाकर
मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो
परमेश्वर को भाता है। 19 और मेरा परमश्ेवर भी अपके उस धन के अनुसार जो
महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। 20 हमारे
परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।। 21 हर एक पवित्र
जन को जो यीशु मसीह में हैं नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साय हैं तुम्हें नमस्कार
कहते हैं। 22 सब पवित्र लोग, विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं तुम को
नमस्कार कहते हैं।। 23 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्क़ा के
साय रहे।।

कुलुस्सियों 1

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई
तीमुयियुस की ओर से। 2 मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयोंके नाम जो
कुलुस्से में रहते हैं।। हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
प्राप्त होती रहे।। 3 हम तुम्हारे लिथे नित प्रार्यना करके अपके प्रभु यीशु मसीह
के पिता अर्यात परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। 4 क्योंकि हम ने सुना है, कि
मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगोंसे प्रेम रखते हो। 5 उस
आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिथे स्वर्ग में रखी हुई है, जिस का
वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो। 6 जो तुम्हारे पास
पहुंचा है और जैसा जगत में भी फल लाता, और बढ़ता जाता है; अर्यात जिस दिन
से तुम ने उस को सुना, और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में
भी ऐसा ही करता है। 7 उसी की शिझा तुम ने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से
पाई, जो हमारे लिथे मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। 8 उसी ने तुम्हारे प्रेम को
जो आत्क़ा में है हम पर प्रगट किया।। 9 इसी लिथे जिस दिन से यह सुना है, हम
भी तुम्हारे लिथे यह प्रार्यना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे
आत्क़िक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो
जाओ। 10 ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से
प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामोंका फल लगे, और परमेश्वर की
पहिचान में बढ़ते जाओ। 11 और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार
की सामर्य से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साय हर प्रकार से
धीरज और सहनशीलता दिखा सको। 12 और पिता का धन्यवाद करते रहो,

जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगोंके साय मीरास में
समभागी हों। 13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपके प्रिय पुत्र के
राज्य में प्रवेश कराया। 14 जिस से हमें छुटकारा अर्यात पापोंकी झमा प्राप्त होती
है। 15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। 16
क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अयवा पृय्वी की, देखी
या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिक्कारने,
सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिथे सृजी गई हैं। 17 और वही सब
वस्तुओं में प्रयम है, और सब वस्तुएं उसी में स्यिर रहती हैं। 18 और वही देह,
अर्यात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालोंमें
पहिलौठा कि सब बातोंमें वही प्रधान ठहरे। 19 क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी
में है कि उस में सरी परिपूर्णता वास करे। 20 और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के
द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपके साय मेल कर ले
चाहे वे पृय्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। 21 और उस ने अब उसकी शारीरिक
देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे
कामोंके कारण मन से बैरी थे। 22 ताकि तुम्हें अपके सम्मुख पवित्र और
निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्यित करे। 23 यदि तुम विश्वास की नेव पर
दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिस
का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिस का मैं पौलुस
सेवक बना।। 24 अब मैं उन दुखोंके कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिथे
उठाता हूं, और मसीह के क्लेशोंकी घटी उस की देह के लिथे, अर्यात कलीसिया के
लिथे, अपके शरीर में पूरी किए देता हूं। 25 जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के

अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिथे मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन
को पूरा पूरा प्रचार करूं। 26 अर्यात्‌ उस भेद को समयोंऔर पीढिय़ोंसे गुप्त रहा,
परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगोंपर प्रगट हुआ है। 27 जिन पर परमेश्वर ने
प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियोंमें उस भेद की महिमा का
मूल्य क्या है और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।
28 जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर
एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके
उपस्यित करें। 29 और इसी के लिथे मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में
सामर्थ के साय प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्र्म भी करता हूं।

कुलुस्सियों 2

1 मैं चाहता हूं कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और
उन सब के लिथे जिन्होंने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्र्म करता हूं।
2 ताकि उन के मनोंमें शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी
समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्यात्‌ मसीह को
पहिचान लें। 3 जिस में बुद्धि और ज्ञान से सारे भण्डार छिपे हुए हैं। 4 यह मैं
इसलिथे कहता हूं, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातोंसे धोखा न दे। 5
क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूं, तौभी आत्क़िक भाव से तुम्हारे
निकट हूं, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में
है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं।। 6 सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके
ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो। 7 और उसी में जड़ पकड़ते और

बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और
अत्यन्त धन्यवाद करते रहो।। 8 चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और
व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न करे ले, जो मनुष्योंके परम्पराई मत और संसार की
आदि शिझा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। 9 क्योंकि उस में ईश्वरत्व
की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। 10 और तुम उसी में भरपूर हो गए हो
जो सारी प्रधानता और अधिक्कारने का शिरोमणि है। 11 उसी में तुम्हारा ऐसा
खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्यात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक
देह उतार दी जाती है। 12 और उसी के साय बपतिस्क़ा में गाड़े गए, और उसी में
परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया,
उसके साय जी भी उठे। 13 और उस ने तुम्हें भी, जो अपके अपराधों, और अपके
शरीर की खतनारिहत दशा में मुर्दा थे, उसे साय जिलाया, और हमारे सब
अपराधोंको झमा किया। 14 और विधियोंका वह लेख जो हमारे नाम पर और
हमारे विरोध में या मिटा डाला; और उस को क्रूस पर कीलोंसे जड़कर साम्हने से
हटा दिया है। 15 और उस ने प्रधानताओं और अधिक्कारनोंको अपके ऊपर से
उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर
जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई ।। 16 इसलिथे खाने पीने या पर्ब्ब या नए चान्द,
या सब्तोंके विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। 17 क्योंकि थे सब आनेवाली
बातोंकी छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं। 18 कोई मनुष्य दीनता और
स्वर्गदूतोंकी पूजा करके तुम्हें दोड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य
देखी हुई बातोंमें लगा रहता है और अपक्की शारीरिक समझ पर व्यर्य फूलता है।
19 और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिस से सारी देह जोड़ोंऔर पट्ठोंके

द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साय गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती
है।। 20 जब कि तुम मसीह के साय संसार की आदि शिझा की ओर से मर गए हो,
तो फिर उन के समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्योंकी आज्ञाओं और
शिझानुसार 21 और ऐसी विधियोंके वश में क्योंरहते हो कि यह न छूना, उसे न
चखना, और उसे हाथ न लगाना। 22 (क्योंकि थे सब वस्तु काम में लाते लाते
नाश हो जाएंगी)। 23 इन विधियोंमें अपक्की इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की
रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है,
परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन के कुछ भी लाभ नहीं होता।।

कुलुस्सियों 3

1 सो जब तुम मसीह के साय जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो,
जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दिहनी ओर बैठा है। 2 प्रय्वी पर की नहीं
परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। 3 क्योंकि तुम तो मर गए, और
तुम्हारा जीवन मसीह के साय परमेश्वर में छिपा हुआ है। 4 जब मसीह जो हमारा
जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साय महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।
5 इसलिथे अपके उन अंगो को मार डालो, जो पृय्वी पर हैं, अर्यात व्यभिचार,
अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूतिर् पूजा के बराबर है। 6
इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न माननेवालोंपर पड़ता है। 7 और
तुम भी, जब इन बुराइयोंमें जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। 8
पर अब तुम भी इन सब को अर्यात क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से
गालियां बकना थे सब बातें छोड़ दो। 9 एक दूसरे से फूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने

पुराने मनुष्यत्व को उसके कामोंसमेत उतार डाला है। 10 और नए मनुष्यत्व को
पहिन लिया है जो अपके सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के
लिथे नया बनता जाता है। 11 उस में न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न
खतनारिहत, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र: केवल मसीह सब कुछ
और सब में है।। 12 इसलिथे परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय
हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण
करो। 13 और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे
की सह लो, और एक दूसरे के अपराध झमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध
झमा किए, वैसे ही तुम भी करो। 14 और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का
किटबन्ध है बान्ध लो। 15 और मसीह की शान्ति जिस के लिथे तुम एक देह
होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे ह्रृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।
16 मसीह के वचन को अपके ह्रृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान
सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपके अपके मन में अनुग्रह के
साय परमेश्वर के लिथे भजन और स्तुतिगान और आत्क़िक गीत गाओ। 17 और
वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके
द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।। 18 हे पत्नियो, जेसा प्रभु में उचित है,
वैसा ही अपके अपके पति के आधीन रहो। 19 हे पतियो, अपक्की अपक्की पत्नी
से प्रेम रखो, और उन से कठोरता न करो। 20 हे बालको, सब बातोंमें अपके अपके
माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है। 21 हे
बच्चेवालो, अपके बालकोंको तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट जाए। 22 हे
सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातोंमें उन की आज्ञा का

पालन करो, मनुष्योंको प्रसन्न करनेवालोंकी नाईं दिखाने के लिथे नहीं, परन्तु
मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। 23 और जो कुछ तुम करते हो, तन मन
से करो, यह समझकर कि मनुष्योंके लिथे नहीं परन्तु प्रभु के लिथे करते हो। 24
क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु
मसीह की सेवा करते हो। 25 क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपक्की बुराई का
फल पाएगा; वहां किसी का पझपात नहीं।

कुलुस्सियों 4

1 हे स्वामियों, अपके अपके दासोंके साय न्याय और ठीक ठीक व्यवहार करो,
यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।। 2 प्रार्यना में लगे रहो, और
धन्यवाद के साय उस में जागृत रहो। 3 और इस के साय ही साय हमारे लिथे भी
प्रार्यना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिथे वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि
हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिस के कारण मैं कैद में हूं। 4 और उसे
ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है। 5 अवसर को बहुमूल्य समझकर
बाहरवालोंके साय बुद्धिमानी से बर्ताव करो। 6 तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित
और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए। 7
प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी
सब बातें तुम्हें बता देगा। 8 उसे मैं ने इसलिथे तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम्हें
हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयोंको शान्ति दे। 9 और उसके
साय उनेसिमुस को भी भेजा है जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से
है, थे तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे।। 10 अरिस्तर्खुस जो मेरे साय कैदी है,

और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता है। (जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई
यी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उस से अच्छी तरह व्यवहार करना।) 11
और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुए
लोगोंमें से केवल थे ही परमेश्वर के राज्य के लिथे मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति
का कारण रहे हैं। 12 इपफ्रास जो तुम में से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम से
नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिथे प्रार्यनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि
तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साय परमेश्वर की इच्छा पर स्यिर रहो। 13 मैं
उसका गवाह हूं, कि वह तुम्हारे लिथे और लौदीकिया और हियरापुलिसवालोंके
लिथे बड़ा यत्न करता रहता है। 14 प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें
नमस्कार। 15 लौदीकिया के भाइयोंको और तुमफास और उन के घर की
कलीसिया को नमस्कार कहना। 16 और जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया
जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र
जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। 17 फिर अखिर्प्पुस से कहना कि जो
सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साय पूरी करना।। 18 मुझ पौलुस
का अपके हाथ से लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरोंको स्क़रण रखना; तुम पर
अनुग्रह होता रहे। आमीन।।

1 थिस्सलुनीकियों 1

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुयियुस की ओर से यिस्सलुनिकियोंकी
कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है।। अनुग्रह और
शान्ति तुम्हें मिलती रहे।। 2 हम अपक्की प्रार्यनाओं में तुम्हें स्क़रण करते और

सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। 3 और अपके परमेश्वर
और पिता के साम्हने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे
प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्क़रण करते हैं। 4 और हे
भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगोंहम जानतें हैं, कि तुम चुने हुए हो। 5 क्योंकि
हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में बरन सामर्थ और पवित्र
आत्क़ा, और बड़े निश्चय के साय पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे
लिथे तुम में कैसे बन गए थे। 6 और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्क़ा के आनन्द
के साय वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। 7 यहां तक
कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियोंके लिथे तुम आदर्श बने। 8
क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया
गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है,
कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। 9 क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में
बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्योंकि मूरतोंसे
परमेश्वर की ओर फिरें ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। 10 और
उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे हुओं में से
जिलाया, अर्यात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।।

1 थिस्सलुनीकियों 2

1 हे भाइयों, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्य न हुआ। 2
बरन तुम आप ही जानते हो, कि पहिले पहिल फिलिप्पी में दुख उठाने और
उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि हम परमेश्वर

का सुसमाचार भारी विरोधोंके होते हुए भी तुम्हें सुनाएं। 3 क्योंकि हमारा उपकेश
न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साय है। 4 पर जैसा परमेश्वर ने
हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इस में
मनुष्योंको नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनोंको जांचता है, प्रसन्न करते
हैं। 5 क्योंकि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते
थे, और न लोभ के लिथे बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। 6 और यद्यपि हम
मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोफ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्योंसे
आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। 7 परन्तु जिस तरह माता
अपके बालकोंका पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर
कोमलता दिखाई है। 8 और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल
परमेश्वर को सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे,
इसलिथे कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। 9 क्योंकि, हे भाइयों, तुम हमारे परिश्र्म
और कष्ट को स्क़रण रखते हो, कि हम ने इसलिथे रात दिन काम अन्धा करते
हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से किसी पर भार न
हों। 10 तुम आप ही गवाह हो: और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास
रखते हो हम कैसी पवित्रता और धामिर्कता और निर्दोषता से रहे। 11 जैसे तुम
जानते हो, कि जैसा पिता अपके बालकोंके साय बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम
में से हर एक को भी उपकेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे। 12 कि
तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपके राज्य और महिमा में
बुलाता है।। 13 इसलिथे हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब
हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उस

मनुष्योंका नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही
है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है। 14
इसलिथे कि तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने
लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपके लोगोंसे वैसा ही
दुख पाया, जैसा उन्होंने यहूदियोंसे पाया या। 15 जिन्होंने प्रभु यीशु को और
भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्वर उन से
प्रसन्न नहीं; और वे सब मनुष्योंको विरोध करते हैं। 16 और वे अन्यजातियोंसे
उन के उद्धार के लिथे बातें करने से हमें रोकते हैं, कि सदा अपके पापोंका नपुआ
भरते रहें; पर उन पर भयानक प्रकोप आ पहुंचा है।। 17 हे भाइयों, जब हम योड़ी
देर के लिथे मन में नहीं बरन प्रगट में तुम से अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी
लालसा के साय तुम्हारा मुंह देखने के लिथे और भी अधिक यत्न किया। 18
इसलिथे हम ने (अर्यात्‌ मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं, बरन दो बार तुम्हारे पास
आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा। 19 भला हमारी आशा, या आनन्द या
बड़ाई का मुकुट क्या है क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम
ही न होगे 20 हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।।

1 थिस्सलुनीकियों 3

1 इसलिथे जब हम से और भी न रहा गया, तो हम ने यह ठहराया कि एथेन्स में
अकेले रह जाएं। 2 और हम ने तीमुयियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा
भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिथे भेजा, कि वह तुम्हें स्यिर करे; और
तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए। 3 कि कोई इन क्लेशोंके कारण

डगमगा न जाए; क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम इन ही के लिथे ठहराए गए
हैं। 4 क्योंकि पहिले भी, जब हम तुम्हारे यहां थे, तो तुम ने कहा करते थे, कि हमें
क्लेश उठाने पकेंगे, और ऐसा ही हुआ है, और तुम जानते भी हो। 5 इस कारण
जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिथे भेजा,
कि कहीं ऐसा न हो, कि पक्कीझा करनेवाले ने तुम्हारी पक्कीझा की हो, और
हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो। 6 पर अभी तीमुयियुस ने जो तुम्हारे पास से
हमारे यहां आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात
को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के साय हमें स्क़रण करते हो, और हमारे देखने
की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। 7 इसलिथे हे भाइयों, हम ने
अपक्की सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति
पाई। 8 क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्यिर रहो तो हम जीवित हैं। 9 और जैसा
आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपके परमेश्वर के साम्हने है, उसके बदले तुम्हारे
विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें 10 हम राज दिन बहुत ही
प्रार्यना करते रहते हैं, कि तुम्हारा मुंह देखें, और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी
करें।। 11 अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे
यहां आने के लिथे हमारी अगुवाई करे। 12 और प्रभु ऐसा करे, कि जेसा हम तुम
से प्रेम रखते हैं; वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्योंके साय बढ़े,
और उन्नति करता जाए। 13 ताकि वह तुम्हारे मनोंको ऐसा स्यिर करे, कि जब
हमारा प्रभु यीशु अपके सब पवित्र लोगोंके साय आए, तो वे हमारे परमेश्वर और
पिता के साम्हने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।।

1 थिस्सलुनीकियों 4

1 निदान, हे भाइयों, हम तुम से बिनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते
हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना
सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। 2 क्योंकि तुम
जानते हो, कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई। 3
क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्यात् व्यभिचार से बचे
रहो। 4 और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साय अपके पात्र को प्राप्त
करना जाने। 5 और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियोंकी नाई, जो
परमेश्वर को नहीं जानतीं। 6 कि इस बात में कोई अपके भाई को न ठगे, और न
उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इस सब बातोंका पलटा लेनेवाला है; जैसा कि
हम ने पहिले तुम से कहा, और चिताया भी या। 7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध
होने के लिथे नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिथे बुलाया है। 8 इस कारण जो तुच्छ
जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना
पवित्र आत्क़ा तुम्हें देता है।। 9 किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह अवश्य
नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं; क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही
परमेश्वर से सीखा है। 10 और सारे मकिदुनिया के सब भाइयोंके साय ऐसा करते
भी हो, पर हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि और भी बढ़ते जाओ। 11 और
जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना अपना काम काज
करने, और अपके अपके हाथोंसे कमाने का प्रयत्न करो। 12 कि बाहरवालोंके
साय सभ्यता से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो।। 13 हे भाइयों,
हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि
तुम औरोंकी नाई शोक करो जिन्हें आशा नहीं। 14 क्योंकि यदि हम प्रतीति करते

हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो
गए हैं, उसी के साय ले आएगा। 15 क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से
यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं
से कभी आगे न बढ़ेंगे। 16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय
ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी
जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। 17 तब हम जो जीवित और
बचे रहेंगे, उन के साय बादलोंपर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और
इस रीति से हम सदा प्रभु के साय रहेंगे। 18 सो इन बातोंसे एक दूसरे को शान्ति
दिया करो।।

1 थिस्सलुनीकियों 5

1 पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयोंऔर कालोंके विषय में तुम्हारे
पास कुछ लिखा जाए। 2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर
आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। 3 जब लोग कहते होंगे, कि कुशल हैं,
और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पकेगा, जिस प्रकार गर्भवती
पर पीड़ा; और वे किसी रीति से बचेंगे। 4 पर हे भाइयों, तुम तो अन्धकार में नहीं
हो, कि वह दिन तुम पर चोर की नाईं आ पके। 5 क्योंकि तुम सब ज्योति की
सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं। 6
इसलिथे हम औरोंकी नाईं सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें। 7 क्योंकि
जो सोते हैं, वे रात ही को सोतें हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे रात ही को मतवाले
होते हैं। 8 पर हम तो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की फिलम पहिनकर और

उद्धार की टोप पहिनकर सावधान रहें। 9 क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिथे
नहीं, परन्तु इसलिथे ठहराया कि हम अपके प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त
करें। 10 वह हमारे लिथे इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों:
सब मिलकर उसी के साय जीएं। 11 इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो, और
एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो, निदान, तुम ऐसा करते भी हो।। 12 और हे
भाइयों, हम तुम से बिनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्र्म करते हैं, और प्रभु में
तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिझा देते हैं, उन्हें मानो। 13 और उन के काम के
कारण प्रेम के साय उन को बहुत ही आदर के योग्य समझो: आपस में
मेल-मिलाप से रहो। 14 और हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल
नहीं चलते, उन को समझाओ, कायरोंको ढाढ़स दो, निर्बलोंको संभालो, सब की
ओर सहनशीलता दिखाओ। 15 सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न
करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सब से भी भलाई ही की
चेष्टा करो। 16 सदा आनन्दित रहो। 17 निरन्तर प्रार्यना मे लगे रहो। 18 हर
बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिथे मसीह यीशु में परमेश्वर की यहीं
इच्छा है। 19 आत्क़ा को न बुफाओ। 20 भविष्यद्वाणियोंको तुच्छ न जानो। 21
सब बातोंको परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो। 22 सब प्रकार की बुराई से बचे
रहो।। 23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी
आत्क़ा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और
निर्दोष सुरिझत रहें। 24 तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।।
25 हे भाइयों, हमारे लिथे प्रार्यना करो।। 26 सब भाइयोंको पवित्र चुम्बन से
नमस्कार करो। 27 मैं तुम्हें प्रभु की शपय देता हूं, कि यह पत्री सब भाइयोंको

पढ़कर सुनाई जाए।। 28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।।

2 थिस्सलुनीकियों 1

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुयियुस की ओर से यिस्सलुनीकियोंकी
कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है।। 2 हमारे
पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।। 3
हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए,
और यह उचित भी है इसलिथे कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम
सब को प्रेम आपस में बहुत ही होता जाता है। 4 यहां तक कि हम आप परमेश्वर
की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि जितने उपद्रव और क्लेश
तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है। 5 यह
परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य
ठहरो, जिस के लिथे तुम दुख भी उठाते हो। 6 क्योंकि परमेश्वर के निकट यह
न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। 7 और तुम्हें जो
क्लेश पाते हो, हमारे साय चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपके सामर्यी
दूतोंके साय, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। 8 और जो परमेश्वर को
नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा
लेगा। 9 वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त
विनाश का दण्ड पाएंगे। 10 यह उस दिन होगा, जब वह अपके पवित्र लोगोंमें
महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालोंमें आश्चर्य का कारण होने को आएगा;
क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतीति की। 11 इसी लिथे हम सदा तुम्हारे

निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य
समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ
सहित पूरा करे। 12 कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के
अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में।।

2 थिस्सलुनीकियों 2

1 हे भाइयों, तुम अपके प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपके इकट्ठे
होने के विषय में तुम से बिनती करते हैं। 2 कि किसी आत्क़ा, या वचन, या पत्री
के द्वारा जो कि मानोंहमारी ओर से को, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा
है, तुम्हारा मन अचानक अस्यिर न हो जाए; और न तुम घबराओ। 3 किसी रीति
से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग
न हो ले, और वह पाप का पुरूष अर्यात विनाश का पुत्र प्रगट न हो। 4 जो विरोध
करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपके आप को बड़ा
ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपके आप को
परमेश्वर प्रगट करता है। 5 क्या तुम्हें स्क़रण नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहां या,
तो तुम से थे बातें कहा करता या 6 और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे
रोक रही है, कि वह अपके ही समय में प्रगट हो। 7 क्योंकि अधर्म का भेद अब भी
कार्य्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो
जाए, वह रोके रहेगा। 8 तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपके मुंह को
फंूक से मार डालेगा, और अपके आगमन के तेज से भस्क़ करेगा। 9 उस अधर्मी
का आना शैतान के कार्य्य के अनुसार सब प्रकार की फूठी सामर्य, और चिन्ह,

और अद्भुत काम के साय। 10 और नाश होनेवालोंके लिथे अधर्म के सब प्रकार के
धोखे के साय होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से
उन का उद्धार होता। 11 और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देनेवाली
सामर्य को भेजेगा ताकि वे फूठ की प्रतीति करें। 12 और जितने लोग सत्य की
प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं।। 13 पर हे
भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो चाहिथे कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का
धन्यवाद करते रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्क़ा के द्वारा
पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। 14 जिस के लिथे उस ने
तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा
को प्राप्त करो। 15 इसलिथे, थे भाइयों, स्यिर; और जो जो बातें तुम ने क्या
वचन, क्या पत्री के द्वारा हम से सीखी है, उन्हें यामे रहो।। 16 हमारा प्रभु यीशु
मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर जिस ने हम से प्रेम रखा, और अनुग्रह
से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है। 17 तुम्हारे मनोंमें शान्ति दे, और तुम्हें
हर एक अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करे।।

2 थिस्सलुनीकियों 3

1 निदान, हे भाइयो, हमारे लिथे प्रार्यना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र
फैले, और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ। 2 और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्योंसे
बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं।। 3 परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता
से स्यिर करेगा: और उस दुष्ट से सुरिझत रखेगा। 4 और हमें प्रभु में तुम्हारे
ऊपर भरोसा है, कि जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और

मानते भी रहोगे। 5 परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे
मन की अगुवाई करे।। 6 हे भाइयों, हम तुम्हें अपके प्रभु यीशु मसीह के नाम से
आज्ञा देते हैं; कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और
जो शिझा उस ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता। 7 क्योंकि तुम आप
जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे
बीच में अनुचित चाल न चले। 8 और किसी की रोटी सेंत में न खाई; पर परिश्र्म
और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो। 9
यह नहीं, कि हमें अधिक्कारने नहीं; पर इसलिथे कि अपके आप को तुम्हारे लिथे
आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो। 10 और जब हम तुम्हारे यहां थे,
तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न
पाए। 11 हम सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं;
और कुछ काम नहीं करते, पर औरोंके काम में हाथ डाला करते हैं। 12 ऐसोंको
हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके
अपक्की ही रोटी खाया करें। 13 और तुम, हे भाइयो, भलाई करने में हियाव न
छोड़ो। 14 यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो;
और उस की संगति न करो, जिस से वह लज्ज़ित हो; 15 तौभी उसे बैरी मन
समझो पर भाई जानकर चिताओ।। 16 अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही
तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे: प्रभु तुम सब के साय रहे।। 17 मैं पौलुस
अपके हाथ से नमस्कार लिखता हूं: हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है: मैं इसी प्रकार
से लिखता हूं। 18 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।।

1 तीमुथियुस 1

1 पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, और हमारी आशा-स्यान
मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है, तिमुयियुस के नाम जो विश्वास
में मेरा सच्चा पुत्र है।। 2 पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु से, तुझे
अनुग्रह और दया, और शान्ति मिलती रहे।। 3 जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते
समय तुझे समझाया या, कि इफिसुस में रहकर कितनोंको आज्ञा दे कि और
प्रकार की शिझा न दें। 4 और उन ऐसी कहानियोंऔर अनन्त वंशावलियोंपर मन
न लगाएं, जिन से विवाद होते हैं; और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं,
जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है; वैसे ही फिर भी कहता हूं। 5 आज्ञा का सारांश
यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरिहत विश्वास से प्रेम उत्पन्न
हो। 6 इन को छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं। 7 और
व्यवस्यापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते
हैं, उन को समझते भी नहीं। 8 पर हम जानते हैं, कि यदि कोई व्यवस्या को
व्यवस्या की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। 9 यह जानकर कि व्यवस्या
धर्मी जन के लिथे नहीं, पर अधमिर्यों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापीयों,
अपवित्रोंऔर अशुद्धों, मां-बाप के घात करनेवालों, हत्यारों। 10 व्याभिचारियों,
पुरूषगामियों, मनुष्य के बेचनेवालों, फूठों, और फूठी शपय खानेवालों, और इन
को छोड़ खरे उपकेश के सब विरोधियोंके लिथे ठहराई गई है। 11 यही परमधन्य
परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है।। 12
और मैं, अपके प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्य दी है, धन्यवाद करता हूं;
कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपक्की सेवा के लिथे ठहराया। 13 मैं तो
पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला या; तौभी मुझ

पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूफे, थे काम किए
थे। 14 और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साय जो मसीह यीशु
में है, बहुतायत से हुआ। 15 यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है,
कि मसीह यीशु पापियोंका उद्धार करने के लिथे जगत में आया, जिन में सब से
बड़ा मैं हूं। 16 पर मुझपर इसलिथे दया हुई, कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु
मसीह अपक्की पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के
लिथे विश्वास करेंगे, उन के लिथे मैं एक आदर्श बनूं। 17 अब सनातन राजा अर्यात
अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे।
आमीन।। 18 हे पुत्र तीमुयियुस, उन भविष्यद्ववाणियोंके अनुसार जो पहिले तेरे
विषय में की गई यीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई
को लड़ता रहे। 19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को यामें रहे जिसे दूर
करने के कारण कितनोंका विश्वास रूपी जहाज डूब गया। 20 उन्हीं में से
हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना
न सीखें।।

1 तीमुथियुस 2

1 अब मैं सब से पहिले यह उपकेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्यना, और
निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्योंके लिथे किए जाएं। 2 राजाओं और सब ऊंचे
पदवालोंके निमित्त इसलिथे कि हम विश्रम और चैन के साय सारी भक्ति और
गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता,
और भाता भी है। 3 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता

भी है। 4 वह यह चाहता है, कि सब मनुष्योंका उद्धार हो; और वे सत्य को भली
भांति पहिचान लें। 5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्योंके
बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्यात मसीह यीशु जो मनुष्य है। 6 जिस ने अपके
आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयोंपर
दी जाए। 7 मैं सच कहता हूं, फूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और
प्रेरित और अन्यजातियोंके लिथे विश्वास और सत्य का उपकेशक ठहराया
गया।। 8 सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरूष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र
हाथोंको उठाकर प्रार्यना किया करें। 9 वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के
साय सुहावने वस्त्रोंसे अपके आप को संवारे; न कि बाल गूंयने, और सोने, और
मोतियों, और बहुमोल कपड़ोंसे, पर भले कामोंसे। 10 क्योंकि परमेश्वर की भक्ति
ग्रहण करनेवाली स्त्रियोंको यही उचित भी है। 11 और स्त्री को चुपचाप पूरी
आधीनता में सीखना चाहिए। 12 और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपकेश करे, और न
पुरूष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। 13 क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद
हव्वा बनाई गई। 14 और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर
अपराधिनी हुई। 15 तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी, यदि वे संयम सहित
विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्यिर रहें।।

1 तीमुथियुस 3

1 यह बात सत्य है, कि जो अध्यझ होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा
करता है। 2 सो चाहिए, कि अध्यझ निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी,
सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। 3 पिय?ड़ या

मारपीट करनेवाला न हो; बरन कोमल हो, और न फगड़ालू, और न लोभी हो। 4
अपके घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़के-बालोंको सारी गम्भीरता से
आधीन रखता हो। 5 (जब कोई अपके घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो
परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा)। 6 फिर यह कि नया चेला न
हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। 7 और बाहरवालोंमें
भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए। 8
वैसे ही सेवकोंको भी गम्भीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के
लोभी न हों। 9 पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरिझत रखें। 10 और थे भी
पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें। 11 इसी
प्रकार से स्त्रियोंको भी गम्भीर होना चाहिए; दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत
और सब बातोंमें विश्वासयोग्य हों। 12 सेवक एक ही पत्नी के पति होंऔर
लड़केबालोंऔर अपके घरोंका अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। 13 क्योंकि जो
सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपके लिथे अच्छा पद और उस
विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं।। 14 मैं तेरे पास
जल्द आने की आशा रखने पर भी थे बातें तुझे इसलिथे लिखता हूं। 15 कि यदि
मेरे आने में देर हो तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की
कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना
चाहिए। 16 और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्यात् वह जो
शरीर में प्रगट हुआ, आत्क़ा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतोंको दिखाई दिया,
अन्यजातियोंमें उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और
महिमा में ऊपर उठाया गया।।

1 तीमुथियुस 4

1 परन्तु आत्क़ा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयोंमें कितने लोग
भरमानेवाली आत्क़ाओं, और दुष्टात्क़ाओं की शिझाओं पर मन लगाकर विश्वास
से बहक जाएंगे। 2 यह उन फूठे मनुष्योंके कपट के कारण होगा, जिन का विवेक
मानोंजलते हुए लोहे से दागा गया है। 3 जो ब्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की
कुछ वस्तुओं से पके रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिथे सृजा कि
विश्वासी, और सत्य के पहिचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साय खाएं। 4 क्योंकि
परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के
योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साय खाई जाए। 5 क्योंकि परमेश्वर के वचन
और प्रार्यना से शुद्ध हो जाती है।। 6 यदि तू भाइयोंको इन बातोंकी सुधि दिलाता
रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा: और विश्वास और उस अच्छे
उपकेश की बातोंसे, जा तू मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता रहेगा। 7 पर
अशुद्ध और बूढिय़ोंकी सी कहानियोंसे अलग रह; और भक्ति के लिथे अपना साधन
कर। 8 क्योंकि देह ही साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातोंके लिथे
लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के
लिथे है। 9 और यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है। 10 क्योंकि
हम परिश्रम और यत्न इसी लिथे करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर
पर है; जो सब मनुष्योंका, और निज करके विश्वासियोंका उद्धारकर्ता है। 11 इन
बातोंकी आज्ञा कर, और सिखाता रह। 12 कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने
पाए; पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में
विश्वासियोंके लिथे आदर्श बन जा। 13 जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने और

उपकेश और सिखाने में लौलीन रह। 14 उस वरदान से जो तुझ में है, और
भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनोंके हाथ रखते समय तुझे मिला या, निश्‍चिन्‍त न
रह। 15 उन बातोंको सोचता रह, ताकि तेरी उन्‍नति सब पर प्रगट हो। अपक्की
और अपके उपकेश की चौकसी रख। 16 इन बातोंपर स्यिर रह, क्योंकि यदि ऐसा
करता रहेगा, तो तू अपके, और अपके सुननेवालोंके लिथे भी उद्धार का कारण
होगा।।

1 तीमुथियुस 5

1 किसी बूढ़े को न डांट; पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानोंको भाई
जानकर; बूढ़ी स्‍त्रियोंको माता जानकर। 2 और जवान स्‍त्रियोंको पूरी पवित्रता से
बहिन जानकर, समझा दे। 3 उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर कर।
4 और यदि किसी विधवा के लड़केबाले या नातीपोते हों, तो वे पहिले अपके ही
घराने के साय भक्ति का बर्ताव करना, और अपके माता-पिता आदि को उन का
हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है। 5 जो सचमुच विधवा है, और
उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात दिन बिनती और
प्रार्यना में लौलीन रहती है। 6 पर जो भोगविलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई
है। 7 इन बातोंकी भी आज्ञा दिया कर, ताकि वे निर्दोष रहें। 8 पर यदि कोई
अपनोंकी और निज करके अपके घराने की चिन्‍ता न करे, तो वह विश्वास से
मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है। 9 उसी विधवा का नाम
लिखा जाए, जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्‍नी रही हो। 10
और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्‍चोंका पालन-पोषण किया हो;

पाहुनोंकी सेवा की हो, पवित्र लोगोंके पांव धोए हो, दुखियोंकी सहाथता की हो,
और हर एक भले काम में मन लगाया हो। 11 पर जवान विधवाओं के नाम न
लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो
ब्याह करना चाहती हैं। 12 और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपके पहिले
विश्वास को छोड़ दिया है। 13 और इस के साय ही साय वे घर घर फिरकर आलसी
होना सीखती है, और केवल आलसी नहीं, पर बकबक करती रहती और औरोंके
काम में हाथ भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं। 14 इसलिथे मैं यह
चाहता हूं, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जनें और घरबार संभालें,
और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। 15 क्योंकि कई एक तो
बहककर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। 16 यदि किसी विश्वासिनी के यहां विधवाएं
हों, तो वही उन की सहाथता करे, कि कलीसिया पर भार न हो ताकि वह उन की
सहाथता कर सके, जो सचमुच में विधवाएं हैं।। 17 जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध
करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने
आदर के योग्य समझे जाएं। 18 क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि दांवनेवाले
बैल का मुंह न बान्धना, क्योंकि मजदूर अपक्की मजदूरी का ह?दार है। 19 कोई
दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहोंके उस को न सुन।
20 पाप करनेवालोंको सब के साम्हने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें। 21
परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतोंको उपस्यित जानकर मैं तुझे
चितौनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातोंको माना कर, और कोई काम
पझपात से न कर। 22 किसी पर शीघ्र हाथ न रखना और दूसरोंके पापोंमें भागी न
होना: अपके आप को पवित्र बनाए रख। 23 भविष्य में केवल जल ही का

पीनेवाला न रह, पर अपके पेट के और अपके बार बार बीमार होने के कारण योड़ा
योड़ा दाखरस भी काम में लाया कर। 24 कितने मनुष्योंके पाप प्रगट हो जाते हैं,
और न्याय के लिथे पहिले से पहुंच जाते हैं, पर कितनोंके पीछे से आते हैं। 25 वैसे
ही कितने भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं
सकते।।

1 तीमुथियुस 6

1 जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपके अपके स्वामी को बड़े आदर के योग्य
जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपकेश की निन्दा न हो। 2 और जिन के
स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; बरन उन की और
भी सेवा करें, क्योंकि इस से लाभ उठाने वाले विश्वासी और प्रेमी हैं: इन बातोंका
उपकेश किया कर और समझाता रह।। 3 यदि कोई और ही प्रकार का उपकेश
देना है; और खरी बातोंको, अर्यात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातोंको और उस
उपकेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है। 4 तो वह अभिमानी हो गया,
और कुछ नहीं जानता, बरन उसे विवाद और शब्दोंपर तर्क करने का रोग है, जिन
से डाह, और फगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे बुरे सन्देह। 5 और उन
मनुष्योंमें व्यर्य रगड़े फगड़े उत्पन्न होते हैं, जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे
सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है। 6 पर
सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। 7 क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और
न कुछ ले जा सकते हैं। 8 और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो
इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। 9 पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी पक्कीझा,

और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्योंको
बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। 10 क्योंकि रूपके का लोभ
सब प्रकार की बुराइयोंकी जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनोंने
विश्वास से भटककर अपके आप को नाना प्रकार के दुखोंसे छलनी बना लिया है।।
11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातोंसे भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम,
धीरज, और नम्रता का पीछा कर। 12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस
अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिथे तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहोंके
साम्हने अच्छा अंगीकार किया या। 13 मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित
रखता है, और मसीह यीशु को गवाह करके जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के
साम्हने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूं, 14 कि तू हमारे प्रभु यीशु
मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख। 15 जिसे वह
ठीक समयोंमें दिखाएगा, जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का
राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। 16 और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य
ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है:
उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।। 17 इस संसार के
धनवानोंको आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न होंऔर चंचल धन पर आशा न रखें,
परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिथे सब कुछ बहुतायत से देता है। 18 और
भलाई करें, और भले कामोंमें धनी बनें, और उदार और सहाथता देने में तत्पर
हों। 19 और आगे के लिथे एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में
कर लें।। 20 हे तीमुयियुस इस याती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान
कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातोंसे पके रह। 21

कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास से भटक गए हैं।। तुम पर अनुग्रह
होता रहे।।

2 तीमुथियुस 1

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है,
परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है। 2 प्रिय पुत्र तीमुयियुस के नाम।।
परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और
शान्ति मिलती रहे।। 3 जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपके बापदादोंकी रीति पर
शुद्ध विवेक से करता हूं, उसका धन्यवाद हो कि अपक्की प्रार्यनाओं में तुझे
लगातार स्क़रण करता हूं। 4 और तेरे आंसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ
से भेंट करने की लालसा रखता हूं कि आनन्द से भर जाऊं। 5 और मुझे तेरे उस
निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोइस, और तेरी माता
यूनीके में यी, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तुम में भी है। 6 इसी कारण मैं तुझे
सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा
तुझे मिला है चमका दे। 7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्य, और
प्रेम, और संयम की आत्क़ा दी है। 8 इसलिथे हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ
से जो उसका कैदी हूं, लज्ज़ित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्य के अनुसार
सुसमाचार के लिथे मेरे साय दुख उठा। 9 जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र
बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामोंके अनुसार नहीं; पर अपक्की मनसा
और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है। 10
पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने

मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा
प्रकाशमान कर दिया। 11 जिस के लिथे मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपकेशक
भी ठहरा। 12 इस कारण मैं इन दुखोंको भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं
उसे जिस की मैं ने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी
याती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। 13 जो खरी बातें तू ने मुझ से
सुनी हैं उन को उस विश्वास और प्रेम के साय जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श
बनाकर रख। 14 और पवित्र आत्क़ा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी
याती की रखवाली कर।। 15 तू जानता है, कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए
हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। 16 उनेसिफुरूस के घराने पर प्रभु दया
करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरोंसे लज्ज़ित
न हुआ। 17 पर जब वह रोमा में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढकर मुझ से भेंट की।
18 (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। और जो जो सेवा उस ने
इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है।।

2 तीमुथियुस 2

1 इसलिथे हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा। 2
और जो बातें तू ने बहुत गवाहोंके साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी
मनुष्योंको सौंप दे; जो औरोंको भी सिखाने के योग्य हों। 3 मसीह यीशु के अच्छे
योद्धा की नाई मेरे साय दुख उठा। 4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो
इसलिथे कि अपके भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपके आप को संसार के
कामोंमें नहीं फंसाता 5 फिर अखाड़े में लडनेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो

मुकुट नहीं पाता। 6 जो गृहस्थ परिश्रम करता है, फल का अंश पहिले उसे मिलना
चाहिए। 7 जो मैं कहता हूं, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातोंकी समझ
देगा। 8 यीशु मसीह को स्क़रण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में
से जी उठा; और यह मरे सुसमाचार के अनुसार है। 9 जिस के लिथे मैं कुकर्मी की
नाई दुख उठाता हूं, यहां तक कि कैद भी हूं; परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नहीं।
10 इस कारण मैं चुने हुए लोगोंके लिथे सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उस उद्धार
को जो मसीह यीशु में हैं अनन्त महिमा के साय पाएं। 11 यह बात सच है, कि
यदि हम उसके साय मर गए हैं तो उसके साय जीएंगे भी। 12 यदि हम धीरज से
सहते रहेंगे, तो उसके साय राज्य भी करेंगे : यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह
भी हमारा इन्कार करेगा। 13 यदि हम अविश्वासी भी होंतौभी वह विश्वासयोग्य
बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता।। 14 इन बातोंकी
सुधि उन्हें दिला, और प्रभु के साम्हने चिता दे, कि शब्दोंपर तर्क-वितर्क न किया
करें, जिन से कुछ लाभ नहीं होता; बरन सुननेवाले बिगड़ जाते हैं। 15 अपके आप
को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर,
जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता
हो। 16 पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते
जाएंगे। 17 और उन का वचन सड़े-घाव की नाईं फैलता जाएगा: हुमिनयुस और
फिलेतुस उन्हीं में से हैं। 18 जो यह कहकर कि पुनरूत्यान हो चुका है सत्य से
भटक गए हैं, और कितनोंके विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं। 19 तौभी
परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु
अपनोंको पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा

रहे। 20 बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन भी
होते हैं; कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिथे। 21 यदि कोई अपके
आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और
स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिथे तैयार होगा। 22 जवानी की
अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साय धर्म,
और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर। 23 पर मूर्खता, और
अविद्या के विवादोंसे अलग रह; क्योंकि तू जानता है, कि उन से फगड़े होते हैं। 24
और प्रभु के दास को फगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साय कोमल और शिझा
में निपुण, और सहनशील हो। 25 और विरोधियोंको नम्रता से समझाए, क्या
जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहिचानें। 26 और
इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिथे सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट
जाए।।

2 तीमुथियुस 3

1 पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनोंमें किठन समय आएंगे। 2 क्योंकि मनुष्य
अपस्वार्यी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा
टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र। 3 मयारिहत, झमारिहत, दोष लगानेवाले,
असंयमी, कठोर, भले के बैरी। 4 विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के
नहीं बरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे। 5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस
की शक्ति को न मानेंगे; ऐसोंसे पके रहता। 6 इन्हीं में से वे लोग हैं, जो घरोंमें दबे
पांव घुस आते हैं और छिछौरी स्त्रियोंको वश में कर लेते हैं, जो पापोंसे दबी और

हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं। 7 और सदा सीखती तो रहती हैं पर
सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुंचक्कीं। 8 और जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने
मूसा का विरोध किया या वैसे ही थे भी सत्य का विरोध करते हैं: थे तो ऐसे
मनुष्य हैं, जिन की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। 9
पर वे इस से आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उन की अज्ञानता सब मनुष्योंपर
प्रगट हो गई यी, वैसे ही इन की भी हो जाएगी। 10 पर तू ने उपकेश, चाल चलन,
मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दुख उठाने में
मेरा साय दिया। 11 और ऐसे दुखोंमें भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और
लुस्त्रा में मुझ पर पके थे और और दुखोंमें भी, जो मैं ने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने
मुझे उन सब से छुड़ा लिया। 12 पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साय जीवन
बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे। 13 और दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते
हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे। 14 पर तू इन बातोंपर जो तू ने
सीखीं हैं और प्रतीति की यी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन
लोगोंसे सीखा या 15 और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे
मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिथे बुद्धिमान बना सकता है।
16 हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपकेश, और
समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिझा के लिथे लाभदायक है। 17 ताकि
परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिथे तत्पर हो जाए।।

2 तीमुथियुस 4

1 परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतोंऔर मरे हुओं का न्याय

करेगा, उसे और उसके प्रगट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता
हूं। 2 कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की
सहनशीलता, और शिझा के साय उलाहना दे, और डांट, और समझा। 3 क्योंकि
ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपकेश न सह सकेंगे पर कानोंकी खुजली के
कारण अपक्की अभिलाषाओं के अनुसार अपके लिथे बहुतेरे उपकेशक बटोर
लेंगे। 4 और अपके कान सत्य से फेरकर कया-कहानियोंपर लगाएंगे। 5 पर तू
सब बातोंमें सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपक्की
सेवा को पूरा कर। 6 क्योंकि अब मैं अर्ध की नाई उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का
समय आ पहुंचा है। 7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपक्की दौड़ पूरी कर ली
है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। 8 भविष्य में मेरे लिथे धर्म का वह मुकुट
रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही
नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।। 9 मेरे पास
शीघ्र आने का प्रयत्न कर। 10 क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे
छोड़ दिया है, और यिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलतिया को और
तीतुस दलमतिया को चला गया है। 11 केवल लूका मेरे साय है: मरकुस को लेकर
चला आ; क्योंकि सेवा के लिथे वह मेरे बहुत काम का है। 12 तुखिकुस को मैं ने
इफिसुस को भेजा है। 13 जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब
तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्म्मपत्रोंको लेते आना। 14 सिकन्दर
ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की हैं प्रभु उसे उसके कामोंके अनुसार बदला देगा।
15 तू भी उस से सावधान रह, क्योंकि उस ने हमारी बातोंका बहुत ही विरोध
किया। 16 मेरे पहिले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साय नहीं दिया,

बरन सब ने मुझे छोड़ दिया या: भला हो, कि इस का उनको लेखा देना न पके। 17
परन्तु प्रभु मेरा सहाथक रहा, और मुझे सामर्थ दी: ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार
हो, और सब अन्यजाति सुन ले; और मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया। 18 और
प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपके स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके
पहुंचाएगा: उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।। 19 प्रिसका और
अक्विला को, और उनेसिफुरूस के घराने को नमस्कार। 20 इरास्तुस कुरिन्युस
में रह गया, और त्रुफिमुस को मैं ने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है। 21 जाड़े से पहिले
चले आने का प्रयत्न कर: यूबूलुस, और पूदेंस, और लीनुस और क्लौदिया, और
सब भाइयोंका तुझे नमस्कार।। 22 प्रभु तेरी आत्क़ा के साय रहे: तुम पर अनुग्रह
होता रहे।।

तीतुस 1

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है, परमेश्वर
के चुने हुए लोगोंके विश्वास, और भक्ति के अनुसार है। 2 उस अनन्त जीवन की
आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो फूठ बोल नहीं सकता सनातन से की
है। 3 पर ठीक समय पर अपके वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रगट किया, जो
हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया। 4 तीतुस के
नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है: परमेश्वर पिता
और हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती रहे।। 5 मैं
इसलिथे तुझे क्रेते में छोड़ आया या, कि तू शेष रही हुई बातोंको सुधारे, और मेरी
आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनोंको नियुक्त करे। 6 जो निर्दोष और एक ही

पत्नी के पति हों, जिन के लड़केबाले विश्वासी हो, और जिन्हें लुचपन और
निरंकुशता का दोष नहीं। 7 क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के
कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्?ड़, न मारपीट करनेवाला,
और न नीच कमाई का लोभी। 8 पर पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला,
संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो। 9 और विश्वासयोग्य वचन पर जो
धर्मोपकेश के अनुसार है, स्यिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपकेश दे सके; और
विवादियोंका मुंह भी बन्द कर सके।। 10 क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश बकवादी
और धोखा देनेवाले हैं; विशेष करके खतनावालोंमें से। 11 इन का मुंह बन्द करना
चाहिए: थे लोग नीच कमाई के लिथे अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़
देते हैं। 12 उन्हीं में से एक जन ने जो उन्हीं भविष्यद्क्ता हैं, कहा है, कि क्रेती लोग
सदा फूठे, दुष्ट पशु और आलसी पेट्ू होते हैं। 13 यह गवाही सच है, इसलिथे
उनहें कड़ाई से चितौनी दिया कर, कि वे विश्वास में पके हो जाएं। 14 और वे
यहूदियोंकी कया कहानियोंऔर उन मनुष्योंकी आज्ञाओं पर मन न लगाएं, जो
सत्य से भटक जाते हैं। 15 शुद्ध लोगोंके लिथे सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और
अविश्वासियोंके लिथे कुछ भी शुद्ध नहीं: बरन उन की बुद्धि और विवेक दोनोंअशुद्ध
हैं। 16 वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं: पर अपके कामोंसे उसका
इन्कार करते हैं, क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न माननेवाले हैं: और किसी अच्छे
काम के योग्य नहीं।।

तीतुस 2

1 पर तू ऐसी बातें कहा कर, जो खरे उपकेश के योग्य हैं। 2 अर्यात बूढे पुरूष,

सचेत और गम्भीर और संयमी हों, और उन का विश्वास और प्रेम और धीरज
प?ा हो। 3 इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियोंका चाल चलन पवित्र लोगोंसा हो, दोष
लगानेवाली और पियक्?ड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों। 4 ताकि वे जवान
स्त्रियोंको चितौनी देती रहें, कि अपके पतियोंऔर बच्चोंसे प्रीति रखें। 5 और
संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपके अपके पति के
आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए। 6 ऐसे ही
जवान पुरूषोंको भी समझाया कर, कि संयमी हों। 7 सब बातोंमें अपके आम को
भले कामोंका नमूना बना: तेरे उपकेश में सफाई, गम्भीरता। 8 और ऐसी खराई
पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिस से विरोधी हम पर कोई दोष लगाने
की गौं न पाकर लज्ज़ित हों। 9 दासोंको समझा, कि अपके अपके स्वामी के
आधीन रहें, और सब बातोंमें उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें। 10
चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि वे सब बातोंमें
हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपकेश की शोभा दें। 11 क्योंकि परमेश्वर का
अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्योंके उद्धार का कारण है। 12 और हमें चिताता है,
कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम
और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। 13 और उस धन्य आशा की अर्यात्‌ अपके
महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट
जोहते रहें। 14 जिस ने अपके आप को हमारे लिथे दे दिया, कि हमें हर प्रकार के
अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपके लिथे एक ऐसी जाति बना ले जो भले
भले कामोंमें सरगर्म हो।। 15 पूरे अधिक्कारने के साय थे बातें कह और समझा
और सिखाता रह: कोई तुझे तुच्द न जानने पाए।।

तीतुस 3

1 लोगोंको सुधि दिला, कि हाकिमोंऔर अधिक्कारनेियोंके आधीन रहें, और उन
की आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिथे तैयार रह। 2 किसी को बदनाम
न करें; फगडालू न हों: पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्योंके साय बड़ी
नम्रता के साय रहें। 3 क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले,
और भ्रम में पके हुए, और रंग रंग के अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में
थे, और बैरभाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और
एक दूसरे से बैर रखते थे। 4 पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा, और
मनुष्योंपर उसकी प्रीति प्रगट हुई। 5 तो उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म
के कामोंके कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपक्की दया के अनुसार, नए
जन्क़ के स्नान, और पवित्र आत्क़ा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। 6 जिसे उस
ने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। 7 जिस से
हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस
बनें। 8 यह बात सच है, और मैं चाहता हूं, कि तू इन बातोंके विषय में दृढ़ता से
बोले इसलिथे कि जिन्होंने परमेश्वर की प्रतीति की है, वे भले-भले कामोंमे लगे
रहने का ध्यान रखें: थे बातें भली, और मनुष्योंके लाभ की हैं। 9 पर मूर्खता के
विवादों, और वंशावलियों, और बैर विरोध, और उन फगड़ोंसे, जो व्यवस्या के
विषय में होंबचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। 10 किसी पाखंडी को एक
दो बार समझा बुफाकर उस से अलग रह। 11 यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक
गया है, और अपके आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।। 12 जब मैं तेरे
पास अरितमास या तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस आने का यत्न

करना: क्योंकि मैं ने वहीं जाड़ा काटने की ठानी है। 13 जेनास व्यवस्यापक और
अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुंचा दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की घटी
न होने पाए। 14 और हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिथे अच्छे
कामोंमें लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें।। 15 मेरे सब सायियोंका तुझे
नमस्कार और जो विश्वास के कारण हम से प्रीति रखते हैं, उन को नमस्कार।।
तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।।

फिलेमोन 1

1 पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तिमुयियुस की ओर से
हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। 2 और बहिन अफिफया, और हमारे सायी योद्धा
अरिखप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम।। 3 हमारे पिता
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती
रहे।। 4 मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनकर, जो सब पवित्र लोगोंके साय
और प्रभु यीशु पर है। 5 सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं; और अपक्की
प्रार्यनाओं में भी तुझे स्क़रण करता हूं। 6 कि तेरा विश्वास में सहभागी होना
तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिथे प्रभावशाली हो। 7 क्योंकि हे
भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिथे, कि तेरे द्वारा
पवित्र लोगोंके मन हरे भरे हो गए हैं।। 8 इसलिथे यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा
हियाव तो है, कि जो बात ठीक है, उस की आज्ञा तुझे दूं। 9 तौभी मुझ बूढ़े पौलुस
को जो अब मसीह यीशु के लिथे कैदी हूं, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से
बिनती करूं। 10 मैं अपके बच्चे उनेसिमुस के लिथे जो मुझ से मेरी कैद में जन्क़ा

है तुझ से बिनती करता हूं। 11 वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न या, पर अब तेरे
और मेरे दोनोंके बड़े काम का है। 12 उसी को अर्यात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैं
ने उसे तेरे पास लौटा दिया है। 13 उसे मैं अपके ही पास रखना चाहता या कि तेरी
ओर से इस कैद में जो सुसमाचार के कारण हैं, मेरी सेवा करे। 14 पर मैं ने तेरी
इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से
हो। 15 क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिथे इसी कारण अलग
हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। 16 परन्तु अब से दास की नाई नहीं, बरन दास से
भी उत्तम, अर्यात् भाई के समान हरे जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में भी
मेरा प्रिय हो। 17 सो यदि तू मुझे सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण
कर जैसे मुझे। 18 और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ
आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। 19 मैं पौलुस अपके हाथ से लिखता हूं, कि मैं
आप भर दूंगा; और हम के कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो
तुझ पर है वह तू ही है। 20 हे भाई यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले :
मसीह में मेरे जी को हरा भरा कर दे। 21 मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा
रखकर, तुझे लिखता हूं और यह जानता हूं, कि जो कुछ मैं कहता हूं, तू उस से
कहीं बढ़कर करेगा। 22 और यह भी, कि मेरे लिथे उतरने की जगह तैयार रख;
मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्यनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा।। 23
इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साय कैदी है। 24 और मरकुस और अरिस्तर्खुस
और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी है इन का तुझे नमस्कार।। 25 हमारे प्रभु
यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्क़ा पर होता रहे। आमीन।।

इब्रानियों 1

1 पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादोंसे योड़ा योड़ा करके और भांति भांति से
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। 2 इन दिनोंके अन्त में हम से पुत्र के द्वारा
बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने
सारी सृष्टि रची है। 3 वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है,
और सब वस्तुओं को अपक्की सामर्थ के वचन से संभालता है: वह पापोंको धोकर
ऊंचे स्यानोंपर महामहिमन के दिहने जा बैठा। 4 और स्वर्गदूतोंसे उतना ही उत्तम
ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। 5 क्योंकि
स्वर्गदूतोंमें से उस ने कब किसी से कहा, कि तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से
उत्पन्न हुआ और फिर यह, कि मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा 6
और जब पहिलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, कि परमेश्वर के सब
स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें। 7 और स्वर्गदूतोंके विषय में यह कहता है, कि वह
अपके दूतोंको पवन, और अपके सेवकोंको धधकती आग बनाता है। 8 परन्तु पुत्र
से कहता है, कि हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का
राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। 9 तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस
कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे सायियोंसे बढ़कर हर्षरूपी तेल से तुझे
अभिषेक किया। 10 और यह कि, हे प्रभु, आदि में तू ने पृय्वी की नेव डाली, और
स्वर्ग तेरे हाथोंकी कारीगरी है। 11 वे तो नाश हो जाएंगे; परन्तु तू बना रहेगा:
और वे सब वस्त्र की नाई पुराने हो जाएंगे। 12 और तू उन्हें चादर की नाईं
लपेटेगा, और वे वस्त्र की नाई बदल जाएंगे: पर तू वही है और तेरे वर्षोंका अन्त
न होगा। 13 और स्वर्गदूतोंमें से उन ने किस से कब कहा, कि तू मेरे दिहने बैठ,
जब कि मैं तेरे बैरियोंको तेरे पांवोंके नीचे की पीढ़ी न कर दूं 14 क्या वे सब सेवा

टहल करनेवाली आत्क़ाएं नहीं; जो उद्धार पानेवालोंके लिथे सेवा करने को भेजी
जाती हैं

इब्रानियों 2

1 इस कारण चाहिए, कि हम उन बातोंपर जो हम ने सुनी हैं और भी मन लगाएं,
ऐसा न हो कि बहकर उन से दूर चले जाएं। 2 क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतोंके द्वारा
कहा गया या जब वह स्यिर रहा ओर हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का
ठीक ठीक बदला मिला। 3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर
क्योंकर बच सकते हैं जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई, और
सुननेवालोंके द्वारा हमें निश्चय हुआ। 4 और साय ही परमेश्वर भी अपक्की इच्छा
के अनुसार चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्य के कामों, और
पवित्र आत्क़ा के वरदानोंके बांटने के द्वारा इस की गवाही देता रहा।। 5 उस ने उस
आनेवाले जगत को जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतोंके आधीन न किया। 6
बरन किसी ने कहीं, यह गवाही दी है, कि मनुष्य क्या हैं, कि तू उस की सुधि लेता
है या मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उस पर दृष्टि करता है 7 तू ने उसे स्वर्गदूतोंसे
कुछ ही कम किया; तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे
अपके हाथोंके कामोंपर अधिक्कारने दिया। 8 तू ने सब कुछ उसके पांवोंके नीचे
कर दिया: इसलिथे जब कि उस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो उस ने
कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके आधीन न हो : पर हम अब तक सब कुछ उसके
आधीन नहीं देखते। 9 पर हम को यीशु जो स्वर्गदूतोंसे कुछ ही कम किया गया
या, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते

हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिथे मृत्यु का स्वाद चखे। 10
क्योंकि जिस के लिथे सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा
लगा कि जब वह बहुत से पुत्रोंको महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को
दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। 11 क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए
जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं: इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।
12 पर कहता है, कि मैं तेरा नाम अपके भाइयोंको सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं
तेरा भजन गाऊंगा। 13 और फिर यह, कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा; और फिर यह
कि देख, मैं उन लड़कोंसहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए। 14 इसलिथे जब कि
लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उन के समान उन का सहभागी
हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली यी, अर्यात शैतान को
निकम्मा कर दे। 15 और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे
थे, उन्हें छुड़ा ले। 16 क्योंकि वह तो स्वर्गदूतोंको नहीं बरन इब्राहीम के वंश को
संभालता है। 17 इस कारण उसको चाहिए या, कि सब बातोंमें अपके भाइयोंके
समान बने; जिस से वह उन बातोंमें जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक
दयालु और विश्वासयोग्य महाथाजक बने ताकि लोगोंके पापोंके लिथे प्रायश्चित्त
करे। 18 क्योंकि जब उस ने पक्कीझा की दशा में दुख उठाया, तो वह उन की भी
सहाथता कर सकता है, जिन की पक्कीझा होती है।।

इब्रानियों 3

1 सो हे पवित्र भाइयोंतुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और
महाथाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। 2 जो अपके नियुक्त

करनेवाले के लिथे विश्वासयोग्य या, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में या। 3
क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि
घर बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। 4 क्योंकि हर एक घर का कोई न
कोई बनानेवाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। 5 मूसा तो
उसके सारे घर में सेवक की नाई विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातोंका वर्णन
होनेवाला या, उन की गवाही दे। 6 पर मसीह पुत्र की नाई उसके घर का
अधिक्कारनी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपक्की आशा
के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्यिर रहें। 7 सो जैसा पवित्र आत्क़ा कहता है,
कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो। 8 तो अपके मन को कठोर न करो, जैसा
कि क्रोध दिलाने के समय और पक्कीझा के दिन जंगल में किया या। 9 जहां
तुम्हारे बापदादोंने मुझे जांचकर परखा और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे। 10
इस कारण मैं उस समय के लोगोंसे रूठा रहा, और कहा, कि इन के मन सदा
भटकते रहते हैं, और इन्होंने मेरे मार्गोंको नहीं पहिचाना। 11 तब मैं ने क्रोध में
आकर शपय खाई, कि वे मेरे विश्रम में प्रवेश करने न पाएंगे। 12 हे भाइयो,
चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी न मन हो, जो जीवते परमेश्वर से
दूर हट जाए। 13 बरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक
दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर
कठोर हो जाए। 14 क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपके प्रयम
भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्यिर रहें। 15 जैसा कहा जाता है, कि यदि आज
तुम उसका शब्द सुनो, तो अपके मनोंको कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के
समय किया या। 16 भला किन लोगोंने सुनकर क्रोध दिलाया क्या उन सब ने

नहीं जो मूसा के द्वारा मिसर से निकले थे 17 और वह चालीस वर्ष तक किन
लोगोंसे रूठा रहा क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उन की लोथें जंगल
में पड़ी रहीं 18 और उस ने किन से शपय खाई, कि तुम मेरे विश्रम में प्रवेश करने
न पाओगे: केवल उन से जिन्होंने आज्ञा न मानी 19 सो हम देखते हैं, कि वे
अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके।।

इब्रानियों 4

1 इसलिथे जब कि उसके विश्रम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें
डरना चाहिए; ऐसा ने हो, कि तुम में से कोई जंग उस से रिहत जान पके। 2
क्योंकि हमें उन्हीं की नाई सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें
कुछ लोय न हुआ; क्योंकि सुननेवालोंके मन में विश्वास के साय नहीं बैठा। 3 और
हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्रम में प्रवेश करते हैं; जैसा उस ने कहा, कि
मैं ने अपके क्रोध में शपय खाई, कि वे मेरे विश्रम में प्रवेश करने न पाएंगे, यद्यपि
जगत की उत्पत्ति के समय से उसे काम हो चुके थे। 4 क्योंकि सातवें दिन के
विषय में उस ने कहीं योंकहा है, कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपके सब कामोंको
निपटा करके विश्रम किया। 5 और इस जगह फिर यह कहता है, कि वे मेरे विश्रम
में प्रवेश न करने पाएंगे। 6 तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस
विश्रम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहिले सुनाया गया, उन्होंने
आज्ञा न मानने के कारण उस में प्रवेश न किया। 7 तो फिर वह किसी विशेष दिन
की ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है,
जैसे पहिले कहा गया, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपके मनोंको

कठोर न करो। 8 और यदि यहोशू उन्हें विश्रम में प्रवेश कर लेता, तो उसके बाद
दूसरे दिन की चर्चा न होती। 9 सो जान लो कि परमेश्वर के लोगोंके लिथे सब्त का
विश्रम बाकी है। 10 क्योंकि जिस ने उसके विश्रम में प्रवेश किया है, उस ने भी
परमेश्वर की नाईं अपके कामोंको पूरा करके विश्रम किया है। 11 सो हम उस
विश्रम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उन की नाईं आज्ञा
न मानकर गिर पके। 12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर
एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्क़ा को, और गांठ
गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं
और विचारोंको जांचता है। 13 और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है बरन
जिस से हमें काम है, उस की आंखोंके साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं।।
14 सो जब हमारा ऐसा बड़ा महाथाजक है, जो स्वर्गोंसे होकर गया है, अर्यात
परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपके अंगीकार को दृढ़ता से यामें रहे। 15
क्योंकि हमारा ऐसा महाथाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साय दुखी
न हो सके; बरन वह सब बातोंमें हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप
निकला। 16 इसलिथे आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर
चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी
सहाथता करे।।

इब्रानियों 5

1 क्योंकि हर एक महाथाजक मनुष्योंमें से लिया जाता है, और मनुष्योंही के लिथे
उन बातोंके विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है: कि भेंट

और पाप बलि चढ़ाया करे। 2 और वह अज्ञानों, और भूले भटकोंके साय नर्मी से
व्यवहार कर सकता है इसलिथे कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है। 3 और इसी
लिथे उसे चाहिए, कि जैसे लोगोंके लिथे, वैसे ही अपके लिथे भी पाप-बलि चढ़ाया
करे। 4 और यह आदर का पद कोई अपके आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून
की नाई परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। 5 वैसे ही मसीह ने भी महाथाजक
बनने की बड़ाई अपके आप से नहीं ली, पर उस को उसी ने दी, जिस ने उस से
कहा या, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्क़ाया है। 6 वह दूसरी जगह में
भी कहता है, तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिथे याजक है। 7 उस ने
अपक्की देह में रहने के दिनोंमें ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा
बहाकर उस से जो उस को मृत्यु से बचा सकता या, प्रार्यनाएं और बिनती की और
भक्ति के कारण उस की सुनी गई। 8 और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा
उठाकर आज्ञा माननी सीखी। 9 और सिद्ध बनकर, अपके सब आज्ञा
माननेवालोंके लिथे सदा काल के उद्धार का कारण हो गया। 10 और उसे परमेश्वर
की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महाथाजक का पद मिला।। 11 इस के
विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिन का समझना भी किठन है; इसलिथे
कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। 12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए
या, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनोंकी आदि शिझा
फिर से सिखाए ओर ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही
चाहिए। 13 क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं
होती, क्योंकि वह बालक है। 14 पर अन्न सयानोंके लिथे है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय
अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिथे पके हो गए हैं।।

इब्रानियों 6

1 इसलिथे आओ मसीह की शिझा की आरम्भ की बातोंको छोड़कर, हम सिद्धता
की ओर बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामोंसे मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास
करने। 2 और बपतिस्क़ोंऔर हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और
अन्तिम न्याय की शिझारूपी नेव, फिर से न डालें। 3 और यदि परमेश्वर चाहे, तो
हम यहीं करेंगे। 4 क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, जो स्वर्गीय वरदान
का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्क़ा के भागी हो गए हैं। 5 और परमेश्वर के
उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्योंका स्वाद चख चुके हैं। 6 यदि वे
भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिथे फिर नया बनाना अन्होना है; क्योंकि वे
परमेश्वर के पुत्र को अपके लिथे फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में। उस पर
कलंक लगाते हैं। 7 क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता
है, पी पीकर जिन लोगोंके लिथे वह जोती-बोई जाती है, उन के काम का साग-पात
उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। 8 पर यदि वह फाड़ी और ऊंटकटारे
उगाती है, तो निकम्मी और स्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना
है।। 9 पर हे प्रियो यद्यपि हम थे बातें कहते हैं तौभी तुम्हारे विषय में हम इस से
अच्छा और उद्धारवाली बातोंका भरोसा करते हैं। 10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी
नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उनके नाम के लिथे
इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगोंकी सेवा की, और कर रहे हो। 11 पर हम
बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिथे ऐसा ही
प्रयत्न करता रहे। 12 ताकि तुम आलसी न हो जाओ; बरन उन का अनुकरण
करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं। 13 और

परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपय खाने के लिथे किसी को
अपके से बड़ा न पाया, तो अपक्की ही शपय खाकर कहा। 14 कि मैं सचमुच तुझे
बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा। 15 और इस रीति से
उस ने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। 16 मनुष्य तो अपके से
किसी बड़े की शपय खाया करते हैं और उन के हर एक विवाद का फैसला शपय से
प?ा होता है। 17 इसलिथे जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसोंपर और भी साफ
रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपय को बीच
में लाया। 18 ताकि दो बे-बदल बातोंके द्वारा जिन के विषय में परमेश्वर का फूठा
ठहरना अन्होना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिथे
दौड़े है, कि उस आशा को जो साम्हने रखी हुई है प्राप्त करें। 19 वह आशा हमारे
प्राण के लिथे ऐसा लंगर है जो स्यिर और दृढ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता
है। 20 जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महाथाजक बनकर,
हमारे लिथे अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है।।

इब्रानियों 7

1 यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक,
सर्वदा याजक बना रहता है; जब इब्राहीम राजाओं को मारकर लौटा जाता या, तो
इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी। 2 इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का
दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपके नाम के अर्य के अनुसार, धर्म का राजा है।
3 जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनोंका आदि है और न
जीवन का अनत है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा।। 4 अब इस पर

ध्यान करो कि यह कैसा महान या जिस को कुलपति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे
माल की लूट का दसवां अंश दिया। 5 लेवी की संतान में से जो याजक का पद पाते
हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्यात अपके भाइयोंसे चाहे, वे इब्राहीम ही की
देह से क्योंन जन्कें हां, व्यवस्या के अनुसार दसवां अंश लें। 6 पर इस ने, जो उन
की वंशावली में का भी न या इब्राहीम से दसवां अंश लिया और जिसे प्रतिज्ञाएं
मिली यी उसे आशीष दी। 7 और उस में संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता
है। 8 और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं पर वहां वही लेता है, जिस
की गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है। 9 तो हम यह भी कह सकते हैं, कि लेवी
ने भी, जो दसवां अंश लेता है, इब्राहीम के द्वारा दसवां अंश दिया। 10 क्योंकि
जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेंट की, उस समय यह अपके पिता
की देह में या।। 11 तक यदि लेवीय याजक पद के द्वारा सिद्धि हो सकती है (जिस
के सहारे से लोगोंको व्यवस्या मिली यी) तो फिर क्या आवश्यकता यी, कि दूसरा
याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हारून की रीति का न कहलाए
12 क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है तो व्यवस्या का भी बदलना
अवश्य है। 13 क्योंकि जिस के विषय में थे बातें कही जाती हैं कि वह दूसरे गोत्र
का है, जिस में से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की। 14 तो प्रगट है, कि हमारा प्रभु
यहूदा के गोत्र में से उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजक पद
की कुछ चर्चा नहीं की। 15 ओर जब मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा
याजक उत्पन्न होनेवाला या। 16 जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्या के अनुसार
नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्य के अनुसार नियुक्त हो तो हमारा दावा और
भी स्पष्टता से प्रगट हो गया। 17 क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है,

कि तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। 18 निदान, पहिली आज्ञा
निर्बल; और निष्फल होने के कारण लोप हो गई। 19 (इसलिथे कि व्यवस्या ने
किसी बात की सिद्धि नहीं कि) और उसके स्यान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी
गई है जिस के द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। 20 और इसलिथे कि
मसीह की नियुक्ति बिना शपय नहीं हुई। 21 (क्योंकि वे तो बिना शपय याजक
ठहराए गए पर यह शपय के साय उस की ओर से नियुक्त किया गया जिस ने
उसके विषय में कहा, कि प्रभु ने शपय खाई, और वह उस से फिर ने पछताएगा,
कि तू युगानुयुग याजक है)। 22 सो यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा। 23
वे तो बहुत से याजक बनते आए, इस का कारण यह या कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं
देती यी। 24 पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजक पद अटल है।
25 इसी लिथे जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा पूरा उद्धार
कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिथे बिनती करने को सर्वदा जीवित है।। 26
सो ऐसा ही महाथाजक हमारे योग्य या, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल,
और पापियोंसे अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो। 27 और उन
महाथाजकोंकी नाई उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपके पापोंऔर फिर
लोगोंके पापोंके लिथे बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उस ने अपके आप को बलिदान
चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया। 28 क्योंकि व्यवस्या तो निर्बल मनुष्योंको
महाथाजक नियुक्त करती है; परन्तु उस शपय का वचन जो व्यवस्या के बाद
खाई गई, उस पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिथे सिद्ध किया गया
है।।

इब्रानियों 8

1 अब तो बातें हम कह रहे हैं, उन में से सब से बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा
महाथाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दिहने जा बैठा। 2 और
पवित्र स्यान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं,
बरन प्रभु ने खड़ा किया या। 3 क्योंकि हर एक महाथाजक भेंट, और बलिदान
चढ़ाने के लिथे ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है, कि इस के पास भी कुछ
चढ़ाने के लिथे हो। 4 और यदि पृय्वी पर होता तो कभी याजक न होता, इसलिथे
कि व्यवस्या के अनुसार भेंट चढ़ानेवाले तो हैं। 5 जो स्वर्ग में की वस्तुओं के
प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर या, तो
उसे यह चितावनी मिली, कि देख जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया या,
उसके अनुसार सब कुछ बनाना। 6 पर उस को उन की सेवकाई से बढ़कर मिली,
क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्य ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के
सहारे बान्धी गई है। 7 क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के
लिथे अवसर न ढूंढ़ा जाता। 8 पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु
कहता है, देखो वे दिन आते हैं, कि मैं इस्त्राएल के घराने के साय, और यहूदा के
घराने के साय, नई वाचा बान्धूंगा। 9 यह उस वाचा के समान न होगी, जो मैं ने
उन के बापदादोंके साय उस समय बान्धी यी, जब मैं उन का हाथ पकड़कर उन्हें
मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्यिर न रहे, और मैं ने उन
की सुधि न ली; प्रभु यही कहता है। 10 फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन
दिनोंके बाद इस्त्राएल के घराने के साय बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपक्की
व्यवस्या को उन के मनोंमें डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं
उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। 11 और हर एक अपके

देशवाले को और अपके भाई को यह शिझा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान
कयोंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। 12 क्योंकि मैं उन के अधर्म के
विषय मे दयावन्त हूंगा, और उन के पापोंको फिर स्क़रण न करूंगा। 13 नई
वाचा के स्यापन से उस ने प्रयम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी
और जीर्ण जो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।।

इब्रानियों 9

1 निदान, उस पहिली वाचा में भी सेवा के नियम थे; और ऐसा पवित्रस्यान जो
इस जगत का या। 2 अर्यात्‌ एक तम्बू बनाया गया, पहिले तम्बू में दीवट, और
मेज, और भेंट की रोटियां यी; और वह पवित्रस्यान कहलाता है। 3 और दूसरे
परदे के पीछे वह तम्बू या, जो परम पवित्रस्यान कहलाता है। 4 उस में सोने की
धूपदानी, और चारोंओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इस में मन्ना से
भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिस में फूल फल आ गए थे और
वाचा की पटियां यीं। 5 और उसके ऊपर दोनोंतेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के
ढकने पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक एक करके बखान करने का अभी
अवसर नहीं है। 6 जब थे वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकी, तक पहिले तम्बू में
तो याजक हर समय प्रवेश करके सेवा के काम निबाहते हैं 7 पर दूसरे में केवल
महाथाजक वर्ष भर में एक ही बार जाता है; और बिना लोहू लिथे नहीं जाता; जिसे
वह अपके लिथे और लोगोंकी भूल चूक के लिथे चढ़ावा चढ़ाता है। 8 इस से पवित्र
आत्क़ा यही दिखाता है, कि जब तक पहिला तम्बू खड़ा है, तब तक पवित्रस्यान
का मार्ग प्रगट नहीं हुआ। 9 और यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिथे एक

दृष्टान्त है; जिस में ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिन से आराधना
करनेवालोंके विवेक सिद्ध नहीं हो सकते। 10 इसलिथे कि वे केवल खाने पीने की
वस्तुओं, और भांति भांति के स्नान विधि के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो
सुधार के समय तक के लिथे नियुक्त किए गए हैं।। 11 परन्तु जब मसीह
आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महाथाजक होकर आया, तो उस ने और भी
बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्यात् सृष्टि का नहीं।
12 और बकरोंऔर बछड़ोंके लोहू के द्वारा नहीं, पर अपके ही लोहू के द्वारा एक ही
बार पवित्र स्यान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। 13 क्योंकि
जब बकरोंऔर बैलोंका लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगोंपर छिड़के जाने से
शरीर की शुद्धता के लिथे पवित्र करती है। 14 तो मसीह का लोहू जिस ने अपके
आप को सनातन आत्क़ा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे
विवेक को मरे हुए कामोंसे क्योंन शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा
करो। 15 और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्य है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा
जो पहिली वाचा के समय के अपराधोंसे छुटकारा पाने के लिथे हुई है, बुलाए हुए
लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। 16 क्योंकि जहां वाचा
बान्धी गई है वहां वाचा बान्धनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। 17
क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला
जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। 18 इसी लिथे पहिली वाचा
भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई। 19 क्योंकि जब मूसा सब लोगोंको व्यवस्या की
हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने बछड़ोंऔर बकरोंका लोहू लेकर, पानी और
लाल ऊन, और जूफा के साय, उस पुस्तक पर और सब लोगोंपर छिड़क दिया।

20 और कहा, कि यह उस वाचा का लोहू है, जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे
लिथे दी है। 21 और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू
छिड़का। 22 और व्यवस्या के अनुसार प्राय: सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की
जाती हैं; और बिना लोहू बहाए झमा नहीं होती।। 23 इसलिथे अवश्य है, कि स्वर्ग
में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा शुद्ध किए जाएं; पर स्वर्ग में की वस्तुएं
आप इन से उत्तम बलिदानोंके द्वारा। 24 क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए
पवित्र स्यान में जो सच्चे पवित्र स्यान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग
ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिथे अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई दे। 25 यह
नहीं कि वह अपके आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महाथाजक प्रति वर्ष दूसरे
का लोहू लिथे पवित्रस्यान में प्रवेश किया करता है। 26 नहीं तो जगत की उत्पत्ति
से लेकर उस को बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार
प्रगट हुआ है, ताकि अपके ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। 27 और जैसे
मनुष्योंके लिथे एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। 28 वैसे
ही मसीह भी बहुतोंके पापोंको उठा लेने के लिथे एक बार बलिदान हुआ और जो
लोग उस की बाट जोहते हैं, उन के उद्धार के लिथे दूसरी बार बिना पाप के दिखाई
देगा।।

इब्रानियों 10

1 क्योंकि व्यवस्या जिस में आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन
का असली स्वरूप नहीं, इसलिथे उन एक ही प्रकार के बलिदानोंके द्वारा, जो प्रति
वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालोंको कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। 2 नहीं

तो उन का चढ़ाना बन्द क्योंन हो जाता इसलिथे कि जब सेवा करनेवाले एक ही
बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का विवेक उन्हें पापी न ठहराता। 3 परन्तु उन के
द्वारा प्रति वर्ष पापोंका स्क़रण हुआ करता है। 4 क्योंकि अनहोना है, कि बैलोंऔर
बकरोंका लोहू पापोंको दूर करे। 5 इसी कारण वह जगत में आने समय कहता है,
कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिथे एक देह तैयार किया। 6
होम-बलियोंऔर पाप-बलियोंसे तू प्रसन्न नहीं हुआ। 7 तब मैं ने कहा, देख, मैं
आ गया हूं, (पवित्र शस्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी
इच्छा पूरी करूं। 8 ऊपर तो वह कहता है, कि न तू ने बलिदान और भेंट और
होम-बलियोंऔर पाप-बलियोंको चाहा, और न उन से प्रसन्न हुआ; यद्यपि थे
बलिदान तो व्यवस्या के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। 9 फिर यह भी कहता है, कि
देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान वह पहिले को उठा देता है,
ताकि दूसरे को नियुक्त करे। 10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही
बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। 11 और हर एक याजक तो
खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो
पापोंको कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार बार चढ़ाता है। 12 पर यह व्यक्ति तो
पापोंके बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिथे चढ़ाकर परमेश्वर के दिहने जा
बैठा। 13 और उसी समय से इस की बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवोंके
नीचे की पीढ़ी बनें। 14 क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए
जाते हैं, सर्वदा के लिथे सिद्ध कर दिया है। 15 और पवित्र आत्क़ा भी हमें यही
गवाही देता है; क्योंकि उस ने पहिले कहा या 16 कि प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं
उन दिनोंके बाद उन से बान्धूंगा वह यह है कि मैं अपक्की व्यवस्याओं को उनके

हृदय पर लिखूंगा और मैं उन के विवेक में डालूंगा। 17 (फिर वह यह कहता है,
कि) मैं उन के पापोंको, और उन के अधर्म के कामोंको फिर कभी स्क़रण न
करूंगा। 18 और जब इन की झमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।।
19 सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से
पवित्र स्यान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। 20 जो उस ने परदे अर्यात
अपके शरीर में से होकर, हमारे लिथे अभिषेक किया है, 21 और इसलिथे कि
हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिक्कारनी है। 22 तो
आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साय, और विवेक को दोष दूर करने के
लिथे हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के
समीप जाएं। 23 और अपक्की आशा के अंगीकार को दृढ़ता से यामें रहें; क्योंकि
जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है। 24 और प्रेम, और भले कामोंमें उस्काने
के लिथे एक दूसरे की चिन्ता किया करें। 25 और एक दूसरे के साय इकट्ठा होना
ने छोड़ें, जैसे कि कितनोंकी रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और
ज्योंज्योंउस दिन को निकट आते देखो, त्योंत्योंऔर भी अधिक यह किया करो।।
26 क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूफकर पाप
करते रहें, तो पापोंके लिथे फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। 27 हां, दण्ड का एक
भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियोंको भस्क़ कर
देगा। 28 जब कि मूसा की व्यवस्या का न माननेवाला दो या तीन जनोंकी गवाही
पर, बिना दया के मार डाला जाता है। 29 तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी
दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवोंसे रौंदा, और वाचा के
लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया या, अपवित्र जाना हैं, और अनुग्रह

की आत्क़ा का अपमान किया। 30 क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, कि
पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: और फिर यह, कि प्रभु अपके लोगोंका
न्याय करेगा। 31 जीवते परमेश्वर के हाथोंमें पड़ना भयानक बात है।। 32 परन्तु
उन पहिले दिनोंको स्क़रण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुखोंके बड़े फमेले में
स्यिर रहे। 33 कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और
कुछ यों, कि तुम उन के साफी हुए जिन की र्दुदशा की जाती यीं। 34 क्योंकि तुम
कैदियोंके दुख में भी दुखी हुए, और अपक्की संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह
जानकर, कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है।
35 सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। 36 क्योंकि तुम्हें
धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का
फल पाओ। 37 क्योंकि अब बहुत ही योड़ा समय रह गया है जब कि आनेवाला
आएगा, और देर न करेगा। 38 और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और
यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा। 39 पर हम हटनेवाले
नहीं, कि नाश हो जाएं पर विश्वास करनेवाले हैं, कि प्राणोंको बचाएं।।

इब्रानियों 11

1 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और मन देखी वस्तुओं का
प्रमाण है। 2 क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनोंकी अच्छी गवाही दी गई। 3
विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के
द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना
हो। 4 विश्वास की से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिथे चढ़ाया;

और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उस
की भेंटोंके विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें
करता है। 5 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और
उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया या, और उसके उठाए
जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई यी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न
किया है। 6 और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के
पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपके खोजनेवालोंको
प्रतिफल देता है। 7 विश्वास ही से नूह ने उन बातोंके विषय में जो उस समय
दिखाई न पड़ती यीं, चितौनी पाकर भक्ति के साय अपके घराने के बचाव के लिथे
जहाज बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का
वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। 8 विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो
आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला या, और यह न
जानता या, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया। 9 विश्वास ही से उस ने
प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब
समेत जो उसके साय उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बूओं में वास किया। 10
क्योंकि वह उस स्यिर नेववाले नगर की बाट जोहता या, जिस का रचनेवाला और
बनानेवाला परमेश्वर है। 11 विश्वास से सारा ने आप बूढी होने पर भी गर्भ धारण
करने की सामर्य पाई; क्योंकि उस ने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना या। 12
इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा या, आकाश के तारोंऔर समुद्र के तीर
के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।। 13 थे सब विश्वास ही की दशा
में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर

आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। 14 जो
ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। 15 और
जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का
अवसर या। 16 पर वे एक उत्तम अर्यात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिथे
परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिथे
एक नगर तैयार किया है।। 17 विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में,
इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना या। 18 और
जिस से यह कहा गया या, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपके
एकलौते को चढ़ाने लगा। 19 क्योंकि उस ने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्यी
है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर
मिला। 20 विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातोंके
विषय मे आशीष दी। 21 विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनोंपुत्रोंमें
से एक एक को आशीष दी, और अपक्की लाठी के सिक्के पर सहारा लेकर
दण्डवत किया। 22 विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर या, तो इस्त्राएल की
सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपक्की हिड्डयोंके विषय में आज्ञा
दी। 23 विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उस को, उत्पन्न होने के बाद तीन
महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा
की आज्ञा से न डरे। 24 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का
पुत्र कहलाने से इन्कार किया। 25 इसलिथे कि उसे पाप में योड़े दिन के सुख
भोगने से परमेश्वर के लोगोंके साय दुख भोगना और उत्तम लगा। 26 और मसीह
के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की

आंखे फल पाने की ओर लगी यीं। 27 विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उस
ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानोंदेखता हुआ दृढ़ रहा। 28
विश्वास ही से उस ने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौठोंका
नाश करनेवाला इस्त्राएलियोंपर हाथ न डाले। 29 विश्वास ही से वे लाल समुद्र के
पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियोंने वैसा ही करना
चाहा, तो सब डूब मरे। 30 विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक
उसका च?र लगा चुके तो वह गिर पड़ी। 31 विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा ने
माननेवालोंके साय नाश नहीं हुई; इसलिथे कि उस ने भेदियोंको कुशल से रखा
या। 32 अब और क्या कहूँ क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बाराक
और समसून का, और यिफतह का, और दाऊद का और शामुएल का, और
भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं। 33 इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के
काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त की, सिंहोंके मुंह बन्द किए। 34 आग ही
ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए;
लड़ाई में वीर निकले; विदेशियोंकी फोजोंको मार भगाया। 35 स्त्रियोंने अपके मरे
हुओं को फिर जीवते पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए; और छुटकारा न
चाहा; इसलिथे कि उत्तम पुनरूत्यान के भागी हों। 36 कई एक ठट्ठोंमें उड़ाए
जाने; और कोड़े खाने; वरन बान्धे जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। 37
पत्यरवाह किए गए; आरे से चीरे गए; उन की पक्कीझा की गई; तलवार से मारे
गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ोंऔर बकिरयोंकी खालें
ओढ़े हुए, इधर उधर मारे मारे फिरे। 38 और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं
में, और पृय्वी की दरारोंमें भटकते फिरे। 39 संसार उन के योगय न या: और

विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तोभी उन्हें प्रतिज्ञा
की हुई वस्तु न मिली। 40 क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिथे पहिले से एक उत्तम
बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचे।।

इब्रानियों 12

1 इस कारण जब कि गवाहोंका ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर
एक रोकनेवाली वस्तु, और उलफानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें
दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। 2 और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की
ओर से ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिथे जो उसके आगे धरा या, लज्ज़ा
की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दिहने
जा बैठा। 3 इसलिथे उस पर ध्यान करो, जिस ने अपके विरोध में पापियोंका
इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। 4 तुम ने
पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। 5 और
तुम उस उपकेश को जो तुम को पुत्रोंकी नाई दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे
पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुडके तो हियाव न
छोड़। 6 क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और
जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। 7 तुम दुख को ताड़ना
समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साय बर्ताव करता है, वह
कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता 8 यदि वह ताड़ना जिस के
भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान
ठहरे! 9 फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो

क्या आत्क़ाओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिस से जीवित रहें। 10 वे तो
अपक्की अपक्की समझ के अनुसार योड़े दिनोंके लिथे ताड़ना करते थे, पर यह
तो हमारे लाभ के लिथे करता है, कि हम भी उस की पवित्रता के भागी हो जाएं।
11 और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात
दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पके हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के
साय धर्म का प्रतिफल मिलता है। 12 इसलिथे ढीले हाथोंऔर निर्बल घुटनोंको
सीधे करो। 13 और अपके पांवोंके लिथे सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न
जाए, पर भला चंगा हो जाए।। 14 सब से मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के
खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। 15 और ध्यान से देखते
रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी
जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। 16 ऐसा न हो,
कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव की नाईं अधर्मी हो, जिस न एक बार के
भोजन के बदले अपके पहिलौठे होने का पद बेच डाला। 17 तुम जानते तो हो, कि
बाद को जब उस ने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा
बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला।। 18 तुम तो उस
पहाड़ के पास जो छूआ जा सकता या और आग से प्रज्वलित या, और काली घटा,
और अन्धेरा, और आन्धी के पास। 19 और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के
ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिस के सुननेवालोंने बिनती की, कि अब हम से और
बातें न की जाएं। 20 क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी
पहाड़ को छूए, तो पत्यरवाह किया जाए। 21 और वह दर्शन ऐसा डरावना या, कि
मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और कांपता हूं। 22 पर तुम सिय्योन के पहाड़ के

पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। 23 और
लाखोंस्वर्गदूतोंऔर उन पहिलौठोंकी साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम
स्वर्ग में लिखे हुए हैं: और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए
धमिर्योंकी आत्क़ाओं। 24 और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस
लोहू के पास आए हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है। 25 सावधान
रहो, और उस कहनेवाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के
चितावनी देनेवाले से मुंह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चितावनी
करनेवाले से मुंह मोड़कर क्योंकर बच सकेंगे 26 उस समय तो उसके शब्द ने
पृथ्वी को हिला दिया पर अब उस ने यह प्रतिज्ञा की है, कि एक बार फिर मैं केवल
पृथ्वी को नहीं, बरन आकाश को भी हिला दूंगा। 27 और यह वाक्य ?एक बार
फिर इस बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई
वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं, वे अटल
बनी रहें। 28 इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह
को हाथ से न जाने दें, जिस के द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी
आराधना कर सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है। 29 क्योंकि हमारा परमेश्वर
भस्म करनेवाली आग है।।

इब्रानियों 13

1 भाईचारे की प्रीति बनी रहे। 2 पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा
कितनोंने अनजाने स्वर्गदूतोंकी पहुनाई की है। 3 कैदियोंकी ऐसी सुधि लो, कि
मानो उन के साय तुम भी कैद हो; और जिन के साय बुरा बर्ताव किया जाता है,

उन की भी यह समझकर सुधि लिया करो, कि हमारी भी देह है। 4 विवाह सब में
आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर
व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियोंका न्याय करेगा। 5 तुम्हारा स्वभाव लोभरिहत
हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उस ने आप ही
कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। 6 इसलिथे हम
बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहाथक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या
कर सकता है।। 7 जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन
सुनाया है, उन्हें स्क़रण रखो; और ध्यान से उन के चाल-चलन का अन्त देखकर
उन के विश्वास का अनुकरण करो। 8 यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग
एकसा है। 9 नाना प्रकार के और ऊपक्की उपकेशोंसे न भरमाए जाओ, क्योंकि
मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम
रखनेवालोंको कुछ लाभ न हुआ। 10 हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने
का अधिक्कारने उन लोगोंको नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। 11 क्योंकि जिन
पशुओं का लोहू महाथाजक पाप-बलि के लिथे पवित्र स्यान में ले जाता है, उन की
देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। 12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगोंको अपके
ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिथे फाटक के बाहर दुख उठाया। 13 सो आओ
उस की निन्दा अपके ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। 14
क्योंकि यहां हमारा कोई स्यिर रहनेवाला नगर नहीं, बरन हम एक आनेवाले
नगर की खोज में हैं। 15 इसलिथे हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्यात उन
होठोंका फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिथे सर्वदा
चढ़ाया करें। 16 पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे

बलिदानोंसे प्रसन्न होता है। 17 अपके अगुवोंकी मानो; और उनके अधीन रहो,
क्योंकि वे उन की नाई तुम्हारे प्राणोंके लिथे जागते रहते, जिन्हें लेखा देना
पकेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस
दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं। 18 हमारे लिथे प्रार्यना करते रहो, क्योंकि हमें
भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातोंमें अच्छी चाल चलना
चाहते हैं। 19 और इस के करने के लिथे मैं तुम्हें और भी समझाता हूं, कि मैं शीघ्र
तुम्हारे पास फिर आ सकूं।। 20 अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को
जो भेड़ोंका महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से
जिलाकर ले आया। 21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की
इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में
उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।। 22 हे भाइयोंमें तुम
से बिनती करता हूं, कि इन उपकेश की बातोंको सह लेओ; क्योंकि मैं ने तुम्हें
बहुत संझेप में लिखा है। 23 तुम यह जान लो कि तीमुयियुस हमारा भाई छूट
गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साय तुम से भेंट करूंगा। 24
अपके सब अगुवोंऔर सब पवित्र लोगोंको नमस्कार कहो। इतालियावाले तुम्हें
नमस्कार कहते हैं।। 25 तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।।

याकूब 1

1 परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहोंगोत्रोंको
जो तित्तर बित्तर होकर रहते हैं नमस्कार पहुंचे।। 2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना
प्रकार की पक्कीझाओं में पड़ो 3 तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो, यह

जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। 4 पर
धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में
किसी बात की घटी न रहे।। 5 पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो
परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को
दी जाएगी। 6 पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह
करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। 7 ऐसा
मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। 8 वह व्यक्ति दुचित्ता है, और
अपक्की सारी बातोंमें चंचल है।। 9 दीन भाई अपके ऊंचे पद पर घमण्ड करे। 10
और धनवान अपक्की नीच दशा पर: क्योंकि वह घास के फूल की नाईं जाता
रहेगा। 11 क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती
है, और उसका फूल फड़ जाता है, और उस की शोभा जाती रहती है; उसी प्रकार
धनवान भी अपके मार्ग पर चलते चलते धूल में मिल जाएगा। 12 धन्य है वह
मनुष्य, जो पक्कीझा में स्यिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का
वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपके प्रेम करनेवालोंको दी है। 13
जब किसी ही पक्कीझा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी पक्कीझा परमेश्वर की
ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातोंसे परमेश्वर की पक्कीझा हो सकती है,
और न वही किसी की पक्कीझा आप करता है। 14 परन्तु प्रत्थेक व्यक्ति अपक्की
ही अभिलाषा में खिंचकर, और फंसकर पक्कीझा में पड़ता है। 15 फिर अभिलाषा
गर्भवती होकर पाप को जनता है और पाप बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न
करता है। 16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ। 17 क्योंकि हर एक अच्छा
वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियोंके पिता की ओर से

मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के
कारण उस पर छाया पड़ती है। 18 उस ने अपक्की ही इच्छा से हमें सत्य के वचन
के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार
के प्रयम फल हों।। 19 हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो: इसलिथे हर
एक मनुष्य सुनने के लिथे तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो। 20
क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है। 21
इसलिथे सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को
नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणोंका उद्धार
कर सकता है। 22 परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं
जो अपके आप को धोखा देते हैं। 23 क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो,
और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना
स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। 24 इसलिथे कि वह अपके आप को देखकर
चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा या। 25 पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता
की सिद्ध व्यवस्या पर ध्यान करता रहता है, वह अपके काम में इसलिथे आशीष
पाएगा कि सुनकर नहीं, पर वैसा ही काम करता है। 26 यदि कोई अपके आप को
भक्त समझे, और अपक्की जीभ पर लगाम न दे, पर अपके हृदय को धोखा दे, तो
उस की भक्ति व्यर्य है। 27 हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल
भक्ति यह है, कि अनायोंओर विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपके
आप को संसार से निष्कलंक रखें।।

याकूब 2

1 हे मेरे भाइयों, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के
साय न हो। 2 क्योंकि यदि एक पुरूष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए
तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपके पहिने हुए आए। 3
और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुंह देखकर कहो कि तू वहां अच्छी जगह बैठ;
और उस कंगाल से कहो, कि तू यहां खड़ा रह, या मेरे पांव की पीढ़ी के पास बैठ। 4
तो क्या तुम ने आपस में भेद भाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न
ठहरे 5 हे मेरे प्रिय भाइयोंसुनो; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालोंको नहीं
चुना कि विश्वास में धर्मी, और उस राज्य के अधिक्कारनी हों, जिस की प्रतिज्ञा
उस ने उन से की है जो उस से प्रेम रखते हैं 6 पर तुम ने उस कंगाल का अपमान
किया: क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें
कचहिरयोंमें घसीट घसीट कर नहीं ले जाते 7 क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा
नहीं करते जिस के तुम कहलाए जाते हो 8 तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस
वचन के अनुसार, कि तू अपके पड़ोसी से अपके समान प्रेम रख, सचमुच उस
राज्य व्यवस्या को पूरी करते हो, तो अच्छा करते हो। 9 पर यदि तुम पक्षपात
करते हो, तो पाप करते हो; और व्यवस्या तुम्हें अपराधी ठहराती है। 10 क्योंकि
जो कोई सारी व्यवस्या का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो
वह सब बातोंमे दोषी ठहरा। 11 इसलिथे कि जिस ने यह कहा, कि तू व्यभिचार
न करना उसी ने यह भी कहा, कि तू हत्या न करना इसलिथे यदि तू ने व्यभिचार
तो नहीं किया, पर हत्या की तौभी तू व्यवस्या का उलंघन करने वाला ठहरा। 12
तुम उन लोगोंकी नाई वचन बोलो, और काम भी करो, जिन का न्याय स्वतंत्रता
की व्यवस्या के अनुसार होगा। 13 क्योंकि जिस ने दया नहीं की, उसका न्याय

बिना दया के होगा: दया न्याय पर जयवन्त होती है।। 14 हे मेरे भाइयों, यदि
कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ क्या
ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है 15 यदि कोई भाई या बहिन नगें
उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। 16 और तुम में से कोई उन से
कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिथे
आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ 17 वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित
न हो तो अपके स्वभाव में मरा हुआ है। 18 बरन कोई कह सकता है कि तुझे
विश्वास है, और मैं कर्म करता हूं: तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और
मैं अपना विश्वास अपके कर्मोंके द्वारा तुझे दिखाऊंगा। 19 तुझे विश्वास है कि एक
ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है: दुष्टात्क़ा भी विश्वास रखते, और यरयराते हैं।
20 पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास
व्यर्य है 21 जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपके पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो
क्या वह कर्मो से धार्मिक न ठहरा या। 22 सो तू ने देख लिया कि विश्वास ने उस
के कामोंके साय मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मो से विश्वास सिद्ध हुआ। 23 और
पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और
यह उसके लिथे धर्म गिना गया, और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। 24 सो तुम
ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मोंसे भी धर्मी ठहरता
है। 25 वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उस ने दूतोंको अपके घर में उतारा, और दूसरे
मार्ग से विदा किया, तो क्या कर्मोंसे धार्मिक न ठहरी 26 निदान, जैसे देह आत्क़ा
बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।।

याकूब 3

1 हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपकेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम
उपकेशक और भी दोषी ठहरेंगे। 2 इसलिथे कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं:
जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी
लगाम लगा सकता है। 3 जब हम अपके वश में करने के लिथे घोड़ोंके मुंह में
लगाम लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी फेर सकते हैं। 4 देखो, जहाज
भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी
पतवार के द्वारा मांफी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं। 5 वैसे ही जीभ भी
एक छोटा सा अंग है और बड़ी बड़ी डींगे मारती है: देखो, योड़ी सी आग से कितने
बड़े बन में आग लग जाती है। 6 जीभ भी एक आग है: भी हमारे अंगोंमें अधर्म का
एक लोक है और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है
और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है। 7 क्योंकि हर प्रकार के बन-पशु,
पक्की, और रेंगनेवाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं
और हो भी गए हैं। 8 पर जीभ को मनुष्योंमें से कोई वश में नहीं कर सकता; वह
एक ऐसी बला है जो कभी रूकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। 9
इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्योंको जो
परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं स्राप देते हैं। 10 एक ही मुंह से धन्यवाद
और स्राप दोनोंनिकलते हैं। 11 हे मेरे भाइयों, ऐसा नही होना चाहिए। 12 क्या
सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनोंनिकलता है हे मेरे भाइयों, क्या
अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं वैसे ही खारे सोते
से मीठा पानी नहीं निकल सकता।। 13 तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है
जो ऐसा हो वह अपके कामोंको अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे

जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। 14 पर यदि तुम अपके अपके मन में कड़वी डाह
और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो फूठ
बोलना। 15 यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है बरन सांसारिक, और
शारीरिक, और शैतानी है। 16 इसलिथे कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां
बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। 17 पर जो ज्ञान ऊपर से आता है
वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और
अच्छे फलोंसे लदा हुआ और पझपात और कपट रिहत होता है। 18 और मिलाप
करानेवालोंके लिथे धामिर्कता का फल मेल-मिलाप के साय बोया जाता है।।

याकूब 4

1 तुम में लड़ाइयां और फगड़े कहां से आ गए क्या उन सुख-विलासोंसे नहीं जो
तुम्हारे अंगोंमें लड़ते-भिड़ते हैं 2 तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं;
तुम हत्या और डाह करते हो, ओर कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम फगड़ते और
लड़ते हो; तुम्हें इसलिथे नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। 3 तुम मांगते हो और पाते
नहीं, इसलिथे कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपके भोग विलास में उड़ा दो।
4 हे व्यभिचाि‍रिणयों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी
परमेश्वर से बैर करना है सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपके
आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है। 5 क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र शास्त्र
व्यर्य कहता है जिस आत्क़ा को उस ने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी
लालसा करता है, जिस का प्रतिफल डाह हो 6 वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस
कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियोंसे विरोध करता है, पर दीनोंपर

अनुग्रह करता है। 7 इसलिथे परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का
साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। 8 परमेश्वर के निकट
आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपके हाथ शुद्ध करो; और हे
दुचित्ते लोगोंअपके हृदय को पवित्र करो। 9 दुखी होओ, और शोक करा, और रोओ:
तुम्हारी हंसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए। 10 प्रभु के
साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा। 11 हे भाइयों, एक दूसरे की
बदनामी न करो, जो अपके भाई की बदनामी करता है, या भाई पर दोष लगाता
है, वह व्यवस्या की बदनामी करता है, और व्यवस्या पर दोष लगाता है, तो तू
व्यवस्या पर चलनेवाला नहीं, पर उस पर हाकिम ठहरा। 12 व्यवस्या देनेवाला
और हाकिम तो एक ही है, जिसे बचाने और नाश करने की सामर्थ है; तू कौन है,
जो अपके पड़ोसी पर दोष लगाता है 13 तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल
हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ
उठाएंगे। 14 और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन
है ही क्या तुम तो मानो भाप समान हो, जो योड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो
जाती है। 15 इस के विपक्कीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम
जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे। 16 पर अब तुम अपक्की ड़ींग पर
घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है। 17 इसलिथे जो कोई भलाई
करना जानता है और नहीं करता, उसके लिथे यह पाप है।।

याकूब 5

1 हे धनवानोंसुन तो लो; तुम अपके आनेवाले क्लेशोंपर चिल्लाकर रोओ। 2

तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे वस्त्रोंको कीड़े खा गए। 3 तुम्हारे
सोने-चान्दी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग की
नाई तुम्हारा मांस खा जाएगी: तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है। 4 देखो,
जिन मजदूरोंने तुम्हारे खेत काटे, उन की वह मजदूरी जो तुम ने धोखा देकर रख
ली है चिल्ला रही है, और लवनेवालोंकी दोहाई, सेनाओं के प्रभु के कानोंतक पहुंच
गई है। 5 तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने
इस वध के दिन के लिथे अपके ह्रृदय का पालन-पोषण करके मोटा ताजा किया।
6 तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला; वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता।। 7
सो हे भाइयों, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्या पृथ्वी के बहुमूल्य
फल की आशा रखता हुआ प्रयम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। 8
तुम भी धीरज धरो, और अपके ह्रृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन
निकट है। 9 हे भाइयों, एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो,
देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है। 10 हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम
से बातें की, उन्हें दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। 11 देखो,
हम धीरज धरनेवालोंको धन्य कहते हैं: तुम ने ऐयूब के धीरज के विषय में तो
सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है,
जिस से प्रभु की अत्यन्त करूणा और दया प्रगट होती है। 12 पर हे मेरे भाइयों,
सब से श्र्ेष्ठ बात यह है, कि शपय न खाना; न स्वर्ग की न पृथ्वी की, न किसी
और वस्तु की, पर तुम्हारी बातचीत हां की हां, और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड
के योग्य न ठहरो।। 13 यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्यना करे: यदि
आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए। 14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो

कलीसिया के प्राचीनोंको बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर
उसके लिथे प्रार्यना करें। 15 और विश्वास की प्रार्यना के द्वारा रोगी बच जाएगा
और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन
की भी झमा हो जाएगी। 16 इसलिथे तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपके
अपके पापोंको मान लो; और एक दूसरे के लिथे प्रार्यना करो, जिस के चंगे हो
जाओ; धर्मी जन की प्रार्यना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। 17 एलिय्याह
भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य या; और उस ने गिड़िगड़ा कर प्रार्यना
की; कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा। 18 फिर
उस ने प्रार्यना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई।। 19 हे मेरे
भाइयों, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस को फेर
लाए। 20 तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा,
वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापोंपर परदा डालेगा।।

1 पतरस 1

1 पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियोंके नाम, जो
पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया, और बियुनिया में तित्तर बित्तर होकर
रहते हैं। 2 और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्क़ा के पवित्र
करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिथे चुने
गए हैं। तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।। 3 हमारे प्रभु यीशु
मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह को मरे हुओं
में से जी उठने के द्वारा, अपक्की बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिथे नया

जन्क़ दिया। 4 अर्यात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिथे। 5
जो तुम्हारे लिथे स्वर्ग में रखी है, जिन की रझा परमेश्वर की सामर्य से, विश्वास के
द्वारा उस उद्धार के लिथे, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है। 6
और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना
प्रकार की पक्कीझाओं के कारण उदास हो। 7 और यह इसलिथे है कि तुम्हारा
परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक
बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का
कारण ठहरे। 8 उस से तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे
भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और
महिमा से भरा हुआ है। 9 और अपके विश्वास का प्रतिफल अर्यात आत्क़ाओं का
उद्धार प्राप्त करते हो। 10 इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत
ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर
होने को या, भविष्यद्वाणी की यी। 11 उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का
आत्क़ा जो उन में या, और पहिले ही से मसीह के दुखोंकी और उन के बाद
होनेवाली महिमा की गवाही देता या, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत
करता या। 12 उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपक्की नहीं बरन तुम्हारी
सेवा के लिथे थे बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा
मिला जिन्होंने पवित्र आत्क़ा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार
सुनाया, और इन बातोंको स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।। 13
इस कारण अपक्की अपक्की बुद्धि की कमर बान्धकर, और सचेत रहकर उस
अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें

मिलनेवाला है। 14 और आज्ञाकारी बालकोंकी नाई अपक्की अज्ञानता के समय
की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। 15 पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र
है, वैसे ही तुम भी अपके सारे चाल चलन में पवित्र बनो। 16 क्योंकि लिखा है, कि
पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। 17 और जब कि तुम, हे पिता, कह कर उस से
प्रार्यना करते हो, जो बिना पझपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है,
तो अपके परदेशी होने का समय भय से बिताओ। 18 क्योंकि तुम जानते हो, कि
तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादोंसे चला आता है उस से तुम्हारा
छुटकारा चान्दी सोने अर्यात्‌ नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। 19 पर निर्दोष
और निष्कलंक मेम्ने अर्यात्‌ मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। 20 उसका
ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया या, पर अब इस अन्तिम
युग में तुम्हारे लिथे प्रगट हुआ। 21 जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास
करते हो, जिस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और महिमा दी; कि तुम्हारा
विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। 22 सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट
प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपके मनोंको पवित्र किया है, तो तन मन
लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। 23 क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर
अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया
जन्क़ पाया है। 24 क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उस की सारी शोभा
घास के फूल की नाईं है: घास सूख जाती है, और फूल फड़ जाता है। 25 परन्तु प्रभु
का वचन युगानुयुग स्यिर रहेगा: और यह ही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें
सुनाया गया या।।

1 पतरस 2

1 इसलिथे सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को
दूर करके। 2 नथे जन्क़े हुए बच्चोंकी नाई निर्मल आत्क़िक दूध की लालसा करो,
ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिथे बढ़ते जाओ। 3 यदि तुम ने प्रभु की कृपा का
स्वाद चख लिया है। 4 उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों‍ने तो निकम्मा ठहराया,
परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्यर है। 5 तुम भी
आप जीवते पत्यरोंकी नाई आत्क़िक घर बनते जाते हो, जिस से याजकोंका
पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्क़िक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर को ग्राह्य हो। 6 इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है, कि देखो, मैं
सिय्योन में कोने के सिक्के का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्यर धरता हूं: और जो
कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्ज़ित नहीं होगा। 7 सो तुम्हारे
लिथे जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उन के
लिथे जिस पत्यर को राजमिस्त्रीयों‍ने निकम्मा ठहराया या, वही कोने का सिरा हो
गया। 8 और ठेस लगने का पत्यर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है:
क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिथे वे ठहराए भी
गए थे। 9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकोंका समाज, और
पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिथे कि जिस ने तुम्हें
अन्धकार में से अपक्की अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। 10
तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर ही प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई
यी पर अब तुम पर दया हुई है।। 11 हे प्रियोंमैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम
अपके आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो
आत्क़ा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। 12 अन्यजातियोंमें तुम्हारा चालचलन भला

हो; इसलिथे कि जिन जिन बातोंमें वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे
तुम्हारे भले कामोंको देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की
महिमा करें।। 13 प्रभु के लिथे मनुष्योंके ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में
रहो, राजा के इसलिथे कि वह सब पर प्रधान है। 14 और हाकिमोंके, क्योंकि वे
कुकिर्मयोंको दण्ड देने और सुकिर्मयोंकी प्रशंसा के लिथे उसके भेजे हुए हैं। 15
क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगोंकी
अज्ञानता की बातोंको बन्द कर दो। 16 और अपके आप को स्वतंत्र जानो पर
अपक्की इस स्वतंत्रता को बुराई के लिथे आड़ न बनाओ, परन्तु अपके आप को
परमेश्वर के दास समझकर चलो। 17 सब का आदर करो, भाइयोंसे प्रेम रखो,
परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।। 18 हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साय
अपके स्वामियोंके आधीन रहो, न केवल भलोंऔर नम्रोंके, पर कुटिलोंके भी। 19
क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश
सहता है, तो यह सुहावना है। 20 क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए
और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है पर यदि भला काम करके दुख
उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। 21 और तुम इसी के
लिथे बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिथे दुख उठाकर, तुम्हें एक
आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। 22 न तो उस ने पाप किया,
और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। 23 वह गाली सुनकर गाली नहीं
देता या, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता या, पर अपके आप को
सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता या। 24 वह आप ही हमारे पापोंको अपक्की देह
पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापोंके लिथे मर करके धामिर्कता के

लिथे जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। 25 क्योंकि तुम पहिले
भटकी हुई भेड़ोंकी नाईं थे, पर अब अपके प्राणोंके रखवाले और अध्यझ के पास
फिर आ गए हो।

1 पतरस 3

1 हे पत्नियों, तुम भी अपके पति के आधीन रहो। 2 इसलिथे कि यदि इन में से
कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन
को देखकर बिना वचन के अपक्की अपक्की पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच
जाएं। 3 और तुम्हारा सिंगार, दिखावटी न हो, अर्यात् बाल गूंयने, और सोने के
गहने, या भांति भांति के कपके पहिनना। 4 बरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त
मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्ज़ित रहे,
क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। 5 और पूर्वकाल में पवित्र
स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती यीं, अपके आप को इसी रीति से
संवारती और अपके अपके पति के आधीन रहती यीं। 6 जैसे सारा इब्राहीम की
आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती यी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और
किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उस की बेंटियां ठहरोगी।। 7 वैसे ही हे
पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियोंके साय जीवन निर्वाह करो और स्त्री को
निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनोंजीवन के
वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्यनाएं रूक न जाएं।। 8 निदान, सब के
सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करूणामय,
और नम्र बनो। 9 बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो;

पर इस के विपक्कीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिथे
बुलाए गए हो। 10 क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन
देखना चाहता है, वह अपक्की जीभ को बुराई से, और अपके होंठोंको छल की
बातें करने से रोके रहे। 11 वह बुराई का साय छोड़े, और भलाई की करे; वह मेल
मिलाप को ढूंढे, और उस के यत्न में रहे। 12 क्योंकि प्रभु की आंखे धमिर्योंपर
लगी रहती हैं, और उसके कान उस की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु
बुराई करनेवालोंके विमुख रहता है।। 13 और यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित
रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है 14 और यदि तुम धर्म के कारण
दुख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उन के डराने से मत डरो, और न घबराओ। 15
पर मसीह को प्रभु जानकर अपके अपके मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम
से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिथे सर्वदा तैयार
रहो, पर नम्रता और भय के साय। 16 और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिथे कि जिन
बातोंके विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चालचलन का अपमान करते हैं
लज्ज़ित हों। 17 क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो, कि तुम भलाई करने के
कारण दुख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुख उठाने से उत्तम है। 18
इसलिथे कि मसीह ने भी, अर्यात् अधमिर्योंके लिथे धर्मी ने पापोंके कारण एक
बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो
घात किया गया, पर आत्क़ा के भाव से जिलाया गया। 19 उसी में उस ने जाकर
कैदी आत्क़ाओं को भी प्रचार किया। 20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न
माना जब परमेश्वर नूह के दिनोंमें धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन
रहा या, जिस में बैठकर योड़े लोग अर्यात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। 21

और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्यात बपतिस्क़ा, यीशु मसीह के जी उठने के
द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्य नहीं है,
परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्य है)। 22 वह स्वर्ग पर
जाकर परमेश्वर के दिहनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिक्कारनी और
सामर्यी उसके आधीन किए गए हैं।।

1 पतरस 4

1 सो जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उस ही मनसा को
धारण करके हियथार बान्ध लो क्योंकि जिस शरीर में दुख उठाया, वह पाप से
छूट गया। 2 ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्योंकी
अभिलाषाओं के अनुसार नहीं बरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो।
3 क्योंकि अन्यजातियोंकी इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी
अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पिय?ड़पन, और घृणित मूत्तिपूजा में
जहां तक हम ने पहिले से समय गंवाया, वही बहुत हुआ। 4 इस से वे अचम्भा
करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साय नहीं देते, और इसलिथे वे बुरा
भला कहते हैं। 5 पर वे उस को जो जीवतोंऔर मरे हुओं का न्याय करने को तैयार
हैं, लेखा देंगे। 6 क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिथे सुनाया गया, कि
शरीर में तो मनुष्योंके अनुसार उन का न्याय हो, पर आत्क़ा में वे परमेश्वर के
अनुसार जीवित रहें।। 7 सब बातोंका अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिथे संयमी
होकर प्रार्यना के लिथे सचेत रहो। 8 और सब में श्र्ेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे
से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापोंको ढ़ाप देता है। 9 बिना कुड़कुड़ाए

एक दूसरे की पहुनाई करो। 10 जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के
नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियोंकी नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए।
11 यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानोंपरमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे;
तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातोंमे यीशु मसीह के द्वारा,
परमेश्वर की महिमा प्रगट हो: महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी की है।
आमीन।। 12 हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिथे तुम में भड़की
है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही
है। 13 पर जैसे जैसे मसीह के दुखोंमें सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से
उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। 14 फिर
यदि मसीह के नाम के लिथे तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि
महिमा का आत्क़ा, जो परमेश्वर का आत्क़ा है, तुम पर छाया करता है। 15 तुम
में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने
के कारण दुख न पाए। 16 पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्ज़ित
न हो, पर इस बात के लिथे परमेश्वर की महिमा करे। 17 क्योंकि वह समय आ
पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगोंका न्याय किया जाए, और जब कि न्याय
का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के
सुसमाचार को नहीं मानते 18 और यदि धर्मी व्यक्ति ही किठनता से उद्धार पाएगा,
तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना 19 इसलिथे जो परमेश्वर की इच्छा के
अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपके अपके प्राण को विश्वासयोग्य
सृजनहार के हाथ में सौंप दें।।

1 पतरस 5

1 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखोंका गवाह और
प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। 2 कि परमेश्वर
के उस फुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं,
परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिथे नहीं,
पर मन लगा कर। 3 और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिक्कारने न
जताओ, बरन फुंड के लिथे आदर्श बनो। 4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा,
तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरफाने को नहीं। 5 हे नवयुवकों,
तुम भी प्राचीनोंके आधीन रहो, बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिथे
दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियोंका साम्हना करता है,
परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है। 6 इसलिथे परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे
दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। 7 और अपक्की सारी
चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है। 8 सचेत हो, और
जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में
रहता है, कि किस को फाड़ खाए। 9 विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर
उसका साम्हना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं।
10 अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपक्की
अनन्त महिमा के लिथे बुलाया, तुम्हारे योड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही
तुम्हें सिद्ध और स्यिर और बलवन्त करेगा। 11 उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे।
आमीन।। 12 मैं ने सिलवानुस के हाथ, जिस मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूं,
संझेप में लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा
अनुग्रह यही है, इसी में स्यिर रहो। 13 जो बाबुल में तुम्हारी नाईं चुने हुए लोग हैं,

वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। 14 प्रेम से चुम्बन ले लेकर
एक दूसरे को नमस्कार करो।। तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।।

2 पतरस 1

1 शमौन पतरस की और से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगोंके
नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता से हमारा
सा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है। 2 परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की
पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। 3 क्योंकि
उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें
उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपक्की ही महिमा और सद्गुण के
अनुसार बुलाया है। 4 जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी
प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी
अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। 5 और इसी
कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपके विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर
समझ। 6 और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति। 7
और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। 8
क्योंकि यदि थे बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु
यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी। 9 और जिस में
थे बातें नहीं, वह अन्धा है, और धुन्धला देखता है, और अपके पूर्वकाली पापोंसे
धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। 10 इस कारण हे भाइयों, अपके बुलाए जाने,
और चुन लिथे जाने को सिद्ध करने का भली भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि

यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे। 11 बरन इस रीति से तुम हमारे
प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साय प्रवेश
करने पाओगे। 12 इसलिथे यद्यपि तुम थे बातें जानते हो, और जो सत्य वचन
तुम्हें मिला है, उस में बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातोंकी सुधि दिलाने को
सर्वदा तैयार रहूंगा। 13 और मैं यह अपके लिथे उचित समझता हूं, कि जब तक
मैं इस डेरे में हूं, तब तक तुम्हें सुधि दिलाकर उभारता रहूं। 14 क्योंकि यह
जानता हूं, कि मसीह के वचन के अनुसार मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र
आनेवाला है। 15 इसलिथे मैं ऐसा यत्न करूंगा, कि मेरे कूच करने के बाद तुम
इन सब बातोंको सर्वदा स्क़रण कर सको। 16 क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपके
प्रभु यीशु मसीह की सामर्य का, और आगमन का समाचार दिया या तो वह
चतुराई से गढ़ी हुई कहानियोंका अनुकरण नहीं किया या बरन हम ने आप ही
उसके प्रताप को देखा या। 17 कि उस ने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा
पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस
से मैं प्रसन्न हूं। 18 और जब हम उसके साय पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही
वाणी आते सुना। 19 और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस
घटना से दृढ़ ठहरा है और तुम यह अच्छा करते हो, कि जो यह समझकर उस पर
ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धिक्कारने स्यान में उस समय तक
प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे ह्रृदयोंमें न
चमक उठे। 20 पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी
किसी के अपके ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। 21 क्योंकि कोई भी
भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्क़ा के

द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।।

2 पतरस 2

1 और जिस प्रकार उन लोगोंमें फूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी फूठे
उपकेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और
उस स्वामी का जिस ने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपके आप को
शीघ्र विनाश में डाल देंगे। 2 और बहुतेरे उन की नाई लुचपन करेंगे, जिन के
कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी। 3 और वे लोभ के लिथे बातें गढ़कर
तुम्हें अपके लाभ का कारण बनाएंगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहिले से हो
चुकी है, उसके आने में कुछ भी देर नहीं, और उन का विनाश ऊंघता नहीं। 4
क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतोंको जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर
नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डोंमें डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।
5 और प्रयम युग के संसार को भी न छोड़ा, बरन भक्तिहीन संसार पर महा
जल-प्रलय भेजकर धर्म के प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियोंको बचा लिया। 6
और सदोम और अमोरा के नगरोंको विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उन्हें भस्क़
करके राख में मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगोंकी शिझा के लिथे
एक दृष्टान्त बनें। 7 और धर्मी लूत को जो अधमिर्योंके अशुद्ध चाल-चलन से
बहुत दुखी या छुटकारा दिया। 8 (क्योंकि वह धर्मी उन के बीच में रहते हुए, और
उन के अधर्म के कामोंको देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपके सच्चे
मन को पीडित करता या)। 9 तो प्रभु के भक्तोंको पक्कीझा में से निकाल लेना
और अधमिर्योंको न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है। 10

निज करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और
प्रभुता को तुच्छ जानते हैं: वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊंचे पदवालोंको बुरा भला
कहने से नहीं डरते। 11 तौभी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ में उन से बड़े हैं, प्रभु
के साम्हने उन्हें बुरा भला कहकर दोष नहीं लगाते। 12 पर थे लोग निर्बुद्धि
पशुओं ही के तुल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिथे उत्पन्न हुए हैं; और
जिन बातोंको जानते ही नहीं, उन के विषय में औरोंको बुरा भला कहते हैं, वे
अपक्की सड़ाहट में आप ही सड़ जाएंगे। 13 औरोंका बुरा करने के बदले उन्हीं का
बुरा होगा: उन्हें दिन दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है; यह कलंक और
दोष है- जब वे तुम्हारे साय खाते पीते हैं, तो अपक्की ओर से प्रेम भोज करके
भोग-विलास करते हैं। 14 उन ही आंखोंमें व्यभिचारिणी बसी हुई है, और वे पाप
किए बिना रूक नहीं सकते: वे चंचल मनवालोंको फुसला लेते हैं; उन के मन को
लोभ करने का अभ्यास हो गया है, वे सन्ताप के सन्तान हैं। 15 वे सीधे मार्ग को
छोड़कर भटक गए हैं, और बओर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिए हैं; जिस ने
अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना। 16 पर उसके अपराध के विषय में उलाहना
दिया गया, यहां तक कि अबोल गदही ने मनुष्य की बोली से उस भविष्यद्वक्ता को
उसके बावलेपन से रोका। 17 थे लोग अन्धे कुंए, और आन्धी के उड़ाए हुए बादल
हैं, उन के लिथे अनन्त अन्धकार ठहराया गया है। 18 वे व्यर्थ घमण्ड की बातें
कर करके लुचपन के कामोंके द्वारा, उन लोगोंको शारीरिक अभिलाषाओं में फंसा
लेते हैं, जो भटके हुओं में से अभी निकल ही रहे हैं। 19 वे उन्हें स्वतंत्र होने की
प्रतिज्ञा तो देते हैं, पर आप ही सड़ाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिस से हार
गया है, वह उसका दास बन जाता है। 20 और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु

मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले,
और फिर उन में फंसकर हार गए, तो उन की पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो
गई है। 21 क्योंकि धर्म के मार्ग में न जानना ही उन के लिथे इस से भला होता,
कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई यी। उन पर
यह कहावत ठीक बैठती है, 22 कि कुत्ता अपक्की छांट की ओर और धोई हुई
सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिथे फिर चक्की जाती है।।

2 पतरस 3

1 हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूं, और दोनोंमें सुधि दिलाकर
तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूं। 2 कि तुम उन बातोंको, जो पवित्र
भविश्यद्वक्ताओं ने पहिले से कही हैं और प्रभु, और उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को
स्क़रण करो, जो तुम्हारे प्रेरितोंके द्वारा दी गई यी। 3 और यह पहिले जान लो, कि
अन्तिम दिनोंमे हंसी ठट्ठा करनेवाले आएंगे, जो अपक्की ही अभिलाषाओं के
अनुसार चलेंगे। 4 और कहेंगे, उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई क्योंकि जब से
बाप-दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से या 5 वे तो
जान बूफकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से आकाश प्राचीन काल
से वर्तमान है और पृय्वी भी जल में से बनी और जल में स्यिर है। 6 इन्हीं के द्वारा
उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया। 7 पर वर्तमान काल के आकाश
और पृय्वी उसी वचन के द्वारा इसलिथे रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन
मनुष्योंके न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।। 8 हे प्रियों, यह
एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है,

और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं। 9 प्रभु अपक्की प्रतिज्ञा के विषय में देर
नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता
है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सब को मन फिराव का
अवसर मिले। 10 परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश
बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल
जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे। 11 तो जब कि थे सब
वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में
कैसे मनुष्य होना चाहिए। 12 और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से
जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिथे कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के
कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर
गल जाएंगे। 13 पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई
पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धामिर्कता वास करेगी।। 14 इसलिथे, हे प्रियो,
जब कि तुम इन बातोंकी आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके
साम्हने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो। 15 और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार
समझो, जैसे हमारे प्रिय भाई पौलुस न भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला,
तुम्हें लिखा है। 16 वैसे ही उस ने अपक्की सब पत्रियोंमें भी इन बातोंकी चर्चा की
है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना किठन है, और अनपढ़ और
चंचल लोग उन के अर्योंको भी पवित्र शास्त्र की और बातोंकी नाईं खींच तानकर
अपके ही नाश का कारण बनाते हैं। 17 इसलिथे हे प्रियो तुम लोग पहिले ही से
इन बातोंको जानकर चौकस रहो, ताकि अधमिर्योंके भ्रम में फंसकर अपक्की
स्यिरता को हाथ से कहीं खो न दो। 18 पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह

के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और
युगानुयुग होती रहे। आमीन।।

1 यूहन्ना 1

1 उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से या, जिसे हम ने सुना, और जिसे
अपक्की आंखोंसे देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथोंसे छूआ। 2
(यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और
तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साय या, और हम पर
प्रगट हुआ)। 3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं,
इसलिथे कि तुम भी हमारे साय सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता
के साय, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साय है। 4 और थे बातें हम इसलिथे
लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।। 5 जो समाचार हम ने उस से सुना,
और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति हैं: और उस में कुछ भी
अन्धकार नहीं। 6 यदि हम कहें, कि उसके साय हमारी सहभागिता है, और फिर
अन्धकार में चलें, तो हम फूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते। 7 पर यदि जैसा वह
ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं;
और उसके पुत्र यीशु मसीह का लोहू हमें सब पापोंसे शुद्ध करता है। 8 यदि हम
कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपके आप को धोखा देते हैं: और हम में
सत्य नहीं। 9 यदि हम अपके पापोंको मान लें, तो वह हमारे पापोंको झमा करने,
और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। 10 यदि कहें कि
हम ने पाप नहीं किया, तो उसे फूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।।

1 यूहन्ना 2

1 हे मेरे बालको, मैं थे बातें तुम्हें इसलिथे लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और
यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहाथक है, अर्यात्‌ धामिर्क यीशु
मसीह। 2 और वही हमारे पापोंका प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, बरन
सारे जगत के पापोंका भी। 3 यदि हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे, तो उस से हम
जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। 4 जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया
हूं, और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता, वह फूठा है; और उस में सत्य नहीं। 5
पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है:
हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं। 6 सो कोई यह कहता है, कि मैं उस
में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता या। 7 हे
प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से
तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है। 8 फिर मैं
तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूं; और यह तो उस में और तुम में सच्ची ठहरती है;
कयोंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है। 9
जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूं; और अपके भाई से बैर रखता है, वह
अब तक अन्धकार ही में है। 10 जो कोई अपके भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति
में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। 11 पर जो कोई अपके भाई से बैर रखता
है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता, कि कहां
जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उस की आंखे अन्धी कर दी हैं।। 12 हे बालको, मैं
तुम्हें इसलिथे लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप झमा हुए। 13 हे पितरों,
मैं तुम्हें इसलिथे लिखता हूं, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो: हे जवानों, मैं

तुम्हें इसलिथे लिखता हूं, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे लड़कोंमैं ने तुम्हें
इसलिथे लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो। 14 हे पितरों, मैं ने तुम्हें
इसलिथे लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो: हे जवानो, मैं ने तुम्हें
इसलिथे लिखा है, कि बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है,
और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है। 15 तुम न तो संसार से और न संसार में की
वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम
नहीं है। 16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्यात् शरीर की अभिलाषा, और
आंखोंकी अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु
संसार ही की ओर से है। 17 और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनोंमिटते जाते
हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।। 18 हे लड़कों,
यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला
है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इस से हम जानते हैं,
कि यह अन्तिम समय है। 19 वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं;
क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साय रहते, पर निकल इसलिथे गए कि यह
प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं। 20 और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक
हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो। 21 मैं ने तुम्हें इसलिथे नहीं लिखा, कि तुम
सत्य को नहीं जानते, पर इसलिथे, कि उसे जानते हो, और इसलिथे कि कोई
फूठ, सत्य की ओर से नहीं। 22 फूठा कौन है केवल वह, जो यीशु के मसीह होने
का इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का
इन्कार करता है। 23 जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं:
जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। 24 जो कुछ तुम ने आरम्भ से

सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना
रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे। 25 और जिस की उस ने हम से
प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है। 26 मैं ने थे बातें तुम्हें उस के विषय में लिखी हैं,
जो तुम्हें भरमाते हैं। 27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया
गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नही, कि कोई तुम्हें
सिखाए, बरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें
सिखाता है, और यह सच्चा है, और फूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है
वैसे ही तुम उस में बने रहते हो। 28 निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब
वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्ज़ित
न हों। 29 यदि तुम जानते हो, कि वह धामिर्क है, तो यह भी जानते हो, कि जो
कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्क़ा है।

1 यूहन्ना 3

1 देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं,
और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं
जाना। 2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं
हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी
उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 3 और जो कोई
उस पर यह आशा रखता है, वह अपके आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह
पवित्र है। 4 जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्या का विरोध करता है; ओर पाप तो
व्यवस्या का विरोध है। 5 और तुम जानते हो, कि वह इसलिथे प्रगट हुआ, कि

पापोंको हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। 6 जो कोई उस में बना
रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है,
और न उस को जाना है। 7 हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के
काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है। 8 जो कोई पाप करता है, वह शैतान की
ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है: परमेश्वर का पुत्र
इसलिथे प्रगट हुआ, कि शैतान के कामोंको नाश करे। 9 जो कोई परमेश्वर से
जन्क़ा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता है: और वह
पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्क़ा है। 10 इसी से परमेश्वर की
सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता,
वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपके भाई से प्रेम नहीं रखता। 11 क्योंकि
जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से बैर रखे। 12
और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से या, और जिस ने अपके भाई को घात
किया: और उसे किस कारण घात किया इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और
उसके भाई के काम धर्म के थे।। 13 हे भाइयों, यदि संसार तुम से बैर करता है तो
अचम्भा न करना। 14 हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे
हैं; क्योंकि हम भाइयोंसे प्रेम रखते हैं: जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में
रहता है। 15 जो कोई अपके भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते
हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। 16 हम ने प्रेम इसी से जाना,
कि उस ने हमारे अपके प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयोंके लिथे प्राण देना
चाहिए। 17 पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपके भाई को
कंगाल देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर

बना रह सकता है 18 हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और
सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। 19 इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस
बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसे विषय में हम उसके साम्हने अपके अपके
मन को ढाढ़स दे सकेंगे। 20 क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ
जानता है। 21 हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के
साम्हने हियाव होता है। 22 और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है;
क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं। 23
और उस की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें
और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें। 24 और जो
उस की आज्ञाओं को मानता है, वह इस में, और यह उस में बना रहता है: और
इसी से, अर्यात उस आत्क़ा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम
में बना रहता है।।

1 यूहन्ना 4

1 हे प्रियों, हर एक आत्क़ा की प्रतीति न करो: बरन आत्क़ाओं को परखो, कि वे
परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से फूठे भविष्यद्वक्ता जगत में
निकल खड़े हुए हैं। 2 परमेश्वर का आत्क़ा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो,
कि जो कोई आत्क़ा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह
परमेश्वर की ओर से है। 3 और जो कोई आत्क़ा यीशु को नहीं मानती, वह
परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्क़ा है; जिस की
चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है: और अब भी जगत में है। 4 हे

बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में
है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है। 5 वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की
बातें बोलते हैं, और संसार उन की सुनता है। 6 हम परमेश्वर के हैं: जो परमेश्वर
को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं
सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्क़ा और भ्रम की आत्क़ा को पहचान लेते हैं।
7 हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम
करता है, वह परमेश्वर से जन्क़ा है; और परमेश्वर को जानता है। 8 जो प्रेम नहीं
रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। 9 जो प्रेम
परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपके एकलौते
पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसे द्वारा जीवन पाएं। 10 प्रेम इस में नहीं कि
हम ने परमेश्वर ने प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और
हमारे पापोंके प्रायश्चित्त के लिथे अपके पुत्र को भेजा। 11 हे प्रियों, जब परमेश्वर
ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। 12
परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर
हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। 13 इसी से हम
जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उस ने अपके
आत्क़ा में से हमें दिया है। 14 और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि
पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है। 15 जो कोई यह मान लेता है,
कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में।
16 और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की
प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है;

और परमेश्वर उस में बना रहता है। 17 इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें
न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी है। 18 प्रेम
में भय नहीं होता, बरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय के कष्ट
होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। 19 हम इसलिथे प्रेम
करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया। 20 यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से
प्रेम रखता हूं; और अपके भाई से बैर रखे; तो वह फूठा है: क्योंकि जो अपके भाई
से, जिस उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं
देखा, प्रेम नहीं रख सकता। 21 और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई
अपके परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपके भाई से भी प्रेम रखे।।

1 यूहन्ना 5

1 जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है
और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो
उस से उत्पन्न हुआ है। 2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की
आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानोंसे प्रेम
रखते हैं। 3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और
उस की आज्ञाएं किठन नहीं। 4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह
संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त
होती है हमारा विश्वास है। 5 संसार पर जय पानेवाला कौन है केवल वह जिस का
विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है। 6 यही है वह, जो पानी और लोहू के द्वारा
आया या; अर्यात यीशु मसीह: वह न केवल पानी के द्वारा, बरन पानी और लोहू

दोनोंके द्वारा आया या। 7 और जो गवाही देता है, वह आत्क़ा है; क्योंकि आत्क़ा
सत्य है। 8 और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्क़ा, और पानी, और लोहू; और
तीनोंएक ही बात पर सम्मत हैं। 9 जब हम मनुष्योंकी गवाही मान लेते हैं, तो
परमेश्वर की गवाही तो उस से बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उस
ने अपके पुत्र के विषय में गवाही दी है। 10 जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता
है, वह अपके ही में गवाही रखता है; जिस ने परमेश्वर को प्रतीति नहीं की, उस ने
उसे फूठा ठहराया; क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर
ने अपके पुत्र के विषय में दी है। 11 और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें
अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है। 12 जिस के पास पुत्र है,
उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन
भी नहीं है।। 13 मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो,
इसलिथे लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। 14 और हमें
उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के
अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं, कि जो
कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने
उस से मांगा, वह पाया है। 16 यदि कोई अपके भाई को ऐसा पाप करते देखे,
जिस का फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के लिथे,
जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु है: इस के विषय में मै बिनती
करने के लिथे नहीं कहता। 17 सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप
भी है, जिस का फल मृत्यु नहीं।। 18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से
उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह

बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। 19 हम जानते हैं, कि हम
परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वंश में पड़ा है। 20 और यह भी
जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम
उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्यात उसके पुत्र यीशु मसीह
में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। 21 हे बालको, अपके आप
को मुरतोंसे बचाए रखो।।

2 यूहन्ना 1

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस चुनी हुई श्र्ीमती और उसके लड़केबालोंके नाम
जिन से मैं उस सच्चाई के कारण सत्य प्रेम रखता हूं, जा हम में स्यिर रहती है,
और सर्वदा हमारे साय अटल रहेगी। 2 और केवल मैं ही नहीं, बरन वह सब भी
प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं।। 3 परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु
मसीह की ओर से अनुग्रह, और दया, और शान्ति, सत्य, और प्रेम सहित हमारे
साय रहेंगे।। 4 मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैं ने तेरे कितने लड़के-बालोंको उस
आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली यी सत्य पर चलते हुए पाया। 5
अब हे श्र्ीमती, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास
है, लिखता हूं; और तुझ से बिनती करता हूं, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। 6 और
प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वही आज्ञा है, जो तुम ने
आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए। 7 क्योंकि बहुत से ऐसे
भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर
में होकर आया: भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है। 8 अपके विषय में

चौकस रहो; कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न बिगाड़ो: बरन उसका
पूरा प्रतिफल पाओ। 9 जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिझा में बना
नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उस की शिझा में स्यिर रहता है,
उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। 10 यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही
शिझा न दे, उसे न तो घर मे आने दो, और न नमस्कार करो। 11 क्योंकि जो कोई
ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामोंमें साफी होता है।। 12 मुझे
बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और सियाही से लिखना नहीं चाहता;
पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और सम्मुख होकर बातचीत करूंगा:
जिस से तुम्हारा आनन्द पूरा हो। 13 तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के-बाले तुझे
नमस्कार करते हैं।

3 यूहन्ना 1

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता
हूं।। 2 हे प्रिय, मेरी यह प्रार्यना है; कि जैसे तू आत्क़िक उन्नति कर रहा है, वैसे ही
तू सब बातोंमे उन्नति करे, और भला चंगा रहे। 3 क्योंकि जब भाइयोंने आकर,
तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही
आनन्दित हुआ। 4 मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि
मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं। 5 हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयोंके साय करता
है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाई करता है। 6 उन्होंने मण्डली के साम्हने
तेरे प्रेम की गवाही दी यी: यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार
परमेश्वर के लोगोंके लिथे उचित है तो अच्छा करेगा। 7 क्योंकि वे उस नाम के

लिथे निकले हैं, और अन्यजातियोंसे कुछ नहीं लेते। 8 इसलिथे ऐसोंका स्वागत
करना चाहिए, जिस से हम भी सत्य के पझ में उन के सहकर्मी हों।। 9 मैं ने
मण्डली को कुछ लिखा या; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमें
ग्रहण नहीं करता। 10 सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामोंकी जो वह कर रहा है
सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है; और इस पर भी
सन्तोष न करके आप ही भाइयोंको ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना
चाहते हैं, मना करता है: और मण्डली से निकाल देता है। 11 हे प्रिय, बुराई के
नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है;
पर जो बुराई करता है, उस ने परमेश्वर को नहीं देखा। 12 देमेत्रियुस के विषय में
सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: औश्र् हम भी गवाही देते हैं, और तू
जानता है, कि हमारी गवाही सच्चा है।। 13 मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो
या; पर सियाही और कलम से लिखना नहीं चाहता। 14 पर मुझे आशा है कि तुझ
से शीघ्र भेंट करूंगा: तब हम आम्हने साम्हने बातचीत करेंगे: तुझे शान्ति
मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं: वहां के मित्रोंके नाम ले लेकर
नमस्कार कह देना।।

यहूदा 1

1 यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है, उन बुलाए
हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिथे सुरिझत हैं।। 2
दया और शान्ति और प्रेम तुम्हें बहुतायत से प्राप्त होता रहे।। 3 हे प्रियो, जब मैं
तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा या,

जिस में हम सब सहभागी हैं; तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि
उस विश्वास के लिथे पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगोंको एक ही बार सौंपा गया या।
4 क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिन से इस दण्ड का
वर्णन पुराने समय में पहिले ही से लिखा गया या: थे भक्तिहीन हैं, और हमारे
परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते है, और हमारे अद्वैत स्वामी और
प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।। 5 पर यद्यपि तुम सब बात एक बार जान
चुके हो, तौभी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु ने एक कुल
को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालोंको नाश कर दिया। 6 फिर जो
स्र्वगदूतोंने अपके पद को स्यिर न रखा वरन अपके निज निवास को छोड़ दिया,
उस ने उन को भी उस भीषण दिन के न्याय के लिथे अन्धकार में जो सदा काल
के लिथे है बन्धनोंमें रखा है। 7 जिस रीति से सदोम और अमोरा और उन के
आस पास के नगर, जो इन की नाई व्यभिचारी हो गए थे और पराथे शरीर के
पीछे लग गए थे आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं। 8 उसी रीति से
थे स्वप्नदर्शी भी अपके अपके शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ
जानते हैं; और ऊंचे पदवालोंको बुरा भला कहते हैं। 9 परन्तु प्रधान स्वर्गदूत
मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा की लोय के विषय में वाद-विवाद करता या, तो
उस को बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, कि प्रभु
तुझे डांटे। 10 पर थे लोग जिन बातोंको नहीं जानते, उन को बुरा भला कहते हैं;
पर जिन बातोंको अचेतन पशुओं की नाई स्वभाव ही से जानते हैं, उन में अपके
आप को नाश करते हैं। 11 उन पर हाथ! कि वे कैन की सी चाल चले, और
मजदूरी के लिथे बिलाम की नाई भ्रष्ट हो गए हैं: और कोरह की नाई विरोध करके

नाश हुए हैं। 12 यह तुम्हारी प्रेम सभाओं में तुम्हारे साय खाते-पीते, समुद्र में
छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरनेवाले रखवाले हैं; वे
निर्जल बादल हैं; जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है; पतफड़ के निष्फल पेड़ हैं, जो दो
बार मर चुके हैं; और जड़ से उखड़ गए हैं। 13 थे समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे हैं, जो
अपक्की लज्ज़ा का फेन उछालते हैं: थे डांवाडोल तारे हैं, जिन के लिथे सदा काल
तक घोर अन्धकार रखा गया है। 14 और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी
में या, इन के विषय में यह भविष्यद्वाणी की, कि देखो, प्रभु अपके
लाखोंपवित्रोंके साय आया। 15 कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनोंको उन
के अभक्ति के सब कामोंके विषय में, जो भक्तिहीन पापियोंने उसके विरोध में कही
हैं, दोषी ठहराए। 16 थे तो असंतुष्ट, कुड़कुड़ानेवाले, और अपके अभिलाषाओं के
अनुसार चलनेवाले हैं; और अपके मुंह से घमण्ड की बातें बोलते हैं; और वे लाभ
के लिथे मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं।। 17 पर हे प्रियों, तुम उन बातोंको स्क़रण
रखो; जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहिले कह चुके हैं। 18 वे तुम से कहा
करते थे, कि पिछले दिनोंमें ऐसे ठट्ठा करनेवाले होंगे, जो अपक्की अभक्ति के
अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। 19 थे तो वे है, जो फूट डालते हैं; थे शारीरिक
लोग हैं, जिन में आत्क़ा नहीं। 20 पर हे प्रियोंतुम अपके अति पवित्र विश्वास में
अपक्की उन्नति करते हुए और पवित्र आत्क़ा में प्रार्यना करते हुए। 21 अपके
आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिथे हमारे प्रभु
यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो। 22 और उन पर जो शंका में हैं दया
करो। 23 और बहुतोंको आग में से फपटकर निकालो, और बहुतोंपर भय के साय
दया करो; बरन उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है।।

24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपक्की महिमा की भरपूरी
के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। 25 उस अद्वैत परमेश्वर
हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिक्कारने, हमारे
प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे।
आमीन।।

प्रकाशित वाक्य 1

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिथे दिया, कि अपके
दासोंको वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपके
स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपके दास यूहन्ना को बताया। 2 जिस ने
परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्यात जो कुछ उस ने देखा या उस
की गवाही दी। 3 धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे
जो सुनते हैं और इस में लिखी हुई बातोंको मानते हैं, क्योंकि समय निकट आया
है।। 4 यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम: उस की ओर से
जो है, और जो या, और जो आनेवाला है; और उन सात आत्क़ाओं की ओर से, जो
उसके सिंहासन के साम्हने है। 5 और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य
साझी और मरे हुओं में से जी उठनेवालोंमें पहिलौठा, और पृय्वी के राजाओं का
हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे: जो हम से प्रेम रखता है, और
जिस ने अपके लोहू के द्वारा हमें पापोंसे छुड़ाया है। 6 और हमें एक राज्य और
अपके पिता परमेश्वर के लिथे याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और
पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन। 7 देखो, वह बादलोंके साय आनेवाला है; और

हर एक आंख उसे देखेगी, बरन जिन्हों ने उसे बेधा या, वे भी उसे देखेंगे, और
पृय्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां। आमीन।। 8 प्रभु परमेश्वर वह
जो है, और जो या, और जो आनेवाला है; जो सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, कि मैं
ही अल्फा और ओमिगा हूं।। 9 मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश,
और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के वचन, और यीशु की
गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में या। 10 कि मैं प्रभु के दिन आत्क़ा में आ
गया, और अपके पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना। 11 कि जो कुछ तू
देखता है, उसे पुस्तक में लिखकर सातोंकलीसियाओं के पास भेज दे, अर्यात्‌
इफिसुस और स्मुरना, और पिरगमुन, और यूआतीरा, और सरदीस, और
फिलेदिलफिया, और लौदीकिया में। 12 और मैं ने उसे जो मुझ से बोल रहा या;
देखने के लिथे अपना मुंह फेरा; और पीछे घूमकर मैं ने सोने की सात दीवटें देखी।
13 और उन दीवटोंके बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष को देखा, जो
पांवोंतक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए या। 14 उसके
सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्ज़वल थे; और उस की आंखे आग की
ज्वाला की नाईं यी। 15 और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी
में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं या। 16 और वह
अपके दिहने हाथ में सात तारे लिए हुए या: और उसके मुख से चोखी दोधारी
तलवार निकलती यी; और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित या, जैसा सूर्य कड़ी धूप के
समय चमकता है। 17 जब मै ने उसे देखा, तो उसके पैरोंपर मुर्दा सा गिर पड़ा
और उस ने मुझ पर अपना दिहना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रयम
और अन्तिम और जीवता हूं। 18 मैं मर गया या, और अब देख; मैं युगानुयुग

जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं। 19 इसलिथे जो
बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इस के बाद होनेवाली हैं, उन
सब को लिख ले। 20 अर्यात उन सात तारोंका भेद जिन्हें तू ने मेरे दिहने हाथ में
देखा या, और उन सात सोने की दीवटोंका भेद: वे सात तारे सातोंकलीसियाओं के
दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं।।

प्रकाशित वाक्य 2

1 इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो सातोंतारे अपके दिहने
हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातोंदीवटोंके बीच में फिरता है, वह यह कहता
है कि 2 मै तेरे काम, और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूं; और यह भी, कि तू
बुरे लोगोंको तो देख नहीं सकता; और जो अपके आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं
नहीं, उन्हें तू ने परखकर फूठा पाया। 3 और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के
लिथे दु:ख उठाते उठाते यका नहीं। 4 पर मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है कि तू ने
अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। 5 सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और
मन फिरा और पहिले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मै
तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्यान से हटा दूंगा। 6 पर होंतुझ में यह बात
तो है, कि तू नीकुलइयोंके कामोंसे घृणा करता है, जिन से मैं भी घृणा करता हूं। 7
जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय
पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को
दूंगा।। 8 और स्कुरना की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो प्रयम और
अन्तिम है; जो मर गया या और अब जीवित हो गया है, वह यह कहता है कि। 9

मैं तेरे क्लेश और दिरद्रता को जानता हूं; (परन्तु तू धनी है); और जो लोग अपके
आप को यहूदी कहते हैं और हैं नहीं, पर शैतान की सभा हैं, उन की निन्दा को भी
जानता हूं। 10 जो दु:ख तुझ को फेलने होंगे, उन से मत डर: क्योंकि देखो, शैतान
तुम में से कितनोंको जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें
दस दिन तक क्लेश उठाना होगा: प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन
का मुकुट दूंगा। 11 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या
कहता है: जो जय पाए, उस को दूसरी मृत्यु से हानि न पंहुचेगी।। 12 और
पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जिस के पास दोधारी और
चोखी तलवार है, वह यह कहता है, कि। 13 मैं यह तो जानता हूं, कि तू वहां रहता
है जहां शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्यिर रहता है; और मुझ पर
विश्वास करने से उन दिनोंमें भी पीछे नहीं हटा जिन में मेरा विश्वासयोग्य साझी
अन्तिपास, तुम में उस स्यान पर घात किया गया जहां शैतान रहता है। 14 पर
मुझे तेरे विरूद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो बिलाम
की शिझा को मानते हैं, जिस ने बालाक को इस्त्राएलियोंके आगे ठोकर का कारण
रखना सिखाया, कि वे मूरतोंके बलिदान खाएं, और व्यभिचार करें। 15 वैसे ही
तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो नीकुलइयोंकी शिझा को मानते हैं। 16 सो मन
फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपके मुख की तलवार से उन के साय
लडूंगा। 17 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या कहता
है; जो जय पाए, उस को मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा, और उसे एक श्वेत पत्यर भी
दूंगा; और उस पत्यर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानेवाले के
सिवाय और कोई न जानेगा।। 18 और यूआतीरा की कलीसिया के दूत को यह

लिख, कि, परमेश्वर का पुत्र जिस की आंखे आग की ज्वाला की नाई, और जिस के
पांव उत्तम पीतल के समान हैं, यह कहता है, कि 19 मैं तेरे कामों, और प्रेम, और
विश्वास, और सेवा, और धीरज को जानता हूं, और यह भी कि तेरे पिछले काम
पहिलोंसे बढ़कर हैं। 20 पर मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री इजेबेल
को रहने देता है जो अपके आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासोंको
व्यभिचार करने, और मूरतोंके आगे के बलिदान खाने को सिखलाकर भरमाती
है। 21 मैं ने उस को मन फिराने के लिथे अवसर दिया, पर वह अपके व्यभिचार
से मन फिराना नहीं चाहती। 22 देख, मैं उसे खाट पर डालता हूं; और जो उसके
साय व्यभिचार करते हैं यदि वे भी उसके से कामोंसे मन न फिराएंगे तो उन्हें बड़े
क्लेश में डांलूगा। 23 और मैं उसके बच्चोंको मार डालंूगा; और तब सब
कलीसियाएं जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूं: और मैं तुम
में से हर एक को उसके कामोंके अनुसार बदला दूंगा। 24 पर तुम यूआतीरा के
बाकी लोगोंसे, जितने इस शिझा को नहीं मानते, और उन बातोंको जिन्हें शैतान
की गहिरी बातें कहते हैं नहीं जानते, यह कहता हूं, कि मैं तुम पर और बोफ न
डालूंगा। 25 पर हां, जो तुम्हारे पास है उस को मेरे आने तक यामें रहो। 26 जो
जय पाए, और मेरे कामोंके अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के
लोगोंपर अधिक्कारने दूंगा। 27 और वह लोहे का राजदण्ड लिथे हुए उन पर
राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते है: जैसे
कि मै ने भी ऐसा ही अधिक्कारने अपके पिता से पाया है। 28 और मैं उसे भोर को
तारा दूंगा। 29 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या
कहता है।।

प्रकाशित वाक्य 3

1 और सरदीस की कलीसिया के दूत को लिख, कि, जिस के पास परमेश्वर की
सात आत्क़ाएं और सात तारे हैं, यह कहता है, कि मैं तेरे कामोंको जानता हूं, कि
तू जीवता तो कहलाता है, पर, है मरा हुआ। 2 जागृत रह, और उन वस्तुओं को
जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने को यी, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैं ने तेरे किसी
काम को अपके परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया। 3 सो चेत कर, कि तु ने किस
रीति से शिझा प्राप्त की और सुनी यी, और उस में बना रह, और मन फिरा: और
यदि तू जागृत न रहेगा, तो मैं चोर की नाईं आ जाऊंगा और तू कदापि न जान
सकेगा, कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पडूंगा। 4 पर हां, सरदीस में तेरे यहां कुछ
ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपके अपके वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए
मेरे साय घूमेंगे क्योंकि वे इस योग्य हैं। 5 जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत
वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति
से न काटूंगा, पर उसका नाम अपके पिता और उसके स्वर्गदूतोंके साम्हने मान
लूंगा। 6 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या कहता है।।
7 और फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो पवित्र और
सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिस के खोले हुए को कोई बन्द नहीं
कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है, कि।
8 मैं तेरे कामोंको जानता हूं, (देख, मैं ने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है, जिसे
कोई बन्द नहीं कर सकता) कि तेरी सामर्य योड़ी सी है, और तू ने मेरे वचन का
पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। 9 देख, मैं शैतान के उन
सभावालोंको तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, बरन फूठ

बोलते हैं देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणोंमें दण्डवत करेंगे, और यह
जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है। 10 तू ने मेरे धीरज के वचन को यामा है,
इसलिथे मैं भी तुझे पक्कीझा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृय्वी पर
रहनेवालोंके परखने के लिथे सारे संसार पर आनेवाला है। 11 मैं शीघ्र ही
आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस यामें रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।
12 जो जय पाए, उस मैं अपके परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा; और
वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपके परमेश्वर का नाम, और अपके
परमेश्वर के नगर, अर्यात नथे यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से
स्वर्ग पर से उतरनेवाला है और अपना नया नाप उस पर लिखूंगा। 13 जिस के
कान हों, वह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं से क्या कहता है।। 14 और
लौदीकिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो आमीन, और
विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है,
वह यह कहता है। 15 कि मैं तेरे कामोंको जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न
गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। 16 सो इसलिथे कि तू गुनगुना है, और
न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपके मुंह से उगलने पर हूं। 17 तू जो कहता है, कि
मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं, और यह
नहीं जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा, और नंगा है। 18
इसी लिथे मैं तुझे सम्मति देता हूं, कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले,
कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिनकर तुझे अपके नंगेपन की
लज्ज़ा न हो; और अपक्की आंखोंमें लगाने के लिथे सुर्मा ले, कि तू देखने लगे।
19 मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं,

इसलिथे सरगर्म हो, और मन फिरा। 20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं;
यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके
साय भोजन करूंगा, और वह मेरे साय। 21 जो जय पाए, मैं उसे अपके साय
अपके सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपके पिता के साय उसके
सिंहासन पर बैठ गया। 22 जिस के कान होंवह सुन ले कि आत्क़ा कलीसियाओं
से क्या कहता है।।

प्रकाशित वाक्य 4

1 इन बातोंके बाद जो मैं ने दृष्टि की, तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार
खुला हुआ है; और जिस को मैं ने पहिले तुरही के से शब्द से अपके साय बातें
करते सुना या, वही कहता है, कि यहां ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे
दिखाऊंगा, जिन का इन बातोंके बाद पूरा होना अवश्य है। 2 और तुरन्त मैं
आत्क़ा में आ गया; और क्या देखता हूं, कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और
उस सिंहासन पर कोई बैठा है। 3 और जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक
सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारोंओर मरकत सा एक मेघधनुष
दिखाई देता है। 4 और उस सिंहासन के चारोंओर चौबीस सिंहासन है; और इन
सिंहासनोंपर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठें हैं, और उन के सिरोंपर
सोने के मुकुट हैं। 5 और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते हैं
और सिंहासन के साम्हने आग के सात दीपक जल रहे हैं, थे परमेश्वर की सात
आत्क़ाएं हैं। 6 और उस सिंहासन के साम्हने मानो बिल्लौर के समान कांच का
सा समुद्र है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारोंओर चार प्राणी है,

जिन के आगे पीछे आंखे ही आंखे हैं। 7 पहिला प्राणी सिंह के समान है, और
दूसरा प्राणी का मुंह बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और
चौया प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। 8 और चारोंप्राणियोंके छ: छ: पंख हैं,
और चारोंओर, और भीतर आंखे ही आंखे हैं; और वे रात दिन बिना विश्रम लिए
यह कहते रहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो या,
और जो है, और जो आनेवाला है। 9 और जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर
बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे।
10 तब चौबीसोंप्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के साम्हने गिर पकेंगे, और उसे
जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपके अपके मुकुट सिंहासन के
साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे। 11 कि हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा,
और आदर, और सामर्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी
ही इच्छा से यी, और सृजी गईं।।

प्रकाशित वाक्य 5

1 और जो सिंहासन पर बैठा या, मैं ने उसके दिहने हाथ में एक पुस्तक देखी, जो
भीतर और बाहर लिखी हुई भी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई यी। 2
फिर मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊंचे शब्द से यह प्रचार करता या
कि इस पुस्तक के खोलने और उस की मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है 3 और न
स्वर्ग में, न पृय्वी पर, न पृय्वी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोलने या उस पर
दृष्टि डालने के योग्य निकला। 4 और मैं फूट फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस
पुस्तक के खोलने, या उस पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला। 5 तब उन

प्राचीनोंमें से एक ने मुझे से कहा, मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो
दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातोंमुहर तोड़ने के लिथे
जयवन्त हुआ है। 6 और मैं ने उस सिंहासन और चारोंप्राणियोंऔर उन प्राचीनोंके
बीच में, मानोंएक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा: उसके सात सींग और सात
आंखे यी; थे परमेश्वर की सातोंआत्क़ाएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। 7 उस
ने आकर उसके दिहने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा या, वह पुस्तक ले ली, 8 और
जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारोंप्राणी और चौबीसोंप्राचीन उस मेम्ने के
साम्हने गिर पके; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के
कटोरे थे, थे तो पवित्र लोगोंकी प्रार्यनाएं हैं। 9 और वे यह नया गीत गाने लगे, कि
तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध
होकर अपके लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से
परमेश्वर के लिथे लोगोंको मोल लिया है। 10 और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिथे
एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। 11 और जब मै
ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियोंऔर उन प्राचीनोंकी चारोंओर बहुत से
स्वर्गदूतोंका शब्द सुना, जिन की गिनती लाखोंऔर करोड़ोंकी यी। 12 और वे ऊंचे
शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्य, और धन, और ज्ञान, और
शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है। 13 फिर मैं ने स्वर्ग
में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को,
और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है,
उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग
रहे। 14 और चारोंप्राणियोंने आमीन कहा, और प्राचीनोंने गिरकर दण्डवत

किया।।

प्रकाशित वाक्य 6

1 फिर मैं ने देखा, कि मेम्ने ने उन सात मुहरोंमें से एक को खोला; और उन
चारोंप्राणियोंमें से एक का गर्ज का सा शब्द सुना, कि आ। 2 और मैं ने दृष्टि की,
और देखो, एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिए हुए है: और उसे एक
मुकुट दिया गया, और वह जय करता हुआ निकल कि और भी जय प्राप्त करे।।
3 और जब उस ने दूसरी मुहर खोली, तो मैं ने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि
आ। 4 फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल रंग का या; उसके सवार को यह
अधिक्कारने दिया गया, कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे को
वध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई।। 5 और जब उस ने तीसरी मुहर
खोली, तो मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि आ: और मैं ने दृष्टि की, और
देखो, एक काला घोड़ा है; 6 और मैं ने उन चारोंप्राणियोंके बीच में से एक शब्द यह
कहते सुना, कि दीनार का सेर भर गेहूं, और दीनार का तीन सेर जव, और तेल,
और दाख-रस की हानि न करना।। 7 और जब उस ने चौयी मुहर खोली, तो मैं ने
चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, कि आ। 8 और मैं ने दृष्टि की, और देखो,
एक पीला सा घोड़ा है; और उसके सवार का नाम मृत्यु है: और अधोलोक उसके
पीछे पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौयाई पर यह अधिक्कारने दिया गया, कि
तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के वनपशुओं के द्वारा लोगोंको मार
डालें।। 9 और जब उस ने पांचक्की मुहर खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के
प्राणोंको देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो

उन्होंने दी थी, वध किए गए थे। 10 और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे
स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा और पृथ्वी के
रहनेवालोंसे हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा 11 और उन में से हर एक को
श्वेत वस्त्र दिया गया, और उन से कहा गया, कि और थोड़ी देर तक विश्रम करो,
जब तक कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाई वध होनेवाले हैं, उन
की भी गिनती पूरी न हो ले।। 12 और जब उस ने छठवीं मुहर खोली, तो मैं ने
देखा, कि एक बड़ा भुइंडोल हुआ; और सूर्य कम्मल की नाईं काला, और पूरा
चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। 13 और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पके
जैसे बड़ी आन्धी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल फड़ते हैं। 14 और
आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़,
और टापू, अपके अपके स्यान से टल गया। 15 और पृथ्वी के राजा, और प्रधान,
और सरदार, और धनवान और सामर्यी लोग, और हर एक दास, और हर एक
स्वतंत्र, पहाड़ोंकी खोहोंमें, और चटानोंमें जा छिपे। 16 और पहाड़ों, और चटानोंसे
कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है
और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। 17 क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ
पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है

प्रकाशित वाक्य 7

1 इसके बाद मैं ने पृथ्वी के चारोंकोनोंपर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की
चारोंहवाओं को यामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले।
2 फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से

ऊपर की ओर आते देखा; उस ने उन चारोंस्वर्गदूतोंसे जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की
हानि करने का अधिक्कारने दिया गया या, ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा। 3 जब
तक हम अपके परमेश्वर के दासोंके माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और
समुद्र और पेड़ोंको हानि न पहुंचाना। 4 और जिन पर मुहर दी गई, मैं ने उन की
गिनती सुनी, कि इस्त्राएल की सन्तानोंके सब गोत्रोंमें से एक लाख चौआलीस
हजार पर मुहर दी गई। 5 यहूदा के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई; रूबेन
के गोत्र में से बारह हजार पर; गाद के गोत्र में से बारह हजार पर। 6 आशेर के गोत्र
में से बारह हजार पर; मनश्शिह के गोत्र में से बारह हजार पर। 7 शमौन के गोत्र में
से बारह हजार पर; लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर; लेवी के गोत्र में से बारह
हजार पर; इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार पर। 8 जबूलून के गोत्र में से बारह
हजार पर; यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर और बिन्यामीन के गोत्र में से
बारह हजार पर मुहर दी गई। 9 इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक
जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन
नहीं सकता या श्वेत वस्त्र पहिने, और अपके हाथोंमें खजूर की डालियां लिथे हुए
सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है। 10 और बड़े शब्द से
पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिथे हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है,
और मेम्ने का जय-जय-कार हो। 11 और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और
प्राचीनोंऔर चारोंप्राणियोंके चारोंओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के साम्हने मुंह के
बल गिर पके; और परमेश्वर को दण्डवत करके कहा, आमीन। 12 हमारे परमेश्वर
की स्तुति, ओर महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, और
शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन। 13 इस पर प्राचीनोंमें से एक ने मुझ से कहा;

थे श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं और कहां से आए हैं 14 मैं ने उस से कहा; हे
स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; थे वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से
निकलकर आए हैं; इन्होंने अपके अपके वस्त्र मेम्ने के लोहू में धोकर श्वेत किए
हैं। 15 इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के साम्हने हैं, और उसके मन्दिर में
दिन रात उस की सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उन के ऊपर
अपना तम्बू तानेगा। 16 वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे: ओर न उन पर धूप, न
कोई तपन पकेगी। 17 क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उन की रखवाली
करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतोंके पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर
उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा।।

प्रकाशित वाक्य 8

1 और जब उस ने सातवीं मुहर खोली, तो स्वर्ग में आध घड़ी तक सन्नाटा छा
गया। 2 और मैं ने उन सातोंस्वर्गदूतोंको जो परमेश्वर के साम्हने खड़े रहते हैं,
देखा, और उन्हें सात तुरिहयां दी गईं।। 3 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का
धूपदान लिथे हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उस को बहुत धूप
दिया गया, कि सब पवित्र लोगोंकी प्रार्यनाओं के साय उस सोनहली वेदी पर जो
सिंहासन के साम्हने है चढ़ाए। 4 और उस धूप का धुआं पवित्र लोगोंकी प्रार्यनाओं
सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के साम्हने पहुंच गया। 5 और स्वर्गदूत ने
धूपदान लेकर उस में वेदी की आग भरी, और पृय्वी पर डाल दी, और गर्जन और
शब्द और बिजलियां और भूईडोल होने लगा।। 6 और वे सातोंस्वर्गदूत जिन के
पास सात तुरिहयां यी, फंूकने को तैयार हुए।। 7 पहिले स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी,

और लोहू से मिले हुए ओले और आग उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और
पृथ्वी की एक तिहाई जल गई, और सब हरी घास भी जल गई।। 8 और दूसरे
स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मानो आग सा जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में
डाला गया; और समुद्र का एक तिहाई लोहू हो गया। 9 और समुद्र की एक तिहाई
सृजी हुई वस्तुएं जो सजीव यीं मर गई, और एक तिहाई जहाज नाश हो गया।।
10 और तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं
जलता या, स्वर्ग से टूटा, और नदियोंकी एक तिहाई पर, और पानी के सोतोंपर
आ पड़ा 11 और उस तोर का नाम नागदौना कहलाता है, और एक तिहाई पानी
नागदौना सा कड़वा हो गया, और बहुतेरे मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से
मर गए।। 12 और चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और सूर्य की एक तिहाई, और
चान्द की एक तिहाई और तारोंकी एक तिहाई पर आपत्ति आई, यहां तक कि उन
का एक तिहाई अंग अन्धेरा हो गया और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा,
और वैसे ही रात में भी।। 13 और जब मैं ने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक
उकाब को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि उन तीन स्वर्गदूतोंकी
तुरही के शब्दोंके कारण जिन का फूंकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहनेवालोंपर
हाथ! हाथ! हाथ!

प्रकाशित वाक्य 9

1 और जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मैं ने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा
गिरता हुआ देखा, और उसे अयाह कुण्ड की कुंजी दी गई। 2 और उस ने अयाह
कुण्ड को खोला, और कुण्ड में से बड़ी भट्टी का सा धुआं उठा, और कुण्ड के धुएं

से सूर्य और वायु अन्धयारी हो गई। 3 और उस धुएं में से पृथ्वी पर टि्टड्डियाँ
निकलीं, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं की सी शक्ति दी गई। 4 और उन से कहा
गया, कि न पृथ्वी की घास को, न किसी हिरयाली को, न किसी पेड़ को हानि
पहुंचाओ, केवल उन मनुष्योंको जिन के माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। 5
और उन्हें मार डालते का तो नहीं, पर पांच महीने तक लोगोंको पीड़ा देने का
अधिक्कारने दिया गया: और उन की पीड़ा ऐसी यी, जैसे बिच्छू के डंक मारने से
मनुष्य को होती है। 6 उन दिनोंमें मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे, ओर न पाएंगे; और
मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उस से भागेगी। 7 और उन ि◌टिड्डयोंके
आकार लड़ाई के लिथे तैयार किए हुए घोड़ोंके से थे, और उन के सिरोंपर
मानोंसोने के मुकुट थे; और उसके मुंह मनुष्योंके से थे। 8 और उन के बाल
स्त्रियोंके से, और दांत सिहोंके से थे। 9 और वे लोहे की सी फिलम पहिने थे, और
उन के पंखोंका शब्द ऐसा या जैसा रयोंऔर बहुत से घोड़ोंका जो लड़ाई में दौड़ते
हों। 10 और उन की पूंछ बिच्छुओं की सी यीं, और उन में डंक थे, और उन्हें पांच
महीने तक मनुष्योंको दुख पहुंचाने की जो सामर्य यी, वह उन की पूंछोंमें यी। 11
अयाह कुण्ड का दूत उन पर राजा या, उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी
में अपुल्लयोन है।। 12 पहिली विपत्ति बीत चुकी, देखो अब इन के बाद दो
विपत्तियां और होनेवाली हैं।। 13 और जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फं◌ूकी तो जो
सोने की वेदी परमेश्वर के साम्हने है उसके सींगो में से मैं ने ऐसा शब्द सुना। 14
मानोंकोई छठवें स्वर्गदूत से जिस के पास तुरही यी कह रहा है कि उन चार
स्वर्गदूतोंको जो बड़ी नदी फुरात के पास बन्धे हुए हैं, खोल दे। 15 और वे चारोंदूत
खोल दिए गए जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिथे मनुष्योंकी

एक तिहाई के मार डालने को तैयार किए गए थे। 16 और फौजोंके सवारोंकी
गिनती बीस करोड़ यी; मैं ने उन की गिनती सुनी। 17 और मुझे इस दर्शन में घोड़े
और उन के ऐसे सवार दिखाई दिए, जिन की फिलमें आग, और धूम्रकान्त, और
गन्धक की सी यीं, और उन घोड़ोंके सिर सिंहोंके सिरोंके से थे: और उन के मुंह से
आग, और धुआं, और गन्धक निकलती यी। 18 इन तीनोंमरियों; अर्यात आग,
और धुएं, और गन्धक से जो उसके मुंह से निकलती यीं, मनुष्योंकी एक तिहाई
मार डाली गई। 19 क्योंकि उन घोड़ोंकी सामर्य उन के मुंह, और उन की पूंछोंमें
यी; इसलिथे कि उन की पूंछे सांपोंकी सी यीं, और उन पूंछोंके सिर भी थे, और
इन्हीं से वे पीड़ा पहुंचाते थे। 20 और बाकी मनुष्योंने जो उन मरियोंसे न मरे थे,
अपके हाथोंके कामोंसे मन न फिराया, कि दुष्टात्क़ाओं की, और सोने और
चान्दी, और पीतल, और पत्यर, और काठ की मूरतोंकी पूजा न करें, जो न देख,
न सुन, न चल सकती हैं। 21 और जो खून, और टोना, और व्यभिचार, और
चोरियां, उन्होंने की यीं, उन से मन न फिराया।।

प्रकाशित वाक्य 10

1 फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा,
उसके सिर पर मेघधनुष या: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के
खंभे के से थे। 2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक यी; उस ने
अपना दिहना पांव समुद्र पर, और बायां पृय्वी पर रखा। 3 और ऐसे बड़े शब्द से
चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द
सुनाई दिए। 4 और जब सातोंगर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर या,

और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि जो बातें गर्जन के उन सात शब्दोंसे सुनी हैं,
उन्हें गुप्त रख, और मत लिख। 5 और जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र और पृथ्वी
पर खड़े देख या; उस ने अपना दिहना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया। 6 और जो
युगानुयुग जीवता रहेगा, और जिस ने सवर्ग को और जो कुछ उस में है, और
पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उस में है सृजा
उसी की शपय खाकर कहा, अब तो और देर न होगी। 7 बरन सातवें स्वर्गदूत के
शब्द देने के दिनोंमें जब वह तुरही फूंकने पर होगा, तो परमेश्वर का गुप्त मनोरय
उस सुसमाचार के अनुसार जो उस ने अपके दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया पूरा
होगा। 8 और जिस शब्द करनेवाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते सुना या, वह फिर मेरे
साय बातें करने लगा; कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके
हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले। 9 और मैं ने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, यह
छोटी पुस्तक मुझे दे; और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा जो, और यह तेरा पेट
कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी। 10 सो मैं वह छोटी पुस्तक
उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर
जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया। 11 तब मुझ से यह कहा गया,
कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर
भविष्यद्ववाणी करनी होगी।।

प्रकाशित वाक्य 11

1 और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा दिया गया, और किसी ने कहा; उठ,
परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उस में भजन करनेवालोंको नाप ले। 2 और

मन्दिर के बारह का आंगन छोड़ दे; उस मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियोंको
दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी। 3 और मैं
अपके दो गवाहोंको यह अधिक्कारने दूंगा, कि टाट ओढे हुए एक हजार दो सौ
साठ दिन तक भविष्यद्ववाणी करें। 4 थे वे ही जैतून के दो पेड़ और दो दीवट हैं जो
पृय्वी के प्रभु के साम्हने खड़े रहते हैं। 5 और यदि कोई उन को हानि पहुंचाना
चाहता है, तो उन के मुंह से आग निकलकर उन के बैरियोंको भस्क़ करती है, और
यदि कोई उन को हानि पहुंचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला
जाएगा। 6 इन्हें अधिक्कारने है, कि आकाश को बन्द करें, कि उन की
भविष्यद्ववाणी के दिनोंमें मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिक्कारने है,
कि उसे लोहू बनाएं, और जब जब चाहें तब तब पृय्वी पर हर प्रकार की आपत्ति
लाएं। 7 और जब वे अपक्की गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अयाह कुण्ड में से
निकलेगा, उन से लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। 8 और उन की
लोथें उस बड़े नगर के चौक में पड़ी रहेंगी, जो आत्क़िक रीति से सदोम और
मिसर कहलाता है, जहां उन का प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया या। 9 और सब
लोगों, और कुलों, और भाषाओं, और जातियोंमें से लोग उन की लोथें साढ़े तीन
दिन तक देखते रहेंगे, और उन की लोथें कब्र में रखने ने देंगे। 10 और पृय्वी के
रहनेवाले, उन के मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक दूसरे के पास भेंट
भेजेंगे, क्योंकि इन दोनोंभविष्यद्वक्ताओं ने पृय्वी के रहनेवालोंको सताया या 11
और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्क़ा उन में पैठ
गई; और वे अपके पांवोंके बल खड़े हो गए, और उनके देखनेवालोंपर बड़ा भय छा
गया। 12 और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया, कि यहां ऊपर आओ; यह

सुन वे बादल पर सवार होकर अपके बैरियोंके देखते देखते स्वर्ग पर चढ़ गए। 13
फिर उसी घड़ी एक बड़ा भुइंडोल हुआ, और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा; और
उस भुइंडोल से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के
परमेश्वर की महिमा की।। 14 दूसरी विपत्ति बीत चुकी, देखो, तीसरी विपत्ति शीघ्र
आनेवाली है।। 15 और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के
बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का
हो गया। 16 और वह युगानुयुग राज्य करेगा, और चौबीसोंप्राचीन जो परमेश्वर के
साम्हने अपके अपके सिंहासन पर बैठे थे, मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को
दण्डवत करके। 17 यह कहने लगे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और
जो या, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपक्की बड़ी सामर्थ काम में लाकर
राज्य किया है। 18 और अन्यजातियोंने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा
और वह समय आ पहुंचा है, कि मरे हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास
भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगोंको और उन छोटे बड़ोंको जो तेरे नाम से डरते हैं,
बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएं।। 19 और परमेश्वर
का जो मन्दिर स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उस की वाचा का
सन्दूक दिखाई दिया, और बिजलियां और शब्द और गर्जन और भुइंडोल हुए,
और बड़े बड़े ओले पके।।

प्रकाशित वाक्य 12

1 फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्यात एक स्त्री जो सूर्य्य ओढ़े हुए
यी, और चान्द उसके पांवोंतले या, और उसके सिर पर बारह तारोंका मुकुट या। 2

और वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती यी; कयोंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी यी;
और वह बच्चा जनने की पीड़ा में यी। 3 और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई
दिया, और देखो; एक बड़ा लाल अजगर या जिस के सात सिर और दस सींग थे,
और उसके सिरोंपर सात राजमुकुट थे। 4 और उस की पूंछ ने आकाश के तारोंकी
एक तिहाई को खींचकर पृय्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस स्त्री से साम्हने
जो जच्चा यी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।
5 और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए, सब जातियोंपर राज्य करने पर
या, और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास
उठाकर पहुंचा दिया गया। 6 और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई, जहां परमेश्वर
की ओर से उसके लिथे एक जगह तैयार की गई यी, कि वहां वह एक हजार दो सौ
साठ दिन तक पाली जाए।। 7 फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके
स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर ओर उनके दूत उस से लड़े। 8
परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उन के लिथे फिर जगह न रही। 9 और वह बड़ा
अजगर अर्यात् वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे
संसार का भरमानेवाला है, पृय्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साय
गिरा दिए गए। 10 फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि अब
हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्य, और राज्य, और उसके मसीह का
अधिक्कारने प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयोंपर दोष लगानेवाला, जो रात
दिन हमारे परमेश्वर के साम्हने उन पर दोष लगाया करता या, गिरा दिया गया।
11 और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपक्की गवाही के वचन के कारण, उस
पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपके प्राणोंको प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु

भी सह ली। 12 इस कारण, हे स्वर्गों, और उन में के रहनेवालोंमगन हो; हे पृय्वी,
और समुद्र, तुम पर हाथ! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साय तुम्हारे पास उतर
आया है; क्योंकि जानता है, कि उसका योड़ा ही समय और बाकी है।। 13 और
जब अजगर ने देखा, कि मैं पृय्वी पर गिरा दिया गया हूं, तो उस स्त्री को जो बेटा
जनी यी, सताया। 14 और उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि सांप के
साम्हने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुंच जाए, जहां वह एक समय, और
समयों, और आधे समय तक पाली जाए। 15 और सांप ने उस स्त्री के पीछे अपके
मुंह से नदी की नाई पानी बहाथा, कि उसे इस नदी से बहा दे। 16 परन्तु पृय्वी ने
उस स्त्री की सहाथता की, और अपना मुंह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने
अपके मुंह से बहाई यी, पी लिया। 17 और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और
उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही
देने पर स्यिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ।।

प्रकाशित वाक्य 13

1 और मैं ने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिस के दस सींग और
सात सिर थे; और उसके सिरोंपर निन्दा के नाम लिखे हुए थे। 2 और जो पशु मैं
ने देखा, वह चीते की नाई या; और उसके पांव भालू के से, और मुंह सिंह का सा
या; और उस अजगर ने अपक्की सामर्य, और अपना सिंहासन, और बड़ा
अधिक्कारने, उसे दे दिया। 3 और मैं ने उसके सिरोंमें से एक पर ऐसा भारी घाव
लगा देखा, मानो वह माने पर है; फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया,
और सारी पृय्वी के लोग उस पशु के पीछे पीछे अचंभा करते हुए चले। 4 और

उन्होंने अजगर की पूजा की, क्योंकि उस ने पशु को अपना अधिक्कारने दे दिया
या और यह कहकर पशु की पूजा की, कि इस पशु के समान कौन है 5 कौन उस से
लड़ सकता है और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिथे उसे एक मुंह दिया
गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिक्कारने दिया गया। 6
और उस ने परमेश्वर की निन्दा करने के लिथे मुंह खोला, कि उसके नाम और
उसके तम्बू अर्यात् स्वर्ग के रहनेवालोंकी निन्दा करे। 7 और उसे यह
अधिक्कारने दिया गया, कि पवित्र लोगोंसे लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे
हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिक्कारने दिया गया। 8
और पृय्वी के वे सब रहनेवाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में
लिखे नहीं गए, जो जंगल की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा
करेंगे। 9 जिस के कान होंवह सुने। 10 जिस को कैद में पड़ना है, वह कैद में
पकेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा, पवित्र
लोगोंका धीरज और विश्वास इसी में है।। 11 फिर मैं ने एक और पशु को पृय्वी में
से निकलते हुए देखा, उसके मेम्ने के से दो सींग थे; और वह अजगर की नाईं
बोलता या। 12 और यह उस पहिले पशु का सारा अधिक्कारने उसके साम्हने
काम में लाता या, और पृय्वी और उसके रहनेवालोंसे उस पहिले पशु की जिस का
प्राणघातक घाव अच्छा हो गया या, पूजा कराता या। 13 और वह बड़े बड़े चिन्ह
दिखाता या, यहां तक कि मनुष्योंके साम्हने स्वर्ग से पृय्वी पर आग बरसा देता
या। 14 और उन चिन्होंके कारण जिन्हें उस पशु के साम्हने दिखाने का
अधिक्कारने उसे दिया गया या; वह पृय्वी के रहनेवालोंको इस प्रकार भरमाता
या, कि पृय्वी के रहनेवालोंसे कहता या, कि जिस पशु के तलवार लगी यी, वह जी

गया है, उस की मूरत बनाओ। 15 और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का
अधिक्कारने दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु
की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। 16 और उस ने छोटे, बड़े, धनी,
कंगाल, स्वत्रंत, दास सब के दिहने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा
दी। 17 कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्यात उस पशु का नाम, या उसके नाम
का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके। 18 ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह
इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छ: सौ
छियासठ है।।

प्रकाशित वाक्य 14

1 फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और
उसके साय एक लाख चौआलीस हजार जन हैं, जिन के माथे पर उसका और
उसके पिता का नाम लिखा हुआ है। 2 और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई
दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द या, और जो शब्द मैं
ने सुना; वह ऐसा या, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों। 3 और वे सिंहासन
के साम्हने और चारोंप्राणियोंऔर प्राचीनोंके साम्हने मानो, यह नया गीत गा रहे
थे, और उन एक लाख चौआलीस हजार जनो को छोड़ जो मोल लिए गए थे, कोई
वह गीत न सीख सकता या। 4 थे वे हैं, जो स्त्रियोंके साय अशुद्ध नहीं हुए, पर
कुंवारे हैं: थे वे ही हैं, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं: थे तो
परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिथे मनुष्योंमें से मोल लिए गए हैं। 5
और उन के मुंह से कभी फूठ न निकला या, वे निर्दोष हैं।। 6 फिर मैं ने एक और

स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिस के पास पृथ्वी पर के
रहनेवालोंकी हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगोंको सुनाने के लिथे
सनातन सुसमाचार या। 7 और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और
उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है, और
उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते
बनाए।। 8 फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि
गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपके व्यभिचार की कोपमय मदिरा
सारी जातियोंको पिलाई है।। 9 फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से
यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और
अपके माथे या अपके हाथ पर उस की छाप ले। 10 तो वह परमेश्वर का प्रकोप की
निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र
स्वर्गदूतोंके साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में
पकेगा। 11 और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु
और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम ही छाप लेते हैं, उन को
रात दिन चैन न मिलेगा। 12 पवित्र लोगोंका धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की
आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं।। 13 और मैं ने स्वर्ग से यह
शब्द सुना, कि लिख; जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्क़ा कहता
है, हां क्योंकि वे अपके परिश्र्मोंसे विश्रम पाएंगे, और उन के कार्य्य उन के साय
हो लेते हैं।। 14 और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस
बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है, जिस के सिर पर सोने का मुकुट
और हाथ में चोखा हंसुआ है। 15 फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से

निकलकर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा, कि अपना
हंसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पंहुचा है, इसलिथे कि
पृय्वी की खेती पक चुकी है। 16 सो जो बादल पर बैठा था, उस ने पृय्वी पर
अपना हंसुआ लगाया, और पृय्वी की लवनी की गई।। 17 फिर एक और स्वर्गदूत
उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था।
18 फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिक्कारने था, वेदी में से निकला,
और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा
हंसुआ लगाकर पृय्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक
चुकी है। 19 और उस स्वर्गदूत ने पृय्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृय्वी की
दाख लता का फल काटकर, अपके परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल
दिया। 20 और नगर के बाहर उस रस कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से
इतना लोहू निकला कि घोड़ोंके लगामोंतक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया।।

प्रकाशित वाक्य 15

1 फिर मैं ने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा, अर्यात सात स्वर्गदूत
जिन के पास सातोंपिछली विपत्तियां यीं, क्योंकि उन के हो जाने पर परमेश्वर के
प्रकोप का अन्त है।। 2 और मैं ने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा,
और जो उस पशु पर, और उस की मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर
जयवन्त हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए
हुए खड़े देखा। 3 और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा
गाकर कहते थे, कि हे स्र्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य्य बड़े, और अद्भुत हैं,

हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है। 4 हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा
और तेरे नाम की महिमा न करेगा क्योंकि केवल तू ही पवित्र है, और सारी
जातियां आकर तेरे साम्हने दण्डवत करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो
गए हैं।। 5 और इस के बाद मैं ने देखा, कि स्वर्ग में साझी के तम्बू का मन्दिर
खोला गया। 6 और वे सातोंस्वर्गदूत जिन के पास सातोंविपत्तियां यीं, शुद्ध और
चमकती हुई मणि पहिने हुए छाती पर सुनहले पटुके बान्धे हुए मन्दिर से
निकले। 7 और उन चारोंप्राणियोंमें से एक ने उन सात स्वर्गदूतोंको परमेश्वर के,
जो युगानुयुग जीवता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए। 8 और
परमेश्वर की महिमा, और उस की सामर्य के कारण मन्दिर धुएं से भर गया और
जब तक उन सातोंस्वर्गदूतोंकी सातोंविपत्तियां समाप्त न हुई, तब तक कोई
मन्दिर में न जा सका।।

प्रकाशित वाक्य 16

1 फिर मैं ने मन्दिर में किसी को ऊंचे शब्द से उन सातोंस्वर्गदूतोंसे यह कहते
सुना कि जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातोंकटोरोंको पृय्वी पर उंडेल दो।। 2 सो
पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृय्वी पर उंडेल दिया। और उन मनुष्योंके जिन पर
पशु की छाप यी, और जो उस की मूरत की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और
दुखदाई फोड़ा निकला।। 3 और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और
वह मरे हुए का सा लोहू बन गया, और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया।।
4 और तीसरे ने अपना कटोरा नदियों, और पानी के सोतोंपर उंडेल दिया, और वे
लोहू बन गए। 5 और मैं ने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, कि हे पवित्र, जो

है, और जो या, तू न्यायी है और तू ने यह न्याय किया। 6 क्योंकि उन्होंने पवित्र
लोगों, और भविष्यद्वक्ताओं को लोहू बहाथा या, और तू ने उन्हें लोहू पिलाया;
क्योंकि वे इसी योग्य हैं। 7 फिर मैं ने वेदी से यह शब्द सुना, कि हां हे
सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं।। 8 और चौथे ने
अपना कटोरा सूर्य पर उंडेल दिया, और उसे मनुष्योंको आग से फुलसा देने का
अधिक्कारने दिया गया। 9 और मनुष्य बड़ी तपन से फुलस गए, और परमेश्वर
के नाम की जिसे इन विपत्तियोंपर अधिक्कारने है, निन्दा की और उस की
महिमा करने के लिथे मन न फिराया।। 10 और पांचवें ने अपना कटोरा उस पशु
के सिंहासन पर उंडेल दिया और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया; और लोग पीड़ा
के मारे अपक्की अपक्की जीभ चबाने लगे। 11 और अपक्की पीड़ाओं और
फोड़ोंके कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; और अपके अपके कामोंसे मन न
फिराया।। 12 और छठवें ने अपना कटोरा बड़ी नदी फुरात पर उंडेल दिया और
उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिथे मार्ग तैयार हो जाए। 13
और मैं ने उस अजगर के मुंह से, और उस पशु के मुंह से और उस फूठे
भविष्यद्वक्ता के मुंह से तीन अशुद्ध आत्क़ाओं को मेंढ़कोंके रूप में निकलते देखा।
14 थे चिन्ह दिखानेवाली दुष्टात्क़ा हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास
निकलकर इसलिथे जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की
लड़ाई के लिथे इकट्ठा करें। 15 देख, मैं चोर की नाई आता हूं; धन्य वह है, जो
जागता रहता है, और अपके वस्त्र कि चौकसी करता है, कि नंगा न फिरे, और
लोग उसका नंगापन न देखें। 16 और उन्होंने उन को उस जगह इकट्ठा किया,
जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है।। 17 और सातवें ने अपना कटोरा हवा पर

उंडेल दिया, और मंदिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, कि ?हो चुका। 18 फिर
बिजलियां, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुइंडोल हुआ, कि जब
से मनुष्य की उत्पत्ति पृय्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुइंडोल कभी न हुआ या।
19 और उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए, और जाति जाति के नगर गिर पके,
और बड़ा बाबुल का स्क़रण परमेश्वर के यहां हुआ, कि वह अपके क्रोध की
जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए। 20 और हर एक टापू अपक्की जगह से टल
गया; और पहाड़ोंका पता न लगा। 21 और आकाश से मनुष्योंपर मन मन भर के
बड़े ओले गिरे, और इसलिथे कि यह विपत्ति बहुत ही भारी यी, लोगोंने ओलोंकी
विपत्ति के कारण परमेश्वर की निन्दा की।।

प्रकाशित वाक्य 17

1 और जिन सात स्वर्गदूतोंके पास वे सात कटोरे थे, उन में से एक ने आकर मुझ
से यह कहा कि इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं, जो बहुत से
पानियोंपर बैठी है। 2 जिस के साय पृय्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया, और
पृय्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे। 3 तब वह
मुझे आत्क़ा में जंगल को ले गया, और मैं ने किरिमजी रंग के पशु पर जो निन्दा
के नामोंसे छिपा हुआ या और जिस के सात सिर और दस सींग थे, एक स्त्री को
बैठे हुए देखा। 4 यह स्त्री बैंजनी, और किरिमजी, कपके पहिने यी, और सोने और
बहुमोल मणियोंऔर मोतियोंसे सजी हुई यी, और उसके हाथ में एक सोने का
कटोरा या जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा
हुआ या। 5 और उसके माथे पर यह नाम लिखा या, ?भेद बड़ा बाबुल पृय्वी की

वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता। 6 और मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगोंके
लोहू और यीशु के गवाहोंके लोहू पीने से मतवाली देखा और उसे देखकर मैं
चकित हो गया। 7 उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा; तू क्योंचकित हुआ मैं इस स्त्री,
और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, और जिस के सात सिर और दस सींग हैं,
तुझे भेद बताया हूं। 8 जो पशु तू ने देखा है, यह पहिले तो या, पर अब नहीं है,
और अयाह कुंड से निकलकर विनाश में पकेगा, और पृथ्वी के रहनेवाले जिन के
नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, इस पशु
की यह दशा देखकर, कि पहिले या, और अब नहीं; और फिर आ जाएगा, अचंभा
करेंगे। 9 उस बुद्धि के लिथे जिस में ज्ञान है यही अवसर है, वे सातोंसिर सात
पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। 10 और वे सात राजा भी हैं, पांच तो हो चुके हैं,
और एक अभी है; और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा, तो कुछ समय
तक उसका रहना भी अवश्य है। 11 और जो पशु पहिले या, और अब नहीं, वह
आप आठवां है; और उन सातोंमें से उत्पन्न हुआ, और विनाश में पकेगा। 12
और जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं; जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया;
पर उस पशु के साय घड़ी भर के लिथे राजाओं का सा अधिक्कारने पाएंगे। 13 थे
सब एक मन होंगे, और वे अपक्की अपक्की सामर्य और अधिक्कारने उस पशु
को देंगे। 14 थे मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह
प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है: और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, ओर
विश्वासी उसके साय हैं, वे भी जय पाएंगे। 15 फिर उस ने मुझ से कहा, कि जो
पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे लोग, और भीड़ और जातियां, और
भाषा हैं। 16 और जो दस सींग तू ने देखे, वे और पशु उस वेश्या से बैर रखेंगे, और

उसे लाचार और नंगी कर देंगे; और उसका मांस खा जाएंगे, और उसे आग में
जला देंगे। 17 क्योंकि परमेश्वर उन के मन में यह डालेगा, कि वे उस की मनसा
पूरी करें; और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें, तब तक एक मन होकर
अपना अपना राज्य पशु को दे दें। 18 और वह स्त्री, जिस तू ने देखा है वह बड़ा
नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है।।

प्रकाशित वाक्य 18

1 इस के बाद मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिस का बड़ा
अधिक्कारने या; और पृथ्वी उसके तेज से प्रज्वलित हो गई। 2 उस ने ऊंचे शबद
से पुकारकर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है: और दुष्टात्क़ाओ का
निवास, और हर एक अशुद्ध आत्क़ा का अड्डा, और एक अशुद्ध और घृणित
पक्की का अड्डा हो गया। 3 क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक मदिरा के
कारण सब जातियां गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साय व्यभिचार
किया है; और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण
धनवान हुए हैं। 4 फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों,
उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापोंमें भागी न हो, और उस की
विपत्तियोंमें से कोई तुम पर आ न पके। 5 क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच
गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्क़रण आए हैं। 6 जैसा उस ने तुम्हें दिया
है, वैसा ही उस को भर दो, और उसके कामोंके अनुसार उसे दो गुणा बदला दो,
जिस कटोरे में उस ने भर दिया या उसी में उसके लिथे दो गुणा भर दो। 7 जितनी
उस ने अपक्की बड़ाई की और सुख-विलास किया; उतनी उस को पीड़ा, और शोक

दो; क्योंकि वह अपके मन में कहती है, मैं रानी हो बैठी हूं, विधवा नहीं; और शोक
में कभी न पड़ूंगी। 8 इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ पकेंगी,
अर्यात्‌ मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्क़ कर दी जाएगी,
क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है। 9 और पृय्वी के राजा जिन्होंने
उसके साय व्यभिचार, और सुख-विलास किया, जब उसके जलने का धुआं देखेंगे,
तो उसके लिथे रोएंगे, और छाती पीटेंगे। 10 और उस की पीड़ा के डर के मारे दूर
खड़े होकर कहेंगे, हे बड़े नगर, बाबुल! हे दृढ़ नगर, हाथ! हाथ! घड़ी ही भर में तुझे
दण्ड मिल गया है। 11 और पृय्वी के व्यापारी उसके लिथे रोएंगे और कलपेंगे
क्योंकि अब कोई उन का माल मोल न लेगा। 12 अर्यात्‌ सोना, चान्दी, रत्न,
मोती, और मलमल, और बैंजनी, और रेशमी, और किरिमजी कपके, और हर
प्रकार का सुगन्धित काठ, और हाथीदांत की हर प्रकार की वस्तुएं, और बहुमोल
काठ, और पीतल, और लोहे, और संगमरमर के सब भांति के पात्र। 13 और
दारचीनी, मसाले, धूप, इत्र, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूं, गाय, बैल, भेड़,
बकिरयां, घोड़े, रय, और दास, और मनुष्य के प्राण। 14 अब मेरे मन भावने फल
तेरे पास से जाते रहे; और स्वादिष्ट और भड़कीली वस्तुएं तुझ से दूर हुई हैं, और
वे फिर कदापि न मिलेंगी। 15 इन वस्तुओं के व्यापारी जो उसके द्वारा धनवान हो
गए थे, उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे, और रोते और कलपके हुए
कहेंगे। 16 हाथ! हाथ! यह बड़ा नगर जो मलमल, और बैंजनी, और किरिमजी
कपके पहिने या, और सोने, और रत्नों, और मोतियोंसे सजा या, 17 घड़ी ही भर
में उसका ऐसा भारी धन नाश हो गया: और हर एक मांफी, और जलयात्री, और
मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए। 18 और उसके जलने

का धुआं देखते हुए पुकारकर कहेंगे, कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है 19
और अपके अपके सिरोंपर धूल डालेंगे, और रोते हुए और कलपके हुए चिल्ला
चिल्लाकर कहेंगे, कि हाथ! हाथ! यह बड़ा नगर जिस की सम्पत्ति के द्वारा समुद्र
के सब जहाजवाले धनी हो गए थे घड़ी ही भर में उजड़ गया। 20 हे स्वर्ग, और हे
पवित्र लोगों, और प्रेरितों, और भविष्यद्वक्ताओं, उस पर आनन्द करो, क्योंकि
परमेश्वर ने न्याय करके उस से तुम्हारा पलटा लिया है।। 21 फिर एक बलवन्त
स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाअ के समान एक पत्यर उठाया, और यह कहकर
समुद्र में फेंक दिया, कि बड़ा नगर बाबुल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा, और
फिर कभी उसका पता न मिलेगा। 22 और वीणा बजानेवालों, और बजनियों,
और बंसी बजानेवालों, और तुरही फूंकनेवालोंका शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न
देगा, और किसी उद्यम का कोई कारीगर भी फिर कभी तुझ में न मिलेगा; और
चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा। 23 और दीया का
उजाला फिर कभी तुझ में ने चमकेगा और दूल्हे और दुल्हिन का शब्द फिर कभी
तुझ में सुनाई न देगा; क्योंकि तेरे व्यापारी पृय्वी के प्रधान थे, और तेरे टोने से
सब जातियां भरमाई गई यी। 24 और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों, और
पृय्वी पर सब घात किए हुओं का लोहू उसी में पाया गया।।

प्रकाशित वाक्य 19

1 इस के बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि
हल्लिलूय्याह उद्धार, और महिमा, और सामर्य हमारे परमेश्वर ही की है। 2
क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं, इसलिथे कि उस ने उस बड़ी वेश्या का

जो अपके व्यभिचार से पृय्वी को भ्रष्ट करती यी, न्याय किया, और उस से अपके
दासोंके लोहू का पलटा लिया है। 3 फिर दूसरी बार उन्होंने हल्लिलूय्याह कहा:
और उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा। 4 और चौबीसोंप्राचीनोंऔर
चारोंप्राणियोंने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया; जो सिंहासन पर बैठा या,
और कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह। 5 और सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि हे
हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासों, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उस की
स्तुति करो। 6 फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और
गर्जनोंका सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लिलूय्याह, इसलिथे कि प्रभु हमारा
परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। 7 आओ, हम आनन्दित और मगन हों,
और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उस की पत्नी ने
अपके आप को तैयार कर लिया है। 8 और उस को शुद्ध और चमकदार महीन
मलमल पहिनने का अधिक्कारने दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्य
पवित्र लोगोंके धर्म के काम है। 9 और उस ने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे
हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; फिर उस ने मुझ से कहा, थे वचन
परमेश्वर के सत्य वचन हैं। 10 और मैं उस को दण्डवत करने के लिथे उसके
पांवोंपर गिरा; उस ने मुझ से कहा; देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयोंका
संगी दास हूं, जो यीशु की गवाही देने पर स्यिर हैं, परमेश्वर ही को दण्डवत कर;
क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्क़ा है।। 11 फिर मैं ने स्वर्ग को
खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है,
जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साय न्याय और लड़ाई
करता है। 12 उस की आंखे आग की ज्वाला हैं: और उसके सिर पर बहुत से

राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिस उस को छोड़ और कोई नहीं
जानता। 13 और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम
परमेश्वर का वचन है। 14 और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ोंपर सवार और श्वेत और
शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। 15 और जाति जाति को मारने के
लिथे उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड
लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप
की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। 16 और उसके वस्त्र और जांघ
पर यह नाम लिखा है, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।। 17 फिर मैं ने एक
स्वर्गदूत को सूर्य पर खड़े हुए देखा, और उस ने बड़े शब्द से पुकारकर आकाश के
बीच में से उड़नेवाले सब पझियोंसे कहा, आओ परमेश्वर की बड़ी बियारी के लिथे
इकट्ठे हो जाओ। 18 जिस से तुम राजाओं का मांस, ओर सरदारोंका मांस, और
शक्तिमान पुरूषोंका मांस, और घाड़ोंका, और उन के सवारोंका मांस, और क्या
स्वतंत्र, क्या दास, क्या छोटे, क्या बड़े, सब लोगोंका मांस खाओ।। 19 फिर मैं ने
उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उन की सेनाओं को उस घोड़े के सवार, और
उस की सेना से लड़ने के लिथे इकट्ठे देखा। 20 और वह पशु और उसके साय वह
फूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया, जिस ने उसके साम्हने ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिन
के द्वारा उस ने उन को भरमाया, जिन्हो ने उस पशु की छाप ली यी, और जो उस
की मूरत की पूजा करते थे, थे दोनोंजीते जी उस आग की फील में जो गन्धक से
जलती है, डाले गए। 21 और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से जो उसके
मुंह से निकलती यी, मार डाले गए; और सब पक्की उन के मांस से तृप्त हो
गए।।

प्रकाशित वाक्य 20

1 फिर मै ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिस के हाथ में अयाह कुंड
की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर यी। 2 और उस ने उस अजगर, अर्यात् पुराने सांप
को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिथे बान्ध दिया। 3 और
उसे अयाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह
हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगोंको फिर न भरमाए; इस के बाद
अवश्य है, कि योड़ी देर के लिथे फिर खोला जाए।। 4 फिर मैं ने सिंहासन देखे,
और उन पर लोग बैठ गए, और उन को न्याय करने का अधिक्कारने दिया गया;
और उन की आत्क़ाओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और
परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्होंने न उस पशु की, और न
उस की मूरत की पूजा की यी, और न उस की छाप अपके माथे और हाथोंपर ली
यी; वे जीवित होकर मसीह के साय हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। 5 और जब
तक थे हजार वर्ष पूरे न हुए तक तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहिला
मृत्कोत्यान है। 6 धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरूत्यान का भागी है,
ऐसोंपर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिक्कारने नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के
याजक होंगे, और उसके साय हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।। 7 और जब हजार वर्ष
पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। 8 और उन जातियोंको जो
पृय्वी के चारोंओर होंगी, अर्यात् याजूज और माजूज को जिन की गिनती समुद्र
की बालू के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिथे इकट्ठे करने को निकलेगा। 9
और वे सारी पृय्वी पर फैल जाएंगी; और पवित्र लोगोंकी छावनी और प्रिय नगर
को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्क़ करेगी। 10 और उन का

भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस फा◌ील में, जिस में वह पशु और
फूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ में
तड़पके रहेंगे।। 11 फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर
बैठा हुआ है, देखा, जिस के साम्हने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उन के
लिथे जगह न मिली। 12 फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के
साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली
गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्यात् जीवन की पुस्तक; और जैसे
उन पुस्तकोंमें लिखा हुआ या, उन के कामोंके अनुसार मरे हुओं का न्याय किया
गया। 13 और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और
अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के
कामोंके अनुसार उन का न्याय किया गया। 14 और मृत्यु और अधोलोक भी
आग की फील में डाले गए; यह आग की फील में डाले गए; यह आग की फील तो
दूसरी मृत्यु है। 15 और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न
मिला, वह आग की फील में डाला गया।।

प्रकाशित वाक्य 21

1 फिर मैं ने नथे आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और
पहिली पृथ्वी जाती रही यी, और समुद्र भी न रहा। 2 फिर मैं ने पवित्र नगर नथे
यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन
के समान यी, जो अपके पति के लिथे सिंगार किए हो। 3 फिर मैं ने सिंहासन में से
किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्योंके बीच

में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन
के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। 4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू
पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा
रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। 5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि
देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि थे वचन
विश्वास के योग्य और सत्य हैं। 6 फिर उस ने मुझ से कहा, थे बातें पूरी हो गई हैं,
मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते
में से सेंतमेंत पिलाऊंगा। 7 जो जय पाए, वही उन वस्तुओं का वारिस होगा; और
मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। 8 पर डरपोकों, और
अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और
मूतिर्पूजकों, और सब झूठोंका भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से
जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।। 9 फिर जिन सात स्वर्गदूतोंके पास सात
पिछली विपत्तियोंसे भरे हुए सात कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया, और
मेरे साथ बातें करके कहा; इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात मेम्ने की पत्नी
दिखाऊंगा। 10 और वह मुझे आत्क़ा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और
पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। 11
परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत की बहुमोल पत्थर,
अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी। 12 और उस की शहरपनाह
बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकोंपर बारह स्वर्गदूत थे; और
उन पर इस्त्राएलियोंके बारह गोत्रोंके नाम लिखे थे। 13 पूर्व की ओर तीन फाटक,
उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर

तीन फाटक थे। 14 और नगर की शहरपनाह की बारह नेवें यीं, और उन पर मेम्ने
के बारह प्रेरितोंके बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मेरे साय बातें कर रहा या,
उसके पास नगर, और उसके फाटकोंऔर उस की शहरपनाह को नापके के लिथे
एक सोने का गज या। 16 और वह नगर चौकोर बसा हुआ या और उस की
लम्बाई चौड़ाई के बराबर यी, और उस ने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े
सात सौ कोस का निकला: उस की लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊंचाई बराबर यी।
17 और उस ने उस की शहरपनाह को मनुष्य के, अर्यात स्वर्गदूत के नाम से
नापा, तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली। 18 और उस की शहरपनाह की जुड़ाई
यशब की यी, और नगर ऐसे चोखे सोने का या, जा स्वच्छ कांच के समान हो। 19
और उस नगर की नेवें हर प्रकार के बहुमोल पत्यरोंसे संवारी हुई यी, पहिली नेव
यशब की यी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौयी मरकत की। 20
पांचक्की गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज
की, नवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं
याकूत की। 21 और बारहोंफाटक, बारह मोतियोंके थे; एक एक फाटक, एक एक
मोती का बना या; और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की यी।
22 और मैं ने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और
मेम्ना उसका मंदिर हैं। 23 और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का
प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है, और मेम्ना
उसका दीपक है। 24 और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चले फिरेंगे, और
पृय्वी के राजा अपके अपके तेज का सामान उस में लाएंगे। 25 और उसके फाटक
दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी। 26 और लोग जाति जाति के

तेज और विभव का सामान उस में लाएंगे। 27 और उस में कोई अपवित्र वस्तु या
घृणित काम करनेवाला, या फूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा;
पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।।

प्रकाशित वाक्य 22

1 फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी फलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी
दिखाई, जो परमेश्वर और मेंम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के
बीचोंबीच बहती यी। 2 और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ या: उस
में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता या; और उस पेड़ के
पत्तोंसे जाति जाति के लोग चंगे होते थे। 3 और फिर स्राप न होगा और परमेश्वर
और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे। 4
और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उन के मायोंपर लिखा हुआ होगा। 5
और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न
होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा: और वे युगानुयुग राज्य
करेंगे।। 6 फिर उस ने मुझ से कहा, थे बातें विश्वास के योग्य, और सत्य हैं, और
प्रभु ने जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्क़ाओं का परमेश्वर है, अपके स्वर्गदूत को
इसलिथे भेजा, कि अपके दासोंको वे बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है
दिखाए। 7 देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; धन्य है वह, जो इस पुस्तक की
भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।। 8 मैं वही यूहन्ना हूं, जो थे बातें सुनता, और
देखता या; और जब मैं ने सुना, और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे थे बातें दिखाता
या, मैं उसके पांवोंपर दण्डवत करने के लिथे गिर पड़ा। 9 और उस ने मुझ से

कहा, देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई भविष्यद्वक्ताओं और इस
पुस्तक की बातोंके माननेवालोंका संगी दास हूं; परमेश्वर ही को दण्डवत कर।।
10 फिर उस ने मुझ से कहा, इस पुस्तक की भविष्यद्ववाणी की बातोंको बन्द मत
कर; क्योंकि समय निकट है।। 11 जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता
रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे;
और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। 12 देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक
के काम के अनुसार बदला देने के लिथे प्रतिफल मेरे पास है। 13 मैं अलफा और
ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि और अन्त हूं। 14 धन्य वे हैं, जो अपके
वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिक्कारने
मिलेगा, और वे फाटकोंसे होकर नगर में प्रवेश करेंगे। 15 पर कुत्ते, और टोन्हें,
और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक फूठ का चाहनेवाला,
और गढ़नेवाला बाहर रहेगा।। 16 मुझ यीशु ने अपके स्वर्गदूत को इसलिथे भेजा,
कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातोंकी गवाही दे: मैं दाऊद का
मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं।। 17 और आत्क़ा, और
दुल्हिन दोनोंकहती हैं, आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो,
वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।। 18 मैं हर एक को जो
इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई
मनुष्य इन बातोंमें कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियोंको जो इस पुस्तक में
लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। 19 और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की
बातोंमें से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में
से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।। 20 जो इन

बातोंकी गवाही देता है, वह यह कहता है, हां शीघ्र आनेवाला हूं। आमीन। हे प्रभु
यीशु आ।। 21 प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगोंके साय रहे। आमीन।।